



प्रस्तुत पुस्तिका जन समाज के लिए कितनी उपयोगी है इसका अनुमान अन्तर्गत विषय से भन्नी भांति नगाया जा सकता है ऐसी लाभपद पुस्तिका के प्रकाशन में तन मन धन से सहायता पदान करने वाले महान-भावों का त्राभार न मानना घृष्टता होगी। सर्वे प्रथम इस पुस्तिका के विषय के संग्रह-कर्त्ता पं. रत्न मंत्री सुनि श्री १००८ श्री मिश्रीमञ्जजी म० सा० का हम मानते हैं, तत्पश्चात् इस पुस्तक के संपादन कर्ता श्रीयुत् पं. शोभाचन्द्रजी भारिल्ल न्यायतीर्थ प्रथानाध्यापक श्री जैन गुरुकुल च्यावर तथा श्रर्थदाता श्री गम्भीरमलजी कोठारी डिगरना १५०) रु० तथा श्री रुपराज-जी रुंठिया जोधपुर ४०) रु० इन्हों का हम आभार मानते हैं।

भंडारी जोरावरमल



# \* भूमिका \*

इस ग्रसार संसार में श्राधार एवं उद्धार का करने वाला शास्त्रकारों ने केवल ज्ञान ही फरमाया है। किंत ज्ञान ही सम्यक् होना चाहिये । क्योंकि सम्यक् ज्ञान से ही सम्यक् दर्शन श्रौर सम्यक् चारित्र प्राप्त हो सकता है। वही मोज्ञ का मार्ग है, देखिये उमाखाति क्या फरमाते हैं कि "सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्राणि मोच्नमार्गः" ऐसा परम प्रधान ज्ञान जिनवाणी के अतिरिक्ष कहीं भी प्राप्त नहीं हो सकता। अतः जिनवाणी ठोस ज्ञान सव से प्रथम करना चाहिये श्रोर उस श्रोर ही रुचि बढ़ानी चाहिये, इस उद्देश्य से ही यह "तत्त्व ज्ञान-तरंगिणी" नामक प्रन्थ गुरुदेव की परम रूपा से प्रका-शित कर रहा हूँ। इसमें तेरह ढ़ालें, समिकत छुप्पनी, श्री दशवैकालिक च श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र के ऋध्ययन व थोकड़े वगेरह का समावेश किया गया है। इससे मुमुज़ सज्जनगण अवश्य ही लाभ उठाकर पं. मुनि श्री व मेरे श्रम को सफल बनाकर उत्साहित करेंगे॥ इति शम्॥

> श्रापका— भंडारी जोरावरमल प्रेसिडेंट, श्री जैन बुद्धवीर स्मारक मंडल, जोधपुर.





# श्रीतत्त्वज्ञान-तरंगिग्णी

# श्रथ श्रीमहावीर जिन-स्तुति

पुचिंद्रसु गंसमणा माहणा य, अगारिणो या परतित्थित्रा य। से केइ गेगंतिहयं धम्ममाहु, अगोलिसं साहु सिमक्लयाए।१ कहं च णाणं कह दंसणं से, सीलं कहं नायसुतस्स आसी?। जाणासि गं भिक्खु जहातहेणं, अहासुतं वृहि जहाणिसंतं।२ खेयन्नए से कुसले महेसी×, अगंतनाणी य अगंतदंसी। जसंसिणो चक्खुपहिद्यस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि।३ उह्दं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा। से गिच्चिणाटचेहि सिमक्ख पन्ने, दीवेव धम्मं सिमयं उदाहु।४ में सन्दर्शनी श्रमियुवनाणी, बिरामागेंचे चिहम दितणा।
मञ्जूचरे सब्दर्जानि थि अ गंधा अतीते समय श्रमुकः ।
से मूर्ययंत्रे श्राब्दिय अवानी, श्रोहंतरे चीरे श्रमुंतवस्त् ।
मञ्जूचरं उप्पति स्विष्य अ वहरोपालिते व तमयागि ।
सञ्जूचरं प्रमामिनां विश्वारां, लेपानुनी साम्य

क्ष्युक्तरं घनममिवां विद्यावां, खेवासुक्ती कास्तव कास्तुवव्ये । इन्दे व देवाल महालुमावे सदस्यलेका दिविशां विदिक्षे । से पचया अभक्तपतायारे या, महोद्दद्दी वादि अक्तुत्यारे । अल्याते या अस्त्राह मिक्कु सक्केद वेवादियाँ दुईं में से वीरियर्ण पविद्युवक्तिरिय, सुर्देशले वा क्यस्माव्यदे । सुराक्य वासि सुदामरे से विदायय क्षेत्रसुक्षेत्रकेष । ।

सर्थ स्वयस्ताश्चक कोयशांखं तिर्कटो पंडगवेजयंते । से कोयथे शवकाते सहस्से उत्युत्सिको हेड्ड सहस्त्रमेगां! पुडे क्रेसे विद्वत म्मितड्रिय, अं स्तरिया झासुपरिषड्यति । से देशवमें बहुनत्ये य अंसी रिते वेद्यवती महिता! से प्रकाप सहमदण्यास्ये विरायती कव्यवस्त्रकृतने । असुसरे विरिद्ध य प्रकड्डानी सिरीवरे से अजिपकानो ।!!

महीर मश्क्रिम ठिते वृगिषे पएवापते सूरियमुद्धकेसी।
एव सिरीप उ स भूरिवएवे महोरके जोगा व्यवस्था।
सुर्वसक्सीय कसो गिरिस्स पत्रुवा महोरो पावपस्स।
पतोबमे समग्रे नापपुणे जाती जसोवंसहमावसीके।
गिरीपरे वा निमहा-ऽध्याव अस्य स सेट्रे बनामसावि

गिरीवरे वा निमझ-55यमा रुपए थ सेट्रे बलपायतार्थ । तथानेने से सम्मूपपर्ये मुलील मनके समुद्राह परये ।! मधार्थे पम्माईर्यना, सहातरे क्राव्यरे क्रियारं । सुनुस्रह्म भागोहर्युक्ष भंकियुर्गत्यवातस्क्षाः! त्रशुत्तरमं परमं महेसी, त्रसेसकमं स विसोहस्ता। सिद्धिंगते साइमणंतपत्ते, नागेण सीलेण य दंसगोण ।१७ रुक्खेसु गाते जह सामली वा, जस्सि रति वेययति सुवन्ना। वरोसु वा गंदरामाहु सेटुं, नारोग् सीलेग् य भूतिपन्ने ।१८ थिंग्यं व सद्दाण त्र्रगुत्तरे उ, चन्दो व ताराण महागुभावे। गंधेसु वा चंदरामाहु सेटुं, एवं मुखीरां अपिहनमाहु ।१६ जहा सर्यभू उदहीण सेट्टे, नागेसु वा घरणिंदमाहु सेट्टे । खोग्रोदए वारस वेजयंते, तवीवहारों मुिए वेजयंते ।२० हत्थीसु परावणमाहु णाप, सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा। पक्खीसु वा गरुले वेगुदेवे, निव्वाणवादीगिह गायपुत्ते ।२१ जोहे सुणाप जह वीससेण, पुष्फेसु वा जह अरविंदमाहु। खत्तीण सेट्टे जह दंतवके, इसीण सेट्टे तह वद्धमाणे।२२ दाणाण सेट्टं श्रभयप्पयागां, सच्चेसु वा श्रणवज्जं वयंति । तवेसु वा उत्तम वंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ।२३ ठिईण सेट्टा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्टा। निव्वाण्सेट्टा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमित्थ नाणी ।२४ पुढोवमे भुण्ड विगयगेही, न सिएणहिं कुट्वति आसुपएरे। तरिउं समुद्दं व महानवोधं, अभयंकरे वीर अणंतचक्खू।२४ कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं श्रन्भत्थदोसा। पत्राणि वंता अरहा महेसी, ण कुंव्वइ पाव ण कारवेइ।२६ किरिया किरियं वेणइयाखुवायं, अरुणाणियाणं पडियच ठाणं। से सञ्चवायं इति वेयइत्ता, उवद्विए संजमदीहरायं १२० से वारिया इत्थी सराइभत्तं, उवहाग्वं दुक्खखयद्वयाए । लोगं विदित्ता आरं पारं च, सन्वं पभू वारिय सन्ववारं ।२८ सोधा य घम्म भरइंतमासियं समाद्दित सङ्कुपशेषस्वर्यः तं सददायाय जगाभगाठ, इन्दा व देवादिव भागमिस्सति

चित्रेमि ॥ इक्षा सिनि वीररखुइ नाम क्षष्टमस्म्ययं समर्थ ।

### यथ दुमपुष्फिया घन्मयगौ

प्रस्तो संगलगुष्किई काईंचा संज्ञतो तथे ॥
वेषा वित समस्ति जस्स प्रस्ते भया सणी ॥ १ व जहा दुवस्य पुण्डेस समस्ते भाषिण गर्थ ॥
व पुण्यं कितानेश सो व पीषेश भाष्यं ॥ १३ व एमेप समझा मुक्ता वे लोग संति साहुयो ॥ विहासा व पुण्डेस वायमचेसणे १पा ॥३॥ वर्ष च विक्ति सम्मानो, ण य कोह उपहरसह ॥ बहारावेश रीपते पुण्डेस समस्त जहा ॥ ॥ सहार्ग (का) रससा दुवा ने सर्वति काविस्तिया॥ नावार्षिकरण वता तथा पुण्डेस सम्बत्ति साहुको ॥ ॥।विचेर्ष

इति बुमपुष्किया पढमं भागमध्य भागमसं ॥१॥

### थय सामग्रापुब्वय खन्मग्रा

कद दु कुका मामएकं जो कामे म नियारए॥ पर पर विसीकंतो, संकच्चस्म यस गको ॥गा वत्थगंधमलंकारं, इत्थीत्रो सयणाणि य ॥ श्रव्हंदा जे न भुंजंति, न से चाइत्ति बुचइ ॥२॥ जे य कंते पिए भोए, लंदे वि पिष्टि कुव्वइ ॥ साहीणे चयइ भोए, से हु चाइत्ति बुचइ ॥३॥ समाइ पेहाइ परिव्वयंता, सिया मणो निस्सरई वहिन्दा ॥ न सा महं नोवि श्रहं वितीसे, इच्चेव ताश्रो विण्इज रागं ॥४॥ श्रायावयाही चय सोगमलं, कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं ॥ हिंदाहि दोसं विण्एज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए ॥४॥

पक्खंदे जिल्यं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ॥
नेच्छंति वंतयं भोत्तं, कुले जाया अगंधिण ॥६॥
धिरत्धु ते जसोकामी, जो तं जीवियकारणा ॥
वंतं इच्छिसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥७॥
आहं च भोगरायस्स, तं चऽित अंधगविरिहणो ॥
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुआे चर ॥८॥
जह तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छिसि नारिओ ॥
वाया विद्धुच्च हडो, अद्विअप्पा भिवस्सिस ॥६॥
तीसे सो वयगं सोचा, संजयाह सुभासियं ॥
श्रंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपिडवाहओ ॥१०॥
एवं करंति संबुद्धा, पंडिया पिवयवखणा ॥
विणियदंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥त्तिवेमि॥११॥

इञ्च सामरारापुद्वयं नाम दुइञ्चं श्रज्भयरां सम्मत्तं ॥२॥

### खुइ्डपायार कहा श्रज्मत्यर्गा

संजमे सुद्धिप्रप्यागं, विष्यमुक्ताव ताइएं ॥ वेसिमेयमकाप्रवर्गं, निमाधास महेसिर्ग ॥१॥ बहेसिय कीयगर्क नियागममिहराणि य ॥ राइमचे सियाये य गंधमस्ते य बीययं ॥२॥ भनिही गिडिमचे प. रायपिंडे किमिण्ह्य ॥ भवाहका इतपहोचका व संपुष्कका देहपलोचका य ॥३॥ ब्रहाबय य नासीय जुरास्त य बारसहाय॥ तेशिक्यं पात्रवान्याय समारंभं व जोहको हथ।। निकायरपिंडं च, बासंदीपतिर्पेक्य ॥ गिर्द्रतरिनिसिका य गापस्तुष्टदुष्पदि य हैश। रिद्विचो देशायदियं जा व सामीयवरिया ॥ तसा निस्तुडमोइसं चाडरस्सरकाकि य ॥६॥ समय सिंगबेरे य उच्छुकंडे क्रनियुडे ॥ केते मुले व मण्डिके फरेंग बीप य बामप ॥७॥ सोबबले सिंघने सोखे पोमासोचे य आमए॥ सामद्रे पंत्रकारे य काहालोखे य बामप 🎞 🖽 प्रवर्षे कि ममखे व क्लीकम्मविरेयणे ॥ र्भजरो दलपरो थ गायकांगविभूसरो #£D सम्बन्धमम्बन्धाः निर्माशास्त्र महेसियां ॥ संज्ञमस्मि च जुलाएं लहुमूयविहारिएं 17०॥ पंचासय परिण्याया तिग्रचा छस् भजया ॥ प्रवासम्मद्द्रणा चीरा मिर्गाचा बज्जुनंसिको ॥११॥

त्रायावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु त्रवाउडा ॥ वासासु पडिसंलीणा, सञ्जया सुसमाहिया ॥१२॥ परीसहरिऊदन्ता, धृत्रमोहा जिंददिया ॥ सव्वदुक्खपहीण्डा, पक्षमंति महेसिणो ॥१३॥ दुक्कराइं करित्ताणां, दुस्सहाइं सहित्तु य ॥ केइ-तथ देवलोण्सु, केइ सिज्मंति नीरया ॥१४॥ खिवत्ता पुत्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ॥ सिद्धिमग्गमणुष्पत्ता, ताइणो परिणिव्वुडे ॥त्तिबेमि॥१४॥

॥ इत्र खुड्डयायारकहा नाम तइयमज्क्रयणं समत्तं ॥

# ॥ श्रह छुजीवणियानामं चउत्थं श्रज्भयणं ॥

सुत्रं मे त्राउसंतेगं भगवया एवमक्खायं, इह खलु ज्ञजीविण्या नामन्भयगं समगोगं भगवया महावीरेगं कास-वेगं पवेइया सुत्रक्खाया सुपन्नत्ताः; सेत्रं मे त्रहिज्जिउं त्रज्भ-यगं धम्मपग्ण्ती ॥ १ ॥ कयरा खलु सा छजीविण्या नाम-ज्भयगं समगोगं भगवया महावीरेगं कासवेगं पवेइया सुत्रक्खाया सुपन्नत्ता सेत्रं मे त्रहिज्जिउं त्रज्भयगं धम्म-पग्ण्ती १॥२॥ इमा खलु सा छजीविण्या नामज्भयगं सम-गोगं भगवया महावीरेगं कासवेगं पवेइया सुत्रक्खाया सुपन्नत्ता मेत्रं मे त्रहिज्जिउं त्रज्भयगं धम्मपन्नत्ती ॥ तं जहा—पुढिविकाइया १, त्राउकाइया २, तेउकाइया २, वाउ-काइया ४, वग्रस्सइकाइया ४, तसकाइया ६। पुढवीचित्तमंत-मक्खाया त्रगोगजीवा पुढोसत्ता त्रवत्थ सत्थपरिग्एगां। त्राज

चित्तमतमक्साया भ्रागोगणीया पुढोसाचा अभ्रत्य सत्यपरिष पर्या ॥ ३ ॥ वेक चित्तमंतमन्याया सरोगजीवा पुरोसचा मचत्य सत्थपरिकवर्ण ॥४॥ वाक चित्रमतसभ्वाया मरोग जीवा पुढोसचा बाबाच संस्थपरियापूर्ण ॥४॥ यजस्मई विच मंतमकाया चरोगजीवा पुढोमचा बधस्य सरधपरिवप्रणं, त ज्ञहा--- झम्मश्रीपा मृलवीया पोरवीया अध्यवीयाः वीय दहा, संमुच्छिमा, तवालया चलरसङ्काह्या संबीचा चित्र मतमस्माया ऋगोगजीवा पुढोसचा क्रवत्य सत्यपन्गिपर्या ॥ से जे पुण इमे क्योंने वहदे तथा पाका तं जहा-ग्रंडमा पोयपा जराज्या रसया संसेष्ट्या समुक्तिमा अस्मिया उपवादया जेसिं केसिंगि पायायां, अभिकंतं परिकर्त मंकुविय पसारियं क्य गंतं तमियं पसाहयं भागहगहवि भाषा जे स की बपर्यमा जा य इत्युविषी क्रिया सब्दे बेहिन्द या सब्बे तेइन्द्रिया, सब्बे चउरिंदिया सब्बे पंचितिया सब्दे विरिक्त कोकिया सब्बे तेरहमा सब्बे मणुझा, सब्बे देवा. करने पाना परमाहिमाचा पत्नी जान खुड़ी श्रीवनिकाची तस काओ चि प्रस्ताह । इच्लेसि छ्यहं जीवनिकायायां नेच सय क्ष समारंशिका नेवम्मेदि वंद समारंमापिका वद समारं-सक्ते वि अन्ते न समग्रजासामि जायक्वीबाप तिविहं [तिय-देशों मरोलों बाबाय कायरों न करेशि स कारचेशि कांत्रवि धर्म म समग्रजाणामि, तस्य मन्त पडिकमासि निंदामि शरिकामि अञ्चलां कोसिरासि ॥

पडमे भन्त महत्त्वय पाणारयायाचा वेरमर्गा भन्धं भन्ते 'पाणारयायं पद्मपक्षामि । से सुदूर्म या वायरं क्षा, तसं वा धार्यं वा मैय सर्यं पाण बहवाहका मैय-प्रनीहिं पाल श्रद्दवायाविज्ञा, पागे श्रद्दवायन्ते ऽवि श्रन्ने न समगुजागामि, जावज्ञीवाए तिथिहं तिविहेगां मगोगां वायाए काएगां न करेमि न कारवेभि करंतिप श्रन्नं न समगुजाणामि, तस्स भन्ते ! पिकक्षमामि निंदामि गरिहामि श्रप्पागां वोसिरामि । पढमे भन्ते ! महत्वए उविद्विश्रोमि सव्वाश्रो पाणाइवायाश्रो वेर-मगां ॥१॥

श्रहावरे दुच्चे भन्ते ! महद्वण मुसावायं पचक्खामि । से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, नेव सयं मुसंवहजा, नेवनेहिं मुसं वायाविज्ञा मुसं वयंते वि श्रन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाण, तिविहं तिदिहेणं मणेणं वायाण कायणं न करेमि न कारविमि करंतिप श्रन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि श्रण्पाणं वोसिरामि । दुच्चे भन्ते ! मह्व्वण उवद्विश्रो मि सद्वाश्रो मुसावायाश्रो वेरमणं ॥ २॥

श्रहावरे तच्चे भन्ते ! महत्वए श्रदिन्नादाणात्रो वेरमणं। सत्वं भन्ते ! श्रदिन्नादाणं पचक्खामि। से गामे वा, नगरे वा, रण्णोवा, अप्पं वा, वहुं वा, श्रणुं वा, धूलं वा, चित्तमंतं वा, श्रचित्तमंतं वा, नेव सयं श्रदिन्नं गिण्हविज्ञा, नेवन्नेहिं श्रदिन्नं गिण्हाविज्ञा, श्रदिन्नं गिण्हन्ते वि श्रन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणोणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि श्रन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते ! पडिक्रमामि निंदामि गरिहामि श्रप्णाणं वोसिरामि। तच्चे भन्ते ! महव्वए उवद्विश्रो मि सद्याश्रो श्रदिन्नादाणाश्रो वेरमणं॥ ३॥

चित्रमतसम्याया अग्रेगजीया पुढोसत्ता अजाधः सत्यपरिष पर्यो ॥ ३ ॥ तेऊ चित्तमंत्रमप्राया अयोगश्रीया प्रदोसत्ता मञ्जल्य सत्यपरिगुणगो ॥।।।। याक्ष शिक्तमतमपन्नाया महोग जीया पुढोलका अधारथ शरधपरिगुधग्रां ॥४॥ थगुरुलई विक मनमक्पाया ऋगोगश्रीवा पुढोलता सदात्व सत्यपरिण्यसे त अहा-कागकीया, मृत्याया पोरबीया धेथकीया। बीय यहा ममुस्थिमा त्रणस्या, यशस्यहकाह्या, समीमा, विश्व मंतमस्याया ऋगोगजीवा पुढोसत्ता अबल्य सत्यपरिखपर्या ॥ से जै पुष इम आगोग वहचे तथा पावा त अहा—मंडपा पोपया करावधा, रसया संसेदया समुश्किमा उम्मिया, उपयाद्या जेसिं केसिंकि पाकार्याः आमिकंनं पविकर्त मंकुखिय, पसारियं ठयं मत तमियं पलाइये आगइगइवि भागा जै स की अपयोगा आ य कुंचुविची किया सब्वे वेइन्दि या सब्बे तेर्निया सब्बे चडरिंदिया सब्बे पंचिदिया, सब्बे तिरिश्व क्रोफिया सब्बे तेरहया, सब्बे प्रसुद्धा सब्बे देवा सक्ते पाशा परमाहरिमका, युनो बातु कही जीवनिकाको तथ काओ कि प्रमुखद । इच्लेमि बगई बीवनिकायाग्री नेव सर्व वंद समारंशिका नेवली हैं वृदे समारंगायिका वंद समारं-गाले वि भागी म समयाजायामि जावक्रीवाय तिबिध निष्टि-हेर्ग मणेशं वायाय कायरां न करेमि, स कारवेमि करंतिय धार्म म समयाजायामि तस्स मन्ते पविक्रमामि विदासि नरिकामि अप्पातां चोसिरामि ॥

पडमें मन्ते महस्तव पाश्वादवायाओं देरमणी। स्टब्स् मन्ते 'पाश्वादत्तवं पञ्चनकामि। से सुदुमं का कार्या या, तसं वा यावां वा वेद सर्वं पाले कहवादका नेव-अमेरि पाणे श्रद्दवायाविज्ञा, पागो श्रद्दवायन्ते ऽवि श्रन्ते न समगुजाणामि, जावज्जीवाए तिथिहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेभि करंतिप श्रन्तं न समगुजाणामि, तस्स भन्ते ! पिकक्षमामि निंदामि गरिहामि श्रप्पाणं वोसिरामि । पढमे भन्ते ! महब्वए उविद्विश्रोमि सब्वाश्रो पाणाइवायाश्रो वेर-मणं ॥१॥

श्रहावरे दुच्चे अन्ते ! मह्व्वए मुसावायं पचक्खामि । से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, नेव सयं मुसंवहजा, नेवन्नेहिं मुसं वायाविज्ञा मुसं वयंते वि श्रन्ने न समणुजाणामि जावजीवाए, तिविहं तिविहेणं मणोणं वायाए कायणं न करेमि न कारवेमि करंतिप श्रन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्रमामि निंदामि गरिहामि श्रण्पाणं वोसिरामि । दुच्चे भन्ते ! मह्व्वए उवद्विश्रो मि सव्वाश्रो मुसावायाश्रो वेरमणं ॥ २॥

श्रहावरे तच्चे भन्ते ! महत्वए श्रदिश्रादाणाश्रो वेरमणं। सन्वं भन्ते ! श्रदिश्रादाणं पश्चक्खामि। से गामे वा, नगरे वा, राणोवा, श्रणं वा, वहुं वा, श्रणं वा, धृलं वा, चित्तमंतं वा, श्रचित्तमंतं वा, नेव सयं श्रदिन्नं गिणहविज्ञा, नेवन्नेहिं श्रदिन्नं गिणहाविज्ञा, श्रदिन्नं गिणहत्वे वा श्रन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणोणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतिए श्रन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते ! पिडकमामि निंदामि गरिहामि श्रण्याणं वोसिरामि। तच्चे भन्ते ! महत्वए उविहुश्रो मि सन्वाश्रो श्रदिश्रादाणाश्रो वेरमणं॥ ३॥

मन्ते ! मेड्यां पचककासि । से विदर्धं था माणुनं वा, तिरि बच्चजीविर्धं वा, भेव स्वयं मेड्यां सेबिक्का, नेपानीहिं मेड्यां सेपामिका मेड्यां सेवन्ते विकाल न समस्त्रज्ञाणामि आव बीवाप तिथिदं तिबिद्देशं मचेतां वायार कारतां न करिस न कारबेस करिता आवन म सम्प्रज्ञाणामि । करस मन्ते ! पिकास मि निवास नरिवासि क्षरणायं वोस्तिरामि । चतस्य मन्ते ! सहस्वप स्वविद्यो सि सम्बासी वेदकासो बेदसर्वा।।॥।

कहाबरे पञ्चमे संते ! महत्वप परिमाहाओं बेरमपा । सम्बं मन्ते ! परिनाह पञ्चककामि । से क्रप्ये वा बहुं वा कार्यु वा पूर्व का बित्तमत बा,कवित्तमंत वा वेच सर्प परिनाई परिमा रिह्ना भेवन्तेष्ठि परिमाहं परिनिश्हाविका परिमाह परि निप्रदेशि वि क्रम्ये न समयुजायिका जावकामाप तिविद्दं विविद्देशी मत्त्रेरा वावाय कायणं न करेमि न कारवेमि करं तेपि क्रम्ये न समयुजायामि तस्त मन्ते ! प्रक्रिममामि मित्तामि गरिहामि क्ष्याणां वोविरामि (पक्षमे मान्ते ! महक्ष्य-

अष्टावरे संदे मन्ते । वय राहमीयकासी बेरमयां । सह

सन्ते ! टाइमीययां पण्डनकासि । से कासयां था पायां वा काइमं वा साइमं वा वैष सर्वे रात्रं सुंक्षिका मेकनोई रा गुंकावित्रका पारं गुंकीऽवि काने वा नमयाकाषामि जाव-ज्योवपर, विवेद तिबिदेशं मायेशां वायाय काषयां व करेति न कारवेति करेतिये कान व समयाकाष्यां । तस्स मन्ते पिककमामि निवासि गरिहासि क्षणार्थं पोसियसि । वर्षे \$11

न्ते ! वए उवद्विश्चोःमि सब्वाश्चो राइभोश्चणाश्चो वेरमणं॥ ॥ इचेयादं पञ्च महब्वयादं राइमोश्चणवेरमणंछट्टादं श्रत्त-हेयट्टियाए उवसंपन्जित्ताणं विहरामि॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजयविरयपिडिहयपचत्खायपावकरमे, दिश्रा वा, राश्रो वा, एगश्रो वा, परिसातश्रो वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा,
सेलं वा, लेलुं वा, ससरक्षं वा कायं, ससरक्षं वा वत्थं,
हत्थेण वा; पाएण वा, कट्टेण वा, किलिंचेण वा, श्रंगुलियाए
वा, सिलागए वा, सिलागहत्थेण वा, न श्रालिहिण्जा, न
विलिहाविज्ञा, न घट्टाविज्ञा, न भिंदाविज्ञा, श्रन्नं श्रालिहंतं वा, विलिहंतं वा, घट्टाविज्ञा, न भिंदाविज्ञा, श्रन्नं श्रालिहंतं वा, विलिहंतं वा, घट्टावेज्ञा, मिंदाविज्ञा, श्रन्नं श्रालिहंतं वा, विलिहंतं वा, घट्टावं वा, भिदंतं वा, न समणुजाणिज्ञा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न
करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स
भन्ते ! पडिक्रमामि निंदामि गरिहामि श्रण्याणं चोसिरामि
॥ १॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा संजयिवरयपिडहियपच-क्लायपावकम्मे, दिश्रा वा, राश्रो वा, एगश्रो वा, परिसागश्रो वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदगं वा, श्रोसं वा, हिमं वा, महियं वा, करगं वा, हिरतणुगं वा, सुद्दोदगं वा, उद-उल्लं वा कायं, उदउल्लं वा वत्थं, सिसिणिदं वा कायं, सिस-णिदं वा वत्थं न श्रामुसिङ्जा, न संपुरिक्जा, न श्रावी-लिङ्जा, न पवीलिङ्जा, न श्रक्कोडिङ्जा, न पक्कोडिङ्जा, न श्रायाविङ्जा, न प्याविङ्जा, श्रन्नं श्रामुसंतं वा, संपुरसंतं

वन्त्री इत्र ग

ना साबीसत ना, परीर्लतं या अक्सोबंतं या आगामणे गा, प्रमापनों ना म समयुकाशिक्या, आवक्सीमार, निर्विष्टं निर्विष्टं देगे मचेशं वायाप कापगों न करिस न कारवेसि करेत पि अपंत्र समयुक्तानासि । तकस मन्ते । पश्चिक्समासि निर्दार्भि गरिकासि संप्याणं वोस्पितिस ४ २ ॥

से भिक्त वा भिक्तुयों वा सज्जयविरयपिकद्वयवं क्लायपायक्रमें, विज्ञा वा राख्ने वा पत्रकों बा, परिसामकों वा, खुन्ने का ज्ञानमा आहे अपार्थ वा दक्षण का प्रस्मुदं वा खाँक वा जाते वा खुलामिं वा दक्षण का दिविरेका न प्रहित्जा न मिन्नेरजा न उरजाविरका न पढ़ाविरजा कि जा न निष्याविरजा खर्च न उरजाविरजा न पढ़ाविरजा न मिन्नाविरजा न उरजाविरजा न पर्जाविरजा न मिन्नाविरजा क्यं उरजाविर वा व पर्जाविरुखा न निष्याविरजा क्यं उरजान्त वा घहुम्मं वा सिदंव वा उरजा औक्रविर्मा क्यं उरजान्त वा घहुम्मं वा सिदंव वा उरजा जाकरबीचाय विविद्य विषयि मचेषां वापाय कम्प्यां न करित कारकों कर्मं प्रस्ताविर स्वर्ण म समस्यावावाति । तस्य मन्ते ! पिकक्रमामि निवासि गरिवासि खप्यां वो निवासि

से भिक्त् वा भिक्तुवी था, संज्ञवित्यपद्विपपद्व क्यापगावकामे दिका वा राखी वा गम्बो वा परिमागधो वा सुन्ते वा जागरमाधे वा, से विषय वा, बिद्वगणि वा राजिपरेक पा परेक वा पक्षमंगेल वा खाद्वार वा महा-मंगेल वा पिद्रोश था, पिद्वशहरोश वा केलेल पा, केल कनेल पा हरवेल वा मुद्देल या आपको या कार्य, वाहिरं वा वि पुग्गलं न फुमिज्जा, न वीएज्जा, अन्नं न फुमाविज्जा, न वीत्राविज्जा, अन्नं फुमंतं वा, वीत्र्यन्तं वा न समगुजागा-मि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेगां मगेगां वायाए काएगां न करेमि, न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समगुजागामि, तस्स भन्ते! पडिक्रमामि निंदामि गरिहामि अप्पागां वोसिरामि ॥४॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजयविरयपिडहयपच क्छायपावकम्मे, दिश्रा वा, राश्रो वा, पगश्रो वा, परिसागश्रो वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से वीपसु वा, वीयपइट्टेसु वा, रुद्धेसु वा, रूढपइट्टेसु वा, जाएसु वा, जायपइट्टेसु वा, हरि-एसु वा, हरियपइट्टेसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नपइट्टेसु वा, सचित्तेसु वा, सचित्तकोलपिडिनिस्सिएसु वा न गच्छेप्जा, न चिट्टेप्जा, न निसीइज्जा, न तुश्रद्धिजा, श्रन्नं न गच्छाविष्जा, न चिट्टाविष्जा, न निसीश्राविष्जा, न तुश्रद्धाविष्जा, श्रन्नं गच्छेनं वा, चिट्टंतं वा, निसीश्राविष्जा, न तुश्रद्धाविष्जा, श्रन्नं गच्छेनं वा, चिट्टंतं वा, निसीश्रान्तं वा, तुयट्टंतं वा न समणु-जाणामि जावज्जीवाए तिविद्दं तिविद्देणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि श्रन्नं न समणुजाणामि। तस्स भन्ते ! पिडिक्कमामि निंदामि गरिहामि श्रप्पाणं वोसि-रामि॥ ४॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच-क्खायपावकम्मे,दिश्रावा,राश्रो वा, प्राश्रो वा, परिसागश्रो वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीडं वा, प्रयंगं वा, कुन्धुं वा, िष्पी-लियं वा, हत्थंसि वा, पायंसि वा, उदंसि वा, उदरंसि वा, क सीसंसि वा, वत्थंसि वा, पडिग्गहंसि वा, कंवलंसि वा, पाय-पुच्छुणंसि वा, रयहरणंसि वा, गुच्छुगंसि वा, उंडगंसि वा, क्टनंनि पा पीडमंनि था, फलनंनि था, सेडबंसि या, सपार गंनि वा अक्षयंनि था, तहत्यगारे उदगरणज्ञाप तथी सजयामेष पडिलेष्टिय पडिलेष्टिय पत्रज्जिक पत्रज्जिक वर्गन सविक्षाज्ञा नोर्गा संघायसत्यज्जिका ॥ ६॥

#### --

स्रजयं घरमानो स, पा**न्**य्याह द्विंगर ४ वचह पावपं करम त से होई कडुकं कर बर्ध क्राजर्य चिद्रमाको का पाक्षभूपाइ क्रिंसइ II पंचर पावयं करम सं से दोह कहूम पता वश्र श्रज्ञथ आसमायो स्र पाक्षभूयार विंसर ह यभर पायमं काम ते से होत कड़म कस गरा धानमं समामो सा पायम्पार विसद अ बभार पासर्व कर्मा में से बोर कड़में फले वंध। क्रजर्च श्रेजमायो का पायम्पाद हिंसह ह बंधर पायर्थ करमां ते से बोद क्षत्रको पाल ॥४॥ क्रक्यं ज्ञासमायो च पापभपाद हिंसद ।। बंधार पायर्थ करमें त से बोद कडूका फर्ल ॥६॥ कद करे कई विदे कहमासे कई सरा प्र कह मुंजेती भारती, पायकरमें म बंबह ॥७॥ वर्ष करे जय विदे जयमासे वर्ष सदा। वर्ष भुवति मानौता पावकार्य स वंश्वह हाना सन्वभूयव्यभूयस्स, सम्मं भूयाइ पासत्रो ॥ पिहित्रासवस्स दंतस्स, पावकस्मं न वंधइ ॥६॥ पढमं नाएां तस्रो दया, एवं चिद्रः सन्वसंजए॥ श्रन्नाणी किं काही, किंवा नाही सेयपावगं । १०॥ सोचा जाणइ कल्लागं. सोचा जाणइ पात्रगं॥ उभयं पि जाणइ सोचा, जं सेयं तं समायरे ॥११॥ जो जीवे वि न याण्ड, श्रजीवे वि न याण्ड ॥ जीवाजीवे श्रयागंतो, कहं सो नाहीइ संजमं ॥१२॥ जो जीवे वि वियागोइ, ऋजीवे वि वियागइ॥ जीवाजीवे वियागांतो, सो हु नाहीइ संज्मं ॥१३॥ जया जीवमजीवे य, दोवि एए वियागाइ ॥ तया गई वहुविहं, सब्बं जीवाण जाण्ड ॥१४॥ जया गई बहुबिहं, सद्व जीवाण जाणइ ॥ तया पुरुशांच पावं च, वंधं मुक्खं च जाराइ ॥१४॥ जया पुर्णं च पावं च, वंधं मुक्खं च जागाइ ॥ तया निविंबदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥ जया निव्विद्र भोए; जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ तया चयइ संजोगं, सब्भितरं बाहिरं ॥१७॥ जया चयइ संजोगं, सर्विभतरं वाहिरं ॥ तया मुंडे भवित्तागां, पव्वइए श्रग्गारियं ॥१८॥ जया मुंडे भवित्तारां, पव्वइए त्र्रणगारियं ॥ तया संवरमुकिट्ठं, धम्मं फासे ऋगुत्तरं ॥१६॥ जया संबरमुक्तिः धम्मं कासे धालुत्तरं ॥ तमा भूसार कम्मरम धानोशिकल्स कई ।।२०॥ जया पुष्ट कस्मरचे बाबीहिकल्लं कई ॥ तया सद्यक्तर्ग वाणं वंसणं वामिगच्छा ॥२१॥ जया सब्बन्तर्ग मार्गा, द्मार्ग चामिगञ्चह ॥ तथा जोरामलोगं च. जियो जायह केवली 🙉 🛚 जया कोगमलोगं च जिस्से अखब केवसी । तया जांगे निर्देशिका सेशसि पहिचला १८३॥ जया जोशे निर्वेतिका सेखरिं पहिचरज्ञ ॥ तया कम्म कविचार्या, सिक्टिं गच्यह मीरमी ॥२४॥ जया कस्स कविचार्ण सिव्हें गच्छह मीरमा ॥ तया लोगमत्थयत्था सिखो ४वड मासमी ॥२४॥ सहसायगस्स मधगुरम नायावतगस्स निगामसाहस्म उद्यक्षीलखापद्वीचारम पुत्रदा सुगई तारिमगस्स ॥२६॥ त्रकोगाखपहाखस्य उज्ज्ञमङ् सम्विन्धज्ञमरयस्स ॥ परीसहे जिगोतस्य सुसदा सगई तारिस्तास्य ॥२७॥ पच्छावि ते प्रयापा शिष्य गण्डांति समरभवणाई॥ केंसि पिक्रो तको संजमो का राज्यी का वसकर था हरूदा इच्छेर्य छुरुनीयशिष भारमविष्टी भाषा अथ ॥ इक्रई सहिन्तु भामवर्ण, कम्मुका न विराहिस्तासि ॥ रश

॥ निषेमि ॥ (वस्त्रेपालिय ) इम एउजीविणुमा गार्म चडरच भाउमस्यणी समर्श ॥४॥

# श्रह तइश्रं चाउरंगिज्जं श्रज्भय्गां।

चत्तारि पगमंगाणि, दुल्लहाणीह जन्तुणो ॥ माणुसत्तं सुई सदा, संजमिम य वीरियं ॥१॥ समावन्नाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु॥ कम्मा नालाविहा कट्डु, पुढो विस्संभया पया ॥२॥ एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया ॥ एगया आसुरं कायं, आहाकम्मेहिं गच्छुई ॥३॥ एगया खतित्रो होइ, तत्रो चएडाल बुकसो ॥ तत्रो कीडपयंगी य, तत्रो कुंथुपिवीलिया ॥४॥ एवमावद्वजोणीसु, पाणिणो कम्मकिव्विसा॥ न निविज्जंति संसारे, सन्बद्देसु च खत्तिया ॥४॥ कम्मसंगेहिं सम्मूढा, दुक्खिया वहुवेयणा ॥ अमाणुसासु जोगीसु, विणिहम्मंति पाणिगो ॥६॥ कम्मारां तु पहाणाप, त्रारापुद्वी कयाइउ॥ जीवा सोहिमगुष्पत्ता, त्र्रायंयति मगुस्सयं ॥ ॥ माशुस्सं विन्गहं लद्धुं, सद्धा परम दुल्लहा॥ जं सोचा पडिवज्जंति, तवं खन्तिमहिसयं ॥ ॥ ॥ **ब्राहच सवरां लद्धुं, सद्धा परम दुल्लहा** ॥ सोचा नेत्राउयं मग्गं, वहवे परिभस्सई ॥६॥ सुरं च लद्धुं सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लहं ॥ वहवे रोयमाणावि, नो य एां पडिवज्जए ॥१०॥ माणसन्तिम बायाचा जो धरमं सोब सहहे ॥ तपस्ती वीरिय सर्वुं खबुडे निवृष्को रयं॥११॥ मोदी उरुप्रयमुगरस धम्मो प्रवस्त चिद्रई ॥ मिम्बार्ग परमे जाह. प्रयसिविज्य पावप ॥१२॥ विभिन्न करमुणो हेड, जस मधिख सान्तिए ॥ सरीरं पाइवं हिचा उबक्ष पक्रमई विसं । १३॥ निमातिसेई सीकेई, जनका उत्तरक्षरा 🛭 महासका च विजीता सकता चपुण्डचर्य ॥१४॥ मप्पिया देखकामायां कामकवित्रवित्रको ॥ उद्दर कृत्यस चिद्रन्ति पुरुषा वासस्या नह ।११॥ वरय दिव्या जहाटावां जनका बावनकय जुवा ॥ उपेंति माजुल जोखि से दसंगेऽमिजायह ॥१६॥ केतं वत्यं हिरएलं च पसनो दासपोदस ॥ श्वकारि कामणेवाचि तत्य से उपवस्ता ॥१॥ मिन्तवं भावनं दोई उच्चागोप थ चरखन।। क्राव्यावंके महापच समिताप क्रमोवले ॥।=॥ भोबा जालस्मय मोप अध्यक्तिने बहातय ॥ पुरिव विश्वक्षक्रमें केमले बोहि बुल्सिया ॥१६॥ चर्डरंगे वज्रहे भया, शंजम पहिचलिया ह तवना धयकमंसे सिवे हवह मासद ॥२०॥

अ शिथेमि ॥ इति भाउरंगिरज जाम तहश्चे का मत्यमं समरां ॥३॥

# यह चउत्थं यसंखयं यज्भयगां।

श्रसंखयं जीविय मा पमायप, जरोवणीयस्स हु निध्य तार्णं ॥ एवं विजाणाहि जरें। पमत्ते, किरासु विहिंसा श्रजया गहिति।१ जो पावकम्मेहि धरां मरासा, समाययंती श्रमइं गहाय॥ पहाय ते पासपयद्विए नरे, वेराणुवद्धा नरयं उवेंति ॥२ तेणे जहा संधिमुहे गहीए, सकम्मुणा किचइ पावकारी ॥ एवं पया पेच इहं च लोए, कडाण कम्माण न मुक्ख अत्थि॥३ संसारमावन्न परस्स श्रद्धा, साहारगां जं च करेइ कम्मं॥ कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले, न वंधवा वंधवयं उवेंति॥४ वित्तेण ताणां न लभे पमत्ते, इमिम लोए अदुवा परत्था ॥ दीवण्पण्डेच अगांतमोहे, नेयाउयं दद्रुमदद्रुमेव सुत्तेसु यावी पडिवुद्धजीवी, न वीससे पंडिय त्राहुपन्ने॥ घोरा मुहुत्ता अवलं सरीरं, भारंडपक्खी व चरेऽपमत्ते ॥६ चरे पयाइं परिसंकमाणो, जं किंचि पानं इह मग्णमाणो॥ लामंतरे जीविय वृहइत्ता, पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥७ छुन्दं निरोहेण उवेइ मोक्खं, श्रासे जहा सिक्खियवस्मधारी॥ . पुव्वाइं वासाइं चरेप्पमत्ते, तम्हा मुग्गी खिप्पमुवेश मोक्खं ॥ 🗷 स पुन्वमेवं न लभेज पच्छा, एसोवमा सासयवाइयारां॥ विसीयई सिढिले अण्डयम्मि, कालोवणीए सरीरस्स भेए॥६ खिष्पं न सक्केइ विवेगमेउं, तम्हा समुद्वाय पहाय कामे॥ सिमच लोयं समया महेसी, आयाणरक्खी चरऽप्यत्तो॥१० मुहं मुहं मोहगुणे जयन्तं, श्राणेगरूवा समगां चरन्तं॥ फासा फुसंति असमंजसं च न तेसि भिक्खु मण्सा पउस्से ॥११ मंदा य पासा बहुलोहिकिया तहच्यगारेमु मर्गा म हुन्यः॥ रिनिग्रत्व कोह विष्णुत्व मार्गा मार्ग म सेपेख पहंच लोहें॥ के सक्षया तुष्कुपरव्यवाहि है विकादोसालुगया वरस्यः॥ यद बहुन्मे कि तुसुकृतालो, कंद्रो सुख जाव सरीरनेऽ॥१

### ॥ सिचेमि ॥

इति भनस्य खरुषं सरक्षपर्वं समर्गः ॥ ४ ॥

यह गांवम निमपवज्ञा गामिज्यस्यगा । बारुराण देवसोगाको अववको आखसन्मि सोगन्मि॥

उवसन्तमोहिंस को सर्व पोराखियं जारे हैं। जार सरिता सबब नवे संबुद्धी बायुत्तरे घरने व पुत्त न्वेस्तु ग्रन्थे अभिणिस्तामई नमी राया ॥ ।॥ से देवलोगसरिसे अन्तेडरवग्गमो वरे मोए । मंजिल्ह्य भमी रावा दुवो मोगे परिवयह ॥३॥ मिहिलं सपुरजण्डमं वलमारोड च परिवर्णं सध्वं । विका समिनियस्तानो यगन्तमहिहिस्रो अयथ ॥४॥ कोबाहसगम्पं भासी मिक्रिलाए पश्ययस्तरिम तथ्या रापरिसिन्मि नमिन्मि अमिणिनसमन्त्रिम् ॥शी श्रामद्विषं रायरिसि प्रथ्वसाठायम् समे 11 सक्को मादणस्वेण दम वयसम्बद्धी HEI कियस मो सङ्ग मिहिलाप कोलाहसगर्सकता Ħ सम्बंति वादया सदा पासापस गिद्देस य non प्यमहं मिसामिचा हेडकारणचोहमो

तको मनी रायरिसी देविन्दं इसमन्त्रकी

nd.

मिहिलाए चेंइए चच्छे, सीयच्छाए मणोरमे॥ पत्तपुष्फफलोवेष, वहुएां वहुगुणे सया ॥६॥ वाएण हीरमाण्मिम, चेइयम्मि मणोरमे ॥ दुहिया ग्रसरणा श्रत्ता, एए कंदंति भो खगा ॥१०॥ एयमद्रं निसामित्ता, हेउकारणचोइस्रो ॥ तत्रो नमिं रायरिसिं, देविंदो इंग्एमव्ववी ॥१२॥ एस ऋग्गी य वाऊ य, एयं डज्भइ मन्दिरं॥ भयवं श्रन्तेउरं तेगां, कीस गां नावपेक्खह ॥(२॥ एयमद्रं निसामित्ता, हेउकारणचोइश्रो ॥ तत्रो नमी रायरिसी, देविंन्दं इणमञ्चवी ॥१३॥ सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो नित्थ किंवरां॥ मिहिलाए डज्समागीए, न मे डज्सइ किंचगां ॥१४॥ चत्तपुत्तकलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो ॥ पियं न विजाई किंचि, श्रप्पियं पि न विजाई ॥१४॥ वहुं खु मुणिणो भद्दं, श्रणगारस्स भिक्खुणो ॥ सद्वन्नो विष्पमुक्कस्स, एगन्तमगुपस्सन्नो ॥१६॥ एयमट्टं निसामित्ता, ् हेउकारणचोइश्रो ॥ तत्रो निर्म रायरिसिं, देविन्दो इण्मन्ववी ।।१७॥ पागारं कारइत्तारां, गोपुरट्टालगारिए य ॥ उस्सूलगसयग्घीत्रो, तत्रो गच्छुसि खत्तिया ॥१८॥ एयमद्वं निसामित्ता, हेउकारणचोइश्रो ॥ तश्रो नमी रायरिसी, देविन्दं इणमञ्जूबी ॥१६॥

सद नगरं किया स्वसंबरमगल 🛭 सर्मित निरुणपागार्थः तिगुत्त तुष्पधसय हरूना पयु परकम किया, जीवं च इरिवं समा। भिद्र च केयणं किचाण, सक्षेण पश्चिमंथम ॥२१॥ तव भारायञ्जलेया सिल्तूर्गा क्रम्मकच्रुय ॥ मुगी बिगयसंगामो, मधाको परिमुखय ४२२। प्यमद्रं निमामित्ता हेउकारप्रधोदयो ॥ तको नर्जि रायरिमि देविन्दो इक्सम्बद्धी ॥२३॥ पासाय कारक्कार्ण बद्धमासगिहाकि य ।। बाह्मगयोश्याची य. तच्ये गच्छ्य सस्तिया ॥२४॥ प्यम<u>ई</u> निसामित्रा हेउकारण्योदको ॥ तको नती रायन्सि देनिन्द इसमन्द्रनी ॥२४॥ संसय बाह्य सो क्रवाई जो अन्ने क्रवाई घर ॥ अत्येष गुनुमिण्डेका तत्व कृष्वेक सासय ॥२६॥ यसम्बद्धं विस्तामित्ता हेउकारणचीइको ॥ लको लक्ति रापरिसि देविन्त्री इयामध्यवी \$२७॥ कामोसे लोमहारे य गंदिमेय य सकरे। मगरस्स बेमकाकर्ण तथी गण्डसिकसिया ॥२८॥ प्रयमर्द निसामित्ता हेउकारपूर्वोद्दशो ह तको नमी चयरिसी देविन्यं इसमध्यकी ॥२३॥ समार हु मधुम्सेहि मिच्छा व्यक्ते प्रहसार **॥** मकारियोऽय पत्रमन्ति सुमाई कारको ज्ञया #३०॥

एयमद्रं निसामित्ता, हेउकारणचोइश्रो ॥ तन्त्रो निमं रायरिसिं, देविन्दो इणमव्ववी ॥३१॥ जे केइ पत्थिवा तुज्कं, नानमन्ति नराहिवा॥ वसे ते ठावइत्तारां, तश्रो गच्छिस खत्तिया ॥३२॥ एयमद्रं निसामित्ता, हेउकारणचोइत्रो ।। तत्रो नमी रायरिसी, देविन्दं इएमव्ववी ॥३३॥ जो सहस्सं सहस्सारां, संगामे दुजाए जिसे॥ एगं जिलेज अप्पालं, एस से परमो जत्रो ॥३४॥ श्रपाणमेच जुज्भाहि, किं ते जुज्भेण वज्भश्रो॥ अप्पाणमेवमप्पाणं, जइत्ता सुहमेहए ॥३४॥ पंचिन्दियाणि कोहं, माणं मायं तहेव लोहं च ॥ दुज्जयं चेव ऋष्पागं, सब्वं ऋष्पे जिए जियं ॥३६॥ एयमद्रं निसामित्ता, हेउकारण्चोइय्रो ॥ तत्रो निमं रायरिसिं, देविन्दो इल्प्सब्बवी ॥३७॥ जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समण्माह्यो ॥ दत्ता भोचा य जिट्टा य, तत्रो गच्छसि खत्तिया ॥३८॥ एयमद्रं निसामित्ता, हेउकारणचोइत्रो ॥ तत्रो नमी रायरिसी, देविन्दं इणमव्यवी ॥३६॥ जो सहस्सं सहस्साएां, मासे मासे गवं दए॥ तस्स वि संजमो सेत्रो, ऋदिंतस्स वि किंच्एां ॥४०॥ एयमट्टं निसामित्ता, हेउकारणचोइञ्रो ॥ तस्रो निर्म रायरिसि, देविन्दो इणमन्वनी ॥४१॥

पोगमम चर्त्वार्ग, बन्ने परवेसि बासम॥ न्हेय पोमहरको भवादि मलुवादिवा ॥४२॥ एयमद्रं निसामित्ता हैउकारसबोहको ॥ तमो नमी गयरिसी देविन्दं इस्तमन्त्रवी 🕏 ४३॥ मासे मासे तु जो बालो, कुसग्गेल तु मुंबए ॥ न मो मुपन्यायधम्मस्त कर्तं धन्धरु मोहसि ॥४४॥ एयम् निमासिचा हेउकारखबोह्यो ॥ तको नमि रायरिसि देविन्त्री इस्तमन्त्रवी ॥४४॥ द्विरवर्गं सुववर्गं मश्रिमुक्त कसंदूत व बाहर्गं 🏻 कोस बबदाधरकार्ण तको गच्छसि वरिया।।४६॥ प्यमहं निमामित्रा हेडकारवचोश्मो ॥ तको मभी रायरिसी वैथिन्तं व्लगन्तवी ॥४०॥ सुबर्यस्य स्वयंक्षया महे सिया हु केताससमा ससंजया। नरस्स मुखस्स न तेडि किंचि १०का हु आगाससमा आगंतिया पुढवी साझी जवा केव हिरुएयां पस्तिस्मह ॥ पश्चिपवर्ग नासमेगस्य दर विकास्यं घरे ४४॥ एयमई निसामिता हेउकारवचोइको ॥ तक्यों नमि रापरिसि वेविन्दो १ समन्वर्वी ॥ १०॥ श्रदक्षेरगमस्भुदयः मोयः व्ययसि परिचया ॥ भ्रासम्ते कामे पत्थेसि सक्यम विद्यमसि ॥x१॥ एयमद्वं निसामित्ता हेडकारस्थोदश्रो ॥ तमो नमी रायरिसी दैविन्तं इज्ञमन्त्रची ॥ १२॥ सस्तं कामा विमं कामा कामा कासीविसोवमा ॥ कामे पत्थेमाना अकामा अन्ति दोगाई ॥४३॥

श्रहे वयंति कोहेगां, माणेगां श्रहमा गई॥ माया गइपडिग्घात्रो, लोभात्रो दहन्त्रो भयं ॥५९॥ त्रवउन्भिक्षण माहणुरूवं, विउन्विक्षण इन्दत्तं॥ वन्दइ श्रभित्थुणन्तो, इमाहि महुराहि वग्गृहिं ॥४४॥ त्रहो ते निज्जित्रो कोहो, त्रहो माणो पराजित्रो॥ अहो निरक्किया माया, अहो लोमो वसीकओ ॥४६॥ श्रहो ते श्रज्जवं साहु, श्रहो ते साहु मद्दं॥ त्रहो ते उत्तमा खन्ती, त्रहो ते मृत्ति उत्तमा ॥५०॥ इहं सि उत्तमो भन्ते, पच्छा होहिसि उत्तमो ॥ लोगुत्तमुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि नीरत्रो ॥४८॥ एवं श्रभित्थुणंतो. रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए॥ पयाहिएां करेन्तो, पुणो पुणो वन्दई सक्को ॥४६॥ तो वंदिऊण पाए चक्कं कुसलक्खणे मुणिवरस्स ॥ श्रागासेखुप्पइत्रो, ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥६०॥ नमी नमेइ अप्पारां, सक्खं सकेरा चोइओ॥ चइऊण गेहं च वेदेही, सामर्गो पञ्जुवट्टिग्रो ॥६१॥ एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ॥ विणियहंति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसी ॥६२॥

### ॥ त्तिबेमि ॥

इति निमपव्यक्ता नाम नवमं अक्भयणं समत्तं ॥६॥

## घह महानियिठिज्ज वीसहम श्रज्मयर्गा ।

सिद्धाय ममो किया, संजयार्ग व भावको ॥ मत्यभमगद तथं ब्रह्ममाद्वं सुक्षेत्र में ॥१॥ पम्परयको रापा सेविको मगहाहिनो 🗈 विद्यारज्ञत्ते विकासी मिरिडकुर्विज्ञसि बेहप ॥२॥ मानातुमसयाइए गं भाषापिकवामिसीयियं ॥ नायाकुत्तुमसंस्थान वसार्या भन्त्योवम सत्य सो पास**ई** साई, संजयं सुसमाहियं 🛭 निसम्तं रुक्तमूलस्मि सुकुमास सुद्दोह्यं ॥४३ तस्स इतं हु पासिचा राइको तम्मि संजय ह ग्रयन्तपरमी जासी कावलो कपविम्तको ॥४॥ महो पर्ययो सहो कर्व सहो समस्य सोमया 🛭 महो चन्त्री महो मुची महो मोगे सर्सगया ॥६॥ वस्स पाप उ बंदिना, काळच य पपादिएां ॥ नारक्रमणासम्ते पंजनी पहिपुच्छारे ॥७॥ तदसी सि भारजी पन्यहमी, भीगकाहास्मि संजया । उपरिक्रों सि मामरणे प्यमद्वे सचेमि ता । पा श्रमहोसि महागय, नाही मञ्जू न विसर्व ॥ श्रायुकंपनं सुद्धिं वावि कंखि नामिसमेगढं ॥१॥ तको सो पहिसको राया सेविको मगहादियो ॥ ययं ते इविडमन्तरस, कई नाही न विज्ञाई ॥१०॥ हामि नाही भवंतायाँ, भीगे श्रेजाहि संतया ॥ मित्तनाईपरियुक्ते माणुस्स सु सुदुस्तई, ॥११॥ मप्पसा वि मलाहो असि, सेखिया मगहाहिया ॥ भणका भवादो सन्तो, करम माद्दो भविस्ससि ॥१२॥ एवं बुत्तो निरन्दो सो, सुसमन्तो सुविम्हित्रो ॥ वयगां ग्रस्सुयपुब्वं, साहुणा विम्हयन्नित्री ॥१३॥ श्रस्सा हत्थी मणुस्सा में, पुरं श्रन्तेउरं च में **॥** मुंजामि माणुसे भोगे, श्राणा इस्सरियं च मे ॥१४॥ एरिसे संपयगामिम. सब्बकामसमिष्पिए कहं त्रणाहो भवइ, मा हु भन्ते मुसं वए ॥१४॥ . न तुमं जागो त्रागाहस्स, त्रात्थं पोत्थं च पत्थिवा ॥ जहा ऋणाहो भवई, सणाहो वा नराहिवा ॥॥१६॥ सुरोह मे महाराय, श्रव्यक्खितेरा चेयसा॥ जहा ऋणाहो भवई, जहा मेयं पवत्तियं ॥१७॥ कोसंबी नाम नयरी, पुराणपुरभेयणी ॥ तत्थ त्रासी पिया मज्भ, पभूयधण्संचन्रो ॥१८॥ पढमे वए महाराय, श्रउला मे श्रच्छिवेयणा ॥ श्रहोत्था विउलो दाहो, सब्वगत्तेसु पत्थिवा ॥१६॥ सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीरविवरन्तरे ॥ त्रावीलिज्ज त्ररी कुद्धो, एवं मे त्र्रच्छिवेयणा॥२०॥ तियं मे अन्तरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडई॥ इन्दासिणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥२१॥ उवट्रिया मे आयरिया, विज्जामन्ततिगिच्छिगा ॥ 👵 त्रवीया सत्थकुसला, मन्तमूलविसारया ॥२२॥ ते मे तिगिच्छं कुव्वंति, चाउष्पायं जहाहियं ॥ न य दुक्खा विमोयंति, एसा मन्भ ऋणाह्या ॥२३॥ पिया मे सब्वसारंपि, दिज्जाहि मम कारणा॥ न य दुक्खा विमोयंति, एसा मन्भ त्रणाह्या ॥२८॥

माया यि मे महाराज, पुश्तसोगदुहद्विया ॥ न य दुक्सा विमोयति एसा मज्य प्रवाहया ॥२४॥ भायरो मे महाराय संगा जेड्डिक केट्रगा । न य दुफ्ला विमोर्वति यसा मरमः श्रावाह्या ॥२६॥ मर्रवीयो मे महाराय, सगा खेद्रकशिद्रगा ॥ न प दुफ्का विमोयति यसा मरमा श्रयाह्या ॥२७॥ मारिया में महाराय बालुरका बालुष्टया 🛭 शंसुप्रयोष्ठि नयखेडि उर मे परिखिनई ॥२०३ अर्ग्न पार्यां च यहार्यां च गम्धमञ्जविक्षेषर्यं ॥ मप नायसमाय था, छा बाला नेब भुंजई हरधा पर्णापि में महाराय, धालाओं में न फिर्हिं। म य दुक्का विमोद्द, एसा मज्य खगाइया ॥६०॥ तको ६ एपमाईस जुक्तमा ह पुत्रो पुर्यो ॥ वेयणा अणुमधितं जे संसारम्मि अणुन्तपः ॥३१॥ सर्व च कर मुक्तेका वेपका विदला इसी॥ दान्तो इन्तो निरारंमो पव्नप ऋषगारिय ॥६२॥ दर्भ च चिन्तरचार्ण पसुची मि नराहिया॥ परीयसम्बीप राईप, वेयका में दार्य गया ॥३३॥ तभी कल्ले प्रभायम्मि आपुचित्रसाम् वध्ये ॥ ध्यन्तो बन्तो निरारंमो, पच्यक्को अवगारिय ॥३४॥ नोद्द नाडो जाओ, ऋष्यणां ययरस्य यथ सम्पेनि चेष भृषाणं तसाल वाषराल व ॥३४॥ म्रापानकं वेयरणी मध्यामं कृष्टसामशी। कप्पा कामद्रहा घेश्रा कप्पा मे नम्पूर्ण धर्म ॥३६॥

श्रप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाए। य सुहाए। य ॥ श्रणा मित्तममित्तं च, दुष्पट्टिय सुपट्टिश्रो ॥३७॥ इमा हु श्रन्नावि अणाहया निवा, तमेगचित्तो निहु श्रो सुरोहि । नियंठधम्मं लहीयाण वी जहा, सीयंति एगे बहुकायरा नरा॥३= जो पव्वइत्तार्णं महव्वयाइं, सम्मं च नो फासयई पमाया॥ श्रनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलश्रो छिन्नइ वंधरां से ॥३६ श्राउत्तया जस्स न श्रात्थि काइ, इरियाएं भासाए तहेसगाए ॥ श्रायाण्निक्खेवदुगुंछणाए, न वीरजायं श्रणुजाइ मग्गं॥४० चिरं पि से मुंडरुई भवित्ता, श्रिथरव्वए तवनियमेहिं भद्रे॥ चिरं पि श्रप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु संपराए ॥४१ पोल्ले व मुट्टी जह से श्रसारे, श्रयन्तिए कृडकहावर्णे वा ॥ रुढामणी वेरुलियप्पगासे, स्रमहम्घए होइ हु जाण्पसु ॥४२ कुसीललिंगं इह धारइत्ता, इसिज्भयं जीविय वृहइत्ता ॥ श्रसंजए संजयलपमाणे, विणिग्घायमागच्छुइ से चिरंपि ॥४३ विसंतु पीयं जह कालकूडं, हलाइ सत्थं जह कुग्गहीयं॥ एसो वि धम्मो विसन्त्रोववन्नो, हणाई वेयाल इवाविवन्नो ॥४४ जे लक्खणं सुविण परंजमाणे, निमित्तकोऊहलसंपगाहे॥ कुहेडविजासवदारजीवी, न गच्छई सरगं तिम्म काले ॥४४ तमंतमेरोव उ से श्रसीले, सया दुही विष्परियासुवेइ ॥ संधावई नरगतिरिक्खजोणि, मोगां विराहेत्तुं असाहुक्रवे ॥४६ उद्देसियं कीयगडं नियागं, न मुंचई किंच त्र्रागेसिगिङ्जं ॥ अग्गीं विवा सव्वभक्षी भवित्ता, इत्तो चुए गच्छुइ कट्टु पावं॥४७ न तं ऋरी कंठछेत्ता करेइ, जं से करे ऋष्पिया दुरणया॥ से नाहइ मच्चुमुहं तु पत्ते, पच्छाखतावेण दयाविहृ्णो ॥४८ निरद्विया नग्गरुई उ तस्स, जे उत्तमट्टं विवज्जासमेइ ॥ इमे विसे नित्थ परे वि लोए दुहुत्रो विसे भिजाइ तत्थ लोए ॥४६ इस्सी बिया मोगरसालुभिजा निरद्वसोया परियावमेर ॥१० सोधाल मेहापि सुमासिय इस अलुसासर्या नालगुलोववेर । मन्ते इसीसाल जहाय सच्छ, महानिवंताल वद पहेस ॥११ विरुत्तिसाला उत्तिसाल का अलुक्तेर संज्ञम पाक्तियास ॥ विरुत्तिसाल स्वाधियाल काम अवेद त्यां विश्वलुक्तमं पुर्व ॥११ पद्मातृत्वने वि महात्वोषणे महासुणी महासुणी महासुणी महास्वरी ॥१३ महानिवंतिकानियां महासुण से काहुए महया विरयरोगी ॥१३

तुद्दो य संविद्यो रागा १७प्रवृत्त कार्यज्ञली ॥ स्रायाहरू जहान्थ्य पुरुद्ध मं उवर्षतिये ॥४४॥ युग्म पुरुद्ध सु सपुरुप जम्मे सामा पुरुषा य दुमे महेसी ॥ तुम्मे सबाहा य सबस्या य जमे दिया मग्गे जिल्लामाणी॥४४ वित्र नाहो स्वाहार्ग स्वस्याय संज्ञाता ॥

तास नाहा सस्ताहाय सम्बद्धान स्वत्या ।
स्वामिम ते महामाग इस्द्वामि स्वत्यामित ॥१६॥
पुरिस्कृत्य मर तुम्म अम्बद्धानि स्वत्यामित ॥१६॥
तिमत्तिया य मोगोर्ड तं सन्य मारिसेदि मे ॥४॥।
यसं युविचाय स रायतीहो सम्बग्धानतीहं परमाह मचीय ॥
सभोरोहो मयरिययो सर्वया सम्माहुरचो विमलेस वेयता॥

कसिमयरोमक्षो काळख प पणाहिए। । स्रिमंदिकक सिन्सा कारणामा सगहिको ॥५६॥ १ परो वि गुंगसमिको तिगुनिगुक्ता तिर्वेडविरको प ॥ विहम देव विष्युक्ता विहरत बसुई विमयमोहो ॥६०॥ ॥ विकास सम्बद्धि ॥

इति महानियंडिज्ञं बीसहम क्रज्यस्ययां समत्तं ॥२०॥ ( क्यारम्ययाः )

### [ ३१ ]

# **त्रय बडी सायु वन्द्रणा लिख्यते**

( तेरह ढालां )



## ।। ढाल १ ली ।। देशी चौपईनी ॥

पंच भरत पंच एरचय जांग, पांचों ही महाविदेह चखांगा। जे अनन्त हुवा अरिहन्त, ते प्रगमूं कर जोरी सन्त ॥१॥ जे हिवड़ा विहरे जिनचन्द, खेत्र विदेह सदा सुखकन्द ॥ कर जोड़ी प्रगमूं तस पाय, आरत विधन सह दिल जाय ॥२॥ सिद्ध अनन्त जे पनरे भेद, ते प्रगमूं मन धरी उमेद ॥ आचारज प्रगमूं गग्धार, श्री उवज्भाय सदा सुखकार ॥३॥ साधु सह प्रगमूं केवली, काल अनादि अनंता वली ॥ जे हियड़ा विहरे गुग्वन्त, साधु साधवी सह भगवन्त ॥४॥ ते सह प्रगमूं मन हुक्षास, अरिहंत सिध ने साधु प्रकाश ॥ वार अनंत अनंत विचार, साधु वन्दन करसं हितकार ॥४॥

#### # दोहा #

पहिज जम्बूदीप वर, भरत नाम तिहाँ खेत॥ जिनवर वचन लही जिहाँ, निर्मल कीघा नेत॥१॥ तिहाँ चौवीसे जिन थया, ऋषभादिक महावीर॥ पूरव भव कहि प्रणमिये, पामीजे भवतीर॥२॥

[ ३२ ] ती शया कायातक विभीका ।

पूरव सथ चक्रवर्ती थया ऋपसन्त्र निर्मीकः ॥ अजितादिक तेपील किन, राजा सह संदर्शक ॥ ३॥

प्रत सही पूरव चहन आवम मनवां मन रंग ॥ पूरव मन तेबीस जिन, मनवां इत्यारे बाह ॥॥ धीस चानक तिहीं संविधा, बीज मन सुरराय ॥ स्वांधी चयि बीजीस जिन हुवा संप्रचर्म वाय ॥॥॥

> ।। डाल २ जी ।। चौपार्व तथा सिंपूनी देशी ॥

चनवर्ती पूरव सव जांच वहरनाम इव नाम वस्त्रांख ॥ च्युपसदेव प्रसम् अगमीच गुख गातां हुवे जन्म प्रमास ॥१॥

विमक्ताप पूरंब मह नाम खडिन जिनेन्दर कर्क प्रशास । विमल पाइण पूरंब मवराय औ सम्भव किन प्रशास प्राप्त ॥ ॥ ॥ पूरंब मच घर्मसीह राजान क्रिसेन्स्यन प्रशास प्राप्त ग्रुम दवान ॥

पुरक अध सुभित्त प्रसिद्ध सुमिति विवेश्यर प्रवर्म सिद्ध तिश पुरक अव राजा धर्मिस्ति पद्यप्रम विव प्रवर्म तित त पुरक अव वे सुन्दर बाबु ते सुपास प्रवर्म जनताबु स्था

पूरक भक्ष के सुन्दर काहु ते सुपास प्रक्षम्ं कर्णनाहु ॥४३ पूरक भक्ष विकाहु सुनीरा व्यवस्था प्रवास् उपादीशा ॥ बुत्तभाव पूरक सम्बन्धीय प्रवास् सुविधि विकास सुनीत १२३॥ तटकाहु पूर्वक स्व जास भी शीतता तिल प्रवास् हुआस ॥ विकास पूर्वक तिकक समाल प्रवास् शो कोवांस प्रमात ॥६॥

इन्द्रदत्त मुनिवर गुणवन्त, वासुपूज्य प्रणमूं भगवन्त ॥ पूरव भव सुन्दर वड़भाग, वन्दूं विमल धरी मन राग ॥७॥ पूरव भव जे राय महिंदर, ते श्रनन्त जिन प्रणमूं खुखकर ॥ साधु शिरोमणि सियरथ राय, धर्मनाथ प्रणमूं मन लाय॥॥॥॥ पूरव भव मेघरथ गुण गाऊं, शांतिनाथ चरणे चित लाऊं॥ पहिले भव रूपी मुनिकहिये, कुंथुनाथ प्रणम्यां सुख लहिये ॥ राय सुदर्शन मुनि विख्यात, वन्दूं ऋर जिन त्रिभुवन-तात ॥ पहिले भव नन्दन मुनि चन्द, ते प्रणमूं श्री मल्लि जिनंद ॥१० सीहगिरि पूरव भव सार, मुनिसुव्रत जिन जगदाधार ॥ श्रदीन शत्रु मुनिवर शिव साथ, कर जोड़ी प्रणमूं निमनाथ॥११ संख नरेश्वर साधु सुजास, श्रारिट्टनेमि प्रसार्यू गुस खान ॥ राय सुदर्शन जेह मुनीश, पार्श्वनाथ प्रण्मूं निसदीश ॥१२ छट्ठे भव पोटिल मुनि जाण, कोड वर्ष चारित्र नीहाण ॥ तीजे भव नन्दन राजान, कर जोड़ी प्रग्मूं वर्द्धमान ॥१३ चौवीसे जिनवर भगवन्त, ज्ञान दरशण चारित्र अनन्त ॥ वार ब्रनन्त करूं परणाम, दुष्ट कर्म चय करजो. साम ॥१४

### ॥ दोहा ॥

मेरु थकी उत्तर दिशे, इण्हिज जम्बूदीप ॥
एरवय चेत्र सुहामणो, जिण विध मोती शीप ॥१॥
तिहाँ चौवीशे जिन थया, चन्द्रानन वारिखेण ॥
एहिज चौवीसे सही, ते प्रणमूं समश्रेण ॥२॥

चन्द्रानम जिल प्रथम जिलेश्वर बीजा भी सुचन्द्र भगवन्त । अगिगसेय तीजा तीर्थंकर चीचा भी नवियेख अर्द्धत ॥१॥

विकरण सुद्ध सदा जिम प्रणुम् एरवय क्षेत्र तसां कीवीस 🗷

पांचमां भी रिसदिय पुचीजे वयदारी कड़ा जिनराय 🛚

ऋपमादिक सामी अनुक्रमे ह्या एके समे जनम्यां सुजगीश 🕫

मामबन्द सातमो जिन समर्वे जुतिसेस बादमा सुपसाय। त्रि मबमा स्रविधसेष जिम मस्त्रं वस्त्रमं भी शिवसेन उदार ॥ देयभ्रमण इत्यानमा गाऊँ वारमा नक्संत सुचकार । त्रि॰ तेरमा ससंबद्ध जिन तारक बारदमा भी विजनाय सनंत । पश्चरमा स्पर्शत नमीसे नोहमा भी गुतिसेन महत ॥ त्रि सवरमा स्रतिपास सुर्वाजे मण्डु बढारमा श्री सपास ॥ रगणीसमा मरदेश मनोहर वीसमां श्रीचर प्रथमें इलास । प्रिन इक्डीममा सामीकोठ सुदक्द, वाबीसमा प्रश्नम् भ्रागिसेद्य॥ तेबीसमां भारतपुत्त समोपम भीबीशमां प्रणम् बारिसेस ॥वि० थीवा घड पकी य माक्या अवृतासीस क्रिनेम्बर साम ॥ mi क्री कहा मुनिसुवत सुकविपाके जुगवाह साम ॥ ति॰ जिन पनास य महनन बनने यम क्रमत ह्या करिहेत ॥ विहरमान बसी के जिल विकरे, ने पन्नी साधु सह मगर्वत ।।विक सिद्ध थया वसी सम्प्रति वर्ते कर बोडी प्रथम तस पाप ॥ क्रिव के भागम नाम सुवीजे ते मुनिधर कहरूम् चितलाय।।ति॰

यग-चेलावल । ह बलिहारी पादवाँ ॥ य देशी ॥

🛭 ढाल ३जी ॥

जिनवर प्रथम जे गणधर श्रमणी, चक्रवर्ती हिर हल्धर जेह।। पूर्वभव नसु नाम जे नसु गुरु, गाईस चौथा श्रंगधी तेह ॥वि० चौवीशे जिन तीरथ श्रंतर, कोड् श्रसंख्य हुया मुनि सिद्ध ॥ कर जोड़ी प्रणमें ते प्रहसमें, नाम फहें हिवे जेह प्रसिद्ध ॥वि०

တကိုသင်္တာမလ

## ॥ ढाल ४थी ॥

सहस समणानुं सुख संयम धरो ॥ ए देशी ॥

पहलमें प्रण्में ऋषभ जिनेश्वम, श्री मरुदेव्या सिद्ध सुहंकम ॥ चौरासी गण्धार शिरोपणी, उसभसेन मुनिपणमें सुखभणी॥ सुखभणी प्रण्में बाहुबल मुनि सहस चौरासी मुनि। बीस सहस प्रण्में केवली मुनि सिद्ध थया त्रिभुवन धणी॥ तीन लाख समणी धुर नमुं नित नाम बाबी सुंदरी। चालीस सहस ए केवली बली नमुं समणी चित धरी॥६॥

घर श्रायंसे भरह नरेसक, ध्यान वलेकर केवल लहे वह। सहस एदस संघाते नरपति, बत लेई शिव गया प्रणमूं श्रभमती॥ श्रभमती जम्बूड़ीप पन्नत्ति वली वलाणिये। श्री भरहनी परे केवली वली चेत्र एरवय जाणिये॥ वंदिये चिक्र एरवय मुनि भावसुं नित मन रही। हिव भरत पाटे श्राठ श्रमुकमे वंदिये नृष केवली॥२॥

श्री श्राइच जस महाजस केवली,श्रित्रवल महवल तेज वीरियवली कीर्ति वीरिय दंड वीरिय ध्याइये, जल वीरिय मुनि नित गुण गाइये गाइये ठाणांग मुनिवर एह भाष्या संयती। श्री ऋपभनी वले श्रिजित श्रन्तर हिवे कहुँ सुरो शुभमती॥ पचास सास प कोड़ सायर तिहां क्रसंरय प केयशी। वे चया प्रशम् तेह मुनिवर क्रकृत दुर्मति विर्देशी॥श॥

च परा प्रयम् सह सुनिवर बाग्रुम दुनीत विदेशी ॥६॥ समित जिमेसर गेळ गण्यक, पुर प्रयम् सहिसेन सुईक्ट । प्रहस्ते प्रयम् प्रयु साहुची हुए सु बांई सागर महामुखी॥

महामुखी लागर तील लाख ए को इ कल्तर के घया। केवली मुनिकर तेह अकमू दोच कर कोड़ी लया है भी संसद बाद मुनिकर चित सामा ग्रायरम् ।

ताल दस प कोड लागर सक्तरे सिक सह नर्म् ।।॥।
भी भ्रमिनन्त्रमध्यम् गत्यस्य सहरतामध्रमि भतिपण्णी सती। सापर झाले नव कोडी कन्तरे कैपलीके यया प्रस्मूग्रम परे।

शुमपरे सुमति जिल्लेम गल्यार कामर कामवी वासिया। मैंज सहस्य हा कोड़ भागर विक मह जे सिघ धया ह साती पडमपाईस सीस य नाम सुज्यय पवित्रे। साहयी रति नाम मनमी पुण्क हर निकेशिये हथा

साती पडमणहेतु सांच य नाम सुख्य नाह्यः। साह्य्यी रित नाम मनमी पुश्का नूर निकंतिये ॥॥ कोड सहस्र नव मागर विच वक्षी,मचार गुनिवर के यथा केवली। श्रीसुपास जिन विवर्भ गुण्यस्थि मचार्म सोमा समग्रीगुक्तियि। गुण्यियि नव से नोड सायर अस्तरे के केवली।

काइ सहस्य मणसार विच वता, प्रवास् प्राप्त का धर्म सिमार सम्पर्ध सिह्यास जिन विवर्भ गुण्य भि मान्त सोमार सम्पर्ध है के वर्ना। गुण्य निभि नच से नो इस्तायर अम्तरे के के वर्ना। तेद प्रपुत्र माथर्स जिम हुन्स जाये सव टली है भी चन्द्रमम दिन गणभर सतीय सुमण्य स्पाप्त । नेद साथर नो इस्तर के वर्गा गुण्य पाइये।।॥।

#### [ ३७ ]

### ॥ ढाल ४मी ॥

सकल संसार अवतार ए हूँ गि एँ॥ ए देशी॥

सुविध जिनेश्वर मुनि वाराह ए, वारुणि वंदिये चित्र उच्छाह ए। ग्रन्तर क्रोड़ नव सायर विच जिहाँ, कालियसुय तणो विरह भाख्यो तिहाँ॥१॥

स्वामी शीतल जिन साधु त्रारांद ए,

सतीय सुलसा नमूं चित्त आणंद ए। एक सागर तणो कोड़ अन्तर कहाो, एक सो सागर ऊंखकर संग्रह्यो ॥२॥

सहस छावीस लख छासठ ऊपरे,

कालिय सुय तणी छेद इण ग्रन्तरें। श्री श्रेयांस मुनि गोधूभ ध्याइये,

धारणी साहुणी चरण चित लाइये ॥३॥

पुन्वभव गुरु कहूँ साधु संभूत ए,

विश्वनन्दी वले सुगुण संयुक्त ए।

श्रवल मुनिवर नमूं पढम हलधार ए,

वंधूतिपिट्ठ केशव सिरदार ए ॥४॥

चोपन सागर विच थया केवली,

वंदिय सुय तलो विरह भाख्यो वली।

एम विच्छेद विच सात जिन अन्तरे,

जािखेये शांति जिनवर लगे इस परे ॥४॥

स्वामि वासुपूज्य जिन साध सोहम्म धुरे,

साहुणी वले जिहाँ धरणी श्रापद हरे।

1 25 1

मुगुरू मुभइ सुषस्पु वक्षाणिये विजय मुनि वध क्रिपिट्ट इसी आस्मिय स्था त्तीम सागर विश्व भ्रम्तरे ज धया

कैथली यदिये माथ मगत सया।

विमल जिन चरिये नाथ मंदिर वसी ममको घरकी धन आगमे मांमली 💵

गुर सुद्धिसम् भुति सागरदत्त प स्वयेम् हरि बन्ध्रद मह शिवपत्त ए।

ग्रस्तर सागर मन बीच केवसी वंदिये जे थया त सद्दु चली वर्मा हन्य

माभी सनमा जिन प्रसमिये जसगणी

ममजी प्रदेश वस सुगुर धेर्यास सुनी। सीस भसोक मच बीये सुप्रम जति,

भाग पुरुपोत्तम केशम भग्पती ।।शा

सायर क्यार इए झम्तरे आसिये केमली विविधे राध सका वासिये।

क्रिनंदर धर्म मरिद्वसम्बर कर् सतीब अमणी शिवा बेंद्र शिव सुक्त सर्व ॥१०॥

पुरुषभव कृष्य गुरु तक्षित तसु सीस प गाम प्रवास सावस्य निवासीया प

बन्धम परिस बरसीह केशब अयो

बाधको पंचमी मर्थ पुरुषी गया ॥१२॥

मायर तीत विक अन्तरे साक्षिये. परुप पूर्णेकर अश्रुत दानिये ।

#### [ 3,8 ]

तिहाँ किए रायरिसी मध्य मुनिवर जयो,
तेह निद्धी रयण तज ग्रुद्ध संयम थयो ॥१२॥
तयणु चक्कीसर सनतकुमार ए,
वंदिये अन्त क्रिया अधिकार ए।
एए अन्तर मुनि मुगत पहुँचा जिके,
केवली वंदिये भाव भगते तिके ॥१३॥

## ॥ ढाल ६ठी ॥

उत्तम हिव रायरिसी महासतीक जयन्ती ॥ ए देशी ॥

सोलमा श्री सन्तेपहु चकी जिनरायं,

चक्रायुध गर्णा श्रमणी सृद्द प्रणम्यां सुख थाय। पृवेभव गंगदत्त गुरु तसु सीस वाराह,

वन्धव पुरिस वर पुंडरीय राम श्रागंद उछाह ॥१॥ श्रर्द्ध पल्योपम श्रन्तरे ए सिद्धा वहु भेद,

तेह मुनीश्वर वंदिये ए नहीं तीर्थ छेट । चक्कीसर श्री कुंशुं नमुं स्वयंभू गणधार,

श्रंज् श्रज्ञा वंदत्ता ए होवे जय जयकार ॥२॥ सागर गुरु धर्मसेन सीस नंदन हत्तधार,

वंधव केशवदत्त नो ए समवाय प्रकार । कोड़ सहस वरसे करी ए ऊंगो पत्निये चौभाग.

एण अन्तर हुं सिद्ध बहु बांदू धर राग ॥३॥ अर जिन चर्का सत्तमा ए कुंम गणहर गाऊं, रिवया समर्णी बंदनां ए जिल्लामान गाउं। कोड़ी सहस यरस ग्रन्तरे ए सीधा मुनियून्द, सत्तमी नरगे संघृम अक्षी पहुतो मतिमन्द्र ॥४॥

मक्की जिनेस्यर विशेष प वशी मिलय मुर्जिद गरिपनिकन्तु चरण कमल प्रवामं सुन्दरन्तु । सहस्र प्रवादन सावधी ए साञ्च सहस्र बाशीम

बचीसे शुनि क्विकिये प्रकृष् निश्कीम ॥ ॥ । सन्हरी जिनेसर पुष्पमेथे प्रवृक्त क्रावुगार तात बहे नसु विश्वीय वस शुनि क्रानियार। क्राव्यक प्रविच्चित थरो धरव्यकम्य साय

पूरव जीव ने संकथनु क्यों कहियाय ॥६॥ वेसमय तं क्योंन शह क्रमियन्य जियसातुः

त्तरी केवल य सिन्ध वया प्रथम मिलु । मुनियर नन्दने नन्दमित्त सुमित्त वसार्ख, यलमित्त ने वले मानुमित्त समस्पनि जाता ॥॥॥

स्मारसेन महासेन व सहनाय कुमार, सहसी संघात साधु यथा सङ्ग हुट्टे विस्तार ।

प्राप्तर बली वहां आधिषे प कल योपन यादा केवकी विद्यां यह परिये प घरी हरण हुनाम ॥व्या बोह जिनवर बीसमाँ य मुनिश्चमत न्यामी

गरापर इन्हमें पुरुषती प्रदम् शिरमामी । सुरबर सत्तमें क्या वयो मुनिवर गंगरून कवित्र सोहम इन्द्र पणे सुर सिरि सम्पत्त ॥शा

रायरिसी महा पडम श्रान्ति थांडू कर कोड़ी समुद्र गुरू अपराजिता म गार्क मत् मोड़ी । राम ऋषीश्वर वंदिये ए नामे पडम जेह,
केशव नारायण तणो ए वंधव कहुं तेह ॥१०॥
लही केवल मुगते अया ए आठे वलदेव,
नवमो सुरसुख अनुहवे ए लहस्ये शिवहेव।
मुणिसुव्वय निम अन्तरे ए वरस लाख छ होइ,
केवली सीधा ते सहू ए प्रणमूं सूत्र जोइ॥११॥

## ॥ ढाल ७वीं ॥

श्री नवकार जपो मनरंगे ॥ ए देशी ।।

इकवीशमां श्री निम जिन चन्दू, गण्धर कुम्म प्रधानरी माई। श्रमणी श्रनिला गुण गांवतां, सफल हुवे निजग्यानरी माई॥१ श्री जिनशासन मुनिवर वन्दूं, भगते निज शिरन मरी माई। कर्म हणीने केवल पामी, पहुंता जे शिवठामरी माई ॥श्री० नवनिध चउद रयण ऋद त्यागी, चक्कीसर हिस्सेण्री माई। श्राश्रव इंडी संवर मंडी, वेगवरी शिव जेग्री माई ॥श्री० वरस वली इहाँ पिण लख श्रन्तर, तिहां चक्की जय रायरी माई। वली श्रनेरा मुगत पहुंता, ते वांदूं मन लाय श माई ॥श्री० पह ऊठी प्रणमूं नेमीसर, श्रमण ते सहस श्रठाररी माई। वरदत्त श्रादि मुनि पनरे से, वांदूं केवल धाररी माई ॥श्री० गोतम समुद्र ने सागर गाऊँ, गंभीर धिमित उदाररी माई। श्रचल कंपिल श्रज्ञोभ पसेणी, दसमो विष्णु कुमाररी माई॥श्री० श्रनोभ सागर समुद्र हुं वांदूं , हिमवंत श्रचल सुवंगरी माई। धरण पूरण ने श्रमिचंद श्रष्टम, श्रहिय इन्यारे श्रंगरी माई॥श्री० मध्य विष्णु भारको झड्डम, मुनियन यह बनार ना । माह साठ साठ सन्तेठर सुनि , सहपान्यो अथपान माई । मिं बसुदेव देवकी सड्डम हे ए साजीवनेन सनम्मनेन । माई भार्म सित्तेन साजिति है सित्ते सित्ते

संयम बच्चर चील करायी कीयो करम सहारी माई है। जानी मयानी वले उबचानी पुरितसेल वारिसेक्स माई बारल करी लोड वरस बली पास्था संयम जेवरी माई। मी

यसुदेव धारधी काहज काढे रमणी तजी पंचामरी माई । सता माने शिवपण पान्या अवर्ध ते बुबामरी माई ॥धी सुगुह तुमुह में कुम्बय नांट्र नमलेव बारधी पृतरी माई ॥धी स्वाम वरस समम धार सै त्या बववे पृत्य सुप्री माई ॥धी रम्ममणी कृत्य कुमर कह पूर्वम जानवननी सुत सम्प्री माई ॥धी रम्ममणिक शिवा देवी गत्य स्वत्ये स्वाम्य स्वामरी माई ॥धी समुम्निक शिवा देवी गत्य स्वत्ये स्वाम्य स्वामरी माई ॥धी साम्ममणिक स्वत्य प्रत्य क्षा प्रवास क्षेत्रमा माई ॥धी समुम्न विज्ञ सुत्र ग्राम्य प्रवास रमाई ॥धी समुम्न पामी ग्रुमते पहला ते वांच्य बहुवाररी माई ॥धी साम्रा बरुपामी ग्रुमते पहला ते वांच्य बहुवाररी माई ॥धी साम्रा बरुपामी साथे तीयणी समझी सहस नालीसरी माई ।

भी जिन शासन समग्री है परने ॥ भी

पोमावई गोरी गन्धारी, लखणा सुसीमा नामरी माई।
ाम्बूबती सत्यभामा रुकमण, हरिग्मणी श्रभिरामरी माई॥श्री०
मूलसिरी मूलदत्ता बेह, सम्बक्तमरनी नाररी माई।
ग्रन्तगढ़ श्रंगे ए सह भाखी, पहुंती भवने पाररी माई।।
उत्तराजयणे राजमती सती, संयम शील निहाणरी माई।
गडिबोही रहनेमी पामी, शास्य सुख निबीणरी माई।।

ದಾಸ್ಕಾಪ್ತಿದ್ದಾರವಾದ್ಯ.

## ॥ ढाल =मी ॥

गौतम समुद्र सागर ॥ ए देशी ॥

गवचा सुत सुक सेलग आद, पंथय पमुह मुनि पांच से ए॥
गस संलेहणा करिय तप अति यणा, पुंडरीगिर शिवपुर वसेए॥
ाय जुिहिहिल भीम अतुलवली, अर्जुन नकुल सहदेवजी ए॥
ायसिरी पिरहरी अद्ध संयम धरी, साधुजी शिवपदवी भजी ए।१
विउदे पूर्व घर धिवर धर्मघोप धर्मघिच शीश सुगुण भरवो ए।
गिग श्री माहणी दत्तविसजेण, तुम्वमय मास पारणो कन्यो ए।
शिह मुनि वंदतां कर्मवली निंदतां जनम जीतव सफलो थयो ए।२
शिमणी गोवालिया जेण सुकमालिया दाखिया तास हुँ गुण भणुं ए
शिम वली सुन्वता द्रोपदी संजता नेम शासन तसु गुण शुणुं ए।
शिमल अनंत जिन अंतरे राय महावल देवी पदमावती ए।
शिमल अनंत जिन शंतरे राय महावल देवी पदमावती ए।
शिमल अनंत जिन शंतरे राय महावल देवी पदमावती ए।
शिमल अनंत जिन शंतरे राय महावल देवी पदमावती ए।
शिमल अनंत जिन शंतरे राय महावल देवी पदमावती ए।
शिमल अक्षय कुमर वीरंगय तरुण वत्तीस तरुणीपती ए।३

करीय पहुन्म दम वरम वरम वर संवम पाली सवार्थ मिन्न सुद्ध लगा होत्र विदेश में केवल म्यमे सिन्न कोस्टे वले त मुक्ती प इयार कानियह बंद पगती महें माह लुफ्ति कह गुत्र पुर्ध पर्दे इसरह दहरह महाचाये तम सत्वचाये गुल मुक्त मन वस्या प तवचाये दस्तवा स्वयाया पम मासीया खुन बाहीदग्रा प

पूर्वभाव हरिगुर नाम जुमलेन लकित ते राम पूर्वभावे प्र राम वक्तरेय चले नव महल चार महलोगे सुद्ध महत्वे प्रे वित्य जिन तेरमो नाम निक्ताम यापसी लड़ी महत्व होते प्रे व्याप कैराव पक्त व्यापता स्थाप से प्रदार प्रदार स्थाप प्रमुख्य केराव पक्त व्यापता स्थाप काल प्रवर्ध प्रदेश विद्या किए सिल मुनि निक्स मपत पाय तास वेद कीती करवा प्रवर्ध प्रदार प्रवर्ध प्रदार प्रवर्ध प्रदार प्रवास वक्ष व्यापता है। प्रवासन्य वच्च वक्षी व्यापता साम की महत्व स्थाप प्रवास विद्या प्रवास विद्या प्रवास विद्या प्रवर्ध करवा है।

नामि अब सब्देवा हियके श्राति ह० ॥ त्रेवीसमां जिन तारक पुरसा वाणीय थास.

ब्रह्मदिष सुमा सुमधीप बंदू बासिट नाम

बीरमद जस कावदे सिद्धा सहस्र प्रमासः

मनिषर सोहे सहस वर गयधर बाठ बस्हास।

वसी ब्रह्मचारी सोमगे श्रीधर कर्फे अवाम हर।

वेद मुनीसर वन्वतां होने परम करूपायाः !

साधवी संख्या सहु श्रङ्तीस सहस वखांणुं,

ं पुष्फ चूलादि सहस वे सीधी ते मन श्राणुं ॥२॥ समग्री सुपास सीऊस्ये भाखी धर्म चडयांम,

ए ग्रधिकार कहाो श्री ठाणायांग सुठाम । चउदस पुट्टी वले चउणाणी केसी कुमार,

परदेसी पडिवोहिय कीधो पर उपगार ॥३॥

वरस अहीसे अन्तरे सीधा साधु अनेक,

ते सह वांदूं विनयसुं श्रांणी चित्त् विवेक । मुनिवर चउदे सहस गुरु प्रणमूं श्री महावीर,

संातसे केवली वली पकादश गणधर धीर ॥४॥

इन्द्रभूई श्रक्षिभूईय वंदुं वले वायुभूई,

व्यक्त सुधर्मा चन्दत मुज मन निर्मल हुई। मंडिय मोरिय पुत्र श्रकंपित नित सिव वास,

अचल भया मेतार्थ वन्दूं श्री प्रभास ॥४॥

वीरंगय वीरयस नृप संजय एगोज राय,

. सेय सिवे उदायण नरपति संख कहिवाय । वीर जिनेश्वर श्राठ ए दीख्या राथ सुजाण,

मुनिवर पोद्दिल वांध्यो गोत्र तीर्थक्कर ठांग ॥६॥

पालत श्रावक पुत्र ते वांदूं समुद्र पाल,

पुन्य ने पाप वे ज्ञय कर सीधा साधु दयाल। नयर सावशी वे मिल्या केसी गोयम सामी,

सीस सन्देह परीहरी पण मंहवत लिया सिरनामी॥७॥



#### ll ढाल १०मी ।! व्यस्त्रकरखभर मुनिवर० ॥

माहराष्ट्र इस जगरनो का घेपति, माहराष्ट्र तम-सन्तेषी वीर जिलेसर तात सुगुन मीलो, ज्यपमन्त्र मुनिन्दो वी नित नित पांदू दे मुनिदर ए सह, जिक्क्स ग्रुद्ध जिकालो वे विधिष्ठ देहरे तीन महस्त्रियों का भावती निज मालो वी राय उदायक सिंह मालो की स्विध्य देहरे तीन महस्त्रियों नित मालो की स्विध्य देहरे तीन महस्त्रियों नित मालो की से स्वयं के स्वयं कि सुगी हो से स्वयं के स्वयं

कालोदाई अवधनो छुनि वांदर्ता सीके कालो थी।
महाई छुनि किंकन बंदिये कर्तुनमासी दुसासो की
कालय केनने चितिदर जायिये, केवस कर केलासो थी।
सुनि दरकम्बन पारत्य यसी सुवर्शक पुरस्य महो वी

जार समयाह समया आगमा सुपयट्ट समय समुद्दो जी। मेह मुनीम्बर अवपन्तो अम्, रायरिसी जलक्को जी जी जिन सीसे सह मुगते गया सेवे सुरवर सकको जी।

सहस हुत्तीले धमनी बन्दनां आदे बनदेले सीचो वं देनारूवारे अननी बीरनी, केवल माख समित्रो वी सित नित बन्दरे समस्योग सह स

नित नित क्ष्मी कारणा निवस कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्य

प्रमणा समणी रे भूइदिन्ना नमूं, राणी श्रेणिक रायो जी।

ास संलेहणारे तेरे सिद्ध थइ, प्रणम्यां पातक जायो जी। नि०

हाली सुकाली रे महाकाली चले, किन्हा सुकिन्हा तेमो जी।

हाकिन्हा चीरिकन्हा साहुणी, रामिकन्हा शुद्ध नेमो जी। नि०

पेउसेण किन्हारे महासेण किन्हका, ए दश श्रेणिक नारो जी।

तेज निज नन्दन काल सुणी करी, लीधो संयम भारो जी। नि०

दश श्रमणी रे तप रयणा चली, श्रादे दशे प्रकारो जी।

तर केवल लही सह मुगते गई, ते प्रणमूं वह वारो जी। नि०

## ॥ ढाल ११मी ॥

सुख कारण भवियण सम०॥ ए देशी॥

धर्मधोष मुनीसर महन्वल गुरु श्रुतधार,
जिल पृछ्यारों है लोका लोक विचार।
वेसालिय सावय पिंगल नाम नियंठ,
परिवायग पूछिय खन्दक समय पयंठ ॥१॥
कालियपुत्त मोहिल श्रालंद रिखया ज्ञानी,
वले कासव चौथो थेविर ते पास सन्तानी।
मुनि तीसग कुहदत्त पुत्त नियंठी पूत,
धन नारयपुत्त मुनि सामहथी संयुत्त ॥२॥
सुनखत्त सव्वासु भूईखपक श्रालन्द,
जिन उसह श्राल्यो धन धन सीह मुनिंद।
वले पृछ्या जिनने लेस्यादिक वहु भेद,
ते गाऊं मुनिवर माकन्दी पुत्र उमेद ॥३॥

दिय भेशिक सत कई जाही इमर मयाही, उथमाही पुरिचलेश वारिलेख श्रापदा टाही।

दीह दन्तने सट्टवन्त धारखी शन्दम होय,

वेहल वेहायस चेहणा अगज दोय ॥ पक नन्दा नन्दन मुनिवर अगय महत्त,

दीहरीय महासेय लहुदम्य गुडदम्त ।

धुद्धवन्त कुमर इस दुमने चले दुमसेण, गुण गाऊं महादुम सेण्य सीह ने सीहसेण !!

मुनिषर महासीहरीच पुनरीख प्रधान,

र भारकी भक्तत तेजे तरवी समाम ।

सहस्रे बिक सम्बन्ध दश तर कुम्र

बाउ बाउ रमन तब बनुतरे सुर बवतार में तिस बनसर मधरी काकनी अमिराम

तिहाँ परिवसे महा सारचवाही नाम।

तसु मन्दन धनो सन्दर कप निधान तिसापटकी तदकी बचीस रैमा समान 🕬

बिन वयद धुवी करी कीचो संयम जोग सनि तक वर्णा सह स्टोबंग उराहर कोग्रा

मुनि तक रूपणे सह श्रांक्या रसना मोग। नित छट तप पारचे कांचिल उक्ति मात

जस भमच वकी मग कोयन वंश्वे धात ॥º

व्यति दुक्तर संयम काराज्यो नव सास कर मास संतेत्वा सर्वार्थ सिद्ध में वास।

काकन्त्री भुणकार रायिष्ठे इतिवास

पेगल थ बेहु एक अयर दुझास ॥ध रायपुराने चेनिमा साकेतपुर वर शाम

पुट्टिमार्थ पेटास युच य वासियगाम । ,

हित्थणाउर पोटिल ए सह धन्ना समान, तरणी तप जननी संयम वरसे मान ॥१०॥ वेहल वली कहू रायगिहे ज्ञावास, सर्वार्थ पहुंतो घर संयम छ मास ।

ंप एक भवे सिवगामी जिनवर सीस,

सहु नवमे श्रंगे भाष्या मुनी तेतीस ॥११॥ हिवे पडम महापडम भद्द सुभद्द वखागुं,

पोमभद्दने पोमसेण परमगुम्म मन आणुं। नित्तीगुम्म आणन्द नन्दन ए मुनि जाण,

कालादिक दश सुन कप्पवर्डिसिया छाण ॥१२॥ ्र मुनि उरके पूछ्या गोतम ने पचखाण,

चउयाम थकी कीयो पंच तणो प्रमाण । जिण जिनमत मंडी खंड्या कुमत स्रनेक,

ते त्राद्र कुमेर मुनि धन तसु बुद्ध विवेक ॥१३॥ गइ भालिय वोहिय संजम नृप त्रणगार,

मुनि खत्रीग भाष्या वहुविध स्रर्थ प्रकार। महि मंडल विहरे विगत मोह स्रनाथ,

गुण गातां श्रहनिश सम्पत्ते शिवपुर साथ ॥१४॥ नृप श्रेणिक नन्दन मुनिवर मेघ सुजाण,

तजी श्राठ श्रन्तेडर पहुंतो विजे विमाण्। श्रवमानीय रयणा श्रादःचो संयम जेह,

जिन पालित मुनिवर सेाहम्म सुर थयो तेह ॥१४॥ हर चोर चिलातीय सूसमा तातने घन्नो,

श्राराधिय संयम सेाहम्म सूर उववन्नो । ए वीर जिनेसर शासन मुनीवर नाम,

नित भगते गाऊं तेह तणां गुण्याम ॥१६॥

{ **k**o }

#### ॥ ढाल १२मी ॥

वेसाद्भिय सावय पिङ्स यतिः 🛊 प देशी ॥

धर्मधोप गुरु सीस सुदत्त, मासने पारणे तेद सुपत्तः पश्चितामिण सुमत्तितः ! सुमुद्द प्रयोभव बीय सुवाहः सुरु वयो संयम प्रश्नी सुसाह

सुमुद्द यथो भव बीय सुवाह स्र थयो स्यम प्रदी स्साह गुद्ध तस् गार्क नित्त ॥१॥

भी जुगवाह जिनवर बावे विजय कुमर पश्चितामे भावे। वीजे भाष सह नन्द

र्वाजे सच सह नन्दः। भोगतजीययो साबु मुस्टिंद करी संब्रेडमा लडे सुसाहन्द।

गुद्ध वस् वादं भार्याः ॥२॥ इद्वयमद्च पश्चिते मन सन्त विक पश्चिताम्यो सुनि पुपर्वः, विद्यांषी वयो सङ्गातः ।

तुष सम बाबी सङ्घ रिभवात आवृण्या आठे अवस्त मातः भविषक् तस् गृक्षगात।।३॥

पद्भिसं सब नरपति धनपास, वैसमस महने दान ग्यास, देई सुवासय थाय ।

देहें सुवासय थाय । संपम क्षेत्र ते मुनिराय कही केवल वसे रिश्वात जाय: ते वर्षि सनकार ॥५

ते वार्षु मनलाय ॥४॥ पूर्वमव सेमरच राजान सोहम मुनि ने देह शानः

बीजे सम जिल्लास । संबरपात्री ते थयो सिञ्ज केवत वसला बाल समिन्छ।

स्पर्याणां प्रयासिक स्वयं वृक्षण गाँच सामग्री वर्षे वृक्षास ॥शा

सिश्राय पूर्वेसव आखें संस्त विजय सुनि नाम वकायें। कुमर ते धनपति हो हा वीर समीये संयम लीधो, तत्त्त्तण कर्महणी ने सीधो; दिन प्रते वंदू सोय ॥६॥ पूर्वभव नागदत्त धनीस, पडिलाभ्यो इन्द्रपुत्त मुनीस; महवल नाम कुमार संयम लेइ कारज साऱ्यो, भवसायर थी त्रातम ताऱ्यो; ते वांदूं श्रनिवार ॥७॥ गृहपति पहिले भव धर्म घोस, तित पडिलाभ्यो अति संतोप; नामे मुनि धर्मसीह वीजे भेंच थयो ते भद्रनंदी, मुक्ति गयो भव वंधन डिंदी; ते प्रणमूं निरीह ॥二॥ पहिले भव जिय सञ्ज नरेश, पडिलाभ्यो धर्म विरत स्लेस; वले महचन्द कुमार तिए छुंडी वहुराज कुमारी, पांच से अपछर ने अनुहारी; ते नमूं केवलधारी ।।।।। विमल वाहन राजा पूर्वभव, धर्मरुचि पडिलाभ्यो गुणस्तव; वरदत्त वले भव बीजे। संयम लेइ फलसिरी पामी, कप्पंतर तेजे सिव गामी: तेहनी कीर्च कीजे ॥१०॥ पूर्वभव देइ दान उदार, वीजे भव थयो राज कुमार, तिहां तजी पांच पांच से नारी। सह थया वीर जिलेसर सीस, सुखविपाक में एह सुनीस; पंच महावत धारी ॥११॥ नमी मातंग ने सोमिल गाऊं, राय गुत्त सुदंसण ध्याऊं: नमुं यजमाली भिंगाली । किंकम पेलग कालिय तीजी, श्रंतगढ़ श्रंगे वेय वीजी; ठाणायंग सम्भाली ॥१२॥

[ k2 ]

पूर्णनव महा पोमले बीजें, तेतली पुत्र मुत्री मख्मीजें। भहा पढम पुत्रके तातः। बली वंदूं जित शहु सुबुढि कर्महणी डियु करिय विद्यारित ते सुनि वंदू विकयास ॥'धा

त मुन्न चयू विकास ॥ व मुन्न चयू विकास ॥ व मुन्न चयू विकास मिन्न चयू विकास मिन्न स्थाप पुत्र चयू विकास मिन्न स्थाप पुत्र चयू विकास मिन्न स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स

कम्बाचवा रुपु कार । पुत्र पुरोदित बज़ेत सुमारी, माम बसा सम्बेगे सारी। बांदर्ता नित जय जयकार ॥१२॥

।। ढाल १३मी ॥

समुर विचारिये रे ॥ य देशी ॥

मुनि इसिदासमी भभी वहें वकाष्टिये है। सुनकत्त करिय संयुत्त । सदाय साम्रियद कार्यंत्र तेतली है वहार्य यद कति सूत्र ह

भूति ग्रुव गाइवे हे ॥१॥ भूति ग्रुव गाइवे हे ॥१॥ गावता परमानम्ब, सिव सुन्न साचु शुक्तेस्रर ।

गावता परमानम्ब, साव सुन साधु गुण्यस्य। भाद्रनिश सम्पत्ने वे भाने भव मगव्द ॥मुणानाः

क्षाचुत्तर भक्षमी वहीज नीजी बाबनारे य वस मुनिवर नाम। नदी सुत्रमें सासु सुत्रुक्ति पणे कहोरे मंदीनेण स्राप्तराम। सु॰ १ विवसय ननी फक्ष स्रविकार धनो मृत्रि रे

भनो देख दिश्च तातः। सुवतः भमकी गुरुणी सिपणी पोटलारे पुँचरीक कुटरीक भातः ॥ सुरु ॥ ॥॥

पुरुषी सुमद्रा केरी असणी सुन्नता रे, पुरुष मह सूर्वम । माणिभद्र ने दत्त सिव वल मुनि रे, श्रग ढिय पुरिक्तयउपंग ॥ मु० ॥ श्रा धन ते कपिल यति श्रति निर्मल मती रे, ं जिए तज्यो लोम सन्ताप॥ ह्द परीचा अवसर उपशम आदस्वी रे, नमी नमावे श्राप ॥ मु० ॥६॥ हुरवर सेवित श्रीहर केसी वल मुनी रे, संवर घर सुभ लेस ॥ राक ने प्रेयों प्रत्यच संयम त्रादयों रे, दसारण भद्र नरेस ॥ मु० ॥ ॥। उनि कर कुंडु राजा देश किलंगनो रे, दुमुह पंचाल भूपाल ॥ ग्लीय विदेहनो नरपति निम रामा व्रती रे, नगइ गन्धार रसाल ॥ मु० ॥ मा तेय विजय ने महवल ए सहु राजवी रे, वत लेइ थया श्रग्गार ॥ नाम कपाय निवारी सीतल श्रातमा रे, थेविर ते गंग गराधार ॥ मु० ॥ ॥ हेवे श्री बीर जिनेसर सीस सोहम गणी रे: तास परंपर एहं।। ाम्यू प्रभव ने वली सिर्यंभव जागिये रे, मनक पिता मुनि तेह ॥ मु० ॥१०॥ भी यशोभद्र मुनि संभूत विजे वली रे. भद्रवाह् थूल भद्र ॥ म अनेरा जिनवर आएमे जे हुया रे, ते मुनि गाऊं समुद्र ॥ मु० ॥ ११॥

[ \*\* ]

मुपगश्चीन में मुनियर वे कक्षा है, ठालार्वम काकीस ॥ एक सो गुर्वातर बोधे जने सदी है

मधवती बारे बीम ॥ मृ०॥ ॥

प्रसास साधु कहा। व्याता मधे रे, श्रम्तगङ्ग मैठ होय ॥

नतीस साधु नवमे अने सही रे

इक्स्पीस विपाद जोए॥ मु॰ है । राग मसेशी केसी समञ्ज कहा रे

क्रम्ब्रीप पचती माँग॥ हैरवप चन्नी हुवा केवली रे,

ते वार्द् मनलाय ॥ मु०॥१४॥

दस साब कप वहिं सिया रे,

पुष्पिया महि मान ॥ व्यवदे सिक्न्यु वस्त्री इसा दे

ते समय दिन गत ॥ सु ॥१४॥

क्यातील साञ्च इचराच्ययन में दे

नंदी सूत्र में एक a पार काठ द्वारा सी बीरना दे

ते समदं भाग विवक् ॥ मु॰ ॥१६॥

सय मिली में साधु जे चया रे

यौथ सय इक्कीम ॥

पनरं सूत्र में किये रे वे समर्व निशारील ॥ मु•॥१७॥

#### [ 🗱 ]:

संयम पाली ने सुर थया रे, गाऊं गुणा ने कोड़ ॥ कमें खपाबी मुनि मुगते गया रे, ज्यां ने बांदूं वे कर जोड़ ॥ मु० ॥१८॥

काल श्रनन्ते मुनिवर जे मुगते गया रे, संप्रति वर्ते जेह ॥ स्थाप दंसरा वर चररा ने कररा धुरंधरा रे, श्री देव वांदे तेह ॥ मु०॥१६॥

ढाल तेरमी ए पृरी थई रे, कहे श्री देव रसाल ॥ भेगों गुगों ने सुगों जे भावसूं रे, तिल घर मंगल माल ॥ मु० ॥२०॥

#### ॥ कलश ॥

इम चौवीस जिनवर प्रथम गणधर चक्की हलधर जे हुया॥ संसार तारक केवली वली समणा समणी संजुया॥ संवेग श्रुतधर साधु सुखकर श्रागम वयणे जे सुएया॥ श्री ग्यानचन्द्र गुरु सुपसाय थी श्री देव मुनि ते संथुएया॥१॥

॥ इति श्री त्रागमोक्न वृहद् साधु वन्दना समाप्ता॥



श्रथ थी लघु साधु वन्दनानी मङमाय लिख्यते । साधुकी में यक्ता नित नित कीके, यद वनमते सूर रे मार्चा । मीच गरित मों ते मिंव जाबे वामे दिख अरपूर रे आर्ची हुंग

मीच गति मां ते मिय जाने पाने दिख सरपूर रे प्राची म्या-मोटा ते पच महामन पाल, सु काबारा मतिपाल रे मार्चा। मेटा ते पच महामन पाल, सु काबारा मतिपाल रे मार्चा। सित छपता सुनि कारमी जांगे दीशी वसार ने पूठ रे मार्चा। परे पुरुपारि वेहणी करता, काठे करण जाये तुट रे मार्चा।

एक एक मुनियर रसना स्वागी, एकेका बान महार रे प्रायी। एक एक मुनियर वैदायम वैदागी

यना गुणुनी नावे पार रे प्राची । नान गुण स्तावीस करीने दीये जीव्या वरीला वावीस रे प्राणी ! ना बावन हो कानाबारण दाने संने नगाडु मार्च शीरा रे प्राणी !मां बहाक साना से संत गुलीक्दर भव्य जीव केंसे काप रे प्राणी ! पर बरगारी गुलिबान न मांगे देवे से गुगित रोबायरे प्राणी! ए बरजे प्राणी शाना रे पार्च पार्च है से सिल विवाद रे प्राणी! । काम आ की मारा सिदावें नावे करी गर्मीबास रे प्राणी!

एक यक्त प्रकार करों को वेसे दिल मांच रे प्राची। नरक गतिमां ते निव जावे, प्रम कहे जिनराच रे प्राची। साम् मारते उठीने उत्तम मावी हाजो सावांचे व्यावमात रे प्राची। प्रमुपित से करतां पावे समर विमान रे प्राची। साम् संगद सवारे ने वर्ष सम्बत्तीसे तुसी ते गाम बीमास रे प्राची। मति सासक वजी प्रची परे मंदे

भावकण्यका क्या पर अय श्वी उत्तम साधारी दास रे प्राक्षी । साण

॥ इति सञ्च माञ्च वंदमा सङ्ग्राय सम्पूर्वम् ॥

## ॥ त्रथ श्री सावु वन्दना लिख्यते ॥

नमूं श्रनन्त चौबीसी, ऋपभादिक महावीर। श्रार्थ चेत्रमां घाली धर्मनी सीर ॥१॥ महा श्रतुल्यः वितनर, श्रूरवीर ने घीर। तीर्थ प्रवर्त्तावी, पहुंच्या भव जल तीर ॥२॥

श्री मंघर प्रमुख, जघन्न तीर्थक्कर वीस ।
छे श्रदी द्वीपमां, जयवंता जगदीश ॥३॥
एक सौ ने सित्तेर, उत्कृष्टा पदे जगदीश।
धन्य महोटा प्रभुजी, जेहने नमावुं शीश ॥४॥

केवली दोय कोड़ी, उत्कृष्टा नव कोड़ । मुनिदोय सहस्र कोड़ी, उत्कृष्ट नव सहस्र कोड़ ॥४॥

विचरे विदेह में, महोटा तपस्वी घोर ।
भावे करी वंदूं, टाले भवनी कोड़ ॥६॥
चौवीसे जिनना, सगला ए गणधार ।
चडदेसे ने वावन, ते प्रणमूं सुखकार ॥७॥

जिन शासन नायक, धन्य श्री वीर जिगांद । • गौतमादिक गणधार, वर्ताब्यो श्रानन्द ॥=॥

श्री रिपभदेवना, भरतादिक सोपूत । वैराग्य मन श्राणो, संयम लियो श्रद्भुत ॥ ॥

केवल उपराजी, करी करणी करतूत । जिन मत दिपावी, सघला मोच्च पहूंत ॥१०॥

श्री भरतेश्वर ना, हुवा पटोधर ब्राठ । ब्रादित्य जशादिक, पहुंत्या शिवपुर वाट ॥११॥

## [ k= ]

भी जिन भ्रम्तरमा, हुवा पाठ सस्पय । सुनि युन्ति पहुँत्या टाली कमेनी वैक ११ ॥ भ्रम्य कपिल सुनियर नभी नम् भ्रावनार। भ्रेष्य तमञ्चल स्थानो, लहन्त्र रमशी परियार ॥११

स्य ततक्ष्य स्थाना, सहस्र रमशा पान्यान ॥ मुनि हरकेशी वह चित्त मुनीन्वन सार । शुद्ध संयम पाली, पान्यो मयनी पार ॥१४॥

वर्ती द्रश्रुकार राजा घरे कमसावती नार। भगु ने जोसा तेहमा दोय कुमार ॥१४॥

भगु में कोसा तेहना दोय कुमार ॥१ इस्पे इती रिख इंडिंग में भीधी संयम भार।

इक् अस्य कालमां पाम्या मोक् दुवार 82%॥ बली संस्ती राजा इरस आहिके जाय !

त्ता सम्बद्धा राजा इरम् भाइक् जाय । मुनिवर गत्र भाली काएयो मारग ठाय ॥१७॥

चारित्र सहिने मेठ्या शुक्ता पाय ।

कृषी राज रिपीम्बर, वर्षा करी चितलाय ॥१८ वित्त दसे चक्रवर्ती राज्य रमणी रिज्ञ होत् । वेशे अधिक वहींस्य कल ने शोमा बढीड ॥१६

वत्री भुवित वहींच्या कुल ने शोमा बहोड़ ॥१४ इन अवस्थितीयाँ काट यस गया मोछ। वसमङ्ग भुवीस्थर गया पंचने देखतोक ॥२०॥

शतमञ्ज्ञ भुनाम्बरं गया पंचम देवलाक ॥२ दशार्यमञ्ज्ञा बीर बांचा घरि मान्।

पहें इन्द्र हठायों विशे बुकाय कमेवात ॥२१॥ करकंडु ममक, चारे प्रत्येक बोध । सुनि सुन्ति पार्टेका जीव्या कर्म महाजोध ॥२१

भन्य महोटा सुनिवर, सुगापुत्र अगीरा।

भन्य महादा सुनग्वर, सुनापुत्र अनाशः। सुनिवर सनायी, जीत्या नाग में रीस ॥२६॥ वली समुद्र पाल मुनि, राजीमती रहेनेम । केशी ने गौतम, पाम्या शिवपुर चेम ॥२४॥ धन्य विजय घोस मुनि, जयघोष चली जांग । श्री गर्गाचार्य, पहोंत्या छै निवीण ॥२५॥ श्री उत्तराध्ययनमां, जिनवरे कर्या वखांगा । शुध मन से ध्यावो, मन में धीरज श्रांण ॥२६॥ वली खन्धक संन्यासी, राख्यो गौतम स्नेह। महावीर समीपे, पंच महावंत लेह ॥२०॥ <sup>तप</sup> कठिन करीने, कोंशी **त्राप**र्णी देह । गया च्युत देवलोके, चवी लेशे भव छेह ॥२८॥ वली रिषभदत्त मुनि सेठ सुदर्शन सार। शिवराज ऋषीश्वर, धन्य गांगेय अभागार ॥२६॥ श्रद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार । ए ज्यारे मुनिवर, पहोंत्या मोच्न मोभार ॥३०॥ भगवंतनी माता, धन्य धन्य सती देवानन्दा। वली सती जयन्ती, छोड़ी दिया घर फन्दा ॥३१॥ सती मुक्ति पहोंत्या, वली ते वीरनी नन्दा। महासती सुदर्शणा, घणी सतीयोंना वृन्दा ॥३२॥ वली कार्तिक सेठे, पडिमा वही शूरवीर । जीम्यों महोरा ऊपर, तापस वलती खीर ॥३३॥ पछी चारित्र लीधुं, मन्त्री सहस्र आठ घीर। मरी हुवा शकेन्द्र, चवी लेशे भवतीर ॥३४॥ वली राय उदायन, दियो भागोजा ने राज। पछी चारित्र लइने, सार्या त्रातम काज ॥३४॥

• गद्त्त मुनि सार्गात, तरस तारण जिहात । कुराल मुनि रोहो, दियो बर्गा ने सता ॥१६६॥

भाग सुनद्यत्र मुनियर सनातुमृति स्रवागार। स्राराधिक दुई ने गया देवलोक मोमार 1201

चित्र मुक्ति कासे चली सिंह भुनीश्वर सार । बीका पच मुनिचर, मनयतीमा समिकार ॥३०॥

बाबा पत्र भुलबर, सायदामा सामकार गरना भेगिक मा बेटा मोटा मुनिबर मेघ। तजी चाट चन्तेडरी, चारायो सन सम्वेग १२६॥

तजा काट कल्याटरा, कार्या सम सम्बर्गा वर्ष भीर ये जल केहने, वांची सपत्ती लेग ।

गया विजय विमाने, चिव लेशे शिव वेग #≠०॥ मध्य धावची पुत्र तजी वतीले नार ।

तेनी सामे निकश्या पुरुष एक हजार WV

ग्रुक्तेव संस्थाती एक सहस्र ग्रिप्य लार । पंचायय सु सेसक, लीभो संबम मार ॥४२॥

सर्वे सहस्र अवार्षे पया जीको ने तार । पुंडर गिरि कपर, कियो पाक्षय गमन समार ॥४३।

ज्ञाराधिक हुई ने कीची खेबी पार । हुवा मीटा सुनिवर नाम लिया निस्तार ॥४४॥

श्रुषा भीटा मुनिषर नाम क्षिपा निस्तार ॥४४॥ भन्य क्रिमपाल मुनिषर नोय धनाचा साध ।

गया मयस देवलोकै सोश आसे आराम तथशा भी मस्त्रिताय ना सु भिष्म सहावस प्रमुखा सुनिराय । सर्वे सुन्तित सिमाया महोदी पश्ची पाप ॥४६॥

विक्र जित्रमञ्जू राजा सुबुधि नामे प्रधान । योते चारित्र केश्ने, पास्या सोक्त निवास ॥४०॥

धन्य तेतली सुनि, दियो छुकाय अभेदान । पोटिला प्रतिवोध्या, पाम्या केवल ग्यान ॥४८॥ धन्य पांचे पांडव, तजी द्रोपदी नार । स्थिवरनी पासे, लीघो संयम भार ॥४६॥ थी नेमी वंदननो, एहवो स्रभित्रह कीघ। मास मास खमण तप, शत्रुंजय जेई सिद्ध ॥४०॥ धर्मघोप तर्णा शिष्य, धर्म रुचि श्ररणगार । कीड़ीयोंनी करुणां, श्रांणी द्यारस सार ॥४१॥ कडुवा त्ँवानो, कीधो सगलेा ब्राहार । सर्वार्थ सिद्ध पहोंत्या, चिव लेशे भवपार ॥४२॥ वली पुंडरीक राजा, कुंडरीक डिगियो जांस। पोते चारित्र लेइने, न घाली धर्ममां हांए ॥४३॥ सर्भार्थ सिद्ध पहोंत्या, चिव लेशे निर्वाण। श्री ग्याता सूत्र में, जिनवरे कर्या वखांगा ॥५४॥ गीतमादिक कुमार, सगा श्रढारे भ्रात। सर्वे अन्धक विष्णु सुत, धारणी ज्यांरी मात ॥४४॥ तजी त्राठ अन्तेउरी, काढी दीचानी वात। चारित्र लेइने, कीधो मुक्ति नो साथ ॥४६॥ श्री श्रनेक सेनादिक, छुये सहोद्र भाय। वसुदेव नो नन्दन, देवकी ज्यांरी माय ॥१७॥ मदीलपुर नगरी, नाग गाहावई जाए। स्रलंसा घर विधया, सांभली नेमिनी वांस ॥४८॥ तजी वत्रीस २ अन्तेडरी, निकलिया छिटकाय। नल कुत्रेर समाना, मेटिया श्री नेमिना पाय ॥५६॥ करी छुठ छुठ पारणा, मन में वैराग्य लाय । पक मास संथारे मुक्ति विराज्या जाय ॥६०॥

वली दादक सारब सुमुख दुमुख मुनिराय । बक्षी कुमर बनाविष्ट गया मुक्ति गढ माँग ॥६१३

धसुदेव ना नम्बन धन्य धन्य गञ्ज सुकुमाल।

रुपे माति सुत्र, कलायन्त यय बाल ॥६२॥ भी नेसि समीपे सोडिया मोड जजल ।

मिलुमो परिमा गया महान महाकात ॥६६॥

देखी सो मिल कोप्यो मसा के वांची पात । वेहरना चीरा शीर ठविया च सराह ॥६४॥

मुनि मकर न करकी भेदी मननी स्थात ! परीसह सकीने मुक्ति गया ततकाल १६४॥

मन्य जाली मयाकी स्वयालादिक साध । सर्वते प्रयुक्त क्रमिरुच साचु क्रगांच ॥६६॥

वती सच नेमी दहनेमी करवी कीची वाम। देशे मुनि मुगते पडोंखा जिमचर वचन बागच ॥६३

भ्रम्य धर्मुम माली कर्यो क्यामह क्र । बीर पेजत केशने, सरपमादी द्वा ग्रूट ॥६८॥

करी इट सट पारणा समाकरी अरपूर ! क्यांमा मोदी कर्म किया जकक् ॥६९॥

कुँसर कासुचे दीठा गीतम स्वाम । धुची वीरमी वौत्री कीचो उत्तम काम 1900

भारित केंद्री पर्दोस्य शिष्युर उस ।

भुर कावि सकार्गकल कालद सुनि साम <sup>(3)</sup>। वली कृष्ण राथनी काम महिपी बाठ ।

पुत्र यहुदोये संख्या पुग्यना ठाट ॥७२॥ याद्य कुछ सतियाँ द्वारी तुम्बन बचाट।

पर्धोस्या शिवपुर में य **स** सूत्र मो पाठ ॥७३॥

श्रेणिकनी रांणी, कालियादिक दस जांण । दशे पुत्र वियोगे, सांभली वीरनी वांग ॥७४॥ चंदन वाला पै, संजम लेइ हुत्रा जांग । तपकरी देह भोशी, पहोंत्या छुं निर्वाण ॥७४॥ निन्दादिक तंरे श्रेिका नृपनी नार । संघली चन्दन वाला पै, लीघो संजम भार ॥७६॥ एक मास संथारे, पहोंत्या मुक्ति मोंकार। ए नेवुं जलांनो, अन्तगडमां अधिकार ॥७७॥ श्रेणिक ना बेटा, ज लियादिक चौवीस । वीर पै वत लेइने, पाल्यो विश्वावीस ॥८८॥ तप कंठिन करीने, पूरी मध जगीस । देवलोके पहोंत्या, मोच जासे तजि रीस ॥७६॥ काकंडीनो धन्नो, तजी वतीसे नार । महावीर समीपे, बीधो संजम भार ॥५०॥ करी छुठ छुठ पारणा, ऋायंविल उछित ऋाहार। श्री वीरे वखाए मं, धन धन्नो ऋग्गार ॥५१॥ एक मास संथारे सर्वार्थ सिद्ध पोहोत । महा विदेह चेत्रमां, करसे भवनो अन्त ॥८२॥ धन्नानी रीते, हुवा नवेद सन्त । श्री श्रद्धत्ताविवाइमां, भाखी गया भगवन्त ॥५३॥ खुवाहु प्रमुख, पांच पांच से नार । तजी वीर पे लीघां, पंच महावत सार ॥८४॥ चारित्रं लेइने, पाल्यो निरतीचार । देवलोके पहोंत्यां, सुख विपाके अधिकार ॥८४॥ श्रेणिकना पौत्रा, पौमादिक हुवा दस। वीर पै वत लेइने, काढ्यो देहीनो कस ॥=६॥

#### [ 48 ]

स्यम भाराधी, देयशोकमां जह वस । महा विदेह देवमां, मोद्य जासे केंद्र सस ॥८७॥

यसभद्रना सन्दर्ग, नियमादिक हुवा बार । तजी प्रसास अन्तेउरी स्थाग वियो ससार बः≕

तजी पंचास भारते हो। विशे ससार बद्धा सहु मेमि समीप चार महावत श्लीघ । सपीर्थ सिक पहोंखा होशे दिवेह में सिक ॥=६

भन्नो ने शास्त्रियह मुनीन्वरों नी कोड़।

मारीनां बन्धन तरत्त्वण नांरण तोड़ प्रश्ना घर कुटुस्व कवीलो धन कंचनमी कोड़।

मास मास समया तप दालहो भवनी यो हु हरी

भी सुधर्मा सामी ना शिष्य धन धन अंबु साम । तजी भाठ भन्तवरी भात पिता धन धीम ॥११

ममयादिक तारी पड़ोंस्या शियपुर ठाम। सुत्र प्रयक्तींची, जगमी राल्युनाम ॥६३॥

भन्य श्रेष्ठण मुनिवर रूप्ण रायना सन्द्। राभ भ्रमिमद पाली टाली दियो मय फन्द्र ॥ १५

पती सन्धर प्रापिती देह उत्तरी सास । परीमह भदीने भवी फेरा दिया टास धर्ध

परीमह नदीन भवी करा दिया टाल पर यशी प्रत्यक श्रापिता हुया पांच से शिप्प।

षोलीमो चील्या, मुक्ति गया तजी शेस हर्श समृति पित्रय शिष्य, मुद्रपाद मुनिश्च ।

चार्य प्रव भारी चम्त्रगुप्त स्रांगयो हाय ११०। चार्य प्रव भारी चम्त्रगुप्त स्रांगयो हाय ११०। पर्सा माह कुमार सुनि स्थुद्धिमञ्ज संदीचेता।

पता भाव कुमार सुल क्याक्षमद्र सद्दापन् । सरन्तक सहसुत्ता, सुनीध्यरों मी क्षेत्र वस्मी चीर्यामे जिसना सुनिवण संस्था सहस्रीय सालः।

उपर सहस्र श्रह्माशीम, स्ववंचरा शास ॥ध

कोई उत्तम वांचो, मोढे जयणा राख। 🗼 उद्याङ्के मुख बोल्यां, पाप लागे इम भाख ॥१००॥ धन्य मरुदेची माला, ध्यायुं निर्मल ध्यान। गज होदे पायुं, निर्मल केवल ग्यान ॥१०१॥ धन्य त्रादेश्वर नी पुत्री, ब्राह्मी सुन्दरी दोय। चारित्र लेइने मुक्ति गया सिद्ध होय ॥१०२॥ चौवीसे जिननी, वड़ी शिष्यणी चौवीस। सती मुक्ति पहोंत्या, पूरी मन्न जगीसं ॥१०३॥ चौवीशे जिननी, सर्व साधवी सार । श्रड़तालीस लाखने, श्राठ से सितर हजार ॥ १०४॥ चेडानी पुत्री, राखी धर्म सुं प्रीत । राजीमती विजया, मृगादती सुविनीत ॥१०४॥ पद्मा सती मयण्रेहा, द्रोपदी दमयन्ती सीत। इत्यादिक सतियों, गई जमारो जीत ॥१०६॥ चौवीसे जिनना, साधु साघवी सार । गया मोच्च देवलोके, हिरदे राखो धार ॥१०७॥ इण श्रही द्वीपमां, गरड़ा तपसी वाल । ग्रध पंच महाव्रत धारी, नमो नमो त्रयकाल ॥१०८॥ प जतियों सतियोंना, लीजे नित प्रति नाम। शुद्धे मन ध्यावी, एह तरणनी ठाम ॥१०६॥ ए जतियों सतियों शुं, राखो उज्वल भाव। एम कहे ऋषि जेइमलजी, एहज तरणनो दाव ॥११० संवत श्रदारने वरस सातो शिरदार। गढ जालोर मां, पह कह्यो श्रधिकार ॥१११॥

॥ इति श्री साधु वन्दना सम्पृर्णम् ॥

## थय सम्पक्तस्वरुप पट्टपचामिका विलिरूपते।

व भूतो मन मैंबरा कांद्र ममे । ए देशी ॥

इम समकित मन बिर करो, पालो मिरतीचार ॥ मनुष्य जनम 🕏 दोविसो, ममर्ता जगत मैंसार ॥ इस० ॥ 👯

व्यथ ४ व्या दुर्लभ ।

नरभय धारज कुत्र तिर्दास्त्रज्ञे जिसवर वांगु॥ होय यदारच सहहा चउक्रज्ञ दुक्रह खाँश । इम॰ ॥२॥

व्यथारम-परिग्रहत्वाग । भारंस परिव्रष्ट दोइ ए तिस यह विषय कपास ॥ जब सग पठला नहिँ पढ़े भाडी समक्रित भाय ॥ इस० ॥३॥

#### थ्यथ ४ बाद ।

चातस १ सोग २ कमें ३ किया ४ शख वाद क्षे क्यार ॥ चित्रपर्वा समस्तित सहै जीव अगत मंद्रार ॥ इस० हथ। जीय प्रमृद्धि द्वासती तीत रतम सुमाव॥ परसंबोरी अपने तम विषय ऋषाय ॥ इस० ॥ आ भन्तम सम भाई काय है। दुक्त निर अमिलाप॥ परलाक परवस जारुको जिल बागम है साथ में हम । ॥६॥ सपत बिपत सुची तुची मृड चतुर मुजान ॥ माटक कर्ममा जीशको जन यह मामा विद्यात ॥ इस॰ ॥ ॥

विम की घां लागे नहीं की घां करें हा होय॥ नर्मे कमाया भाषका तहबी सुरु दुरा होय । इस**ा**टा

# अथ हेयज्ञेयोपादेय स्वरुपं।

जीव श्रजीव वेह मिल्या, कीर नीर ने न्याय ॥
श्रज्जव गुणने कारणे, तेहथी वन्धन थाय ॥ इम० ॥९॥
श्राश्रव हेतु है वंधनो, श्रुभ श्रश्रभ दुय भेद ॥
कर्मथी पुण्य ने पाप है, भोज है तेहनो छेद ॥ इम० ॥१०॥
संवर रोके श्रावता, जीण तपथी होय ॥
तेहनो नाम है निर्जरा, मोजना कारण दोय ॥ इम० ॥११॥
पहिली त्रिक मन धारिये, ज्ञेय वीजी हेय ॥
तीजी उपादेय जाणिये, इम समिकत सेय ॥ इम० ॥१२॥

# त्रथ सम्यक्तना ५ लत्त्तण स्वरुपं।

उपराम जेह कपाय नो, तेहनो सम श्रिमधान ॥ र क्ति पंथनी चाहना, यह सम्वेग प्रधान ॥ इम० ॥१३॥ होय उदास विपय विषे, जांगुच्यो निरवेद ॥ परदुख देखी दुख द्या, ए क्षे चोथो भेद ॥ इम० ॥१४॥ इह परलोक छुतापगो, होय श्रास्तिक भाव ॥ कर्म कर्या तेहना फल सहे, होई पुग्य ने पाव ॥ इम० ॥१४॥

# श्रथ श्रद्धा प्रतीत रुचि ३ स्वरुपं।

तरक अगोचर सद्द्दो, द्रव्य धर्म अधर्म ॥ केइ प्रतीतों युक्ति सों. पुग्य पाप सकर्म ॥ इम० ॥१६॥ तप चारित्र में राचवो, कीजे तस अभिलाख ॥ अद्धा प्रत्यय रुचि तिहुँ, जिन आगमनी साख ॥ इम० ॥१७॥

### श्रथ दस संज्ञा।

पंथ १ धर्म २ जिय ३ साधु ४ छै, सिद्ध ४ खेतर ६ जानि ॥ एह यथारथ जांिखये, संज्ञा दश विधि मानि ॥ इम० ॥१८॥

#### म्रथ १० रुचि ।

जाति स्मृति भाषभियादिनों जपने थोष मिसमें ॥
ध्रमस्य जिन रपदेश सों पाचे मधिजन वर्ग ॥ १प० ॥११८
ध्रमस्य जिन रपदेश सों पाचे मधिजन वर्ग ॥ १प० ॥११८
ध्रमसे सु तिका उपचे सुक रुषि है सोर ॥ १म० ॥५०॥
हे सुम जोयो बीज रुषि, माने जिनवर माह ॥ १म० ॥२१॥
ध्रम देवारे भुन के बासिगम रुषि जानि ॥
सद गुन पर्यय मान नय १म विमतारे मानि ॥ १म० ॥२१॥
किरिया रुषि हिरिया विषे उपाम करते होर ॥
सारिज में उपाम करते होर ॥
सारिज में उपाम करते होर ॥

#### सकेप रुपि सो जानिये भाके दुदिः ब्रहीन ॥ इस०। २५॥ स्राय १ सम्यक्त मेव ।

स्यारि सर्नतातु विविधा सिस्या मोहणी भीम ॥
य जव समितिन को हुने भारणो भी तगहीश ॥ इम० ॥२४।
देश हप्पस मोहनी समितित य आत ॥
वय वराश्रम नृषको कहा। मीस वर्ष प्रमात ॥ इम० ॥२६॥
वयदम प्रमात पुरुष हातानो ज्य उपश्म भेतू ॥
स्यार सनदातु वैविधा सिख्य हुँ इह क्षेत्र ॥ इम० ॥२६॥
वरणा पक् तुहन को च्या उपश्म शेष ॥
समितित मोदिमी वर्षशो निषमा तिहुँ क्षेत्र ॥ इम० ॥२६॥
वेषस मेनियमा वर्ष होइ समितित मोद ॥
शेष हा भ्रवति उपश्मे आया पाते होइ ॥ इम० ॥२६॥

च्यार कपाय त्तय हुवे, दश दो उपशाम ॥ श्रथवा मीसा उपशमे, पंच पावे विराम ॥ इम० ॥३०॥ ए नवविध समकित कह्यो, जेहथी शिवसुख थाय ॥ त्तय १ उपशम २ दो भेद छै ४, एही च्यारे भाय ॥ इम० ॥३१॥

#### श्रथ द श्राचार ।

र्शका कंखा कर रहित, वितिगिच्छाजीनांह ॥ दिष्ट श्रमूढ थिरीकरण, जिनमत के मांह ॥ इम० ॥३२॥ धर्म विषे उछाहना, तस उववूह नाम ॥ होइ प्रभावना श्राठ ये, श्राचारेना ठाम ॥ इम० ॥३३॥

### श्रथ ५ श्रातिचार।

रांका संशय ऊपजे, सर्व देशे होइ ॥

सवधी श्रनाचार देशधी, श्रतीचार है सोई॥ इम०॥३४॥ धर्म करतां मन धरे, देवादिक थी भीति॥ श्रथवा लज्जा लोकनी, ए हैं शंका रीति ॥ इम०॥३४॥ कंखा परमत वांछवा, सव देशे होई॥ सवधी श्रनाचार देश थी, श्रतीचार है सोई॥ इम०॥३६॥ साह्य वंछे धर्म में, सुरनर थी कोई॥ लब्धादिक वंछा करे, येही कंखा जोई॥ इम०॥३७॥ तप चारित्रना फल विषे, वितिगिच्छा सन्देह॥ साधु उपिध मलीन लिख, दुर्गिंछा है पह॥ इम०॥३६॥ संसार कर्त्तव्य सिद्धि को, परयुंजे धर्म॥ सवही श्रतिचार ऊपजे, सम मोहिनी कर्म॥ इम०॥३६॥

पासत्यावि कुवर्यनी, जेव शिविश्वाचार॥ विश्वय पेच ससायु हैं जे स परिवार ह इन । 160 व इत प्रयेश समय क्रिनार हैं पेच !! समर्पि इस कोबिस्सी, मति सेवो रेच !! इस । 180 विश्व

#### श्रप ७ सम्पक्त नाम ।

किन किन कोच करे घरे, जाते दीरच गोग ॥ इह पर जगरे मञ्चल्या कार्ग्यत गोग ॥ इस०॥४७ निमित्त करी काजीकिक पहची कायुग्ज वाम ॥ इस०॥४७ क्यार परे समोह है सबसी समक्रित जाय ॥ इस०॥४३॥ इन्सारमानी देशना येथ विचन सुजान ॥

शिरिच साव विषे तकों, काम ओग निवान ।। इस० १४४॥ सिर्देत धर्म तथा गुढ़ सब अवरख वाद ॥ यहची किल्सियता कहें सिध्यासित वरपाद ॥ इस० १४४॥ अपना गुव पर भीगुल भूति जीतुलाकार ॥ इस० १४४॥ इसियोगी हर के हुई तेहता ध्यार प्रकार ।। इस० १४४॥

कासमाना घुर के हुन ठहना क्यार प्रकार । इस० १४४॥ सन्दर्भ विकथा करे अगढ़ केष्ठाबी जान ॥ चपकाई परिहास के जेडथी कन्द्रभी चान ॥ इस० १४४३ झारेस परिप्रह मोट को ऐक इन्हिय चात ॥

निय आहार गरफ तथां हेतु ध्यारे थात ॥ इस० १४४०। भाषा करे तसु गोपने कुड़ा देवे जात ॥ फुड़ा मापा तोलतां तिर्यंच कंच काल ॥ इस० १४४॥

#### च्यय ४ सम्यक्त व्यवहारी।

कारित्र वर्गम ग्याम को कीक्रिये काश्यास ॥ सगत कीके गासुनी जेद हैं अगशी उदास ॥ इस० ॥४०॥

### [ ७१ ]

भेष्ट कुदर्शन की तजो, संगति ए व्यवहार ॥ समकितना तुम जागुज्यो, इम च्यारे परकार ॥ इम० ॥४१॥

### अथ ३ त्र्यायतन ।

<sup>त्रुन्यमती</sup> तस देवता, चैत्य वन्दे नांहि॥

### ग्रथ इंडी

राजागण सुगुरु सवल, बृत्ती छुंडी मांहि ॥ इम• ॥४२॥ ऋथ द्रस्य भाव ।

न्याय करे न्याय भाखइ, न्याय को पत्तपात ॥ न्याय विचारे मन धरे, लजा नीति की वात ॥ इम० ॥४३॥ जाको वज्ञभ न्याय है, न्यायिह को छाचार ॥ न्यायिह सों सब ही करे, वृत्ति छाब्यो छाहार ॥ इम० ॥४४॥

# श्रथ १२ विरद सवैया तेईसा।

ती तत्व ज्ञान १ सहाय न वंछे २ डिगे निहं देव अदेव डिगाये ३ । सोप विना धरे दर्शन को ४ जिन सच्च अर्थ करे समुजाये ४॥ धर्म के राग रंग्यो हिरदे६ अति धर्म कहे आपस में मिलाये ७। नेर्मलचित्त प्रअभंग दुवार ६ श्रंते उरनांहि परत्रहजाये १०।इम.४४

### ॥ दोहा ॥

गोपध छहुँ तिथि को करे ११, प्रतिलामे श्रुध साध १२॥ ऐसे समदृष्टि तथा, श्रावक हैं त्र्राराध ॥ इम०॥४६॥

🛮 इति सम्यक्कं स्वरूपस्य पट्पंचासिका समाप्ता ॥ ग्रुमं भवतु ॥

[ ७२ ]

- 1		-	,	n	-	
समाकत छुट्पना ।	and altered	n de	<u>.</u> •	, io	~ <u>u</u>	
	F = 1	¥	Ē	ķ.	£	
		E	E	£	i i	
	राज्यात बन्धान्त्र मिलास्त्र मिलास्त्र नेह्र वृष्ट स्ति	NA.	E	E	E	
	a.b CiDica	ig.	F	Ē	E	
	£ ₩	E	E.	F	Shipse O	
	-	~	~	~	>	*
	मान्ती विशेषा	n <b>8</b>	÷ 4	ž ge	T Big	Xela
	复年	F	E	122 36	) [F	E S
	The state of	臣	E	Helia	W426-11.	¥
	#	Mercy of State	<b>5</b>	i.	¥	ß

ममाकत करवना ।

# अथ श्री नव-तत्त्व लिख्यते ।

हवे विवेकी सम्यक्त्व दृष्टि जीवने नव पदार्थ जेहवा हैं तेहवा तथा रूप वुद्धि प्रमाणे गुरु श्राम्नायथी धारवा। ते नव पदार्थना नाम कहे है ॥ जीव तत्त्व १, श्रजीव तत्त्व २, पुराय तस्व ३, पाप तस्व ४, आश्रव तस्व ४, संवर तस्व ६, निर्जरा तस्व ७, बंध तस्व =, मोच तस्व ह ॥ हवे जीव तस्व ते केहने कहिये॥ चैतन्य लत्त्रण, सदा सउपयोगी, श्रसं-ख्यात प्रदेशी, सुख दुःखनो जांग, सुख दुःखनो वेदक तेहने जीव तस्व कहिये ॥ १ ॥ श्रजीव तस्व ते केहने कहिये ॥ जड़ लज्ञण, चैतन्य रहित, तेहने ऋजीव तत्त्व कहिये ॥ २ ॥ पुएय तत्त्व ते शुभ करिएये करी, शुभ कर्म ने उदय करी, जेहना फल श्रातमा ने भोगवतां मीठां लागे तेहने पुराय तत्त्व कहिये ॥ ३॥ पाप तत्त्व ते अ्रशुभ कमाणिये करी ॥ अशुभ कर्म ने उदये करी, जेहना फल आत्मा ने भोगवतां कड़वा लागे।। तेहने पाप तत्त्व कहिये ॥४॥ श्राश्रव तत्त्व ते श्रवत ने श्रपच-खारों करी, विषय कपाय ने सेववे करी, श्रात्मारूप तलाव ने विषे, इन्द्रियादिक घड़नाले छिद्रे करी, कर्म पाप रूप जलनो भवाह त्रावे, तेहने त्रार्श्वव तत्त्व कहिये ॥ ४ ॥ संवर तत्त्व ते जीव रूप तलाव ने विषे कर्म रूप जल त्रावतां वत पच-खाणादिक द्वार देवे करी रोकिये, तेहने संवर तत्त्व कहिये॥ ६॥ निर्जरा तत्त्व ते ब्रात्माना प्रदेश थी वार भेदे तपस्याये देश थकी कर्मग्रं निर्जरबं दूर थाबुं तेहने निर्जरा तत्त्व कहिये ॥ आ वंध तत्त्व ते आत्मा प्रदेश ने कर्म पुद्गलना दल खीर नीरनी परे, लोह पिंड श्रिशनी परे लोली भूत थई वंधाय, तेहने वंध तत्त्व किहये॥ ८॥ मोत्त तत्त्व ते सकल

मारमाना प्रदेश थी सकल कर्मेलु छुटबुं सकल वधर्ड मुकावयं सकत कार्यनी सिद्धि धाय तेहने मोत्त तत्व कदिये ॥ १ ॥ ए नव पदार्थनु जांक्वयु तेहुमे तत्त्व कदिये ॥ हवे जीवनो एक मेह है सकल जीवोनं जैतन्य लक्षण एक है। माटे संप्रहमये करी एक मेर्ड जीव कहिये तथा वे प्रकारे पित्र जीव कहिये ॥ जस १ यावर १॥ तथा सिक १ ने समारी र ॥ तथा वस मेरे जीव, क्षी बेद १, पुरुप वेद ६, नपुसक वेद ३ ॥ तथा मवसिविधा १. समवसिविधा ३ होमदिखिया मी अमचिविदिया है । तथा च्यार मेदे कीव। नारकी १ तिर्थेख र, मनुष्य ३ वेचता ४ व तथा चलु दर्शनी १ अवक दर्शनी र, अवधि दराजी ६, केवल दर्शनी ४ ॥ तया पांच प्रकारे श्रीव एकेंद्रिय ? बेइन्द्रिय २, तेइन्द्रिया ३ चर्डरिंडच ४ पर्विदिय ४॥ तथा खजोगी १ मनजोगी २ वचनकोगी ६ कायकोगी ४ अन्जोगी ४॥ तथा खुनकारै तीव प्रश्रीकाय १ अपकाय २ तेडकाय ३ वाडकाय ४ वनस्पतिकाय ४, जसकाय ६ । तथा सकपायी ? कोद-कपानी २ जानकपानी ३ मायाकपानी ४ लोमकपानी ४. क्रकपायी ६ । तथा सात प्रकारे जीव नारकी १ तिर्येक २. तिर्येचयी १ मनुष्य ४ मनुष्यशी ४, देवता ६ देवी ७॥ सथा भाठ प्रकारे की उ सक्षेत्री ? क्रप्यक्रेशी २ नीसक्षेत्रीय कापुतकेशी ४ तेजुलशी ४ पचलेशी ६ शक्कोशी ७ अलेशी द्र।। तथा नव प्रकार जीव पृथ्वी १ क्राय २, तेत ३ बाउ ४ वनस्पति ४ चेदन्त्रिय ६ तेदन्त्रिय ७, चवरित्रय ८, पंचेत्रिय शा तथा वश मेवे श्रीव पक्षेतिय १ चेडन्जिय २. तेडन्जिय भवरिदिय ४ पंचेंद्रिय ४, ए ४ ना क्रमजासा ने प्रजासा पच १०॥ तथा सम्पारे मेवे जीव व्यक्तिय १ बेस्निय २,

तेइन्द्रिय ३, चडरिंद्रिय ४, नारकी ४, तिर्यंच ६, मनुष्य ७, भवनपति =, वाण्डयंतर ६, ज्योतिपी १०, वैमानिक ११॥ तथा १२ भेदे जीव, पृथिवी १, श्रप २, तेउ ३, वाउ ४, वनस्पति ४, त्रसकाय ६, ए छना श्रप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एवं १२॥ तथा तेरह भेदे जीव, कृष्णलेशी १, नीललेशी २, कापृतलेशी ३, तेजुलेशी ४, पद्मलेशी ४, शुक्कलेशी ६, ए ६ ना अप्रजासा ने प्रजासा एवं १२ ने एक अलेशी १३ एवं १३॥ हवे जीवना १४ भेद कहे छै॥ सूदम एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो १, नै प्रजाप्तो २, वादर एकेंद्रिय नो अप्रजाप्तो ३, ने प्रजाप्तो ४, वेइन्द्रियनो अप्रजातो ४, ने प्रजातो ६, तेइन्द्रियनो अप्रजातो ७, नै प्रजाप्तो ८, चडरिंद्रियनो अप्रजाप्तो ६, ने प्रजाप्तो १०, असंज्ञी पंचेंद्रियनो अप्रजाप्तो १२ ने प्रजाप्तो १२, संज्ञी पंचें-दियनो श्रप्रजाप्तो १३ ने प्रजाप्तो १४॥ हवे व्यवहार विस्तार नये करीने पांचसे बेसठ भेद जीवना कहे हैं ॥ तेहमां बणसे ने त्रण भेद मनुष्यना, एकसो ब्रहास भेद देवताना, ब्रह-तालीस भेद तिर्यचना, चडद भेद नारकीना, ए ४६३ भेद जीवना ॥ हवे तेहमां मनुष्यना ३०३ मेद कहे छै, ते १४ कर्म भूमिना मनुष्य, ३० श्रकर्म भूमिना मनुष्य, ४६ श्रन्तर द्वीपना मनुष्य एवं १०१ च्रेत्रना गर्भज मनुष्यना, श्रप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एवं २०२ ने एक सी ने एक चेत्रना समुद्धिम मनुष्यना श्र-भजाप्ता एवं ३०३ मनुष्यना ॥ हवे कर्मभूमि ते केहने कहिये। असी १, मसी २, कृषी ३, ए तीन प्रकारना व्यापारे करी जीवे तेहने कर्म भूमिना मनुष्य कि ये॥ ते कर्म भूमिना चेत्र केटला छै॥ ४ भरत ४ इरवरत ने ४ महाविदेह एवं पंद्रह ॥ ते कर्म भूमि किहाँ छै ॥ एक लाख जोजननो जंबू-द्यीप छै, तेहमां १ भरत, १ इरवत, १ महाविदेह, ए तीन

संज कर्म भूमिनां जम्बुडीपमां क्षे तेहमें परतो बेलाख मोजननो लबख समुद्र झ, तेहने परतो खान्लाख जोजननो भाग की खपब डीए के तेहमां २ मरत, २ इरचत, १ महा-विदेह के, तेहने परतो = लाग जोजननो कालोदिस समुद्र है। तहने परतो = लाज जोजननो कार्क पुष्पर द्वीप के ब तेहमां २ मरत - इरवल - र महाविद्य के एक सुदृ १० ने ३ एकर कर्म भूमिना मञ्जूष्य कहा।।

हवे ३० कक्त्रं भूमिना मञ्जूष्य कहे है । अवसं भूमि त केहने कहिये ॥ ६ क्त्रं रहित वृद्ध मकारना करपन्न के की ने जीन तेहने अक्त्रं भूमिना मञ्जूष्य कहिये ॥ ते केदना है । ४ तेमयप ४ हिन्युषय ४ हरियास ४ रूपक्षास ४ रूप इठ ४ उक्तर कुठ एय ३०॥ हवे अम्बूडीएमी १ तेमच १ हिरस्यय १ हरियास, १ रमक्षास १ वैषक् ठ १ उत्तरक्ष एय ६ स्त्रं अम्बूडीएमी है ॥ पातकी सरक्षां वे ने जीव्या। एव १० कार्य पुष्कर छीएमी ने थे आख्या एवं ३० अक्त्रं भूमिना मञ्जूष्य कहा। ॥

ह के कृष्यन अन्तरजीयना मनुष्य कहे के ॥ अस्मृदीयना मरताकृष मी मर्यादानो करखहार खूलहिमतनल नामा पर्येत है ते पीला खोगामय के ते खो जोजनते ऊँचो है खो गाउनो ऊरो है एक हजार वायन जोजम ने बार कलातों पहालो है चौपीस हजार पचसे चर्चाय जोजमनो लोगो है । तहने पूर्व पीकम में खेहन ने ये बाहों सीकली है एके की बाहां चौरासी से चौरायी जोजन आफ्रेरी लांबी है। ते पके हो बाहों जपरे खात खात खन्तरप्रीय है ते सन्तरप्रीय किंद्री हैं। जगतीना कोठची ३०० जोजम सक्ष्य समुद्रमां

जाइये तिवारे पहिलो अन्तरद्वीपो आवे छै। ते ३०० जोजन नो लांबो ने पहोलो छै॥ तिहाँथी ४०० जोजन जाइये, तिबारे वीजो श्रन्तरद्वीपो , श्रावे छै. ते ४०० जोजन लांबो ने पहोलो है। तिहाँथी ४०० जोजन जाइये तिवारे त्रीजो ग्रन्तरद्वीपो श्रावे ते ४०० जोजननो लांबो ने पहोलो छै॥ तिहाँथी छः से जोजन जाइये तिवारे चौथो अन्तरद्वीपो आवे ते ६०० जीजननी;लांबो ने पहोलो छै॥ तिहाँथी ७०० जोजन, जाइये तिवारे पांचमो अन्तरद्वीपो आवे ते ७०० जोजननी लांबो ने पहोलो छ ॥ तिहाँथी ५०० जोजन जाइये तिवारे छुट्टो श्रन्तरद्वीपो द्यावे ते =०० जोजन लांबो ने पहोलो छै॥ तिहाँथी ६०० जोजन जाइये तिवारे सात्मो अन्तरद्वीपो श्रावे ते ६०० जोजन नो लांको ने पोहोलो छै एवं सात चोकू रे श्रन्तरद्वीपा जांगवा ॥ एमज् इरवत चेत्रनी मर्यादा नो करणहार शिखरीनामा पर्वत छै, ते चूल हिमवंत सरीखो जोंगको ॥ तिहाँ प्रण २० अन्तरद्वीपा छै ॥ अद्वावीस दूगा <sup>४६</sup> श्रन्तरद्वीपा जाणवा ॥ श्रन्तरद्वीपाना मनुष्य ते केहने किहिये ॥ हेठे,समुद्र के अने ऊपर अधर डाढामां द्वीपाना रहेनार है, माटे स्त्रन्तरद्वीपना मनुष्य कहिये॥

हवे १०१ चेत्रना समुर्छिम मनुष्य, १४ स्थानकमां उपजे छै ते कहे छै ।। उचारेसु वा ते वड़ी नीतमां उपजे १, पासवणेसु वा ते लघु नीतमां उपजे २, खेलेसु वा ते वलखामां उपजे ३, संघाणेसु वा ते लिंटमां उपजे ४, वन्तेसु वा ते वमनमां उपजे ४, पीतेसु वा ते नीला पीला पीतमां उपजे ६, पुइए-सुवा ते परमां उपजे ६, सोणिएसु वा ते रुधिरमां उपजे ६, सुक्केसु वा ते वीर्थमां उपजे ६, सुकक्षेसु वा ते विर्थमां उपजे ६, सुकक्षेसु वा ते विर्थमां उपजे ६, सुकक्षेसु वा ते विर्थमां उपजे ६, सुकक्षेसु वा ते वार्थमां उपजे ६, सुकक्षेसु वा ते विर्थमां उपजे ६, सुकक्षेसु वा ते वार्थमां उपजे ६, सुकक्षेसु वा ते वार्थसां उपजे ६, सुकक्षेसु वार्थसां वार्यसां वार्यसां वार्थसां वार्यसां वार्यसां

वीयोदिकता पुरुषस स्काला ते पिरि भीना धाय तेहमाँ कर्ण १०, विगयजीयकलेयरेसु वा ते मञ्जूष्यमा कलेयरमां कर्प ११, इष्मिपुरिस्तरमोनेसुवा ते की युक्यनां संक्रीममां कर्प १२ नगरतियमणेसुवा ते नगरती वालोमां अपने १३, समं सुचेव बासुरहाणेसुवा ते सार्व मञ्जूष्य सम्बन्धी बाग्रुवि साः कोमां करने १४ ॥ यव १०१ चेवका समुद्धिम मञ्जूष्य १ प्रजासा एव सर्वे मिसी ३०६ भेद मञ्जूष्यता कथा।

हवे देवताना १८८ येद कहे हैं।। तेहमां दश भव पतिना नाम ॥ अञ्चरकुमार १, नागकुमार 🗸 सुवर्वकमार 🖰 विज्ञकुमार ४ अग्रिकुमार ४ श्रीवकुमार ६ उद्धिकुमार विशाक्तमार म, यवनकुमार । चित्राकुमार १० ।। इवे ! परमाधामीना नाम कहे हैं ॥ सम्ब १ अम्बरीस २, शाम सबस ५ बत ४ वैरुत ६, काल ७ महाकाश म, ब्रासिपण घतुष्य १० क्रेस ११ बाह्य १२ बतरखी १३ सरसर १ महाभोप १४ ॥ छोल वाक्यंतरना नाम ॥ पिद्याच १ 👭 २, जन्न ६, राज्यस ४ कियर ४, कियुरिस ६ सहोरग गंधवे म, ब्राइएबी १ पाक्षपत्री १० इसिवाइ ११ भूइव १२, कंदिय १३ महाकंदियारिश कोहत १४ पर्यमदेव १६ क्षण केंगवाला लाग है बालाजेंग्रका १ पालाजेंग्रका २ समा जमका १ शयक जमका ७ तथक जैसका ४ पूर्ण जमा ६ फल बोमका ७ भीय जेमका म विकास जैमका ६, क्याँ यत जैमका १० ॥ वश ज्यातिधीना नाम ह कन्त्रमा १ स २. ब्रह ३ लक्क ७ तारा ४ य ४ जल ते अधीवीपमाँ से स्थिर ते बाढीजीप वाहिर के वर्च १० ॥ इवे १ किल्वियी। साम । वक्त पश्चिया १ वक्त सागरिया २, तेर सागरिया ३

नव लोकांतिकना नाम ॥ सारस्वत १, श्रादित्य २, विन्ह ३, वस्ल ४, गईतोया ४, तोषिया ६, श्रव्यावाधा ७, श्रागचा ८, तिरा १ ॥ वार देवलोकना नाम ॥ सुधर्म १, ईशान २, सन-लुंगार ३, मिहंद्र ४, ब्रह्मलोक ४, लंतक ६, महाशुक्र ७, सहसार ८, श्राणत ६, प्राणत १०, श्रारण ११, श्रच्चुय १२ ॥ नव श्रीवेक ना नाम ॥ भेद्र १, सुभद्दे २, सुजाए ३, सुमाणसे ४, श्रियदर्शणे ४, सुदर्शने ६, श्रामोहे ७, सुपडिवद्दे ८, जशोधरे ६ ॥ पांच श्रमुत्तर विमानना नाम । विजय १, विजयंत२, जयंत ३, श्रपराजित ४, सविश्विसद्ध ४ ॥ ए ६६ जातना देवता श्रमजाता ने ६६ जातना प्रजाप्ता एवं १६८ भेद देवताना कह्या।

हवे तिर्यंचना ४८ भेद कहे छै॥ पृथिवी १, पाणि २, तेउ ३, वाउ ४, ए ४ सूदम ने ४ वादर एवं ८॥ ए ८ ना अभ्याप्ता ने ८ ना प्रजाप्ता एवं १६ ॥ वनस्पति ना ३ भेद ॥ सूदम १, प्रत्येक २, ने साधारण ३, ए ३ ना अप्रजाप्ता ने ३ ना प्रजाप्ता एवं ६ एवं २२ एकेंद्रियना॥ त्रण विकलेन्द्रिय वेश्विय ॥, तेइन्द्रिय २, चडरिंद्रिय ३, ए ३ ना अप्रजाप्ता ने ३ ना प्रजाप्ता ए ६ एवं २८ ॥ जलचर १, थलचर २, उरपर ३, भुजगर ४, खेचर ४, ए ४ समुद्धिम ने ४ गर्भज एवं १० ना अभ्याप्ता ने १० ना प्रजाप्ता एवं २० एवं ४८ भेद तिर्यंचना कहा। हवे १४ भेद नारकीना कहे है ॥ सात नरकना नाम ॥

हवे १४ भेद नारकीना कहे छै ॥ सात नरकना नाम ॥ धमा १, वंशा २, शिला ३, श्रंजणा ४, रिठा ४, मघा ६, माघ-वइ ७ ॥ हवे ७ ना गीत्र कहे छै ॥ रत्नप्रभा १, शर्करप्रभा २, बालुप्रभा ३, पंकप्रभा ४, ध्रमप्रभा ४, तमप्रभा ६, तमतमा-प्रभा ७, ए ७ ना अप्रजाप्ता ने ७ ना प्रजाप्ता एवं १४ भेद नारकीना कहा ॥ एवं सर्व मिली ने ४६३ भेद जीवना जांग्यवा ॥ इति जीवतत्वं समाप्तम् ॥ १ ॥ दयं क्रमीयन य ना १४ मेत् बहे थु ॥ धमास्त्रिकावम स्रम्भ १ द्य २, प्रदेश १, क्षधमीत्रिक यना प्रकार ४ देश ४, प्रदेश ६, क्षाकाग्रीस्त्रिकायना क्रम्प्य ७, देश ८. प्रदेश ६, क्षाक्षासम्य काल १० प १० भ्रव कारणे क्रमीयन कहा। ॥ हवे द्रपी क्रमीयना ४ भ्रव कहे थुं॥ युह्नास्त्रिकाय मो स्वयन्य ११, देश १२ प्रदेश १३ परमाणुक्रम १४ पर्य ४। इवे स्पष्टार विस्तार मधैकारी १६० धव क्रमीयनायना

हवे ब्ययहार विस्तार नवेकरी ४६० धह क्रजीवनम्बना कह में । तहमां ३० मेद सरुपी कडीयमा कहे स । धम स्नि काय द्वरपथकी एक १ खन्नपकी साथ ग्रमाचा ? काम धर्की अमादि अमत रे माय थकी अथले अगनी अरसे अकार चम्ति ४ शुक्थकी चल न सहाय ४ अधभीक्तिकाय प्रवर्ष यकी एक ६ होत्र थकी लोगप्रमाण ७ काल यकी सनादि धनरत द, माथ धकी बायवाँ बारंचे बारसे बकामे बाम्ति ह गुज्यकी स्थिर सहाय १० आकाशास्त्रिकाथ तथ्य चर्ची य€ ११ चेम शकी लोकालोक प्रमाण १० काल शकी सनाहि श्रामन १३ माय शकी श्रावर्ण बार वे शहने बाजाने श्रमनि १४ शुश धकी अवगाइना दान १४ दुवे काल ब्रव्य धकी मनेक १६ चेत्र यकी भवीतीय प्रशांके १७ कालथकी सनावि कामन्त १८ भाष धारी कावलें कारांचे कावज़री कामृति १६ गुण यकी पतमा लक्ष्य २० एव २० में १० पूर्वे कहा से पर्व ३० मेर बादची बाजीसमा जांकता ह

वर्षे ४१० सेव् क्यो क्रजीवमाक हे के तेवसांवर्ष ४ कालो १ मीलो २ रातो ३ पीलो ४ घोलो ४ घोलो ४। पक्ते का वर्षमांकी बीठा बीठा सेव् लासे ते २ गंध ४ रस ४ संठाब ८ रसर्थं पर्वं बीठा पंचासी॥ वर्षे २ गंध ते झुरसिर्गक र

इरिभगंध २,॥ एकेका गंधमांहि त्रेवीस त्रेवीस भेद लाभे॥ १६र्ण, ४ रस, ४ संठाण, = स्पर्श, एवं २३ वृ छ्यांलीस भेद जांग्या॥ हवे ४ रस ते तीखो १, कड़वो २, कपायलो ३, खाटो ४, मीठो ४ एके का रसमां वीश वीश मेद लाभे ४ वर्ण, रेगंध, ४ संटास, ५ स्पर्श एवं २० पंचा सी । हवे ४ संटास । परिमंडल संठास १, वट संठास २, वंश ३, चडरंस ४, श्रायत संठाए ४॥ एके का संठाएमां वीश वीश मे्द लामे॥ <sup>४ वर्गी,</sup> २ गंध, ४ रस, = स्पर्श एवं २० पंचा सी ॥ ह्वे = स्पर्श ।। खरखरो १, खंहालो २, भारि ३, हलवो ४, टाढो ४, उन्हों ६, चोपड्यो ७, लूखो = ॥ एके का स्पर्शमां तेवीस तेवीस मेद लाभे ॥ ४.वर्ण, २ गन्ध, ४ रस, ४ संठाण, ६ स्पर्श एवं २३ भेद लाभे॥ खरखरामां खरदरी ने खंहाली वे वर्जवा॥ एम वे वे स्पर्श वर्जवा एवं २३ त्राठा १८४ एवं सर्व मिली ने ४३० भेद रूपी अजीवना कहा।। एवं सर्व मिली ने <sup>५६०</sup> भेद श्रजीवना जाणवा ॥ इति श्रजीवतत्वं समाप्तं ॥२॥

हवे नव भेदे पुराय उपराजे ते कहे छै ॥ अन्नपुन्ने ४, पार्णपुन्ने २, लयरापुन्ने ३, रायरापुन्ने ४, दत्थपुन्ने ४, मन-पुन्ने ६, वचनपुन्ने ७, कायपुन्ने ६, प ६ भेदे पुराय उपराजे ॥ तेहना अभ फल ४२ भेदे भोगवे ॥शाता वेदनीय १, ऊँच गोत्र २, मनुष्य गति ३, मनुष्यानुपूर्व्वी ४, देवानुपूर्वी ६, पंचेंद्रियनी जाति ७, देवानि गति ४, देवानुपूर्वी ६, पंचेंद्रियनी जाति ७, उदारिक शरीर ६, वैक्रेय शरीर ६, आहारक शरीर १०, तेजस शरीर १४, कार्मण शरीर १२, उदारिकना अङ्ग उपांग १३, वैक्रेयना अङ्ग उपांग १४, वज्र-रिपमनाराचसंघयण १६, समचउरंशसंठाण १७, अभवर्ण १८,

हते क्रजीयमस्य मा १४ मेड् कहे हैं ॥ धर्मास्मिकापनी रै स्रम्भ रे, देश , प्रदेश रे बाधसीम्जिब बनी स्वन्य है। देश ४, प्रदश ६, काकाशास्त्रिकायनी क्वन्य ७ देश ६,६ प्रदेश ६, श्रादासमय काल १० व १० सेन् श्राद्धण श्राद्धी कार्या श्रा कता ॥ हमें रूपी भाजीयना थ मेत्र कहे थे ॥ पुत्रलास्तिका<sup>त</sup> मो स्क्रम्भ ११ वंश १० प्रदेश १३ परमास्प्रकल १४ वर्ष ४। हते व्ययहार विस्तार मयेकरी ४६० सङ वर्जावनत्था। कहे है । तहमां ३० मेन सक्या सजीवमा कहे स । धम लि काय द्रव्यथकी एक १ चेजथकी लाक प्रमाध २ काल धर्मी बामादि बानंत रे माथ थकी बावर्षे बागन्ये बारसे अकासे अमृति ४ गुण्यकी जसन नहाय ४, ग्रंथभीस्तिकाम प्रस्य यसी यक ६ चेत्र धकी लोकप्रमाण ७ काल धकी बातारि क्रनस्त म, भाव थकी कायम क्रांगचे चरसे कफासे क्रम्ति <sup>६</sup> गुज्यकी रिधर सहाम १० काकाशास्त्रिकाय हत्य धकी पक ११ चेत्र थकी लोकालोक ममाख १०, काम शकी बागारि शतन्त १३ साथ शकी अवर्थे अरथे अरसे अफासे सर्गि रेश गुख धकी कावगाहका दान रेश, हवे काल हरूम धकी बानेक १६ क्षेत्र धकी बाडीझींप प्रमाणी १७ कालग्रकी बानादि कामन्त १८, मान शकी बाबर्स क्षमच कायासे धामति १६ गुम यकी वर्तमा शक्क्य २० एव २० में १० वर्षे कहा स पर्य ३० मेव प्रकृपी क्रजीवला जांशता है

वि ४१० नेतृ कयी अजीवता कहे ही तेहमाँ वर्ष ४ कालो ( गीलो १, दातो १ पीलो ४ घोलो ४। पद्ये का वर्षमार्थि क्षेत्र केतु कालो ठे २ पण ४ एस ४ संटाव ८ स्पर्श पर्व बीज पेता सी। हवे २ गंव गंदुरसिगंवा १ मान ३७. माया ३८. लोभ ३६. ऋपचालाणावरणीय कोध ४०. मान ४१. माया ४२. लोभ ४३. पचालाणावरणीय कोध ४४. मान ४६. माया ४६. लोभ ४७. संजलनोकोध ४८. मान ४६. माया ४०. लोभ ६१. हास्य ६२. रित ६३. ऋरित ६४. भय ६६. शोक ६६. हुगंछा ६७, स्त्री वेद ६८. पुरुपवेद ६६. नपुंसकवेद ६०. तिर्यंचनी गित ६१. तिर्यंचनी अनुपूर्वी ६२. एकंद्रियपणुं ६३. चेइन्द्रियपणुं ६४. वड-रिद्रयपणुं ६६. ऋग्रुभ चालवानी गित ६७. उपघात नामकर्म ६६. अग्रुभवर्ण ६६. ऋग्रुभगंघ ७०. ऋग्रुभरस ७१. ऋग्रुभ स्पर्श ७२, ऋपभनाराच संघयण ७३. नाराचसंघयण ७४. ऋदेनाराच संघयण ७४. किलकुसंघयण ७६. छेवहुसंघयण ७७. निगोहपरिमंडलसंटाण ७८, सादिसंटाण ७६. वामनसंटाण ८०. कुटजसंटाण ८१. हुंडसंटाण ८२ एवं ८२ मेद पापतस्वना जांणवा इति पापतस्वं समाप्तं ॥ ४॥

हवे आश्रव ना सामान्य प्रकारे २० भेद कहे छै॥ मिथ्यात्व ते आश्रव १. श्रवत ते आश्रव २. प्रमाद ते आश्रव ३. कपाय ते आश्रव ४. श्रवतात ते आश्रव ४. प्राणातिपात ते आश्रव ६. मृषावाद ते आ० ७. श्रवतादान ते अ० २. मैथुन ते आ० ६. परिश्रह ते आ० १०. श्रोजेंद्रिय असंवरे अ० ११. चचुइन्द्रिय अ० आ० १२. व्याणेन्द्रिय अ० आ० १४. वचन ०१५. भंडउपगरणउपिजिम तिम ते आ० २०॥ हवे ५ इन्द्रिय मोकली मुके ग एवं १७; ने २४

पराचातनाम २३, वसासनाम ६४ चातापनाम ४ उर्चात-

माम २६, गुभवालवानी गति २७, मिर्माच नाम ४८, वर्स-माम २६, बाक्रनाम १० प्रजाप्तनाम ११ प्राचेकमाम १० स्थिरमाम ३३ शुमनाम ३४ सीअत्यनाम ३४, सुसरनाम १६ आदेवनाम ३७, अशोकीर्तिनाम १८ देवताद मारुपं १६, मनुष्यर्त्तं भावपुं ४० विर्यसन् सावपु भूगतम् । तीर्यक्र नाम कमें ४२ पर्च ४२ मेन पुरुष ना आखवी।। इति पुरुवतर्व समाप्त ॥ ३ ॥ इने १८ प्रकारे पाप उपराजे ते कहे के ॥ प्रसातिया रै सूपाबाद २, अइनादान ६ मेपुन ४ परिवह ४ क्रोम ६ मान ७ मामा = क्रोम ६, राग २० द्वेप ११ फलह १६, अस्याक्यान १३ पेद्यान्य १४ परपरिश्रात १४ रति अरति १६ मामा मोसो १७ मिच्यार्चसपुसम् १८६ १८॥ हरे तेहमा असुस पन्न = श्रकारे सोगवे से कहे हैं।। सतिवाना बरप्रीय १ सुरुकानावरस्रीय २ सम्बद्धिकानावरणीय १ मन प्रजेपद्यानावरपीय ४ केवस्त्रातावरसीय १ इत्तांतराय ६ हामांतराय ७ मोगांतराय ८, उपमोगांतराय ६ बीयाँवराय to निदार्श निदानिदार्थ प्रचलार्थ, प्रवला प्रवला १४ बीक्दोनिहा १६ क्युव्येमावरचीय १६ समग्रदर्शना वरक्षीय १७ क्रकचिवर्शनाकरणीय १८ केवसवर्शनावरणीय १६,तिकगोत्र २० धाशासा जेन्नसीय २१ मिच्यास्य मोहनीय२१ स्थाचरपर्श्व १३ शुक्रमपर्श्व २४, भ्रापक्रीव्तपर्श्व २४ साधारस पूर्व २६, ब्रस्थिरनास २७ ब्राह्मसमास २८ दीमीम्प २८, वासरमाम ११ वासगोकीर्ति माम १० मरकनीगति ११ तरकतुं बरावर्ष् १४ नग्कानुपूर्वी ११ वर्गतासुर्वपीकोच १६.

रोग नो० १६, त्यास्पर्शनो० १७, मेलनो० १८, सत्कार पुरस्कारनो० १६, प्रज्ञानो० २०, श्रज्ञाननो० २१, दंसण परिसह
१२, ए २२ ने ८ पूर्व कह्या ते एवं २०, खंति ३१, मृत्ति ३२,
श्रज्जवे ३३, मदवे ३४, लाघवे ३४, सच्चे ३६, संजमे २७,
तवे ३८, चियाए ३६, वंभचेरवासे ४०, ए १० प्रकारे जती
धर्म श्राराधवो ने १२ भावना भाववी । तेहना नाम ॥ श्रानित्य
भावना १, श्रशरणा भा० २, संसार भा० ३, एकत्व भा० ४,
श्रन्यत्व भा०४, श्रश्रुचि भा०६, श्राश्रुव भा०७, संवर भा० ८,
त्रिजरा भा० ६, लोक भा० १०, बोध भा० ११, धर्म भा० १२,
ए ६० ने १२ भावना मलीने वावन ॥ सामायिक चारित्र ४३,
हेतीपस्थानीय० ४४, परिहार विश्रुद्ध० ४४, सूदम संपराय
१६, ज्याख्यात ४७, ए ४७ भेद संवर तत्त्वना जांणवा ॥
इति संवर तत्त्व समाप्तं ॥ ६॥

हवे निर्जराना १२ भेद कहे छै॥ अनशन १, उगोदरी २, विसंसे सेप ३, रसपरित्याग ४, कायक्लेश ४, पिडसंली गया ६, ए६ छ भेद वाहाना कहा॥ हवे छ भेद अभ्यंतरना कहे छै॥ प्रायछित्त ७, विनय ५, वियावच ६, सङ्भाय १०, ध्यान ११, काउसग्ग १२, एवं १२ भेद निर्जरा तत्त्वना कहा॥ ७॥

हैंवे वंध तत्त्वना ४ भेद कहे हैं ॥ प्रकृति वंध १, स्थिति वंध २, अनुभाग वंध ३, प्रदेश वंध ४, प्रकृति वंध ते कर्मनो ख्राव तथा परिणाम १, स्थिति वंध ते जे कर्मनी जेटली स्थिति हैं तेटली २, अनुभाग वंध ते एस तीव मंद रसादि कर्मनो ३, प्रदेश वंध ते कर्म पुद्रलना दल ४ ए ४ वंधनुं सक्ति मोदक ने हणांते करी वतावे हैं ॥ जिम कोई मोदक घणा

किया है काथिकी किया ?, आधिकरखकी किया २, या सिया है, पारिसाविष्या ४, पाख्याय ४, धार्म भिया ६ वर्ष राष्ट्रिया ७ साथायसिया ५, पाख्याय एक्सिया ६, सिक्ष इसल्युक्तिया १०, दिहीया ११, पुष्ट्रिया १२, पाद्धिया ११, सामेतीयशिया १४ किसाविष्य १५, साहधिया १६, धार्डक दिया १७ विदारिष्या १८ कास्मुदाखी १२ प्रधानिया १६ होसयतिया २५ इरियायदिया किया १६ वर्ष २१ ते १७ वेता सीस मेक भाव्यय तस्कता कास्मुदाखी १२ प्रधानिया १६ ॥ ४४ हो स्वास्थ्य तस्कता हार्य कासम्ब तर्श्व कामन होसे सेवरका लासक्य सकारे २० सेव् कहे हैं । सम

 एटला तेत्रमां सिद्ध रह्या छै॥ ३॥ स्पर्शना द्वार ते सिद्धतेत्र षी काईक अधिकी सिद्धनी स्पर्शना छै॥ ४ ॥ कालद्वार ते एक सिद्ध आश्री सादि अनन्ता सर्व सिद्ध आश्री अनादि अन्तत ॥ ४॥ अन्तर ते फरी लिद्धने संसारमां अवतरवुं नथी, अने एक सिद्ध तिहाँ अनन्ता सिद्ध छै अने अनन्ता विद्य तिहाँ एक सिद्ध छै, परले सिद्ध सिद्धमां अन्तर नथी है। भाग ते सघला जीवने सिद्धना जीव अनन्त में भाग हैं। लोक ने असंख्यात में भागे हैं॥ ७॥ भाव ते सिद्धमां नायक भाव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन, ज्ञायक समिकत छै। श्रने परिणामिक भाव ते सिद्धपणो जाणवो ॥=॥ श्रहप बहुत्व हार ते सर्वथी थोड़ा नपुंसक सिद्ध, तथी स्त्री संख्यातगुणी सिंद्, तेथी पुरुष संख्यात गुणा सिद्ध ॥ एक समये नपुंसक १० सिद्ध थाय, स्त्री २० सिद्ध थाय, पुरुष १०⊏ सिद्ध थाय ि । त्रसपरो १, वादरपरो २. संक्षीपरो ३, वज्रऋषभ∸ गराचसंघयणपणे ४, शुक्ल ध्यान पणे ४, मनुष्य गति ६, वायक समकित ७, जथाख्यात चारित्र ८, पंडितवीर्य ६, केवलज्ञान १०, केवल दरीन ११, भन्यसिद्धिक १२, पर्म-युक्ललेशी १३, चरमशरीरी १४, ए १४ वोलनो धणी मोच गय ।। जघन्य वे हाथनी त्रवगहणावालो । उत्कृष्टी पांच से नुपनी श्रवगहणावालो । जघन्य नव वरसनो, उत्कृष्ट पूर्व-होडिना श्रायुष वालो कर्म भूमिनो होय ते मोत्तमां जाय॥ ति मोच तस्वं समाप्तम् ॥६॥ इति नव तस्वना वोल संपूर्णं ॥



हवें मोच्च तत्त्व ते १४ मेदे सिद्ध शाय ते कहे हैं <sup>॥ प्रीर्थ</sup> सिका १ अवीर्व सिवा ? वीर्वहर सिवा ३ अतीर्वह सिका ४ गृहस्पतिंग विका १ कम्पतिंग सिका ६ सिद्धा ७ स्त्रीसिंग सिद्धा ८, पुचपसिंग सिद्धा ६, मपुसक्रीत विका १० लवंद्रक मिका ११ अधिकत्व मिका १६, इब भोदि सिदा १३ एक सिदा १४ कनेक सिदा १४, विया प्रकारे जीव मोच जाय ते कहे है ॥ बामेकरी १ वर्शनेकरी % बारिनेकरी ३ वर्षकरी ४ ।। तथा नवक्षार मोजना करे 🖣 सत्पद प्रकारण ते मोच गति पूर्वकाले इती इमसा पव 🖣 भागमिये काके इस ते क्ती करित है पद्म साकाशना फर्डनी पर नास्ति मधी ह १॥ द्रव्यापमाचे त सिक धर्मता है ह 🕊 मन्य जीव-बी जननागुणा कविक के बनस्यति वर्जी है। २३ क्षक की सिद्यमा जीव कामना गुरुषा का विकासी।। २ ह के म बार ते सिद्धशिका प्रमाणे थे ते सिद्धशिका विकताशीन बाल सोजननी सांबी पहोली है है बार्प निग्रंची स्टाउँही परिचि है। अने जैंबपने ३३३ अग्रुप ने ३६ ब्रोग्स प्रसाने ला तेत्रमां सिद्ध रह्या है ॥ ३ ॥ स्पर्शना द्वार ते सिद्धचेत्र काईक अधिकी सिद्धनी स्पर्शना है।। अ ॥ कालद्वार ते ि सिद्ध श्राश्री सादि श्रनन्ता सर्व सिद्ध श्राश्री श्रनादि नित ॥ ४॥ श्रन्तर ते फरी सिद्धने संसारमां श्रवतर छं ी, अने एक सिद्ध तिहाँ अनन्ता सिद्ध छै अने अनन्ता द तिहाँ एक सिद्ध छै, एटले सिद्ध सिद्धमां अन्तर नथी भाग ते सघला जीवने सिद्धना जीव श्रनन्त में भाग लोक ने असंख्यात में भागे हैं॥ ७॥ भाव ते सिद्धमां यक भाव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन, चायक समिकत छै। परिगामिक भाव ते सिद्धपगो जागवो ॥=॥ श्ररूप वहुत्व ते 'सर्वथी थोड़ा नपुंसक सिद्ध, तेथी स्त्री संख्यातगुणी दे, तेथी पुरुष संख्यात गुणा सिद्ध ॥ एक समये नपुंसक सिद्ध थाय, स्त्री २० सिद्ध थाय, पुरुष १०८ सिद्ध थाय ॥ त्रसपर्गे १, वादरपर्गे २, संक्षीपर्गे ३, वज्रऋपभन पचसंघयणपणे ४, शुक्ल ध्यान पणे ४, मनुष्य गति ६, यक समकित ७, जथाख्यात चारित्र ८, पंडितवीर्य ६, लिक्षान १०, केवल दर्शन ११, भन्धसिद्धिक १२, पर्म-लिलेशी १३, चरमशरीरी १४, ए १४ वोलनो धणी मोच य ।। जघन्य वे हाथनी श्रवगहणावालो । उत्कृष्टी पांच से पुपनी श्रवगहणावालो । जघन्य नव वरसनो, उत्कृष्ट पूर्व-डिना त्रायुष वालो कर्म भूमिनो होय ते मोचमां जाय।। ते मोच तत्त्वं समाप्तम् ॥६॥ इति नव तत्त्वना वोल संपूर्णं॥



### श्रिष श्री पाच देवना वोल लिस्पते। परितुमामकार १ बीख ग्रणकार ४ बीजु , वबनायार

१ चोषु न्पितिहार ४ पांचमु ऋदि तथा विकृष्ण्यार १ इट्ट चमण्डार १ सातमु सचिरुण्डार ७, बाहमु चानराहर मृ मवर्स कारण बहुत्यकार १ व १ कार पांच देव कपर उतारे र्ख त इवे परिशु नाम छार कहे हैं ॥ अविय हुम्य देव १, वर देव २ धर्मदेव ३ देवाधिवेव ४ मावदव ४ ॥ १॥ इते बीह गुसकार कहे हैं । मजुष्य तथा तिर्यस प्लेहिय सहते हैं वामां उपज्ञ है तेहने मविय प्रध्यवेष कहिये है है। बदर राम, मवविभाग, जेहने होय तहने मर देव कहिये है रे साञ्चना सत्याबीस गुणेकरी सहित होय तेहने धर्मदेव कहिने Nan झडार दोण रहित में बारे ग्रुखे करी खडित होय तेहरे वेगाभिवेच कदिये ॥ बाहार दोप ते कहे है । बाहान १ कीच P मद्दे मान ७ माया ४, कोम ६ रति ७ अप्रति 🤊 निद्रा ८, योक १० असत्य ११ चोरी १२ सत्सर १६, वर्ष १४ माधिषभ १४, मेम १६ क्रीड़ा मसंग १७ हास्य १८, प १= दोप रक्षित में १२ गुलेकरी सहित ते १० ग्रेंच कहे हैं। मगबन्त जिहाँ जिहाँ बसारहे बैढे समीलरे तिहाँ विहाँ वह वोत सबितते भगवतबी वार गुणो क्रेंको तत्कास सरोक्ष् थाइ आवे सामी में क्षांयको करे ॥ १ ॥ असवस्य जिल्ली जिल्ली समोसरे तिहाँ तिहाँ पाँच वर्ता अचेत प्रसनी बृधि यार हिंचनुप्रमाखे बगला थाय ॥ २ ॥ जगवन्त्रनी क्रोजम प्रमाने वांची विस्तरे सङ्गा भगनो संशय हरे।। ३ ॥ मगवन्त नै चौबीस जोड़ जामर जिमाय प्रशा रफदिक रत्ममय पाइपीठ सकित सिंहासन कामी ने भागही बाय ॥४॥ मामंडल संबोदा

ने टेकाणे तेज मंडल विराजे, दिशोदिशना अन्धकार टाले ।। ६॥ त्राकाशे साढा वार कोड़ गेवी वाजा वागे ॥७॥ भगवंत-नी ऊपरे त्रण छत्र उपराउपरि विराजे ॥ ८॥ श्रनन्त ज्ञान श्रितिशय ॥ ६ ॥ अनन्त अर्चा अतिशय परम-पूज्य पर्सु १० ॥ श्रनंत वचन श्रतिशय ॥ ११ ॥ श्रनन्त श्रपायापगम श्रतिशय ते सर्व दोप रहित पर्यं ॥ १२ ॥ ए १२ गुरोकरी सहित तथा चौत्रीस अतिशय, पाँत्रीस वचनातिशय आदि देइने अनन्त गुणे करी सहित होय तेहने देवाधिदेव कहिये ॥४॥ भावदेव ते भवनपति १, वाण्ड्यंतर २, ज्योतिषी ३, वैमानिक ४॥ ए ४ जातिना देवताना भावे प्रवर्ते छै तेहने भाव देव कहिये ॥ ४॥ २॥ हवे त्रीजु उववायद्वार कहे छै ॥ भविय द्रव्य देव मां मनुष्य १, तिर्यंच २, जुगलीया ॥ सर्वार्थ सिद्ध ३ ए ३ टाम वर्जी ने वाकी टामना श्रावी ऊपजे ॥ २॥ धर्म देवमां घट्टी सातमी नर्क तेउ वाऊ, मनुष्य तिर्यंच जुगलिया ए ६ ठाम वर्जी ने शेष सबी ठामना श्रावी उपजे ॥३॥ देवाधिदेव-<sup>मां,</sup> पहिली, बीजी, त्रीजी, नर्क । किल्विपी वर्जी ने वैमानिक दैवना आवी उपने ॥ ४ ॥ भाव देवमां तिर्यंच पंचेंद्रिय १ ने पंकी मनुष्य ए २ ठामना त्रावी ऊपजे ॥ ४ ॥ ३ ॥ हवे चोथु. स्थितिद्वार कहे है ॥ भविय द्रव्य देवनी जघ० श्रंत० उत्० ३ पल्यनी ॥ १॥ नरदेवनी जघ० सातसे वर्पनी उत्० चोरवासी लाख पूर्वनी ॥ २ ॥ धर्म देवनी जघ० श्रंत० उत्० देशे उणी पूर्व कोडीनी ।।३॥ देवाधिदेवनी जघ० वहुतेर वर्ष-नी उत्० देश लाख पूर्वनी ॥४॥ भाव देवनी जघ० दश हजार वर्षनी उत्० ३३ सागरनी ॥ ४॥ ४॥ हवे पांचमुं ऋदि तथा विकुवणद्वार कहे हैं ॥ भविय द्रव्य देवमां जेहने वैकेय लब्धि अपनी होय तेहने। नरदेव ने तो होयज। धर्म देवमां जेहने

याणि वा पच्छासधुयाणि वा कुलाइं पुन्वामेन भिक्खायरियाए अणुपविसइ अणुप-विसत वा साइजइ ॥ ९४ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्यिएण वा गारत्यिएण वा अपरि-हारिए वा अपरिहारिएण सर्द्धि गाहावर्ङ्खल पिंडवायपिंडयाए णिक्खमइ वा अणुप-विसइ वा णिक्खमत वा अणुपविसत वा साइज्जइ ॥ ९५ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ वा अपरिहारिएण सद्धि वहिया विहारभूमि वा वियारभूमि वा णिक्खमइ वा पविसइ वा णिक्खमत वा पविसंत वा साइजाइ ॥ ९६ ॥ जे भिक्ख कणडित्यएण वा गारित्यएण वा परिहारिओ अपरिहारिएहिं सर्दि गामाणुगामं वृङ्जड दृङ्जंत वा साङ्जङ् ॥ ९७ ॥ जे भिक्ख् अण्णयर पाणगजायं पिनगहिता पुप्फा पुप्फां आइयइ कसाय २ परिद्ववेइ परिद्ववेंत वा साइजइ ॥ ९८ ॥ जे भिक्ख् क्षण्णयर भोयणजाय पिडगाहित्ता सुविम २ भुजइ दुविभ २ परिद्ववेइ परिद्ववेंत वा साइजइ ॥ ९९ ॥ जे भिक्ख् मणुण्ण मोयणजायं पढिगाहेता वहुपरियावण्णं सिया अदूरे तत्थ साहम्मिया समोइया समणुण्णा अपरिहारिया सता परिवसति ते अणापु-च्छि(य)या अणिमतिया परिद्ववेइ परिद्ववेंत वा साइजइ ॥१ ००॥ जे मिक्ख सागारिय पिंड गिण्हइ गिण्हत वा साइजाइ ॥ १०१ ॥ जे मिक्खु सागारिय पिंड भुजइ भुजत वा साहजह ॥ १०२ ॥ जे भिक्ख सागारिय कुल अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पुष्वामेव पिंडवायपिंडग्राए अणुप्पविस् अणुप्पविस्त वा साइजइ ॥ १०३ ॥ जे भिक्ख् सागारियनीसाए असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा ओभासिय २ जायइ जायत वा साइज्जइ ॥ १०४ ॥ जे भिक्खू उडुबद्धियं सेजासथारयं परं पजोसवणाओ उवाइणाइ उवाइणत वा साइजइ ॥ १०५ ॥ जे मिक्ख वासा-वासिय सेजासयारय परं दसरायकप्पाओ उवाइणाइ उवाइणत वा साइजइ ॥ १०६ ॥ जे भिक्ख् उद्धबद्धिय वा वासावासिय वा सेजासथार्गं उवरि सिज्ज-माण पेहाए न ओसारेइ न ओसारेंतं वा साइजइ ॥ १०७ ॥ जे मिक्खू पाडि-हारिय सेव्वासथारय अणगुण्णवेता बाहिं णीणेइ णीणेत वा साइजाइ ॥ १०८॥ जे भिक्ख सागारियसतिय सेजासथारय अणगुण्णवेता वाहिं णीणेइ णीणेंत वा साइज्जइ ॥ १०९ ॥ जे मिक्ख् पाडिहारिय सागारियसतिय वा सेजासथारय दोचिप अणणुण्णवेत्रा वाहिं णीणेइ णीणेतं वा साइज्जइ ॥ ११० ॥ जे भिक्ख् पाहिहारिय सेजासथारय आदाय अप्पिब्हिट्ट सपम्वयइ सपन्वयत वा साइज्जड् ॥ १११ ॥ जे भिक्ख् सागारियसतिय सेजासबारयं आदाय आहिगरण कट्टु अण-प्पिणेता सपन्वयह सपन्चयत वा साइजाइ ॥ ११२ ॥ जे भिक्ख् पाहिहारियं वा सागारियसतिय वा सेजासथारय विप्पणद्व ण गवेसह ण गवेसतं वा साइजइ ॥ १९२ ॥ जे भिष्णु इत्तरिवंपि अवदि व पश्चितेह व पहिलेहेर्त वा सहजार। र्ष सेचमान भारत्रह मालिये परिहारद्वाचे स्टब्पाइये ॥ १९४ ॥ जिसीहऽतर यणे यीमो उद्देशो समस्तो ॥ २ ॥

#### तहओ उदेसो

चे भितन् भागंनारेषु वा भारामागारेषु वा गाहावश्चरेषु वा परिवासगरेषु ना भग्नजरिवर्य वा गाररिवर्य वा अरार्ण वा ४ ओमारिव १ जावा जारेरी ही साइज्य ॥ ११७ ॥ एर्न कप्याउत्पिया वा गारतियसा वा अन्त्रप्रतिवर्धी गी गाररियची वा अन्तउरियणीओ वा गारियणीओ वा असर्ग वा ४ अध्याप्ति र वायर वार्यतं वा भारका ॥ १९६-११७-११८ ॥ ये क्रिका सर्गाती**ः** वी भारामागरेसु वा गाहावहरूकेनु वा प्रत्यारसहेतु वा बोउहस्रपहियाए प्रियानवे रामार्थ अन्त्रजारिक्ये का गाररियये का अन्त्रजनिया का भाररियका का कर्ण-बरिपणी वा मारश्चिणी वा अञ्जादश्चिणीओ वा बारश्चिजीओ वा असर्व वा ४ भोमासिव २ जावर जावैते वा सङ्ख्या ॥ १९५-१२०-१२५-१२२ ॥ वे अ मिरुन आमेतारेम का बारामागारेस वा पाहाकाउठेन वा परिवासकी <sup>वा</sup> मन्यदरिपएम वा याररिपएम वा अन्यदरिपादि वा गारश्विपदि वा भा<sup>न्</sup> उरिपचीए वा पारत्विकीए वा अव्यवस्थिकीहै वा गारिपचीहि वा वस्त्रें व ४ अमिहर्ड आहर्ड विज्ञमार्ण पश्चितेता तमेव अनुवृत्तिय १ परिवृद्धित १ परि क्षतिम १ क्रोमाशिय १ बायइ बार्यर्त वा सञ्ज्ञाइ ॥ १२१-१२४-११५ के सिक्क् याहानश्करं पिंडवायपडियाप् पथि<u>दे</u> पडिवाहनियाप् समामे वीने(वि) रोमेर कुमें सञ्ज्यानिसार अञ्ज्यानिसेतं वा साहत्वद् ॥ १९७ ॥ के मिनव् सर्वे विपन्नायनाए असर्थं था ४ पविस्माहेड पविस्माहेर्तं वा साहम्बद्धं १९८३ है निसन्द गाहाबर्ड्ड पेंडबाकाडियाए अलुपनि<u>के</u> समाने पर शिवांतरानी वसन का ४ मिन्दर्व माहर् विज्ञार्थ पडिलाहेड् पडिल्पाहेर्त वा सार्मर् व १२५ व के मिल्प् कप्पनी पाएँ कामजेज वा प्राजेज वा कामजो वा प्राजे के राह्यक ॥ १३ ॥ ने निक्ष्य कवानो पाए संबद्धित वा प्रक्रियेज वा स्वार्ट का परिमाईर्स का साहजाह n १३१ n के विकस् कपन्यो पाप रोजेप का करन बा गवर्गीएन वा सल्केज वा अवस्तिज वा सक्योंते वा व्यवस्ति वा सक्जे 0 १३२ ॥ वे मिल्ल् अध्यक्षा पातृ सोदेखना वा कोल वा() ठालेक्न वा बर्मोंच्या ता जातेकेर्द वा सम्पर्धित वा सतकह ॥ ५२२ व से मिनब् अपन्ये

१ खेमाए।

पाए सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोवेज वा उच्छोलेत वा पधोर्वेत वा साइजइ ॥ १३४ ॥ जे भिक्खू अप्पणो पाए फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा साइजइ ॥ १३५॥ जे भिक्खू अप्पणी काय भामजेज वा पमजेज वा आमजत वा पमजंत वा साइजाइ ॥ १३६ ॥ जे भिक्ख् अप्पणी काय सवाहेज वा पित्रमेहर्ज वा सवाहेत वा पिलमेहित वा साइजाइ ॥ १३७ ॥ जे भिक्ख् अप्पणो काय तेह्रेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा मिलिंगेज वा मक्खेंत वा मिलिंगेत वा साइजइ ॥ १३८॥ जे भिक्ख् अप्पणो काय लोद्धेण वा क्क्रेण वा उल्लोलेज वा उव्वहेज वा उल्लोलेतं वा उन्बर्टेत वा साइजाइ ॥ १३९ ॥ जे भिक्ख अप्पणो काय सीओदग-वियहेण वा उसिणोदगवियहेण वा उच्छोलेज वा पधोवेज वा उच्छोलेंत वा पधोवेंत वा साइजाइ ॥ १४० ॥ जे मिक्ख अप्पणो काय फूमेज वा रएज वा फूर्मेंत वा रएंत वा साइजइ ॥ १४१ ॥ जे भिक्ख् अप्पणो कायंसि वर्ण आमजेज वा पमजेज वा आमजत वा पमजत वा साइजइ ॥ १४२ ॥ जे भिक्ख अप्पणो कायसि वण सवाहेज वा पिलमहेज वा सवाहेत वा पिलमहेत बा साइजाइ ॥ १४३ ॥ जे भिक्ख अप्पणो कायसि वर्ण तेहेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेतं वा भिलिंगेत वा साइजइ ॥ १४४ ॥ जे मिक्ख् अप्पणो कायसि वण लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लेलेज बा उन्बहेज वा उल्लोकेंत वा उन्बहेंतं वा साइजइ ॥ १४५ ॥ जे भिक्खू अप्पणी कायसि वण सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण वा उच्छोलेज वा पधोवेज वा उच्छोठेंत वा पघोवेंत वा साइजाइ ॥ १४६ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायसि वर्ण फुमेजा वा रएज वा फूर्मेत वा रएत वा साइजइ ॥ १४७ ॥ जे भिक्खू अपणो कायिस गंड वा पिटय वा अरह्य वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदेज वा विच्छिदेज वा अच्छिदत वा विच्छिदत वा साइजइ ॥ १४८ ॥ जे भिक्ख् अप्पणो कायसि गंड वा पिलयं वा अरइय वा असियं वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता पूर वा सोणिय वा णीहरेज चा विसोहेज वा णीहरेंत वा विसोहेंत वा साइजाइ ॥ १४९ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायिस गड वा पिलय वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अर्व्छिदिता विच्छिदिता (पू॰) णीहरिता विसोहेता सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण वा उच्छोळेज वा पधोवेज वा उच्छोलेंत वा पधोवेंतं वा साइजइ ॥ १५० ॥ जे भिक्ख् अप्पणो कायसि गड वा पलिय वा अरझ्य वा असिय वा **648** 

मगंदक वा कञ्चनदेनं तिनकोर्य सरवजाएनं अस्तिवित्ता विश्विविता पौद्दिता निसोहेता पर्वोहता अञ्चयदेणे जावेनचत्राएणं आस्मित्र वा विक्रिपेत्र वा आर्टिपे षा विसिनंदं वा साराज्यो ॥ १५१ ॥ से शिक्ष्य कप्पयो कार्यस्त र्राप्त वा पतिने <sup>बा</sup> अरहत वा अंसिर्य वा मर्गदर्भ वा अन्वयूरेण विक्कार्य सरवज्ञाण्य अधिकीण विच्छितिता बीवरिता विसेडिता प्रयोजता विकिंपिता तेक्रेज वा वरण वा ववनीर्य वा काव्यगित था सक्योज वा काव्यगित था सक्जेंत वा सक्षजह ॥ १५२ व वे मिनक संपन्ती कार्नेस गई था पछियं वा कारतर्थ वा संसिधं वा मर्गवर्ध वा अञ्चयरेणं तिक्केणं सत्यकार्णं करिक्किता विश्विता जीवरिता विसेरेश पर्वोदता निर्मिपिता सक्योता सञ्चारीय जुनम्बाएर्थ जुनम वा प्रज्ञेज वा पूर्वेर वा पवृदेंते वा सहस्रकार ॥ १५३ ॥ ये सिक्ब्य अप्पनी पासकिसितं वा <del>प्रकारिता</del> मा मंगुलीए निवेशिव २ जीहरह जीहरेतं वा शहजह ॥ १५४ ॥ जे निकल ज<sup>ानी</sup> बीहाओं नहरिब्रोको कम्पेज वा संदर्भज वा कमेंसे वा संदर्भ वा साहजह में 14% है के मिक्क अपनो श्रीहर्ष जंबरोमछं करपेज ना चंठकेज ना कर्जेतं ना चंठनेतं ना सहजह ॥ १५६ ॥ के निषम् अध्यक्षे श्रीहाई कम्मारोमाई क्रयेज वा स्टोज का कर्णेतं का चंठमेंतं का साहज्जह II १५७ B के मिक्ख अपनो धीहाई संप्रदेगाई कप्पेज वा संटबेज वा कपेंटी वा संटबेंटी वा साइजड 🛭 १५४ 🖟 जे मिनन जपनी बीहाई मानारीमाई कमीज वा चेठवेज वा फर्जेंट वा चेठवेंट वा सहजर 🛭 १५६ 🌣 थे मिनन्त् भप्पनी बीहर्ष जनसरोमाई बप्पेज ना संत्र्वेज ना कर्पोनं वा वंत्रवेतं ना साइमाइ ॥ १६ ॥ जे शिक्स बायाणी श्रीहाई कामरोसाई कमोज वा संदर्भज वा कर्णितं वा संठवेंत वा सक्त्रज्ञ ॥ १६१ ॥ क्षे मिरुषः अप्तयो दंत आसिज व पर्परीज ना भार्तवर्ध ना पनसर्थ ना साहजह ॥ १६२ ॥ जे भिनना जपनो हैं रीजोदगमिमदेश का उत्तिमोदगमिमदेश का उच्छोकेल का प्रवोदेश का उत्होंके मा पर्धोर्मेत वा साप्रकार ॥ १६३ ॥ जे निकर् क्रमानी वैश प्रमेण वा रस्म वा कुर्मेर्त वा रऐतं वा साइजाइ ॥ १६४ ॥ वे मिनवा अपनो उड्डे कामनेन वा प्राजेन वा शामनंते वा प्रानेते वा सहस्त्र ॥ १६० ॥ ने मिरुप् बणकी उद्वे स्वाहित का प्रतिमहित का सवाहेर्स का प्रतिमहेर्स वा सहात । १६६ म चे मिरुष्, **अ**प्पणी उद्वै तक्षेण वा वपून वा नवजीपूण वा सरक्षेत्र वा भिक्तिन वा मक्केंग्रे वा मिक्किंग्रे वा साहजह स १६७॥ ज भिरुष् अपनी रहे स्टेड्व

१ गंडाइऐपणे क्याद पानी अनुकार्य रोगनित्वाराहरोग सि पानिकाराण । अनेकारिक्ति । १ विद्यार ।

वा क्क्षेण वा उल्लेकेज वा उल्वेहेज वा उल्लेकेत वा उल्वेहेतं वा साइजइ ॥ १६८ ॥ जे भिक्ख अप्पणो उद्वे सीओदगवियडेण वा उत्छोलेज वा पधोवेज वा उच्छोठेंत वा पधोवेंत वा साइजइ ॥ १६९ ॥ जे भिक्ख् अप्पणो उद्वे फुमेज वा रएज वा फुमेंत वा रएत वा साइजइ ॥ १७० ॥ जे भिक्ख भपणो दीहाई उत्तरोहरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेंत वा साइजइ ॥ १७१ ॥ जे मिक्ख् अप्पणो दीहाइ अच्छिपत्ताइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेंत वा साइज़इ॥ १७२॥ जे भिक्ख् अप्पणो अच्छीणि आमजेज वा पसजेज वा आमजत वा पमजत वा साइजइ॥ १७३॥ जे भिक्ख अप्पणी अच्छीणि सवाहेज वा पलिमहेज वा सवाहेतं वा पलिमहेतं वा साइजइ ॥ १७४॥ जे सिक्ख् अप्पणो अच्छीणि तेह्रेण वा घएण वा णवणीएण वा सक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्केंत वा मिलिंगेंत वा साइजइ ॥ १७५ ॥ जे भिक्खू अप्पणी अच्छीणि लोडेण वा कहेण वा उल्लेखन वा उन्वहेन वा उल्लेखेत वा उन्वहेंत वा साइजाइ ॥ १७६ ॥ जे भिक्ख अप्पणो अच्छीणि सीओदगवियहेण वा उत्तिणोदग-वियहेण वा उच्छोलेज वा पघोवेज वा उच्छोलेंतं वा पघोर्वेत वा साइज्जइ ॥ १७७॥ जे भिक्ख अप्पणो अच्छीणि फुमेज वा रएज वा फुमेंत वा रएत वा साइजड ॥ १७८ ॥ जे मिक्ख् अप्पणो दीहाइ भुमगरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेंत वा साइजइ ॥ १७९ ॥ जे भिक्ख अप्पणी दीहाई पासरोमाई कप्पेज वा सठवेज वा कपेंत वा सठवेंन वा साइजाइ ॥ १८० ॥ जे मिक्ख अपणो दीहाइ केसरोमाई कप्पेज वा सठनेज वा कप्पेंत वा सठवेंत वा साइजइ ॥ १८१ ॥ जे भिक्ख अप्पणी कायाओं सेय वा जर्र वा पक वा मल वा णीहरेजा वा विसोहेजा वा णीहरेंत वा विसोहेंत वा साइजइ ॥ १८२ ॥ जे भिक्ख् मणणो सन्छिमल वा कण्णमल वा दतमल वा णहमल वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेत वा विसोहेत वा साइजइ ॥ १८३ ॥ जे भिक्ख् गामाणुगाम दूइजमाणे भप्पणो सीसदुवारिय करेड करेंत वा साइजाइ ॥ १८४॥ जे मिक्ख् सणकप्पा(सा)सओ वा उण्णकप्पासओ वा पोण्डकप्पासओ वा अमिलकप्पासओ वा वसीकरणसोत्तिय करेड करेंत वा साइजाइ ॥ १८५ ॥ जे भिक्ख् गिहसि वा गिह्मुहसि वा गिह्दुवारियंसि वा गिहपिड-दुवारियसि वा गिहेळुयसि वा गिहगणसि वा गिह्वचसि वा उचारं वा पासवण वा परिदुवेइ परिदुवेंत वा साइज्जइ॥ १८६॥ जे भिक्ख् महगगिहसि वा महगछारियसि वा महगयूमियसि वा महगासयसि वा महगळेणसि वा महगयहिलसि वा महगवत्रसि वा उचार वा पासवण वा परिद्ववेइ परिद्ववेंत वा साइजइ ॥ १८७ ॥ जे भिक्ख इंगास्ट्रवाईति वा बारदाईति वा गायदाईति वा त्यवाइति वा समदाईति वा स्वारं वा पासवर्णं वा परिद्वेषेड् परिद्ववेतं वा साइजङ् ॥ १८८ ॥ वे भितन्त् अभियनिवाध वा योकेक्टियास अमियनियास वा अधियाकाणीस वा परिमुखमानियास वा वर्गाः मुक्तमानिवास वा राषारं वा पामवर्णं वा परिद्ववेद परिद्ववेत वा साहजह 🛭 १८५ 🗷 के निक्य सेमापर्णस वा पंत्रीत वा प्रवर्गत वा सवार वा प्रसम्बं वा परिद्वर परिदुर्वेतं वा साइज्यर ॥ १९ ॥ के मित्रस् बंबरवर्वास वा बस्मोइवर्वास 🛎 करमात्मकार्वसि का सकारे का पासका का परिद्वीद परिद्वीते का साह्मका । १९१३ जे मिक्स डागवकति वा सागवकति वा मूम्मवर्णति वा कोर्स्स(वरी)मारिक्सीत वा द्मारक्वंसि वा औरक्कवंसि वा वसमामाक्वंसि वा सहसक्वंसि वा स्वार क पासनमं ना परिद्वनेह परिद्वनेतं ना साहकाह ॥ १९२ ॥ में मित्रम् इतन्तननंति व सामिकासि वा इसंमार्गित वा क्रमान्यनित वा सवार वा पासका वा परिडेनेर परिद्वनीतं वा सक्ताद ॥ १९३ ॥ के मिनक् असोगवर्णसे वा सतिकव्यवर्णसे वा र्यकावर्गीत वा क्यवर्गीत वा अन्ययोग वा शहक्तारेश वा क्रोबार प्रकार परमेक्प्स बी(बाओ)योवएस स्वारं वा पासवर्ग वा परिश्वोद परिश्वोरं वा सहस्यह n ९ ४ ॥ से मिक्स समार्थित का परपार्थित का विज्ञा का राज्ये का मिनाके का उच्ची-द्विज्ञनामे स्रुपम गद्दाय परपार्य कादत्ता वा स्वचार पास्त्रक्षे वा परिद्ववता स्वत्रमण् स्तिए एकेइ एकेंट्री वा सहस्वद् । त सेकमाने नावव्यः मासिय प्रशास्त्रकं उरवार्ष ॥ १९५ ॥ जिलीहऽञ्जयके तहमी बहेस्री समची 🏻 🛢 🗈

#### चठत्यो उन्नेसो

ये सिक्त एवं अतीनरेंद्र क्योरिटरें वा सहस्या । १९६ ॥ ये सिन्द्र एवं एसियर्थ क्योरिटरें क्या सहस्य । १९६ ॥ ये सिक्त क्यारिटरं क्योरिटरें क्या सहस्य । १९६ ॥ ये सिक्त व्यारिटरं क्योरिटरें वा सहस्य । १९६ ॥ ये सिक्त व्यारिटरं क्यारिटरं वा सिक्त क्यारिटरं क्यार

१ पसचेर ।

॥ २०७ ॥ जे भिक्ख् राय अत्थीकरेड् अत्यीकरेतं वा साइजङ ॥ २०८ ॥ जे भिक्ख रायारिक्सयं अत्यीकरेइ अत्यीकरेंत वा साइजइ ॥ २०९ ॥ जे भिक्ख णगरारिक्खयं अत्थीकरेड् अत्थीकरेंत वा साइज्जड् ॥ २१० ॥ जे मिक्ख् णिगमा-रिक्सय अत्थीकरेड अत्थीकरेत वा साइजइ ॥ २११ ॥ जे मिक्ख् देसारिक्सय अत्थीकरेइ अत्थीकरेंत वा साइजइ ॥ २१२ ॥ जे भिक्ख् सव्वारिक्खय अत्थीकरेइ भत्थीकरेंत वा साइजाइ ॥ २१३ ॥ जे भिक्ख् किंगाओ ओसहीओ आहारेड साहारेंत वा साइजइ ॥ २१४ ॥ जे भिक्ख आयरिएहिं अदिण्णं आहारेइ आहारेंत वा साइज्जइ ॥ २१५ ॥ जे भिक्ख् आयरियोवज्झाएहिं अविदिण्ण विगइ आहारेइ माहरित वा साइजाइ ॥ २१६ ॥ जे मिक्ख् ठवणाकुलाइ अजाणिय अपुच्छिय सग-वेसिय पुन्वामेव पिंडवायपिंडयाए अणुप्पविसङ् अणुप्पविसतं वा साङ्जङ् ॥ २१७ ॥ जे भिक्ख् णिरगधीण उवस्सयंसि अविहीए अणुप्पविसइ अणुप्पविसतं वा साइजइ ॥ २१८ ॥ जे भिक्ख जिम्मयीण आगमणपहंसि दहम वा स्यहरणं वा मुहपोत्तिय वा अण्णयरं वा उवगरणजाय ठवेइ ठवेंतं वा साइजाइ ॥ २१९ ॥ जे भिक्ख णवाइ अणुप्पण्णाइ अहिगरणाई उप्पाएड उप्पाएतं वा साइजाइ ॥ २२० ॥ जे भिक्ख पोराणाइ अहिगरणाइ खामिय विओसवियाइ पुणो उदीरेइ उदीरेंत वा साइजाइ ॥ २२१ ॥ जे भिक्ख मुह विष्फालिय हसइ हसत वा साइजाइ ॥ २२२ ॥ जे भिक्ख पासत्यस्स सघाडय देइ देंत वा साइजाइ ॥ २२३ ॥ जे भिक्ख पास-त्यस्स सघाडय पडिच्छइ पडिच्छत वा साइजइ ॥ २२४ ॥ जे भिक्खू ओसण्णस्स सघाडय देह देत वा साइजइ ॥ २२५ ॥ जे भिक्ख् ओसण्णस्स सघाडय पहिच्छड पिंडच्छंत वा साइजाइ ॥ २२६ ॥ जे भिक्ख् कुसीलस्स संघाहय देइ देंत वा साइज्जइ ॥ २२७ ॥ जे भिक्ख् कुसीलस्स सघाडय पिडच्छइ पिडच्छंत वा साइज्जइ ॥ २२८ ॥ जे भिक्ख नितियस्स संघाडय देइ दैंतं वा साइजाइ ॥ २२९ ॥ जे भिक्ख् नितियस्स सघाडय पिटच्छर पिंडच्छत वा साहजाई ॥ २३० ॥ जे भिक्ख संसत्तस्स संघाड्य देइ देंत वा साङ्जइ ॥ २३१ ॥ जे भिक्खू संसत्तस्स संघाड्य पहिच्छर् पहिच्छंतं वा साइजङ् ॥ २३२ ॥ जे भिक्ख् उदओहेण वा सिरिणिद्धेण वा हत्थेण वा दन्वीए वा भायणेण वा असण वा ४ पहिन्नाहेड पहिन्नाहेतं वा साइजइ ॥ २३३ ॥ जे भिक्खू ससरक्खेण वा महियाससहेण वा ऊसाससहेण वा लोणियससहेण वा हरियालसंसहेण वा मणोसिलससहेण वा लोदससहेण वा गेर्य-ससहेण वा सेंद्रियससहेण वा हिंगुलससहेण वा अजणससहेण वा कुक्सससहेण वा पिहससहेण वा कतनससहेण वा कदम्लससहेण वा सिंगवेरससहेण वा पुष्फससहेण वा उड्डइसंमद्वेण वा अर्रसहंज वा इत्येज वा वस्त्रीए वा भारतेच वा असर्प ग ४ परिमादिर परिम्मादेवं वा सहस्वर ॥ २३४ ॥ से मिक्स मामारक्तिर वर्षः

< t .

करंद्र वादीकरेते वा साहमह ॥ २३५ ॥ जे निकृत् गुमारनियन अवीकरेर भाषी हरेते वा साहज्यह ॥ १३६ ॥ ज शिक्त गासारविदार्व अत्योद्धरेड जल्बीहरेते का साहज्जह ह २३७ ॥ के मिनस् सीमारनियर्व असीकरेड असीकरेंते क सहज्ञह ॥ २३८ ॥ जे भिरुषा सीमारन्तियाँ भवीक्रोड अवीक्रीतं वा सहज्ञ N २३९ ए ज निरम्प सीमारनियंगे अल्पीकरेड अल्पीकरेंस वा सहस्य ध २४ 🛚 से सिक्त रण्णारम्यमं अतीकरेड सतीकरेतं वा सहस्रह ॥ २४९ 🕏 के मिनन, एन्यार्सियार्थ अचीकरेड अचीकरेत वा शतकाइ ॥ २४२ ॥ वे निस्त रम्पारिक्यनं अल्बीचरेड् अल्बीकरेंस् वा सत्त्रका ४२४३ । वे नितन भगमण्यस्य पाए भागजेज वा पमजेज वा भागजेर्ड वा पमजेर्ड वा धारण्य II ९४४ ॥ जे निक्त्य अव्यासव्यासा पाए संबाहेज वा परिनाहेज वा संबाहेर्त <sup>वा</sup> पक्रिमाँदेवं का साहजाह ॥ २४% ॥ जो मितन्त् अव्ययन्त्रस्य पाए होहेक का कर्त वा पनविएन वा अक्केज वा अविनेज वा अक्टोर्स वा अस्मिर्गेर वा धार<sup>क्ट</sup> प्र २४६ ॥ वं मिनन् कल्पस्कास्य पाए क्षेत्रेच वा क्ष्रेच वा समेकेन वा डम्मोटेन वा उनेकर्त का उन्होंर्त का साहजह 🏿 २४७ 🗈 वे शिक्स कन्पस्<sup>कारत</sup>

पाए सीओइगमेसकेम का उत्तिमोदगमियकेस का उच्छो<del>के</del>म ना प्रवीएम की डच्छोरुदं वा प्रधोर्पतं वा साहज्ज्द् ॥ २४८ ॥ के सिन्ख् जन्मसन्<del>वर</del>स पार भूमेज वा रएज वा फूमर्टवा रहेट वा सक्तक ॥ २४% ॥ जे मिन्स वर्ण सन्तरस कार्य जासजेज वा पराजेज वा कासजेर्द वा पराजेर्द वा सहजड़ में <sup>२५ वे</sup> जे सिम्ब्यू सम्बम्धमारत कार्य चंत्राहेळ वा पविभवेळ वा चंत्राहेर्द वा परिवर्ते व साइमाइ ॥ २५१ ॥ में मिन्यू अन्यतंत्रमस्य कार्य रोजेग वा क्यम मा <del>व्यवस्त</del> बा सन्दोन वा मिलिनेज वा सक्दोंचें वा निर्मिनेचें वा सम्बन्ध । १५१ है बे मिन्स् भव्यमञ्जलसं वार्वं क्षेत्रेण वा क्षेत्रेण वा उन्नोक्षेत्र वा समीत वा स्मीत भा उम्पर्टेर्त मा सहस्रकः ॥ १५३ ॥ मे मिनम् बज्जमणस्स वर्म सैम्प्रेममेनदेव वा उतिनोदगमिवदेण वा उच्छोकम वा पपोएम वा उच्छोक्त वा पदोएँ <sup>वा</sup> साइन्छ ॥ २५४ ॥ वे निरुष् अन्नग्रन्तस्य कार्व पुरोज वा रएज वा पूर्वेतं वा रऐर्स वा साहजह ॥ १५५ ॥ वे निकल् अञ्चानजस्य कार्वसि वर्ष बामजेज वा पराजेज वा भाराजेरी वा पराजेरी वा शाहज्यह ॥ १५६ व के रिक्ट्य बाजगण्यस्य कार्यस्य कर्य चेत्राहेज था पतिभहेज था सवाहेर्य वा पत्रिमहित वा सहजार ह १५० D

जे भिक्ख अण्णमण्णस्स कायसि वंगं तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंत वा भिलिंगेंत वा साइजइ ॥ २५८ ॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्स कायसि वण लोद्धेण वा कक्क्षेण वा उल्लोलेज वा उन्वहेज वा उल्लोलेंत वा उन्वहेंत वा साइजाइ ॥ २५९ ॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्स कायसि वण सीओदगवियडेण वा उत्तिणोदगवियहेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेंतं वा पधोएतं वा साइ-जाइ ॥ २६० ॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्स कायसि वर्ण फूमेज वा रएज वा फूमेंतं वा रएत वा साइजाइ ॥ २६१ ॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्स कायसि गंड वा पिलग वा धरइय वा असिय वा भगदल वा भण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएणं अच्छिदेज वा विच्छिदेज वा अचिछरैंत वा विच्छिदैंतं वा साइजाइ ॥ २६२ ॥ जे मिक्ख अण्णमण्णस्स कायसि गढ वा पिलय वा अरइय वा असियं वा मगदल वा अण्ण-यरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता पूर वा सोणिय वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंत वा विसोहेंत वा साइजइ ॥ २६३ ॥ जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायिस गड वा पिल्यं वा अर्ड्य वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता णीहरिता विसोहिता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगिवयहेण वा उच्छोळेज वा पधोएज वा उच्छोळेत वा पधोएतं वा साइज्जइ ॥ २६४ ॥ जे मिक्खु अण्णमण्णस्स कायसि गड वा पिलयं वा अरइयं वा असिय वा भगंदल वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता णीहरिता विसोहेता उच्छोलेता प्योएता अण्णयरेण आलेवणजाएण आलिपेज वा विलिपेज वा आर्लिपेत वा विलिपेत वा साङ्जइ ॥ २६५ ॥ जे भिक्खु अण्णसण्णस्स कायिस गंड वा पिलम वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णग्ररेणं तिक्खेण सत्य-जाएण अच्छिदिता विाच्छिंदिता णीहरिता विसोहेता उच्छोलेता पघोएता आलिंपिता विलिंपिता तेहेण वा घएण वा णवणीएण वा अञ्भगेज वा भक्खेज वा अञ्भगेत वा मक्खेंत वा साइजइ ॥ २६६ ॥ जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायसि गड वा पिलग वा अरइयं वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता णीहरिता विसोहेता उच्छोलेता पघोएता आर्लिपिता विलिपिता अञ्भगेता मक्खेता अण्णयरेण जूनणजाएण धृवेज वा पजूवेज वा धृवत वा पध्वत वा साङ्जङ् ॥ २६७ ॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्स पालुकिमिय वा **इच्छिकिमिय वा अगुलीए णिवेसिय २ णीहरइ णीहरत वा माइज्जर् ॥ २६८ ॥** ने भिक्ख् अण्णमण्णस्स दीहाओ णहतिहाओ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेंत वा सठवेत वा साइजाइ॥ २६९ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्स दीहाइ जघ- वे मित्र**म्** सम्परमणस्य शीहतं करधारीमतं ग्रम्पेश वा संस्थेत वा स्पेर्ट

417

ना संटर्नेतं ना साहज्ज्ञः ॥ २७१ ॥ ये शिक्षः अण्यमन्त्रस्य रीहार्व मंद्रसेपर्व क्रमेज वा संदर्भज वा कर्णेतं वा संदर्भेतं वा साम्रज्जा ॥ २०२ ॥ जे स्मिन् क्रण्यमञ्जनस्य बीवृद्धं भासारीमहं कप्पेज वा बंदविज वा क्रमेंट वा स्केने वा साहज्यह n २७३ n के निक्य, कण्णमण्यस्य श्रीवृत्तं अवस्रोताहं क्ष्में वा चंडवेज वा कर्णेंगे वा चंडमेंर्ड वा साहमह ॥ २०४-९ ॥ से निर्मं अन्यमञ्जल श्रीवृत्तं कन्नरोमाई क्योज वा चंडवेल वा कर्येतं वा संट<sup>ब्रेसं व</sup> साइमार ॥ २७४-२ ध से मिक्स अन्यमञ्जल रहे आईसेम वा वर्षीन ना आर्थसर्व वा पर्यसेतं वा साहजाइ ॥ २७७ ॥ के मि<del>वन्द</del> क्राज्यसम्बद्ध <sup>वृद्</sup>दे उच्छोकेण का पक्षोप्ता का उच्छोडेंद्रं का पक्षोप्तं का साहजाह ॥ १४६ व वे मिक्त अञ्चासम्बद्ध पेठे फुमेज वा रएज वा फुमेर्ट वा रएंट वा सह<sup>35</sup> n २५७ n से जिस्स् अन्यमन्त्रस्य रहे सामजेस वा पमकेस वा सामजेर का पारजेरी वा साहज्वह ॥ २७८ ॥ ज निक्क् कान्यमण्यास्य उद्वे संबद्धि <sup>स</sup> परिमोदन वा संवादेश वा पविमोदेश वा साहमाह ।। २७९ ॥ वे निवय अन्य

मज्जरस उद्वे देक्केण वा वर्षण वा शवणीर्षण वा सक्केज वा मि<sup>द्रमिज क</sup> मनचेंद्र वा मिल्लियं वा साइन्छ ॥ १८ ॥ वे मिल्ला अञ्चलसम्बद्ध हो कादेल वा करेज वा उल्लेक्स वा उल्लेक्स वा उक्सेंट वा उल्लेक्ट वा उल्लेक्ट वा स्टब्स ॥ चे मिन्न जन्ममञ्जल वहे सीक्षोर्गनिवदेण वा उतियोग्गिवदेव मा उच्छोकेन था प्रयोगेन वा उच्छाउँत मा प्रयोगेत वा शास्त्रम् ॥ १४९ व के मिक्न् कम्लमणस्य उद्वे प्रमेज वा रएज वा प्रमेर्व वा रहेर्त वा स्ट्रेस u १८१ u के मित्रक कलनल्यस्स चीहाई उत्तरोहरोमहं क्येस वा संत्रेत व करीते वा संस्कृतं वा साहका ॥ १८४ ॥ वे शिक्स अव्यवस्थास सैका विके पतार्म क्रमेल वा संस्थेल वा क्रमेर्स वा संस्थेत वा सहस्य ह रहत है जे मिन्नच् अन्वसन्त्रास्य अन्तरीयि शामनेश वा पमजेज वा शामनी वा प्राणी वा साहमाह ॥ २८६ ॥ वे मिनस् भाज्यसम्बर्धाः अध्यक्ति संबद्धिः वा समि मोज वा सवाहें वा पतिनहें वा साइजह ॥ २८७ ॥ से नित्य क्रमानात भराकी जिल्ला का करूप वा कवणीएक वा सकती का मिसिंगास वा सकती ना मिलिनेंदें वा साइमाइ ॥ १८८ ॥ में सिवन् अन्यस्थ्यस्य अवसीय स्टेड वा नद्देश था उन्नोकेन वा उन्नोहेल था सन्नोक्ष्य वा उन्नोही वा तारमह

करयानी सै पण करे नहीं। वेबाधिवेयमी ग्रक्ति सबी है पस करे नहीं ॥ ४ ह हवे सुदुं व्यवज्ञार कहे है।। मिबदूर देव चित्र वेवना धाप १ नरदेव बचि मक्ते जाय ४२॥ धर्मरेव बची बैमानिक तथा मोखमां आय ॥ है।। वेबाधिवेय तो ग्रीक्त जाय ॥ ॥।। याव देव बची से पृथ्वी पांची बक्षस्पति बहुरसी

में गर्मज मञ्जूष्य तिर्पेषमां जाय ॥ ६ ॥ इचे सातम् संविद्वय ते स्पुं ते देवमा देवपणे रहे तो केठलो काम रहे ते । अनिय प्रस्प देवनी संखिठका जयन संतन तत्त है प्रत्योपमनी । 👯 मरदैवनी जञ्च छात से वर्ष भी उत्र क्य बाला पूर्वेनी ॥२॥ धर्म देवनी जवा १ समयनी अन् देशे दयी पूर्व कोडीनी ॥३॥ वेबाधिवेवमी जग्न० बहुतेर वर्षमी वत् ० दंश झाझ पूर्वमी ध भाव देवनी अभ० वरा हजार वर्षनी बव्छ ३३ सागरीय मनी १३७॥ हने बाउमुं बन्तरहार कहे है। मबिय प्रमा देवह बांतर पढ़े तो जमन वस हजार वर्ष में अन्तर सुक्रत मधिक । उत् कामन्ता कालते वांतद पढ़े १ भरदेवत जमन १ सागर मांभरो उत्॰ भर्त प्राक्ष परावर्षन देशे उद्ये २ भर्म देवतं अभ र पश्य सांभेद उत् धार्य प्रमुख परावर्तन देशे बस्य व देवासिवेवर्त कांतर्थ नवी ॥४॥ भाववेवर्त जन्न कर्त उत् अनन्ता कार्यन्तं ॥ ५% वृत्ते मन्त्रं अस्य बद्धत्व द्वार करे 🛊 ॥ सबैधी थोड़ा नरवेव १ तेहबी वेबाधिवेय संस्थातगुषा २ शेहकी कर्मदेन संस्थातगुवा १ शेहकी समिप हरपदेन भ्रासंक्यातगरा ७ तेरभी आवर्षेत्र भ्रासंक्यातगरा ॥ ४ ॥ ३ व

इति यांच वेयमा मोल सम्यूचेंग ॥ शर्म सक्त ॥

॥ २८९ ॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्स अच्छीणि सीओदगवियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज वा पघोएज वा उच्छोलेंत वा पघोएंतं वा साइजइ ॥ २९०॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्स अच्छीणि फूमेज वा रएज वा फूमेंत वा रएत वा साइजाइ ॥ २९१ ॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्स दीहाइ भुमगरोमाई कप्पेज वा सठवेजा वा कप्पेंत वा सठवेंत वा साइजाइ ॥ २९२ ॥ जे भिक्खू अण्णमण्णस्स वीहाइ पासरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेंत वा सठवेंत वा साइजइ ॥ २९३-१॥

केसरोमाइ ॥ २९३-२॥ जे भिक्खू अण्णमण्णस्स अच्छिमलं वा कण्णमल वा दतमल वा णहमलं वा णीहरेजा वा विसोहेजा वा णीहरेंत वा विसोहेंत वा साइजाइ ॥२९४॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्स कायाओ सेय वा जल्ल वा पंक वा मलं वा णीहरेजा वा विसोहेज वा णीहरेंतं वा विसोहेंत वा साइज्जइ ॥ २९५ ॥ जे भिक्खू गामाणुगा-[मिय]म दृह्ज्ज्जमाणे अण्णमण्णस्स सीसदुवारिय करेइ करेंतं वा साइज्जङ ॥ २९६ ॥ जे भिक्ख् साणुप्पए उचारपासवणभूमिं साणुप्पए ण पडिलेह्इ ण पडिलेहत वा साइजाइ ॥ २९७॥ जे भिक्ख्तमा उचारपासवणभूमीभी ण पडिलेहेड् ण पडिलेहत वा साइजड ॥२९८॥ जे भिक्ख् खुर्रागसि थडिलसि उच्चारपासवण परिद्ववेइ परिद्ववेंत वा साइजाइ ॥ २९९॥ जे भिक्ख् उन्बारपासवण अविहीए परिद्ववेइ परिद्ववेंत वा साङ्बाइ ॥ ३००॥ जे भिक्ख उचारपासवण परिद्ववेता ण पुछइ ण पुंछत वा साइजाइ ॥ ३०१ ॥ जे भिक्खू उचारपासवण परिटुवेत्ता कट्टेण वा किलिंचेण वा अगुलियाए वा सलागाए वा पुंछड् पुछत वा साइज्जइ ॥ ३०२ ॥ जे भिक्ख् उन्नारपासवण परिद्ववेता णायमइ णायमत वा साइजाइ ॥ ३०३ ॥ जे मिक्खू उन्वारपासवण परिद्ववेत्ता तत्थेव आयमइ आय-मत वा साइजइ ॥ ३०४ ॥ जे मिक्ख् उचारपासवण परिद्ववेत्ता दूरे आयमइ आय-मत वा साइज्बइ ॥ ३०५ ॥ जे भिक्ख् उन्बारपासवण परिद्ववेत्ता णावापूराण आय-मइ आयमत वा साइजाइ ॥ ३०६ ॥ जे भिक्ख अपरिहारिएण परिहारियं वएजा-एहि अजो। तुम च अह च एगओ असण वा ४ पडिग्गाहेता तओ पच्छा पत्तेयं २ भोक्तामो वा पाहामो वा, जे तं एव वयइ वयत वा साइजाइ। त सेवमाणे आवज्जः मासिय् परिहारद्वाण उग्घाइयं ॥ ३०७ ॥ णिसीहऽज्झयणे चउत्थो उद्देसो समत्तो॥ ४॥

## पंचमो उद्देसो

जे भिक्ख् सचित्तरक्खमूलसि ठिचा आलोएज वा पलोएज वा आलोएत वा १ क्याइ एगट्टाणे केण वि कारणेण पारिद्वावणाऽवसरो ण होज तो दोच तच

ठाण उनओगी होउ ति तिण्णि ठाणाइ वृत्ताइ ति ।

पम्पेएंतं वा सद्बन्द् ॥ ३ 🗸 ॥ जे मिक्त् सनित्तरस्वामुसंक्षि टिवा ठार्न वा हेर्ज व निसीक्षित ना शुप्रहण ना चेएक चेएंतं ना सतकात ॥ ३ ९ ॥ वी जिल्ला सनितनन मुमंदि दिना असर्ग ना ४ आहारेस माहारेत ना साहम्बद्ध ३१ ध के सिन्द् सनिद रनजन्तर्गरी ठिया जवारपासवर्ण परिद्वतेश परिद्वतेर्य वा सावज्ञद ॥ ३९१ ॥ वे निवर संवित्तरुरसमूत्रंसि ठिवा सन्तार्थं करेद करेतं वा सक्त्यद् ॥ ३१२ ॥ वे लिप धिकतरुष्टम्के ठिवा सञ्चार्य रहिसद उदिसँतं वा साद्याह ॥ १११ ॥ से मिन्स सनितरनकर्के ठिका सञ्चार्य समुद्दिस्य समुद्दिस्यं वा साहभार ॥ ३९४ ॥ वे सिक्क् समितककार्युक्ति ठिया सञ्ज्ञामं अशुकामह अशुकार्यते वा सम्बद् JI ३९५ II के निरुक् सक्तिसनकम्बंधि ठिवा सञ्चानं नाध्य नार्धतं ना सम्बद्ध II ३९६ II के निकब् धनितारमकमूर्वति दिना सन्द्रार्थ परिवर्त परिवर्त ग साइबद् ॥ १९७ ॥ वे निषम् एक्तिएक्यमूमीछ ठिका सकार्य परिवाहर परिवाहर मा साहन्तर ॥ १९८ ॥ से मिनक् अपन्यो संवानि मञ्चलत्विएन वा नारि<sup>कार्त</sup> ना सागारिएन ना सिम्नानेह सिम्नानेर्ड ना सहस्का त १९८ त जे मिन्स नामने संबाधिए ग्रीइप्रताहं करेड़ करेंद्र वा साहन्य ॥ १२ ॥ जे सिनन् पिउमेश्यास्त्रे मा पडोलपकासर्य या विकासासर्थ या सीकोदमस्यकेण वा उतिकोदक्षितके<sup>न स</sup>ी र्चेकानिक २ भाषारेह आहारेंग्रे वा साहजह ॥ १२१ ॥ वे सिक्ब पविहारि पार्व्यक्रं कार्या तमेव रवर्षि क्वप्पिकिस्सामिति प्रुप् क्वप्पिक्ट क्वप्रिकर्त <sup>वा</sup> शहरूह ॥ १९२॥ जे मिन्स् पाविदारिनं पायपुंत्रपं वाहता छए प्रविमित्तसामिति यमेन रमणि प्रवामित्रङ् प्रवामित्रर्थं वा साहन्त्रह् ॥ ३२३ ॥ जै सिन्द्र् सागारि चेतियं पायपुंक्रणं काहता तभेव १यवि पचणिमित्सामिति हुए पचणिन्दर स्विपि मेर्त वा साइव्यक् ॥ १२४ ॥ के मिनना, सागारिकसरियं पानपुंडमं बाहणा हुए प्रवासिम्हिस्सामिति समंब स्वासि प्रवासिमाइ प्रवासिनते वा सक्ष्मद्र ॥ ३२५ ई वे भिक्स, पाकिशारिन वंजर्व वा अन्त्येश्वरित वा नेक्स्पर्ध वा बाहता समेव रक्ष मक्यिमिस्सामिति छुप् प्रकथिनम् प्रकथिपर्यतं वा साहन्यतः ॥ ३२६ ॥ वे मिन् पाविद्यारियं देवनं वा अवनेक्नियं वा नैसस्प्रहं वा बाहता छए एकप्रिनिस्सामिटि दोनेव रजनि क्वप्लिक्ट् क्वप्लिक्तं का सहस्वदं ॥ १२७ ॥ जै तिक्व धाराहर सतिनं र्वदर्व का सक्केब्रियम् वा केस्युर्ह ना जावता तसक रामिक्स प्रतिनं र्वदर्व का सक्केब्रियम् वा केस्युर्व ना जावता तसक रसि प्रविधित्तरस्थित द्याप् पत्रपिपन्तः पत्रपिपर्यते वा सहस्वस् ॥ २९८॥ के तिलक्षः हासारितर्यक्षि प्रेंडचे वा क्लफेडिकिंग वा सहस्वस् ॥ २९८॥ के तिलक्षः हासारितर्यक्षि प्रेडचे वा क्लफेडिकिंग वा बिक्कस्याः वा बाहता छपः पत्रपिकिस्सामिति तत्र (वर्ति

448

पचिपणइ पचिपणतं वा साइजइ ॥ ३२९ ॥ जे भिक्खू पाहिहारियं वा सागा-रियसतियं वा सेजासथारय पचिपणिता दोचिप अणणुण्णविय अहिट्ठेंद अहिट्ठेंत वा साइजइ ॥ ३३० ॥ जे भिक्ख सणकप्पासओ वा उण्णकप्पासओ वा पोण्डकप्पासओ वा अमिलकप्पासओ वा दीहसुत्ताइ करेड़ करेंत वा साइजड़ ॥ ३३१ ॥ जे भिक्खू सचिताइ दारुदडाणि वा वेलुदडाणि वा वेत्तदडाणि वा करेइ करेंत वा साइजड ॥ ३३२ ॥ जे भिक्खू सचिताई दारुदडाणि वा चेळुदंडाणि वा वेत्तदडाणि वा धरेइ घरेंत वा साइजइ ॥ ३३३ ॥ जे भिक्खू चित्ताइ दारुदडाणि वा वेलुदडाणि वा वैत्तदंडाणि वा करेइ करेंत वा साइजइ ॥ ३३४ ॥ जे भिक्ख् चित्ताई दारुदंडाणि चा वेलुदंडाणि वा वेत्तदंडाणि वा धरेड धरेंत वा साइजाइ ॥ ३३५ ॥ जे भिक्खू विचित्ताइ दारुदहाणि वा वेलुदहाणि वा वेत्तदंडाणि वा करेइ करेंत वा साइजइ ॥ ३३६ ॥ जे भिक्ख् विचित्ताई दारुदडाणि वा वेलुदडाणि वा वेत्तदंडाणि वा घरेइ घरेंत वा साइजइ ॥ ३३७॥ जे मिक्ख् सचिताइ दारुदडाणि वा वेळुदडाणि चा वेतदढाणि वा परिभुजइ परिभुजतं वा साइजइ ॥ ३३८ ॥ जे भिक्ख् चित्ताइ दारुद्डाणि वा वेलुद्डाणि वा वेत्तदंडाणि वा परिभुजड परिभुजत वा साइजइ ॥ ३३९॥ जे मिनख विचिताई दारुदहाणि वा वेलुदंहाणि वा वेत्तदहाणि वा परिभुजइ परिभुजत वा साइजइ ॥ ३४० ॥ जे भिक्ख् णवगणिवेसिस वा गामिस वा जाव सिष्णवेसिस वा अणुप्पविसित्ता असण वा ४ पिडिग्गाहेड पिडिग्गाहेंत वा साइजाइ ॥ ३४९ ॥ जे मिक्ख णवगणिवेससि वा अयागर्सि वा तबागर्सि वा तज्यागरिस वा सीसागरिस वा हिरण्णागरेसि वा ध्रवण्णागरिस वा (रयणागरिस वा) वइरागरंसि वा अणुप्पविसित्ता असण वा ४ पडिग्गाहेड पडिग्गाहेंत वा साइजाइ ॥ ३४२ ॥ जे भिक्ख मुहवीणिय करेइ करेंत वा साइजइ ॥ ३४३ ॥ जे भिक्ख दतवीणिय करेइ करेंतें वा साइजाइ ॥ ३४४ ॥ जे भिक्खू उद्ववीणिय करेइ करेंतें वा साइजइ ॥ २४५ ॥ जे भिक्खू णासावीणिय करेड करेंत वा साइजड ॥ २४६॥ जे भिक्खू क्क्लबीणिय करेइ करेंतं वा साइजइ ॥ ३४७ ॥ जे भिक्खू हत्य-वीणिय करेइ करेंत वा साइजाइ ॥ ३४८ ॥ जे भिक्खू णहवीणिय करेइ करेंतं वा साङजङ ॥ ३४९ ॥ जे भिक्ख् पत्तवीणिय करेड् करेंत वा साङ्जङ ॥ ३५० ॥ जे भिक्ख पुष्फवीणिय करेड़ करेंत वा साइज्जइ ॥ ३५१॥ जे भिक्ख फल-वीणिय करेइ करेंत वा साइजाड ॥ ३५२ ॥ जे भिक्ख वीयवीणिय करेइ करेंत वा साइजड ॥ ३५३ ॥ जे भिक्ख् हरियवीणिय करेड करेंत वा साइजड ॥ ३५४ ॥ से भिक्ख् मुह्वीणिय वाएइ वाएत वा साइज्जइ ॥ ३५५ ॥ जे ५५ सप्ता॰

सीइजइ ॥ ३५८ ॥ वा निक्का क्रमसावीकिन बाएड वाएर्स वा साइजड ॥ ३ ६ ह वे सिक्ब इत्यवीयियं वाएइ वाएँते वा सत्त्वका ॥ ३६ ॥ जे सिक्ब नहरीकि बाएइ बाएवं का शाहजाह ॥ ३६९ ॥ से शिक्ख परावीनिय वाएइ वार्स्ट क साइज्यह ॥ ३६५ ॥ भा निमृष्यु पुष्प्रतीनिय बाएह बाएँए वा साहज्यह ॥ ३६३ । ज मिस्ब् फल्मीनिय बाएर बाएँचे वा साम्ब्बन् ॥ ३६४ ॥ जे मिनब् बीनवीनिर्व बाएक बाएँसे वा साहजाह ॥ ३६५ ॥ से शिक्य, हरियमीनियं बाएह बाएँस साइन्द्र (पुर कम्परराज्य वा त्यापागारानि वा मजुरिज्यातं समारं उरीरेद्र सर्परेतं वा सार्**जर) ॥ ३६६ ॥ अ निनक् जोतिनं सेजं क्**लुपनिस्द जनुपनिस्तं रा चार्म्म । १६७ ॥ के मिन्स् छपाष्ट्रविमं हेर्ज अञ्चपनिस्त अस्त्रपनिसंत वा सार्म्स II ३६८ II के मिनक शरीकार्य सेजं अनुप्रतिस्त अनुप्रतिस्त ता साहका ।। १९९ ॥ वे निकल् मरिन एंगोगमधिया किरिनधि पनश नर्मा वा सम्बद् u १७ u में निकल् कारुयपानं ना नारुपानं ना महिमापामं ना नकं निरंडर्न भारत्मिनं परिमिदिन परिष्टिनिय परिष्ठवेदं परिष्ठवेदं वा साहना ।। १४९ व न मिनन् बर्ल या पविमाहे वा वंत्रसं वा पायपुंक्त वा सर्क विरे क्ष वारमित्र पक्रिकिंद्य परिद्वतेद परिद्वतेतं वा साहज्ञह ॥ १७२ ॥ ये सिल्ब् हंडर्य वा जन्मे इचिमं वा बेहसाई वा पविजेषिय २ परिहतेत् परिहतेतं था साकका ॥ १७१ व वे मितन् महरेक्सार्क इन्हर्स्क बरेह घरेंठे वा छाह्नाह ॥ ३५४ ॥ व भिन्छ बहुमार्व रमदरमधीरातं करेर करेतं वा साहनार ॥ २७५ ॥ वे मिन्च रक्ररवान एकं वैषे देश देते का साहजार ॥ २७६ ॥ के मिश्रन्त रसहरणे अहसावदेशे वैधर बंधते वा साहकह ॥ १७० ॥ के मिलना एसहरचं समितिए वंपह वंतर ग साइजाइ ॥ १७८ ॥ वै जिक्चा रजहरूमें एगेग विभा बंधह वेजीते वा छाइजाई ॥ ३७९ ॥ में निक्ष्य रसहरकस्य परं तिर्ध वैधानं देह देते या सहस्य ॥३८ ॥ जे समन्त् रयहरणं समिसाई घरेड् वरेंसं वा साहजाइ ॥ ३८५ ॥ ज सिनम् रवहरणं बोछई घरेड घरेंत वा साहत्व्य ॥ ३८२ ॥ के शिक्ष स्वदर्ण अभिकार र भविदेश कविदेशें का साहज्यरं ॥ २८३ ॥ के शितृत्व स्वाहर्ण अरहीवाहुके असेर ठनते वा साहज्जद ॥ ३०४ ॥ के शिक्त्य रमहरणे द्वनोहर हुयहूँने वा सहज्ज्द । र्त संबमाने भावज्ञः माधियं परिद्वारद्वाणं धरनाइनं ॥ ३८५ ॥ मिसीइऽस्त्रयण पंचमो उदेसो समचो ॥ ५ ॥

# छट्टो उद्देसो

जे भिक्ख् माउरगाम मेहुणपिडयाए विण्णवेइ विण्णवेंत वा साइजाइ ॥ ३८६ ॥ जे भिक्ख् माजग्गामस्स मेहुणपिडयाए हत्थकम्म करेइ करेंते वा साइजाइ॥३८७॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणपिडयाए अगादाण कट्टेण वा किलिंचेण वा अगुलि-याए वा सलागाए वा सचालेइ सचालेंत वा साइजइ ॥ ३८८ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणपिडयाए अगादाण सनाहेज ना पिलमहेज ना सनाहेतं ना पलिमहेंत वा साइज्जइ ॥ ३८९ ॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अगादाणं तेहेण वा घएण वा णवणीएण वा अञ्मगेज वा मक्खेज वा अञ्मगेत वा मक्खेंतं वा साङ्जङ् ॥ ३९० ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविदयाए अगादाण कक्केण वा लोदेण वा परमचुण्णेण वा ण्हाणेण वा सिणाणेण वा चुण्णेहिं वा वण्णेहिं वा उच्चेट्टेंड वा परिचेट्टेंड वा उच्चेट्टेंत वा परिचेटेंत वा साइजड़ ॥ ३९१ ॥ जे मिन्स्बू माउग्गामस्स मेहुणविदयाए अगादाण सीओदगवियदेण वा उसिणोदगवियदेण वा उच्छोलेज वा पंघोएज वा उच्छोलेंतं वा पंघोएत वा साइजइ ॥ ३९२ ॥ जे भिक्ख् मारम्मामस्स मेहुणविडयाए अगादाण णिच्छिहेड णिच्छिहेत वा साइजइ॥ ३९३॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहणविडयाए अगादाण जिग्घइ जिग्घत वा साइज्जइ ॥ ३९४ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अगादाण अण्णयरंसि अचित्तसि सोयसि अणुपवेसेता सुक्कपोग्गले णिग्घायइ णिग्घायत वा साइजाइ ॥ ३९५ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामं मेहुणविदयाए (अवाउिंड) सय कुजा सय वूया करेंत वा (वूएतं वा) साइज्जइ ॥ ३९६ ॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए कलह कुजा कलहं व्या कलहवडियाए गच्छह गच्छत वा साइज्जइ ॥ ३९७॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहुणवंडियाए लेह लिह्द लेह लिहावेद लेहवडियाए वा गच्छद गच्छतं वा साइजाइ ॥ ३९८ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए पिद्वंत वा सोयं(त) वा पोसत वा भ(हि) ह्रायएण उप्पाएइ उप्पाएत वा साइजइ ॥ ३९९ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणनिहयाए पिट्टत वा सोय वा पोसतं वा मल्लायएण उप्पाएता सीओदगिवयहेण वा उत्तिणोदगवियहेण वा उच्छोळेज वा पधोएज वा उच्छोळेंत वा पधोएतं वा साइजइ ॥ ४००॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए पिट्ठत वा सोय वा पोसत वा उच्छोलेता पघोएता अण्णयरेण आलेवणजाएण आलिंपेज वा विलिंपेज वा वालिपेंत वा विलिपेंत वा साइजाइ ॥ ४०१ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुण-विहियाए पिद्वत वा सोर्य वा पोसत वा उच्छोलेता पघोएता आर्लिपेता विर्लिपेता तेक्षेण वा घएण वा णवणीएण वा अञ्भगेज वा मक्खेज वा अञ्भगेत वा

मुख्यमे 414 Facilities of मक्बेंते वा साहअह ॥ ४ ९ ॥ जे सिन्न्य, माठनगामस्स मेहूबबढियाए खिं मा सोर्ग ना पोस्तं ना र**क्सेक्**ता पर्याएता जाकियेता विसियेता सम्मेनेप मनचेता अञ्जयरेणं पूर्वणवाएणं धूषेज वा प्रधूषेज वा धूबेर्त वा प्रधूषे 🕏 साहजह ॥ ४ १ ॥ से मिनना माजस्यामस्य मेहुननहिमाप् वरिनाह वन्तर्म भरेद परेंते वा सत्वज्ञक् ॥ ४ ४ ॥ के मिक्स् माउक्गामस्स मेहपनविना महनाई बत्याई वरेड वरेंते का साहन्यह ॥ ४ ५ ॥ को मिन्नू माराग्यासर मेहुजबबिनाए घोनरताइ नत्वाई वरेड़ वरेंते ना साहजह ॥ v ६ a बे जिल्ह मावम्गामस्य मेहचवविद्याए चिताई वत्यहं चरेड वरेंतं वा सहज्रह ॥ ४ ० <sup>६</sup> चे भिन्न मारामामस्य मेहजबबियाए विविताहं बत्यहं बरेड बरेंतं हा सदस्य II ४ ८ II के मिनना मातस्यामस्य मेहननविज्ञाए अध्यक्षो पाए जामजेन <sup>स</sup> परकेन वा भागमंत्रं वा परमंत्रं वा सहस्रह ॥ ४ ९ ६ के निवन्ह नाउन्हें मरस मेहुक्वविचाए अप्पणी पाए संवाहेज वा पविमहेज वा संवाहेंंते वा 🕬 महेंच वा सारक्द ॥ ४९ ॥ के निरुष् मारुग्मामस्स मेहबबदिवार अपने पाए देकेण वा घएण वा नवजीएम वा सक्केज वा सिक्सिक वा सन्वेंद्र ए मिसिर्गेर्त वा सहज्जह ॥ ४९९ ॥ वे मिनन्द् माउम्मामस्य मेहचवविवाए नपाने पाए सोदेश वा वहेल वा उल्लेख वा उल्लेख वा स्क्रोबेर्ट वा उल्लेख साइन्बर् ॥ ४९९ ॥ वे मित्रस् माउम्पानस्य महस्वविवाए बप्नचे 📆 धीओदगमियदेण वा उत्तिणोदगमियदेव वा उच्छोतेमा वा प्रचोएमा वा उच्छोते वा पत्रोऐंद्र वा साहजह ॥ ४९३ ॥ वे मिन्स् माठमामस्य मे<u>ड</u>काहिगर् मप्पनी पाए फूमेळ वा रएज वा फूमेंसे वा रऐसे वा शहजह स ४१४ है निक्त, माउम्मामस्य मेहुकविद्याए अपयो द्वार सामक्रेज वा प्राक्रेज व भाममंद्रं वा पमर्मातं वा साहमा ॥ ४९% ॥ भे मिरम् मातमामस्य वेर्ड

साहबार ॥ ४९९ ॥ व निकल् माठायमास्य अहुम्बदिवाए ब्रायवे के विकेदगानियरेण वा ठियोपेदगानियरेण वा ठियोपेदगानियरेण वा उपहोंकेल वा प्योर्ट्स वा प्रवाद मंत्रिक सारकामास्य मेहुक्वितिया साम्यं प्रवाद प्रवाद माठायमास्य मेहुक्वितिया साम्यं प्रवाद प्रवाद वा प्रवाद वा

वा फ़ूमेतं वा रएंत वा साइजइ ॥ ४२० ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए क्षप्पणो कार्यसि वर्णं आमज्जेज वा पमजेज वा आमजंतं वा पमजत वा साइजाइ ॥ ४२१ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो कायसि वण सवाहेज वा पिलमेदेज वा सवाहेंत वा पिलमेंद्रत वा साइजाइ ॥ ४२२ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो कायिस वण तेहिण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंत वा भिलिंगेंत वा साइजइ ॥ ४२३ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो कार्यसि वर्ण लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लेखेज वा उन्बेहेज वा उल्लेखेत वा उन्बेहेतं वा साइजइ ॥ ४२४ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो कायसि वणं सीओदगवियडेण वा उसिणो-दगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेंत वा पधोएतं वा साइजइ ॥ ४२५ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो कायिस वण फूमेज वा रएज वा फूर्मेंत वा रएत वा साइजाइ ॥ ४२६ ॥ जे भिक्ख् माउगगामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो कायंसि गर्ड वा पिलगं वा अरइय वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदेज वा विच्छिदेज वा अच्छिदेतं वा विच्छिदेतं वा साइजाइ॥ ४२७॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए **अ**प्पणो कायिस गंड वा पिलग वा अरह्य वा असिय वा भगंदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता पूय वा सोणियं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंत वा विसोहेंतं वा साइजइ ॥ ४२८ ॥ जे भिक्ख माउग्गा-मस्स मेहुणविडियाए अप्पणो कायिस गड वा पिलगं वा अरह्य वा असियं वा भगदल वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएण अस्छिदिता विस्छिदिता णीहरित्ता विसोहेता सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण वा उच्छोळेज वा पधोएज वा उच्छोर्टेन वा पघोएत वा साइजइ ॥ ४२९ ॥ जे भिक्खु माउग्गा-मस्त मेहुणविडयाए अप्पणो कायिस गड वा पिलगं वा अरइय वा असियं वा भगं-दल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता णीहरित्ता विसोहेता पघोएता अण्णयरेण आलेवणजाएण आलिंपेज वा विलिंपेज वा आलिंपेंत वा विलिंपतं वा साइजाइ ॥ ४३० ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहणविडयाए अप्पणो कायित गढ वा पिलग वा अरइयं वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेणं तिक्खेण सत्यजाएण अर्च्छिदित्ता विच्छिदिता णीहरित्ता विसोहेता उच्छोलेता पधोएत्ता आलिंपेता विलिपेता तेष्टेण वा घएण वा णवणीएण वा अच्मगेज वा मक्खेज वा अन्भगेत वा मक्खेंत वा साइजइ ॥ ४३१ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुण- शुक्तागमे वापिक्षणं वा

विद्याए अप्यक्ते कार्नीत मेर्च वा पिक्रमें वा अरहमें वा असिव वा नार्नि अन्यवरेषे रिक्केणे संस्थानाएणे अस्त्रिवित्ता विश्विवित्ता वीहरिता विशेषे

400

केता पनोएवा बाळियेचा विकियेचा अधिययेचा अवस्थित अध्ययदेचे पूर्णी वृक्तेल वा प्रवृक्तेल वा पूर्वेर्त वा प्रपृति वा साहलाह ॥ ४३९ ॥ से नित्र स्थान मस्य महुमबहिनाए अप्पची पाउकिसमें वा इधिकक्रिमें वा अंगुकीए विदेश बीहरेड जीहरेंते वा साइजाइ ॥ ४३३ ॥ जे मिक्च माडग्गामस मेर्ड माए अपनो रीहाको नहरिहाको रूप्पेज वा संख्येत वा कुर्पेत वा संख्ये हैं साइका ॥ ४१४ ॥ वे मिनक् मानस्थामस्य मेहुमनविवाए कप्पणी **पैक** रोमाह कप्लेख वा चंडकिय वा कर्णित वा चंडकित वा सहस्रह प्र ४१% है मिन्न मार्जमामस्य मेशुभविताए अपन्यो अस्त्रारोवाई क्येज वा एंडरेंड हैं कर्णेतं वा संठवेतं वा साहबाह u ४३६ u थ मिन्न्य मास्तामस्स मेहनवरिर क्षप्तमो । संवरोसार्व कम्पेज वा चंडलेज वा कम्पेर्ट वा चंडलेंचे वा चाहजद ह ४३४। वे मित्रम् माठम्गामस्य मेबुजनविचाए अधनी आसारोमाई क्रम्पेज वा करें का कप्पेंग वा स्टबेंट का साइन्क ॥ ४३८ ॥ वे मिक्स, माउन्मामस्य सु बडिजाए अप्यामी ' पनक्रारामाई अप्येज वा चंडवेज वा क्पोर्ट वा चंडवेर्ट वा सा त ४३९-१ ॥ से मिक्स् मावस्थानस्य मेहुनवडिवाए कपानी कन्नरोमाई व<sup>र्णेन</sup> ना सठवेज ना कप्पेत था संठनेंत ना सत्त्रज्ञ । ४१९∼१ व ने मिरण मार्जने सस्स मेहुणविश्वाप अप्यक्ती वंत्रे आफ्सेन वा पर्वसेन वा आर्थर्स वा पर्वस वा साहजह µ ४४ । वे मितव मातम्मासस्य मेहकाडिनाए अपनी रें उच्छोकेम वा प्रयोगम वा उच्छोकेर्त वा प्रयोगेर्त वा साहमह ॥ ४४१ ॥ में मिर्स मालग्गामस्स मेहुववविवाए कपायो इति पूरोज वा रएज वा पूर्मिते हु। रहेर्न व साइमार् ॥ ४४१ ॥ मै मिक्स् मात्रमामसा सेह्रवक्तिवार अधनो । श प्राचेत्र का सामार्ज्य का प्राच्चे प्राच्च स ४४३ ॥ से

्य पविमा**रेज वा** थे

सकेण वा पर्यंच वा व्यवसीएय वा साइज्य ११ ४४% में बोरोज वा बडेण वा ११ ४४६ ११ वा मिक्स् वा उद्यानोहराविश्वक वा

मस्स संबुधविद्यात् अध्यक्षे संदे

बा साइजार ॥ ४४४ ॥ वी रि

साइजाइ ॥ ४४७ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो उट्टे फूमेज वा रएज वा फ़्मेंतं वा रएत वा साइज्जड ॥ ४४८ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुण-विहियाए अप्पणो दीहाई उत्तरोहरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेंत वा साइजइ॥ ४४९॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो दीहाइ अच्छि-पत्ताइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइजइ ॥ ४५० ॥ जे भिक्ख् मारुग्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो अच्छीणि आमजेज वा पमजेज वा आमजत वा पमजात वा साइजाइ ॥ ४५१ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो अच्छीणि सनाहेज वा पिलमहेज वा सवाहेत वा पिलमहेत वा माङ्जइ॥ ४५२॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो अच्छीणि तेल्लेण वा घएण वा णवणी-एण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंत वा भिलिंगेत वा साइजइ ॥ ४५३ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्य मेहुणविडयाए अप्पणो अच्छीणि लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोकेज वा उन्बहेज वा उन्नेहेंत वा साइजाइ ॥ ४५४॥ जे भिक्ख माउ-गामस्स् मेहुणबिडियाए अप्पणो अच्छीणि सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण वा उच्छोळेज वा पघोएज वा उच्छोलेंतं वा पघोएंत वा साइजइ ॥ ४५५॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो अच्छीणि फूमेज वा रएज वा फूमेंत वा रएत वा साइज्जइ ॥ ४५६ ॥ जे भिक्खू माउम्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो दीहाइ सुमगरोमाई कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेतं वा साइजइ ॥ ४५०॥ जे भिक्ख माजग्गामस्स मेहुणविहयाए अप्पणी दीह इ पासरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवंत वा साइजाइ ॥ ४५८-१ ॥ केसरामाइ ॥ ४५८-२ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहुणविहयाए अपणो अच्छिमलं वा कण्णमल वा दतमल वा णहमल वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंतं वा विसोहेंत वा साइजइ ॥ ४५९ ॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो कायाओ सेयं वा जल्ल वा पक वा मल वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंतं वा विसोहेंत वा साङ्जइ ॥ ४६० ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहुणविध्याए गामाणुगाम दृङ्जमाणे सीसदुवारिय करेड् करेंत वा साइ-जाई ॥ ४६१ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए खीर वा दिह वा णवणीय वा सिर्प वा गुल वा सह वा सहर वा मच्छिडिय वा अण्णयर वा पणीय आहारे आहारेह आहारेत वा साङ्बाइ । त सेवमाणे आवृज्जङ चाउम्मासिय परिहारद्वाण <sup>अणुरवाहय ॥ ४६२ ॥ णिसीह 2 ज्हायणे छहो उद्देसो समत्तो ॥ ६॥</sup>

जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाएं तणमालिय वा भुजमालिय वा वैत्त-

द्वापमे [लेसीमार्ड मार्थिय वा स्वस्तावियं वा पितासियं वा प्रत्यसियं वा व्यवस्थियं वा प्रत्यसियं वा प्रत्यसियं वा व्यवस्थियं वा व्यवस्थि

मासिय वा प्रपठमातिने वा चलमातिर्य वा वीनमातिने वा **वरिक्रमा**तिने वा पिर्व बोद्य पियर्दर्त वा सक्तका ॥ ४६५ ॥ के शिक्ष साहस्यासस्य सेत्रवहीकार अक्कोहाम्य वा तंत्रकोहाम्य वा तरुपक्षोहाम्य वा शीसगढोहाम्य वा हमकोहा<sup>ह्य वा</sup> सनग्रकोहानि ना करेड करेंचे वा साहज्यह ॥ ४६६ ॥ से शिक्य गाउम्मासरा मेहुणबहिबाए असकोहाणि वा तैवलेहालि वा सजयकोहाणि वा संस्थानीहानि की क्यमधेहानि वा सक्यमधेहाणि वा बरेड चरैतं वा साहज्ञह ॥ ४६७ ३ वे निवर्ष माउल्मामस्य मेडुनविमाए नयकोडामि वा तंबकोडामि वा तजकोडामे वी सीसगलोहाणि वा कप्पसोहाणि वा स्वप्पत्येकाणि वा परिश्लंबर शरेसंबंध वा साइज्य u ४६८ n अ मिक्स माउम्मामस्य मेह्नबहिनाए हाराणि वा ब्रहारा<sup>क</sup> वा प्यावकी वा शुक्तावकी वा वचगावकी वा रवजावकी वा कवगायि वा द्ववित्रा<sup>की</sup> मा फेळराजि मा शुंजन्मनि वा पदाणि वा सदशानि वा पत्रंबसूत्तामि वा द्वन्य प्रतामि वा क्षेत्र करेंते वा साहबह n ४६५ n वे सिक्क् गाउमामस्य पेड्रक विक्रमाप् दाराचि वा व्यवहाराचि वा पुगावती वा मुतावती वा ववसावती वा रमपानाचे वा फरमाणि ना तुरिवाणि वा केठनानि वा कुँवसामि वा पर्शव क संब्रहाणि वा पर्कवद्यताणि वा सुरुव्यद्वताणि वा वरेड वरेंसे वा सहजार ॥४४० ह जे मिक्न, मारुगामस्छ महुणवहिदाए द्वाराधि वा सदहाराधि वा एया से वा मुशानती वा कणगानकी वा रवणानको वा कक्याचि वा तृत्रियानि वा कक्या<sup>कि</sup> वा द्वेडकाणि का प्रश्नाणि का सहकाणि वा प्रक्रवस्तायि वा स्वयम्बद्धानि का परिमुंबर परिमुंबर वा साइबर ॥ ४७९ ॥ वे मिनस मारम्मास्य मेहनवडिवाएँ वाईंगानि वा भाईंक्यानराणि वा कंपकाणि वा कंपक्यावराणि वा कोवर(ध)पि

# ॥ व्यवहार सम्यक्त्व के ६७ बोल ॥

इन सड़सठ बोलों को बारह द्वार करके कहेंगे।(१) सहस्या ४, (२) लिंग ३, (३) विनय १० प्रकार, (४) युद्धता ३, (४) लद्धारा ४, (६) भूषणा ४, (७) दोषणा ४, (६) प्रभावना ६, (६) ग्रागार ६, (१०) जयणा ६, (११) स्थानक ६, (१२) भावना ६।

# ें १ सदहणा चार प्रकार की--

(१) परतीर्थी का अधिक परिचय न करें। (२) अधर्म प्रक्रपक पाखंडियों की प्रशंसा न करें। (३) स्वमत का पासत्था, उसना और कुलिंगादि की सक्कत न करें, इन तीनों का परिचय करने से शुद्ध तत्त्व की प्राप्ति नहीं हो सकती। (४) परमार्थ को जानने वाले संविन्न गीतार्थ की उपासना करके शुद्ध श्रद्धा को धारण करें।

### २ लिंग के तीन भेद-

(१) जैसे तरुण पुरुष रंग राग ऊपर राचे वैसे ही भव्यातमा श्री जिन शासन पर राचे। (२) जैसे चुधातुर पुरुप खीर खांड युक्त भोजन का प्रेम सहित श्रादर करे वैसे ही वीतराग की वाणी का श्रादर करे। जैसे व्यवहारिक ज्ञान पढ़ने की तीव इच्छा हो श्रीर पढ़ाने वाला मिलने से पढ़कर इस लोक में खुखी होवे वैसे ही वीतराग के श्रागमों का सूद्मार्थ नित नया ज्ञान सीख के इह लोक श्रीर पर लोक के मनोवांछित सुख को प्राप्त करें।

वा कोयर(व)पावराणि वा कालिभयाणि वा णीलिभयाणि वा सामाणि वा मि(मा)हा-सामाणि वा उद्दाणि वा उद्दलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवगाणि वा सहिणाणि वा सहिणक्छाणि वा खोमाणि वा दुगुछाणि वा (तिरीडपद्वाणि वा) पतु-[हा]ण्णाणि वा आवरताणि वा वी(ची)णाणि वा असुयाणि वा कणकर्कताणि वा कणग-खचियाणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा करेड् करेंत वा साइजइ ॥ ४७२ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कवलाणि वा कवलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपाव-राणि वा कालमियाणि वा णीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उद्टाणि वा च्छलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवगाणि वा सहिणाणि वा सहिणक-ह्मणि वा खोमाणि वा दुगुह्मणि वा पतुण्णाणि वा (पणलाणि वा) आवरंताणि वा वीणाणि वा अधुयाणि वा कणककताणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचिताणि वा घरेइ घरेंत वा साइजइ ॥ ४७३ ॥ जे भिक्खु माउग्गा-मस्स मेहुणविडयाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कवलाणि वा कवलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा णीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उद्दाणि वा उद्दुलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा पर-वगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगुल्लाणि वा पतुण्णाणि वा आवरेताणि वा वीणाणि वा असुयाणि वा कणककताणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा परिभुजइ परिभुजैत वा साइजाइ ॥ ४७४ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अ(विंख)क्खिस वा ऊरुंसि वा उयरंसि वा थणिस वा गहाय सचालेंद्र सचालेंत वा साइजाइ ॥ ४०५ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविटयाए अण्णमण्णस्स पाए आमजेज वा पमजेज वा आमज्जन वा पमज्जतं वा साइजाइ ॥ ४७६ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुण-विडियाए अण्णमण्णस्स पाए सवाहेज वा पिलमहेज वा सवाहेत वा पिलमहेत वा साइज्जइ ॥ ४७७ ॥ जे भिक्ख् माउरगामस्स मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स पाए तेहेण वा घएण वा णत्रणीएण वा मक्खेज वा मिलिंगेज वा मक्खेंत वा भिलिंगेत वा साइज्जड ॥ ४७८ ॥ जे भिक्ख् मारुगगमस्स मेहुणविडियाए अण्णमण्णस्स पाए लोद्धेण वा कक्षेण वा उल्लोलेज वा उल्लोलेत वा उञ्चट्टेंत वा साइज्जइ ॥ ४७९ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्ण-मण्यस्य पाए सीओद्यवियदेण वा उत्तिणोद्यवियदेण वा उच्छोटेज वा पधोएज वा उच्छोटेंत वा पघोएत वा साइजाइ ॥ ४८० ॥ जे भिक्ख् मारुग्गामस्य मेहुण-

< \*\* सुचागमे - क्रिकेटर विवाए अञ्चमञ्जरम पाए धुमेज वा रएअ वा फुर्मेर्टवा रार्ति वा समज्ञ U ४८९ II के सिक्क् मातम्मासस्य मेहुणबहिबाए अन्यस्प्यस्य कर्म मामकेत्र 🖭 प्रमाणेज वा कामजेरी वा प्रमाणी वा साहजह ॥ ४८२ व से मिस्स् माउम्मा मस्म मेहुचनडियाए अन्यमण्यस्य कार्य सेनाहेज वा पछिमीहज वा धनाहेर्त व पनिमर्देतं वा साहजह ॥ ४८३ ॥ जे मिक्न्ह् मातम्मामस्य मेहणवडिवाए क्ल सरमस्य काय देकेण का पर्पण वा शक्त्रीएन का सन्वेज वा मिलिनेज क सक्येतं वा सिक्तिनं वा सादबद् ॥ ४८४ ॥ वे मित्रस् माठम्यासस्य मेडुववी याएं अन्त्रमण्यस्य कार कोदेल वा क्षेत्रण वा उन्नोकेन वा उन्नोज वा उन्नेहर्न वा उब्बहेर्त वा साहजह n ४८५ n के सिल्यू मारुग्यामस्स मे<u>ड</u>बबहिबार अन्नासन्तरस कार्य सीओद्वानवर्षेत्र वा उत्तिवीद्वानवर्षेत्र वा उन्नद्रोकेन वा परी एक ना उच्छोडेंत्रं ना पंचीएतं ना साहकाइ 🏿 ४८६ 🗈 के मिनन्त् माउन्मानस मेहुणविकाए अञ्चयन्त्रस्य कार्य कुमेळ वा रएज वा कुमेंते वा रएते वा सहागा ५ ४८७ । चे मिनन् माउन्मामस्य मेहुजबडिवाए अञ्चलकास्य कार्यस्य वर्षे वर्षे कार्यः जेज ना पमजेज ना मामजंद ना पमजंद ना साहजह (I ४८८)। से मिनन् मारामी-

मस्स मेहुणविवाए अल्पमञ्चस्य कार्यसि वर्ष सेवाहेज वा परिमहेज वा संवाहेर रा पनिमाईत वा साइजह ॥ ४८९ ॥ जे मिक्ब माउरगामस्स मेहचवविवाद कर्ने मण्यस्य कार्यस्य वर्षः देकेच वा वर्षन वा जवजीएण वा सक्केच वा सिक्ष्मिण वा मक्केंद्र वा मिलिंदि वा साहजह ॥ ४९ ॥ ये मिनक् माहरगामस्य मेहुकाडियाँ करणामण्यस्य कार्यस्य वर्ण स्मेदेण वर क्योच्य वर उन्नोकेन वर सम्बद्धन वर उन्नोकेर बा उम्बद्धिं वा सार्ज्यः ॥ ४९१ ॥ के मिक्न् मार्चस्यामस्य मेहुबद्दिवारं <sup>क्रा</sup> सन्तरस कार्यसि वर्ण सीओइसमियवेण वा उसियोशसम्बर्धम वा उस्क्रेकेण वा पमोर्ज वा बच्छोजेर्ट वा पकोएँट वा शाहजह ॥ ४६१ ॥ वे जिलव् मानज्ञालस मेहुणविद्याए अञ्चसन्यस्य कावति वर्ण कुमेज वा रएज वा कुमेर्ट वा रऐंट व साइज्य ॥ ४९३ ॥ वे मिल्ल् मात्रमामस्स मेहुनवहियाए अन्वयन्तरस कारी गाँउ वा पिक्यों वा अध्यमें वा अधिमें वा अर्थवर्क वा अञ्चयरेज तिक्केमें सत्वज्ञार्ज मक्तिरेज वा मिक्कियेज वा अक्तिर्देतं वा विकिर्देतं वा साहज्य ॥ ४९४ ॥ वे भिक्त्य, माठस्मानस्स मेड्डनवडिजाए क्वन्नसम्बद्धः कार्यस्य गर्वेदं वा विस्त्रं वा अपूर्व वा अंतिन वा मर्गवर्क वा अञ्चयरेण तिक्त्रोण सत्वनाएवं अध्विदिशा विकित्तेण पूर्व वा सोन्दिर्व वा जीवरेण वा निसोहेज वा जीवरेंते वा निसोहेंते वा सम्बद्ध n ४९५ n के जिल्ला माळगामस्य जेनुचवडिवाए अञ्चयनगरस कार्वति ग्रेड वा

पिलग वा अरइय वा असियं वा भगटलं वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता णीहरित्ता विसोहेता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेंत वा पघोएत वा साइजाइ ॥ ४९६ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स कार्यास गंड वा पिलगं वा अरइयं वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदित्ता णीहरिता विसोहेता उच्छोळेता पयोएता अण्णयरेणं आळेवणजाएणं आलिंपेज वा विलिपेज वा आर्लिपत वा विलिपत वा साइजइ ॥ ४९७॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स कार्यसि गड वा पिलग वा अरइय वा असिय वा मगंदल वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता णीहरिता विसोहेता उच्छोडेता पघोएता आर्लिपता विलिपिता तेहेण वा घएण वा णवणीएण वा अञ्मगेज वा मक्खेज वा अञ्मगेतं वा मक्खेंतं वा साइजइ ॥ ४९८॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविदयाए अण्णमण्णस्स कायसि गंड वा पिलगं वा अरइय वा असियं वा भगंदल वा अण्णगरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता णीहरेता विसोहेता उच्छोळेता पघोएता आलिंपेता अञ्भगेता अण्णयरेण व्वणजाएणं व्वेज वा पधूर्वेज वा धूर्वेत वा पधूर्वेत वा साइजइ॥ ४९९ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुण-विडियाए अण्णमण्णस्स पालुकिमिय वा कुच्छिकिमियं वा अगुलीए णिवेसिय २ णीहरइ णीहरंत वा साइजइ ॥ ५००॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स दीहाओ णहसिहाओ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइजइ॥५०१॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्य दीहाइ जघरोमाई ऋषेज वा ाठवेज वा कप्पेंत वा सठवेंते वा साइजइ॥ ५०२ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुण-ाडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइ कक्खरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत रा साइजड ॥ ५०३ ॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स दीहाई ममुरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेंत वा साइजइ ॥ ५०४॥ जे भिक्ख् माजग्गामस्स मेहुणविदयाए अण्णमण्णस्स दीहाइ णासारोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेंत वा साइजाइ ॥ ५०५ ॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविड-याए अण्णमण्णस्स दीहाइ चक्खरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेंतं वा सठवेंत वा साइजइ ॥ ५०६-१ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स चीहाइ कण्णरोमाइ कप्पेज्न वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेंतं वा साइज्जइ ॥ ५०६-२ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स दत्ते आघसेव्न वा पघसेव्न वा आघसत वा पघसत वा साइज्जइ॥ ५०७॥ जे भिक्ख्माउग्गामस्स मेहुणवृडियाए

॥ ५२ ॥ वे सिक्स् माठम्यासस्य मेतुनविकाष् अन्यसन्यस्य वर्ण्यनि वर्षेत्र वा स्थोन वा उल्लेक्न ना उल्लोक वा उल्लेक्ट वा एम्पर्टेंट वा साहक ॥ ५२९ ह जे मिनम् मार्चमामस्य मेश्रुमन्त्रियाए अञ्चलस्यस्य <del>अ</del>च्छीवि सौक्येस्पवित्रहेन स उसिपोदयस्थिक ना उच्छोकेल ना पनोएल ना उच्छोर्वेर्त ना वनोएंत ना धारी न्द्र प्र ५२९ ध वं मित्रण् मातम्मामस्स मे<u>ड</u>णविज्ञाए <del>सन्त्रमन्दर्धं वार्</del>काम फूनेज वा रएज वा फूनेंचे वा रऐते वा साहज्जर ॥ ५२३ ॥ वे निवस प्राचनी मस्स मेहुव्यक्तिवाए व्यव्यमण्यस्स वीहाई अुमगरीमाई व्यपेख वा स्टक्ष्य वा कर्मेर्त वा संस्कृति वा सक्ष्मक् ॥ ५९४ ॥ जे सिक्ष्म् मातस्यासस्य मेहुक्वविवार

क्षण्णमण्णस्स दीहाइं पासरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेंतं वा साङजाइ ॥ ५२५-१॥ केसरोमाइ ॥ ५२५-२॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए क्षण्णमण्णस्यु अच्छिमलं वा कण्णमल वा दंतमल वा णहमल वा णीहरेजा वा विसोहेज वा णीहरेंत वा विसोहेंत वा साइजइ ॥ ५२६॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायाओं सेय वा जल वा पंक वा मल वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरें तं चा विसोहित वा साइजइ॥ ५२७॥ जे भिक्ख् माउम्मामस्स मेहुणविडयाए अण्णम-ण्णस्स गामाणुगामं दूर्जमाणे सीसदुवारिय करेइ करेंत वा साइजइ ॥ ५२८॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अणतरिहयाए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयरावेज वा णिसीयावेंत वा तुयहावेंत वा साइजाइ ॥ ५२९ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुण-चिंडयाए सिसिणिद्वाए पुडवीए णिसीयावेज वा तुयदावेज वा णिसीयावेंत वा तुयदावेंत वा साइजइ ॥ ५३० ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए ससरक्खाए पुढ-वीए णिसीयावेज वा तुयहावेज वा णिसीयावेंत वा तुयहावेंत वा साइजइ ॥ ५३१ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहुणविडयाए म[ह]हियाकडाए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयद्यवेज ना णिसीयार्वेतं वा तुयद्यवेत वा साइजइ ॥ ५३२ ॥ जे भिक्ख माउग्गा-मस्स मेहुणविडयाए चित्तमताए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयद्ववेज वा णिसीया-वैत वा तुयद्ववित वा साइज्जइ ॥ ५३३ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए चित्तमताए सिलाए णिसीयावेज वा व्यष्टावेज वा णिसीयावेंत वा त्यहावेंत वा साइज्जइ ॥ ५३४ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए चित्तमताए लेलूए णिसीयावेज वा तुयहावेज वा णिसीयावेंत वा तुयहावेंत वा साइजइ ॥ ५३५ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए कोलावासिस वा दारुए जीवपइद्विए सस्रहे सपाणे सबीए सहरिए सओसे सउदए सउत्तिंगपणगदगमहियमक्कासताणगिस णिसी-यावेज वा तुयदावेज वा णिसीयावेंतं वा तुयदावेंत वा साइजइ ॥ ५२६ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अकसि वा पित्रयकसि वा णिसीयावेज वा तुयहावेज वा णिसीयार्वेत वा तुयद्वार्वेत वा साइजइ ॥ ५३७ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुण-विद्याए अकिस वा पल्चियकिस वा णिसीयावेता वा तुयहावेता वा असण वा ४ अणुरघासेज वा अणुपाएज वा अणुरघासेंत वा अणुपाएत वा साइजइ ॥ ५३८॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाप् आगतागारेसु वा आरामा-गारेसु वा गाहावङ्कुलेसु वा परियावसहेसु वा णिसीयावेज वा तुयदावेज वा णिसीयार्वेत वा तुयद्वविंत वा साइज्जइ ॥ ५३९ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुण-विडियाए आगतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा सहस्वह ॥ ५१५॥ वे निरुष् गाउनगामस्य गे<u>ष</u>्टववविवाए सम्मानस्य ग्रेहर्म उत्तरीहरोमाई क्योब्स वा संटबेक वा क्योंचे वा संटबेंचे वा साहकर a ५१६ ह चे निक्ष्य मानगामस्य नेष्टुणगडियाए भन्नमञ्जस्य श्रेष्ट्राई स<del>न्ति</del>पताई क्येत्र रा

चंडनेज वा करोतं वा चंडनेतं वा सम्बद्ध ॥ ५९७ ॥ ये सिन्द् मारमामस्य में पनडियाए अन्यसंभ्यस्य जच्छीनि आसकेन वा पसकेन वा आसकेर वा सामी वा साहम्बद्ध ॥ ५५८ ॥ वे मिलव्यू मार्कमामस्य मे<u>ष</u>्टकवडिवाए कामान्यस्य क्ष्मकीम संबाहेज वा पत्रिमहेज वा संबाहतं वा पत्रिमहेतं वा सहज्जरं है . १५ है वे निक्ष मात्रमागस्य मेहुणगडिवाए अण्यमण्यस्य अध्यक्ति छोष वा गर् वा नवपीएन वा अवस्था ना अविभेश वा अवस्थेते वा मिक्रियेतं वा प्राव्या ll ५३ ॥ वे सिक्ष् माठमाभस्स मेहुक्वविवाए क्वस्पनकस्स क्वाहीन संदेव मा क्षेत्रण वा उक्षेक्षेत्रण वा उच्चोह्न वा उन्नोर्डेन वा कम्बर्देत वा साहन्तर ॥ ५१ । के मिनक् माराम्मामस्य मेडूक्वविधाएं क्ष्म्यानस्य संक्ष्मिति रीखेर्यमित्रेण स उतिनोदगमिनवेग वा उच्छोकेम वा पनीएम वा उच्छोकेंद्र वा व्योर्ग वा सर पद् ॥ ५१२ ॥ जे मित्रम् सारम्यामस्य मेहणमित्राए बण्यमम्बस्य संस्कृति पुरोज वा रएज वा पुरोते वा रऐते वा सार्व्य । ५११ त के निवस प्राचना मस्स मेहुक्ववियाए क्वममन्तरसः शीहर्षः सुमगरीमाई कार्यज्ञ वा संबंधित वा क्रमेर्त वा संख्येतं वा सहस्यह ॥ ५२४ ॥ वे शिक्ष्य माठम्यासस्य मेवूबविवारं

अण्णमण्णस्त दीहाइं पासरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेंतं वा सठवेंत वा साइजइ १। ५२५-१।। केसरोमाइ ॥ ५२५-२॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्य अच्छिमल वा कण्णमल वा दंतमल वा णहमल वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंत वा विसोहेंत वा साइजाइ ॥ ५२६॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स कायाओ सेय वा जल वा पकं वा मलं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंतं वा विसोहेंत वा साइज्जइ॥ ५२७॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णम-ण्णस्स गामाणुगाम दूइज्जमाणे सीसदुवारिय करेइ करेंत वा साइजइ ॥ ५२८॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अणतरिहयाए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेंत वा तुयद्वावेंत वा साइजइ ॥ ५२९ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुण-विडियाए सिंसिणिद्धाए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयद्दावेज वा णिसीयावेंत वा तुयद्दावेतं ना साइजइ ॥ ५३० ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणविडयाए ससरक्खाए पुढ-वीए णिसीयावेज वा तुयहावेज वा णिसीयावेंत वा तुयहावेंत वा साइजइ॥ ५३१॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए म[ह]हियाकडाए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयद्दावेज वा गिसीयावेंतं वा तुयद्दावेंत वा साइजइ ॥ ५३२ ॥ जे भिक्ख माउग्गा-मस्स मेहुणविहयाए चित्तमताए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयदावेज वा णिसीया-वैंत वा तुयद्यवेंत वा साइजाइ ॥ ५३३ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए चित्तमताए सिलाए णिसीयावेज वा तुयद्दावेज वा णिसीयावेंत वा तुयद्दावेंत वा साइज्जइ ॥ ५३४ ॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए चित्तमताए छेळूए णिसीयावेज्व वा तुयदावेज्व वा णिसीयावेंत वा तुयदावेंत वा साइजाइ॥ ५३५॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए कोलावासिस वा दारुए जीवपइद्विए सअडे सपाणे सवीए सहरिए सओसे सउदए सउत्तिंगपणगदगमद्वियमऋडासताणगिस णिसी-यावेज वा तुयहावेज वा णिसीयावेंतं वा तुयहावेंत वा साइजइ ॥ ५३६ ॥ जे भिक्खू माउरगामस्स मेहुंणविडयाए अकिस वा पिलयंकंसि वा णिसीयावेज वा तुयदावेज वा णिसीयावेंतं वा तुयदावेंतं वा साइजइ॥ ५३७॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहुण-विडियाए अकिस वा पिलेयंकिस वा णिसीयावेत्ता वा तुयदावेत्ता वा असण वा ४ अणुग्घासेज्ञ वा अणुपाएज्ज वा अणुग्घासेत वा अणुपाएतं वा साइजइ ॥ ५३८॥ जे भिक्ख् माउम्मामस्स मेहुणविडयाए आगतागारेसु वा आरामा-गारेसु वा गाहावर्ङ्कलेसु वा परियावसहेसु वा णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेंतं वा तुयद्वावेंत वा साइज्जइ॥ ५३९॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुण-विद्याए आगतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावहकुलेसु वा परियावसहेसु

षा मिसीमानेता वा तुमहावेताचा असचे वा ४ अनुस्वारेज वा अनुसार्ज 🗉 अनुस्पारित वा बाधुपाएँते वा साहजह ॥ ५४ ॥ वे सिक्ब माउमामस मेहन वहिमाए कन्यमरे तेष्ठपर्छ बाताह बातांती था साहबाद ॥ ५४९ ॥ व नितर् मानम्मामस्य मेहुनविद्याप् अम्बुष्णाई पोगाकाई सवजीहरह बीहर्स्ट वा सम्ब

सचागमे

विस्तिहरू है

404

॥ ५४२ ॥ वे मिन्न्यू माउम्यामस्य मेहचनविभाए मुख्याई पोमास्रहं स्वक्रिप उनकरतं ना साहजात् ॥ ५४३ ॥ से मिनजा मार्समामस्स मेहणगढियाए भन्यतं पद्मजले वा परिवासको वा पानंति वा परस्कति वा प्रतिकेति वा सीर्धति वा स्वाप्त (उमिहर ना पन्निहर ना) एंचाछेर (उमिहेंते ना पन्निहेंते ना) एंचारेंते ना साइणाइ ॥ ५४४ ॥ वो मिनन्तु मातरगामस्य अङ्क्षणाविद्याए कन्यवरे प्रदानां वा पनिवाजार्य वा सोवंशि कहे वा काँक्षेत्रं वा अंगुक्तित्र वा सकार्य वा सकुरावेशिया चंत्राके स्वास्ट वा सङ्ख्या ॥ ५४५ ॥ से मिक्ब मारस्यामस्य मेडुवविवर सम्मदरं पश्चनार्थं वा पविश्वनार्थं वा अवमिरिवशिकडू बार्किनेज वा परिस्पर्व वा परिचुंबेज वा विकोशज वा सामिनंत वा परिस्तर्पर्य वा परिचुंबंर्य वा निकेर्ड वा साहम्बद् n ५४६ n के निक्क माउग्यामस्य मेहणविद्याए असर्व वा ४ देर वैतं वा साहजह ॥ ५४७ ॥ जे जिल्ल् सारम्गासस्य सेहुल्ल्हियाए असर्व वा ४ परिचार परिचार्त वा शास्त्रक ॥ ५४८ ॥ के सिन्दा मात्रस्यामस्य सेद्रवातिकार बत्बं वा पविस्पद्द वा कंबकं वा पानपुंकर्ण वा वेद वेंते वा साहमद ॥ ५४५ व के निवस, मास्त्रगामस्य मेहुक्वविज्ञाए शत्व वा ४ पविच्छत् पविचार्त वा सहज्जर प्र १५ । जे नित्रक् माठमाामस्य मेहुक्वविवाए सञ्जाने वाएर वाएं व साइज्यह ॥ ५५१ ॥ व मिनव्यू माठग्गामस्य मेहजवहियाए सन्तार्य परिवर्ण पविवर्धतं ना साज्ञ्य ॥ ५५२ ॥ वे मिन्छ् मातस्यामस्य मेह्रवनदिनाए सन्तर्भवे इंबिएमं भारारं करेड़ करेंते वा साइआई। ते सेवमाने आवजार बाउनमार्टन परिशाद्वामं भग्नमास्मं ॥ ५५३ ॥ विसीष्ट्रद्रमस्यवे सत्तमो बहेस्रो स्यमनो 🏿 ७ ॥

अहमो उरेसो

के मिनन्य मार्गतारेत वा कारामामारेस वा गाहाव उक्तेत वा परियावनकेत वा एगो एघाए स्त्रीए सर्वि मिहारे वा करेड़ सञ्चार्य वा वरेड़ असर्व वा ४ आहारेड हकारे वा पासरम् वा परिद्वनेद अञ्चयरं वा अचारिनं विद्वरं (पिट्टनं) आरम्ब(म)मरामोर्म्म कई करेंद्र करेंते वा शान्त्रद्र ॥ ५५४ ॥ वे शिस्त्र उनावंधि वा उनावंधिकी वा उज्यानसमिति वा विज्ञानित वा विज्ञानितिति वा विज्ञानमार्रति वा वृत्ती

एगाए इत्थीए सिद्धं विहार वा करेइ सज्झाय वा करेड असणं वा ४ आहारेइ उचारं वा पासवण वा परिद्ववेद् अण्णयर वा अणारियं पिहुण अस्समणपाओग्ग कहं कहेड़ कहेंत वा साडजाड़ ॥ ५५५ ॥ जे भिक्ख् अहिस वा अहालयंसि वा चारियसि वा पागारसि वा दारसि वा गोपुरेसि वा एगो॰ इत्थीए सिर्दे विहार वा करेड सज्झाय वा करेइ असण वा ४ आहारेइ उन्बार वा पासवर्ण वा परिद्ववेइ सण्णयरं वा भणारिय पिहुण अस्समणपाउगं कह कहेंद्र कहेंत वा साइज्जइ ॥ ५५६ ॥ जे भिक्ख् दगिस वा दगमगंगिस वा दगपहिस वा दगतीरिस वा दगठाणिस वा एगो० इत्थीए सिद्ध विहार वा करेइ सज्झाय वा करेइ असण वा ४ आहारेइ उचारं वा पासवण वा परिद्ववेइ अण्णयर वा अणारिय पिहुण अस्समण-पाउनमं कह कहेड कहेंत वा साइजइ ॥ ५५७ ॥ जे भिक्ख सुण्णगिहसि वा म्रुणसालिस वा भिष्णगिहंसि वा भिष्णसालिस वा कुडागारिस वा कोट्टागारिस वा एगो० इत्थीए सिद्धं विद्वारं वा करेड़ सज्झाय वा करेड़ असण वा ४ आहारेह उचार वा पासवण वा परिद्ववेइ अण्णयरं वा अणारिय पिहणं अस्समणपाउगां कह क्हेंड् कहेंतं वा साइजड़ ॥ ५५८॥ जे भिक्ख् तणगिहसि वा तणसारुंसि वा तसिग-इसि वा तुससालिस वा भुसगिहिस वा भुससालिस वा एगो॰ इत्थीए सिद्ध विहार वा करेड सज्झाय वा करेड असण वा ४ आहारेड उचारे वा पासवण वा परिट्ठ-वेइ अण्णयर वा अणारिय पिहुण अस्समणपाउरग कह क्रेंड् कहेंत वा साइज्जह ॥ ५५९ ॥ जे मिक्ख् जाणसालित वा जाणगिहिस वा जुग्गसालिस वा जुग्गगिहंसि वा एगी० इत्यीए सिद्धे विहारे वा करेइ सज्झार्य वा करेइ असण वा ४ आहारेड उचारं ना पासवण ना परिद्वनेश भण्णयरं ना भणारिय पिहण अस्समणपाजग्ग कह क्हेइ कहेंत वा साइजइ ॥ ५६० ॥ जे भिक्ख् पणियसालसि वा पणियगिहंसि वा परियासालसि वा परियागिइसि वा कम्मियसालंसि वा कम्मियगिइसि वा एगो० इत्थीए सिद्ध निहार ना करेड सज्झाय वा करेड असणं ना ४ आहारेड उचार ना पासवण ना परिद्वेव अण्णयरं वा अणारिय पिहुण अस्समणपाउग्ग कह कहेड कहेंत वा साइजइ ॥ ५६१ ॥ जे भिक्ख् गोणसालसि वा गोणगिहसि वा महाकुलसि वा महागिहिस वा एगो० इत्थीए सिर्दे विहार वा करें इ सज्झाय वा करें इ असण वा ४ आहारेइ उचारं वा पासवण वा परिद्ववेइ अण्णयर वा अणारिय पिहुण अस्प-मणपाउग्ग कह कहेइ कहेंत वा साइज्जइ ॥ ५६२ ॥ जे भिक्ख राओ बा वियाले वा इत्यिमज्ज्ञगए इत्यिससत्ते इत्यिपरिवुढे कहं कहेड कहेंत वा साडज्जड ॥ ५६३ ॥ जे भिक्ख सगणिभियाए वा परगणिभियाए वा णिग्गथीए सर्विः

या अधानयं वा स्वासमं वा अनुवानमं वा अंदो उनस्समसः अर्द्ध वा रहं वर्षि मा राद संबक्षाचेद्र (ये न पढियाद्वयद्ध तं यहुन जिनलम्ह वा पविख्य वा) <sup>होन</sup> सार्वेतं वा साइन्द्रश ५६५ ॥ जे नित्रव् यावर्गं वा जनावर्गं वा उदास्य व मणुनासर्पे वा मेतो जवस्तवस्त भर्त वा गाँ श्राप्तमं वा गाँ संवासि तं पान निक्कमह वा पनिखह था निज्ञासेते वा पनिसेते वा साहकह से ५६६ स के मिर्ग्स रक्तो वरियाणं सुदियाणं सुद्धाभितिताणं संवायमहेस वा विक्रमहेस वा बाद असर्व भा ४ पवित्रगाहेर पवित्रवाहेर्त वा साहकह ॥ ५६७ ॥ वे मिक्स रूप्यो बहिनार्त मुरियार्च मुद्दासिलितार्थं सत्तरसाकति वा उत्तरसिद्धि वा रीवमार्च कर्म्यं वा ४ पवित्याहेर पवित्याहेर्तं वा साइजह ॥ ५६८ ॥ वे भिक्त् राजी वितिवार्य मुसियाणं मुद्धानिशिक्ताणं इवसान्धगयाण वा ययसाध्यायवाण वा मंतराध्याववाण था गुज्यसास्त्राम्याम् वा रहस्ससास्त्रम्याच वा शृ<u>ष्ट्र</u>णसासाम्याच वा समर्वे ग ४ पडिम्माहेर पडिम्माहेर्त वा सार्व्यार् ॥ ५६९ ॥ वे मिक्स् रच्ची बस्तिवर्त सुरियार्थ सुद्धामितिकाल शिवहिर्यनिषयाओं बीर वा वहीं वा ववयीर्व वा सी था गुर्ने वा खंडे वा सक्दरे वा सक्केबिय वा अन्त्यवरे वा मोयपवार्व प्रदेशमंदिर पढिल्गाईर्रं वा साहत्व्य ॥ ५७ ॥ वे शित्रव्य रण्यो खरिवार्च मुदिवार्च मुख्यिन ितार्थं उत्स्यद्वर्षितं वा संस्कृषितं ना अलाहर्षितं वा किनिनर्षितं वा वर्णामधीतं वा परिमाहित् परिमाहितं वा शात्रकत्। तं सेवमाणे अलब्बत् वातम्मातिवं परिहारि हार्च ब्युत्भाइय व ५७९ । णिसीहऽस्त्रयणे सदूमी उदेखो समची 🕬 णबमो उरेसो

णवामी उद्देशों

बे तिस्त्व रामिनं नेल्क्र नेलीर वा वाह्यह ॥ ५०२ ॥ वे तिल्व रामिनं
ग्रेंबर ग्रेंबर्ट वा वाह्यह ॥ ५०३ ॥ वे तिल्व रामिनं रामिनं
ग्रेंबर ग्रेंबर्ट वा वाह्यह ॥ ५०३ ॥ व्य तिल्व रामिनं
वाह्यद ॥ ५०४ ॥ वे तिल्व रामिनं
व्यक्त स्वाद रामिनं
वाह्य रामिनं
वाह्य रामिनं
ग्रेंबर नेलानं
वाह्य वाह

#### रं विनय का दश सेद---

(१) अरिक्ट्रों का | यिनय करे। (२) सिडों के विमय॰। (१) आवार्य का विनयः। (४) उपाध्याम के यिनय करे।(४) स्वविर का विश्व।(६) भणः [ बहुत आवार्यों के समूद ] का विश्वा (८) कुल [ बहुत आवार्यों के शिष्य समूद ] का विश्व। (८) स्व अर्थी का विश् ।(१) सेश्व का विश् ।(१०) संभोगी का विनय करें, इन वर्षों ग बहुमान पूर्वेच विनय करें। जैन ग्रास्त में 'यिनय मूल पर्ये हैं'। विनय करने से अनेक सत्युणों की प्राप्ति हो सकती है।

#### ४ शुद्धता के ४ मेद---

(१) अन ग्रुवता-अन करके श्रारहंत देव १७ श्रति ग्रय ११ वाणी ' अहमातिवाये स्वद्यत १ स् वृपक रहित, १२ ग्रुक सहित हमारे वेच हैं। इसके सिवाय हजारों कर पर्वने गर भी स्वचनी देवों का स्मन्य न करें। १२) वकन ग्रुवता वक्त से ग्रुक कीर्तम श्रारहरूमों के स्विपाय दूसरे सरागी वेचों का न करें। (१) काय ग्रुवता-कार से नमस्कार मी अदिकारों के विषया श्राप्त स्वन्तागी वेचों को म परे।

#### १ सम्बाध के १ मेव---

(१) समज्ञु मिषपर सम परिवास रखना।(१) सवेग-बैराम्य मान रखना याने संसार प्रसार है विषय भौर कपास से मनत्वा काल सब असबुकरते हुवै रस सम्बद्धी सामग्री मिली है रस्वादि विचार करना। वने यहां तक रस मोहस्य स्वास से शाला तला और समागर किसराज की पिंडरगहरा जाए अम्ह रायतेपुराओ असण वा ४ अभिहर्ड आहर्ट्ड दलयामि' जो तं एव वयंतं पडिसुणेइ पडिसुणेंत वा साइज्जड ॥ ५७६ ॥ जे भिक्ख् रण्णो खत्तियाण सुदियाण सुद्धाभिसित्ताणं दुवारियभत्त वा पसुभत्तं वा भयगभत्त वा वलमत्त वा कयगमत्तं वा हयभत्त वा गयभत्त वा कतारभत्त वा दुब्भिक्खभत्त वा दमगभत्त वा गिलाणभत्त वा वहिलयाभत्त वा पाहुणभत्त वा पिडग्गाहेद पिडग्गाहेर्त वा साइजाइ ॥ ५७७ ॥ जे भिक्ख् रण्णो खत्तियाणं मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण इमाइ छहोसाय-यणाइ अजाणि(य)त्ता अपुच्छिय अगवेसिय पर चउरायपचरायाओ गाहावइकुल पिंड-वायपिंडयाए णिक्खमइ वा पविसइ वा णिक्खमत वा पविसत वा साइजाइ, तजहा-कोहागारसालाणि वा भडागारसालाणि वा पाणसालाणि वा खीरसालाणि वा गज-सालाणि वा महाणससालाणि वा ॥ ५७८ ॥ जे मिक्ख् रण्णो खत्तियाण मुदियाणं मुद्धामिसित्ताण अङ्गच्छमाणाण वा णिग्गच्छमाणाण वा पयमवि चक्ख्रसणपिड-याए अभिसघारेइ अभिसघारेंत वा साइजइ ॥५७९॥ जे भिक्ख् रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभितित्ताण इत्थीओ सन्वालकारविभृतियाओ पयमवि चक्खुदसण-पडियाए अभिस्थारेइ अभिस्थारेंत वा साइजइ ॥ ५८० ॥ जे भिक्खू रण्णो खित्याण सुदियाण सुद्धाभिसित्ताणं मस(क)खाया[ण]ण वा मच्छखायाण वा छवि-खायाण वा वहिया णिरगयाण असणं वा ४ पडिरगाहेइ पडिरगाहेंत वा साइजइ ॥ ५८१ ॥ जे भिक्ख् रण्णो खित्रयाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण अण्णयर उववृह्णिय समीहिय पेहाए तीसे परिसाए अणुद्वियाए अभिण्णाए अव्वोच्छिण्णाए जो तमण्ण पिडरगाहेर पिडरगाहेत वा सार्व्जर ॥ ५८२ ॥ अह पुण एव जाणेज 'इहज रायस्तिए परिवृत्तिए' जे भिक्ख ताए गिहाए ताए पएसाए ताए उवासतराए विहारं वा करेड़ सज्झाय वा करेड असण वा ४ आहारेड उच्चारं वा पासवण वा परिद्ववेड अण्णयरं वा अणारिय पिहुण अस्समणपाउग्ग कह कहेइ कहेंतें वा साइजाइ॥ ५८३॥ जे भिक्ख् रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण बहिया जत्तास(पट्टि)ठियाण असण वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंत वा साइज्जइ ॥ ५८४ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धामिसित्ताण वहिया जत्तापिडिणियत्ताण असण वा ४ पिड-ग्गाहेड पढिग्गाहेंतं वा साङ्जइ ॥ ५८५ ॥ जे भिक्ख् रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण णइजत्ता(स)पद्धियाण असणं वा ४ पडिग्गाहेड पडिग्गाहेत वा साइ-जइ ॥ ५८६ ॥ जे भिक्ख् रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्दाभितिताण णइजत्तापिड-णियत्ताण अमण वा ४ पिडम्माहेइ पिडम्माहेत वा साइज्जइ ॥ ५८७ ॥ जे भिक्ख रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण गिरिजतापहियाण असण वा ४ पडिग्गः-५६ मुता०

🔃 पविस्मादेवं का साइज्य ॥ ५८८ ॥ जे मिन्स् रूप्यो शक्तिमार्थ मुद्दिनार्थ मुक्त मिसित्तार्थं गिरैकत्तापविविकतार्णं असल वा ४ पविकारहेड् पविकारितं हा सर्वः

468

**बर्** ॥ ५८९ ॥ मे मिनल् रण्यो खतियाणं सुदिवाणं सुद्धामितितामं महामितेर्यम **बद्दमामति निक्यासह वा पनिसाह वा निप्तयानी वा पविसेत वा साहावद ॥ ५५ ॥** चे मिरन्त् रच्चे धत्तिमार्ण मुदियाणं सुद्धामितितार्ण इमाओ इस वामितीयाओ रायहाणीओ उद्भिक्षो पवित्राओ बिन्याओ सेतो मासस्य हुक्ह्यतो वा विवस्ते का जिम्प्रमद का प्रविचह का जिल्ह्यमैंहै का पनिचंदी का सहस्रह, तजहा-केंग महुए वाजारसी सावत्वी सापूर्व कंपिक कोसंबी मिक्किन इत्थि(णा)नपुरं रायगिई ॥ ५९९ म चे मिन्न् रूच्यो श्वतिबाय मुदियार्थ मुद्यामितिताय असर्थ वा ४ दरस वीहर्ष पडिम्गाइंड् पविभार्देतं वा साङ्ब्ब्ह्, तंब्द्धा-स्वतियाच वा राईच वा इन्प्रदेव वा रामपंतियाय वा श्वांपेरियाम वा ॥ ५९२ ॥ यो मिक्स् रण्यो श्वास्त्रार्थं सुविवार्थं सुद्धामिसितार्ण असर्ण वा ४ परस्त वीद्यव पडिस्मादेह पडिस्मा**हे**तं वा साह*मा*र्ट र्तज्ञा-भडान ना नशन ना रुक्तुनाल ना सक्राच ना सत्राच ना सुद्धिनान ग वेकंनगाय वा कश्याय वा प्रयाप वा कासगाय वा दोकक्रमम वा प्रतास्थान वा ॥ ५९३ ॥ वे निक्क् रज्जो खत्तियार्च मुद्यार्थ मुखानिस्तितार्च असर्व बा ४ वरस्य जीहर पिक्रमाहेर पिक्रमाहेर्च वा शहनक, तंबहा-भासपोस्तान मा दिन-पोसनाम ना महिसपोसनाल ना नसहपोसनाम ना सीहपोसनाम ना नामग्रेसनाम वा अवपोत्तवाय का पोवपोत्तवाय का मियपोत्तवाय का **श**ब्दगोतकाथ वा स्वरक्ष याम वा मेंडपोस्थान वा अनुवयोस्थान वा विक्तिरवोत्तयान वा बद्धवरोहवान वा बाक्तपोस्त्राण वा वीर्ग् **कृ**ष्णोस्त्राण वा ईसपोस्त्राण वा सक्तरपेस्त्राण वा स्व पोसयान वा ॥ ५९४ ॥ वे सिक्क् रूज्नो वक्तिवाचं मुदिवायं मुदासिल्हानं वहर्ष बा ४ परस्य जीवृडं पडिस्माहेड् पडिस्माहेत वा शहरूर, तंम्हा-बास(मा)हरी-गाम ना इस्पिरमधाण ना ॥ ५९५ ॥ जे मिनक रूप्यो सक्तियाने मुनिकार्व मुक्ति भिष्ठितार्थं असर्वं का ४ परस्य गोवृडं पडिज्यादेव पडिज्यादेवं वा सहज्जर रं<sup>ज्या</sup> बाधर्मिठाच वा इत्विमिठाण का ॥ ५९६ ॥ वे किन्च् रण्यो कतिवार्य मुस्यार्थ सुद्धामिशिक्तार्थ असर्व वा ४ परस्त जीवड पडिम्माहेड् पडिम्माहेर्ड वा शहना र्तम्बन्-भासरोहाण वा इत्विरोहत्त्व वा ॥ ५ ७ ॥ मे सिवब् रच्यो अतिवार्य मुद्रिताणं मुद्रामिन्दिताणं समुणं वा ४ परस्य जीवरं पंडित्याहर् पंडित्याहर् व साहज्ञह, तंत्रहा-सत्ववाहाण वा सवाहाववाण वा अवसीयाववाण वा उच्छाववाच वा समावदाण वा संवादयाच वा क्रास्महाच वा वसरम्बद्धान वा हडप्यमहाच

वा परियद्वयग्गहाण वा दीवियग्गहाण वा असिग्गहाण वा घणुग्गहाण वा सित्तग्गहाण वा कोंत्रगहाण वा ॥ ५९८॥ जे भिक्ख् रण्णो खत्तियाण मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असण वा ४ परस्स णीहड पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंत वा साइजइ, तजहा-वरिसधराण वा कचुङ्जाण वा दोवारियाण वा द[ङ]डारक्खियाण वा ॥ ५९९॥ जे सिक्ख् रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताण असण वा ४ परस्स णीहड पडिग्गाहेइ पडिग्गा-हैंत वा साइज्जइ, तजहा—खुज्जाण वा चिलाइयाण वा वामणीण वा षडभीण वा वब्बरीण वा प[पा]उसीण वा जोणियाण वा पल्हवियाण वा ईसणीण वा थारगिणीण वा लउसीण वा लासीण वा दमिलीण वा सिंहलीण वा आलवीण वा पुलिंदीण वा 😁 सवरीण वा पारसी[परिसिणी]ण वा । त सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासिय परिहारद्वाण भणुग्घाइय ॥ ६०० ॥ णिसीहऽज्झयणे णवमो उद्देसो समत्तो ॥ ९ ॥

दसमो उद्देसो

जे भिक्ख् भदत आगाढ वयइ वयत वा साइजइ ॥ ६०१ ॥ जे भिक्ख् भदंतं फरुस वयइ वयत वा साइजाइ ॥ ६०२ ॥ जे भिवन्तु भदत आगाढ फरुस वयड वयत वा साइजाइ ॥ ६०३ ॥ जे भिक्ख भदत अण्णयरीए अन्वासायणाए अचासाएइ अचासाएत वा साइजाइ ॥ ६०४ ॥ जे मिक्ख् अणतकायसजुत्त आहारं **आहारे**ई आहारेंतं वा साइजाइ ॥ ६०५ ॥ जे भिक्ख् आहाकम्म भुजइ भुजत वा साइजइ।। ६०६।। ( लाभातित्त नि॰ कहेइ कहत वा सा॰) जे भिक्खू पहुप्पण्णं निमित्त वागरेंद्र वागरेंत वा साइज्जइ ॥ ६०७ ॥ जे भिक्ख् अणागय निमित्त वागरेइ वागरेंत वा साइजाइ ॥ ६०८ ॥ जे भिक्खु सेह अवहरइ अवहरत वा साइजाइ ॥ ६०९ ॥ जे भिक्ख् सेह विप्परिणामेइ विप्परिणामेंत वा साइजइ ॥ ६१० ॥ जे भिक्ख दिस अवहरइ अवहरंत वा साइजइ ॥ ६११ ॥ जे भिक्ख दिस विप्परिणा-मेइ विप्परिणामेंत वा साइजइ ॥ ६१२ ॥ जे भिक्खू बहियावासियं आएस परं तिरायाओ अविफालेता सवसावेइ सवसावेंत वा साइज्बइ ॥ ६९३ ॥ जे मिक्ख् साहिगरण अविओसवियपाहुङ अकडपायच्छित परं तिरायाओ विष्फालिय अविष्फा-लिय सभुजइ सभुजत वा साइजाइ॥ ६१४॥ जे मिक्खू उग्घाइय अणुग्घाइय वयइ वयत वा साइजाइ ॥ ६१५॥ जे भिक्ख् अणुग्चाइय उग्घाइय वयइ वयतं वा साइजाइ ॥ ६१६ ॥ जे भिक्ख् उग्घाइय अणुग्घाइय देइ देंत वा साइजाइ ॥ ६१७॥ जे भिक्ख् अणुम्घाइय उम्घाइय देइ देंत वा साइजाड ॥ ६१८॥ जे भिक्ख् उग्घाइय सोचा णचा सभुजइ सभुजत वा साइज्जइ ॥ ६१९ ॥ जे मिक्ख् उम्घाड्यहेउ सोचा णन्ना सभुजइ सभुजत वा साइजइ॥ ६२०॥ जे भिक्ख्

मिनप् रायाहर्य रायाहर्यहेर्व वा रायाहर्यकंत्रप्यं वा सोबा बचा संस्था र्सर्नर्नतं वा साइजाइ ॥ ६२२ ॥ जे मिनस् क्लाग्याहर्न सीवा सवा सर्वे र्समुक्ते वा सहक्रह ॥ ६२३ ॥ वे मिरल् क्लुग्याहबहेर्व छोवा ववा रस्का चेर्नुनंतं वा साहजह ॥ ६९४ ॥ के भिरुष् अनुस्पाहक्षंकृष्यं सोवा वचा सर्वेग संश्रंबंद वा सहकार ॥ ६९५ ॥ जी मिरन्यू अधुरवाहर्य क्युरवाहराहेर्ग वा करामचाइवर्षकर्म वा सोवा अचा संश्रंबद संशुर्वतं वा साहबाद II ६१६ ॥ वे मिनन् सम्पादमे का अनुस्मादमे का सीका गंका पेर्मुकट एंस्केट वा सामका ॥ ६२७ ॥ से मिरुक् जरमाइयहेर्ड वा स्लुल्पाइनहेर्ड वा सोवा प्रवा समुद् संभुनंते वा साइन्बर ॥ ६२८ ॥ के मिरुक् उरवास्वर्धकर्ण वा अग्रावान्यरंत्रण बा सोबा नवा संभुंतर संभुंबंते वा सार्व्यह ॥ ६२९ ॥ वे मिन्न तरवार्व वा क्युनवाहर्यं वा सन्धाहमहेते वा ब्युन्याहमहेतं वा सन्धाहमस्त्राणं वा अनुनवाहन संक्रमं ना सोचा भना संगुन्द संगुन्तं ना साहजह ॥ ६३ ॥ जे निक्य रामायनितीए अमत्यमिवमणरीकपे शेवविए निम्बितिनिकालमाक्तीनं अपावेनं भराजे वा ४ पवित्माहेता संशुंबह संशुंबेते वा साहमह । यह प्रण एवं वामेओ म्लुनाए स्रिए अत्यक्षिए वा" से वं च (आसमंद्रि) सहे वं च पानिति र्ष च पविज्ञाहे तं निर्गिचिय निर्धोहिय तं परिद्वनेयाचे (बर्म) बाह्यसह र जो तं भुंबर मुकी का साहबद ॥ ६३९ ॥ वे मिक्स कम्पनितीए बनार मिमर्चक्रमे संपरिए वितिविकाए समावकोणं क्यायेणं क्यकं वा ४ व्हिमाहेण र्सर्भुक्ट् र्सर्भुक्तं वा साहजाह । कह् पुण पूर्व वालेका व्यक्तगए सारेए कार्य मिए वा" से वं व मुद्दे वं व पाणिश वं व पवित्यद्वे से मिनित्वर मिनित्व र्त परिद्वनेमाने पाइकमह । को र्त गुंकह गुंजर्त वा सक्तकह ॥ ६३९ ॥ व मिन्छ उमामनितीए जनत्वसिक्षक्यो अस्यविष् विभिन्नितिकासमानक्येन अधानेन कराणे वा ४ एकिम्पाहेता सर्थेक्ट सर्थेक्ट वा सक्तक्ट । 🛲 पुत्र एर जानेजा "बलुमाए सहिए सत्यमिए वा" से वं च मुद्दे वं च पानिश वं च परिम्मद्दे ते निर्गिषिय निरोहित ते परिद्ववैमाने नात्रकत्तः । को ते ग्रंबर तुंजी श साहजह ॥ ६३३ ॥ जे जिल्ह् उम्ममनितीए अन्यत्नसिवर्धरूपे सर्ववविर निर्दे गिच्यासमाननेर्य अपायेर्व असर्व वा ४ पडिमाहिता सर्गुब्द एंगुर्वतं ॥ सर्व अवद । मह पुच पूर्व वामेमा "म्लुमाए सूरिए सत्वमिए वा" से व व सहे में प पार्लिस ने व पडिम्महे से विभिन्न निसोहिन से परिप्रवेगाने बारहमत् । (ते

अप्पणा भुजमा॰ अण्णेसिं वा दलमाणे राइभोयणपिंडसेवणपत्ते) जो त भुजइ भुजंत वा साइजइ ॥ ६३४ ॥ जे भिक्ख् राओ वा वियाले वा सपाण सभीयणं उग्गाल उग्गिलित्ता पञ्चोगिलइ पञ्चोगिलंतं वा साइज्जइ ॥ ६३५ ॥ जे भिक्ख् गिलाणं सोचा ण गवेसइ ण गवेसत वा साइज्जइ ॥ ६३६ ॥ जे भिक्ख गिलाण सोचा उम्मग्ग वा पडिपहं वा गच्छड् गच्छंत वा साइजइ ॥ ६३७ ॥ जे भिक्ख् गिला-णवेयावचे अञ्मुहियस्स सएण लामेण असंयरमाणस्स जो तस्स न पडितप्पइ न पिंडतप्पतं वा साइजाइ ॥ ६३८ ॥ जे भिक्ख् गिलाणवेयावचे अन्भुद्विए गिलाण-पाउग्गे दव्वजाए अलब्भमाणे जो तं न पडियाइक्खइ न पडियाइक्खंतं वा साइजइ ॥ ६३९ ॥ जे भिक्ख् पढमपाउसम्मि गामाणुग्गामं दूहज्जइ दूहजांतं वा साइजड ॥ ६४० ॥ जे भिक्ख् वासावास पज्जोसवियसि दृह्ज्ज् दृह्ज्जंत वा साइज्ज्ह ॥ ६४९ ॥ जे भिक्खू अपज्जोसवणाए पज्जोसवेइ पज्जोसवेंतं वा साइजइ ॥ ६४२ ॥ जे भिक्ख् पज्जोसवणाए ण पज्जोसवेह ण पज्जोसवेंत वा साइजड ॥ ६४३ ॥ जे भिक्ख पज्जोसवणाए गोलोमाइ-पि वा(वा)लाइ उवाइणाइ उवाइणतं वा साइज्जइ ॥ ६४४ ॥ जे मिक्ख् पज्जोसनणाए इतिरिय पा(पि-आ)हारं साहारेइ आहारेंत वा साइजड ॥ ६४५ ॥ जे भिक्खू गारत्थिय पज्जोसवेई पज्जोसवेंतं वा साइजड ॥ ६४६ ॥ जे भिक्खू पढमसमोसरणुद्देसे पत्ताइ चीवराई पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइजइ। त सेवमाणे आवजाइ चाउम्मासियं परिहारद्वाण अणुग्घाइय॥ ६४७॥

णिसीहऽज्झयणे दसमो उद्देसो समत्तो ॥ १० ॥ एकारसमो उद्देसो

१ पज्जोसवणाए (सवच्छरीए) पडिकामण करावेइ करावेंतं

**ब्यह्न । ६**९ ॥ जे मिल्न्यू शर्य्यवणानि वा तंत्रवंभयानि वा तत्त्वस्थानि च र्कंसर्वेमजानि का इप्पर्वेचजानि वा सुवक्जवेजनानि वा जायस्मवेचनानि वा सन्नि र्वमणानि वा कार्यक्रमणानि वा देशवेषणानि वा सिंगक्षेत्रचानि वा कार्यक्रमानि वा चेळवेंपवानि वा संबाववणावि वा बहरवेंबजानि वा बहेह करेंद्रे वा साहगरें ।। ६५९ । ज मित्रक् धनर्वक्यापि वा र्तवर्वक्यापि वा तस्यकंप्रवासि वा वर्ग-र्वप्रयापि वा क्यार्वप्रवाणि वा ग्रक्त्यवर्षणाधि वा वायस्वर्वप्रशासि वा मनिर्वर गानि वा पायर्वययाधि वा दंत्रदेवयाधि वा सिंधर्ववणाधि वा सामर्वधमानि प फेर्ज़्यमानि वा एंख्यंबनानि वा वहर्ष्यनानि वा वरेड वरेंद्रे वा सहन्य 0 ६५२ व जे मिनन्द्र कार्यवरणाधि वा तंत्रवंत्रणाधि वा तंत्रवंत्रणाधि वा वंत्र र्ववमानि ना त्यनंबरहानि वा छवन्यवंबयानि वा बावस्ववंबयानि वा सनिवंधनानि मा धारवंक्यामि वा वेतवंत्रजानि वा सिंगवंत्रणानि वा कामवंत्रणानि वा केत र्वभगानि वा संध्ववयानि वा कारवंबवानि वा परिभुंका परिभुंका वा साहर्की 🛚 ६५३ 🗷 में मिल्ल् परं कदाबोजनमेराओं पासपृष्टियाएं एच्छा एकी 🗗 सक्त्य । (५४ ॥ वे मिक्ब् प्रमद्भावनमेराओं सरनवार्यस पार्व अमिर्ड जाहर्द सेजमार्थ पडिस्माहेर् पडिम्माहेर्त वा सार्क्स ॥ ६५५ प्र जे मिर्ड मन्तरस सबर्च्य बयह वर्वर्त वा साहजह ॥ ६५६ ॥ वे मित्रव अवन्तरस वर्ण वक् वर्रतं वा साहकह ॥ ६५७ ॥ अ मिनक् अव्यवस्थितस्य वा गार्शविवस् मा पाए भामजेन्य वा परमोज वा भागजेरी वा परमंदी वा साहबाह स ६ ६ ह से निक्त सम्मदिस्यस्य वा गारश्वियस्य वा पाप् वंबाहेज वा प्रतिमहित वी संबादित था प्रक्रिमहेर्त वा साहजह । ६५९ । वे मिश्र्य अञ्चातिकाम वी गारत्पिनस्य वा पाए देक्केण वा जाएण वा जनगीएक वा सन्वेज वा मिस्टिज वा सक्बेर्य वा सिमिंगेरों वा साहबाह n ६६ n के सिरम्य अन्मउदिवदर्ग वी गारश्पिक्स वा पाए केंद्रिण वा कहेल वा उड़ोकेज वा उज्जेहन दा उड़ोकेर वा बन्दोरी वा चार्क्य ॥ ६६९ n वे मिनच् अञ्चातस्यास्य वा मारशिवस्य वी पाए सीबोदमतिनदेण वा उछियोदमसिवदेव वा उच्छोदेज वा वदोएज वी उच्छोडेर्ट वा प्रवीएँट वा साहजह ॥ ६६२ ॥ वे मिल्ल् जन्मा विकल स मारत्यिक्स वा पाए पूमेल वा रहल वा पूमेंने वा रहेर्न वा साइलह ॥ ६६१ व मे भिरुष् भव्यउत्थियसः वा गारश्चिषस्य वा वार्यं सामजेज वा पार्वेज वा मामर्मते वा पमर्मने वा धात्मतः ॥ ६६४ ॥ विभिन्नः अन्तर्शवस्ति वा

गारित्थयस्स वा काय सवाहेज वा पिलमेह्ज वा सवाहेत वा पिलमेह्त वा साइज्जड ॥ ६६५ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायं तेहेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंत वा भिलिंगेत वा साइज्जइ ॥ ६६६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारिययस्स वा काय लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लेकेज वा उन्बेहेज वा उल्लेकेत वा उन्बेहेत वा साइजइ ॥ ६६७ ॥ जे भिक्ख् अण्णडित्ययस्स वा गारित्ययस्स वा काय सीओदगिवयडेण वा उसिणी-दगवियहेण वा उच्छोळेज वा पघोएज वा उच्छोळेंतं वा पघोएत वा साइजड् 11 ६६८ ।। जे भिक्ख अण्णडित्ययस्स वा गारित्ययस्स वा काय फूमेज वा रएज वा फूमेंत वा रएत वा साइजइ ॥ ६६९ ॥ जे भिक्ख् अण्णडित्थयस्स वा गारत्थियस्स वा कायसि वण आमजेज वा पमजेज वा आमजत वा पमजत वा साइज्जइ ॥ ६७० ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कार्यसि चण सवाहेज वा पलिमेर्झ वा सवाहेंत वा पलिमेर्देत वा साइजाइ ॥ ६७९ ॥ जे मिक्ख अण्णजित्ययस्य वा गारित्ययस्य वा कायसि वण तेक्षेण वा घएण वा णवणीएण वा सक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंत वा सिलिंगेत वा साइजड ॥ ६७२ ॥ जे भिक्ख अण्णडित्ययस्य वा गारित्ययस्य वा कायसि वण लोढेण वा क्रक्केण वा उल्लेखेज वा उल्लेख्ज वा उल्लेखेत वा उल्लेखेत वा साइजाइ ॥ ६७३ ॥ जे भिक्ख अण्ण हिययस्स वा गारित्ययस्य वा कायसि वण सीओदगवियडेण वा उसि-गोदगवियंडेण वा उच्छोलेज वा पघोएज वा उच्छोलेंतं वा पघोएत वा साइजड ॥ ६७४॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कार्यंसि वण फूमेज वा रएज वा फ़ुमेंत वा रएत वा साइजइ ॥६७५॥ जे भिक्खू अण्णउत्ययस्स वा गारत्यियस्स वा कायित गढ वा पिलग वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्य-जाएण अस्छिटेज वा विस्छिदेज वा अस्छिटेतं वा विस्छिदेत वा साइजाइ ॥ ६७६॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियस्स वा गारित्थियस्स वा कायसि गढ वा पिलग वा अरङ्य वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्थजाएणं अस्छिदित्ता विस्छिदित्ता पूर्य वा सोणियं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंत वा विसोहेंत वा साइजड़ ॥ ६७७॥ जे भिक्ख भण्णउत्यियस्स वा गारत्थियस्स वा कायिस गड वा पिलग वा अर्ड्य वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यनाएण अन्छिदित्ता विन्छिदित्ता प्य वा सोणिय वा णीहरेता विसोहेता सीओद्गवियडेण वा उत्तिणोद्गवियडेण वा उच्छोलेज वा पघोएज वा उच्छोलेत वा पघोएत वा साइज्जइ ॥ ६७८ ॥ जे भिक्खु र्रुण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायित गढ वा पिलग वा अर्ड्यं वा असियं वा मर्गदर्छ वा अञ्जयरेण दिवसोज सरवजाएक अधिरदिता विस्टिदिता पूर्व वा सोमिय वा जीहरेता मिसोहेता सीओदगनियदेव वा उत्तिगोदयविवदेव वा उपने केता परोएसा स्वकायरेणे आकेत्रमजाएमें आसिंपेज वा बिसिपेज वा आसिंगे व विकिर्दर्त वा साहज्ज्ञ ॥ ६७९ ॥ ये मिनवा कण्यदरिवयस्य वा गारस्थिवस्य वा कार्यसि यह वा पिक्रमें वा अरहने वा अंशियें वा सगहले वा अव्यवदेने वित्रकेने सरवक्षाएणं अध्यितिका विचित्रविता पूर्व वा शोकियं वा जीहरेता विसोहेता श्रीमोदरमियदेण का सरिजोदगविवदेण का उच्छोड़ेता प्रदोशता सन्तर्यार्थ शर्के क्यमाएचे मार्नियेचा निर्मियेचा खेळेल वा करूच वा जबचीएल वा सम्मीन र मक्त्रीज वा अव्यक्तिं वा मक्त्रोतं वा साइजह त ६८ ॥ जे मिक्स् जन्मनिक मरस वा गारत्विकस्स वा कार्यस्य गंडं वा पिक्रमें वा अरहतं वा अंसियं वा मार्गकं वा अभ्यमरे**नं ति**रुवेर्ण सत्ववाएनं अस्तिवित्ता निर्मेटरिया पूर्व वा स्त्रेनिर्व वा जीइरेता निसोदेता सीओव्यवियवेण या उत्तिनोदगवियवेज था उत्त्वोकेता प्रयोप्या सम्पर्दार्थं आनेक्प्रकाएपं जासियिता विভियिता रोडेप वा नएम वा नवनीएम वा अरुमंगेता भन्नेता अन्यवरेणं धूक्तवाएवं धूकेल वा पहुनेल वा धूमेरं वा पर्वृतेतं वा साइज्जइ ॥ ६८९ ॥ जे मिक्चू अन्यवरिक्यस्य वा गाररिक्यस्य वा पाहिनिर्मियं वा इच्छिकिमियं वा अगुर्फीय विवेशिय २ शीहरेड जीहरेतं वा समन्त्र n ६८९ p के मिक्**क् अ**ज्जातस्थारस वा मारस्थियस्स वा श्रीहाओ जहारिहाको कप्पेज वा एंठनेज वा कप्पेंटी वा एंठवेंटी वा धाइजाइ ॥ ६८३ ॥ वे मिनवा लाग उत्पितस्स वा भारत्वियस्स वा बीहाह बंबरोमाई क्रमेज वा संटमेज वा क्रमेंसे वा चेठवेतं वा साम्बद्ध ॥ ६८४ ॥ के शिक्ष्य अञ्चटतिकसर वा मार**श्वि**कस वी चीहाह कनसरीमाई क्योज वा संठवेज वा क्योंतं वा संठवेंतं वा साहत्वह ए ६४५० ने मिन्न, मञ्जयरियम्स वा पारलियस्य वा चीवतं मंग्ररोमतं कृप्येज वा सम्बन्ध वा कप्पेते वा स्टब्नेतं वा सत्त्वका ॥ ६८६ ॥ से मिल्ला सम्बद्धानास वा गारश्चित्रस्य का बीहाई णासारोमाई कप्पेज वा संटवेज वा कप्पेंत वा संटवेंस वा साइजाइ ॥ ६८७ ॥ से मित्रम् अञ्चलस्य वा गारस्वियस्य वा रीहाई वन्न रोमाई कप्पेज का छेठनेज का कप्पेर्त का छठनर्त का साहज्जर प्र ६८८ १ ह वे भिन्नम् मञ्चलित्रमस्य ना गाररिपनस्य ना ग्रीहाई कव्यरोमाई कप्पेत्र ना संस्केत वा कम्पेरी वा चैठनेंदी वा सहस्रह ॥ ६८८ २ ॥ के सिक्ख कम्बर्गनिवस्स वा गारशिवमस्त हा देते आफ्लेब्ब वा पर्यक्तेज वा बार्यसर्त वा पर्यक्ते वा सम्बन्ध ॥ ६८६ ॥ वे मिन्य कन्नवरिवनस्य वा सारश्यिमस्य वा बंधे उच्छेन्त्र वा

पधोएज वा उच्छोरेंत वा पघोएत वा साइजइ ॥ ६९० ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थि-यस्स वा गारित्थयस्स वा दंते फूमेज वा रएज वा फूमेंतं वा रएत वा साइजइ ॥ ६९१ ॥ जे भिक्ख् अण्णडित्थयस्स वा गारित्थयस्स वा उद्वे आमजेज वा पमजेज वा आमजंत वा पमजत वा साइजइ ॥ ६९२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थि-यस्स वा गारित्थयस्स वा उद्वे सवाहेज वा पिलमहेज वा सवाहेंत वा पिलमहेंतं वा साइजइ ॥ ६९३ ॥ जे भिक्ख् अण्णउित्थयस्स वा गारित्थयस्स वा उद्दे तेह्रेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंत वा भिलिगेंत वा साइजाइ॥ ६९४॥ जे भिक्ख् अण्णडित्थयस्स वा गारित्थयस्स वा उद्दे लोदेण वा क्क्रेण वा उल्लोकेन वा उब्बहेज वा उल्लोकेंत वा उब्बहेंत वा साइजह ॥ ६९५ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उद्वे सीओदगवियहेण वा उत्तिणोदगवियहेण वा उच्छोळेज वा पधोएज वा उच्छोळेंत वा पधोएत वा साइज्जइ ॥ ६९६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उट्ठे फूमेज्ज वा रएज वा फूर्मेत वा रएत वा साइजइ ॥ ६९७ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारित्थयस्स वा दीहाइ उत्तरोद्वरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेंत वा सठवेंतं वा साइज्जइ ॥ ६९८ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्यियस्स वा गारस्थियस्स वा दीहाइ अच्छिपत्ताइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेंत वा सठवेंत वा साइजइ ॥ ६९९॥ जे भिक्खू अणगडित्ययस्स वा गारित्ययस्स वा अच्छीणि आमजेज वा पमजेज वा आमजते वा पमजत वा साइजइ॥ ७००॥ जे भिक्ख अण्णजस्यियस्स वा गारस्यियस्स वा अच्छीणि सवाहेज वा पलिमहेज वा सवाहेत वा पलिमहेत वा साइजाइ॥ ७०१॥ जे भिक्खू अण्णडित्ययस्स वा गारित्ययस्स वा अच्छीणि तेह्रेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिल्मिज वा मक्खेंत वा भिल्मिंत वा साइजाइ॥ ७०२॥ जे भिक्ख अण्णडित्ययस्स वा गारित्ययस्स वा अच्छीणि लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लेलेज वा उच्चेट्टेज वा उल्लेटेंत वा उन्वर्टेतं वा साइज्जइ ॥ ७०३ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थि-यस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेंत वा पघोएत वा साइजाइ ॥ ७०४ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि फ़ुमेज वा रएज वा फ़ुमेंत वा रएत वा साइज्जड ॥ ७०५ ॥ जे भिक्ख अण्णजित्थयस्स वा गारित्थयस्स वा दीहाइ भुमगरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेतं वा सठवेंत वा साइजइ ॥ ७०६ ॥ जे भिक्ख् अण्णडित्थयस्स वा गारित्ययस्स वा दीहाइ पासरोमाइ कप्पेज वा सठवेज षा क्पेंतं वा सठवेंत वा साइजइ ॥ ७०७-१ ॥ केसरोमाइ :॥ ७०७-२ ॥

भे भिक्**ष्** शण्यसंख्यस्य वा गार्श्वियस्य वा अधिक्रममे वा **ध**ण्यामं वा बंदम्मे था जहमस्त्रं ना जीहरेज वा विसोद्रेज वा वीहरेंतें वा विसोदेंतें वा शहजार ॥ > ४॥ के मिक्क कल्पराधिवस्य वा गार्टियवस्य वा कानानो सेर्ग वा वर्त्र वा के ग मर्भ वा चौद्दरेज वा निसोद्देज वा पीट्दरेंत वा विसोदेंत वा सहजद ॥ • ६ ॥ चे मि<del>नव्</del> गामाध्ययाम बुक्रमाणे जन्मतरियनस्य वा गारश्यितस्य वा सीस्त्रवारि<sup>ई</sup> करेड करेंते वा साइजड ॥ ७९ ॥ जो शिक्ष्य जप्पार्थ वीभावेड वीमार्वेत व साइजाइ ॥ ७१९ ॥ जो शिक्ष्य परं बीमाबैह बीमाबेंद्रं वा सहजाह ॥ ७१२ <sup>॥ वे</sup> मिक्नम् मप्पानं विम्हानेह विम्हावेर्तं वा साहज्यह् ॥ ७१६ ॥ जे मिक्नम् पर विम्हानेर मिम्बार्वेट वा सहस्रह ॥ ७१४ ॥ वे मिन्न् नपार्न विपारियासेड निपारिकरी वा साइकड़ ॥ ७१५ ॥ को निक्ष्य परे विप्यरिवासेड विप्यरिवासेट वा सक्राह्म ॥ ७१६ ॥ व निश्रम् सुद्दवन्तं करेद्द करेंर्त वा सहस्रद्र ॥ ७१७ ॥ वे निर्म् वेर्जनिरहरजेटि एजे गमणे एकं बागमणं एकं गमणायसयं हरेड् क्रेंटे वा साइज्यह ॥ ७९८ ॥ से निक्ष्य विद्यामीयणस्य ध्वरूणं वयह वर्गतं वा सहस्रह ७९९ ॥ के जिल्ला राहमोनगस्त वर्ण नगइ वर्गतं ना साइन्द्र ॥ ७२ ॥ वे मिक्ब विमा असर्ज वा ४ पविकादिता दिया ग्रेक्ट मुर्वेत वा साहक्ट सं<sup>41</sup>ी के निमम् दिना करायें वा ४ पविज्ञाहेता रहिं सुबह सुबंदें वा साहबह 🛚 ४९९ 🗈 जे निनम्ब् रत्ति असर्ण ना ४ पनिम्माहेता विद्या <u>सं</u>बद्ध <u>सुर्जर्य ना साहजह</u> सं ४९३ है चे मिन्न्यू रति असम् वा ४ पविष्णाहेता रति भुक्तः ॥ ७१४ ॥ वे मिन्न्यू नर्स् वा ४ परिवासेह परिवासितं वा साहन्त्वह ॥ ७२५॥ के सिवन्द परिवासिक्टरे जननस्र बा ४ दसप्पंतानं वा भूक्ष्पमार्थं वा विद्युप्पमार्थं वा बाह्यर बाहारेड बाहारेंडे व साहजह ॥ ७२६ ॥ वे निशव्य माहेर्य वा पहेर्ण वा समर्थ वा हिंदोले वा श्रन्तवर्र का तकप्तगार निरुवस्त्रे क्रीरमार्च पेक्षाए ताए आसाए ताए पिकासाए ते रवर्षि काञ्चाल्य उवाहणानेद स्वतहणानेते वा साहज्जह 🛭 ७२७ ॥ क्षे निकल् विदेवनर्पिई सुंबद सुंबति वा साहबाह ॥ ७२८ ॥ के विकास अहात्वर्ग पसंबद पखरीते वा सहबार ॥ ७२९ ॥ जो मिनना कालाई नंबह नंबंत वा साहनाह ॥ ७३ ॥ वे मिनन नावर्गं था अनावर्गं वा स्वासर्गं वा स्थानासर्गं वा अनवर्तं प्रन्यादेशं ध साहमाह ॥ ४२१ ॥ में विक्त् भावर्ष वा स्थापन वा जनाव जनाव स्थापन वा १ दिया चेतुं निर्ति सवासेशुं सं विद्यारिण शुंबमाणस्य पदमांची स्वरं ।

490

२ बकारर्य- गण्यत्व जागावेही रोगार्वकेही से विश्वकर्ये ।

दीना ले कर्म शतुत्रों को जीत के सिद्ध पद को प्राप्त करने की हमेशा अभिलापा रखना। (४) अनुकम्पा-स्वात्मा, परामा की अनुकम्पा करनी अर्थात् दुःखी जीव को सुखी करना। (४) आसता-जैलोक्य पूजनीय श्री वीतराग के का पर दढ़ श्रद्धा रखनी, हिताहित का विचार, अर्थात् अस्तित्व भाव में रमण करना। यह व्यवहार सम्यक्त्व का जिला है। जिस चात की न्यूनता हो उसे पूरी करना।

## २ भूषण के ५ भेद--

(१) जिन शासन में धैर्यवन्त हो। शासन का हर एक कार्य धैर्यता से करें। (२) शासन में भिक्तवान हो। (३) शासन में कियावान हो। (४) शासन में चातुर्य हो। हर एक कार्य ऐसी चतुरता के साथ करे ताकि निर्विध्नता से हो। (४) शासन में चतुर्विध संघ की भिक्त ख्रीर वहुमान करने वाला हो। इन पांच भूपयों से शासन की शोभा होती है।

# ७ दूषण पांच प्रकार का--

(१) जिन वचन में शंका करनी।(२) कंखा-दूसरे मतों का आडम्बर देख के उनकी बांछा करनी।(३) विति-गिच्छा-धर्म करणी के फल में सन्देह करना कि इसका फल ऊछ होगा या नहीं अभी तक तो कुछ नहीं हुवा। इत्यादि।(४) पर पाखराडी से हमेशा परिचय रखना।(४) पर पाखराडी की प्रशंसा करना। ये पांच सम्यक्त्व के दूपण हैं इन्हें टालने चाहिये।

### बारसमो उद्देसी

जे भिक्ख् अण्णयिं तसपाणजाइ तणपासएण वा मुजपासएण वा कट्ठपासएण वा चम्मपासएण वा वेत्तपासएण वा क्षुत्रपासएण वा र्ज्जपासएण वा वधइ वधत वा साइज्जइ ॥ ७४०-१ ॥ जे भिक्ख् अण्णयिं तसपाणजाइ तणपासएण वा मुंजपासएण वा कट्ठपासएण वा चम्मपासएण वा वेत्तपासएण वा सुत्तपासएण वा रज्जपासएण वा कट्ठपासएण वा चम्मपासएण वा साइज्जइ ॥ ७४०-२ ॥ जे भिक्ख् यिनकाय-क्षुण २ पचक्खाण भजइ भजत वा साइज्जइ ॥ ७४९ ॥ जे भिक्ख् परित्तकाय-क्षुण आहारेइ आहारेंत वा साइज्जइ ॥ ७४९ ॥ जे भिक्ख् तणपीढग वा पलाल-पीढग वा छगणपीढगं वा कट्ठपीढगं वा पर्वत्येणोच्छण्ण आहिट्ठेइ आहिट्ठेत वा साइज्जइ ॥ ७४२ ॥ जे भिक्ख् पुढवीकायस्स वा साइज्जइ ॥ ७४४ ॥ जे भिक्ख् पुढवीकायस्स वा आउकायस्स वा अगणिकायस्स वा वाउकायस्स वा वणप्पइकायस्स वा कलमा-पावि समा(रं)रमइ समारमत वा साइज्जइ ॥ ७४५ ॥ जे भिक्ख् सिक्तु सिक्तु स्वित्तक्क्ष्य दुल्हुई दुल्हुंत वा साइज्जइ ॥ ७४६ ॥ जे भिक्ख् सिक्तु सिक्तु सुजत वा

१ सजईण । २ जिणकप्पीण । ३ थेरकप्पीण । ४ जिणकप्पिणो कस्स वि साहेज णेच्छति अओ एगल्ला विहरंति ति । ५ 'गिहत्थ' ।

साहमाह ११ ७४७ ॥ से मिथबा निविद्यार्थ परिवृद्ध परिवृद्ध वा साहमाह ॥ ४४८ है में भिक्क गिक्किसिक बाहेर बाहेर्स वा साएकड़ ॥ ४४९ ॥ जे मिनक विहेते इच्छे करेड् करेंट्रे वा साइजाइ ॥ ७५ ॥ वे शिवृष्ट् प्रश्तकमक्त्रेम इत्वेत व मरोप वा व[क्वि]व्यीएण वा भाग्यीय वा असर्व वा ४ प्रक्रिमाहेड प्रक्रिमहेर्व र साइजड् ॥ ४५१ ॥ जे मिक्ब् मिहत्वाण वा अन्य(श)वित्वियान वा सीबोहरूपी मोगेण इरनेज का गरीमा वा वस्त्रीएक वा आयणेज वा असर्व वा ४ परित्रगईर पविभगाईंते वा साहज्ज ॥ ४५२ ॥ जे सिक्ज वप्पालि वा परिवालि वा उपाधारी ना पक्रकानि का उपसरानि वा निज्यासानि वा वातीनि वा योजवासनि वा गीर्वे याचि वा सराधि वा सरपेशियाचि वा सरसरपेशिवाचि वा ववन्तर्यसमाहितार अभिसंघारेड अभिसंघारेतं वा सहस्वद् ॥ ७५३ ॥ जे मिक्स क्लामे स गङ्गाधि वा बुसावि वा वचावि वा वचनितुम्यावि वा प्रमादानि वा प्रमानिति म्गाप्ति वा चक्कुर्रसमप्रकेबाए अभिसंशारेह अभिसंशारेतं वा साहण्यः 🛭 🗥 🗜 के सिन्छ, पामाणि का जगराणि का खेडाणि का कल्पडाणि वा सर्वेशिक प दोपमुद्रामि वा प्रश्नानि वा कामराजि वा सेवाहाचि वा सम्बद्धीरी वैसमपरिवाप कमिसंबारेड् कमिसंबारेंचे वा साइक्ट ॥ ७५५ ॥ जे भिन्द मासमहानि वा गगरमहायि वा खेडमहायि वा कम्बडमहामि वा महंकाहानि द दोषसुहमहानि वा पर्शनसहानि वा जागरसहानि वा चेवाहमहानि वा स<del>न्यिय</del>ी महास्य वा चक्क्क्वंसणपविवाप् अभिसंघारेद्र अभिसंगारेतं वा सतम्बर व 🛰 🗓 के मिक्न्यू पानवहानि वा जगरवहानि वा केववहानि वा कावजनहानि वा मर्ववनदानि ना दोणमुद्दवद्यानि ना पश्चनदानि ना कार्यवदानि ना संनद्रव्यानि वा समिवेन्त्रहामि वा वजनार्यसम्बद्धमाए अभिसंवारेड अभिसंवारेतं वा सहस्रो ॥ ४ ४ ॥ मे निकल् गामकाणि या नगरपदाणि वा चेद्रपदानि वा वकारकाणि वा महेबपहाणि वा योजमुहणहाणि वा पश्चपहाणि वा कागरपहाणि वा संबाहण्याणि वा सम्बद्धिमानेसपहान्य वा चनन्तुर्वसनप्रक्षियाए अमिसवारेह अमिसवारेत वा स्प्रमा ॥ ४५८ ॥ में मिनव् गामदाहानि वा जान सम्जित्मतहारि वा जन्मस्तनपरि बाप् अभियंत्रारेड् अमिर्धवारेतं वा साइव्यहः ॥ ७५९ ॥ वे सिन्दं शास्त्रहवादि वा इत्मिकरणायि वा उहतरगामि वा खेलकरणायि वा महिएतरवामि वा स्वर्ष रकामि वा चम्लुवसवपडिवाएं असिसंबारेत् असिसंबारेतं वा साहम्बर्धः ह के भित्रम् सासतुद्धाणि वा इत्तितुद्धाणि वा उहतुद्धाणि वा सोवतुद्धाणि वा सङ्ग्रिस्त का सुवरभुद्धानि वा चक्र्युवंसनपटियाएं अभिसंपारी अभिनेत्राति

वा साइज्जइ ॥ ७६१ ॥ जे भिक्ख् उज्जूहिय[द्वा]ठाणाणि वा हयज्रहियठाणाणि वा गयज्ञहियठाणाणि वा चक्खुदसणपिडयाएं अभिसधारेह अभिसधारेत वा साइजाइ ॥ ७६२ ॥ जे भिक्ख् अ(भिसे)म्घायठाणाणि वा अक्खाइयठाणाणि वा माणुम्मा-णियठाणाणि वा महया हयणद्रगीयवाइयततीतलतालतुडियपडुप्पवाइयठाणाणि वा चक्खुदसणपिंडयाए अभिसधारेइ अभिसधारेत वा साइजाइ ॥ ७६३ ॥ जे भिक्खू क्ट्वकम्माणि वा चित्तकम्माणि वा ( लेवकम्माणि वा ) पोत्थकम्माणि वा दतकम्माणि वा मणिकम्माणि वा सेलकम्माणि वा गठिमाणि वा वेढिमाणि वा पूरिमाणि वा सघाइमाणि वा पत्तच्छेजाणि वा वाहीणि वा वेहिमाणि वा चक्खदंसण-पिंडियाए अभिसंघारें अभिसंघारेंत वा साइजाइ ॥ ७६४ ॥ जे भिक्खू हिम्वाणि वा डमराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुद्धाणि वा महासगा-माणि वा कलहाणि वा वोलाणि वा चक्खदसणपिडयाए अभिसधारेइ अभि-संघारेत वा साइज्जइ॥ ७६५॥ जे भिक्खू विरूवरूवेस्र महुस्सवेस्र इत्थीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा मज्झिमाणि वा डहराणि वा अणलकियाणि वा सुअलकि-याणि वा गायताणि वा वायंताणि वा णचताणि वा इसताणि वा रमताणि वा मोहताणि वा विउलं असण वा ४ परिमायताणि वा परिभुजताणि वा चक्खदसण-पडियाए अभिसघारेइ अभिसघारेंतं वा साइजाइ ॥ ७६६ ॥ जे भिक्खू इहलोइएसु ना रूवेस परलोइएस वा रूवेस दिहेस वा रूवेस अदिहेस वा रूवेस सएस वा रूवेस असुएस वा रूवेस विण्णाएस वा रूवेस अविण्णाएस वा रूवेस सजह रजह गिज्झड अज्झोववजाइ सज्जत रज्जत गिज्झत अज्झोववज (जमाण)जत वा साइजाइ॥ ७६७॥ जे भिक्ख् पढमाए पोरिसीए असण वा ४ पडिग्गाहेता पच्छिम पोरिसिं उवाइणावेइ उवाइणार्वेत वा साइज्जइ ॥ ७६८ ॥ जे भिक्खू परं अद्धजोयणमेराओ असण वा ४ उवाइणावेइ उवाइणावेंत वा साइजाइ ॥ ७६९ ॥ जे भिक्खू दिया गोमय पिडग्गा-हेत्ता दिया कायसि वणं आलिंपेज वा विलिंपेज वा आलिंपतं वा विलिंपत वा साइजाइ ॥ ७७० ॥ जे भिक्ख् दिया गोमय पडिग्गाहेत्ता रिंत कायसि वण आर्लिपेज वा विलिपेज वा आर्लिपत वा विलिपत वा साइजाइ ॥ ७७१ ॥ जे भिक्ख् रितं गोमय पिडग्गाहेत्ता दिया कार्यंति वण आर्लिपेज वा विलिपेज वा आर्लिपतं वा विलिंपत वा साइजइ॥ ७७२॥ जे मिक्ख् रितं गोमय पढिग्गाहेत्ता रितिं कायित वण आलिंपेज वा विलिंपेज वा आलिंपत वा विलिंपत वा साइ-जाइ ॥ ७७३ ॥ जे भिक्ख् दिया आलेवणजाय पडिग्गाहेता दिया कायसि वण आर्लिपेज वा विलिपेज वा आर्लिपत वा विलिपत वा साइजइ ॥ ७७४॥

ये मिन्स दिया आक्रेनपमान परिमाहिता एपि कार्यसि वर्ग लास्पित स्व मिनियम ना भासिपित ना मिनियत ना साम्बाह ११ जरूर ११ से मिन्स परि मानेनजनामं परिमाहिता सिना कार्यसि वर्ग आक्रिये ना सिनियम ना नार्मित पर्त ना मिनियम ना साम्बाह ११ जरूर ११ से मिन्स र्ती आक्रेनपमाने परि माहिता एपि कार्यसि वर्ग लासिये ना सिनियम ना भासिपिय ना उन्हों नार्मित महासित सा साम्बाह ११ जरूर ११ से मिन्स कार्यसिक्त ना मारियियर ना उन्हों नार्मित महासित सा साम्बाह ११ जरूर ११ से मिन्स कार्यामा कार्यस्य ना उन्हों नार्मित महासित ना साम्बाह ११ जरूर ११ से मिन्स कार्यामा कार्यस्य ना उन्हों नार्मित मानेनामो निम्मानो भौतो मास्स्य कार्यो पर महाज्ञामा अर्था साम्बाह ११ से ११ से

#### तरहमा उदेशी

ज मिक्न्यू मर्गतरब्रियाए पुडवीए ठावं वा सेमं वा अभिकेन वा निवीदिन <sup>वा</sup> चेपुर चेपूर्व वा शाहजार ॥ ७८९ n जे मिनना शरिमिद्धाप प्रवर्गीए ठार्च वा" साहज्य ॥ ७४२ ॥ जे मिन्स् मधियाणकाए पुरुषीए ठालं का साहज्य ॥ ७८३ ॥ ज मिन्स् छस्त्रकाए पुरुषीए ठाणं का सहज्जर ॥ ७४४ ॥ जे मिक्च वित्तर्मराए पुरुषीए ठार्ण था साहक्य ॥ ५८५ ॥ जे मिन्द वित्तर्गार चिकाए ठाण था - साइजाइ ॥ ७०६ ॥ जे मिनन्तु निरामंताए केवए अर्थ वा साइजइ ॥ ७८७ ॥ ज भिन्न्य, बोलावासंसि वा शारत जीवपदक्षिए समडे समी सबीए सहरिए सकोरस सजहरू सजतियणग्यहरायाश्चीजिमप्रवासेतावर्यत आर्थ मा साइन्यइ ॥ ७८८ ॥ जे मिन्स् धूर्णनि मा गिर्देख्येषि पा ठर्ता हो यात्रेष्ठि ना कार्य-असरि वा गुम्बदे बुण्यिनिगते अभिक्षे जसायके ठार्च वा साहजद ॥ ४८९ है के मित्रम् इतिमंसि वा मितिसि वा सिलेसि वा केलंसि वा अंतरिस्य बार्यनि वी हुस्यदे दुण्यिनियो अधिवंधे वसावके ठावं वा साहसह ॥ ७९ ॥ जे मिन्स क्षेपेसि वा फरिबेंगि वा मैंपेसि वा मेडबेरी वा मार्मीम वा पामार्थीम वा इम्म हर्तिम वा दुस्मसे दुण्णिनियते अधिवर्षे चसावके ठार्च वा सद्भार ॥ ४५१ व जे भितरा, सन्मदियमं वा बारम्बिनं वा निर्प्यं वा सिखेर्गं वा बहुत्वयं वा वदस्यं का सुर्गुगा नेपासि का समाहरकर्वींस का शिक्तापेड सिक्तापेत का गाउँका अ अ व थे भिक्त अञ्चात्रीययं वा वात्रीवयं वा आसाउँ वयर वर्षतं वा तार्ज्य

॥ ७९३ ॥ जे भिक्ख् अण्णजित्ययं वा गारित्थिय वा फरुस वयइ वयत वा साइजाइ ॥ ७९४ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थिय वा गारत्थिय वा आगाढ फरुस वयइ वयत वा साइजइ ॥ ७९५ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियं वा गारित्थयं वा अण्णयरीए अचा-सायणाए अचासाएइ अचासाएत वा साइज्जइ ॥ ७९६ ॥ जे भिक्ख् मण्णउत्थि-याण वा गारत्थियाण वा कोउगकम्म करेइ करेंत वा साइजाइ॥ ७९७॥ जे भिक्क अण्णउत्यियाण वा गारत्थियाण वा भूइकम्म करेइ करेंत वा साइजाइ ॥ ७९८ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा पिसण करेइ करेंतं वा साइजइ ॥ ७९९ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा परिणा-पसिण करेड करेंत वा साइज्जइ॥ ८००॥ (जे पसिण कहेइ कहेंत पसि-णापिसणं ) जे भिक्ख् अण्णजित्ययाण वा गारित्ययाण वा तीय निमित्त क(हे)रेइ करेंत वा साइजाइ ॥ ८०९ ॥ ( पहुप्पण्ण आगमिस्स ) जे भिक्क् अण्णउत्यियाण वा गारित्ययाण वा लक्क्षण करेइ करेंत वा साइजइ ॥ ८०२ ॥ जे भिक्खू सण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा वजण करेइ करेंतं वा साइजड ॥ ८०३ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा समिण करेड़ करेंत वा साड्जड़ ॥ ८०४ ॥ जे मिक्ख् अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा विज पडजइ पडजत वा साइजाइ ॥ ८०५ ॥ जे भिक्खू अण्णडित्ययाण वा गारित्थयाण वा मत पडजइ पडजत वा साइजइ॥ ८०६॥ जे भिक्ख् अण्णडित्थयाण वा गारित्थयाण वा जोग पउजइ पउजत वा साइजड ॥ ८०७ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा मगग वा पवेएड सिघ वा पवेएड (मग्गाओ वा सधिं पवेएड) सधीओ वा मग्ग पवेएँड पवेएत वा साइज्जड ॥ ८०८ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियाण वा गारत्यियाण वा धाउ पवेएइ पवेएत वा साहजह ॥ ८०९ ॥ जे भिक्क अण्ण उत्थियाण वा गारित्थयाण वा णिहिं पवेएइ पवेएत वा साउज्जड ॥ ८१० ॥ जे भिक्खू मत्तए अ(प्पा)ताण हेहइ टेहत ना (पलोएइ पलोएत ना) साइजाइ ॥ ८११ ॥ जे भिक्ख् अहाए अप्पाण देहड देहत वा साइजड ॥ ८१२ ॥ जे मिन्नख् असीए अप्पाण देहड् देहत वा साइज्जड ॥ ८१३ ॥ जे भिक्ख मणीए अप्पाण देहड देहत वा साइज्जइ ॥ ८१४ ॥ जे भिरम् इडपाणिए अप्पाण देहड् देहत वा माइज्जड ॥ ८१५ ॥ जे भिक्ख् तेहें अप्पाण देहह देहत वा साइज्जइ ॥ ८१६ ॥ जे भिक्यू मप्पिए अप्पाण देहड देहत वा साइजाइ ॥ ८१७ ॥ जे भिम्नव् पाणिए अप्पाण देहइ देहत वा

१ फुडीकरणमेयस्सायारविडयसुयक्सिधिरियज्सयणाओ णायव्य ।

सारम्मः ॥ ८९८ ॥ से मिनस्य समर्थं करेड् करेत का साहकाइ ॥ ८९९ ॥ वे मिल्ला निरेयमं करेड करेंद्रं वा साइआइ॥ ८२ ॥ वो मिल्ला वसमिरेरणं करेड करेंद्र का साइज्यह ॥ ८२१ ॥ जे निक्च आरोगियपत्रिकर्म करेड करेंद्र मा साहज्यह ॥ ८२२ ॥ वो मितना पासली नंतह गेर्नर्स था साहज्यह ॥ ८२३ ॥ से मिक्स पासलं पर्वसङ् पर्वसंतं वा साङ्ख्यः ॥ ८२४ ॥ के मिनस् इसीवं वेदर चंदर्त वा साइज्यह n ८२५ n के मित्रम् हुसीलं वसंस्ट वसंसंत वा सहजा ॥ ८२६ ॥ के मिल्ल् कोसल्यं बंदह बंदेतं वा साहबाह ॥ ८२७ ॥ के मिल्ल् ओसम्मं परेतर परंतरं वा सार्वार ॥ ८२८ ॥ वे मित्रवा संसर् वंदर षा साहज्जह n ८२९ n के जिलका संसर्व पर्सस्य पर्सस्य का साहज्जह म ८२ 🝍 से मिनन्त्र मिदिने बंदद वेर्तेत का साइज्यह ॥ ८३९ ॥ से मिनन्त्र निदिनं पर्वस्य पर्छर्छ वा साहज्ज्य ॥ ८३२ ॥ से मिथन्यू काहित वंदह नंदर्छ वा साहज्ज् u ८३३ n के मिनक काहिये पर्यसङ् प्रतेषेतं का साङ्क्षकः u ८३४ a के भिन्द पासनिर्व बंदर बंदर्त वा साइजार ॥ ८३५ ॥ जे मिक्न पासनिर्व पर्सार पर्सरी NI सहस्त्रह ॥ ८१९ ॥ में मिनक मानव वंदह वंदेर्त वा सहस्रह ॥ ८१७ ॥ में मित्रम्, सामर्ग पर्धस्य, पर्धसंतं वा साङ्बाइ ॥ ८६८ ॥ वे शिरम् संस्थारि बंदर बंदर्त का साहजह ॥ ८३९ ॥ में मिल्क् संप्रसाहित पर्यस्त प्रस्तां वा चाइनद् ॥ ८४ ा में मिनन्त् वा(इ)ईपिंड सुंबद् शुंबर्द वा चाइनद् ॥ ६४९ व में निरुष्ट पूर्वेपिंग गुंबर गुंबर्ग या साहबाद ॥ ४४२ ॥ के मिरुष्ट, जिलिएपिं र्मुंबर मुंबंदे वा सारबर ॥ ४४२ ॥ जे मिनवा वाजीवियरिङ मेवर मुंबंदे वा चारकार II ८४४ II में निकल् बर्गामपरिंड सुंबद भुंबर्त वा चारकर 🛚 ८४º 🖹 के मिन्द निमिच्छापित्रं शुंबद शुंबनं वा धाइका ॥ ८४६ ॥ जे मिन्द को(e)वर्षित्रं ग्रेजर ग्रेजर्व वा सार्व्यह ॥ ८४७ ॥ वि भित्रस् मान्यित्रं ग्रे<sup>जर</sup> मुंजेर वा साइमइ ॥ ८४८ ॥ के मिनन् मानापिंड मुंबर भुंजेर वा सदम्ब n eve n जे भिनन्द सोगपित्रं मुख्य गुंबरी वा साप्तवार n ev ॥ जे भिन्दी निजारिंगे सुंबद सुंबर्ग वा साहकह ॥ ८५९ ॥ व्य सिक्ट्यू संवरिति धुंबह सुंबर्ग वा साहबह ॥ ८५३ ॥ के भितन्त् बुष्णवारित शुंबर शुंबर वा सहबा n ८५३ स में भित्रमा संत्रहानपित्रं भुंजर् भुंजर्त वा साहनार n ८५४ ॥ ज मिक्स, जोगर्पिर्ट मुंबद भुजर्त था साइनाइ। ते सेवमाणे आरमार साउम्बनीव परिवाद्याच चनपाइन ॥ ८५५ १ जिमीहऽज्हायके तेरहमी उहेसी समचो ॥ १६ १

# चउइसमो उद्देसो

जे मिक्ख् पंडिग्गह किणइ किणावेइ कीयमाहट्टु दिजमाण पंडिग्गाहेइ पंडि-ग्गाहेत वा साइजड ॥ ८५६॥ जे भिक्ख् पंडिग्गह पामिचेइ पामिचावेइ पामिचमाहरू दिजमाण पिडम्गाहेइ पिडम्गाहेत वा साइजइ ॥ ८५७ ॥ जे भिक्ख् पढिगाह परियद्देह परियद्दावेइ परियद्दियमाहर् दिज्जमाण पहिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा साइजाइ ॥ ८५८॥ जे भिक्ख पडिग्गह अ(न्छि)च्छेज अणिसिट्ट अभिहड-माह्रहु दि[दे]जामाण पंडिम्गाहेइ पंडिम्गाहेत वा साइज्जइ ॥ ८५९ ॥ जे भिक्ख् अइरेगपिडिग्गह गणि उद्दिसिय गणि समुद्दिसिय त गणि अणापुच्छिय अणामंतिय भण्णमण्णस्स वियरइ वियरत वा साइजाइ ॥ ८६० ॥ जे भिक्ख् अइरेग पहिस्यह खुइगस्स वा खुड्डियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा अहत्यच्छिण्णस्स अपायच्छि-ण्णस्स अणासाछिण्णस्स अकण्णिच्छण्णस्स अणोद्वच्छिण्णस्स सत्तस्स देइ देंत वा साइजाइ ॥ ८६१ ॥ जे भिक्न अइरेग पडिम्मह खुरुमस्स वा खुरियाए वा थेर-गस्स वा थेरियाए वा [अ]हत्यच्छिण्णस्स [अ]पायच्छिण्णस्स [अ]णासाछिण्णस्स [अ]कण्णिच्छण्णस्स [अण]ोद्वच्छिण्णस्स असकस्स न देइ न देंत वा साइजङ् ॥ ८६२ ॥ जे मिक्बू पंडिमाह अणल अथिरं अधुव अधारणिज घरेड धरेंत वा साइजइ॥ ८६३॥ जे भिक्खु पडिगगह अर्ल थिरं धुव घारणिज न धरेइ न घरेंतं चा साइजाइ ॥ ८६४ ॥ जे भिक्ख वण्णमत पहिरगह विवण्ण करेइ करेंत वा साइ-जाइ॥ ८६५॥ जे भिक्ख् विवण्ण पहिरगैह वण्णमत करेह करेंत वा साइजाइ॥ ८६६॥ जे भिक्खुणो णवए मे पिंडिग्गहे लखेत्तिकृष्ट् तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा मिलिंगेज वा मक्खेंत वा भिलिंगेत वा साइजइ ॥ ८६७ ॥ जे भिक्खू णो णवए मे पहिरमहे लद्धे तिकटु लोद्धेण वा कक्षेण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उच्छोलेज वा उन्नलेज वा उच्छोलेंतं वा उन्वलेंत वा साइजइ॥ ८६८॥ जे भिक्खु णो णवए मे पिडम्महे छद्धेतिकर्टु सीओद्गवियदेण वा उसिणोद्गवियदेण वा उच्छोळेज वा पधोएज वा उच्छोठेंत वा पधोएत वा साइजाइ ॥ ८६९ ॥ जे भिक्ख् णो णवए मे पडिम्महे लद्धेतिकहु वहु(दि)देवसिएण [वा] तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा सक्खेज वा मिलिंगेज वा मक्खेंत वा मिलिंगेंत वा साइजइ ॥ ८७० ॥ जे भिक्ख णो णवए मे पडिम्महे लढेत्तिकटु वहुदैवसिए(ण)ण लोद्धेण वा क्रकेण वा चुण्णेण वा बण्णेण वा उल्लेखेज वा उन्वलेज वा उल्लेखेत वा उन्वलेंत वा साइजइ ॥ ८७१ ॥ जे भिक्ख् णो णवए में पडिरगहें लंदेत्तिकहु वहुदेवसिएण

१ सोभाणिमित्त ।

५७ मुत्ता०

496

रीभेदगरिपक्षण वा उत्पिशदगरियक्षण वा जन्छेन्छ वा प्रधान्त्र वा उत्परिते या पंतीर्ती या नाइज्य ॥ ८७२ ॥ वे निवन् दुरिनर्गंत स परिनाई स्वेल्स् रारम का पएल का शक्तीएम का अक्लेज का जिल्लिक का अवर्ग है वा निर्दर्श मा गाण्या ॥ ८७३ ॥ ज भिरुष् दुध्यिपेश व पश्चिमहं सद्धतित होदेन ग काम वा नुस्तम वा वरीय वा उहातेक वा उसके वा वहाँ रेर्न वा उसकें हैं गारम्य ॥ ८४४ ॥ ज विकृष् पुरिमानेथे से परिसाहे सदेतिका सीमारामियोग बा उनिमान्यश्यिकेच वा उपक्षेत्रम का प्रशासम का उसकेरेन का प्रशेर्ण प साउम्ह ॥ ८४ ॥ ॥ जिल्ला दुष्मिर्वि य पहिमादे सदीहित् बहुदेशीर होने वा पएन वा वयनीएन वा मश्लेख वा भिन्तिल वा महर्नि वा मिलिगेर्न वा गाण्यद ॥ ८७६ ॥ जे भिन्नह दुक्तियंथे व पहिलाई सदेगिर्स में देवनिएन सोदेश वा काल वा चुराव वा क्येन वा उल्लेख वा उल्लेख वा उल्लेश वा उम्पनेन वा सारकड् छ ८०० छ ज भिरुम् डुम्मिपेड मे परिम्पर्डे सदितिरदु बहुदेविक्त सीओरगांवयदेव वा उतिवीदगरंग्यदम हा बच्छेरेज वा पर्पाणक वा उरहोर्टिन वा प्योर्णने वा गाइकड़ u ४५८ n के भिरण अर्पत रहिमाए पुररीए दुस्पढे दुन्मिनियति भगिवेरे समास्त्रे प्रदेशके अवादेश व पदार्थक वा भावार्थेने वा पवार्थेने वा शहरूक है ८७९ व के मिन्छ सहिन्छ। पुरुवीय दुम्बदे दुल्लिमिनो अधिवंत बसाबके पहिमाई शायावेश हा प्यापेश ना मानावेतं ना पवावेनं वा मार्ज्यह ध ४४ ॥ अ अञ्चल समरस्वाए तुष्टीर कुम्बदं कुलिक्तिती अभिनेपे चमाचले पडिम्बद् आयावेळ वा प्यावेळ वा सावारे का प्यार्वेत वा छात्रका ॥ ८८९ ॥ के जिल्ला महिनाकाए प्रत्वीय दुन्ते दुनिगरियते जमिर्देपे चनावके पहिलाई जागावेज वा प्वावेज वा जागावें स प्यापितं वा साद्रक्षद्र ॥ ४४२ ॥ वै भिन्तुः विश्वमंताए पुत्रवीर हुन्ववि हुन्विविद्यो क्रमिद्भी बसायके पडिमाई आयावेज वा वनावेज वा आवादें वा वनावें व शाहमाइ ॥ ४८३ ॥ वे मिनल चित्तमीवाए शिकाए पुरुषि पुरिवारिकारे समिति चमापरे परिमाई आयामेश वा पतानेश वा आयापेत वा प्यावित वा सम्बद् प्र ८६४ ॥ वे मिस्स् वित्तर्मताए कंद्रप्र बुक्वेचे बुक्किक्टिस्त क्रक्किप ब्राह्मक पढिमाइ भागायेज वा प्यापेज वा भागावेतं वा प्यापेनं वा पार्टमर है हरू है में भित्रम् कोमावारीय वा बावर् बीवस्त्रीय समझ समझ सबीर सहीर समोत्से स्वत् स्वतिगणम्यम्पाधिसम्बन्धास्तान्(ए)गीर्थ द्वाप कृत्यस्य मनिभी वस्त्रवर्धे परिस्माई जानावेज वा पतावेज वा भागावेते वा समझी वा

साङजङ ॥ ८८६ ॥ जे भिक्ख् थूणंसि वा गिहेलुयसि वा उम्रयालंसि वा का[झा]म[व]-जलंसि वा दुव्यदे दुण्णिक्सिंसे अणिकपे चलाचले परिग्गह आयावेज वा पयावेज वा आयावेंते वा पयावेंत वा साइजाइ ॥ ८८७ ॥ जे भिवख् कुलियंसि वा भितिसि वा सिलसि वा खेळुसि वा अत(रि)लिक्खजायसि वा दुन्यद्धे दुण्णिक्सित अणिकपे चलाचले पहिरगह आयावेज वा पयावेज वा आयावेत वा पयावेत वा साइजइ ॥ ८८८ ॥ जे भिक्ख् खघिस वा फलहंसि वा मचिस वा मडविस वा मालिस वा पासार्यसि वा दुच्चद्धे दुण्णिक्खित अणिकपे चलाचले पिडग्गह आयावेज वा पयावेज वा आयार्वेत वा पयार्वेत वा साइजइ ॥ ८८९ ॥ जे भिक्ख पडिग्गहाओ पुढवी-काय णीहरइ णीहरावेइ णीहरिय आह् हु देजामाण पिडम्गाहेइ पिडम्गाहेंत वा साइजइ ॥ ८९० ॥ जे भिक्यू पिडम्महाओ आउद्माय णीहरड णीहरावेड णीहरिय आहरू देजमाण पडिग्गाहेड् पडिग्गाहेत वा साइजइ ॥ ८९१ ॥ जे मिक्ख् पडिग्गहाओ तेनकाय णीहरइ णीहरावेइ णीहरिय आहरू देजमाण पिंडरगाहेंद्र पिंडरगाहेंत वा साइजड ॥ ८९२ ॥ जे भिक्खू पहिम्महाओ कदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुप्पाणि वा फलाणि वा णीहरड णीहरावेइ णीहरिय आहटू देजमाण पडिग्गाहेइ पडिग्गाहॅत वा साइजई ॥ ८९३ ॥ जे मिक्खू पडिग्गहाओ ओसहिवीयाणि णीहरह णीहरावेइ पीहरिय आहट्ट देव्बमाण पिंडरगाहेइ पिंडरगाहेत वा साइजइ ॥ ८९४॥ जे भिक्ख् पहिन्गहाओ तसपाणजाइ णीहरइ णीहरावेइ णीहरिय आहरू देजमाणं पिडरगाहेड पिडरगाहेंन वा साइजाइ ॥ ८९५ ॥ जे मिक्ख् पिडरगहरा कोरेड कोरावेइ कोरिय आहट्ट देजमाण पिंडग्गाहेइ पिंडग्गाहेत वा साइजइ ॥ ८९६ ॥ ने भिक्छ णायग वा अणायग वा उवासग वा अणुवासग वा गामतरंसि वा गाम-पहतरंसि वा पिडिग्गह ओभासिय २ जायइ जायत वा साइज्जइ ॥ ८९७ ॥ जै भिक्ख् णायग वा अणायग वा उवासग वा अणुवासग वा परिसामज्झाओ उद्ववेत्ता पिडगगह षोमासिय २ जायइ जायत वा साइजइ ॥ ८९८ ॥ जे भित्रस्तू पिडागहणीसाए उद्भवद्ध वसइ वसत वा साइजाइ॥ ८९९॥ जे भिक्ख् पडिग्गहणीसाए वासावास वसइ वसतं वा साइज्जइ । त सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासिय परिहारद्वाण उग्धाइय ॥ ९०० ॥ णिसीहऽज्झयणे चउइसमो उद्देसो समत्तो ॥ १४ ॥

पण्णरसमो उद्देसो

जे भिक्ख भिक्ख्ण आगाढ वयइ वयंत वा साइज्जइ ॥ ९०१ ॥ जे भिक्ख् फरुस वयइ वयतं वा साइज्जइ ॥ ९०२ ॥ जे भिक्ख् भिक्ख्ण आगाढ फरुस वयइ वयतं वा साइज्जइ ॥ ९०३ ॥ जे भिक्ख् भिक्ख्ण अण्णयरीए अचासायणाए

क्षणासायुद्द क्षणासायुद्धं वा साइजाइ ॥ ९ ४ ॥ वे मिनवा सबिर्स सर्वे संबं मुंबर्त वा साहजाइ ॥ ९ ५ ॥ जे निरम्ब् समियं त्रंव वि(वं)वसद विवर्ततं वा साहजा ॥ ९ ६ ॥ वे सिक्त् समितापाद्वियं अर्थ सुबद् शुंबर्त ना साहजह ॥ ९ ७ ॥ ने मितन्त सनिक्तकृद्धिन औन निकस्त मित्रसेते वा सक्तक्त ॥ ९ ८ ॥ वे मितन समित संबं ना अवये(सिये)सि ना अंबमि(ति)ते ना अवसामन ना अंबडाओं ने संबन्धिया वा मुंबद् भुंबति वा साद्यक्ष ॥ ९ ९॥ वे नियम् समितं अर्व वा सर पेसि वा अंवभित्तं वा अंवसायमं वा अंवदाकर्य वा अंववोधमं वा बिडस्ट्र विडस्ट मा साइ-बाइ ॥ ९० ॥ के निक्का समितकहिन्दं अर्थना अंबपैसिंबा अवनिर्ध ना संबद्धारम का संबद्धारमां का संबद्धीयमं का श्रीबद्ध श्रीबंदी का साहजह ॥ १९० वे मिक्क एक्तिप्रदक्षितं अर्थ था अंवपेसि वा अंवमित्तं था अंवसासर्व वा संबं बासर्थ वा संबन्धेया वा विबस्द विबस्तं वा सत्वत्वद् ॥ ५९२ ॥ ये निर्म् अन्तरतिष्य वा पारतिष्य वा अपयो पाए श्रामकावेक वा पराजावेक प मामजानैर्दं वा पमजानेते वा साहजह ॥ ९१३ ॥ थे निश्न्य अध्यवस्थिए<sup>स क</sup> गारतिष्ण वा सप्पची पाए संवाहायेण वा पक्रिमहायेण वा स्वाहायतं हा पडि-महानेंद्रों वा साहज्जा ॥ ९९४ ॥ व मिक्चू अन्वतरिवर्ण वा मारत्वरण म अपनो पाए देकेन वा वएन वा स्वर्णीएक वा सक्खावेज वा निर्क्रियांकेन 🕅 सन्खारेंसे वा निर्विगारेंसे वा सहस्वरू ॥ ९९५ ॥ वे निषय, जन्दरस्वरूप वी गारस्थिएन वा अध्यक्षो पाए क्रोडिक वा ब्रह्मेच वा उन्नेस्वरेज वा उन्नामित स एकोस्पर्वेर्त वा उम्बद्धार्वेर्त वा शहरूहा ९१६ ॥ वे सिक्**व**्कानग्रहिष्ण वी गाररिषएण वा अध्यको पाए शीकाश्मविवदेश वा उधिनोदयविवदेश वा उच्छोडी मेज वा पर्याताकेल वा उच्छोतार्वेतं वा प्रयोगार्वेतं वा सार्वेन्द्र र ६१ 🕫 है मिश्च अञ्चलक्षिपण का गारस्थिएंग वा अन्यको पाए पूमावेश वा रवावेश वा पूमार्नेर्तं वा रयार्नेर्तं वा साहजह ॥ ९१८॥ के मिक्सू अन्यउत्सिएम वा मारति एवं वा कपयो कार्य कामजावेज वा पसजावेज वा कासजावेत वा पसजावेत षा सहस्रह ॥९१९॥ जे विक्त् जन्मतिबक्त वा बारत्विक्त वा अव्यक्ति समाहाकेण का पश्चिमहाकेण का संबाहार्केंद्र का पश्चिमहार्केंद्र वा साहण्यह स ५१ म जे भिन्न कन्नउतिकृष वा वार्यातकृण वा कप्पनी वार्व रोहेन वा बण्य वा नवगीएम वा सस्रावेज वा मिलिंगावेज वा सस्मावेत वा मिरियारी वा सारे जद ॥ ९१९ ॥ जे मितन्तु अञ्चतिवायुव वा वारम्बियया वा अपको कार्व लदेव वा बक्रेण वा उड़ोजानेश वा उच्चहावेश वा उनेसावर्ग वा उन्हारीत वा ताहरूर

#### ⊏ प्रभाषना ⊏ प्रकार की~

(१) बिछ कास में जितने सुपादि हीं उनको ग्रह गम से जाने वह शासन का प्रमाविक होता है। (१) व सारम्बर के साथ धर्म कथा का ब्याय्यान करके शासन स ममायना करें। (३) विकट सपस्या करके शासन क्षेत्रमा पना करे। (४) वीम काल और तीन मत का जासकार ही (४) तर्क वितर्क हेतु याव युषित श्याय और विद्यादिश से वादियों को शासार्व में पराजय करके शासन की प्रमान करे। (६) पुरुपार्थी पुरुप दीखा लेके शासन की प्रभाव करे। (७) कविया करने की शक्ति हो तो कविता कर यासन की प्रभावना करे। ( = ) ब्रह्मचर्यादि कोई बड़ा में तेमा हो तो प्रगट बहुत से बादमियों के बीच में ते। इसी सोगों को ग्रासम पर धन्ना और वत क्षेत्रे की रुचि बड़गी मध्यम दुर्वस स धर्मी भाइयों की सहायता करनी यह प्रभावना है, परंतु भाजकल चीमासे में भमक वस्तुमाँ प्रमावना या लक्त आवि बाँदते हैं बीर्घ दरि से विवारि इसके बांटने ही ग्रासन की क्या प्रभावना होती है। में कितमा साम है इसका बुजियाम स्वय निवार कर सक हैं अगर प्रमाणना से आएका लखा प्रेम हो तो सोटे हैं तुन्बज्ञानमय द्रेक्ड की ग्रमाधना करिये ठाके आपके मार् को भारम बान की प्राप्ति हो।

#### ६ व्यागार ६ हैं---

सम्यास्य के अन्दर है जागर है। (१) राजा क जागार।(२) देवता का॰।(३) न्यात का॰।(४) माना पित ॥ ९२२ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थिएण वा गारात्यिएण वा अप्पणो काय सीओदग-वियहेण वा रसिणोद्गवियहेण वा उच्छोलावेज वा पधोवावेज वा उच्छोलावेंत वा पधोवार्वेत वा साइज्जइ ॥ ९२३ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो काय फूमावेज वा रयावेज वा फूमावेंत वा रयावेंत वा साइजइ ॥ ९२४ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणी कायंसि वणं आमजावेज वा पमजावेज वा आमजावेंतं वा पमजावेंत वा साइजइ ॥ ९२५॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायिस वण सवाहावेज वा पलिमद्दावेज वा सवाहावेंत वा पलिमद्दावेंत वा साइज्जइ ॥ ९२६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायसि वण तेहेण वा घएण वा णवणी-एण वा मक्खावेज वा भिलिंगावेज वा मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंत वा साइजाइ ॥ ९२७ ॥ जे भिक्ख अण्णडित्यएण वा गारित्यएण वा अप्पणी कार्यसि वण लोदेण वा कक्षेण वा उल्लेलावेज वा उल्वहावेज वा उल्लेलावेंत वा उन्वहावेंत वा साइजाइ ॥ ९२८ ॥ जे मिक्ख् अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायसि वण सीओदगिवयडेण वा उसिणोदगिवयडेण वा उच्छोलावेज वा पधोवावेज वा उच्छोलावेंत वा पधोवावेंत वा साइजाइ ॥ ९२९ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थिएण वा गारित्थएण वा अप्पणी कायिस वर्ण फूमावेज वा रयावेज वा फूमावेंत वा रयावेत वा साइज्जइ ॥ ९३० ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारिथएण वा अप्पणो कायिस गड वा पिछम वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेणं तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिदावेज वा विच्छिदावेज वा अच्छिदावेंत वा विच्छिदावेंत वा साइजड ॥ ९३१ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्यिएण वा गारत्यिएण वा अप्पणो कायसि गड वा पिलग वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेणं तिक्खेण सत्यजाएण अचिंछदाविता विचिंछदाविता पूर्व वा सोणिय वा जीहरावेज वा विसोहावेज वा णीहरावेंत वा विसोहावेंत वा साइजड ॥ ९३२ ॥ जे भिक्खू अण्णजित्यएण वा गारित्थिएण वा अप्पणो कायिस गड वा पिलगं वा अरइय वा असियं वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदावेता विच्छिदावेता पूर्य वा सोणिय वा णीहरावेता विसोहावेता सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण वा उच्छोलावेज वा पथोयावेज वा उच्छोलावेंत वा पधोयावेंत वा साइज्जइ ॥ ९३३ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायसि गड वा पिलग वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएणं अच्छिदावेता विच्छिदावेता प्य वा सोणिय वा णीहरावेता विसोहावेता सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण कम्पायिक वा संद्रमानेक वा कमानेंद्र वा संद्रमानेंद्र वा सहकार ॥ ९६१-१॥ केररी मार्द ॥ ९६२-२ ॥ व्यं मिन्न्यू अञ्चलरियपुर्व वा मारुतियपुर्व वा अध्यनो व्यक्तिमार्व ना कल्पमंत्र वा रहमर्थना प्रश्नमंत्र वा जीश्चरानेश्व वा विश्वोद्दानेश्व वा जीश्चरानेतं <sup>वा</sup> विसोहार्वेतं ना साहजह ॥ ९६३ ॥ के मिन्न् अन्यतरिक्षएच ना गारत्विपर्य वा अपन्ये कामाको सेर्य वा कहं वा पंके वा मधं वा जीहरावैक वा विसोहावेज वा जीहरावेंडे व विशोहार्वेर्त वा साङ्ख्य ॥ ९६४ ॥ वे निकृष् अञ्चलकितृत वा गारस्थिएन वा गामार्ज गाम सूहमानाये अध्यक्षो सीसतुवारियं कारकेद कारवेर्त का साहनद ॥ ९६५ ॥ से जिन€ आर्गतागारेख् वा आरामागारेख वा गाहा<del>वक्कके</del>छ वा परियावसहेख् वा स्वारपस वर्ष परिद्वनेद परिद्वनेतं वा साहनद ॥ ९६६ ॥ के मितन्त् उजार्गति वा उजान निवंदि वा चजाणसार्वसः वा निजापीत वा किमाधनिवंदि वा विज्ञानसार्वति वी सभारपासमर्थ परिद्वनेह परिद्वनेतं या साहज्जह ॥ ९६७ ॥ से सिक्न्य सहिते वा अध्यक्तमंति वा चारेर्यसि वा पामारेसि वा वारेसि वा घोपुरेसि वा उचारमस्वयं परिद्वनेद परिद्वनेत वा शासम्बद्ध ॥ ९६८ ॥ के शिक्ष्य वर्गयि वा इमसम्बंधि वा दगपद्दि वा दगदीरेषि वा वयद्वानेशानीर वा सवारपासको परिद्वेद परिद्वतं स सन्नज्ञ ॥ ९६ ॥ जे मिनन् सुम्मन्तिस वा सम्बस्तिस वा सिन्निस्ति वा मिल्पसार्क्त वा कुकागारीस वा कोहामारीस वा उचारपासवर्ण परिद्वनेद परिद्वनेद क साइन्द्र 🛘 🗫 🗷 से मिलन् तनगिरंसि वा तकसासमि वा तुसगिरंसि वा प्रस सामंदि वा क्रु(मु)समिर्वृति वा क्रुससामेति वा जन्मान्यासको परिद्वन्त परिद्वन्त व सारम्बर ॥ ९७१ त के निक्ष्य, भाषानिहित का बावसानति वा सुनानिहित की हुम्मसानंति वा जवारपासवर्ग परिद्वतेह परिद्वतेर्त वा साहमह ॥ ९७३ ॥ मे सिन् पवित्रसामेंकी का प्रक्रियमित्रिये का परिनासामेंकी का परिचारिमोरि का इतिकासिरी वा क्रमिननिर्दात वा रुवारपास्त्रकं परिद्वतेत परिद्वतेतं वा साहमह ॥ ९७३ ॥ व भिन्न गोगसार्थ्य वा गोगगिर्देश वा महाक्र(क्सा)बंश वा सहास्वित वा सवास्वित वा पासको परिष्ठनैक परिश्वनैते वा साहज्यह ॥ ९७४ ॥ जो सिक्ष्ट् अध्यतन्त्रिवस्य वा गारित्यमस्य वा असम्य वा ४ वेड़ वैंसी वा साइन्यड़ ॥ 👊 ॥ वे स्टिट्स पात-त्वस्य अस[मस्स]चे वा ४ वेड् वैर्त वा साहबाह ॥ ९७६ ॥ थे मिनव पालवर्ण बस्य वा ४ परिच्छद् परिष्यंतं वा सम्बद्धः ॥ ९७७ ॥ जै सिन्दः बीनाव्यस् कमार्ज मा ४ वेड् वैतं वा साहमह ॥ ९७८ ॥ अ मिनख मोसन्वस्य असर्वं वा ४ पविच्या पविच्यां हा साहमह ॥ ६७६ ॥ में मिल्ल, वर्धानस्य अपने वा

अण्णयर वा उवगरणजाय धरेइ धरेंत वा साइजइ ॥ १०५२ ॥ जे भिक्खू विभूसा-पिंडयाए वत्य वा ४ अण्णयरं वा उवगरणजाय धोवेइ घोवेंतं वा साइजाइ। त सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासिय परिहारद्वाण उग्घाइय ॥ १०५३ ॥ णिसीहऽज्झ-यणे पण्णरसमो उद्देसो समत्तो ॥ १५॥

सोलसमो उद्देसो

जे मिक्ख् सागारियसेजं अणुपविसइ अणुपविसत वा साइज्जइ ॥ १०५४ ॥ जे भिक्ख स(सी)उदग सेज उवागच्छइ उवागच्छत वा साइजाइ ॥ १०५५ ॥ जे भिक्ख सञगणिसेज अणुपविसइ अणुपविसत वा साइजइ ॥ १०५६ ॥ जे भिक्ख् सचित्त उच्छु भुजइ भुजंत वा साइजाइ ॥ १०५७ ॥ जे भिक्ख् सचित्त

भुंबर भुंबेरी वा सहस्रक ॥ १ ५९ ॥ के मिल्क् समितनहिम उन्हें निस्टर विवर्णत वा साहजह ॥ १ ६ ॥ जे मिक्नू सचितं तांतरसमूर्वं वा अच्युवंदिनं ग उच्छु नामने वा उच्छुमेरन वा उच्छुसामने वा उच्छुडाशने वा मेजर मुंबर्द वा सहसर n १ ६१ n के सिक्क् संवितः कॅतसक्कूर्यं का उपस्थाकर्यं वा निकस्त् विकरी ना साहन्द्र ॥ ९ ९२॥ जे शिवन्द् समितानहिन्ने जांतरुच्छनं वा अच्छनासम्ब मुंबद् मुंबंदं वा साद्व्यद् ॥ १ ६३ ॥ वे शिक्ष्यु स्वित्तरहाद्वियं बांतरव्युसं वा जानमं था निकस्त निक्संतं था साहजह ॥ १ ६४ ॥ से मितन् आरम्बार्व क्लासर्व सवनीयतासप्(इ)द्विवानं अस्यवं वा ४ पवित्याहेड पवित्याहेरं वा सहना ll ९ ६५ ॥ वे शिक्ष्य आ(अ)रम्प(य)र्थ वर्ण्यपार्थ अदबीवतामो परिवित्तार्थ भसम वा ४ पविन्याहेर पविन्याहेर्त वा सार्व्यह ॥ १ ६६ ॥ जे मिनव वर्ड (मुसि)राहने मा(मुसि)मञ्चणहर्य वयह कर्नते वा साहम्मह ॥ १ ६७ ॥ वे निर्दे अनुसिराद्रय नुसिराहर्य नगर चर्गत ना साहज्जह ॥ १ ६८ ॥ वे स्थित हुस्तिर्यः काणाओं अनुसिरहर्व गर्न संस्माद संस्मार वा साहजह ॥ १ ६९ ॥ वे निनर्द कुमाइक्क्रेवामं सदानं वा ७ वेड रॅंवे वा साहजह ॥ ९ ७ ॥ मे मिनव उम्पर् केदार्गभस्यं वा ४ पविच्यव पविच्यंदं वा साहका ॥ १ ७१ D जे निर्द कुमाइबक्रवामं क्लं वा ४ वेड वैंद्र वा साइज्यह ॥ १ ७२ ॥ वे शिक्द हुम्पद् केंद्राणं वर्त्यं वा ४ पविच्छ्यः पविच्छेदं वा साह्यकः ॥ ९ ४३ ॥ जे विश्व कुमगहनकंदार्थ नसदि नेत्र वैर्त ना साहज्जह ॥ ९ ४४ ॥ से मिनन्द नुमाहकंदार्थ नसहि पविच्छ्द प<del>विच्ये</del>त वा साहनाइ ॥ १ ७५ ॥ वे निमन्द सुमाहनांगां बसर्वे अनुपनिसर् बनुपनिसर्त वा सार्व्यस् ॥ १ ७६ ॥ से निवन्द तुमहास्तान सज्ज्ञार्य देह बैर्त वा साहजाह ॥ १ ७०॥ के मिनन्त् बुमाहबर्दार्ग सञ्जान पविष्यत् पविष्यते या साहमह ॥ ९ ७८ ॥ यो मित्रस् विद् श्रमेपाइनामिन चङ् साढे निहाराप् संवरमामेस् वसवपुत्र निहारपंडिनाए असिसंबारेर असिसंबारेर वा साहजह ॥ १ ७९ ॥ जे मिनच् निस्वरनाई शस्त्रायनाई अवारिवाई सि क्यारं पर्वारोजार सर् काढे महाराए शेक्समन्धः जनवएसः महारायदिवाए अभिने भारेह समिर्धेवारेंते वा साहमह ॥ १ ८ ॥ से मिनस् हुर्गेडियहुँहेर् बा ४ पडिन्माहेर पडिन्माहेर्त वा साहमह ॥ ९ ८१ ॥ वे मिनव हुर्जुड्यानेट बन्दे वा ४ पडिम्माहेर पडिम्माहेर्त वा सार्व्यह ॥ १ ८२ ॥ वे सिन्द् राज स्ट्रकेस क्सर्हि पवित्रमाहेद पवित्रमाहेर्स वा साहकह ॥ ९ ८३ है के शिल्प

हुगुछियकुलेम्रु सज्झाय करेइ करेंत वा साइज्जइ ॥ १०८४ ॥ जे भिक्ख् दुगुछिय-कुळेष्ठ सज्झाय उद्दिसइ उद्दिसतं वा साइज्जड ॥ १०८५ ॥ ( ससुद्दिसड •• अणुजाणइ ) जे भिक्ख् दुगुछियङ्खेसु मज्झाय वाएइ वाएत वा साइज्जइ 🕯। १०८६ ॥ जे भिक्ख् दुगुछियकुलेसु सज्झाय पडिच्छइ पडिच्छतं वा साइजाइ ॥ १०८७॥ ( परियष्ट्इ ) जे भिक्ख् असण वा ४ पुढवीए णिक्खिवइ णिक्खिवत वा साइज्जइ ॥ १०८८ ॥ जे भिक्ख् असणं वा ४ सथारए णिक्खिवड णिक्सिवतं वा साइजाइ ॥ १०८९ ॥ जे भिक्ख् असण वा ४ वेहासे णिक्सिववइ णिक्खिवत वा साइजइ ॥ १०९० ॥ जे भिक्ख् अण्ण(उत्थिएण)तित्थीहिं वा गार(त्यिएण)त्यीहिं वा सिंद्धं भुजइ भुजंत वा साइजाइ ॥ १०९१ ॥ जे भिक्ख् अण्णतित्थीहिं वा गारत्थीहिं वा सिद्धं आवेदिय परिवेदिय भुजइ भुजत वा साइजइ ॥ १०९२ ॥ जे भिक्ख् आयरियडवज्झायाण सेजासथारग पाएण सघट्टेता इत्येण अणणुण्णवेत्ता धा(रे)रयमा(णे)णो गच्छड् गच्छत वा साइजाइ ॥ १०९३ ॥ जे भिक्ख पमाणाइरित्त वा गणणाइरित्त वा उविह धरेद धरेतं वा साइज्जइ ॥ १०९४॥ जे मिक्ख् अणतरहियाए पुढवीए जीवपइद्विए ससदे सपाणे सबीए सहिरए सभोरसे सउदए सउर्तिगपणगदगमिहयमक्कडासताणगिस चलाचले उचार-पासवणं परिट्ठवेइ परिट्ठवेंत वा साइजाइ ॥ १०९५ ॥ जे भिक्खू सिसणिद्धाए पुढवीए जाव साइज्जइ ॥ १०९६ ॥ जे मिक्ख् ससरक्खाए पुढवीए जाव साइज्जइ ॥ १०९७॥ जे भिक्ख् मट्टियाकडाए पुढवीए जाव साइज्जइ ॥ १०९८ ॥ जे भिक्ख् चित्तमंताए पुढवीए जाव साइजाइ॥ १०९९॥ जे मिक्खू चित्तमताए सिलाए जाव साइजाइ ॥ १९०० ॥ जे भिक्ख् चित्तमताए छेळुए जाव साइज्जइ ॥ १९०१ ॥ जे भिक्ख् कोलावासित वा दारुए जाव साइज्जइ ॥ ११०२ ॥ जे भिक्ख् थूणिस वा गिहेलुयिस वा उम्रुयालंिस वा कामजलसे वा चलाचले उचारपासवण परिद्ववेइ परिद्ववेंत वा साइजाइ॥ १९०३॥ जे भिक्ख कुलियंसि वा भित्तिसि वा सिलसि वा लेलुसि वा अन्तलिक्खजायिस वा चलाचले उष्मारपासवण परिद्ववेइ परिद्ववेंत वा साइजाइ ॥ ११०४॥ जे भिक्ख् खंघिस वा फलहिस वा मचिस वा महविस वा मालिस वा पासायिस वा (अण्णयरंसि वा अतरिक्खजायिस ) उच्चारपासवण परिद्ववेड परिद्ववेंतं वा साइजाइ । त सेवमाणे आवजाइ चाउम्मासिय परिहारद्वाण उग्घाइय ॥ ११०५॥ णिसीहऽज्झयणे सोलसमो उद्देसो समत्तो ॥ १६॥

सत्तरसमो उद्देसो

जे भिक्ख् कोउद्दल्लपिडयाए अण्णयर तसपाणजाय तणपासएण वा मुजपासएण

वा बहुरासएम वा धम्मपासक्त वा वैक्यानक्त वा इज्यामक्त वा क्रुप्त पर्य वा बैधर बैसेने का साहजह ॥ १९ ६ ७ जै मिरलू कोउद्दलसंडियाए अन्यस्ट तगराणजार्ये तथरासएण वा जाब सत्तरागसूच वा विश्वर्य सुगर्दे वा सम्बद् n १९ ७ n ज मित्रम कोउद्वक्षपविचाए स्वामासियं वा संज्ञासियं वा सिंह माठिय वा मयशमानिये वा विद्यमाठिये वा ईतमाठिये वा गिंगमाठिये वा चैंक मासियं वा इष्ट्रमान्त्रियं वा बद्धमानियं वा प्रतमानियं वा पुरस्त्रमानियं वा बक्रमानियं वा चीयमातियं वा इरियमाधियं वा करेडू करेंते वा साडकार 8 १९ ८ में मिक्न को उह्नहपृत्तिकाए सुनमानिये का जाउ हरियमानिये का घरेड घरें है का सम्बद्ध n १९ ९ n के निवन् कोउद्गापविचाप् तमगासियं वा जाव इतियमासिर्व वा मिनदर पिचर्दर्त वा राष्ट्रबाद ॥ १९९ ॥ ( 'परिश्वंबद ) के मिनन वीर-हमप्रियाप अवसोहानि वा तंत्रलोहानि वा तंत्रकाहानि वा तीरकोहानि वी रप्पनीहापि वा प्रकलकोहापि वा क्षेत्र करेंते वा साहबाह व १९११ ॥ वे तिस्य कोउद्दक्षपत्रियाए अयसोद्दाणि था जान एक्क्यसोद्दाणि था घरेड वरेंदे वा साह्यह n १९९१ ॥ जे मिरुष् कोउद्दूषपविवाए अवलोहामि वा बाव श्रवण्यकोहामि वा परिमुंज[पिणड]इ परिमुंबर्त वा साहकइ ॥ १११३ व जे मिक्स केटहरू<sup>रीड</sup> याए हारानि ना अब्हारामि ना एयावर्ति ना मुतावर्ति ना ननमान्त्रि नी र्यणापनि वा कडवालि वा तुडियाणि वा केकराबि वा गुँडवालि वा प्राप्ति वी संदर्शाय ना पक्षमनुतालि ना शुनम्मञ्जाति ना करेड करेंचे ना सार्ट्सर ४ १९९४ ह के सिन्ध माजहमपरियाए हाराणि वा आव शक्यप्रशासि वा बरेड परेंट व सारमार ॥ १९५७ में मित्रम् कोन्हमपरियात् दाराणि वा जान स्वम्बद्धाति वा विषयप्र विषयंतं का सहस्वह ॥ १९९६ ॥ के विषयः कोत्रक्षपविवादः आर्थनानि वा आईक्पावरामि वा कंक्साबि वा वैवसवावरावि वा क्रेयरानि वा कोक्पाकरानि वा नाकस्थिति ना जीवस्थितिय वा सामानि वा सिवासासनि वा स्टानि वा <sup>वह</sup> हैस्सामि वा बरबामि वा मिनरवामि वा पर्ययामि वा सहिवामि वा सहिवामि वा बोमानि वा बुगूकानि वा पतुज्वानि वा कावरेडानि वा बीमानि वा बीमानि वा कमगर्कशामि वा वकमकाविदामि वा कथगवितामि वा आभारतविवितामि वा करेडू करेंते वा सहस्का ध १९१७ ॥ वे मिन्न, नोतव्यवस्थिताए आईवानि वा कार सामरमनिवितायि वा भरेह गरेंर्त वा साहमहा। १९१८ व से शिवन कोत्रहरूमविवाए आर्रभावि वा काव कामरविविक्तावि वा परिग्रंक प्रोमुक्त स सारमार 🛘 १९९८ है जा (जे जिल्ला) वि(ति)मो(वे)नी विन्धांवस्स पार् सन्त

उत्थिएण वा गारित्थएण वा आमजावेज वा पमजावेज वा आमजावेंत वा पमजावेंत वा साइज्जइ ॥ ११२० ॥ जान जा णिग्गथी सीसदुवारिय कारवेद कारवेत वा साइजइ ॥ ११७२ ॥ जे णिरगंथे णिरगथीए पाए अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा जाव सीसदुवारिय कारवेइ कारवेंत वा साइज्जइ॥ १२२५॥ जे णिग्गथे णिग्गथस्स सरिसगस्स सते ओवासे अते ओवासे ण देइ ण देतं वा साङजाइ ॥ १२२६ ॥ जा णिगाथी णिगाथीए सरिसियाए सते ओवासे अते ओवासे ण टेइ ण देंत वा साइजाइ ॥ १२२७ ॥ जे भिक्ख् मालोह्ड असण वा ४ उर्दिभदिय देजामाण पर्डिग्गाहेइ पिंडागाहेंत वा साइजाइ ॥ १२२८॥ जे भिक्ख् कोद्वियाउत्त असण वा ४ उक्कुजिय निक्कुज्जिय उहारिय देजमाण पडिग्गाहेड पडिग्गाहेतं वा साइजइ॥ १२२९॥ जे भिक्ख् महिओछित्त असण वा ४ उधिभिदय णिधिभिदय देजमाणं पिडिग्गाहेड् पिंडरगाहेंत वा साइज्जइ ॥ १२३० ॥ जे भिक्खू (असण वा ) पुढिविपइट्टिय पंडिग्गाहेड् पंडिग्गाहेत् वा साइज्जड्॥ १२३१॥ जे भिक्ख् आउपइद्विय पंडिग्गाहेड् पिढिग्गाहेंतं वा साइजाइ ॥ १२३२ ॥ जे भिक्ख् तेउपइद्वियं पिडिग्गाहेइ पिडिग्गाहेत वा साइजाइ ॥ १२३३ ॥ जे भिक्खू वणस्सडकायपइद्विय पहिग्गाहेइ पहिग्गाहेत वा साइजाइ ॥ १२३४ ॥ जे भिक्ख् अञ्चलिण असण वा ४ सुप्पेण वा विहुयणेण वा तालियटेण वा पत्तण वा पत्तभगेण वा साहाए वा साहाभगेण वा पिहुणेण वा पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकणोण वा हत्थेण वा मुहेण वा फुितता वीइता आहर् देजमाण पढिग्गाहेइ पडिग्गाहेंत वा साइजाइ ॥ १२३५ ॥ जे भिक्ख् असण वा ४ उत्तिणुत्तिण पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा साइजइ॥ १२३६॥ जे भिक्खू उस्सेइम ना ससेइम ना चाउलोदगं ना नालोदग ना तिलोदग ना तुसोदग ना जनोदग वा आयाम वा सोवीर वा अवकजिय वा सुद्धवियड वा अहुणाधोय अणिनल अपरिणय अनक्षतजीन अविद्धत्य पहिन्गाहेर पिडिन्गाहेतं वा साइजाइ ॥ १२३७॥ जे भिक्ख् अप्पणो आयरियत्ताए लक्खणाइ वागरेइ वागरेंत वा साइजइ ॥ १२३८ ॥ जे भिक्ख् गाएज वा (हसेज वा) वाएज वा णचेज वा अभिणवेज वा हयहेसिय वा हत्थिगुलगुलाइय वा उ[क्कु(क्कि)ह]क्किहिसीहणाय वा करेड़ करेंत वा साइ-जाइ ॥ १२३९ ॥ जे भिक्ख् मेरिसहाणि वा पडहसहाणि वा मुरवसहाणि वा सुडगसद्दाणि वा णदिसद्दाणि वा झल्लारेसद्दाणि वा वल्लारेसद्दाणि वा डमरु(य)गसद्दाणि वा मङ्ग्यसहाणि वा सदुयसहाणि वा पएससहाणि वा गोलुङ्सहाणि वा अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि वितयाणि सद्दाणि कण्णसोयपिडयाए अभिसधारेड अभिसधारेंत वा साइजइ ॥ १२४० ॥ जे मिक्ख् वीणासद्दाणि वा विविचसद्दाणि वा तुणसद्दाणि

110 सत्तायमे िस्तिस मा मन्त्रीस्पसहायि भा गीणाह्यसहायि ना र्हुननीमासहायि मा सोडयसहायि मा टेउणसहामि वा अभ्ययराणि वा ख्यायाराणि स्याणि सहामि सम्बसीवपरिवार मिसंबारेड समिसंबारेंतं वा सक्त्यह ॥ १२४१ ॥ वे निवस तामस्य या करताकराहानि वा किरिनसहानि वा योहियसहानि वा मकरैयसहानि वा रच्छमिनद्दानि वा सद्द्वस्तानि वा समास्त्रितासद्दानि वा वाकिमासद्दानि वा वान वरावि वा तहप्पताराणि क्याणि सहावि कव्यसोनपश्चिताए अभिरोपारेह विभि संपारेतं का सहस्रह ॥ १२४२ ॥ वे मिक्स संबाधानि वा वंसस्हानि वा क्षेत्र सदानि वा बारमुद्रिस्दानि वा परिक्रिस्तानि वा बेबासहानि वा अन्नयरानि वा तहप्पाराणि मुसिराणि सहाथि कम्मसोयपविचाए अमिसंबारेह अभिसंबारेत ना सारम्बर् ॥ १२४३ ॥ से निष्मा क्यांनि वा एकिसानि वा उपासानि वा प्रा मानि वा उज्यस्ति वा मिज्यस्ति वा वाबीमि वा पोक्यसि वा धीवसि वा चरान्य वा चरपंतियानि वा चरचरपंतिवानि वा कण्यसोनपश्चिमए अभिषेत्र-देइ अभिसंघारेंतें वा साइनाइ ॥ ९२४४ ॥ वे भिक्य कव्यानि वा महनामि वा प्साम वा वजारि वा वसविद्वागानि वा पञ्चवानि वा पञ्चवनिद्वागानि वा कम्पामीक्पविवाप कमिसंबारेइ कमिसंबारेंसं वा साह्यह ॥ १२४५ ॥ वे निरुष गामामि वा नगरामि वा चेडानि वा कञ्चडामि वा सर्ववानि वा बोक्सुहानि वा पर्श्याणि ना भागराणि वा संवाहाणि वा संविधेसाणि वा कज्यसीवपडिमाए वि संपारह शमितंबारित वा सक्ताह ॥ १९४६ ॥ वे जिल्ला गामाहानि वा पार स्रिजनसम्बद्धात्व वा वण्यस्रोयपत्रिकाए अभिसंघारेड् असिसंघारेतं वा सहस्य # १२४७ ॥ के मिक्न् मामवहानि वा यगरवहानि वा खेडवहानि वा क्रमान्न वहामि वा जान सन्मिनेनवहामि वा कन्मसोनपश्चियाए समिपंपारेह अभिपंतरि वा माइसइ ।। १२४८ ॥ वे सिन्नच् गामपदानि वा बाव सन्तिवेनस्तान स क्ष्णमोयपंडियाए अमिर्धमारेड् अमिर्धमारेतं वा साम्रज्यः ॥ १९४९-१ ॥

धामदाहानि वा बाद सम्जिबेगुदाहानि वा ॥१२४५-२ ॥ ज मिन्सू आनदर मानि वा इत्विकर्गानि वा उद्दर्शानि वा गोनक्रशानि हा महित्रस्थानि था मञ्ज्(सून)रणरणाणि या वण्यसीयगडियाण् श्रामिणैपारेह श्रामिणेयारे श्रा सत्यः ॥ १९५ ॥ वे भिक्त् भासतुजाति वा इत्यितुजाति वा वाह्यस्य वा गोजकुडानि वा महिसहुदावि वा वण्यमावप्रधियाएं अभिनेत्रपरिः समित्रपरि वा माह्यह ॥ १९५९ ॥ में विक्त उस्ट्रियहायानि वा इयव्दियह मारि वा गमज्दियद्वानावि वा बच्चनोनपरिवाए निर्मणको अभिरोपरी वा नम्पर

॥ १२५२॥ जे भिक्ख् अभिसेय(ठा)द्वाणाणि वा अक्खाइयद्वाणाणि वा माणुम्माणद्वाणाणि वा मह्या ह्यणद्वगीयवाइयततीतलतालतुिं व्यपद्वण्यवाइयद्वाणाणि वा
कण्णसोयपिं वा स्वरा ह्यणद्वगीयवाइयततीतलतालतुिं व्यपद्वण्यवाइयद्वाणाणि वा
कण्णसोयपिं वा स्वराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुद्धाणि वा महासगामाणि वा
कल्हाणि वा वोलाणि वा कण्णसोयपिं वाण्यभिस्थारेइ अभिस्थारेतं वा साइजद्ध ॥ १२५४॥ जे भिक्ख् विरूवह्वेषु महुस्सवेषु इत्थीणि वा पुरिसाणि वा
थेराणि वा मिक्समाणि वा छहराणि वा अणलिक्याणि वा ग्रुथलिक्याणि वा गायताणि वा वायंताणि वा णर्चताणि वा हसताणि वा समताणि वा मोहंताणि वा
विउल असण वा ४ परिभायताणि वा परिभुजताणि वा कण्णसोयपिं वा
सिद्ध परलोइएष्ठ वा सिद्ध विद्धेष्ठ वा सिद्ध अदिद्धेषु वा सिद्ध ग्रुएषु वा सिद्ध अधुपु वा सिद्ध विष्ठेषु वा सिद्ध साज्वइ ॥ १२५५॥ जे भिक्ख् इह्लोइएषु वा
सिद्ध परलोइएषु वा सिद्ध विद्धेषु वा सिद्ध अदिद्धेषु वा सिद्ध ग्रुपु वा सिद्ध विष्ठाणाएमु वा सिद्ध साज्वइ । त सेवमाणे आवजाइ चाउम्मासिय
परिहारद्वाण उग्धाइय ॥ १२५६॥ णिसीहऽज्वयणे सत्तरसमो उद्देसो
समतो॥ १७॥

# अहारसमो उद्देसी

जे मिक्ख् अणद्वाए णाव दुरुहइ दुरुहत वा साइजाइ॥ १२५०॥ जे भिक्ख् णाव किणइ किणावेइ कीय आहट्ट देजमाण दुरुहइ दुरुहत वा साइजाइ॥ १२५८॥ जे भिक्ख् णाव पामिच्चइ पामिचावेइ पामिच्च आहट्ट देजमाण दुरुहइ दुरुहतं वा साइजाइ॥ १२५९॥ जे भिक्ख् णाव परियट्टेइ परियद्वावेइ परियट्ट आहट्ट देजमाण दुरुहइ दुरुहत वा साइजाइ॥ १२६०॥ जे भिक्ख् णाव अच्छेज अणिसिट्ट अभिहड आहट्ट देजमाण दुरुहइ दुरुहत वा साइजाइ॥ १२६०॥ जे भिक्ख् यलाओ णावं जले ओकसावेइ ओकसावेत वा साइजाइ॥ १२६२॥ जे भिक्ख् यलाओ णावं यले उक्कसावेइ उक्कसावेत वा साइजाइ॥ १२६२॥ जे भिक्ख् पुण्ण णाव उर्सिचाद वा साइजाइ॥ १२६४॥ जे भिक्ख् पुण्ण णाव उर्सिचाद दर्सिचात वा साइजाइ॥ १२६४॥ जे भिक्ख् स्वविद्य णाव उर्तिग वा उद्म वा आर्मिचमाणि वा उवस्विर वा कज्जलवेमाणि पेहाए हत्येण वा पाएण वा अतिपत्तेण वा कुसपत्तेण वा मिक्ख् पिडणाविय कट्ट णावाए दुरुहइ दुरुहत वा साइजाइ॥ १२६५॥ जे भिक्ख् उद्दिरहत वा साइजाइ॥ १२६६॥ जे भिक्ख् उद्दिरहत वा साइजाइ॥ १२६६॥ जे भिक्ख् उद्दुगामिणि वा णाव अहोगामिणि वा णावं दुरुहइ दुरुहत वा साइजाइ॥ १२६०॥ जे भिक्ख् उद्दुगामिणि वा णावं अहोगामिणि वा णावं दुरुहइ दुरुहत वा साइजाइ॥ १२६०॥ जे भिक्ख् उद्दुगामिणि वा णावं अहोगामिणि वा णावं दुरुहइ दुरुहत

या साहम्बद्ध ॥ १९६८ ध से सिक्यू जोधनवेकामासिर्धि वा ब्यद्धनोयनवेकामासिर्धि वा व्यद्धनोयनवेकामासिर्धि वा व्यद्धनोयनवेकामासिर्धि वा वार्त्य स्वास्ट्रिया साहम्बद्ध ॥ १९५९ ॥ के सिक्यू लागे केवावेद केवावर्ग मा साहम्बद्ध ॥ १९५७ ॥ के सिक्यू लागे केवावेद केवावर्ग मा साहम्बद्ध ॥ १९५७ ॥ के सिक्यू लागे कावेदा वा वा वाहम्बद्ध ॥ १९५० ॥ के सिक्यू लागे बाल्याव्य वा परिष्ठायम् वा वहेस्य वा वाल्याव्य साहम्बद्ध ॥ १९५० ॥ केवाव्य साहम्बद्ध ॥ १९५० ॥ केवाव्य साहम्बद्ध साहम्बद्ध स्वास्त्र साहम्बद्ध साहम्य साहम्बद्ध साहम्बद्ध साहम्बद्ध साहम्बद्ध साहम्बद्ध साहम्बद्ध साहम्बद्ध साहम्बद्ध साहम्बद्ध साहम्य साहम्बद्ध साहम्य साहम्बद्ध साह

सुचलमे

िम्सीस्तुर्व

111

पारुष्या । १९७१ । या भारत्य याण राजुणा वा पट्टेण वा कहा बहुद वर्ष दे पारावस्त्र ।। १९०२ । के सिन्छ् वार्थ वालिएण वा परिकार्ण वा वर्षण वर्षण वा वर्षण वर्

वहेंसो समचो ॥ १८॥

प्रगृणाधीसङ्गी उद्देशी

ज मिन्द्र चडहिं धेमाई ध्यात बडेर बरेरे वा वास्त्र, हंबा-अन्य
ध्याप् परिकाण् ध्याप् करावे कार्ता व करेर बरेरे वा वास्त्र, हंबा-अन्य
ध्याप् परिकाण् ध्याप् करावे कार्त्ते व १११५ व के स्तित्व विकास्तर
परि तर्व पुष्पार्थ पुष्पार्थ पुष्पार्थ वास्त्रम्य व १११६ व व सिन्द् विद्वार्यण्य
परि तर्व पुष्पार्थ पुष्पार्थ कार्यक्रम्य व १११६ व व सिन्द् व स्तित्व स्तित्व

सा-सरकारण्यान्यप्र, नाववस्य प्राप्त सामान्यप्रमान्यप्र, नाववस्य निवास क्षेत्र प्रदर्शने स्वास्य निवास क्षेत्र अस्य । सहस्य निवास सामान्यप्रमान्यप्र, नाववस्य निवास सामान्यप्रमान्यप्र, निवास सामान्यप्रमान्यप्र, निवास सामान्यप्र, निवास सामान्यप्य, निवास सामान्यप्र, निवास सामान्यप्र, निवास सामान्यप्र, निवास सामान्यप्र, निवास सामान्यप्र, निवास सामान्यप्र, निवास सामान्यप्र,

गुर जनों का०। (४) वलवंत का०। (६) दुष्काल में सुख से श्राजीविका न चलती हो, इन छे आगारों से सम्यक्त्व में श्रुचित कार्य भी करना पड़े तो सम्यक्त्व दूषित नहीं होता है।

# . १०. जयणा ६ प्रकार की-

(१) त्रालाप-स्वधर्मी भाइयों से एक वार वोलना।
(१) संलाप-स्वधर्मी भाइयों से वार वार वोलना।(३) मुनि
को दान देना श्रीर स्वधर्मी वात्सल्य करना। (४) प्रतिदिन
वार वार करना। (४) गुणी जनों का गुण प्रकट करना।
(१) श्रीर वन्दन नमस्कार, वहुमान करना।

# ११. स्थान ६ हैं--

(१) धर्म रूपी नगर और सम्यक्त रूपी दरवाजा। (२) धर्मरूप वृत्त और सम्यक्त रूपी जड़। (३) धर्मरूपी मासाद और सम्यक्त रूपी नींव। (४) धर्मरूपी भोजन और सम्यक्त रूपी थाल। (४) धर्मरूपी माल और सम्यक्त रूपी धर्मरूपी पत्न और सम्यक्त रूपी दिन हों। (६) धर्मरूपी रत्न और सम्यक्त रूपी तिजोरी०।

## १२. भावना ६ हैं--

(१) जीव चैतन्य लच्चणयुक्त असंख्यात प्रदेशी नि-कलंक अमूर्ति है। (२) अनादि काल से जीव और कर्मों पुण्णिमाओ-)आसोय(किण्ह)पाडिवए, कत्तिय(पुण्णिमाओ-मग्गसिरकिण्ह)पाडिवए [वा] ॥ १३२८ ॥ जे भिक्ख् पोरिसिं सज्झाय उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा साइजइ ॥ १३२९ ॥ जे भिक्ख् चनकाल सज्झाय न करेड् न करेंत वा साइजइ ॥ १३३०॥ जे भिक्ख असज्झाइए सज्झाय करेड़ करेंत वा साइजाइ॥ १३३१॥ जे भिक्ख अप्पणो असज्झाइए सज्झाय करेइ करेंत वा साइजाइ॥ १३३२॥ जे भिक्ख् हिहिल्लाइ समोसरणाइ अवाएता उविरक्लाइ समोसरणाइ वाएइ वाएतं वा साइजाइ ॥ १२२३ ॥ जे भिक्ख् णव वभचेराइ भवाएता उवरि स्रय वाएइ वाएंत वा साइज्जह ॥ १३३४ ॥ जे भिक्ख् अपत्त वाएइ वाएतं वा साइज्जइ ॥ १३३५ ॥ जे भिक्खू पत्त ण वाएइ वाएत वा साइजाइ ॥ १३३६ ॥ जे भिक्खू अव्वत्त वाएड नाएत वा साइजाइ ॥ १३३७ ॥ जे भिक्खु वत्त ण वाएइ ण वाएत वा साइजाइ ॥ १३३८॥ जे भिक्खु दोण्ह सरिसगाणं एक स(सि)चिक्खावेइ एक ण सचिक्खावेड एक वाएड एक ण वाएइ त करंत वा साइजाइ ॥ १३३९ ॥ जे भिक्ख आयरिय-उवज्झाएहिं अविदिण्ण गिर आइयह भाडयत वा साइजाइ ॥ १३४० ॥ जे भिक्ख् अण्णरुत्थियगारत्थिय वाएइ वाएत वा साइजई ॥ १३४१ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियगारित्थय (वायणं) पहिच्छइ पहिच्छत वा साइजाई ॥ १३४२ ॥ जे भिक्ख् पासत्य नाएइ नाएत ना साइजाइ ॥ १३४३ ॥ जे भिक्ख् पासत्य पिडच्छड पिंडच्छत वा साङ्जइ ॥ १३४४ ॥ जे भिक्खु ओसण्णं वाएइ वाएत वा साङ्जइ ॥ १३४५॥ जे मिक्ख् ओसण्णं पिंडच्छ्र पिंडच्छत वा साइजइ॥ १३४६॥ जे भिक्ख् कुसील वाएइ वाएत वा साइजइ ॥ १३४७॥ जे भिक्खू कुसील पहिच्छह पहिच्छत ना साइजइ॥ १३४८॥ जे भिक्ख् णितिय वाएइ वाएत वा साइजइ ॥ १३४९॥ जे भिक्ख् णितिय पिटच्छइ पिटच्छत वा साइजइ॥ १३५०॥ जे भिक्ख् ससत्त वाएइ वाएत वा साङ्जइ॥ १३५१॥ जे भिक्ष ससत्त पहिच्छड पहिच्छत चा साइजाई । त सेवमाणे आवजाई चाउम्मासिय परिहारद्वाण उग्याइय ॥ १३५२ ॥ णिसीहऽज्झयणे पगूणवीसइमो उद्देसो समत्तो॥ १९॥

वीसइमो उद्देसी

जे भिक्ख् मासियं परिहारद्वाण पिंडसेवित्ता आलोएजा, अपलिउन्विय आलोएमा-णस्य मासिय, पलिउन्विय आलोएमाणस्स दोमासिय ॥ १३५३ ॥ जे भिक्ख्

९ अण्णधिम्मओ वाङ्जतो वायणाए दुरुवओग करेजित्त पायच्छित्तठाण । २ आगमहो दुरिह्गमो परहिम्मओ आगमाणमणिहगमणिजा अट्टविवजास कुणे-जित्ति पायच्छित ।

FRANK

बोमालिक परिद्वारद्वाणं पविशेषिता काखोएजा अपक्रितंत्रिय कासोएमायस्य बेमान िय पक्षितंत्रिय आसोएगाणस्य ते(ति)मासियं ॥ १३५४ ॥ जे मित्रस् तैमासिर्व परिदारद्वाग पविशेषिया मासोएमा भपकितेषिय आसोएमाणस्य रोमाछर्म परि उचित्र आस्मेष्माणस्य पाठमासिर्व ॥ ११५५ ॥ जे मित्रम् चाउम्मासिर्व प्रीक्र द्वाण पविदेनिता भारतेएजा अपक्रितंतिय जास्त्रेएमाणस्य चटमाधर्यं प्रक्रितंतिय बासोएमाणस्य पंत्रमासिमं n १३५६ n जे मिक्नू पंत्रमासिमं परिवारकार्व की सेनिता आक्षेत्जा, अपक्षितंत्रिय आक्षेत्राणस्य पंत्रमावियं पवितंत्रिय आजेर मानस्य हम्मासिय ॥ १३५७ ॥ तेन परं पकितंतिए वा अपनितंतिए वा से (हैं) चेन छम्(मासिय)मासा ॥ १३५८ ॥ के मिक्स बहुसोनि मासिनं परिहारको पवितेतिता काकोएजा अपक्रितेत्विव आकोएमायस्य मालिम पद्धितेत्विव वाकोर् माणस्य बोमाखिनं ॥ १२५९ ॥ जे मिनन्त नहसोनि बोमाछिनं परिहारहानं पृष्टि चेतिशा बाम्मेएका अपकितेचित्र काकोएमाणस्य दोमास्तियं परितंचित्र बाकोर माजस्स तेमासियं ॥ १६६ ॥ के मिक्**ष् बहु**सोबि तमासिकं परिदा**रहा**च एडि चेनिसा आक्रोएमा अपछिउंचिय माम्बेएमाणस्य तेमादिनं पक्रिवंचित्र वासेप् मानस्स चन्नासियं ॥ १६६१ ॥ वे मिक्स, बहुसोबि चानस्मासियं परिवासकर् पिंदेविता भास्येएमा अपक्रितंत्रिय सामोएनापरच चारमाचित्र पक्रितंत्रिय सामोर् मागस्य पत्रमासियं ॥ १३६२॥ वे मित्रप् बहुसोनि पंत्रमासियं परिहारक्रवं पनि ऐनिता आक्रोएका अपनिजंबित आक्रोएमावस्य प्**वमास्यि प**निजंबित आक्रोर माणस्य सम्मासिव ॥ १३६३ ॥ तम परं पक्षितंत्रिय वा बयस्तितंत्रिय वा ते वेन क्रमासा n ११६४ u के मित्रक् मासिनं वा वोमासिनं वा वेमासिनं वा वासम्ब चित्रं ना पंत्रमासिय ना पृथ्सि परिश्वारक्षाचार्य अप्लबर्द परिश्वारक्षाचे प्रतिस्था मास्मेएवा अपक्रिजेनिय भानोपमाणस्य मासियं वा रोमासियं वा रोमासियं वा चतमासिर्वं वा पंचमासिर्वं वा पक्षितंचिय माळोएमाजस्म दोमासिर्वं वा रेमारिर्व मा चवमासिर्म ना पंचमासिर्म ना सम्मासिर्म ना ॥ १३६५-१॥ तेन परं पहितरिर्द वा अपक्रितंत्रिए वा से जैन सम्मासा ॥ १३६५-२॥ अ भिक्ष्य बहुसोने मासिनं वा बहुसोनि दोमासिनं वा बहुसोनि सेमासिनं वा बहुसोनि बाठम्मसिनं वा बहुसोनि पंचमानिम वा प्यूर्सि परिवारक्राकार्ण मण्यसरे परिवारकाच पश्चितिला बास्पेर्जा, कपकिराविव (बहुसीमें) आक्रोएसालस्स मासिर्यं वा श्रोमासिर्वं वा रोमाधिर्वं वा व मासिर्वं वा पंक्रमासिर्वं वा पंक्रवंचिय (बहुसोवि) बाक्रोरमाणस्य दोमासिर्वं वा रोस-सिमं वा चटमारिमं वा पंचमारिमं वा कम्मारिमं वा ॥ १३६६ स स्रे भिन्त् बासमारिमं

सिय वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासिय वा साइरेगपंचमासिय वा एएसिं परिहार-हाणाण अण्णयर परिहारहाण पटिसेवित्ता आलोएजा, अपलिउचिय आलोएमाणस्स चाउम्मासिय वा साइरेग वा पंचमासियं वा साइरेग वा, पिलडंचिय आलोएमाणस्स पचमामिय वा साइरेग वा छम्भासिय वा॥ १३६७-१ ॥ तेण पर पलिखनिए वा अपल्जिचिए वा ते चेव छम्मासा ॥ १३६७–२ ॥ जे भिक्ख् वहुसोवि चाउम्मासिय वा वहुसोवि साइरेगचाउम्मासिय वा बहुसोवि पचमासियं वा बहुसोवि साइरेगपंचमा-सिय वा एएसि परिहारहाणाणं अण्णयर परिहारहाण पडिसेनित्ता आलोएजा, अपलिउ-चिय आलोएमाणस्स बहुसोवि चाउम्मासियं वा बहुसोवि साइरेगं वा बहुसोवि पचमा-सिय वा बहुसोवि साइरेग वा, पलिउचिय आलोएमाणस्स बहुमोवि पचमासिय वा यहुसोवि साइरेग वा वहुसोवि छम्मासिय वा ॥ १३६८-१ ॥ तेण परं पछिउंचिए वा अपिलंडिचिए वा ते चेव छम्मासा ॥ १३६८-२ ॥ जे भिक्ख् चारुम्मासिय वा साइरेगचाउम्मासिय वा पचमासिय वा साहरेगपचमासिय वा एएसिं परिहारहाणाणं अण्णयरं परिदारहाण पहिसेविता आलोएजा, अपळिउचिय आलोएमाणे ठवणिजं ठवइत्ता करणिज वेयाविष्टय, ठिवएवि पिंडसेवित्ता सेवि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्ये सिया, पुट्चि पिडसेविय पुट्चि आलोइय, पुट्चि पिडसेविय पच्छा आलोइयं. पच्छा पिंडेसेविय पुर्वि आलोइय, पच्छा पिंडसेविय पच्छा आलोइय, अपलिउचिए अपलि-उंनिय, अपलिउंनिए पलिउनिय, पलिउनिए अपलिउनिय, पलिउनिए पलिउनिय **मालोएमाणस्स सन्वमेयं सक्य साहणिय जे एयाए पहुनणाए पहुनिए णिव्विसमाणे** पिंडसेवेइ सेवि कसिणे तत्येव आरुहेयन्वे सिया ॥ १३६९ ॥ जे भिक्खू बहुसोवि चाउम्मानिय वा वहुसोवि साइरेगचाउम्मासिय वा (जहा हेट्टा णवरं बहुसोवि) जाव आरुहेयन्वे सिया एयं पळिउंचिए॥ १३७०॥ जे भिक्ख् चाउम्मासिय वा आलोएजा, पिठउचिय आलोएमाणे (जहा हेट्टा) जाव पिठउचिए पिठउचिय, पळिडचिए पळिडचिय आलोएमाणस्स आरहेयन्वे सिया ॥ १३७१ ॥ जे भिक्ख बहुसोवि चाउम्मासिय वा (जहा हेद्वा णवर बहुसोवि) जाव आरुहेयन्वे सिया ॥ १३७२ ॥ छम्मासिय परिहारद्वाण पद्विवए अणगारे अतरा दोमासियं परिहार-द्वाण पिंडसेवित्ता आलोएजा, महावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्झावसाणे समद्व सहेउ सकारण अहीणमइरित्त, तेण परं सवीसहराङ्या दो मासा ॥ १३७३ ॥ पचमासिय परिहारद्वाण (नहा हेट्टा) जान दो मासा ॥ १३७४ ॥ चाउम्मासिय परिहारद्वाण (जहा हेड्डा) जाव दो मासा ॥ १३७५ ॥ तेमासिय परिहारद्वाण (जहा हेट्ठा) जाव दो मासा ॥ १३७६ ॥ दोमासिय परिहारद्वाण (जहा हेट्ठा)

सुचारामे Referen जान दो मासा श १३७७ हा मासिर्ग परिद्वारहार्ज (नदा हेट्टा) चार दो मास प्रशेष्ट ॥ समीख्यादन दोमासिनं परिहारद्वाणं पद्धनेए क्षमगारे (म्हा क्षेत्र) बाब महीबमहरेतं रोण परं सबसरावा ठिप्पि मासा ॥ १३७५ ह सबस्य-

तेमाधियं परिहारक्कार्वं (कहा हेट्टा) जाव तेज परं बताहर मासा प्र १३४ 🛭 पाउम्मासियं परिवारकार्ण (बचा हेड्डा) जान रोज पर समीसङ्गाना नाती. माना प्र ११८९ प्र समीसङ्ग्रावनासम्मासिर्य परिदारक्षण (शहा हेट्टा) बान तेन में सदसराना पेप मासा ॥ १३४२ ॥ सब्सरामर्थवमासियं परिवारहार्व (वहा के जान रोग परं सम्मासा ॥ १३८३ ॥ सम्मासिर्व परिहारक्षाचे पद्वनिए सन्तरीरे मेंतरा माधिर्य परिदारकार्च परिवेमिका आसेएमा अहारत परिवास आरोपना माहमञ्जाकताचे समाई सहेर्स सम्बद्ध महीयमहरिता तेम पर हैरही <sup>हानी</sup> u १६८४ ॥ पंत्रमासिर्व परिश्वासद्वार्थ (बहा हेट्टा) बाद दिवड्डो आसी ॥ ११८ व बाउम्मासिकं परिहारकार्षं (बाहा हेक्का) बाव क्रिनड्डो साखे 🛭 १३८६ वेमाविन परिवारकार्ज (बदा हैक्का) बान शिनको मावी ॥ १२४० ॥ होमाविन परिदारकार्ण (नदा देखा) काल शिक्को मास्तो ॥ १६८८ ॥ मास्ति वरिदारक (बहा हेड्डा) बाव दिवड्डी मास्रो ॥ १३८५ ॥ दिवड्डमास्त्रिकं परिहारद्वार्वं स्ट्रमेर भजवारे जंतरा मासियं परिवारकार्ण पश्चिमिता आसीएजा अहाररा पश्चिमा मारोक्ता आहमस्थावताचे समई सहेतं ससर्वं बहीचमहरितं तेच परं हो स<sup>म्हा</sup> ม १२५ ॥ बोमासिमं परिकारक्कर्ण (बहा हेक्का) नवर स्रष्टाहरू मासा 🛙 १२५१ 🕏 अनुहरूमासिर्म परिहारद्वार्ण (बहा हेड्डा) बनरे विष्य सासा ॥ ११९२ ॥ सेनी सिपं परिदारकार्ण (कहा हेद्वा) कार्र असुद्धा मासा ॥ ११५१ व असुद्भारित परिहारहार्च (बहा हेंद्वा) नवर बतारि माता ॥ १३९४ ॥ बारम्मानिये बर्धार हुवर्ष ( बहा हेड्डा ) शहर अहुर्यवमा मासा ॥ १३६५ ॥ अहुरेबमानिर्व परि हारद्वार्ण (महा हेट्टा) जबरे तब सासा ॥ १३९६ ॥ तबमासिन प्रदारहार (व्य देश ) नवरं भदाव्या मासा ॥ १३९० ॥ भदाव्यमासिर्व परिदारकार्न (वहा देह) बारर क्रमाया ॥ १३९८ ॥ बोमासिनं परिहारहाचं पद्मिए अगगारे लेख वर्ति परिहारद्वाचं परिश्वनिक्ता बाल्यपूजा अझाउरा परिन्यना बारोपण बाइनस्तारम सम्बद्धं सहेर्ड सरार्थ महीमामृतितं विण पर सहायमा माना ॥ १३८६ व मा इजमाहियं अन्य सेमानियं भहारत वीतिय आरोज्या (बहा देह) हेव परं सुपंत्रराह्ना तिथित कामा ॥ १४ ॥ सर्पपरायसमापि झेना म अद्दावरा परिमाना भारोतमा (जहा हेट्टा) तेन वरं शरीमहराह्या (क्रिक अन्त

314

॥ १४०१ ॥ सवीसहरायतेमासिय अतरा दोमासिय अहावरा वीसइराइया अरोवणा (जहा हेट्टा), तेण पर सदसराया चतारि मासा ॥ १४०२ ॥ सदसराय-चाउम्मासिय अतरा मासिय अहावरा पिक्खया आरोवणा (जहा हेट्टा), तेण परं पच्णा पच मासा ॥ १४०३ ॥ पच्णपचमासिय अतरा दोमासिय अहावरा वीसइराइया आरोवणा (जहा हेट्टा), तेण परं अद्धछ्टा मासा ॥ १४०४ ॥ अद्धछ्टा मासा ॥ १४०५ ॥ विस्विद्धण्यो वीसइमो उद्देसो समन्तो ॥ २०॥ णिसीहसुन्तं समन्ते ॥





## णमोऽत्यु णं समणस्स भगवयो णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

# <sub>तत्थ</sub> णं द्सासुयक्खंघो

### पढमा दसा

मुँग मे आउस । तेण भगवया एवमक्खाय, इह खलु थेरेहिं भगवंतिहिं वी[जी]स असमाहि[ठा]हाणा पण्णता, कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतिहिं वीस असमाहिहाणा पण्णता है इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतिहिं वीस असमाहिहाणा पण्णता। तजहा-दवदवचारी यावि भवइ॥ १॥ अ(ए)पमज्जियचारी यावि भवइ॥ २॥ अहरित्तसेज्ञासणिए॥ ४॥ राहणि-यपरिमासी॥ ५॥ थेरोवघाइए॥ ६॥ भूओवघाइए॥ ७॥ सजलणे॥ ८॥ कोहणे॥ ९॥ पिद्विमितए॥ १०॥ अभिक्खणं अभिक्खणं ओहा(रि)रइत्ता भवड॥ ११॥ णानाणं अहिंगरणाणं अणुप्पणाणं उप्पाइता भवइ॥ १२॥ पोराणाणं अहिंगरणाणं यामिय विउसवियाणं पुणो(उ)दी(रि)रेत्ता भवड॥ १३॥ अकालसञ्झायकारए यावि भवइ॥ १४॥ ससरक्खपाणिपाए॥ १५॥ सहकरे (मेयकरे)॥ १६॥ झंझकरे ॥ १०॥ कलहकरे॥ १८॥ सूरप्पमाणमोई ॥ १९॥ एसणाऽसमिए यावि भवइ॥ २०॥ एए खलु ते थेरेहिं भगवंतिहिं वीस असमाहिद्दाणां पण्णत्ता॥ २१॥ ति-वेमि॥ पढमा दस्मा समत्ता॥१॥

## विइया दसा

मुय मे आउस! तेण भगवया एवमक्खाय, इह खलु थेरेहिं भगवतेहिं एगवीस सवला पण्णता, कयरे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं एगवीस सवला पण्णता ? इमे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं एगवीस सवला पण्णता । तजहा-हत्यकम्म करेमाणे सवले ॥ २२ ॥ मेहुण पिस्तिवमाणे सवले ॥ २३ ॥ राइमोयण भुजमाणे सवले ॥ २४ ॥ आहाकम्म भुजमाणे सवले ॥ २५ ॥ रायपिंड भुजमाणे सवले ॥ २६ ॥ (टेहेितय) कीय वा पामिच वा अच्छिज वा अणिसिट्ट वा आहट्ट दिज्जमाण वा भुजमाणे सवले ॥ २७ ॥ अभिक्खण अभिक्खण पिडयाइक्खेताण भुजमाणे सवले ॥ २८ ॥

१ अण्णे आयरिसे पारमे पच णमोक्वारोऽहिगो लब्भड ।

42

भेतो छन्दं मासार्च पनाको धर्न चैक्समाचे सबके ॥ १९ ॥ संतो मासस्य छन्ने दगर्कने करेमाने सबके ॥ १ ॥ मंत्रो मासस्य सभो मा[ईआ]इह्वाने करे(सेर)भने सक्के ॥ ११ ॥ सा[च]गारिवर्षिङ शुक्रमाचे सक्छे ॥ १२ ॥ भाउदियाए पार्च-इवार्य करेमाने सबके ॥ ३३ ॥ आवडिनाए सुसानार्य वयमाने सबके ॥ १४ व माउदियाए अदिन्यादार्थ गिन्ह्माने सबसे lt १ - n भाउदिवाए अभगरिक्षण पुरवीए ठाचे वा सेज्ये वा निसीक्ष्में वा चे[त]एमाने सबसे व ३६ ॥ एवं सरिनिः बार पुरवीए एवं ससरकताए पुरवीए ॥ १७ ॥ एवं बाउद्दिवाए विशनगरि विकाप विश्वनदाए केवए बोमानावंति वा दाहर श्रीवपत्रद्विए समेंड स्पाप तर्गीर सहरिए संदर्श सददने सदतिने वनमदनम्(हिम)हिए महाहासंतामए दहप्पमारं हार्य वा रिजं वा निरोक्षियं वा चेर्माचे स्वके ॥ ३८ ॥ बाटक्सिए सूम्मीयचे वा फैदमोनमें वा खंपमोक्ने वा तयागायमें वा पवाक्रमोनमें वा पत्तमोनने वा प्राप्त मोमर्ग वा पक्रमोनर्ग वा वीयमोवर्ग वा इरियमोवर्ण वा भूजमाचे स्वते 🛚 🦮 भेतो संबच्छरस्य इस इगकेने करेमाचे सबके n v n अंद्रो संबच्छरस्य र<sup>हा</sup> मारद्वाचाई करेमाणे सबछे ॥ ४९ ॥ आठद्विवाए चौकोह्यमियहवरपारिय(गानिक) इस्पेज वा मरोग ना व[निज्य]ब्बीए ना मावचय वा असुवं वा पार्य वा वाह्ये वी

सारमं वा पश्चिमाहिता भुंबमाचे सबडे ॥ ४२ ॥ एए श्रञ्ज हे धेरेई अवर्तिर्दे एगबीर्ड स्वका पण्यता ॥ ४१ ॥ ति-बेमि ॥ विद्या इसा समर्गा ॥ १ ॥ तह्या दसा

मुर्ग मे आउसे! तेर्थ मनस्या एसमस्यार्थ इह सुतु पेरेहैं मगर्विद्धि वे[वी]तीर्थ भागायधाओ कनताओं कनता राख तामो थेरेहें मा वैविधि वर्षाचे मनावणाओं पञ्चलाओं हमाओं रास दाओं बेरेडि प्रयावि हेत्तीचं भागावत्रामा कनतामा । तंत्रहा-सेहे र्ह्म्य]इप्रिवरण पुरजो गेता श्रार भासायमा संदर्भ ॥ ४४-४ ॥ सेहे राष्ट्रियस्य सरकृतं भगा सन्दर्भागायस सहस्य ॥ ४६ ॥ वेहे राइविकाम काराने येता मरद आगायका सेहरम ॥ ४ सेंद्रे राज्ञीयरम पुरक्षा निद्विणा भार मागानमा सेहरम ॥ ४८ ॥ सेंद्रे राज्ञीन स्पन्न विदिना मन्द्र भासानना सेट्स्न व ४ व मेट्टे राजीयरन अन्त्र (ठिया) विद्विता सर्द भागायना मेहस्म ॥ " ॥ सेहे शहनियम्म पुरावे निर्वाण मरण मानायणा सेहमा ॥ ५९ त सेहे राष्ट्रियस्य तरकर्म निसीरण भार भाग यात्र सेहरूम छ ५९ ॥ सेंद्रे राइनियस्य आगक्ते नितीरण भरत अनाबात हैरून ॥ ५३ ॥ सह राइनिवृत्रं नदि ब्रष्टिया विवारमृति [बा] निशात नम्म हन्त्र है।

पुच्वतराग आयमड पच्छा राइणिए भवड आसायणा सेहस्स ॥ ५४ ॥ सेहे राइ--णिएणं सिद्धं विहया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खते समाणे तत्य सेहे पुव्वत-रागं आलोएइ पच्छा राइणिए भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ५५ ॥ केंड राइणियस्स पुञ्चसलवित्तए सिया, त सेहे पुञ्चतराग आलवइ पच्छा राइणिए भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ५६ ॥ सेहे राइणियस्स राओ वा वियाले वा वाहरमाणस्स अजो ! के मु(त्ते)ता के जाग(रे)रा <sup>2</sup> तत्थ सेहे जागरमाणे राइणियस्स अपडिमुणेता भवइ आसायणा सेहरस ॥ ५७ ॥ मेहे असण वा पाण वा खाइमं वा साइमं वा पिंड-गाहिता तं पु[व्व]व्वामेव सेहतरागस्स आलोएइ पच्छा राइणियस्स भवइ आसा-यणा सेहस्स ॥ ५८ ॥ सेंहे असणं वा पाण वा खाइम वा साइम वा पिंडगाहिता त पुव्वामेव सेहतरागस्स उवदसेइ पच्छा राइणियस्स भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ५९ ॥ सेहे असण वा पिडनाहित्ता त पुत्रवामेव सेहतराग उविणमतेइ पच्छा राइणि[ए]य भवर आसायणा सेहस्स ॥ ६० ॥ सेहे राइणिएण सद्धि असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पिडगाहिता त राइणिय अणापुच्छिता जस्स जस्स इच्छइ तस्स तस्स खद्ध [खध] २ त दलयइ आसायणा सेहस्स ॥ ६१ ॥ सेहे असण वा ४ पडिगाहिता राइणिएणं सर्दि भुजमाणे तत्य सेहे खद्ध २ डागं डाग उसढ उसढ रिवय रिवय मणुज मणुज मणाम मणाम निद्ध निद्ध छुक्स छुक्ख आहारिता मवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६२ ॥ सेहे राइणियस्स वाहर(आल्ब)माणस्स अपिडसुणिता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६३ ॥ सेहे राइ-णियस्स वाहरमाणस्स तत्य गए चेव पिडम्रिणिता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६४॥ सेहे राइणियस्स किंति-वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६५ ॥ सेहे राइणिय तुमति-वत्ता भनइ आसायणा सेहस्स ॥ ६६ ॥ सेहे राइणिय खद्ध खद्ध वत्ता भनः आसायणा सेहस्स ॥ ६७ ॥ सेहे राइणिय तज्जाएणं [२] पिडहणिता भवइ आमा-यणा सेहस्स ॥ ६८ ॥ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्य इति एव वत्ता भवड आसायणा सेहस्स ॥ ६९ ॥ सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स णो सुमरसीति वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ७० ॥ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स णो स्नमणसे भवड् आसायणा सेहस्स ॥ ७१ ॥ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स परिस मेता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ७२ ॥ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स कह अस्छि-दित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ७३ ॥ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्म तीसे परिसाए अणुद्वियाए अभिनाए अनुच्छिन्नाए अनोगडाए दो(दु)चपि तचिपि तमेन कह कहिता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ७४ ॥ सेहे राइणियस्स सिज्ञासथारग

पाएंबं छंबहिता इत्येज काण्युताबिता (काण्यु(व्यवे)बिता) तस्वद् असः वार्ध-यका सेहस्स ॥ ४५॥ सेहं राह्मिकस्स शिकार्यभारम् विद्विता का निर्मारण में द्वविता वा अपन् कासम्यम् शिक्स्स ॥ ४६॥ सेहं राह्मिकस्स उकारमंत्रे व गमानगरि का विद्विता वा निर्मेहत कार्यविद्वित तेतां कार्याव्याक्ष स्वताव्या ॥ ४५ ॥ एवामो व्यक्त साक्षे वेरिह्न अग्यविद्वि तेतां कार्याव्याक्ष स्वताव्ये ॥ ४५ ॥ एवामो व्यक्त साक्षे वेरिह्न अग्यविद्वि तेतां कार्याव्याक्ष स्वताव्या

111

#### चडस्था दसा

हुएँ में भाउसे। तेर्ण अनवया एक्सक्याय इह यस वेरेहिं अगवेतेहें स्ट्रिया गमिर्सपमा पञ्चला कमरा कक्ष अञ्चलिहा गणिर्सपमा पञ्चला है हमा कई बडिंग गमिसंपवा भन्नता । तेमहा-सानार्कंपना १ स्वयंपना १ सरीर्वंपना रे चयलसंदया ४ नायनासंदवा ५ महसंदया ६ वस्रोगसंदया ७ संग**हपरि**षा(वार) कडूमा ८ । से कि से आधारसंपना देशायारसंपना वडम्बिहा पन्नछा । तंश्रीन चंत्रसञ्ज्ञानेमञ्जूते यानि सन्दर्भ असंप्रयद्वियक्षणाः क्षणिययनितीः लङ्क्षतिके वाति सन्दर्भः से तं नामारसंपना n 🐱 n से 🎏 तं समसंपना 🕯 सबसंपना वहनिका पनार्थ । र्वजहा-बहुद्ध(चे)ए बानि शबद, परिनिवस्तप् वावि शबद, निनित्तसप् वानि मार्ट मोसन्दिदिकारए थानि सन्द । से वें समर्थपया U < ॥ से कि वें स्रीरदंपन सरीरचंत्रया का किहा प्रणक्ता। सेवहा-आरोहपरिकाहसंपक्षे यात्रि अस्ट, सकीतपः सरीरे जिरसंबर्ध बहुपनिपुर्निगरिए वालि अबह । से तं सरीरसंपना ॥ ८९ व है कि ते वनमर्थपमा ? वनमरापमा अवस्थिता प्रमाता : लेवहा-आदे<del>मानने</del> वार्षे भन्द, महूरवयणे यानि मनह, नामिस्सिक्ययणे यानि मन्द्र नास्सिक्य<sup>की नाम</sup> मन्द्र । से तं बनजर्सपमा b <२ ॥ से कि तं बानचार्यपमा १ बावभासंस्था बन्धियाँ पञ्चता । र्रजहा--विजयं उद्दिसह, विजयं बायहः परिनिव्यालियं बायर, अरबनिजी बए बाबि सम्बद्ध है से बायनार्थपना ॥ ८३ ॥ है कि तं सहसंपना । सहसंपन चरमित्रा क्यामा । तेनहा-सम्मद्द्रक्षमा देवागद्दर्कस्या स्मास्मद्द्रक्ष मारणामक्षेपमा । से कि तं उम्मक्सक्षेपमा । स्टमक्सक्षेपमा क्रम्महा प्रन्तता ! रांजहा-कियां समिन्हेर, वहु स्थिनोह, वहुमिहं स्थिनोह, पुर्व उतिनोह, समिति एक्तिके असंदिकं स्थानके । से तं अस्पन्तक्तंपमा । एवं ईडास्ट्रान । एवं सहति । से कि ते बारणामहर्षम्या । भारणामहर्षपया कव्यक्ता । तन्यता । तन्यतः क्षु वरेड, बहुनियं वरेड, पोराणं वरेड तुवरं वरेड, अधिरियरं वरेड, अधिरं नरेह । प्रे तं भारणामहर्षपया ॥ ४४ ॥ से कि तं वजीगमहर्षपता ! प्रमाणमहर्षपता

का स्त्रोग है। जैसे दूच में घृत तिल में तेल, पून में चार्छ । पुष्प में सुराम्च, चार्मकांति में चायुत हरीं माण्डि कार्मी स्पोग है। (१) जीव सुक्त पुष्प का कत्ता है चीर मोझ है। निम्नय नव से कर्म का कर्ती कर्म है चीर व्यवहार वर्ष से जीव है। (४) जीव हुन्य गुष्प पर्याय, माण कीर ग्रंप स्थानक सहित है। (४) जाव जीव को मोज है। (६) वार्ष

वर्रात और बारिज मोध का क्याप है व इसि सम्पूर्वम ।
इस घोकड़े को क्यटस्य करके विचार करो कि वे ६३
सङ्घट घोस स्ववदार मन्यस्थ्य के हैं इनमें से मेरे में कि
तने हैं और आगे के 'क्रिये स्ववन की कोरियर करो और
पुरुषाई द्वारा उनको मास करो ॥ इति मर्स ॥

B सेवं महै सेव मंते तमेव सबाम् 8



चडिव्वहा पण्णत्ता । तजहा--भाय विदाय वाय पडिजित्ता भवइ, परिस विदाय वायं पर्नेजित्ता भवइ, खेत विदाय वाय पर्नेजित्ता भवइ, वत्थु विदाय वाय पर्जित्ता भवइ । से त पञ्जोगमङसपया ॥ ८५ ॥ से किं त सगहपरिवा नाम सपया <sup>२</sup> सगह-परिन्ना नाम सपया चडव्विहा पण्णता। तजहा-वासावासेसु खेत पडिलेहिता भवइ वहुजणपाउग्गयाए, बहुजणपाउग्गयाए पाडिहारियपीढफलगसेज्ञासथारय उगिण्हिता मवइ, काळेण कालं समाणइता भवइ, अहागुरु सपूएता भवइ। से त सगहपरिना नाम सपया ॥ ८६ ॥ आयरिओ अतेनासी इमाए चउन्विहाए विणयपडिवत्तीए विणइत्ता भवइ निरणत्त गच्छइ । तजहा-आयारविणएणं, सुयविणएण, विक्खेवणाविणएणं, दोसनिग्घायणनिणएणं ॥ ८७ ॥ से किं त आयारनिणए १ आयारनिणए चउन्तिहे पण्णते। तजहा-सजमसा(स)मायारी यावि भवइ, तवसामायारी यावि भवइ, गणसा-मायारी यावि भवड्, एगल्लविहारसामायारी यावि भवइ। से त आयारविणए॥ ८८॥ से किं तं सुयविणए र सुयविणए चउन्त्रिहे पण्णते । तजहा-सुत्त वाएइ, अत्यं वाएइ, हिय वाएइ, निस्सेस वाएइ। से त सुयविणए ॥ ८९ ॥ से किं तं विक्खे-वणानिणए १ विक्खेनणानिणए चउन्विहे पण्णते । तजहा-अदिद्वधम्म दिद्वपुव्व-गत्ताए निणएइता भवइ, दिद्वपुन्वग साहम्मियत्ताए निणएइत्ता भवइ, चुय-धम्माओ धम्मे ठावइत्ता भवइ, तस्सेव धम्मस्स हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए अणुगामिय-त्ताए अब्सुद्वेत्ता भवइ । से त विक्खेवणाविणए ॥ ९० ॥ से किं त दोसनिग्घायणा-विणए व दोसनिग्घायणाविणए चउव्विहे पण्णते । तजहा-कुद्धस्स कोहविणएता मवइ, दुट्टस्स दोस णिगिण्हित्ता भवइ, कखियस्स कल छिंदित्ता भवइ, आयासुप्प-णिहिए यावि भवइ। से त दोसनिग्घायणाविणए ॥ ९१ ॥ तस्सेव गुणजाइयस्स अतेवासिस्स इमा चउव्विहा विणयपिडवत्ती भवइ । तजहा-उवगरणउप्पायणया, साहिल्लया, वण्णसजलणया, भारपचोरुहणया ॥ ९२ ॥ से किं तं उवगरणउप्पाय-णया <sup>१</sup> उचगरणउप्पायणया चउन्विहा पण्णत्ता । तजहा-अणुप्पण्णाण उवगरणाणं उप्पाइत्ता भवइ, पोराणाण उवगरणाण सारिक्खता संगोवित्ता भवइ, परित्त जाणिता पचुद्धरिता मनइ, अहानिहि संविभइत्ता भनइ । से तं उनगरणउप्पायणया ॥ ९३ ॥ • से किं त साहिन्नया <sup>२</sup> साहिन्नया चउन्विहा पण्णता । तजहा-अणुलोमवङ्सहिए यावि भवइ, अणुलोमकायकिरियत्ता, पिहस्वकायसफासणया, सन्वत्थेम् अपिड-लोमया । से त साहिल्लया ॥ ९४ ॥ से किं त वण्णसजलणया <sup>२</sup> वण्णसजलणया चउव्यिहा पण्णता । तंजहा—अहातचाण वण्णवाई भवर, अवण्णवाई पडिहणिता मवइ, वण्णवाई अणुवृहित्ता भवइ, आयवुद्धुसेवी यावि भवइ । से तं वण्णसजलणया 11.९५.1 है हि स भारव्योद्धाया है आराव्योद्धाया वर्णवाद्धा प्रकात । वेद्धा-संग्रीह्यपरिकर्णमाद्धा अवह, हिंहे आरायोवर चंपाद्धिया अबह, हाइम्मिक्स किसम्माप्तस्य कर्षायांने वेदार्थ अब्दुद्धित अबह, हाइम्प्रियां अहित्यहीत उप-गाँवि तत्व अभितिस्त्रोवनित्यहा (वित्तो) अयनचर्या गहियोगाद्धी मञ्चात्यमवस्य स्पर्य कर्द्धाणो उत्तर अवित्यस्य क्ष्मावयाद्धा विवस्त्रवायाद्धा त्यासीमें कप्युवित्य पंतर, व्यं सु साहस्मित्रा वण्याद्धा अप्यतीक्षा वण्याव्या व्यवस्थाया वण्युनित्य चंप्रसाद्धा वेद्यान्द्राया समाविद्याल वण्याता वण्यान्धा व्यवस्थाया व्यवस्थाया व्यवस्थाया व्यवस्थाया । एवं प प्रविद्याना । वे चंप्रस्थानस्था । १९॥ एवं व्यवस्था वित्यस्था व्यवस्था । १९॥ पंतर्यस्था वर्षायाः

सर्व में बाउर्य ! तेचे मंगवता एवमक्यांस इंद बाह वेरेड्डि मार्वतेड्ड स्व चित्तसमाहित्या प्रमादा कार बाह ते वेरेड्डि मार्वतेड्ड इस चित्तसमाहित्या पन्मता दे हमे कह से वेपेड़ी सवहरीही वस विसस्माहिताना पन्नया। र्टबर्ड-तेर्च काक्रेमं तेर्म समप्रने वानिकामे जबरे हात्वा एत्य कारवन्त्रमो मासिम<sup>ामी</sup>। दस्य मं बाक्रियगामस्य गवरस्य बह्रिया उत्तरपुरक्किमे विचीनाए ब्रूप्समसए <sup>बार्स</sup> ठजाने होत्वा वजानी। विवसन् राया तस्य बारणी नार्म देनी एवं राज्य समोसर्थं मानिकनं जान पुरुवीरिकाफाय सामी समोसके परिसा किन्या षम्मो कक्किमो परिसा पणिगवा ॥ ९८ ॥ सम्बो ! [इ]वि समचे समर्थ महा<sup>होरी</sup> समया निम्मवा निर्मादीको य बार्मदिशा एवं वनासी-"स्य वस अस्त्री निर्म-बाम वा निर्म्मवीच वा इरियासमिताचे भारतसमिताचे एसनासमिमाचे बावान सबमतनिक्केषणासमिवार्णं दकारपास्त्रण<del>केष वह</del>सिवाचपारैठावसिवासमिवार्णं स समिमाणं व[वा]मसमिमाणं श्ववसमिमाणं मणपुतीय वासपुतीवं समगुतीवं गुर्तिः वार्च गुप्तर्वसमारीणं कामग्रीणं कावतिवाणं कावजीवे कावगरकमार्च ग्रमसहि पत्तानं विस्तानमानार्थं इसाई इस विशतमाब्दिशलाई अवसुप्यन्तपुनाई स्मुप् जेजा। तंत्रहा-कमर्विता था से असमुपान्तपुत्रमा समुपाकेजा तन्त्र वर्ण बामिताए ॥ ९९ D श्रमिनर्वराचे वा से वससुप्पन्यपुत्रके समुप्पनेजा सहरा<sup>क</sup> दुमिर्ग पासित्तप् प १ ॥ सण्यिनाहसर्वेणं सण्यिना(क्रे)मं वा से अस्मुण्याप् रमुप्पनेजा (पुन्नमंदे) जप्पणो ग्रेसन्मिं जाई समिताए ॥ १ १ श देवरंपने स है क्रसमुप्पजापुरुवे समुप्पकेणा विश्वं वेत्रीति विश्वं वेत्रहर्ष विश्वं वेत्रहामानं वाहितर श १ १ । बोहिणाचे वा से असमुज्यन्त्र समुज्यन्त्र वाहिणा कोर्स वाहिणा

॥ १०३ ॥ ओहिदसणे वा से असमुप्पण्णपुन्वे समुप्पजेजा ओहिणा लोय पासि-त्तए ॥ १०४ ॥ मणपज्जनणाणे वा से असमुप्पण्णपुरुवे समुप्पज्जेजा अतो मणुस्स-क्खितेस अद्वाइजेस दीवसमुद्देस सण्णीण पर्चिदियाण पजत्तगाण मणोगए भावे जाणितए॥ १०५॥ फेवलणाणे वा से असमुप्पण्णपुन्वे समुप्पजेजा केव(ल)लकप्प लो(गं)यालोय जाणित्तए ॥ १०६॥ फेवलदसणे वा से असमुप्पण्णपुरुवे समुप्पज्जजा केवलकप्पं लोयालोय पासित्तए।। १०७॥ केव(लि)लमर(ण)णे वा से असमुप्पण्णपुर्व्वे समुप्पजे(मरि)जा सव्वदुक्खपही[हा]णाए॥ १०८॥ ओय चित्त समादाय, झाण स-मुप्पजाइ। धम्मे ठिओ अविमणो, निव्वाणमभिगच्छइ॥ १०९॥ ण इम चित्त समादाय, भुजो लोयसि जायइ । अप्पणो उत्तम ठाण, सण्णिणाणेण जाणइ॥ ११०॥ अहातच तु सुमिण, खिप्प पासेइ सबुडे । सब्ब वा ओह तरइ, दुक्खदोय विमुचइ ॥ १११ ॥ पंताई भयमाणस्स, विवित्त सयणासण । अप्पाहारस्स दंतस्स, देवा दसेति ताइणो ॥ ११२ ॥ सव्वकामविरत्तस्स, खमणो भयमेरव । तथो से ओही भवइ, सजयस्स तवस्सिणो ॥ ११३ ॥ तवसा अवह् द्वुळेस्सस्स, दसण परिसुज्झइ । उष्टु अहे तिरिय च, सन्व समणुपस्सइ॥ ११४॥ द्वसमाहियछेस्सस्स, अवितक्कस्स भिक्खुणो। सन्त्रओ विप्पमुक्कस्स, आया जाणाइ पज्जवे ॥ ११५ ॥ जया से णाणावरण, सन्व होइ खय गय। तभो लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली ॥ ११६॥ जया से दरिसणावरण, सन्व होइ खय गय। तथो लोगमलोग च, जिणो पासइ केवली ॥ १९७ ॥ पिंडमाए विद्यद्वाए, मोहणिज खय ग[य]ए। असेस लोगमलोग च, पासेइ ग्रसमाहिए ॥ ११८ ॥ जहा मत्यय-स्ईए, हताए हम्मइ तले । एवं कम्माणि हम्मति, मोहणिजे खयं गए॥ ११९॥ सेणावइमि निहए, जहा सेणा पणस्सह। एव कम्माणि णस्स्ति, मोहणिजे खय गए॥ १२०॥ वृमहीणो जहा अग्गी, . खीयइ से निरिंधणे । एव कम्माणि खीयति , मोहणिजे खय गए ॥ १२१ ॥ झक्रमूले जहा स्क्खे, सिंवमाणे ण रोहइ। एव कम्मा ण रोहति, मोहणिजे खय गए ॥ १२२ ॥ जहा दहुाण वीयाण, न जायति पुणकुरा। कम्मवीएस दहुेन, न जायित भवकुरा ॥ १२३ ॥ विचा ओरालिय वॉदिं, नामगी(त्त)य च केवली। आउय वैयणिज च, छित्ता भवड नीरए ॥ १२४ ॥ एव अभिसमागम्म, वित्तमादाय आउसो । सेणिमुद्धिमुवागम्म, आया मुद्धि(सोहि)मुवागड ॥ १२५ ॥ ति-वेमि ॥ पंचमा दसा समता॥ ५॥

#### छट्टा दसा

चय में आउस ! तेण भगवया महावीरेण एवमक्खाय, इह राल धेरेहिं भगवतेहिं

ए(इ)मारस जनामध्यविमानो प्रणतामो कनरा राह्य ताओ बेरेड्स मधनेतेई प्रस्त सवासगपडिसाओ एज्जलाओ ! इसाओ यह ताओ येरेड्डि भगविटेई एदारस दशस-मपडिमाओ एज्यताओ। तंबही-अकिरियवाई यावि अवड, लाहिसवाई, माहिसकी नाहियदिही यो सम्मानाहै, यो वितियानाहै, य संवि परकोमवाहै, यरिव स्रकेप मरिय परक्रोए; मरिन सामा गरिन पिया अरिव करिहता गरिव नाउन्हों विन बस्त्रमा भरित बासुबेगा चरित्र किरवा गरित केरह्या गरित सुकरतुकार्य क्सी-विनित्तरको जा सभिज्या कामा समिज्या कमा भनेति जो दुनिक्या कामा इतिका फल भवेति अफके वजायपानए, यो पचार्यति श्रीवा अस्वि निरए, अस्वि निर्देश हैं एक्बाई एवंफ्जो एवंदिक्ती एवंद्रियरागमहणिनिद्धे गावि अवस् ॥ १२६ ॥ से अवस् महिकी महारंने महापरिमाई अहमिनए अहम्माखुए अहम्मारेबी ब्रह्मिन्हे ब्रहमस्बाई ब्रहम्म रानी शहरमपत्नेहे अहम्मवीबी अहम्मपसंज्ञचे अहम्मदीक्रमुदायारे अहम्मेषं वेर निर्ति कप्पेमाने निराहर ॥ १२७॥ इस छिए सिंह" विकास बोहियांक्सी वेड से **बार् अ**समिनिवासकारी साम्रस्थिए वर्णवर्णवर्णमात्रनिवासकूत्र साहसंस्कोमस्त्री इस्सीले हुप्परिचए हुचरिए हुरणुचेए हुम्बए हुप्पडिवार्वेड निस्तीके विम्बए <sup>सिर्</sup>वे निम्मेरे निप्यवस्थावपीसहोत्रवासं असाह ॥ १५४ ॥ सम्बान्से पावास्तवाने भप्पतिनिरना नामजीराए जान सम्मानो परिन्यक्ताओं एव बाद समाजे कोरानी **पन्नाओं माणाओं सन्नाओं मानाओं सन्ताओं सोमाओं पेजाओं होताओं कानाओं** क्रमक्त्रामाओ पेद्यण्यप्रपरिवानाको सरहरासामाओसान्त्रे सिकार्यसम्बद्धान मृत्यक्रिमिरमा मानामीमाय ॥ १२९ ॥ सम्मामो समावर्यतमञ्जूनामाम्यमिनेन सर्परिसरसरवर्गमभाक्राऽकंताराओं अप्यक्तिरया जावजीधार, समानो स्र करहजायग्रुगमिक्रिमिक्रिसीयासंद्रमाणिबास्यणासणबाष्याहणमोबयप्रक्षणामिके कपाडिनिरना कानजीनाए ॥ १३ ॥ असमिनियत्रनारी सम्बामी बासहिनकी दिसामा गर्नेसम्परासदारीकम्महरपोस्त्याको अध्यक्तिरता जानजीनाए, सनाजी क्रमिक्यमासग्रमासस्यग्रसम्बद्धारांशी अध्यविनिर्दा वास्त्रीमार्ट, एम्बानी विरूप धुक्कवजमक्रमिक्मोरिम<del>र्शकविक्रम्यवासम्ब</del>ो कप्पत्निविरता कावजीवार, सम्बाद् वृडतुसक्डमाणामो क्पाडिविरवा वावजीवापु सम्बाजी आरंगस्यारताचे जन किमेर्या वावजीनाए, सन्वाको प्राच्याकाको अप्पतिवरवा जलकीयर, सम्बद्धि क्रम्यकरमणामी अध्यविमिर्या जावजीवाए, सम्बद्धि दुश्विद्धाना

पदमस्तिरसद्भाषऽद्यमस्यक्षामे जासमो ।

१ पासक प्रकारसम्बं सम्बानं । १ निरोशो सुक्रमकविक्ष्यसम्बन्धपविक्रमञ्ज्ञान

तज्जणतालणाओ वहचघपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया जावजीवाए, जेयावण्णे तहप्प-गारा सावजा अवोहिया कम्मा कज्जति परपाणपरियावणक[डा]रा कर्जात तओवि य अप्पडिविरया जावजीवाए ॥ १३१ ॥ से जहानामए-केइ पुरिसे कलममसूरतिल-मुग्गमासनिष्फावकुलत्यभालिसदगजवजवा एवमाइएहिं अयत्ते कूरे मिच्छादड पउ-जड एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए तित्तिरवट्टगलावयकवोयकर्विजलमियमहिसवराह-गाहगोहकुम्मसरिसवाइएहिं अयत्ते कूरे मिच्छादंड पउजइ ॥ १३२ ॥ जावि य से वाहिरिया परिसा भवइ, तजहा-दासेइ वा पेसेइ वा भितएइ वा भाइलेइ वा कम्म-करेड़ वा भोगपुरिसेड़ वा तेसिंपि य ण अण्णयरगित अहालहुयि अवराहंसि सय-मेव गरुय दङ वत्तेइ, तजहा-इम दखेह, इमं मुडेह, इमं तजेह, इम तालेह, इम अदुयवधण करेह, इस नियलवधण करेह, इस हिडवधण करेह, इस चारगवधण करेह, इम नियलजुयलसकोडियमोडिय करेह, इम हत्थिलिनय करेह, इम पायिछ-न्नय करेह, इस कन्नछिन्नयं करेह, इसं नक्कछिन्नय करेह, इस उद्घछिन्नय करेह, इस सीसछिन्नय करेह, इम मुहछिन्नय करेह, इम वेयछिन्नय करेह, इम हियउप्पाडिय करेह, एव नयण-वसण-दंसण वयण-जिब्(मु)म-उप्पाडिय करेह, इम उह्रविय करेह, इम घाषिय॰, इम घोलिय॰, इम स्ला[का(पो)यत]इय॰, इम स्लामिन्न॰, इम खारवितय करेह, इम दब्भवितय करेह, इम सीहपुच्छय करेह, इम वसभपुच्छय करेह, इम द्विगिवद्वय करेह, इम काक(णि)णीमसखाविय करेह, इम भत्तपाण-निरुद्धय करेह, जावजीववघण करेह, इस अन्नयरेण अग्रुभकुमारेण मारेह ॥ १३३॥ जावि य से अर्दिभतरिया परिसा भवइ, तजहा-मायाइ वा पियाइ वा भायाइ वा भगिणीइ वा भजाइ वा धूयाइ वा सुण्हाइ वा तेसिंपि य ण अण्णयरंसि अहाल-हुयसि अवराहिस सयमेव गरुय दड वितह, तजहा-सीओदगवियङसि काय बोलिता मवइ, उपिणोदगवियदेण काय सिंचिता भवइ, अगणिकाएण काय उद्वृहिता भवइ, जोत्तेण वा वेत्तेण वा नेत्तेण वा कसेण वा छिवाडीए वा लयाए वा पासाइ उद्दालिता मनइ, दरेण वा अद्वीण वा मुद्दीण वा लेखुएण वा कवालेण वा काय आउदिता भवइ, तहप्पगारे पुरिसजाए सवसमाणे दुम्मणा भवति, तहप्पगारे पुरिसजाए विप्पवसमाणे समणा भवति ॥ १३४ ॥ तहप्पगारे पुरिसजाए दडमासी दडगरुए दढपुरेक्खडे अहिए अस्सि लोयसि अहिए परंसि लोयसि । ते दुक्खेंति सोयति एव झ्रति तिष्पति पिर्हेति परितष्पति, ते दुक्खणसोयणझ्ररणतिष्पणपिहणपरितष्पण-वहवधपरिकिलेसाओ अप्पिडिविरया भवति ॥ १२५ ॥ एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं सुच्छिया गिद्धा गढिया अज्होववन्ना जान वासाइ चउपच[मा]छदसमाणि वा

भप्पतरो ना भुज्यतरो ना कार्य भुजिता कामगोपाह परेनिताने राजवणहं संवितिय नहुर्ग पानम् कमाई तसने समार्वकेण कम्मुणा से जहानामार-जनगोके वा स्प गोकेर वा उदर्शत परिचारी समाने उदयतकार वहता आहे वर(वि)वीयके परानि मनइ एवायेन राहप्पणारे पुरिसामाए बाजवहुके पुरावहुके पहमहुके बेरवहुके देन-मिमहिसार्वहुके आसाम**ानहुके** अक्सवहुके अप्पत्तिबहुके उरम्पन्य तथ्याव<mark>ण्य</mark> कासमारे कार्स किया धरणीयअसक्त्रका आहे सरगवरणीयके पद्भने अस् П ११६ D ते में मरगा मेतो वहा वाहिं वडरेसा कहे करप्परंडावरंठिया निवर बारतमसा वदपनगढ्यंदस्रमनसात्रोदसप्ता महत्रसर्मशरद्विरपूर्वपद्वविवस कितानुसेक्यतमा क्यू(ई)इ[ले]बीसा पर्श्युक्तियवा वाउयसगविकन्यामा क्युड पासा दुरिह्नासा मसुना गरमा असमा नरपृष्ठ वेदचा नी चेद न नरए वरावा निहामंति वा प्यकार्यति वा धर्व वा रहे वा विष्ठं वा महे वा उपकर्मति व व स्टब्स् उजर्स निजस मगर्स स्वरतं सञ्जर्भ गाँउ दुक्तं हुग्ग रिश्ना रिम्ना <u>स</u>्वरूप[स्वरत नरएड नेरह्मा नरमवेनण पण्यानसमाणा निहरित ॥ १३७ ह से सहनहार-काचे रिया पत्रपमी जाए मूलकिये भमी गरए कभी निर्व कमी इस्ते जमी निगर्न तको परस्य एकामेर त्रब्रुप्पगारे प्रतिस्थाए सम्मामा सम्म क्रमामे कर्म माराभो मारं वुक्याको वुक्वं बाह्यिगमसिनेछाए क्रव्यक्रियर शास्त्री स्थार्ण बुज्यवीविष् याणि अवद् । से तं काजिरेयावाहे [वालि अवदे ॥ १६८ ॥ धं कि ते निरिवानाई [गानि मनद्] है तजहां-आहिवाचाई, आहियपनी आहिव रिद्वी सम्मानाई, निवानाई, सनि गरकोग्लाई, करिच इड्सोगे *वास्ति* गर<sup>कोने</sup>, व्यक्ति माना नात्य पिया शांत्व अधिदेता अन्य न्यान्त्री नात्व सर्वरा करिय बाहुबेबा व्यक्ति एउउडुकडार्न कम्मार्थ प्रस्त्रितिसेसे स्विक्ता कम्मा श्चिममा राज्य मर्पति शुक्तिन्या कामा शुप्तिन्या प्रका मर्पति श्ववके वज्ञानारावरः पनार्पति जीवा व्याप्य मेरह्या काम अध्य बेवा अध्य शिक्षी से एवंताहे एन पने एवंदिप्रीकंदरशासद्गितिके साथि संबद । सं संदद सविपक्षे बाद उत्तरसमिद नंदर्प सुरूपनिचाए आगमेरसार्थ सुकमनोहिए गावि अबद । सं है मिहबागाँ ध ११८ ध सम्बन्धम्मरुई यानि अवड, शस्य ने बहुई श्रीसवस्तुजनेरम<del>नश्वस्थान</del> प्रेक्कोनबासाई नो सम्मे प्रतिविधुभाई मर्गति एवं तबानगरन पहमा वृंग्या पश्चिमा ॥ १४ ॥ महावर्ष क्षेत्र्या उद्यासगपश्चिमा सम्बन्धमारी ना अबर्, तस्य व बहुई के पण्डेरमण्डकावापीमहोबबामाई मन्म एड्रविद्य । जगपाकिता भगा, दोध्या प्रयासम

अर्थित है से साहायाँ

पंडिमा ॥ १४२-१ ॥ अहावरा तचा उचासगपंडिमा-सन्वधम्मर्र्ड यावि भवड, तस्म ण बहूइ सीलवयगुणवेरमणपचक्याणपोसहोववासाड सम्म पट्टवियाड भवंति, से ण मामाइय देसावगासिय सम्म अणुपालिता भवड, से ण चउ(इ)दसि-अटुमिडिह्टपुण्णमातिणीसु पिडिपुण्ण पोमहोवनास नो मम्म अणुपालिता भवड, तन्ता उवासगपडिमा ॥ १४२-२ ॥ अहावरा चउर[थी]था उवासगपडिमा-यव्वबम्मरुई यावि भवइ, तस्स ण बहूइ सील्वयगुणवेरमणपचक्रसाणपोसहोववा-साइ सम्म पट्टवियाड भवति, से ण सामाडय देसावगासिय सम्म अणुपालिसा भवड, से ण चउद्दसिअद्वमिउद्दिद्रपुण्णमासिणीमु पडिपुण्णं पोसह सम्म अणुपालिता भवड, से ण एगराइय उवासगपिंडम नो सम्म अणुपालिता भवइ, चउत्था उवासग-पिंडमा ॥ १४३ ॥ अहावरा पंचमा उवासगपिंडमा-सन्वधम्मरुई यावि भवड्, तस्य ण वहड् सीलवय जाव सम्म अणुपालिता भवड्, से ण मामाइय तहेव, से ण चउइसि तहेव, से ण एगराइय उवासगपडिम सम्म अणुपालिता भवइ, से ण असिणाणए वियडमोई मुडलिकडे दिया वभवारी रित्तपरिमाणकडे, से ण एयारुवे[ण]ण विहारेण विहरमाणे जहण्णेण एगाह वा दुयाह वा तियाह वा उक्रोसेण पच मा[स]से विहरइ, पंचमा उचासगपडिमा ॥ १४४ ॥ अहावरा छ[ही]द्वा उवासगपडिमा-सन्बधम्मरुई यावि भवड जाव से ण एगराइय उवा-सगपिडम॰ अणुपालिता भवइ, से ण असिणाणए वियडमोई मङलिकडे दिया वा राओ वा वमयारी, सचित्ताहारे से अपरिण्णाए भवइ, से ण एयारुवेण विहारेण विहर-माणे जहन्नेण एगाह वा दुयाह वा तियाह वा [जाव] उक्कोसेण छमासे विहरेजा, छट्टा उवासगपडिमा ॥ १४५ ॥ अहावरा सत्तमा उवासगपडिमा-सव्वधम्म-रहें यावि भवइ जाव राओवराय वा वभयारी, सचित्ताहारे से परिण्णाए भवइ, से ण एयारुवेण विहारेण विहरमाणे जहनेण एगाह वा दुयाह वा तियाह वा उक्कोसेण सत्त मासे विहरेजा, से त सत्तमा उवासगपडिमा ॥ १४६॥ अहावरा अद्भुमा उवासगपिडमा-सव्बधम्मरुई यावि भवइ जाव राओवराय चभवारी, संचित्ताहारे से परिण्णाए भवइ, आरमे से परिण्णाए भवड, पेसारमे से अपरिण्णाए भवइ, से ण एयारुवेण विहारेण विहरमाणे [जाव] जहनेण एगाह वा दुयाह वा तियाह वा उक्कोसेण अह मासे विहरेजा, से तं अहुमा उवासगपिडमा ॥ १४७ ॥ अहावरा **नवमा उवासगपडिमा**-सव्वधम्मर्राई यावि भवइ जाव **"** राओवराय वभयारी, सचिताहारे से परिण्णाए भवइ, आरमे से परिण्णाए भवइ, पेसारंभे से परिण्णाए भवड़, उद्दिद्वभत्ते से अपरिण्णाए भवड़, से ण एयाहवेण ५९ सत्ता॰

41

निहारमें रिहरमाचे जहसेर्थ एगाई वा तुबाई वा निवाई वा प्रकोरोर्च वर माने विहरेजा से ते संख्या उद्यासगपश्चिमा ॥ १४८ ॥ शहारत दुसमा उद्या स्तगपद्मिमा-गम्बभम्महर्दे वानि भार बार टहिंदुमत से परिणाए भार, से बं प्रस्नेटए वा विहाधारए वा तरम व भागद्वमा ममामद्वरम वा कर्पति हुव माठाने मामित्तपु, जहा-जार्ण वा जार्ण अजार्ण वा जो आर्ण से ण एमारूवर्ग विहारि बिहरमाणि बहनेजे एगाइ वा दुवाई वा विवाई वा उद्योगेण दम मामे विहरेण हैं त इसमा उवामगपद्दिमा ॥ १४९ ॥ महानत ए[काद]कारसमा उवा स्तरापहिमा-मध्यकमार्थं बाबि भवर जाब उदिहमी से परैक्याए मन्द्र से बं पुरमुंडए वा सुत्तनिरए वा गडिवाबारमण्यानवरथे जारिसे समयार्व निर्मावार्व यस्मं पत्रते । शंबद्दा-गस्म काएण पासेमाणे पासेमाल पुरुष्ये सुगमामाए वेहराने रकुण तसे पाने उक्कर पाए शि(रि)एमा शाहर पाए शिएमा निरिग्ध वा पाने की रीएजा सह परवर्म[जा] संज्ञानव परवर्मका भी सज़र्ज मन्दरेजा केरत है माथए पेजर्मपने अवोध्यिने अवद्, एवं से कप्पद्र नातनिहिं वद्याए ॥ १५ ॥ तर् से पुरमागमणेनं पुरमाउते बातसोत्रने पच्छाउते मिळिमस्ब बच्च से बाउसेर पडिर्म् ग]गाहित्तए, को संबच्छ विक्रियस्थ पडिव्याद्वितए। तत्य [ब] से पुष्पाका पर्च पुरनाउत्ते मिर्किंगमूचे पच्छाउत्ते बाउस्प्रेट्णे कृपद् से मिर्किंगमूचे पडिस्मार्वि त्तप् तो से रूपक् चाउरोर्णे पडिस्माहितप् । तत्व से पुजानस्मेन होन पुम्बावचाई कप्पति होनि पडिम्माहितप् । तत्व से पच्छाममधेन होने पण्डा बताई नो से अन्यदि दोनि पविग्गाहितए । अ से तत्त्व पुरमागमजेन पुमावते है क्प्यू पडिम्माहितए। वे से तत्व पुरमायमवर्ष प्रचारते से मी क्प्यू परि माञ्चित्तए ॥ १५९ ॥ तस्य ने गाहावर्ष्ट्रक पिठनावपविवाए क्युमस्ट्रिस्ट क्यू एवं बहुगए समलोबास्परस पविद्यापवित्रतस्य मिन्न्यं दक्षमह्" हे वेब एक्ट्रवेस बिहारेण विदरमाणे में केंद्र पासिता करूमा-"केंद्र माठयों! हमें बतन्त्र हिना" समजोनासए पडिमापविजनाए अनुमंसीति" वत्तव्यं रिया से वं स्वाहवेशं निर्

रंगं विद्रामाने बहुबेर्णं पूनाई ना हुनाई स त्रीमाई वा उन्होंने पूराण मारे विद्रामा पूर्ता) का हुनाई ना हुनाई स त्रीमाई वा उन्होंने पूराण मारे विद्रामा पूर्ता)कारप्तमा जनास्त्रमण्डीमा । १५१ ॥ पूना कई त्रामो ये हैं सम्मते हैं प्रवास जनास्त्रमण्डीमानो एकनामो ॥ १५१ ॥ तिनित्र ह

u(f) हा वसा समचा ॥ ६ ॥

सस्तामी]मा वसा

सूर्य म बाउसे! राजे भगवया एवमनयाव इह बह वेरेह मध्येतेही बस्छ

भिक्खुपिटमाओ पण्णताओ, क्यरा खलु ताओ थेरेहिं भगवतेहि वारस भिक्खु-पंडिमाओ पण्णताओं <sup>१</sup> इमाओ खळु ताओ थेरेहिं भगवतेहिं वारस भिक्खुपंडिमाओ पण्णत्ताओ । तजहा-मासिया भिक्खुपडिमा १, दोमासिया भिक्खुपडिमा २, तिमासिया भिक्खपिडमा ३, च(ा)उ(म्)मासिया भिक्खपिडमा ४, पचमासिया भिक्खुपहिमा ५, छ(म)मासिया भिक्खुपहिमा ६, सत्तमासिया भिक्खुपहिमा ७, पढमा सत्तराइदिया भिक्खपिडिमा ८, दोचा सत्तराइदिया भिक्खपिडिमा ९, तचा सत्तराइ-दिया मिक्खपिडमा १०, अहोरा(इ)ईदिया भिक्खपिडमा ११, एगराइया भिक्ख-पिंदमा १२॥ १५४॥ मासिय ण भिक्खपिंदम पिंदवनस्स अणगारस्स निच वोसद्रकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसगगा उववजाति, तजहा-दिव्वा वा, माणुसा वा, तिरिक्खजोणिया वा, ते उप्पण्णे सम्म (काएण) सहइ खमइ तितिक्खड अहियासेइ ॥ १५५ ॥ मासिय ण भिक्खुपिस पिडविषस्स अणगारस्स कप्पइ एगा दत्ती मोयणस्स पडिगाहित्तए एगा पाणगस्स, अण्णायउञ्छ सुद्धोबहुङं निज्नूहित्ता वहवे दु[प]पयचउप्पयसमणमाहणअतिहिकिवणवणीमगा, कप्पइ से एगस्स भुजमाणस्स पडिगाहित्तए, णो दुण्ह णो तिण्हं णो चउण्ह णो पचण्ह, णो गुव्निणीए, णो वालवच्छाए, णो दारग पेजमाणीए, णो अतो एलुयस्स दोवि पाए साहटू दलमाणीए, णो वा[व]हिं एछयस्स दोवि पाए साहट्ट दलमाणीए, एग पाय अतो किचा एग पाय वाहिं किचा एल्डय विक्खभइता एवं दलयइ एवं से कप्पइ पिडगाहिताए, एवं से नो दलयइ एव से नो कप्पइ पिडगाहित्तए ॥ १५६ ॥ मासिय ण भिक्खपिडिम पडिवन्नस्स अणगारस्स तओ गोयरकाला पन्नता । तजहा-आ[दि]इमे म[ज्झे]ज्झिमे चरिमे, आइमे चरेजा, नो मज्झे चरेजा, नो चरिमे चरेजा १, मज्झे चरेजा, नो आइमे चरेजा, नो चरिमे चरेजा २, चरिमे चरेजा, नो आइमे चरेजा, नो मिन्झिमे चरेजा ३॥ १५७॥ मासिय ण भिक्खुपिटम पिडवन्नस्स अणगारस्स छिव्वहा गो-यर-चरिया पन्नता । तजहा-पेला, अद्धपेला, गोमुत्तिया, पतगवीहिया, सवुकावद्दा, गत्तु (गतु)पचागया ॥ १५८ ॥ सासिय ण भिक्खुपिडस पिडवन्नस्स अणगारस्स जत्थ ण केड जाणड कप्पइ से तत्थ एगरा(इ)इय बसित्तए, जत्थ ण केइ न जाणइ कप्पइ से तत्थ एगराय वा दुराय वा वसित्तए, नो से कप्पइ एग-रायाओ वा दुरायाओ वा पर वत्थए, जे तत्थ एगरायाओं वा दुरायाओ वा परं वसंड से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १५९ ॥ मासिय ण भिक्खपिडम पिड-वनस्य॰ कप्पड चत्तारि भासाओं भासित्तए, तजहा-जायणी, पुच्छणी, अणुण्णवणी,

१ वण्णणविसेसमेयासि ठाणतचठाणभगवईअतगडाईहितो जाणियव्व ।

त्तप्, तंजहा-पुडवीसिकं का कड्डसिकं का काहासंबद्धमेव । मारिम वं मिक्तुसिर्म पविवाहतः कृप्यः तस्रो संवारगा अञ्चलनेतए, त पेव । मास्त्रं न मिनक्रास्त्रं पडिवसस्य कमा तन्त्रो सेवारगा स्वाहिकत्तप्, सं चैव ॥ १६२ ॥ मासिनं वं निक्**य**पनिमं परिकारसः । इत्यो वा पुरिसे वा उवस्तर्यं अवायन्त्रेमा सं इत्यो वा पुरिसे वा नो से कपड़ ते पहुंच निक्कमित्तप् वा पविस्तितप् वा ॥ १६३ ॥ मार्कि र्ण मिन्द्रापविस पवित्रशस्य केंद्र उक्सर्य अगणिकाएर्ण सामेजा तो से कन्द्र हैं पद्भव निक्तामित्रए वा पविवित्रए वा उत्त्व में केंद्र बाहाए गर्हाए व अगलेगा से से कप्पद र्थ वक्तंबितए वा क्लंबितए वा कप्पद से बहारिये कि[रिब]तए॥ १६४३ माधिम न निकल्कपृत्रिम पृत्रिकत्तरसः पार्थति साल् वा कटए वा डीरए वा सहरह का अञ्चयनिरोक्ता मो से कप्पद शीवनिराय वा विसोक्तिय वा समझ से कहारै व

रीहराए ॥ १६५ ॥ मासिर्व र्च भित्रशापतिर्म पतिवसस्य बाज सन्तिरि <sup>सर्वा</sup> मिनि वा वी[बामि]ए वा रए वा परिवादकेका भो से क्यक शहरेत्तर वा निवेदे त्तप् वा अन्यत् से बाहारियं रीवृत्तप् ॥ १६६॥ मासियं वं मिललाप्रीटमं प्रतिबंबत्स करनेन स्मिप् अत्यसेना राज्य एव अर्थ(शुक्रसमासर्व)सि वा सर्वस्ट वा इमीव प निकंति वा पम्बयरि वा विसर्गति वा गहाए वा वरीए वा बच्चक् से है रहनी हत्वी उदायकामित्तए नो से कप्पह प्रवस्ति वसिताए, कप्पह से वर्ड पावप्पमाए स्वसीए वर्ड करंदे पाईचामिमुहस्य वा बाहिकामिमुहस्य वा पत्रीचाभिमुहस्य वा उत्तरामिनुहस्य ना अकारियं रिक्तए ॥ १६७ ॥ मासियं जे निमन्तुरविसं परिनक्तस को है कम्पर् भर्नसरिद्विमाए पुढवीए निहाइत्तर् वा पवश्वत्रसर् वा क्षेत्रती बूना आसम् मेर्व से शत्म निश्चमानि वा पश्चामगणि वा राजेकी भूमि परास्तरिका जहातिकी मेन ठानं अद्देशपु निक्यामितपु वा अवारपास्त्रपेनं बुप्पान्ताहिता नो छ रूप जनिष्दित्तम् [ना] कप्पद् से पुरुषात्रिकेद्विष् वीतिके उचारमारमणं शहरीलार तमेव उदस्यवं भागस्य बहानिक्के ठावं ठाइत्तर् ॥ १६८ ॥ मानिसं सं भिनवा दिस्तं पत्रिमबस्सः भो कम्पङ् समस्मद्धेणं नापूर्णं गाहामहरुसः अध्यय ना समार

[ &3 ]

# सूत्र श्री पन्नवसाजी पद तीजा.

## (महादंडक)

-	•	•			•	
मेहया	मार्गणा का ६⊏ बोल	जेवों के भेद १४	गुण स्थान १४	योग १४	उपयोग १२	लेखा ह
१	्सर्वे स्तोक गर्भज मनुष्य	٦ <sub>.</sub>	88	१५	१२	464
२	मनुष्यगी संख्यात गुगा	ર	१४	१३	१२	લ્
ş	बादर तेडकाय के पर्याप्ता असं०	8	્ર	. १	३२	, <b>3</b>
8	गुगा०। पाँच इंगात्तर वैमान के देव	२	્ર	११	ફ	.ç
ķ	येवेयक जपरकी त्रिकके देव संख्या <b>ग</b>	ર∙	રાર	११	з	.۶
46	। ो , मध्यमकी,, ,, ,,,,,	२	२।३	११	B	१
v	ກ नीचेकी "ຸກ ກຸກ	२	२।३	११	B	१
5	ब वहवें देवलोक के देव ,, ,,	ેર	୍ଷ	११	B	१
3	ग्यारवे " ्र ग्र ग्र	.૨	8	११	ε	. १
१०	दश्रवे , : , , , ,	२	8	११	u,	१
११	नीवां ,, ,, ,;;	२	8	११	B	१
_	•	•	I		· 1	: 

वा निक्यामित्तए वा पविसित्तए वा, अह पुण एवं जाणेजा ससरक्खे से अत्ताए वा जलताए वा मलताए वा पकताए वा विद्धत्थे से कपड गाहावइकुल भत्ताए वा पाणाए वा निक्खिमत्तए वा पविसित्तए वा ॥ १६९ ॥ मासिय ण भिक्खुपिडम पडिवन्नस्म॰ नो कप्पड़ सीओद्गवियडेण वा उसिणोद्गवियडेण वा हत्थाणि वा पायाणि वा उताणि वा अच्छीणि वा सुह वा उच्छोलितए वा पघोइत्तए वा, णण्णत्थ लेवालेवेण वा भत्तमासेण वा ॥ १७० ॥ मासिय ण भिक्खपडिम पडिवन्नस्स० नो कप्पड आसस्स वा हित्यस्स वा गोणस्स वा महिसस्स वा फोल्सुणगस्स वा मुणस्म वा वग्वस्म वा दुहुस्स वा आवयमाणस्स पयमवि पन्नोसिक्षत्तए, अदुहुस्स आवयमाणस्य कप्पड जुगमित्त पञ्चोसिक्कत्तए॥ १७१ ॥ मासिय ण भिक्खपिडिम पडिवन्नस्स० नो कप्पड़ छायाओ सीयति उण्ह इयत्तए, उण्हाओ उण्हंति छाय इयत्तए । ज जत्थ जया सिया त तत्थ तया अहियामए ॥ १७२ ॥ एव खलु मासिय भिक्खपिटम अहादुत्त अहारूप अहामग्ग अहातच सम्म काएण फासिता पालिता सोहिता तीरिता किष्टिता आराहड्ता आणाए अणुपा(हे)लिता भवड ॥ १ ॥ १७३ ॥ दोमासिय ण भिक्खुपडिम पडिवन्नस्स० निर्च वोसट्टकाए जाव दो दत्तीओ ॥ २ ॥ १७४ ॥ तिमासियं तिण्णि दत्तीओ ॥ ३ ॥ १७५ ॥ चउमासिय चत्तारि दत्तीओ ॥ ४ ॥ १७६ ॥ पचमासिय पच दत्तीओ ॥ ५ ॥ १७७ ॥ छमासिय छ दत्तीओ ॥ ६ ॥ १७८ ॥ सत्तमासिय सत्त दत्तीओ ॥ ७ ॥ जेत्तिया मासिया तेत्तिया दनीओ ॥ १७९ ॥ पढम सत्तराइदिय भिक्खपडिम पडिवन्नस्स अणगारस्स निच वोसद्वकाए जाव अहियासेइ, कप्पइ से चउत्थेण भत्तेण अपाणएण बहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा उत्ताणगस्स वा पासिल्लगस्स वा नेसज्जियस्स वा ठाण ठाइत्तए, तत्य दिव्या वा माणुमा वा तिरिक्खजोणिया वा उवसरगा समुप्पजेजा तेण उनसम्मा पयलिज वा पवडेज वा गो से कप्पइ पयलित्तए वा पविस्ताए वा, तत्थ ण उचारपासवण उच्चाहिजा णो से कप्पइ उचारपासवण उगिण्हित्तए, कप्पइ से पुन्वपिक्टलेहियसि थिंडलिस उचारपासवण परिठवित्तए, अहाविहिमेव ठाणं ठाइत्तए, एवं खळु एसा पढमा सत्तराइदिया भिक्खपिडमा अहार्सु[य]त्त जाव आणाए अणुपालित्ता भवइ ॥ ८ ॥ १८० ॥ एव दोष्वा सत्तराइदिया [या]वि नवरं दडा[य]इयस्स वा लग[डसाइ]डाइयस्स वा उक्कुडुयस्स वा ठाण ठाइत्तए, सेस त चेव जाव अणुपालिता मनइ ॥ ९ ॥ १८१ ॥ एव तन्त्रा सत्तराइदियावि, नवरं गोदोहियाए वा वीरासणियस्स वा अवखुजस्स वा ठाण ठाइत्तए त चेव जाव अणुपालिता भवड़ ॥ १०॥ १८२ ॥ एवं अहोराइदियावि, नवर छट्टेणं भत्तेण अपाणएण वहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए मुचागमे

[ इन्द्रमुक्त्रवंबे

बा ईसि दोनि पाए साहडू बग्धारियपापिस्स ठार्च अहतए, सेस ते बेन जान स्ड पाकिता सबद् ॥ १९ ॥ १८३ ॥ एगराहर्यं चौ शिवन्द्वपत्रिमं परिवनस्य सम्बाहरः निर्व बोसद्वाराए में बाब कहियासेर, कमार से [वी] शट्टमेर्च मतेले जरानएनं नहेरा गासस्य वा बाब राज्ञहाणीए वा हैमि पबसारगएलं काएगं एसपोसास् रिखीसगर विद्वीए अभिनियनमणे बाहायविश्विएशि गाएशि सर्विविएशि गुरेशि होले पर संस् बरबारियपानिस्स ठाणं ठावतप्, तस्य से विस्ता मालुस्सा विशेषधानीमिया वर्ष सदिवासेर, से ज तत्व उचारपासको उच्चाहिता तो से समह उचारपासकी उमिन्दित्तप्, कप्पद् से पुम्बपडिकेद्विमान बंडिकेस उचारपास्त्रचं परिम्निए भद्दानिहिसेन ठार्ज अक्रतए ॥ १८४ ॥ एगराइनै यै मिनकुपन्सि व्यक्तुपानेमानस्य राजगारस्य इन तभी ठाणा विद्वयाए बद्धमाए वक्त्यमाए अभिस्तेमाए <del>व</del>र्णा गामियताए भवति र्धवदा-उम्माव वा स[व]मेजा शेहकालिय वा रोगार्न पारमंत्रा केवनियन्यताची धन्मामी मृष्टि]रोजा ॥१८५ ॥ एगराइवं वं निक्त पहिने सन्में अञ्चराकेमानस्य अनगारस्य इमे तत्रो क्रया हिमाए छ्यार क्रमार निरसेसाए बगुगामिनताए मर्नति राज्या-शोहिनाने वा से समुप्तमेणा जनगर नागे वा हे ममुप्पनेजा कनक्रमाणे वा हे असमुप्पनपुष्पे समुप्पजेना एवं 🕶 पुसा एगराह्या निक्सप्रिनिमा अक्षात्रचे अक्षाकर्ण अक्षातम् अक्षातम् मार्गे कर् पालिता पाकिता सोहिता तीरिता निहिता भाराहिता शायाए बलुराजिता [राहि] मनद् ॥ १८६ ॥ एनाको कम्ह ताको येरेहि सगर्वतहि बारस मिन्तुपरिसकी पञ्चताओ ॥ ९८७ ॥ ति-नेम ॥ इति मिन्यनुपश्चिमा व्यामं सत्तमा द्सासमता॥७॥

488

भट्टमा पसा

तर्भ नाक्ष्मं तेषं समय्क स्थापे मार्ग मार्गावीर पंत्रहसूतरे वाहि होन्य-तम्हा-स्युत्तराहि त्रप् वर्गा गत्म वर्षते १ हत्युत्तराहि गत्माच्यो गर्भ तहित् १ हत्युत्तराहि वाप् १ हत्युत्तराहि भूवे भविष्या बागाराओ वाष्यपति कर्यपर १ हत्युत्तराहि स्थापे कर्युतर नि(क)क्वाचाप् निरावरणे नक्ष्ये वर्षक्रम्यान् देवते समुप्यम्वे ५ सञ्चना परिक्रिन्युत मार्ग वाष्ट्र मुख्ये ३ वरस्ट १८ १ १८ १ ति-बेमि ॥ इति पद्योस परिक्रिन्युत मार्ग वाष्ट्र मुख्या स्थापा ॥ ८ ४

नवमा दसा

न चना दुस्ता तेषं बाडेमं तर्ण समय्ये चंता ना[म]मं नवरी दोला बन्मनो । तुन्नमं दर्व एजाचे बन्मन्ते ।कोमियराया चारिणी देवी मानी समीमह परिमा दिसावर, बासी कहिओ, परिसा पडिगया॥ १८९॥ अजो ! ति समणे मगव महावीरे वहवे निग्गंथा य निम्मधीओ य आमतेत्ता एव वयासी-''एव खलु अज्जो ! तीस मोहणिज्जठाणाई जाइ इमाइ इत्थी[ओ] वा पुरिमो वा अभिक्खण अभिक्खण आ[यारे]यरमाणे वा समायरमाणे वा मोहणिजनाए कम्म पकरेड, तंजहा-जे (यावि) केइ तसे पाणे, वारि-मज्झे विगाहिया । उदएणक्समा मारे(ई)इ, महामोहं पकुन्वइ ॥ १९० ॥ पाणिणा सपिहित्ताणं, सोयमावरिय पाणिण । अतोनदत मारेइ, महामोह पकुव्वड ॥ १९१ ॥ जायतेय समारव्म, वहु ओरुभिया जण । अतो वृमेण मारे(जा)इ, महामोह पकु-च्द्रड ॥ १९२ ॥ सीसम्मि जो (जे) पहणइ, उ(ति)तमगम्मि चेयसा । विभज मत्थय फाले, महामोह पकुन्दइ ॥ १९३ ॥ सीस वेढेण जे केइ, आवेढेइ अभिक्खण । तिव्वासुमसमायारे, महामोह पकुव्वइ ॥ १९४ ॥ पुणो पुणो पणिहिए, हणिता उवहसे जणं । फलेण अदुव दंडेण, महामोह पकुन्वइ ॥ १९५ ॥ गृहायारी निगृ-हिजा, माय मायाए छायए । असचवाई णिण्हाइ, महामोह पतुन्वड ॥ १९६ ॥ धसेइ जो अभूएण, अकम्म अत्तकम्मुणा । अहुवा तुमकासित्ति, महामोह पकुन्वइ ॥ १९७ ॥ जाणमाणो परि[सओ]साए, सचामोसाणि भासइ । अन्खीणझझे पुरिसे, महामोह प्रज्वा ॥ १९८ ॥ अणायगस्स नयव, दारे तस्सेव धासया । विडल विक्लोमइत्ताण, किचा ण पिडवाहिर ॥ १९९ ॥ उवगसतिप झिपित्ता, पिडलोमाहिं वरगुहिं। भोगभोगे वियारेइ, महामोह पकुव्वइ ॥ २०० ॥ अकुमारभूए जे केइ, कुमारभूएति ह वए । इत्थीविसयगेहीए, महामोह पकुव्वड ॥ २०१ ॥ अवंभयारी जे केइ, वभयारिति ह वए। गद्देव गवा मज्झे, विस्सर नयई नद॥ २०२॥ अप्पणो अहिए वाले, मायामोसं वहु भसे। इत्थीविसयगेहीए, महामोह पकुव्वइ ॥ २०३॥ ज निस्सिए उन्वहइ, जससाहिगमेण वा । तस्स छन्भइ वित्तमि, महा-मोह पकुट्वइ ॥ २०४ ॥ ईसरेण अदुवा गामेण, अणि(र)सरे ईसरीकए । तस्स सपयहीणस्स, सिरी अतुलमागया ॥ २०५ ॥ ई(इस)सादोसेण आविद्वे, क्लुसाविल-चेयसे। जे अतराय चेएइ, महामोह पकुव्वइ॥ २०६॥ सप्पी जहा अडउड, भत्तारं जो विहिंसइ । सेणावइ पसत्यारं, महामोह पकुन्वइ ॥ २०७ ॥ जे नायगं च रहस्स, नेयार निगमस्स वा । सेर्हि वहुरव हता, महामोहं पकुन्वइ ॥ २०८ ॥ वहुजणस्स णेयार, दी(व)वताण च पाणिण । एयारिस नरं हता, महामोह पकुळ्वड ॥ २०९ ॥ उनद्विय पिंडिनिरय, सजयं सतनिस्तय । विस् (वु) क्रम्स धम्माओ भसेइ, महामोह पकुव्वह ॥ २१० ॥ तहेवाणतणाणीणं, जिणाण वरदसिण । तेसिं अवण्णावं वाले, महामोह पकुव्वइ ॥ २११ ॥ नेया(इ) उयस्स मगगस्स, दुद्वे अवयरई वहु । र्वं ति'पर्यंतो मावेद, महामोद्द पक्तमद्द ॥ २९२ ॥ भागरियउवज्हाएहि, ध्रुवं निवरं च गाहिए । ते चेन किंसइ नाके महामोह प्युक्तमह ॥ २१६ ॥ जागरिगउन-मान मार्च सम्मं तो पश्चितपह । अप्पश्चिप्तए थरो, सहामोह परम्बद ॥ १९४ ॥ सन् स्प्रए य में केंद्र, प्रएम पनिकायत । सज्जायनार्थ बया, सहामोई प्रक्रमत ॥ १९ ॥ भतनस्वी[ए] य जे केड, सथव पनितरकड । सम्बक्तीनपरे तथे महासीई प्राम्प ।। १६ । साहारगद्धा के केंद्र, विसानम्मि उन्द्रिए । वस म नगर क्रिय सर्वापि से न सुम्बद्ध । १९७ ॥ सहै नियदीपण्याने सद्धसाउद्धपंदसे । अपनो व नर्ग ही(य)ए, महामोर्क पदम्बद ॥ १९८ ॥ से बदाहियरणाह, संपर्वने प्रणे प्रणे सम्बद्धित्याण सेवार्ण महामोह व्हुम्बई ॥ २९८ ॥ ज व शाहिम्मए जोए, स (को) ठेजे पुत्रो पुणो । सहाहेठं सहीहेठं सहामोई एक बाह ॥ १२ ॥ जे व मर्के स्तप् मीप्, अनुवा पारकोइए। तेऽविप्पर्यतो आसयह, महामोई प्रान्नद्र ॥११९॥ र्ष्या गुर्व जलो क्या देवार्थ ककारिया । तसि श्रवण्यदं वाके सद्दासीई प्राप्त 🛚 २२२ 🗓 अपस्तमानो परमामि । दे(वे)बजनके य गुज्यागे । अन्नामी विवय महामोर्ड प्लुम्बर ॥ २२३ ॥ पूर् मोद्युणा श्रुता कर्मता विस्वद्वा। जे व मिरन् विजेजा नरिजागनेगए ॥ २२४ ॥ जपि जाने इस्ते पुर्ण विकारने बहु बई । तें बेंस सामि सेनिका वेहीं वाबार्ख किया ॥ १२५ ॥ मानाया सुद्रापा परमे ठिका कपुतारं। तभो वसे सए वास विस्तासीविसो बहा ॥ ११६॥ प्रचारति प्रवस्ता चन्मद्वी मिनितापरे । इहेब स्व(ब)मण् जिति पेषा व उन्दे वर्षे ॥ २२७ ॥ एवं मिनिमाणस्म स्रा वृष्णस्मा । सम्बरोहनिमिस्तुरः बद्धर गमरिक्या ॥ २२८ ॥ तिन्त्रेमि ॥ मोहव्यक्कठाणयाम भयमा इसा समत्ता 🛚 💲 🛭

#### दसमा दसा

इमाइ रायगिष्ट्स्य णयरस्य विहया तजहा-आरामाणि य उज्जाणाणि य आएस-णाणि य सभाओ य पवाओ य पणियगिहाणि य पणियमालाओ य छुहाऋ-म्मनाणि य वाणियकम्मनाणि य क्टुकम्मताणि य इगालकम्मताणि य वणकम्म-ताणि य दन्भक्रमंताणि य जे त[थेव]त्य महत्तरगा अण्णया चिट्टति ते एव वयर--एव एालु देवाणुप्पिया ! सेणिए राया भभमारे आणवेह-जया ण समणे भगव महावीरे आइगरे तित्थयरे जाव सपाविओक्तामे पुट्याणुपुट्यि च[र]रमाणे गामाणुगा[मे]म दू(दु)इजमाणे सुहसुहेण विहरमाणे सुजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरि(इह आगच्छेजा इह समोसरे)जा तया ण तुम्हे भगवओ महा-वीरम्य अहापटिस्व उग्गह अणुजाणह अहापटिस्व उग्गह अणुजाणेता सेणि-यस्म रत्नो भभसारस्स एयमङ पिय णिवेएह ॥ २२९ ॥ त[तो]ए ण ते कोड्र-वियपुरिमा सेणिएण रन्ना भभासारेण एव बुत्ता समाणा हट्टनुह जाव हियया जाव एव सामि(तह)ति आणाए विणएण पडिसुणिति २ ता [एव-ते] सेणियस्स रत्नो अतियाओ पिडिनिक्खमति २ ता रायगिह नयर मज्ज्ञमज्झेण निगगच्छति २ ता जाड [इमाड-भर्वति] रायगिहस्स वहिया आरामाणि वा जाव जे तत्थ महत्तरगा क्षण्णया चिह्नति ते एव वयति जाव सेणियस्य रन्नो एयमह पिय निवेएजा पिय भे भवउ दोचपि तचपि एव वयति २ ता [जाव] जामेव दि[स]सिं पाउच्भूया तामेव दिसि पिडिंगया ॥ २३० ॥ तेण कालेण तेण समएण समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्ययरे जाव गामाणुगाम दूङजमाणे जाव अप्पाण भावेमाणे विहरह । तए ण रायगिहे णयरे सिंघाडगतियवउक्ववर एव जाव परिसा निरगया जाव पज़्वा(से)सइ ॥ २३१ ॥ तए णं ते महत्तरगा जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति २ ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो वदंति नमसति वदिता नमंसिता नामगोय पुच्छति नामगोय पुच्छिता नामगोय पधारति॰ पधारिता एगओ मिलति एगओ मिलिता एगतमवक्कमति एगतमवक्कमिता एव वयासी-जस्स ण देवाणुप्पिया! सेणिए राया मंमसारे दसण कखड़ जस्स ण देवाणुष्पिया। सेणिए राया दसण पीहेइ जस्स णं देवाणुप्पिया ! सेणिए राया दसण पत्थेइ अभिलसइ जस्स णं देवाणुप्पिया ! सेणिए राया नामगोत्तस्सिन सवणयाए हद्वतुष्ट जान भनइ से ण समणे भगव महावीरे आइगरे तित्ययरे जाव सञ्वण्णू सञ्वदसी पुन्वाणुपुन्ति चरमाणे गामाणुगाम दृहुज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे इह आगए इह समोसढे इह सपत्ते जाव अप्पाण भावेमाणे [सम्म] विहरइ, त गच्छामी ण देवाणुप्पिया ! सेणियस्स रण्णो एयमद्व निवेएमो पिय मे भवउत्तिकहु अण्णमण्णस्स वयण

पडिम्राजेंति २ ता रायगिर्ध मगर्र मज्जांमज्ञोर्च खणेव सेनियस्य रहा पि जेणेन संनिए राया तेणन जनागरछंति १ ता शेषियं रामं करयसपरैस्मईरं जान जएकं विजयम बद्धानित बद्धानिता एवं वयासी- 'अस्स वं सामां! केले करनड जान से में समजे मगर्थ महाबीरे गुणशिक्षित्वए उजाने बान निहर. एये [तस्त] च क्रेक्श्लियार्च वित्रं निवेषसी पिये से सबत' ॥ ३२ ॥ हर में से सेविय राजा होति पुरिसामं मंतिय एयमद सोका निसन्न रहाह जार हिमए चीहाराजाओ व्यब्सुद्धेह - ता अहा कोणिओ जाब बंबह नर्मगढ़ बीहरा मर्मिता स परिचे चटारेड सम्माणेड सहारिता सम्मानिता ब्रेटम डीम्प रिई पीइवार्च बळ्यह २ सा पडिविमकेद पडिविसकिता नगरगतियं महावेद र व एव बमासी-रिज्यानेव भी ववाजुण्या। राजियां कार सर्विमतरग्रहरनं आसियसंग्राज्ञात्रक्षितं वात करिया पत्राप्याति ॥ २३३ ॥ ११ में सं सेविए राया बरुबाउर्य सहाबंद २ ता एवं बवासी-विष्णामेव भी देवानिया। इन्यनरह मोहम्ब्रियं चाउरंगिणि सेथ सम्यादेह जार से वि एवप्पितह स १३४ ह तर व से सेमिए राजा जानसालियं सन्तिक र ता एवं नगासी- मो बेरास्प्रिमा। विपा मेर प्रस्थित जानपार जुतामेत्र उरहतेत् उरहतिता सम एवमानदिर प्रवास जह"। तपु वं सं वायसानिय सेमिएमें रका एवं अते समाने रहुतुई वान हैनर जेमेन जाणसामा तेगेन उनामकाद् २ ता जानसालं अनुप्रतिस्ह २ ता बार्क प्युक्तिकह २ मा आर्ज प्रकोटनह २ ता वृद्धं प्रकी[पीह]नेक २ ता जायन सम्म जह सपनजिता जाणगं जीधह २ ता जानाई समलहरेड २ ता बाजाई बरनेडि नाई करेड़ २ ता जानाई सबेबेड २ ता जेमेर नाइणसामा राजेर सराम<sup>स्टर</sup> २ त बाहमसास्यं अञ्चलविसङ् २ ता बाहमाई प्युत्तेत्रकः २ ता बाहमाई संस्थान्यः २ ता बाहनम् वाप्ताके १ ता बाहणाई जीगेह १ ता बुद्धे पर्वतिह १ ता बाहनाई समसक्रेड २ ता वरमक्रममंक्रियाई करेड २ ता बाहणाई जावनां योग्ह २ ता बहममां गाहर र शा प्रजोनसद्धि प्रजोगमरे व सर्ग कारोबह र शा बंचरणमानि बेपेन सेमिए राजा रेणेन उनागक्तम् १ ता करवस बान एवं वनारी-उँगे वे सामी। बम्मिए जानपन्नरे भारते महत् वस्पूर्वि गाविता॥ १३५ ४ तए वं हेनिए राया मेंससारे बालसाक्ष्यसंस केशिए एयमई सोना सिसम्य इ<u>त्य</u>क्ष वार नाम भरे अञ्चयमितः १ चा भाव कप्पश्चने चेव कर्तकियमितिए वरिद बाव स्वान भराजो पविभिन्दासङ् १ ता जेवेन थे(नि)क्रणावेथी तेगेच उदापराज्ञ चेह्न(प)नादेषि एवं क्वासी-एवं क्का वेक्लाप्पए! समग्र मधवं महाबीरे क्याचरे

तित्ययरे जाव पुट्वाणुपुर्विंव चरमाणे जाव सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तं म(हा)हप्फलं॰ देवाणुप्पिए! तहास्त्राण छ[र]रिहताण जाव त गच्छामो ण देवाणुप्पिए! समण भगवं महावीर वदामो नमसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कलाण मंगल देवय चेइय पज्जवासामो, एय णे इहभवे य परभवे य हियाए छहाए खमाए निस्से(य)साए जाव अणुगामियताए भविस्सइ। तए ण सा चेक्रणाटेवी सेणियस्स रण्णो अतिए एयमट्ट सोचा निसम्म इट्टतुट्ट जान पडिसुणेइ २ ता जेणेव मज्जण-घरे तेणेव उवागच्छइ २ ता ण्हाया किं ते वरपायपत्तनेउरा मणिमेहलाहाररइय-उविचया कडगस् र्गुगएगाविलकठसुत्तमरगवितसरयवरवलयहेमसुत्तयकुठलउजोविया-णणा रयणविभूसियनी चीणसुयवत्थपरिहिया दुगुलसुकुमालकतरमणिजउत्तरिजा सन्वोउयसुरभिकुसुमसुदररइयपलबसोहणकतविकसतचित्तमाला वराभरणविभूसियगी कालागुरुयुवधूविया सिरिसमाणवेसा वहाँहें खुजाहिं॰ चिलाइ-याहिं जाव महत्तरगविंदपरिक्खिता जेणेव बाहिरिया उवद्वाणसाला जेणेव सेणि[य]ए राया तेणेव उवागच्छइ। तए ण से सेणिए राया चेल्लणादेवीए सर्दि वस्मिय जाणप्पवर दुरुहइ २ ता सकोरिंटमङ्गदामेण छत्तेण वरिज्ञमाणेण उववाइ(य)गमेण णेयव्वं जाव पजुवासइ, एव चेह्रणादेवी जाव महत्तरगपरिक्षिता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छर २ ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ सेणिय राय पुरस्रो काल ठिइया चेव जाव पज्जुवासड ॥ २३६ ॥ तए ण समणे भगव महावीरे सेणियस्स रत्रो भभसारस्स चेल्लणादेवीए तीसे य महङ्महालियाए परिसाए इतिपरिसाए मुणिपरि-माए मणु(य)स्तपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए जाव धम्मो कहिओ, परिसा पडि-गया, सेर्णि[य]ओ राया पंडिगओ ॥२३७॥ तत्थेगइयाण निरगंधाण निरगंधीण य सेणिय राय चेल्लण च देनि पासिताण इमे एयारुवे अञ्झात्थए जाव सकप्पे समु-प्पजित्या-अहो ण सेणिए राया महिष्टिए जाव महासुक्खे जे ण ण्हाए सन्वाल-कारिवभूसिए चेल्लणाटेवीए सिर्द्ध उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरह् जइ इमस्स मुचरियस्स तवनियमसजमवभचेरगुतिफलवित्तिविसेसे अत्थि तया वय-मवि आगमेस्साण इमाइ ताइ उरालाइ एयास्वाइ माणुस्सगाइ भोगमोगाइ भुजमाणा विहरामो, से त साहु ॥ २३८ ॥ अहो ण चेल्लणादेवी महिद्धिया जाव महासुक्खा जा ण ण्हाया सन्वालकारविभूसिया सेणिएण रण्णा सिद्धं उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरइ, जङ इमस्स सुचरियस्स तवनियमसजमवभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि वयमवि आगमिस्साण इमाइ एयारुवाइ उरालाइ जाव विहरामो, से त साहु[णी] ॥ २३९ ॥ अजो | ति समणे भगव महावीरे ते वहवे निग्ग-

मा (य) निर्म्यंत्रीको य आसंतेता एवं वयासी- 'सेपियं रावं चेक्रवादेनि प्रकेश इमेबाहवे अक्टारिवए बाव एसुप्पजिल्या-बाह्ये में सेमिए रामा महिन्दिए बात संव साहू, महो नं चेत्रजादेवी महिश्विमा सुदरा जान साहू, से जून अग्ये ! नहे सन्हें !" हेता । अन्य ॥ २४ ॥ एवं राज्यु समयाससो । मए प्रामी प्रव्यक्ते ही मा विमान पानवणे सन्ने नजुत्तरे पश्चिपुण्ये केत् [के]किए संसुद्धे गेशाउए सक्रमतने विकित्ताने मुत्तिमस्ये निजानस्ये निजानस्ये अनितत्स्यनिर्मेषुद्धे श्रज्यद्वनसम्बन्धिः ठिया बीबा सिज्यंति बुज्यंति सुवति परिनिन्दार्यति सम्बद्धस्थानमंतं क(र)रेपि ॥ २४९ ॥ बस्त जे बस्मस्त निर्माचे शिक्ताए सर्वाष्ट्र बिहरमाचे पुरा-विभिन्न पुरा पित्रासाय पुरा-बाबाऽयवेद्धिं पुरा-युद्धे विश्ववस्त्रेति परिसद्दोवसमोद्धे प्रतिन कामबाए निहरिका से व परक्ष्मेका से य परक्ष्ममाने शस्त्रा-के हमें उम्पूर्ण महामादया भोगपुत्ता महामादया देखि अञ्चयरस्य अह्यायमाजस्य निजायगानः पुरको महं दावीदासकिकरकरमकरपुरिवाणं अं(तो)ते परिकिकत कर्त मियारं महान निम्मकंदि ॥ २४२ ॥ तबार्वतरं व व पुरुषो म(ह)हावासा वास(व)वरा उनमे वे(पा)सिं नामा मारा-बरा पिठुको र(स)का रहवरा धंनेकि से तं उ(स्कि)क्रारेरधेन (६)को अन्युक्त्यम्भिगारे प्रगाहिक्तान्त्रिटे ए(बीवन)विवच सेनचामरा बाल्यीकार मिनियाण अभिन्तार्थं अस्वाह् य निवाह व स्प्यता सपुन्नावर व व वाप् स्मा छेरारविम्हिए महद्दमहाकिवाए कुवागारशाकाए महद्दमहास्वति स्विहासवि स सम्बदा[तिथी]ह(मि)एवं बोह्णा क्रियायमाचेर्च इत्विगुम्मपरित्रहे सहारवे इक्सू वनाद्मतंत्रीतस्यतासतुन्तियनम्।(व)वैभगद्कपङ्कपनाद्वरवेषं उरास्तरं कामनोगाई मुक्साने निहरह ॥ १४३ ॥ तस्य नं एवसनि स्वयंसामस्य जान वर्षा पंच अनुता चेव अस्पुद्धेशि-मन वेवालुप्पिना । कि करेसी ! कि उपनेसी ! भाररेमों है के शासिकामों है कि में दिस्तृष्टियं है कि वे बाल्यसस स्वर है देशविया जिन्मीये विद्यानं करेंद्र-क्य इमस्य तवनिजयसंव्यक्तिकेरलासस्य तं वय दाव स्त्री एवं वास सम्मानसो ! किमाँचे किया ने किया तस्त अगस्म कामसेहर बाजूनेहरे कासमासे कास किया कव्यपरे देवबोएस देवताए उनकारो अन्य महितिएस वर्ष प्राण्या प्राप्त सम्पन्न व वक्षाएं वक्षाएं क्ष्माएं स्वक्षाएं स्वर महिन्द्र प्रे विरक्षिप्रतः से गंतल वेशे महर महिन्द्रिण बाव विगक्षिप्र, एको देखनेतावे साठनकर्षणं सम्बन्ध्याणं दिश्वक्षपूर्णं कर्षातः वर्षे वस्ता वर्षे हो अप्रता स्वर्णः स्वा माठवा मोगपुता सङ्गानवा एएछि यं अवस्परिष् इमेरि प्रताप्त स्वरम् ॥ २५४॥ से वे तर्षे वारण् सबद् स्वत्रालयानियाण् बाव सब्बे तप् वे सर्व १ विरोस्ट्रा देवताह स्थायवदोक्सनकर्यवदायणस्यार्थ ।

उम्मुक्षवालभावे विण्णायपरिणय[मि]मेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सयमेव पेइयं पडिवज्जइ, तस्स णं अङ्जायमाणस्स वा॰ पुरश्रो मह दासीदास जाव किं ते आसगस्स सयइ? ॥ २४५ ॥ तस्स ण तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स तहारूवे समणे वा भीहणे वा उभक्षो काल केवलिपनत धम्ममाइक्खेजा र हता ! आइक्खेजा, से ण पिंड-सुणेजा ह णो इणहे समहे, अभविए ण से तस्स वम्मस्स सव[णा]णयाए, से य भवइ महिच्छे महारमे महापरिग्गहे अहम्मिए जाव दाहिणगामी नेरइए आग(मे)मिस्साण दुछह्बोहिए यावि भवइ, त एव खळु समणाउसो । तस्स णियाणस्स इमेयारूवे ॰फलविवागे ज णो सचाएइ केवॉलिपज्ञत्त वम्म पिडस्रिणित्तए ॥ २४६ ॥ एवं खद्ध समणाउसो । मए धम्मे पण्णते, इणमेव णिग्गये पावयणे जाव सन्बदुक्खाणमत करेंति, जस्स ण धम्मस्स निगाथी सिक्खाए उवद्विया विहरमाणी पुरा-दिर्गिछाए उदिण्णकामजाया विहरेजा, सा य परक्षमेजा, सा य परक्षममाणी पासेजा-से जा इमा इत्यिया भवइ एगा एगजाया एगाभरणिपिहणा तेल्रपेला इव ग्रसगोविया चेलपेला इव म्रसपरिग्गहिया रयणकरङगममा[णी]णा, तीसे ण अङ्जायमाणीए वा निजायमाणीए वा पुरलो मह दासीदास तं चेव जाव किं में आसगस्स सयड 2 ज पासिता णिग्गंथी णियाण करेइ-जइ इमस्स सुचरियस्स तवनियमसजमबमचेर जाव भूजमाणी विहरामि. से(त्त)त साहु । एव खल्ल समणाउसो । णिग्गथी णियाण किचा तस्स ठाणस्स अणा-लोइय अप्पडिकता कालमासे काल किचा अण्णयरेस देवलोएस देवताए उववतारो भवड़ महिद्विएस जाव सा ण तत्य देवे मवड़ जाव भुजमाणी विहरइ, सा ण ताओ देवलोगाओं आउक्खएण भवकखएण ठिड्कखएण अणतर चय चइता जे इसे मनित उग्गपुत्ता महामाउया मोगपुत्ता महामाउया एएसि ण अण्णयरेसि कुलसि दारियताए पनायाइ, सा ण तत्य दारिया भवइ सुकुमाला जाव सुरूवा ॥ २४७ ॥ तए ण त दारिय सम्मापियरो उम्[आ]मुक्कवालमाव विण्णायपरिणयमेत जोव्वण-गमणुप्पत पिंडरूवेण सुक्केण पिंडरुवस्स मत्तारस्स मारियत्ताए दलयति, सा ण तस्स भारिया भवइ एगा एगजाया इहा कता जाव रयणकरंडगसमाणा, तीसे ण भइजायमाणीए वा निजायमाणीए वा पुरओ मह दासीदास जाव कि ते आम-गस्स समइ १ ॥ २४८ ॥ तीसे ण तहप्पगाराए डत्थियाए तहारु समणे वा माहणे वा उभयकाल केवलिपन्नत धम्म आडक्खेजा है इता। आइक्खेजा, सा णं भते! पिंडसुणेजा १ णो इणद्वे समद्वे, अभविया ण सा तस्स चम्मस्स सवणयाए, सा य भवड महिच्छा महारभा महापरिग्गहा अहम्मिया जाव दाहिणगामि० गेरङ० आगमि-

१ सावए ति अट्टो ।

4.00

एवं प्रस्त समनातसो ! मए बम्मे पञ्चते ते चेव से व परहामेजा । परहामार्व माजुरसंपम् काममार्गम् निक्वेयं गरहेका मानुस्समा रक्षः काममोगा बहुर मनिविया तहेव बाव संवि उर्दू देवा देक्छोगीर ते श रूप वो बज्यमि देवा मर्ज्य देनि समित्रुजिय २ परियारिति अध्यशो चेव सप्यानं वित्रस्थिता परैवारी मध्यमिनिवाओन देवीओ अभिक्षंत्रिय २ परिवारेति वह इमस्य हानिस्य हैं चेव सम्बं बाव से वं सहदेशा पतिएजा रोएका है वो इक्ट्रे समहे । १५६ ह सम्पर्धः दर्मागुए मे य मनदः से जे न्मे आरम्बिना आवसदिया गामेरिना स्पूरः रहस्सिया जो बहुसज्या जो बहुबिर्या सम्बपाणभूवजीवसत्तेम् अप्यज्ञी सवामी हि एव निपंडियद्दि-अर्ह ण हंतन्त्रो शका हंतन्त्रा सह व श्रासावेतन्त्रो अन्त्रे समान मन्या जह न परियाचेगन्यो भाज्ये परिवाबेक्त्वा श्रष्ट् व परिवेत्तागी क्रण्ये परिपेन्त्रमा मह भ त[ब]हबेबस्बो अल्ये तहबेबस्बा एक्स्मेब इत्यिशसक्ति सच्छिमा महिनी पिका अञ्चीवनदा जार श्रावमाने कार्ड किया अञ्चलको अग्रहाई रिकिनियर ठामाई वयवतारोः सर्वति तथो वि(प्प)सुच्याजा भुजो २ एसम्बताए प्वापी एवं यह समजावतो । तस्य वियागस्य काव को संवादह केउक्रिएकते धन्म सर्हितर वा ॥ १५७ ॥ एर्न रक्षु समजाहसो | सए बच्ने कनते जान मस्त्रममा यात काममीगा अधुका तहेन संदि उर्दू दका देवसोर्गास यो अन्योगि वकार्य वि देव] सम्बं दर्दि अभिन्नुजिव परिवार्रेति यो अध्यक्षो केर कृष्यार्व रिउपिय परिवारित अन्यणिकिनाओं देवीओ असिन्नुजिय १ परिवारित बर इमस्य हर नियम र्ट पर सम्बं जाब एवं छस्त महाचाउनो । किरमधो वा निर्मारी णियाणे रिका तस्य ठाणस्य अणास्त्रेह्द अप्यक्षित्रंत ते येद बाद ब्रिट्ट है वे तत्य मा अग्लेमि बंबार्न अर्ज्य वर्ति अभिशृत्तिय २ परियारेट, जो आपना वर्ष क्यार्ग भिउन्तिम परियारेष्ट्, क्याधिज्ञाको देवीका अभिन्नेजिम १ गहेदारि से में तभा बाउन्यपुष सरस्यपूर्व दिश्लापूर्व तहेब बतले बारे हेंग। मी हेच्या पत्तिएमा शेएमा स वं सील्यास्त्राणनेरसमयस्याणयेगसोवस्तारं <sup>वर्ण</sup> क्रमेजा र मो "मह समद्वे, स मं ईनणमावए अव"-अभिगरमैनामेन प्रा महिमित्रपेम्मानुस्मरते स्वामान्ता । निर्माय पादको सहै एग (मय) वासहै से भाइमित्रपेम्मानुस्मरते स्वामान्ता । निर्माय पादको सहै एग (मय) वासहै से भावहे म वे एयान्यक विहारणे विहरमान वाहर बाला समानियानगरेन पाउन्द्र र ता काममाने कार्य किया अञ्चयनेत केरणात वरणार उसारी माइ एर्ट सङ्ग्रीमाना अञ्चयनेत केरणात करणार उसारी माइ एर्ट सङ्ग्रीमाना अञ्चयनित पार कर्मान दे

१ रिमनाय सबग्र २ ल अ बारमर्स हिर्मियणां इण्हों ।

[ 85 ]				[11]			
१२   सामगीमादक निश्चा काल छ ।	, }	8	11	E	Luckstyan,		
	.	*	11	٠ ١	s Here septer		
१४ बाउँव देवको इने देव 🛩	۱ ۹	8	22	1	*******		
१४ सातवी देवलोक के देव "	7	R	11	٤	<u>.</u>		
१६ पोचनी मरक के नैरिया "	Q	8	11	٤	6 Laston		
१७ हाद्व देवलोच के देश 🧳	٦	8	11	3	6 1 4460		
१८ भीमी नरक के मविषा 🤊	Ŗ	8	11	3	S Janets		
११ पांचर स्वक्रोक के वैव =	4	8	11	2	16 11 10		
२० शीबी नरक के नैरिया	R	*	11	3	6 Sept Bed "		
०१ चीने देवशोक क देव	٦	8	11	1	6 1 . 2 .		
२२ वृत्री लाक के नेरिया -	٩	8	37	E	6 CHILER "		
प्रे तीका देवकोक के देव »	2	*	188	٩	ह जिल्लाहर के		
२४ समुस्सम ममुख्य	1	1	18	8	1 Dante		
२६ वृज्ञा देवलोक के देव 🦽	2	¥	121	3 1	8 11 400		
२६ की मेवी सं ० सु०	٦	8	71	1	6 11 max agus		
२० पहले देवलाक के देव कार्स	٦	8	1 27	3	S James "		
1	-			R	414		

णो सचाएइ सीलव्वयगुण[व्वय]वेरमणपचक्खाणपोसहोववासाइ पडिवजित्तए ॥ २५८ ॥ एव खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते त चेव सब्व जाव से य परक्षममाणे दिव्वमाणुस्सएहिं कामभोगेहिं निव्वेयं गच्छेजा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा जाव विप्पजहणिजा, दिव्वावि खल्ल कामभोगा अधुवा अणितिया असासया चकाचल[ण]धम्मा पुणरागमणिजा पच्छा पुव्व च ण अवस्स विष्पजहणिजा, जइ इमस्स तवनियम जाव आगमेस्साण जे इमे भवति उग्गपुत्ता महामाउया जाव पुम-त्ताए पचायति तत्य ण समणोवासए मविस्सामि-अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे फासुयएसणिज असणपाणखाइमसाइम पिडलामेमाणे विहरिस्सामि, से त साहु। एव खलु समणाउसो ! निरगथो वा निरगथी वा नियाण किचा तस्स ठाणस्स अणालोडय जाव देवलोएस देवताए उववजाइ जाव किं ते आसगस्स सयइ <sup>१</sup> ॥ २५९ ॥ तस्स ण तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स जाव पडिस्रणिजा हता ! पडिसुणिजा, से ण सहहेजा जाव रोएजा  $^2$  हता ! सद्देजा $\circ$ , से ण सीलन्वय जाव पोसहोववासाइ पिंडबजेजा  $^2$ हता ! परिवजेजा, से ण मुढे भवित्ता अ[आ]गाराओ अणगारिय पव्वएजा <sup>2</sup> णो डणहे समट्ठे ॥ २६० ॥ से ण समणोवासए भवइ-अभिगयजीवाजीवे जाव पिंडलाभेमाणे विहरइ, से ण एयारूवेण विहारेण विहरमाणे वहूणि वासाणि समणोवासगपरियाग पाउणइ २ ता बहुइ भत्ताइ पचक्खाइ १ हता । पचक्खाइ २ ता आवाहसि उपप्रति वा अणुप्पन्नित वा बहूइ भत्ताइ अणसणाइ छेएइ २ ता आलोइयपिडकते समाहिपत्ते कालमासे काल किचा अण्णयरेष्ठ देवलोएस देवताए उववतारो भवइ, एव खलु समणाउसो ! तस्स णियाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जेण णो सन्वाएड सन्वओ सन्वताए मुढे भविता अगाराओ अणगारिय पन्वइत्तए ॥ २६१ ॥ एव खळ समणाउसो । मए वम्मे पण्णत्ते जाव से य परक्षममाणे दिव्यमाणुस्सएहिं काममोगेहिं निन्वेय गन्छेजा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुना० असासया जाव विप्पजह-णिजा, दिव्वावि खलु कामभोगा अधुवा जाव पुणरागमणिजा, जइ इमस्स तवनियम जाव वयमवि आगमेस्साण जाइ इमाइ (कुलाइ) मवति (त॰)-अतकुलाणि वा पतकुलाणि वा तुच्छकुलाणि वा दिरह्कुलाणि वा किवणकुलाणि वा भिक्खागकुलाणि वा, एसि ण अण्णयरीसे कुलसि पुमत्ताए एस मे आया परियाए सुणीह्डे भविस्मइ, से त साहु । एवं खलु समणाउसो ! निम्मथो वा निम्मयी वा नियाण विचा तस्म ठाणस्स अणालोइय अप्पिडिकते सन्व त चेव, से णं मुडे भवित्ता अगाराओ अ[णा]ण-गारिय पव्यङ्जा १ हता ! पव्यङ्जा, से ण तेणेव भवग्गहणेण सिज्झेजा जाव सव्य-दुक्याण अत करेजा <sup>2</sup> णो इण्हे समहे ॥ २६२ ॥ से ण भवड से जे अणगारा भगवतो इरियासमिमा भारतसमिमा जान नेमबारी तेण विद्वारेण विद्वरमाने वहुई नामई परियार्ग पानजड २ ता आवार्षित उप्पर्वति वा वाब मताई पवक्ताएजा देखे पवध्यापुना बहुई भक्तह अगसमाई छेड्जा र हेता ! छेड्जा जाकेह्नाडिटरे समादिग्रे काकमारे कार्स किया अञ्चानरेस एक्छोएस देवताए जनतारी स्ट एवं ऋश्व समयातसो । तस्य विभागस्य इमेशास्य पावफसमिनामे व नो संवास त्रेयेव सदमाहमेणं शिजिलत् बाव सम्मद्दकायमंतं वरितप् ॥ १६३ ॥ एर यास समजाउसी ! मए भागे क्याते इजमेन विश्वीचे पात्रवन आव से य क्राइमेडा, सम्बद्धमानितते सम्बरागिनतते सम्बर्धगातीचे सम्बद्धाः सम्बर्धमेहत्वेते सम्ब बरितपरिवृश्विवे !! १६४ II तस्य में सवर्वतस्य अनुतरेर्ण शामेन अनुतरेन इंतनेन मनुत्तरेचं परिनिज्याचमभोजं अप्याणं मावेमाणस्य अर्थते अनुत्तरे निम्बाबाएं सर वरणे विकिषे परिपुत्नो केनाकारणावानेकचे समुद्यक्रिया। २६५ घ तप् थे सार्व शरहा अवह विके केनाकी सम्बद्ध सम्बद्धिशृत्यी स्वेतनस्वतस्य स्व वहाँ बानाई केनकिपरिवार्य प्रस्तवह र ता कायांची आउसेस्ट सामोरह र सा वा पवनन्ताएइ १ ता बहुई मतत मणस्याई छैएइ १ ता तमी पच्छा बरमेई छरान नीसासेहि चिज्हाइ जान सम्बद्धनयायमंतं करेड एवं बाह्य समयावसो ! हस्त अपि-याजस्य इमेयास्त्रे क्लायप्रकारियागे जे रागेव भवस्महरीज शिज्सह जाव सम्बद्धानी प्रमारं करेडू ॥ १६६ ॥ तए वं बहुबे निर्माणा य किगीबीओ व समबास मन्दर महाबीरस्य मतिए एयमई छोबा निस्म्य एमर्थ मगर्थ महाबीरं देरति स्रोधीः वैक्ता ममेरिया तस्य ठायस्य आसमेरीते पत्रिवमीत जाव अहार्यि प्रविधा त्याज्ञमं पविवर्जते ॥ २६७ ॥ तर्ण काकेणे तेथे समर्प्य समर्थ महायी राविमेर्द्रे नवरे गुणस्मित् उज्जानं बहुनं समणार्थं बहुन समणीनं बहुनं सन्तर्यं बहुनं शामियार्थं बहुनं देवार्थं बहुनं दवीर्थं सदेवमञ्जयानुसर परिसार मञ्जन एसमाइक्यर एवं मासह एवं प्रत्येह आसहरावं वामं अन्ये। सन्तवनं नगर सहेर्ड सन्धरणं सर्व व अल्पं व स्तुमर्व व मुक्तो मुक्तो उदर्वेत ॥ १६८ ॥ ति-वैमि ॥ मायइठार्ण जामे वृत्यमा वृत्ता समसा ॥ 🕬 🛭

।। दसासुयक्खधसुर्च समच ॥

नसम्प्राप्

#### चउछेयसुत्ताइं समत्ताइ

#### णमोऽत्थु णं समणस्स भगवशो णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

## चत्तारि मूलसुत्ताइं तत्थ णं दसवेयालियसुत्तं

### दुमपुष्फिया णामं पढममज्झयणं

धम्मो मगलमुिक्क अहिंसा सजमो तवो। देवा वि त नमसित, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १॥ जहा दुमस्स पुष्फेद्ध, भमरो आवियइ रस। न य पुष्फ किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पय ॥ २ ॥ एमेए समणा मुत्ता, जे लोए सित साहुणो। विहगमा व पुष्फेद्ध, दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥ वय च वित्तिं लब्मामो, न य कोइ उवहम्मइ। अहागडेस रीयंते, पुष्फेद्ध ममरा जहा ॥ ४ ॥ महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया। नाणापिंडरया दता, तेण वृष्वित साहुणो ॥ ५ ॥ ति-वेमि ॥ इति दुम-पुष्फिया णामं पढममज्झयणं समत्तं ॥ १ ॥

### अह सामण्णपुन्वयं णामं दुइयमञ्झयणं

कह नु कुजा सामण्णं, जो कामे न निवारए। पए पए विसीयतो, सकप्पस्स वस्त गओ।। १॥ वत्थगधमलकारं, इत्थीओ सयणाणि य। अच्छदा जे न भुंजित, न से चाइति चुच्चइ॥ २॥ जे य कते पिए भोए, लद्धे विपिद्धि-कृव्वइ। साहीणे चयड भोए, से हु चाइति चुच्चइ॥ ३॥ समाइ पेहाइ परिव्वयतो, सिया मणो निस्सरई वहिद्धा। "न सा मह नो वि सह पि तीसे", इच्चेव ताओ विणएज राग॥ ४॥ आयावयाही चय सोगमष्ट, कामे कमाही कमिय खु दुक्ख। छिंदाहि दोस विणएज राग, एवं सुही होहिसि सपराए॥ ५॥ पवन्वदे जलिय जोइ, धूमकेउ दुरासय। नेच्छित वत्यं भोगु, कुले जाया स्वाधि ॥ ६॥ घिरत्यु तेऽजसोकामी,

यो सं वीविक्तारणा। वंशं इन्तरिक वावेर्त से सं सं स्वार्थ स्वे स भ ॥ वर्ष में मेरास्स्तर सं वर्षित अंवारिक्षणों। सा इन्द्रे सेवार्य होनों सेवार्य हिन्सू वे पर ॥ ८॥ वर्ष सं क्षिति सार्थ वा व्या हिन्सित सार्रिकों। वावारिकों। वावारिकों सो महिलामा मिस्सिति ॥ ९॥ सिसे सो वावार्य सेवार्य सेवार्य स्वारिक। व्यंक्रेर बहु। नार्यो परमे पंपरिकारकों। ९॥ एवं करित संक्रुवर पंतिना पंत्रेमरणा। विविधारि मोनेस बहु। प्रसिद्धानों। ९९॥ सिन्द्रोमें ॥ वृत्ति स्वार्यण्युं क्ष्येर्य सार्य प्रस्ति स्वार्यण्युं

#### अइ खुड्डियायारकहा णाम तह्यमञ्जयणं

र्चक्रमे सुद्धिज्ञप्यार्थं निष्मसुद्धाय तह्न्यं । देखिमेन्समाहर्ज्यं निर्मानां सर्वेनि १ । उद्दिन्धं कीवगैंडं नियानं कानिक्डोंनि य । राष्ट्रमेंते विकास व सर्वं भी व नीर्वेचे ॥ २ ॥ समित्री मिहिन्ते व रावपिंडे किलिस्कर् । संबादमें रंशकीर्वे य संपुज्यमी देवपन्नेयमी व u १ u बद्धावैष य नीकीष, कार्सी य बारवास रोमिक पाइना पाए, समारेमं च कोहनी ॥ ४ ॥ सेकावैरॅपिकं च आसंपैकी स्कर्षे । विश्वेतरतिसेषी य गावस्यान्तरीयिक य ॥ ५ ॥ तिश्वेचा केतिनिर्व स य कार्यात्वरिक्षी । तत्तातिन्तुंदैक्षोह्यं कारुरस्तरपेति य ॥ ६ ॥ सूक्ष्यं विकार य उन्युखर्ड व्यक्तिनुदे । केर्ब सूक्ते व सकिते पक्ते बीए य कामए ॥ ७ ॥ मेर्ब वर्क सिन्दे कोणे रोमालोंके व कामग् । विशिष्टे पश्चकीरे य कार्कियों व बार्स ध ८ ॥ भूगमेरि वर्गमे व वस्त्रीक्रम विरेग्गे । संत्रमे देशवर्भे व अवस्त्री विम्सने ॥ ॥ सम्बमेयमणाङ्कां निरम्बाण सहित्यां। संवसिम न स्राह्म सनुभूमविद्वारिण ॥ १ ॥ पेपासक्यरिष्याना तिग्रता छन् संस्ता । ऐक्सिम्पर्य पीरा निर्माषा उजुद्धिको ॥ ११ ॥ भाषावर्गति तिसहेड हेर्नतप्र भारता। बासास पडिसंनीणा स्टब्स ससमाहिया है १२ ॥ परीसहरिजरेता सूनमोहा सि दिया । सम्बदुक्याप्यीलहा पत्रमंति महेरियो ॥ १२ ॥ दुरुदो दरिया देश इक समितु व । केइस्क देवस्पणु केइ रिज्यति मीरवा ॥ १४ ॥ रामा उस कम्माह, चेबमेज तर्वेत थ । विश्विसम्मानुष्यता ताहको परिविद्युता व १ तिनिम ॥ इति र्वितृयायारकहा जामै तह्यमज्ञ्जमर्ज समर्च । ।

# अह छजीवणिया णामं चउत्थमज्झयणं

द्यय में आउस ! तेणं भगवया एवमक्खाय, इह खलु छजीवणिया नामज्झयणं समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपन्नता सेय मे अहिज्जिड अज्झयण धम्मपण्णत्ती ॥ १ ॥ कयरा खलु सा छजीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेय मे अहि जिउ अज्झयण धम्मपण्णत्ती ॥ २ ॥ इमा खलु सा छजीवणिया नामज्झयण समणेणं भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपन्नता सेय मे अहिज्जिउ अज्झ-यण धम्मपण्णत्ती । तजहा--पुढिवकाइया १, आउकाइया २, तेउकाइया ३, वाउ-काइया ४, वणस्सइकाइया ५, तसकाइया ६। पुढवी चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्य सत्यपरिणएण १ । आऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्य सत्यपरिणएण २ । तेऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्य सत्यपरिणएण ३ । वास्र चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्य सत्य-परिणएण ४ । वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्य सत्यपरि-णएण । तजहा—अग्गवीया, मूलबीया, पोरवीया, खधवीया, वीयरहा, सम्सु-च्छिमा, तणल्या वणस्सङकाइया, सवीया, चित्तमंतमवस्ताया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्य सत्यपरिणएण ५। से जे पुण इमे अणेगे वहवे तसा पाणा तजहा-अडया, पोयया, जराज्या, रसया, ससेइमा, समुच्छिमा, उविभया, उववाइया, जेसिं केसिं च पाणाण, अभिकंत, पडिकत, सकुचिय, पसारिय, रुयं, भत, तसिय, पलाइय, आगडगइनिकाया, जे य कीडपयगा जा य कुथुपिपीलिया, सन्वे वेइदिया, सन्वे तेइ-दिया, सन्ने चर्डारेदिया सन्वे पर्चिदिया, सन्वे तिरिक्खजोणिया, सन्वे नेरइया, सन्वे मणुया, सन्वे देवा, सन्वे पाणा परमाहम्मिया, एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाउत्ति पत्चइ ६॥३॥ इचीसिं छण्ह जीवनिकायाण नेव सय दड समारंभिजा, नेवन्नेहिं दड समारभाविजा, दड समारंभते वि अने न समणुजाणिजा। जावजीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंत पि अन्न न सम-णुजाणामि । तस्स भते ! पडिक्स्मामि निंदामि गरिहामि अप्पाण बोसिरामि ॥ ४ ॥ पढमे भते ! महन्वए पाणाइवायाओ वेरमण । सन्व भते ! पाणाइवाय पच-क्लामि । से सुहुम ना, नायर ना, तस ना, थानर ना, नेन सय पाणे अइनाइजा, नेवडनेहिं पाणे अइवायाविजा, पाणे अइवायते वि अने न समणुजाणिजा । जाव-जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि व्यक्ति गिन्दाविका वर्षित मिन्द्रेते वि अते न समञ्जामिका। वास्त्रीगर विनिद्दं विनिदेशं मधेर्थं बानाए काएयं न करेमि न करवेमि वरंदं रि नवं र चमञ्जानामि । तस्य मेर्चे ! पविकासमि सिंशमि गरिकामि कपानं केरिशमि । त्तवे मंदे ! महभ्वए जबद्विमोमि सम्बामो अविद्यादाजाओ वेरमयं ॥ १ ॥ ४ ह सहावरे कटरचे मेरी। महत्त्वए मेहनाको कैरमन । सन्द मेरी मेहन प्रचलकारि । से विष्यं वा सल्लुसे वा विश्विककोणियं वा तेव सर्गे केर्ड पेनिजा नेगाओं हैं मेहुने रोगाविजा मेहुने रोगेरी मि असे न सम्स्थानिजा। कामजीवाए दिविहें दिविहेर्ण गणेर्च वाबाए काएवं न करेमि स कारविमें करें हैं क्षत्रं न सम्बुकामामि । तस्स भेते ! पविक्रमामि निंदामि गरिहामि क्रमार्व होति रामि । चठरचे मंद्रे ! महत्त्वए सबद्विमोसि सञ्चाओ सेहुनाओ वैरमणं ४ ४ ह ८ ह अञ्चलरे पंचने शेर्व । सहस्वयु परिमाहाओं बेरमर्थ । सम्बं सेर्व । परिस्थ प्रवास्थामि । से अर्थ का बहु का शतु का पूर्व वा विस्मत वा अविस्थ वा सेव समें परिव्याई परिगिष्डिका ने उठते हैं परिव्याई परिविकालिका परिवर्ध परिमिण्डित मि लाचे न समगुजामिका । जानजीवाए तिमिट्टे निर्मिटेनं मुनेन बाबाए काएक न करेमि न कारबेमि करते पि आर्ब न समझुजानामि। सर्व मेर्ते । पविद्यमामि निवामि गरिहामि भप्पार्ण नोशिरामि । पंचमे मेर्त । महम्मर उबद्विजोमि सम्बामी परिव्यक्तामी बेरमर्ग ॥ ५ ॥ ५ ॥ अहा बहावरे छड्डे प्रते । वर राह्मोयगामो बेरमण । सम्म भेते ! राहमोवर्ण पणनगामा । से अपने स था सन्दर्भ वा सदर्भ वा मेल सर्व राई श्रुंकिका नेपडमेंस्ट एई श्रुंकपिका रहे

भुजते वि अंबे न समणुजाणिजा। जावजीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिकमामि निदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि । छट्टे भते ! वए उवद्विओमि सव्वाओ राइमोयणाओ वेरमण ॥ ६ ॥ १० ॥ इचेयाइ पच महव्वयाइ राइभोयण-वेरमणछ्टाइ अत्तिह्यद्वयाए उवसपजित्ताण विहरामि ॥ ११ ॥ से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविर्यपिडहयपचक्खायपावकम्मे, दिशा वा, राओ वा, एगओ वा, परिसानओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा, सिल वा, छेछ वा, ससरक्ख वा काय, ससरक्ख वा वत्यं, हत्थेण वा, पाएण वा, कहेण वा, किलिंचेण वा, अगुलियाए वा, सलागाए वा, सलागहत्थेण वा, न आलिहिजा, न विलिहिजा, न घटिजा, न भिंदिजा, अब न आलिहाविजा, न विलिहाविजा, न घटाविजा, न भिंदाविजा, अन आलिहत वा, विलिहत वा, घट्टत वा, भिंदत वा, न समणुजाणिजा । जावजीवाए तिविह तिविहेण मणेणं वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंत पि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भते ! पडिक्समामि निंदामि गरिहासि अप्पाण वोसिरामि ॥ १ ॥ १२ ॥ से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयनिरयपिंडहयपचनस्वायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, द्वते वा, जागरमाणे वा, से उदग वा, ओस वा, हिम वा, महिय वा, करग चा, हरितणुग वा, सुद्धोदग वा, उदछल वा काय, उदछल वा वत्य, सिसणिद्ध वा काय, ससिणिद वा वत्यं, न आमुसिजा, न सफुसिजा, न आवीलिजा, न पवीलिजा, न अक्खोडिजा, न पक्कोडिजा, न आयाविजा, न पयाविजा, अन्न न आमुसाविजा, न सफुसाविजा, न आवीलाविजा, न पवीलाविजा, न अक्खो-डाविजा, न पक्खोडाविजा, न आयाविजा, न पयाविजा, अन आमुसत वा, सफुसत वा, आवीलत वा, पवीलत वा, अक्खोडत वा, पक्खोडत वा, आयावत वा, पयावत वा, न समणुजाणिजा । जावजीवाए तिनिह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि । तस्स मते ! पडिक्रमासि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ २ ॥ १३ ॥ से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपिडहयपचक्खायपावकम्मे, दिशा वा, राशो वा, एगओ वा, परिसा-गओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से अगणिं वा, इगाल वा, सुम्मुर वा, अचि वा, जाल वा, अलाय वा, सुद्धागणि वा, उक्क वा, न उजिजा, न घहिजा, न भिंदिजा, न उजालिजा, न पजालिजा, न निन्वाविजा, अन्न न उजाविजा, न घटाविज्ञा, न भिंदाविज्ञा, न उज्जालाविज्ञा, न पज्जालाविज्ञा, न निन्वाविज्ञा,

442

भनं उर्ज्यं वा पहेरी या शिवर्त हा राजाबेरों वा प्रजाबंदी वा निमार्तन प म समञ्जाणिका । जाबजीवाए दिनिहं दिविहेर्ण संवेर्ण वाबाए श्राएवं न वरेमि न कारवेशि करंते थि कम न समञ्जानासि । तस्य अंते । प्रविक्रमामि निवासि गरिहामि सप्पाण बोसिरामि ॥ १ ॥ १४ ॥ से मिक्ख वा मिक्खनी वा रंजनविर्वपविद्वपवान्यानपावकम्भं विका वा राखी वा एगमो वा परिसामको वा धरो वा जागरमाने वा से सिक्श वा बिहुमणिन वा सास्त्रियीज वा परेन वा पत्तमंतिन का साहाए वा साहामंत्रीय वा पिहणेय वा पि<u>ह</u>महरमेव वा चेरेण वा चेरनकणेण वा इत्थेष वा सुद्देश वा अप्पनी था नाव वाहिर वानि पुराकं न पूरिका न बीहजा अर्थ न पूरामिजा न बीमाबिजा अर्थ पूर्णे ना नीनेर्दं वा प समयुवानिजा। वानजीवार विनिष्टं तिनिष्टेनं संदेनं वातार काएचं न करेमि न कारवेमि करतं पि कर्चन समयुवाचामि । तस्य मेर्रे पिंडरमामि निवामि गरिवामि अप्यार्थ बोसिरामि ॥ ४ ॥ १५ ॥ से बिन्य वा निक्**य**णी वा संजयनिरयपविद्यप्रकक्षायपावकरमे दिशा वा रामो वा एगन्नो वा परिसागनो वा श्रप्ते वा भागरमाणे वा से बीए<u>स</u> वा वीवफाडेट <sup>वा</sup> स्बेस वा स्वयाद्वेद वा काएस वा कावणहोस वा इरिएस वा इरिक्सोट ना क्रिकेश वा क्रिकपरहोश का समितेश वा समितकोष्ट्रपतिनितिसम्स वा व गरिज्ञा न निद्विमा ॥ निरीदमा न दुयस्मित सर्व न एक्झनिया न निद्वानिमा न निर्धागनिमा न तुम्छनिमा सब पर्चंद ना निर्देत हा निर्देश वा तुवांदेरं वा न सम्बुजामिन्छ। बावजीवाए तिनित्तं तिनित्तेचं मयेण वावाए कार्य ॥ करेमि न करवैमि वर्ते पि अर्थे न समञ्ज्ञानामि । तस्य मेरी ! पश्चिम्यमि निंदामि गरिद्वामि अप्पार्ण बोसिरामि ॥ ५ ॥ १६ ॥ से सिक्य वा मिनवार्थ वा स्वयमिन्यपविद्यप्र<del>या</del>स्थानपावकस्य मिला वा रास्त्रो वा एमलो वा परिसायस्य मा द्वेतों का कागरमाणे था से कीड वा पर्यंग का ईर्फ़ का पिनीकियं का इन्बंधि वा पानंधि वा बाहुंसि वा उद्धि वा बद्दारि वा सीसरित वा बर्दारि ना पविस्माहरी ना स्थापने ना प्रशास ना वन्ता का प्रशास ना प्रशास न पमित्रम प्राचित्र पूर्णतमकित्रा वो ये सवानमावित्रमा ध ६० १४ अस्त वरमानो (न) उ पानम्यार्व हिंदह । वैवह पानम कर्म ते से होर इत्र इत

१ फ़रीकरणमेवस्य विशिष्ट्रज्यायभावो नावन्तं ।

॥ १ ॥ अजय चिद्वमाणो उ, पाणभूयाइ हिंसइ । बधइ पावय कम्म, त से होइ 'कडुय फल ॥ २ ॥ अजयं आसमाणो उ, पाणभूयाइ हिंसइ । वघइ पावय कम्म, त से होड कहुय फल ॥ ३ ॥ अजय सयमाणो उ, पाणभ्याई हिंसइ । वघइ पावय कम्मं, त से होइ कहुय फल ॥ ४ ॥ अजयं भुजमाणो उ, पाणभूयाइ हिंसड । वधइ पावरं कम्म, त से होइ कडुयं फल ॥ ५ ॥ अजयं भासमाणो उ, पाणभूयाइ हिंसइ। बधइ पावय कम्म, त से होइ कड़ुय फल ॥ ६॥ कह चरे <sup>2</sup> कह चिट्ठे <sup>2</sup>, कहमासे <sup>2</sup> कह सए <sup>2</sup>। कह भुजतो भासतो, पानकम्म न बधह <sup>2</sup>॥ ७॥ जय चरे जय चिट्ठे, जयमासे जय सए। जय भुंजतो भासतो, पावकम्म न वधइ ॥ ८॥ सव्वभूयप्पभूयस्स, सम्म भूयाइ पासओ । पिहियासवस्स दतस्स, पावकम्मं न वधइ ॥ ९ ॥ पढम नाण तओ दया, एव चिद्वइ सन्वसजए । अन्नाणी किं काही 2, कि वा नाहिइ सेयपावग <sup>२</sup> ॥ १० ॥ सोचा जाणइ कल्लाण, सोचा जाणइ पावग । उभय पि जाणइ सोचा, ज सेय त समायरे॥ ११॥ जो जीवे वि न याणेइ, अजीवे वि न याणइ । जीवाजीवे अयाणतो, कह सो नाहिइ सजम <sup>2</sup> ॥ १२ ॥ जो जीवे वि वियाणेइ, अजीवे वि वियाणइ । जीवाजीवे वियाणतो, सो हु नाहिइ सजम ॥ १३ ॥ जया जीवमजीचे य, दो वि एए वियाणइ । तया गई बहुविह, सब्व-जीवाण जाणइ ॥ १४ ॥ जया गइ वहुविह, सन्वजीवाण जाणइ । तया पुण्ण च पान च, वध मुक्ल च जाणइ॥ १५॥ जया पुण्ण च पान च, वध मुक्ख च जाणइ। तया निर्व्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ १६ ॥ जया निर्व्विदए भोए, जे दिन्वे जे य माणुसे । तया चयड सजोग, सब्भितरवाहिर ॥ १७ ॥ जया चयइ सजोग, सर्विभतरवाहिर । तया मुखे भवित्ताण, पव्वइए अणगारिय ॥ १८ ॥ जया मुढे भविताण, पव्वइए अणगारिय । तया सवरमुिकह, धम्म फासे अणुत्तर ॥ १९ ॥ जया सवरमुक्किट्ठ, धम्म फासे अणुत्तर । तया धुणइ कम्मरय, अवोहि-क्ळुस कड ॥ २० ॥ जया धुणइ कम्मरय, अवोहिक्ळुस कड । तया सन्वत्तग नाण, दसण चाभिगच्छइ ॥ २१ ॥ जया सव्वत्तग नाण, दसण चाभिगच्छड । तया लोगमलोग च, जिणो जाणड केवली ॥ २२ ॥ जया लोगमलोग च, जिणो जाणड केवली । तया जोगे निक्सिता, सेलेसिं पडिवज्जड् ॥ २३ ॥ जया जोगे निरुभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जड । तया कम्म खवित्ताण, सिद्धिं गच्छः नीरुओ ॥ २४ ॥ जया कम्म खिवत्ताण, सिद्धिं गच्छइ नीरओ । तया लोगमत्ययत्यो, सिद्धो हवइ सामओ ॥ २५ ॥ सुहसायगस्स ममणस्स, मायाउळगस्स निगामसाइस्स । चच्छोलणापहोयस्स, दुव्रहा सुगइ तारिसगस्स ॥ २६ ॥ तबोगुणपहाणस्स, उज्जु~ मन्-चित्रियंवमरमस्य । परीसहे जिश्तास्य छक्ष्या ग्राग्द तारिसगस्य ० ९०॥
पण्डा मि रो पमावा बिच्चे गण्डेमी कमरस्यवाम् । वेसि रिजो तवो सेको व चाँची व वंसपेवर च ॥ २.८ ॥ वेषो क्षावीकितं सम्माद्वि स्वय वर । इस् स्वरिष्ठ सामार्ग्य कम्मुचा ग निराहितारि ॥ २.९ ॥ ति-वेमि ॥ इति छक्षी-चित्रिया गाम् चरुण्यमञ्जावणं समर्च ॥ ४ ॥

#### मह पिंडेसणा णाम पचममञ्ज्ञयणं

#### पहमो उहेसी

पंगेते मिक्यरास्त्रीम् अपंगेतो समुच्छिओ । इमेश कमबोगेश मतार्थं ग्ये-सए ॥ १ ॥ से गामे वा नगरे वा धोबरागगजो सुवी । वरे मेहसपुरितस्य अन नियक्तिन चेमसा ॥ २ ॥ पुरको पुरस्कायाए, वेद्याको सहि चरे । बजेदी बीबहरे बाई, पाने य बरामहिये ॥ ३ ॥ ओवार्य निसर्य राज्यं विकास परिवास । संसम्ब म गर्चिकमा विज्ञमाणे परक्रमे ॥ ७ ॥ पद्धते व सं तत्व पनदासंते व संगर। हिंचेज पायमूमाई, तसे लखुब बाबरे ॥ ५ ॥ तमहा तेच व गन्धिका संबंध हरू माहिए। पर जहेग समेच अवनेद परहमे ॥ ६ ॥ इवार्क छारैयं राप्ति वृक्तार्मि च गोमर्ज । स्टर्क्चेह पाएडि, संज्ञा से सन्दर्भ ॥ 🕶 ॥ चरेज वासे व नरे. महिमाए व पडेतिए । महावाए व बार्वते विशिष्कसंपातमेल वा ॥ ८ ॥ स बरेन वेससामंति बंगचेरवसाञ्चए । बंगवारित्स बंतत्स होजा तरव विमोतिना ॥ ६ ॥ क्यामने वरंतरसः संसम्मीप् अभिन्धर्ण । होज वयाणं पीका सामन्यन्ति व स्समी ॥ ९ ॥ सम्हा एवं निवासिता होसे बुगावबङ्कर्म : बमए देगगार्मर्ग स्वी एर्गतमस्सए ॥ ९९॥ सार्च सुद्रचं गानि वित्तं गोर्च हुवं गर्व । संक्रिम्नं वसर्द सुर्व दरको परिवजप ॥ १२ ॥ अनुकार शावकप, अप्पदिद्वे कवाउके। देखाई वहा-मार्ग दमइता सुधी चरे ॥ १३ ॥ व्यवस्ता न गच्छेजा मानगायी व गीपरे। इछेती नामिगच्छेजा चुक्रे तबावर्य सवा ॥ १४ ॥ आसोर्य विनाहं दार्ट वंदि इयभग्रचानि स । चरेतो न मिनिज्ञाए, संबद्धार्च निवक्तए ॥ १५ ॥ रखो गिरवर्ड च रहस्तारन्यियाणि थ। सीरिकेमकरं ठार्च बुदको परित्रकर ॥ १६ ॥ वर्षः बुद्धानं न पनिसे मामगं परिवासए । अवियत्तवुक्तं न पविसे वियत्त विशे वृत् n ५ × u साम्प्रीयानारपिहियं कालका सावर्गगरे । बनाउं मो प्राप्तिमा उन्हर्म

२८	पहले देवलोक की देवी सं ० गु०	٦	8	११	3	१
. २६	भुवनपति देव श्चर्सं० "	3	8	१९	Э	8
३०	,, देवी संख्या० "	ર	8	११	Э	8
३१	पहली नरक के नैरिया श्रासं,,	રૂ .	8	११	B	१
३२	खेचर पुरुष श्रासं० "	२	Ł	१३	ω	હ્
३३	<sub>ा</sub> ंस्त्री संख्या ०	२	ধ	१३	w	دور
३४	थजचर पुरुष , "	२	Ł	१३	æ	ર્લ્
३५	,, स्त्री ,,	२	ķ	१३	B	દ્ધ
३६	जलचर पुरुप "	ર	¥,	१३	В	466,
३७	" দ্বী "	ર	¥	१३	3	Ę
३८	व्यंतर देव "	ર	૪	११	3	8
38	व्यंतर देवी संख्या गु०	२	8	११	٤	8
80	क्योतिर्वा—देव "	२	8	११	з	१
४१	,, देवी п	ऱ	8	११	3	१
४२	खेचर नपुंसक "	રાષ્ટ	ų	१३	ع	Ę
४३	थक्षचर " "	રાષ્ટ	५	१३	3	Ę
	•	•	•	1	•	i

अजाइया ॥ १८ ॥ गोयरगगपविद्वो य, बचमुत्त न वारए । ओगास फासुय नचा, अणुन्नविय वोसिरे ॥ १९ ॥ नीय दुवार तमस, कुट्ठगं परिवज्जए । अन्वक्खुविसओ जत्य, पाणा दुप्पडिछेहगा ॥ २०॥ जत्य पुप्फाइ बीयाइ, विप्पइण्णाड कोट्टए। अहुणोवलित्तं उहं, दह्ण परिवज्जए ॥ २१ ॥ एलग दारग साण, वच्छम वावि कोट्ठए। उल्लेबिया न पविसे, विउहिताण व सजए ॥ २२ ॥ अससत्त पलोइजा, नाइदूराव-लोयए । उप्पुळ न विणिज्झाए, नियहिज अयपिरो ॥ २३ ॥ अइसूर्मि न गच्छेजा, गोयरग्गाको मुणी । कुलस्स भूमि जाणिता, मिय भूमि परक्षमे ॥ २४ ॥ तत्थैव पडिळेहिज्जा, भूमिभाग वियक्खणो । सिणाणस्स य वचस्स, सलोग परिवज्जए ॥ २५ ॥ दगमद्वियआयाणे, वीयाणि हरियाणि य । परिवज्जतो चिद्धिजा, सिंविदियसमाहिए ॥ २६ ॥ तत्थ से चिद्वमाणस्स, आहरे पाणभोयण । अकप्पिय न गिण्हिजा, पिंड-गाहिज कप्पिय ॥ २७ ॥ आहरंती सिया तत्य, परिसाडिज मोयण । दितिय पडि-याइक्खे, "न मे कप्पइ तारिस"॥ २८॥ समहमाणी पाणाणि, वीयाणि हरियाणि य । असजमकरिं नचा, तारिसिं परिवज्जए ॥ २९ ॥ साहट्टु निक्सिवित्ताण, सन्वित्त घटियाणि य । तहेव समणद्वाए, उदग सपणुक्रिया ॥ ३० ॥ ओगाहङ्ता चलङ्ता, आहरे पाणभोयण । दिंतिय पिडयाइक्खे, "न में कप्पइ तारिस" ॥ ३१ ॥ पुरेक-म्मेण हत्थेण, द्व्वीए भायणेण वा । दिंतिय पिडयाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिस" ॥ ३२ ॥ एव उदउल्ले संसिणिद्धे, संसरक्खे महिया ऊसे । हरियांचे हिंगुलए, मणो-सिला अजणे लोणे ॥ ३३ ॥ गेरुय विण्णिय सेढिय, सोरहिय पिट्ट कुकुम कए य । उक्तिद्वमससद्वे, ससद्वे चेव वोद्धव्वे ॥ ३४ ॥ अससद्वेण हत्थेण, दन्बीए भायणेण वा । दिजमाण न इच्छिजा, पच्छाकम्म जहिं मने ॥ ३५ ॥ ससट्टेण य हत्थेण, दन्वीए भायणेण वा । दिज्ञमाण पडिच्छिजा, ज तत्थेमणिय भवे ॥ ३६ ॥ दुण्ह तु भुजमाणाण, एगो तत्थ निमंतए । दिज्ञमाण न इन्छिजा, छट से पडिलेहए ॥ ३७ ॥ दुण्ह तु भुजमाणाण, दो वि तत्य निमतए । दिज्ञमाण पहिच्छिजा, ज तत्थेसणिय भने ॥ ३८ ॥ गुन्चिणीए जनजत्थ, विविह पाणमीयण । मुजमाण विव-जिजा, मुत्तसेस पडिच्छए ॥ ३९ ॥ सिया य समणद्वाए, गुव्विणी कालमासिणी । रुद्विया वा निसीइजा, निसना वा पुण्हुए ॥ ४० ॥ त भवे भत्तपाण तु, सनमाण अकिप्पय । दितिय पिंडयाडक्खे, "न मे कप्पइ तारिस" ॥ ४१ ॥ थणग पिज्ञ-माणी, दारग वा कुमारिय । त निक्खवितु रोअत, आहरे पाणमोयण ॥ ४२ ॥ त भने भत्तपार तु, सजयाण अकप्पिय । दितिय पडियाइक्खे, "न मे कप्पढ तारिस" ॥ ४३ ॥ जंः । भत्तपाण तु, कप्पाकप्यस्मि सिकय । दितिय पडियाहक्खे "न मे 948

कप्पद वारिसे<sup>क</sup> ॥ ४४ ॥ दगकारेज पिष्ठिनं जीनाए पीनएज वा । स्रोदेज वार्ष केमेरा ठिकेरोग व केमइ ॥ ४५ ॥ तं च वर्थिमदिना दिखा समयद्वाए व दानए । रिंटिन यहिनतक्को भ में कप्पड़ शारिसं" ॥ ४६ ॥ असर्ज पानर्य नामि समर्म धाइमें तहा ) जे जाबिक संविद्या था "दायदा कार्ड इसे" 1) ४० ॥ ते सबे सन-पार्न हा. संज्ञाण सफाणिये । दितिय पश्चितकको "ल मे कपड तारिस"॥४८ ह असर्ग पाचर्ग वानि चात्रम साहमें तका । अं बानिज सुविज्ञा वा 'सुरुद्धा पाउँ इम" ॥ ४९ ॥ ते मने मतापार्थ त. संबंधाण शक्यपर्व । वितियं परिवाहरू व में कट्य तारिसं " ॥ ५ ॥ असर्व पानर्व वानि यातमं सतमं तरा । जे जानित सुविज्ञा वा "विक्रिमद्वा पर्साई इसं" ॥ ५९ ॥ सं भवे मत्त्रालं हा, संज्ञान वर्षः पिस । दिविस पश्चिमाहक्छे न से कथार तारिसं ॥ ५२ ॥ असनं पापमं <sup>का</sup> नि रराइमें साहमें तहा । वें कामिज सुविका वा समयदा पगई हमें" में "रे हैं तं मने भगवार्य हा, संबयाण अक्षणियं । विदिवं पश्चियाद्वस्य 'न म क्रम्प तारिर्ध ॥ ५४ ॥ उद्देशियं कीश्यव युक्तम्य व आहर्ष । अरलोगर पानिर्व मीर्न जार्य क्लिज्ञेष् ॥ ५५ ॥ कमार्ग से य पुष्टिका। क्लिक्षा क्रेम शा वर्ष । देव निस्पत्रिय पूर्व परिवादिक चैत्रए ॥ ५६ ॥ समर्थ पावर्ष वानि वाहमें लाहे नहा । पुरक्तेत्र हुन्न उञ्मीचं नीयम् इरियम् वा ॥ ५७ ॥ वं मने माराणं ह चंत्रयान अरुप्पर्य । दिवियं पश्चित्रप्रचे "म मं कप्पर शारेस" ॥ ५८ ह अन्तर्व पागर्य वानि शान्यं माहमं तहा । उदर्गमि हुज निरुपतं उत्तिमायमेव वा a 🛰 🛢 र्त भने भत्तपान तु, संजवाय अन्यास्य । स्तियं पडिवाहन्ते । न म नण्य तार्रित स ६ ॥ बनार्ग पाणर्ग वामि । राहमं साइमे सहा । बनाविम्स होन सिनाद र्य च संपरिता दए ॥ ६९ ॥ तं अयं अत्तराचे ता चंत्रपाच कर्यापर्य । रिविर्व दीन मा'रले "म म नज्य तारिस" ॥ ६२ ॥ एवं तस्तक्षिया भोगतिना उजारिय प्रज्ञात्रिया निस्कामिया । तांस्पणिया निर्दिगणिया वस्त्रात्त्या शोबारिया इर्ष ह ६३ ह तं भर भक्ताणं ह्य चंत्रवाण अवस्थितं । दिनियं पटिवाहरो । व हे बच्च रामित । ६४ थ हुन बड्ड शिले बार्थ शाले बारि एतवा । टीर्न हेम्पाई र्त प दूज समाचम त ६० ॥ न तम मिश्नू गांकिया दिही तार असंदर्भ ह गर्मारं शुनिरं चत्र सन्विरियममाहिए ॥ ६६ ॥ तिसर्गि एतमे पी<sup>3</sup> बस्तरिक समाग्द्र । सथ कीन व पानार्य नमयद्वाए व दावए ॥ ६० ॥ दुरहमन्ते बर्टन हर्ग्य पार्य व स्ट्रगए । पुर्विजीय नि दिसका के व से निस्तिया जग ह ६६ है एवारिश महारोगे जानिकन महेशिला । तमहा मानाहर्व भिन्न व वरिक्टी

सजया ॥ ६९ ॥ कंद मूलं पलंबं वा, आम छिन्न च सन्निर । तुंबाग सिंगवेरं च, आमग परिवज्जए ॥ ७० ॥ तहेव सत्तुन्वुण्णाइ, कोलन्वुण्णाइ आवणे । सक्कुलि फाणिय पूरा, अन वावि तहाविह ॥ ७९ ॥ विकायमाण पसढ, रएण परिफासियं। दितिय पडियाइक्खे, "न में कप्पइ तारिस"॥ ७२॥ बहुअद्विअ पुग्गल, अणमिस वा बहुकटर्य । अत्थिय तिंदुय बिल, उच्छुखड व सिंवलिं ॥ ७३ ॥ अप्पे सिया भीय-णजाए, बहुउज्झियघम्मिए। दिंतिय पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिस"।। ७४॥ तहेवुचावय पाणं, अदुवा चारधोयणं । ससेइम चाउलोदग, अहुणाधोय विवजाए ॥ ७५ ॥ जं जाणेज चिराधोय, मईए दसणेण वा। पिंडपुच्छिऊण सचा वा, ज च निस्सकिय भवे ॥ ७६ ॥ अजीव परिणय नचा, पिंडगाहिज सजए । अह सिकय भविज्ञा, आसाइताण रोयए ॥ ७७ ॥ ''थोवमासायणहाए, हत्थगम्मि दलाहि मे । मा मे अचिबल पूय, नार्ल तिण्ह विणित्तए" ॥ ७८ ॥ त च अचिबल पूय, नाल तिण्ह विणित्तए । दिंतिय पिंडयाइक्खे, "न में कप्पइ तारिस" ॥ ७९ ॥ त च हुजा अकामेण, विमणेण पिंडिच्छिय। त अप्पणा न पिबे, नो वि अन्नस्स दावए ॥ ८० ॥ एगतमनक्कमित्ता, अचित्त पडिलेहिया। जय परिद्वविज्ञा, परिद्वप्प पडिक्कमे ॥ ८१ ॥ सिया य गोयरग्गओ, इन्छिजा परिभुत्तुय । कुट्टग भित्तिमूल वा, पिंडलेहिताण फाद्मय ॥ ८२ ॥ अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छन्नम्मि सबुढे । हत्थग सपमज्जिता, तत्य भुजिज सजए॥ ८३॥ तत्य से भुजमाणस्स, अद्विज कटओ सिया। तणक-इसकर वावि, अन्न वावि तहाविह ॥ ८४ ॥ त उक्किविन्तु न निक्खिने, आस-एण न छहुए । हत्थेण त गहेऊण, एगतमवक्तमे ॥ ८५ ॥ एगतमवक्तमित्ता, अचित्त पिंडलेहिया । जय परिद्वविजा, परिद्वप्प पिंडक्समे ॥ ८६ ॥ सिया य भिक्ख इच्छिजा, सिजमागम्म भुत्तुय । सपिंडपायमागम्म, उहुय पिंडलेहिया ॥ ८० ॥ विणएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी । इरियावहियमायाय, आगओ य पडिऋमे ॥ ८८ ॥ साभोइताण नीसेस, अइयार जहकम । गमणागमणे चेव, भत्तपाणे व सजए ॥ ८९ ॥ उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो, अव्विक्षत्तेण चेयमा । आलोए गुरुसगासे, ज जहा गहिय

१ वहुअद्विअ=वहुगद्विय-गद्विया 'गुठली' ति भासाए, वहुईओ गद्वियाओ ठियाओ जम्मि त व ०,गकारयकारलोवो,एव वहुअद्विअस्स निष्कत्ती। वहुवीयग ति अद्वो। अहवा वहुअद्विअ=वहुअ+द्विअ-वहुयाइ वीयाइ ठियाइ जिस त तारिस फल । २ पुग्गल≍प+ रमगल-पगरिसेण उम्मलणारिह-पक्खेवणजुम्म विज्ञाए जसि त तारिस फलविसेस । ३ अणमिस ति वा अणण्णास ति बा एगद्वा । ४ पणसफलाइय । ५ अग त्थियस्वस्वत्रल, अगत्थियस्सऽज्झाहारो अत्थिय। ६ सिद्धी जहा हेट्टा, णवर हिंगमेओ पाइयत्तणओ ।

भवे ॥ ९ ॥ न सम्मामोद्धर्य हुन्ना पुनिष पका व व कई । पुनो पनिष्टेन दस्त विषय इसे ॥ ९ ॥ कहे विवयेद्वरास का निर्मा साहुत्व है सिमा । इस्क स्वार्य देवरस्य साहुत्वहरस्य साहुत्वहरूप्य स

246

### अइ पिंडेसणाए बीओ उदेसी

पहिमाई एडिहिताये केवायक देवा । द्वांचे वा द्वांचे वा एक ग्रंबे व करूप ॥ १ ॥ ऐका निर्देशिवाए, समावको व गोमरे । क्यावमङ ग्रंबा व रागे ज स्वरे ॥ १ ॥ कालो क्रारम्सप्रमुख्ये आत्रापी प्रकेश । व्हांचे वेगे जरारे य ॥ १ ॥ काले निक्का आत्रापी प्रकेश । व्हांचे व निवास वाके कालो उमापरे ॥ ४ ॥ 'ब्लाके वपदिक्ष' ॥ ॥ ॥ उत्तर के व परिकारित । क्यापणे व किकामेरी शक्तिक व यरिवृत्ति ॥ ॥ ॥ उत्तर के व विकार कुमा पुरियामार्थे । अकामोरे शि व शेष्ट्या । तरे शिक्त कर्या ॥ १ ॥ राहे सुर्वाचावा पाणा भत्तद्वाप समापा। ते उल्हर्य ॥ वर्षेच व वर्षित्य, विद्वेदाण थ ॥ गोक्सप्रमंत्रित्रे ॥ व निर्देशिक क्याव्य । वर्षेच व वर्षित्य, विद्वेदाण व स्वरं ॥ ८ ॥ क्यावं पश्चित्रं वारं क्यावं वार्षि स्वरं । क्यावं व निर्देशिया वारस्माणको गुली ॥ ९ ॥ स्वरं गावं वार्षित्य वर्षेत्रं । वर्षेचे व वर्षेत्रं । पत्तक्षीत । पाण्याप व स्वरं ॥ ९ ॥ ते कावश्चित्रं तर्षेत्रं । वर्षेचे व विदेशिक स्वरं । पाण्याप व स्वरं ॥ १ ॥ ते कावश्चित्रं । वर्षेचे व विदेशिक स्वरंपं । वर्षेत्रं व वर्षेत्रं । पिंडसेहिए व दिन्ने वा, तओ तिम्म नियत्तिए। उवसकिमज्ज भत्तहा, पाणहाए व सजए ॥ १३ ॥ उप्पल प्रस वावि, कुमुय वा मगदतिय । अर्ज वा पुप्फसिचत्त, त च सलुचिया दए॥ १४॥ तं भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिय। दिंतिय पिंडियाइक्खे, "न में कप्पइ तारिस" ॥ १५॥ उप्पर्छ परम वावि, कुमुय वा सगदतिय । अन्न वा पुष्फसिचित्त, त च समिद्दिया दए ॥ १६ ॥ त भवे भत्तपाणं तु, सजयाण अकप्पिय । दिंतिय पिंडयाइक्खे, ''न में कप्पइ तारिस''॥ १७॥ साह्ययं वा विरालिय, कुमुय उप्पलनातिय । मुणालिय सासवनालिय, उन्छुखङ अनिन्युड ॥ १८ ॥ तरुणग वा पवाल, स्वन्यस्स तणगस्स वा । अन्नस्स वावि हरियस्स, आसग परिवज्जए ॥ १९ ॥ तरुणिय वा छिवार्डि, आमिय भजिय सह । दितिय पिडयाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिस"।। २०॥ तहा कोलमणुस्सिन, वेलुय कासवनालिय । तिलपप्पडग नीम, आमग परिवज्जए ॥ २१ ॥ तहेव चाउल पिट्ट, वियड वा तत्तनिव्युड । तिलपिट्टपृड्पिण्णाग, आमग परिवज्जए ॥ २२ ॥ कविट्ड माडलिंग च, मूलगं मूलगत्तिय । आम असत्थपरिणय, मणसा वि न पत्थए ॥ २३ ॥ तहेव फलमथूणि, बीयमथूणि जाणिया । विहेलग पियाल च, आमर्ग परिवज्ञए॥ २४॥ समुयाण चरे भिक्ख्, कुल उन्नावय सया। नीय कुलमइ-इम्म, उसड नाभिघारए ॥ २५ ॥ अदीणो वित्तिमेसिजा, न विसीएज पिंडए । असुच्छिओ मोयणिम्म, मायने एसणारए॥ २६॥ वहु परघरे अत्थि, विविर्ह खाइमसाइम । न तत्थ पिंडओ कुप्पे, इच्छा दिज्ज परो न वा ॥ २० ॥ सयणा-सणवत्य वा, मत्त पाण च सजए । अर्दितस्स न कुप्पिजा, पचक्खे वि य दीसओ ॥ २८ ॥ इत्थिय पुरिस वावि, डहरं वा महह्नग । वदमाण न जाइजा, नो य ण फरुस वए ॥ २९ ॥ जे न वटे न से कुप्पे, विदओ न समुक्क्से । एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिद्वह ॥ ३० ॥ सिया एगइस्रो लद्धु, लोभेण विणिगृहृइ । "मामेय दाइय सत, दहुण सयमायए'' ॥ ३१ ॥ अत्तहा गुरुओ छुद्धो, वहु पावं पकुन्वड । दुत्तीसओ य से होइ, निव्वाण च न गच्छड ॥ ३२ ॥ सिया एगड्ओ लुद्धु, विविह पाणमोयण । भद्रग भद्दग भोचा, विवण्ण विरसमाहरे ॥ ३३ ॥ जाणतु ता इमे समणा, ''आययद्वी अय मुणी । सतुद्वी सेवए पत, लहवित्ती स्रुतोसओ'' ॥ ३४ ॥ प्यणद्वा जसोकामी, माणसमाणकामए। वहु पसवई पाव, मायासङ च कुरुवइ ॥ ३५ ॥ छर वा मेरग वावि, अन वा मजाग रस । ससक्ख न पित्रे भिक्खु, जस सारक्खमप्पणो ॥ ३६ ॥ पियए एमओ तेणो, "न मे कोइ वियाणइ"। तस्न पस्मह दोसाइ, नियर्डि च चुणेह मे ॥ ३७ ॥ बहुड सुडिया तस्स, मायामोस च मिन्नुको । क्यसो य वारिष्वार्थ सन्तर्ग च असाहुया ॥ ३८ ॥ निबुधिनगी जहा तेचो अत्तरम्मेहि दुम्मई । तारिसो मर**ंत**े वि नाराहेह संबरं ॥ ३५ म जानरिए नाराहेड, समणे गानि तारिसो । निडरवा वि जं गरिडति : क्षेत्र वार्गीरे तारिसं ॥ ४ ॥ एवं त बागुणप्पेही गुणाणं च विश्वकर । तारिसो मरबंदे हैं नाराहेड् संबरे ॥ ४९ ॥ तर्न कुष्यङ् मेहाबी पूजीयं कुम्यु रसं । सम्बन्धानः मिरको सबस्ती कहनकरो ॥ ४२ ॥ तस्य परसङ् कुमार्ग जमेगसाङ्गुपूर्व । भित्रके सत्पर्धतुर्च कितहरसं धनेह मे ॥ ४३ ॥ एवं तु शुक्रपोद्दी *ब*गुनार्प च किन्मर । तारियो मरचंते नि आराहेड संबरं ॥ ४४ ॥ आवरिए आराहेड, समवं वानि तारिसो । गिइत्या वि मं पूर्वति खेम बामति तारिसं ॥ ४५ ॥ तनत्वे वनतेचे, स्मतेने य के नरे । जायारमावतेणे व इच्चाइ वैवाकिन्याएं ॥ ४६ ॥ स्ट्रा म देवर्त तवक्दो देवकिन्विसे । तत्वामि से न नानाह, कि मे किया इस पर्वे 🖰 u ४७ ॥ उत्तो नि सं जब्तामं सम्मद् एकम्पूर्य । नर्गं हिरिस्करोनि वा बोही जल्ब हरुम्हा ॥ ४८ ॥ एव च दोर्च सङ्ग्रं नायपुरोच मास्त्रं। महमार्व पि नेबाबी मानामोधे निवन्तए॥ ४९ ॥ विविद्युक्तम सि<del>वनेव</del>णसी**ह**, सम्बन कुदाम सगसे । सन्य भिष्मा सुव्यविहितप्, विकासकामार्थ विहरिकारि 🗷 🖰 🚨 ति-नेति । इति पिंडेचणाय धीमो बहेस्रो समचो । ५२ व इति पिंडेसणा जामं पंचममञ्जयणं समस् ॥ ५ ॥

#### CO (1) (30)

#### अइ मङ्क्षियायारकड्डा(पम्मत्यकाम)णामं छद्रमञ्जयणं

नामहंतपर्यपन समये व तबे स्थे । शिक्षामायार्थ्य उमाणिम फोर्मे ।। १ ॥ रायाणां राजमणा व आह्या शतुक स्वित्या (पुन्नेस्टि सिह्नेस्वाणी से आवारायायरे । १ ॥ तिरि सी निवृत्यो से स्वावारस्य रे । १ ॥ तिरि सी निवृत्यो से स्वावारस्य रे । स्वावारस्य रामे स्ववाद रे । स्वावारस्य रामे स्ववाद रे । १ ॥ स्वावारस्य रामे स्ववाद रे । १ ॥ स्वावारस्य रामे स्ववाद रे । स्वावारस्य रामे स्ववाद रामे स्वावाद रामे स्वावाद रामे स्वावाद रामे स्ववाद रामे स्वावाद रामे स्वावाद रामे स्ववाद रामे स्वावाद रामे स्वावाद रामे स्ववाद रामे स्वावाद रामे स्ववाद रामे स्ववाद रामे स्वावाद रामे स्ववाद रामे स्वावाद रामे स्ववाद रामे रामे स्ववाद रामे स्वाद रामे स्ववाद रामे स

तिणाण मोहवर्जण ॥ ८ ॥ (१) तित्थम पडम ठाण्, महावीरेण देतिय । अहिंमा निङ्णा दिहा, सच्यभएत सजसो ॥ ९ ॥ जायति छोए पाणा, तसा अदुव यावरा । ते जाणमजाण वा, न हणे नो वि घायए॥ १०॥ सन्वे जीवा वि इन्छति, जीविड न मरिजिड । तम्हा पाणिवह घोर, निम्मथा चज्जयित णं॥ १९॥ (२) अप्पणद्दा परद्वा वा, कोहा वा जइ वा भया। हिंसग न मुस वृया, नो नि अन्न वयावए ॥ १२ ॥ मुसावाओ य लोगमि, मव्वमाहूहिं गरिहिओ । अविस्सामो य भूयाण, तम्हा मोस निवज्जए॥ १३॥ (३) चित्तमतमचित्त वा, अप्प वा जड वा वहु । दत्तमोहणमित्त पि, उनगहित अजाइया ॥ १४ ॥ त अप्पणा न गिण्हित, नी वि गिण्हावए पर । अन्न वा गिण्हमाण पि, नाणुजाणति सजया ॥ १५ ॥ (/) अवसचरिय घोर, पमाय दुरहिद्दिय । नायरति मुणी लोए, मेयायग्रणविजाणो ॥ १६ ॥ मृलमेयमहम्मस्स, महादोगसमुस्सय । तम्हा मेहुणससम्म, निम्या वजयंति ण ॥ १७ ॥ (५) विडमुङमेईम लोण, तिल सप्पि च फाणिय । न ते सिन्निहिमिच्छति, नायपुत्तवओरया ॥ १८ ॥ लोहस्सेस अणुप्फासे, मन्ने अन्नय-रामवि । जे सिया सन्निही कामे, गिही पन्बइए न से ॥ १९ ॥ ज पि वत्थ व पाय श्र, कवल पायपुरुण । त पि सजमलजद्वा, धारति परिहरेति य ॥ २० ॥ न सो परिग्नहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा । "मुच्छा परिग्नहो वुत्तो", इइ वुत्त महेसिणा ॥ २१ ॥ सन्बत्धुवहिणा वुद्धा, सरक्खणपरिम्महे । अवि अप्पणो वि देहिमि. नायरित ममाइय ॥ २२ ॥ (६) अहो निच तवोकम्म, सञ्बद्धेहिं विणिय । जा य लजासमा नित्ती, एगभत्त च मोयण ॥ २३ ॥ सतिमे ग्रहमा पाणा, तसा अहुव थावरा । जाइ राओ अपासतो, कहमेसणिय चरे ॥ २४ ॥ उदछह बीयससत्त, पाणा निन्विडिया मिहं। दिया ताइ विविज्जिजा, राओ तत्थ कह चरे ॥ २५॥ एयं च दोस दहूण, नायपुत्तेण भासिय । सन्वाहार न मुजति, निग्गथा राइभोयण । २६ ॥ (१) पुढिनकाय न हिंसति, मणसा वयसा कायसा । तिविद्देण करणजो-रुण, संजया सुसमाहिया॥ २७॥ पुढिविकाय विहिंसतो, हिंसई उ तयस्सिए। तसे य विविहे पाणे, चक्खसे य अचक्खसे ॥ २८ ॥ तम्हा एय वियाणिता, दोस हुमगइवस्रुणं । पुढविकायसमारम, जावजीवाए वजाए ॥ २९ ॥ (२) आउकाय न हिंसति, मणसा वयसा कायसा । तिविहेण करणजोएण, सजया म्रसमाहिया ॥ ३० ॥ आउकार्यं विहिंसतो, हिंसई उ नयस्सिए। तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ ३१ ॥ तम्हा एय नियाणिता, दोस दुग्गइन्हुण । आउकायसमा-

१ फाझ्य ।

अपुरिसामि । लोहे बाहिएको वानि वहे उत्तरको नि य ॥ ३४ ॥ भूगा थेसथापाओ हम्मवाहो ज संगओ । तं प्रीवपशाबद्वा संत्रमा किये नारने n ३५ n सम्बर एय नियाणिसा दोसं बुरगइबहुर्ण । सेउन्समसमारमं आवजीगर रजए ॥ ३६ ॥ (४) अभिकरस समारेमं सुद्धा मर्गदी तारिसं । सनअवार्त पेर सेयं ताईहिं समिय ॥ ३७ ॥ तालियटेण पत्तेण साहानिह्नयचेण वा । व वे वीहरुसिक्कति कीक्षक्रियम का गरे ॥ ३८ ॥ जीपि कर्ला व पास का केंद्री पायपुंडणं । न ते बाबसुइरेशि अर्थ परिदरेशि य ॥ ३५ ॥ तम्हा एवं विवासिता दोसं दुसाइबहुनं । बाजकायसमारंगं जानजीवाए वजाए ॥ ४ ॥ (५) वजसार म हिंचेदि मणसा वयसा कायसा । तिबिहेण करसबीएन संक्रमा मुनमाईका II ४९ II बणस्थाई विद्विचेतो क्रिंचई उ त्यस्तिए । तसे य मिनिहे प्राप्त बन्धार्त य अपन्यस्ते ॥ ४२ ॥ तम्बा एवं विवासिता दोसे बुम्यस्वद्वने । दयस्य समारंगे जावजीवाए बजाए ॥ ४३ ॥ (६-१९) समकार्म न द्विसंधि मवन वयमा नायसा । तिविहेण करमबोप्य संस्था तसमाहिया ॥ ४४ ॥ तसार्व बिहिसनो हिंसह उ तबस्मिए। तस य विविद्दे पाणे चक्पाचे य अवदन्तमे हे ४९ ह तम्हा एवं विवास्तिता वीचं बुस्मइवहुर्ण । तमशावसमारेमं आरखेनाए वहर u ४६ ॥ (९३) जाई चतारिज्युमाई, इसिणाहारमान्यि । ताई टु निवर्जी चंत्रम सन्त्रारूप् ॥ ४७ ॥ पिर्न विजं च बत्वं च चत्वं पासमेर स। अर्राक्तं न इण्डिका परिवाहिक क्षियं ॥ ४८ ॥ जे निवासं समावेति कीवस्तिनकारी बर्द च समग्रजानंति दर चुर्ग सद्देशिया ॥ ४९ ॥ तम्हा असगरानाई दीनदुरै सिवाद<sup>†</sup> । बज्रवंति ठिमणाणो निर्मामा भस्मवीविको ॥ ५ ॥ (१४) इंडेन कमवावमु में हमीएन का पुणी । शुंकेनी असणवाजाई, आवारा परेशरमा व १९ ह सीओन्यममार्थने मत्त्रधीयणउर्ह्य । बाद् ईनित भूयाई हिंहो तस्य अर्थन्त त र ॥ पण्डास्थ्यं पुरेश्य्यं निया तत्त्व न नप्पड । प्यार्ड न धुर्देहें सर्वेद गिहिमायमे ॥ ५३ ॥ ( १५ ) आसरीपवित्रीतुः अध्यमानासण्य वा । अन्त्रको यसजार्च कामान्सु गहनु वा ॥ ५४ ॥ नागरीपाजियेशन् म निरित्रा व वीत्रः। निर्मायाऽपन्ति नेष्, बुद्धनुममिन्या ॥ ० ॥ गंतीरितित्रया एनं, पण्य हुन्ते हेट्या । आगंत्रीरितित्रया एनं, पण्य हुन्ते हेट्या । आगंत्रीरितित्रया एनं, पण्य हुन्ते हेट्या । आगंत्रीरितित्रया एनं, पण्य निर्माना करम वण्यह । इमरियमणाबारे आवज्ञह सर्वर्षित ॥

तिकसमस्यारे सत्य सम्बन्धी वि बुरासम् ॥ ३३ ॥ गाईणं पतियां वाति वर्ष

वभचेरस्स, पाणाण च वहे वहो। वणीमगपडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिण ॥ ५८ ॥ अगुत्ती बभचेरस्स, इत्थीओ वावि सकण। क़ुसीलवहुण ठाण, दूरओ परिवज्जए ॥ ५९ ॥ तिण्हमन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ। जराए अभिभूयस्सै, वाहियैस्स तवस्तिणो ॥ ६०॥ (१७) वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पत्यए। वुकतो होइ आयारो, जढो ह्वइ संजमो ॥ ६१ ॥ सतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगासु य । जे य भिक्ख् सिणायतो, वियडेणुप्पिलावए ॥ ६२ ॥ तम्हा ते न सिणायति, सीएण उसिणेण वा । जावजीव वय घोर, असिणाणमहिद्वगा ॥ ६३ ॥ सिणाण अदुवा नक, लोद्ध पउमगाणि य । गायस्प्रव्वटणद्वाए, नायरंति कयाइ वि ॥ ६४॥ (१८) नगिणस्स वावि मुडस्स, दीहरोमनहसिणो । मेहुणा उवसतस्स. कि विभूसाए कारिय ॥ ६५ ॥ विभूसावत्तिय भिवन्त्, कम्म ववइ चिक्रण । ससारसायरे घोरे, जेण पडइ दुरुत्तरे ॥ ६६ ॥ विभूसावित्तय चेय, बुद्धा मन्नति तारिस । सावज्जवहुल चेय, नेय ताईहिं सेविय ॥ ६७ ॥ खवेति अप्पाणममोह-दिसणो, तवे रया सजमञ्जने गुणे । धुणति पावाइ पुरेकडाइ, नवाइ पावाइ न ते करेंति ॥ ६८ ॥ सओवसता अममा अकिचणा, सविज्वविज्वाणुगया जससिणो । उउप्पसन्ने विमले व चिदमा, सिद्धि विमाणाई उर्वेति ताइणो ॥ ६९ ॥ त्ति-बेमि ॥ इति महिल्लयायारकहा णामं छट्टमज्झयण समत्तं ॥ ६॥

eal show

## अह सुवकसुद्धी णामं सत्तममज्झयणं

चडण्ह खलु भासाण, परिसखाय पन्नव । दुण्ह तु विणय सिक्खे, दो न भासिज सव्वमो ॥ १ ॥ जा य सचा अवत्तव्वा, सचामोसा य जा मुसा । जा य बुद्धेहि-Sणाइण्णा, न त भासिज पन्नव ॥ २ ॥ असचमोस सच च, अणवज्जमकक्ष्य । समुप्पेहमसदिद्ध, गिर भासिज पन्नव ॥ ३ ॥ एय च अट्टमन्न वा, ज तु नामेइ सासय। स मास सचमोस च, त पि धीरो विवज्जए ॥ ४॥ वितह पि तहामुर्ति, ज गिर भासए नरो। तम्हा सो पुद्घो पावेण, कि पुण जो मुस वए ॥ ५॥ तम्हा "गच्छामो वक्खामो, अमुगवा णे भविस्सड । अह वा ण करिस्सामि, एसो वा ण करिस्मइ" ॥ ६ ॥ एवमाइ उ जा भासा, एसकालिम सकिया । सपयाईयमट्टे वा. त पि घीरो विवजाए ॥ ७ ॥ अईयम्मि य कालम्मि, पञ्चपन्नमणागए । जसह तु न जाणिजा, "एवमेय" ति नो वए ॥ ८ ॥ अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणा-गए। जत्थ सका भवे त तु, "एवमेय" ति नो वए॥ ९॥ अईयम्मि य कालम्मि,

पञ्चपनमणागए । निरसंक्रिय समि वं तु "एउमेर्स" ति निष्टि ॥ १ ॥ तहेर फरमा भारत शुरुमुओबचाइनी । सन्ता वि सा न बत्तव्हा जजी पाइस कामने u १९॥ तहेच कार्ष 'काणे" ति पंडम पंडमें 'ति वा : बाहियं वाति "ग्रेमि" ति तम बोरे" ति नो वए ॥ १२ ॥ प्र्यक्तिण अद्वेच परो जेलुबहुम्मह। मार्ग-रमानदोसम् न तं भासिक पत्तरं ॥ १३ ॥ तहेव होके" "गोनि" ति "सर्वे" ना 'बमुक्ते' कि य । इसए' "तुक्ष्य' बार्रि न संभातिक पत्तर्व ॥ १८ व अञ्चिए पिकए बामि कम्मो माउसियति य । वितसिए भाइमिकति पूर <sup>क</sup>र्ड नियत्ति स ॥ ९५ ॥ इके हके ति कसे जि महे सामिनि चीमिनि । होने मेंके सार्वे ति इत्पियं नेवमालमे ॥ १६ ॥ मामधिजेज वं वृता इरवोद्यतेय वा पुर्यो । नदी रिहमसिमिक्स आस्त्रिज समिज वा ॥ १७ ॥ कजर प्रजर वानि वर्षे डुअपैउ विया । माउस्मे माइजिजाति पुत्ते नतुषियति का। १८ । हे हो इनिति सर्वि वि मद्य सास्तिय गोमिय । ब्रोस गोस्ड बमुक्रिक्ति पुरिश्व नेबमान्त्रवे ॥ १९ ॥ वस्ति भिजेग नं बूगा पुरिस्तुतेल वा पुणो । बहारिह्मसिनिका आसरिज संस्ति वी II २ ो। पेनिश्चिम्य पामार्ण एउ इस्थी समे पुर्म"। बाम में न विज्ञानिका राव नाइति आसने ॥ १९ ॥ तहेव माणुर्ध पर्यू, परिश्व वाले स्रीतिर्म । "स्री पनेरके बज्के पायमि" कि य जो वए n २२ n परिवृद्धित व वृसा क्या वस्तिर ति सः। संबाद पीलिए बावि सहाकार्यक्ति भारत्ये ॥ २३ ॥ तहेव गामने इंज्यांकी रम्मा पोरक्गति व । बाहिमा रहजेमाति नेवं मारिज पक्षं । २४ ॥ इपं स ति गं वृता चेलु रसव्यक्ति थ । रहस्ये सहस्रए वाले वए स्वरुविति सं ! ५ ! द्रमुं पंतुमुजार्न पश्चवाणि क्यापि स् । रक्षाः सङ्ग्र पेहाप्, वर्न सक्ति प्र U २६ ॥ सर्व पासायबंभानं तोरणाणि गिहानि व । प्रतिहरमक्तानाव अर्व वर् गरोमियं । २७ ॥ पीडए चंगवेरे व मंगले मध्यं समा । चंतकडी व नामी व पंकिया व अब रिमा ॥ २८ ॥ शासच्य स्थर्ण जार्च हुआ वा किनुक्तरं । दूजे ववाइमि मास नेवं मासिक पथ्नं ॥ १ ॥ तहेव र्यातमुखार्थ पश्चमादि ववावि व रक्ता महत्र पेहाए, एवं मारिका पत्रनं ॥ ३ ॥ व्यक्तित इमे रक्ता श्वास सहाक्या । प्रशासकाका विकिता वयु वृत्तिकाणि स ॥ १९ ॥ तहा एसई पर्याट पाक्कजाई नो वयु । नेस्प्रेयम् दश्काई, नेब्रिसाई क्षे नो वयु ॥ ३२ ॥ अस्त्रका हो भवा बहुनिव्यक्तिमा प्रज्ञा । बहुव्य बहुर्चमूया भूयस्थित वा पुणी ॥ ११ व द्रवेते सहिनो पदानो नीकियानो स्नी हय । बाह्मा मक्तिमानसि विद्ववसी स्टेश्प रा ३४ ॥ स्वा बहुर्सम्या निरा करावा नि न । चन्मानाओं पर्वाची स्वाधन

	[ १०	•]					
88	र जीवक संव भीव		18  8	R	₹ 1 E	: 14	
४४	भोरित्रियका पर्यामा सै० गु	١,	18	1.		,  ,	1
8₫	पर्चत्रिय का " विशेषा	1	12	1,4			1
8.0	दंदं त्रय का ल	1	1,	1,2	T,	١,	1
82	वैद्रशियका "	1	1.	1		1	
8€	पॅचेत्रियका कावर्गमा कर्त ग्र	1	1	1	Fig	T.	ľ
40	चौरिद्रिय का विशेषा		12	1	[x	١,	1
४१	तेईद्रिय 🤊 ,		2	3	1	,	ľ
४२	वैदंदिय 🦁 🤊	,		1	1	1	ľ
**	मतेब तरीरी वासरवम कावका वर्गीश कार्रा ० गुरु	8	,	,		,	ľ
48	भादर निगोद का "	2		,	1	3	
14	बाहर प्रथािक "	2			,	,	-
श्व	ando = =	١ ,				,	98
	ग चायु , ,	٠		8	2	,	
k5	n तेह० क्षपर्याच्या <sub>म</sub>	١ ۽	₹		۹	ą	
48	प्रव्यावस्य अस्त 🤊	1	۱   ۱	1	2 /	8	,
		,		I			. (

त्ति आलवे ॥ ३५ ॥ तहेव सखर्डि नचा, किर्च कज्ज ति नो वए । तेणग वावि विज्ञित्ति, सुतित्थिति य आवगा ॥ ३६ ॥ सखिं सखिं वृया, पणियद्वति तेणगं । वहुसमाणि तित्थाणि, आवगाणं वियागरे ॥ ३७ ॥ तहा नईओ पुण्णाओ, कायतिजित्ति नो वए । नावाहिं तारिमाउत्ति, पाणिपिजत्ति नो वए ॥ ३८ ॥ वहुवाहडा अगाहा, वहुसाँलेलुप्लिलेदगा । वहुवित्थडोदगा यावि, एवं भासिज्न पन्नव ॥ ३९ ॥ तहेव सावज जोग, परस्सद्वाए निद्विय । कीरमाण ति वा नचा, सावज नालवे मुणी ॥ ४० ॥ सुकडित्ति सुपिक्षति, सुच्छिने सहडे मडे । सुनिद्विए सलद्वित, सावजा वजाए मुणी ॥ ४९ ॥ पयत्तपक्षत्ति व पक्षमालवे, पयत्तछिन्नत्ति व छिन्नमालवे । पयत्त-लिंहिति व कम्महेउय, पहारगांडित व गांडमालवे ॥ ४२ ॥ सन्बुक्स परग्य वा, अउल निष्य एरिस । अविक्षियमवत्तव्व, अचियत्त चेव नो वए ॥ ४३ ॥ "सव्वमेय वइस्सामि, सन्वमेय" ति नो वए । अणुवीइ सन्व सन्वत्थ, एव भासिज पश्चन ॥ ४४ ॥ सुकीय वा सुविक्कीय, अकिज किजमेव वा । ''इम गिण्ह इम मुच, पणियं'' नो वियागरे ॥ ४५ ॥ अप्पाचे वा महाचे वा, कए वा विकाए वि वा। पणियहे समु-प्पन्ने, अणक्ज वियागरे ॥ ४६ ॥ तहेवासजयं घीरो, "आस एहि करेहि वा । सय चिट्ठ वयाहि" ति, नेव भासिज पन्नव ॥ ४७ ॥ वहवे इमे असाहू, लोए वुचित साहुणो । न लवे असाहु साहुत्ति, साहुं साहुत्ति आलवे ॥ ४८ ॥ नाणदसणसपन्न, सजमे य तने रय । एवं गुणसमाउत्त, सजय साहुमालवे ॥ ४९ ॥ देवाण मणुयाण च, तिरियाण च बुग्गहे । अमुगाण जओ होड, मा वा होड ति नो वए ॥ ५०॥ वाओ बुद्ध व सीउण्ह, खेम धाय सिव ति वा । कया णु हुळा एयाणि, मा वा होउ त्ति नो वए ॥ ५१ ॥ तहेव मेह व णह व माणव, न देव देवति गिरं वङ्जा । समु-च्छिए उन्नए वा पओए, वङ्ज वा बुद्ध वलाह्यति ॥ ५२ ॥ अतलिक्खित ण वृगा. गुज्झाणुचरियत्ति य । रिद्धिमत नरं दिस्स, रिद्धिमत ति आलवे ॥ ५३ ॥ तहेव साव-जाणुमोयणी गिरा, ओहारिणी जा य परोनघाइणी । से कोहलोहभयहासमाणयो, न हासमाणो वि गिरं वहजा ॥ ५४ ॥ अवक्युद्धं समुपेहिया मुणी, गिरं च दुह परि-वजाए सया । मिय अदुद्धं अणुवीइ भासए, सयाण मज्झे लहुई पससणं ॥ ५५ ॥ भासाइ दोसे य गुणे य जाणिया, तीसे य दुट्टे परिवज्जए सया। छस्र सजए सामणिए सया जए, वहज वुद्धे हियमाणुलोमिय ॥ ५६॥ परिक्खमासी सुसमाहिइदिए, चउक्-सायावगए अणिस्सिए। स निद्धुणे बुन्नमल पुरेकड, आराहए लोगमिण तहा परं॥ ५७॥ ति-वेमि ॥ इति सुवक्कसुद्धी णामं सत्तममज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

### अइ आयारपणिही णाम अहममजसयणं

भायारपणिहि कर्नु, बहा कावस्य शिक्युणा । ते ने संवाहरिस्सामि अल्युमि सनेक में n १ व पुरुष्टियमनगनिमारन राजरूनप्रसामीनमा । तसा म पापा नी<del>र</del> ि इर वुर्त महेरिजा ॥ २ ॥ तेसि अच्छजजीएण जिल्हे होनम्बर्न रिमा । स्वस्त काम नदेश एवं इवह रांबए ॥ ३ ॥ पुत्रवि मिलि सिर्फ केंद्र मेन विंद न रेक्टि तिविदेण करमञोएण सेवए ससमाहिए n w n सुद्रपुत्रवि व निसीए, सस्स्वानि व बाराज । पमाजित निरीक्ता आहता कसर रुव्यह ॥ ५ ॥ रीकोर्य न हेनिक विसान्त्रं विमानि व । उतिभोदनं शत्तपातुर्वं वहिनाहिना क्षेत्रए ॥ ६ व उद्श कामनी कार्य जैव पुँछे न संविद्धे । समुप्येह तहासूर्य नो श संप्रदूप सुनी ॥ 🕶 इंगार्स क्यांनि वार्षि असार्व वा एजोइयं। न र्राजिका न यहिका नो वे दिनारर सुधी । ८ । ताकिनीरेण परेण साहाए बिहुनोक वा । न सेहन बायको वर्ते बाह्निर वादि पुसाक । ९ । तणसम्ब न किराजा कर्क धूर्क व वरस्त । जान विविद्दं वीर्ज समस्या विज पत्त्वस्य ॥ १ ॥ पद्मवेद्य व निद्धित्वा वीर्ट्स हरिस् वा। सदर्गमि लहा निर्वं स्वतिरूपयोग्ध वा॥ १९॥ सस्ये गर्वे न विस्थिय वानी खुन कम्मुका । उक्तको स्थान्त्य परिक्र विमिष्ट वर्ष ॥ १२ ॥ स्त्र स्थान्ति पेशाए, जाई वामितु संजप । दवादियारी मूर्छ आस निक्र स्पृद्ध वा ॥ १३ ॥ कनराई शह बहुमाई! नाई पुरिकाम र्यत्रप् । हमार ताह मेहाची जाहरियाँ मिनक्समो ॥ १४ ॥ विमेर्ड पुप्पश्चहुम च पालुतिर्ग रहेव य । प्यां बीर्न इसि च अवर्रीहुर्म च व्युक्त ॥ १५ ॥ एवनेमानि जानिता सन्वरादेन संवर्ण । वास्तर वर् निर्व समितिवस्थातिए ॥ १६ ॥ श्वरं च प्रिकेश्वना जीगरा पास्त्रती विज्ञमुखारभूमि च थेवारं भतुषासर्थं ॥ १७ ॥ श्रेषारं पासकं 🐲 विवर्त वाकिन । पासुने पविकेतिमा परिद्वागिज संबद् ॥ १८ ॥ पनिशित् परायार, वा भोजनस्य वा । वर्ज विद्वे मिर्ज मासे म न समेश्च मर्थ करे ॥ १९ ॥ वा द्वार क्रमीहें, गाँ सरकीहें पिष्कः। ज व सिद्धं हुने सम्बं धनवादगीर ॥ २ ॥ एवं वा चह वा रिर्कु न स्वित्वावसह तथ सम्ब । सम्ब वा प्रेम स्थापित । ॥ एवं वा चह वा रिर्कु न स्वित्वावसह । न व केव स्वापन स्थिति । समावे ॥ १९ ॥ मिहाने स्थापित्वह सहये साव । सहये वा वा वा स्थापन स्थापन । क्रमाकार्म न भिद्रिते ॥ १२ ॥ न व ओयनम्य मिन्नो वरे 🛍 क्रमीरिएँ । क्षप्रसार्य न मुक्तिया क्षित्रमुद्दियावर्ष ॥ २३ ॥ समित्री व न इन्तिया क्ष्यप्रसार्य न मुक्तिया क्ष्यप्रसार्थ ॥ २३ ॥ समित्री व न इन्तिया क्ष्यप्रसार्थ ॥ १३ ॥ समित्री व न इन्तिया क्ष्यप्रसार्थ । स्वाप्ति व व्यक्तिया क्ष्यप्रसार्थ । स्वाप्ति व व्यक्तिया व

अप्पिन्छे सुहरे सिया। आसुरत्त न गच्छिजा, सुचा ण जिणसासणं ॥ २५॥ कणा सुक्खेहिं सद्देहिं, पेम नाभिनिवेसए। दारुण कक्षस फास, काएण अहियासए ॥ २६ ॥ खुहं पिवास दुस्सिज, सीउण्हं अरइ भय । अहियासे अव्वहिओ, देहदुक्ख महाफल ॥ २७ ॥ अत्यगयमि आङ्चे, पुरत्था य अणुग्गए । आहारमाइय सव्व, मणसा वि न पत्थए ॥ २८ ॥ अतिंतिणे अन्ववले, अप्पभासी मियासणे । हविज्ञ उयरे दते, थोव लद्धु न खिंसए॥ २९॥ न वाहिरं परिभवे, अत्ताण न समुक्क्से। भुयलामे न मजिजा, जचा तवस्सिवुद्धिए ॥ ३०॥ से जाणमजाण वा, कहु आह-मिसय पय । सवरे खिप्पसप्पाण, बीय त न समायरे ॥ ३१ ॥ अणायार परक्कम्म, नेव गृहे न निण्हवे । सुई सया वियडमावे, अससत्ते जिइदिए ॥ ३२ ॥ अमोह वयण कुजा, आयरियस्स महप्पणो । त परिगिज्झ नायाए, कम्मुणा उववायए ॥ ३३ ॥ अधुव जीविय नचा, सिद्धिमग्ग वियाणिया । विणियहिन भोगेस, आउ परिमियमप्पणो ॥ ३४ ॥ वल थाम च पेहाए, सद्धामारुगमप्पणो । खेत काल च विन्नाय, तहप्पाण निजुजए ॥ ३५ ॥ जरा जाव न पीढेइ, वाही जाव न वहुइ । जाविंदिया न हायति, ताव धम्म समायरे ॥ ३६ ॥ कोह माण च माय च, लोभ च पाववहूण । वसे चतारि दोसे उ, इच्छतो हियमप्पणो ॥ ३७ ॥ कोहो पीइ पणासेइ, माणो विणयनासणो । माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सञ्वविणासणो ॥ ३८ ॥ उनसमेण हणे कोह, माण महवया जिणे । माय चज्जवभावेण, लोभ सतोसक्षी जिणे ॥ ३९ ॥ कोहो य माणो य अणिग्गहीया, माया य लोभो य पवहूमाणा । चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचति मृलाई पुणव्भवस्स ॥ ४० ॥ राइणिएस विणय पडजे, अवसीलय सयय न हावइजा । कुम्मुव्य अलीणपलीणगुत्तो, परक्रमिजा तवसजमम्मि ॥ ४१ ॥ निद्द् च न वहु मिश्रजा, सप्पहास विवजाए । मिहो कहाहिँ न रमे, सज्झायम्मि रभो सया ॥ ४२ ॥ जोग च समणधम्मम्मि, जुजे अणलसो धुव । जुत्तो य समणधम्मम्मि, अद्व लहड अणुत्तरं ॥ ४३ ॥ इहलोगपारत्तहिय, जेण गच्छइ सुग्गइ । वहुसुय पज्जुवासिजा, पुच्छिजत्यविणिच्छय ॥ ४४ ॥ इत्थ पाय च काय च, पणिहाय जिइदिए। अलीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी ॥ ४५ ॥ न पक्तओ न पुरओ, नेव किचाण पिट्टओ । न य ऊरं समासिजा, चिहिजा गुरुणतिए ॥ ४६ ॥ अपुच्छियो न भासिजा, भासमाणस्स सतरा । पिहिमस न खाइजा, मायामोस विवज्जए॥ ४०॥ अप्पत्तिय जेण सिया, आसु कुप्पिज वा परो। सन्वसो त न मासिजा, मास अहियगामिणि॥ ४८॥ दिट्ठ मिय असदिद्ध, पडिपुण्ण विय जिय । अयपिरमणुव्विग्ग, भास निसिर अत्तव

u ४९ a भाजारपण्याचिष्यं, विद्वितायमहिकार्गः। वास्त्रिक्कक्रियं नचा न तं उपरे सुणी n ५ n शक्सते सुविणे कोर्ग निमित्त सद्योसको । रिक्कियो से न नद्रश्रे भूमादिगर्णं वर्षे ॥ ७९ ॥ अनुद्रं वयदं समर्थं अद्या समयासर्थं । उपारम्नि संपर्क इस्मीप्यमिनिया ॥ ५२ ॥ निनिधा व मन शिका नारीर्ज न सर्वे धर्रे । गिविस्तेयने न कुम्मा कुमा साहुवि संयर्थ ॥ ५३ ॥ वहा कुमुहयोगस्स निर्व कुम्ममं सर्व । एवं स बंसमारिका इरबोबिश्महको स्व 🛭 ५४ 🗈 चिक्तमिति स निकार, मारि वा सुक्कंनियों । सक्कार पित्र सङ्घर्ष दिक्कि पश्चिमाहरे ॥ ५५ ॥ इत्वस्थ पडिण्डिमं कज्यनाधिकापियाँ । अति बाससमै नार्टि, वंभवारी विश्वाद । ५६ । मिम्मा इन्यिस्मरमो प्रथीवरसमोक्यां । मरस्सरमधिक्स विसे तक्रवरं स्था ॥ ५७ ॥ अंधपनंगलंदाचं चारुवियपेश्चियं । इत्त्रीनं त त्र विकाए, क्षमणं मिनपूर्ण II ५८ II विसएस अध्योज पेर्स गाभिनिवेसए । अध्या देसि विकर् परियास प्रेममञ्जल स ॥ ५६ ॥ प्रोम्पलाण परिजासं त्रसि लका कहा छहा। विणीमक्को बिहरे सीहेम्एण अप्पया ॥ ६ ॥ आह स्टब्स निस्बंदी परिगक् द्वापनुत्तर्म । तनव क्ष्युपाकिका शुक्ते आयरिश्रसम्बर्ग ॥ ६९ ॥ तर्व विमे धम्म जोगर्य च सञ्चानजोग च सवा अविद्वार । धरे व सेवाह समामारहे, बद्धान्यचे होइ अर्क परेलि ॥ ६ ॥ सञ्चाबसञ्चाबरयस्य ताहको कपनमाहस्य ले रयस्य । मिम्रकार्षः मः सि सकं प्रदेकवं समीरिय स्थानकं व कोणा ॥ ६३ ॥ है वारित दुरुवतहे निर्दिग्, स्रपून जुत्ते असन सक्तिवने । लेपनई क्रम्यून्यनि सवगर कविश्वस्मपुराक्यमे व विश्वम ॥ ६४ ॥ ति-वेमि ॥ इति आयारपविश्वी णामं अद्भागवस्यवं समर्चे ॥ ८ ॥

### अइ विणयसमाही णार्म णवसमज्ज्ञयणं

### पहमी उहेसी

भेगा व भोड़ा व मरापमाया पुरस्तागाँव निजर्ज ॥ शिवको । यो वेज व रूपे समुद्रमानो चन्न व चीनस्य चहान शेड्र ॥ १ ॥ यो नामि मसित पुर्व क्षारा नासे इसे सप्पन्तप्र वि नना । इसिति मिन्द्रं परिनम्बागाना वरीत नाशास्त्र वे पुत्रस्त्री ॥ १ ॥ पनाइप् स्वा में मार्वित एगे बहुत्त नि व ज सम्बन्धिस्त्रा । नाह्यस्त्राप्ता प्राच्छिनप्या जे इंक्टिना शिवितिय सास इन्जा ॥ ३ ॥ वे कार्र नाग डहर ति नचा, आसायए से अहियाय होड । एवायरियं पि हु हीलयतो, नियन्छई जाइपहं खु मदो ॥ ४ ॥ आसीविसो वावि परं सुरुहो, कि जीवनासाउ पर नु कुज्ञा । आयरियपाया पुण अप्पसन्ना, अवोहिआसायण नित्य मुक्खो ॥ ५ ॥ जो पावग जलियमवक्षमिजा, आसीविस वावि हु कोवइजा । जो वा विस सायइ जीवियद्वी, एसोवमाऽऽसायणया गुरुण ॥ ६ ॥ सिया हु से पावय नो ढहिजा, आसी-विसो वा कुविओ न भक्खे। सिया विस हालहल न मारे, न यावि मुक्खो गुरुही-लणाए ॥ ७ ॥ जो पव्वय सिरसा भित्तुमिन्छे, स्रुत्त व सीह पडियोहङ्जा । जो वा दए सत्तिअग्गे पहार, एसोवमाऽऽसायणया गुरूण ॥ ८ ॥ सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे। सिया न भिंदिज व सत्तिअग्ग, न यावि मुक्तो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥ आयरियपाया पुण अप्पसन्ना, अवोहिआसायण नित्य मुक्खो । तम्हा अणावाह्युहाभिकखी, गुरुप्पसायाभिमुहो रमिजा ॥ १० ॥ जहा-हिअग्गी जलण नमसे, नाणाहुईमतपयाभिषित । एवायरिय उविदृह्जा, अणत-नाणोवगओ वि सतो ॥ ११ ॥ जस्सतिए धम्मपयाइ सिक्खे, तस्सतिए वेणइय पडजे । सकारए सिरसा पजलीओ, कायग्गिरा भो मणसा य निच ॥ १२ ॥ लजादयासज-मवभचेरं, क्लाणमागिस्स विसोहिठाण । जे मे गुरू सययमणुसासयति, ते हं गुरू सयय पूर्यमामि ॥ १३ ॥ जहा निसते तवणिचमाली, पभासई केवलभारह तु । एवायरिओ सुयसीलबुद्धिए, विरायई धरमज्झे व इंदी ॥ १४ ॥ जहा ससी कोसुइ-जोगजुत्तो, नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा। खे सोहई विमले अन्भमुक्के, एव गणी सोहइ भिक्खमज्झे ॥ १५ ॥ महागरा आयरिया महेसी, समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए । सपाविउकामे अणुत्तराइ आराहए तोसड धम्मकामी ॥ १६ ॥ स्रचाण मेहावि सुभा-सियाइ, सुस्सूसए आयरियऽप्पमत्तो । आराहइत्ताण गुणे अणेगे, सो पावई सिद्धिम-णुत्तर ॥ १७ ॥ ति-नेमि ॥ इति विणयसमाहिणामणवमञ्झयणे पढमो उद्देसो समत्तो ॥ ९-१ ॥

### अह णवमज्झयणे वीओ उद्देसो **>0森0c**

म्लाउ खघप्पभवो दुमस्स, खघाउ पच्छा समुर्विति साहा । साहप्पसाहा विरू-हति पत्ता, तओ सि पुष्फ च फल रसो य ॥ ९ ॥ एव धम्मस्स विणस्रो, मूल परमो से मुक्खो। जेण किर्ति सुय सिग्घ, निस्सेस चाभिगच्छइ ॥ २॥ जे य चढे मिए थदे, दुव्वाई नियधी सढे। वुज्झइ से अविणीयप्पा, कह सोयगय जहा

 ॥ १ ॥ विजयं पि को समाएल कोइको कुप्यों नरो । दिम्बं सो धिरिमक्ति, वंडेम परिचेहए ॥ ४ ॥ तहेन अनिशीयच्या त्रमण्यसा हवा गया । शैसी दुइमेईता मामिक्येगमुबद्धिया ॥ ५ ॥ तहेव सुविशीयणा उपरण्या इरा म्या बीचंति प्रहमेडंता इक्ट्रियता सङ्ख्याता ॥ ६ ॥ तहेब अविजीनया झेगंति गर-नारिक्ये । वीचेति तुरुमेहेता छाया ते विगविदिया ॥ ७ ॥ वृत्रस्त्वपरितुत्वा, कसम्भवसंगिति व । बहुणा विवक्तांवा श्वाणिमासक्परियमा 🛭 ८ ॥ छोर ग्रमिजीयप्या कोर्गति भरनारिको । गीर्वति ग्रहमेहंता हर्ष्ट्रि वता स्वदानता ॥ ५ व तहेर जविजीरच्या देशा अस्था र गुजरागा। रीसंवि सहसहता आसिकेन सुबद्दिया ॥ १ ॥ तहेन श्रमिजीयपा तना अक्काय गुज्जमा । शेस्ट्री ग्रहमेईता होते पत्ता महायसा ॥ १९ ॥ जे आयरिकटकज्ञाजाच उत्स्ती वमर्गकरा । देखि विकास पन्नोति वक्तिता इव पायना ॥ १२ ॥ जनक परक्का वा विष्या नेउनिकाल व । निक्कियो उपमौपक्का सब्सेगस्य वार<sup>क्</sup> ॥ १२ ॥ जेम वर्ष वह मोरं परिवार्ग व वारुण । क्लियमामा निवर्जी उ ते किन्द्रिया ॥ १४ ॥ ते नि तं पुर्व पूर्वति तस्य विप्यस्य कारमा । स्थापी नर्सर्यति हुद्धा निरेसवतिको ॥ १५ ॥ कि प्रथ से हुबस्माही वनतिहेब<sup>कार्य</sup> मायरिवा व वर मित्रक् सम्बा वं नाव्यस्य ॥ १६॥ सीर्व स्टबं सर्व नीयं च आसगानि व । नीयं च पाए निरुक्ता शीर्थ कुका य संगति है <sup>9</sup> चक्क्षणा काएमं चहा उनहिजातमे । 'क्रमेह अवराह में" क्रमा "म इडे ति स ॥ १८ ॥ बुरपको वा पमापून चौरको बहुद रई । एवं हुद्दि स्वा चुत्तो हुत्तो प्दम्मद ॥ १९ ॥ आक्रांत कर्ति वा च विश्वजाए पश्चित हैं माराणं धीरो श्रस्त्ताए पत्रिसामे ॥ १ ॥ कार्यं कंग्रेलवारं व पहिन्ती<sup>ता</sup> हेउहिं। देविं देविं दगापृष्टिं, तं तं सपरिवानप् ॥ २९ ॥ तिवरी अनिर्वानः सपती विश्विमस्य व । अस्त्रेमं बुद्दको पार्च विश्व से समित्रकार । १९४ वे मानि भवे सहर्शकृतारने पिश्चने वरे शाहराहीनपेटने। निर्देशको हेन्य बाद्मित्, अपनिमाती न हु तस्य मुक्ता ॥ ११ ॥ विदेखाती पुत्र के कुन् सुजल्पसम्मा निमर्वमि कोमिया । रारित सं कोक्सियां हुरुतरे, दक्तितुं इत्सं स्ट मुक्तमं परा ॥ २४ ॥ ही-चेमि ॥ इति विषयसमाहिष्यामणवनका बीबो खोसो सबस्तो ॥ ९-२ ॥ ----

# अह णवमज्झयणे तइओ उद्देसो

आयरियग्गिमिवाहिअग्गी, सुस्स्समाणो पिंडजागरिजा । आलोइय इंगियमेव नचा, जो छदमाराहयई स पुज्जो॥ १ ॥ आयारमद्वा विणयं पउजे, सस्स्समाणो परिगिज्झ वक्क । जहोवइट्ठ अभिकखमाणो, गुरुं तु नासाययई स पुज्जो ॥ २ ॥ राइणिएसु विणय पउजे, डहरा वि य जे परियायजिद्वा । नीयत्तणे वद्दद् सचवाई, ओवायव वक्कतरे स पुजो ॥ ३ ॥ अन्नायउछ चरई विसुद्ध, जवणहुया समुयाण च निच । अलद्धुयं नो परिदेवइज्जा, लद्धु न विकत्थयई स पुज्जो ॥ ४ ॥ सथारसिजाऽऽसण-भत्तपाणे, अप्पिच्छया अङ्लाभे वि सते । जो एवमप्पाणमितोसङ्जा, सतोसपाहन्न-रए स पुज्जो ॥ ५ ॥ सका सहेउ आसाइ कटया, अओमया उच्छहया नरेण। अणासए जो उ सहिज्ज कटए, वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥ मुहुत्तदुक्खा उ हवति कटया, अओमया ते वि तओ सुउद्धरा । वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणु-वधीणि महञ्सयाणि ॥ ७ ॥ समावयता वयणाभिषाया, कण्णं गया दुम्मणियं जणति । धम्मति किचा परमग्गसूरे, जिइदिए जो सहई स पुजो ॥ ८॥ अवण्णवाय च परमहस्स, पचक्खओ पडिणीय च भास । ओहारिणि अप्पियकारिणि च. भास न मासिज संया स पुजो ॥ ९ ॥ अलोलुए अक्कुहए अमाई, अपिसुणे यावि अदीण-वित्ती। नो भावए नो वि य भावियप्पा, अकोउह्ने य सया स पुज्जो ॥ १०॥ गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू, गिण्हाहि साहू गुण मुचऽसाहू। वियाणिया अप्पग-मप्पएण, जो रागदोसेहिं समी स पुज्जो ॥ ११ ॥ तहेव इहर च महल्लग वा, इतथी पुम पव्वइय गिहिं वा। नो हीलए नो विय खिंसइजा, थम च कोह च चए स पुज्जो ॥ १२ ॥ जे माणिया सयय माणयति, जत्तेण क्लां व निवेसयति । ते माणए माणरिहे तनस्सी, जिइदिए सचरए स पुज्जो ॥ १३ ॥ तेसिं गुरूण गुणसायराण, सुचाण मेहावि सुभासियाइ । चरे मुणी पचरए तिगुत्तो, चउक्कसायावगए स पुजो ॥ १४ ॥ गुरुमिह सयय पडियरिय मुणी, जिणवयनिउणे अभिगमकुसछे । बुणिय रयमल पुरेकड, भाइरमडल गड गय ॥ १५ ॥ त्ति-वेमि ॥ इति विणयसमाहि-णामणवमञ्झयणे तइओ उद्देसो समत्तो ॥ ९-३ ॥

### अह णवमज्झयणे चउत्थो उद्देसो

चुय मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय, इह खलु थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि

निजयसमाहिद्वाणा पवता कनरे **बहु तं येरेहि मगर्नतेहि वत्तारि विधनसमाहिद्व**ण पणता है इसे बस्तु ते बेरेब्रि मगवते हैं जतारि विजयसमाबिद्धामा पणता है वर्षा मिजस्यमाही १ सुमस्माही २: तमसमाही ३ मागारसमाही ४ । निजए छर <sup>व</sup> तमे आयारे निम पंकिया। मनिरासमंति अप्यार्थ के ममंति विपंतिया । १ ह भरम्भिता बाह्य विभवसमाधी मन्त्र, र्तनहा-अनुसासिकंतो प्रस्पत् । सर्व संपरिकासक २ वेसमाराह्यक ३ ल व भवक वालांपमाहिए ४ वटलां पर्व मक मक्त य इत्व शिक्षोगो-पेहेर हियाशुस्तासर्व सस्युद्ध तं व प्रको सहिद्धिए। प व माणमएक सम्बद्ध, विषयसमाही आवनहिए ॥ १ ॥ वटिवाहा बहु हमसम्बद्ध मनंद र्जन्य-पूर्ण में सनिस्तद ति अज्ञाहरूक अवद १ एगरगक्ति मनिस्सर्म ति करमाप्रकर्ण सबद २ अप्याचे ठावहरग्रामि ति अञ्चाहवर्ण सबद १ दिने पर्द ठाक्ट्रनामि ति जजनाइयम्बै सबद् ४ चटर्ष पर्व सबद् । सबद् य द्रत्य रिक्रेयेन नागमेगन्यान्तित्ये य ठिको व ठावड् परे । छयानि य अविकिता रको छ<del>वस्य</del>-हिए ॥ ३ तः जडन्जिहा कछ ठवसमाद्दी सन्दर् तंजहा-नो इहस्मेग्द्धवाए तस्पत्ती हिला १ जो परक्षेगद्वबाए तबसहिद्विका २ जो किवियसहरिक्केग्द्वबाए वर्ष महिद्विमा १ नषरम निम्मरद्वनाए तपमहिद्विमा ४ वतन्त्र वर्ष मक्द्र। मध्य व इत्य सिक्सेगो निनिद्युजतबोरए निर्च मनद निरासए निजरिद्वए। तदसा प्रच पुरामपाष्य अच्चे सथा तबसमाबिए 🛭 🛪 ॥ च उन्निहा चक्क आबारसमधी मन्द्र तंत्ररा-मो इङ्मोमङ्कराए भाषारमहिद्विमा १ नो परस्रोगङ्कराए सामारमहिकिमा १ मो कित्तिवस्त्रस्तिक्रोयक्षयापु मासारमदिक्षिमा १ नवत्व आरहेतीहे हेर्स्स आसारमहिक्किमा ४ चलको पर्न समझ । समझ म इत्य शिकोगो-विकासमार् अर्दितिणे पश्चिपुण्यावस्थावनद्विए । आसारसमाहिसमुखे सन्दर् व रंते सन्दर्भ u < ॥ व्यक्तिमाम करते समाविको स्वित्वहो ससमाविकपको । विरुद्धिवै स्वार्क पुणी कुम्ब्स् सी पन्नेसम्मयन्यो ॥ ६ ॥ जाहसर्वाको सुचार, शत्काने व नगर सम्बन्ता । रिन्दे वा इन्द्र साधार, देने वा अप्यरए अदिश्विए ।। 🗸 व तिन्त्रीमे ॥ इति विणयसमाविणामणवममायणे चडत्यो उद्देशो समत्तो । ९४। णधममञ्जयर्व समर्च 🛚 🕻 🖁

<del>्रीयासम्मार</del> अ**इ** समिक्ख् णाम वसममज्ज्ञयणे

निक्चम्मसम्भाष्ट्रं व हुबस्यने विश्वं विश्वसमाधिको इनिका । सर्थान वर्षे व

गर्र ॥ २१ त ति-बेमि॥ इति समिबस्य जामे वसममञ्ज्ञायणे समर्छ । ! • !

### अह रहबका णामा पढमा चूलिया

इह सह भी ! पन्नहरूणं तप्पनहुनकोणं संजये अरहसमानविक्तेलं जोराउपे विमा अणोहाद्यूण चेव इयरस्सिययकुसपोयपवामाम्यादं इसाई अनुस्त सम्ब सम्मं संपविकेहियमाई मर्पेटि सबदा—ई मो ! इस्समाए हुप्पनीती १ म्हरूमा इत्तरिया निश्रीयो कामओया २ शुक्रो व साहबहुका मणुस्सा ३ इमे व मे इन्हें म चिरमाम्बद्धाई मनिस्चइ ४ भोमबचपुरकारे ५ बंतस्य व पडिमान महरगा-नासोवर्धपथा ७ दुब्रहे उन्छ मो ! गिहीय बन्ने मिहिबासम्बर्धे वश्या आमंत्रे से बहाय होद ९ संख्यों से बहाय होद १ सोबरेस विक्रिया निरमदेसे परिवाद १९ वंभे विद्विवास सुमन्ते परिवाद १२ समजे विद्वित भजनके परिसाए १३ बहुसाहारचा विहीसं कासमीना १४ परेसं पुन्वसर् ! भनिने पह मो । मणुपाण जीनिए इसम्मक्रानिपुचनके १६ नहें व एउ में पांच करम पगर्ड १७ पांचाय च रात सो ! कहार्च वस्तायं पुलि इविलान इप्पर्णियानं नेहता शुक्यो नित्व अनेहता स्वसा वा शोधहता १८ व्यासन पर्य भवद्र । भवद्र य इत्य छिकोगो--जना व चयहे बस्सं असजो मीवरात्या। छ तत्व मुच्छिए बाके आयई नाक्तुज्यहै ॥ १ ॥ जबा ओहासियो होर ही ह पिनो छमं । सम्बद्धमपरिकाद्वी स परात परितपर्द ॥ १ ॥ बना व केस्ट होइ पच्छा होइ सर्वियो । देवता व चुना ठावा स पच्छा परितन्तर ॥ र अया य पूरुमो होट, पच्छा होइ अपूरुमो । राजा व रजपन्मट्टो स पद्या क्रान्य हे 🕶 ॥ जया य माधिनी होद, पच्या होद कमाधिमी । सेड्रिज्य कमाडे 🖺 💆 पद्भा परितपाइ ॥ ५ ॥ जमा स थेरको होट, समार्थतत्रक्षका । अन्तर्भ । पितिता स पन्छा परितपकि ॥ ६ ॥ जया व चपु वेबस्य चनारे स्थानसी। इत्मी व वंश्रमे बद्धों स पच्छा परितर्णा । अ ॥ पुनवारपरिभिष्णो स्टेर्ड व संतम्मा। पंत्रासभी जहानामा संपद्धा परिनर्पर ॥ अत्र रहेनी हुता मानियप्पा बहुस्त्रजो । बह ई स्मठो परिपाए, सामण्डे जिब<sup>े हिर्</sup> । ९ व देकमागमानो च परिवाधी महेमियी। त्याम करवाने च महातरवणानेती हैं। भेमराष्मे आधिम तुकरामुत्तमे स्माण परिवाए सद्दारमाथ। शिर्श्नोण बन्देर

## [ १०१ ]

4 .	•	-				
Ęo	बादरनिगोद का खप० पर्याप्ता	1 8	18	1 ३	३	J!3
ं ६१	, पृथ्वीकायका ., "	٩	8	3	3	18
हिंच	ः, श्रापकायकाः ;, ,,	8	8	3	3	8,
ξş	बादर वाडकायका ,,श्चसं०गु०	१	8	3	3	1
र्देश	स्हम तेडकायका ., ,,	٠ و	8	3	3	m m
६४	स्हम पृथ्वीकायका ,, विरेषा	ع	8	3	3	`
46	,, श्चपकायका ,, ,,	8	٧.	3	3	3   2
60	n वायुकायका ,, ,,	8	8	3	3	av av
Ę	"तेडकायका पर्यास्ता सं०गुर	१	् १	8	3	3
33	"पृथ्वीकायका,, वि०	१	१	3	3	3
60	,, श्रपकायका ,, ,,	१	१	8	3	3
७१	,, वायुकायका ,, ,,	१	१	१	à S	३
७२	», निरोदका श्रव० श्रंसं. गु.	१	१	nγ	ą	<b>à</b>
७३	» ,, पर्याप्ता सं <b>०</b> गु०	š	१	१	३	. ` ३
७४		१ध	१	१३	Ę	"(6,
७४	पडवाइ सम्मितिही प्रनंत गु०	१४	१४	१५	१२	Ę
			'	•	í	

हुक्तमृत्तमं, रिमज तम्हा परियाए पिछए॥ ११॥ धम्माउ भट्ट सिरिओववेय, जन्निग विज्ञ्ञायमिवण्यतेय। हीलित ण हुन्त्रियं कुसीला, दाहुद्विय घोरिवस व नाग॥ १२॥ इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती, दुन्नामधिज च पिहुज्जणिम्म । चुयस्स धम्माउ अहम्मसेविणो, सिमन्नवित्तस्स य हिट्ठओ गई॥ १३॥ भुजितु भोगाइ पसज्ज्ञ चेयसा, तहाविह कहु असजमं बहु। गइ च गच्छे अणहिज्ञ्ञिय दुह, वोही य से नो मुलहा पुणो पुणो॥ १४॥ "इमस्स ता नेरइयस्स जतुणो, दुहोवणीयस्स किलेसवित्तणो। पिछिओवम झिज्ज्ञ्च सागरोवम, किम्म पुण मज्ज्ञ इम मणोदुह?॥ १५॥ न मे चिरं दुज्ज्विमण भवित्सइ, असासया भोगियास जतुणो। न चे सरीरेण इमेणऽविस्सइ, अविस्सई जीवियपज्जवेण में ॥ १६॥ जस्सेवमप्पा उ हिन्जा निच्छिओ, चइज्ज देह न हु धम्मसासणं। त तारिस नो पइलिति इदिया, उवितिवाया व सुदसर्णं गिरि॥ १७॥ इचेव सपस्सिय बुद्धिमं नरो, आय उवाय विविह वियाणिया। काएण वाया अदु माणसेण, तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिद्धिजासि॥ १८॥ ति—वेमि॥ इय रहचका णामा पढमा चूळिया समत्ता॥ १॥

# अह विवित्तचरिया णामा बीया चूलिया

बुलिय तु पवक्खामि, सुय केविलिभासिय। ज सुणितु सुपुण्णाणं, यम्मे उप्पजए मई॥ १॥ अणुसोयपिट्ठिए बहुजणिम्म, पिट्ठसोयलद्भलेक । पिट्ठसोयमेव
अप्पा, दायन्वो होउ कामेण ॥ २॥ अणुसोयसहो लोओ, पिट्ठसोओ आसवो
स्वितिहयाण। अणुसोओ ससारो, पिट्ठसोओ तस्स उत्तारो ॥ ३॥ तम्हा आयारपरक्रमेण, सवरसमाहिबहुलेण। चिर्या गुणा य नियमा य, हुित साहूण दहुन्वा
॥ ४॥ अणिएयवासो समुयाणचिर्या, अन्नायज्ञ पहिक्कया य। अप्पोवही
कलहिवज्जणा य, विहारचिर्या इसिण पसत्या ॥ ५॥ आह्ण्णोमाणिवज्जणा
य, ओसन्निद्दाहङभत्तपाणे । ससद्वकप्णेण चिर्ज भिक्ख, तज्जायससद्व जई
जहज्जा ॥ ६॥ अमज्जमसासि अमच्छरीया, अभिक्खण निन्वगङ् गया य।
अभिक्खण काउस्सम्मकारी, सज्झायजोगे पयओ हिवजा॥ ०॥ न पिट्जिवजा
सयणासणाइ, सिज निसिज तह भत्तपाण। गामे कुले वा नगरे व देसे, ममतभाव न किंह पि कुज्जा॥ ८॥ गिहिणो वेयाविह्य न कुजा, अभिवायण वदणपूयण वा। असिकिलिट्ठेहिं सम विस्जा, मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी॥ ९॥
न या लभेजा निउण सहाय, गुणाहिय वा गुणओ सम वा। इक्को वि पावाइ

विवस्त्रकीती विवृद्धिक कामग्र कराजवाणों ॥ १ ॥ श्रेषकार वालि पर पार्थ वीर्य व तार्थ न तार्ष्ट्र विव्या । श्राप्तस्त्र मानेश्य विद्या स्थित्व अस्त्र आलेक् ॥ १९ ॥ जो पुन्यत्यावत्याके पेरिक्ष्य स्थानम्प्रत्य । "है वे का कि कि के कि कि के कि का का कि का का कि का का कि का का कि का का कि का का कि का का कि का कि

॥ दसवेगालियसत्त समस्त ॥



### णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

### <sub>तत्य</sub> णं उत्तरज्झयणसुत्तं

**その歌り**か

## अह विणयसुयं णामं पढममज्झयणं

सजोगा विप्पमुक्स्स, अणगारस्स भिक्खुणो । विणय पाउकरिस्सामि, आणुपुटिंव चुणेह मे ॥ १ ॥ आणानिद्देसकरे, गुरूणमुववायकारए । इगियागारसपन्ने, से विणीए ति बुचई ॥ २ ॥ आणाऽनिद्सकरे, गुरूणमणुववायकारए । पडिणीए असबुद्धे, अविणीए ति बुचई ॥ ३ ॥ जहा सुणी पूइकण्णी, निक्कसिजई सन्वसो । एव दुस्सीलपहिणीए, मुहरी निक्सिजई ॥ ४ ॥ कणकुण्डग चइत्ताण, विद्व भुजइ सूयरे। एव सील चइत्ताण, दुस्सीले रमई मिए ॥ ५॥ म्रणिया भाव साणस्स, सूय-रस्स नरस्स य । विणए ठवेज अप्पाण, इच्छतो हियमप्पणो ॥ ६ ॥ तम्हा विणय-मेसिजा, सील पडिलमेज्जो । वुद्धपुत्त नियागद्वी, न निकसिज्जइ कण्हुई ॥ ७ ॥ निस्सते सियाऽमुहरी, बुद्धाण अतिए सया । अहुजुत्ताणि सिक्खिजा, निरहाणि उ वजए ॥ ८ ॥ अणुसासिओ न कुप्पिजा, खर्ति सेविज पहिए । खुड्रेहिं सह ससम्मि, हास कीड च वजाए॥ ९॥ मा य चडालिय कासी, बहुय मा य आलवे। ग्रलेण य अहिजिता, तभी झाइज एगगो ॥ १० ॥ आहच चडालिय कडु, न नेण्ह्विज क्याइ वि । कड कढे ति भासेजा, अकड नो कढे ति य ॥ ११॥ मा ालियस्सेव कस, वयणमिच्छे पुणो पुणो। कस व दहुमाइण्णे, पावग परिवज्जए॥ १२॥ भणासवा थूलवया कुसीला, मिउं पि चड पकरंति सीसा। चित्ताणुया लहु दक्खोव-वेया, पसायए ते हु दुरासय पि ॥ १३ ॥ नापुद्वो वागरे किचि, पुद्वो वा नालिय वए । कोह असम्ब कुन्वेज्जा, धारेज्जा पियमप्पिय ॥ १४ ॥ अप्पा चेव दमेयन्वो, अप्पा हु खळु दुइमो । अप्पा दत्तो सही होइ, अस्सि लोए परत्थ य ॥ १५ ॥ वर्र में अप्पा दतो, सजमेण तवेण य। माह परेहि दम्मतो, वंधणेहिं वहेहि य॥ १६॥ पिंडिणीय च बुद्धाण, याया अदुव कम्मुणा । आवी वा जइ वा रहस्से, नेव कृजा ६२ सुत्ता०

क्याद्र नि ॥ ९७ ॥ न परस्यको न परको सेन कियाज किस्तो । स इस स्टब्स पाए पसारिए वाकि म निद्धे पुरर्णतिए ॥ १९ ॥ सामरिएक्ट बाक्रिको द्वितिकी न क्याइ मि । प्रमानपेडी नियागदी सवस्तिहे गुड स्या ॥ २ ॥ आसर्वि वर्ष वा n निर्द्योगम क्याइ वि । वहकनमासर्थं त्रीरो कलो सत्त पश्चित्रकी ॥ १९ म आसम्बन्धे न प्रच्छेन्या नेव सेनायमो क्वाह वि । कायम्बह्हमो स्तो प्र<sup>विक्रम</sup> पंजनीयको ॥ २२ ॥ एवं विभागतातस्य सर्तं बस्यं च तकस्यं । अक्रमाणस्य सीसस्य बागरिज व्यवसार्थ ॥ २३ ॥ मुद्दं परिवारे निकल, न स नोहारिज बए । मासादोसे परिवरि मान व नजाएसया ॥ २४॥ न समेज उद्घे साव न निर्दे न सम्मर्थ । भणाषद्वा पर्दा था । सम्बन्धितरेष था ॥ १५ ॥ सम्बन्ध कगारेस, संबीद य सहापते । एमी एमिलिए सर्कि नेव बिक्रे व सेवने हे रहे हैं में में मुखाऽशुशार्थित चीएण फरहेच दा । सम कामी ति पेहाए, पनमी है की स्तुने ॥ २० ॥ स्ट्रासासमोगार्वे तुद्धहरस य चोतर्व । द्वितं सं मण्डे विसं होर कसाहुगो ॥ २४ 0 क्षिये विगयमया प्रका प्रक्रमें पि व्हासाहने। सि व पर वस प्रशाहना व र क छात्र । प्रशासनाथ कुछा प्रस्तुव । वस्तुव स्तर्य । वस्तुव स्तर्य विश्व स्तर्य स ल विद्वेता निवन्द् बतेसर्व चरे । प्रक्रिकेट एक्सि सिर्व शकेन सन्दर् ॥ १२ ॥ नाइबुरमणास्त्री नाऽचीर्स चारमुणास्त्रो । क्यो निदेश मास्त्र स्तिर र्श्व प्रदेशकार विश्व का निष्या कार्या । प्रमा कार्य । प्रमा कार्या । प्रमा कार्य । प्रमा कार्या । प्रमा कार्य । प्रमा कार्या । प्रमा कार्य । प्रमा कार्या समयं सेवप् मुंते वर्षे अपरिशादिर्थं ॥ १५ ॥ शब्दिति श्रपदिति श्र प्यति असे १ प्रभावित । १९ ॥ श्वास्त्र ध्यारण स्थित। १६ ॥ स्थारण स्थित। १६ ॥ स्थारण स्यारण स्थारण स्था स्यारण स्थारण स्थारण स्थारण स्थारण स्थारण स्थारण स्था स्थारण स्थारण ता १८ ॥ पुत्तो में माय नाइति साहु कक्षाण मन्द्रीः प्रवसिद्धित झमार्च तर्व वातिति मन्द्रित ३९ व न केनए सावरियं क्यार्थ दि न केनए। इंटरन्य स्विमा न दिया दोल्मानेसए ॥ व अवस्थित व्यवस्थित स्वार्थ दिन स्वार्थ ।

विज्ञानेक पंजबीतको वर्क न पुणो ति य १ ४० १ धरमानियं व नवारि बुद्रोहामरिन छ्या । समायरोतो ववहारे, यदा नाभिष्यक ॥ ४१ ॥ स्थापनी वक्षगथ, जाणितायरियस्स उ । तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥ ४३ ॥ वित्ते अचोइए निच्च, खिप्प हवइ मुचोइए । जहोवइट्टं सुक्य, किचाइ कुन्वई सया ॥ ४४ ॥ नचा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जायए । हवई किचाणं सरणं, भूयाण जगई जहा ॥ ४५ ॥ पुजा जस्स पसीयंति, सवुद्धा पुन्वसथुया । पसना लाभइस्सति, विउल अद्विय सुय ॥ ४६ ॥ स पुजसत्ये सुविणीयससए, मणोर्क्ड चिट्ठड कम्म-सपया । तवोसमायारिसमाहिसवुढे, महजुई पच वयाइ पालिया ॥ ४७ ॥ स देव-गयव्यमणुस्सपूइए, चइ्तु देह मलपकपुन्वय । सिन्दे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिद्विए॥ ४८ ॥ ति-चेमि ॥ इति विणयसुयंणामं पढममज्झयणं समन्तं ॥ १ ॥

# अह परिसहणामं दुइयमज्झयणं

सुय में आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय, इह खळु वावीस परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया जे मिक्ख सोचा नचा जिचा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयतो पुट्टो नो विनिहन्नेजा, कयरे खळ ते वावीस परीसहा समणेण भगवया महावीरेणं कासवेण पवेड्या जे भिक्ख् सोचा नवा जिचा अभि-भूय भिक्खायरियाए परिव्वयतो पुद्वो नो निनिद्दनेचा १ इमे खलु ते वावीस परीसहा समणेण मगवया महावीरेण कासवेण पवेइया जे भिक्ख सोचा नचा जिन्ना अभिमूय भिक्ष्कायरियाए परिव्वयतो पुद्धो नो विनिह्नेजा, तजहा-दिगिछा-परीसहे १, पिवासापरीसहे २, सीयमरीसहे ३, उसिणपरीसहे ४, दंसमसयपरी-सहे ५, अचेलपरीसहे ६, अरडपरीसहे ७, इत्थीपरीसहे ८, चरियापरीसहे ९, निसीहियापरीसहे १०, सेजापरीसहे ११, अक्षोसपरीसहे १२, वहपरीसहे १३, जायणापरीसहे १४, क्षलामपरीसहे १५, रोगपरीसहे १६, तणकासपरीसहे १७, जल्लपरीसहे १८, सक्कारपुरकारपरीसहे १९, पन्नापरीसहे २०, अन्नाणपरीसहे २१, दसणपरीसहे २२ । परीसहाण पविभत्ती, कासवेण पवेइया । त मे उदाहरिस्सामि, साणुपुर्वि सुणेह मे ॥ १ ॥ (१) दिगिंछापरिगए देहे, तवस्सी भिक्ख थामव । न छिंदे न छिंदानए, न पए न पयावए ॥ २ ॥ कालीपव्वगसकासे, किसे धमणि-सतए । मायने असणपाणस्स, अबीणमणसो चरे ॥ ३ ॥ (२) तओ पुद्दो पिना-साए, दोगुंछी ळजसजए । सीओदग न सेविजा, वियहस्सेसण चरे ॥ ४ ॥ छिन्ना-नाएस पथेस, आउरे सुपिनासिए। परिस्नक्षसुहाऽदीणे, त तितिक्खे परीसहं॥ ५॥

(१) चरंत विरव सर्वे, सीर्य फुसह एगमा । महब्सेल सुजी गच्छे सोबार्ज विस् सासजं ॥ ६ ॥ न के निवारणं अस्थि अस्थिताणं न विजाई । अर्द्ध तु सर्वि धीरेन घर ॥ त म जनाएण सारक स्वयत्ताच त अस्त्र । अस्त्र तथन धेनामि दर निरुष्ट न वित्र घण्या (४) उरियोग परियानेन परियत्ति होन्स विद्व ना परियानेन सार्व नो परिवरण ॥ ८०॥ उच्चाबित्ता ने नेहानी वित्र में नि परुष्य । यार्व नो परिविचेत्रका न बीएका न कप्तमी ॥ २॥ (५) इस्त्रे न दसमस्पर्धि, समरे न महासुष्टी। मागो पैपायसीसे ना सुरो समिन्न परे न ॥ न संतरे न बारेका अर्थ पि न प्रशेसप । त्रके व इत्रे यात्रे अंतरे संस्पेत्रिये न उत्तर न बारच्या स्थापा न प्रकारस्य । उत्तर यह इस पास अध्य राज्य ॥ १९॥ (६) परितृष्णीई सर्योई, श्लेमबासि शि सम्बेक्स । सदुवा श्लेम श्लेमबासि इस स्मिन्स न वित्तर्य १९॥ एनायाल्येक्स होर, श्लेके सामें स्थ्या एर्ज सम्में हिर्द नम्बा सामी नो परिदेवस ॥ १३॥ (७) धासस्यमं टेस्ट्रें, एम बन्ध हुए नचा भागा था पारहरू ता १६ हा ५५ धानकुरा उत्तर करणारि सक्तिकर्ण । कार्य क्ष्युप्यवेधेजा है डिलिक्स परीवर्ष ता १४ हा कर्र पिट्ठाने किया किरए सावर्षित्रण । सम्बाराओं डिलिक्स रावर्षेत्र ही मी परे धा १५ ता (४) सेनो एस मन्त्राणं साओं खोचसिन इस्स्कित सहस् स्वा प्रके चाया एक रत्य सामन्त्रं ॥ १६॥ एवमावाय मेहावी पंकन्या व हरिवर्त्रः। भावन क्षेत्रक उत्तर प्रानामा । १९ ॥ एवशावान सहावा १४०५॥ च ४००० मी ताई विकिदकेमा मरेमाउत्तरवेसए ॥ १७ ॥ (९) एस एव बरे काई मिन्स् परीसहे । नामे वा अपरे वामि निगमे वा रामहानिए ॥ १८ ॥ अस्ताने वरे निस्त्व, नेत्र कुला परिवाह । अर्थकरो निहरनेहि, समिएको परिवाद है १९ है मिन्स, नेव कुमा परिवाह। वर्षकरों शिहानेही, समिएसो एरेम्पर ह 174 (१) क्यांने प्रकारि वा काव्यक्ते व एक्को । स्वाह्मे तिर्वाहना तर्व विद्यालय सर्व ॥ १ ॥ तत्व वे विद्यालयः व व्यक्तमानिवाहः। प्रवाधि व राज्येमा उद्धिता समाराजं ॥ १९॥ (१९) समाराजं ह कार्यी, वस्त्रों तिन् वामर्व । नार्वेकं विद्वालया प्रवाधि विद्यालया । युक्तिक्रास्त्र । १९॥ प्रविद्युक्तस्य व्यक्तमान्युव । प्रवाह । व्यक्तिक्रास्त्र । १९॥ क्याम्पर्युव पायं । क्रिमेगार्य व्यक्तिक्रास्त्र । व्यक्तिक्रास्त्र । व्यक्तिक्रास्त्र । विद्यालये व्यक्तिक्रास्त्र । विद्यालये व्यक्तिक्रास्त्र । विद्यालये व्यक्तिक्रास्त्र व्यक्तिक्रास्त्र । व्यक्तिक्रास्त्र व्यक्तिक्रास्त्र व्यक्तिक्रास्त्र व्यक्तिक्रास्त्र । व्यक्तिक्रास्त्र व्यक्तिक्रास्त्र व्यक्तिक्रास्त्र व्यक्तिक्रास्त्र । व्यक्तिक्रास्त्र विद्यालया । व्यक्तिक्रास्त्र विद्यालया व्यक्तिक्रास्त्र व्यक्तिक्रास्त्र विद्यालया । ण ठाजो अरुवी करें है। १५ ॥ (१६) इस्त्रों स स्वक्षेत्र सिक्ष्य, तसे पिण प्रकेश । वितिम्त्रं परर्म तथा तिमन्त्रं सम्प्र सिक्षित्रं स १६ ॥ सत्त्रं स्वत्रं से हैं स्वत्रं सितिम्त्रं परर्म तथा तिमन्त्रं सम्प्र सिक्षित्रं स १६ ॥ सत्त्रं स्वत्रं से हैं स्वत्रं चंद्र मो निर्म क्यारस्य निवक्तो । सम्बं से बाहर्य होह, वरित्र हिनि क्रांत्री १ १ ४ ६ व गोमरागपित्रस्य पाणी जो प्राप्तारप् । सेजो बगारवाग्रणि सः विश्व व विराप् ॥ १५ ॥ (१५) परिस्न वासमेक्षेत्रमा सोवचे परिविद्धिप् । कर्रे होई वर्णने

वा, नाणुतप्पेज पिटए ॥ ३० ॥ अजेवाह न लन्मामि, अवि लाभो छए सिया । जो एवं पडिसचिक्खे, अलामी त न तज्जए ॥ ३१ ॥ (१६) नचा उप्पइयं दुक्खं, वेयणाए दुहिहुए। अदीणी थावए पन्न, पुद्धो तत्थरिह्यासए॥ ३२॥ तेइच्छ नामिनदेजा, सचिक्खऽत्तगवेसए। एवं ख तस्स सामण्ण, ज न कुजा न कारवे ॥ ३३ ॥ (१७) अचेलगस्स छहस्स, सजयस्स तवस्सिणो । तणेषु सयमाणस्स, हुज्जा गायविराहणा ॥ ३४ ॥ आयवस्स निवाएण, अउला हवह वेयणा । एव नचा न सेवति, ततुज तणतिज्ञया ॥ ३५ ॥ (१८) किलिनगाए मेहावी, पंकेण व रएण वा । विंधु वा परियावेण, साय नो परिदेवए ॥ ३६ ॥ वेएजा निज्जरापेही, आरिय घम्मऽणुत्तरं । जाब सरीरमेउत्ति, जल्ल काएण धारए ॥ ३७॥ (१९) अभिवायण-मन्भुद्वाण, सामी कुजा निमतणं। जे ताइ पिंडसेवंति, न तेसि पीहए मुणी॥ ३८॥ अणुक्साई अप्पिन्छे, अन्नाएसी अलोल्डए । रसेसु नाणुगिज्झेजा, नाणुतप्पेज पन्नव ॥ ३९ ॥ (२०) से नूण मए पुन्व, कम्माऽणाणफला कहा। जेणाह नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥ ४० ॥ अह पच्छा उङ्जति, कम्माऽणाणफला कडा । एव-मस्सासि अप्पाण, नचा कम्मविचागय॥ ४१॥ (२१) निरष्ट्रगम्मि विरखो, मेहुणाओ ब्रसंबुडो । जो सक्स नाभिजाणामि, धम्म कल्लाणपावग ॥ ४२ ॥ तवीवहाणमादाय, पिंडिम पिंडिवजाओ। एव पि विहरसो में, छउम न नियदृई ॥ ४३ ॥ (२२) नित्थ तूण परे लोए, इड्डी वाबि तवस्सिणो । अदुवा विचेशोमित्ति, इइ भिक्ख् न चिंतए ॥ ४४ ॥ अभू जिणा अत्यि जिणा, अदुवा वि भविस्सइ । मुस ते एवमाहसु, इइ भिक्ख न चिंतए ॥ ४५ ॥ एए परीसहा सब्वे, कासवेण पवेइया । जे भिक्ख न विहक्षेजा, पुद्रो केणइ कण्हुई ॥ ४६ ॥ ति-बेमि ॥ इति परिसहणामं दुइय-मज्झयणं समत्तं॥ २॥

## अह चाउरंगिजं णाम तइयमज्झयणं

चत्तारि परमगाणि, दुल्हाणीह जतुणो। माणुसस सुई सद्धा, सजमिम य वीरियं॥ १॥ समावनाण ससारे, नाणागोत्तास जाइस । कम्मा नाणाविहा कहु, पुढो विस्समया पया॥ २॥ एगया देवलोएस, नरएस वि एगया। एगया आसुरं काय, सहाकम्मेहिं गच्छड ॥ ३॥ एगया खत्तिओ होइ, तओ चढालबुक्सो। तओ कीडपयगो य, तओ कुंशुपिवीलिया॥ ४॥ एवमावह्रजोणीस, पाणिणो कम्म-किल्विसा। म निविज्ञति ससारे, सम्बद्धेस व खतिया॥ ५॥ कम्मसगेहिं समृहा,

दुनियाम बहुनेवणा । जसानुसास जोजीस विलिद्ध-मेरि पानिजो प ६ व कमार्च तु पद्मानाए, आणुपुन्नी कमाइ च । श्रीना सोविमकुप्पता नामर्गेदि स<del>ङ्गा</del>नं ॥ ७ ॥ माजुर्स्ट निस्पई कई, धुई भरमस्य दुक्का । ज सोचा पढिककत त्र वंदिमहिंसने ॥ ८ ॥ ब्याह्च समर्ग ब्याह, सदा परमञ्जूला । सोबा देशाने समा बहुवे परिसरसङ्ग् ॥ ९ ॥ छई च कर्नु सर्वः च बीरिन पुण कुछः। वहाँ रोजमाना वि नो य न पश्चिमजाए ॥ १ ॥ मालुसत्तीम जानाची ची कर्य साम सब्दे । तमस्यी मीरियं कहा, संख्डे निहाणे रमं त १९ ॥ सोही उसून मृगस्य अपनो क्ष्यस्य निद्वहै । निज्यार्थं परमं जाडः अमसिक्तिन्य पावर ॥ ९० ह मिनिक कम्मुको हेर्च कर्स सेविन बंदिए। सरीर पार्क क्रिका उर्द्र प्रसार कर ॥ ११ ॥ विसाविनोही चीकेही, कान्या कत्तरकत्तरा । महास्थ्या व विप्यता स्वय क्युणवर्ष ॥ १४ ॥ लिपना देवकामार्ग कामक्त्रमित्रमित्रो । तर्ष क्ष्में विद्वेरी पुरूष वाससवा बहु ॥ १५ ॥ तत्व ठिवा वहाठार्थ वसवा अत्रक्त पुना । जर्नेति मालुएं कोनि से प्रशंगेऽमिकासए ॥ १६॥ केर्स गर्ख हिराने प् पक्को वासपोरुषं । अतारि कामखंगामि तत्प से उक्कामी ॥ ९७ ॥ निर्ण भावने होत्, उनागोए य नव्यने । सप्पार्वके सहापने असिवाए क्सी के 8 16 8 पुचा माजुरसप् मोए, अप्यविक्रमे अहातर्ग । पुर्ण मिखदास्याम्मे नेवर्ग गोर्ड दुनिसमा ॥ १९ ॥ कर्रणं दुक्कं तथा चेवसं पविवक्तिमा । तवस पुरस्मी सिके इनइ सासए ॥ २ ॥ ति-नेमि ॥ इति चातरंगिका जाम तहन सकायणं समर्च 🏻 🦫 🖺

#### <del>्राण्डः ।</del> शह असंस्रय णाम चडस्यम<del>स्</del>रयणं

वीससे पंढिएँ आछपणे। घोरा मुहुत्ता अवलं सरीरं, भारंडपक्खीव चरेऽप्पमत्ते ॥ ६ ॥ चरे पयाइ परिसक्ताणो, जं किंचि पास इह मन्नमाणो। लाभतरे जीविय वृहइत्ता, पच्छा परिनाय मलावधसी ॥ ७ ॥ छद निरोहेण उवेइ मोक्ख, आसे जहा सिक्खियवम्मधारी। पुव्वाइ वासाइ चरेऽप्पमत्तो, 'तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्ख ॥ ८ ॥ स पुव्वमेवं न लमेज पच्छा, एसोवमा सासयवाइयाणं। विसीयई सिढिले आउयम्मि, कालोवणीए सरीरस्स मेए ॥ ९ ॥ खिप्प न समेइ विवेगमेउ, तम्हा समुद्वाय पहाय कामे। सिम्ब लोय समया महेसी, आयाणुरक्खी चरे-ऽप्पमत्तो॥ १० ॥ मुहु मुहु मोहगुणे जयत, अणेगस्ता समण चरत । फासा फुसति असमजस च, न तेसि भिक्ख् मणसा पउस्से ॥ ११ ॥ मदा य फासा वहुलोहणिजा, तहप्पगरिम्र मण न कुजा। रिक्खिज कोह विणएज माणं, मायं म सेवेज पहेज लोह ॥ १२ ॥ जेऽसखया तुच्छपरप्पवाई, ते पिजदोसाणुगया परज्ञा। एए अहम्मे त्ति दुगुछमाणो, कखे गुणे जाव सरीरमेउ ॥ १३ ॥ ति-वेमि ॥ इति असंखयं णाम चडत्थमज्झयणं समत्तं ॥ ४ ॥

# अह अकाममरणिजं णामं पंचममञ्झयणं

अण्णवित महोहित, एगे विण्णे दुक्तरे। तत्थ एगे महापन्ने, इम पण्हमुदाहरे। १॥ सितमे य दुवे ठाणा, अवस्वाया मरणितया। अकाममरेण चेव, सकाममरेण तहा॥ २॥ वालाण अकाम तु, मरण असइ भवे। पिडयाण सकामं तु, उद्योसेण सह भवे॥ ३॥ तत्थिम पढम ठाण, महावीरेण देसिय। कामिगेद्वे जहा बाले, भिस कुराइ कुव्वई॥ ४॥ जे गिद्धे काममोगेसु, एगे कूटाय गच्छई। न मे दिष्ठे परे लोए, चक्खिरहा इमा रई॥ ५॥ हत्यागया इमे कामा, कालिया जे अणागया। को जाणइ परे लोए, अत्थि वा नित्य वा पुणो॥ ६॥ जणेण सिद्धं होक्खामि, इइ वाले पगव्मई। कामभोगाणुराएण, केस सपिहवर्जाई॥ ७॥ तओ से दह समारमई, तसेसु यावरेसु य। अद्वाए य अणहाए, भूयगामं विहिंसई॥ ८॥ हिंसे वाले मुसावाई, माइले पिसुणे सढे। मुजमाणे सर मस, सेयमेय ति मन्नई॥ ९॥ कायसा वयसा मते, वित्ते गिद्धे य इत्यासु। दुहुओ मल सिचणइ, सिसुणागुव्य मिट्टय॥ १०॥ तओ पुट्टो आयंकेण, गिलाणो परितप्पई। अभीओ परलोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो॥ १९॥ सुया मे नरए ठाणा, असीलाणं च जा गई। यालाण कृरकम्माण, पगाडा जत्य वेयणा॥ १२॥ तत्थोववाइयं ठाण, जहा

929

मेदम्बुस्टर्न । अञ्चलक्रमेद्री यच्छेतो को परका परिश्वको ॥ १३ ॥ बहा सम्पत्रिको जार्ग समें दिया महापर्ह । विसर्ग समामोडण्यो अवन्ते सम्बन्धि सोमाँ व १४ है एवं पानों नितकाम जहारों पश्चित्रजिया । बाक्रे सम्बन्धं पते अन्त्रे मने व सोमई ॥ १५ ॥ तमो से मरमैतम्म बाके संतसक्षे भया । अवस्ममर्थं मरह, डि ष कलिया जिए ॥ १६ ॥ एथं अन्ताससरण वास्त्रमं तु परेत्रवं । इत्ती सकसमर्व पंक्रियानं स्वेद मे ॥ ९७ ॥ मरणं पि सपुण्याणं व्यक्त मेयम<del>णुर</del>सूत्रं । विप्यस्व मणावार्य चंत्रवाच वृत्तीमको ॥ १८ ॥ म इम सन्वेद्य सिक्चान, न इमं सन्वे हुऽगरिद्ध । नाषाचीका स्थारत्या सिसमचीका य मित्रस्थो ॥ १९ ॥ सदि स्थे भिनवाहै, गारत्था सबसुत्तरा । बारत्येक्षि य सम्बेक्षि, साहवो संबन्तरा 🗷 रै 🧵 चीराखिणं निरामिणं वाको संवासि सक्षिणं । एवासि वि न तार्यति इस्सी प्रेरी-गर्भ ॥ २९ ॥ रिंडोक्स्ट्रम् इस्तीके नरगानो न सम्बद्दे । मिन्द्राए वा किस्ते वा पुरुष कमाई दिनं ॥ २२ ॥ कगारि सामाहर्गगानि सङ्गी काएन कसरे ! पोचई दुइसो धनकं पुगरामं न इत्तर ॥ २३ ॥ एवं सिक्तासमारके निर्हराचे वि दुव्यए । सुबई क्रमिनमाओं गच्छे का<del>वस्ता</del>रोगर्व ॥ ९४ ८ वह वे सं<sup>हो</sup> निक्ष, दोर्च कवनरे सिया । सम्बद्धकक्षपहीचे वा देवे वाले सदिविए ॥ १५ ६ उत्तरहं निमोदादं, शुद्दैर्गताऽनुपुम्बसो । समाद्रम्बादं स्व्यवेदिं, वादासादं क्रांतिनी ॥ २६ ॥ ग्रीहाउना वृद्धिनंता समिका कामक्षिको । अहुबोनस्वर्धकरा सुन् सचिमावित्यमा ॥ ९७ ॥ ताथि ठावाथि सर्व्यादी सिविवता संतर्म तर्व । निक्वाद वा निहरमें वा को संदि परिनिन्तुका।। २८ ॥ देखि स्त्रेमा सपुत्रामं इस्त्राम वुचीसम्बे । ॥ चंतरंदि सरमंते चीक्नंता बहुस्ख्या ॥ १९ ॥ <u>व</u>क्रिया <del>विदेशा</del>र्थ व्यावस्मस्य वृद्धियः। निप्पतीयुक्त नेद्वाती तद्वासूय्य कृप्या ॥ ३ ॥ तसी नर्ले अभिप्पेप्, सङ्ग्री ताकिसमंतिप्। निषप्जा क्रोमहरिसं भेर्य वेहस्स कंटए ॥ १९॥ अर्ड मासम्मि एती भाषायाव समुस्सर्य । सम्बन्धरूपं मर्गः, तिम्बनवर्यः मुन्ने ॥ ११ ॥ ति-वेमि ॥ इति अकाममर्ग्यासे जासे पंचममस्त्रयणं समर्च ॥ ५३

### भह खुडुागणियंटिज णामं छहमजायणं

कार्यत् भ १ । तमिनक पंतिप् तस्ता पासकात्रपहे बहु । अपना सकतेन मेर्ति मूएस कप्पयु॥ २ ॥ माना पिता च्हुसा आया शजा पुरा व कोरा।

वस० द्यपर्याता द्यरां भार

श्चापद्यांच्या वि०

30 50

uc,

ह ०

51 समुख्यम काइर० वि०

4 **प्रत्य बनावति अवर्या**ता थन 58

ध्यपर्याप्ता वि०

बन पर्याप्ता संव गुरू ςγ.  $\subseteq k$ 

प्रधाप्ता० कि

<4

समुख्यम सुझ्म० कि० सबसिक्षि जीव विक

50 निगांच का शीव विश

52 55

यकदिव श्रीक कि०

तियम जीव विक

बनस्पति जीब कि०

ŧ٤ 2

ŧ

Ę 3 ŕ

\$ 0

8 ŧ

ě ŧ

ŧ ŧ

ŧ ŧ

ঽ 8

×

×

ą

3

12

= 6

ŧ 2

3

ş

3

3

3

ą

ŧ ¥

3 ş

ŧ

नालं ते मम ताणाए, लुप्पतस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥ एयमह सपेहाए, पासे समिय-दसणे। छिंदे गिद्धिं सिणेह च, न कखें पुन्वसथव ॥ ४॥ गवास मणिकुंडलं, पसवो दासपोरुस । सन्वमेय चडत्ताण, कामरुवी भविस्सिति ॥ ५ ॥ (थावर जंगम चेव, धर्ण धन्न उवक्खर । पचमाणस्य कम्मेहिं, नाल दुक्याओं मोयणे॥) अज्झत्य सञ्चओ सञ्च, दिस्य पाणे पियायए । न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए ॥ ६ ॥ आयाण नरय दिस्म, नायएज तणामवि । दोगुंछी अप्पणो पाए, दिन्न भुजेज भोयणं ॥ ७ ॥ इहमेगे उ मन्नंति, अप्पन्तक्खाय पावग । आयरिय विदित्ताण, सब्बदुक्खा विमुचर्ड ॥ ८ ॥ भणता अकरेंता य, वंघमोक्खपइण्णिणो । वायाविरियमेत्तेण, समासासिति अप्पय ॥ ९ ॥ न चित्ता तायए भासा, कुओ विजाणुसासण । विसन्ना पावकम्मेहिं, वाला पिडयमाणिणो ॥ १०॥ जे केइ सरीरे सत्ता. वृष्णे रुवे य सञ्वसो । मणसा कायवक्षेण, सञ्वे ते दुक्खसभवा ॥ ११ ॥ आवना दीहमद्भाण, ससारामे अणतए । तम्हा सञ्वदिस पस्स, अप्पमत्तो परिन्वए ॥ १२ ॥ वहिया उद्दुमादाय, नावकले कयाइ वि । पुव्यकम्मक्खयद्वाए, इमं देह समुद्धरे ॥ १३ ॥ विगिच कम्मुणो हेउ, कालकखी परिव्वए । मार्थ पिंडस्स पाणस्म, कड लढ्ण भक्खए॥ १४॥ सन्निहिं च न कुन्वेजा, लेवसायाए सजए। पक्खीपत्त समादाय, निरवेक्खो परिव्वए ॥ १५ ॥ एसणासमिस्रो लज्जू, गामे अणियओ चरे । अप्पमत्तो पमत्तेहि, पिंडवाय गवेसए ॥ १६ ॥ एव से उदाह अणुत्तरनाणी, अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदसणधरे । अरहा नायपुत्ते भगव, वेसालिए वियाहिए ॥ १७ ॥ त्ति-वेमि ॥ इति खुडुागणियंठिज्ञं णामं छट्टमज्झयणं समतं॥६॥

## अह एलइज्जणामं सत्तममज्झयणं

जहाएस समुद्दिस, कोइ पोसेज एलय । ओयण जवस देजा, पोसेजा वि सयगणे ॥ १ ॥ तओ से पुट्टे परिवृढे, जायमेए महोदरे । पीणिए विउले देहे, आएस परिकखए ॥ २ ॥ जाव न एइ आएसे, ताव जीवइ से दुही । अह पत्तिम्म आएसे, सीसं छेतूण मुर्जाई ॥ ३ ॥ जहा से खल उरच्मे, आएसाए समीहिए । एवं वाले अहम्मिट्टे, ईहई नरयाउय ॥ ४ ॥ हिंसे वाले मुसावाई, अद्धाणंमि विलोवए । अन्नदत्तहरे तेणे, माई क नु हरे सढे ॥ ५ ॥ इत्थीविसयगिद्धे य, महारमपरिग्गहे । मुजमाणे सुरं मंस, परिवृढे परंदमे-॥ ६ ॥ अयकक्षरभोई य, तुदिल्ले चियलोहिए ।

१ दक्षाचं। १ दक्स'।

### भह नमिपन्यजा नामं नवममजसयणं

न्यस्य देवस्रोगाको स्ववको गाणुर्वमि कोर्गमि । स्वसंसमोद्दमिको सर्प पोराचिमं बाई ॥ १ ॥ बाई सरितु मन्त्रं समेंबुद्धो अनुतरे धम्मे । पुत्ते मेप रके, अभिनित्वार्य नभी राजा ॥ २ ॥ सो बेनसोपसरिसे अंतेउरवरमको वरे भोए । मुंबिनु मनी राया कुछो मोगे परिवर्या ॥ १ ॥ मिहिनं सपुरवकारं बक्रमोरोई व परिवण सन्नै । विचा अभिनिवर्कतो एगतमहिद्विको मन्दै ह Y ! कोसाहकामूर्य आसी मिक्काए पक्कर्यतीम । तहना राजरिसिम नर्जीय असिविककारतीम ॥ ५ ॥ कक्सुद्विवं एचरिसि पवजाठाक्सुरुसं । सको स्वर्ण रुपेण इसे वयवसम्बन्धी u ६ n कि तु भो! कव निर्देखाए, कोठाहरूपाई क हम्मति दारणा सहा पासापुछ मिहेह य n v n एवसई निसामिता हेळ्डार भोरूयो । तको मनी रायरिणी देवितं इत्रमध्यवी ॥ ८ ॥ मिक्किए वेरेए क्लै. सीनकार् मणोरमे । पत्तपुष्पफकोनेए, बहुर्थ बहुगुन्ने समा ॥ ६ ॥ बार्व हैर माणिम भेरैबरिम मणोरमे । हुसिया असरणा असा एए इंदेरी सी एप u १ ॥ प्रमार्श्व निशानिया हेळारारणचोहको । तभी नर्नि रामीर्टी हेवैरी इममञ्जूषी ॥ १९ ॥ एन अस्पी य बाळ व एर्य डज्क्षड संदिर्र । सबर्ष अवडर वेणं केल गं नावपेक्यक ॥ १२ ॥ एक्सई विशामिता हेक्स्सरक्षेत्रेले यभो नमी रायरियी वेविषं इक्सम्बद्धी ॥ १३ ॥ वहं क्यामी बीवामी, वेविसे मरिय किंवमें । मिहिकाए बजामाबीए, व में बजाई किंपर्य 🛭 🤫 🛎 🐃 पुत्तरकत्तरः निम्बानारस्य निम्बुलो । पितं न विजाहे सिनिः क्राप्तनं विज विजर्र ॥ १५ ॥ वर्ष्ट्र स्ट्रालियो मह् अवनारस्य मिन्तुया । सम्बन्धे मिन् सुप्रस्म पूर्णतमञ्जरस्वजो ॥ १६ ॥ पूनमुई निवामिता हेकशास्त्रवेदको । तसी निर्मि राजरिमि देविको क्षमान्यको ॥ ९७ ॥ पासादै कारक्तानं बोहुसासमानि व । उरम्ममस्यग्रीको तभो यद्यस्य दातिया। ॥ १८॥ एवमई विनासिनः, हेळरारचनोर्ट्ये : तमो मगी रायरिती हेर्निर्दे हणमध्यती ॥ १९ ॥ सर्व कर्र रिया तक्षकरममार्क । चीति निजनपानार्दे तिगुर्ध रूपप्रमर्व ॥ २ ॥ ची परतम किया जीवें च इरिमें समा। धिई च क्मर्ज किया सबेचे वीर्याए ध २१ ॥ तवनास्त्रवर्तेण शितूर्ण कम्मकेषुर्य । शुली शिनक्षेणान्त्रे आर्थ परिमुच्य ॥ २२ ॥ एवमई निगासिता हेकरारचवीरमा । तमा नि एउरिने

देविंदो इणमञ्चनी ॥ २३ ॥ पासाए कारइत्ताणं, वद्धमाणगिहाणि य । वालम्ग-पोइयाओ य, तओ गच्छिस खत्तिया ! ॥ २४ ॥ एयमद्व निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमञ्चवी ॥ २५ ॥ ससर्यं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घर । जत्येव गंतुमिच्छेजा, तत्य कुव्वेज सासय ॥ २६॥ एयमह निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ निम रायरिसि, देविंदो इणमञ्चवी ॥ २७॥ आमोसे लोमहारे य, गठिमेए य तक्करे। नगरस्स खेम काऊणं, तओ गच्छिस खित्तया ! ॥ २८ ॥ एयमद्व निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमञ्चवी ॥ २९ ॥ असइ तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दंडो पजुजाई । अकारिणोऽत्य वज्झति, मुचई कारओ जणो ॥ ३० ॥ एयमद्व निसामित्ता, हेऊ-कारणचोइओ । तओ नामें रायरिसिं, देविंदो इणमञ्चनी ॥ ३१ ॥ जे केइ पत्थिना तुज्झ, नानमति नराहिवा । वसे ते ठावइत्ताण, तओ गच्छिस खत्तिया । ॥ ३२ ॥ एयमट्ट निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमञ्चवी ॥ ३३ ॥ जो सहस्स सहस्साणं, सगामे दुज्जए जिणे । एग जिणेज अप्पाण, एस से परमो जक्षो ॥ ३४ ॥ अप्पाणमेव जुज्झाहि, कि ते जुज्झेण वज्झओ। क्षप्पाणमेव अप्पाण, जइता छहमेहए ॥ ३५ ॥ पचिंदियाणि कोह, माणं मायं तहेव लोह च । दुजाय चेव अप्पाण, सन्वमप्पे जिए जियं ॥ ३६ ॥ एयमट्ट निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ निम रायरिसिं, देविंदो इणमञ्चवी ॥ ३०॥ जइत्ता विउले जन्ने, भोइता समणमाहणे । दचा भोचा य जिद्वा य, तओ गच्छित वित्तया ! ॥ ३८ ॥ एयमह निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, इविंद इणमञ्चवी ॥ ३९ ॥ जो सहस्स सहस्साण, मासे मासे गव दए । तस्स वि वजमो सेओ, अर्दितस्स वि किंचण ॥ ४०॥ एयमट्ट निसामित्ता, हेऊकारण-बोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमञ्चवी ॥ ४१ ॥ घोरासम चइत्ताण, अन्न पत्येचि आसम । इहेव पोसहरसो, भवाहि मणुयाहिवा । ॥ ४२ ॥ एयमट्ट निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमञ्चवी ॥ ४३ ॥ मासे मासे तु जो वालो, क़ुसग्गेण तु भुजए । न सो सुअक्खायधम्मस्स, कल अग्घइ सोलसि ॥ ४४ ॥ एयमह निसामिता, हेऊकारणचोइसो । तस्रो निर्म रायरिसिं, देविंदो इणमन्ववी ॥ ४५ ॥ हिरण्ण स्रवण्ण मणिमुत्त, कस दूस च वाहण । कोस वहुावडताण, तओ गच्छिस खत्तिया । ॥ ४६ ॥ एयमद्व निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नभी रायरिसी, देविंद इणमञ्चवी ॥ ४७ ॥ सुवण्णरूप्पस्स उ पन्वया भवे, सिया हु केलाससमा असखया । नरस्स छुद्धस्स न तेहि किंचि, इच्छा हु आगासममा

भगीतिका ॥ ४८ ॥ पुढकी साक्षी कका चेव हिरण्य पश्चिमस्सद् । पवितुर्ण नासमेगस्य १६ निजा तर्व चरै ॥ ४९ ॥ एयमई निरामिता हेजनएनकेर्ने। तको नर्मि रायरिसिं वेषियो इत्यमञ्जयी ॥ ५ ॥ अन्यक्रेरयसञ्जयर मोद् वस्सै परिचवा । असेते कामे पत्चेति संख्योण विद्वस्मति ॥ ५१ ॥ एममई निसंबिए, वैजनारकनोध्यो । तमो नमी राजरिसी वर्षिय इवसम्बन्धी व ५२ ॥ सर्ग धर्मा निर्धं कामा कामा कार्याविस्रोपमा । कामे प्रत्येमाना वकामा 🖎 होन्ह प्त ५३ व महे स्पर कोहेर्य सालेजं शहमा गर्दै । सावा गईपविरपाओ, जेलाने उद्देशों भये ॥ ५४ ॥ भवरजिल्लाम माह्यकर्ष विरुक्तिकत्र इंदर्श ! वंदर वर्ति लुग्लो इसाई महुराई क्याई ॥ ५५ ॥ अही हे निक्रियों कोही करो गाँगी पराजियो । अही दे निरक्षिया माना आही छोमो वसीक्जो ॥ ५६॥ आही दे कर्जा साहु, कही के साहु मार्च । कही से क्तमा बंदी कही से सुदि वस्मी प्र ५७ ॥ इहं सि उत्तमो मेर्ने ! चच्छा होहिसि उत्तमो । कोगुरुसुर्गमं हर्च हिर्द मण्डाति गीरमो ॥ ५८ ॥ एव भनित्युर्णतो राज्येति उद्यात् सङ्ग्रह । स्वर्हे करेंवो पुगो पुगो नंदई सको ॥ ५९ ॥ वो विस्तान पाए, वरेनुनगरक मुम्पिक्रस्स । भागालेगुप्पह्मो अभिन्यक्<del>ष्यांक्रमीरी</del>मी ॥ ६ ॥ मधी स्मेर मप्पाणं सक्यं सद्देण कोहमो । कहत्वम ग्रेहं च देवेडी सामन्त्रे पहुंची में n ६९ n एवं करेंदि संबुद्धा पहिचा पनियक्ताया । श्रिनिमहेंदि मोगेट, बहा नमी रायरिषि ॥ ६२ ॥ ति-नेमि ॥ इति नमिपष्यकाः नामं सवसमञ्जा समर्च ॥ ९ ॥

### अह दुमपत्तय णामं दसममन्हायण

हुमरताए पेहमए जहा निराहर राह्मणाण कालए । एवं सहसाण देतिने, समये गोमम । सा प्रमावर ॥ १ ॥ इन्त्रमो जह कोसनिहुए, बोर्च विद्वा केसतार एवं मानुवाण जीविज समये गोमम । मा प्रमावर ॥ १ ॥ सर हर्गारेजिक जार । जीवियए बहुपयानए । शिहुणाहि रचे पूर्व कहे समये गोमम । सा प्रमावर । १ ॥ इन्हरें नक्ष्म मानुष्ठ मधे विराहाकेल कि सक्याधियों । सात व किस्म वस्त्रों समये मोमम । सा प्यायर ॥ ४ ॥ पुत्रविद्वास्त्रम्यको जहारेज जीवेज हर्गां वार्त सम्बाद समये गोनम । मा प्रमावर ॥ ५ ॥ जाउदायमहरूको इन्तर्यक्षे उ समय । इस्सं संस्तर्य समये गोनम । सा प्रमावर ॥ ६ ॥ तेजहरूकहरूको उक्कोच जीवो उ सबसे। काल सखाईय, समयं गोयम! मा पमायए॥ ७॥ वाडकायमङ्गओ, उक्कोस जीवो उ सवसे । कालं सखाईय, समय गोयम । मा पमायए ॥ ८ ॥ वणस्सडकायमइगओ, उक्तोस जीवो उ सवमे । कालमणतदुरतय, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ९ ॥ चेडदियकायमङगओ, उछोस जीवो उ सवसे । काल सरितज्जसन्निय, समय गोयम । मा पमायए ॥ १०॥ तेइदियकायमङगओ, उद्योस जीवो उ सबसे। काल सखिजसन्निय, समय गोयम ! मा पमायए॥ १९॥ चडरिंदियकायमइगओ, उक्वोस जीनो उ सवसे । काल संखिजसन्नियं, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १२ ॥ पचिंदियकायमइगओ, उछोस जीवो उ सवसे । सत्तहभवगहणे, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १३ ॥ देवे नेरइए य अइगओ, उद्योख जीवो उ सवसे। इक्षेक्रभवगहणे, समय गोयम!मा पमायए॥ १४॥ एव भवससारे, ससरङ सुहासुहेहि कम्मेहिं। जीवो पमायवहुलो, समय गोयम । मा पमायए ॥ १५ ॥ लद्भूण वि माणुमत्तण, आरियत्त पुणर्वि दुह्ह। वहवे दसुया मिलक्खुया, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १६ ॥ लद्भूण वि आरियत्तण, अहीणपचेंदियया हु दुछहा । विगर्लिदियया हु दीसई, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १७ ॥ अहीणपर्चेदियत्त पि से लहे, उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा। कुतित्थिनिसेवए जणे, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १८ ॥ लद्भूण वि उत्तम सुइ, सद्दृणा पुणरावि दुल्हा । मिच्छत्तनिसेवए जणे, समय गोयम मा पमायए॥ १९॥ धम्म पि हु सद्दतया, दुल्रह्या काएण फासया। इहकामगुणेहि मुच्छिया, समय गोयम! मा पमायए॥ २०॥ परिज़रइ ते सरीरय, केसा पहुरया इनित ते। से सोयवले य हायई, समय गोयम! मा पमायए ॥ २१ ॥ परिज्रह ते सरीरय, केसा पंडुरया हवति ते । से चक्खुवले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए॥ २२॥ परिजूरइ ते सरीरय, केसा पहुरया हवित ते । से घाणवले य हायई, समय गोयम । मा पमायए ॥ २३ ॥ परिजूरइ ते सरीरय, केसा पहुरया हवति ते । से जिन्मवछे य हायई, समय गोयम ! मा पमायए ॥ २४ ॥ परिजूरइ ते सरीरय, केसा पंडुरया हवति ते । से फासवछे य हायई, समय गोयम ! मा पमायए ॥ २५ ॥ परिजूरइ ते सरीरय, केसा पहुरया हवति ते । से सव्ववछे य हायई, समय गोयम । मा पमायए ॥ २६ ॥ अरई गड विसुइया, आयका विविहा फुसित ते । विहडइ विद्धसङ् ते सरीरय, समय गोयम! मा पमायए ॥ २७ ॥ वोच्छिद सिणेहमप्पणो, कुमुय सारइय व पाणिय । से सन्वसिणेहविक्किए, समय गोयम! मा पमायए ॥ २८ ॥ चिन्नाण धण च मारिय, पव्वड्ओ हि सि अणगारिय। मा वत पुणो वि आविए, समय गोयम! मा पसायए

प्यस्त गोरम । वा प्यायप् ॥ २ ॥ ० व क्रिके अस्त दिस्स है, बहुनए दिस्स सम्पर्द । वे प्रमुद्ध । वे प्र

~<del>ःश्वास्तरम्</del> **अह यह**स्त्रयपुद्धं णार्म एगारसम्बद्धायण

सबेगा विप्तसुक्तस्य अपगारस्य सिम्बापो । व्यामारं पारवरिस्सामि बाउ प्रति स्वेष्ट्र में ॥ १ ॥ के वालि हिंदू विकित्तं वेद ह्ये व्यक्तियत् । विश्वन्तं राज्यत् अनेवर्णम् अवस्त्रस्य ॥ १ ॥ अस्त पंत्राहे राजेत्वं, व्यक्ति ह्यान्या म अपनी पार्मा प्रति प्रमार्ग्य रोजेलीऽक्तस्यप्य ॥ ॥ ॥ ॥ व्यक्त स्वाह्म द्राजेत्वं, शिल्यानि विक्रे त्र सुन्धः । अवस्ति स्वाह्म वेष्ट्र प्रत्या प्रति प्रत्या स्वाह्म त्र प्रति क्षा विक्रे ने विक्रे त्र स्वाह्म स्वाह्म । विक्रोद्ध्य वक्तर्यः, शिक्याविके ति सुन्धः ॥ ५ ॥ वत्र प्रति स्वाह्म स्वाह्म ॥ ० ॥ वत्र प्राप्ति सुन्धः स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म व्यक्ति । विक्राम्य व प्रति हर्षः स्वाह्म स्वाह्म ॥ ० ॥ वत्र प्राप्ति स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्म । व्यक्तिया व्यक्तिया विक्रमार्गः । विक्रम्यः । विक्रमार्गः । विक्रम्यः । विक्रमार्गः । विक्रमार्गः । विक्रमार्गः । विक्रमार्गः । वि कळहडमरवजिए, बुद्धे अभिजाइए । हिरिम प**डि**सलीण, सुविणीए ति बुन्चई ॥ १३ ॥ वसे गुरुकुले निच, जोगव उबहाणव । पियकरे पियवाई, से सिक्ख लद्धुमरिहई ॥ १४ ॥ जहा सखिम पय, निहिय दुहुको वि विरायइ । एवं बहुस्सुए भिक्ख, थम्मो कित्ती तहा सुय ॥ १५॥ जहां से कबोयाणं, आइण्णे कथए सिया। आसे जवेण पवरे, एव हवइ बहुस्सुए ॥ १६ ॥ जहाडण्णसमारूढे, सूरे दढपरक्रमे । उमओ निद्योसेण, एव हवइ बहुत्सुए ॥ १७ ॥ जहा करेणुपरिकिण्णे, कुजरे सिंद्वहायणे । वलवते अप्पिंद्वहण्, एव हवइ वहुस्सुण् ॥ १८ ॥ जहा से तिक्ख-सिंगे, जायखंधे विरायई । वसहे जूहाहिवई, एव हवइ बहुस्छए ॥ १९॥ जहां से तिक्खदाढे, उद्ग्गे दुप्पहसए । सीहे मियाण पनरे, एव हवइ वहुस्छए ॥ २०॥ जहा से वासुदेवे, संसचकगयाधरे । अप्पिंडहयबले जोहे, एव हवई वहु-न्सुए ॥ २९ ॥ जहां से चाउरते, चक्कवट्टी महिष्ट्रिए । चोद्दसरयणाहिवई, एव हवइ बहुस्सए ॥ २२ ॥ जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरंदरे । सक्के देवाहिनई, एव हवइ बहुस्सुए ॥ २३ ॥ जहा से तिमिरविद्धसे, उचिह्नंते दिवायरे । जलते इब तेएण, एव इवइ बहुस्छए॥ २४॥ जहा से उद्धवई चदे, नक्खतपरिवारिए। पिंडपुण्णो पुण्णमासीए, एव इवइ वहुस्सुए ॥ २५ ॥ जहा से सामाइयाण, कोद्वा-गारे सुरिक्खए । नाणाधन्नपहिपुण्णे, एव हवइ बहुस्सुए ॥ २६ ॥ जहा सा दुमाण पवरा, जवृ नाम सुदसणा । अणाढियस्स देवस्स, एव हवइ बहुस्सुए ॥ २०॥ जहा सा नईण पनरा, सिळला सागरगमा । सीया नीलवतपनहा, एन हवइ वहुस्छए ॥ २८॥ जहा से नगाण पवरे, सुमह मंदरे गिरी। नाणोसहिपज्जलिए, एव हवइ वहु-स्तुए ॥ २९ ॥ जहा से सयभुरमणे, उदही अक्खओदए । नाणारयणपिंडपुण्णे, एव हवइ बहुस्सुए ॥ ३० ॥ समुद्दगमीरसमा दुरासया, अचिक्किया केणइ दुप्पह्सया । खयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो, खिनतु कम्म गइमुत्तम गमा ॥ ३१ ॥ तम्हा खयमहिष्ठिजा, उत्तमहुगवेसए। जेणप्पाण परं चेव, सिद्धिं स्पाउणेजासि ॥ ३२ ॥ त्ति-वेमि ॥ इति बहुस्सुयपुज्जं णामं एगारसममज्झयणं समतं ॥ ११ ॥

## अह हरिएसिज्ञं णामं दुवालसममज्झयणं

सोवागकुलसभूओ गुणुत्तरघरो मुणी। हरिएसबलो नाम, आसि भिक्ख् जिइ-ओ ॥ १ ॥ इरिएसणमासाए, उचारसिमईसु य। जओ आयाणनिक्खेचे, सज्ओ समाहिओ ॥ २ ॥ मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइदिओ । भिक्खहा वभ- वनगरणं उषद्धित समारिया ॥ ४ ॥ मास्मावप्रिया ॥ हिल्या अभिनेता ॥ स्वांमावप्रियो ॥ स्वंमावप्रियो ॥ स्वांमावप्रियो ॥ स्वांमावप्रियो ॥ स्वांमावप्रियो ॥ स्वांमावप्रिया ॥ स्वंमावप्रियो ॥ स्वांमावप्रियो ॥ स्वांमावप्रियो ॥ स्वांमावप्रियो ॥ स्वांमावप्रियो ॥ स्वंमावप्रिया ॥ स्वांमावप्रिया ॥ स्वांमावप्रिया ॥ स्वांमावप्रिया ॥ स्वंमावप्रिया ॥ स्वांमावप्रिया ॥ स्वांमावप्रिया ॥ स्वांमावप्रिया ॥ स्वांमावप्रिया ॥ स्वांमावप्रिय ॥ स्वांमावप्रिय ॥ स्वांमावप्रिया ॥ स्वांमावप्रिय ॥ स्वांमावप्रिया ॥ स्वंंमावप्रिया ॥ स्वांमावप्रिया ॥ स्वंंमावप्रिया ॥ स्वंंमावप्रिय ॥ स्वंंमावप्रिया ॥ स्वंंमावप्रिया ॥ स्वंंमावप्रिया ॥ स्वंंमावप्रिया ॥ स्वंंमावप्रिय ॥ स्वंंमावप

बिर्त ॥ ९२ ॥ बेदाजि कर्म्य निर्मानि स्रोप, बहुँ पहिल्ला सैस्पर्वि उ<sup>ल्ला</sup>। वै माइना बादमिओदवेगा तार्वत केतार्व प्रपेसकात ॥ १३ । कोही व माकी व क्हों य अंखि जोसे कहते क परिमाई क । ते माहका बाइकिजासिहका, दर्म है चेताई सुपारसम् १९ १४ ॥ तुक्सेत्व सी ! आर्थरा मिराज अह व वास्त्र अहैन वेए। जवानवार्द श्रमिको करति तार्द हा केताई श्रपेसकाई ॥ १५ ॥ अळातका पिक्कुममाची पमावडे कि पु सगावि कर्म् है। अबि एर्य विजस्सड अवगर्भ व वर्ष बाहाञ्च दुर्म निर्वेठा ॥ १६ ॥ समिष्टेहि मञ्जी सममाद्विवस्य प्रापिह प्राप्तव विदेनियस्त । यह में न दावित्य अहेतनिक किसम संसाम स्वीत्य मह u १७ u के इल्क दाता वक्तोहमा वा अध्यतक्या वा सह स्रोडियी एनं सु देवेल एकेण हिंसा चौडीय येतुन प्रतेख की ले है 14 है मज्जाबनार्ण नमने समेता संस्कृता तरक बहु कुमारा । इंडेड्ड मिनेड क्लेडि क्लेडि समाम्या में इसि ताममंति ॥ १९ ॥ रहा तहिं होसक्रियरन पूर्या अर्ति बर्मन आर्थिक्यमी । र्घ पासिया संस्थ बस्ममानं हुन कुमारे परिनिवरिंद से । देशामिओरोच निभोइएर्ण विकास रक्षा मनसा व सामा । नरिंददन्दिकारिए केजामि मंत्रा इसिया स एमो ॥ २१ ॥ एमो हु सो उम्मतमा सहया जिससम रोडको मेंसवारी । को में तथा नेच्छद् दिकागाणि पित्रणा तमें कोलीक्ष स्था ॥ १९ ॥ अहाअमी एस महाजुमानी चीरवाओं चीरमानी व । मा पूर्व हिन्द

अहीलणिज, मा सन्वे तेएण मे निद्दहेजा ॥ २३ ॥ एयाइ तीसे वयणाई सोचा, पत्तीइ भद्दाइ सुभासियाइ। इसिस्स वेयाविडयद्वयाए, जक्खा कुमारे विणिवारयति ॥ २४ ॥ ते घोर्ह्वा ठिय अतिलक्खे, इप्चरा तिहें तं जण तालयंति । ते भिन्नदेहे रुहिर वसते, पासितु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥ २५ ॥ गिरिं नहेहिं खणह, अय दतेहिं खायह । जायतेय पाएहि हणह, जे भिक्ख अवमन्नह ॥ २६ ॥ आसीविसो उग्ग-तनो महेसी, घोरव्वओ घोरपरक्रमो य । अगणि च पक्खद पयगसेणा, जे भिक्ख्यं भत्तकाळे वहेह ॥ २७ ॥ सीसेण एय सरण उवेह, समागया सव्वजणेण तुब्से । जइ इच्छह जीविय वा घणें वा, लोग पि एसो कुविओ डहेजा ॥ २८ ॥ अवहेडिय-पिद्विमउत्तमंगे, पसारिया वाहु अकम्मचिद्वे । निक्मेरियच्छे रुहिर वमते, उद्वमुहे निग्गयजीहनेते ॥ २९ ॥ ते पासिया खिंडय क्टुभूए, विमणो विसण्णो अह माहणो सो । इसि पसाएइ समारियाओ, हील च निंद च खमाह भते ! ॥ ३०॥ वालेहिं मूढेहिं अयाणएहिं, ज हीलिया तस्स खमाह भते ! । महप्पसाया इसिणो ह्वति, न हु मुणी कोवपरा ह्वति ॥ ३१ ॥ पुन्वि च इण्हि च अणागय च, मणप्पओसो न मे अस्थि कोइ। जक्खा हु वेयाविडय करेंति, तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥ ३२ ॥ अत्य च घम्म च वियाणमाणा, तुन्मे न वि कुप्पह भूडपन्ना । तुन्म तु पाए सरण उनेमो, समागया सन्वजणेण अम्हे ॥ ३३ ॥ अचेमु ते महाभाग!, न ते किचि न अचिमो । भुजाहि सालिम कूर, नाणा-वजणसजुय ॥ ३४ ॥ इस च में अस्यि पभूयमन्न, त भुजस् अम्ह अणुरग-हुट्टा । वाढ ति पिंडेच्छड भत्तपाण, मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥ ३५ ॥ तहिय गधोदयपुप्पत्रास, दिव्ना तिहं वसुहारा य बुद्धा । पहयाओ दुदुहीओ सरेहिं, आगासे अहो दाण च घुट ॥ ३६ ॥ सक्ख खु दीसइ तवोविसेसो, न दीसई जाइविसेम कोई । सोवागपुत्त हारिएनसाहु, जस्सेरिसा इड्डि महाणुभागा ॥ ३० ॥ किं मारणा ! जोइयमारभता, उदएण सोहिं वहिया विसगाहा ? । ज सगाहा वाहि-रिय विमोहिं, न त सुरह कुमला वयति ॥ ३८ ॥ दुस च जव तणकटुमरिंग, साय च पाय उदग फुसता । पाणाइ भूयाइ विहेडयता, भुजो वि मदा ! पकरेह पाव ॥ ३९ ॥ वह चरे भिक्छ । वय जयामो, पावाइ कम्माइ पणुलयामो । अन्त्याहि णे सजय ! जक्त्यप्रया, कह मुजह कुमला वयति ॥ ४० ॥ छन्नीवकाए असमारभता, मोस अदत्तं च असेवमाणा । परिम्मह इत्यिओ माणमाय, एव परिन्नाय चरति दता ॥ ४१ ॥ मुसपुडा पंचिंहं सनरेहिं, इह जीविय अणवस्त्रमाणा । बोसह-काया सहचत्तदेहा, महाजयं जयह जनसिद्ध ॥ ४२ ॥ के ते जोई के व ते जोडठाणे 2, का ते द्वान कि च ते कारिसंगं । गृह्य म तं कमरा छीति मिलवा । कमरेन होनेय हुगारित कोर्ने । गर ॥ तथी बोर्च जीनो बोर्फाणं कोगा हुआ सर्टर नारिसंगं । कमरेहा से बमानोगरिती होत्रे हुगानित हरित्य गरास्थी ॥ अर्थ ॥ के ते हा एवं कर्य सेटिटियों । कोई सिमान्यों न एतं जहारि । जाएरक के संकर्ता | कमराहरी इन्ह्रमाने मार्च मन्त्रमा समान्ये ॥ अप ॥ अपने हरण् की संदिदित्ये जमान्त्रित अगस्यक्रदेशे । वाई सिमान्यों निक्ता मिल्ली हिंदुकी स्वतिस्था पन्तानित होरं ॥ ४९ ॥ एता । अपने हिंदित होते हैं स्वतिस्थानं इतियं सरावं । बाई सिमाना मिल्ली विद्या महारिती उत्तर्भ जानं पता ॥ ४७ ॥ हिन्मेशे ॥ इति हरियासियं पार्म जुवाक्टसममन्त्रहायणं समान्त्र ॥ १२ ॥

### अइ चित्तसं मृहज्ञणाम तेरहममन्सयणं

माईमराजिमो यह कालि निवार्य तु इत्यिवपुरम्मि । पुक्कीए बेम्ब्यो वर्ग क्यो परमगुस्मामो ॥ १ ॥ ऋषिके संमुख्ये कियो पुष काओ प्रतिमतासमि । पेडिकुमारेम निवाके कर्मा सोकल पम्बद्धमो ॥ २॥ व्यक्तिम व नवरे, स्वानना दो नि निपार्तमूमा । क्षाद्वकराप्रमनिवार्ग वर्षेति ते एडनेक्स्स ॥ ३ ॥ नवनी सहिद्वीस्थे नेमदत्त्वे सहायको । मानरं बहुमानेणं इसं बरवसम्बद्धी ॥ ४ ॥ आधिसे मानरा दो नि अवस्ववसालुया । अवसम्बद्धारा अवसवहिष्टिची ३ ५ इ इस्ट वसको आसी मिना काकिनरे नगे। ईसा अनंपतीरे, सोवाया वासिम्मिए प वेशा य देवसोगस्मि आसि अम्बे मिहिन्सा । इसा वो छद्विवा बाई, बद्धमदेव वा निया ॥ ७ ॥ कम्मा नियाणययता हमे तन । विविदिया । हेर्सि इसरियाँ विष्णानीयमुक्ताया छ ८ ॥ शब्दतीयष्ययका क्रमा मए पुरा क्षा । ते जल की मुनानी किनु निते नि से लहा है। ९ ॥ सम्बं समिल्यों सक्ते नरावं दहते कम्माण न मोक्स अन्य । कर्त्याहि कामेहि व उत्तमहि, जाया सर्म पुण्यक्रमेश्वर ॥ १ ॥ आणासि समूत्र । महासुमार्ग महित्रितं पुच्चप्रमारदेवं । दिनं वि जाणाहि तहेव रार्थ ! वृद्धी सुद्दे तस्स वि स प्यमुका ॥ १९ ॥ सहस्वस्था वर्ण प्रमुखा माह्युतीया नरसेयमञ्जर। ये मिल्स्को सीम्म्युलोववेशा वह वर्वते सवकी मि बाबो ॥ १६ ॥ उच्चोक्य महु बक्रे स वीते पवेहना जावमहा व रस्ता । स्र मिर्द्ध मिता । यणप्पमूर्वः पराष्ट्रि पंचालगुलोवमेर्वं ॥ १३ ॥ नहेर्द्धः यौप्नि व व पर्दे नारीजनाई परिवारनेती । भुँजाहि भोगाइ कुमार मिहना । सम रोवर कराजा है

### [ 803 ]

	- ,	-1				
	मिध्यात्वी जीव वि०	188	ı ę	1 83	3 1	ફ
<b>\$3</b> ,	श्रव्रती जीव वि०	१४	8	१३	3	8
. 83	सक्तवायी जीव वि०	१४	१ •	१५	80	8
६४	छद्मस्थ जीव वि०	१४	१२	१५	.80	ह
69	संयोगी जीव वि०	१४	१३	१५	१२	æ
v3	संसारी जोव विञ	१४	<b>38</b>	१५	१२	l é
23	समुच्चय जीव वि०	१४	१४	१५	१२	લા
	11 2 12 2 4 15					'

## ॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥

ದಾರ್ಭಿತ ಪ್ರತಿತರ

## सूत्र श्री पन्नवसााजी पद ६ । (विरहद्वार)

जिस योनि में जीव था वह वहां से चव जाने के बाद उस योनि में दूसरा जीव कितने काल से उत्पन्न होते हैं, उनको विरह कहते हैं। जघन्य तो सर्व स्थान पर एक समय का विरह है उत्कृष्ट श्रलग श्रलग हैं जैसे—

- (१) समुचय च्यार गति संज्ञी मनुष्य श्रीर संज्ञी तिर्यंच में उत्कृष्ट विरह १२ मुहर्त का है।
- (२) पहली नरक, दश भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, सौधर्मशान देव श्रोर श्रसंजी मनुष्य में २४ मुहर्त, दृजी नरक

दुक्ख ॥ १४ ॥ त पुन्वनेहेण कयाणुरागं, नराहिव कामगुणेसु गिद्ध । वम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही, चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था ॥ १५ ॥ सव्व विलवियं गीय, सन्व नट्ट विडवियं। सन्वे आभरणा भारा, सन्वे कामा दुहावहा॥ १६॥ वालाभिरामेख दुहावहेसु, न त सुहं कामगुणेसु रायं!। विरत्तकामाण तवोघणाणं, ज भिक्खुण सीलगुणे रयाण ॥ १७ ॥ नरिंद ! जाई अहमा नराण, सोवागजाई दुहुओ गयाण । जिंह वर्य सञ्वजणस्स वेस्सा, वसीक्ष सोवागनिवेसणेसु ॥ १८ ॥ तीसे य जाईइ उ पानियाए, वुच्छामु सोवागनिवेसणेषु । सन्वस्स लोगस्स दुगछ-णिजा, इह तु कम्माइ पुरे कडाइ॥ १९॥ सो दाणिसिं राय! महाणुभागो, महिङ्कियो पुण्णपत्नोववेओ। चइतु योगाइ असासयाड, आदाणहेउं अभिणिक्खमाहि ॥ २०॥ इह जीविए राय । असासयम्मि, घणिय तु पुण्णाइ अकुव्वमाणो । से सोयई मच्चमुहोवणीए, धम्म अकाऊण परंमि लोए ॥ २१ ॥ जहेह सीहो व मिय गहाय, मन्तू नर नेइ हु अतकाले। न तस्स माया व पिया व भाया, कालम्मि तम्मसहरा भवति ॥ २२ ॥ न तस्स दुक्ख विभयंति नाइओ, न मित्तवग्गा न सुया न वधवा । एको सय पचणुहोइ दुक्ख, कत्तारमेव अणुजाइ कम्म ॥ २३ ॥ चिचा दुपय च चउप्पय च, खेत गिह वणघन्न च सब्व । सकम्मवीओ अवसो पयाइ, परं भव सुद्र पावग वा ॥ २४ ॥ त एक्षग तुच्छसरीरग से, चिईगय दहिय ड पावगेण । भजा य पुत्तो वि य नायओ वा, दायारमन्न अणुसकमति ॥ २५ ॥ उवणिजई जीवियमप्पमाय, वण्ण जरा हरइ नरस्स राय । एचालराया ! वयणं द्युणाहि, मा कासि कम्माइ महालयाइ ॥ २६ ॥ अह पि जाणामि जहेह साह् , ज मे तुम साहिस वक्षमेय। मोगा इमे सगकरा हवति, जे दुज्जया अज्ज ! अम्हारिसेहिं ॥ २७ ॥ इत्थिणपुरम्मि चित्ता !, दहुण नरवइ महिष्ट्विय । कामभोगेसु गिद्धेण, नियाणमसुद्द कड ॥ २८ ॥ तस्स मे अप्पिडकतस्स, इम एयारिस फल । जाणमाणो वि ज धम्म, काममोगेस मुच्छिओ ॥ २९ ॥ नागो जहा पकजलावसन्नो, दहु थल नाभिसमेइ तीर। एव वय कामगुणेसु गिद्धा, न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो॥ ३०॥ अचेड कालो तूरति राइखो, न यावि भोगा पुरिसाण निचा । उविच भोगा पुरिस चयति, दुम जहा खीणफल व पक्खी ॥ ३१ ॥ जइ तसि मोगे चइउ असत्तो, मजाइ कम्माइं करेहि राय । धम्मे ठिओ सन्वपयाणुकपी, तो होहिसि देवो इओ विउच्वी ॥ ३२ ॥ न तुज्झ भोगे चइऊण वुद्धी, किद्धो सि आरंभपरिग्गहेसु । मोह क्लो एत्तिउ विष्पलावो, गच्छामि राय ! आमतिओ सि ॥ ३३ ॥ पचालराया वि य यमदत्तो, साहुस्स तस्स वयण अकाउ। अणुत्तरे भुजिय काममोगे, अणुत्तरे सो नरप पतिहो ॥ १४ ॥ विशो वि कानेहि विराजनानो सहमाजारितानो मोर्डें अधुतरे संस्म पासदता अनुतर्ग शिक्षिण्यं गजो ॥ १५ ॥ वि-नेति ॥ सि चित्तर्समृहक्षणामं तेरहममञ्जायणं समर्त्त ॥ १३ ॥

996

## भह उसुयारिज्ञ णाम चउइसममन्त्रयर्ण

देवा मनिवाण पुरे सबस्म केई चुना एगमिमाणवाती । पुरे पुराने बद्धमार-नामे चाए समिदे सुरक्षेत्ररम्मे ॥ १ ॥ सकम्मुसेसेल पुराकरूव कुनेस हमेस व पर्या । विकामसंसारमया जहाय जिलिहमर्ग सर्व परशा n ९ ॥ अम्प मामम्म इसार दो बी प्रदेशिको तस्त बसा ब पर्ता । मिसासकेची व अ प्रपारी रामल्य देवी कारकारी य ॥ ३ ॥ वर्षां बरामकुममानिम्स्य वर्षे 🔍 रामिनिविद्वविद्या । चेतारवक्स विमोक्यवद्या ब्रह्म च काम्युने निरहा ॥ ४ ॥ पिन्युक्ता दोकि ने माहगस्य चक्रमधीकस्य प्रचित्रस्य । वरितु गोरामेन उर्व चर्च, तहा क्षत्रिकां तक्षत्रमां च ॥ ५ ॥ से दाममीरोस असमाना म<del>ाउ</del>पा एसुं के बानि दिस्ता । मोजकामिकंकी क्षमिकासस्त्राः तार्थ बनायस्य स्में उस्स् ध ६ ॥ असासनं बहु धूर्म निवारं वहुनंतरायं व व बीह्मार्स । तन्दा निवार व रहं बनामो आनंतर्रामो चरिरसञ्ज मोर्ग ॥ 🕶 ॥ वह तावगो तत्व सुबाँव वेहि, देवस्य नामानकरं वयाची । इसे वर्ष नेयमिओ वर्षति । वडा १ डोर्ड अडवान क्रेमी u ८ u अब्रिज नेए परिनिस्स निप्पे पुत्ते परिद्वाण निर्मास कार्ता । सोनान नीए चह दरियमाई, कारण्यमा होह मुजी परस्या ॥ ॥ सोमामाना कानगुर्निकर्तने योद्दाव्यका प्रजस्माहिएयं । संतत्तमानं परितप्पमानं सरकप्पमानं स्ट्रहा गाँ <sup>स</sup> ॥ ९ ॥ पुरोहिनं वं धमसोऽगुर्णतं विमंतर्गतं च छ्य यभेनं । बहस्मं शमपुर्वेह भेव इमारता वे पर्सन्त्रण नर्क । ११ ॥ भेदा आहीना व सर्वति वार्व श्रुवा हैना निदि तमें दसेर्य । जाना सञ्चता न हर्वदि तार्थ को नाम दे जलुनकेन एवं त १२३ क्षणितसम्बा नहुकासमुक्का प्रतासकुक्का अधियासस्वका। संसारमान्य किक्कसम्या बाजी अनत्त्वाच ए काममोया ॥ १३ ॥ परिवर्गतं अस्तिकारी, महो य रामो परिजयमाणे । मध्यपारी मध्योतमाने पणीते सम्बुं प्रति वर्ष ॥ २४ ॥ इसे च में भागित हो च नहित्र हमें च में मध्य हमें स्वित्र । वे एनमेर्स सम्मामाने हरा हरेलि ति कई प्रमानो ॥ २५ ॥ वर्ष स्वर्त वर् इस्पियादि, सनमा तहा कामगुना प्यामा । तर्च कए तप्पर कस्स क्षेत्रे, तं स्थ

सोबाऽमिनिक्यस्य पहास मोए । हुनुबसारं बिउत्सार्यं च रासं अभिक्षं स्मुक्त देवी ॥ २७ ॥ वंतासी पुरिसो रायं । न सो होइ परीक्षको । माहबेन परिवर्ण, मर्ग मादाउतिष्यस्य ॥ ३८ ॥ सम्बंधन अह तहं सम्बंबानि धर्म सर्व । सर्व पि ते अपजता भेद ताजाय तं तद ॥ ३९ ॥ मरिद्विश्व राम! बमा तवा व मणोरमे कामगुन्ने पहाय । एको हु घरमो नरवेव ! तार्च न विजाई नवनिवेर किया ४ ध नाएँ रमे पविकाणि पैक्टे वा चेतावशिका बारिस्नामि मोर्व अधिका समुक्ता निरामिसा परिम्महारैमनियत्तावीसा ॥ ४९ ॥ इविगना व्य रूपी कज्लमानेत जंतुषु । असे सत्ता प्रशोधीत रागद्दोशवसं गया ॥ ४२ ॥ एवंस वस मृद्राः काममोनेह्यु मुच्छिता। कञ्चामाणं न कुञ्चामो रामक्षेत्रस्थिताका क्रमें है ४१ ह मोगे गोचा बनिता स खबुसूबविद्यारियो । श्रामोयमाना गर्च्छति विदा कामका इन ॥ ४४ ॥ इमे न बढा फैरति मम इत्वडनायमा । वर्ष व सता करें मनिस्सामी बड़ा इसे ॥ ४५ ॥ सामितं इसकं वितर बरक्षमार्व निरामितं । जामिस सब्बमुक्तिता विद्विरस्थामि निरामिसा ॥ ४६ ॥ विद्वीषमा व स्थार्य, काम संसारबङ्कुण : ठरयो सक्यापासेच्य संक्रमानो तत्तुं वरे ॥ ४७ ॥ बाव्येच्य बंधमं क्रिया क्याणो क्छक्षि वए । एवं पत्ने महारायं उत्प्रवारिति में सुबं व ४८ ह चइता निरुष्टं एवं काममोगे व दुक्ए । निम्नियवा निरामिया निर्मेश निष्मीमा ॥ ४९ ॥ सम्में प्रम्म मिमानिया, निया कामगुणे वरे । सर्व पविश्रह्मस्वार्व केरे भौरपरकमा ॥ ५ ॥ एवं ये कमशो बुद्धाः सम्बे वस्मपरायवा । कमस्युत्तरिक्त दुक्यस्यामवेषियो ॥ ५९ ॥ सास्ये निगदमोदार्गं पुर्वत सन्त्रमानित्। समिरेगेन कालेय हुक्छरस्त्रसुवागवा ॥ ५२ ॥ रामा सह देवीए, मार्थी व पुराहिको । मृत्यूची शरगा चेव सम्मे ते परिनिम्मुडा ॥ ५३ ॥ हि-बेसि ॥ इति उसुयारिक्षं जाम श्रष्ठश्रसममञ्जयणं समर्च ॥ १४ ॥

**अइ** समिष्यु णाम पण्णरसममञ्ज्ञयणं

मोर्ग चरिस्सामि समिच बन्धं सन्निए तसुवने निवाजनिषे । सर्व बह्नि करामकारी क्षत्रावण्यी परिकार स निक्ष्य ॥ १ स राजीवर्स करें देश देशीकावर्षिया। एके अधिकार स निक्ष्य ॥ १ स राजीवर्स करें देश ३ २ ॥ अहोसबार निर्मु थीरे अभी करें बादें निक्सारमुटी । कवासनी करें

१ बेर्च न्येयं (हेर्न) जाध्यह सो । २ समपासी ।

हिंहे, जे किसण अहियासए स भिक्ख् ॥ ३ ॥ पतं सयणासणं भइता, सीउण्हं वेविह च दसमसग । अन्वग्गमणे असपिहिंद्वे, जे कसिण अहियासए स भिक्ख् । ४॥ नो सक्कइमिच्छई न पूरा, नो वि य वदणगं कुओ पसस । से सजए सुव्वए तवस्ती, सहिए आयगवेसए स भिक्ख् ॥ ५ ॥ जेण पुण जहाइ जीवियं, मोह वा कसिण नियच्छई। नरनारिं पजहे सया तवस्सी, न य कोऊहरुं उनेइ स भिक्ख् ॥ ६॥ छित्र सर भोम अतिलिक्त, सुमिण लक्खणदङवत्थुविज । अगवियारं सरस्स विजय, जे विजाहिं न जीवइ म भिक्ख् ॥ ७ ॥ मत मूल विविह वेजर्नित, वमणविरेयणधूमणेत्तिणाण । आउरे सरणं तिगिच्छिय च, त परिन्नाय परिव्वए स भिक्खु ॥ ८ ॥ खत्तियगणउग्गरायपुत्ता, माहण भोइय विविद्दा य सिप्पिणो । नो तेसि वयइ सिलोगपूय, त परिन्नाय परिन्वए स भिक्खू ॥ ९ ॥ गिहिणो जे पन्वइएण दिद्वा, अप्पन्वइएण व स्युया इविजा। तेसि इहलोइयफलद्वा, जो सथव न करेड् स भिक्ख् ॥ १० ॥ सयणासणपाणभोयण, विविद्द खाइम साइम परेसिं । अदए पिंडसेहिए नियठे, जे तत्य न पउस्सई स भिक्खु ॥ ११ ॥ ज किंचि आहारपाणग, विविद्द खाइम साइम परेसिं ल्द्धु । जो त तिविहेण नाणुकंपे, मण-वयकायसुसवुहे स भिक्ख् ॥ १२ ॥ आयामग चेव जवोदण च, सीय सोवीरजवोदग च। नो हीलए पिंड नीरस तु, पतकुलाइ परिव्वए स भिक्खु॥ १३॥ सहा विविहा भवति लोए, दिव्वा माणुस्सगा तिरिच्छा । मीमा भयभेरवा उराला, जो सोचा न विहिजाई स भिक्ख् ॥ १४ ॥ वाय विविह समिच छोए, सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा। पन्ने अभिभूयु सन्वदसी, उवसते अविहेडए स भिक्ख्॥ १५॥ असिप्पर्जावी अगिहे अमिने, जिइदिए सन्वओ विप्पमुके । अणुक्साई लहुअप्प-भक्खी, चिन्ना गिह एगचरे स भिक्ख्॥ १६॥ ति-वेसि॥ इति समिक्खु णामं पण्णरसममञ्ज्ञयण समर्ते ॥ १५॥

## अह बंभचेरसमाहिठाणा णामं सोलसममज्झचणं

नुय में आरस ! तेण भगवया एवमक्खाय । इह खलु घेरेहिं भगवतेहिं दम वभचेरममाहिठाणा पत्रता, जे भिक्यु सोचा निसम्म सजमबहुले सवरवहुले

१ न स भिक्खिति सेसो, अहवा नाणुकपे≈ना+अणुकपे "ना" साहुपुरिसो गिहत्यगिहुबलद्धविद्धदाहाराइणा वालबुष्टुगिलाणसजयाणमुवरिमणुकप काऊण वेया-वस करेड ति । २ मित्तसत्तुवज्जिए रागदोसरहिए ति अटो ।

3 R

प्रमादिगहुठे प्रते गुर्तिदिए गुरार्वभगारी समा अप्यमते विहरेजा । स्वरे 🕶 दे थेरेहि मगर्वतेहि वस बेमचेरसमाहिठाणा पचता जे सिक्**य** सोचा निसम्म संस्म बहुके संबरबहुके समाहिबहुके गुत्ते ग्राविधिए गुत्तवभवारी समा अपमति विस्वा इमें यह ते नेरहें भगवंतेहें इस वंशनेरसमाहितामा पनाता जे मित्रव से<sup>जा</sup> निसम्म संज्ञसबहुके संबर्वहुके समाधिवहुके गुत्ते गुतिविए गुत्तवेमवारी स्व अप्पारते निहरेजा । वंजहा-विनिताह समधासणाई सेविता हनह से निर्मावे । वे इस्बीपसुर्पडगर्सस्ताहं सत्रवासणहं सेविता इवह से निर्माये । तं बहरिति है। कामरियाहः । निर्मायस्य कन्न इरबीपसूर्यवगर्धसत्ताई स्त्रजासमाई सेवानस वेंसवारिस्स वेंशचेरे सेवा वा कंका वा विद्ययक्त वा समय्यक्रिका के व क्रमेजा उम्म्युयं वा पाठमिका **रीष्ट्रका**ठियं वा रोगार्थकं हवेजा केरविमवतार्ज [वा] चम्माओ अंसेजा । राम्हा मो इरबीपसुर्वडमसंस्तातं स्थवासमात्रं संवेता इन्ह से निमाने ॥ १ ॥ मो इत्वीमं कई कहिता इन्ह से निमाने । ई नहीं चे । भावरिवाह । मिन्यवस्य कन्न इरबीयं वहं क्रहेमायस्य वंगदारिस्य कंपनी चेता वा क्या वा विविध्वा वा समुप्तकिया भेदें वा समेगा समा<sup>त दा</sup> पाउमिका चीइफासियं वा रोगार्थके इवेका केवक्रियकताओ कम्माको मंदिया। राम्हा [कड़] नो इरबीण कह क्ये जा व १ ॥ नो इरबीनं सर्वि सक्तिकान्त विद्यतिमा इन्द्र से निग्यंत्रे । से कहमिति ते । शावरियाइ । तिम्मनस्य कड हर्नाई सर्वि, सक्रिकेमागवस्य वंगवारित्य वंगवरे संद्या वा क्ष्या वा विस्तित्वा व समुप्यक्रिका सेर्व वा समेका सम्मान वा पातक्रिका संहशक्रिक वा ऐवर्क इतेमा केनम्पिकताको यथ्याको संकेमा । तन्दा कह तो तिसर्व सर्वे पदि पविधेनागपु विहरेना ॥ ३ ॥ नो हत्वीर्य हेंदेवाई मनोहराई मनोरं मास्मेरता निकारण इन्ह से निर्माय । ते ब्रह्मिति चे । झानहेन्ह निर्म्यपस्य वस इत्वीचं इंपिनाई समोहराई समोरमाई मास्तेर्यायस्य निर्मान मावस्स बेमयारिस्स बंगवेरे संता वा क्या वा विद्विष्क्रम वा समुजानिक मेर्द्र वा क्रमेजा बम्मार्व वा पाठनिजा चीहकान्द्रियों वा रोपार्यर्थ हवेजा केर्य पक्षाओं कम्माओं मेरीजा। तम्हा यह नो निम्मंदे इत्वीनं इंदिवर्गं म्बोई<sup>र्ग</sup> मयोरसाई माओएमा निकाएमा ॥ ४ ॥ वो इत्वीर्च दुर्द्दार वा इत्वार वा मिस्रतरेखि का पुरुवर्ध का रास्त्रमं वा गीनसह वा इसिकाई वा बनिका ना कदिवसई वा विकासियसई वा समिता हुन्छ से तिलाँचे। सं क्रिली ने। सायरियाह । निर्मानस्य कहा इत्योचं दुरिवरित वा ब्रुवराति वा विर्मारित वा

कृह्यसई वा रुइयसइ वा गीयसइ वा हिसयसइ वा थिणयसइ वा किद्यसइ वा विलवियसद् वा सुणेमाणस्स वभयारिस्स वंभचेरे सका वा कखा वा विङ्गिच्छा वा समुप्पज्जिजा, मेद वा लमेजा, उम्मायं वा पाउणिजा, दीहकालिय वा रोगायकं हवेजा, केवलिपन्नताओ धम्माओ भसेजा । तम्हा खलु नो निगगंथे इत्थीणं कुट्ट-तरिस वा दूसतरिस वा भित्तंतरिस वा कृङ्यसह वा रुड्यसह वा गीयसह वा हिसयसई वा थिणयसह वा किदयसह वा विलवियसह वा सुणेमाणे विहरेजा।। ५॥ नो इत्थीणं पुन्वर्य पुन्वकीलिय अणुसरित्ता हृवइ से निग्गथे। त कहमिति चे। आयरियाह । निग्गयस्स खलु इत्थीण पुन्वरय पुन्वकीलिय अणुसरमाणस्स वभया-रिस्स वमचेरे सका वा कखा वा विङ्गिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेट वा लमेजा, उम्माय वा पार्राणजा, दीहकालिय वा रोगायकं हवेजा, केवलिपन्नताओ धम्माओ मसेजा। तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीण पुव्वरयं पुव्वकीलिय अणुसरेजा॥ ६॥ नो पणीयं आहार आहारित्ता हवइ से निम्मथे । त कहमिति चे । आयरियाह । निम्म-थस्स खळु पणीय आहार आहारेमाणस्स वभयारिस्स वभचेरे सका वा कंखा वा विइ-गिच्छा वा समुप्पिज्जा, मेद वा लमेजा, उम्माय वा पाउणिजा, दीहकालिय वा रोगायक हवेजा, केवलिपन्नताओ वम्माओ भसेजा । तम्हा खल्ल नो निग्गथे पणीय आहारं आहारेजा॥ ७॥ नो अझ्मायाए पाणभोयण आहारेत्ता हवइ से निगाथे। त कहमिति चे। आयरियाह। निग्गथस्स खळ अइमायाए पाणमोयण आहारेमाणस्स वंभयारिस्स वभचेरे सका वा कखा वा विङ्गिच्छा वा समुप्पजिजा, मेद वा लमेजा, उम्माय वा पाउणिजा, दीहकालिय वा रोगायकं हवेजा, केवलि-पन्नताओ धम्माओ मसेजा। तम्हा खलु नो निग्गथे अइमायाए पाणभोयणं आहारेजा ॥ ८॥ नो विभूसाणुवाई हवइ से निग्गथे। त कहमिति चे। आयरियाह। विभूसावत्तिए विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ। तस्रो णं इत्थिजणेण अभिलिसिजामाणस्स वभयारिस्स वभचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्प-जिजा, मेद वा लमेजा, उम्माय वा पाउणिजा, दीहकालिय वा रोगायक हवेजा, केविलिपन्नताओ धम्माओ भसेजा। तम्हा खळ नो निगगये विभूसाणुवाई हवेजा ॥ ९ ॥ नो सद्दरूवरसगघफासाणुवाई हवड से निग्गथे । त कहमिति चे । आयरियाह । निगायस्स खळु सद्द्वरसगधकासाणुवाइस्स वसयारिस्स वभचेरे सका वा कखा वा विङ्गिच्छा वा समुप्पिजजा, सेद वा लभेजा, उम्माय वा पाउणिजा, दीह-कालियं वा रोगायंक हवेजा, केवलिपन्नताओ धम्माओ भसेजा। तम्हा खलु नो सह-स्वरसगधफासाणुवाई भवेजा से निग्गथे। दसमे वभचेरसमाहिठाणे हवइ॥ १०॥

इवंदि इत्य रिख्येगा । रीवहा--- वं निनित्तगणसूच्ये १ हिर्दा इत्यवयेन स । वंगनेरस रक्प्रद्वा आसर्वे द्व निसेवए ॥ १ ॥ भनपस्यायज्ञान्त्री अभरागस्मित्री । र्वमचेररको मिनवा, बीचनं तु निवजाए ॥ २ ॥ सर्ग वा सेवर्व बीहि, संबंद मिक्बाणं । धनवेरस्मे मिक्बा, निवसो परिवक्षए ॥ ३ ॥ क्रांपचेनसेवर्ष चारक्रवियपेतिये । जैसजेररओ बीर्ण जनक्रमिन्सं विवज्ञए ॥ ४ ॥ सूनं वर्ष गीर्न इतिमं यमिसकंदिनं । नंसचेररका शीच सोयगिकां विकास 🛚 ५ ह 🕏 निद्ध रहं दप्पं सङ्साविधावियायि य । वैश्वपेररक्शं श्रीलं ललुचिते स्वाह 1) ६ ॥ पणीर्व मत्तपार्च हु, किप्प सम्रविक्षुणं । बंगचेररको निम्कः, श्रेनचे परिवासप् ।। पारमास्त्व निर्म बढले जातुर्ल पनिवृत्तवं । नाप्नार्ण हैं प्रेडिज चैसचररको ए*या ॥ ८ ॥ मिथ्*चे परिचलेका स्तीरपरिमकर्न । वेसचेररको नि<sup>क्</sup> सिंगारलं न भारए॥ ९॥ शहे स्वीव श्वीव रहे पासे छहेन न। पंत्रीये कामगुणे निक्तो परिकार ॥ १ ॥ आसमो बीक्वाइकेसे बीदमा व सकेरने सक्तो केन मैं।रीज तासि इंदियवरिसँगं ॥ १९ ॥ इतनं वहनं गीर्म इत्यद्वाळ रिर्मानि व । प्रजीयं अस्पील व अहमार्य पालमोर्येज ॥ ११ ॥ सस्ताननिर्म प कासमीमा य दुर्जानी । गरस्सत्तानविधस्य विशे ताक्रवर्ष कहा ॥ १२ म दु<sup>ज्ञा</sup> काममोरो म निकसो परिकार । संबद्धाचानि संबद्धाद क्यांका पनिदायमें है १४ ह पम्मारामे नरे निवन, विदर्भ प्रमाधारही । प्रमारामे रए वंते बंजनेरसमाहर ॥ १ ॥ देवदाजनगंबच्या चनकरनकासकारा । वसवारि कांग्रेत उद्गर वे क्रिये सं १६ ॥ एस माने धुने निने सासए विश्ववेदिए । विश्व विश्वी वालेम सिन्धिस्तंति व्यावरे॥ १७॥ चि-वेमि॥ इति वंसचेरसमाधितावा णामं सोजसमम्बन्धणं समर्च ॥ १६ 🏾

### भइ पावसमणिजं णाम सन्तरसममजहय<sup>र्ण</sup>

के कंद न सम्बन्ध निर्में वास्त प्रियोग निम्मोदको । प्राप्त स्कृषं विके सामें निकृष्य भर्मा के निकृष्य मिन्नों के स्वाप्त के स्वाप्त

अप्पडिपूग्रए थद्धे, पावसमणे ति बुच्चई ॥ ५ ॥ सम्मद्माणे पाणाणि, वीग्राणि हरियाणि य । असंजए संजयमञ्जमाणे, पावनमणे ति वुचई ॥ ६ ॥ संथार फलग पीढ, निसेजं पायकवलं । अपमज्जियमारुहई, पावसमणे ति वुष्वई ॥ ७ ॥ दवदवस्स चरई, पमते य अभिक्खण । उल्लघणे य चडे य, पावसमणे ति वुचई ॥ ८ ॥ पिंढेलेहेड पमते, अवउज्झाइ पायकवल । पिंढेलेहा अणाउते, पावसमणे ति वुचई ॥ ९ ॥ पिंडलेंहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया । गुरुपरिभावए निच, पावसमणे त्ति बुचई ॥ १० ॥ वहुमाई पमुहरी, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे । ससविभागी अवियत्ते, पावसमणे ति वुचई ॥ ११॥ विवाद च उदीरेइ, अहम्मे अत्तपन्नहा । वुग्गहे कलहे रते, पावसमणे ति वुचई ॥ १२ ॥ अथिरासणे कुक्कुइए, जत्य तत्थ निसीयई। आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणे ति वुचई ॥ १३ ॥ ससरक्खपाए सुवई, सेज न पिंडेलेहई । सथारए अणाउत्ते, पावसमणे ति वुचई ॥ १४ ॥ दुद्धदही विगईओ, आहारेइ अमिक्खण । अरए य तवोकम्मे, पानसमणे ति वुचई ॥ १५ ॥ अत्यतम्मि य स्रम्म, आहारेइ अभिक्खणं । चोइओ पिडचोएइ, पावसमणे ति बुचई ॥ १६॥ आयरियपरिचाई, परपासङसेवए। गाणगणिए दुब्भूए, पावसमणे ति वुचई ॥ १०॥ सय गेह परिचज, परगेहिस वावरे । निमित्तेण य ववहरई, पावसमणे ति वुचई ॥ १८ ॥ सन्नाइपिंड जेमेइ, नेच्छइ सामुदाणिय । गिहिनिसेज च वाहेइ, पाव-समणे ति वुचई ॥ १९ ॥ एयारिसे पचकुसीलसवुडे, रूवधरे मुणिपवराण हेहिमे । अयसि लोए विसमेव गरिहए, न से इह नेव परत्य लोए ॥ २० ॥ जे वजाए एए सया उ दोसे, से खुव्वए होइ मुणीण मज्झे । अयसि लोए अमर्थ व पूड्ए, आरा-इए लोगमिण तहा परं॥ २१॥ ति—वेमि॥ इति पावसमणिर्ज्जं णाम सत्तरसममज्झयणं समत्तं॥ १७॥

## अह संजइज्जणामं अद्वारसममज्झयणं

कंपिहे नयरे राया, उदिण्णवळवाह्णे । नामेण सजए नाम, मिगव्य उद्यणिग्गए ॥ १ ॥ ह्याणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य । पायत्ताणीए महया, सव्वओं परिवारिए ॥ २ ॥ मिए छुहित्ता हयगओ, किपहुज्जाणकेसरे । भीए संते मिए तत्य, वहेद रसमुच्छिए ॥ ३ ॥ अह केसरिम्म उज्जाणे, अणगारे तबोधणे । सज्ज्ञाय-ज्ज्ञाणसज्ज्ते, धम्मज्ज्ञाण झियायइ ॥ ४ ॥ अप्फोवमडविम, झायइ क्खवियासवे । तस्सागए मिगे पास, वहेद से नराहिवे ॥ ५ ॥ अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म

**मुक्ता**गमे 1 1 उपलब्द सो तहि । इए मिए उपालिता अवस्थारं तस्य पासइ ॥ ६ छ बाइ रामा व्य चैनेंनो अचनारो समाहसो । सए उ सैट्युज्येजं रसमिद्रेण प्रमुखा ॥ ४ ॥ अर्थ भिगजरताय अनगारसा सो नियो । विभएन बैदए पाए, समर्थ ! एस में बने इ < ॥ अह मोणेण सो मगर्न असगारे साममस्मिए । रागार्य न परिमंतर, समे राया मयहुको ॥ ९ ॥ संबक्षी अहमस्मीति भगवं । बाहराहि म । इन्हें देख क्षजगारं रहेज नरकोटिओ ॥ १ ॥ समझो परिवता ! तुर्का असमदामा समझै य । अन्तिवे जीउस्पेर्गित 🎏 द्विसाय, पगअशी है थ ११ स क्या सर्व्य प्रीवन गंतस्कारमस्य ते । अभिने जीक्योगीमः कि रजीम पराजसी । 🗈 १२ 🛙 भीनि भेर नमं च विक्रुरंगायपंत्रल । जल्म सं सुरुप्तसी रागं। पेक्स्पंतास्त्र<sup>क्र</sup>रे n १३ ॥ दारामि व सुवा चेर मिताय सद वंधवाः अविकन्छ-गैनेटि सर्व नाजुम्बर्गति स ॥ १४ ॥ बीहरेति सम पुत्ता पिकरे परमञ्जनियामा । पिक्ते हे वहा पुत्ते बंधू राजे ! तर्व भरे ॥ १५ ॥ तको तैयानिक्य बच्ने बारे व की रन्तिय । क्रीवंदिङ्गे गरा सर्व । इक्क्युड्मलंकिया ॥ १६ ॥ तेमाने वं सं कम्म छ्रद्रेनाच्छ्नाबुद्दे। कम्मुपात्रच छेतुद्धो गच्छद्देन परेमर्व। १०० योजम तस्य यो घरमं अनमारस्य अविष् । सहवा संवेगनिम्बेरं समान नराहियो ॥ १४ ॥ धंत्रको चहुर्च एजं निक्चरो क्रियसास्य । महमाहित्स अर् बसी अधगारस्य अंतिए ॥ १९ ॥ विवा 📆 पञ्चर्य, दातिए परिमासहै। 🍽 वे शीसई हवं पन्तां वे तका सभी ॥ २ ॥ (६ माने ६६ मोते क्लाइप र माइने । नई प्रविदर्शी हुते कई विनीए ति बुक्सी है ॥ २१ ॥ संबन्धे वार नामेच छहा गोतेल गोयमो । महमाकी समायरिका किकान्यरमपारमा ॥ २९ ॥ किरेनं अकिरेनं निगर्य असानं न सहामुणी । प्ए**हें नवह**ि अभिर्हें, सेनने <sup>हि</sup> पमासके ॥ ११ ॥ इक् पानकरे असे, नावए परिविच्युए । विज्ञानरमधाने स्ने क्ष्मण्डमे ॥ १४॥ पर्वति शर्य थोरे के शरा पावशरिको। मेर्न व क प्रमानि वरिता वस्तमारियं ॥ २५ ॥ मामानुस्यमेय द्व. मुखा माधा विस्तिका र्सवसमाधी में काई क्यांनि इरियामि व १ १ १ । सक्येर क्यां मर्स मिले रिद्वी अधारिता। मिळमाणे परे कोए, सम्मं जाणामि अध्यतं ॥ २० ॥ सहनार्के महापाणे जुद्धनं वरिसस्त्रजोषने । जा सा पाकिमहापाठी क्षेत्रका वरिस्तरजोषनी ॥ २< ॥ से चुए बंसम्मेपाओ सामुस शब्सागए। अपानी व परेसि व अर्व बाले जहां तहा । २९ ॥ नापारह व की व परिचक्रेण संवर् । बन्ति हेर

सम्बद्धा इह निवासणुर्धवरे ॥ ३ ॥ पश्चिमाणि परिवार्ण परमेटेही बाउनी

में चात दिस तीजी सरक में पन्त्रह दिस, चौधी नरक में पक मास पांचर्यी मरक में दो मास, खट्टी नरक में च्यार मास सातवीं मरक सिद्धगिठ कीर चौसठ इस्ट्रों में विरह है मास का है।

- (१) तीजा वेशकोक में मी 'विन वीस मुद्रतं वीय' देवलोक में बाद्य दिन वय मुद्रतं पांचवां देवलोक में बाद्य दिन वय मुद्रतं पांचवां देवलोक में खादावादिय दिन, बद्धा देवलोक में पेंठाशीख दिन खातवं देवलोक में सी दिन नववं व्याप्तं देवलोक में सी दिन नववं व्याप्तं देवलोक में सिक्त में बिक्त में पांचवां पांचवां देवलोक में सिक्त में सिक्त
- (४) पाँच स्थावरों में विरद्द नहीं है शीन विकर्त दिन कसंज्ञी तिर्येख में कल्तर सक्षते।

(४) अन्त्र सूर्य के प्रदर्शासयी विरद्द पड़े हो असम्य के साल उत्कृष अन्त्र के वैंसाक्षील साल सूर्य के अकृताक्षील वर्ष।

- (१) भरतेरवतकोषायेषा सायु साभी प्रावक भाविक जायसी जयस्य तो १६००० वर्ष झीर झरियुस्त जकतर्या वत्रदेय ।वासुदेय आश्रमी जयस्य ८४००० वर्ष उत्क्रम संबद्धो देशोग खडारा कोड्डा कोड्ड सागरीयम का ह इति सर्मा
  - सेवं मंते सेव मंते तमेव सचम् \*

अहो उद्विए अहोराय, इड विजा तव चरे ॥ ३१ ॥ जं च मे पुच्छसी काले, सम्म मुद्धेण चेयसा । ताई पाउकरे बुद्धे, त नाणं जिणसासणे ॥ ३२ ॥ किरिय च रोयई धीरे, अकिरिय परिवजए । दिट्टीए दिट्टिसपन्ने, धम्मं चर सुदुचर ॥ ३३ ॥ एयं पुण्णपय सोमा, अत्यधम्मोवसोहिय । भरहो वि भारह वास, चिन्ना कामाड पव्वए ॥ ३४ ॥ सगरो वि सागरत, भरहवास नराहिवो । इस्सरिय केवल हिचा, दयाड परिनिब्बुडे ॥ २५ ॥ चइता भारह वास, चक्वटी महिद्विओ । पव्यज्ज-मच्भुवगओ, मघव नाम महाजसो ॥ ३६॥ सणकुमारो मणुस्सिदो, चक्क्टी सिंहिष्ट्रिओ । पुत्त रजे ठवेऊण, सो वि राया तव चरे ॥ ३७ ॥ चङ्ता भारहं वास, चक्कवट्टी महिष्टिओ । सती सतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ३८ ॥ इनखा-गरायवसभो, कुथू नाम नरीसरो । विक्खायिकत्ती भगव, पत्तो गडमणुत्तर ॥ ३९ ॥ सागरत चइत्ताण, भरहं नरवरीसरो । अरो य अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ४० ॥ चइता भारह वास, चइता वलवाहण । चइता उत्तमे भोए, महापडमे तवं चरे ॥ ४१ ॥ एगच्छत्त पसाहिता, महिं माणनिस्रणो । हरिसेणो मणुस्पिदो, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ४२ ॥ अन्निओ रायसहस्सेहिं, सुपरिचाई दम चरे। जयनामो जिणक्खाय, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४३ ॥ दसण्णरज्ज मुदिय, चइत्ताण मुणी चरे । दसण्णभद्दो निक्खतो, सक्ख सकेण चोइओ ॥ ४४ ॥ नमी नमेइ अप्पाण, सक्ख सकेण चोइओ । चइऊण गेह नइदेही, सामण्णे पज्जवहिओ ॥ ४५ ॥ करकह किलेंगेष्ट, पचालेष्ट य दुम्मुहो । नमी राया विदेहेषु, गंधारेष्ठ य नग्गई ॥ ४६ ॥ एए नरिंदनसभा, निक्खता जिणसासणे । पुत्ते रज्जे ठनेऊण, सामण्णे पज्जुवड्डिया ॥ ४७ ॥ सोवीररायमसमो, चइत्ताण मुणी चरे । उदायणो पव्वइओ, पत्तो गइ-मणुत्तर ॥ ४८ ॥ तहेव कासिराया वि, सेओ सचपरक्षमे । कामभोगे परिचज, पहणे कम्ममहावण ॥ ४९ ॥ तहेव विजयो राया, अणद्वाकित्ति पव्यए । रज तु गुणसमिद्ध, पयहिनु महाजसो ॥ ५० ॥ तहेवुग्ग तव किचा, अव्वक्खितेण चेयसा । महब्वली रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥ '५१ ॥ कई धीरो अहेर्फाहें, रुम्मत्तो व महिं चरे <sup>२</sup>। एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्रमा ॥ ५२॥ अचत-नियाणखमा, सचा में भासिया वई । अतरिंसु तरेतेगे, तरिस्सिति अणागया ॥ ५३ ॥ कहिं धीरे अहेर्ऊहिं, अत्ताण परियावसे । सन्वसगविनिम्मुक्के, सिद्धे भवइ नीरए ॥ ५४ ॥ ति-वेसि ॥ इति संजइज्जणामं अहारसममञ्झयणं समतं॥ १८॥

1004 श्रुचामी [उत्तरसम्बर्ध सह मिषापुत्तीयं णाम एगूणबीसहम स्रज्झपर्ण

सह नियापुर्तीयं णाम एगूणवीसहम सङ्स्यण स्मावि नयर रम्मे काल्डबावकोतिय । रावा बक्रमिकि भिमा उत्सम्मन

बिसी ॥ ९ त देखि पुत्ते बब्धियों भिनापुत्ते कि बेस्तापु । आन्ताविक्रम वार्ष्ट इत्तरपार पर्वापुरे ॥ ९ त श्रेषणे यो ज्यावारा, क्रीक्रप्ट वह इत्तिक्ष्टि । वेते पेपूरा श्रेष्ट निष्टे पुरस्तामाती ॥ १ ॥ मानिरपणारीतिक्रपत्ते । श्रामाणीर्व्यक्ति । आजोप्द मगरस्य व्यवकातिकत्त्रपत्र ॥ ४ ॥ आह तस्य अवस्थितं पुताह सम्बन्धतं

काकार्य गारिक ज्यांकारियां वर्ष । ४ गां को तुर्व कार्य गांव प्राप्त है मित्रापुति । विद्युत्त कर्षि त्यांकार्य व । कर्षि मोत्रीरचे वर्ष विद्युत्तवं नत्य पुता ॥ ६ ॥ छात्रस्य वरिजे तद्द कत्यांकार्यान्तिम खोवणे । मोद्रौं प्रथस्य चंत्रस्य वाह्यस्य हायुत्तवः हायुत्तवः ॥ ४ ॥ ६ क संभावकार्यान्तिम खोवणे । स्थापनी स्थापनी स्थापनी स्थापनी वाह्यस्य ॥ १ व्यापनी वाह्यस्य ॥ १ व्यापनी वाह्यस्य ॥

कर्षे ॥ ८ ॥ विस्तृष्टि कारक्षेत्रो र रखंडी एंकमधि व । कामापिकरमुकाममा स्विकासकार्यो ॥ ९ ॥ मुकाधि से एंक सङ्कल्याकि नरएस मुक्कि विदेशक कोसिंह । निकित्यकारमीमि अनुस्तराक्षों असुवायक्ष एवक्स्सामि कामी। १ ॥ कामस्ताय । सूर्य भोगा भुगा निष्णकारमा । एवळा बद्धानिकामा अर्थनंत्रसम्ब

त ११ ॥ इसं तरीरे जानिन्ने काप्तरं काप्तरं काप्तरं काप्तरं काप्तरं काप्तरं काप्तरं काप्तरं माना ११ ॥ काप्तरं वर्धरं देति रहं जोनकमामाई (ज्यान प्रदेश व बहरतं कियान प्रदेश काप्तरं काण्य । अध्यक्षतं काप्तरं काण्य । अध्यक्षतं काप्तरं काण्य । अध्यक्षतं काण्यं । अध्यक्षतं काण्यं । अध्यक्षतं काण्यं । अध्यक्षतं काण्यं के वर्धरं के प्रदेश क

पुरादारे व बंबना । बहुरामं इस वेर्ड, गंतुक्वामध्यस्य से ॥ १६ ॥ बहा जिनार क्रमानं वरियामो ॥ ग्रंदरो । एवं अराज मोमानं वरियामो ॥ ग्रंदरो ॥ १ वं अराज मोमानं वरियामो ॥ ग्रंदरो ॥ १ व्यानं वो मानं रहे ॥ १ व्यानं वो मानं रहे ॥ १ व्यानं वे व्यानं वर्षे । गर्वकी थे प्रदे विकास वर्षे मंद्र । गर्वकी थे प्रदे हित्स हार्यामं वर्षे । एवं प्रानं मान्यामं वो मानं वर्षे । रावकी थे प्रदे हित्स हार्यामं वर्षे । एवं प्रानं । गर्वकी थे प्रदे हित्स वादिरोपेडी पीकियो ॥ १९ ॥ व्यानं वो मार्वकी हार्यामं वर्षे । प्रतानं वे व्यानं विकास वि

॥ २३ ॥ त विंतम्मापियरो, सामण्ण पुत्त ! दुचर । गुणाण तु सहस्साइ, धारेय-व्वाइ भिक्खुणा ॥ २४ ॥ समया सन्त्रभूएसु, सतुमित्तेसु वा जगे । पाणाइवायविरई, जावजीवाए दुक्तर ॥ २५ ॥ निचकालऽप्पमत्तेण, मुसावायविवज्जण । भासियन्व हिय सभ, निचाउत्तेण दुक्तरं ॥ २६ ॥ दतसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवजाण । अणवज्जेसणिजस्स, ग्रिण्हणा अवि दुक्तर ॥ २७ ॥ विरई अवभचेरस्स, कामभोगर-सञ्जुणा । उस्म महन्वय वर्भ, धारेयव्यं सुदुक्तरं ॥ २८ ॥ धणधन्नपेसवरगेसु, परि-माहविवजाण । सञ्वारंभपरिचाओ, निम्ममत्त सुदुक्र ॥ २९ ॥ चउन्विहे वि आहारे, राईभोयणवज्जणा । सिन्नहीसचओ चेव, वज्जेयव्वो छुदुकर ॥ ३० ॥ छुहा तण्हा य -सीउर्ण्ह, दसमसगवेयणा । अक्कोसा दुक्खसेजा य, तणफासा जल्लमेव य ॥ ३१ ॥ तालणा तजाणा चेव, वहवधपरीसहा । दुक्ख मिक्खायरिया, जायणा य अलाभया न। ३२ ॥ कावोया जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो । दुक्ख वभन्वय घोर, धारेंड च महप्पणी ॥ ३३ ॥ छहोइंबो तुम पुत्ता !, छकुमालो छमज्जिओ । न हु सि पभू तुम पुत्ता!, सामण्णमणुपालिया ॥ ३४ ॥ जावंजीवमविस्सामो, गुणाण तु महञ्मरो । गुरुओ लोहभारूव्य, जो पुत्ता होइ दुव्यहो ॥ ३५ ॥ आगासे गंगसोउन्य, पिडसोउव्य दुत्तरो । वाहाहिं सागरो चेव, तरियन्यो गुणोदही ॥ ३६ ॥ वाछ्या कवले चेव, निरस्साए उ सजमे। असिघारागमण चेव, दुक्करं चरिउ तवो ॥३०॥ अहींनेगतिदहीए, चरिते पुत्त । दुक्तरे । जना लोहमया चेन, चानेयन्ना सुदुकर a। ३८ ।। जहा अभिगतिहा दिता, पाउ होइ सुदुक्तरा । तहा दुक्तरं करेउ जे, तारुणी समणत्तण ॥ ३९ ॥ जहा दुक्ख भरेड जे, होइ वायस्स कोत्थलो । तहा दुक्ख करेउ जे, की[वे]बेण समणत्तण ॥ ४० ॥ जहा तुलाए तोलेउ, दुक्करी मदरी गिरी । नहा निह्य नीसक, दुक्करं समणतण ॥ ४१ ॥ जहा भुयाहिं तरिउ, दुक्करं रयणायरो । तहा अणुवसतेण, दुक्करं दमसागरो ॥ ४२ ॥ भुज माणुस्सए भोए, पचलक्खणए नुम । भुत्तभोगी तस्रो जाया ।, पच्छा घम्म चरिस्सिति ॥ ४३ ॥ सो बेइ अम्मा-पियरो, एवमेय जहा फुडं। इह लोए निप्पिवासस्स, नित्य किचिवि दुक्ररे ॥ ४४ ॥ सारीरमाणसा चेव, वेयणाओ अणतसो। मए सोढाओ मीमाओ, असइ दुक्खभयाणि य ॥ ४५ ॥ जरामरणकतारे, चाउरंते भयागरे । मया सोढाणि मीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥ ४६ ॥ जहा इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणतगुणो तहिं। नरएसु वेयणा उण्हा, असाया वेइया मए ॥ ४७ ॥ जहा इहं इम सीय, एत्तोऽणंतगुणो तहिं। नरएसु वेयणा सीया, असाया वेइया मए ॥ ४८ ॥ कदतो कंदुकुमीसु, उष्हृपाओ अहोसिरो । हुयासणे जलतम्मि, पक्कपुञ्जो अणतसो ॥ ४९ ॥ महादविगसकासे, ६४ सुता०

n ५३ n कुनतो कोसमुजप्**र्वे** सामेहि सबस्रह य । पाडिको दाक्रिजो डिको विपारंतो क्लेक्से ॥ ५४ ॥ असीहि क्यसिक्जाहि अहेहि पहिसेहि व । क्रिके भिन्नो निभिन्नो य कोक्न्यो पानकस्मुना ॥ ५५ ॥ कवसी सोहरहे <u>र</u>ाजे कारी समिकान्तप् । बोइको तोतलुतेन्ति, रोज्हो का बढ पाविका ॥ ५६ ॥ ह्वास्त करंदिमा विवाद महिसो निव। दशो पदो य अवसी पाव अमेहि पाविसी 🛚 🔻 🖡 यका संबासतुर्वेदी, कोइतुर्वेदी पविचारी । निक्क्तो निकातो हं तंबरिद्वीदिर्जाएके II ५८ II तम्बानिसेती पार्को पत्ती वेयरणि नई । कर्न पार्टि दि विदेती कर थारादि निवाहको ॥ ५९ ॥ सन्दामियतो संपत्तो अस्पर्य महावर्ष । अस्पिके परंतिहर क्रिक्युक्नो अनेपसो ॥ ६ ॥ सम्मरेहि सचकीह स्केटिस्टरेहै य । गयाचेमन्ययोष्टि, पत्तं दुन्नं वर्षतस्ये ॥ ६९ ॥ ब्रोडे तिक्वगाएडी सुरियार्दि कंप्यक्रीहि व । कप्पिको पाविको किस्रो व विकास व समेरको ॥ ११ ॥ पारिहें कृत्रजाकेहें, मिओ वा अवसी अर्ड । वाहिओ वदस्ती वा बहुयो के निवाहको ॥ ६३ ॥ मकेहिं समस्वाकेहिं, सन्त्रमे वा अवसो सह । उष्टिको प्रस्तिक गहिनो मारिको य जगतसो ॥ ६४ ॥ बीर्वसपृष्टि बाकेर्ड केपाई स्टबो दिव पहिल्लो सन्तो बद्धो य मारिलो व वर्णतको ॥ ६५ ॥ बुदावरस्यसमितः स्ट्रॉर्ड दुनो निन । इहिमो फाकिमो क्रिको तक्किमो न भर्नतसे ॥ ६६ ॥ व्यवस्थि साईहें डमारेबें कर्य पित्र। ताविको डुन्डिओ सिको खण्डिको स अर्थको हर १४ ह वत्तवं चंगकेहारं तरुपाई चीस्थानि स । पाइको चसक्यंतारं, बारसंदो हुनेररं n ६८ n दुई पिनाई मेंसले, वाबले स्तेत्रमाणि य । बालिमोनि समेंसर्व, बन्नि न्नार्-इनेम्स्यो ॥ ६९ ॥ तुर्वं पिया शरा शिंह थेरको व महन्ति य । पास्येति तीको वसाको स्विराणि म ॥ ७ ॥ निर्वे तीएच तत्वेच द्विराण विरिष् । परमा दुइर्पनका नेपणा नेप्पा मए ॥ ७९ ॥ तिकार्षकप्पामानमे बोराजे कर्ष स्पद्धाः । सद्वसमान्त्रो सीमान्त्रो नरपृष्ठ वेदना सप् ॥ ७२ ॥ वारीसा सङ्घे क्रेप ताया ! शेषित वैयन्या । एत्रो अर्जतपुनिया गर्एस दुन्यनेवया ॥ ७३ ह सन समेषु बरसामा वेजका बेह्या गए। तिमेसतरतिते पि व सामा बर्ट्स देखी

प्र पर प्र ते क्तिम्सापियरो अविजे पुता । प्रस्तवा । नवर पुत्र शामन्ते पुत्रव

11

निप्पहिकम्मया ॥ ७५ ॥ सो वेइ अम्मापियरो !, एवमेयं जहा फुड । पडिकम्म को कुणई, अरण्णे मियपिक्खण ॥ ७६ ॥ एगब्सूए अरण्णे व, जहाँ उ चरई मिगे । एवं वस्म चरिस्सामि, सजमेण तवेण य ॥ ७७ ॥ जहा मिगस्स आयको, महार-ण्णमि जायई। अच्छत रुक्लमूलमि, को ण ताहे तिगिच्छई॥ ७८॥ को वा से ओसह देइ<sup>2</sup>, को वा से पुच्छई ग्रह<sup>2</sup>। को से भत्त च पाण वा, आहरितु पणामए<sup>2</sup> ॥ ७९ ॥ जया य से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं । भत्तपाणस्स अद्वाए, वहराणि सराणि य ॥ <०॥ खाइता पाणिय पाउ, वहरेहिं सरेहि य । मिगचारिय चरिताण, गच्छई मिगचारिय ॥ ८९ ॥ एव समुद्धिओ भिक्ख्, एवमेव अणेगए । मिगचारिय चरित्ताण, उहु पक्सई दिस ॥ ८२ ॥ जहा मिए एग अणेगचारी, अणेगवासे धुवगो-यरे य । एव मुणी गोयरियं पविद्वे, नो हीलए नो वि य खिंसएजा ॥ ८३॥ मिग-चारिय चरिस्सामि, एव पुत्ता । जहासुहं । अम्मापिकहिंऽणुष्टाओ, जहाइ उवहिं तहा ॥ ८४ ॥ मिगचारियं चरिस्सामि, सञ्बदुक्खविमोक्खणि । तुञ्मेहिं अञ्भणुनाओ, गच्छ पुत्त ! जहास्रह ॥ ८५ ॥ एव सो अम्मापियरो, अणुमाणिताण बहुविहं । ममत्त छिंदई ताहे, महानागोव्व कचुय ॥ ८६ ॥ इष्ट्वी वित्त च मित्ते य, पुत्तदारं च नायओ । रेणुय व पडे लग्ग, निद्धणिताण निग्गओ ॥ ८७ ॥ पचमहव्वयज्ञत्तो, पंचसिमे तिगुत्तिगुत्तो य । सिंसतरवाहिरए, तवोकम्मिम उज्जुओ ॥ ८८ ॥ निम्ममो निरह-कारो, निस्सगो चत्तगारवो। समो य सञ्वभूएस, तसेस थावरेस य॥ ८९॥ लाभा-लाभे बहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा। समो निदापससासु, तहा माणावमाणओ॥ ९०॥ गारवेसु कसाएसु, दबसङ्भएसु य। नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अवघणो ॥ ९१ ॥ अणिस्सिओ इह लोए, परलोए अणिस्सिओ । वासीचदणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥ ९२ ॥ अप्पसत्थेहि दारेहि, सन्वओ पिहियासवे । अज्झप्पज्झाणजोगेहि, पसत्यदमसासणे ॥ ९३ ॥ एव नाणेण चरणेण, दसणेण तवेण य । भावणाहि य सुदाहि, सम्म भावित्तु अप्पय ॥ ९४ ॥ वहुयाणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिया । मासिएण उ भत्तेण, सिद्धि पत्तो अणुत्तर ॥ ९५ ॥ एव करंति सबुद्धा, पिंडया पविय-क्खणा । विणियदृति भोगेसु, मियापुत्ते जहा रिसी ॥ ९६ ॥ महापमावस्स महाज-सस्स, मियाइपुत्तस्स निसम्म भासिय । तवप्पहाण चरिय च उत्तम, गइप्पहाणं च तिलोगिविस्तुय ॥ ९७ ॥ वियाणिया दुक्खविवद्धण धण, ममत्तवध च महाभयावहं । इहावह धम्मधुर अणुत्तर, धारेज निव्वाणगुणावह मह ॥ ९८ ॥ ति–वेमि ॥ इति मियाप्तीयं णामं प्राणवीसइमं अज्झयणं समत्तं॥ १९॥

>63C

#### 

सिद्धार्ण मसो किया चैजनार्ण च भागको। अल्पधमसर्था तर्च वर्तसर्वि ह<sup>ोस्</sup> ये ॥ १ ॥ प्रमुबर्गणी रामा सेनिको समहाहितो । निहारकौ निजामो मेनि कुर्विक्रिति चेर्रेष् ॥ २ ॥ नामानुससमाङ्ज्यै भाजावनिक्रानितेम्य । मानाकुपुनार्वेक्यः रुआणे पंदचीनमें II रे II रहन सी पासई साई संबर्ध ससमाहित । मिल इक्बाम्बन्सि सुक्रमार्क श्रहोहर्य ॥ ४ ॥ तस्य इवं द्व शास्ति। रहनो तस्य रंजए । अक्टपरयो आसी अठको स्विमहर्भे ॥ ५ ॥ अहो । क्यो ब्यो ११६ लहो | अजस्य योगवा । लहो | बंदी कहो | सुती अहो | मोगै अवंदवा । ( ! तस्य पाए व बंदिता काळण व पंगादियं । भाइन्द्रमणास्त्रे पंजनी पविदुर्ण n 👽 n तस्यों सि अजो ] पम्बद्धमी भोगकाश्चीम संस्का । तबद्विमो सि सम्ब एयमई छनेमि ता ॥ ४ ॥ भनाहोमि सहाराय । लाहो सञ्जा न विज्ञहै । न्छुनी प्रदि बाबि कंपि नामिसमेगई ॥ ९ ॥ तभो सो प्रतिको राजा सेविको मणी हियो । एवं ते इश्विमंतरस्य कर्म नाहो न निकर्ष ॥ १ ॥ होमि नाहो सरंतर् मोरो मुंबाहि संबंधा । शिवनाहैपरिवृदो मानुस्य 🖷 छतुन्त्रं ॥ १९ ॥ बन्ध नि अन्याहो छि छेपिया । समहादिया । सप्पथा अन्याहो छंदो वर्ष गारी 🌴 स्तरि । १२ ॥ पूर्व कुत्तो नरियो सा सर्समेतो सुनिम्बन्ते । बनर्व अस्तर्यन साहुमा निम्हनक्रियो ॥ १३ ॥ भरता इत्यी शहरसा में प्ररं अदेवर व है। र्सुबारि माखुरे सोए, भाजा इस्सरैय न मे ११ १४ ॥ एरिसे संपनम्परिन वर्ण कामधमियप् । नहीं मनाही मनहीं, मा हु मेंदे ! मुखे वप् ॥ १५ ॥ न द्वर्ष 📽 क्याहरस अर्ख पीर्स्य च परिचया ! । बहा क्याहो सबहै, सवाहो वा नराहित ॥ १६ ॥ धुनेत में महाएवं। अव्यक्तिकरेण चेत्रता । वहा सवाहे सबरे बर्ग प्यक्तियं ॥ १७ ॥ कोर्सची शाम नगरी पुरानपुरमेवणी । तत्य आजी रिवा सर्व प्रमुख्यमधीका ॥ १४॥ पढमे वयु महारास । अतसा से अविक्रीका । सहे बिरुको दाहो सम्मगतिह परिवता । ११ ।। सस्य बहा परमदिन्तं, तर्परिका तरे । आयोजिक अधी कुछो एवं में अधिक्षेत्रण ६ १ ॥ तिर्दे में अधिके तत्त्रों च पीड़िं । इसासणिसमा बोरा सेमणा सरमहास्था ॥ ११ ॥ त्रवित्रों व व्यावरिका मिळामंदरितिकामा । वाषीया एत्युक्सण मेटमूलस्थारावा ६ १३ ये मे दिशिका इन्वेदि, चारुपामं बहादियं । श व दुक्का निमार्वेद एस स्व

अणाह्या ॥ २३ ॥ पिया मे सव्वसार पि, दिजाहि मम कारणा । न य दुक्या विसोएइ, एसा मज्झ अणाह्या ॥ २४ ॥ माया वि मे महाराय !, पुत्तसोगदुह्दिया । न य दुक्ता विमोएइ, एसा मञ्ज अणाह्या ॥ २५ ॥ भायरा मे महाराय!, सगा जेट्टमणिटुगा । न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाह्या ॥ २६ ॥ भइणीओ में महाराय!, संगा जेट्टकणिट्टगा। न य दुक्या विमोयति, एमा मज्य अणाहया ॥ २७ ॥ भारिया मे महाराय !, अणुरत्ता अणुव्यया । असुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचई ॥ २८ ॥ अन्न पाण च ण्हाण च, गधमान्नविटेवण । मए नायमनाय वा, ना वाला नेव भुजई ॥ २९ ॥ राण पि मे महाराय !, पासाओ वि न फिटई । न य दुक्या विमोएइ, एसा मज्ज्ञ अणाह्या ॥ ३० ॥ तमो ह एवमाहंच, दुक्खमा हु पुणो पुणो । वेयणा अणुभविउ जे, ससारम्मि अणतए ॥ ३१ ॥ सइ च जइ मुचेजा, वेयणा विउला इओ । खतो दतो निरारमो, पन्वए अणगारिय ॥ ३२ ॥ एव च चिंतइताण, पस्तोमि नराहिवा!। परियत्ततीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥ ३३ ॥ तओ कहे पभायमि, आपुच्छिताण वधवे । खंतो दंतो निरारमो, पव्य-इओऽणगारियं ॥ ३४ ॥ तो ह नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य । सन्वेसिं चेव भूयाण, तसाणं थावराण य ॥ ३५ ॥ अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कृडसामली । अप्पा कामदुद्दा घेणू, अप्पा मे नदण वण ॥ ३६ ॥ अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुद्दाण य सुहाण य । अप्पा मित्तममित्त च, दुप्पद्विय सुपद्विओ ॥ ३७ ॥ इमा हु अन्ना वि अणाह्या निवा !, तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि । नियठधम्म लहियाण वी जहा, सीयति एगे वहुकायरा नरा॥ ३८॥ जो पव्वइत्ताण महव्वयाइ, सम्म च नो फासयई पमाया । अनिग्गहप्पा य रसेम्र गिद्धे, न मूलओ छिन्नइ वंधण से ॥ ३९ ॥ आउत्तया जस्स न अत्थि काइ, इरियाए मासाए तहेसणाए । आयाणनिक्खेव-दुगुछणाए, न वीरजाय अणुजाइ मग्गं ॥ ४० ॥ चिरं पि से मुडफई भविता, अथिरव्वए तवनियमेहिं भट्टे। चिर पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु सपराए ॥ ४९ ॥ पोहे व सुद्वी जह से असारे, अयतिए कुडकहावणे वा । राढामणी वैरुलियप्पगासे, अमहम्घए होइ हु जाणएसु ॥ ४२ ॥ कुसीलर्लिंग इह धारइत्ता, इसिन्सय जीविय बृहइता । असजए सजयलप्पमाणे, विणिघायमागच्छइ से चिरं पि ॥ ४३ ॥ विस तु पीय जह कालकूड, हणाइ सत्य जह कुम्महीय । एसो वि धम्मो विमओववनो, हणाइ वेयाल इवाविवन्नो ॥ ४४ ॥ जे लक्खण स्विण पउजमाणे, निमित्तकोऊहलसपगाढे । कुद्देडविज्ञासवदारजीवी, न गच्छई सरण तम्मि काले ॥ ४५ ॥ तमतमेणेन उ से असीळे, सया दुही विष्परियामुनेह । संघावई नरगति-

रिक्पजोर्गि मोर्ज विराहेतु असातुरुवे ॥ ४६ ॥ श्रोहितं कीमगई निगर्म व शंबरे किनि बावेसियाँ । अभी विद्या सम्बन्धवी भविता हुतो पुर नक्क गु पान ॥ ४७ ॥ न ते भरी कंठकेता करेड्, वं से करे कप्पनिया हरप्पया । से नाईर्र मनुमुद्दं तु पते। पष्णानुदानेश ब्यानिहली ॥ ४८ ॥ निरद्विया नम्पर्के हे तस जे चरामद्वे निवजासमेह। इसे नि से नित्य परे नि कोए, बुदनों नि से क्रिका तत्व कोए ॥ ४९ ॥ एमेन:प्रहार्छवन्त्रशीकस्त्री मर्ग्य विराहित जिल्लामार्थ । इस्पै विवा भोगरसाखागिका निरङ्कसोवा परिवानमेह ॥ ५ ॥ सोबान केहानि ! सुवारित इमें अलुसासर्ग नारमुजानवेथे । यस्में क्षरीकाच चहाय स्टब्से अहानिर्वक्षय स् पदेन ॥ ५९ ॥ चरित्रमायाग्यूयविष् तन्नी कनुतरं संजन वास्त्रियार्च । निरास्त्रे र्पयनियाभ करमं उनेह ठाणं विरुद्धारमं पुनं ॥ ५२ ॥ एकुरमहंदे वि महारानोधने सहस्मुनी सहायदेवे सहायसे । सहायिबंदिकानियं सहाद्वर्य से बहेर्द सहस्र निव रेणं ॥ ५३ ॥ दुझे व सेविको राजा अवस्थाह वर्धवती । अवस्य वदार्थ प्रदु ने उन्देशियों h भार h सुरको सन्दर्भ स म्युल्यकार्म सामा प्रमाण न देने महेरी । हुन्मे सपादा व संबंधना व नं मे ठिया समें विज्ञतमार्थ ॥ ५५ ॥ तं ति नाहो क्रणाहानं सम्बभूगान संबया । धामेनि ते महासाम । इस्क्रमा नर् सासितं ॥ ५६ ॥ पुष्टिकान सप् मुक्तं झालकियो र जो क्लो । निसंदिया व मोगेहि, दं सुन्नं भरिसेदि मे ॥ ५० ॥ एवं हुनिताच स रायवीही अजगारकी परमाह मसिए। समीरोही सपरिवनी सर्वपनी कमास्प्रती विस्तेम नेपस ह ५० ह करियरीमकूनी श्राकण य प्रशासिकी। अभिवेदिकार शिरका कहनाको नराहियो ॥ ५९ ॥ इसरी नि गुजबरिमको रिग्रसियुको रिप्रियसको सः। विदय हम विस्मानी निक्र वहाई विश्वमानी ॥ ६ ॥ ति जीन ॥ इति सञ्चानियंदिश्रमार्मे वीसहमें अज्ञायने समर्थ ॥ २० ॥

### **अइ** समुद्रपालीय णाम पृगवीसङ्ग अञ्चायणं

र्णनाए पाकिए भाग, सामए आधि वानिए। श्रवाधीरस्य शतकां सीते तो प्र सप्पत्नो ॥ १ ॥ तिर्माये पावकां सामए से नि कोमिए। पोएन ववस्पते प्रितं सगरसामए ॥ १ ॥ पिद्वेषे नवस्पतस्य वानिकां धेद धूनरं। ते स्वयं प्रक्रिया सपेसमह परिकारो ॥ १ ॥ कह पाकिनस्य करणी समृहीमा स्यवतं। वद कम्प

1 12

१ विरक्षमो जिनक्यो वि ।

तिह जाए, समुद्दपानिति नामए ॥ ४ ॥ रोमेण आगए चप. सावए वाणिए घर । सवदृई तस्य घरे, दारए से मुहोडए ॥ ५ ॥ वावत्तरी कलाओ य, सिक्सई नीड-कोतिए । जोव्वणेण य सपन्ने, सुन्वे पियदमणे ॥ ६ ॥ तस्म रवनड भज, पिया आणेड हविणि । पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुद्ओ जहा ॥ ७ ॥ अह अजया कयाई, पासायालीयणे ठिओ । वज्यमङणसोनागं, वज्य पासइ वज्यग ॥ ८॥ त पासिऊण चिवरगो, ममुद्धालो उणमच्चनी । अहोऽमुभाण कम्माण, निजाण पावग इम ॥ ९ ॥ सबुद्धो सो तिह भयव, परमसवेगमागओ । आपुच्छऽम्मा-पियरो, पत्वए अणगारिय ॥ १० ॥ जहित्तु मग्गथ महाकिलेस, महतमीह कसिण भयावह । परियायचम्म चऽभिरोयएजा, वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥ ११ ॥ अहिंससच च अतेणग च, तत्तो य वभ अपरिग्गह च। पडिवज्जिया पचमहन्व-न्याणि, चरिज धम्म जिणदेसिय विदू ॥ १२ ॥ सन्वेहिं भूएहिं दयाणुकपी, राति-क्खमे सजयवभयारी। सावजजोग परिवज्जयंतो, चरिज भिक्ख सुनमाहिइदिए ॥ १३ ॥ कालेण काल विहरेज रहे, वलावल जाणिय अप्पणो य । सीहो व सदेण न सतसेजा, वयजोग सुन्धा न असन्भमाहु ॥ १४ ॥ उनेहमाणो उ परिन्वएजा, पियमप्पिय सन्त्र तितिक्खएजा । न सन्त्र मन्वत्थऽभिरोयएजा, न यावि पृय गरह च सजए ॥ १५ ॥ अणेगछदा इह माणवेहिं, जे मावओ सपगरेड भिक्खू । भयभेरवा तत्य उइति मीमा, दिव्वा मणुरुसा अदुवा तिरिच्छा ॥ १६ ॥ परीसहा दुव्विसहा अणेगे, सीयति जत्था वहुकायरा नरा । से तत्य पत्ते न वहिज्ज भिक्खु, सगामसीसे इव नागराया ॥ १७ ॥ सीओसिणा दसमसा य फासा, आयका विविहा फुसति देह । अकुकुओ तत्यऽहियासएजा, रयाई खेवेज पुराकयाई ॥ १८ ॥ पहाय राग च तहेव दोस, मोह च भिक्ख सयय वियक्खणो। मेरूव वाएण अकपमाणो, परीसहे आयगुत्ते सहेजा ॥ १९ ॥ अणुत्रए नावणए महेसी, न यावि पृय गरहं च सजए । स उज्जमान पिंडवज्ज सजए, निन्चाणमग्ग विरए उचेइ ॥ २० ॥ अरड-रइमहे पहीणसयवे, विरए आयहिए पहाणव । परमद्वपर्एाई चिद्वई, छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥ २१ ॥ विवित्तलयणाइ भएज ताई, निरोवलेवाइ असथडाइ । इसीहिं चिण्णाइ महायसेहिं, काएण फासेज परीसहाइ॥ २२॥ सन्नाणनाणोवगए महेसी, अणुत्तरं चरिङ धम्मसचय । अणुत्तरे नाणधरे जससी, ओभासई सूरिए वतिहेक्खे ॥ २३ ॥ इतिह खनेऊण य पुण्णपान, निरंगणे सन्वओ विष्पमुक्ते । तरिता समुद व महाभवोघ, समुद्दपाले अपुणागम गए॥ २४॥ ति-वेमि॥ इति समुद्द-पालीयं णामं एगवीसहमं अज्ज्ञयणं समत्तं ॥ २१ ॥

### अह रहनेमिक्षनाम बाबीसङ्गमं अज्ज्ञयणं

सोरिक्पुरम्मि नवरे, आसि राजा महित्रिए । वश्चवेत्रति नामर्थ रामकरवन र्फेटए ॥ १ ॥ तस्य मन्या हुने वासी रोक्षिणी बेनडे तहा । तासि होनां हुने प्रण इद्वा रामकेसना ॥ २ ॥ सोरिवपुरम्मि नवरे नासि एमा महिन्नेप् । स्पुर्मिक्र् मार्ग रामस्वन्द्रणसंहर् ॥ ३॥ वस्त समा ताना नाम तीसे पुत्तो महा<sup>क्</sup>रो भगवं महिन्नेमित्ति स्त्रेयनाहे ब्यीसर्र ॥ ४ ॥ सीऽरिक्नेमिनामी स अस्ववरसर संख्यो । सद्वराहस्यकमञ्चलकरो । गोनमो श्रावसम्बद्धनी ॥ ५ ॥ वजरिसहस्वनको समस्वरंतो झसीयरो । तस्य रावमहेकस अञ्च बावह कक्ष्मो ॥ ६ ॥ वह स रायवरकता सरीका चारुपेडणी । सम्बद्धकरंपका विक्रमीवासविष्यसा है क क्षड़ोड़ बचमो सीसे बासदेनें महिन्दिनं । इहायपक्रत डमारो जा से वर्ड दहाने हैं II ८ II सम्बोस**्टि ज्**षिको कवकोतसम्मको । विव्यवसम्परिहेको आस्ट्रेस मिम्दिको ॥ ९ ॥ मर्ग च ग्रंबहर्ति च शास्त्रदेवस्य बेक्टम । कारको सोहए करिय हिरं चूडामणी बहा ॥ १ ॥ शह असिएच स्रोप बामराहि व सेवियो । इसर चडेरा व सो सम्बन्धी परिवारिको ॥ १९ ॥ बाउरेमिजीए सेवाए, रहवार ब्युडरी दुरियाण सक्रिनाएणं विश्वेणं गगण कुछ ॥ १९ ॥ एवारिसीए स्ट्रीए, हर्तीए <sup>बर्ग</sup> माइ व । निक्याची सरणाजी निकाची विन्धियरो ॥ १३॥ बाइ सी छब निर्मी दिस्स पाने सन्दूर । वाडेक्क् पनरेहिं च संनिक्ते छङ्किकर ॥ १४ ॥ बीमेर्न इ स्पत्ते. संस्कृतः सनिकारण्यप् । पारिता से सहापके सार्ती इजनव्ययो ॥ १५॥ वस्य अद्वा हमे पाचा एए सम्में सुद्रेशियो। शाबेहि ग्रंबरेहिं व सतिहरू म मन्त्रव्हि । १९३ बाइ सारही तको मगह, एए महा उ शानियो । त्राची विवाहकक्रमा मोनाके पू क्षर्य ॥ ९७ ॥ सीक्षण रास्य वन्यं बहुपाविविवासयं । विरोह से महानवे सङ्गीरी जिएमि छ ॥ १८॥ ज्व राज्या कारका एए, इस्मीरी प्रवत्न जिया। न मे एवं हु निरहेण परकोगे सन्दिराष्ट्री ॥ १९ ॥ सो कुंबकाय सुवक सुरार्थ च सहायसे । आस्त्रस्थी व सम्मामि सारिष्टिस प्रमामए॥ १ ॥ मनपरिणामो य स्था देश व सहीत समोदन्या । सन्निष्कृष्टि सपरिसाः निवनामनं तस्य चार्व के स २९ ॥ वस्पन्ति परिवृत्तो सीमारमणं तथो समावत्ते । निवक्तमेस कारणाओ देवसवीम हिन् भगवं ॥ २१ ॥ उजार्ण संपत्तो क्षेत्रण्यो उत्तमान वीधानो । सहसीह वरिष्ट

१ कोउन-मुसस्मर्का क्लिककमार्था संगर्क-वदिकक्कबदुव्यार्वद्वाहवा क्रिजें विद्वानं तस्यमदपनविववेगाविनरीष्ट्रक्रमपेराणुरारचमकियो नि बद्धी ।

# सूत्र श्री भगवतीजी शतक १२वां उद्देशा ५वां ।

(रूपी श्ररूपी के १०६ वोल)

रूपी पदार्थ दो प्रकार के होते हैं, एक अप्रस्पर्श वाले जिनसे कितनेक पदार्थों को चरम चलु वाले देख सके, दूसरे चार स्पर्श वाले रूपी जिन्हों को चरम चलु वाले देख नहीं सके, अतिशय ज्ञानी ही जाने। अरूपी—जिन्हों को केवलज्ञानी अपने केवलज्ञान द्वारा ही जाने-देखे।

- (१) आठ स्पर्श | वाले रूपी के संचित से १४ वोल है। यथा—छे द्रव्य लेश्या (कृष्ण, नील, कापोत, तेजस, पन्न, श्रुक्क) ग्रीदारिक शरीर, वैकिय शरीर, व्याहारक शरीर, तैजस शरीर, एवं १० तथा समुचय, घणोदधि, घणवायु, तणवायु, वादर पुद्रलों का स्कन्ध ग्रीर काया का योग एवं १४ वोल में वर्णादि २० वोल पावे। २००
  - (२) च्यार स्वर्श वाले रूपी के ३० वोल है, अठारां पाप, आठ कर्म, मन योग, वचन योग, सूदम पुद्गलों का स्कन्ध, और कारमण शरीर एवं ३० वोल में वर्णादि १६ वोल पावे। ४८० वोल।
    - (३) अरूपी के ६१ वोल है, अठारा पाप का त्याग करना, वारह उपयोग, कृष्णादि छे भाव लेश्या, च्यार संज्ञा ( ब्राहार० भय० मैथुन० परिग्रह० ) च्यार मतिज्ञान के भांगा

अह निक्खमई उ चिताहिं ॥ २३ ॥ अह से सुगधगंधीए, तुरिय मउयकुचिए । सयमेव छुंचई केसे, पचमुद्रीहिं समाहिओ ॥ २४॥ वासुदेवो य ण भणइ, छुत्तकेस जिडदिय । इच्छियमणोरह तुरिय, पावसु त दमीसरा । ॥ २५ ॥ नाणेण दसणेण च, चिरत्तेण तहेव य । खतीए मुत्तीए, वहुमाणो भवाहि य ॥ २६ ॥ एवं ते राम-केसना, दसारा य वहू जणा । अरिट्टणेर्मि वदित्ता, अङगया वारगापुरिं ॥ २७ ॥ सोऊण रायकन्ना, पव्यजा सा जिणस्स उ। नीहासा य निराणदा, सोगेण उ समु-च्छिया ॥ २८ ॥ राईमई विचितेइ, धिरत्यु मम जीविय । जाऽहं तेण परिचता, सेय पव्वइड मम ॥ २९ ॥ अह सा भमरसिनमे, कुन्नफणगसाहिए। सयमेव छिनई केसे, धिइमंता ववस्सिया ॥ ३० ॥ वासुदेवो य ण भणइ, छत्तकेस जिइदिय । ससारसागरं घोरं, तर कन्ने ! लहुं लहु ॥ ३१ ॥ सा पव्यइया सती, पव्यावेसी तर्हि वहु । सयण परियण चेव, सीलवता वहुस्सुया ॥ ३२ ॥ गिरिं रेवयय जती, वासेणुह्रा उ अतरा। वासते अधयारीम, अतो लयणस्स सा ठिया॥ ३३॥ चीवराइं विसारंती, जहाजायित पासिया। रहनेमी भगगिचतो, पच्छा दिह्रो य तीइ वि ॥ ३४ ॥ सीया य सा तहिं दहु, एगते सजय तयं। बाहाहिं काउ सगोप्फ, वैवमाणी निसीयई ॥ ३५॥ अह सो वि रायपुत्तो, समुद्दविजयगओ । भीय पवेविय दट्ट, इम वक्कमुदाहरे ॥ ३६ ॥ रहनेमी अह भद्दे । सुरूवे । चारुभासिणी । मम भयाहि स्रयणु !, न ते पीला भविस्सई ॥ ३७॥ एहि ता भुजिमो भोए, माणुस्स ख सुदुह्नह । भुत्तमोगी तओ पच्छा, जिणमग्ग चरिस्समो ॥ ३८ ॥ दहूण रहनेमिं त, मग्गुज्जोयपराजिय । राईमई असमता, अप्पाण सवरे तर्हि ॥ ३९ ॥ अह सा रायवरकन्ना, द्विट्टिया नियमव्वए। जाई कुल च सील च, रक्समाणी तय वए ॥ ४०॥ जइऽसि रूवेण वेसमणो, ललिएण नलकूवरो। तहा वि ते न इच्छामि, जइऽसि सक्ख पुरंदरो ॥ ४१ ॥ पक्खदे जलिय जोई, धूमकेउ दुरासय । नेच्छति वतय भोतु, कुळे जाया अगधणे ॥ ४२ ॥ धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो त जीविय-कारणा । वत इच्छिसि आवेउ, सेय ते मरण भवे ॥ ४३ ॥ अह च भोगरायस्स, त च सि अघगवण्हिणो । मा कुळे गवणा होमो, सजम निहुओ चर ॥ ४४॥ जड त काहिसि भाव, जा जा दिच्छसि नारिओ । वायाविद्योव्व इढो, अट्टिअप्पा भवि-स्सिति ॥ ४५॥ गोवालो भडवालो वा, जहा तद्दव्वणिस्सरो । एव अणिस्सरो त पि, सामण्णस्स भविस्सिसि ॥ ४६ ॥ कोइ मार्णं निगिण्हित्ता, माय लोम च सन्वसो । इदियाइ वसे काल, अप्पाण उवसहरे ॥ ४७॥ तीसे सो वयण सोचा, सजयाए द्यभासिय । अकुसेण जहा नागो, धम्मे सपिडवाइस्रो ॥ ४८ ॥ मणगुत्तो वयगुत्तो,

वे जिलों ने संसमी हमी। अजो वि संसभी शर्मा है से बहुत योजना वि ४४ है अंदोहियमधेम्या क्या बिह्न गोवमा! । एकेड विश्वसम्बन्धि सा उ वस्ति। कर्<sup>र</sup> ॥ ४५ ॥ तं कर्य सम्बंधी किता - उद्यक्तिता समुक्तिये । विकासि व्यक्ति सुक्रोमि विरामक्कार्य ॥ ४६ ॥ समा म इह का लुक्ता है केही गोममसम्बर्ध । वेशिमे पुर्वेत तु गोयमो इनसन्तवी ॥ ४७ ॥ सन्तव्हा समा नृता सीमा भीमप्रकेष<sup>ता</sup> रामुख्यितु बहानाथ, विहरामि बहासुई ॥ ४८ ॥ साह गीयमा पत्रा ते कियो वे चंत्रजो इसो । असो वि गंगको सर्जा र में कहत गोनमा । ॥ ४५ ॥ पंत्रजीन भोरा कामी चिद्वर गोनमा । जे बहुति सरीरत्या कई विज्ञानिया हुने । ॥ ५ महानेहुप्पस्याको सिज्हा चारि बहुत्तर्य। सिंचामि सक्वं बेर्ड्, शिता हो वहीं है ॥ ५९॥ कार्गी य इह के हुत्ता है केरी धोयसम्बन्धी। <del>वस्तिन</del> कुर्वे द्व, योजने ही सम्बद्धी ॥ भर ॥ वर्षामा व्यवस्थित कुला, स्वत्रक्रियतो वर्षः । स्वयमारिवा कुल निका हु न बहुरि में ॥ भर ॥ साहु योगमा (क्या हे किसी में संस्था हमें। क्या वि संस्था सम्बद्धी में ॥ भर ॥ साहु योगमा (क्या हो किसी में संस्था हमें। भागहै। वंशि गोसमा । भारको कई शंच म हिर्मि है। ५५॥ प्रमानंत निरिकारि द्वयरस्वीतमाद्वियं । न ने गरभद्व उत्मन्त्रं अर्था च पश्चिमको ४ ५६ 🛭 बाते व स् हुते हैं केबी मोनसम्बन्ध । केविसेंब हुर्गते हु, गोवसो इक्सव्यत्री ॥ ५४ ॥ वर्ष साहरिको मीनो बुद्धस्तो परिजावहै। त सम्म हा निर्माणको नामकिनाह केर्य हा ५८ ॥ साहु गोबम र जना ते कियो में एसओ हुनो । जनो में ऐसओ स्में र्त में कहा गोमना । ॥ ५६ ॥ कुण्यता बहुने स्त्रेण, केहि नाचेति कंतुनी । स्टब्स मह बहुती दें न भारति योजना है ॥ ६ ॥ के ब मनोब शक्केंद्र के स क्रम्पर्न पश्चिमा । चे सम्बंबेहना सम्बं तो न नन्सासम् सभी । ॥ ६१ ॥ समी व सं हुते हैं केही सोधममञ्जूषी । केशिमेर्च हुन्तर हा गोधमी इनसम्बद्धी है देरे हैं कुप्पन्यस्थापिकी सन्त्री सम्मानगा । जनवश्य व्यवस्था सम्मानगा । स्थानगा सम्मानगा स्थानगा । कुप्पन्यस्थापिकी सन्त्री सम्मानगा क्षित्रा । सम्मानगा स्थानगा स्थानगा स्थानगा । कप्तमे ॥ ६३ ॥ साहु गोसम । पत्रा से किसी से संस्था हमी । असी से सम्ब बत्तम ॥ ६२ ॥ साहु गांधम ! पत्ता ते किस्तो से पंताओ हमी ! स्वर्ध में प्रशास सर्व्य ए में कायु गांधमा ! ॥ ६५ ॥ सहावर्गकोल व्यक्तां माना माना स्तरण गई पद्धा व की सं मावारी सुन्ति । ॥ ५५ ॥ स्वित्र एसे आर्थि सामिन्दी सहास्त्रमा । महावर्गकेसस्य गाँव राव्य न विकारी ॥ ६५ ॥ देर्ड द हार्ड हुत्ते : केसी पोससम्बन्धना । केसीमेर्च कुर्तर सु मोनामे हत्त्रसम्बन्धना ॥ ५४ ॥ वर्ष-स्तर्भित्यं कुणसमावात्र पाणियं। बस्तो बीचो पद्धा न वहं परस्तुत्तर ॥ ६८ ॥ सहस्त्रमावात्र पाणियं। बस्तो बीचो पद्धा न वहं परस्तुत्तर ॥ इत्तर ।

गोयमा ! ॥ ६९ ॥ अण्णवसि महोहंसि, नावा विपरिधावई । जंसि गोयम ! आर्डो, कह पार गमिस्सिति <sup>2</sup> ॥ ७० ॥ जा उँ अस्साविणी नावा, न सा पारस्म गामिणी । जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥ ७१ ॥ नावा य इइ का बुत्ता <sup>२</sup> । केसी गोयममच्ववी । केसिमेवं बुवत तु, गोयमो इणमच्ववी ॥ ७२ ॥ सरीरमाहु नावति, जीवो बुचइ नाविओ। ससारो अण्णवो बुत्तो, ज तरिति महेसिणो॥ ७३॥ साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो में ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्झ, तमे कहस गोयमा ! ॥ ७४ ॥ अधयारे तमे घोरे, चिट्ठति पाणिणो वहू । को करिस्सइ उज्जोय 2, सञ्बलोयम्मि पाणिणं ॥ ७५ ॥ उग्गओ विमलो भाण्, सन्बलोयपभकरो । सो करिस्सइ उज्जोय, सन्वलोयिम पाणिण ॥ ७६ ॥ भाणू य इइ के चुत्ते 2, केसी गोयममन्त्रवी । केसिमेव धुवंत तु, गोयमो इणमब्त्रवी ॥ ७७ ॥ उग्गओ खीणससारो, सञ्बन्न जिणमक्खरो । सो करिस्सइ उज्जोय, सञ्बलोयिम पाणिण ॥ ७८ ॥ साहु गोयम ! पना ते, छिन्नो में ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्झ, त में कहर्स गोयमा । ॥ ७९ ॥ सारीरमाणसे दुक्खे, वज्झमाणाण पाणिण । खेम सिवमणावाह, ठाण किं मन्नसी मुणी 2 ॥ ८० ॥ अत्य एग धुन ठाण, लोगगगिम दुरारहं । जत्य नित्य जरा मन्त्र, वाहिणो वेयणा तहा ॥ ८१ ॥ ठाणे य इइ के बुत्ते 2, केसी गोयममञ्जवी । केसिमेव युवत तु, गोयमो इणमञ्जवी ॥ ८२ ॥ निञ्चाण ति अवाह ति, सिद्धी लोगगगमेव य । खेम सिव अणावाह, ज चरति महेसिणो ॥ ८३ ॥ त ठाण सासय वास, लोयग्गमि दुरारुह । जं सपत्ता न सोयति, भवोहंतकरा मुणी ! ॥ ८४ ॥ साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो में ससओ इमो । नमो ते ससयातीत !, सन्बद्धत्तमहोयही ॥ ८५ ॥ एव तु ससए छिन्ने, केसी घोरपरक्रमे । अभिवदिता सिरसा, गोयमं तु महायस ॥ ८६ ॥ पंचमहन्वयधममं, पिडवजाइ भावओ । पुरिमस्स पच्छिममि, मरगे तत्थ युहावहे ॥ ८७॥ केसीगोयमओ निच, तमि आसि समागमे। ग्रुयसीलसमुक्करिसो, महत्यत्यविणिच्छ्यो ॥ ८८ ॥ तोसिया परिसा सन्वा, सम्माग समुवड्रिया । सथुया ते पसीयतु, भयव केसिगोयमे ॥ ८९ ॥ ति-बेमि ॥ इति केसिगोयमिज्जणामं तेवीसइमं अज्झयणं समत्तं ॥ २३ ॥

## अह समिईओ णामं चउचीसइमं अज्झयणं

अड पवयणमायाओ, सिमेई गुत्ती तहेव य । पचेव य सिमेईओ, तओ गुत्तीउ आहिया॥ १॥ इरियाभासिसणाँदीणे, उच्चारे सिमेई इय । मणगुत्ती वयगुत्ती, कायगुत्ती

विकास सम्ब संचनामे य भद्रमा ॥ २ ॥ एयाओ भद्र समिदेशो समासेम विवाहितः। दुवाकरमं विवत्रवर्ग मार्ग जल्प र पदयर्ग ११ १ ॥ (१) आर्थकोर्ण कांग्रेज समीर्थ बस्पाई व । बस्स रणपरिसुद्धं, संजय इरियं रिष् ॥ ४ ॥ तस्य आसंबर्ण नार्व ईसनं बरबं दहा । नार्व

म निवसे चुत्ते मध्ये सप्पद्धवाजिए ॥ ५ ॥ वृष्यकी खेतांकी चेव कार्यकी मार्चके छ।। जनणा चटिमहा वृत्ताः सं में कित्तवभो द्वय ॥ ६ ॥ वृष्णको चक्क्या पेहे. हर्यात ष दोत्तको । कारुको बाद रीइजा उदस्ते य मानको ॥ ७ ॥ ईवियत्वे निर्माण सज्ञार्थ भेव पंचहा । तम्मुची तम्मुखारे उद्यक्ते हैर्य हिए ॥ ८ ॥ (१) होई मेने स मायाएँ, कोर्मे स उवज्ञाया। होसे माँद मोद्दिरें, विवहार्द्ध टोहेव व छ ८ ह एसर्र अङ्गाजारं परिवासनु पंतरए। सदासको मिन्ने वाले आएं आएंत आर्थना ॥ १ ॥ (१) गवेसणाएं महैले स परियोगसणैं। स जा। बाहि।टोबैहिसेसाएँ, एर हिति निरोद्द्य ॥ ११ ॥ राज्यमुष्पायणं पत्रमे श्रीए रहेहेज एराणं । परिग्हेसम्म सङ्ग्रहे मिसोहेज जर्म बहै ॥ १२ ॥ (४) ओहोबेहोकमाँद्वियं संबर्ध दुनिई सुवी। किर्देश निक्तियांती व पर्वजेज इसं निर्दे ॥ १३॥ चन्युसा पविकेदिता पसलेज वर्ग वर्ग भाग्य निक्तिवेका वा बुद्भोऽवि समिए सवा ॥ १४ ॥ (५) तवारं पासन्त है

1099

चिंगागजानिनं । भाषारं उनहीं वेर्ड, भर्च वानि सहामिई स १५ स समायानमस्बोध मजाबाए चंब होह रंकोएँ। मानायमध्योएँ, भावाए चेब रंकोर्एँ ॥ १६॥ अवस्थान मर्चन्तेए, परस्चऽन्त्रवाह्य । समं अञ्चादिरे वानि अनिरक्षकञ्चामि व ॥ १४ ह मिरिकणी बुद्रमोगावै नासकै निक्रमामण । तसपानवीनरक्रिए, तमाराहेमि नोविर II १८ II एवाओं पंत्र समित्रंको समासेक निवाहिया। एतो य तको ग्रुतीको सेक्स्पर म्हापुम्बक्षे प्र: १६ प (६) छनी तहेन मोशा य सम्बामोरी तहेर प्र। बडानी <sup>सर</sup> समिति व मनपुती सर्वाभित्व । २ ॥ धर्ममध्यात् कारमाम्य तहे व । स्व भारमार्थ तु, निमोज सर्व सहै ॥ २२ ॥ धर्ममध्यात् कारमाम्य तहे व । स्व भारमार्थ तु, निमोज सर्व सहै ॥ २२ ॥ (७) धर्मा तहेव मोशी म स्वामीर्थ राहेन न । चठत्वी शस्त्रमारीं। न कश्युची चठन्विहा ॥ २२ ॥ धरमसमासि नार मन्मि तहेव स । वर्ष पवक्तमार्च तु, नियक्तेज वर्ष अहै ॥ २३॥ (८) हार्वे निर्धार्य भेव तहेव स तुम्हणे । टार्डपणपर्वपणे हेविनाण स जनमे ॥ २४ ॥ संरमध्मारी मार्टमन्मि ठहेव स । कार्व पनतमान तु नियतिक कर्य वह ध २५ प्र एवाको रेप समिईमो वरमस्य व पवताने । युत्ती भिवताने बुता अस्तारकेन्द्र सम्बसी ॥ २६ ॥ इत पन्यणमाना जे सम्में भागरे सुन्नी। सो बिच्चं सम्मस्तारा बिच्चसुन्द र्वतिए व र ति-वेसि 🛮 इति समिर्द्रको जामं श्वरुवीसहमे अञ्चयमं समर्च 🛭 🕬 🖰

## अह जन्नइज्ञनामं पंचवीसइमं अज्झयणं

माहणकुलसभूओ, आसि विष्पो महायसो । जायाई जमजन्नंमि, जयघोसित्ति नामओ ॥ १ ॥ इदियग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी । गामाणुगाम रीयते, पत्तो वाणारसि पुरि ॥ २ ॥ वाणारसीए वहिया, उज्जाणंमि मणोरमे । फासुए सेज्जसथारे, तत्थ वाससुवागए॥ ३॥ अह तेणेव कालेण, पुरीए तत्थ माहणे। विजयघोसिति नामेण, जन्न जयइ वेयवी ॥ ४॥ अह से तत्थ अणगारे, मासक्ख-मणपारणे । विजयघोसस्स जन्नमि, भिक्खमट्टा उवद्विए ॥ ५ ॥ समुवद्विय तर्हि सत, जायगो पिडसेहए। न हु दाहामि ते भिक्ख, भिक्ख् । जायाहि अन्नमो ॥ ६॥ जे य वेयविक विप्पा, जन्नहा य जे दिया । जोइसगविक जे य, जे य वम्माण पारना ॥ ७ ॥ जे समत्था समुद्धतु, परमप्पाणमेव य । तेसि अन्नमिणं देय, भो भिक्खु! सव्वकामिय ॥ ८ ॥ सो तत्य एव पिडसिद्धो, जायगेण महामुणी । निव रहो निव तुहो, उत्तमहुगवेसओ ॥ ९ ॥ नम्नहु पाणहेउ वा, निव निव्वाहणाय वा । तेसिं विमोक्खणद्वाए, इम वयणमञ्जवी ॥ १०॥ नवि जाणासि वेयमुह, नवि जन्नाण ज सह । नक्खताण सह ज च, ज च धम्माण वा सह ॥ ११ ॥ जे समत्या समुद्धत्, परमप्पाणमेव य । न ते तुम विद्याणासि, अह जाणासि तो भण ॥ १२ ॥ तस्तक्खेवपमोक्ख तु, अचयतो तिहं दिओ। सपरिसो पजली होउ, पुच्छई त महामुणि ॥ १३ ॥ वेयाण च मुह वूहि, वृहि जन्नाण ज मुह । नक्खत्ताण मुह बृहि, बृहि धम्माण वा मुद्द ॥ १४ ॥ जे समत्या समुद्धत्त, परमप्पाणमेव य । एय में ससय सन्व, साहू! क्हस पुच्छिओ ॥ १५ ॥ अग्गिहुत्तमुद्दा वेया, जन्नट्टी वेयसा मुद्द । नक्खत्ताण मुद्द चदो, धम्माण कासवो मुद्दं ॥ १६ ॥ जहा चंद गहाईया, चिहति पंजलीउडा । वदमाणा नमसता, उत्तम मणहारिणो ॥ १७॥ अजाणगा जन्नवाई, विजामाहणसपया । गृहा सज्झायतवसा, भासच्छना इवगिगणो ॥ १८ ॥ जो लोए वमणो बुत्तो, अग्गी व महिओ जहा । सया कुसलसदिह, त वय वूम माहण ॥ १९ ॥ जो न सज्जइ आगंतु, पन्वयतो न सोयड । रमइ अजन वयणिम, त वय वृम माहण ॥ २०॥ जायस्व जहामह्र, निद्धतमलपावग । राग-दोसभयाईय, तं वय वृम माहण ॥ २९ ॥ तवस्सिय किस दत, अवचियमंससोणिय । स्ववय पत्तनिव्त्राण, त वय वूम माहण ॥ २२ ॥ तसपाणे वियाणेता, सगहेण य थावरे । जो न हिंसइ तिविहेण, तं वय वूम माहण ॥ २३ ॥ कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया । मुस न वयई जो उ, तं वय वूम माहण ॥ २४ ॥

( बसाइन्स्ट्रे

माइगं ॥ २७ व विम्बमाजुस्ततिरिक्क को न सेवह महुनं । मणसा रामसे वं, दें वर्ग वृत्त माइच ॥ २६ ॥ वहा पोर्ग वक्षे कार्य जोवक्षिप्पत वारिजा । एवं वर्षि कामेर्डि, ते वर्ष कृत आहर्ष ॥ २७ ॥ अलोहर्ष सहाजीर्षि अपगारे **सके**रव मर्गमतं गिहत्येश तं नर्ग कृम माहर्ज ॥ २८ ॥ बहिता पुम्क्सकोर्ग ना स्पे ह र्ववरे । जो न सम्बद्ध भोगेसः तं वर्ष वृद्ध भाइर्ज ॥ २९ ॥ प्रस्वंबा सम्बदेश स्ट च पारकम्मुचा । न त तानति दुस्तीकं कम्मामि वसर्वति हि ॥ ३ ॥ न में मुंबिएन समनो न लॉकरेन कमनो । न मुधी रच्चवासेचं क्रसर्वारेन न तानी u १९ n समयाए समनो होह, बैमचेरेय बेमजो । मानेय य सुनी होह, हने होर तावसो प्र १२ ॥ कम्मुचा बंगयो होत, कम्मुचा होर यक्तिये। बन्हों कम्मुणा होह, मुद्रो इवह कम्मुणा ॥ ३३ ॥ एए पाउकरे मुद्रे, बेह्री होई स्थानने सम्बद्धमनिविन्सुई देशव बूग गाइनं॥ ३४ ॥ एवं गुजसमावता वे संबंधि विरुक्तमा । ते समल्बा समुद्धतं, परमप्पायमेव व ॥ ३५ ॥ एव द्व संस्पृ जि विक्समोधे स सहरो । समुदास तको ते हा, बरबोधे सहस्मानि ॥ ३६ ॥ छहे <sup>व</sup> निजयपोसे इमसुदाहु कर्मको । माहचर्त बहासूर्य सुद्ध म छवर्सिर्य 🛭 🕽 तुष्मी जहमा क्षणाया तुष्मी वेयनिक निक । जोहर्सगनिक तुष्मी तुष्मी क्षम्या<sup>व</sup> पारवा ॥ ३८ ध तुरूने समत्या उनके परसप्पायमंत्र व । क्रम्युनाई करेकन निक्केचं निक्कृतसमा l n ३९ ॥ न कर्व सम्ब्र निक्केच कियं निक्कमध्येका । सा मनिश्चित्त समारके भोरे संमारसागरे ॥ ४ ॥ उपकेनो होह सोगेट, अमीमी नोनकिपाई । मोगी ममद् संसारे अमोगी विप्रमुखई ॥ ४९ प्र समे हस्बां व वी पूरा गोलमा महिनामना । दो वि सानडिया <u>क</u>र्व स्रो तले सोडल समार् 🛭 🗸 🕻 एवं समादि दुम्मेहा व गरा कामकाकशा । बिरशा व स कमोदि बदा हे हाँगी क्यू ॥ ४३ ॥ एवं से मिजसमोसे जसमोसस्य अंतिए । भवनारस्य निवर्ता वर्ण सीना क्लुतरे ॥ ४४ ॥ सनिता पुरनक्त्माई, संबदेण तनेप ए। जनकेन्द्रिय भोधा सिद्धि पना सनुसर्व ॥ ४५ ॥ ति-नेमि ॥ इति जम्महस्रमामे देखदी सहमं अज्ञायणं समर्च 🛙 २५ ॥

2028

**अइ** सामायारी णार्म कच्चीसङ्ग अञ्चय<sup>र्ण</sup>

सामाबारि प्रकटामि सम्बद्धस्यविमोक्यवि । वं बरिताय विर्मात

ससारसागर ॥ ९ ॥ पटमा आवम्सिया नाम, त्रिडया य निसीहिया । आपुच्छणा य तहया, चटरवी पहिपुच्छणा ॥ २ ॥ पचमा छदणा नाम, उच्छाकारी य छट्टओ । सत्तमो मिन्छाकारो य, तहबारो य अहमो ॥ ३ ॥ अब्भुहाण च नवम, दसमी उवसपया । एमा दसगा माह्ण, मामायारी पवेडया ॥ ८ ॥ गमणे आवस्मिय कुन्ना, ठाणे कुन्ना निसीहियं । आपुच्छण सयकरणे, परकरणे पडिपुच्छण ॥ ५ ॥ च्टरणा द्वाएण, इन्छाकारी य सारणे। मिन्छाकारी य निंदाए, तहधारी पटिस्सुए ॥ ६ ॥ अन्भुद्वाण गुरुपृया, अन्छणे उत्रसपया । एव दुपचसजुत्ता, सामा-यारी पवेड्या ॥ ७ ॥ पुव्विहमि चडच्माए, आइचीम समुद्विए । भडय पडिलेहित्ता, विदेता य तओ गुरु ॥ ८ ॥ पुच्छिल पजलीउडो, कि कायव्य मए इह । इच्छ निओइंड भते !, वेयावचे व मज्झाए ॥ ९ ॥ वेयावचे निउत्तेण, कायव्व अगि-न्मयुओ । सज्झाए वा निउत्तेण, मन्बदुक्यविमोक्खणे ॥ १० ॥ दिवसस्स चउरो भागे, भिक्खू कुजा वियक्तणो । तभो उत्तरगुणे कुजा, दिणभागेमु चउमु वि ॥ १९ ॥ पहम पोरिति मज्झाय, वीय झाण झियायई । तडयाए भिक्खायरिय, पुणो चडतथीड सज्झाय ॥ १२ ॥ असाढे मासे दुपया, पोसे मासे चडप्पया । चित्तामोएस मासेत, तिप्पया हवइ पोरिसी ॥ १३ ॥ अगुल सत्तरतेणं, पक्खेण च दुअगुल । चट्टुए हायए वावि, मासेण चउरगुल ॥ १४ ॥ आसादवहल-पक्खे, भहवए कत्तिए य पोसे य। फरगुणवइसाहेसु य, वोद्धव्वा ओमर्त्ताओ ॥ १५ ॥ जेट्टामूले आमाढसावणे, छिहं अगुलेहिं पिडलेहा । अट्टाहें बीयतयिम, तइए दस अट्टीह चउत्थे ॥ १६ ॥ रित पि चउरो भागे, भिक्ख कुजा विय-क्लणो । तओ उत्तरगुणे कुजा, राइभाएस चउस वि ॥ १७ ॥ पटम पोरिसि सज्झाय. बीय झाणं झियायई । तइयाए निहमोक्ख तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ॥ १८ ॥ जं नेइ जया रित्, नक्खत्त तिम नहचडच्माए । सपते विरमेजा, सज्झाय पओसकालमि॥ १९॥ तम्मेव य नक्खते, गयणचडच्माग-सावसेसमि । वेरत्तिय पि काल, पडिलेहित्ता मुणी कुजा ॥ २० ॥ पुव्चिलमि चउन्भाए, पिंडलेहित्ताण भडय । गुरु विदेशु सज्झाय, कुजा दुक्खविमोक्खण ॥ २१ ॥ पोरिसीए चउन्माए, विस्ताण तओ गुरु । अपिडक्सिन्ता कालस्स, भायण पडिलेहए ॥ २२ ॥ मुहपोर्ति पडिलेहित्ता, पडिलेहिज गोच्छ्य । गोच्छ्य-लडयगुलिओ, वत्याइ पिंडलेहए ॥ २३ ॥ उद्घ थिरं अतुरिय, पुन्व ता वत्यमेव पिंडलेहे । तो विड्य पप्फोडे, तइय च पुणो पमजिजा ॥ २४ ॥ अणचाविय

१ सज्झायकालाओं अणिवित्तो होऊण । य्रता० ६५

कवित्रमं सण्णुवंशियमोसिकं चेव । छप्परिमा भव कोडा पाणीमामिसिरेर् ॥ २५ ॥ भारभका सम्मक्षा वजेनका व मोसकी तत्वा । पण्योजना वनली, विविश्वता नेइना चडी ॥ १६ ॥ परिविक्यमतेनसीका एगायोसा अनेदरम्पुण कुणइ पमाणपमार्थ संकिय राजणोत्रगं कुजा ॥ २० ॥ अज्बाहरिसर्विदेश क्षिक्वाचा तहेव य । प्रस्में एय पसर्व सेसानि त अपसरपाइ ॥ १८ । परिचेह्णं कुनंदों सिद्दों कई कुणड बचनसम्बद्ध वा । वेड् व प्रवस्तानं वाएर सर्वे पविकार वा ॥ २९ ॥ पुरुवीमासकाए, तेस्त्रास्त्रणपस्तर्शनं । पविकेरवासके छन्दं पि निराहको होह ॥ ३ ॥ पुरुषीकातकाप्, रोकमारुमध्यस्यराणं पविकेदगामासको अर्थ संस्कृतको होह ॥ ३९ ॥ तहसाए पोरेसीए, अर्थ पर्य गवेसए । छन्दं अक्षयगुर्गीम आर्थीम समुद्धिए ॥ १२ ॥ वेसम वैशास्त्रे इसेन्द्रार

य संक्रमक्काए । तह पाववतिवाए, छई पुत्र शम्मविताए ॥ ३३ ॥ तिमी भित्रमतो निर्माणी मिन करेज छाई चेव। ठायेक्ट व इमेक्ट, जनस्थाना है होइ ॥ ३४ त मार्नके उदसमी विविक्तावा वंशवेरातीय । पानिद्वा तरहेर सरीरनोच्छेननद्वार् ॥ ३५ ॥ अवसेसं मंडम पिळा चनन्द्रसा पहिलेदए। पर समोयनाओं निहारं निहरए सुनी n १६ n चतरबीए पोरिसीए, निरिस्तितान

सचागमे

**डिस्टस्टरम**्ड

1 44

सावर्ज । सन्दार्स तको कुमा सक्तमावविभावर्ज । १५ ॥ चेरिसीए बरुमाए विमित्ताय तक्ये गुर्व । पविद्रमिता काकस्य सेवां <u>त</u> पविकेदए ॥ १८ त याच्या भारमूर्ति च पडिसेहिज वर्ष वर्ष । शतस्त्रमा तसी क्रमा राज्यद्वस्त्रविमोश्यर्ण ॥ ३९ ॥ वेवतिर्वं च अक्सारं, चितिजा कळ्लुव्यक्ते । नाचं य इपने चेर चरित्तमि तहेव स ॥ ४ ॥ पारिसकातस्यामो वंतिताच तन्त्रे ग्रुवं । देवतिनं ह भइयारं आसोएन नक्समं ॥ ४९ ॥ पश्चिमीत विस्ताने विस्तान तम गुर्व । काउरसमा रामो कुमा सम्बद्धकानिमानमान । ४९ ॥ वारिकावरसम्ब विकाल तथा ग्रह । बुहर्मगर्छ च काळग काळे संपविकेषण ॥ ४३ व एउम स्टेरिक धज्यार्थ निर्मे सार्ग क्रियायहै । तहवाए निहमोर्स्य ह धज्यार्थ ह बर्गिर B ४४ ध पोरिसीए चनस्थीए, वार्स हु पहिश्वक्षिया । सटलाव हु तस्मे इन्ज लगोहतो लसंबर् ॥ ४५ ॥ पोरिश्वीय् जनमागु बॅविक्य तमी गुर्द । क्षांत्रमेपु कासस्य कार्सतु पिकलेक्य् ॥ ४६ ॥ आगाए कायग्रीस्थम्मे सम्बदुक्यामिलेक्याचे । कावस्सानं तभी कुना सम्बद्धस्यविमोत्रसर्व ॥ ४७ ॥ सहवं च बर्रेगरं विश्व भाषापुरुवारो । गार्वामे देशवीमे व वारितीम त्रवीमे व ॥ ४४ त पारिवशवराम्यो

वंदितान तनो पुर्व। राहमें तु नार्देगाई मामोएस जहारमें इ ४९ त वहिरमिन्

निस्सहो, विदत्ताण तस्यो गुरु । कारुस्सग्ग तओ कुजा, सन्बद्दुक्खिवमोवराण ॥ ५० ॥ कि तव पिडवजामि, एवं तत्थ विचिंतए । कारुस्सग्ग तु पारिता, करिजा जिणसथव ॥ ५१ ॥ पारियकारुस्सग्गो, वंदिताण तस्यो गुरु । तवं सपिडवजेत्ता, कुजा सिद्धाण सथवं ॥ ५२ ॥ एसा सामायारी, ममासेण वियाहिया । ज चरिता वहू जीवा, तिण्णा ससारसागर ॥ ५३ ॥ ति-वेमि ॥ इति सामायारी णामं छव्वीसइमं अज्झयणं समत्तं ॥ २६ ॥

## अह खलुंकिजाणामं सत्तवीसइमं अज्झयणं

थेरे गणहरे गरगे, मुणी आसि विसारए । आइण्णे गणिभावमि, समाहिं पिंडसंघए ॥ १ ॥ वहणे बहमाणस्स, कतार अइवत्तई । जोगे वहमाणस्स, ससारो <del>थ</del>ड्वत्तई ॥ २ ॥ खलुके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सई । असमार्हि च वेएइ, तोत्तओं से य भजई ॥ ३ ॥ एग डसइ पुच्छंमि, एगं विंधइऽभिक्खण । एगो भजइ समिल, एगो उप्पहपट्टिओ ॥ ४ ॥ एगो पडड पासेण, निवेसइ निवजाई । उक्कद्द उप्पिड्द, सढे वालगवी वए॥ ५॥ माई मुद्रेण पड्द, कुद्धे गच्छइ पिट-पह । मयलक्षेण चिद्वई, बेगेण य पहावई ॥ ६ ॥ छिन्नाले छिंदई सेिंह, दुइंतो भजए जुग । से वि य मुस्सुयाइता, उज्जहित्ता पलायए ॥ ७ ॥ खल्लका जारिसा जोजा, दुस्सीसा वि हु तारिसा। जोइया धम्मजाणमि, भर्जती धिइदुव्बला॥ ८॥ इङ्गीगारविष् एगे, एगेऽत्थ रसगारवे । सायागारविष् एगे, एगे सुन्विरकोहणे ॥ ९ ॥ भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणमीरुए। यद्धे एगेऽणुसासमि, हेर्झाह कारणेहि य ।। १० ।। सो वि अतरभासिलो, दोसमेव पकुन्वई । आयरियाण तु वयण, पिंड-कुलेह 5िमक्खण ॥ ११ ॥ न सा मम वियाणाइ, न वि सा मज्झ दाहिई । निग्गया होहिई मने, साहू अनोऽत्य व[ज]चड ॥ १२ ॥ पेसिया पळिउचति, ते परियति समतओ । रायवेहिं च मनता, करेंति भिउडिं मुहे ॥ १३ ॥ वाह्या सगहिया चेव, मत्तपाणेण पोसिया । जायपक्खा जहा हसा, पक्सिति दिसी दिसि ॥ १४ ॥ अह सारही विचितेइ, खलुकेहिं समागओ । किं मज्झ दुद्वसीसेहिं, अप्पा में अव-सीयई ॥ १५ ॥ जारिसा मम सीसा उ, तारिसा गलिगद्दा । गलिगद्दे जहिताणं, दढ पगिण्हई तव ॥ १६ ॥ मिउमइवसपन्नो, गमीरो सुसमाहिओ । विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणा ॥ १७ ॥ ति-बेमि ॥ इति खल्लंकिज्जणामं सत्त-वीसइमं अज्ययणं समत्तं ॥ २७ ॥

### 1076 अह मोक्लमग्गगई णाम अहाबीसहर्म अञ्चयण

मोत्रयमगराई तर्व धनेह जिनमासियं । पराद्यारमसंप्रतं शबरंतममन् ।। १।। नार्ग व वंसमें बेब भारते व तवी तका। एस सन्प्रति कार्य निर्मी नरपंशिद्धि ध २ ॥ नाणं च बंसणं चेव चरित्र च तनो तहा । एवं सम्मन्तुपारा, जीवा राज्येति सोम्प्ये ॥ ३ ॥ तत्व पंचवित्रं नार्ण सर्व व्यामिनियोदिवं। बोर्व नार्य त राज्यं मणनार्ण क केवलं ॥ ४ ॥ एवं र्यक्तिई नार्व इस्थान व प्रवास य । पञ्जार्ग व सम्बेसि नाम नाजीहि वेसिर्व ॥ ५ ॥ ग्रमानमाना रन एगदम्बस्थिना गुजा । धनवार्ण पळवार्थ हु, उसको बस्सिमा सबै ॥ ६ व वस्त्री अहम्मी नागार्थ बाक्षे प्रशासकंदनी । एस क्रोगो ति पक्को विवेह गरंगी र 🕶 ॥ भन्नो आहम्मो जायाचं व्यव इहिवसाद्वियं । अर्वताचि व वस्पर्ति भासी पुरासर्वतरो ॥ < ॥ गद्दसक्याणो च भ्रम्मो अहम्मो अपस्थवराणे । श्राम सम्बद्ध्याचं नई सोगाइस्टाध्ययं ॥ ९ ॥ बत्तवासन्त्रयो शस्त्रे जीवो स्वक्रीर कक्यभो । नावेजं इस्तेचं क सुद्देश य सुद्देश य ॥ १ ॥ नावं च दस्त के चरित्तं च तनो तका । चौरियं उपयोगी व एमं बीवरस अनुवानं व १९ प्र स भवारतकोओ पहा कामाऽऽतनो इ वा । कृष्यरसर्गक्रमसा प्रमाद्यवं हु स्ववन # ९२ II एगर्च क प्रदर्ध क संबा संराधनेत स । संबोधा व विभाषा व की भार्य 🖫 अञ्चलमं ॥ ९३ ॥ जीवाजीवा य वैद्यो य पुल्न पावाऽद्यवी 🕬 🖟 एंबरो निकार मोतको चंतेए वहिया नव a १४ a वहिवार्य ह भावार्ग सम्बद्ध चनएसर्थ । मानेर्य <del>अव्हेदस्य सम्मर्त्त व मिनाहिर्य ॥ १५ ॥ मिराम्पर</del>ाहनी काणको क्रामीनक्रमेन । अधिनाम-मित्यमरहे, केरिया एकेन-बन्तरहे ॥ १६ ॥ मूबल्पेपाक्किया वीकाजीया स पुष्पपार्व च । सहसम्बद्धा<del>स्वर्</del>तरो व रोस्र व निस्समो ॥ १७ ॥ को जिलस्ति मार्च अतमिति सहसह सबसेव । एवं नहरि व सं निसम्पद्मति नायम्बो ॥ १८ ॥ एए चेव क मार्व जबक्के को गोब स्तर्मा कतमस्येण बियेल व उनएसक्ति नावन्त्री ॥ १९॥ श्लो बोद्धे मोद्रे भार बस्स अवयमं होह । आनाए रोवंतो स्त्रे बहु जावार्थ नामं ॥ १ ॥ मो इ महिजेती सुपूप कोगाई न सम्मत्तं । अनेच बाहिरेच व सो इत्तरप्ति श्रामी n २१ ॥ एरोज क्रमेगाई, प्रवाई को प्रसाई त सम्मर्त । सद्यूक्त तेत्रसिंह, तो बीयस्त्रीत नाजको हा २१ ॥ सो होह अभिगमर्थी, सुबनाय सेन सन्तर्भ हैं। एकारस संगारे प्राप्यमं विश्विताओं य ॥ ११ ॥ इन्याय सम्प्रशाहा सन्धाने

(उग्गह रेहा अपाय० धारता) च्यार सुधि (उत्पार्त है। विसयमी कमेकी पारियासिकी ) तीत दृषि (सम्पर्क दृष्टि मिच्याकार सिश्वकरि ) पांच दृष्य धर्मारित अर्थान रिन आकारास्ति जीवारित और कास दृष्य' पांच प्रकार से जीव की शुक्त 'इत्यान, कर्म वक्त दृष्टि पुरुपार्क' प्रक है। बीक सक्तपी के हैं। इति ॥

सेव मते सेवं मंते तमेव सवम् ।

### सुत्र श्री ज्ञाताजी श्रद्ययन दवा

(तीर्पंकर नाम गोश्र वच के २० कारण)

(१) थी ग्रारिहत्त भगवान् के शुख स्तवनादि करने से । (२) भी सिद्ध भगवान् के गुख स्तवनादि करने से ।

(२) भी प्रोच समिति तीन शुरी स्तर्थाति करण सः । (३) भी प्रोच समिति तीन शुप्ति यह ब्राप्ट प्रयचन की <sup>माठी</sup>

है इन्हों को सम्बद्ध मकार से भाराभम करने से। (४) श्री गुचनमा गुक्की महाराज का गुझ करने से।

(४) भी स्थिषरणी शहाराज के ग्रुच स्तपनादि करने से । (४) भी स्थिषरणी शहाराज के ग्रुच स्तपनादि करने से ।

(६) भी यद्वभुती-गीतायों का गुण स्तवनादि करने से ।
 (७) भी तपस्त्रीजी महाराज के गुण स्तवनादि करने से ।

( ७ ) भी तपस्कीची महाराज के गुरा स्तक्तानि करने स ( ६ ) क्रिका पढ़ा कान को चार वार खिलवम करने से ।

(६) क्रिक्षा पड़ा बान को बार वार खिलवम करमें से ! (६) वर्रोन [समकित] निर्मेल आराधन करने से !

(१०) मात तथा १३४ प्रकार के नियम करने से ।

(११) कालो काल प्रतिश्रमण करने से।

(१९) शिपे इप मन~प्रसाच्यान निर्मेश पासने से।

(१३) धर्म ध्याम-शक्त च्याम ध्वाते रहने से !

जस्स उवलद्धा । सत्र्वाहिं नयविहीहिं, वित्थाररुइत्ति नायव्वो ॥ २४ ॥ दसणनाण-चरित्ते, तवविणए सच्चसिन्द्गुत्तीस् । जो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुई नाम ॥ २५ ॥ अणभिगगहियकुदिद्वी, सखेवम्हिति होइ नायन्वो । अविसारक्षो पवयणे, अणिमग्गहिओ य सेसेस ॥ २६॥ जो अत्थिकायधम्म, सुयधम्म खळ चरित्तधम्म च । सद्दइ जिणाभिहिय, सो धम्मरुइत्ति नायन्वो ॥ २७ ॥ परमत्यसयवो वा, सुदिद्वपरमत्थसेवण वावि । वावन्नकुद्सणवज्जणा, य सम्मत्तसद्द्वणा ॥ २८ ॥ नित्य चरित्त सम्मत्तविहूण, दसणे उ भइयव्व । सम्मत्तचरित्ताइ, जुगव पुव्व व सम्मत्त ॥ २९ ॥ नादसणिस्स नाण, नाणेण विणा न हुति चरणगुणा । अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नित्य अमोक्खस्स निन्वाणं ॥ ३० ॥ निस्सिकय निक्षखिय, निन्विति-गिच्छा अमूढदिही य । उववृह थिरीकरणे, वच्छल पमावणे अह ॥ ३१ ॥ सामा-इयत्थ पढमं, छेओवद्वावण मवे बीय । परिहारविसुद्धीय, सुहम तह सपराय च ॥ ३२ ॥ अनसायमहक्खाय, छउमत्यस्स जिणस्स वा । एयं चयरित्तकरं, चारित्त होइ आहिय ॥ ३३ ॥ तवो य दुविहो वुत्तो, वाहिरन्मतरो तहा । वाहिरो छिन्वहो वुत्तो, एवमन्भतरो तवो ॥ ३४ ॥ नाणेण जाणई भावे, दसणेण य सद्दे । चरि-त्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झई ॥ ३५ ॥ खवेत्ता पुव्वकम्माइ, सजमेण तवेण य । सव्बद्धक्यपहीणद्वा, पक्षमित महेसिणो ॥ ३६ ॥ त्ति-बेमि ॥ इति मोक्ख-मग्गगई णामं अट्टावीसइमं अज्झयणं समत्तं ॥ २८ ॥

## अह सम्मत्तपरक्षमणामं एगूणतीसहमं अञ्झयणं

सुय में आउस! तेण भगवया एवमक्खाय । इह खळु सम्मत्तपरक्षमे नाम अज्झयणे समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइए ज सम्म सहिहता पत्तिइता रोयइता फासित्ता पालइता तीरित्ता कित्तइता सोहइत्ता आराहिता व्याणाए अणुपालइता वहवे जीवा सिज्झित वुज्झित मुन्नित परिनिन्नायित सन्वदुक्खाणमंत करेंति । तस्स ण अयमेट्ठे एवमाहिज्जइ । तजहा—सवेगे १ निन्नेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहिम्मयद्धस्स्मणया ४ आलोयणया ५ निंदणया ६ गरिहणया ७ सामाइए ८ चउन्त्रीमत्यवे ९ वदणे १० पिडक्सिणे ११ काउस्सम्मे १२ पन्नक्खाणे १३ थवयुडमगले १४ कालपिडलेह्णया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया १९ पुच्छणया २० परियहणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगम्ममणसनिवेसणया २५ सजमे २६

तमे २७ बोबाणे २८ छहसाए २९ अप्यक्तिवद्धशा १ विक्तिसम्बाधकरीवनमा ११ विनिवासया ११ र्यभोगपणप्रकाणे ११ तमहिपचनकाले १४ अहारास-

1 1.

क्यामे ३५ क्यागपक्रयाचे ३६ व्योगपक्रमाने ३७ स्टीरफ्क्सनि १६ सद्दायपचानदाचे १९ मारपचानदाचे ४ - सबमावपचानदाचे ४९ पडिस्थनवा ४९ नेवानने ४३ सम्बगुणसंपन्नया ४४ नीवरागया ४५ रांसी ४६ मुत्ती ४४ महर्ष ४६ मामने ४९ मामसंबे ५ करणसंबे ५१ जोगसंबे ५२ मजगुरमा ११ वयपुत्तया ५४ कारगुत्तया ५५ सवस्ताधारवया ५६ वयस्ताधारव्या ५ कामसमापार्चया ५८ गायसंप्रया ५९ दंशवसंप्रथम ६ अरितरंजना ५१ सोईदियनिमाहे ६२ वर्षियदियनिमाहे ६३ वार्विदियनिमाहे ६४ विस्मिरेक निमादे ६५ चासिरियनिमादे ६६ कोहबिकप् ६७ मानविकप् ६८ मानाविक्र ६६ कोञ्जनिवए ७ ऐजवोसनिष्कार्वसम्बद्ध ७१ सकेसी ७२ सकनमा १। संकेरीनं मंते ! जीवे कि जनगढ़ है सकेरीनं अलुतारं सम्मास्त्रं अपन्य । न्युत्रस्

वस्मसदाएं संदेशे इकासागच्छा । वर्षतानुर्वविकोहसाणमायाकोने वर्वेद । वर्ष च कर्म न बंबर । तथवर्ग च वं मिरुक्तविहोहि शासम वंसवारवर मन्। वंसनमिसीहीए व में विस्काए अल्बेगहए तेगेव अवस्थाहवेनं रिजाह । विसेरी य में निक्रदाप तक पुनी मनमाइने नाइक्सा ह १ व निक्रीएने सेंदे ! याँवे नि

चनगर् निक्नेएमं विकासस्तरतिरिक्तम् बाससीनेस निक्नेयं इकसायका सम्बनिसपुर निरमङ् । सम्बनिसपुर निरमाने भारसपरिवानं करेर्। शास्त परिवार्य करेमाच एंसारमस्य वार्विक्षः, विकित्समं पश्चिके व इन्ह र र मामस्याए न भेते । बीचे कि कामह ! मामस्याए वं सामस्रोक्तेस र<sup>कामी</sup> विरम्म । बागारधम्मं च मं चक् । बजगारिए गं जीवे सारीरमानसानं इन्तानं क्रेनगमंत्रक्तमाईणं बोक्केन करेड् । अम्बाबाई व हाई तिम्बीदे है रे गुरुताहम्मिक्यस्स्तम्बनाय् व गेरो ! जीवे कि जनक है गुरुताहम्मिक्यस्य र्थं निमनपडिवर्ति वययह । निजयपडिक्के न नं जीवे अनवसानमधीडे नेप्स विरिणकामे विपानपुरसकेषपुरमाँको निद्रशङ् । कल्पसंग्रकामा किन्दुमाणकाए अनुसा बेक्सुगर्देश विवेक्द । सिक्रि सोम्प्रहं च विस्तिहरू । प्रस्ताहरं च वं विकरणा सम्बद्धमार्द्द साहेद : असे य बहने जीवा शिक्तिया अवह ॥ ४ ७ आसोनवार व मेरे । बीचे कि बक्यर है आओपबाए के सामानिवायरिक्कार्यस्यसम्बर्ध मोनक मयानिरमार्थं क्यातस्तारमञ्जामं उद्युर्णं करेत्र । उज्युगतं च वस्तरः । उत्युगतं नपरिश्नो य में वीनै समाई इरवीनेयनपुरायमेंने च व वंबर ( प्रव्याव न न

निजारेड ॥५॥ निंदणयाए ण भते । जीवे कि जणयड 2 निंदणयाए ण पच्छाणुताव जणयइ । पच्छाणुतावेण विरज्जमाणे करणगुणसेटि पडिवज्जइ । करणगुणसेढीपडिवन्ने य ण अणगारे मोहणिजं कम्म उग्घाएउ ॥ ६ ॥ गरहणयाए ण भते । जीवे कि जणयइ १ गरहणयाए ण अपुरद्वार जणयड । अपुरद्वारगए ण जीवे अप्पसत्थेहितो जोगेहितो नियत्तेइ, पसत्ये य पिडवज्जइ। पसत्यजोगपिडवजे य ण अणगारे अणतघा-इपज्जें रावेंड् ॥ ७ ॥ सामाइएण भते ! जीवें कि जणयंड <sup>२</sup> सामाइएण यावजजोगविरङ् जणयइ॥८॥ चउन्वीसत्थएण भेते ! जीवे कि जणयइ <sup>२</sup> चउन्वीमत्थएण दसणिवसोहिं जणयड ॥ ९ ॥ वदणएण भंते । जीवे कि जणयड <sup>२</sup> वदणएण नीयागोय कम्म खंबेइ । उचागोय कम्म निवंधइ । सोहरग च ण अपडिहयं आणाफल निव्यत्तेइ । दाहिणभाव च ण जणयइ ॥ १० ॥ पटिकमणेण भते ! जीवे कि जणयड 2 पटिकमणेण वयछिद्दाणि पिहेर । पिहियवयछिदे पुण जीवे निरुद्धासवे असवलचरित्ते अद्भु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरङ ॥ ११ ॥ काउस्सग्गेण भते । जीवे किं जणयइ <sup>२</sup> काउस्सग्गेण तीयपडुप्पन्न पायच्छित्त विसोहेइ । दिसुद्ध-पायन्छिते य जीवे निन्युयहियए ओहरियभरुव्य भारवहे पसत्थझाणीवगए सुह-मुहेण विहरड ॥ १२ ॥ पचक्खाणेण भते ! जीवे किं जणयह <sup>१</sup> पचक्खाणेण आसबदाराइ निरुभइ । पचक्खाणेण इच्छानिरोह जणयइ । इच्छानिरोहं गए य ण जीवे सन्वदन्वेषु विणीयतण्हे सीइभृए विहरइ ॥ १३ ॥ थव्युद्मगलेण भते । जीवे कि जणयइ <sup>१</sup> थवथुइमगलेण नाणदंसणचरित्तवोहिलाभ जणयइ । नाणदसणचरि-त्तवोहिलाभसपंते य ण जीवे अतिकरिय कप्पविमाणोववत्तिय आराहण आराहेड ॥ १४ ॥ कालपिटल्रेहणयाए ण भते ! जीने कि जणयइ १ कालपिडल्रेहणयाए ण नाणावरणिज कम्म खवेइ ॥ १५ ॥ पायच्छित्तकरणेणं भते । जीवे किं जणयह १ पायच्छित्तकरणेण पावकम्मविसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवइ। सम्मं च ण पायन्छित पिंडवजमाणे मग्ग च मग्गफल च विसोहेइ, आयार च आयारफल च आराहेइ ॥ १६ ॥ खमावणयाए ण मते । जीवे किं जणयह १ खमा-वणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ । पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाणभूयजीव-सतेस मित्तीमावसुप्पाएइ । मित्तीभावसुवगए य जीवे भावविसोहिं काऊण निव्मए भवइ ॥ १७ ॥ सज्झाएण भंते । जीवे किं जणयइ १ सज्झाएण नाणावरणिज्ञ कम्म खवेइ ॥ १८ ॥ वायणाए ण भते ! जीवे किं जणयह वयणाए ण निजारं जणयइ । सुयस्स य अणुसज्जणाए अणासायणाए वदृए । सुयस्स अणुसज्जणाए अणासायणाए वर्द्रमाणे तित्यधम्म अवलंवइ । तित्यधम्म अवलवमाणे महानिज्ञरे १६९ मुसायमे (जनसम्पर्ध महाप्रकाराणे महाप्रकार महा

मं अवार्ग समेद्द, न य संकितिस्सद् । २४ ॥ एकायमणसनिवेसनयार् मं मंति। जीवे कि जयन्त्र है एगरगमणर्गनिवेश्यवाए में जित्तनिरोई करेड ॥ २५ ॥ सङ्गेर्य मेरे ! जीवे कि बमयह है सेवनेज अपन्युपत क्यायह ॥ २६ त दर्शन मेरी वीवे 🎼 जजपद 🖁 तमेर्ण बोदार्ण जनपद ॥ २७ ॥ बोदानेर्ज संते ! जीवे 🎋 धनना बोदागेर्थ अफिरियं कंपका । जकिरियाए मनिया तजो एक्स छिन्छर **इ**क्स हु<sup>क्</sup>र परितिम्बावर सम्बद्धक्यानर्गतं कीह् ॥ १८ ॥ ग्रहसाएवं गेते । बीवे कि क्यारी ह्यसायम अकुन्सवर्ध जनवर । अकुस्सवाए वं वीचे अकुर्वनए स्मुकारे निवनहोंपे वरितमोद्दलिक रूप्यं क्लेड् ॥ २९ ॥ कप्पविषद्वपाए वं मते ! बाँवे कि वस्त्र <sup>ह</sup> कप्पवित्रह्मसाए ण जीवे निरस्यत्त वजनह । निरसंग्रोच वीवे एगामन्ति दिना न राम्भे म अस्त्रमान्त्रे अप्यविवक्षे यात्रि विश्वरह ॥ १ ॥ निनित्तस्त्रमान्त्रकार् व मंति ! जीवे कि जनसङ् । विनित्तस्यवणास्त्रसाय् मं जीवे वारेत्त्युति जनसः ! चरित्तगुरो व व जावे विवित्ताहारे वहचारेते एमंतरए सोक्बसावपटिवडे क्यु<sup>मे</sup>र कम्मगठि निकारेह ॥ ३९ ॥ निविधात्त्रयापु क्षं श्रेति । जीवे 🗱 वनसह 🖁 निविधान याप् में जीने पानकम्माने ककरणयाप् क<u>न्मोद्रेष</u> । पुल्लकस्य व सिजारक्वाप् पान निवरीह । तमो पच्छा चाउरैतं ससारकतारं बीहवसह ॥ ३२ ॥ संमोगपनाकारेव मेर्ते ! जीने कि कराज्य ! समोगण्यक्तावियं जीने आर्थनवारं खनेर । निरार्कावरण व काजविद्या बोगा मनिति । धएणं कामेलं छतुस्तह, परसामं नो बाधाएर नो तदेइ नो पीहेइ मो पत्पेह मो समिस्नसह । परकार्म अवस्ताएमाचे अपहेनाचे

अपीहेमाणे अंपरथेमाणे अणभिलसमाणे दुच सुहसेज उनसपजिताण निहरड ॥ ३३॥ उन्निहिपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे कि जणग्रह<sup>2</sup> उन्निहिपचक्खाणेण जीवे अपलिमंथ जणयइ । निरुवहिए ण जीवे निष्टंखी उवहिमतरेण य न सकिलिस्सड ॥ ३४ ॥ आहारपचक्खाणेण भते ! जीवे किं जणयइ १ आहारपचक्खाणेण जीवे जीविया-ससप्पओग बोच्छिदइ । जीवियाससप्पओग वोच्छिदित्ता जीवे आहारमतरेण न सिकिलिस्सइ ॥ ३५ ॥ कसायपचक्खाणेण भंते ! जीने कि जणयइ 2 कसायपच-क्खाणेण जीवे वीयरागभाव जणयइ । वीयरागभावपिडवन्ने वि य ण जीवे समसह-दुक्खे भवइ ॥ ३६ ॥ जोगपचक्खाणेण भते ! जीवे किं जणग्रह <sup>2</sup> जोगपचक्खाणेण जीवे अजोगत्त जणयह । अजोगी णं जीवे नव कम्म न वधइ, पुव्ववद्ध निज्जरेइ ॥ ३७ ॥ सरीरपचक्खाणेण भते ! जीवे कि जणयइ १ सरीरपचक्खाणेण जीवे सिद्धाइसयगुणिकत्तण निव्वते । सिद्धाइसयगुणसपन्ने य ण जीवे लोगगगम्वगए परमद्धही भवइ ॥ ३८ ॥ सहायपचन-खाणेण भंते । जीवे किं जणयइ १ सहायपच-क्खाणेण जीवे एगीभाव जणयइ। एगीभावभूए वि य ण जीवे एगत्त भावेमाणे अप्पसेंद् अप्पक्षक्षे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमतुमे सजमवद्गुले सवरवहुले समा-हिए यावि भवइ ॥ ३९ ॥ भत्तपचक्खाणेण भते ! जीवे किं जणयइ १ भत्तपचक्खा-णेण जीवे अणेगाइ मवसयाइ निरुंभइ ॥ ४० ॥ सब्भावपचक्खाणेण भते ! जीवे किं जणयह र सन्भावपचक्खाणेण जीवे अनियिं जणयह । अनियिंटपिंडवन्ने य व्यणगारे चत्तारि केवृळिकम्मसे खवेइ। तंजहा—वेयणिज व्याउय नाम गोय। तओ पच्छा सिज्झइ वुज्झइ मुच्चइ परिनिच्यायइ सन्वदुक्खाणमत करेइ ॥ ४९ ॥ पिंडरूवयाए ण भते ! जीवे किं जणयह १ पिंडरूवयाए ण जीवे लाघवियं जणयह । लघुभूए ण जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्यलिंगे विद्युद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सन्वपाणभूयजीवसत्तेष्ठ वीससणिजरूवे अप्पिडलेहे जिइदिए विउलतवसिवइसमन्नागए यावि मवइ॥ ४२॥ वैयावचेण भते । जीवे कि जणयइ व वैयावचेण जीवे तित्थयर-नामगोत्त कम्म निवयइ ॥ ४३॥ सव्वगुणसपन्नयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ १ सन्वगुणसपन्नयाए ण जीवे अपुणरावितं जणयइ । अपुणरावितं पत्तए य ण जीवे सारीरमाणसाण दुक्खाण नो मागी भवइ ॥ ४४॥ वीयरागयाए ण भंते ! जीवे कि जणयइ <sup>१</sup> वीयरागयाए ण जीवे नेहाणुवधणाणि तण्हाणुवधणाणि य वोच्छिदइ, मणुन्नामणुनेस सद्दफरिसरूवरसगघेस (सचित्ताचित्तमीसएस) चेव विरुज्जर् ॥ ४५॥ खतीए ण भते ! जीवे िकं जणयइ  $^2$  खतीए ण जीवे परीसहे जिणइ ॥ ४६॥ मुत्तीए ण भते ! जीवे किं जणयह 2 मुत्तीए ण जीवे अकिंचण जणयह । अकिंचणे य जीवे

उत्तरमञ्जू मस्पक्षेकार्नं पुरिसार्वं कपस्यवि(क्षे)क्षे अवह ॥ ४७ ॥ काळवयाए न संदे! र्वा<sup>वे</sup> हैं चनसर् ! अञ्चननाए ये जीवे काराभुगर्व भाषुजुस्य भाराज्यसर्व अविरंगानवं <del>वर</del> बद् । अविदेवासक्तरेपक्याए वं जीवे अस्तरस आराहए सबद् n ४४ a स्वतन र्ज मेरी ! जीमे कि जनसङ् ! सहस्रमाए जं जीने स्लास्स्यर्श जनस्ह । सङ्गरिसनीय

मुचागमे

भीने मिटमक्षपंपने बहुमयहायह निद्वापेड् ॥ ४९ ॥ मानसचेर्ण मदे । श्रीत 🕏 षजयइ । सामस्योगं अपि माननिसी**हि ज**णयह । सामनिसी[ही]हिए नक्समे सेने कर्णतपत्रतस्य यम्मस्य आराहणगाए जन्मुहेद । अर्ख्वपत्रतस्य बम्मस्य अर्थः इगयाए सन्मुद्विता परक्षेगधम्मस्य साराइए मक्द्र ॥ ५ ॥ घरणसंबेचे प्रवि

जीवे कि जगरह है वरवसचेव जीवे करकाति वयवह । बरवसचे बहुमानं सैं कहानाई दहाकारी भागि सबद ॥ ५९ ॥ जीगस्त्रेचं संदे ! जीवे कि वनदर !

क्षेत्रसम्बेण जीवे जोगं विसोबेह ॥ ५० ॥ मण्यक्त्याए मं मंते ! बोबे कि बनाई!

समग्रतकाए व क्षीके एगर्स्स जनकह । एसम्मानिते व जीवे सम्माति सक्रमाण्डर सबर ॥ ५३ ॥ बस्युत्तबाए जं गेरी । जीवे 🎁 क्लबर १ वन्युत्तवाए में नीवे निम्नियारत जनवर । निम्नियारे नं जीवे बहुगुत्ते अज्ञायकोगसाहमस्रो वर्षे मनद् ॥ ५४ ॥ अवगुत्तवाप् न मंत्रे । जीवे कि क्यायह विश्वयुत्तवाप न की

सबरं जगन्द । संबरेणं कावगुत्ते पुणी पानास्वितिरोहं करेह ॥ ५५ ॥ मकावी हारणयाए यें मंति । जीने कि जनवह रै मजसमाहारचनाए ये वीने एगम्में जनकी। प्रामा कष्ट्रा नावपमने कणन्द्र । नावपमने वज्रह्ता सम्मर्ध निसंहेर, श्र<sup>ाउर्व</sup> च निकारेड़ ॥ ५६ ॥ वनसमाहारचयापू में नरी । बाँचे कि बचना है कस्पन द्वारणमाए मं जीवे वयसाद्वारणवंशनपज्ञवे विशेष्टेश । वयसहारवर्गना विधोदिशा सुमद्योदिवर्ग निश्योद्ध, बुल्ब्बोद्धिवर्ग निजरेड ह ५० ॥ वात्रावी

तहा जीवे सन्तो सतारे न मिणस्सर ॥ १ ॥ नानधिवयत स्वरित्तानो संगान्ध ससमबपरसमयनिसारए य असंभावनिके सन्द ॥ ५९ ॥ वंस्वसंग्रहवाए व वर्तः बीय कि बणबर् ! वंशमर्शनकाए वें जीवे अवसिकारियन करेड, वर्र व विज्ञान

3 38

बारणवाए में मंत ! जीवे कि जनगढ़ है कामसमाहारणवाए से और बारणपूर्ण मिलोहेर । चरित्रपळाचे निलोहिता अहरकासचरित निलोहेर । बहरतावचरित विसोहेता बतारि केविकम्पेसे धर्मह । तजो पच्छा सिटाह इन्सई सुबर गी-

मिम्बानइ सम्बद्धनसाममंतं करेड् ॥ ५८ ॥ शामसंगत्तनाए च संते । और हि

बचयह । नामसपन्नवाप् नं जीवे सम्मसावाश्चिम्मं जम्मह । नामसंपद्वे नं जी

चाउरंत संसारकतारे न विगस्सर । बाह्या-अहा सर्हे सतता परिवा व विवस्तर।

पर अविज्ञाएमाणे अणुत्तरेणं नाणदंगणेण अप्पाणं सजीएमाणे गम्म भावेमाणे विहरड ॥ ६० ॥ चरित्तसपन्नयाए ण भंते ! जीचे किं जणयद ? चरित्तसपन्नयाए ण जीवे सेलेसीभावं जणयह। सेलेसि पडिवने य अणगारे चतारि फेवलिरम्मसे रायेह। तओ पच्छा निज्यद युज्यह मुचद परिनिध्वायद गव्यदुक्साणमंत करेड ॥ ६९ ॥ सोइंदियनिग्गहेणं भंते । जीवे कि जणयइ ? रो।उदियनिग्गहेणं जीवे मणुजामणुत्रेमु संदेस रागदोसनिरगह जणयड । तप्पगड्य च ण कम्म न वधद, पुन्ववदं च निजरेड ॥ ६२ ॥ चर्क्सिदियनिगगहेण भंते । जीवे कि जणयड ? चर्क्सिदियनिगगहेण जीवे मणुज्ञामणुज्ञेसु रवेसु रागदोसनिग्गह जणयह। तप्पचटय च ण वम्म न वधइ, पुक्वबद्ध च निजारेइ ॥ ६३ ॥ घाणिंदियनिग्गहेण भते ! जींचे कि जणयङ <sup>2</sup> घाणिदियनिग्गहेण जीवे मणुन्नामणुन्नेसु गधेसु रागदोसनिग्गह जणयड । तप्पचडय च ण कम्म न वंधइ, पुव्वयद्ध च निजारेड ॥ ६४ ॥ जिन्भिदियनिग्गहेण भते ! जीवे किं जणयह व जिन्भिटियनिगगहेण जीवे मणुशामणुत्रेस रसेस रागदोमनिगगह जणयह । तप्पचडय च ण कम्म न वघइ, पुन्ववद्ध च निजारेड ॥ ६५ ॥ फासिं-दियनिरगहेण भते । जीवे कि जणयड १ फासिंदियनिरगहेण जीवे मणुनामणुन्नेस फासेष्ठ रागदोसनिगगह जणयह । तप्पचड्य च ण कम्म न वधइ, पृव्वचद्ध च निजरेइ ॥ ६६ ॥ कोह्विजएण भते । जीवे कि जणयड <sup>2</sup> कोह्विजएण जीवे सित जणग्रह । कोहवेयणिज कम्म न वघह, पुन्ववद्ध च निजारेह ॥ ६७ ॥ माणविज-एण भते ! जीवे कि जणयड 2 माणविजएण जीवे मद्दव जणयइ । माणवेयणिज कम्म न वघड, पुव्ववद च निजरेइ ॥ ६८ ॥ मायाविजएण भते । जीवे कि जणयड १ मायाविजएण जीवे अज्जव जणयइ। मायावेयणिज कम्म न वधइ, पुव्वयद च निजन रेइ ॥ ६९ ॥ लोभविजएण भते ! जीवे किं जणयइ <sup>१</sup> लोभविजएण जीवे सतोस जण-यइ । लोभवेयणिज कम्म न वयइ, पुल्ववद्ध च निजारेड ॥ ७० ॥ पिजादोसमिन्छा-दसणविजएण भते ! जीवे किं जणयइ 2 पिजादोसमिच्छादसणविजएण जीवे नाणवसण-चरित्ताराहणयाए अब्सुद्वेइ। अट्टविहस्स कम्मस्स कम्मगठिविमोयणयाए तप्पडमयाए जहाणुपुन्वीए अद्वावीसङ्विह मोहणिज कम्म उग्घाएड्, पचविह नाणावरणिज, नव-विह दसणावरणिज, पचिवह अतराइय, एए तिन्नि वि कम्मसे जुगव खवेइ। तओ पच्छा अणुत्तरं कसिण पिटपुण्ण निरावरण वितिमिरं विसुद्ध लोगालोगप्पभावं केवलवरनाणदसण समुप्पाडेइ । जाव सजोगी भवइ ताव इरियावहिय कम्म निवधइ द्धहफरिस दुसमयठिइय, त पढमसमए वद्ध विइयसमए वेइय तइयसमए निज्जिण्ण त वद्ध पुद्व उदीरियं वैइय निज्जिण्णं सेयाले य अकम्म चावि भवइ ॥ ७९ ॥

भह जाउने पासदता जेतीसुहत्त्वावरेताए जोगनिरोह हरेगावे द्वार्णमें सम्पर्वत्य हम्मानां हान्याने तम्प्यस्था स्वयंभे दिस्स, वहनेपे मिन्न समयोगे निरंत्त, जावणावनिरोहे रुदे । हेरि-पंचाहरसम्बर्गायस्य १ र स्वयारे समुचित्वकिरिते जनियद्विक्वणाणं विशासमाने देवस्थे नार्य स्व पोर्च च एए चतारि हम्मेरे जुग्ने बनेहा ॥ ५१ ॥ तम्नो कोराक्रियरेक्नमानं जन्मे निप्पवाणादि विप्पवदिता उनुविकिरते व्यात्मावन्त्रदे उन्हे एनस्मएवं किस्स तस्य गेता सारारेक्टरो विजवा हुन्याद सुबद परिनिष्पात्र स्वयद्वावन्त्रक केरा ॥ ५५ ॥ एव कहा स्वमानसमस्य स्वयत्वस्थात् हो स्वर्णने सम्बद्धानिक सहायोगेर्य नावनिए प्रविद्या प्रमान स्वर्णने विवद्यानिक उन्हरित् । तिनिक्षात्रिक स्वयाद्यानिक स्वर्णने स्वर्णने

### भह तवमग्गणामं तीसइमं अज्ययणं

जहां च पार्क्य कर्मा रागदोससमित्रमें । वर्केट तक्सा मिर्क्य, विकेशमा धूज ॥ ९ ॥ पानिवह्युसामामा अवसम्बद्धानगरित्यहा विरक्षे । राहैसोसावित जीनो अन्द अमासनो ॥ २ ॥ पंचसमिन्हो विद्यतो अन्दरानो विद्वितो । अमारनो न निस्साने जीनो होइ जजासनो ॥ १ ॥ एक्सि <u>त</u> मिननासे राज्यें एमानियं । वनैद व वहा मिनव्, ठमेगमामानो प्रव 🛭 🗑 ॥ वहा महास्वास्त र्यमिक्ट करमामे । ठरियक्याए वर्षणए, क्मेर्च शोधवा सबे ॥ ५ ॥ मंड एंकनस्सानि पावकामनिरासने । भवकोनीयंनियं कार्य ततसा निजरितर । स्रो तमो दुनिही कुत्तो नाहिरम्भावरो छहा। नाहिरो क्रम्भिही हुत्तो स्वयम्बन्सर तमा n 🕶 ॥ व्ययस्तर्गतृष्णोमरिनौ निक्तवानरिनौ य रहपरिनौजी । शर्मिकेनो क्लीनवी य गज्हो तनो होद ॥ ८ ॥ (१) इत्तरिवै सरमक्ति व अन्तर्य वुनिक्षा भने । इत्तरिन सानर्कका निरन्तका व निक्जिया ॥ ९ ॥ को हो इत्तर भतनो सो समाप्टेण कन्निहों । धेक्तिनो पनरतनो पैयो व तह होर क्सी व ॥ १ ॥ तसी व कमक्रमेंसे पंचमते कड़को पर्चनर्तने । मक्स<mark>िक्स</mark>िकरणे, भागच्चे होइ हारियो ॥ १९ ॥ चा सा वन्यवचा मरथे दुनिहा हा हिनाहैग । सम्बन्धिमहिनारी कमनिद्धे गहे गये ॥ १९ ॥ वनस्य चरिहा हा हार्यस्था य साहिता। मीहोरियनीहींची बाहारकोच्चे बोद हि ॥ ११॥ (१) ब्लेटोनर्स य साहिता। मीहोरियनीहींची बाहारकोच्चे बोद हि ॥ ११॥ (१) पंचहा समारिज विवाहियं। दर्भमो केर्रोच्चरेने सॉनियं वर्जेनेहें व म १४ ह

जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओम तु जो करे। जहन्नेणेगसित्याई, एवं दब्वेण रु भवे ॥ १५ ॥ गामे नगरे तह रायहाणि, निगमे य आगरे पही । खेडे कव्यडदो-णमुह-, पष्टणमडवसवाहे ॥ १६ ॥ आसमपए विहारे, सन्निवेसे समायघोसे य । थलिसेणाखघारे, सत्थे सवहकोट्टे य ॥ १७ ॥ वाढेसु व रत्थासु व, घरेसु वा एवमित्तियं खेतं । कप्पइ उ एवमाई, एव खेतेण ऊ भने ॥ १८ ॥ पेडी य अद्धपेडी, गोमुँ तिपयगवीहियाँ चेव । सबुकावट्टीयय-, गतुं पचागर्या छट्टा ॥ १९ ॥ दिवसस्स पोरुसीण, चउण्ह पि उ जत्तिओ भवे कालो । एव चरमाणो खलु, कालोमाण सुणेयव्व ॥ २०॥ अहवा तङ्याए पोरिसीए, ऊणाङ् घासमेसतो । चडभागूणाए वा, एव कालेण ऊ भवे ॥ २१ ॥ इतथी वा पुरिसो वा, अलकिओ वा नलकिओ वावि । अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेण व वत्थेण ॥ २२ ॥ अन्नेण विसेसेण, वण्णेण भावमणुस्यते उ । एवं चरमाणो खलु, भावोसाणं सुणेयव्वं ॥ २३ ॥ दव्वे खेते काले, भावंमि य आहिया उ जे भावा । एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खु ॥ २४ ॥ (३) अद्वविहगोयरग्ग तु, तहा सत्तेव एसणा । अभिगाहा य जे अजे, भिक्खायरियमाहिया ॥ २५ ॥ (४) खीरदहि-सप्पिमाई, पणीयं पाणभोयण । परिवज्जण रसाणं तु. भणियं रसविवज्जण ॥ २६ ॥ (५) ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ सहावहा । उग्गा जहा धरिजंति, कायिकलेस तमाहिय ॥ २७ ॥ (६) एगतमणावाए, इत्थीपस्रवियज्जिए । सयणा-सणसेवणया, विवित्तसयणासण ॥ २८ ॥ एसो बाहिरग तवो, समासेण वियाहिओ । अब्मितरं तव एत्तो, बुच्छामि अणुपुन्वसो ॥ २९ ॥ पायच्छित विणेओ, वेया-वैच तहेव सज्झींओ। झाँण च विजस्सर्ग्गो, एसो अब्भितरो तवो ॥ ३०॥ (१) आलोयणारिहाईय, पायच्छित तु दसविह । जे भिक्ख् वहई सम्म, पायच्छित तमाहिय ॥ ३१ ॥ (२) अब्भुद्वाणं अजलिकरण, तहेवासणदायण । गुरुमत्ति-भावसुस्सूसा, विणक्षो एस वियाहिको ॥ ३२ ॥ (३) आयरियमाईए, वैयावधिस दसविहे । आसेवण जहायाम, वेयावच तमाहिय ॥ ३३ ॥ (४) वायणी पुच्छणौ चेव, तहेव परियद्वणा । अणुप्पेहाँ धम्मकहा, सज्झाओ पचहा भवे ॥ ३४॥ (५) अर्ट्टेरहेंगि विज्ञता, साएजा ससमाहिए। धम्मैसर्केड झाणाइ, झाण त तु बुहा वए ॥ ३५ ॥ (६) सयणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे । कायस्स विउस्सम्मो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥ ३६ ॥ एवं तव तु दुविह्, जे सम्म आयरे मुणी । सो खिप्प सन्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिओ ॥ ३०॥ त्ति-बेसि ॥ इति तवमग्गणामं तीसइम अज्झयणं समत्तं ॥ ३०॥

एगतरते ठारंचि रूने अलाजिये से कुनाई पत्नीयं। युक्यस्त संपीक्सनेह बार्ने न सिप्पद्दै चेज सुनी विरागो ॥ २६ ॥ स्थालुगासालुयए व जीवे चराचरे हैं इंडिंगरको । बिरोहि से परिसाबेह बाके पीकेह करतागुर किसिद्धे ॥ २५ ॥ रवर्ड नाएण परिमाहेज उप्पानमे रक्याचराधिकोगे । थए विकीगे व कई हुई है यमोगकाके य अतिराज्याने ॥ १८ ॥ तमे अविति व परिस्महान सरोक्यके <sup>व</sup> तकेर प्रश्चि । अञ्जादियोत्तेण हुद्दी परस्य क्षोमानिके मायवर्ष स्थर्त 🗈 १९ 🖡 तन्त्रामिभूयस्य अवत्त्रहारियो क्ये अवित्तस्य परिमाहे य । मानासुर्व गर्ह सोमदोसा करवानि दुक्का न निमुचारै थे ॥ ३ ॥ मोसस्स क्या व पुरा<sup>वसे</sup> मंत्रीतकाके स वृद्धी पुरंते । एवं अवतानि समानस्तो हदे अतिको पुरंते अभिस्तो ॥ ११ ॥ रमानुरतस्य गरस्य एवं कतो सह होन बनाई अपि। रत्योगमोनी मि किलेसपुक्तं निम्मार्थं मस्य कर्ण पुक्तं ॥ ३९ ॥ एमेन स्पॅरि तको पक्षोपं अनेर हुन्यतेन्यरंपराको । प्रमुक्तियो स निणाह कर्म व स प्रजी होत् दुई निकारो प्रश्ने प्रश्ने निरसो राष्ट्रको विस्तोगो एएच पुनवोहपरंपरेक । व किप्पए राक्तमञ्ज्ञो नि स्तो अलेण वा पोनवारिगीपकार्य ॥ २४ ॥ (२) होन्स्स सर्व गर्वाच वर्मति सं रामकृत क्ष मणुक्तमाह्न । तं क्षेत्रकृतं कमलुक्तमाह्न, समे व को तेछ स बीकरागो ॥ ३५ ॥ सहस्य सोवै ग्रहचे वर्षति सोवस्य सर् शहूर्य क्यंति । रागरस हेर्न समझूबमाह्य, होसस्य हेर्ड समझूबमाहु ॥ ३६ व स्तेष्ठ को गिरिश्चित तिर्म कराजित्व हुए स्वत्यत्व हुए स्वत्यत्व हुए स्वत्यत्व हुए स्वत्यत्व हुए स्वत्यत्व हुए स सुद्धे स्वत्य त्याच्यत्व सुद्धे हुए हुए हुए हुए स्वत्य हुए स्वत्य हुए स्वत्य हुए स्वत्य हुए स्वत्य हुए स्वत्य सुद्धे स्वत्य हुम्म । पुराविश्चिम स्वत्य क्ष्य हुम्म सुद्धि सुद्धे स्वत्यक्ष हुम्म सुद्धि सुद्धे स्वत्यक्ष हुम्म

(१४)वारहः प्रकार की तपश्चर्या करने से ।

(१५') अभयदान-सुपात्र देने से।

(१६) दश प्रकार की वैयावच करने से ।

(१७)चतुर्विध संघ को समाधि देने से।

रिद) नये नये अपूर्व ज्ञान पढ़ने से ।

<sup>१६</sup>)सूत्र सिद्धान्त की भक्ति-सेवा करने से।

२०) मिथ्यात्व का नाश और समकित का उद्योत करने से।

ऊपर लिखे बीस वोलों का सेवन करने से जीव कर्मों <sup>ही को</sup>ड़ाकोड़ी चय कर देते हैं, श्रीर उत्कृष्टी रसायण भावना ] श्राने से जीव तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन कर <sup>तेते</sup> हैं। जितने जीव तीर्थङ्कर हुये हैं या होंगे उन सब ने इन ीस वोलों का सेवन किया है और करेंगे ॥ इति शुभं ॥

\* सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम् \*

# त्र्रथ श्री जयमञ्ज बावनी । ॥ दोहा॥

नमो सिद्ध निरंजनं, नमूं श्री सत्गुरु पाय। धन वाणी जिनराजरी, सुिणयों पातिक जाय ॥ १॥ पहलो तीजो ने चौथो, देश द्रव्य महावत । सर्वे द्रव्यधिक पांचमो, चाल्या कर्म गिर्थ ॥ २॥ तेरे वारे तीसरे, नहीं करे गुण ठाणे काल। चतर पंच छुठ सात में, गौत्र वांधे दीन द्याल ॥ ३॥ पहलो बीजो ने चौथो, चाले गुण टाणा लार। पेलो चौथो पंच छुट तेरमो, सदा साखता धार ॥ ४ ॥ एगतरत्ते रुइरेसि सद्दे, अतालिसे से कुणई पओस । दुक्खस्स सपीलमुवेइ चाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ३९ ॥ सद्दाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणे-गरूवे । चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तद्वगुरू किलिट्टे ॥ ४० ॥ सद्दाणुवाएण परिग्रहेण, उप्पायणे रक्खणसिक्षोगे । वए विओगे य कह सह से, सभोगकाछे य अतित्तलामें ॥ ४१ ॥ सद्दे अतित्ते य परिग्गहंगि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुर्द्धि । अतुद्धि-दोसेण दुही परस्स, लोमाविले आययई अदत्त ॥ ४२ ॥ तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, सहें अतित्तस्स परिग्गहें य। मायामुस बहुद लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुन्नई से ॥ ४३ ॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्यओ य, पओगकाले य दुही दुरंते। एवं अदत्ताणि समाययतो, सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ४४ ॥ सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुद्द द्दोज्न कयाइ किंचि। तत्थोवमोगे वि किलेसदुक्ख, निन्वतर्द जस्स कएण दुक्ख ॥ ४५ ॥ एमेव सद्दिम गओ पद्मोस, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ । पदुद्वचित्तो य चिणाइ कम्म, ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥ ४६ ॥ सहै विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्लोहपरंपरेण । न लिप्पए भवमज्झे वि सतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥ ४७ ॥ (३) घाणस्स गंघं गहण वयति, त रागहेउ तु मणुन्नमाहु । त दोसहेउ अमणुन्नमाहु, समी य जो तेस्र स वीयरागी ॥ ४८ ॥ गधस्स घाण गहण वयति, घाणस्स गध गहण वयति । रागस्स हेउ समणुजमाह, दोसस्स हेउ अमणुष्पमाहु ॥ ४९ ॥ गधेषु जो गिद्धिमुवेइ तिब्बं, अकालिय पावइ से विणास । रागाउरे ओसहगधगिद्धे, सप्पे विलाओ विव निक्खमते ॥ ५० ॥ जे यावि दोस समुवेइ तिब्ब, तसि क्खणे से उ उनेइ हुक्ख । दुइतदोसेण सएण जतू, न किंचि गर्ध अवरज्झई से ॥ ५१ ॥ एगतरत्ते रुइरसि गर्ध, अतालिसे से कुणई पञ्जोस । दुक्खरस सपीलमुचेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ५२ ॥ गधाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे । चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तहगुरू किलिहे ॥ ५३ ॥ गधाणुवाएण परिगाहेण, उप्पायणे रक्खण-सिन्नोंगे । वए विओंगे य कहं ग्रह से, सभोगकाले य अतित्तलामे ॥ ५४ ॥ गधे अतिते य परिग्गहमि, सत्तोवसत्तो न उवेइ दुद्धि । अतुद्विदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्त ॥ ५५ ॥ तण्हाभिभूयस्य अदत्तहारिणो, गघे अतित्तस्य परिगाहे य । मायामुस वहुद लोमदोमा, तत्यावि दुक्खा न विमुचई से ॥ ५६ ॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्थको य, पक्षोगकाले य हुही हुरंते । एव अदत्ताणि समाय-यतो, गधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो॥ ५७॥ गधाणुरत्तस्स नरस्स एव, कत्तो ग्रह होज क्याइ किंचि । तत्योवमोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वतई जस्स कएण ६६ सत्ता०

विसोगो एएम पुरुबोइपरंपरेम । न किप्पी सबसजी वि संतो कीमा वा केर्च-रिगीयसार्थ ॥ ६ ॥ (४) जिस्माए ग्रंत गहने वर्गति ते रामहेर्ड द्व महत्त्रमा ।

....

त दोसहेउं अमनुक्तमाहु, समो व जो तस स नीयरागो ॥ ६९ ॥ रहस्स विस् गहणे वयति जिल्लाए रसे गहणे वर्गति । रागश्स हेर्ड सम्बुत्तमाहु, होसस्य हेर्ड समञ्जानाहु ॥ ६२ ॥ रहेस को गिरियाकेइ विर्म कामस्ति पाका से विवाद । रागाउरे विस्तिमित्रराष्, मच्छे वहा आसिसमीमगिकै ॥ ६३ ॥ व बार्न होन समुक्ति तिन्यं वंशि क्याचे से व वक्त दुक्तां। दुर्ववरोसेम सर्व बंद, व किरी रसं सबरण्याहै से ॥ ६४ ॥ एथलरते स्वरंगि-रसे अलामिने से हण्डे स्वरंग दुक्दस्य पंपीक्सुबेद्र बाक्षे न कियाई तेज सूजी विरागो ॥ ६५ ॥ रहासुबान हुगए य जीने 'चराचरे हिंसइडमेगरूने । चितेहि वे परैतानेह वाले पीनेर भारतगुर किमिद्धे ॥ ६६ ॥ रसाकुवाएंग परिमाहेल उप्पायने रक्षक्यविमाने क्य विकोगे स कई सुई से संयोगराके व कार्यत्तकाने ॥ ६० ॥ एसे अदित व परिमाईमि धत्तोदस्यो न उने इदि । श्वद्वद्वितेसेच दुई परस्य समानि भागगई भवतं ॥ ६८ ॥ तम्बामिम्बस्य अवतकारियो रसे मतितस्य परिनर्य य । मानामुधं बहुद कोमनोशा करणानि हुक्बा न मिमुचई से 🛭 ६९ 🗈 बोस्ट पच्छा स पुरत्यको य पक्षीगक्षके न दुवी दुरेत । एवं अवदानि समानकी एवं भविष्ये दुव्यको भगितस्त्रो ॥ ७ ॥ रखाषुरणस्य नरस्य एवं रखे औ होन्स क्याह किषि । तत्वोवसीये से किसेसहकर्क निम्नाई बस्स करून इंडे u ५१ ॥ एमेच रसम्मि गमी पमीचं तमेइ वुक्कोइपरेपरामी। पर्मान्द्रे व विचाह कर्मा व से पुत्रों होह तुई विचाने ॥ ७२ ध रसे विरानी मुख्यों विजे पूर्ण कुमबोहपरंपरेख । न किप्पई सबस्त्रको कि पंतो बढेम वा चेनकरिक पमास ॥ ४३ ॥ (५) क्रमस्य फार्च ग्रहणे वर्तति सं शमहेर्व द्व सनुकार्यः तं दोसहेन समञ्जनमाहु, समा व को तेस स वीवरागे s पर s राज्य कार्य गहन वर्गति कायस्स फार्च गहचे वर्गति । रागस्य 👪 त्रानुकार्यः होगस्य हेछ कम्प्युक्तमाहु ॥ ७५ ॥ प्राप्तेस को व्यक्तिस्त होन् क्यां<sup>हर</sup> पाबद्व से निजार्स । रामाजरे सीयवकावसके गाह्यमाहीए महिसे निवर्ष ॥ ४६ ॥ वे शामि दोसं समुद्रीय शिम्मं तसि नवाचे से व उनेह दुवर्ष । इहेज्योग स्पूर्व कर्त्, न किन्दि फार्स समस्यकाई से ॥ ७७ ॥ पूर्णतरहे ठहरीसे शरी बडाकेर है

कुणई पओस । हुक्खस्स सपीलमुचेइ वाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ७८ ॥ फासाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरचे । चित्तेहि ते परितावेइ वाले, पीलेड अत्तह्नगुरू किलिहे ॥ ७९ ॥ फासाणुवाएण परिगाहेण, उप्पायणे रक्खणसिन ओंगे । वए विओंगे य कह ग्रह से, सभोगकाले य अतित्तलामे ॥ ८० ॥ फासे अतिते य परिग्गहमि, सत्तोवसत्तो न उनेइ तुर्हि । अतुद्विदोसेण दुही परस्स, लोमा-बिरुं आययई अवत्त ॥ ८९ ॥ तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, फासे अतित्तस्स परि-गाहे य । मायामुस बहुइ लोभदोसा, तत्यावि दुक्खा न विमुचई से ॥ ८२ ॥ मोसस्स पच्छा य पुरस्थको य, पञीगकाले य दुही दुरैते । एवं अदत्ताणि समाय-यतो, फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्यो ॥ ८३ ॥ फासाणुरत्तस्स नरस्स एव, कत्तो सुह होज क्याइ किचि । तत्योवभोगे वि किलेसदुक्ख, निन्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ८४ ॥ एमेव फासमि गञ्जो पञोस, उनेइ दुक्खोहपरपराओ । पदुट्टिचत्तो य चिणाइ कस्म, ज से पुणी होइ दुह विवागे ॥ ८५ ॥ फासे विरत्तो मणुओ विसीगो, एएण दुक्खोहपरपरेण । न लिप्पई भवमज्झे वि सतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥ ८६ ॥ (६) मणस्स मार्व गहण वयंति, तं रागहेउ तु मणुत्रमाहु । त दोसहेउ अमणुत्रमाहु, समो य जो तेम्र स वीयरागो ॥ ८७ ॥ भावस्स मण गहण वयति, भणस्स भाव गहण वयति । रागस्स हेउ समणुत्रमाहु, दोसस्स हेउं श्रमणुत्रमाहु ॥ ८८ ॥ भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिब्ब, अकालिय पावइ से विणास। रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे, करेणुमग्गाविहए गजे वा ॥ ८९ ॥ जे यावि दोस समुवेड तिन्व, तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख । दुइतदोसेण सएण जतू, न किन्नि भाव अवरज्झई से ॥ ९० ॥ एगतरते रुइरंसि मावे, अतालिसे से कुणई पश्चोस। दुक्खस्स सपीलमुवेइ वाले, न लिपाई तेण मुणी विरागी ॥ ९१ ॥ भावाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंस-इऽणेगरूने । चित्तेहि ते परितानेइ वाले, पीलेइ अत्तहुगुरू किलिहे ॥ ९२ ॥ भावाणु-वाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्लणसिक्सोंगे । वए विओगे य कह दुह से, समोग-काळे य अतित्तलामे ॥ ९३ ॥ भावे अतिते य परिग्गहिम, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुर्हि । अतुद्विदोसेण दुही परस्स, लोमाविले आययई अदत्त ॥ ९४ ॥ तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, भावे अतित्तस्स परिग्गहे य । मायामुस वद्भुः लोमदोसा, तत्यावि दुक्ला न विमुचई से ॥ ९५ ॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्यओ य, पन्नोगकाले य दुही दुरते । एव अदत्ताणि समाययतो, भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ९६ ॥ भावा-णुरत्तस्स नरस्स एव, कत्तो सुह होज कयाइ किचि। तत्थोवभोगे वि किळेसदुक्खं, निव्यत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥ ९७ ॥ एमेव भाविम गओ पओस, उवेइ दुक्खोह-

इस्टब्स्ट्र है

## <u>म</u>च्चगमे

1 \*\*

परंपराच्ये । एतुद्वचित्तो व विजाइ कम्म र्ज से पुजी होह हुई विवाने ॥ ९८॥ मने भिरत्तो म्लुओ विसोगो पूर्ण दुवकोइपरंपरेग । म सिप्पई मक्मजो वि स्तो क्लेन ना पोनकरिनीपकार्स ॥ ९९ ॥ एविदिवत्था व मकस्स व्यथा इतकस्य हेर्र स्ट जस्स रामिणो । ते चेव कोर्न पि कमाइ दुक्का भ बीधरायस्स करेंदि सिनि ॥ १ न काममीया समयं उनिति न बावि भीया निवई उनिति । वे ठप्पनोधी व परिगर्य म खो तेष्ठ मोद्दा निगर्द उमेद्दा १ १ ॥ कोई च मार्च च तहेव मार्च की हुएकं मर्स्स रहे था। बार्स मने सोगपुमिलियेनं नर्प्रसमेनं विविद्वे न मार्थ ॥ १ १ । मानमारै प्रशासनावने प्रांतिहे कामगुणेष्ठ सत्तो। असे व एसपानी मेले. कारुमारीणे ब्रिरिये बहरते ॥ ९ ३ ॥ वर्ष्यं व इष्टिक सहामध्यम्, वकार्यन न त्वप्पमान । एवं कियारे श्रामियप्पवारे आवजहै इंदिनवीरनस्ते ॥ १ ४ तमो से भागीत पञ्जेयलाई, निमामिलं मोहमहज्यमंति । इहेरियो हुस्सामिकेरण तप्पणने रुजमए व रामी ॥ १ ५ ॥ विरुजमायस्य व इविसरना स्तुत्रका स

इसप्पनारा । न उस्त सन्ते नि मनुकर्य वा निम्नतर्यको काम्बुकर्य वा ॥ १ 🕻 एवं सर्चक्रमनिकम्पनाञ्चं संज्ञानदे समन्तुवद्वियस्य । बस्ये य संज्ञमननो हर्ने है प्राप्तियर नामग्रामेश तन्ता ॥ १ ७ ॥ स श्रीयरामो क्यसम्बन्धि वर्षेत्र तास्त्रम समियं । तहेन क दंशजमानरेह, क चंतरार्व पक्रोह कर्म्म व १ ८ ॥ सर्व हर्म जाजर पासप् य अमोहने होह निरंतराए । जनायने सायसमावित्रपे साउपन मोलक्सुके हुदै ॥ १ ९ ॥ छो तस्य सम्बद्ध बुद्दस्य सुद्दो व बहाँ स्व भंदुनेसं । रीहामर्थ विप्रसारको परालो हो होर अर्थात्वही स्मात्ये है 11 क्षणप्रकारणसम्बद्धाः स्थापकः प्रशासकः स्थापकः स्था वचीसहमं अञ्चयणं समर्च ॥ ३२ ॥ 

अह फम्मप्पयक्षी णाम तेसीसहम अञ्झय<sup>र्ण</sup>

मञ्जूकममादै चोच्छानि कालुपुर्ति व्यक्तमं । वेहिं वडो सर्व ग्रीचो संगरे हैं बार्ड ॥ ९ । नामस्थावर्गिकं वसमावर्गनं तहा । वेवर्गिकं तहा मोर्ट वार्राक्री तहेन न ॥ र ॥ नामकर्मां च गोर्व च संतर्गन तहेन म । एनमेना क्रमी भद्देव उ समामको स १॥ (१) नाजावरणं पंचित्तं, सूर्व बैतिसियोदियं । अर्थे नीजं च तहर्य सवसार्थं च चहेते ॥ ४॥ (१) मिहा तहेव घटको, स्ट्रियोदियं

लपयुर्ला य । तत्तो य श्रीणगिद्धी उ, पंचमा होड नायन्वा ॥ ५ ॥ चक्खुमचक्खु-ओहिस्सै, इसणे केवेंले य आवरणे। एव तु नवविगण्पं, नायव्व दंसणावरण ॥ ६॥ (३) वेयणीय पि य दुविहं, सार्यमसीयं च आहिय । सायस्स उ वहू भेया, एमेव असायस्स वि ॥ ७॥ (४) मोहणिज पि दुविह, दसैणे चरैंणे तहा । दसणे तिविह वृत्त, चरणे दुविह भवे ॥ ८ ॥ सम्मत्तं चेव मिच्छेत, सम्मामिच्छत्तमेवै य । एयाओ ति जि पयडीओ, सोहणिजस्स दसणे ॥ ९ ॥ चरित्तमोहण कम्मं, दुविहं तु वियाहियं। क्सायमोहणिज तु, नोक्सीयं तहेव य ॥ १० ॥ सोलसविहमेएण, कम्म तु कसा-यज । सत्तविह नविहें वा, कम्म च नोक्सायजं ॥ १९ ॥ (५) नेरहयैतिरिक्खाँड, मणुस्साँ तहेव य। देवाउँय चउत्थ तु, आउकम्म चउव्विहं ॥ १२ ॥ (६) नाम-कम्म तु दुविह, सुहैमसुँहं च आहिय । सुहस्म उ वहू भेया, एमेव अस्रहस्स वि ॥ १३॥ (७) गोयं कम्म दुविह, उर्च नीयं च आहिय। उच्च अद्वविह होइ, एव नीय पि आहिय ॥ १४ ॥ (८) दीणे लोभे य भौगे य, उवँभोगे वीरिए तहा । पचिवहमतराय, समासेण वियाहिय ॥ १५ ॥ एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया। पएसरगं खेत्तकाले य, भावं च उत्तरं सुण ॥ १६ ॥ सन्वेसिं चेव कम्माण, पएसंगमणतग । गठियसत्ताईय, अतो विद्धाण आहिय ॥ १७॥ सव्वजीवाण कम्म तु, सगहे छिद्दिसागय । सन्वेद्घ वि पएसेप्त, सन्वं सन्वेण वद्धगं ॥ १८ ॥ उदहीसरिसनामाण, तीसई कोडिकोडिओ । उक्कोसिया ठिई होइ, अतोमुहुत्तं जहिनया ॥ १९ ॥ भावरणिजाण दुण्हं पि, वेयणिजे तहेव य । भतराए य कम्मम्मि, ठिई एसा वियाहिया ॥ २० ॥ उदहीसरिसनामाण, सत्तरिं कोडिको-डिओ । मोहणिजस्स उद्योसा, अतोमुद्दत्त जहन्निया ॥ २१ ॥ तेत्तीससागरोवमा, उक्कोसेण नियाहिया। ठिई उ आडकम्मस्स, अतीसुहुत्त जहनिया ॥ २२॥ उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडिओ । नामगोत्ताण उक्कोसा, अद्वसुहत्ता जह, ित्रया ॥ २३ ॥ सिद्धाणणतमागो य, अणुभागा हवेति उ । सन्वेसु वि पएसगा सन्वजीवे अइच्छिय ॥ २४ ॥ तम्हा एएसि कम्माण, अणुभागा वियाणिया । एएसि सवरे चेव, खवणे य जए युद्दो ॥ २५ ॥ ति-बेसि ॥ इति कम्मप्ययदी णामं तेत्तीसइमं अञ्झयणं समत्तं ॥ ३३ ॥

## अह छेसज्झयणणामं चोत्तीसहमं अज्झयणं

─────────────────────────────── लेसज्झयण पवक्खामि, आणुपुर्विंव जहक्तम । छण्हं पि कम्मलेसाण, अणुमावे

**इस्टब्स**्ट सुचागमे 1 94 सुचेद में ॥ १ १: मामाई बच्चरसमीय- प्रस्तपरिजाससम्बन्ध । अर्थ कि प्यं नार्र केसार्थ तु स्रवेह में ॥ २॥ किन्दुं। नीकें। व करते य होर्के प्रमुंत होई व । हार्के य छट्टा य नामक् तु व्यवस्य ॥ १ ॥ (१) जीम्यनिव्यक्तस्य गवसरिद्वस्यतिमा चंत्रवजनवजनिमा किल्कुकेसा उ वृष्यको n v n (१) नीझस्त्रेयकेस्स नासपिक्कप्रमणमा । पैर्हिपशिक्षपैकस्याः मीक्कसा उ कन्नजो । ५ । (१) सम्वीपुप्पशंकासः कोइकप्पन्यसिमा। पारेवनगीवनिमा काउडेसा र स्वाहे u ६ n (४) विगुक्त्यवारुपेशचा एक्णक्ष्यस्थिमा । स्वतंत्रप्रविभा हे केसा च क्ष्मको । ♥ ।। (५) इरियासमेयर्थकासा इसिमामेयसम्मम क्षां पर्याप्त ॥ र ॥ (२) हारपाक्षवकावा वास्त्वात्त्र्यात्त्र समासम्बद्धानिमा प्रवृक्षेत्रा व क्ष्यको ॥ ८ ॥ (१) विश्वेष्ठावानि सीरपुरसम्प्रमा । रक्ष्यकृतकाव क्ष्यकेत व क्ष्यको ॥ ९ ॥ (१) हा इत्रुप्तेनारसे निवरको क्ष्यकोहिन्सरको ॥ । एको हे क्षर्यकारी हि किन्दार नायन्त्रो ॥ १ ॥ (२) नह तियहस्य व रखे क्रिन्दो नहीं रिप्पनीए ना । एतो कि कर्णतपुत्रो रखे ड रीक्सए नायन्त्रो ॥ ११ । (१) नहतरनमंत्रारखे हमरनमहत्त्रस्य नामि नारिक्सो।एतो कि कर्नतपुर्धे ही च करकार नायम्मो ॥ १२ ॥ (४) वह परिकर्यनगरको पक्किन्द्रिस नानि वार्रेडवे

ज करनर नायन्त्रा ॥ १२॥(४) वह पारस्वकारको रखा साह वार्यान्य एक प्राणित स्वरंत होते । एतो सि स्वरंतपुणी रखो ज तेस्स्य नावन्त्री ॥ १२॥ (५) वह वास्त्रीय वर्षेत्र सिनिहास व सावनाल साहिस्त्री । महुनेरपस्य व रखो एतो वस्त्रार सर्वे ॥ १४॥ (५) बनुस्त्रिविक्तरो सीराली क्वरस्वरराये वा। एतो सि क्वरियो रखो छ स्त्राप् नावन्त्री ॥ १५॥ सह योगहरस्य यंत्री ह्यस्यमस्य व स्त्रा स्वरंति । महस्य। एतो सि सर्वत्रपुणी केशाणं कथास्त्राची ॥ १६॥ सह छाईहरूस्त्री र्गजनासाम पिरसमाणार्थ । एची वि वर्णसमुखी परस्पकेसाम विश्व पि ॥ १०॥ कह करगजस्य भागो गोबिक्भाए य सागपतार्च । एसी वि असेतएको विव सप्यसत्वार्थ ॥ १८ ॥ वह बूरस्य व पायो भवजीयस्य व वि<del>रोधत प्रश्</del>व । हो वि क्रजंतपुर्यो परस्थकेसाम तिर्ण्यं पि ॥ १९ ॥ तिविहो व स्वविहो वा स्वापिती सिद्देवसीओं ना । इसमो तनाम्ये ना केसाम होद परिचासी ॥ १ ॥ (1) देवनारे बत्तो तीव्रै अगुत्ते छन् अनिवासे वा शिक्षारं प्रश्नामा व र व र १ । ११ । ११ वत्ते व र व र व र व र व र व र व र व निर्देशसम्बद्धानामे निर्देशने अभिदेशियो । एवजोगसमावत्ते हैं जरेने द र वे

॥ २२ ॥ (२) इस्या अमिरः अत्यो अधिकतामा आहीरेना । ति प्रेति प्रदेशे सदे प्रमत्ते स्वस्मेक्षर् ॥ २३ ॥ सावगवैसप् मैं। आरंमाओ अधिरने, प्रे ९ 'गवपीपक' इति भाषाए । १ गाहाविगपयमिण' ।

साहस्सिओ नरो । एयजोगसमाउत्तो, नीललेस तु परिणमे ॥ २४ ॥ (३) वंके वकसमायारे, नियहिले अणुजुए । पिठउंचगभोवहिए, मिच्छादिट्टी अणारिए ॥ २५॥ उप्पालगदुद्ववाई य, तेणे यावि य मच्छरी । एयजोगसमाउत्तो, काउलेस तु परिणमे ॥ २६॥ (४) नीयावित्ती अचवले, अमाई अकुऊहले । विणीयविणए दते, जोगव उवहाणव ॥ २७ ॥ पियधम्मे दृढधम्मे, ऽवज्जमीरू हिएसए । एयजोगसमाउत्तो, तेकलेस तु परिणमे ॥ २८ ॥ (५) पयणुकोहमाणे य, मायालोमे य पयणुए । पसतचित्ते दतप्पा, जोगव जवहाणव ॥ २९ ॥ तहा पयणुवाई य, उवसते जिइ-दिए । एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेस तु परिणमे ॥ ३० ॥ (६) अट्टहाणि विजता, थम्मसुकाणि झायए । पसंतिचित्ते दतप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिस्र ॥ ३९ ॥ सरागे बीयरागे वा, उवसते जिइदिए। एयजोगसमाउत्तो, सक्केस तु परिणमे ॥ ३२ ॥ असंबिजाणोसिपणीण, उस्सिप्पणीण जे समया । संबाईया लोगा, लेसाण इवित ठाणाइ ॥ ३३ ॥ मुहुत्तद्ध तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तहिया । उक्कोसा होइ ठिई, नायन्वा किण्हळेसाए ॥ ३४ ॥ मुहुत्तद्ध तु जहना, दस उदही पिलयमसब्सागमन्मिहिया । उद्गोसा होइ ठिई, नायन्त्रा नीललेसाए ॥ ३५ ॥ मुहुत्तद्ध तु जहना, तिण्णुदही पिलयमसखभागमन्भिहिया । उद्योसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥ ३६ ॥ मुहुत्तद्ध तु जहना, दोण्णुदही पलियमसखभाग-मन्महिया । उक्नोसा होइ ठिई, नायन्वा तेउलेसाए ॥ ३० ॥ मुहुत्तद्ध तु जहना, दस होंति य सागरा मुहुत्तिहया । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥ ३८॥ मुहुत्तद्ध तु जहन्ना, तेत्तीस सागरा मुहुत्तहिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायव्या सुक्कलेसाए ॥ ३९ ॥ एसा खलु लेसाण, ओहेण ठिई उ विष्णिया होड । चउमु वि गईमु एतो, लेसाण ठिइ तु नोच्छामि॥ ४०॥ दस वाससहस्साइ, काऊए ठिई जहिंकया होइ । तिण्णुदही पिल्ओवम-, असलभाग च उद्योसा ॥ ४९ ॥ तिण्णुदही पलिओनम~, असखभागो जहन्नेण नीलठिई । दस उदही पिल्ञोवम-, असंखभाग च उक्कोसा ॥ ४२ ॥ दसउदही पिल्ञोवम-,असंखभाग जहिनया होइ। तेत्तीससागराड उक्कोसा, होइ किण्हाए लेसाए ॥ ४३॥ एसा नेरइयाण, छेसाण ठिई उ वण्णिया होइ। तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाणं ॥ ४४ ॥ अतोमुहुत्तमढं, छेसाण ठिई जिहं जिहं जा उ । तिरियाण नराण ना, विज्ञिता केवल लेस ॥ ४५ ॥ मुहुत्तद्ध तु जहन्ना, उन्नोसा होइ पुन्व-कोडीओ । नवहि विसिहि ऊणा, नायव्या ग्रक्तलेसाए ॥ ४६ ॥ एसा तिरिय-नराण, छेसाण ठिई उ विणया होइ । तेण पर वोच्छासि, छेसाण ठिई उ देवाण

 ॥ ४७ ॥ दस वाससहरसाई, फिल्हाए ठिवै बहतिया होत् । पश्चिममसंविक्त्मे उद्दोसो होड् क्रिव्हाए ॥ ४८ ॥ वा क्रिव्हाए ठिई राख्न सहोगा सा व समस् क्माहिया । बहुबेर्ज नीलाए, परिन्यमसंखं च उद्योगा ॥ ४९ ॥ वा मीक्स् वि पर्श्व, उद्योसा सा उ सम्बगन्मक्षिया । अहरेशं कार्य्य, पश्चिमसंबं व उद्योग ॥ ५ ॥ सेच परं गोरहामि सेरुकेसा नहा सरगणार्थ । अन्यवद्यानने बोइसनमानियानं च ॥ ५९ ॥ परिओवर्ध बहुवा स्वद्रोसा समग्र उ हुवहिन पक्रियमधंकेक्षेत्रं होत् मागेल खेळर ॥ ५२ ॥ वसवाससहस्साई, वेकर वि कहतिया होत् । तुकुरही पविभोषम- असंदामार्ग च उडीसा ॥ ५३ ॥ वो देन्स कि प्राप्त उद्योगा सा र समयग्रनमहिया । बहुबेर्ण कहाए, इस र सहुवाहिन उच्चेता ॥ ५४ ॥ भा पन्याप् ठिई क्षत उद्योग था व समस्मारियाँ। जहरोमं स्काप वेत्रीसमुद्वतसम्महिया ॥ ५५ ॥ किन्हा भीत्म काळ, विवि है एकामी अञ्चलकेताको । एयादि शिवि वि योको जुल्लई क्वक्सई ॥ ५६ ॥ हैंड पन्दा दका दिनि नि एसाओ वस्मलेखाओं । एसाई दिवि नि मीनी 🗺 रुक्तमहै ॥ ५७ ॥ केवाहि सन्वाहि, पत्रमे समर्वमि परिचवाहै हा । व ह क्ल द्वनशास्त्रो परे मने सरिव जीवस्त्व ॥ ५८ ॥ केवाहि क्वमाहि बहैसे स्पर् परिजयादि द्व । न हु वस्त्वह दक्काओं परे मने होर बीवस्त्व ॥ ५८ ॥ केवाहि मए, सत्मुहुर्ताम सेवए चेव । केवाई परिक्याई, बीवा या सेव स n ६ u तम्हा एवारि केंसार्व भालुमाहै विवासिया । अध्यस्यान्द्रे वित्री प्सरवामोऽहिहिए सुनि ॥ ६९ ॥ वि-नेमि ॥ इति सेस्तरस्यपनार्थ कोचीसामं अञ्चयनं समर्च ॥ १४ ॥

भइ अणगारज्ययणं णाम पंचतीसहमं अज्यय<sup>मं</sup>

धुनेह मं प्रारमसमा समा कुद्रेहि वेसिय । नमायरंतो सिन्न, दुवनारंतर्ग मने ॥ १ ॥ भिद्दनार्थं परिचान पराजासिस्सर् सूर्णी । इसं पेरी निवासिकाः सर्वादी माथना () ९ ॥ तहेन हिंस मध्यने नोर्च मनेमवेर्नेचे । इन्सानने व क्षेत्रं च संबक्तो परिवज्ञप् ॥ ३ ॥ अनोहरं निरावरं ग्रहमूबेच वाहिर्व । साम् पेंड्रस्कोर्स मणसा वि व परवष् ॥ ४ ॥ इंदिवाचि उ शिल्बस्य हार्ड्ड उपस्तित् । हृद्दर्मः निवारेजं कासरागिक्वहुणे ॥ ५ ॥ श्रतां हृद्धारे ह रम्प्पान्ते व एराजो । पहरिषे परकवे वा बार्स सरवामिरोवए ॥ ६ ॥

अणावाहे, इत्थीहिं अणभिद्यु । तत्थ सकप्पए वास, भिक्ख् परमसजए ॥ ७॥ न सय गिहाइ कुन्त्रिजा, णेन अन्नेहिं कारए। गिहकम्मसमारमे, भूयाणं दिस्सए वहो ॥ ८ ॥ तसाणं थावराण च, सुहुमाणं वादराण य । तम्हा गिहसमारभ, सजओ परिवजए ॥ ९ ॥ तहेव भत्तपाणेसु, पयणे पयावणेसु य । पाणभूयदयद्वाएं, न पए न पयावए ॥ १० ॥ जलधन्ननिस्सिया जीवा, पुढवीकट्ठनिस्सिया । हम्मति भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्ख् न पयावए ॥ १९ ॥ विसप्पे सन्वओ धारे, वहुपाणि-विणासणे । नित्य जोइसमे सत्ये, तम्हा जोइ न दीवए ॥ १२ ॥ हिरण्ण जायरूवं च, मणसा वि न पत्थए । समलेट्टुकचणे भिक्ख, विरए कयविकए ॥ १३॥ किणतो कइओ होइ, विक्विणतो य वाणिओ । कयविक्वयमि वस्तो, भिक्ख न भवड तारिसो ॥ १४ ॥ मिक्खियव्व न केयव्वं, भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा । कयविक्कओ महादोसो, भिक्खावित्ती सुहावहा ॥ १५ ॥ समुयाण उद्यमेसिजा, जहासुत्तम-णिंदिय। लामालाभिम सतुद्वे, पिंडवाय चरे मुणी ॥ १६ ॥ अलोले न रसे गिद्धे, जिब्मादते अमुच्छिए । न रसद्वाए मुजिजा, जनणद्वाए महामुणी ॥ १७॥ अचिण रयण चेव, वंदण पूयण तहा । इड्डीसकारसम्माणं, मणसा वि न पत्थए ॥ १८ ॥ सक्काण झियाएजा, अणियाणे अर्किचणे । वोसद्रकाए विहरेजा, जाव कालस्य पज्जओ ॥ १९ ॥ निज्जहिकण आहारं, कालधम्मे उवद्विए । जहिकण माणुस चोंदि, पहू दुक्खा विमुचई ॥ २०॥ निम्ममे निरहकारे, वीयरागी अणासनो । सपत्तो केवल नाण, सासय परिणिव्युए ॥ २१ ॥ ति-बेमि ॥ इति अणगारज्ययणं णाम पंचतीसहमं अज्ययणं समत्तं ॥ ३५ ॥

## अह जीवाजीवविभत्ती णामं छत्तीसहमं अज्झयणं

जीवाजीविवमित्तं में, सुणेहेगमणा इंखो। जं जाणिसण मिक्ख, सम्मं जयइ सजमे॥ १॥ जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए । अजीवदेसमागासे, अलोगे से वियाहिए ॥ २॥ द्व्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा। परुवणा तेसिं भवे, जीवाणमजीवाण य ॥ ३॥ रूविणो चेवऽरूवी य, अजीवा दुविहा भवे । अरूवी दसहा वुत्ता, रूविणो य चडिव्वहा ॥ ४॥ धम्मित्यकाए तहेसे, तप्पएसे य, आहिए । अहम्मे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए ॥ ५॥ आगासे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए ॥ ५॥ आगासे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए ॥ ५॥ धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमिता वियाहिया। लोगालोगे य आगासे, समए समयखेतिए ॥ ७॥

सम्माधम्मागासा तिसि सि एए समाह्या। सरस्वयधिया सेव धम्मद्र प्रसिद्धीत । ८ । सम्बद्ध प्रसिद्धीत एक्योर स्थितिया सि । साएसे एक्योर स्थानिए। साएसे एक्योर स्थानिए। साएसे एक्योर सि । १ । एक्योर प्रसिद्धीत के प्रसिद्धीत के प्रसिद्धीत । एक्योर प्रसिद्धीत क्या प्रस्तात । १ । एक्योर प्रस्तात क्या प्रस्तात । स्थानिए। सिंदी स्थानिए। स्य

चें प्रभाविक सरक्त्यारिया कि या। दिई पहुन्त साहिता स्वयन्त्रिया कि सा ॥ १ ॥ असंदर्शनसमुद्दिती एवं समझे बहुत्तन। असीत्राच य स्थाने दिई एमा निमार्क्स ॥ १४ ॥ अम्पेतनसमुद्दिती एदी समझे जहावर। असीत्राच व स्थीने कॉर्स निमाहित ॥ १५॥ वण्यको येजनो चेन रस्को गस्को स्वारा स्वरत्नाने में किसे,

मुचागमे

ि **उत्तरक्षात्र**म्य

1 40

परिमानो लेकि पंचहा ॥ १६ ॥ बच्चको परिमाना कं ठ पंचहा के प्रक्रितिया। विश्व । विश्व परिमान परिमान परिमान । इस्मिपंच रहेव व ॥ १८ ॥ राज्ये परिमान के ठ पंचा । विश्व परिमान के ठ पंचा के परिमान के ठ पंचा के परिमान के ठ पंचा के परिमान के एक प्रकार के परिमान के एक प्रकार के परिमान के परिमा

मिं या। १०० बण्यको पीयप् थे हा साम् से उ संक्ष्मो । एसमी पायमें की भाग देशकारी विश्व । १६ ॥ बण्यको हिन्द्व । अस्प से इस्मी पायमें की भाग देशकारी विश्व । १६ ॥ व्यक्तों हिन्द्व ॥ एक। ॥ प्रकाशे अर्थ इस्मी अर्थ देशकार । एसमी अर्थ इस्मी अर्थ देशकार । एसमी अर्थ की व्यक्त से स्वा । १८ ॥ व्यक्तों और इस्मी अर्थ से उत्तर से उ व्यक्तों । एसमी अर्थ से उत्तर से अर्थ से

(उन्मह इंहा अपाय॰ जारणा) च्यार सुबि (उत्पारि में, चिनयकी कर्मकी, पारिखासिकी) तीन वृद्धि (सम्बर्क् इप्रिम्प्यादः ए, सिखदिए) पांच दृष्य धर्मारिन, क्रमी रिन आकाग्रारित जीवारित और काल हृदय' पांच प्रकार से जीव की गरित 'उत्थान कर्म, वल वीर्य पुरुपाचे" यह १ वील कारणी के हैं। प्रशित ॥

सेवं मते सेवं मते तमेव स्वम्

### सूत्र श्री ज्ञाताजी श्रध्ययन दवा

( तीर्पकर नाम गोज बंध के २० कारण )

(१) भी भरिहस्त भगवान् के शुरा स्तबमादि करने से । (२) भी सिक्र मगवान् के शुक्ष स्तबमादि करने से ।

(२) मा ।सङ मगवान् क ग्रुस स्तथनावि करन सः । (३) मी पांच समिति तीन शुप्ति यह बार प्रवचन की <sup>मार्त</sup>

है इन्हों को सम्बद्ध प्रकार से ब्राएयम करने से !

(४) भी गुव्यक्त गुरुजी सहाराज का गुद्ध करने में । (४) श्री स्थिपरजी महाराज के गुस्स स्वयमादि करने से !

( ४ ) श्री स्थिपरजी महाराज के ग्रुश स्तपनादि करने से ( ६ ) श्री बहुभुती-गीतार्थी का ग्रुश स्तपनादि करने से !

( ७ ) जी तपस्वीजी महाराज के ग्रुप स्तपनादि करने से । ( ८ ) लिया पढ़ा बात को बार बार बितयन करने से ।

( ८ ) ज़िया पशु क्षान को बार बार बितयन करने से ( ८ ) दर्यन [समकित] निर्मल क्षाराधन करने से ।

(१०) मात तथा १६४ प्रकार के मियम करने से ।

( ११ ) काला काल प्रतिश्रमण करने से ।

( 19 ) क्रिये हुए यम-प्रात्याक्यान मिमेस पातने से ।

(13) धर्म स्पान-शक्त स्पाम स्पाते रहने से ।

वण्णओ । गधओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ३३ ॥ रसओ महुरए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गघओ फासओ चैव, भइए सठाणओ वि य ॥ ३४ ॥ फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ । गघओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ३५ ॥ फासओ मउए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए सठाणओं विय ॥ ३६ ॥ फासओं गुरुए जे उ, भइए से उ वण्णमो । गधमो रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ३७ ॥ फासओ लहुए जे ड, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ३८ ॥ फासओ सीयए जे उ, भइए से उ वण्णको । गधओ रसको चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ३९॥ फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ४० ॥ फासओ निद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ विय ॥ ४१ ॥ फासओ छुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गघओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ४२ ॥ परिमंडलसठाणे, भइए से उ वण्णओ । गघओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥ ४३ ॥ सठाणओ भवे वहे, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥ ४४ ॥ सठाणओ भवे तसे, भइए से उ वण्णओ । गघओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥ ४५ ॥ सठाणओं जे चडरसे, भइए से उ वण्णओं । गधओं रसओं चेव, भइए फासओं वि य ॥ ४६ ॥ जे आययसठाणे, भइए से उ वण्णको । गधको रसको चेव, भइए फासओ वि य ॥ ४७ ॥ एसा अजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया । इत्तो जीववि-मत्ति, बुच्छामि अणुपुञ्वसो ॥ ४८ ॥ ससारत्या य सिद्धा य, दुविहा जीवा विया-हिया । सिद्धा णेगविहा बुत्ता, त मे कित्तयओ सुण ॥ ४९ ॥ इत्थी-पुरिससिद्धा य, तहेव य नपुसगा । सर्लिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ॥ ५० ॥ उन्नोसोगाह-णाए य, जहन्नमज्झिमाड य । उन्हु अहे य तिरिय च, ममुद्दमि जलिम य ॥ ५१ ॥ दस य नपुसएसु, वीस इत्थियासु य। पुरिसेसु य अहसय, समएणेनेण सिज्झई ॥ ५२॥ चत्तारि य गिहलिंगे, अन्निलंगे दसेन य । सर्लिगेण अट्टसय, समएणेगेण सिज्झई ॥ ५३ ॥ उक्कोसोगाहणाए य, िक्झते जुगव दुवे । चत्तारि जहन्नाए, मज्झे अहुत्तरं सय ॥ ५४ ॥ चउरहुलोए य दुवे समुद्दे, तओ जले वीसमहे तहेव य। सय च अड़त्तरं तिरियलोए, समएणेगेण सिज्झई धुवं ॥ ५५ ॥ किंह पिडहिया सिद्धा <sup>2</sup>, किंह सिद्धा पइद्विया <sup>२</sup>। किं वोंदिं चडसाण <sup>२</sup>, कत्य गत्ण सिज्झई <sup>२</sup>॥ ५६॥ अलोए पडिह्या सिद्धा, लीयरगे य पइद्विया । इह वॉर्दि चइत्ताण, तत्थ गतूण सिज्झई ॥ ५७ ॥ वारसिंह जोयणेहिं, सन्बद्धसम्बर्धि भने । ईसिपन्भारनामा उ, पुढनी छत्तसिठया

वाबरा जे र पञ्चता, प्रणेगहा ते विवाहिया । ईगाळे मुस्मुर अगर्वा वर्षि नामा तहेन स ॥ ११ ॥ उक्षा विज् न नोधन्ना,ऽनेसहा एनसासमी। एन निहमगानता सुहुमा ते विशाहिया ॥ १९९ ॥ सुद्रमा सम्बद्धीर्यम स्रोवहरी में नागरा । इतो चारुविमार्ग तु. शेसिं बुच्छ चरुव्याई ॥ १९२ ॥ स्टब्स् पण्डना हैया अपन्नपरिया निया दिसे पशुष्त साहैया सपन्नपरिया निया 111 E विज्येन सहोरता वद्योगेन नियाहिया । बावठिई रोकनं अंत्रोग्रहत्तं बहविन N १९४॥ सरंखकाकमुक्तेसा संतोमुक्तुतं बक्किया। कानठिई तेतनं तं गर्न द्र असंचानो ॥ १९५ ॥ अर्थतकाकसुकोर्स अंतोसहर्त्त बहस्त्रं । विजरंग सर् चाए, तेळजीवाण अंतरं ॥ ११६ ॥ एएसिं वण्याओं चेव गंबको रहणसम्बे पंठामादेशमा वाचि विद्यालाई सहस्तासी ॥ १९७ ॥ दुनिहा बाउजीवा उ स्टब्स नामरा तहा । एकत्तमप्रमत्ता एनमेए हुद्दा प्रणो ॥ १९८॥ नामरा के उ प्रमण पंचाहा ते पनितिया। उद्यक्तिमा संकतिमा धनर्गुमा श्रद्धमामा व ॥ ११५ ॥ पेनक्रानामा न,ऽनेगहा एक्सायको । एनमिह्ममाकता <u>शक्</u>रमा तत्त्र निराहित ॥ १२ ॥ प्रहुमा सम्बक्तांनि क्रोगक्से य वायरा । इत्तो कास्विमानं द्वः तेर्वे कुक्तं चत्रनिष्ठ ॥ १९९ ॥ एंटाई पप्पडनाईया । वपन्नवस्थिया वि न । छिई सु<sup>ब</sup> चाईमा सपन्नविशा विश्व ॥ १९९ ॥ तिष्णेव सहस्राई, वासक्त्रोसिना सर्वे माठिदं गावर्ण अतीमुद्दर्श जद्दनिया ॥ १९३ ॥ अधेकराममुद्देशा अतीमुद्र<sup>हे</sup> भवतिया । अवदिवै गाळमं शे कार्य <u>व वर्ता</u>णको ॥ १९४ ॥ अर्थतकर सुकोर्च अंतिसुहुत्तं जहकन । निवर्तमि सर्द कार, वास्त्रवीवाच सर्दर ॥ १९५ म प्रति बन्नजो चन गंबको स्वचासको । संकामावेसको वानि मिहानाई सहस्त्री ॥ ९ ६ ॥ उराका तसा को उ चाउड़ा ते प्रकितिमा । मेडीवन तेडीवन वन्ही पैचितिया उच्चा॥ १९७॥ नेप्रेसिया स जो भीना शुनिकाचे पक्षितिका। पत्राप मफबता देशि मेए धनेक में ॥ १९८ ॥ किसियों सोर्मगव्य केंद्र व्यवसायाँ शहरा। गारीसहा व रिप्पिना सेना सेनपा तहा ॥ १९९ । फोनासन्त भीव सहेव स वराजना । अवस्था आव्यासा भीव चंत्रना व तहेव स ॥ १३ ह इर केइविका एए, इमेगहा एक्सासमो । क्षोगेगकेसे हे सम्बे न सम्बद्ध विवाहिका ॥ १३१ ॥ सत्त्रं पप्पाऽमार्थेना अपन्यवस्थिया वि व । क्रियं प्रक्षण सार्थेना सम्बन्ध वसिया वि न ॥ ९३२ ॥ बासाई नारसा चेन सकोरीय विवादिना । देविनवाउ ितं, शेवोसङ्गां वहविना ॥ १११ ॥ शक्तिकाशम्बरेशा अवोसङ्गां बहविना। नेइस्विक्यसम्बद्धि, ते नार्ये तु अर्मुचको ॥ १३४ ॥ अनतकालमुकोस अर्जसहर्म

जहन्नय । वेइदियजीवाण, अतर च वियाहिय ॥ १३५ ॥ एएसिं वण्णओ चेव, गंघओ रसफासओ । सठाणाढेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १३६ ॥ तेइदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पिकत्तिया। पज्जत्तमपज्जता, तेसिं मेए सुणेह मे ॥ १३७॥ कुंथुपिवीलिउइसा, उक्लुंदेहिया तहा । तणहारकट्टहारा य, माल्र्गा पत्तहारगा ॥ १३८ ॥ कप्पासित्यींमजा य, तिंदुगा तउसिंजगा । सदावरी य गुम्मी य, वोधव्वा इंदगाइया ॥ १३९ ॥ इदगोवगमाईया,ऽणेगहा एवमायओ । लोगेगदेसे ते सब्वे, न सब्बत्य वियाहिया ॥ १४० ॥ सतइ पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य । ठिइ पहुच साईया, सपज्जवसिया वि य ॥ १४१ ॥ एगूणपण्णहोरत्ता, उद्दो-सेण वियाहिया । तेइदियभाउठिई, अतोमुहुत्त जहित्रया ॥ १४२ ॥ सिखजिकाल-मुक्कोसा, अतोमुहुत्त जहन्निया। तेडंदियकायिठई, तं काय तु अमुचओ ॥ १४३ ॥ अणतकालमुक्कोस, अतोमुहुत्त जहन्नय । तेइदियजीवाण, अतर तु वियाहिय ॥ १४४ ॥ एएसिं वण्णओ चेव, गंघओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १४५ ॥ चडरिंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पिकत्तिया । पजन्तम-पजता, तेसिं सेए सुणेह मे ॥ १४६ ॥ अधिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तहा । भमरे कीडपयगे य, ढिंकुणे कक्णे तहा ॥ १४७ ॥ कुक्कडे सिंगिरीडी य, नदावते य विच्छुए । डोले मिंगिरीही य, विरली अच्छिवेहए ॥ १४८ ॥ अच्छिले माहए अच्छि(रोडए), विचित्ते चित्तपत्तए । उर्हिजलिया जलकारी य, नीयया तवगाइया ॥ १४९ ॥ इय चडरिंदिया एए, ऽणेगहा एवमायस्रो । लोगेगदेसे ते सन्वे, न सन्वत्थ वियाहिथा ॥ १५० ॥ सतइ पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि थ । ठिइ पहुच साईया, सपज्जनसिया नि य ॥ १५१ ॥ छचेन य मासाऊ, उक्कोसेण वियाहिया । चर्डोरेदियसाउठिई, सतोमुहुत्त जहिनया ॥ १५२ ॥ सिखजनाल-मुक्कोसा, अतोमुहुत्त जहिनया । चउरिंदियकायिठई, त काय तु अमुचओ ॥ १५३ ॥ अणतकालमुक्कोस, अतोमुहुत जहन्नय । चर्डारेदियजीवाण, अतरं च वियाहिय ॥ १५४ ॥ एएसिं वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १५५ ॥ पर्चिदिया उ जे जीवा, चडविहा ते वियाहिया । नेरइया तिरिक्खा य, मणुया देवा य आहिया ॥ १५६ ॥ नेरइया सत्तविहा, पुढवीस सत्तस भने । रयणाभसक्तराभा, वाळुयाभा य आहिया ॥ १५७ ॥ पकामा धूमामा, तमा तमतमा तहा । इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥ १५८ ॥ लोगस्स एगदेसमि, ते सन्त्रे उ वियाहिया । एत्तो काल-

पाढंतरं-१ लोगस्स एगदेसमि, ते सन्वे परिकित्तिआ। २ विजडिम्म सए काए।

#### ि उत्तरम्<u>य</u>ा सुत्तागमे 1046 विभागं तु, बोच्छं वंशि चटम्बिह् ॥ १५९ ॥ एंटर्ड एप्पडवाहेमा अपनवस्ता विया ठिइ पहच साईमा सपजनस्या विया ॥ १६ ॥ सामरोक्समेर्व इ चक्रोरोच निवादिया । पत्रमाए अक्तेमं वसवाससहरिसना ॥ १६१ ॥ तिनेत सागरा छ, उहारोज विवाहिया । दोचाए बहनेलं एवं हु सागरीयम ॥ १६३ ॥ सतेव सागरा क उद्योगेण विभादिया । तहवाए बहतेर्थ दिल्लेव सामरोध्य ॥ १६३ ॥ इससागरीयमा छः उद्दोसेण विवाहिया । श्राटबीए वहचेनं श्री सागरोपमा ॥ १६४ ॥ सत्तरसंसागरा छ, उद्दोसेष विमाहिया । पंचमाप आहेर्य, दस चेव सागरोवमा ॥ १६५ ॥ वातीससागरा छ, उन्होरेज विसाहिता। कार अक्रुबेण सत्तरसंसागरोवमा ॥ १६६ ॥ वेचीससायरा छ, वक्रेसेण विवादिता सत्तमाए बहुबेणं बाबीसं सागरीबमा ॥ १६७ ॥ जा चेद य आउठिहे, मेछुबाब विवाहिता । सा रोसि कम्पाठिट, जहसुबोस्तिम मने ॥ १६८ ॥ अध्यतनात्रमुहीस कंतोसङ्कृतं बद्दवर्थ । विवर्वमि सए काए, बेरहवार्थ ह अंतरं ॥ १६९ म एस् बन्धको चेव गफ्को रसफासको । संठापादेसको शामि निहानाई स्ट्रल्स ॥ १७ ॥ प्रविदेशविरिक्यामो पुनिका वे स्थितिका । एंसुविज्ञातिरिक्वामें गब्सवहंदिना तहा ॥ १७९ ॥ दुनिहा ते सबै तिसिहा जरूनरा वसनरा तरा नद्भरा स मोचम्का तेसिं नेए सच्चेद से ॥ १७९ ॥ सच्चा व इच्छाना स सह य समय वहा । ग्रेंग्रमाय य बोधम्बा पंचदा बक्तमयदिन ॥ १५३ व मोर्ड्स दे सन्त्रे न सन्तरन निरामिता। इत्तो कालमितार्थ हा कोच्छ देसि वडन्नि रा १५४ ॥ वंतर् पण्डमारेना अपन्यस्थित वि स । डिप्ट्रं पहुच सारेना स्पन्न विस्माविस् ॥ १७५॥ एगा व पुल्बकोडी उद्योगेय विसादिता। आठली बक्त्यरार्थं अतिस्रद्वतं व्यवस्थित ॥ १७६ ॥ पुष्पकोविपुक्तं हः स्वोतेन निर्मा हिया । कानस्थि जनस्यार्थ अंतीमुहुतं कहिया ॥ १७७ ॥ सर्वत्यान्स्युक्तिः

दे सम्बे न सम्बन्ध निवादिना । होते काम्येवार्य हु वेष्णे वेति वर्तामं 
त १९४८ ॥ चंदर्य पण्डणांदिना अध्यम्भविता हि व कि वेति वर्तामं 
त १९४८ ॥ चंदर्य पण्डणांदिना अध्यम्भविता कि व कि वेति वर्तामं 
वस्त्रापं अध्यक्षित्र । पण्डणां व पुण्यक्षेत्री उद्यक्षेत्र विद्या । वार्वित 
दिया । वार्वित्र कम्यापं अध्यक्षित्र हुचे व्यक्षित्रा ॥ १९५४ ॥ व्यक्ष्मान्त्र व्यक्ष्मान्त्र । विद्यक्षित्र । वार्वित्र व्यक्ष्मान्त्र विवित्र वर्गाम्यक्ष्मान्त्र व व्यक्ष्मान्त्र वित्र वर्गाम्यक्ष्मान्त्र वित्र वर्गाम्यक्ष्मान्त्र वित्र वर्गाम्यक्ष्मान्त्र वित्र वर्गाम्यक्ष्मान्त्र वित्र वर्गाम्यक्षान्त्र वित्र वर्गाम्यक्ष्मान्त्र वित्र वर्गाम्यक्ष्मान्त्र वर्गाम्यक्षान्त्र वर्गाम्यक्षान्त्र वर्गाम्यक्ष्मान्त्र वर्गाम्यक्षान्त्र वर्गान्त्र वर्गाम्यक्ष्मान्त्र वर्गाम्यक्षान्त्र वरक्षमान्त्र वर्गाम्यक्षान्त्र वर्गाम्यक्षान्त्र वर्णाम्यक्षान्त्र वर्णाम्यक्षान्त्र वर्गाम्यक्षान्त्र वर्णाम्यक्षान्यक्षान्त्र वर्णाम्यक्षान्त्र वरित्र वर्णाम्यक्षान्त्र वर्णाम्यक्षान्त्र वर्णाम्यक्षान्त्र वर्णाम्यक्षान्त्र वरक्षान्त्र वर्णाम्यक्षान्त्र वरक्षान्त्र वर्णाम्यक्षान्त्र वरक्षान्त्र वर्णाम्यक्षान्त्र वरक्षान्त्र वर्णाम्यक्षान्त्र वर्णाम्यक्षान्त्र वरक्षान्त्र वरक्षान्त्र वरक्षान्त्र वरक्षान्त्र वरवरक्षान्यक्षान्त्र वरक्षान्त्र वरक्षान्त्र वरक्षान्त्र वरक्षान्यक्

॥ १८४ ॥ पठिओवमाइ तिण्णि ड, उक्कोसेण वियाहिया । आउठिई थलयराण, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १८५ ॥ पुन्वकोडिपुहुत्तेणं, उक्कोसेण वियाहिया । कायिऽई थलयराण, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १८६ ॥ कालमणंतमुक्कोस, अतोमुहुत्त जहन्नय । विजर्हमि सए काए, थलयराण तु अतर ॥ १८७ ॥ एएसिं वण्णको चेव, गंधओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १८८॥ चम्मे उ छोमपक्खी य, तइया समुगगपिक्खया । विययपक्खी य वोधव्वा, पिक्खणो य चउन्विहा ॥ १८९ ॥ लोगेगदेसे ते सन्वे, न सन्वत्य वियाहिया । इत्तो कालवि-भागं तु, तेसिं वोच्छं चउन्विह ॥ १९० ॥ सतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य । ठिड पहुच साईया, सपज्जवसिया वि य ॥ १९१ ॥ पलिओवमस्स भागो, असखेज्जइमो भने । आउठिई खहयराण, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १९२ ॥ असखभागो पिलयस्स, उक्कोसेण उ साहिया । पुन्वकोडीपुहत्तेण, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १९३ ॥ कायिठई खह्यराण, अतरं तेसिम भवे । अणतकालमुक्कोस, अतोमुहृत्त जहन्नय ॥ १९४ ॥ एएसिं वण्णओ चेव, गधभो रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विद्याणाइ सहस्ससो ॥ १९५ ॥ मणुया दुविहमेया उ, ते मे कित्तयओ सुण । समु च्छिमा य मणुया, गन्भवकृतिया तहा ॥ १९६ ॥ गन्भवकृतिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया। कम्मअकम्मभूमा य, अतरदीवया तहा ॥ १९७॥ पन्नरसतीसविहा, मेया अद्ववीसइ। ससा उ कमसो तेमिं, इइ एसा वियाहिया ॥ १९८ ॥ समुन्छिमाण एसेव, मेओ होइ वियाहिओ । लोगस्स एगदेसमि, ते सन्वे नि नियाहिया ॥ १९९ ॥ सतई पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया नि य । ठिइ पहुच साईया, सपजवसिया वि य ॥ २०० ॥ पिलओवमाई तिण्णि वि, उक्कोसेण वियाहिया। आउठिई मणुयाण, अतोमुहुत्त जहिन्नया ॥ २०९॥ परिख्योवमाई तिष्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया। पुन्वकोडिपुहत्तेण, अतोमुहुत्तं जहन्निया ॥ २०२ ॥ कायठिई मणुयाण, अतरं तेसिम भवे । अणतकालमुकोस, अतोमुहुत्तं जहस्रय ॥ २०३ ॥ एएसिं वण्णओ चेव, गथओ रसफासओ । सठाणाटेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ २०४ ॥ देवा चडिव्वहा वृत्ता, ते मे कित्तयओ द्भण । मोमिज वाणमतर, जोइस वेमाणिया तहा ॥ २०५ ॥ दसहा उ भवणवासी, अहहा वणचारिणो । पचिवहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥ २०६ ॥ असुरा नाग-सुवण्णा, विज्ञू अग्णी वियाहिया । दीवोदहिदिसा वाया, थणिया भवणवासिणो १। २०७ ॥ पिसायभूया जक्स्ता य, रक्पासा किन्नरा किंपुरिमा । महोरगा य गथव्वा, अट्ठविहा वाणमतरा ॥ २०८ ॥ चदा सूरा य नक्खता, गहा तारागणा तहा । ६७ सुत्ता०



क्षेण, वीसई सागरोवमा ॥ २३३ ॥ वावीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । अझुयस्मि जहन्नेण, सागरा इक्कवीसई ॥ २३४ ॥ तेवीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । पढ-ममि जहन्नेण, वावीस सागरोवमा ॥ २३५॥ चडवीस सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । विइयमि जहन्नेण, तेवीस सागरीवमा ॥ २३६ ॥ पणवीस सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । तह्यमि जहन्नेण, चउवीस सागरोवमा ॥ २३७ ॥ छन्वीस सागराई, उद्घोसेण ठिई भने। चउत्थमि जहन्नेण, सागरा पणुनीसई ॥ २३८ ॥ सागरा सत्तवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे । पचमंति जहन्नेणं, सागरा उ छवीसई ॥ २३९ ॥ सागरा अट्टवीस तु, उद्दोसेण ठिई भवे । छट्टमि जहनेण, सागरा सत्तवीसई ॥ २४० ॥ सागरा अडणतीस तु, उद्दोसेण ठिई मवे । सत्तमिम जहन्नेण, सागरा अद्ववीसई ॥ २४१ ॥ तीस तु सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । अद्वमिम जहनेण, सागरा अउ-णतीसई ॥ २४२ ॥ सागरा इक्तीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे । नवसि जहन्नेणं, तीसई सागरोवमा ॥ २४३ ॥ तेत्तीसा सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । चउसु पि विजयाईछ, जहन्नेणेकतीसई ॥ २४४ ॥ अजहन्नमणुक्कोसा, तेत्तीस सागरोवमा । महाविमाणे सन्बहे, ठिई एसा वियाहिया ॥ २४५ ॥ जा चेव उ आउठिई, देवाण तु वियाहिया । सा तेसिं कायठिङ, जद्जमुक्कोसिया भवे ॥ २४६ ॥ अणतकाल-मुक्कोस, अतोमुहुत्त जहन्नयं । विजडिम सए काए, देवाण हुज्ज अतर ॥ २४७ ॥ अणतकालमुक्कोस, वासपुहुत्त जहन्नय । आणयाईण कप्पाण, गेविज्ञाण तु अतरं ॥ २४८ ॥ सखिजसागरुकोस, वासपुहुत्त जहन्नय । अणुत्तराणं देवाणं, अतरेय वियाहिय ॥ २४९ ॥ एएसिं वण्णे चेव, गधओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ २५० ॥ ससारत्या य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया। हिनणो चेनऽह्नी य, अजीवा दुनिहा नि य ॥ २५१ ॥ इय जीवमजीवे य, सोचा सद्दिरुण य । सव्वनयाणमणुमए, रमेज सजमे मुणी ॥ २५२ ॥ तओ वद्दृणि वासाणि, सामण्णमणुपालिया । इमेण कमजोगेण, अप्पाण सलिहे सुणी ॥ २५३॥ वारसेव उ वासाई, सलेहुकोसिया भवे । सवच्छरं मज्झिमया, छम्मासा य जहिन्नया ॥ २५४ ॥ पडमे वासचलकामि, विगईनिज्यूहण करे । विद्यु वासचलकामि, विवित्त हु तवं चरे ॥ २५५ ॥ एगंतरमायाम, कट्टु सवच्छरे दुवे । तओ सवच्छरद्ध तु, नाइविगिट्ट तव चरे ॥ २५६ ॥ तथो सवच्छरदं तु, विगिट्ट तु तव चरे । परिमिय चेव भायाम, तमि सवच्छरे करे ॥ २५७ ॥ कोडीसहियसायामं, कट्टु सवच्छरे मुणी । मासद्धमासिएण तु, आहारेण तवं चरे ॥ २५८ ॥ कंदप्पमाभिओग च, किन्विसिय मोहमासुरत्त च । एयाउ दुग्गईओ, मरणंमि विराहिया होंति ॥ २५९ ॥

भिष्मदेशपरता सनियाणा च हिंसमा । इस से मरशि बीका तेसि प्रव छन्। बी u १६ । सम्माईवजरता अनिगागा ग्रहकेसमोगाहा । इय वे मध्ये जीवा वर्षि द्यमहा मने नोही ॥ २६१ ॥ मिख्डार्दसगरता सनियामा क्रम्हेन्सरोगात । इन वे सरेठि जीवा होसि पुण कुल्या बोबी ॥ २६२ ॥ जिल्लसने अकुरशा जिल्लसने वे करेंदि मार्केम । समस्य अधेकिन्द्रा ते होंदि परित्तर्वसारी ॥ १६३ ॥ गम्मर-शासि बहुले अकाममर्थानि चेद व बहुवि । मरिहंशि से बराया जिल्ह्यां ते व वार्णति ॥ १६४ ॥ बहुकानमविश्वाका समाहितपायमा व गुक्तमाही । एएवं १% रोचं अरिहा भारतेवर्ण साउं ॥ २६५ ॥ कंत्रप्यक्रवाई, तह सीम्स्सामान्यस् मिन्हावेंतो य परं, कंदप्ये मावर्ण ड्रम्मइ ॥ २६६ ॥ मताबोर्य कार्च महेंद्रमं व वे पर्वजीति । सामरध्यक्रिते व्यक्तिमार्गं मानव्यं कुमह ॥ २६७ ॥ नामस्य स्मान करमागरियस्य संगताङ्क्ष्ये । माहै व्यवण्यकाहै, क्रिकिसिकं मानवं क्रमह **४** १६८ ह मञुजबरोसपसरो तह य निमित्तम होइ पविशेषी । युप्ति कारवेति, बाह्यस्व सम्ब कुमह । २६९ ॥ सरक्यहर्ण विस्तानकार्य च जळमं च कक्पमिनो व । स्वानीर भवरोची बम्मकमर्गाल वंधीत ॥ २७ ॥ 💵 वातकरे हुदे, नामप् परिनित्तरः क्रतीस वत्तरण्याप्, मनस्द्रीवसंबुदे मण् । १७९ । ति वेम ॥ इति जीवा जीवधिमत्ती जामें क्वीसहमें संख्यायणं समर्च ॥ ३३ ॥

।। उत्तरज्ञयणसूर्त समत्त ॥



## णमोऽत्थु णं संमणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

## तत्थ णं नंदीसुत्तं

जयइ जगजीवजोणी-,विशाणओ जगगुरू जगाणदो । जगणाहो जगवधू, जयइ जगण्पियामहो भयव ॥ १ ॥ जयइ सुआण पभवी, तित्थयराण अपच्छिमो जयइ। जयइ गुरू लोगाण, जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥ भद्द मव्यजगुज्जोयगस्स, भद्द जिणस्स वीरस्स । भद्दं धुराधुरनमसियस्स, भद्द धुयरयस्स ॥ ३ ॥ गुणभवणगहण मुयरयणभरिय, दमणविसुद्धरत्थागा । सघनगर । भद्द ते, अखडचारित्तपागारा ॥ ४ ॥ सजमतवतुवारयस्य, नमो सम्मत्तपारियहस्स । अप्पिडचाइस्स जओ, होउ सया सघचकस्स ॥ ५ ॥ भद्द सीलपडागृतियस्त, तवनियमतुरयजुत्तस्त । सघरहस्स मगवओ, सज्झायसुनदिघोसस्स ॥ ६ ॥ कम्मरयजलोहिविणिग्गयस्स, सुयरयणदीह-नालस्त । पनमङ्क्ययथिरकन्नियस्त, गुणकेसरालस्त ॥ ७॥ सावगजणमहुव्यारि-परिवृडस्स, जिणसूरतेयवुद्धस्स । सघपउमस्स भद्द, समणगणसहस्सपत्तस्स ॥ ८ ॥ तवसजममयलछण !, अिकरियराहुमुहदुद्धरिस । निच । जय सघचद । निम्मल-, सम्मत्तविद्यद्वजोण्हागा ! ॥ ९ ॥ परितित्थियगहपहनासगस्स, तवतेयदित्तछेसस्स । नाणुजोयस्स जए, भइ दमसघस्रस्स ॥ १० ॥ भइ धिइवेलापरिगयस्स, सज्झाय-जोगमगरस्स । अक्लोहस्स भगवओ, सघसमुद्दस्त रुदस्स ॥ ११ ॥ सम्मद्सण-वरवइरदढरूढगाढावगाढपेढस्स । धम्मवररयणमडियचामीयरमेहलागस्स ॥ १२ ॥ नियमूसियकणयसिलायङ्जलजलतचित्तकृडस्स । नदणवणमणहर्सुरभिसीलगधुद्ध-मायस्स ॥ १३ ॥ जीवदयासुद्रकद्रुहियमुणिवरमइ्द्इनस्स । हेउसयधाउपगल-तरयणदित्तोसहिगुहस्स ॥ १४ ॥ संवरवरजलपगलियउज्झरपविरायमाणहारस्स । सावगजणपुडरस्वतमोरमञ्चतकुहरस्स ॥ १५ ॥ विणयनयपुवरसुणिवरफुरंतविज्ञुज्ज-लतसिहरस्स । विविद्दगुणकप्पस्क्खगफलभरकुसुमाउलवणस्स ॥ १६ ॥ नाणवरर-यणदिप्पत-,कत्वेष्ठियविमलचूलस्स । वदामि विणयपणञ्जो, सघमहामदरगिरिस्स ॥ १७ ॥ [गुणरयणुज्जलक्डय, सीलसुगंधितवमडिउद्देस । सुयवारसगसिहर, सघ-महामदर वदे ॥ १८ ॥ नगररहचक्कपडमे, चदे सूरे समुद्दमेविम्म । जो उविमजह 1 ६२ मुद्यागमे (क्षेत्र) सबसं में पंच्युतावरं विवे ॥ १९ ॥] [विदे] उससं कांत्रावं संस्थ- मिनंत्रकार्य-प्रथमप्रप्रापतं । सित्युप्पर्यतासीयक-,तिसंशं वास्त्युप्तं व ॥ १ ॥ विमाध्यकं व व वससं छेति देश्वं वरं च मात्रि च । सुनिश्चव्यमिनेसेसि यासं वर्ष करानं व ॥ २१ ॥ परमेरिक वृंदर्गुरं, वीत् युक्तं को स्वीमगद्वाति । तस्य वसन्त्रों, तब विवारे शहरमे य ॥ २१ ॥ मेडियमोरियपुतं कार्याण्य व भेक्स्याया व । मेन्द्रे

म पहास [म], पणहरा द्वेरी भीरस्य ॥ २३ ॥ निष्णुक्ष्यहसासमर्भ सम्बद्धसा सम्बनावदेसण्य । इममयमयनासवर्वं विविद्वरधीरहासवर्वे ॥ १४ ॥ छन् कारिमकेसाण केंबुलामं व कासवे । पमर्थ कवायर्व वदि वच्छ विजेतर्व व्य १ १५ ॥ सस्मदं तुंगियं विदे, संसूतं केव शाहरं । सहवाहं व पाइवं क्यानं व मोममं ॥ २६ ॥ एका<del>वव</del>सयोर्च वंदामि महागिरि **त**हर्ति च । ठछे कोदिनकी, बहुस्तरस सरिम्बर्ध विदे ॥ २७ ॥ हारियगुर्च शहः, व वेदिमी हारियं य सम्प्रते। विदे कोविमगोर्त्त संवित्रं अन्वजीनवरं ॥ २८ ॥ विस्तुक्वामकेवि चैक्स्सुर्रे गहिनपेनामं । वेदे कजारसुद्दं, सक्तुनियससुद्दर्गगीरं ॥ २९ ॥ सक्रां करमं प्रापं पमावर्गं जानवंशप्रयुवार्णं । वंदामि अञ्चर्गत् सुवसायरपार्गं वीरं प्र र [बंदामि कजनम्म तथो वंदे म महतुर्थं च । तथो न कजनहरं, टबनिकराने क्रुएसमं ॥ ३९ ॥ वंदामि अञ्चरनिक्य-कामने रविकामपरिकारनासे। (राज्य करंडयम्मूनो अनुस्रोनो रनिपत्थो नेहि ॥ ३९ ॥] नामस्मि बंधनस्मि व व्यक्ति भिषक्तममुजुत्त । सर्ज पंतिककारणे शिरसा वेदै पराचमचं 🛭 ३३ ॥ गहुद धर्म गर्नेची वस्त्रेंची अञ्जनागङ्गत्वीण । वागरणकर्णनियः- क्रमप्पनकेन्नानं ll १४ N वर्षनसमावसम्पन्धान शृहिसङ्गस्यस्यामः । बङ्का वास्पनेने, रेर क्रमक्तानामार्थं ॥ १५ ॥ अवस्तुरा विन्तांते वास्त्रिवस्यवासुस्मेनिए परि बस्रहेनमधीहे, वाजसप्त्रसुक्तमं वते ॥ ३६ ॥ जेखि इसो व्युओनो क्नरह व कडुमरहरिम । बहुनवरनिमायक्छे ते वेद बंदिकायरिए ॥ ३७ ॥ उछे हैरी कंतमद्रंतिकमे पिइपरकममर्थते । सञ्चायस्थतकरे क्रिमतंते वंदिसो हिस्स १ ६८ ॥ काम्प्रियक्त्रक्षेगरस्य वारप् भारप् य प्रकार्यः । दिमस्टबनाग्रम्यः
 वि नासकुरायरिष् ॥ १९ ॥ मिठमहबस्यते आयुप्तिवातयार्थं यो / क्रॅं धुनसमानारे, लागजुलकासए वर्षे ॥ ४ ॥ [योनिहालीप नमो बसुमीने मिन क्यारिविदानं । क्षेत्र कंविद्यार्थं पश्यने दुवसिदार्थं ॥ ४९ ॥ तसे व सूत्रीर्थः तिवं तवरंबमे अतिव्यन्तं । पंडिनवन्तासन्तं वंदामो सबमन्दिस्य व ४२ ॥ वर्ष्यमान्यमिवचंपगः- मिमवचनरकम्बनाकमसरिक्षे । समियवनहिननवर्षः, द्वापुन

(१४) वारह प्रकार की तपश्चर्या करने से।
(१४) श्रभयदान-सुपात्र देने से।
(१६) दश प्रकार की वैयावच करने से।
(१६) चतुर्विध संघ को समाधि देने से।

(१६) नये नये अपूर्व ज्ञान पढ़ने से।

(१६) सूत्र सिद्धान्त की भिक्त-सेश करने से।

(२०) मिथ्यात्व का नाश और समिकत का उद्योत करने से।

अपर लिखे वीस वोलों का सेवन करने से जीव कर्मों की कोड़ाकोड़ी ज्ञय कर देते हैं, श्रीर उत्कृष्टी रसायण [भावना] श्राने से जीव तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन कर लेते हैं। जितने जीव तीर्थंक्वर हुये हैं या होंगे उन सव ने इन वीस वोलों का सेवन किया है श्रीर करेंगे॥ इति शुमं॥

\* सेवं भंते सेवं भंते तमेव सद्यम् \*

## **ऋथ श्री जयम**ल्ल बावनी ।

॥ दोहा ॥

नमो सिद्ध निरंजनं, नमूं श्री सत्गुरु पायं।
धन वाणी जिनराजरी, सुणियों पातिक जाय ॥ १॥
पहलो तीजो ने चौथो, देश द्रव्य महावत ।
सर्व द्रव्यधिक पांचमो, चाल्या कर्म गिरंथ ॥ २॥
तेरे वारे तीसरे, नहीं करे गुण टाणे काल ।
चतुर पंच छट सात में, गौत्र वांधे दीन द्याल ॥ ३॥
पहलो वीजो ने चौथो, चाले गुण टाणा लार ।
पेलो चौथो पंच छट तेरमो, सदा साखता धार ॥ ४॥

विसारए धीरे ॥ ४३ ॥ अहुभरहृप्पहाणे, वहुविहसज्झायसुमुणियपहाणे । अणु-ओगियवरवसमे, नाइलकुलवसनदिकरे ॥ ४४ ॥ भूयहियअप्पगव्मे, वंदेऽह भूय-दिल्लमायरिए । भवभयवुच्छेयकरे, सीसे नागज्जुणरिसीण ॥ ४५ ॥ सुमुणियनिचा-निच, सुमुणियसुत्तत्यघार्य वदे । सन्भावुन्भावणया-,तत्य लोहिचणामाण ॥४६॥ अत्यमदृत्यक्खाणि, सुसम्णवक्याणकृष्णनिव्वाणि । पयईए महुरवाणि, पयओ पणमामि दूसगणि ॥ ४७ ॥ [तवनियमसश्चसजम-,विणयज्जवखतिमद्दवरयाण । सील-गुणगद्याण, अणुओगजुगप्पहाणाण ॥ ४८ ॥] सुकुमालकोमलतले, तेसिं पणमामि लक्खणपसत्ये । पाए पावयणीण, पिटच्छ्यसएहिं पणिवइए ॥ ४९ ॥ जे अन्ने मगवते, कालियस्यभाणुओगिए धीरे। ते पणमिळण सिरसा, नाणस्स पहवणं वोच्छ ॥ ५० ॥ सेलचण १ कुडग २ चालणि ३, परिपूणग ४ इस ५ महिस ६ मेसे ७ य। मसग ८ जळ्ग ९ विराली १०, जाहग ११ गो १२ भेरी १३ आभीरी १४॥ ५९॥ सा समासओ तिविहा पन्नत्ता, तजहा-जाणिया, अजाणिया, दुव्बि-यष्ट्रा । जाणिया जहा-खीरिमव जहा हसा, जे घुट्टति इह गुरुगुणसिमद्धा । दोसे य विवजति, त जाणसु जाणिय परिस ॥ ५२ ॥ अजाणिया जहा-जा होइ पगइ-महुरा, मियछानयसीहकुकुडयभूया । रयणमिव असठविया, अजाणिया सा भने परिसा ॥ ५३ ॥ दुव्वियद्वा जहा-न य कत्यइ निम्माओ, न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेण । वित्थव्य वायपुण्णो, फुट्टड गामिल्लय(दुव्यि)वियक्को ॥ ५४॥ नाण पचितह पन्नत्त, तजहा-आभिणिवोहियनाणं, स्यमाणं, ओहिनाणं, मणपजननाण, केवलनाण ॥ १ ॥ त समासओ दुविह पण्णत्, तजहा-पचक्ख च परोक्ख च ॥ २ ॥ से किं त पचक्ख १ पचक्ख दुविह पण्णत, तजहा-इंदियपचक्ख नोडदियपचक्ख च ॥ ३ ॥ से किं त इदियपचक्ख र इदियपचक्ख पचित्रं पण्णत्त, तजहा-सोइंदियपचक्ख चिंत्वदियपचक्ख घाणिदियपचक्ख जिहिंमदियपचक्खं फासिंदियपचक्ख, से त इदिय-पचक्ख ॥४॥ से किं त नोइदियपचक्ख १ नोइदियपचक्ख तिविह पण्णतं, तजहा-ओहिनाणपचक्ख मणपज्जवनाणपचक्ख केवलनाणपचक्ख ॥ ५॥ से किं त ओहिनाण-पचक्स <sup>२</sup> ओहिनाणपचक्स दुविह पण्णत्त, तजहा-मवपचड्य च खाओवसमिय च ॥ ६ ॥ से किं त मवपचइय<sup>2</sup> मवपचडय दुण्ह, तजहा—देवाण य नेरङ्याण य ॥ ७॥ से किं त खाओवसिय र खाओवसिय दुण्ह, तजहा-मण्साण य पर्चेदिय-तिरिक्खजोणियाण य । को हेऊ खाओवसिमय १ खाओवसिमय तयावरणिज्ञाण कम्माण उदिण्णाण खएण अणुदिण्णाण उनसमेणं ओहिनाण समुप्पज्जइ ॥ ८ ॥ अहवा गुणपिंडवनस्स अणगारस्स ओहिनाण समुप्पजाई, त समासओ छिन्त्रिह 1 48

पञ्चर्य रीवहा-बालुगासियं १ अवालुगासिव २ बहुमावर्ष १ हीसगार्क 😙 पविवाहर्य 🍕 अपविवाहर्य ६ ॥ ९ ॥ से कि ते आखुगामिन ओह्रिगा<sup>त्र</sup> भागुगामिनं खोहिनाणं तुविहं पण्णतं तनहा जंतगर्यं च अज्ञापनं च । से कि व व्यंतम्य र संत्यमं तिविह्न पण्णतं तैनहा-पुरको सत्यम समान्ते संत्यनं पण्डे बीतगर्य । से कि सं पुरुषो संतगन है पुरुषो श्रीतगर्व से बहामामए वह पुरेते त्रज्ञ ना चहुनिन ना अकार्य ना मणि ना पहेर्च ना जोई ना प्रस्के कार्य पहुरेमाने र गच्छेता से तं पुरको अंतगर्व । से कि तं मन्यको अंतगर्व ! समाओ अतगर्व से बहामामए केद पुरिसे सर्व वा बहुटियं वा अस्तर्य वा यदि वा पूर्व वा की वा समाओ कार्च अगुक्को माणे २ गव्यक्रका से सं समाओ अंताय : से हैं से पासको अंतगर्व ! पासको जंतगर्व-से बद्दामामए केंद्र पुरिसे वर्ष वा बद्धकों न क्स्मान वा समि वा पहुंच का कोई वा पासको कार्ड परिच्छेमाचे २ सरिज्ञा है तं पासको अतगर्य से तं कंतगर्य । से कि त सञ्चगर्य । सञ्च<del>गर्य से खा</del>लानी केद पुरिसे छन्ने का बद्धकिये का अस्मार्व का मार्थि का पहिले का बोर्द का मालप् कर्य समुन्बह्माने २ मक्टिमा हे हैं मन्स्यगर्य । शहगवस्स मन्समबस्य व हो पर मिसेसो ! पुरको सत्तपएन श्रोहिणानेर्च पुरको नेव पंक्तिज्ञानि वा श्रवंतिज्ञानि वा जोमजाई जायह पासह । सम्मको अनुगयुर्व ओदिनाचेर्य सम्मक्षे वेद संविज्ञान वा अर्थिक आमि वा जोगमाई बाजर परवह । पासजो अंतमपूर्व जोद्विनावेच परके चेव चंदिजायि वा अवंदिजानि वा बोबगाई बावह पास्ट । सम्हागदनै बोर्बरा पोर्न सम्बन्धे समेता श्रीक्षमाणि वा अशिक्षमाणि वा बोमलाई बाव्य पहर १ है हैं अनुगामियं कोहिगार्च ॥ १ ॥ से से कंपनिक्षमाणि वा बोमलाई बाव्य पहर १ है हैं अनुगामियं कोहिगार्च ॥ १ ॥ से सि से बवालुयामियं बोहिगार्च ? अवातुसमें ओहिनाणं से बहानामए केंद्र पुरिसे एगं महतं बोरह्मचं कार्ड तस्सेव बोरह्मचन परिपेरतिह परिपेरतिह परिक्षेत्रमाचे परिक्षेत्रमाचे तमेव बोरद्वाचं पातर, अक्ष्य गए [न बाणह] न पासह, प्राप्ति अवाजुगासिनं सोहिनानं अत्वेत स्मुप्तस्य तत्थेव संवेजानि वा असंवेजानि वा संवयानि वा असंवयानि वा असंवयानि वा असंवयानि वा पामहा अवत्व गए न पासह । सेर्त अव्यानुगासिय बोहिनाच्ये । ११ ॥ हे हा है वह माध्य ओहिमार्च ! बहुसायर्ग ओहिनार्य एसत्येषु बजावसायक्वानेत्र वामावत्य बङ्गमाजयस्वितस्य विद्याज्यमाणस्य विद्याज्यसमावयस्वितस्य सम्बद्धां समेता स्रोती वहर बातरवा विसमयहारणस्य सद्भारत्य वाद्यावास्य स्वतास्य स्वताः व्यावाः वेद्यावास्य स्वताः व्यावाः वेद्यावास्य व्यावा बाद्यं तु ॥ ५५ त सम्बद्धान्यपरियोगः विस्ततः वाद्यावं स्वताः विश्व स्वताः व्यावाः विस्ताः स्वताः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः विद्याः । परमोद्यो वेतानिद्विते ॥ ५६ ॥ वेषुव्यात्राक्ष्यायं आगस्यस्थितः देशः विद्याः।

अगुलमावलियतो, आवलिया अगुलपुहुत्त ॥ ५७ ॥ हत्थम्मि मुहुत्ततो, दिवसतो गाउयम्मि बोद्धव्यो । जोयणदिवसपुहुत्तं, पक्खतो पन्नवीसाक्षो ॥ ५८ ॥ भरहम्मि अद्धमासो, जम्बूरीवम्मि साहिओ मासो । वास च मणुयलोए, वासपुहुत्त च रुयगम्मि ॥ ५९ ॥ संखिजम्मि उ काले, दीवसमुद्दावि हुति संखिजा । कालम्मि असंखिजे, दीवसमुद्दा उ भइयव्या ॥ ६० ॥ काले चउण्ह बुद्धी, कालो भइयव्बु खित्तवुद्धीए । वुद्धिए दव्यपज्जव, भइयव्वा खित्तकाला उ ॥ ६१ ॥ सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमग्रर हवह खित्त । अगुलसेढीमित्ते, ओसप्पिणिओ ससखिजा ॥ ६२ ॥ सेत्त वहुमाणय ओहिनाण ॥ १२ ॥ से कि त हीयमाणय ओहिनाणं 2 हीयमाणयं ओहिनाणं अप्पसत्येहिं अज्झवसायद्वाणेहिं वद्टमाणस्स वद्टमाणचरित्तस्स सिकिलिस्स-माणस्स सिकल्सिमाणचरित्तस्स सब्बओ समता ओही परिहायइ । सेत्त हीयमाणय ओहिनाण ॥ १३ ॥ से किं त पिंडवाडओहिनाण <sup>३</sup> पिंडवाइओहिनाण जहण्णेणं अगुलस्स असंखिजयभाग वा संखिजयभाग वा, वालग्गं वा वालग्गपुहुत्त वा, लिक्ख वा लिक्खपुहुत वा, जूर्य वा ज्यपुहुत्तं वा, जवं वा जवपुहुत्त वा, अगुल वा अगुलपुहुत्तं वा, पाय वा पायपुहुत्त वा, विहर्तिथ वा विहरियपुहुत्त वा, रयणि वा रयणिपुहुत्त वा, कुच्छि वा कुच्छिपुहुत्त वा, घणु वा घणुपुहुत्त वा, गाउयं वा गारयपुहुत्त वा, जोयण वा जोयणपुहुत्त वा, जोयणसय वा जोयणसयपुहुत्त वा, जोयणसहस्स वा जोयणसहस्सपुहुत्त वा, जोयणलक्ख वा जोयणलक्खपुहुत्त वा, [जीयणकोडिं वा जीयणकोडिपुहुत्त वा, जीयणकोडाकोडिं वा जीयणकोडाकोडिपुहुत्त -वा, जोयणसंखिज वा जोयणसंखिजपुहुत्त वा, जोयणअसखेज वा जोयणअसखेज-पुहुत्त वा] उक्कोसेण लोग वा पासित्ताण पडिवइजा। सेत्त पडिवाइओहिनाण॥ १४॥ से किं तं अपिंडवाइओहिमाण<sup>2</sup> अपिंडवाइओहिनाणं जेण अलोगस्स एगमवि आगासपएस जाणइ पासइ, तेण पर अपडिवाइओहिनाण। सेतं अपडिवाइओहिनाण ॥ १५ ॥ त समासओ चडन्विह पण्णत्त, तजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ । तत्य दन्वओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अणताइ रूविद्व्वाइ जाणइ पासइ, उद्योसेण सन्वाई रुविद्व्वाइ जाणइ पासङ । खित्तओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अगुलस्स असिखज्जइभाग जाणइ पासइ, उद्योसेण असिखजाइ अलोगे लोगप्पमाणमिताड खडाइ जाणइ पासइ । कालओ ण ओहिनाणी जहन्नेण आवलियाए असरिवजङ्माग जाणड पासइ, उक्कोसेण असखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अनसप्पिणीओ अर्डयमणागय च काल जाणड पासइ। भावओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अणते भावे जाणड पासइ, उक्तोसेणवि अणंते भावे जाणइ पामइ । सन्त्रभावाणमणतभाग जाणइ पासङ ॥ १६ ॥

विश्व

कोही सनपन्यहमो गुनपन्यहथो न निजयो दुविहो । तस्य व बहू विदणा रूपे यिते य काके य ॥ ६३ ॥ गेरहनवेनशिर्त्वकरा य ओद्विस्स्टनाहिरा हुति । पासी सम्मको सह, सेसा देशेण पार्यति ॥ ६४ ॥ सेर्ग कोश्विमाणप्रवासको ॥ से 🛱 व मगपन्नकाण ! मनपन्नकाणि जे मेरी ! कि म्लुस्सार्ग उपपन्न कम्पुसार्ग गोयमा ! स्युस्साण मो अयुष्टराणं । 🖛 ज्युरसाणं 👫 संसुविकसम्बन्धान गरमाबद्रतिजमनुस्साणे ! गोयमा ! शो संगुच्छिममनुस्सार्थं उपान्यः गरमनपत्रिः मञुस्तार्ग । **बद्द गब्भावक्वतियम**ञ्जलार्थं कि कामभूमियगब्भवक्**ति**म<del>ाञ्</del>रसार्थं <del>मच्यमम्मिदगस्मक्कंतिकमञ्जूलाणं अंतरदीकमयव्यक्कंतिकमञ्जूलामं ।</del> वोक्या । करमानुनिक्यकारकेविवस्तुस्थाय मो श्राक्रमानुनिक्यकारकेविकस्तुस्थायं मे अदरशैवगयक्मवर्षतिग्रम्णुस्थार्गः । ज्यु काममूमियगर्मनवंदिकानुस्थार्वः म चेन्द्रिजनासादयरम्मभूमियमञ्जनसम्बद्धित्रम्मुस्सार्गः वर्षन्त्रम्मासास्यक्रमम् गरमाबर्कदियसञ्जरसार्थ । गोवमा । एकेक्सासाउवकम्मभूमियगन्भवर्कदिकस्त्रार्थ नो **मधंबेजना**साउवकस्मासूनियग**म्भवद्यंति**वसनुस्सार्यः। वदः पंबेजनासाउवकस्म मूमिनगञ्जनकंतिकमञ्जरपाणं कि पश्चचगरंकेकवासाववकमम्मिकगञ्जवकंतिकन्त स्सामं अपज्ञागसंबे ज्यासारस्य अस्मामृतियगन्भवकवियम्बुस्सामं ! ग्रेवमा ! प्रवर्षः गर्धकेजनाधारयकम्मभूमियमयम्बद्धदिवमञ्जरकार्तं को अपवास्तर्गरंकेजनाधारवर म्ममूमियगब्सक्तियसपुरशार्थं । जद्र प्रवत्तगरंबी जनाशाउवकम्ममूमिक्यस्मार्थः सम्बुरसाण के सम्मावृद्धिपञ्चतगरीकेञ्चनासात्यकम्मा<u>म</u>स्वयकम्<mark>वर</mark>िवसङ्ख्या मिच्छदिद्विपनत्तगर्धके जनासारायकम्मगृमिक्यच्याकं विकालस्यानं सम्मानिकरि द्विपमत्तार्थचे ज्वासारमञ्जनम् मृतियगम्भवदेतियमणुरसार्चः । गोस्मा । सम्महिकै पजात्मसंकेजवासाजवकम्मम्भियगक्मवद्वतियम्बुस्साच वो निकारित्रमण र्वेडेजनासार यर मामूमियगण्याकातियमणुस्सार्वे तो सम्मामिर्जी दिस्मान सक्रेजनासावयक्षमम् विजगम्मानकृतियम्बुस्तानं वह सम्मारिहिएजन्मस्वेज वासारचनरमम्मियमक्त्रवर्षतिवमणुस्सार्यः कि संवयसम्महिद्वपञ्चावसंवेजवासः संबद्धमामूमिमगरभावकृतियम्बुस्सार्वः असेववसम्महिद्विप्रज्ञत्मसंबेजवासाउरै कम्मभूमिनगण्याकदेवियमणुरसार्थः संज्यासंज्यसम्महिद्वियज्ञक्तसंवेजनातार्व कम्मभूमियगण्मकाविकमणुस्सार्थं है योगमा । संवयसम्मादिश्वपानसम्बेजवासाः उसकम्मभूमियमक्मवकंतियमणुस्सानं नो अधंत्रवसम्महिद्वरमण्यसंवेजनागर कम्मभूमियगब्भवक्षेत्रिकमणुस्साचं नो संज्यासंज्यसम्मार्दिपजनुतासंग्रेजनानी बसकाममूमिनगरभावदेतिनमपुरसार्व । वह संवयसम्मदिश्वसम्पर्धेत्रवानात्रव

कम्ममूमियगन्भवक्षतियमणुस्साणं, कि पमत्तसजयसम्मदिद्विपज्जत्तगसखेजवासाउय-कम्मभूमियगन्भवक्षतियमणुरसाण, अपमत्तसजयसम्महिद्विपजन्तगसखेजवासाउय-कम्मभूमियगञ्भवकृतियमणुस्साण २ गोयमा । अपमत्तसजयसम्मदिद्विपज्जतगसखेज्ज-वासाउयकम्मभूमियगञ्भवकृतियमणुस्साण, नो पमत्तसजयसम्महिद्विपज्ञतगसखेज-वासाउयकम्मभूमियगन्भवक्षतियमणुस्साणं । जइ अपमत्तसजयसम्महिद्विपज्जत्तग-सखेजवासाउयकम्मभूमियगञ्भवकंतियमणुरसाण, कि इङ्गीपत्तअपमत्तसजयसम्माइद्वि-पज्जतगराखेजनासाउयकम्मभूमियगन्मनक्कतियमणुस्साण, अणिष्ट्वीपत्तअपमत्तराजय-सम्महिद्विपजनगराकेजनासाउयकम्मभूमियगव्भवक्षतियमणुस्साण १ गोयमा ! इही-पत्तअपमत्तसजयसम्महिद्विपज्जतगसखेजवासाउयकम्मभूमियगव्भवक्षतियमणुस्साण, नो अणिद्गीपत्तअपमत्तसजयसम्मिद्दिष्टपज्ञतगसखेज्ञवासाउयकम्मभूमियगञ्भवक्कतिय-मणुस्साण मणपज्जवनाण समुप्पज्जइ ॥ १७ ॥ त च दुविह उप्पज्जइ, तजहा-उज्जुमई य विउलमई य, त समासओ चउव्विह पन्नत, तंजहा-द्व्वसो, सित्तसो, कालसो, मावओ । तत्य दव्वओ ण उजुमई अणते भणतपएसिए खधे जाणइ पासइ, ते चेव विउलमई अन्भहियतराए विउलतराए विद्युद्धतराए वितिमिरतराए जाणह पासइ। खित्तओं ण उज्जमई य जहन्नेण अगुलस्स असखेजवमाग, उक्कोसेण अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उबरिमहेट्विले खुडूगपयरे, उड्ढू जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरियं जाव अतोमणुस्सिखते अहु।इजेधु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्म-मुमिछ तीसाए अकम्मभूमिछ छप्पनाए अतरदीवगेस सन्निपचेंदियाण पजत्तयाण मणोगए भावे जाणइ पासइ, त चेव विउलमई अहु। इजेहिमगुलेहिं अन्महियतर विउलतर विधुद्धतर वितिमिरतराग खेत्त जाणइ पासइ । कालओं णं उज्जुमई जहन्नेण पिल्नोवमस्स असिक्जयभाग उक्कोसेणवि पिल्नोवमस्स असिक्जयमाग अईयमणागय वा काल जाणइ पासइ, त चेव विउलमई अन्महियतराग विउल-तराग विसुद्धतराग वितिमिरतराग जाणइ पासइ। भावओ ण उज्जमई अणते सावे जाणइ पासइ, सन्वमावाण अणतभाग जाणइ पासइ, त चेव विजलमई अञ्महिय-तराग विउलतराग निमुद्धतराग नितिमिरतराग जाणइ पासइ। मणपज्जवनाण पुण, जणमणपरिचितियत्यपागहण । माणुसखित्तनिवद्ध, गुणपचडय चरित्तवओ ॥ ६५ ॥ सेत मणपज्जवनार्ण ॥ १८॥ से किं त केवलनाण १ केवलनाण दुविह पन्नत्त, तजहा—भवत्यकेवलनाण च सिद्धकेवलनाण च।से कि त भवत्यकेवलनाण 2 भवत्यकेवलनाण दुविह पण्णत्त, तजहा-सजोगिभवत्यकेवलनाण च अजोगिभवत्य-केवलनाणं च । से किं त सजोगिभनत्यकेवलनाण <sup>2</sup> सजोगिभवत्यकेवलनाण दुविह

ि वर्गमूर्व

पुरुषकः तीवहा--पुत्रमसमयसञ्जोतिभवत्यदेशसभाजं च अपद्रमसममसयोगिनस्य-केनसनाण च बहुना चरमसमबस्त्रोगिमनत्वदेवसनाण च अचरमसम्बस्योनिः मदरबदेनकम्।ण च सेर्स समोगिमारवकेवसमाच । से कि त अजोगिमान केवलनायं ? अजोगिमनस्यकेवसमाणं वृतिर्द्धं पवर्तः राजहा-पदमसम्बज्जेयिमा रबारेत्रस्ताणं च अपद्रश्नमस्कामोयिशवरबारेनस्ताण च अद्वा वरश्नमस्त्रज्ञेनि सक्त्यदेवकतार्थं च क्षचरमसमयकाजीमभक्त्यदेवसनाथ च रेतं अजीरिमस्त्र-केंबस्तार्थ सेश सम्हणकेंबसनाथ ॥ १९ ॥ से कि सं श्रियकेंबसमार्थ । श्रिर क्षमानार्थं तुलिई पञ्चतं तंत्रहा-क्षणंतरसिद्धकेषकमानं व परंपरसिद्धकेषकमानं न n u से कि तं अधंतरविद्यकेनकनार्थ ! कर्नतरविद्यकेनकनार्थ प्रवरक्षि पण्यतः र्वज्ञा-तित्वसिदा १ श्रातित्वसिदा २ तित्ववरसिदा ३ जतित्ववरसिदा ४ सर्वकुदारिया = परेपबुदारिया ६ बुदरोहिनसिया = इतिकामिमसिया < पुरै एक्सिंग्रिया ९ न्युसगक्सिक्या १ सक्सिक्या ११ अवस्थिति ११ विदे र्जिंगसिका १३ एगसिका १४ क्येयसिका १५, स्त्रं अन्तरसिक्कालार्ज से 🕏 तं परंपरिद्धकेनसमाध ! परंपरिवकेनकमार्च समेनसिई प्रमातं तक्का-अगः मस्तवस्थि वुसमयस्थि विसमयस्थि वस्तमवस्थि वाद इस्टमवरिकः स्विज्ञसम्बर्धिद्धाः व्यविक्रजसम्बर्धिद्धाः क्षर्वतसम्बर्धिद्धाः सेतं परेपरिवर्णन नार्प । सेर्च सिवकेनक्रमार्च ॥ २९ ॥ तं समासको चढनिवहं प्रवारं तबह-हम्मओ वित्तको श्रक्तओ भावको । तत्व दम्बक्षे च वेस्क्ताको सम्बद्धम नामइ पासइ । बिताओं ने नेमसमाणी शस्त्रे किसे बाणइ पासइ। शासकों वे केन्ट नाणी सन्त्रं कालं काव्या पासद् । सावजो क क्षेत्रकताची सन्त्रे मावे बाक्द प्रस्त्र । मह सम्बद्ध्यपरियास- मायनिष्यतिकार्यस्थाते । साध्यमध्यक्षित्रो, प्रमेद गार्ज ॥ ६६ ॥ २२ ॥ केनक्षमाधिकाइत्वे भाई व्यं तत्व राज्यसम्बोते । ते मान्द वित्यनरी वहकोमञ्जयं इवह छेवं ॥ ६७ ॥ छेतं केवजनार्यः वेतं नोहिंदयनकर्यः सेतं व्यवस्थानानं ॥ ११ ॥ से कि वं परोक्यानार्थं है परोक्यानार्थं हुनिई व्यक्त तगहा-भागिविवोहियागणपरीवर्षं च द्ववमावपरीवर्षं च जल गापिविवोहे यनार्ण तत्व सुदमार्थ अत्व सुनमार्थ तत्वाधिष्मित्रोहियमार्थ बोऽवि एमई सन्त मण्यासपुरासाई छहति पुण इत्य काक्षिया नामर्ग प्रकारपेति समिनिकृत्वारि जाभिमिनोद्दिनमाण सुणेवति सर्वं सदपुष्यं क्षेत्र सर्वं न गर्व स्वपुष्टिका है १४ है अविसेसिया माई-महनार्य च महत्त्ववार्थ च । विसेसिया-सम्मितिहरस महे सहनार्य मिन्छारिष्ठिस्स सहै सहस्रवार्ण । समिन्छारा-धन्मराह्य स्थापनार्थ स्थापनार्थ स्थापनार्थ स्थापनार्थ स्थापनार्थ स्

सिय सुय-सम्मिद्दिह्स सुय सुयनाणं, मिच्छिद्दिहस्स सुयं सुयअनाणं॥ २५॥ से किं त आभिणिवोहियनाण <sup>2</sup> आभिणिवोहियनाण दुविह पण्णत्त, तजहा-सुयनिस्सिय च, अस्सुयनिस्सिय च । से कि त अस्सुयनिस्सियं <sup>१</sup> अस्सुयनिस्सिय चउव्विह पण्णत्त, तंजहा-उप्पत्तिया १ वेणड्या २, कम्मया ३, परिणामिया ४। बुद्धी चडव्विहा वुत्ता, पचमा नोवलञ्भइ॥ ६८॥ २६॥ पुट्यमदिद्वमस्सुय-,मवेइयतक्खणविसुद्धगहियत्या। अव्वाह्यफलजोगा, वुद्धी उप्पत्तिया नाम ॥ ६९॥ भरहसिल १ मिंढ २ कुकुड ३, तिल ४ वालुय ५ हत्यि ६ अगङ ७ वणस<del>ढे ८। पायस ९ अ</del>इया १० पत्ते ११, खाडहिला १२ पच पियरो य १३॥ ७०॥ भरहसिल १ पणिय २ रुक्खे ३, खुरुग ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उचारे ८। गय ९ घयण १० गोरु ११ खमे १२, खुडूग १३ मगिग १४ त्थि १५ पइ १६ पुत्ते १७ ॥ ७१ ॥ महुसित्य १८ सुद्दि १९ अके २०, य नाणए २१ भिक्ख २२ चेडगनिहाणे २३। सिक्खा २४ य अत्थसत्ये २५, इत्थी य मह २६ सयसहस्से २७॥ ७२॥ भर-नित्यरणसमत्या, तिवम्गधक्तत्यगहियपेयाला । उमओ-लोगफलवई, विणयसमुत्या हुबह बुद्धी ॥ ७३ ॥ निर्मित्ते १ अत्यसत्ये य २, रुहे ३ गणिए ४ य कृत ५ अस्से ६ य। गद्दम ७ लक्क्लण ८ गठी ९, अगए १० रहिए ११ य गणिया १२ य ॥ ७४ ॥ सीया साढी दीह, च तण अवसव्वय च कुचस्स १३ । निव्वोदए १४ य गोणे, घोडगपडण च स्क्लाओ १५ ॥ ७५ ॥ उवओगदिद्वसारा, कम्मपसंगपरि-घोलणविसाला । साहुकारफलवई, कम्मसमुत्था हवड बुद्धी ॥ ७६ ॥ हेरण्णिए १ करिसए २, कोलिय ३ डोवे ४ य मुत्ति ५ घय ६ पवए ७ । तुन्नाए ८ वहूइय ९, पूयड १० घड ११ चित्तकारे १२ य ॥ ७७ ॥ अणुमाणहेउदिद्वंतसाहिया, वयविवा-गपरिणामा । हियनिस्सेयसफलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥ ७८ ॥ अमए १ सिट्टि २ कुमारे ३, देवी ४ उदिओदए हवइ राया ५ । साहू य निदसेणे ६, धण-दत्ते ७ सावग ८ अमचे ९ ॥ ७९ ॥ खमए १० अमचपुत्ते ११, चाणके १२ चेव थूलमेह १३ य । नासिकसुदरिनढे १४, वइरे १५ परिणामिया बुद्धी ॥ ८०॥ चलणाहण १६ आमडे १७, मणी १८ य सप्पे १९ य खिंग २० जाणिजा । परिणामियवुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ॥ ८१ ॥ सेत्त अस्मुयनिस्सिय ॥ से कि त स्यनिस्सियं १ सुयनिस्मिय चडिव्बह पण्णत्त, तजहा-उग्गहे १, ईहा २, अवाओ ३, धारणा ४॥ २०॥ से कि त उग्गहे ? उग्गहे दुविहे पण्णते, तजहा-अत्रुग्गहे य वजणुम्महे य ॥ २८ ॥ से किं त वजणुम्महे 2 वजणुम्महे चउव्विहे पण्णत्ते, तजहा-सोइदियवजणुम्महे, घाणिदियवजणुम्महे, जिटिमदियवजणुम्महे, फासिंदियव-

1 .

अनुस्पद्दे । रेत वंजनुस्पद्दे ॥ ९९ ॥ से कित अल्युस्पद्दे अल्युस्पद्दे अल्युस्पद् पणते रंबदा-सोहंबियअलुम्यहे, चर्विकवियअलुम्यहे वाविविस्अञ्चर्महे विध्मिदिसमञ्जूमाहे, फासिदिसमञ्जूमाहे, मोइंदिसमञ्जूमाहे ॥ १ ॥ तस्त व इसे एगद्विमा नाजाबोसा नाजाबजवा पेच नामधिज्या मर्वति र्वजहा-मोगेन्हवना उपपारणमा समजमा समध्यममा भेडा। सेर्त उम्पडे ॥ ३१ ॥ से 👫 वं हि। हैहा स्रस्थिहा पण्याता राजहा-सोइंदिनहैहा अर्विकामनहैहा बार्जिन्हिरीस जिर्दिमिक्सेंडा फासिवियदेडा नोईवियदेडा । शीरी नं इमे एगद्विमा मानाकेल माजार्वज्ञमा पंच मामधिज्ञा सर्वति शैज्ञा-श्रासीयकया समावया गकेकवी, चिंता वीर्मसा । सेच वृंदा ॥ १२ ॥ से कि र्त क्वाए ई क्वाए क्विट्रे क्वी राजदा-रोहेवियमपाप, परिकारियकमाप, पार्मिवियमपाप, विक्रिदिसमार, पार्तिवियमवाप्, मोहेवियमवाप् । तस्य ने इसे एयद्विमा शामायेसा शामावेत्रा पंच नामधिजा भवन्ति तैयहा-बाउद्याना प्वाउद्यया भवाए, इसी क्रिकारे। चेत्तं अवाए ॥ ३३ ॥ से कि तं भारणा <sup>३</sup> वारणा छन्निहा पन्नता तंत्रहा सोहंदिनवारना वर्तिन्वदिकपारणा वार्तिहेववारणा विश्विदेववारमा प्रसित्ते यमारणा मोइंदियभारणा । चीते च इमे एमद्विया नामामेता नामानंत्रणा 🔫 नामधिजा भवति तंत्रज्ञा-भारणा शाधारमा उत्रणा पर्दछ वृद्धि । सैर्घ भारण ॥ १४ ॥ तमाहे इकतमहरू, अंत्रोमुङ्कतिमा हैहा अत्रोसुङ्कतिए अवार, बार्च सकेयं वा गार्च नर्पकेणं वा कार्क ॥ ३५ ॥ एवं शङ्कानीस्त्रनिहस्स आसिनिनी द्विननाचारस भंजपुरमहरस परानर्ण नरिरसामि पविचोह्यविद्वेतेनं सङ्ग्यमिद्वेतेनं व <sup>१</sup> से कि तं पविवोहमदिद्वीनं । पविवोहगरिद्वीनं से बहानामप् केंद्र प्रति हैं पुरिस सर्च पतिबोद्दिजा असुगा अगुगति तस्य बोक्गे पदावर्थ एवं क्वासी है एमसमयपविद्वा पुरमका गहणमायकारी है बुसमयपविद्वा पुरमका स्वूदमानकारी बाव व्हतसम्यपन्तिः पुरमका गङ्गमासम्बद्धिः चेक्रिकसमयपन्तिः पुरमका मक्षमापकारी <sup>३</sup> असंक्रिजसमनपनिद्वा पुनास्त्र गङ्गमा<del>पन्तर्वे</del>दि । एवं वर्ष चोक्यां पञ्चवए एवं वयाधी-को एगसमस्पविद्वा पुरगक्त सहस्रमायकार्थ को इप समयनिद्वा पुरमका पहणमागण्डसी जान भी इस्तमनपनिद्वा पुरमका सहजनामण्डसी नो एंप्रि<del>ज्यसम्मयपिद्धा पुर</del>गका महण्यासम्बद्धिः असंविज्यसम्परपिद्धा पुरमका गङ्गमामच्छंदि सेत्त पविवोहगमिद्वेतेणं । से कि तं सक्रगमिद्वेतेणं साममिद्वेतेणं से जरानामए केंद्र पुरिसे आवागसीसाओं मक्तां यहान तस्पेर्ध उद्दर्शनेंद्र वार्च-किमा से महे, सम्बेडनि प्रस्थितों सेडनि नहें, पूर्व प्रस्थितप्रसानेत प्रस्थित्वप्रसानेत

होही से उदगविंदू जे णंत महम रावेहिइति, होही से उदगविंदू जे णं तंसि मह्नगसि ठाहिइ, होही से उदगविंदू जेणं त महर्गं भरिहिइ, होही से उदगविंदू जेण त मह्ना पवाहेहिइ, एवामेव पिनखप्पमाणेहिं पिनखप्पमाणेहिं अणतेहिं पुग्गलेहिं जाहे त वजण पूरियं होइ ताहे हुति करेइ, नो चेव ण जाणइ के वेस सहाइ 2 तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सहाइ, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगर्य हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण वारेइ सखिज वा काल असंखिज वा काल। से जहानामए केइ पुरिसे अन्वत्त सह सुणिजा, तेणं सद्दोत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस सद्दाइ, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ असुगे एस सद्दे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज वा काल असखेज वा काल । से जहानामए केइ पुरिसे अन्वत्त रूव पासिजा, तेण रूवत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस रुवत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रूवे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ सखेज वा काल असखेजं वा काल । से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त गध अग्घाइजा, तेण गधत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस गधेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस गधे, तओ अवाय पविसइ, तओ से खवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज वा काल असखेज वा काल। से जहानामए केंद्र पुरिसे अन्वत्त रस आसाइजा, तेण रसोत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वैस रसेत्ति, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ वारण पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज वा काल असंखिज वा काल। से जहानामए केइ पुरिसे अन्वत्त फास पिंडसवेइजा, तेण फासेत्ति उग्गहिए, नी चेव णं जाणइ के वेस फासओत्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवार्य पविसइ, तओ से उवगय हवड़, तओ धारण पविसड़, तओ णं धारेड़ सखेज वा काल असखेज वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त सुमिणं पासिजा, तेण सुमिणेति उग्गहिए, नी चेव ण जाणइ के वेस सुमिणेति, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सुमिणे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हबइ, तभो धारण पविसइ, तभो ण धारेइ सखेज वा काल असखेज वा काल। सेत्त मह्नगदिद्वतेण ॥ ३६ ॥ त समासको चडन्विह पण्णत्त, तजहा-दन्वको, खित्तओ, कालओ, भावओ । तत्थ द्व्वओ ण आभिणिवोहियनाणी आएसेण सव्वाङ दव्वाइ जाणइ, न पासइ। खेत्तओ ण आभिणिवोहियनाणी आएसेण सन्व खेत्त

उम्पद् रहाऽवाओ व पारणा एव डॉन चतारि । आभिविशोधिकनागरम भर बरम् रामायेषं ॥ ८९ ॥ भैत्याच जम्महणस्मि जग्महो तह विशासमे हेहा । दरमा

यस्य बराओ पर्य पुत्र बारण विशि ॥ ८३ ॥ तमाह वर्ष समय हैहनाएँ सुदुत्तमदं 🖫 । कासमसेन्यं संग्लं का कारणा होत्र नासका ॥ ४४ ॥ पुद्र तके 🕬 म्ब पुण पानद अपुर्दे हु । गोर्च रसं च पास च बद्युद्धे विदागरे हैं 🗗 भासाग्रममंद्रीओ अर्द् में एका मीकिन ग्रयह । बीसकी प्रम सर्ह, तकेद निज्ञा परापाए ॥ ८६ ॥ ईहा अपोट बीर्मसा भरगणा च गवेम्पणा । सन्ना सर्व महै स्वा सर्व आसिविधोहित ॥ ८७ ॥ सेत आसिविशहियनाचपरान्यं सिर्च महनाने ॥ ३७॥ चे कि त मुक्ताव्यपरोक्ष्यं र श्वकाव्यपरोक्**तं नाह्यकिई कन्तरं तंत्रहा-नक्ष्य**ार्व १ जगम्पारकां २ सम्बन्धं ३ अमन्त्रिका ४ सम्बन्धं ५ मिण्डमुर ६ साम्प्रं ४ क्षमान्त्रं ८ नपज्रवसियं ९ क्षप्रज्ञानियं १ गयिर्वे ११ अगर्मिर्व ११ अगर मिञ्च १६, मर्जनरविद्धं १४ ॥ ३८ ॥ से कि सं करवासूर्व है करवास्तर्व निर्मितं राजारी र्वेसरा-सम्पन्तरं, गंजणस्पारं, सम्बन्धरं । सं कि र्व सम्बन्धरं है सम्बन्धरं जन्म रत्न संठामानिई, सेत नकाखरे । से कि तं वंबधक्करे हे वंबधक्का अनुसार वजगामिलावी संत्रं वजयवसर् । सं कि तै बद्धिमक्सरे हैं बद्धिमक्सर क्षेत्रका स्रोहेयस्य क्रियम्बर्धाः समुप्पाक्यः रीवहा-सार्वहियक्षित्रमध्यरे, वर्तिपरिवक् दिशनकरं, वाणिदेशस्त्रिशनपारं, रशविविवसदिशनपारं, पाधिवसदिशनकरं, नो दिक्तदिश्वरकर सेचं अदिश्वरादं । सेतं जनकरातं ॥ से 🕏 तं व्यवस्थरादं । अजनकरमुर्य अगेगविद् पञ्चलं तैबहा-असमिवं तीमसियं निष्ट्रवं सामिवं व कीर्ज च । निर्सिप्तिकमशुसारे, क्षणकरार हेकिमाईपे 🛭 ८८ 🛭 सेर्स क्रवनकराने n ३६ n स कि से सम्बद्ध । सम्बद्ध शिक्ष प्रमाण संबद्ध कार्य एसेर्प हेउनएसेर्न निद्विभाजीनएसेर्ग । से किस नामिजीयएसेर्न है कारिजीनएसेर्न अस्त ने अन्य देश अवोही अध्यक्ष प्रेन्स किया वीत्रंश है वे सन्तर्भेत्र अस्त ने अन्य देश अवोही अध्यक्ष प्रेन्स किया वीत्रंश है वे सन्तर्भेत्र अस्तर, अस्त में गरिव देश अवोही अस्त्राना गर्वना विता वीत्रंश से वे कराज्योति सन्मह, सेर्स नाकिओवएसेर्य । से कि स देवजाएसेर्व है हे इतारोव जन्म मं बारिज समिसमारनपुण्यिका करणसभी से व्यं सम्बद्धीत सम्मह, जस्म व वर्षि ी पार्टतरगाहा-मत्वाने उत्पाहन व उत्पाई तह प्रयानने हैं। इन्ताने

व सवार्थ भरमें प्रथ भारवं विति है 5 है

क्रिक जिक सत बाठ नच दश, एकादश चवदे वार! नच गुलुडाय असासता, शासा में अभिकार ॥ 🗷 नियह चादर घणा शीवमा, शरिका मार्श परणाम। मनियह वादर सब सारिसा य ग्रुमठावा साम ॥ ६ व भ्रम्या माच पर् ज्रब्म तता भाइ प्रतिति पुरुष पाप ! क्रमा वर्ष साचु आवक तथा करावी जिल आए॥ अ॥ विशेषा द्वाय आहे नहीं सिस्ला कीवा रेत। जीव सकित है प्रयोग सा भी जिल बाब्दी हैत ॥ छ । जोग बदारिक पहले चाठमें, दुजे बढ़े चात में विश्व आप। वाकी तीन कारमञ्जू कहा। समा स्नाठ परमास ॥ 💵 प्रत्येक को एकच साच में कोरवें समुदात। प्रत्येक संहस बहारीक शब्ध एक समारी वात atall सक्ष उंचा ने कोक भो चर्ग यांच में आ रा। चीजा प्रचर ने बिपे चाह्योऽरिए बिमास ॥११॥ मेठ रुचक प्रदेश में तिरक्षारो सक्त थाय। भौधी नरक निमें निमातको क्रीजन असंस्थाकाश क्रग जाय !११ पैक्षी नर्फ से लांचवे जोजन चार्मक्याकाय ( व्यवे यज्ञ तस्तो मका सूत्र भगवती भास ॥१३॥ इन्हीये दक्ष पोगली जीव ये रूच पीनाल चाय। शतक भाट उदेश दशमें आस्पो अगवती मांच ॥<sup>१५३</sup> यक पाद्यर केमली शको कीजे पर्जवा बातन्स । एक प्रकेषे क्रमन्त धारमा आक्या भी भगवन्त ॥१४॥ एक ध्रम्मो तिस मायलो कीजे क्रहांक्या भाग । यक भाग चनन्ता रायक्षण काही बाही वाम कांचार्ग <sup>हर्</sup>देश अभिसधारणपुव्विया करणसत्ती से ण असण्णीति लब्भइ, सेत हेस्रवएसेणं। से कि त दिद्विवाओवएसेण <sup>2</sup> दिद्विवाओवएसेण सिण्णस्यस्स खओवसमेण सण्णी रुन्भइ, असण्णिस्यस्स खओवसमेण असण्णी लन्भइ, सेत्त दिष्टिवाओवएसेण । सेत्त सण्णिसुय । सेतं अस्ण्णिसुय ॥ ४० ॥ से किं त सम्मसुय र सम्मसुयं जं इम अरहतेहिं भगवतेहिं उप्पण्णनाणदसणधरेहिं तेलुक्निरिक्खियमहियपूइएहिं तीयप-दुप्पणमणागयञाणएहिं सन्वण्णूहिं सन्वदिरसीहिं पणीय दुवालसग गणिपिडग, तंजहा-आयारो १ स्यगडो २ ठाण ३ समवाओ ४ विवाहपण्णती ५ नायाध-ममकहाओ ६ उवानगदसाओ ७ अतगडदसाओ ८ अणुत्तरीववाइयदमाओ ९ पण्हानागरणाइ १० विवागसुय ११ दिद्विवाओ १२, इचेयं दुवालसग गणिपिडग चोइसपुव्विस्स सम्मानुय, अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मानुय, तेण परं भिण्णेनु भयणा, सेत सम्मसुय ॥ ४१ ॥ से कि त मिच्छास्य १ मिच्छास्य जं इम अण्णाणिएहिं मिच्छादिष्ठिएहिं सच्छद्बुद्धिमङ्विगप्पियं, तजहा-भारह, रामायण, भीमासुरक्ख, कोडिल्य, सगडभिद्याओ, खोड( घोडग )मुह, कप्पासिय, नागसुहुम, कणगसत्तरी, वइसेसिय, बुद्धवयण, तेरासिय, काविलिय, लोगायय, सद्विततं, माढर, पुराण, नागरण, भागवय, पायजली, पुस्सदेवय, लेह, गणिय, सउणस्य, नाडयाइ, अहवा चावत्तरिकलाओ, चत्तारि य वेया संगोवगा, एयाइ मिच्छदिष्टिस्स मिच्छत्तपरिग्ग-हियाइ मिच्छास्रय, एयाइ चेव सम्मदिद्विस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइ सम्मसुय, अहवा-मिच्छादिद्विस्सिव एयाइ चेव सम्मस्रय, कम्हा <sup>2</sup> सम्मत्तहेउत्तणओ जम्हा ते मिच्छा-दिद्विया तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिद्वीओ चयति, सेत मिच्छासुय ॥ ४२ ॥ से कि त साइयं सपज्जवसिय, अणाइय अपज्जवसिय च १ इचेइय दुवालसग गणिपिडग वुच्छित्तिनयद्वयाए साइय सपज्जवसिय, अवुच्छित्ति-नयद्वयाए अणाइय अपज्जवसिय, त समासको चउन्विह पण्णत्त, तजहा-दन्वको खित्तओं कालओं भावओं, तत्थ दव्वओं ण सम्मसुर्य एग पुरिस पहुच साइय सपज्जवसिय, वहवे पुरिसे य पहुच अणाइय अपज्जवसिय, खेत्तओ ण पच भरहाइ पचेरवयाइ पहुच साइय सपज्जवसिय, पच महाविदेहाइ पहुच अणाइय अपज्जवसिय, कालओ ण उस्सप्पिणि ओसप्पिणि च पहुच साइय सपज्जवसियं, नोउस्सप्पिणि नोओसिप्पिणि च पहुच अणाइय अपज्जवसिय, भावओ ण जे जया जिणपन्नता भावा आघविजाति, पन्नविजाति, परुविजाति, दसिजाति, निदसिजाति, उवदसिजाति, ते तया भावे पहुच साइय सपज्जवसिय, खाओवसिमय पुण भाव पहुच अणाइय अपज्जवसिय, अहवा भवसिद्धियस्स द्वय साइय सपज्जवसिय च, अभवसिद्धियस्स ६८ सुत्ता०

1 11

विन्ति है

सर्वे अजाहर्य अपज्यस्थितं च सम्मागासपप्रसर्वे सम्बागासपप्रेहेंहें सर्वतानेतं पञ्चकरारं नियमञाह, सम्बजीबार्वपि य वां अक्सारस्य अवदासयो निम्नामधिके बद पुत्र सोऽनि भागरिका तर्च जीयो अजीवते गाविका -"सुदुवि नेहस्सर्दः होद पमा चवस्राणं ' छेतं साहम सपजनसियं सेत जलाहमं अपजनसिनं । ४३ ह से कि स गरिय हैं गरिय विद्विताओं से कि से अमसिन है असिन कारिन करें, सेत यमिये सेर्रा वरगमिने । सहवा त समासको तुविहं पत्वतं तंबहा-वंपपिकं कंगवाहिरं च । से कि ते संधवाहिरं ? कंगवाहिरं दुनिह पण्यात र्वस्था-अस्तर च आवस्सयबद्दरितं च । से कि ते मानस्मर्थ है आवस्सर्व समित्रई एकाई, रेडडी-सामाइव चतरीसत्यको वंदणस पविक्रमणं काउस्सम्मो पवक्षाचं सेर मान रसर्य । सं कि तं जावरसम्बद्धरित्तं हं जावरसम्बद्धरितं वृक्तिह पन्नतं र्समहा-नामि च उद्यातिनं च । ये कि तं अव्यातिनं ३ ए अपोगनिष्टं प्रण्यातं तंत्रद्या-वर्तनेनािनं करियमाक्रियं पुरुक्तप्रमुवं सङ्ख्यास्य, उक्ताहर्वं राजप्रवेशिनं जीवानियाः, प्रकारका सद्दापक्रमेनमा प्रसादाणसार्व मंदी अञ्चलीगदाराई, देविदालको र्रंड वेगासिमं चंदानिज्ञानं स्राप्थाती पोरिसिमण्डलं सण्डस्येनेस्रो निजान(प्रक्रिने क्छको गनिकित्वा शाधनिमत्ती मरनविमत्ती भावनिरोही धीनरागद्वनं छोड्ना द्यवं विद्वारकम्पो चरवनिष्ठी बाउरपचनकार्यं महापचनकार्वं एकार्यः वर्ष उकासिये । ऐ कि ये नाकित ? फाकिये स्वीतनिष्टं प्रन्यतः संबद्धा-सस्तरकार्यः ब्सामो क्यो वक्शरो मिलीइ महामिलीई इसिमाधियाई बम्ब्एक्सर्ट, योगसानस्पन्नती चंदरनाती खरिया-निमाणगनिमती सङ्क्रिया-निमाणगनिमती र्थराष्ट्रकिया वसम्बुकिया निवादःचुकिया काश्मीक्याए, वरमोधवाए, सम्बोक्सए, भरकोक्साए, वेसमजीक्साए, वेलंबरोक्साए, वेविदोलवाए, वहाक्सए, स्मृहाक्सी नागपरियावित्वाको निर्वावित्वाको विध्याको कप्पविधिवाको पुरिकाल पुप्पत्यक्रिमको वर्णावसाओं [आसीनिसमावयार्थ शिक्षितसमावयार्थ समित्रवर्णः मान महाम्रिनमावनाणं तेनस्यिनसम्मानं ] एक्साह्यहं वटरासैई खूक्कर स्सक्तं मध्यको मरदको कछात्सामिस्य माहिरणगरस्य चहा संक्रिकारं प्रकल्पर स्सार्वं मध्यसमार्थं जिलकरार्थं चोद्य-पद्मागसहस्सार्वं सम्बन्धां बदमाननामित महना बस्स जरिना श्रीसा उप्पतिमाए वेगस्माए कम्प्रयार कार्रवामिनार चनम्बहाए कुबोए अवस्था तस्स ततित्रतं प्रम्मासहस्यातं वरोसहबाते ततिता चेन क्षेत्र कालिय क्षेत्र मानस्थनकहरित होते क्षणीयमित्र ॥ ४४ ह ते क्ष तं भगपनिर्द्धाः कलपनिर्द्धं तुनालसमित्रं प्रकारं तंत्रता∸मानारी १ सूनपते १

ठाण ३, समवाओ ४, विवाहपन्नत्ती ५, नायाधम्मकहाओ ६, उनासगदसाओ ७, सतगडदसाओ ८, अणुत्तरोववाइयदसाओ ९, पण्हावागरणाइ १०, विवागसुय ११, दिहिवाओ १२॥ ४५॥ से किंत आयारे १ आयारे ण समणाण निम्मयाण आयारगोयरविणयवेणइयरिक्खाभासाअभासाचरणकरणजायामायावित्तीओ आघवि-जिति, से समासको पचिविहे पण्णते, तजहा-नाणायारे, दसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे, आयारे ण परिता वायणा, सखेजा अणुओगदारा, सखेजा वेढा, संबेजा सिलोगा, संबिजाओ निजुत्तीओ, संबिजाओ सगहणीओ, संबि-जाओ पिंडवत्तीओ, से णं अगद्वयाए पढमे अगे, दो सुयक्खधा, पणवीस अजझ-यणा, पचासीइ उद्देसणकाला, पचासीइ समुद्देसणकाला, अद्वारस पयसहस्साइ पयगोण, संखिजा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परिता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविजाति, पन्नविजाति, पह्विजाति, दसिजाति, निदसिजाति, उवदसिजाति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्ञह्, सेत्त आयारे १ ॥ ४६ ॥ से किं त स्यगडे १ स्यगडे ण लोए स्इजइ, अलोए स्इजइ, लोयालोए स्इजइ, जीवा सूइ-जति, अजीवा सूइजति, जीवाजीवा सूइजति, ससमए सूइजाइ, परसमए सूइजाइ, ससमयपरसमए सूङ्जइ, सूयगढे ण असीयस्स किरियावाइसयस्स, चउरासीईए अकिरियावाईण, सत्तद्वीए अण्णाणियवाईण, वत्तीसाए वेणइयवाईण, तिण्ह तेसद्वाणं पासंडियसयाण बृह किन्ना ससमए ठाविजंड, स्यगंडे ण परिता वायणा, संखेजा अणुओगदारा, संखेजा वेढा, संखेजा सिलोगा, संखिजाओ निज्नतीओ, संखि-जाओ सगहणीओ, सखिजाओ पिंडवत्तीओ, से ण अगद्वयाए विइए अगे, दो चयक्खधा, तेवीस अञ्झयणा, तित्तीस उद्देराणकाला, तित्तीस समुद्देराणकाला, छत्तीस पयसहस्साइं पयग्गेण, सिखजा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परिता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपण्णता भावा आच-विजाति, पत्रविज्ञाति, परुविज्ञाति, दिस्ज्ञाति, निदसिज्ञाति, उवदसिज्ञाति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्ञइ, सेत्त स्यगढे र ॥ ४७ ॥ से किं तं ठाणे १ ठाणे ण जीवा ठाविज्ञति, अजीवा ठाविज्ञति, जीवाजीवा ठाविज्जति, ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ, ससमयपरसमए ठाविजाड, लोए ठाविजाइ, अलोए ठाविजाइ, लोयालोए ठाविजाइ। ठाणे ण टका, कृडा, सेला, सिहरिणो, पञ्भारा, कुडाइ, गुहाओ, आगरा, दहा, नईओ, आघ-विज्ञति । ठाणे ण एगाइयाए एगुत्तरियाए वुद्धीए दसद्वाणगविविद्धियाण भावाणं

रमपरम्ममा भागमिनकः । सेतं ठाणे १ ॥ ४८ ॥ से कि तं समबार है सम्बार है जीवा समास्त्रजेति अजीवा समासिजेति जीवाजीवा समासिजेति सरमर् स्प सिन्दर, परसमए समाविज्ञाह, ससमजपरसमए समाविज्ञाह, क्रोए समाविज्ञाह अस्रेए समासिका, स्रोबान्सेए समासिका: । सम्बार व एमाहवार्व स्पुत्तीवर ठाजस्यविविद्यार्गं भाषाच परम्बा आवित्रकः, द्वाकसविदस्य व मन्दिरः यस्य पन्नव[र]ने समाधिका । समयावस्य थ परिता वानया संविक्ता क्युवोगाण चेचित्रा केरा चेकिका स्किमा चेरिकामे निकृतिको चेकिकामे स्मानिक चेकिकामे प्रक्रितामो । छे चै काम्ह्याए चत्रसे की एमं प्रस्करि है अज्ञासने एने उद्देशकाले एने समुद्रेशकाले एने बोनाके स्वसद्दरी पन चंदिज्या अन्यादा अर्जता यमा अर्जता प्रजना परिता तथा अर्जता वास्प सासम्बद्धनिकात्मा जिल्लाच्या सावा भावनिर्वते प्यानिर्वति कार्यानी व्याजीत निर्देशिनिति जवव्याजीत । से एवं भाषा एवं नामा एवं निर्माण पूर्व चरम्बर्वप्रसम्भा आधिसम्भः । वेर्ता वसवाए ४ ८ ४५ त वे कि वे निर्दे निवाहे में जीना नियाहिअदि अजीवा निवाहिअदि जीराजीवा निवाहिअदि स्थमप् नियादिकाः परसमप् नियादिकाः स्थानवपरसमप् निवादिकाः, लेरी विवाहित्यह, मामेप निवाहित्यह, सोनासीप मिवाहित्यह, विवाहस व वर्रण वानमा संविज्ञा क्लुब्रेयदारा संविज्ञा कैना संविज्ञा हिस्सेया संविज्ञा निजुत्तीलो एंदिजाओ एंनइनीओ एंदिजाओ एक्सिनी है व अन्दूर ए पंचम अंगे एगे स्वयनसंबे एगे साहरेगे अज्ञायकसए, इस उर्देस्समहरमाई वन समुद्रेशनसङ्ख्यादं क्रतीर्थं बागर्णमहस्यादं हो अवना महाबोदं स्वतास्य प्यमोनं स्विजा भारत्य जर्नता गमा अर्मता प्रज्ञा परिवा हमा अर्म वावरा साम्रयक्तिन्यनिवाद्या जिल्लाकामा आवा वापनित्रके स्वापनि प्रमित्रमि इंशिजनि निर्देशिजति उत्तरशिजीति से एवं बावा इर्न बन्द

विण्णाया, एव चरणकरणपस्वणा भाघविज्ञइ, सेत्त विवाहे ५ ॥ ५० ॥ से किं त नायाधम्मकहाओ <sup>2</sup> नायाधम्मकहासु ण नायाणं नगराइं, उज्जाणाइं, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इङ्ग्रिविसेसा, भोगपरिचाया, पव्यज्ञाओ, परियाया, स्रयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, सल्हेहणाओ, मत्तपचक्खाणाइं, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुकुलपचायाईसो, पुणवोहि-लामा, अतिकिरियाओं य आघविजाति, दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्य ण एगमेगाए धम्मकहाए पंच पच अक्खाइयासयाइ, एगमेगाए अक्खाइयाए पच पच उनक्खाइ-यासयाइ, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइ, एवामेव सपुन्वावरेण अद्भुद्धाओ कहाणगकोडीओ हवंतित्ति समक्खाय। नायायम्मकहाण परिता वायणा, सिखजा अणुओगदारा, सिखजा वेढा, सिखजा सिलोगा, सिंबजाओं निजुत्तीओ, सिंबजाओं सगहणीओ, सिंबजाओं पिंडवित्तीओं । से ण अगद्वयाए छट्ठे अगे, दो म्रयक्खघा, एगूणवीस अज्झयणा, एगूणवीस उद्देसण-काला, एगूणवीस समुद्देसणकाला, सखेजा पयसहस्सा पयग्गेणं, सखेजा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिवद्ध-निकाइया जिणपण्णता भावा आघविज्ञति, पश्चविज्ञति, पश्चविज्ञंति, दसिज्ञंति, निद-सिजाति, उवद्सिजाति । से एव माया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एव चरणकरण-पह्वणा आघविजाइ । सेत्त नायाधम्मकहाओ ६ ॥ ५१ ॥ से किं त उवासगद-साओ  $^{\it l}$  उवासगदसाद्ध णं समणोवासयाण नगराइ, उजाणाइ, समोसरणाइ, रायाणो, भम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इश्विविसेसा, भोगपरि-बाया, पव्यज्ञास्रो, परियागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, सीलव्वयगुणवेरमण-म्बन्खाणपोसहोववासपिंडवज्जणया, पिंडमाओ, उवसरगा, सठेहणाओ, भत्तपच-क्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, इकुलपचायाईओ, पुणवोहिलामा, अतिकिरियाओ य आघविजाति । उवासगदसाणं परिता वायणा, सखेजा अणुओ-गदारा, सखेजा वेढा, सखेजा सिलोगा, सखेजाओ निजत्तीओ, सखेजाओ सगहणीओ, सखेजाओ पडिवत्तीओ। से ण अगद्वयाए सत्तमे अगे, एगे सुय-क्लचे, दम अन्झराणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेजा पय-सहस्सा पयागेण, सखेजा अक्खरा, अणता गमा, अणता पजवा, परिता तसा, अणता थावरा,सासयकढनिवद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविजाति, पन्नविजाति, पह्विजाति, दसिजाति, निद्धिजाति, उवटंसिजाति । से एव आया, एवं नाया, एव विष्णाया, एव चरणकरणपह्वणा आघविज्ञइ। सेत उवासगदसाओ ७॥ ५२॥ से

कि वै अंतगहव्साओं है अंतगहव्साद्ध व अंतगहार्च नपराहं, उजावारं, स्मोनर लाई, रावाची अम्मापियरी घम्मायरिया धम्म**वद्दाओ इहसोर्वरहोर**ग सी निसेसा गोगपरिकामा पञ्चकाओ परिकामा समयरिमादा स्वीकापार्य, स्वे यामी मत्तपत्रकराजाई, पाञीवगमणाई, श्रंतकिरिवाओ शावनिजीन जनगण्ड धारा नं परिचा नामना धेवेजन अनुभोगवारा, संबेजन मेडा धेवेजन किनेप संदेजाओं निमुत्तीओं संबेजाओं संगद्धणीओं संबेजाओं पविवर्तीओं से बंबर हुमाए शहुम संति एने ग्रावनसंधि शहु बस्ता बहु स्रोशकाका बहु एन्होन कास्म एरोजा परस्वस्था प्रयमेण संबेजा अन्तरा अर्जता यमा अर्जा पत्रका परिचा तसा अर्णता वावरा सासवकानिकद्वनिकद्वमा जिल्लाका वाव मावनिजंदि पत्तनिजंदि पर्वजंदि देखिलंदि निदंखिलंदि सवदंखिलंदि से हो व्याया एवं नामा एवं मिन्यामा एवं चरणकरचपरम्या आवक्रिकार, वेर्त अठ<sup>कर</sup> ब्साओं « n ५३ n से कि वे बकुत्तरोववाह्यवसाओं । अलुत्तरोववहनस्वर्ध <del>ज्ञातरोववाइवार्गं नगरहं, उज्यानहं, समोगरणहं, समावे अन्मापिको अन्म</del> सरिना कम्मकदाओं बहुस्मेद्रचपरकोह्या इक्विक्तिसा शोसपरिकासा समजाने परिवागा प्रकारिसाहा राजीवहाजाई, पविभाजी तपसम्या संकेदपाकी महर्ग वक्याणाई, पाओकासमाई, जलुत्तरीववाहबत्ति सक्वती स्कूबपवाबाईने उ वोद्दिकामा अंतकिरियाको भाषिकांति अनुत्तरीयबाहक्यसञ्च नं परिता वात्रण, श्चीका बच्चमोगदारा संबोजा हैया संबोजा रिकोगा संबोजाको विश्वतीजे एंचेजाओ संगद्दणीओ संकेजाओ पत्रिक्तीओ से वं अंगद्रवाए क्यो करे एने ही क्यांचे दिश्वि क्रम्मा दिश्वि छहेसनकाका दिश्वि सहहेसनकाका संग्रेजाई स्वर्ण स्साई पनमोर्ज संबोधा अनवारा अर्णता यमा अर्णता पत्रमा परेता हता. करोता पानरा साधयकतनिवत्तनिकाश्या जिक्कण्यता माना जावनिज्ञीः पत्रक्रिकंदि पर्विकंदि वृधिकंदि निर्देष्टिकंदि उपर्विकंदि से एवं बार्व एवं नावा एवं विश्वासा एवं चरणकरणस्वका आयमिका, ऐते नवुपरि बाह्यदक्षाओं ५ 8 % 0 8 कि तें प्रश्वामास्त्राह्मं है प्रश्वामास्त्रेत व बहुती मिर्विक्तानं व्यक्तिरं व्यविक्तानं व्यक्तितं पविकापविकालं तंत्रा व्यवकारिकारं बाहुपरिवार, अवस्पपरिवार, अनेवि विविता विवाससमा वान्सवर्गनेह स्वी दिस्या संवाता भावनिजीते पन्यावासर्वार्थं परिता वातवा संकेता अनुसीयवारी, स्वेजा केत संवेजा रिक्रेगा रिकेशको निजुतीयो संदेवाने कंपरनीन संबेजाओ परिवर्तीओं से ने मंग्रुवाए वसये करें। एवं प्रत्यवन (नगरी)

अज्झयणा, पणयालीस उद्देसणकाला, पणयालीस समुद्देसणकाला, सखेजाइ पय-सहस्साइ पयम्मेणं, सखेजा अक्खरा, अणंता गमा, अणता पजना, परिता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपण्णता भावा आघविजाति, पन्न-विजाति, परूविजाति, दसिजाति, निदिसजाति, उनदिसजाति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्ञइ, सेत्त पण्हावागरणाइ १०॥ ५५ ॥ से किं त विवागसुय <sup>२</sup> विवागसुए ण सुकडदुक्कडाण कम्माणं फल-विवागे आघविजाइ, तत्य ण दस दुह्विवागा दस ग्रह्विवागा। से कि त दुह्विवागा? दुह्विनागेसु ण दुह्विनागाण नगराईं, उज्जाणाड, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मा-पियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इष्ट्विविसेसा, निरयगमणाइ, ससारभवपवचा, दुदृपरपराओ, दुकुलपचायाईओ, दुल्लहवोहियत्त आधविज्जइ, सेत्त दुह्विवागा। से किं तं मुह्विवागा र मुह्विवागेमु ण मुह्विवागाण नगराइ, उजाणाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायारेया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इह्विवेसेसा, भोगपरिचागा, पव्वजाओ, परियागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, सलेहणाओ, भत्तपचक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, ग्रहपरंपराओ, मुक्तजपन्नायाईसो, पुणवोहिलाभा, अतिकरियाओ आघविज्जति । विवागस्यस्स ण परित्ता वायणा, सखेजा अणुओगदारा, सखेजा वेढा, सखेजा सिलोगा, सखिजाओ निजुत्तीओ, सिखजाओ सगहणीओ, सिखजाओ पिडवत्तीओ । से ण अगद्वयाए इकारसमे अगे, दो सुयक्खघा, वीस अज्झयणा, वीस उद्देसणकाला, वीस समुद्दे-सणकाला, सिंबजाइ पयसहस्साइ पयग्गेण, संबेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पजाना, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपण्णता भावा आघिनजाति, पन्नविजाति, परूनिजाति, दिसजाति, निदिसजाति, उनदिसजाति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपह्वणा आघविज्ञइ, सेत विवागसुय ११॥ ५६॥ से िकंत दिद्विवाए १ दिद्विवाए ण सन्वभावपस्वणा आघविजाइ, से समासओ पचिवहें पण्णते, तजहा-परिकम्मे १, ग्रुलाइ २, पुव्चगए ३, अणुओरे ४, चूलिया ५। से किंत परिकम्मे १ पिकम्मे सत्तविहे पण्णते, तजहा-सिद्धसेणियापरिकम्मे १, मणुस्ससेणियापरिकम्मे २, पुरुसेणियापरिकम्मे २, स्रोगाढ-सेणियापरिकम्मे ४, उनसपजाणसेणियापरिकम्मे ५, विष्यजहणसेणियापरिकम्मे ६, चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ७। से किंत सिद्धसेणियापरिकम्मे १ सिद्धसेणियापरिकम्मे चउद्सिविहे पण्णत्ते, तजहा-मानगापयाइ १ एगद्वियपयाइ २ अद्वपयाइ ३ पाटो-आगासपयाइ ४ केउभूयं ५ रासिवद्ध ६ एगगुण ७ हुगुण ८ तिगुणं ९ केउभूय १०

सच्चगमे 1 4 पविस्महो १९ संसारपविस्महो १२ शहावर्ष १३ सिद्धावर्ष १४ सेर्ग सिक् सेमियापरिकरमे 🤧 । से कि हो मनुस्तरोगियापरिकरमे 🕽 मनुस्तरोमिनापरिकरमे चन्नस्थिद्दे प्रचारे शब्दा-सान्यापयातं १ एगद्वियपयातं १ शङ्कपमारं १ पासे-जागासपमा**र्द ४ के**डमून ५ रासिक्द् ६ एगगुर्व ७ दुगुर्व ४ दिगुन ९ केडमून १ पवित्रगहो १९ संसारपवित्रगहो १२ मैदानतं १३ मनुस्सानत १४ हेर्च मपुरवरेणियापरिकरमे २ । वे कि वं पुरुवेणियापरिकरमे । पुरुवेणियापरिकरमे इहारसमिद्दे क्यारे तंत्रहा-पावीभागासपगर्द १ केवमूर्व २ रास्त्रिय १ स्पष्टन ४ हुगुर्ण ५ हिगुर्ग ६ केटमूर्ग ७ पश्चिमाही ८ संसारपविम्मही ६ नंशवर्ग १ पुद्रावरं ११ सेर पुद्रसेकियापरिकामे १ । से कि वं लोगावसेकियापरै करने ! मोगावधेनिवापरिकाने इकारसमिहे पण्यते शक्का-पाडोजाससम्बद्धे १ केलभूमं २ रास्त्रिक्षं ३ एगगुण ४ तुगुणं ५ तिगुणं ६ केलमूर्व ७ पक्षिमाहो ६ संसारपवित्यक्षे ९ नंदावर्त १ कोगाबावर्त १९ सेर्त ओगाबसेविवापरिकार ४ । धे कि ये उनसंपन्त्रणसेनियापरिकामे । उनसंपन्त्रणसेविनापरिकामे स्ट रसमिद्दे पन्त्रते । तंबहा-पाडोबारपासपवर्षः १ केडमूर्यः १ रास्विकः १ एवपुर्व ४ हुगुर्ज ५ तिगुर्ज ६ केन्नमुर्व ७ पवित्रमहो ८ संसारपवित्रमहो ५ संदावर्ग १ उद्यक्तमान्तं १९ थेतं उद्यक्तमान्येषियापरिकामे 🗸 । से 🗱 वं ब्रियम्बर् चेजिनापरिकरमे ! लिप्पमङ्गचेजिनापरिकरमं इकारचनिष्ठे पञ्चते तंत्रहा-पत्री-भागासप्याई १ केउमूर्य १ रासिकड ३ एनगुर्न ४ इतुर्व ५ तिगुर्व ६ केउमूर्व ४ पबिज्यहों ८ संसारपबिज्यहों ९ नैदानते १ मिप्पबद्दमानते ११ सेर्च मिन ब्यू नरेजियापरिकामे ६। से कि से चुनाचुनरोवियापरिकामे ! चुनाचुनरेजिनापरिकामे इक्षारमिन्द्रे पचते संबद्ध-पानेजागासप्याम् १ केतम्य २ रासिन्सं ३ एन्स्य ४ हुगुणं ५ विगुणं ६ केउमूर्यं ७ पक्षिमाहो 💪 संसारपंत्रिमाहो ९ मंदावर्त १ जुना चुनवर्त ११ रेतं चुनाचुयरेनिनायरिकम्मे ७। छ वतस्त्रहर्म, छद देशनि मार्च, सेश परिकामी १ । से कि ते ग्रताह । ग्रताह वाशीस पवताई, तेजहा-तमुन्द । परिनमापरिषयं १ बहुमन्नियं १ विश्वयन्तियं ४ जर्नतरे ५ परंपरे ६ मासानं ४ संदर्भ « समिल्मं ९ माहणार्म १ सोवरिक्यावर्ष १९ मंदावर्त १२ बहुई १३ पुद्रापुद्रं १४ विसावर्ष १५ पूर्वसूर्व १६ सुवावर्ष १७ वरासावपर्व १८ सम मिस्डं १८ सम्बन्धोमह १ परवार्थ २१ हुप्पवित्माई १३ हबेर्नाई बावैर्ड मुताई शिवच्छेमनइवामि छत्तमवत्ताचीरवाबीए, इवेडमाई वाबीचे तताई मच्छिन रोप्रननद्वमानि मात्रीनियनुत्तपरिवायीय, इचेत्रमार्वं कावीसं सुतार्वं शिवनद्वापि

तेरासियसुत्तपरिवाहीए, इचेइयाइं वावीस स्रुत्ताइं चलक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरि-वाहीए, एवामेव सपुव्वावरेण अद्घासीई सुताई भवंतिति मक्खाय, सेत सुताइ २। से किं त पुट्यगए <sup>२</sup> पुट्यगए चउद्सविहे पण्णत्ते, तंजहा—उप्पायपुट्य १, अग्गा-णीय २, वीरिय ३, अत्थिनत्थिप्पबाय ४, नाणप्पवाय ५, सचप्पवाय ६, आयप्पवाय ७, कम्मप्पवाय ८, पञ्चक्खाणप्पत्राय (पञ्चक्खाण) ९, विज्जाणुप्पनायं १०, अवझ ११, पाणाक १२, किरियाविसाल १३, लोकविंदुसारं १४। उप्पायपुन्वस्स ण दस वत्यू, चत्तारि चूलियावत्यू पण्णता । अग्गाणीयपुव्वस्स ण चोद्दस बत्यू, दुवालस चूलियावत्थू पण्णता । वीरियपुन्वस्स णं अड वत्थू, अड चूलियावत्थ् पण्णता । अत्यिनत्थिप्पवायपुब्बस्स ण अद्वारस वत्थू, दस चूलियावत्थू पण्णत्ता । नाणप्प-वायपुन्वस्स ण बारस वत्थू पण्णत्ता । सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दोण्णि वत्थू पण्णत्ता । आयप्पवायपुरुवस्स णं सोलस बत्यू पण्णता । कम्मप्पवायपुरुवस्स ण तीस वत्थू पण्णता । पचक्खाणपुञ्चस्स णं वीस वत्थू पण्णता । विज्ञाणुप्पवायपुञ्चस्स णं पन्न-रस वत्थू पण्णत्ता । अवस्रपुञ्चस्स ण बारस वत्थू पण्णता । पाणाउपुञ्चस्स णं तेरस वत्थू पण्णत्ता । किरियाविसालपुब्बस्स ण तीस वत्थू पण्णत्ता । लोकविंदुसारपुब्बस्स ण पणुवीस वत्थू पण्णता, गाहा-दस १ चोइस २ अह ३ ८हा-,रसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य वत्यूणि । सोलस ७ तीसा ८ वीसा ९, पन्नरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ८९ ॥ बारस इक्रारसमे, बारसमे तेरसेव वत्थूणि । तीसा पुण तेरसमे, चोइसमे पण्णवीसाओ ॥ ९० ॥ चत्तारि १ दुवालस २ अद्व ३ चेव, दस ४ चेव चुह्र-वत्थूणि । आइल्लाण चउण्ह, सेसाण चूलिया नत्थि ॥ ९१ ॥ सेत्तं पुन्वगए ३ ॥ से कि त अणुओंगे 2 अणुओंगे दुविहे पण्णते, तजहा-मूलपढमाणुओंगे, गहि-याणुओगे य । से किं त मूलपढमाणुओगे १ मूलपढमाणुओगे ण अरहताण मग-वताण पुञ्चमवा, देवगमणाइ, भाउ, चवणाइ, जम्मणाणि, अभिसेया, रायवर-सिरीओ, पव्यजाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ, तित्थपवत्तणाणि य, सीसा, गणा, गणहरा, अजपवत्तिणीओ, सघरस चउव्विहस्स ज च परिमाण. जिणमणपज्जवओहिनाणी, सम्मत्तस्यनाणिणो य, वाई, अणुत्तरगई य, उत्तरवेड-व्विणो य मुणिणो, जित्तया सिद्धा, सिद्धिपहो जह देसिओ, जिचर च काल, पाओवगया जे जिंह जित्तयाइ भत्ताइ अणसणाए छेड्ता अतगढे, मुणिवठत्तमे, तिमिरओघविप्पमुके, मुक्खसुहमणुत्तर च पत्ते, एवमन्ने य एवमाइभावा मूलपढ-माणुओगे कहिया, सेत मूलपढमाणुओगे । से किं त गडियाणुओगे ? गडियाणुओगे कुलगरगडियाओ, तित्थयरगडियाओ, चक्क्वट्टिगडियाओ, दसारगडियाओ, वल-

यामो सामनिर्मित प्रचनिर्मित सेतं वंबिश्<u>यक्त</u>मोगे सेस सनुशीगे ४ । से हैं त जुलियाओ । जुलियाओ-आइकार्ज जटार्ज पुष्पार्ज जुलिया ऐसर्व प्रजाते अचुक्तियारं, छेत्तं चुक्तियाओ ५ । दिद्विवायस्स भ परिता वामना छक्तेजा स्ड आंगवारा एंकेजा वेडा एंकेजा रिस्सेया एंकेजाओ परिवर्तीमो रावेजाने निक्रुपीको संकेकाओ संबद्धणीओ । से वं अंगहबाए भारसमे करे एने इव क्टींचे चोह्छ पुम्लाई, सबेजा क्ष्मू, संबोधा चूबनत्त्व, संबोधा पहुडा इंटीजी पाहुडपाहुवा संकेमाओ पाहुविवाओ संकेमाओ पाहुवपाहुविवाले संकेमप्र पंत्रसङ्स्यदं प्रस्पोनं संक्षेत्रा अन्तरा अनेता गमा अन्ता पत्रया परेता तसा असेता भागरा सासयक्वानिकाविकाहना विजयन्त्रता भाग आवन्त्रिकी पत्तकनंदि परविकारि दंशिकारि निवसिकारि स्ववस्थिति । से एवं शावा एवं नामा एवं किण्यामा एवं पर्वाकर्यपर्वाचा आवित्वाह । ऐतं विक्रिक्र ९९ ॥ ५७ ॥ इनेहर्नेनि दुवाकर्तने समिपिडने वर्णता सावा अर्वता *वसार*ः भजेता हेक समया महेक अर्गता कारणा अनवा अकारना अर्नेटा बीग नर्नता सत्रीचा अर्गता समसिदिया अर्पता असमसिदिया अर्मता विस भगंता वरिद्धा पन्नता-मानममामा हेतमहेळ आरणमकाने चेद । वीदार्थना मनिय- समिवन किया शक्तिया य ॥ ९९ ॥ इच्चेड्च दुवास्तर्य यम्बिपेडचं केर काके मर्नेता जीवा भागाए निराहिता चावरंत संसारकंतार अञ्चयरिवरित । विसं पुनाक्यंगं गम्पियकां पश्चप्यक्यनाके परिचा जीवा बाजाए निराहिता वानसं पंचारकंतारे अनुपरिवर्शते । क्षेत्रव सुवाक्ष्यंगं धाविष्ठियं कावागर् काके बनाय नीवा सामापु विराहिता चाठरते समारकंतारं समुपरिवहित्तंति । इवेहर् दुशक्तरंगं गरिपपिडमं चीए काके वर्णता बीना मानाए माराब्द्या बाउरतं स्वार र्कतार बीहेनहंछ । वेजेवर्न बुवाकर्सर्ग शस्त्रिपेटर्ग पहुष्पन्नकाले परिया औष माचाए माराहिता चानरतं संबारनेतारं गर्दैवर्गति । श्वेहर्ग शुग्रामधेवं प्रकारिकर्ण भणामप् काके कर्मता जीवा भाजाए आराहिता जाउर्रत संसारकेतार सीवार रऐति । इचेद्रम बुगाछर्पमं गनिपित्रमं स कमाइ नासी न कनाई न सन्दर्ध क्याइ न मनिस्सक, भुनि च अवह य अमिस्सक्य धुने निवए, साराए, अवराए मस्त्रप्, स्वाह्निप्, सिन् । से बहानाम्प् पंचलिकाए न कवाद नाती न स्वाह

वैवर्गवियाओं बाह्यदेवयविवाओं गलभर्गविवाओं महबाहुर्गविवाओं तरोकन गंडियाओ इरिनंसगंडियाओ उरस्यियागीकीयाओं कोस्यियागीकीयाओं विशे तरगंबियाओ अमरनरशिरियनिरनगङ्गमणविविद्यपितङ्गेश्च एवमाइनाओं गॅबि

पक खएड तिसा मायलो, भाग संख्याता जासा। एक भाग तिरा मायलो, तेहनो खुरो प्रमारा ॥१७॥ बार ज्ञान चघदे पूर्व, अङ्ग उपङ्ग संव जाए। मिवे भागज एक में, धन भगवन्त रो ज्ञान ॥१८॥ मिद अलोक काल ज्ञान ते, जीव पुद्रल वणस्सई काय। निगोदिया जीव अनन्ता कह्या, ठागो आठमें माय ॥१६॥ भाकाश वायु दग पृथ्वी तस, स्थावर जीवा जीव होय। अजीवा जीव परद्विया, जीवा कम्म पइद्विया सीय ॥२०॥ प्रजीवा जीव संगहिया जीवा कम्म संगहिया तास । त्राठ वोल थित लोक विच, ठाणायांग इम भास ॥२१॥ <sup>हाणायां</sup>ग सूत्र मध्ये, ठाणे पांचवें मांय । पेले उद्देश्ये चालियां, ते सुणजो चित लाय ॥२२॥ पांच महावत साधुना, ऋगुवत पांचज होय। पांच वरण ते चालिया, इल ऋर्थे उद्यम करे छे लोय ॥२६॥ शब्द रूप रस गंध स्पर्श, ए राखे जतन कराय। मुर्छा गिरध तेने विषे, एक चित्त वर्रू थाय ॥२४॥ पंच थानके जीवड़ो, पामें मरगुज घात। मृग पतंग भ्रमर मन्त्रि, कुंजर केरी जात ॥२४॥ पाण विकलेन्द्री भृत वनस्पति, जीव पंचेंद्री जात। च्यार थावर सत्वज कहाा, भगवन्ते साद्वात ॥२६॥ पांच वोल जाएयों विना, अहेन अशुभ अपचखाय। श्रश्रेय श्रागल जाणिये, रुले चडगति माय ॥२७॥ शब्दादिक जाएयों थकां, सुलटा चारों वोल । करे परत संसार ने, पामें मुगति श्रमोल ॥२=॥

नित्य, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, सासए, अक्खए, अन्वए, अवद्विए, निचे

नासी, न क्याइ नित्य, न क्याइ न भिव

धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए. अ पण्णते, तजहा-दन्वओ, खित्तओ, कार

उवउत्ते सञ्वदव्वाई जाणङ पासइ। रि जाणइ पासइ । कालओ ण सुयनाणी उव सुयनाणी उवउत्ते सन्वे भावे जाणइ पा खल्ल सपज्जवसिय च । गमिय अगपविः

आगमसत्थरगहण, जं वृद्धिगुणेहिं अद्रहि सारया धीरा ॥ ९४ ॥ स्रस्तसङ १ यावि ५। तत्तो अपोहए ६ वा. धारे हुकार वा. वाढकार पडिपुच्छ वीमसा



## णमोऽत्थु णं समणस्स भगवयो णायपुत्तमहावीरस्स

## सुत्तागमे तत्थ णं

## अणुओगदारसुत्तं

नाण पचिवह पण्णत्त । तजहा—आभिणिवोहियनाण १ मुयनाण २ ओहिनाण ३ मणपज्जवनाण ४ केवलनाणं ५ ॥ १ ॥ तत्थ चत्तारि नाणाइ ठप्पाड ठवणिजाइ, णो उद्दिसिजाति, णो समुद्दिसिजाति, णो अणुण्णविजाति । द्ययनाणस्स उद्देसो, समुद्देसो, अणुज्जा, अणुओगो य पवत्तइ ॥ २ ॥ जइ सुयनाणस्स उद्देसो, नमुद्देसो, अणुण्णा, अणुओगो य पवत्तइ, किं अगपविद्वस्स उद्देसो, समुद्देसो, अणुण्णा, अणुओगो य पवत्तइ १ किं अगवाहिरस्स उद्देसो, समुद्देसो, अणुण्णा, अणुओगो य पवत्तइ <sup>२</sup> अगपविद्वस्स वि उद्देसो जाव पवत्तइ, अँगगपविद्वस्स वि उद्देसो जाव पवत्तइ । इस पुण पट्टवण पहुंच अणगपनिट्टस्सें अणुओगो ॥ ३ ॥ जइ अंगंगप-विद्वस्स अणुओगो, कि कालियस्स अणुओगो <sup>२</sup> उक्कालियस्स अणुओगो <sup>२</sup> कालियस्स वि अणुओगो, उक्कालियस्स वि अणुओगो । इम पुण पट्टवण पडुच उक्कालियस्स अणुओगो ॥ ४॥ जद्द उकालियस्स अणुओगो, किं आवस्सगस्स अणुओगो 2 आवरसगवइरित्तस्स अणुओगो <sup>१</sup> आवस्सगस्स वि अणुओगो, आवस्सगवइरित्तस्स वि अणुओगो । इम पुण पट्टवण पदुःच आवस्सगस्स अणुओगो ॥ ५ ॥ जइ आवस्सगस्स अणुओगो, किँण अग <sup>2</sup> अगाइ <sup>2</sup> सुयखघो <sup>2</sup> सुयखघा <sup>2</sup> अज्झयण <sup>2</sup> अज्झयणाइ <sup>2</sup> उद्देसो <sup>2</sup> उद्देसा <sup>2</sup> आवस्सँयं ण नो अग, नो अगाइ, सुयखधो, नो च्चयखघा, नो अज्झयण, अज्झयणाइ, नो उद्देसो, नो उद्देसा ॥ ६ ॥ तम्हा आवस्तय निक्खिवस्सामि, ग्रय निक्खिवस्सामि, खधं निक्खिवस्सामि, अज्झयण निक्खिनिस्सामि । गाहा - जत्य य ज जाणेजा, निक्खेव निक्खिने निरवसेस । जत्थ वि य न जाणेजा, चउका निक्खिने तत्थ ॥ १॥ ७॥ से कि त आवस्सय <sup>२</sup> आवस्सय चउव्विह पण्णत्त । तजहा—नामावस्सय १ ठवणावस्सय २ दन्वावस्सय ३ मावावस्सय ४ ॥ ८ ॥ से किं त नामावस्सय १ नामावस्सय---

पार्ढतरं-१ उद्दिसति । २ समुद्दिसति । ३ अगवाहिरस्स वि । ४ अगवाहि-रस्स । ५ अगवाहिरस्स । ६ आवस्सय किं । ७ आवस्सयस्स ।

टनमावस्सर्य है उनमावस्सर—में नं बहुकरने वा पोत्यकरने वा विश्वकरने वा केप्पक्रमी वा शीविमे वा शिवमे वा पृथिने वा संबद्धने वा अवजे वा वरसङ् **वा एगो वा अवेगो वा सक्यावठवला वा असक्यावठवणा वा 'आवस्तए'** वि ठनमा उनिजाह । ऐसा ठमभानरसर्थ ॥ १ ॥ भारतहम्यार्थ को पद्मिसेसो है गर्म आनकतिय उनना इत्तरिया या होत्या जातकतिया या ॥ १९ ॥ से कि र्व दम्बाबस्स्यं f दश्यावस्स्यं दुविद्धं पण्णतः । तबहा—आस्मामो 🗷 १ गोबाबसमे य २ प्र १२ प्र से कि तं जायमको स्व्यावस्थ्य है जायमको स्व्यावस<del>्थ्य व</del> आवस्सए' कि एवं विकिश्वार्थ दिन्वं जियं मियं परिजिनं नामसर्ग बेहरणं महीयक्कर, अनवक्षारे अन्यप्रदश्यारे अक्षात्रमं अग्रिको अवस्थिते परिपुर्ण परिपुर्वकारे केंद्रेड्विप्यमुक्तं गुरुवावधीवसर्थं से वं सस्य वादवार. पुरुष्कार, परिवद्दणाए, बन्भवद्वाए, जो अगुष्येद्वाए । कन्दा है 'अगुरुष्येची बन्बमिदि कडु । मेगमस्य च एगो अनुवरुत्ते आयमञ्जे एमं दश्नावस्य दोजिम ज्युन्दत्ता भागमनो वोण्यि वस्तावस्त्याई, विस्थि अञ्चरत्ता सामाने विक्ति दब्बावरसमाहे, एवं बावरूमा अनुकटण आगमको ताक्रमाहे दब्बावरसमाहे। एकमेन वनहारस्य वि । संगहस्य ये एगो वा अनेगो वा अञ्चन्त्रची वा अञ्चन्त्रण मा भागनभो बम्बाक्स्समं वन्त्रावस्त्रमाणि वा से एगे बन्त्रावस्तर । सञ्जूतन्त्र एमो मञ्ज्यतत्ती भागमञ्जो एय बच्चावरसर्व पुरुत्ते नेष्यस् । तिर्वः स्त्रवगर्व जानए अनुसर्व अक्षु । बस्तु ! बह जानए, स्तुवरत् न स्वर्, वह स्कुरण चाणए न मन्द्र, तम्हा नरिय भागमनो दश्यावस्त्रमं । सेतं भागमन्त्रे राजावस्त्र य १२-१४ ॥ से कि से जोजानमध्ये वृष्णाशस्त्रवं व जोजागमध्ये पृत्यापरसर्व विविद् पञ्चर्तः । श्रेष्ठहाः---वाणवस्तरिरवृष्णानस्तवः १ शविद्यगरीरवृष्णानस्तवः १ वाजवगरीः रमनिमसरीरमद्रितं वन्नानस्थर्यं १ ॥ १५ ॥ से कि से आव्यसप्रीरच्यादानर्यं काणवसरीरदक्काक्स्सर्व- बावस्सए' जि पयरवाहिगारकात्र्यस्स व सरीर्व मनपमभुमवानिमवतवेई जीवनिष्यवर्थ विज्ञायर्थे वा सेवारगर्थं वा निरीक्षेत्रा<sup>वर्थ</sup> वा शिक्कितसमर्व वा पाशिता नं कोई मधे(वप्)जा-मही ! वं इमेर्च तरित-मुस्सएमं जिमारिट्रेणं मावेणं भागरमण् ति पर्य आवस्यि क्यानित वर्माने बचियं निर्देशियं उनर्देशियं। बहा को रिद्वानी है अब महुचुं से आही अब पराई से भारी । ये तं जाजयसरीरवृष्णाक्तम्य ॥ १६ ॥ से कि तं अविनसरीरवृष्णावस्मार्थः

र्मात्रयमगरद्वात्रस्यय-जे जीवे जोणिजम्मणनिक्यते, इमेणं चेव आत्तएणं सरीर-समुन्यग्ण जिणोविद्धिणं भावेण 'आवस्यए' ति पय सेयकाले मिक्किस्यङ न ताव सिम्पर । जहा को दिहुंनी <sup>2</sup> अय महुकुंमे भविस्मड, अय घयकुंमे भविस्सर । सेनं मित्रयर्गार्टच्यावस्पय ॥ १७ ॥ से कि तं जाणयमरीरभवियमरीरवडरित्त द्व्वाव-म्मय <sup>२</sup> जाणयगरीर्माययगरीरवडरित्त दच्चावम्सय तिबिह पण्णत्त । तजहा---लोडय १ रूपावयणिय २ छोडत्तारिय ३ ॥ १८ ॥ से कि त लोडयं दन्त्रावस्सय <sup>2</sup> लोडय द्वावम्मय-जे हमे राह्मरतलवरमाउंवियकोह्वियङ्क्ससेहिमेणावङ्मत्यवाहपिम-इओ ऋढ पाउपमायाण् र्यणीण् मुविमलाण् फुळुप्पलक्रमलकोमछम्मिलियम्मि अहा-पट्टंग प्रमाण् रत्तास्रोगपगासकिसुयसुयसुद्दर्शनद्वरागमरिसे कमलागरनलिणिसङ्बोहण् टिट्रयम्मि मर्दे महम्मरिमम्मि दिणयरे तेयसा जळते मुह्घोयणदतपक्खालण-तेङकणिहस्रिद्धस्ययहरियाखियअद्दागधृचपुष्फमस्रगधतवोलवस्थाङयाङ दन्बावस्सयाङ करैंति, तओ पच्छा रायकुरुं वा देवकुरुं वा आरामं वा उजाण वा मभ वा पव वा गन्छंति । सेत्त छोद्वय दन्वावस्मयं ॥ १९ ॥ से कि त कुप्पावयणिय दन्वाव-स्मय १ कृप्पावयणिय दव्वावस्मयं-जे इमे चर्गचीरिगचम्मखडियभिक्खोंडपडुरंग-गोयमगोव्यदयगिहिघम्मधम्मचितगअविषद्वविरुद्धवुहुमावगैपभिद्धओ पासङ्खा करू पाटणमायाए रयणीए जाव तेयमा जलते, इटस्म वा, खदस्म वा, रदस्म वा, **खित्रम्य वा, वैयमणस्य वा, देवस्य वा, नागस्य वा, जक्खर्य वा, भूयरस वा,** मुगुदरम वा, अँजाए वा, दुग्गाए वा, कोट्टकिरियाए वा, उवटेवणसमजणआवरि-गण अत्रपुष्पगधमष्टाइयाइ दव्वावस्सयाइ करेंति । मेत्त कुष्पावयणिय दव्वावस्सयं ॥ २० ॥ ये किं त छोगुत्तरिय द्ववावस्मय <sup>१</sup> छोगुत्तरियं द्ववावस्मय-जे इमे समण-गुणमुक्ष जोगी, छयायनिर्णुकपा, ह्या इव उद्दामा, गया इव निरकुसा, घट्टा, मट्टा, नुप्योद्घा, पदुरपदपाउरणा, जिणाणमणाणाए मन्छद विहरिक्रण उभओ-काल आव-ग्ययम्य उपहृति । संत्त छोगुत्तरिय दव्वावस्यय । सेतं जाणयसरीर्भवियसरीर्वइरित्त द्रव्याप्रम्मय । सेन नोआगमओ द्रव्यावस्मय । सेत्त द्रव्यावस्सय ॥ २१ ॥ से कि त भागावरमय <sup>२</sup> भावावस्मय दुविह पण्णत्त । तजहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ ॥ २२ ॥ से कि त आगमओ भावावस्मय र आगमओ भावावस्मय जाणए उयर्जे । मेत्त आगमओ भावावस्सय ॥ २३ ॥ से किं त नोआगमओ भावावस्सय १ नोआगमओ भावावम्मय तिविद्यं पण्णत्त । तजहा—छोइय १ सुप्पावयणिय २ लोगु-

१ भरहरमण जेण ऋषया मावया पच्छा वमणा जाया तेण वभणा बुहुसाव-गति त्रचति । २ देवीणामसिम ।

सुचापमे

1 44

अनरम्बे रामायणं । सेतं कोइनं मानानस्सनं 🏿 २५ 🗈 से 🏗 तं कुप्पानयमिन माना-वस्स्यं ! कृष्णवननिर्वं माबावस्स्य-जे इसे वरगयीरिय बाब पासंकरवा इजेनिक होभक्योरदुरक्रनसुकारमाद्याई भावावस्स्याई करेंदि । सेर्च उप्याववित्रं मावावस्सर u २६॥ से 🎋 तं सोगुचरिनं मानावस्सनं 🕴 सोगुचरिनं आनावस्सन-जे (बण)मं हमे-समने वा समजी वा सावको वा साविया वा तकिते तम्मने कोसे ठर्जाविय, तत्तिस्नज्ञत्वसाथे तत्त्वद्वेवन्ते वद्यायबद्ये तस्मावनामानिए, बाज्याव कर्त्याः मर्ज जकरेमाने समजो-कार्व आवस्त्यमं करे[न्ति]इ । सेतं क्रोगुत्तरियं मावावस्तव । सेतं मोजागमको भावाबस्तय । सेत भावाबस्तर्य ॥ २७ ॥ तस्त यं इमे एमद्विना नागामीसा पायानंत्रण। यामधेजा मनति तंत्रहा-शाहा-मानस्यैन अनस्परः मिजं पुरानिसीहो विरोही य । अञ्जयबद्धकरेंगो नीओ बाराहर्णे। संगो ॥ १ ह समजेमं सामएव य अवस्त कायकार्य इक्ट अव्हा । अदो महोनिसस्त व तम्हा आवस्त्रमं' नाम । ९ ॥ सोर्च बावस्त्रमं ॥ ९८ ॥ से कि तं हमं ! हमं चर निर्द पन्यतं। तंत्रहा-नामस्य ९ ठवणास्य २ ४ व्यक्तं ३ शायस्य ४ ४ १९ ॥ से 👫 तं मामद्भर्य ! नामद्भयं-बरस ये जीवस्य वा बाव सुए' तिशामं क्याइ। सेत्तं नामद्भवं श से कि वैठनपाछने है उनजाछने—वी न कड़कामे वा बाव उनका उनिमा सेत उनवासुर्य ॥ १९ ॥ भागठनवानं को प्रदृष्टिसो है भागं भागकदिनं उनवा इत्तरिया वा होज्या आवस्त्रिया वा ॥ ३२ ॥ से कि से व्यवस्त्रयं है वस्तर्यं है विस्

पन्यतं। तबहा आसमको व १ भो आगमको य १ ॥ १३॥ से कि तं जासमधी व्रम्मसुर्ग । भागमको व्रम्मसुर्ग-बस्स ग्रं सुए' 🗎 प्रमः सिमिप्पर्ग दिनो जिमे जान को क्युप्पेहाए । कम्बा ! क्युवभायो' दम्बमिति कह । सेपमस्य वं एगो अनुकारो भागमंत्री एमं दण्यस्यं नाव तिर्व्यं सङ्ख्यार्थं वाषाप् अख्यत्रते अवख् । दम्बा बह मानप्, मनुस्तरो न सबह, बह बनुस्तरो बावप् न मबह, तम्हा परिष भागमध्ये इष्मद्वयं। सेतं भायसभो इष्मद्वयं ॥ ३४॥ से कितं नोजायसओ दम्बस्य र नोमायममो दम्बसुर्व तिविह्नं पन्नतं । तंत्रहा-जावरसरीरदन्नपुर्व १ मनिक्सरीरक्रमसूर्य २ जानगरसीरमनिगसरीरकारिश दन्तसूर्य ३ ॥ १५ ॥ से कि र्तं जागमधरीरदम्बधुर्वं । जाणमधरीरदम्बधुय- छव' ति पनस्वाविगारजाणनस्य वं सरीरमं वनमयनुवन्तानियनत्त्रवेहं जान पाक्षिता वं कोई भगेजा-नहो । वं इमेगं सरीरसमुस्सएवं जिलविद्वेणं सावैणं सुम् सि एवं शावनित्रं जान अर्व १ विपदनचनमानुरागरत्तमणे ।

घयकुंभे आसी । सेत जाणयसरीरद्व्वसुयं ॥ ३६ ॥ से किंत भिवयसरीरद्व्वसुय 2 भवियसरीरद्व्यसय-जे जीवे जोणिजम्मणनिक्खते जाव जिणोविदेहुण भावेण 'सुय' ति पय सेयकाले सिक्खिस्सइ जाव अय घयकुभे भनिस्सइ। सेत्तं भनियसरीरदव्वसुयं ॥ ३७ ॥ से किं त जाणयसरीरभवियसरीरवइरित्त दन्वसुय 2 जाणयसरीरभविय-सरीरवडारेत्त दन्वसुय पत्तयपोत्थयलिहियं । अहवा जाणयसरीरमवियसरीरवडरित्त दव्बसुय पचिवह पण्णत्तं। तजहा-अडय १ वोंडय २ कीडयं ३ वालय ४ वागय ५। से किं त अडय ? अडयं हंसगब्भाड । से किं त वोडय ? वोंडयं कप्पासमाइ । से किं त कीडय <sup>२</sup> कीडय पर्चावेह पण्णत्तं। तजहा-पट्टे १ मलए २ अग्रुए ३ चीणंग्रुए ४ किमि-रागे ५। से किं त बालय १ बालय पचिवहं पण्णतं। तजहा-उण्णिए १ उद्दिए २ मिय-लोमिए ३ कोतवे ४ किट्टिसे ५ । से किं त वागय १ वागयं सैणमाइ । सेत्त जाणयस-रीरभवियसरीरवइरित्त दव्वसुय । सेत्त नोआगमओ दव्वसुय । सेत्तं दव्वसुय ॥ ३८ ॥ से किं त भावसुर्य ? भावसुर्य दुविह पण्णत्त । तजहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ ॥ ३९ ॥ से किं त आगमओ भावसुयं ३ आगमओ भावसुय जाणए उवडते । सेत भागमओ मावसुय ॥ ४० ॥ से किं त नोआगमओ भावसुय <sup>2</sup> नोआगमओ भावम्रयं दुविह पणात्तं। तजहा-लोइय १ लोगुत्तरिय च २ ॥ ४१ ॥ से किं त लोइयं नोआगमओ मावसुय १ लोइय नोआगमओ भावसुय-ज इम अण्णाणिएहिं मिच्छ-दिट्टीहिं सच्छद्वुद्धिमइविगप्पिय तजहा-भारह, रामायण, भीमाचुरुक्क, कोडिल्लयं, घोडयसुईं, सगडभद्दियाङ, कप्पासियं, णागस्रहुम, कणगसत्तरी, वेसिय, वझ्सेसियं, इदसासण, काविल, लोगायत, सिट्टयंत, माहरपुराणवागरणनाङगाइ, अहवा वाव-त्तरिकलाओ, चत्तरि वेया संगोर्वगा । सेत लोइय नोआगमओ मावसुय ॥ ४२ ॥ चे किं त लोडत्तरिय नोआगमओ भावसुयं <sup>2</sup> लोडत्तरियं नोआगमओ भावसुय-ज इम अरिहतेहिं भगवंतेहिं, उप्पण्णणाणदसण बरेहिं, तीयपचुप्पण्णमणागयजाणएहिं, सन्वण्णृहिं सन्वदारेसीहिं, तिलुक्कवहियैमहियपुरुपहिं, अप्पिडहयवरनाणदंसणधरेहिं. पणीय दुवालसग गणिपिडग । तजहा—आयारो १ स्यगडो २ ठाण ३ समवाओ ४ विवाहपण्णत्ती ५ णायाधम्म्कहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अतगडदसाओ ८ अणुत्त-रोवनाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइ १० विवागसुय ११ दिद्विवाओ य १२। सेत्त लोडत्तरिय नोआगमओ भावष्ठ्य । सेत्त नोआगमओ भावष्ठ्य । सेत्त भावसुर्य ॥ ४३ ॥ तस्त ण इमे एगद्विया णाणाघोसा णाणावजणा नामधेजा मर्वति, तजहा-गाहा-सुयसुत्तगथसिद्धतसासणे, आणवयण उवएसे । पन्नवण आगमे वि य, एगट्टा

१ अलसिमाइ । २ 'निरिक्सिय'।

६९ मुत्ता०

अनेगविद्वे पञ्चते । तंत्रहा-दुपएसिए, तिपएसिए जान वसक्यसिए, संज्ञिजप्रसिए अपंदितज्ञपत्तिए, वर्णतपप्रिए । चेत्र कविते दक्कवि ॥ ४५ ॥ चे कि वं मील्ए दम्बर्धि है भीसए दम्बन्ने अनेगविहे पञ्चते। श्रेडहा-सेवाए अगिगमे र्खा सेवार मिन्सिने लेके सेवाए परिस्ते क्वें। सेलं मीसए ब्व्यक्वें ॥ ५ ॥ अहवा व्यव असरीरभनिक्सरीरनइरिते व्यवस्थि विनिद्दे पञ्चते। तंत्रहा-करिक्पंधे १ सक्ति द्यि १ अनेगवनियद्यि ३ ॥ ५९ ॥ से १६ श्रं वरित्रकृषि १ वरित्रद्यि ने के हमकाँचे गमर्राचे बाब उसमकाँचे। सत्तं करिकार्याचे स ५२ ॥ से कि तं अकरिकार्या अवस्थिनदंवे-रे चेव दुपएसियाद वाँधे बाब अर्थतपरसिए वाँधे । संतं *वरसि*ववाँ 1 रे ॥ से कि तं भणियविषयि । अधेगव्यव्यक्ति - तस्स चेस वेसे अवनिष् तस्त चेव वेसे ववनिष् । सेतं अपेमवनिम्बद्धि । सेतं बाधवसरीरमविम्सरीरवहरेते वन्न केंचे । सेतं नोजागमको वन्त्रकंचे १ सेतं बक्तरांचे B ५४ B से के सम्बक्ते भावसंत्रे दुनिहे प्रवरो । वंबद्धा-सारासको य १ नोसायमको न २ ॥ ५५ ॥ है कि से भागसभी भाववंत्रि है भागसभी भाववंत्रि आजप सकत्ते । सेसे शामसभी मानवनि ॥ ५६ ॥ से कि तं नोमागमको आक्टीन है नोबागमको मानविक पूप्ति भेव सामाद्यमाद्याणं स्मद् अञ्चलकाणं समृद्यसमिहसमायेणं आवस्सव प्रवर्धि 'भावर्धवे' ति कमाइ । सेर्त शोकागसको आवक्षेत्रे । सेर्त आवक्षेत्रे ० ५० ह हस्स में इसे प्राष्ट्रिया भाषायोसा मानावंत्रया नामवेजा सर्वति हंज्या-गाहा-तन नाए व निकाप, संवे कमो सबेद रासी व । संवे पिंडे तिमरे संसप् जानक समुद्दे ॥ ९ ॥ सीर्च मांध्रे ॥ ५८ ॥ आवस्सगरस में इमे करवाहिनारा अर्थत र्दम्या-बाह्य-सावमधोयनिर्दं, प्रकारच ग्रामको व पविवर्ता । बक्रियस्य

र्वेदणाँ, वणतिगिच्छ गुणधारणा चेव ॥ १ ॥ ५९ ॥ **गाहा**-आवस्सयस्स एसो, पिंडत्थो विष्णिओ समासेणं । एत्तो एकेक पुण, अज्झयण कित्तडस्सामि ॥ १ ॥ तजहा-सामाइयं १ चउवीसत्थओ २ वदणयं ३ पडिकमण ४ काउस्सग्गो ५ पचक्लाण ६ । तत्थ पढमं अज्झयण सामाइयं । तस्स णं इमे चत्तारि बणुओगदारा भवति, तंजहा-उवक्रमे १ निक्खेवे २ अणुगमे ३ नए ४ ॥ ६० ॥ से कि तं उनक्से <sup>2</sup> उनक्से छिन्तिहे पण्णते । तंजहा-णामोनकसे १ ठनणोनकसे २ दक्वीवक्कमे ३ खेत्तीवक्कमे ४ कालीवक्कमे ५ भावीवक्कमे ६ । णामठवणाओ गयाओ । से कि त दन्वीवक्से १ दन्वीवक्से दुविहे पण्णते । तजहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ जाव सेत्त भवियसरीरद्ववीवक्कमे । से कि त जाणगसरीर-भिवयसरीरवड्रिते द्ववोवक्कमे १ जाणगसरीरभवियसरीरवड्रिते द्ववोवक्कमे तिविहे पण्णते। तंजहा-सचिते १ अचिते २ मीसए ३॥ ६१॥ से किंत सचिते दन्वो-विक्रमे १ सिचत्ते दव्योवक्षमे तिविहे पण्णत्ते । तजहा-दुप(ए)याण १ चडप्पयाण २ अपयाण ३ । एकेके पुण दुविहे पण्णते । तंजहा-परिकामे य १ वत्युविणासे य २ <sup>∥ ६२</sup> ॥ से किं तं दुपयाण उवक्से <sup>2</sup> दुपयाण-नडाण, नहाणं, जल्लाण, मलाणं, सुहियाण, वेलवगाण, कहगाण, पवगाण, लासगाण, भाइक्खगाणं, लंखाण, मखाणं, र्णड्छाणं, तुववीणियाण, का(विडि)वोयाण, मागहाण । सेत्त दुपयाण उवक्कमे । ॥ ६३ ॥ से किं त चडप्पयाणं उवक्कमे १ चडप्पयाण–आसाणं, हत्थीण, डचाइ । रेत चडप्पयाण उवक्कमे ॥ ६४ ॥ से किं त अपयाण उवक्कमे <sup>२</sup> अपयाण-अवाण, अवाडगाण, इचाइ । सेत्त अपओवक्षमे । सेत्त सचित्तदव्वीवक्षमे ॥ ६५ ॥ से किं तं अचित्तद्व्वोवक्कमे १ अचित्तद्व्वोवक्कमे- खडाईण, गुडाईणं, मच्छंडीण । सेत्त अचित्तद्व्योवक्समे ॥ ६६ ॥ से कि तं मीसए द्व्योवक्समे मीसए द्व्योवक्समे-से चेत्र थासगआयसगाइमिंडए आसाइ। सेत्त मीसए दन्नोनक्समे । सेत्त जाणय-सरीरभवियसरीरवइरित्ते दव्वोवक्षमे । सेत नोआगमओ दव्वोवक्षमे । सेत्त दव्वो-विक्रमे ॥ ६७ ॥ से िकंत खेत्तोवक्कमे <sup>2</sup> खेत्तोवक्कमे—जण हलकुलियाई हिंखेताइ उनक्रमिजाति । सेत्त खेत्तोनक्रमे ॥ ६८ ॥ से किंत कालोनक्रमे <sup>२</sup> कालोनक्रमे-ज ण नालियाईहिं कालस्सोवक्रमण कीरइ। सेत्त कालोवक्रमे ॥ ६९ ॥ से किंत भानोवक्कमे २ भावोवक्कमे दुविद्दे पण्णते । तजहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ । तत्य आगमओ जाणए उवउत्ते । से किं तं नोआगमओ भावोवक्कमे ? नोआगमओ भावोवक्कमे दुविहे पण्णते । तजहा-पसत्ये य १ अपसत्ये य २ । से किं त अपसत्ये नोआगमओ भावोवक्रमे १ अपसत्ये नोआगमओ भावोवक्रमे डोडिणिगणियाअमचा-

हैं<sup>स्र</sup> । से कि त पसरमें नोआयमको भागोक्द्रभे हैं परस्थे । गुरुमाहैंच । सर्द नोअप्रममें मानोक्टमे । शेर्त मानोक्टमे । सेर्त उक्टमे ॥ ७ ॥ अहना उक्टमे सम्बद्धे क्लोड

र्तेबहा-जालुपुरुषी १ लागं २ पसानं ३ बतान्वया ४ अल्बाहियारै ५ समोगरे ५

1 19

॥ ७९ ॥ से कि ते बालुपुर्व्यो है वालुपुर्व्यो वसविद्वा पञ्चला । श्रीबद्धा-नामानुपूर्व १

उनमानुपुर्वा २ दम्पानुपुर्वा ३ बेतानुपुर्वा ४ ऋकलुपुर्वा ५ उदित्तवङ्गुर्वी ६

गणभाष्युक्ती । पेठाणाणुक्ती ८ सामागारीभाष्युक्ती ९ मानलुक्ती १

॥ ५२ ॥ नामरुपणाओ समाजो । से 🕸 तं दम्बासुपुम्बी 🖁 वमासुपुम्बी 🖫 पन्यता । तंत्रहा-मायमओ य १ मोश्रायसमो य २ । से दि तं शागसमो दम्बाह्युमी

भागमको दम्बा<u>णपुर्व्या</u>-जल्स गं भा<u>लपुर्वित्र ति पर्यं सिमिक्सं</u> दिनं सिनं

सप्रेरमनिवसप्रवहरिता वन्त्रालुपुरुषी वृतिहा पन्यता । तंबहा-उपनिहिना व <sup>१</sup> अपोधनिद्विया य १ । तस्य मैं था वा वननिद्विया वा उप्पा । तस्य से था व

चे कि त नेगमवद्धाराणं जयोगमिहिना बम्बा<u>लप</u>न्ती है सेगमवस्थाराणं अनोति हिमा चम्बालपुरुवी पंचलिहा पञ्चला । शैवहा-अञ्चपमध्वववा १ संगतमुक्तितववा १

अद्भारतम्बनम्या <sup>१</sup> नेयमनवद्याराण अञ्चयनप्रमणया-शिपग्रिए जाव दस्यप्<sup>हर्</sup> मार्युज्यो संविज्यप्रिए मानुपुज्यो असंधिजपप्रिए शानुपुज्यो सर्वतप्रि आसुपूर्णी परमाजुनीनगढे अवानुपूर्णी दुपएशिए अवतन्त्रम्, दिपएशिमा आर्ड

परिविधं वास में! अगुप्पेशाय । कम्हा है अगुरुओंगों दक्कमिति कहू । नेपनस्य वे एमी अञ्चयतको आगमको एया बम्बायुपुम्बी बाब बावए अञ्चयतके अवस्त । सम्बा बह बानए, ब्युक्तते न अवह, बह ब्युक्तते बानए व अवह, तमा नहिं

नायमभी दम्बादुर्जी । तेर्त मायमभी दम्बादुर्द्भी । से कि र्द मोमान्यमे क्षालुपुर्वती ! भोकागमधी क्ष्यालुपुर्व्या तिविद्या पण्यता । तंत्रहा-जासम्पर्केर रण्या<u>णु</u>च्यी १ अविवसरीरर्ज्याणुपुच्यी २ जाणसररीर्अविवसरीरस्हरिता स्मार्ड

पुर्मी १। से कि ए जानसस्रीरवृत्त्वानुपुर्मा १ अस्पुपुर्मित प्रत्तानिमारवावनस्य र्वे सरीरमे बबगयनुस्वानियवत्तरेहं सेसं बहा वृत्वावस्तरं तहा भावित्रवं वर्त चेर्तं बाजनसरीरवृष्णानुपुष्णी । से कि. र्तं अनियसरीरवृष्णानुपुष्णी ! अनिकारीर दम्बागुपुन्ती-ने बीवे बोजीबम्मजनिक्चीते पेपं बहा द्व्यावरसप् जान सेर्रा सनिर चपेरदम्बाह्युम्पी । से कि वं बाण्यसरीरमध्यसपैरकारिता दम्बाह्युम्मी <sup>१</sup> वा<del>र्मी</del>

क्षमोननिद्धिया सा दुनिहा पञ्चला । श्रंजहाः नेपमनगदाशार्जं १ संसद्दस व १ ॥ ४१॥ मंगोनईसम्बा ३ समोनारे ४ अनुगरे ५ ॥ ५४ ॥ से 🕏 ते वेगसनवहाए<sup>ई</sup>

पुर्णामो बाव अर्वतपप्रियाको आणुप्रश्रीको परमणुपोगाका अवाहपुर्गाको

बाधव पाँचे सेवनीं जीव पांत्र दुरगत। पांच संबर सेवगों. पीचित्र सदगत ॥२६॥ कर दोनों कढ़ि ऊपरे पूरप पिरे चौपेर। की बाकार बिर्ह खोक नी काड्यो प्रस्व निहेर ॥३०३ श्रतिकाम इच्छा जाणिये व्यक्तिकाम यस्तु धर्मण । श्रतिचार देश भग है। समाचार लघ मँग ॥३१॥ इन्द्र ब्रह्म सिरुव नामित प्रजापति कदिवाय । सामी वांच म्यावर नको कहा। उत्कावांग आम ॥३५॥ उपजवी दर्शन क्षत्रभ यांच चामके चाय ! उपज्ञाने पेले भागे चलमा लोग प्रमाप ॥३३॥ देखें असप प्रश्नी थोड़ी गरी शक्ते जीव हैका। मा फिस है सांसे पश्यी जलगा पंजी रेक #३५४ कुल्पका सर्पज मादका इन्द्र तथा फिलोस ! टाम टाम धन देखाने यशया पांचा बोक शहरा मोह कर्म अधिक तक गयो जिला सा अक्सता याम । केवल कान वर्णन उपजय सद्या मुलदा यांच्य करया नामप्र-६। पारे प्रथम करम ने जीक ने इर्लम होय। पांच बोल भी जिल कहा। लांगलजो सङ्क कीय ॥३७॥ सूत्र कहवासे वुक्के वुक्के समजे नेव माथ निहान। जीवादिक देखाङ्गा पुत्री सहार अगगान ॥३८०। परिपदादिक सदिवा वृक्ते वृक्ते पशे बाबार । मुलडी गाणीयों तथे पश्चित इस भार ॥३।।। राति मृत्ति प्रामान महत्त्व लागन पाँचमो जाय । नित वकाएया मुनिराज में संगवन्त थी ब्रुब्साम ॥४०॥ सत संग्रम तपस्था तथी. शंतेन ने शहा बजा । भाजा है जिनराजरी सेवल लादे कक्र तथशा

दुपएसियाई अवत्तव्वयाई । सेत्त नेगमववहाराण अट्टपयपस्वणया ॥ ७५ ॥ एयाए ण नेगमववहाराणं अद्वपयपह्वणयाए कि पओयणं <sup>२</sup> एयाए ण नेगमवव-हाराण अट्टपयपरूवणयाए भगसमुक्कित्तणया कज्जइ ॥ ७६ ॥ से कि तं नेगमवव-हाराण भगसमुक्कित्तणया <sup>१</sup> नेगमववहाराण भगसमुक्कित्तणया-अत्थि पुन्वी १ अत्यि अणाणुपुन्वी २ अत्थि अवत्तन्वए ३ अत्थि आणुपुन्वीओ ४ अत्थि भणाणुपुन्वीओ ५ अत्थि अवत्तन्वयाई ६ । अहवा अत्यि आणुपुन्वी य सणाणुपुन्नी य १ अह्वा अत्थि आणुपुन्नी य अणाणुपुन्नीओ य २ अह्वा अत्थि आणुपुन्वीओ य अणाणुपुन्वी य ३ अहवा अत्यि आणुपुन्वीओ य अणाणुपुन्वीओ य ४ अहवा अत्थि आणुपुन्वी य अवत्तव्यए य ५ अहवा अत्थि आणुपुन्वी य अवत्तन्वयाइ च ६ अहवा अत्थि आणुपुन्वीओ य अवत्तन्वए य ७ अहवा अत्थि आणुपुन्नीओ य अवत्तव्वयाइ च ८ अहवा अत्यि अणाणुपुन्वी य अवत्तव्वए य ९ अहवा अत्थि अणाणुपुन्वी य अवत्तन्वयाइ च १० अहवा अत्थि अणाणुपुन्वीओ य अवत्तव्वए य ११ अहवा अत्थि अणाणुपुन्वीओ य अवत्तन्वयाई च १२ । महवा अत्यि आणुपुन्वी य अणाणुपुन्वी य अवत्तन्वए य १ अहवा अत्यि भाणुपुन्वी य अणाणुपुन्वी य अवत्तन्वयाई च २ अहवा अत्थि आणुपुन्वी य अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य ३ अहवा अत्यि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वयाङ च ४ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ य अणाणुपुव्वी य अवत्तव्वए य ५ अहवा अस्यि आणुपुन्वीओ य अणाणुपुन्त्री य अवत्तन्वयाइ च ६ अहवा सिर्य आणुपुन्वीओ य अणाणुपुन्वीओ य अवत्तन्वए य ७ अहवा अरिय आणु-पुन्नीओ य अणाणुपुन्नीओ य अवत्तन्त्रयाइ च ८ तिसजोगे एए अ(ङ)हुभंगा। एव सन्वेऽवि छन्वीस भगा । सेत्त नेगमववहाराणं मंगसमुक्तित्तणया ॥ ७७ ॥ एयाए ण नेगमवनहाराण भंगसमुक्तित्तणयाए कि पक्षोयण 2 एयाए ण नेगमवव-हाराण भगसमुक्कित्तणयाए भगोवदसणया कीरइ ॥ ७८ ॥ से किं त नेगमवव-हाराण भगोवदसणया १ नेगमववहाराण भगोवदसणया-तिपएसिए आणुपुव्वी १ परमाणुपोग्गले अणाणुपुन्वी २ दुपएसिए अवत्तव्वए ३ अहवा तिपएसिया आणुपु-व्वीओ ४ परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वीओ ५ दुपएसिया अवत्तव्वयाइ ६ । अहवा तिपएसिए य परमाणुपुग्गले य आणुपुन्नी य अणाणुपुन्नी य चउभगो ४ । अहवा तिपएसिए य दुपएसिए य आणुपुन्वी य अवत्तन्वए य चउमंगो ८ । अहवा परमा-णुपोग्गले य दुपएसिए य अणाणुपुन्वी य अवत्तन्वए य चर्रमंगो १२। अहवा

१ भण्णायरिसे वारसभगुहेहो लन्भइ।

( अञ्चयोगगासुर्य

द्विपएसिए य परमाणुपीउमके स चुपएसिए स आखुपुर्व्या व अप्यानुपुर्व्या र समराष्ट्रप न १ शहशा विषय्तिए य परमाञ्जानेको न वुपएतिया न मानुपूर्ण म अचानुपुन्ती म अवतानवमाई च १ कहना दिपएसिए म धरमानुप्रमास व **इ**पएसिए न शा<u>लुपुन्नों व अणालुपुन्नोंको य अन्तरन्त्रए य ३ अह्ना तिपरि<sup>हर</sup></u> य परमाञ्जपोस्तका न बुपएछिया न बालुपुरनी न कार्याणुपुरनीको स कारास्त्रकर्म च ४ आह्रमा दिपएसिया व परमाश्रुपोरमके य बुपएसिए य अधिपुरुपोसी व काणानुपुरनीओ य अवस्तव्याए य ५ लहवा विषयशिया व परमाध्योगके व उपर सिवा य आजपुरुवीको व कावाणपुरुवी य अवतत्त्वयात व ६ अववा दिगण्डिना य परमाभुपोमाका य प्रप्रातिए य भाषपुर्विमो न व्यवाशपुर्विभो य अवस्थर म 🗸 महना विपएसिया व परमानुषोगमका य बुवप्रिया व असुपुर्वीम 🖣 भगाष्ट्रपुरुनीओ स अवतस्वताई च ८ । छेत नेगमयबहाराणं मगोददसनदा ॥ 🙌 से कि वं समोयारे ! समोयारे (मिनाक् )। वैचमववहाराजं अलुस्मीरमाः पर्दि समोनरति है कि आसुपुर्मीवर्मीहै समोनरति है अभासुपुर्भावरनेहि स्योप रेति । अन्तान्त्रनद्दन्ते सि समीयरेति । नेपमनवद्दाराजं आलुपुन्तीदन्त्रद्रं नदी व्योदम्बेहि समोपरेवि यो जयाणुप्रव्योदम्बेहि समोपरिव यो असाम्बर्गनेहि धनीयरेति । नगसववशाराण अवालपुरुवीयच्याई कृष्टि समीयरेति । मि वास्त्रपूर्ण वस्मेहं समोगरंति ! अमानुपुम्भावस्मेहं समोगरंति ! अवसम्मनवस्मेहं समोनरंति ! नो आनुपुम्नीवस्मेद्वं स्थीमधेव अवानुपुम्नीवस्मेद्वं समोनधेव नो अनवस्म बम्बेह्रं समोवरंति । नेगमक्काराणं अवत्तव्ययव्यक्तं वर्षे समोबरंति । मास्प्र<sup>वर्ष</sup> वस्त्रेष्टि समोमरति । मनानुपुल्लीवस्त्रेष्ट्रं समोगरति । अवतस्त्रमध्यमध्येष्ट्रं समोगरति । नो भारतपुष्पीदन्नेहिं धनोयरेति नो समारतपुष्पीक्षेत्रेहिं समोनरेति व्यवस्था वृद्धि समोगरेति । येर्ग समोवारे ॥ ८ ॥ से कि से अनुगम ? अनुगमे नावि पश्यति । संबद्धा-साह्य-संतपनपरमण्याः पश्यप्तीर्थं स दिस्तै पुरस्की व । गैसी व भरीरं मार्गे मीने कप्पार्वेड्डं चेव ॥ १ ॥ ४१ ॥ शेगमवनद्वारानं आडपुमी-बुम्बर्स कि भरिप गरिप है जिनमा महिब । नेममनबहाराणं समानुपुरनीवस्त्राहं है सरिय गरिव ! भिनमा अस्यि । गैयमवनद्वाराणं सवतस्थानरभारं 🕸 अस्य नरिय 🖁 विज्ञमा करिय ॥ ८२ ॥ नेपसकाहाराणे कालुपुष्णीदस्नारे 🎏 संशिजार्य !

अस्थिजाई <sup>इ</sup> सर्गताई ! नो संशिकाई, नो असंधिजाई, सर्नदाई । एवं अ<sup>स</sup> पुरुवीदस्तरं सरप्रमानस्मारं च मर्गतारं मानिरध्नारं ॥ ८३ व वेदस्तरहाएरं अलुप्मीरमाई क्षेगरस कि संविकासांगे होजा । वसंधिकासांगे होजा । सखेजेष्ठ भागेषु होजा <sup>2</sup> असखेजेष्ठ भागेष्ठ होजा <sup>2</sup> सन्वलोए होजा <sup>2</sup> एग दन्वं पहुच सिखजइभागे वा होजा, असिखजइभागे वा होजा, सखेजेस भागेस वा होजा, असखेजेम्र भागेम्र वा होजा, सन्वलोए वा होजा । णाणादन्वाइ पहुच नियमा सञ्वलोए होजा । नेगमववहाराण अणाणुपुन्वीदन्वाई कि लोयस्स सखिज्ज-इभागे होजा जाव सन्वलोए होजा <sup>2</sup> एग दव्व पहुच नो सखिजइभागे होजा, असिखजइभागे होजा, नो सखेजेस भागेस होजा, नो असखेजेस भागेस होजा, नो सन्वलोए होजा। णाणादन्वाइ पडुच नियमा सन्वलोए होजा। एवं अवत्तन्व-गदन्वाइं भाणियन्वाइ ॥ ८४॥ नेगमववहाराण आणुपुन्वीदन्वाइ लोगस्स कि सखेजइभाग फ़ुसति  $^2$  असखेजइभाग फ़ुसति  $^2$  सखेजे भागे फ़ुसति  $^2$  असखेजे मागे फ़ुसति <sup>२</sup> सन्वलोग फ़ुसति <sup>२</sup> एग दन्व पहुच लोगस्स सखेजाइभाग वा फुसित जाव सन्वलोगं वा फुसित । णाणादन्वाइ पडुच नियमा सन्वलोग फुसित । नेगमववहाराणं अणाणुपुञ्वीदञ्वाइ लोगस्स कि सिखजङ्भाग फुसति जाव सञ्वलोग फुर्चित <sup>2</sup> एर्ग दव्च पहुच नो सिखजइभाग फुर्सित, असिखजइभाग फुर्सित, नो सिंखजे भागे फुसति, नो असिंखजे भागे फुसति, नो सव्वलीय फुसति। णाणादव्वाइ पहुच नियमा सव्वलोय फुसति । एव अवत्तव्वगदव्वाइ भाणियव्वाइ ॥ ८५ ॥ णेगमववहाराण आणुपुन्वीदव्वाइ कालओ केविचरं होंति <sup>२</sup> एग दव्व पडुन्न जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज काल । णाणादम्बाइ पडुच णियमा सम्बद्धा । अणाणुपुव्वीदव्वाइ अवत्तव्वगदव्वाइ च एव चेव भाणियव्वाई ॥ ८६ ॥ णेगम-ववहाराण आणुपुव्वीदव्वाण अतरं कालओ केविचर होइ १ एगं दव्वं पडुच जहण्णेण एग समय, उक्वोसेण अण(त)तकाल । णाणादन्वाइ पहुच णत्यि अतर । णेगमववहाराण अणाणुपुव्वीद्व्याणं अतर कालओ केविचर होइ <sup>2</sup> एग दव्य पडुच जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज काल। णाणाद्व्याइ पहुच णत्थि अतर। णेगमववहाराण अवत्तव्वगदव्वाण अतरं कालओ केवचिर होइ <sup>2</sup> एगं दव्वं पडुच जहण्णेण एग समय, उद्दोसेण अणतकाल । णाणाद्वाइ पहुच णित्य अतरं ॥ ८७ ॥ णेगमववहाराण आणुपुर्वीदव्वाइ सेसदव्वाण कड्भागे होज्जा १ किं सिखज्रभागे होजा <sup>2</sup> असिखज्रमागे होजा <sup>2</sup> सखेजेस भागेस होजा <sup>2</sup> असखेजेस भागेस होजा 2 नो सिवजइभागे होजा, नो असिवजइभागे होजा, नो सर्वेजेस भागेमु होजा, नियमा असखेजेषु भागेषु होजा। णेगमववहाराणं अणाणुपुच्वी-दव्वाइ सेसद्वाण क्इभागे होजा? कि सखेजडभागे होजा? असखेजइभागे होजा <sup>2</sup> सखेजेमु भागेमु होजा <sup>2</sup> असखेजेमु भागेमु होजा <sup>2</sup> नो सखेजडमागे १९६ सुष्ठावये [बजुबोत्तरसहार होजा धरंधेकद्माने होजा में ग्रंथकंषु मानेष्ठ होजा मो अग्रंथकेषु मानेष्ठ होजा एव जातस्यव्यवस्थायि सि सावित्यवायि ॥ ८८ ॥ योगामस्वारात्यं वार्ष्ट-पुर्श्यीदस्यादं कररंगि मावे होजा ? कि उद्दूष्ट्र माथे होजा ? उद्यक्षित्र मावे होजा ? परंप्ट्र माथे होजा ? उस्तेवस्यायेष्ट्र माथे होजा ! वार्ष्ट्रप्राप्ट्रिय मावे होजा ! विश्वा हात्या शिक्षायिए मावे होजा ! व्याप्ट्रप्रकृत्यायेष्ट्रपर्याः वत्यस्यम्यस्थाये व वृत्ये चेत्र मावित्यवायि ॥ ८९ ॥ एएकि मेटि ! वैत्यमस्वर्धिः एम अस्त्युक्तिस्याये अपाव्युक्षोद्यमाले अस्त्यस्यव्यवस्याय य दस्यकृत्य एरस्ट-माय् वस्यद्वस्यय् कर्मा अस्तेवस्यायः अस्त्यस्यवस्यव्यवस्याय स्वयुक्तायः मावेवस्यायः स्वयुक्तायः स्वयं स्वयुक्तायः स्वयुक्तय

न समानुत्राची न ४ महमा अदिन बालुपुत्वी न सन्तान्वए य ५ महमा वर्षित व्यवस्थानी म नन्तान्वए य ६ सहसा क्रमित नायुप्तवी न ब्यायुप्ती न क्रमान्वाम् य ५ व्यं सान्तीया । वेष्टे स्वाह्मा संत्राम्या क्रिक्तवरा १ व्यायुप्त व स्वाह्मा अस्यम्यक्रिकान्याए क्रिक्योयमं १ एवाए वं काल्स्स अंत्राम्युक्तिननाए अपेन्त सणया कीरइ॥ ९३॥ से किं त सगहस्स भगोवदसणया <sup>१</sup> सगहस्स भगोवदंसणया-तिपएसिया आणुपुच्ची १ परमाणुपोग्गला अणाणुपुच्ची २ दुपएसिया अवत्तव्वए ३ अह्वा तिपएसिया य परमाणुपुग्गला य आणुपुन्वी य अणाणुपुन्वी य ४ अहवा तिपएसिया य दुपएसिया य आणुपुच्ची य अवत्तव्वए य ५ अह्वा परमाणु-पोग्गला य दुपएसिया य अणाणुपुन्वी य अवत्तन्वए य ६ अहवा तिपएसिया य परमाणुपोग्गला य हुपएसिया य आणुपुन्वी य अणाणुपुन्वी य अवत्तन्वए य ७। सेत सगहस्स भगोवदसणया ॥ ९४ ॥ से किं त सगहस्स समोयारे १ सगहस्स समोयारे (भणिज्जइ) । सगहरस आणुपुन्वीदन्वाइ कर्हि समोयरंति <sup>२</sup> कि आणु-पुन्नीदन्वेहिं समोयरंति १ अणाणुपुन्नीदन्वेहिं समोयरति १ अवत्तन्वयदन्वेहिं समो-यरति १ सगहस्स आणुपुञ्वीदञ्वाई आणुपुञ्वीदञ्वीहें समीयरंति, नो अणाणु-पुन्वीदन्वेहिं समोयरंति, नो अवत्तव्वयदन्वेहिं समोयरंति । एव दोन्नि वि सहाणे सङ्घाणे समोयरंति । सेत्त समोयारे ॥ ९५ ॥ से किं तं अणुगमे १ अणुगमे अङ्घविहे पण्गते । तजहा-गाहा-सतैपयपस्वणया, दैव्वपमाणं च खित्तै फुसर्णां य । काँही य अर्तरं भाग, भावे अप्पावहु नित्य ॥ १ ॥ सगहस्स आणुपुन्वीदव्वाइ कि अत्यि नित्थ १ णियमा अत्थि । एवं दोन्नि वि । सगहरूस आणुपुरवीद्वाइ किं सिव-जाइ  $^{2}$  असंखिजाइ  $^{2}$  अणताइ  $^{2}$  नो संखिजाइ, नो असंखिजाइ, नो अणताइ, नियमा एगो रासी। एव दोन्नि वि। सगहस्स आणुपुन्वीदन्वाइ लोगस्य कइभागे होजा <sup>२</sup> कि संखिजङ्मागे होजा <sup>२</sup> असंखिजङ्भागे होजा <sup>२</sup> संखेजेस मागेस होजा <sup>2</sup> असखेजेसु भागेसु होजा <sup>2</sup> सञ्वलोए होजा <sup>2</sup> नो सखिजइभागे होर्जा नो असिखजइभागे होजा, नो सखेजेस भागेस होजा, नो असखेजेस मागेस होजा, नियमा सन्वलोए होजा। एव दोन्नि वि । सगहस्स आणुपुन्वीदन्वाइ लोगस्य कि सखेजाइमाग फुसति <sup>२</sup> असखेजाइमाग फुसति <sup>२</sup> सखेजे भागे फुसति <sup>२</sup> असखेजे भागे फुसति 2 सन्वलोग फुसति 2 नो सखेजडमाग फुसति जाव णियमा सन्वलोग फुसित । एव दोन्नि वि । सगहस्स आणुपुन्वीदन्वाइ कालओ केविचर होंति ८ (नियमा) सन्बद्धा । एव दोन्नि वि । सगहस्स आणुपुन्वीद्व्वाण कालओ षेत्रचिर अतर होइ <sup>2</sup> णत्थि अतर । एव दोन्नि वि । सगहस्स आणुपुन्वीदन्वाड सेसदय्वाण कइमारो होजा <sup>2</sup> कि सखिजडभागे होजा <sup>2</sup> असखिजडभागे होजा <sup>2</sup> सरेजिस मागेसु होजा <sup>२</sup> असखेजेसु भागेसु होजा <sup>२</sup> नो सखिजडभागे होजा, नो असिराजइभागे होजा, नो सखेजेष्ठ भागेष्ठ होजा, नो असखेजेष्ठ भागेष्ठ होजा, नियमा तिभागे होजा । एव दोन्नि वि । सगहस्स आणुपुन्वीदन्वाङ

क्यरम्मि भावे होजा है नियमा साहपारिचामिए भावे होजा । एवं दोत्रि नि । मप्पावहुं गरिव । सेर्च अगुगमे । सेर्च संगाहस्स अगोनविश्वया वस्मागुपुर्मा । चेत्र मजोननिद्धिया दम्मालुपुरुवी ॥ ९६ ॥ से कि तै उनविद्धिया दम्मालुपुर्नी ! उनमिद्दिया दम्मालुएम्मी तिमिहा पञ्चता । तैत्रहा-पुम्नालुएमी १ पञ्चानुपुमी १ अवागुपुरुती स ३ ॥ ९७॥ से कि ले पुरुषानुपुरुती है पुरुषानुपुरुती-बस्मदिनहाएँ है समस्मित्रहरू २ भागासरिक्छए १ जीवरिक्छए ४ पोस्मकरिक्सए ५ **वर** समए ६ । क्षेत्रं पुञ्चलपुरुवी । से कि र्वं पच्छाणुप्रवी है पच्छाणुपुरुवी-अक्षाप्रमए ६ पोमासरिपकाए ५ जीवरिवराए ४ आगासरिक्काए ३ अवस्मरिवकाए ९ वस्स रिवकाए १ । वेर्ता पच्छलुपुरुवी । ये कि र्त अधानुपुरुवी । अजानुपुरुवी-एवाई चेव एगाइमाएं एगुत्तरिकाएं छनच्छेगवाएं सेबीए अञ्चयनमञ्जयमासी बुरक्यो । सेव मयागुपुच्यी ॥ ९८ ॥ शहरा उपयिक्षिण दस्यागुपुच्यी दिखेहा पञ्चता । दबहर-पुम्मानुपूर्वा १ क्कानुपूर्वा १ वयानुपूर्वा १। से कि सं पुम्बस्युव्यो । उनाः जुपुन्नी-परमाक्तोमाके १ दुण्एसिए २ विष्एसिए ३ वाव इसक्ट्सिए १ सर्वि-ज्यपप्रिय ११ मसंदिजपप्रिय १२ अर्जनपर्यसम् १३। सेतं प्रश्नसपुरमी। से कि वं पच्छानुपूर्व्या । पण्डानुपूर्व्या-भर्गतपर्वतप् १३ बाब परमाञ्चरोगाने १। सेतं पन्त्रज्ञपुरुषी ! से के तं अनाजुपुरुषी ! जवाजुपुरुषी-एवाएं केन एमहरूप एगुत्तरिवाए अर्णतगच्छनवाए सेबीए अञ्चराज्यस्मासो दुरबुधो । सेत्ते अवादपुर्वे । सेत उनमिद्धिमा इम्बालुक्यी। <sup>के</sup>ले बाजवसरीर्मिवसरीरक्रिता इम्बल्पुमी। सेतं मोबागनमा दम्बानुप्रमा । सेत्तं द्व्याणुपुरवी ॥ १९ व से कि वं सेतः मुपुम्मी ! चेतानुप्रमा दुख्या क्लाता । संबद्दा-स्वमिद्दिया व अमोदमिद्दिया व ॥ १ । तत्पण वासास्त्रभिद्वियासाठण्या। तत्प वं कासाझनोति हिंबा **या दुनिहा पन्न**या । तंत्रहा-येगमक्त्रहारायं १ संगहस्य य १ ॥ १ ९ ॥ सं कि व नेगमनवहारार्ण अनोनमित्रिया केतानुप्रस्वी । येगमनवहारानं अनोनमि हिमा चेतालुपुरमी पंचनिक्षा पञ्चता । तजहा-अहुपवपस्वणसा १ संगरमुहिण नया र मंगोनवसम्बर्ग ३ समोबारे ४ अनुपने ५ । से कि ते वैगमनवस्पर्ण शहुपनपद्दन्यमा । जेगमनवद्दाराणं जहुपनपद्दन्यमा-विपन्धोगाहे जानुपन्ये गा ब्रस्पप्सोयाने बालुपुन्नी सम्बन्धप्यसोयाने आसुपुन्नी असंधिजपरसोपाने वार्ड पुर्मी एगवप्रोगाडे अवासुपुर्मी हुपएसोगाडे व्यक्तम्बए, श्रिपरसोगाडा वर्षी पुर्माओ बाव एसपप्रोगाडा बालुपुर्माओ असंक्रिजपप्रोगाता बालुप्रमीले

१ समुद्र'। १ पर्वतरे एसो पाटो नरिवा।

एगपएसोगाढा अणाणुपुन्वीओ, दुपएसोगाढा अवत्तव्वगाइ। सेत्तं णेगमववहाराणं अद्वपयपस्वणया । एयाए ण णेगमववहाराण अद्वपयपस्वणयाए कि पओयणं <sup>2</sup> एयाए॰ णेगमववहाराणं अद्वपयपस्वणयाए णेगमववहाराण भगसमुक्कित्तणया कज्जइ । से किं त णेगमववहाराणं भगसमुक्कित्तणया १ णेगमववहाराणं भगसमुक्कित्तणया-अत्यि आणुपुच्ची १ अत्यि अणाणुपुच्ची २ अत्यि अवत्तव्वए ३ एव दव्वाणुपुच्ची-गमेण खेताणुपुव्वीए वि ते चेव छव्वीस भगा भाणियव्वा जाव सेत्त णेगम-ववहाराण भंगसमुक्तिताणया । एयाए ण णेगमववहाराण भगसमुक्तिताणयाए कि पक्षोयण १ एयाए ण णेगमववहाराण भगसमुिकत्तणयाए भगोवदंसणया कीरइ। से किंतं णेगमववद्दाराण भगोवदसणया १ णेगमववद्दाराण भगोवदसणया-तिपएसोगाढे आणुपुच्वी १ एगपएसोगाढे अणाणुपुच्ची २ दुपएसोगाढे अवत्तव्वए ३ तिपएसोगाढा आणुपुव्वीओ ४ एगपएसोगाढा अणाणुपुव्वीओ ५ दुपएसोगाढा अवत्तव्वगार्ड ६ अहवा तिपएसोगाढे य एगपएसोगाढे य आणुपुन्वी य अणाणुपुन्वी य एवं तहा चेव दव्वाणुपुरुवीगमेण छव्वीस भगा भाणियव्वा जाव सेतं णेगमववहाराण भगो-वदसणया । से किं त समोयारे र समोयारे-णेगमववहाराणं आणुपुन्वीदव्वाइ किंह समोयरति १ कि आणुपुन्वीदन्वेहिं समोयरति १ अणाणुपुन्वीदन्वेहिं समोयरित १ अवत्तव्ययद्वेहिं समोयरति <sup>२</sup>० आणुपुव्वीद्वाइ आणुपुव्वीद्वेहिं समोयरेति, नो अणाणुपुन्वीदन्वेहिं समीयरति, नो अवत्तन्वयदन्वेहिं समीयरति । एव दोन्नि वि स्टाणे सद्वाणे समोयरंति । सेत्त समोयारे । से किंत अणुगमे ? अणुगमे नवविहे पण्णते । तजहा-गाहा-सतैपयपस्वणया, दैव्वपमाण च खित फुसणी य । काँहो य अर्तरं भागै, भावे अप्पावेहु चेव ॥ १ ॥ णेगमववहाराण आणुपुग्वीदव्वाइ किं अत्थि मस्यि १ णियमा अत्थि । एव दोन्नि वि । णेगमववहाराण आणुपुन्वीदन्वाइ किं सिखजाइ 2 असखिजाइ <sup>२</sup> अणताइ <sup>२</sup> नो सखिजाइ, नो असखिजाइ, अणताइ । एवं दोन्नि नि । णेगमवनहाराण आणुपुन्वीदन्वाइ लोगस्स किं सखिज्जइभागे होज्जा <sup>२</sup> असखिज्जइभागे होजा १ जाव सन्वलोए होजा १ एग दव्व पहुच सखिजइभागे वा होजा, अस-खिजइभागे वा होजा, सखेजेस भागेस वा होजा, असखेजेस भागेस वा होजा, देस्णे वा लोए होज्जा । णाणादव्वाइ पहुच्च नियमा सब्वलीए होज्जा । णेगमवव-हाराण अणाणुपुन्वीदव्वाण पुच्छाए-एग दव्व पहुच नो सखिजइभागे होज्जा, असखिजइमार्गे होजा, नो सखेजेस भागेस होजा, नो असखेजेस भागेस होजा, नो सन्वलोए होज्जा । णाणादन्वाइ पहुच्च नियमा सन्वलोए होज्जा । एव अवत्तन्व-गदन्वाणि वि भाणियन्वाणि । णेगमववहाराण आणुपुन्वीदन्वाइ लोगस्स किं सिख- 11 • धुनाममे [जनुमेनपुरसुर्वे व्यवमानं पुर्वति । जाविराज्ञामान पुर्वति । वेतेको माने पुर्वति । काविरोज्ञामान पुर्वति । व्यवस्थानं व्यवस्यानं व्यवस्थानं व्यवस्थान

माग वा पुन्यह्न संदोश माने वा पुरावः, शर्वक्रेश माने वा पुन्यहः, वेदार्थ वा स्वेतं पुरावः। बाजावस्तादं पद्रवः नियमा सम्बन्धते पुराविः। अनालुद्वामीदस्यदं अवतः स्वयदस्यदं च व्यवः दोतं नवरं पुरावः मानिकस्याः। केतन्त्रवहाराणं बाल्यस्यः वस्तादं वावाने केवितं विति ? एगं वस्तं पद्यव व्यव्येषं एगं सात्रं उद्योक्तं स्वेतं देशके स्वेतं देशके स्वेतं दोनं करतं । नालावस्तादं पद्वव वित्याना सम्बन्धाः। एवं दुन्तिम वि । केतामवादाराणं साहद्वासीरस्यादायादं शासनो कवित्तं होई । एगं द्वानं पद्वव व्यवस्थां एगं वस्तं दक्षेत्रेलं सर्वदेशं बाले। वालावस्थादं पद्वव वालिव अंतरं। वेपामवादाराणं स्वातः

आध्यान्यास्थायम्परं वासको कावितं होत् । एगं सूर्य यहुन वहुन्यमं एमं सम्ब एकोलेनं नरंपीयं कामं । नामाहमातं युक्त वाहित कोतः । नेमाहमातायां स्था प्रमोणनात् रेस्टक्सामं क्रमारे होता ! तिथित वि बहा बम्बास्यम्य । वेस्म-क्षारात् नाम्युव्यनिक्षायं क्ष्मरिक्षा मात्रे होता ! तिथमा स्वाप्रतिनाति सर्वे होता । एवं होति ति । पूर्ण्य यं मेरे । येमास्वहारामं आध्यान्यास्थानं कार्य प्रमोण्याम क्षमान्यास्थानं न वन्यद्रमाय स्थान्याय् वन्यद्रम्यस्थानं कर्याः हिंदो नत्या वा तहुन्या वा तहा ना विद्यादित वा सेयमा । यस्यविद्यार् क्षिप्रतिकार्यः

प्रशासिक प्रशासभादम्भाइ हम्मुक्तार, क्याणुक्तास्याइ व्यव्हानार् स्वयानियाः स्वाप्ताः स्वयानियाः स्वाप्ताः स्वयान्त्रः स्वाप्ताः स्वयान्त्रः स्वाप्ताः स्वयान्त्रः स्वाप्ताः स्वयान्त्रः स्वाप्ताः स्वयान्त्रः स्वयान्तः स्वयान्त्रः स्वयान्तः स्वयान्तः स्वयान्त्रः स्वयान्तः स्वयान्तः

तुपुत्री पुरस्केपार्वे क्लान्मण् । ऐतं संग्रहस्य बद्धस्यस्यापया । एकाए वं संग्रहस्य अद्वर्धयस्यात्याप् कि प्रश्लेखवं । संग्रहस्य अद्वर्धयस्यक्याप् स्माहस्य संगरस्यक्रियणम्य कृत्रव्य । से कि तं संग्रहस्य संगरस्यक्रियवया । स्वयहस्य संय समुक्तिनणया-अत्य आणुपुच्ची १ अत्यि अणाणुपुच्ची २ अत्यि अवत्तव्यए ३ अहवा अत्थि आणुपुन्वी य अणाणुपुन्वी य एवं जहा दव्वाणुपुन्वीए सगहस्स तहा भाणियव्वा जाव सेत सगहस्स भगसमुक्कित्तणया । एयाए ण सगहस्स भगसमु-कित्तणयाए कि पञ्जोयणं 2 एयाए णं सगहस्स भगसमुक्तितणयाए भगोवदसणया कज्जइ । से किं त सगहस्स भगोवदसणया १ सगहस्स भगोवदसणया-तिपएसोगाढे भाणुपुन्वी १ एगपएसोगाढे भणाणुपुन्वी २ दुपएसोगाढे अवत्तव्वए ३ अहवा तिपएसोगाढे य एगपएसोगाढे य आणुपुन्वी य अणाणुपुन्वी य एव जहा दन्वाणु-पुव्वीए सगहस्स तहा खेताणुपुव्वीए वि भाणियव्य जाव सेत्तं सगहस्स भगोवद-सणया । से किं त समोयारे <sup>१</sup> समोयारे-सगहस्स आणुपुन्वीद्न्वाई किं समोय-रंति  $^2$  किं आणुपुन्वीदन्वेहिं समोयरति  $^2$  अणाणुपुन्वीदन्वेहिं समोयरति  $^2$  अवत्त-व्वयद्व्वेहिं समोयरंति १ तिण्णि वि सद्वाणे समोयरंति । सेतं समोयारे । से कि तं अणुगमे १ अणुगमे अद्वविहे पण्णते। तजहा-गाहा-सतैपयपल्वणया, दैव्वपमाण च खितै फुसर्णा य । केलो य अर्तर भाग, भीवे अप्पावहु णित्य ॥ १ ॥ सगहस्स आणुपुव्नीदव्नाइ किं अतिथ णित्य १ णियमा अतिथ । एव दुण्णि वि । सेसग-दाराइ जहा दव्वाणुपुव्वीए सगहस्स तहा खेताणुपुव्वीए वि भाणियव्वाई जाव सेत्त अणुगमे । सेत्तं सगहस्स अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी । सेत्त अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ॥ १०३ ॥ से किं तं उविणहिया खेत्ताणुपुव्वी <sup>2</sup> उविणहिया खेत्ताणु-पुव्वी तिविहा पण्णत्ता । तजहा-पुव्वाणुपुव्वी १ पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी य रे । से किं त पुन्वाणुपुन्वी <sup>2</sup> पुन्वाणुपुन्वी-अहोलोए १ तिरियलोए २ उ**ह**लोए ३ । सेत्त पुन्नाणुपुन्नी । से किं त पच्छाणुपुन्नी १ पच्छाणुपुन्नी—उन्नुलोए ३ तिरियलोए २ अहोलोए १। सेत्त पच्छाणुपुञ्ची। से किंत अणाणुपुञ्ची <sup>२</sup> अणाणुपुञ्ची-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए तिगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णन्भासो दुरुवूणो । सेतं अणाणुपुन्वी । सहोरोयखेताणुपुन्धी तिविहा पण्णता । तजहा-पुन्वाणुपुन्वी <u>१</u> पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी ३ । से किं त पुव्वाणुपुव्वी १ पुव्वाणुपुव्वी-रयणप्पभा १ सकरप्पमा २ वाछयप्पमा ३ पकप्पमा ४ धूमप्पमा ५ तमप्पमा ६ तमतमप्पमा ७। सेत्त पुञ्वाणुपुच्वी । से कि त पच्छाणुपुच्वी <sup>२</sup> पच्छाणुपुच्वी–तमतमप्पमा ৩ जाव रयंणप्पमा १ । सेत्त पच्छाणुपुट्यी । से कि त अणाणुपुट्यी <sup>१</sup> अणाणुपुट्यी-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए सत्तगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णव्यासी दुरवूणो। सेत्त अणाणुपुन्वी । तिरियलोयखेताणुपुन्वी तिविहा पण्णता । तजहा-पुन्वाणुपुन्वी १ पच्छाणुपुन्वी २ अणाणुपुन्वी ३ । से किं त पुन्त्राणुपुन्ती १ पुन्ताणुपुन्ती- 11 4

गाहामी-स्वृरीवे कवणे बावद काकोग पुबध्दरे वरणं । स्तर क्य बीग मेरी सरगवरे चुंबके रुपये ॥ १ ॥ बौत्मरण वस्त्र यथि जन्मस विकय् व पुडलि निर्दे रसने । बासहर बह नईको विवना बन्द्यार कप्पिया ॥ २ ॥ क्षत्र मंदर मानासा **कृता** नक्तात चंद सूरा स । देने नाने बजनो अूत् य सर्वमुरसणे न 🛭 रे 🛭 सेर्च पुष्पालुपुर्था । से कि र्त पत्कालुपुर्धा है प्रकालुपुर्धा-सर्वमूराये व बार **कंपूरीने । सेर्त पर्व्या**शपुर्व्या । से कि ते अवा<u>शपुर्व्या !</u> अवत्यपुर्व्या-एगाए नेन एनाइयाएं एनुत्तरिहाएं भर्तकेकणकावाएं वेकीए बज्जमञ्चन्नाती हुस्सूनी। सेर्ग भगानुपुर्वा । प्रश्नुसेवचेतानुपुर्वा तिनिहा पण्यता । तंबहा-पुन्नानुपूर्वा १ क्लानुपुर्वा १ अवनुपुर्वा ३ । छे 🕏 तं पुर्वानुपुर्वा । पुर्वासपुर्वी-सोहम्मे १ ईसाणे २ सर्वकुमारे ३ माहिंदे ४ वममोए ५ लंडए ६ महास्टे ४ सहस्यारे ८ माजप् ९ पामप् १ आर्थे १९ मञ्जूप् १२ गेमेजनिमाने ११ भजुत्तरनिमाणे १४ ईवियम्भारा १५ । वेत्तं पुरुषाणुप्रच्यी । वे 🎋 तं प्रवास्त्रपुरुषी ै पच्छापुरुषी-दैसिपण्मारा १५ बाव धोद्यमे १ । सेर्च पच्छापुरुषी । से 👫 वं **मनःसपुर्वते । भ**गानुपुर्व्या-एवाए चेद एयाइद्याए प्युत्तरियाए वचरसग<del>व्य</del>गवरि पेक्षीए मन्त्रमञ्जनमाती हुरुन्ते । पेर्त शयानुपुत्रमी । सहवा उत्तरिक्षिमा बेतार्ड पुरुषी विविद्या पर्न्याता । तंत्रहा-पुरुषा १ पत्त्वसुपुरुषी १ सम्राष्ट्रपुरुषी व १। से कि ते पुम्बासुपुर्ग्नी है पुरुष्णुपुर्ग्नी-एमपण्सीयाके द्वपर्योगाने वार ब्सपएसोगावे जाव सक्रिजनएस्रोपावे असंबिजनएसोगावे । धेर्त पुज्ञा<u>सपु</u>ज्ञी । से कि तं प्रकारमुख्यो ! प्रकारमुख्यो-असंविक्तपुरुगेगाडे संविक्तपुरक्षेपाडे वार एनपर्तोगान् । सेतं पञ्जागुपन्ती । सं कि तं अनागुपुन्ती । अयानुपन्ति-एनार चेद एगाइवाए एपुसरियाए अर्थविकागक्क्यवाए सेकीए अञ्चलकम्माखे पुश्यको ! वैद्यं अमलुपुन्नी । वेद्यं स्वयमिद्धिया बेतानुपुन्नी । शे<del>द्यं क्रेप्ता</del>सुपुन्नी ॥ १ ४ म से कि त बाबाबुपुन्नी व कास्राणुपुन्नी बुविहा प्रकाशा । तंबहा-तवनिहिवा म १ मजोबनिक्षेत्रा व १ ॥ १ ५ ॥ तस्य मं था सा उपविद्या सा रूपा । तस्य मं जा सा वाजीवनिद्विया सा दुनिहा प्रणाता । तंत्रहा-जेगमववहाराचं १ संगहस्य व ९ ॥ १ ६ ॥ से कि तं वैयमववहाराजं अमोत्रविद्विया आसन्त्रपुरनी १ वैययवर् हाराजं वसोवयिहिना साळालुपुच्नी पंचनिहा पञ्चला । संबहा-अद्वपयपस्यवना १ र्भगसमुक्तित्त्रका २ भेंगांवर्गसम्बग्धः व समोगारे ४ अशुममे ५॥ १ ७॥ से 🗗

चंतुरीयाओ कह्न, निरंतरा सेसवा सरकश्या । अन्यवर कुसवरानिय ध्रैन-वरामरणमार्दे व ॥ वावणेतरे एसा याक्षा नि अन्यतः ।

पांच थांनके वीरजी, स्राज्ञा दीवी एह । <sup>श्र</sup>भित्रह धारी साधुजी, करे गवेषणा तेह ॥४२॥ <sup>आप</sup> निमित्त काट्यों वाहिर, थवा न काट्यों न वार । तींजे खातों उचरे, पंत चले लुख ग्रहार ॥४३॥ श्रगन्यात कुल मुनिवर तजे, करे गोचरी छांडी काल । कर सरले ऋण सर लिये, धन ऋषि दीन दयाल ॥४४॥ <sup>हां</sup>इ करिते श्रहार श्राणियो, दोप वयालिश रेत । जला निजरे देख तो, पांचमो पठे देत ॥४४॥ <sup>ष्ट्रायं</sup>वल निवी पुरिमट्ट, करे द्रव्य उन्मांन । भिन्न पिंड वाइ ए पांचमो, ए श्राज्ञा भगवान ॥४६॥ प्ररस विरस अन्त पन्त लूह, ए<sub>ं</sub>चाल्या पांच अहार्ा़ <sup>र</sup> जीमी जीवे मुनि, धन मोटा त्र्र्णगार ॥४७॥ . 👫 श्रासण श्ररु उकडू, पडमा काउसग्ग रात । दिमास**ण वीरास**णे, रहे छ**्कायानाथ ॥**४८॥ -ग्रडांनी परे साधुजी, रहे पग पसार। उवे लकड़ीनी परे. मस्तक भू त्रलगाड़ ॥४६॥ तड़के लेवे त्रातापना, शीत खमेसी रात । डीले खाज खीरो नहीं, श्रहो गुरा कहा। न जात ॥५०॥ पांच वोले मुनिराजजी, महा निर्जरा पाम। श्रन्त करे संसार नो, जो राखे शुद्ध प्रणाम ॥४१॥ **त्राचारज उवभाय थविर, तपसी वहुश्रुति जा**ण । गणावच्छेदक वली, सात पद्वियें मान ॥४२॥

त णेगमववहाराणं अद्भपयपल्वणया १ णेगमववहाराण अद्वपयपल्वणया-तिसमय-हिइए आणुपुन्नी जाव दससमयहिइए आणुपुन्नी, सखिजसमयहिइए आणुपुन्नी, असंखिजसमयद्विइए आणुपुन्वी, एगसमयद्विइए अणाणुपुन्वी, दुसमयद्विइए अवत्तन्वए, तिसमयद्विइयाओ आणुपुन्वीओ, एगसमयद्विइयाओ अणाणुपुन्वीओ, दुसमयद्विद्याइ अवत्तव्वगाइ । सेत्त णेगमववहाराण अद्वपयपरुवणया । एयाए णं णेगमववहाराण अद्वपयपरूवणयाए किं पओयणं <sup>१</sup>० णेगमववहाराण अद्वपयपरूव-णयाए णेगमववहाराण भंगसमुक्तित्तणया कज्जइ ॥ १०८ ॥ से किं त णेगमवव-हाराण भगसमुक्कित्तणया  $^{2}$  णेगमववहाराण भगसमुक्कित्तणया-अत्थि आणुपुन्त्री १ अस्थि अणाणुपुन्वी २ अस्थि अवत्तन्वए ३ एवं दन्वाणुपुन्वीगमेण कालाणु-पुन्वीए वि ते चेव छव्वीस भंगा भाणियव्वा जाव सेत्त णेगमववहाराणं भंगसमु-कितणया । एयाए णं णेगमववहाराण भंगसमुक्तित्तणयाए किं पओयण <sup>१</sup> एयाए ण णेगमववहाराण भगसमुक्कित्तणयाए णेगमववहाराण भगोवदसणया कज्जइ ॥ १०९ ॥ से किं तं णेगमववहाराण भगोवदंसणया १ णेगमववहाराण भगोवद-सणया-तिसमयहिङ्ए आणुपुन्वी १ एगसमयहिङ्ए अणाणुपुन्वी २ दुसमयहिङ्ए अवत्तव्यए ३ तिसमयद्विह्याओ आणुपुव्यीओ ४ एगसमयद्विह्याओ अणाणुपुव्यीओ ५ <sup>दुस</sup>मयद्विड्याइ अवत्तव्वगाइ ६ । अहवा तिसमयद्विड्ए य एगसमयद्विडए य साणुपुन्नी य अणाणुपुन्नी य एव तहा दन्नाणुपुन्नीगमेणं छन्नीस भंगा भाणियन्त्रा जाव सेत्त णेगमववहाराण भगोवदंसणया ॥ १९० ॥ से किं त समोयारे <sup>२</sup> समोयारे-णेगमववद्दाराण आणुपुव्वीदव्वाइ किंह समीयरंति <sup>१</sup> किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समी-यरंति 2 अणाणुपुन्वीद्न्वेहिं समोयरंति 2 अवत्तन्वयद्न्वेहिं समोयरंति 2 एव तिण्णि वि सट्टाणे समोयरंति इति भाणियव्व । सेत्त समोयारे ॥ १११ ॥ से किं त अणुगमे ? अणुगमे नवविद्दे पण्णत्ते । तजहा-गाहा-सतपयपस्त्रणया,द्व्वपमाण च खित्तै फुसणा य । केलो य अर्तर भाग, भावे अप्पार्वेह चेव ॥ १ ॥ णेगमववहाराण आणुपुन्वी दिनाइ कि अत्थि णित्थि र णियमा तिण्णि वि अत्थि । णेगमववहाराण आणुपुन्वी-दिनाइ किं सिखजाइ  $^{2}$  असिखजाइ  $^{2}$  अणताइ  $^{2}$  नो सिखजाइ, नियमा अस-खिजाई, नो अणताई। एव दुण्णि वि। णेगमववहाराण आणुपुन्वीद्व्वाइ लोगस्स र्कि सिवजइभागे होजा <sup>2</sup> असिवजइमागे होजा <sup>2</sup> सखेजेंग्र मागेष्र होजा <sup>2</sup> अस-खेजेमु भागेमु होजा <sup>२</sup> सन्वलोए होजा <sup>२</sup> एग दन्त्र पहुच सखिजहभागे वा होजा, असिखज्ञहमारे वा होजा, सखेजेष्ठ भारेष्ठ वा होजा, असखेजेष्ठ भारेष्ठ वा होजा. (प)देस्णे वा लोए होज्जा । णाणादन्त्राइ पहुच नियमा सन्त्रलोए होज्जा । (आए- र्धतरेण वा सन्दर्ग्रसामु होजा) एवं अवस्तुपुरमीतृष्याणि अवसम्बद्धानि है नहा चेतापुप्यीए । एवं पुत्तका कामायुप्यीए वि तहा क्षेत्र भागियन्या । येगम-नगहाराच माणुपुरुवीवस्त्राई कासओं केनचिर होति है एवं वस्त्रं पहुच बहरनेनं निष्यि नमवा सहोतेर्वं असंदेखं कार्कः गामाद्यवादं पुरुष सम्बद्धाः पेपमत्त्रहा-

राण अचापुपुर्वीद्भाद कामओ क्ष्मविरं होति । एवं दर्भ पटुच सम्बन्धमण्डे कोसमं एई समर्थ नाजादम्बाई पहुत्र सम्बद्धा । अवसम्बगद्यार्थ पुष्पा । एपं इ.म. पहुन सफ्रहणमणुद्रोशचे हो समया वाणावस्तातं पहुन सन्दर्धा । नेपम-

वनहाराज भागुपुत्वीद्व्याणमंतरं शासको केनविरं होत् ! एवं दर्श पहुच अस्त्रेन पूर्ग समर्व उद्दोसेयं दो समया। यायाद्म्यादं पहुच चरित्र अंतरं। नेपमनवद्दारानं

भगानुपुष्नीदम्मार्गं अतरं नामओ केशबिरं होइ है एवं दर्श्व पहुन वहन्येर्ग हो समयं उद्दोसेमं असंखेलं कालः। जानादम्बाई पहुन्न नहिन अंतरं । मेगमवन्दरार्ण भवतम्बयद्व्याज पुरुष्य । एय दश्य पहुच बहुकोर्ग एवं समर्व उद्दोरेन अर्थनेत्र कार्क । मानादम्बाह पहुच नरिव सरारे । मागभावभप्पावर्डु चव सहा केवानुप्रनीर तहा सामित्रकाई जान तेत अलुगम । तिर्ते गेयमववहाराचे अजीवमिद्रिया शब्दे पुष्पी ॥ ११२ ॥ से 🎋 तं संगहस्य अनोवनिश्चिमा कामापुष्पी । संगहस्य भनोषमिद्दिना काळालुएको पंचनिद्दा कनता । तंबद्दा-अञ्चयसम्बद्धन १ मीतस्य किचम्या २ भंगोक्दंसम्या ३ छमोबारे ४ ज्लुगमे ५ ॥ ११३ ॥ से 🕏 है छन इस्स अङ्कपनगरूनमा । संगहस्य अञ्चयनपरननया-एयाई पच वि दाराई वहां केवाजुपमीए सगहस्य गाळाजुपमीए वि तहा मामिसभावि । अवरं दिस<sup>्त्रामि</sup> सावो बाव सेर्च सञ्चयमे । सेर्च संबद्धस्य व्ययोवनिद्धिता बाजस<u>म्पूर</u>मी ॥ ११४ ॥ से कि तं अविविद्या कालागुपुर्वा ! स्वयमिद्या कालागुप्रमी तिविद्या प्रवासी तसदा-पुष्पानुपुष्पी १ पण्यस्पुष्पी २ अणालुपुष्पी ३ । छ कि ते पुष्पानुपुष्पी पुरुवानुपुरुवी-समप् १ आवलिया २ जाणापाण् ३ वोदे ४ छवे ५ सङ्को ६ नहीं रते ७ पनचे ८ मासे ९ एक १ अयणे १९ संक्ष्यारे १२ खुरो १३ वाससए १४ बाससङ्ख्ये १५ बासस्वसङ्ख्ये १६ पुष्पंगे १७ पुष्पं १८ तुब्दिगे १९ तुब्दिए १ अवर्थे १९ अवर्थे २९ अवर्थे २३ लवने २४ <u>बह</u>न्ये १५ **ह**ईए २६ उप्पक्तो २४ उपके २८ पतर्मने २९ पत्ने १ वक्तियो ३१ वस्ये १ अस् निवरंगे ३३ शस्पनिवरे ३४ मठयंगे ३५ मवयः ३६ नवसी ३७ नटए ३४ परुपंगे ३९ परुष् ४ चुक्किमो ४९ चुक्किमा ४२ सीसपहेरिक्ती ४३ सीसपहेरिका ४४ पिकानोनमे ४५ सावरोनमे ४६ कोसप्पिकी ४७ संस्यप्पिकी ४४ पोनास्त्री

येंट ४९ अतीतद्वा ५० अणागयदा ५१ सव्बद्धा ५२ । सेत पुच्वाणुप्ची । से कितं पच्छाणुपुव्वी <sup>२</sup> पच्छाणुपुव्वी-सव्बद्धा ५२ अणागयद्धा ५१ जाव समए १ । सेत्त पच्छा-णुप्वनी । से किं त अणाणुपुव्वी ? अणाणुपुव्वी-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए अणतगच्छगयाएं मेढीए अण्णमण्णव्भासो दुस्वृणो । सेत्तं अणाणुपुन्वी । अहवा उवणि-हिया कालाणुपुच्वी तिविहा पण्णत्ता । तजहा-पुट्याणुप्ववी १ पच्छाणुप्ववी २ अणाणु-पुष्वी ३। से किं तं पुष्वाणुपुष्वी १ पुष्वाणुपुष्वी-एगसमयहिङ्ए, दुसमयहिङ्ए, तिसमय-हिरए जाव दसममयहिङए, सखिजममयहिङए, असखिजसमयहिङए । सेत्त पुट्याणु-पुव्वी। से किंत पच्छाणुप्ववी १ पच्छाणुप्वयी-असखिजममयहिङए जाव एगममयहि-इए । सेत पच्छाणुपुन्नी । से कि तं अणाणुपुन्नी <sup>१</sup> अणाणुपुन्नी-एयाए चेन एगाइयाए एगुत्तरियाए असिक्वगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णव्भासो दुरवूणो । सेत अणाणु-पुन्वी । सेत्त उवणिहिया कालाणुपुन्वी । **सेत्तं कालाणुपुन्वी ॥** ११५ ॥ से किं त उक्षित्तणाणुपुरवी <sup>२</sup> उक्षित्तणाणुपुरवी तिविहा पण्णता । तजहा-पुरवाणुपुरवी १ पन्छाणुपुच्वी २ अणाणुपुच्वी य ३ । से किं त पुच्चाणुपुच्वी १ पुच्चाणुपुच्वी-उसभे १ अजिए २ सभवे ३ अभिणद्णे ४ सुमई ५ परमप्पहे ६ सुपासे ७ चदप्पहे ८ सुविही ९ सीयले १० सेजासे ११ वासुपुजे १२ विमले १३ अणते १४ वम्मे १५ सती १६ कुथू १७ अरे १८ मही १९ मुणिसुव्वए २० णमी २१ अस्ट्रिणेमी २२ पासे २३ वद्धमाणे २४ । सेत्त पुन्वाणुपुन्वी । से किं तं पच्छाणुपुन्वी १ पच्छाणु-पुव्वी-बद्धमाणे २४ जाव उसमे १ । सेत्त पच्छाणुप्ववी । से कि त अणाणुपुव्वी १ अणाणुपुव्वी-एयाए चेत्र एगाइयाए एगुत्तरियाए चउचीसगच्छगयाए सेढीए अण्ण-मण्णव्मासो दुहवूणो । सेत्त अणाणुपुव्वी । सेत्तं उक्कित्तणाणुपुव्वी ॥ ११६ ॥ से किं त गणणाणुपुरवी १ गणणाणुपुरवी तिविहा पण्णता । तंजहा-पुरवाणुप्रवी १ पच्छा णुप्व्वी २ अणाणुपुव्वी ३। से किंत पुव्वाणुप्व्वी <sup>२</sup> पुव्वाणुपुव्वी-एगो, दस, सय, सहस्स, दससहस्साइ, सयसहस्स, दससयसहस्साइं, कोडी, दसकोडीओ, कोडीनय, दसकोडिसयाइ। सेत्त पुव्वाणुपुव्वी। से किं तं पच्छाणुपुव्वी 2 पच्छाणुपुव्वी-दसकोडिसयाइ जाव ए(क्षो)गो । सेत्त पच्छाणुपुव्वी । से किं त अणाणुपुव्वी ? अणाणुपुव्वी-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए दसकोडिसयगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णव्मासो दुरूवूणो । सेत्त अणाणुपुव्वी । सेत्तं गणणाणुपुव्वी ॥ ११७ ॥ से किं त सठाणाणुपुच्ची १ सठाणाणुपुच्ची तिविहा पण्णत्ता । तजहा-पुट्वाणुपुट्वी १ पच्छाणुपुट्वी २ अणाणुपुट्वी ३।से किं त पुट्वाणुपुट्वी १ पुष्वाणुपुब्वी-समचउरसे १ निग्गोहमढछे २ साई २ खुज्जे ४ वामणे ५ हुडे ६ । ७० सुत्ता०

सेतरेण वा सवरपुष्छास होजा) एवं अधाणुपुष्यीव्यामि अवसम्बद्धानि वि नदा बेताहपुरमीए। एवं फुसमा कारुएपुरमीए नि तहा चेन भानिसमा। नेग्म-नगहाराण आयुपुरमीदस्थाहं कासओ कंशविरं होति ! एर्ग तस्यं पद्भा बहनोनं तिन्य समया उद्दोरेण वर्षकेण काकः । णाणाङ्ग्याई पृष्टव सम्बद्धाः। नेगमनन्त्रः रानं जगाणुपुन्नीद्याद कासमो धनकिरं होति ! एगं दर्भ पद्भ समझन्मर्ड कोरोजं एई समर्थ जाजावस्ताह पहुच सम्बद्धा । अवसम्बग्धवस्तानं प्रनाम हर्न दम्मं पहुच अञ्चल्यमनुद्रोसेणं दो समया जालादम्बक्षं पहुच सम्बद्धा । सेम्प नवहारामं आरुपुरनीद्य्याणमंतरं चाकलो केलविरं होत् है एमं दर्श एउच जहन्येर्व एर्थं समय उद्दोसेय दो समया। याजादम्बाई पुत्रम महिप अट्टरं। नेगमक्कारा<sup>म</sup> मगलुपुन्नितम्बार्च अतरं काकमो केनन्तिरं होत् । एवं क्ष्मं पहुन बहुन्ने में समयं उद्दोत्तेर्यं असंकेज काळ । जायात्रव्यात् पहुष्य वरिष अंतरं । वेगमव्यद्वाराण अवतम्बादमार्ज पुचल ! एवं दर्ज पहुच बहुन्तेचं एर्ग समय उद्योगेन अस्त्रेजं क्षतं । नापादन्तात् पहच परिच अंतरं । माधमावनप्पावहं चेव नहा केपन्तपुर्नीर तहा मान्यसमाह जान क्षेत्र व्युक्त 💥 तं येगमवबद्वाराचं अचीवमितिया वासी पुप्रची॥ ११२ ॥ से के लं∗ अगोनमिहिया शासल्य क्रियम्या २ संयोक्तरः चेतालपन्दीय १२ **छ**गे १३ वासमय १४ < तुक्तिकी १९ तुक्तिए १ वे २४ <u>इ.इ.</u>सी २५ <u>इ.इ</u>ए २६ मक्रियंगे ११ मक्रिये ३ साच-१५ मतए १६ नतकी २० नक्ए १८ **मृक्तिया ४२ सीसपहेलिजीय ४३ सीसपहेलिका ४४** ४६ मोशियमी ४७ वस्सियमी ४४ पोगाइपरि

येंहे ४९ अतीतद्धा ५० अणागयद्धा ५१ सव्यद्धा ५२ । सेत्तं पुव्वाणुपृव्वी । से कित पच्छाणुपुन्वी १ पच्छाणुपुन्वी-सन्बद्धा ५२ अणागयद्धा ५१ जाव समए १ । सेत्तं पच्छा-णुपुन्नी । से कि त अणाणुपुन्नी ? अणाणुपुन्नी-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए अणतगन्द्धगयाप् सेढीए् अण्णमण्णव्भासो दुस्वूणो । सेत्त अणाणुपुन्वी । अहवा उवणि-हिया कालाणुपुन्वी तिविद्दा पण्णता । तंजहा-पुन्वाणुपुन्वी १ पच्छाणुपुन्वी २ अणाणु-पुब्वी ३। से कि त पुब्वाणुपुब्वी <sup>१</sup> पुब्वाणुपुब्वी-एगसमयद्विइए, दुसमयद्विइए, तिसमय-द्विरए जाव दससमयद्विडए, सखिजसमयद्विरए, असखिजसमयद्विरए । सेत्त पुन्वाणु-पुन्वी। से किं त पच्छाणुपुन्वी <sup>२</sup> पच्छाणुपुन्वी—असखिजनमयद्विइए जाव एगसमयद्वि-इए । सेत्त पच्छाणुपुन्वी । से किं त अणाणुपुन्वी <sup>2</sup> अणाणुपुन्वी ~एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए असिखजगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णन्भासो दुरुवूणो । सेत्त अणाणु-पुन्वी । सेत्त उवणिहिया कालाणुपुन्वी । से**त्तं कालाणुपुन्वी** ॥ ११५ ॥ से किं त उक्तित्तणाणुपुव्वी 2 उक्तित्तणाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता । तजहा-पुन्वाणुपुव्वी १ फ्छाणुपुन्वी २ अणाणुपुन्वी य ३ । से किं त पुन्वाणुपुन्वी <sup>2</sup> पुन्वाणुपुन्वी-उसभे १ अजिए २ समवे ३ अभिणदणे ४ समई ५ परमप्पहे ६ सुपासे ७ चदप्पहे ८ चुविही ९ सीयले १० सेजासे ११ वासुपुजो १२ विमले १३ अणते १४ वम्मे १५ सती १६ कुथू १७ अरे १८ मही १९ मुणिसुन्वए २० णमी २१ अरिट्डणेमी २२ पासे २३ वद्धमाणे २४ । सेत्त पुळ्वाणुपुळ्वी । से किंत पच्छाणुपुळ्वी <sup>२</sup> पच्छाणु-पुव्वी-वद्धमाणे २४ जाव उसमे १ । सेत्त पच्छाणुपुव्वी । से किं त अणाणुपुव्वी १ अणाणुपुन्त्री-एयाए चेत्र एगाइयाए एगुत्तरियाए चडवीसगच्छगयाए सेढीए अण्ण-मण्णब्मासो दुरूवूणो । सेत्त अणाणुपुन्वी । से**त्तं उक्तित्तणाणुपुन्वी** ॥ ११६ ॥ से किंत गणणाणुपुन्वी <sup>२</sup> गणणाणुपुन्वी तिविहा पण्णत्ता । तंजहा-पुन्वाणुपुन्वी १ पच्छा णुपुन्वी २ अणाणुपुन्वी ३। से कि त पुन्वाणुपुन्वी <sup>2</sup> पुन्वाणुपुन्वी-एगो, दस, सय, सहस्स, दससहस्साइ, सयसहस्स, दससयसहस्साइ, कोडी, दसकोडीओ, कोडीसय, दसकोडिसयाइ । सेत्त पुव्वाणुपुव्वी । से किं त पच्छाणुपुव्वी ? पच्छाणुपुव्वी-प्सकोडिसयाइ जाव ए(क्षो)गो । सेत्त पच्छाणुपुव्वी । से किं त अणाणुपुव्वी ? चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए दसकोडिसयगच्छगयाए अणाणुप्वी-एयाए सेढीए अण्णमण्णन्भासो दुरूवूणो । सेत्त अणाणुपुन्नी । सेत्तं गणणाणुपुन्वी ॥ १९७॥ से किंत सठाणाणुपुच्वी <sup>१</sup> सठाणाणुपुच्वी तिविहा पण्णत्ता । तंजहा-पुच्वाणुपुच्वी १ पच्छाणुपुच्वी २ अणाणुपुच्वी ३। से किं त पुच्वाणुपुव्वी १ पुन्वाणुपुन्वी-समन्वउरंसे १ निग्गोहमढले २ साई ३ खुजे ४ वामणे ५ हुडे ६ ।

७० सुत्ता०

थेतं पच्छालुपुर्वतः । से 🎋 तं अवानुपुर्वतः ! वानानुपुर्वती-स्थाप् चेत्रः प्रयादगार एगुत्तरियाए छन्दळनवाए सेबीए अञ्चयन्त्रकासी दुरुषुणो । सेत्र समह्युन्ती । सेचं संडापायुप्रकी ॥ १९८॥ है है व सामानारीमायुप्नी । सामानारीमा सुप्यो तिविद्वा क्याता । तंत्रदा-पुष्यालुपुष्यो १ प्रकालुपुष्यो २ श्रवालुपुष्यो ३।

ध कि ते पुरुषाश्रपुरुषी । पुरुषाश्रपुरुषी-बाह्या-इच्छेन निर्को-सहकरि) अन्तरिर्धेना व निरोद्विया। भाषुस्थ्यमी य पविष्यस्थी श्रंक्षी य निर्मतना ॥ १ ६ स्थलेप्यी व श्राप्ते समायारी मने इसमिद्दा र । सेतं पुष्पालपुष्पी । से कि तं पण्यालपुरुवी ! पण्यात पुर्म्या-जनसंपनी बार इच्छायोरो । सेतं पच्छायुप्रमी । से कि तं समानुपुर्मी अनस्य भी-एयाए चेव एगहवाए एगत्तरियाए दसगच्छमदाए सेद्रीए अन्वसन्य म्सासो पुरुष्णो । सेतं भगानुपन्नी । सेतं सामायारीसानुपुर्व्वी ४ ११९ ३ हे 🖹 तं माना<u>जपुर्वतो । भागाजपुर्वती तिनिका</u> पञ्चलता। तंत्रहा—पुर्व्वा<u>यपुर्वती १</u> पुरु<u>क्तपुर</u>्वती १ धमानुपुन्नी १ । से कि तं पुन्नासुपुन्नी है पुन्नासुपुन्नी-उदहर १ उन्हिन्द <sup>६</sup> बाहर १ दाओक्समिर ४ पारिकामिर ५ सक्तिवाहर ६ । सेत प्रव्यावप्रध्वी । से मि र्तं पच्छा<u>नपुष्</u>नी <sup>इ.</sup> पच्छा<u>नपुष्</u>नी-समिनाहपु ६ जान सन्दर्पु १ । सेतं पच्छानुपुर्नी से कि ते कजानुपूर्णी है जजानुपूर्णी-एसाए चेन एसाइसाए एक्सरेनाए इस<del>न्हर</del> याए देवीए अञ्चलज्ञकासी <u>वृस्त</u>्यो । देतं जगलपुरमी । सेन्त आवाणपुरमी । सेचं आप्यपूर्व्या 🛭 १२० 🗈 'आणुपूर्व्या' ति पर्य समत्त ॥ से कि ते मार्स | यासे इसकि प्रवासी । तंबद्दा-प्रायमे १ हुवासे १ तवास १ वरमासे ४ पंचपासे ५ क्यासे ६ सत्त्वासे ७ बहुवासे ८ वरमासे ९ इसकी १

॥ १२९ ॥ से कि ते एगणाने <sup>६</sup> एगणाने-नासून-जामानि कानि कानि व स्थानि गुजाय फुक्सार्च व । तेरि साममनिक्की जामी ति परविपासण्या ॥ १॥ सेर्स्ट पर्यो आपसे त १२२ त से कि तें बुजाओं हे बुजाओं सुविद्ये पत्यक्षेत्र । तैवहा—प्यक्सिए व १ क्रोपक्सिए च १ । से कि तें प्राक्सिए हे प्राक्सिए अधेगविद्ये पत्रकारिए स् ही भी वो हो। रीत एगक्करिए। से किंत अलेगक्करिए र अवेगक्करेए-<sup>क्</sup>वी भीमा कना साध्य : ऐसे क्येगक्सरिए : कहवा तुवाने तुमिहे पन्तते : तंत्र्या बीवजामे व १ सजीवणामे व २ । से कि तं जीवणामे ! जीवणामे अनेमविद्दे पन्नते ! तंत्रहा-देवदक्ती जन्नदक्ती निष्हुदक्ती सीमदक्ती । सेत्त जीववासे । से 🏗 तं व्यरीव-वामे १ अजीवजामे अध्येगविद्वे पण्यते । तंत्रहा-वदो पडो वडो रहो । सेतं अजीव १ ही २ सी (अवस्थेते) १ मी ४ मी।

णामे । अहवा दुणामे दुविहे पण्णते । तंजहा-विसेसिए य १ अविसेसिए य २ । अवि-सेसिए-दव्वे। विसेसिए-जीवदव्वे, अजीवदव्वे य। अविसेसिए-जीवदव्वे। विसेसिए-णेरङए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे। अविसेसिए-णेरइए। विसेसिए-रयणप्पहाए, सक्षरप्पहाए, वाछ्यप्पहाए, पकप्पहाए, धूमप्पहाए, तमाए, तमतमाए। अविसेसिए-रयणप्पहापुढविणेरइए । विसेसिए-पज्जत्तए य, अपज्जत्तए य । एव जाव अविसेसिए-तमतमापुढविणेरइए । विसेसिए-पज्जत्तए य, अपज्जत्तए य । अविसेसिए-तिरिक्ख-जोणिए । विसेसिए-एगिंदिए, वेइंदिए, तेइदिए, चउरिंदिए, पर्चिदिए । अविसेसिए-एगिंदिए। विसेसिए-पुढविकाडए, आउकाइए, तेउकाडए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए। अविसेसिए-पुढविकाइए । विसेसिए-मुहुमपुढविकाइए य, वायरपुढविकाइए य । अविसेसिए-सुहुमपुढविकाइए । विसेसिए-पजन्तयसुहुमपुढविकाइए य, अपजन्तय-स्हुमपुडविकाइए य । अविसेसिए-वायरपुडविकाइए । विसेसिए-पज्जत्तयवायरपुढ-विकाइए य, अपजन्तयवायरपुढविकाइए य। एव आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सङ्काङए, अविसेसियविसेसियपज्जत्तयअपज्जत्तयभेएहिं भाणियव्वा । अविसेसिए-वेइदिए । विसेसिए-पजन्तयवेइदिए य, अपजन्तयवेइदिए य । एव तेइदियचउरिंदिया वि माणियन्वा । अविसेसिए-पर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-जलयरपर्चिदिय-तिरिक्खजोणिए, थलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए, खहयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए । अविसेसिए-जलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-समुच्छिमजलयरपर्चिदिय-तिरिक्खजोणिए य, गञ्भवक्कतियजलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए य । अ्विसेसिए-ससुन्छिमजलयरपचिंदियतिरिक्याजोणिए । विसेसिए-पजत्तयससुच्छिमजलयरपेचि-वियतिरिक्खजोणिए य, अपज्ञत्तयसमुच्छिमजलयरपचिदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेतिए-गव्भवक्षतियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पजन्तयगव्स-विक्षतियजलयरपिचिदियतिरिक्खजोणिए य, अपजत्तयगञ्भवक्षतियजलयरपिचिदिय-तिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-थलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-चडप्पय-थल्यरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए य परिसप्पथलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेतिए–चडप्पयथलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेतिए–सम्मुच्छिमचड-प्पययलयरपचिदियतिरिक्खजोणिए य, गञ्मवक्षतियचउप्पययलयरपचिदियतिरि-क्लजोणिए य । अविसेसिए-सम्मुच्छिमचउप्पयथलयरपर्चिदियतिरिक्यजोणिए । विसेनिए-पजन्तयसम्मुच्छिमचडप्पयथलयरपचिदियतिरिक्खजोणिए य, अपजन्तय-सम्मुच्छिमचङप्पययन्यरपचिदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेतिए-गब्भवद्गतिय-चडप्पयथलयरपचिदियतिरिक्सजोणिए । विसेसिए-पद्मत्तयगब्भवकतियचडप्पयथल-

सेत प्रधानपुरनी । से कि तं भणानपुरनी है भणानपुरनी-एनाए चेन एगाउनाए एगुत्तरियाए स्थानकागवाए सेबीए भाज्यसम्बन्धासी हरुमूची । सेर्च व्यानुसुम्भी । सेचं संठाणायुप्यो ॥ १९८॥ से ६ व सामागरीजानुस्थी ! सामाजरीमा-पुप्रको तिनिहा पञ्चला । तंत्रहा-पुन्नानुपन्नी १ पञ्छानुपन्नी १ मणसुपन्नी १। से कि स पुरुषागुपनी । पुन्नानुपुन्नी नाइहा एकंग मिकी सहहारी आवरिनेया व निसीक्ष्मी । आयुच्छर्णी य पश्चिपुच्छी अंतर्णी व निर्मातनी ॥ १ ॥ सवस्पनी य बाब, समावारी मने दसनिका र । सेतं प्रम्वालपुरुषी । से कि त प्रस्तालपुरुषी । क्रिकेट प्रभी-उदसपरी कान इसकागारी । केंग्रे रच्छावपन्ती । से कें से अपानस् चयालपुर्व्या –एवाए चेव एनाइवाए एगुत्तरिवाए इसगच्छगवाए सेबीए धन्वमण क्सासी दुरक्गो । सेतं जवालुपुन्नी । सेतं सामायारीआणुप्ननी ॥ ११९ ॥ से के र्तं मानामुप्रन्ती है मानामुप्रन्ती तिनिहा प्रणता । तबहा-प्रमानपुरनी १ प्रकारपुरनी र भभाषुपुर्वती १ । से कि तं पुर्व्वाणुपुर्वती र पुर्व्वाणुपुर्वती -संबद्ध्य १ उत्तरमिप १ बात्स् ३ प्रजोक्समिप् ४ पारिवामिए ५ सकिवाह्य् ६ । सेर्त प्रव्वा<u>न्स</u>्वा । वे 🛱 र्तं परकालपुरुषी है परकारपुरुजी-सविवाहण ६ जाव सवहण १ । सेर्त परकालपुरुषी से कि ते अवानुपुर्व्यो है अवानुपुर्व्या-एसाए चेव एसाइसाए एगुस्तरिमाए इस्वान नाप् सेबीप् कन्नमञ्जन्मासो तुरुक्तो । सेतं समायुप्तनी । सेतं भाषापुप्तनी सेचं आयुप्रवी ॥ १२० ॥ 'बायुप्रवी' ति पर्य समये ॥ वे के र्र मार्यः मार्ग वद्यविद्ये पञ्चति । तंत्रदा-प्रायाने १ हमार्ग १ चवजाने ४ पंचनाने ५ क्रमार्ग ६ वस्त्राने ४ व्यक्षाने ४ क्रमार्ग १ द्वराने १ u १२१ ॥ से कि रो एगजामें <sup>9</sup> एगजामें नगावा-जामाणि जानि काणि वि व<sup>जानी</sup> गुजाज एजजार्ज जा तीर्से आगमनिक्के जार्म कि एकविया सच्या ॥ १॥ सेरो <sup>द्रा</sup> थासि ॥ १२२ p से कि ते पुणार्य हैं हुणासे दुनिहें पञ्चले । तंबहा—प्यन्तारिए हैं है क्षत्रेगक्तारिए स र । से कि त प्रथमपारिए हैं प्रस्तवारिए क्षत्रेगनिहें क्लाते । तंत्रिहें ही थी भी भी । रोग एगएकारिए । से कि ते अभेगककारिए ! अभेगमकारिए-क्ष वीजा समा मास्य । वेशं अनेगणकारिए । महना बुधामे इतिहे क्यारे । तंत्री

जीवपासं य १ काजीवणासे व २ । से कि एँ अविष्णाने हैं जीवणासे अधिगन्धि प्रकार । र्तमहा-बनवत्त्रो जन्मवत्तो निम्नुवत्तो सोमवत्त्रो । सेस नीवणामे । सं कि से नाम

पासे हैं अजीवजाने अपेशनिक्के क्यारों। तंत्रका-चडो पडो चडो रहो। ऐर्स सर्वीय १ ही २ सी(अलब्बोसे) ३ मी ४ मी।

णामे । अह्वा दुणामे दुविहे पण्णते । तंजहा-विसेसिए य १ अविसेसिए य २ । अवि-सेंसिए-दन्वे। विसेसिए-जीवदन्वे, अजीवदन्वे य। अविसेसिए-जीवदन्वे। विसेसिए-णेरइए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे । अविसेसिए-णेरइए । विसेसिए-रयणप्पहाए, सक्करप्पहाए, वाळुयप्पहाए, पकप्पहाए, ध्रूमप्पहाए, तमाए, तमतमाए। अविसेसिए-रयणपहापुढविणेरइए । विसेसिए-पज्जत्तए य, अपज्जत्तए य । एव जाव अविसेसिए-तमतमापुढविणेरइए । विसेसिए-पज्जत्तए य, अपज्जत्तए य । अविसेसिए-तिरिक्ख-जोणिए । विसेसिए-एगिंदिए, वेइंदिए, तेइदिए, चउरिंदिए, पर्चिंदिए । अविसेसिए-एगिदिए । विसेसिए-पुढविकाइए, आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए । अविसेसिए-पुढविकाइए । विसेसिए-मुहुमपुढविकाइए य, वायरपुढविकाइए य । विवेसिए-सुहमपुढविकाइए । विसेसिए-पज्जतयसहुमपुढविकाइए य, अपज्जतय-पुहुमपुढिविकाइए य । अविसेसिए-वायरपुढिविकाइए । विसेसिए-पजत्तयबायरपुढ-विकाइए य, अपजात्तयवायरपुढविकाइए य। एव आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए, अविसेसियविसेसियपज्जत्तयअपज्जत्तयभेएहिं भाणियव्वा । अविसेसिए-वेइदिए । निसेसिए-पज्जत्तयवेइदिए य, अपज्जत्तयवेइदिए य । एव तेईदियचउरिंदिया वि भाणियन्वा । अविसेसिए-पर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-जलयरपर्चिदिय-तिरिक्खजोणिए, थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए, खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । अविसेतिए-जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेतिए-समुच्छिमजलयरपर्चिंदिय-तिरिक्खजोणिए य, गञ्भवक्कतियजलयरपचिदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-समुच्छिमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पजत्तयसमुच्छिमजलयरपंचि-दियतिरिक्खजोणिए य, अपजत्तयसमुच्छिमजलयरपचिदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-गञ्भवक्षतियजलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पज्जत्तयगञ्भ-विष्कृतियजलयरपिचेदियतिरिक्खजोणिए य, अपज्जत्तयगञ्भवद्गतियजलयरपिचेदिय-तिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-चडप्पय-<sup>यल्यरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए य परिसप्पयलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए य ।</sup> अविमेसिए-चडप्पयथलयरपर्चिदियतिारेक्खजोणिए । विसेसिए-मम्मुच्छिमचड-प्पयथलयरपचिदियतिरिक्खजोणिए य, गञ्मवद्गतियचडप्पयथलयरपचिदियतिरि-क्लजोणिए य । अविसेसिए-सम्मुच्छिमचउप्पययलयरपर्चिटियतिरिक्खजोणिए । विसेतिए-पजत्तयसम्मुच्छिमचडप्पयथलयरपचिदियतिरिक्खजोणिए य, अपजत्तय-सम्मुच्छिमचडप्पयथल्यरपचिदियतिरिक्यजोणिए य । अविसेसिए-गब्भवक्षतिय-चडप्पयथत्यरपर्चिदियतिरिक्यजोणिए । विसेसिए-पज्जत्तयगन्भवद्वतियचडप्पयथतः

<u>स</u>चागमे 33 E **अजुओन्द्**रसूर्च सेर्त पुम्पानुपुत्नी । से ६६ संपष्टमाणुपुत्रनी 🖁 प 🗕 🚰 ६ जाव सम्पन्नदरेंसे 🕦 सेचं पच्छाणुपन्थी । से कि तं अणाणुपन्थी है अनालुपन्थी-एकाए जेन एगदनार् पुगुत्तरियाप् स्रतन्त्रमयाप् सेवीप् क्षणगराज्यक्सासी दुरुषुको । सेर्न क्षणापुरुषी । सेचं संटाप्याणुद्धति ॥ १९८॥ हे कि त समागारीभावपुष्मी ! समाक्षीणः तुपुष्मी तिविद्या प्रणाता । तैवद्या-पुष्माणुपुष्मी १ पच्छानुपुष्मी १ भवावपुष्मी १। धे कि तं पुन्नानुपन्नी ? पुष्पालपुष्नी-गाहा-एक्के-निक्कै-तहहारी आवरिसेंग र निर्दादिना। भाषु सर्था य परिपुच्छा संदर्भा य निर्मतना ॥ १॥ जबसंदर्भी व करे धमायारी मने वसन्ति। उ । सर्च पुष्पानुपुष्पी । से कि व पर्यानुपुष्मी ! क्यारी पुष्ती-उपसंपनी काम इच्छागारी । सेतं पच्छानुपन्ती । से 🏗 से बानानुपन्ती ह भजानुपुन्वी-एकाए चेव एगाइकाए एगुत्तरियाए दसगन्वत्रमयाए सेद्रीए सन्वयन्त ब्मासो दुरन्त्यो । सेत्तं अवशापुर्व्यो । सेत्तं स्वामायारीआणुपुरवी ॥ १९९ ॥ से हैं तं मानागुप्रभी ! भावानुपुर्व्यो तिविद्या पण्यता । तंबद्या-पुरम्बसुप्रभी १ परस्तुपुर्व्यो १ मजागुपुरमी १ । से 🏗 वं पुरुराजुपुरमी 🖁 पुरसाजुपुरमी—उदहए १ उनसमिद ९ साइए ३ खमोबसमिए ४ पारियामिए ५ सनिपाइए ६ । शर्त पुरुबसुपन्नी । से वि र्तं पच्छानुपुम्बी र पच्छानुपन्नी-समितारए ६ जार उदश्य १ । सेतं पच्छानुप्रमी

है हि से बजातुर्जी । समायुर्ज्यो-एवाए येव एगाइयाए एएतिसाए एन्यान्य वाए दिए अन्यस्थानाही दुन्यों। होते समायुर्ज्यों (स्त्य आयाचुर्जी। हित्त पर्य प्रस्ता आयाचुर्जी। हित्त पर्य प्रस्ता अध्याचुर्जी। हित्त पर्य प्रस्ता अध्याचुर्जी। हित्त पर्य प्रस्ता अध्याचे एक्षित प्राथम । हित्त है एक्ष्यों से एक्ष्यों के प्रकार के प्रवार के प्रकार के प्रवार के प्रस्ता के प्रति आयोगि है जो है है प्रकार के प्रकार के प्रवार के प्रकार के प्रकार

तंत्रहा-क्षत्रमे रूप्यक्तो भिर्मुक्ता शोगक्ता । सेन औषमास । मंति सर्वेत्र बाम रे अर्थाकास अनेगपिहे पण्या । तंत्रहा चत्रा पत्रो को रही । सेने सर्वेत्र

र्गार सी (भाग्नेती) हे भी ४ भी।

जहा तेरे योलों का योग हो वहा चातुर्मास करें।

कावो तिर्द्धा योको होय, योक्प्यी खलप दोय। मिर्मेय यानक होय जहां में बतरणो ! उचारावि टोक होय पीयो बहु बस्ती होय कैय सुलय होय धीपध उचारवी ! मावक निम्मल होय पाता सुलम होय। पात्यपत्ती क्षमण होय, योको सिता फिरको ! माठमाय मी मोम होय, हत्य केल काल मात्र बोय। हेरे बोल मिस्ने जठे कामानो ही करको #²#

## ३४ असङमाइयों के नाम।

तारो नृते राति दिए ककाल में गाज बीज। बनुके ककाल तथा सूनी बजर मारी हैं। बाती बजर पक बिन्द बाकारो क्षामि काल। काली भीजी पूमन कर नज धात न्यारी है। हान मोल कोडी-राज, उरको मसाब बले, बन्द सूर्य भद्र राम सून्यु निवाद उर्ति है। यानक मांगे पढ़ियों मुझो वंबेहर को बहोबर। वीस बोल वाली कर बाती काला प्रक्रिये 828

कारावृत्र सामुक्षी कार्मोक कार्ति केति पूनम आर्थ । पेती लगती आयुक्षी पश्चिमा पांच प्रकास २ स्ट्रा सकाप व मणिये वारों समय में भड़ी कृषी हो हो दी पति । संस्मा साती रात्त होपार मान कारमकात उत्तरी कृत मयुती होत्र । ऋषि सातकान्य यों कहे सो विश्वन मध्यापे कोष २ ॥३॥ णामे । अहवा दुणामे दुविहे पण्णते । तंजहा-विसेसिए य १ अविसेसिए य २ । अवि-सेंसिए-दब्वे। विसेसिए-जीवदब्वे, अजीवदब्वे य। अविसेसिए-जीवदब्वे। विसेसिए-णेरइए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे। अविसेसिए–णेरइए। विसेसिए–रयणप्पहाए, सकरप्पहाए, वाळुग्रप्पहाए,पकप्पहाए, धृमप्पहाए,तमाए,तमतमाए। अविसेसिए-रयणप्यहापुढविणेरइए । विसेसिए-पज्जत्तए य, अपज्जत्तए य । एव जाव अविसेसिए-तमतमापुढविणेरइषु । विसेसिए-पज्जत्तए य, अपज्जत्तए य । अविसेसिए-तिरिक्ख-जोणिए । विसेसिए-एगिंदिए, वेइंदिए, तेइदिए, चर्डारेदिए, पर्विदिए । अविसेसिए-एगिंदिए। विसेसिए–पुढविकाइए, आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए। सिविसेसिए-पुढविकाइए । विसेसिए-सुहुमपुढविकाइए य, वायरपुढविकाइए य । अविसेसिए-सुह्मपुढविकाइए । विसेसिए-पजन्तयसुहुमपुढविकाइए य, अपजन्तय-ष्डुमपुढिनकाइए य । अविसेसिए-वायरपुढिविकाइए । विसेसिए-पजन्तयवायरपुढ-विकाइए य, अपजत्तयबायरपुढविकाइए य । एवं आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सङ्काङए, अविसेसियविसेसियपज्जत्तयअपज्जत्तयभेएहिं भाणियव्वा । अविसेसिए-वेइदिए । विसेसिए-पज्जत्तयवेइदिए य, अपज्जत्तयवेईदिए य । एव तेईदियचउरिंदिया वि माणियन्वा । अविसेसिए-पर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-जलयरपर्चिदिय-तिरिक्खजोणिए, थलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए, खहयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए। अविसेसिए-जलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-समुच्छिमजलयरपर्चिदिय-तिरिक्खजोणिए य, गब्भवक्कतियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अ्विसेसिए-समुच्छिमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पजन्नयसमुच्छिमजलयरपंचि-दियतिरिक्खजोणिए य, अपजन्यसमुच्छिमजलयरपचिदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-गञ्भवक्कतियजलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पज्जत्तयगञ्भ-विक्षतियजलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए य, अपज्जत्तयगब्भवक्षतियजलयरपर्चिदिय-तिरिक्सजोणिए य । अविसेसिए–थलयरपर्चिदियतिरिक्सजोणिए । विसेसिए–चडप्पय-यलयरपिचिदियतिरिक्खजोणिए य परिसप्पयलयरपिचिदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए–चरुप्ययलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए–सम्मुच्छिमचरु-प्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, गब्भवक्षतियचउप्पयथलयरपचिंदियतिरि-क्खजोणिए य । अविसेसिए-सम्मुच्छिमचउप्पयथलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेतिए-पजनयसम्मुच्छिमचरुप्यथलयरपचिदियतिरिक्खजोणिए य, अपजन्य-सम्मुच्छिमचडप्पयथलयरपचिदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-गट्भवक्षतिय-चडप्पयथलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पजत्तयगञ्भवकृतियचडप्पयथल-

•••	2000	F C
		दुवि ६ जान समयतस्य १।
		दुक्ती–एसाए चेव एयादवाए
		वुस्त्वो । सेत्तं समायुक्तीः
		यारीमालुपुम्बी । सामामारीमा
		क्लुपुर्वा १ अवलुपुर्वा १।
		मिल्की-तहकारी भागस्तिमा व तथा ॥ ९ ॥ सम्बद्धियो स सम्ब
		त्वात १ श त्वस्थाय य राज् कितं प्रकारमुखी ! प्रकार
समाबारा मन दसम्बद्धा च	। सत्त पुरमासुपुरमा । स	कित प्रकाशित्रकाः प्रकार भी । से किर्तक महिन्दी
		या । स्टब्स्ट क्या क्या विकास स्टब्स्ट क्या विकास स्टब्स्ट क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या
क्याची हरूको । येथे अन्य	नाइबाए पुरुवारबाए दर्	किर्णुपुरुषि ॥ ११९ व से
ने प्रकारको है सम्बद्ध	क्ष्या स्था सामायार विक्रिका काल्या जंदना-	पुष्पालुपुष्पी १ पकालुपुष्पी १
संबाज्यस्ति ३ । से कि ह	र प्रमाणकाती है प्रकारण	पुन्नी-उदहए १ उक्छनिए १
बाउप ३ चक्रोक्समिय ४	प्रतिषामित्र ५ स <b>विवा</b> स्त	६। सेतं पुष्पालपुरम्ये । हे हि
त पञ्चलपन्धी है पञ्चलप	म्बी–सविद्याद्य ६ काव र	व्हरू १। सेतं प्रकल्पामा
से किसं अवाजपुर्वा है का	मालपानी-प्रयाप चेव पर	क्षिप एग्रतिकार् स्थान
बाए सेबीए जन्मसन्यव्यास	ो दुस्यूका । धर्म जणानुप	मो। सेचे भाषा <b>पुर्<sup>मी !</sup></b>
क्षेत्रं समामान्त्री ॥ १३	o ii summon' for	त्यो स्टब्स् ।
से किं तंजान द्याने व	समिद्दे पञ्चते । तंबदा-ए	गयामे १ हुमाने १ हिमाने १ मे ८ नवजाने ९ वस्त्राने १
वतनामे ४ पंचनामे ५ 🔛	गमे ५ सत्तवामे ७ व्यापा	में ८ नवजाने ९ वस्त्राम ।
॥ १२१ ॥ से कि दे एगण	ामे ! एवणाने <b>-पादा-</b> -प	हमानि जानि कावि ने स् <sup>मान</sup>
गुजान पञ्चान था ठास न	गयमानसूस नामास्य प्रस्प	वेया सञ्चा ॥ १॥ सेसं वय
श्रोभंसार⊀ ॥ सम्बद्ध	(म) म ३ पुणान पुत्रक् ५०० . ले चनकक्रिय है चनकरसी	ति । र्टबहा-एगम्बरिए व १ ए अणेममिहे पन्नते । र्टब्स
A st st at Denn	म्बर्गाच्या । ते क्रिक्ट व्यवस्था	म्प्रिटिए र अधिग <del>रवा</del> रिए-स्वी
भीका प्रका शासा । शैन	क्रमेरा जातिक र प्राप्तिक	कारो विशेष एक्यते । <sup>सुम्बर</sup>
- केन्याचे - व स्वतीसमारो :	ா> ச <del>்சி இட்சினினா</del> ன்?	जीवकारी अर्चनित्र प्राप्त
चंच्या नेपाली उच्चावरी	क्रिकालको स्रोगमको । शे	ल अधिकारासि । सि विकास
यामे ! अजीवनामे अनेगरि	धेहे पण्यते । तंत्रहा-वडो	पद्यो कही रही। सेर्त सर्वक

१ ही २ सी (अवस्मेंसे) १ भी ४ थी।

सुचारामे [अनुभोरत्सपुर्य

णामे । अहवा दुणामे दुविहे पण्णते । तजहा-विसेसिए य १ अविसेसिए य २ । अवि-सेंसिए-दब्वे। विसेसिए-जीवढब्वे, अजीवदब्वे य। अविसेसिए-जीवदब्वे। विसेसिए-णेरइए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे । अविसेसिए-णेरइए । विसेसिए-रयणप्पहाए, सकरप्पहाए, वाछयप्पहाए, पकप्पहाए, धूमप्पहाए, तमाए, तमतमाए। अविसेसिए--रयणप्यहापुढविणेरइए । विसेसिए-पज्जताए य, अपज्जताए य । एव जाव अविसेसिए-तमतमापुढविणेरडए । विसेसिए-पज्जत्तए य, अपज्जत्तए य । अविसेसिए-तिरिक्ख-जोषिए । विसेसिए-एगिंदिए, वेईदिए, तेइदिए, चउरिंदिए, पर्चिंदिए । अविसेसिए-एगिंदिए । विसेसिए-पुढविकाइए, आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए । अविसेसिए-पुडविकाइए । विसेसिए-मुहुमपुडविकाइए य, वायरपुडविकाइए य । अविसेसिए-सुहुमपुढविकाइए । विसेसिए-पज्जत्तयसुहुमपुढविकाइए य, अपज्जत्तय-ष्ड्रिमपुढिनिकाइए य । अविसेसिए-चायरपुढिनिकाइए । विसेसिए-पजन्तयवायरपुढ-विकाइए य, अपज्जत्तयवायरपुढविकाइए य। एवं आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सङ्काङ्ण्, अविसेसियविसेसियपज्जत्तयअपज्जत्तयभेएहिं भाणियव्वा । अविसेसिए-वेइदिए । विसेसिए-पज्जत्तयवेइदिए य, अपज्जत्तयवेइदिए य । एव तेइदियचडरिंदिया वि भाणियव्वा । अविसेसिए-पर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-जलयरपर्चिदिय-तिरिक्खजोणिए, थलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए, खहयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए। अविसेसिए-जलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-समुच्छिमजलयरपर्चिदिय-तिरिक्खजोणिए य, गन्भवक्षतियजलयरपचिदियतिरिक्खजोणिए य । अ्विसेसिए-समुच्छिमजलयरपचिंदियतिरिक्याजोणिए । विसेसिए-पज्जत्तयसमुच्छिमजलयरपंचि-दियतिरिक्खजोणिए य, अपज्जत्तयसमुच्छिमजलयरपचिदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए–गडभवक्कतियजलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए–पज्जत्तयगड्भ-वक्षतियजलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए य, अपज्जत्तयगब्भवक्षतियजलयरपर्चिदिय-तिरिक्खजोणिए य। ् ेोसेए-थलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिए। विसेसिए-चडप्पय-लयर हिंदर ०० रपिंदियति विख्यानिए य ।

। विसेसिए-सम्मुच्छिमचड-तियचउ प्रथरपिनिद्यतिरि-प्रचिदियतिरिक्खजोणिए। चोणिए य, अपजत्तय-भविसेसिए-गञ्भवक्कतिय-मुगञ्भवक्कतियचडुप्पयथल-

[ बयुक्तेमास्त्री

**सु**चागमे

111

तो पिक्ष सहुँ व अता वर्ष्यायं ॥ ६॥ सेक्षं तिजासे ॥ २१४ व में में विचारमं व वर्षाव्यं एक्स्ता । वेडहा-आगमें न में में में १ वर्ष । सिपारें म । से कि ते आगमें व आगमें व आगमें व आगमें व आगमें न में में में १ वर्ष । सिपारें म । से कि ते आगमें १ आगमें न आगमें व अगमें व अगमे

2 B 8

य १ ज्यस्पित्यकां स १ । शास्त्र के वर्षायः वृत्रकारं । श्री-अलब-विद्रस्य ५ प्रवेश-अलब-प्रोटेस् श्री-अलब्दियाल्यिमार्गं अस्त्रामार्गं ५ लाश्चा प्राप्त-वंदश-अल्याल्यं दाराकं एकारा, १ लाश्चा व्यक्तिं, ११ गोर-इद्यालं एकारा, १ लाश्चा भागिय १ जेवार्स्य १ अल्यार्य्य १ कोस्य १ अस्तु ति सेवार्यं भावरं ति कारारार्यं अट्टण्ह कम्मपयदीण उदएण । सेत्तं उदइए । से किं त उदयनिष्फन्ने <sup>२</sup> उदयनिष्फन्ने दुविहे पण्णते । तजहा-जीवोदयनिष्पन्ने य १ अजीवोदयनिष्पन्ने य २ । से कि त जीवोदयनिष्फन्ने व जीवोदयनिष्फन्ने अणेगविहे पण्णते । तजहा-णेरइए, तिरिक्ख-जोणिए, मणुस्से, देवे, पुढविकाइए जाव तसकाइए, कोहकसाई जाव लोहकसाई, इत्थीवेयए, पुरिसवेयए, णपुसगवेयए, कण्हलेसे जाव सुक्कलेसे, मिच्छादिद्वी, सम्म-दिद्वी, सम्मामिच्छादिद्वी, अविरए, असण्णी, अण्णाणी, आहारए, छउमत्थे, सजोगी, ससारत्ये, असिद्धे । सेत्त जीवोदयनिष्फन्ने । से कि त अजीवोदयनिष्फन्ने 2 अजी-वोदयनिष्फले अणेगविहे पण्णते । तजहा-उरालिय वा सरीर, उरालियसरीरपओग-परिणामिय वा दन्व, वेडिव्वय वा सरीर, वेडिव्वयसरीरपञ्जोगपरिणामियं वा दन्व, एव आहारग सरीर तेयग सरीर कम्मगसरीर च माणियव्व । पञ्जोगपरिणामिए वण्णे, गघे, रसे, फासे । सेत्त अजीबोदयनिष्फन्ने । सेत्तं उदयनिष्फन्ने । सेत्त उदइए । से किं त उवसमिए <sup>2</sup> उवसमिए दुविहे पण्णते । तजहा—उवसमे य १ उवसमनिप्फण्णे य २ । से किं त उनसमे 2 उनसमे मोहणिजस्स कम्मस्स उनसमेण । सेत्त उनसमे । में किं त उवसमनिष्फण्णे ? उवसमनिष्फण्णे अणेगविहे पण्णत्ते । तजहा—उवसतकोहे ञोभे, उवसतपेजे, उवसतदोसे, उवसतदसणमोहणिजे, उवसतचरित्त-्या सुम्मत्तलद्धी, उवसामिया चरित्तलद्धी, उवसतकसायछउमत्य-🔁 ो । सेत उनसमिए । से किं त खहए <sup>2</sup> खहए दुविहे ्रे त्रयनिष्फण्णे य २ । से किं त खइए <sup>१</sup> खइए-अट्टण्ह ्। से कि त खयनिप्पण्णे ? खयनिप्पण्णे अणेगविहे गणधरे, अरहा, जिणे, केवली, खीणभाभिणिवोहिय-ा, खीणओहिणाणावरणे, खीणमणपज्जवणाणावरणे, ो, निरावरणे, खीणावरणे, णाणावरणिज्ञकम्मविप्प-गनिद्दे, खीणनिद्दानिद्दे, खीणपयले, खीणपयलापयले, गवरणे, खीणअचक्खदसणावरणे, खीणओहिदसणा-णावरणे, निरावरणे, खीणावरणे, दरिसणावरणिज्ज-जे, खीणअसायावेयणिजे, अवेयणे, निन्वेयणे, खीण-वेयणे, सुभासुभवेयणिजकम्मविष्पमुक्के, खीणकोहे जाव खीणलोहे, खीणपेजे, खीण-दोसे, खीणदसणमोहणिजे, खीणचरित्तमोहणिजे, अमोहे, निम्मोहे, खीणमोहे,

मोहणिजकम्मविप्पमुके, खीणणेरइयभाडए, खीणतिरिक्खजोणियाउए, खीणमणु-स्साउए, खीणदेवाउए,अणाउए, निराउए, खीणाउए, आउकम्मविप्पमुके, गइजाइ-

2222 संचागमे **विश्ववीगदास्य**र्प सरीरयोर्वगर्वजनसंबायनसंबयनसंठानश्रकेयवीदिविद्यंबायविष्यमुक्ते जीवप्रभागे चीगमप्रभवामे व्यामे निन्धामे चीलवामे प्रमाप्रमनामकमानिव्याहे; तीन उचामोए, सीमणीमागीए, अगोए, निम्बोए, सीमगोए, उचनीमगोत्तकमनिप्स्के चीनदार्जवराय, चीनसमंतराय, बीनमोर्गवराय, बीनवनमोर्गवराय, बीनकीर वंतराय, अर्थतराय, निरंतराय, चीनंतराय, अंतरावकम्मविष्मुक्षे; छिदे हैंने, मुक्ते परिनिम्तुए, सदगढे सम्बद्धकप्पद्वीणे । शेर्त स्वयनिप्यन्ते । शेर्त बहर् ! से कि ते सब्दोबसमिए ? बाब्दोबसमिए तबिडे पण्यते । तंत्रहा-बाब्दोबसमे व १ सम्बे बसमनिक्त्रजो न २ । से कि तं सक्षोतसम् । सभोतसमे-वदन्तं वाहरूमाण उन्हें-वसमेन तबदा-भागावरनिजन्स १ वस्यावरणिजन्स २ मोहनिजन्स ३ <del>व</del>र्ष रावस्य प्रभोवसमेयं ४ । सेच बाबोबसमे । से कि ई बाबोबसमानिपानो ! बाबे वसमनिष्यम् क्रणेगविहे पञ्चल । तंत्रहा-सभोवसमिना कामिनिवोद्विनपानकी बाव राओवसनिवा सनपञ्चवापक्रदी सजीवसनिवा सङ्गण्यानकदी स<del>मोवर्</del> मिया <u>प्र</u>यमञ्जापकवी क्रमोवसमिया विभेगनागळ्**दी** राजोवसमिवा क्**रह**रेंस<sup>ह</sup> सदी वजोवसमिना अवनक्ष्यंसम्बद्धी बजोवसमिना बोहिब्सम्बद्धी एवं सम्ब र्वतमञ्ज्ञी निष्कादसम्बद्धी सम्मनिष्कादसम्बद्धी राज्ञोक्समिना सामाइनवरिप करी एवं देवोबद्वावणस्त्री परिदारनिष्ठविष्यकरी शहुमसंपरावणरितन्त्री प् वरितापहरतस्या करोतरामिया वायस्या एवं सामनदी मोगक्यी ववमोयस्य दाओवस्मिया वीरियक्की एवं पंकिसवीरियक्की वास्त्रवीरिकक्की वास्त्रपंकिसवीर्थ यसकी दानोपरानिया चोहंदियककी जाव फासिंदियककी समोवसनिए भागार्य-बरे एवं प्रकारमध्ये ठाणंगवरे समगार्थवर्षरे विवाहपन्नविवरे नामावस्मरहा<sup>वरे</sup>

क्वासग्रह्मा अंतगड्सा अञ्चलरोक्नाइयहसा पन्हावागरमभरे निवान स्यवर राज्येवसमिए विद्विवालवरे राज्येवसमिए वर्षाच्यी जाव वरत्तापुर्वी क्षाओवसमिए गणी कामोवसमिए बाबए । सेर्स धानोबसमिनपण्ये । सेर्स कनोब समिए । से कि से पारिकामिए १ बारिकामिए दुविक्वे पञ्चते । संबद्ध-साम्पारि नामिए च ९ सनाहपारिनामिए य २ । से कि ते सक्षपारिचामिए हे सहपारिजानिर श्रवेगविद्दे क्यारे । र्रवदा-शाहा-तुल्यहरा सुन्यगुध्ये जुल्यवर्व सुन्यर्युहा चेर । श्रवसा व श्रवसंस्त्रका राज्या वैश्वमानगरा व 🛮 १ ॥ तकावावा दिशावही यक्रियं विज्ञृ, निरवाना प्रया जल्लानिया धूमिना महिया रतस्थाम वरी बरागा स्टोबरागा चंदपरिवेशा स्टपरिवेशा प्रक्रिचंदा पवित्रा इंदपन् सक्तमस्त्रा, कविङ्ग्रिया जनोहा, वासा वासपरा नामा वगरा परा क्या

पायाला, भवणा, निरया-रयणप्पहा, सक्करप्पहा, वालुग्रप्पहा, पकप्पहा, धूमप्पहा, तमप्पहा, तमतमप्पहा, सोहम्मे जाव अच्चुए, गेवेजे, अणुत्तरे, ईसिप्पन्भारा, परमाणुपोम्गले, दुपएसिए जाव अणंतपएसिए । सेत्त साइपारिणामिए । से किं त अणाइपारिणामिए १ अणाइपारिणामिए-धम्मत्यिकाए, अधम्मत्यिकाए, आगासत्थि काए, जीवत्थिकाए, पुग्गलत्थिकाए, अद्धासमए, लोए, अलोए, भवसिद्धिया, अभव-सिद्धिया । सेत्त अणाइपारिणामिए । सेत्त पारिणामिए । से किं त सिन्वाइए 2 सिन्नाइए-एएसिं चेव उद्इयउवसमियखङ्यखओवसमियपारिणामियाण भावाण दुगसजोएण तिगसजोएण चडकसजोएण पचगसजोएण जे निप्फजात सन्वे ते सिन्नवाइए नामे । तत्थ णं दस दुयसजोगा, दस तियसजोगा, पच चउकसजोगा, एगे पंचकसजोगे । तत्य ण जे ते दस दुगसजोगा ते णं इमे-अस्थि णामे उदइय-उवसमनिष्फण्णे १ अस्यि णामे उदह्यखाइगनिष्फण्णे २ अस्यि णामे उदहयखओ-वसमनिष्फण्णे ३ अत्थि णामे उदइयपारिणामियनिष्फण्णे ४ अत्थि णामे उव-समियखयनिप्फणो ५ अतिथ णामे उनसमियखओवसमनिप्फणो ६ अतिथ णामे उनसमियपारिणामियनिष्फण्णे ७ अत्यि णामे खड्यखओवसमनिष्फण्णे ८ अत्यि णामे खड्यपारिणामियनिष्फण्णे ९ अत्थि णामे खओवसमियपारिणामियनिष्फण्णे १०। क्यरे से णामे उद्इयउवसमनिष्फणे व उद्इए ति मणुस्से, उवसता कसाया, एस ण से णामे उदइयउवसमनिष्फण्णे । कयरे से णामे उदइयखयनिष्फण्णे १ उदइए ति मणुस्से, खइय सम्मत्त, एस ण से णामे उदइयखयनिप्फण्णे । कयरे से णामे उद्द्याखनोवसमनिष्फणो १ उद्दए ति मणुस्से, खन्नोवसमियाइ इंदियाइ, एस ण से णामे उदइयखओवसमनिष्फणो । क्यरे से णामे उदइयपारिणामियनिष्फणो ? उदइए ति मणुस्से, पारिणामिए जीवे, एस ण से णामे उदइयपारिणामियनिप्पण्णे । क्यरे से णामे उनसमियखयनिष्फण्णे 2 उनसता कसाया, खड्य सम्मत्त, एस ण से णामे उवसमियुक्वयनिष्फणो । कयरे से णामे उवसमियुक्कोवसमितिष्फणो १ उव-सता कसाया, खओवसमियाइ इदियाई, एस ण मे णामे उचसमियखओवसमित-प्पण्णे । कयरे से णामे जनसमियपारिणामियनिष्पण्णे ? उनसता कसाया, पारिणा-मिए जीवे, एस ण से णामे उवसमियपारिणासियनिष्फणो । कयरे से णामे खड्य-खओवसमनिष्फण्णे <sup>2</sup> खइय सम्मत्त, खओवसियाइ इदियाइ, एस ण से णामे खइयसओवसमनिप्फण्णे । कयरे से णामे खइयपारिणामियनिष्फण्णे १ सइयं सम्मत्त, पारिणामिए जीवे, एस ण से णामे खड्यपारिणामियनिष्फणो । कयरे से णामे खओवसमियपारिणामियनिप्फण्णे 2 खओवसमियाइ इदियाइ, पारिणामिए जीवे, एस

1118 सुचागरे र्णं से मामे राओवसमिशपारिकामिशनिपकृष्ये । तत्व मं वो ते वस विगसंबोगा व प इमे-मिरिन मामे उवह्रयजनसमिनकाननिष्याण्ये १ आहेन वाझे उवह्रयजनसमिनन ओवसमनिष्पण्ये १ अरिब गामे उद्दश्यतमसमित्रपारिवासिबनिष्युक्ते ३ सरिब गारे उपइबसङ्ग्यसभोवसमनिष्यको ४ अस्ति भागे उपइबसङ्ग्यपारिमामिवनिष्यको । जरिब जामे सबद्वस्थाओवसमियपारिवाभियनिष्यको ६ अस्य जामे सबसमिक्य इमयओक्समनिष्याणे ७ अस्य नामे उवसमिवयाद्यपारिवासियनिष्याणे ८ वस्य णामे उत्तरमियपञ्जोबसमियपारिणामिवनिष्पञ्जे ९ जतिब नामे प्रवत्वक्रोतसमिन पारिवामिवविष्यत्रमे १ । कवरे मे थामे उन्हब्दक्समिक्ट्यमिष्यमे । उन्हर्स ति मक्सरे उबसेता कसाया धार्य सम्मत्तं एस ये से गामे उद्दरस्टबसमिनक सनिप्कलो । कनरे से नामे उवहबउक्समिवसाओक्समनिप्कलो ! उद्दार वि म्प्यस्ते जनस्ता कराया खळोनसमियाई ईदिवाई, एस वं से पाने जनहरूउसर-मियराओवस्यमितप्राण्ये । कवरे से यामे छव्य उवसमियपारिवासियनिपाले ! उदश्य ति मञ्जरचे उवसता कसावा पारिणामिए बीचे एस मं से मामे उदश्य उपसमित्रपारिमामियनिष्याले । कयरे से नागे उपहत्रकार्यसमित्रसमित्राले है उदहए कि मणुरचे याहर्य सम्माव क्यानेश्वसमियाई इदिमाई एम जं से बामें उद्दब्यद्ययमोनसमनिष्क्रले । स्यरे से नामे उद्दब्यद्यपारेनामियविष्क्रले हैं चदक्य ति मनुस्ते **क**हबै सम्मत्तं पारिष्णामिए जीवे एस **थं** से नाम उदह<del>वाण</del>ी सपारिणामिसनिष्कणे । कसरै से जाने तत्रस्यक्रोबसमिसपारिणामिसनिष्का ! उदस्प ति मलस्टि वामोगसमियाई इंदियाई, पारिणामिय जीवे एस मं से वामे उद्दुबद्धजोक्समित्रपारिणामित्रनिष्यक्रणे । कतरे से जासे सवसमि<del>यकद्भद्रक्षेत्रसमि</del> प्यक्रमे <sup>१</sup> जनस्ता कराया धार्म सम्मत्ता धाओनसमिनाई इतिसाद, एस न है नामे उनसमिसवाहनराज्योगसमनिष्यको । कमरे से थामे उनसमिसवाहसपारिनानि वनिष्फण्ने । उवसता क्याया धाइमै सम्मत्तं पारिणामिए चीवे एस वं से बामे चक्छमियसङ्गपारिणामियनिष्यस्य । स्यारे से भागे उपसमिवदाओतसमिवपारिणी मियनिष्कण्ये हे उनर्रता कसाया कामोक्समियाह हिस्साई, पारिणामिए जीवे एए र्षं से नामे उनसभियप्रश्लोकसभिनपारिवामियनिष्क्रन्ते । क्यरे से नामे प्रदश्ननी वससिवपारिवासियविष्यक्षे 🖁 यहवं सम्मर्च यक्षेत्रसमिगाई इदिवाई, पारिवासिए जीवे एस में से माने राष्ट्रस्टाभावसमितपारिनामियनिष्यामें । तत्व वं से तं पंच

चत्रसम्बोगा ते वं इगे-अस्यि नामे उद्दवडक्समियस्वरूपकोरसमित्यन्ते १ शरिव पामे उद्दव्यवसमिवस्वरूपतिवामियनिष्टमं २ शरिव नामे उद्दय- उनमियसओवसियपारिणासियनिष्फणो ३ अत्यि णामे उदइयसङ्यसओवस मियपारिणामियनिष्फणो ४ अत्य णामे उवसमियखङ्यखओवसमियपारिणामियनि-प्फणो ५ । क्यरे से णामे उदङ्यउवसारीयखङ्यखओवसमानिष्फणो 2 उदङ्ग ति मणुस्से, उवसता कसाया, राडय सम्मत्त, खओवयामियाइ इदियाइ, एस ण से णामे उद्बयउन्समियखङ्यखओन्समनिष्फण्णे । कयरे से णामे उद्बयउन्समियखङ्यपा-रिणामियनिष्फण्णे १ उदइए ति मणुस्से, उवसता ऋयाया, राइयं सम्मत्त, पारिणा-मिए जीवे, एस ण से णामे उद्द्यउवसमियखङ्यपारिणामियनिष्फणो । कयरे ने णामे उद्इयउनसामयखओवमामयपारिणामियनिष्फण्णे १ उद्दरए ति मणुरसे, उनसता कसाया, खओवसमियाइ इंटियाइ, पारिणामिए जीवे, एस ण से णामे उदहयउवस-मियखओवसियपारिणामियनिष्फणे । कयरे से णामे उदइयखडयखओवसिमय-पारिणामियनिष्कण्णे १ उदइए ति मणुस्से, खड्य सम्मत्त, राओवसमियांई इदियाइ, पारिणामिए जीवे, एस ण से णामे उदइयखडयखओवसमियपारिणामियनिप्फण्णे। क्यरे से णामे उवसमियखङ्यखञ्जोवसमियपारिणामियनिष्कणो र उवसता कसाया, खइय सम्मत्त, खओवसमियाइ इदियाई, पारिणामिए जीवे, एस ण से णामे उवसमिय-खइयखओवसमियपारिणामियनिप्फण्णे । तत्थ ण जे से एक्के पचगसजीए से णं इमे-अत्यि णामे उदइयउवसमियखइयखओवसमियपारिणामियणिप्फणे । कयरे से णामे उद्इयउवसमियखङ्यख्ञावसमियपारिणामियणिष्फणो १ उद्दृष् ति मणुस्से, उवसता कसाया, खड्य सम्मत्त, खओवसिमयाइ इदियाइ, पारिणामिए जीवे, एस ण से णामे उदह्यउवसमियखह्यखओवसमियपारिणामियणिप्फण्णे । सेत्त सन्निवाह्ए । सेतं छण्णामे ॥ १२७ ॥ से कि तं सत्तणामे १ सत्तणामे सत्तसरा पण्णता । तजहा~ गाहा-सजी रिसहे गधारे, मजिझमे पचमे सरे । धे(रे)वए चेव नेसाए, सरा सत्त वियाहिया ॥ १ ॥ एएसि ण सत्तण्ह सराणं सत्त सरद्वाणा पण्णता । तजहा-गाहाओ-सज च अगजीहाए, उरेण रिसह सर । कंद्रगणण गधार, मज्झजीहाएँ मिज्सिम ॥ १ ॥ नासाए पचम वया, दतोट्टेण य घेवय । भम्रहक्खेवेण णेसाय, सरहाणा वियाहिया ॥ २ ॥ सत्तसरा जीवणिस्सिया पण्णता । तजहा-गाहा-सजं रवइ मऊरो, कुक्डो रिसमं सर । हसो रवइ गधारं, मज्झिमं च गवेलगा ॥ १ ॥ अह कुसुमसभवें काले, कोइला पंचम सर। छट्ट च सारसा कुचा, नेसाय सत्तम गसो ॥ २ ॥ सत्तसरा अजीवणिस्सिया पण्णत्ता । तजहा-सज्ज रवइ मुयगो, गोमुही रिसह सरं । सखो रवइ गधारं, मज्ज्ञिम पुण ब्राह्नरी ॥ १ ॥ चडचरणपइह्राणा. गोहिया पचम सरं । आडवरो रेवइय, महामेरी य सत्तम ॥ २ ॥ एएसि ण सत्तण्ह

[ अयुक्तेगद**रमु**र्च

सरार्यं सत्त सरस्करतमा पञ्चता । तंत्रहा-गाहाओ-समेर्वं सहते विति, क्रां च व विजस्सक् । गानो पुत्ता य मिता यः नारीण होइ नहाई। ॥ ९ ॥ हिसहेन र एर-(व्हे)मं सेवावयं मधानि स । बल्यवयसम्बद्धारं, इत्थिको समवानि स ॥ ९ इ गयारे गीमजुरिक्या कविसी कमाहिया । ह्वेति बह्यो बच्चा वे कन्मे सर् पारमा ॥ ३ ॥ मणिसमसरनेता च इनेति सहजीनियो । साजरै पिनरै वेर्र मज्जिमसरमस्सिको ॥ ४ ॥ पंत्रमसरमैता छ इपेवि पुद्वपीपी । स्रा संगहकतारी अनेगगणनायगा ॥ ५ ॥ रेबस्सरर्मता च इबति हुइजीविनो । साउमिना वार-रिवा सोनरिवा य मुख्तिवा ॥ ६ ॥ णिसायसरमंता व होंसि कव्यकारमा । वंदा-परी केवनता श्रिका भारतात्वा ॥ ७ ॥ एएसि व सत्तव्य सरार्थ तस्रो नामा पत्रपत्ता । तंत्रहा-स्वतामे १ मस्त्रिमयामे १ मैदारगामे १ । स्वतामस्य व स्त मुक्कनाओ पञ्चलाओ । लेकहा-गाहर-मेन्सी कोरमिनी हरिनी रर्वेजी व शारकी य । इद्वी व सार्रेसी नाम सुद्धसन्त्रा य सत्तमा ॥ १ ॥ मजिसमयामस्स वंस्त मुख्यमाओ पण्यतास्त्रो । राज्या-उत्तरमंदी रवेषी । उत्तरी उत्तरीसमा । समेक्षेते व सोगीरी जसिक्त्री होत्र एतमा ॥ १॥ पंचारपासस्य यं एत सुख्यमाओ पण्यास्य। निवस - पित क प्रतिमा व भावत्वी व ह्यतंत्राता । कारतावात में व क्षिण व प्रतिमा व भावत्वी व ह्यतंत्राता । कारतावात में व क्षिण व भावत्वा । अस्ति प्रमुखी व पानव्या । अस्ति । अस्तिमा य सा सामात्री मुख्या ॥ १ ॥ सामात्रा अस्ति । प्रतिमा य सा सामात्री मुख्या ॥ १ ॥ सामात्रा अस्ति । प्रतिमा य सा सामात्रा । अस्ति । अस्तिमा य सा सामात्रा । अस्ति । अस्तिमा अस्ति । अस सत्तरा नामीमो इनित गीर्थ च खुरबोणी : पानसमा कसासा तिज्य व स्वेनस्य मानारा ॥ २ ॥ बाइमच चारमेता समुम्बदंता य मञ्जूबारीम । वनस्वे उज्यंता दिग्यि व गौनस्य भागारा ॥ ३ ॥ **क्लोसे सहयूने दिग्यि व बिता**र्व से य भन्दिरेजो । को नाही चो गाहिए, द्वरिक्कियो रंगमञ्जान्ति ॥ ४ ॥ मीर्व इर्व विभेक वर्षात न वनसो मुनेयन्त्र । कामस्त्रेरमनुकीर्ध क्रोपा हॉति नेनस्स ॥ ५ ॥ पुर्वेत रेतं च केंद्रक्षम् च वैतं च रहेनमिन्द्रं । महिर सैसं सर्वेतिनं, स्टुप्पा होति गेमस्स ॥ ६ ॥ सर्वेद्रवेदिनसुर्वं च मिजीत मर्वेदरिनियेदनर्वं। समताक्रमहरूवेर्व सत्तरसरधीमर गीर्व ॥ ७ ॥ अवस्थरसेर्ग पर्वतेर्ग तास्तरी वन सँगं च गेहरोंने । मीसविजोसविजरींनं संवारसँगं सरा सर ४८ व्रह्मेरं सारेमंतं च हेउन्हर्तेमें अधिनं । सर्वेषीनं सोवर्धारं च मिसं महुरमेर्वन ॥ ९ ॥ सेमं सद्युरेमं चेव सम्बद्ध विसीनं च वं । तिथिन वितासमारहं, चउरनं मोस्कम्पद

## १८ लाख २४ हजार एक सौ वीस बार सिध्या दुष्कृत की धारणा।

जीव भेद वाण सत तेसठ विचार उर, श्रभिहयादिक ताही दश गुणा कीजिये। तीन करण तीन गुणा, दूणा राग वेप वस त्रिंहूं जोग त्रिगुणा, त्रिहूँ काल ते धरि जिये। श्रहंत सिद्ध श्राचारज उवज्भाय साधु श्रातमादि पट् गुणा कर लीजिये। श्रठारे लाख चौवीश हजार सत एकवीश, किसन-लाल कहे मिथ्या दुष्कृत यों नित दीजिये॥ ४॥

## राज का प्रमाण।

तीन कोड़ उपरे इक्यासी लाख वारा सहस नवसे सित्तर मण गोलो एक मानिये। श्रायो उर्ध्व लोक से वो मास पट दिन पट पहर पट घड़ी पट पल पट जानिये, ताको नाम राज एक, ऐसो श्रधो सात राज सात राज ऊर्ध्व लोक ज्ञान से प्रमानिये, तहमेव सत्य हो निश्शंक है किशनलाल, ज्ञानी देव भाष्यो जामें संशय हूं न श्रानिये॥ १॥

जीव अनन्ता मोत्त में, गया रु जासी जाय। पिण खेत्तर रोके नहीं, ज्यों विद्या घट माय ॥६॥

श्रेगिकराय सुपास उदाईन, पौटिल नाम महा श्रागारे। जान दढ़ा यूं सती सुलशा पुनि, रेवति नाम भलो सो विचारे। सुन्दर श्रावक शंखरु पोखली, शतक तीसरे श्रङ्ग उचारे। ए नव जीव तीर्थंकर गोत्र उपाउदी वीर जिनन्द के वारे॥७॥ ॥ १० ॥ सक्या पायया चेव, भणिईओ होंति दोण्णि वा । सरमडलिम गिजाते, पसत्या इसिभासिया ॥ ११ ॥ केसी गायइ महुरं, केसी गायइ खर च रुक्ख च । केसी गायइ चडर, केसी य विलवियं दुय केसी ॥ १२ ॥ विसेर पुण केरिसी <sup>2</sup>। गोरी गायइ महुर, सामा गायइ खर च रुक्य च । काली गायइ चंजर, काणा य विलविय दुय अथा ॥ १३ ॥ विस्सर पुण पिंगला । सत्तसरा तओ गामा, मुच्छणा इक्ष्वीसई। ताणा एगूणपण्णास, सम्मतं सरमङल॥ १४॥ सेतं सत्तणामे ॥ १२८॥ से कि त अट्टणामे <sup>२</sup> अट्टणामे-अट्टविहा वयणविभत्ती पण्णता। तजहा-निद्से पढमा होइ, विइया उनएसणे। तडया करणम्मि कया, चउत्थी सपयावणे॥ १॥ पंचमी य अवायाणे, छट्टी सस्सामिवायणे । सत्तमी सण्णिहाणत्थे, अट्टमाऽऽमतणी भवे ॥ २ ॥ तत्थ पढमा विभत्ती, निद्देसे 'सो इमो अह व' ति । विड्या पुण उवएसे 'भण कुणसु इस व तं व' ति ॥ ३ ॥ तइया करणम्मि कया 'भणिय च क्य च तेण व मए' वा । 'हंदि णमो साहाए' हवइ चउतथी पयाणिम्म ॥ ४ ॥ 'अवणय गिण्ह य एतो. इउ' ति वा पंचमी अवायाणे । छट्टी तस्स इमस्स वा, गयस्स वा सामिसवधे ॥ ५ ॥ हवइ पुण सत्तमी त, इमम्मि आहारकालभावे य । आमतणी भवे अडमी उ, जह 'हे जुवाण' ति ॥ ६॥ सेत्तं अट्रणासे ॥ १२९॥ में किं तं नवणामे 2 नवणामे-नवकव्वरसा पण्णता । तजहा-साहाओ-वीरो सिंगारो अन्भुओं य, रोही य होइ वोद्धन्वो । वेलणओं वीभच्छो, हाँसी क्छणो पसतो य ॥ १ ॥ (१) तत्थ परिचायम्मि य, (दाण)तवचरणसत्तुजणविणासे य । अण्णुसय-धिइपरक्कम-,लिंगो वीरो रसो होइ ॥ १ ॥ वीरो रसो जहा-सो नाम महावीरो, जो रजं पयहिकण पव्वइओ । कामकोहमहासत्तु-, पक्खनिग्घायणं कुणइ ॥ २॥ (२) सिंगारो नाम रसो, रइसंजोगाभिलाससजणणो। मडणविलासविब्बोय-, हासली-लारमणलिंगो ॥ १ ॥ सिंगारो रसो जहा-महुरविलाससललिय, हियउम्मायणकरं जुनाणाण। सामा सहुद्दाम, दाएई मेहलादाम॥ २॥ (३) विम्हयकरो अपुच्चो, अनु-भूयपुट्यो य जो रसो होइ । हरिसिविसाउप्पत्ति-, लक्खणो अञ्भुओ नाम ॥ १ ॥ अन्भुओ रसो जहा-अन्भुयतरमिह एत्तो, अन्न किं अत्थि जीवलोगम्मि १। ज जिण-वयणे अत्या, तिकाळजुत्ता मुणिज्जिति ॥ २॥ (४) भयजणणस्वसद्धयार-, चिंता-कहासमुप्पण्णो । समोहसभमिवसाय, सरणिर्हिंगो रसो रोहो ॥ १॥ रोहो रसो जहा-भिउडिविडिवियमुहो, सद्द्रोष्ट इय रुहिरमािकण्णो । हणिस पसु असुरिणिमो, भीमरिसय अइरोइ ! रोहोऽसि ॥ २ ॥ (५) विणओवयारगुज्झगुरु-, दारमेरावडक्क-

१-२ गाहाहिगपयाइमेयाइ।

मुप्पण्यो । वेसणओ नाम रखो सजा संराकरणतियो ॥ १ ॥ वेस्त्यओ रखे पदार्नाः सोइयनरणीकोः सम्मायतारं ति समयाम् ति । बारिकस्मि गुस्यनी परिषद् वं बहुप्योत्तं ॥ २॥ (६) अनुद्रदृष्टिमनुर्द्धण - संजोगस्मासमंबनित्रण्यो । नित्मगऽविद्वितासकराणी रसो होइ बीअच्छो ॥ १ ॥ बीभच्छो रसो बहा-स्ट इमलमरियनिज्यार्- समानुवर्गधिसम्बद्धास पि । घण्णा उ सरीर्वासे बद्दमग्रस-सुर्च निमुचनि ॥ २ ॥ (७) रूवनवधनमानाः निप्तिवर्धिराणानमुष्याच्यो । इली मणप्यद्वारोः पर्गामर्नियो रमो होइ॥ १॥ हासी रमो जहा-पासुत्तमसीमंहिय- परि मुद्धं नवरं परोयंती । ही जह बलभरकंपच- पलमियमञ्ता हराह सामा ॥ ३ ह (c) पिश्विपाधोगर्नभ- बद्दगहिविधिशायसँगमुप्पण्यो । सार्वविसभिक्सम्हास-राम्मसिनो रमो करुयो ॥ १ ॥ करुयां रसो बहा-पामायरहत्वामिवयं बाहानयरपुर पिछप बहुनो । तस्न विभागे प्रतिया हुम्बलने हे सुद्दे जाय ॥ १ । (९) निशागमणसमाहान- संमत्रो जो वर्षनमार्थणं । अतिवारसन्ताना स्रो एपै पर्यंता ति चायका ॥ १ ॥ पर्यंता वनी वहा-गरभारनिज्ञियारं जनसेनपर्यं स्मेन रिद्वीयं। ही जह सुपिण। शाहर सहस्रतं पीपरशियेय ॥ २ ॥ एए मध कन्यरमा बर्तामादागनिदिनमुध्यस्य। । शाहादि मुस्किन्य। हबनि तहा वा गीमा वा प्र रे म मंच नवपासं ॥ १३ ॥ से कित बनवाने रे बनवान बनविहे पन्नते । तंत्रहा मीला १ मामाल्य २ मानाजवर्ग ६ पडिवयररार्थ ४ पदाचनाए ५ मा प्रन तिदलने ६ नामने ७ कारवर्ण ८ मेंजानचे पमाणचे १ । में 🏗 ते धेनी ! गांज्य-रामद्र ति रामणा तद्र ति तक्को जब्द ति अवणो पाइ नि बासी। मेर्न गोल्ब । में 🕼 वं नागाला है अपूर्ता गर्दना अमुम्पो गमुम्पा अमुरा गमुरे अराज पतारं भारिया महिता नो पत्रं अगह नि बनागी अमहर्गहर माइराइए अपीयराक्त बीयताका, ना इंड्याक्त इंग्योब । सर्त मोलानी । से नि र्ग भागाभाराच्ये र भागाभारप्रचे-(धरमोमगर्ड पुष्टिया) भावेचे चारांदिले अपे समं भरामियां भरामं त्रमार्थं त्रमार्थं पुरिसर्भं (उपासिनं) रायत्रं संपर्ध भव्या यतः गर्मागर्गं अवस्त्र्यं । गेले आयाण्याणं । में ६६ में परिचनत्तारी विवयमाराप्त-सवा वावानम्मार्गेहव्यव्यक्षमंबर्गासमुद्रवर्गानावर्गमः (विवस्ते स्त्री तुब्दियम्बलायु-अनिया निवा अस्ती तीया। विमे सन्ते अन्तर्भारेतु अर्थानी गाउम ज रुगा व भाग्या, ज साउर् व अगाउर ज वीभर्ते व किए, भागवेर रिकारियमासम् । सन् परिकाससम्ब । स्र हि स कार्यन्यम र कारणकान आ गक्त गुनक्राका अध्यक्त भृतका नामका पुत्रभावत प्रमुक्त

दक्तवणे, साल्विणे । सेत पाहण्णयाए । से कि त अणाइयसिद्धतेण ? भणाइय-सिद्धतेण-धम्मित्यकाए, अवम्मित्यकाए, आगासित्यकाए, जीवित्यकाए, पुग्गलिय-काए, अद्धासमए । सेत्त अणाइयसिद्धतेण । से किं त नामेण 2 नामेण-पिउपिया-महस्य नामेणं उन्नामिज(ए) इ। सेत्त नामेण । से किं त अवयवेणं 2 अवयवेण-सिंगी सिही विसाणी, टाढी पक्खी खुरी नहीं वाली। दुपय चरुप्य यहुप्पय, नगुली केसरी कडही ॥ १ ॥ परियरवधेण भङ, जाणिज्ञा महिलिय निवसणेण । सित्थेण दोणवाय, कविं च इक्काए गाहाए॥ २॥ सेत्त अवयवेण । से कि तं सजोएण <sup>२</sup> सजोगे चडिव्वहे पण्णते । तजहा-दव्वसजोगे १ खेत्तसजोगे २ कालसजोगे ३ भावसजोगे ४। से कि त द्व्वसजोगे १ द्व्वसजोगे तिविहे पण्णते। जहा-सिवते १ अचिते २ मीसए ३ । से कि त सिवते १ सिवते—गोहिं गोमिए, महिसीहिं महिसए, ऊरणीहिं ऊरणीए, उट्टीहिं उट्टीवाले । सेत सचिते । से किं तं अचिते <sup>2</sup> अचिते-छत्तेण छत्ती, दहेण दही, पहेण पही, घडेण घ**ही**, क्डेण कडी। सेत्त अचित्ते। से किंत मीसए १ मीसए-इल्लेण हालिए, सगडेण सागडिए, रहेणं रहिए, नावाए नाविए । सेत्त मीसए । सेत्त दव्वसजोगे । से किं तं खेत्तसजोगे २ खेत्तसजोगे-भारहे, एरवए, हेमवए, एरण्णवए, हरिवासए, रम्म-गवासए, देवकुरुए, उत्तरकुरुए, पुन्वविदेहुए, अवरविदेहुए । अहवा-मागहे, माल-वए, सोरहए, मरहहुए, कुकणए। सेत्त खेत्तसजोगे। से किंत कालसजोगे<sup>2</sup> कालसजोगे-द्वसमद्यसमाए १ द्वसमाए २ द्वसमद्वसमाए ३ दूसमद्वसमाए ४ दूसमाए ५ दूसमदूसमाए ६। अहवा-पावसए १ वासारत्तए २ सरदए ३ हेमतए ४ वसतए ५ गिम्हए ६ । सेत्त कालसजोगे । से किं त भावसजोगे 2 भावसजोगे इविहे पण्णत्ते । तजहा-पसत्थे य १ अपसत्थे य २ । से कि तं पसत्थे <sup>१</sup> पसत्थे-नाणेण नाणी, दसणेण दसणी, चरित्तेण चरित्ती । सेत पसत्थे । से किं त अप-सत्थे ? अपमत्थे-कोहेण कोही, माणेण माणी, मायाए माई, लोहेण लोही। सेत्त अपसत्ये । सेत्त भावसजोगे । सेत्त सजोएण । से किं त पमाणेणं १ पमाणे चउव्विहे पण्णते । तजहा-नामप्पमाणे १ ठवणप्पमाणे २ दव्वप्पमाणे ३ भावप्पमाणे ४ । से किं त नामप्पमाणे <sup>2</sup> नामप्पमाणे-जस्स ण जीवस्स वा, अजीवस्स वा, जीवाण वा, अजीवाण वा, तदुभयस्स वा, तदुभयाण वा, 'पमाणे' त्ति- नाम कन्नइ। सेत्त नामप्पमाणे । से किं त ठवणप्पमाणे 2 ठवणप्पमाणे सत्तविहे पण्णते । तंजहा-गाहा-णक्खर्त देवयं कुँले, पासर्ड गेणे य जीवियाहेड । आभिप्पाइयणामे ठवणा-णाम तु सत्तविह ॥ १ ॥ से किं तं णक्खत्तणामे 2 णक्खत्तणामे -कित्तियाहिं जाए--

में कि त प्रमाण र प्रमाण बाउध्यक्ष प्रशति । तंत्रहा-दम्बाप्रमाणे प नेन्याना । कार्यमात्र हे आक्ष्यवाच ४॥ १३०॥ में दि ते ब्रायमार्थ है इप्राप्तमाभ दुविद्दे पण्यतः । संबद्धा-पण्यमिष्यत्रम वः १ विभवानिपाणी व १ र स कि ते पर्यानियाला है पाम्मनियाला परमाप्रशासन कुरवनिय जार द्यारामिल सीराज्यप्रमित् असेरिकारणमान् अवसार्वात् । अन् वस्तानिका । से रि विमाणनियाला है विमाणनियाला वर्षाक्ष प्रयाप । संबद्धा-माम १ बस्माप १ भारताच १ गरिम ४ पडिमार ५ । छै हि नै मान है सचे हुरिहे परारे । संज्या-पत्रमागायमार्गम १ रममाजासात व १। में दि से भवन पापन दे। प्रभागामान-दो भगईभी-नगर हा वर्गामा म वा चनारे मारवामी-नुगर्म बर्लार बुद्या-गथा ननार यथ्या-अपूर्व बनाव आप्ता कि कि भारत्यः नत्रकाः संभ असीः आउपारं सिलासाः संभ भारतार्यं उपारा हैने भद्र य बाह्यगहण-बाद » यूग्नी धनामणस्यान्त हि प्रशेषाँ है सार्थ वर्ग मानामारमं र्मुनोरीमुरारद्वभित्रभावत्यंशियणं बनार्थं धरामारामार्थं िर्शान्तरमानं सर्व । ग्रम धन्यन्त्रना । व हि में श्वयन्त्रमाने राज्य रक्ता-वरम्यकामानाभा वर्शकार्थात्रीक अधिवार्थ द्वार शावकामार वि न्या नेश्वा वार्याद्वा (वार्यसम्बर्ग ४) वन्तार (बनारसम्बर्ग ४)

त्र भू रामण पात्रम् आस्यार्गण कवि २ तर बृद्धिः ३ वा केर्रव र एर् रामण पात्रम् आस्यार्गण रामी इन्द्र अच्या बाजो १ १ ते स्मार स्मार व स्मीरा २ अस्य व रक्षा सन्ध्रमो ३ त्रह्म हुने स्मार हिन्दा प्रश्नी अन्द्रामीन स्मार वेणः ६ प्रकृतका राम्यः स्मार वा साम १ १ सा क्षीत् वा मृद्धि हुन्य सीक्षण व्यक्ते रिशाण

सोलंतिया (सोलमपलपमाणा १६), अद्धभाड्या (वत्तीसपलपमाणा ३२), चटभाइया (चडमहिपलपमाणा ६४), अद्भाणी (संयाहियअद्वाडमपलपमाणा १२८), माणी (दुसयाहियद्यप्पणपलपमाणा २५६), दो चउसद्वियाओ=वत्तीसिया, दो वत्तीसियाओ=सोलसिया, दो मोलसियाओ=अट्टभाइया, दो अट्टभाइयाओ=चरुभा-इया, दो चडभाइयाओ=अद्माणी, दो अद्माणीओ=माणी। एएण रसमाणपमाणेण किं पओयण १ एएण रसमाणेण-वारकघडककरकक्रसियगागरिदइयकरोडियकुडिय-(दो)सिसयाण रसाण रसमाणप्पमाणनिव्यित्तिलक्खण भवइ । सेत्त रसमाणपमाणे । सेत माणे । से किं त उम्माणे 2 उम्माणे-ज ण उम्मिणिजाइ, तंजहा-अद्धकरिसो, करिसो, अद्धपलं, पल, अद्धतुला, तुला, अद्धभारो, भारो । दो अद्धकरिसा=करिसो, दो करिसा=अद्भपल, दो अद्भपलाइ=पल, पच पलसऱ्या=तुला, दस तुलाओ=अदभारो, वी[ची]स तुलाओ=भारो। एएण उम्माणपमाणेणं किं पञ्जोयण १ एएण उम्माण-पमाणेण पत्ताऽगरतगर्चोययकुकुमखङगुलमच्छिडयाईण दव्वाण सम्माणपमाण-निव्वित्तिलक्खण भवड । सेत्त उम्माणपमाणे । से कि त ओमाणे 2 ओमाणे-जं णं भोमिणिजइ, तजहा-हत्येण वा, दडेण वा, धणुकेण वा, जुगेण वा, नालियाए वा, अक्खेण वा, मुसलेण वा। गाहा-दड धणू जुग नालिया य, अक्ख मुसल च चउहत्थ । दसनालिय च रज्जु, वियाण ओमाणसण्णाए ॥ १ ॥ वत्थुम्मि हत्थमेज्ज, खिते दह धणुं च पत्थिमम । खाय च नालियाए, वियाण औमाणसण्णाए ॥ २ ॥ एएण अवमाणपमाणेण किं पञ्जोयण १ एएण अवमाणपमाणेण खायचियरइय-फरकचियकडपडभित्तिपरिक्खेवससियाण द्वाण अवमाणपमाणनिविवत्तिलक्खण भवइ। सेत्त अवसाणे । से किं त गणिमे व गणिमे-ज ण गणिजाइ, तजहा-एगो. दस, सय, सहस्स, दससहस्साइ, सयसहस्स, दससयसहस्साइ, कोडी। एएण गणिमप्पमाणेण किं पञ्चोयण १ एएण गणिमप्पमाणेण भितगभितिभत्तवेयणञाय-व्वयसियाण द्वाण गणिमप्पमाणनिव्वित्तिलक्खणं भवः । सेत्त गणिमे । से किं त पिडमाणे १ पिडमाणे-ज ण पिडिमिणिज्जङ, तजहा-गुजा, कागणी, निष्कावो, कम्ममासओ, मडलओ, सुवण्णो । पच गुजाओ=कम्ममासैओ, चत्तारि कागणीओ= कम्ममासओ, तिण्णि निष्फाना=कम्ममासओ, एव चउको कम्मयासेओ। बारस कम्ममासया=महलक्षो, एव अहयालीस कागणीओ=महलको, सोलस कम्ममासया= द्धवण्णो, एव चउसिंद्धं कांगणीओं≈द्धवण्णो । एएण पिंदमाणप्पमाणेण किं पञ्जोयण १ एएणं पिंदमाणप्पमाणेण सुवण्णरययमणिमोत्तियसखसिरुप्पवारुाईण द्वाण

१ कागणीअवेक्खाए । २ कागणीअवेक्खाए ति अद्घो ।

पिक्रमाणप्यमाणनिम्नितिक्ष्मकर्णं सन्द्रः। शेर्तं विक्रमाणै । शेर्तं विक्रमाणिपकर्णे । सेर इष्मप्पमाने ॥ १३३ ॥ से कि तं बोतप्रमाने है बोतप्रमाने बुनिन्ने पन्नते । तंत्रहा-पर्यसिक्कने स १ विसागनिक्कने स २ । ये 🎋 त पर्यनिकाने 🖁 पर् निष्यक्षे-एगपएसोमाडे पुपएसोगाडे विषएसोगाडे संक्रिजनएसोमाडे नसंबिक्त एसोगाडे । सेत्तं पएसनिष्यन्ते । से किं त विमागनिष्यन्ते ! विभागनिष्यन्ते गाहा-रागुस निहरिय रवणी जुणकी पनु गारावं च बोदानां । बोदाय सेही पवरं, क्रोपस स्रोते नि य तहेव ॥ १ ॥ से किंतं अंगुके 1 अंगुके दिनिहे पञ्चते । तबहा-धानग्रसे १ सस्तेदगुके २ पमाणंगुके ३। से कि ते कार्यगुके हैं कार्यगुके ने वं कमा सङ्ख्या मनंति तेसि वं तथा कप्पणो अंगुकेनं बुवाबसमंगुकाई सुई, नम्मुहाई प्रिसे प्रमानकुत्ते सन्द्र, बोल्चिए पुरिधे साजज्ञते सन्द्र, अखनारे क्रुब्साचे पुरिधे सम्मान-पुत्ते सन्द । गाहाओ-माणुम्माणपमाञ्चला(वय) अन्याणवंशवरानेहे उदनेश ! सत्तम्बरसम्मद्या उत्तमपुरिया सुनेयन्या ॥ ९ ॥ होति पुण नहिनपुरिया म्<del>या</del>नं अगुकाज विकिद्या । क्रम्मकद् व्यागपुरिसा चवतत् गरिसमिक्षा व ॥ १ म प्रैन्द वा अद्विता वा अ बाह्य सरसत्तरारपरिद्वीचा । ये उत्तरपुरिसानं अवस्य पेस्क्य-मुबेंदि ॥ ३ ॥ पूर्ण जेगुक्यमानेर्ज-छ व्युकाई≈पाओ रो पामा≔िवृत्वी रो विद्वारवीओ=रसणी वो रसणीओ=इच्छी दो इच्छीओ=वंत वय खरी मासिमा अस्वी मुसके हो पनुसहस्ताई=गाउमे चलारि याउसाई=जोरम । प्रपण जार्कपुरुकसमिने कि प्रशोसर्थ । एएच ब्लास्पुकेलं के नं क्या समुस्सा इवंति तेति नं तमा नं बार्यपुक्रेमं क्रगकतकानवृद्धमूर्वानपुक्तसरिगीरीक्ष्रियपुनानिकानो सरा सरपरिवासे सरमरपरियामो निक्यंतिनाको सारामुज्याजकाकचनवकसंडनवराईको समामा-धाइमपरिद्वाओः पाणारअप्राक्षमञ्जरियद्वारगोतुरपासावगरसरमञ्जरभागमसियाग्य-तिगण्यतसम्बद्धस्यम् सम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम कोहीजोद्रकवाहर विक्रयमंत्रभरानियर्यमाईकि अज्ञासकिन्छ व जोयजाई समिजित ! से समासको विनिद्दे पळारो । राज्यहा-सुहिनगुळे १ पर्यस्तुळे १ प्रमंतुळे १ । अंगुका-सवा एगपएछिवा सेबी सहिक्पुके सहै सहिप्रक्रिया पर्यपुके पर्यर सहिए प्रक्रियं वर्ग गुडे । एएसि य मंते । स्वभंगुक्यस्य गुक्रवर्णभुक्षाणं क्यरे क्यरेहितो अप्या वा बहुया ना तुत्रा ना विधेसाहिता ना र सम्मालीवे सहस्रोतुके प्रयोगुके करीबे कराने वर्तानी असंबेद्धज्युणे । रात्तं भागपुरे । से कि र्त तर्मेद्दुके । तर्वेद्दुके अनेदविदे प्रभाते । तंत्रहा-साहा-परमाण् तरारेण्, रहरेण् अध्यतं च बाकस्य । शिक्सा जूना य वरी अदुरुष-निवड्डिया कमसो ॥ ९ व से कि से परमाय है परमाय दुनिडे पच्ची । - \*\*\*\*-

सुहुमे य १ ववहारिए य २। तत्थ ण जे से सुहुमे से ठप्पे। तत्थ ण जे से ववहारिए से ण अणताणताणं सहुमपोग्गलाण समुद्यसमिइसमागमेणं ववहारिए परमाणुपोग्गले निष्फजइ। से ण भते ! असिघार वा खुरधार वा ओगाहेजा <sup>2</sup> हता ! ओगाहेजा। से ण तत्य छिजेज वा भिजेज वा 2 नो इणट्टे समद्वे, नो खलु तत्य सत्यं कमइ। से णं मंते ! अगणिकायस्स मज्झमज्झेणं वीडवएजा १ हता ! वीइवएजा । से ण भते ! तत्थ डहेजा १ नो इण्हे समहे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ । से ण भते ! पुक्खरसवद्टगस्स महामेहस्स मज्झमज्झेण वीडवएजा 2 हता ! वीडवएजा । से णं तत्य उद्दु िस्या 2 नो इण्डे समुद्दे, नो खुळु तत्य सत्य कमइ। से ण भते ! गंगाए महाणईए पिंडसोय ह्व्यमागच्छेजा 2 हता ! हव्यमागच्छेजा । से णं तत्थ विणिघाय-मावजेजा 2 नो इणहे समहे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ । से ण भते ! उदगावतं वा उदगविंदु वा ओगाहेजा <sup>2</sup> हता ! ओगाहेजा । से ण तत्य कुच्छेजा वा परि-यावजेज वा <sup>१</sup> नो इणट्टे समद्दे, नो खलु तत्य सत्य कमइ। गाहा-सत्येण स्रतिक्खेण वि, छित्तु भेत्तु च ज न किर सका। तं परमाणुं सिद्धा, वयित आइ पमाणाणं॥ १॥ अणताण ववहारियपरमाणुपोग्गलाण समुदयसमिइसमागमेण-सा एगा उसण्ह-सण्हियाइ वा, सण्हसण्हियाइ वा, उष्टुरेणूइ वा, तसरेणूइ वा, रहरेणूइ वा। अह उसण्हसण्हियाओ=सा एगा सण्हसण्हिया, अड्ड सण्हसण्हियाओ=सा एगा उष्हरेणू, अड उद्दृरेण्ओ=सा एगा तसरेणू, अड तसरेण्ओ=सा एगा रहरेणू, अड रहरेण्ओ= देवकुरुउत्तरकुरूण मणुयाण से एगे वालरगे, अह देवकुरुउत्तरकुरूण मणुयाण वालग्गा≔हरिवासरम्मगवासाणं मणुयाण से एगे वालग्गे, अट्ट हरिवासरम्मगवासाणं मणुस्साण वालग्गा=हेमवयहेरण्णवयाण मणुस्साण से एगे वालग्गे, अह हेमवय-हेरण्णवयाण मणुस्साण वालग्गा=पुन्वविदेहअवर्विदेहाण मणुस्साणं से एगे वालग्गे, यह पुन्वविदेहअवरविदेहाण मणुस्साण वालग्गा=भरहएरवयाणं मणुस्साण से एगे वालग्गे, अह भरहेरवयाण मणुस्साण वालग्गा=सा एगा लिक्खा, अह लिक्खाओ= सा एगा ज्या, अह ज्याओ=से एगे जवमज्झे, अह जवमज्झे=से एगे अगुळे। एएण अगुलाण पमाणेण छ अगुलाइ=पाओ, वारस अगुलाइ=विहृत्थी, चउवीस अगुलाइ=रयणी, अडयालीस अगुलाइ=कुन्छी, छनवइ अगुलाइ=से एगे दखेइ वा, धण्ड वा, जुगेइ वा, नालियाइ वा, अक्खेइ वा, मुसलेइ वा। एएणं धणुप्पमाणेण दो धणुसहस्साइ≕गाउयं, चत्तारि गाउयाइ≕जोयण। एएण उस्सेहंगुलेण किं पसोयण 2 एएणं उस्सेह्युलेण णेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्मदेवाण सरीरोगाहणा मविज्ञइ । णेरइयाण भते । केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा

पन्त्रता । सजहा—सम्बारणिका य १ सत्तर्षेत्रकिया व १ । स्टब में बा 🖽 मवनारमिका सा पौ--व्यक्षणोर्ज अंगुस्तरस वासेकेकदमाग उद्योसेकं पंचपणुमनाई। तत्व य या सा उत्तरधेजिक्त्या सा—अकृष्येर्थ अंगुलस्य संयोजपुनामं उद्देशेर्य प्रमुसहस्य । रयणप्रवाप् पुरवीप् नेरह्यार्थं शंत ! केमहास्थि। सरीरोपार्ण पञ्जता है गोसमा । बुनिष्का पञ्चता । संबद्धा---सपभारभिज्ञा स ५ उत्तरवेउन्तिया य २ । तस्य ये का सा भगवारणिका सा-व्यक्तनेणं श्रीग्रहस्य अर्थकेन्यभागं सक्रोसमं सत्तपष्ठ विभिन्न रयणीओ क्ष्य अंगुकाई । तत्य मं मा सा उत्तरवेत्रशिक सा-जहण्येज अंगुब्रस्य संखेळहमार्ग एडीसेयं राज्यरसम्बद्धं होन्जि रसबीसे बारन मगुक्रतः । केवरप्पहापुत्रबीए नेरह्मार्च मेश । बेमहाक्रिया सरीरोध्यहम पन्मता र योगमा ) दुनिहा पण्यता । तंत्रहा —सम्पारणिका य उत्तरवेउन्निमा मा त्तरभ में का सा अवधारिकका सा-वाहमीयाँ अंगुब्दस करीके बाहुआर्थ सक्ते पञ्जरसम्बर्ध दुष्णि रश्मीको शारसभागुकाइ । तस्य वं भा सा उत्तरवेठन्यिया सन बहुन्नेर्ग क्रमुसस्स संकेबहुमार्ग सहोसेच एक्ट्रीसं वन्द्रं इहरवनी य । यह यप्पद्दापुढशीए चेरहवार्थ अंते । केमदाकिया सरीरोगाइका एव्यता ! मोनमा दुनिक्का पण्यत्ता । तंत्रहा—अवधारविका स १ उत्तरवेदन्विका स १ । तत्व वं स सा समाराभिका सा-वहणोगं अंगुकस्स वर्धकेक्द्रमार्गः वहोसेवं एक्टीसं पर्यः इक्टबर्जी व । रहण ये वा शा उत्तरपैठन्निया शा-अहण्येर्ज अंगुसस्स रंकेनहमार्च उद्योगेर्न शासद्वित्रपूर्द वो रवनीओ य : एवं सन्मासि प्रकार्य प्रस्का गामिनमा । पंकणकार पुरसीए अवधारविका- व्यक्तीर्थ अंगुक्तस असंस्केत्रामार्थ छस्तीर्थ बासहिभव्यं हो रवणीयो व । उत्तरवैद्यान्या-बन्न्नेपं अंगुक्सस संवेग्यस्मापं, उद्योरेणं पननीर्धं मनुसर्व । धूनप्पहाए जनभारकिमा-बहम्बोध अंगुक्तस वर्षः केमहमार्ग सक्षोत्तेषं पणवीतं षणुतनं । सत्तर्वेतिकमा-वहकोनं वर्गकस्य सकेम्प्रभागं स्कोसेणं अञ्चादकारं मणुसयाहं । तुमाप् सक्यारिकमा-बहन्तेणं अनुक्रस्य अ<del>स्केत्व</del>र्माण सङ्गेरीणं **लहात्जा**ई बनुसमाई । बत्तरवेतिनना जङ्गेर्थं स्पु<del>ष्ट्रस्य सक्षेत्रकृ</del>मार्गं उन्होसेर्थं पंचवनुस्यार्थं । तमतमार प्राचीर नेरहभाजं मेरी । केमहासिनाः सरीरोगाह्या पञ्चता । गोनमा । श्रुविश पञ्चता। ते बहा- भवनार विकास १ उत्तर वेठ विकास स २ । तरण में चा सा सवकार दिका सा-बद्दण्णेनं अगुनस्स भस्तवेज्ञातमागः स्वतिनेनं पंचायपुरस्यहं । सत्व नं वा स रक्तरेनेन्द्रिया सा-बद्दण्येणं अगुनस्स संबेज्ज्ञसमां बद्रोटेनं यपुरादस्यहं ।

<sup>🤊</sup> एवं सञ्जानं दुविहा मनवारविज्ञा-

असुरकुमाराण भते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता <sup>२</sup> गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता । तंजहा-भवधारणिजा य १ उत्तरवेउव्विया य २ । तत्थ ण जा सा भवधारणिजा सा-जहण्णेण अगुलस्स असखेजङ्भाग, उद्दोसेण सत्तरयणीओ । तत्य ण जा सा उत्तरवेउन्विया सा-जहण्णेणं अगुलस्स सखेजाइभाग, उक्कोसेण जोयणसयसहस्स । एव असुरक्कमारगमेण जाव थणियकुमाराण भाणियव्वं । पुढविकाइयाणं भते ! केमहाठिया सरीरोगाहणा पण्णता २ गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेजाइभाग, उक्षोसेण वि अगुलस्स असखेजाइमागं । एव सुहुमाण ओहियाण अपजत्तगाण पजत्तगाण च भाणियव्व । एव जाव वायरवाउकाइयाण पजत्तगाण भाणियव्व । वणस्सङ्काङ्याण भते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेणं साइरेग जोयणसहस्स । सुहुमनणस्सङ्काइयाण ओहियाण अपजत्तगाण पजत्तगाण तिण्ह पि-जहण्णेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्कोसेण वि अगुलस्स असखेजाइभाग । बायरवणस्सइकाइयाण ओहियाणं-जहण्णेण अगुलस्स असखेजाइमाग, उक्कोसेण साइरेग जोयणसहस्स । अपजत्तगाण-जहण्णेण अगुलस्स असलेजाइमागं, उद्योसेण वि अगुलस्स असलेजाइमाग। पजत्तगाण-जहण्णेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्कोसेण साइरेग जोयणसहस्स । वेइदियाण पुच्छा । गोयमा । जहण्णेण अगुलस्स असखेजाइभागं, उक्कोसेण बारस-जोयणाइ। अपजत्तगाण-जहण्णेण अगुलस्स असखेजङ्भाग, उक्कोसेण वि अगुलस्स असलेज्ञहभाग । पजतगाण-जहण्णेण अगुलस्स सलेज्जहभागं, उक्कोसेण बारसजोय-गाइ। तेइंदियाण पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं अगुलस्स असखेजाइभाग, उक्कोरीण तिणि गाउयाइ । अपजनगाणं-जहण्णेण अगुलस्स असखेजइभाग. उद्योसेण वि मगुलस्स असखेजइभागं । पजत्तगाण-जहण्णेण अगुलस्स सखेजइभाग, उक्कोरोणं तिण्णि गाउयाइ। चउरिंदियाण पुच्छा।गोयमा! जहण्णेण अगुलस्स असखेजाइभाग, उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइ। अपजत्तगाण-जहण्णेण॰ उक्कोसेण वि अगुलस्स असखेजइभागं । पजत्तगाण-जहण्णेण अगुलस्स सखेजइभागं, उद्घोसेण चत्तारि गाउयाइ। पर्चिदियतिरिक्खजोणियाण भते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पृष्णत्ता १ गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण जोयणसहस्स । जलयर-पर्चिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! एव चेव । सम्मु च्छिमजलयरपर्चिद-यतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्कोसेण जोयणसहस्स । अपजत्तगसम्मु च्छिमजलयरपचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गो॰ ! जहण्णेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्कोसेण वि अगुलुस्य असखेजइभाग ।

क्षंगुमस्य संदेक्द्रमाग उक्तोसेर्ग कोननसङ्ख्या । यन्मवर्गदिवस्तमस्पंपित्र-पुष्पमः । गोयमा । बङ्ग्णेयं अंगुस्तसः असंकेक्द्रसार्यः सङ्गोर्सनं चोयनसङ्स्य । भपमत्तागरमवर्षतियमसगर्पविधियपुच्छा । गोयमा ! जङ्ग्लेणं संगुन्तर असंध्येत्रहमाग सहोरोज वि जंगुक्सस असंखेत्रहमार्ग । पत्रतगमस्मार्करीय-कमनरपुषद्वा । गोनमा । जहन्येषं अंगुक्रस्स संधेअक्षममं उद्दोसेषं बोनक सङ्स्यं । वडप्पनकसगरपंजितिगपुरका । गोनमा । वङ्ग्येयं अंगुक्रस्य अर्थवे-**जर्मार्गं उद्दोर्धेचं छ** गाउन्ह्यं । सम्मुच्छितनर<del>ुप्यक्कास्पुच्छा</del> । मोनमा । बहुनोर्ज संगुक्तस कारंकेक्यमार्ग उद्योगेनं गाउपपुरुतं । अपकरणसम्मुक्तिम चरुप्ययसम्बद्धारकः । गोयमा । बहुण्येचं अंगुक्तसः असंके अनुमार्गः वक्तेरेन वि **र्वपुक्तः मधेकेन्द्र**सार्यः । पञ्चतगश्चम्मुच्छिमचडणम**गक्ष**नसु**च्याः ।** गीनगाः! बङ्ग्लेचं अंगुस्तरः संबेज्ञश्नानं उद्योरेणं नाउन्पृष्ट्यं । प्रकारकृतियनापर-वक्ष्मरपुरुद्धाः। गोनमाः ! जहक्केणं अंगुक्तस्य असंकेतहसागः उद्योशकं छ यात्रमारं। भपजत्तगरम्बरुदियचरण्यवसयपुष्टा । योवमा । बङ्ग्लेच अंगुक्स्स अर्पः केम्बर्भार्गः उद्दोरोजः वि अंगुलस्य <del>वर्षके</del>म्बर्भागः । पणत्त्वयक्रम**वर्द्धरियगर**ण्याः थसन्य पुरस्ता । गोनमा ! बहुजोर्च अंगुस्त्य सकेवहसार्य उद्दोरेचं ह गाउनम् । उरपरिसयमध्यरपंत्रिवयुक्ता । गोनमा ! ऋक्येय बंगुकस्य वर्षकेम्बमार्न उक्कोरिय योगमसङ्स्य । सञ्जातिकमारुरपरिसप्ययमगरुरुक्ता । योगमा । व्यवसर्वे **अंगुष्टस्य असंबोज**द्भागं उद्देशय योगण्**तुत्**यं । अपजातासम्मुख्यान्दर्गरिस<sup>म्स</sup> क्छमरपुरका । गोसमा ! बहुष्येणं अंगुक्स्स असंकेक्ड्सार्गं उद्दोसेच वि अंगुक्स्स मर्चचे अप्रमार्गः । पञ्चतगराम्मु विक्रमतर्परिसय्यवसम्बरपुष्टमः । योगमा । वर्गनेर्व अगुष्टस्य एंकेज्यस्मार्गः उद्योतेनः चोयनपुर्वतः । गण्यस्यवंतिकतरपरिसप्यस्य पुरक्षा । योजमा ! अङ्ग्लेचं अगुक्तस्य गर्शकेष्यद्रमागं सदोरोण कोनयसङ्स्यै । अपजतगरमार्क्तवेत्रगरपरिसम्पर्धानवरपुष्टा । गोवमा ! वहण्येन ब्ह्युसस्स वर्षः क्षेत्रक्रमार्थं रक्कोरोण वि मगुक्तरस असंबोद्यक्षमार्गः । स्वासमावसम्बद्धतियङस्परि सप्पासनरपुष्का । गोगमा ! बहुण्लेजं अनुसन्स संसेजदमार्ग उद्योसेयं क्षेत्रन सङ्स्यं । सुप्रपरिश्वणवक्रमर्शविदियाच पुच्छा । गोक्सः । बङ्ग्येमं क्लुकस असंबेज्जर्मार्गं उद्योशेणं मारुजपुद्वतं । सम्मुच्छिमसुवपरिसप्यवकरपंविदिवार्ण पुरुष्टा । योजमा ! व्यक्तिणे अगुष्टस्य असंखेळात्माणं उद्योतेणे वनुपृष्ट्यं । अपजातमसम्मृष्टिमसुमपरिसप्यकमराणं पुष्का । योक्मा । बहुन्मेर्च अपुक्रस

भारत निन्द प्रयक्षम गुलुयन्त गुरु स्थेषर ने वह भृति तपमी चस्राविधे। भगगो गुख बार बार, समकित वित्रप सार बावहरक विभिज्ञीस सुद्धान बानिये । ध्यान कीय तप दान ध्यावस्य समाधी मास् अपूर्यकान मनित आगम की जाकिये जैस पथ थाएतो सिक्याल को उत्पास कीय, बीस थोल जीव तीर्थकर गीत का पिक्रामिय ॥ = ॥

सचिच पृथ्वी काएड पारेवा सो करेशन जम्बूडीप में न माने जीव पेता जानिये। जल विश्व मधुकर, तेउ सर सम सम बायु एक अनुकड़े कल कल ठालिये। प्रत्येक बनस्पति अलक्याता गुवा कर, साधारच भूचि प्राप्न अनन्त ममानिये। तस देह सिच सिछ कहत है निलोक चिम

निज माण सम जास बजुकस्या कानिये 🛭 ६ 🗷

अमि समस्तित गला है यांके आप रहेश। पर बात नाची मिल हाठी जोकी मैन 🛭 🐫

जीवों का एक मृहर्त में जन्म भरण ।

बारे सहस्र बाट सी बीधीस एक महात में, जम्म मरक पृथ्वी पाणी तडशाय में साड़ी पेसट सहस छतीस करें निगादिया वसीस हजार सी मरथक इरिकाय में चेदरडी में बसी साठ तहन्त्री में जन्म हुये कीरिन्ही में बालीस सरपा कही सुत्र राय में बासधी बीवीश सफी यक मध हाय हह कहत है तिलोक ऋषी धर्मी समस्र जाय में 1172.1 असखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अगुलस्स असखेज्जइभागं । पज्जत्तगसम्मुच्छिमभुय-परिसप्पाण पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स सखेजइभाग, उक्कोसेण धणु-पुहुत्त । गन्भवक्षतियभुयपरिसप्पथलयराणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेणं गाउयपुहुत्त । अपज्जत्तगभुयपरिसप्पाण पुच्छा । गोयमा ! जहणोण अगुलस्स असखेजाइभाग, उद्घोसेण वि अगुलस्स असखेजाइभाग । पजन त्तगभुयपरिसप्पाण पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अगुलस्स सखेज्जइभाग, उक्कोसेणं गाउयपुहुत्त । खहयरपचिदियपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेजाइ-माग, उक्कोसेण धणुपुदुत्तं । सम्मुच्छिमखहयराण जहा भुयगपरिसप्पसम्मुच्छिमाण तिस्र वि गमेस्र तहा भाणियव्वं । गब्भवक्कंतियखहयरपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असखेजङ्भागं, उक्कोसेणं वणुपुहुत्त । अपजत्तगगन्भवकंतियखह्यरपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेजइमाग, उक्कोसेण वि अगुलस्स असखेजइ-भाग । पजन्तगगन्मवक्षतियखह्यरपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स सखेजङ् भाग, उक्कोसेणं धणुपुहुत्त । एत्य सगहणिगाहाओ हवति, तजहा-जोयणसहस्स गाउयपुहुत, तत्तो य जोयणपुहुत्त । दोण्ह तु घणुपुहुत्तं, समुच्छिमे होइ उन्नत ॥ १॥ जोयणसहस्स छम्गाउयाई, तत्तो य जोयणसहस्स । गाउयपुहुत्त भुयगे, पक्खीस भने धणुपुहुत्त ॥ २ ॥ मणुस्साण भते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णता १ गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेजइभाग, उद्योसेण तिण्णि गाउ-याइ । सम्मुच्छिममणुस्साण पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अगुलस्स असखेजह-भाग, उक्कोसेण वि अगुलस्स असखेजाङ्भाग । अपजत्तगगन्भवक्कतियमणुस्साण पुच्छा । गोयमा । जहण्णेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्कोसेण वि अगुलस्स असखेजङ्भाग । पजत्तगगञ्भवक्षतियमणुरुसाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अगु-लस्स सखेजाइभाग, उद्योसेण तिण्णि गाउयाइ। वाणमंतराण भवधारणिजा य उत्तरवेउ व्विया य जहा अग्ररकुमाराणं तहा भाणियव्वा । जहा वाणमतराण तहा जोइसियाण वि । सोहम्मे कप्पे देवाण भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता । तजहा-भवधारणिज्जा य १ उत्तरवेडव्विया य २ । तत्य ण जा सा भवधारणिजा सा-जहण्णेण अगुलस्स असखेजङ्भाग, उक्कोसेणं सत्तर-यणीओ । तत्य ण जा सा उत्तरवेउव्विया सा–जहण्णेण अगुलस्स सखेजाइभागं, उद्दोसेण जोयणसयसहस्स । एव ईसाणकप्पे वि भाणियव्वं । जहा सोहम्मकप्पाण देवाण पुच्छा तहा सेसकप्पदेवाण पुच्छा माणियव्वा जाव अनुयकप्पो। सणकुमारे भवधारणिजा-जहण्णेण अगुलस्स असखेज्ञह्माग, उक्षोसेण छ रयणीओ । उत्तर-

भावितस्या । वंभक्तरोस् धववारिक्या-जदुष्येषं अंगुक्तस्य वर्धसेक्यभातं उद्दां स्रेण पंतरसर्णाको । उत्तरवेत्रस्थितः जद्याः भोदन्यः । मदावस्तादस्यास्यः स्ववस् विज्ञा-व्यक्तिः संगुक्तसः वर्धकेक्यस्थानं उद्यक्तिः वर्षातिः स्वयोगः। उद्यक्तिः विन्याः वद्याः सोदम्ये । जालन्यापम्बार्वज्ञसुत्यः वरद्यः वि कव्यक्तिः व वारुणोर्यः संगुक्तसः अधिकेक्यमानं उद्योगः विकितः राणीको । उत्तरवेत्रभिकाः

जहां सोहरूमें । गेवेजसबेदार्ग अंते । वेमहासिना स्टीरोगाह्या एकता ! गोयमा ! एगे भवपारिक्रेज्ञे सरीरते एकते । से जहाकार्ग अंगुस्स्य अस्टेडेजस्मार्ग सहीरोजं दुष्पि रसर्गीको । अनुसरीवनास्यवेदान अंते | वेमहासिना सरीरोगाहर्ण

षेउम्बिया वहा सोहम्मे तहा माजियमा । जहा सर्गरुमारे तहा माहिरे <sup>हि</sup>

पणनाः "गोनसा । एगे सन्वारिक्षके एरीरो पण्यते । ऐ कहणोर्च अंगुस्सर्य वर्षेकेन्द्रमागा उक्तरेले एगा दर्श्वीत । से समावको दिनिहे रणनां । देव हा-स्कृतेष्ट में
केन्द्रमागा उक्तरेले एगा दर्श्वीत । से समावको दिनिहे रणनां । देव हा-स्कृतेष्ट में
हे दी प्राप्ति । परिदेश प्राप्ति नणपुर्वे । एएरिक्ष में सुर्वेश प्राप्ति । से से स्वर्धिक स्वर्धिक । स्वर्धिक । हे कि
समार्थिक में प्राप्तिक मार्थिक स्वर्धिक स

अप्पे वा वहुए वा तुल्ले वा विसेसाहिए वा १ सन्वत्थोवे सेढीअगुले, पयरगुले असखेजगुणे, घणगुले असखेजगुणे । सेत्त पमाणगुले । सेत्त विभागनिष्फणे । सेत्त खेत्तप्पमाणे ॥ १३४॥ से कि त कालप्पमाणे १ कालप्पमाणे दुविहे पण्णते । तजहा— पएसनिष्फण्णे य १ विभागनिष्फण्णे य २ ॥ १३५ ॥ से कि त पएसनिष्फण्णे 2 पएसनिप्फण्णे-एगसमयद्विईए, दुसमयद्विईए, तिसमयद्विईए जाव दससमयद्विईए, सिखजसमयहिईए, असिखजसमयहिईए। से त पएसिनिप्फण्णे॥ १३६॥ से िक त्त विभागनिष्फण्णे १ विभागनिष्फण्णे-गाहा-समयावलिय मुहुत्ता, दिवस अहोरत्त पक्ख मासा य । सवच्छर जुग पिलया, सागर ओसप्पि परियद्वा ॥ १ ॥ १३७ ॥ से किं तं समए <sup>२</sup> समयस्स ण पह्वण करिस्सामि-से जहानामए तुण्णागदारए सिया-तरुणे, वलवं, जुगव, जुवाणे, अप्पायके, थिरग्गहत्थे, दढपाणिपायपास-पिइतरोरुपरिणए, तलजमलजुयलपरिघणिमवाहू, चम्मेट्टगदुहणमुट्टियसमाह्यिन-चियगत्तकाए, उरस्सवलसमण्णागए, लघणपवणजङ्गवायामसमत्थे, छेए, दक्खे. पत्तहे, कुसले, मेहावी, निजणे, निजणिसप्पोवगए, एग महइं पडसाडिय वा पहुसा-हिय वा गहाय सयराह हत्यमेत ओसारेजा, तत्य चोयए पण्णवय एवं वयासी-जेण कालेण तेण तुण्णागदारएण तीसे पडसाडियाए वा पट्टसाडियाए वा सयराह हत्यमेत्ते ओसारिए से समए भवइ <sup>१</sup> नो इणहे समहे । कम्हा १ जम्हा सखेजाण तत्ण समद्यसमितिसमागमेण एगा पडसाडिया निष्फजह, उवारेल्लिम्म तत्रमिम अच्छिणो हिद्दिके ततू न छिजइ, अण्णिम्म काले उविरिष्ठे तंतू छिजाइ, अण्णिम्म काले हिट्ठिले तत् छिजाइ, तम्हा से समए न भवइ । एवं वयत पण्णवय चोयए एव वयासी-जेण कालेण तेण तुण्णागदारएणं तीसे पहसाहियाए वा पृहसाहियाए वा उविरिक्षे ततू छिण्णे से समए भनइ १ न भवइ । कम्हा १ जम्हा सखेजाण पम्हाण समुद्यसमिइसमागमेण एगे तत् निप्फजइ, उवरिहे पम्हे अच्छिणी हिद्विले पम्हे न छिज्जइ, अण्णिम्म काले उनिरिल्ले पम्हे छिज्जइ, अण्णिम्म काले हिद्विले पम्हे छिजाइ, तम्हा से समए न भवइ । एव वयतं पण्णवय चोयए एवं वयासी-जेण कालेण तेण तुण्णागदारएणं तस्स तत्नुस्स उवरिक्षे पम्हे छिण्णे से समए भवइ<sup>२</sup> न भवइ। कम्हा<sup>२</sup> जम्हा अणताण सघायाण समुदयसमिइसमा-गमेणं एगे पम्हे निप्फजह, उनिरिष्ठे सघाए अविसघाइए हेट्टिक्ट सघाए न विसधा-इजाइ, अण्णम्मि काले उवरिल्ले सघाए विसंघाइजाइ, अण्णम्मि काले हेद्विले संघाए विसघाइजाइ, तम्हा से समए न भवइ। एत्तो वि य ण सुहुमतराए समए पण्णत्ते समणाउसो !, असिखज्जाण समयाण समुद्यसिम्इसमागमेण सा एगा 'आविलय'ति प्रकार प्राप्त कर्म विश्व प्राप्त विश्व विष्य विश्व विष्व विश्व विष्य विश्व व

सहस्रातं मतोसुहृतूनातं उदासचे एगं मागरोक्मं मंतोसुहृतून । धररप्पहरा

निरोद्याणं भंत । एक्त्रं वालं ठिई पञ्चला । गोयमा । सहज्येणं एवं हावरी-बमं उक्रोमेणं निष्णि धागरीनमात्र । एवं सेसपुदवीयु पुच्छा भाषिकस्या । बाट सप्तद्दापुद्रमिनरह्मार्ण-अहण्मेने निष्मि गामरोप्तमाई, उद्यासमे गत्तसामरोदमाई। पद्रव्यद्दापुद्रविनर्त्याण-बद्दण्णेणं सत्तमायरोपमारं, सदोमेणं दगमागरोपमारं भूमणहापुकविनेद्द्रवार्य-अहण्येर्य दमरामधीरमाई, उड़ोक्षेत्र सत्तरसमायरोज्यये हमप्परापुत्रविणेर्द्यार्थ-अहरूवर्गं सत्तरगमागरोषमाई वहरेसेर्पं वादीमगावरीर माई । तमतमापुरनिगेरह्याणं भेत ! केउर्य कालै टिई चन्याता ! गोयमा ! बई मोर्च नार्गास वागरोक्ताई जड़ोस्थं तत्तीले सागरोक्ताई । अगुरुक्ताराचे अते ! केरण्यं कालं टिई नज्यमा । गोयमा । जहण्यजं दगरासमहरूनाई, उक्रोसनं गार्रेनं शागरावर्म । मसरकुमारवेवीमें अंत ! च गहुर्य च न्हं दिई पण्यता ! गोदमा ! महण्ये बगबामगद्दरगाई, उडोनेचे बद्धपंपमाई पविभोरबाई । नामवृत्माराचे श्रेत । बदार्य कामें दिई प्रणाता है यायमा ! बहुकार्ज ब्यबामगहस्थाई वडासेने देशमाई हुनि पिआरमाई । मायानारीयं अंत ! व रण्यं वालं ठिई प्रवात ! मोयमा ! जहारी दगवानगदस्मातं अक्रोनेणे दम्कं पविभोत्तमं । एवं बदा वागरुमारदेवाणं देवीन य तरा जान वित्रयत्र नाराणं वेषाणं वेतीय व अणीयण्यं । पुरशैवस्वाणं भेडी भारते वार्त दिइ वाणमा रे गायमा । अहलाये जीमगुहुम उद्योगने वारीचे बासगहरूमाई । सनुसदुवयीकारयाण ओदियाच अवसमनार्च प्रजनवाच व । शिर वि पुरवा । सायमा । जहराचे अतीमुदुर्ग उडोधा वि अतिमुदुर्ग । बाबसुर्य

काडयाण पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वावीस वाससहस्साई । अपजत्तगवायरपुढविकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण वि अतोमुहुत्तं, उद्घोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जतगवायरपुढविकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उद्दोसेणं वावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ । एव सेसकाइयाण वि पुच्छावयणं भाणियव्व । आउकाऱ्याण-जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सत्तवाससहस्साइ। म्रहुमआउकाइयाणं ओहियाण अपज्जतगाण पज्जत्तगाण तिण्ह वि-जहण्णेण वि अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । वायरआउकाइयाण जहा ओहियाण । अपज्जत-गवायरआउकाइयाण-जहण्णेण वि अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जतगवा-यरकाउकाइयाण-जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सत्तवाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाई। तेउकाइयाण-जहण्णेणं अतोसुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि राइदियाइ । म्रहुमतेउकाइयाण ओहियाण अपजत्तगाण पजत्तगाण तिण्ह वि-जहण्णेण वि अतोसुहुत्त, उद्दोसेण वि भतोमुहुत्त । वायरतेउकाइयाण-जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि राइंदियाई । भपजन्तगवायरतेखकाइयाण-जहण्णेण वि अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पजनगवायरतेजकाइयाणं-जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि राइंदियाइ अतो-मुहुत्तूणाइ । वाउकाइयाणं-जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि वाससहस्साइ । इहुमवाउकाइयाण ओहियाण अपजत्तगाण पजत्तगाण य तिण्ह वि-जहण्णेण वि अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । बायरवाउकाइयाण-जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उद्दोसेण तिण्णि वाससहस्साइ। अपजनगवायरवाउकाइयाण-जहण्णेण वि अतो-मुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तगवायरवाउकाइयाण-जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि वाससहस्साइ अतोमुहुत्तृणाइ । वणस्सइकाइयाण-जहण्णेण अतो मुहुत्त, उक्कोसेण दसवाससहरूसाइ । मुहुमवणस्सइकाइयाण ओहियाण अपज्जत्तगाण पजत्तगाण य तिण्ह वि-जहण्णेण वि अतोसुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोसुहुत्त। वायर-वणस्सङ्काङ्याण-जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं दसवाससहस्साइ । अपजत्तग-वायरवणस्सइकाइयाण-जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पजत्तग-वायरवणस्सङ्काङ्याण-जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दसवाससहरसाङ अतो-मुहुत्तूणाइ । वेइदियाण भते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता १ गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वारससवच्छराणि । अपज्जतगर्वेइदियाण पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पजत्तगबेइदियाण० । गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्नोसेण वारससवच्छराइ अतोमुहुत्तूणाइ । तेडदियाण पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण एगूणपण्णास राइदियाण । अपज्नत्तगतेइ- र्त्तर्भिनारं अतिश्वहूणुणाः । चलरिक्षिमाणः सेते । केन्द्रनं ब्यूकः ठिष्टं पण्नाणः । योसा। चहण्णेच अतिश्वहूर्यः उद्योगेर्च क्रम्मासा । जफ्जायब्करिक्षिमाणं पुष्पः । योसमा बहण्येच वि अतिश्वहूर्यः उद्योगेच वि अतीश्चर्यः । प्रमात्मवलरिक्षिनाणं पुण्यः ।

योगमा : बहुण्येच कारो<u>सहत्त्व</u> प्रकोशेण क्रम्मासा अंदो<u>सहत</u>्त्वा । पॅनिसेन विरिक्ताओमिनार्थ मंति । कन्त्रमं कार्क ठिई प्रमाशा है मीयमा ! अहन्तर्म क्तिसङ्ख्या स्टासियं विक्रिय पक्षिओवसाई । वस्त्रवर्गविदिवविहेक्काबोनिवार्य मंति । केन्द्रमं कार्क विक्री पन्यता । गोनमा । शहरूके अतोमुद्वतः वामेरे । पुरुषकोदी । सम्मुक्तिमञ्जूकरपंत्रिवित्यपुष्टा । गोनमा । नास्त्रीयं सदोमुद्वर्ग सक्नेसेर्ण पुष्तकोत्री । अवज्ञतत्वसम्युच्छिमकस्वपर्पविविवपुच्छा । गोवसा । स्ट प्लेन वि अंतीसङ्क्षां उद्योशेच वि अंतीसङ्क्षां । प्रवत्तपरास्<del>वर्तव</del>ानवस्यर्<del>पवि</del> विस्युच्छा । गोसमा ! बङ्ग्लेनं अंतोस्हर्तं उन्नेसेनं पुन्नकोद्ये अंतोसङ्गूना ! गब्सम्बद्धतिज्ञज्ञक्यरपंत्रिवियपुच्छा । शोयमा । जङ्ग्लेशं अंदोसङ्ख्यः उद्यक्ति पुरुषक्रेश । अपन्यसगगन्मवदेशिकासम्पर्धविशयुक्ता । गोनमा । वहच्चेव वि र्गतोमुक्कां उद्योग्धेम वि अंतोमुक्कां । प्रजानगरमान्त्रं श्रिमक्कार्पनिवित्रपुक्ता । मोममा । बहुन्नेणं श्रेतोसुहुनं उद्योशेणं पुष्पकोधी श्रेतोसुहुनुना । वटप्पनप्रवर्ग पंजितिवयुक्तमः । गोयमा । अङ्ग्लेचं करोस्पद्वतं स्वद्येतेचं दिग्निः प्रक्रियोक्सारं। क्रमुक्तिमचन्ययसम्बद्धवित्युक्ता । योगमा ! बङ्कोर्व अंतोसुहुत्तं सहोर्हेर्व नकरासीतं वासंसहस्सातं । अपनाससम्मुख्यस्यवय्यवयस्यरपार्वस्यपुरस्य गोसमा । जहरूनेण नि अतोसुद्धर्तः वक्षोतेण नि अंतोसुद्धर्तः । पळ्तस्यस्युन्ध्वस्यान प्यम्बस्तरपंत्रिदिवपुर्वेश । गीयमा । अङ्ग्लेशं अंतोमुङ्कतं उक्रोतेशं वडराडीर नाससङ्स्साई अंदोमुङ्कपूचाई। यवमनकृतिजणतव्यवसम्बर्गनिदिवपुच्छा। योवमा कद्मभेन अतीमुदुर्च उक्नेसेनं विनिज पविज्ञोनमाई । अपज्ञक्तगमसम्बर्गतिमवड प्यावसम्पर्वितितपुरका । गोनमा ! जङ्गोज नि अंतोसुहुर्च उद्दोरेण नि अगो-सङ्गो । पञ्चकामञ्चानकेतियणवय्यवयसम्बर्गविवयुक्ताः गोनमा ! बङ्गोर्ज अतोमुहुत्तं तहोधेणं विण्नि पविज्ञोनसाइ अंतोमुहुत्तूपाई। उरपरिसप्पवज्ञगरपैनिहे

स्पुष्का । गोसमा ! जहलेर्च अंतोसुतुत्तं उत्रसिवं पुष्पत्तेची । एस्पुरिक्ष्मउरस्त्रै सप्पुसन्दर्शवित्रपुष्का । योगमा ! जहलेर्च अनोसुतुत्तं उद्योठेर्च उत्तर्वं वास-सहस्याई । अरजानसस्युष्किमउरपरिसप्पुतन्तर्शवित्रपुष्का । योगमा ! जहलेल वि अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तयसम्मु च्छिमउरपरिसप्पथलयरपचिंदि-चपुच्छा । गोयमा । जहण्णेण वि अतोमुहुत्त, उद्दोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तयसम्मु-च्छिमउरपरिसप्पथलयरपचिदियपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं तेवण्ण वाससद्दस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ । गब्भवक्वतियउरपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अतोसुहुत्त, उक्कोसेण पुन्वकोढी । अपजत्तगगब्भवक्कतियउरपरि-सप्पयलयरपचिदियपुच्छा । गोयमा । जहण्णेण वि अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अतो-मुहुत्त । पज्जत्तगगन्भवकृतियउरपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्नोसेण पुन्वकोढी अतोमुहुत्तुणा । भुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुन्वकोडी । सम्मु च्छिमभुयपरिसप्पथलयर-पर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वायाठीस वामसहस्साइ । अपजत्तयसम्मुच्छिम्भुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण वि अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तयसम्मुन्छिमभुयपरिसप्पथलयरपार्चिदिय-पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बायालीस वाससहस्साइ अतो-सुहुत्तूणाइ । गब्भवक्रंतियभुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा । जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी । अपजत्तयगन्भवकंतियमुग्रपरिसप्पथलयरपर्विदिय-पुच्छा । गोयमा । जहण्णेण वि अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुर्त्त । पजत्तयगब्भ-वक्कतियभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियपुच्छा । गोयमा । जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुन्वकोडी अतोमुहुत्तूणा । खहयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उद्मोरेण पिटेओवमस्स असखेजहभागो। सम्मुच्छिमखहयरपर्चिदियपुच्छा। गोयमा । जहणीण अतोसुहत्त, उक्कोसेण वावत्तरिं वाससहस्साइ। अपज्जत्तगसम्मुच्छिमखह-यरपचिदियपुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि अतोसुहुत्त, उद्योसेण वि अतोसुहुत्त । पजत्तगसम्मुच्छिमखद्द्यरपचिदियपुच्छा । गोयमा । जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण चावत्तरिं वाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ। गब्भवक्कतियखहयरपर्चिदियपुच्छा। गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण पिळ्ञावमस्स असखेज्ञइभागो । अपजत्तगगच्भ-वक्कतियखह्यरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण वि अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तगगब्भवक्षतियखहयरपर्चिदियतिरिक्खजोणियाण भते । केवइय काल ठिई पण्णता १ गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पलिओनमस्स असखेजहभागो अतोमुहुतूणो । एत्य एएसि ण सगहणिगाहाओ भवति, तजहा---सम्मुच्छिम पुव्वकोढी, चउरासीइ भवे सहस्साइ । तेवण्णा वायाला, चावत्तरिमेव पक्खीण ॥ १ ॥ गञ्ममि पुञ्वकोडी, तिण्णि य पिठक्षोवमाइ परमाऊ । ७२ सुता०

सरम भुव पुन्तकोडी पश्चिमीवमासंबामागो य ॥ १ ॥ मणुस्साण मंते / केनार्ड

1114

कारं ठिवे पञ्जता है गोयमा ! बहुव्येणं श्रीतीसङ्कृतं जहनेसेच त्रिव्यि प्रक्रियोगमहः धरमुच्छिमसण्हरमार्थे पुष्का । गोनमा । बहुन्गेन नि अतिसहत्त प्रकोधेन नि मतासङ्कते । राज्यनदंशियमणुस्साच पुष्पा । गोयमा । बङ्ग्यंच अंतोसङ्क्यं, उद्दोरीण विभिन्न पश्चिमोनमर्त । अपनातागगन्यकारीयस्थारसार्व संते । केन्द्रने कारं दिई पन्यता है गोजमा । बहुष्लेश अंतोशहर्श सहोरोज में अतोसहर्ता । पन्नतागर-मनद्वतियमणुरधाणं भते । केन्द्रनं कालं ठिवं पञ्चता ! गोदमा ! वह-ण्लेचं संदोस्हतं उद्योसेचं दिग्णि पक्षिशोषमध्यं संदोस्थलुलई । बावरंदराचं वेबार्ज मेरी ! केबहन काले दिई पन्यता ? गीयमा ! बहलीबं वसवानसहरूकोः, सकारोज परिकोजने । बाबर्गतरीये देवीने गेते । बनार्य काम ठिडे पन्नता <sup>है</sup> मोनमा ! बहजार्थ इसवाससहस्सातं, स्क्रोसेर्च अञ्चपक्रियांतरं : बोहसिनार्च भेते ! देवार्थ केनइमें कालं ठिई पण्यता ! योग्यमा ! अहकीर्ण शहरेर्य सहनामप्रक्रिक नर्भ उद्योपेर्ण पश्चिमोनर्ग नासस्यसहरूसम्ब्यद्वियं । बोहसियदेवीर्ण सदे । केन्द्रनं कार्क दिई वज्याता ! मोगमा ! कह्न्मेर्ण शत्रुमागवक्रियोगम अव्योधेर्ण अवपनि कोवमं पन्यासाए वास्तवहस्तिहः सक्तहर्यः अवविद्यानार्थः शेते ! देवार्थः केन्द्रने कार्क ठिड्ड पण्यक्ता । पोजमा । कहण्लेणं बाटमागपतिकोक्सं सक्षीरेणं पवित्रोपनं नाससमध्यस्सम्बन्धियः। वंदियमानाणं अति ! देवीनं पुष्काः । गोयमा ! वद्यमेनं परामापक्षिकोनमं सन्नोतेनं अञ्चपक्षिकोनमं पन्नासाय नासमङ्ख्ये सन्मिहेने । स्रक्रिमाणार्थं संते । विवाणं पुच्छा । गोवमा । ऋष्णेयं व्यवसागप्रिजीवर्गं बडोसेनं परिजोत्तमं वासस्वस्तमस्मित्रं । स्रविताचार्नं वेत्रीनं पुल्का । गोनमा अहण्मेग चडमामपकिमोनमं उद्योशेषं अद्यपिओनमं पंचति वाससप्**दें** अ<sup>हस</sup>् हियं । गहविमाचानं संख ! वंबाणं केमहर्य कालं ठिई पन्नशा ! गोसमा ! अहन्मेर्न चडमागपकिमोनमं सकोसणं पश्चिमोनमं । गद्दविमाणार्च मंते ! वेबीनं पुरुषम् । गोयमा ! बङ्क्येणं वारमागपश्चित्रोत्रमं बडोपेणं भद्रपतिकोत्रमं । गक्तापिमा भार्य भेटं बंबार्य पुष्का । योगमा । जहान्नेर्व चउमायपत्रिकारमें उद्दोनेर्व सद्धपरिओवर्ग । णारप्रशामिमानार्ग वेशीनं पुष्या । गीयमा । जहानीनं चटभान परिक्रोवर्ग उद्योगेणं साइरेगं वाजमागव्यक्तियोवर्गः ताराविमाणाण भवं । इराव पुरुतः । गोसमा ! अहण्यंत्र साहरेगं अहुनागपिक्षक्रेतमं उद्दोनेपं प्रकारपदि-भोरमं । तारामिमाधानं संतः वेतीयं नेयहवं नासं ठिवं पत्रमणः गोनमा

जहरूपेयां महमागपिकांवर्ग तक्षोमेणं वाहरेगं अहमागपिकांवर्ग ।

मंते ! देवाण केवइय काल ठिई पण्णता 2 गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवम, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ । वेमाणियाण भते ! देवीण केवइय काळ ठिई पण्णत्ता <sup>2</sup> गोयमा ! जहण्णेण पलिओवम, उक्कोसेण पणपण्ण पलिओवमाई । सोहम्मे ण मते ! कप्पे देवाण पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण पिठ्योवम, उक्कोसेण दो सागरो-वमाइ। सोहम्मे ण भते ! कप्पे परिग्गहियादेवीण पुच्छा । गोयमा! जहण्णेणं पिल्ञोवस, उक्कोसेण सत्तपिल्ञोवमाइ। सोहम्मे णं भते। कप्पे अपरिग्गहिया-देवीण केवइय काल ठिई पण्णता 2 गोयमा! जहण्णेण पलिओवम, उक्कोसेणं पण्णास पलिओवम । ईसाणे ण भते । कप्पे देवाण केवइय काल ठिई पण्णता 2 गोयमा! जहण्णेण साइरेग पलिओवम, उक्कोसेण साइरेगाई दो सागरोवमाइ। ईसाणे ण भते ! कप्पे परिग्गहियादेवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता <sup>2</sup> गोयमा ! जहण्णेणं साइरेग पिल्ञोवम, उक्कोसेण नवपिल्ञोवमाइ। ईसाणे णं भते! कप्पे अपरिगाहियादेवीण केवड्य काल ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहण्णेण साइरेग पिल्ओवमं, उक्कोसेण पणपण्ण पिल्लोवमाइ। सणकुमारेण भते! कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा । जहण्णेण दो सागरोवमाइ, उक्रोसेण सत्तसागरोवमाइ । माहिंदे ण मते ! कप्पे देवाण पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण साइरेगाइ दो सागरोवमाइ. उद्दोसेण साइरेगाइ सत्तसागरोवमाइ। वभलोए ण भते! कप्पे देवाण पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण सत्तसागरोवमाइ, उक्वोसेण दससागरोवमाइ । एव कप्पे कप्पे केनड्य काल ठिई पण्णता १ गोयमा । एव भाणियव्व-लतए-जहण्णेण दससागरो-वमाड, उद्दोसेण चउद्दस सागरोवमाड । महासुक्के-जहण्णेण चउद्दस सागरोवमाइ, जकोसेण सत्तरस सागरोवमाड । सहस्सारे-जहण्णेण सत्तरस सागरोवमाइ, जक्कोसेण अद्वारस सागरीवमाइ । आणए-जहण्णेण अद्वारस सागरीवमाइ, उक्वीसेण एगूण-वीस सागरोवमाइ । पाणए-जहण्णेण एगूणवीस सागरोवमाइ, उक्नोसेण वीस सागरोवमाइ । आरणे-जहण्णेण वीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण एकवीस सागरो-वमाइ । अनुए-जहण्णेण एक्स्वीस नागरोवमाइ, उक्कोसेण वाचीस सागरोवमाइ । हेट्रिमहेट्रिमगेविज्ञविमाणेतु ण भते ! देवाण केवऱ्य काल ठिई पण्णता १ गोयमा ! जहण्णेण वावीस मागरोवमाइ, उद्योसेण तेवीस मागरोवमाइ । हेहिमसज्झिमगेवि-ज्जविमाणेतु ण भते ! देवाण० 2 गोयमा ! जहण्णेण तेवीस सागरीवमाड, उक्नोसेण चटवीस सागरोवमाइ । हेट्टिमटवारिमगेविज्ञविमाणेष्ठ ण भते ! ठेवाण० १ गोयमा ! जहण्णेण चरवीस सागरोवमाइ, उद्घोसेण पणवीस सागरोवमाइ । मज्लिमहेट्टिम-नेवेज्ञविमाणेसु ण भते ! देवाण० 2 गोयमा ! जहण्णेण पणवीस सागरोवमाइ,

111 सुत्तागरी **ब्रिश्मोगदास्मुर्व** उद्दोरेणं स्व्यीरं सागरोबमाई । मजिसममजिसमगेबेजनिमाचेन जं र्यंत ! दवावं ी योगमा ! बहुणोर्थं स्थ्वीर्थं सागरोक्साई, उद्दोक्षणं सत्तादीर्थं सागरोक्साई । मजितमरुवरिसरोवेजनिसालेसु चं संते ! देवाण 🚦 गोवसा ! व्यक्तिचं सत्तावीर्ष सागरोबनाह, उद्दोसेण भद्वागीसं सागरोबनाई । उत्तरिमहेड्रिमगेबिजनिमालेस् वं मते । देवार्ज । गोयमा । जहण्येलं अद्भावीर्थ सागरीवमाह, उहारीर्व एगूक्टीर सागरोबमाई । सबरिममजिसमगेनिक्रमिस्राणेश्च जं भेरी । वेबार्ज ! स्पेनमा ! व्य क्लेजं एगुक्दीसं सामरोगमात्, उद्गोरोजं सीसं सागरोगमात् । उत्तरिमदनरिममेनिकः निमानेष्ठ ये संतु । देवान १ गोयमा । अहन्त्रेच तीर्थ सागरीवमक्ष, उद्दारेणं इत वीर्षं सागरोक्षमत् । विकायनेकांत्रकांत्रकायराजियानिमाणेस च मंते ! वेकाणं करू इमें कार्य दिहै पण्याता है गोयमा । अक्रुक्तेयं इक्टवीस सागरीवमाई, उड़ीसेय देखीर सागरीयमञ् । सम्बद्धविदे न पति । सङ्गाविमाने वेवायं कावृतं कार्यं दिई पनना। गोममा । अबहुच्चमञुक्तेसेणं तेतीसं सागरोपमाई । छेर्च क्रुपे अखापतिओवने । सेर्च महाप्रक्रियोदने ॥ १४ ॥ से 🏗 तं चैत्तप्रक्रियोदमें 🕻 खेतप्रक्रियोदमें उनिहें पञ्चते । दंजहा-सहुमे य १ वाबहारिए ज २ । तत्य मं जे से सहुमे से उप्पे । तत्य र्ण जे से बाक्हारिए-से जहानामए औ शिवा-बोयर्च जावामनिक्समेर्च योजन

टक्बेहर्ज ते शिपुर्क छानिएं प्रीरक्बेहर्ज से यो को एयाहियहेबाहियहेवाहिय अस मंदिर हाकमाण्डीयों से के बाकमा को कमारी बहेब्या जान को प्रत्याद हम्मानार स्वीक्ष्मा के न रुपर पान्स्स माणावपएस गेहिंद सक्कोई क्षांत्रकात तमे के ध्रेम प्रमुद्ध सम्प्रदान के स्वाहिए केमारिक्कोमें । वाह्य-पूर्परि पान्न के स्वीक्ष जान मिदिर मध्य से व बन्नाहिए केमारिक्कोमें । वाह्य-पूर्परि पान्न के स्वीक्ष जान मिदिर मध्य से व बन्नाहिए केमारिक्कोमें । वाह्य-पूर्परि पान्न के स्वीक्ष के प्रदेश हर-हारिए के सेन्द्र सिंग्स किप्पानिकोमें के स्वाह क्षांत्रकार । से उन्ह्या केमारिको-स्मानारकोमें वाहित किपियानोम्ब केमारिकोमें स्वाह केमारिकोमें के स्वाहमानिक संपर्धानिकोमें । से कि से प्रकृषि केमारिकोमें के स्वाहम केमारिकोमें ने वाहमान्त्र संपर्धानिकोमें केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें का स्वाहम सिंग्स केमारिकोमें ने वाहमान्त्र से प्रवाहम केमारिकोमें कामारिकोमें का स्वाहम सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें से प्रवाहम केमारिकोमें कामारिकोमें केमारिकोमें सिंग्स सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें से प्रवाहम केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स क्षित्रकेमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स कामारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स कामारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स केमारिकोमें सिंग्स कामारिकोमें सिंग्स कामारिकोमें सिंग्स कामारिकोमें सिंग्स कामारिकोमें सिंग्स कामारिकोमें केमारिकोमें केमारिकोमें सिंग्स कामारिकोमें सिंग्स कामारिकोमें सिंग्स कामारिकोमें सिंगस कामारिकोमें केमारिकोमें केमारिकोमें सिंगस कामारिकोमें सिंगस कामारिकोमें सिंगस कामारिकोमें केमारिकोमें केमारिकोमें सिंगस कामारिकोमें केमारिकोमें कामारिकोमें सिंगस कामारिकोमें

### [११५]

# छुत्रों लेश्या का परिणाम।

एक समें भेला होइ, चाल्या है मंतरी खट, पाको श्रांबो देखीं कहे कैसी तरे कीजिये। एक कहे मूल काटो, रूजो कहे ऊपर सेती, तीजो नर कहे लघु शाखा काट लीजिये। चौथो जुरे काची पाकी, पांचमा ने पाकी पारी, छठो कर कहे इम हेठे पड़ो लीजिये, छुट्टों जला सम छेट्टों लेश्या का प्रतास जान हीरालाल कहे छुद्ध भावों से तिरीजिये। १२॥

### जीवों का पिंड।

सूइ श्रथ्रभाग जिति साधारण वनस्पति, यथा दृष्टान्त तिमें जीव वास पावे है। श्रेणियों श्रसंख्य श्रेणी, श्रेणी में मत्तर श्रसंख्य, प्रत्तर २ गोल श्रसंख्य रहावे है। एक एक गोले मांही श्रसंख्य शरीर रहाइ, प्रत्येके सरीरे जीव श्रनन्त कहावे है, एक खांस मांहे साढ़ी सत्तरे जन्म मर्ण तीर्यंच के दुःख का तो पार कहां पावे है॥ १३॥

### पल्योपम का प्रमाण ।

जुगल्यों हंदा केश, जाय कोइ देवत लावे। तिन का करें लघु खराड एक का दोय न थावे। योजन मान प्रमाण कूप खिण तेह भरावे। चक्रवर्तीनी ऋदि खूंदतो मोच न खावे, शत वर्ष गया एक खराड शहे काढ़े जे देवत सदा। ते कूप जाम रीतो हवे पल्योपम कहिये नदा॥ १८॥ पएस अवहाय जावइएण कालेणं से पल्ले खीणे जाव निट्ठिए भवइ सेत्तं झहुमे खेता-पिलओवमे । तत्थ णं चोयए पण्णवग एव वयासी-अत्थि ण तस्स पहरस आगास-पएसा जे ण तेहिं वालग्गेहिं अणाफुण्णा <sup>2</sup> हंता ! अत्थि । जहा को दिद्वतो <sup>2</sup> से जहाणामए कोट्टए सिया कोहडाण भरिए, तत्थ ण माउलिंगा पिनखत्ता ते वि माया, तत्य ण बिल्ला पिक्खत्ता ते वि माया, तत्थ णं आमलगा पिक्खत्ता ते वि साया, तत्थ ण वयरा पिक्खत्ता ते वि माया, तत्थ ण चणगा पिक्खत्ता ते वि माया, तत्थ ण मुग्गा पिन्खत्ता ते वि माया, तत्थ ण सरिसवा पिन्खत्ता ते वि माया, तत्थ ण गगावालुया पिक्खत्ता सा वि माया, एवमेव एएणं दिद्वतेणं अस्थि ण तस्स पह्नस्स आगासपएसा जे ण तेहिं वालग्गेहिं अणाफुण्णा । गाहा-एएसिं पहाण, कोडाकोडी भवेज दसगुणिया। त सुहुमस्स खेत्तसागरोवमस्स, एगस्स भवे परिमाण ॥ २ ॥ एएहिं छहुमेहिं खेत्तपलिओवमसागरोवमेहिं किं पओयर्ण १ एएहिं म्रहुमेहिं खेत्तपिल्ओवमसागरोवमेहिं दिद्विवाए दव्वा मविज्ञिति ॥ १४१ ॥ कइविहा ण मते । दन्ता पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तंजहा--जीवदन्ता य १ अजीवदन्वा य २ । अजीवदन्वा ण भंते ! कड्विहा पण्णता 2 गोयमा ! दुविहा पण्णता । तजहा--- रूवीअजीवद्वा य १ अरूवीअजीवद्व्वा य २ । अरूवीअजीव-दन्वा ण भते ! कड्विहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता । तजहा---धम्मत्यिकाए १ धम्मत्यिकायस्स देसा २ धम्मत्यिकायस्स पएसा ३ अधम्मत्यि-काए > अधम्मत्थिकायस्त देसा ५ अधम्मत्थिकायस्स पएमा ६ आगासत्यिकाए ७ आगासत्यिकायस्स देसा ८ आगासत्यिकायस्स पएसा ९ अद्धासमए १०। रूवी-अजीवद्व्या ण भते ! कङ्विहा पण्णता <sup>१</sup> गोयमा! चडव्यिहा पण्णता । तजहा-खधा १ खघदेसा २ खंघपएसा ३ परमाणुपोग्गला ४। ते ण भंते ! कि संखिजा असंखिजा अणता 2 गोयमा ! नो संखिजा, नो असंखिजा, अणता । से केणट्टेण भते । एव वुचर्-नो सिखजा, नो असिखजा, अणता १ गोयमा ! अणता परमा-णुपोग्गला, अणता दुपएसिया खघा जाव अणता अणतपएसिया खघा, से एए-णहेण गोयमा! एव वुचड-नो सखिजा, नो असखिजा, अणता। जीवदव्वा ण भते! कि मखिजा असखिजा अणता <sup>2</sup> गोयमा ! नो सखिजा, नो असखिजा, अणता । से केण्हेण भते । एव वुचइ-नो सखिजा, नो असखिजा, अणता १ गोयमा ! असंखिजा णेरइया, असंखिजा अस्तरकुमारा जान असंखिजा थणियकुमारा, अस-रिजा पुढविकाङ्या जाव असखिजा वाउकाङ्या, अणता वणस्सङ्काङ्या, असखिजा वेइदिया जाव असंखिजा चर्रारेदिया, असंखिजा पर्चिदियतिरिक्खजोणिया, अस-

रिका सप्तम्या अमेरिका बावर्जनरा असेशिका जोडशिक असेशिका प्रेमदिया भर्णता निदा में एएचट्टन गोयमा ! ए ! वचर-नो संशिक्षा नो असंधिका भगता ॥ १४२ ॥ वर्षीदा में भेत ! सरीरा क्याता ! गीयमा ! पंच सरीरा क्याता र्तजहा-ओरानिए ९ वंडस्विए ॰ माहारए १ श्वयए ४ बम्मए ५ । मेरह्यार्थ मेर्व । क्ष्य गरीस प्रम्यका है भोगमा । तभो शरीस प्रम्यका । तंत्रहा-नेउम्बर ६ तवर ६ कम्मण १ । अगुरतमाराणं मेन 1 का नरीता पत्र्यता र गोयमा ! तभी सरीत पञ्चला । संबद्दा-येउध्यत् १ तम्प १ बन्भव् १ । एवं निष्यि द्वित्रि एए चेर राधिरा जार वनिवक्रमाराचे मानिवण्या । पुरुषिशहबाचे मेत् । च्छ संधिरा पण्यता है गांबमा है तको गरीरा पण्यता । तैनदा-आराकिए ९ तेयर ६ कम्मए है। एवं भाउत्तत्रवनसमारवारवाच मि एए चेव निष्टित गरीरा आवियम्बा । बाउचार यार्ग भेत । क्षत्र गरीरा पत्र्वता । यावमा । चतारि सरीरा पत्र्वता। संबद्धा-स्टेरा-डिए १ चेडम्पिए १ तेवए १ कम्मए ४ । बेईदिवतेईदिवचडरिन्बार्य बदा पुर बीराइयाचे । पंजिरयनिरिक्तरकोनियाचे जहा बाउराहबाचे । मलस्मार्थ सेते । <sup>बह</sup> सरीरा पत्र्यता । योगमा । पंच सरीरा पत्र्यता । राज्या-बोराव्यि १ वेडम्बर् १ भाइरए १ तेयए ४ बन्यए ७ । वाचमंतरार्च औरशिवानं बैमानियानं वहा चैद्दबार्ज । चैबह्वा थे अंते ! ओरातिवयपीत पण्यता ! गीवमा दुविहा पण्यता । देजहा-बढेजगा व ९ मुद्रेक्या व १ । तस्य न जे ते बढेकमा दे में असंबिक्त क्षपंतिकार्वे उत्पण्निकीभोन्यप्रिकीर्ति भारतिये कारुको चेत्रजो अपंतेजा स्प्रेगा । तरन ने से त मुद्रेसगा ते ने अनंता अनंताई उस्तिपनीओसपिनीई अवद्वीरित कालभी केलजी अनंता स्रोगा ब्रम्मचे अभवतिविद्वे अनंतपुका दिक्कार्ण क्षणंतमायो । केमञ्चा र्ण भेत ! केक्कावस्पीरा प्रव्यक्ता ! योगमा ! ड्रीका पल्लाचा । तंत्रहा-नदेशमा न ९ सबेद्रमा य २ । सत्य में जे से सबेदमा से में असंदिजा असंबेजाई वस्तिपिक्शिसिपनीहिं समहीरंदि राजमी बेटनी असंधिजाओं सेबीओ पवरस्त असंधिज्यमायों । तत्व यें वे ते सुकेतमा ते वें अर्थता अर्थताहि उस्सप्पिक्शेसप्पिणीहि शवहीरति कातको सेस वहा क्षेप्रकि यस्य सुद्रेक्षमा तदा एप वि आमियम्या । ने प्र्या व गेते ! बाहारमस्टरा प्रवास । पर प्रकृतिका प्रवास । तेजहा-विक्रमा व १ सुद्देश्या व १ ता वाहार प्रवास करिया है। प्रोममा १ दुनिहार प्रवास । तेजहा-विक्रमा व १ सुद्देश्या व १ ता दुर्ज के बे दे बद्रोश्यमा दे गे दिया कार्तिक स्थित वह अरित बहुव्येन एगे वा हो वा विक्रिय वा उद्दोरिय सहस्तपुदत्ती। सुदेशमा वहा कोरासिना वहा मासियका।

1117

९ कडनिहा थे ।

केवइया णं भते ! तेयगसरीरा पण्णता १ गोयमा ! दुविहा पण्णता । तजहा-वदे-ह्रया य १ मुक्केहरया य २ । तत्थ ण जे ते वद्धेहरया ते णं अणता, अणंताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहि अवहीरंति कालओ, खेत्तओ भणता लोगा, दन्वओ सिदेहिं अणतगुणा, सन्वजीवाण अणतभागूणा । तत्थ ण जे ते मुकेहस्या ते णं अणता, अणताहिं उस्सिप्पणीओसप्पिणीहिं अवहीरित कालओ, खेत्तओ अणता लोगा, दब्बओ सन्वजीवेहिं अणतगुणा, सन्वजीववग्गस्स अणतभागो । केवङ्या ण भते ! कम्मगसरीरा पण्णता १ गोयमा ! दुविहा पण्णता । तजहा-बदेलया य १ मुक्केल्या य २ । जहा तेयगसरीरा तहा कम्मगसरीरा वि भाणियव्वा । णेरइयाण मते ! केवइया ओरालियसरीरा पण्णता १ गोयमा ! दुविहा पण्णता । तजहा-बद्धे-लयाय १ मुक्केलयाय २ । तत्थण जे ते बद्धेलया ते णंणित्य । तत्थण जे ते मुक्केल्या ते जहा ओहिया ओरालियसरीरा तहा भाणियव्वा । णेरइयाण भते । केवइया वेउ व्वियसरीरा पण्णता <sup>१</sup> गोयमा ! दुविहा पण्णता । तजहा-वदेख्नया य १ मुक्केलया य २ । तत्थ ण जे ते बद्धेलया ते ण असिखजा, असिखजाहिं उत्स-प्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असखेजाओ सेढीओ पयरस्स असंखिजाइमागो, तासि ण सेढीण विक्खमस्ई अगुलपढमवग्गमूल विइयवग्गमूल-पहुप्पणं, अहवा ण अगुलविङ्यवग्गमूलघणपमाणमेत्ताओ सेढीओ । तत्य ण जे ते मुक्केल्या ते ण जहा ओहिया ओरालियसरीरा तहा भाणियव्वा । णेरइयाण भते ! केवडया आहारगसरीरा पण्णता <sup>२</sup> गोयमा! दुविहा पण्णता । तंजहा-बद्धेल्लया य १ मुक्केल्या य २ । तत्य ण जे ते बद्धेल्या ते ण णित्य । तत्य ण जे ते मुक्के-छ्या ते जहा ओहिया तहा भाणियव्वा । तेयगकम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव वेउव्वियसरीरा तहा भाणियव्वा । अग्रुरकुमाराण भते । केवह्या ओरालियसरीरा पण्णत्ता १ गोयमा ! जहा णेरइयाण ओरालियसरीरा तहा भाणियच्वा । असर-कुमाराण भते ! केवइया वेउन्वियसरीरा पण्णता 2 गोयमा ! दुविहा पण्णता । तजहा-बढेळ्या य १ मुक्केळ्या य २। तत्य ण जे ते बढेळ्या ते ण असिखजा, असिखंजाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरति कालओ, खेतओ असखेजाओ सेढीओ पयरस्स असखिजाइभागो, तासि ण सेढीण विक्खभसूई अगुलपढमव्गगमूलस्स असिखजडमागो । मुक्केल्लया जहा ओहिया ओरालियसरीरा । अद्धरकुमाराण मते ! केवइया आहारगसरीरा पण्णता <sup>१</sup> गोयमा । दुविहा पण्णता । तजहा-वद्धेल्लया य १ मुक्केलया य २ । जहा एएसिं चेव ओरालियसरीरा तहा भाणियच्या । तेयगकम्म-गसरीरा जहा एएसिं चेव वेउन्वियसरीरा तहा भाणियन्वा । जहा असुरकुमाराणं 1111

तहा अब यन्यियद्वमाराणं ताव भानियम्या । प्रश्नविकाहवार्णं संत ! क्रमह्मा ब्हेरा-क्रियसरीरा पण्यता ! गांबमा ! दुविहा पञ्चता । तंबहा-वदेक्रमा व १ मुडेन्डा य २ । एवं जहां भोदिया औरास्त्रियस्तीरा तहा भाविश्वव्या । पुत्रश्रेताङ्गाचं मते । कारमा नेतन्त्रनसरीरा पञ्चता है गोनमा । बुलिहा पञ्चता। तंत्रहा-बद्रीस्ना न ९ मुफेक्सा स २ । तत्व र्ण के तं वदेशका ते र्ण गत्वि । सुकेक्सा कहा श्रोहिशकें भोरातिन्यसरीरा तह। भागियम्था । आहारगसरीरा वि एवं चेव भावियम्या । तंत्रमन कम्मसरीरा जहा एएसि चेन भोराजियसरीरा तहा गाणियमा । बहा प्रविनादनार्थ एवं आउकाइमार्य चेउकाइयाच य सम्बस्तीरा आवियम्बा । बाउकाइयार्य मेठे। केन्द्रभा बोराकिवसरीरा पण्याता है योगमा । हुविहा पण्यता । तंत्रहा-वर्देश्या य १ मुद्देशका य २ । वहा पुरुषिराङ्बार्ण ओराडियसपीरा तहा मानिकाना । बार काइयाच कनइया केतन्त्रवर्धरा पत्र्यता है वीवमा ! दुनिशा पञ्चता । वैज्ञा-बढेक्या ब १ सुदेक्या व १ । तत्व मं जे ते बढेक्या ते मं अरंकिका समए समए अवहीरमाणा केशपक्षिकोक्सस्य क्रसंख्यिकद्मागमेशैर्ण काढेण व्या-हीरेति भो चेव नं अवदिया विवा । सुद्देज्या वैदान्ववसरीय आहारगमरीय य बहा पुरुषिराङ्गाच तहा भावितव्या । तेव्यवस्मामरीश वहा पुरुषिराह्यार्थ तहा भागितम्या । तमस्यवृत्तान्यार्वं कोराक्रियवेतन्त्रियशाहारणसरीरा व्या पुरुविकारबाग तहा मानियम्बा । बणस्महाज्ञारबाणं शेते । बेजह्या तक्परपीय क्ष्मचा है गौयमा दुविहा क्ष्मचा । वहा ओहिया चयपक्रममारीच तहा बनस्पर-कारबाज वि तेवगक्रमाससीरा भावियव्या । वेदंवियाणं शंत ! कंतरबा कांग्र कियसपीरा पण्यता ! योगमा ! दुविहा पण्यता । तंबहा-- वदेशमा व ! मुद्रेज्या य २ । तत्व में व त महेज्या ते में अर्थियका अर्थिकाई वस्तिमंत्री भोसिपाणीहि अवहीरति काममो जेतमो असंख्याको घेडीको पगरस्य असंगिमा मागो तासि न संबोर्ज विजयीभगृष्ट असंबोळाखो वोयमकोडाकोडीओ असरिएजाई समिवमामुकार, वेदेरियाणं औराकिक्वकेक्स्मृहं पयरं अवहीरह असंस्थिताई उस्सिपियीओसिपियीई कासभी चेत्रभी संगुलप्यनस्स आउतियाए अवंगित्रहर मानपडिमानेलं । सुकेक्सा वहा सोहिया औराव्यिसरीरा तहा माजियाला। भागपाननाराः । तुक्तमा जहां जात्वा जाताज्यायस्य प्रदेश कोरासिनगरीरा नेत्रमिनभाद्दारमध्येस नदेनया नतिन । सुवेष्टना जहां कोदिया कोरासिनगरीरा तहा मासिनग्ना । तक्षमकम्ममधरीरा जहां एएसि केन कोरासिनगरीरा तहा मानिवस्ता । जहा मेहरिवार्ण तहा रोहरिवज्यारिरिवाण वि मानिवस्ता । पंजित्यितिस्वरायोणियाण नि कोरास्थियसीरा एवं चेव माविसम्बा । पंजितिनी

रिक्खजोणियाण भते । केन्रहया वेडिव्वयसरीरा पण्णता १ गोयमा । दुविहा पण्णता। तजहा-चद्धेल्या य १ मुक्केल्या य २ । तत्य ण जे ते चद्धेल्या ते ण असिखजा, असिराजाहि उस्मिपणीओसिप्पणीहिं अवहीरित कालओ, खेत्तओ असखेजाओ पेढीओ पयरस्स असिखजइभागो, तासि ण सेढीण विक्खभसई अगुलपढमवग्ग-मृलस्म असिखजङ्भागो । सुद्देलया जहा ओहिया ओरालिया तहा भाणियव्वा । आहारयमरीरा जहा वेडदियाण तेयगकम्मसरीरा जहा ओरालिया। मणुस्ताण भते ! केवडया ओरालियसरीरा पण्णता <sup>१</sup> गोयमा ! दुविहा पण्णता । तजहा-वदेलया य १ मुक्किया य २ । तत्थ ण जे ते वदेक्त्या ते ण सिय सिखजा सिय असियजा. जहण्गपए सदोजा, सिवजाओ कोडाकोडीओ, एगूणतीस ठाणाड तिजमलपयस्स उवरिं चडजमलपयस्य हेद्वा, अहव ण छट्टो वरगो पचमवरगपद्धपण्णो, अहव ण छण्णउइष्टेयणगदाइरासी, उद्योमपए असखेजा, असखेजाहिं उस्सप्पिणीओसप्पि-णीहि अमहीरति कालओ, रोत्तओ उकोमपए स्वपक्सितेहिं मणुस्सेहि सर्ढा अवहीरइ चारओ असुविज्ञाहि उस्मिप्पणीओमप्पिणीहि, दोत्तओ अगुलपडमवगगमूल तहय-वग्गनृत्रपटुप्पण्ण । सुद्देह्रया नहा ओहिया ओरालिया तहा भाणियव्वा । मणुस्साण भंत ' क्वड्या वेडव्हियसरीरा पणता १ गोयमा ! द्विहा पणता । तजहा-बद्धेल्या य १ मुक्केट्या य २ । तत्थ ण जे ते बदेक्ट्या ते ण चित्रजा, समए समए अव हीरमाणा अवहीरमाणा सखेळाण कालेण अवहीरति, नो चेव ण अवहिया विद्या । मुषेत्रया जहा ओहिया ओरान्यिण मुषेत्रया तहा भाणियन्या । मणुस्याण भते ! केवटया आहारगमरीमा पण्णता ? गोपमा । दुविहा पण्णता । तजहा-बद्धेच्या य १ भिष्या म २ । तत्य ण जे ते प्रदेष्ट्या ने ण निय अत्यि निय णन्यि, जट अत्यि हरूगेण एहं। वा जो व। निष्णि वा, उद्योभेण नहस्तपुरत । सुद्देरमा जहा ओहिया बोरािया नटा भागितस्या । नेयातस्मागमरीरा जहा एगरि चेत्र ओराहिया तहा गानियन्य। पाणमतराण औरगीयानीरा उत्रा गेरायाण। पाणमतराण भते ' रेद ५. पेटन्तिपर्सामा पणामा रे नीपमा " तुब्दित पण्याता तज्ञहा-यदेणया स ५ मुरेगपा व २ । परा ए है ने बंदेगपा से व अस्मेला, असरेखाहि उत्साविकी-की वांपरीति असीमी राजते, मेणते अविकाती वेदीओ प्रास्त पस-ेराप्तामी, तारिक मेर्डाण विकासार को इन्हेंस्यायायसायनिसारी प्यास्त । सुनेत्र व त्रात्र अतिका सोसान्ति का सारियपत्त । तालस्यमधीत कृतित वि त्रा अप्रमुख्या रहा सान्ति । बत्तामास्य संते । देवाचा वित्तासम्बद्धीय प्रमन । मीराही वहा गर्गः। येर वेटवियाना नहा नेरातमहारीम गाँउ



पण्णते। तजहा-णाणगुणप्पमाणे १ दसणगुणप्पमाणे २ चरित्तगुणप्पमाणे ३।से किंत णाणगुणप्पमाणे <sup>१</sup> णाणगुणप्पमाणे चउव्विहे पण्णते । तजहा-पचक्वे १ अणुमाणे २ भोवम्मे ३ आगमे ४ । से किंत पचक्खे १ पचक्खे दुविहे पण्णते । तजहा-इदिय-पचक्खे य १ णोइदियपचक्खे य २। से किं तं इदियपचक्खे 2 इदियपचक्खे पचिविहे पण्णते । तजहा-सोइदियपचक्ले १ चक्खुरिंदियपचक्ले २ घाणिंदियपचक्ले ३ जिन्मिदियपचक्खे ४ फासिदियपचक्खे ५ । सेत्त इदियपचक्खे । से कि त णोड-दियपचक्खे १ णोइदियपचक्खे तिविहे पण्णते । तजहा-ओहिणाणपचक्खे १ मण-पजनणाणपचक्के २ केवलणाणपचक्के ३ । सेत्त णोइदियपचक्के । सेत्त पचक्के । से कि तं अणुमाणे ? अणुमाणे तिविहे पण्णत्ते । तजहा-पुव्वव १ सेसवं २ दिट्ट-साहम्मव ३। से कि तं पुरुववं १ पुरुवव-गाहा-माया पुत्त जहा नह, जुवाणं पुणरागय । काइ पचिभजाणेजा, पुन्विलिंगेण केणइ ॥ १ ॥ तजहा-खएण वा, वण्णेण वा, लड़णेण वा, मसेण वा, तिल्रुण वा। सेत्त पुन्वव। से किंत सेसव 2 सेसव पचविह पण्णत्त । तजहा-कन्नेणं १ कारणेण २ गुणेण ३ अवयवेण ४ आस-एण ५। से किं त कज़ेण १ कज़ेण-सख सद्देण, भेरिं ताडिएण, वसभ डिक्क्एण, मोरं किंकाइएण, हय हेसिएण, गय गुलगुलाइएण, रह घणघणाइएण । सेत्त कजेणं। से कि त कारणेणं 2 कारणेणं-ततवो पडस्स कारण, ण पडो ततुकारण, वीरणा कडस्स कारणं, ण कडी वीरणाकारण, मिप्पिंडो घडस्स कारण, ण घडी मिप्पिंड-कारणा सेत्त कारणेण । से किंत गुणेणं 2 गुणेणं-सुवण्ण निकसेण, पुष्फ गंधेण, लवण रसेणं, घय आसायएण, नत्य फासेण । सेत गुणेण । से किंत अवयवेण र अनयवेण-महिस सिंगेण, कुकुङ सिहाएण, दृत्थि विसीणेण, वराह दाढाए, मोरं पिच्छेण, आस खुरेण, वग्घ नहेण, चमिर वालग्गेण, वाणरं लगूळेण, दुपय मणुस्साइ, चउप्पय गव[या]माइ, वहुपय गोमियाइ, सीह केसरेण, वसह कलुहेण, महिल वलयवाहाए, गाहा-परियरवधेण भड, जाणिजा महिलिय निवसणेण। सिरथेण दोणपाग, कविं च एकाए गाहाए ॥ २ ॥ सेत अवयवेण । से किं त आसएण 2 आसएण-अभिंग घूमेण, सलिल वलागेण, वुद्धिं अन्भविगारेण, कुलपुत्त सीलसमाया-रेण । सेत्त आसएण । सेत्त सेसव । से कि त दिव्वसाहम्मव १ दिव्वसाहम्मव दुविह पण्णत्तं । तजहा–सामण्णदिहः च १ विसेसदिव्व च २ । से कि त सामण्णदिहः १ सामण्णदिहु-जहा एगो पुरिसो तहा बहवे पुरिसा, जहा बहवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो, जहा एगो करिसावणो तहा बहवे करिसावणा, जहा बहवे करिसावणा तहा

१ दतेण ति अट्टो।

1194

एगो करिसावणो । संर्थ सामन्त्ररिष्ट्रं । से कि ल बिगेसविद्धं र विसेसविद्धं-से बहुत्वानर् केद पुरिस देनि पुरिसं बहुध पुरिमाण मज्ज्ञे पुरुवदिई प्रवासकानेजा-'वर्ग से प्रिसे बहुण करिसावणार्च मज्हे पुष्परिर्द्ध वरिसावर्च व्यासिवानेका- वर्ष है करिसावने' । तस्स समासओ तिनिई ग्रहण भगद्, तंत्रहा-अदीयनावमहर्ग ! पद्मप्रध्यकासग्रहणे २ अजागयकासग्रहणे ३ । से कि त अतीयकास्मार्थ बारीयशासग्रहणं-उत्तवाणि थवाणि निष्कृण्यसस्य वा मेडसि पुरुपानि व इस सरमहेरीहियातकागाइ पालिता धर्ण साहित्वइ बहा-प्रमुद्धी भाषी । सेच स्टीन कामगहण । स कि सं पङ्गणकाशासमहण है पहुणकाशासगहर्ण-साई योगस्थयन विन्छिरीयपउरभक्तपार्वं पासिचा चेव साहित्वह वहा-सुमित्रके बहर । सेंद पद्भाष्यानासमञ्जूषं । से कि ए स्थानवरासमञ्जूषं । अधानवरासम्बर्धं सम्मस्य निम्मलर्शं करिका व गिरी छक्तिव्या महा। विवर्धं वाटक्यामी संबारण पमि(हा)दा व ॥ ३ ॥ बाहवं वा महिंद वा कलवरं वा पसरव उप्पानं पास्त्रा वेम साहित्रह वहा-सुद्धी भनिस्सह। सेर्त शणायनकासग्रहणं । एएसि नेर निवजाने दिनिहं गहुणं भन्तः, तंबहा-नरीवकासगरुणं १ पहुप्तप्रवकातमहर्णः १ सगागनकासगरणं १ । से कि सं वसीय राज्यहर्ण है श्लितियाई बनाई सनिदनव्यासर्ग वा मेहकि पुकाल व कुँउसरकईसीह्यातकागाई पासिता. तेर्ज साहिज्य करा उड़ा मारी । रेच भदीनराखगहर्न । से 🎼 त पहुष्पण्यराखगहर्न 🖁 पहुष्पन्यराख्यर् सार्तुं गोनरमागर्यं मिनकं अनममाणं पारिता तेथं साहित्यः वहा-इभिन्ति बद्द । येत पहुष्पणवाकाह्यं । से कि ते कथागववाकाह्य है कथायय सक्यार्वं गाहा-भूमार्थति विशाली शैविय-लेहणी अपविवद्धाः। वाना वेरह्रवा 🐠 इनुद्विनेत निवेनंति ॥ ४ ॥ असीय वा वासम्बं वा <del>सम्पर्यर</del> वा जन्मसर्व उपार्व पासिता वेणं साहित्रहः बहा-अवुद्धी मनिस्सह । सेत वनायमकाक्रमहनं । सेर्प निरोसिद्धं । सेता विद्वसायसम्ब । सेता व्यवसाणे । से कि वे व्यवस्मे ! स्रोक्से दुनिहे पञ्चते । समहा-साहरमोवणीए १ बेहरमोवणीए व ९ । से कि व साहरमी-बणीए हैं साहम्मोबणीए दिनिहें फलते। तंत्रहा-किनिसाहम्मोबणीए १ पायसाहम्मो-बजीए सन्स्याहरूमोवनीए १। से कि से किनिसाहरूमोवचीए है किनिसाहरूमे वशीए-वहा संदरी तहा सरिसनी जहा सरिसनी तहा संदरी वहा समुद्दी तहा गोप्पर्ने बहा गोप्पर्ने तहा समुद्दों जहां भाइको तहा राज्योंने जहां सम्बेकी तहा माहनी जहा नेवो तहा इसुवो जहा इसुवो तहा नेवो । स्तं विश्वसामान वजीए । से कि वे पानसाहरूसोवणीए है पानसाहरूसोवजीए-जहा सो तहा स्वजी

जहा गवओ तहा गो । सेत्त पायसाहम्मोवणीए । से किं त सव्वसाहम्मोवणीए <sup>१</sup> सन्वसाहम्मे ओवम्मे णित्य, तहावि तेणेव तस्स ओवम्म कीरइ, जहा-अरिहतेहिं अरिहतसरिस क्य, चक्कविष्टणा चक्कविष्टसरिस क्य, वलदेवेण वलदेवसरिस क्य, वासुदेवेण वासुदेवसारेस कय, साहुणा साहुसरिस कय । मेत्त सव्वसाहम्मे । सेत्त साहम्मोवणीए। से किं त वेहम्मोवणीए वेहम्मोवणीए तिविहे पण्णते। तंजहा-र्किचिवेहम्मे १ पायवेहम्मे २ सञ्बवेहम्मे ३। से कि त किचिवेहम्मे १ किचिवेहम्मे-जहा सामलेरो न तहा वाहुलेरो, जहा वाहुलेरो न तहा सामलेरो। सेत्त किंचिवेहम्मे। से किं त पायवेहम्मे र पायवेहम्मे-जहाँ वायसो न तहा पायसो, जहा पायसो न तहा वायसो। सेत्त पायवेहम्मे। से किंत सन्ववेहम्मे १ सन्ववेहम्मे ओवम्मे णत्यि, तहावि तेणेव तस्स ओवम्म कीरइ, जहा णीएण णीयसरिस कय, दासेण दाससरिस कय, काकेण काकसरिस कयं, साणेणं साणसरिस कय, पाणेण पाणमरिस कय । सेत्त सञ्बवेहम्मे । सेत्तं वेहम्मोवणीए । सेत्त ओवम्मे । से किं त आगमे 2 भागमे दुविहे पण्णत्ते । तजहा—लोइए य १ लोउत्तरिए य २ । से किं त लोइए <sup>२</sup> लोइए—ज ण इस अण्णाणिएहिं मिच्छादिद्विएहिं सच्छद्बुद्धिमइ्विगप्पिय, तजहा-भारहं, रामायण जाव चत्तारि वेया संगोवगा । सेत्त लोइए आगमे । से किं त लोउत्तरिए <sup>2</sup> लोउत्तरिए– ज ण इम अरिहतेहिं भगवतेहिं उप्पण्णणाणदसणधरेहिं तीयपचुप्पण्णमणागयजाणएहिं तिलुक्कविद्यमिह्यपृर्एहिं सञ्बण्णूहिं सञ्बदिरसीहिं पणीय दुवालसग गणिपिडगं, त्तजहा-आयारो जाव दिद्विवाओ । अहवा आगमे तिविहे पण्णते । तजहा-सुत्तागमे १ अत्थागमे २ तदुभयागमे ३ । अहवा आगमे तिविहे पण्णते । तजहा-अत्तागमे १ भणतरागमे २ परपरागमे ३ । तित्थगराण अत्यस्स अत्तागमे, गणहराण सुत्तस्स अत्तागमे, अत्यस्स अणतरागमे, गणहरसीसाण दुत्तस्स अणतरागमे, अत्यस्स परपरागमे, तेण परं मुत्तस्स वि अत्यस्स वि णो अत्तागमे, णो अणतरागमे. परपरागमे । सेत्त लोगुत्तरिए । सेत्तं आगमे । सेत्त णाणगुणप्पमाणे । से किं त दसण-गुणप्पमाणे <sup>२</sup> दसणगुणप्पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते । तजहा-चक्खुदसणगुणप्पमाणे १ अचक्खुद्सणगुणप्पमाणे २ ओहिद्सणगुणप्पमाणे ३ केवलद्सणगुणप्पमाणे ४। चक्खुदसण चक्खुदसणिस्स घडपडकडरहाइएसु दन्वेसु, अचक्खुदसण अचक्खुद-सणिस्स आयमाने, ओहिदसण ओहिदसणिस्स सन्वरूनिद्व्वेसु न पुण सन्वपज्ञवेसु, केवलदसण केवलदमणिस्स सञ्वदञ्वेसु य सञ्वपज्जवेसु य । सेत्त दसणगुणप्पमाणे । से कि त चरित्तगुणप्पमाणे १ चरित्तगुणप्पमाणे पचिवहे पण्णते । तजहा-सामाइय-चरित्तगुणप्पमाणे १ छेओवद्वावणचरित्तगुणप्पमाणे २ परिहारविसुद्धियचरित्तगुण-

114

प्यमाणे ३ शहुमर्थपराययरितगुजप्यमाचे ४ माह्यसामयरितगुजप्यमाचे ५ । सामाहमचरित्तगुषपमाणे तुमिहे पण्यते । तंत्रहा-हत्तरिष् य १ मानस्मिष् व १। क्रेमोबद्वावणचरित्तगुषप्पमाने दुविद्वे पण्णते । तैनदा-सावयारे व १ निरहमारे व । परिदारमिष्टवियजरित्तगुजप्पमाणे तुमिहे पण्यते । तंजदा-मिमिसमामए म १ यिन्यिद्वसार्य् य २ । शुरुमसंपरायचरित्तगुचप्यमाने बुनिहे पन्यते । तंत्रहा-संक्रिक्ति स्खमालप् स १ विधुक्तमालप् व २ । मह्या सुद्रुमसपरावयरित्तगुक्यमाने सुन्धि पञ्चति । तंबद्दा-पविवार्षे च १ अपविवार्षे य १ । ब्रह्मस्यायनरित्तानप्रयाने दुमिद्दे परगते । तंत्रहा-परिवार्द व ९ अपरिवार्द व ९ । अहमा अहत्त्रपानचरैतः गुणप्रमाने दुनिहे पन्नते । संबहा-छठमत्बए य १ केवछिए व १ । छैर्स वरिक् गुनप्पमाने । सेतं जीवगुनप्पमाने । सेतं गुरुप्पमाने ॥ १४५ ॥ सं कि र्व नगपः माचे १ नवप्पनाणे तिमिद्दे पण्यत्त । ताबदा-पत्वयदिर्द्धतेर्च १ वनदिरिद्धतेर्च १ पएचरिद्धंतनं ३ । से कि तं पत्वयरिद्धंतनं १ परधगरित्रंतनं से बहानामर हैर पुरिसे परस गहाय अवस्मिमाहुत्तो गच्छेजा सं पासित्ता केइ बएजा-"नहीं मर्ग सच्छारि !" अभिश्वको येगमो अनह- परबपस्य यच्छामि" : शं च नेइ डिस्मार्च पासिता बएजा- कि सर्व डिवरि !" मिनुदो कामो सवाइ-"फ्लर्म जिहामि" ! तं च केंद्र तच्छमानं पासिता वएजा-"कि भनं तच्छति ?' विश्वद्रतरामी वेरमी भग"- परवर्ष तच्छामि" । तं भ केइ उद्दीरमार्ण पासत्ता वएका-"कि भरे उद्गौरित है। विश्वयतराओं नेपमी मनद्र-"क्चर्य उद्गौरामि" । वं 🔫 नेद्र विकि हमार्ज पासिता वर्ण्या- 'कि भन्ने विकिद्धि ?'' विश्वद्वतराओ गैममी मन्द-''वर्ष्य विविद्यामि" । एवं विमुद्धतरस्य नेगमस्य नामाउडिओ पापमी । एवसर वयस् रस्म वि । चंगहरून चित्रमियमञ्जनमाहको पत्थको । बज्राग्रयस्म प्रवासे नि पन्पञा मेळं पि पत्पमो । तिन्दं सहनगार्थं परवयस्य बरवादिगारवानमे जन्म बा बसय परमभा निष्यन्त्रह । संग परमयरिर्द्धतमें । स कि ते अमहिद्धितमें बमिद्विरिद्वतर्ण-से जहानामए अर् पुरिम बेचि पुरिसं वर्णा "बर्र मर्ने बर्मा है" तं अभिनुदा भेगमो मण"-"स्थगे बगामि" । अस्मे निविद्दे राजने तंत्रहा-उड्डापेए । भद्दोराए तिरियमाए ३ तमु गव्यमु सर्व वयशि १ विमुद्धो सेगसी संदर् निरियारीए बनामि' । निरियकोए जेनुहीराहमा नर्यभूरमापानसामा अर्थ गिजा कीरममुद्दा पञ्चल तसु गर्ममु अन गमी। रण निवृद्धाराओ भागी मण्डेण र्जनुहीय क्यामि" । "जेनुहीय इस-नेता प्रत्यका नंजहा-भरहे १ एरवर १ देमाए ३ एरकारप् ४ इतिवास ५ वस्त्रावसमे ६ देवरू - जारतक ४ प्रान

#### [ ११६ ]

#### चत्रवर्तिओं के नाम I

भतं सागर में मध्य सतन्त बीधो सुटकारी। शाँवि इन्यु घरनाथ महायश्च अयकारी। हिरियेण अयदेव शन्म् महायच मांखो। मुक्ति देव ने शक्ष धहानी विवरी बाबो, मध्य सत्तंत देव गते श्वद्ध मुगत बासी गिको, शंमूम अवद्व सतमी तरफ खकवर्ती बारे मिलों॥ १४ ॥

#### मुनियों के १२४ च्यतिचार।

मान के अनुनंत्र माण समक्तित केय वेद राजात मुज भाषाय उदार है। युग भुनि पेपकारा भी भी सुमित्य हम पांचमीय दिए निम मोजन इसार है। पांच महामत की पांचीस भारता न भूत तीन ग्रुति रा मंक उसने अपनार है। पांचय ग्रानेपकार भार उर हम्मतास सायुजी रा युक सी पांचीस मतिकार है॥ १६६

सत्य शील श्रम दूस दूसा विद्या कीशल दान । बन वक्तमधा स्टला पावक दस पुलवान ॥ १७ ॥



विदेहे ९ अवरविदेहे १० तेस सन्वेस भव वसिस 2" विस्रद्धतराओ णेगमो भणइ-"भरहे वासे वसामि" । "भरहे वासे दुविहे पण्णते तजहा-दाहिणहुभरहे १ उत्तरहुभरहे य २ तेस्र सब्वे(दो)सु भव वसिस <sup>2</sup>" विसुद्धतराओ णेगमो भणइ-"दाहिणहुभरहे वसामि" । "दाहिणहुभरहे अणेगाइ गामागरणगरखेडकव्वड-मडवदोणमुहपृहणासमसवाहसण्णिवेसाइ, तेसु सन्वेसु भव वसिस 🗥 विसुद्धतराओ णेगमो भणइ-''पाङलिपुत्ते वसामि''। ''पाङलिपुत्ते अणेगाङ गिहाइ, तेसु सन्वेसु भव वसिस 2'' विद्युद्धतराओ णेगमो भणइ-"डेवदत्तस्स घरे वसामि"। "देवद-त्तस्स घरे अणेगा कोहुगा, तेसु सन्वेसु भव वसिस १'' विसुद्धतराओ णेगमो भणइ-"गब्भघरं वसामि"। एवं विसुद्धस्स णेगमस्स वसमाणो । एवमेव ववहारस्स वि । सगहरस सथारसमारूढो वसइ । उज्जुसुयस्स जेस्र आगासपएसेस्र ओगाढो तेस्र वसङ । तिण्ह सह्णयाणं आयभावे वसइ । सेत्त वसहिदिद्वतेण । से कि त पएसदि-हतेण <sup>२</sup> पएसदिहतेण-णेगमो भणइ-''छण्ह पएसो, तजहा-धम्मपएसो, अधम्म-पएसो, आगासपएसो, जीवपएसो, खधपएसो, देसपएसो" । एव वयत णेगम सगहो भणइ-''ज भणसि-छण्ह पएसो त न भवइ''। ''कम्हा १'' ''जम्हा जो देसपएसो सो तस्सेव दव्वस्स''। "जहा को दिइतो ?" "दासेण मे खरो कीओ, दासो वि मे खरो वि मे । त मा भणाहि-छण्ह पएसो, भणाहि पचण्ह पएसो, तजहा-धम्मपएसो, अधम्मपएसो, आगासपएसो, जीवपएसो, खघपएसो''। एव वयत सगह ववहारो मणड्-''ज मणसि-पचण्ह पएसो त न भवइ''। ''क्रम्हा १'' ''जइ जहा पचण्ह गोहियाण पुरिसाण केइ दव्वजाए सामण्णे भवड, तजहा-हिरण्णे वा धवण्णे वा धणे वा वण्णे वा, त न ते जुत्त वतु जहा पचण्ह पएसो, त मा भणाहि-पचण्ह पएसो, भणाहि-पचिवहो पएसो, तजहा-वम्मपएसो, अधम्मपएसो, आगासपएसो, जीवप-एसो, खवपएसो"। एवं वयत वनहारं उज्जुसुओ भणइ-"ज भणसि-पचिवहो पएसो त न भवइ' । "कम्हा ?" "जइ ते पचिवहो पएसो, एव ते एकेको पएसो पच-विहो, एवं ते पणवीसइविहो पएसो भवइ, त मा भणाहि-पन्वविहो पएसो, भणाहि-भइयव्वो पएसो-सिय धम्मपएसो, सिय अधम्मपएसो, सिय आगासपएसो, सिय जीवपएसो, सिय खधपएसो"। एव वयत उज्जुसुय सपइ सद्दनओ भणइ-"ज भणसि-भइयव्वो पएसो त न भनइ" । "कम्हा ?" "जड भइयव्वो पएसो एवं ते धम्मपएसो वि-सिय धम्मपएसो सिय अधम्मपएसो सिय आगासपएसो सिय जीवपएसो सिय बायपएसो, अधम्मपएसो वि सिय वम्मपएसो जाव सिय खधपएसो, जीवपएसो वि तिय धम्मपएसो जाव सिय सधपएसो, सधपएसो वि सिय वम्मपएसो जाव सिय

से कि तं अवतए है अनतए दिनिहे पन्नते । तजहा-परितानतए १ शुतार्वतप १ अर्गतार्थतप् ३ । धे कि तं परितालतप् र परितार्थतप् विविद्वे क्लो । तंत्रहा-चर-ण्यप् १ चक्रोसप् २ मजङ्ग्यम्भुकोसप् ३ । से 👫 तं जनाजंतप् १ सुप्तानंतप् विनिद्दे पण्यते । तंत्रहा-बह्ब्यए ९ उद्योसए २ अब्बह्ब्यमणुद्योसए ३ । से 👫 वं अयातार्गतप् रे असतार्गतप् बुविहे पञ्चते । संबद्दा-बद्दञ्गप् १ अबद्दञ्यमधुक्रीयप् १ १ जरकार्य संदोज्जर्स केरह्य होद ? दोल्बन । तेर्ण परं अजहण्याम्ख्योसनाई क्षानाई नाह उक्रोसर्य **एकेम**र्य म पावड । उक्कोसर्य संबोधर्य केम्बर्य होड है उक्कोसवस्स सं<del>केम</del> करस परवर्ण करिस्सामि-से खडानामए एके शिया-एम खोरणसबस्डस्स जानमं-निक्खंनेमं विक्य जोगणसम्बरहस्साह सोकस्सहस्साई वोष्णि व सत्तानीसे जोनज-सए तिन्ति न कोसे कहानीसे न बणुसर्य देरस न बंगुकाई कदं अगुसं न रिनि निसंसाहिमं परिक्षेत्रेण प्रणाचे से नं पक्रे सिद्धस्थवार्ण मरिए, तमो न तेलें निर्द त्यपृष्टि श्रीवसमुद्राणं उद्धारो वेपन्तु, एने श्रीवे एने समुद्रे एवं पश्चियमाविनं पनिय प्पमाणियं जावहवा चीवसमुद्दा तेहि शिवस्वपृष्टि अप्युक्ता एस वं एवहए धेरी वहे (भाइड्रा) प्रन्मा सळागा एक्ड्यार्ज सछागाच अर्चळप्पा स्प्रेगा मरिना सहा है उद्दोस्य संखेज्यं न पावर । बहा को दिईतो है से बहानामए मंचे दिना आम<sup>त</sup> यार्च मरिए, तस्य एगे आमकए पत्रियत्ते सेडलि साए. अञ्चडनि पश्चित्ते सेडलि माए, एवं पनिवायमानेमं पनिवायमाणेण होही संडनि भागमए बंधि पस्पितं है मंचए महिजिद्दिर जे तरन भामसए न महिद्द, प्रशंस प्रक्रोमए संदेजए हैं परिन्ती महत्वर्थं परितारंपीयमं सबई । तेन परं सबहत्यसमुद्रीसबाई ठामप्रं बार उद्दोसमं परितासंध्याननं न पाष्ट्र : उद्योसनं परितासंख्यानमं कारमं होर ? जरमानं परिलासंग्रेजमं अहण्यमं परिलासंग्रेजमगणाणं रासीणं अञ्चयण्यस्मान्त्रे स्ट्री रकास परितासीयज्ञयं होइ । अहना जहन्ययं जुतासंनेज्ञयं अवूनं उद्योसवं वरिता संरोक्तमं द्वीरः । जद्दन्तमं सत्तासंरोक्तमं ने पहमं होतः है जद्दन्तमपरितासंतक्रममेनार्व रासीनं अन्त्रमन्त्रस्थासी परिपुत्नो जहन्ययं जुत्तासंश्रेअयं होर् । अहवा उत्तीपर् परितासनेऋए कर्व पनिगतं जरणार्थं पुतासंग्रेळवं होऽ । भावतिवा वि ततिवा भेद । तथ परं अजहन्त्रमणुष्टीमबाई ठाणाई जाब उष्टांगर्स भुगातीराज्य अ पायर । उद्योगन जुतार्सनीयर्थ केंद्रहर्य होद <sup>ह</sup> जहक्कपूर्ण जुतासंग्रेजपूर्व अविध्या गुरिना अन्यमम्बद्धारो स्पूचा उद्योगम् जुत्तानेनेज्ञम् द्वारः। अन्या बरण्यमं अनेनज्ञा सन्तज्ञवं सर्च चत्रांसयं गुणामंभेज्ञवं होऽ । जहन्तवं श्रांनजानंनेसवं बतावं

होइ <sup>२</sup> जहण्णएण जुत्तासखेजएणं आवित्या गुणिया अण्णमण्णन्भासो परिपुण्णो जहण्णय असखेजासखेजयं होइ । अहवा उक्कोसए जुत्तासखेजए रूव पिक्खत्त जह-ण्णय असखेजासखेजयं होइ । तेण परं अजहण्णमणुक्कोसयाई ठाणाइ जाव उक्कोसयं असखेजासखेजयं ण पावइ । उक्कोसय असखेजासखेजयं केवइय होइ 2 जहण्णयं भंसखेजासखेजयमेताणं रासीणं अण्णमण्णान्भासो रूवूणो उक्कोसयं असखेजासखेजय होइ । अहवा जहण्णय परित्ताणंतयं रूवूण उक्कोसयं असखेजासखेजयं होइ । जह-ण्णय परित्ताणंतय केवइय होइ १ जहण्णय असखेजासखेज्जयमेत्ताण रासीणं अण्ण-मण्णन्मासो पिंडपुण्णो जहण्णय परित्ताणंतय होइ । सहवा उक्कोसए असखेजासखे-जए स्व पक्खित जहण्णय परित्ताणंतय होइ। तेण परं अजहण्णमणुक्कोसयाइ ठाणाइ जाव उक्कोसय परिताणतय ण पावइ । उक्कोसय परिताणतयं फेवइय होइ ? जहण्णय-परिताणतयमेत्ताण रासीण अण्णमण्णब्भासो स्वूणो उक्कोसय परिताणतय होइ। भद्दवा जहण्णय जुत्ताणंतय रूवृणं उक्कोसय परिताणतय होइ । जहण्णय जुत्ताणतयं केवइयं होइ<sup>२</sup> जहण्णयपरित्ताणतयमेत्ताण रासीण अण्णमण्णव्यासो पिटपुण्णो जहण्णय जुत्ताणतय होइ। अहवा उक्कोसए परित्ताणतए रूवं पक्खित जहण्णय जुत्ताणतय होइ । अभवसिद्धिया वि तत्तिया होति । तेण परं अजहण्णमणुक्कोसयाइ ठाणाइ जाव उक्कोसय जुत्ताणतय ण पावइ । उक्कोसय जुत्ताणतय केवइय होइ 2 जदृण्णएण जुत्ताणतएण अमवसिद्धिया गुणिया अण्णमण्णव्मासो रूवूणो उद्योसय जुत्ताणतय होइ । अहवा जहण्णय अणताणतय रूवूणं उद्घोसय जुत्ताणतय होइ । जहण्णय अणताणतय केवइय होइ 2 जहण्णएणं जुत्ताणतएणं अभवसिद्धिया गुणिया अण्णमण्णब्मासो पिंडपुण्णो जहण्णय अणताणतयं होइ । अहवा उक्कोसए जुत्ताणतए रूवं पिक्खत्त जहण्णय अणताणतय होइ । तेण पर अजहण्णमणुक्कोसयाह ठाणाइ । सेत्त गणणासखा । से किं त भावसखा भावसखा-जे इमे जीवा सखगइनामगोत्ताइ कम्माइ वेर्देति । सेत भावसंखा । सेत सखापमाणे । सेत भावप्पमाणे । सेतं पमाणे ॥ १४७ ॥ पमाणे ति पयं समतं ॥

से कि त वत्तव्वया <sup>2</sup> वत्तव्वया तिविहा पण्णत्ता । तजहा-ससमयवत्तव्वया १ परसमयवत्तव्वया २ ससमयपरसमयवत्तव्वया ३ । से किं त ससमयवत्तव्वया <sup>2</sup> ससमयवत्तव्वया २ ससमयवत्तव्वया १ ससमयवत्तव्वया -जत्य ण ससमए आघविज्ञह, पण्णविज्जह, परूविज्जह, दिसज्जह, निदिसज्जह, उवदंसिज्जह । सेत्त ससमयवत्तव्वया । से किं तं परसमयवत्तव्वया <sup>2</sup> परसमयवत्तव्वया । ते किं त ससमयपरसमयवत्तव्वया । से किं त ससमयपरसमयवत्तव्वया <sup>2</sup> ससमयपरसमयवत्तव्वया । जत्थ ण

इवाणीं को पर्छ। क बतानवर्ग हत्कह है रहन नेगमसंगहनवहारा तिनिहं शान्तर्ग इष्टिति । जनहा-ससमजनतान्तर्मः १ परसमजनतान्तर्मः १ सत्तरप्रपरसमजनतान्तर्मः १ । जनापुरनी तनिहं नतस्वनं इस्तहः, तंबहा-धराननतस्वनं १ पर्यमक्त्रप्रमारे १। तरन न जा सा सस्माननतन्त्रमा सा ससमनं पविद्वा जा सा परसमयनतन्त्रमा स परसमर्ग पविद्वा तम्हा दुविहा नचन्यया नतिम विविहा क्तन्यया । विभिन्न धर् णया एन सरसयक्तवर्थं इच्छंति गरिव परसमयक्तवया । कन्हा ! बन्हा परसम्प अन्द्रे नहेळ असक्तावे अविवेध उज्याने नव्यक्ते मिकार्यस्वमितिकः। तम्बा समायकात्रका व्यक्ति परमायकात्रका व्यक्ति वस्त्रवप्रसम्ब वतन्त्रया । **होत्तं श्रन्तध्यया** ॥ १४८ ॥ से कि तं श्रत्याद्विगरे ! श्रत्याद्विगरे-को करस अञ्चयनरस *करवादियारो संबद्धा-गाद्धा-सावज्ञजोगनिरहै* स्वीतन गुगमको य पवित्रती । वक्षियस्य निवया पण- तिनिव्यः गुजवारमा चेव ॥ १ म सेसं जरवादिवारे ॥ १४९ ॥ वे कि तं समोनारे ! समोनारे प्रकिष्टे एकते । रंज्या-गामसमीयारे १ ठनणासमीवारे १ बन्नसमीयारे ३ केतसमीवारे ४ काकसमीयारे ५ आवसमीयारे ६ । बामठववाको पर्व्य वर्णियाको जान सर्पे मनिवस्पीरक्ष्मसमोवारे । से कि से बायक्सरीरमनिवसपीरकारिये च्यासमीवारे ! जानमस्पीरमनिमस्पीरपद्रिते बुष्यसमीमारे तिनिहे प्रवते । स्वहा-जानसमी बारे १ पर्छमीयारे २ तदुभवसमीयारे ३ । सम्बद्ध्या वि मं भायसमीवारेषं कासमावि समोनरंति। पर्धमोबारेक बहा क्षेत्रै वहराणि । तहभयसमोवारे वहा वरे कंग्री भारतामें व बहा पढ़े गीना भारतामें य । बहना शामसंस्परमानेक्सपैर बद्दरिते वृष्ट्रस्मीनारे पुनिहे पण्णते । तंत्रहा-नामसमीयारे य १ तदुसवसमीनारे न २ । चरुपद्विना आवसमीनारेणं भागमाने समोनरत्र, रापुमनसमोनारेणं वर्गी-शियाए समोयस्य कावमाने य । वत्तीसिया कायसमोबारेकं कायमाने समोवस्र तदुमनसमोगारेणं सोमसिगाए समोगरह भागमार्थे य । सोबाराना भानपमी मारेलं भावभाषे समीयराह, त<u>त</u>ुभवनभोवारेलं लक्क्ष्माइवाए समीवरह अस-मावे म । अद्भारमा भागसमीयारेचं भागमाने समीयरप्र, रादुसक्समीनारेचं चन्नभाषमाण् समीयरह भागभावे व । चन्नभाहवा आवसमीवारैर्ज आवभावे समोयरप्, तपुभयगमोनारेणं अदमाणीय तमोयरप् आवधार्थं व र अदमाणी आवे समोबारेण भाषमाने समोबरम्, ततुमनमग्रीयारेणं माजीए सम्रोवरम् भावभावे व । सेत बाधसम्परिसम्बन्धरिकारिते ब्ष्नसमोनारे । सेतं नोधाममभी ब्ष्मममोनारे ।

सेत दव्वसमोयारे । से किं तं खेतसमोयारे १ खेत्तसमोयारे दुविहे पण्णते । तंजहा-आयसमोयारे य १ तदुभयसमोयारे य २। भरहे वासे आयसमोयारेणं आयमावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेणं जबुद्दीवे समोयरइ आयभावे य । जंबुद्दीवे आयसमो-यारेण आयभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेण तिरियलोए समोयरइ आयमावे य। तिरियलोए आयसमोयारेण आयभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेण लोए समोयरइ भायभावे यै। सेत खेत्तसमोयारे। से किंत कालसमोयारे १ कालसमोयारे दुविहे पण्णते। तंजहा-आयसमीयारे य १ तदुभयसमीयारे य २। समए आयसमीयारेणं भायभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेणं आविलयाए समोयरइ आयमावे य। एवमाणापाण् थोवे लवे मुहुत्ते अहोरते पक्खे मासे उक्त अयणे सवच्छरे जुगे वाससए वाससहरूसे वाससयसहरूसे पुन्वगे पुन्वे तुडियंगे तुडिए अडडगे अडडे भववगे अववे हुहुयगे हुहुए उप्पलगे उप्पले पडमगे पडमे नलिणगे नलिणे भारयनिडरंगे अत्यनिडरे अडयगे अडए नडयंगे नडए पडयंगे पडए चूलियंगे चूलिया सीसपहेलियगे सीसपहेलिया पलिओवमे सागरोवमे-आयसमोयारेणं आयभावे समोयरइ, तद्दमयसमोयारेणं ओसप्पिणीउस्सप्पिणीच समोयरइ आयमावे य। ओसिपणीउस्सिपणीओ आयसमोयारेण आयभावे समोयरंति, तदुभयसमोयारेण पोग्गलपरियहे समोयरति आयमावे य । पोग्गलपरियहे आयसमोयारेण आयमावे समीयरइ, तद्भयसमीयारेण तीतद्वाअणागतद्वास समीयरइ । तीतद्वाअणागतद्वास भायसमोयारेण आयमावे समोयरंति, तदुभयसमोयारेण सन्वद्वाए समोयरंति आयभावे य । सेत्त कालसमीयारे । से किं त भावसमीयारे १ भावसमीयारे दुविहे पण्णते । तजहा-आयसमीयारे य १ तदुभयसमीयारे य २ । कोहे आयसमी-यारेण आयभावे समीयरइ, तदुभयसमीयारेण माणे समीयरइ आयभावे य । एव माणे माया लोमे रागे मोहणिजे । अद्वकम्मपयहीओ आयसमोयारेणं आयमावे समीयरति, तदुभयसमीयारेणं छिन्वहे भावे समीयरित आयभावे य । एवं छिन्वहे मावे । जीवे जीवत्थिकाए आयसमोयारेणं आयभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेण सन्वद्वेष्ठ समोयरइ आयमावे य। एत्य संगहणीगाहा-कोहे माणे माया, लोमे रागे य मोहणिक्ने य। पगढी भावे जीवें, जीवत्थिकाय द्वा य ॥ १ ॥ सेत मावसमोयारे । सेचं समोयारे । सेचं उवक्कमे ॥ १५० ॥ उवक्कम इति पढमं दारं ॥

१ लोए आयसमोयारेण आयमावे समोयरइ, तदुमयसमोयारेणं अलोए समोयरइ आयमावे य । इन्हिय पचतरे ।

प्रानमें ४ । थामञ्जूषाओं पुर्व्य पश्चिमाओं । से किं ते दम्मजारमे हे दस्मजारमे दुनिहे पन्नते। तनदा-मागमभो य १ जोक्षागमभो य १। से वि वं बायसके रमजरायचे १ आध्यमधो वृष्यज्ञायणे-नरस वं अज्ञायन' ति वर्य शिक्सियं दिने निर्मे मिर्च परिजिय जान एवं जानहता अधुनतता आगममो तानहमाह शुम्बरदान-भाइ । एवमेव क्वहारस्य वि । संगहस्य वं एग्ये वा अवेगो वा जाव सेर्च आगमने वुन्त्रज्ञायने । से कि से मोभागमधो बुन्यज्ञायने हैं मोभागमधो बन्यजायने हिन्दि पण्यते । तंत्रहा-माणयसरीरदम्बळायये १ मनिक्सरीरवन्बळाक्ये १ जावमस्पर मनियस्पीरबद्दरिते बश्वज्ञायणे । से कि संबाजबस्पीरबब्बज्जायये है २ अञ्चवन प्यत्वातिगारजाणसस्य वं सरीरं ववगवप्रयाचाविस्वतवेशं, श्रीवनिष्यवशं वान नरे न इमेर्च सरीरसमुरसपूर्व जिनदिद्वेनं मानेचं अज्ययने' कि एवं जानविनं वह उनर्देशियं। बाहा को विद्वारो है जाने करकुंने आशी अस्य महकुंने आशी। हेर्न वाष्यसरीरवन्त्रजस्यो । से कि से मनियसरीरवन्त्रजस्यो है मनिवसरीरवन्त्रज्ञानम् ने नीने कोविकस्मकतिक्वांते हमेनं नेव आयत्तपूर्व सरीत्सम्सस्य जिपनिद्वेतं मानेज अज्ञायने' कि वर्ग सेमकाके शिनिकरसङ्ग तान सिक्साइ : बहा को निक्रंयों है क्यं महर्क्तमे मनिस्तह, वर्धं क्यक्रमे भविस्तह । धेर्चं मनिवसरीरवम्बज्यायने । से कि वं जायमधीरम्बिगसधीरवहरिते ब्रुव्यक्तम्ये हे १ पत्तमजेत्वनश्चित् । सेते कानमस्रीर्मिनमस्रीत्वहरिशे दब्बज्लमने । सेर्च गोकागमको बुब्बज्जनके। सेर क्षाज्यानमे । से कि से भागजायणे हैं मानजायणे दुनिहे पण्यते । राजहा-आगममी व नोजागसभी य १। से कि से आगसको भावज्यावये है आगसभ्ये भावज्यावने भाषए उपरत्ते । सैर्स जागमको मामञ्जानको । से कि सं नोकायमञ्जो मानञ्जानके 🖁 मोश्रागमको भावज्यस्ये-गाहा-अज्ञाप्यस्याणवर्णं कम्मार्थं अवस्थे ववनियार्थः क्युकचको व नवार्णः सम्बा अञ्चानगरिष्कति ॥ ९ ॥ वैसं पोधागरमजो मावजसन्ते । भैतं भावज्यसमे । सेन्तं सन्त्रायणे । से कि तं जज्जीये ! अज्ञीये वर्तनीये प्रजाते । तेवहा-नामज्जीये १ ठवनज्जीने २ व्यवज्जीये १ मानज्जीये ४! मामठबमाओ पुरुषं वन्त्रियामो । से कि तं वृष्ण्यक्षीणे ह बृष्ण्यक्रीणे हुन्दिहे एक्सते । र्वबद्दा-मागमध्ये स ९ नोजायमको य ६। से कि से आयमको दन्तरुतीये हैं

आगमओ दन्वज्झीणे-जस्स ण 'अज्झीणे' त्ति पयं सिक्खिय ठियं, जिय, मियं, परिजिय जाव सेत्त आगमओ द्व्वज्झीणे। से कि त नोआगमओ द्व्यज्झीणे 2 नोआगमओ द्व्यज्झीणे तिविहें पण्णते । तंजहा-जाणयसरीरदव्यज्झीणे १ मिवयसरीरद्व्वज्झीणे २ जाणयसरीरमिवयसरीरवङिरते द्व्वज्झीणे ३। से कि तं जाणयसरीरदव्यज्झीणे । जाणयसरीरदव्यज्झीणे-'अज्झीण' पयत्थाहिगारजाण-यस्स ज सरीरय ववगयचुयचावियचत्तदेह जहा दव्वज्झयणे तहा भाणियव्वं जाव सेत्तं जाणयसरीरद्वव्वज्झीणे । से किं तं भवियसरीरद्ववज्झीणे <sup>१</sup> मवियसरी-रदव्वज्झीणे-जे जीवे जोणिजम्मणनिक्खते जहा दव्वज्झयणे जाव सेत्त भविय-सरीरद्व्वज्झीणे । से किं त जाणयसरीरभिवयसरीरवइरिते द्व्वज्झीणे 2 जाण-यसरीरभवियसरीरवइरित्ते द्व्वज्झीणे सव्वागाससेढी । सेत्त जाणयसरीरभविय-सरीरवडरित्ते दव्वज्झीणे । सेत्त नोआगमओ दव्वज्झीणे । सेत्त दव्वज्झीणे । से किं त भावज्झीणे 2 भावज्झीणे दुविहे पण्णते । तंजहा-आगमओ य १ नोक्षागमओ य २ । मे किं त आगमओ भावज्झीणे 2 आगमओ भावज्झीणे जाणए उवउत्ते । सेत्त आगमओ भावज्झीणे । से किं त नोआगमओ भावज्झीणे <sup>2</sup> नोआगमओ भावज्झीणे-गाहा-जह दीवा दीवसय पइप्पइ, दिप्पए य सो दीवो । दीवसमा आयरिया, दिप्पति पर च दीवति ॥ १ ॥ सेत्त नोआगमओ भावज्झीणे । सेत्तं भावज्झीणे । से**न्तं अज्झीणे ।** से किं त आए <sup>2</sup> आए चउव्विहे पण्णते । तजहा— नामाए १ ठवणाए २ दव्वाए ३ भावाए ४। नामठवणाओ पुव्व भणियाओ। से कि त दन्त्राए ? दन्त्राए दुविहे पण्णते । तजहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ । से कि त आगमओ दन्त्राए <sup>2</sup> आगमओ दन्त्राए—जस्म ण 'आए' ति पय सिक्खिय, ठिय, जिय, मिय, परिजिय जाव कम्हा <sup>2</sup> 'अणुवओगो' द्विमिति कहू। णेगमस्स ण जावऱ्या अणुवउत्ता आगमओ तावऱ्या ते दन्वाया जाव सेत आग-मओ द्वाए। से किं त नोआगमओ द्वाए 2 नोआगमओ द्वाए तिविहे पण्णते । तजहा-जाणयसरीरदञ्वाए १ भवियसरीरदञ्वाए २ जाणयसरीरभवियसरी-रवडरिते दव्वाए रे। से कि त जाणयसरीरदव्वाए 2 जाणयसरीरदव्वाए-'आय' पयत्याहिगारजाणयस्स ज सरीर्यं ववगयजुयचावियचत्तदेह जहा दव्वज्झयणे जाव सेत्त जाणयसरीरद्व्वाए । से कि त भवियसरीरडव्वाए<sup>२</sup> भवियमरीरडव्वाए-ने जीवे जोणिजम्मणणिक्खते जहा दव्वज्झयणे जाव सेत्त भवियसरीरदव्वाए । से कि त जाणयसरीरभवियसरीरवडारेते दव्वाए <sup>2</sup> जाणयमरीरभवियसरीरवडारेते दव्याए तिविहे पण्णते । तजहा-सोइए १ कुप्पानयणिए २ सोगुत्तरिए ३ । से किं तं

114 सत्ताममे **अञ्चलेगहारप्रशं** मोदए 🖁 कोइए तिविहे फुल ते । तैयहा—सविते १ अविते २ मीसए स 🤾 । से 🎏 र्त समिते हैं समिते तिमिहे पण्यते। र्तजहा-प्रथमार्ग १ चतप्रशार्ग २ क्यमार्ग है । हुपयार्च –दासार्च दासीर्ज वसप्यक्षार्च-भासार्च हरबीय, अपवार्ज-अंबार्च अंबारुपर्च माए । ऐस समिते । से किं तं अभिते ! अभिते-ग्रम्मण्यर्थममिमोतिकस्य-विखप्पनास्तरसमार्च (संतवानपृष्ट्य) मापू । वेर्च अचित्र । से कें ते मीसर् मीसए-वासामं वासीम आसाम बटनीनं समागरियातज्ञाबंधिकाम आए ! से तं मीसए । से ते कोहए । से कि ते जुन्मानसमिए है कुम्मानसमिए विविद्वे पण्यते । तंबदा-समिते १ मनिते २ मीसए व ३ : तिम्ब नि बदा क्रोहए बाव से वं मीसए । से सं क्रप्याच्यावाए । से 🏁 तं कोग्रतरिए । कोग्रतरिए विविधे पानते । तबहा-समिते १ ममिते २ मीसए व १ । ये 👫 वं समिते । समिते नीसर्ग शिंस्स रिसमियार्थ । शेर्त सन्तित । से कि तं अनिते । अनिते-परिवाहार्थ स्टबर्ट कंबळानं पानपुरूपाणं आए । सेत अनिते । से कि तं शीसए है मीसए-सिसा<sup>र्च</sup> सिस्सिविनामं समेडोकगरकार्यं आए । से तं बीसए । से त क्रोगुत्तरेए । से तं व्यक् यसप्रेरमनियसरीरवहरिते वन्वाए । धेरी जोजायसओ वन्वाए । से वं दन्वाए । हे कि ते भावाए ! भावाए तुमेडे पन्नते । तैयहा-मागमको व ९ मोमायमको व ९ १ से कि दें भागमको मानाए है मागमको मानाए बायए उनदत्ते । से दें भागमको मानाए । से कि तं नोसायमको मानाए ! शोजागमको माचाए प्रविद्वे पन्नसे । रंबहा-परात्मे व १ अपसरचे म १ । से कि ता परात्मे हे परात्मे तिमेहे पत्नते । र्वबद्दा-नाजाए १ दंधनाए २ चरिताए ३ । छेत्तं परस्ये । छे 🙉 तं अकार्ये ह अपरात्में चर्तामाई पन्मते । तंत्रहा-मोहाए १ साभाए १ साहार ३ सेहाए ४ । से द अपस्ति । से ते नोजनमधी भागाए । से तं भागाए । से तं भाव । से हैं र्वं सबका र सकता चरुनिहा पञ्चला । तंत्रहा-नामञ्जावया ९ स्वकंत्रहरूमा १ बुक्तज्ञावणा ३ सावज्ञावजा ४ । नामठवणाओ पुर्क्त समियाको । से 🕏 ते वस्र-ज्सवना <sup>१</sup> व्यवज्ञानमा जुनिहा पण्यता । तंत्रहा-आगसमो य १ मोमायसमो व २ । से कि वंजापसको क्लाजानका <sup>३</sup> आध्याको क्लाजानका—कस्त वं 'स्वने' ति पर्ने रिक्शिय ठिने जिमे मिनं परिजिये जान सेर्ग भागमध्ये दन्त्रज्ञानना । से कि हो मोआगमभी बम्बज्याक्या है जोआगमभी बम्बज्याक्या हिविहा पञ्चला । र्पज्ञहा-जानवसरीरहरूकामानाः १ भविष्यगरीरहरूकामानाः २ जानकारीरमधिव सरीरवहरिता दम्बज्यानमा ३ । छे किं तं जायसपरीरदम्बज्यानमा १ १ श्वरणा पत्रपादियारमानगर्स जं सरीहर्यं वनपत्रमुखनानियनगर्दं सेसं वहा व्यवज्ञानने

जाव सेत्तं जाणयसरीरद्व्वज्झवणा । से कि तं भवियसरीरद्व्वज्झवणा <sup>२</sup> २ जे जीवे जोणिजम्मणणिक्खते सेस जहा दव्वज्झयणे जाव सेत्त भवियसरीरदव्वज्झवणा। से किं त जाणयसरीरभवियसरीरवइरित्ता द्ववज्झवणा 2 २ जहा जाणयसरीरभविय-सरीरवइरित्ते दन्वाए तहा भाणियन्वा जाव से त मीसिया । से त लोगुत्तरिया । से तं जाणयसरीरभवियसरीरवइरित्ता दव्वज्झवणा । से त नोआगमओ दव्वज्झवणा । से त दन्त्रज्झवणा । से किं त भावज्झवणा <sup>२</sup> भावज्झवणा दुविहा पण्णता । तंजहा~ आगमओ य १ नोआगमओ य २ । से किं त आगमओ भावज्झवणा <sup>१</sup> आगमओ भावज्झवणा जाणए उवउत्ते । से त आगमओ भावज्झवणा । से किं त नोआग-मओ भावज्झवणा 2 नोआगमओ भावज्झवणा दुविहा पण्णत्ता । तजहा-पसत्या य १ अपसत्या य २ । से किं तं पसत्था १ पसत्या तिविहा पण्णत्ता । तजहा-नाण-ज्झवणा १ दंसणज्झवणा २ चरित्तज्झवणा ३ । सेत्त पसत्या । से कि त अपसत्था  $^2$ अपसत्था चडव्विहा पण्णत्ता । तजहा—कोहज्झवणा १ माणज्झवणा २ मायज्झवणा ३ लोहज्झवणा ४। से त अपसंस्था। से त नोआगमओ भावज्झवणा । से त भावज्झवणा । से तं झवणा । से तं ओहनिष्फण्णे । से कि तं नामनिष्फण्णे 2 नामनिप्फणे सामाइए । से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते । तजहा-णामसामाइए १ ठवणासामाइए २ दन्वसामाइए ३ भावसामाइए ४। णामठवणाओ पुन्व भणि-याओ । दब्बसामाइए वि तहेव जाव सेत्त भवियसरीरदब्बसामाइए । से किं त जाणयमरीरभवियसरीरवइरिते दव्वसामाइए <sup>२</sup> २ पत्तयपोत्थयलिहिय । से त जाणय-सरीरभवियसरीरवडरित्ते दन्वसामाइए । से त नोआगमओ दन्वसामाइए । से त दव्बसामाइए । से किं त भावसामाइए <sup>२</sup> भावसामाइए दुविहे पण्णते। तजहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ । से किं त आगमओ भावसामाइए<sup>2</sup> आगमओ भावसामाइए जाणए उवउत्ते । से त' आगमओ भावसामाइए । से किं नोआगमओ भावसामाइए <sup>१</sup> नोआगमओ भावसामाइए-गाहाओ-जस्स सामाणिओ अप्पा, सजमे णियमे तवे। तस्स सामाइय होई, इइ केविलिमासिय ॥ १॥ जो समो सन्वभूएसु, तसेसु थावरेसु थ। तस्स सामाइयं होइ, इइ केविल-भासिय ॥ २ ॥ जह मम ण पिय दुक्ख, जाणिय एमेव सव्वजीवाण । न हणइ न हणावेइ य, सममणइ तेण सो समणो ॥ ३ ॥ णित्य य से क्रोड वेसो, पिओ य सब्बेसु चेव जीवेसु । एएण होइ समणो, एसो अन्नोऽवि पजाओ ॥ ४ ॥ उरग-गिरिजलणसागर-, नहतलतरुगणसमो य जो होइ। भमरमियधरणिजलरुह-, रवि-पवणसमो य सो समणो ॥ ५ ॥ तो समणो जइ समणो, भावेण य जइ ण होड

[ बलुबोग्लस्स**र** सुचागमे 2252 पारमधो । समने य जणे व समो समो य माजावमानेस ॥ ६ ॥ से वै नोभागमने भावसामाइए । से ते भावसामाइए । से ते सामाइए । से ते सामानिय्यापने । से 🕏 तं धतासावगनिष्यको है इसार्कि सत्ताक्षावयनिष्यको निक्खेवं इच्छादेत्, से व एए क्रमसणे नि य जिनिवापम् । कम्बा है कामवर्त्त । मत्ति हमो तहए मधुन्नेगदारै बाजुरासे ति । ठत्य णित्रक्तो इहं मिनिक्तो सन्छ । हहं ना मिनिक्तो तत्न मिनिकी मबद्द । तम्बा **बर्ड** ण निविद्यालंड, त**र्ह्स** क्षेत्र शिविकप्पद् । स्ते तं णिक्कोने ॥ १५९ ॥ से कि तं अधुमाने है अलुगने दुविहे पळले । संबद्दा-सत्ताकुगने स १ निजुतिश्रहणे न २ । से कि तं निजातिकानुगर्भ है निजातिकानुगर्भ विविद्वे प्रव्यते । तंत्रहा-निकरेत निश्चतिक्षकुगमं ९ उपरवायनिज्ञतिकाषुगमे २ इत्तप्प्राधियनिज्ञतिक्षकुगमे ३। व कि ते जिन्नेपतिज्ञुत्तिमाजुगमे ! निक्केपनिज्ञतिमाजुगमे क्लुगए । से ते निक्के निज्ञतिक्रापुगमे । से कि तं सकरकायनिज्ञतिक्रापुगमे है २ इमाई होई सूक्तावाई भक्तांताली तंत्रहा-गाहाओ-वहेते निष्यं व निस्तमे केत काल प्रसिव कारन क्या सम्बाण नए समोगारनाष्ट्रमए ॥ १ ॥ कि क्यानिह वस्स वर्षे क्य कर्म किर्मिर इनइ कार्स । कर्म संतर-मनिरहिन भवागरिस प्रशंक निरसी ॥ ९ व सेचं स्वरमायनिकृतिमणुगमे । से कि है इत्तरणसिवनिकृतिम्ह्यामे ३ इत्तरणसिव निम्नुतिअनुगमे-द्वर्गं क्यारेडम्न-अवध्यक्तियं असिकेमं अस्यासक्रियं पवितुत्त पण्डिपुञ्जनीर्स कंट्रोह्नविप्पमुकं ग्ररवाजनीयगर्ग । तको तस्य पञ्चित्रहरू सरमयसं का परसम्भयम्य वा वैषयम् वा मोककापवे था सामाद्रयपर्व वा मोसामाद्रमपन वा वजो तम्मि उचारिए छमामें केरि व मं मगर्वताम केंद्र भरवाहियारा बहिनवा भवंति केंद्र सरवाहिगारा अधिवाना भवंति । तको रोसि समहिगनार्थ अहियसम्बद्धार पय पर्वा बन्नाइस्सामि-गाञ्चा-चंत्रिया य पर्य चेन पत्रस्थो पयविमाहो । चात्रमा य परिन्दी प क्रमिन्द्रं निक्कि सक्त्यार्थं ॥ १ ॥ से तं सत्तप्रतस्थिनिज्ञासिक्षानुसमे । से ते निश्चतिभयुगमें। स्ते तं मणुगमी॥ १५३॥ से कि तं पए है सत मूजनबा पञ्चता। तंत्रहा-नोगमे १ सगई २ ववहारे १ उनुस्य ४ सहे ५ समझिवडे ६ एवं मृए । तस्य गाहामो-नेगेहिं मानेहैं, शिवहत्ति चेगमस्य व निहत्ती । स्थाने पि नदार्थ सम्बन्धिमाने प्रणह नोस्त्री ॥ ॥ स्माह्यपिकियमं संस्कृतन समासको विवि । वच्छ विविध्यस्यं वच्छारो सम्बद्ध्येषः ॥ २ ॥ जुप्पद्रमारी अण्डुसुओ भनमिही सुनेसम्मी । इच्छ्य निसंस्थितर धनुष्यम्म जन्ने तरी ॥ ३ म बत्सुओ र्राज्यमं होर् सवस्युनग्रसमीत्रको। वेजनजन्तरुभवे रुलेगुओ सिमेर्र ॥ ४ ॥ सावस्मि शिल्युनमे असिव्यिज्यस्मि वेष अत्यस्मि । जर्बन्यस्य ११

# देव गुरु धर्म सम्बन्धा प्रश्नोत्तर ।

### देव

मञ्ज-देव किसे कहते हैं?

उत्तर-देव दो प्रकार के होते हैं—लौकिक ग्रौर लोकोत्तर। दोनों का स्वरूप अलग अलग है।

भ०-लौकिक देव किसे कहते हैं?

उ०-लोक में कई तरह से देव शब्द का प्रयोग होता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, देव कहलाते हैं, स्वर्ग में रहने वालों को देव कहते हैं तथा राजा और चक्रवर्ती भी देव कहलाते हैं।

म०-लोकोत्तर देव किसे कहते हैं?

डिंग्-जो महात्मा अनेक जन्मों की साधना के झारा अपनी आत्मा को सर्वथा विशुद्ध बना लेते हैं। जिनमें अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख और अनन्त शक्ति प्रकट हो जाती है; अतएव जो सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, होते हैं, वीतराग होते हैं, कर्मों से एकदम मुक्त हो जाते हैं; वे लोकोत्तर देव कहलाते हैं।

प्र०-ग्रानन्त ज्ञान श्रीर ग्रानन्त दर्शन से क्या मतलव है ? उ०-तीन लोक में श्रीर तीन काल में जितने भी पदार्थ थे, हैं ग्रीर होंगे उन सब को एक साथ पूर्ण रूप से जानने बाला ज्ञान ग्रानन्त ज्ञान कहलाता है। ग्रीर सामान्य रूप से सब पदार्थों को जानने वाला ग्रानन्त दर्शन कह-लाता है। जो, उवएसो सो नओ नाम ॥ ५ ॥ मव्वेमिं पि नयाण, वहुविह्वत्तव्वयं निसामित्ता । त सन्वनयिवसुद्ध, जं चरणगुणद्विओ माहू ॥ ६ ॥ सेतं नए ॥ १५३ ॥ अणु-ओगद्दारा समत्ता ॥ सोलससयाणि चउरुत्तराणि, होंति उ इमिम गाहाण । इसहस्स मणुद्धुभ-, छद्वित्तपमाणओ भणिओ ॥ १ ॥ णयरमहादारा इव, उवद्यम-दाराणुओगवरदारा । अक्खरविंदुगमत्ता, लिहिया दुक्खक्खयद्वाए ॥ २ ॥

॥ अणुओगदारसुत्तं समत्तं ॥

तस्समत्तीए

# चत्तारि मूलसुत्ताइं समत्ताइं

॥ सन्वसिलोगसखा ५५०० ॥





## णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

## <sub>तत्थ</sub>णं आ**वस्सयसुत्तं**

**©** 

## अह पढमं सामाइयावस्सयं

श्रीवस्सही इच्छाकारेण सदिसह भगव! देव(सी)सियैपिडक्कमणं ठाएमि, देव-वियणाणदंसणचिरत्ततवअइयारचिंतवणट्ट करेमि काउसगं॥ १॥ णमो अरिहताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सन्वसाहण ॥ २॥ करेमि भते! सामाइय सन्व सावज जोग पचक्खामि, जावजीवाए तिविह तिविहेणं मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतिप अण्ण न समणु-जाणामि, तस्स भते! पिडक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि॥ ३॥ इच्छामि (पिडक्कमिड-ओ) ठामि काउसग्ग, जो मे देवसिओ अइयारो क्यो काइओ वाइओ माणसिओ उस्म्रतो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिजो दुज्झाओ दुविचितिओ अणायारो अणिच्छियन्वो असमणपाउग्गो नाणे तह दसणे चिरत्ते सुए सामाइए तिण्ह गुत्तीणं चउण्हं कसायाण पचण्ह महत्वयाणं छण्हं जीविनकायाण सत्तण्ह

१ विही-पुर्वि 'तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेमि वदामि नमसामि सक्का-रेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवयं चेह्य पजुवासामि मत्थएण वदामि ।' इच्चणेण पाढेण गुरुवदणा किज्जइ । पच्छा णमोक्कार्रचारो 'एसो पच णमोक्कारो, सन्वपावप्प-णासणो । मगलाण च सन्वेसिं, पढम हवइ मगल ॥' जुत्तो । पुणो 'तिक्खुत्तो॰' तओ 'इच्छाकारेण॰' 'तस्सुत्तरीकरणेण॰' जाव 'ठाणेण' फुडुच्चारण किचा 'मोणेण॰' अप्फुड अन्वत्त मणंसि 'इरियावहियाए' मग्गविसोही कीरइ । णमो-क्कारुचारणेण झाण पारिज्जइ, पच्छा 'लोगस्स॰' फुडुच्चारो, तओ दुण्णि 'णमोऽत्यु ण॰'। पच्छा सामाइय पढमावस्सयं पार्च्भइ । पत्तेयावस्सयसमत्तीए 'तिक्खुत्तो॰' इच्चणेण गुरु विद्तु अण्णस्सावस्सयस्साणा घेप्यइ ति विसेसो । २ 'राइय' 'पिक्खिय' 'चाडम्मासिय' 'सवच्छरिय' । ३ केइ विहीए 'तिक्खुत्तो॰' पच्छा केवलं णमोक्कारं णवपयमिच्छति, 'करेमि भते ।॰' इच्चणेण पढमावस्सयं पार्च्मित य ।

पिनेतमार्थ शहुश्य पनगणमान्त्रम नाम्बं गंगनेत्यां प्रापि एति हैं समावसमें समापार्थ में मोदि में वे निराहितं तस्य शिष्कांति बुदर्व 8 × 8 तस्य तर्षे करित हैं स्वार्थ समाप्त में मार्थ में स्वार्थ समाप्त में मार्थ मार्य मार्थ मार्थ

#### अष्ट बीयं चउबीसस्पवादस्सयं

स्मेगस्स उज्जेयगरं कम्मशिक्वरं किथे। कार्युति केन्द्रस्यं कउर्यसेपि केन्द्रस्यं त १ त वदममकियं व नीं, कानवमीत्ववयं व द्वार्यं व । वदमणद्वं द्वार्यं व । त वेदमार्थं वेदे ॥ २ ॥ इसिष्टे व पुण्यतं चीयक्वित्रकंदं नायुक्तं व । क्षेत्रकं मनतं व कियं वन्न्यं संति व नदामं ॥ २ ॥ इंतुं करं व मित्र स्थित्यव्यं नतिक्षिणं व । वंदारिक्षिणं वर्षं वद स्थानतं व ॥ ४ ॥ एवं मार्य समित्रका निद्यारस्याणा पदित्यस्यस्या । व्यवसीपि विकास्य हिस्परा में पर्यार्थं ॥ ५ ॥ किवित्यवंवित्यस्यात्वा व व प्रकासस्य व्यवस्य हिस्परा में पर्यार्थं वस्तिक्षरस्यामा पदित्यस्यस्या वेद प्रकासस्य व्यवस्य हिस्परा । महत्यविद्यानं वस्तिक्षरस्यानं विद्या व ॥ व । व्यवस्य विस्मावस्य । व्यवस्य वस्तिक्यानं । वसार्वस्यामीरा स्थित स्थितं सम्म विद्यं ॥ ७ ॥ इह् वीयं व्यवस्यान्या वस्तिक्षरस्योग्यस्य वस्तिक्षरस्य वस्तिक्षर्यः।

१ आगमे शिविद्दे बाव मुख्युक पंच इपकामि ठामि 'एक्टरस वि देर रिम्मे दुनितित दुनारिम्मे दुनिद्धिमे दुनारिक्मं पूर एक्के पात्रा मोचेन प्रतानररा-यन्त्राने आक्रमेति पुन्नो क्रमानस्थयस्य एक्स नात्रपालस्वरस्यति शिवा इउ बारपणुक्ता वकारिवर्ति । एर्द्रा बागमे 'इच्छामि ठामि पूर दुन्नि कदमा-गाहिए 'एक्टरस्ट कि अवस्थरमागाहिए कई मासाए । ऐसा विन्यामिकनामाए इक्मेरि तारोक्सेया ।

## अह तइयं वंदणावस्सयं

इच्छामि खमासमणो ! वंदिज जाविणजाए निसीहियाए, अणुजाणह मे मिउग्गह, निसीहि अहोकाय कायसफास, खमणिजो मे किलामो, अप्पिकलताण वहुस्रभेण मे दिवसी वइक्कतो १ जता मे १ जविणज च मे १ खामेमि खमासमणो ! देवसिय वइक्कम, आविस्तियाए पिडक्कमामि खमासमणाण देवसियाए आसायणाए तेत्तीसन्नयराए जिलिच मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोहाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधममाइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवैसिओ अइयारो क्यो तस्स खमासमणो । पिडक्कमामि निंदािम गरिहािम अप्पाण वोसिरािम ॥ इह तह्यं वंदणावस्तयं समतं॥ ३॥

# अह चउत्थं पडिक्रमणावस्सयं

चैतारि मंगल-अरिहता मगल, सिद्धा मगल, साहू मगल, केवलिपन्नत्तो धम्मो मगल। चतारि लोगुत्तमा-अरिहता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चतारि सरण पवजामि-अरिहता सरण पवजामि, सिद्धा सरण पवजामि, सिद्धा सरण पवजामि, साहू सरणं पवजामि, केवलिपन्नत्त धम्म सरण पवजामि।। १॥ इच्छामि पिडक्किमिउ इरियाविह्याए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हिरियक्कमणे ओसाउर्तिगपणगदगमट्टीमक्कडासताणासक्कमणे जे मे जीवा विराहिया एगिदिया वेइदिया तेइदिया चउरिंदिया पिचिंदिया अभिहया वित्तया लेसिया सघा-इया सघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओ ठाण सकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ २॥ इच्छामि पिडक्किमिउ पगामिरिज्ञाए निगामिरिज्ञाए सथाराउव्वदृणाए परियट्टणाए आउटणाए पसारणाए छप्पइसघटणाए कृद्ध कक्कराहए छीए जमाइए आमोसे ससरक्खामोसे आउलमाउलाए सोवणवित्त्याए इत्थीविप्परियासियाए दिट्ठीविप्परियासियाए मणविष्परियासियाए पाणभोयणविप्परियासियाए जो मे देवसिओ अइयारो क्रो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ३॥ पिडक्रमामि गोयरचरियाए भिक्खायरियाए उग्घाडकवाडउग्घाडणाए साणावच्छा-

१ 'राइओ' 'पिक्खओ' 'चाउम्मासिओ' 'सवच्छरिओ । २ 'तिक्खुत्तो० इचणेण वंदण किचा पच्छा पचणमोकारं तओ 'करेमि भंते०!' तओ 'चत्तारि मगल०'। ३ 'चत्तारि मगल०' पच्छा 'इच्छामि०' पढियन्व ति केइ।

दारासंबद्दमाय् मं वैपाहुडियाय् बक्षिपाहुडिवाय् ठवणापाहुडिवाय् संकिन् सहमानारिए अमेरावाए वायेसवाए वामभीयनाए बीमभीनगाए इरियभीयनाए वच्छाक्रीमनस् पुरेकम्मियाए अविद्वहरूराए व्यर्धमङ्गहरूराए रसर्वमङ्गहरूराए पारिसाहविदाए पारिङ्वानः मियाप ओहासगमिक्ताए जं उरगमेर्च रुप्यावजेसगाए अपरिमुद्धं परिचाहिक परिमुद्ध बा जे म परिद्वनिये तस्स निच्छानि बुक्के II ४ II परिश्वमानि बाडश्वार्ने धन्धानस्स अन्त्यमाप् समझोकार्वं मेहोकार्वस्य अप्यक्तिह्वाप् वृप्यक्तिह्वाप् वप्यमञ् माए हुप्पतक्रमाए सहदमे बहदमे सहबारे अधायारे जो मे देवशिको मह्यापे कमो एस्य मिक्कामि बुक्तं ॥ ५ ॥ पविक्रमामि पुगविद्वे अर्थजमे । पविक्रमामि बोर्डि बंबपेहि-रायपंथपेयं दोसबंबपोर्यः पिडामामि लिक्के एडिक्के-मनर्देडेनं वसहर्विणं काश्रदेवेणे । पविकासामि तिव्हिं गुत्तीवि-सणगुत्तीए, बज्युतीए, शर्न-गुत्तीए । एडिइमामि विक्र स्क्रेडि-मागासकेयं निवाधसकेय मिस्कार्वसनन्त्रेणं । पविक्रमानि विश्वे गारवेहि-दश्वीपारवैणं रसगारवैर्ण सामागारवेल । पविक्रमानि तिहैं विरम्बनाई-वानविराहनाए बंसमविराहणाए, चरित्तविराहणाए। पविहमानि चर्राहें भूनाएहें-होडकराएणं माधकराएणं माश्राभसाएणं स्रोमस्राएणं। पविद्यमामि चढाई सन्बाई-जाद्दारसञ्जाए, श्वयसञ्जाए, मेहमसञ्जाए, परिस्मह सम्माए । परिक्रमामि चर्राहे विश्वादि-इत्वीरद्वाप्, भत्तरद्वाप्, देसक्दाप्, राज-कहाए । परिकासि चन्नि शामें हैं-महेर्य शामेर्य शोर्य शामेर्य प्राप्ति प्राप्ति शामेर्य शामेर्य सकेमं सामेमं । पविक्रमामि पंत्रहि किरिवाहि-काइयाए, सक्रिमरविद्याए, पाउछि-बाए, परिताननिवाए, पाणाइवायनिवरिवाए । पविकसासि पेचाई कास्युकेई-स्वर्ण वर्षेणं मंत्रेचं रसेणं पासेचं। पविषयमानि पंच**र्वे** सक्**ञ**प्**हे**—सञ्जालो पाराह्याः बाओ बेरमर्ज धन्नाको सुसाबाबाओ बेरमर्ज सम्बाओ अरिम्नादाबाओ बेरमर्ज सम्बाभो मेहुणाओ बेरमर्थ सम्बामो परिन्यक्षाओं बेरमर्थ । परिक्रमामि पंचर्वे समिद्रे न्रियाममित्रेष, मासासमित्रिष, प्रशासमित्रेष, अत्यानमेवमत्तिककेवणा-समित्रेष्, रुवास्पासक्ववेककहरियानपारिकानिमासिन्देष् । परिवस्मानि स्वी जीव निराएहिं-पुरुषिकाएवं आउकाएवं तेसकाएवं वाउकाएवं वयस्सारकाएवं यसकाएर्ज । पश्चिममामि स्वर्ति केसाह्री-केप्यकेसाय, जीवकेसाय, कारकेसाय, रेज केसाए, पन्द्रजेसाए, क्वाकेसाए । पविकासामि सत्ताहि सम्बाभिति, सहाहि सम्बाभिति, वबह्र बंगचेरमुताहर्ते, वसमिद्रे समयबस्मे पृगारसहि सवासगपडिमाई, वारसई सिन् ( क्) सुपरिवासि, वेरसिं किरियाअमें , चव(व)सिंव मूलामेरी, पण्यरसिं परमाह्मिसपृक्षि, सोकस्त्री गाहासोमस(पृ)क्षि, एकसमिहे अस्त्रमे अक्रूप्रसमिहे

सहसागारेणं वोसिरामि ॥ १ ॥ **पोरिसीपचक्ताणं-**उग्गए सूरे पोरिसि पचक्खामि, चडव्विहपि आहार असण पाण खाइम साइम अण्णत्थऽणाभोगेणं सहसागारेण पच्छण्णकालेण दिसामोहेण साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि [एवं सष्टुगोरिसिय] ॥ २ ॥ पुरिमहृपचन्यवाणं-उग्गए स्रे पुरिमहुं पचक्खामि, चउन्त्रिहंपि आहारं असण पाण खाइम साइम अण्णत्थऽणाभोगेणं सहसागारेण पच्छण्णकालेणं दिसामोहेण साहुवयणेण महत्तरागारेण सन्वसमा-हिवतियागारेणं वोसिरामि ॥ ३ ॥ एगासण[बेआसण]=पञ्चक्खाणं-[उग्गए सूरे] एगासण [बेआसणं] पचक्खामि, [दुविह] तिविहपि आहारे असण [पाणं] खाइम साइम अण्णत्थऽणाभोगेण [सहसागारेण] सागारियागारेण सा[उद्द]उटणपसारणेण गुरुअच्<u>भुद्</u>दाणेण पारिद्वावणियागारेण महत्तरागारेण सन्त्रसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ४ ॥ एगट्टाणपच्चक्खाणं-एगट्टाण पचक्खामि, चउव्विहिप आहारं असण पाण खाइमं साइमं अण्णत्यऽणाभोगेणं सहसागारेण सागारियागारेण गुरुअब्भुट्टाणेणं पारिद्वावणियागारेणं महत्तरागारेण सन्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ५॥ आयंविलपञ्चक्खाणं-आयविल पचक्लामि, [तिनिहपि आहार असणं खाउ्मं साइम] अग्णत्यऽणाभोगेण सहसा-गारेण लेवालेवेणं गिहत्यससहेण उक्खितविवेगेण पारिद्वावणियागारेण महत्त-रागारेणं सन्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ६ ॥ अभत्तद्र[चउव्विहा-ार]पच्चक्खाणं-उग्गए स्रे अभत्तह पचक्खामि, चउन्विहपि आहारं असण ग बाइम साइम अण्णत्यऽणामोगेण सहसागारेण पारिष्ठावणियागारेण महत्तरा-ग सन्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि॥ ७-१ ॥ अभत्तद्व[तिविहाहार]-- खाणं-उग्गए स्रे अभत्तद्व पचक्खामि तिविहिप आहारं असण खाइम न्ण्णत्यऽणाभोगेणं सहसागारेण पारिद्वावणियागारेण महत्तरागारेण सन्ब-नियागारेण पाणस्स छेवेण वा अच्छेण वा बहुछेण वा ससित्थेण वा ा वीसिरामि ॥ ७-२ ॥ दिवसचरिम[भवचरिम]पश्चक्लाणं-भवचरिम वा] पचक्यामि, चउव्विहपि आहार असल पाण ऽणाभोगेण सहसागा

ोमी, चर्ड • ामि, चर्ड • 110

वार्षति केत् साह रवहरणगुण्डमपशिक्तमाह्यारा पंचमह्यव्यवपारा क्रपुरसम्बद्धस्य-संग्यारा अस्वयासारविधा ते सम्बे स्थिता मण्या अस्वत्य बरामि ॥ वर्षे (स्रीयमिक्तव्यवस्यार, सीसे साहम्मिर वृक्तमधे वा वे ये केद्र करामा सम्बे सिबेंद सामेंमी ॥ १ ॥ सम्बद्ध स्मार्थाचेत्रस्य अम्बद्धा केद्रस्य स्वत्य सिक्त सम्मित्रमा यमानि सम्बद्ध स्वत्यति ॥ १ ॥ सम्बद्धा स्वत्यति स्वत्य सीरा स्वत्य वे। सम्मित्रमित्रविक्तमे । स ॥ १ ॥ ] साम्यार्था सम्बद्धा स्वत्य वे। सिक्ती मे सम्बद्धानु स्वत्य स्वत्य ॥ स्वत्य स्

### **अह पनमं** काउस्सन्गावस्सय

बीतस्तर्शि । करेमि मते ! । इच्छमि ठामि कावसमं बाब समधानं बोबावं तस्य मिन्द्रामि दुबरे । तस्य कच्छमिनं बाब सम्पारं बोसिर्रामि ॥ इत् पंबर्म काडस्त्रमाणस्त्रयो सम्पर्ति ॥ ५ ॥

The state of the s

#### **अइ** छ्टं प<del>र्वश</del>काणावस्सय

इसमिद्दे त्यस्थाने प शं अभायपाइक्टं क्षावेशहूर्य निर्वित येश । सगारमागार, परिभागको तिरूपेश २ १ ४ छक्ते नेव अस्तर, व्यस्तारी पर्वे दसदा । जमोकारसाहित्यपाक्तकालां-उम्मप दूर व्यक्तरहर्षि व्यक्तकाभि यत्रमिद्दित साहारे स्टाप पार्च बाहर्स सहस्रे सन्तर-वानीने

१ बोद्धगगवामी माहाको क्वन्तरेऽक्षिगाबी बन्धीत । १ तमो वज्यग्रीवन्त्र वीवयोक्षमावगाएवं प्रविक्षः । ठवी-। बक्तमबोऽक्योग्राचेच्यो । १ बस्य क्रवे क्ष्म स्व्वामी व मंदी । द्वन्धित बन्धनुक्याए छमाने देवस्ति विशोचत्रं क्रेमी क्रव सम्म हि उवारित । ४ ति पर्वित् क्वत्यसर्थ क्ष्मा ठवा 'ब्रोमस्य वज्येवगरे वारवज्यं मन्त्रा छमानेत्र छ छमानेक्षरं कात्रसम्यं परितृ पुण्यति 'ब्रोमस्य क्रमेन समरे जुमानारेक तार्थ इच्छानि बमासस्यो पुन्यत्वागे प्रविक्रम प्रधानीवे प्रवस्त्रकानि सिंहै।

सहसागारेणं वोसिरामि ॥ १ ॥ पोरिसीपचक्लाणं-उगगए सूरे पोरिसि पचक्वामि, चरुव्विहपि आहार असणं पाणं याइम साइम अण्णत्थऽणाभोगेणं सहसागारेण पच्छण्णकालेण दिसामोहेण साहुवयणेण सन्वसमाहिवत्तियागारेणं वोचिरामि [एव सहुपोरिसिय] ॥ २ ॥ पुरिमहृपच्चक्खाण-उग्गए स्रे पुरिमहुं पचक्खामि, चडिवहंपि आहारं असण पाण खाइम साइमं अण्णत्थऽणाभोगेणं सहसागारेण पच्छण्णकालेणं दिसामोहेण साहुवयणेण महत्तरागारेण सन्वसमा-हिवतियागारेण वोसिरामि ॥ ३ ॥ एगासण[वेआसण]=पच्चक्खाणं-[उग्गए सूरे] एगासण [वेआसण] पचक्खामि, [दुविह] तिविहिप आहारं असण [पाणं] खाइम साइम अण्णत्यऽणाभोगेण [सहसागारेण] सागारियागारेण सा[उर्ह]उटणपसार्णेण गुरुअब्भुहाणेण पारिहानणियाग।रेण महत्तरानारेण सन्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ४ ॥ एगट्ठाणपञ्चवस्वाणं-एगट्ठाण पचक्लामि, चउव्विद्धपि आहारं असण पाण खाइम साइमं अण्णत्यऽणासीगेणं सहसागारेण सागारियागारेण गुरुअच्युद्वाणेणं पारिद्वावणियागारेणं महत्तरागारेण सन्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ आयंबिलपद्मक्लाणं-आयविल पचक्खामि, [तिनिद्िप आहारं असणं खाइमं साइम] अग्णत्यऽणाभोगेण सहसा-गारेण छेवाछेवेणं गिहत्यससह्रेण उक्खितविवेगेण पारिहावणियागारेणं महत्त-रागारेणं सव्वसमाहिवित्रयागारेण वोसिरामि ॥ ६ ॥ अभत्तट्ट[चडिवहा-हार पिचन खाण-उग्गए सूरे अभत्तद्व पषक्खामि, चडिव्हिप आहारं असण पाण खाइम साइम अण्णत्यऽणामोगेण सहसागारेण पारिद्वावणियागारेण महत्तरा-गारेणं सन्वसमाहित्रत्तियागारेण वोसिरामि॥ ७-१ ॥ अभत्तद्र[तिविहाहार]-पचक्खाणं-उग्गए स्रे अभत्तद्व पचक्खामि तिविद्दपि आहार असण खाइमं साइम अण्णत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं पारिद्वावणियागारेण महत्तरागारेणं सव्य-समाहित्रत्तियागारेण पागस्स छेवेण वा अच्छेण वा बहुछेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरामि ॥ ७-२॥ दिवसचरिम[भवचरिम]पचक्वाणं-दिवसचरिम [भवचरिम वा] पचक्यामि, चउन्विहपि आहारं असण पाणं खाइम साइम अण्णत्थऽणाभोगेण सहसागारेणं महत्तरागारेण सन्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ८ ॥ अभिग्गहपचक्लाणं-[उग्गए सूरे गंठिसहिय मुद्धिसहिय] अभिगगह पचक्खामि, चउव्विदंपि आहारं असण पाण खाइम साइम अण्ण-त्थऽणाभोगेण सहसागारेण महत्तरागारेण सन्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ९ ॥ निव्विगइयपचक्काण-[उ॰ स॰] निव्विगइय पचक्कामि [च॰

मा ६६ ४) बाचायायामार्गा सहयामारेलं हेन्द्रानं शिहायलेटीयं विनार्गायसम्बद्धाः सामिद्वानीयामारेलं सहतामारेलं सम्बद्धाः बिन्यामारेनं कांग्रेरीमि ॥ १ ॥ विकासन्तरायपार्यायिही-उराए मुरे समुद्रारमियं जाव वजनमार्वं कर्यं संसक्ष व्याप्य कांग्रिवं वर्मानं सार्टि सारियं हिर्दियं भारादियं भारतियं अबद् जं च ल अबद सहग निरामि दुवर्व हो ण्यादायु सं अरहेनाचे अगरेनासं अप्रयतानं निन्त्रवतानं सर्पमंत्रदानं तुरिशा-बार्ग पुरिननीहाचे पुरिनवरपुडरियाचं वृदिनवरकपुड्राधीचं सोगुन्याचं स्टेक्सहार्थ स्पेगा याचे स्तारीबाचे सागरजायगराचे अनवद्याचे चरुपुरवाचे मागरवाचे रार्गत्याचे औरत्यार्थ बोत्रियार्थ यस्मायार्थ धस्मदेनयार्थ कम्मनाययार्न मन्मगारहीर्गं मन्मरान्याउरेनबहच्छीर्वः सी(बी)रल्(बी)सनरममहराज्यां आपि हयररमञ्जूनवभराम विवासकामां जिलाचे जातवाने निल्लाचे हारवाचे हुवाने बाह्याचं सुलाबं सायगार्च गण्यकार्च शम्बद्दरितीर्च क्षित्रमदलमारमम्बेनमस्गरम स्ताबाहमपुषराधितिनिदियद्वाबधेय ठार्च शेरलायं नमी जियामं जियमयानं [ठामं चंत्रनित श(मल)भीलं] ॥ इह छट्टं पणकाराजायरूपयं सेमर्ख ॥ ६ ॥ ॥ भायस्सयसुत्तं समत्त ॥ शस्ममत्तीप वत्तीस सुत्ताइ समत्ताइ तेसिं ममसीए स्रतागमे समत्ते ॥ सस्यमिस्रोतस्या ७२००० ॥

मुचायने

**मित्रास्यस्य**नुर्वे

1102

शो सम्बादस्यासस्या ७२००० ।।

१ प्एगि दरार्ट वचकामालां अग्यवरं पवाराणं पविश्वरतः स्मादस्यान्यं पविश्वरतः समादस्यान्यं पविश्वरतः समादस्यान्यं पविश्वरतः समादस्यान्यं पविश्वरतः समादस्यान्यं प्रतिप्राणि—इस्ट वचा कुत्राणो "मार्गेऽण्यु व वार्ष्यं वार्ष्यं प्रतिप्राणि एक्टिया वार्ष्यं वक्षरत्यं प्रतिप्राणि एक्टियां प्रतिप्राणि एक्टियां प्रतिप्राणि एक्टियां प्रतिप्राणि एक्टियां प्रतिप्राणि वार्ष्यं विष्यं प्रतिप्राणि वार्ष्यं विष्यं वार्ष्यं विषयं वार्ष्यं वार्यं वार्ष्यं वार्यं वार्ष्यं वार्ष्यं वार्ष्यं वार्ष्यं वार्ष्यं वार्ष्यं वार्ष्यं वार्यं वार्ष्यं वार्यं वार्यं वार्ष्यं वार्ष्यं वार्यं वार्यं वार्ष्यं वार्यं वार्यं वार्यं वार्यं वार्यं

प्रo-त्संकोत्तर देव में क्या फाई भी दाय मही होता ? उ०-तहीं। दीय मुक्य रूप ल झडारह हैं। उनमें से एक भी दोप देव में नहीं होता।

प्रभावतारह काप कीम कीम ही है।

उ॰-वानान्तराय, आसाम्मराय सेागाम्मराय, उपसोगाम्बराय, वीर्याम्मराय, हास्य, रसि आदिस, शोक, सय, निवा, काम मिध्याम्य, अक्षात निहा अधिरति, राम अप

प्र०-देव के शरीर होता है या नहीं ! उ॰-होता भी है कीर नहीं भी होता।

म•-यह कैसे रे

उ - मरिहम्म देव के शरीर दाता है और सिक देव के नहीं होता।

प्रश्नारहस्त देव किस कहत है ै

उ०-जिन्होंने चाट कर्मों में स बार यह यातिया कर्मों का हटा दिया का उन्हें चारहत्त कहत हैं!

प्र०-धाठ धर्म कीन कीन हैं।

प्रज-(१) ज्ञासाकरण (२) त्ररीलाधरण (३) वेदशीय (४) सोहलीय (४) क्यायु (६) त्रास (७) गांव (⊏) अस्तराय । यह काठ कस हैं।

प्र∾चार घन घानिया कमें कीन **हैं** ै

प्र∽चार यन गातया कस कान है। च∽चामावरक वृशेनावरच शोहतीय और कन्त्राय।

प्रश्—व्यरिक्त देव के शरीर क्यों होता है . ---उ---शरीर, नामकर्स के उदब से बनना है ! व्यर्शित मगवास् के नामकर्स का उदब है इसक्रिये शरीर,मी दोता है । णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# पढमं परिसिइं

## द्सासुयक्बंधस्स अट्टममज्झयणं

# अहवा कप्पसुत्तं

नमो अरिहताण, नमो सिद्धाण, नमो आयरियाण, नमो उवज्झायाण, नमो कोए सव्वसाद्वण । एसो पचनसुकारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाण च सव्वेसि, पढम हवइ मंगल ॥ १ ॥ तेण कालेण तेण समएण समणे भगवं महावीरे पच-इत्थुत्तरे हुत्था, तजहा-हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गर्ञ्भ वक्षंते १ हत्थुत्तराहिं गञ्भाओ गर्कं साहरिए २ हत्युत्तराहिं जाए ३ हत्युत्तराहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्बङ्ए ४ हत्युत्तराहिं अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पिडपुण्णे केव-लवरनाणदसणे समुप्पन्ने ५ साइणा परिनिव्वुए भयव ६ ॥ २ ॥ तेणं कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जे से गिम्हाण चउत्थे मासे अट्टमे पक्खे आसाहसुद्धे तस्स ण आसाहसुद्धस्स छ्टीप्क्खेण महाविजयपुप्फुत्तरपवरपुडरीयाओ महाविमा का णाओ वीससागरोवमहिइयाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतरं चयं चइता इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणहुभरहे इमीसे ओसप्पिणीए मुसम-म्रसमाए समाए विइक्कताए १ स्रसमाए समाए विइक्कताए २ म्रसमदुसमाए समाए विइक्षताए ३ दुसमसुसमाए समाए वहुविइक्षताए-सागरोवमकोडाकोडीए बायाली-(साए)सवाससहस्सेहिं ऊणियाए पचहत्तरिवासेहिं अद्भवमेहि य मासेहिं सेसेहिं-र्क्षनीसाए तित्ययरेहिं इक्खागकुलम्मुप्पचेहिं कासवगुत्तेहिं, दोहि य हरिवसकुल-समुप्पन्नेहिं गोयमसगुत्तेहिं, तेषीसाए तित्थयरेहिं विङ्कतेहिं, समणे भगव महावीरे च(रिमे)रमतित्ययरे पुन्वतित्ययरिनिद्देष्ठे माहणकुढग्गामे नयरे उसभदत्तस्स माह-णस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणदाए माहणीए जालधरसगुत्ताए पुन्वरत्ता-वरत्तकालसमयिस हत्थुत्तराहिं नक्खतेण जोगमुवागएण आहारवकंतीए भववक्षतीए सरीरवक्कतीए कुच्छिति गव्भत्ताए वक्कते ॥ ३ ॥ समणे भगव महावीरे तिन्नाणो-वगए यावि हुत्या-चइस्सामित्ति जाणइ, चयमाणे न जाणइ, चुएमित्ति जाणइ। जं **९ परि०** 

रवर्षि च में समने मगर्व महाबीरे देवाणदाए माहबीए बार्मभरसगुताए इस्किरी गम्भताए बहेंते ते स्थमि च र्ग सा देशार्थेया माहणी समयिजीत सत्तमारा भोड़ीरमाची २ इमेकारवे उराके रजाणे सिवे क्ले मध्ये सरिसरीए वजरसम्ब मुमिने पारिताण पविद्या तकहा-गरी वसहै सीहै समिसेर्य वामें सीति विजर्नेर हैंने इनें। प्रतमें ऐ. सार्गरे निमाणसम्बर्ध-रमणुर्वेश नी है च ॥ ९ ॥ ४॥ छए में सा देश-येदा माहबी हुने एसार्व स्टाडे स्क्राचे स्टेब को संगत्ने सरिसरीए नजहसम्बर्धने पासिताचं परिवृद्धा समाजा इद्धतुद्धवित्तमानविद्या पीइमना परमस्त्रेमवरिसरा धरै स्वस्तित प्यमानिहस्या बाराह्यकेनुगंपिक समुस्यविवरोमक्वा सुनिपुमार् होर सुन्दिनाई करिया सम्मित्राओं अस्मोद्धे अस्मृद्धिया अनुरिक्तवस्मार्गरीय राज्य संसरितीए गईए केमेन संसमन्ते माइये देगेव उदानकाई उदायकिया उत्तमर्थ माहर्ष जएनं निजएनं कहाकेह बढानिया अहासमबरगया आसरमा वीसत्वा प्रश सनकरगया करपनस्परिस्पक्ष्यं वसनई सिरसावर्त मरबए अंजर्कि क्यु एवं क्यारी-एवं प्रमः नहं देवान्यणिया ! अञ्च सवविश्वति प्रताजागरा ओडीरमानी २ इसेवी रचे उराके चान सरिसरीए अल्ड्सनहासुमिने पारितार्थ पवित्रका संबद्धा-सन नाम सिक्क्षे च । एएसि देनापुण्यिया ! तराकार्ण काव चरुक्षण्य सहाग्रस्थानं वे मचे कामने फलनिशिनिसंसे मनिस्टब्र है ॥ ५-६ ॥ तए वं से उसमदत्ते मार्च देवार्मदाए सहर्गीए लंतिए एसमङ्क श्रवा निसम्स **रहतः वा**व द्विपए पारास्*वर्धः* हुवपित समुस्ततियरोमसूबै ग्रुमिनुस्पई करेड बारेता हेई बलुपबिसइ अनुपवितिया अप्पणी शाहातिए नं सद्भुव्यएलं बुद्धियिष्णाचैनं तेसि श्वसिवानं अत्सुनाई बरेह २ ती देवार्थर्व माइपि एवं बयासी-कराका ये तुमे देवायुप्पिए ! समिना विद्वा वकायी (वं) रिका वका सँगाम सरिसरीया जारस्यतृतिसीक्षाउक्कायसँगाइकारगा वं तुमे देवाणुप्पए ! धमिना विद्वा चंबदा-अत्यकामो देवालुप्पए ! मोयध्यमो देवालुप्पिए! पुत्तमामी वेवलुपिए ! धुक्तकमाने वेवलुपिए ! एवं बाह्य दुनं वेवलुपिए ! गम्बं मासार्य बहुपविपुत्राणं अवद्वमाणं राहिसाणं विद्वांताण एड्माक्याविपावे सद्दीमापविशुवर्गनिरिवसरीर अञ्चलमंत्रकशुक्तिकेत मालुम्मात्रप्रमाचपविशुवस्त्रातः सम्मानुद्रंतं समियोगानार नेतं विक्तंतनं सुरुषं देवकुमारोपमं दारवं पयाद्विध II ५-४ II से में व पे दारए उम्मुक्बातमांवे मिकावपरिपयमिके बोम्बकामानुष्यो रिटब्बेयम्बन्बवेयसामवैयमवन्यववेन-इतिहासपैवमार्च नि(१)पेनुस्ट्राचं संयोव-गान सरहस्सार्य चडन्द्रं वैयानं शारए, पारए (बारए), भारए, सर्डगर्वी सङ्घितंत्रले

₹

९ वर्षसपुष्पगपित ।

सारए, सखाणे [सिक्खाणे] सिक्खाकप्पे वागरणे छदे निरुत्ते जोइसामयणे अन्नेस य वहुसु वभण्णएसु परिव्वायएसु नएसु सुपरिनिद्विए यावि भविस्सइ ॥ ९ ॥ त उराला णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणा दिद्वा जाव आरुग्गतुद्विदीहाउयमंगहकलाणकारगा ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणा दिद्वत्तिकहु भुज्जो २ अणुबृहइ ॥ १०॥ तए णं सा देवा-णदा माहणी उसभदत्तस्स माहणस्स अतिए एयमह सुचा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियया जाव करयलपिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु उसमदत्त साहण एव वयासी-एवमेय देवाणुप्पिया ! तहमेय देवाणुप्पिया ! अवितहमेय देवा-णुप्पिया ! असदिद्धमेय देवाणुप्पिया ! इच्छियमेय देवाणुप्पिया ! पिंडच्छियमेय देवाणुप्पिया ! इच्छियपिङच्छियमेय देवाणुप्पिया !, सच्चे ण एस(अ)मद्वे से जहेय तुन्मे वयहत्तिकृद्द ते सुमिणे सम्म पिडच्छइ २ ता उसभदतेण माहणेण सिर्द उरालाई माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरइ ॥ ११-१२ ॥ तेण कालेणं तेण समएणं सक्के देविंदे देवराया वजापाणी पुरंदरे सयक्क सहस्सक्खे मघवं पागसासणे दाहिणहुलोगाहिनई बत्तीसविमाणसयसहस्साहिनई एरावणवाहणे सुरिदे अरयवरवत्थघरे आलङ्यमालमज्डे नवहेमचारुचित्तचचलकुडलविलिहिजमाणगहे महिद्दिए महजूइए महाबले महायसे महाणुभावे महासुक्ले भासुर(बॉ)बुंदी पलव-वणमालधरे सोहम्मे कप्पे सोहम्मविंसए विमाणे ग्रहम्माए सभाए सक्किस सीहा-सणंसि, से ण तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसाहस्सीण, चउरासीए सामाणिय-साहस्सीण, तायत्तीसाए तायत्तीसगाण, चडण्ह लोगपालाण, अट्टण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण, तिण्ह परिसाण, सत्तण्ह अणीयाण, सत्तण्ह अणीयाहिवईणं, चउण्ह चउरासी(ए)ण आयरक्खदेवसाहस्सीण, अन्नेसिं च वहूण सोहम्मकप्पवासीण वेमा-णियाण देवाण देवीण य आहेवच पोरेवच सामित्त महित्त महत्तरगत्त आणाईसर-सेणावच कारेमाणे पालेमाणे महया हयनदृगीयवाइयततीतलतालतुडियघणमुईगपदु-पडहवाइयरवेण दिन्वाई भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ॥ १३ ॥ इस च ण केवल-कप्प जबुद्दीव दीव विउल्लेण सोहिणा आभोएमाणे २ विहरह, तत्य ण समण भगव महावीर जबुद्दीने दीने भारहे नासे दाहिणहुभरहे माहणकुडग्गामे नयरे उसभ-दत्तस्स माहणस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणदाए माहणीए जालघरसगुत्ताए कुच्छिसि गन्भताए वक्कत पासइ २ ता हट्टतुट्टचित्तमाणदिए णदिए परमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हारिसवसविसप्पमाणहियए धाराहय(क्यव)नीवसुरभिक्-म्रमचंचुमालइयऊसियरोमकृवे वियसियवरकमलनयणवयणे पयलियवरकहगतुडि-यकेऊरमउडकुडलहारविरायतवच्छे पालवपलवमाणघोलतभूमणघरे ससमम तुरिय

( क्यमुर्च

चवर्स पुरिवे शीहासनाओं अध्युद्धेर १ ता पानपीताओ पचीखह र ता वेस्टि

12

यबरिद्वरिद्वं बजनित्रको (बन्धि) वियमितितितम् विरम्भार्यकर्महियाओ पाउमाओ क्षेत्र-मह २ ता एगगाहियं उत्तरासेयं करेह २ ता अंत्रत्मित्रत्वियमहत्वे तित्वसरासिहे मतद्वपनाई मनुपरत्वर २ ता वार्म जार्जु अंबर २ ता बाहिन बाजुं बाविकारी माइड् रिक्युचे मुदार्ज वरनिकारी निवेशेड् १ ता देनि पशुचमइ १ ता <del>वरना</del> परिगाहिये दसमहे सिरसावते मत्नप् अंवित कर् एवं बवासी-ममुख नं अधिकार मगर्कराजं बादगराजं वित्ववराजं सर्वसंबुद्धावं पुरिपुक्तमार्थ पुरिधसीद्वाच पुरिपहर पुंडरीयाचं पुरिसदर्श्ववद्श्वीय स्रोगुत्तवाणं खेगनाहाणं ख्रोगद्वियाचं स्रोगर्याच सोमपञ्जोबगरानं अभगव्याणं चरुपुरवार्य समादवार्य सरमङ्गानं ग्रीवरवार्य बोद्रियमार्च घम्मरयार्च घम्मदेसयार्च धम्मनावयार्च बस्ससारहीर्न बम्सवर्चारस्य चलवहीलं चैवो ताणं सरण यहे पट्टा खप्यविहासवरणायर्वसन्त्रपानं विवास्त्रमानं जिनाने जलगार्थ दिशाये तार्वायं हुदानं बोहवार्य ग्रहानं मोक्गानं सन्तर्भारे ਰਾਜਰਸਦੀਜ सिवस्यसम्बद्धमा ग्रेजन स्टायसम्बद्धमा पुत्र सिविधिक स्टाम वे वे ठापं चंपााणं नमें जिनापं जिनसमार्थं। नमुख् वे समयस्य भगवंशे महासीरस भाइगरस्य भरमदित्वबरस्य गुम्बदित्वबरमिद्धिस्य बाब संगमितकामस्य । बेरामि र्ष मगर्नते तत्पगर्य इङ्गए, पास(इ)ड मे भगरं तत्प्पए इङ्गर्नदिकडु समर्भ भण महावीरं बद्दा नर्मेच्य मं २ चा चीदासचनरंशि पुरस्थामिसके सक्तिसंके व १४-१<sup>५ व</sup> तपू में करन सकत्त देनिवृत्त देवरको अयमेशास्त्रे अञ्चारिकप् वितिप् परिवर्ष मयोगप् सम्प्रे समुप्यक्रिया-न क्रम् एव सूर्व न एवं सम्बं न एवं सक्ति र्व ने अर्द्धता वा चक्रवड़ी वा वस्त्वेवा वा वाक्ष्येचा वा अंदर्केत्र वा वाव मिक्यामञ्जेन ना माहनकुकेन ना भागाईन ना भागाईत ना भागाहरसंति ना १६ ॥ एवं प्रष्ठ अरहता वा शक्वाही वा वक्कोवा वा वास्रवेता वा सम्बद्धीय वा भीगकुकेमु वा राह्म्यकुकेस वा इनकायकुकेस वा क्रास्तकुकेस वा इरिवंशकुकेस ना अक्रमरेस ना तक्ष्णयारेस निस्तकात्रकांक्षेत्र मानाईस ना मानाईति क व्यायाहरचंद्रि वा ॥ १ × ॥ सरिव पुत्र एसे मि भावे ओगच्छेरवभूए वर्षशाहि **एस्सिणानीओसिपानीहैं निवर्शतार्थि समुप्यज्ञह, नामगुत्तस्य वा ध्रम्मस्य सम्ब**ी नस्य अमेर्यस्य अभिनिज्यस्य उत्तर्णं वं वं अरहेता वा पदादी वा बन्नदेश वा वासुवेवा वा संताउनेस्य वा जाव माव्यक्तकेस वा आयर्द्य वा १ इकिसि राष्ट्रभाराए कार्मित वा वक्कमंति वा क्कमिरपैति वा जो चेव वं खेळी सम्मविकास-मेर्न निक्यमिंध का निक्यमेरि का <del>निक्</del>यमिस्सेरि वा ॥ ९८ ॥ वर्व व वे समये

भगव महावीरे जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्तस्स माह-णस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणदाए माहणीए जालंधरसगुत्ताए कुन्छिसि गन्मताए वहते ॥ १९ ॥ त जीयमेय तीयपचुप्पन्नमणागयाणं सङ्गाण देविंदाणं देनरा(ई)याण अरहते भगवते तहप्पगारेहिंतो अतकुलेहिंतो जाव कि(वि)वण-कुलेहिंतो॰ तहप्पगारेस उग्गकुलेस वा जाव राइण्णकुलेस वा नाय(०)रात्तियह-रिवमकुलेसु वा अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु विसुद्धजाइकुलवसेसु (जाव रज्जिसिॉर कारेमाणेसु पाळेमाणेसु) वा साहरावित्तए, त सेय खलु मम वि समणं भगव महावीर चरमतित्ययर पुन्वतित्ययरनिद्दिष्ट माहणकुडग्गामाओ नयराओ उसभदत्तस्स माह-णस्य कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणदाए माहणीए जालंधरसगुत्ताए कुच्छीओ खत्तियकुटग्गामे नयरे नायाण खत्तियाण सिद्धत्यस्स रात्तियस्स कासवगुत्तस्स भारि-याए तिसलाए खत्तियाणीए वासिद्वसगुत्ताए कुच्छिति गन्भत्ताए साहरावित्तए। जे वि य ण से तिसलाए खत्तियाणीए गन्भे त पि य ण देवाणदाए माहणीए जाल-धरसगुत्ताए कुच्छिसि गव्भत्ताए साहरावित्तएत्तिकट्ट एवं सपेहेइ २ ता हरिणेगमेसिं भग्गा(पायत्ता)णीयाहिवइ देव सद्दावेइ २ ता एव वयासी-एव खल्ल देवाणुप्पिया ! न एय भूयं, न एय भव्य, न एय भविस्स, ज ण अरहता वा चक्कवटी वा वलदेवा वा वासुदेवा वा अतकुलेसु वा जाव भिक्खागकुलेसु वा॰ आयाइसु वा ३, एव खलु अ(रि)रहता वा चक्कवट्टी वा वलदेवा वा वासुदेवा वा उग्गकुलेसु वा जाव हरिवस-कुळें यु वा अन्नयरेषु वा तहप्पगारेषु विसुद्धजाइकुलवसेषु आयाइस वा ३॥ २०-२१॥ अत्यि पुण एसे वि भावे लोगच्छेरयभूए अणताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं विड्क्स-ताहिं समुप्पज्जइ, नामगुत्तरस ना कम्मस्स अक्खीणस्स अवेइयस्स अणिज्जिण्णस्स उदएण, ज ण अरहता वा चक्कवट्टी वा वलदेवा वा वासुदेवा वा अतकुलेसु वा जाव भिक्खागकुलेषु वा॰ आयाइसु वा ३, कुर्च्छिसि गब्भत्ताए वक्कमिंसु वा ३, नो चेव ण जोणीजम्मणनिक्खमणेण निक्खर्मिसु वा ३ ॥ २२ ॥ अय च ण समणे भगव महावीरे जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे माहणकुडग्गामे नयरे उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणदाए माहणीए जालधरसगुत्ताए कुर्च्छिस गन्भत्ताए वकते ॥ २३ ॥ तं जीयमेय तीयपचुप्णणमणागयाण सक्काण देविंदाण देवराईण अर-हते भगवते तहप्पगारेहिंतो अतकुछेहिंतो जाव माहणकुछेहिंतो तहप्पगारेस उग्गकु-छेमु वा भोगकुलेमु वा जाव हरिवसकुलेमु वा अ**घयरे**मु वा तहप्पगारेमु विमुद्धजाइ-कुलवसेस साहरावित्तए ॥ २४ ॥ त गच्छ ण तुम देवाणुप्पिया ! समण भगव महा-वीरं माहणकुडग्गामाओ नयराओ उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए

देशभराप माहणीप वासंवरखपुष्ठाए कुच्छीओ लिश्विकंटमामे नदरे भागवे लियापं सिद्धस्यस्य यहिकस्य काम्म्युगस्य मारिवाप शिक्षमाप यहिमाधीर वाधिद्वस्युग्ताए बृद्धिकं गर्ममाप साहराहि, के वि व व वे शिक्षमा कितापीर गर्मे त दि व वे वेद्याचेशार माहराहि, के वि व व वे शिक्षमा कितापीर गर्मे त दि व वेद्याचेशार माहराहि वादंसरस्प्राप कृष्टिकं मान्यविद्यास्ति हिस्सा क्ष्रिकंट मान्यविद्यास्ति वाद्याचे विद्याचे वेद्याचा पूर्व के स्वीविद्या समाणीवाहिष्टे देवे स्थित वेद्याचा पूर्व के समाचे इद्युद्ध नाव हित्तप् करसम्य जाव विष्कृ पूर्व वेदेवो बात्यवेद्यां काण्यविद्याद्य १ वा व्याप्त रिक्षमेत्र २ त्या व्याप्त विद्याच्या विद्याच्या प्रतिक्रमात्र १ वा वत्यपुरस्थित्यां शिक्षीयार्गं काच्यावर वा वेदिवस्य व्याप्त विद्याचा प्रतिक्रमात्र १ वा विद्याद्यां कोच्याव्यं वर्व विशिद्धः श्वाबन-प्याचार्णं वाप्तविद्यां विद्याच्यां वाप्तविद्यान्ति वाप्तविद्यान्ति

क्षोहियकदार्थं महार्यकार्णं इंसगब्भार्यं प्रक्ष्यार्थं सोगधियार्थं क्षोरसार्वं अंत्रवार्थं भवनपुरस्तारं जानस्त्रानं समपार्थं संशार्व प्रशिक्षार्थं रिद्वानं बहानारे प्रस्के परिसावेड २ ता अहासङ्क्षे प्रत्यके परिवा(ए)मैक्ड २ सा हुवीप वैजिम्बयसमुख्याएणं समोहणह २ ता उत्तरवैजिमसम् विज्ञाह २ ता वर्ष उक्टिया तुरिवाए चवलाए चँवाए क(य)इचाए उद्ध्याए सिमाए हैन्याए देवपहुँए बीहब्बसाणे २ विरिवमसंखिजार्च बीवसमुद्दार्च सर्व्यस्तरोर्च जेनेन र्जनहोंने बीने मारहे वासे जेनेन माइणईक्यामे अपरे बेणेन उसमदत्तस्य मह णस्य गिहे जेचेव देवाणंडा माहणी चंचेव उदाय**का**ड १ चा जाकोए समन्तर मगक्यो महाबीरस्य पनामं करेड् २ ता वेबायंबाय महाजीय सपरिजवार ओसी-क्षि इक्क १ ता बद्धमे पुरुष्के शबहरह २ ता धुमे पुरुष्के पश्चिक १ पा क्लुबाज्य में म्(य)गर्वतिकर् समर्थ भगवे न्हावीरे अध्यावाहं सम्बानाहेचे विकोर्ग पहानेनं करमणसपुतेर्गं निवह २ ता जेलेर कतिनक्रेंडमामे सबरे जेलेर सिक्टबरस कतियस्त गिहे घेचेन विस्ता कतिनाजी वेचेन स्वायध्यः १ पा दिसकाए सतिवासीए सपरिजयाए कोसोवर्ति वसक् १ ता शहमे पुरमके नव्हरह १ ता हमें पुमाछे पविश्वपद १ ता समर्थ नगर्व महाबीर सम्बाबाई सम्माबाईच तिसकाए कतियाणीए इतिकास गरमताए साहरह (२ ता) जे ले र में से तिसमाए बत्तिमानीए सक्से ते पि न नं देशार्यदाए साम्राणीए जान्यरसमुताए इतिस्थि यस्मताय साहरह २ ता जामेन विसिं पाउच्मय तामेन विसिं पढिगए ॥ २६-२०॥ ताए उक्कियाए तुरिशाए चक्काए चंडाए बदनाए ठडुवाए शिकाए बैनाए देन-

गर्प विरियमपिकाणं वीवतमुद्दानं मञ्ज्ञांमञ्ज्ञेवं कोम्बसाहरियप्रदे विमाहेर्दे

उप्पयमाणे २ जेणामेव सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सक्कंसि सीहासणिस सक्के देविंदे देवराया तेणामेव उवागच्छइ २ ता सकस्स देविंद्स्स देवरन्नो एयमा-णत्तिय खिप्पामेव पचिष्पणः ॥ २८ ॥ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जेसे वासाण तचे मासे पचमे पक्खे आसोयवहुले तस्स ण आ(अर)सो-यवहुलस्य तेरसीपक्खेण वासीइराइदिएहिं विडक्कतेहिं तेसीडमस्य राइदियस्स अतरा वहमा(णस्स)णे हियाणुकंपएण हेनेण हरिणेगमेसिणा सक्षवयणसिद्देषेण माहणकुंड-•गामाओ नयराओ उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणदाए माहणीए जालधरमगुत्ताए कुच्छीओ खत्तियकुडम्गामे नयरे नायाण खत्तियाण सिद्धत्यस्स खत्तियस्स कासवगुत्तस्स भारियाए तिसलाए खत्तियाणीए वासिद्धसगुत्ताए पुन्नरत्तावरत्तकालसमयसि हत्युत्तराहिं नक्खत्तेण जोगमुवागएण अव्वावाह अव्वा-वाहेण कुच्छिसि गञ्भताए साहरिए ॥ २९ ॥ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे तिनाणोवगए यावि हुत्था, तजहा-साहरिजिस्सामित्ति जाणइ, साहरिजमाणे न जाणइ, साहरिएमित्ति जाणइ॥ ३०॥ ज रयणि च ण समणे भगव महावीरे देवाणदाए माहणीए जालधरसगुत्ताए कुच्छीओ तिसलाए खत्तिया-णीए वासिद्वमगुत्ताए कुर्च्छिसि गब्भत्ताए साहरिए त रयणि च ण सा देवाणदा भाहणी सयणिजासि मुत्तजागरा ओहीरमाणी २ इमेयारूवे उराले कल्लाणे सिवे धन्ने मगहें सस्तिरीए चउद्दसमहास्रमिणे तिसलाए खत्तीयाणीए हडेति पासित्ताणं पडिवुद्धा, तजहा-गय जाव सिहिंच ॥ ३१॥ जं रयणि च ण समणे भगव महावीरे देवाणदाए माइणीए जालधरसगुत्ताए कुच्छीओ तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्टस-गुत्ताए कुचिंछिसि गब्भत्ताए साहरिए त रयणि च ण सा तिसला खत्तियाणी तसि तारिसगिस वासघरंसि अब्भितरओं सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमियघट्टमहे विचित्तउ-ह्रोयिचिह्रियत्रे मणिर्यणपणासियधयारे वहुसमसुविभत्तभूमिभागे पचवन्नसरससुर-भिमुक्कपुप्फर्पुंजोवयारकलिए कालागुरुपवरकुदुरुक्कतुरुक्कडज्झतधूवमघमघतगधुद्धया-भिरामे सुगधवरगधिए गधवट्टिभूए तसि तारिसगिस सयणिजासि सालिंगणवट्टिए उभक्षो बिब्बोयणे उभक्षो उन्नए मज्झे णयगभीरे गगापुलिणवालुयाउद्दालसालिसए ओयवियखोमियदुगुल्लपष्टपिडच्छने सुविरइयरयत्ताणे रत्तसुयसवुए सरम्मे आइणगरूय-वूरनवणीयत्लतुल्लफासे सुगधवरकुसुमचुन्नसयणोवयारकलिए, पुव्वरत्तावरत्तकालसम-यसि स्रुत्तजागरा ओहीरमाणी २ इमेयारूवे उराळे जाव चउद्दसमहास्रुमिणे पासित्ताण

१ हिएण-अप्पणो इदस्स य हियकारिणा तहा अणुकपएण-भगवओ भत्तेण ति अद्यो।

पद्ममें परिसिद्ध **क्यमु**र्च पविद्वा राजहा-गर्थ-वस्त -सी -मिसेर्थ-वार्थ-रास-रिस-रिजर्वर सम कर्म । पर मर्गरे-सागरे-मिमाणमन्त्री-रम्भुनने विद्वि च ॥ १ ॥ ३२ ॥ तए मं सा तिसम चतियाणी तप्पद्रमसाय् [तओ य]चउर्शतम्शियमधियमिपुस्रबस्दरहारविद्धरसीरसा-गरसर्वक्रके रजदगरमरमयमहासेक्ष्पंड(१)रतरं समामममङ्गमरक्रुगंबदाववासिमक्(फे)-वोक्स्मूकं देवरामकुंब(र)र(व)वरप्यमाल पिच्चर् सञ्जलकानुपुरुवकारुगाज्यसंगीः रवारकोचं इसं सुसं सम्बद्धकाणकांकिनं करोर्व १ ॥ ३३ ॥ ठठो प्रची वनक-कमक्यत्तपमराहरेगरवयमं पहासमुबकोनहारेहिं सम्बको केन शैवनंतं शहिरी

मरपिक्रमानिसप्पेतकंतसोइतचारम्बर्दं तबुस्(इ)श्युकुमास्स्रोमनिद्यक्तिं विरद्धा दर्मसम्बन्धिमञ्ज्ञातिकास्त्रेवरंगं पिष्टा वचनश्चद्वजन्निस्त्रविश्वद्वप्रसम्बन्धिरं र्दर्त सिर्व समागसोहतस्यक्ष्यवर्तं वसह असियगुणसंग्रसमुहं २ ॥ ३४ ॥ तस्ये उच्ये हारनिकरचीरसागरसस्य क्रीकरणवगरयस्यसम्बासेक्संह्य (रतरं)रंगं रमश्रिजनिक्संकि निरम्बद्धमञ्जूषप्रपीवरञ्जलिकृतिसिद्धविक्तादाडातिर्देशिवसुई परिप्रस्मियजनकारको सम्बन्धाराचीकृतकतृत्वद्वं रज्ञापक्यतम्बन्धन्यमासताज्ञनिकाविद्यसम्बद्धं मुसायसम्ब कनमतानिवसावतार्यतवश्चविवनिमकसरिशनसर्गं निशास्त्रपीवरवरोई पविपुत्रविम कर्चमं भिरुविसम्बद्धम्भननकामपसस्यविश्विक्षकेसराकोक्षेत्रं स्वरिवस्यिमिनास्य जारमप्तोदियकंपूर्व छोनं सोमाच्यर श्रीकावर्त ग्रह्मकाओ औनयमार्च नियगक्त जसइवर्यतं पिकाइ सा गावतिकप्रमानाई सीई वयवसिरीप(संग)सवपतावादगीई ३ ॥ १५ ॥ तब्बे पुणो पुज्यबद्धनगा धनाययठानकप्रवेठिये परत्वस्त्रे स्पर्स्ट्रियः कानग(सम)कुम्मसरिधोत्रमाध्यक्षकं व्यक्तक्षकरीकरव्यसंस्काउ(वन्ति)ववराणुनंतन्ति द्वनई क्यकासास्युक्तासकर्वरककोमसर्वरमुखि कुवविद्यत्तक्ष्युक्तानेनं निग्र बार्च यमनरक्टसरिसपीवरोढं चानी स्रायुगमेहकामुत्तकेतिविद्यवसोलिका वर्ष अभगमर्बकमप्रवर्ठजुपसगस्त्रिकाषुप्रभाष्ट्रज्ञसङ्स्यु गासम्बद्धरमनि अरोमगर्

नामीमंडसमुद्दनिधाळपगण्यज्ञाचर्यं कृदयसमाज्ञ्यपमस्यतिवक्षिपमञ्जे भाग्यमिक कगरवयविमसमहाताविकाभरणभूगवविराह(वर्मपु)र्यगोर्थीय हारविरावेदई दमा<del>ता</del> रिजद्भमम्बसित्वगह्रयमविगसम्बद्धः आद्यपश्चियविभृतिएवं तुमयमानुम्रकेण मुत्ताककाषप्च चरत्वदीकारमा(क)स्विमित्तरूप्य वंडममित्रतप्च व उँचसञ्चयसम चंत्रमंगेनसत्तमोर्मनसत्पमेणं सोमागुलसमुद्यूणं आचण्युद्वंनियूच कमकामस्रयेगा क्र(मिनिक्सोक्(गि)ण अनकरकांन्यरगद्वियमुक्तोय क्षेत्रावायरम्परग्यप्यं हिन सर्राधिकववस्यकृतं रेतरणहर्त्वं पत्रमहर्द्वसम्बद्धाविणि विदि सगद्दे पिष्टा भूम <del>र्वतप्रेक्तरिहरे दिसामई</del>होरुपीवरकराभिनिक्सामि ४ ॥ ३६ ॥ तमो प्रको सरक

कुसुममदारदामरमणिज्ञभूय चपगासोगपुन्नागनागपियगुसिरीसमुगगरगमहियाजाइ-जूहिअकोल्लकोज्जकोरिंटपत्तद्मणयनवमालियवडलतिलयवासतियपडमुप्पलपाडलकु-दाइमुत्तसेहकारसुरभिगंधि अणुवममणोहरेण गंधेण दसदिसाओवि वासयंत सन्वो-उग्रसुरभिकुसुममल्लधवलविलसतकतवहुवण्णमत्तिचित्तं छप्पयमहुयरिभमरगणगुमगु-मायतनिर्लितगुजतदेसभाग दाम पिच्छइ नहगणतलाओ ओवयंत ५ ॥ ३७ ॥ सर्सि च गोखीरफेणदगरयरययकळसपडुर सुभ हिययनयणकत पिडपुण्ण तिमिरनिकरघण-गुहिरवितिमिरकर पमाणपञ्खतरायलेह कुमुयवणविबोहगं निसासोहगं सुपरिमट्ट-दप्पणतलोवमं हसपडुवण्ण जोइसमुद्दमंडग तमरिपु मयणसरापूरग समुद्दगपूरग दुम्मण जण दइयवज्जियं पायएहिं सोसयत पुणो सोमचारुख्वं पिच्छइ सा गगण-मंडलविसालसोमचकम्ममाणतिल(ग)य रोहिणिमणहिययवल्लहं देवी पुण्णचद समुल्ल-सत ६ ॥ ३८ ॥ तभ्रो पुणो तमपडलपरिप्फुर्ड चेव तेयसा पज्जलतरूव रत्तासोग-पगासिकं सुयसुयमुह्गुजद्धरागसरिस कमलवणालकरणं अकण जोइसस्स अवरतल-पईव हिमपडलगलग्गह गहगणोरुनायग रित्तविणास उदयत्थ्रमणेसु मुहुत्तसुह-दसण दुन्निरिक्खरूव रत्तिसुद्धतदुप्पयारप्पमद्दण सीयवेगमहणं पिच्छइ मेरुगिरि-सययपरियद्वय विसाल स्रं रस्सीसहस्सपयलियदित्तसोह ७ ॥ ३९ ॥ तओ पुणो जञ्चकणगलद्विपइद्विय समूहनीलरत्तपीयसुक्षिल्लसुकुमालुल्लसियमोरपिच्छक्यमुद्ध्य धय अहियसस्सिरीय फालियसखककुददगरयरययकलमपडुरेण मत्ययत्थेण सीहेण राय-माणेण रायमाण भित्तु गगणतलमङल चेव ववसिएण पिच्छइ छिवमडयमास्यल-याहयकपमाण अइप्पमाण जणपिच्छणिज्ञरूव ८॥४०॥ तस्रो पुणो जञ्चकवणुज्ञल-तरूव निम्मलजलपुण्णमुत्तम दिप्पमाणसोह कमलकलावपरिरायमाण पहिपुण्ण[य]-सन्वमगलभेयसमागम पवररयणप(रि)रायतकमलद्विय नयणभूसणकरं पभासमाण सन्वओ चेव दीवयत सोमलच्छीनिमेलण सन्वपावपरिविज्ञय सुभ भासुरं सिरिवरं सन्वो-उयसुरभिकुसुमभासत्तमह्रदाम पिच्छइ सा रययपुण्णकलस ९ ॥ ४१ ॥ तओ पुणो (पुणर्वि) रविकिरणतरुणवोहियसहस्सपत्तसुरभितर्पिजरंजल जलचरपहकरपरिहत्य-गमच्छपरिभुज्जमाणजलसचय महत जलतमिव कमलकुवलयउप्पलतामरसपुडरीय-उरुसप्पमाणसिरिसमुदएण रमणिज्जरूवसोह पमुइयतममरगणमत्तमहुयरिगणुक्करो-लि(हि)ज्ञमाणकमल कायवगवलाह्यचक्ककलह्ससार्सगव्वियसङणगणमिहुणसेविज्ज-माणसिलल पर्जमिणिपत्तोवलम्गजलविंदुनिचयन्वित्त पिच्छइ सा हिययनयणकत पर्ज-

१ मदारपारिजातियचपगविजलमचकुदपाडलजायजूहियसुगंधगंधपुप्फमाला ० । २ परसमयाचेक्खाए ।

पबमै परिसिद्धं िक्<u>ष्यसर्</u>ग मसरै नामसरै सरहवामिराम १ ॥ ४२ ॥ छम्रो पुणो चैद्रकरणरासिसरिससिरै क्ष्यरोह कर(गु)मम्बवसङ्गाणवक्षरंचर्य कर्तकंचतुकारव्यमानस्रोठकेरंदर्भ पद्भावणाह्म व सिम्बव बयागहत् रेगरेगंतर्गयकोष्ट्र समावसोर्भतिसम्बद्ध इटस्मीतह-चेवंभभावमा(बाव)जोनियत्तमाग्रस्तरामिरामं महामगरमञ्जलिमितिमिनिवनिस्तरि वितिक्षियामिनायर प्रदेशवपसरं सहागर्डेत्तरिक्षेयमसायक्ष्मभगगावत्तगुप्पमञ्जूनमेन क्योनियत्तमसमाणसोलस्थितं पिरक्कः चीरोनसानर शा रसमिकरसोसन्वया ११ B ४३ II तसो पुणो सहजस्रागंबनसमण्डः दिणमाणसोइं उत्तमकंत्रवमहामनिस-म्ह्रभवरतेयञ्चनवस्यदिप्यंतनवप्यवं कथयपगरस्थानस्यम्यानम् अतं अतंत्रहे व्यवानं इंहामिगरसम्बुरयनर्गयरविष्यंगालगविष्यरहरमरभवमरसंस्टर् जरवस्त यपउनस्तवमित्ती ग्रेंबब्बोपबळ्यावसंपुष्णयोसं निर्वा सबस्वप्रवितनजनस्य जिनसङ्ग्रानाह्मा देवबंद्रश्चिमद्वारवेणं समस्मात बीवसोर्थं पूर्वतं कावागुरण-र्खे दुक्द तुरक्द उर्धत पृष्ट् सार)वासंग(यं) उत्तममधमवैतर्य पुत्रुमामिरामं निवासीनं सेय सेयप्पम श्ररवरामिराम पिन्छन् सा साओवमीय वरनिमान्युंडरीवं ११ II ४४ ॥ तस्ते पुणे पुरुपवेरियनीकसासगण्डेयणसोहितस्वारगयनसारमञ्जूषा सप्तिक्सोर्यक्रिमक्सम्बन्धंत्रणर्वद्रप्रकृतरस्ववेदिः सक्षितस्परहित्रं गामवर्गेत्रक्र पनास्त्रयं द्वंपं मेहिपिरिसंति(गा)कार्सं पिच्छक् सा रयजनिकररासिं १३ ॥ ४% व विद्वी च-ता विदक्क्षालपिमतमङ्गवयपितिचमाचनिक्सप्यमयगाइसवर्कनवासुक्राधी मिराम धरतमबोगञ्जोही बाह्यपनरेहि शञ्जुव्यसिव शञ्जुव्यस्य निव्ह्य बाह्य-जसन(ग)में संबर व कलाइ पर्वंद्र महतेगर्वकंत शिक्षि १४ ॥ ४६ ॥ हमे एसारिते धमें स्पेमें पियर्सने शहने श्रमने बहुण समन्तरने परिवृद्धा अर्पित्समेगण इरिसपुसद्दंगी । एए चडवसश्चमिणे सञ्चा प्रसेष्ट तिस्वयरमासा । ज रक्षी बक्रमई, कुव्किसि महायसो भरहा ॥ १ ॥ ४० ॥ तए थ सा विसमा कतिनाची इमे प्यारूचे उराजे चन्ह्समहास्रमिणे पासिलाण परिवृद्धा समाणी बहुनुह वाद द्दिनमा बाराहरकर्मनपुष्पणीयन समुस्यसियरोमकृता समिनुस्यहं करेह र ता संययिजाओं अस्मुद्रेह २ ता पायपीजाओं प्रचोरह्रह २ ता अनुरिदमवनसमर्गनेनाए कमिक्षमियाप् रायहस्स्परिसीए गईए अणिन सम्प्रिजे अगेव शिद्धाचे सारिए तेनेव

उदारत्यहर १ ता स्थितनं कतिनं ताहि इद्वाहि कंताहि स्थितहे सहस्वाहि मणोरसाहि करावाहि पत्राणाहि स्थाहि पत्राहि संग्राहि वस्तिगीयाहि हियर सम्प्रिजाहि हिस्सपण्डामित्याहि स्थितमहुर्तस्तृहाहि स्थितहे संकरमाणी १ पत्रिकोहेर तथ ॥ तए ये सा विस्ता कतिस्त्राणी श्वस्त्रेणं रण्या अस्त्राण्याना भ-तिद्ध भगवान् किसे कहते हैं ?

उ०-जिन परम आत्माओं ने आटों कर्मों का समूल नाश कर दिया है, जो गुण्छानों से अतीत हो चुके हैं, जिन्होंने परम पुरुपार्थ मोत्त को प्राप्त कर लिया है, जो लोका-काश के मस्तक पर जा विराजे हैं, उन्हें सिद्ध कहते हैं। सिद्ध भगवान फिर कभी जन्म नहीं लेते, फिर संसार में नहीं आते। वे अनन्त ज्ञान खरूप होकर सिद्ध नेत्र में विराजते हैं।

प०-अरिहन्तं श्रोर सिद्ध में क्या भेद है?

उ०-श्ररिहन्त भगवान् ने चार कर्मों का नाश किया है श्रौर सिद्ध भगवान् ने श्राठों का । श्ररिहन्त भगवान् तेरहमें गुणस्थानवर्ती हैं श्रौर सिद्ध गुणस्थानों को पार कर चुके हैं। श्ररिहंत की श्रपेक्षा सिद्ध भगवान् उच्च पद पर हैं।

भ०-एमोकार मंत्र में पहले श्रिरहंत को नमस्कार क्यों किया गया है ?

उ०-ग्रिरहंत भगवान सर्वज्ञता प्राप्त करके भी संसार में रहते हैं। वे जगह जगह श्रमण करके भव्य जीवों को धर्म का उपदेश देते हैं, कल्याण का मार्ग सुभाते हैं। हम लोग जिन शास्त्रों को पढ़ते सुनते हैं, उनमें ग्रिरहन्त भगवान का उपदेश ही है। सिद्ध भगवान का ज्ञान हमें ग्रिरहंत भगवान के कथन से ही होता है। इस प्रकार सिद्ध यद्यपि वड़े हैं फिर भी निकट उपकारक होने के कारण पहले ग्रिरहंत भगवान का स्मरण किया जाता है। समाणी नाणासणिकणगरयणभत्तिचित्तसि भद्दासणिस निसीयइ २ त्ता आसत्या वीसत्या मुहासणवरगया सिद्धत्थ खत्तिय ताहिं इट्टाहिं जाव सलवमाणी २ एव चयासी-एव खलु अह सामी ! अज्ञ तसि तारिसगिस सयणिज्ञिस वण्णओ जाव पिंडवुद्धा, तजहा-गय(उ)वसह० गाहा।त एएसिं सामी ! उरालाण चउदसण्ह महा-सुमिणाण के मन्ने कहाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सड 2 ॥ ४९-५० ॥ तए ण से सिद्धत्ये राया तिसलाए खत्तियाणीए अतिए एयमट्ट सुचा निसम्म हट्टतुट्टचित्ते जाव हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुमचचुमाल्डयरोमकृवे ते सुमिणे ओगिण(ह)हेइ २ त्ता ईह अणुपविसइ २ ता अप्पणो साहाविएण मइपुट्वएणं वुद्धिविण्णाणेण तेसिं मुमिणाणं अत्युग्गह करेइ २ त्ता तिसल खत्तियाणि ताहिं इद्वाहिं जाव मगल्लाहिं मिय-महुरसिसरीयाहिं वग्गूहिं सलवमाणे २ एव वयासी-उराला ण तुमे देवाणुप्पिए! स्रमिणा दिद्रा. कक्षाणा ण तुमे देवाणुप्पिए! स्रमिणा दिद्रा, एव सिवा, बन्ना, मगल्ला, सस्सिरीया, आरुग्गतुद्विदीहाउकल्लाणमगलकारगा ण तुमे देवाणुप्पिए! मुमिणा दिद्रा, तजहा-अत्थलाभो देवाणुप्पिए । भोगलाभो देवाणुप्पिए । पुत्तलाभो देवाणुप्पिए ! सुक्खलाभो देवाणुप्पिए ! रज्जलाभो देवाणुप्पिए !, एव खलु तुमे देवाणिपए! नवण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण अद्गृहमाण राइदियाण विङ्क्षताण अम्हं कुलकेउ, अम्ह कुलदीव, कुलपव्यम, कुलविहंसय, कुलतिलय, कुलकित्तिकरं, क़ळवित्तिकर, कुळदिणयरं, कुळाधारं, कुळनदिकर, कुळजसकर, कुळपायव, कुळविव-ु द्धणकरं, चुकुमालपाणिपाय, अहीण(स)पडिपुण्णपंचिदियसरीर, लक्खणवजणगुणोव-वेय. माणुम्माणप्पमाणपिडपुण्णसुजायसन्वगसुद्रंग, सिससोमाकारं, कत, पियद-सण, सुरूवं दारय पयाहिसि॥ ५१-५२॥ से विय ण दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णा-वपरिणयमित्ते जुन्वणगमणुप्पत्ते सुरे वीरे विक्कते वि(च्छि)त्थिण्णविउलबलवाहणे रजनई राया भविस्सइ ॥ ५३ ॥ त उराला ण तुमे देवाणुप्पि॰! जाव दुचिप तचपि अणु(वू)वृह्इ। तए ण सा तिसला खत्तियाणी सिद्धत्थस्स रण्णो अतिए एयमट्ट सुन्ना निसम्म हट्टत्रट्ट जाव हियया करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजर्लि क्टु एव वयासी-एवमेय सामी । तहमेय सामी । अवितहमेय सामी । असिदद्धमेय सामी! इच्छियमेय सामी! पिंडच्छियमेय सामी! इच्छियपिंड-च्छियमेय सामी! सम्बेण एसमट्टे-से जहेय तुब्से वयहत्तिकहु ते सुमिणे सम्म पिंडच्छइ २ ता सिद्धत्येणं रण्णा अन्भणुण्णाया समाणी नाणामणि(कणग)रयण-भित्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अन्भुद्धेइ २ ता अतुरियमचवलमसभताए अविलवियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव सए सयणिको तेणेव उवागच्छइ २ ता एव वयासी-

मा मे वे (दएश) उत्तमा पहाणा मैगवा समिथा दिवा अवेदि पार्वामि रै पविद्यान्सरेतितिष्ठः वेदमगुक्ष्यपर्धनदाष्टि पगत्वार्षिः संगन्नार्दिः प्रान्समारि सद् क्हार्द्ध समिणजागरिय कागरमाणी पढिजागरमाणी विहरत छ ५४-५६ छ सप् सिदरपे रातिए पश्चामधममधि बोर्डुविमपुरिसे सहावेद १ ता एवं वनकी विष्णामेन मो देनागुणिया। । अज शेर्स बाहितियं तबहानसाधं गंमोदयमितं स्ट्रि संमाजिओवनिश्तं सुगंपवरपंचवकापुष्योत्रयारवन्त्रयं बालागुरुपत्रसं बुस्द्रदश्यक्तं भूतमपमपंदर्गभुद्धयामिरामं शुर्गभवरगेथियं धंधाहिभूवं करेड कारमेह करेगा भारविता य सीदासर्ग रवाबेद रवाबिता समेवनानतियं रिल्पामेर पवित्र ह ॥ ५७-५८ ॥ ठए में ते कोईबिवपुरिया मिहत्येचे रक्ता दर्व कुता समाग इङ्कात जान दियया परयम जार पहु एवं शामिति आसाय निगएनं वर्ग पडिमुजंदि पडिमुक्ति। स्वित्रबस्य शामियस्य अंतियाओ पडिनिजगर्मनि पडिनिक्त मिता जेमेव बादिरिया उबहाचगाला संगेव उबागरसंति (तेमेव) सवायरिसरी निष्यामेन यतिवेसे बादिरियं उबद्वाननार्ध गंबोदयमि(शतुर्य)तं जार सी(नर्य रमाविति रयाभिता जेणेन शिक्षरथे नातिए तेणेव अवागरहेति उवायरितना बर यसपरिवाहिये दमनई गिरमावर्त सरवष् अंत्रलि वर्ड गिजरवरम राणियस्य तमार्थ किये प्रविश्विति । ७९ । तए वं विद्यत्ये वासिए वर्ध पाउप्पमाए रवा<sup>का</sup>र पुमुच्यम् स्मातको मञ्जनमी विर्याणि भद्वार्यपुरे प्रमाण्, इत्तासी मञ्जनमा विरामग्रवसुरग्रं व दरागर्वपु गिरमपास्य स्व वननवणपाद्वयस्य ते रामवानुवनपु मुमरानिति सु स्व वेव राहरेसरेई गिरीने बसानासरमंडबोहए उद्विनेति सुरै सहस्मारितानि शिवरे समा कांत्र तस्य व करवदरागरदमि क्षेत्रवारे बालवाईकुमर्व राजितार कीरील गयनिकाओं अम्पुण्य ॥ ६ ॥ गयनिकाओं अम्पुद्धिना पावरीताओं प्रवारहरू ६ लॉ जीर भरगगाचा सगर वनायरछर् २ ता भरूपमध्ये भाउपीमा २ ता भाप-बायामजीगरामाचरामरूगमण्ड्रमकर्मा<sup>त्रक</sup> सीडे परिवर्गत स्वरत्तारस्थायोगी द्वांप बर्गाण्यारण पीणीमा श्रीविक्षी सर्वाची ग्रीहित ।((व)र्गाची प्राण्ये सर्वित्वम वया हार्योगाली अन्त्रीति। समाच विषयमी निर्माण विद्या परित्या [माउनोमाउरोगे अवसंशकातिम्युक्त उसक्तरमगुर्णनामप्र्यू हैगारी इकाद वर्गा कुमांना बहाबी विवाधकामार पुरिवेश अन्वरूप बेल्डरण लवाल्यान् रोमनुहार् वामिन्द्राप् सहपरित्रमान्यु संबन्धित् मान्ये सराम्(तेप)मिनम् अम्पापामा परितृत्वसम् ॥ ६६ ॥ आप्तामाने परितृत्वस्थाने अम्पापामा परितृत्वसम् ॥ ६६ ॥ आप्तामाने परितृत्वस्थाने और सक्षम् रोगीन् वस्थानस्य १ १० सक्षमाने अपूर्णना ॥ ॥

डिबुज्झित ॥ ७२-७७ ॥ इमे य णं देवाणुप्पिया ! तिसलाए ा महासुमिणा दिद्वा, त उराला णं देवाणुप्पिया ! तिसलाए दिहा जाव मगल्रकारगा ण देवाणुप्पिया ! तिसलाए खत्तियाणीए हा-अत्यलाभो देवाणुप्पिया ! मोगलाभो देवाणुप्पिया ! प्रत्तलाभो म्बलामो देवाणुप्पिया! रज्जलामो देवाणुप्पिया!, एव खलु त्सला खत्तियाणी नवण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण अद्धद्वमाण राइ-ा तुम्हं कुलकेउ, कुलदीव, कुलपञ्चय, कुलवर्डिसय, कुलतिलय, कुल-त्तिकर, कुलदिणयर, कुलाधार, कुलनदिकर, कुलजसकर, कुलपायव, ्यबद्धणकर, सुकुमालपाणिपाय, अहीणपिडपुण्णपिचंदियसरीर, लक्ख-वेयं, माणुम्माणप्पमाणपिडपुण्णसुजायसव्वगसुद्रंग, ससिसोमाकारं, ाण, सुरूव दारय पयाहिसि ॥ ७८॥ से विय ण दारए उम्मुक्कवालभावे ायमित्ते जुव्वणगमणुप्पत्ते स्रे वीरे विकते विच्छिण्णविपुलवलवाहणे वट्टी रज्जवई राया भविस्मड, जिणे वा तेलुइ[तिलोग]नायगे वम्मवर-उन्हीं ॥ ७९ ॥ त उराला ण देवाणुप्पिया ! तिसलाए खत्तियाणीए उहा जाव आरम्गतुहिदीहाउकहाणमगहकारगा ण देवाणुप्पिया! तिसलाए गीए सुमिणा दिद्धा ॥ ८० ॥ तए ण सिद्धत्ये राया तेसि सविणलक्खणपाड-जितिए एयमह सोचा नियम्म हहतुह जाव हियए करयल जाव ते द्विण-गपाढए एव वयासी-एवमेय देवाणुप्पिया ! तहमेय दे० ! अवितहमेय दे० ! यमेय हे । पिडिन्छियमेय हे । इन्छियपिडिन्छियमेयं हे ।, मचे ण एसमेहे ्यं तुच्मे वयहत्तिवृह् ते सुमिणे सम्म पिडच्छइ २ ता ते सुविणलक्यणपाटए ण असणेण पुष्पवत्यगवसहार रारेण महारेड सम्माणेड सहारिता सम्मा-विडल जीवियारिह पीडदाण दलयङ २ ता पिडवियज्जेड ॥ ८१-८२ ॥ ण में सिद्धत्ये वित्तिए सीहामणाओं अब्भुद्धेड २ ता जेणेन तिमला खत्तियाणी ेग्पेव उवागच्छ २ ता तिनल गत्तियाणि एव वयासी-एम खलु ,ण नत्यनि चायालीस सुमिणा तीस महासुमिणा जाव एगं महा-ियुज्जीत । इसे य ण तुसे देवाणुष्पिए ! चडद्दा महासुमिणा नुमे जाव जिले वा तेलुपनायो धम्मवरचा उरनचप्रवर्ध । तिनला गतियाणी एयमह सो(मु)या निपम्म हट्टनुट्ट ने दिमिणे मन्स पडिच्छड् २ ना तिद्रन्येण गणा अन्स-रणमत्तिचिताओ भद्दामणाओ अञ्चेद्धेः

~3

11 प्टोमं **सेमन प्र**विज्ञानस्यापपाडमार्च गेहाई खेचेत्र सनामर्च्छति सनामस्थिता प्र<sup>हेस</sup> सक्तमपाटप् सहासिति ॥ ६३-६६ ॥ तए व ते समिवजन्तवापाद(गा)मा छर त्परस सतियस्य कोईविजयुरिसेहिं सहाविधा समाणा शहरह जान हिवस मान <u> स्वप्पावेमाई</u> मेमद्राई क्लाई फाराइ परिहिया अप्पमहत्त्वासरवासी असरीरा किरत यहरियाकियाक्रयमगरम्मुद्धाणा चएहिं सएहिं गेहेहितो निम्नव्हेर्दि निमाच्छिण खतिम्द्रीबस्यामं नगरं मज्द्रीमज्द्रीनं जेनेव शिक्क्षास्य रूच्यो भवनवरवर्षिसमयी हुवारे तेणेन सनागरकेति सनागरिकता अवणवरवर्डिसमध्विहवारे प्रगवको मिनी मिकिता जेनेव बाहिरिया अवद्वाबसामा जेपीव तिचारी कतिए तेथेव उवामधर्मी उदानकिता करचसपरिवयद्विय जाद करू शिक्तमं शक्तिवं अपन विवयनं बकानिय ॥ ६७ ॥ तए में त सुविधकभन्तणपाऱ्या सिक्त्येणं रच्या वंदिक्यूरेवसकारिक्यमाः निया समाना पत्तेयं प्रतेय पुम्बक्त्येमु महास्रविद्व मित्तीयदि ॥ ६८ ॥ तए न सिक्त्वे सतिए तिस्सं दातिशामि सबम्बदारिय ठावेह ठाविता पुण्डरसपविपुण्यहत्ये परेचे निमएनं ते हनियसक्तामपाहए एवं बनाधी-एवं बाह वेबादापिना । बाब दिगम चित्रमाणी तीव तारिसगीव चान सत्तवागरा ओहीरमाची २ हमे एनास्ने उराहे चटहसमहासुमिने पासिताच पविज्ञा तंत्रहा-गय-बगह थाहा है एएसि करें सर्व महाद्वासमार्ग वैवाल्यपिया ! उरासार्थ के महे कहाने एकवितिमिसेसे महि स्सद् है ॥ ६९-७१ ॥ तए वे ते सुमिजसम्बद्धपासमा विस्तरतस्य सातिमस्स अतिए एसमई सोचा निसम्म बहुदुह बाब दिवना से सुमिणे (सम्में) ओपिब्हेरी ओमिन्टिया हैंर स्लुपनिसंदि स्लुपनिसिता समामोर्च सदि सं(कार्वे)वासेश्व २ ता रासि हानिवार्व सन्द्रद्वा गर्हमञ्जा पुरिकासङ्ग निमिक्तियङ्गा आहिएनद्वा सिवल्बस्य रच्यो पुरस्ये धर्मि क्सरबाई स्वारेगावा १ विकर्त्व सत्तिमं एवं क्याची-एवं कह वेदासुव्यया ! अन्ह द्युमिगसस्ये बानाकीसं द्यमिमा द्येसं महाद्यमिमा बाबतारि सञ्चसुमिना हैहा छन

पं देवाशुण्यिया ! अर्र्ष्तमावरो वा पश्चवद्विमायरो वा अरद्वराति वा पश्चद्रिति वर गरम बद्दममार्गित पृष्ति तीसाप् महाद्यमिवार्गं हमे वरद्यमहाद्यमिवे पालितार्गं पणिनुकांश्रि राजहा-गम-मसह गाहा । बासुवेजमायरी वा बानुवेजीस गरमे वर्ष-ममार्णीय पूर्वि चरहराष्ट्रं महाग्रमिनाण सहयरे सत्त महाग्रमिने पारिचाने पवि

बुजांदि । वसवेषमावरो वा वकवेषंति गब्मे वक्तमगार्थति पुरस्ति वजद्यक् महा-सुमिनान भक्तमरे नतारै महासुमिने पासितामं परिश्वकौरी । मैटकियमानरी ना गंडकियंसि यस्त्रं शक्तममाणेसि एएसि वाउत्सन्धं महाद्यमियाणं अजनर एयं गरा-

५ 'कमसाग्यन' ।

वियाणिता एगदेसेण एयइ, तए ण सा तिसला खत्तियाणी हट्टतुट जाव हियया एवं वयासी-नो खलु मे गब्मे हुडे जाव नो गलिए, मे गब्मे पुर्विव नो एयइ, डयाणि एयइत्तिक्टु हट्टतुट्ट जाव हियया एव विहरइ ॥ ९३ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे गब्भत्थे चेव इमेयाह्व अभिग्गह अभिग्ण्हइ-नो खलु मे कप्पइ अम्मा-पिकहिं जीवतेहिं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वहत्तए ॥ ९४ ॥ तए ण सा तिसला खित्तयाणी ण्हाया सञ्चालकारविभूसिया त गब्भ नाइसीएहिं नाइउण्हेहिं नाइतित्तेहिं नाइकडुएहिं नाइकसाएहिं नाइअविलेहिं नाइमहुरेहिं नाइनिद्धेहिं नाइ-छुक्बेहिं नाइउल्लेहिं नाइसुक्केहिं सञ्बत्तुगभयमाणसुहेहिं भोयणच्छायणगधमलेहिं ववगयरोगसोगमोहभयपरिस्समा सा ज तस्स गङ्भस्स हिय मिय पत्थ गङ्भपोसण त देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विचित्तमउएहिं सयणासणेहिं पहरिक्क सहाए मणोऽणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला सपुण्णदोहला समाणियदोहला अविमाणि-यदोहला वुच्छिन्नदोहला ववणीयदोहला सुहस्रहेण आसइ, सयइ, चिद्रह, निसीयइ, तुयदृह, विहर्, मुहमुहेणं त गच्भ परिवहह ॥ ९५ ॥ तेणं कालेण तेण समएणं समणे भगवं महावीरे जे से गिम्हाण पढमे मासे दुचे पक्खे चित्तछुद्धे तस्म ण चित्तसुद्धस्स तेरसीदिवसेण नवण्ह मासाण बहुपिडपुण्णाण अद्धष्टमाणं राइदियाणं विइक्सताण उच्चद्वाणगएस गहेस पढमे चदजोगे सोमास दिसास वितिमिरास विसदास जडएमु सन्वसङ्गेसु पयाहिणाणुकूलसि भूमिसप्पसि मास्यसि पवायसि निप्फन्नमेइ-णीयसि कालंसि पमुद्यपक्षीलिएस जणवएस पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि हत्युत्तराहिं नक्खतेण जोगमुनागएण आ(६)रोग्गा(आ६)रोग्ग दारय पयाया ॥ ९६ ॥ ज रयणि च ण समणे मगव महावीरे जाए सा ण रयणी बहूहिं देवेहिं देवीहि य ओवयतेहि उप्पयतेहि य उप्पिजलमाणभूया कहकहगभूया यावि हुत्था॥ ९७॥ र्जं रयणि च ण समणे भगव महावीरे जाए त रयणि च ण वहवे वेसमणकुडधारी तिरियजभगा देवा सिद्धत्यरायमवणित हिरण्णवास च सुवण्णवास च वयरवास च वत्यवास च आभरणवास च पत्तवास च प्रप्रवास च फलवास च वीयवास च मळवास च गधवास च चुण्णवास च वण्णवास च वसुहारवास च वासिंद्र ॥ ९८ ॥ तए ण से सिद्धत्ये खत्तिए भवणवङ्वाणमतरजोङ्सवेमाणिएहिं देवेहिं तित्ययरजम्म-णाभिसेयमहिमाए कयाए समाणीए पन्नूसकालसमयिस नगरगुत्तिए सहावेइ २ ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया। (खतिय)कुड(ग्गामे)पुरे नगरे चारग-सोहणं करेह करिता माणुम्माणवद्धण करेह करिता कुडपुरं नगर सर्विभतरवाहिरियं आतियसम्माजिओविलत्त सिंघाङगति(ग)यचउक्चचरचउम्मुहमहापहपहेस सित्तसुड-२ परि॰

रियमचनसमर्थभराए अविकविजाए रामहससरिसीए गईए जेमेन सर मनने वेन रनामकाइ २ शा सर्व सबस अधुपनिद्वा ॥ ८६-८७ ॥ अध्यक्ति व वे सने मनव महाबीरे रांसि ना(रा)मकुर्मसि साहरिए राप्यमिह व व बहुवे वेसनार्डी पारिया विरियमगर्गा देवा शक्षमणेण से नहीं इसाई पुरापोराणाई सहानिहानी मर्वति र्जन्या-पर्वाणसामियाई पर्वाणसेनवाई पर्वाण(ग्र)गोत्तागार्गः, तरिज्यसमि माई उन्धिमधेयमाइ उच्छिमगोतागार्थं, गामागरनगरश्चेत्रकव्यवसर्वमहेन्स् पष्टणासमसं-भाइसंनिवेसेस सिंबाकएस वा तिएस वा वटहेस वा ववरे व क्जम्मुदेश वा महाप्रदेश वा पामक्राणेश वा वरस्कारेश वा रामनिद्रमके व नगरनिक्रमणेष्ठ वा भावनेष्ठ वा देव्हानेष्ठ वा समाछ वा पराष्ट्र वा बारमेड व उजारोप्त ना बनेता ना बनसंबेध ना शसामग्रामागारगिरिकंट्रस्टिसेस्ट्रम्मा<sup>न्द्र</sup> गिरेस मा समिनियत्ताई निवृति ताई शिक्सपरायमार्थाले सावरंति # 46 के र्ज रस्पि व ने समणे भगवं महाबीरे नावक्रकंति साहरिए तं रस्पि व वे तार्त कुळे हिरण्येणे विद्वत्वा श्रवण्येणे विद्वत्वा ययेथं वर्षणे रक्षेत्रे रहेने वर्षेत्रे वर्ष येमं क्रोरेजं कोद्धारारेज पुरेयं अंतिवरेजं अववर्ष्यं जसवाएन विद्रशा विर् घमकुगगर्मभममिनोत्तिवर्धयाधिकभवाक्त्त्वरवस्माहरूकं र्वतसारसावद्रजेकं गीर्व सकारसंसुवर्णमें शर्वेण आहेन मानिवरित्या ॥ ४९ ॥ तर् ण समजस्य मगवणी सह<sup>त्री</sup> रस्य क्षम्मापिकने अयमेवानने अन्मरिक्य निरिष्य परिवय मनोगय छेक्से छन्न क्रिका-बम्मिर्ड क व अर्म्स एस वार्य कृष्टिस्स शब्मताए काते तम्मीर्ह व वे अन्ते विरम्पेणं बहुत्मो श्रवण्येणं बहुत्मो वर्णणं कान चंत्रचारणाव्यज्ञेनं पीत्रका रेनं अर्देव अदेव मानिवञ्चामी तं वावा नं अन्दं एस बारए बाए मनिस्सद तवी यं अन्ते एक्स दारवस्त एवाजुरनं गुल्मे गुलनिएक्तं नामवित्रं करिस्तानी बद्धमानुति ॥ ९ ॥ तए यं धमण मगर्ग महावीरे मा<del>त्रमानुप्रमाहा</del>ए निके निष्क्री निरेशेये व्यक्षीपप्रकीयगुरो गानि बोल्या ॥ ९१ ॥ तप् वं दरिष्टे विश्ववार्य वारियाणीए अजमेबाहबे बाद संकृष्ये समुख्यकित्वा-वृत्वे में से गक्से मंदे मं है शक्ते पुर में से गब्दों चित्रकों से गब्दों एस में सब्दों पुलिंग एक्ट, इसार्वि नो एवइतिलुदु बोद्दममध्येषम्या वितासोयसागरसंपिद्धाः करवनमन्दृत्वसूरी वर्षः जनायोकसमा मूर्गीमध्यिद्विता क्षितायम्, तं पि व स्वयस्यस्वरमवस्मवतं वरस्यमूर्व र्वतीक्याक्नावद्वाजनस्यु(व) अ वीणविमर्थ विद्रुष्ट्र । ६२ । तप वं ते समह स्तवं सहावीरे शांक्य व्यमेगावनं अध्यक्तियं परिवर्ग स्वोगमं संकर्ण समुख्य

९ 'काक्तवा' । १ निर्मि ।

पाणं स्नाइम साइम आसाएमाणा विसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एव वा विहरंति ॥ १०४ ॥ जिमियभुतुत्तरागया वि य ण समाणा आयता चोक्खा परमसु(इ)ईभूया त मित्तनाइनियगमयणसविधपरिजण नायए खत्तिए य विडलेण पुष्फवत्यगधमहगलकारेण सक्वारेति सम्माणिति सक्वारित्ता सम्माणिता तस्सेव मित्त-नाइनियगसयणसविधपरि(य)जणस्स नाया(ण य)ण खत्तियाण य पुरओ एव वयासी-पुर्वि पि (य) ण देवाणुप्पिया ! अम्ह एयसि दारगैसि गब्म वक्षतिस समाणिस इमे एयाह्वे अञ्मत्थिए जाव समुप्पजित्था-जप्पभिई च ण अम्ह एस दारए कुर्च्छिस गब्भत्ताए वक्कते तप्पभिइ च ण अम्हे हिरण्णेण बहुामो, सुवण्णेण धणेण धलेण रज्ञेण जाव सावङ्ज्ञेण पीडमकारेण अईव अईव अभिवद्वामो, सामतरायाणो वस-मागया य । त जया ण अम्ह एस दारए जाए भविस्सइ तया ण अम्हे एयस्स दारगस्स इमें एयाणुरव गुण्ण गुणनिष्फन्न नामधिज करिस्सामी वद्धमाणुत्ति, ता अज अम्ह मणारहसपती जाया, त होउ ण अम्ह कुमारे वद्धमाणे नामेणं ॥ १०५-१०७ ॥ समणे भगव महावीरे कासवगुत्तेण, तस्स णं तओ नामधिजा एवमाहिजाति, तजहा-अम्मापिउसतिए वद्धमाणे, सहसमुद्याए समणे, अयसे भयमेरवाण प(री)रिसहोवसम्गाण खतिखमे पिडमाण पालए धीम अरइरइसहे द्विए वीरियसपने देवेहिं से नाम कय 'समणे भगव महावीरे' ॥ १०८ ॥ सम-णस्स ण भगवओ महावीरस्स पिया कासवगुत्तेण, तस्स ण तओ नामधिजा एव-माहिजाति, तजहा-सिद्धत्थेइ वा, सिज्यसेइ वा, जससेइ वा। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स माया वासि(इस)ही गुत्तेण, तीसे तओ नामधिजा एवमाहिजति, तजहा-तिसलाइ वा, विदेहदिलाइ वा, पीइकारिणीइ वा। समणस्स ण भगवओ महावीरस्त पित्तिजे सुपासे, जिट्ठे भाया निदवद्वणे, भगिणी सुदसणा, भारिया जसोया कोडिका गुत्तेण। समणस्स ण भगवओ महावीरस्स बूया कास(व)वी गुत्तेण, तीसे दो नामधिजा एवमाहिजाति, तजहा-अणोजाइ वा, पियदसणाइ वा। सम-णस्स ण भगवस्रो महावीरस्स नतुई कोसिय(कासव)गुत्तेण, तीसे ण दो नामधिजा एवमाहिज्जिति, तजहा-सेसवर्डें वा, जसवर्डेंड् वा ॥ १०९ ॥ समणे भगव महावीरे दक्खे दक्खपइषे पिडल्वे आलीणे भद्य विणीए नाए नायपुत्ते नायकुलचदे विदेहे विदेहिंदे विदेहजने विदेहस्माले तीस वासाइ विदेहिंस कहु अम्मापिकहिं देवता-गएहिं गुरुमहत्तरएहिं अन्भणुण्णाए समत्तपङ्घे पुणरिव लोगतिएहिं जीयकिपएहिं देवेहिं तार्हि इहार्हि जान वम्गूहिं अणवर्य अभिनंदमाणा य अभिधुन्वमाणा य एवं वयासी-जय जय नदा !, जय जय भद्दा ! भद्द ते, जय जय खत्तियवरवसहा !,

सेमहरस्यंतरावणवीहियं संचार्याच रुक्तियं भाषाबिहरागभृतियज्ञसपदागमंत्रियं व्यव-ब्रोहयमहियं योगीससरसरशायवसद्दर्शिकर्यवयुक्तितं उवन्तिसर्वदनसम्बंधनसम्बं <del>श्रक्तभरोरमपविद्वगरदेशमार्थं जासक्तोयत्तविपुरुवद्वगमारियमह्नदामक्कार्यं पंचनम्य</del> सरसद्वरमिमुद्रपुष्युंजोबनारकवियं काळागुरुपनरनुं हुरुद्रतुरुद्रवर्णातभूनमध्यका<sup>त्</sup> पुरुपामिरामं धर्गभगरमधिमं गेजनद्विभूमं नडनद्वमज्ञासम्मुद्विजनेक्षणसम्बद्धाः(शब)-पदगव्यासम्मभा(इ)रक्यायस्यानेयात्वाहाहतुंचगीवियअनेगताव्यवराज्यात्रं करेइ कर मेह करिता कारमिता व ज्येसहरसं मुसलसहरसं च उरसमेह उस्समिता मन एकमाणितमं पन्यप्यित्वद् ॥ ९५-१ । तए णं ते कोईवियपुरिसा सिक्स्विकं रण्या एव शुक्ता समाणा रहातुह जाव हिस्सा करसळ जाव परिश्वनिक्ता विष्पामेन इंडपुरे नगरे नारमसोहणे जान उस्तविता क्षेत्रेच शिक्सचे (खातिए) राजा तेनेव उवागकांदि २ ता करमक बाब कडु विद्यावस्य दक्तियस्य रच्नो एयमानतिर्व प्य प्पिनंदि ॥ १ १॥ तपु नं से सिक्ट्ये राया क्षेत्रेय सहव्यसम्म देनेन उनाप्यक्य १ छ कान सम्मोरोहेमं सम्बपुरक्रांबवत्वसङ्गानंकारविभूसाय सम्बद्धविनसङ्दिनाएमं सङ्ग इ**डीए** सहया छुईए सहना वक्रेयं सहना वाहकेयं सहया समुद्रएवं सहना हा द्वविश्वमगसमगप्पनाद्रपृत्रं संवापनवपवद्यमेरिसामरिवारस<u>विह</u>वसमुरवसुर्वगर्द्धवितिः रचोसनाइयरवेणं चस्त्रकं उद्धरं चक्किन्नं कारिज कारिजं कारवप्पवेसं अवंडियकोर्वडियं क्षत्रप्ते पश्चिमावरनावक्ष्यककियं क्रणेयतासम्बराज्यस्यं स्पुनुसमुद्दं अभिकार-मक्रदानं प्रमुद्दमप्रक्रीक्षितपुरक(शामिरामें)नवालवर्तं वृद्यम्बस्य टिस्पडितं करेर १ १ ॥ ठए च चिक्रत्ये रामा व्हाक्षियाए ठिक्चवियाए बहुमानीए छहए व साइन्सिए व समसाइस्सिए व काए य दाए व साए व दक्तमान व दवावेना<sup>नी</sup> म सहए म साहरिश्य न समसाहरिश्य न अमे पशिच्छमाने न पशिच्छामेगा<sup>न</sup> व एवं [बा] निष्करह 🗈 🤊 🤚 🛭 तए वं समजस्स मगवको महानौरस्स अन्यादिक्छे पड़ने बिनसे टिवनडियं क्(रि)रेंति तस्य बिनसे केन्स्ररेतिकां वरेति 🕏 दिवसे भस्मवासरिय जागरें(वरि)ति ए(इ)कारसमे विवसे विश्वते निम्वतिए क्षप्रकारकारकरणे चंपते बारसा(हे)इतिबसे नितक जसर्च पार्च बाहर्स साहसं सवक्तवा (वि)वैधि २ ता मितनाइनिव(व)मसवक्तसंबिपरिकर्य वावर प्राप्त व कामर्देशि २ ता तम्बे पच्चा कामा सब्दप्पादेगाई संगडाई प्रदाई बस्बाई परे क्षिमा अपमञ्जानारणाकंकियसरीरा मोनलकेकाए मोयलमङ्गंति ह्यूनान्तराजा तेचे नितनाहरिकमसन्त्रपर्वेतिपरिकाणं नामपृष्टै कारिय्य स्थितं हे निवर्व अन्य

९ व्या-तुगाई रोसि सहस्य । २ असक्याव्यक्तसम्साइमे ।

ततीतलतालतुडियगीयवाइयरवेण महुरेण य मणहरेण जयजयमद्घोसमीसिएण मजुमजुणा घोसेण य पडियुज्झ(आपुच्छिज)माणे पडियुज्झमाणे, सन्विद्धीए सव्बजुईए सव्ववलेण सव्ववाहणेण गन्वसमुदएण सव्वायरेण सन्वविभृद्रेए सन्व-विभूसाए सन्वसभमेण सन्वसगमेण सन्वपगईहिं सन्वनाडएहिं सव्वतालायरेहिं सर्व(वाव)वोरोहेण सन्वपुप्फगधवस्थमहालकारविभृसाए सन्वतुडियसद्मिननाएण महया उद्घीए महया जुईए महया बलेण महया वाहणेण महया समुदएण महया वरतुडियजमगसमगप्पवाइएण सरापणवपडहमेरिझहरिखरसुहिहुडुक्टुटुहिनिग्घोस-नाडयरवेण कुडपुरं नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ २ ता जेणेव नायसडवणे उजाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उचागन्छइ उवागन्छिता असोगवरपायवस्म अहे सीय ठावेइ २ त्ता सीयाओ पचोरुहड २ त्ता सयमेव आभरणमहालकार ओसुयइ २ ता सय-मेव पचमुद्धिय लोय करेइ २ ता छद्देण भत्तेण अपाणएण हत्युत्तराहि नक्खत्तेणं जोग-मुवागएण एग देवदूसमादाय एगे अवीए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए ॥ १९५-११६॥ समणे भगव महावीरे सवच्छर साहिय मास जाव चीवरधारी होत्था, तेण परं अचेले पाणिपिडिग्गहिए । समणे भगवं महावीरे साइरेगाइ दुवालसवासाई निच वोसट्टकाए चियत्तदेहें जे केइ उवसम्मा उप्पजति, तंजहा-दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा अणुलोमा वा पिंडलोमा वा ते उपन्ने सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥ ११७ ॥ तए ण समणे भगवं महावीरे अणगारे जाए-इ(ई)-रियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणमङमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपास-वणखेलजहसिंघाणपारिद्वावणियासमिए, मणसमिए, वयसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिदिए, गुत्तवभयारी, अकोहे, अमाणे, अमाए, अलोहे, सते, पसते, उवसते, परिनिव्युढे, अणासवे, अममे, अकिंचणे, छिन्न(सोए)गथे, निर्वलेवे, कसपाई इव मुक्कतोए १, सखे इव निरंजणे २, जीवे इव अप्पिट्हियगई ३, गगणमिव निरालबणे ४, वा(ऊ इव)उन्व अपिबबद्धे ५, मार्यसलिल व सुद्ध-हियए ६, पुक्खरपत्त व निरुवलेवे ७, कुम्मे इव गुर्तिदिए ८, खरिगविसाणं व एगजाए ९, विह्नग इव विष्पमुक्ते १०, भारंडपक्खी इव अप्पमत्ते ११, कुजरे इव सोंडीरे १२, वसहो इव जायथामे १३, सीहो इव दुद्धरिसे १४, मदरो इव निक्क-(अप्पक)पे १५, सागरो इव गंभीरे १६, चदो इव सोमलेसे १७, सूरो इव दित्त-तेए १८, जचकणग व जायरूचे १९, वसुधरा इव सव्वफासविसहे २०, सुहुयहु-यासणो इव तेयसा जलते २१। इमेसिं पयाण दुन्नि संगहणिगाहायो-कसे सखे जीवे, गगणे वाऊ य सरयसिंहले य । पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहुगे खग्गे य भारंडे

क्यम

**इ**ज्यादि भयर्ष स्रोगनाहा ! सनसमयजीवदियं पनतिह घम्मदिर्श्व हिनद्दन्तिने नगररं राजकोए सन्तरीवार्ग भनिस्सर्शिक्ट अग्रजमसर्द पर्वजंदि ॥ ११०-१११ ह पुर्वित पि न रामणस्य भगवजो महाबीरस्य मानस्ययाको मिहत्यकमाओ अनुगरे माहोइए अप्पडिवाई नानवसमें हो(ह)त्वा । सए वं सममे मयवं महाबीरे तेवं अपुत्तरेनं आहोद्रपूर्णं नावनंसर्वेनं अप्यानो निषयामणका**र्वं** आसोवद्र २ ता विवा हिरको विवा धुनुष्कं विवा यथ विवा रजं विवा रहें, एवं वसं बाहवं कीर कोद्वागारं निवा पुरं, निवा अंतेउरं, निवा अववय निवा विप्रश्नपत्रकाररण ममि(स)मोतिनसंदाधिलपमाजरत्तरममाहर्वं संतसारसावदर्जं विस्तादसा नक्ता काम दानारेहि परिभाक्ता कार्न काक्नार्थ परिभाक्ता u १९२ ॥ तेर्न कामेमं तेनं समप्रं समने मगर्न महानीरे से से हेमेताचं पत्रमे मासे पत्रमे काने सस्यविर्वहुके एस्स न सम्यविर्वहुक्स्स व्यमीक्कोनं पाईवगासिबीए क्रावार पोरिसीए अमिनिबिद्याए धमामपताए सम्बप्नं दिस्सेन विवएनं मुद्रतेयं नंदप्पमह चीमाए चरेक्मकुनसुराए परिवाए कम्लुगम्ममाणमन्त्रे चेकिनचक्किम्(ड)नंगडिन सुइमंगविक्वदामानपूर्वमावर्वेटिवगनेहि ताहि बहाहि वाव वसाहि श्रामिनंदमाना (व) मसियुष्तमाना य एवं बवाधी-बय जय नंदा! जब बय महा! शई ते [क्रिय नरमस्त्रा 1] अमरगेशि शामबंसमामरिति अभियोदं जिलावि इंदिवारं, जिनं व पाकेकि समयवरमं विविधानों वि व बसाबि से पेप ! सिविधानों निहमानि रागदोस्ताने तथन विद्याधिकवसकको मदादि व्यक्तकमस्त सामेन उत्तीर्व स्टेंडनं अप्पारतो हराहि आराहणपडार्गं च बीर l रोक्रसरेगमञ्जे पावस विदित्तिर सञ्चत्तरं केन्स्सवरनानं पच्छ व सुचयां प्र(रस)रं पर्य जिल्पवरोवाहेलं समीलं लड्डविकेनं होता परीसहन्तरं, कन कन वात्तिसनरवस्त्वा । नहुई विनशाई बहुई पश्चाई पहुरे मासाई नहुई उन्हें शहूर अनुनाह नहुई संनक्तराई अभीए परीसहोत्सानार्व कंदिसमें सम्मोरवार्य अस्में से अविश्वे अवतरित्र अस्मार परीसहोतसमार्व ध १९३-१९४ ।। लए में समये अगर्व अवाचीरे सम्बन्धमान्वासहरोहें विक्रिक माचे पिक्किमाचे वयणमाध्यसस्तिहे अभियुष्यमाचे अमियुष्यमाचे हिनव-मामास्यर्रमेष्ठि उपित्रमाणे एवधित्रमाणे मणोग्रमानस्यर्रमेष्ठि विश्वित्रमाणे विश्वत्रमाणे वैदिरवर्षेष्ठि परित्रमाणे परित्रमाणे संपृत्रिमानस्यर्रमेष्ठ दाक्रमाणे दाक्रमाणे वाहिणहरूपेणं वहूणं नरणारीसहस्ताणं श्रीवरिमाध्ययः इस्साहं परिच्यमाणे परिच्यमाणे मनणपतिसहस्ताई सम्बज्जमाचे सम्बज्जमाचे

१ वजेगाई हि अहो।

म०-जगत की रचना कीन दय करते हैं ?

उ०-कोई मी नहीं। यह जात् तो बामादि काम से हैं और धननत काम तक रहेगा। न किसी ने इसकी रचमा की है और म कोई इसका माग्र कर सकता है।

मञ्नतो पुरूप पाप का फल काँन देता दे !

उ - बुरे पी का श्री की ति है। उसका फल भी उ - बुरे कि कि की की कावश्यकता नहीं पश्ती। गत के किये की किसी की कावश्यकता नहीं पश्ती। गराब पीने पाल को गराब काव बंदाय का देती हैं। बिप काने वाले को विप क्ष्यय ही मार इस्तत है। पेटी क्ष्यं भूक श्रिष्टा देती है। बेड़ीय बनाने भारते और भूर भगाने के लिये किसी दूबरे पुरूप कर्या की कर रत नहीं पड़ती। इसी मकार पुष्प-पाप भागने के किये किसी है-भर की करूरत नहीं है। पुष्प-पाप अगना पस कर्य देता है।

प्र• भगवात की भक्ति क्यों करती काहिये !

उ॰-हम झात्स शुद्धि करना चाहत हैं और आयात आत्म-शुक्ति के बावशे हैं। उन्होंने बारम-शावन का बपाय मी हमें बताया है। हम भगवान शरी के लोकोचर गुज्यात करमा बाहते हैं। हम उन्हें पूर्य न शानेंगे तो उनके गुरों का सनुकर्ज मी न कर शकेंगे। इमिन्निये उनकें मति खादर कीर बहुआन रखना हमारा कश्वर है।

प्र-मगवान की अधित से धीर भी कोई साम है !

उ०-हाँ अमेक काम हैं। जब कोई मध्य बीव आस्तरिक मक्ति से गत्गत शोकर मगवार की आरायना करता जाणमाणे पासमाणे विहरइ॥ १२१॥ तेणं कालेण तेण समएण समणे भगवं महावीरे अद्वियगाम नीसाए पढम अतरावास वासावास उवागए १, चपं च पिट्ठ-चप च नीसाए तस्रो अतरावासे वासावास उवागए ४, वेसार्लि नगरिं वाणियगाम च नीसाए दुवालस अतरावासे वासावास उवागए १६, रायगिह नगरं नालद च बाहिरिय नीसाए चउद्स अतरावासे वासावास उवागए ३०, छ मिहि(लिया)लाए ३६ दो भिह्याए ३८ एग आलंभियाए ३९ एगं सावतथीए ४० एगं पणियभूमीए ४१ एग पावाए मज्झिमाए हत्थिवालस्स रण्णो रज्जुगसभाए अपच्छिम अतरावास वासावास उवागए ४२ ॥ १२२ ॥ तत्थ ण जे से पावाए मज्झिमाए हत्थिवालस्स रण्णो रज्जुगसभाए अपच्छिम अतरावास वासावास उवागए तस्स णं अतरावासस्स जे से वासाण चउत्थे मासे सत्तमे पक्खे कत्तियबहुळे तस्स ण कत्तियबहुळस्स पण्ण-रसीपक्खेणं जा सा चरमा रयणी तं रयणिं च णं समणे भगव महावीरे कालगए विइक्कते समुज्जाए छिन्नजाइजरामरणवघणे सिद्धे बुढे मुत्ते अतगढे परिनिव्बुढे सव्बदुक्खप्पहीणे, चदे नाम से दो(दु)चे सवच्छरे, पीइवद्धणे मासे, नदिवद्धणे पक्खे, अगिगवेसे नाम से दिवसे उवसमित्ति पवुचइ, देवाणंदा नामं सा रयणी निरतित्ति पबुचइ, अंचे लवे, मुहुत्ते पाणू, थोवे सिद्धे, नागे करणे, सन्वहसिद्धे मुहुत्ते, साइणा नक्खत्तेण जोगमुवागएण कालगए विइक्षते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे॥ १२३-१२४॥ ज रयणि च ण समणे भगव महावीरे कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे सा ण रयणी वहूहिं देवेहिं देवीहि य ओवयमाणेहि य उप्पयमाणेहि य उज्जोविया यावि हुत्या ॥ १२५ ॥ ज रयणि च ण समणे भगव महावीरे कालगए जाव सम्बद्धक्खप्पहीणे सा ण रयणी बहुहिं देवे(हिय)हिं देवीहि य ओवयमाणेहिं उप्पयमाणेहि य उप्पिजलगमाणभूया कहकहण-भूया यावि हुत्था ॥ १२६ ॥ ज रयणि च ण समणे भगवं महावीरे कालगए जाव सव्वदु-क्खप्पहीणे त रयणिं च ण जिट्टस्स गोयमस्स इद्भृइस्स अणगारस्स अतेवासिस्स नायए पिज्जबयणे वुच्छिने अणते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदसणे समुप्पन्ने॥१२७॥ ज रयणि च ण समणे भगव महावीरे कालगए जाव सन्वदुक्खप्पहीणे त रयणि च ण नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अद्वारसवि गणरायाणो अमावासाए पा(वा)राभो(ए)य पोसहोववास पट्टविंसु, गए से भावुज्जोए दव्युज्जोय कारिस्सामो ॥ १२८ ॥ ज रयणि च ण समणे भगव महावीरे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे त रयणि च ण खुद्दाए भासरासी नाम महग्गहे दोवाससहस्सिठिई समणस्स भगवओ महावीरस्स जम्मनक्वत सकते ॥ १२९ ॥ जप्पभिइ च ण से खुद्दाए भासरासी महग्गहे दो-वाससहस्सिठिई समणस्स भगवओ महावीरस्स जम्मनक्खत सकते तप्पभिइ च

٩¥

पदमे परिसिर्ट

॥ १ ॥ कुंबर वसहे सीडे मगराया चेव सागरमधोडे । बंदे सुरे कमरे वर्डक्ट चेन हुनवहे ॥ र ध मरिय थ तस्स मधर्गतस्स करवह पश्चित्री से व प्रविश्ते चरुनिया प्रवास संबद्धा-सम्बद्धा विश्वको कासको भागको अस्वको न स्विक वित्तमीरिएस दम्बेस क्षितओं में गामे वा नगरे वा अरुणे वा क्षित वा उने व मरे वा कांगणे वा नहे वा कासको थं सगए वा जावक्रियाए वा कावापल्डर व नोवे वा अपे वा समे वा मुहुते वा महोरते वा परके वा माने वा उ(फ)उए वा क्रमचे वा संबन्छरे वा अवगरे वा बीहकाससंबोध, माध्यो प कोहे वा सने ग्र माबाए वा कोमे वा गए वा इत्ते वा पिने वा दोते वा कमडे वा अवमननाने व पेद्वचे वा फरपरिवाए वा अरहर्ए(ए) वा मावामोरी वा मिच्छाइएम**ा** वा उस नं भगर्कतस्य नो एवं मनइ ॥ ११८ ॥ से वं भगवं बासावासकां ऋह निम्हरेमंदिर सासे मामे एगराइए नयरे पंचराइए बासीचंदबसमायक्रये समतिचसन्निद्वदंबचे <sup>सम</sup> मुहदुक्के इहक्रोगपरध्येगअप्यविषदे शीविषमर्(व य)जनिरवक्के समारमस्यानी कम्मसत्तुनित्वावणहाए अञ्जूषिए एव च च विहरू ॥ ११९ ॥ दस्स में मार्वदस्य

अनुत्तरेयं मारोमं अनुतारेण र्यस्तिन अनुतारेमं चरित्तेनं अनुतारेमं जाअपनं अनुतारेनं विद्वारेण अपुत्तरेण नीरिएणं अपुत्तरेणं अजनेणं अपुत्तरेणं अपूर्वेणं अनुतरेणं आवरेणं मञ्चराप् वर्धीप् अञ्चराप् मुचीप् वश्चराप् श्रुचीप् व्युवराप् दुर्ह्मप् व्युवरा सवर्धवमतुबद्धवरियहोवविवयुक्तनिम्बाजममोर्च कप्पार्च मानेमाकस्य दुवान्तः संबच्छरमं विद्यांतर्ग, तेरसमस्य संबच्छरस्य मंतरा बहुनावस्य से से विन्दार्व दुवे माधे नदस्ये पक्के कहताहरूढे तस्त में काताहरूदस्य दसमीमनकेनं गाई<sup>क</sup> गामिजीए क्रमाप् पोरिशीए शमिनिविद्याप् प्रमाणपत्ताए द्वस्यप्त्रं सेवरेनं विवर्ष सुदुत्तेर्नं वासिकामस्य नगरस्य बहिया वक्क्वाक्रियाप् गरेप् होरे वेगलकस्य क्रेमस्य अबुद्धानंति सामायस्य माहाश्वदस्य क्राक्रतंति साक्यावकस्य वहे ग्रेवी हियाए एक्(वि)द्ववनिशिजाए जावाववाए आसाविमावस्य कोर्न मर्चन वसावस्य इतुराराई न्तव्यतेनं जोनमुबाणएवं शार्जतारेगाए वदमावस्य अर्वते बलुवरे विज्ञा भाए निरावरणे करियो पविपुत्ते <del>वेत्रसवर</del>णानवंशने समुप्तने ॥ १२ ॥ तए नं स्थाने मध्य महावीरे जरहा जाए जिले केवली सम्बद्ध सम्बद्धारी सहेवमञ्जाहरूस क्रोयस्स परिवार्व जाणइ पासइ, सञ्जकोए सञ्ज्ञीवार्च जागई गई दिई जवर्च वर्ष-बार्च तबं समोनानसिर्व सुरो कर्न पश्चिमेन आमोक्स्म होक्स्म आहा अरहास्त्रास्त्र मागी त त कर्क सप्तर्यकाशमोने बहुसायाच्ये सम्बद्धार सम्बद्धार्थ सम्बद्धार

१ तेनं धारेणं तेनं समएनं ।

जाणमाणे पासमाणे विहरइ ॥ १२१ ॥ तेणं कालेणं तेण समएण समणे भगवं महावीरे अद्वियगामं नीसाए पढम अतरावास वासावास उवागए १, चपं च पिट्ठ-चपं च नीसाए तओ अतरावासे वासावास उवागए ४, वेसार्लि नगरिं वाणियगामं च नीसाए दुवालस अतरावासे वासावास उवागए १६, रायगिह नगरं नालदं च नाहिरिय नीसाए चउद्दस अतरावासे वासावास उवागए ३०, छ मिहि(लिया)लाए ३६ दो भिद्याए ३८ एग आलिमयाए ३९ एग सावत्थीए ४० एगं पणियभूमीए ४१ एग पावाए मज्झिमाए हत्थिवालस्स रण्णो रज्जुगसभाए अपच्छिमं अतरावास नासावास उवागए ४२ ॥ १२२ ॥ तत्य णं जे से पावाए मज्झिमाए हित्यवालस्स रण्णो रज्जुगसभाए अपन्छिम अतरावास वासावास उवागए तस्स ण अतरावासस्स जे से वासाण चडत्थे मासे सत्तमे पक्खे कत्तियवहुळे तस्स ण कत्तियवहुळस्स पण्ण-रसीपक्खेण जा सा चरमा रयणी त रयणि च ण समणे भगव महावीरे कालगए विइक्कते समुजाए छिन्नजाइजरामरणवधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगढे परिनिव्बुढे सञ्बद्धक्यपहींणे, चंदे नाम से दो(दु)चे सवच्छरे, पीइनद्धणे मासे, नदिवद्धणे पक्से. अगिनेसे नाम से दिवसे उनसमित्ति पनुचइ, देवाणंदा नामं सा स्यणी निरितित्ति पवचह, अचे लवे, मुहुत्ते पाणू, योवे सिद्धे, नागे करणे, सन्वद्वसिद्धे मुहुत्ते, साइणा नक्खत्तेण जोगमुवागएण कालगए विइक्कंते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे॥ १२३-१२४॥ ज रयर्णि च ण समणे भगव महावीरे कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे सा ण रयणी वहूहिं देवेहिं देवीहि य ओवयमाणेहि य उप्पयमाणेहि य उज्जोविया यावि हत्या ॥ १२५॥ ज रयणि च ण समणे भगव महावीरे कालगए जाव सम्बदुक्खप्पहीणे सा ण रयणी बहुहिँ देवे(हिय)हिं देवीहिय क्षोनयमाणेहिं उप्पयमाणेहि य उप्पिजलगमाणभूया कहकहंग-भूया यावि हुत्था॥ १२६॥ ज रयणि च ण समणे भगव महावीरे कालगए जाव सव्बदु-क्खप्पहीणे त रयणि च ण जिद्वस्स गोयमस्स इदभूइस्स अणगारस्य अतेवासिस्स नायए पिज्जवधणे बुच्छिने अणते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदसणे समुप्पन्ने ॥१२७॥ ज रयणि च ण समणे भगव महावीरे कालगए जाव सन्वदुक्खप्पहीणे त रयणि च ण नव मर्लाई नव छेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारसवि गणरायाणो अमावासाए पा(वा)राभो(ए)य पोसहोवनास पट्टविंसु, गए से भावुज्जोए दव्युज्जोय करिस्सामी ॥ १२८॥ ज रयणि च ण समणे भगव महावीरे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे त रयणि च ण खुद्दाए भासरासी नाम महम्गहे दोवाससहस्सिठिई समणस्स भगवओ महावीरस्स जम्मनक्खत्त सकते ॥ १२९ ॥ जप्पभिइ च ण से खुद्दाए भासरासी महग्गहे दो-वाससहस्सिठिई समणस्स भगवओ महावीर्स्म जम्मनक्खत्त सकते तप्पभिड च

न समयार्थ निर्माणां निर्माणीय व मो उदिए उदिए पूर्यासकारे व्यक्त 🛭 🥦 क्या न से ब्रह्मए बान बस्यमनबत्ताओं विश्वतं मविस्स्त् स्या में समकाने निर्मायाणं निरमबीण य तथिए तथिए पुशासकारे सनिरसङ् ॥ १३९ ॥ वं रवनि च चं समर्थ भगनं सहावीरे जान सम्बद्धक्षप्रधाने त रसमि च नं क्षेत्र नप्रसी मार्ग समुप्पक्ता का द्विया कनकमाना छउमत्कार्य निर्माधार्य विर्माधीय व मो चन्द्रफार्य इम्बमागच्छा, जा सठिया चन्नमाणा छउमस्त्राचं निम्मशनं निर्म-बीज य **चपन्न**प्रासं इव्यमाय**का**द् ॥ १३९ ॥ च पासिता बहाई निर्मायेहै निर्म-बीडि य सताह एक्क्बाबाह, से किमाह मेरे ! (१) अजप्यभिद्र संजमे <u>इरा</u>सा(हे)हए मिस्स्टर ॥ १३३ ॥ तेथं काकेणं तेथं समपूर्णं समयस्य मगमको सङ्गारिस्य इंद्रम्हपासुक्याओं क्वद्ससमनसाहस्त्रीओ सङ्गोरिया समजसंप्रशाहका व १३४ व समयस्य मगदभो महावीरस्य जन्मवंद्यापस्यवन्ताओ छत्तीसं अन्तिमासाहस्यीने उद्योक्तिया मन्त्रियार्थपया द्वत्वा ॥ १३५ ॥ समणस्य [व] मनवमो स्वामीरस्य एकारक्ष्मपानुकदानं एसजोवारागाणं एगा स्थराहरसी भरजाई 🔻 सहस्य चकोश्चिमा समनोनासगार्थं सेपमा हुत्वा ॥ १३६ व समनस्य मतनभे महागीरस सुक्रमारेवर्षेपासुक्काणं समजोबाधियाणं विकि स्वसाइस्टीको बद्धारसस्हरसा एकोशिया समजोबाशिकार्ज संपमा हत्या ॥ १३७ ॥ समजस्य-भगवको महा-बौरस्य विवि स्था क्टाइसपुष्यीयं अविजाणं जिल्लंकाराणं सम्बद्धारसंबिगार्व बिजे निव अवितर्द बागरमामार्ज उद्योखिया बाउइसपुरुवीनं संपदा हुत्या 🛭 १३४ है समगस्य नं मगक्को मक्कवीरस्य तेरस्य समा कोविजानीयं अध्येरीयार्जं बक्केनिया भोहिना(मीर्म)निसपमा हुत्या ॥ ११९ ॥ समगरस वं भगवजो महामीरस्स सर्व समा केनकनाजीर्ग समिजनरानानर्गसक्त्रपाणं उद्योशिया केनकना-विसपना हुत्ना ॥ १४ ॥ समन्तर नं भगवभो महाबीरत्स सत्त सवा बेटव्योगं अदेवावं देनि-**बि्प्र**मार्ज उद्दोक्तिया वैदम्बिकसपमा हुत्या ॥ १४१ ॥ सम<del>वस्य व मगवसी</del> स्वाचीरसा पंच सका विज्ञानाईर्ण अञ्चादकेश वीनेतु दोसु व समुदेश सनीर्य पर्विदिवार्ण प्रजासार्ण सजोगए गावे कानमाणार्व सद्दोसिया वितक्तर्यं च स्तवा हुत्या ॥ १४२ ॥ समयस्य वं समक्त्रो सहावीरस्य बतारि समा बाहेर्य स्वेतस-सनासराए परेसाए वाए अपराजिवार्य स्वोतिया बाहसम्या हुत्या ॥ १४३ ॥ सम्पर्स में मगवमो महानीरस्स एत सरवाधिस्वाई शिवाई वाव सम्पद्भाव-पद्मिताहे, चंडस्य कविवासवाई शिवाह ॥ १४४ ॥ सम्बरम में मन्यभो मही-

47

९ 'आमोसक्रिमाइसदि"।

वीरस्स अह सया अणुत्तरोववाडयाण गड्कल्लाणाण ठिडक्छाणाणं आगमेसिभद्दाण उद्योसिया अणुत्तरोववाइयाण सपया हुत्या ॥ १४५ ॥ समणस्स ण भगवओ महा-वीरस्स दुविहा अतगटभूमी हुत्था, तजहा–जुगंत(ग)कडभूमी य परियायतकड-भूमी य, जाव तचाओ पुरिसजुगाओ जुगतकडभ्मी, चउवासपरियाए अतमकासी ॥ १४६ ॥ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे तीस वासाइ अगार-वासमज्झे वसित्ता साइरेगाइ दुवालस वासाइ छडमत्थपरियाग पाउणित्ता देस्णाइ तीस वासाइ केवलिपरियाग पांडणित्ता वायालीस वासाइ सामण्णपरियाग पांडणित्ता वावत्त(रिं)रि वासाइ सव्वाउय पालइता खीणे वेयणिजाउयनामगुत्ते इमीसे ओस-प्पिणीए दूसमसुसमाए समाए वहुविइकताए तिहिं वासेहिं अद्धनवमेहि य मासेहिं सेसेहिं पावाए मज्झिमाए हत्थिवालस्य रण्णो रज्जु(य)गसभाए एगे अवीए छट्टेण भत्तेण अपाणएणं साइणा नक्खतेण जोगमुवागएण पचूसकालगमयसि सपिलय-किनसण्णे पणपन्न अज्झयणाइ कछाणफलविवागाडं पणपन्न अज्झयणाइ पावफल-विवागाइ छत्तीस च अपुद्ववागरणाइ वागरिता पहाण नाम अज्झयण विभावेमाणे विभावेमाणे कालगए विइक्कते समुज्जाए छिन्नजाइजरामरणवधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगढे परिनिव्युडे सन्वदुक्खप्पहीणे ॥ १४७ ॥ सैमणस्स भगवओ महावीरस्स जाव मन्वदुक्खप्पहीणस्स नव वाससयाई विइक्कताइ, दसमस्स य वाससयस्स अय असीइमे सवच्छरे काले गच्छइ । नायणंतरे पुण अय तेणउए सवच्छरे काले गच्छइ इइ दीमइ ॥ १४८ ॥ २४ ॥ इइ सिरिमहावीरचरियं समत्तं ॥

तेण कालेण तेण समएण पासे [ण] अरहा पुरिसादाणीए पंचिवसाहें हुत्या, तजहा-विसाहाहिं चुए चइत्ता गव्म वक्कते १, विसाहाहिं जाए २, विसाहाहिं सुद्धे भिवता अगाराओ अणगारिय पव्वइए ३, विसाहाहिं अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे किसणे पिंडपुण्णे केवलवरनाणदसणे समुप्पन्ने ४, विसाहाहिं पिरिनिव्यु(हे)ए ५॥ १४९॥ तेण कालेण तेणं समएण पासे अरहा पुरिसादाणीए जे से गिम्हाण पढमे मासे पढमे पक्ले चित्तवहुले तस्स ण चित्तवहुलस्स चउत्थीपक्लेण पाणयाओ कप्पाओ वीससागरोवमिट्टइयाओ अणतरं चय चइत्ता इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वाणारसीए नयरीए आससेणस्स रण्णो वामाए देवीए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयित विसाहाहिं नक्लत्तेण जोगमुवागएण आहारविक्ततीए भववक्कतीए सरीर-

१ कप्पस्चत्तस्स पुत्ययित्रहणकालजाणावणद्वा सुत्तामिण देविष्ट्वगणिखमासमणेहिं लिहिय, वीरनिव्वाणाओ नवसयअसीइविरसे पुत्ययारूढो सिद्धतो जाओ तया कप्पो वि पुत्थयारूढो जाओ ति अद्घो । एवं सव्विजणतरेसु अवगतव्वं ।

वर्षतीए इस्टिंडि गम्भताए वर्षते ॥ १५ ॥ पासे वं करहा पुरिसादाणीए तिस-गोनगए यानि हुत्या शैजहा-नहस्सामिति जावह, नयसाये न जाजह, चुएमिवि पायह, तेर्च धेन अभिकानेर्ज सुनिवर्णनयविद्वाचेर्ज सम्बं जान निवर्ण किई स्टापिस बाव सर्वस्थे ते गर्का परिवद्द ।। १५९ ॥ तेर्च बाक्षेत्रं तेर्च समपूर्ण परि अरहा पुरिवादाणीप के से हेमेंताण हुने मासे कने पान्ते पोछनपुरे करत न पोसनहरूम वसमीपरकेने नरन्तं मासार्ण बहुपविपुर्वाणं व्यवसार्व सं-दिसाचं निर्देशताचे पुरुवरतावरताशस्त्रसम्बंधि निसादार्शि सक्यातीयं क्रोयसुवायएवं मारोग्गा(मा)रोग्गं शार्वं प्याया ॥ १५२ ॥ वं रवविं व वं प्रते वरही प्रतिसादाचीए जाए (सं रसमि व यं) शा (वं) रवकी बहुई देवेई देवीई व जार्ग व्यप्तिकक्यमूना कहरूहगमूमा शानि हत्या ॥ १५३ ॥ एछ तहेव अवरे जन्मन पानासिकावेच भावित्रको जाव स हात वे हमारे वारो नामेज ॥ १५४ ॥ पासे व भरहा पुरिसादाजीए वक्के वक्कारहरू पविक्रमें क्लीचे महए विजीए सीर्ष बासम् अगारबासमञ्जे विका पुष्पर्वि कोर्गतिपृष्टि वीसक्रिपपृष्टि देवेडि ठाडि इक्कार्टि जान एवं ननाशी-जन जन लन्या! अस अस सहा! जान जनतन्तरं पर्वजिति ॥ १५५-१५६ ॥ पुन्नि वि नं पासस्य न करहजो पुरिसाहापीनस्य मानुस्सगाओ गिहरनपम्माओ अणुत्तरे आब्हेस्य सं चेन सम्यं नाम नानं नाहननं परिमहत्ता अ से डेमेवाम इसे मारो क्ले परन्ते पोसन्तके करत ने प्रेमनहूमार इकारसीविवसेचं प्रम्मम्बराक्समंति विसामाए सि(वि)विवाए स्वेपम्युगाधराप परिचाए ते जैव सम्बं नवरं वाजारसिं नगरि सर्व्यानकोनं विस्थानक १ ता जेनेव श्रासम्पर्य सन्दर्भ क्षेत्रेन अस्त्रोगनरपानने तेणेन सन्नाय**ण्या** २ ता सस्त्रोपनरमाननस्य मदे चीर्य उन्दि ९ चा चीनामा प्रमोसद्द ९ चा सम्मेष भागरपनमार्थकार मेस बह २ ता सम्मेव पंचमुद्धियं क्रोगं करेड् २ ता अक्रमेणं मत्तेचं अधानएयं विशः शाहि सम्बद्धारेण जोगमुनागपूर्व एगं वेकस्तुस्मादान तिथि प्रतिसत्तपृहि सर्वि संवै भनिता भगारामी मचनारिने वन्मस्य ॥ १५० ॥ वासे व मरहा प्रदेशसामीए तेशीह राईमिमाई निर्ण बोसहराए विमलदेहें के केंद्र उक्समार उपकरित संबद्धा-दिम्ना वा माधुमा वा विरिक्तवाबोमिका वा अनुस्तेमा वा पविद्योगा वा हे उपके सम्मं सहरू स्मार् दिविक्कार अहिनासेर ॥ १५८ ॥ तए ये से पासे अग्यारे बाए इरियाससिए जार सम्पान आनेमानस्थ सेसीई राहविनाई विदर्शताई, नतरा-

2.5

९ पहुँचि गम्मत्ये वह सर्वाधकत्याए मास्त्रम् पासे सप्पती बन्दसप्ते हैं। रोग पासे नि नाम कर्म ।

सीइ(मे)मस्स राइदि(ए)यस्स अतरा वद्रमा(णे)णस्स जे से गिम्हाण पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तवहुरु तस्स ण चित्तवहुरुस्स चउत्थीपक्खेण पुन्वण्हकारुसमयसि धाय(ई)इपायवस्स अहे छट्ठेण भत्तेण अपाणएण विसाहाहिं नक्खत्तेण जोगमुवागएण ञ्चाणतरियाए वद्टमाणस्स अणते जाव जाणमाणे पासमाणे विहरइ ॥ १५९ ॥ पासस्स ण अरहुओ पुरिसादाणीयस्स अद्व गणा अद्व गणहरा हुत्था, तजहा-सुमे १ य अजाघोसे २ य, विसिट्ठे ३ वभयारि ४ य। सोमे ५ सिरिहरे ६ चेन, वीरभेद्दे ७ जसे विय ८ ॥ १ ॥ १६० ॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स अज्जिदन पामुक्खाओ सोलस समणसाहरूसीओ उद्घोसिया समणसपया हुत्या॥ १६१॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स पुप्फचूलापामुक्खाओ अट्टतीस अजियासाहस्सीओ डकोसिया अजियासपया हुत्या ॥ १६२ ॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स ग्रव्वयपामुक्खाण समणोवासगाण एगा सयसाहस्सी[ओ] चउसिं च सहस्सा उक्को-सिया समणोवास(ग)गाण सपया हुत्या ॥ १६३ ॥ पासस्स ण अरह्ओ पुरिसादा-णीयस्स सुनदापामुक्काण समणोवासियाण तिण्णि सयसाहरसीओ सत्तावीस च सहस्ता उक्कोसिया समणोवासियाण सपया हुत्या ॥ १६४ ॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स अद्भुद्धसया चउद्दसपुव्वीण अजिणाण जिणसकासाण सव्वक्खर-सिनाईणं जाव चउँ इसपुर्वीण सपया हुत्या ॥ १६५ ॥ पासस्स ण अरहुओ पुरिसादाणीयस्स चउद्दस सया ओहिनाणीणं, दस सया केवलनाणीण, ए(इ)कार-स सया वेड(व्विया)व्वीण, छस्सया रिडमईण, दस समणसया सिद्धा, वीस अजि-यासया सिद्धा, अद्रहु-म-सया विउलमईण, छ(र)सया वाईण, वारस सया अणुत्तरोव-वाइयाण ॥ १६६ ॥ पासस्स णं अरहःओ पुरिसादाणीयस्स दुविहा अतगडभूमी हुत्या, तजहा–जुगतकडभूमी य परियार्यतकडभूमी य, जाव चउत्थाओ पुरिसजु-गाओ जुगतकडभूमी, तिवासपरियाए अतमकासी ॥ १६७ ॥ तेणं कालेण तेण समएण पासे अरहा पुरिसादाणीए तीस वासाइ अगारवासमज्झे वसिता तेसीई राइदियाइ छउमत्थपरियाय पाउणिता देम्णाइ सत्तरि वासाइ केवलिपरियायं पाउणित्ता पिडपुन्नाइ सत्तरि वासाइ सामण्णपरियायं पाउणित्ता एक वाससय सन्वाउय पालइत्ता खीणे वेयणिज्ञाउयनामगुत्ते इमीसे ओसप्पिणीए दूसमसुसमाए समाए वह-विइक्कताए जे से वासाण पढमे मासे दुचे पक्खे सावणसुद्धे तस्स ण सावणसुद्धस्स अट्टमीपक्खेण उर्पिप सम्मेयसेलसिह्रंसि अप्पचउत्तीसङ्मे मासिएण भत्तेण अपाणएणं विसाहाहिं नक्खत्तेण जोगमुवागएण पुन्व(रत्तावरत्त)ण्हकालसमयसि वग्धारियपाणी कालगए विइक्कते जाव सञ्बद्धक्खप्पहीणे ॥ १६८ ॥ पासस्स ण अरहओ जाव २८ पत्रमं परिसिद्धं [कप्पष्ट

कांकेलं तेचे समाएणं कार्या व्यक्तियोगं वा से बासायं पतत्वे मारे समने वर्तने करितनबुक्ते तस्य पं कतिक्वहुकस्य बारसीयकोणं कारतिवामको महानितायां वर्गीयं सारायेत्वमिद्धायांको कार्येत्रपं क्षेत्र व्यक्ता होत्व कंतुरीयं शीचे मार्थे वर्णे सोरित्युरे नवरे स्पृत्तकिकस्य रक्यो मारिताय सिवायं वेगीय मुख्यतात्वरिकस्य समनेसि जान विचारि वण्यामाए कंति सम्बंदि मेहिन सिवायंत्रपत्तिकस्य

सम्बद्धस्यापदीनस्य प्रवास्त्य वास्त्रवाहं निद्धांताहं, तंरसमस्य (व) व वर्ष सेन्यं सेन्याहं साथे प्रच्या ॥ १९०॥ २१॥ प्रवृ निरिपास्तिणाव्यदियं समर्थे तेनं कोनं तेनं साथे स्वत्यं कार्याः वरिद्धांतीयं वंत्रविते प्रवास तंत्रवाहं निर्मा पुर वहता गर्म्या बहेते तोहर तननेतो बाह निसाहि परिनित्यु ॥ १० ॥ तो

इस्य माजिनको ॥ १०१ ॥ तेले काकेणं तेलं उमापूर्णं वरहा आरिक्षेनमी के वे नायां करेंगे माणे वर्षे पत्रके आवश्यक्त स्त्र सं शावनपुद्धं स्त्र सं वर्षावाच्यक्त माणे वर्षावाच्यक्त स्त्र संमाप्त्रकेलं भावन्य साधार्णं बहुपविद्याल्याचे बात विचालं कर्वकालं चीयमुमाप्त्रकेलं पत्रमार्थं सार्य स्त्रामा । वर्षावाच्यक्त विचालं क्षत्र सं होत मं इमारे करिदेवनी मामेणं । कर्वका करिद्धेनमी वर्षावे जाव दिवित्य वास्त्रस्यस्य है मोरे क्षायांत्रसम्बन्धित्यस्य विचालं प्रतिकृति क्षत्रस्य स्त्रामं स्त्रामार्थः । १०४ ॥ के वे वास्त्रस्य स्त्रामं स्त्रामार्थः ॥ १०४ ॥ के वे वास्त्रस्य स्त्रमार्थं स्त्रमार्थं प्रतिकृति स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमार्वं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमार्वं स्त्रमेलं स्त्रमार्थं स्त्रमेलं स्त्रमेलं स्त्रमार्वं स्त्रमेलं स्त्रमेलं स्त्रमार्वं स्त्रमेलं स्त्रमेलं स्त्रमेलं स्त्रमार्वं स्त्रमेलं स्त्रमे

आयोयबहुकस्य पम्मार्थीगानीमं विष्णस्य परिकार या(योगे सक्कित्सक्तिहरे वेत समायबस्य अहे बहुमे(बहु)मं अपेणं अभावपूर्णं विद्यानस्यापं सेम्पुनानपूर्णं भ्रत्यसंत्री समार्थ्य सास्य रिहुर्सम्बन्धा मेनी-महत्त्रारा मुक्ति रिहु तमोत्रीर हुनेयों असरस्य असंभावपरिवाह्यसम्बन्धा अरिहुनेमिति रिह्नपो असंगतस्यविधि । स्वारीनीयसम्बन्धाः

मुंबे असिता क्षणाराओं स्वयनारियं प्रस्तर्य त १७६॥ सरम् सं सरहनेयां चड पर्यं रामितार्थं निषं संसद्धारण् स्विचारेहे तं चच तम्बं वान प्रस्तानार रामित्रस्य क्षतरा ब्रह्मायस्य से से बासार्थं तथे आसे पंचयं वचने सासायस्य तार्यं नगस्स एगे सागरोवमकोडिसहस्से विइक्कते, सेस अद्भनवमासाहियवायाठीसवाससहस्सेहिं ऊणिया । पउमप्पहस्स ण अरहओ जाव पहीणस्स दस - तिवासअद्भनवमासाहियवायाठीसवाससहस्सेहिं - १००॥ ६॥ समइस्स णं अरहओ जाव पहीणस्स विइक्कते, सेस जहा सीयलस्स, तिवासअद्भनवमा-वाडय॥ २०१॥ ५॥ अभिनदणस्स ण अरहओ - नकोडिसयसहस्सा विइक्कता, सेसं जहा सीयलस्स, नवाससहस्सेहिं इचाइयं॥ २०२॥ ४॥ सभवस्स ।सं सागरोवमकोडिसयसहस्सा विइक्कता, सेस जहा - हियवायाठीसवाससहस्सेहिं इचाइय॥ २०३॥ ३॥ पहीणस्स पन्नास सागरोवमकोडिसयसहस्सा विइक्कता, अ इम-तिवासअद्धनवमासाहियवायाठीसवाससहस्सेहिं - इ जिणंतराइं समत्ताइ॥

ा उसमे ण अरहा कोसिलए चउउत्तरासाढे अभीइपचमे
हिं चुए चइत्ता गब्भ वक्कते जाव अभीइणा परिनिव्चुए
गण समएण उसमे ण अरहा कोसिलए जे से गिम्हाण
आसाढवहुले तस्स ण आसाढवहुलस्स चउत्थीपक्खेण
गाओ तित्तीस सागरोवमिट्टइयाओ अणतरं चय चइता
रहे वासे इक्खागभूमीए नाभिकुलगरस्स मठदे(वा)वीए
कालसमयि आहारवक्कतीए जाव गब्भत्ताए वक्कते ॥ २०६॥
लए तिन्नाणोवगए यावि हुत्या, तजहा—चइस्सामित्ति जाणइ
ग्हा—गय—वसह० गाहा । सब्द तहेव, नवरं पढम उसमें
सेसाओ गय । नाभिकुलगरस्स सा(ह)हेइ, स्विणपाढगा
सयमेव वागरेड ॥ २००॥ तेण कालेणं तेण समएण उसमे
जे से गिम्हाण पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तवहुले तस्स ण
पक्खेण नवण्ह मासाणं वहुपिडपुण्णाण अद्धुमाण राइदियाण
त्वत्तेण जोगमुवागएण आरोग्गारोगं दास्य पयाया ॥ २०८॥
देवा देवीओ य वसुहारवास वासिस्र, सेस तहेव चारगसोहणउस्सुक्षमाइयद्विहविद्यज्यवज्ञ सब्वं भाणियव्य ॥ २०९॥

१० पहले परिसिद्धं [कप्पूर्णं यस्य वे करहूको बात सम्बद्धकापहिल्लस्य इद्यास्य शासस्यक्तस्यादे नगराणी व नापस्यस्यादे नन नासस्यादे निहक्ताद्वे, इत्यास्य न नासस्यस्य अर्थार्थे प्रैरम्बन्ने स्वक्षे पर्वाह्य ॥ १८६ ॥ २ ॥ स्विन्त्य स्वव्ह्याय्वे स्वत्यस्य स्विन्त्यः प्रमादि नासस्यस्यादे वर्गापीहं व नासस्वहस्यादे नन नास्यस्य निहर्णति, इत्यस्य व नासस्यस्य वर्गं साधीहते संवन्न्ये स्वत्रे क्षात्रे नम्बन्

1 १८० । १९ ॥ सरस्य यं बरहाने वाव सम्बद्धनायम्(मस्य एने वासनेहि पहरसे क्षेत्रकोठे छेछे वहा महिस्स ४ व एने-वंबसद्ध कवता वारणी(() (बाध)सहस्या(ह) क्षेत्रकेता(है) सम्बद्धनाय सहावीरी विस्तुको ठाके मेरे वर्ग

वाससवा(ई) निक्तंदर्श वस्तारस य वासस्यस्य अवं असीहमे संवर्षा वाले गच्छद् । एवं कामाओ जान सेवसी तान सुद्वानं त १८८ त १८ त इंडस्स ने भरहमो बाब सम्बदुक्याणहीयस्य एगे चत्रभागपक्षिमोनने विश्वेते पंचसर्ड व चनसङ्ख्या सेथं जहा मजिल्स ॥ १८९ ॥ १७ ॥ एंशिस्स नं अरहमी बार सम्बद्धननपहीजस्य एगे बटमागूने पश्चित्रेयमे विद्यांते पन्नद्धि व हेर्स वर्षा मिन्स ॥ १९ ॥ १६॥ प्रमारत ने बरहजो जान सम्बद्धसामहीयस्य विभि सामरोजनाई फमार्डि व सेसं अहा महिस्स ॥ १९१ ॥ १५ ॥ सवत्स्य व भरहम्भे जल सम्बद्धक्षामहीगरस सच सागरोक्साई वम्पर्के व सेर्स वहा मकिस्छ ॥ १९२ ॥ १४ ॥ निगतस्य व अरहको बाव सम्बद्धनस्वादीनस्य सोक्स सागरोक्ताई निर्हेनाई क्यांक्षि व सेसं वहा महिन्स II १९३ II १३ म बाह्मपुत्रस्स मं अरहको वाव सम्बद्धक्कपाद्वीचरस झायातीचं सामरोबमानं निर् हैदाई पश्चिद्ध व सेस बहा गाम्सिस ॥ १९४ ॥ १९ ॥ सिजेस्स व अरहकी बाव सम्बद्धकापद्मीवस्य एगे सावरोगमसए विद्यांत कमार्ड व सर्व वहा महिस्स ६ १९५ ॥ ११ ॥ धीनभ्रत्य में करहको जाद सम्बद्धस्यपदीवस्य एमा सागरीवमकोसै विकासमञ्जयकमाराजियकायात्रीसकासस्वासस्व स्टिया निर्देश एसमि समए महानीरो निष्युको तमो (वि स न) परे नद बासस्याई बिट्नेतर्म, इसमस्य व बारायसस्य अर्थ शतीहमें चंत्रनाहरे वाले पन्छा ॥ १९६ ॥ १ प्रविद्वित्स में करहको पुण्यंतस्य बाच सम्बद्धक्यपदिवस्य इत सागरीक्यकोडीओ

निर्माणांची ऐतं नहां वीयमस्य तं न इयं-शिवाणम्बतस्यासामिद्ववानारीम् वासनाहरोष्ट्री व्यप्रिया(४) निर्माणा(६) इवार्य्य) ॥ १६० ॥ ९ ॥ वंद्यपुरत्य वं सरहादो वात परिवरस एपं सावयोवपकोविसयं निर्माणं देशं ववा वीतमस्य तं न इमं-शिवासम्बत्तवासामिद्यायात्मीवसामसाहरोष्ट्री व्यवस्थात्मा ॥ १९४ ॥ ८ ॥

# [ १२१ ]

है तो उसके मन में समाधि प्राप्त होती है श्रीर उस समाधि से श्रात्म-विशुद्धि होती है। श्रात्म-विशुद्धि से दोप दूर होते हैं श्रीर दोष दूर होने से क्रमशः मुक्ति प्राप्त होती है।

प०-यया हम भी देव वन सकते हैं?

.उ०-ग्रवश्य । जैन-धर्म नर को नारायण वना देता है ।

भ०-हम किस प्रकार देव वन सकते हैं ?

उ०-श्रव तक जो श्रनंत देव हो चुके हैं वे सव किसी न किसी समय हमारे समान थे। उन्होंने धर्म की श्राराधना की। पहले सम्यक्तव प्राप्त किया, फिर चारित्र पाला। धीरे-धीरे कठोर साधना करते करते उन्हें पूर्ण निर्मलता प्राप्त हो गई। इसी प्रकार हम भी पूर्ण निर्मलता पाकर देव वन सकते हैं।

## गुरु-

पश्च-गुरु किसे कहते हैं ?

उत्तर-जो महापुरुप पांच महावतों का समितियों श्रीर गुप्तियों

का नियमित रूप से पालन करते हैं उन्हें गुरु कहते हैं। प्र०-पांच महावत कीन-कीन हैं ?

उ०-(१) श्रहिंसा (२) सत्य (३) श्रचौर्य (४) ब्रह्मचर्य (४) श्रपरिग्रह।

प्र०-इन्हें महावत क्यों कहते हैं ?

उ०-इन्हें महाव्रत कहने के दो कारण हैं:-(१) गृहस्थ श्रावक इन व्रतों को स्थृल रूप से-एक देश से पालता है श्रोर सुपासस्स ण अरहओ जाव पहीणस्स एगे सागरोवमकोिडसहस्से विइक्कते, सेस जहा सीयलस्म, तं च इम-तिवासअद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्सेहिं ट्रिणिया (विइक्कता) इचाइ ॥ १९९ ॥ ७ ॥ पडमप्पहस्स णं अरहओ जाव पहीणस्स दस सागरोवमकोिडसहस्सा विइक्कता, तिवायअद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्सेहिं इचाइय, सेस जहा सीयलस्स ॥ २०० ॥ ६ ॥ समइस्स णं अरहओ जाव पहीणस्स एगे सागरोवमकोिडसयसहस्से विइक्कते, सेस जहा सीयलस्स, तिवासअद्धनवमा-साहियवायालीसवाससहस्सेहिं इचाइय ॥ २०१ ॥ ५ ॥ अभिनदणस्स ण अरहओ जाव पहीणस्स दस सागरोवमकोिडसयसहस्सा विइक्कता, सेस जहा सीयलस्स, तिवासअद्धनवमा-साहियवायालीसवाससहस्सेहिं इचाइयं ॥ २०२ ॥ ४ ॥ सभवस्स ण अरहओ जाव पहीणस्स वीस सागरोवमकोिडसयसहस्सा विइक्कता, सेस जहा सीयलस्स, तिवासअद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्सेहिं इचाइयं ॥ २०२ ॥ ४ ॥ सभवस्स ण अरहओ जाव पहीणस्स वीस सागरोवमकोिडसयसहस्सा विइक्कता, सेस जहा सीयलस्स, तिवासअद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्सेहिं इचाइयं ॥ २०३ ॥ ३ ॥ अजियस्स ण अरहओ जाव पहीणस्स पनास सागरोवमकोिडसयसहस्सा विइक्कता, सेस जहा सीयलस्स, तं च इम-तिवासअद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्सेहिं इचाइयं ॥ २०४ ॥ २ ॥ इक्क जिणंतराइं समचाइं ॥

तेण कालेण तेण समएण उसमे णं अरहा कोसलिए चउउत्तरासाढे अमीइपचमे हुत्या, तजहा-उत्तरासाढाहिं चुए चइता गव्भ वक्कते जाव अमीइणा परिनिव्वए ॥ २०५ ॥ तेण कालेण तेण समएण उसमे ण अरहा कोसलिए जे से गिम्हाण चउत्थे मासे सत्तमे पक्खे आसाढवहुले तस्स ण आसाढवहुलस्स चउत्थीपक्खेण सन्बद्वतिद्धाओं महाविमाणाओं तित्तीस सागरीवमहिङ्याओं अणतर चय चडत्ता इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इक्खागभूमीए नाभिकुलगरस्य मरुदे(वा)वीए भारियाए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि आहारवक्कतीए जाव गब्भत्ताए वक्कते ॥ २०६॥ उसमे ण अरहा कोसलिए तिन्नाणोवगए यावि हुत्था, तजहा-चडस्सामिति जाणइ जाव सुमिणे पासइ, तजहा-गय-वसह० गाहा । सन्व तहेव, नवर पढम उसम मुहेण अडत पासाइ, सेसाओ गय । नामिकुलगरस्स सा(ह)हेइ, सुविणपाडगा नित्य, नामिकुलगरो सयमेव वागरेइ ॥ २०७ ॥ तेण काल्रेण तेण समएण उसमे ण अरहा कोसलिए जे से गिम्हाण पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तवहुले तस्स ण चित्तवहुलस्स अट्टमीपञ्खेण नवण्ह मासाण वहुपिडपुण्णाण अद्बद्धमाण राइदियाण जाव आमाढाहि नक्सत्तेण जोगमुवागएण आरोग्गारोग्ग दार्य पयाया ॥ २०८ ॥ त चेव सव्वं जाव देवा देवीओ य वसुहारवास वामिस, सेस तहेव चारगसोहण-माणुम्माणव(द)द्दृणउस्मुक्साइयद्विद्वस्थिज्यवज्ञ सन्व भाणियव्व ॥ २०९ ॥

इपसूर्य

उद्यप्ते में अरहा कोसकिए कासनपुरेमं तस्स मं पंत्र नामधिजा एवसाहिजी तंत्रहा-उसमेह वा पढमराबाह वा पढममिक्सावरेह वा पढमजिपेह वा पढम तिह(पंक)नगरे इ था ॥ २१ ॥ उसमे मं अरहा कोसक्रिए वृक्तो वृक्तरान्ने पश्चिम्ने स्ववीणे महए विजीए नीसै पुन्तसमसहस्साई कुमारवासमण्डे वसङ् विता वेन्द्वि पुण्नसम्बसहरसाई राजनासगण्डी नसह, तेन्द्वि न पुण्नसमसहरसाई राजना-समज्हे बसमाणे खेहाहबाको गविवप्पतामाओ सरुपद्मपञ्चवसापाको बाबपरि ककाओं चरसर्डि महिस्सराणे सिप्पसर्व व कम्माणं तिथि वि प्रवाहिवाए स्वप्निसह उनदिश्चिता प्रतसनं रजासए लगिसिनाइ व्यमिसिनिता प्रणस्न कोनेतिएहें जीनक प्पिएक्कि वेबेडि तार्डि इद्यक्ति चाव वस्पृक्षि सेसं सं चव सक्ये आविक्ष्यं जाव दार्च बादबार्ज परिमाइता को से मिम्हार्थ पढ़ने मारी पढ़ने प्रश्ने जितवहुँ तस्य में नितवहुकस्य सङ्गीपक्कोणं विवसस्य पश्किमे माने सुर्वस्रणायः सिनियाप् स्वेवन-हुअसुराए परैसाए सम्भुपन्ममाणमञ्जे जात विचीर्य सम्बागि मञ्जीमञ्जेष निगालका निमाण्डिमा खेलेव शिवलक्ये उजाचे जेनेव असीमवरपासवे संवैध उदागच्छा उदामकिता असोगवरपास्वस्य अहे जाव सनसेव बाउमुद्विसं स्मेर्व करेड धरिता ब्रहेर्ण अतेर्व अपायपूर्ण आधाडाई परकतेर्व बायमुगाएचं उत्पान मोगानं एकण्याचं प्रतिज्ञानं चन्नति प्रतिससहरसेहि सदि एवं वेबद्धसमाधान संवे सबिका भगाराओं जनगरिन पञ्चए ॥ २११ ॥ वसमे व बरहा कोसमिए एव नाससङ्स्यं निनं नीसङ्काए निनत्तवेहे बान नप्पार्थ आदेमानस्य (हर्व) एपं नास्य-इस्सं निरुद्धतं तुओं में को से डेमंतामं मजस्ये मासे सत्तमे प्रमुखे एसस चं फुर्युच्यक्कस्ट प्(इ)कारसीयक्केन पुल्यक्राध्यममंति प्रारेसवाहस्य नगरस्य बहिया सगडमुद्दति राजानेसि लग्गोहबरपायवस्स मह बहुमेर्च मोर्ल अपामएच आसाराई नक्तरेणं जीवमुनागपूर्णं शार्णतरिजाए बहुमाणस्य सर्गते जान जान-माणे पासमाचे विश्वस्य ॥ २१२ ॥ उसमस्य नं जरहको कोसवित्रस्य चउरातीरै गमा चडरावीर् गमहरा हुत्या ॥ २१३ ॥ उसमस्य मं अरहजो कासन्तिवस्स उसमरोबपामु न्या(को) में चंदराधी(इ) से समज्याहरसीओ वडोलिना सममसंस्था हुरमा ॥ २९४ ॥ उसमस्य न नरहुओ कोसलियस्य वंगीर्जुदरिगामुक्खार्यः अजि मार्च दिष्णि समताहरूपीओ उद्दोतिया मजियासपमा हुरूना ॥ १९५ ॥ उस-सम्मु वं विज्ञमपासुक्याणं सम्मोतमनाणं विक्ति सम्पादस्तीओ वंत्र सहस्मा बदोसिया समनोवास(म)गार्व संपया हुत्या ॥ १९६॥ उसमस्य नं सुभरापा-मुक्तार्व समनोगानियार्व पंच समसाहस्तीओ कारणके व महरमा बद्दीसिया सम

णोवासियाण सपया हुत्था ॥ २१७ ॥ उसभस्स ण चत्तारि सहस्सा सत्त सया पण्णासा चउद्दसपुव्वीण अजिणाण जिणसकासाणं जाव उक्कोसिया चउद्सपुव्वि-सपया हुत्या ॥ २१८ ॥ उसभस्स ण विन सहस्सा ओहिनाणीण० उक्कोसिया ओहि-नाणिसपया हुत्या ॥ २१९ ॥ उसभस्स ण वीससहस्सा केवलनाणीणं० उक्कोसिया केवलनाणिसपया हुत्था ॥ २२० ॥ उसभस्स ण वीससहस्सा छच सया वेउ-व्वियाण॰ उक्कोसिया वेउव्विय(समण)सपया हुत्था ॥ २२१ ॥ उसभस्स ण सहस्सा छच सया पण्णासा विजलमईण अह्वाइजोस दी(वेस दोस य)वसमुद्देस सन्नीण पर्चिदियाण पज्जत्तगाण मणोगए भावे जाणमाणाण (पासमाणाण) विउलमइसपया हुत्या ॥ २२२ ॥ उसभस्स ण वारस सहस्सा छच सया पण्णासा वाईण० उक्को-सिया वाइसपया हुत्या ॥ २२३ ॥ उसभस्स ण वीस अतेवासिसहस्सा सिद्धा, चत्तालीस अज्जिया(स)साहर्स(सा)सीओ सिद्धाओ ॥ २२४॥ उसभस्स ण महस्मा नव सया अणुत्तरोववाइयाणं गइकल्लाणाण जाव भद्दाण उक्कोसिया अणुत्तरोव-चाइयसपया हुत्था ॥ २२५ ॥ उसभस्स ण अरहओ कोसिटयस्स दुविहा अतगडभूमी हुत्या, तजहाँ-जुगतगडभूमी य परियायतगडभूमी य, जाव असंखिजाओ पुरिसंजु-गाओ जुगतगढभूमी, अतोमुहुत्तपरियाए अतमकासी ॥ २२६ ॥ तेणं कालेण तेण समएण उसमे ण अरहा कोसलिए वीस पुव्वसयसहस्साइ कुमारवासमज्झे विसत्ता(णं) तेविं पुव्वसयसहस्साइ रज्जवासमज्झे विसत्ता तेसीइ पुव्वसयसहस्साइ अगारवास-सज्झे विसत्ता एग वाससहस्स छउमत्थपरिया(य)ग पाउणिता एग पुव्वसयसहस्स वाससहस्सूण केवलिपरियाग पाउणिता पिड (स)पुण्ण पुञ्वसयसहस्य सामण्णपरियाग पाउणिता चउरासीइ पुव्वसयसहस्साइ सव्वाउय पालइता खीणे वेयणिजाउयनामगुत्ते इमीसे ओसप्पिणीए ग्रसमदूसमाए समाए वहुविडक्सताए तिहिं वासेहिं अद्भनवमेहि य मासेहिं सेसेहिं जे से हेमताण तचे मासे पचमे पक्खे माहवहुले तस्स ण माहवहुलस्स तेरसीपक्खेण उपिं अडावयसेलिसहरंसि दसिंह अणगारसहरसेहिं सिर्दे चउ(चो)ह-समेण भत्तेण अपाणएण अमीइणा नक्खत्तेण जोगमुवागएण पुव्वण्हकालसमयसि सप-हियकनिसण्णे काल्गए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ॥ २२७॥ उसमस्स ण अरहओ कोस-हियस्म कालगयस्स जान सन्वदुक्खप्पहीणस्स तिण्णि वासा अद्भनवमा य मासा विइ-क्ता, तओ वि परं एगा सागरोवमकोडाकोडी तिवासअद्भनवमासाहियवायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया विइक्ता, एयमि समए समणे भगव महावीरे परिनिव्वु(है)ए, तओ वि पर नववासमया विड्कता, दसमस्स य वामसयस्स अय असीइमे सवच्छरे काले गन्छइ ॥ २२८ ॥ १ ॥ इइ सिरिउसहजिणचरियं समत्तं ॥ ३ परि०

तेमं काकेमं तेर्ण समध्यं समगरस मगक्को महाबीरस्य वह गया हहास गजहरा हुत्या ॥ १ ॥ से केमहेर्ज मैदा । एव कुक्द-समजस्य भगवजो महावीरस नव गना इन्हारस वजहरा <u>त</u>रबा है ॥ २ ॥ समगरस अमवजो महानीरस्स जिडे हंग्सी अणमारे गोनम(स)मुक्तेण पंच समजसमाई वाप्त, मजिसमए अभिगर्मु असगारे मोसमगुरेणं पेच समजसयाई बाएइ, क्जीयसे अनगार बाउमुई नामेर्च बोकस्पोर्ज पंच समनसवाई नाएइ, बेरे अजनियते मारदाए गुत्तेशं एक समगस्याई बाएह, बेरे अञ्चाहरूमे अभिगनेसान(न)अधुतेर्ण पंच समध्यसमाई नाएइ थेरे मंद्रिजपुत्ते नास-(हे)हरम्योगे सम्बद्धां समयस्थां भागः वेरे शोरियपते कास(वे)प्रयोगं अनुदारं समजसबाई बाएड बेरे अकपिए गोन(मे)मसगुत्तेर्ज-बेरे अवस्थानाया हारिनान(मे)-जगुत्तर्ग पए दुक्तिकी धेरा विक्ति विक्ति समलसमाइ बाएवे मेरे अक्ते(इ)क्ले-बेरे अञ्चपमाचे वृद् वुनिजनि बेरा कोविशा-गुत्तेयं विकिन विकिय समनस्याहे बाएँवि । से तेमद्वेज अज्ञो । एव कुन्दर्-समजरस मधक्यो महाबीरस्स नव गया हकारस गणहरा हत्या ॥ ३ ॥ सम्बे वि ये एए समकस्य भगवनो महागैरस्य ए(इ)बारस वि गणहरा वुवाकसैनिको चाउ(इ)वसपुन्तिको समक्तामिपिङमवारमा रामिष्टे नगरे माखिएने अदेणे अपाणएने काकनमा जाब सम्बद्धनक्षयाहीमा । मेरे इंपर्यू येरे सक्क्युइम्मे य सिक्षिगए महाबीरे पच्छा दुव्जिन बेरा परिनिन्तुमा । बं इमे अञ्चलप समया निर्माण निर्देशी पूर् भै सकते अञ्चलक्ष्मस्य अपनारस्य भावित्या अवरेसा गणहरा निरमणा नुव्यक्ता ॥ ४ ॥ समेरी मगर्व महावीरे कासक्युतेण । समजस्य ये मामाओ महाबीरस्य कासक्युत्तस्य कामाहरूमं वेरे अवे वासी अभिनवेसाजजपुत्ते । वेरस्स मं अजसूब्स्मरस अभिनवेसाजजपुतस्य अज अपूनामे भेरे अवेदासी कास्त्रमुक्तेणं । थेरस्स ले अव्यक्तनामस्य कास्त्रपुक्तस सम्मानने येरे अतेशाची क्याश्रमसमुद्रे । वेरस्त न सम्मानस्य स्थाननस गुत्तस्य अजसिजंसने नेरे अरोगासी समगपिया वस्त्रसम्बत्ते । बेरस्स वं अजसिजं मंबरस मध्यपितचो वयसम्प्रापस्य अञ्चनसभो बेरे अंतवासी ह्रीयनाववसर्गी ॥ ५ ॥ इइ गणहराइथेरावली समन्ता ॥ तेनं काळेग तेनं समपूर्ण समये मगक महाबीरे वामार्च सपीसहराए मासे पिट्रबंट वासावास पञ्जेसकेइ ॥ १ ॥ से केमहेण भेते । एवं नुवाद-समने मगा महावीरे

3.5

बासानं सबीसङ्ग्रप् मासे निड्करो बासानासं प्रजोमनेह है जम्मे नं पाएस जगारीनं ९ सम्हाममङ्गाईनावरिसे एशिओ चव पाटी सब्मङ् चो 'सजमङ्गाहुमा इमस्य

रक्या क्या अस्य प्रद्धिं करेत्र ।

अगाराइ कडियाइ उक्क(वि)पियाइ छन्नाइ लिताइ गुत्ताइ घट्ठाइ मट्ठाई सपधूमियाई खाओदगाड खायनिद्धमणाइ अप्पणो अद्वाए कडाइ परिभुत्ताइ परिणामियाइ भवति, से तेणहेण एव वुचइ-समणे भगव महावीरे वासाण सवीसइराए 'मासे विइक्कते वासावास पज्जोसवेड ॥ २ ॥ जहा णं ममणे भगव महावीरे वामाण सवीसइराए मासे विइक्कते वासावास पज्जोसवेइ तहा ण गणहरावि वासाण सवीमइराए मासे विइक्कते वासावासं पज्जोसविति ॥ ३ ॥ जहा ण गणहरा वासाण सवीमइराए जाव पज्जोसविति तहा ण गणहरसीसावि वासाण जाव पज्जोसविंति ॥ ४॥ जहा णं गणहरसीसा वासाण जाव पज्जोसविंति तहा णं थेरावि वा(सावास)साणं जाव पज्जोसविंति ॥५॥ जहा ण थेरा वासाणं जाव पज्जोसविंति तहा ण जे इमे अज्जताए समणा निग्गथा विद्दरंति ते (एए) वि य ण वासाण जाव पज्जोस(वे)विंति ॥ ६ ॥ जहा ण जे इमे अज्ज-त्ताए समणा निरगथा वासाणं सवीसइराए मासे विइक्ते वासावास पज्जोसविंति तहा ण अम्हपि आयरिया उवज्झाया वासाण जाव पज्जोसविति ॥ ७ ॥ जहा णं अम्ह(पि) **धायरिया उवज्झाया वासाण जाव पज्जोसविंति तहा णं अम्हे**वि वासाण सवीसइ-राए मासे विइक्कते वासावास पज्जोसवेमो, अतरा वि य से कप्पर्ध पज्जोसवित्तए], नो से कप्पइ त रयाणें उवाइणावित्तए॥ ८॥ वासावास पज्जोसवियाण कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा सव्वओ समता मक्कोस जोयण उग्गह ओगिण्हित्ताण चिद्धिड अहालदमवि उग्गहे ॥ ९ ॥ वासावास पज्जोसवियाण कप्पइ निग्गयाण वा निग्गश्रीण वा सव्वओ समता सक्कोस जोयण भिक्खायरियाए गतु पिंडनियत्तए ॥ १० ॥ जत्य नई निच्चोयगा निचसदणा, नो से कप्पइ सव्वओ समता सक्कोस जोयण भिक्खायरियाए गतु पिंडनियत्तए ॥ ११ ॥ एरावई कुणालाए, जत्य चिक्कया सिया एग पाय जले किचा एगं पाय थले किचा, एव चिक्किया एवं ण कप्पइ सव्वक्षी समता सक्कोस जोयण गतु पिडिनियत्तए॥ १२॥ एव च नो चिक्किया, एव से नो कप्पइ सव्वओ समता सक्कोस जोयण गतु पिडनियत्तए ॥ १३ ॥ वासावास पज्जो-सवियाण अत्येगइयाण एव वृत्तपुव्व भवइ-'दावे भते !' एव से कप्पइ दावित्तए. नो से कप्पइ पिंडगाहित्तए ॥ १४ ॥ वासावास पज्जोसवियाण अत्थेगडयाण एव वृत्त-पुन्व भवइ-'पिडगाहे(हि) भते !' एवं से कप्पइ पिडगाहित्तए, नो से कप्पइ दावित्तए ॥ १५ ॥ वासावास पज्जोसवियाण अत्थेगइयाण एव वृत्तपुट्य भवइ-'दावे भते ! पिंडगाहे भते ।' एव से कप्पड़ दावित्तएवि पिंडगाहित्तएवि॥ १६॥ वासावास पज्जोस-वियाण नो कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा हद्वाण तुद्वाण आ(६)रोग्गाण वलिय-सरीराण इमाओ विगईओ अभिक्खण अभिक्खण आहारित्तए, तजहा-खीर, दहिं,

सर्थि दिने गुर्वे ॥ ९७ ॥ बासाबार्ध पञ्जीसनिवाण कार्येगद्वमार्ग एवं कुत्तुर्म मबर- अही मंदी गिकावरमाई से व वएजा- ब्रह्में' से य पुरिश्चमने केनर-एमं अञ्चे ! से (स) वएजा- एकाएवं अही विकाससा' जै से प्रमान बना से व पमायको पितको से य विश्वविद्या से व विश्वविद्यारी स्वतिद्या से य प्रमानपते होउ अकादि' इस बत्तस्ये विमा से फिसाहु सेंदी । एवइएर्ज अक्को विकासस्य जिना ने एवं वर्षतं परो वहमा- प्रविमाहेहि अजो ! पच्छा तुर्म मुक्तांस वा पाहिस वा एवं से कम्पद पविचाहिताए, नो से कम्पद निकाननीसाए प्रविमाहिताए ॥ १८ ॥ बासाबार्स पञ्जोसमिकाण अस्थि यं बेराणं तहप्यमाराई उचाइ बजर्ड परिवर्ष मिनाई वेतातियाई संमयाई बहुमवाई बलुमवाई शबंदि त(व)रव से नी क्या सदस्य बहतए- सत्य ते शाउसो ! इमें वा इमें वा १ से कियाह सेते ! पड़ी गिही पिन्हर वा तेजिसीप क्रमा ॥ १९ ॥ वासावार्थ प्रजीसमिकस्य निकातिगस्य मिनचस्य कप्पद एमं गोजरकालं गाहावरपुछं नताए वा पापाए वा निज्वानितर का पविशिक्तए का मक्तला\$ऽदारियवेगावनेच हा एवं उद्यक्ताववेनावनेच का तवस्मिकेशस्त्रेण वा निम्नानमैवावयेण वा श्वरूपन वा श्वरूपाए वा सर्वेगन जाबएव वा ॥ २ ॥ बानावार्थं पञ्चसमिवस्स चडल्यमक्तिस्स मिनकस सर्व एक्ट्र मिरेसेन्व से पानो निकसम्य प्रमानेत स्थारमं भुषा पिता परि-माहर्ग एकिश्चिय एंपमनिका से य संबन्धि क्याह से सहिनसे देवेद मार्ख्य प्रजोसमित्रप्, से व मी संगरिका एवं से रूपन पूर्विप पाइ।वरकर सताय ना पानाए वा निकक्तिगए वा प्रविक्षितए वा ॥ २१ ॥ वासावार्स प्रजीसविवस्स **ब**हुमतिसस्य भित्रकुर्य कर्णीय वो गोजरकास्य गाइस**ाइन** मत्ताए वा पानाए का निकक्षमित्तए का प्रविक्तिस् वा ॥ २२ ॥ वासायाचे प्रजोसस्यस्य ब्युट्स-मतिगस्य भित्रकास कमादि तको गोनरकाक गावाकाको मताए वा पानाए वा निक्खमित्तप् वा पविशिक्षप् वा ध २३ ॥ वासावासं प**ब्बे**सवियस्य विविद्व मिन्यस्य मिनवास्य कर्णति सन्त्रेवि गोयरकाका साम्यक्तुकं भताए वा प्रवाए ना निक्जनियण का पनिवित्तप् वा ॥ १४ ॥ वासावार्षं प्रजीसनियस्स विकासि क्स्स भित्रश्वस्स कर्णीय सम्बार्थं पावधार्वं पश्चिमाहित्तव । वासमार्थं पत्रानि बरस चउत्पमतिबस्य मिनचस्स कवंति तको पालगतं पविगादिवए, तेब्डा-कोसेंड्मं(बा) सरेड्मं चाउकोड्गं । वासावारं पञ्चेसविकस्त क्युमितस्स भित्रकृत्स मर्पारी तको पावनाई पविधादितप्, तैवहा-दिसोदर्ग वा तुसोदर्ग वा अवोव्यं वा । वासावार्तं पञ्जीसनिवस्त अद्भागतिवस्त गिमक्स्य कृपंति तत्रो

पाणगाइ पिंडगाहित्तए, तंजहा-आयाम वा, सोवीरं वा, सुद्धवियङ वा। वासावास पज्जोसवियस्स वि(िक)गिट्टभत्तियस्स भिक्खुस्स कप्पइ एगे उसिणवियडे पडिगाहित्तए, से वि य णं असित्थे नो (चेव) वि य ण ससित्थे । वासावास पज्जोसवियस्स भत्त-पिंडयाइक्खियस्स भिक्खुस्स कप्पइ एगे उसिणवियंडे पिंडगाहित्तए, से वि य ण असित्थे, नो चेव ण ससित्थे, से वि य ण परिपूए, नो चेव ण अपरिपूए, से वि य ण परिमिए, नो चेव ण अपरिमिए, से वि य ण वहुसपने, नो चेव ण अबहुसपने ॥ २५ ॥ वासावास पज्जोसवियस्स सखादत्तियस्स भिक्खस्स कप्पति पच दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहित्तए पंच पाणगस्स, अहवा चतारि भोयणस्स पच पाणगस्स. अहवा पच भोयणस्स चत्तारि पाणगस्स, तत्थ ण एगा दत्ती लोणासायणमित्तमवि पिडगाहिया सिया कप्पइ से तिह्वस तेणेव भत्तहेण पिजोसिवत्तए, नो से कप्पइ दुर्चिप गाहावइकुल भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ २६ ॥ वासा-वास पज्जोसवियाण नो कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा जाव उवस्सयाक्षो सत्तघरतर सखर्डि सनियहचारिस्स इत्तए, एगे (पुण) एवमाहसु-नो कप्पइ जाव जवस्सयाओ परेण सत्तघरतर संबर्धि सनियद्वारिस्स इत्तए, एगे पुण एवमाइसु-नो कप्पइ जाव उवस्सयाओ परपरेण सखिंड सिनयटचारिस्स इत्तए ॥ २०॥ वासावास पज्जोसवियस्स नो कप्पइ पाणिपडिग्गहियस्स भिक्खुस्स कणगप्रसिये-मित्तमवि वृद्धिकायसि निवयमाणसि गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निवन्त-मित्तए वा पविसित्तए वा ॥ २८ ॥ वासावास पज्जोसवियस्स पाणिपहिरगहियस्स भिक्खुस्स नो कप्पइ अगिद्दसि पिंडवाय पिंडगाहित्ता पज्जोसवित्तए, पज्जोसवेमाणस्स सहमा बुद्धिकाए निवहजा देस भुन्वा देसमादाय से पाणिणा पाणि परिपिहिता उरित वा ण निलिजिजा, कक्खिस वा ण समाहिडिजा, अहाछनाणि वा लेणाणि वा उवागच्छिजा, स्क्लम्लाणि वा उवागच्छिजा, जहा से पाणिसि दए वा दगरए वा दगफुतिया वा नो परियावज्ञइ ॥ २९ ॥ वासावास पज्जोसवियस्स पाणिपिडिग्ग-हियस्स भिक्खुस्स ज किंचि कणगफुसियमित्तपि निवडेइ, नो से कप्पइ गाहादड-कुळ भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ ३० ॥ वासावास पज्जोस-. वियस्स पिडिग्गहधारिस्स भिक्खुस्स नो कप्पइ वग्वारियचुद्विकायसि गाहावइकुल भत्ताए वा पाणाए वा निक्खिमित्तए वा पविसित्तए वा, कप्पड से अप्पचुट्टिकायसि सतस्त-रित । १९॥ वासावास पज्जोसिवयस्म निम्मथस्स निम्मथीए वा गाहावडवुरू पिंड-

१ आयामे वा, सोवीरे वा, सुद्धवियढे वा । २ 'फ़ुर्यार' । ३ वियारभूमिगमणे-ऽववाओ ।

14

वानपविचाए कनुपविद्वस्य निर्मिष्माव निर्मिष्माव बृद्धिकाए निकामा क्रम्य से महे मारामीत वा आहे उक्स्सयति वा लड्डे वियवगिर्वति वा आहे रक्कमूर्वति वा वदागिकतए ॥ ३२ ॥ तस्य से प्रभागमनेयं प्रभावते बाउमोदये प्रधारके मिकिंगस्वे कप्पद् से जासकोव्ये पविचादित्तए, नो से कप्पद् मिकिंगस्वे पडि गामिक्य ॥ १३ ॥ तत्व से पुम्बायमणेर्न पुम्बाउते मिसिंगस्वे क्व्याउते बाउ स्मेरने कप्पद से मिसिंगस्थे पश्चिमाहिताए, जो से कप्पद बाउस्सेर्ज पश्चिमाहिताए II १४ II तत्व से पुष्कायमनेनं बोडिंस पुन्नावक्ताहं (बहुंति) बर्म्यत से बोडिंस परि गाबितए, तस्य से पुम्यागमणेनं बोडिंव पच्छाउत्तार्व, एवं नी से कर्पाति बाडिंव पत्रि गाहित्तप्, जे से तत्त्व पुण्यायमणेणं पुष्कातते से कप्पन्न पविचाहित्तप्, जे से तत्त्व पुरुषागमगेर्च परकारको हो से कप्या परिचाहितप् ॥ १५ ॥ बासादास पर्योपः निमस्त निर्मायस्य निर्मायीए वा गाडालाकुर्क पिंडवाक्पडिवाए मनुपनिद्वस्य निगिजिसम मिगिजिसन बुद्धिकाए निक्त्या कम्पद से बाहे भारामंति वा नहे उनस्तर्नति वा भडे नियडगिर्देशि वा नहे स्वत्यमुक्ति वा उदागक्कित्य, मो से वप्पर् पुरुवगद्विएन सत्तपामेणं नेले सवायणानित्तप्, कप्तक् से पुरुवासेक नियहमं भुवा (फ्या) परिस्पद्दर्ग संसिद्धिय संसिद्धिय संप्रमुख्य सप्तमुख्य स्वासर्वे गासर्वे गासर्वे गासर्वे न्दु सावधंसे सूरे श्रेपेन उनस्सए रोगेन उनागिकत्तए, नो से कप्पद वं रननि तत्येव जवामणावित्तप् ॥ ३६ ॥ वासावासं प्रजोसविवस्य निर्मावस्य तिर्मावस्य वा पाहाबहरूमं पिंडवावपंडियाए अनुपविद्वस्स तिगिज्ञित नियिज्ञित कुर्द्विणार निवरूमा कप्पर से भाहे आरामंति वा आहे तपस्सर्वति वा विवयमिर्देशि वा भद्दे स्मप्रमुख्यति वा सवागन्तिकतप् ॥ ३० ॥ तत्व नो कप्यद् प्यस्स निगमेवस्म पुगाए य निम्पंत्रीए प्रगयको चिद्वित्तए १ तत्व नो बच्चा एयस्स निर्मावस्स हुन्हें निर्माबीन प्रायको बिद्धितप् २ छन्त नो रूपद् हुन्हें निरमेवार्व एमाए व मिर्माचीए एमकमो चिद्विताए १ तत्व नो चप्पह बुव्हं निर्माचार्च दुव्हं निर्माची स एगमओ विद्वितए ४ सति व स्व केंद्र र्यक्में सहूप का सहिया(इ) वा अवेति का सम्मेप सपत्रिकुवारे एवं व्हं कप्पड़ एयनओ विद्वितए ॥ ३८ त बागानार्थ प्रजोसमियस्स निर्मापस्य गाहामहरूक पिडवावपविवाप् कपुगमिद्वस्य निर्मिदान निविज्ञित बुद्धिकाए निवस्त्रा कप्पद से सद्दे आरामीत वा बाद्दे उवस्पर्यंत वा महे विमारिमहित वा भाहे रूपरामूर्वति वा उवागिकारण, तस्य वो वप्पार प्रयत्म निर्मापस्य एमाए स अगारीए एगनभी बिद्वित्तप्, एवं श्रवसंगी असि में रूप केंद्र पंक्षमण् मेरे वा मेरिया(इ)वा मशैसि वा संस्तीप सपत्रितुवारे एवं वप्पद्र एवन औ

चिट्ठित्तए । एवं चेव निग्गथीए अगारस्स य भाणियव्व ॥ ३९ ॥ वासावास पज्जो-सवियाण नो कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा अपरिण्णएण अपरिण्णयस्स अद्वाए असण वा १ पाण वा २ खाइम वा ३ साइमं वा ४ जाव पडिगाहित्तए ॥ ४० ॥ से किमाहु भते !, इच्छा परो अपरिण्णए भुजिजा, इच्छा परो न भुजिजा ॥ ४१ ॥ वासावास पज्जोसवियाण नो कप्पइ निग्गथाण वा निग्गंथीण वा उदउहेण वा ससिणिद्धेण वा काएण असण वा १ पाण वा २ ग्वाइमं वा ३ साइम वा ४ आहारित्तए ॥ ४२ ॥ से किमाहु भते !, सत्त सिणेहाययणा पण्णत्ता, तजहा-पाणी १ पाणिलेहा २ नहा ३ नहसिंहा ४ भमुद्दा ५ अहरोड्डा ६ उत्तरोड्डा ७ । अह पुण एव जाणिजा-विगओदगे में काए छिनसिणेहे, एव से कप्पइ असण वा १ पाण वा २ खाइम वा ३ साइम वा ४ आहारित्तए ॥ ४३ ॥ वासावास पज्जोस-वियाण इह खलु निग्गथाण वा निग्गथीण वा इमाइ अह सुहुमाइ जाइ छउमत्थेण निरगथेण वा निरगथीए वा अभिक्खण अभिक्खण जाणियव्वाइ पासियव्वाइ पिछ-लेहियव्वाइ भवति, तजहा-पाणसुहम १ पणगसुहुम २ वीयसुहुम ३ हरियसुहुम ४ पुप्फब्रहुम ५ अडब्रुहुम ६ लेणसुहुम ७ सिणेह्सुहुम ८ ॥ ४४ ॥ से कि त पाण-सुहमे <sup>१</sup> पाणसुहुमे पचविहे पण्णत्ते, तजहा-किण्हे १, नीले २, लोहिए ३, हालिंद्दे ४, चुिक्किले ५ । अत्थि कुंधु अणुद्धरी ना(म समुप्पन्ना)मं, जा ठिया अचलमाणा छउम-त्थाण निग्गथाण वा निग्गथीण वा नो चक्खुफास ह्व्यमागन्छह, जा अठिया चल-माणा छउमत्थाण निग्गथाण वा निग्गथीण वा चक्खुफास हव्वमागच्छइ, जा छउ-मत्थेण निरगथेण वा निरगथीए वा अभिक्खणं अभिक्राण जाणियव्वा पासियव्वा पिं लेहियन्वा हवइ। से त पाणसुहुमे १॥ से कि त पणगसुहुमे १ पणगसुहुमे पच-विहे पण्णत्ते, तजहा-किण्हे, नीले, लोहिए, हालिहे, सुक्किले। अत्थि पणगसुहुमे तह-व्वसमाणवण्णे नाम पण्णते, जे छउमत्थेण निग्गथेण वा निग्गथीए वा जाव पिड-रेहियव्वे भवइ। से त पणगसुहुमे २॥ से कि त वीयसुहुमे <sup>2</sup> वीयसुहुमे पर्चावहे पण्णत्ते, तजहा-किण्हे जाव मुक्किले । अत्थि वीयसुहुमे कणियासमाणवण्णए नाम पण्णते, जे छउमत्थेण निम्मथेण वा निम्मथीए वा जाव पिंडलेहियन्वे भवइ। से त वीयसहुमे ३ ॥ से किं त हरियसहुमे १ हरियसहुमे पचिवहे पण्णते, तजहा-किण्हे जाव सुिक । अत्यि हरियसुहुमे पुढवीसमाणवण्णए नाम पण्णते, जे निग्गयेण वा निग्गधीए वा अभिक्खण अभिक्खण जाणियव्वे पासियव्वे पडिलेहियव्वे भवड । से त हरियमुहुमे ४ ॥ में किं त पुष्फमुहुमे १ पुष्फमुहुमे पचिवहे पण्णत्ते, तजहा-किण्हे जाव नुष्किल्ले। अत्थि पुष्फमुहुमे रुक्खसमाणवण्णे नाम पण्णत्ते, जे छउमत्थेण

निर्मायेण वा निर्माणीए वा जाध्यतको जाव पत्रिकेश्चितको समझ ! से सं पुष्पक्ष-हुमें ५ ॥ से कि ते अंबश्रहूमें हैं अंबश्रहुमें पंचमिह्ने प्रकारत संबद्धा-तर्वसी उस्मि मंदि पिपीकियेवे इक्षिमंदि हमोहकियेवे से विमायिण वा निर्मातीए वा जान पवि केदिनको संबर् । से तं अंडसुतुमें ६ ॥ से कि तं केमसुद्वमे १ केमसुद्वमं प्रवर्तिह पण्यति तंत्रहा-उतिगरुने शिगुक्षेमे उजुए, तालमूल्य, संबुद्धानहे नाम पंचमे बे इतमरमेथं निर्माणेण वा निर्माणीय वा आविश्राणी बाद पश्चित्रेक्ष्ट्रियण्ये सदद् । हे हैं केमशहूमे ज ।। से कि ते शिमेद्रशहुम है शिमेद्रशहुमे पंजनित्रे पन्जी। तंत्रहा-उस्स दिमए, महिया करए, इरस्कुए । व कतमस्वैर्ण निर्मावेण वा निर्माशीए वा निर्मा क्सर्ज असिक्दाण जाव पविश्वेद्देशको सवह । से से सिम्बेद्द्यहुमें < ॥ ४५ ॥ वासी बासं पञ्जोसनिए निक्षः इत्यानमा गाहानहरूषं मताए वा प्राचाए वा निक्यमितम् का पनिचित्तए वा नो से कप्पदः अवायुष्किता बावरियं वा सवक्काव वा कर (वा) पनिति पणि समहरे गमानकोसर्थ में वा पुरको कार्च बिहरा, कम्पह से अपुष्तिस् क्षामरियं वा जान के वा पुरको कर्च बिहरह-इच्छामि में भेते ! तुन्मेहिं नगन्छ-न्नाए समापे गाइभाइकुम मताएवा पाजाएवा निकामितए वा पनितितए वा उ प से मियरिजा एवं है क्याह शताएं वा पाणाएं वा निकल्लितएं वा प्रमितिताएं वा है व है नो विवरिका पूर्व से नो कप्पद भताए वा पाचाए वा निकस्तिराए वा पविधितए वा। से किसाहु सेते ! आजरिया प्रकार जार्गित ॥ ४६ ॥ एवं बिहार स्टब्साव) सूर्मि वा निवारसूमि वा अब वा वं बिल्वि प्रश्लोयणं एवं गामखुनासं सुरक्षितर् ॥ ४७ ॥ बासाबास पत्नोत्तविए निक्ष इक्तिका सम्बर्गीर क्रिगड कालारितए, नी से कम्पड क्षणापुरिक्ता आवरियं वा जाव राजावक्केयनं वा व वा पुरशो बारे विवरह, कृष्पर हे लापुच्चिता। सामरियं नाव साद्दारिताए-इच्छामि में मेरी ! तुब्मेई सम्मनुष्याए समाने अवस्ति निम्हें आशारिशाए एकहर्व वा एकहम्भूति वा से स से विनरिजा एवं से कम्पन्न अभ्यवर्धि विगई आहारितए, ते व से तो विवरिका एवं से तो वम्पन्न क्षण्यपरि विगर्द भावारिताय, सं विमाद्व संते ! कायरिया प्रचनाने आवेति ॥ ४८ ॥ बासाबास पञ्जेसविए सिक्च इच्छिजा अन्यवर्रि से(सिन्ड)इच्डिमे आविद्याए र्तं पंत्र सम्बं गामितम्मं ॥ ४९ ॥ वासावास प्रमोसकीप् मिन्स् इत्स्त्रमा अञ्चर्तं स्टास्त वकृष्यं स्टिर्ड क्ष्म्य ग्रंगावं सरिस्टरीयं महास्त्रमावं सर्वोक्तमं स्वयंगितायां विव्रतितप्, तं पेत्र सम्बं भावितम्यं ॥ ५ ॥ वासावास प्रजीसनिए भित्रनः इत्यानः अपन्तिममार्गतितसमेदनान्समान्तिए अत्तपावपत्रियादनिवार् प्रजीतमप् वास

१ सम्बद्धि ।

प्र०-जगत् की रखना कीन वेच करते हैं।

उ०-कोई मी नहीं। यह जगह नो झमादि काल से हैं और अमन्त काल तक रहेगा। न किसी ने इसकी ग्याम की है और न कोई इसका भाग कर सकता है।

म⊶तो पुरस पाप का फल कीन देता है ै

प्रण-ता पुरम पाप का फल कात देता है! उसका फल से। द०-हरक चीज़ अपना पत्न कर्य देती है। उसका फल से। गते के किये की। किसी की कावश्यकता गईं। पश्ती। ग्राय पीने वाले को ग्राय क्या वेहाण वसा देती है विप काने वाले को ग्रिप स्वय हो मार डालता है। रोसे स्वयं मृत्व निटा देती है। बेहोश बनाने आर ने कीर मृत्व मगाने के निये किसी वृक्षरे पुरुष कर्णा की अफ रत नहीं पड़ती। इसी प्रकार पुग्य-पाप सेगाने के किये किसी ईश्वर की जकरत नहीं है। पुण्य-पाप आपना पत्न क्या देता है।

प्र•-भगषाम् की अपित क्यों करनी काहिये हैं

दि-सम भारम गुर्जि करना चाहते हैं और अगवान, बारम-गुर्जि के बावरी हैं। उन्होंने बारम शोधन का उपाय मी हमें पताया है। इस अगवान सरीखे कोकांकन गुल्यात करमा चाहते हैं। इस उन्हें पुत्र म मानेंगे गो उनके गुलों का सनुकरण भी कर सकेंगे। इसहिये जनके मति बादर कीर यहभान रकता हुमारा कक्षण है।

प्रध्नमानाम् की अभित से भीर भी कोई लाग है। उक्-इां समक लाम हैं। जब कोई मध्य जीय काम्तरिन मित से गतुगद होकर अगयान् की चाराधना करता अणवक्रखमाणे विहरित्तए वा, निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा आहारित्तए वा, उचार वा पासवणं वा परिष्ठावित्तए, सज्झाय वा करित्तए, धम्मजागरिय वा जागरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता तं चेव सव्व ॥ ५९ ॥ वासावास पज्जोसविए भिक्ख् इच्छिजा वर्त्यं वा पडिग्गह वा कवल वा पायपुंछण वा अण्णयरि वा उवर्हि आयावित्तए वा पयावित्तए वा, नो से कप्पइ एग वा अणेग वा अपिंडण्णवित्ता गाहावर्द्कुल भत्ताए वा पाणाए वा निक्खिमित्तए वा पविसित्तए वा, असण वा पाण वा खाइमं वा साइम वा आहारित्तए, बहिया विहार-भूमिं वा वियारभूमिं वा सज्झाय वा करित्तए, काउस्सम्ग वा ठाण वा ठाइत्तए, अत्थि य इत्थ केड् अभिसमण्णागए अहासण्णहिए एगे वा अणेगे वा, कप्पइ से एवं वइ-त्तए-इम ता अजो ! तुम मुहुत्तग जाणेहि जाव ताव अह गाहावइकुल जाव काउ स्सरग वा ठाण वा ठाइत्तए, से य से पिडसुणिजा एव से कप्पइ गाहावइकुलं त चेव सच्च भाणियव्व । से य से नो पहिसुणिजा एवं से नो कप्पइ गाहावइकुरु जाव काउस्तरम वा ठाणं वा ठाइत्तए ॥ ५२ ॥ वासावास पज्जोसवियाण नो कप्पइ निगयाण वा निग्गथीण वा अणमिरगहियसिजासणियाण हुत्तए, आयाणमेय, अण-भिग्गहियसिजासणियस्स अणुचाङुइयस्स अणद्वाबियस्स अमियासणियस्स अणाताः वियस्स असमियस्स अभिक्खण अभिक्खण अपिडिछेहणासीलस्स अपमज्जणासीलस्स तहा तहा सजमे दुराराहए भवड ॥ ५३ ॥ अणायाणमेयं अमिग्गहियसिजासणियस्स उचान्रहरूस्स अद्वावधियस्स मियासणियस्स आयावियस्स समियस्स अमिक्खण अभि-क्खण पडिलेहणासीलस्स पमजणासीलस्स तहा तहा सजमे सुआराहए भवइ ॥ ५४ ॥ वासावास पजोसवियाण कप्पइ निम्मथाण वा निम्मथीण वा तओ उचारपासवण-भूमीओ पिंडेलेहितए, न तहा हेमतिगम्हास जहा ण वासास, से किमाहु भते ! 2 वासासु ण उस्सण्ण पाणा य तणा य वीया य पणगा य हरियाणि य भवति ॥ ५५ ॥ वासावास पज्जोसवियाणं कप्पइ निम्मथाण वा निम्मथीण वा तओ मत्तमाइ गिण्हित्तए, तजहा-उचारमत्तए, पासवणमत्तए, खेलमत्तए ॥ ५६ ॥ वासावास पज्जोम-वियाण नो कप्पइ निरमयाण वा निरमथीण वा पर पज्जोसवणाओ गोलोमप्पमाण-मित्तेऽवि केसे त रयणि उवायणावित्तए ॥ ५७ ॥ वासावास पज्जोसवियाण नो कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा परं पज्जोसवणाओ अहिगरण वइत्तए, जे ण निग्गथो वा निग्गथी वा पर पद्मोसवणाओ अहिंगरण वयइ, से णं 'अऋप्पेण अद्मो ! वय-सीति' वत्तव्वे सिया, जे ण निरमधो वा निरमधी वा पर पज्जोसवणाओ अहिगरण वयइ से ण निज्ञूहियव्वे सिया ॥ ५८ ॥ वासावास पज्जोसवियाण इह खलु निग्ग-

\*\*

थाम वा निर्माधीण वा कञ्चेन करदाहे कडुए नि(न)माहे समुप्पञ्चि[त्या]जा सेहे राइनियं गामिका राइनिएऽनि सेई खासिका समियको समानियको जनगरिका जनसमावियम्नं तुमद्रपेपुच्छजावहुसेमं होयम्बं । जो उदसमद् तस्य अवि आसर्प जो म जबसमङ तस्स परिव भाराहणा तम्हा रूप्पणा चेव उवसमियम्बं से निमाह भेते । उबसमसारे स् सामन्य ॥ ५९ ॥ वासावासं पञ्जोसविद्यार्थं कृष्ट्यः निर्मावार्थ वा निरमेवीज वा तमो उवस्समा गिव्हितप्, तबहा-वेडम्बिसा पश्चिदा साइजिक पराजना ।) ६ ॥ कासाबार्य पञ्चोतनियाच तिर्धाताळ वा निर्मार्थीय वा रूपद अञ्जयरि विसि वा अनुविधि वा अवगिनिसय २ सत्तवान गुवेशितए । से निमन् भेत । उत्सन्त्रं समना भगवंतो वासान सवसंपदचा मवति सवस्ती हुन्बके किन्दे मुरिक्रण वा परविज्ञ वा तमेर दिसं वा क्लूबिसं वा समणा सरकरो परिजाम रेति ॥ ६९ ॥ बासाबासे पजोसबियार्च कप्पड निर्माबाज वा निर्माबीन वा विकास हेर्ड अन बतारि र्पण जोयनाई गतु पविनिवत्तप्, वंतराजनि से कप्पर नत्वप्, नो से कप्पद्र त रवनि तत्वेष तवावनाविष्य ॥ ६२ ॥ इचेवं राज्यतिवं वेरक्यं सही-सुर्त महारूपं भहामार्ग महातत्र धर्मा नाएव पारिता पक्तित सेभिता वैरिया किविता भाराहिता भागाए भगुपाठिता सरवेयहवा समना निग्मंबा देवेव भन भाइमेनं रिजाति दुर्जाति मुनंति परिनिम्नावरि सम्बद्दमधानमेतं नर्दिति करफेन्द्रमा दुवेश्ये सबस्यक्ष्मेणं शिकांदि जाव राज्यदुक्ताध्मर्तं नरिति अस्पेगर्ग तकेणं भवनाइयेण जान बंदां करिति चालुसबनाइबाइ पुन नाइकांति ॥ ६३ ॥ वर्ण काक्रेम वेर्ण समएलं समले समर्थ शहाबीरे राजियहे समरे गुमलिकर समाने बहुनं समयानं बहुनं समजीनं बहुनं सावयानं बहुवं साविवानं बहुवं देवानं बहुमं देवीचे राजरगए चेव एवसाइक्**बा**इ, एवं शासद, एव प्रवासेह, एवं परनेह, प्रजी स्वजाकप्यो नार्स कामावर्ण समह सहेत्वर्ग सकार्ण सक्षर्य समझे स्वागर्ण भुव्ये भुव्ये व्यवस्थित ॥ ६४ ॥ सि-ब्रेसि ॥ इत्र मामायारी समस्ता ॥ पद्मोसयणाक्ष्यो नाम वसाञ्चयक्तंधस्स महमसम्बर्ग समर्च । अहवा कव्यसूचे समर्च ॥ पढमं परिसिद्धं समर्च ॥



# णमोऽत्थु ण समणस्स भगवक्षो णायपुचमहावीरस्स

# बीयं परिसिद्धं

# सावयावस्सए सामाइयसुत्तं

पढम 'णमो आरिहताण॰' तओ 'तिक्खुत्तो॰' तओ-अरिहतो मह देवो, जावजीवं चुसाहुणो गुरुणो । जिणपण्णत्त तत्त, इय सम्मत्त मए गहिय ॥ १ ॥ तओ-पचिं-दियसवरणो, तह णवविहवमचेरगुत्तिधरो । चउविहकसायमुक्को, अट्ठारसगुणेहिं सजुत्तो ॥ १ ॥ पचमहव्वयजुत्तो, पचिवहायारपाठणसमत्यो । पचसिर्विदीगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरू मज्झ ॥ २ ॥ तओ 'इच्छाकारेण०' पच्छा 'तस्स उत्तरीकरणेण०' तओ 'लोगस्स उज्जोयगरे॰' तओ 'करेमि भते ! सामाइय, सावज्ज जोग पचक्खामि, जाव-णियम पजुनासामि, दुविह तिविहेण ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, तस्स भते ! पडिक्रमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि'। तओ पच्छा 'णमोऽत्थु ण॰' । तको सामाइयपारणपाढो जहा-'एयस्स णवमस्स सामाइय-वयस्स पच अइयारा जाणियव्वा ण समायरियव्वा, तजहा-( ते आलोएमि-) मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइ अकरणया, सामाइयस्स अणवद्वियस्स करणया, तस्स मिच्छामि दुक्कड । सामाइय सम्म काएण ण फासिय, ण पालिय, ण तीरिय, ण किट्टिय, ण सोहिय, ण आराहिय, आणाए अणुपालिय ण भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कड' । [ सामाइए मणसो दस दोसा, वयणस्स दस टोसा, कायस्स दुवालस दोसा, एएस अण्णयरी दोसो लग्गो तस्स मिच्छामि दुकड । सामाइए ईत्थीकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा, एथाम्च चउसु विकहासु अण्णयरा विकहा कया तस्स मिच्छामि दुक्कड । सामाइए आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा, एयासु चउसु सण्णासु अण्णयरा सण्णा सेविया तस्स मिच्छामि दुक्कड । सामाइए अडक्कमे वङ्कमे अङ्यारे अणायारे जाण-तेण वा अजाणतेण वा मणसा वयसा कायसा दुप्पउत्ती कया तस्स मिच्छामि दुक्कड । सामाइए विहिगहिए विहिपालिए को वि अविही कस्रो तस्स मिच्छामि दुक्ट । सामाइए मत्ताऽणुस्सारपयक्खरगाहास्रुत्ताइय हीण वा अहिय वा विवरीय वा कहिय अणतसिद्धकेवलिभगवताण सक्खीए तस्स मिच्छामि दुक्कड । सामाइ-

१ साविगाओं 'इत्यीकहा'ठाणे 'पुरिसकहा'ति वोस्रति ।

यगहणविद्धी-पदर्ग भूमिमासबरगहर,विमुह्गोसिगाईबं पविश्वेद्या अपन्या तमे भूमि जगजाए पर्याजना जाराजगरपरियज्य । पुण्यो सङ्ग्रोतित्रं सङ्गे वीवेडन व्यासणाओं सिन्ति बुदे निकिन्तु 'तिनक्ताों व्यापेण गुरर्गदमा ब्रायम्मा । नद व होंद्र मुनियो तो पुन्याभिमुहेय वा उत्तराभिमुहेश वा सीर्मवरसामित्स विहरमाय-विरम्परस्य भावनवना करणिजा । तयो नसोद्यारधत्ताको सारस्य नाम 'तस्य स्तरीप्रते मध्या थव स्वारेज तको शायावत्वार विजमग्रर व वोगमुग्र व सुतिसंपुरमुद्दाए वा खरगासचेण वा 'इरिशावक्षित्रासुर्त' सणसा चेत्र काउरसम्मावत्वाए पढिवर्ण तको सभी आरिहेतायाँ समसा तहा फुडस्वेच समामेता सहस्यमहे पारियम्मो : एको 'ब्रोगस्य वन्तर्गतरं ग्रद वंदिक्क करेनि मंते । आव-न्यनमं इक्लेल केठियाई शामहयाई काउनिकोज तेतियमुहुएकासस्य समित वितर्ग किया तबविशित् भारणे बहाविही प्रमोऽत्यु म विश्वको परिवर्ण। फाम विकार्ण भीने भाविताण तहने 'भगोऽत्य में सम भागगुक्तस मन्तानरिनत भग्नोमप्सवस्त ति । सामाइए काउस्समो वा संकाओ वा वक्कामस्वन ना कानितनं वा कामण । सामाइयपार्व्यविद्यी-सामाइवराज्यमतीए वहा है। प्रमोद्दारपुत्तामो भारत बान 'छोयस्य उचारमं तको सामाद्रवरारबपटी पविनम्नो त्यर्पतरं पुरशुत्तमिक्षणा 'चयोऽद्य वं विशवको तथ्ये दिनवर्षे ममोद्रारस्य शतस्यम्यो नामम्यो । एवं श्रद्धानेही सामहर्ग पाठनं मन्द्र। मणसो वस दोसा-भनिवेद वैद्योक्ती क्रमीत्वी वर्म सर्वे व्यवनित्वी। पर्वेयऐर्स्थितिनेड सबहुरीन ए वीसा अधिकन्दा ॥ १ ॥ दस सहदोसा-कुनरेन सहरोग्रारे सकेंदे संकेंदें करेंदें जा। निवास नि हाँसेऽहाँदें, निरमीके मुम्भुमा केसा इस ॥ १ ॥ बारस कायकोसा समायेमं नहीतनं वहेरी सार्वे अविश्वास संवेता हु वर्षणसार्व । बार्वेश्स मोदर्ग संवे विश्वीसवं विदे वेति वि बारत नामदोसा ॥ १ ॥ वन्त्रीसी संद्र्णादीसा-मनीवित न मैस न पेनिसे वेंद्रिपिकियं । टोलेम्स् कार्डुं से चेन तहा नफडमैरिगियं ॥ १ ॥ सप्रहेंक्वर्चे सन्छा-पर्वेद्धं तह य मेरनीयबं । अनेता जेन अमेरी सिती गार्टेन धेरेला । र ॥ तीवन पहिलियं चय रहे तमियेंग्य य । सर्वे च हीक्य नेव तका विपासिटेंचिनं ॥ ३ ॥ क्षितिक्षं च तक्षा सिर्ग च कैरियोवर्च । आस्ट्रिकेमासिर्य, कीर्च उत्तरिक्षेत्रं n v n मूर्व च हेर्डर चन चारितमं अपध्यमः। वत्तीसदोसपनेताहे, रिश्चर्म मर्बत्रए ॥ ५ ॥ प्रमुजबीसी काउस्सन्मवीसा-चेत्रम क्या म बने औ

माले य सबरि वैहु णियहे । लबुत्तर थगैंडद्धी, सजर्ई खलिणे य वायस किन्हें ॥ १ ॥ सीसोकपियमूई, अगुलिभमुहाइ वारुणी पेहा । एए काउरसम्मे, हवंति दोसा एगुणवीस\* ॥ २ ॥

॥ इय सामाइयसुर्त्त समत्तं ॥

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# तइयं परिसिइं

# सावयावस्सय(पडिक्रमण)सुत्तं

इच्छामि ण भते । तुञ्मेहिं अञ्मणुण्णाए समाणे देवेसिय पिडक्समण ठाएमि, देवसियणाणदसणचरित्ताचरित्ततवसहयारचिंतवणत्य करेमि काउसग्ग ॥ १ ॥

## अह पढमं सामाइयावस्सयं

णमो अरिहताणं० ॥ १ ॥ करेमि मंते । ॥ २ ॥ इच्छामि ठामि काउसग्गं, जो मे देवसिसो अइयारो क्ओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्छत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिजो, दुज्झाओ, दुविचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छियव्वो, असावग-पाउग्गो, णाणे तह दसणे, चरिताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्ह गुत्तीण, चरण्ह कसायाण, पचण्हमणुव्वयाण, तिण्हं गुणव्वयाण, चरण्ह सिक्खावयाण, वारस-विहस्स सावगधम्मस्स, ज खडिय, ज विराहिय तस्स मिच्छामि दुक्ड ॥ ३॥ तस्स उर्त्तरी० ॥ ४॥ इइ पढमं सामाइयावस्सयं समत्तं ॥ १॥

१-२-३-४ एए दोसा ण साविगाए, २-३-४ एए दोसा ण साहुणीए होंति ति । १ विसेसाय 'श्रीमान् लाला प्यारेलाल जैन ( अवरनाथ G I P )' इचेयस्स द्व्वसहाएण मुत्तागमपगासगसमिईए पगासिय सिरिमामाडयमुत्त दृह्व । ५ 'राइय' 'पिक्वय' 'चाउम्मासिय' 'सवच्छिरिय' । ६ णवणडइअइयाराण काउस्सम्गो किज्ञड-'आगमे तिबिहे जाव कामभोगासमप्यओगे' । 'अष्टारहपावष्टाणग' भासाए, 'इच्छामि ठामि॰' 'णमो अरिहताण॰' बुत्तृण काउस्सम्गो पारिज्ञइ । मब्वे अडयारपाटा मिण्णमिण्णभासामीसिया लब्भित तत्तोऽवसेया । मूल तु अग्गे दृह्व । वीयं चउवीसत्थवावस्सयं तह्यं वंदणावस्सयं जहा आवस्सप ॥२-३॥

अह चउत्थं पडिक्रमणावस्सयं

#### णाणाइयारपाडो

केरिमें दिनिहें पण्णते री -श्रतानमं अल्बागमें श्रुमशायमें (एवं विकिस्म भागमञ्ज्ञणाचस्स निसए जे अङ्गारा सम्मा ते आक्रोएति-) वं गाइदं जाव सन्धारे म सज्जाहर्न (अनंतिण गुणतेज विनारंतिण नागरस गाननंतरस य सासानना बना) दस्स मित्रकामि बुद्धवं ।

#### **वसणसम्मत्तपादो**

कार्रिहोती सङ् वेद्यो ।। १ ।। परमस्यसंबद्यो वा ग्रामिट्टपरमस्वरीयका वानि । बावण्येत्रपणक्रमणा य सम्मत्तसम्बन्धाः ॥ १॥ इय सम्मतस्त प्रमास्ताः पेत्रास्य बारिसम्बन्धाः यः समावरियम्बाः एं –(ते नाकापृति–)र्यकाः केवाः विदियम्बन्धाः परपार्थकपर्वता परपार्थकसंघको (एएछ पंचल अहसारैल कानवरा अहसारी सन्मी) तस्य मिष्काम उक्का ।

#### बुवालसवयाहयारस**हि**यपाही

(पदमं अणुक्वयं-) भूममा पाणाइवायाको वेरमणं (तसवीने नेइदिव देशीन चर्तरियपनिदिए नाजन आतही-इचनकुतीए इचनह्यानजम्बन्दार्थं सस्विनि एसरीरसमिसेसपीकारारिया सावराहिया वा विश्वस्य ) जावजीवाए दुनिई विभिन्ने व बरेमि व ब्रान्वेमि शनसा वयसा कायसा (एयस्स फ्रास्स अञ्चयस्स 💨 पानाकामनेरमणस्म) पेन अञ्चारा पेयाव्य जाण्यक्या च सप्तानरेपच्या र्वः—(व आक्रोऐमि-) वंके वहं, कविच्छेए, अश्रुगारे अत्तराज(वि) पुच्छेए, को से देवसिनी भइबारी क्जो तरस मिच्छाम इक्डं ॥ १ ॥ (बीच् अ<u>ज</u>ुस्तर्य-) पूकाओ सुर्धा-वायाओं वेदमणं कण्या(को)स्थित, योगासिए, मोमासिए, बासाबहारी(बाप्बमोर्गी), कुडसस्टिपनं (क्षेत्रमाहस्म महत्तमुसावागस्स वयक्तार्च) वावजीवाए दुविह विभिन्ने व करेमि च कारनेमि मणसा वनसा काजसा (प्रस्त नीयस्स अनुक्वमस्स मूक्सुशाबायवेरमचस्य) पंज अञ्चारा जावियश्या अ समायरिवणा र्घ०-() सहराक्त्रमचाने रहस्सक्त्रमस्त्राणे खेत्रारमंत्रमेषु, मोसीवपूरे इडवेहकरपे को मै देवसिओ सदमारी कुआ तस्स मिन्द्रामि दुरहे ॥ २ ॥ (तहस्य सन्तुःसय )

९ अवजाउडमह्बारपात्रा जे पडमावस्तप् कावस्तामे वितिजेश से पेड एए फुजरभण क्यारिजेटि । १ तस्य राज्यस्य हैरसियस्य भरवारस्य दुवनासिक-दुविश्विम-दुविश्विमस्य बास्धवेगां पवित्रमामि । गमोत्रारं वरेमि सेते ! बस्तरे इफामि अमि 'इण्डासरेल । इन्हें पुरित पर्वतरे । रे पूर्व तथ्य व अवर्गन्तर्थ । ४ सामिगाई अस्म ठाप 'समत्तार'मेशभेए ति वातर्थ । एवं सन्तरप ।

थूलाओ अदिण्णादाणाओं वेरमण, (खत्तखणण, गठिभेयण, तालुम्घाङणं, पडियवत्थु-हरण, ससामियवत्युहरणं, इचेवमाइस्स अदिण्णादाणस्स पचक्खाण अप्पाण य सविध-नावारसविधितुच्छवत्थु विप्पजहिऊण,) जावजीवाए दुविह तिविहेण ण करेमि ण कार्विमि मणसा वयसा कायसा, (एयस्स तइयस्स अणुव्वयस्स थूलअदि-ण्णादाणवेरमणस्म) पच अङ्यारा जाणियव्वा ण समायरियव्वा, त०-(०) तेणाहडे, तकरप्यक्षोगे, विरुद्धरजाडकमे, कूडतुल्लकूडमाणे, तप्पडिस्वगववहारे, जो मे देव-सिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्डें ॥ ३ ॥ (चउत्थं अणुव्वयं-) थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं, सदारसतोसिए, अवसेसमेहुणविहिं पचक्खामि, जावजीवाए (दिञ्व) दुविह तिविहेण ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, (माणुस्स तिरिक्तजोणिय) एगविह एगविहेण ण करेमि कायसा, (एयस्स चडत्थस्स अणु-व्वयस्स थूलमेहुणवेरमणस्स) पच अइयारा जाणियन्वा ण समायरियन्वा, त०-(०) इत्तरियपरिग्गहियागमणे, अपरिग्गहियागमणे, अणंगकीडा, परविवाहकरणे, काम-भोगतिन्वाभिलासे, जो मे देवसिक्षो अइयारी कमो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ४ ॥ (पंचमं अणुट्वयं-) थूलाओ परिग्गहाओ वेरमण, (खेत्तवत्यूण जहापरिमाण, हिरण्णसुनणाणं जहापरिमाण, धणधण्णाण जहापरिमाण, दुपयन्वउप्पयाणं जहा-परिमाण, कुप्पस्स जहापरिमाण, एव मए जहापरिमाण कय तओ अइरित्तस्स परि-ग्गहस्स पचक्याण,) जावजीवाए एगविह तिविहेण ण करेमि मणसा वयसा कायसा, (एयस्स पचमस्स अणुव्वयस्स धूलपरिग्गइवैरमणस्स) पच अइयारा जाणियव्वा ण समायरियव्वा, त०-(०) खेत्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे, हिरण्णसुवण्णप्पमाणाइक्कमे, धण-धण्णप्पमाणाइक्समे, दुपयचउप्पयप्पमाणाइक्समे, कुवियप्पमाणाइक्समे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ५ ॥ (छट्टं दिसिवयं-उद्दृदिसाए जहा-परिमाण, अहोदिसाए जहापरिमाण, तिरियदिमाए जहापरिमाणं, एवं जहापरिमाण कय तत्तो अइरित्त सेच्छाए कायाए गतूण पचासवासेवणपचवन्खाण,) जावजीवाए दुैविह तिविहेण ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, (एयस्स छ्ट्रस्स दिसिवयस्स अहवा पढमस्स गुणव्वयस्स) पच अझ्यारा जाणियव्वा ण समायरियव्वा, त०-(०) उद्वृदिसिप्पमाणाइक्समे, अहोदिसिप्पमाणाइक्समे, तिरियदिसिप्पमाणाइक्समे, खित्तवुद्धी, सहअतरद्धा, जो मे देवसिओ अइयारो क्यो तस्स मिच्छामि दुकड ॥ ६ ॥ (सत्तमं उवभोगपरिभोगपरिमाणव्ययं-) उवभोगपरिभोगविहिं पचक्खाय-माणे(ण) १ उछणियाविहि, २ दत्तवणविहि, ३ फलविहि, ४ अव्भगणविहि,

१ एगविहपि पचतरे।

भ उत्तरहर्मार्ग ६ सळाणांगीह ७ जाणांगी 🕜 विकेन्यांगीह ६ ५ प्रीपी ९ आसरमार्थित १९ शृहर्पक १९ वेश्वरिद्ध १३ अवसमादि ४४ अ<sup>सम्बद्ध</sup> १५ गर्मा १६ जिम्मान १७ मार्गाह १८ महर्मा १९ जेमर्मी २ पारिवारि ४१ मुख्यामधि २१ बन्द्रमधि, ४३ उद्योषे २४ गयर्गार्थः २५ गविभागिः २६ कार्यार्थः (इक्स्पेयं ब्रह्मारियामे वर्षे मने महित्रम उपनागारिभागस्य ययस्याचे ) अत्रजीवाय चर्णाहे जिल्ह्ये व परेमि माना वयना पायना (एम वं गलमे) अवमानारिमान (अहम की गुगरबर्) दुरिद्ध वण्यन श्रीवहा भाव(था)गान्ध स कमाने स मान्यने रामचौरीगाएमं वंच अहवारा जारियाचा च रामधीरवाना से 🛶 ) समिर्कारी मिनतारिकणाहारे अव्यवताओगादिमकत्त्रमया गुण्यवतिभोगादिमकामया वृष्णे गद्भिनगत्रया कम्मभा वं गमवारागवृत्र वन्त्ररमहत्त्र्याद्यार् आविवनाई व गमामरियम्बाह में -( ) ९ ईगालहरूम ९ वयक्रम ३ लाग्रेक्स ४ भारी-काम ५ शरीकमी ६ इंत्रशामित्र ७ लक्क्शशक्तिक ४ वनशक्ति ६ रस्पत निमे १ जिन्हानिमे ११ जैनपी स्वस्था १९ निर्ने उपस्था ११ दर्गानहरू बमया १४ शरवहतलायगोगणया १५ अगईप्रजरीतममा जो व देशीली महयारी कभा वस्य नियामि दुवर्ष ॥ ७ ॥ ( अट्टमे अव्यह्नद्वस्थियवर्षे ) चउम्पद्द अगद्वादंदे पञ्चते मं -अरज्ञामायरिष् प्रमानायरिष्, श्रमणयामे पावस्मागर्छे (एर्ने अञ्चयश्य मणद्वार्वज्ञानक्षर्य प्रवस्तीचे ) वार्जनार् युभिद्दं निषिद्देणं च करेलि च वारवित संचता वसना कायना (प्रवस्न बहुमस्त अवद्वार्वप्रवेरमणरवस्य भद्दवा गर्यस्य ग्रुक्त्यरस्य ) वेच अर्वारा जानियम् व समायरियम्या री⊶( ) केरप्पे इनुरुए मोहरेए, संहताक्ष्मर्था उत्रमोगकी-भोगाइरिता की में बंबसिओं भरमारों बाओं सर्म निष्यामि बुक्के से क (जयमं सामाद्यययं-) सल्ब जोगं वयस्यामः जल-मित्रमं प्रमुकामानि दुविह तिमिहेणं ल करेमि ल कार्रक्षि शक्ता वनसा कानसा (पूर्वमूना मे सहरूमा पत्रमण धामाइयामसरै समागए सामाइयास्त्री पासनाए हर्न्ट एक्स मक्सरम सामाद्र्यवयस्य आह्वा पण्मस्य शिक्यावयस्य ) पंच व्यवस्य वाध्यवन्त्रा न श्रमामरियन्ता तं -( ) मनवुष्यविद्वाचे न(इ)युष्यविद्वाचे नाववुष्यविद्वाचे

५ सावियाहि समणोगाधिवाए ये ति वक्तकं । १ (जीत कड क्यारा-) बाए वा राए वा बाए वा परेवारे वा वेदे वा वारो वा काले वा धूर वा एति एई कामारेहि कण्याव। इक्यहिये पर्वतरे ।

सामाइयस्स सइ अकरणया, सामाइयस्स अणवद्वियस्स करणया, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ९॥ (दसमं देसावगासियवय-दिणमज्झे गोसा आरव्स पुन्त्राईस छसु दिसास जाषइयं परिमाणं कय तत्ती भइरित्त सेच्छाए सकाएणं गतूणं पंचासवासेवणस्स पचक्खाणं,) जाव अहोरत्त दुनिहं तिनिहेण ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, ( अह य छद्घ दिसासु जावइय परिमाणं कय तम्मज्झेवि जावइया द्वाईण मजाया तथो भइरित्तस्स भोगोवभोगस्स पचक्खाणं, ) जाव अहोरत एगविहं तिविहेणं ण करेमि मणसा वयसा कायसा, ( एयस्स दसमस्स देसावगासियवयस्स अहवा बिइयस्स सिक्खा-वयस ) पच अइयारा जाणियव्वा ण समायरियव्वा, तं०-(०) आणवणप्पओगे, पेसवणप्यओगे, सद्दाणुवाए, रूवाणुवाए, वहियापुरगलपक्खेवे, जो मे देवसिओ भइयारो क्यो तस्स मिच्छामि दुष्कड ॥ १० ॥ (एक्कारसमं पडिपुण्णपो-सहचयं-असणपाणखाइमसाइमपबक्खाणं, अवभपचक्खाणं, अमुगमणिसुवण्णप-मालावण्णगविळेवणपचक्खाण, सत्यमुसलाइयसावजजोगसेवणपच-क्खाण, ) जाव अहोरत्त पज्जुवासामि, दुविह तिविहेणं ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, ( एवं मे सद्दृणा परूवणा पोसहावसरे समागए पोसह-करणे फासणाए सुद्ध, एयस्स एक्कारसमस्स पिडिपुण्णपोसहवयस्य अहवा तइयस्स सिक्खावयस्स ) पच अइयारा जाणियव्वा ण समायरियव्वा, त०-(०) अप्पिहले-हियदुप्पडिलेहि्यसेजासथारए, अप्पमज्जियदुप्पमज्जियसेजासथारए, अप्पडिलेहिय-दुप्पिढेलेहियडचारपासवणभूमी, अप्पमिजयदुप्पमिजयउषारपासवणभूमी, पोसहस्स सम्म अण्णुपालणया, जो मे देवसिओ अङ्यारी कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥११॥ (वारसमं अतिहिसंविभागवयं-) समणे णिग्गथे फास्रयएसणिज्ञेण-असण-पाणखाडमसाइमवत्थपिडग्गहकवलपायपुँछणेण पाडिहारियपीढफलगसेजासथारएण ओसहमेसज्जेण पिंडलामेमाणे विहरामि, (एव मे सद्दणा परूवणा साहुसाहुणीण जोगे पत्ते फासणाए सुद्ध, एयस्स वारसमस्स अतिहिसविभागवयस्स अहवा चउत्थस्स सिक्सावयस्स) पच अइयारा जाणियव्वा ण समायरियव्वा, त०-(०)सचित्तणि-क्खेबणया, संचित्तपिहणया, कालाइक्समे, परववएसे, मच्छरिया(ए)यं, जो मे देव-सिओ भइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ १२ ॥

अपिच्छममार्णतियसंलेहणापाढो

महं भेते ! अपन्छिममारणितयसकेहणाङ्ग्रसणाआराहणा(समए पोसहसाल पिट-रुहिता पमिन्तता उचारपासवणभूमि पिडलेहिता गमणागमण पिडक्रिमिता दन्भाइ-४ परि॰ u

संबारनं संबरिता दुरुद्दिता उत्तरपुरत्वामिनुद्दे संवक्षिनंकाद्रबासले(व) वितीहत) करकत्तंपरिगाहिय विरसावतं महवप् अंबर्कि बहु एवं व -"बमोध्यु वं नरिर्हणां बाब संदर्शाणं (एवं बागतंतिके अमसिता) "नमोऽस्य नं अधितानं मर्ग्यतानं वान संपानितकामार्थं (पहुण्यानाको महानिवेद्दे केते बिहरमाचतित्वमरे धर्मितता स्व म्मायरियं सबम्मोनएसेयं जमसामि साहुपसुङ्गजन्निहरस तिल्बस्स सन्वजीवरा-िरस य समानाता पुल्यि के बना परिविधाता तेश के बाह्मारदोसा सम्मा ते सम्मे शासोइस परिकासिन चिनिन भिरसको बोन्जन) सन्नं पानादवार्स पणक्यामि सार्ने द्वधानार्थं प्रवननामि सन्नं व्यविन्तादार्थं प्रवस्तामि सन्नं मे<u>इ</u>यं प्रवस्तामि सन्नं परिमाई एकक्सामि सम्बं कोई मार्च काब मिक्कार्यसम्बर्ध सम्ब अकरिकां कोर्न पश्चमानि जारजीवाए तिमिश्चे तिविश्चेणं च करेनि च कारवेनि उरतिये सार्णं व स्मञ्जानामि मध्या वयसा समसा (एवं महारसपाबहानाई प्रवतिकता) सर्म असर्च प्रार्थ बाह्म सहमे चरुनिवर्षेपि बाह्यर पत्रक्यामि बाह्याचार्, (एवं वर श्चिह बाहार प्रविश्वका) जे पि व इसे सरीर हुई, बैठें पिवे समुण्ये सवासे विज्ञं वे(वि)सास्तिव संगवं क्ल्यमयं बहुमवं शंवकरंवगसमार्णं रवणकरंवगम्बं मार्च दीर्यमार्च उर्वामार्च इद्या मार्च पित्रासा मार्च नास्य मार्चनीय मा भ बंसमसगा मा भ बाइ(यी)व पिश्वव-संमि(कप्कि)य-सम्बद्धय निविद्य रोगावका प्रस्त(हा ड)होबसमा (फास) फुसंगु(शिक्ट) एवं पि व न व(प्रे)रमेडें उस्सास(भी)म्निस्सासंहैं भोतिरामितिका (एवं सरीर बोसिरिता) कार्य अनवर्वन माने निहरानि (एर्स में सक्कना परमणा अनसनावसरे परो अवस्थे कर ग्रसमाप सुद्धं एर्न) वपरिक्रमभारणंदिवसंकेष्णाद्वस्थानामाराष्ट्रवाए एँव बस्तारा वामिनन्त ग समावरिवन्ता र्त -( ) क्षामीमासंसप्पन्नोगे परक्षेपासंसप्पन्नोगे, वीविकसंत प्यक्रेने मर्गाचसप्यक्षेत्रे काममोपाचसप्यक्षेत्रे (मा मञ्च 🛤 मर्जदेनि सङ्गाप-क्रमणीय क्रम्महासाची ) एतस विकासी क्र**म**र्थ ॥

**बहारहपाबहु**एवाई ्राह्म को निष्मा कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या सरोवियाई सेवा— निवार्व बालुमोदनाई तहा व ३ व) शहर विषक्रामि हेक्दै≠ ह

१ अन्ते बायरिते बस्य ठाणे समुबनगाधे मासार् कस्मर् ततोऽन्हेको । २ रुपाप्रसि ठानि इसो एक्स विहीए । अनन्ते पनवीतमिष्टतागार्थ वडर्सम

# [ १२१ ]

है तो उसके मन में समाधि प्राप्त होती है श्रोर उस समाधि से श्रात्म-विशुद्धि होती है। श्रात्म-विशुद्धि से दोप दूर होते हैं श्रोर दोप दूर होने से क्रमशः मुक्ति प्राप्त होती है।

प0-नया हम भी देव वन सकते हैं?

<sup>उ०–</sup>श्रवश्य । जैन-धर्म नर को नारायण वना देता है ।

.प०-हम किस प्रकार देव वन सकते हैं ?

उ०-श्रव तक जो श्रमंत देव हो चुके हैं वे सव किसी न किसी समय हमारे समान थे। उन्होंने धर्म की श्राराधना की। पहले सम्यक्तव प्राप्त किया, फिर चारित्र पाला। धीरे-धीरे कठोर साधना करते करते उन्हें पूर्ण निर्म-लता प्राप्त हो गई। इसी प्रकार हम भी पूर्ण निर्मलता पाकर देव वन सकते हैं।

### गुरु-

पश्र-गुरु किसे कहते हैं ?

उत्तर-जो महापुरुप पांच महावतों का समितियों श्रीर गुप्तियों का नियमित रूप से पालन करते हैं उन्हें गुरु कहते हैं। प्र०-पांच महावत कीन-कीन हैं?

उ०-(१) श्रहिंसा (२) सत्य (३) श्रंचौर्य (४) ब्रह्मचर्य (४) श्रपरिग्रह।

प्र०-इन्हें महावत क्यों कहते हैं ?

उ०-इन्हें महाव्रत कहने के दो कारण हैं:-(१) गृहस्थ श्रावक इन वर्तों को स्थूल रूप से-एक देश से पालता है श्रीर तस्स धम्मस्म केविलपण्णत्तस्य अञ्भद्विओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए, तिविहेण पिडक्तो वदामि जिणचर्येन्वीस । गाहाओ-आयरियउवज्झाए० जहा आवस्सगचउत्थावस्सयकोद्वगगयाँओ । खामेमि सन्वे जीवा० जहाऽऽवस्सएँ । इइ चउत्थे पिडक्रमणावस्सयं समत्तं ॥ ४॥

अह पंचमं काउस्सग्गावस्सयं

देवसियपायच्छित्तविसोहणत्य करेमि काउसम्मं। 'णमो अरिहताणं०' 'करेमि०' 'इच्छामि ठामि॰' 'तस्स उर्तेरी॰'। हृइ पंचमं काउस्सग्गावस्सयं समत्तं ॥५॥ सम्मुच्छिममणुस्सपाढ च उचारति ते य एव-अभिग्गहियमिच्छत, अणभिग्गहि-यमिच्छत्त, अभिणिवेसियमिच्छत्त, ससइयमिच्छत्त, अणाभोर्गमिच्छत्त, लोइयमिच्छत्त, लोडत्तरियमिच्छत्त, कुप्पावयणियमिच्छत्त, अधम्मे धम्मसण्णा, धम्मे अधम्मसण्णा, उम्मरगे मरगसण्णा, मरगे उम्मरगसण्णा, अजीवेस जीवसण्णा, जीवेस अजीवसण्गा, असाहुसु साहुसण्णा, साहुसु असाहुसण्गा, अमुत्तेसु मुत्तसण्गा, मुत्तेसु अमुत्तसण्गा, ऊणाइरित्तपरूवणामिच्छत्त, तन्वइरित्तपरूवणामिच्छत्त, अकिरियामिच्छत्त, अविणय-मिच्छत्तं, अण्णाणमिच्छत्तं, आसायणामिच्छत्तं (एवं एयाई पणवीसविहाइ मिच्छताइ मए सेवियाइ सेवावियाइ ता अरिहतसिद्धकेवितिसिक्षय) तस्स मिच्छामि दुक्कडं। (चंडह्हठाणसम्मुच्डिमजीवे आलोएमि) १ उचारेस वा, २ पासवणेस वा, ३ खेलेस वा, ४ सिंघाणेषु वा, ५ वतेषु वा, ६ पित्तेषु वा, ७ पूएसु वा, ८ सोणिएसु वा, ९ सुक्केस वा, १० सुक्कपुरगलपरिसारेस वा, ११ विगयजीवकलेवरेस वा, १२ इत्थी-पुरिससजोगेम्र वा, १३ णगरणिद्धमणेम्र वा, १४ सन्वेम्र चेव अम्रइद्वाणेम्र वा, (एवं चउद्सविद्दसम्मु च्छिममणुस्साणं विराइणा कया (होज ता)) तस्स मिच्छामि दुक्क हं। अवि य समणसुत्तंपि बोहंते, से किं त समणसूत्त <sup>2</sup> २ जहा आवस्सए चउत्थ पिकक्षमणावस्सय जाव मत्यएण वंदामि। 'करेमि भंते । ॰ 'इच्छामि ठामि ॰ 'सु जो भेओ सो इमस्स चेन पढमानस्तयाओ णायन्वो । १ इओ पच्छा (दुक्खुत्तो इच्छामि समासमणी एक्को णवकारो विहीए) भिण्णभिण्णभासापाढा लब्भित तत्तोऽवसेया। २ रागेण व दोसेण व, अहवा अकयण्णुणा पिंडणिवेसेण । जो में किंचि वि भणिओ, तमह तिविहेण खामेमि॥ पर्च तरे एसा गाहाऽहिगां लब्मइ। ३ सावगसाविगाखा-मणाचडरासीलक्खजीवजोणिखामणाकुलको जैखामणापाढा मिर्णाभिण्णभासाए तत्तो-ऽवसेया। इसे पच्छा 'अद्वारहपावद्वाणाइ' विहीए । ४ काउरसग्गे चडलोगस्सझाण, केइ धम्मज्झाणस्स काउस्सम्म करैंति, तस्स भेया ठाणवउत्यठाणाओऽवसेया। 'णमो अरिहताणं वृत्तूण काउस्सग्गो पारिजंइ, तओ 'लोगस्स॰' फुड उच्चारिजंइ ति विही ।

सिपणा समायण

### अह छट्ट पचक्साणावस्सय

समुखयपद्यपेखाणपाडी

गठिसहिनं सद्विसक्षियं जमुद्दारसद्विमं पोरिसिनं सङ्ग्रपेरिसिनं (वियविया कालुसारें) दिनिहंपि करन्यहंपि काहारे अधर्न पार्व आहर्म साहर्म कान्यवा-भोगेनं सहसामारेचं महत्तरामारेनं सम्बद्धमाहिनतियागारेचं नोतिरामि । इह छट्टे पश्चपसाजाच्याये समाने ॥ ६ ॥

#### सावयावस्तय(परिवामण)सूच समर्च तइय परिसिट्ट समन

चेचपरिसिद्धविसप-

सर्कोस्रो ताब विध्यक्षर, (जाव १११८ गाहा विद्यवा) बाबाद सेसपार्वतराई (डबासगदसासेसपार्वतराई पिह्य्यगासिय प्रचान मदसमपुष्के दहुन्दाई) गाहाणुकमन्त्रिया विसिद्धवामसुई य गंधनि त्यरमया य डिण्या।

९ विसेसाव कानस्तर छई पणक्यानानस्तर्भ बहुन्तं । २ सर्व प्रवस्थाः तथ बोसिरामि वि वन्द्र कन्येसि प्रवक्ताकः वया बोसिरे वि निसेसो । तबो प्रका **प्रन्**मानस्त्रमाप्रमङ्गारसंबंधिनिष्कानियुक्तं मिन्छ । तसो <u>त</u>न्ति 'समोऽस सं ३ शिल्या वान संविक्तविद्यी निरमाओं पविकासमित्री वर्गकासक्त्रमास्थमानिर्दे पोसहविद्यी वैसानयाधिक(सँगर)विद्यी मासामोऽवसेना ।



साधु पूर्ण रूप से पालते हैं। अतः इन मतीं की पूर्णता यताने के लिये इन्हें महावन कहते हैं। (२) दूसग कारण यह है कि संसार में जितने भी मत हैं उन सब में ये यन श्रेष्ट हैं इसलिए भी इन्हें महावन कहते हैं।

प्र०-इन मतों का अर्थ समसाहए ? उ०-मन से, घचन से, काय से माणी मात्र को कप्ट न पूर्ड चाना, प्रत्येयः प्रार्शी पर मंत्री माय रस्तना ऋहिंसा है। हिन, मित, त्रिय और यथार्थ यचन योलना सत्य है। तिनका जसी तुरुछ चीज़ भी विना स्वामी की ग्राहा के न बहुए करना अचीर्य है। कामवासना का पूर्ण रूप से परित्याम कर आत्मा में विचरना ब्रह्मचर्य कहलाता है इब्य, भाष, सचित्त, श्रचित्त, श्रादि समल प्रकार के परिमद्द को त्याग देना, संसार के किमी भी पदार्थ पर यहां तक कि शरीर पर भी ममता न रखना अपन्मिट है।

प्र०-समिति का क्या स्थम*व है ?* उ०-यतना के साथ प्रवृत्ति करना समिति है। मुनिराज

प्रत्येक किया बहुत सावधानी से करते हैं। प्र०-समिति कितनी हैं ?

ड॰-पांच-(१) ईया समिति (२) भाषा समिति (३) पपणा

समिति (४) श्रादाननि द्वेपस समिति (४) उत्सर्ग समिति ।

प्र० इनका स्वरूप क्या है ?

• उ०–यतना के साथ चार हाथ ज़मीन देखते हुए चलना ईर्या समिति है। हितकारी सत्य वचन बोलना भाग समिति

है। निर्दोप श्राहार लेना एपणा समिति है। उपकरणों को जीव-रहित स्थान में सावधानी से रखना श्रीर उठाना श्रादाननित्तेपण समिति है श्रीर यतना के साथ मल मृत्र का परित्याग करना उत्सर्ग समिति है।

º-निर्दोप श्राहार कौन सा है <sup>१</sup>

भिनौन शास्त्रों में श्राहार के ४२ दोप टाल कर साधु को श्राहार लेने का विधान है। उनका विवेचन श्रन्यत्र देखना चाहिए। यहां विस्तार भय से नहीं लिखा जाता। इतना समभ लेना चाहिये कि साधु किसी का निमंत्रण स्वीकार नहीं करते, श्रापने उद्देश्य से वनाया श्रीर खरीदा हुआ श्राहार नहीं लेते, सचित्त भोजन नहीं करते, विकार यदाने वाला पौष्टिक श्राहार नहीं लेते। ऋखा-सूखा, सादा, वचा खुचा श्राहार जो श्रनेक घरों से मित्ता द्वारा मिल जाता है उसे समभाव से श्रहण करते हैं।

भ०-गुप्ति किसे कहते हैं ?

<sup>उ०</sup>−मन वचन श्रौर काय की प्रवृत्ति को रोक लेना गुप्ति कहलाता है।

भ०-समिति श्रीर गुप्ति में क्या कन्तर है ?

उ०-गुप्ति उत्सर्ग मार्ग है श्रौर भिमिति अपवाद मार्ग है।
मुनि को सामान्यन मन वचन काय की क्रियाओं का
निरोध करना चाहिये यह गुप्ति है श्रौर यही उन्सर्ग
मार्ग है। यदि मुनि इन कियाओं का निरोध करने में
श्रसमर्थ है तो ये सब कियाएँ कम से कम यतनापृष्क
तो अवश्य ही करे। यह अपवाद मार्ग है, इसी यतना
को सिमिति कहते हैं। सिमिति अपवाद रूप है।

## ि १२४ 1

प्र०-गुरु की पहचान केसी हो लकती है ?

ड०-सच्चे गुरु की पहचान कर लेना श्रासान नहीं है। संसार में अनेक वेपधारी व्यक्ति ऐसे हैं जो अपने को गुरु फहते हैं, तरह तरह के दोंग करते हैं श्रीर चेलें को उगते हैं। उनके मुलावे में पड़कर लोग श्रपना श्रहित कर बैठते हैं। इसलिये गुरु का निश्चय धहुत सावधानी से करना चाहिये।

प्र-गर का निश्चय किन वातों से किया जाग ?

उ०-सच्चे गुरु का स्वरूप ऊपर थोड़ा वताया गया है। जो महापुरुष कंचन कामिनी का सर्थया स्वागी हो, करी कौड़ी भी अपने पास न रखता हो. हिंसा आदि पापों का पूर्ण रूप से त्यागी हो, स्थार्थ साधता हुआ परमार्थ का दोंग न करता हो, निस्पृह हो, राग-द्वेप पर विजय पारहा हो, घर-द्वार छोड़कर त्यामी बना हो, जिसका हृदय दया से भरा हुआ हो, विपयों की आशा से रहित हो, सब प्रकार के आरंभ परित्रह से मुक्त हो, हान-ध्यान और तप में अनुरक्त हो, उसे साधु या गुर सम भना चाहिये।

प्र०-साधु का वेप कैसा होता है ?

उ०-साधुपन श्रीर वेप का श्रनिवासायनहीं है। कई श्रसापु भी साधु का वेष पहन लेते हैं और कई साधु भी साधु का श्रमुक नियत वेष नहीं पहनते। फिर भी सामान्य रूप से शलग-शलग सम्प्रदाय के साधुओं का वेप थलग-थलग होता है।

१०-जैन साधुग्रो का वेष क्या है ?

रे०-जैनों के भी श्रलग-श्रलग सम्प्रदाय हैं। उनके साधुश्रों के वेप भी श्रलग-श्रलग हैं।

४०-अपन किस सम्प्रदाय के हैं ?

उ०-श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय हमारा सम्प्र-दाय है।

प्र०-ग्वे० स्था० जेन मुनियों का क्या मेप है <sup>१</sup>

उ०-स्थानकवासी मुनि श्वेत वस्त्र धारण करते हैं। यह वस्त्र सिले हुये नहीं होते। उनके मुख पर श्राठ श्रंगुल की मुख वस्त्रिका डोरे से वधी रहती है। जिससे कि मुंह से निकलने वाली गर्म वायु के श्राघात से छोटे जीवों की हिंसा न हो श्रीर कोई वाहर उड़ता-फिरता जीव मुंह में न चला जाय। जीवों की रचा के लिये मुनिराज ऊनका श्रोधा रखते हैं। उससे जमीन श्राटि पूंजते हैं। उनके पैरा में जूता नहीं होता, सिर खुला रहता है। गृहस्थों के घर से भिचा लाते हैं श्रीर वन्दना करने पर 'दया पालो' कहकर श्राशीवाद रूप धर्म-प्रेरणा करते हैं।

प्र०-मुनिराजों के श्रीर क्या कर्त्तव्य हैं ?

उ०-मुनिराजों के कर्त्तच्यों का वर्णन संदोप में होना कठिन है। मुनिराज मुक्ति के लिये सतत प्रयक्षशील रहते हैं। वे कठोर साधना करते हैं। वारह प्रकार की तपस्या इच्छा पूर्वक स्वीकार करते हैं। भूख, प्यास, सदी, गमी श्राढि की वाईस परीपह सहन करते हैं। हमेशा पैदल विहार करते श्रीर जगह जगह दयाधर्म का प्रचार

फरते हैं। प्रातःकाल और सायंकाल प्रतिदिन प्रति कमण करते हैं। प्रतिदिन श्रपने दस्त पात्र की प्रति लेखना करते हैं। श्रात्मा के ध्यान में मस्त रहते हैं राष्ट्र और मित्र पर समता माच रावते हैं। श्रादः मत्कार की चाहना नहीं करते । शरीर को सुन्दर धना के लिये स्नान, लेपन छादि नहीं करते।

प्र०-प्रतिकामण किसे कहते हैं ?

ड०~सायधानी रखने पर भी कभी कभी मन शुभ योग से श्रम् योग में प्रयुक्त हो जाता है। मो मन को पुनः श्रम योग में लोटाना प्रतिक्रमण कहलाता है। प्रति-कमण में पापों की निन्दा गर्हा की जाती है। ऐसा फरने से पापों पर द्यरुचि होती है। द्यारमा में निर्मलता श्राती है। इसिलिये मनिराज प्रति विन दो बार प्रति-कमण करते हैं।

<del>и2</del>\_

मश्र-धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर-को संसारी कीवों को दुःख से छुड़ाकर उत्तम सुख में धारण करता है उसे धर्म कहते हैं।

म०-धर्म पया है ?

ड०-धर्म की श्रनेक ब्यास्याएँ शास्त्रकाशों ने बताई हैं। मिस्र मिन्न इष्टियों से वे सव संगत श्रीर समन्वित हैं।

जैसे-(१) सदाचार को धर्म कहते हैं।

(२) यस्तु-स्वमाव को धर्म कहते हैं।

इन व्याख्याओं में एक चरणानुयोग की दृष्टि से है और इसरी द्रव्यानुयोग की दृष्टि से।

<sup>१०-सदाचार-धर्म का क्या श्रमिप्राय है ?</sup>

उ०-'दसवेयालिय' सूत्र में 'धम्मो मंगलमुक्किट्ट श्रिहेंसा सजमो तवो' ऐसा कहा है। यहां श्रिहंसा, संयम श्रीर तप को उत्कृष्ट धर्म वतलाया गया है। किसी भी प्राणी को किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाना, सव पर मित्रता की भावना रखेंना, श्रपनी इन्द्रियों को श्रीर मन को कावू में रखना या उनके उच्छुंखल ज्यापार को रोकना तथा श्रहिंसा श्रीर संयम का पालन करने के हेतु कठिन से कठिन कष्ट सहना-तपस्या करना, यह धर्म है। इस छोटे से वाक्य में मानव जीवन के समस्त कर्तव्यों का सार संगृहीत कर दिया गया है। श्रहिंसा, संयम श्रीर तप, सदाचार का श्रादर्श है। यह तीन रत्न जिल भाग्यवान् को प्राप्त हो चुके वह उत्तम श्रलोंकिक सुख का भोक्षा वन जाता है।

10-यहां श्रहिंसा के साथ सत्य श्रादि को धर्म क्यों नहीं कहा?

उ०-श्रहिंसा का यहां व्यापक भाव लिया गया है। श्रत' सत्य, श्रवीर्य ब्रह्मचर्य श्रादि सव धर्म श्रहिंसा में ही गिंभत हो जाते हैं। श्रहिंसा सव धर्मों का मृल हे सत्य श्रादि इंसेकी शाखाएँ हैं। जिसने पूर्ण श्रहिंसा की श्राराधना की हो वह श्रसत्य का श्राचरण नहीं कर सकता, चोनी नहीं कर सकता. श्रब्रह्म का सेवन नहीं कर सकता श्रीर परिश्रह के पाश में नहीं फॅस सकता। क्योंकि श्रसत्य श्रादि का श्राचरण करने से हिसा होना श्रनि-धार्य है। प्र०-संयम, धर्म क्यों है ?

उ०-श्रात्मा रूपी राजा का मन्त्री मन है श्रीर मन की दासी इन्द्रियां हैं। यह दोनों ही जब उच्छंखल हो उठते हैं, इनमें तोलुपता पैदा हो जाती है तब श्रात्मा को पतन की श्रोरले जाते हैं। श्रनः शात्मा कर्पाराजा की चाहिये कि यह इनकी चौकसी करता रहे, उन्हें उच्छुं-यल न होने देवे, अपने अधीन रखे। यही संयमकह लाता है। संयम उत्तम सुदं का आयश्यक साधन है थतः घह भी धर्म है।

प्रवन्तप, क्यों धर्म है ?

उ०-इन्द्रियों थीर मन का इमन करना तप है। जब वे उच्हुं खल हो उठते हैं तव उनका दमन करना झावश्यक है। श्रतः तप भी धर्म है।

म०-तप से दमन कैसे होता है ?

उ०-तप दो प्रकार का है--वाहा और आभ्यन्तर। मुख्य रूप से याद्य तप से इन्द्रियों का दमन होता है और आश्य न्तर तप से मन का। या यों कहें कि इन्द्रियों के दमन को बाह्य तप और मन के दमन को भ्राभ्यंतर तप कहते हैं

प्र०-वाह्य तप कितने हैं ? ड०-छः हैं-श्रमशन, ऊनोद्रर,वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग,

विविक्रशय्यासन और कायक्लेश।

प्र०-अभ्यन्तर तप कितने हैं? उ०-श्रभ्यन्तर तप भी छः हैं-श्रायश्चित्त, विनय, धैयावृत्य, स्वाध्याय, ब्युत्सर्ग और ध्यान।

## [ १२६ ]

प्राचित प्रमुख्या के श्रीर भी भेद हो सकते हैं ?

उ०-हां। साधु धर्म और गृहस्थ धर्म के मेट से दो मेद हो सकते हैं।

प०-इन दोनों का श्रर्थ समभाइये ?

उ०-साधु-धर्म का संज्ञिप्त वर्णन गुरु के प्रकरण में किया जा चुका है। एक देशविरति को श्रावक धर्म कहते हैं!

भ०-देश विरति किसे कहते हैं ?

उ०-श्रिहिंसा श्रादि वतों को एक देश से श्रर्थात् श्रांशिक रूप से पालन करना देशविरित है। उसे श्रणुवत भी कहते हैं। श्रावक पांच श्रणुवतों के साथ चार शिक्ता वत श्रीर तीन गुणवतों का भी पालन करता है। इस प्रकार श्रावक के १२ वत होते हैं।

ं प्र०-श्रहिंसाणुत्रत का क्या खरूप है <sup>१</sup>

उ०-निरपराधी त्रस जोव की संकल्प पूर्वक हिंसा न करना श्रीर विना प्रयोजन स्थावर जीव की हिसा न करना श्रहिंसाखुवत है।

प्र०-सत्याणुवत किसे कहते हैं ?

उ०-स्यूल श्रसत्य भाषण न करना श्रीर दूसरे पर विपत्ति डालने वाला सत्य वचन भी न वोलना सत्याणुवत है।

प्र०-श्रचौर्यागुव्रत किसे कहते हैं ?

उ०-स्थूल चोरी, जो लोक निन्दा के योग्य हो श्रौर राज्य हारा दराडनीय हो,न करना श्रचीर्यागुत्रन कहलाना है। प्र०-थायक का श्रीर क्या कर्सव्य है ?

उ०-साधारएतया किसी भी धर्म के श्रन्यायियों के जीवन व्यवहार की श्रच्छाई या बुराई को देखकर लोग उस धर्म की अच्छाई या बुराई का विचार करते हैं। यदि हमारा जीवन स्यवहार निद्नीय होगा तो हमारा धर्म भी निंदनीय समभा जायना, ऐसा सीच कर श्रावक को प्रत्येक कार्य करना चाहिये। किसी से सम्भाषण फरते समय, कय-विकय करते समय, लेन-देन के समय या स्वजन और परजनों से और व्यवहार करते समय अपने कर्त्तस्य का अर्थात् धर्म का विचार श्रवश्य रखना चाहिये। श्रावक, न्यायनीति से धन का उपार्जन करे, वड़ों का आदर सत्कार करे, मधुर वाणी वोले, अपनी पत्नी के साथ निरुद्धल और पवित्र ब्यवहार रखे, धर्म और समाज को हानि पहुँचाने वाली कुरुदि-यों का विवेक पूर्वक परित्याग करे, अपने हुद्य में विश्ववेम और राष्ट्रभक्ति को स्थान दे, सेवा भाषी हो, करणायान् हो, कायर न हो। राजा हो तो प्रजा को पुत्र के समान समके, सेनापति हो तो प्रजा की रहा करे, मन्त्री हो तो सची दितकर सलाह दे, व्यापारी हो तो देशहित, के अनुकूल व्यापार करे। तात्पर्य यह है कि श्रावक अपने प्रत्येक कर्त्तव्य के द्वारा अपने जीवन को उन्नत बनावे और अपने धर्न का लिका दसरों पर जमा है।

प्र०-डपंयहार खाता श्रीर धर्म खाता श्रलग-श्रलम नहीं हैं ? उ॰-डपयहार श्रीर धर्म श्रलग-श्रलम हैं परंतु जो श्रपने व्यय-इ.र को धर्ममय वनाता है बढी धर्मारमा कहलाता है । यह कभी न समभो कि कोई बुरा काम व्यवहार खाते में लिखा गया है इसलिये उसका फल तुम्हें नहीं भुग-तना पड़ेगा। श्रात्मा एक है—श्रकेला है। सब कमों का फल उसे ही भोगना पड़ता है। श्रात्मा रोकड़-वहीं नहीं है, इसलिए उसमें इस प्रकार के दो खाते भी नहीं। यदि श्रसमर्थता के कारण कोई धर्म विरुद्ध कार्य हो जाय तो उसे श्रधम ही समभना चाहिए, व्यवहार खाते में गिनकर उसकी उपेला नहीं करनी चाहिए।

प्र०-चस्तु स्वरूप धर्म किसे कहते हैं ?

उ०-जिस-जिस द्रव्य का जो-जो स्वभाव है वही उसका धर्म है। उसी को वस्तु स्वभाव धर्म कहते हैं।

प्र०-उदाहरण देकर समसाइए ?

उ०-जैसे—जीव ज्ञान, दर्शन, वीर्य श्रीर सुख स्वभाव वाला है। जीव के स्वभाविक गुण हैं। जीव इनके विना कभी नहीं रह सकता श्रीर ये गुण जीव को छोड़कर श्रन्यत्र कहीं नहीं पाये जा सकते। श्रतएव ये जीव के स्वभाव या धर्म कहलाते हैं। इसी प्रकार पुरुल के गुण कप, रस, गध श्रीर स्पर्श हैं। धर्म द्रव्य का गुण गतिसहाय, श्रधम द्रव्य का स्थित सहाय, श्राकाश द्रव्य का श्रवगाहदान श्रीर काल द्रव्य का परिणमन सहाय है। यही इनका सक्षप है।

प्र०-धर्म की दो व्याख्याओं में मेद क्या है?

उ०-सदाचार धर्म साधन है और वस्तुस्वभाव धर्म साध्य है। अर्थात् अहिंसा आदि वतों के पालन करने से सव कर्मो का चय हो जाता है और आत्मा के असाधारण ज्ञान आदि गुण निर्मल और पूर्ण व्यक्त हो जाते हैं। प्र०-धर्म से भागड़े पैदा होते हैं, तो उसे मानने की श्राव-श्यकता क्या है ?

उ०-धर्म का पहले जो स्वरूप वतलाया गया है उससे संसार में भगड़े उत्पन्न नहीं हो सकते। यह जहां श्रातमा का विकास करता है वही संसार में शांति, प्रेम, दया, सहानुभूति और समता का प्रचार करता है। धर्म संसार को भी स्वर्गधाम वनाता है। सद्या धर्म कमी फ्लेश नहीं पैदा करता।

प्र०-सच्चे धर्म की पहचान कैसे हो ?

उ०-जो धर्म वीतराग महर्षियों ने वतलाया है, जहां द्या को सर्वोच स्थान दिया गया है, जहां पश्चपात नहीं किन्तु म्याद्वाद की बरूपला है, जो आत्मा को परमाश्मा यनाने का मार्ग वतलाता है, जिसके उपदेशक गुरू परिप्रही नहीं हैं, जिस धर्म के माने हुए देव हथियार नहीं रखते. सियों से विश्व हैं, वही धर्म सचा है।

**२०-सम्प्रदाय और धर्म में कुछ मेद है ?** 

उ०-हां, सम्प्रदाय में प्रायः कदाप्रह होता है, धर्म में नहीं। धर्म मानव का सबा सखा है, सबा हितकारी है। जो अपने धर्म की रत्ता करता है, धर्म उसकी रत्ता



हंता अत्थि, एव जाव अहेसत्तमाए ॥ ७१ ॥ इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडे केवइयं वाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा! सोलस जोयणसहरूसाइ बाहल्लेणं पन्नत्ते ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकडे केवइय वाह्हेण पन्नत्ते <sup>२</sup> गोयमा ! एक जोयणसहस्स वाहल्लेणं पण्णत्ते, एवं जाव रिट्ठे । इमीसे ण भंते ! रय० पु० पकवहुले कडे केवइय वाह्न्नेण पन्नते र गोयमा! चउरसीइजोयणसहस्साइ वाह्नेलेण पण्णते । इमीसे ण भते! रय॰ पु॰ आववहुले कडे केवइय वाहलेण पन्नते? गोयमा! असीइ-जोयणसहस्साइ बाह्रहेण पन्नते । इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पु० घणोदही केवइय वाह्रेण पन्नते ? गोयमा! वीस जोयणसहस्साइ वाह्रेल पण्णते । इमीसे ण भंते! रय॰ पु॰ घणवाए केवइय बाह्रहेण पन्नते ? गोयमा! असखेजाइ जोयणसहस्साइ वाह्ह्रेण पण्णते, एव तणुवाएऽवि ओवासतरेऽवि । सक्करप्प० मते ! पु० घणोदही केव-इय वाह्रहेण पण्णते २ गोयमा । वीस जोयणसहस्साइ वाह्रहेण पण्णते । सक्दरप्प० पु० घणनाए केनइय वाह्न्नेण पण्णत्ते ? गोयमा ! असखे॰ जोयणसहस्साइ वाह्नेण पण्णत्ते, एव तणुवाएवि, ओवासतरेवि जहा सक्करप्प॰ पु॰ एव जाव अहेसत्तमा ॥ ७२ ॥ इमीसे ण भते । रयणप्प० पु० असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाह्रह्राए खेतच्छेएण छिज्जमाणीए अत्थि दन्वाइ वण्णओ कालनीललोहियहालिइसुक्किल्लाई गधओ सुरभि-गधाइ दुव्भिगधाइ रसओ तित्तकद्वयकसायअनिलमहुराइ फासओ कक्खडमउयगर-यल्हुसीयउत्तिणणिद्कुक्लाइ सठाणओ परिमडलबद्दतसचउरसआययसठाणपरिणयाई अन्नमन्नबद्धाइ अण्णमण्णपुद्धाई अण्णमण्णसेगाढाइ अण्णमण्णसिगेहपर्डिबद्धाइ अण्ण-मण्णघडताए चिट्ठति <sup>2</sup> हता अत्यि । इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पु॰ खरकडस्स सोलसजोयणसहस्सबाहरूस्स खेतच्छेएण छिजमाणस्स अत्थि दव्वाइ वण्णओ काल जाव परिणयाइ <sup>१</sup> हता अत्थि । इमीसे ण भते ! रयण्प॰ पु॰ रयणनामगस्स कडरस जोयणसहरसवाहह्नस्स खेतच्छेएण छिज्ज॰ त चेव जाव हता अत्थि, एवं जाव रिट्ठस्स, इमीसे ण भंते ! रयणप्प॰ पु॰ पकवहुलस्स कडस्स चडरासीइ-जोयणसहस्सबाहह्रस्स खेते त चेव, एवं आववहुरुस्सवि असीइजोयणसहस्सवाहह्रस्स। इमीसे ण भते ! रयणप्प० पु० घणोदहिस्स वीस जोयणसहस्सवाहह्रस्स खेत्तच्छेएण तहेव । एव घणवायस्स असखेजजोयणसहस्सवाहहस्स तहेव, ओवासतरस्सवि त चेव ॥ सक्करप्पभाए ण भते । पु० वत्तीसत्तरजोयणसयसहस्सवाहह्रस्स खेतच्छेएण छिजमाणीए अत्थि दव्वाइ वण्णओ जाव घडत्ताए चिट्ठति <sup>2</sup> इता अत्थि, एवं घणोदहिस्स वीसजोयणसहस्सवाहृष्ठस्स घणवायस्स असखेजजोयणसहस्सवाहृष्ठस्स, एव जाव ओवासतरस्स, जहा सक्करप्पभाए एव जाव अहेसत्तमाए॥ ७३॥

इमीसे के मेरी ! स्वपण प्र पारकेंके किसीठिए पञ्चते हैं गोबमा । सक्रमेसंबिध पण्यते । इसीचे मं मीते ! रमणप्य प्र रमणको किसेटिय पण्यते ! गोकमा ! श्राहरि सुटिए प्रम्यते एव जान रिद्धे, एवं पंत्रमहरूमि एवं आवश्रहेमि घमोवहीमि यमगाएकि तलुगाएकि जोगासत्रेकि सम्मे सामरिसंठिया पञ्चला । सम्मरप्पमा व मंते ! पुरुषी किसंदिया पञ्चला ! योजना ! साहरिसंदिया पञ्चला सहस्यमापुरुषीर मयोदही किर्देठिए प्रकात । योगमा । सक्ररिस्टिए प्रकात एवं जाव मोनास्टरे जबा सन्दरप्यमाएं बतन्त्रया एवं बाव महेसलमाए ॥ ७४ ॥ इमीसे वं मेर्दे! रयज्ञा पुरुषीए पुरस्थितिकाओ चरिनेताओ केवस्य अवाद्याए कोर्यते पञ्चते ! गोनमा ! इनामग्रहें जोनजेडी सवाहाए कोर्यते पञ्चले एव ताहिन्दास्थे पनिन निकाको उत्तरिकाको । सक्तरण पु पुरत्यिभिकाको नरिनेदाको केवहर्न भगवार मोर्नते पन्यते ! गोममा ! विमागुषेशि तरसदि कोन्योहि कराहाए कोर्नते पन्यते एवं चडविसिंपि। बाहरवण प्र प्रतिबामिकाको प्रचल गोवमा ! सरिभागे हैं देखाँ जोमपोई भवाहाए कोर्यते पञ्चते एवं करहिसीप एवं सम्बार्धि करमूनि रिसाई पुष्प्रिमर्ग्न । पंद्रमः चोश्सक्षं बोवलेहि सराहाए क्षेत्रंते एवनते । वेदमाप् दिमासूमेहि पद्मरसङ्ख्या कोनपिष्ट्रं अवाहाए कोन्यते पण्यते । स्क्षीए सरिमानेष्ट्रं पसरसङ्ख्या कोनपिष्ट अवाहाए कोमेर्ड पन्नते । धत्तनीय शोकधाँहै बोवनेहि खवाहाएं बार्पेड पन्नते

अवाहाएं कोनेंद्रे एक्यां । छत्तांपु छोक्यांह्रे बोवनेंह्रे अवाहाएं कारेंद्रे एक्यां । छत्तांच्यां के ग्रंदी । याण पु पुरक्तिक्रे निर्माण करिते कार्यके पाण्या । विक्री कार्यक्रिक निर्माण करिते कार्यके पाण्या । विक्रेष्ठे एक्यां प्रेक्टा —क्यार्वह्रेवच्य प्रवास्त्रक प्रवास्त्र व्यवस्त्र व्यवस्त्र । इति के भंदी । राज्या पुरक्ति क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं के भंदी । राज्या पुरक्ति क्रियं क्रियं क्रियं के भंदी । राज्या पुरक्ति क्रियं क्

चाहलेण पण्णत्ते, पकप्पभाए सक्कोसाइ पच जोयणाइ वाहलेण पण्णत्ते । धूमप्प-भाए अद्मछद्वाइ जोयणाइ वाहल्लेणं पन्नते, तमप्पभाए कोस्णाइ छजोयणाई चाहल्लेण पण्णत्ते, अहेसत्तमाए छजोयणाइ बाहल्लेण पण्णते ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्प० पु० तणुवायवलण् केवइयं बाहल्लेण पण्णत्ते 2 गोयमा ! छक्कोसेण वाहल्लेण पण्णत्ते, एव एएण अभिलावेण सक्तरप्पभाए सितभागे छक्कोसे बाहल्लेण पण्णत्ते । वालु--यप्पभाए तिभागूणे सत्तकोसे वाहल्लेण पण्णते । पकप्पभाए पुढवीए सत्तकोसे वाहल्लेण पण्णते । वृमप्पभाए सतिभागे सत्तकोसे । तमप्पभाए तिभागूणे अद्वकोसे वाहल्लेण पन्नते । अहेसत्तमाए पुढवीए अट्टफ़ोसे बाहल्लेण पण्णते ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्प० पु॰ घणोदिहवलयस्स छज्जोयणबाहब्रस्स खेत्तच्छेएण छिज्जमाणस्स अत्थि द॰वाई वण्णओ काल जाव हता अत्थि । सक्करप्पभाए ण भते । पु० घणोदहिवलयस्स सितभागछजोयणवाह्रहस्स खेत्तच्छेएण छिज्जमाणस्स जाव हता अत्थि, एव जाव अहेसत्तमाए ज जस्स बाहल्ल । इमीसे ण भते ! रयणप्प० पु० घणवायवलयस्स अद्भपचमजोयणवाह्रह्रस्स खेत्तछेएणं छि० जाव हता अत्थि, एव जाव अहेसत्तमाए ज जस्स वाह्र । एव तणुवायवलयस्सवि जाव अहेसत्तमा ज जस्स वाह्रल्ल ॥ इमीसे ण मते! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहिवलए किसठिए पण्णत्ते १ गोयमा! वहे वलया-गारसठाणसठिए पण्णते जे ण इम रयणप्पभ पुढविं सव्वओ० सपरिक्खिवित्ताणं चिद्वइ, एव जाव अहेसत्तमाए पु॰ घणोदहिवलए, णवरं अप्पणप्पण पुढविं सपरिक्खि-वित्ताण चिद्वह । इमीसे ण रयणप्प० पु० घणवायवलए किंसिटिए पण्णत्ते ? गोयमा ! बढ़े वलयागारे तहेव जाव जे ण इमीसे रयणप्प॰ पु॰ घणोदहिवलय सन्वओ समता सपरिक्लिवित्ताण चिद्वइ एव जाव अहेसत्तमाए घणवायवलए। इमीसे ण भते ! रयणप्प॰ पु॰ तणुवायवलए किंसिंठिए पण्णते १ गोयमा ! वहे वलयागार-सठाणसठिए जाव जेण इमीसे रयणप्प॰ पु॰ घणवायवलय सव्वओ समता संपरिक्खिवताण चिट्टइ, एव जाव अहेसत्तमाए तणुवायवलए ॥ इमा ण भते ! रयणप॰ पु॰ केवइय आयामविक्खभेण प॰ 2 गोयमा । असखेजाइ जोयणसहस्साइ आयामविक्खभेण असखेजाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ता, एव जाव अहे-सत्तमा ॥ इमा ण भते ! रयणप्प० पु० अते य मज्झे य सव्वत्थ समा वाहहेण पण्णता है हता गोयमा! इमा ण रयण० पु० अते य मज्झे य सन्वत्थ समा वाह्ह्रेण, एव जाव अहेसत्तमा ॥ ७६ ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्प० पु० सव्वजीवा उवनण्णपुच्वा <sup>२</sup> सन्वजीवा उवनण्णा <sup>२</sup>, गोयमा! इमीसे ण रय० पु० सन्वजीवा उववण्णपुन्वा नो चेव ण सव्वजीवा उववण्णा, एव जाव अहेसत्तमाए पुढवीए॥

पोम्पाख्य पश्चितः । योद्यमा । इमीसे वं रसमः पुरुषीए सम्बयोग्गमा पश्चिपुरमा नो चेव ज सम्बर्गासम्ब पविद्या एवं काब आहेससमाए प्रक्रवीए ११ धना वं सर्ते ! रस्यप्तमा पुरुषी सन्त्रपोग्गकेई विजयपुरुषा र सन्त्रपोग्ग विवदा र गोसमा । इसा व रयपप्यमा पु छव्वपोस्पकेई विवहपुर्व्या नो चेह व छन्वप्रोस्पकेई मिक्डा एव जान आहेसतमा ॥ ७७ ॥ इमा च मंते ! रक्नपमा प्रवर्ध 🎏 सारमा असारमा ! योगमा ! क्षित्र सारमा दिन असारमा ॥ से केनद्वेर्ण मंति !

एव बुक्द-दिव सासमा दिव असासमा । योगमा । दम्बद्धमाम् सासना वस्य-प्रस्ते वं विश्वकों इसप्रकरे ही प्रास्त्रकों क्रसासवा से तेमदेश योगना एवं बुबद-तं चेन बाद किन सरात्या एवं बाद सहेतत्या । इसा वं संदे रयमप्रमा प्र अस्त्रमी केनियर होर् शियमा । न कनत न आसि व कनार् परिप प क्यांड म अविरस्तं भुवि च अवड य सविरस्तं य प्रवा विश्वा सास्या अक्बाना अञ्चन अवद्विता निका एवं जान अहेसतमा ॥ ५८ ॥ [हमीसे वं मते ! रज्ञानमाए पृह्मीए उपरिक्रको परिनंताको हेटिके परिनंते एस प

केवहनं बनाहाए अंतरे कन्नते । गोयमा । अस्तितत्तरं जोयमस्थलहरूरं बनाहाए भतरे कनते । इसीचे ने भंदे िरवन प उपरिकासो परिनंदासी बरस्य कंडरस हे किये चारिमंत्रे एस नं केनहर्य अवाहाए अतारे एव्यति ! मोसमा ! स्पेन्स बोयमस्टरसाई भगाहाय अंतरे फनते। इमीसे वं अंते ! रखपपमाए पृहसीय हर रिवासो वरिनंतासी रवषस्य कहरस हेक्कि वरिनंते एस में केवाने सवाहाए अगरे पञ्चते हैं गोममा ! एकं जोक्जमहरसं क्याहाए अंतरे एज्यते ॥ इमीसे वे सेते !

रवम पु उनरिकामो निर्मितामा वहरस्य क्रम्बस्य उनरिक्रे निर्मिते एसं में केवहमं सवाहाए अवरे पण्यते ! योध्या ! एक जोयमसहस्स कवाहाए सवरे प इमीरी में मेरे ! रदन यु उनरिकामो नरिमेताओ कारस्य कंत्रस्य हेडिने हेटिक परिमत सोक्स जोड़जसहरसाई ॥ इमीस में मेंते ! रसमप्प पु उन्हरि

बरिमंते एस वं केनहर्य अवाहाए अतरे प १ शोयमा ! वो बोयनसहरसाई हमीसे वं सवाहाएं अठरे प्रवर्ते एवं वाच विद्वस उपिक्रे प्रवरस जोवनसङ्ख्या काका वरिर्मताको पंजबहुकस्य केंद्रस्य उपिक्तै वरिर्मते एस में श्लाहाए केंद्रस् अतरे प्रवरते ! गोनमा ! घोळन जोननसङ्ख्याई अवाहाप् अतरे प्रवर्तते । हेक्कि

चरिमते एक जोयणसयसहस्स आववहुलस्स उवरि एक जोयणसयसहस्स हेट्ठिले चरिमते असीउत्तर जोयणसयसहस्स । घणोदहिउवरिल्ले असिउत्तरजोयणसयसहस्स हेट्टिले चरिमते दो जोयणसयसहस्साइ। इमीसे ण भते! रयण० पुढ० घणवायस्स उविरिक्षे चरिमते दो जोयणसयसहस्साइ । हेट्टिक्ने चरिमते असखेजाइ जोयणसयस-हस्साइ । इमीसे ण भते ! रयण० पु० तणुवायस्स उविरिक्षे चरिमते असखेजाइ जोयणसयसहस्साइ अवाहाए अतरे हेट्टिह्नेवि असखेजाइ जोयणसयसहस्साइ, एव ओवासतरेवि ॥ दोचाए ण भंते ! पुढवीए उचरिल्लाओ चरिमताओ हेद्विले चरिमते एस ण केनइय अवाहाए अतरे पण्णते <sup>2</sup> गोयमा! वत्तीसुत्तर जोयणसयसहस्स अवाहाए अतरे पण्णते । सक्करप्प० पु० उवरि घणोदहिस्स हेट्ठिले चरिमते वाव-ण्णुत्तर जोयणसयसहस्स अवाहाए०। घणवायस्स असखेजाइ जोयणसयसहस्साइ पण्णताइ । एवं जाव उवासतरस्तवि जाव अहेसत्तमाए, णवरं जीसे ज वाहल्ल तेण घणोदही सवधेयव्वो बुद्धीए । सक्करप्पभाए अणुसारेण घणोदहिसहियाण इम पमाण ॥ तचाए अडयालीमुत्तर जोयणसयसहस्स । पकप्पभाए पुढवीए चत्ताली-मुत्तरं जोयणसयसहस्स । यूमप्पभाए पु॰ अद्वर्तामुत्तर जोयणसयसहस्स । तमाए पु॰ छत्तीसत्तर जोयणसयसहस्स । अहेसत्तमाए पु० अट्ठावीसुत्तर जोयणसयसहस्स जाव अहेसत्तमाए ण भते! पुढवीए उवरिलाओ चरिमताओ उवासतरस्स हेड्रिले चरिमते केवडय अवाहाए अतरे पण्णते ? गोयमा ! असखेजाई जोयणसयसहस्साई अवाहाए अतरे पण्णते ॥ ७९ ॥ इमा ण भते ! रयणप्पमा पुढवी दोच पुढविं पणिहाय वाह्रेण कि तुल्ला विसेसाहिया सखेजगुणा 2 वित्थरेण कि तुल्ला विसेसहीणा सखेज-गुणहीणा 2, गोयमा ! इमा ण रयण० पु० दोच पुढिन पणिहाय बाह्नेलेण नो तुल्ला विसेसाहिया नो सखेजगुणा, वित्यारेण नो तुल्ला विसेसहीणा णो सखेजगुणहीणा । दोचा ण भते ! पुढवी तच पुढविं पणिहाय बाह्हेण कि तुहा एव चेव भाणियव्व । एव तचा चउतथी पचमी छट्टी । छट्टी ण भते । पुढवी सत्तम पुढविं पणिहाय वाहलेण कि तुल्ला विसेसाहिया सखेजगुणा <sup>2</sup> एव चेव भाणियव्व । सेव भते ! २ ॥ ८० ॥ पढमो नेरइयउद्देसो समत्तो॥

कइ ण भते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ १ गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तजहा-रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्प० पु० असी-उत्तरजोयणसयसहस्सवाहलाए उविर केवइय ओगाहित्ता हेट्ठा केवइय विज्ञता मज्झे केवइए केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता १ गोयमा ! इमीसे ण रयण० पु० असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहलाए उविर एगं जोयणसहस्स ओगाहिता हेट्ठावि

एर्यं बोयगवहस्यं क्येता सन्त्रे अब्धत्तरी बोयगसवहस्या एर्व वं रस्वयमार् पु नरहनार्यं रीप निरमादासवसहस्यादं महितिफारबााया ॥ ठे वं वरणा अग्रे दश्च वाहिं चर्यराय जाव असुमा वरएस बेयजा एवं एएर्यं क्षसिम्पदेवं उनर्सुकिय

मानिकार्य ठाजप्यतालुवारियं जात्य वं बाह्यं वास्त्र वास्त्र वा नत्यायात्वरास्ट्र वा वा अदिरस्तात् पुत्रवीष्, माहानामाए माजिस्स केवाप् वह क्ष्युत्तरा माहान्यत्य पत्यात्ता पूर्व प्रिक्तस्य वायरेकार्य विद्या क्ष्युत्ता प्रवास क्ष्युत्त्र माहान्यत्य पत्यात्ता प्रविद्या व्यवस्था । ४१ ॥ इसीते वं मेशे । द्रव्यप्यमाए पुत्रवेष्ट्र पत्या विद्या व्यवस्था । ४१ ॥ इसीते वं मेशे । द्रव्यप्यमाए पुत्रवेष्ट्र पत्या विद्या व्यवस्था । ४१ ॥ इसीते वं विष्या पत्यात्ता प्रवास विद्या व्यवस्था । ४३ ॥ इसीते व्यवस्था विद्या विद्

पुरुवीर भरना केवार्य वास्त्रोर्ण पञ्चला है गोयसा ! विभिन्न जोयपस्त्र स्साई वास्त्रोर्ण पम्मता तंत्रका-हेद्रा बना सहस्यं मध्ये हासिरा खास्यं समि सञ्ज्ञा सहस्यं पर्न व्यव भद्रेपक्तमाए ॥ इसीचे वं भवे । रववप्य प्र भरमा केव्यनं भागामनिस्वांनेवं केनहर्व परिश्वेनेने प्रवत्ता ! योगमा ! दुविशा प्रव्यत्ता वंगहा-- एकेन्स्टिया य अस्थेयक्रियदा व तत्थ नं से ते संखेजकित्यहा से पं सथेजाई जोरमसहस्सर्प व्यामामकिन्द्रोतेण सक्षेत्राह बोयणसङ्ख्याई परिक्चेनेण पञ्चला सत्त्व में से वे माचिजनित्यका है ये अपेचेजाई जोयणसहरसाह मानासमिक्यसिम क्यांनेजारे कोवनसङ्गरसाई परिक्केनेने प्रव्यक्ता एवं जाव तमाए, अहेचतमाए वं संदे ! पुच्छा गोगमा बुविहा पञ्चला र्चजहा-- एंकेजनिस्ववं न असन्तेजनिस्ववा न सरव वं वे त स्वोजनित्वहे से पं एकं जोन्यसमसहस्यं आवाननिक्यानेण तिथि योगण-समसदस्सतं सोकस सहस्सतं बोबि य सत्तानीते जोयनसप् दिवि कोसे य नद्वानीस च भगुसर्य तेरस व अगुम्बर्ध अर्थगुम्बर्ग व विज्ञविभिसेसाहिए परिवयोनेर्न पञ्चते तत्व वं जे ते असंदेशविकात वं वं असंबेशकं जोयजसमस्यस्यतं भागामन विषयंगेणं अर्धवेश्रातं जाव परिक्षेत्रेणं पण्यता ॥ ८२ ॥ इतीसे ये मेरे । रजण-

प्पमाए पुढवीए नरया केरिसया वण्णेण पण्णत्ता<sup>२</sup> गोयमा! काला कालोभासा गमीरलोमहरिसा मीमा उत्तासणया परमिकण्हा वण्णेण पण्णत्ता, एव जाव अहेसत्त-माए ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरगा केरिसया गंधेण पण्णता 2 गोयमा ! से जहाणामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा सुणगमडेइ वा मजारमडेइ वा मणुरसमडेइ वा महिसमडेइ वा मूसगमडेइ वा आसमडेइ वा हित्यमडेइ वा सीहमडेइ वा वग्घमडेइ वा विगमडेइ वा दीवियमडेड वा मयकुहियचिरविणहुकुणिमवावण्ण-दुव्भिगघे असुर्विलीणविगयवीभत्थद्रिसणिजे किमिजालाउलससत्ते, भवेयारूवे सिया 2, णो इणहे समहे, गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्ती अणिद्वतर्गा चेव अकततर्गा चेव जाव अमणामतर्गा चेव गधेण पण्णता, एव जाव अहेसत्तमाए पुढवीए ॥ इमीसे ण भते! रयणप्प० पु० णरया केरिसया फासेण पण्णता<sup>2</sup> गोयमा! से जहानामए असिपत्तेइ वा खरपत्तेइ वा कलवचीरि-यापत्तेइ वा सितागेइ वा कुतगोइ वा तोमरगोइ वा नारायगोइ वा सूलगोइ वा ल्उलगोइ वा भिडिमालगोइ वा सूड्कलावेइ वा कवियच्छूइ वा विंचुयकटएइ वा इगालेइ वा जालेइ वा मुम्मुरेइ वा अचीइ वा अलाएइ वा सुद्धागणीइ वा, भने एयारूने सिया 2, णो इणहे समद्दे, गोयमा! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढनीए णरगा एत्तो अणिट्ठतरगा चेव जाव अमणामतरगा चेव फासेण पण्णत्ता, एव जाव अहेसत्तमाए पुढवीए ॥ ८३ ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरगा केमहालया पण्णत्ता <sup>2</sup>गोयमा । अयण्ण जबुद्दीवे २ सव्वदीवसमुद्दाण सव्वब्भतरए सन्वखुर्राए वट्टे तेल्लापूवसठाणसिठए वट्टे रहचक्कवालसठाणसिठिए वट्टे पुक्खरकण्णि-यासठाणसिंठए वृहे पिंडपुण्णचद्सठाणसिंठए एक जोयणसयसहस्स आयामविक्ख-मेण जाव किचिविसेसाहिए परिक्खेवेण, देवे ण महिष्टिए जाव महाणुभागे जाव इणामेव इणामेवत्तिकटु इम केवलकप्प जबुद्दीव २ तिर्हि अच्छरानिवाएहिं तिसत्त-खुतो अणुपरियद्विताण हव्वमागच्छेजा, से ण देवे ताए उक्किद्वाए तुरियाए चवलाए चडाए सिम्घाए उद्भुयाए जयणाए छेयाए दिव्वाए दिव्वगईए वीइवयमाणे २ जहण्णेण एगाह वा दुयाह वा तियाह वा उक्कोसेण छम्मासेण वीइवएजा, अत्थेगइए वीइवएजा अत्थेगइए नो वीइवएजा, एमहालया ण गोयमा! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए णरगा पण्णत्ता, एव जाव अहेसत्तमाए, णवरं अहेसत्तमाए अत्थेगइय नरग वीइवएजा, अत्थेगइए नरगे नो वीइवएजा ॥ ८४ ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरगा किंमया पण्णत्ता  $^{\it 2}$  गोयमा ! सञ्ववइरामया यण्णत्ता, तत्थ ण नरएसु वहवे जीवा य पोग्गला य अवक्रमति विउक्षमति चयति

मोसना! आरम्पेमं एको वा दो वा दिश्वि वा उद्योगेमं सकेना वा असंकेना वा

वस्त्रकांति एवं नाव अहेरातमाए ॥ इसीरो यं गेता ! रावचार पुढवीए वेएस्सं स्थाप स्वार्त्तात्तात्रा कार्यात्तात्ता केरात्रकेष व्यवस्त स्वार्त्त । स्वार्त कार्यात्तात्ता कार्यात्तात्ता स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त । स्वार्त में संवर्त ने संवर्त कार्यात्तात्त्रात्ता स्वार्त्त । स्वार्त स्वर्त स्वार्त स्वार्त स्वर्त स्वार्त स्वार स्वार्त स्वार्त स्वार्त स्वर्त स्वार्त स्वार्त स्वार्त स्वार स्वार्त स्वार स्वार्त स्वार्त स्वार स्वार स्वार्त स्वार स्वार्त स्वार स्वार स्वार स्वार्त स्वार स्वार स

ब्युरमार्त, इद्वीप मनभारिका अङ्गादकारं प्रमुख्यतं उत्तरवेठिका पंतपस्तः मार्च, सत्तामा सम्बादिकामा पंतपस्त्रसम्बद्ध उत्तरवेठिका ब्रह्मसस्य ॥ ८६ ॥ इसीसे से मेटे ! त्वापण पु सेरहमार्थ स्थापता क्रियंक्यकी प्रकार रोगार्थ स्थापता स्थाप अहेसत्तमाए ॥ इमीसे ण भते ! रयण० पु० नेरइयाण सरीरा किसठिया पण्णता 2 गोयमा ! दुविहा पण्णता तजहा-भवधारणिजा य उत्तरवेउव्विया य, तत्थ ण जे ते भवधारणिजा ते हुङसठिया पण्णता, तत्थ ण जे ते उत्तरवेउव्विया तेवि हुडसठिया पण्णत्ता, एव जाव अहेसत्तमाए ॥ इमीसे ण भते ! रयण० पु० णेर-इयाण सरीरगा केरिसया वण्णेण पण्णत्ता 2 गोयमा! काला कालोभासा जाव परमिकण्हा वण्णेण पण्णत्ता, एवं जाव अहेसत्तमाए ॥ इमीसे ण भते रयण० पु० नेरइयाण सरीरया केरिसया गधेण पण्णता <sup>2</sup> गोयमा! से जहानामए अहिमडेइ वा तं चेव जाव अहेसत्तमा ॥ इमीसे ण भते ! रयण० पु० नेरइयाण सरीरया केरिसया फासेण पण्णत्ता ? गोयमा ! फुडियच्छविविच्छविया खरफरसझामझुसिरा फासेण पण्णता, एव जाव अहेमत्तमा ॥ ८७ ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए गेरइयाण केरिसया पोग्गला ऊसासत्ताए परिणमति <sup>2</sup> गोयमा ! जे पोग्गला अणिट्ठा जाव अमणामा ते तेसिं ऊसासत्ताए परिणमति, एवं जाव अहेसत्तमाए, एवं आहारस्तिव सत्तसुवि ॥ इमीसे ण भैते ! रयण० पु० नेरइयाण कह लेसाओ पण्णताओ १ गोयमा ! एका काउलेसा पण्णता, एव सक्ररप्पभाएऽवि, वालुयप्पभाए पुच्छा, गोयमा ! दो लेसाओ पण्णताओ त०—नीललेसा य काउलेसा य, तत्थ जे काउलेसा ते बहुतरा जे णीललेस्सा पण्णता ते थोवा, पंकप्पभाए पुच्छा, एका नीललेसा पण्णत्ता, बूमप्पभाए पुच्छा, गोयमा ! दो लेस्साओ पण्णत्ताओ, तजहा-किण्हलेस्सा य नीलळेस्सा य, ते बहुतरगा जे नीललेस्सा, ते थोवतरगा जे किण्ह-ठेसा, तमाए पुच्छा, गोयमा ! एका किण्हलेस्सा, अहेसत्तमाए एका परमिकण्ह-ळेस्सा ॥ इमीसे ण भते ! रयण० पु० नेरइया किं सम्मदिट्टी मिच्छादिट्टी सम्मामि-च्छादिद्वी १ गोयमा । सम्मदिद्वीवि मिच्छादिद्वीवि सम्मामिच्छादिद्वीवि, एव जाव अहे-सत्तमाए ॥ इमीसे ण भते ! रयण० पु० णेरइया कि नाणी अण्णाणी १ गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि, जे णाणी ते णियमा तिणाणी, तजहा—आमिणिवोहियणाणी स्यणाणी ओहिणाणी, जे अण्णाणी ते अत्येगइया दुअण्णाणी अत्येगइया तिअ-न्नाणी, जे दुअन्नाणी ते णियमा मइअन्नाणी य सुयअण्णाणी य, जे तिअन्नाणी ते नियमा मङ्अण्णाणी सुयअण्णाणी विभगणाणीवि, सेसा ण णाणीवि अण्णाणीवि तिण्णि जाव अहेसत्तमाए॥ इमीसे ण भते ! रयण० पु० किं मणजोगी वइजोगी कायजोगी ? गों । तिण्णिव, एव जाव अहेसत्तमाए ॥ इमीसे ण भते । रयणप्पभापु० नेरइया किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता 2 गोयमा। सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि. एव जाव अहेसत्तमाए पुढवीए ॥ [इमीसे ण भते । रयणप्प० पु० नेरइया ओहिणा

इस्में क्षेत्रं वार्णले पार्वति । वासमा व्यव्यव्यव्यक्षित् व्यक्ति वार्णले वा

मंद्रमा गुह्रणिवासे पवसुमवमाना विश्वरेशि एवं आव बहेसतमाए ।। इमीसं पं

भंव । रवनप्रभाए यु नेरह्या कि एयत प्रभू विज्ञवित्त सुनुर्गाप पर्यू विज्ञवित्त एवर्ग प्रमुप्त पर्यू युक्तपि प्रमू विज्ञवित्त एयतं विज्ञवित्त प्रमू विज्ञवित्त प्रमू विज्ञवित्त प्रमू विज्ञवित्त एयतं विज्ञवित्त प्रमू विज्ञवित्त प्रमू विज्ञवित्त प्रमू विज्ञवित्त वित्त विज्ञवित्त वित्त व

त्रकारी आज हर्गियाण ॥ उसीश का भेत स्वास्त्रा में प्रकार के जिल्ला है बीदना प्रकार अस्ति अ

वेयणं वेदेंति, एव अहेसत्तमाए णवरं परमसीय ॥ इमीसे ण मते ! रयणप० पु० णेरइया केरिसय णिरयभवं पचणुभवमाणा विहरति <sup>२</sup> गोयमा ! ते ण तत्य णिच मीया णिच तिसया णिच छुहिया णिच उव्विग्गा निच उपप्पुया णिच वहिया निच परममसुभमञ्लमणुबद्ध निर्यभव पचणुभवमाणा विहरंति, एव जाव अहेसत्तमाए ण पुढवीए पच अणुत्तरा महइमहालया महाणरगा पण्णता, तजहा—काले महाकाले रोक्ए महारोक्त् अप्पइद्वाणे, तत्थ इमे पच महापुरिसा अगुत्तरेहिं दडसमादाणेहिं कालमासे काल किचा अप्पइट्टाणे णरए णेरइयत्ताए उववण्णा, तजहा—रामे जमदग्गिपुत्ते, दढाऊ लच्छइपुत्ते, वसू उवरिचरे, सुभूमे कोरव्वे, बभदत्ते चुलणिसुए, ते ण तत्य नेरइया जाया काला काली० जाव परमिकण्हा वण्णेणं पण्णत्ता, तजहा-ते ण तत्थ वेयण वेरेंति उज्जल विउल जाव दुरहियास ॥ उसिणवेयणिजेसु ण मते! णरइएसु णेरइया केरिसयं उसिणवेयण पचणुभवमाणा विहरंति ? गोयमा! से जहाणामए कम्मारदारए सिया तरुणे बलव जुगव अप्पायके थिरगग्रहत्थे दढ-पाणिपायपासिपद्वतरोरुसघायपरिणए लघणपवणजवणवग्गणपमद्दणसमत्थे तलजमल-ज्यलबहुफलिह्णिमवाहू घणणिचियवलियवृहखंघे चम्मेट्टगदुहणमुद्दियसमाह्यणिचिय-गत्ते उरस्सवलसमण्णागए छेए दक्खे पट्टे कुसले णिउणे मेहावी णिउणसिप्पोवगए एग मह अयपिंड उदगवारसमाणं गहाय तं ताविय ताविय कोष्टिय कोष्टिय उन्मि-दिय उदिभदिय चुण्णिय चुण्णिय जाव एगाह वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं अद्भास सहणेजा, से ण तं सीय सीईभूय अओमएण सदंसएण गहाय असन्भाव-पडवणाए उसिणवेयणिजेषु णरएसु पिक्ववेजा, से ण तं उम्मिसियणिमिसियतरेण पुणरिव पचुद्धिरस्सामित्तिकर्टु पविरायमेव पासेजा पविलीणमेव पासेजा पविद्धत्थमेव पासेजा णो चेव ण सचाएइ अविराय वा अविलीण वा अविद्धत्यं वा पुणरवि पचुदारित्तए ॥ से जहा नामए मत्तमातगे दुपए कुजरे सिट्टहायणे पढमसर्यकाल-समयसि वा चरमनिद्धिकालसमयसि वा उण्हाभिद्दए तण्हाभिद्दए दविग्गिजालाभिद्दए आउरे सुसिए पिवासिए दुव्वले किलते एक महं पुक्खरिणि पासेजा चाउक्कोण समतीर अणुपुव्वसुजायवप्पगमीरसीयलजल सछण्णपत्तभिसमुणाल वहुउप्पलकुमुय-णिलणसुभगसोगधियपुडरीयमहापुडरीयसयपत्तसहरूसपत्तकेसरफुल्लोवचिय छप्पयपरि-भुजमाणकमल अच्छविमलसलिलपुण्ण परिहृत्यभमतमच्छकच्छमं अणेगसङ्गगण-मिहुणयविरइयसहु अङ्यमहुरसरणाइय त पासड त पासित्ता तं ओगाहइ ओगाहित्ता से ण तत्य उण्हिपि पविणेजा तण्हिपि पविणेजा खुहिपि पविणेजा जरिप पवि० दाहिप पवि॰ णिहाएज वा पयलाएज वा सइ वा रइ वा धिइ वा मइ वा उवलभेजा,

मुणागसे विश्व विद्याला पंडसमाचे सामाधीनलाड्ड मानि विद्याला एवानेन ग्रेममा अस्पनाल पंडसमाचे सामाधीनलाड्ड मानि विद्याला एवानेन ग्रेममा अस्पनालपुत्रवाण उत्तर्वक्षमिकिक्दितो कराष्ट्रितो केराहर उन्तरित्र माना आई मार्ड मानुस्त्रकार्यक्षि वार्वित पंडियास्थिति वार्वित्रास्थिति वार्वे विद्यालयित् वार्वे वार्याण्यीत् वार्वे विद्यालयित् वार्याण्यीत् वार्वे विद्यालयित् वार्याण्यीत् वार्वे वार्यालयित् वार्यालयित्र वार्यालयित् वार्यालयित्र वार्यालयित् वार्यालयित्र वार्यालयास्थिति वार्यालयास्थिति वार्यालयास्थिति वार्यालयास्य वार्याल

पन्नसाएम ना गई वा रह वा चित्र वा यह वा उक्तमंत्रा वीए वीकपूर जम्म मांचे पंकराने वावाधोमकबुके वालि बिद्दामा भवेतावये विवार ने वह वह स्वाम प्रेयाना। उत्तिवस्य मेने प्राप्त एता वालि स्वाम विवार ने विवार

तब्दीप पत्रिकेमा सहीप पत्रियेमा वर्शप परिकेमा शहीप पत्रिकेमा विहाएन ग

पण्डारितात्, व च व वाहापालय् सान्तासंगे ताहेब बार वीस्प्यत्युक्त वाहि विदेश्य एवामव गांवता अवस्थारयहुरुवाय् वीस्थ्यलद्वियो चरप्रदेशो नरस्य उर्जाप्त स्थापन वर्ष इसार इस मार्ग्यसम्पर् वर्षेत्री दौन्हाः—विवाधि वा विसर्वेजार्वि वा दिस्परक्तार्व वा दिस्परस्युज्ञाचि या नुष्याराणि वा नुष्यार्युज्ञाचि वा दिस्पुंडार्वि वा दिस्पुंडपुंज्ञाचि वा वीद्यानि वा ताहै पायद पाविता ताई अध्याद्द आगार्विता व व त्यस वीत्रित् यर्गण्या त्यस्यि व पुरिष य जिपिय व त्यस्थि व तिराप्त्र वा प्रकारण का प्राप्त वाचित्रवर्षि व पुरिष य जिपिय व त्यस्थि व तिराप्त्र वा प्रकारण का प्राप्त विवस्त्रवित्रवेषु स्थापाल व स्थापाल वासार्थ्यसङ्घल वास्प्र पदनुस्त्रवारा वादमा वीवस्त्रवित्रवेषु वरस्य वस्त्रवा एगो अस्तिकृत्यं पर वीवस्थनं पदनुस्त्रवारा विद्यास्थ्री ॥ ८९॥ इत्रीत्र व अतः दश्याप्त्र पुरस्ति वरस्त्रवे पर वीवस्थनं काल ठिई पण्णता 2 गोयमा । जहण्णेणवि उक्कोसेणवि ठिई भाणियव्वा जाव अहेसत्त-माए ॥ ९० ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पु० णेरइया अणतरं उव्वद्धिय किंह गच्छति <sup>२</sup> किं उववज्जिति <sup>२</sup> किं नेरइएस उववज्जिति <sup>२</sup> किं तिरिक्खजोणिएस उननजाति १ एवं उञ्बद्दणा भाणियव्वा जहा वक्कतीए तहा इहवि जाव अहेसत्तमाए ॥ ९१ ॥ इमीसे ण भंते ! रयण० पु० नेरइया केरिसय पुढविफास पश्चणुभवमाणा विहरंति २ गोयमा । अणिद्धं जाव अमणाम, एव जाव अहेसत्तमाए, इमीसे णं भते !, रयण० पु॰ नेरइया केरिसय आउफास पचणुभवमाणा विहरति  $^{2}$  गोयमा ! अणिट्ठ जाव अमणाम, एव जाव अहेसत्तमाए, एव जाव वणप्पइफास अहेसत्तमाए पुढवीए। इमा ण भंते ! र्यणप्पसापुढवी दोच पुढिंव पणिहाय सन्वमहंतिया बाह्छेण सन्व-क्ख़िशा सञ्चतेस् <sup>२</sup> हता गोयमा ! इमा ण रयणप्पभापुढवी दोच पुढविं पणिहाय जाव सन्वक्खुरिया सन्वतेसु, दोचा ण भंते ! पुढवी तच पुढविं पणिहाय सन्वमह-तिया वाह्नेण पुच्छा, हंता गोयमा ! दोचा ण पुढवी जाव सव्वक्खांहुया सव्वतेसु, एव एएण अभिलावेण जाव छद्विया पुढवी अहेसत्तम पुढविं पणिहाय सव्वक्खुड्डिया सव्वतेसु ॥ ९२ ॥ इमीसे णं भते ! रयणप्प० पु० तीसाए नरयावाससयसहस्सेसु इकमिकास निरयावासिस सन्वे पाणा सन्वे भूया सन्वे जीवा सन्वे सत्ता पुढवीकाइय-त्ताए जान नणस्सइकाइयत्ताए नेरइयत्ताए उननन्नपुन्ना <sup>२</sup> हता गोयमा ! असइ अदुना अणतखुत्तो, एव जाव अहेसत्तमाए पुढवीए णवर जत्य जित्या णरगा [ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पु॰ निरयपरिसामतेम्च जे पुढविकाइया जाव वणप्फइकाइया ते ण भते । जीवा महाक्रमतरा चेव महािकरियतरा चेव महाआसवतरा चेव महा-चैयणतरा चेव <sup>२</sup> हता गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसा-मतेस त चेव जाव महावेयणतरा चेव, एव जाव अहेसत्तमा ] ॥ ९३ ॥ पुढविँ ओगाहिता, नर्गा सठाणमेव वाहल । विक्खमपरिक्खेवे वण्णो गधो य फासो य ॥ १ ॥ तेसिं महालयाए उनमा देवेण होइ कायव्वा । जीवा य पोग्गला वष्टमति तह सासया निरया ॥ २ ॥ उनवायपरीमाण अनहारुचत्तमेन सघयण । सठाणनण्ण-गवा फासा ऊसासमाहारे ॥ ३ ॥ छेसा दिड्डी नाणे जोगुवओंगे तहा समुग्चाया । तत्तो खुहापिवासा विउन्वणा वेयणा य भए ॥ ४ ॥ उववाओ पुरिसाण ओवम्म वेयणाऍ दुविहाए । उन्नदृणपुढनी उ उववाओ सन्त्रजीवाण ॥ ५ ॥ एयाओ सग-हणिगाहाओ ॥ ९४॥ वीओ णेरइयउद्देसो समत्तो ॥

इमींसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसय पोग्गलपरिणाम पचणु-भवमाणा विद्दति <sup>१</sup> गोयमा ! अणिट्ठ जाव अमणाम, एव जाव अहेसत्तमाए एवं १० सुत्ता० स्दापितासा स नाही य ॥ १ ॥ सरसासे सम्द्राने कोई माने य मानकोने व । नागिर य सम्बन्धी नरदानां हु परिचाने ॥ २ ॥ एवन किर स्वत्रकोरी दरस्यम केरमा सम्बन्धा न । मेनकिया राखानों ने य महास्वनेदीनी ॥ १ ॥ मिनसुन्दीन नरपुन् होद रिरियमञ्जूषु स्वारि । वेलेड सदमासी त्रदोशनितम्बाना मनिया ॥ ४ ॥ में पोमम्बा सन्दिद्ध निक्या को संबि होद साहारो । स्वत्रानं हु कोर स्वर्धनेत्र विस्ता हुने हुन नावन्ने ॥ ५ ॥ बहुमा निक्यानां स्वह नेरहानां दू होर स्वर्धनेत्र विस्ता हुने हुन सरको ॥ ५ ॥ बहुमा निक्यानां स्वर्धनेत्र स्वर्धनेत्र भी

चनम् निरम्भरं । सम्पपुरवीत् श्रीयो सम्बेद्ध शिवनितेतेतुं ॥ ४ तरबाय्य र सर्ने नेरम्भो नेम्कमुप्पा वानि । अञ्चलसामित्रितं बाह्य क्रमासुमानित । ० । तर रामुप्पानी त्वोतं पंत्रवोत्तमस्यातं । तुस्त्रवानितुत्वानं पंत्रवस्यस्यातां ॥ ८ मे क्रम्बिनितिक्रमेले तरित्र दुवै सुरुवमेल परिकर्षः । तरण् नेरम्बारं क्रमिन्स

तिरि १९ दुनिया प्रण्या। तेम्बा—प्रमासद्वाम अरुमारस्कृत से तं स्तुत्त ।

वे कि तं धामरपुर्विकाहन १९ दुनिया क्लाता। तेम्बा—प्रमास्त्रास्य अपनसमायपु से तं बामरपुर्विकाल प्रश्निया क्लाता। तेम्बान्यस्त्रास्य । वे कि
से आजवादनप्रिमित १९ दुनिया प्रण्याता। एवं स्त्रेष पुर्विकास्त्रामं तदेव
तेम्बान्यस्त्रास्य क्लात्यस्त्रस्य से तं क्लास्यस्यस्य प्रमासिनितिरेक्यः । से कि
तं केम्बान्यस्त्रितिरूपः १९ दुनिया प्रण्याता तेम्बा—प्रमासकेशियां। अरुमान्य-

वेइदियति॰, से त वेइदियतिरि॰ एव जाव चउरिंदिया। से कि त पर्चेदियतिरि-क्खजोणिया <sup>2</sup> २ तिविहा पण्णत्ता, तंजहा---जलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया थल-यरपचेंदियतिरिक्यजो॰ खह्यरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से िकं त जलयरपचेंदि-यतिरिक्खजोणिया 2 २ दुविहा पण्णता, तजहा—समुच्छिमजलयरपर्चेदियतिरिक्ख-जोणिया य गन्भवकंतियजलयरपचेदियतिरिक्खजोणिया य । से कि त समुच्छिम-जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया १ २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—पजत्तगसमुच्छिम • अपजत्तगसम्। छमजलयर्॰, से त समुच्छिम॰पचिंदियतिरिक्ख॰। से कि त गञ्भवक्षतियजलयरपचॅदियतिरिक्खजोणिया १ २ दुविहा पण्णता, तजहा--पजत-गगञ्भवक्षतिय० अपजत्तगगञ्भ० से त गञ्भवक्षंतियजलयर०, से तं जलयरपर्चेदि-यतिरि॰। से कि त थलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया १ २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा-चउप्यथलयरपचेदिय॰ परिसप्यथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से कि त चउ-प्पयथलयरपर्चिदिय॰ व चउप्पय॰ दुविहा पण्णता, तजहा—समुच्छिमचउप्पयथ-लयरपर्चेदिय० गव्भवक्षतियचउप्पयथलयरपर्चेदियतिरिक्खजोणिया य, जहेव जल-यराण तहेव चउक्कओ मेओ, सेत्त चउप्पयथलयरपर्चेदिय । से किं त परिसप्प-थलयरपचेदियतिरिक्ख॰ १ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—उरपरिसप्पथलयरपंचेंदि-यतिरिक्खजोणिया भुयपरिसप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से किं त उरपरिस-प्पथलयरपंचिदियतिरिक्खजोणिया <sup>१</sup> उरपरि० दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—जहेव जलयराण तहेव चडक्कओ मेओ, एव भुयपरिसप्पाणवि भाणियव्य, से त भुयपरि-सप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया, से त थलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया। से किं त खहयरपचेदियतिरिक्खजोणिया 2 खहयर० दुविहा पण्णत्ता, तजहा—समुच्छि-मखह्यरपचेंदियतिरिक्खजोणिया गब्भवक्षतियखह्यरपचेंदियतिरिक्खजोणिया य । से कि त समुच्छिमखहयरपचेदियतिरिक्खजोणिया <sup>१</sup> समु० दुविहा पण्णता, तजहा---पजत्तगसमुच्छिमखहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया अपजत्तगसमुच्छिमखह-यरपचेंदियतिरिक्खजोणिया य, एव गब्भवक्षतियावि जाव पज्जत्तगगब्भवक्षतियावि जाव अपजत्तगगनभवक्षतियावि । खह्यरपचेंदियतिरिक्खजोणियाण भते ! कहविहे जोणिसगहे पण्णत्ते २ गोयमा ! तिविहे जोणिसगहे पण्णत्ते, तजहा—अडया पोयया समुच्छिमा, अडया तिविहा पण्णत्ता, तजहा—इत्थी पुरिसा णपुसगा, पोयया तिविहा पण्णत्ता, तजहा--इत्थी पुरिसा णपुसया, तत्थ ण जे ते समुच्छिमा ते सन्वे णपुसगा ॥ ९६ ॥ एएसि ण भते ! जीवाण कइ छेसाओ पण्णताओ ? गोयमा। छह्नेसाओ पण्णत्ताओ, तजहा--कण्ह्ळेसा जाव सुक्कलेसा ॥ ते ण भते!

नमम्बं गाहा-पोम्मलपरिषामे वेयणा व केसा व नामगोए य । भरत्रे भए व सोगे **ब्र**्डापिकासा स बाही स ॥ ९ ॥ उस्सासे अनुताने कोहे माने स मानसोमे स । चतारि य सच्यामो नेरहवाचं तु परिणामे ॥ २ ॥ पुरूप किर अहवर्यसी धरवसमा केसवा कलपरा य । मंत्रकिया रायाणो जे य महारंसकोईवी ॥ ३ ॥ मिक्सुहत्तो **गरपुन होइ धिरियम्खुपुन्न जतारि । वंदेन्न अञ्च**नाची उन्होसन्दिन्नया मनिया ॥ ४ ॥ के पोम्पमा कामिक्स नियमा सो तेसि होह आहारो । सठार्ण <u>त</u> जाएका निवमा हुंबे तु नावर्क्न ॥ ५ ॥ असुमा बिउम्बमा यस नेरहमार्ज दु होइ सम्बेसि । वेतन्त्रियं सरीरं असंप्रयाद्वेतस्ताल ॥ ६ ॥ अस्ताओ तवकण्यो अस्ताओ केव चम्द्र निरयम्बं । सम्बपुरवित्य जीवो सम्बेख दिव्यिपेसंग्रं ॥ ७ ॥ उनवाएम व सार्य नेरहको बेक्कम्मण पनि । अञ्चलसाणनिमित्तं अवता कम्मालुभावेणं ॥ ४ ॥ नेर-इमक्त्रपाओ उजीस पंत्रजोसपरस्यक्षं । दुरुवनिमधुमाण नेपनसमस्यस्याहार्य ॥ ५ ४ सन्तिनीतिनीतिनमेत्तं नतिन छत्तं दुननामेव पविवर्द । नरए नरहवाणं अहोनिसं प्रवामाणार्थं ॥ १ - ध तेवाकम्मस्पीरा सुद्वमस्पीरा व जे वप्रवता । जीवेव मुद्धमेता क्वंदि सहस्तरों मेर्च ॥ ९९ ॥ आहरीने अहरूकों सहत्त्वा अहरूहा सहस्तरं ना १ निरए नेरहमार्च इनकासवाई अविस्तार्थ ॥ १२ ॥ एरप व निकसहता पोलाक अद्धहा म होह अस्तानो । उन्नवाभी अप्याभी अध्य सरीरा उ नाहम्मा ॥ १३ ॥ हे है नेएला ॥ ९५ ॥ शहको नेखयउद्देखी समस्रो ॥ से कि त तिरिक्य को विया ! तिरिक्य को विया पंजविद्या प्रवासा तैयहा-

बेइंदियति०, से तं बेइदियतिरि० एवं जाव चउरिंदिया। से कि त पंचेंदियतिरि-क्खजोणिया <sup>१</sup> २ तिविहा पण्णत्ता, तजहा—जलयरपर्चेदियतिरिक्खजोणिया थल-यरपर्नेदियतिरिक्खजो० सहयरपर्नेदियतिरिक्खजोणिया । से कि त जलयरपंर्नेदि-यतिरिक्खजोणिया १ २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—समुच्छिमजलयरपर्चेदियतिरिक्ख-जोणिया य गन्भवकंतियजलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया य । से किं त समुच्छिम-जलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिया <sup>१</sup> २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—पजत्तगसमुच्छिम० अपजत्तगसमु। छमजलयर०, से त समुच्छिम०पंचिदियतिरिक्ख०। से कि तं गञ्भवक्षतियजलयरप्चेंदियतिरिक्खजोणिया १ २ दुविहा पण्णता, तंजहा--पजत्त-गगन्भवक्कतिय० अपजत्तगगन्भ० से त गन्भवक्कतियज्ञलयर०, से त जलयरपंचेंदि-यतिरि॰। से किं त यलयरपर्चेदियतिरिक्खजोणिया १ २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा-चउप्पयक्यरपचेंदिय॰ परिसप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से कि त चउ-प्पयथलयरपचिंदिय॰ व चउप्पय॰ दुविहा पण्णता, तजहा—समुच्छिमचउप्पयथ-लयरपर्चेदिय । गञ्मवक्षतियचउप्पयथलयरपंचेदियतिरिक्खजोणिया य, जहेव जल-यराण तहेव चडक्कओ मेओ, सेत्त चडप्पयथलयरपचेंदिय । से कि त परिसप्प-थलयरपचेदियतिरिक्ख॰ २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—उरपरिसप्पथलयरपंचेंदि-यतिरिक्यजोणिया भुयपरिसप्पथलयरपचेदियतिरिक्खजोणिया । से कि त उरपरिस-प्पथलयरपचेदियतिरिक्खजोणिया <sup>१</sup> उरपरि० दुविहा पण्णत्ता, तजहा—जहेव जलयराण तहेव चडक्कओ मेओ, एव भुयपरिसप्पाणवि भाणियव्व, से त भुयपरि-सप्पथलयरपचेदियतिरिक्खजोणिया, से त थलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से कि त खह्यरपचिदयतिरिक्खजोणिया 2 खह्यर० दुविहा फणत्ता, तजहा—समुन्छि-मखह्यरपचेंदियतिरिक्खजोणिया गञ्भवक्षतियखह्यरपचेदियतिरिक्खजोणिया य । से कि त समुच्छिमखहयरपचेंदियतिरिक्यजोणिया <sup>2</sup> समु॰ दुविहा पण्णता. तजहा---पजनगसमुच्छिमखह्यरपचेदियतिरिक्खजोणिया अपजनगसमुच्छिमसह-यरपचिदियतिरिक्खजोणिया य, एव गञ्भवऋतियावि जाव पज्जत्तगगञ्भवक्षतियावि जाव अपज्जतगगन्भवक्रतियावि । सहयरपचंदियतिरिक्खजोणियाण भते ! क्इविहे जोणिसगहे पण्णते 2 गोयमा ! तिविहे जोणिसगहे पण्णते, तजहा—अउया पोयया समुच्डिमा, अडया तिविहा पण्णत्ता, तजहा—इत्थी पुरिसा णपुसगा, पोयया तिविहा पण्णता, तजहा—इत्थी पुरिसा णपुसया, तत्थ ण जे ते समुच्छिमा ते सन्वे णपुनगा ॥ ९६ ॥ एएति ण भते ! जीवाण वह छेषाओ पण्णताओ ? गोयमा ! छहेसाओ पण्णताओ, तजहा—कण्हलेसा जाव सुरूलेसा ॥ ते ण भते !

नकर्म गाहा-पोरमकपरिणामे वेवजा य केसा य नासपोए य । अरहे भए य माने 📆 पिनासा य भाही य ॥ १ ॥ उरसासे अनुसाभे कोहे माणे य मामकोम य । चतारि य सञ्चाओं नेरहयार्च तु परिणामे ॥ २ ॥ एत्य फिर अङ्बर्येसी बरबसमा केसवा करूपरा य । ग्रेडकिया रामाणी जे य महारंभकोडीबी छ ३ ४ भिक्तमहत्ती नरप्त होइ दिरियम्शुप्त बत्तारि । देनेमु अदमासी उन्होसमेउम्बना मन्दिना u v u ज पोमाका समिद्धा निसमा स्त्रे देशि होड् आहारी । संठानं त नहप्पी नियमा हुँ है तु पायम् ॥ ५ ॥ अनुभा निरम्पण कह नेरह्मानं तु होह सम्बेसि । बेटविवर्य सरीर असंबदवर्षंडस्टाकं ॥ ६ ॥ अस्याओ उपकृष्यो अस्याओ चन क्या निरम्मार्थ । सम्बद्धन्त्रीम जीवो सम्बेद्ध दिवसिरेसर्छ ॥ ७ ॥ उपवाएम व सार्थ नेरहको देवचन्त्रजा शामि । अञ्चलकाणनिमितं कदवा कमास्त्रनामेणं p < ॥ नर इबारुप्पाओं उद्दोस पंत्रकोशनसभाई । दुक्कोपशिहुपार्च नेवकसमसंस्थादार्च ॥ ९ ३ अच्छिनिमीतियमेत्तं शरित सुद्धं कुरवामेत पविवर्तः । नरए नेरहमाणं आहोनिसं प्रवासनार्थं ॥ १ ॥ तंबाक्रमस्रीत मुहुमस्रीत व वे वप्रवता । वीवेन महस्तत क्वंति सहस्तरो मेर्च ॥ १९ ॥ आइरीयं महत्वर्ष् आहत्वरा वहस्त्रहा सहसर्व वा । निरए बेरडवार्च व्यक्क्सवार्व अविस्तार्ग ॥ १२ ॥ एस्व य निक्सहत्तो पोमाक अस्ताः य होइ जस्साओ । उन्हाओ उप्पाओ अस्कि सरीरा स बोदामा ॥ १३ छ से ते नंदर्श ॥ ५५ ॥ तहसो नेरह्यउदेसी समस्ते ॥ चे कि तं तिरिक्काओविया <sup>३</sup> तिरिक्काओविया पंचनिका प्रध्यत्ता तंत्रका---एसिंदियतिरिक्ककोव्याः वेशीयगतिरिक्ककोवियाः तर्शीयगतिरिक्ककोवियाः चर्जरि

से कि से तिरिक्बाओक्या विरिक्षाओक्या रेक्क्या पंकासम् प्रप्ता त्रिक्या के कि से तिरिक्बाओक्या के विरिक्षा के विकास के विर्वाशिक्षा के विकास के विरामित के विकास के विरामित के विकास के

बेइदियति॰, से त वेइदियतिरि॰ एव जाव चर्डिंदिया। से कि तं पर्वेंदियतिरि-क्खजोणिया <sup>१</sup> २ तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—जलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया थल-यरपर्चेदियतिरिक्खजो० खहयरपर्चेदियतिरिक्खजोणिया । से किं त जलयरपंर्चेदि-यतिरिक्खजोणिया १ २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—समुच्छिमजलयरपर्चेदियतिरिक्ख-जोणिया य गन्भवकंतियजलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया य । से किं त समुच्छिम-जलयर्पचिंदियतिरिक्खजोणिया <sup>१</sup> २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—पजत्तगसमुच्छिम० अपजत्तगसमां छमजलयर०, से त समुच्छिम०पचिदियतिरिक्ख०। से किं तं गञ्भवक्षतियजलयरपर्चेदियतिरिक्खजोणिया १ २ दुविहा पण्णता, तंजहा--- पजता-गगन्भवक्षतिय० अपजत्तगगन्भ० से त गन्भवक्षतियजलयर०, से तं जलयरपर्चेदि-यतिरि॰। से किंत थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया  $^2$  २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा— चउप्पयल्व्यरपचेंदिय० परिसप्पथल्वयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से किं त चउ-प्पयथलयर्पंचिंदियः व चलप्पयः दुविहा पण्णता, तजहा-समुच्छिमचलप्पयथ-लयरपचेंदिय० गब्भवक्कतियचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया य, जहेव जल-यराण तहेव चउक्कओ मेओ, सेत चउप्पयथलयरपर्चेदिय०। से कि त परिसप्प-थलयरपचेंदियतिरिक्ख॰ १ द दुविहा पण्णत्ता, तजहा—उरपरिसप्पथलयरपंचेंदि-यतिरिक्खजोणिया भुयपरिसप्पथलयरपचेदियतिरिक्खजोणिया । से कि त उरपरिस-प्पथलयरपचेदियतिरिक्खजोणिया १ उरपरि० दुविहा पण्णत्ता, तजहा---जहेव जलयराण तहेव चडक्कओ मेओ, एव भुयपरिसप्पाणिव भाणियव्वं, से त भुयपरि-सप्पथलयर्पचेंदियतिरिक्खजोणिया, से त थलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया। से किं त खहयरपचंदियतिरिक्खजोणिया 2 खहयर० दुविहा पण्णत्ता, तजहा-समुच्छि-मखह्यरपचेंदियतिरिक्खजोणिया गव्भवक्षतियखह्यरपंचेदियतिरिक्खजोणिया य । से कि त समुच्छिमखहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया<sup>2</sup> समु० दुविहा पण्णता. तजहा---पजनगसमुच्छिमखह्यरपचेंदियतिरिक्खजोणिया अपजनगसमुच्छिमखह-यरपचिदियतिरिक्खजोणिया य, एव गब्भवक्षतियावि जाव पज्जत्तगगब्भवक्षंतियावि जाव अपज्जत्तगगन्भवक्कतियावि । खहयरपचेंदियतिरिक्खजोणियाण भते ! कइविहे जोणिसगहे पण्णते १ गोयमा ! तिविहे जोणिसगहे पण्णते, तजहा—अडया पोयया समुच्छिमा, अङया तिविहा पण्णता, तजहा—इत्थी पुरिसा णपुसगा, पोयया तिबिहा पण्णता, तजहा—इत्थी पुरिसा णपुसया, तत्य ण जे ते समुच्छिमा ते सन्वे णपुसगा ॥ ९६ ॥ एएसि ण भते ! जीवाण कह छेसाओ पण्णताओ ? गोयमा! छहेसाओ पण्णताओ, तजहा—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा ॥ ते ण भते!

द्वीन सम्मानिकारिद्वीन ॥ ते नै भंत ! जीवा कि जाजी कन्नाची ! गोगमा ! जाजीवि सञ्चानीति दिण्यि कामाह विभिन्न सन्मानहं सम्भार ॥ वे जं संद ! जीवा कि मनकोरी बहुकोगी कायकोगी ! गोयमा ! तिबिहानि ॥ ते नं मंत ! बीना कि सायारोबदत्ता अवायारोबदत्ता । गोथया । सामारोबदत्तावि अवागारोबदत्तावि ॥ ते भ मंदे! जीवा कमो उनक्मंति कि नेरह्मशिदो उन दिरिक्समोभिए।[दिदो उद ! एच्छा गोनमा! असंकेजवासातवश्यकमभूमगर्गतर्शवश्यकेर्वितो उद-क्यंदि ॥ सेहि नं संते । जीवानं केनहर्य कार्क क्रिक्ष पण्यता । गोसमा । उद्युज्येनं भरोमहत्त् उद्योसेषं परिश्लोदमस्य असंबेज्जमार्ग ॥ देखि वं भेते ! जीवार्ण का समुरवामा पञ्चला रे गोममा । पंच समुरवामा पञ्चला संबद्धा-विम्यासमुरवाप जाद देगास्त्ररकार n से जं मंद्र ! जीवा मार्खंदियस्तरकारणं कि समोहवा मर्पति <del>व्यवसोदाना सर्पति ।</del> गोयमा ! समोदायानि म असमोदायानि सर्पति ॥ ते में मेर्दे । जीवा समेदरे सम्बद्धिता कहि गच्छति ! कहि समर्गादी !—कि सरहरूस उनकर्यति ! तिरिक्ख पुष्का मीयमा ! एवं उन्बद्धमा मामिसम्बा बद्दा वर्षतीए तहेव II देखि वं मंदे ! जीवार्य का व्याद्विक्योविक्योवीयमुहस्यसहस्सा पन्नता ! गोयमा ! बारस व्याक्त्रमध्येत्रीकोषीपमुद्यस्यस्या प ॥ सुवपरिस्ययस्य एपँवेदिय-तिरिक्स मोमिना में गंते ! स्वामेहे योजीसपहे पण्यते ! योजमा ! तिमिहे बोजीसंगहे पञ्जते तंबहा-भवना पोक्या पेमुव्यिमा एव वहा सहनरामं तहेन पानतं कारोगं अठोसुदूर्त उद्योगेन पुरुषकोधी जन्महिता दोनं पुर्वार शब्दंदि जन बाहेडून-कोबीबोबीएसइएवसहरसा भनेतीति भववार्य सेस तहेव ॥ एरपरिसप्पथस्यरपर्ने-मिमतिरिक्तामोनिमानं मेरो । पुत्रका बहेव सुमगरिसप्यानं सहेव नवरं दिई वह बेम मंत्रोसक्तं उद्योसेणं पुरुषकोडी समाहिता बाब पंचनि पुरुषि राष्ट्रंति इस बाई-**अ**क्योमी ॥ चटप्पनक्यनरपंत्रियतिरिक्या पुषका गोयमा! दुनिहे क्यते त्रवहा— कराज्या (पोनना) न संमुख्यिमा न से कि तं व्यक्तवा (पोनवा) है २ विनिधा फणता रीनदा- बरबी प्रतिसा पर्यसमा तरन में के से सेमुक्तिमा ते सम्बे पर्युक्ता। राधि में मंते! जीवामें कह केरवाओ पन्यताओ! सेस नहा पन्नवीर्थं भावतं ठिईं व्यावेर्थं व्यतेस्पृष्टुतं उद्योरेर्थं तिथि पविषयेक्साहं, उच्यतिता न्यतित पुर्वति शर्वाति वस वाहेकुक्यतेये ॥ वस्त्रत्पविद्यतितितस्यामित्यार्थं पुच्छा बहा भुमपरिसप्पाणं जनरं सम्बद्धिता बान आहेसत्तमं प्रवर्ति सद्धतरस बार्ड्सकोडीबोधीपमुद्द प ॥ चतरिविवाणं भंते ! अब वार्ड्डककोडीबाधीप-

मुह्त्सयसहस्सा पण्णता <sup>१</sup> गोयमा! नव जाईकुलकोबीजोणीपमुह्तसयसहस्सा सम-क्खाया । तेइदियाण पुच्छा, गोयमा! अट्ठजाईकुल जाव मक्खाया । वेइदियाण भंते! कइ जाई० पुच्छा, गोयमा! सत्त जाईकुलकोबीजोणीपमुह० ॥ ९० ॥ कइ ण भते! गघा पण्णता 2 कइ ण भंते! गधसया पण्णता 2, गोयमा! सत्त गधा सत्त गधसया पण्णता ॥ कइ ण मते । पुष्फजाईकुलकोढीजोणिपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता १ गोयमा ! सोलसपुष्फजाईकुळकोबीजोणीपमृहसयसहस्सा पण्णत्ता, तजहा— चतारि जलयाण चतारि थलयाण चतारि महारुक्खियाण चतारि महागुम्मियाणं ॥ कड़ ण मते। बहीओ कड़ बहिसया पण्णता १ गोयमा। चत्तारि बहीओ चत्तारि वहीसया पण्णता ॥ वह ण भंते । लयाओ वह लयासया पण्णता 2 गोयमा ! अह लयाओ अट्ठ लयासया पण्णता ॥ कइ ण भते ! हरियकाया हरियकायसया पण्णता 2 गोयमा! तओ हरियकाया तओ हरियकायसया पण्णता, फलसहस्स च विटवद्धाण फलसहस्स च णालवद्धाण, ते वि सञ्चे हरियकायमेव समोयरति, ते एव समणुगम्म-माणा २ एव समणुगाहिज्जमाणा २ एव समणुपेहिज्जमाणा २ एव समणुचितिज्जमाणा २ एएमु चेव दोसु काएमु समोयरंति, तजहा-तसकाए चेव थावरकाए चेव, एवा-मेव सपुन्वावरेण आजीवियदिद्वतेण चउरासीइ जाइकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा भवतीति मक्खाया ॥ ९८ ॥ अत्यि ण भते । विमाणाइ सोत्थियाणि सोत्थियावत्ताइ सोत्यियपभाइ सोत्यियकन्ताइ सोत्यियवन्नाइ सोत्यियलेसाई सोत्यियज्झयाई सोत्थियसिंगाराइ सोत्थियकुडाइ सोत्थिय<mark>सिद्वा</mark>ड सोत्थुत्तरवर्डिसगाइ<sup>१</sup> हता अत्थि । ते ण भते! विमाणा केमहालया प० 2 गोयमा! जावइए ण स्रिए उदेइ जावइए ण च स्रिए अत्थमइ एवइयाइ तिण्णोवासतराइ अत्थेगइयस्स देवत्स एगे विक्कमे सिया. से ण देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे २ जाव एगाह वा दुयाह वा उक्कोसेण छम्मासा वीईवएजा, अत्थेगइया विमाण वीईवएजा अत्थेगइया विमाण नो वीईवएजा, एमहाल्या ण गोयमा! ते विमाणा पण्णता, अत्थि ण भते ! विमाणाइ अचीणि अचिरावताइ तहेव जाव अच्चतरवर्डिसगाइ ? हता अस्यि, ते ण भते! विमाणा केमहालया पण्णता? गोयमा! एव जहा सोरथी-(याई)णि णवर एवइयाइ पच उवासतराइ अत्थेगइयस्स देवस्स एगे विक्रमे सिया सेस त चेत्र ॥ अत्थि ण भते ! विमाणाइ कामाड कामावत्ताइ जाव कामुत्तरवर्डिस-याइ र हता अत्यि, ते ण भते ! विमाणा नेमहालया पण्णत्ता र गोयमा ! जहा सोत्थीणि णवर सत्त उवासतराइ विक्रमे सेस तहेव ॥ अत्य ण भते विमाणाइ विजयाइ वेजयताइ जयताइ अपराजियाइ? हता अत्थि, ते ण भते ! विमाणा क्रे॰ ? गोयमा !

बाक्ए पं धूरिए उनेप्र एक्स्नाई वन ओवाधेतराई, वेसे ते केन मा केन पं ते विमाने वीकिएका एक्सका के ते विभागा प्रकाश ध्रमणाउसी। ॥ ९९ ॥ पदमो तिरिक्काओणियउद्देशो समाची ॥

ब्बनिया जे सेते ! सेसारसमाक्ष्यमा जीवा पण्यता है योगमा ! स्टिन्हा पञ्चता र्रमहा-पुरुषिकाह्ना जान तसकाह्या । से कि वै पुरुषिकाह्ना ! पुरुषिकाह्ना दुसिहा पञ्चला तंत्रहा-सहसपुरविकाह्या नागरपुरविकाह्या य । से कि ले सुद्व मपुर्वनिश्रह्मा १ २ तुमिहा पण्यता तंत्रहा-पजतगा व अपजतगा व सेते सुद् मपुर्वविकास । से विंद से बानस्पत्रविकासमा है २ इतिका सम्बन्धाः संबन्धाः प्रवासमा य व्यवसाया य एवं बहा पञ्चवधापय, सब्दा सत्तविहा पञ्चला उत्तर अनेयनिहा पकता जार असंकेजा सेर्च वायरपुरविकारना सेर्च पुरविकारना एवं भेन कहा पण्यबंगापं तहेव निरक्तरं मानियनं जाव वजप्रश्रकादया एवं बाव करयंगी तरप क्षिप पंक्षेत्रा क्षिप व्यक्षेत्रज्ञा क्षिप वर्षाता . ऐतं वागरवपन्यवस्था है तं क्यस्तरकारमा । से कि तं तसकारमा ? यजकार प्रकार प्रकार तंत्रहा नेर्द्रास्म देईबिया पर्वरिविता प्रचविता। से कि वे बेईबिया है २ अवेगनिका प्रवक्ता एवं र्व केर पञ्चवनापर ते केर निरक्तेतं आधिवर्ण बाद समहारिद्धमदेशा से तं अनुकारोक्यास्या से ते देवा से तं पंचेत्रिया से तं तसकावना ॥ १ ॥ **पद**िका पं मंते ! प्रक्रो पञ्चला ! गोसमा ! श्रामिका प्रक्री पञ्चला लंबका - पञ्चापकी सद्भवनी नास्त्वापुरुवी मजोसिन्यप सक्तराप करपुरुवी ॥ सन्नापुरुवीमें भेते । केमहर कार्य दिई पञ्चला । गोयला । बहु अतील उक्कोरोणं एगं वाससहरसं । स्वयंक्रमीय पुण्का गीममा ! यह अतिस्य जको बारस वासस्वरसहाई । वस्तुवा-पुक्रमीयुक्तम गीममा ! वह अतिस्य जक्षे भीवस वासस्वरसाई । मानोसिना-पुरुवीर्ण पुष्पा योगमा ! यह अंतोश तहो सोकस वाससहरसत्तं । सकरा-पुत्रकीय पुष्पका गीयमा । अह अस्तोस अही अधारस बाससहस्ताई । सारपुर-पिपुण्डम योगमा । बाह्र अंतोस सहो बाबीस वाससहस्ताह । नेरह्मार्ज मंते । केनइयं उन्हें दिई पञ्चला रे गायमा । अब इस गाससहस्तानं उन्हों तेलीसं सागरीकमाई ठिई, एवं सम्बं भाषितमां आव सम्बद्धसिद्धेवति । जीवे में मेर्च ! जीवति कावजो केवविरं होड् <sup>ह</sup> योगमा ! सम्बद्धः पुरुविकाइए वं भेरी ! पुरुविका इएचि कामभो केनचिरे होह रे गोनमा । सम्बद्ध, एवं जान तसगाइए ॥ ९ ९ ॥ पदुष्पद्मपुद्धिन सद्द्या भ भंत । केनह्कामस्य भित्रेवा दिया । योगमा । बद्दम्यपूर् असकेमार्टि उरसप्पिणीओसप्पिणीहि, उद्दोसपए असबेजाहि उरसप्पिणीओसप्पि-

णीहिं, जहन्नपयाओ उक्कोसपए असखेजगुणा, एवं जाव पडुप्पन्नवाउक्काइया ॥ पद्धपन्नवणप्फड्काइयाण भते ! केवइकालस्स निह्नेवा सिया २ गोयमा ! पद्धपन्नवण० जहण्णपए अपया उक्कोसपए अपया, पडुप्पन्नवणप्फड्काइयाण णिथ निल्लेवणा ॥ पड्रपन्नतसकाइयाण पुच्छा, जहण्णपए सागरोवमसयपुहुत्तस्स उक्कोसपए सागरोवम-स्यपुहत्तरस्, जहण्णपया उक्कोसपए विसेसाहिया ॥ १०२ ॥ अविसुद्धछेरसे ण भते ! राणगारे असमोहएण अप्पाणेण अविद्युद्धलेस्स देवं देविं अणगार जाणइ पासइ <sup>2</sup> गोयमा ! नो इणहे समदे । अविमुद्धछेस्से ण भते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणएण विसुद्धलेस्स देव देविं अणगार जाणइ पासइ २ गोयमा ! नो इणड्डे समद्वे । अविसुद्धलेस्से ण भंते ! अणगारे समोहएण अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्स देव देविं अणगार जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । अविसुद्धलेस्से० अणगारे समोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देव देविं अणगार जाणइ पासइ 2 नो इणड्डे समद्वे । अविसद्धलेस्से ण भते ! अणगारे समोहयासमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्स देव देविं अणगारं जाणइ पासइ १ नो इणद्रे समद्रे । अविसुद्धलेरसे॰ अणगारे समोहयासमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देव देविं अगगार जाणइ पासइ 2 नो इण्हे समद्वे । विसद्धेलसे ण भते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण अविद्युद्धलेस्स देव देविं अणगार जाणइ पासुइ <sup>2</sup> हंता जाणइ पासइ जहा अविद्युद्धलेरसेण छ आलावगा एव विद्युद्धलेरसेणवि छ आलावगा भाणि-यन्त्रा जाव विसुद्धलेस्से ण भंते ! अणगारे समोहयासमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देव देविं अणगार जाणइ पासइ <sup>2</sup> हता जाणइ पासइ ॥ १०३ ॥ अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खित एव भासेन्ति एवं पण्णवेंति एव परूवेंति-एव खलु एगे जीवे एगेणं समएण दो किरियाओ पकरेइ, तजहा--सम्मत्तकिरिय च सिच्छत्तकिरिय च, ज समय सम्मत्ति किरिय पकरेड़ त समयं मिच्छत्ति किरिय पकरेड़, ज समयं मिच्छत्ति रिय पकरेइ त समय सम्मत्तिकिरिय पकरेइ, सम्मत्तिकिरियापकरणयाए मिच्छत्तिकिरिय पकरेइ मिच्छत्तकिरियापकरणयाए सम्मत्तकिरिय पकरेइ, एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेड, तजहा—सम्मत्तिकिरिय च मिच्छत्तिकिरिय च, से कहमेय भते ! एव 2 गोयमा ! जन्न ते अन्नजित्यया एवमाइक्खित एव भासति एव पण्णवेति एव परूर्वेति एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेइ, तहेव जाव सम्मत्तिकिरिय च मिच्छत्तिकिरिय च, जे ते एवमाइसु त ण मिच्छा, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जान पह्नेमि-एन खलु एगे जीने एगेण समएण एग किरिय पकरेइ, तजहा--सम्मत्तिकिरिय वा मिच्छत्तिकिरिय वा, ज समय सम्मत्तिकिरिय पकरेइ णो त समय मिच्छत्तकिरिय पकरेइ, त चेव ज समय मिच्छत्तकिरिय पकरेइ मो तं समने सम्मतिकीर्थ पकरेत्, सम्मतिकीरवापकरच्याए नो मिस्कतिकीर्थ पकरेत् मिस्कतिकीरवापकरच्याए जो सम्मतिकीर्थ पकरेत्, पूर्व खहु एने बीने एगेर्थ सम-एयं एने किरीयं पकरेत्, तैकाह—सम्मतिकीर्थ ना मिस्कतिकीर्थ ना ॥ ९ ४ ॥ भीभी तिरिक्काजोचियवज्ञेत्वो समन्ति॥

ये कि ते स्युत्सा ! स्युत्सा दुनिहा पन्नता शनहा - चेमुन्धिमस्युत्सा य मञ्जनदेशियम्बुस्सा य ॥ ९ ५ ॥ 🖟 कि सं संसुच्चिमस्बुस्सा 🖡 १ एकामारा पण्यता ॥ कोई ये मेरो ! संस्थितमञ्जलता संस्थाति ! गोयमा ! अंतोम<del>णस्यावेदे</del> बारा प्रव्यवसाए बान सेतं सेमध्यममञ्जलसा ॥ १ ६ ॥ से कि से गरुसनकेटिय-मसरसा रे २ विभिन्ना पञ्चला तैयहा---कम्ममूमया अकम्ममूमया अंतरबीवगा n ९ ♥ n से कि ते क्षेत्रपीवमा है २ व्ह्याबीसङ्गिका पञ्चता केनका—एगुस्ता साभासिका वेसाविका गंगोकिया इजकण्या ४ सार्यसम्बद्धा ४ सारमञ्जू ४ सारमञ्जूषा ४ उक्सभुद्दा ४ चनवता मान मुदर्गता ॥ १ ८ ॥ वर्ष्ट्र व मंते ! दाहिनिकार्ण एगोस्न महरतानं एपोदनधेने वामं बीवे पञ्चते ! गोयमा ! चंतुरीने १ मंदरस्य पञ्चस्य वाद्विपेगं पुरुद्विमर्गदस्य बासहरकम्बयस्य उत्तरपुर्यक्रमिक्राओ वरिमंदाओ सबय-एसर दिकि जोनगरायाई कोयाक्षिता एस्य य वाक्षिकार्ण एगोवयस्टास्यार्क एगूरुमरीब भाग रीबे क्लारे तिथि बोयनसमाई आमामनिक्सीने मब एगूबपण्य-फोस्कसए किनि विसेसेय परिकारिये एयाए एउसवरवेदवाए एनेसे च वयसंडेमें सम्बद्धा समेता संपरिक्षिको । सा ये प्रज्ञमवरकाया बढ कोमवाई उन्ने उन्नोने पेन बद्धमयात्रं विक्यभियं एगुक्यदीन सम्बन्धे समेता परिस्थान्यं पञ्चता । दीसे कं पत्रभवरकेरमार सम्मेमाकन बन्नावाचे पन्नते तैनका-कररासमा निस्सा एवं कारायमाओं जहां राजप्रदेशीय तहां मानियम्यो ॥ १ ९ ॥ सा ने परमकरकाया एनमं बनसडेमं सम्बन्धे समेशा सपरिविधाता । से पं बनसडे ब्रमुनाई वो जोबनाई बङ्गासम्बद्धीर्थं बङ्गासमर्थं परिच्योतेषं पत्र्यते सं वं वयस्ते विन्धे किन्दी-भारते एवं बढा राजारोजहयवजसङ्ग्याओं तहेव निरवरोर्ध मानिएका तवाम में क्ष्मांपरासी सहै राजार्थ वाबीजो बच्यान्यन्यमा पुत्रविशिमायस्या य भावित्रन्या जाब तरन में सहने नाममैतरा दवा न दरीओ स आसमति जान निहरेति ॥ ११ ॥ एमाध्यरीवस्त वे दीवस्त अंदा यहसमरमणिजे भूमिमाने पन्नतः से बदावामप् आर्थिमपुरुपरेड वा एउं सब्विजे भाषित्वन जान पुरुविसिसप्रशीत सत्त्व के यह व एम्हनदीवया अनुस्मा व मनुस्तीओ व आसर्वति जान निहरति एम्हनदीये र्व श्रीच तत्त्व दरन इ.सं २ तर्हि २ वहचे उदावया बोहासमा करमामा करमामा

णृहमाला सिंगमाला सखमाला दतमाला सेलमाला णाम दुमगणा पण्णता समणा-उसो। कुसविकुसविसुद्धस्म्खम्ला मूलमंतो कदमंतो जाव वीयमतो पत्तेहि य पुप्फेहि य अच्छण्णपडिच्छण्णा सिरीए अईव २ उवसोहेमाणा उवसोहेमाणा चिट्ठांते, एग्ह्यदीवे ण दीवे रक्खा वहवे हेस्यालवणा भेस्यालवणा भेस्यालवणा सेस्यालवणा सालत्रणा सरलवणा सत्तवण्णवणा पूयफलिवणा दाज्यूरिवणा णालिएरिवणा कुसविकुसवि • जाव चिद्वति, एगूह्यदीवे ण दीवे तत्थ २ देसे॰ वहवे तिलया लवया नग्गोहा जाव रायरुक्ता णदिरुक्ता कुसविकुसवि० जाव चिह्नति, एगूरुयदीवे ण दीवे तत्थ वहूओ पउमलयाओं जाव सामलयाओं निच्च कुसुमियाओं एवं लयावण्णओं जहां उववाइए जाव पडिल्वाओ, एगोरुयरीचे ण दीचे तत्थ २ वहचे सेरियागुम्मा जाव महाजाइगुम्मा ते ण गुम्मा दसद्भवण्ण कुसुम कुसुमति विह्यरगसाहा जेण वायविह्यरगसाला एगोरुयदीवस्त वहुसमरमणिजभूमिभाग मुक्षपुष्फपुजोवयारकलिय करेंति, एगोरुयदीवे ण दीवे तत्य २ वहुओ वणराईओ पण्णत्ताओ, ताओ ण वणराईओ किण्हाओ किण्होभासाओ जाव रम्माओ महामेहणिउरुवभूयाओ जाव महइ गधदाणि मुयतीओ पासाईयाओ ४। एगूहयदीवे ण दीवे तत्य २ वहवे मत्तगा णाम दुमगणा पण्णता समणाउसो । जहा से चदप्पममणिसिलागसीहुवारुणिफलपत्तपुष्फचोयणिजा ससारबहुदव्वज्ञत्तसभारकालसधयासवा महुमेरगरिद्वाभदुद्धजाईपसन्नमेल्लगसयाङ दाजूरमु ह्यासारकाविसायणसपक्कक्षोयरससरावण्णरसगधफरिसजुत्ता मजाविहित्यबहु-प्यगारा तदेव ते मत्तगयावि दुमगणा अणेगवहुविविह्वीससापरिणयाए मज्जविहीए उववेया फलेहिं पुण्णा वीसदति कुसविकुसविसुद्धरम्खमूला जाव चिट्ठति १। एगोस्यदीवे॰ तत्थ २ वहवो भिंगगया णाम दुमगणा पण्णता समणाउसो !, जहा से वारगधडकरगकलसक्कारिपायकचिणउदकवद्धणिसुपविद्वरपारीचसगिनगार-करोडिसरगथरगपत्तीथालणत्थगववलियअवपदगवारयविचित्तवदृगमणिवदृगस्तिचारु-पिणयाकचणमणिरयणमत्तिचित्ता भायणविहीए बहुप्पगारा तहेव ते भिंगगयावि दुमगणा अणेगवहुविविद्ववीससाए परिणयाए भायणविहीए उववेया फलेहिं पुनाविव विसदृति कुसविकुस० जाव चिद्वति २। एगोरुयदीवे ण दीवे तत्य २ तुहियगा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो!, जहा से आर्लिगमुयगपणवपहह-दहरगकरिंडिंडिमममाहोरमकण्णियारखरमुहिमुगुदसिखयपरिलीवव्वगपरिवाइणिव-सावेणुवीणासुघोसविवचिमहङ्कच्छिभरगसगातलतालकसतालसुसपउत्ता विहीणिउणगधन्त्रसमयकुसलेहिं फदिया तिद्वाणकरणसुद्धा तहेव ते तुडियगयावि दुमगणा अणेगवहुविविहवीससापरिणामाए ततविततघणशुसिराए

वानुसम्बद्धियामिरामाहि सोहेमाचा सहेव सं धीविष्ठशि हुम्माना अगेगब्हु विविद्द्यीससापरिजामाए उन्होनविद्धिए उन्होंना फर्केड्स पुच्चा विस्तरि हुस्विद्धानि जाव विद्धित र । एगुस्वधीन एस्च २ नहवे चोहिष्टा वाम हुम्माना एकता

समजानसो । जहां से अविकायसस्यस्यस्यक्रिक्यकेत्रक्षसहस्यविप्यतिक्राजस्य सबहतिद्वमञ्ज्ञास्त्र निर्देतयो यत्तरत्व विज्ञानिस्त्र वासीय वावास्त्र वज्यसमिता क्रियपुं वस-निरवनकिरधनवर्ष्टिप्रसम्बन्धिरस्वाहरेमस्या तहेन ते जोइसिहानि सुगर्या अनेगबह्विक्रिवीस्सायरिणयाए उज्योजविद्वीए जननेश छड्छेरसा संदछरसा संदछरसा संदर्भ-वकेरसा कृताय १व ठाजठिया अवगवसमोगावाही केरसाहि साए पमाए रापपसे सम्बन्धो समेता भोगासति स्थावैति प्रमासिति इसव्यास्था बाव निर्दृति ५। एन्स्मरीचे उत्प २ नहने निर्देगा नास दुसयमा एन्यदा समनाउसी ! बहा से पेच्छावरे विविधे रम्मे क्ट्युमवासमाक्ष्मके मासंदसुबयुप्पानंबीक्सारकस्पि विरक्षित्रिक्तमात्रसिरिवासमात्रसिरिसमुद्दवप्याच्ये विवसवित्रिसपूरिमसंबाह्मण स्त्रीम केमसिपियं विभागरप्रथ्य सम्बन्धे केन सम्स्यूक्ते विरक्तनंतिपद्रदेश पंजनमाई क्रमतामें ब्रीहमाने से सेक्साने वजमाक्रवस्तए चेव विप्पताने तहेव ते चित्तंप-बाबि क्रमणना अधेगवडुनिक्शीतसापरिभयाए महानिहीए सबनेमा इसनिङ्ग्यनि जान निकृति ६। एग्रूस्मवीने तत्व १ बहुने नितरसा जाम बुस्पना पम्नता सम पालसो ! अक्षा से सुर्गमनरकम्मसाधितंतुस्विधिक्रमिरनद्वतुत्वरते सारनचन्तुवर्वे सहमेकिए कहरसे परसन्ने होज उत्तसनव्यवसमित रच्नो जहा वा च्यानहिस्स होज भित्रपे**ड्रि** सुन्पुरिसे**ड्रि** समिप्**ड्रि वाउर**कप्संत्रपित इव क्षेत्रपे क्ष्म्यसाविकिमति-एवि एके सम्बद्धमितकसनसनसिरने व्यनेगसाम्बद्धमस्त्रीते भड्डा पविपुन्नवन्तुत-

स्वतेष्ठः रावार् क्यापेवरराज्येराकुणसम्बोरितपरिवामे वृंविरावकपुद्धिरावने वृद्धिरात-साम्रचे जानि गुज्यद्धिरावनेक्यावित्रस्यकारीय स्वतेष्ठानेस्याच्ये वृद्धेत्र परस-इद्धेरसम्बद्धेत रोहेत्र व नितारस्याचित्रसम्बद्धानिक्यायेरसम्बद्धानेस्यायः वृद्धेत्रसम्बद्धानेस्यायः स्वतेष्ठानेस्यायः स्वतेष्ठानित्रस्यायः स्वतेष्ठानित्रस्यायः स्वतिक्षायः स्वतिक्ष्यः स्वतिक्षायः स्वतिक्यायः स्वतिक्षायः स्वतिक्षायः स्वतिक्षायः स्वतिक्षायः स्वतिक्षायः स्वतिक्षायः स्वतिक्षायः स्वति मणियंगा नाम दुमगणा पण्णता समणाउसो !, जहा से हारद्धहारवदृणगमउडकुडल-वासुत्तगहेमजालमणिजालकणगजालगमुत्तगउ चिड्यकडगाखुडियएगावलिकठस्रुत्तमग-रिभउरत्थगेवेज्जसोणिसत्तगचूलामणिकणगतिलगफुळसिद्धत्थयकण्णवालिससिसूरउसम-नक्सातलभगतुडियहित्यमालगवलक्खरीणारमालिया चदसूरमालिया हरिसयकेऊर-वलयपालवअगुलेज्ञगकचीमेहलाकलावपयरगपायजालघंटियखिंखणिरयणोठजालत्य-गियवरणेउरचलणमालिया कणगणिगरमालिया कचणमणिरयणभत्तिचित्ता भूसणविही बहुप्पनारा तहेव ते मणियगावि दुमगणा अणेगबहुविविह्वीससापरिणयाए भूसण-विहीए उववेया कुसवि० जाव चिद्वति ८ । एगूरुयदीवे० तत्य २ वहवे गेहागारा नाम दुमगणा पण्णता समणाउसो !, जहा से पागारद्यालगचरियदारगोपुरपासायागा-सतलमङवएगसालविसालगतिसालगचउरंसचउसालगञ्भघरमोहणघरवलिभघरचि-त्तसालमालयभत्तिघरवद्दतसचउरंसणदियावत्तस्रियाययपंडुरतलमुंडमालहम्मियं अहव ण धवलहरअद्धमागहविन्ममसेलद्धसेलसिटयकूडागारद्वसुविहिकोट्टगअणेगघरसरणले-णआवणविडगजालचदणिज्रुह्यपवरकवोयालिचदसालियरूवविभक्तिकलिया 'भवणविही बहुविगप्पा तहेव ते गेहागारावि दुमगणा अणेगबहुविविह्वीससापरिणयाए सुहारु-हणे सहोत्ताराए सहिनक्लमणप्पनेसाए दहरसोवाणपितकलियाए पहिरक्काए सहिन हाराए मणोऽणुकूलाए भवणविहीए उववेया कुसवि० जाव चिद्वति ९ । एगोरुयदीवे० बहुवे अणिगणा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो !, जहा से आईणग-खोमतणुयकवलदुगुल्लकोसेज्जकालमिगपष्टचीणसुयअणह्यनिउणनिप्पावियनिद्धगज्जिय-चरणातवारवणिगयथुणाभरणचित्तसहिणगक्छाणगर्मिगिमेहणीलकजलव-, इवण्णरत्तपीयनीलस् क्रिल्लमक्खयमिगलोमहेमप्फरुणगअवसरत्तगर्सिधुओसभदामिल्ल-गकलिंगनलिणततुमयभित्तिचित्ता वत्थविही वहुप्पगारा हवेज वरपष्ट्रणुग्गया वण्णरा-गकलिया तहेव ते अणिगणावि दुमगणा अणेगवहुविविह्वीससापरिणयाए वत्थवि-हीए उववेया कुसविकुसवि० जाव चिद्वति १०। एगोस्यदीवे णं भंते ! दीवे मणु-याण केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णते <sup>२</sup> गोयमा ! ते णं मणुया अणुवमतरसो-मचारुरुवा भोगुत्तमगयलक्खणा भोगसिस्सरीया सुजायसन्वगसुदरगा सुपइद्वियकु-म्मचारुचलणा रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालकोमलतला नगनगरसागरमगरचक्ककवरंकल-क्राणिकयचलणा अणुपुञ्वसुसाहयगुलीया उण्णयतणुतवणिद्धणहा सठियसुप्तिलिट्टगू-ढगुप्फा एणीकुर्त्तवेदावत्तवद्वाणुपुरुवजंघा समुग्गणिमग्गगूढजाणू गयससणमुजायसण्जि<u>-</u> भोरू वरवारणमत्ततुल्लविक्षमविलसियगई सुजायवरतुरगगुज्झदेसा आइण्णह्ओव णिरवलेवा पमुर्यवरतुरियसीहअर्रेगवद्वियकडी साहयसोणिद्मुसलद्प्पणणिगरियवर्-

कमगच्छक्तरिसवरवहरपविभगन्या उज्जयसमसहित्रसुवायववर्ष्युक्ररियविद्यादेव-सम्बद्धान्याज्ञमत्यरमिकारोगराई गंगावत्तपमाहिवावशतरंगरंगुररविकिर्वतस्यवी-द्वियमच्येसायंतपदमर्गमीरविगडणागी असन्दिगसुजायपीणकुच्छी शस्त्रेवरा सुदक् रणा पम्हनिवद्यजामी सम्भवपासा समयपासा र्सुब्रपासा सुवावपासा मिममाहन-पीमरस्यपासा अक्ट्रंड्रवक्ष्यम्बन्धम्बन्धम्बन्धम्बन्धम्बन्धम्बन्धम्बन्धम् क्षणपरा क्यारिकायस्वकपराध्यसमयकोषवियमिकिसपिद्वसम्बद्धाः विरिक्के क्रिमक्क्य पुरवरफक्रिक्ववियभुया भुयगीसरविष्ठस्मोगकामाणफक्रिक्टक्यूक्रवीहवाह् सून सक्तिमपी **मरहन पीकर प**राष्ट्रसं ठिन<u>स</u> सिक्किक्ष विशिक्ष क्या विरक्ष कर्माने गृह प्रकास सी रत्ततन्त्रेनर्यमत्यमंस्क्षपसत्यक्षणक्षणस्यायक्षण्यम् वाक्याणी पीत्रविध्यद्ववायकी-क्षमरंपुकीमा तंत्रतक्षित्रसम्बद्धरनिद्धपत्रका र्वदपन्तिका स्रपनिकेश संक्षपनि क्या भद्रपाणिकेश विशासोरिययपाणिकेश चैत्स्रसंख बद्रविसासोरियवपाणिकेश <del>भाषेगम् सम्बद्धारमपरतमधारम् यामिनेदाः वरमहिसमस्हर्षाद्वस्यमनामगर</del> पविपुत्रनिष्ठसञ्ज्यसर्द्य्यंता वार्रगुम्ब्युप्पमानक्षुवरसरिस्गीना स्वाह्मिसस्विमस् द्धनामनिष्ठमंस् मंसक्यंद्रियपस्त्रयसङ्खनेपु<del>न्यद्</del>ष्ठमा उननिनस्कपनास्त्रवेनच्यसनि भाइरोद्धा पंद्ररससिधनकनिम्मकनिम्मकर्यक्रमोकीरफेणवगरयमुजाकिया वनकदरसेकी अप्रेडर्जा अफुडिवरता अविराखंता ध्वानर्जा एगरंतसेक्टिन अनेमरता हुरन-इनिबंदभोक्दत्त्वभिक्ररत्त्वस्यास्त्रश्रीद्या यक्नस्ययः मुद्देगणसः व्यदाक्रियपौडरी-श्चनमा क्रोमासिन<del>यम्बद्धपालका</del> आवातिसमानस<del>्यक्तिव्पूर्</del>त्वसाठेनसंगयआस्य द्वबायत्त्र प्रक्रियनिवसुरामा अप्रीयप्पमाणहत्तस्वया दासवया पीयमंसक्कोध्येक्ष भागा अन्तिकारमासम्बद्धंकियपस्यानिनिकत्तसमनिकाम उद्ववर्पविपुन्नसोससम्ब इतायाक्टमयदेखा क्यानिनियमुक्दसम्बानुकावकृषायारिनिपरिक्रियसीचे दाकिमप् रक्रमास**त्वभिश्वस**रिसनिन्यस्य वायकेसत्तकेसम्मी सामक्रियोडक्यविश्वस्थेडियमिन उ विसम्पर्सरप्रहुमसम्प्राणसम्पर्भत् स्थानमोयगर्भिनिजीस **समस्पर्**द्धसम्परमण्**निद्धाः** अर्दननिवर्कनिवनिवयपादिणानतामुद्धसिर्या सम्बाधनेवणशुचीववेया स्वासप्रवि-भत्तप्रस्त्रमा पासाइमा वरिसणिजा अभिस्त्रा पश्चिमा से चं भूगुमा ओइस्सर्स इसरसरा कॉक्स्सरा निवधोता सीहरसरा सीहपोसा मंहस्सरा मंहानेसा प्रस्मण हस्सर्भिग्येसा प्रवादकोश्यमममा वजारिहार्भारायसम्बन्धा समचारसस्टामस-द्विमा विभिद्धानी विश्वका जनसम्बद्धसमनसम्बद्धसमनसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसमनस सबजियसपीरा निरूपक्षेत्रा अणुस्मेगगाउवेगा क्षेत्रस्मात्वी क्रयोगपरिज्ञामा सउविध्य वामपिद्रंतरोक्षरिणया विमाहिसरसयक्रमधी परमुप्पनसरिसर्गवनिस्तासप्रस्मित्वना

अट्टघणुसय ऊसिया, तेसिं मणुयाणं चउसद्वि पिट्टिकरङगा पण्णता समणाउसो !, ते ण मणुया पगइभद्गा पगइविणीयगा पगइउवसता पगइपयणुकोहमाणमायालोभा मिउमद्वसपण्णा अल्लीणा भद्गा विणीया अप्पिच्छा असनिहिसचया अचंडा विडि-मतर्परिवसणा जिह्नेच्छियकामगामिणो य ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो !। तेसि णं भते! मणुयाण केवइकालस्स आहारहे समुप्पज्जइ र गोयमा! चडत्थभत्तस्स आहारहे समुप्पज्जइ, एगोरुयमणुईण भते ! केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णते ? गोयमा ! ताओ ण मणुईओ सुजायसव्वगसुदरीओ पहाणमहिलागुणेहिं जुत्ता अचत-विसप्पमाणप्रमस्मालकुम्मस्ठियविसिद्धनलणा उज्जुमउयपीवरनिरंतरपुद्धसाहियगु-लीया उण्णयरइयनलिणन सुइणिद्धणक्खा रोमरहियनष्टलट्टसठियअजहण्णपसत्यलक्ख-णअकोप्पजघजुयला सुणिम्मियसुगूढजाणुमडलसुबद्धसधी क्यलिक्खभाइरेगस्ठिय-णिव्वणसुरुमालमु यक्तोमलअविरलसमसहियसुजायवृष्ट्रपीवर्णिरतरोरू अद्वावयवीई-पद्टसठियपसस्यविच्छिन्नपिहुलसोणी वयणायामप्पमाणदुगुणियविसालमंसलसुवद्धज-हणवरधारणीओ वजाविराइयपसत्यलक्खणणिरोद्री तिवलिवलीयतणुणमियमज्ज्ञि-याओं उज्जयसमसिहयज्वतणुकसिणणिद्धआदेजलङहसुविमत्तस्जायकतसोहतरङ्ल-रमणिजरोमराई गंगावत्तपयाहिणावत्ततरगमगुररविकिरणतरुणवोहियअकोसायतप-उमवणगंभीरवियडणाभी अणुव्भडपसत्थपीणकुच्छी सण्णयपासा सगयपासा सुजाय-पासा मियमाइयपीणरइयपासा अकरड्अयकणगरुयगनिम्मलसुजायणिरुवहयगायलद्वी कचणकलससमपमाणसमसहियसुजायलहुचूचुयआमेलगजमलजुयलवद्दियअञ्भुष्णयर-इयस्ठियपओहराओ भुयगणुपुव्वतणुयगोपुच्छन्रहसमसहियणमियआएजललियवाहाओ तंवणहा मंसलग्गहत्था पीवरकोमलवरंगुलीओ णिद्धपाणिलेहा रविससिसखचक-सोत्यियमुनिभत्तमुनिरइयपाणिलेहा पीणुण्णयकम्खवित्यदेसा पिंडपुण्णगलकवोला चउरगुलसुप्पमाणक्खुवरसारेसगीवा मसलसठियपसत्यहणुया दाडिमपुप्फप्पगास-पीवरकुचियवराघरा सुदरोत्तरोट्टा दिहदगरयचदकुदवासितमङलअच्छिद्दविमलदसणा रत्तुप्पलपत्तमउयद्यकुमालतालुजीहा कणयरमुउलअकुिडलअब्भुग्गयउज्जुतुगणासा सार-यणवकमलकुमुयकुवलयविमुक्कदलणिगरसरिसलक्खणअकियकतणयणा पत्तलचवला-यततवलोयणाओ आणामियनावरुइलकिण्हन्भराइसठियसगयआययसुजायतणुकतिण-णिद्धभमुया अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुसवणा पीणमद्वरमणिज्जगडलेहा चउरसपसत्य-समणिडाला कोमुइरयणियरविमलपिडपुन्नसोमवयणा छत्तुन्नयङित्तमगा कुडिलमुत्ति-णिद्धरीहसिरया छत्तज्झयजुगदामिणिकमङलुकलसवाविसोत्थियपडागजवमच्छुनुम्मर्-ह्वरमगरत्त्रयथालअङ्सअद्वावयवीइसुपइट्टगमऊरसिरिदामाभिसेयतोरणमेइणिउद्हि-

बरभवमापिरिवरभागसम्बद्धिवगवउसमधीक्ष्वभर्उत्तमपसस्ववतीसम्बन्धमभराओ इंसपरिसगईन्ये कोइबगङ्करनिरसस्तराजो केता सम्बद्ध बलुनवाओ बकायनवि-पश्चिमा पंगतुन्तरुपमाहीनोह्नरगसोगमुद्धाओ स्वत्तेष य नराण बोन्यमुसिनाओ सभावसिंगारायार्जाकवंशा संयक्ष्यकाशिकामिक्षवेद्वियमिकासस्वावमित्वमञ्ज्ञोकवार इसका स्वर्धनाम्बरम्बरमञ्जूषामानासम्बर्धनामानासम्बर्धनामानासम्बर्धना र्भवयनयविवरचारियोजन अच्छराओ अच्छरायेन्छणिजा पासाईयाओ व्रसिमिन जाओ विमस्त्राओं पविश्वाओं । साथि में मेरी ! म्हाईपं केन्द्रभासस बाहाएँ स्मुप्पन्नः ! योगमा ! कारधमतस्य श्राहारहे समुप्पन्नः । त वं भंते । महुमा निमाहारमाहारेंदि । गोयमा ! पुरविपुण्डच्छहारा नं ते मगुरमणा फणता समना-उसो । तीसे भे भेते । पुरबीए केरिसए मासाए पञ्जते ! योदमा ! से जहामासर् प्रकेड वा संबेड वा सकराड वा सक्कंडियाड वा निसर्क्वेड वा प्रभारमोक्टड वा प्रपन्नवत्तराह वा पवस्तवराह वा अक्टोसिवाह वा निववाह वा सहानिववाह वा भागस्त्रेक्साइ वा उपमाइ वा भजोबसाइ वा पाउरहे गोबीरे क्वठावपरिवर् गुरुबंडमण्डंबिउवणीए मैद्रिगळ्डीए बण्लेणं उद्देश जाब फारोजं मदेवास्त्रे विचा 1 नो इमद्वे समद्वे, धीरे में पुरुषीए एटो इद्वतराए चेब काब मनासटराए चेब भासाए पन्यते तसि व मेते । पुण्डक्रमार्थ केरिसए आसाए पन्यते ! गोयमा ! धे जद्दानामए रहा नाउरंदानक्रमहित्स कक्रमे प्यरमोदने समस्वत्सनियामे क्नोपं उबकेए र्रोधेणं उबकेए रहेथं उनकेए प्रासेणं उबकेए जासावणिजे बीसावणिजे दौरमिजे विद्वनिके दप्पनिजे समनिके समिनिक्यायपस्टायनिके सम्बादने क्षिया र यो इयद्वे समद्वे, तेसि यं प्रश्वकतार्य एतो स्तुतराए चेन मान आसाए पञ्चति । तं में मंतः । मुख्या तमाद्वारभाद्वारिता 📲 वस्ति वर्वति । योगमा ! स्कारनेहासमा ने वं महामनना पण्यता समनाउसो।। वं वं भेदे। स्वया किस्रिया पञ्चला । योगमा । कहानारसंठिया वेक्सवरस्रिया सत्तागरसंठिया सबस्रक्रिया तोरणपेठिया गांपरवेद्रयचोपाबासगस्रक्रिया अञ्चलमपेठिया पासाबस्रक्रिया इस्मातमस्यिता सवक्तसंदिया बासमापानिवसंदिवा बसमीपदिया सन्न छत्त बहुब बरभवशस्यवासकवितिक्रस्याकसितिमा गृहसीयसब्द्रस्या कं त नुस्तामा प्रवास सममाउसो । व अस्य ये नेतं । एमोस्यहाँच तीच गेहावि वा गेहाववावि वा व इनदे समद्भे, स्वयन्द्रातमा पं ते मुख्यमया प्रव्यता समयावसी । अस्य न भेते ! एमूस्यरीय दीन यामाइ वा नमराइ वा जान सविक्साइ वा है भी इनदे समके अद्वित्यम्यसम्मामिको च मनुकाला पक्षता समकाउसो।। अस्य च भेट।

ज़्यदीवे० असीइ वा मसीइ वा कसीइ घा पणीइ वा वणिजाइ वा<sup>2</sup> नो इण्डे हे, ववगयअसिमसिकिसिपणियवाणिजा ण ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! । थ णं भते। एगूह्यदीवे० हिरण्णेइ वा सुवनेइ वा क्सेइ वा दूसेइ वा मणीइ वा तएइ वा विउलघणकणगरयणमणिमोत्तियसखसिलप्पवालसत्तसारसावएजेइ वा <sup>३</sup> ा अत्यि. णो चेव ण तेसिं मणुयाणं तिन्वे ममत्तभावे समुप्पजइ। अत्थि ण ो। एगोस्यवीवे॰ रायाइ वा जुवरायाइ वा ईसरेइ वा तलवरेइ वा माडवियाइ वा डुनियार वा रूआइ वा सेद्वीर वा सेणावर्डर वा सत्यवाहार वा <sup>2</sup> णो रणद्रे ाहे, ववगयइद्वीसकारा ण ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो। अत्य णं भते। ारुयदीवे दीवे दासाइ वा पेसाइ वा सिस्साइ वा भयगाइ वा भाइल्लगाइ वा नगरपरिसाइ वा <sup>2</sup> नो डणडे समद्रे. वबगयआमिओगिया ण ते मणुयगणा पण्णत्ता नणाउसो।। अत्य ण भते। एगोहयदीवे दीवे मायाइ वा पियाइ वा भायाइ वा श्णीइ वा भजाइ वा प्रताइ वा ध्रयाइ वा सुण्हाइ वा<sup>2</sup> हता अत्यि, नो चेव ण सि ण मणुयाण तिन्वे पेसबधणे समुप्पज्जइ, पयणुपेज्जबधणा ण ते मणुयगणा णता समणाउसो !। अत्यि ण भते ! एगूरुयदी वे दीवे अरीइ वा वेरिएइ वा घायगाइ । वहगाइ वा पर्डिणीयाइ वा पन्नामिताइ वा <sup>२</sup> णो इणद्वे समद्वे, ववगयवेराणुवैघा ं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो!। अत्यि ण भते! एगोरुयदीवे० मित्ताइ वा यसाइ वा घडियाइ वा सहीइ वा स्रहियाइ वा महाभागाइ वा सगइयाइ वा १ णो णहे समझे, ववगयपैम्मा ण ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो।। अत्य णं भते। गोरुमरीचै० आवाहाइ वा वीवाहाइ वा जण्णाइ वा सद्धाइ वा थालिपागाइ वा चोलो-णयणाइ वा सीमतोवणयणाइ वा पिइ(मय)पिंडनिवेयणाइ वा <sup>१</sup> णो इणद्रे समद्रे, वगयआबाहविवाहजण्णसद्धथालिपागचोलोवणयणसीमतोवणयणपिइपिंडनिवेयणा ण ो मणुयगणा पण्णता समणाउसो!। अत्थि ण भते! एगोस्यदीवे दीवे इदमहाइ वा इदमहाइ वा रहमहाइ वा सित्रमहाइ वा वेसमणमहाइ वा मुगुदमहाइ वा णागमहाइ ।। जन्खमहाइ वा भूयमहाइ वा कूनमहाइ वा तलायणइमहाइ वा दहमहाइ वा ान्वयमहाइ वा स्क्खरोवणमहाइ वा <sup>२</sup> णो इणद्वे समद्वे, ववगयमहमहिमा ण ते नणुयगणा पण्णता समणाउसो!। अत्थि ण भते। एगोरुयदीवे दीवे णडपेच्छाइ वा गद्दपेच्छाइ वा मह्रपेच्छाइ वा सुद्वियपेच्छाइ वा विडवगपेच्छाइ वा कहगपेच्छाइ वा पवगपेच्छाइ वा अक्लायगपेच्छाइ वा लासगपेच्छाइ वा लखपे० मखपे० तूणइल्लपे० तुववीणपे० कीवपे० मागहपे० जल्लपे०१ णो इणहे समद्वे, ववगयकोउहल्ला ण ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो!। अत्थि ण भते! एगूस्यदीवे दीवे सगडाइ वा रहाइ ना जाजाइ ना शुस्पाद वा मिलीइ ना विलीह ना पिपिजीइ ना प्रवहनानि ना शिनियाइ वा चंदमानिमाइ वा । जो इबड्रे समद्वे, पायबारविद्वारिको मं ते महरसमाना प्रव्यक्त स्मणावसो!। अस्य वं मेरो। एगुरुवरीच आसाइ वा इस्वीइ वा वदाइ वा गोबाइ ना महिसाइ वा सराइ वा भोगाइ वा असाइ का एसमइ वा है बैटा मत्सि नो चेव में दुसि मुख्यार्थं परिओगताए हम्ममायन्त्रदेति । अत्व में अंत ! एगोद्ध्यदीवे वीने गाबीह वा महिचीह ना उड़ीह वा अभाह वा एलगाइ वा है ईटा अस्पि भी वन ल देखि मनुवार्ण परिमोयतायु इम्बमागकांदि । अतिव यं मेरो । एगुरमदीव दीवे रीक्षक वा बन्धक वा विगाह वा वीविश्वक वा अध्यक्षक वा परच्छत वा परस्तराह ना तरच्छाइ वा शिवाक्षतः वा विकाकाइ वा धुणगाइ वा कोक्सक्याइ वा कोकेशियाई ना सस्पाद वा निस्तानक वा निक्रास्थात वाई ईसा अरिय नो पेन में सं अल्य-सम्बद्ध तंसि वा मनुवान किवि आवाई वा प्रवाई वा उप्पार्वति वा अभिन्द्रेनं का करेंद्रि पगर्भरूमा के ते सावक्रमणा पन्कता समजाउसा । अदिव के मंद्रे । एगुरुक्तीने दौने साकीह वा नीहीह वा मीचुनाह वा अवाह वा विकाह वा इसका वा है हैता बारिय मो चेन ने वासि महानार्थ परिमोगचाए हज्यसाराच्छेति । सरिव ने भेते! एगुरुपदीन दीने मतात्र मा न्यीत ना नेसाह ना मिगुड ना उनायह ना निसमेद वा किसकेद वा भूठीद वा रेक्ट्र वा प्रेक्ट वा चस्रभीद वा वो दच्छे समद्भे, एग्ट्यनीवे ज बीवे बहसमरमणिजे भूमिभागे पञ्चति समनातसी ! । अरिन र्ज मेठे । एराइस्कीचे कीने कानूह वा केस्पूह वा हीरएह वा सकराह वा तजनन राह वा पत्तकनवराइ वा महाबैह वा पूहनाइ वा बुब्निमंबाइ वा बानोनवाइ वा णो इपदे समदे, वकाववास्यकेटगहीरसङ्ख्यक्यवरपत्तकववरमञ्जूपपुत्रविसर्गकाः चोक्कपरिवामिए ज प्रमुक्तवीचे पञ्जी समजावसो । अस्य व भेते । एगूस्त-दीव हीने दंशल का सरगाह का पिश्चमाह का ज्याह का किन्साह का बंदुनाह वा ! भा इमडे समदे, अवनवर्गसमसगपिस्यज्यक्रिक्कर्रकृतपरिवक्रिय भे प्यूर्व-वीचे पन्यते सममाउसो । अस्य वं भंते ! एगुड्यवीने व्यक्ति वा सनगराह वा सहोरमाइ वा हिंता अस्ति जो चेव वं ते अवगवस्य तस्ति वा सञ्जानं किनि मानाई वा प्रवाई वा स्मिन्केन वा करेंति प्रमहमस्या में ते बाजगपना प्रव्यक्त सम्बादस्ते । अस्य व भेते । एग्डमरीवे गहर्वका वा गहमुस्त्रम वा गहगविवाह का अहराबाह वा गहसभावगाह वा गहसवस्थाह वा सम्मार वा सम्मारकवाह वा समाह वा गवश्यागराह वा गविवाह वा किसुबाह वा उद्या पानाह ना विसानाहार मा जिल्लामार ना पश्चमुद्रीय का सुनगाह ना जनसासियार

वा वृमियात वा महियात वा रउग्वायात वा चटावर्गद्व व्यागमाद्र प चदपरिवेसाइ वा स्रपरिवेसाउ वा पढिचदाउ वा उटिन्यट वा उट्याट वा उट्याट मच्छाइ वा अमोहाइ वा कविहसियाड वा पार्टणकाराट वा ककारणकर सा हा सुद्धवायाइ वा गामदाहाइ वा नगरदाहाइ वा जाव मिनिनिन्द्रनाट का राजानाचन जणक्रायकुलक्राययणक्रायवसणभ्यमणारियाङ या १ मी आहे ननंह । यो या भते । एगूरुयदीवे दीवे डिंवाड वा उमराउ वा करहार ना बारर ना नगर म वेराइ वा महावेराइ वा विरुद्धरजाइ वा <sup>२</sup> णो उणहे नमहे, खनार उपरामा कर वोलखारवेरविरुद्धरज्जविवज्जिया ण ते मणुयगणा पण्णता सम्मानुमे । से ५ व भते ! एगूह्यदीवे दीवे महाजुदाङ वा महासगामाङ वा नर्का रहे हैं है। पुरिसपडणाइ वा महारुहिरपडणाड वा नागवाणाड वा ने किया है है है है है वा दुञ्भूइयाइ वा कुलरोगाइ वा गामरोगाइ या पार्कित है स्टब्स्स म सिरोवेयणाइ वा अच्छिवेयणाइ वा कण्णवेयणाइ वा क्रिकेट व वा नहवेयणाइ वा कासाइ वा सासाइ वा जराइ वा उर्देश वा निर्देश है। वा कुद्धाइ वा कुडाइ वा दगराइ वा अरिगाट के किन्द्र के किन्द्र रा इद्रगहाड वा सद्रगहाइ वा कुमार्गहाउ वा भूयग्गहाइ वा उच्वेयग्गहाइ वा वणुग्गहाड वा गर्ने हुन है । वा हियाइ वा चउत्थगाइ वा हिययस्लाइ वा मरगण्या है वा मन् त्रहराइ वा जोणिसूलाइ वा गाममारीइ वा नाव क्यांक्रिक के निर्माण कार्य वसणभूयमणारियाइ वा थे णो इणहे समहे, क्यानिया व मानुनाणा पण्णता समणाउसो । अत्यि णं भते । एतृत्वर्ग्य हेत् हरणाणु अ परभागा वा सुनुद्वीइ वा मदनुद्वीइ वा उदगवाहाइ वा उर्ग्या १०००० वा सन्त्रीय वा उर्ग्य वा सन्त्रीय वा सन्त्र पीलाइ वा गामवाहाइ वा जाव सिन्नवेसवाहरू विकास का अपने का अपने विकास का अपने का अपन जसो । अत्थि ण भते । एगूरुयदीवे र्शव हार हर स्वापार पा नी प्राण राइ वा सुवण्णागराइ वा रयणागराइ वा कार्या है के मार या हिरणायांनी वा सुवण्णवासाइ वा रयणवासाइ वा करत् है के कि नामाट वा पत्रानार वा पुष्पतासाइ वा फलवासाइ वा नियानाः है ने नियानाः या पान चुण्णवृद्धीइ वा सुकालाइ वा दुकालाइ वा गुमिन्दर वा अन्य 

निर्दार वा निराजार वा चिरपोराजार वा पहीजसामियाद वा परीचसंडयार वा प्रतिच गोत्तागार्टाई वा अहं इमाई गामागर्णगरबोडक्ववसर्वनदोजमुङ्गपुत्रवासमर्वगहरा विवेधेत् सिमावगतिगमतक्रक्षस्यस्यस्यस्यापापायकेत् जगर्विद्रम्यमामविद्रम्यः सामगिरिकन्रसन्तिसंकोबद्धाणभगणियोषु समिकिसत्तात् निर्वृति १ नो इनके समदे। एग्रुपदीने में भेते ! वीने मणुमार्च केन्द्रने कार्क ठिई पुरुषता ! धोममा ! सहवेत परिन्मोबमस्य संसंकेणकृताग असंबेणकृतागेण स्वाग सक्षोरीणं परिन्नोक्सस अरंबेज्यस्मानं । ते में मंत्रं ! अनुवा काक्रमासे कार्क किया कर्क्क गर्चारे पर्दे उन्नर्जिति ! योजमा ! ते जं म्युया हम्मासावसेसाउया मिनुष्माहं परानिति अस्मान सीई राईविनाई निहुत्ताह सारक्यंति संगोबिति व सार्विनाता संगोबिता उस्सविता निस्पितिता काशिता कीइता अविद्धा व्यव्यक्षिया अपरियानिया [पक्षिकोक्सस्स असरिज्ञहमार्ग परियायिक । प्रांसक्षेणं काकमासे कार्क किया अधनराह देवनीएउ देवताए उक्क्तारी भवन्ति। देवस्थयपरिमाहा कं श्रे मुख्यमाना प्रम्ता समयान उसो ।। ऋदि में भेते । दाहिनिकार्ण भागावियमणुरसार्ण भागावियरीये गाउँ वीन प्रमाते ! गोयमा ! क्षेत्रवेषे बीने प्रक्रिमधंतस्य वास्त्ररप्रमायस्य वाहिण्युर रिक्रमिक्राओ परिमेताको सम्बद्धसुद्दं विकि जोयण संस वहा एग्ट्यार्थ किर्परेड मानियन्त्रं । कहि में नते ! वाहिनिकार्ण वैदास्त्रियरहास्याच पुच्छा गोयमा ! जनुरीय दीवे मंदरस्य प्रम्वयस्य दाविषेणं पुश्चिमवंतस्य वासहरप्रम्<del>वरस्</del> उत्तरप्रवरियमिक्राओ वरिनंदाओ अववसमुद् तिच्यि वोवसस्यक् सेस 🔏 पगुरुममञुरसार्च ॥ ऋदि नं भरे ! दाविनिक्षार्थं वेसानियमञुरसाण प्रका गोमना ! वंतुरीने दीने मंदरस्य पश्चमस्य दाविशेषा पुत्रविमर्गतस्य वायरस्यम्बसस्य दाविश पणत्मिनाओं परिमंताओं अमणसार्व तिष्णि आसण सेसं अहा एन्ह्याणे ॥९११४ कदि में मंति । दाविधिकाणं इनकाममनुस्सामं इनकामदीने मार्स दीव पत्रमते ! योक्सा । एस्ट्रवरीवस्स उत्तरपुरव्यिनिकानो वरिमेतानो स्वयसमुदं बताहि जीवणसवाई जीगाद्विणा एस्य कं वाद्विणिक्राकं इवस्त्र्यसम्प्रस्थाय इवस्त्रव्यस् नामं दीवं पञ्जते नतारि जायणस्याई आवासनिक्यंभेयं वारस जोवजसवा पत्तर्ज्ञी किन्धिमिसेस्पा परिस्थेनन से मं एगाए पउमनरचेर्याए अवसेसं नहीं

प्रमुख्याच । वृद्धि में भेतं वाहिणिलानं गजरूनमन्त्रसानं पुष्य मोयमा ! आभारिक्दोक्स दाविष्युरिक्यमिशको वरिमेताको स्वपरमुदं पतारि जोस्प-संगर्द सेस जहा इयक्रमार्थ । एवं धोक्रम्यम्हस्सार्थ पुष्का वेसाधियदौरस्य वाहिनप्यस्थिमिकाओ वरिमेगाओ अववसमुद्दं पत्तारि खोक्पस्याई संस वहा हयकण्णाण । सङ्कुलिकण्णाणं पुच्छा, गोयमा ! णंगोलियदीवस्स उत्तरपचित्यमिल्लाओ चरिमताओ लवणसमुद्द चत्तारि जोयणसयाइ सेस जहा हयकण्णाण ॥ आयसमुहाण पुच्छा, हयकण्णयदीवस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ चरिमताओ पच जोयणसयाइ ओगा-हित्ता एत्य ण दाहिणिल्लाण आयसमुहमणुस्साण आयसमुहर्दावे णाम दीवे पण्णेत, पच जोयणसयाइ आयामविक्खभेण, आसमुहाईण छ सया, आसकन्नाईण सत्त, उक्कामु-हाईण अद्घ, घणदंताईण जाव नव जोयणसयाइ, गाहा—एगूरुयपरिक्खेवो नव चेव सयाइ अउणपन्नाइ । वारसपन्नद्वाइ ह्यकण्णाईण परिक्खेवो ॥ १ ॥ आयंसमुहाईण पन्नरसेकासीए जोयणसए किचिविसेसाहिए परिक्खेवेण, एव एएणं कमेण उवउङ्जिकण णेयव्वा चतारि चतारि एगपमाणा, णाणत ओगाहे, विक्खमे परिक्खेवे पढमवीय-तइयचउक्काण उग्गहो विक्खमो परिक्खेवो भणिओ, चउत्यचउक्के छ्जोयणसयाई आयामविक्खभेण अद्वारसत्ताणउए जोयणसए विक्खभेण । पचमचउक्के सत्त जोयण-सयाइं आयामविक्खभेण वावीस तेरसोत्तरे जोयणसए परिक्खेवेण । छट्टचडक्ने अहुजोयणसयाई आयामविक्खभेण पणवीस गुणतीसजोयणसए परिक्खेवेण । सत्तमचउके नवजोयणसयाइ आयामविक्सभेण दो जोयणसहस्साइ अद्भ पणयाले जोयणसए परिक्खेवेण । जस्स य जो विक्खमो उम्माहो तस्स तत्तिओ चेव । पढमवीयाण परिरओ ऊणो सेसाण अहिओ उ ॥ १ ॥ सेसा जहा एगूरुयदीवस्स जाव इद्धदतदीने देनलोगपरिग्गहा ण ते मणुयगणा पण्णता समणाउसी । ॥ कहि ण भते ! उत्तरिल्लाण एगूस्यमणुस्साण एगूस्यदीवे णाम दीवे पण्णते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्य पव्ययस्य उत्तरेण तिहारिस्स वासहरपव्ययस्य उत्तरपुरिच्छ-मिल्लाओ चरिमताओ लवणसमुद्द तिण्णि जोयणसयाइ ओगाहिता एव जहा दाहिणिल्लाण तहा उत्तरिल्लाण भाणियव्व, णवर सिद्दरिस्स वासहरपव्वयस्स निदिसासु, एव जाव सद्धदतदीवेति जाव सेत अतरदीवगा ॥ ११२ ॥ से किं त अकम्मभूमगमणुस्सा ? २ तीसविहा पण्णता, तजहा—पचहिं हेमवएहिं, एव जहा पण्णवणापए जाव पचिंह उत्तरकुरुहिं, सेत्त अनम्मभूमगा । से कि त कम्म-भूमगा १ २ पण्णरसाविहा पण्णता, तंजहा—पचिहं भरहेहिं पचिहं एरवएहिं पचिहं महानिदेहोहू, ते समासओ दुनिहा पण्णता, तजहा-आरिया मिलेच्छा, एव जहा पण्णवणापए जाव सेत्त आरिया, सेत्त गञ्भवकातिया, सेत्त मणुस्सा ॥ ११३ ॥ मणुस्सुद्देसो समत्तो॥

से कि त देवा <sup>2</sup> देवा चउव्विहा पण्णता, तंजहा—भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया ॥ ११४॥ से कि त भवणवासी <sup>2</sup> २ दसविहा पण्णता, तजहा— मद्भारा वहा पन्यस्थापप् देवार्थ मेम्रो तहा मानियम्बो नाव शनुतारोवबाह्या पंचित्रहा प्रवत्ता रोजहा-विजयविजयेत जाव सम्बद्धसिद्धमा सेच अनुतारोजनाहना u १९५ n फर्क में मेरे ! मनमगारिकेशाजें मनमा प्रवास ? कहि यो मेरा ! मनयवाची देवा परिवर्षति ! योगमा ! इमीचे रशयप्पमाए पुढवीए अधीरत्तरबोय-वासमसहस्सवाहाहाय, एवं बहा कणववाय जाव सवधवासाहवा स(ए)स्य व भवनवासीचे देवाणं रात्र भवणकोबीको बाबतारि मवणावासस्यस्यस्या भवेति तिमस्वामा तत्य भं बहुने सर्व्यनाधी देवा परिवर्धति-अधुरा शाम सुबन्ना व जहां क्लबमाए जान विहरेति ॥ ११६ ॥ कहि नै मंति । सञ्जानगरार्थ देशने भवना प प्रकार एवं कहा पञ्चवकारायपए जाव निहारित n कर्जा के प्रेति ! वाहिनिक्राणं शहरकुमारवेषाचे मक्या प्रकार एवं कहा ठाणपए जाव धमरे छला महरक्रमारिके अञ्चलक्षमाररामा परिचलक् माथ विकास ॥ १९० ॥ बसारसा व भेते । अस्परिवस्य अस्परको पद्भ परिसाओ प ई गो । तुओ परिसाओ प हो-समिया चंडा काथा अस्मित्तरिया समिया मन्त्री चंडा वार्क्ष च बावा n बनरस्य नं मंत । असुरिवस्य असुरक्तो अन्धितरपरिशाप बह बेबसाइस्सीओ कानताओं ! मन्त्रियमपरिसाय वह वेषसावस्थीओ पञ्चताओ है वाश्विरियाए परिसाय वह देवसा-इस्सीको फन्नताको <sup>३</sup> गोयमा । जनरस्य में असरिवस्य १ क्राउँमत्यप्रिसार भारतीयं देवसाहरसीओ पञ्चलाओ मन्त्रिमियाए परिचाए श्रद्धानीसं हव बार्डि-रिमाप परिसाप कतीस देवसा ॥ कमरस्य में भेते ! क्यारिवस्स क्रमराको अस्मित्तियाए प का वेक्सिका पत्नता ! मजिसमिनाए परिसाप का वेक्सिका पुरुषता है बाह्रिरिजाए परिसाय बद्ध वेलिसमा पुरुषता है गोममा ! ध्यारस्य वे कार्टरिकस्य कारररण्यो अस्मितियाण परिसाप असदा वेनिसमा च माजासियाप परिचाए दिक्ति केनि बाहिरियाए अबूहरूका केने । असरस्य में मेरा ! अस्परिवस्य असररक्तो अस्मितरिज्ञाए परिसाए वेशानं केवार्य कार्क रिडी पन्नता । माजिसमिनाए परिसाय वाडिरियाय परिसाय वेवाणं केवामं कार्क ठिवै पन्यता ! अधिनतरिवार परि बंबीन केम्प्र्यं कार्क ठिवे पन्नता है मजिसमियाए परि बंबीने केम्प्र्यं बाक्किरेजाय परि वेशीणं के 1 योगमा ! जमरस्य वं क्यारिवस्स २ अविमादिवाए परि देशार्थ अञ्चाहमाई पश्चिमोनमाई ठिवे प अध्यासमाए परिसाए देशार्थ की परिकारिकाम दिन्ने पर्यापा वाहिस्त्रियाए परिचाए वेवालं विवर्ष्ट्र पश्चि आस्मितरिवाए परिचाए वेवीलं विवर्ष्ट्र परिकारिका दिन्द्र पर्यापा सम्बद्धियाए परिचाए वेवीलं पर्वि-क्षेत्रमं दिश्व पञ्चला वाहितिवाए परि वंबीर्थ व्यवपतिजीवर्ग दिश्व पञ्चला ॥ से

केणहुण भंते । एव वुचइ--वमरस्स असुरिंदस्स तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तजहा-समिया चडा जाया, अविभतरिया समिया मजिझमिया चडा वाहिरिया जाया २ गोयमा ! चमरस्य ण असुरिंदस्स असुररन्नो अब्भितरपरिसाए देवा वाहिया हुव्वमागच्छति णो अव्वाहिया, मज्झिमपरिसाए देवा वाहिया हुव्वमागच्छेति अन्बाहियावि, वाहिरपरिसाए देवा अन्वाहिया हन्वमागच्छति, अदुत्तर च ण गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया अन्नयरेस उचावएस कजको हुंबेस समुप्पन्नेस अब्भितरि-याए परिसाए सर्दि समइसपुच्छणाबहुले विहरइ मज्झिमपरिसाए सर्दि पय एवं पवचेमाणे २ विहरइ बाहिरियाए परिसाए सिद्धं पयडेमाणे २ विहरइ, से तेणहेणं गोयमा! एव वुचह--वमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ समिया चडा जाया, अब्भितरिया समिया मजिझमिया चंडा बाहिरिया जाया ॥ १९८ ॥ कहि ण भंते ! उत्तरिह्नाण असुरकुमाराण भवणा पण्णता 2 जहा ठाणपए जान नली एत्य नइरोयणिंदे नइरोयणराया परिनसइ जान निहरइ ॥ विहरस ण भते ! वयरोयणिंदस्स वहरोयणरत्रो कइ परिसाओ पण्णताओ ? गोयमा ! तिण्णि परिसाओ प०, तजहा—समिया चडा जाया, अब्भितरिया समिया मज्झिमया चडा वाहिरिया जाया। विलस्स ण भते । वइरोयणिंदस्स वइरोयणरक्षो अव्भितरियाए परिसाए कइ देवसहस्सा प॰ 2 मज्झिमियाए परिसाए कइ देवसहस्सा जाव वाहि-रियाए परिसाए कड देविसया पण्णता 2, गोयमा ! विकस्स ण वड्रोयणिंदस्स २ अर्बिमतरियाए परिसाए वीस देवसहस्सा पण्णत्ता, मज्झिमयाए परिसाए चडवीस देवसहस्सा पण्णत्ता, वाहिरियाए परिसाए अडावीस देवसहस्सा पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए अद्भपचमा देविसया पण्णता, मज्ज्ञिमियाए परिसाए चत्तारि देविसया पण्णता, वाहिरियाए परिसाए अद्भुद्धा देनिसया पण्णता, निलस्स ठिईए पुच्छा जाव वाहिरियाए परिसाए देवीण केवइय कार्ल ठिई पण्णता <sup>2</sup>, गोयमा 1 विलस्स ण वङ्रोयणिदस्स २ अब्भितारियाए परिसाए देवाण अद्भुद्वपिओवमा ठिई पण्णता, मन्झिमियाए परिसाए तिन्नि पलिओवमाइ ठिई पण्णता, वाहिरियाए परिसाए देवाण अम्राङ्जाङ पलिओवमाङ ठिई पण्णता, अन्भितरियाए परिसाए देवीण अ**ह**ाइजाइ पछिओवमाइ ठिई पण्णता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णता, वाहिरियाए परिसाए देवीण दिवस्न पलि-ओवम ठिई पण्णता, सेस जहा चमरस्स असुरिंद्स्स असुरकुमाररण्णो ॥ १९९ ॥ कहि ण भते ! नागकुमाराण देवाण भवणा पण्णता 2 जहा ठाणपए जाव दाहिणि-लाणि पुच्छियव्वा जाव धरणे इत्य नागकुमारिदे नागकुमारराया परिवसइ जाव

**निवरक । घरण**स्त र्ण भेते ! नागकुमारियस्य नागकुमार**ण्यो क**्र परिसाओ प**ी** गोक्सा! दिन्नि परिसाओं तालों चेन जहां चमरस्य । घरणस्य में मेरा । माय-इमारिक्स्य जागकुमार्रको भर्मिमतरियाए परिशाए कह वेक्सहरसा पक्षता जान गाविरिजाए परिसाए का वेनिसमा पण्यता । गोयमा । घरणस्य में मामअमारिवस्य नान्डमाररण्यो अस्मितरिवाए परिसाए सहि वेशसहस्ताई मिलसिमियाए परिसाए स्कारि बेबसहस्तातं नाहिरियाण परिसाण क्षसीप्रवेशसहस्तातं क्षस्मितरपरिसाण प्रम्यातर वेविसये क्यांत मजिससियाय परिसाय क्यासं वेभिसयं क्यात बाहिरियाय परिसाय पमवीसे देशिसम प्रम्यतं । घरणस्य यं । स्त्रो अभिनतरिमाप् परिसाप् देशाणं केन्द्रनं काल किहें पण्यता है मध्यितमियाए परिसाए देवान केनार्य काले किहे पण्यता है बाह्मिरियाए परिसाए देवाणं केवहर्ग कार्क ठिई पण्यता है अस्टिम्तरियाए परिसाए देवीण केन्द्रमें कार्य दिवे पण्णता ! मजिसमिवाए परिसाए देवीन केन्द्रने कार्य दिहै पञ्चला ! बाहिरियाए परिसाए वेशीजं केनहर्ग कार्क ठिहै पञ्चला ! मोनमा ! भरबस्य रण्यो अस्मितरियाए परिसाए देवार्थ सहरेपं सहप्रक्रिओवर्न ठिई पञ्चण सन्धिमिनाए परिसाए बंबार्थ कदपक्रिओवर्ग ठिई क्लापा बाहिरिनाए परिसाए देवाणं देसूनं श्रद्धपरिकोदमं क्षि पञ्चला अभिगतरियाए परिसार देनीयं देसूनं **अद्यप्रिओवर्ग ठिडे पण्णता अभिवामिनाए परिसाए देवीनं साहर्ग न**टक्मागपनि-कोदमं दिशे पञ्चला वाशिरेबाय परिसाय देवाणं करमागपरिकोदमं दिशे पञ्चला सद्धे ज्वा पमरस्य n उद्धे में मंदे ! उद्योद्धानं पायकुमाराणं पदा ठावपर पाव मिद्ररह ॥ अवार्षंद्रस्य में मेरे ! नायकमारियस्य नायकमाररूमो *नविस्ति*रीयार परिसाय क्षत्र वेषसाहरसीओ कमाताओ है मिक्सिमियाए परिसाय पत्र वेषसाहरसीको क्यताओं । बाहिरियाए परिसाए वह वेक्साहरसीओ क्याताओं । अध्यतिगए परिसाय क्षत्र वेभिसना पञ्चला । मधिकानियाय परिसाय क्षत्र वेभिसना पञ्चला । वाबिरिवाए परिसाए कह वेबिसमा पण्यता । गोवना । भूवार्यवृत्स व नामकुमारि बरस नाम्ब्यमाररचो मस्मित्तियाए परिसाध प्रवास वेबस्यस्सा क्याता मन्धि-मिमाए परिसाए सर्दे वेक्साइस्सीको पञ्चलाको बाबिरियाए परिसाए सपरि वेवसम्बद्धीओ पञ्चताओ अभिगतरिवाए परिसाए हो पनवीस वेविसवार्ण पञ्चता मजिसमिनाए परिसार हो बेबीसना पन्नता नाक्षिरियाए परिसार पन्नतर बेनिसर्न पन्यतः। भवानंबस्यः नं मेरो । नागक्रमारिबस्यः नामक्रमाररन्त्रो अस्मित्ररिमाए परिसाए बनाने केनरने कर्फ ठिवे पन्यता जान नाहिरिनाए परिसाए वेशीन केनरने कार्य दिश्व परमचा रे योगमा । भूजार्जनस्य मं अधिमतरिज्ञाप् गरिसाप् देवाणं

देसूण पिलओवमं ठिई पण्णता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण साइरेग अद्धपिलओवमं ठिई पण्णता, बाहिरियाए परिसाए देवाण अद्धपलिओवम ठिई पण्णता, अर्थिन-तरियाए परिसाए देवीण अद्भपिक्षोवमं ठिई पण्णता, मिन्झिमियाए परिसाए देवीण देसूण अद्धपलिओवम ठिई पण्णता, वाहिरियाए परिसाए देवीण साइरेगं चडब्भागपलिओवम ठिई पण्णता, अद्वो जहा चमरस्स, अवसेसाणं वेणुदेवाईणं महाघोसपज्जवसाणाण ठाणपयवत्तव्वया णिरवसेसा भाणियन्वा, परिसाओ जहा धरणभूयाणदाण (सेसाण भवणवर्षण) दाहिणिल्लाण जहा वरणस्स उत्तरिल्लाण जहा भूयाणदस्स, परिमाणिप ठिईवि॥ १२०॥ किह ण भंते! वाणमतराण देवाण भवणा (भोमेजा णगरा) पण्णता 2 जहा ठाणपए जाव विहरंति ॥ किह ण भंते ! पिसायाण देवाण भवणा पण्णता व जहा ठाणपए जाव विहरति कालमहाकाला य तत्य दुवे पिसायकुमाररायाणो परिवसति जाव विहरति, कहि ण भते ! दाहिणिल्लाण पिसायकुमाराण जाव विहरति काले य एत्य पिसाय-कुमारिंदे पिसायकुमारराया परिवसइ महिद्वुए जाव विहरइ ॥ कालस्स ण भते! पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो कइ परिसाओ पण्णताओ १ गोयमा! तिण्णि परिसाओ पण्णताओ, तजहा-ईसा तुडिया दढरहा, अस्मितरिया ईसा मिज्झिमिया तुिडिया वाहिरिया दृढरहा। कालस्स ण मते ! पिसायकुमारिंदरस पिसायकुमाररण्णो अस्भितरपरिसाए कइ देवसाहस्सीओ पण्णताओ जाव वाहि-रियाए परिसाए कइ देविसया पण्णता 2, गो०। कालस्स णं पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमाररायस्स अन्भितरियपरिसाए अह देवसाहस्सीओ पण्णताओ मज्झिम-परिसाए दस देवसाहरूसीओ पण्णताओ वाहिरियपरिसाए वार्य देवसाहरूसीओ पण्णताओं अन्भितरियाए परिसाए एग देविसय पण्णत्त मज्ज्जिमियाए परिसाए एग देविसय पण्णत वाहिरियाए परिसाए एग देविसय पण्णत । कालस्स ण भते ! पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो अर्दिभतरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णता <sup>2</sup> मिन्सिमियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णता <sup>2</sup> वाहि-रियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता जाव वाहिरियाए० देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता 2, गोयमा ! कालस्स ण पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमा-ररण्णो अर्टिभतरपरिसाए देवाण अद्धपलिओवम ठिई पण्णता, मज्झिमियाए परि॰ देवाण देस्ण अद्धपलिओवम ठिई पण्णता, वाहिरियाए परि॰ देवाण साइरेगं चउन्भागपलिओवम ठिई पण्णता, अन्भतरपरि० देवीण साइरेग चउन्भागपलि-ओवम ठिई पण्णत्ता, मजिसमपरि॰ देवीण चडव्भागपलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरपरिसाए देवीयाँ इसूर्ण बराज्यानपरिओवनं दिवें पञ्चला अट्टो को बन सम-रस्त एवं उत्तरस्यमि एवं मिर्न्तरं जान गीनक्यस्य ॥ १२१ ॥ कहि ये मेर्ने ! जोवसिवाणं वंबाक विमाना पण्यता ! ऋदि य मैठे ! जोइसिवा वया परिवर्शते ! मोगमा ! उर्णि दीवसमुद्दाण इमीसे रमणणमाए पुडमीए बहसमरमिन्दाओ मूमि-मामाओ सत्तकरए जावनसए उड्डं उप्यक्ता बस्तारसमा जोवजवाहमेर्च उत्त्व ने बोइसिबार्च देवायं तिरियमस्बेद्धा बोइसियनिमाणागासस्यसहस्या मर्गतीतिम-क्बार्य से में निमाणा अस्यक्रियराख्ठाणस्टिमा एवं बहा ठाणपए जाव बंदमस्रीया य तस्य में ओइसिंदा ओइसरावाचो परिवसंति समिन्द्रिया जान निद्राति ॥ स्ट्रस्य म भेते ! बोइसिंब्स्स बोइसरम्बो का परिसाओ पन्यताओ है गोसमा ! विकित परिसाओ पन्नताओं तंत्रहा-तंत्रा तृत्विया पन्ना व्यक्तितरया तंत्रा मनिश्वनिया तृत्विता वाहि रिया पन्ना सेस जहा काकस्य परिमार्थ दिशेनि । बद्दो नदा नगरस्य । बदस्सनि एव चन ॥ १२२ ॥ चक्कि में मते । वीवसमुदा है केरहवा में मते । दीवसमुद्दा है केनहासका र्ष मंत्रे | दोवसमुद्दा रे 🎏 चंठिया र्य मंत्र । दौवसमुद्दा रे विमायारमावपहोबाउ र्ष भेट ! दीवस्मुदा पत्रता । योजमा ! नेपुदीवाह्या दीवा अवजाह्या समुद्रा संज्ञानमा एगविङ्गविद्वाना निस्पारको जनेगविङ्गविद्वाना बुगुपादुगुचे पङ्गपाएमाना २ पनिरन्तामा २ सोसासमाणबीईवा बहुउप्पस्परसङ्ख्यकक्रिसहस्मसोयीविकरी-करीयमहापॉकरीक्सवनत्तवहरस्यपत्तपण्डककेसरीयन्त्रिया पर्तर्य पर्ताव परामवरकेया-परिक्रिकता परित्रं परित्रं कासंबपरिक्रिकता अस्ति श्रीरेनकोए अस्त्रोजा बीनस्टाहा सर्वभूरमधपम्बद्धाना पन्नता सम्बादसो। ॥ १२३ ॥ सन्द में अर्थ नेन्सीने मामं दीवे रीवसमुदार्ण अस्मितारेए सम्बद्धाए यह वेक्कपुरसंक्रानसक्त सह ए नहनामस्कानसंकिए के पुरुक्तकन्त्रनास्क्रावसंकिए के प्रतिपुर्वपंदर्सकान-देशिए एक बोयमसमसहस्य आयामनिक्तानेन विभिन्न जोगमस्यसहस्यातं सोक्स य सहस्ताई बोन्नि य सताबोरी कोयवसए विन्नि य कोसे महाबीस व प्रमुख तरस स्थानतं अदंगुक्यं च किविविसेसाद्विनं परिक्योने प्रवर्ते ॥ से चं प्रधार बराईए सम्बद्धे सर्गता सपरिक्षितो ॥ सा वं अगई सद्ध बोस्पाई उर्द्र उपतेर्य मुके बार्स जांस्पाई निकासियं सको अहा बोबवाई विकासिन उपि बतारि बोनवाई विस्तुनियं मुळे विविक्रणा सब्दे एंखिला स्टिंग तलुना मोपुष्कस्थान सरिया सम्बद्धरामहै अच्छा सन्दा कहा बद्धा मद्धा जीर्या विस्तवा विपेका क्रिक्रे प्रश्नाम्या सत्पमा सरिसधीया सत्योगा पासाप्रेया वरिसमित्रा अभिरूपा क्षीरमा ॥ सा म समह एकेमं आस्कडएमं सम्मनो सर्गता स्परिनेकता ॥ से मे

जालकडए अद्भजोयण उद्गु उचतेण पचघणुसयाइ विक्खभेण सव्वरयणामए अच्छे सण्हे लण्हे घट्टे महे णीरए णिम्मले णिप्पके णिक्कडच्छाए सप्पभे [सस्सिरीए] समरीए सउजोए पासाईए दरिसणिजे अभिरूवे पिडरूवे ॥ १२४ ॥ तीसे ण जगईए उपि वहुमज्झदेसभाए एत्य ण एगा महई पउमवरवेइया ५०, सा ण पउमवरवेइया अद्वजोयण उन्न उच्चतेण पंच धणुसयाइ विक्खभेण सव्वरयणामए जगईसमिया परिक्खेवेण सव्वरयणामई०॥ तीसे ण पउमवरवेइयाए अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते, तजहा-वइरामया नेमा रिद्वामया परहाणा वेरुलियामया खभा सुवण्णरूपमया फलगा वइरामया सधी लोहियक्खमईओ सूईओ णाणामणिमया कडेवरा कडेवरसचाडा णाणामणिमया रूवा नाणामणिमया रूवसघाडा अकामया पक्खा पक्खवाहाओ जोइरसामया वसा वसकवेह्नया य रययामईओ पट्टियाओ जायरूवमईओ ओहाडणीओ वइरामईओ उवरि पुञ्छणीओ सन्वसेए रययामए छायणे ॥ सा ण पडमवरवेइया एगमेगेण हेमजालेण एगमेगेण गवक्खजालेण एगमेगेण खिंखिणिजालेण जाव मणिजालेण (कणयजालेण रयणजालेण) एगमेगेण पउमवरजालेण सन्वरयणामएण सन्वओ समंता सपरिक्खिता ॥ ते ण जाला तव-णिजलवृसगा सुवण्णपयरगमिडया णाणामणिरयणविविहहारद्वहारजवसोभियसमुदया ईसिं अण्णमण्णमसपत्ता पुव्वावरदाहिणउत्तरागएहिं वाएहिं मदाग २ एजामाणा २ कपिजमाणा २ लबमाणा २ पझझमाणा २ सद्दायमाणा २ तेण ओराळेण मणु-ण्णेण कण्णमणणिव्युइकरेण सद्देण सव्वओ समता आपूरेमाणा सिरीए अईव २ उनसोभेमाणा उन॰ चिट्ठति ॥ तीसे ण पउमनरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे २ तहिं तिहें बहुवे ह्यसघाडा गयसघाडा नरसघाडा किण्णरसघाडा किपुरिससघाडा महोरग-सघाडा गधव्वसघाडा वसहसघाडा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा रुण्हा घट्टा महा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कबन्छाया सप्पभा समरीया सउजोया पासाईया दरिसणिजा अभिरूवा पडिरूवा । तीसे ण पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे २ तिह तर्हि वहवे ह्यपतीओ तहेव जाव पिडल्वाओ । एव ह्यवीहीओ जाव पिडल्वाओ । एव इयमिहुणाइ जाव पिडिल्वाइ ॥ तीसे ण पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे २ तिह तिहं वहवे पडमलयाओ नागलयाओ, एवं असोग० चपग० च्यवण० वासित० अइ-मुत्तग॰ कुद॰ सामलयाओ णिच कुसुमियाओ जाव सुविहत्तपिंडमजरिवर्डिसगधरीओ सन्वरयणामईओ अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्टाओ मट्टाओ णीरयाओ णिम्मलाओ णिप्पकाओ णिक्कडच्छायाओ सप्पभाओ समरीयाओ सउज्जोयाओ पासाइयाओ दरिसणिजाओ अभिल्वाओ पडिल्वाओ ॥ तीसे ण पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ

मेरी । एवं शुक्क-परामवरकेका परामवरकेका ! गोसमा ! परामवरकेकाए राज क्ष्म हेसे २ तक्षे वक्षे नेहमास नेहमानाहास नेहमासीसप्रम्पस नेहमापुरतरेक क्रमेस योगवाहास यमसीसेस क्षेत्रपूर्वतरेस सहित सहित्रहेस सहित्रहरूस सहपूर्वतरेस पक्षेत्र पक्रवाहास पक्रवपेरतेस वहाँ उपाधा प्रवस्त वाव स्वसहस्सपता सम्बर्धमानगरं अच्छार सम्बद्धं कमातं महारं महारं बीरमतं विस्मकारं निप्प-काई निर्मापक कामगाई सप्पमाई समरीनाई सक्कोबाई पासाइबाई बरिसिमाबाड अभिरुवाई पविद्याहे मह्या २ वाशिक्षण्यनसमामाई प्रणतात सम्यानको ! से रामहोने मोतमा । एवं पुचा-परमारशस्या २ ॥ परमारकेश्या के मंद्र । कि सारया असास्या रे गोनमा र सिय सास्या रिज असास्या ॥ से केन्द्रेमं मंते र एवं तुच्छ---रिय सास्या सिव असास्या ! गोयमा ! क्ष्यद्वाए सास्या क्ष्यप्रवाही गांवपळ-नहीं रमपन्नवेदी फासपन्नवेदी असासवा से तबदेन गोवमा ! एवं वचड-सिव सासवा क्षित्र असासमा ॥ परमवरनेप्रमा में अंत ( काळवो केवियर होत ) योगमा । प क्यांनि जारि ज क्यांनि चरिय च क्यांनि च अविस्तर भूनि च अवह व सनि-स्तइ व प्रवा तिथया सासवा अक्टाया अव्यक्त अवद्विया यिचा परमक्रकेता B ९ २ ५ ॥ सीसे व्य जराहए रुप्ति बाह्रि परमंबरकेत्याए एस्व वं एने स**हं क्यसह** प्रकार इस्माहं यो जोजवादं पद्याकनिक्यांनेणं जयप्रसम् परिक्केनेणं किन्हे किन्हो-माचे जान अनेगमगडरा बाणसम्मपरिमोषणे शुरम्मे पासाइए सम्बे सन्हे ध्दे सहै नीरए निर्भाव निरमक निर्मा कार्य सम्मान समिरीए स्टब्सए पासाईए दरिसांबने अभिक्त परिकृते । क्ला वं वजसङस्य कतो बहुसमरमध्ये भूमिनागे पन्यदे सं बहानामए-आसिंगपुरुवादेइ वा सुरंगपुरुवादेइ वा सरतकेइ वा करवकेइ वा आर्यसमञ्जेर वा पंदर्मक्केर वा स्टर्मक्केर वा उरक्षावरनेत वा उसमवन्तेर वा बराइकानेइ वा सीइकानेइ वा वरकानकोइ वा बिगकानेइ वा बीविजनकेइ वा अनेवर्धक्रिकासहरसम्बद्धः आवष्ठप्रवानश्चेत्रंपसेत्रीसारिवयसोवरिवयपुग्नापनद् माप्यमञ्जेत्यमगरकगणारमारपञ्जानकिप्रमपत्तमागरसरगनासदिस्त्रवपदमस्यभितिः वितेष्ट सम्बद्धार्थे समिरीएडि सउजाएडि नापाबिड्यंचनकार्ड सपडि य मणीक्ष य जबसोडिए र्राज्या-फिन्हेर्षि जान गुतिकेर्षि ॥ तस्य मं अ तं फिल्हा तमा स समी य तसि य असमेगावने नामानासे पम्नति से जहानासए -अस्तिह ना अवसंह वा र्यंत्रपद्व वा कम्बस्द था मसीइ वा गुरिकाद वा गमसेद वा गक्कगुमिनाद वा ममरेड वा समराविध्याह वा समरपत्तागयसारेह वा जेतुककेह वा अहारिद्धेह वा

परपद्वएइ वा गएइ वा गयकलमेइ वा कण्हसप्पेइ वा कण्हकेसरेइ वा आगासथि-गगलेइ वा कण्हासोएइ वा किण्हकणवीरेइ वा कण्हवधुजीवएइ वा, भवे एयारूवे सिया 2, गोयमा 1 णो इणहे समद्वे, तेसि ण कण्हाण तणाण मणीण य इत्तो इहतराए चेव कततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव वण्णेणं पण्णत्ते ॥ तत्य ण जे ते जीलगा तणा य मणी य तेसि ण इमेयारूवे वण्णावासे पण्णते, से जहानामए-भिंगेइ वा भिंगपत्तेइ वा चासेइ वा चासपिच्छेइ वा सएइ वा सुयपिच्छेइ वा णीलीइ वा णीलीमेएइ वा णीलीगुलियाइ वा सामाएइ वा उचतएइ वा वणराईइ वा हलहरवसणेइ वा मोरग्गीवाइ वा पारेवयगीवाइ वा अयसिकुसुमेइ वा अजणकेसिगाकुसुमेइ वा णीलुप्पलेइ वा णीलासोएइ वा णीलकणवीरेइ वा णीलवधुजीवएइ वा, भवे एयारूवे सिया <sup>2</sup>, णो इण्डे समद्वे, तेसि ण णीलगाण तणाण मणीण य एत्तो इट्टतराए चेव कततराए चेव जाव वण्णेण पण्णते ॥ तत्य णं जे ते लोहियगा तणा य मणी य तेसि ण अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते, से जहाणामए-ससगरुहिरेइ वा उरव्भरुहिरेइ वा णरुरुहिरेइ वा वराहरुहिरेइ वा महिसरहिरेइ वा वालिंदगोवएइ वा वालिदवागरेइ वा सझन्भरागेइ वा गुंजद्धराएइ वा जाइहिगुळुएइ वा सिलप्पवालेइ वा पवालकुरेइ वा लोहियक्खमणीइ वा लक्खा-रसएइ वा किमिरागेइ वा रत्तकवलेइ वा चीणपिट्टरासीइ वा जासुयणकुरुमेड वा किसुयन्नसुमेइ वा पालियायकुसुमेइ वा रत्तुप्पलेइ वा रत्तासोगेइ वा रत्तकणयारेइ वा रत्तवधुजीवेइ वा, भवे एयारूवे सिया 2, नो इणड्डे समद्धे, तेसि ण लोहियगाण तणाण य मणीण य एत्तो इट्टतराए चेव जाव वण्णेण पण्णते ॥ तत्थ ण जे ते हालिहुना तणा य मणी य तेसि ण अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते. से जहाणामए---चपएइ वा चपगच्छल्लीइ वा अपयमेएइ वा हालिहाइ वा हालिह्मेएइ वा हालिह्गुलियाइ वा हरियालेइ वा हरियालमेण्ड् वा हरियालगुलियाइ वा चिउरेइ वा चिउरंगरागेइ वा वरक-गएइ वा वरकणगनिघसेइ वा सुवण्णसिप्पिएइ वा वर्पुरिसवसणेइ वा सल्लइकुसुमेइ वा चपगकुसुमेइ वा कुहु डियाकुसुमेइ वा (कोरटगदामेइ वा) तडउटाकुसुमेइ वा घोसाडियाकुसुमेइ वा सुवण्णजुहियाकुसुमेइ वा सहरिष्ययाकुसुमेइ वा िकोरिंटवरमञ्ज-दामेइ वा | बीयगकुसुमेइ वा पीयासोएइ वा पीयकणवीरेइ वा पीयवधुजीएइ वा, भवे एयारूवे सिया 2, नो इणद्वे समद्वे, ते ण हालिहा तणा य मणी य एतो इद्वयरा चेव जाव वण्णेण पण्णता ॥ तत्थ ण जे ते सुक्षिल्लगा तणा य मणी य तेसि ण अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहानामए-अकेइ वा सखेइ वा चदेइ वा कुदेइ वा कुसुमे(मुए)इ वा दयरएइ वा (दिहघणेइ वा खीरेइ वा खीरपूरेइ वा) इंधावठीइ वा कोंचावलीइ वा हारावशीह वा क्लायावशीह वा चंदावकीइ वा सारह-मनकाइएर वा करायोगकृमधोह वा साविधिद्वरातीह वा क्रेब्युप्परातीह वा कुसुन-राधीद वा श्रव्यक्तिवाबीद वा पेतुषानिवाद वा निरोद्द वा निषाक्तिवाद वा गर्यव्येतेद वा सर्वयदक्ष वा पोंडरीयवंदेव वा सिंदुवारमञ्जदानेक वा सेमाओएई वा सेमकणवीरेक वा धनवंदुनीएइ वा सबे एयाक्ने सिया ! जो इनदे समक्के, तेसि व सुविकार्य तकार्ण मणीय स एतो इद्वतराय चेव वाव वज्येण प्रकात ॥ तेसि व सेसे ! तबाय य मणीन व केरिसए पंथे पञ्चले है से जकामामए<del>ं कोटप</del>्राय वा पत्तपुतास वा नांगपुराम ना तगरपुराय ना एकपुराय ना [किरिमेप्पिराय ना ] र्यदनपुराय वा कुंकमपुराज वा उसीरपुराज वा जंपमपुराज वा सहसमपुराज वा दमजमपुराज वा जाइपुराय वा जुडियापुराय वा अक्रिक्युराय वा जोसाक्षियपुराज वा वासदि-स्पुडाण वा केस्पुडाण वा कप्प्युडाण वा पाडक्युडाण वा अवसार्थारी उदिसर्जन मायाय वा विक्रिक्साबाज वा कुष्टिक्सायाय वा विक्रिशाबाब वा उक्रिशिक्साबाज वा विकिरिज्ञमाणाय वा परिशुक्षमाणाय वा भंडाका वा भंड साहरिज्ञमाणाय मोएका समुख्या बावमव्यविक्कावरा स्वक्यो धर्मता वंदा बामिनिस्सर्वेति सर्वे एबास्य दिना है जो इसके समके विशे जें तजाने मधील य एको उ स्क्रतराए पेंद बान मजामतराए चेद गेंचे पन्तरो ॥ देशि वं संदे । तथाय द मजीन न केरिसए फासे पञ्चले । से अहाजानए-आदेषेद वा क्यह वा भूरेद वा पनवीएर वा इसगब्भक्तप्रेत्र वा सिरीसक्रुद्धमनिषएर वा बाब्कमुक्ततरासीह वा अवे एकस्त्री दिया <sup>१</sup> को इमद्रे समेंद्रे, रेसि मं तकाण य मणीक य एत्प्रे स्ट्रक्टाए के जान प्राप्तेनं पन्नते ।। देखि मं शेदे । दनानं पुन्तान्रहाद्विपश्चरागपृद्धं नाप्त्रें मेदार्य मेदार्ग एहमानं वेहमार्थ केपियाण खोमियाणे शाकियानं केदियानं प्रदियानं उद्योगमार्थ केरिसप् सहे पन्नो र से बहायामप्-सिनेशप् वा स्वमानिवाप् का गहकारन का सक्षतस्य सञ्चायस्य सर्वेदयस्य क्रतोरनकारस्य सर्विकोसस्य संविद्यिभिद्वेसवासपेरेतपरिवित्तस्य द्वेसववित्तवित्वत्वित्तवस्यानिज्ञुत्तवास्या मस्य सुविविद्यारयर्गंडकपुरागस्य काकायसम्बन्धयेनियत्कामस्य काद्रव्यवस्य ससप्रतास्य अस्यव्यक्तियसारविश्वसप्रियस्य सरक्ष्यवतीयतोष(परि)मंबिवस्र संबद्धवर्दिसास्य स्वावसरपहरवावर्वभरियस्य बोहहदस्वस्य राज्यावित ग अर्चवरित वा रम्मीरे वा मणियोडिमतर्वति अभिनुदार्व २ अनियडिन-मायस्य वा विवाहिकमाणस्य वा [पहत्रवरतुरंगस्य र्थवनेपादश्वसः] भोरासा मञुच्या कन्नमध्यविष्युद्दकरा सम्बन्धी सर्मता सन्। श्रामिनस्तवति सन् एयास्त्री

सिया 2, णो इणहे समद्दे, से जहाणामए-वैयालियाए वीणाए उत्तरमंदामुच्छियाए अके सुपइद्वियाए चदणसारकोणपिडघिट्याए कुसलणरणारिसपगिहयाए पओसपचूस-कालसमयिस मदं मंदं एइयाए वेइयाए खोभियाए उदीरियाए ओराला मणुण्णा कण्णमणणिव्युइकरा सव्वओ समता सद्दा अभिणिस्सवति भवे एयारूवे सिया 2, णो इण्डे समद्वे, से जहाणामए--किण्णराण वा किपुरिसाण वा महोरगाण वा गधन्वाण वा भइसाळवणगयाण वा नद्णवणगयाण वा सोमणसवणगयाण वा पंडगवणगयाण वा हिमवतमलयमद्रगिरिगुहसमण्णागयाण वा एगओ सहियाण समुहागयाण समु-विद्वाण सनिविद्वाण पमुइयपक्षीलियाणं गीयरइगधव्वहरिसियमणाण गेज पज्ज कत्थं गेय प्यविद्धं पायविद्ध उक्खित्तय पवत्तय मदाय रोइयावसाण सत्तसरसमण्णागय अट्टरसमुसपउत्त छद्दोसविप्पमुक्क एकारसगुणालकार अट्टगुणोववेय गुजतवसकुद्दरोवगूढ रत्त तिद्वाणकरणसुद्ध महुरं सम सुललिय सकुहरगुजतवसततीतलताललयग्गहसु-सपउत्त मणोहरं मजयरिभियपयसचारं सुरइ सुणइ वरचारुख दिव्वं नष्ट सज गेय पगीयाण, भवे एयारूवे सिया <sup>2</sup>, हता गोयमा । एवभूए सिया ॥१२६॥ तस्स ण वणसङस्स तत्थ तत्थ देसे २ तिहं तिहं बहवे खुडूा खुडूियाओ वावीओ पुक्खरिणीओ गुजालियाओ दीहियाओ (सरसीओ) सरपतियाओ सरसरपतीओ बिलपतीओ अच्छाओ सण्हाओ रययामयकूलाओ वहरामयपासाणाओ तवणिज्ञमयतलाओ वेर्रालयमणिफालियपडलपचोयडाओ सुवण्णसुच्भ(ज्झ)रययमणिवालुयाओ सहोया-रामुडत्ताराओ णाणामणितित्यमुबद्धाओ चाउ(चउ)क्रोणाओ समतीराओ आणुपुव्व-युजायवप्पगभीरसीयलजलाओ सङ्ग्णपत्तभिसमुणालाओ बहुउप्पलकुमुयणलिणयुभ-गसोगिधयपोंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तफुळकेसरोवचियाओ छप्पयपरिभुजमाणकमलाओ अच्छविमलसलिलपुण्णाओ परिहत्यभमतमच्छकच्छभअणेगसउणमिहुणपविचरि-याओ पत्तेय पत्तेय पजमवरवेइयापरिक्खिताओ पत्तेय पत्तेय वणसङपरिक्खि-त्ताओ अप्पेगइयाओ आसवोदाओ अप्पेगइयाओ वारुणोदाओ अप्पेगइयाओ खीरोदाओ अप्पेगइयाओ घओदाओ अप्पेगइयाओ [इक्ख्र]खोदोदाओ (अमयरस-समरसोदाओ) अप्पेगइयाओ पगईए उदग(अमय)रसेण पण्णताओ पासाइयाओ ४, तासि ण खुड्डियाण वाबीण जाव बिलपतियाण तत्य २ देसे २ तहि २ जाव वहवे तिसोवाणपडिरूवगा पण्णता । तेसि ण तिसोवाणपडिरूवगाण अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते, तजहा-वइरामया नेमा रिद्वामया पइद्वाणा वेरुलियामया खभा सवण्ण-रुप्पामया फलगा वहरामया सधी लोहियक्खमईओ सूईओ णाणामणिमया अवलवणा अवलवणवाहाओ पासाइयाओ ४ ॥ तेसि ण तिसोवाणपिड ह्वगाण पुरओ पत्तेय २

तोरमा प ॥ तं वं तोरणा वानामनिमयबंगेष्ट उनमिनिद्वसम्मिनद्वा निनिद्धार्तन दरोवनिया विविद्वसारास्थोवनिया ईहानियनसमहुरमणर्मगरविद्वगवासपविज्ञार रस्सरभवसर्कुवरवयव्ययनसम्बन्धानिकाः यसुम्मवक्दरवेद्र्यापरिगमानिरामा निमाहरमम्बद्धस्यवंतप्रकानिव समिसहरसमाद्यणीया स्वासहरसम्बद्धमा निपन माणा मिक्सिसमाणा क्वक्रमेयक्केसा सहस्रासा सन्सिरीयहूना पासाप्रैया 🗑 🛭 रोसि पं तोरणार्थं उन्ति वर्षे अहुदुर्मगळना पञ्चता तं --सोरियवसिरिवच्छणंबियावत-वदमायमहाराजक्रकसम्बद्धाराणा सम्बद्धानामा अच्छा सावा प्रावस्था । रोधि व तोरवाचे तस्प काने किवानामरकाया नीवनामरकाया कोश्रेयनामरकाया हास्मित्वामरकाया प्रक्रिक्रवामरकाया अध्या सम्बाह्मप्रशाबहरदेश वस्त्रामध-गैमिया सहया पासाहया ४ ॥ तेथि वं तोरवार्व दक्षि बहुवे स्ताइस्ता पहायाः-पंडामा प्रशासका नामञ्जनका उपम्बद्धस्यमा जान समस्द्रस्यकाहरूमा। सन्बर गणामया <del>गच्छा</del> जाव पविरुवा ॥ तासि मं **स**्थियामं वावीमं जाव विरूपंतियानं तत्व तत्य वेसे २ ताई ताई बहुवे उप्पायपन्त्रसा नियदपन्त्रसा कराहपन्त्रसा शह-पम्बन्धा दगर्मदक्या वनमंत्रमा दगमाकमा दघपासाचमा प्रसदा बजा दादद्वयम भदोसमा पक्षांदोसमा सम्बद्धमानया अन्यस जाव परिक्रमा ॥ तेस वं उप्पाय-पम्बर्ध बाद पर्वाहोक्यस बहुने इसासनहं कोचासनहं गरूप्रसम्बद्धं उपनय-समाई प्रधासमाई रोहासमाई महासमाह प्रशासमाई सगरासमाई उसमासमाई पीक्षासमक्षे पठमासमक्षे विसासीगरियमासमक्षे सम्बद्धां सम्बद्धे सम्बद्धे सम्बद्धे सम्बद्धे सम्बादं महत्वं महत्वं शीरमावं विम्मकां निप्पक्रवं निवंद्रवस्काराहं सप्पमाद सनि-रीनाई सरज्जोनाई पासाइनाई दरिसनिकाई अभिक्नाई पक्रिमाई ।। तस्त में बजर्सहरूस तरब तरब वसे २ तक्षि तक्षि बहबे माकियरा गामियरा धनकियरा सनावरा मध्यनवरा पेन्कनवरा समाववरणा पराइववरणा पवसवरणा मोहन-घरचा साम्रक्रामा आक्रकरमा असम्बरमा जिल्लासमा गैपव्यवस्मा आर्यसक्सम सम्बद्धमानमा अध्यक्ष सम्बद्धा कन्द्रा बद्धा ग्राह्म बीरमा विस्मास विर्णस्य विदेश्य चप्रजा सप्पमा समिरीया सरुजोया पासाप्रया वरिसंपिजा अमिक्ना परिक्ना 🛭 तमु भ भाकिनरपुत जान भागसभरपुत बहुई हैसासमाई आन दिसाखेररियना संजातं सम्बद्धमासभातं जाम पविवकातं ॥ तस्स वं बणसवस्य तस्य तस्य वसं १ तक्षे तक्षे बहुवे कार्यक्रवणा जुहिबासैकाणा सक्रियासैक्वना बदमास्थिपासैक्वमा बासतीमेंडवगा इधिवासुमागडवया स्रीरिक्रमडवया तैक्रोक्रीमेडवगा सुद्धिमांडक्या बागसमामेडक्या अञ्चलसङ्ख्या अञ्चेत्रासंडक्या साक्षुवानेडक्या सामस्यासंडक्या

सव्वरयणामया णिच कुसुमिया णिच जाव पिडिहवा ॥ तेसु ण जाइमडवएसु जाव सामलयामजनएसु वहने पुढविसिलापट्टगा पण्णता, तजहा-अप्पेगइया हसासण-सठिया अप्पे॰ कोचासणसठिया अप्पे॰ गहलासणसठिया अप्पे॰ उण्णयासणसठिया अप्पे॰ पणयासणसिठया अप्पे॰ दीहासणसिठिया अप्पे॰ भहासणसिठिया अप्पे॰ पक्खासणसिठया अप्पे॰ मगरासणसिठया अप्पे॰ उसभासणसिठया अप्पे॰ सीहासणसठिया अप्पे॰ पडमासणसठिया अप्पे॰ दिसासोत्थियासणसठिया॰ प॰, तत्थ वहवे वरसयणासणविसिद्धसठाणसठिया पण्णत्ता समणाउसो ! आइण्णगरूय-वूरणवणीयतूलफासा मजया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा । तत्य ण वहवे वाणमतरा देवा देवीओ य आसयति सयति चिट्ठति णिसीयति तुयदृति रमति ललति कीलति मोहति पुरापोराणाण सुन्विण्णाण सुपरिक्षताण सुभाण कल्लाणाण कडाण कम्माण कल्लाण फलवित्तिविसेस पचणुभवमाणा विहरति ॥ तीसे ण जगईए उप्पि अतो पउमवरवेइयाए एत्य ण एगे मह वणसडे पण्णते देस्णाइ दो जोयणाइ विक्खभेण वेड्यासमएण परिक्खेवेण किण्हें किण्होभासे वणसडवण्णओ मणि-तणसद्दविहूणो णेयव्यो, तत्थ ण वहवे वाणमतरा देवा देवीओ य आसयित सयित चिद्वति णिसीयति तुयदृति रमति ठलति कीडति मोहति पुरा पोराणाण सुचिण्णाण सुपरिक्रताण सुभाण कहाणाण कडाण कम्माण कल्लाण फलवित्तिविसेस पञ्चणुभव-माणा विहरति ॥ १२७ ॥ जबुद्दीवस्स ण भते । दीवस्स कइ दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णता, तजहा-निजए वेजयते जयते अपराजिए ॥ १२८॥ कहि ण भते ! जबुद्दीवस्स दीवस्स विजए नाम दारे पण्णते 2 गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरित्थमेण पणयालीस जोयणसहस्साइ अवाहाए जवहीवे दीवे पुरिच्छमपेरते लवणसमुद्दपुरिच्छमद्धस्स पश्चित्थमेण सीयाए महाणईए उप्पि एत्थ ण जवुद्दीवस्म दीवस्स विजए णाम दारे पण्णते अह जोयणाइ उस्र उच्चतेण चतारि जोयणाइ विक्खभेण तावइय चेव पवेसेण सेए वरकणगयूभियागे ईहासि-यउसभतुरगनरमगर्विहगवालगकिण्णररुस्सरभचमर्कुजरवणलयपउमलयभत्तिचित्ते सभुगयवरवइरवेइयापरिगयाभिरामे विजाहरजमळजुयळजतजुते इव अचीसहस्समा-लिणीए रूवगसहस्सकलिए भिसमाणे भिन्भिसमाणे चक्खुल्लोयणलेसे सुहफासे सिस्सि-रीयरूवे वण्णो दारस्स तस्सिमो होइ त०--वइरामया णिम्मा रिद्वामया पइद्राणा वैरुलियामया खभा जायरूवोवचियपवरपचवण्णमणिरयणकोद्दिमतले हसगव्भमए एछुए गोमेजमए इदक्खीळे लोहियक्खमईओ दारचेढीओ जोइरसामए उत्तरगे वैरुठियामया कवाहा वहरामया सघी लोहियक्खमईओ सूईओ णाणामणिमया समुस्पया वहरामई अम्यलाओ अस्यक्षपासावा वहरामई आवत्तमपेत्रिया में पासप् विरेतरिसम्बन्धाः भित्तीस् चन मित्तीसुक्रिया ग्रप्पञ्या दिग्नि योगामधी ततिया णानामपिरयमनास्वरगरीसद्वियसाठिमंजियागे बङ्रसमए रस्यामप् उस्सेहे सम्मतनापिजनप् उझेप् पानामपिरअपजासपजरमनि सोवियमध्यपविषयप्ययमोग्यं अकामया प्रवस्ताकामो बोहरसामया वसा । मेहुगा य रज्यामाई पश्चियाओं जानस्मार्थ भोशावणी कररामाई उपरि पुर

सम्बर्धेवरमज्ञामण् सामवे जकममञ्ज्ञानमृत्रकाविकास्त्रीममाण् रेष् सम्बर्धान मिन्मस्दृष्टिक्यगोसीरफेक्यस्ययमिनस्थानसे विस्तरसक्दर्वदिको बामासन् दामार्जनिय भेतो य बहि च सन्हे तर्वाधनसम्बद्धमाप्रयदे ध्रहण्यसे स रीनस्वे पासाईए ४ ॥ विकास्त में दारस्य उसको पासि ब्रह्मो जिसीई दो दो नदमञ्चलपरिशासीओ प्रव्यक्ताओं ते वे नंदमकुत्रसा बर्ड्डस्ट्रस्ट द्वरमिदरवारिपविपुण्या नेदणस्वनन्याया आवदक्षेत्रपुषा परमुप्पस्विद्वाया सम् मानमा अच्छा सन्दा जाव पविस्ता महमा महमा महिन्दुं-मसनामा पर

समभाउसो i n विकास मं बारस्य उमको पासि दुवको विसीक्कियाए दो हो जाम परिवासीको ते में मागद्वामा मुत्ताबाईटर्सिकोमबासम्बन्धवाससिकानी जासपरिनेखता अस्भुगगता अमिनिसिद्धा तिरियं सुस्पमित्या व्यक्रेपप्यमञ् फ्फ्पनद्वस्टानस्टिना सम्बर्धणासया श्रव्या बाद पविस्ता महमा महमा गर समाया प सम्मानसो । ॥ तस्य न यायदेत्तम् बहुवे किञ्चसत्तवद्वकामारिक्सक

कमाना जान मुक्तिसमुक्तकदनग्नारियमक्रवामककाना ॥ ते ने दामा क्वणिक्स्नेन् मुक्कपुन्तरगर्मकिया नाजानभिरयणविविष्कद्वारसद्वार(अवसोमिक्स्मुक्का) ः

विक्रिप अर्थेन अर्थ उन्होंनेमाणा उन्होंनेमाणा निर्देश । दक्षि में मागवत उपरि भण्याओं हो दो भागवंतपरिवाधीओं पन्यताओं तसि में मागहतः मुत्ताजानेतरस्थिया तक्षेत्र काव समणारुसो ! । तेमु र्ज व्यागरीतरम्य बहुवे रमना शिक्ष्या प्रव्यक्ता तसु व रयनामपुत्र शिक्षपुत्रु व वेदक्रियामईको भूगवर्ग पञ्चताओं तंत्रहा—ताओं नं पूनवधीओ कान्सगुक्तवरकुंद्रस्त्युक्तपूनमक्सर्पर प्रस्थानिसमाना मुर्गथवरमकाभियाओ र्यथवरिम्याओ ओराक्रेप मसुन्यमे प मणनिव्यक्तरेणं यंथेणं तप्पत्त सम्बन्धा समता आपूरमाणीओ आपूरमाण आईव कार्येच स्टिशिए जान निर्दृति ॥ विजयस्य ये दारस्य बसओ पार्सि इर विसीक्षित्र हो हो साक्षिमंजितापरिधायोगो पञ्चलाओ साम्रो य सालमजिया

सीसद्वियाओं सुपयद्विवाओं मुभर्विकियाओं जाणाशास्त्रसम्याओं जाप्यामऋपिजदा

सुद्वीगेज्झमज्झाओ आमेलगजमलजुयलवद्विअब्भुष्णयपीणरइयस्रियपओहराओ रत्तावंगाओ असियकेसीओ मिउविसयपसत्यलक्खणसवैहियगगसिरयाओ ईसिं असो-गवरपायवसमुद्वियाओ वामहत्थगहियग्गसालाओ ईसिं अद्धच्छिकडक्खविद्धिएहिं -छ्सेमाणीओ इव चक्खुल्लोयणलेसाहिं अण्णमण्ण खिज्जमाणीओ इव पुढविपरिणामाओ सासयभावमुवगयाओ चदाणणाओ चदविलासिणीओ चददसमितिहालाओ चदाहि-यसोमदसणाओ उक्का इव उज्जोएमाणीओ विज्जुघणमरीइसूरदिप्पततेयअहिययरसनि-गासाओ सिंगारागारचारुवेसाओ पासाइयाओ ४ तेयसा अईव अईव सोमेमाणीओ सोमेमाणीओ चिद्वति ॥ विजयस्स ण दारस्स उभओ पासि दुहुओ णिसीहियाए दो दो जालकडगा पण्णत्ता, ते ण जालकडगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडि-रूवा ॥ विजयस्स ण दारस्स उभओ पासिं दुहुओ णिसीहियाए दो दो घंटापरिवाडीओ पण्णताओ, तासि णं घटाण अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते, तजहा—जवूणयमईओ घटाओ वहरामईस्रो लालाओ णाणामणिमया घटापासगा तवणिज्जमईस्रो सकलाओ रययामईओ रज्जूमो ॥ ताओ ण घटाओ ओहस्सराओ मेहस्सराओ हंसस्सराओ कोंचस्तराओ णदिस्सराओ णदिघोसाओ सीहस्तराओ सीहघोसाओ मजुस्तराओ मजुघोसाओ सुस्सराओ सुस्सरणिग्घोसाओ ते पएसे ओराल्रेण कण्णमणनिव्युइकरेण सद्देण जाव चिट्ठति ॥ विजयस्स ण दारस्स उभओ पासि दुहओं णिसीहियाए दो दो वणमालापरिवाहीओ वण्णताओ, ताओ ण वणमालाओ णाणादुमलयाकिसलयपश्चनसमाउलाओ छप्पयपरिभुजमाणकमलसोभतसस्सिरीयाओ पासाइयाओ॰ ते पएसे उराळेण जाव गधेण आपूरेमाणीओ जाव चिद्वति ॥ १२९ ॥ विजयस्स ण दारस्स उभओ पासिं दुहुओ णिसीहियाए दो दो पगठगा पण्णता, ते ण पगठगा चत्तारि जोयणाइ आयामविक्खमेण दो जोयणाइ बाह्ह्रेण सन्ववइरामया अन्छा जाव पिंडह्वा ॥ तेसि ण पगठगाण उविर पत्तेय पत्तेय पासायविंसगा पण्णता, ते ण पासायवर्डिसगा चत्तारि जोयणाइ उन्ह उच्चतेण दो जोयणाइ आया-मविक्लभेण अन्भुग्गयमूसियपहसियाविव विविह्मणिर्यणभितिचिता वाउद्धुयविज-यवेजयतीपडागच्छताइच्छत्तकलिया तुगा गयणयलमभिलघमाण(णुलिहत)सिहरा जालतररयणपजरुम्मिलियन्व मणिकणगथूमियागा वियसियसयवत्तपोंडरीयतिलयर-<sup>सणद्भवदित्ता</sup> णाणामणिमयदामालकिया अतो य वाहिं च सण्हा तवणिज्जरहरू वाछुयापत्यडा सहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया ४ ॥ तेसि ण पासायवर्डिसगाण उद्योया पउमलया जाव सामलयाभितिचित्ता सन्वतविणज्ञमया अच्छा जाव पिड-र्वा ॥ तेसि ण पासायविंडिसगाण पत्तेय पत्तेयं अतो वहुसमरमणिजे भूमिभागे

पन्नते से बहापामए आर्सिमपुरूकोर वा जाव मणीहै उद्योगित, मणीव गर्पो बच्चो प्रसी व नेसम्बो ॥ तसि वं बहुसगरमधिकाणं भूमिमागाचं बहुमञ्जादसमाए परेबं परोबं मनिपेडियाओ पण्यतामी वामो वं मनिपेडियाओ जोयन मामामनि-क्रंप्रेमेणं अञ्चलोयणं बाह्येणं सम्बर्यणामाईको जाव पविश्वाको तासि पं समिपेक्षि याणं उपरि परेतं २ सीहासणे पञ्जते वेधि णै सीहासणाणं अयमयाहरू व्याजासे पण्यते तेयहा-त्यक्रियमया बदबाका रचनामया चीहा सोवव्यिया कावा क्राव्यास निमगाई पावसीसगाई अंगुजयसवाई गताई बहुरामवा सभी जानामनिमए क्षेत्र है से सीडासमा इंडामियउसम् बाद परमस्वमतिबित्ता स्सारसारोवइस्विविद्याधारस्य-पायपीका अध्यापमितमस्रागभवतय् अवविश्वतीक्ष्यसम्बद्धाः स्वामित्रामा उपविश्वती महराज्यपविच्छायणा श्रविरह्मप्यताणा रतस्वसमुपा सुरम्मा आईपयस्यम्र्रणवयी-यक्तमस्यक्रासा मरुवा पासाईवा ४ ॥ देखि जं सीहास्यार्च स्टिप प्लेब प्रदेश विश्व-मबसे पन्नते तं में निजयवुसा सेवा संबाद्धंत्ववगरवनस्थमद्वियक्षेत्रपुंजस्वियासा सम्बरमपामना अच्छा जान पविस्था ॥ वेशि वं विनयनुशानं बहुमञ्चादेसभाए परेर्व परिमं नहराममा अकुरा पन्नता वेस न बहरामधून अञ्चस परिमं २ अभिका मुता दामा प्रणाता है में क्रेमिका भुतावामा अधिहै चउड़ि चउड़ि तदब्बच्यमाधमते हैं व्यव्यक्तिक्रेष्टि मुत्तावामेक्षे सम्बन्धे सर्मता स्वतिक्रियता सं व बामा तबनिक्रमेन् समा मुक्कप्रदरगमंतिया जाव निर्देशि वेशि यं पासास्वविस्थाणं उप्पि बहुव बाउ-दुर्मगरम्या वन्त्रता सोरिक्य तहेव जाव छता ॥ १३ ॥ विजयस्य व्यं बारस्य यमभी पार्सि दुइओ निसीहिनाए दो दो दारणा पञ्चला दे नं तोरणा नानामनिममा उद्देश बाब अद्भुनंगलगा व छत्तत्वकृता ॥ तसि यं तोर्वार्व पुरका दो दो सामनंबि-याओं पन्नसाओं जहन जे हेक्स सहेन ॥ संस्थि में सोरमाने पुरक्षा हो दो मागई त्या पन्यता त यं नागर्तत्या मुत्तावार्कतस्थिया तहेन तमु मं मागर्दत्यम् नहेने किया सत्ताद्वरमारिक्यक्वासङ्गामा जाव निद्यति ॥ तति वं ठारणायं पुरस्के दो तो इयसभाडमा जान उसमसैनाहमा कुनता सम्बर्धमामया भक्ता जान पढिस्था एव पंतीओ बीईाओ सिबुक्या दो दो पडमल्याओ जाव पडिस्थाओ एसि में तीरमार्न पुरक्षों हो हो अस्यानसीयस्थिया पञ्चला त में अस्यानस्थानस्थित सम्बर्गयाम्या अच्छा जान पृष्टिस्या । तसि में तोरमार्च पुरुश्ने दो दो चंदवप्रसमा क्रमता त म पंत्रप्रक्रमा वरकमन्त्रहामा तहेष सम्बद्धमानवा जान प्रवेतवा समजाउसो । ॥ शक्ति व्यं सारकार्यं पुरओ दो दो भिगारमा पन्यसः बरबमनगर द्राया जाव सम्बरमणासमा अध्या जाव पत्रिक्ता महया महया यत्तपत्रमुद्दाविहत-

माणा पण्णता समणाउसो ! ॥ तेसि ण तोरणाण पुरओ दो दो आयसगा पण्णता, तेसि ण आयंसगाण अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते, तजहा--तवणिज्ञमया पगठगा वैरुलियमया छरहा ( थभया ) वहरामया वरंगा णाणामणिमया वलक्खा अकमया मडला अणोघिषयनिम्मलासाए छायाए सन्वओ चेव समणुवद्धा चद्मंडलपिडणि-गासा महया महया अद्भकायसमाणा पण्णता समणाउसो ! ॥ तेसि ण तोरणाणं पुरओ दो दो वहरणाभा थाला पण्णता, ते णं थाला अच्छतिच्छिडयसालितदुलनह-सद्दुबहुपिंडपुण्णा चेव चिद्वति सव्वजवृणयामया अच्छा जाव पडिरूवा मह्या मह्या रह्चकसमाणा प॰ समणाउसो।॥ तेसि ण तोरणाणं पुरओ दो दो पाईओ पण्णताओ, ताओ ण पाईओ अच्छोदयपिंडहत्थाओ णाणाविहपचवण्णस्स फलहरियगस्स वहुपिडपुण्णाओ विव चिद्वति सन्वरयणामईओ जाव पिडह्वाओ मह्या महया गोक्रिंजगचब्रसमाणाओ पण्णताओ समणाउसो ! ॥ तेसि ण तोरणाण पुरओ दो दो सुपइहुगा पण्णत्ता, ते ण सुपइहुगा णाणाविहपचवण्णपसाहणगभडविरइया सब्बोसिहपिंडपुण्णा सन्वर्यणामया अच्छा जाव पर्डिरूवा ॥ तेसि ण तोरणाणं पुरओ दो दो मणोगुलियाओ पण्णताओ ॥ तासु णं मणोगुलियासु वहचे सुवण्ण-रुपामया फलगा पण्णता, तेसु ण सुवण्णरुपामएस फलएस वहवे वहरामया णागदतगा मुताजालतरूसिया हेम जाव गयदतसमाणा पण्णता, तेसु णं वहराम-एस णागदतएस वहवे रसयामया सिक्स्या पण्णता, तेसु णं रययामएस सिक्क्एस बहुवे वायकरगा पण्णता ॥ ते ण वायकरगा किण्हसुत्तसिक्कगवत्थिया जाव सुिक्क-ह्रप्रत्तिसिक्गवित्यया सन्वे वेरालियामया अच्छा जाव पिडल्वा ॥ तेसि ण तोरणाणं पुरओ दो दो चिता रयणकरङगा पण्णता, से जहाणामए--रण्णो चाउरतचक-विहस्स चित्ते रयणकरंडे वेठलियमणिफालियपडलपचोयडे साए पभाए ते पएसे सव्वक्षो समता ओभासङ् उज्जोवेङ् तावेङ् पभासेङ्, एवामेव ते चित्तरयणकर-डगा पण्णता वेहलियपडलपचीयङा साए पभाए ते पएसे सब्बओ समता ओभा-सेन्ति जाव पभासीन्त ॥ तेसि ण तोरणाण पुरओ दो दो हयकठगा जाव दो दो उसभकठगा पण्णता सव्वरयणामया अच्छा जाव पिंडस्वा ॥ तेसु ण हय-कठएस जाव उसमकठएस दो दो पुष्फचगेरीओ, एव महमधवण्णचुण्णवत्याभरण-चगेरीओ सिद्धत्यचगेरीओ सव्वर्यणामईओ अच्छाओ जाव पडिह्वाओ॥ तासु ण पुष्फचगेरीसु जाव सिद्धत्थचगेरीसु दो दो पुष्फपडलाइ जाव सि॰ सन्ब-रयणामयाइ जाव पडिह्वाइ ॥ तेसि ण तोरणाण पुरश्नो दो दो सीहासणाइ पण्णताइ, वेसि ण सीहासणाण अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते तहेव जाव पासाईया

 प्रतिक्ष में तोरणार्थ पुरक्षों दो दो दप्पक्रवाक्रता प्रश्यक्ता ते में क्रता बंदिक्य-मिसंत्रिमध्यका जंबूकमक्तिवानहरसंधी मुत्तावाक्रपरिगमा सङ्गसहस्स्वरकेवक-समाना वदरमध्यस्यांची सम्बोठवस्यरियशियमध्याया सैयक्याचिवता चंदानारीवसा मध ध तेसि वं तोरणार्ण पुरक्षो हो हो नामराओ पञ्जताओ ताओ नं नामराओ (चन्दप्पश्**वद्दरेकेक्क्र**पाणागणिर्यणसाचित्रवृद्धा) चाणागणिकसगर्यसमिससमहरि इतनमञ्ज्ञसनिवित्तरहाओ विक्रियाओ एंश्वेस्क्रप्रपरसम्मासमक्ष्रियकेप्प्रंथसन्त गासामा शहुमरयमधीहणाया सम्बद्धावासमामा अच्छावा जाव पविश्वासी । तेसि वं तोर्याणं प्रको यो यो विक्रसमुग्गा कोद्रसमुग्गा पत्तसमुग्गा कोवसमुग्गा तपरसम्भा एकासमुका इतियाकसम्भा हिग्रायसम्भा भूजोरिकासमुक्या अवभस्तुमा सम्बर्गनासमा अच्छा जान परिस्ता । १३९ । विकार वे हारे महस्यं परम्यापार्वं सङ्घर्यं मिगळायार्वं सहस्यं गरवज्ञायार्वं सहस्य जुमळा-नार्ष (सद्भवं एक्वजावार्ष) सद्भवं क्राज्यवार्ष श्रद्धसं विकासवार्ष श्रद्धसं सरमिज्ञाना सङ्गसर्व वीव्यवस्थानं सङ्गसर्व रसमञ्ज्ञानानं अद्भारनं सेवानं भवित्रसामार्थं नातनरहेळाणे एवामेन सपुरमानरेणं विज्ञमहारे आहीर्य केवसहस्त संग्राति सम्बार्य ॥ विकार व बारे क्या मोमा प्रव्यक्ता देखि व मोमार्च अद्यो बहुसमरमनिजा भूमिमामा पण्यता काब मचीर्ण प्रासी वेसि पं मोमाणं दर्पि रामेया परानक्या जाव सामन्यामधिकिता बाव सम्बद्धक्रियमया अस्या जाव पडिस्वा तेथि न मामाण बहुमजाबसमाए के से पंचम मोम्मे तस्य व मोमस्य बहुमञ्चादेशमाए एरन मं धृगे मई सीहासचे पञ्चते सीहासमवज्यमा विकारसे जान म्बन्ते बाब दामा विद्वति तस्य णं वीद्यासमस्य अवश्वरेणं उत्तरेणं उत्तरप्ररत्मिमणं पत्य में विवयस्य वेवस्य चउनां सामाविश्यवस्थानं चतारि मद्यसम्बद्धाहरवीओ पन्नताओं तस्स नं सीहासणस्य प्रराधकोणे गृत्व वं निकारस देवस्स करणे क्षम्पनिर्देशीर्व सपरिवाराने पत्तारि महासवा पञ्चता वस्त वं सीहासप्तस वाहिणपुरस्थिमेर्ण एत्व में निवनस्थ देवस्थ अस्मितरिवाए परिचाए अङ्कर्ष देव साइस्सीयं अद्भ महासमसाहरतीयो पन्नतायो तस्स न सीहासमस्य दाहियमे विकास केवरस मजिसमियाएं परिसाएं वसुन्तं वेवसाहरूसीनं वस महासवसाहरूसीओ पञ्चताओं तस्स वं सीक्षासणस्य वाशिकप्रवर्शियोगं पृत्व वं विजयस्य वेवस्य कादिरियाए परिसाए बारसन्ते वेषसाहरसीने वारस महासनसाहरसीओ पन्धतामा व तस्स वं सीहासनस्य प्रवालिनेनं एस्य ये निकास्स वंगस्य धताव्यं अभियादिगईनं सद्य सहास्त्रमा फुण्यता दस्स ने सीहासनस्य प्ररक्षियेनं वाहिनेनं प्रवस्थियेनं

उत्तरेण एत्थ ण विजयस्स देवस्स सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीण सोलस भद्दासण-साहस्सीओ पण्णताओ, तंजहा-पुरिथमेण चत्तारि साहरसीओ, एवं चउसुवि जाव उत्तरेण चत्तारि साहस्सीओ, अवसेसेस भोमेस पत्तेय पत्तेयं भहासणा पण्णता ॥१३२॥ विजयस्स णं दारस्स उत्ररिमागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोमिया, तजहा---रयणेहिं वयरेहिं वेरुलिएहिं जाव रिट्ठेहिं ॥ विजयस्स ण दारस्स उप्पि वहवे अट्टट-मगलगा पण्णता, तजहा-सोत्थियसिरिवच्छ जाव दप्पणा सन्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा । विजयस्स णं दारस्स उप्पि वहवे कण्ह्नामरज्झया जाव सव्वरय-णामया अच्छा जाव पिडल्वा । विजयस्स ण दारस्स उप्पि वहवे छत्ताइच्छत्ता तहेव ॥ १३३ ॥ से केणहेणं भंते ! एव वुचइ—विजए दारे २ १ गोयमा ! विजए ण दारे विजए णामं देवे महिष्टिए महजुइए जाव महाणुभावे पलिओवम-द्रिइए परिवसङ्, से ण तत्य चउण्ह सामाणियसाहस्सीण चउण्ह अगगमहिसीणं सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं विजयस्स ण दारस्स विजयाए रायहाणीए अण्णेसिं च वहण विजयाए रायहाणीए वत्यन्वगाण देवाण देवीण य आहेवच जाव दिन्वाडं भोगभोगाई भुंजमाणे विहरइ, से तेणहेण गोयमा! एव वुचइ—विजए दारे विजए दारे, अदुत्तरं च ण गोयमा ! विजयस्स ण दारस्स सासए णामधेजे पण्णते जण्ण क्याइ णासी ण कयाइ णित्य ण कयाइ ण भविस्सइ जाव अवद्विए णिचे विजए दारे ॥ १३४ ॥ कहि ण भते ! विजयस्स देवस्स विजया णाम रायहाणी पण्णता ? गोयमा ! विजयस्स ण दारस्स पुरित्यमेण विरियमसखेजे दीवसमुद्दे वीइवइत्ता अण्णामि जबुद्दीवे दीवे वारस जोयणसहस्साइ ओगाहिता एत्य ण विजयस्स देवस्स विजया णाम रायहाणी प० वारस जोयणसहस्साइ आयामविक्खमेणं सत्ततीसजो-यणसहस्साइ नव य अडयाछे जोयणसए किचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं प० ॥ सा ण एगेणं पागारेण सञ्चओ समंता सपरिक्खिता ॥ से ण पागारे सत्ततीस जोय-णाइ अद्धजीयण च उन्न उन्नतेण मूळे अद्धतेरस जोयणाइ विक्खंमेण मज्झेत्य सक्कोसाइ छजोयणाइ विक्खमेण उप्पि तिण्णि सद्धकोसाइ जोयणाइ विक्खमेण मूळे विच्छिणे मज्झे सखिते उपि तणुए वाहि वहे अतो चर्जरे गोपुच्छसठाणसठिए सव्वक्रणगामए अच्छे जाव पिंडरूवे ॥ से ण पागारे णाणाविह्यचवण्णेहिं कविसी-सएहि उवसोभिए, तजहा-किण्हेहिं जाव सुिक्षेहिं॥ ते ण कविसीसगा अद्भक्तोस आयामेण पचघणुसयाइ विक्खमेण देसूणमद्भकोस उन्न उन्नतेण सव्वमणिसया अच्छा जाव पन्डिस्वा ॥ विजयाए ण रायहाणीए एगमेगाए वाहाए पणवीस पणवीस

वारसर्ग मक्दीति मक्दाने ॥ ते ने दारा भावद्वि जोक्सर्व अञ्चलोक्ष्यं च उर्ष् चनतेर्ण एक्टीस जोसजर्ह कोर्स च निवर्जासेण तानहर्व चेन प्रवेसनं सेमा वरकन-समृभिनागा देशमिय । राहेन महा विजय नारे बान तनमिक्तनाह्यसम्बद्धा सहफासा सरिस(म)रीजा ध्रुरूना पासाईमा ४ । तसि में दारार्ण सभक्को पासि तुक्को निसी-वियाए वो दो चंदणकरम्परियाधीओ प्रव्यक्ताओं तक्षेत्र भागितकां बात सम्मा-व्यको ॥ देखि न दाराजं उसमो पासि बुद्दमो विशिक्षिताए दो दो पगठगा पन्यदा ते ने पर्यट्या एक्ट्रीस ओसफाई कोर्स व कावासविक्सीमेर्न प्रबद्ध जोसकाई भद्राद्रजो क्रोडे नहारेण पुण्यता सम्बद्धरागया श्रवका नाव परिश्वा ॥ दक्षि नै पर्यठगाने दक्षि परेवं १ पाधासनहिंसगा पण्यता ॥ ते व पाधासनहिंसगा एउटीस कोस्याई कोस क वर्ड उक्तेणं पकरत योगणाई सङ्गाहमे य क्रेसे आगामनि क्यंत्रेणं संस तं चेव जाव समुख्यता अवरं वहवयर्गं भाषित्रकां । विजयाएं पं राबद्दाबीए एमसेने दारे अञ्चलने चक्काबार्य बाब अञ्चलने सेवाल करनिसानार्य नागनरकेळमं एनामेव सपुरमावरेणं विकासए राजहाजीए एकारी दारे आसीर्व ९ केनसङ्ख्यं भवतीति सक्तामं । निक्याप् णं रामहाणीप् प्रामगे हारे ( देखि वं दाराजं पुरस्रों ) सत्तरस सोमा पञ्चता विश्व वं मोमाच (भूमिभागा) सहेर्ब (य) पडमम्म्या मितिनिता ॥ तेरि यं नीमार्थ बहुमञ्जादेसभाए जे ते नवमनवमा मोमा चारि नै भोमाणे बहुमन्द्रावेसभाए परेर्य २ सीहास्ट्रा पञ्जता सीहासगरूकाओ जान दामा जहा हेद्वा एएन व अवसेलेड भोभंद्र पतेर्थ पतेर्थ महासमा प्रव्यता । तसि न दारार्थ उतिर्मगा( उदिमा) गारा सोक्सनिक्कें रक्नेजी उनसोविया ते नेन बान छत्ताहरूता एनानेन पुम्बाबरेण मिक्याए राजहाणीए पेन वारसमा अवंतीवि सक्खाना ॥ ११५ ॥ मिक्साए में राजहामीए करोहिंसे पंचजीनगरवाई सवाहाए एस में पतारि बनसङ्ग पञ्चता संबद्धा-अस्त्रेगवने सत्तवन्यवने वंदगवय पूरवणे पुरस्थिने असोगबचे दाविणेलं सक्तकजबजे प्रवास्त्रिमेलं चंपगवचे उत्तरेलं बुयवचे 🏻 र वं बजसङा सहरेगाई हुबावस जोवजसहरूसाई आयामेर्न पंच खोवजस्याई विस्टानेर्न प्रभाता पतेर्थ पतेर्थ पागारपरिकियता क्षित्रा क्षित्रोभासा कासंबक्त्यओ मानि कानो जान नहने वालमंदरा वंदा य वंदीओ व आसमति समेदि निर्देशि निर्देशि तुमहति रमंति सकति कीवंति गोहंति पुरायोराणांनं समिल्लानं मुपरिहंतांनं सभानं क्रमानं करानं र ग्रापं प्रज्ञतिसिविसेस प्रमुक्तमाणा निक्रित ॥ रासि मं वर्षः सडाम बहुमन्त्रवस्तामाप् परेले परेल पासाववडिसमा कवता दे वे प्रसादगडिसपा

वाविंद्वं जोयणाइ अद्धजोयण च उष्टु उचतेण एकतीस जोयणाइ कोस च आयाम-विक्खभेण अञ्भुग्गयमृसिया तद्देव जाव अतो वहुसमरमणिजा भूमिभागा पण्णता उल्लोया पउम भतिचित्ता भाणियव्वा, तेसि ण पासायवर्डिसगाण वहुमज्झदेसमाए फ्तेय फ्तेय सीहासणा पण्णता वण्णावासो सपरिवारा, तेसि ण पासायवर्डिसगाण उप्पि वहवे अद्वद्वमंगलगा झया छत्ताइछता ॥ तत्य ण चत्तारि देवा महिष्टिया जाव पिलेओवमिद्विद्या परिवसित, तजहा-असोए सत्तवण्णे चपए चूए ॥ तत्य ण ते साण साण वणसङाण साण साण पासायवर्डिसयाणं साण साण सामाणियाण साण साण अगमहिसीण साण साण परिसाण साण साण आयरक्खदेवाण आहेवधं जाव विहरन्ति ॥ विजयाए ण रायहाणीए अतो बहुसमरमणिजे भूमिमागे पण्णत्ते जाव पचवण्णेहि मणीहि उवसोहिए तणसद्विद्वूणे जाव देवा य देवीओ य आसयंति जाव विद्दरति । तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसभाए एत्थ ण एगे मह उवयारियालयणे पण्णते वारस जोयणसयाइ आयामविक्खमेण तिन्नि जोयणसहस्साइ सत्त य पचाणउए जोयणसए किचिविसेसाहिए परिक्खेवेण अद्धकोस वाह्हेण सन्वजवृणयामएण अच्छे जाव पिंडहवे ॥ से ण एगाए पडमवरवेइयाए एरोण वणसंडेण सब्वओ समता सपरिक्लित पडमवरवेइयाए वण्णको वणसङ-वण्णओ जाव विहरति, से ण वणसडे देस्णाइ दो जोयणाइ चक्कवालविक्खभेण उन्यारियालयणसमपरिक्खेवेण ॥ तस्स ण उवयारियालयणस्स चउिह्सिं चत्तारि तिसोवाणपिडह्वगा पण्णता, वण्णओ, तेसि ण तिसोवाणपिडह्वगाणं पुरस्रो पत्तेय पत्तेय तोरणा पण्णत्ता छत्ताइछता ॥ तस्स ण उवयारियालयणस्स उप्पि बहुसमर-सणिजे भूमिभागे पण्णते जाव मणीहिं उवसोभिए मणिवण्णओ, गघो, पासो, तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसभाए एत्य ण एगे मह मूलपासाय-वर्डिसए पण्णते, से ण पासायवर्डिसए वावर्ट्डि जोयणाइ अद्वजीयण च उडू उचतेण एक्रतीस जोयणाइ कोस च आयामविक्यभेण अञ्चुग्गयमृतियप्पहांसए तहेव, तस्स ण पासायविंसगस्स अतो वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते जाव मणिफासे उल्लोए ॥ तस्स ण वहुसमरमणिज्ञस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसभागे एत्थ ण एगा मह मणि-पेढिया पत्रता, सा य एग जोयणमायामविक्समेण अद्भजोयण वाह्हेण सन्वमणि-मई अच्छा सण्हा जाव पिंडरूवा ॥ तीसे ण मिणपेढियाए उर्वारे एगे मह सीहासणे पन्नते, एव सीहामणवण्णओ सपरिवारो, तरम ण पासायवर्डिसगस्स उप्पि वहचे अद्वरुमगलगा झया छत्ताइछता ॥ से ण पायायविडसए अण्णेहि चडिह तद्बुचत्तप्-माणमेत्तेहिं पासायविंडसएहिं सव्वओ समता सपरिविद्यत्ते, ते णं पासायविंडसगा

168

एक्सीएं जोमनाई कोर्स च उड्ड एक्सेनं अक्सोक्सकोयगाई शक्कोएं व आवाम-निक्यंभेणं सक्सुमाय शहेच तेसि च पासायवृत्तिस्थानं अंदो बहसस्सानिका मूमिमागा उद्भेषा ॥ देशि भं बहुसमरमिष्णाणं भूमिमायाणं बहुमञ्चावेसमाए पतिनं पतिनं सीहासमं पञ्चर्यः बन्नको देखि परिवारभुया बहुमञ्जाबसभाए पतिनं १ महासया प्रम्यता तेलि ये सहदुर्वयक्या स्वा कताहरूता ॥ ते वे वासास्वाहिता क्लोहें क्वाहें क्वाहें व्यवहारणमायमेरीहें पावस्ववेंसवहें सम्बन्धे समहा चैपरिक्रियता ॥ ते र्थ पाशायवर्षेसया अवशोकसभोयणतः अवकोसं च तत् उच-तेलं देस्यातं सह कोमणातं आधानविक्यमेणं अकामगण तहेव देशि प पासान-वर्डेसगार्च अंदो बहुसगरमधिजा मूमिमागा सक्षेत्रा तेसि वं बहुसगरमधिजार्च भूमिमामार्ग बहुमञ्हादेखमाए परेज परेजं पडमासका प्रवता से से व पासावार्क महद्भगमा स्वा क्राह्मता ॥ ते व पासाववर्षस्या अध्यक्षे वर्षे दहर् कारप्रमानमेतेहि पासायकरेस्प्रहे सन्दर्भ समया संपरिविकता ॥ स वं पासाय-वर्वेसमा दस्माहं अत जोवजाई उन्ने उन्नेस्य देस्पाई जतारि कोवजाई जावार-मिनप्रिमेन अन्युमाय मूमिमागा उन्नेया महासभाई क्वरि संपन्नमा सना जााह कता ॥ १३६ ॥ तस्य में मुख्यासावपर्वेच्यस्स चतारपुरस्थियंचे यत्व में विजयस्थ वेबस्य सभा सहस्मा पन्नता अवतेरसकोवनाई वावायेचे छ सहोसहं जोनवाई निर्म्दारीयं जब जोरकाई उड्ड उक्तेजं अकेरक्मस्यर्शनिविद्या अस्मानायप्रज्ञानहर नेहना दोरमन्दरत्रयसामनंत्रिया श्रीयविश्वविश्वश्रृष्टियपस्त्ववेदवियविमानर्थमा मानामनिकामरसम्बद्धनात्रज्ञासम्बद्धसम्बद्धानाम् । विविधानिकामनिकास सिवतसम्बद्धायरमगरमिक्यवाक्षशक्तिम्थरकस्य अवस्य वास्त्रक्षात्म स्वति । चा वेमस्यवन्द्र(वेद्रमापरिसमामिरामा विज्ञाहरजनसम्बज्जेतजनावित व्यवसहरून-माक्योंना क्यमसहस्सक्तिया मिसमाची मिकिससमाणी चक्राक्रेयचकेता पुरस्करा सरिसरीयस्था अज्ञणमन्त्रिरयणपृप्तिवाया भाजाविद्युरेषक्ष्मपेदापवाध्यपित्रविद्यया-शिक्षरा भवता मिरीक्रकार्य विकित्सुनेशी धालकावसमिता गोडीससरसरात्रेयण दर्रिकानिगुन्तिमा उननियनित्नकासा र्यक्षणवनुक्रयतोरणपतिपुर्वारवेसमामा आसत्त्रोसत्तवितसम्बर्धारीयमाव्यासम्बद्धाना वनम्बनसरसस्ररीसम्बद्धवस्रीयास्यार करिया कारम्यक्रमका के दुवर तुरुद्व कुमानमा वेदन पुत्र वाशिशामा सुर्वेष प्रतिवास संभ-वहिभूमा अध्यानावर्तपर्धविधिक्या दिव्यनुहित्तमहुरसासप्रवास्या सुरध्मा सम्बर्धवा मह अच्छा जाब पश्चित्रजा ॥ सीधं जे सहस्थाएं सभाएं विविधि तथा दारा पन्नता तजहा पुरस्थिमण बाहियमं उत्तरमं ॥ ते वं दारा पतेर्य पतेर्य हा हो जोमणाई

उद्घ उचत्तेण एगं जोयण विक्खभेण तावइय चेव पवेसेण सेया वरकणगथ्भियागा जाव वणमालादारवन्नओ ॥ तेसि ण दाराण पुरओ मुहमडवा पण्णता, ते ण मुहमडवा अद्धतेरसजोयणाइं आयामेण छजोयणाइ सक्कोसाइ विक्खभेण साइरेगाइ दो जोयणाइ उद्घ उचतेण मुहमडवा अणेगखभसयसनिविद्वा जाव उल्लोया भूमि-भागवण्णओ ॥ तेसि ण मुहमडवाण उवरिं पत्तेय पत्तेय अट्टह मगला पण्णता सोत्यिय जाव मच्छ०॥ तेसि ण मुहमंडवाण पुरुओ पत्तेय पत्तेय पेच्छाघरमडवा पण्णता, ते ण पेच्छाघरमङवा अद्धतेरसजीयणाइ आयामेण जाव दो जीयणाइ उद्ग उचत्तेण जाव मणिफासो ॥ तेसि ण वहुमज्झदेसभाए पत्तेय पत्तेय वहरामय-अक्दाडगा पण्णता, तेसि ण वइरामयाण अक्खाडगाण वहुमञ्झदेसभाए पत्तेय २ मणिपीढिया पण्णता, ताओ ण मणिपीढियाओ जोयणमेग आयामविक्खंभेण अद्भजोयण वाह्रहेण सञ्चमणिमईओ अच्छाओ जाव पिंडहवाओ ॥ तासि ण मणि-पीढियाण उप्पि पत्तेय पत्तेय सीहासणा पण्णता, सीहासणवण्णओ जाव दामा परिवारो । तेसि ण पेच्छाघरमङवाण उप्पि अट्टडमगलगा झया छत्ताइछत्ता ॥ तेसि ण पेच्छाघरमडवाण परओ तिदिसिं तुओ मणिपेढियाओ पण्णताओ, ताओ ण मणिपेहियाओ जोयण आयामविक्खभेण अद्भजोयण वाहहेणं सव्वमणिमईओ अच्छाओ । जाव पिंडस्वाओ ॥ तासि ण मणिपेढियाण उप्पि पत्तेय पत्तेय महिद्ज्झया अद्धद्र-माइ जोयणाइ उन्द्र उन्नत्तेण अद्भकोस उन्वेहेण अद्भकोस विक्खभेण वहरामयवट-ल्डसिठयसुसिलिट्टपरिघट्टमद्रसुपइद्विया विसिद्धा अणेगवरपचवण्णकुङमीसहस्सपरि-मिडयाभिरामा वाउद्धुयविजयवेजयतीपडागा छत्ताइछत्तकलिया तुगा गयणयलमिन लेघमाणसिहरा पामाईया जाव पडिख्वा ॥ तेसि णं महिंदज्झयाण उप्पं अद्वद्वमग-लगा झया छत्ताइछत्ता ॥ तेसि ण महिदज्झयाण पुरओ तिदिसिं तओ णदाओ पुक्खरिणीओ प॰ ताओ ण पुक्खरिणीओ अद्धतेरसजोयणाइ आयामेण सक्कोसाइ छ जोयणाइ विक्खमेण दसजोयणाइ उन्वेहेण अच्छाओ सण्हाओ पुक्खरिणीवण्णओ पत्तेय पत्तेय पउमवरवेइधापरिक्खिताओ पत्तेय पत्तेय वणसङपरिक्खिताओ वण्णओ जाव पिंडरूवाओ ॥ तेसि ण पुक्खरिणीण पत्तेय २ तिदिसिं तिसोवाणपिंडरूवगा प०, तेसि ण तिसोवाणपडिरूवगाण वण्णओ, तोरणा भाणियव्या जाव छताइच्छता। सभाए ण सहम्माए छ मणोगुलियासाहस्सीओ पण्णताओ, तजहा—पुरिस्थमेण दो साहस्सीओ पचित्थिमेण दो साहस्सीओ दाहिणेण एगसाहस्सी उत्तरेण एगा साहस्सी, तासु ण मणोगुलियासु वहवे सुवण्णरूप्पामया फलगा पण्णता, तेसु ण सुवण्णरूप्पा-मएस फलगेस बहुवे वहरामया णागदतगा पण्णता. तेस ण वहरामएस ना

एकवीर्थ जोजनार्व कोर्स व उन्नु उन्तोर्ण अवसोक्सकोयनार्व अवकोस व आसाम-निवर्षानेमं अस्मुस्मन तहेव देखि वं पाषासवर्षित्यानं अतो बहुसमरमनिन्य भूमिमाना उन्नेमा ॥ तेथि वं बहुससरमणिनावं भूमिशासावं बहुसञ्चवेसमाए परेनं परेनं सीवासनं पणारं नज्जले होति परिनारम्या बहुमज्जलेसमाएं परेनं १ महासंशा प्रन्यता । तेले व अक्ट्रमैयसमा सना स्ताहरूचा ॥ ते वं पासामनहिस्या अन्तेहें चर्डी चर्डी क्षत्रुवत्तपमाध्येतेहें पासायवहें एएडे सन्बंधे समंद्रा रंपरिक्षिता ।। ते कं पासामवर्षसमा अद्यसीलसवीयणाई अद्यक्षीरं च उर्व उक् तेषं वेसुणाई बद्ध जोवजाई वासामनिक्सीमें अध्युक्तयः तहेष तेसि व पासन-वर्डेसगाम संदो बहुसमरमिका भूमिमागा उन्नोया देखि न बहुसमरमिकान मूमिमाताचं बहुमञ्जादेशमाप् परेवं परेतं परमाश्या पकता शिर्व वं पाशमानं मह्युसंगमना स्था क्रताहकता a दे च पासायवर्षेक्या अन्मेह काह तर् वत्तप्रमानमेत्रेहे पासामवर्षेषपृष्टे धन्त्रको सर्मता संपरिनिवाता ॥ त न पासान-वर्वेस्पा बस्यादं अञ्च जोजपादं उद्वं उच्चतेर्थं वेस्काई कतारि जोस्पादं कासमन विकासिनं अक्नुमास स्मिमागा उन्नोसा महासवाई वनरि संसकता समा कतार **क**ता ।। १३६ ।। तस्य में मूख्यासायवर्षेश्वयस्य कत्तरपुरस्थिमेणं एत्य में विकास देवस्य समा सहस्मा पन्नता अज्ञतेरसकोयनाई कामामेनं छ स्कोसहं जोरकहं विनर्जातेनं भद्र योजधारं उहा उच्योगं अनेगकंगस्वस्तिने<u>का</u> सन्<u>त</u>रमस्तास्त्रस्तर वेदया दोरणबररक्षसानमंत्रिया श्रीक्षतिन्द्रविशिष्टकष्ट्रपंडिक्सक्स्ववेदक्रियमिसस्योगी भागामनिकलगर्य<del>णकार्यकार्यकार्</del>यसम्बद्धानमञ्जूषिमञ्जूषा (विविय)रमन्त्रज्ञ क्रिमतका देवीन मिसदस्थन रवका सगर विद्यम्यासगरिक्ष्यरहासरमञ्जन एकं कर वश्वस्थन उसस्य प्रिति चा चेमुस्स्यवद्रदेशकारियवागिरामा विश्वाद्रश्यमसञ्ज्यकर्त्वाभित अविस्ट्रस माससीया स्वमसदस्य रुक्तिया मिनगाची मिविससमाणी करकामेमकोसा शुरुप्रसा सरिसरीयहर्वा कंचणमध्यरमध्यमिश्राया भाषामिहर्यच्चण्यचेत्रसहायपरिमेडियस विक्रा भवका मिरीकृत्वनं विकित्सुवंती कातकोत्समित्रिया गोसीससरसरसर्वरव-द्रुरिक्षपंग्युक्रियसः जन्निवणक्षकता चंद्रवण्डमुक्त्रतोर्णपडितुगरदेसमागा आसत्तीयत्त्रीवत्त्रवास्याम्बारियमस्यायक्रमायां यनवण्यसस्यस्यस्यास्य कतिया नाकागुरस्परकृषुकानुकाश्चनम्बार्मसम्बद्धयानिशामा सुर्गधनसमिया गंध वश्चिम्या जन्मस्यव्यविष्ठिण्या विव्यतुत्रियसहुरमब्द्यपणाद्या मुस्मा सम्बर्यणा-मर्चे बच्चम जान परिवन्ता ॥ शीरां न सहस्माप् समाप् विविति समा वारा पन्नता तंत्रहा पुरस्थिमणे बाह्यिको धत्तरेणे ॥ श व बारा पत्तर्म पत्तर्म दा वो जोनकार

सभाए ण नुहम्माए उत्तरपुरित्थमेण एत्य ण एगा मह उनवायसभा पण्णता जहा सुहम्सा तहेव जाव गोमाणसीओ उववायसभाएवि दारा मुहमडवा सव्व भूमिभागे तहेव जाव मणिफासो ( मुहम्मासभावत्तव्वया भाणियव्वा जाव भूमीए फासो ) ॥ तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भृमिभागस्स वहुमज्झदेसभाए एत्य ण एगा सह मणिपेढिया पण्णता जोयण आयामविक्खभेण अद्धजोयण वाह्रेहण सन्वमणि-मई अच्छा जाव पडिस्वा, तींसे ण मणिपेडियाए उपि एत्य ण एगे मह देवसय-णिजे पण्णते, तस्म ण देवसयणिजस्स वण्णओ, उववायसभाए ण उप्पि अद्वर्धम-गलगा झया छत्ताइछत्ता जाव उत्तिमागारा, तीसे ण उववायसभाए उत्तरपुरच्छिमेण एत्थ ण एगे मह हरए पण्णते, से ण हरए अद्धतेरसजोयणाइ आयामेण छक्रोसाइ जोयणाई विक्रामेण दम जोयणाइ उन्वेहेण अच्छे सण्हे वण्णओ जहेव णदाण पुक्तिरिणीण जाव तोर्णवण्णओ, तस्म ण हरयस्स उत्तरपुरित्यमेण एत्य ण एगा मह अभिसेयसभा पण्णता जहा सभासुहम्मा त चेव निरवसेस जाव गोमाणसीओ भूमिभाए उन्नोए तहेव ॥ तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसभाए एत्थ ण एगा मह मणिपेढिया पण्णता जोयण आयामविक्खसेण अद्भजोयण वाह्रेण सन्वमणिमया अच्छा ।। तीसे ण मणिपेढियाए उपि एत्य ण मह एगे सीहासणे पण्णत्ते, सीहासणवण्णओ अपरिवारो ॥ तत्थ ण विजयस्स देवस्स सुवहु आभिसेके भडे सणिक्यिते चिद्वर, अभिसेयसभाए उप्पि अद्वद्वमगलगा जाव उत्ति-मागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया, तीसे ण अभिसेयसभाए उत्तरपुरत्यि-मेण एत्थ ण एगा मह अलकारियसभा पण्णत्ता अभिसेयसभावतव्वया भाणियव्वा जाव गोमाणसीओ मणिपेढियाओ जहा अभिसेयसभाए उप्पि सीहासण (स)-अपरिवार ॥ तत्य ण विजयस्स देवस्स सुवहु अलकारिए भडे सनिक्खित चिद्रहु, अलंकारिय॰ उप्पि मगलगा झया जाव (छताइछता) उत्तिमागारा ॥ तीसे ण अलकारियसहाए उत्तरपुरत्थिमेण एत्थ ण एगा मह वनसायसभा पण्णता, अभि-सेयसभावतव्वया जाव सीहासण अपरिवारं ॥ त(ए)त्थ ण विजयस्स देवस्स एगे मह पोत्थयरयणे सनिक्खित्ते चिद्वइ, तस्स ण पोत्थयरयणस्स अयमेयारूवे वण्णा-वासे पन्नते, तजहा--रिद्वामईओ कवियाओ [रययामयाइ पत्तगाइ] तवणिजमए दोरे णाणामणिमए गठी (अकमयाइ पत्ताइ) वेरुलियमए लिप्पासणे तवणिजामई सकला रिद्वामए छायणे रिद्वामया मसी वइरामई छेहणी रिद्वामयाइ अक्खराइ विम्मए सत्ये ववसायसभाए ण उपि अट्टहुमगलगा झया छत्ताइछता उत्तिमा-गारेति । तीसे ण ववसायसभाए उत्तरपुरिच्छमेण एत्थ ण एगा मह णदापुक्खरिणी

बह्ने स्मिनुतरहरूपारियमञ्जासस्मारा भाव पुढिजनुतवहरुपारियमञ्जासस्माना त ने हामा सनविज्ञानेनुसमा जार चिद्धति ध सभाए व सहस्माए समामानधी-साइस्सीओ प्रव्यक्षाओं संबद्धा-पुरश्चियम हो याहरसीओ एवं प्रवश्चिमपनि दाक्षियर्ण सहस्त एव उत्तरभनि तासु य गोमाश्वरीत ग्रहमे तुरुवस्पासमा प्रमा प जान तमु न नहरामध्यु नागर्यत्वपु यहूने रययामया विद्रमा पञ्चता ततु ने रमयामपुत्र विद्यपुत्र व व्यक्तियामहभा भूरपश्चिमाओ पञ्चलाओ ताजा व ध्वयदिवाभ्यं कालागुरसवर्क्षतुरक्षतुरुक् आव भावनविष्णुरुकरण संघेणं सम्बन्धे समदा आपूर्माणीओ निर्देशि । सभाए जे मुहम्माए अदो जनसम्मामाओ भूमिनाने पञ्जते जान मनीन पाना उत्मेवा पउमनवनतिनिता जान सन्वतनविज्ञमए अच्छ जाद पडिका ॥ १३७ ॥ शस्य वं बहुसमरमधिकस्य भूमिमायस्य बहुमाज्यवसमाय एत्व के एगा महासम्पितिया पः सा व समिपेतिया हो कोमपाई आयार्यक्स्पे-मेप जासन बद्धोंनं राज्यसम्बद्धं जाव पडिस्मा ॥ शीरे वं समिपेडियाए रुसि पुरुष के पूरो मई सीहासक पञ्चले सीहासकर व्यक्तो ॥ शीस के विदिसाए एत्व के एगा महं मनियेदिया प जोनपं भाषामनिश्वमीपं श्रद्धजोक्यं शाहकेनं सम्बर्गीय मह अच्छा बाद पविरुवा ॥ तीचे नं समिपेडियाए वर्ष्य एत्य नं एते सर्व रहे स्विभिन्ने प्रणाते तस्य वं ब्रवसम्बिनसम् अयमेगावने बण्यावासं प्रणाते तंत्रहा-नामामनिमया पश्चिपाया सोवभ्विया पासा नामामनिमया पावसीसा जंबूपयमगर्दे गत्ताद्रं बहरामया सभी नानामनिमाए चित्रे रक्तमया कुनै <del>कोहिनास</del>मय विक्नोरमा तरमिकार र्यडोवहानिया से य ददस्यकिके समझे निक्नोर<sup>के</sup> दुइस्रो उप्पए सम्बेजस्पर्भारे साक्षिगणबङ्गिए संगापुरिजबस्तुनदशस्यानिसए बोन-विश्वनकोम्बुगु इपहपत्रि व्यान्यमं समिरह्मस्यकाः रक्तंत्रवर्तमुप् सरम्मे आह्ममर बर्रणवजीक्तूमप्रस्मानम् पासर्थम् ४ ॥ तस्य पं व्यस्यविकस्य उत्तरपुरन्तिमाने एरब ज सहदे एमा समिपीटिया पञ्जला जोयणमंगं सायासनिक्तंनेशं सदाबोयर्थं बाह्योंच्यं सम्मननिमार् अच्छा जाव पविक्ता ॥ शीसे वं मॉक्रपीहिमाए वर्षि एमे महं बहुए महिंद्रकाए पञ्चते अस्ट्रमाई जोगनाई उन्ने उन्तेन सहकोस उन्ने हेपं शद्धकोस विक्यमिणं वहरामस्वहस्तुसठिए तहेव जाव संस्क्रमा सना **व**णाईर छगा ॥ तस्य ण श्रामविवज्यावस्य प्रवासियोज पूल्य चै विवयस्य वेषस्य गुप्पावस् नाम पहरचकोसे पञ्चले ॥ तस्य वं विजयस्य देवस्य प्रतिकृत्यवपामोक्षा वहने पहरमसमा सनिविदात्ता निर्देशि कञ्चलक्षित्रसारिक्समारा पासाईमा ४ ॥ दीवे ष समाप् सक्षम्माप् रुप्पि वहवे अञ्चल्लगणमा समा कताक्ष्या ॥ १३८ व

सभाए ण सुहम्माए उत्तरपुरत्थिमेण एत्थ ण एगा मह उववायसभा पण्णता जहा सुहम्मा तहेव जाव गोमाणसीओ उववायसभाएवि दारा मुहमंडवा सन्व भूमिभागे तहेव जाव मणिफासो (सुहम्मासभावत्तव्वया भाणियव्वा जाव भूमीए फासो ) ॥ तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसभाए एत्य ण एगा मह मणिपेढिया पण्णता जोयण आयामविक्खमेण अद्भजोयण वाह्ह्रेण सन्वमणि-मई अच्छा जाव पडिरूवा, तीसे ण मिणपेढियाए उपि एत्य ण एगे मह देवसय-णिजे पण्णते, तस्त ण देवसयणिजस्स वण्णओ, उववायसभाए ण उप्पि अट्टहुम-गलगा झया छत्ताइछत्ता जाव उत्तिमागारा, तीसे ण उववायसभाए उत्तरपुरच्छिमेण एत्थ ण एगे मह हरए पण्णते, से ण हरए अद्धतेरसजोयणाइ आयामेण छकोसाइ जोयणाइ विक्खंमेण दस जोयणाइ उन्वेहेण अन्छे सण्हे वण्णओ जहेव णंदाण पुक्खरिणीण जाव तोरणवण्णओ, तस्स ण हरयस्स उत्तरपुरिथमेण एत्य ण एगा मह अभिसेयसभा पण्णता जहा सभासुहम्मा त चेव निरवसेस जाव गोमाणसीओ भूमिभाए उल्लोए तहेव ॥ तस्स ण बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसभाए एत्य ण एगा मह मणिपेढिया पण्णता जोयण आयामविक्खंमेण अद्भजोयण बाह्हेण सन्वमणिमया अच्छा ।। तीसे ण मणिपेढियाए उप्पि एत्य ण मह एगे सीहासणे पण्णत्ते, सीहासणवण्णओ अपरिवारो ॥ तत्थ ण विजयस्स देवस्स सुबहु आभिसेक्षे भडे सणिक्खिते चिट्ठइ, अभिसेयसभाए उप्पि अट्ठड्रमगलगा जाव उत्ति-मागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया, तीसे ण अभिसेयसभाए उत्तरपुरत्य-मेण एत्थ ण एगा मह अलकारियसभा पण्णता अभिसेयसभावत्तव्वया भाणियव्वा जाव गोमाणसीओ मणिपेढियाओ जहा अभिसेयसभाए उप्प सीहासण (स)-अपरिवारं ॥ तत्थ ण विजयस्स देवस्स ग्चबहु अलकारिए भडे सनिक्खित चिट्ठइ, अलकारिय॰ उप्पि भंगलगा झया जाव (छताइछत्ता) उत्तिमागारा ॥ तीसे ण अलकारियसहाए उत्तरपुरित्यमेण एत्थ ण एगा मह ववसायसभा पण्णता, अभि-सेयसभावत्तव्वया जाव सीहासण अपरिवार ॥ त(ए)त्थ ण विजयस्स देवस्स एगे मह पोत्थयरयणे सनिक्खिते चिद्रइ, तस्स ण पोत्थयरयणस्स अयमेयारूवे वण्णा-वासे पन्नते, तजहा-रिद्वामईओ किवयाओ [रययामयाइ पत्तगाइ] तवणिजमए दोरे णाणामणिमए गठी (अकमयाइ पत्ताइ) वेक्तलियमए लिप्पासणे तवणिज्ञसई सकला रिद्वामए छायणे रिद्वामया मसी वहरामई लेहणी रिद्वामयाइ अक्खराई विम्मिए सत्ये ववसायसभाए ण उप्पि अद्वद्धमगळगा झया छत्ताइछता उत्तिमा-गारेति । तीसे ण ववसायसभाए उत्तरपुरिच्छमेण एत्थ ण एगा मह णदापुक्खरिणी

पम्मता वे चेद प्रमार्थ हरवस्स ते चेत्र सर्व्य ॥ १३५-१४ हे। तेर्य ब्राह्मेर्य तमं समप्तं निवय देवे विकास श्रवहाणीय सदयानसभाय देवस्वक्रिजेस देव-व्यवसिए बोपुक्तस असेकेम्बरमायमेशीए बोबीए विजयवेदताए उक्कवी ॥ तए व **छे निजय देव अहुबोनकम्पनेताए चेव समाजे पंजनिहाए पञ्चतीए पञ्चतीमार्ग** गच्छ, देखा--आशारपवतीए संधेरपवतीए इंदियपवतीए बाव्यापञ्चनकीए भारामजदम्बरीए ॥ तए वे से बिबए देने देशसम्बन्धाओं बस्मुदेह २ ता दिन्द देवर्प्पतुनक परिदेश २ चा अवस्यविकाको प्रवोखा २ चा स्ववायसमाधी प्रातिपमेणं वारेषं क्रियम्बद्ध र ता अधेव शरए तेमेन तकारम्बद्ध ज्ञापनिस्ता इरवं अक्समाहितं करेमाने करेमाने प्ररक्षियमं तोरणेवं अवस्पविस्तः २ ता प्रस्-रिपनिक्षेत्रं विद्योगाजपविक्तपूर्णं प्रयोद्धहरू २ ता इर्त्यं कोमाहङ् २ ता क्रम्मणहर्ष करेड़ २ ता कम्माकणं करेड़ २ ता कमाद्रेतं करेड़ २ ता आर्थते योकने परमहरू-मृत इरबाब्बे प्यानरह २ ता बेचानेव श्रमिसेयसमा तेवामेव उदानका २ तर अभिवेद्यमं ब्लुप्यादिवं करेगाचे प्रस्थितिकं वारेषं अवयक्तित १ ता जेनेव प्रण सीहासने तेनेव उदाराख्य र ता सीहासनवरगए प्रराच्यासिम्हे स<del>न्मियाने</del> ह तर मं इस्त निक्रयस्य वंबस्य सामानियपरिसीवनकागा तेवा आप्रीक्येनिए देवे सहाबति २ ता एवं ववासी--किम्पामेश सो बदालिया। विजयस्य बेदस्य महत्यं सहत्व सहरेडं निजकं इंग्रामिसेनं उनहानेह ॥ तत् वं त कामिस्रोनिना देवा सामाध्ययपिसोलक्लोडी एवं नुता समाना इड्टाड बाद क्रेमवा क्रायक्रमी स्पत्तिय सिरसाक्त संस्थप अवसिं कड् एवं देवा सहित आयाप विवर्ण स्वय पविद्यमंति १ ता उत्तरपुरस्थिमं श्रीशीशायं अवक्रमंति २ ता वेडान्वरस्यायाय्यं समोहमंदि र ता संबेजाई जोयगाई दंई शिसपति तै--रयणाने बान रिक्रां सहाबागर पोम्पके परिसार्वति ? ता बहायाओं पोम्पके परिवार्वति ? ता दोवीपे केटमिनसमुग्नाएम समोहमेति १ ता अद्वसहरसं सोबध्नियायं इक्सार्य अप्रश इस्स रूपामगाचे कम्सापे सहस्रहस्स मित्रमगाच सहस्रहस्त गुरुवरुपमगाचे **बद्धसहस्य प्रथममधिमवार्ग बहुसहस्य स्पामधिमयार्थ अद्वरहस्य भीनेवार्थ** अद्यस्यस्य किंगारगार्थः एवं व्यावेशगार्थः बाक्षयः पादेश्यं सुख्युत्रगार्व वितार्थः रयज्ञरहरायं अद्भवं सीवासकाणं छतायं कामराकं अववस्थानं बद्ध्याणं तर् रिप्पार्थ बोरगान पीनगार्थ तेत्रसमुख्यकार्थ निउन्ति तं सामानिए विजन्ति व कारते व जाव तेकसमुख्याएं य गेल्युति गेषिक्ता विकासको रायराजीको पति निस्तामंति २ ता साए उपिद्धाए जान उद्वाए विष्याए वंशवर्षेष विदिनमध्ये

जाण दीवसमुद्दाण मज्झमज्झेण वीईवयमाणा २ जेणेव खीरोए समुद्दे तेणेव -उवागच्छति तेणेव उवागच्छिता खीरोदग गिण्हति गिण्हिता जाइ तत्य उप्पलाइ जाव सयसहस्सपत्ताइ ताइ गिण्हति २ त्ता जेणेव पुक्खरोदे समुद्दे तेणेव उवा-मच्छति २ त्ता पुक्खरोदग गेण्हति पुक्खरोदग गिण्हित्ता जाइ तत्थ उप्पलाइ जाव सयसहस्सपत्ताइ ताइ गिण्हति २ ता जेणेव समयखेते जेणेव भरहेरवयाइ वासाइ जेणेव मागहवरदामपभासाइ तित्थाइ तेणेव उवागच्छति तेणेव उवाग-च्छिता तित्योदग गिण्हति २ ता तित्यमिट्टय गेण्हंति २ ता जेणेव गगासिंधुरता-रत्तवईसालेला तेणेव उवागच्छति २ त्ता सरिओदग गेण्हति २ ता उभओ तड-महिय गेण्हति गेण्हिता जेणेव चुल्लहिमवतसिहरिवासहरपव्या तेणेव उवागच्छति त्तेणेव उवागच्छिता सव्वतूवरे य सन्वपुष्फे य सव्वगधे य सन्वमहे य सव्वोस-हिसिद्धत्यए य गिण्हंति सब्बोसहिसिद्धत्यए गिण्हिता जेणेव पडमहहपुडरीयहहा तेणेव उनागच्छति तेणेव उनागच्छिता दहोदग गेण्हति २ ता जाइ तत्य उप्पलाई जाव सयसहस्सपत्ताइ ताइ गेण्हति ताइ गिण्हित्ता जेणेव हेमवयहेरण्णवयाई वासाइ जेणेव रोहियरोहियसस्वण्णकलरूपकलाओ तेणेव उवागच्छति २ ता सलिलोदग गेण्हंति २ त्ता उमओ तडमहिय गिण्हति गेण्हित्ता जेणेव सहावाइमालवतपरियागा वहवेयङ्ग-पव्यया तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छिता सव्वतुवरे य जाव सव्वोसहिसिद्ध-त्यए य गेण्हति सव्वोसहिसिद्धत्थए गेण्हिता जेणेव महाहिमवतरुप्पिवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छिता सन्वपुष्फे त चेव जेणेव महापउमद्दमहा-पुडरीयदृहा तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छिता जाइ तत्थ उप्पलाइ त चेव जेणेव हरिवासे रम्मावासेति जेणेव हरिकंतहरिसलिलाणरकतणारिकताओ सलिलाओ तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छिता सलिलोदग गेण्हति सलिलोदग गेण्हिता जेणेव वियडावडगधावडवट्टवेयद्भपव्वया तेणेव उवागच्छति २ ता सव्वपुप्फे य त चेव जेणेव णिसहणीलवतवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छिता सव्वत्वरे य तहेव जेणेव तिगिच्छिदहकेसरिदहा तेणेव उवागच्छति २ त्ता जाइ तत्य उप्पळाड त चेव जेणेव पुव्वविदेहावरविदेहवासाइ जेणेव सीयासीओयाओ महाणईओ जहा णईओ जेणेव सञ्बचक्षवद्विविजया जेणेव सञ्बमागहवरदामपभासाइ तित्याइ तहेव जहेव जेणेव सव्ववक्खारपव्वया सव्वतुवरे य जेणेव सव्वतरणईओ सिललोदग नेण्हित २ ता त चेव जेणेव मदरे पव्वए जेणेव भद्दसालवणे तेणेव उवागच्छति सव्वतुवरे य जाव सव्वोसिहिसिद्धत्थए य गिण्हति २ ता जेणेव णदणवणे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सन्वतुवरे जाव सन्वोसिहिसिद्धत्थे य सरस च गोसीसचदण

मिर्जाति २ ता जेशन सोमणसन्त तेलेन उनामध्येति तेलेन उनामध्यता सन्दारो म जान सम्बोसक्रिसिक्समप् म सरसमोसीसर्पक्य विर्म च समजवाने नेन्द्रित गेन्द्रिता खेणेव पडववणे तेणानेव समुवागव्यति तेलेव समुवागिकता सम्बद्धारे मान सम्बोसिक्दिक्तामध् न सर्थं न घोसीसमयुर्ण विवर्षं च ध्रममोद्दास दृष्ट्यसम्बन्धः धुर्गिपए य गाँपे नेर्णाति २ ता एनको मिकति २ ता जंगुरीयस्य पुरस्किमिकेन बारेणं विस्मार्कति पुरस्थितिकां बारेणं नियमिकता ताए उतिहास जाव दिखाए वेदगाँच सिरियमसंबेद्धानं चीवसवदाच गर्जामध्येण बीदवयमाना २ क्रेनेब विश्ववा रामधाणी चेणेन जवागच्छेति २ ता विकर्य रामधार्थि अशुप्पनादिणं करेमाना २ जैनेन अमिग्रेससभा अनेन विजय देवे तंगेन उदायकारि १ ता घटसकारिमाहिने विरसानतं भत्यए अंकांके कडू अएण किवाएनं नदानेति किकमस्य देवस्य तं स्वरनं महर्ग महर्ग्य निरुक्त असिकेने रुक्कानेति ॥ तए थे वे विजयदेषे चतारि धार्मान नियसाहरसीओ चतारि असामक्षिसीओ सपरिवाराओ तिकिन परिसाओ सत्त अभिया रात मनिनाहिनई खेळा मानरक्यदेक्साहस्सीओ शक्ते न यहचे विजनस्वहानि-बस्यम्बया बाबसंतरा देवा य देवीओ अ वेहिं सामानिएहिं उत्तरदेवन्विएहि में वरकानकार्व्याचे प्रतिवरवारिपवियुक्ते विवयस्यवसारोहि साविद्यकंट्युके परामुक्तामार्थिकारोक्षे कार्यकारकाराककोताकारित्यविष्यि काञ्चसारसार्थ सीवविष्यवार्थ कारतानं रूपमायानं कान व्यक्कतहरसानं शोगेनानं कारतानं सन्नोत्तपति सन्नपति यादि सम्बद्धारीहे सम्बद्धकोहे जाव सम्बोसद्विसदल्बस्टी सम्बद्धीए सम्बद्धीए सम्बद्धमं सम्बद्धस्यपूर्णं सम्बागरेशं सम्बन्धिगुरः सम्बन्धिगुसाए सम्बद्धसमेने समोरोहेनं सम्बन्धपृष्टि सम्बपुण्यांबन्धार्थकारविम्साए सम्बन्धनानिमार्थ सक्ता हडीए सक्ता शुक्रि महता बढेले महता समुक्ष्य महता द्वरियवसगरसम् पहुण्याहमरवेणं सक्षपन्यपण्यमेरिकाकरियरमहिमुरवमुर्वनतंत्रविक्वहरूक्षेत्रवेसस्त्रि बाह्यरवेण महसा महसा हैवामिसेगेलं असिसिन्दि ॥ तए नं तस्य विकास देवस्य सहसा सहसा इंदामिसेगंधि कहुमार्थास कप्पेगहमा देवा जकोवर्स बाइसदिने पत्रिरकपण्डलिय दिव्यं सुर्शिं रयरेणुविजासर्वं गेणोब्यवास वासंदि अप्येगद्वया देवा विक्रमार्थं महरमं महरमं पस्तरमं उवस्तरमं कोशि अप्योगस्य देवा विकर्ण रामधाणि सम्मितरबादिनिर्मं आस्मितसम्बाद्यान्त्रभोगकितं सिलक्ष्रसम्बद्धानंतरस्य बोहियं करेंदि अप्येयहमा वेचा विकर्म रामहापि शवाहशवक्रीमं करेंद्रि अप्ये सहसा देवा विकर्य रासहायि याणाविहरागरणियकतिसम्बनिमनपेतस्यापेशमा हराजागर्मविषे करेंति अध्येगावा वेवा विवर्ग राज्याणि व्यवक्रोरममंत्रियं करेंति

अप्पेगड्या देवा विजय रा० गोसीससरसरत्तचदणदह्रदिण्णपचगुलितल करेंति, अप्पे-गइया देवा विजयं० उवचियचदणकलस चंदणघडसुक्यतोरणपडिदुवारदेसभागं करेंति, अप्पेगइया देवा विजय॰ आसत्तोसत्तविउलवृद्धवाधारियमह्नदामकलावं करेति, अप्पे-गइया देवा विजयं रायहाणि पचवण्णसरससुरभिमुक्षपुष्फर्पंजोवयारकलिय करेंति, अप्पेगइ्या देवा विजय॰ कालागुरुपवरकुदुरक्षतुरुक्षचूवडज्झतमघमधॅतगधुद्ध्याभिराम सुगधनरगिय गधनिट्टभूय करति, अप्पेगइया देवा हिरण्णवास नासति, अप्पेगइया देवा सुवण्णवास वासति, अप्पेगइया देना एव रयणवास वइरवास पुप्पवास मल्ल-वास गधवास चुण्णवास वत्थवास आहरणवास, अप्पेगइया देवा हिरण्णांवेहिं भाइति, एव सुवण्णविहिं रयणविहिं वइरिवहि पुष्फविहि मछविहि चुण्णविहिं गधिविहिं वत्थिविहिं आभरणविहिं भाइति ॥ अप्पेगइया देवा दुय णहविहि उवदसेति अप्पेग-इया देवा विलविय णहविहिं उबदसंति अप्पेगइया देवा दुयविलविय णाम णहविहिं उनदसिति अप्पेगइया देवा अचिय णदृविहिं उनदंसिति अप्पेगइया देवा रिभिय णदृविहिं उवदसिति अ० अचियरिभियं णाम दिव्व णदृविहि उवदंसिति अप्पेगइया देवा आरभड णद्रविहि उवदसेंति अप्पेगइया देवा भसोल णद्रविहिं उवदसेंति अप्पेगइया देवा आरमंडमसोल णाम दिव्व णष्टविहिं उवदसेंति अप्पेगइया देवा उप्पायणिवायपवुत्त सकुचियपसारिय रियारिय भतसभत णाम दिव्य णदृविहिं उवदसंति, अप्पेगइया देवा चउब्विह वाइय वाएति, तजहा--तत वितत घण द्यितर, अप्पेगऱ्या देवा चडिव्वहं गेय गायति, तजहा—उक्खित्तय पवत्तय मदायं रोइयावसाण, अप्पेगइया देवा चउब्बिह अभिणय अभिणयति, तजहा—दिइतिय पाडतिय सामन्तोवणिवाइय लोगमज्झावसाणिय, अप्पेगइया देवा पीणति, अप्पेग-इया देवा बुकारेंति, अप्पेगइया देवा तडवेंति, अप्पे॰ लासेंति, अप्पेगइया देवा पीणति बुकारेंति तडवेंति लासति, अप्पेगइया देवा बुकारेंति, अप्पेगइया देवा अप्फोडति, अप्पेगइया देवा वग्गति, अप्पेगइया देवा तिवइ छिंदति, अप्पेगइया देवा अप्फोर्डेति वग्गति तिवइ छिंदेति, अप्पेगइया देवा हयहेसिय करेंति, अप्पेगइया देवा हत्थिगुलगुलाइय करेंति, अप्पेगडया देवा रहघणघणाइय करेंति, अप्पेगइया देवा हयहेसिय करेंति हत्यिगुलगुलाइय करेंति रहघणघणाइय करेंति, अप्पेगइया देवा उच्छोलति, अप्पेगइया देवा पच्छोलिति, [अप्पेगइया देवा उक्किद्धिं करेंति ] अप्पे-गइया देवा उक्किटीओ करेंति, अप्पेगइया देवा उच्छोलेति पच्छोलिति उक्किटीओ करेंति, अप्पेगइया देवा सीहणाय करेंति, अप्पेगइया देवा पायदद्द्य करेंति, अप्पे-गइया देवा भूमिचवेड दलयति, अप्पेगइया देवा सीहनाय पायदहर्य भूमिचवेडे

**जीवाजीवामिममे** 

न्सर्मति अप्पेगइवा देश इदारिति अप्पेगइया दश नुशारिति अप्पेगइया दश पदारित अप्पे पुवारित अप्पेग्यमा रंग मामाई सावेति अप्पेगास्या रंग प्रारंति प्रश्नरंति पदारंति प्रकारंति प्रामात्रं सावेति अध्येषाचा वक्षा उपस्वति अप्पेगद्वा देवा विवयंति अप्पेगद्वा दवा परिचयति अप्पेगद्वमा दवा उपमंति निवर्गति परिवर्गति अध्येगस्या वदा जकति क्षयेगस्या वदा तवति अध्येगस्या वस पतनीत अप्येगद्या दवा बसंति तनीत पतनीत अप्येगद्या दवा वजति अप्यमद्या बेबा निर्भुवार्येदि अप्येगद्वा बंबा वार्येदि आप्येगद्वा बंबा गजादि विज्ञुपार्येदि वासीत अप्येपद्रया दवा दवगविवाय करेंति अप्येगद्रया देवा वनक्रियं करेंति अप्येयद्रमा रहा देवरहरई करेति अप्येयद्रमा देवा देवरहरई करेंति अप्येयद्रमा देवा देवतविदार्य देवतवन्तिर्व देवतव्यास्य देवतुद्वहुई करेति। अप्येयद्वया देवा दशुस्त्रीर्व करेंति अप्येगद्या वंश विज्ञुयार करेंति अप्येगद्या वंश पेतनकेनं करेंति अप्येग-इसा दवा देखुओने विजुवार पंत्रकरोने करेंद्रि अप्येगद्वमा दवा उपान्नहरूकाओं जाब राहरूमपता चंटाहरूकमया कानग्रहस्थमया जाब वेह्नग्रसमाग्रहस्थमया हट्टा वाव इरिसक्सनिसप्पमाणहिनना निकनाए राजहाणीए सम्बद्धी समक्ता आधानाते परिभावति ॥ तए में से विवर्त वर्ष नतारि सामानिवसहरसीओ चतारि अम्प महिसीओ स्परिकाराओं जान सोक्समानएककदनसाहस्सीओ अन्ये व नहरे विजयसम्बद्धानीयस्थामा वानमंतरा देवा य देवीओ व सर्वे वरकमकाराष्ट्रानीहें कर अद्भारम सार्विक्यानं कल्लानं त नेव जान अद्भार्यनं भोसेजानं रक्तायं सम्मी इगाई सम्बन्धियाई सम्बन्धरोहे सम्बद्धयोहे बाब सम्बोसद्विरिद्धत्वरहे सम्बन् भीए जान निज्योसनाहनरकेच महत्या १ ईबाभिसंएचं अभिसिचेटि २ ता पत्तन १ सिरसावर्त अवन्ति कर्डु एवं कवारी---वन कर नेदा ! क्य क्य भग्ना ! क्य वन मद महं ते अजिनं जिलाहि जिनं पातकाहि अजिय जिलेहि सन्तुपनको जिने पानेहि मित्तरमर्ख कियाजन नसाक्षि से क्षेत्र । निवनसम्ये हवो इन देवामें संदो इन वारा<sup>स</sup> श्वमरी इव समुराजं करणो इव नागाणं भरहो ४व मनुवाणं शहूनि पक्रिमानगाई वहूनि सागरोबमाणि बहु वि पविभोगमसागरोगमाणि करण्ड सामाणिकसाहरसीणे जान आन-रमग्रदेवसाहरसीनं निजनस्य वैवस्य निजमाय राजहाबीय सन्येसि च बहुवं निजम-राज्यानिकरभव्यानं वानमतरानं वंशानं वेशीय न आहेवनं जान सामाईधरधेयाननं ब्रारेमाणे पाकेमाने निशाराशिकिक्ट्र मह्मा २ सहैण करवस्तरे पर्वविति ॥ १४९ ॥ तए मंसे विवए देने सहना २ ईवामिसएनं अभिक्षित समाज सीहास्याओ अस्पुदेर सीकासमाओं अन्मुद्रेता कामिसेयसभाका पुरस्थियेकं वारेकं पविविक्यानः र ता

जेणामेव अलकारियसभा तेणेव उवागच्छइ २ ता अलकारियसमं अणुप्पया-हिणीकरेमाणे २ पुरित्थमेण दारेणं अणुपविसइ पुरित्थमेण दारेण अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे, तए ण तस्स विजयस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा आभिओगिए देवे सहार्वेति २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । विजयस्स देवस्स आलकारिय भंडं उवणेह, तए ण ते आलकारिय भड जाव उवडवेंति ॥ तए णं से विजए देवे तप्पढमयाए पम्हलसूमालाए दिन्वाए सुरभीए गघकासाईए गायाइ ऌहेइ गायाई छ्हेता सरसेण गोसीसचंदणेण गायाइ अणुलिंपइ सरसेणं गोसीसचंदणेण गायाइ अणुलिंपेत्ता तओऽणतरं च ण नासाणीसासवायवोज्झ चक्खहरं वण्णफरिसजुत्त हयलालापेलवाइरेग धवल कणगखइयतकम्मं आगासफलिहसरिसप्पभ अहयं दिव्व देवदूसजुयल णियसेइ णियसेता हार पिणिदेइ हार पिणिदेत्ता अद्धहारं पिणदेइ अद्ध० एव एगावर्लि पिणिधइ एगावर्लि पिणिधेत्ता एव एएण अभिलावेण मुत्तावर्लि कणगाविलं रयणाविलं कडगाइ तुडियाइं अगयाईं केऊराइं दसमुद्दियाणतग कडिमुत्तग वेयिच्छिम्रतग मुरविं कठमुरविं पालव कुडलाइ चूडामणि चित्तरयणसकड मडङ पिणिधेइ पिणिधिता गंठिमवेढिमपूरिमसघाइमेण चउब्बिहेणं महेण कप्परक्खयपिव अप्पाण अलकियविभूसिय करेइ कप्परक्खयिपव अप्पाण अलकियविभूसिय करेत्ता दहरमलयसगधगधिएहिं गधेहिं गायाइ सुिकड़ २ ता दिव्य समणदामं पिणिद्ध ॥ तए ण से विजए देवे केसालकारेणं वत्थालकारेण मल्लालकारेण आमरणाल-कारेण चउव्विहेण अलकारेण अलकियविभूसिए समाणे पडिपुण्णालकारे सीहा-सणाओ अञ्भद्रेह २ ता अलकारियसभाओ पुरच्छिमिल्लेण दारेण पडिनिक्खमइ २ ता जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ २ ता ववसायसभ अणुप्पयाहिण करेमाणे २ पुरिक्षिमिल्लेण दारेण अणुपविसइ २ ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छा २ ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुद्दे सण्णिसण्णे । तए ण तस्स विजयस्स देवस्स आभिओगिया देवा पोत्थयरयण उवणेंति ॥ तए ण से विजए देवे पोत्थयरयणं गेण्हइ २ त्ता पोत्थयरयण मुयइ पोत्थयरयण मुएत्ता पोत्थयरयण विहाडेड पोत्थयरयण विहाडेता पोत्थयरयण वाएइ पोत्थयरयण वाएता धम्मिय ववसाय पगेण्हइ घम्मिय ववसाय पगेण्हित्ता पोत्थयरयण पिडणिक्खिवेइ २ त्ता सीहासणाओ अन्भुद्देइ २ त्ता वनसायसभाओ पुरित्थिमिल्लेण दारेण पिडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव पहारेत्य गमणाए । तए ण से विजए देवे चउहि सामाणिय-साहस्सीहिं जाव सोलसिंहं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं सन्विद्वीए जाव निम्घोसनाइय-१३ सुत्ता०

**िजीमाजीमानि**परे

रभेषं जेनेन समा शुक्रमा राजेन उनायच्छा २ ता सम् मुहुम्मं पुररियमिकेनं हारेनं अनुपनिसद २ ता जेपेव मणिपेक्षिया यजेव जवागच्छाइ २ ता सीहासम्बर्ग्स प्रस्थानिमुद्दे सम्बद्धको ॥ १४२ ॥ सए च तस्य मिजनस्य देवस्य चन्नी सामान्यसम्बद्धस्त्रीको अवस्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरविक्रमेणं पत्तेयं १ पुम्पमत्तेत्र महासमेस निसीयंति । तए नं तस्स विजयस्स देवस्स चतारि अमामहिसीने प्रस्थिमेन परेचं २ पुम्बमस्येष्ट महाराजेष्ट निसीवंति । तए न तस्य विकास देवस्य दाहिणपुरस्थिमेणं धर्मिनतरिमाए परिसाए अह दंवसाहरसीओ पतेर्व १ वर विश्वीविदि । एवं वृक्तियाचेषं मञ्ज्ञिमियाए परिसाए वस वेबसाहरसीम्ये जार निर्धार्वित । वाक्षिणपण्डिमेणं वाक्षिरियाए परिचाए बारस देवसाहस्सीओ परेपं १ नाम निर्दार्वित । तर् में तस्य निम्मस्य देवस्य प्रवासिनेय सत्त अभिग्राह्मिये पत्तेमं २ जाद निसीमति । तए चं तस्य मिक्यस्स देवस्स पुरस्थिमेनं दाक्षिके प्रवास्थिमेनं उत्तरेणं खेळव आगरणयावणावस्थीको पतेर्व ९ पुम्बनलेख महासम्ब निधीमंति र्तम्बा प्रतिपनम चतारि साहरसीओ जाव उत्तरेमं व ॥ त न वासरम्बा सम्बद्धवरिमसम्बद्धाः अप्यीक्षित्रसरास्त्रपद्धिः विनद्धरोक्षेत्रविसम्बद्धः चित्रपद्य गद्दियाञ्डूप्याहरूमा दिव्यवाहं विस्त्रीयि वहरामया कोडीय वर्षहं अभिनिव्य परिवाहमकेर स्थावा चीक्यामिको पीवपानिको रत्तपानिको चावपानिको चारपानिको चन्मपानियो बन्गपानिनो वंडपानिनो पासपानियो बीक्सीन्स्त्रभावपान्यस्य रगर्द्धपासवर्षरा व्यायसम्बारक्ष्मोवणा ग्रुता ग्रुतपासिना स्ता सुतपासिना पाने ९ समक्त्रों निजयको किकरमुगानिक विद्वति ॥ विकासस्य व संत ! देवस्स केवर्स कार्ज दिशे पञ्चला है गो । एनं पत्रिकोषम दिशे पञ्चला विकास्य व सेवे। देवस्य सामानियाचं देवामं केनहवं कार्क ठिड्डै पञ्चता है ग्रोयमा । एवं पविज्ञोतमं ठिई पण्णता प्रवंसिक्षिए एवंसक्ष्मुहए एवसक्ष्मके एवंसक्षाक्षे एवसक्राक्ष्मके एषंनदाशुमाने निजए देने २ ॥ १४३ ॥ कहि में मंति । बंबरीवस्य १ नेकांते पास दारे पञ्चते ह शोयमा ! जेन्सीनै २ जैवरस्य पन्ययस्य विश्वासने प्रथमाठीय जोवणसङ्स्ताङ् अवादाए अनुहीवरीवदाशिक्येरते कवणसमुद्रदाशिवदस्य उत्तरे<sup>वं</sup> पुरुष के अंगुरीवरस २ वेजनेते जाने वारे पण्णीत व्यक्त कोववार्व उन्होंने सकेव सम्बा बत्तम्बरा बाग विने । कहि वं संदे । रायदावी ३ वाहिनेनं जान वेबर्यते देव २ ॥ वर्ति में मंते । वसुदीवस्स २ वर्गते वार्म दारै प्रवस्ते र ग्रोक्सा । जेनुरीने २ मेन्द्रस्य प्रव्यवस्य प्रवासिकाणं प्रवताकीयं जोतवस्ताहस्यादं जेनुरीनपः वारियसपेरतं क्वप्यसमुद्दपवारियमजस्य पुरश्किमेणं सीओनाए महावर्षाए वर्षि एत्व वं

रवेर्ज जेमेन समा तुरुम्मा वेषेन चनागच्छर २ ता समे क्रुप्तम्म पुरस्थिनिजेर्ज वार्र्ज म्ब्युनस्थित २ ता जेगेन समिपेतिना तेगेन जनागच्छर २ ता सीहास्थनस्थ्य पुरस्क्रासिम्ब्रेड स्थितसम्भे ॥ १४२ ॥ तए सं तस्त्र सिकानस्य वेत्रस्य चार्रि समामिसम्बादस्थीनो मनदगरेगं जरूरेनं जरापुरस्थिमेर्ग तर्गते २ समामुक्षेतीन्त्रे महास्पेत्र मित्रीनंति । तहा सं तस्त्र विकास्य वेत्रस्य चतारि कमामुक्षेतीन्त्रे

प्रभागन्त्रवाहरवामा अवरार्वर वारान्य वार्यपुराव्यक्य प्राप्ता क्ष्मामाईद्वी माहायोद्र मित्रविदेश । वार्य से तस्य निकारस देशस्य क्षातारि क्षमामाईद्वी पुरित्यक्षेत्रं परेत्र र पुष्पक्तस्य आहायोद्य शाहरीयित । वार्य न तस्य निकारण वेत्रस्य वाश्वित्यपुरित्यक्षेत्रं स्वमित्यतियाप् परिवाप् बद्ध वेत्रवाहरूसीस्त्रो क्षेत्रं र वार्य मित्रविदेशि । एवं विकारियां सामित्रविस्थाप् परिवाप् वृक्ष वेत्रवाहरूसीस्त्रे वार्य

निर्विपिति । राहिजरणस्पिनेलं नाहिरियाए प्रीरवाए वाराउ वेपावाइस्तीनो गोर्त १ जात निर्विपिति । तए मं तस्य निजयस्य वेपास्य प्रवास्त्रिये सात निर्विपिति । तए मं तस्य निजयस्य वेपास्य वेपास्य प्रतिपानि वाहिणे मार्ति । तए मं तस्य निजयस्य वेपास्य प्रतिपानि वाहिणे मार्ति । तस्य निजयस्य काम्यस्य निर्विपिति । तस्य निर्विपिति वाहिणे वाहिणे निर्विपिति । तस्य निर्विपिति विप्ति । तस्य निर्विपति । तस्य निर्विपति

विषयम् गद्दिनाज्यः व्यूत्या द्विण्यानं तिरोपीनि बर्रामना क्रोसीन कर्या मानिकेंव परिवादकंक प्रकारा परिवादानिको पीमपाणिको नयपानिको वाद्यानिको बाह्यानिको बाह्यानिको सम्मानिको प्रमाणानिको देवपानिको पासपानिको जोक्यीन्तरत्वात्वात्वस्यान्यः राग्देवपायस्या काराव्यक्ता राज्योवणा प्रणा प्रणाणानिया प्रणा प्रणाणानिका गर्वातः व्यवस्यानिका गरीव १ सम्मानो निकामने निकारमुणानिक निर्द्वति । विकादस्य म भेटा देवस्य कर्मनं कार्य ठिवे प्रकारा १ गो । एगे पत्रिकावेक्या ठिवे प्रकारा । विकास्य पर्व गेरी । देवस्य सामानिकाल देवालं केवस्य कार्य ठिवे प्रकारा । योजमा । एगे पत्रिकावेन ठिवे प्रकारा प्रवेशविष्ठिए एवंगवानुकर एवंगवाकको एवंगवानिके प्रवेशवासने

एसंमहास्त्रमाने मिनप् वेचे २ ॥ १४३ ॥ निह्नं च गति । चंदुरीवस्स १ वेचारी वामा बारे प्रकारी १ गोममा । चंदुरीव २ गोवस्स प्रकारस्य प्रकारस्य परिचारित वामान्यस्य वामान्यस्य परिचारित वामान्यस्य परिचारित वामान्यस्य वामान्यस्य परिचारित वामान्यस्य वामान्यस्य परिचारित वामान्यस्य वामान्यस्य वामान्यस्य परिचारित वामान्यस्य वामान्यस्य परिचारित वामान्यस्य परिचारित वामान्यस्य परिचारित वामान्यस्य परिचारित वामान्यस्य परिचारित वामान्यस्य परिचारित वामान्यस्य वामान्यस्य परिचारित वामान्यस्य वामान्यस्य परिचारित वामान्यस्य

वारिवसपेरं वे व्यवसमुद्द्यवरिवसदस्स पुरक्किमेणं सीओवाप् महार्गाए सर्वेष एल वे

जंबुईविस्स दीवस्स जयते णाम दारे पण्णते, तं चेव से पमाण जयते देवे पचित्यमेण चे रायहाणी जाव महिहिए०।। किह ण भंते ! जबुद्दीवस्स २ अपराइए णामं दारे पण्णते २ गोयमा । मंदरस्त पव्चयस्स उत्तरेण पणयालीस जोयणसहस्साइ अवाहाए जनुर्हीवे २ उत्तरपेरते लवणसमुद्दस्स उत्तरद्धस्स टाहिणेण एत्थ ण जनुद्दीवे २ अपराइए णाम दारे पण्णत्ते त चेव पमाण, रायहाणी उत्तरेण जाव अपराइए देवे चउण्हिव अण्णामे जबुद्दीवे ॥ १४४ ॥ जबुद्दीवस्स ण भेते ! दीवस्स दारसा 🛔 दारस्य य एस ण केवडयं अवाहाए अतरे पण्णते ? गोयमा ! अउणासीई सहस्साइ वावण्ण च जोयणाड देस्णं च अद्वजोयणं दारस्स य २ अबाहाण पण्णते ॥ १४५ ॥ जबुद्दीवस्स ण भते । दीवस्स पएसा लवण समुर् पुड़ा ॥ ते ण भते ! किं जबुईवि २ लवणसमुद्दे १ गोयमा ! जबुद्दी ते लवणसमुद्दे ॥ लवणत्स णं भंते ! समुद्दस पएसा जबुद्दीव दीव ण भंते ! कि लवणसमुद्दे जबुद्दीवे दीने ? गोयमा ! लवणे ण ते द्दीवे दीवे ॥ जबुद्दीवे ण भते ! दीवे जीवा उदाइता २ लवणसमुहे अत्येगइया पचायंति अत्येगइया नो पचायति ॥ लवणे ण भते 🗓 जबुईनि २ पचायति १ गोयमा ! अत्थेगइया पचायति अत्थेगइया से केणहेण भंते ! एव बुच्चइ-जबुद्दीवे २ 2 गोयमा ! जबुद्दीवे २ णीलवतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेण मालवतस्स वक्खार मायणस्स वक्तारपव्वयस्स पुरित्यमेण एत्थ ण उत्तरकुरा णाम ु बीणायया उदीणदाहिणवित्यिण्णा अद्भवदसठाणसठिया एकारस वायाले जोयणसए दोण्णि य एगूणवीसडभागे जोयणस्य 🗟 . रसो पाईणपडीणायया दुहओ वक्खारपव्वय पुट्टा, पुरात्यि । र नक्तारपव्य पुट्टा, पचित्यमिल्लाए कोडीए पचित्यमिल जोयणसहत्साइ आयामेण, तींसे अद्वारसत्तरे जोयणसए दुवालस य **उत्तरकुराए** ण भते! कुराए केरि वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, एगुरुयदीववत्तव्वया जाव देवलोग ै णवरि इम णाणत्त—छवणुनहरनम् आहारहे नमुप्पञ्च तिण्णि पटि े. रूपगाइ जहन्नेण, तिन्नि पलिओवमाड

रवेणं जैसेन समा प्रदम्मा तेजेन उनागकाइ २ ता समै सहस्में पुरस्विमिक्नेन वारेने **क्युपन्तिः** २ ता जेणेव सम्पिपेक्षिया तेथेव सवासम्बद्धः २ ता सीहासणवरगए पुरन्छामिस्तके सन्धिसन्त्री ॥ १४२ ॥ तए यो तस्स विजयस्य वेवस्य नतारी सामान्यसाहरसीओ अवस्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरव्छियेणं प्रदेशं २ प्रम्बसक्त मबासणेस विसीर्यति । तए नं तस्य विजयस्य वैवस्य वक्तारि कागमिश्वीको पुरत्विमंगं परेतं २ पुन्नवाखेनु अद्वासणेड विधीर्वति । तए वं तस्य विजयस्य वेदस्स वाहिवपुरत्यिमेन अधिमतरियाए परिसाए अह देवसाहस्सीको योग्यं १ जाव निर्धार्यति । एवं दक्तिकाणेणं मजिसमियाए परिशाए इस देवसक्तरसीमा बार मिसीवैति । बाहिणपनस्थिनेनं नाहिरियाए परिसाए नारस देवसाइस्सीओ प्रोपं र चान मिसीमंदि । तए में तस्स निजयस्य वेशस्य पनस्थिमेनं सत्त अमिशाहिगरै पतिनं र जान निर्मायंति । तए ग तस्य निषयस्य वेषस्य प्रतियमेणं बाह्रिनेनं पबत्विनेगं उत्तरेणं सोकस भागरकपारेबसाइस्सीओ पत्तेर्थं ९ प्रव्यवस्थेत महासमेश स्रितीयंति तंत्रहा-पुरत्यिमेणं चतारि साहरसीको जाव उत्तरेणं च ॥ तं व नामरकता समद्भवत्रविमयकम्या उप्पीतियमरामनपश्चिम पिचवरोचेजविमसम् चियपद्य गहियातहप्यतरणा शिवामां शिरोपीनि बदरासमा कोडीनि वन्दं अभिनिन्स परिवादयां इंडक्क्सबा जीक्साकियों पीक्यानियों रक्तकियों बाब्धाकियों बाह्यानियों चम्मपाबिजो कम्मपाबिजो देवपाबिजो पासपाबिजो गौक्रपीवरत्तवावपाक्चम्मध रगर्वेडपासबरमरा भावरक्रमा रक्ष्योवमा ग्रुता ग्रुत्तपक्षिया मुत्ता भुत्तपानिया पतेर्य 🤻 समयभी विजयको किञ्दम्याचित निद्वति ॥ विजयस्य वं भरा । देवस्य केनार्य कार्स दिशे प्रव्यक्ता है गी । एगं प्रक्रिओवर्स दिशे प्रव्यक्ता निजवस्स के सेते । **इ**बस्य सामाणियाच वेताणं केवर्यं कार्क ठिई पञ्चता रे गोनमा ! एपं परिजीवर्ग किइ पन्नाता एपंमितिहिए एपंमहत्तुहुए एपंमहत्त्वके एपंमहायस एपंमहासम्बे एवंगहानुभागे भिन्नप् वेषे १ ॥ १४१ ॥ विह वं भीते । चंतुर्गहान १ वेजवेट गामे दारे पानते र मानमा ! जेनुहीने १ मैत्ररहा यथ्नयस्म विराधिन पत्रयातीर्थ जायगराहरूगाः अग्रहाए जेनुहीवशीवदाहिकपेरेत सवचसमुद्दाहिकदरम उत्तरेने पूर्व में अनुहोतरन र वैजवंश गार्न बारे प्रथमी अञ्च जीनमाई उर्षे उच्छोने रावेद राज्या बनाव्यता जाव विचे । वहि में भेरे ! रामहाची है बाहिनेचे जाव बेबर्यन १३ ॥ वहि में मेंते ! जंबुरीवर्ग १ अवैते वार्म दारे पत्र्यते ! ग्यंयमा ! जन्दीय मंदरस्य प्रस्तास्य प्रवासिकार्ण प्रशासीसं जीवनायद्शामं जीदीवा-क्रियापेरत काजनमहत्वविभवन्त पुर्विष्ठमणे सीओवाए महान्तरेष वरिन एरच न

जबुद्दीवस्स दीवस्स जयंते णामं दारे पण्णते, तं चेव से पमाण जयते देवे पचित्यमेण से रायहाणी जाव महिद्धिए० ॥ किह ण भते ! जबुद्दीवस्स २ अपराइए णामं दारे पण्णते २ गोयमा । मंदरस्स पन्वयस्स उत्तरेण पणयालीस जोयणसहस्साइ अवाहाए जबुद्दीवे २ उत्तरपेरते छवणसमुद्दस्स उत्तरद्धस्स दाहिणेणं एत्थ ण जंबुद्दीवे २ अपराइए णाम दारे पण्णते त चेव पमाण, रायहाणी उत्तरेण जाव अपराइए देवे, चउण्हवि अण्णंमि जबुद्दीवे ॥ १४४ ॥ जंबुद्दीवस्स ण भते । दीवस्स दारस्स य दारस्स य एस ण केवइय अवाहाए अतरे पण्णते ? गोयमा ! अउणासीइ जोयण-सहस्ताइ वावण्णं च जोयणाइ देसूण च अद्धजोयण दारस्स य २ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥ १४५ ॥ ज्वुद्दीवस्स णं भंते ! दीवस्स पएसा लवण समुद्दं पुद्वा <sup>2</sup> हंता पुटा ॥ ते णं भते । किं जबुद्दीवे २ लवणसमुद्दे १ गोयमा । जंबुद्दीवे दीवे नो खलु ते लवणसमुद्दे ॥ लवणस्स णं भते ! समुद्दस्स पएसा जवुद्दीव दीव पुट्टा <sup>२</sup> हता पुट्टा । ते ण भते ! किं लवणसमुद्दे जबुद्दीवे दीवे 2 गोयमा ! लवणे ण ते समुद्दे नो खलु ते जबु-दीवे दीवे ॥ जबुद्दीवे णं भते ! दीवे जीवा उद्दाइता २ लवणसमुद्दे पन्नायति ? गोयमा ! अत्थेगइया पचार्यति अत्थेगइया नो पचायित ॥ लवणे णं भते ! ममुद्दे जीवा उद्दाइता २ जबुद्दीने २ पचायति १ गोयमा ! अत्थेगइया पचायति अत्थेगइया नो पचायति ॥१४६॥ से केणट्टेण भते । एव वृच्चर्-जवुद्दीवे २ १ गोयमा ! जवुद्दीवे २ मदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण णीलवतस्स वासहरपञ्चयस्स दाहिणेण मालवंतस्स वक्खारपञ्चयस्स पचित्थिमेण गंध-मायणस्स वक्खारपञ्चयस्स पुरत्थिमेण एत्थ ण उत्तरकुरा णाम कुरा पण्णता, पाईणप-बीणायया उदीणदाहिणवित्यिण्णा अद्भचदसठाणसिठया एकारस जोयणसहस्साइ अट्र वायाले जोयणसए दोण्णि य एगूणवीसइभागे जोयणस्य विक्यंभेण ॥ तीसे जीवा उत्त-रको पाईणपढीणायया दुहुओ वक्खारपव्वयं पुद्धा, पुरित्थिमिल्लाए कोडीए पुरित्थिमिल्लं वक्खारपव्वय पुट्टा, पचित्यमिल्लाए कोडीए पचित्यमिल वक्खारपव्वय पुट्टा, तेवण्ण जोयणसहस्साइ आयामेण, तीसे धणुपद्व दाहिणेण सिंह जोयणसहस्साइ चत्तारि य अहारसुत्तरे जोयणसए दुवालस य एगूणवीसङ्भाए जोयणस्स परिक्खेवेण पण्णते ॥ उत्तरकुराए णं भते! कुराए केरिसए आगारमावपडोयारे पण्णते? गोयमा! वहुसमरमणिजे भूमिमार्गे पण्णत्ते, से जहा णामए आर्टिंगपुक्खरेड वा जाव एव एगुरुयदीववत्तव्वया जाव देवलोगपरिग्गहा ण ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !. णवरि इम णाणत्त—छथणुसहस्सम्सिया दोछप्पन्ना पिट्टकर्डगमया अट्टमभत्तस्स आहारहे समुप्पज्ञइ तिण्णि प्रतिओवमाइ देम्णाई प्रतिओवमस्सासिराज्ञइभागेण ऊणगाइ जहन्नेण, तिन्नि पलिओवमाड उद्योसेण, एन्णपण्णराइदियाई अणुपालणा,

ससे महा एत्रवार्ण ह उत्तरपुराए में कुराए छम्मिहा मणुस्या अञ्चयक्रीते संग्रहा-पम्हर्गेषा १ मित्रयता १ असमा ६ सहा ४ तबालीमा ५ समिवारी ६ ॥ १४७ ॥ कहि में मेंट ! उत्तरकुराए कुराए कमना भाग हुने परम्या पश्चा ! शायमा ! नीतर्वतस्य बासहरपञ्चयस्य दाहिणां अद्ववातीसं स्रोयनसम् बतारि स सत्तरागे जायमस्य भगहाए धीमाएं महानहए (पुरुपपिउमर्प) उसकी बुद्धे शस्त्र च उत्तर द्वराष् > जमगा नाम जुनै पञ्चया चण्यता व्यन्तर्भ जीवणमहस्तं तहं तहतेनं सङ्गादकाई जावसम्माणि उच्मेहेण मुख शुगर्मा सोमणमहरसं सामामविकामिन मानी अस्ट्रमाई जोगणमगई आसामविकामिक उन्हें पंचानेस्वयमार्थ जासम-विरुप्तिमं मुक्के दिण्यि कोक्यमहरनाई एवं च बावर्द्धि बोवजनवं विविधितिमाहिनं परिकारेक्च सालो को जोक्यमहरूमाई निश्चि व बाबतारे जोक्यमण डिव्बिसमाहिए परिक्लेकेनं पक्के उपरि पण्डम एकासीए क्रेक्ससए क्रिकिसिसेमाहिए परिक्लेकेनं पन्नते मुक्के निरिज्ञना मज्जे संविक्ता रुपि ततुवा मेशुरज्ञसंकासंक्रिया सम कन्यासया मण्डा सन्द्रा जाव पडिस्ता पतेर्व १ प्रजमवर्गेइयापरिक्रिका गीर्य १ क्णसंदरस्तिकता कन्मको दोन्द्वि ससि य बसगपम्बसानं सन्दि बहुससरगमिके मूमिमागे पत्राते बन्मभो बाब कानवित ॥ शति यं बहुनमरमिकाणं भूनि-मागार्थ बहुमञ्चादेसमाए परिर्व ? पासावबहुसमा प्रमाता है में पासावबहुसमा बाबर्द्ध जोननाई अञ्जोदनं च उद्दं उच्छेणं एकर्तासं जोयवर्द्धं कोर्स व क्रिक्सीमं जन्ममामन्तिया बन्धजो भूमिमागा उद्योगा वो धोयगात मनिपेटिवाको वरहीय-समा सपरिवारा जान जनमा निर्देति ॥ से केमद्रेण मेते ! एव कुकड्-जनमा पम्मया १ मोनमा ! जममेश जंपल्यएम् तत्व शत्य वेसे १ तहि तहि बहुरेको बहाबहियाओं कारीओं जान निकर्गतियाओं ताल ने बहाबहियात नाम विकर्गति-यात कडा उपाधां काव समग्रहसापतां कारापमार्थं कारापमातः, कामा <sup>स</sup> एरच हो बेबा महिश्विमा बाब पर्कियोगमहित्रमा परिवर्शति से वं सर्प परिम परिव श्रदर्ण सामाभिवनाहरूसीनं जान जमगार्थं पन्नयानं जमगाण व स्ववहानीर्व अप्लेमि व बहुर्ण वाणमंत्रराजं वंबाच व वेबीच व आहेवचं चाव पाकेमामा विह tित से तेजदेवं गोनमा । एवं असयक्त्यना २ अदुत्तरं व वं गोक्सा । वांव पिश्वा । कहि में मेरी ! अपनाण देवाने जमगाओं शाम राजहाणीओ पळाताओं ? पोबमा ! अमुगार्व प्रव्यवार्व उत्तरेणं सिरियमसंकेते वीवसमुद्दे वीस्वरता अर्जनि अनुरीचे २ बारस जोजजसहरसाई जोपाहिता गुरुप व जमगार्व देवार्व जममान्त्रे नाम राज्याणीओ पन्नताओं नारसजोजनसङ्ख्य जहा निजयस जान महिन्निग

जमगा देवा जमगा देवा ॥ १४८ ॥ कहि णं भते ! उत्तरकुराए २ नीलवंतद्दे णामं दहे पण्णते 2 गोयमा । जमगपन्वयाण दाहिणेण अहुचोत्तीसे जोयणसए चत्तारि सत्तभागा जोयणस्य अबाहाए सीयाए महाणईए वहुमज्झदेसभाए एत्य ण उत्तर-कुराए २ नीलवतद्दहे नाम दहे पन्नते, उत्तरदिक्खणायए पाईणपढीणविच्छिने एगं जोयणसहस्स आयामेण पच जोयणसयाई विक्खमेणं दस जोयणाइ उ०वेहेण अच्छे सण्हे रययामयकूळे चउक्कोणे समतीरे जाव पिंडरूवे उभओ पासि दोहिं पडम-वरवेइयाहिं वणसडेहि य सव्वओ समंता सपरिक्खित दोण्हवि वण्णओ ॥ नीलवंत-दहरस ण दहरस तत्थ २ जाव वहवे तिसोवाणपडिरूवगा पण्णता, वण्णओ भाणि-यव्यो जाव तोरणित ॥ तस्स ण नीलवतद्दहस्स ण दहस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ ण एगे मह पडमे पण्णते, जोयण आयामविक्खमेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण अद्भजोयण वाह्ह्रेण दस जोयणाइ उन्वेहेण दो कोसे ऊसिए जलताओ साइरेगाइ दसद्धजोयणाइ सन्वरंगेण पण्णते ॥ तस्स ण पडमस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते. तजहा-वइरामया मूला रिट्ठामए कदे वेरुलियामए नाले वेरुलियामया वाहिरपत्ता जवूणयमया अब्सितरपत्ता तवणिज्ञमया केसरा कणगामई कण्णिया नाणामणिमया पुक्खरित्थमुगा ॥ सा ण कण्णिया अद्धजोयण आयामविक्खमेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण कोस वाह्नेण सन्वप्पणा कणगामई अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ तीसे ण कण्णियाए उवरिं बहुसमरमणिजे देसभाए पण्णते जाव मणीहिं०॥ तस्स ण वहुसमर्मणिजस्स भूमिभागस्स वहुमञ्झदेसभाए एत्थ ण एगे मह भवणे पण्णते, कोस आयामेण अद्धकोस विक्खमेण देसूण कोस उडू उचतेण अणेगलभसयसनिविद्व जाव वण्णओ, तस्स ण भवणस्स तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता पुरित्थमेण दाहिणेण उत्तरेण, ते ण दारा पंचधणुसयाइ उद्ध उचितेण अद्वाइजाइ धणुसयाइ विक्खभेण तावइय चेव पवेसेण सेया वरकणगथ्भियागा जाव वणमालाउत्ति ॥ तस्स ण भवणस्स अतो वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते से जहा नामए—आर्लिंगपुक्खरेइ वा जाव मणीण वण्णओ ॥ तस्त ण वहुसमरमणि-जस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसभाए एत्थ ण मणिपेढिया पण्णता, पचघणुसयाई आयामविक्खमेण अहुाइजाइ वणुमयाइ वाह्रहेण सन्वमणिमई० ॥ तीसे ण मणि-पेढियाए उनरि एत्थ ण एगे मह देवनयणिजे पण्णते, देवनयणिजस्स वण्णको ॥ से ण पउमे अण्णेण अद्वयएण तद्दुचतप्यमाणमेत्ताण पउमाण यव्यओ समता सपरिक्खित ॥ ते ण परामा अद्धनोयण आयामविक्खमेण त तिगुण सविसेस परिक्येवेण कोस वाह्हेण दस जोयणाइ उन्वेहेण कोस ऊसिया जलताओ साइरेगाइ

वस जोजवार्ड सम्बन्नेणं पण्यतार्ड ॥ तेनि थं पउमार्च अयमेयारूपे बच्चावासे पन्यते संबद्धा-नदरामवा मूला जाव वाजामवित्तया प्रकटारिवसूना ॥ ताओ न करिजयाओं कोसे आजामविकानिण सं तिगुर्ण सं परि अदक्षीर्ध बाह्येर्थ सम्ब कवयागर्डेओ अस्तात्ओ आए पहिल्लाओ ॥ ताति भ कण्यिकां रुप्पि बहुतमर मिया भूमिमागा बाद मणीनं कृत्यो गयो भ्रासो ॥ तस्य व पत्रमस्य अवद-त्तरेजं उत्तरेणं उत्तरपरविद्यमेणं मीलर्गतहरूपमारस्य वेजस्य चडणां सामाजिक्यान हस्तीचे चतारै परमसहस्तीओ पञ्जताओं एवं सम्बो परिवारी मनरि परमार्च माजिकको n से में पाउने अल्लेखि तिहि पाउमकरपरिक्तेनेहि सम्बाधे सर्मता संपरिकियते तंत्रहा-शर्कितरेणं मजिसमेणं बाहिरपूर्णं अस्मितरए सं पटमधीर क्येबे बतासं परमनवसाहरसीओ प मन्त्रियए सं परमपरिक्येबे बत्ताकीर्स प्रवस्तवसाहस्तीओ व वाहिरए में पडमपरिक्लेवे भडवाकीसं प्रवस्तवसाहस्तीओ पञ्चलाओं एकामेक सपुन्याकरेण एगा परमकोडी बीर्स व परमस्यसङ्ख्या भर्व वीति मक्त्रामा ॥ से केनद्वेणं मेते । एवं कुण्यः -- जीतमंत्रहे वहे । गीयमा ! णीसर्वत्वहे में वहे तत्व तत्व जाई उपकाई जाव सवसहस्तपताह गीसर्वतप्पमाई बीलरंतक्रमानीई नीक्वंतरहद्वमारे व एत्य देवे क्मगदेवगमी से तेमद्रेगं योजमा ! बाद नीसर्वतदहे २. शीकर्वतस्य में रावहाजी पुरुवाभिकावेणे एस्व सी चेर ससी बाद बीस्त्रंति वेदे ॥ १४९ ॥ जीसलंताहरस मं प्रारियमणबारियमेणं वस कोनवाई अबाह्यए एरच में इस इस कंबमगपन्यता पन्नता ते में कंबमगपन्यता एपरेगे कामणसर्व तबूं तबकेषं पननीसं २ जोवनाई तब्बेहेन मुके एगरेवं कोवनसर्व विक्लीमेर्च मञ्जे पन्नतरि बोबनाई (कायाम)निक्लीमेर्च उन्तरि पञ्चातं बोबनाई विकर्रामिनं सके दिन्ति सीके जीयनसए विनिविसेसाक्षिए परिक्केबेनं सक्तो होकि सत्तरिक्षे बीनमस्य किनिनिसंसाक्षिए परिक्तेविनं उपरि एमं अद्यादक्यं जोयनसमें किनिविदेसाहिए परिवचेनेनं मुके विश्वकणा संज्ञे संविक्ता वर्णि कुनुवा गोपुच्छ-र्धेठावस्तिना सम्बद्धवनसमा अच्छा जाव पश्चिक्या परियं १ परस्वरदेशमा । परिवं १ क्जस्बपरिक्सिता ॥ वेशि नं कंकसम्पन्धमार्ज उप्पि बहुसमर्गकेसे सुमिमाने कार्य कासमेटी तेसि में परेलं परेल पासानवर्डसमा समुवावर्ड कोनवलं उर्ष स्व तेनं पहलीतं कोवलाई कोस न निकर्यमेणं मणिपेविया वोज्येनविया सीवासर्व सर-रिवार n से केमार्ड्य मेरे ! एवं वुक्त - कंक्श्रगम्बद्धा कवसम्बद्धा ! योगमा ! कंपकरोद्ध में पन्यपुद्ध सरम सरम नामीह उप्पदाई जान कंपनगवन्नामाई कंप-थमा देवा महिदिया जान निहरीत उत्तरेल कंत्रकमार्थ कंत्रविनामो रास्क्रा-

णीओ अण्णमि जवू० तहेव सव्व भाणियव्वं ॥ किह ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे उत्तरकुराए कुराए उत्तरकुरुद्दे णाम दहे पण्णते <sup>2</sup> गोयमा ! नीलवतह्हस्स दाहिणेण अद्वचोत्तांमे जोयणसए, एव सो चेव गमो णेयच्वो जो णीलवंतद्दहस्स सब्वेसिं सरिसगो दहमरिनामा य देवा, सब्वेरिं पुरत्थिमपचित्यमेण कचणगपव्वया दस २ एगणमाणा उत्तरेणं रायहाणीओ अण्णमि जबुद्दीवे २ । चदद्दे एरावणद्दहे माल-वतद्दे एव एकेको णेयव्यो ॥ १५० ॥ किह ण भते ! उत्तरकुराए २ जवूसुदंसणाए जबुपेटे नाम पेढे फणते व गोयमा ! जबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरिच्छमेण नीलवतस्म वासहरपव्वयस्स दाहिणेण मालवतस्स वक्खारपव्वयस्स पचित्थिमेण गधमायणस्स वक्तारपन्वयस्स पुरित्यमेण सीयाए महाणईए पुरित्यमिहे कूले एत्य ण उत्तरकुराए कुराए जबूपेढे नाम पेढे पण्णते पचजोयणसयाड आयामविक्खमेण पण्णरस एकासीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं वहुमज्झदेसभाए वारस जीयणाड वाह्रेहण तयाणतर च ण मायाए २ पएसे परिहाणीए सब्वेस चरमंतेस दो कोसे वाह्रक्षेण पण्णते सन्वजवृणयामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥ से ण एगाए पजमनरनेइयाए एगेण य नणसडेण सञ्नओ समता सपरिक्खित नण्णको दोण्हिन । तस्स ण जबुपेदस्स चडिह्सिं चतारि तिसोवाणपिहरूवगा पण्णता तं चेव जाव तोरणा जाव छता ॥ तस्स ण जवृपेढस्स उप्पि वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते से जहाणामए आर्लिगपुक्खरेइ वा जाव मणि० ॥ तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमि-भागरस वहुमज्झदेसभाए एत्थ ण एगा मह मणिपेढिया पण्णत्ता श्रद्ध जोयणाइ आयामविक्खमेण चत्तारि जोयणाइ वाह्रहेण सन्वमणिमई अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ तीसे ण मणिपेढियाए उवरि एत्थ ण मह जबूसुदसणा पण्णता अट्ट-जोयणाइ उहु उचतेण अद्धजोयण उन्वेहेण दो जोयणाइ खंघे अद्घ जोयणाई विक्खमेण छ जोयणाइ विडिमा बहुमज्झदेसभाए अह जोयणाइ विक्खमेणं साइ-रेगाइ अह जोयणाइ सन्वरगेण पण्णत्ता, वइरामयमूला रययसुपइडियविडिमा रिहाम-यविउलकदा वेरुलियरुइर्क्खधा सुजायवर्जायरूवपढमगविसालसाला नाणामणिर्य-णविविद्दसाहप्पसाहवेर्रालयपत्ततवणिज्ञपत्तर्विटा जवूणयरत्तमञयसुकुमालपवालपल्लवकु-रघरा विचित्तमणिरयणद्धरहिकुसुमा फलभारनमियसाला सच्छाया सप्पमा सस्सिरीया सउज्जोया अहिय मणोनिव्युइकरा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पिङ्ह्या ॥ १५१ ॥ जवूए ण सुदसणाए चउद्दिसिं चत्तारि साला पण्णता, तजहा--पुरत्थिमेण दक्खि-णेण पचित्थमेण उत्तरेण, तत्य ण जे से पुरित्थिमिल्ले साहे एत्य ण एगे मह भवणे पण्णते एग कोस आयामेण अद्धकोस विक्खमेण देस्ण कोस उष्टु उचतेणं अणेग- ą

र्यमः कन्मभो बाव भवणस्य धारं तं चेव प्रमानं पंज्ञानुसमाइ उच्च उबसेर्व बाहाइकाई पनुसमाई विक्रामेणे जान बजमालाको भूमिमागा उन्नेया मनिपेतिया पंचयपुरस्या देवसम्बन्धिक भाषितस्य ।। तस्य मं जे से वाद्विभिन्दे सान्ते एत्व मं एगे महं पासायवर्डेसए पञ्चति कोसं उर्व उक्तेषां कदकोसं आदामवित्रामिनं **अस्**मुनाशमृतिय अति यहुसम् उल्लेखा । तस्स कं बहुसमर्मनिकस्य मूमिमायस्य बहुमज्यदेसमाए सीहासय सपरिवार आणियन्तं । तत्थ मं को से प्रथानिमित्रे साने प्रस्य में पासामवर्डेसए पञ्चते से चेव प्रमाण सीहागर्ग सपरिवार भावितमें तत्य मं से से उत्तरिते साके एता मं एते मई पासानवर्डेसए पन्त्रते हं सेन पनाम सीहासनं सपरिवारं । केन् कं सुवस्ता मुक्ते बारसहि पठमबरबेइमाछि सम्बन्धे संनेय चैपरिक्रियता ताओ नं परमवरक्ष्यामी सदबोवर्च उड्ड स्वतेनं पंचम्लुमनहं विज्वसियं बन्धको ॥ जेब् चे धुवसमा अन्येयं अहमपूर्ण शंबूर्ण तस्युवसम्पनानने तेमं सम्बन्धी समंता संपरिविधाता ॥ ताओ नं बीड्रको नतारि कोल्याह उर्ष स्वतेनं कोसं कोम्पेहेमं योगलं रांघो कोसं विकटमिणं तिकित कोबवाई बिडिमा बहुमन्स देसमाय बतारि जोवनाई निरुपिण सहरेगाई बतारि जोवजाड सन्तरीने गर् रामसम्भा सो चेव जबसदैसवावव्याओं । वंद्रए वं सुदंशकाए अवस्टीमं उत्तरेनं कत्तरपरिवरेणे एत्व ने अणावियस्य धेवस्य करणां धामाव्ययसाहस्तीणं वतारि कंतुसाहरसीओ पञ्चलाओं कंतुए नं सर्वस्थाए पुरस्किमेर्य एत्य सं अवाडिमस्य देवस्स नवन्तं भगगमहिसीणं नतारि नंतुको पननताओं एवं परिवारो सन्ते कासक्यों चंत्र जान जागरनकार्ज । वंद्र ये छद्स्या तिहें व्येयजसपृष्टि वनसंदेष्टि सम्बक्ती सर्गता सपरिविश्वाता तैनहा-पत्रमेणे दोवेचं त्वेचं । संपूर् मं हदसमार प्रशिक्षमेणं प्रक्रम मनसूर्वं पण्यासं जीवनाई जीयाहिता एस्व मं एगे मई समन् प्रकृति पुरस्विभिन्ने मनमसरिसे मानिकन्ते चान सक्षिकं एवं शाहिनेनं प्रचरिपने उत्तरेजं ॥ अंबए वं प्रवंशकाए उत्तरप्रतिवरेजं पढमं वक्षांचं पव्याचं जोननारं क्षेपाक्किता चतारि चैदापुणकरिणीको पण्णताको श्रेवहा---परमा परमप्पमा चेन इसना इसनप्रमा । ताओं वं नवाओं पुनकारिनीओं कोई आवामेनं अबकोई इसुन। उत्पन्नामा जन्म निर्माणका प्रकार स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना किर्णकामे गीरमामो बाब पडिस्मामो क्यामो मानियन्त्रो बाव द्योरमसि झार्ड-क्ता ॥ तासि मं मंत्रापुरव्यरिणीमं शृह्मभगावेसमाय एरव मं पासायवर्डेस्य पन्नते कोराप्यमाने भद्रकोर्स निक्संगो सो नेन वण्नतो बाव सीहास्तरं सपरिवारे । एवं वनिवानपुरस्विभेधनि पन्धार्थ जीवना नतारि नेवापुरुद्धरिपीओ उपन्यापुरमा

नलिणा उप्पला उप्पलुज्जला त चेव पमाण तहेव पासायवर्डेसगो तप्पमाणो । एव दिक्खणपचित्यमेणवि पण्णास जोयणाण नवर-भिंगा भिंगणिभा चेव अजणा कज-रुप्पमा, सेस त चेव । जबूए ण सुदसणाए उत्तरपुरित्यमेणं पढम वणसङ पण्णास जोयणाइ ओगाहित्ता एत्य णं चत्तारि णदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ त०-सिरिकंता सिरिमहिया सिरिचंदा चेव तह य सिरिणिलया। तं चेव पमाणं तहेव पासायवर्डिसओ ॥ जवूए ण सुदसणाए पुरित्थिमिह्नस्स भवणस्स उत्तरेण उत्तरपुरित्थ-मेण पासायवडेंसगस्स दाहिणेण एत्य ण एगे मह कूढे पण्णते अह जोयणाइ उद्व उचतेण मूले वारस जोयणाइ विक्खमेण मज्झे अट्ट जोयणाइ आयामविक्खमेण उवरिं चत्तारि जोयणाइ आयामविक्खभेण मूले साइरेगाइ सत्ततीस जोयणाइ परिक्खेवेण मज्झे साइरेगाइ पणवीस जोयणाइ परिक्खेवेण उविरें साइरेगाइ वारस जोयणाइ परिक्खेवेण मूळे विच्छिन्ने मज्झे सिखते उपि तणुए गोपुच्छसठाणसिठए सव्वजबूणयामए अच्छे जाव पिंडह्वे, से ण एगाए पडमवरवेइयाए एगेण वण-संडेण सव्वओ समता संपरिक्खित दोण्हिन वण्णओ ॥ तस्स णं कूडस्स उविर वहुसमर्मणिजे भूमिभागे पण्णते जाव आसयति० ॥ जंवूए ण सुदंसणाए पुरत्यिमस्स भवणस्त दाहिणेण दाहिणपुरित्यमिल्लस्त पासायवर्डेसगस्स उत्तरेण एत्य ण एगे मह कूढे पण्णते त चेव पमाण । जंवूए ण छदंसणाए दाहिणिह्रस्स भवणस्स पुरत्थिमेण दाहिणपुरत्थिमस्स पासायवर्डेसगस्स पचित्थिमेण एत्थ ण एगे मह कुडे पण्णते त चेव पमाण, जवृए ण सु० दाहिणस्स भवणस्स पचित्यमेण दाहिणपचित्य-मिल्लस्स पासायवर्डिसगस्स पुरित्यमेण एत्थ ण एगे मह कुढे पण्णते त चेव पमाणं. जंबूओ पचित्यमिह्नस्स भवणस्स दाहिणेण दाहिणपचित्यमिह्नस्स पासायवर्डेसगस्स उत्तरेण एत्य णं एगे मह कूढे प० तं चेव पमाण, जवूए० पचित्यिमिह्नस्स भवणस्स उत्तरेण उत्तरपचित्यमिहस्स पासायवर्डेसगस्स दाहिणेण एत्य ण एगे मह कृडे पण्णते त चेव पमाणं । जवूए० उत्तरस्स भवणस्स पचित्यमेण उत्तरपचित्यमस्स पासायवर्डेसगस्स पुरित्यमेण एत्य णं एगे मह कूडे पण्णत्ते, त चेव पमाण । जवूए० उत्तरभवणस्स पुरित्यमेण उत्तरपुरित्यभिष्ठस्स पासायवर्डेसगस्स पचित्यमेण एत्य ण एगे मह कूडे पण्णते, त चेव पमाण । जवू ण सुदसणा अण्णेहिं वहूहिं तिलएहिं लउएहिं जाव रायरुक्खेहिं हिंगुरुक्खेहिं जाव सव्वओ समता सपरिक्खिता। जवूए ण सदसणाए उवरिं वहवे अट्टहमगलगा पण्णता, तजहा-सोत्थियसिरिवच्छ० किण्हा चामरज्झया जाव छत्ताइच्छता ॥ जवूए ण सुदसणाए दुवालस णामघेजा पण्णत्ता, तजहा---सुदसणा अमोहा य, सुप्पवुद्धा जसोघरा। विदेहजवू सोमणसा, **P • P** 

बस्स चाव धमत्ता वत्तव्यया रावद्याचीए महिष्किए। अद्रुत्तरे व व मीयमा! जंदुरीये २ तत्व तत्व वेसे २ तार्दै २ वहवे जंबुरव्यमा जंदुवजा जंबुवजहंता क्रिके **56**मिया बाब सिरीए भारेब ९ उबसोनेनामा ९ निर्देश से देखड्रेन पोनमा। एवं कुका-व्युति १ अवृत्तरं न वं योगमा। वंतुर्शवस्य सासप् वामधेजे पत्नते जब क्यानि याप्ति जाव किने ॥ १५२ ॥ जैन्द्रीवे में मंति। बीचे कुट बेदा प्रस्-र्क्ति वा पमारेति वा पमारिक्षिति वा <sup>ह</sup> वह सुरिया तर्विद्ध वा तर्वति वा तमिस्स्ति वा ! का लस्कता जोगं कोईस वा कोयंत्रि वा कोएस्सेट वा ! का सहस्राहा कार्र चरित्र वा चरिति वा चरित्सीय वा ! केनहमाओ ठारागणकोडाकोडीओ सोहिस वा धोइति वा सोहेस्सेति वा ? गोयमा । जेनुहोने जे बीने दो जेदा पमासिंह वा ३ हो स्रिया तर्विद्य या ३ क्रम्पकं शक्कता जोगं कोईस वा ३ छलकार सहसर्व कार वरिद्य वा रे-एने व सरसहस्तं वेचीतं बाह्य भवं सहस्तातं । कव व सवा प्रतास दारागमकोडिकोडीनं D % # सोनिष्ठ मा सोनेदि मा सोनिर्दित मा D 5% D कर्मां बाम रीवं अवने जार्ग समो को वक्ताभारसंस्थानीरूए सम्बन्धे स्मेर्क रंपरिकेशकार्य विद्वार । अने नं मंदे ! समुद्र कि समन्द्रकामसंदिए विसमनह-कार्म्सक्रिय् । गीनमा । समजवनामर्गकिय् मी विसमनवारामर्गक्रिय् ॥ समगे में मंते! यहाँ देशस्यं कामास्त्रिकश्चीरणं केवस्यं परिक्केवेवं पत्यते ! गोनसा ! कारी में एसुदे हो बोमणसनसहरसाई शहरास्त्रिकनोनेनं प्रशास बोनगसनसहरसाई एमाचीहसहरताई समनेगुनवतालीसे किविनियंस्व परिक्केनेन प्रव्यते । से व एकाए पडामर के याए एनेज व वजरी वर्ण सम्बन्धी समेदा संपरिनिक्ती निद्वर-बोलानि गण्यमा । सा वं परमवर शरूबोशवं रहे पंत्रकुसननित्यमियं सम्बनसमुद्दससिवपरिक्किनेजं सेसं ताहेत । से जं बजरीवे वेस्वाई दो कोनजई बाब निक्रम । सम्बन्धा नं गीते । समुद्रस्य बह्र वारा पञ्चला । गोनमा । बनारि बारा फनता र्तमहा-विमए वैकर्यते वर्वते नपराजिए ॥ कहि वे मंते ! स्वय-समझ्स निवय गार्न वारे पञ्चते व गोयसा । स्वचन्त्रस्स पुरस्थिमपेरेते शास्त्रकंडस्स रीक्स्स पुरश्चिमग्रस्य क्वलियेणं शीमोबायु महत्त्वेयु सप्ति एत्व व

केन्ए, नामचेका दुवासस्य ॥ २ ॥ सं केन्नहोर्च मंति । एवं शुक्तर्—र्जनुसुर्वसना २ ! गोयमा । चंत्रुए वं श्रदेशवाप् अंत्रुशैवादिवर्ष अवादिए वामें देने महिष्किए जान पकिओबमद्विष्य परिनक्तर, से में तरप नजन्दे सामानिनसाहरसीय बाद जेन्द्रीदस र्षम्प सर्वस्थाप् अमावियाप् य राजहागीप् जान निहरत् । यद्वि ने नीते ! अपावि

लवणस्य यमुहस्स विजए णामं दारे पण्णते अह जोयणाई उद्दृ उचतेण चत्तारि जोयणाइ विक्खंभेण, एव तं चेव गव्व जहा जबुद्दीवस्स विजयसरिसेवि (दारसरि-समेयपि) रायहाणी पुरित्थमेण अण्णामि लवणसमुद्दे ॥ किह ण भते ! लवणसमुद्दे वेजयते नाम दारे पण्णते 2 गोयमा ! लवणसमुद्दे टाहिणपेरते धायइसडदीवस्म दाहिणदस्य उत्तरेण सेस त चेव सन्वं। एव जयंतेवि, णवरि सीयाए महाणईए उप्पि माणियव्ये । एव अपराजिएवि, णवर दिसीभागो भाणियव्यो ॥ लवणस्स णं भंते! ममुहस्म दारस्स य २ एस ण केवइय अजाहाए अतरे पण्णते? गोयमा!— 'तिण्णेव नयसहस्सा पंचाणजड भवे सहस्साइ । दो जोयणसय असिया कोस दारतरे लवणे ॥ १ ॥' जाव अवाहाए अतरे पण्णते । लवणस्स ण पएसा धायइसङ दीव पुद्धा, तहेव जहा जबृदीवे धायइसडेवि सो चेव गमो। लवणे ण भते! समुद्दे जीवा उद्दाइता सो चेव विही, एव घायइसडेवि ॥ से केण्ट्रेण भते ! एव वृच्चइ---लवणममुद्दे २ १ गोयमा ! लवणे ण समुद्दे उदगे आविले रइले लोणे लिंदे खारए कडुए अप्पेजे वहूण दुपयचडप्पयमियपसुपिन्यसरीसिवाण नण्णत्य तज्जोणियाण सत्ताण, सुद्विए एत्य लवणाहिनई देने महिद्विए पलिओनमिट्ठिइए, से ण तत्य सामाणिय जान लवणममुद्दस्स सुद्वियाए रायहाणीए अण्णेसि जाव विहरड्, से एएणट्रेण गो० ! एव व्रचड ठवणे ण समुद्दे २, अदुत्तर च ण गो०! ठवणसमुद्दे सासए जाव णिचे ॥१५४॥ लवणे ण भते ! समुद्दे कड चंदा पभासिंद्ध वा पभासिंति वा पभासिस्सिति वा 2 एव पचण्हिव पुच्छा, गोयमा! लवणसमुद्दे चत्तारि चदा पभासिंसु वा ३ चत्तारि स्रिया तर्विसु वा ३ वारस्तरं नक्खत्तसय जोग जोएसु वा ३ तिण्णि वावण्णा महग्गहसया चार चरिंसु वा ३ दुण्णि सयसहस्सा सत्ति च सहस्सा नव य सया तारागणकोडाकोडीण सोभ सोभिन्न वा ३ ॥ १५५ ॥ कम्हा ण भते ! लवणसमुहे चाउइमहुमुद्दिष्टुण्णिमासिणीसु अइरेगं २ वहुइ वा हायइ वा १ गोयमा ! जबुद्दीवस्स ण दीवस्स चडिह्सिं वाहिरिल्लाओ वेइयताओ लवणसमुद्दं पचाणउइ २ जोयणसह-स्साइ ओगाहित्ता एत्थ ण चत्तारि महार्लिजरसठाणसिठया महइमहालया महापा-याला पण्णता, तजहा-वलयामुहे केळए जूने ईसरे, ते ण महापायाला एगमेगं जोयणमयसहस्स उन्वेहेण मूळे दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण मज्झे एगपएसियाए सेढीए एगमेग जोयणसयसहस्स विक्खमेण उवरिं मुहमूले दस जोयणसहस्साइ विक्सभेण ॥ तेसि ण महापायालाण कुट्टा सव्वत्थ समा दसजोयणसयवाहला पण्णत्ता सव्ववइरामया अच्छा जाव पिडल्वा ॥ तत्य ण वहवे जीवा पोग्गला य अनक्ष्मिति विउक्कमिति चयिति उचचयिति सासया ण ते कुरु दब्बद्वयाए वण्णपज- वेहि असासमा ॥ तत्व वं चतारि देवा महिद्विता जाव पश्चिमोदमद्विमा परिद-चैति चैत्रहा—काठे महाकाचे किने पर्मांगणे ॥ तेसि र्ण महापानासाणं तओ विमाना कनता तैना केडिक तिमाने मजिल्लो तिमाने उन्हेंसे तिमाने ॥ ते न दिमाया रेतीर्स जोनवसहरसा तिणिव व रेतीर्स जोनवसर्व जोनवदिमार्व व गडोर्ज । तत्म में जे से हेरिते विभागे एत्य में बारुकाओं सेचिद्रश तत्म में बे से मजिसके दिसाने एस्प वं वाउद्याए य आ उद्याद य संविद्या, हत्व वंश्रे से चवित्र तिमारे एत्व मं बाराबाए संविद्या, शक्तरं व वं गोममा ! **ब्या**ससी मन्द २ देसे 'बहदे ब्यासिकाएंडावसंडिया ब्यायासम्बस्य क्याता ते भे ब्या पाबाक्य एगमेर्ग कोक्यसहरसं उच्छेक्षेत्रं मुद्धे एगमेर्ग कोवजसर्व विकासिनं अजी क्षापरस्थितर सेडीए एगमेर्ग जोबनसङ्ख्य विक्रिक्षण कृष्य मुद्दमुक्ते एगमेय जोब-नेसर्व विकर्तमेण ॥ तेसि व्यं वापायपावाकार्य द्वारा सव्यक्त समा वस वावपार नाडोमं प्रश्ताः सम्बद्धाराम्या सन्द्रा जाव परिस्था । तस्य पं बहने वीना पोमासा य जाव असासवामि पतेर्य २ अञ्चपक्रिमोवसङ्किरमाई देवसाई परिगर-किया । तेलि मं क्यागपायाकानं तजो विभागा प तंत्रहा-हेक्कि विभागे मिजितके दिमारो तबस्कि दिमारो श में दिमाया दिन्ति देतींसे बोयबसए जोन निविमार्ग व बाइकेर्ज पञ्जला । तत्व न से से हेक्कि विमागे एरम न बाउवाओ मिजिले विभागे बार्टकाए आरुकाए य सबिले आरुकाए, ध्वामेव सपन्नावरेले केबनसपुरे सत्त पायाससहरूमा ब्यंड य पुलसीना पायाकसूना भनेतीति संस्थाना है देखि न महापाराकाण सुगुगपारासम्य य हेड्डिममञ्चिम्भेन्द्र दिमागेट वहरे भोराक्य बाबा संस्थिति संमुख्यिमति एवति कर्तति दंगति बुब्बेरि क्टेरि रंपि ते ते मार्च परिवर्मति तथा कं से उत्तर स्व्यामिक्ट, बया वे देखि महापानामाने **व**ज्ञापपानाकाण य डेट्रियमजिक्केत तिमागेल को बढ़वे औराक्स जाद ते ते मार्च व परिवर्मति तथा में से उवए मी बनामिका अतरानि य ने ते बार्य उद्योरित भतरावि य में से उदये सम्मागिका, अंतरावि व ते दावा मो स्वीरंति संतरावि भ र्व से उद्देश को उज्जामिनाह, एवं राज्य बोबमा । अवजस्तुहे बाउएनाह्मस्टिन पुष्पमासिनीपु आहरेमं ? बहुद वा दाबद वा ॥ १५६ ॥ तबसे में मंत ! समृद् वीमाय महत्तानं कर्युत्तां कारेगं २ बहुर वा हाबद वा । गोबमा ! अपने ये एस्ट्रें रीमाए महत्तार्क बुक्युत्तो भइरगं बहुइ वा हावह वा ॥ से केनद्वेर्च मैत ! एर्च कुषद्-समने में समुद्दे तीसाए मुद्रुतार्ण दुनगुत्तो अद्देर्य २ वहूद था हायद वा र गौयमा । उडुर्मतेत पायाकेमु बहुर आपूरिण्यु पायाकेमु द्वायर, से घेनड्रेच गोवमा

लवणे ण समुद्दे तीसाए मुहुत्ताण दुक्खुत्तो अइरेग अइरेग वहूइ वा हायइ वा ॥ १५७ ॥ लवणसिंहा ण भंते । केवइय चक्कवालिवन्खंभेणं केवइयं अइरेग २ वहूइ वा हायइ वा <sup>२</sup> गोयमा । लवणसिंहा ण दस जोयणसहस्साइ चक्कवालवि-क्खभेण देसूण अद्धजोयणं अइरेग २ वष्टुइ वा हायइ वा ॥ लवणस्स ण भते ! समुद्दस्स कर णागसाहस्सीओ अब्भितरिय वेलं धारति १ कर नागसाहस्सीओ वाहि-रिय वेल धरंति <sup>2</sup> कइ नागसाहस्सीओ अग्गोदय धरेंति <sup>2</sup>, गोयमा <sup>1</sup> लवणसमुद्दस्स वायालीस णागसाहस्सीओ अब्भितरिय वेल धारेंति, वावृत्तरिं णागसाहस्सीओ वाहिरिय वेलं घारेंति. सिंद्धं णागसाहस्सीओ अग्गोदय धारेंति, एवामेव सपुव्वावरेणं एगा णागसयसाहरसी चोवत्तरिं च णागसहस्सा भवतीति मक्खाया ॥ १५८ ॥ कइ ण भते ! वेलधरा णागराया पण्णता १ गोयमा ! चतारि वेलधरा णागराया पण्णता, तजहा-गोथूमे सिवए सखे मणोसिलए ॥ एएसि ण भंते ! चडण्ह वेल-घरणागरायाण कइ आवासपव्वया पण्णत्ता<sup>२</sup> गोयमा! चत्तारि आवासपव्यया पण्णत्ता, तजहा-गोथूभे उदगभासे सखे दगसीमए ॥ कहि ण भते ! गोथूभस्स वेलधरणागरायस्स गोथूमे णाम आवासपव्वए पण्णते ? गोयमा । जवूदीवे दीवे मदरस्स प॰ पुरित्यमेण लवण समुद्द बायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता एत्थ णं गोथूमस्स वेलघरणागरायस्स गोथूमे णाम आवासपञ्चए पण्णते सत्तरसएकवीसाइ जोयणसयाइ उन्नु उन्नतेण चतारि तीसे जोयणसए कोस च उव्वेहेण मूळे दसवावीसे जोयणसए आयामविक्खमेण मज्झे सत्ततेवीसे जोयणसए उवरिं चत्तारि चउवीसे जोयणसए आयामविक्खसेणं मूळे तिण्णि जोयणसहस्साइ दोण्णि य वत्तीसुत्तरे जोयणसए किंन्विविसेस्णे परिक्खेवेण मज्हे दो जोयणसहस्साइ दोण्णि य छलसीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण उवरि एग जोयणसहस्स तिण्णि य ईयाले जोयणसए किंचिविसेस्णे परिक्खेवेण मूळे वित्यिण्णे मज्हे सखिते उपि तुण्ए गोपुच्छसठाणसठिए सन्वकणगामए अच्छे जाव पिहरूवे ॥ से ण एगाए पउमवर-वेइयाए एगेण य वणसंडेण सन्वओ समता सपरिक्खित, दोण्हवि वण्णओ ॥ गोथूमस्स ण आवासपव्वयस्स उर्वारं वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते जाव आस-यति ।। तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिमागस्स बहुमज्झदेसमाए एत्थ ण एगे मह पासायवर्डेसए वावट्ठ जोयणद्ध च उष्टु उचतेण त चेव पमाण अद्ध आयाम-विक्खभेण वण्णओ जाव सीहासण सपरिवार ॥ से केणट्टेण भते ! एव वुचड्-गोथूमे आवासपव्वए २ र गोयमा ! गोथूमे ण आवासपव्वए तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहुओ खुडुाखुड्डियाओ जाव गोथूमवण्णाइ वहूड उप्पलाड तहेव जाव गोथूमे तत्थ देवे

महिश्विए जान प्रतिमोनमद्विरए परिनसर, से ये तरन पाटर्ज सामानिनमाहरसीन बाब गीम्भम्स आवासकन्यस्य गीव्साए रायहाजीए बाब बिहरा, से तबहेर्न जान मिने । रामहाणिपुच्छा योगमा । गोष्मस्य आवासप्रव्ययस्य प्ररक्षिमेर्ग तिरियमसंबेजे श्रीवसमुद्दे बीदवद्ता अन्मीन अवजसमुद्दे से जेव प्रसाम तहेव सम्बं ॥ कहि में मेरे ! रिकारस विजेवरणागरायस्य वृत्त्रोमासपामे कावासपानप् पञ्चते ! गोसमा । जेनुहीने में धीने सेंदर्श्स पञ्चनस्य दक्तिकवेणं क्रमणस्मुई नामासीसं जोव-क्सइस्टाई जोगाद्विता प्रत्य में शिवगस्त वेकंबरकागरावस्त दक्केमारे बामें भावास-पम्बए पञ्चते तं चेत्र प्रमाण चे गोव्यस्य व्यवरि सुव्वक्षंक्रमण् अच्छे जाव प्रविश्वे जाब बद्धे मानिकको गोवमा । दशोमासे थं आवासपन्यए स्वजसमुद्दे बद्धवाबनि-मनेते हर्ग सन्त्रको समंता ओमासेह राज्योवह तवह प्रमासेह सिवए इत्व देवे महिद्विए जान रानदाची से वनिक्रणेलं शिविणा ब्रुक्षेमासस्य सेवं वं चेव ॥ वहि में मंत्री संबत्त नेकंबरणागरायस्य संबे णामं वाषासक्याप् पञ्चते ! योदमा ! वतुरीने ने बीचे संपरस्य पञ्चयस्य प्रचरिपातेणं कवणसमुदं वावाकीसं कोम्पसङ्क्षाहं भोगाहिता पूर्व में संबर्ध केर्नमर संबे जार्म मावासपम्बए प से वेब प्रमान पवर सम्बरन-मानए भक्ते बाद परिश्वे। से जे प्याए प्रतम्परवेदवाए एनेम व वणसंबेध माद बड़ी बहुको बहु।बहुियाओ बाब बहुई रूपकाई सेपायमाई संबद्धकाई संबद्धक्यामाई संबे एल देने महिष्टिए बाब राजहाजीए एकरियमेज संबास्य जातासम्बन्नस संदा नाम राबद्वाची वे बेन प्रमाण ॥ कहि ये सेते ! समोसिकारस नेर्वनरनाग-राबस्य उदगरीमए नामं आदासम्बद् पन्नते । योगमा ! कंतुहोदे » मंदरस्य प बत्तरेण स्वनसप्तर्दं वावालीसं जीयनसहस्ताई कोपादिता एत्य में सबोस्कियस्स वेकंबरजागराब्स्स धव्यक्षीमण् जाम जावासपञ्चए पञ्चते तं चेद पमाणं जबरि सम्बन्धिदासए अच्छे बाल पडिवर्ष मञ्जे योगमा! व्यसीमए में बारासपम्बए सीयासीयोगाणं महानांगं तत्व गओ सोए पविद्यमाइ से तेनद्वेतं बान विवे मनोशिसप् एत्व देने महिन्दिए जान से णै शरूप चटनई सामानिय जान निहरत ।। कदि में मंदे। मणोसिकान्स वेर्कवरणागरायस्य मध्येसिका जाम शयदानी पुरुतारा र गोयमा । इगसीमस्स जानासपुरुवस्य उत्तरेषं हिरि अर्जनी समये एएन में भुजोषितिया जाम रायहांगी प्रज्ञता तं जेव प्रमार्थ जाव मधोष्टिकर देवे - राजांगरा मयपालियमया य वैकेपराणयावाया । अणुवैकेपरराईण पत्नया होति रवधमय त्र ११ १५ प्रा क्यू में संत ! अणुक्तंबर्गायराजाको पण्यता ! सोयमा ! बतारि अणुकेने-अरबागरायाची कमता तंत्रहा-सहोडए क्षमए केसस अस्यपने । एएमि व

भते ! चउण्हं अणुवेलधरणागरायाण कइ आवासपव्वया पत्तता ? गोयमा ! चत्तारि आवासपव्वया पण्णत्ता, तजहा—कक्कोडए १ कह्मए २ क्हलासे ३ अरुणप्पमे ४॥ किह ण भंते ! कक्कोडगस्स अणुवेलघरणागरायस्य कक्कोडए णाम आवास-पव्वए पण्णत्ते १ गोयमा ! जबुद्दीवे २ मदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरच्छिमेण लवणसमुद्द चायालीस जोयणसहस्साई ओगाहित्ता एत्थ ण कक्कोडगस्स नागरायस्स कक्कोडए णामं आवासपव्वए पण्णते सत्तरस एक्क्वीसाइ जोयणसयाई तं चेव पमाणं ज गोथूमस्स णवरि सव्वरयणामए अच्छे जाव निरवसेस जाव सिंहासणं सपरिवारं भद्दो से बहूइ उप्पलाइ० कक्कोडप्पभाइ सेस त चेव णवरि कक्कोडगपव्वयस्स उत्तर-पुरिच्छिमेणं, एव त चेव सव्व, कहमस्सिव सो चेव गमओ अपरिसेसिओ, णवरि दाहिणपुरिच्छमेणं आवासो विज्जुप्पमा रायहाणी दाहिणपुरित्यमेण, क्दलासेवि एवं चेव, णवरि दाहिणपचित्यमेणं कहलासावि रायहाणी ताए चेव दिसाए, अरुणप्पभेवि उत्तरपचित्थिमेण रायहाणीवि ताए चेव दिसाए, चत्तारि विगप्पमाणा सव्वरयणामया य ॥ १६० ॥ किं ण भते ! सुद्वियस्स लवणाहिवइस्स गोयमदीवे णाम दीवे पण्णते <sup>१</sup>ंगोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पन्वयस्स पचित्थिमेणं लवणसमुद्द वारस-जोयणसहस्साइ ओगाहिता एत्य ण सुद्वियस्स लवणाहिवइस्स गोयमदीवे० पण्णते, वारसजोयणसहस्साइ आयामविक्खभेण सत्ततीस जोयणसहस्साइ नव य अडयाले जोयणसए किंन्विविसेस्णे परिक्खेवेण जवूदीवंतेण अद्धेगृणणउए जोयणाइ चत्ता-लीस पंचणउइभागे जोयणस्स ऊसिए जलताओ लवणसमुद्दोण दो कोसे ऊसिए जलताओ ॥ से ण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेण सव्वओ समंता तहेव वण्णओ दोण्हिव । गोयमदीवस्स ण दीवस्स अतो जाव बहुसमर्माणेजे भूमिभागे पण्णते, से जहानामए-आर्लिंग॰ जाव आसयति॰। तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसभागे एत्थ ण सुद्वियस्स लवणाहिवइस्स एगे मह अइक्षीला-वासे नाम भोमेजविहारे पण्णते वाविंद्वं जोयणाइ अद्धजोयण उन्नृ उचतेण एकतीस जोयणाइ कोस च विक्खमेण अणेगखमसयसिनिष्ठे सन्वो भवणवण्णओ माणियन्वो । अइक्कीलावासस्स ण भोमेज्जविहारस्स अतो वहुसमरमणिज्जे भृमिभागे पण्णत्ते जाव मणीण फासो । तस्स ण वहुसमर्मणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसभाए एत्य एगा मणिपेडिया पण्णता । सा ण मणिपेडिया दो जोयणाइ आयामविक्खमेण जोयणचाहहेण मन्वमणिमया अच्छा जाव पहिरूवा ॥ तीसे ण मणिपेहियाए उनरि एत्य ण देवसय-णिजे पण्णते वण्णक्षो ॥ से केणहेण भते । एव वुचइ--गोयमदीवे दीवे २१ गोयमा ! गोयमदीने ण दीने तत्य २ देसे २ ताहिं २ वहूड उप्पलाइ जान गोयमप्पसाइ से एएण्डेण

गोयमा ! जाव विशे । कहि वाँ संति ! लुद्धियस्य सम्बाहिषकस्य सुद्धिवा भागं रावद्वानी परगत्ता है गोयमा । गोयमबीबस्स प्रवस्थिमेर्ग दिस्यमधेकेले जाव कर्णमि सवबस्मारे बारम जीयजसहरमाह ओगाहिला एवं तहेब सम्में नंसम्बं जात सुद्विए देवे ॥ १६१ ॥ कहि ये मेरे ! अंबुहाश्याणे चैदाने चेदरीया नामें शीवा पत्नाता ! मीममा ! **मे3रीये २ मेंदररम पम्मयरम पुरविज्ञमण क्षत्रणसमुद्दं बारम जोनजसहरसाई** कोगाहिता एत श्रं चंत्रुरीवगार्च वंदार्ग चैन्दीवा नार्म धीवा क्वता चंत्रुदौर्ववेचे नदेग्णनडर्जोयनाई बतासीसं पंत्राचडर मागे जोयनस्य द्वारेया जस्तासी लग्नममुद्दार्य हो कोसे स्ट्रॉयमा जर्ननाओ बारस जीवणसङ्ख्याई आवासमिक्सी-मेर्प संसं तं चत्र बहा गोयमधीयस्य परिक्येचो पत्रमधरबेदया प्रतितं २ वधसंत्रपरि बाज्यि बज्जा बहुसमरमणिजा भूमिमामा जाव जोइनिवा देवा आसमैति । तेति मै बहुगमरमध्ये मूनिमारे पानायवर्डेसमा शबद्धि बोयगाई बहुमद्या मन्त्रिके याओं हो जीवणाई जाउ सीधासका संपरिवास भावितक्या तहेब अही ग्रेममा ! बहुत राहात राहियात बहुरे उप्पक्तां अंदरमामाई बंदा एस देवा महिद्दिया बाद पतिजोतमद्भिया परितसंदि से व तत्व पतेर्थ पतेर्थ बदलई सामानियमाइस्तीब जाद चंदरीयार्ज चंदाल व रावदाणीयं अधेति च बहुर्ज चार्रशियार्ग करार्ज देवीन य आहर्ष जान निहरेति से तमदेशं गीयमा | चैत्रीका आप मिचा । कहि में र्मत । जेर्द्रश्वगाणं अनामं अंनाओ शाम रामदानीओ पत्रमतानी । गोपमा । चैद्दीवार्ग पुरिवमेर्ण निरियं जान अर्ग्गाम चंत्रुदीय २ नारण जीवनगहरूमार्थ भोगादिना सं चन प्रमार्च जार एमहिड्डिया चवा देवा २ ॥ वहि में मंत ! नैई-दीनगार्थ मुदार्थ शुरकीन जाने कीना कलाता है गोयमा । जंतरीने २ मंदरल पान्यम्म प्रविचामेचे लडणसमुद्दे बारम जीयचमहत्त्वाई श्रोगाहिता सं चेत्र उचर्च भायामित्रस्रोतेनं परिकाती केत्या वयमेटा मूमिमाण जान भागवेति पानाववर्डे गुगार्ज ते च्या प्रमाण सनियेतिया तीहामया सपरिशास भद्रा उच्छताई । सूरप्पमार्थ सूरा प्रथ्य बना आप रायहाणीओ नगार्च बीबार्च प्रवस्थितर्च अन्तिन चेतुरीवे रीय मेगुनै की बाव स्टावना ॥ १६ ॥ वटि वी संखी अधिनतामाम याची गोदाची चीहरीका गामें कीका पत्रवता है शायमा । अंपुरीन २ मोद्रश्य पत्रवस्म पुरिधार्थं सदमगमुरे बारगः जायमगदस्याई ओगादिमा ग्रन्थ से अस्थितरसः द गार्च भेराण भेरतीस नामे बीया परमता जहा जेपुरिस्मा संस नहीं मानिवान बार्धा रामद्रामीओ अर्थाम लग्न नेंगे ने चेर । एवं अध्वितरनावनमाने भूगमार करमममुद्दं बारमः आयागहरूपाई तहेद गर्मः जाव शयदानीओ स वर्षः से मन

चाहिरलावणगाण चदाणं चंददीवा॰ पण्णता १ गोयमा ! लवणस्स समुद्दस्स पुरित्थ-मिल्लाओ वेइयंताओ लवणसमुद्द पचित्थमेण बारस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता एत्य ण चाहिरलावणगाण चदाणं चददीवा नामं दीवा पण्णत्ता धायइसडदीवंतेणं अद्धेगूणणव-इजोयणाई चत्तालीस च पचणउइभागे जोयणस्स ऊसिया जलताओ लवणसमुद्दतेण दो कोसे ऊत्तिया बारस जोयणसहस्साइ आयामविक्खमेण पउमवरवेइया वणसङा वहुसमरमणिजा भूमिमागा मणिपेढिया सीहासणा सपरिवारा सो चेव अद्वो राय-हाणीओ सगाणं दीवाणं पुरित्यमेण तिरियमस० अण्णंमि लवणसमुद्दे तहेव सन्व । कहि ण भते ! वाहिरलावणगाण सुराणं सूरदीवा णाम दीवा ण्णात्ता ? गोयमा ! लवणसमुद्दपचित्यमिल्लाओ वेइयताओ लवणसमुद्द पुरित्यमेण बारस जोयणसहस्साइ धायइसडदीवतेण अद्धेगूणणउइ जोयणाइ चत्तालीस च पचनउइमागे जोयणस्स दो कोसे ऊसिया सेस तहेव जाव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पचित्यमेण तिरियमस-खेंजे लवणे चेव बारस जोयणा तहेव सन्व भाणियन्व ॥ १६३ ॥ फिह ण भते ! भायइसहदीवगाणं चदाण चददीवा० पण्णता <sup>२</sup> गोयमा ! भायइसहस्स दीवस्स पुरित्यमिल्लाओ वेइयताओ कालोयं ण समुद्द वारस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता एतथ ण धायइसडदीवाणं चदाण चददीवा णाम दीवा पण्णता, सव्वओ समता दो कोसा ऊतिया जलताओ वारस जोयणसहस्साइ तहेव विक्खभपरिक्खेवो भूमिभागो पासायविंसया मिणपेढिया सीहासणा सपरिवारा अहो तहेव रायहाणीओ सगाण दीवाण पुरित्थमेणं अण्णमि घायइसडे दीवे सेस त चेव, एव स्रदीवावि, नवर भायइसडस्स दीवस्स पच्चित्यमिल्लाओ वेङ्यताओ कालोय ण समुद्द वारस जोयण० तहेव सन्व जाव रायहाणीओ सूराण दीवाण पचित्थिमेण अण्णिम्म धायइसडे दीवे सव्व तहेव ॥ १६४ ॥ किह ण भते । कालोयगाण चदाण चददीवा णाम दीवा पण्णत्ता ? गोयमा! कालोयसमुद्स्स पुरिच्छिमिछाओ वेइयताओ कालोयण्ण समुद्द पच-त्थिमेण वारस जोयणसहस्साइ ओगाहिता एत्थ ण कालोयगचदाण चददीवा०सन्वओ समता दो कोसा ऊसिया जलताओ सेस तहेव जाव रायहाणीओ सगाण दीव० पुर-च्छिमेण अण्णमि कालोयगसमुद्दे वारस जोयणा त चेव सन्व जाव चदा देवा २। एव स्राणिव, णवर कालोयगपचित्यमिल्लाओ वेइयताओ कालोयसमुद्दपुरिच्छमेण वारस जोयणसहस्साइ ओगाहिता तहेव रायहाणीओ सगाण दीवाण पचित्यमेण अण्णामे-कालोयगसमुद्दे तहेव सन्व । एव पुक्खरवरगाण चदाण पुक्खरवरस्स दीवस्स पुरित्थ-मिल्लाओ वेडयताओ पुक्खरसमुद्द वार्य जोयणसहस्साइ ओगाहिता चददीवा अण्णाम युक्खरवरे दीवे रायहाणीओ तहेव । एव स्राणिव दीवा पुक्खरवरदीवस्स पचित्य-१४ सुत्ता०

बान रान्द्राणीओ शैनिक्रमाथ शैने समुद्गार्ण समुद्दे चेव द्यार्ण अस्मितरपाठे एगार्ग नाहिरपाने रामहाणीओ चीनिक्रगाण चीनेत समुद्दगार्ग समुद्देश सरिसणामपूर्व ॥ १९५ ॥ इमे पामा अपुर्गतमा-अपुरीने लगणे पानइ श्रास्त्रोद पुरुवारे वस्पे । चीर मय इन्ह्यूंवरो मोणंत्री सरुणवरे कुंबके रुपये ॥ १ ॥ सामरुवस्त्वामि सप्पष्ट-तिकर् व पुत्रवि व्यक्तिरम्ये । वासहरवहणहैंमो विज्ञा वक्तारकर्विदा ॥ २ ॥ पुर मैदरमाबासा कुवा जनवात्तर्वदस्या व । एव मानिकर्ण ॥ १६६ ॥ सक्षे नं मेर्ट ! देवदीवगार्ज चंदाणे चंदारीया गामे दीवा पञ्चला ! शोयमा ! देवदीवस्स देवोर्द समुद्दं बारस क्येयणसङ्स्साई कोपाद्विता तेचेव क्येच पुरस्थितिकाको केवतान्त्रे जाब राजद्वाणीयो समाणं श्रीवाणं पुरस्थितेयं देवहीयं समुद्रं असंकेशाई बोवन सहस्थाई ओपाद्विता एत्य ने दंबरीबयार्ण चंदार्ण चदाओं यार्स राज्याचीओ पन्न-प्रामी ऐसं ते चेन देवरीयचवा बीवा एवं सुरावनि वचरं एकत्विनिकासी नेहर्य-ताओ प्रवरिवनेयं व मानियन्त्रा तीमें चंद स्मुद्दे ॥ वर्षद्दे य मंते ! देवस्मुद्द्यार्थ वंदानं पंतरीया नामं वीवा प्रभाता ! गोयमा ! वेबोवपस्य समहस्य प्रदश्मिकाची नैदर्भताओं बंगीवर्भ समुद्रं प्रवास्थिनेयं कारस जीवगसङ्गरसङ्कं ओगाहिता तेचेन करेनं जान रामद्वाणीओ स्थार्थ शैनाणं प्रचारियमेथं देवोद्यं समुद्दं अस्थेजार्म जीयक्यहस्सक लोगाहिता एत्व न देवोदगल नंदायं नंदाओ पास रामहापीमी पञ्चताओं ते केव सम्बं एवं सुराणनि अवसि इयोदगस्य प्रवस्थितिकाओं नेहर्नताओं देवोदगसमुदं पुरस्थिमेर्ग कारस जोयमसङ्ख्यादं श्रोगाहिता सबद्दाणीओ स्पार्म ९ बीबाजं पुरस्थिमंत्रं वेदोवणं समुद्दं असक्तेजातं बोयणसङ्ख्याः ॥ एवं प्राणे अवन्ते मुप्<sup>ति</sup> वातमां वीवसमुदार्थ । क्रीह र्ण भते ! सबभूतमशरीक्यार्ण केरार्थ केर्युमा नाने वीवा पञ्चता र गोनमा । सर्वमुरमणस्य बीनस्य पुरस्थिनिकामो केवितामो सर्वमुरमण्डे इग समुद्दं बारस बोनणसहस्ताई ताहेन शनहाजीको सगार्ज २ रीवाने पुरस्थितंत्र सर्वमुरमणोवर्ग समुद्दे पुरस्थिमेर्ग असंस्केत्राई जोतवा ते जेव एवं स्रावनि समेन्द्रमणस्य पण्डलिमिताओं केइनेताओ हामहाशीओ सगाण १ शीमाणे पण्डलि मिकाण सर्वभरमणोर्व समुद्दं **कर्तके**का सेसं है क्व । वहि जै सेहे ! सर्वभूरम<sup>क</sup> समुद्दगानं भदावं है बोयमा ! सर्वभुरमणस्य समुद्दस पुरत्विमिनाओ हेर्पतानो

सर्पेपुरमनं स्पृतं प्रवास्थितं बारसः व्योवनयहस्साहं कोगाहिता सेसं तं केव । एवं स्रामितं सर्पेपुरस्करमः प्रवास्थितिकाको सर्वपुरसक्षीत् सहाई पुरक्षियोन बारम कोयनस्वरस्ताहं कोगाहिता रहतवानीको सनार्यं शीवानं पुरक्षियोनं सर्वपुरसम्बन्धाः असखेजाइ जोयणसहस्साई ओगाहिता एत्थ ण सयभुरमण जान स्रा देवा २ ॥ १६७ ॥ अत्थि णं भते ! लत्रणसमुद्दे वेलघराइ वा णागरायाइ वा खन्नाइ वा अग्घाइ वा सिंहाइ वा विजाईइ वा हासवटीड वा <sup>2</sup> हता अत्थि । जहा ण भते ! रुवणसमुद्दे अत्यि वेलघराड वा णागराया अग्घा सिंहा विजाईइ वा हासवटीइ वा तहा ण वाहिरएसवि समुदेसु अत्थि वेलंघराइ वा णागरायाइ वा ॰ अग्घाइ वा सीहाइ वा विजाईइ वा हासवटीइ वा 2 णो इणहे समदे ॥ १६८ ॥ ठवणे ण भते ! समुद्दे किं ऊसिओ-दंगे किं पत्यडोद्गे किं खुभियजले किं अखुभियजले 2 गोयमा ! लवणे णं समुद्दे ऊसि-भोदगे नो पत्थडोदगे खुभियजले नो अक्खुभियजले । जहा ण भते ! लवणे समुद्दे किसओदगे नो पत्थडोदगे खुभियजले नो अक्खुभियजले तहा ण वाहिरगा समुद्दा किं ऊसिओदगा पत्यडोदगा खुभियजला अक्खुभियजला <sup>२</sup> गोयमा ! वाहिरगा समुद्दा नो उस्सिओदगा पत्थडोदगा नो खुभियजला अक्खुभियजला पुण्णा पुण्णपमाणा वोल-हमाणा वोसहमाणा समभरघडत्ताए चिहति ॥ अत्यि णं भते । लवणसमुद्दे वहचे ओराला वलाहगा संसेयंति समुच्छति वा वास वासति वा <sup>2</sup> हता अत्य । जहा ण भते ! लवणसमुद्दे वहवे ओराला वलाहगा ससेयति समुच्छति वास वासति वा तहा ण वाहिरएम्रिव समुद्देस बहुवे ओराला वलाहगा ससेयति समुच्छति वास वासति १ णो इण्डे समट्टे, से केण्ड्रेण भंते ! एव वुचइ-वाहिरगा ण समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोल्रहमाणा वोसहमाणा समभरघडताए चिट्टंति <sup>२</sup> गोयमा ! वाहिरएसु ण समुद्देसु वहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमति विउक्कमंति चयति उवचयति, से तेणद्वेण एव वृचइ-वाहिरगा समुद्दा पुण्णा पुण्ण० जाव समभरघड-त्ताए चिट्ठति ॥ १६९ ॥ लवणे ण भते ! समुद्दे केवइय उन्वेहपरिवृद्धीए पण्णते १ गोयमा ! लवणस्स ण समुद्दस्स उभओ पासि पचाणउइ २ पएसे गता पएस उच्चेह-परिवृद्धीए पण्णते, पचाणउइ २ वालम्माइ गता वालम्म उन्वेहपरिवृद्धीए पण्णते. एव पं॰ २ लिक्खाओ गता लिक्ख उन्वेहपरि॰ ज्या॰ जवमज्झे॰ अगुल॰ विहस्यि॰ रयणी० कुल्छी० घणु० उन्वेहपरिवृद्गीए प०, गाउय० जोयण० जोयणसय० जोय-णसहस्साइ गता जोयणसहस्स उन्बेहपरिवृद्धीए पण्णते ॥ ठवणे ण भते ! समुहे केवइय उस्सेहपरिवृद्धीए पण्णते २ गोयमा ! ठवणस्स ण समुद्दस्स उमओ पासि पचा-णउइ पएसे गता सोलसपएसे उस्सेहपरिवृङ्कीए पण्णत्ते, एएणेव कमेण जाव पचाणउइ २ जोयणसहस्साइ गता सोलस जोयणसहस्साइ उस्सेहपरिवृङ्गीए पण्णते ॥ १७०॥ लवणस्य ण भते ! समुद्दस्य केमहालए गोतित्थे पण्णते १ गोयमा ! लवणस्य ण समु-इस्स उभक्षो पासि पचाणउइ २ जोयणसहस्साइ गोतित्य पण्णत ॥ स्वणस्स ण भते ।

समुद्दरत केमहाकप् योतिस्वनिद्धिष् चेते प्रव्यते ! शोगगः ! सम्बन्स मं समुद्दरत इस जोगणसङ्ख्या घोतित्वनिरहिए केते प्रव्यते ॥ स्वयत्स यं भीते । ससुद्रस केनदालय् उदगमाके पण्णते ! योवमा ! इस कोवणसहस्सतः उदगमाके पन्नते u १७१ n सहने में मंते ! समुद्दे किरोठिए पञ्चते ! मोबमा ! मोशिक्षरीटिए मानार्चठापर्चठिए विध्यसंपुत्रचंठिए वास्त्रचंत्रिय वस्त्रमसंठिए के बन्धामार संद्राणसंद्रित पन्त्रते ॥ सन्त्रे न गेरो । समुद्दे केवद्य शहनास्त्रीक्त्राभिनं ! केवदंव परिक्वोदेशं । केतहर्य सम्बद्धेशं । केतहर्य सरसेक्षेत्रं । केतहर्य सरवारोधं प्रध्यते । गोबमा । सबसे भं समुद्दे हो कोक्यसम्बद्धाः शहरास्त्रविक्यांमेर्यं प्रवास जोराजसम्बद्धस्तारं एकासीइं व सहस्तातं सर्वं व इगुवार्धः विविधिते परिक्षेतेनं एगं क्रेमनसहस्यं उन्येष्ट्य सोक्स क्रेन्यसहस्याई तस्येहेर्य एत्तरस क्रोन्यसहस्याई सम्बर्भेनं प्रवति ॥ १७२ ॥ बद्र नं गेरी । सक्त्रसमुद्रे हो बोयजस्यसहस्सर्पे पक्रमामनिक्जनिर्ण पन्परस जोनगरस्वसहरसाई एकासीह च सहरसाई सर्व शुपारी किनि निरोक्त गरिक्केवेयं एगं जोजनसङ्ख्यं उज्येहेर्न शोकस कोजनसङ्ख्यारं उत्सेक्षेत्रं सत्तरस जोयनसङ्ख्याः सम्बगोगं पन्नते । क्षत्रा यं संते ! सम्बग्सी चंतुर्व १ मो उनीकेइ मो सप्पीकेद मो चेन च पक्कोवर्ग करेद । सोक्सा । संप्रीन र्पं कीने भरकेरनपत्त वासेस अरहेतनकारियसका वासवेना नारणा निजाहर समजा समजीको सामबा सामिवाको मनुवा पगइभाइवा पगइनिबीबा पगइबार्सक परकप्रकारकारमानायोगा मित्रमध्यपंपण स्वीचा महया विज्ञीता तेसि वं पनि द्वाए क्यमे समुद्दे चंतुरीयं बीवं नो वजीकेंद्र नो बच्चीकेंद्र नो चेव वं एन्पेर्ड्स करेंट र्मगासिङ्क्तारत्तवहूँछ सक्रिकास वेद्याओं महिद्विशायो जान परिकोलमद्भिराजनी परिवर्धि तासि नै पनिवाप सक्तरसाँहै कार नो चेव ने एमोदर्स करेड, कुनहिंगी बंतसिहरेष्ठ बासहरपम्बएड देवा महिदिया थेसि व परिवार हेमवएरध्यवस्ट बारोस राज्या पर्यामहारा रोहियससुराणा इसरायकृतास सकितास देवसाओ महित्रियाओं शासि पनि शहानश्रवियज्ञानश्रवश्रेयश्रपम्बद्ध वेना महित्रिया आर्थ पिक्रमोबसद्भिरया परिव सहाहिमवंशरूपीस वासहरएक्वएस देवा महिद्विमा अन पक्रिमोनभद्भित्ना हरिनासरम्मयनासेषु मनुवा प्रवह्मस्याः गैयाबरमासर्वेटगरियाः एम् वहनेबबुरम्बएस् वेवा महिश्विमा विसवनीसर्वतेस वासहरपम्बएस् देवा महि विवा सम्बाओ बहुदेवनामी भावियम्बाओ पतमहद्वतिगिरिक्केसरिददानसानी देवनाओं महिश्वियांको तासि पणिकाय पुरुषमितेहावरविदेशे वासेत अरहेतवड प द्वित्रभवेषमामुदेशः चारमः निजाहरः समना समनीमो सामपा सानियाभो मनुवा

पगइ० तेसिं पणिहाए लवण०, सीयासीओयगासु सिललासु देवयाओ महिष्हिया०, देवकुरुउत्तरकुरूसु मणुया पगइभइगा०, मदरे पव्वए देवयाओ महिष्हिया०, जंवूए य सुदमणाए जबूदीवाहिवई अणाढिए णाम देवे मिहिष्हिए जाव पिलओवमिट्टिइए परिवसड तस्स पणिहाए लवणसमुद्दे० नो उवीलेड नो उप्पीलेड नो चेव णं एक्कोदग करेड, अहुत्तरं च णं गोयमा। लोगिट्टिई लोगाणुभावे जण्ण लवणसमुद्दे जबुद्दीव दीव नो उवीलेड नो उप्पीलेड नो चेव णमेगोदगं करेड ॥ १७३॥ इइ मंदरोहेसो समत्तो॥

लवणसमुद्द धायइसडे नाम दीवे वहे वलयागारसठाणसिठिए सन्वओ समंता संपरिक्खिताण चिद्रइ, धायइसडे ण भंते ! दीवे किं समचक्कवालसिठिए विसमचक्रवालस्रिष् १ गोयमा ! समचक्रवालस्रिष् नो विसमचक्रवालस्रिष् ॥ धायइसडे ण मते । दीचे केवइय चक्कवालविक्खमेण केवडयं परिक्खेवेण पण्णते 2 गोयमा! चत्तारि जोयणसयसहस्साईं चक्कवालिक्खभेण एगयालीस जोयणसय-सहस्साड दमजोयणसहस्साइ णवएगड्डे जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥ से ण एगाए पडमवरवेइयाए एगेण वणसङ्घेण सन्वओ समता सपरिक्खित दोण्हवि वण्णओ दीवसमिया परिक्खेवेणं ॥ धायइसडस्स ण मंते ! दीवस्स कइ दारा पण्णता 2 गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णता, त०-विजए वेजयते जयंते अपराजिए ॥ किह ण भते ! घायइसडस्स दीवस्स विजए णाम दारे पण्णते 2 गोयमा ! घायइ-सडपुरित्यमपेरंते कालोयसमुद्दपुरित्यमद्धस्स पष्टित्थमेण सीयाए महाणईए उपि एत्य ण धायइ० विजए णाम दारे पण्णते त चेव पमाण, रायहाणीओ अण्णमि धायइसडे दीवे, दीवस्स वत्तव्वया भाणियव्वा, एव चत्तारिवि दारा भाणियव्या ॥ धायइसडस्स ण भते! दीवस्स दारस्स य २ एस ण केवइय अवाहाए अतरे पण्णते १ गोयमा । दस जोयणसयसहस्साई सत्तावीस च जोयणसहस्साइ सत्तपणतीसे जोयणसए तिचि य कोसे दारस्स य २ अवाहाए अतरे पण्णते ॥ धायइस्डस्स ण भते ! बीवस्स पएसा कालोयगं समुदं पुद्धा १ हता पुद्धा ॥ ते ण भते ! किं धायइ-संडे दीवे कालोए समुद्दे <sup>2</sup> ते घायइसंडे नो खलु ते कालोयसमुद्दे । एव कालोय-स्सिन । धायइसडद्दीने ण भते ! जीना उदाइत्ता २ कालोए समुद्दे पन्नायति १ गोयमा ! अत्थेगइया पचायति अत्थेगइया नो पचायति । एव कालोएवि अत्थे० प० अत्थेग-इया णो पचायति ॥ से केणहेणं भते ! एव वुचइ--धायइसडे दीवे २ १ गोयमा ! धायइसडे ण दीने तत्थ तत्य देसे २ तिहं २ वहने धायइस्वन्छा धायइनण्णा धायइसङा णिच कुसुमिया जान उनसोभेमाणा २ चिद्वति, धायइमहाधायइस्व सेसु सुदसण-

पिमर्वसमा दुव देवा महिश्विमा जाव परिज्ञोवमद्भिता परिवर्धति से एएजड्रेज नदत्तरं च में योजगा । जाव निजे ॥ बायहरीडे में मेरी । बीबे बळ जंडा प्रमासित ना दे ! च्या सरिया तर्निस वा दे ! च्या महस्मद्वा चारं चरिस था दे ! च्या नमचता जोगं जोहंस वा ३ ! वद सारायक्योबाओं की मेंस वा ३ ! गोममा ! बारस चेदा प्रभासिस वा ३ एक-करवीसे संस्टित्मिको अवस्ता संया य शिक्ति क्रतीरा। एवं य रत्तुसहरते अपने भागोपी ॥ १ ॥ अद्वेष सगरतास्ता दिख्य सहरतां सत म समार्थ । बानप्रसारे रीवे तारागणकोविकोरीयाँ ॥ १ ॥ सीमेंस वा ३ ॥ १०४ ॥ बाद्यसें ने रीवें बाधोदे बाल समुद्रे के बच्चागारसञागरीठिए सम्बती सर्गता संपरिक्तार्थं विद्वा, कामोरे में समुद्दे कि समकातासस्त्रणसंद्विप विस्त ! गोजमा ! समक्कान्य को विसमक्कानावर्गित्य ॥ कामोदे वं संते ! समुद्रे केन्द्रने ज्ञासमिक्सीर्ग केस्ट्रयं परिक्षेत्रेयं पन्त्रो । गोयमा । वह बोबजस्यसहरसर्व वद्यालनिक्सीमं एकाणतहबोदयसगरहस्ताई तत्तरि सहस्ताई तब पंतारे कोयमस्य किनिनिसेसाक्षिय परिक्केवेचं पन्नते ॥ से वं एयाए प्रसमस्यास्याप फ्लेमं बगसंडेजं दोजानि कञ्चलो ॥ काब्येयस्य नं संदे ! समुद्रस्य कह दारा प्रभक्ता ! गोक्सा ! बतारि बारा प्रभक्ता | तंब्दा-विवय वेक्वेते क्यंते बारा-बिए D कहि वं रिते ! कामोदस्य समुदस्य निवए वार्स वारे प्रवत्ती ! योक्सा ! कामोदे समुद्दे पुरस्थिमपेरंडे पुक्तारकरवीकपुरस्थिमकस्स प्रवस्थिमेर्व शीकोकार महानहेर वर्ष्य रात्य ग ऋकोषस्य समुद्दस्य विवय वार्त्य तारे यज्जाते नहेर कोनकार ते चेव प्रमाण वाक राजहाणीओ । कहि के संते ! काक्रोयस्य स्मारस्य केनपंते गामं दारे पन्नते हैं मोधमा । कास्नेनसमुद्दस्य वक्तिकपेरंते पुरुवारवर बीबस्य दक्तिकाद्यस्य उत्तरेणं एत्य मं ब्यूक्षेपसमुदस्य वैवयदे नामं हारै पक्ते। कांद्र में मेरे ! काम्बेयसमुद्दस्य नवंदे नामं दारे पत्रते ! योगमा ! कामोगसमुद्दस्य प्यस्थिमपेरते प्रम्बरम्सीयस्य प्यस्थिमदस्य प्रतियोगं सीमाप महानाँए समि कर्यते नामं बारे पञ्चते । कहि थं मेरो । कास्मेयसमुदस्य वापराविए नामं वारे प्रकति ! गोयमा । काम्येनसमुबस्य उत्तरदापेरेते पुनवरनरकीवोत्तरहास वाहिप्यको एत्व मं कालोनसमुद्दस्य अपराजिए नामं बारे सेसं तं चेव ॥ कालोबस्स ने भीते | समहत्त्व शारत्स य २ एस में केनहर्य २ अवाहाय अतरे फनते है गोयमा !---बाबीस समस्त्रस्सा बाजरङ बाह्र भवे सहस्ताते । इन्य समा बागावा वारेतर शिवि कोसा य ॥ १ ॥ बारस्य म २ अवाहाए असरे प्रकृते । काम्प्रेयस्य व मेरे ! समुद्दस्य पएसा पुरुष्करवरदीन छोन एनं पुरुष्करवरदीवस्तनि जीना उद्दारण र

तहेव भाणियव्व ॥ से केणहेणं भते ! एव वुचड-कालोए समुद्दे २ १ गोयमा ! कालोयस्स ण समुद्दस्य उदए आसले मासले पेसले कालए भासरासिवण्णाभे पगईए उद्गरसेण पण्णते, कालमहाकाला एत्य दुवे देवा महिष्ट्रिया जाव पलिओवमट्टिङया परिवसति, से तेणहेण गोयमा ! जाव णिचे ॥ कालोए ण भते ! समुद्दे कइ चदा पभासिंसु वा ३ 2 पुच्छा, गोयमा! कालोए ण समुद्दे वायालीस चदा पभासेंसु वा ३---वायालीस चदा वायालीस च दिणयरा दित्ता ॥ कालोदहिम्मि एए चरति सव-द्रलेमागा ॥ १ ॥ णक्खताण सहस्स एग छावत्तर च सयमण्ण । छच सया छण्ण-उया महागहा तिण्णि य सहस्या ॥ २ ॥ अट्ठावीस कालोटहिम्मि वारस य सयसह-स्साइ । नव य सया पन्नासा तारागणकोडिकोडीणं ॥३॥ सोमॅसु वा ३ ॥ १७५॥ कालोयं ण समुद्दं पुक्खरवरे णामं दीवे वहे वलयागारसठाणसठिए सन्वओ समंता सपरि॰ तहेव जाव समचक्रवालसठाणसिठए नो विसमचक्रवालसठाणसिठए। पुक्खरवरे ण भते ! दीवे केवइय चक्कवालविक्खभेणं केवइय परिक्खेवेणं पण्णते १ गोयमा! सोलस जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खंभेणं—एगा जोयणकोडी वाण-उड खलु भवे सयसहस्सा । अउणाणउइ अट्ट सया चडणउया य [परिरओ] पुक्खर्वरस्स ॥ १ ॥ से णं एगाए पडमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं० सपरि० दोण्हिवं वण्णओ ॥ पुक्खरवरस्स ण भते ! दीवस्स कइ दारा पण्णता १ गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णता, तजहा—विजए वेजयंते जयंते अपराजिए ॥ कहि ण भते ! पुक्खरवरस्स दीवरस विजए णाम दारे पण्णते <sup>2</sup> गोयमा ! पुक्खरवरदीवपुरच्छिम-पेरंते पुक्खरोदसमुद्दपुरच्छिमद्धस्स पचित्थिमेण एत्थ णं पुक्खरवरदीवस्स विजए णाम दारे पण्णते त चेव सन्वं, एवं चत्तारिवि दारा, सीयासीओया णित्थ भाणि-यव्वाओ ॥ पुक्खर्वरस्स ण भते । दीवस्स दारस्स य २ एस ण केवइय अवाहाए अतरे पण्णते १ गोयमा !—अडयाल सयसहस्सा वावीस खलु भने सहस्साइ। अगुणुत्तरा य चडरो दारंतर पुक्खरवरस्स ॥ १ ॥ पएसा दोण्हवि पुट्टा, जीवा दोस्र भाणियव्वा ॥ से केणद्रेण भते । एवं वुचइ-पुक्खरवरदीवे २१ गो० ! पुक्खरवरे ण दीवे तत्थ २ देसे २ तिहं २ वहवे पडमरुक्खा पडमवणसङा णिच कुसुमिया जाव चिहति, परममहापरमस्तवा एत्थ ण परमपुहरीया णाम दुवे देवा महिस्स्या जाव पलिओवमद्विदया परिवसति, से तेणहेण गोयमा ! एव वुचद-पुक्खरवरदीवे २ जाव निचे ॥ पुक्खरवरे ण भते ! दीवे केवइया चदा पभासिंसु वा ३ १ एव पुच्छा,---चोयाल चदसय चलयाल चेव स्रियाण सय। पुक्खरवरदीविम चरंति एए पसा-र्सेता ॥ १ ॥ चतारि सहस्साइ वत्तीस चेव होंति णक्खता । छच सया वावत्तर

[ वीवाजीवामिगमे

725

महरगहा बारह सहस्ता ॥ ९ ॥ छण्जडह समसहस्ता बताबीसे मने सहस्पर्छ । चतारि सवा पुन्धर्ववर]वारागणकोविकोबीर्ज ॥ ३ ॥ सोर्नेस वा ३ ॥ प्रकार भरदीवरम जे बहुमञ्जादेसमाए एरव ण मानुसूतरे लाग प्रवृत प्रवृत्ति वह वस्त्रा-भारसंद्र्यणसंद्रिए के में पुरुपारवर बीचे बुधा विश्वसमाने २ चिद्धा, तंत्रहा-भर्मितरपुक्यरके भ नाहिरपुक्यरक भ ॥ भर्मितरपुक्यरके में सेते । बनारे भवनाकेर्ण परिक्रोकेर्ण पणाते ! गोवामा ! बाह्न जोवकायसम्बद्धसम्बद्धं अप्रकासिकरा-नेर्य-नोडी बामाडीसा सीसे बोणित व सवा अगुजक्त्या । पुरुदारबद्धपरिएमी एवं व महासायेत्तरस्य ॥ १ ॥ से केवड्रेणं अंते । एवं नुवद्-आध्यादावयरके २ हे गोयमा । अस्मितरपुरुपारहे ने प्राप्तमुत्तरेन प्रमाएन सम्बन्ध सर्वता संपरि निराते से एएनदेने गोवमा ! मध्यितरपुरुपादे १ अवतर म गं अब विने म करिमतासक्यरके में मेरे ! केरहमा भंदा यमानित वा १ सा चेद पुच्छा वाद तारायमञ्जेषिरोधीमा १ गोवमा!- वाबतार प बंदा बावहरिमेश संयदरा दिहा । प्रस्कारकररीमहे नरेति पूर् प्रशासिता ॥ १ ॥ तिकिन स्था छत्तीसा छत्र सहस्या सहस्महार्ज तु । भक्यातार्ज तु सर्व योकाई बुंबे सहस्साई ॥ १ ॥ काउयाक सगर-इस्मा बाबीचे च्या अने कारमाई। शोकि सब पुक्यारके तारावणशेकिरोधिन ध ३ प्र मोर्नेड बा ३ ॥ १७६ ॥ समबक्षेत्र में संस ! केन्द्रमं आमास्त्रीकरमीर्न केषदर्भं परिकारिकेनं प्रकात ? गोयमा । प्रवासातीलं जीवजनयगहरूमाई आयामनिः क्ट्रीयं एमा जोक्यकोदी जावन्तितरपुरनरद्वपरित्यो से मानियन्त्रो बाव अर नपन्ते ॥ सं केन्द्रेणं संते ! धर्म क्या-माणुगक्ते १ ! योगमा | मालुनकंदे में विविद्या सञ्चरमा परिवर्शति तीवदा-कम्ममूममा कारम्मभूममा श्रीतरकोवमा है रीगद्रम गोबमा । एवं बुबर्-माशुमक्ते माशुमक्ते ॥ माशुमदत्ते मं भंद ! 🕰 र्वता प्रमासेगु वा ३ रे वह सुरा त्वहंतु वा ३ रे गोगमा !--वतीसे वंदनसं वतीये चेव मुरियान गर्य । सक्त मनुरुपतोर्य चरेति एए प्रमासेता ॥ १ ॥ एशास व सहस्या सन्प व सोसा सहस्यक्षणं नु । धन गया सन्यवया नपुराता विध्य न महत्त्वा ॥ ६ ॥ भारतीत्र नवगहरूमा बत्तानीम सहस्य अनुवस्त्रोगीते । गत्त व सर्वा न्ताला साराममकोविकोतीर्थ ॥ ३ ॥ सोमं सीमेंगु वा ३ ॥ एखा वारापिडी सम्प्रममासेच मनुबन्धेगंथि । बदिवा पुत्र ताराजी जिनेहिं मदिया अर्थनेजा 💵 एकार्य सारमी ज समिये बाजुसीम कोर्गमि । बारे कर्मजुवसुरुवमीठवे जार्म वरा u » u रिनासिगद्दनरगता एराया आदिया समुयसीए । जीते नाजागीर्य न पापवा पत्तनदिति ॥ ३ ॥ ध्यवद्वी पिडगाई वैदाहवाय अनुवलोगीय । दो येदा वो

स्रा य होंति एक्केकए पिडए ॥ ४ ॥ छावट्टी पिडगाडं नक्खत्ताण तु मणुयलोगिम । छप्पन्न नक्खता य होंति एकेकए पिडए ॥ ५ ॥ छावट्टी पिडगाई महागहाण तु मणुयलोगिम । छावत्तर गहसर्यं च होइ एक्केक्ए पिडए ॥ ६ ॥ चत्तारि य पतीओ चदाङचाण मणुयलोगिम । छावद्विय छावद्विय होड य एकेकिया पती ॥ ७ ॥ छप्पन्ने पतीओ नक्खत्ताण तु मणुयलोगमि । छावट्टी छावट्टी हवइ य एक्केक्या पंती ॥ ८ ॥ छावत्तर गहाण पतिसय होड मणुयलोगमि । छावद्वी छावद्वी य होइ एक्केक्या पती ॥९॥ ते मेरु परियडन्ता पयाहिणावत्तमंडला सन्वे । अणवद्वियजोगेहिं चदा सूरा गहगणा य ॥ १० ॥ नक्खत्ततारगाण अवद्विया मंडला मुणेयव्वा । तेऽविय पयाहिणाव-त्तमेव मेरु अणुचरंति ॥ १९ ॥ रयणियरदिणयराणं उद्दे व अहे व सकमो नत्य । मडलसकमण पुण अर्दिभतरवाहिरं तिरिए॥ १२॥ रयणियरदिणयराण नक्ख-त्ताण महग्गहाण च । चारिवसेसेण भवे सुहदुक्खविही मणुस्साण ॥ १३ ॥ तेसिं पविसताणं तावक्खेत तु वहुए नियमा । तेणेव कमेण पुणो परिहायइ निक्ख-मताण ॥ १४ ॥ तेसिं कलवुयापुष्फसिठया होइ तावखेतपहा । अतो य सकुया वाहि वित्यडा चदसूरगणा ॥ १५ ॥ केण वहुइ चदो परिहाणी केण होइ चंदस्स । कालो वा जोण्हो वा केणऽणुभावेण चदस्स १ ॥ १६॥ किण्ह राहुविमाण निच चंदेण होइ अविरहिय । चउरगुलमप्पत्त हिट्ठा चदस्स तं चरइ ॥ १७॥ वाविं वाविं दिवसे दिवसे उ सुक्षपक्खस्स । ज परिवहृड चदो खवेइ त चेव कालेण ॥ १८ ॥ पन्नरसङ्भागेण य चद पन्नरसमेव त वरइ । पन्नरसङ्भागेण य पुणोवि त चेव तिक्कमइ ॥ १९ ॥ एव वहुइ चदो परिहाणी एव होइ चदस्स । कालो वा जोण्हा वा तेणणुभावेण चदस्स ॥ २० ॥ अतो मणुस्सखेते हवंति चारोवगा य उववण्णा । पद्मविहा जोइसिया चदा सूरा गहगणा य ॥ २१ ॥ तेण परं जे सेसा चदाइचगहतारनक्खता। नित्य गई निव चारो अवद्विया ते मुणेयव्वा ॥ २२ ॥ दो चदा इह दीवे चत्तारि य सागरे लवणतोए । धायइसडे दीवे वारस चदा य सूरा य ॥ २३ ॥ दो दो जबुद्दीवे ससिसूरा दुगुणिया भवे लवणे । लावणिगा य तिगुणिया सिससूरा घायईसडे ॥ २४ ॥ धायइसडप्पभिई उद्दिष्ठतिगुणिया भवे चदा । आइल्लचदसिह्या अणतराणतरे खेते ॥ २५ ॥ रिक्खग्गहतारग्ग दीवसमुद्दे जहिच्छसे नाउ । तस्स ससीहिं गुणिय रिक्खग्गहतारगाण तु ॥ २६ ॥ चदाओ स्रस्स य स्रा चदस्स अतरं होइ। पन्नास सहस्साइ तु जोयणाण अण्णाइ॥ २०॥ स्रस्स य स्रस्स य सिषणो सिषणो य अतर्र होइ। वहियाओ मणुस्सनगस्स जोयणाण सयसहस्स ॥ २८ ॥ स्रंतिरिया चदा चदतिरिया य दिणयरा दिता।

महरनहा बारह सहस्या ॥ १ ॥ धन्यदङ समग्रहस्या कतासीर्धं मने सहस्यर्धः। चतारि समा पुरुषार्[वर]तारागणकोविकोवीर्ण ॥ ३ ॥ सोर्मेनु वा ३ ॥ पुरुषर बरदीवरस पर बहुमञ्जादेसभाए एएव व मालुनुतारे लामे कवाए फक्तो वहे बस्मा-गार्संठागर्संठिए से ने पुनसारवरं रीवें तुहा विभयमांगे २ विद्वार, संबदा-व्यक्तितरपुरुवारकं च वाक्षिरपुरुवारकं च ॥ व्यक्तितरपुरुवारके मेरी । केनार्ने चहवाडेन परिक्तेनेने पण्यते ! गोयमा ! अद्व जोयनसम्बद्धसम्बद्धाः चहवासम्बद्धः मेशं—कोडी बामाणीसा तीसं वोष्णि य स्था अगुगक्त्या । पुरुवस्थद्वप्रेरको एवं व उत्पुस्तवेत्तस्य ॥ १ ॥ धे केण्डेणं अति हिएवं कुकार-अस्मितस्युस्वरके २ ! गोनमा ! मर्निमतरपुष्कारके ने मासुद्वत्तरेगं प्रम्यपूर्व सम्भाभे समंता संगी नियते से एएजडेर्ण गोदमा ! अध्मितरपुरुवारदे २ जनुत्तरं व जं बाद निवे । अस्मितरपुरू वरदे में भेते । केमहमा चंदा प्रमासिंग्र वा ३ सा केद पुरुष्ठा वार वारागाजकोबिजोबीओ ! गोयमा!--वाक्तरि च चैता वाबक्तरिमेन विवयस दिया ! प्रकार करवी को करेरी पूर प्रभाविता ॥ १ ॥ तिकित समा क्रतीशा क्रब सहस्या महमाहानं द्व । जनकत्तार्णं द्व भने सोमाई दुने सहस्ताई ॥ २ ॥ अहराख स<del>न्ध</del>-इस्या नामीचं चक्र मने सहस्यतं । दोन्नि सब पुरुवारदे तारागधन्त्रेविदोर्वेनं ॥ ३ ॥ सोमेंद्र वा ३ ॥ १७६ ॥ समयक्षेत्रे वे गेरी | केवामं बायामनिक्यमिकं केबर्स परिक्केवेस फ्लारे १ गोनमा । फायाधीसं जोननस्यसहस्साई जामामनि क्यमिनं एमा कोननकोडी जावस्मितरपुरुकरदापरिस्थो से मानियन्त्रो बाव अउ वपन्ने ॥ से केन्द्रेनं शंते । एवं वुन्द-मानुसक्ते २ व्योजमा । मा<del>नुसक्ते</del> वं तिनिहा सगुरशा परिवर्शति तन्त्रा कम्यागुरामा वकम्यागुरामा श्रीतरशैक्या थे तेमहोणं गोबमा एवं तुक्त मानुसक्ती माणुसक्ती ॥ मालुसक्ती भं मेते ! बड र्वदा प्रमार्वेद्ध वा १ रै अब सुरा समझ्छ ना १ रे गोयमा !-- मधीर्द चंदसने नहीस चेव सुरियाण सर्वे । समर्क मनुस्तामोर्व चरेति एए प्रमासेता ॥ १ ॥ एकारम व सहरसा क्रांपि य सोका महम्महार्ण हु । क्ष्म सना क्रम्मतमा शनकता दिनिव व सहस्सा ॥ ५ ॥ अवसीत् समस्यस्या चताकीत सहस्य मनुबन्धेर्यमि । सत्त व सर्वा कपूजा वाराम**णकोविकोधीर्ज** ॥ ३ ॥ सीमँ सीमेंस वा ३ ॥ एसी वारापिकी सम्बस्तारीण सञ्जयकोर्गति । वहिया पुण दाराको जिलेही समिया अपंचेता ॥९॥ एक्स तारमो वं समियं माणुरीम कोरीम । चारं नवंदुवापुण्यसीठवं बोदर्ध वरर n २ n रनिसरिपक्तनकाता एकाया साहिया मनुस्कोए । बेर्सि मामायोगै <sup>स</sup> पराया पवनेहिति ॥ ३ ॥ सम्बद्धी पित्रपाई चेन्द्रमाण स्युवनसंग्रीय । वो चंदा की

स्रा य होंति एक्केक्कए पिडए ॥ ४ ॥ छावट्टी पिडगाडं नक्खत्ताण तु मणुयलोगंमि । छप्पन्न नक्खत्ता य होंति एकेकए पिडए ॥ ५ ॥ छावट्ठी पिडगाइ महागहाणं तु मणुयलोगिम । छावत्तरं गहसयं च होइ एकेकए पिडए ॥ ६ ॥ चत्तारि य पतीओ चदाङ्चाण मणुयलोगिम । छावद्विय छावद्विय होइ य एक्केक्क्या पती ॥ ७ ॥ छप्पन्न पतीओ नक्खत्ताण तु मणुयलोगिम । छावट्टी छावट्टी हवइ य एक्केकया पंती ॥ ८ ॥ छावत्तर गहाण पंतिसय होइ मणुयलोगंमि । छावट्ठी छावट्टी य होइ एकेक्स्या पती ॥९॥ ते मेरु परियडन्ता पयाहिणावत्तमङला सन्वे। अणवद्वियजोगेहिं चदा सूरा गहगणा य ॥ १० ॥ नक्खत्ततारगाण अवद्विया मडला मुणेयव्वा । तेऽविय पयाहिणाव-त्तमेव मेरु अणुचरंति ॥ ११ ॥ रयणियरदिणयराणं उक्के व अहे व सकमो नत्थि । मेंडल्सकमण पुण अर्दिमतरवाहिरं तिरिए ॥ १२ ॥ रयणियरदिणयराण नक्ख-त्ताण महग्गहाण च । चारविसेसेण भवे सुहदुक्खविही मणुस्साण ॥ १३ ॥ तेसिं पविसताणं तावक्खेत्त तु वहुए नियमा । तेणेव कमेण पुणो परिहायइ निक्ख-मताण ॥ १४ ॥ तेसिं कलवुयापुष्फसिठया होइ तावखेतपहा । अतो य सकुया वाहि वित्यडा चदसूरगणा ॥ १५ ॥ केणं वहुइ चदो परिहाणी केण होइ चदस्स । कालो वा जोण्हो वा केणऽणुभावेण चदस्स 2 ॥ १६॥ किण्ह राहुविमाण निच चदेण होइ अविरहिय। चउरंगुलमप्पत्त हिट्टा चदस्स तं चरइ॥ १७॥ वाविं वाविं दिवसे दिवसे उ सुक्तपक्लस्स । ज परिवहुर चदो खवेह त चेव कालेण ॥ १८ ॥ पन्नरसङ्भागेण य चद पन्नरसमेव त वरइ । पन्नरसङ्भागेण य पुणोवि त चेव तिक्कमइ ॥ १९ ॥ एव वहुइ चदो परिहाणी एव होइ चदस्स । कालो वा जोण्हा वा तेणणुभावेण चदस्स ॥ २० ॥ अतो मणुस्सखेते हुर्वति चारोवगा य उववण्णा । पञ्चविहा जोइसिया चदा सूरा गहगणा य ॥ २१ ॥ तेण परं जे सेसा चदाइच्चगहतारनक्खता। नित्य गई निव चारो अवद्विया ते मुणेयव्वा ॥ २२ ॥ दो चदा इह दीवे चत्तारि य सागरे लवणतोए । घायइसडे दीवे वारस चदा य सूरा य ॥ २३ ॥ दो दो जबुद्दीचे ससिस्रा दुगुणिया भने लवणे । लावणिगा य तिगुणिया ससिस्रा धायईसडे ॥ २४ ॥ धायइसडप्पमिई उद्दिष्ठतिगुणिया भवे चदा । आइह्रचद्सहिया अणतराणतरे खेते ॥ २५ ॥ रिक्खग्गहतारग्ग दीवसमुहे जहिच्छसे नाउ । तस्स ससीहिं गुणिय रिक्खम्महतारमाण तु ॥ २६ ॥ चदाओ स्रस्स य स्रा चदस्य अतर होइ। पनास सहस्साइ तु जोयणाण अण्णाई॥ २०॥ स्रस्म य स्रस्म य सिषणो सिषणो य अतर होइ। वहियाओ मणुस्सनगस्स जोयणाणं सयसहस्स ॥ २८ ॥ स्रतिरिया चदा चदतिरिया य दिणयरा दित्ता ।

जोक्यकोमी बावाजीसं च सवसहरसाई क्तीसं च सहरसाई नव व क्तीसे जोबनसए परिक्लेबेजं सके विधिकते सकते संखित तथि तकए संदो सक्ते सकते उदमी बाह्र दरिस्तिको हैसि सम्मिसको सीहणिसाहै सबहबबरासिसंठानस्थि सम्मर्जनुगमानए अच्छे सन्हे बाब पत्रिक्षे उमको पासि दोही पदमवरवेत्रवाही दोड़ि य बणसंदेही सम्बन्धी समंता संपरिक्शतो क्याओ दोन्हार्य ॥ से केन्द्रेने मंदं । एवं भुषद् - मानुसत्तरे पञ्चए २ व गोयमा । मानुसत्तरस्य व पञ्चनस्य कारों मणुवा रुप्पि शक्त्या वार्कि देवा अवशर च वे गोवमा ! मानुपुत्तरपन्दर्ग सनुमा च नेवाद बीहरूईमु वा बीहरूमंति वा बीहरूहरेति वा जन्मत्व चारमेई वा मिलाहरेडि का बेक्करमुका वानि से सेक्ट्रेज धोयमा। बदसर व व नाव मिनेति ॥ जार्न च में मानुसूत्तरे प्रमाप तार्न च में महिंस सोपति प्लुचर, जार्न च जे शसाद वा बासहराई वा तार्व च चे व्यस्ति कोपृति पुरुष्ठ, जार्व च चे रेश्वतः वा रोहामणाहः वा सार्वं च जं वास्सि स्रोपृत्ति प्रमुख्यः, बालं च वं गामार वा जाब रामहाजीह का तार्व क वर्ग आस्मि कोएति प्युक्त, जार्व च वर्ग अरहेता बानवी बसदेवा बासदेवा परिवासदेवा बारचा निजाइरा समका समजीको धावना सामि-

याओ मणुया पगइभद्दगा विणीया ताव च ण अस्सि लोएत्ति पवुचाइ, जाव च ण समयाइ वा आविलयाइ वा आणापाणूड वा थोवाइ वा लवाइ वा मुहुत्ताड वा दिवसाइ वा अहोरत्ताइ वा पक्खाइ वा मासाइ वा उदूइ वा अयणाइ वा सवच्छराइ वा जुगाड वा वाससयाइ वा वाससहस्साड वा वाससयसहस्साइ वा पुव्वगाड वा पुञ्वाउ वा तुडियगाइ वा, एव तुडिए अडडे अववे हुहुए उप्पले पउमे णलिणे अच्छिणिउरे अउए णउए पउए चूलिया जाव सीसपहेलियगेड वा सीसपहेलियाड वा पिलओवमेड वा सागरोवमेइ वा उवसप्पिणीड वा ओसप्पिणीइ वा तार्व च ण अस्सि लोएति प्वचाइ, जाव च ण वायरे विज्ञुयारे वायरे थणियसहे तावं च ण अस्सि॰, जाव च ण वहवे ओराला वलाहगा ससेयति समुच्छति वास वासित ताव च ण अस्सि लोए॰, जावं च ण वायरे तेउकाए तावं च ण अस्सि लोए०, जावं च ण आगराइ वा णिहीइ वा ताव च ण अस्सि लोएत्ति प्रचिन्ह, जाव च ण अगडाइ वा णईइ वा ताव च ण अस्सि लोए॰, जाव च णं चदोवरागाइ वा सूरोवरागाइ वा चदपरिवेसाइ वा सूरपरिवेसाइ वा पडिचदाइ वा पिडस्राइ वा इद्यणूइ वा उद्गमच्छेइ वा कविहसियाइ वा ताव च णं अस्सि लोएत्ति प॰, जाव च ण चिदमसूरियगहणक्खत्तताराख्वाण अभिगमणनिरगमणवुङ्खिणिवुङ्कि-अणवद्वियसठाणसिठिई आघिनिज्ञइ ताव च ण अस्सि लोएति पनुच्चइ ॥ १७८ ॥ अतो ण भते! मणुस्सखेत्तस्स जे चिदमस्रियगहगणणक्खत्ततारारूवा ते ण भन्ते! देवा कि उद्दोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा चारिंडह्या गइरइया गइसमावण्णगा १ गोयमा ! ते ण देवा णो उद्घोववण्णगा णो कपोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा नो चारहिइया गइरइया गइसमाव-ण्णगा उद्गुमुहकळवुयपुष्फसठाणसठिएहिं जोयणसाहस्सिएहिं तावखेत्तेहिं साहस्सि-याहिं वाहिरियाहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं महया हयनष्टगीयवाइयततीतलतालतुन्धिय-घणमुइगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा महया २ उक्कद्विसीहणायवो-लक्लकलसद्देण विउलाई भोगभोगाइ भुंजमाणा अच्छयपञ्चयराय पयाहिणावत्तमङ-लयार मेरु अणुपरियङति ॥ जया णं भते ! तेसिं देवाणं ईदे चवइ से कहमिदाणि पकरेंति <sup>2</sup> गोयमा । ताहे चत्तारि पच सामाणिया त ठाण उवसपजिताण विहरेति जाव तत्थ अने इदे उनवण्णे भवइ॥ इदद्वाणे ण मते! केवइय काल विरहिए उववाएण पण्णत्ते २ गोयमा ! जहण्णेण एक समय उक्कोसेण छम्मासा ॥ बहिया ण मंते! मणुस्तखेत्तस्स जे चिदमसूरियगहणक्खतताराख्वा ते ण भते! देवा किं उ**न्हो**ववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा चारहिइया गइरइया

गङ्समाबन्तागा ! योगमा ! शे व बेबा को उन्नावक्क्यमा को क्रप्योबक्क्यमा बिमा-धोवक्ष्मरा नो वारोक्क्ष्मया धारक्रिया नो गहरह्या नो यहसमाक्ष्मरा प्रकट-पर्यंडानसंदिएक्ट जोवनसम्बाहरिसएक्ट तान्त्रजेतेक्ट्र साहरिसगावि य बाहिरावि वेड व्याप्त परिसाधि मह्या इक्वश्मीनवाइय रवेचे विष्वाई मोगमोगाई भूकमावा वान सहकेरसा सीवकेरसा मंगकेरसा मैदायगकेरसा निर्मातरकेसाया कृता इव ठान द्विवा अञ्जोञ्जसमोगावाहि केताहि ते पएसे सम्बन्धी सर्मता मोमासेवि सन्दोनेवि तनेति पमारेति । जमा व मेते । तेथि देशार्थ इते जमह से ब्रह्मोदाणि करेति । गोबमा । बाब क्तारि एक सामाणिया ते ठाके उपरांपिकताने विवरंति बाब ठत्य क्षणी दि उत्तरणो सन्छ । इंश्वाने मं मेते ! केनार्य कार्य मिरहिए स्ववार्ण प है गोससा ! बहुम्मेर्य एवं समर्थ उद्योशेषं क्रमासा ॥ १७५ ॥ प्रकटरकरकां श्रीवं प्रकारोदे गामं स्मारे यह प्रकारगरसंज्ञणसंज्ञ्य वाच संगरिक्यलाणं विद्वा ॥ पुरुवारोदे में मंते ! समुद्दे केन्द्रमं चन्नवाकविरुवारीयं केन्द्रम परिक्योनेनं प्रजाते हैं गोयमा । संकेतातं योगमसनस्वरसतं व्यक्ताव्यक्तियो संकेतातं योगमसनस्य-स्साई परिक्केनेक पण्यते ॥ पुरुक्तरोदस्स वं भंदा ! समुद्रस का द्वारा क्याता ! मोक्सा ! चतारि बारा पण्यता रक्षेत्र सन्त्रं पुरुवारोबसभुद्धुरस्थिमपेरते वस्त्रवर बीचपुरस्थिमदस्य प्रवस्थिमेणं प्रस्थ जं प्रश्वारोयस्य विश्वए शर्म दारे कन्नते एवं सेसामाने । वारंतर्रामे संकेमातं कोमनसमसहस्यातं समाहाए अंतरे पञ्चते । पएसा बीबा व टक्केट । से केमक्केण संदि । एवं बुक्क - पुरुवारोवे समुद्दे ५ ! गोवमा ! पुरुक्तरोहस्त में समुहस्त उद्देश अब्दे पत्ने क्ये राष्ट्रए फ्रिक्समाने पर्याप डहगरसेर्ज सिरिजरसिरिप्यमा य हो देशा महिन्दिया जाव पश्चिमोधमद्विद्या परिक सति से एएजड्रेमं जाव निषे । प्रवसरोंदे में सेते ! समुद्रे बेन्द्रवा चंदा प्रमाणिह वा ३ है सकेवा चंदा पमासेंस वा ३ जान तारामकोविकोवीओ सोसेंस वा ३ छ पुरुदारोबर्ग्य समुद्रं वरुनवरे वार्ग बीवे को बक्रमामार जाव विद्वह, तहेब समन्द्र-बालस्टिए केनामं बद्धवासनिक्सीनेजं केनामं परिक्षीनेजं पञ्चति । सोनमा ! संबे अतं बोवणस्थसहस्सतं वहवासविवयांनेणं संखेशतं बोगणस्यसहस्ततं परिच्ये-बेचे फलते. प्रतमबर्देशमाध्यमं इब्लब्बो वारंतरं पएसा जीवा तहेब सन्नं 11 से केमकेन शते । एवं वृष्ण्य-वक्तवरे धीवे २ । गोसमा । वस्तवरे में धीवे सत्व १ देसे १ ताई १ बहुओ साम्बर्धियाओं चान निसर्पतियाओं चल्काओं परेत्र १ पतमकरकेकापरि क्या काक्नोत्गपविकृत्याको पासाइकाको भ शाद में काल-प्रियास जान विकारितवास वहने उच्चायपन्त्रया जान वात्रहरूया सम्बन्धिक्तमा

अन्या तहेव वहणारणापमा य एत्थ टो हेवा महिष्ट्रिया॰ परिवसति, से तेणहेणं जाप णिये । जोडस मध्यं सरोजनेण जान तारानणमोटिमोधीओ । वरणवरण्णं दीव बारणोटे णाम समुद्दे यहे यलया॰ जाय चिहुड, समनाप॰ विसमवपवालवि॰ तहेव मन्य भाषियव्य, विक्समपरिक्षेवी सिंगजाड जीयणमहस्माड दारंतरं च पडमवर० वणसंडे पएमा जीवा अद्वी-गोयमा। वारुणोदस्य ण ममुद्स्य उटए से बहा नामए-चदप्पभाड वा मणिसिलागाड वा सीहृड वा वारुणीड वा पत्तासवेड वा पुष्फासवेड वा चोयामवेड वा फरामवेड वा महमेरएड वा जनुपलपुट्टवजाड वा जाडप्पननाट वा पञ्रमारेइ वा मुहियासारेड वा कापिमायणाड वा मुपक्रोयरसेइ वा पभ्यसभार-सचिया पोयमासनयभिषयजोगवत्तिया निरुवह्यविसिट्टदिलकालोवयारा उपोयम-चपत्ता अद्वपिद्वतिद्विया चण्णेण उववेया गधेण उववेया रसेण उववेया पानेण उनवेया, भवे एयारूवे तिया 2, गोयमा ! नो डणहे समहे, वारणस्स ण समुद्दस्य उदए एतो इट्टतरे जाव आसाएण पण्णते तत्थ ण वारुणिवारुणकता दो देवा महिद्विया जाव परिवसति, से एएणट्टेण जाव णिचे, मव्य जोइस सरितज्ञकेण नायव्य १। १८० ॥ वारुणोदण्णं समुद्द खीरवरे णाम दीवे वट्टे जाव चिट्टड सव्व सरोज्जग -विम्खभे य परिक्खेवो य जाव अट्टो॰ बहुओ सुद्दा॰ वावीओ जाव विलपतियाओ खीरोदगपडिहत्याओ पामाडयाओ ४, तासु ण० छुट्टियासु जाव विलपंतियासु वहुचे उप्पायपव्ययगा सव्यरयणामया जाव पडिरुवा, पुटरीगपुप्फदता एत्य दो देवा महि-ष्ट्रिया जाव परिवसति, से एएणट्टेण जाव निचे जोइस सन्वं सखेजं ॥ खीरवरण्ण चीव खीरोए नाम समुद्दे वहे वलयागारसठाणसिंठए जाव परिक्खिताण चिट्टइ, समचक्कवालसिठए नो विसमचक्कवालसिठए, सखेजाइ जीयणस॰ विक्खभपरिक्खेवो तहेव सन्व जाव अहो, गोयमा। खीरोयस्स ण समुद्दस्य उदग से जहा णामए---ध्रजसहीमारुपण्णअज्जुणतरुणसरसपत्तकोमलअत्थिग्गत्तणग्गपोंडगवरुच्छुचारिणीण लव-गपत्तपुरकपञ्चनक्कोलगसफलरुक्यवहुगुच्छगुर्ममकलियमलद्विमहुपउरपिप्पलीफलियव-क्षित्रविवरचारिणीण अप्पोदगपिइरइसरसभूमिभागणिभयसुद्दोसियाण सुपोसियसुद्दा-याण रोगपरिवज्जियाण णिरुवह्यसरीराण कालप्पसविणीणं विद्यतद्वयसामप्पस्याण अजणवरगवलवलयजलधरजञ्चजणस्ट्रिभमरपभृयसमप्पभाण गावीण कुडदोहणाणं चद्धत्थीपत्युयाण स्ट्वाण मधुमासकाळे सगहिए होज्जचाउरकेव होज तासि खीरे महुररसिववगच्छवहुद्व्वसपउत्ते पत्तेय मद्गिगुमुक्रहिए आउत्ते खडगुडमच्छडि-ओववेए रण्णो चाउरतचक्कविटस्स उवद्वविए आसायणिजे विस्सायणिजे पीणणिजे जाव सर्व्विदियगायपल्हायणिजे वण्णेण उववेए जाव फासेण उववेए, भवे एयास्वे

भारतपूर्ण पञ्चति विस्त्राविसक्रम्पमा एटन वो देवा समितिया जाव परिवर्णीत चे तेणहेर्ज संबेदमा चेदा चान तारा ॥ १८१ ॥ सीरोवर्ज्य समुद्दं भगनरे नार्म रीने को नमयागारसेठावसेठिए कान परि निक्कर, समनकाशरू मो निसम संदेजनिज्यांमपरि पएसा बाब जड़ो गांवमा। ध्वबरे वं वीचे तत्व १ बहुओ बाजातामा मानीको जान भयोज्यपविद्याको उप्पायपन्यका। जान सहहत सम्बद्धेयणस्या अन्त्वा जाव पविकृता कसवकारणस्या एत्व दी वेशा सविश्विता र्षेदा संकेजा ।। चनवरणां दीवं क्रमोदे गामं समुद्दे वहे बमयागारसंठानदेशिए जान निद्धार, समजब चहेन बारपएसा जीना व महो योगमा ! प्रबोदस्स पी समरस उद्य में बहा सेववरनपण्डलसक्त्रिमुक्कक्रियारसरसम्बद्धिक-कोरेंटदामपिडिमतरस्य निवयुचरोवदीनियनिववदवनिशिव्यंदरतरस्य धनायदिस द्विमत्तिक्षाक्रियनप्रणीवपञ्चववावियमुक्तिकृत्वत्वस्त्रवार्वियस्य अद्वियं पीक्रसर हिर्गनमञ्जूरसङ्करपरिकासवरिसम्बन्धस परचनिम्मकस्कोबभोगस्य सरवकालसि होज मोमनबरल भंडप, अने एवारने शिवा है यो इण्डे समुद्रे, गोनमा ! प्रश्लोदत्स में समुद्दम एतो इद्वनराए जान भासाएवं प बैतप्रकेता एत्य वो देश मधिविका जान परिवरंति सेसं तं चेव जान शायगणनोविकोधीको ॥ कनोवरूमं समुद्रं कोननरे नामं रीव नहे नमयागार जान निद्धार तहेन बान भड़ों धोबनरे में रीवे तस्त्र र बैसे २ तर्ही २ रद्वा वागीओ बाव सीवोवगपविद्यस्थाओं उप्पादसम्बर्गा सम्बद्ध रुखियाममा जाव पडिस्का गुप्पममद्ययसा स एरच वो देवा मिन्निका जाउ परिन-चेठि स एएम सन्ने नोहस ते केन जान तारा n योजनरूम की योगीरे नामं एसुद्दे बीर सम्मा । भाग सध्येजाई जोननसक्ताहरूलाई परिक्येवेलं भाग अञ्चे गोयमा ! खोदोदस्य वं धमुद्दश्य उद्दर् हे जहा आश्रकमान्यस्यवाधेतनिक सुद्रमासभूमिमागे त्रविज्ञे धरहमद्रविरिद्धनिववद्यात्रीयवाबीतपुकास्त्रप्रवत्तिवयाः परिकरमञ्जूपाकिममुन्तिनुकार्णं समायार्णं समागतकत्रोसविमार्गं गमावपरिविद्वार्णं निम्मायमुंदरार्वं रहेर्वं परिवयमञ्जीवयोरमंगुरस्वायमहुररनपुरन्विरहयार्वं वदर् विवक्तिवार्ण सीयपरिश्वसिवार्ण कशिणवसमार्गाणं अपासिवार्ण शिमायविष्यमेडिक वात्रिमार्च कारणिवम्तानं गैठिपरिमाहियाणं शुगकनर्वण्याणं उरपुत्रानं वाव पोटियाणं बसवानरजाजनतपरिगारिक्शतार्थं शोकरते होजा बस्वपरिपूर वाउ आवगपुरातिए अदिवारकानुए कणोउपेए सहेव अपे प्रकार भेवा ! वी १७३ रामदे, रोोदोदस्य भ नमुद्दरा उदए एतो बहुबराए चंद जाव बासाएगं प

पुण्णभद्माणिभद्दा य (पुण्णपुण्णभद्दा) इत्थ दुवे देवा जाव परिवसति, सेस तहेव, जोडस सखेज चदा०॥ १८२॥ खोदोदण्ण समुद्द णदीसरवरे णाम दीवे वहे वलयागारसिंठए तहेव जाव परिक्खेवो । पडमवर० वणसङपरि० दारा दारतरप्पएसे जीवा तहेव ॥ से केणट्टेण भंते ! एव बुचइ-नंदीसरवरदीवे २ <sup>2</sup> गोयमा ! नदीस-रवरदींवे २ तत्य २ देसे २ तिह २ वहूओ खुरा० वावीओ जाव विलपंतियाओ खोदोदगपिडहत्थाओ० उप्पायपन्वयगा सन्ववडरामया अच्छा जाव पिडिस्वा ॥ अदु-त्तर च ण गोयमा! णदीसरवरदीवचक्कवालविक्खभवहुमज्झदेसभागे एत्य ण चउ-दिसि चत्तारि अजणगपव्यया पण्णता, ते ण अजणगपव्यया चडरासीडजोयण-सहस्साइ उन्द्र उचतेण एगमेग जोयणसहस्स उन्वेहेणं मूले साइरेगाड दस जोयण-सहस्माइ घरणियले दस जोयणमहस्साइ आयामविक्खभेण तओऽणंतर च ण मायाए २ पएसपरिहाणीए परिहायमाणा २ उवरिं एगमेग जोयणसहस्स आयामविक्खभेण मूळे एकतीस जोयणसहस्साइ छच तेवीसे जोयणसए किचिविसेसाहिया परिक्खेवेण धरणियले एकतीस जोयणसहस्माइ छच तेवीसे जोयणसए देस्णे परिक्खेवेण सिहरतले तिण्णि जोयणसहस्माउ एगं च वावट्ठ जोयणसय किंचिविसेसाहिय परिक्खेनेण पण्णत्ता मूळे विच्छिण्णा मज्झे सखिता उपिंप तणुया गोपुच्छ-सठाणसिटिया सव्वजणामया अच्छा जाव पत्तेय २ पउमवरवेइयापरि० पत्तेय २ वणसङपरिक्खिता वण्णओ ॥ तेसि णं अजणगपव्वयाण उवरि पत्तेय २ वहुस-मरमणिजो भूमिमागो पण्णत्तो, से जहाणामए—आर्लिगपुक्खरेइ वा जाव विहरति ॥ तत्थ ण जे से पुरच्छिमिल्ले अजणगपव्वए तस्स ण चउद्दिसिं चत्तारि णदाओ पुक्ख-रिणीओ पण्णताओ, तजहा—णदुत्तरा य णदा आणदा णदिवद्धणा। (निदसेणा अमोघा य गोयूमा य सुदसणा) ताओ ण णदापुक्खरिणीओ अच्छाओ सण्हाओ० पत्तेय पत्तेय पडमवरवेइया॰ पत्तेय पत्तेय वणसङपरिक्खिता॰ तत्थ तत्थ जाव सोवा-णपडिल्वगा तोरणा ॥ तासि ण पुक्खरिणीण वहुमज्झदेसमाए पत्तेय पत्तेय दहि-सहपन्वया चउसिंह जोयणसहस्साइ उहु उचतेण एग जोयणसहस्स उन्वेहेण सन्वत्यसमा पह्रगसठाणसिठया दस जोयणसहस्साइ विक्खमेण एकतीस जोयण-सहरसाइ छच तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेण पण्णता सन्वरयणामया अच्छा जाव पिंडह्ना, तहा पत्तेय पत्तेय पउमवरवेइया० वणसडवण्णओ वहुसम० जाव आसयित सयति । तत्य ण जे से दिक्खणिहे अजणगपव्वए तस्स ण चउद्दिर्मि चत्तारि णदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तजहा—भद्दा य विसाला य कुमुया पुडरीगिणी, (नन्दु-त्तरा य नदा य आनन्दा नन्दिवद्गुणा) त चेव दिहमुहा पव्वया त चेव पमाण जाव

निहरीते ।। स्टब में से से प्रमालिमिक्ने श्रीनमयपन्यप् सस्स में चन्नविसि पत्तारि मंत्रा पुरूपरिजीको पन्यताको चंबहा--वंदिसेमा समीहा व गोपमा य मुदंसना (सहा म विदारम व बुभुवा पुंडरीगिणी) है केंद्र सन्दें भाषियन्त्रें ॥ हत्य ये से से उत्तरिक्रे संबजगपन्त्रए हरून के चडिहर्सि क्लारि चैदापुक्यरिनीओ प <u>संबद्धा</u>-निजन नेजर्गेदी य जर्मदी अपराजिया । तहेन इहिमुह्गप्रज्यमा तहेन जान नधर्माता वह जाब निहरेति । व्यक्तरं च में गोयमा ! मेवीसरवरस्य च बीबस्स चन्नवासविक्यं-मस्य बहुमक्त्रदेशमाएं भवश्च निविशाद्ध वक्तारि श्वकरणस्या ५ - तं ---वक्तरपुर निर्माधि एक्टरगरम्बर वाक्षेणपुरविष्ठिके एकरगणम्बर वाक्षेणपुरविभिन्ने एकर गपम्बर सत्तरम्बरियमिक्ने रहररवपम्बर्, हे चं रहकरवपम्बया इसक्रोक्यसवार्द वर्षे रकतेर्य वस्तावयसमार्थं रज्योहेर्य सन्तरपसमा शहरीसंठायसंठिता वसन्नोदनस-इरसाइ विज्यांनीलं एकतीसं योजनसङ्ख्यातं क्षणतेवीसे जोजनसए परिकारियं सम्बद्धजायमा जच्चम काम पविक्रमा । तत्त्व में से से उत्तरपुर्विद्धानिके रहकरणक क्यए हस्स व वहारिसिमीसायस्य देविदस्य देवरूको वहव्यसमास्त्रीसीयं जेन्द्रीक प्पमाणमेताओ बचारि राज्याणीओ प र्त-वंदोचरा चंदा शताखरा देवहरा कच्चार कचराईर कानार कामरकियाबार । तस्य र्ज वे से बाह्मपरस्थितीके सकर गपन्नय दस्स मं चढरिस सदस्य दनिवस्य देवरण्यो चढव्यसम्प्रमहिसीयं अनुरीक प्यमानामी बतारि रावहानीमी व तं -हमणा चोमनवा अविमाठी मयोरमा पउमाए विवाद संबंद श्रीमूर । तस्य में की से वाक्षिणपणस्थिमिक्ने रहकरगपण्यद दस्स नं पराहिति सहरसः वेजिहरसः वेजरुको करुक्तमध्यमहितीयं जेपदीवप्यसानमतानी कतारि राजदाबीको प र्व०-भूना भूजनविंचा गोबूमा प्रदेशका जमकार अच्छरार नवनिवार रोडिजीए । तस्य में से से सत्तरफारियमिके रहकरगणमार तस्स में वर्डीं विमीसाणस्य श्रवण्यमस्यमद्वितीण अंगुरीनप्यमाणनेताओ श्वार राज्याणीओ प र्ध--रबचा रबचोचना सम्परम्या रमणसचनाः वसूर् वस्तुतार् वस्त्रितार् वर्धभरार्। **पञ्**कासहरिवाहणा थ शाल हुने देशा सहिद्दिया जान पठिक्योनसङ्ख्यिता परिकारि से प्रकृति गोक्सा । जान मिके जोइसं सक्तेज त १८३ त जंबीसरनरण्यं धैर्न नंदीसरोदे चार्स समुद्रे को क्ल्यागार्पंठागर्पंठए जान सम्बं तदेव स्टा को बोदोबगस्य बाब सुमनसोमनसगदा एता यो देवा महिद्विया जाव परिवस्ति सेर्प त्त्रेष बाब तारमां ॥ १८४ ॥ वंदीसरोद वं समुद्रं वदमे वामं श्रेवे के वक्त्यागार बाव संपरिनिश्वतार्ण विश्वत् । बरुवे में शेवे ! वीमें कि समनद्रवाकस्टिए विस सबहबासर्पेटियू र्व गोयमा । समध्यवाक्रपेटियू जी विसमव्यवाक्रपटियू, वेनहर्न

चप्रवालवि० १ गोयमा । सरोजाइ जोयणसयमहस्साइं चप्रवालविक्यभेण सरोजाइ जोयणसयमहस्माइं परिक्नेचेण पण्णत्ते, पडमवर० वणसङदारा दारतरा य तहेच मखेजाङ जोयणगयसहस्माङ दारतर जाव अट्टो, वावीओ० योदोटगपडिहत्थाओ उप्पायपव्वयंगा सव्ववदरामया अच्छा जाव पडिस्वा, असोगवीयसोगा य एत्थ दुवे देवा महिष्ट्रिया जाव परिवस्ति, से तेण० जाव सरोज मध्य ॥ अरुणण्ण दीव अरुणोटे णाम नमुद्दे नस्मवि तहेच परिक्योबो अहो सोदोदमे णवर सुभद्रमुमण-भद्दा एत्य दो देवा महिद्धिया सेस तहेव ॥ अरुणोटग णं समुद्द अरुणवरे णाम दीवे वहे वलयागारसठाण • तहेव सखेज्ञग मन्त्रं जाव अट्टो • सोटोदगपडिहत्याओ उप्पा-यपन्त्रयया मन्त्रवडरामया अन्छा जाव पिडम्बा, अरुणवरभद्दअरुणवरमहाभद्दा एत्य दो देवा महिष्ट्रिया । एव अरुणवरोदेवि ममुद्दे जाव अरुणवरअरुणमहावरा य एत्थ टो देवा मेस तहेव ॥ अरुणवरोदण्ण यमुद्द अरुणवर।वभामे णाम दीवे वहे जाव अरुणवरावमासभद्दारुणवरावभासमहाभद्दा एत्य दो देवा महिह्विया०। एव अरणवरावमासे ममुद्दे णवारे अरुणवरावमायवरारुणवरावभासमहावरा एत्थ टो देवा महिद्धिया०॥ कुडले दीवे कुडलभद्कुडलमहाभद्दा एत्य दो देवा महिद्धिया०, कुटलोडे समुद्दे चक्खुसुभचक्खुकता एत्य दो देवा म० । कुडलवरे दीवे कुडलव-रभद्कुटलवरमहाभद्दा एत्थ दो देवा महिद्दिया॰, कुडलवरोदे समुद्दे कुटलवर-[वर]कुडलवरमहावरा एत्थ दो देवा म०॥ कुडलवरावभासे टीवे कुडलवराव-भासभद्दकुडलवरावभाममहाभद्दा एत्थ दो ढेवा० ॥ कुटलवरोभासोदे समुद्दे कुडल-वरोभासवरकुटलवरोभासमहावरा एत्थ दो ढेवा म० जाव पलिओवमट्टिडया परि-वसति ।। कुडलवरोभामोद ण समुद्द रुयगे णाम दीवे वहे वलया । जाव चिट्रट. कि समचक् विसमचक्रवाल १ गोयमा । समचक्रवाल नो विसमचक्रवालसिंठए, केनइय चक्रवाल० पण्णत्ते १०) सम्बद्धमणोरमा एत्य दो ढेवा सेस तहेव । स्यगोदे नाम समुद्दे जहा राोदोढे समुद्दे सखेजाड जोयणसयसहस्साइ चक्कवालवि० सखेजाड जोयणमयसहस्साइ परिक्खेवेण दारा दारंतरिप सखेजाइ जोइसिप सन्व सखेज भाणियन्त्र, अद्घोवि जहेव खोदोटस्स नवरि सुमणसोमणसा एत्थ दो देवा महिङ्गिया तहेव स्यगाओं आढत्त असखेज विक्खभो परिक्खेवो दारा दारतरं च जोइस च सन्व असखेज भाणियन्व । स्यगोदण्ण समुद्द स्यगवरे ण दीवे वट्टे० स्यगवरभद्दस्य-गवरमहाभद्दा एत्थ दो टेवा० रुयगवरोदे स० रुयगवररुयगवरमहावरा एत्थ दो देवा महिह्रिया । स्यगवरावभासे दीवे स्यगवरावभासभद्स्यगवरावभासमहाभद्दा एत्थ दो देवा महिङ्खिया । स्यगवरावमासे समुद्दे स्यगवरावभासवरस्यगवरावभासमहावरा १५ मुत्ता०

महिद्विया । शारवरोवे समुद्दे शारवरहारवरमधावरा परव । शारवरावमासे दिवे शार

वरावमासमह्दारवरावमासमहामदा वृत्व । दारवरावभासोवे समुद्दे द्वारवरावमास-नरहारनरावमासमहावरा धृरव ः धृर्व धन्नेवि तिप्रजानारा नेनम्बा बाव सुरवरी मासोबै समुद्रे, वीबेश महनामा बरनामा होति उदहीह, बाब पन्किममार्च सोमपराईस सर्पम्रमन्त्रजातेस वाशीको सोबोदगपविद्यस्थाको प्रव्यस्था स सम्ब-कररामसा । देवदीचे यीचे वयमहत्रेयमहाभद्दा एन्य दो देवा महिन्द्रिया वेबीचे समुद्रे वक्करवेक्स्यक्षावरा एल्य जाव सर्वभूरमणे वीचे सर्वमूरमकमङ्सर्वभूरमकसङ्ग-मद्दा एत्व को बंबा सम्बद्धिका । सर्वसुरमणान्वं वीर्व सर्वमुरमकोवे नार्म समुद्रे महे बक्रमा जान असचीजाह जीवगसनसहस्सर्क परिश्चेनेगं जाप असे गोमसा ! सर्मभुरमगोदए उदए अच्छे पत्ने कने राजुए फक्किकामाने पर्नाष्ट्रप उदगरसेणं पञ्जमः समैक्षरमनवरसमेक्षरमनमहावरा दस्य वो देशा महिद्विमा सेस तहेर नाम नर्सकेमाओ ठारागणशेकिका**र्या**को सोमेंस मा ३ ॥ १८५ **॥** केनइमा में भेते ! जंबुद्दीना चीना जामकेनेहिं पञ्चता ! गोसमा ! शर्रकेना मेउ-होता र नामभेजेटि क्याता केनह्या वं मेरे । स्वयास्युहा क्याता । योजमा । शरकेमा सबनसमुद्दा गामजेनेति पन्नता एवं पायद्देशानि एवं नाव शरकेमा धुरकीया मामकेमेहि । एगं देवे क्षेत्र प्रमाति एगे देवोद सुमुद्दे प्रमाति एवं बागे कश्चे भूए बाब एगे सर्गभूरमधे बीबे एगे सर्गभूरमध्यमुद्दे जमानेकेचं पञ्चते ॥ १८६ ॥ कमनस्स नं निते! समुद्रस उद्ययं केरिसप् आसाएनं कनते ! नाक्मा! सम्बन्धः । उत्रथं शामिके शुक्ते स्थि अमृणे महाए अपेके बहुन बुपरामाउप्पननिय-पप्तपकिरासरीसिवाचे गण्याच्य राज्योधियाचं सत्तार्ज ॥ काळोबस्स णं संदे ! समुदस्र रादए केरिसए बासाएवं पव्यति ! गोयमा । बासकं पेसके मासके करूप मासप-शिक्तमासे पराईए अवगरशेणं पत्नते ॥ पुक्तारोवस्य णं सति । समुद्रस्य वर्ष केरिमए आ पञ्चति । गोधमा । अच्छे चचे तगुए शाक्रियक्त्यासे पर्याप् उदगरहैचे पन्नते ॥ बारुनोव्स्स वं भीते । व गोगमा । से जहा नामय्- यसासनेइ वा नोना-सबैद वा सञ्जूरसाबैद वा मुदिनासाबेद वा स्वयक्तानरसेद वा नेरपूर वा वानिसान गेड् वा चंदप्पसाह का संगरिकाड वा सीहरू वा चारणीड वा अद्वपिङ्गपरिविद्विपार वा <del>बंबुफसामसिनाइ</del> वा पसण्या उद्योसमबय्पता बन्येचं बववेया चाव सबे एवावने तिना र यो इपद्वे समद्वे, योवमा । वास्त्रोदप् इता श्वाराय चेत्र नान नातापूर्ण

प०। खीरोदस्य ण भते । उदए केरियए आसाएण पण्णते ? गोयमा! से जहा णामए-रन्नो चाउरंतचक्षविस्स चाउरहे गोखीरे पयत्तमदग्गिमुकढिए आउत्तरखटमच्छडिओववेए वण्णेणं उववेए जाव फासेण उववेए, भवे एयाहवे मिया <sup>2</sup>, णो इणहे ममहे, गोयमा ! खीरोयस्स॰ एत्तो इह जाव आमाएण पण्णत्ते । घओदस्स ण० से जहा णामए-सारइयरम गोघयवरस्य मडे सल्लडकण्णियारपुष्फ-वण्णाभे मुक्तद्वियउदारसज्झवीसदिए वण्णेण उववेए जाव फासेणं उववेए, भवे एयारुवे सिया 2, णो उणहे समहे, इत्तो इहयरा०, खोदोदस्स० से जहा णामए-उच्छूण जचपुडगाण हरियालपिंडराण मेर्स्टळणाण वा कालपोराणं तिभागनिन्वा-डियवाङगाण वलवगणर्जतपरिगालियमित्ताण जे य रसे होजा वत्थपरिपूर् चाउ-ज्ञायगधुवासिए अहियपत्थे लहुए वण्णेण उववेए जाव भवेयारुवे सिया <sup>२</sup>, नो इणट्टे समट्टे, एत्तो इद्वयरा०, एव सेसगाणवि समुद्दाणं भेदो जाव सयभुरमणस्स, णवरि अच्छे जन्ने पत्ये जहा पुक्खरोदस्स ॥ कइ ण भते ! समुद्दा पत्तेगरसा पण्णता २ गोयमा ! चत्तारि समुद्दा पत्तेगरसा पण्णता, तजहा—स्वणे वारणोटे खीरोटे घओटे ॥ कह ण भते ! समुद्दा पगईए उदगरसेण पण्णता ? गोयमा ! तओ समुद्दा पगईए उदगरसेण पण्णत्ता, तजहा--कालोदे पुक्खरोदे सयभुरमणे, अवसेमा समुद्दा उत्सण्ण खोयरसा प० समणाउसो ! ॥ १८७ ॥ कइ ण भते ! समुद्दा वहुमच्छकच्छभाइण्णा पण्णता ? गोयमा ! तओ समुद्दा वहुमच्छकच्छभाइण्णा पण्णत्ता, तजहा---लवणे कालोटे सयभुरमणे, अवसेसा समुद्दा अप्पमच्छकच्छभाइण्णा पण्णता समणाउसो ! ॥ लवणे ण भते ! समुद्दे कइ मच्छजाइकुलकोडिजोणीपमुह-सयसहरसा पण्णता 2 गोयमा । सत्त मच्छजाइकुलकोडीजोणीपमुद्दसयसहरसा पण्णता ॥ कालोटे णं भते । समुद्दे कड मच्छजाइ० पण्णता १ गोयमा ! नव मच्छ-जाइकुलकोडीजोणी०॥ सयभुरमणेण भते । समुद्दे० १ गो०। अद्धतेरस मच्छजाइकुल-कोडीजोणीपमुद्दसयसद्दस्सा पण्णता ॥ ठवणे ण भते । समुद्दे मच्छाण केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णता 2 गो०। जहण्णेण अगुलस्स असखेजहभाग उक्कोसेण पच-जोयणसयाइ ॥ एव कालोटे उ० सत्त जोयणसयाइ ॥ सयभूरमणे जहण्णेण अगुलस्स ससखेजड० उक्कोसेण दस जोयणसयाइ ॥ १८८ ॥ केवइया ण भते ! दीवसमुद्दा नामधेजेहिं पण्णता १ गोयमा ! जावइया लोगे सुभा णामा सुभा वण्णा जाव सुभा फासा एवइया दीवसमुद्दा नामधेजेहिं पण्णता ॥ केवइया ण भते ! दीवसमुद्दा उद्धारसमएण पण्णता <sup>२</sup> गोयमा । जावइया अ**ङ्ग**ाइजाण सागरोवमाण उद्धारसमया एवइया दीवसमुद्दा उद्धारसमएण पन्नता ॥ १८९ ॥ दीवसमुद्दा ण भते ! किं पुत्रकिपरिणामा आउपरिणामा जीवपरिणामा पुरस्तपरिणामा १ पोपसा । पुत्रकिपरि लामाकि भाउपरिलामाकि जीवपरिणामावि पुत्राक्यरिणामाकि ॥ पीवप्यमुद्देश चे भेते । धन्यराना सम्बन्धा सम्बन्धाना प्रकारमात् पुत्रकिराह्यमात् काल तस्तराह्यमात् प्रवहनक्ष्यपुत्रमा १ हेता पोपसा । अपर्व अपुत्रमा स्वगत्यतो ॥ १९ ॥ १६ दीयसमुद्दा समस्या ॥

कामिट्रे में मेरे ! इंस्थिमसङ् पीनगरमस्थाने पन्नति है गीनसा । पंचविद्व ईविद-विसए पामास्वपरिवास पञ्जते राजहा-सोइंदिवविसए बाब फार्सिट्सक्रिएए। सोईमियमिसए र्ण मेरी ! पोरास्क्यारेशामें कड़मिंहे कन्नते हैं गोबमा ! दुनिहें क्याते रंग्रहा-सुनिमसरपरिवामे व तुनिमसरपरिवामे व एवं पविद्यारविस्तारपति सकापरिवास स वस्थापरिवास स एवं सरविरोधपरिवास व दरसिर्वाकपरिवास व एवं पुरसपरिभाग व बुरमपरिणाम च एवं धुपामपरिणामे व हुदासपरिचामे न ॥ से हुनं भेते । उचानपुत्र सर्पारणामेनु उचानपुत्र स्वपरिणामेनु एवं गंबपरिणामेनु रसपरिवासेन दानपरिवासेन परिवाससावा पोसाखा परिवासीति वलव्यं क्षसा । इंटा काबमा ' संबाध्यम सम्बद्धिकातम् जाव वरिवासमाना योगसा वर्षेणमंत्रिति वतम् रिया से बूर्ज मंते । ग्रुटिमसर् योग्गका हुव्यिमस्ताए वरिवमंत्रि हुव्यिसर् योगका धन्मिसहताए परिणमेति १ हेवा गीयमा ! मुन्मिसहा पो अन्मिसहताए परिणमेति दुनिमसद्दा प्रं सुनिमसद्दर्शाप् परिकरीत से पूर्व शेते । सुद्भा प्रमाका सुद्भाताप् परिक मेरि बढ़ना प्रस्तान्त्र सम्बद्धात है बैसा गोबसा । एवं स्टिम्मांबा पीन्नका इडिक्संबनाए परिवामिति इडिक्संबर पाकाका सुक्तिलंबनाए परिवासित ! इंडा गोमना । एवं सुरासा बुकासत्ताए ! धरसा बुरसताए ! धरा गोयना । ॥ १९१ व क्षेत्रं मंत्र ! मिक्किए बाब महालुमाने पुरुतसेत्र पीमासं विकास वस् समेन अध्यपरिविद्याणे विविद्याए है होता पन , से केणहुंचे मेरा । एवं वृषद-वित्र में महिद्विय जान निविद्वाय । गोमा । गोमा । एते धमाणे पुन्वासेन शिप्साई भनिता तथा पच्छा संबंध समह, देवे भं सक्षिक्ष आव सहाणुमाने पुर्णि पक्कांव सीक्षे सीहगई तुरिए तुरिकाई चेर से तेजदेव योगमा । एवं बुक्र जान अनुपरिवाहितार्ण गेणिक्सए ॥ बेबे ण शंते । महिष्किए वाहिरए पोमाके अपरे बाइता पुम्बामें बालं अध्याता अभेता पम् गठितए हैं भी इबद्धे सबद्धे ? देवे व सेवे । महिद्विप वाहिरए पुस्तके अपरिमाहता पुरूषामेव वासे किता निता पर् रोठिताए । तो इपद्वे सम्दे १ देवे में गेरी । महिश्विए बाह्यरए पुगाके परिवाहता पुरमामेव बार्क अधिकता अभिता पम् गठितप् में सभद्वे समक्के ३ देवे थे मंत्र

महिन्निए जाव महाणुभागे वाहिरे पोग्गुले परियाइत्ता पुन्वामेव वाल छेत्ता भेता पम् गठित्तए हता पम् ४, त चेव ण गठिं छउमत्थे ण जाणइ ण पासड एवंसुहुमं च ण गढिया ३, देवे णं भंते ! महिङ्गिए० पुन्वामेव वाल अच्छेता अभेता पभू दीहीकरित्तए वा हस्सीकरित्तए वा <sup>2</sup> नो इणद्वे समद्वे ४, एवं चत्तारिवि गमा, पढमविडयभंगेस अपरियाइता एगतरियगा अच्छेता अभेता, सेस तहेव, त चेव सिद्धिं छउमत्थे ण जाणइ ण पासइ एसुहम च ण दीहीकरेज वा हस्सीकरेज वा ॥ १९२ ॥ अत्थि ण भते ! चंदिमसूरियाणं हिर्द्विपि ताराख्वा अणुंपि तुल्लानि समंपि तारारुवा अणुंपि तुह्नावि उपिंपि तारारुवा अणुपि तुह्नावि १ हता अत्थि, से केणहेण भते । एव वुचइ-अस्य ण चिदमसूरियाणं जाव उपिंपि तारारूवा अणुपि तुह्रावि <sup>२</sup> गोयमा ! जहा जहा ण तेसिं देवाणं तवनियमवंभचेरवासाइ [उक्कडाइ] उस्सियाइ भर्वति तहा तहा ण तेसिं देवाण एय पण्णायइ अणुत्ते वा तुल्लते वा, से एएणट्रेण गोयमा !० अत्थि ण चिदमसूरियाण० उप्पिपि तारास्वा अणुंपि तुल्लावि ॥ १९३ ॥ एगमेगस्स ण भंते ! चदिमसूरियस्स केवइओ णक्खत्तपरिवारो पण्णत्तो केवइओ महम्गहपरिवारो पण्णत्तो केवइओ तारागणकोडाकोडीओ परिवारो प॰ १ गोयमा । एगमेगस्स ण चंदिमस्रियस्स-अद्वासीइ च गहा अद्वावीस च होइ नक्खता । एगससीपरिवारो एत्तो ताराण वोच्छामि ॥ १ ॥ छावद्विसहस्साइ णव चेव सयाई पचसयराइ। एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीण ॥ २॥ १९४॥ जवृदीवे ण भते ! दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरिच्छिमिल्लाओ चरिमताओ केवइय अवाहाए जोइस चारं चरइ र गोयमा! एकारसिंह एकवीसेहिं जोयणसएहिं अवाहाए जोइस चार चरइ, एव दक्खिणिल्लाओ पचित्थिमिल्लाओ उत्तरिल्लाओ एकारसिंह एकवीसेहिं जोयण ॰ जाव चारं चरइ ॥ लोगताओ भते । केवइय अवाहाए जोइसे पण्णते 2 गोयमा ! एकारसाँहें एकारेहिं जोयणसएहिं अवाहाए जोइसे पण्णते ॥ डमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिज्ञाओ भूमिभागाओ केवडय अवाहाए सन्वहेट्रिले तारारूवे चार चरइ? केवडय अवाहाए सूरविमाणे चार चरइ? केवइय अवाहाए चदविमाणे चारं चरइ <sup>१</sup> केवइय अवाहाए सव्वउवरिक्ने तारारू वे चार चरइ 2, गोयमा! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणि० सत्तिह णउ-एहिं जोयणसएहिं अवाहाए जोइस सन्वहेद्विले तारारूवे चार चरइ, अद्विह जोयणसएहिं अवाहाए स्रविमाणे चार चरइ, अट्ठिहें असीएहिं जोयणसएहिं अवा-हाए चदनिमाणे चारं चरइ, नवहिं जोयणसएहिं अवाहाए सव्वउविहे ताराह्वे चार चरड ॥ सन्वहेद्विमिल्लाओ ण मते । ताराह्वाओ केवइय अवाहाए सुरविमाणे 41

चारं चरह ! नेपहर्य अवाहाए चवविमाणे चारं चरह ! चेमहर्य अवाहाए सम्बद्धहरिहे तारास्य चारं चरह । गोनमा । सम्बद्धेतिकामा च वसहि कोयगेहि सर्विमाचे बारं चरह गर्दारं जोडमेर्ड अवाहाए बंदनिमाने बारं बरह हास्तरे जोडबसए अवाहाए सम्बोवरिक्ने वारावने चारं चरह ॥ सुरमिमाणाओं वं भंदे । केवहर्व अवा-हाए चहनिमाने बारं बरह है बेमहर्ग सम्मत्रवृक्ति सागहने बारं बरह है शीयसा ! सरनिमाधाओं च ससीए जोवनेति नंतनिमाने नारं चरप्र, जोजवसयअवादाएं सम्बोधिके सारास्त्रे चारं चरड । श्रंबविमाणाओं ये मंते । केन्द्रयं अवाहार सम्बद्धारिके ताराकने कारे करह । गीनमा । वंदनिमानाओं न धीसाए जीवनेहें क्वाहाए सम्मदनरिक्ने साराज्ये बार बरह, एवामन सपुन्नावरेलं दक्कारसदन्नोक्क बाहके तिरियमसक्केके जोइसबिसए फलते ॥ १९५ n जेनूरवि में सर्द ! दीवे कनरे भरवाते सम्बन्धितरिक्षं बारे गरा ! कारे नक्यते समावातिरिक्षं चारे बरा ! कारे मन्त्रते सम्बद्धारितं कारं करत ! कारं नक्त्रते सम्बद्धिक कारं करा ! गोडमा ! र्षवृद्दीने में बीने असीहनकतारे सम्बन्धियरिक बारं बरह सूके यनवारे सम्बन्धे कि बार जरह साई शक्कते सम्बोनकि बार वरह भरणी अक्कते सम्बोधिक बार बरङ u १९६ n चंदवियांचे वं संते ! किसेटिए एक्यों ? योगमा ! अक्टब्रियन चेठापारं दिय सम्बद्धान्त्रियासय मन्युरगयम् वियवादिय वण्यको एवं सरविसाधेने नक्ष्यात्तिमानेनि वारानिमाणेनि अञ्चलन्द्रस्टराययंटिए ॥ चवनिमाने सं मंदे । केमहत्र आयामनिक्त्यतिणं है नेनवहर्य परिक्योनेणं है कनहर्य बाह्योगं प्रभाति है गीयसा है क्रायके प्रासिक्तांने कोमणस्य कामामनिक्सीमं ते तिग्रवं सनिसेस प्रश्निकीयं क्टाबीसं एगसदिमाने बोयणस्य कान्नेनं पञ्चते ॥ स्ट्रिमाणस्यनि स्केत प्रकार गोसमा ! बारवाधीर्थ एक्छद्विमाने बोस्थस्य बासस्मिक्बोमेर्थं से तिस्रयं समितेर्थं परिकारीकं भरवीसं एक्सक्रियाने कोनकस्स कार्क्रेणं पत्तते ॥ एवं प्रकृतियानेनि कारजोजनं कायमनिक्जीमेणं समितेस परि कोस बासीलं प ॥ शकरताविमाधे वं कोसं आज्ञामनिककीमणे ठं दिगुणे सनिसेस परि जक्रकोस बाह्यकेर्य । साराविमाणे र्ण क्रमाकोसे आयामनिकसंभेणं ते तिगुणे सनिसेसे परि - पंजवस्तासतं बल्डोणं पण्योत n १९७ n चंद्रविमाणे वं मेते ! यह तेवसाहरसीओ परिचर्वति है गोयमा ! चेद विसायस्य में पुरश्किमेणे सैमार्थः समयार्थः सप्यामार्थः समातकविमाकनिरमान्तिभग गोवीरफेवरवयस्मिर्ण्यवासार्वं (सङ्गुष्टिवर्षिगसम्बार्व) विरवश्चित्रदृष्टश्चित्रस् बर्सारिक्टिमेरिक्टिक्ववाडाविक्विसमुद्याणं रच्चण्यास्यसम्बर्धान्यसम्बर्धान्यसम्बर्धान्यसम्बर्धान्यसम्बर्धान्यसम् [पराश्वकारमेवसिवनिर्वातमस्त्रमहानै] सिराक्यीवरोक्पविपुण्यसिक्यांवार्च मिठनि

स्रयपसत्यसुहुमलक्ष्वणविच्छिण्णकेसरसङोवसोभियाण चकामियललियपुलियधवलग-व्वियगईण उस्मियसुणिम्मियसुजायअप्फोडियणंगूलाण वहरामयणक्खाणं वहरामय-दन्ताण वयरामयदाढाण तवणिजजीहाण तवणिज्जतालुयाणं तवणिजजोत्तगसुजोइ-चाण कासगमाण पीइगमाण मणोगमाणं मणोरमाण मणोहराणं अमियगईण अमिय-चलवीरियपुरिसकारपरक्रमाण महया अप्फोडियसीहनाइयवोलक्लयलरवेण महरेण मणहरेण य पूरिता अवर दिसाओ य सोमयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ सीहरूवधा-रीण देवाण पुरच्छिमिल बाह परिवहति । चदविमाणस्स ण दिक्खणेणं सेयाण सुभगाण सुप्पभाण सःवतलविमलनिम्मलदिह्मणगोखीरफेणरययणियरप्पगासाण वइरामयकुभजुयलसुद्वियपीवरवरवइरसोंडवद्वियदित्तसुरत्तपउमप्पगासाण अञ्भूण्णय. गुणा(मुहा)ण तवणिजाविसालचंचलचलतचवलकणणविमलुजालाण मधुवण्णभिसत-णिद्धपिंगलपत्तलतिवण्णमणिरयणलोयणाण अञ्भुग्गयमञ्लमिल्रयाण धवलसरिसस्रिट-यणिव्वणद्ढक्तिणफालियामयसुजायदंतमुसलोवसोभियाण कचणकोसीपविट्वद्रतग्ग-विमलमणिरयणरङ्कपेरंतचित्तरूवगविराङ्याणं तवणिजविसालतिलगप्सहपरिमाडि-याण णाणामणिरयणगुलियगेवेज्जवद्धगलपवरभूसणाण वेहलियविचित्तदङणिम्मल-वालगडाण वइरामयतिक्खलट्टअकुसकुभजुयलंतरोदियाण तवणिजासुवद्धकच्छदप्पिय-बल्लद्धराण जबूणयविमलघणमङलवङ्रामयलीलाललियतालणाणामणिर्यणघण्टपास-गर्ययामयरज्ञूबद्धलवियघटाजुयलमहुरसरमणहराण अल्लीणपमाणजुत्तवद्वियसुजाय-रुक्खणपसत्थतवणिज्ञवालगत्तपरिपुच्छणाण उविचयपिडपुण्णकुम्मचलणलहुविक्कमाणं अकामयणक्खाण तवणिजातालुयाण तवणिजाजीहाण तवणिजाजोत्तगसुजोइयाण कामगमाण पीइगमाण मणोगमाण मणोरमाण मणोहराण अमियगईण अमियवल-वीरियपुरिसकारपरकमाण महया गभीरगुलगुलाइयरवेण महुरेण मणहरेण पूरेन्ता अवर दिसाओ य सोभयता चतारि देवसाहस्सीओ गयत्वधारीण देवाण दिक्खणिल वाह परिवहति । चदविमाणस्स ण पचित्यमेण सेयाण सुभगाणं सुप्पभाण चक-मियललियपुलियनलचनलक्कुद्सालीण सण्णयपासाण सगयपासाण भुजायपासाणं मियमाइयपीणरइयपासाण झसविहगसुजायकुच्छीण पसत्यणिद्धमधुगुलियभिसतपिंग-लक्खाण विसालपीवरोहपडिपुण्णविडलखघाण वृहपडिपुण्णविडलकण्णपासाणं घणणि-चियसुवदलंक्खणुण्णयईसिआणयवसमोद्वाण चक्तमियलित्यपुलियचक्कवालचवलगव्वि-यगईण पीवरोस्वष्टियसुसठियकढीण ओलवपलवलक्खणपमाणजुत्तपसत्यरमणिज्न-वालगडाण ममखुरवालधाराण समलिहियतिक्खग्गर्सिगाण तणुसुहुमसुजायणिद्ध-लोमच्छविधराण उवन्वियममलविसालपडिपुण्णखद्दपमुहसुदराणं (स्वधपएसमुदराण) सुचागमे [वीवाजीवामिगमे

चेरुपियमिसंतक्तककार्यक्षिरिककाणार्थं ज्ञाराणमायण्याणकार्यवपसंख्यामिकारम्य गक्रसोमियाणं अवस्रवसुबद्धकरुपरिमेशियाणं नाषामधित्रणगर्यणकरुदेनेमकस्यसुद वरचम्मासिवाणं वरपंतागकगरिमसार्मतसरिसरीयार्थं परमापकमसरस्वरिममास्म-विभागिमाण वहरवाराचं विविद्यविवाराणं फाकिमासगणताणं सवविज्ञजीवाणं सव क्रिक्रमाळ्याचे त्राविकाजोत्तगसाजोतियाचं कामग्रमाणं पीद्रगमाणं मणोग्रमाणं मधोरमार्थं मधोहरार्थं कसियगर्देशं असिवनकशीरियपुरिसदारपरहमार्थं सहवा रांनीरगन्निवरदेणं महुरेणं मणहरेण व पूरिया नवरं दियामो व सोमयंता चतारि देवसाहरसीओ वसमब्बदारीनं देवानं पन्नत्निमत्रं वाई परिवृद्धि । वेदविमाधस्य र्षं उत्तरेषं सेवार्णं समयाणं सध्यमाणं बचार्णं वरमिकायनार्णं हरिमेकामकुममान्यि-रकार्ग अमामिकसूनदासम्बन्धानमानकमि(वंतुकि)वयस्यपुक्रिक्वस्वनसर्वकम शहरो केष्णवस्मानवानणवारणतिनद्ववद्गमधिनिकपगर्देनं संवयपासाय संगदपासाय प्रकारपासाणे मिनमाइनपीनरहनपासाणे ससमिक्तप्रवानक्रमधीले पीजपीनरनक्रिय-पुरुद्धितस्त्रीयं भोतेषप्रकारकम्बानपर्मायन्त्रतपरस्वरमन्त्रजनाकरीडान राजसङ्गस कार्यक्रिकस्केरम्भाविकराचे निरुविस्थापसम्बद्धसम्बद्धापनिविध्यक्रेसरवास्मिराणे सक्रियमासगरह(ससंद्रधासम्बद्ध)काषयरम्सणार्च सुद्द्रभवगोष्ट्रभवमरवाद्यगपरेमेदिन क्योगं एवन्पिजन्यराणं तन्त्रिकाशिकां तन्त्रिकातस्यानं तन्त्रिकवोत्तास्योद्दरानं कामयमाच पीइनमार्ग संजोगमाज मंजीरमार्ग मंजीहरार्ग अभियगईचे असिक-बळवीरिस्पुरिसदारपरकमाणं सहसा वसहेस्टिनकिसक्तिकाइसरवेचे सहरेगं सन्दरेज 🚐 नतारि देवसाइस्सीमो इनवव में इ परेंचा अवर विसामो न सी उत्तरिष्टं बाह्नं परिवर्षति व ए देवभाइरसीओ परिवर्शत प्रथ्य बद्ध वेषसाहरसीमी परिवर्षति भार्ष परिवर्षति हो वेकार्ग प्यत्विम दो वंगसाहरसीओ » बाह्रं परिक्टंशि ॥ एवं निसानस्पनि पुरुक्त गोनमा । 🖘 परिवर्शत संबद बारीज बंबाज एमा बेबसाइस्सी पर a. एवं चटरिं तारगाणनि चनर हो देनसाहरसीजो

पुरस्थिमि काई परिवर्धसे एवं च १८ क्यरे सिरकाई सरेकियों

\*\*\*

हिंतो तारा सिग्घगई, सव्वप्पगई चदा सव्वसिग्घगईओ ताराख्वा ॥ १९९ ॥ एएसि ण भते ! चदिम जाव तारारूवाण कयरे २ हिंतो अप्पि**हि**या वा महि**हि**या वा <sup>२</sup> गोयमा ! तारारूवेहितो णक्खत्ता महिन्हिया णक्खतेहितो गहा महिन्हिया गहेहितो स्रा महि-ह्रिया स्रेहिंतो चदा महिह्रिया, सञ्चप्पह्रिया तारास्वा सञ्चमहिह्रिया चंदा ॥२००॥ जबूरीवे ण भते ! दीवे तारारूवस्स २ य एस ण केवइय अवाहाए अतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे अतरे पण्णते, तजहा—वाघाइमे य निव्वाघाइमे य, तत्थ ण जे से वाघाइमें से जहण्णेण दोण्णि य छावट्ठे जोयणसए उक्कोसेण वारस जोयणसह-स्साइ दोण्णि य वायाले जोयणसए तारारूवस्स २ य अवाहाए अतरे पण्णते। तत्थ ण जे से णिन्वाघाइमे से जहण्णेण पचधणुसयाइ उक्कोसेण दो गाउयाइ तारारुव जाव अतरे पण्णत्ते ॥ २०१ ॥ चदस्स ण भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरक्रो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ <sup>१</sup> गोयमा! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णताओ, तंजहा—चदप्पभा दोसिणामा अश्विमाली पमकरा, तत्य ण एगमेगाए देवीए चतारि चतारि देवसाहस्सीओ परिवारे य, पभू ण तओ एगमेगा देवी अण्णाह चत्तारि २ देविसहस्साइ परिवार विउब्बित्तए, एवामेव सपुब्वावरेण सोलस देवसा-हस्सीओ पण्णत्ताओ, से त तुडिए ॥ २०२ ॥ पभू ण भते ! चदे जोहर्सिंदे जोह-सराया चदवडिंसए विमाणे सभाए सहम्माए चंदिस सीहासणिस तुडिएण सर्दि दिव्वाड भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए 2 णो इणहे समहे । अहुत्तरं च ण गोयमा ! पभू चढे जोइसिंढे जोइसराया चदविंडसए विमाणे सभाए सहस्माए चदिस सीहा-सणिस चर्राहं सामाणियसाहस्सीहिं जाव सोलसिंह आयरक्खदेवाण माहस्सीहिं अनेहिं बहुहिं जोडसिएहिं देवेहिं देवीहि य सिद्धं सपरिवुढे महया हयणहुनीइवाडयत-तीतलतालतुडियघणमुइगपडुप्पवाइयरवेण दिव्याड भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए, केवल परियारिद्धीए नो चेव ण मेहुणवित्तय ॥ २०३ ॥ स्रस्स ण भते ! जोडसिंद्स्स जोइसरको कइ अग्गमहिसीओ पण्णताओ 2 गोयमा। चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णताओ, तजहा-स्र्प्पभा आयवाभा अचिमाली पभकरा, एव अवसेस जहा चटरम णवर स्रविंडसए विमाणे स्रिस सीहामणिस, तहेव सन्वेसिंपि गहाईण चत्तारि अगगमहिसीओ॰ तजहा-विजया वेजयती जयती अपराजिया, तेसिंपि तहेव ॥ २०४ ॥ चद्विमाणे ण भते ! देवाण केवड्य काल ठिडी पण्णता १ एव जहा ठिईपए तहा भाणियव्वा जाव ताराण ॥ २०५ ॥ एएसि ण भते ! चिदमस्-रियगहणक्रात्ततारास्त्राण कयरे २ हिंतो अप्पा वा वहुया वा तुला वा विसेमाहिया वा १ गोयमा ! चिद्रममृरिया एए ण दोण्णिव तुहा सन्वत्थोवा, सखेजगुणा णक्खता, गरूमोसियाणं चरवरगमुबद्धरच्छपरिमेडियाणं नाणाग्रध्यवणगरस्वचच्छ्यदेवस्वस्त्रम् यरप्रयमान्त्रिवाण वर्रवेटायकगतिवयोर्गतसहिमरीयार्थं पत्रमुष्पक्रमसम्बनुर्शिमाना विभृतियाच बहरहराणं मिनिहनिद्धराणं फाटिजामस्यूनाणं तबविजाबीहाणे ठव-गिळगास्थाय त्राणिककोत्तगस्योतियाणं कामगमाणं पीडगमालं सकोगमार्थ समोरमार्गं ममोहराणं अभिनयर्षेण अभिनक्तनौरिनपुरिसदारपर्द्यमान महना र्गमीरगिवयरवेर्य महरेलं भजहरेण य पूर्वेता अंबरं विसाओ य क्षोमयका बतारि देवसाइस्सीओ वसभगववारीणं देवाणं प्रवाशिकार्यं वार्ड परिवर्डति । पंडविसायस्य र्ण उत्तरेण सेवाच सम्माणे सप्पमार्ण बचार्ण वरमहिद्वाबगार्ण इरियेलामसम्माप्रेय रतार्गं प्रमाणियमुबद्धसम्बनुस्मयार्थकम्(बंबुवि)नमकिक्पुरियब्रव्यक्षयंग्राः गर्डेगं संकारमानवारच्यारणतिवानावासिकियारगर्वेचं संगवपत्राचं संगवपासाचं मुजायपानाचे नियमाइयपीचग्ड्यपासाचे शतकृतमुजाबरुण्डीचे पीमपीवग्यदिक-मुसेटियक्क्षीणे कोसेनप्रसेवनक्राज्यमाणसूत्तासस्वरमध्यावासमाजाणे त्स्युहुमसु-जानविक्तानेनग्जनिवराणे निजनिमवपतत्वतृत्वसङ्ग्राणनिकेन्यद्रेमरवाकिनयर्पं सन्धियतासुगगद्द(सर्वनवासगर्व)लाडवरमूमवार्च सुद्दर्गडमोक्सवसर्वासगद्दिवेडिय कृत्रीयं सुबन्धिकसुद्धार्थं सब्धिकवीद्वाणं सब्बिक्यनासुवाणं सब्बिक्यवीस्तयमुत्रीहवाणं कामगमार्ज पीरममार्ज मणायमार्ण समोरमार्ज मचोहराचे अमिशगईचे अमिर बसबीरिक्यरिमदारपरद्रमाण महत्ता इत्रहेलिवविस्तान्त्रवार्थेयं सहरेनं समहरन व परेता अपरे दिमाओ व सोमवंता चतारि व्यमाइस्सीओ हयन्वयारीचे उत्तरित्रं बाई परिवर्दनि ॥ एवं सुरविभाषस्मित्र पुष्या गोक्सा । मोरम हरमाहरसीको परिवर्दनि प्रम्यक्रमचै ॥ एवं गहविमाणस्मवि प्रच्या गोगमा । अट दबमाहरगीओ परिवर्शन पुम्पश्मेत्रं को दबार्ण साहरगीओ पुरन्पिमेर्ड बाद परिवर्दनि को कारणे साहरूतीया विकासिक वा बकास माहरतीयो वक्षिक्र ता बरासाहरशीओ हवन्यपारीणं उत्तरिक्षं बाई परिवहति ॥ एवं अवस्था विभागमानि प्राप्ता गाँपमा । चलादि केवगाहरसीआ परिवर्गन संबदा-गोदस्य बारीय देवान एमा देवनाइन्सी पुरिवामित्रं बाई परिवाद, एवं चत्राहिनीपि एवं नारपार्जाय नगरे हो बयगाहरसीओ परिवर्देति शत्रहा-सीहरूवधारीने बवार्य पंजरेव नया पुरिधानितं बार्र परिवर्देशि एवं बतादेशिषि ॥ १९८ ॥ एएछि वं सेने वंशिस सहितगहरामग्रहान्ताराज्यार्गं कपरे कपरेत्रिती ग्रिव्यवर्द् वा मेहमहे वा है धीरमा चेंदर्दिना मुरा शारकाई मुदेशिया बदा नित्यमई गहेरिना वास्त्रामा शिकाई अस्ताने

हिंतो तारा सिग्घगई, सव्वप्पगई चदा सव्वसिग्घगईओ ताराख्वा ॥ १९९ ॥ एएसि ण भते ! चिदम जाव ताराख्वाण कयरे २ हिंतो अप्पिष्टिया वा महिष्टिया वा १ गोयमा ! तारारूवेहिंतो णक्खत्ता महिश्विया णक्खतेहिंतो गहा महिश्विया गहेहिंतो सूरा महि-द्विया सूरेहिंतो चदा महिद्दिया, सन्वप्पद्विया ताराख्वा सन्वमहिद्विया चदा ॥२००॥ जवृदीवे णं भते ! दीवे तारारूवस्स २ य एस णं केवइय अवाहाए अतरे पण्णत्ते 2 गोयमा ! दुविहे अतरे पण्णते, तजहा-वाघाइमे य निन्वाघाइमे य, तत्य ण जे से वाघाइमें से जहण्णेण दोण्णि य छावट्टे जोयणसए उक्कोसेण वारस जोयणसह-स्साइ दोण्णि य बायाले जोयणसए तारारूवस्स २ य अवाहाए अतरे पण्णते । तत्थ ण जे से णिव्वाघाइमे से जहण्णेण पचधणुसयाइ उक्कोसेण दो गाउयाइ तारारूव जाव अतरे पण्णते ॥ २०१ ॥ चदस्स ण भते ! जोइसिंदस्स जोइसरन्नो कइ अगगमहिसीओ पण्णताओ र गोयमा। चतारि अगगमहिसीओ पण्णताओ. तंजहा-चंदप्यभा दोसिणाभा अचिमाली पभकरा, तत्य ण एगमेगाए देवीए चत्तारि चत्तारि देवसाहरसीओ परिवारे य, पभू ण तओ एगमेगा देवी अण्णाइ चत्तारि २ देविसहस्साइ परिवार विजन्तित्तप्, एवामेव सपुन्वावरेण सोलस देवसा-हस्सीओ पण्णताओ, से त तुडिए ॥ २०२ ॥ पभू ण भते ! चदे जोइसिंदे जोड-सराया चदवर्डिसए विमाणे सभाए सुहम्माए चदिस सीहासणिस तुहिएण सर्द्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणे विहरित्तए १ णो इणहे समहे । अदुत्तर च ण गोयमा ! पभू चढे जोइसिंदे जोइसराया चदविंडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए चदिस सीहा-सणिस चडिंह सामाणियसाहस्सीहिं जाव सोलसिंह आयरक्खदेवाण साहस्सीहिं अन्नेहिं वहहिं जोइसिएहिं देवेहि देवीहि य सिंद्धं सपरिवृद्धे महया ह्यणहुनीइवाइयत-तीतलतालतुडियघणमुङ्गपडुप्पवाङ्यरवेण दिव्वाङ भोगभोगाङ भुजमाणे विहरित्तए. केवल परियारिष्ट्रीए नो चेव ण मेहुणवित्तय ॥ २०३ ॥ स्रस्स ण भते ! जोडसिंटस्स जोइसरन्नो कह अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ 2 गोयमा ! चतारि अग्गमहिसीओ पण्णताओ, तजहा-सूरप्पमा आयवामा अचिमाली पमकरा, एव अवसेस जहा चदरस णवर सूरवर्डिसए विमाणे स्रिस सीहासणिस, तहेव सन्वेसिंपि गहाईण चत्तारि अग्गमहिसीओ॰ तजहा—विजया वेजयती जयती अपराजिया, तेसिंपि तहेन ॥ २०४ ॥ चदविमाणे ण भते ! देवाण केवडय काल ठिई पण्णता १ एव जहा ठिईपए तहा भाणियव्वा जाव ताराण ॥ २०५ ॥ एएसि ण भते ! चिदमस्-रियगहणक्खत्ततारास्त्राण कयरे २ हिंतो अप्पा ना चहुया ना तुःहा ना निसेसाहिया वा 2 गोयमा ! चिदमस्रिया एए ण दोण्णिवि तुहा सन्वत्थोवा, सखेजगुणा णक्खता,

सुत्तागमे

र्यकेन्द्रामा यहा संकेन्द्रमामो तारमामो ॥ १ ६॥ जोहस्रहेसमो समन्त्रो ॥ क्षि में मेरे ! बेमानियाणें देवाणें किमाणा पन्नता ! क्षेत्र में मरे ! बेमापिया देवा परिवर्षति है, बहा ठाणपए तहा सम्ब मावियम्बं गवर परिसामो भाविय-

\*11

भारते जान रहें। जलेंसि न नहुणं सोहरमहत्पनासीणं वेदाण व वेदीण व बान निक्रण ॥ २ ७ ॥ सकत्त्व में मैते ! विविदश्स वेषरको क्ष्य परिसामी प्रकत्तामो ! शोवमा ! तभो परिसाओ पञ्चलामो तंत्रहा--समिना चंडा बाया मन्सितरिना समिया मिलामिया चडा बाहिरिया जाया ॥ सङ्ग्स चं गीते ! देशियस्स देशरहो सन्भितिरमाप् परिसाप् क्ष चंत्रसाहरसीओ प्रव्यक्ताओं है मन्त्रिमिनाए परि क्षेत्र बाह्मिरियाए प्रच्छा गोनमा ! सक्त्स वंवितृत्स वेबरको मन्मितरिवाए परिसाए बारस देवसाहस्यीओ पण्णताओ मिनामियाए परिसाप श्ववस देवसाहस्सीओ पन्नताओं बाह्मिरवाप परिसाप सोक्स देवसाहरसीओ पन्यताओं तहा अस्मित-रियाए परिसाए एत देवीसमानि मक्तिमियाए छ देवीसमानि वाहिरियाए पर

देवीसवानि पत्रतान्य n सकरस में भेतं ! देविवन्स देवरची अस्मित्रदिवाए परिसाए दशाजें केवहने कार्क ठिड् पञ्चला ? एवं मजिसमियाए वाहिरियाएवं गोयमा ! सक्त देविदस्य दवर्षो अस्मितिरयाप् परिशाप् दवार्षं पंत्र पछिओवसाई ठिई पञ्चचा मञ्ज्ञिनियाए परिसाए जत्तारि पश्चिजीवमाई ठिई पञ्चचा बाहिरियाए परिसाए देशार्व दिश्वि पक्तिभोषमाई ठिवे पञ्चता देशीर्च ठिवे-मस्मित्रियाए परिसाए देवीचं दिक्षि पत्रिकोषमाई ठिइ पञ्चला मण्डिसमिवाए दृष्टि परिकोक्समे ठिउँ फगता बाब्रिटिवाए परिसाए एगं पविकोक्त ठिउँ पञ्चला कडो सो चेच उदा भवचवासीनं n नहि र्ण मदे । देशायगाणं देवायं निमाया पण्यता है तहेव सन्त जाब ईसाचे एत्य वंतिक त्रव जाव विकास । ईसायस्य में सेत ! देविवस्म देवरक्ती कर परिसाओ पञ्चक्ताओं ? गोवमा ! तको परिसाओ पञ्चक्ताओं तैयहा-सुनिया चंद्रा जाया तक्षेत्र सन्त्रं जबरे अस्थितिरयाच् परिसाप् दस वेबसाहरसीओ कारताओं अधिसमियाए परिसाप बारन देवपाहरसीयो बाहिरियाए बटराउ देवनाहरसीओं दर्शार्व पुरस्ता अधिभवरियाए जब देवीनया पञ्चला मन्त्रितियाए परिसाए क्यू देवीसका परमता बाहिरियाए परिसाए सत देवीयमा पन्नता देवार्च

ठिरेपुच्छा अभिन्तिरेगाय परिसाय बेबार्ण सत्त पश्चिमोबमाई ठिइ प्रश्नाता मनिस सिमाए छ परिक्रोक्साई नाहिरिमाए थेन परिक्रोक्साई ठिई क्लाता। देवीन पुच्छा अस्मितरिवापु नाइरैगाई पंचप विभोनमाई अञ्चित्तियापु परिमाए चतारि पछिमोदमार्च दिई प्रणादा बाहिरियाएं परिसाए निरिम परिमोदमार्च दिई प्रणाता

अद्घो तहेव भाणियव्वो ॥ सणंकुमाराण पुच्छा तहेव ठाणपयगमेण जाव सणंकुमा-रस्स तओ परिसाओ सिमयाई तहेव, णवर अब्भितरियाए परिसाए अह देवसा-हस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, वाहिरियाए परिसाए वारस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, अर्विभतारियाए परिसाए देवाणं अद्धपंचमाइ सागरोवमाइ पंच पलिओवमाइं ठिई पण्णता, मजिझमियाए परिसाए० अद्भपचमाइ सागरोवमाइ चत्तारि पिलेओवमाइ ठिई पण्णत्ता, वाहिरियाए परिसाए० अद्धपंचमाई सागरोवमाइ तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, अट्टो सो चेव ॥ एव माहिंद्स्सवि तहेव तओ परिसाओ णवर अर्झ्मितरियाए परिसाए छदेवसाहस्सीओ पण्णताओ, मज्झिमियाए परिसाए अह देवसाहस्सीओ पण्णताओ, वाहिरियाए॰ दस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, ठिई देवाण-अब्भितरियाए परिसाए अद्भपचमाई सागरोवमाइ सत्त य पिलेओ॰ ठिई पण्णत्ता, मिन्झिमियाए परिसाए अद्भपचमाइ सागरोवमाइ छच पलिओवमाई॰, बाहिरियाए परिसाए अद्भपचमाइ सागरोवमाइ पच य पळिओवमाइ ठिई प०, तहेव सब्वेसिं इदाण ठाणपयगमेण विमाणा णेयव्वा तओ पच्छा परिसाओ पत्तेय २ बुच्चति ॥ वसस्सवि तओ परिसाओ पण्णत्ताओ० अब्भितरियाए चत्तारि देवसाहस्सीओ मज्झिमियाए छ देवसाहस्सीओ वाहिरियाए अद्व देवसाहस्सीओ, देवाण ठिई-अब्भितरियाए परिसाए अद्धणवमाइ सागरोवमाइ पच य पलिओवमाइ, मज्झिमियाए परिसाए अद्भनवमाइ चत्तारि पलि-ओवमाइ, वाहिरियाए० अद्भनवमाइ सागरोवमाइ तिण्णि य पल्लिओवमाई अट्टो सो चेव ॥ लतगस्सवि जाव तओ परिसाओ जाव अर्बिभतरियाए परिसाए दो देव साहस्सीओ • मज्झिमियाए • चत्तारि देवसाहस्सीओ पण्णताओ वाहिरियाए • छद्देव-साहरसीओ पण्णत्ताओ, ठिई भाणियन्वा—अर्टिभतरियाए परिसाए वारस सागरोवमाइ सत्त पलिओवमाइ ठिई पण्णता, मिन्झिमियाए परिसाए वारस सागरोवमाइ छच पिलओवमाइ ठिई पण्णत्ता, वाहिरियाए परिसाए वारस सागरोवमाइ पच पिलओव-माइ ठिई पण्णत्ता अद्वो सो चेव ॥ महासुक्तस्सवि जाव तओ परिसाओ जाव अर्दिभतरियाए एग देवसहस्स मिज्झिमियाए दो देवसाहस्सीओ पन्नताओ वाहिरियाए चत्तारि देवसाहस्सीओ, अर्थिभतरियाए परिसाए अद्धसोलस सागरोवमाइ पच पिल्ञोवमाइ, मिज्झिमियाए अद्धसोलस सागरोवमाई चत्तारि पिल्ञोवमाइ, वाहिरियाए अद्धसोलस सागरोवमाइ तिण्णि पलिओवमाइ, अट्टो सो चेव ॥ सहस्सारे पुच्छा जाव अर्टिभतारियाए परिसाए पच देवसया, मजिझमियाए परि० एगा देवसाहस्सी, वाहिरियाए० दो देवसाहस्सीओ पन्नता, ठिई-अव्भितरियाए अद्ध्वारस सागरोवमाड

[ श्रीवात्रीवासिगसे 725 **मुच्च**गमे सत्त प्रक्रिभोबसत् ठिई पञ्जता एव मजिससियाए जढद्वारस छन्पक्रिओक्सई बाई रियाए स्वद्वारस सागरोक्सई पैत्र पिक्रमेलमई आहे सो त्रत व भागवपानवस्त्री पुण्या बाद ताले परिसालो क्वरि सर्थिमधरिनाए सङ्गाद्व्या वेदस्या मन्धिमिनाए पेच दवनमा बाहिरियाए एया देवसाहरूसी क्रिक्ने-अधिन्यरियाए एग्लबीत सामरोद-मार्ड पंच य पठिजोदमाह एवं मण्डि पूर्णनीय सायरोदमाई चतारि य पछि-भोनमाई बाहिरियाए परिसाए एमूणबीस सागरीयमह विभिन्न व परिखोनमाई हिर्दे

सद्धी सी चेव h बहि में गेरी विजारणमञ्जूनार्ग देवार्ण राहेब शक्कार संपरिवारे जान निहरड, अनुपस्त ण दर्निवस्त तनो परिसाओ पन्नताओ अध्यितरपरि हैवानं पणबीसं सर्व मस्तिम अन्नादका सवा बाहिरिय पंत्रसवा व्यक्तितरियाए सन्दर्भ सागरोबमा सत्त व पश्चिमोबमाई मिन्स एकबीससागरी छन्मकि बाह्निहे एसदीसं सागरी पंच व पश्चिमोसमाई दिन्ने पन्यता ॥ कहि ये मेरी ! हेट्टिमोरेजमार्न बबार्ज निसाधा पञ्चला । कहि नं गेते । हेडिमगेकेजगा देवा परिवर्गत । जहेव ठाजपए तहेब एवं अञ्चलनेवेजा उद्योगनेवेजना अनुसराय बाद अहर्मिहानामें ठ देवा प्रमाता समजावसो। ॥२ < ॥ पहली बेलाणियवहेसी सलसी ॥ संहम्मीसाणेम् च मंति ! कप्पेय विमाधपुरची कियादिया पञ्चला ! गोदमा ! फगोदक्षिपद्विया प । सर्वकुमारमाहिक्स क्रम्पेस विमानसन्त्री क्रिपद्वविया फनता है गोनमा । चराबाक्यकृद्धिया पञ्चता । बैमसोए चे मति । कम्पे जिमाणपुरवी प्रच्या यो ! चयनायपद्रदिया पञ्चता। बंठए में मेरी ! प्रचल योगमा ! तहसंबद्धदिया । महास्वरमहत्तारेत्रमि त्वस्यवपद्भिया । खायय जान वापन्त न मंते । कपेस पुरस ग्री । भ्रीशासंतरपण्डिया । गेनिजनिमानपुण्यीचं पुच्छा गोवमा । भोवासंतरपर द्विता । स्वत्रशरोषकाप्रवर्षाच्या ओवासंतरपद्विया ॥ २ ९ ॥ सोहरमीसामकप्पेतु निमानपुरश्चे केष्ट्रमं बाह्यवेय पञ्चला है गीयमा है सत्तावीसी जोनजसवाई बाह्येने प्रभाता एवं पुच्छा सर्वकुमारमाहिदेनु सम्बीसं जोबवसवाइ । वसर्वतए पंचवीसे । महानुक्रमहस्सारेम् चडवीसं । आजयपाणकारणाञ्चएन् संबीतः सवारं । गेनिज जिसाबपुरको बाबीसं । अनुतारमिमाणपुरुकौ गृहशीसं जीवग्यसमार्दं बाहरेको पः ॥२१ 🗈 सोहर्म्भागोमु वं संते । कप्पेपु विभाषा कन्नहर्य उर्षु उचतेर्थ । गोयमा । पंच

भोयवस्यातं तर्षु उच्नोर्ण प**ा सर्वकृमारमाहिंदेम् छजोमणसवारं, बं**सकतप्तु सत्त महामुक्तमहरमारेमु अद्भ, आववराज्यस्य ४ वद गेवेजविमाणा च संत हेवार्य उष्ट द रेया दिम बोयवसमाई, जनुत्तरमिमाणा नं एहारस बोवनस्याई उर्ध उबतर्म प १९९१। सोइम्मीमाणैमु नं शेष । बप्पेमु विभागा किंसठिया पञ्चला । योगमा ।

दुविहा पण्णत्ता, तजहा-आविलयपविद्वा य आविलयवाहिरा य, तत्य ण जे ते आविष्यपिवद्वा ते तिविहा पण्णता, तजहा-वद्या तसा चडरंसा, तत्य ण जे ते आवलियवाहिरा ते ण णाणासठाणसठिया पण्णता, एवं जाव गेविजविमाणा, अणुत्तरो-ववाइयविमाणा दुविहा पण्णत्ता, तजहा-वट्टे य तंसा य ॥ २१२ ॥ सोहम्मीसाणेसु णं मते ! कप्पेस विमाणा केवइय आयामविक्खंभेण केवइयं परिक्खेवेण पण्णता 2 गोयमा! दुविहा पण्णता, तजहा-सखेजवित्थडा य असखेजवित्थडा य, जहा णर्गा तहा जाव अणुत्तरोववाइया सखेज्जवित्थडे य असखेज्जवित्थडा य, तत्थ ण जे से सखेजवित्यहे से जबुद्दीवप्पमाणे असखेजवित्यहा असखेजाई जोयणसयाइ जाव परिक्खेवेण पण्णता।। सोहम्मीसाणेसु ण भते ! कप्पेसु विमाणा कइवण्णा पन्नता 2 गोयमा। पचवण्णा पण्णत्ता, तजहा—किण्हा नीला लोहिया हालिहा सिक्ला, सणंकुमारमाहिंदेसु चलवण्णा नीला जाव सुक्किला, वभलोगलतएसु तिवण्णा लोहिया जाव सुिकला, महासुक्तसहरूसारेस दुवण्णा--हालिहा य सुिकला य, आण-यपाणयारणच्च्एस सुक्किल्ला, गेविजविमाणा सुक्किल्ला, अणुत्तरोववाइयविमाणा परम-सुिक्का वण्णेण पण्णता ॥ सोहम्मीसाणेसु णं भते ! कप्पेसु विमाणा केरिसया पभाए पण्णता १ गोयमा! णिचालोया णिचुजोया सय पभाए पण्णता जाव अणु-त्तरोववाइयविमाणा णिचालोया णिचुजोया सय पभाए पण्णता ॥ सोहम्मीसाणेसु णं भते ! कप्पेस विमाणा केरिसया गधेण पण्णता ? गोयमा ! से जहा नामए-कोट्टपुडाण वा एव जाव एत्तो इट्टतरागा चेव जाव गधेण पण्णत्ता, जाव अणुत्तर-विमाणा ॥ सोहम्मीसाणेसु० विमाणा केरिसया फासेण पण्णता १ गोयमा ! से जहा णामए--आइणेइ वा रूएइ वा सव्वो फासो भाणियव्यो जाव अणुत्तरोववाइय-विमाणा ॥ सोहम्मीसाणेषु ण भते ! कप्पेषु विमाणा केमहालया पण्णत्ता 2 गोयमा ! अयण्ण जबुद्दीवे २ सन्वदीवसमुद्दाण सो चेव गमो जाव छम्मासे वीइव-एजा जाव अत्थेगइया विमाणावासा वीइवएजा अत्थेगइया विमाणावासा नो वीइ-वएजा जाव अणुत्तरीववाइयविमाणा अत्येगइय विमाण वीइवएजा अत्येगइए० नो वीइवएजा ॥ सोहम्मीसाणेसु ण भते !० विमाणा किंमया पण्णता 2 गोयमा ! सव्वरयणामया पण्णता, तत्थ ण वहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमति विउद्धमंति चयति उवचयति, सासया णं ते विमाणा द्व्यद्वयाए जाव फासपज्जवेहिं असामया जाव अणुत्तरोववाइया विमाणा ॥ सोहम्मीसाणेसु ण० देवा कओहिंतो उववजात 2 उवनाओ नेयव्वो जहा वक्ततीए तिरियमणुएस पचिदिएस समुच्छिमविज्ञएस, उव-वाओ वक्कतीगमेण जाव अणुत्तरो० ॥ सोहम्मीसाणेसु० देवा एगसमएण केवड्या रिकास य उत्तरवैद्यालया व तत्व में जे से सवधारिकों से जहाँकों अध्यक्त असंबेज्यस्थान उद्दोरोण सत्त रवणीओ तत्व वं के से उत्तरबंद बियर से बार्य्यन अंगुलस्य संकेळ्यमानो उद्योसेचं कोयणस्वसदस्यं एवं एकेका ओसारेताणं बाव नगुत्तराणं एका रनणी नेकिज्ञलुत्तराणं यने मनधारणियो सरीरे उत्तरनेउनिया नित्य ॥२९६॥ सोहम्मीसाबेस जं बेबार्च सरीरपा किसंपवणी पञ्चता । गीनमा । क्षण्डं संस्थामानं असंस्थानी पञ्चला अबद्धी नेत्र क्षिरा नवि ब्राह पेत्र संस्थान-मन्ति से पोस्पल बद्धा कंता बाद ते वेसि संबादताए परिणमंति बाद जगुतारी-प्रवाहका ॥ सोहस्मीमाचेम् । देवार्च सरीरमा क्रिसंडिया पण्णता । सोवमा । इतिहा सरीरा प र् तं ---भववारिकामा य उत्तरवेउव्यवस्य व तत्त्व य ने ते भववारिकाम वै ममनवर्गमस्टानसंटिया प्रव्यक्ता तस्य शं जे ते उत्तरवेउन्पिया त भागासंटान स्टिया पन्नता कार अनुशी अवतन्त्रिया रेनिअनुत्रा अवधारनिज्ञा समयवर्ष सस्त्राणसंद्रिया उत्तरवेदन्यिया नत्य ॥ १९४ ॥ सोब्य्मीसानेस् वेदा वेरिस्या बज्जेजं पश्चता ३ गीयमा । कथमलयरचामा बज्जेबं पन्त्रता । सर्वेड्डमारमाहिक्स सै धडमस्म्बरोस क्लीकं प्रमाता । बंगकोने शं अंते । १ गोवमा । अनुमनुगवण्यामा कुनोने प्रव्यक्ता एवं जान गंदेका अनुसरीयबाइका प्रसमुद्रिका कुनार्य प्रमात b रोदम्मीसाचेमु नं मेर्ड ! क्योमु इकार्ग सगरमा केरियमा गीवर्ण पळाला ! योगमा ! से बहा थामए-नोट्रपुराण वा सहेव सम्बं जान मनामनत्या चन गविने परमता जान अणुत्तरोत्रपाद्या ।। छोद्रम्मीसानंतुः वेतानं सरीरमा बेरिमना पासेनं पत्र्यता है गायमा । विरामत्रमधिकपुरुपासग्यभितारीणं पाणमाः एतं मान अपुनरीनगदया ।। सोहरूमी माचवार्त ने दिसमा पुरमका उरमामत्ताप् परिचर्मति है गोयमा । जे पोनगना

इट्टा कता जाव ते तेसिं उस्सासत्ताए परिणमित जाव अणुत्तरोववाइया, एवं आहारत्ताएवि जाव अणुत्तरोववाइया ॥ सोहम्मीसाणदेवाण० कइ लेस्साओ पण्ण-त्ताओ १ गोयमा ! एगा तेउछेस्सा पण्णता । सणंकुमारमाहिंदेसु एगा पम्हलेस्सा, एव वभलोगेवि पम्हा, सेसेसु एका सुक्षलेस्सा, अणुत्तरोववाइयाण० एका परमसुक्र-छेस्सा ॥ सोहम्मीसाणदेवा० कि सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी <sup>२</sup> गोयमा ! तिण्णिव, जाव अतिमगेवेजा देवा सम्मदिद्वीवि मिच्छादिद्वीवि सम्मामिच्छादिद्वीवि, अणुत्तरोववाइया सम्मदिही णो मिच्छादिही णो सम्मामिच्छादिही॥ सोहम्मी-साणा॰ किं णाणी अण्णाणी <sup>२</sup> गोयमा ! दोवि, तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा णियमा जाव गेवेजा, अणुत्तरोववाइया नाणी नो अण्णाणी तिण्णि णाणा णियमा । तिविहे जोगे दुविहे उवओगे सन्वेसिं जाव अणुत्तरोववाइया ॥ २१५ ॥ सोहम्मीसाणदेवा अोहिणा केवड्य खेत जाणति पासति ? गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेजाइभाग उक्कोसेण ओही जाव रयणप्पभा पुढवी उहु जाव साइ विमाणाइ तिरिय जाव असखेजा दीवसमुद्दा एव-सक्कीसाणा पढमं दोच च सण-कुमारमाहिंदा । तर्च च वमलतग सुक्सहस्सारग चउतथी ॥ १ ॥ आणयपाणय-कप्पे देवा पासित पचिम पुढविं। त चेव आरणचुय ओहीनाणेण पासित ॥ २॥ छिंड हेड्रिममज्झिमगेवेजा सत्तिमं च उविरहा। सिमण्णलोगणालिं पासित अणुत्तरा देवा ॥ ३ ॥ २ १६ ॥ सोहम्मीसाणेसु ण भते । ० देवाण क्र्इ समुग्धाया पण्णत्ता १ गोयमा ! पच समुग्घाया पण्णत्ता, तजहा—वेयणासमुग्घाए कसाय० मारणतिय० वेड न्विय॰ तेयासमुग्घाए॰, एव जाव अच्चुए। गेवेजअणुत्तराण आइल्ला तिण्णि समुग्चाया पण्णता ॥ सोहम्मीसाणढेवा० केरिसय खुइप्पिवास पचणुभवमाणा विह-रंति <sup>२</sup> गोयमा । णित्य खुद्दापिवास पचणुभवमाणा विहरंति जाव अणुत्तरोववाइया ॥ सोहम्मीसाणेसु ण भते ! कप्पेसु देवा एगत्त पभू विउव्वित्तए पुहुत्त पभू विउव्वित्तए 2 हता पभ्, एगत्त विउन्वेमाणा एगिदियस्व वा जाव पर्चिदियस्व वा पुहुत्त विउन्वे-माणा एगिंदियह्वाणि वा जाव पिंविदयह्वाणि वा, ताड सखेजाडपि असखेजाडपि सरिमाइपि असरिसाइपि सवदाइपि असवदाइपि रूवाइ विजन्वति विजन्वित्ता अप्पणा जिहिन्छियाइ कजाइ करेंति जाव अजुओ, गेवेजणुत्तरोववाइया० देवा किं एगत्त पभू विडिव्वित्तए पुहुत्त पभू विडिव्वित्तए र गोयमा ! एगत्तिप पुहुत्तिपि, नो चेव ण सपत्तीए विउव्विसु वा विउव्वति वा विउव्विस्सति वा॥ सोहम्मीसाणदेवा० केरिसय सायासोक्ख पचणुभवमाणा विहरति र गोयमा! मणुण्णा सहा जाव मणुण्णा फासा जान गेविज्जा, अणुत्तरोननाड्या अणुत्तरा सद्दा जान फासा॥ मोहम्मीमाणेसु० 48

देवार्गं केरिसमा इड्डी पण्णधा । गोगमा ! महिड्डिया महजुदमा जान महाशामागा इड्डीए प आव अञ्चलो गेवैअञ्चलरा य सक्ते महिश्विमा बाब सक्ते महासुमामा अभिंदा जान शहरिंदा णाम ते वंत्रगंबा पण्यता समणाउसो । ॥ २१० ॥ सोहम्मीसाचा देवा केरिसमा विमुसाय पण्णता ! गोसमा ! बुविहा पण्यता तंत्रहा- वेजिवससरीरा य अवेजन्यसरीरा य शत्य न वे से वेजिवससरीरा ते द्वारनिराहरबच्छा बाव इस विसाओं छजोबेमाणा प्रमासेमाणा बाब प्रसिद्धा तत्व में के तं कवेत निवस्तिया ते व बासरणवसणरहिया पगहरबा विस्पाए पञ्जला ।। सोहरूनीसायेस वं भेते । कृत्येस देवीओ केरिसिवाओ विज्ञसाए प्रव्य-त्ताओं र गोबमा ! दुविहाओ पञ्चलाओं श्रेजहा- केटव्यिक्सरीराओं ध अवेटविक-स्वरीराक्ये व तस्य गं वाको वेटव्यियवरीराक्ये तामा प्रवण्यवदाशाको प्रवण्य-सहामक वरणकं पवरपरिविधाओं चंदाचगाओं चंदविकासिणीओ चंददसमिका-सस्त्री सिंगारामारवारुवेसाको सगय वाब पासल्याको वाब पविश्वाको तस्त्र व वाको समैदम्बियसरीराओ ताको चं कामरणवसणरहियाको पगइत्याओ बिभसाए पन्नताओं एउँछ देवा बंबीओं जरिब बाव शकुओं गेंबेजगदेवा बेरिसवा बिम्-न्ताप १ मोबसा । कामरकमसकरक्रिया एवं देवी वरिय सावियक्तं प्रश्नात्वा निम्साए पञ्चला एवं अनुसरानि ॥ १९८ ॥ चोहम्मीधानेस देवा केरिसए कामभीनं पक्छानवमाना विष्ट्रेरि । गोयमा । इहा सहा इहा बना बाद पासा एवं जाव गेकेका अनुसरोक्ताप्रयानं नवस्तरा सता जाव अनुसरा शासा ॥ १९५ ॥ ठिई सम्मेर्सि भानिसम्बा वेनिताएनि क्रमंतर वर्मत काता जे वर्डे गच्छेरी प्र सामित्रको n २२ n सोहरूमीसानंत गं शेर्च ! क्रमेश सम्बन्धना सम्बन्धना बार सत्ता पुरुषिकाह्यत्ताए जान कनस्यद्वकाह्यताए देवताए देविताए आसमसम्ब आव मंडोक्परणताय स्वक्रिप्या <sup>३</sup> हता गोवमा । जस्तई व्युवा अर्यतन्त्रो सेरेह बच्चेम एवं चेव णवरि नो चेव ने बनिताय जाव गेनंकता अनुतरीवग-इएक्सि एवं को क्षेत्र व्य विकास । ऐसं व्या ॥ २२९ स नेरहनार्ग भेते । केरान्यं कार्क दिई पञ्चला है मोजमा ! बहुवेचे इस बाससहस्ताई उद्दोरेजे तेतीए साग-रोममहं, एवं सम्मेरि पुष्पा विविक्ताकोनिनाणं वहनेयं भरोम् उक्तेरेणं विवि परिज्ञीयमात्रं, एवं मजुरसाजनि वेवालं बहा गेरहवालं ॥ वेवयेरहवाय जा लेव दिहे समेव समिद्वाना दिरिक्यामीनिवस्स व्यक्तिनं अदीसङ्कृतं समीरेनं वनसह कासी सङ्ख्ये नं नंदी । स्वस्तिति कामनो केमनिर होए । गोथमा । सरमोनं क्तोमहत्तं बहोतेचं तिथि पश्चिमोनमार्यं पुरुषशोविपुतृत्तमस्मवियारं ॥ नैरहनस्पुरुष

देवाण अतरं जहनेणं अतोमु॰ उक्कोसेणं वणस्सइकालो । तिरिक्खजोणियस्स अतरं जहनेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेण सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेग ॥ २२२ ॥ एएसि ण भते ! णेरइयाण जाव देवाण य कयरे॰ १ गोयमा ! सन्वत्थोवा मणुस्सा णेरइया अस॰ देवा अस॰ तिरिया अणतगुणा, सेत चउन्विहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ॥२२३॥ वीओ वे॰ देवुद्देसो समत्तो ॥ तच्चा चउन्विहपडिवत्ती समत्ता ॥

तत्थ ण जे ते एवमाहसु-पचिवहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ते एवमाहंसु, त०-एगिंदिया वेइंदिया तेइदिया चर्डारेदिया पिंदिया। से कि त एगिंदिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा-पजत्तगा य अपजत्तगा य, एव जाव पंचिंदिया दुविहा प०, तं ---पजत्तगा य अपजत्तगा य । एगिंदियस्स ण भते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता 2 गोयमा। जहनेण अतोमुहुत्तं उद्दोसेण वावीस वाससहस्साई, वेइदिय० जहनेण अतोसु ॰ उक्कोसेण वारस सवच्छराणि, एवं तेइदियस्स एगूणपण्ण राइदियाण, चर्डरिंदियस्स छम्मासा, पर्चेदियस्स जह० अतोमु० उक्वोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइ, अपजात्तएगिंदियस्स ण० केवइय काल ठिई पण्णता 2 गोयमा ! जहन्नेण अतोस् ० उक्कोसेणवि अतो॰ एव सन्वेसिंपि अपजत्तगाण जाव पंचेंदियाण, पज्जेतिगिंदियाण जाव पचिन्दियाण पुच्छा, गो०! जहन्नेण अतो० उक्को० वावीस वाससहस्साई अतोसुहतू-णाइ, एव उक्कोसियावि ठिई अतोमुहुत्तृणा सन्वेसिं पज्जताण कायव्वा ॥ एगिंदिए ण भते ! एगिंदिएत्ति कालओ केविचर होइ १ गोयमा ! जहन्नेण अतोस् ० उद्दो॰ वणस्सइकालो । बेइदिए ण भते ! बेइदिएत्ति कालओ केवचिर होइ १ गोयमा ! जह ॰ अतोमु ॰ उक्कोसेण सखेज काल जान चर्डिरिए सखेज काल, पचेंदिए ण भते ! पचिंदिएति कालओ केविचर होइ १ गोयमा ! जह अतोमु ० उक्को ० साग-रोवमसहस्स साइरेग ॥ अपज्जत्तएगिदिए ण भते । कालओ केवचिर होइ १ गोयमा ! जहन्नेण अतोमु॰ उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त जाव पचिंदियअपज्जत्तए । पज्जत्तगएगिंदिए ण भते !० कालओ केविचर होइ <sup>2</sup> गोयमा ! जहन्नेण अतोसुहुत्त उक्कोसेण सखिजाड वाससहस्साइ । एव बेइदिएवि, णवर सखेजाइ वासाइ । तेइदिए ण भते । सखेजा राइदिया। चउरिंदिए ण० सखेजा मासा। पज्जत्तपचिंदिए० सागरोवमसय-पुरुत्त साइरेग ॥ एगिंदियस्स ण भते ! केवइय काल अतरं होइ <sup>2</sup> गोयमा ! जह-ण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दो सागरोवमसहस्साइ सखेजवासमञ्भहियाइ। वेइदियस्स ण० अतरं कालओ केविचर होइ  $^{2}$  गोयमा ! जहण्णेण अतोसुहुत्त उक्कोसेण वणस्पड्-कालो, एव तेइदियस्स चर्जिदियस्स पर्चेदियस्स, अपजत्तगाण एवं चेव, पजत्त-गाणिव एव चेव ॥ २२४ ॥ एएसि ण भते । एगिंदि० वेइ० तेइ० चउ० पिंच-१६ सुत्ता०

सम्बत्नोवा पचरिना पचरित्रमा निरोसाहिया तहेरिना निरोसाहिना नेहेरिया निरो साहिया प्रतिदिया अवतनुवा । एवं जपकतनार्य सन्यत्वोषा पंचदिया अपवस्ताना चर्रितिया अपन्तामा विशेशाहिया तेइंबिया अपन्तामा विशेशाहिया वैद्विया भाग्यतमा विरोधादिया एगिविया व्यवसमा वर्णसमुका सहैविका अप वि ॥ सम्बत्योवा कर्रोरेविया पजलमा पेथेविया पजलमा निर्सेसाहिया वेईविवयजलमा निरेमाद्विया तेर्देविक्यनामा विरेसाद्विया एपिनिवयनामा नर्गतनुना सर्देविया पजारागा विसेसातिया n एएसि में अंते ! सहिद्यार्थ पजारागक्षपजारागां कहरे > हिंतो 🧍 गोयमा । सन्वस्थीमा सहिदया अपजलगा सहिदया पळलगा संकेळ्याचा । एवं प्रतिविधानि ॥ एएछि भै संते । बेइविधार्थ प्रमत्ताप्रमत्त्रगार्थ करो १ जितो अप्पा वा बहुया वा द्वारा वा विसंसाहिया वा <sup>इ</sup> गोक्सा ( सम्बत्वोवा वेइदिया प्रकास अपजलगा असंबेक्युणा यूने वेशिनवार्गरिश्यपंचीरशावि ॥ यूयांत मे भेता । एनिवियानं वेडीय लेडीय चलरिवि पविविधार्य प्रमानानं अपजानान य करे २ ं गोजमा ! सन्यत्योगा चउरिविया फजनगा वंधेविया फजनगा विसे-साहिया बेहरिया प्रवासा विसेसाहिया रोईदिया प्रवासा विसेसाहिया प्रवीस्था क्यक्तामा कार्यकेक्युमा कर्तरिवेदा अध्यता विवेदाहिया वेदेविकापकता विवे-साबिया चेत्रेविया वापवाता निर्शेशाविया एगिवियावप्रवाता वार्पेस्पुना सहित्रा भपनता विरेताक्षिका एगिवियमनता राजेक्याचा सर्वियमनता विरेताक्षिका एवं दिया विसेसाहिया। सेतं पंत्रविद्धा संसारसमात्रकामा जीवा प अ २९५ अ बाउत्था पंचविता परिवत्ती समसा ह तत्व वे से ते एकमार्क्षक्र-क्रामिका पंचारसमावन्त्रमा जीवा प ते एकमार्क्षक तबहा-पुत्रविकाहना जानवाहना संट बाउ वणस्पद्वकारमा सम्बद्धा ॥ से िर्म पुत्रमि । पुत्रमि युनिका पञ्चला तं —<u>प्रा</u>ह्मपुत्रनिकाहमा नानरपत्रनिरा इया सहसपुर्वनिकादया दुनिहा पञ्चला तंत्रहा—पञ्चलमा य अपञ्चलगा न पर्व बाजरपदमिकाह्यानि एव वस्तवार्ण नेएलं आसरोजवासकारसङ्ख्या नेवन्ताः।

के कि ते तसकाहका <sup>३ ३</sup> दुविहा प्रमाता र्तजहा---पञ्चतमा स अपज्ञतामा स ॥ २२६ ॥ पुष्ठविकादयस्य वं गेरो ! कादाने वासे ठिई प्रवणता ! गोममा ! भई न्त्रेषं अंदोस्पृद्वतं स्वासिणं वाबीस वातसङ्ख्यातं, एवं सन्वेतिं दिई वेजना तमकाइक्स जहनेनं नतीमुहुर्गं बक्तेमेनं तेतीयं सागरीनमतं, जनकामार्थ सब्बेर्ति बहुकेच्छि उद्योसेणनि अतीनुहुनं पञ्चतगार्व सम्बेर्नि उद्योसिना विर्व अतोमुहुत्तूणा कायव्वा ॥ २२७ ॥ पुढविकाइए ण भते । पुढविकाइएत्ति कालओ केविचर होई <sup>२</sup> गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त उद्घोसेण असखेज काल जाव अस-खेजा लोया। एव आड० तेउ० वाउक्काइयाण वणस्सङकाइयाण अणतं काल जाव आविलयाए असखेजइभागो ॥ तसकाइए ण भते । जहन्नेणं अतोमु॰ उद्यो-सेण दो मागरोवमसहस्साइं सखेज्जवासमञ्महियाइ। अपजन्तगाण छण्हवि जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त, पजत्तगाण—'वामसहस्मा संखा पुढविदगाणिलतहण पजाता । तेस राइंदिसखा तससागरसयपुहुत्ताइ ॥ १ ॥' पजातगाणवि सञ्वेसिं एव ॥ पुढविकाइयस्स ण भते ! केवइयं काल अतर होइ<sup>2</sup> गोयमा ! जहनेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणप्फइकालो, एव आउतेउवाउकाइयाण वणस्सइकालो, तसकाडयाणवि, वणस्सङ्काइयस्स पुढविकालो, एव अपज्जत्तगाणवि वणस्सङ्कालो, वणस्सईणं पुढविकालो, पजन्तगाणिव एव चेव वणस्सइकालो, पजन्तवणस्सईणं पुढिवकालो ॥ २२८ ॥ अप्पावहुय-सन्वत्योवा तसकाइया तेउकाइया असखेजागुणा पुढिवकाइया विसेसाहिया भाउकाइया विसेसाहिया वाउकाइया विसेसाहिया वणस्स-इकाइया अणतगुणा एव अपजन्तगावि पजनगावि ॥ एएसि ण भते ! पढविकाइयाण पज्जतगाण अपज्जतगाण य कयरे २ हिंतो अप्पा वा एव जाव विसेसाहिया वा 2 गोयमा ! सन्वत्थोवा पुढविकाइया अपजत्तगा पुढविकाइया पजत्तगा सखेजगुणा, एएसि ण भते ! आ० सञ्वत्थोवा आउकाइया अपजत्तगा पजत्तगा सखेजगुणा जाव वणस्स-इकाइया० सन्वत्थोवा तसकाइया पजत्तगा तसकाइया अपजत्तगा असखेजगुणा॥ एएसि ण भते ! पुढविकाइयाण जाव तसकाइयाणं पजत्तगअपजत्तगाण य कयरे २ हिंतो अप्पा वा ४ 2 गो० ! सन्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असखेजगुणा, तेउकाइया अपजता असखेजगुणा, पुढविकाइया आउकाइया वाउ-काइया अपजतगा विसेसाहिया, तेउकाइया पजतगा सखेजगुणा, पुढविआउवाउ-पजत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपजत्तगा अणतगुणा, सकाइया अपजत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पजतामा सखेजगुणा, सकाइया पजतामा विसेसाहिया ॥ २२९ ॥ सुहमस्स ण भते ! केनइय काल ठिई पण्णत्ता १ गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अतोमुहुत्तं एव जाव सुहुमणिओयस्स, एव अपज्जत्तगाणवि पजत्तगाणिव जहण्णेणिव उक्कोसेणिव अतोमुहुत्त ॥ २३० ॥ सुहुमे ण भते ! सुहु-मेत्ति कालओ केविचरं होइ 2 गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेजकाल जाव असखेजा लोया, सन्वेसिं पुढविकालो जाव सुहुमणिओयस्स पुढविकालो, अपजत्तनगाण सन्वेसिं जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त, एव पजत्तगाणवि सन्वेसिं **3 2 3** 

जहरूनेपनि उद्दोसेगनि संतोसहर्त ॥ १११ ॥ सुदूसस्स र्ग संवै । क्रेन्ड्स इस्सं संतर्र होद ! गोक्सा ! जबन्त्रेणं शंतीस उद्यो असंबेजं बार्स कासभी जसंबेजाओ उस्सिम्बन्धोर्यापनीओ बेत्तओ बंगुक्स अस्त्रेन्द्रमायो एवं सुरुभवजस्त्रकार् नस्रामि सहस्रमिकोसस्यवि जाव कर्सबेजा स्रोता कर्सबेज्यस्थानो । प्रश्नविक्रयस्थाने बफ्लडकार्धे । एवं अपन्नतगार्वं पन्नतगार्गवे ॥१३२॥ पूर्वं अप्यानहुर्वं सम्बद्धोत छहमतेजन्मस्या ग्रह्मम्पुरमिकान्या विशेसाहिया छहुमनाजनानः विशेसाहिया छहुम-निजेगा सचकेन्युवा शहरवणस्त्रकाऱ्या क्षर्यस्थुण शहरा विसेशाहिया एवं मनकत्तनार्थं प्रकत्तनार्गवि पूर्वं चेव ॥ प्रपृष्टि में मेरी । स्कूमार्ग प्रकताप्रकतार्थं **९वरे !** गोवमा ! सम्बत्धी**या शहुमा अपन्नतमा शहुमा पन्नतमा संवेत्रपु**चा पूर्व जाब शहरानियोगा ॥ एएसि वं मेंचे । शहरार्थ शहरापुत्रविकाहवार्य जाब प्रहमिमीवाम व प्रवत्ताप्रवता कवरे २ क्विते ! गायमा ! सम्बद्धीया सहस्रवे वकारमा भवजाना श्रामपुर्विकारमा अपजाना विशेशाहिमा श्राम्बाटकप्रजात निरेशाहिया शहमकाज्यपत्रता निरेशाहिका सुदूसरितकाहका पत्रतागा एंकेज्याना मुद्रुपपुरविभाउवारपन्नागा विशेशक्षिका ध्रुप्यविभोगा वापनाया अस्त्रोत्राणा धहुमनिजीया पजतमा रोकेक्गुणा सहस्मनस्टारश्रद्धा अपञ्चतमा अर्णतापा सुद्रमञ्जनमा निरेसाहिया सहमनकारवपनतमा पंकेन्द्रपा सहया पन्नता विसे-साहिया । २३३ ॥ वाबरस्य वे अते । केवहच कार्क दिहे पञ्चला १ गीनमा । महत्त्रेर्य संतोषु अको तेत्रीस सागरीयमधं किई पण्यता पूर्व बादरतमराइन-स्त्रमे बाबएएडमी अङ्ग्यस्त बाबीक्षवाससङ्ख्याई, बाबरबाउस्य सत्त्रवासस्टस्ट बायरहेउस्य हिन्दि रहिर्देश वादरवाहस्य हिन्दि बारसहस्ताई, बायरकर दसकायसहस्तातं, एवं परेज्यसरीरकाजरस्तवि विकोजस्य अवकेनति उद्योगेयनि करतेष्ठ एवं गायरनिव्येवस्ति जपनतार्थं सम्बेति अंदोगुहुत्तं पजतार्थां स्टोसिमा दिश् संदोगुहुत्तृता व्यवस्था सम्बेति ॥ २१४ ॥ वायरे नं संदर्ध सन रेक्ति कासको केमियर होयु विश्वमा । जह अंतो उक्तेसेमं असंदोजं कार्म शक्तेजाओं स्ट्सपिनीभोसिपनीओ कल्प्नो दोत्तओ स्टूबस्स अन्यस्माग्ये कार्यापुरविशाहरामाजाराज्याज पतेलसरीरवागरवणस्ताक्ष्याह्वस्य बायरिनाचेयस्स एएसि अवन्तेनं अंगोस सक्तेचेनं सत्तरि सागरीकमक्रेवानोधैको-संपाईनामी संयाओं अंगुक्तभागी तहा असंखेळा । लोहे य नावरतरुष्ट्रांची सेगाओं नीफी ॥ १॥ उरमध्यित १ सा अनुगर्वपोत्तासम् परिवर्श । बेउनद्विसहरमा राम् आदिया होति समगप ॥ १ ॥ श्रेतोसुहराधासो होद अराजाताण सन्वेसी ॥ पजावामरस्य

य वायरतसकाइयस्सावि ॥ ३ ॥ एएसिं ठिई सागरोवमसयपुहुत्त साइरेगं । तेउस्म सख राई[दिया] दुविहणिओए मुहुत्तमद्धं तु । सेसाण सखेजा वाससहस्सा य सन्वेसिं ॥ ४ ॥ २३५ ॥ अतर वायरस्स वायर्वणस्सइस्स णिओयस्स वायरणिओयस्स एएसिं चउण्हवि पुढविकालो जाव असखेजा लोया, सेसाण वणस्सइकालो । एव पजतगाण अपजत्तगाणवि अतरं, ओहे य वायरतरु ओघनिओए य वायरणिओए य । काळमसखेजातरं सेसाण वणस्सईकालो ॥ १ ॥ २३६ ॥ अप्पा० सन्तरथोवा वायरतसकाइया वायरते उकाइया असखे जगुणा पत्ते यसरीरवायरवणस्सइ० अस-खेजगुणा वायरणिओया असखे० वायरपुढवि० असखे० आउवाउ० असखेजगुणा वायरवणस्सङकाङया अणत्गुणा वायरा विसेसाहिया १ । एव अपज्जत्तगाणवि २ । पजत्तगाण सन्वत्थोवा वायरतेउक्काइया वायरतसकाइया असखेजगुणा पत्तेगसरीरवायरा असखेजगुणा सेसा तहेव जाव वायरा विसेसाहिया ३ । एएसि णं भते ! वायराण पजनापजनाण कयरे २ हिंतो० <sup>२</sup> गो० ! सव्वत्थोवा वायरा पजना वायरा अपजत्तगा असखेजगुणा, एव सव्वे जहा वायरतसकाइया ४। एएसि णं भते ! वायराण बायरपुढविकाइयाण जाव वायरतसकाइयाण य पज्जतापज्जताण क्यरे २ हिंतो ० १ गोयमा ! सन्वत्थोवा वायरते उक्काइया पजनगा वायरतसका-इया पजत्तगा असखेज्जगुणा वायरतसकाइया अपजत्तगा असखेज्जगुणा पत्तेयसरीरवा-यरवणस्सङकाइया पजन्तगा असखेजगुणा वायरणिओया पजन्तगा असखेज० पुढविआउवाउपजत्तगा असखेजगुणा वायरतेउअपजत्तगा असखेजगुणा पत्तेयमरी-रवायरवणस्सइ० अप० असखे० वायरणिओया अपजत्तगा असखे० वायर्पुढवि-भाउवाउअपजनगा असखेजगुणा वायरवणस्सइ० पजनगा अणतगुणा वायर-पजना विसेसाहिया वायरवणस्सइ० अपजना असखेजगुणा वायरा अपजनागा विसेसाहिया वायरा विसेसाहिया ५ । एएिस ण भते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण जाव सुहुमनिगोदाण वायराण वायरपुढिविकाडयाण जाव वायरतसकाडयाण य क्यरे २ हिंतो॰ १ गोयमा ! सव्तत्थोवा वायरतसकाडया वायरतेउकाइया असखेजन गुणा पत्तेयसरीरवायरवण असखे० तहेव जाव वायरवाउकाड्या असखेजगुणा म्रहुमतेउद्घाइया असखे० सुहुमपुढवि० विसेसाहिया सुहुमआउ० वि० सुहुमवाउ० विसेसा० मृहुमनिओया असखेजगुणा वायरवणस्सङकाइया अणतगुणा वायरा विसे-साहिया मुहुमनणस्सडकाडया असखे॰ मुहुमा विसेसा॰, एव अपजत्तगावि पज्तन-गावि, णवरि सव्वत्योवा वायरतेउक्काइया पज्जत्ता वायरतमकाइया पज्जता असखे-ज्जगुणा पत्तेयसरीर॰ सेस तहेव जाव सुहुमपज्जता विसेसाहिया। एएसि ण भते!

ध्रुपाणं नायराज य पञ्चतार्थं अपञ्चताग व क्यारे २ 🕴 गोवमा ! सम्बर्खोना नागरा पजरा नागरा नपनता अधेकेनपुणा प्रहुमा अपजता अधेकेनपुना सुह मपजाता संबेजगुजा एवं शहुमपुबनिवायरपुत्रनि जाव सुद्वमनिजीया वायरनिजीया भवरं पत्तेमसरीरवामरवण सम्बत्वीमा पत्रता कारत्वता शरीकेळ्लुला एवं बावर क्तमाहराणि ॥ सम्बेसि मेरो ! पञ्चतभपञ्चतवार्ण क्रमरे २ हिंतो अप्या वा बहुया वा तुमा था विरोशहिजा था । योथमा । सञ्चल्योचा बाजरतेतकाह्या पञ्चता बायरतंत्र-कार्या प्रजलता शतके मधुना से चेत्र मप्रजलता वर्धके मधुना प्रतिकारियावरव णस्तप्रमप्रमामा अर्थके वायरमिश्रीया प्रमाता अर्थकेल वायरपुट्यि प्रमात बार्च आउकारप्रवाता असेचे बायरतेरकाइक्यप्रवाता बार्चचे प्रतिय अप्रवाता श्रदेशे वादरनियोक्षपणा गर्ध वावरपुरनि मारवारकाइ अपजाला मधंबेज्यामा प्रमुमतेककारमा भएजातमा भर्ग प्रदूरपुरुविमातमातमप्रकात विरोधा सम्मारेककद्वपञ्चलमा चंकेकगुणा सम्मापुत्रविकारकारपञ्चलमा विदेशा-द्वेता प्रसुननिगोवा अपन्यतामा असंकेत्रपुणा शहुननिगोवा पजातमा संकेत्रपुणा वावरवगस्टक्षकर्या पञ्चामा अर्णसमुजा कायरा पञ्चामा विशेशक्रिया वावरवय-स्तद अपन्यता मसंबेज्यामा बाजरा अपनाता विसे बावरा विसेसाद्विया प्रक्रम-क्यस्ट्रकाह्या अपञातामा नसंबेजगुणा शहुमा नपनाता निसेसाहिया शहुमानन स्तरकारमा पन्नता चेकेन्स्युचा स्ट्रमा पन्नतमा विधेसाहिया स्ट्रमा विधेसाहिया u २३७ n कालिका र्ग नेते ! कियोगा परणता ! यावमा ! हिनका नियोग पञ्चला संजहा-- निम्होगा ग निगोदजीवा व । निम्हाना व भेरो ! बहनिहा प्रभक्ता १ गोक्या । दुविहा पः तंत्रहा-यहस्यिकोवा य कावर्गिकोवा स 🏗 क्ट्रममिकोना न संते । क्युनिहा पन्यता <sup>३</sup> गोनमा । दुनिहा पञ्चता वंजहा---पंजातना व अपनातमा व 🛭 वायरविकोशावि बुविहा पञ्चता तंत्रहा-पञ्चतमा व कपज्ञानमा व ।। निक्योकजीमा भी अंदो । सङ्गीमा पञ्चला है गोनमा ! दुनिहाँ क्ष्मणा तक्का सङ्गमनिनीवशीषा स वासरविनोसबीषा स । स्क्रुमनिनोदनीषा दुनिहा प री ---पनतमा थ नपनतमा व । नावरनियोदनीया दुनिहा पक्ता ते --प्रजामा व अप्रजामा व ॥ २३८ ॥ कियोदा र्थ संवे। वृष्णदुवाए 🎁 एकेमा अएकेमा वर्णताः गोयमा । नो सक्षमा अपनेवा नो असेता एवं प्रजाताति अपजात्वावि ॥ शहूयनिगोहा व गेते । रूबद्रयाप् 🕰 ऐके आ अर्थके आ अर्थता ! गो । यो एके आ अर्थके आ नो अर्थता स्र् व्यक्तगामि अपव्यक्तगामि पूर्व नागरामि पञ्चलगामि अपव्यक्तगामि जो सर्वजा

388

सुत्तागमे

असखेजा णो अणता ॥ णिगोदजीवा ण भंते । दन्बद्धयाए कि सखेजा असखेजा अणता <sup>२</sup> गोयमा ! नो सखेजा नो असखेजा अणता, एव पजतावि अपजतावि, एव सुहुमणिओयजीवावि पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि, वादरणिगोदजीवावि पज्जत्तगावि अपजत्तनावि ॥ णिगोदा ण भते । पएसष्ट्रयाए किं सखेजा॰ पुच्छा, गोयमा ! नो सखेजा नो असखेजा अणता, एव पजतगावि अपजतगावि । एवं मुहुमणि-ओयावि पजनगावि अपजनगावि, पएसद्वयाए सन्वे अणता, एवं वायरनिगोयावि पजत्तयावि अप्पजत्तयावि, पएसद्वयाए सन्वे अणता, एव णिगोदजीवा नविवहावि पएसहयाए सन्वे अणता ॥ एएसि ण भते । णिओयाण सहुमाण वायराण पजत-गाणं अपज्जत्तगाण दव्बद्वयाए पएसद्वयाए दव्बद्वपएसद्वयाए कयरे २ हिंतो अप्पा वा वहुया वा॰ १ गोयमा । सञ्वत्योवा वायरणिओयपजतगा दव्बद्वयाए वादर-निगोदा अपजन्ता दव्वद्वयाए असखेजागुणा सुहुमणिगोदा अपजन्ता दव्वद्वयाए असखेजगुणा सहुमणिगोदा पजत्तगा दव्बद्धयाए सखेजगुणा, एव पएसहुयाएवि ॥ दव्यद्वपएसद्वयाए सव्वत्योवा वायरणिओया पजता दव्बद्वयाए जाव सहुमणि-गोदा पजता दव्बद्वयाए सखेजगुणा, सुहुमणिओएहितो पजत्तएहिंतो दव्बद्वयाए वादरणिगोदा पजता पएसद्वयाए अणतगुणा, वायरणिओया अपजता पएसद्वयाए असखे॰ जाव सुहुमणिओया पज्जता पएसद्वयाए सखेजगुणा । एव णिओयजीवावि, णवरि सक्मए जाव सहुमणिओयजीवेहिंतो पजत्तएहिंतो दव्बहुयाए वायरणिओयजीवा यज्ञ० पएसद्वयाए असखेजगुणा, सेस तहेव जाव सहुमणिओयजीवा पज्जता पए-सद्वयाए सखेजगुणा ॥ एएसि ण भते । णिगोदाणं सुहुमाण वायराण पजाताण अपज्जत्ताण णिओयजीवाण सहुमाण वायराण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणं दव्बहुयाए पएसद्वयाए दव्बद्वपएसद्वयाए कयरे २ हिंतो ॰ १ गो ० । सव्बत्योवा वायरणिओया पज्जता दव्बद्वयाए वायरणिओया अपज्जता दव्बद्वयाए असङ्खेजगुणा सुहुमणिगोदा अप० दन्बद्वयाए असखेजगुणा सुहुमणिगोदा पज्ज० दन्बद्वयाए सखेजगुणा सुहु-मणिओएहिंतो दन्बद्वयाए वायरणिओयजीवा पजता दन्बद्वयाए अणतगुणा वायरणि-ओयजीवा अपज्जता दन्बद्वयाए असखेजगुणा सुहुमणिओयजीवा अपज्जता दन्बद्वयाए असखेजगुणा सहुमणिओयजीवा पजता दव्यद्वयाए सखेजगुणा, पएसद्वयाए सब्व-त्योवा वायरणिओयजीवा पजता पएसहयाए वायरणिओयाँ तुं अपजता पएसहयाए असखे॰ सुहुमणिओयजीवा अपज्जत्तगा पएसद्वयाए असखेज्जगुणा झुंहुमणिगोदजीवा पजता पएसद्वयाए सखेजगुणा सुहुमणिगोदजीवेहिंतो पएसद्वयाए वादरणिगोदा पज्जता पएसट्टयाए अणतगुणा वायरणिओया अपज्जत्तगा पएस० असखेज्जगुणा जाव

[ जीवाबीवामिगमे

₹86

मिन्नेवा पन्नता ब्ष्यद्वयाए बायरणियोवा अपन्नता ब्रम्बद्वयाए असेकेक्युचा जाव शुहुमन्तिगोदा पञ्चता वृज्यहुवाए संकेज्युणा शुहुमनिश्येगार्हितो वृज्यहुवाए वायरनि-नोमबीबा पळला व्यवद्वमाप् अणवगुणा सेसा तहेव बाब सुदूमकियोगबीबा पळ-त्तमा बच्चद्वमाए संबेक्साचा सङ्क्षमनिकोयजीवेहिंतो पञ्चतपृक्षितो वच्चद्वमाए वायरनि-भोगजीवा पश्चला पर्यद्ववार अर्थकेन्द्रणा सेसा तहेव बाव सहस्रविधीया पत्रला पएसद्भाग संबन्धाना ॥ धर्त सम्बद्धा संसारसमाबन्धना जीवा प ॥ २३५ ॥ पंथमा छम्बिहा परिचली समत्ता ॥

तरव में अ ते एक्साईनु-सत्तविक्षा संसारसमावन्यमा जीवा प ते एक्साईनु-र्तमद्या-नेरक्या विरिक्तकोणिका शिरिक्तकोणिकीका मुख्या मुलस्सीको देवा

देवीमा ॥ गेरहवस्त दिवे बहनेणं दसवाससहस्ताहं उद्योसेणं देशीसं सागरोबसहं. तिरिक्यजोनिक्स ठिई वहण्येमं संतोमुहत्त स्कोरोर्च दिक्रि परिओक्सर्त, एवं तिरिक्जाबोलिजीएनि मलुरुसायनि मणुरुसीलनि बेबाजं दिई बहा नंदद्वराजं देवीचं अहण्लेण दसवाससहस्याई उद्योगेर्ण पणपण्णपसिओवसाई ॥ नैरहसहेबहेबीचं अवेद ठिउँ नचेव पचिद्रवा। तिरिक्काशेलिए गं संते ! तिरिक्यशोनिएति कासओ केऽकिरे होऽ ! मोयमा ! वहन्त्रेणं करोमुहुत्तं उद्योशेणं वगस्सङ्ख्याः दिरिक्छकोलितीनं जहचेय भवीम उत्रो तिकि पविभावपद पुस्परोडिप्रहत्तमस्महियदं । एवं मञ्जरनरस मञ्जरबीपनि ॥ नस्त्रवरस अंतरं वह अंतोमु उक्नेसेनं बकस्तइकासी। एवं सन्याणं दिरिक्यजोत्रिकवजाणं दिरिक्तकोत्रिवाणं कल्लोणं अंतीसः उद्यो सामरोक्तमयनपुरुत्तं साइरेगे ॥ अत्याकदुर्य-मन्प्रत्योगाओ यनुस्तीओ अनुस्ता अस-केल्युगा बेरहमा वर्धनेक्युगा हिरिक्यकोनिजीको कस्केल्युगानो देवा बर्धने-अपूना देवीमो एसेज्युनामो विरिक्ताबोधिना वर्णतपुना । सेर्च सत्तिका

मुनारसमाबन्त्रमा बीना पः ॥ ४ ॥ छन्नी सत्ताबिहा पश्चियत्ती समत्ता ॥ हत्य च जे तं पृत्रसाईन्द्र---स्ट्रनिटा संसारसमावन्यमा जीवा प ते पृत्रसाईत ते -पन्मसम्बनेदश्या अपन्यसमयनेदश्या पन्मसम्बनिदिस्यग्रेषिया अरन्यसम क्षतिरिक्तजोषिया प्रत्मसम्बद्धास्मा अपद्रम्यसम्बद्धाः पद्रमसम्बद्धाः अपटमस-मगरवा ॥ पटमसमनगरवरम भ भंते । केवार्व काल दिङ् पत्रमा ! धोममा ! पन्मसमयभेद्रसस्य बहु एई समय उक्को एई समयं अपद्रमानसभैदरमस्य वह दगवामगहम्मात् समञ्ज्ञातं बढोग्रेणं वंतीलं शामरोत्रमातं समञ्जातं । पटममस्यनिरिक्राजीजिक्तम बद्द एउँ समये बढो एउँ समर्व अपरामनस्यनि

रिक्खजोणियस्स जह॰ खुड्ढागं भवग्गहण समऊण उक्को॰ तिन्नि पलिओवमाइ समऊणाई, एव मणुस्साणवि जहा तिरिक्खजोणियाण, देवाण जहा णेरइयाण ठिई ॥ णेरइयदेवाण जचेव ठिई सचेव सचिद्वणा दुविहाणवि । पढमसमयतिरिक्खजोणिए ण भंते । पढ० कालओं केविचर होइ १ गोयमा । जह० एक समय उक्को० एक समय, अपढम॰ तिरिक्खजोणियस्स जह० खुड्डाग भवम्गहण समऊण उक्कोसेण वणस्सङ्कालो । पढमसमयमणुस्साण जह० उ० एक समय, अपडम० मणुस्साण जह० खुड्डाग भवग्गहण समऊण उक्को० तिन्नि पिलओवमाइ पुव्वकोन्डिपुहुत्तमन्भिहियाइ॥ अतर पढमसमयणेरइयस्स जह० दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमञ्भिहयाई उक्को० वणस्सङ्कालो, अपढमसमय० जह० अतोमु० उक्को० वणस्सङ्कालो । पढमसमय-तिरिक्खजोणियस्स जह० दो खुङ्गागभवगग्हणाइ समऊणाइ उक्को० वणस्सइकालो, अपडमसमयतिरिक्खजोणियस्स जह० खुङ्काग भवग्गहण समयाहिय उक्को० सागरोव-मसयपुहुत्त साइरेग । पढमसमयमणुस्सस्स जह० दो खुड्ढाइ भवग्गहणाइ समऊणाइ उक्को वणस्सङ्कालो, अपढमसमयमणुस्सस्स जह० खुड्ढाग भवग्गहण समयाहिय उको॰ वणस्सङकालो । देवाण जहा नेरङ्याण जह० दसवाससहस्साई अतोमुहुत्त-मञ्महियाइ उक्को० वणस्सङ्कालो, अपढमसमय० जह० अतो० उक्को० वणस्सङ्-कालो ॥ अप्पाबहु॰ एएसि ण भते। पढमसमयनेरइयाण जाव पढमसमयदेवाण य कयरे २ हिंतो ॰ १ गोयमा ! सञ्वत्थोवा पढमसमयमणुस्सा पढमसमयणेरइया असखेजगुणा पढमसमयदेवा असखेजगुणा पढमसमयतिरिक्खजोणिया असखेज-गुणा ॥ अपढमसमयनेरइयाण जाव अपढमसमयदेवाण एव चेव अप्पवहु ः णवरि अपडमसमयतिरिक्खजोणिया अणतगुणा ॥ एएसि ण भते । पडमसमयनेरइयाण अपडम॰ णेरइयाण कयरे २ १ गोयमा! सञ्वत्थोवा पढमसमयणेरइया अपडम-समयनेरइया असखेज्ञगुणा, एव सन्वे ॥ एएसि ण भते ! पढमसमयणेरइयाण जाव सपटमसमयदेवाण य कयरे २ <sup>२</sup> गोयमा ! सन्वत्थोवा पढमसमयमणुस्सा अपडमसमयमणुस्सा असखेज्ञगुणा पढमसमयणेरइया असखेज्जगुणा पढमसमयदेवा असखेजगुणा पढमसमयतिरिक्खजोणिया असखेजगुणा अपढमसमयनेरइया असखे-जगुणा अपढमसमयदेवा असखेजगुणा अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणतगुणा । सेत्त अडविहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णता॥ २४१॥ सत्तमा अडुविह-पडिवत्ती समत्ता॥

तत्य ण जे ते एवमाहसु-णविवहा समारसमावण्णमा जीवा प० ते एवमाहसु, त०-पुढविकाडया आउक्काइया तेउकाइया वाउक्काडया वणस्सङ्काइया वेददिया तेष्ठिया व्यवस्थित पंजीवता ॥ किष्ठै सम्बोरी मानियम्बा ॥ पुरुषिकाष्ट्रमान संविद्धणा पुरिवासो जाव वाटकाइयाणं वणस्ताहेणं वणस्ताहकाओ वेइंदिवा तेइंदिया भवरिविया संक्षेत्र कार्यः पंजीवियार्गं सागरीयमसहस्यं साहरेर्गं ॥ संवरं सम्बेसिं सर्वतं कार्सः वजस्यक्रमाक्रमार्जे असेकार्जे कास्त्र ॥ अप्यानहृतः सम्बर्णोणा पंजितिया पर्दारिका विशेषाहिया शिक्षीया विशेषाहिया विशेषाहिया विशेषाहिया शेराहिया अर्थने पुरनिश्च काउ बाउ विसेसाहिया वगरसङ्काङ्मा वर्षसमुना । ऐसं प्रविद्वा संनारसमाबन्दमा बीबा पञ्चला ॥ १४९ ॥ अद्भाग जयबिहपश्चित्रची समचा ॥ तन्त्र ज जे ते एवमाइंछ-वसनिका संसारसमावन्त्रमा जीवा प ते एवमाइंस तंत्रका---पदमस्तवएरिविका अपन्यससम्बद्धिविका पदमसम्बद्धिका आप्रक्रससम्ब वेर्द्राह्मा जाव पदमसमयपंचित्रया अण्डमसमवर्पचित्रया परमसमयप्निदियस्य ध भते । केन्द्रवं कालं ठिई फल्कता रे गोबना । जहानेच एकं समर्थ उद्दो एकं अनक्त समयएगिवियस्स बङ्ग्लेब बुद्वार्य अवस्माद्यां समक्रमे उद्यो वाबीसं बाससङ्ख्यादं समञ्जाहं, एवं सम्बन्धि पद्मससम्बन्धकं बहुण्येणं एको समको उद्योगेणं एको समजो जनवम बहन्नेगं स्थानं भवमाहर्ण समजर्ण उडोसेगं का बस्स ठिई सा समस्या जाब पेक्सियार्ज तेत्रीसं सागरोबमाई समस्याह ॥ संविद्वमा पद्मानमा क्स्य बहुम्लानं एउं. समर्थ उद्योसेणं एकं समर्थ अध्याससममार्थ बहुन्मेर्थ स्थानं महरगड्ड समजर्म सकारीण एगिदियाणं बणस्सक्रमसे वेडेश्यरेड्दियक्दरिदेशाणं संबेजं कार्यः पंचित्राणं सामरोकासहस्सं साहरेमं ॥ पद्मसमनएगिदिवाणं मेते ! कालको केव्ह्य कर्तर होत्र । गोतमा । जहकेनं दो प्रशासकमाहणहं समक्रमाई उड़ी अपस्यक्रमा अपत्रम एगिदिस अतर जहन्मेर्ग स्ट्रार्ग सबसाहर्ज समक द्वियं बजी हो सामगेषमसहस्थातं संधेजनासमस्माद्वेयतं, ग्रेसाणं सम्बन्धि पाम-समह्यार्च मतर वह हो रहाई अवग्यहनक समजगढ़ उही वजस्मह्वाओ अपन्मसमद्यानं रोसाणं जहकीणं गुप्तास समस्माहकं समदाहियं एको वयस्मह कान्ध्रे । पदमसमद्रनाचे सम्बेसि सम्बन्धीना पदमनसम्बचेत्रीरमा पदम अउरिविया विसेसाहिका एउम चेइंदिका निसेसाहिका प नेइंदिया विसेसाहिका प एगिरिका विसंगाहिया । एवं अपन्यसमस्याचि जन्मी अपन्यसस्यवर्गिरिया अर्चगणुन्म । बोर्खं अप्पत्रष्टु सम्बरयोगा रण्यसम्बर्गितिया अर्णम्यसम्पर्धिदेश अर्पत्यामा सेसाणे सम्बरधांना परमसमहवा अपरामः असंबेजनुष्या ॥ एप्ति वे भेते । पण्मसमन पुरितियाचे अपटमरासंयप्रितियाचे जाव अपन्मसम्बद्धिरवाण व अपरे गोदमा ! सम्बत्धोवा परमामसवर्पवेदिया पटमामसवादिदेश विमेगाहिया परम-

समयतेइदिया विसेसाहिया एव हेट्ठामुहा जाव पढमसमयएगिंदिया विसेसाहिया अप-ढमसमयपचेंदिया असखेजगुणा अपढमसमयचउरिंदिया विसेसाहिया जाव अपढम-समयएगिंदिया अणतगुणा ॥ २४३ ॥ सेत्त दसविहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता. सेत्तं ससारसमावण्णगजीवाभिगमे ॥ नवमा दसविहा पडिवत्ती समत्ता॥

से किं त सव्वजीवाभिगमे <sup>2</sup> सव्वजीवेसु ण इमाओ णव पडिवत्तीओ एवमाहि-जांति एगे एवमाहसु-दुविहा सव्वजीवा पण्णता जाव दसविहा सव्वजीवा पण्णता ॥ तत्थ ण जे ते एवमाहसु-दुविहा सञ्वजीवा पण्णत्ता ते एवमाहसु, तजहा--सिद्धा चेव असिद्धा चेव इति ॥ सिद्धे ण भते ! सिद्धेत्ति कालओ केविचर होइ १ गोयमा ! साइए अपज्जवसिए ॥ असिद्धे ण भते ! असिद्धेत्ति० १ गोयमा ! असिद्धे दुविहे पण्णते. तजहा-अणाइए वा अपज्जवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए ॥ सिद्धस्स ण भते ! केवङ्काल अतरं होइ <sup>१</sup> गोयमा । साइयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अतर ॥ असि-द्धस्स ण भते ! केवइय अतरं होइ <sup>१</sup> गोयमा ! अणाइयस्स अपज्जवसियस्स णत्यि अतर, अणाइयस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अतर ॥ एएसि णं भते ! सिद्धाण असि-द्धाण य कयरे २ 2 गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा असिद्धा अणतगुणा ॥ २४४॥ अहवा दुविहा सन्वजीवा पण्णत्ता, तजहा—सइदिया चेव अणिदिया चेव । सइदिए ण भते !० कालओ केविचरं होइ 2 गोयमा ! सइंदिए दुविहे पण्णते, त०-अणाइए वा अपज्जवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए, अर्णिदिए साइए वा अपज्जवसिए, दोण्हवि अतर नित्य । सव्वत्योवा अणिदिया सईदिया अणतगुणा । अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तजहा—सकाइया चेव अकाडया चेव एव चेव, एव सजोगी चेव अजोगी चेव तहेव, [एव सलेस्सा चेव अलेस्सा चेव ससरीरा चेव असरीरा चेव] सचिद्वण अतर अप्पावह्य जहा सइन्दियाण ॥ अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तजहा— सवेदगा चेव अवेदगा चेव ॥ सवेदए ण भते ! सवे० १ गोयमा ! सवेदए तिविहे पण्णत्ते, तजहा-अणाइए अपज्जवसिए, अणाइए सपज्जवसिए, साइए मपज्जवसिए, तत्थ ण जे से साइए सपज्जवसिए से जह॰ अतोमु॰ उक्को॰ अणंत काल जाव खेत्तओ अवह पोग्गलपरियह देस्णं ॥ अवेदए ण भते ! अवेदएत्ति कालओ केव-चिर होइ <sup>2</sup> गोयमा । अनेदए दुनिहे पण्णते, तजहा—साइए वा अपज्जनसिए साइए वा सपज्जवसिए, तत्थ ण जे से साइए सपज्जवसिए से जहण्णेण एक समय उद्यो० अतोमुहुत्त ॥ सवेयगस्स ण भते ! केवडकाल अतर होइ १ गोयमा ! अणाइयस्स अपज्जवसियस्स णित्य अतर, अणाइयस्स सपज्जवसियस्स नित्य अतर, साइयस्स सपज्जवितयस्स जहण्णेण एक समय उक्वोसेण अतोमुहुत्त ॥ अवेयगस्स ण मते !

**जीवाजीवा**मिगमे

केनस्यं कार्स बोतरं होह र गोनमा ! साहयस्य वापनगरियस्य जिला बांतर, साह-मरस सप्तम्मक्तिमस्य वह अंदोशु उन्नोसेणं भगंदी कार्न वाव शवर्ष पोमाका-रिगर्द रसूर्ण । अप्याबहुर्ग सम्बद्धीना अनेगमा सनेगमा अर्थतमुना । एवं सक्काई चेन सञ्चाई चेन २ जहां सबैनमें तहेन माणियम्ने ॥ भहना बुनिहां सम्बजीना प तं -सकेसा य मध्या य पदा भविद्या विद्या समात्वीमा मध्या सहेसा सर्वसा B २४५ B सहका जाजी जब अल्यांनी जेब B जाजी मंत्री ! जाजिति कास्त्री ! गोयमा । जानी दुविह पनले त -साहए वा वपजवित सहए वा सपजवित. तत्व न से से सद्दर् सपजनस्थर् से कहणोर्च संतोमहत्त उड़ोरेजं सावद्विसागरी-नमाई याहरेगाई, अञ्चाकी बहा समेदगा ॥ नामिस्स शंसर अहजोर्च अंतीसङ्कर्त उद्योरिंग क्यांत कार्क अब्बूं पोस्पळमरियां इसूजं । अन्त्रामिस्त वोण्डाव आह्यार्थ मन्पि भतर साइवस्स सपनवसियस्य व्यक्तियं भंतीमु बद्रोसेणं सबद्धि साय रोबमाइं सुद्धरेगाई । अध्याबद्धर्य-सम्बन्धेवा गांची बन्नाची जनतसुधा ॥ अहवा इतिहा सम्बद्धीया प्रशता तं -सामारोक्तता व बागामारोक्ष्यता व चेत्रिह्या अन्तरं न अक्रमेनं उद्दोशंगवि अन्तोशक्तं मध्याबह सागारी संबे ॥ २४६ ॥ सरना दुनिका सम्बजीना पर्याता र्तनकः—आहारणा पेन समादारया पेर **॥** माहारए गं मंत्र ! जान केनकिरं श्लीह ? गोयमा ! माहारए पुनिहे पण्यते । तंत्रहा---छत्रमत्यभादारए व केवकिमादारए म अतमत्वकादारए मं वान केवियर देव ! मोससा ! ऋक्षीर्ण क्ष्मार्ग सवस्माहर्ण बुसमकर्ण तका असंबेज काल जाव कारुओ बेताओं अपुनस्य अधेककारमार्ग । केविकशाहारए वे बाद केवियर होड ? गोनमा ! का अंत्रीम उद्यो वेस्चा पुरुषकोकी । काशहारए में भेते । कहनित्रे । गोनगा भगाषारप् दुनिहे गण्यतः राजहा-स्वयाध्याणगाहारप् य केमस्थिमगाहारप् य क्षत्रमत्वकाणाहारए कं बाब केमबिए होह ? गोजमा ! व्यक्तीर्थ एवं एसर्थ उद्देशिय वो समग्रा । केनकिमभावारए विश्वी पञ्जते संख्या-विवादेनकिमपावारए न भगत्वदेवकिञ्चाहारए य ॥ शिवकेवकिभवाहारए वं भेरो । कलको केविवर होत्र १ जो । शहर अपन्नवसिए ॥ अवस्वकेनविज्ञनाश्वरए में असे ! कर्मिहे पन्नते हैं गो । अवत्यवेत्रासः वृतिहे पण्यतः तै-श्रवोधिमवत्यवेत्रविक्रमाहारए य अवोधि-भवरबक्रेवक्रिकाशाहारए व । सजीगिमवरवक्रेवक्रिकवाहारए थे गेते ! बामओ केमकिरं १ तो । क्षत्रप्रकारणुद्दोरीणै दिन्नि समना । जानोनिमानत्वनेननि जह अन्। शको भरोमुकुर्गः ॥ क्रवसन्बभादारमस्य केन्द्रमं कार्वः अंतरं । योगमा ! क्ट्रकोर्च एकं समये उन्हों वो समया । केवलिजाहारगरस जंतरे क्रवहण्यान्तु-

क्कोसेण तिण्णि समया ॥ छउमत्थअणाहारगस्स अतर जहन्नेण खुडूागभवग्गहणं दुसमऊण उक्नो० असखेज काल जाव अगुलस्स असखेजाइभाग । सिद्धकेवलिअणा-हारगस्स साइयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अतर ॥ सजोगिभवत्थकेवलिअणाहार-गस्म जह० अतो० उक्कोसेणवि, अजोगिमवत्थकेवित्रजणाहारगस्स णत्थि अतरं ॥ एएसि ण भते ! आहारगाण अणाहारगाण य क्यरे २ हिंतो अप्पा वा बहु० <sup>१</sup> गोयमा ! सन्वत्थोवा अणाहारगा आहारगा असखेजज० ॥ २४७ ॥ अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णता, तजहा—सभासगा य अभासगा य ॥ सभासए ण भते ! सभासएति कालको केविचरं होइ १ गोयमा ! जहण्णेण एकं समय उक्को॰ अतोमुहुत्त ॥ अभासए ण भते ० <sup>१</sup> गोयमा । अमासए दुविहे पण्णत्ते, तं०-साइए वा अपज्जवसिए साइए वा सपज्जवसिए, तत्थ ण जे से साइए सपज्जवसिए से जह० अतो० उक्को० अर्णत काल अणताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ वणस्सइकालो ॥ भासगस्स ण भते ! केवइकाल अतर होइ <sup>१</sup> गोयमा ! जह० अतो० उक्को० अणत काल वणस्सइकालो । अभासग० साइयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अतर, साइयस-पज्जवसियस्स जहण्णेण एक समयं उक्को॰ अतो॰ । अप्पावहु॰ सन्वत्थोवा भासगा अमासगा अर्णतगुणा ॥ अहवा दुविहा सव्वजीवा प०, त०–ससरीरी य असरीरी य० असरीरी जहा सिद्धा, सन्वत्थोवा असरीरी ससरीरी अर्णतगुणा ॥ २४८ ॥ अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णता, तजहा—्चरिमा चेव अचरिमा चेव ॥ चरिमेण भते ! चरिमेत्ति कालओं केविचर होइ 2 गोयमा! चरिमे अणाइए सपज्जवसिए, अचरिमे दुविहें प॰, त॰—अणाइए वा अपज्जवसिए साइए वा अपज्जवसिए, दोण्हिप णिस्थ अतरं, अप्पावहुय-सन्वत्थोवा अचरिमा चरिमा अणतगुणा । [ अहवा दुविहा सन्व-जीवा प॰, त॰-सागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य, दोण्हिप सचिद्वणावि अतरिप जह० अतो० उ० अतो०, अप्पावहु० सव्वत्थोवा अणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता असखेजगुणा ] सेत्त दुविहा सन्वजीवा पन्नत्ता॥ २४९॥ ०॥ तत्य ण जे ते एवमाह्सु-तिनिहा सन्वजीवा पण्णत्ता ते एवमाहसु, तजहा-सम्मदिद्वी मिच्छादिद्वी सम्मा-मिच्छादिद्वी ॥ सम्मदिद्वी ण भते !॰ कालओ केविचरं होइ <sup>2</sup> गोयमा ! सम्मदिद्वी दुनिहे पण्णते, तजहा—साइए वा अपज्जनसिए साइए वा सपज्जनसिए, तत्थ जे ते साइए सपज्जनसिए से जह अतो उको छावर्टि सागरोवमाई माइरे-गाड॰ मिच्छादिद्वी तिविहे अणाडए वा अपज्ञवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए साडए वा सपज्जविसए, तत्थ जे ते माइए सपज्जविसए से जह॰ अतो॰ उद्दो॰ अणत काल जाव अवद्रु पोग्गलपरियद्व देस्ण सम्मामिच्छादिट्ठी जह० अतो० उक्षो०

भेदोमुहत्तं ॥ सम्मदिविस्स अंदरं साहगस्य वर्गावासिक्स्स वन्ति अंदरं साह-

देसूर्प मिन्नाविद्विस्य अणाहयस्य अपञ्चनित्रस्य गरिव क्षेत्ररं, अणाहयस्य सप-व्यवसियस्य नृतिव शेतरे साझ्यस्य सप्यवसियस्य वह अंतो तको क्षाविद्व धागरोषमार्व सावरेगारः, सम्मानिक्वानिहित्स का बंदो उद्यो अर्थातं स्मान वार अक्टू पोमाळपरियष्टं देस्क । अप्पावहु सम्बरकोवा सम्मामिकारिकी सम्म-रिद्वी अर्गतन्ताः मिण्डाचिद्वी अर्थतन्त्राः ॥ २५ ॥ अञ्चनः तिमिता सम्बनीया क्ष्मतः तं-परिता अपरेता मोपरितामोअपरिता। परिते चं संते! ध्रमभो केनियरं होत्र है योक्सा । परिचे हमिहे प्रमाते वें -कायपरिते व संसारपरिचे व । क्रायगरिते में मेरे ! ! गोबमा ! वह बीठोमा सक्षी असंबेर्ध क्रारं कार असंबेर्ध स्रोगा। संसारपरिते ने नेति। संसारपरितेति काक्सो केन्द्रिर होह। यो । व्य मती उद्यो अर्गतं काने बाद अवर्षु पोरनक्यारेयहं देल्यं : जपरिते वं संति ! है गो । जगरेते इबिडे फणते तं -- अवजपरिते य संसारअपरिते य स्वयजपरिते में कर मंत्रो शकी वर्णते कमं बनस्सरकानो ससारापरिते हुनिहे पन्यते तंन्हा-सगाइए वा जरवादिए अजाहर वा सपनादिए, गोपहित्तेजोश्चपरिये साहर अप-अवसिए। ब्रायपरैतास्य मेतरं बद्ध मेत्रो उन्हो बनस्सहनास्मे संसारपरिकल जिल् अनुरं, कामापरित्तस्य का अंतो उद्यो कांक्रेजं कार्स प्रत्विश्वासे । पंतारापरिकृतस्य अवाहमस्य अपन्यत्रमिवस्य वरिष अंतरः अवाहबस्य स्पन्नन-सिनस्य तरिय जंदरे योपरिचनोअपरिचस्यमि गरिव संदर्गः। अप्याबद्वः सम्मन स्थीवा परिता जोपरितानोजपरिता अर्थतसूचा अपरिता अर्थतसूचा ४ २५९ । भहरा दिविद्या सम्बन्धीया प र् वं --यम्तराग नपमत्त्रमा शोपमत्तरागो सपमत्त्रागा प्रजानने में भंते ! ! गोसमा ! चह अंतो उसी सागरीसमस्यप्रकृत साइरेमें ! कारजारों में मंते ! ! गोममा ! बहु जीती उन्हों जीनी भोपजानीजपनाएं भाउए अप्रजानिए । प्रजानस्य सत्तर जह जीतो उन्हों सैतो अप्रजानस्य का अंत्री शको सागरीवमसम्बर्धाः सहरेगं तह्रमरस वस्प अंतरे । अप्पा-वर्षः सम्बन्धीया नोपजासमानोकपञ्चतमा कपञ्चतमा कर्णतम्या पञ्चतमा संवेजन गुजा ॥ २५२ ॥ आह्वा दिनिद्धा सम्बजीया प र्ड--- मुहुमा वाबरा नोध**्**म नोबायरा सहस न मेरे ! शुहुमेति बालमो केनचिर ई गो । बहुप्येने मंटोसुड्रा रहोस्तं अस्त्रेजं क्ष्मं पुरुषिक्रको नावस् उत् असी उद्यो असीवित्र

कर्म जारिकाओं दासणियाँओसपियीमी बाबको बेत्तओ स्थानस सप्रदेशी

भागो, नोसुहमनोवायरे साइए अपज्जवसिए, सुहुमस्स अनर वायरकालो, वायरस्स अतर द्यहुमकालो, तइयस्स नोस्रहुमणोवायरस्स अतरं नित्थ । अप्पाबहु० सन्वत्थोवा नोस्रहमनोवायरा वायरा अणतगुणा सुहुमा असखेज्जगुणा॥ २५३॥ अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तजहा--सण्णी असण्णी नोसण्णीनोअसण्णी, सन्ती णं भते । कालओ ०१ गो०! जह० अतो० उक्को० सागरोवमसयपुहुतं साइरेग, असण्णी जह॰ अतो॰ उक्को॰ वणस्सइकालो, नोसण्णीनोअसण्णी साइए अपज्जवसिए । सिणिस्स अतर जह॰ अतो॰ उन्हो॰ वणस्सङ्कालो, असण्णिस्स अतर जह॰ अतो॰ उक्को॰ सागरोवमसयपुहुत्त साइरेग, तइयस्स णत्यि अतर । अप्पावहु० सञ्चत्थोवा सण्णी नोसन्नीनोअसण्णी अणंतगुणा असण्णी अणंतगुणा ॥ २५४ ॥ अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णता, तजहा-भवसिद्धिया अभवसिद्धिया नोमवसिद्धियानोअभवसिद्धिया, अणाइया सपज्जवसिया भवसिद्धिया, अणाइया अपज्जवसिया अभवसिद्धिया, साइया अपज्जवसिया नोभव-सिद्धियानोअभवसिद्धिया । तिण्हिप नित्य अतर । अप्पाबहु० सन्वत्थोवा अभव-सिद्धिया णोभवसिद्धियाणोअभवसिद्धिया अर्णतगुणा भवसिद्धिया अणतगुणा ॥२५५॥ अहवा तिविहा सव्व० प०, तजहा—तसा थावरा नोतसानोथावरा, तसस्स णं भते ! ०१ गोयमा ! जह ० अतो ० उक्को ० दो सागरोवमसहस्साइ साइरेगाइ, थावरस्स सिचट्टणा वणस्सइकालो, णोतसानोथावरा साइया अपज्जवसिया । तसस्स अतर वणस्तइकालो, थावरस्त अतरं दो सागरोवमसहस्ताइ साइरेगाइ, णोतसणोथावरस्त णित्य अतर । अप्पावहु ॰ सन्वत्योवा ,तसा नोतमानोथावरा अणंतगुणा थावरा क्षणतगुणा। से त तिविहा सञ्बजीवा पण्णत्ता॥ २५६॥०॥ तत्थ ण जे ते एवमाहसु---चउव्विहा सव्वजीवा पण्णता ते एवमाहस्र, तं०--मणजोगी वङ्जोगी कायजोगी अजीगी। मणजोगी ण भते ! े गोयमा। जह ० एक समय उक्की ० अती ०, एव वइजोगीवि, कायजोगी जह अतो उको वणस्सइकालो, अजोगी साइए अपज-वसिए । मणजोगिस्स अतरं जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्को० वणस्सङ्कालो, एव वइजोगिरसवि, कायजोगिरस जह० एक समय उक्को० अतो०, अजोगिरस णिथ अतर । अप्पावहु० सन्वत्थोवा मणजोगी वङ्जोगी असखेजगुणा अजोगी अर्णतगुणा कायजोगी अणतगुणा ॥ २५० ॥ अहवा चउ व्विहा सन्वजीवा पण्णता. तजहा-इत्थिवेयमा पुरिसवेयमा नपुसमवेयमा अवेयमा, इत्यिवेयए ण भते ! इत्यिवेयएति कालओ केविचर होइ? गोयमा! (एगेण आएसेण०) पल्चियसय दस्तरं अद्वारस चोद्दस पिठयपुहुत्त, समओ जहण्णो, पुरिसवेयस्स जह । अतो ।

'उद्रो सागरोगमनवपुहुत्त साइरमं मर्चुनगवेशस्य अह एदं समयं बद्रा अर्जन कार्स बणस्यद्रशाला । अध्येषण् बुविद्दं प - सं -साप्रण् वा अपज्ञारतिष् रााद्रण वा सपजनिम्यु स जह पूर्व स उदा जेनामु । इत्यिवसस्य जेनरं जह अनी उद्यो अन्तरमञ्जासम् पुरितसेयरम जह एवं समर्थ उन्नो अनमग्रद्रमध्ये नपुरमानेयरम अह अंदो उचा शागरीतमसम्पूर्ण साइरंग भवयमी जहा देखा । सप्पानतुः सम्बत्यांना पुरिमानयमा इन्धिनेयमा सेपेकपुणा अधेनमा अर्गतगुका मर्पुनगर्भमता अर्गतगुवा॥ १५४ ॥ अहवा चत्रभिद्दा मन्वत्रीवा परमता तंत्रहा---चक्परंगणी अणस्पुरंगणी सोहिदंगणी केशसरंगणी । सम्पूर्णगणी र्ण भंदी । गोसमा । बद्द अनी उड़ा सागरीसमसद्दस्य साइरेगं असक्तुईमधी हुनिहे पण्यते . र्व =-अणाइए वा अपक्रायाम्य अणाइए वा सपक्रवसिए । ओडिरंसम्बरम जह इपं समर्य उक्को वो छाबद्धा सभारोबमाण मध्यरेगाओ केवस्टरंसजी सहस् अपन्यवसिए ॥ चनन्त्रदेशनिस्य अंतरे बद्ध अंतोम् उद्यो वणस्पद्दरास्त्रं । अन्तरपुरंसणिस्य दुविहस्य मस्य अन्तरं । भोद्वितंसधिन्य बह अंद्रोमु उदार्थनं मणस्यद्वामा । क्षेत्रमर्थलागस्य जात्व अवरं । अध्यावद्वर्य-सम्बादा ओहर्यसपी नन्द्रदंशनी अएंकेजगुना केरकर्गननी कर्णतपुना अवस्तुरंगनी अगतपुना ॥ १ ९ ॥ अहवा चटनिका सम्बदीया प्रणाता राजहा-संज्ञा असम्ब सबगासबदा नोसंबबानाभसबयानासंबदासंबदा । संबद् में भेते ! १ यायमा । बह एकं समये उदा देशमा पुरुषकोडी अधीववा बहा मज्यांनी सेवयासम्प बद अनोम उद्यो बेस्का पुरुषकोडी सोसंबयनोअसंबयनोसंबयसंस्थ साहर भरमविधप, चमनस्य सवयासंजयस्य दोन्दवि अन्त वह अहोतु उका नना पोमानगरियाः वेसूणं असमबस्य जात्रपृषे गरिव कतर साहमस्स सफ्जबसिक्स बाइ एकं स उन्नी बेस्ना पुरमानावी नडरमधस्स गरिप अनर ॥ समामह सम्बत्नोचा सत्रया सम्यासत्रया भसनेजगुना गासंज्यकोनस्थ्यकोसम्बर्धस्य

अक्साई तहा जहा हेट्टा ॥ अप्पावहुय-अक्साइणो मव्वत्योवा माणक्साई तहा अणतगुणा । कोहे मायालोमे विसेसमिहया मुणेयव्वा ॥ १ ॥ २६१ ॥ अहवा पचिवहा सव्वजीवा पण्णता, तजहा---णेर्डया तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा सिद्धा । सिचिट्टणतराणि जह हेट्टा भणियाणि । अप्पावहु० सन्वत्योवा मणुस्सा णेरइया असखेजगुणा देवा असखेजगुणा सिद्धा अणतगुणा तिरिया अणतगुणा । सेत्त पच-विहा सन्वजीवा पण्णता ॥ २६२ ॥ चउत्था स० प० समत्ता ॥

तत्थ ण जे ते एवमाह्म-छिव्वहा सव्वजीवा पण्णता ते एवमाहंसु, तजहा--आभिणियोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जनणाणी केनलणाणी अण्णाणी, आभिणिवोहियणाणी ण भते! आभिणिवोहियणाणिति कालओ केविचर होइ? गोयमा ! जह ॰ अन्तोसुहुत्त उक्को ॰ छाविंद्धं सागरीवमाइ साइरेगाइ, एवं सुयणाणीवि, ओहिणाणी ण भते ! • रे गोयमा ! जह • एक समय उक्को • छावर्डि सागरोवमाइ साइरेगाइ, मणपजनणाणी ण भते १०१ गो०। जह० एक समय उक्को० देसूणा पुन्न-कोडी, केवलनाणी ण भते 10 र गो० ! साइए अपज्ञवसिए, अन्नाणिणो तिविहा प०, त॰--अणाइए वा अपज्जवसिए अणाडए वा सपज्जवसिए साइए वा सपज्जवसिए. तत्य॰ साइए सपज्जवसिए से जह॰ अतो॰ उक्को॰ अणत काल अवस्त्र पुग्गलपरियह देसूण । अतर आभिणियोहियणाणित्स जह० अतो० उक्को० अणत काल अवहू पुग्ग-न्तपरियहं देसूण, एव सुय० अतर० मणपज्जव०, केवलनाणिणो णत्थि अतर, अन्नाणि॰ साइयसपज्जवसियस्स जह॰ अतो॰ उक्को॰ छावर्द्धि सागरोवमाइ साइरेगाइ । अप्पा॰ सन्वत्योवा मण॰ ओहि॰ असखे॰ आभि॰ सुय॰ विसेसा॰ सट्टाणे दोवि तुल्ला केवल० अणत० अण्णाणी अणतगुणा ॥ अहवा छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तजहा— एगिंदिया चेंदिया विंदिया चर्डारेंदिया पर्चेंदिया अणिंदिया। सचिद्वणतरा जहा हेट्टा । अप्पाबद्धय—सव्वत्थोवा पंचेंदिया चउरिंदिया विसेसा॰ तेईंदिया विसेसा॰ वेंदिया विसेसा॰ अणिदिया अर्णतगुणा एर्गिदिया अणतगुणा ॥ २६३ ॥ अहवा छिव्वहा सव्वजीवा पण्णता, तंजहा—ओरालियसरीरी वेउव्वियसरीरी आहारगसरीरी तेयगसरीरी क्रमगसरीरी असरीरी ॥ ओरालियसरीरी णं भते!० कालओ केविचरे होइ <sup>2</sup> गोयमा ! जहण्णेण ख़ुङ्गाग भवग्गहणं दुसमऊण, उक्कोसेण असखेज काल जान अगुलस्स असखेजइमाग, नेउन्नियसरीरी जह॰ एक समय उक्वोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तमन्महियाइ, आहारगसरीरी जह॰ अतो॰ उक्को॰ अतो॰. तेयगसरीरी दुविहे प॰, त०-अणाइए वा अपज्जवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए, एव कम्मगसरीरीवि, असरीरी साइए अपज्जवसिए॥ अतरं ओरालियसरीरस्स जह० १७ सत्ता०

\*46 सुचागमे जीवा जीवा सिगमे एकं समये उको रोगीसं सागरोवमाइं अंदोसुहश्तमकाश्चियाह, वेटव्यियसरीरस्स च्छ भंतो तहो अर्णतं कार्कं वणस्पदकासो आहारणसरीरस्स कह संतो सको अर्थातं कार्यः जान अवश्वं पोरगस्थारियाः बस्या तेन काम्मयसरीरसम् य दुन्द्वि यरिव सेतरं ॥ अप्यानह्नुः सम्बत्नोना आहारमसरीरी केविकारसरीरी मर्चकेन्युपा थोएकिवसरीरी मर्पकेन्युपा असरीरी मर्गतगुवा तेमान्यसगसरीरी बोमि द्वारा अर्गतपुरमा ।। संत कविनदा सम्बनीया यन्तता ॥ १६४ ॥ ॥ तत्व में जे वे एक्सारंक सत्तिहा सम्बजीना प वे एक्साईस वंबदा-धकरि-काइया मातकाइया चेतकाइया बातकाइया वणस्सक्ष्माइया समकाइया अकाइया । संनिद्वर्णतरा ऋष हेद्वा । भप्पानद्व - सन्नत्नोना तसकाहना रोजकाह्या असेकेन-गुना पुत्रनिषक्षमा निसे जाद निसे बाद निसेसा विद्या वर्णनपुना वर्ण-स्सद्देशका अर्थाततुमा ॥ १६५ ॥ अत्या संत्रविद्वा सम्बन्धीया प्रव्यक्ता संबद्धा---क्षत्रकेरमा नीककेरसा कारकेरसा तेरकेरसा प्रमुक्तसा प्रश्नकेरसा क्षकेरसा ॥ कव सेने पं मते ! क्यूब्रेनेति कालमा केवियर होत ! गोबसा ! व अंतो छडी तंत्रीयं सागरोवमादं कतोस्पृहत्तमक्यक्षित्रातं, जीतकेस्से वं क्य अंतो सही वस सागरीवनाई पविभोन्नारस नसंबेक्दमागनन्मक्रिकाई, काउकेस्से न मंते ! ई सी ! मह मंत्री उद्यो तिकि सागरीयमात्रं पविम्योपसस्य असक्षेत्रकमायसम्मद्रिनाहे. वैज्ञान्स में मंते । १ योगमा । वह मा जहां होण्य सागरोनमाई पत्रिकोदमस्स

भरक्षामानामन्मदिनातं, पन्द्रकेरे ग सेते ! ! गामना ! वह अतो वही • इस सागरीनमाइ जीवोलाइतगरनाहियात, शुरुकेचे व संते ! १ गो ! बरुकेचे अती -बह्रोतेचं तेत्रीसं सागरीयमात् अंतोमहत्तमध्यक्तियक, अवेस्से मं मंते ! तार्प मपन्नवसिए ॥ कन्बकेसस्य च गंते। असर कावजो केनविर होर ! गोयमा। वर र्जतो तको तेत्तीचं सागरोजनकं मरोमुहुत्तम एवं नी<del>ककेपस्यति</del> काउके<del>पस्यति</del> तेरकेमस्य में मंते ! अतर का द मोबमा ! बहु अतो रही वमस्पद्राध्ये एवं पम्बुकेसस्यमि धुत्रकेसम्यमि बोन्हमि एवमंतरं, सकेसस्य मं मंते। जीतरं भावन्ते १ गोवना । साइयस्य अपज्यासियस्य जरिय अंतरं ॥ एएसि व अंति । जीवाजं कुन्द्रकेसाणं नीसकेसाज काउके तेउ पाद सुवा अकेसाज सक्यरे ? मोसमा ! सम्बद्धीया ग्रह्मकेरसा पम्हकरसा संकेमगुणा रोउकेरसा सर्सकेमगुणा अवेरसा अर्जल्युचा काष्टकेरसा वर्जल्युचा वीसकेरसा विशेशाहिता क्रम्बेरमा बिछेलाह्निया । छेतं एतमिङ्कः सम्बजीना पत्रता ॥ १६६ ॥ ॥ छत्त्व भं के त एकमार्द्य-सङ्ग्रिकः सम्बजीना रम्पता से एकमार्द्यः, तंत्रहा----आमिथिनोह्निय

नाणी मुय० ओहि० मण० केवल० मङ्अण्णाणी सुयअण्णाणी विभगणाणी॥ आभिणिवोहियणाणी ण भते। आभिणिवोहियणाणिति कालओ केविचर होड 2 गोयमा ! जह ॰ अतो ॰ उक्को ॰ छावट्टिमागरोवमाइ साइरेगाई, एव सुयणाणीवि । ओहिणाणी ण भते । ०१ गोयमा । जह ० एक समय उक्को ० छावद्विसागरोवमाइ साइरेगाइ, मणपजावणाणी ण भते !०१ गोयमा ! जह० एकं स० उक्वो० देस्णा पुव्वकोढी, केवलणाणी णं भते । व गोयमा ! साइए अपज्जवसिए, मङ्अण्णाणी णं भंते । ०१ गोयमा । मङ्भण्णाणी तिविहे पण्णत्ते, त०-अणाङए वा अपज्जवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए साइए वा सपज्जवसिए, तत्थ ण जे से साइए सपज्जवसिए से जह० अतो० उक्को० अणत काल जाव अवष्ट्र पोग्गलपरियट देस्ण, द्वयअण्णाणी एव चेव, विभगणाणी ण भते ! विभंग० ? गोयमा ! जह० एक समय उ० तेतीस सागरोवमाइ देस्णाए पुव्वकोडीए अञ्भहियाइ ॥ आभिणिवोहियणाणिस्स ण भते! अतर कालओ॰ 2 गोयमा! जह अतो । उक्को॰ अणंत काल जाव अवसू पोग्गलपरियद्ट देसूण, एव सुग्रणाणिस्सवि, ओहिणाणिस्सवि, मणपज्जवणाणिस्सवि, केवलणाणिस्स ण भते! अतर<sup>02</sup> गोयमा! साइयस्स अपज्जवितयस्स णित्य अतर । मइअण्णाणिस्स ण भते ! अतर॰ 2 गोयमा ! अणाइयस्स अपज्जवियस्स णित्य अतर, अणाइयस्स सपज्जवसियस्स णित्य अतर, साइयस्स सपज्जवसियस्स जह॰ अतो॰ उक्को॰ छावर्ट्घ सागरोवमाइ साइरेगाइ, एव सुयअण्णाणिस्सवि, विभगणाणिस्स ण मते ! अतर॰ 2 गोयमा ! जह० अतो० उद्घो० वणस्सङ्कालो ॥ एएसि ण भते ! आभिणिवोहियणाणीण द्ययणाणीण ओहि॰ मण० केवल० सङ्अण्णाणीण सुयञ्जणाणीण विभगणाणीण य कयरे०<sup>२</sup> गोयमा! सन्वत्थोवा जीवा मणपज्जवणाणी, ओहिणाणी असखेजगुणा, आभिणिवोहियणाणी द्वयणाणी एए दोवि तुल्ला विसेसाहिया, विभगणाणी असखेजगुणा, केवलणाणी अणत-गुणा, मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य दोवि तुह्ना अणतगुणा ॥ २६७ ॥ अहवा सद्वविहा सञ्वजीवा पण्णत्ता, तजहा---णेरइया तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणि-णीओ मणुस्सा मणुस्सीओ देवा देवीओ सिद्धा ॥ णेरहए ण भते ! णेरहएति कालओ केविचर होइ <sup>2</sup> गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्साइ उ० तेत्तीस सागरो-वमाइ, तिरिक्खजोणिए ण भंते 102 गोयमा । जह अतोमु उक्को वणस्सइ-कालो, तिरिक्खजोणिणी ण भते । १ गोयमा । जह अतो अको तिचि पिलओनमाइ पुन्वकोिंडपुहुत्तमन्भिहियाई, एव मणूसे मणूसी, देवे जहा नेरइए, देवी ण भते !० 2 गो०! जह० दस वाससहस्साइ उ० पणपन्न पालिओवमाइ, सिद्धे \*\*\*

र्ण भेते ! सिकैति । गोजमा ! साहयू अपज्यवसिय । गेरहस्सर व भेते ! अंतर्र कारामो केवियर होही गोनमा । यह अंदो शब्दो वजस्पदकामो दिनिका व्यंतियस्त में गेठे । शंदरं कालको । गोयसा । जह अंतो छक्को सागरोनमस्य-पहुत्ते साहरेगे तिरिक्याबोमिणी में मेते । संतर कासबो केनिवर होड़ रे गोबमा र न्द मेरोसुहूर्त उद्यो वजस्सङ्काओ वर्ष म्ह्युस्तरसदि महारचीएवि वेषस्तरि बेबीएबि विद्वत्स गे भेंदे ! अंदर्र साहनस्य अपञ्चनविद्यस्य वरिव अंतर्र ॥ एएछ र्ण मंद्रे । बेरहवार्ण विरिक्षकोणियार्ण विरिक्षकोणिणीण मनुसार्ण मनुसील देवार्य वेबीर्ण दिद्याण व कवरे 🕴 गोधमा 🛚 सम्बन्धीया मणस्त्रीओ स्वयस्ता अर्थकेञ्चा नैरहवा अर्थकेक्प्रया विकिक्क बोलिशीओ कार्यकेक्प्रयाओं देवा संकेक्प्रया देवीयो संबोद्धापायको शिवा वर्णसमुगा तिरिक्कवोनिया वर्णसमुजा । सेत शहनिका सम्मनीका पञ्चला ॥ २६८॥ ॥ तस्य यं के ते एकमाईश्च-नवनिद्या सम्मनीका प ते एकमाईस तंत्रहा---एगिविया वेंबिया तेंबिया कारिविया मेरहसा भेजिवियारि क्टाबोलिया सक्सा देशा सिद्धा ।। एपियिए वे शंते ! एगिविएति बाबसो बेमिपिरे होद ! योक्सा ! क्या कारोस उद्यो क्यस्य वेंथिए व संते ! गोसमा ! बाह संतो बाहो सबोजो कार्क । एवं तैर्युविएमि वस नेरहना ज संते । ह मो ! वह यस बास्सबस्साई उद्योक चेत्तीसं सागरीकाई, पॅबॅब्स्यितिरिक्चनी-निष् में भेते ! १ गोनमा ! यह अंतो तको विभिन्न पक्तिकोबमाई पुरुवरांकि पुहत्तमक्त्राहिमाई, एवं सम्बंधित वेका कहा नेरहता सिद्धे नं संदे ! है गो । सक्षए अप्रक्रवसिए II एपिनियरस में मेरे । अंतर कालको केवनिर होत्र ! गोनमा ! मह भरो जहाँ हो सागरीयमसहरक्षाई चल्रेजनासमध्यक्रिको नेविनस्स में र्मते ! मतरे ग्रामको केनशिरे होत ? गोनगा ! वह जीतो तहो नवस्तवकामे एव दक्षियस्सनि वर्दरिवयस्सनि नेरायस्सनि वंगैनिवदिरिक्शकोनियस्सनि सन्दर्ध-स्थमि वेक्समि सम्मेरिनेवं अतर भाषिकणं सिक्स वं मेरा। बांटरं कालको ी शो । साइबस्य क्लब्बनस्य गरिव बातर ॥ प्रयस्य र्ग संते । प्रशिद्धनार्य वेदेवे तेषंदि कारियाणं नेरहनाणं वंजीवनतिरिक्षानीवियाणं सक्याणं देवाणं विकाण य क्यरे १ । योजमा ! सम्बर्धीया मधुरसा नेराह्या क्षरीयोजपुता देशा क्यांबेज-गुणा पंचेतियदिरिक्सजोनिया असक्षेत्रगुणा चतरितिया विसेताहिया देविया विसेसाहिया वेडविया विसे सिया समस्तुमा प्रितिया सर्पस्तुमा ॥ २६९ ॥ बहुदा वामिका सम्बन्धीया प्रमाता तंत्रहा-पहससम्बनेरहमा वाप्रसससमयोर इता पद्मसम्मयदिरिज्ञाकोतिना काणामसम्मदिरिक्ताकोणिया पद्मसमयमपुरा

अपहमसमयमणूसा पहमसमयदेवा अपहमसमयदेवा सिद्धा य ॥ पहमसमयणेरइया-णं मते !० <sup>२</sup> गोयमा ! एकं समय, अपढमसमयणेरइयस्स ण भते !० <sup>२</sup> गो० ! जहन्नेण दस वाससहस्साइ समऊणाइ उक्को॰ तेत्तीस सागरोवमाइ समऊणाइ, पढम-समयतिरिक्खजोणियस्स ण भते । ० १ गो० । एक्ष समय, अपढमसमयतिरिक्खजोणि-यस्स ण भते !० <sup>१</sup> गो० | जह० खुड्ढागं भवग्गहण समऊण उक्को० वणस्सङ्कालो, पढमसमयमणूसे ण भते lo १ गो० l एक समय, अपडमसमयमणुरसे ण भते lo १ गो०! जह० खुशुग भवग्गहण समऊण उक्को० तिन्नि पलिओवमाइ पुव्वकोडिपुहुत्तमब्महि-याइ, देने जहा णेरइए, सिद्धे ण भते ! सिद्धेत्ति कालओ केविचर होइ ? गोयमा ! साइए अपज्ञवसिए ॥ पढमसमयणेरइयस्स ण भते ! अतर कालओ० १ गोयमा ! जह० दस वाससहस्साइं अतोमुहुत्तमञ्भहियाइ उक्कोसेणं वणस्सइकालो, अपडमसमयणेरइ-यस्स णं भते! अतर् १ गोयमा! जह अतो उक्को वणस्सइकालो, पढमसमय-तिरिक्खजोणियस्स ण भते ! अतर कालओ॰ 2 गोयमा ! जह॰ दो खुरूगाइ भवग्ग-हुणाइ समऊणाइ उक्को० वण०, अपढमसमयतिरिक्खजोणियस्स ण भते ! अतरं कालओ॰ <sup>२</sup> गो॰ ! जह॰ खुर्रागं भवगगहण समयाहिय उ॰ सागरोवमसयपुहुत्त साइरेग, पढमसमयमणूसस्स जहा पढमसमयतिरिक्खजोणियस्स, अपढमसमयमणू-सस्स ण भते ! अतर कालओ० ? गो० ! ज० खुड्डागं भवग्गहण समयाहिय उ० वण०, पडमसमयदेवस्स जहा पडमसमयणेरइयस्स, अपडमसमयदेवस्स जहा अपडम-समयणेरइयस्स, सिद्धस्स णं भते 1० १ गो० । साइयस्स अपजनसियस्स णत्थि अतरं ॥ एएसि ण भते । पढमसमयनेरइयाण पढमसमयतिरिक्खजोणियाण पढमसमयमण्-साण पढमसमयदेवाण य कयरे० 2 गोयमा ! सव्वत्योवा पढमसमयमणूसा पढम-समयणेरइया असखेजगुणा पढमसमयदेवा अस॰ पढमसमयतिरिक्खजो॰ अस॰। एएसि ण भते ! अपढमसमयनेरइयाण अपढमसमयतिरिक्खजोणि० अपढमसमय-मणूसाण अपढमसमयदेवाण य कयरे॰ 2 गोयमा । सन्वत्थोवा अपढमसमयमणूसा अपढमसमयनेरइया अस० अपढमसमयदेवा अस० अपढमसमयतिरि० अणंतगुणा । एएसि ण भते। पढमस ॰ नेरह्याण अपढमसमयणेरह्याण य कयरे २ 2 गोयमा। सन्वत्योवा पढमसमयणेरइया अपढमसमयणेरइया असखेजगुणा, एएसि ण भते! पढमसमयतिरिक्खजो ः अपढमसमयतिरिक्खजोणि ः क्यरे ः शे गोयमा ! सञ्ब ः पढमसमयतिरि॰ अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणत॰, मणुयदेवअप्पावहुय जहा णेरइयाण । एएसि णं भते ! पढमसमयणेरइ० पढमस०तिरिक्खजो० पढमस०मणूसाण पढमसमयदेवाण अपढमसमयनेरइ० अपडमसमयतिरिक्खजोणि० अपडमसमयम-

१६२ सुकाराने [वीनाजीवासिमाने प्रसाप अध्यक्षमान्त्र स्थाप अध्यक्षमान्त्र स्थाप अध्यक्षमान्त्र स्थाप अध्यक्षमान्त्र स्थाप स्थाप अध्यक्षमान्त्र स्थाप स्थाप अध्यक्षमान्त्र स्थाप स्थाप अध्यक्षमान्त्र स्थाप स्

गोयना ! वह अंदो उक्का करांके के कार्ज असके आओ प्रस्मिणीओ सिप्पणीओ काममो चेतमो नर्रकेमा स्रोता एवं जाउरोजवातकार्य, कास्सरकार्य व मेरो है मोजना । जह अंतो उसो चनरसहसाको वॅदिए च मंते । विशे । जह अंतो तको संक्षेत्रं कार्क वर्ष तेर्द्रविविष अवस्थितिय में संते ! १ क्षेत्रमा ! जब अंतो उड़ी सामरोबमसबस्यं साइरेगं कविष्ठिए जे शता है गी । सहर अपन्नवसिए ।। प्रवनिवाहबस्य वं शते । जंतरं कालको केवकिरं होत्र ! मोनमा ! कड़ भंतो उन्नो गणस्यस्थालो एवं जाउराध्यस्य तेड पाउ वजस्मुहकर-इयस्य में मेरो ! भावरे काकमो 🕴 वा चेव पुरुषिराइयस्य संचित्रका विनिवित्र-भउरिविमर्पनैदिवाणं एएसि नजन्मीय अंतरे वह अंदो उन्हों बगस्पद्यसमी अपिवियस्त ने भेठे । जंतरं कामको केनचिरं होह है गोयमा । साहयस्त वपमन-सिवस्त करिक मेतरे ॥ एप्सि थं भेते । पुरुषिकाइवाणं काउ रोड वाउ वर्ष वेंद्रियानं रेक्क्टिबाजं चटरि पंचलियाणं क्यिंदिवाच य ध्यरे ९ 🚦 गोयमा । सम्बद्धांचा पंचित्रमा कारियिया निसेमाडिया रेडिया निसे वेंद्रिया निसे वेंद्र काइया कार्यकेज्यामा प्रविकासका कि आता कि बात वि आमितिका अर्थत-तुमा नयरस्यःशाहना अर्णस्युमा ॥ २७९ ॥ अहना नयमिदा राम्बजीना पन्यती देशहा--पत्रमनममणेखना अपन्मनमननेखना पत्रमसमयतिरिक्यशोषिया अपन्म-समग्रितिकराजीयिका पत्रमनसम्बन्धाः अपत्रमसमयसम्बन्धाः पत्रमसमज्ञेषाः अपत्रम-समयदेवा प्रमसमयशिका अपन्नमसमयशिका ॥ प्रत्यमसम्बेरका नं संति ! बरम-समयनेरहएति कालम्बे केवलिरं होह है गोयमा । एक समर्थ अपत्रयममयनेरहए व मंति । शोयमा ! जहवेलं वग वासमहरकाई समजवाई उद्रोसनं शंदीसं नागरी-नमाई समजनाई, पायनमगठिरिक्ताजीविए व मंते ! ३ वोयवा ! एई ममर्व अन-कामसमानितिका वह स्थान सरमाहर्ण नमकर्ण उद्यो कपरमाइकारो पडागा-मसमब्भे वे मेठे ! । शोयमा ! पूर्व समर्थ अपरमय मन्त्रे वे मेठ ! । शोयमा !

जह ॰ खुट्टाग भवग्गहण समऊणं उको ॰ तिण्णि पलिओवमाइ पुन्व होडिपुहुत्तमन्भ-हियाडं, देवे जहा णेरडए, पटमसमयसिद्धे ण भते !० 2 गोयमा ! एक समय, अपट-मसमयसिद्धे ण भते !० 2 गोयमा ! साइए अपज्जवसिए । पडमसमयणेर० भते ! अतर कालओ॰ १ गोयमा! ज॰ दस वायसहस्साइ अतोमुहुत्तमन्भहियाइ उक्को॰ वण॰, अपटमसमयणेर॰ अतर कालओ केव०१ गोयमा। जह॰ अतो० उ० वण०, पडमसमयतिरिक्खजोणियस्स ० अतर ० केविचरं होड १ गोयमा ! जह ० दो खुर्हाग-भवग्गहणाई समऊणाइ उक्षो० वण०, अपढमसमयतिरिक्खजोणियस्स ण भते !० १ गोयमा ! जह ॰ खुडूगभवग्गहण समयाहिय उद्दो ॰ सागरोवमसयपुहुत्त साइरेग, पढमसमयमण्सस्स ण भते । अतर कालओ॰ १ गो॰। जह० दो खुड्डागभवग्गहणाइ समऊणाइ उक्को॰ वण॰, अपडमसमयमण्सस्स ण भते ! अतर॰ ² गो॰ ! जह० खुड्डाग भव० समयाहिय उक्को० वणस्सड०, देवस्स अतर जहा णेरइयस्स, पढमस-मयसिद्धस्स ण भते ! अतर॰ 2 गो॰ ! णितथ, अपडमसमयसिद्धस्स ण भते ! अतर कालओ केविचर होड <sup>2</sup> गोयमा ! साइयस्स अपज्जविसयस्म णित्य अतर ॥ एएसि ण भते ! पढमस०णेर० पढमस०तिरिक्खजोणियाण पढमसमयमणूसाण पढमसमय-देवाण पढमसमयसिद्धाण य कयरे २ 2 गोयमा । सन्वत्थोवा पढमसमयसिद्धा पढमसमयमणूसा असखे॰ पढमस॰णेरइया असखेजगुणा पढमस॰देवा अस॰ पढ-मस॰तिरि॰ अस॰। एएसि ण भंते ! अपटमसमयनेरइयाण जाव अपडमसमयसि-द्धाण य कयरे॰ १ गोयमा ! सन्वत्थोवा अपडमस॰मणूसा अपडमस॰नेरइया असखे॰ अपढमस॰देवा असले॰ अपढमस॰सिद्धा अणतगुणा अपढमस॰तिरिक्खजो॰ अणत-गुणा। एएसि ण भते ! पढमस० णेरइयाण अपढमस० णेरइयाण य कयरे २ गोयमा ! सन्वत्योवा पढमस० णेरइया अपढमस० णेरइया असखे०, एएसि ण भते ! पढमस॰तिरिक्खजोणियाण अपढमस॰तिरिक्खजोणियाण य कयरे २ भेगयमा! सन्वत्थोवा पढमसमयतिरिक्खजो॰ अपढमस॰तिरिक्खजोणिया अणतगुणा, एएसि ण भते । पढमस॰मणुसाण अपढमसमयमणुसाण य कयरे २ <sup>2</sup> गोयमा ! सव्ब-त्योवा पढमसमयमणूसा अपढमस०मणूसा असखे०, जहा मणूसा तहा देवावि, एएसि ण भंते । पढमसमयसिद्धाण अपढमसमयसिद्धाण य कयरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा <sup>2</sup> गोयमा! सव्वत्थोवा पढमसमयसिद्धा अपढमसमयसिद्धा अणतगुणा । एएसि ण भते । पढमसमयणेरइयाण अपढमसमयणेरइयाणं पढमस०-तिरिक्खजोणि॰ अपढमस॰तिरिक्खजो॰ प॰समयमण्॰ अपढमस॰म्ण्॰ पढम-स॰देवाणं अप॰समयदेवाण पढमसमयसिद्धाण अपढमसमयसिद्धाण य क्यरे २ हिंतो

१६४ धुचानी [बीहानीवामितमें अप्पाना बहुबा ना द्वाबा ना निस्ते नै गांवमा । सम्बद्धोना पत्रमस् क्षिद्धा पदमस् --मन्दा अस्ते ,अग सम्मम्मन्द्वा अस्ते व्यवस्थनमंत्रीद्दाना अस्ते व्यवस्य देश अस्ते पदमस् दिरि अस्ते व्यवस्था पेर आस्त्री काराज्य देश अस्ते अभ्यस्य स्विद्धा अस्तेत अपन्यस्य दिरि व्यवस्थाना । तेता बराबिक्षा सम्बद्धाना पत्रमा ।।

<del>पेत्र सम्बर्जाशास्त्रामे ॥ २७२ ॥ नघमा सम्बर्जाधवस्त्रिहपदिवर्त्ती</del>

समचा ॥ जीवाजीवाभिगमसूचे समर्च ॥

## णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

## युत्तागमे तत्य गं

## तत्थ णं **पण्णवणासुत्तं**

ववगयजरमरणभए सिद्धे अभिवदिऊण तिविहेण। वदामि जिणवरिंद तेलोकः-गुरं महावीर ॥ १ ॥ सुयरयणनिहाण जिणवरेण भवियजणनिव्युङ्करेण । उनदसिया भगवया पन्नवणा सव्वभावाण ॥ २ ॥ वायगवरवसाओ तेवीसङ्मेण धीरपुरिसेण । दुद्धरधरेण मुणिणा पुव्वसुयसमिद्धवुद्धीण ॥ ३ ॥ सुयसागरा विणेकण जेण सुयर-यणमुत्तम दिन्नं । सीसगणस्स भगवओ तस्स नमो अजसामस्स ॥ ४ ॥ अज्झयण-मिण चित्त सुयरयण दिद्विवायणीसन्द । जह वित्तय भगवया अहमवि तह वित्रइ-स्सामि ॥ ५ ॥ पन्नवणा ठाणाइ वहुवत्तव्व ठिई विसेसा य । वक्कनती ऊसासो सन्ना जोणी य चरिमाइ ॥ ६ ॥ भासा सरीर परिणाम कसाय इन्दिए पओगे य । लेसा कायिर्वर्डिया सम्मत्ते अन्तिकिरिया य ॥ ७ ॥ ओगाहणसठाणे किरिया कम्मे इयावरे । [कम्मस्स] वन्धए [कम्मस्स] वेद[ए]वेदस्स वन्धए वेयवेयए ॥ ८॥ आहारे . उवओगे पासणया सन्नि सङ्गमे चेव । ओही पवियारण वेयणा य तत्तो समुग्घाए ॥ ९ ॥ से किं त पन्नवणा <sup>२</sup> पन्नवणा दुविहा पन्नत्ता । तजहा–जीवपन्नवणा य अजीवपन्नवणा य ॥ १ ॥ से कि त अजीवपन्नवणा <sup>२</sup> अजीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता । तजहा-ह्विअजीवपन्नवणा य अरूविअजीवपन्नवणा य ॥ २ ॥ से किं त अरुविअजीवपन्नवणा <sup>२</sup> अरूविअजीवपन्नवणा दसविहा पन्नत्ता । तजहा-धम्मित्यिकाए, धम्मत्यिकायस्त देसे, धम्मत्यिकायस्त पएसा, अधम्मत्यिकाए, अधम्मत्यिकायस्त देसे, अधम्मत्यिकायस्स पएसा, आगासत्यिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगा-सित्यकायस्म पएसा, अद्धासमए । सेत्त अस्विअजीवपन्नवणा ॥ ३ ॥ से कि त र्विअजीवपन्नवणा १ रिनेअजीवपन्नवणा चडिव्वहा पन्नत्ता । तजहा-१ स्वधा, २ खबदेमा, ३ खबप्पएमा, ४ परमाणुपोग्गला । ते समासओ पचविहा पन्नत्ता । तजहा-१ वन्तपरिणया, २ गघपरिणया, ३ रसपरिणया, ४ फासपरिणया, ५ सठाणपरिणया ॥ ४ ॥ जे वनपारिणया ते पचविहा पन्नता । तजहा-१ काल-वन्नपरिणया, २ नीलवनपरिणया, ३ लोहियवनपरिणया, ४ हालिद्वन्नपरिणया,

सपरिणया ति । सन्दर्शनाओं परिमण्डकसण्टरायपरिणया वि वास्टेडायपरिणया वि र्तसस्याचपरिजया वि चतरंसस्याज्ञाचपरिचया वि भावयस्याचपरिचया वि १ / के बज्जओ मीसक्जापरिणया हे राजको धुनिसयन्बपरिजया में बुदिसगन्भपरिजया नि । रसमो दित्तरसपरिजया नि अञ्चयरसपरिजया नि अनामरसपरिजया नि अभिम्हरसपरिजया वि महुररसपरिजया है। शासको कारवहरामपरिपरा है महचनासपरिचया वि शुक्तवासपरिचया वि स्कूबन्नसपरिचया वि सीवपानपरि मया वि उत्तिमकासपरिचया वि निद्धकासपरिचया वि सुक्ताकासपरिचया वि। र्चेठाजनी परिभव्डससञ्दर्भगपरिणया वि बङ्गस्टराणपरिणया वि तंपरस्टानपरिणया मि परस्तरमञ्जानपरिषया नि साययसकानपरियता नि १ । जे सन्दर्भ सोवै वदण्यारिजया तं गम्बजो तुविमानक्यरिजया वि बुविमगम्बदरिणया वि । रसम्बे रिशारमपरिणवा वि अञ्चलरमपरिणया वि कनावरसपरिणवा वि अधिकारसपरि मना नि महुररमयरिजया नि । शासओ कनखडव्यसपरिवास वि मदवशासपरि णमा नि गुरुपकारपरिणका नि सक्रुपक्तसपरिणका नि सीयकारपरिणका वि उतिजनामगरिणका वि निक्कामगरिकमा वि सक्तानामगरिकका वि । एँठामञ्जी परिमण्डससेठाचपरिणवा वि वहस्रठाजपरिणया वि तैससेठाजपरिणया रि मडरे सस्रामपरिणया वि आध्यसंद्राणपरिणया वि २ । से वण्डामा दानिद्वण्यपरिणया ते गम्भमो सुविमगम्बद्धियानि युविमगन्बद्धिवालि । रमन्त्रो नितरसद्धिगरा

वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, मुहररस-परिणया वि । फामओ कन्खडफासपरिणया वि, मरयफासपरिणया वि, गुरुयफाम-परिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणयावि, णिद्धफासपरिणया वि, छुक्खफासपरिणया वि । सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणया वि, वरसठाणपरिणयावि, तससठाणपरिणया वि, चउरससठाणपरिणया वि, आययसठाणपरिणया वि २० । जे वण्णओ सुिकहवण्णपरिणया ते गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्यपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि. क्इयरसपरिणया वि. कमायरसपरिणया वि, अम्त्रिलरमपरिणया वि, सहररस-परिणया वि । फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मजयफासपरिणया वि, गुरुयफास-परिणया वि, लहुयकासपरिणया वि, सीयकासपरिणया वि, उसिणकासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, छुक्खफासपरिणया वि। सठाणओ परिमङ्कसठाणपरिणया वि, वहसठाणपरिणया वि. तससठाणपरिणया वि, चउरससठाणपरिणया वि. आययसठाणपरिणया वि २०, १००। जे गन्धओ सुव्भिगन्धपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, णीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिहवण्ण-परिणया वि, सुद्धिल्लवण्णपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि, कड्रयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ क्त्रखडफासपरिणया वि, मजयफासपरिणया वि, गरुयफासपरिणया वि, लहुयफास-परिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि । सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणया वि, वहसठाणपरिणया वि, तससठाणपरिणया वि, चडरंससठाणपरिणया वि, आययसठाणपरिणया वि २३ । जे गन्धओ दुव्भिगन्धपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, णीलवण्ण-परिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्वण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्ण-परिणया वि, रसओ तित्तरसपरिणया वि, कहुयरसपरिणया वि, कसायरस परिणया वि, अम्विलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि । फासओ क्वन्खह-फासपरिणया वि, मंडयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफास-परिणयावि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि । सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणया वि, वृहसठाणपरिणया वि, तससठाणपरिणया वि, चउरससठाणपरिणया वि, आययसठाणपरिणया वि २३,४६। जे रसओ तित्तरसपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, णीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिह्वण्णपरिणया वि, सुक्तिल्लवण्णपरिणया वि । गन्धुओ

सुचागमे 255 परिणया य बुध्धिनाष्प्रियता य । अ राज्यस्थात्रः वास्त्रावराणीरः हे बीन्स्यस्मितः । कृत्रावराम्यस्यातिः हे निर्मास्यातिः । कृत्रावराम्यस्यातिः । कृत्रावराम्यस्यातिः । कृत्रावर्षः । कृत्रवर्षः । कृत्रवर्वर्वेषः । कृत्रवर्वर्वरः । कृत्रवर्षः । कृत्रवर्व १ नित्तरपारिनया २ बहुबरगपारिनया १ का अहमित का मन्यस्थापिका प्रस्ति के क्योपिका वि विदेश परिणया = महुरस्परिक्या । ज पापपरिका । गरमहारिक प्रियम मि वस्ति १ कमरण्यास्त्रिया १ मडवरामगरिक्या १ गरमहारिक में हैं। हैंडीकर्षे परिका परिष्यः

• इत्यान्तरिक्या २ सञ्ज्ञानागारीकावा २ स्थानक्षेत्रक्षेत्रक्षे परिक्रम्

• इत्यान्तरिक्या २ सञ्ज्ञानक्षरिक्या ६ उत्रिक्यानक्षरिक्या द्वीत्रक्षेत्रक् रामगरियमा ५ सीवशासपरिणमा ६ चारानाः । १ वर्षः विकास १ कि वर्षः स्वर्थः । १ वर्षः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः । १ वर्षः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः । १ वर्षः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः ८ सुरुररामपरिषया। जे संग्रामपरिषया त पश्यक्ष भागा । प्रे स्विकारणपरिष्य महापारिक्या साम्रेशक ४ वहर्षभूति है । रस्की रिहर ८ ड्रान्सा वर्षांत्रक १ तमस्त्राण
 महानगरिक्या वर्षांत्रक शास्त्रका स्थान क्षेत्रक विकास किया । ५ त के क्याको वास्त्रकारिक्या विकास क्षेत्रक क्ष रिश्चा ॥ ५ ॥ वे करमधो बासररमापारतका च न्यार्थ है बीक्ससंस्थासम्बद्ध दुरिकत प्रयुक्तिया रि १ एमध्य निकृतपारिक्या थि कृतपार्थ है वेदिकसंस्थासम्बद्धाः दुस्मित वर्षात्र । स्वतिम्तरस्यतिका वि सदुर्ग्यात्र । स्वतिका स्वितिका वि विकास । स्वतिका स्वतिका वि विकास । स्वतिका स्वतिका वि विकास । स्वतिका स्वति रामालका । व नामार्यसम्बा कि अञ्चनामानरीयावा वि गुरुकामान्यसम्बा वि तीवनाम्यसम्बा वि विभागमान्यसम्बा वि तिवसम् नासित्रवा वि । स्वत्रामाने विस्तारकसम्बामानिका वि स्वत्रामाने विस्तारकमान्यसम्बा वि आदम् स्वत्रामाने विस्तारकमाने व वि सावशासकः । गारितवा वि । सञ्ज्ञाणां वरिसम्बरसम्बर्णणाः ।। संमागञ्जावरितवा वि चउरेगमञ्ज्ञाणरित्याः वि आदवर्षः स्थाने सिम्मान्वरित्यः सेमागञ्जवरित्याः वि चउरेगमञ्ज्ञारित्यः विश्वतिक्यापरित्यः वि

तैमाराज्यस्या वे बार्शमाराज्यस्या । सावन् के केर्यमाराज्यस्य । सावन् के केर्यमाराज्यस्य । सावन् के केर्यमाराज्यस्य । सावन् के केर्यमाराज्यस्य । सावन् केर्यमाराज्यस्य । रि चर्रागरमान्यस्थित हि आवसगळात्रात्र । व नावसर्थेशस्य वरण्यास्या च गण्यमा नृशिगरमास्यास्या हि दुरि भेवमो कास्वरूपासीया हि वरान्नारियवा व सम्बन्धा नृतिभूतम्बन्धारवयः । । उः निर्मान्यस्थितः वि रिम्मन्तिमया वि वन्यागर्यस्थया वि कार्यानम् विविद्यान्तिस्या वि वा िरुप्तर्भाषाया वि वन्यागापीयया १३ व्यावसम्बद्धाः वि व्यावसम्बद्धाः विवासम्बद्धाः विवासम्यासम्बद्धाः विवासम्बद्धाः विव ववा वि सद्दर्शवर्षण्या दि । क्षेत्रका वक्षा वि । विरामित्रका दि । व ववा वि नामकावित्रका वि स्टूबकावर्षण्या विरामित्रका वि । विरामा नवा (। राजस्थानिया हि रहुवसासस्यक्षः । जनवा हि । यसन् प्रिनारणाजैयवा हि विज्ञणातीसम्बद्धाः हिस्तु । यसन्यक्षियम् हिस् वता । १९८० । प्रिन्तागरीयमा १६ विज्ञणातीयमा वि स्थान अन्यात्वातीयमा वि स्व रोमराक्ष्मीतारीयमा १६ वासीयमतीयम् १ विकासितम् वि विकासित्सः रोगराक्षीतम् १६ अन्यसीरम्बरीतम् । विश्वासितम् वि विकासित्सः अन्यस्त्र वृद्धिसम्बरीतस्त्र विभागस्त्रसम्बर्धः अन्यसीतम्बर्धः वि विकासित्सः वि वि

वि, ऋडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्विलरसपरिणया वि, महररस-परिणया वि । फामओ क्रक्खडफासपरिणया वि, मुख्यफासपरिणया वि, गुस्यफास-परिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणयावि. णिद्धफासपरिणया वि, छुक्खफासपरिणया वि । सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणया वि, वदृसठाणपरिणयावि, तससठाणपरिणया वि, चउरससठाणपरिणया वि, आययसठाणपरिणया वि २० । जे वण्णओ मुक्किलवण्णपरिणया ते गन्धओ सुव्भिगन्चपरिणया वि, दुव्भिगन्चपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि. कडुयरसपरिणया वि, कमायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, मुहररम-परिणया वि । फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मजयफासपरिणया वि, गुरुयफास-परिणया वि, लहुयकामपरिणया वि, सीयकासपरिणया वि, उसिणकासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, छुक्खफासपरिणया वि। सठाणओ परिमंडलसठाणपरिणया वि, वदृसठाणपरिणया वि, तंमसठाणपरिणया वि, चडरससठाणपरिणया वि, आययसठाणपरिणया वि २०, १००। जे गन्धओ सुन्भिगन्धपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, णीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्वण्ण-परिणया वि, सिक्छवण्णपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणया वि, कहुयरसपरिणया वि, क्यायरसपरिणया वि, अम्विलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि । फास<mark>ओ</mark> क्क्लंडफासपरिणया वि, मंजयफासपरिणया वि, गरुयफासपरिणया वि, लहुयफास-परिणया नि, सीयफासपरिणया नि, उत्तिणफायपरिणया नि, णिद्धफासपरिणया नि, <del>धन्त्र</del>फासपरिणया वि । सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणया वि, वहसठाणपरिणया <sup>वि</sup>, तससठाणपरिणया वि, चडरससठाणपरिणया वि, आययसठाणपरिणया वि २२। जे गन्धओ दुव्भिगन्धपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, णीलवण्ण-परिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्वण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्ण-परिणया वि, रसओ तित्तरस्परिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरस परिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि । फासओ कक्खट-फासपरिणया वि, मडयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफास-परिणयावि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफामपरिणया वि, छुन्सभासपरिणया वि । सठाणयो परिमण्डलसठाणपरिणया वि, वदृसठाणपरिणया वि, <sup>तसस</sup>ठाणपरिणया वि, चटरससठाणपरिणया वि, आययसठाणपरिणया वि २३, ४६ । ने रसओ तित्तरसपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, णीलवण्णपरिणया वि, लोहियनण्णपरिणया वि, हालिद्दनण्णपरिणया वि, सुक्किलनण्णपरिणया वि । गन्धओ

महयशास्त्रपतिजया नि शुरुवाद्मासपरिजया नि सहुवाद्मासपरिचया नि सीबाद्मासपरि गया वि उतिवाशसपरिणवा वि निवाससपरिणवा वि सुक्ताप्रसपरिणया वि। संज्ञानाजा परिसन्द्रसन्देजानपरिचया वि नप्तसंज्ञानपरिजना नि तंससंज्ञानपरिचया नि चाउरेमसंठाचपरिणया वि आयमसंठाजपरिणया वि १ । जो रक्षमो क्षप्रयरसपरि शया ते वण्यक्षो काळक्कापरिकास वि. जीकावकापरिकास वि. क्षेत्रियक्कापरिकास मि हारिक्रक्जपरिणया मि सहिद्धारणपरिणया विश्व चन्नो सहित्रगान्यपरिणया नि बुरिमगन्थररिजया वि । पासको कवनावकासपरिकया वि माउनपासपरिकया मि गुरुवरानपरिचवा नि संबुवसासपरिचया नि सीवसासपरिचना नि सरिच-भासपरिणया वि विकास संपरिणया वि अस्त्यापासपरिणया वि । संजानको पहि मण्डससंत्रावपरिणवा वि वहसंठाजपरिणया वि संगर्धठाणपरिणया वि वाटरेग्र-**एंटाजपरिचया वि आयवर्यटाजपरिचया वि ६ । जे रसमो कमागरसपरिजया** ते कम्मभी काममण्यपरिणका वि शीरकाक्यपरिणमा वि कोहिनकम्पपरिणमा वि दासिद्वज्यपरिणयाः नि स्वित्रज्ञान्त्रपरिणयाः नि । यन्त्रको सुविभगन्त्रपरिचयाः नि द्रियमानभवरिणवा वि । जासमी करुउवजासपरिजया वि सहयजारपरिजवा वि गुरुवन्त्रमगरिजया नि सञ्ज्वपामगरिजना नि सीवपासपरिचया नि उत्तिकरास-परिचया वि विश्वकासपरिचया वि सुक्यापान्यरिचवा वि । संठानको परिसण्डस-संज्ञाचपरिचया वि बहुसंज्ञाचगरिचया वि तैनसंज्ञाचगरिचवा वि चडरेमसंज्ञाचगरे क्षमा नि अतम्बसंद्राणपरिकास वि १ । के ग्राको सन्त्रिकरसपरिकार स बल्काओ कामरक्रमारिकमा वि शीलवण्यपरिणवा वि लोद्वियवण्यपरिणया वि हालिद्वरूप परिणया वि स्वतिक्षकापरिणमा वि । गत्यामी क्षतिमगत्यपरिणमा वि वृदिभगत्य-परिणया वि । पासको अक्नाडपापपरिणया वि अठयधापपरिणया वि गुरुवपास परिचया वि सञ्चयत्रागपरिचया नि जीवत्रागपरिचया वि जलिकफासपरिचया नि विक्रासम्परिकास वि इत्रारम्भाषारिकास वि । संगणको परिवरकार्यगानपरिकास क्षि कारोगाजपरिजया वि लेगसङापपरिजया वि चाउरेमसँडानाररिणवा वि भायपम्छक्त्यरेगया वि १ । जे स्मध्ये महुररमपरिचम त क्रमञ्जे कालान्य परिचया नि मीन्यरमारिचया वि कांश्यिकणपरिचया नि हान्तिकमारिचना वि गुडिकास्मपरिषया दि । गरूपका तुक्तिगरूपरिणवा वि दुक्तिगरूपरिणया वि । पामधी वक्ताहरागपरिचया वि अववतागपरिचया वि गुरुवरागार्यस्यया ि सहयरागररिचया वि श्रीवनागपरिचया वि अधिगत्रागररिचना वि निद्रशान-

परिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि । सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणया वि, वह-सठाणपरिणया वि, तससठाणपरिणया वि, चउरससठाणपरिणया वि, आययसठाण-परिणया वि २०, १००। जे फासओ क्वन्खडफासपरिणया ते वण्णओ कालवण्ण-परिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिइवण्णपरिणया वि, मुक्किलवण्णपरिणया वि । गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्विलरस-परिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, छुक्ख-फासपरिणया वि । सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणया वि, वहसठाणपरिणया वि, तससठाणपरिणया वि, चउरंससठाणपरिणया वि, आययसठाणपरिणया वि २३। जे फासओ मउयफासपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्वण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्यओ द्विभगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्यपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि, कद्धयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररस-परिणया वि । फासओ गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफास-परिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, छुक्खफासपरिणया वि। सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणयावि, वहसठाणपरिणया वि, तंससठाणपरिणया वि. चडरंससठाणपरिणया वि, आययसठाणपरिणया वि २३। जे फासओ गुरुयफास-परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्ण-परिणया वि, हालिद्वण्णपरिणया वि, सुिक्कलण्णपरिणया वि। गन्धओ सुिह्म-गन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि, क्डुयरस-परिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि । फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मजयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, छुक्खफासपरिणया वि। सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणया वि, वदृसठाणपरिणया वि, तससठाणपरिणया वि, चंउरस-सठाणपरिणया वि, आययसठाणपरिणया वि २३। जे फासओ लहुयफासपरिणया ते वण्णस्रो कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्वण्णपरिणया वि, सुिक्कवण्णपरिणया वि । गन्धओ सुिक्भगन्धपरिणया वि, द्दिनगन्धपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि, कहुयरसपरिणया वि, कसाय-रसपरिणया वि, अम्विलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ क्क्न्खड-

वि जिन्नफासपरिकाना नि स्वनक्षफासपरिजया नि । सैठानको परिमण्डकसंठाजपरि गवा वि वहसेटाणपरिणया वि शैससैठाणपरिणवा वि वजरेससेठाजपरिजया वि आयमसँठाणपरिक्या वि ११ । जो प्रासको सीयफासपरिजवा ते वक्तको स्थान ज्यपरिचया वि नीक्रमञ्जपरिजया वि **क्रोडि**जनञ्जपरिणमा वि हास्त्रिक्तञ्जपरिणमा वि सुक्रिक्कणपरिणया वि । गरमको सुविधागरभपरिणया वि बुविधगरभपरिणवा नि । रसमो दिशरसपरिक्या नि कक्क्यरसपरिक्या नि कसानरसपरिणमा नि अभिकारसपरिकार वि अहुएरसपरिकार वि । फासको समझङभासपरिकार वि मठगरासपरिगया वि गुस्यभसपरिणवा वि बहुवरासपरिणवा वि निद्रस्त्रसपरि मना नि अन्यादासपरिणना नि । संदाणको परिमन्धनसंदालपरिणना नि नासं-ठाजपरिजया वि वैसर्वेक्षणपरिजया वि चाउरेसर्वेकाजपरिजया वि आस्त्रवंकाज परिवादा वि २३ । के प्रास्को उत्तिवकारावरियामा ते शकाको सामान्यापरिवास वि नीकक्यपरिक्या वि स्पेक्षियकमापरिणया वि शाक्षिकस्मपरिणया वि प्रक्रि-क्षप्रभागरिएका वि । गत्त्रको द्वविभगत्त्रपरिचका वि दुव्यिगत्त्रपरिचक्रा वि । रसम्ये हित्तरसंपरिणया वि अञ्चयरसंपरिणया वि असायरसंपरिणया वि अधिका-रसपरिणया वि महुररसपरिजया वि । पासको धनवाडफासपरिजया वि मदयपा-सपरिचया वि गुरुवरासपरिचया वि अञ्चयप्रसपरिचया वि विज्ञाप्रसपरिचया वि क्रमचापारपरिचया वि । सञानमी परिमानकार्यग्राजपरिचया वि वास्तंजानपरिचया वि संसम्प्रतापरिकास वि कार्यसम्प्रतापरिकास वि कान्यसंद्रतापरिकास वि २३ । व प्रस्को निवक्तसपरिषया ते क्रमको ब्रावकपरिषया वि बीक्स-आपरिजना नि स्त्रेहिन्नज्यपरिजना नि हासिहनज्जपरिजना नि स्र<del>िक्रनज्ज</del>परिजना वि । गम्बजो धुम्मिगम्भपरिषया वि बुन्यिग भपरिषया वि । रसमी हित्तरसपरि गया नि कष्टवरसंपरिणवा वि कसावरसंपरिणया नि अध्विकरसंपरिणवा नि सहररसपरिणवा मि । फासको धक्तकप्रशासपरिणवा मि सउयपासपरिणया मि गुरुवपासपरिणया वि कहुवाधसपरिणया वि सीवपासपरिणया वि विस्थिपासपरि बना वि । सठायओ परिगण्यसर्यठाजगरिकमा वि वश्सठाजगरियमा वि तंनसंदर्भ-परिजया जि. चडरंसचेठाजपरिजया जि. आयवस्त्राचपरिचया जि.९१ । ज पासमे सक्यागासपरिकसा से कम्मभी काक्क्कणपरिक्या नि जीवनक्रमपरिणया वि स्पेदि सवज्यपरिवास वि वास्त्रिवज्यपरिवास वि शक्तिक्रवज्यपरिवास वि । गत्र्वको स्रक्रिमान्यपरिक्या वि बुध्धिगन्यपरिवया वि । रसओ नित्तरम्परिवया वि वद्वपर

सपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्विलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि । फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मजयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि । सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणया वि, वृहसठाणपरिणया वि, तंससठाणपरिणया वि, चउरस-सठाणपरिणया वि, आययसठाणपरिणया वि २३, १८४। जे सठाणओ परिमण्ड-लसठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियव-ण्णपरिणया वि, हालिद्वण्णपरिणया वि, सुिक्कवण्णपरिणया वि । गन्धओ सुब्सि-गन्धपरिणया वि, दुव्भिगन्धपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि, कड्रयरसप-रिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्विलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मजयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफायपरिणया वि, उत्तिणफासपरिणया वि, निद्धफास-परिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि २०। जे सठाणओ वृहसठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि. हालिद्दनण्णपरिणया वि, सुक्किलनण्णपरिणया वि । गन्धसो सुन्भिगनधपरिणया वि दुब्भिगन्थपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि, कहुयरसपरिणया वि, कसायर-. सपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि । फासओ क्व्सखडफा-संपरिणया वि, मंजयकासपरिणया वि, गुरुयकासपरिणया वि, लहुयकासपरिणया वि. सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, निद्धफासपरिणया वि, छुक्खफासप-रिणया वि २०। जे सठाणओ तससठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्वण्णपरिणया वि, सुक्षिल्लवण्ण-परिणया वि । गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरस-परिणया वि, महररसपरिणया वि । फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफास-परिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि. उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, छुक्खफासपरिणया वि २०। जे सठाणओ चडरंससठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्वण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि । गन्यओ सुब्भिगनधपरिणया वि, दुब्भिगधपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्विलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि । फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि,

202

**क्रु**यफासपरिणया वि, सीयपासपरिणया वि उसिजफासपरिणया वि निक्कास-परिचया वि ह्वस्वापासपरिणना वि २ । जे रांठामध्ये आययरांठानपरिचया से बन्दमी कारमञ्जारियमा वि जीवनकापरियमा नि क्रोहिमकापरियमा नि हातिम्बन्स परिचया नि स्टिजिन्नम्पपरिकता वि । धन्त्रको स्रविकार-सप्रिचया वि सुविकार-न्वपरिजया वि । रसको विचारसपरिजया वि अञ्चयरसपरिणवा वि कसायरसपरिजया वि अस्त्रिकरसपरिचया वि अहुररसपरिचया वि । फासओ क्व्याकफासपरिचया वि मडबद्धसपरिक्या वि गुरुवफासपरिक्या वि सङ्करफासपरिक्या वि सीवकास-परिजया वि उत्तिवादासपरिणया वि विद्यापासपरिणया वि सक्यापासपरिणया 🖹 २ 🕠 । सेच दविवजीवपत्रवणा । सेर्च मजीवपत्रवणा 🛚 🤻 🛚

से कि वे जीवपद्मका है जीवपद्मका दुविहा प्रवत्ता । वेजहा---संसारसमानन जीवपन्यवना स असंसारसमाकवाशीवपञ्चवणा स ॥ ० ॥ से विः तं असंसारममाद प्पात्रीवप्रव्यवना <sup>है</sup> अससारसमावण्यत्रीवप्रव्यवचा <u>व</u>विद्वा फ्रव्यता । तंबहा-सम्पन्त-रिविद्यक्षरीकारसमाक्ष्यजीवपञ्चवका व परम्परविद्यालसंसारसमाजीवपञ्चला व II < 1) से कि से क्यान्तरसिक्कानेसारसमावण्यजीवप्रणवचा । क्यान्तरसिक्कानेसा र्ममाक्काजीवपमावका प्रम्परशिक्षा प्रमत्ता । शंक्का-१ तित्वरिका २ मितत्व किया । दिल्बगरसिया ४ अक्षित्वगरसिया ५ सर्ववद्यक्तिया ६ परेत्वन्यस्थि वृद्धवोद्दियस्थितः < इत्वीक्ष्मितिकाः < पुरिश्वस्थितिकाः । नपुंस्पिक्षितः</li> पिद्धा १९ एकिंगरिद्धा १२ वक्ककिंगरिद्धा १३ मिद्रिकिंगरिद्धा १४ एगरिन्ध १५ अधेगरिद्धा । सेत्री अर्थकारित ॥ ९ ॥ से कि सं परम्परशिद्धअर्थसारसमात-नाजीवप्रव्यवद्या <sup>ह</sup> २ ज्योगनिहा प्रव्यत्ता तंत्रहा—अपन्नसस्यद्यस्या <u>इ</u>समयपिया रिसमबस्याः अतसमयस्याः बाब शक्तिकसमबस्याः अस्तिकसमयस्याः अप न्तरसम्बद्धियः । सेतं परम्परविश्वभक्तारसमायकातीयकामभा । सेतं असेसारसमा-क्याजीवप्रणवना ॥ १ ॥ से बि. ते सेसारसभावणाजीवप्रणवना है ऐसारसमाव-काजीवप्रकानका प्रक्रमिहा प्रकाशा । तंत्रहा--- १ एवंबियसंसारसमानण्यजीवपन्न क्या य बेइन्दिवर्धसारसमावकाजीवपन्यवना १ तेइन्दिवससारसमावकाजीवपन क्याच्या ४ व्यवस्थितवर्धसारसमात्रकात्रीमप्रकाराणाः ५ पश्चित्रवर्षसारसमात्रका जीवपन्तवमा ॥ ९९ B से कि तै एगेन्वियसेसारसमावण्यजीवपन्तवमा र एगेन्निवय-संसारसमानव्यवीक्ष्यव्यक्ता प्रविद्या प्रवता । तंत्रहा-पुरविराद्वना आन्वदारमा रेतकाहमा बातकाहना वणस्तक्षकामा ॥ १९ ॥ से कि सं पुत्रविकाहना र पुत्रवि-कारमा दुविहा प्रकारा। राजहाः—सहुरमुक्ष्मिकारमा य नामस्युवनिरहरमा न व ११ ॥

न्से किं त सुह्मपुढविकाइया <sup>१</sup> सुह्मपुढविकाइया दुविहा पण्णता । तजहा---पजत्त-सुहंमपुढविकाइया य अपजातसुह्मपुंढविकाइया य । सेत्त सुहुमपुढविकाइया ॥ १४ ॥ से किं त वायरपुढविकाइया<sup>2</sup> वायरपुढविकाइया दुविहा पन्नता । तजहा-सण्हवायर-पुढविकाइयां य खर्वायरपुढविकाइया य ॥ १५ ॥ से किं त सण्हवायरपुढविकाइया १ -सण्हवायर्पुढविकाइया सत्तिविहा पन्नता । तजहा-१ किण्हमिट्टिया; २ नीलमिट्टिया, ३ लोहियमहिया, ४ हालिह्महिया, ५ सुक्किल्लमहिया, ६ पाण्डुमहिया, ७ पणगः मिट्टिया । सेत्त सण्हवायरपुढिविकाइया ॥ १६ ॥ से कि त खरवायरपुढिविकाडया 2 -खरबायरपुढविकाइया अणेगविहा पण्णता । तजहा-१ पुढवी य २ सकरा ३ वालुया य ४ उवले ५ सिला य ६-७ लोणूसे । ८ अय ९ तब १० तहरा ११ सीसय १२ रुप १३ सुवन्ने य १४ वड्रे य ॥ १ ॥ १५ हरियाले १६ हिंगुलए १७ मणों-क्तिला १८-२० सासगजणपवाले । २१-२२ अन्भपडलन्भवालुय वायरकाए मणि-विहाणा ॥२॥ २३ गोमेजाए य २४ रुयए २५ अके २६ फलिहे य २७ लोहिसक्ले -य। २८ मरगय २९ मसारगहे ३० भुयमोयग ३१ इन्दर्नीले य ॥ ३ ॥ ३२ चदण ३३ गेरुय ३४ इसगब्भ ३५ पुलए ३६ सोगन्धिए य बोद्धब्वे । ३७ चन्दप्पभ ३८ विरुलिए ३९ जलकते ४० सूरकते य ॥४॥ जेयावन्ने तहप्पगारा । ते समासओ दुविहा पन्नता । तजहा-पजत्तगा य अपजत्तगा य । तत्थाण जे ते अपजत्तगा ते ण असपत्ता । तत्य ण जे ते पजनगा एएसिं वचादेसेण, रसादेसेण, गधादेसेण, फासा-देसेण सहस्सग्गसो विहाणाइ, सङ्खेजाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साई । पजत्तगणिस्साए अपजनगा वक्सिति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असखेजा। सेत्त खरवायरपुढविकाइया। सेत वायरपुढविकाइया । सेत पुढविकाइया ॥ १७ ॥ से किं त आउकाइया <sup>१</sup> आउ-क्काइया दुविहा पण्णत्ता । तजहा-सुहुमआउक्काइया य वायरआउक्काइया यं ॥ १८॥ से किं त सुहमआउकाइया 2 सुहमाउकाइया दुविहा पन्नत्ता । तजहा-पज्जतसुहम-आउकाइया य अपजत्तसुहुमआउकाइया य । सेत्त सुहुमआउकाइया ॥ १९ ॥ से कि त वायरआउकाइया १ वायरआउकाइया अणेगविहा पन्नता । तजहा-उस्सा, हिमए, महिया, करए, हरतणुए, भुद्धोदए, सीओदए, उसिणोदए, खारोदए, खट्टो-दए, अम्बिलोदए, लवणोदए, वारुणोदए, खीरोदए, घओदए, खोओदए, रसोदए. जे यावने तहप्पगरा । ते समासओ दुविहा पण्णता । तजहा-पजन्नगा य अपज-त्तगा य । तत्थ ण जे ते अपजत्तगा ते ण असपता । तत्थ ण जे ते पजत्तगा एएसिं वण्णादेसेण गन्धादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसो विहाणाइ, सखे-जाइ जोणिप्पमुद्दसयसद्दसाइ, पजतगर्निस्साए अपजत्तगा वक्समित, जत्य एगो १८ मुत्ता०

र्तमहा-पज्यतगा य अपज्यतगा म । सेर्त सुदुमतेककाइमा ॥ २० ॥ से कि र्त धाव रतेकात्यमा । नामरतेकात्मा भनेगनिहा पण्यता । तबहा-पंगाके जाला सम्मूरे भवी असाप, सदागणी उदा विज् असणी निम्नाए, संपरिससमुद्विए, स्रक-न्दमभिन्निरिसर्, बेयावचे तद्वप्यपारा । ते समासम्बे प्रविद्या पञ्चता । र्दञ्चा-पञ्च-त्तया य अपजतना न । तत्व श के ते कपजतना ते थे असंदता । तत्व भे के ते प्रजलगा एएसि ण बजावेसेणं गम्बावेसेणं रसावेसेणं प्रशस्तिमं सहस्तमास्रे निहागार्थः, पंचेत्राई खोनिप्यमुहस्रयसहस्ताई । पञ्चलगनिस्साए भप्रजलगा बहमित्रः बत्ब एमो तस्ब निवमा अपेकेमा सेल वायरतं काराया। सेले तेकवाहमा ॥ २३ प्र से 🎮 तं बारकाइमा 🖁 वारकाइबा द्वविहा पवता । तंबहा-सुरुमबारवाइबा 🔻 बागरबाउकाइना य ॥ ६४ ॥ सं कि ते सहमवाउनाइना है सहमबाउनाहना हुनिहा पञ्जता । तंत्रहा-पञ्जलगतुष्ट्रमधानकाद्या व अपञ्चलगद्वहुमवानकाद्या व । सेर्प क्षरम्याजकादमा ॥ १५॥ से कि सं वागरबाजकादमा । बाबरबाजकादमा अगेगाविहा पण्यता । तंत्रहा-पाईणमाध्, पडीलमाध्, वाद्विणमाध्, श्रदीणमाध्, उद्दूषाध्, स्ट्रीन बाए, दिरियबाए, विदिशिवाए, बाउच्माने बाउबकिया वायग्रेडस्थ्वा बन्नकिया-बाए, संबक्षियालाए, ग्रंबाबाए, श्रंसाबाए, श्रंबद्धवाए, यजवाए, त्याबाए, इद्धवाए, केशक्त्री रेड्रप्यगरा । ते समास्त्री दुविहा पत्तरा । तबहा-पत्रतगा य अपन्नसमा य ! तरब में जे ते अपज्ञतामा ते ने असंपता । तरन में ब त पज्ञतमा प्रशि ने क्ष्मादेशेयं यत्र्यादेशेनं रसावेशेनं फासावेशेनं सहस्यमस्त्रे विद्यापाई, संबेजारं कोविष्णगृहस्यसहस्थाई । शकतगनिस्नाए अधकतया वहमंति करून एयो सन् निवसा असंबेजा । सेतं वायरवाजकार्या । सेतं वाउकार्या ॥ ९६ व से कि तं वणस्पद्वाद्मा । वणस्यद्वाद्मा द्वविद्वा पञ्चता । तंत्रदा-सुनुसवपस्यद्वादमा व बागरनगरसङ्ख्यास्या य ॥ ६७ ॥ से कि से सङ्ग्रमनगरसङ्ग्रह्मा । सङ्ग्रमनगरसङ्ग इया बुबिहा पण्यता । र्राजहा-पजतागनुबुसगणस्मात्र्या य अपज्ञतानुबुसगणस्य-इंगाइमा थ । वित्री तहुमनपरसार्गाइना छ ९८ त से कि ते वायरवपरसारकारण र वागरवज्ञस्त्रकार्या दुविद्या पक्ता । संबद्या-पत्तवस्तिरवायरवक्तस्यरकार्या व साहारणसरीरकायरवणसम्बन्धास्य य ॥ २९ ॥ से 🕸 ते प्रतेयसरीरकावरवयस्यर कार्या है २ दुवाकसमिद्दा पनता । तैयदा-१ ४१म्या २ तुम्का ३ द्वामा ४ कम

\*\*\*

य ५ वहीं य ६ पन्वगा चेव। ७ तण ८ वलय ९ हरिय १० ओसहि ११ जलहर १२ क़हणा य वोद्धव्वा ॥ ३० ॥ से किंत फ़क्खा <sup>२</sup> स्क्खा दुविहा पण्णता । तंजहा-एगवीया य वहुवीयगा य ॥ ३१ ॥ से किं तं एगवीया ? एगवीया अणेग-विहा पन्नता । तजहा—णिववजंबुकोसवसालअकुलपीलु सेट् य । मल्डमोयइमालु-यवउलपलासे करजे य ॥ १ ॥ पुत्तजीवयऽरिट्टे विहेलए इरिडए य मिल्लाए । उंबे-भरियाखीरिणि वोद्धव्वे धायइपियाले ॥ २ ॥ पृह्यनिवकरजे सण्हा तह सीसवा य असणे य । पुत्रागनागरुक्खे सीवण्णि तहा असोगे य ॥ ३ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा । एएसि ण मृला वि असखेजजीविया, कदा वि, खथा वि, तया वि, साला वि, पवाला वि । पत्ता पत्तेयजीविया, पुष्फा अणेगजीविया, फला एगवीया । सेत्त एगवीया ॥ ३२ ॥ से किं त वहुचीयगा ? बहुचीयगा अणेगविहा पन्नता । तजहा-अत्यियतेंद्र-कविट्ठे अवाडगमाउलिंग विल्ले य । आमलगफणिसदालिमआसोट्ठे उंचरवडे य ॥ १ ॥ णग्गोहणदिरुक्ते पिप्परीं सयरी पिलुक्खरुक्ले य । काउवरि कुर्त्थुभरि वोद्धव्वा देव-दाली य ॥ २ ॥ तिलए लउए छत्ताहसिरीसे सत्तवन्नदहिनने । लोद्धघवचदणज्ञुणणीमे कुडए क्यवे य ॥ ३ ॥ जेयावने तहप्पगारा । एएसि ण मूला वि असखेजजीविया, कदा वि, खधा वि, तया वि, साला वि, पवाला वि । पत्ता पत्तेयजीविया । पुष्फा अणेगजीविया। फला वहुवीयगा। सेत्त वहुवीयगा। सेत्तं रुक्खा॥ ३३॥ से किं त गुच्छा १ गुच्छा अणेगविहा पत्रता। तजहा—वाहगणिसह्रह्थुण्डई य तह कच्छुरी य जासुमणा । रुवी आढइ णीली तुलसी तह माउलिंगी य ॥ १ ॥ कच्छुभरि पिप्प-लिया अयसी वही य कायमाईया । वुच्चू पडोलकदिल विउन्ना वत्थुले वयरे ॥ २ ॥ पत्तटर सीयउरए हवइ तहा जवसए य बोद्धव्वे । णिग्गुडिय कत्तुवरि अत्यई चेव तालउडा ॥ ३ ॥ सणपाणकासमुद्दगअग्घाडगसामसिंदुवारे य । करमदृसदृह्सगकरी-रएरावणमहित्ये ॥ ४ ॥ जाउलगमालपरिलीगयमारिणिकुन्वकारिया मही । जावड केयइ तह गज पाडला दासिसकोहे ॥ ५ ॥ जेयावने तहप्पगारा । सेत गुच्छा ॥ ३४ ॥ से किं त गुम्मा <sup>२</sup> गुम्मा अणेगविहा पन्नता । तजहा-सेरियए णोमालिय-कोरंटयवधुजीवगमणोजे । पिइयपाणकणयरकुज्य तह सिंदुवारे य ॥ १ ॥ जाई मोगगर तह जुहिया ग तह मिल्लया य नासती । नत्थुल कत्थुल सेवाल गंठि मगद-तिया चेव ॥ २ ॥ चंपगजाई णवणीइया य कुदो तहा महाजाई । एवमणेगागारा हवति गुम्मा मुणेयव्वा ॥ ३ ॥ सेतं गुम्मा ॥ ३५ ॥ से किं त लयाओ १ लयाओ अर्णेगविहाओ पन्नताओ । तजहा-पउमलया णागलयअसोगचपगलया य च्यलया । वणल्यवास्रतिल्या अङ्मुत्तयकुदसामलया ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्त लयाओ॥३६॥

रण्ड	मुचागमे	[ पञ्चनग्रसूर्य
से कि तंबकीओं । या	क्रमो मणगबिहाओ पचचाओ ।	रंबहा-प्राप्तके श्रामिती
द्वेषी तउसीय एवका	र्षके । मोसाबङ् पंडोका <del>पंची</del> पुरि	म्माय चीकी व ॥ १ ॥
क्रमूना क्ष्युद्धा क्रमोवई	मारियाओं सभगा । समाव ।	ग <b>ा</b> कीया पा[व]वामी वेव-
माकी वं॥ घ⊪ भण्ये	ोगा मासुक्तनगामकता कवस्त्र	श्री व । सं <del>कटा</del> मजसानि
	य ॥ १ ॥ सुधिय <b>अंधानकी क</b> रि	
पाणीमासामग्री ग्रेमान्स्री	ग बच्छाजी ॥ ४ ॥ ससविद्वगोत्त	इतिया गिरिरण्या सम्बन
य भौजनई । वहिप्रोक्ट	कागनि मोगश्री व तह अक्सोंबी	व ॥ ५ ॥ जेयामी तह
	। १० ॥ से 🎏 र्तपम्मगा 🖁 प	
तंबदा-स्थल य स्थला	की बीरण सह इक्के ममाने व ।	ग्रंडे घरे व बेते विमिरे
	बंधे केंद्र कागए कंडानंधे व नावर्ग	
कंडाकेस य ब्रह्मणे ॥ २	।। जेनाक्षेत्र तहप्पनारा । वेशं प	भग ध ३८ ॥ से 🗯 र्व
त्त्या है तथा अवेगक्रिहा	पक्ता । रांबदा-चेकिनमेतियहाँति	नदम्मलुक्ते प्रमण् व पीक्
इका । अञ्चय कसावय	रोबिक्सें छमनेनचीरभुसे ॥ १ ॥	एरंडे श्रूपविदे काकर सक्रे
तका विसन् या सहर	तणद्भरमशिष्य योजन्य प्रशक्ति	तये य ॥ १ ॥ वेशक्ये
	D ३९ D से 👫 त बजबाई क्ल	
र्तबदा—ताक्रवमाले तब	कि दोवकि साठी य सारकाणी।	सरके जानह केनह कमडी
	॥ भुवरत्वातिपुरत्वे कांपसम्बे	
साम्री बोद्धन्या भाकिए	रीय ॥ १ ॥ क्रेशको सहप्रगार	ाः सेतं वक्तमा ॥ ४ 🕦
से किले इरिया है हरिय	रा अनेपविद्या पनता । तैवदा-भ	जोखनोडाचे हरियम छ
	ग्रेरम[ <b>मं</b> जीर]योक् <b>नती</b> य पा <b>लका ॥</b>	
सीत्पिवसाए तहेव वर्म	शिषः। मूक्कासरिस <b>य अनिक</b> साए	य जियदा⊽ जेव ॥ २ ॥
<b>तुकरी अब्द</b> उराके फ़लि	मध् मजाप् व भूगवाप्। चोरपद्मा	वसमस्यय समपुष्टिचैपरै
	सहप्पनारा । सेतं हरिया ॥ ४९	
	क्लकाओ । संग्रहा—सामीबीहीर	
Organization of Brown and	<b>एक जातियो</b> करती क्रचसिर्द्ध <b>व</b> राक्षय स्	रामेसको वर्षा राज्या व

विक्रमुमामास्रविष्कविक्रमान्यवानिसंब्रहातीवपसिमेवपस्यसी द्वर्भे सक्षेत्रकर्ण्यान रा(१५)सामकोबुक्तसक्तरिसकपूरमानीया । क्षेत्राक्ये तक्ष्यमारा । सैतं क्षेत्रहीमो ४४९० से दि त बसराहा है बबस्दा अगेयविहा पनता । तैयहा-बदप्, अवप्, पत्रप्, सेवाडे कर्ममुगा (हे वरीहमा कच्छ माजी उप्पत्ते पतमे क्रमुए, यहिने सुभए, सीर्गंथिए, पोन्डरीक्ष्, अहापोण्डरीक्ष्, सवपक्त सहस्थयते बस्हारे कोवनके बार्जिंदे सामरसे मिसे मिसमुनाके पोन्चके पोन्याकरपस्प, जेवादवे सहप्प-

रा । से त जलरहा ॥ ४३-१ ॥ से किं तं उद्दणा १ कुहणा अणेगविहा पन्नता । हा-आए, काए, कुहणे, कुणके, दव्वहलिया, सप्फाए, सज्झाए, छत्तोए, वंसी, ा, कुरए । जेयावने तहप्पगारा । सेत्त कुहणा । णाणाविहसठाणा रिक्खाणं नीविया पत्ता । खथा वि एगजीवा तालसरलणालिएरीण ॥ १ ॥ जह सगलसरि-ण सिलेसमिस्साण विदया वद्टी। पत्तेयसरीराणं तह होन्ति सरीरसघाया ॥ २ ॥ न्द वा तिलपप्पिडिया वहुंपहिं तिलेहि सहया सती। पत्तेयसरीराण तह होंति सरीरसघाया ॥ ३ ॥ सेत्तं पत्तेयसरीरबायरवणस्सङ्काङ्या ॥ ४३-२ ॥ से किं तं साहारणसरीरवायरवणस्सङ्काङ्या ? साहारणसरीरवायरवणस्सङ्काङया अणेगविहा पन्नता । तजहा---अवए पणए सेवालें लोहिणी[जाणिया] थिह थिभगा । अस्सकर्शी सीँहकन्नी सिउढि तत्तो मुसुंढी य ॥ १ ॥ क्क्कुण्डरिया जीरू छीरविरार्छी तहेव किट्टी य । हालिहा सिंगवेरे य आलुगा मूलए इय ॥ २ ॥ कंवूया कनुकड महुपोवलई तहेव महसिंगी । णीरुहॉ सप्पद्धयथा छिन्नरहा चेव बीयरहा ॥ ३ ॥ पाढा मियवालुंकी महररसा चेव रायवली य। पउमा य माढरी दती चढी किट्टिति यावरा ॥ ४॥ मासपिण मुग्गपण्णी जीवियरसहे य रेणुया चेव। काओली खीरकाओली तहा भगी नहीं इय ॥ ५ ॥ किमिरासि भद्दमुत्या णगलई पेलुगा इय । किण्हे पडले य हुढे हर-तणुया चेव लोयाणी ॥ ६ ॥ कण्हकदे वजे सूरणकदे तहेव खल्लूडे । एए अणतजीवा जेयावने तहाविहा ॥ ७ ॥ तणमूलकदमूळे वसीमूलेति यावरे । सर्खिजमसस्बिजा वोधव्वाऽणतजीवा य ॥ ८ ॥ सिंघाडगस्स गुच्छो अणेगजीवो उ होइ नायव्वो । पत्ता पत्तेयजीया दोन्नि य जीवा फले भणिया ॥ ९ ॥ जस्स मूलस्स भगगस्स समी भगो पदीसङ् । अणतजीवे उ से मृळे जेयावन्ने तहाविहा ॥ १० ॥ जस्स कदस्स मगगस्स समो भगो पदीसइ। अणतजीवे उ से कदे जेयावन्ने तहाविहा ॥ १२॥ जस्स खधस्स भरगस्य समो भगो पदीसङ् । अणतजीवे उ से खधे जेयावजे तहाविहा ॥ १२ ॥ जीसे तयाए भगगए समो मगो पदीसए। अणतजीवा तया सा उ जेयावजा तहाविहा ॥ १३ ॥ जस्स सालस्स भगगस्स समो भगो पदीसए । अणतजीवे य से साले जे-यावने तहाविहा ॥ १४ ॥ जस्स पवालस्स भगगस्स समो भगो पदीसए । अणत-जीवे पवाले से जेयावने तहाविहा ॥ १५ ॥ जस्स पत्तस्स भगस्स समो भगो पदी-सए । अणतजीवे उ से पत्ते जेयावने तहाविहा ॥ १६ ॥ जस्स प्रप्फरस भगास्स समो भगो पदीसए । अणतजीवे उ से पुष्फे नेयावने तहाविहा ॥ १७ ॥ जस्म फलस्य भगगस्स ममो भंगो पदीसए। अणतजीवे फले से उ जेयावने तहाविहा ॥ १८ ॥ जस्स वीयस्स भगगस्स संमो भगो पदीसए । अणतजीवै उ से वीए जेया- वर्षाया करेगाविद्या प्रकाश । तबहा-युकाकिस्था कृष्यिकेस्य गंक्रकण प्रेसेस्य करेगाविद्या प्रकाश । तबहा-युकाकिस्था कृष्यिकेस्या गंक्रकण प्रेसेस्य प्रकाश करा करा प्रकाश करा करा प्रकाश प्रकाश करा प्रकाश करा करा प्रकाश प्रकाश प्रकाश करा करा प्रकाश प्रक

दिया पुण्कवेदिया फल्केंदिवा थीयवेदिया संबुर्श्वमिश्रिया स्थानिर्मिश्रिया करपासरिकमित्रिया हिमिया क्रिमिया सिंगिरा किंगिरेबा बाह्या स्मुना मुसमा स्रोबरियम श्रववेटा इंद्रश्रद्रवा ईरगोवमा तुरुर्वकमा इश्वस्मवाहमा भूया इस्माइमा पिस्या सम्बद्धमा योम्ही इत्विमोंडा जैयाको स्टूप्यमारा । सम्बे त समुख्यिमा नर्पसम्। ते समासभी दुनेहा प्रवता। तंत्रहा-प्रवत्तमा व अपव्यतमा व । एएसि जे एकमाइमार्थ सेईबियाच पन्यतापन्यताचे अद्भ आईकुमची-हिबोजिप्पमुद्दमयसदृरसा अनतीति नक्यार्थ । सत्ते सर्वतिपसेसारसमादनवीदपध बना ॥ १५ ॥ से कि व जाउरिन्यसंनारसमावनशीवपवनवा । १ अनयन्ति। पन्नता । र्वजरा-अधिवपत्तिवमध्यिमसमा क्रीड तहा पर्वणे य । इनजरजदरका मंदाको य निनिरदे ॥ किञ्चपता नीसपता स्मेहिक्पता दानिक्पता स्विच्याम विकासना विविध्यक्ता बोईम्लिमा बसवादिना वंगीरा प्रीमिना तंत्रा अस्तिरोडा अभिनेता सारंगा नेतरा दोह्य अमरा अस्ति जस्ता होत िर्या भनविर्युना सामनिर्युना जमनिर्युना पिसनामा चनना गोमनदीहा जैवाबने तहप्पगरा । सम्बे ते संमुच्छिमा नपुसवा । से समासओ बुविहा पत्तना । र्वज्ञदा-पत्रनया व अपञ्चनमा य । एव्सि च एवमाइयाचे चउरिरियाचे पत्रनाय-अशाग नव अप्रकृतिकोतिव्यमुद्दराजगहरसाई वर्नतीति जनमार्य । सेर्स चउरि विवर्तमारसमानवजीवरकारणः ॥ ४६ ॥ सं कि तं पेषान्त्रपर्तमारसमानवजीवरक बता है १ भवनिक्दा पत्रणा । र्गबदा-अस्त्रयपेविदियससस्यानस्रवीकस्वास्या तिर्मेश्याजीयिक्पेबिन्दियसँगारसमारश्चतीक्पणक्या मनुलार्पविग्दियसंसारगमा<sup>त्रक</sup>

जीवपन्नवणा, देवपंचिन्दियससारसमावन्नजीवपन्नवणा ॥ ४७ ॥ से कि त नेरइया ? नेरइया सत्तविहा पन्नता । तजहा-१ रयणप्पभापुढविनेरइया, २ सक्करप्पभापुढवि-नेरइया, ३ वालुयप्पमापुढविनेरइया, ४ पकप्पमापुढिविनेरइया, ५ धूमप्पमापुढिवि-नेरइया, ६ तमप्पभापुढविनेरडया, ७ तमतमप्पभापुढविनेरडया । ते समासओ द्विवहा पन्नत्ता । तंजहा-पज्जत्तगा य अपज्ज्तगा य । सेत्त नेरइया ॥ ४८ ॥ से किं तं पर्चेदियतिरिक्खजोणिया १ पर्चिदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पन्नता । तजहा-.१ जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया य, २ थलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया य, ३ खहयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया य ॥ ४९ ॥ से किं त जलयरपचिन्दियतिरि-क्खजोणिया र जलयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया पचिवहा पन्नता। तंजहा-१ मच्छा. २ कच्छमा, ३ गाहा, ४ मगरा, ५ सुसुमारा । से कि त मच्छा <sup>२</sup> मच्छा अणेग-विहा पन्नता । तजहा-सण्हमच्छा, खवल्लमच्छा, जुगमच्छा, विज्झिंडियमच्छा, हलि-मच्छा, मगरिमच्छा, रोहियमच्छा, हलीसागरा, गागरा, वडा, बडगरा, गब्भया, उसगारा, तिमी, तिर्मिगिला, णक्का, तदुलमच्छा, कणिक्कामच्छा, साली, सत्थिया-मच्छा, लभणमच्छा, पडागा, पडागाइपडागा, जेयावने तहप्पगारा । सेत्त मच्छा । से किं तं कच्छभा <sup>२</sup> कच्छभा दुविहा पन्नता । तजहा-अद्विकच्छमा य मसकच्छभा य । सेत्त कच्छभा । से कि त गाहा ? गाहा पंचिवहा पन्नता । तजहा-- १ दिली, २ वेढगा, ३ सुद्धया, ४ पुलया, ५ सीमागारा । सेत गाहा । से किंत मगरा ? मगरा दुविहा पन्नता। तजहा-१ सोंडमगरा य, २ मद्वमगरा य। सेतं मगरा। से किं त सुसुमारा <sup>२</sup> सुसुमारा एगागारा पन्नता । सेत्त सुसुमारा । जेयावने तहप्पगारा । ते समासओ दुविहा पन्नता । तजहा--समुच्छिमा य गञ्भवक्षतिया य । तत्य ण जे ते समुच्छिमा ते सन्वे नपुसगा। तत्य ण जें ते गन्भवक्षतिया ते तिविहा पन्नत्ता । तजहा—इरथी, पुरिसा, नपुसगा । एएसि ण एवमाइयाण जलयरपचिदि-यतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तापज्जताण अद्धतेरसजाइकुलकोडिजोणिप्पमुहस्रयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । सेत जल्यरपर्चिदियतिरिक्खजोणिया ॥ ५० ॥ से कि त थल-यरपचिदियतिरिक्खजोणिया र थलयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नता । तजहा-चडप्पयथलयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया य परिसप्पथलयरपचिन्दियतिरि-क्खजोणिया य । से किं त चउप्पयथलयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया 2 चउप्पयथल-यरपचिन्टियतिरिक्खजोणिया चउन्त्रिहा पन्नत्ता । तजहा-एगखुरा, त्रिखुरा, गढीपया, सणप्कया । से किं त एगखुरा 2 एगखुरा अणेगविहा पत्रत्ता । तजहा-अस्सा, अस्स-तरा, घोडगा, गह्मा, गोरक्खरा, कदलगा, सिरिकदलगा, आवत्तगा, जेयावन्ने तह-

पञ्चनगमुर्व

प्पनारा । सेचं पुगब्रारा । से कि सं बुक्ता है बुक्ता व्यक्तिका प्रवत्ता । संबद्ध-अध

\$3F

गोपा यक्या रोज्ह्या प्रथम महिसा मिना र्पनरा नराहा क्या प्रस्मास्त्रसर मनमञ्जूरंगगोक्रवामार्षे, क्षेत्रावृक्षे तक्षणमारा । सेत्र ब्रवारा । से क्षेत्र स मधीपना है र्गबीपरा अधेननिहा पक्ता । तेजहा-हरनी हरचीप्राधना संउनहरूची खगा(म्मा) मेंडा जेबानेके लहप्पपारा । पेर्स शहीपया । से कि ले समय्क्रमा है समय्क्रमा अनेगविद्वा पत्रता।र्रज्हा-सीहा कवा चैकिया अच्छा सरख्य परस्तरा विज्ञामा विश्वास पुष्पा क्रोक्तुष्पा कोक्टिया स्ताम विकास विकास केपाकी तहण्यारा। सेतं समानवा । ते समासमो देवहा पवचा । वेबहा-संप्रक्रिमा व गवमवहन्तिना य । तरम में के ते संमुख्तिमा ते सब्बे नर्पस्था । तरब में से त गरमवर्षतिय वं विभिन्ना पश्चा । वंश्वा-स्त्यो पुरिसा मर्पुसमा । एएछि न एवमाद्रयानं वस्य-रपंतिन्दियतिशक्तकोतियाणं प्रवातापकताणं वस वात्रककोतिकोतिप्रमृद्दस्यस

इस्मा भवन्त्रीति भवन्तार्थं । सेत वरुप्यसम्बद्धंविन्दिवतिस्यासेनिया ॥ ५१ व से कि ते परिस्थानकवरपंचिन्तिवतिरिक्ताबोणिया । परितयनकवरपंचिन्निवतिरि क्लबोनिया दुविद्वा पक्ता । दंबद्वा-बरपरिसप्पयसयरपंचिन्दियदिरिक्पवोनिया व भूगप्रदेसप्यवस्थारपंचित्रवादितिकदाकोनिका स ॥ ५० ॥ से कि ते सापरिसपान्य-सरपंचिन्द्रमहिरिक्पनोक्षिमा । उरपरिश्चणवक्षमरपंचिन्द्रमहिरिक्पनोक्षिमा चउ

मिद्दा पनता । तबहा-अद्दी अवगरा आमालिया सद्दोरमा । से कि तं अद्दी ! मही हुम्छा पक्ता । तंत्रहा--दश्यीक्ता य सउदिको य । छ % तं दश्यीपरा है दम्बीकरा अनेवविद्धा प्रवता । तंत्रहा--आधीविना विद्धीविसा उम्मविसा सीन-विमा तमाविसा कालाविसा सरमामविसा मीमासविमा बण्डमप्पा सैयसप्पा काओदरा इज्यापुष्पा कोमाहा अक्रिमिंदा संनिदा क्षेत्राको सहस्थारा । सर्पे बम्बीपरा । सं 🎏 सं सहसिन्तो है सहनिन्तो अनेपनिहा पनता । संबदा---रिप्नाया योगसा क्याहीया व्यवस्य विलक्षियो सहवियो सावियो वही ब्रह्मिसाणी बारपडागा अदावते तहप्यगरा । संघ मउतियो । शेर्त बही । से 🕏 र्त बदगरा अवगरा एगायारा पणता । सेतं अवगरा ह ५३ ह से कि ले आमानिजा रे पदि के र्भत । भागानिया सेमुख्यद् । गोयसा । संतो सञ्जयनेते अन्नादमेन प्रैनेत निर्माः बाएचं पक्षरसम् कम्मधूनीम् नावायं पटुच पंजनु अहानिवहेत् चरपरिसंपानारप्र बानुद्वरांपाचारेल वसदेवरांपावारेल अंडियाचीवावारेम् अहामेडियरावाचारेल यामनिवेतेषु श्वरनिवसस् निगमनिवेशम्, श्रवनिक्तेनु, कम्परनिवेशन् मर्ववनि वेसेण होजमुद्दविवेसेस पर्यानिवसेण आसरनिवेसम् आसम्पनियसेन संबाहनिवे

सेसु, रायहाणीनिवेसेसु, एएसि णं चेव विणासेसु एत्थ णं आसालिया समुच्छइ। जहन्नेणं अगुलस्स असखेज्जइमागमित्ताए ओगाहणाए, उक्कोसेणं बारसजोयणाइ तय-णुरूवं च ण विक्खमवाहहेण भूमिं दालिता ण समुद्देड, असन्नी मिच्छादिद्दी अण्णाणी अंतोमुहुत्तऽद्धाउया चेव कालं करेइ। सेत्त आसालिया ॥ ५४ ॥ से किं त महोरगा 2 महोरगा अणेगविहा पन्नता। तजहा-अत्थेगइया अगुल पि, अगुलपुहुत्तिया वि, वियल्यि पि, वियत्थिपुहुत्तिया वि, रयणि पि, रयणिपुहुत्तिया वि, कुच्छि पि, कुच्छि-पुहुत्तिया वि, घणु पि, घणुपुहुत्तिया वि, गाउयं पि, गाउयपुहुत्तिया वि, जोयण पि, जोयणपुहुत्तिया वि, जोयणसय पि, जोयणसयपुहुत्तिया वि, जोयणसहस्स पि। ते णं थले जाया, जलेऽवि चरंति थलेऽवि चरन्ति, ते णित्य इह, बाहिरएसु दीवेसु समुद्द्यम् हवन्ति, जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्त महोरगा । ते समासओ दुविहा पन्नता । तजहा----समुन्छिमा य गब्भवक्षतिया य । तत्थ ण जे ते समुच्छिमा ते सब्वे नपु-सगा। तत्य ण जे ते गब्भवक्षतिया ते तिविहा पन्नता। तजहा-इत्थी, पुरिसा, नपुसगा । एएसि ण एवमाइयाण पजन्तापजन्ताणं उरपरिसप्पाण दसजाइकुलकोडि-जोणिप्पमुद्दसयसद्दस्सा भवन्तीति मक्खाय । सेत्त उरपरिसप्पा ॥ ५५ ॥ से कि त भुयपरिसप्पा<sup>2</sup> भुयपरिसप्पा अणेगविहा पन्नत्ता । तजहा-नउला, सेहा, सरडा, सला, सरंठा, सारा, खोरा, घरोइला, विस्सभरा, मूसा, मगुसा, पयलाइया, छीरविरालिया, जोहा, चउप्पाइया, जेयावने तहप्पगारा। ते समासओ दुविहा पन्नता। तंजहा---समुच्छिमा य गब्भवक्कतिया य । तत्थ ण जे ते समुच्छिमा ते सब्वे नपुसगा । तत्थ ण जे ते गञ्भवकृतिया ते तिविहा पन्नता। तंजहा-इतथी, पुरिसा, नपुसगा। एएसि ण एवमाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताण भुयपरिसप्पाण नव जाइकुलकोडिजोणिप्पमुह-सयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । सेत्त भुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिया । सेत परिसप्पथलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिया ॥ ५६ ॥ से कि त खहयरपचिन्दिय-तिरिक्खजोणिया 2 खह्यरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया चडव्विहा पन्नता । तजहा---चम्मपन्खी, लोमपन्खी, समुगगपन्खी, विययपन्खी। से किं त चम्मपन्खी वस्म-पक्खी अणेगविहा पन्नता । तंजहा-वग्गुली, जलोया, अडिला, भारडपक्खी, जीव-जीवा, समुद्दवायसा, क्रणित्तिया, पिक्खिवरालिया, जेयावन्ने तदृष्पगारा । सेत चम्म-पक्खी। से किं त लोमपक्खी <sup>2</sup> लोमपक्खी अणेगविहा पन्नत्ता। तजहा—डका, कंका, कुरला, वायसा, चक्कागा, इसा, कलहंसा, रायहमा, पायहसा, आडा, सेडी, वगा, वलागा, पारिप्पवा, कोंचा, सारसा, मेसरा, मस्रा, मऊरा, सत्तहत्या, गहरा, पोंडरिया, कागा, कार्मिजुया, वंजुलया, तित्तिरा, वृष्टगा, लावगा, क्वोया, कविंजला,

448

पारेक्या विकया वासा इनकुका सुवा बरहिया समजसकामा कोहका, सेहा **१रिक्र**गमाई । सेर्च स्रेमण्डली । से 🎏 त समुम्मण्डली 🖁 समुम्मण्डली प्रगामास पवता । ते में मरिव दर्द, वाबिरएक्ष बीक्समुदेख भवन्ति । सेव समुग्गपदवी । **छे किं** त नियस**पत्रकों ।** विसम<del>पत्रकों</del> एगागारा पत्रता । ते में शस्त्र हाँ, बाह्यरसूह पीत्रसमुद्रेषु भवन्ति । सेतै निमनपत्रस्ती । ते समासको हुनिहा पत्रता । तबहा-संगुष्टियमा य गब्भवदंशिया व । तत्व जं के ते संगुष्टिमा ते सम्बे वर्षसमा । तरम में जे ते गम्मनदेविया हे विभिन्न पत्रता। तंत्रहा--हत्मी प्रसिता नर्पुसमा। एएसि में एक्साइवार्ण बहुयर्पंकिन्वियतिरिक्सकोविधार्ण पत्रशापकत्तार्ण बारस बाइक्टरोविजीविष्यमुद्दस्यस्य स्वन्धीति सम्बार्थः। सरद्ववाद्यस्योविकस्य नव महत्तरसाई च । यस वस व होन्सि भवना तह बारस चेद बोहरूबा । सैसे वाह्यरपंचित्रिदवदिरिक्वकोणिया । सेर्त पचित्रिदयदिरिक्ककोणिया ॥ ५७ ॥ से किं त मञ्जला है मगुरसा बुविहा पणता । तंत्रहा--- एमुन्जिममञ्जला य गब्भवकंदिक-मकुरना य n ५४ ॥ से कि वे चेमुल्किममकुरसा ! कि वं भेते ! चेमुल्किममकुरसा संस्थाति । गोवमा । क्षेत्रो सम्बन्धको पगवाक्षाताप कोवनसवस्वस्वति अवतः जेन रोक्तमुरेष्ठ पजरसह कन्मम्यीम्, रीसाए जक्नमभूरीष्ठ, क्रम्मण् अंदररी वप्तु गञ्जनदंदियमञ्जरतानं चेन कवारेतु वा पाछवयेत वा <del>चेके</del>तु वा सिवावपूर्य वा बेरोस वा पिरोस वा प्रश्स वा सोनियस वा सबेरा वा सक्सान्यक्रपरिसारेस वा विरामजीवस्केवरेस वा बीपुरिससेबोएस वा करारमिद्धम्बेस वा सब्बेद धर बारुप्टाचेतु एत्व में संतुच्छिममञुरसा संतुच्छंति अंगुकरन असेनेआसागमेताए भोगाइणाए । सम्बर्ध निकारिक्षी जन्मानी सम्बाह्य प्रवर्गाष्ट्र अपन्यामा शंहोस्तह त्ताउवा चेव नार्व करेंदि । सेचे प्रमुख्यिममणुरुगा ॥ ५९ ॥ से 🎏 ते सब्सवहेदि-कापुरसा । गब्मवर्द्धतिवमणुरसा तिविद्दा पणता । तैवदा—कम्मभूमना अवस्मन मुमगा अन्तररोषना ॥ ६ ॥ से कि त अन्तरशीवगा । अन्तररोपना अञ्चानीस विद्वा पत्रता । रामधा-१ एगोस्मा १ कामासिया १ वेमाधिया ४ जंगोनिया ५ इसक्या ६ पनस्था ७ गोरचा ८ सङ्ख्या ९ आर्यसमुद्दा ५ मेंडमुद्दा ११ भवीमुद्दा १२ मीमुद्दा १३ भागमुद्दा १४ दरिवमुद्दा १५ चीरमुद्दा १६ गरमुद्दा १७ आसकता १८ इरिस्का १९ अरसा ६ कन्नपाउरमा २१ तकामुदा २२ मासुदा २३ विमुसुदा २४ विमुर्गता २५ वर्गाता सहरता २० गृहर्वता १४ छहरता । सेतं अन्तरस्थाना स ६१ अ से कि तं अक्रमभूमगा र अक्रमभूमगा तीनविहा पत्तता । र्रवहा-पंचाई हेमवपूर, पंचाई

हेरण्यवएहिं, पचिंह हरिवासेहिं, पचिंह रम्मगवासेहिं, पंचिंह देवकुरूहिं, पचिंह उत्तर-कुरूहिं। सेत्त अकम्मभूमगा ॥ ६२ ॥ से किं तं कम्मभूमगा <sup>2</sup> कम्मभूमगा पन्नरसविहा पन्नता । तजहा-पचिंह भरहेहिं, पंचिंह एरवएहिं, पचिंह महाविदेहेहिं । ते समासओ दुविहा पन्नता । तजहां-आरिया य मिलक्ख्य ॥ ६३ ॥ से किंत मिलक्ख्य मिलक्ख् अणेगविहा मन्नता। तजहा-सगा जवणा चिलायसवरवब्वरकायमुरुंडोडभ-डगनिण्णगपक्कणियादुळक्खगोंडसिंहलपारसगोधाकोंचअवडइदमिलचिल्ललपुर्लिदहारो-सदोववोक्काणगन्याहारगपहलियअज्झलरोमपासपउसामलयायवर्धुयायस्यलिकुकुणग-नेयपल्हवमालवमगगरवाभासियाणकःचीणल्हसियखसाघासियणद्रमोंढङोंविलगलओ-सपञ्जोसकक्केयञ्जकखागहूणरोमगमरुमरुयचिलायविसयवासी य एवमाई। सेत्तं मिलक्ख् ॥ ६४ ॥ से कि त आरिया <sup>2</sup> आरिया दुविहा पर्वता । तजहा-इङ्किपत्तारिया य अणिह्रिपत्तारिया य । से किं तं इद्दिपत्तारिया <sup>१</sup> इद्दिपत्तारिया छिन्वहा पन्नता । तंजहा-१ अरहता. २ चक्कवटी, ३ वलदेवा, ४ वासुदेवा, ५ चारणा, ६ विज्ञा-हरा । सेत्त इष्ट्रिपत्तारिया । से कि त'अणिष्ट्रिपत्तारिया <sup>2</sup> अणिष्ट्रिपत्तारिया नवविहा पन्नता । तजहा-खेतारिया, जाइआरिया, कुलारिया, कम्मारिया, सिप्पारिया, भासारिया, नाणारिया, दसणारिया, चरितारिया ॥ ६५ ॥ से कि त खेतारिया 2 खेतारिया अद्मुख्वीसइविद्याणा पन्नता । तजहा-रायगिह मगह चपा, अगा तह तामलिति वगा य । कचणपुरं कलिंगा, वाणारसी चेव कासी य ॥ १ ॥ साएय कोसला गयपुरं च कुरु सोरिय कुसहाँ य । कंपिल पंचाला, अहिछत्ता जंगला चेव ।। २ ॥ वारवई सोरहा, मिहिल विदेहा य वच्छ कोसबी। नंदिपुरं सिंडला. महिलपुरमेव मलया य ॥ ३ ॥ वहराड वच्छ वरणा, अच्छा तह मत्तियावह दसण्णा । सोत्तियवई य चेदी, वीयभयं सिंधुसोवीरा ॥ ४ ॥ महुरा य सूरसेणा, पावा भगा य मास पुरिवद्या । सावत्थी य कुणाला, कीडीवरिस च लाढा य ॥ ५ ॥ सेयविया वि य णयरी, केकयअदं च आरिय भणिय । इत्युप्पत्ती जिणाण, चक्कीण रामकण्हाण ॥ ६ ॥ सेत्त खेत्तारिया ॥ ६६ ॥ से किं त जाइआरिया <sup>2</sup> जाइआरिया छिव्वहा पन्नता। तजहा-अवट्टा य किंदा विदेहा वेदगा इ य । हरिया चुचुणा चेव छ एया इब्भजाइओ ॥ सेत्त जाइआरिया ॥ ६७ ॥ से किं त कुलारिया 2 कुलारिया छिव्वहा पन्नता । तजहा-उग्गा, भोगा, राइन्ना, इक्खागा, णाया, कोरव्वा । सेत कुलारिया ॥ ६८ ॥ से किं त कम्मारिया <sup>१</sup> कम्मारिया अणेगविहा पन्नता । तजहा--दोसिया, सोत्तिया, कप्पासिया, सुत्तवेयालिया, भडवेयालिया, कोलालिया, नरवाह-णिया, जेयावजे तहप्पगारा। सेत्त कम्मारिया॥ ६९॥ से किं त सिप्पारिया? 464

१ नेमहना १९ निम्महना १२ अंक्रिमी १३ विध्यक्रियी १४ व्यवस्थिती १५ बाज्यक्वि १६ महिन्दी १७ बोमिकिनी १८ पोक्रिकी । ऐते मासारिता H ७९ B से कि स लामाप्रेया ई लागारेवा पंचनिका पक्ता । संबद्धा-आमिनिकोहि मनाजारिका समनानारिका कोश्विनानारिका मणपळ्यनानारिका केवसनामारिका । धेते नागारिया ॥ ७२ ॥ से 🗯 तं वंसवारिया है वंसवारिया कुमिहा पवता । तंत्र्या-सरागर्वसजारिका व बीकरागर्वसचारिका व ॥ ७३ ॥ से कि सं सरागर्वसचारिका है सरागदसमारिया इसविद्या पक्षता । तंत्रहा-निसम्प्रकृषस्य आजार्यः स्तानीयस्त्रमेव । कामिरामनिरवारको निर्मियाचेकेवयम्मको ॥ १ ॥ स्वत्युजाक्रियया जीवाजीवे व पुज्य-पार्व च । सङ्स्युक्याऽऽस्वर्धवरे व रोग्रह च निरस्तमो ॥ २ ॥ को विनविद्वे सावै चटनिको सहका सम्मेव । प्रमेव अक्टब्रीए व निसमास्क्रील नावस्त्रो ॥ १ प्र प्र चेव क माने उनमेद्धे जो परेण सरबह । करमस्येय विकेश व उपएसक्ति नामन्त्रो ॥ ४ ॥ को हेरुस्याजंदी आसाप् रीमए प्रस्तुनं द्व । एसेन नमहति व एसी माजाब्दे नाम ॥ ५ ॥ को शतमिक्रमतो शक्य क्येयाहर् व सम्मतं । अनि बाहिरेग न सो प्रतासति गायको n ६ n एनेज अवेगतं प्रयानं सो परापी न सम्पत्तं । उदए व्य देवानेम्बू सो भीयकाति नायको ॥ ७ ॥ सो द्वाद्र अप्रियमर्पः प्रकार मस्य मस्यको विद्धे । इकारस अंगर्छ फाक्या विद्विवासी में प्र 6 है वृष्याण सम्मनाया सम्मपमाणेले बरस उपरुद्धा । सम्बाह्य वयविद्वीहि नित्यार्रक इति नामनो ॥ ५ ॥ वंसणनाजवस्ति तवनिणप् सम्बस्निकातीस । वो अस्तिना-भावत्ये से क्य किरेवार्ष भाग ॥ १ ॥ अनिमम्बद्धान्त्रित्त्री संवेदव्यति होर नावको । नविसारको पथरके वागरिसमहिको व सेरोध ॥ १९ ॥ वो वस्विकन बरमं पुनवनमं कह चरित्तपन्मं व । सहद विवासिद्देवं सो प्रत्मकृति नाजनी n १६ ॥ परमत्यस्थाने वा स्वीतुपरम्पत्यस्था वावि । पावनकृतंस्वयस्था व सम्मातसम्बद्धाः ॥ १६ ॥ निस्तीकव निर्वाचित्रः विश्वतिम्बद्धाः साहस्यि व १

उववृह्थिरीकरणे वच्छल्लपभावणे अद्गु ॥ १४ ॥ सेत सरागदसणारिया ॥ ७४ ॥ से किं त वीयरायदसणारिया विवासियायदसणारिया दुविहा पन्नता । तजहा-उवसतकसायवीयरायदसणारिया य खीणकमायवीयरायदंसणारिया य । से कि त जवसतकसायवीयरायदसणारिया <sup>१</sup> जवसतकसायवीयरायदसणारिया द्वविहा पन्नता । तजहा-पढमसमयउवसतकमायवीयरायदसणारिया य अपढमसमयउवसतकसाय-वीयरायदमणारिया य । अहवा चरिमसमयउवसतकसायवीयरायदसणारिया य अचरिमसमयुज्वसतकसायवीयरायदसणारिया य । सेत्त उवसतकसायवीयरायदसणा-रिया । से किंत खीणकसायवीयरायदसणारिया 2 खीणकसायवीयरायदसणारिया दुविहा पन्नता । तजहा-छउमत्थखीणकमायवीयरायदंसणारिया य केवलिखीणकसाय-वीयरायदंसणारिया य । से कि त छउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया 2 छउ-मत्यखीणकसायवीयरायदसणारिया दुविहा पत्रता । तजहा-सयवुद्धछउमत्थखीण-कसायवीयरायदसणारिया य वृद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायदसणारिया य । से कि त सयवुद्धछउमत्यखीणकसायवीयरायदंसणारिया <sup>२</sup> सयवुद्धछउमत्थखीण-कसायवीयरायदसणारिया दुविहा पन्नता । तजहा-पढमसमयसयवुद्धछउमत्थखीण-कसायवीयरायदसणारिया य अपडमसमयसयंवुद्धछन्जमत्थलीणकसायवीयरायदसणा-रिया य । अहवा चरिमसमयसयबुद्धछउमत्थलीणकसायवीयरायदसणारिया य अचरिमसमयमयबुद्धछउमत्थालीणकसायवीयरायदसणारिया य । सेत्त सयबुद्धछउमत्थ-खीणकसायनीयरायदसणारिया । से किं त वुद्धचोहियछउमत्थाखीणकसायनीयराय-दसणारिया ? वुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायदसणारिया दुनिहा पन्नता । तजहा-पढमसमयवुद्धवोहियखीणकसायवीयरायदसणारिया य अपढमसमयवुद्धवोहि-यछउमत्यखीणकसायवीयरायदसणारिया य । अहवा चरिमसमय्बुद्धवोहियछउमत्य-खीणकसायवीयरायर्दसणारिया य अचरिमसमयबुद्धचोहियछउमत्यखीणकसायवीयरा-यदंसणारिया य । सेत्त बुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायदसणारिया । सेत्त छउमत्थर्खीणकसायवीयरायदसणारिया । से किं त केवलिखीणकसायवीयरायदसणा-रिया <sup>२</sup> केवलिखीणकसायवीयरायदसणारिया दुविहा पन्नता । तजहा–सजोगि-केविल्खीणकसायवीयरायदंसणारिया य अजोगिकेविल्खीणकसायवीयरायदसणा-रिया य । से किं त सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदसणारिया <sup>2</sup> सजोगिकेवलिखीण-क्सायवीयरायदसणारिया दुविहा पन्नत्ता । तजहा-पढमसमयसजोगिकेवलिखीणक्सा-यवीयरायद्सणारिया य झपढमसमयसजोगिकेविल्खीणकसायवीयरायदंसणारिया य । अहवा चरिमसमयसजोगिकेविळखीणकसायवीयरायदसणारिया य अचरिमसमय-

444 मुत्तागमे - पञ्जाबासर्व समोगिकेविक्तीगवसायगायग्यवसारिता य । सेतं समोगिकेविक्तिपदमाववीय-रानर्सागारिया । ऐ 🎏 र्शं अजोविकेन्विक्वीकक्षायबीयरायर्थसमारिया 🖁 अजोनि-केवित्वीवस्थाववीक्रावदेसचारिया दुविहा पश्चमा । सवहा-परमसमवभवानि-केमिकचीणस्यायवीयरावर्षसभारिका य अपस्मसम्बद्धानेकोविकेमिकस्यावनीय-रामर्वसमारिया च । भवना चरिमसम्बन्धनोगिकेनशिक्तीगकसावधीनरामदगनारिना त्र अन्तरमसमयभागोनिकेनिकवीयकसामनीयरामवसगारिया य । सेत अजीनि-केनकियीणस्थावदीयरावदेशकारिता । सेर्घ केनकियीनकरास्त्रीसरावदेशकारिता । सेत चीयकसायनीयरावर्वसनारिका । सेतं बंधनारिका ॥ ७५ ॥ सं कि वं बरितारिया ! बरितारिया अविदा पणता । तंबदा-धरामबरितारिया य बीबराम-बरितारिया व । से कि सं सरमाबरितारिया । सर्माबरितारिया हुनिहा प्रकृता । र्तन्दा---ध्रहमसंपरावसरागवरितारिया च वाधरसंप्रावसरागवरितारिया व । से 🏂 तं चहमपेपराध्यरामचरितारेश 🖁 ध्वत्रमयेपराययरागचरितारिया बुकिन पक्षता । तेवदा- पद्मारमञ्जूष्ट्रमार्थपरामसरामस्त्राधेवा व कण्यसम्बद्धानन्त्रा र्थपराजसरायकरिकारिया व । भद्रवा करिमसम्बद्धाः मर्थपरावसरायकरिकारिजा व

अन्यरिमयममध्रद्वमयेपरावसरागनरित्तारिया य । श्रद्दवा सद्वमुसंपरावसरागनरित्ता-रिया दुविहा प्रवता । तंत्रहा---चेकिछिस्त्यमाना व विद्युज्यमाना य । चेतं सहसर्वप-व अपरामसम्बन्धराज्यसरायवरितारिया व । बहवा वरिससमयग्रनस्यप्रय सरागचित्तारिया व अवस्मिसमञ्जाबरसंपराजसरायचितारिया य । कहन बायरसंपर्करागवरितारिक कृतिहा पक्ता। संबदा-पविवाहं य अपविवाहं व । सेतं बायरसंप्रतमसरागवरितारिया ॥ ४६ ॥ से कि ये बीयराजवरितारिया है बीयरायचरितारिया द्वविद्या पणता । तंबद्या-सवर्धतपरायधीयरायचरितारिया व कीजक्यान्त्रीकरावनरिकारिया थ । से कि से सन्तर्भतक्यावनीकरायनरिकारिया है ठवसंतकतामवीनरामकरितारिया वृतिहा पत्रता । संबद्धा-पवस्तवस्व वर्षतकतान-शीयराजकरितारिया व क्यंत्रमसम्बद्धवसेत्तरसाववीयराजकरितारिया व । जदवा वरिमसम्बद्धसंतक्षाववीयराज्यस्ति। य अवरिमसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धाववीय रायमरितारिया य । पेतं वनसंतकसायभीजरायमरितारिया । से 🕸 दें चीनकसाय-कीवरायवरितारियाः विकासावधीवरावधरितारिया प्रविद्या पक्षणः । श्रेवदा-कामान्यकीजनसास्त्रीयस्थ विस्तारिया य वैमधिवीयवसायनीवस्य विस्तारिया व ।

रायसरायनरिवारिया । से कि वं वायरसंपरावसरायनरिवारिया । वायरसंपराय-श्रामक्रितारिया दुविद्या पवता । तंबद्य-गडमसमब्बाब्दर्सपराबश्रधगानरितारिया से कि तं छउमत्थाखीणकसायवीयरायचरित्तारिया १ छउमत्थाखीणकसायवीयरायच-रितारिया दुविहा पन्नता । तजहा-सयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य वुद्धवोहियछउमत्थाखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । से किं तं सयवुद्धछउम-त्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया <sup>१</sup> सयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नता । तजहा-पदमसमयसयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अपडमसमयसयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । अहवा चरिमस-मयसयबुद्धछउमत्थलीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थ-चीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । से किं त वुद्धवोहियछउमत्यखीणकसायवीयरा-यचरित्तारिया ? बुद्धवोहियछउमत्यखीणकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नता । तजहा-पडमसमयवुद्धवोहियछउमत्यखीणकसायवीयरायचरितारिया य अपडमसमय-बुद्धवोहियछउमत्यखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य। अहवा चरिमसमयबुद्धवोहियछ-जमत्यखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अचरिमसमयवुद्धवोहियछउमत्यखीणकसा-यवीयरायचरितारिया य । सेत्त वुद्धवोहियछउमत्यखीणकसायवीयरायचरितारिया । सेत छउमत्यखीणकसायवीयरायचरितारिया । से किं त केवलिखीणकसायवीयरा--यचरित्तारिया<sup>२</sup> केवलिखीणकसायनीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नता। तंजहा---सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरितारिया य अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायच-रितारिया य । से कि त सजोगिकेवंलिखीणकसायवीयरायचरितारिया 2 सजोगिकेव-लिखीणकसायवीयरायचरितारिया दुविहा पन्नता । तजहा—पढमसमयसजोगिकेव-लिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अपडमसमयमजोगिकेवलिखीणकमायवीयराय-चरित्तारिया य । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । सेत्त सजोगिकेवलि खीणकसायवीयरायचरित्तारिया । से कि त अजोगिकेवलिखीणकमायवीयरायचरि-त्तारिया <sup>२</sup> अजोगिकेविलेखीणम्सायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नता । तजहा---पढमसमयअजोगिकेवलिखीणक्सायवीयरायचरित्तारिया य अपडमसमयअजोगिकेव-लिखीणकसायवीयरायचरितारिया य । अहवा चरिमयमयअजोगिकेवलिखीणरसाय-वीयरायचरितारियाय अचरिमममयअजोगिकेविल्खीणकसायवीयरायचरितारिया य । सेत्त अजोगिकेविल्खीणकसायवीयरायचरित्तारिया । सेत्त केविल्खीणक्यायवीयरायच-रित्तारिया । सेत्त खीणक्यायवीयरायचरित्तारिया । मेत्त वीयरायचरित्तारिया । अत्वा चरित्तारिया पचिवहा पन्नता । तजहा--मामाइयचरित्तारिया, छेटोवट्टावणियचरित्ता-रिया, परिहारविमुद्धियचरित्तारिया, मुहुमसपरायचरित्तारिया, अहक्सायचरित्तारिया १९ सत्ता०

य । से कि ते सामाहबन्दितारिया ? सामाहबन्दितारिना नुमिहा पत्तता । तेनहा---इत्तरेयसमाइयजरिकारिया अ मायक्षियसमाइयजरिकारिया व । सेर्च सामाइयजन रितारिया । से कि ते केवोनक्कानमिननरितारिया र केवोनक्कावितनरितारिया वृत्तिः पनता । रामश्-सार्वारकेनोनद्वाननिवनिरासिया य निरक्षारकेनोनद्वाननियन रितारिया य । सेतं क्षेत्रोबद्धावन्यियजरितारिया । से कि श्रं परिश्वारनिश्वद्धियवरिता-सुविध्यवरितारिया य निनिद्धकावनपरिदारनिश्चविध्यवरितारिया थ । सेत्तं परिवारनिश्च क्रियचरितारिया । से कि वै सहुमधेपरावनरितारिया । सहुमधेपरावनरितारिया विश्वा पणता । र्वेजवा— येक्किकिस्स्यायम्बद्धमसंपराजगरितारिता व विद्याज्यामाणव इमसंप्रायमरिवारिया व । थे तं सहमसंपरावमरिवारिया । सं 🏂 तं अहक्सायन रिशारिया ! सहस्वायणरिशारिया दुनिया पश्चता । तवया- उत्तरस्थव्यव्याम वरैतारिमा व केवक्रिमदक्कायवरिचारिया व । धेर्च सहक्कायवरिचारिया । धेर्च बरितारिया । चेतं अनिद्विपतारिया । चेतं कम्माभूमया । चेतं गब्भवकेतिया । चेतं मक्तमा ॥ ५७ ॥ से कि ते देवा ? देवा करुक्ति। पवता । तबा -- अवधवासी बाबसंदरा कोप्रतिया बेमानिया । सं के सं भवनवासी ! सबजवासी क्सन्तिः पवता । तनहा-नद्वरङ्गारा नाग्डमारा प्रविद्यमारा विम्हुमारा विम्हु मारा श्रीक्टमारा उदब्रिकमारा बिसकमारा बाउकमारा बन्निकमारा। हे समान संभी दुनिहा पन्नता । तैनहा---पन्नलया य अवजनगा य । सेत्ते मनजवासी । सं 🎏 वं भागमंतरा है भागमतरा क्युनिहा पणता । तंत्रहा-निजयः सिपुरिशा महोरमा र्गभव्या करूबा रक्ष्यसा भूवा पिसामा । तं समासको दुनिशा पदार्गा । भोद्रसिया पंत्रविद्वा क्षणा । तैश्रहा—श्रंबा सरा गहा नक्ष्यता तारा। वे समामको इतिहा पक्ता । तबहा---पक्तागा य अपजलगा व । सेते बोदसमा ह से कि ते बेमानिया <sup>३</sup> वैमानिना बुविहा पक्ता । शेनवा-कप्योवया अ कप्यादेवा य । से कि त कप्पोबना ! कप्पोबना बारसमिक्षा पत्रता । रामहा--सोहम्मा देसाणा सर्वकुमारा माहिवा वंशकीया जैतया महाश्रका सहस्सारा आणवा पायमा सारणा समुना । ते समासभी दुनिहा पत्रता समहा--यजतगा म अपक्रतमा स । सेर्च कम्पोबमा । से कि र्च कम्पाईमा है कम्पाईमा दुविहा प्रवता । र्तवहा--नेकिकमा व अञ्चलरोजनाइया य । से कि ते गॅनिकमा <sup>३</sup> गेनिकमा स्वतिहा पत्रता । रोजहा- विद्विमविद्विमगेनिजना विद्विमगणिसगोनिजमा देडिमउनरे

मगेविज्ञगा, मिज्ञमहेद्रिमगेविज्जगा, मिज्ञममिज्ज्ञमगेविज्जगा, मिज्ञमछवरिमगेविज्जगा, उवरिमहिद्विमगेविज्जगा, उवरिममिज्ज्ञमगेविज्जगा, उवरिमछवरिमगेविज्जगा। ते समासओ दुविहा पन्नता। तजहा—पज्जतगा य अपज्जत्तगा य। सेत्त गेवि-ज्जगा। से कि त अणुत्तरोववाङया थ अणुत्तरोववाङ्या पचिवहा पन्नता। तजहा—विजया, वेजयन्ता, जयन्ता, अपराजिया, सव्वद्वसिद्धा। ते समासओ दुविहा पन्नता। तजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। सेत्तं अणुत्तरोववाङया। सेत्तं कप्पा-ईया। सेत्तं वेमाणिया। सेत्तं देवा। सेत्तं पन्नवणा। सेत् ससारसमावन्नजीवपन्नवणा। सेत्तं जीचपन्नवणा। सेत्तं पन्नवणा॥ ७८॥ पन्नवणाए भग-वर्षए पढमं पन्नवणाएयं समत्तं।

किह ण भते ! वायरपुढिविकाइयाण पजन्तगाण ठाणा पन्नता 2 गोयमा ! सद्घा-णेण अद्वतु पुढवीतु, तजहा-रयणप्यभाए, सक्करप्यभाए, वालुयप्पभाए, पकप्पभाए, धूमप्पभाए, तमप्पभाए, तमतमप्पभाए, ईसिप्पन्माराए, अहोलोए पायालेसु, भव-णेसु, भवणपत्यडेसु, निरएसु, निरयावलियासु, निरयपत्यडेसु, उद्गुलोए कप्पेसु, विमाणेष्ठ, विमाणावलियासु, विमाणपत्यडेसु, तिरियलोए टकेसु, कूडेसु, सेलेसु, सिहरीष्ठ, पञ्भारेष्ठ, विजएस, वक्खारेष्ठ, वासेष्ठ, वासहरपञ्चएस्च, वेलासु, वेइयासु, दारेस, तोरणेस, दीवेस, समुद्देस, एत्य णं वायरपुढविकाइयाण पज्जतगाण ठाणा पनता । उनवाएण लोयस्स असखेजइभागे, समुग्घाएण लोयस्स असखेजइभागे, सद्वाणेण लोयस्स असखेजइभागे॥ ७९॥ कहि ण भते। वायरपुढविक्काइयाण अपजत्तगाण ठाणा पन्नता र गोयमा! जत्थेव वायरपुढविकाइयाण पजत्तगाणं ठाणा पनता तत्थेव वायरपुढविकाइयाण अपजत्तगाण ठाणा पन्नता । उववाएण सन्वलोए, समुग्घाएण मन्वलोए, सद्घाणेण लोयस्य असखेजाइभागे ॥ ८० ॥ कहि णं मते ! सहमपुढविकाइयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाण य ठाणा पन्नता १ गोयमा । सुहुमपुढिवकाइया जे पजतागा जे य अपजतागा ते सन्वे एगविहा अविसेसा अणा-णता सव्वलोयपरियावन्नगा पनता समणाउसो ! ॥ ८१ ॥ कहि ण भन्ते ! वायर-आउकाइयाण पजत्तगाण ठाणा पनता ? गोयमा ! सद्वाणेण सत्तसु घणोदहीसु, सत्तम्र घणोदहिनलएस्र, अहोलोए पायालेस्र, भनणेस्र, भनणपत्यहेस्र, उद्गुलोए कप्पेस्र, विमाणेसु, विमाणाविलयासु, विमाणपत्यबेसु, तिरियलोए अगडेसु, तलाएसु, नईसु, दहेस, वानीस, पुक्खरिणीस, दीहियास, गुजालियास, सरेस, सरपतियास, सरसर-पतियास, बिलेस, विलपतियास, उज्झरेस, निज्झरेस, चिल्लएस, पल्लएस, विपणिसु, दीवेसु, समुद्देसु, सब्वेसु चेव जलासएसु जलद्वाणेसु, एत्थ ण वायर-

२६६ सुचारामे [पन्नस्मापुनं स्रोतस्य अर्थकेन्द्रमानो समुप्तपार्यं स्रोतस्य अर्थकेन्द्रमानो समुप्तपार्यं स्रोतस्य अर्थकेन्द्रमानो समुप्तपार्यं स्रोतस्य अर्थकेन्द्रमानो स्रोत्तरम् अर्थकान्तर्याणं स्रोतस्य अर्थकान्तर्याणं स्रोतस्य स्रोतस्य

जारमाने । स्त्रीः ण मेते । प्रतुमधानस्तर्भाणं पजानगायं क्षपजानमाण स अना पबता ! गोयमा ! शहुममातकाइमा से पजतना ने व नपजतना ते सस्वे एगबिहा अविसेसा जनायता सम्बन्धेवपरिवादकाग पत्रता समगाउसी ! ॥ ४२ ॥ कहि में भेते ! काररतेवकाहवामें प्रजातगार्ण ठाना प्रकार ! सोससा ! सहावेबे मंत्रोत्रश्रसकेते अञ्चादकेश वीवसमुदेश किलायाएगं वकरस्य कम्यामुनीस, बाबार्य पञ्जन पंचान सङ्गिविहेन्त, पूर्व में बायरतेतकाहवार्च पञ्चतपार्च तावा प्रवता । रवनाएनं क्षेत्रस्य असकेवाइमागे समुग्याएनं क्षेत्रस्य असंकेवाइमागे सङ्ग्राकेयं क्षेत्रस्य अधेकेन्द्रमाने ॥ ८१ ॥ नक्ष् नं मार्च ! शावरतेवनाद्यानां अध्वतागानं ठाका प्रमत्ता <sup>३</sup> गी*समा* । जस्वेन नामश्वेतकाइनार्ण प्रजन्मार्थ ठावा ए । तस्येन बानरतेचन्द्रप्राणं अपञ्चतगाणं ठावा पत्रता। उपगाएणं क्रोनस्स हासु सङ्गद्रगाहेसु तिरियकोयतो य एस्रवाएनं सम्बन्धेप, सङ्ग्रावेणं स्वेयस्य वर्षके अप्रभागे ॥ ८४ ॥ क्कि र्ग मंत्रे ( <u>सह</u>सतेष्ठकक्क्याण भजतानाच व अपजतानाच व राजा प्रजता है थोममा ! सहमतेत्रकाइका के पक्रतमा के म अपक्रतमा तं सन्दे एतहिहा अभिनेता क्रमाणका सम्बद्धोनपरियानक्रमा पत्रकास समाजस्था ॥ ८५ ॥ ५% वं संते ! बाबरबाउकाइबार्च पजतगार्ण ठावा पकता है शोसमा । चट्टावेर्च सत्तम् चनवादन्, साह्य क्यबावकस्थतः, सत्तम् तजनाएतः कत्ततः तत्रकायकथनः, वद्योद्योग पावाकेनः, भागोत सवनात्मवेत, भागातिनेतु, भवगनिकत्तवेतु निरात्तु, विरयानियाध निरमप्तपोश्च निरमधिनेसु, निरमनिक्सबेश उन्नमोए क्योसु, विमानेसु, विमानि वक्रियास विमाजपरववेष्ठ निमाजस्थित विमाणनिक्षकेत, विरियकोए पाईन पद्मेगवाहिज्जरीय-सम्बेश भेर क्रोगायामधिकेस स्रोगनिवन्त्रवेस य एत्व वे वासर बाउद्भव्याणं पञ्चतागाणं ठावा पश्चता । स्वबाएवं कोजस्य व्यवध्येक्य भागेतः एड स्थापूर्ण सोजस्य जर्बचेजेमु मानेडः सङ्घापेनं क्षेत्रस्य नर्वचेजेन नागेन ॥ ४६ व क्षत्रि में भेते ! अपमतवानस्वातकार्याण ठाणा पणता ! योवसा ! अरचेव बावर बाजराइयाने प्रजारणार्थे ठाना व । तत्वेत वाजरवाउवाइवार्थं अप्रजातगार्वं अवा पत्तता । उत्तवाएवं सध्यकोए, समुग्वाएवं सध्यकोए, सङ्ख्येणं कोवस्य अर्धनेजेड

भागेमु ॥ ८७ ॥ कहि ण भते ! सुहुमवाउकाइयाण पज्जतगाण अपजत्तगाण य ठाणा पन्नत्ता <sup>२</sup> गोयमा ! सुहुमवाउकाइया जे पजत्तगा जे य अपजत्तगा ते सन्वे एगविहा अविसेसा अणाणता सन्त्रलोयपरियावन्नगा पन्नता समणाउसो ! ॥ ८८ ॥ किं ण भते ! वायरवणस्सङ्काङ्याण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नता <sup>२</sup> गोयमा ! सद्घाणेणं सत्तमु घणोदहीमु, सत्तमु घणोदिहवलएमु, अहोलोए पायालेमु, भवणेमु, भवण-पत्थडेसु, उष्टुलोए कप्पेसु, विमाणेसु, विमाणावित्यासु, विमाणपत्थडेसु, तिरियलोए अगडेसु, तडागेसु, नईसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुजालियासु, सरेसु, सरपतियासु, सरसरपतियासु, विलेसु, विलपतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिल्ललेसु, पल्लेसु, विपणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सन्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्य ण वायरवणस्सङकाङ्याणं पज्जत्तगाणं ठाणा पनता । उववाएण सन्वलोए, समु-ग्घाएण सन्वलोए, सद्घाणेण लोयस्स असखेजइभागे ॥ ८९ ॥ कहि ण भते ! वाय-रवणस्मङकाङ्याण अपजातगाण ठाणा पत्रता ? गोयमा! जत्येव वायरवणस्सङ्काइ-याण पजनगण ठाणा प० तत्थेव वायरवणस्सइकाइयाण अपजनगण ठाणा पन्नता । उववाएणं मन्वलोए, समुग्घाएण सन्वलोए, सद्वाणेण लोयस्स असखेजाइभागे॥ ९०॥ कहि ण भंते ! सुहुमवणस्सङ्काङ्याण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाण य ठाणा पन्नता ? गोयमा! बहुमवणस्सङ्काङ्या जे पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सन्वे एगविहा अविसेसा अणाणता सञ्वलोयपरियावन्नगा पन्नता समणाउसो!॥ ९१॥ कहि णं भते ! वेइदियाण पजतापजतगाण ठाणा पत्रता १ गोयमा ! उहुलोए तदेकदेसभागे, अहोलोए तदेक्कदेसमागे, तिरियलोए अगडेसु, तलाएसु, नईसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुजालियासु, सरेसु, सरपतियासु, सरसरपतियासु, बिलेसु, विलपंतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिल्लेसु, पल्लेसु, विप्पणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सन्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्य ण वेइदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पन्नता । उननाएण लोगस्स असखेजइभागे, समुग्घाएण लोगस्स असखेजइभागे, सट्टाणेण लोगस्स असखेज्जइमागे॥ ९२॥ कहि ण भते। तेइदियाण पज्जत्ता-पजत्तगाण ठाणा पन्नता ? गोयमा ! उष्टुलोए तदेकदेसभाए, सहोलोए तदेकटेस-भाए, तिरियलोए अगडेसु, तलाएसु, नईसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहि-यासु, गुजालियासु, सरेसु, मरपितयासु, सरसरपितयासु, विलेसु, विलपितयासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिल्लेसु, पल्लेसु, विप्पणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सन्वेसु चेव जलासएमु जलठाणेमु, एत्य ण तेइदियाण पजनापजनगाण ठाणा पन्नता । उववाएण लोयस्स असखेजङ्भागे, समुग्घाएण लोयस्स असखेजङ्भागे, सट्टाणेणं ध्येस्स अर्थकेन्द्रामां। ॥ ९१ ॥ इद्वि एं मंदि । वदिविद्याण पन्नागाक्ष्यत्याणं द्वापा पत्राप्ता । विस्ता । वह्न्नेप्त तदेवद्वासां व्यक्तिस्त विद्यान । विद्य

नेरह्या परिवयन्ति । गीयमा । व्यावेणं सत्तय प्रववीय रोका-र्यण्यार , सहरप्यमार, सहर्यण्यार, क्ष्म्प्रमार, क्ष्म्प्रमार, स्वरप्यमार, सरप्यमार, सरप्यमार, सरप्यमार, स्वरप्यमार, स्वर्णा स्वरप्यमार, स्वरप्यम, स्वरप्

रबणप्यमापुद्ववीनरहृत्वा परिवयन्ति १ गोवमा । इशीक्षे रववप्यमापु पु असीउत्तर जोवनसम्बद्धस्यस्यादृष्टाणु उदिर पूर्व बोवनम्बस्थानोगाहिता देहा चेर्ग वावन सहस्स वजित्ता मज्झे अद्वहुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं रयणप्पभापुढघी-नेरइयाण तीस निरयाचाससयसहरसा भवन्तीति मक्खाय । ते ण णरगा अतो वद्वा, वाहिं चउरसा, अहे खुरप्पसठाणसठिया, निर्वधयारतमसा, ववगयगहचद-सूरणक्खत्तजोइसप्पहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमसचिक्खिललिताणुलेवणतला, असुई [वीसा], परमदुव्मिगंघा, काउअगणिवण्णाभा, कक्खडफासा, दुरहियासा, असुभा णरगा, असुभा णरगेसु वेयणाओ, एत्य ण रयणप्पभापुढवीनेरइयाण पजता-पजताण ठाणा पन्नता, उनवाएण लोयस्स असखेजहभागे, समुग्घाएण लोयस्स असखेजइभागे. सद्राणेणं लोयस्स असखेजइभागे। तत्थ णं वहवे रयणप्पभापुढवी-नेरइया परिवसन्ति । काला, कालोभासा, गंभीरलोमहरिसा, भीमा, उत्तासणगा, पर्मिकण्हा वन्नेण पन्नता समणाउसो !। ते ण तत्थ निच मीया, निच तत्था, निच तसिया, निश्व उन्त्रिगा, निश्व पर्ममसुहसबद्ध णर्गभय पत्रणुभवमाणा विहरन्ति ॥ ९७ ॥ कहि ण भते ! सक्करप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता? कहि ण भते ! सक्करप्पमापुढवीनेरइया परिवसन्ति <sup>2</sup>, गोयमा ! सक्करप्पमापुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहस्राए उनिर्रं एगं जोयणसहस्स ओगाहिता हेट्टा चेग जोयणसहस्स वजिता मज्झे तीसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ ण सङ्करप्पभापुढवी-नेरइयाण पणवीस निरयावाससयसहस्सा इवन्तीति मक्खाय । ते ण णरगा अतो वद्टा, बाहिं चउरसा, अहे खुरप्पसठाणसठिया, निचधयारतमसा, ववगयगहचद-सूरनक्खत्तजोइसियप्पहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमसचिक्खिललिताणुळेवणतला. असुई[वीसा], परमदुब्भिगंधा, काउअगणिवण्णामा, कक्खडफासा, दुरहियासा. असुमा णरगा, असुमा णरगेस वेयणाओ, एत्य ण सक्करप्पमापुढवीनेरइयाण पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता । उननाएणं०, समुग्घाएण०, सद्वाणेण लोगस्स असखेजहभागे । तत्थ ण बहवे सक्तरप्पभापुढवीनेरहया परिवसन्ति । काला, कालोभासा, गंमीरलोमहरिसा, मीमा, उत्तासणगा, परमिकण्हा वन्नेण पन्नत्ता सम-णाउसो । ते ण तत्थ निच भीया, निच तत्था, निच तसिया, निच उव्चिगा. निच परममसुहसवद्ध नरगभय पचणुभवमाणा विहरन्ति ॥ ९८ ॥ किह ण भते ! वाल्यप्पभापुढवीनेरइयाण पजनापजनाण ठाणा पत्रता 2 किह ण भते ! वाल्यप्प-भापुढवीनेरइया परिवसति <sup>2</sup>, गोयमा ! वालुयप्पभापुढवीए अहावीसुत्तरजोयणसय-सहस्सवाह्लाए उवरिं एग जोयणसहस्स ओगाहिता हेट्टा चेग जोयणसहस्स विज्ञता मज्झे छन्वीमुत्तरजोयणसयसहस्से एत्य ण वालुयप्पभापुढवीनेरइयाण पन्नरसनर-यावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । ते ण णरगा अतो वहा, वाहिं चउरंसा,

कामा कासोमासा गैमीर्जेमहरिसा भीमा उत्तासकता परमक्षण कोर्च प्रकृत सम्माउसी । ते में तत्व निर्म मीवा निम्न तत्वा निर्म तसिवा निर्म प्रक्रिया। निवे परममद्भइपंवये चर्गमर्थ पवजुमवमाणा विद्दन्ति ॥ ५५ ॥ वृद्धि वं सन्तः ! पंक्रपमापुरवीनेरहयार्थं प्रवतापव्यतार्थं क्षणा प्रवता है वहि सं अस्ते ! पंक्रपमान प्रत्वीतरहेवा परिवर्णते हैं गोबमा ! पॅरप्पमापुष्रवीप वीस्तारकोक्समसमसहस्त-बाह्रकाएं खबरिं एमं जोगणधरसं ओगाविता विक्का चेर्ग जोनजसहरसं बाजिता मक्त अञ्चारमतरे जोजवस्थलहरू एत्व ण पंज्ञणमापुरवीनेएइनाचं इस निरया-बासमबसहस्सा भवन्तीति मक्तार्व । ते यं चरमा संतो बद्धा बाह्रे बटरसा काडे सुरप्परंजगर्धिया निर्वत्रवारतम्सा वदगवगद्वपैरस्रानम्यताजोऽधिवपदा मद्दनापूर्वप्रसन्हिरमैसचिविद्यज्ञितालुकेन्यतस्य वर्द्ध[बीसा], परमदुनिमांशा काटकगनिक्त्नामा क्षकावपासा प्रश्निवासा असमा नरगर असमा नरगेस बंदजाओं एत्व में पेरप्पमापुरबीनरब्द्याण प्रवतापत्रतामं ठाणा पत्रता । उद-बाएचं स्प्रेक्टर अस्परिकारमाणे समुख्याएणं सोयस्य असंखेजारमाने सङ्काणेणं स्रोयस्य अस्त्रेकद्रमाने । तत्व वं बहुवे पंत्रप्यसापुरुषीवराज्यः परैवसंति । कामा कासीमाना समीरसोमहरिया गीमा उत्तानगरा परमित्रका कोने प्रवत्ता समगा दसा। ते न तत्व विश्वं सीवा निश्वं तत्वा विश्वं तसिवा निश्वं दक्षिममा निश्वं परमम्पद्रभुदद् अरणगर्य प्रजानुभवमाणा विद्वरन्ति ॥ १ ॥ सक्के अ सन्त । धमप्पमापुरवीतेरङ्गार्थं पञ्चनापञ्चतार्थं ठाणा पनता है वही में तं । चूमप्पमा पुर्णानस्या परिवयन्ति १ वीयमा । ध्रमप्पभूपवर्णीय भद्रारमुशस्योजस्यमस्य बाहताए उबरि एमं कामणगहरतं भागाहिता हेट्टा थेगं जोयणगहरतं बिजाा मज्यो गोलमुक्तरे बोमजरायगहरसं पूरव व धूमप्पशापुरजीनरद्वाचं तिकि गिर मारामसम्बद्धस्या संबन्तीनि संस्थाय । तं च अरगा अनो वद्या बाह् वउरेगा

सह गुग्प्सस्त्रवस्तिया निर्वपयारमस्या ववगयगहर्षदम्र्तनगत्त्रवेशियपहा सद्यगार्थपस्त्रहरूपयिविभिगवनिताणुकेषणत्ता अगुर्व [बीमा] यरसपुरिसर्गना काउअगणिवण्णाभा, क्वन्खडफासा, दुरिहयासा, असुभा नरगा, असुभा नरगेसु वेयणाओ, एत्थ ण वृमप्पभापुडवीनेरङयाण पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता । उववा-एण लोयस्म असखेजडभागे, समुग्घाएण लोयस्स असखेजडभागे, सट्टाणेणं लोयस्स असखेजाडभागे । तत्थ ण वहवे धूमप्पभापुढवीनेरडया परिवसन्ति । काला कालो-भामा गभीरलोमहरिसा भीमा उत्तामणगा परमिकण्हा वन्नेण पन्नता समणाउसो !। ते ण तत्थ निच भीया, निच तत्था, निच तिसया, निच उव्तिगगा, निच परम-ममुहसवद् नरगभय पचणुभवमाणा विहरन्ति ॥ १०१ ॥ किह ण भंते ! तमा-पुटवीनेरडयाण पजनतापजनाण ठाणा पत्रता 2 कहि ण भते ! तमापुढवीनेरइया परिवसति <sup>२</sup>, गोयमा ! तमाए पुढवीए सोलसुत्तरजोयणमयमहस्सवाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्स ओगाहिता हिट्टा चेग जोयणसहस्स विज्ञता मज्झे चउदसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ ण तमप्पभापुढवीनेरइयाण एगे पच्छे णरगावासस्यसहस्से भवतीति मक्खाय । ते ण णरगा अतो वद्दा, वाहिं चउरंमा, अहे खुरप्पसुठाण-सिठया, निचधयारतमसा, ववगयगहचदसूरनक्खत्तजोङसियप्पहा, मेदवसाप्रयपङ्क-रुहिरमंसिचिक्खिष्ठलित्ताणुलेवणतला, असुई [वीसा], परमदुव्भिगधा, क्व्यबंदफासा, दुरहियासा, असुमा नरगा, असुमा नरगेसु वेयणाओ, एत्य ण तमापुढवीनेरइयाण पजनापजनाण ठाणा पन्नता । उववाएणं लोयस्स असखेजइमागे, समुग्घाएणं लोयस्स असखेजइमागे, सट्टाणेणं लोयस्स असखेजइभागे। तत्य ण वहवे तमप्पमा-पुढवीनेरइया परिवसति । काला कालोभासा गमीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमिकण्हा वन्नेण पन्नता समणाउसो ! । ते ण तत्थ निच मीया, निचं तत्था. निच तसिया, निच उव्विग्गा, निच परममसुहसवद्ध नरगभयं पचणुभवमाणा विहरन्ति ॥ १०२ ॥ किह ण भते ! तमतमापुढवीनेरइयाण पजतापजताण ठाणा पन्नता ? किह ण भते ! तमतमापुढवीनेरइया परिवसित 2, गोयमा ! तमतमाए पुढवीए अट्टोत्तर-जोयणसयसहस्सवाह्रहाए उवरिं अद्भतेवन्न जोयणसहस्माइ ओगाहिता हिट्टा वि अद्भतेवन जोयणसहस्साइ विज्ञिता मज्झे तीसु जोयणसहस्सेसु एत्थ ण तमतमा-पुढवीनेरइयाण पज्जत्तापज्जताण पचदिसि पच अणुत्तरा महइमहालया महानिर्या पन्नता । तजहा—काले महाकाले रोक्ए महारोक्ए अपइट्ठाणे । ते ण णरगा अतो वद्टा, वाहिं चउरंसा, अहे खुरप्पसठाणसिठया, निचवयारतमसा, ववगयगहचद-स्रनक्खत्तजोइसियप्पहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमसचिक्खिल्ललिताणुळेवणतला, असुई [बीसा], परमदुब्भिगधा, कक्कबङफासा, दुरहियासा, असुभा नरगा, असुभा नरगेसु वेयणाओ, एत्थ ण तमतमापुढवीनेरइयाण पज्जतापज्जताणं ठाणा पन्नता ।

तववाण्यं स्पेयस्य वर्षत्रेज्ञाद्वाने समुख्याण्यं स्पेयस्य वर्षद्रेज्ञाद्याने पद्भवेतं भोगरम अधेबेज्यप्रमाने । तन्त्र वं बहुवे तमनमानुन्वीनेरहुवा परिवर्दनि । काम्रा काम्मेभासा गैमीरक्षेमहरिसा मीमा उतासणगा परमहिन्हा क्षेत्रच पत्तता समया-बमो ! । ते में तरब निबं मीवा निबं तत्था निब तरिया निब उम्बरमा निबं परमममुद्दर्गवर्दे चरगमधं पचलुमनमाणा विद्दरन्ति । आसीर्य वर्तीर्स अद्वादीर्स व हुँचि नीचे व । बद्धारसमोजसर्ग बद्धसर्थेन हिट्ठिमेगा ॥ १ ॥ सद्धसरे व दीसे छन्नीसं चेत्र सत्रमहरुतं हु । अद्वारस सोकनमं चढरममहियं तु स्क्रीर ॥ १ ॥ अविविधमहत्त्वा उपविषक्षे बाजिका हो मनियं । मन्ते निस्तारसम् होन्ति उ नरगा रुमदमाए n र n चीसा य पश्चीया पचरस दसेव धवसहस्याई । दिसि य पेन्सम पेनेव बालकरा नरना ॥ ४ ॥ १ १ ॥ वहि में मंते । पंचितिमतिरिक्त-कोलियार्गं पज्यसम्बन्धार्णं ठाणा पक्ता । योदमा ! उद्दूषोए तदप्रदेसमाए महोस्रोए तदेखरेममाए, तिरिक्कोए अगडेमु, तकाएमु, गईमु, बहेत नावीमु, पुरुवरिगीम, वीवियात, गुंबाकियान, सरेस, नर्पतियास सरसरपेनिवास, निकेन्, निकरंशियात उज्ज्ञातेन, निज्ञातेन, चिक्रकेन्, पहलेन्द्र वप्पिनेद्र रीनेन्द्र, समुद्रेत सम्बेस केव कलासएन जबदानेत, एत्व व पंचित्रियतिरिक्टाबोविवार्व पज्ञतापज्ञत्ववार्यं ठाणा पत्रता । उन्तात्व सोवस्य असंवेजहमार्गे समुरनाएर्व सम्बद्धीयस्य नरंबेणकानो सङ्गावेर्यं सम्बद्धीयस्य नरंबेणकानी ॥ १ ४ ॥ कवि नं मंदे । मनुरशार्थ पञ्चतापञ्चतार्थ क्रावा पवता । योगमा । भतो मनुरश्येते पणबानीसाए जोसबस्यमहरूरोगु अङ्गाहजेशु श्रीवसमुदेशु, पणरसद्ध कम्माम्मीतु, वीमार् अक्रमम्मीमु, छप्पनाय अंतरशेश्वयु, एरव वे मनुस्तार्थ पञ्चापञ्चार्य ठाजा प्रवता । सक्वाएणं स्रोजस्य असंबेश्वर्माने समुख्याएणं सम्बद्धाए, सङ्कानेन क्रोमस अध्येक्श्नारी ॥ १ ॥ वही में नेत ! सवक्वारीय देवार्य पन्ता-प्रज्ञतानं ठाया प्रज्ञता है कहि याँ भेते । अवस्थाती देवा परिवर्गति है गोक्सा है इमीसे रबभणमाए प्रत्योप असीवत्तरचोयनगयगवस्तवाहकाए प्रवर्ते एगं चोवकः सहस्तं कोगाविता हेड्डा चेगं जोवणगहरसं बजिया अञ्चे अद्भुति कोवयस्यस्तर एत्य में अनुमत्तातीर्ण वेशाण पश्चतापञ्चतार्ण सत्त अनुमन्द्रोगीमा बानसरि सवनाना-समयसङ्ख्या मनन्त्रीति मनवार्थ । ते वं भवणा वाहि वहा अञ्तो वडरेसा वहे पुरस्तात्रीकारोजनरेठिया समितातिकामभीरसायक्रमा पागारहाक्यक्यात वोरमपरिदुवारदेनमागा कतमवनिम्मुनसमुसंदिपरियारिया अङ्ग्या समाववा सब्भूता अवगुरुक्षेत्रुगरह्वा अवगुरुक्ष्यम्मामा केता विवा अवरामरहेवी-

चरिक्वया, लाउल्लोइयमहिया, गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरिक्वपचगुलितला, उवचिय-चदणकलसा, चदणघडसुकयतोरणपिडदुवारदेसभागा, आसत्तोसत्तविडलवटवग्घारि-यमछदामकलावा, पंचवनसरससुरभिमुक्पुप्फपुंजोवयारकलिया, कालागुरुपवरकुंदुरु-क्कतुरुक्कधूवमघमघतगधुद्धुयाभिरामा, सुगधवरगविया, गंधवद्विभूया, अच्छरगणसघ-सविकिन्ना, दिन्नतुडियसद्सपणइया, सन्नरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, महा, णीरया, निम्मला, निप्पका, निक्षकडच्छाया, सप्पहा, सस्सिरीया, समरीइया, सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिजा, अभिरूवा, पडिरूवा। एत्थ ण भवणवासिटे-वाण पजतापजताण ठाणा पन्नता । उववाएण लोयस्स असखेजहभागे, समुग्चाएणं लोयस्स असखेज्जइभागे, सद्घाणेण लोयस्स असखेज्जइभागे। तत्य ण वहवे भवण-वासी देवा परिवसति । तजहा-असुरा नाग सुवन्ना विज्नू अग्गी य दीव उदही य । दिसिपवणथणियनामा दसहा एए भवणवासी ॥ चूडामणिमडडरयणाभूसणणागफड-गस्लवइरपुन्नकलसिकउप्पेमा, सीहहयवरगयकमगरवरवद्धमाणनिज्नत्तचिधगया, सुरूवा, महिह्विया, महज्जुइया, महञ्जला, महायसा, महाणुभावा, महासोक्खा, हारविराइयवच्छा, कडगतुंडिययभियभुया, अगद्कुंडल्मटुगडतलकन्नपीढधारी, विचित्तहत्थाभरणा, विचित्तमालामउलिमउडा, क्लाणगपवरवत्थपरिहिया, क्लाण-गपवरमञ्जाणुळेवणघरा, भासुरवोंदी, पलववणमालधरा, दिन्वेण वन्नेण दिन्वेण गधेण दिन्वेण फासेण दिन्वेण सघयणेण दिन्वेण सठाणेणं दिन्वाए इङ्कीए दिन्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अचीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा, ते ण तत्थ साण साण भवणावाससयसहस्साणं, साण साण सामाणियसाहस्सीण, साण साण तायत्तीसाण, साण साण लोगपालाण, साण साण अग्गमहिसीण, साण साण परिसाण, साण साण अणियाण, साण साण अणियाहिवईण, साण साण आयरक्खदेवसाहस्सीण, अन्नेसि च बहूण भवणवासीण देवाण य देवीण य आहेवच पोरेवचं सामित्त भद्वित महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच कारेमाणा, पाळेमाणा, महया हयनदृगीयवाइयततितलतालतुन्धियघणमुङगपडुप्पवाइ-यरवेण दिन्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरंति ॥ १०६ ॥ कहि ण भंते ! असुरकुमाराण देवाण पजातापजाताण ठाणा पन्नता ? किह ण भते ! असुरकुमारा देवा परिवसित 2, गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणस्यसहस्स-वाहस्राए उविर एगं जोयणसहस्स ओगाहित्ता हेट्टा चेग जोयणसहस्स विजता मज्झे अद्वहुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ ण असुरकुमाराणं देवाण चउसिंहं भवणा-वाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । ते ण भवणा वाहिं वद्टा, अतो चउरसा,

1

महे पुरुदरक्षिपार्रेशवरीठिया चित्रवंतरवितसर्वतीरदावक्षिका प्रारहासक-क्यावतीर्जपविदुवार्वसमाया अनुमानिवमुससम्सेश्विपरिवारिया क्षाउपमा समान जमा समागुता जश्बाक्रकेद्वगरहमा जहबासक्रवनगमान येमा शिवा किया-मर्दंडोवर्विदाया काताबेहनमहिना गोतीमसरसर्शनयणबहरविवर्पकंगुवितका उवनिमर्वदणक्तमा वंदणधासुक्रवगीरणपविकृतारवेसमाथा आसत्तोमत्त्रविक्रम-बहुरस्थारियमञ्ज्ञामरुख्यां पंचवणनग्सप्तरमिमञ्जपप्पर्शकोवकारकसिका कामा-गुरुवन्द्रकेन्द्रकारकारोत्वनमध्यमंतर्गमुद्रनामिरामा सर्वनार्गिध्या गधनप्रि-भूवा अच्छरगणसंपर्धविकिका विस्तुतियसर्धपन्छ्या सम्बद्धवासया अच्छा रुदा सन्दा च्हा महा जीरवा निस्मका निर्णेक्स निक्षक क्यांसा सप्पमा सरिमधीमा समरीह्या शतकोया पामाबीमा बरिसनिजा अभिक्ता पहिरुवा एरम र्ग सञ्चरक्रमाराची देवाणे पञ्चतापञ्चतार्थ ठाचा प्रवृता । उनवाएयं स्नेनस्स अस्बेज्यभागे समुख्याएक कोक्स्म असंधेज्यभागे सद्वाचेनं होबस्स असंबेज्य मारी तत्व वं बहने अमरकमारा देवा परिवर्तति । काळा नोबियकराविद्योद्य धक्य-पुष्पर्वता अस्मिकेमा नामेगकुरुअवरा अहर्वद्गालुकित्तगता इतिसिमिपु-प्यापनासदं अस्तिविद्यतं सहसादं शरकां प्रश्रपरिक्रिया का क प्रारं सम्बद्धाः विद्यं च वर्ग अर्थपता महे जोन्यने बहुमाचा तसर्भयन्त्रक्रियन्त्रसम्बन्धानम्ब मुनिर्यजनंडियमुया व्यमुदानंडियसम्बद्धा भृष्टामन्तिवित्तर्विवरामा ग्रह्मा महिद्रिया सहस्रह्मा सहायसा सहस्रका सहाज्ञामाण स्वासोक्का हारविराह-मक्का कडमतुरिक्यंभियभुवा अगवकुरसमद्वयंडमकक्तपीरुपारी विवित्तरमान-र्या विचित्तमान्समञ्ज्ञिमञ्जा क्ष्माणगप्तर्वस्थपरिश्चिया वज्राच्यमज्ञाणुकेन्यभरा मासरकोंची पर्सक्वभासकारा विज्वेण बहेल दिख्येचं विचेचं विज्वेचं परसेचं विज्वेचं सबमनर्ग दिन्नैज संठायेथं दिन्ताए श्वीए विष्याए खुईए दिव्हाए पमाए दिन्ताए प्रावाप दिस्ताए संबीए दिस्मेनं तेएनं दिस्ताए केमाए वस विसामी उम्नोबेमाना प्रमासेकाचा ते यं तत्व सार्व सार्व मावासस्वसहरसावं सार्व सार्व सामावि-क्रमाहस्सीचं सार्व सार्व तावतीसार्व साथ सार्व क्रोपपास्पर्व साथं सार्व कम्ममह सीर्ण साम २ परिसाम साथ सार्थ अनियार्थ साथै साथै अविवाहिवहैर्ण साथै साथै कायरक्ष्यादेवसाहस्त्रीयं अतिसिं च वहुवं सवनवासीयं देवाण य देवीन य भावेदवं प्रेरेववं शामितं भद्रितं सहत्तर्गतं आवाईसरसेवाववं कारेमाणा पाके साना सहया इनलाक्ष्मीयनाइनलेतीतसनामनुद्धियमनपुर्द्यपाहुप्यमाह्यरदेनं दिन्यहं सोगमोगर्ह मुंबमाणा विहरेति । नगरविक्रमो स्टब दुवे अग्रस्कुमारिंदा अग्रस्क्रमार

रायाणो परिवसति । काला, महानीलसरिसा, णीलगुलियगवलअयसिकुसुमप्पगासा, वियसियसयवत्तिणम्मलई्सिसियर्त्ततवणयणा, गरुलाययङज्तुगनामा, उविचयसिल-प्पवालविवफलसनिमाहरोट्टा, पडुरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसरागोक्खीरकुंदद-गरयमुणालियाधवलदत्तसेढी, हुयवहनिद्धत्त वोयतत्ततवणिज्ञरत्ततलतालुजीहा, अजण-घणकसिणगरुयगरमणिज्जणिद्धकेसा, वामेगकुंडलधरा, अद्चंदणाणुलित्तगत्ता, ईसिसि-लिंधपुप्फप्पगासाइ असिकिलिट्टाइ सुहुमाइ नत्थाइ पनरपरिहिया, वयं च पढम समइक्स्ता, विडय च असपत्ता, भेद्दे जोव्वणे वटमाणा, तलभगयतुडियपवरभूमण णिम्मलमणिरयणमडियभुया, दसमुद्दामडियग्गहत्था, चूडामणिचित्तचिंधगया, सुरवा, महिद्विया, महजुईया, महायसा, महावला, महाणुभागा, महासोक्खा, हारविराइयवच्छा, कडयतुडियथभियभुया, अगद्कुडलमद्दुगटतलकन्नपीढवारी, विचित्तहृत्थाभरणा, विचित्तमालामङालेमङङा, कल्लाणगपवरवृत्थपरिहिया, कल्लाण-गपवरमल्लाणुलेवणधरा, भासुरवोंदी, पलववणमालवरा, दिन्वेण वन्नेण, दिन्वेण गधेण, दिव्वेण फासेण, दिव्वेण सघयणेण, दिव्वेण सठाणेण, दिव्वाए इन्नीए. दिव्वाए जुईए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अचीए, दिव्वेणं तेएण, दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा, पमासेमाणा, ते ण तत्थ साण साण भवणावाससयसदृस्ताण, साण साण सामाणियसाह्स्सीण, साण साण तायत्तीसाणं, साण साण छोगपालाण, साण साणं अगगमहिसीण, साण साण परिसाण, साण साण अणियाण, साण साण अणियाहिनईण, साण साण आयरक्खडेवसाहस्सीण, अन्नेसिं च वहूण भवणवासीण देवाण य देवीण य आहेवच पोरेवच सामित्त भट्टित महत्तर गत्त आणाईमरसेणावच कारेमाणा, पालेमाणा, महया हयनदृगीयवाइयतंतीतलताल तुडियघणमुइगपदुप्पवाइयरवेणं दिन्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरंति ॥ १०७ ॥ किह ण भते ! दाहिणिल्लाण असुरकुमाराण देवाण पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता १ कहि ण भते ! दाहिणिला अधरकुमारा देवा परिवसित 2, गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्त पन्वयस्त दाहिणेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्त-बाह्लाए उवरिं एग जोयणसहस्स ओगाहिता हिट्टा चेग जोयणसहस्स विजता मज्झे अद्वहत्तरे जोयणसयसहस्से एत्य ण दाहिणिल्लाण असुरकुमाराण देवाणं चउत्तीस भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति भक्खाय। ते ण भवणा बाहि वद्टा, अतो चउरसा सो चेव वण्णओ जाव पिंडरूवा । एत्य ण दाहिणिल्लाण असुरकुमाराण देवाण पज्ज-त्तापजाताण ठाणा पन्नता । तीस्रवि लोगस्स असखेजहभागे । तत्य ण वहवे दाहि-णिला अम्रास्क्रमारा देवा देवीओ य परिवसति । काला, लोहियक्या तहेव जाव सत्तर्जं अभियादिकोणं चरुक व चरसग्रीणं आयरक्कवेषसाहस्सीणं अहेसि च बहुच दाहित्रिज्ञार्थ देवार्ज देवील स आहेवन मोरेवर्च काव बिहरह ॥ ९ ८ ॥ करि में मेरे ! उत्तरिकाणं काररकमाराचं वेवाणं प्रकताप्रकताचं दाणा प्रवता है कड़ि में मेरे ! उत्तरिका असरकमारा देश परिवर्शते ! योगमा ! मंतरीवे धैके मंदरस्य पन्यमस्य उत्तरेणं इमीसे रयणप्यमाण् पुरुषीए असीउत्तर्वोदनस्यमहस्स-नाइक्राए उपरि एयं क्येयचसहरसं भीयाक्रिता हिद्या थेय क्येयचसहरसं पनिया मन्द्रों अद्भारत योगजसम्बद्धारने एत्य में उत्तरिक्षार्च अग्ररकमाराय वेदार्च कीचे मबगाबाससम्बन्धा मबन्तीति मक्तार्य । ते व भवना बाह्रे वश संतो कररेसा धेसे कहा बातिनियाणे जाव निहरति । वती एट्य बहरोबर्णिडे वहरीनक रामा परिवस्त का महानीकमरिसे बाब पमासेमाचे। से यं ठरू ठीसाए भवजाबासम्बन्धस्तानं सङ्घेष सामानियसाहरसीनं तामतीसाए तानतीसगानं चउन्हें स्मेगपस्मन पंजन अगमहिसीण सपरेवाराज तिन्हें परिसाम सक्टे अधिवार्ग सत्तव्हं अधिवादिगहर्ग चढव्ह य सद्वीर्ग आवरमखदेक्नाहस्तीर्व अहेर्सि य बहुच उत्तरिकाणं समराजमाराणं देवाण य देवीय य साहेरणं पोरेरणं पुरुषमाचे बिहरद्र ॥ ९ ९ ॥ सक्षि में सते । नागपुमाराचे देवाचे पञ्चतापञ्चनाचे ढाणा पत्रता ! कहि ण मेरे ! नागउमारा इका परिवर्धति ! मोबमा ! इमीचे र्यणप्यमाप् पुत्रवीए असीवत्तरज्ञोयणस्यसङ्ख्याहस्य उनिर एनं ज्ञोयपस्स्र भोगाविता विद्वा चेर्ग जोमणसङ्ख्ये विजता मञ्जे अद्भुतारे जोम्पसस्यहरसे एत्प र्गं नामकुमाराज देवार्गं पञ्चतापञ्चतार्गं वृत्तसीइभवनावारासयसहस्या सव गौरि सक्तार्थ । ते ने सक्या बाह्रि वहा अंतो चउरेसा जाव पढिण्या । तत्व में धागप्रमाराचे पञ्चापञ्चार्यं ठाणा पत्रता । तीमु नि सोगस्य असंतेज्ञामाने । तस्य में बहुने नागुआरा देवा परिवसित अदिद्विता अव्याहता सेसे बहुर ओहिबार्न जाव बिहरेति । घरचभूवार्णवा एत्य ण दुवं वागरुमारिका वागरुमारः रामाची परिवस्ति महिद्विया सेस नहा ओदिवार्ण जाव विदर्शन स ११ ॥ वर्दि कं मेते । दाहियिशार्य नागरुभाराणं वेवार्य पत्रतापत्रतार्न ठाना प्रधता । वाहि

**1** R

ण भते ! दाहिणिहा नागकुमारा देवा परिवसित 2, गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाह्लाए उविरं एग जोयणसहस्स ओगाहिता हिट्ठा चेग जोयणसहस्स विजता मज्झे अद्वहुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ ण दाहिणिल्लाण नागकुमाराण देवाण चउयालीस भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । ते ण भवणा वाहि वट्टा जान पिंडह्वा । एत्थ ण दाहिणिल्लाण नागकुमाराण पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता, तीसु वि लोयस्स असखेजाइभागे, एत्थ ण दाहिणिला नागकुमारा देवा परिवसति, महिद्दिया जाव विहरति । घरणे इत्य नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसह्, महिष्ट्रिए जाव पभासेमाणे। से ण तत्थ चडयालीसाए भवणावाससयसहस्साण, छण्ड सामाणियसाहस्सीण. तायत्तीसाए तायत्तीसगाण, चउण्ह लोगपालाण, छण्ड अगगहिसीण सपरिवाराण, तिण्ह परिसाणं, सत्तण्ह अणियाण, सत्तण्ह अणियाहि-वईण. चउव्वीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण, अन्नेसिं च बहूण दाहिणिह्राण नाग-कुमाराण देवाण य देवीण य आहेवच पोरेवच कुव्वमाणे विहरइ ॥ १११ ॥ कहि ण भते उत्तरिहाण णागकुमाराण देवाण पज्जतापज्जताणं ठाणा पन्नता <sup>2</sup> कहि ण भते ! उत्तरिहा णागकुमारा देवा परिवसति 2, गोयमा ! जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्त पव्वयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरिं एग जोयणसहस्स ओगाहिता हेट्टा चेग जोयणसहस्स वजिता मज्झे अट्टहत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ ण उत्तरिल्लाण नागकुमाराण देवाणं चत्तालीस भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय। ते ण भवणा वाहि वहा सेस जहा दाहिणिल्लाण जाव विहरंति । भूयाणंदे एत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ, महिङ्किए जाव पभासेमाणे। से ण तत्थ चत्तालीसाए भवणावाससयसहस्साण आहेवच जाव विहरइ ॥ ११२ ॥ किह ण मते ! सुवन्नकुमाराण देवाण पज्जता-पज्जताण ठाणा पन्नता <sup>2</sup> कहि ण भते ! सुवन्नकुमारा देवा परिवसति <sup>2</sup>, गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्य ण सुवन्नकुमाराण देवाण वावत्तरिं भवणा-वाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय। ते ण भवणा वाहि वट्टा जाव पिहरूवा। तत्थ ण सुवन्नकुमाराण देवाण पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता जाव तिसु वि लोयस्स असखेज्जइभागे। तत्य ण वहवे सुवन्नकुमारा देवा परिवसति महिद्धिया सेस जहा ओहियाण जाव विहरति । वेणुदेवे वेणुदाली य इत्य दुवे सुवण्णकुमारिंदा सुवण्ण-कुमाररायाणो परिवसति, महिङ्किया जाव विहरति ॥ ११३ ॥ कहि ण भते 1दाहिणिल्लाण सुवण्णकुमाराण पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता 2 किह ण भते ! दाहि-

सुचागमे पञ्चवजासुर मित्रा सक्त्रमञ्जारा देवा परिवर्तति । गीयमा । इमीसे बाद मञ्जे सद्वहुक्त जोयगसयसङ्स्सं एरव र्ग दाहिष्णिकार्ण सुबन्धकुमारार्ण अञ्चर्तासं भवगागासम्बन्ध

इस्सा भवन्यीति सक्यार्थ । ते व संबंध वाहि बद्दा जाव पविक्रमा । पूर्व प बाहिणिज्ञाव सक्कानुमाराच प्रकातप्रकातार्च ठावा प्रकार । शिस वि कोपस असंबेज्यस्माने । एम्ब वर्ष बहुने स्वयन्त्रक्रमारा वेदा परिवर्सति । बेपुदेवं य इस्प धनगढ्रमारिन्धं धनगढ्रमाररामा परिवसह, सेसं जहा शागडमाराणं ॥ १९४ ॥ कहि में मन्ते । उत्तरिकाम धनम⊈भाराजं बेबाजं प्रमताप्रभत्तामं ठाजा प्रमता है

3 8

कति नं मते । उत्तरिका सथक्कुमारा देश परिवर्सति । मोबमा । इमीसे रवणप्प-भाए जान एत्य जे उत्तरिकार्य ध्वकट्रवाराण करतीसं मनजानासम्बस्हरसा भन-न्दीति सक्त्यार्थ । तं लं अवणा बाव एत्व थं बहुने क्तारिका सबस्क्रमारा दवा परिवस्ति अद्विद्धिया जाव बिदरेति । वेद्यदावी इत्य स्ववन्त्रमारिंदे स्ववन्त्रमारराजा परिवयक, महिद्विए छेसे जक्षा नामकुमाराज । एवं बाह्य स्वक्तुडमाराज बतान्वना मिन्या तहा हेतान नि चतवतन्त इंदाज मानियन्ता । नदरं महनजानतं इदना-यत्त वन्त्रयायत्त परिद्वागमाधातं **न इमाहि यादाहि सम्**रातस्य-पारसद्धि सत्तरार्ण चुसवीय चंद हाति नायाणं । बादत्तरि छव्छे बाउउभाराण छन्नउई ॥ १ व

चैनदैसाउदहीमं निमुक्तारिंदमन्त्रयायां । स्मृदेप अयस्याण छानगरिमी समस्बद्धाः ॥ २ ॥ चनतीसा चननामा स्वतीसं च समस्बद्धाः । पता बतार्जमा याहिजको होति मनकाई B र U तीसा कतासीसा करतीसं केंद्र समस्वरसाई I स्ममाना स्तीसा उत्तरमो हुँचि भवनाई ॥ ४ ॥ बरसडी सडी एड्र स्टब सारमाई भगुरवजार्भ । सामाभिया उ एए वडमुला वायरकका उ n ५ n वमरे परने तह केलुक्बें इरिकंतभगिगसीहे व । एके अलकंते य अगिवकित्स्वे व पीसे व त ६ । विस्तृतार्णेक वेद्यवातिकारित्सक्के आगिममाणविस्तिक्के । वक्षपक्क छद्यानि-

मबाह्ये पर्मज्ये य गहायोसे ॥ ७ ॥ तत्तरिकार्ण जाव निहरंति । कामा मद्रारमारा शामा उदही य पैंडरा को नि । वरकमगनिकसमोरा <u>इं</u>टि सन्ता दिसा बिलेगा ॥ ८ ॥ उत्तत्तकणमक्ता विम् अस्मी य दांति वीवा न । सामा पितंपुतका वारकुमारा सुवेदक्या ॥ ९ ॥ असरेस श्रीत रत्ता श्रीतिरद्यव्ययमा व ममुद्रही । भाषासगक्तकारा दाति धक्ता दिसा यमिया ॥ १ ॥ नीसापुरा-गबसचा विक् अम्मी व हुँदि चीवा म । सञ्चाणुरागत्रमणा वाउतुमारा सुगैवन्ता u १९ ॥ १९ ॥ १६ चे मेरे । बावर्गतरार्थ देवाचे पञ्चतापञ्चतार्थ शामा

पञ्चण र निर्देश के भेरो । बाधमीतरा देशा परिवसति र शायमा । इमीसे रवधणमार

पुढवीए रयणामयस्स कडस्स जोयणसहस्सवाहह्रस्स उवीर एगं जोयणसयं ओगा-हित्ता हिद्वा वि एगं जोयणसय विज्ञिता मज्झे अद्वस जोयणसएस एत्य णं वाण-मतराण देवाण तिरियमसखेजा भोमेजनयरावाससयसहस्मा भवन्तीति मक्खायं। ते ण भोमेजा णयरा वाहिं वद्या, अतो चउरंसा, अहे पुक्खरकन्नियासठाणसिठया, उक्तिचतरविउलगभीरखायफिट्हा, पागारहालयकवाडतोरणपिडदुवारदेसभागा, जत-सयग्धिमुसलमुसहिपरिवारिया, अउज्झा, सयाजया, सयागुत्ता, अडयालकोट्टगरइया, अडयालक्यवणमाला, खेमा, सिवा, किकरामरद्डोवरिक्खया, लाउल्लोइयमहिया, गोसीससरसरत्तचदणदद्दरिक्वपचगुलितला, उवचियचदणकलसा, चदणघडसुकय-तोरणपडिदुवारदेसभागा, आसत्तोसत्तविउलवृद्वग्घारियमह्नदामकलावा, पचवण्ण-सरसम्राहिमुक्षपुप्पपुजोवयारकलिया, कालागुरुपवरकुदुरुक्कपुवमघमघतगधुद्धु-याभिरामा, सुगधवरगिया, गधविद्दभूया, अच्छरगणसघसविकिन्ना, दिव्वतुडिय-सद्दसपणइया, पडागमालाउलाभिरामा, सन्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, मट्टा, नीरया, निम्मला, निष्पका, निक्ककडच्छाया, सप्पहा, सस्सिरीया, समरीइया, सउजोया, पासाइया, दरिमणिजा, अभित्वा, पडिल्वा। एत्य ण वाणमन्तराण देवाण पज्जतापज्जताण ठाणा पत्रता । तिमु वि लोयस्स असखेज्ञइ-भागे। तत्थ ण बहुचे वाणमतरा देवा परिवसति। तजहा-पिसाया, भूया, जक्खा, रक्खसा, किंनरा, किंपुरिसा, भुयगवइणो महाकाया, गन्धव्वगणा य निङ्णगधन्नगीयरङ्णो, अणविनयपणविनयःसिवाडयभूयवाङ्यकदियमहाकदिया य <u> सुहडपयगढेवा, चचलचलचवलचित्तकीलणदविष्या, गहिरहसियगीयणचणरई,</u> वणमालामेलमउडकुडलमच्छद्विजव्वियाभरणचारुभृसणघरा, मञ्बोजयसुरभिकुसुम-सुरइयपलवसोहतकतविहसतचित्तवणमालरइयवच्छा, कामगमा [कासकामा], कास-रूवटेहधारी, णाणाविह्वण्णरागवरवत्थिविचित्तचिल्लगनियसणा, विविह्टेसिनेवत्य-गहियवैसा, पमुडयकदप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया, हामवोलवहुला, अमिमुगगर्मत्ति-कुतहत्या, अणेगमणिरयणविविहणिज्नुत्तविचित्तचिवगया, महिद्विया, महज्जुटया, महायसा, महावला, महाणुभागा, महासुक्ता, हारविराउयवच्छा, कटयतुहिय-यभियभुया, अगयकुडलमहगडयलकन्नपीडधारी, विचित्तहत्थाभरणा, विचित्तमाला-मङ्किमङ्दा, रहाणगपन्ररवत्थपरिहिया, कराणगपवरमहाणुलेवणधरा, भासुरवादी, पलयवणमालधरा, दिन्वेण वन्नेण, दिन्वेणं गघेण, दिन्वेण फासेण, दिन्वेण सघय-णेण, दिव्वेण सठाणेण, दिव्वाए इद्वीए, दिव्वाए जुईए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए न्यागए, दिव्वाए अभीए, दिव्वेण तेएण, दिव्वाए लेस्माए दम दिमाओ उज्जोदे-२० सुप्ता०

सार्च सार्ज सामानियसाहरसीयं सार्च सार्च मध्यमहिसीर्च सार्च सार्ज परिवार्च सार्ग सार्ण अगीवाणे सार्ण साथ अधीवाहिशाँणं साथ सार्ण आगरभवादेवसा इस्सीर्ग क्षेत्रेसि च बहुणं बागमतरागं वेदाग व देशीय व आहेवन पोरेवन सामित महितं महत्तरगतं आणाहेसरसेगावर्षं धारेमाणा पत्तिमाणा महवा हमगह-गीयबाइयर्ततीतस्रतासन्विजयसम्बंगपद्धप्यशाहयरवेशं विश्वातं भोगभोगातं भूवमाना विदर्शत ॥ १९६ ॥ करि ये जेते ! पिशाबार्ण बंबाज प्रजानाकालां ठावा पकता ! कहि में अते ! पिछाया देवा परिवर्धति ! गोबमा ! इमीछे रक्ष्मप्पनाए पुरुषीए रमगासयस्य कवस्य जोगमसङ्क्सवाङ्ग्रस्य उन्हर्रे एर्ग क्रोमनसमे क्रोगा किता हैका चेर्रा जीवणसर्व चिक्रणा मज्जे मसस जीवणसपस एला ने पिसावार्ण देवार्ग तिरिज्ञमसंकेका मोगेक्कनगरानासस्यसहस्सा भव तीति सक्कार्थ । ते में मोमजनगरा बाई वहा बहा जोतियो मवजवनाओ तहा भागिकको बाद परि रुवा । एत्व म पिसाबार्ज वेकार्य प्रवक्ताप्रवातार्ज ठाणा पक्ता । शिम्र वि क्रेगस्ट मध्येज्यमार्गे । तत्व बहवे पिसाया देवा परिवर्धतः यहिष्टिया बहा ओहिवा जान निहरन्ति । कास्महाराका इत्य वुने पिसाईवा पिसायरानानी परिवर्धति महिन्दिगी महजुरका बाब विहरिति ॥ १९७ ॥ कहि ये मेरे ! वाहिष्मिक्सके विसामार्थ बेकार्य ठाजा पत्तता १ कक्ष में सत् । शाक्रियका पिसाया वेचा परिवर्सतः । गोनमा । **चेन्द्रीय चेचे** सन्दरस्य प्रस्मवस्स वाक्तिगेणं दमीसे रयग्रप्यमाए प्रदर्शाए रममान मयस्स फलस्य जोनगराहस्यवाहहस्स उपरि एमं बोमणसय धोनाहिता हहा वर्ग जीयजसर्व विकत्ता सञ्जे अञ्चल जीवणसपुद्ध एत्य णे वाहित्रिकाचे पिमावाचे देवाच विरिध्मसंबेजा मोनेजनगरावासस्यसहस्सा भवन्योति मक्सार्व । ये वं सबणा जहा अतिको सवगवन्त्रको सता शाकियन्त्रो वाथ परिश्वा । एरव ध व्यक्तिमार्भ पिसाबार्ग वेवान पत्रसापमतार्ग ठागा पवता । शिम्र वि सोगस्य अस्योज्यमाने : तस्य नं नहने वाहिनिका पिसाया तंत्रा परेवसंति सहित्रिना बहा ओड़िया जान निहरंति । काके एटन पिरार्ट्ने पिसायराना परिनसर, महिडिए आव प्रभारीमाने । से नं सत्त्व विरियमसंधीजानं मोमेजनयरावासमजसहरूमानं बदणं सामाविवसाहरसीर्थं बदण्ड् व अग्यमहित्तीर्थं सपरिवाराणं दिन्हं परिसार्व समन्त्रं अधिवार्त्रं समन्त्र अभिवाहिनप्रेणं शोससर्व्यं आयरत्रराज्यसमाहस्तीर्थ क्षोमि च बहुणे वाहिणिकार्ण वाणमैतरार्ण वैवाज म वेबीज व माहेवर्च जार विहरद् । उत्तरिक्षार्थं पुष्पक्ष । गोयमा विव्यवे व्यक्तिकार्यं वत्तव्यवा तहेव उत्तरि

ल्लाण पि । णवर मन्दरस्स पञ्चयस्स उत्तरेण । महाकाळे एत्य पिसाइदे पिसाय-राया परिवसइ जाव विहरइ। एवं जहा पिसायाण तहा भूयाण पि जाव गधव्वाण। नवर इदेसु णाणत्त भाणियव्व इमेण विहिणा-भूयाण सुरूवपिडस्वा, जक्खाणं पुण्णभद्दमाणिभद्दा, रक्खसाणं सीममहासीमा, किन्नराणं किन्नरिकपुरिसा, किंपुरि-साण सप्परिसमहापुरिसा, महोरगाणं अङ्कायमहाकाया, गधन्वाणं गीयरङ्गीय-जसा जाव विहरन्ति । काले य महाकाले सुरूवपिडरूवपुण्णभद्दे य । तह चेव माणि-भद्दे भीमे य तहा महामीमे ॥ १ ॥ किचरिकपुरिसे खलु सप्पुरिसे खलु तहा महा-पुरिसे । अइकायमहाकाए गीयरई चेव गीयजसे ॥ २ ॥ ११८ ॥ कहि ण भंते । अणविश्वयाण देवाण ठाणा पन्नता <sup>२</sup> किह ण भते ! अणविश्वया देवा परिवसति <sup>२</sup>, गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कडस्स जोयणसहस्सवाहह्रस्म उविर हेट्टा य एग जोयणसय सय वजेता मज्झे अट्टस जोयणसएस एत्य ण अण-वित्रयाण देवाणं तिरियमसखेजा णयरावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । ते ण जाव पडिरुवा । एत्य ण अणविषयाणं देवाण ठाणा पन्नता । उववाएण लोयस्स असखेजहभागे, समुग्घाएण लोयस्स असखेजहभागे, सट्टाणेण लोयस्स असखेजह-भागे । तत्य णं वहूचे अणवन्निया देवा परिवसति । महिह्निया जहा पिमाया जाव विहरति । सिण्णिहियसामाणा इत्थ दुवे अणविज्ञदा अणविज्ञयरायाणो परिवसित । महिह्निया, एव जहां कालमहाकालाण दोण्ह पि दाहिणिल्लाण उत्तरिकाण य भणिया तहा सण्णिहियसामाणाण पि भाणियव्या । सगहणीगाहा--अणविश्वयपणविश्वयइसि-वाङयभ्यवाङ्या चेव। कदिय महाकदिय कोहङ पयगए चेव॥ १॥ इमे इदा-सनिहिया मामाणा धार्यविघाए इसी य इसिवाले । ईसरमहेमरे विय हवड सुवच्छे विसाले य ॥ २ ॥ हासे हासरई चेव सेए तहा भवे महासेए । पयए पयगवई विय नेयव्वा आणुपुन्वीए ॥ ३ ॥ ११९ ॥ किह ण मते ! जोडसियाण देवाण पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता 2 कहि ण भते ! जोडितया देवा परिवसित 2, गोयमा ! इमीसे रयण-प्पभाए पुढवीए वहुममरमणिजाओ भूमिभागाओ मत्तणउए जोयणसए उद्घ उप्पडता दमुत्तरजोयणसयवाहरु तिरियमसखेजे जोडसविसए । एत्य ण जोडसियाण देवाणं तिरियमसखेळा जोडासियविमाणावाससयसहस्मा भवन्तीति मक्खाय । ते ण विमाणा अद्यक्तविद्वगस्ठाणस्ठिया, सन्बकालिह्मया, अन्भुगगयमृतियपह्तिया इव विविह्मणिक्षणगर्यणभत्तिचित्ता, वाडद्ध्यविजयवेजयतीपडागाछताटछतकित्या. तुगा, गगणतलमभिलंघमाणतिहरा, जालतरस्यणपजलुम्मिलियव्य मणिरणगथिन-यागा, वियत्तियमयवत्तपुडरीया, तिलयरयणष्टुचदचित्ता, नाणामणिमयदामालिनया,

3 4

संतो वर्द्धे व राज्या शवणिज्ञस्यस्थासुयापन्यवा सुक्ष्मसा सस्पिरीया सन्त्रा पासाहया वरिसणिका अभिरुषा पढिरुषा। पूरव श्रं जोद्रशियार्ग देवाणं पन्तता प्रमातार्थं ठाणा पत्रता । विद्य वि क्षोगस्य अधेनेक्कामाने । वस्य वे बहुवे जोदनिया वंशा परिवर्तति । तंत्रहा-बहरसङ् चंहा सता सङ्गा समिन्छरा राह्, सूननेन्द्र, शुद्धा भौगारमा नातामधिकारणगरूमा अ य गद्धा जोहसमिन बार चरेति केळ व गइरह्मा भद्रातीसङ्गिक्षा नस्खात्रेननगणा चाणासंठाणसंठिमाओ पंजननाओ तार यांनी ठिसकेसा नारिणी जनिरसामसङ्ख्याई, पत्तियनार्धकरागविस विषमउडा महि द्विया जान पमारोमाणा । से य स्थ्य शार्च सार्थ विमाणावासस्यमहस्सार्थ सार्थ सामं सामान्यसहरूसीनं सानं सानं अव्यमहिसीनं सपरिवाराणं सामं सागं परे सार्थ सार्च राजं अध्याज सार्व साहरसील अवेसी च बहुनं चोइसियाणं देवायं देवीच य आहेवनं जाद निहरति। वंदिमस्रिया इत्व युवै जोहस्तिया व्योदस्थियरायाणो परिवर्सतः महिन्निया बाव पमास-माना । तं नं तस्य सार्वं सार्वं जोडसियविमाणाबासस्यसहस्तार्थं करुनं सामानि बसाहरक्षीण चतन्त्रं समामहिसीयं सपरिवाराणं तिन्तं परिसायं सत्तानं सणीयानं सत्तवं अजीवाहिष्टंणं सोकसन्यं कायरक्यदेवसाहरसीणं अवेसि न ध्यूपं जीव्यार्ज देवार्ज देवील य आहेवर्च काव विद्यादि ॥ १९ ॥ काह यं अवि । केमानिकाणं देवानं पञ्चतापञ्चताणं ठावा प्रवता है वह जं अंते ! केमानिका देवा परिवर्धति । गीयमा । इमीसे रजणप्यमाए पुढवीए बहुसमरमनिज्ञाको मूमिमानाको उद्दं वंदिशयरिक्यम्बक्काताराववार्णं कहुई बोयक्यमधं बहुई बोयक्यस्साई क्रूई जोरमसम्बद्धस्मात् गहुराखो जोरणकोशीओ बहुराओ जोरमकोडाकोगीओ उर्ह गूर्ट उप्पर्ता एत ने सोहम्मीसानसर्गङ्गारमाञ्चर्यमसोयबंदगमहास्वस्सरसारमानन पागबसारणमुसगेनेकपुतारेख एएव जं बेसालिकार्ण बेबार्ज बटरासीहिक्सानावास्त्रज्ञ सक्त्या सत्तामको च सहस्या तेवीचे च निमाणा भवन्तीति सन्दानं। वे वे निमाना सम्बद्धनायमा व्यवसा सन्ता कहा कहा मुद्रा मीरया विस्मान निर्पेश निर्वेष्णकामा सप्पमा सरिसरीया सत्जोना पासलीया इतिस्थिता अभिका पविका। एवं णे वेमानियानं वेदानं पजतापजतानं ठावा पतता ! तिम्र वि क्रोमस्य असंबेधकार्मारो । रास्त्र वं काले वेमाणिया देशा परिवर्धति । रोजदा---पोद्दम्मीराच्यपर्यंदुमारमाहिद्वंभक्षोपर्यंतगमहानुक्यदरसारमानकगण्य भारणन्त्रमगेनेन्द्रगारोवकात्रमा वैवा ते वं शियमहिशकराहसीहरूपमन्दुरहरूपनवर

मुक्तारामाजसमयिकिमपागडिवर्षिकमतहा परिविक्तरसज्बन्धिरीङमारिको वर्रक

लुज्जोडयाणणा, मउडदित्तसिरया, रत्ताभा, पउमपम्हगोरा, सेया, सुहवन्नगधफासा, उत्तमवेउव्विणो, पवरवत्थगंधमल्लाणुलेवणघरा, महिद्धिया, महजुइया, महायसा, महावला, महाणुभागा, महासोक्खा, हारविराइयवच्छा, कडयतुडियथभियभुया. अगद्कुडलमट्टगंडतलकन्नपीढघारी, विचित्तहत्थाभरणा, विचित्तमालामउलिमउडा, कल्लाणगपनरवत्यपरिहिया, कल्लाणगपनरमलाणुलेवणा, भाग्नरवोंदी, पलंबनणमालघरा, दिन्वेण वन्नेणं, दिन्वेण गंधेण, दिन्वेण फासेण, दिन्वेण सघयणेण, दिन्वेण सठा-णेण, दिव्वाए इङ्खीए, दिव्वाए जुईए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अचीए, दिव्वेण तेएणं, दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा, पभासेमाणा, ते ण तत्य साण साणं विमाणावाससयसहस्साण, साण साण सामाणियसाहस्सीण, साण माण तायत्तीसगाणं, साण साण लोगपालाण, साणं साण अगगमहिसीणं सपरिवाराण, साण साण परिसाण, साण साण अणियाण, साण साणं अणियाहि-वईणं, साण साण आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहुणं वेमाणियाण देवाण य देवीण य आहेवच पोरेवच जाव दिव्वाइ मोगमोगाइ भुजमाणा विहरंति ॥ १२१॥ कहि ण भते ! सोहम्मगदेवाण पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता ? कहि णं भते ! सोहम्मगदेवा परिवसति 2, गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्चयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ जाव उहू दूरं उप्प-इता एत्य ण सोहम्मे णाम कप्पे पन्नते । पाईणपढीणायए, उदीणदाहिणवित्यिणो, अद्भवदस्राणस्ठिए, अचिमालिभासरासिवण्णामे, असखेजाओ जोयणकोडीओ असलेजाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खमेण, असलेजाओ जोयणकोडा-कोबीओ परिक्खेनेण, सन्वरयणामए, अच्छे जाव पडिरूवे। तत्य ण सोहम्मग-देवाण वत्तीसविमाणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । ते ण विमाणा सव्वर-यणामया अच्छा जाव पिंडस्वा । तेसि ण विमाणाण वहुमज्झदेसभागे पच विंड-सया पन्नता, तजहा--असोगवर्डिसए, सत्तवण्णवर्डिसए, चपगवर्डिसए, चूयवर्डिसए, मज्झे इत्थ सोहम्मविंडसए। ते ण विंसिया सन्वरयणामया अच्छा जाव पिडस्ता। एत्य ण सोहम्मगढेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पनता । तिसु वि लोगस्स असखे-जइभागे। तत्थ ण वहवे सोहम्मगदेवा परिवसति महिस्ट्रिया जाव पसासेमाणा। ते ण तत्थ साण साण विमाणावाससयसहस्साण, साण साण सामाणियसाहस्सीण, एव जहेव ओहियाण तहेव एएसिं पि भाणियव्वं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीण, अनेनिं च वहूण सोहम्मगकप्पवासीण वेमाणियाण देवाण य देवीण य आहेवच जान निहरति । सक्के इत्थ टेनिंदे देनराया परिनसइ, नज्जपाणी, पुरदरे, सयक्क,

सहस्तकके मक्बं पागमासणे दाविकहानेगाविकी, वशीसविमाणावाससभ्यहस्सा-हिन्दे, एरामणनावणे धारिके, अर्थनरक्षमध्ये आव्यवसायमञ्जे मन्द्रेमचार-वित्रचंचसक्रंडब्सिक्सिक्साकांडे महिश्विष् जाच पमासेमाणे । से र्ज तस्व वतीयाए विमाणावाससम्बद्धस्याणं अवराबीए सामाविकसावस्थीणं तावसीसाए रामतीसवामं करका कोमवासार्व अनुमां अगमहिसील सपरिवाराणं विजा परिसार्ग सत्तन्त्र अभीमार्ग सत्तन्त्रं अशीमाहिन्दैर्ग अठव्हं चउरासीर्ग जानर क्रकारेवसाहस्त्रीणं व्यवेसि व बहुणं खोह्नस्मक्रणवासीणं वेमानियाचं देवाच व देशीय य बाह्यको प्रोरेक्स काव कुल्यमान सिहरह ॥ १९९ ॥ सक्र हो श्रीत ! हैसामार्थ हेबार्च प्रकाराप्रकारार्थ ठावा प्रवास है क्या प्राप्त है क्या प्राप्त है परिवर्तति । गोद्यमा । क्वहीं वे वैव मेवरस्य प्रकारस्य सत्तरेचं इसीमे रद्यक्रमाण प्रदर्भीय बहुसमरमिकामा भूमिमायाको उर्द गॅरिमस्रिवयदणकरास्तारास्त्राम बहुद जीनभस्यातं बहुदं जीयगसदस्यातं बाव उद्व प्रध्यक्ता एत्व वं देशांने वासं कम्मे पक्ते । पाईकपबीकायए, उदीकशाक्रिणविधिको एवं अक्रा सोहस्मे बाव पबिस्ये । तत्त्व यं वृंशाणगरेवाणं बद्धावीयं विमाणावासस्यसदस्या भवन्तीते सम्बानं । तु र्ग विमाणा सम्बर्यणास्या श्राद पविस्ता । तेलि कं बहस्रकारेत-भागे पंत्र वार्तिसमा प्रवता । तेवहा---शंक्वतिसप्, फक्किवर्तिसप्, स्ववन्तिसप्, जानकावतिस्त मानी इत्य ईसाजवविष्य । ते वो वविस्ता सम्बद्धनामधा वाद पविक्रमा । एत्य ने वैसायगदेवार्ण पञ्चतापञ्चतार्थं ठाणा पवता । शिद्ध वि ब्रोगस्व असबे आभागे । सेसं कहा सोइम्मगबेवाणं आव विदर्शत । ईसाणे इत्य देविरे देवरावा परिवस्त, स्रुपाणी वस्त्रवाश्चे उत्तरस्क्रोगाविषरे, बदावसिमाणाः बासस्वसहत्सातिवहे, भरवंबरबावभरे सेसं बहा सकस्य बाद प्रशासेमाने । ए में तत्त्व अद्भवीसाए विमाणावाससमसङ्ख्याचे असीर्वेण पामानिवसक्षरतीचे ठाके तीयाय दासतीसमार्ग अवन्यं कोपपालागं अक्रमं सागमतिसीमं सपरिवाराणं तिर्ण परिशार्ण सत्तवं अविवाणं सत्तवं अविवाविष्यां चवन्यं अतीर्वं आव रम्यादेशसाहरूपीर्ण अजेमि व बहुर्ण ईसालकप्पवासीर्ण सेमानिदार्ण देशां व देवीय म आहेवने बाव विहरह ॥ १९३ ॥ वहि में श्रीत ! सर्वप्रमारदेवाने प्रवत्ताप्रवतार्व ठागा प्रवत्ता । कहि ने शंख ! सर्वक्रमारा देवा परिवर्वति । गोयमा । सोहम्मस्स कप्परस उपि सपरिया सपरियोगं वहुई बोयबादं वहुई बोयबप्पर्य बहुरं जोमनमहरसारं बहुरं जोयगसबमहरसारं बहुमाओ जोयगकोयैओ बहुमाजी जीयणकोषानीधीओ उर्च वर्ष सप्पाक्ता पृत्य वर्ष सर्वप्रमारे नार्म क्यो गर्वा ।

पाईणपढीणायए, उदीणदाहिणवित्यिण्णे जहा सोहम्मे जाव पिडस्वे। तत्य णं सणकुमाराण देवाण वारम विमाणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। तेसि ण विमाणाणं बहुमज्झदेसभागे पच विडसगा पन्नता । तंजहा-असोगविडसए, सत्तवनविडसए, चपगविडसए, च्यवर्डिसए, मज्झे एत्थ मणकुमारवर्डिसए । ते ण वर्डिसया सन्वरयणामया अच्छा जाव पिंडह्वा । एत्य ण सणकुमारदेवाण पजतापजताणं ठाणा पन्नता । तिसु वि लोगस्स असखेज्जइभागे। तत्थ ण वहवे सणंकुमारदेवा परिवसति, महिङ्गिया जाव पभासेमाणा विहरति । नवर अग्गमहिसीओ णित्थ । सणकुमारे इत्य देविंदे देवराया परिवसइ । अरयवरवत्थधरे, सेस जहा सक्क्सस । से ण तत्थ वारसण्ह विमाणावाससयसहस्साण, वावत्तरीए सामाणियसाहस्सीण सेस जहा सकस्स अग्गम-हिसीवज । नवरं चउण्ह वावत्तरीण आयरक्ख देवसाहस्सीण जाव विहरइ ॥ १२४॥ कहि ण भते! माहिंददेवाण पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता 2 कहि ण भते! माहिंदगदेवा परिवसति <sup>2</sup>, गोयमा ! ईसाणस्स कपस्स उपि सपर्निख सपडिदिसिं बहुइ जोयणाई जाव बहुयाओ जीयणकोडाकोडीओ उहु दूर उप्पद्ता एत्य ण साहिंदे नाम कप्पे पन्नते पाईणपढीणायए जाव एवं जहेव सणकुमारे। नवरं अद्र विमाणावाससयसहस्सा । विंसया जहा ईसाणे । नवर मज्झे इत्य माहिंदविंसए, एव जहा सणकुमाराण देवाण जाव विहरति । माहिंदे इतथ देविंदे देवराया परि-वसइ, अरयबरवत्थवरे, एव जहा सणकुमारे जाव विहरइ। नवर अहण्ह विमाणा-वाससयसहरसाण, सत्तरीए सामाणियसाहस्सीण, चउण्हं सत्तरीण आयर्क्खदेव-साहस्सीण जाव विहरइ ॥ १२५ ॥ किह ण भते ! बभलोगदेवाण पज्जत्तापज्जताण ठाणा पन्नता <sup>2</sup> किह ण भते । वभलोगढेवा परिवसित <sup>2</sup>, गोयमा ! सणकुमारमाहि-दाण कप्पाण उपि सपिक्स सपिडिदिसिं वहूद जीयणाई जाव उप्पद्वता एत्य ण वमलोए नाम कप्पे पन्नते, पाईणपढीणायए, उदीणदाहिणवित्यिण्णे, पडिपुणाचद-सठाणसिठए, अचिमालीमासरासिप्पमे, अवसेस जहा सणकुमाराण । नवर चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा, वर्डिसया जहा सोहम्मवर्डिसया, नवर मज्झे इत्य वभ-स्रोयविंडसए । एत्थ ण वसलोगदेवाण पजनापजनाण ठाणा पन्नता सेस तहेव जाव विहरति । वमे इत्य देविंदे देवराया परिवसइ, अरयवरवत्यघरे, एव जहा सणकुमारे जाव विहरइ। नवरं चउण्ह विमाणावामसयसहस्माण, सद्वीए सामा-णियसाहस्सीण, चडण्ह सद्वीए आयरक्खटेनमाहस्सीण, अन्नेसिं च वहण जान विहरइ ॥ १२६ ॥ कहि ण भते ! लतगढेवाण पजतापजताण ठाणा पन्नता ?

111

कड़ि में थेत ! क्रेनगडेबा परिवर्शति है गोबमा ! बंगस्सेगरस कप्परस दक्षि सपर्वित संपंकिदिसिं वहुई ओसगाइ मान सङ्गाओं ओसलकीकाकोधीओ तह हुई रुप्याता पूल में भनए नामें ऋप्ये पक्ते पाईणपढीणावए, जहा बेमकोए। नवर प्रणाएं विमाणानाससहस्ता भवन्तीति सक्याम । बहिसमा बहा हैसावहहिसमा नवरे मज्मे इरब र्कतनवर्धिसए, बेबा शहेब बाब बिहरति । संतए एत्व देविने देवराया परिवमह, ज्या सर्वेडमारे । वनरे प्रकासाए विमाणानासमहस्साच प्रव्यासाए सामाविषसाइस्सीर्थ चतुष्क् य कुणासाणे आयरम्बादेवसाइस्सीर्य अवेसि व बहुणं बाब निहरह ॥ १९७ ॥ वहि में मंत ! महासुद्धाणं वेवाजे प्रकृताप्रकृतामें ठाणा पक्ता १ बद्धि वर्ग मेते अहासका वेका परिवर्शति है गोसमा । बंदगरस कप्परस रुपि संपन्निक संपन्निविधि जान उप्यक्ता एरन में स्कासके मार्ग करने पक्ते पाइंजपद्मियात्रप्, उदीणवाहियतिस्थिका बहा वंशकोए। मुद्दरं बतासीसं निमाणाबाससङ्ख्या भवन्तीति सक्याव । वर्डिसमा बहा सोइम्सवर्डिस्य बाव विश्वरित । सहाक्रके इत्व देविंदे अवरावा वहा सणकुमारे । अवरं बतातीताए विमानाबाससङ्स्साणं नतालीसाए सामाजियसाहस्सीणं बरुष व नतालीसाण भागरम्बदेवसाहस्सीणं जाव निहरइ ॥ १२८ ॥ बहि वं मंदे ! सहस्वारदेवानं पनतापनताचं ठाणा पनता है बढ़ि में मेरी ! तहस्सारदेवा परिवस्ति है गोनमा ! महाश्रद्धरत कम्परत वर्ष्णि सपनित्र सपिनिति जान वण्याचा एत्व में स्वरसारे नामं कपे पक्ते । पाईशपकीयावए, वहा वैभलोए, नवरं छन्त्रिमाबाबाससहस्सा भरन्दीदि सक्दार्व । देवा तहेव जान विधिना जडा हैसानस्य बहिस्सा । नगरं मानो इत्य सहस्यारणविसप् जाव निहरीते । सहस्यारे हत्य देखिवे देशरामा परिनसह बहा धर्णक्रमारे । नवर अर्थ निमाधानाससहरुगार्ग दीसाए सामावित्रसाहरुगीर्थ नतन्त्रं य दीसाए आवरक्षावनसाहरसीणं आहेषम् वाच कारेगाणै। बिहरह हे ९ ९ II किंद्र में मेरे ! आजनपाजनार्य बनार्थ प्रमताप्रमतार्थ राणा पताता ! विदे में मेठे आवयपायका दश परिश्वाति व गोगमा ! सहस्मारस्य कप्पत्स वाणि सपनिस संपर्किदिमिं कान उप्पद्दता एएय न जागनपानकतामा बुचे चप्पा पन्नता । पाइक-प्रध्यात्रका उदीणकृद्धिणविश्विषका अस्ववस्तालसंदिवा अविसासीमागरामि प्पमा संस बहा सर्नेहमारे जाब पिक्रमा । तस्य में आवसपाशयदेवार्ज वतारि विमानावास्त्रामा भवन्तीयि सक्तामं जाव पविक्षा । विन्ताम ज्या स्टेह्स्म वर्णे । न्तरं सन्त्रे इस्य पानसर्विसए । तं ने वहित्या गुब्बस्वणासमा अस्टा जाव पढिक्या । एत्व में आणवपानसभूवार्ण पनतापनतार्थ ठाना पनता । निस वि

लोगस्स असखेजङ्भागे । तत्थ णं बहवे आणयपाणयदेवा परिवसति महिष्ट्रिया जाव पभासेमाणा । ते ण तत्थ साण साण विमाणावाससयाणं जाव विहरंति । पाणए इत्य देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणकुमारे । नवर चउण्ह विमाणावाससयाण, वीसाए सामाणियसाहरसीण, असीईए आयरक्खदेवसाहरसीण, अन्नेसिं च बहुण जाव विहरइ ॥ १३० ॥ किह ण भते । आरणचुयाण देवाणं पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता 2 कहि ण भंते ! आरणचुया देवा परिवसति 2, गोयमा ! आणयपाणयाण कप्पाण उप्पि सपर्विख सपडिदिसिं एत्थ ण आरणचुया नामं दुवे कप्पा पन्नता । पाईणपढीणायया, उदीणदाहिणवित्थिण्णा, अद्भचदसठाणसिठया, अचिमालीभास-रासिवण्णाभा, असखेजाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खभेण, असखेजाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेण, सव्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, छण्हा, घट्ठा, महा, नीरया, निम्मला, निप्पका, निकक्डच्छाया, सप्पभा, सस्सिरीया, सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिजा, अभिरुवा, पडिरुवा । एत्थ ण आरणचुयाण देवाण तिज्ञि दिमाणावाससया भवन्तीति मक्खाय। ते ण विमाणा सव्वर्यणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, मट्टा, नीरया, निम्मला, निप्पका, निक्ककडच्छाया, सप्पभा, सिसरीया, सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिजा, अभिल्वा, पडिल्वा । तेसि णं विमाणाण कप्पाण बहुमज्झदेसभाए पन्व वर्डिसया पन्नता । तजहा-अक्वर्डिसए फलिहवर्डिसए, र्यणवर्डिसए, जायस्ववर्डिसए, मज्झे एत्य अञ्चुयवर्डिसए। ते ण वर्डिसया सन्वरयणामया जाव पडिल्वा। एत्थ ण आरणचुयाण देवाण पजता-पजताण ठाणा पन्नता । तिम्र वि लोगस्स असखेजइभागे । तत्थ ण वहवे आरण-चुया देवा परिवसति । अचुए इत्य देविंदे देवराया परिवसइ, जहा पाणए जाव विहरइ। नवर तिण्ह विमाणावाससयाण, दसण्ह सामाणियसाहस्सीण, चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण आहेवच जाव कुव्वमाणे॰ विहरइ । वत्तीस अद्ववीसा वारस अट्ट चउरो (य) सयसहस्सा । पन्ना चत्तालीसा छच सहस्सा सहस्सारे ॥ १ ॥ आणय-पाणयकप्पे चत्तारि सयाऽऽरणचुए तिन्नि । सत्त विमाणसयाइ चउसु वि एएसु कप्पेसु ॥ २॥ सामाणियसगहणीगाहा-चउरासीइ असीई वावत्तरीं सत्तरी य सही य । पन्ना चत्तालीसा तीसा वीमा दस सहस्सा ॥ १ ॥ एए चेव आयरक्खा चउगुणा ॥ १३१ ॥ कहि ण भते ! हिट्टिमगेविज्जगाण पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता १ कहि ण भते ! हिट्टिमनेविज्जगा देवा परिवसित 2, गोयमा ! आरणचुयाण कप्पाण द्राप्य जाव दहूं द्र उप्पडता एत्थ ण हिद्विमगेविज्ञगाण देवाण तओ गेविज्ञगविमाणपत्यडा पन्नता । पाईणपडीणायया, उदीणदाहिणवित्थिण्णा, पिडपुण्णचदसठाणसिठया, अचिमा- सीमासरासिक नामा सेसं बढा बंगलोगे बाब पविकास । सरब मं इदिया-निजनार्षं देवार्णं प्रजारसक्तरे निमाणाबाससय अवतीति सवजार । ते यं निमाना सम्बद्ध्यासम् जाव पविक्रमा । एत्य मं हेद्रिस्गेनिकगार्च देवाच्य पञ्चतापञ्चतार्च ठाणा पद्मता । तिस्र नि क्रोगस्स असंबोजहमार्ग । तत्व र्ण बहुने हेहिमरोनिज्ञा देवा परिवरंति । सन्त्रे समिद्धिया सन्त्रे समञ्जरमा सन्त्रे समञ्चर सन्त्रे सम बला सब्धे समाजुभावा महासुक्दा कविवा कपेस्सा अपुराहिया आहर्मिंदा नामं ते वेबगना प्रवता समयाउसी ! ॥ १३० ॥ कहि वं मंत ! मजिसमगार्व गेबिजनार्गं देवार्च पञ्चतापञ्चताय ठाणा पत्तता है बढि र्व गेते । अञ्चिसगोविजना वेदा परिवर्धति ! गोयमा ! क्षेद्रिमगेबिकायाचं सच्चि सपविकास सपदिविसे बाव राण्डला एत्व वं मजिल्लामाविज्ञगतेवार्थं तस्त्रे गेकिजगविमानपरग्रहा प्रवता । पाईगपक्रीणायना ऋहा हेड्डिमगेकिक्स्याणं । तबरं सन्तुत्तरे विमाणाबाससर् मनवीवि सक्बार्थ । ते मं मिनाजा जान पविका । एत्य जं सजितसगैविजनाणं जान विस वि क्षेतरस असकेकारमाने । तत्व व बहवे महिलामनेकिकात वंदा परिवसिं बाब बाइमिंदा नासं ते वेबगवा पद्मता समयातसी ! ॥ १३६ ॥ वक्कि ये संतं ! वनरिमगविज्ञमार्ण देवाण पञ्चतापञ्चताचे ठाणा प्रवता है पञ्चे ण मंते । उनरिम-गेबिक्सा देवा परिवर्सते । गोससा । सजिससगेबिक्सायं उप्प बाब उप्पाता एस्य मं उन्नरिक्तोकिकागानं तको गेकिकागिकाणपरच्या पन्नता । पाईनपदीयानमा सेसं जड़ा हेट्रिमगेकिजगार्थ । नवरं एगे विमाणाबाससय अवलीति सक्तामं सेसं तहेन भानियम्म जान अहसिंहा गामे १६ वेक्गणा प्रवता समनावसी ! एकार सुत्तर हेडिमेस सनुतारं व मजिसमए । सबसेगं उपरिमए प्रचेष क्युत्तरविमाना १) १६४ । रहि ये सेते । असत्तरीजनात्रमानं नंतायं प्रजताप्रजनानं असा प्रवत्ता है बढ़ि ये संते ! क्यारशिववादवा वेवा परिवसति ! गोसमा ! इसीसे रवण-प्यमाप् पुरुषीप् वष्टुसमरमध्याको सूमिभागाको उर्धु चंदिमस्रिवगहगवसम्बद्धाः तारास्त्राणं नहूरं चीनणसवारं, नहुर्च चीननसहस्सारं, नहुरं चीननसनसहस्मारं बहुगाओं चौमणकोबीओं बहुगाओं चोमणरोडाकोबीको तथुं हुई उप्पत्ता सोइम्मीसागसर्णद्रमार जान भारणसुगरूपा तिनि अधारतत्तरे गेनिजगनिमाना-बाससाए बीईबाइना राज पर बुद्र गया जीरबा निस्तासा विदिमिरा विद्या प्रवृतिस्ति पेच अनुसारा महदमहासमा महानिमाचा प्रवत्ता । तबहा-निवयः क्षेत्रयेते व्ययंते सपराजिए, सम्बद्धसिद्धे । तं नं विभाणा सम्बरवणामया सम्बद कार सन्दा क्या सद्धा नीरवा निस्मला निर्णेश निर्णक**का**या सप्पमा

218

सस्सिरीया, सजजोया, पासाइया, दिरसणिजा, अभिल्वा, पडिल्वा। एत्थ ण अणुत्तरोववाइयाण देवाणं पजन्तापजन्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तिसु वि लोगस्स असखे-जाइभागे। तत्थ ण वहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसति। सन्वे समिद्धिया सन्वे समवला, सन्वे समाणुभावा, महासुक्खा, अणिंदा, अपेस्सा, अपुरोहिया, अह-मिंदा नाम ते देवगणा पन्नता समणाउसो । ॥ १३५ ॥ कहि ण भते । सिद्धाण ठाणा पन्नता <sup>2</sup> किह ण भंते ! सिद्धा परिवसति <sup>2</sup>, गोयमा ! सव्वद्वसिद्धस्स महा-विमाणस्स उवरिल्लाओ धूभियग्गाओ दुवालस जोयणे उन्हु अवाहाए एत्थ ण ईसि प्पन्मारा णाम पुढवी पन्नता । पणयालीस जोयणसयसहस्साइ आयामनिक्खंभेण, एगा जोयणकोडी वायालीस च सयसहस्साइ तीस च सयसहस्माइ दोन्नि य अउणापण्णे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पत्रता । ईसिप्पन्भाराए ण पुढवीए वहमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेते अट्ठ जोयणाइ बाह्र्लेण पन्नते । तओ अणतर च ण मायाए मायाए पएमपरिहाणीए परिहायमाणी परिहायमाणी सब्वेस चरमतेषु मच्छियपत्ताओ तणुययरी, अगुलस्स असखेजइभाग वाह्रहेण पन्नता । ईसिप्पब्साराए ण पुढवीए दुवालस नामधिजा पन्नता । तजहा-ईसी इ वा, ईसि-प्पन्भारा इ वा, तणू इ वा, तणुतणू इ वा, सिद्धित्ति वा, सिद्धालए इ वा, सुत्तिति वा, मुत्तालए इ वा, लोयग्गेति वा, लोयग्गयूभियति वा, लोयग्गपडिवुज्ज्ञणा इ वा, सन्वपाणभूयजीवसत्तस्रहावहा इ वा । ईसिप्पन्भारा ण पुढवी सेया संखदल-विमलसोत्थियमुणालदगरयतुसारगोक्खीरहारवण्णा, उत्ताणयछत्तसठाणसिठया, सव्व-जुणसुवण्णमई, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, मट्टा, नीरया, निम्मला, निप्पका, निकक्तडच्छाया, सप्पभा, सस्सिरीया, सउज्जोया, पासाईया, दरिसणिज्जा, अभिरुवा, पिंडह्वा । ईसिप्पव्भाराए ण पुढवीए सीआए जोयणिम्म लोगंतो, तस्स जे से उवरिहे गाउए तस्स ण गाउयस्स जे से उवरिहे छ०भागे, एत्थ ण सिद्धा भगवतो साइया अपज्जवसिया अणेगजाइजरामरणजोणिससारकळकळीभावपुणव्भवगव्भवास-वमहीपवचसमइकता सासयमणागयद काल चिट्ठति । तत्य वि य ते अवेया अवे-यणा निम्ममा असगा य । ससारविष्पमुक्का पएसनिन्वत्तसठाणा ॥ १ ॥ कर्हि पडिह्या सिद्धा कहिं मिद्धा पइहिया । कहिं वोंदिं चटत्ता ण कत्य गत्ण सिज्झइ 2 ॥ २ ॥ अलोए पडिह्या सिद्धा लोयग्गे य पटिट्टया । इह वॉटिं चडता ण तत्य गत्ण सिज्झइ ॥ ३ ॥ दीह वा हस्स वा ज चरिममवे हविज्ञ सठाण । तत्तो तिभागहीणा सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ४ ॥ ज सठाण तु टह भव चयतस्स चिर्मियमयमि । आसी य पएमघण त सठाण तिह तस्म ॥ ५ ॥ तिन्नि सया

वित्तीमा चयुत्तिमानो व होइ नावको । एमा यस सिद्धार्च उक्तमेग्रोगाइका मनिवा u ६ n बतारि य रवणीओ रवणीं विमागृषिया व बौदान्य । एसा राख्न सिदार्च मज्जिमभोगाइपा मनिया ॥ ७ ॥ एगा व होह रयपी अदेव व अंगुलाई साहि(य)या । एमा एक विद्याने जहनभोगाहणा मणिया ॥ ८ ॥ बोगाहवाद विद्या महतिमानेन हादि परिद्वीजा । ग्रेंठावसमित्वंयं करामरव्यविष्यमुद्वार्च ॥ ६ ॥ कल्ब स पृगो सिक्को राम्य अवाता मधनस्त्रजनिस्ता । सनोऽवसमांगाता पुता सन्ता वि सौर्यते ॥ १ ॥ कुमह क्षांति निज्ञे सम्बाधानेहिं नियमको सिद्धा । तेऽनि व नसंचित्रपुणा वेसपर-सेहिं अ पुद्रा ॥ ११ ॥ मसरीम बीबचना उवउत्ता र्थ्यचे व नाचे व । नागारमचा गारं सक्ताभमेय हा विद्यार्थ ॥ १ ॥ केशलयाशुक्रता जार्नता सम्बसायग्रमाने । पार्चना सम्बन्धे राज्य केवसनैद्वीविदर्गतार्थे ॥ १३ ॥ नमि अस्वि मानुसाने ते मुरुखं तनि य सम्प्रदेशनं । ये सिद्धाणं पुरुखं सम्भागाई अवगर्गाणं ॥ १४ व मुरगमनुई समत सम्बद्धापिटिये भवतनुषं । नवि शबद मुतिनुई गंवाहै सम्प-मगृहि ॥ १५ ॥ सिवस्य सद्दोरासी सम्बदापिकिमी कर श्वेजा । चोटर्नरवस्य महमो सम्बन्धारे न गाइमा ॥ १६ ॥ वह बास बोद मिन्सी नगरापे बहुनिहे नियाचंत्रो । न चएइ परिकट्टेट उदमाए लाई असंतीए ॥ १७ ॥ इय फिदार्च सोक्से मणीरम गरिप तरम जोरम्मं । हिनि निरोग्नेविश्तो सारिक्यमिनं समह बोच्छे ॥ १८ ॥ अह सम्बरामगुणियं पुरिको भौतृय भोवन कोइ । तन्त्रायुद्दानिमुद्दी अधिका प्रदेश व्यक्तियतियो ॥ १९ ॥ इस सम्बद्धासन्तिया भाउने निम्याचमुद्दस्या मिना । सामयमध्याबाई विद्वंति सुदौ सुद्दं पता ॥ १ ॥ सुन्नति य हुन्नति य पारगद्धि व परंपरगद्धि । सम्मुद्रकामकाया अवश् अमरा असेगा य ॥ १९ व निन्धिष्टमध्यपुरस्या जात्रवागमस्मर्गवनमित्रता । कञ्चाबाई मोत्रनं भणुईनी मामर्व मिना ॥ २२ ॥ १३६ ॥ प्रस्तवालाय अगर्याष्ट्र शीर्य ठाजपर्य समाचे 🖡

दिनिगारिययाण जोए थेए बगाक्तमा ये। गस्तात्वाणरेगायत्रेमवार्ट्टम्बर्गास्त्र ॥ १ ॥ अमगगरितात्वाणरेगायत्र्यस्य अवस्थित् विशेष । अप्रि अग्रिक्त प्रेत्र विश्वास्त्र विष्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विष्वास्त्र विष्वास्त्र विष्वास्त्र विष्वास्त्र विष्वास्त्र विष्वास्त्र विष्वास्त्र वि

वाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया पुरिच्छमेण, पिच्छमेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसा-हिया, दाहिणेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सन्वत्थोवा वणस्सइकाइया पच्छिमेण, पुरिच्छमेणं विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥ १३८ ॥ दिसाणुवाएण सन्वत्थोवा बेइदिया पच्छिमेणं, पुरच्छिमेण विसेसाहिया, दिक्खणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया। दिसाणुवाएण सन्वत्थोवा तेइंदिया पचित्थिमेणं, पुरिच्छमेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया। दिसाणु-वाएण सन्वत्थोवा चर्डारंदिया पचित्थमेण, पुरिच्छमेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया ॥ १३९ ॥ दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा नेरइया पुरच्छिमपचित्यमउत्तरेण, दाहिणेण असखेजगुणा । दिसाणुवाएण सन्वत्योवा रयणप्पभापुढवीनेरइया पुरच्छिमपचित्यमजत्तरेण, दाहिणेणं असखेजगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सक्करप्पभापुढवीनेरइया पुरच्छिमपचित्थिमउत्तरेण, दाहि-गेण असखेजगुणा । दिसाणुवाएणं सव्वत्योवा वालुयप्पभापुढवीनेरइया पुरच्छिम-पचित्यमउत्तरेण, दाहिणेण असखेजागुणा । दिसाणुवाएण सन्वत्योवा पंकप्पभापुढ-वीनेरइया पुरिच्छमपचित्यमजत्तरेण, दाहिणेण असखेजगुणा । दिसाणुवाएण सञ्व-त्योवा वृमप्पमापुढवीनेरइया पुरिच्छमपचित्यमजत्तरेण, दाहिणेण असखेजगुणा । दिसाणुनाएण सन्वत्थोवा तमप्पहापुढवीनेरइया पुरच्छिमपचित्यमउत्तरेण, दाहिणेण असखेजगुणा । दिसाणुवाएण सन्वत्थोवा अहेसत्तमापुढवीनेरइया पुरच्छिमप-चित्यमउत्तरेण, दाहिणेण असखेजगुणा । दाहिणेहिंतो अहेसत्तमापुढवीनेरइएहिंतो छद्वीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपचित्यमउत्तरेण असखेजगुणा, दाहिणेण असखेजगुणा, दाहिणिलेहिंतो तमापुढवीनेरइएहिंतो पचमाए वृमप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरन्छिमपचित्यमउत्तरेण असखेजगुणा, दाहिणेण असखेजगुणा, दाहि-णिलेहिंतो वूमप्पभापुढवीनेरइएहिंतो चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरन्धिः मपचित्थमउत्तरेण असखेजगुणा, दाहिणेण असखेजगुणा, दाहिणिक्लेहिंतो पकप्पसा-पुढवीनेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपचित्यमउत्तरेण असखेजगुणा, दाहिणेण असखेजगुणा, दाहिणिल्लेहिंतो वालुयप्पभापुढवीनेरइएहिंतो दोचाए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपचित्यमउत्तरेण असखेजगुणा, दाहिणेण असखेजगुणा, दाहिणिल्लेहिंतो सक्तरप्पभापुढवीनेरइएहिंतो इमीसे रयणप्प-भाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपचित्यमउत्तरेण असखेजागुणा, दाहिणेण असखेज-गुणा ॥ १४० ॥ दिसाणुवाएण सन्वत्थोवा पर्चिदिया तिरिक्खजोणिया पच्छिमेण, पुरिच्छमेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया ॥ १४१ ॥

सुचागमे

114

दिमानुवाएचं सम्बत्वोवा मनुस्मा वाहिचउत्तरेण पुरश्किमेणं एंबेजगुजा प्रवास-मंत्रं विसंगाद्विया ॥ १४२ ॥ विसालवाएर्ण सम्बद्धोशा अवस्थासी देशा पुरक्ति मरपरिवर्मणं उत्तरेणं असंबेक्युणा वाहियेणं कसंबेक्युणा । विसासनापर्व सम्बत्धोवा बाजमंतरा बेवा प्ररिष्ठमण प्रवृत्थिमेर्च विसंसाहिया सक्तरेच विसेता-दिया दाहिरोजं मिसेसाहिया । विसासुनाएणं सम्बत्नीना जोइसिया देवा प्ररच्छि-मपचरियमंत्र बाहिणेयं विसेसाहिया उत्तरेच विसेसाहिया । विसादवाएणं सम्बन् रबोबा देवा सोहस्मे कप्पे पुरस्किमप्रवस्थिमेण उत्तरेणं असंबेजसूचा बाहिबेर्प विसेसाहिका । विसाधुकाएणं सम्मत्वीका देवा हैसाने कप्पे पुरश्चिमपन्तरियमेणं उत्तरेश असंबेखपुणा वाहिनेणं विसेसाहिया । विसाधवाएणं सम्बत्योगा देश सर्गेडमारे क्यो प्रस्टिअपव्यत्यामं उत्तरेमं अपेकेक्युता साहिनेमं निरेसा-हिया । दिसछानाएणं सम्बद्धीना देवा आहिते कृत्ये पुरस्किमप्रवरियमेणं उत्तरेषं अपंचेज्याना वाश्चिनं विशेसाञ्चना । दिसाञ्चनाएर्यं सम्बत्योना देवा वस्मीए कप्पे पुरिक्रमप्रवातिमञ्ज्ञरेनं वाश्चिमेश असंक्रेम्युमा । विशास्त्रपार्यं सम्बत्नीया देवा संतर कृमे पुरस्किमप्रवरिधमञ्जरेशं दाक्किनेन असंस्थाना । दिसानुवार्य सम्मन्त्रोवा ववा महाप्रके कन्ये प्रतिक्रमण्यत्यमञ्ज्ञतेर्ज वाहिनेच असंकेजगुणा। विसाणवाएवं सम्बद्धांना वेवा सहस्यारे क्रम्ये प्ररक्तिमक्ष्यत्विसरत्तरेजं दाविगेनं अपेने ज्याना । तंन परं बहुसमोदवस्या समजाउसो । ॥ १४३ ॥ विसासुवाएन सम्बद्धीया छिद्धा दाक्षियतत्तरेण पुरन्छिमेणं संबेक्टाचा प्रचरियमेण निस्ताहिता B १ दारे B १४४ B एप्सि न मेरा ! नरहमार्च दिरिक्क मेथियार्ग मणुस्सार्च देवार्य रिकाल य पंचायतसमारीजं कनरे अनरेक्षितो अप्या वा बहुया वा तुजा वा मिरेसां क्रिया बा<sup>2</sup> मोदमा । सम्बद्धीया मणस्या चरहया **अर्थकं अ**गुणा वंदा समेकेन्स्युणा सिजा क्रांत्रमाला | तिरिक्ताओणिया क्रांत्रमाला ॥ १४५ ॥ पएसे वं मंदे । नेस्सार्व दिरिक्टाबोसिवाणं विरिक्क ग्रेमिणीण अनुस्सानं अगुस्सीणं वेवायं वेवीयं सिद्धान य अद्भावसमासेर्ग कवर अवरहितो अप्या वा बहुया वा तुका वा विसेसाहिता वा है गीयमा ! सम्बन्धोदाओं मनस्सीको मनुस्सा असन्देकपुणा भरत्या कर्रबेकपुणा तिरिक्तकोत्रिणीओ असकेक्पुणाओ तथा असकेक्पुणा वंगीको ऐकेक्पुणाओ चिद्या अर्थानगुष्पा विविक्ताजीनिया अव्ययुष्पा ॥ २ वार ॥ १४६ ॥ एएछि व भेत ! स्त्रंदियाचं एगिदिवाणं वेहविवाणं तेईवियाणं जनरिविवाणं पंत्रिवियाणं आणिदिसारा व कनरं कनरेहितो अप्पा का बहुवा वा तुना वा विदेसाहिका का है गोयमा । सम्बद्धीमा पंकितिमा चाउरितिया निरेसाहिका रोहरिका निरंसाहिका

बेइदिया विसेसाहिया, अणिदिया अणंतगुणा, एगिदिया अणंतगुणा, सइदिया विसेसाहिया ॥ १४७ ॥ एएसि ण भते ! सङदियाण एगिंदियाण वेइदियाण तेइदियाण चर्डारेंदियाण पर्चिदियाणं अपजत्तगाण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्रा वा विसेसाहिया वा <sup>१</sup> गोयमा! सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जतगा, चर्रारेदिया अपजन्तगा विसेसाहिया, तेइदिया अपजन्तगा विसेसाहिया, बेइदिया अपजत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपजत्तगा अर्णतगुणा, सडदिया अपजत्तगा विसेसाहिया ॥ १४८ ॥ एएसि ण मते ! सङ्दियाण एगिंदियाणं बेङ्दियाण तेडंदियाण चर्डिरियाण पर्चिदियाण पज्जताण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा <sup>२</sup> गोयमा ! सन्वत्थोवा चर्डारेदिया पजन्तगा, पर्चिदिया पजत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पजत्तगा विसेसाहिया, तेइदिया पजत्तगा विसेसा-हिया, एगिंदिया पज्जत्तगा अणतगुणा, सइदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया॥ १४९ ॥ एएसि ण भते ! सइदियाण पज्जतापज्जताण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तल्ला वा विसेसाहिया वा 2 गोयमा ! सन्वत्योवा सइदिया अपजत्तगा, सइदिया पजनगा सखेजगुणा। एएसि ण भते। एगिंदियाण पजनापजनाण कयरे कयरे-हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुछा वा विसेसाहिया वा<sup>१</sup> गोयमा! सव्वत्थोवा एगिंदिया अपजातमा, एगिंदिया पजातमा सखेजगुणा ॥ एएसि ण भते ! वेइदियाण पजनापजनाण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा । सन्वत्थोवा बेइदिया पजनाग, वेइदिया अपजनगा असखेजगुणा ॥ एएसि ण मते ! तेइदियाण पज्जतापज्जताण कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा १ गोयमा! सन्वत्योवा तेइदिया पज्जतगा, तेइदिया अपजत्तगा असखेजगुणा । एएसि ण भते ! चर्डारेदियाण पजतापजताण कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा <sup>2</sup> गोयमा ! सव्वत्थोवा चर्डिरिदया पजनगा, चर्डिरिदया अपजनगा असखेजगुणा ॥ एएसि ण भते ! पर्चिदियाण पजत्तापजत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुला वा विसेसा-हिया वा 2 गोयमा ! सन्वत्थोवा पचेंदिया पजतागा, पचेंदिया अपजतागा असखे-जगुणा ॥ १५० ॥ एएसि ण भते । सङ्दियाण एगिंदियाण वेड्दियाण तेड्दियाण चर्डिरिदयाण पचिदियाण पज्जत्तापज्जताण कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा <sup>२</sup> गोयमा ! सन्वत्थोवा चर्डारेदिया पज्जत्तगा, पर्चिदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइदिया पज्जत्तगा विसेया-हिया, पचिदिया अपजत्तगा असखेजगुणा, चउरिंदिया अपजत्तगा विसेसाहिया,

सत्तागमे

[ पण्यकामुच

11

वा तुवा वा विध्याद्विया वा है गोमा। शन्यत्याय कराय व्यवस्था कार्यकराना पुर्विराह्या स्थितिह्या वा है गोमा। शन्यत्याय स्थारम्या वर्ष्यहाह्या कार्यकराना पुर्विराह्या स्थितिह्या अध्वाद्या स्थारम्य विद्याद्विया कार्यकरान्या अर्थन्त्रणा कृष्यस्य अर्थन्त्रणा कार्यस्य विद्याद्विया १०५९ ते
करान्या अर्थन्त्रणा कृष्यस्य अर्थन्त्रणा कराह्या वर्ष्यस्य वा उद्याद्याः
करामामा अर्थन्त्रणा हृष्यस्य अर्थन्त्रणा कर्यक्रमा विद्याद्विया अर्थन्त्रम्य वर्षस्य व्यवस्य वर्षस्य वर्षस्य

त्रवाद्यायां वक्षणताण वयर क्यारियों क्या वा बहुवा वा त्रिंगारिया वा वा वा वा विश्वारिया वा विद्यार्थ प्रतासा मंत्रेन्यना प्रश्निया वा व्यवस्था विद्यार्थ क्षण्या विभागित्य व्यवस्था त्रवस्था विश्वारिया व्यवस्था विश्वारिया व्यवस्था विश्वारिया व्यवस्था प्रतासी व्यवस्था प्रतासी व्यवस्था विश्वारिया व्यवस्था विश्वारिया व्यवस्था विश्वारिया व्यवस्था विश्वरिया व्यवस्था व्यवस्या व्यवस्था व्यवस्था

चा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा <sup>१</sup> गोयमा ! सञ्वत्थोवा वाउकाइया अपज-त्तगा, वाउकाइया पजत्तगा सखेजगुणा ॥ एएसि ण भते ! वणस्सइकाइयाण पजता-पज्जताण क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा 2 गोयमा! सव्वत्थोवा वणस्सड्काइया अपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा ॥ एएसि ण भंते ! तसकाइयाण पज्जतापज्जताण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा १ गो० ! सञ्बत्योवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असखेजगुणा ॥ १५५ ॥ एएसि ण भंते ! सकाइयाण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण य पजनापजनाण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा १ गोयमा! सन्वत्थोवा तसकाइया पजतगा, तसकाइया अपजतगा सखेजगुणा, तेउकाइया अपजतगा असखेजगुणा, पुढाविकाइया अपजत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपजत्तगा विसे-साहिया, वाउकाइया अपजन्तगा विसेसाहिया, तेउकाइया पजनागा सखेजगुणा, पुढविकाइया पज्जतगा विसेसाहिया, आउकाइया पज्जतगा विसेसाहिया, वाउकाइया यजत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपजत्तगा अणंतगुणा, सकाइया अपजत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पजनाग संबेजगुणा, सकाइया पजनाग विसेसाहिया, सकाइया विसेसाहिया ॥ १५६ ॥ एएसि णं भते ! सहुमाण सहुमपुढविकाइयाण सुहुमभाउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाडयाण सुहुमनिओयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा <sup>2</sup> नोयमा ! सन्वत्योवा सुहुमतेजकाइया, सुहुमपुढविराइया विसेसाहिया, सुहुमआउ-काइया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिओया असखेजागुणा, सुहुमवणरसङ्काइया अणतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया ॥ १५७ ॥ एएसि ण भते ! सुहुमअपज्जत्तगाण सुहुमपुढविकाइयसपज्जत्तगाण सुहुमआउकाइयसपज्जत्तगाण सुहुम• तेडकाइयअपज्ञत्तगाण सुहुमवाडकाइयअपज्जत्तगाण सुहुमवणस्सइकाइयअपज्जत्तगाण सुहुमनिओयअपज्जत्तगाण य ऋयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४<sup>२</sup> गोयमा! सन्वत्योवा चुहुमतेउकाइया अपज्ञत्तगा, महुमपुढविकाइया अपज्ञत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउ-काइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमिन-ओया अपज्जतगा असखेजगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जतगा अणतगुणा, सुहुमा अपजत्तगा विसेसाहिया ॥ १५८ ॥ एएसि ण भते ! सुहुमपजत्तगाणं सुहुमपुटवि-काइयपज्जत्तगाण मुहुमआउकाइयपज्जतगाण सुहुमतेउकाइयपज्जतगाण सुहुमवाउ-काइयपज्जतगाण सुहुमवणस्मडकाइयपज्जतगाण सुहुमनिओयपज्जतगाण य क्यरे २१ सुत्ता०

क्यरेहितो अप्या वा ४१ कोयमा । सम्बत्वीवा सहस्रोठकाइया पञ्चतना सहस पुरुविकाह्या प्रजातमा विसेसाहिया सहुमआवकाह्या प्रजातमा विसेसाहिया सुरुव बाउनाऱ्या प्रजलगा विशेमाहिया सहुमनिओया प्रवत्तया अर्धकेञ्चुणा सङ्ग्रन-बजरमङ्ख्या प्रजातमा अनेतगुणा सहुमप्रजातमा विशेसादिया ॥ १५५ ॥ एएछि ष मंति ! सङ्कुमार्ग पञ्चतापञ्चतपार्ण दन्नरे कमरेहिंसो अप्पा वा ४३ गीयमा ! सम्बत्पोक सहुमञ्चयञ्चलमा सहुमपञ्चलमा संबेज्ज्युका । एएसि र्ग संवे । सहुम-पुत्रविक्राह्मार्थं प्रजातापञ्चातार्थं क्ष्मरे क्ष्मरेहिंदो व्यप्पा वा ४ ई गोसमा ( सम्बर्जीवा सहुमपुरविष्यस्या अपनातया सहुमपुरविष्यस्या पणतमा संबेकपुणा । एएसि वं मंत ! सहुममातकार्याच पत्रतापन्तगार्थ कारे कारेहितो सप्पा वा ४ है योगमा । सम्बन्धीया सहुमभावकात्र्या अपजनगर सहुमभातकाह्या पजनगर संबेज्याना । एएरि ण अति ! शहुमत्तरकाह्यार्ण पळतापजतार्थ कनरे कनरेहिती क्रमा ना ४ ! गोयमा ! सम्बत्नोवा सहमठेरकाह्या अपञ्चलगाः सहमठेरकास्या पळतगा संबेळगुणा । एएसि में गंदे ! सहस्रवातकहवार्य पळतापळनानं नगरे क्यरेहिं<u>यो अप्या वा ४१ गोवमा । सम्बल्</u>योमा <u>बहुमनाउकादमा अप्रजा</u>या सुदुसनारुकार्यः पञचना संक्रेजन्युचा । एएसि **व** मंते ! सङ्क्रमनजस्तर्वाहनार्ज पन्नशापनशार्ण कमरे कनरेहितो अप्या वा ४१ गोममा । सन्तरकेवा ड्युन-बणस्पद्रशङ्खा भपजनगा अहुमनजस्सद्दशद्दा पळक्तमा संबोजगुजा। एएति नै र्मतः । सहुमनिक्रीवाणं पञ्चतापञ्चताणं क्यरे क्यरेहितो अप्या वा ४१ गोवमा 🕻 सम्बद्धीया सङ्गतिकोमा अपवतामा सङ्गतिकोमा पञ्चतमा संकेत्रपुष्मा ॥ ९६ 🖷 एपति नं मेर्ते । श्रहुमाणं श्रहुमपुष्ठविष्ठाह्याणं श्रहुमणाजकादमाणं श्रहुमरोजकादवाणं मुहमनात्र राह्यार्थं शुहमनगरसाहभाष्यार्थं तहुमनिभोगाण य पज्रतापञ्चतार्थं कर्यरे क्यरहिंतो अप्या वा ४ र गोयमा । सम्बल्योवा सहुमतेशकामा अपज्ञाना त्रहुमपुटविकाइया अपअक्षवा निर्मसाहिया सहुमधातकाइया अपअक्षया विरेसी क्रिया भूकुमकारकारका क्रमण्याच्या निर्मेशाहिका श्रष्टुमचेरारका प्रजानन सेकेल-गुषा शहुमपुटनिराह्या पजताना विशेसाहिया शहुमनावनाह्या पजराना विशेगाः हिया सहुमनावकारया पञ्चतया निर्मेशाहिया सहुमनिश्रोया भगवतया नर्एयम-पुचा दहुमनिजीया पज्यतमा चैकेकपुणा पुतुसबणसम्दरगद्दया अरज्ञनमा जर्बतः पुणा मुहुमकाजातमा विसेसाहिया मुहुमक्षरसङ्ग्रह्मा प्रजामा सरोज्यामा सुरुमपण्डामा विश्वेसाबिका शतुमा विशेषाहिया ॥ १६९ ॥ एएसि में मेरे ! बायराणं नानरपुत्रविनाइगाणं नायरभाडकाइयाणं नायरतेउकाइवार्यं वानरनाउ

काडयाण वायरवणस्सडकाइयाण पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइयाणं वायरनिओयाण वायरतसकाइयाण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा! सन्वत्थोवा वायर-तसकाइया, वायरतेजकाइया असखेजगुणा, पत्तेयसरीरवायरवणस्सङकाइया अस-खेजगुणा, वायरनिओया असखेजगुणा, वायरपुढविकाइया असखेजगुणा, वायर-भाउकाइया असखेजगुणा, वायरवाउकाइया असखेजगुणा, वायरवणस्सइकाइया अणतगुणा, वायरा विसेसाहिया ॥ १६२ ॥ एएसि ण भते ! वायरपुढविकाइय-अपजनगाण वायरभाउकाइयअपजनगाण वायरतेउकाइयअपजनगाण वायरवाउ-काइयअपजत्तगाण वायरवणस्सङ्काङ्यअपजत्तगाण पत्तेयसरीरवायरवणस्सङ्काङ्य-अपजनगाण वायर्निओयअपजनगाणं वायरतसकाइयअपजनगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४१ गोयमा! सन्वत्थोवा वायरतसकाइया अपज्ञत्तगा, वायरतेजकाड्या अपजन्तगा असखेजगुणा, पत्तेयमरीरवायरवणस्मइकाइया अपज-त्तगा असखेजगुणा, वायरनिओया अपज्जत्तगा असखेजगुणा, वायरपुढविकाइया अपजत्तगा असखेजगुणा, वायरआउकाइया अपजत्तगा असखेजगुणा, वायरवाउ-काडया अपजत्तगा असखेजगुणा, वायरवणस्सइकाइया अपजत्तगा अणतगुणा, वायरअपजनगा विसेसाहिया ॥ १६३ ॥ एएसि ण भते ! वायरपजनयाण वायर-पुढवीकाइयपजन्तयाण वायरआङकाइयपजन्तयाण वायरतेङकाइयपजन्तयाण वायर-वाउकाइयपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरवायरवणस्सदकाइयपज्जत्तयाण वायरनिओयपज्जत्त-याण वायरतमकाइयपज्जत्तयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ 2 गोयमा ! सच्च-त्योवा वायरतेजकाड्या पजत्या, वायरतसकाइया पजत्या असखेजगुणा, पत्तेय-सरीरवायरवणस्सङकाइया पज्जत्तया असखेजगुणा, वायरनिओया पज्जत्तया असखे-जगुणा, वायरपुरवीकाइया पजनया असखेजगुणा, वायरभाउकाइया पजनया असखेजगुणा, वायरवाडकाइया पजत्तया असखेजगुणा, वायरवणस्सङमाङया पज-त्तया अणतगुणा, वायरपज्जत्तया विसेसाहिया ॥ १६४ ॥ एएसि ण भते ! वायराण पजतापजताण क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ८२ गोयमा! सन्वत्योवा वायरपज-त्तया, वायरअपज्ञत्तया असंबेज्युणा । एएसि ण भते ! वायरपुटवीनाइयाण पञ्जतापञ्जताण क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! मव्वत्थोवा वायरपुटवी-वाड्या पजनया, यायरपुरवीकाइया अपजनया असखेजगुणा । एएति ण मंते । वायरआउराटयाण पज्ञतापज्ञनाण क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४१ गोयमा! मञ्बत्योवा वायरआउवाउया पजातया, वायरआउवाट्या अपजातया असुवेज-गुणा । एएनि ण भते <sup>।</sup> वायरतेङमाहवाण पजनापजनाण क्यरे क्यरेहितो

सुचागमे

पञ्चलाभूर्य

228

वायरतसकाइया, वायरतेउकाइया असखेज्ञगुणा, पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइया असखेजगुणा, वायरनिओया असखेजगुणा, वायरपुढवीकाइया असखेजगुणा, वायरआडकाइया असखेजगुणा, वायरवाउकाइया असखेजगुणा, मुहुमतेउकाइया असखेजागुणा, सुहुमपुढवीकाइया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिओया असखेजागुणा, वायरवणस्सइकाइया अणतगुणा, वायरा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सङकाटया असखेजागुणा, सुहुमा विसेसा-हिया ॥ १६७ ॥ एएसि ण भते ! सुहुमअपज्जत्तयाण सुहुमपुढवीकाइयाण अपज्जत्त-याणं सुहुमआउकाइयाण अपज्जत्तयाण सुहुमतेउकाइयाण अपज्जत्तयाणं सुहुमवाउ-काइयाण अपज्जत्तयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण अपज्जत्तयाण सुहुमनिओयाण अप-जत्तयाण वायरअपजत्तयाण वायर्पुढवीकाइयाण अपजत्तयाण वायरआउकाइयाणं अपजत्तयाण वायरतेजकाइयाण अपजत्तयाण वायरवाजकाइयाण अपजत्तयाणं वायरवणस्सइकाइयाण अपज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरवायरवणस्सडकाइयाण अपज्जत्तयाण वायरनिओयाणं अपजन्तयाण वायरतसकाइयाण अपजन्तयाण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४<sup>२</sup> गोयमा ! सन्वत्थोवा वायरतसकाइया अपजनतया, वायरतेउकाइया अपजनया असखेजगुणा, पत्तेयसरीरवायरवणस्सडकाइया अपजन्तया असखेजगुणा, वायरनिओया अपजत्तया असखेजगुणा, वायरपुढवीकाइया अपजत्तया असखेज-गुणा, वायरआउकाइया अपज्जत्तया असखेजगुणा, वायरवाउकाइया अपजत्तया असखेजगुणा, सहुमतेउकाइया अपजत्तया असखेजगुणा, सहुमपुढवीकाइया अप-जत्तया विसेसाहिया, स्रहुमआउकाइया अपजत्तया विसेसाहिया, स्रहुमवाउकाइया अपजन्या विसेसाहिया, सहुमनिओया अपजन्तया असखेजगुणा, वायरवणस्सइ-काइया अपजत्तया अणतगुणा, वायरा अपजत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया अपजन्या असखेजगुणा, सुहुमा अपजन्या विसेसाहिया॥ १६८ ॥ एएसि ण भते ! सहुमपजन्तयाण सहुमपुढविकाइयपजन्तयाण सहुमआउकाइयपजन्तयाण सहु-मतेउकाइयपज्जत्तयाण सहुमवाउकाइयपज्जत्तयाण सहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तयाण सहु-मनिओयपजनयाण बायरपजनयाण वायरपुढविकाइयपजनयाणं वायरआउकाइ-यपज्जत्तयाण वायरते उकाइयपज्जत्तयाण वायरवा उकाइयपज्जत्तयाण वायरवणस्सइ-काइयपज्जत्तयाण पर्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाण बायरनिओयपज्जत्तयाणं वायरतसकाइयपजन्तयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ 2 गोयमा ! सन्वत्थोवा वायरतेउकाइया पजनाया, वायरतसकाइया पजनाया असखेजगुणा, पत्तेयसरीर-वायरवणस्सइकाइया पजत्तया असखेजगुणा, वायरनिओया पजत्तया असखेजगुणा,

वामरपुरनिवाहमा पञ्चत्तमा अर्थबेजगुषा वामरभाउबहरूमा पञ्चतमा अर्थबेजगुषा नागरनाउनाइया पजतना असेनेजग्रमा शहुमतेउनाहमा पजतना सर्वनेजगुना शहुमभुवनिराश्या पञ्चत्या विसेसाहिया शहुमभाउकक्ष्या पञ्चत्या विसेसाहिया शहुमकातकाइया प्रमातमा विशेशाहिका शहुमनिओमा प्रमाता असंबेज्याचा नामरनगस्यक्षत्राकृता पञ्चलमा कर्णवर्गुणा नामरपञ्चलका विशेषाद्विमा सहस-वणस्यद्रकाद्या पञ्चलमा व्यवेबोजगुणा श्रहुमपञ्चलमा विशेशाहिया ॥ १६५ ॥ एएछि पं मेते ! सङ्ग्रमाणं बायराज व पजनापजनाच कमरे कमरेखितो जपा वा ४ र गोयमा । सम्बत्नोवा वायरा पञ्चलया वायरा अपञ्चलया असंबेज्याचा सहस-अपन्यतमा अपेकेन्याना सुद्रुमपन्नतमा संदोन्नगुना ॥ एएछि वं संदे ! हहूम-पुत्रविराह्याणे नायरपुरुविकाहवाण च पञ्चतापञ्चताणं क्यरे क्यरेहितो मध्य मा ४१ गोवमा । सम्बत्योमा बायरपुरविकादमा पळतामा बावरपुरविनारमा करजन्म अर्थकेक्पुणा सहसपुत्रनिकार्या अपजन्मा अर्थयेज्युका सहस-पुत्रविभाइया पञ्चलमा संखेळगुणा ॥ एएसि यं मते । ग्रहुममासमाइमार्म वागर माउन्प्रदेशांग न गमतापमताच नवरे नवरेष्टियो मप्पा वा ४१ गोवमा । सम्बद्धीमा मागरआवराहमा पजत्तया मागरभावमाहया भपजत्तवा मस्वान गुणा सहस्रजातकाहका कागजासमा असंदोक्तगुणा सहस्रकातकाहका एजसमा संक्रेज्यपुणा । एएछि णै भेस । सहुमसेउनाइयार्थ वायरतेजनाइयाण व पजान-पञ्चतानं क्यरे क्यरेहिंठो अप्पा वा ४ है ध्येयमा । सम्बन्धीरा वायरस्वतकारमा प्रजाना नागरतेत्रकात्मा अपजाना भएकेजयुना वहुन्तवसाहना अपजाना मध्येळपुणा शहुमवेदक्यवा प्रमाता संयेळपुणा ॥ एएसि में मेरी ! तहुमगर काइमार्च यामरवाठकाइमाच स पज्यसापजसार्च कमरे कमरे**हि**सो अप्यां वा ४ है गोबमा ! सम्भन्नोता वायर्वाडकाऱ्या पळ्यामा वायर्वाडकाडवा अपन्यस्य असंविज्ञगुषा सहुमा सरनाह्या अराजसवा असंलेजगुजा सहुमवारशास्या पञ्चामा प्रेलेजपुषा ॥ एएछि भे मर्छ । सुग्रुमक्यस्तरकार्वाचे बायररपस्पर्र बाइमान व क्यरे क्यरेहिंगो अप्पा वा ४ रे मोदमा । सम्बन्धोदा बाबरव बरगद्दवाच्या पांजलया वावरवजस्माद्द्याद्द्या अवजन्तया असंनेजनुता गुडुमे-बणस्पद्रभाष्या अपञ्चतमा अर्थने अगुगा शहुसरणस्पद्रभद्रया पञ्चतमा संगे-अगुना त एएति ने भेत । सुरुमनिओवार्ग बावरनिओवाण व प्रमाणाम-गार्च कमरे कमरेदियो आपा वा ४ १ गायमा । समस्यारा वाबरनिजीया पञ्चतमा बायरनिभोगा अरञ्ज्ञतमा अर्थनेञ्चनुचा राषुमनिभागा भारतनमा

असखेजगुणा, सहुमनिओया पजत्तया सखेजगुणा॥ १७०॥ एएसि णं भंते! सुहुमाण सुहुमपुढवीकाइयाण सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउका-इयाण सुहुमनणस्सइकाइयाण सुहुमनिओयाण वायराण बायरपुढविकाइयाणं वायर-आउकाइयाण वायरतेउकाइयाण बायरवाउकाइयाण बायरवणस्सइकाइयाण पत्तेय-सरीरवायरवणस्सइकाइयाण वायरनिओयाण बायरतसकाइयाण य पज्जतापज्जताण कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ 2 गोयमा! सन्वत्थोवा बायरतेउकाइया पजत्तया, वायरतसकाइया पजत्तया असखेजगुणा, वायरतसकाइया अपजत्तया असखेजगुणा, पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असखेज्जगुणा, बायरनिओया पज्जत्तया असखेजगुणा, वायरपुढविकाइया पजन्तया असखेजगुणा, वायरभाउकाइया पज-त्तया असखेजगुणा, घायरवाउकाइया पजत्तया असखेजगुणा, वायरतेउकाइया अपज्जत्तया असलेजगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असलेज-गुणा, वायरनिओया अपजत्तया असखेजगुणा, वायरपुढवीकाइया अपजत्तया असखेजगुणा, बायरआउकाइया अपजत्तया असखेजगुणा, वायरवाउकाइया अपजत्तया असखेजगुणा, सुहुमतेउकाइया अपजत्तया असखेजगुणा, सुहुमपुढवी-काइया अपजत्तया विसेसाहिया, सहुमआउकाइया अपजत्तया विसेसाहिया, सहुम-वाउकाइया अपजत्तया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पजत्तया असखेजगुणा, मुहुमपुढवीकाइया पजत्तया विसेसाहिया, मुहुमआउकाइया पजत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पजत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिओया अपजत्तया असखेजगुणा, सुहुमनिओया पजत्तया सखेजगुणा, वायरवणस्सइकाइया पजत्तया अणतगुणा, वायरपजत्तया विसेमाहिया, वायरवणस्सइकाइया अपजत्तया असखेजगुणा, वायर-अपजत्तया विसेसाहिया, वायरा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया अपजत्तया असरोजगुणा, सुहुमअपजत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सङकाङया पजत्तया सखेज-गुणा, सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमा विसेसाहिया ॥ ४ दार ॥ १७१॥ एएसि ण भन्ते । जीवाण सजोगीण मणजोगीण वहजोगीण कायजोगीण अजोगीण य कयरे क्यरेहितो अप्पा वा बहुया वा तुझा वा विसेसाहिया वा 2 गोयमा! सन्वत्योवा जीवा मणजोगी, वइजोगी असखेजगुणा, अजोगी अणतगुणा, कायजोगी अणतगुणा, मजोगी विसेसाहिया ॥ ५ दार ॥ १७२ ॥ एएसि ण भन्ते ! जीवाण सवेयगाण इत्थीवेयगाण पुरिसवेयगाण नपुसगवेयगाण अवेयगाण य क्यरे क्यरे-हिंतो अप्पा वा वहुया वा तुऱ्रा वा विसेमाहिया वा <sup>२</sup> गोयमा ! मव्यत्योवा जीवा पुरिसवेयगा, इत्थीवेयगा सखेजगुणा, अवेयगा अणतगुणा, नपुसगवेयगा अणत- कोहरूमाईण माणक्रमाईण साथारुमाईण कोहरूसाईण सरुमाईण य क्यरे क्यरे-हितो सप्पा वा बहुया वा हावा वा विस्माहिता वा ई गोयमा ! सम्बत्तीया जीवा सरुमाई, माणक्रमाइ वर्णत्त्राण कोहरूमाई विसेसाहिया मायान्गमाई विसेसाहिया सोहरमाई विसेसाहिया सरुमाइ विसेसाहिया ॥ ७ वारं ॥ १०४ ॥ पूर्ण में सेते ! जीवामे सकेसमार्थ रिज्युकेस्सार्थ मीस्प्रेस्सार्थ वात्रकेस्सार्थ वित्रकेस्सार्थ पर्य स्टसार्ल मुक्तेस्सार्थ कस्त्रेस्साण्य य कमर्र क्वरेहितो अप्पा वा बहुया वा हुका वा विसेसाहिया वा व गोयमा ! सम्बन्धेता जीवा प्रप्रेस्सा स्वर्केस्सा संक्रेत्रचा परिक्ताहिया कस्त्रकेस्सा विदेशाविया सम्बन्धित वा स्वर्केस्सा संक्रेत्रस्सा विसेसाहिया कस्त्रकेस्सा विदेशाविया सम्बन्धित संक्रेत्रस्य स्वर्केस्सा विद्याप्तिया सम्बन्धेत्रस्या स्वरेसाहिया कस्त्रकेस्सा विदेशाविया स्वरेस्सा व्यवस्त्राच्या स्वरेस्सा स्वर्केस्सा सम्बन्धेत्रस्य सम्बन्धेत्यस्य सम्बन्धेत्रस्य सम्बन्य

गुणा संवेदगा निसेसाद्विया ॥ ६ थारै ॥ १७३ ॥ एएछि वं सेते ! सक्नाइनं

एएस जे भंत ! जोबाय सम्मादिक्षणं मिन्स्मादिक्षणं सम्मापिक्सादिक्षण य कारे कारोहिते मणा वा बहुवा वा क्रुवा वा सिर्मादिक वा ! नियम ! सम्मापिक जीवा सम्मापिक स्मादिक वा क्रिया शिक्षणोत जीवा सम्मापिक स्मादिक वा स्मादिक व्यवस्था सिर्मादिक वा विकास हो। १ तार १ १ १०६१। एएसे सं भत ! जोबाणं आधिमिक्सिक वार्षणं स्ववस्थाणीय । १ तार १ १ १०६१। एएसे सं भत ! जोबाणं आधिमिक्सिक वार्षणं स्ववस्थाणीयं केरकार्षणं य करे कारोहिता आभा वा बहुवा वा क्रुवा वा सिर्मादिवा वा ! गोक्सा ! एक्स्मावीयं अध्याणां सिर्मादिक्ष कार्या वा वा सिर्मादिक्ष कार्या वा सिर्मादक्ष कार्या कार्या वा सिर्मादक्ष कार्या स्थाप स्थापनिक वा सिर्मादक्ष स्थापनिक स्थापनिक

सजयाण असजयाण सजयासजयाण नोसजयनोअसजयनोसजयासजयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा 2 गोयमा! सञ्बत्योवा जीवा सजया, सजयासजया असखेज्जगुणा, नोसजयनोअसजयनोसजयासजया अणतगुणा, असजया अणतगुणा ॥ १२ दार ॥ १८१ ॥ एएसि णं भते ! जीवाण सागारीवउत्ताण अणागारीवउत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा वहया वा तुहा वा विसेसाहिया वा <sup>२</sup> गोयमा! सन्वत्थोवा जीवा अणागारोवउत्ता, सागारोवउत्ता सखेजगुणा ॥ १३ दारं ॥ १८२ ॥ एएसि णं भते ! जीवाण आहारगाण अणाहारगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुला वा विसे-साहिया वा <sup>१</sup> गोयमा । मन्वत्थोवा जीवा अणाहारगा, आहारगा असखेजगुणा ॥ १४ दार ॥ १८३ ॥ एएसि ण भते ! जीवाण भासगाण अभासगाण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेमाहिया वा <sup>2</sup> गोयमा! सन्वत्थोवा जीवा भासगा, अभासगा अणतगुणा ॥ १५ दार ॥ १८४ ॥ एएसि ण भते ! जीवाण परिताण अपरिताण नोपरित्तनोअपरिताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा वहया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा १ गोयमा ! सन्त्रतथोवा जीवा परित्ता, नोपरि-त्तनोअपरिता अणतगुणा, अपरिता अणतगुणा ॥ १६ दार ॥ १८५ ॥ एएसि ण भते । जीवाण पज्जताण अपज्जताण नोपज्जतानोअपज्जताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा <sup>१</sup> गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोपजन तानोअपजतगा, अपजतगा अणतगुणा, पजतगा सखेजगुणा ॥ १७ दारं ॥ ॥ १८६ ॥ एएसि ण भते ! जीवाण सुहुमाण वायराण नोस्रहुमनोवायराण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा 2 गोयमा! सन्वत्थोवा जीवा नोसुहुमनोवायरा, वायरा अणतगुणा, सुहुमा असखेजगुणा ॥ १८ दार ॥ ॥ १८७ ॥ एएसि ण भते । जीवाण सन्नीण असन्नीण नोसन्नीनोअसन्नीण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा <sup>2</sup> गोयमा! सन्वत्थोव-जीवा सन्नी, नोसन्नीनोअसन्नी अणतगुणा, असन्नी अणतगुणा ॥ १९ दारं ॥ ॥ १८८ ॥ एएसि ण भते । जीवाण भवसिद्धियाणं अभवसिद्धियाण नोभव-सिद्धियानोअभवसिद्धियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा 2 गोयमा ! सन्वत्थोवा जीवा अभवसिद्धिया, णोभवसिद्धियाणो-अभवसिद्धिया अणतगुणा, भवसिद्धिया अणतगुणा ॥ २० दार ॥ १८९ ॥ एएसि ण भते ! धम्मत्यिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकायजीवत्थिकायपोगगलत्थिकाया अद्धासमयाण दन्बहुयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुहा वा विसेसा-

सुत्तागर्म

**ब्रि**मा ना १ गोयमा ! भ्रम्मरियकाषु क्षकमारियकाण मागासरिक्**य**ण् पूर् **र्ण दिक्षि** द्वाम रप्तद्वराए सम्मत्योका जीवत्यिकाए सम्बद्धमाए वर्णसमुक्ते पोगामस्विकाए वस्मद्वमाए अर्जतमुचे बाद्धासमए वस्मद्वमाए वर्णतमुचे ॥ १९ ॥ एएछि नं संते । बम्मस्पिक्ययञ्ज्वस्मरियकायकागासस्विकाक्जीवस्थिकावज्ञेस्गकारेककाजनकासम्बाधि पएसहराए क्यरे क्यरेहितो भप्पा वा बहुवा वा तुला वा निस्तिहिता वा ! गोसमा ! सम्मत्त्रिकाए समस्मत्त्रिकाए एए णं योजि तुवा पएसद्ववाए सम्बत्त्रोवा जीवतिः काए पएसद्वमाएं वार्णसमुणे पोत्मकत्विकाए पएसद्वमाए कर्णसमुबे अदासमय पएसहनाए कर्णतमुणे आगासत्विकाए पएसहमाए अर्थतमुणे ॥ १९१ ॥ एमस्स नं मंते । सम्मत्विकायस्य चन्नहुगप्यद्ववाप् कवरे कपरेहितो क्षप्पा वा बहुवा वा क्रम ना निरोसाहिका ना र योगमा ! सम्बद्धीय एगे बम्मरिकाए सम्बद्ध्याए, से चेव पएसट्ट्याए असंचेजपुर्व । एवरस चं मंत । अध्यमतिमञ्जासर हज्बद्वपएस्ट बाए कबरे कमरेहिंतो अप्या वा बहुवा वा हुआ वा विसेसाहिया वा ! गोसमा ! सम्बद्धांने एगे अवस्मतिकाए दम्बद्धनाए, से बेन पएसङ्कराए असंनेज्याने। एयस्य में भेत ! भागासरियकानस्य चम्बद्वपएसद्वमाए कमरे क्रमरेहिता कप्पा ना बहुया वा हामा वा निर्मेशाहिका वा रिगोयसा । सम्बरकीचे पने जागासस्विकार दम्बद्धमाए, से चेन पएसद्धमाए नर्नतगुले । एयस्य नै गैठे ! जीनस्थिनानस्य दम्बद्वपर्सद्वनाए कारे कारोहितो अप्या वा बहुया वा तुम्र वा विसेसाहिया वा र गौयना ! सम्बत्नीचे जीवरियकार वृष्यञ्जयार, से चेव पर्सञ्ज्यार अस्त्रोक्स्प्रे । एवस्य मं मंते ! पोनगकतिकावस्य वृष्यद्वपप्यद्वमाप् कमरे क्वरेहिचो बप्पा वा बहुन्त वा हुद्धा वा क्रिकेशहिना वा <sup>8</sup> गोनना ! समस्वीचे पोन्नकरिवद्धाए वृज्यहुनार, से चेब पर्सङ्कार नसके बगुणे । नदासमर् न पुच्छिना, पर्सामाना ॥ १६२० एएडि व मंदे ! यम्मनिकाकायम्मत्याम्मारायतिकायमीवन्त्रवान्योगकात्य-कारभदासमार्थ वृष्यद्वपासद्वाप कार्य कार्यहितो कप्पा वा बहुना वा तुला वा मिसेसाम्बर्ग था <sup>इ</sup> गोनमा ! भग्मत्मिश्वाप् अवस्मतिश्वाप् आगासत्मिराप् एए रिकि वि तुवा बन्बद्धवाए सन्वरनोगा अस्मरिक्ताए अवस्मरिपकाए य एएसि में कोशि वि <u>ता</u>क्षा पर्वाहुबाए असवेजपुषाः जीवरिषकाए क्ष्महुनाए सर्वातपुर्वे से चेव परसद्भाए बसबोजगुचे पोमावत्विकाए बन्दद्ववाए अनंदगुणे से चेव परस्क बाए बर्सकेज्युने अदासमए वम्बद्धगएसदुवाए मर्गतगुने आयासस्थित्राए पएम्ड बाए भगंतपुरो ॥ २९ बार्र ॥ १८३ ॥ एएसि ने गेरा । बीधार्न नारेसार्य अपरि मान न कनरे कनरेहितो अप्या वा बहुया वा तुला वा विशेखादिया वा र योगमा

सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा, चरिमा अणतगुणा ॥ २२ दार ॥ १९४ ॥ एएसि णं भते ! जीवाण पोग्गलाण अद्धासमयाण सन्वद्व्वाण सन्वपएसाणं सन्वपज्जवाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुहा वा विसेसाहिया वा 2 गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा, पोग्गला अणतगुणा, अद्धासमया अणतगुणा, सन्वदन्वा विसेसाहिया, सन्व-पएसा अणतगुणा, सव्वपज्जवा अणंतगुणा ॥ २३ दार ॥ १९५ ॥ खेताणुवाएण मव्वत्थोवा जीवा उद्धलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्ते असखेजगुणा, उष्हुलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ १९६ ॥ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा नेरङया तेलोक्के, अहोलोयतिरियलोए अस-खेजगुणा, अहोलोए असखेजगुणा ॥ १९७ ॥ खेत्ताणुनाएणं सम्बत्थोना तिरिक्ख-जोणिया उद्दुलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए अस-खेजगुणा, तेलोक्ने असखेजगुणा, उद्दुलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेताणुवाएण सञ्वत्थोवाओ तिरिक्खजोणिणीओ उद्दुलोए, उद्दुलोयतिरियलोए अस-खेजगुणाओ, तेलोक्के सखेजगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए सखेजगुणाओ, अहोलोए सखेजगुणाओ, तिरियलोए सखेजगुणाओ ॥ १९८ ॥ खेताणुवाएण सन्वत्थोवा मणुस्ता तेलोक्के, उद्दुलोयतिरियलोए असखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए सखेजगुणा, उद्भुठोए सखेजगुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेताणुनाएण सन्वत्योवाओ मणुस्सीओ तेलोक्षे, उद्दूलोयतिरियलोए सखेजगुणाओ, अहोलोयतिरि-यलोए सखेजगुणाओ, उष्हुलोए सखेजगुणाओ, अहोलोए सखेजगुणाओ, तिरियलोए सखेजगुणाओ ॥ १९९ ॥ खेत्ताणुवाएण सन्वत्थोवा देवा उद्दृलोए, उद्दृलोयतिरिय-लोए असखेजगुणा, तेलोक्के सखेजगुणा, अहोलोयितिरियलोए सखेजगुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणुनाएण सव्वत्योवाओ देवीओ उद्दूलोए, उद्गुलोयतिरियलोए असखेजगुणाओ, तेलोक्षे सखेजगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए सखेजगुणाओ, अहोलोए सखेजगुणाओ, तिरियलोए सखेजगुणाओ ॥ २००॥ खेताणुवाएण सन्वत्थोवा भवणवासी देवा उष्टुलोए, उष्टुलोयतिरियलोए असखेजन गुणा, तेलोक्के सखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तिरियलोए असखेज्ज-गुणा, अहोलोए असखेजगुणा । खेताणुवाएण सन्वत्थोवाओ भवणवासिणीओ देवीओ उद्भूलोए, उद्भुलोयतिरियलोए असखेजगुणाओ, तेलोक्के सखेजगुणाओ, अहोलोय-तिरियलोए असखेजगुणाओ, तिरियलोए असखेजगुणाओ, अहोलोए असखेजन-गुणाओ ॥ खेत्ताणुवाएण सन्वत्योवा वाणमतरा देवा उहुलोए, उहुलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलेकि सखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए असखेजगुणा, अहोलोए 111 भुत्तागम

भर्षकेञ्चुला दिरिसंकोए संबेजगुला । बेताशुनाएवं सम्बर्धोनाको नावसदरीको देशीमो उष्ट्रकोए, ट्यून्तेमशिरियकोए अर्धकेणपुणाओ तेकोडे संकेणपुणाओ भरोधोयतिरियमोए असंधेजगुणाओ अहोस्येए संबोजगुणाओ तिरियमोए संबोज-पुणाओ ॥ बेत्ताशुवाएर्य सम्बत्योवा बोइसिया वेवा उन्नुस्रोए, उन्नुस्रायशिरियस्रोए अस्रोज्ञ्या रोक्षेक्व संकेजसूना अहोकोगतिरिक्कोए अस्केज्युमा अहोतीए पंचानगुजा विरियरकोए व्यक्तिजगुजा। बोत्तागुनाएन सम्बरकोगाओ कोद्दिमीको वेबीमा उद्वक्षोप, उद्वक्षेत्रशिरमकोए वर्धकेन्यायाको तेखेडे स्बेज्यायाको व्यक्तियतिरिवसीए असंदोक्तुणाको अहोसीए संकेक्युवाओ तिरिक्कीए असं-ये अगुवासी ॥ बेतालुवाएवं सम्बत्योवा वेमानिया वेवा उन्नसेयतिरियकोए, तेसेवे पंत्रेजगुणा कलोकोस्टिटिककोए पंत्रेजगुणा कलोकोए पंत्रोजगुणा दिरिसकोए सकेळाऱ्या उड्डकोए कार्सकेळाऱ्या । केतालवाएर्य सम्बद्धकेताको केसाविजीको वेदीओ उडुमोयतिस्यलेए, तेसीके संकेमगुणाओ अहोमोनतिस्तिसेए संकेम-गुणाओं अहोस्पेए सक्षेत्रपुषाओं तिरिक्सोए संकेत्रपुषाओं तहसीए ससंकेत-गुणाओ ॥ २ १ ॥ बेत्तानुकाएमं सम्बरकोका पृथिविया जीवा सङ्कोगदिरिकसेए. महाक्रोयदिरियसीए विवेशांदिया दिरिक्सोए अवंश्वित्रमुपा देसोहे सर्वरिज-गुजा तबुक्षीए असविकागुणा अहोक्षीए विसेसाहिया । केतालुबाएण सम्बरपीना पूर्वित्या जीवा अपन्यक्तमा उष्टुक्षेयितिरयस्येष्, अद्देश्येयतिरियस्येष् विदेशिहिया तिरियकोए करंकेअगुना तेकोके वर्षकेअगुना बहुतोए करंकेअगुना वहे-कोए विसेसाद्विया । केताणुवाएवं धन्यस्थीमा एगिविया जीवा पञ्चतगा उद्वसीम तिरियसोप, अहोबोमितिरियबोप निर्मेशाहिया विरियबाए अर्पिटाबयुजा राब्नेडे अस्यिक्युका सङ्क्रीए वर्सक्षिक्युका अशोक्षेप विरोशहिया ॥ १ २ ॥ वेता-तुवाएमं सम्बद्धीया वेद्दिया वक्कीए, उक्कीयविधियक्षीए असंक्रिजगुमा वेस्ने असरिकार्णा बाहोकीयतिरिक्षकोप् असंदिक्ष्याणा अहोकोए संविक्ष्याणा विरि समोप् संदिज्ञातुषा । केपालुवाएणं सम्बर्धावा नेत्रीस्वा अपज्ञत्तवा उत्तुन्तेप. एकसोजितिरिवसीए अर्पनेजागुणा तेसोके अर्पनेजागुणा व्यक्तीसोनिरियसीए अस्त्रेजगुवा बहोकोए संकेजगुवा तिरियकोए संबेजगुवा । बेतापुवाएव सम्बत्नोवा वेईविया पत्रता उड्डसोप, उड्डसोयतिरियसोए असंवित्रगुवा तेस्मेदे अस्यिक्ष्मवा अहोकोन्तिरिक्ष्मेए असंविक्ष्मुणा अहोस्सेए स्थिक्युणा शिर्मे ससीए सरिज्ञामा ॥ दोताणुवाएर्ण सम्बत्नोवा तेईविया सङ्ग्रहोए, उड्डहोसतिरि यस्मेए अस्पिक्याना तेस्रोहे वर्गिकव्याणा अहोम्प्रेनितियस्रोए सर्गिकिक्याना

अहोलोए संखिजगुणा, तिरियलोए संखिजगुणा । खेत्ताणुवाएण सन्वत्थोवा तेइदिया अपजत्तया उद्दृलोए, उद्दृलोयितिरियलोए असरोजगुणा, तेलोद्दे अस-खेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए असरोजगुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा। खेत्ताणुवाएण सन्वत्थोवा तेडदिया पजत्तया उहुलोए, उहुलोय-विरियलोए असखेजनुणा, तेलुक्ते असखेजनुणा, अहोलोयतिरियलोए असखेजनुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा ॥ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा चर्डारे-दिया जीवा उद्दुलोए, उद्दुलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलोक्ने असखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए असखेजगुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा चर्डारंदिया जीवा अपजत्तया उद्दृलोए, उद्दृलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए असखेजगुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेताणुवाएण सन्वत्थोवा चर्डारेदिया जीवा पजत्तया उहुलोए, उहुलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलोक्के असखेजगुणा, अहो-लोयतिरियलोए असखेजगुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा ॥२०३॥ खेताणुवाएण सन्वत्थोवा पचिदिया तेलुके, उड्ढलोयतिरियलोए सखेजागुणा, अहो-लोयतिरियलोए सखेजगुणा, उष्टुलोए सखेजगुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए असखेजगुणा । खेताणुवाएणं सन्वत्योवा पचिदिया अपजत्तया तेलोक्षे, उड्डलोय-तिरियलोए सखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए सखेजगुणा, उहुलोए सखेजगुणा, अहोलोए सखेजागुणा, तिरियलोए असखेजागुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पर्चिदिया पजता उद्गुलोए, उद्गुलोयितिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के सखेजगुणा, अहोलोय-तिरियलोए सखेजगुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए असखेजगुणा ॥ २०४ ॥ खेताणुवाएण सन्वत्योवा पुढविकाइया उहुलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखिजगुणा, तेलोके असखिजगुणा, उड्ढलोए असखि-जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेताणुवाएण सव्वत्योवा पुढविकाइया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलोक्के असखेजागुणा, उष्कृलोए असखेजागुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवा-एण सन्वत्थोवा पुढविकाइया पजात्तया उष्कृलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए . विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुके असखेजगुणा, उ**द्ग**लोए असखेज-गुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ २०५ ॥ खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा आउकाइया उद्भुलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुके असखेजगुणा, उन्हुलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणु-

बाएगं सम्बत्योवा आउराइवा अपजतमा उड्डुतोयतिरैयसोए, ब्रह्मेसेवतिरैक्येर निर्मेसाहिया तिरिक्कोए असंधेजगुणा तहोते असंधजगुणा उड्डबोए असेबेज-गुणा अहोकोए विशेशाहिया । बेशानवाएणं सम्बत्धीवा आठकाहवा प्रजन्म उक्सोयतिरियन्त्रेष्, अहोस्प्रेयतिरियनोष् विस्साहिया विरियसोष् असेबेन्ड्या तेत्मेडे असंखेळपुणा उड्डवीए असंखेळपुणा अहोबीए विवेसाहिया ॥ ९ ६ 🛭 देशानुवाएवं सम्बत्वोचा तेतकार्या सङ्ख्येयतिरिक्कोए, जहोस्मेनतिरिक्कोर विरोसाहिया विरियकोए ससंबेजगुना तेसोडे असंग्रेजगुना उड्डलेए असंबेज-गुणा अहेन्सेए विशेसाहिया । क्षेत्राणुवापूर्ण सम्बद्धीवा तेउवाह्या अपञ्चलम उद्दर्शयतिरिक्त्येष्, अद्दोखीयविरियकोष् विरेसादिया विरियकोष् असंवित्रप्रमा तेमोद्रे अर्चने अपुषा उद्दुलोए अर्चने अपुषा महोक्रोए विशेसाहिया । वेपाउँ बाएणं सम्बत्बोना चेठकाइया पन्नत्तया उड्डमोनशिरिनसीए, अहोसीमधिरिनसीए निर्मेसाहिता दिरियकोए वर्षकेजगुणा तेखेके अर्धकेजगुणा उड्डबोए अर्धकेज-गुमा अहोकोए निर्मणिहिया ॥ १ ७ ॥ बोत्तासुनाएर्न सम्बत्नीना बाउनास्य उडुकोनदिरिनमोए, अहोमोयतिरिनमोए विशेसाहिया विरिवमोए नएकेन्छना तेमोदे अस्बेन्युणा सङ्ग्रीए असंबेज्युणा अहोसीए विसेसाहिना। देसाई वाएगं सम्बत्योदा वाडवाइया अपवत्ताया सबुब्धेयविरिक्कोए, व्यक्केयविरिक्कोर मिसेसाहिया चिरिनलोए असंकेजगुषा तेखेके अस्त्वेजगुषा उन्नेए असंबे अगुणा अहोन्येष् निर्मसाहिता । केतालुवाएनं सम्बत्योवा बाटकत्या पमध्या उक्नोवितरिवकोए, अहोनोगतिरिवकोए विशेशाहिया विरिवकोए अउंकेज्युवा रहरे अस्वेजपुणा उन्नेत्रेए अस्वेजपुणा कहोकोए विसेसाहिया ॥ २ ६ ॥ केताशुमाएर्ज सम्मत्योगा वणस्यदकाहवा उच्चसोयविरियकोए, सहोन्धेनविरियनोप विरोसाहिया विरियकोए वसकेमणुणा वेसोदे वसंकेमणुणा सहस्रेए असेकेम गुजा महोत्रोए विशेसाहिना । केतालुबाएर्थ सम्बत्नोबा वणस्यहरूदमा अपन त्तमा उद्दूर्भनितिरिक्कोए, अहोकोयतिरिनसोए विशेषाहिया विरियसोए सस्बेज गुमा रहिके मस्त्रेजगुमा उनुकोए सर्वेजगुमा महोलेए सिरेसाहिका। केतानुवाएकं सम्बर्धामा क्यारसङ्ग्रहमा प्रजातमा उन्नुसौयदिविदस्येप्, ब्रह्मेकेन क्षित्रकोए विशेसाहिता विशियकोए सस्योजगुणा तेखेके अस्योजगुणा उन्नर्धेए अर्थकाञ्चा कहोस्रोए विवेसाहिया ॥ १ ९ ॥ केतानुवाएवं स्ववत्योगा तस कार्या तेकोके उक्कोमतिरियमोए क्यकेमगुणा जहोस्सेक्तिरिकोए सकेमगुणा अनुसीए संवेजधुना जहोस्रोए संवेजगुणा विरिवसीए असकेजगुणा। वेतास-

वाएण मव्वत्थोवा तमकाइया अपजत्तया तेलोक्रे, उहूलोयतिरियलोए असखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए सखेजगुणा, उडूलोए सखेजगुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरि-यलोए असखेजगुणा । खेत्ताणुवाएण सञ्वत्थोवा तसकाइया पजनया तेलोक्के, उद्दूलो-यतिरियलोए असखेजगुणा, अहोलोयितिरियलोए सखेजगुणा, उहुलोए सखेजगुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए असखेजगुणा ॥ २४ दारं ॥ २१० ॥ एएसि णं भते ! जीवाण आउयस्य कम्मस्स वधगाण अवधगाणं पज्जताण अपज्जताण सुत्ताण जागराण समोहयाण असमोहयाणं सायावेयगाण असायावेयगाण इदिओव-उत्ताण नोइदिओवउत्ताण सागारोवउत्ताण अणागारोवउत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा <sup>२</sup> गोयमा ! सन्वत्योवा जीवा आउ-यस्म कम्मस्स वधगा १, अपज्जत्तया सखेजगुणा २, सत्ता सखेजगुणा ३, समो-हया सखेजगुणा ४, सायावेयगा सखेजगुणा ५, इदिओवउत्ता सखेजगुणा ६, अणागारोवउत्ता सखेज्जगुणा ७, सागारोवउत्ता सखेज्जगुणा ८, नोइदिओवउत्ता विसे-साहिया ९, असायावेयगा विसेसाहिया १०, असमोहया विसेसाहिया ११, जागरा विसेसाहिया १२, पज्जत्तया विसेसाहिया १३, आउयस्स कम्मस्स अवधया विसेसा-हिया १४॥ २५ दार ॥ २११॥ खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा पुग्गला तेलोक्के, उद्गलोय-तिरियलोए अणतगुणा, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, उद्दुलोए असखेजागुणा, अहोलोए विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सन्वत्थोवा पुग्गला उद्गृदिसाए, अहोदिसाए विसेसाहिया, उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपचित्थिमेण उ दोनि तुह्रा असखेजगुणा, दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपचित्थिमेण य दोवि विसेसाहिया, पुरन्छिमेण असखेजगुणा, पचित्यमेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सञ्वत्थोवाई दञ्जाइ तेलोक्के, उद्धलोयतिरियलोए अणतगुणाइ, अहोलोयितिरियलोए विसेसाहियाइ, उन्हलोए असखेजगुणाइ, अहोलोए अणतगुणाइ, तिरियलोए संखेजगुणाइ । दिसाणुवाएण सव्वत्योवाइ दव्वाइ अहोदि-साए, उद्दृदिसाए अणतगुणाइ, उत्तरपुरिच्छमेण दाहिणपचित्यमेण य दोवि तुल्लाई असखेजगुणाइ, दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपचित्थिमेण य दोवि तुल्लाइ विसेसाहियाइ, पुरच्छिमेण असखेजागुणाइ, पश्चित्यमेण विसेसाहियाइ, दाहिणेण विसेसाहियाई, उत्तरेण विसेसाहियाइ ॥ २१२ ॥ एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण सखेज्जपएसि-याण असखेजापएसियाण अणतपएसियाण य खघाण द्व्वहुयाए पएसहुयाए द्व्वहु-पएसट्टयाए क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा $^{2}$ गोयमा ! सञ्चत्थोवा अणतपएसिया खघा द्व्वद्वयाए, परमाणुपोग्गला द्व्वद्वयाए

दम्बद्धगाए असेचेञ्चगुवा । पएसद्वयाए-सम्बत्धोवा सर्वतपरसिवा रांभा पएसद्ववाए, परमाञ्चपोरगम्य अपप्रसङ्घराए अर्थातगुन्ता सेने अपप्रतिया राजा परसङ्गाए सेने अ-गुषा असंद्रपण्तिमा दावा पण्सङ्घाण् असंसेजगुजा । दश्यञ्जपण्सङ्घाण्-सम्भत्योवा मधंतपर्तिया योगा दम्यद्वमार्, ते चेच पर्तस्त्रुमार् अवंतगुमा परमापुरोग्नका दम्बद्धभारपस्ट्वनाए कर्मतगुना संबेजनपरिया र्यमा दम्बद्धभाए संबेजगुना से चेष पर्सद्वयाए संघेळगुणा असंवयपर्तिया यांचा दम्बद्वमार असंकेळगुणा हे भेद पएस्ट्रकाए असेकेकगुणा ॥१९३॥ एएसि वं संते ! एनपएसोगाडाकं संयेकपए-सोताराणं असंबेजपद्योगादाण व पोगम्माचं दम्बद्धवाए वद्यद्ववाए दम्बद्धपण्सङ्घ माए कररे क्यरेहिंतो अप्या वा बहुया वा तुक्का वा क्लिसाहिमा वा है गोममा ! गम्ब-त्योबा एगफ्एसोगाढा पोम्ममा दम्बद्धभाए, संधेजक्एसोगाडा पोमाहा सम्बद्धभाए पंचेक्युणा अपंचेकपएसांगाटा पोग्गमा वष्णद्वशाप अपंचकप्राचा वएगद्वगाप-सब्दरबोदा एमपएनोमाना पोम्मका पर्मद्वपायु, संकेळपरासीनाहा पोम्मका पामाद्वपायु सनेजगुगाः असंनेजनप्रधोगाना पोमान्न पप्तद्ववाए असंवेजगुगा । दम्बद्धपण सञ्ज्ञपाए-सम्बद्धाना एगपएसोगाता पुग्नसा व्याङ्करएसङ्गाए, संस्थितरानामात्रा पुरतसा बम्बद्धनाए सरिज्ञगुणा हे बेब १एएद्धगाए संग्रिज्ञगुणा असंग्रिज्ञगुणी-गाडा पुरगक्त इम्बद्धवाए असरिकानुषा है चेत्र पएसद्ववाए असेटिकानुषा ॥२१४॥ एएमि में भ ते । एनसमयिक्तार्थं सरिवजनमयिक्तार्थं अस्रिजनमयिक्तार्थं पुरासार्गं दम्बद्भाए वएनद्भाए वानद्वपएसद्भाए क्यरे क्यरेहिनो अप्या वा बहुमा ना तुत्रा ना निरोगाद्विया ना । गोयमा । सम्बन्धोवा रुग्लममयिदया पुम्पता इब्बद्धनाए, संशिजनगमयद्भिया पुरासा इब्बद्धनाए सनिव्यापुणा असंशिजननय दिदमा पुरनना बम्बद्धपाए असरिरज्ञगुणा । पएनद्वपाए-सम्बरमोरा एवसमयटिइया प्राचला पर्गद्ववार सर्वज्ञसम्बद्धिया पुग्नसः पर्गाद्ववार सनेजनुषा अर्थ-सेजनमयरिद्या पुरामा वर्गद्वयाण समेन्त्रजनुषा । वस्त्रद्वपरमहुवार्-सम्बन्धीरा एतनमबद्भिया पुम्पमा बम्बद्वप्रसम्बद्धवार्, स्रशिक्षसमयद्भित्रा पुम्पना बम्बद्धवार् मेमिजपुणाः ते अतः कम्मद्वयाम् धरिष्णपुणाः। असेस्तिज्ञगमयदिद्या पुरमान इम्बद्धपाएं असेन्सिमगुचा । तः चव वएगद्धवाएं अमेन्सिमगुचा 🛍 १५ म एग्नि र्ण श्रेत ! एरापुराजासमार्थं सैन्सिक्रगुष्यत्त्वरार्थं अस्तिक्रगुष्यात्त्रमार्थं असे एग बातमाम य पुरगनार्थं इष्णद्ववाए पर्गगद्ववाए इष्णद्वपर्गगद्ववाए व बबरे बनरेप्रि रे अप्या का बहुवा का हुना वा विशेषाहिया का रे शायमा र जहा पुराण तहा

भाणियव्वा, एव संखिजगुणकालगाण वि । एव सेसावि वण्णा गंघा रसा फासा भाणियन्वा । फासाण क्ल्खडमडयगुरुयलहुयाण जहा एगपएसोगाडाण भणियं तहा भाणियव्व । अवसेसा फासा जहा वन्ना तहा भाणियव्वा ॥ २६ दार ॥२१६॥ अह भंते ! सव्वजीवप्पबहु महादण्डय वज्ञड्स्सामि-सव्वत्थोवा गब्भवक्षंतिया मणुस्सा १, मणुस्सीओ सिखजगुणाओ २, वायरतेउकाइया पजत्तया असिखज-गुणा ३, अणुत्तरोववाइया देवा असखिजागुणा ४, उवरिमगेविजागा देवा सखिज-गुणा ५, मज्झिमगेविजागा देवा सखिजागुणा ६, हिद्विमगेविजागा देवा सखिज-गुणा ७, अञ्चुए कप्पे देवा सिखजगुणा ८, आरणे कप्पे देवा सिखजगुणा ९, पाणए कप्पे देवा सिखजागुणा १०, आणए कप्पे देवा सिखजागुणा ११, अहे-सत्तमाए पुढवीए नेरइया असखिजगुणा १२, छट्टीए तमाए पुढवीए नेरइया असिखजगुणा १३, सहस्सारे कप्पे देवा असिखजगुणा १४, महासुक्के कप्पे देवा असंखिजगुणा १५, पचमाए बूमप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखिजगुणा १६. लैतए कप्पे देवा असिखजगुणा १७, चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखिजगुणा १८, वभलोए कप्पे देवा असंखिजगुणा १९, तचाए वालुयप्पभाए पुढवीए नेरइया असखिजगुणा २०, माहिंदे कप्पे देवा असखिजगुणा २१, सणकुमारे कप्पे देवा असखिजगुणा २२, दोचाए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखिजगुणा २३, समुच्छिमा मणुस्सा असंखिजगुणा २४, ईसाणे कप्पे देवा असिखजगुणा २५, ईसाणे कप्पे देवीओ सिखजगुणाओ २६, सोहम्मे कप्पे देवा सिखजगुणा २७, सोहम्मे कप्पे देवीओ सिखजगुणाओ २८, भवणवासी देवा असंखिजगुणा २९, भवणवासिणीओ देवीओ संखिजगुणाओ ३०, इमीसे रयणप्प-भाए पुढवीए नेरइया असखिजगुणा ३१, खहयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असिखजगुणा ३२, बह्यरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ सिराजगुणाओ ३३. थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा सखिजगुणा ३४, थलयरपचिंदियतिरि-क्लजोणिणीओ सिखजगुणाओ ३५, जलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा संखिजगुणा ३६, जलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिजगुणाओ ३७. वाणमतरा देवा सिखजगुणा ३८, वाणमतरीओ देवीओ सिखजगुणाओ ३९. जोइसिया देवा सखिजगुणा ४०, जोइसिणीओ देवीओ सखिजगुणाओ ४१. खह्यरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुसगा सखिजगुणा ४२, थलयरपचिंदियतिरि-क्लजोणिया नपुसगा सिखज्जगुणा ४३, जलयरपिचदियतिरिक्लजोणिया नपुसगा संखिजगुणा ४४, चउरिंदिया पजत्तया संखिजगुणा ४५, पचिंदिया पजत्तया २२ सत्ता०

दिवा ४८ पंचितिया भएजतामा वर्शकालगुणा ४९ वटरिदिया नगजामा देईदिया अपञ्चत्तवा विरोत्ताहिया ५९ वेइंदिया अपञ्चतता मिरोताहिया ५२ परोक्सरीरवाबरवणस्सहकाहवा प्रजातमा अवैकिम्प्रामा ५६ बामरनिजोदा एकत्तमा असेबिजयुगा ५४ वायरपुरुवैद्यस्या एकतवा सर्ववि-कर्मण ५५ बायरमातकाह्या प्रमात्मा करियाममुणा ५६ बायरमातकाह्या प्रमत्त्वा अवंश्वित्रकृषा ५७ बावरतेवक्षक्या अपन्यक्या अवंश्वित्रकृषा ५६ परीयसरीरवायरवजसम्बद्धाः अपन्यस्याः असंदिज्ञसुनाः ५९ वायरनिजीना भएकत्रमा सर्वकित्रम्या ६ वायरप्रवीकाश्या अपनात्रमा असंदित्रम्यामा ६१ वागरकातकाहमा वापव्यवमा अधेविज्ञानुका ६२ वाजस्वातकाहमा वापवातम असंसिक्युका ६३. <u>स्त</u>्रुगतंत्रकाह्ना अपन्याना नर्राक्षकपुना ६४ <u>स्त्रु</u>गत्त्रकी काह्ना जस्माना निर्मेशाहिया ६५ ग्रह्ममारकह्या वपमाया विरोगहिक ६६, प्रकृतमालकाइया जयजनाया विशेसाहिया ६७ प्रकृतितकाइया पजनाया चिक्रज्ञाना ६८ शहरपुरवीकाऱ्या प्रजातमा मिसेसाहिया ६९ शहरमाञ्चाइस पमत्तमा निरेशाहिया 🛩 शहुमबारकाइमा पमत्तवा निरेशाहिया 🛂 रहनि निमोगा सपजतमा जर्रविज्ञणुणा ७२ ध्रहुमनिमोगा पजतमा वंश्विज्ञणुणा ७३ कमक्तिस्था वर्णसम्बन्धा ७४ परिवरियसम्मादिही वर्णसमुका ७५ दिवा वर्षत-गुगा ७६ वासरमणसंस्कृतवा पञ्चलमा वर्णसमुमा ७७ वासरपञ्चलमा विसेशा-दिया ७८ वासरवक्तस्त्कृतस्या अपजन्तमा असविज्ञगुका ७५ बासरअपजनन विरोधिका ८ वायरा विरोधादिया ८९ मुद्रुपनकरसङ्काहमा अन्यत्तमा भर्पतिकानुमा ८२ सुब्रमध्यमत्त्रमा वितेताहिता ८३ सहमन्यस्त्रभाहता पमचया संदिम्मपुष्पा ८४ शहमप्रमामा निवेसाहिया ८५ तहुमा निवेसाहिया संचित्रमा मिसेसाहिया ८० विभोजनीया विसंसाहिया ८८ वयसप्रश्रीया मिसेमादिया ८९ प्रिंगिया विशेसादिया ९ विरिक्खकोत्स्वा विशेसादिया ९१ मिकारिक्क विरेमाहिका ९२ अविरया विरोसाहिया ९३ सम्साह विरोसाहिका ९४ **ए**उमस्या निरोसाहिया ९५ समोगी विशेसाहिया ९६ ससारत्या विशेसाहिया ९७ क्ष्मतीका विशेषादिया ९८॥ २७ वार ॥ २९७॥ चरावणाय मगवर्षय त्रायं अप्यापद्वयपर्यं समर्त्र ॥

नेरहराणें मेहें । केवहर्य काल ठिट्टें पत्ताता ! गोयथा ! वहकेले कालगमहरूमार्य करोसेलें तारीसे सागरीकार्य: । अध्यक्तगतेरहवाणे मंति ! केवहर्य वालं ठिट्टें पत्राणा ! नोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त उद्योसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तगनेरइयाण भते ! केवडय काल ठिडे पन्नता ? गीयमा! जहनेणं दसवाससहस्साड अतोमुहुतूणाई, उद्गोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तृणाइ ॥ २१८ ॥ रयणप्पभापुढविनेरडयाणं भते ! केवइय काल ठिई पन्नता <sup>2</sup> गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइ, उक्नोसेण सागरोवम । अपज्जत्तरयणप्पभापुढविनेरडयाण भते । केवइयं काल ठिई पन्नता 2 नोयमा । जहन्नेण अतोमुहुत्त उक्तोसेण वि अतोमुहुत्त । पजनरयणप्पभापुढविनेरड-याण भते किवइय काल ठिई पन्नता <sup>2</sup> गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्याइ अतोमुहुत्तृणाइ, उक्कोसेण सागरोनम अतोमुहुत्तृण । सकरप्पभापुडनिनेरइयाण भंते ! केवडय काल ठिई पन्नता 2 गोयमा । जहन्नेण एग सागरोवम, उक्कोसेण तिन्नि मागरोवमाइ। अपज्जत्तयसक्ररप्पभापुढविनेरइयाण भते। केवइय काल ठिई पन्नता 2 नोयमा ! जहन्नेण अतोमुहत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तयसकरप्पभापुडवि-नेरइयाणं भते ! केवइय काल ठिई पन्नता <sup>2</sup> गोयमा ! जहन्नेण सागरोवम अतो-मुहुत्तूण, उक्नोसेण तिन्नि सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ । वालुयप्पभापुढविनेरडयाणं अंते ! केनइय काल ठिई पन्नता <sup>2</sup> गोयमा । जहनेण तिनि सागरीनमाइ, उद्दोसेण सत्त सागरोवमाइ । अपज्जत्तयवालुयप्पभापुढविनेरइयाण भते । केवइय काल ठिई पन्नता १ गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उन्नोसेण वि अतोमुहुत्त । पजन्तयवालुयप्प-भापुडिविनेरइयाण भते ! केबइय काल ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेण तिन्नि न्सागरोवमाइ अतोसुहुतूणाइ, उक्कोसेण सत्त सागरोवमाइ अतोसुहुतूणाइ। पकप्पभा-पुढविनेर्ह्याण भते । केवह्य काल ठिई पन्नता १ गोयमा । जहन्नेण सत्त सागरीव-माइ, उक्कोसेण दस सागरोवमाइ। अपजत्तयपकप्पभापुढविनेरइयाण भते ! केवइय काल ठिई पनता 2 गोयमा ! जहनेण वि अतोमुहुत्त उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तयपंकप्पभापुढविनेरइयाण भते! केवइय काल ठिई पन्नता? गोयमा! जहन्नेण सत्त सागरोवमाइ अतोमुहुनूणाइ, उक्कोसेण दस सागरोवमाइ अतोमुहुनूणाइ। 'धूमप्पभापुढविनेरइयाण भते । केवइय काल ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेण दस सागरोवमाइ, उक्कोसेण सत्तरस सागरोवमाइ । अपज्जत्तयधूमप्पभापुढविनेरइयाण भते ! केवइय काल ठिईं पन्नता 2 गोयमा ! जहन्नेण वि अतोमुहुत्त उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तयधूमप्पभापुढविनेरइयाण भते ! केवइय काल ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहनेण दस सागरीवमाइ अतोमुहुतूणाइ, उक्कोसेण सत्तरस सागरीवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ। तमप्पमापुढविनेरङयाण भते । केवइय काल ठिई पनता १ गोयमा। जहन्नेण सत्तरस सागरोवमाइ, उक्षोसेण वावीसं सागरोवमाइ। अपजात्मतमप्पमा-

उद्दोनेन वि अंतीमुद्दुर्गः। प्रजानपरामप्रमप्त्रमुख्यितेत्व्याणं अते । केदस्यं वातं वि पद्याः। शोपसाः। व्यक्षिणं समारस्य सामग्रेवनार्गः अंतीमुद्रुणुगारं उद्दोन्नणं वार्यः सारतिकारः अंतीमुद्रुणुगारं। व्यक्तिमापुष्टिनेत्व्याणं सति । केदस्यं वातं वि पद्याः। शोपसाः। व्यक्षणं वार्योशं साराविकारः व्यक्तिमं त्रीतास्य

प्यापा । पारणा । अवारा भागा वावार साराध्यात व्यापाय तास साराध्यात । साराध्यात स्वीरं । व्यापाय कार्य स्वाराध्य अवाराध्यात करती सुद्धातं व्यापाय भित्रे । व्यापाय कर्षा कि तुम्बाता । त्यापाय स्वीरं करती सुद्धातं व्यापाय । व्यापाय स्वीरं साराध्यात् । व्यापाय स्वार्धात् ।

हामधेनमाई। काश्वासवायोदार्ग मेरी। केस्त्रम् कार्य द्विर्ध पत्ताना गोनाना। व्यवेष मि बरनोत्तर्तुत्ते वारोक्षम मि संशोत्तर्तुता। पत्रमावयेतार्ग संते । केस्त्रमे वक्तं पत्ता । गोनामा। व्यवेष्णं वस वाध्यदस्यक संतर्मश्रुत्तुत्वारं उद्योजे रागिः साराविकास् मेरीस्त्रुत्तुत्वारं । वेष्णेच मंत्र। वेष्ण्यमं व्यते द्विर्ध पत्ताः। योक्षमा। वाहोचं वस मास्यत्तरस्यां, उत्योचचं पत्त्वाला प्रक्रिक्तस्यतं। अग्रमतिकाराये संते। केद्रम् कार्स दिवं पत्रमा। गोममा। व्यवेषा वि संतोत्तर्तुतं वक्रोरेस् व संतोत्तर्त

प्रजातिक्येशीर्ज मेरि । केम्ब्रमे वर्ग्य ठिव् प्रसाता । योगामा । व्यक्तिचं व्य वास्तवे स्मातं अंगोसुनुगुमार्त, जन्नोवर्ण प्रमाण्य परिम्योक्सार्त्त्र अंगोसुनुगुमार्त्त स र . व अस्वासात्रील वैसाचं मेरि । व प्रदुवं वर्ग्य ठिव्दं प्रसाद विस्तवा । स्वतंत्र पर्म व स्मातंत्र स्मातं

बर्सनं दम बाध्यारसाई श्रीसुद्दुणाई, बहोपेनं मार्स्स सामारसं श्रीते हुन्ने । आण्यास्त्रिकां और । देवीलं वेदार्य वार्ध हिंदू क्यार्ग नेक्यां व्यक्ति । आण्यास्त्रिकां और । देवीलं वेदार्य वार्ध हिंदू क्यार्ग नेक्यां व्यक्ति । व्यक्ति वेदार्य का विद्यार्थ क्यार्थ क्यार्थ क्यार्थ क्यार्थ क्यार्थ हिंदीने वेदार्थ के देवेद वार्च किंद्र फ्यार्थ ने ग्रावसा । व्यक्ति किंद्रार्थ क्यार्थ क्या

रोवम । अपज्जत्तयअसुरकुमाराण भते ! देवाण केवडय काल ठिई पन्नता <sup>२</sup> गोयमा ! जहन्नेण वि अतोमुह्त उक्षोसेण वि अन्तोमुहुत्तं । पजत्तयअसुरकुमाराण भते ! देवाणं केवइय काल ठिई पन्नता २ गोयमा । जहन्नेण दम वाससहस्साइ अन्तो-मुहुत्तृणाइ, उद्दोसेण साइरेग सागरोवमं अन्तोमुहुत्तृण । असुरकुमारीण भते ! देवीण केवइय काल ठिई पन्नता <sup>२</sup> गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साई, उक्कोसेण अद्भपनमाइ पिलओवमाइ । अपज्जित्तियाण असुरकुमारीण भते । देवीण केवइय काल ठिई पन्नता ? गोयमा! जहनेण वि अन्तोमुहुत्त उक्कोसेण वि अतोसुहुत्तं। पजित्याण असुरकुमारीणं देवीण भते ! केवइय काल ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण अद्धपनमाई पिलओवमाइ अतो-मुहुतूणाई ॥ २२२ ॥ नागकुमाराण देवाणं भंते । केवइय काल ठिई पन्नत्ता ? गोयमा । जहनेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण दो पठिओवमाइ देसुणाई । अपज-त्तयाण भते ! नागकुमाराण० केवइय काल ठिई पन्नता <sup>२</sup> गोयमा ! जहन्नेण वि अतोमुहुत उक्कोसेण वि अतोमुहुत । पज्जतयाण भते ! नागकुमाराण देवाण केवइय काल ठिई पन्नता १ गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ, उक्कोसेणं दो पल्लिओवमाइ देस्णाइ अतोमुहुनूणाइ । नागकुमारीण भते ! देवीण केवडयं काल ठिई पन्नता ? गोयमा! जहनेण दस वाससहस्याइ, उद्योसेण देसूण पलि-ओवम । अपजात्तियाण भते ! नागकुमारीण देवीण केवइय काल ठिई पक्ता ? गोयमा! जहन्नेण वि अतोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जित्तियाण भते! नागकुमारीण देवीण केवड्य काल ठिई पन्नता र गोयमा । जहन्नेण दस वाससह-स्साइ अतोमुहुत्तृणाइ, उक्कोसेण देस्ण पिठेओवम अतोमुहुत्तूण ॥ २२३ ॥ सुवण्ण-कुमाराण भते । देवाण केवडय काल ठिई पन्नता १ गोयमा । जहन्नेण दस वासस-हस्साइ उक्कोसेण दो पल्लिओवमाइ देस्णाइ । अपजन्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि अतोमुहुत्त, उक्तोसेण वि अतोमुहुत्त । पजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्साइ अतोमुहुनूणाइ, उक्नोसेण दो पिलओवमाइ देसणाइ अतोमुहुत्तृणाइ । सुवण्णकुमारीण देवीण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण दस वासमह-स्साइ, उक्नोसेण देम्ण पिलओवम । अपजात्तियाण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण वि अतोमुहुत्त उद्दोसेण वि अतोमुहुत्त । पजन्तियाण पुच्छा । गोयमा ! जहनेण दस वासमहस्माइ अतोमुहुत्तूणाइ, उद्योसेण देस्ण पलिओवम अतोमुहुत्तूण । एव एएण अभिलावेण ओहियअपज्ञत्तयपुज्ञत्तयसुत्तत्तय देवाण य देवीण य नेयव्य जाव थणियसुमाराण जहा नागसुमाराण ॥ २२४ ॥ पुटविकाडयाण भते ! केवटय काल

ठिदै पण्डा ? गोवमा ! बहुने में अंतोमुहुतं उन्होरीमें वादीसं वाससहस्तर्म । भप्रभावपुर्वनिवाहवाणं अतं ! केवह्यं कास ठिई प्रश्याता है गोयमा ! बहुवेज सि उद्दोरेण वि अंतोसुदुर्ग । पञ्चलयपुरुविकाहवार्ण पुरुक्ता । योगमा । बहुनेर्ग कंटी-मुद्दर्गः उद्रोतेणं वाचीर्य वाससहस्सारं अतोसुद्वृत्यानं । बहुसपुरनिकहसारं पुरा गोयमा ! अवलेण वि सन्नोरंण वि अंतोमुक्षतं । अपज्यत्तनसम्बद्धानमार्थः प्रच्छा । गोममा ! व्यक्षच मि उद्योसेज नि अंतोमुहुत्तं । प्रवत्त्रमसुहुमपुहनिकार्गनं प्रन्ता । योगमा ! वहकेश वि तकोरीण वि अन्तोसङ्कर्ष । वामरपुर विकास्तानं पुनक्त । गोमना ! जहनेशे अतोगुहुतं अदारोणं वाशीर्थं वाससहस्याई । अपन्यत-सनामरपुरविकाइमार्ग पुषका । गीयमा । बाबोण वि उद्योगेय वि अंदोस्ट्रां । पञ्चतवनामरपुरविष्णव्याणं पुष्पा । गीयमा । बहतेषं अंतोमहत्त उद्योतेषं नातीचे नाससङ्ख्यादै जंतोसङ्ख्यादै ॥ २२५ ॥ आउकाहनायं अंते । केनहम ना िंद्र पत्रता ! गोयमा ! जहकेच मतोसुद्धतं उक्रोतेचं एत शाससदस्त्रतं । अर्ज त्तयज्ञातकाहवार्य पुष्णा । गोयमा ! व्यक्तिम वि मतोसुद्वतं वद्योसेम वि संत्रेसुद्वता पञ्चलग्रमातकार्याणं पुष्तसः । गोयमा । व्यक्तेणं सलोसाहलं सक्तोसेणं सत वालनः इत्साई अदोसङ्गूनाहः। सङ्ग्रमातकाहवार्णं शोहिवार्णं अपव्यक्तमार्थं प्रवक्तमार्थं व कहा शहुरपुष्ठविकाहवाच तहा भागिववर्ष । वागरकातकतामार्थ एक्छा । योक्या कन्तर्म अतासुदुर्ग चन्नोरीनं सत्त वासम्बद्धस्याई । सपजनस्वानरभावकारमार्थ प्रच्छा । गोसमा 🖟 बहुशंज नि सकोसेन नि संदोसहुर्त । प्रजातवाच न प्र<sup>च्छा ।</sup> माममा ! जहनेमं अतीशृष्टुर्गः उद्दोसेणं सत्त बाससहरसाद अंदोस्हृतुर्वादं ॥ २१६॥ वंतराहमानं पुण्छा । गीयमा । अक्षेत्रण अवीमुद्दतं वद्येश्वनं विकि राहिस्वर्ते । अपन्नतार्गा पुण्छा । धासमा 🏻 जहलेम नि उडोरोज नि अंतोसहर्त्ते । प्रज्ञासन् व पुण्या । मोनमा । बहुनेचं करोमुहुतं उद्योरीचं तिथि राहिदमई अग्रोगुहुत्वाई । शहमदाउक्त्वार्व कोहियाणं अपवास्थाण म पुच्छा । योगमा ( बहुनेज में उक्नेमेंव वि अतिमुदुर्तः । वागररीतकाइयानं पुच्छा । गोक्या ! अहवर्षं अतीमुदुर्तः तहारेवे शिक्ष राहिरमाई : अपअक्तमनामरसञ्जाहमार्च पुन्छा । योजमा ! बहनेन मि उदासन नि अतोमुहुर्त । पन्नतमाणै पुच्छा । योगमा ! नाचेन अनेमुहुर्त टर्नोसेन तिकि राष्ट्रियार्थं संतीसुहुत्तूनाई ॥ २२७ ॥ बातकाद्याण मंत्रं वचान कार्य दिर्द पन्ना र गोदमा र जहनेचे संदोमुहुत्तं उद्देशैयं दिनि वाधमहस्मार । अपन्नानार्व पुरक्षा । यायमा अहतेश नि उक्तीसन नि अतीसुहत्त । प्रजानशन पुण्या । तीवस्य स्रोतं मतोमुद्रतं उवारोणं विक्ति वासमहरमाई अलोमुद्रुत्वाह । युन्मवाउराहवार्य

पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । अपजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जह-न्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । वायरवाउकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिचि वाससहस्साइ । अपजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोसुहृत्त । पज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोसुहृत्त, उक्तोसेण तिम्नि वाससहस्साड अतोमुहुतूणाइ ॥ २२८ ॥ वणप्फडकाइयाण भते ! केवड्यं कालं ठिई पन्नता ? गोयमा! जहनेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दस वाससह-स्साड । अपजात्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पजनयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दस वाससहस्साइ अतोमुहुतूणाइ । सुहुमवणप्पइकाइयाण ओहियाण अपज्जताण पज्जताण य पुच्छा । गोयमा जिहन्नेण वि उन्होसेण वि अतोमुहुत्त । बायरवणप्पइकाइयाण पुच्छा । गोयमा! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दस वाससहस्साइ। अपजत्तयाण पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्षोसेण वि अतोमुहुत्तं । पजत्तयाण पुच्छा । गोयमा! जह-नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तृणाई ॥ २२९ ॥ बेइदियाणं मते ! केवइयं काल ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहनेणं अतोमुहुत, उक्कोसेण बारस सवच्छराइ । अपजन्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोसुहत्त । पजन्तयाण पुच्छा। गोयमा। जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बारस सवच्छराह अतोसहत्तृणाई । तेइदियाण भते ! केवइय काल ठिई पन्नता र गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुहुत्तं उक्कोसेण एगूणवन्न राइदियाइ । अपज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोरोण वि अतोमुहुत्त । पजन्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहृत्त. उक्कोसेण एगूणवन्न राइदियाइ अतोमुहुत्तृणाइ। चर्डारेदियाण मंते ! केवइय काल ठिई पन्नता<sup>२</sup> गोयमा! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उद्योसेण छम्मासा। अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जतयाण पुच्छा । गोयमा ! जहनेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण छम्मासा अतोमुहुतूणा ॥ २३० ॥ पर्चिदियतिरिक्ख-जोणियाणं भते ! केवइय काल ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहनेण अतोमुहुत्त, उक्नो-सेण तिचि पिलञोवमाइ । अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ । समुच्छिमपचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुन्वकोढी । अपज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्ता पज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा! जहन्नेणः

भंत्रोतुहुर्तः उद्दोत्तेर्णं पुरुषद्रोद्या अंत्रोतुहुतूषा । गब्सक्दंशिवपंविधियतिस्तरायोक्तः बागं पुष्यः । गोदमा ! बहुनेर्णं अंत्रोतुहुतं उद्योतेर्णं शिक्षः पक्षित्रोदमाई । अपवयः भार्ण पुरुष्ता । गोजमा ! अक्सेन नि तकीरोज नि अंतोमुक्कतं । पञ्चतनार्ज पुष्टम । गोनमा ! बहुनेनं संतोमुहत्त अज्ञोरीणं तिनि परिश्लोबमतं अंतोमुहुतुनतं ॥ १३९ करुमरपंकिरियतिरिक्तजोवियाणं मेरी । केवहर्यं कार्स ठिई पचता ! सोसमा । बहतेर्यं स्त्रीमुहुत्तं चहतेरेवं पुरुवतीरी । अपन्यत्तमार्गं पुष्छा । गीममा । बहतेर बहुतम् सत्तानुकृतं चाहाराम् प्रम्थानामाण पुष्पाः गाममानामा पुष्पाः गाममा। बाह्यस्य स्टिमुहुर्व हि उद्योगि पुष्पत्राचे सेटीयुकूर्वः । पेयुन्धिसम्बद्धार्वार्षियस्यदिष्टरस्योभयार्वे पुष्पतः।गीयमा। बाह्यस्य सेटीयुकूर्वः। पेयुन्धिसम्बद्धार्वार्षियस्यदिष्टरस्योभयार्वे पुष्पतः।गीयमा। बाह्यस्य से उद्योगित से सेटीयुकूर्वः। प्रस्तानाम् पुष्पाः। गीस्मा। बहनेनं अंतोमुहुतं बहोरोवं पुम्बकोधी अंदोमुहुतूणा । गब्भवहंतिसम्बन्धारंत्रं दिमदिरिक्तकोत्रिकान पुच्छा । योगमा ! जार्क्षणं अंतीमुहुतं उद्दोर्धेत्रं पुज्यामे । खपजरानायं पुरुष्ण । गोनमा ! वहनेज मि अक्षेत्रेय वि संतीसहर्ता । पजरानार्व पुज्ञा । पोसमा । बहुबेचे कारोपुर्व । ज्योतेन पुज्यक्रीयो संदोपुरुप्ता ॥ १६१४ बद्धण्यसम्बद्धपर्विदियदितिकस्वोभौनेयाणे पुज्यस्य । योसमा ! बहुबेचे केरोपुर्व स्वारेज दिक्ति एक्टियेवयदि । सम्बन्धण्यस्यप्रविद्यादितस्वकोनिया पुष्का । मोसमा । जहकेण कि उन्होंसेण कि कारोसहुद्दं । प्रकारमाणं पुष्का । गोबमा ! जहकेणं कारोसहुत्तं उन्होंसेणं दिनि परिकारमाणं अध्यहतूनाहं । संगुष्टिमस्यप्यव्यक्तरपंतिवियतिरिक्तकोश्रियार्च पुच्छा । गोसमा । व्यक्ति **अं**टोमु**र्ह**र्तः उद्योचेणं चठरावीषाय**यह**स्साहं। अपन्तत्तयाणं पुच्छा । गोबसः जहरेण वि उद्योधेय वि अंतोमुहुत्ते । पञ्चतमार्थ पुच्छा । गोसमा ! बहरेणं संदोमुहुतं स्वोसेणं वटरासीवासध्यस्यातं अतोमुहुत्वातं । गामवारीयव्ययस्य वयस्मरपंत्रियित्रिरिक्सनोनियाणं पुष्का । पोसमा । बहवेणं वातमुहुर्णं स्वोतेष दिश्वि पश्चिमोपमार्थः । अपजाराबार्णं पुष्पमः । गोसमा ! व्यक्त्रेण वि उद्योगेष वि शिष पाक्रमानभाइ । अध्वाधावाण पुष्पा । योसमा । बाह्र्येण ही उद्योग के अंशोड्ड हो । प्रवाधावा पुष्पा । योसमा । बाह्र्येण अशोड्ड र्र उद्योग हो हिंदि पिक्रमानमाई मेरीस्ट्रहण्याई ॥ २११ ॥ अध्यारित्याव्यस्यपंत्रितिकारित्यवाधि वाचे पुष्पा । योसमा । बाह्र्येण बर्धासुक् वाह्येण प्रवाधावा । प्रवाधावा । व्यवस्थावा । व्यवस्थावा

तेवन्नं वाससहस्साइ । अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा । जहनेण वि उद्दोसेण वि अतोमुहुत्त । पद्मत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहकेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तेवन चाससहस्साइं अतोमुहुत्तूणाइ । गञ्भवकृतियटरपरिसप्पथलयरपर्चिदियतिरिक्खजो-णियाण पुच्छा । गोयमा ! जहनेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुन्त्रकोडी । अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण वि उक्तोसेण वि अतोमुहुत्त । पजन्तयाण पुच्छा । गोयमा! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं पुञ्चकोडी अतोमुहुतूणा ॥ २३४॥ भुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण पुन्वकोढी । अपज्जत्तयाण पुन्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण अतोमुहुत्त, उक्नोसेण पुव्वकोडी अतोमुहुतूणा । समुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वायाठीस वाससहस्साइ । अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहनेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वायालीस वाससहस्साड अतोमुहुत्तूणाइ। गञ्भवक-तियभुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी । अपजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तयाणं पुन्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुहुत्त, उक्षो-सेण पुव्वकोडी अतोमुहुत्तूणा ॥ २३५ ॥ खह्यरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेण अतोसुहुत्त, उक्कोसेण पिल्ञोवमस्स असखेजाइमागं । अपजत्तयाण पुच्छा । गो॰ ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोसुहुत्त । पजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभाग अतोमुहुत्तूण । समुच्छि-मखह्यरपार्चिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वावत्तरी वाससहस्साइ । अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उद्दोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहनेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वावत्तरी वाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ । गञ्भवक्षतियखह्यरपर्चिद्यितिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्ञइभाग । अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण वि उक्तोसेण वि अतोसुहुत्त । पजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्वोसेण पठिओवमस्स असखेज्जइभाग अतोमुहुत्तृण ॥ २३६ ॥ मणुस्साण भते ! केवइय काल ठिई पन्नता १ गोयमा ! जहनेण अतोसुहुत्त, उक्वोसेण तिश्वि परिओवमाइ । अपज्ञत्तमणुस्साण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्नोसेण वि अतोमुहुत्त । पजत्तमणुस्साण पुच्छा ।

मार्ग पुष्छा । गोवमा । जहनेचं अंगोमुहुर्श उद्दोष्ठेचं निश्चि पश्चिमोदमाई । अपमत्त-बाणं पुच्छा । गोवमा ! बह्होण नि उदानिण नि अंगोनुहुर्त । पञ्चतवाणं पुच्छा । गोयमा ! बहुभेनं अंतोसुहुत्तं उद्योगेनं निशि पनिकोनमाई अंतोसुहुतुनाई ॥ २३९ ॥ पास्मरपंचिदिवतिरिवन्तजोणियाणं जेते ! केवर्यं कार्लं ठिर्द्ध पश्चता १ गीयमा ! जहरेंचे अंत्रेमुहत्तं अव्येतेणं पुरुवरोडी । अपजानगार्वं पुष्टा । गोयमा । जहसेच वि उद्दोर्सण वि अंतीमुद्दात । पजानवार्ण पुच्छा । गोममा ! जहबेर्स अंतीमुहत्तं उद्दोर्शनं पुन्तरांधी संतोस्तुतुर्णा । संसुविधमत्रस्यरपंत्रियतिरिक्यतानियाणं पुष्यः । गोयमा । अक्षेत्रं संवोसुहुत्तं उद्योतेर्वं पुष्परोगे । अपव्यक्तसार्गं प्रच्यः । मोसमा ! जहतेय जि उद्योगेय जि अंतीमुहत्तं । प्रजातवार्ण प्रच्छा । गोक्सा ! जहनेनं अंतीमृहत्तं उहारेणं पुष्पकाद्यं अंतीमृहतूचा । गरमकात्रिययसम्पर्धाने दिवदिरिक्यजीवियान पुष्छा । गोगमा । बहुबेर्ण अंदोमुहुर्च अजीसेय पुम्पनीसै । अपजन्तमार्थं पुण्छा । योजमा ! जहत्तेण वि जहीरीण वि अंतीमुहुन्तं । प्रजन्तमार्थं पुष्पम् । गोनमा । जहबेलं अंदोमुहुत्तं । उत्रीतलं पुरूरोधी अंदोमुहुत्तमा ॥ १३२ ॥ चडप्पमध्यवरपंचित्रियतिरिक्कजोणियाणं पुष्छा । गोममा ! वहनेशं अंतोसुहृतं उड़ोसेर्गं दिक्रि पविज्ञोबम्रतं । जपजत्तम बरुप्ययक्तस्यर्पनिदिनदिनिदन्दाजीलयाणं पुष्या । गोनमा । बहुकेण वि उहारिक वि क्योसुहुत्ते । प्रजासान पुष्या । योगमा ! अहबेर्ण अंतासहर्ण तकोरीर्ण विकि पश्चित्रोक्सहं अंवोसहरूकाई । संग्राज्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धानिक्तियाति । गोन्यसा । मोन्यसा । महस्रोजे संतोम्हर्तं चहासेम चटरासीवाससहरसतं। अपनतवार्थं प्रच्छा । गोयमा । बहुदेन नि उद्योरेन वि सरोसुहुत्ते । पजत्तमार्ण पुच्छा । योगमा ! बहुवेर्ण अधिमहत्तं स्वासेयं करराधीनाससहस्यादं अंतीमृहनुनादं । गरमक्रदेतियकस्प भगसम्पर्णनिविभवितिकत्वजोणियार्थं पुष्ठा । गीममा । बहुनेश अंतोसहरू उद्दोर्धेर्म विकि परिक्रोक्साई । रापमात्रवार्ण पुष्का । गीममा । प्रदक्षेत्र मि उद्दोनेत्र मि नीतोसहत्तं । प्रजत्तवाणं पुरुषा । गोयमा । जहत्तेणं जीतोसहत्तं । उहारीणं शिवि पक्रिजोबमाई अंतोसुङ्कतुमाई ॥ २३३ ॥ उरपरिसप्यवस्यरपेविदियतिरिक्ताओकि यार्ज पुच्छा । गोममा । बहुनेर्ज औतोसुहुत्तं सहोसेर्ज पुरुषकोदी । अपज्यसमर्ज प्रकार । गोसमा ! जब्देनेन मि उद्दोरिय नि अतोसहर्त्त । प्रजतवानं पुच्छा । गोसमा ! अहतेरां अंत्रोसकृतं उद्योगेर्नं पुरुवनीयी अंत्रोसकृत्वा । चंसुच्छिमठरपरिस्पयस-गरपंचित्रियतिरिक्ककोविनाणं पुष्का । गोनमा विक्रक्षेणं अतोसहत्तं उक्केरेणं

तेवन वाससहस्साइ । अपज्जत्तयाण पुन्छा । गोयमा । जहन्नेण वि उद्दोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहहेनणं अतोमुहुत्त, उक्वोसेण तेवन्न वाससहस्माइं अतोमुहुत्तूणाइ । गञ्भवक्षतियटरपरिसप्पथलयरपर्चिदियतिरिक्खजो-णियाण पुच्छा । गोयमा ! जहनेण अतोमुहुत्त, उद्दोसेण पुन्त्रकोडी । अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण वि उक्वोसेण वि अतोमुहुत्त । पजत्तयाण पुच्छा । गोयमा! जहन्नेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुन्वकोढी अतोमुहुत्त्णा ॥ २३४ ॥ भुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियतिरिक्पाजीणियाण पुच्छा । गोयमा । जहनेण अतोमुहुत्तं, उक्तोसेण पुन्वकोढी । अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण वि उक्तोसेण वि अतोमुहुत्त । पजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्वोसेण पुन्वकोडी अतोमुहुतूणा । समुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपचिंदियतिरिक्ख जोणियाण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्नोसेण वायालीस वाससहस्साइ । अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जह्रेजण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उद्दोसेण वायालीस वासमहस्साड अतोमुहुत्तूणाइ। गव्भवक-तियभुयपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुत्र्वकोडी । अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्को-सेण पुट्यकोडी अतोसुहुत्तूणा ॥ २३५ ॥ खहयरपार्चेदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा। गोयमा ! जहनेण अतोमुहुत्त, उक्रोसेण पिठओवमस्स असखेज्जइभाग । अपज्जत्तयाण पुच्छा । गो॰ ! जहन्नेण वि उक्वोसेण वि अतोमुहुत्त । पजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पलिओतमस्स असखेज्जइभाग अतोमुहुत्तूण। समुच्छि-मखहयरपर्निदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वावत्तरी वाससहस्साइ । अपज्जत्तयाण पुन्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उद्योसेण वि अतोमुहुत्त । पजनयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वावत्तरी वाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ । गञ्भवक्षतियखह्यरपर्चिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पिळओवमस्स असखेज्जइभाग । अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्तोसेण वि अतोसुहुत्त । पजत्तयाण पुच्छा। गोयमा! जहनेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग अतोमुहुतृण ॥ २३६ ॥ मणुस्साण भते ! केवइयं काल ठिई पन्नता १ गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्तं, उक्नोसेण तिन्नि पिळ्योवमाइ । अपजन्तमणुस्साण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण वि उक्वोसेण वि अतोमुहुत्त । पजन्तमणुस्साण पुच्छा ।

अवसेगं वस नाससवस्तारं अंतोसवन्तारं, उक्रोसेणं अद्भावस्थानमं अतोसवन्तारं

ति २६८ ॥ जोहिरियाणं वैवालं पुष्का । तोयमा । ष्ववंशं परिक्रोक्षसहुमाति उद्योरोतं परिक्रोक्षयं वास्तवस्यस्यस्यम्यद्वियं । अपन्यस्यजोहिर्द्वाणं पुष्का । गोनमा ।
क्वतंत्रं व उन्नेरोध नि अत्योग्रह्यां । प्रकाराणं पुष्का । गोनमा ।
क्वतंत्रं व उन्नेरोध नि अत्योग्रह्यां । प्रकाराणं पुष्का । गोनमा ।
क्वतंत्रं व उन्नेरोध नि अत्योग्रह्यां । प्रकाराणं प्रकार ।
क्वत्यां अद्योग्रह्यां वेदीणं पुष्का । गोनमा । ज्वतंत्रं गोनमा । ज्वतंत्रं क्वतंत्रं क्ष्यां ।
क्वत्यां अद्योग्रह्यां वेदीणं पुष्का । गोनमा । ज्वतंत्रं क्वतंत्रं क्ष्यां व ।
क्वतां व ज्वतंत्रं व जन्मां मित्रका । व्यत्यां व । व्यत्यां विक्रां व ।
क्वतां व ज्वतंत्रं व जन्मां व । व्यत्तिवां व । व्यत्यां व ।
क्वतंत्रं व । व्यत्यां व । व्यत्यां व । व्यत्यां व ।
क्वतंत्रं व जनमाणं पुष्का । गोनमा । ज्वतंत्रं व व ।
क्वतां पुष्का । गोनमा । ज्वतंत्रं व जनमाणं क्रिका व ।
क्वतां पुष्का । गोनमा । ज्वतंत्रं व जनमाणं क्रिका व ।
क्वतां पुष्का । गोनमा । ज्वतंत्रं व व ।
क्वतां पुष्का । गोनमा । ज्वतंत्रं व व ।

सम्माहित । करमारियाणं पुष्छा । गोयमा । बहबेण वि नहीसम वि स्रोतिप्रहुर्त । प्रमारियाणं पुण्डा । गोवसा । बहबेणं बाउमागपिक्योयम् क्रिमेपुहुरूणं उद्देशियं सद्धप्रियोक्तं प्रवासनास्वसहस्यसम्बाहियं क्रीसिक्षमुणं । स्ट्रिमेपाये गं संते !

गोममा ! बहुबेर्ण अञ्चारस सागरीयमाई, उक्कोसेर्ज एगूजशीर्स सागरीयमाद । अप-जात्याच पुच्छ । गोजगा । जहुचेग वि उद्योतेग वि जैतोसुहुर्त । पञ्चत्याग पुच्छ । गोगमा ! परकेणं अञ्चारस सागरोवमादं अतोसुहुनुजारं, सक्रोरेजं एगुजवीर्ध साय-रोक्सलं अंदोस्बर्कालं । पाणप् कम्पे बेबाल पुरुष्ठा । गोवसा ! बाबोर्स एक्प्यारी सागरीबमाई, सद्दोरेशं बीसं सागरीबमाई । अपजात्तमार्थं पुल्छा । गीममा ! जहकेम वि बजोरंग नि अंतोसुहुत्तं । पजतायांचं पुण्छा । शोसमा । अहतेर्यं एगूमनीर्यं सामरोबमाई कंतोसुङ्कतुवाई, अकोरेणं बीसं सामरीवमाई कंतोसुङ्कतुवाई। नारने इत्ये देवानं पुन्ता। योजमा! जहनेणं बीसं सामरीवमाई, उद्योसेमं एकमीरी सागरीयमादै । अपञ्चलवार्षं पुरुषा । गीयमा ! बहबेन वि उद्दोरीन वि अंतोसहुत्त । पमत्यानं पुरका । गोयमा ! ऋजेनं गोर्स सागरीनमाई अंदोसुहुतुलाई, उद्योसन प्रमानिक पुष्काः गायमाः। व्यक्तम् वास्य साम्यानिक स्वास्तुः पूर्वातः स्वास्तुः पूर्वातः स्वास्तुः प्रमानिक स्व प्राम्बीसं सामरोत्तमाहं स्वतिसृत्वस्ताहः स्वासेसं सामरोत्तमाहं । सपन्नसामा पुष्काः। गोबना । जहसेन वि उक्तोरेज वि संतीसङ्गतं । प्रजास्थाण पुच्छा । गोसमा ! जस्त्रेणं इक्सीचं सामरोक्ताहं अंदोस्युक्तुवाहं उक्कोरेणं वाबीचं सागरोक्ताहं अंदोस्युक्तु जार्त । २४३ । हेड्डिमहेड्डिमणेनिजनकेवार्ज पुरुका । शीक्सा । कहकेर्ण वार्यार्ट सागरोबसाई, बक्नोसेल तेबीले सायरोबसाई । अपन्तत्वार्थ पुष्ठा । गोनमा । जहचेज मि उद्योगेण मि जेतोसहत्त । पजतमार्थ पुच्छा । योजमा ! जहनेथं मानीर्ध सागरीबसाई मदीसङ्कुलाई, बक्नेसेण तेनीसं सागरीवमाई अंदोसङ्कुलाई । इदि-सम्बित्तसगैविजगहेवार्ज पुच्छा । गीवमा । बहुनेषं तेवीसं सागरोवसाहं, उक्रोसेर्ज वारवीसं सामरीवमाई । अध्यक्तामार्ग पुष्का । गोवमा । वाहनेश वि उद्वेसन वि अंदोभुद्वतं । पञ्चतवार्णं पुष्का । गीवमा ! बद्दनेणं देवीसं सागरोपमादं अंदोस् इतुमात्, उद्योतेमं वाटबीसं सागरोत्रमातं अंतोस्तत्त्वाचारं । हेडिस्टबरेस्मोनिका-देंगार्ग प्रच्या । गोयमा । अहत्रेणं चतनीयं सागरीयमार्थ, प्रकृतिणं प्रथासं माग-रीवमाद् । अपन्यतमार्थं पुष्का । गीयमा । बाह्वेण वि उहारीण वि अतीस्कृतः । प्रवासमार्थं पुच्छा । गोक्सा । जबकेशं कतवीर्थं सागरावसारं संदोसहराणकं बक्रोरोर्ण एवजीरी भागरोगमात् न्योमुक्कणुणात् । मणिक्समहेश्विमगेनिकावदेशार्थ पुरुष्टा । गोवसा । जहलेणं पणनीसं सागरोबसाई, उहासिण क्रम्नीसं सागरोबसाई । अपव्यक्तवार्ण पुष्का । गोवमा । व्यक्षेण वि तहारीण वि संतोसुहुर्त । प्रवत्तवार्ण पुष्पा । योगमा । ज्योग पण्याचे सामरोजमार्थ अंत्रीमुहूत्वाह, उन्हेरेन ध्याचे सामरोजमार्थ असेसहत्याहं । मन्त्रिममध्यामोन्जयवेशालं पुष्पा । शोधमा ।

जहन्नेण छव्वीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण सत्तावीस सागरोवमाइ । अपजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण छव्वीस सागरोवमाई अतोमुहुत्तूणाइ उक्नोसेण सत्तावीस सागरोवमाड अतोमुहुत्तूणाइ । मिञ्झमउवरिमगेविज्जगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण सत्तावीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण अष्टावीस सागरोवमाइ । अपजन्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोसुहुत्त । पज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण सत्तावीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाईं, उक्कोसेण अद्वावीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाईं। उवरिमहेडिमगेविज्ञगदेवाण पुच्छा । गोयमा! जहनेण अडावीस सागरीवमाइ, उक्कोसेर्णं एगूणतीस सागरोवमाइ । अपजन्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्रोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अट्टावीस सागरो-वमाइं अतोमुहुत्तृणाइ, उक्कोसेण एगूणतीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तृणाइ । उविरम-मज्झिमगेविज्जगदेवाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण एगूणतीस सागरोवमाइ उक्नोसेण तीस सागरोवमाइ । अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतो-मुहुत्त । पज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण एगूणतीस सागरोवमाइ अतोमुहु-त्तूणाइ, उक्कोसेण तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ । उवरिमउवरिमगेविज्ञगढेवाण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण तीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण एकतीस सागरोवमाइ । अपजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोसुहुत्त । पजत्तयाण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ, उक्नोसेण एक्सतीस सागरोवमाइ अतोमुहुनूणाइ ॥ २४४ ॥ विजयवेजयतजयतअपराजिएसु णं भते ! देवाण केवइय काल ठिई पन्नता 2 गोयमा ! जहनेण एकतीस सागरोवमाइ, उक्नो-सेण तेत्तीस सागरोवमाइ । अपजन्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । पजत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण एक्कतीस सागरोवमाइ अतोमु-हुत्तूणाइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ ॥ सन्बद्दसिद्धगदेवाण भते! केवइय काल ठिर्ड पन्नता <sup>2</sup>ागोयमा । अजहन्नमणुक्नोस तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पन्नता । सव्बद्धसिद्धगढेवाण अपज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा िजहन्नेण वि उक्वोसेण वि अतोमुहुत्त । सव्बद्घसिद्धगदेवाण० पज्जत्तयाण केवइय काल ठिई पन्नता १ गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोस तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ ठिई पन्नता ॥ २४५ ॥ पन्नवणाए भगवईए चउत्थं ठिइपयं समत्तं॥

कड्बिहा ण भते ! पज्जवा पन्नत्ता १ गोयमा ! दुविहा पज्जवा पन्नत्ता । तजहा-जीवपज्जवा य अजीवपज्जवा य ॥ २४६ ॥ जीवपज्जवा ण भते ! किं सिखजा, 348 **प्र**तागमे ( प<del>ञ्चव</del>ससूर्य भरेदिका अर्थता ! गोयमा ! नो सैकिका नो असंशिका अर्थता । से केस्ट्रेनें मंते । एवं वक्द- जीवपञ्चवा मो संशिक्ता को सर्सकिका अर्थता १ गोबमा [ मधेरिका नेरहमा अवेशिका भारतमारा वर्षश्रिका नाग्युमारा अवेरिका संबन्ध्यास असंबिका विज्ञानारा सरंखिका बनविद्यास असंबिका रीबद्भारा अवंश्विता स्वक्षेत्रमारा अवंश्विता दिसीउमारा अवंश्विता कारकारा असंदिका वर्णसङ्गारा असंदिका पुरुषेक्षस्या असंदिका भारतगढ्या असंक्रिका तरकाहवा असंक्रिका बारकाहमा अर्थता वन-प्याराहमा असंख्या बेहरिया असंधिया वेहरिया असंख्या चर्रिया असंक्रिजा पंत्रिकतिकराजोविया असरिएका मणस्या असंविजा बारामंतर असंदिजा क्षेत्रस्था असंक्रिजा वैमानिया अर्थता सिद्धा से एएक्ट्रेप गोबमा! व्यं वया-ने यं नो पंतिका नो अपंतिका अपंता ॥ २४० ॥ नेरहबाज मंदी ! नेजहबा पञ्चमा पक्ता ? गोयमा ! अर्जता पञ्चमा पक्षा । से केमदिन संते । एवं क्षत्र--'नेरह्माण क्यंता प्रक्रमा प्रकृता' ! योगमा । वेटाए नेरहबरस **दम्प**द्धमाए तुक्के पएसकुबाए तुक्के क्रोया**द**ण्ड्यमाए स्टिब **द्वीचे स्टिम दुवे** क्तिय अवसहिए । का हीने कार्यकिकाइमागहीने वा पंकित्कासागडीने वा संकित-गुगहीणे वा वर्षिक्षज्ञगुनहीणे वा । अह सब्भक्षिए अपंतिकातमागमध्यद्विए वा पंचित्रज्ञामायमञ्जाहिए वा स्टिज्याजमन्त्रहिए वा अपंदिज्ञायमन्त्रहिए वा । टिईए सिम डीमे सिम क्रेड सिम अस्मिदिए। जह हीने असंख्याहमामहीने वा स्रिक्सभागद्दीने वा स्रिक्समुनदीने वा असंख्यिकपुन्तीन वा । शह जन्मवर असरिक्यमागमस्मिद्धे वा समित्रकागमस्मिद्धे वा संविद्धानुसमिद्धे वा असंखिज्यागमन्मद्विए वा । कामनाकापमनेद्वि सिम हींगे सिम होंगे सिम अस्मद्विए !

वर हीना अर्थकमाराहीचे वा अवसेज्य सामाधीये वा वस्त्रेजमाराहीये वा संस्त्रेजमाराहीये वा संस्त्रेजमाराहीये वा अवसरावाहीये वा असे अध्यक्षिण सामाध्य स्वारामध्य स्वारामध्

सुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाणपज्जवेहिं मङ्अन्नाणपज्जवेहिं सुयअन्नाणपज्जवेहिं विमग-नाणपज्जवेहिं चक्खुद्सणपज्जवेहिं अचक्खुट्सणपज्जवेहिं ओहिद्सणपज्जवेहिं छ्ट्ठाण-विडए, से तेणद्वेण गोयमा ! एव वृच्ड-'नेरडयाण नो सखेजा, नो असखेजा, भणता पज्जवा पत्रता' ॥ २४८ ॥ असुरकुमाराण भते ! केवडया पज्जवा पत्रता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पत्रता । से केणहेणं भते ! एव वुचइ-'असुरकुमाराण अणता पज्जवा पन्नता' गोयमा । अमुरकुमारे अमुरकुमारस्य दन्वहुगाए तुहे, पएसहयाए तुरे, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविहए, ठिडेए चउद्वाणविहए, कालवन्न-पजवेहिं छ्टाणविष्ठए, एव नीलवन्नपजवेहिं लोहियवनपजवेहिं हालिद्वन्नपजवेहिं सुकिल्वन्नपज्जवेहिं, सुविभगधपज्जवेहिं दुव्भिगधपज्जवेहिं, तित्तरसपज्जवेहिं कडुयरस-पज्जवेहिं करायरसपज्जवेहिं अविलरमपज्जवेहिं महुररसपज्जवेहिं, कक्खडफासपज्जवेहिं मजयफासपज्जवेहिं गस्यफासपज्जवेहिं लहुयफासपज्जवेहिं सीयफासपज्जवेहिं उसिण-फासपज्जवेहि निद्यफासपज्जवेहिं लुक्खफायपज्जवेहिं आभिणिवोहियनाणपज्जवेहिं स्यनाणपज्जवेहि ओहिनाणपज्जवेहि मइअन्नाणपज्जवेहि सुयअन्नाणपज्जवेहि विभग-नाणपज्जवेहिं चक्खुद्सणपज्जवेहिं अचक्खुद्सणपज्जवेहिं ओहिद्सणपज्जवेहिं छट्ठाण-विडिए, से एएणहेर्ण गोयमा! एव वुष्वइ-'असुरकुमाराण अणता पज्जवा पन्नता'। एव जहा नेरडया, जहा असुरकुमारा तहा नागकुमारा वि जाव थणियकुमारा ॥ २४९ ॥ पुढविकाइयाण भंते ! केव्ह्या पज्जवा पत्रता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पत्रता । से केण्डेण भते ! एव वुद्धइ-'पुढाविकाइयाण अणता पज्जवा पन्नता'? गोयमा ! पुढिवकाइए पुढिविकाइयस्स दव्बद्वयाए तुले, पएसद्वयाए तुले, ओगाहणद्वयाए सिय हीणे सिय तुहे सिय अन्महिए। जइ हीणे असिखजङ्भागहीणे वा सिखजङ्भाग-हीणे वा सिखजदगुणहीणे वा असिखजदगुणहीणे वा। अह अन्मिहिए असिखजद-भागअञ्महिए वा सिखज्जिङभागअञ्महिए वा सिखज्जगुणअञ्महिए वा असिखज्ज-गुणअञ्महिए वा । ठिईए तिद्वाणविहणु, सिय हीणे सिय तुहे सिय अञ्महिए । जइ हीणे असखिज्जभागहीणे वा सिक्षज्जभागहीणे वा सखिज्जगुणहीणे वा । अह अन्भ-हिए असिखज्ञइभागअञ्भहिए वा सिखज्जइभागअञ्भहिए वा सिखजगुणअञ्भहिए वा । वत्तेहिं गधेहिं रसेहिं फासेहिं मइअनाणपज्जवेहिं ग्रयअनाणपज्जवेहिं अचक्ख-दसणपज्जवेहिं छ्ट्ठाणविद्धिए ॥ २५० ॥ आउकाइयाण भंते ! केवइया पज्जवा पन्नता १ गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केणद्वेण भते ! एव वुचइ-'आउ-काइयाण अणता पज्जवा पचता' १ गोयमा । आउकाइए आउकाइयस्स दव्बद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणहुयाए चउडुाणविहए, ठिईए तिट्ठाणविहए, वन्न-२३ सुत्ता०

148

सरंक्षिता अनेता ! गोनमा ! नो संदित्ता नो असंदित्ता अर्मता । सं केमहैर्न मंते । एवं मुक्द- जीवपञ्चवा नी संतिज्ञा नो सर्वधिज्ञा अस्ता ! गोनमा ! सर्पेक्टिका नेरहना असेकिका सम्रकुमारा असंक्रिका नाग्डनारा असेथिका सुराजाउमारा अधिकामा निजानमारा वाधीकामा शराबिकुमारा असंविका बीबद्रमारा असंदिक्ता उदब्रिक्सारा असंदिक्ता विसीक्तमारा असंविज्ञा बातकमारा असेकिका बनियकमारा असेकिका प्रवर्शनहरूमा असेकिका बातकाहवा कार्रकिया रेतकाहवा कार्यक्रिया शासकाहवा अर्थता वय एक राह्या असंविक्ता बेहंपिया असंविक्ता तेहंपिया असंविक्ता करिया अस्तिका पंजित्वतिरिधकानेनिया असंनिका मणस्सा असंतिका बाजनेयप असंदित्जा बोदिस्ता असंबिजा बेमानिया असंता रिजा से एएन्डेने गोबसा एवं तका — ते वं को संविद्या को असंविद्या अनंता । २४७ ॥ मेरहबार्ण अंति ! केनहवा वक्का वक्का है गोयमा ! अर्जता पक्का पनता । है केमहेनं मते । एव व्यक्-नेरायाणं वर्षता पक्का प्रवता ! गोसमा ! नेरार नेरहसस्य वण्डाकार तोहे. परस्क्ष्यार ताहे. जोगाहणहवार विस हीने विस ही विम भवनतिए । जह हीचे अवैश्विजहमागहींगे वा वेदिन्द्रामागहींने वा वेदिन गुमहीण वा अपंदित्वगुमहीने वा : बह अस्मिक्ष्य अपंदित्वक्तागमस्मिद्ध वा र्चन्द्रभागमस्मिष् वा राधिकपुरमस्मिष् वा अर्पाधकपुरमस्मिष् वा ठिइंग सिंद हीचे सिंग तके सिंग सरमहिए । वड हीचे असेकिज्जनमानहीने वा संदिम्बद्रभागडीये वा सरिक्रमगुणडीये वा असंदिक्रगुणडीये वा । अड सम्मिद्रेर सद्याजमागमस्मिद्वेष वा सर्विजनायमध्यद्विष वा संविजगुजनध्यद्वेष वा सर्परित्रक्षनाथसम्बद्धिए वा । कासकाणायकोष्टि सिव शीचे सिय राहे सिय अस्महिए । बद्ध शीने अनेतनागतीने वा असकेअभागतीने ना सकेअभागतीन वा संकेजना ष्टीचे का सर्वासेन्सरणाहीने का अर्वतमुंबद्दीने का । त्यह स्वस्ततिए क्षणंत्रमागमस्मीहर्षः वा असक्षेत्रभागमञ्ज्ञिष् वा सक्षेत्रभागमञ्ज्ञिष् वा सक्षेत्रपुजमञ्ज्ञिष् वा असरोजगुजमस्मक्किए वा अर्जलगुजमस्मक्किए वा । जीवनकरजनेति कोविजनकरण वेहि बाकिवनप्रजावेहि स्तिमनवप्रजाति ब्रह्मवहतिए । सुविधगंबप्रजाति प्रतिमं र्पवपञ्चविक्तं य स्टालवित् । वित्तरसपञ्चविक्तं कडमरसपञ्चविक्तं वसावरसपञ्चवित् नविमर्भपनिति सहररसपनिति सदायबन्धि । कम्प्रबच्चसपक्रवेति सन्धरानि पत्रवेहि गर्नकासपत्रवेहि व्युवकायपत्रवेहि सीवकासपत्रवेहि सरिवकासपत्रवेहि निवासपानवेदि सुक्यकासपानवेदि सञ्चानविष् । आधिनिवोहियनावपानवेदि

सुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाणपज्जवेहिं मङ्अन्नाणपज्जवेहिं सुयअन्नाणपज्जवेहिं विभग-नाणपज्जेवेहिं चक्खुदसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं ओहिदसणपज्जवेहिं छट्टाण-विहए, से तेणद्वेण गोयमा एव वुचइ-'नेरइयाणं नो सखेजा, नो असखेजा, अणता पजना पन्नता' ॥ २४८ ॥ असुरकुमाराण भते ! केवइया पजना पन्नता 2 गोयमा ! अर्णता पज्जवा पन्नता । से केणद्वेण भते ! एव वुच्चइ- असुरकुमाराण अणता पज्जवा पन्नता<sup>72</sup> गोयमा! असुरकुमारे असुरकुमारस्स दव्वट्टयाए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए चउद्घाणविहए, ठिईए चउद्घाणविहए, कालवन्न-पज्जवेहिं छ्ट्ठाणविंहिए, एव नीलवन्नपज्जवेहिं लोहियवन्नपज्जवेहिं हालिह्वन्नपज्जवेहिं सुिक्षल्रवन्नपज्जवेहिं, सुिंदभगधपज्जवेहिं दुिन्भगधपज्जवेहिं, तित्तरसपज्जवेहिं कहुयरस-पज्जवेहिं क्यायरसपज्जवेहिं अविलरसपज्जवेहिं महुररसपज्जवेहिं, क्क्खडफासपज्जवेहिं मउयफासपज्जवेहिं गरुयफासपज्जवेहिं लहुयफासपज्जवेहिं सीयफासपज्जवेहिं उसिण-फासपज्जवेहिं निद्धफासपज्जवेहिं छुक्खफासपज्जवेहिं आभिणिवोहियनाणपज्जवेहिं सुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाणपज्जवेहिं मइअन्नाणपज्जवेहिं सुयअन्नाणपज्जवेहिं विभग-नाणपज्जवेहिं चक्खुदसणपज्जवेहिं अचक्खुदसणपज्जवेहिं ओहिदसणपज्जवेहिं छट्ठाण-विडिए, से एएणद्वेण गोयमा ! एव वुष्वइ–'असुरकुमाराण अणता पजवा पन्नता' । एव जहा नेरइया, जहा असुरकुमारा तहा नागकुमारा वि जाव थणियकुमारा॥ २४९॥ पुढविकाइयाण भते ! केवइया पज्जवा पन्नता २ गोयमा ! अणैता पज्जवा पन्नता । से केणहेण भते ! एव वुचइ-'पुढविकाडयाण अणता पज्जवा पन्नता' र गोयमा ! पुढविकाइए पुढविकाइयस्स द्व्वह्याए तुहे, पएसह्याए तुहे, ओगाहणह्याए सिय हीणे सिय तुह्ने सिय अञ्महिए। जइ हीणे असखिजाइभागहीणे वा सखिजाइभाग-हीणे वा सिखजाइगुणहीणे वा असिखजाडगुणहीणे वा । अह अन्भिहिए असिखजाइ-भागअन्महिए वा संखिजङ्भागअन्महिए वा संखिजगुणअन्महिए वा असंखिज-गुणअन्भहिए वा । ठिईए तिद्वाणविहए, सिय हीणे सिय तुले सिय अन्भहिए । जड हीणे असिखज्ञभागहीणे वा सिखज्ञभागहीणे वा सिखज्जगुणहीणे वा । अह अन्भ-हिए असुखिज्ञङ्भागअञ्भिहिए वा सुखिज्जङ्भागअञ्भिहिए वा सुखिज्जगुणअञ्भिहिए वा । वन्नेहिं गधेहिं रसेहिं फासेहिं मइअन्नाणपज्जवेहिं स्रयअन्नाणपज्जवेहिं अचक्ख-दसणप्रज्ञवेहिं छट्टाणविंहए ॥ २५० ॥ आउकाडयाण भते ! केवइया पज्जवा पन्नता 2 गीयमा । अणता पज्जवा पन्नता । से केणहेण भते ! एव वृच्छ-'आउ-काइयाण अणता पज्जवा पन्नता' 2 गोयमा । आउकाइए आउकाइयस्स द्व्वह्याए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए चउद्घाणविंडए, ठिईए तिद्घाणविंडए, वज्र-

248 काइमार्ज पुण्छा । गोयमा । क्रजंता पञ्चना पन्नता । से केयद्वेर्ण शंख । एवं वचा-वेटकाइबार्य अर्फता एजना पक्ता ! योगमा! तेटकाइए तेटकाइयस्य वस्क्रमाए तुक्रे पएसद्वयाए तुक्रे कोगाइजद्वयाए सरहात्मपत्रिए, ठिईए विद्वासपत्रिए, वक्रपेनरस-फासम्हमकाणस्वस्काजमञ्जूषंसणप्रसंबेहि य ब्रह्मणबन्धिए ॥२५२॥ बाउवहार्यां पुष्पत । गोयमा ! काउपलबाजे खर्णता पञ्जना पत्रता । से केजद्वेजं भेते ! एवं मुच्य-'बाटकारमार्थ अर्थता पञ्चमा प्रवाता' है मीयमा ! बाटकारण बाटकारमस्त बन्धा-बाए को पएसड्याए को बोगाइगड्याए बरुडायबहिए, ठिईए ठिडावयहिए, वन्न-येवरसफाउमदभाषाम्यभवाषाम्यभवन्त्रदेशगराजयेहि अन्नाचनकिए।।१५३॥ वकस्म६ काहनाज प्रका । गोदमा ! भणंता पन्नवा पन्नता । से केजड्रेयं मंते ! एनं पुनर-वपसन्तकात्रवाणे अर्थता पञ्चवा पञ्चता ! शोवमा ! वणस्तत्रवात्रप वणस्तत्रवात्रवस्य बम्बद्धमाए क्रो पएसद्याप को भोगाइबद्धमाए चन्द्राबबद्धिए, टिईए विद्रान-वविष्, वक्रांबरसभासम्बन्धावस्थ्यक्षायमचन्द्रदेशगपञ्चेष्टे य अद्वानवदिष्, से एएगद्वेण गोनमा ! एवं बुषाइ- बबस्सक्काइनार्ण अवता पजना पनता' व १५४ ॥ वैद्देशियाणं पुष्का । गोनमा ! अवंशा पत्रमा प्रचता । से केगद्वेण मंते ! एवं सुवद्-'नेइंदिनार्ज कर्यता पत्रका पत्रता' है गोजमा 1 बेइंदिए नेइंदिनस्य सम्बद्धवाए हुई पएसद्वमाय हुई. ओगाइण्ड्रमाय सिन हीचे सिन हुई सिन अन्मद्विए । यह हीने ठासंदिरज्ञहरुशामीचे था धेविज्ञहरुशामहीचे वा संविज्ञहरुगहीचे वा अस्वविज्ञहरून-द्वीचे वा । यद सम्मद्विए असंक्रिजनायज्ञकादिए वा संदिक्तामायज्ञकाद्विए वा संविक्रापुनस्कातिए वा नर्सकिन्द्रगुणसभाविए वा । दिवेच विवासक्विए, वर्षा-र्मनरमः जामक्रामिनिवोद्धिनगणस्थानायमप्रवाणास्थवनाणन्यस्थानायन्त्रस्थान्यवदेवि न क्याधनविष् । एवं रोहंबिया वि । एवं शतरिविया वि नवर वो वंशवा अवस्तुरमर्व काश्वकवार्यसर्गः । पंत्रिवियतिविकवानीवियाणं पत्तका श्वका प्रेश्डयाणं स्त्रा भाविः सम्बा ॥ २५५ ॥ अनुस्तार्थं अते । केनासा प्रजना प्रता । योजसा । सर्गता पञ्चवा पञ्चता । से केज्द्रेणे मेरी ! एवं जुवाई-"मणुस्मानं कर्षता पञ्चा पमता" है

गोममा । मणूने मणूनस्य चन्यद्ववाय होने पएसद्ववाय होते ओगाइणद्ववाय चउद्वा-महरिए, ठिइँए चउदावनविष, बन्नयंत्रसभामजामिनियोहियनाक्त्रमाध्यक्षिमा-नमप्रपानकार्याच्यानेहें स्टानवहिए, वेनसमानप्रवहेंहें शहे शिष्टें अशायहें विहें र्यसमिद्धे चट्टानवविष्, नेक्सर्यनक्षमञ्जेति तुवे । भागर्यतरा श्रोगाइसद्वसाए टिवेंए चाराजबहिया बज्यार्थे प्रशासनिका । ओरशिका नेमाणिका वि वर्ष चेत्र नारं

ठिईए तिद्वाणविदया ॥ २५६ ॥ जहन्नोगाहणगाण भंते ! नेरइयाण केनइया पज्जवा पन्नता १ गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नता । से केणद्रेणं भते ! एवं वुचइ० १ गोयमा ! जहन्नोगाहणए नेरइए जहन्नोगाहणस्स नेरइयस्स दव्वद्वयाए तुन्ने, पएसद्वयाए तुन्ने, ओगाहणद्वयाए तुल्ले, ठिईए चउद्राणविंहए, वन्नगधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दसणेहिं छहाणविडए । उक्कोसोगाहणगाण भंते ! नेरइयाण केवइया पज्जवा पन्नता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केणद्वेण भते ! एव वुचइ-'उकोसोगाहणगाण नेर्इयाण अणता पज्जवा पन्नता' १ गोयमा ! उक्वोसोगा-हणए नेरइए उक्कोसोगाहणस्स नेरइयस्स दव्बद्धयाए तुह्ने, पएसद्वयाए तुह्ने, ओगाह-णड्याए तुहे । ठिईए सिय हीणे सिय तुहे सिय अन्महिए । जइ हीणे असखिज-भागहीणे वा सिखजभागहीणे वा. अह अञ्महिए असिखजभागअञ्महिए वा सिखजभागअब्भिहिए वा । वन्नगधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्टाणविं । अजहन्नमणुक्कोसोगाहणाण भंते! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पनता १ गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केणट्रेण भते ! एव वुच्छ-'अजहन-मणुक्रोसोगाहणाण अणता पज्जवा पन्नता' गोयमा ! अजहन्नमणुक्रोसोगाहणए नेरइए अजहन्नमणुकोसोगाहणस्स नेरइयस्स दव्वद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए सिय हीणे सिय तुह्ने सिय अन्महिए । जइ हीणे असखिजभागहीणे ना सिखज्जभागहीणे वा सिखज्जगुणहीणे वा असिखज्जगुणहीणे वा। अह अन्मिहिए असिखजमागअन्महिए वा सिखजमागअन्महिए वा सिखजगुणअन्महिए वा असिखजगुणअब्भहिए वा । ठिईए सिय हीणे सिय तुहे सिय अब्भहिए । जइ हीणे असिखजभागहीणे वा सिखजभागहीणे वा सिखजगुणहीणे वा असिखजगुणहीणे वा । अह अन्महिए असखिजभागअन्महिए वा सखिजभागअन्महिए वा सखिज-गुणअन्महिए वा असिखजगुणअन्महिए वा। वन्नगवरसफासपज्जवेहिं तिहिं नागिहिं तिहिं अनाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्टाणविडए, से एएणहेण गोयमा ! एव वुचड-<sup>'</sup>अजहन्नमणुक्नोसोगाहणाण नेरइयाण अणता पज्जवा पन्नता' ॥ २५७ ॥ जहन्न-ाठेइयाण भते ! नेरइयाण केवइया पज्जवा पन्नता <sup>२</sup> गोयसा ! अणता ज्जपवा पनता । से केण्ड्रेण भते ! एव वुचइ-'जहन्निटइयाण नेरइयाण अणता पजना पन्नता' १ गोयमा ! जहन्निठिइए नेरइए जहन्निठिइयस्स नेरइयस्स दव्वह्रयाए तुल्ले, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए चउद्घाणविडए, ठिईए तुहे, वन्नगधरसफासपजन चेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अनाणेहिं तिहिं दसणेहिं छ्ट्ठाणविडए। एव उक्कोसिटइए वि । अजहन्नमणुद्दोसिटइए वि एव चेव, नवर सद्वाणे चउद्वाणविडए ॥ २५८ ॥

व्यवगुणकारमार्गं मंत्रं ! मेरहयार्गं केमहया पत्रवा प्रवतः ! गोवमा ! सर्वतः पजना प्रवता । से केणहेले भरा ! एवं नुकर्- नहक्कुपनासमार्थ नेरहवार्च सर्वदा पमना पनता' है गोसमा ! जहनपुजनामण् नेरहण् नहनगुगनामगस्य प्रहासस्म दम्बद्वयाप् क्षे पएमञ्जूबाए तुले ओगाइबद्धवाप् वउन्नाजबन्निए, ठिईए वउद्घाप-महिए, कालनसपळनेहि तुने अनसेसेहि नवर्गभरमप्रास्त्रअवेहि तिहि नानेहि तिहि भवानेति तिहि वंतनेति सहाजवविष्, से एएणहेर्ण गोयमा । एव बुक्द- जहन गुजसरमार्ग जेरह्मार्च सर्गता पंजवा प्रवता' । एवं उद्योसगुज्यसम् वि । अत्र-रक्षमञ्ज्ञकोसगुक्तकारम् वि एवं जेव नवर कासम्बदमानेहिं छङ्कामहरिए । एवं अद संसा बतारि दबा दो गया पंच रसा बद्ध फासा मानियम्बा ॥ २५९ ॥ बहुवा मिलिबोद्वियनाजीर्थं मठे ! नरहयार्थं केवहमा पन्नता ! मोयमा ! बहुवा सिविबोहिबनाजीचे नरहमार्थ जर्मता धळवा पत्रता । से बेबदेवं संत ! एवं मुचा- अनुनामिनियोद्दियनाणीयं नरहवायं अर्थता एकवा पवता ! योजमा ! अहमाभिनिवोहिक्नाणी नेरहए जहचामित्रिवोहियगाधिस्स नेरहसस्य हम्बद्धग्रह क्के परसङ्घ्याए क्के ओगाइणह्रवाए सरङ्काणवरिए, डिईए सरङ्काबहरिए, वक्रगंपरसम्बन्धनेहें स्थापनिए, आमिनियोदियनावपन्तेहें हुहे हुन्नाव-प्रमानेहें ओहिनाणप्रमानेहें छद्वाणपत्रिए, तिहीं दसपेहें छद्वागपतिए। एव बहरे साभिनिवोद्वियनाणी वि । जजहंशसमुद्दोसामिनिवोद्वियमाणी वि पर्व चेव नगरे आमिनिकोद्वियमानपजवेदि सङ्घणे स्ट्रायवविष् । एवं सुयनामी ओहिमाशी में मबरं बस्स माजा तस्य अनाया नत्नि । बहा नाया तहा अश्वाया वि साविवस्ता मनर बस्त असाना तस्य भागा न मनेति । जद्दचनस्कृत्यवीने मेंते ! नेखमाने केव"या प्रजवा पत्रता ! गोयमा ! जर्णता प्रजवा पत्तता । से बगदेने मंते ! एवं मुच्छ- अक्ष्यप्रभावंत्रज्ञाणं नेरहमाणं अर्थता प्रज्ञचा पत्रता ! गोनमा ! सार्च-वक्सर्वसची वं नेरत्रत् वक्रजवनसर्वसम्बन्धः नेरावस्य वव्यक्षतारं होते। परस्क्रमाप हारे खोगाइणहुमाए कराहाजनविष्, ठिवेप कराहाजनविष्, वसर्पकरस्थानस्कानेन्द्र तिहिं नायेहि तिहि असामेहि अद्यानविष्य, चनक्यंसमयअवहिं दुवे अचनक र्वसणपञ्जवेश्व ओहित्राणपञ्जवेश्व ब्रह्माणवृक्षियः । एवं उद्योसचनव्यारेसणी वि । अत्र-इसरम्बर्धसम्बद्धारीया वि एवं चैवः सवरं सहावि बहावविद्धः । एवं बन्दम्बर सनी वि. ओहिर्बसणी वि.ध. १६ - ॥ ज्वन्त्रोगाह्यान शंते । अपुरकुमाराने केन्द्रमा पञ्चमा पचता है सीयमा ! अर्थना पञ्चमा पञ्चता । से केस्ट्रेच मेते ! एवं नुवार-अहबोगाहणाज अगुर्कुमाश्चर्य वर्णता पजवा पचता ? धोयमा ! अहबोमाहणप्

असुरकुमारे जहन्नोगाहणस्स असुरकुमारस्स दव्बद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए तुहे, ठिईए चउद्वाणवडिए, वन्नाईहिं छ्ट्वाणवडिए, आभिणिवोहिय-नाणपज्जवेहिं सुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाणपज्जवेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहि य छ्टाणविं । एव उद्दोसोगाहणए वि । एव अजहन्नमणुक्कोमोगाहणए वि, नवर सद्वाणे चउट्टाणविहए। एव जाव थणियकुमारा ॥ २६१ ॥ जहन्नोगाहणाण भंते ! पुढ विकाइयाण केवइया पज्जवा पन्नता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केणहेण भते ! एव वुच्द-'जहन्नोगाहणाण पुढविकाइयाण अणंता पज्जवा पन्नता' ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए पुढविकाइए जहन्नोगाहणस्स पुढविकाइयस्स दव्बद्वयाए तुहे, पएसद्व याए तुहे, ओगाहणद्वयाए तुहे, ठिईए तिद्वाणविष्ठए, वन्नगधरसफासपज्जवेहिं दोहिं अन्नाणेहिं अचक्खुदसणपज्जवेहि य छट्टाणविडए । एव उक्कोसोगाहणए वि । अजहन्न-मणुक्कोसोगाहणए वि एव चेव, नवर सट्टाणे चउट्टाणविडए । जहन्नठिइयाण पुढविका-इयाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केणट्रेण भते ! एवं वुचइ-'जह-न्निठिडयाण पुढविकाइयाण अणता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा! जहन्निठेइए पुढविका-इए जहन्निठिइयस्स पुढविकाइयस्स द्व्वद्वयाए तुल्ले, पएसद्वयाए तुल्ले, ओगाहणद्वयाए चउद्घाणविंदि, ठिईए तुहे, वन्नगधरसफासपज्जवेहिं मङ्भन्नाणपज्जवेहिं सुयअन्नाणप-जविहिं अचक्खुदसणपजविहें छट्टाणविहए । एव उक्कोसिटिइए वि । अजहन्नमणुक्कोस-ठिइए वि एव चेव, नवरं सट्टाणे तिद्वाणविङए। जहन्नगुणकालयाण भते ! पुढविका-इयाण पुच्छा। गोयमा! अणता पज्जवा पन्नता। से केणट्टेणं भते! एव वुच्चड-'जहन्नगुणकालयाण पुढविकाइयाण अणता पज्जवा पन्नता' <sup>२</sup> गोयमा ! जहन्नगुणकाल**ए** पुढिनिकाइए जहन्नगुणकालयस्स पुढिनिकाइयस्स दव्वद्वयाए तुह्ने, पएसद्वयाए तुह्ने, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविडए, ठिईए तिद्वाणविडए, काल्यक्रपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वन्नगवरसफासपज्जवेहिं छद्वाणविष्ठए दोहिं अन्नाणेहिं अन्वक्बुदसणपज्जवेहि य -छडाणविडए । एव उक्कोसगुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि **एव चेव, नवरं** -सद्वाणे छद्वाणविहए। एव पच वन्ना दो गधा पच रसा अद्व फासा भाणियव्वा। जहन्नमइअन्नाणीण भते ! पुढविकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केणहेण भते ! एव वुच्चइ-'जहन्नमइअन्नाणीण पुढविकाइयाण अणता पज्जवा पत्रता' 2 गोयमा 1 जहन्नमइअन्नाणी पुढविकाइए जहन्नमइअन्नाणिस्स पुढविकाइयस्स दव्बहयाए तुह्ने, पएसह्याए तुह्ने, ओगाहणह्याए चउद्याणविहण्, ठिईए तिहाण-विडए, वन्नगधरसफासपज्जवेहिं छट्टाणविडए, मङ्अन्नाणपज्जवेहिं तुहे, सुयअन्नाण-पज्जवेहिं अचक्खुदसणपज्जवेहिं छट्टाणविडए। एवं उक्कोममइअन्नाणी वि। अजहन्न- . . .

346

मनुक्रोसमञ्ज्ञाणी वि एवं चेत्र नवरं सङ्घणे छद्वानवडिए। एवं मुयभनाणी वि अवस्पार्टसनी वि एवं चव पान वरापकारात्रमा ॥ १६२ ॥ वहबीसाहरामार्थ सेत । बेइंडिजार्ण पच्छा । गोयमा । अर्णता पञ्चना पचना । से केपन्नेच भंत । एवं बचा-'बह्रकोगारुवराणं नेत्रेविवाणं अनेता पत्रमा पचता' । गीयमा । जह्नोगहपए तेर्पतिए बहकोपाहणस्य केर्पतियस्य कमाइयाए तथे परमञ्जाए तथे कोगाहणद्वाए तरे टिइंप विद्वानविष्ठ, वक्रयभरसप्तसपमिति वोहि नावेहि वोहि मामार्थि क्षानक्ष्मुर्देशगपन्नविद्वि न सन्तरभविद्या । एवं उनकीलागाहणए वि । भवरं भागा नरिव । क्षत्रद्वभ्रमणुक्कोसोपाङ्गण् बहा जङ्गोगाङ्गण्, जनरै सद्वाचे कोगाङ्ग्याण् चन्द्वाच वडिए । ज्यबद्धियानं भते । बर्डवियानं पुष्का । गीयमा ! सर्गता प्रजाता प्रवाता । से केनद्रगं मंते । एव व्याप- व्यापियाण वेपेरियाण वर्णता पत्रवा पत्रता ! मोनमा । व्यक्तिक्य बेडेविए व्यक्तिक्यस्य बेडेवियस्य व्यवस्थाए क्रो पर्य-ह्याए तुक्रे ओयाइणकुमाए चडकुाजबंदिए, टिईए तुक्रे वक्तांबरसपासपजनेते. वोदि अचापेदि अवस्थातस्थापमधेदि य क्रह्मणगरिए । एवं उबकोसरिहए मि गवरं दो नामा अन्मदिना । अवद्वसम्युक्तकोगरिक्ष् बद्दा स्वहोस्टिक्ष्, धनरं ठिइए छिद्वायनविए । बह्वज्युमकास्त्रगायै बेहदियाथ पुच्छा । गोदसा ! अर्थता पञ्चना पद्धता । से केयदेवे शेतं ! एवं कुका- वहत्तगुलकासगार्थ वेदंदिवास सर्गता प्रजाबा पत्रता ? योगमा ! जहाबगुणकाकम् वर्षतिम् सहक्याणकाकमस्य वेर्षतिकस्य बन्बद्रवाए तुक्रे परसद्ववार क्षेत्रे कोगाइबद्धवाए चवद्वाचवदिए, दिवंग तिक्रावदिए, काळबच्चपळनंति होने वानसेसेहिं बचार्गवरसपासपळवंति वोहि पायेहि बोहि जवानेहिं अवन्यरंसयपञ्जेते य स्थाणक्तिए । एव उक्कोसगुणकालए नि । अञ्जासमस्तरो मतलकाक्य मि एवं चेल । जनरं सदाने कदाचनवित । एवं पण क्या हो संब पंत रसा बाह रासा माजियन्ता । काबामिनियोहियनाथीयं भेते । बेइवियानं केन्द्रमा पञ्चमा प्रवास है पायरा । अर्थाता पञ्चमा प्रवास । से केमद्रेण अंते । एव क्या-'अवसामिकिनोद्वियनाचीर्थ जेर्प्रविजार्थ जर्णता प्रजान प्रसात ? शावया । जन्मा-मिनिकाद्वियमाची नेईबिए जङ्गामिनिकोद्विनमानिस्स नेईबियन्स वच्नद्वनाए ग्रेडे पएसद्वमाप् तुत्ते, व्येगाहणद्वमाए भउन्नाजनविष्, ठिवेप् तिद्वाजनविष, वक्ताजरसरा सप्तावेति स्ट्रायनविष्, वामिनिनोहिजनाणपत्रवेति तुक्ते सपनानपत्रवेति स्ट्रा-सम्बद्धिए, अन्तरक्करंश्यमणअनेष्टिं सद्धानमध्यिए । एवं शत्रकोगामिनिनोहियनाची नि । क्रवहत्तम्युक्तकोसाभिविवोद्वियमाची वि एवं चेव नवरं सद्वाचे क्रद्वाकाविए । एवं स्वताओं वि इसमहापि मि अवश्वार्वसमी वि नवरं बत्व नामा स्टब्स नवामा निव

जत्य अञ्चाणा तत्य नाणा नित्य, जत्य दंसण तत्थ नाणा वि अञ्चाणा वि । एव तेइदियाण वि । चउरिंदियाण वि एव चेव, णवरं चक्खुदसण अन्महिय ॥ २६३ ॥ जहन्नोगाहणगाण भते ! पचिंदियतिरिक्खजोणियाण केवइया पजना पन्नता ? गोयमा! अणता पज्जवा पन्नता। से केणद्रेणं भंते! एव वुचड- जहन्नोगाहणगाण पर्चिदियतिरिक्खजोणियाण अणता पज्जवा पन्नता' ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए पर्चि-दियतिरिक्खजोणिए जहन्नोगाहणयस्स पर्चिदियतिरिक्खजोणियस्स द्व्बद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए तुह्ने, ओगाहणद्वयाए तुह्ने, ठिईए तिद्वाणबिंडए, वन्नगधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं दोहिं दसणेहिं छद्घाणविष्ठए । उक्कोसोगाहणए वि एव चेव, नवर तिहिं नाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्टाणविंडए। जहा उक्कोसोगाहणए तहा अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए वि, णवर ओगाहणहुयाए चउट्टाणनिडए, ठिईए चउट्टाण-विडए । जहन्निटिइयाण भते ! पर्चिदियतिरिक्खजोणियाण केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केण्ड्रेण भते । एव वुचर्- जहन्निठिर्याणं पर्चिदिय-तिरिक्खजोणियाण अणता पज्जवा पन्नता' १ गोयमा ! जहन्नठिइए पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिए जहन्निठिइयस्स पिचंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्बद्वयाए तुह्ने, पएसद्वयाए तुह्ने, ओगाहणद्वयाए चउड्राणविहए, ठिईए तुहे, वन्नगधरसफासपज्जवेहि दोहि अन्नाणेहि दोहिं दसणेहिं छट्ठाणविद्धए । उक्कोसिठइए वि एव चेव, नवर दो नाणा दो अन्नाणा दो दसणा । अजहन्नमणुक्कोसिठइए वि एव चेव, नवरं ठिईए चउट्टाणविडए । तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा तिन्नि दसणा । जहन्नगुणकालगाण भते ! पर्चिदियतिरिक्ख-जोणियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता ५जवा पन्नता । से केणद्वेण भंते ! एव बुचइ० १ गोयमा ' जहन्नगुणकालए पर्चिदियतिरिक्खजोणिए जहन्नगुणकालगस्स पचिदियतिरिक्खजोणियस्स दब्बद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविंहए, ठिईए चउद्वाणविंहए, कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वनगघर-सफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दसणेहिं छ्ट्राणविडए। एव उक्कोमगुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एव चेव, नवर सद्वाणे छद्वाण-विडिए । एव पच वन्ना दो गधा पच रसा अट्ठ फासा । जहन्नाभिणिबोहियणाणीण भते ! पर्चिदियतिरिक्खजोणियाण केन्नइया पज्जवा पन्नता <sup>2</sup> गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केणहेण भते ! एव वुचइ० १ गोयमा ! जहन्नाभिणिवोहियणाणी पर्चि-दियतिरिक्खजोणिए जहन्नाभिणिवोहियणाणिस्स पर्चिदियतिरिक्खजोणियस्स दव्बट्ट-याए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविंडए, ठिईए चउद्वाणविंडए वन्नगधरसफासपज्जवेहिं छद्टाणविंडए, आभिणिवोहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयणाण- प्रजनेहीं सदानगढिए, अवन्तर्गसम्बद्धारमञ्जनेहीं छत्तानगढिए, अवनन्दर्गसम्बद्धारमनिर्दे **बद्धानवरिए । एव उद्यो**शामिनिगोद्विवनाणी नि जनरं टिव्रेंग शिद्धानवरिए, तिथि भागा विश्व दंसणा सङ्घाणे हुने संसेध सङ्घानवन्ति । अवश्वमाधानामिनि-बोडिसमाणी जहा उद्योसामिनिबोडिसमाणी जहरं ठिर्देए जउड्डासम्बद्धिए । सङ्घर्षे स्द्राजबहिए । एवं ध्रमणाणी वि । जहकोतिमाणीणं सेते ! पेनित्यतिरिक्यजोनि-थार्च पच्छा । गोयमा ! अर्जता पञ्चमा पत्तता । से केन्द्रोर्च मेरी ! एवं कुनइ ! गोयमा । जब्बोह्रिगाणी पंचिरियशिरियक्कवोलिए जब्बोह्विनामिस्स पंचिरियरिरि कराजीनियस्य दब्बद्धवाय होते. परासद्धयाय होते. श्रीमादगद्धवार वाउदायबहिए, क्षिए दिद्यानविष्, वन्नगेवरसकासपन्नवेति शामिनिवाहिननाशस्यमानपन्नवेदि स्द्रागनविष्, जोहिनाचयज्ञवेर्षि तुहे । अज्ञाना नरिव । <del>वस्ता</del>न्सवयज्ञवेर्षि सप क्ष्मतस्यप्रस्वेदि शोहिर्दसम्पन्नदेष्टि व स्ट्रान्नदिए । एवं स्क्रोसोहिनाणी में। अवहरूकोसोक्षितानी मि एवं चेव जबरं सदाने स्ट्रायवदिए । जहा आमिसिनीहि यमाणी तहा महभत्ताणी सुयमणाणी व जहा ओलिगाची तहा विसंगागणी नि चक्सरंसकी अवक्सरंसकी य चहा आमिनिकोश्वियनाकी ओहिबमकी व्या कोद्विनाची चत्य गाणा तत्य क्षत्रामा नत्य चत्व कक्षामा तत्व नामा नन्य परच दसका तत्व नामा वि अकाका वि व्यत्पिति शावियक्षं ॥ १६४ ॥ वहुकोगा-हजगार्च भरे । सक्तार्थ केनाया पजना प्रवता । योजमा । वर्णता पजना पकता । से केनद्रेणं अंते ! एवं वुच्यः— 'बहन्तोयाहणताण अनुस्थानं कर्णता प्रज्ञवा पचता । मेथमा । जहकोगाहचप् अवसे जहकोगाहचगस्य मनुसस्य बम्बद्रकाए तुमे पएसद्रवाए तुमे कोगामगद्रवाए तुमे टिईए विद्यामन्त्रिए, वस-र्शाजरसंशासपञ्चनेति विश्वि गाणिति धोवि अन्याणिति विदि चंसलेवि प्रवासनिय । उद्भोसोगाहबाए वि एवं बोब अवर्र ठिईए सिम होते सिन तुक्के सिम अवमहिए। कर हीचे वर्तन्त्रज्ञादमायाणि नद्र जनमहित वर्तरिरज्ञादमायवन्त्रित । दो नामा ची असामा वो वसना । अजहनसमूहोस्त्रेगाहमध् वि धर्व भेव भवरं श्रोगाहमह्याएं बाउद्वापलविष्, टिवेष बाउद्वाममविष्, आदकेष्टि चतदि नापेदि स्टामप्रविष्, के मानायप अवेदि हाके निवि अकागेदि निवि बंगमंदि छन्नामविए, नेपसद्यम-प्रमादिहि तुमे । जहलटिश्वाणे मेत् ! अगुरमाणे कवाया प्रमात प्रमात । क्षाचेता पत्रवा पत्रता। से वेणदेशं संते । एवं बुध्य ह योवमा । जहनस्मिए मगुरसे बहत्तविहयस्य अपुरसास्य हम्बद्धवाप् तुत्रे पएसद्ववाप् तुत्रे ओगाहणद्ववाप् नाउटानवहिए, ठिइए तुने नार्गनरसम्बानवजनेदि नोहि जनामेदि नोहि बंगमिरि

छ्ट्ठाणविंहए । एवं उक्कोसिठइए वि, नवर दो नाणा दो अन्नाणा दो दसणा । अजहन्नमणुकोसिठिइए वि एव चेव, नवर ठिईए चउट्टाणविडए, ओगाहणहुयाए चउद्वाणविडए, आइहेहिं चउहिं नाणेहिं छद्वाणविडए, केवलनाणपजावेहिं तुहे, तिहिं अन्नागेहिं तिहिं दसमेहिं छट्टाणविडए, केवलदसणपज्जवेहिं तुह्ने। जहन्नगुणकालयाण मते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पन्नता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केणहेण भते ! एव वुच्चइ० १ गोयमा ! जहन्नगुणकालए मणूसे जहन्नगुणकालयस्स मणुस्सस्स दन्बद्वयाएं तुह्ने, पएसद्वयाए तुह्ने, ओगाहणद्वयाएं चउद्वाणविंडए, ठिईए कालवन्नपज्जवेहिं तुहे, अवसेसेहिं वन्नगधरसफासपज्जवेहिं चउद्घाणवहिए, छट्टाणविंहए, चउिंह नाणेहिं छट्टाणविंहए, केवलनाणपजवेहिं तुल्ले, तिहिं अनाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणविडए, केवलदसणपज्जवेहिं तुल्ले। एव उक्कोसगुणकालए वि। अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एव चेव, नवर सद्वाणे छ्ट्ठाणविडए। एव पच वना दो गधा पंच रसा अह फासा भाणियव्वा । जहन्नाभिणिवोहियनाणीण भते ! मणुस्साण केवइया पजवा पन्नता र गोयमा ! अणता पजवा पन्नता । से केणहेण भते ! एव वुचइ० <sup>२</sup> गोयमा । जहन्नाभिणिबोहियनाणी मणूसे जहन्नाभिणिवोहियनाणिस्स मणु-स्सस्स दब्बद्वयाए तुल्ले, पएसद्वयाए तुल्ले, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविहए, ठिईए चउद्वाणनिहए, वन्नगथरसफासपज्जवेहिं छद्वाणनिहए, आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयनाणपज्जवेहिं दोहिं दसणेहिं छट्टाणबिहए, एव उक्कोसाभिणिबोहियनाणी वि, नवर आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुले, ठिईए तिद्वाणविडए, तिहिं नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छ्ट्ठाणविष्ठए । अजहन्नमणुक्कोसाभिणिवोहियनाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहिय-नाणी, नवरं ठिईए चउद्घाणविष्ठए, सद्घाणे छद्घाणविष्ठए । एव सुयनाणी वि । जहन्नोहिनाणीण भते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणता पजवा पन्नता । से केणद्वेणं भते ! एव वुच्चइ० १ गोयमा ! जहन्नोहिनाणी मणुस्से जहन्नोहिनाणिस्स मणूसस्स दव्बद्वयाए तुह्ने, पएसद्वयाए तुह्ने, श्रोगाहणद्वयाए तिद्वाण-विहिए, ठिईए तिद्वाणविहए, वनगघरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं छद्वाणविहए, ओहिनाणपज्जवेहिं तुहे, मणनाणपज्जवेहिं छट्ठाणविहए, तिहिं दसणेहिं छट्ठाणविहए। एव उक्कोसोहिनाणी वि । अजहन्नमणुक्कोसोहिनाणी वि एव चेव, नवरं ओगाहणद्वयाए चटहाणविंहए, सद्वाणे छद्वाणविंहए । जहां ओहिनाणी तहा मणपज्जवनाणी वि भाणियव्वे, नवरं ओगाहणहुयाए तिहाणविहए। जहा आभिणिवोहियनाणी तहा मइअन्नाणी सुयअन्नाणी वि माणियन्वे । जहा ओहिनाणी तहा विभगनाणी वि भाणि-यव्वे, चक्खदसणी अचक्खदसणी य जहा आभिणिबोहियनाणी, ओहिदसणी जहा

142

मोहिनाची । चत्य गांचा तत्य मंत्राणा गत्य अलाणा तत्व नाणा गत्व करम वंसजा रहन माना नि अज्ञाजा नि । केनस्नावीयं मंदे ! समस्यानं केवस्या पमना पनता है गोनमा । मर्जदा पमना पनता । से केमद्रमा मंद्रे 🏻 एव नुना-किममनाबीर्यं स्वरसार्थं क्षर्यता पत्रवा पत्रता । गोवमा । केवळनाणी सपूरी केमसनामित्स समूसस्य वश्यद्वयाएं होते. पएसद्वयाएं होते ओगाहणद्वयाएं सर्वद्वान-नविए, दिश्वए शिक्षणनकिए, यसर्गनरसपासपणनेहिं ब्रह्मणनविए, केनसनामपणनेहिं केनलन्सकरजनेति य ताहे । एवं केनलर्साची वि सक्से सावियस्ने । बापसंतरा बडा असरक्तारा । एवं जोडसियवेमाविया नवरं सहाणं ठिईए विद्वानवविए मामिनस्थं । सेतं जीवपञ्चन ॥ २६५ ॥ अशीवपञ्चन थं अति ! कडविडा पचता है गायमा ! बुन्धिः पचता । राजहा-कृतिकातीपपञ्चा च अक्षतिञ्जीवपञ्चा व ध २६६ ॥ अवस्थिववीवपञ्चा में विते ! स्वतिदा प्रकृता ! गोवमा ! वसनिदा पत्तता । श्रेजहा-बम्मत्विकाप्, बम्मत्यिकायस्य वेशे बम्मत्विकायस्य प्रश्रा अह म्मन्बिकाए, भहम्मरिवज्ञायस्य वेसे आहम्मरियकायस्य पएसा आगासरिकार् भाषासन्धिकाक्त्य वेसे भागासत्त्वकायस्य पएसा काद्यासम्प ॥ १६० ॥ सन् सबीवपज्ञना भे मते ! क्यन्तिः पणता ! गोयशा ! एउम्बार पर्यदा । देवहा-रांचा राषदेसा खेनपएसा परम<u>एए</u>माध्य । रा नं मीते ! 🖍 संबोधा असं<del>हे</del>णा धर्मता ! गोकमा ! भो सबेका भो असंबेका असंता । से केबद्रेमं अंते ! एवं मुच्छ- नो एंबेजा मो अस्बेजा असंता' । गोयमा । अनंता परमापुरमास भर्मता दपप्रदिया लेवा बाब कर्मता बसपप्रतिया दोवा कवता संबेक्तरप्रदिया र्धना अवता अस्त्रेकाएसिना लेका क्षणता स्वयतपरिका रांचा से तेनदेन गोवमा एवं बुचर- स व नो सकेता नो करंकेता अवंता' ॥ १६८ B परमाजुपारतकार्य संते । केनद्वा प्रजना पत्रता १ कोजमा । परमाजुपोरममर्ग अवना प्रज्ञवा पत्रता । से केन्द्रेनं अंते । एवं तुक्त्-धरमानुप्रशस्त्रयं कर्पता पञ्चा पन्नता 🕴 मोबसा । परमाणुपागके परमाणुपागकरस राजद्ववाप 🗗 पर-सद्भाए तमे कोगाम्बद्धमाए तमे ठिईए सिम बीचे सिम तमे निम कम्मिहिए ! जर् होंगे असंविज्ञारुमागड़ीने वा संविज्ञारमागड़ीये वा संविज्ञाराज्यहाँने वा अस-निजर्गुणहीचे वा । यह अस्मविष् असविज्ञासागअस्मविष् वा संविज्ञासाथ-अवसदिए वा संस्थित्रगुणअवसदिए वा असक्षित्रगुणअवसदिए वा । कास्त्रवापनवेदि क्रिय द्वीन शिय हुते लिंग अन्महिए । यह हीने अर्वतभाषहोत्त वा सर्वत्यास्त भागतीले वा संधिकात्मामहीयं वा संधिकमुण्डीये वा अस्धिकमुण्डीगं वा

अणतगुणहीणे वा । अह अञ्महिए अणतभागअञ्महिए वा असखिजइभागअञ्म-हिए वा सिल्जिमागअञ्महिए वा सिल्जिगुणअञ्महिए वा ससिल्जिगुणअञ्महिए वा अणतगुणअञ्महिए वा । एव अवसेसवन्नगधरमफासपज्जवेहिं छट्टाणविडए। फासाण सीयउत्तिणनिद्दलुक्खेहिं छट्टाणविडए, से तेणहेण गोयमा ! एव वुचइ-'परमाणुपोग्गलाण अणता पज्जवा पन्नता' । दुपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केणहेण भंते । एव वुचइ० १ गोयमा ! दुपएसिए दुपएसियस्स दन्वद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणदृयाए सिय हीणे सिय तुहे सिय अञ्म-हिए । जइ हीणे पएसहीणे, अह अन्महिए पएसमन्महिए । ठिईए चउट्ठाणविडए, वन्नाईहिं उवरिहेहिं चउफासेहि य छट्ठाणविडए । एव तिपएसिए वि, नवर ओगा-हणद्वयाए सिय हीणे सिय तुहे सिय अब्भहिए। जइ हीणे पएसहीणे वा दुपए-सहीणे वा, अह अञ्महिए पएसमञ्महिए वा दुपएसमञ्महिए वा। एव जाव दसपएसिए, नवर ओगाहणाए पएसपरिवुद्धी कायन्वा जाव दसपएसिए, नवर नवपएसहीणति । सखेजापएसियाण पुच्छा । गोयमा । अणता पज्जवा पन्नता । से केणहेण भते । एव वुच्चइ० १ गोयमा । सखेजापएसिए सखेजापएसियस्स दव्वहयाए तुष्टे, पएसद्वयाए सिय हीणे सिय तुष्टे सिय अब्महिए । जइ हीणे सखेजमागहीणे वा संबेजगुणहीणे वा, सह सन्भाहिए एवं चेव । ओगाहणद्वयाए वि दुद्वाणबिहए, ठिईए चउट्ठाणविहए, वण्णाइउवरिल्लचउफासपज्जवेहि य छट्ठाणविहए । असेखिज-पएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । मे केणहेणं भते ! एवं बुचड॰ <sup>१</sup> गोयमा । असंखिजपएसिए खंधे असंखिजपएसियस्स खंधस्स दन्वद्वयाए तुष्टे, पएसद्वयाए चउद्वाणविहए, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविहण्, ठिईए चउद्वाण-विहए, वण्णाइउवरिष्ठचउफासेहि य छट्ठाणविहए। अणतपएसियाण पुच्छा। गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केणहेण भते । एव वुच्छ ० १ गोयमा । अणतपएसिए खधे अणतपएतियस्स खधस्स दव्बद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए छद्वाणविहए, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविंहपु, ठिईए चउद्वाणविंहपु, वन्नगधरसफासपज्जवेहिं छद्वाणविंहए॥२६९॥ एगपएसोगाढाण पोगगलाण पुच्छा । गोयमा 🏳 अणता पज्जवा पश्वता । से केणद्वेण मते । एव वुष्वइ० २ गोयमा । एगपएसोगाढे पोग्गछे एगपएसोगाढस्स पोग्गछस्स दन्बहयाए तुर्हे, पएसहयाए छहाणविहए, ओगाहणहयाए तुर्हे, ठिईए चउहाणविहए, वण्णाइउवरिल्लचउफासेहिं छट्टाणविंडए। एव दुपएसोगाढे वि । संखिजपएसोगाहाण पुच्छा । गोयमा ! अर्णता पज्जवा पजता । से केणद्वेण सते ! एवं वुचइ० ? गोयमा ! सिखज्जपएसोगाढे पोग्गले सिखजपएसोगाढस्स पोग्गलस्य दव्वद्वयाप् तुल्ले, पएसद्वयाप् नरफारेहि य छद्वाजनविष् । असंबेजपएसोपावाण पुरस्ता । गोयमा ! कर्णता पजना पत्तता । से केमहेर्य भेत ! एवं कुका ! गोयमा ! असंबेजपएसीगाड पोगाड सप-केमपएसोपाइस्त पोम्पद्धस्य दब्बहुमाए हुहे पएसङ्ग्याए सदाव्यविष्, कोगाइपद नाए चउद्गाजनविष्, ठिड्रैए चउद्गाणनविष्, कणात्रमञ्जूपासे**डि च**द्राणनविष् ॥२० ॥ एगसमगढिन्याणं पुष्पा । गोनमा ! कर्मता प्रकार प्रवारा । से केमटेर्ग संते ! एवं तुषद 🗜 गोजमा । एगसमयिक्य पोरमके एमसमयिक्यस्य पोरमसस्य बन्धक्रमाप् हों परसहसार सद्भागविष, जोगाइवहुनाए वरहायनविए दिश्रंप हों. बन्यार अहम्मरेहिं स्ट्राणनविष् । एवं जाव दससमबठित्रः । संकेजसमबठिदयार्थः एवं सन भवरं ठिईए हुद्वाचपविए । असंकेकसम्बद्धियाणं एवं चेव नवरं ठिईए करहाम विक्रियः १७९॥ एकगुणकानगार्यं पुच्छा। गोनमा । सर्वता पञ्चा पञ्चा। से केन्द्रेपं संते ! एवं दुवह 🕴 गोयमा ! एक्युणरास्य पोम्पके एक्युनकासमस्य पोलासस्त दश्यद्ववाए दक्के पएसङ्कवाए छद्वानवविष्, जोगाहणहवाए चटहानवविष्, टिईए चउड्रामनविए, काल्यबपमनेहिं तुरे जनसेसेहिं वक्तांबरसपासपमनेहिं छद्राजनविष्, क्टाई पासेहिं सद्वायविष् । एवं बाव वसगुगकासम् । संकेज्युव कालए नि एवं भेन अबरे सद्वामें इद्वानवविए। एवं कसंबेक्यापाशाव्य नि अवरे सञ्ज्ञाचे भवद्वाजबंदिए। एवं भनंतगुनरामम् वि जबरं सङ्घने सञ्चानबद्विए। एवं जहां कल्लबस्स नतस्था गणिया तहा सेसाय वि वस्रांबरसप्तामां वत्तन्त्रा मानियम्बा बाब अर्जरामुक्कि ॥ २७२ ॥ जहबोवाह्यक्यार्थं सेते ! हुपएस्यार्म पुच्छ । गोबमा । कर्षता प्रजना प्रचता । से केजदेर्थं सत्त । एवं मुख्य : गोसमा । बहुद्योगाहुगए तुप्एतिए क्षी बहुजोगाहुबस्त तुप्पतियस्य बंबस्त तुन्दुआए ते? पप्सद्भाए क्षेत्रे शोमाहणद्वनाए तुके ठिईए क्यद्वायम्बिए, शासनत्तप्रजनिर्दि सङ्घानवडिए, ऐसवकर्यवरसप्तानविडि सङ्घानविष्, सीयउसिकम्बद्धस्यवनसपत्रवेडि स्ट्रान्वडिए, से तेवदेनं गोवमा । एवं बुवाद-"बहबोगाहकगानं दुपएसिवाणं पान्य-मार्च मर्पता पत्रवा पनवा"। उद्योसोगाह्मप् नि एवं चेत् । अञ्चलसमुक्तोमोगाह क्यो नित्र । व्यक्तीगाइक्याज भेते । तिक्कृतियार्थं पुष्पप्त । वासमा । व्यवेता प्रजन पकता । से केनद्वेर्न मेरी ! एवं नुषद १ गोयमा ! जहा दुपएनिए जहलागाहणए, तक्कोताग्राहमए नि एवं चन एवं अवहत्तम्युक्कोगोग्राहमए नि । वहत्रोगाहसमार्थ भेत । चडपएनिवार्ग पुच्छा : गोवमा । बहा बहबोगाहबए हुपएछिए तहा उदबी-गाइनए चडप्पएरिए, एवं जहा सक्कोसीयाहबए बुपएलिए तहा सक्कोसामाहबए

सद्भाजनकिए, भोगाइनद्वमाए बुद्धाजनकिए, ठिव्रंए चल्रहामगरिए, कन्माइटमिए-

चउप्पएसिए वि। एव अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए वि चउप्पएसिए, णवर ओगाहणद्वयाए सिय हीणे सिय तुहे सिय अञ्महिए। जइ हीणे पएमहीणे, अह अञ्महिए पएम-अन्भहिए । एव जाव दसपएसिए णेयन्त्र, णवर अजहण्णुक्कोसोमाहणए पएसपरिवुङ्गी कायन्त्रा जाव दसपएसियस्स सत्त पएसा परिवृह्डिजाति । जहन्नोगाहणगाण भते ! सखेजपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्जवा पत्रता । से केणहेण मते ! एव वुचइ० २ गोयमा ! जहन्नोगाहणए सखेजपएसिए जहन्नोगाहणगरस सखेजपएसियस्स दव्वद्वयाए तुह्ने, पएसद्वयाए दुद्वाणविडए, ओगाहणद्वयाए तुह्ने, ठिईए चटद्वाणविडए, वण्णाइचउफासपज्जवेहि य छट्टाणवडिए । एवं उक्कोसोगाहणए वि । अजहन्नमणुक्को-सोगाहणए वि एव चेव, णवर सद्घाणे दुद्घाणविडए। जहन्नोगाहणगाण भते! असिखज्जपएसियाण पुच्छा। गोयमा! अणता पज्जवा पन्नता। से केणहेण भते। एव बुचइ० १ गोयमा! जहन्नोगाहणए असखिजपएसिए खधे जहन्नोगाहणगस्स असखिज-पएसियस्य खधस्स दव्बद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए चउद्वाणविडए, ओगाहणद्वयाए तुहे, ठिईए चउट्टाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लफासेहि य छट्टाणवटिए। एव उक्वोसोगाहणए वि। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए वि एव चेव, नवर सट्टाणे चउट्टाणवडिए । जहन्नोगाहणगाण भते ! अणतपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केणद्वेण भते ! एव बुच्चइ॰ २ गोयमा ! जहन्नोगाहणए अणतपएसिए खंधे जहन्नोगाहणस्म अणतपए-सियस्स खधस्स द्व्वद्वयाए तुल्ले, पएसद्वयाए छद्वाणविहण्, ओगाहणद्वयाए तुल्ले, ठिईण् चउद्वाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लचउफासेहिं छद्वाणवडिए। उक्वोसोगाहणए वि एव चेव, नवर ठिईए वि तुहे। अजहन्नमणुकोसोगाहणगाण भते । अणतपएसियाणं पुच्छा। गोयमा! अणता पज्जवा पन्नता।से केणद्वेण भते! एव वुचइ० १ गोयमा! अजहन्नमणुक्नोसोगाहणए अणतपएसिए खधे अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगस्स अण-तपएसियस्स खबस्स दन्बद्धयाए तुहे, पएसद्वयाए छद्वाणविङए, ओगाहणद्वयाए चउद्घाणविष्ण, ठिईए चउद्घाणविष्ण, वण्णाइअद्घफासेहिं छद्घाणविष्ण ॥ २७३ ॥ जहन्नद्विडयाण भते ! परमाणुपुग्गलाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केण्डेण भते। एव वुच्चड० १ गोयमा। जहन्नठिइए परमाणुपोग्गले जहन्नठिइयस्स परमाणुपोग्गलस्स दब्बद्वयाए तुङ्गे, पएसद्वयाए तुङ्गे, ओगाहणद्वयाए तुङ्गे, ठिईए तुङ्गे, वण्णाइदुफासेहि य छट्टाणविंहए । एव उक्वोसिठइए वि । अजहन्नमणुक्वोसिटइए वि एव चेव, नवरं ठिईए चउहाणविहए । जहन्नि ठिटयाण दुपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता। से केणद्वेण भते! एव वुचड० ² गोयमा! जहन्नठिइए दुपएसिए 'जहन्निटिइयस्स दुपएसियस्स दव्यद्वयाए तुल्ले, पएसद्वयाए तुल्ले, ओगाहणा

पञ्चनमञ्ज क्ष्माप् सिम हीने सिम क्री सिम भन्माहिए। जह हीने प्रप्तहींने आह सम्माहिए पएसभव्माहिए । ठिश्वप द्वारे वण्यादनतपासिहि य स्ट्राप्यविष् । एवं उत्तीय-दिइए मि । अवहस्रमणुकोसदिइए मि एवं चेन नवरं दिईए नदशुधवदिए । एवं जाब इसपएछिए, नगरे पएसपरिवृद्धी कायभ्या । कोगाडजड्रयाए तिस वि गमएस नाव व्रस्पप्रिय, एवं पएसा परिवक्तिकाति । वहस्रक्रियाणं गेरी । संदिध्यप्र-सियार्ग प्रच्छ । गोयमा ! अर्जता प्रजवा प्रचता । से केस्ट्रेर्ग मेते ! एवं क्यह है गोसमा ! बह्चठिहर संधिजपप्सिए जने बह्चटिक्नस्य संकिजप्रशिवस्य संवस्त वस्महनाए 🛍 पएसङ्कराए बुहायनकिए, श्रोयादणहुनाए बुडायनकिए, टिईए हुङे नम्माह्मउफारोडि य छट्टाव्यक्षिए । एव स्कोसिक्षए वि । अवहचारकुकोमठिइए वि एवं भेव नवरं ठिईए सरुद्वानवविए । जङ्गठिइतान असंक्रिजप्रियान प्रका। गांक्सा ! अर्जता पळवा पक्ता । से केनक्क्य संते ! एवं कुक्क ! गोबमा ! बहक-दिव्य अस्तिकार्याचेत् वद्वादिव्यस्य असेदिकापपृतिवस्य चम्बद्धवाय हो। परस-इयाए वर्द्यसम्बद्धिए, ओगाइबहुवाए वरुद्राधविए ठिव्रैए तुष्टे वश्याहरुवरिज्ञक-उपप्रदेशि न ज्ह्यानमञ्जूष । एवं उद्योगठिएए वि । अनव्यानगुक्तोगठिक्ए वि एवं नव नवरं टिर्देए वठहालबिए । जहबटिहवार्ण अपतरप्रियार्ण प्रच्छा । योगमा ! मर्पता पञ्चा पत्रता । से केमडेणं भेते ! एवं कुक्द 🕴 गोनमः ! चन्चास्त्रप वर्णतप्रतिए जहचठिहनस्य कर्णतप्रतिकस्य दम्बद्धनाए तुहे पर्मद्रनाए हद्वान-वित्, जीगाहमद्वाप अन्द्रामविष्, ठिईए तुर्हे परनाइस्ट्रायसेह व स्ट्रान-नविए । एवं उद्योसटिक्ए वि । अजहकानकुद्दोनटिक्ए वि एव चेव अवरे टिवेंए चरकाजनकिए ॥ २७४ ॥ बहुजनुजनाकनाने परमानुप्रमानने प्रनद्ध । मादमा । मर्चता पजना पक्ता । से केनद्रेन शेते ! एवं तुबद ! योक्सा ! बहुक्तुमनाम्प् परमाणुपमाळे अवस्थानकाकथरण परमासुपमानस्स वश्यद्ववाच् हुके परसङ्घाए हुने मोगासण्डमाए गुर्के ठिईए चवडालगविए, नासमभपमविष्ट हुने समसेसा बन्ना मरिव । गेंबरसङ्कासपञ्जेति न स्ट्राधनविए । एवं तक्कोनगुणकासम् वि । एक्सक इक्रमणुक्त्रीसगुक्तराख्य वि वावरं सहाये स्थापवडिए । जहच्युमधानवार्य मेते । दुप्पृश्चिमार्च पुरुष्ठा । गोयमा । सर्वता पजना पनता । से नेजद्वैर्च भव । एवं मुच्य । गोनमा । जहवाधुजनासम् बुपएशिए जहवाधुजनासमस्य बुपएशियस्य वस्त्रहराए हो। पर्स्डनाए हो। ओगावण्ड्याए सिय हीने सिय हो। सिव सम्महिए। क्द होने परमहीने अह अध्यक्षिए पर्शवस्त्राहिए । ठिईए चडहायनदिए, नास-वस्त्रप्रवर्षि हुने सवसेसनज्जाहउवरिजयउपासेक्षे स प्रदूशववदिए। एवं उत्तरास-

गुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एव चेव, नवर सट्ठाणे छट्टाणविंछए । एवं जाव दसपएसिए, नवर पएसपरिवृष्ट्वी ओगाहणाए तहेव। जहन्नगुणकालयाण भते ! सिवज्यप्रियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केणहेण भते । एवं वुचइ० १ गोयमा । जहन्नगुणकालए सिखजपएसिए जहनगुणकालयस्स सिखजपएसियस्स दन्वद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए दुद्वाणविष्ण, ओगाहणद्वयाए दुद्वाण-विडिए, ठिईए चउद्वाणविडिए, कालवन्नपज्जेनेहिं तुले, अवसेसेहिं वण्णाइउवरिल्लचउ-फासेहि य छट्टाणविडए। एव अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि, नवर सट्टाणे छट्टाण-विडिए। जहन्नगुणकालयाण भते ! असिखज्जपएसियाण पुच्छा। गोयमा! अणता पजना पन्नता। से केणहुण भते ! एव वुचइ० १ गोयमा ! जहन्नगुणकालए असखि-ज्जपएसिए जहन्नगुणकालयस्स असखिजपएसियस्स द्व्वट्टयाए तुङ्गे, पएसट्टयाए चड-झाणविडए, ठिईए चउद्घाणविडए, कालवन्नपञ्जवेहिं तुहे, अवसेसेहिं वण्णाइउवरिह्न-चउफासेहि य छ्ट्ठाणविहए, ओगाहणद्वयाए चउट्ठाणविहए। एव उक्कोसगुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एव चेव, नवर सङ्घाणे छड्डाणविहए । जहन्न-गुणकालयाण भते ! अणंतपएसियाणं पुच्छा । गोयमा । अणता पज्जवा पन्नता । से केणड्ठेणं भते ! एव बुच्चइ० १ गोयमा ! जहन्नगुणकालए अणतपएसिए जहन्नगुण-कालयस्स अणतपएसियस्स दन्बहुयाए तुल्ले, पएसहुयाए छहुाणविङ्कण, ओगाहणहुयाए चउड्डाणविडए, ठिईए चउड्डाणविडए, कालवन्नपज्जवेहिं तुहें, अवसेसेहिं वन्नाइअड्ड-फासेहि य छट्टाणविष्ठिए। एवं उक्कोसगुणकालए वि। अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एव चेव, नवरं सद्वाणे छट्ठाणवडिए। एव नीललोहियहालिद्द्यिक्कल्लसुब्भिगधदुब्भिगध-तित्तकडुक्सायअत्रिलमहुररसपज्जवेहि य वत्तव्वया भाणियव्वा, नवरं परमाणुपोग्गलस्स सुब्भिगधस्स दुब्भिगधो न भण्णइ, दुब्भिगधस्स सुब्भिगधो न भण्णइ, तित्तस्स अवसेस न भण्णइ, एव बद्धयाईण वि, अवसेस त चेव । जहन्नगुणकक्खडाण अर्णत-पएसियाण खधाण पुच्छा। गोयमा! अणता पज्जना पन्नता। से केणद्वेण भते! एव बुचइ० १ गोयमा । जहन्नगुणक्रमखंडे अणतपएसिए जहन्नगुणक्रक्खडस्स अणत-पएसियस्स द्व्वद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए छट्ठाणविडए, ओगाहणद्वयाए चउट्ठाणविडए, ठिईए चउट्टाणविहए, वन्नगधरसेहिं छट्टाणविहए, क्रम्खल्फासपज्जवेहिं तुले, अवसे-सेहिं सत्तफासपज्जनेहिं छट्टाणविहए । एव उक्कोसगुणक्क्खडे वि । अजहच्चमणुक्को-सगुणकृत्रखंडे वि एव चेव, नवर सद्वाणे छट्ठाणविंडए। एव मरुयगुस्यलहुए वि भाणियन्वे । जहन्नगुणसीयाण भते । परमाणुपोग्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता। से केणद्वेण भते ! एव वुच्चइ० १ गोयमा ! जहन्नगुणसीए परमाणु-

पोग्गके बहुभगुभरीक्स परमाणुरगकस्य वस्त्रद्ववाए होते. परसद्वयाए होते स्त्रेया-रणह्याए हुते दिवैए चट्टावनविए नक्षर्गभरतेष्ठं छहाववत्रिए, चीनपासपन्नेनेहे य तुरे उत्तिजनासी न मण्यह, निब्धक्षकारासपञ्जेष्ठि व श्रद्धामण्डीए । एवं उन्हो स्पुनासीए मि । अवश्वमञ्जासिशुनसीए नि एवं चेव नवारं सङ्घाने स्ट्रानविए । जान्यग्यसीमार्थं वपासियार्थं प्रच्या । योगमा । क्षर्णता पञ्चमा पन्ता । से केनदेव भेत । एवं शुक्तः 🕴 गोजमा । ज्वालगुणसीय कुपप्सिय बाइलगुणसीयस्स कुपप्रधिनस्स दब्बद्वनाए तुके परसङ्घाए 📷 जोगाइबद्वनाए दिन श्रीने सिन तुक्रै सिन अस्महिए। मह हीचे परसहीचे अह जन्मक्षिए परस्थकमद्विए । ठिईए कठहामबहिए, क्स-गश्रदस्यक्रवेडि सदाववडिए, शीवपासप्रक्रवेडि तक्के स्वतवविद्यानन्यपास्यक्रवेडि खद्वाणबंद्रिए । एवं सक्योसनुमसीए वि । अञ्चलक्ष्यमुक्तकोसनुमसीए वि एव केव कार्र सद्भानं सद्भानवविष् । एव बाव इसफ्एसिए, नवरं कोमाइयहवाएं पपसपरिद्वा क्रमञ्जा काम व्रथपएश्चिमस्य नव पएसा बुश्चिकति । बद्दलगुजसीनार्न संक्रिजपर्-विमार्ग पुच्छा । गोममा । अनंता पळवा पलता । से केमद्रेण मंते ! एवं हुच्ह ! गोनमा । जहस्युनसीए सन्धिजपर्तिए जहस्युनसीयस्य संभिज्ञपर्तियस्य सम्बद्धसर् तुरे परस्त्रपार बद्धानविष, व्योगालपद्धपार श्रद्धानविष, टिबंप नवद्धानविष, बण्गाईहिं छक्कणबन्धिए, सीयफासपज्यवेदि तुत्रे उत्तिमनिकक्ष्यवेहिं छक्काव्यविष् एवं उक्कोमगुमसीए वि । अन्ना<del>द्वमगुक्को</del>सगुमसीए वि एवं चेव सबर स्कामे **स्ट्रा**यबहिए । जन्नगुजरीयाणं असंख्रिकपएसियाणं पुरक्ता । योजना । सर्वता पत्रका फाला। से केल्ह्रील शंद ! एव शुक्द 🕴 ग्रेक्सा ! व्यक्तप्रकरीए अस्तिज्ञ-पएतिए बद्दवसुवासीवस्य असक्षिजपएसियस्य द्व्यद्वयाप् तुहे पएसद्वयाप् व्यवहान बहिए, ओमाइण्ड्रमाए चन्ड्राजबहिए, ठिईए चन्ड्राधनहिए, क्याइपअनेर्द्र स्प्राणबन्निए, सीवपासपजानेदि तके वालेशविद्यस्थनापासपजानेदि स्कृत्यविए। एवं उक्कोसगुणसीए वि । अवस्थामगुलकोसगुणसीए वि एवं चेव कार सद्वापे स्वाप बडिए । बङ्गगुनसीयार्च अनैतपप्सिवार्च प्रकार । गोयमा । अर्मता प्रवार प्रवार । सं केनद्वेण भेते ! एवं कुच्छ ! गोयमा ! महत्तपुणसीए अर्थतपप्रिए जहचगुणसी-

पूर्व उन्तर्राध्याचार्य मान्याच्यास्थात्राची स्वया । योप्यमा । व्यक्ति प्रकार मान्याच्यास्थात्राची स्वया । योप्यमा । व्यक्ति प्रकार प्रकार । सं केपद्रेस भेते । एवं तुष्यः । योप्यमा । व्यक्ति प्रकार प्रकार । सं केपद्रेस भेते । एवं तुष्यः । योप्यमा । व्यक्ति प्रकार प्रकार । स्वयं क्ष्याच्याची स्वयं व्यक्ति स्वयं स्वयं व्यक्ति स्वयं व्यक्ति स्वयं व्यक्ति स्वयं स्वयं व्यक्ति स्वयं स्वयं विष्यं व्यक्ति स्वयं स्वयं विष्यं व्यक्ति स्वयं विष्यं विष्यं विष्यं व्यक्ति स्वयं विष्यं विषयं विष्यं विषयं विष्यं विषयं वि

भाणियव्व ॥ २७५ ॥ जहन्नपएसियाण भने ! खधाण पुन्छा । गोयमा ! अणता पज्जवा पन्नता । से केणहेणं भते ! एवं बुचइ० १ गोयमा ! जहन्नपएसिए खवे जहन्नपएसियस्स खंयस्म दन्बद्टयाए तुहे, पएसद्टयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए सिय हीणे सिय तुह्रे सिय अञ्महिए। जइ हीणे पएसहीणे, अह अञ्महिए पएसअञ्म-हिए । ठिईए चउट्टाणविडए । वन्नगवर्यउविरहचउफासपज्जवेहिं छट्टाणविडए । उक्नोसपएसियाण भते ! खघाणं पुच्छा । गोयमा ! अणता ० । से केणहेण भंते ! एव वुचइ० १ गोयमा ! उक्कोसपएसिए खधे उक्कोसपएसियस्स खधस्स दन्बद्वयाए तुहे, पएसहयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए चउट्टाणविडए, ठिईए चउट्टाणविडए, वण्णाइ-अट्ठफासपज्जवेहि य छट्ठाणविहए । अजहन्नमणुक्षोसपएसियाण भते ! खधाण केवडया पज्जवा पन्नता १ गोयमा ! अणता ० । से केणहेण ० १ गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसपए-सिए खधे अजहन्नमणुक्कोसपएसियस्स खधस्स दव्बद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए छट्टाण--बिहए, ओगाहणह्याए चउद्घाणविहए, ठिईए चउद्घाणविहए, वण्णाइअद्घफासपज्ज-चेहि य छट्ठाणविडए ॥ २७६ ॥ जहन्नोगाहणगाण भते ! पोग्गलाण पुच्छा । नोयमा ! अणता० । से केणट्रेण० १ गोयमा ! जहन्नोगाहणए पोग्गले जहन्नोगाहण-गस्स पोग्गलस्स दव्वड्डयाए तुल्ले, पएसड्डयाए छड्डाणविडए, ओगाहणड्डयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणविडए, वण्णाइउवरिल्नफासेहि य छट्ठाणविडए। उक्वोसोगाहणए वि एव चेव, नवर ठिईए तुल्ले । अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगाण भते ! पोग्गलाण पुच्छा । गोयमा । अणता० । से केणहेण० १ गोयमा । अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अजहन्नमणुकोसोगाहणगस्स पोग्गलस्स दव्वद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविष्ण, ठिईए चउद्वाणविष्ण, वण्णाइसद्वनासपज्जवेहि य च्छाणविहिए ॥ २७७॥ जहन्निठिइयाण भते ! पोग्गलाण पुच्छा । गोयमा ! अणता । से केण्ड्रेण र गोयमा । जहन्निठिइए पोग्गले जहन्निठिइयस्स पोग्गलस्स दन्वद्वयाएं तुह्ने, पएसद्वयाएं छद्वाणविडए, ओगाहणद्वयाएं चउद्वाणविडए, ठिईए तुहे, वण्णाइअहुफासपज्जवेहि य छहुाणविडए । एव उक्वोसिटिइए वि । अजहन्नमणु-क्षोसिठ्इए वि एव चेव, नवर ठिईए वि चउट्ठाणविडए ॥ २७८॥ जहन्नगुणकालयाण भते ! पोग्गलाण केवहया पजावा पन्नता ? गोयमा ! अणता ः। से केणहेण ० ? गोयमा ! जहन्रगुणकालण् पोग्गले जहन्नगुणकालयस्स पोग्गलस्स दव्बद्वयाए तुहे, पएसहयाए छ्टाणविडिए, ओगाहणहुयाए चउहाणविडिए, ठिईए चउहाणविडिए, कालवन्नपज्जवेहिं तुष्टे, अवसेसेहिं वन्नगधरसफासपज्जवेहि य छट्टाणविंए, से तेणहेण गोयमा ! एव वुच्चइ---'जहन्नगुणकालयाण पोग्गलाण अणता पज्जवा पन्नता' । एव २४ सुत्ता०

3 .

उरोवपुणचल्ला में। भारतमाञ्जनोवपुणमालप् में एवं भार नवरं सहाने इहान-वरिए। एवं बहा वाध्यवप्रमाणं वाध्याना मित्रता तहा संवाध में बनवररए-पराणं वाध्याना भारितयना मात्र भारतमानुद्रोत्यक्ते सहाने हहाजवरिए। सर्वे दिनियोत्त्रमा। ऐसे अमीत्रप्रमा॥ २०९॥ एक्सपेपाए समवर्ष्ट पंचाने विसेत्यपूर्ण समर्था॥

बारस स्टबीसाई समंतरे एगसमय कतो य । उच्चप्रण गरमविदाउर्य व महेन आयरिसा ॥ ९ ॥ गिरवयई में भेरी ! फेक्ट्रव कार्ड बिरहिया सवकाएमें पक्ता है गीवमा ! बहुकेनं एकं समर्थ उद्दोरीयं बारस मुहता । तिरिमगई व मंते ! केन्द्रवं नामं निरद्भिता उनवाएयं पनता है गोयमा ! बहुबेन एनं समये उक्लोसेयं बारस सङ्कता । मनुबर्गा वे भंत । केन्द्रमं कार्छ निरक्षिता उनकाएणं पन्ता ! मोक्सा ! अहरोग एग समर्ग उक्कोरीयं बारस सहता । देवगई य मंते ! नेवर्य नाम निरिक्षेत्रा उत्तराएणं पत्तरा ! गोयमा ! प्राह्मेणं एवं समयं जानेरीमं बारस मुहुण । शिक्षिगई में अंत । केवाब कार्स निरक्षिया शिव्याकाए प्रश्रश रै गोयमा ! बाह्ये में को समये उक्कोरोने क्रम्मासा ॥ १८ ॥ गिरवगई न भंते । फेन्सून नार्क निर दिना उन्दश्नाए पन्ता ! गीयमा ! बहुनेयं एकं समय उक्तीरेण शारस सुहुता । दिरियगई भी मेरे ! केमहर्य कालं निरक्षिया जम्बद्दणाए एक्सा है योजमा ! कहवेर्य एगं समय उक्तरेज बारस मुद्रता । मणुक्पई वं भीते । केनरमं कार्स निर्द्धिक बम्बद्दणाए पसता है गोजमा । जहसेनं एगं समयं उक्तेसेचं बारस महता । देवनी भ मंत ! केक्ट्रय शार्क निरहिया तज्यात्रणाए पणता ! गोयमा ! अहतेर्य एग समर्थ रुक्मेरिकं कारस <u>शह</u>ता ॥ १ वार्र ॥ १८९ ॥ रक्क्प्पशासक्तिकेस्त्रज्ञा वं संसे ! केवरनं कामं बिरब्रिया सववाएणं वकता है गोनमा । बहुवेचे एर्ग समये उद्योगेर्य अडम्मीर्छ सुद्वता । छद्ररप्पमापुरविनेरहमा नं मेते । केवहनं कार्व विरक्षिना स्वया-एकं प्रवत्ता ! शोयमा । अवकेनं एमं समये उद्देशेनं सत्तर्मवितायि । नास्त्रप्र भागुनिनेरहसा व भेते । केनहर्य कार्स विरक्षिता उपनाएलं पनता । पांस्सा अपने एम समय उन्नेरेणं कहमार्थ । वैक्रप्यमापुरविनेरह्या ने मेरे । केवर्व कार्स निर्देशिया उननाएन पनता व गोनमा जब्बेण एगं समयं उड़ीरेण साथ । श्वमणमापुरक्रिनेरहमा नै मंदे ! क्षेत्रक्ते कार्क विरक्षिमा उपवादने पत्तरा ! गोवमा ! अद्देश्यं एत समयं उड़ारेशेलं दो माचा । तमापुडनिनेरह्ना वं मेते । केन्द्रनं कालं सिरद्विना उन्हाएमं पनता <sup>ह</sup> गोसमा । जहनेनं एगं समयं उन्होरेनं नतारि मासा । अवसत्तमापद्दविजेरहेया में गेरो ! नेनहमें कार्स निरक्षिया जननाएने पत्तता रे ग्रेजमा !

जहनेणं एग समय, उद्योगेणं छम्मासा ॥ २८२ ॥ असुरकुमारा णं नंत ! केवडयं कालं विरहिया उवताएणं पन्नता <sup>२</sup> गोयमा । जह्नेषण एग समय, उन्होंसंर्णं चडच्चीसं मुहुत्ता । नागनुमारा ण भंत । केनदय कालं विरहिया उचचाण्णं पनता ? गीयमा ! जहन्नेणं एग यमय, उन्नोरंणं चउव्वीसं सुहृता । एवं युत्रन्नरुमाराणं विज्रुसुमाराण अस्मिनुमाराण धीवकुमाराण दिसिकुमाराण उद्यक्तिकुमाराणं वाउकुमाराण थणिय-कुमाराण य पत्तेयं जर्षाण एग समय, उद्योरंण चउध्वीय मुहुता॥ १८३॥ पुर्वविद्यादया णं भने ! केयदयं द्यालं विरक्षिया उचवाएणं पद्मचा 2 गीयमा ! अणु-समयमिरिहियं उपवाएण पतता । एउं आउकाटया वि नेउकाटया वि वाउकाटया वि वणस्यहकाड्या वि अणुसमयं अविरहिया उचनाएणं पन्नता ॥ २८४ ॥ वैर्देटिया ण मने ! केवड्यं काळं विरहिया उववाएण पन्नता ? गोयमा ! जहफेणं एग समयं, उद्यांग्रंण अनोसुहत्त । एवं तर्रंदियचर्रा विया ॥ २८५ ॥ यसुन्द्रिमपंचिष्यतिरिक्य-जीणिया ण भने ! केन्द्रयं काल विरहिया उथनाएणं पद्मता ? गोयमा ! जहनेण एगं समयं, उफ्रोनेण अनोसुहुत्त । गब्भात्रपंतियपचेदियतिरिक्याजोणिया ण भंते ! केयदयं काल निरहिया उवनाएण पन्नता र गोयमा । जहभेणं एगं समय, उफ्रीसेणं वारस मुहुना॥ २८६॥ संमुच्छिममणुरमा ण भने ! फेवडच काळं विरदिया उच-वाएणं पन्नना ? गोयमा ! जहनेण एग समयं, उछौरंण चडव्यीमं सुहत्ता । गव्य-चफ़ित्यमणुरमा ण भेते । केन्द्रयं काल निरहिया उचनाएणं पन्नता <sup>१</sup> गोयमा । जहफेण एग समयं, उद्योसेण बारम सुद्धा ॥ २८७ ॥ बाणमंतराणं पुच्छा । गोयमा ! जहरेंगणं एम यस्य, उद्धांमेण चड्ट्वीयं मृह्ता। जोट्खियाणं पुच्छा। गीयमा! जहरेंगणं एग समय, उफोसेणं चउच्चीस सुहिता। सोहरंगे कर्षे देवा ण भंते ! केनस्यं काल जिरहिया स्ववाणणं पत्रना ? गोयमा ! जहांबेणं एम समयं, स्प्रोसंणं चडव्यीपं मुहुत्ता। हैमाणे कप्पे प्रवाणं पुच्छा। गीयमा! जहंनण गग समर्थ, रफोरण चडच्चीर्य सुहसा। सर्वयुमारे क्रपं देवार्ण पुरुखा। गोयमा। जहस्रेण एग समय, उद्योसंणं पत्र राष्ट्रदियाह वीसाह सृहुताह । साहित्र करपे प्रयाणं पुन्नता । गोयमा ! जहरेनण एम समय, उद्योगेण घारम गर्हिस्याई दम मृहसाट । वंसरीए ट्याण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण एगं समयं, उद्योगेणं शहनेत्रीयं सहीत्यारं । र्छनगद्रपाण पुच्छा । गोयमा ! जर्ह्यणं चग समयं, उद्योगेणं पणयार्हासं राईदियाई । मनायुक्तंत्राण पुच्छा । गोयमा । जहांत्रणं एगं समयं, उक्षोगंणं खगीद राहेदियाहं । महस्मारे दयाणं पुच्छा । गीयमा । जहभेण गग समय, उपीमेण राहदियसय । आणयंद्रयाण पुन्छ। । गोयमा । जद्वेषण कम समयं, उद्योसेण संखेजा मासा ।

पासमधेशार्च प्रचार । गोनमा । बहतेण एवं समर्थ उक्तारेज संदेखा सामा । आरमदेवाजं पुच्छा । गोममा । जहरोजं एर्ग समर्थ चक्रामेर्च संस्मिता वासा । अभागद्याण पुष्पम् । गीयमा । बहुनेचं एगं समर्थ उदासेनं होस्तिना वासा । दिद्विमगेनिजार्थं पुच्छा । गोयमा ! जहकेर्यं एगं समर्थं उक्कोर्स्यं संधिजाहं वाग-प्रयार्थ । मजिससंगित्रकार्य पुत्रका । गोबसा । अहबेर्ण एर्ग समर्थ उद्योक्षेत्रं संचित्र जारं बानसङ्स्यातं । स्वतिसंगिविज्ञाण पुष्का । गांत्रमा । अङ्गोर्च धूर्य समर्थ उद्योरियं संध्यान्तं वाससमसङ्ख्याहं । विजयनेवर्यसम्बन्धपराजिलकार्याः चण्छा। गोरमा । बहसेगं एनं समयं उड़ोरेज करंबेजं वासं । सन्बद्धसदगढ़वा सं मेठ । केन्द्रवं कार्स दिरहिया उपराएक प्रवत्ता है गोममा । आह्रोबर्य एनं समर्थ सहीसेवं परिकासिमस्य संदिजनमार्ग n २८८ n शिक्का में मेरे ! फेक्क्स करके बिरहिया निज्ञासाए प्रवत्ता है गोबमा । जहनेर्स एर्ग समर्थ उक्नोतेर्ग स्टमाना ॥ १८९ ॥ रक्षणमापुरुविनेरहका में भीते । केक्ट्रबं कार्ड विरक्षिया उच्छह्याए पहाचा ! गोक्सा । बहुतेर्ण एवं समयं उन्नोसेष-चउम्मीतं सहता । एवं शिद्धवा उन्नद्दम् नि भानितम्बा जान बनुतारोगगङ्गती नगरं चाहरितनेमानिएड 'नयर्गडी अविकासो कारकारे ॥ १ बार्र ॥ २९ ॥ नेटाया में मंत्र । 🎏 संतर उपवर्णत निरंतरं सक्वजाति है गोजमा । संतरं पि बक्वजांति निरंतरं पि सक्वजांति । निर्दे कराजीनिया के भेत ! कि सेतर सम्बर्धित निरंतर जनाजीते । गोजमा । संतर पि रक्कांनि निरेत्तरं पि जनामंति । महत्त्मा में मेत ! कि चंतरं रुक्कांनि निरंदरं दवरबंदि । गोयमा । संतरं पि बचरबंदि निरंतरं पि उचनबंदि । देवा वं भेते । कि संतर तबबजाति जिरतर तबबजाति । गीयमा । संतर पि पवबजानि जिरतर पि रकारबंदि । १९९ । रक्षप्यमापद्रभिनेरहमा में मेरा कि संदर्ध सकारबंदि मिरतरं उदार्जित । गोयमा । संतरं पि अववर्जित निरंतरं पि सरकांति । एवं आप भद्रेततमाप् संदरं पि उनाजीति निरंतरं पि उपचानित ॥ १९१ ॥ अग्ररमुमारा म क्षेत्र से संत ! कि संतर तकामंति निरंतर उराजनि ! योगमा ! सतरं पि उदबर्जनि निरंहरं पि जनवर्जनि । एवं जान यणिनजुमारा संतरं पि बनरजनि मिर्नरंपि उक्तजंति ॥ १९३ ॥ पुत्रविशास्त्रा व शेल । कि संतरं उक्तजंति निर्देश समाजीत । गीमसा । गो मंतर समाजीत निरंतर समाजीत । एवं जान क्सरमाज्ञातमा नी संतरं अववर्जित निरंतरं सवार्जित । नेरंदिया ने मंति । कि सनरे उपरवंति निरंतरे उपवजेति हैं गीयमा । संगरे पि उपवर्जित निरंतरे पि तक्वजंति । एवं जार पंकितियतिरिक्ताजीभिया ॥ १ ४ ॥ संभरना र्ज संते ! 👫

सतर उनवजाति, निरतर उनवजाति <sup>२</sup> गोयमा । सतर पि उनवजाति, निरतरं पि उववजाति । एव वाणमतरा जोइसिया सोद्दम्मीसाणसणकुमारमाहिंदवभलोयलतग-महासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणमुयहिद्धिमगेविज्जगमज्झिमगेविज्जगउवरिमगेविज्ज-गविजयवेजयतजयतअपराजियसव्बद्धसिद्धदेवा य सतर पि उववज्जति निरतर पि खववजाति ॥ २९५ ॥ सिद्धा ण भते ! किं सतर सिज्झति, निरंतर सिज्झति ? गोयमा! सतर पि सिज्झति, निरतर पि सिज्झति ॥ २९६ ॥ नेरइया ण भते! कि सतरं उव्बद्दति, निरंतर उव्बद्दति <sup>२</sup> गोयमा <sup>।</sup> सतरं पि उव्बद्दति, निरतर पि उव्बद्दति । एव जहा उववाओ भणिओ तहा उव्वदृणा वि सिद्धवज्ञा भाणियव्वा जाव वेमाणिया, नवर जोइमियवेमाणिएसु 'चयण'ति अहिलावो कायव्वो ॥ ३ दार ॥ २९७ ॥ नेरइया णं भंते ! एगसमएण केवइया उववर्जात 2 गोयमा ! जहन्नेण एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेण सखेजा वा असखेजा वा उववज्जति, एव जाव अहेसत्त-माए ॥ २९८ ॥ असुरकुमारा ण भते । एगसमएण केवइया उववजाति १ गोयमा । जहन्नेण एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं सखेजा वा असखेजा वा । एवं नागकुमारा जाव थणियकुमारा वि भाणियन्वा ॥ २९९ ॥ पुढविकाइया ण भंते ! एगसमएण केवइया उववजाति ? गोयमा ! अणुसमय अविरहिय असखेजा उवव-जाति, एव जाव वाउकाइया । वणस्सहकाइया ण भते ! एगसमएण केवइया उवव-जित १ गोयमा ! सद्वाणुववाय पहुच अणुसमय अविरहिया अणता उववजाति, परहाणुनवाय पहुन्व अणुसमय अविरहिया असखेजा उववजाति । बेइदिया ण भंते ! एगसमएण केवइया उववर्जात १ गोयमा । जहन्नेण एगो वा दो वा तिन्नि वा. उक्कोसेण सखेजा वा असखेजा वा। एवं तेइदिया चउरिंदिया। समुच्छिमपंचिं-दियतिरिक्खजोणिया गब्भवक्कतियपचिंदियतिरिक्खजोणिया समुच्छिममणुरसा वाण-मतरजोइसियसोहम्मीसाणसणकुमारमाहिंदवभलोयलतगमहासुक्कसहस्सारकप्पदेवा एए जहा नेरइया । गञ्भवक्कतियमणूसआणयपाणयआरणाच्युयगेवेजागअणुत्तरो-ववाइया य एए जहन्नेण इक्को वा दो वा तिश्चि वा, उक्कोसेण सखेजा उववजाति, न असखेजा उववर्जित ॥ २००॥ सिद्धा ण भते । एगसमएण केवइया सिज्झति १ गोयमा ! जहन्नेण एक्को वा दो वा तिनि वा, उक्कोसेणं अद्वसय ॥ ३०१ ॥ नेरइया ण भते ! एगसमएणं केवइया उव्वदृति 2 गोयमा ! जहन्नेणं एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा उव्वदृति, एव जहा उववाओ भणिओ तहा उन्वदृणा वि सिद्धवज्जा भाणियन्वा जाव अणुत्तरोववाइया, णवर जोइसियवेमाणियाणं चयणेण अहिलावो कायव्वो ॥ ४ दार ॥ ३०२ ॥ नेरइया ण भते ! कओहिंतो सक्तर्जिति कि नेरत्रपृष्टितो सक्तर्जित विरिक्तामोणपृष्टितो सक्तर्जित सक्तरी हितो सम्बर्जित वेबेहितो सम्बर्जित है गोयमा । नो नेस्स्प्रहितो जन्मजात सिरि कवानीमिएहिंतो उनकर्णति मभुस्सेहिंतो उनकर्णति नो वेनेहिंतो उनकर्णति । मह तिरिक्तावानिएक्टितो उपकर्णति कि पूर्णिदियतिरिक्तावोनिएक्टितो सम्बर्जति वहरिक यतिरिक्ताकोशिएवितो सम्मर्जित देवस्थियतिरिक्याकोशिएवितो सम्बर्जात अवस्थि स्वितिकत्व कोम्पिएडिंदो उनकर्जितः पंजिषिकतिरिक्ताओकएडिंदो सम्बर्जित १ गोयमा । नो एगिरिय नो चेईबिन नो वेईबिय नो चर्रियक्तिरिक्टाबाक्रिएरिय एक्कानि पंजितियातिरिक्यजोनिएवितो चनकाति । वह पंजितिवतिरिक्यजोनिए-हिंतो जनकारि कि चक्रवरपैनिवनितिक्ताजीनपृष्टितो जनकारि कामरपैनिव वितिकसंबोधिएवितो सम्बन्धि सम्बन्धि सम्बन्धिवितिरिक्सनीविएवितो सम्बन्धि ! गोवमा ! बसवरपंजियमतिरिक्कवोनिपृत्तिते उदक्रवेति असवरपंचितिमतिरिक् कोविएब्रिटो उनकर्मित काइयरपंत्रियनतिरिक्कावोनिएब्रिटो उनकर्मित ॥ ३ ३ ॥ कड जसवरपंचित्रवादिनिक्शाबोलिएव्रियो उवकार्यात कि एम् विकासकारपंचित्रव तिरिक्यामीमिएसिंती उपकर्माति गण्मान्दंशियमकनर्पनिमित्रितिस्थानोसिएसियो उक्तजांति ! गोवमा ! संमुन्धिमञ्चमरपंत्रितियतिरिक्तावोपिएवितो उव्यक्ति गक्सक्यंदियवक्रयरपंत्रित्रस्तितिस्वतिरिक्ष्याकोनिएहिंतो उक्तकंदि । क्यू संसुविद्यानस् करपंचिविवविरिक्ताकोलिएविवो छनवज्ञतित कि पज्यसमस्याधिकामञ्चलरपंचिविन तिरिक्तानामिए हिंतो उक्तामन्ति अपमाप्तरं मुख्यम् समस्परं विद्यातिरे स्वामीन प्रतितो सम्बर्जित ! गोयमा ! प्रजातन्त्रेशक्रिमकस्यरप्रिविधानिश्चनान्त्रेश्चार्या संबद्धान्ति मी सप्रवत्तनसंगुन्धिमनस्पर्पनिदिवतिरिक्सनोविएक्षेत्रो स्वदर्जीति । क्क सम्मानकंतिन समस्यरपंतियिततिरिक्तकोतिपृष्टियो स्वक्तमंति 🛳 प्रजनसम्बन्धाः क्रकेशिक्षकार पंचिति ग्राहिरिक्षको निपतियो । स्वयंत्रीते । सप्रमाराज्यको निजनक जन्मेनिकियानिविकासोविकासोविकासी । संस्थाति । स्थानसम्बद्धाः स्थानसम्बद्धाः चेनितियतिविक्तानोक्षिपवितो स्वक्तांति को अपन्तत्वस्थानम्बद्धतिकात्वसार्वनिविधः क्षित्रका वोनिएहिंदी स्वकर्णीत ॥ १ ४॥ भन्न यव्यवस्पेनिमयदिश्वस्त्र वोनिएहिंदी नक्षाकंति कि करणग्रामस्यरपंतिविवतिरिवक्षकोतिपक्षितो सववकति परिसप्यणान अरपंकिरियतिरिक्षाओनिएविंतो छक्ताओति । योशसा । चरुप्पत्रश्रसम्दर्शनिति⊀ क्रीक्यकोमिएविंदो जनगणति परिसन्त्रकानरपैविदियतिरिक्यकोनिएविंदो वि स्वक्रांदि । वह वरुप्पवक्रवरपणिविवतिरिक्ताकोकिएरितो उक्कांति कि एँस किसोतितो स्वयंति गरभवदेतिएवितो अवस्यंति ! योगमा ! समुक्तिमचरप्पन-

यलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववजाति, गब्भवक्कतियचउप्पयथलयरपिंच-दियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जति । जइ समुच्छिमचउप्पयथलयरपंर्चिदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उववजाति किं पजातगसमुच्छिमचउप्पयथलयरपर्चिदियतिरि-क्खजोणिएहिंतो उववजाति, अपजात्तगसमुच्छिमचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्ख जोणिएहिंतो उववर्जाति १ गोयमा । पजत्तगसमुच्छिमचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्ख-जोणिएहिंतो उववज्जति, नो अपज्जत्तगसमुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्ख-जोणिएहिंतो उववज्जति । जइ गब्भवक्कतियचउप्पयथलयरपर्चिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उननजन्त कि सखेजनासाउयगब्भवकंतियचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए-हिंतो उववज्जन्ति, असखेज्जवासाउयगच्भवक्षतियचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्ख-जोणिएहिंतो उववज्जन्ति ? गोयमा ! सखेजवासाउएहिंतो उववज्जन्ति, नो असखेज-वासाउएहिंतो उववजान्ति । जइ सखेजवासाउयगञ्भवक्षतियवउप्पयथलयरपर्चिदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उववजान्ति किं पजानगसखेजवासाउयगव्भवक्षतियन्वउप्पय-थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिएर्हितो उववज्जन्ति, अपज्जत्तगसखेज्जवासाउयगब्भवक्क-तियचउप्पयथल्यरपर्चिदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्रन्ति <sup>२</sup> गोयमा ! पज्रतेर्हितो उनवज्जन्ति, नो अपज्जत्तसुखेजवासाउएहिंतो उववज्जन्ति । जइ परिसप्पथलयर-पचिंदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्रन्ति कि उरपरिसप्पथलयरपचिंदियतिरिक्ख-जोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, भुयपरिसप्पथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उव-वजन्ति १ गोयमा ! दोहिंतो वि उववजन्ति । जइ उरपरिसप्पथलयरपचिन्दिय-तिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति कि समुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपचिन्दियतिरिक्ख-जोणिएहिन्तो उनवजन्ति, गञ्भवक्कतियउरपरिसप्यथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिए-हिन्तो उनवज्जन्ति ? गोयमा । समुच्छिमोहिंतो उनवज्जन्ति, गब्भनक्रितएहिंतो वि उववजन्ति । जड समुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उनवज्जन्ति किं पज्जत्तएहिन्तो उनवज्जन्ति, अपजत्तएहिन्तो उनवज्जन्ति <sup>१</sup> गोयमा ! पजनयसमुच्छिमेहिन्तो उववजनित, नो अपजन्तयसमुच्छिमउरपरिसप्यथलयरपचि-न्दियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववजन्ति । जङ् गन्भवक्षतियउरपरिसप्पथलयरपचिन्टि-यतिरिक्खजोणिएहिन्तो उनवज्जन्ति किं पज्जत्तएहिन्तो उनवज्जन्ति, अपज्जतएहिन्तो उनवज्जन्ति र गोयमा ! पजत्तयगब्भवक्षतिएहिन्तो उनवज्जन्ति, नो अपजत्तयगब्भ-वषतियउरपरिसप्पयलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्रन्ति । जइ भुयपरि-मप्पथलयरपिचन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववजन्ति कि समुच्छिमभुयपरिमप्प-थलयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववजनित, गन्भवद्गतियभुयपरिसप्पथ- क्रमरपंत्रिन्दियारिरिक्यओणिए**ड्रि**क्तो जनसङ्गन्ति 🖺 गोयमा 📘 दोक्किन्दो : नि उत्तर अन्ति । जर् संसुन्धिमसुयपरियण्यनवरपश्चिन्द्रवविरिक्कवोक्षपृक्षिन्दो उद्यवसन्त कि पञ्जापर्यमुन्धिमभुगपरिसप्पश्चमगर्पनिन्धिनशिक्सजोनिएहिन्दो उत्तरजनि अपन्यत्तवसंगु निक्रमगुमपरिसण्यक्षमर्पैचिन्दियतिरिक्शकोकिएसँठी । उत्तवज्ञन्तिः गोपमा ! पजतप्रिन्तो सगरजन्ति मो अपजतप्रिन्तो समुखन्ति । वह गमन कार्यविवसुमपरिसप्पवसम्पर्पविन्विमतिरिक्षकोनिएविन्दो उवक्रवन्ति कि प्रवास् हिन्तो उपयानित मपमत्तपश्चित्तो उपयानित है गोगमा ( कात्तपश्चित्तो उपर-जन्ति भो भवजाएदिन्तो उक्तजन्ति ॥ १ ५॥ वह बाह्यसर्विनियदिरिक्पवी-विष्**रि**तो उनकर्मति कि संसुक्तिसम्बद्धनएर्वविदिशतिरिक्यजोक्किती उनकर्मति गब्नक्षंतियदाहबरपंचिन्दबतिरिक्यजोमिएहितो स्ववर्जति । तोसमा । बोहिन्दो वि उपन्यन्ति । ऋ संयुष्धिमन्यद्वरपंत्रिन्दिवतिरस्यकोनिएहिन्तो उपन्यति 🎏 प्रजाएदिन्तो स्वर्जनित अपजाएदिन्तो स्वर्जनि । वादमा । प्रजाएदिन्तो उनवर्जितः भी भएजतए**हि**तो उनवर्जित । यह क्षत्रत्यगब्मव्हेश्वयबहस्पर्वविन्धिः मनिरिक्यमोतिएक्किन्तो सनक्षेति कि पंचेजवासाराप्रदेश्या स्ववजीते अस्पेज-बासानप्रदिश्तो स्ववजीते । योगमा । स्वीजवाशावप्रवि तो स्ववजीते नो मस-देखनासारपद्विन्तो उनन्त्रीत । बह संबोधनासारयगरमनदंतियसहयरपैनिन्दन-विरिक्त बोलिएहिन्तो उक्कबति कि पञ्चतपृष्ठिन्तो उक्कबन्ति अपअक्तपृष्ठिन्तो त्ववज्ञान्ति ! गोबमा । प्रजातपृष्ठिन्तो त्ववज्ञान्ति भो अपज्ञातपृष्ठिन्तो त्ववज्ञान्ति ॥ ३ ६ ॥ व्या अनुरसेक्षित्यो उपन्यतित कि संसुव्यासम्बर्धक्रित्यो उपन्यतित श्वमनद्रन्तियस्युत्वेद्विन्दो उपमानन्ति ! यायसा ! नो संसुन्धिमन्त्रे स्टब्स बजन्ति गरमवर्षतिवसम्प्रसेक्षिन्तो उपवकत्ति । व्य गरमवर्षतियसगुरसंविन्दौ त्रवज्ञन्ति कि क्रम्ममूमिगयव्यावर्त्रतिवयणुरहेड्गितो सवक्रमन्ति आक्रममूमिगगव्य वर्षातियसपुरतिक्षां जनवळ्ति अंतरवीकागव्यावर्षतियसपुरतेष्ट्रितो उपनजन्ति । गोबमा । कम्मभूमिगगरमार्कातियम् इस्तिहरूतो जनवज्ञन्ति जो क्षत्रमस्यमिगगरम वर्षतियमगुरसंदिन्ती जनकवान्ति नी श्रीतर्शीवमगण्यस्येतियमगुरसंदिन्तो उन्त अपित । अह भरमभूमिगगस्मवद्वतिनमञ्जूरविक्रिश्तौ उनवजनित हि स्पेजनासाडए-क्षित्रनो तथरअन्तिः अर्वकेजवासाग्रपृष्टिन्तो तक्वजन्ति <sup>व</sup> गोवलः । संबेजरागार गाउनमामिगायकास्य निवसक्योद्धिन्तो सम्बन्धित, मो क्यंबेजनामास्य द्वरागस्मान्द्रतियस्तुरसेविन्तो उन्दर्जन्ति । यह संवेजनागावयस्माभूनिगयस्मान् विकाससमितिन्तो अवनामन्ति कि प्रमोदिन्तो उन्हामन्ति अपमोदिन्तो उन्हान

ज्जन्ति <sup>2</sup> गोयमा! पजत्तप्रहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपजत्तप्रहिन्तो उववज्जन्ति । एव जहा ओहिया उववाइया तहा रयणप्पमापुढविनेरइया वि उववाएयव्वा ॥ ३०७ ॥ सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा । एए वि जहा ओहिया तहेवोववाएयव्वा, नवरं समुच्छिमेहिन्तो पिडसेहो कायव्वो । वाछयप्पभापुढिवनेर-इया ण भते ! कओहिन्तो उवत्रज्ञन्ति० १ गोयमा । जहा सक्करप्पभापुढविनेरइया, नवर भुयपरिसप्पेहिन्तो पडिसेहो कायव्वो । पकप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा वालुयप्पभापुढविनेरइया, नवर खहयरेहिन्तो पिडसेहो कायव्वो । धूमप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा पकप्पभापुढविनेरइया, नवरं चउप्पएहिन्तो वि पडिसेहो कायव्वो । तमापुढविनेरइया ण भते ! क्लोहिन्तो उववज्जिति० व गोयमा! जहा धूमप्पमापुढविनेरइया, नवरं थलयरेहिन्तो वि पिंडसेहो कायव्वो । इमेण अभिलावेण जइ पिचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, किं जलयरपंचिन्दिएहिन्तो उववज्जन्ति, थलयरपंचिन्दिएहिन्तो उववज्जन्ति, खद्दयरपचिन्दिएहिन्तो उववज्जन्ति <sup>१</sup> गोयमा । जलयरपचिन्दिएहिन्तो उनवज्जन्ति, नो थलयरेहिन्तो॰, नो खहयरेहिन्तो उनवज्जन्ति ॥ ३०८ ॥ जइ मणुस्सेहिन्तो उववजान्ति किं वम्माभूमिएहिन्तो उववजान्ति, अकम्मभूमिएहिन्तो उनवज्जन्ति, अतरदीवएहिन्तो उनवज्जन्ति <sup>२</sup> गोयमा! कम्मभूमिएहिन्तो उनव जन्ति, नो अक्रमभूमिएहिन्तो उववजान्ति, नो अतरदीवएहिन्तो उववजन्ति जड कम्मभूमिएहिन्तो उववजान्ति किं सखेजवास।उएहिन्तो उववजान्ति, असखेज-वासाउएहिन्तो उववज्जन्ति <sup>२</sup> गोयमा ! सखेजवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति, नो असखेजवासाउएहिन्तो उववजान्ति । जड सखेजवासाउएहिन्तो उववजान्ति कि पजत्तएहिन्तो उववजन्ति, अपजत्तएहिन्तो उववजन्ति 2 गोयमा ! पजत्तएहिन्तो उववजन्ति, नो अपजत्तएहिन्तो उववजन्ति । जड पजत्तयसखेजवासाउयकम्म-भृमिएहिन्तो उववज्रन्ति कि इत्थीहिन्तो उववज्रन्ति, पुरिसेहिन्तो उववज्रन्ति, नपुसएहिन्तो उववज्रन्ति <sup>2</sup> गोयमा । इत्थीहिन्तो उववज्रन्ति, पुरिसेहिन्तो उव-वज्जन्ति, नपुसएहिन्तो वि उववज्जन्ति । अहेसत्तमापुढविनेरइया ण भते ! कथो-हिन्तो उववज्जन्ति । गोयमा । एव चेव, नवर इत्थीहिन्तो पिटसेहो कायव्वो । "अस्सन्नी खलु पटम दोच पि सिरीसवा तडय पक्खी। सीहा जन्ति चर्डींथ उरगा पुण पचिम पुढिव ॥ छिट्टं च इत्थियाओ मच्छा मणुया य सत्तमि पुटिव । एमा परमोवाओ वोद्धव्वो नरमपुडवीण" ॥ ३०९ ॥ असुरसुमारा ण भते ! क्ओिहितो उनवज्जन्ति • १ गोयमा ! नो नेरडएहिंतो उनवज्जन्ति, तिरिक्खजोणिएहिंतो



उववजाति । जइ भवणवासिदेवेहिन्तो उववजाति कि असुरकुमारदेवेहिंतो उ० जाव थणियकुमारदेवेहिंतो उववजाति १ गोयमा ! असुरकुमारदेवेहिंतो वि उववजाति जाव श्राणियकुमारदेवेहिंतो वि उववजाति । जङ् वाणमतरदेवेहिन्तो उववजाति किं पिसा-एहिंतो उ० जाव गधन्वेहिंतो उववज्जति १ गोयमा । पिसाएहिंतो वि उ० जाव गध-व्वेहिंतो वि उववजाति । जइ जोइसियदेवेहिंतो उववजाति किं चदविमाणेहिंतो उववजाति जाव ताराविमाणेहिंतो उववजाति <sup>२</sup> गोयमा ! चदविमाणजोडसियदेवेहिंतो वि उ॰ जाव ताराविमाणजोइसियदेवेहिंतो वि उववजाति । जइ वेमाणियदेवेहिंतो उनवज्जति किं कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो उनवज्जति, कप्पातीतवेमाणियदेवेहिन्तो उववजाति १ गोयमा । कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो उववजाति, नो कप्पातीतवेमाणि-यदेवेहिंतो उववजाति । जइ कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो उववजाति किं सोहम्मेहिंतो उ० जाव अच्चुएहिन्तो उववजाति <sup>२</sup> गोयमा! सोहम्मीसाणहिंतो उववजाति, नो सणकुमार जान अच्चुएहिंतो उनवजंति । एव आउकाइया वि । एव तेउवाउ-काइया वि, नवर देववजीहिंतो उववजाति । वणस्सइकाइया जहा पुढविकाइया । बेइदिया तेइदिया चउरिंदिया एए जहा तेउवाऊ देववजेहिंतो भाणियव्वा ॥३१४॥ पचिंदियातिरिक्खजोणिया ण भते ! क्लोहिंतो उववज्जित किं नेरइएहिंतो उवव-जित जान देनेहिंतो उननजिन्त १ गोयमा ! नेरइएहिंतो नि०, तिरिक्खजीणिएहिंतो वि०, मणुस्सेहितो वि०, देवेहितो वि उववज्जन्ति । जइ नेरहएहितो उववजाति कि रय-णप्पभापुढविनेरइएहिंतो उ० जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उनवजाति १ गोयमा ! रयणप्पभापुढिनेनरएहिंतो वि उववजाति जाव अहेसत्तमापुढिनेनरइएहिंतो वि उवव-ज्जित । जइ तिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जिति किं एगिंदिएहिंतो उववज्जित जाव पर्चिदिएहिंतो उनवजाति १ गोयमा ! एगिदिएहिंतो वि उनवजाति जाव पर्चिदिए-हितो वि उववजाति । जइ एगिंदिएहिंतो उववजाति किं पुढिवकाइएहिंतो उववजान्ति-एवं जहा पुढिविकाइयाण उववाओ मणिओ तहेव एएसिं पि भाणियव्यो, नवर देवेहिंतो जाव सहस्सारकपोवगवेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जति, नो आणयकपो-वगवेमाणियदेवेहिंतो जाव अश्वुएहिंतो उववजाति ॥ ३१५ ॥ मणुस्सा ण भते ! कओहिंतो उववजाति किं नेरइएहिंतो उववजाति जाव देवेहिंतो उववजाति 2 गोयमा ! नेरङएहिंतो वि उववजाति जाव ढेवेहिंतो वि उववजाति । जङ नेरङ्एहिंतो उनवज्जति कि रयणप्पभापुडविनेरइएहिंतो उनवज्जति, सक्षरप्पभापुडविनेरइएहिंतो उववजीत, वालुयप्पभापुढविनेरङएहिंतो०, पक्ष्पभा० नेरङएहिंतो०, बूमप्पभा०-नेरङएहिंतो॰, तमप्पभा॰नेरङएहिंतो॰, अहेसत्तमापुडविनेरटएहिंतो उववजाति १

य उनपाओं काक्को जाव कप्पातीशकेमानिकसम्बद्धशिक्षकेत्रेती वि चनकानेकमा B २९६ n बार्ग्मतरदेवा जै अते । क्लोहिंतो उववर्जित कि नेरहएहिंतो दिरिक्तवामिप्रतिते स्थानेतिते वेचेवितो तवनवति । गोसमा । बेदिना ममुख्यमारा उनकामित देहिन्तो बाजसन्वरा उनकामियम्बा ॥ ३९५ ॥ ग्रीशीना देश क भंदि । क्रोडितो अवक्रमन्ति । गोयमा ! एवं बेव मर्बार समुन्किमामसंबि-जनायात्यबङ्गरपंचित्यदिरिक्चवोवितक्वेहितो अंतरशैक्त्यस्वकेहितो उक्क जानेराच्या ॥ १९८ ॥ बेगानिया चं शंते । क्रमोद्वीतो उपवज्रति कि नेरहपहिंगे विरित्तकारोमिएव्रितो स्टास्टेव्हितो वेबेहितो उवकम्पन्ति ह गोनमा ! जो बेर इएईंतो उदार्जित पंचित्रयतिरिक्यकोणिएईंतो उदक्केत समुस्तेईंतो स्व वर्जित जो वेदेहिंतो उद्दरजति । एवं चोहम्मीसाजगदेश वि भामितना । एवं सर्वेडमारदेवा वि मानियामा नवरं अवंशेक्यासास्यक्रकम्ममूमगक्केद्विती वर्षः जाति । एव जाद सहस्सारकम्योवधवेमानियदेवा मानिवन्ता । शायवदेवा मं संते ! कमोदितो उत्तर बंदि कि नेराएकियो पश्चिवविधिकक्कोशिएकियो महस्ते हिंतो देवेहिंठो उपस्थिति ! गोयमा ! गो नेरहपहिंतो उपस्थिति नो निरिन्यसी-मिएबिटो सबवर्जित मणुस्सेबिठो सबवर्जित यो बेबेब्वेटो सबक्जेति । बद महस्से-हितो उन्दर्जित कि संगुल्किममञ्जूरोहिती गव्यक्षंतियमञ्जूरोहितो स्वयंति ह गोममा । प्रकारप्रतिकम्मनुस्रेहितो नो संमुख्यम्म्युस्रेहितो उदयजेति । वह गक्सवज्ञतियमणुरसेहिंतो सबवज्ञनि कि कम्मभूमिगेहिंती अस्मसभूमिगेहिंदी अतररीकोहितो उवक्अंति ! गोयसा । को अक्रममृक्षिगेहितो यो अहररीवगेहिती उद्यासि वस्मासूरियाग्यस्यक्तिवस्युरहेर्देतो उद्यवस्ति । यह कस्मासून्यायस्य वकंतिकारण्हेहितो उपवर्जाति कि संदेशवासाउपहितो कर्सकेशवासाउपहितो उववज्ञति ! गीममा ! सक्षेत्रवासाहएहितो नो अक्टोब्रगसाहएहिंठो उववज्ञिति । का सक्तेजनासाटयकमभूमागण्यवद्यतिमन्त्रस्ति वदक्रति कि प्रवत्तप्रिती उन्दर्जति अपज्ञतपृद्धितो उददर्जति । पोयसा । प्रजाएद्वितो उददज्जीता से

अप्रजाएक्नितो उवरजेति । वह एजाएँबेजवासाउयस्थाम्मायस्माईतिव

मणुस्सेहितो उववजनित किं सम्मिह्टिपजतगसखेजवासाउयकम्मभूमगेहिन्तो उव-वजन्ति, मिच्छिद्द्रिपज्जत्तगेहिंतो उववजन्ति, सम्मामिच्छिद्दिप्वजत्तगेहिंतो उवव-जन्ति <sup>१</sup> गोयमा ! सम्महिद्वीपजत्तगसखेजवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कतियमण्से-हिंतो उनवजन्ति, मिच्छिद्दिष्टीपजत्तगेहिन्तो उनवजन्ति, णो सम्मामिच्छिद्दिष्टिपज-त्तएहिन्तो उववज्रन्ति । जइ सम्मिद्दृष्टीपजत्तगसखेजवासाउयकम्मभूमगगञ्भवद्गतिय-मणूसेहिन्तो उववजाति कि सजयसम्माहिद्वीहिन्तो॰, असजयसम्माहिद्वीपज्जत्तएहिन्तो॰, सजयासजयसम्मिह्डीपजत्तसखेजवासाउएहिन्तो उववजाति <sup>१</sup> गोयमा ! तीहिंतो वि उनवजाति । एव जाव अमुओ कप्पो । एव चेव गोविजागदेवा वि, नवरं असजय-सजयासंजया एए पिडसेहेयव्या । एवं जहेव गेविज्जगदेवा तहेव अणुत्तरोववाइया वि, णवरं इम णाणत्त सजया चेव । जइ सम्माद्दिष्टीसजयपज्जत्तसखेज्जवासाउयकम्म-भूमगगबभवक्षतियमणूसेहिन्तो उववजाति किं पमत्तसजयसम्मिह्डीपज्जत्तएहिन्तो०, अपमत्तसजयसम्मदिद्वीपजात्तएहिन्तो उत्रवजन्ति १ गोयमा ! अपमत्तसजयपजात्तए-हिन्तो उववजाति, नो पमत्तसजयपज्जत्तएहिंतो उववजाति । जइ अपमत्तसजएहिन्तो उववज्जन्ति किं इष्ट्रिपत्तअपमत्तसजएहिन्तो०, अणिड्विपत्तअपमत्तसजएहिन्तो० १ गोयमा । दोहिन्तो वि उववज्जन्ति ॥ ५ दार ॥ ३१९ ॥ नेरइया ण भते । अणतर उन्बद्धिता किह् गच्छिन्ति, किहं उववज्जिति <sup>2</sup> किं नेरइएसु उववज्जन्ति, तिरिक्ख-जोणिएसु उनवज्जन्ति, मणुस्सेसु उनवज्जन्ति, देवेसु उनवज्जन्ति <sup>२</sup> गोयमा! नो नेरइएसु उववज्जन्ति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति, मणुस्तेसु उववजन्ति, नो देवेषु उववज्जन्ति । जइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति किं एगिंदिएसु उववज्जन्ति जाव पार्चेदियतिरिक्खजोणिएमु उववज्जन्ति <sup>2</sup> गोयमा । णो एगिदिएमु उ० जाव नो चउरिदिएसु उनवजन्ति, एव जेहिन्तो उनवाओ भणिओ तेसु उन्बहणा वि भाणि-यन्वा, नवर समुच्छिमेसु न उववजान्ति । एव सन्वपुढवीसु भाणियन्व, नवर अहेसत्तमाओ मणुस्सेसु न उववज्जन्ति ॥ ३२० ॥ असुरकुमारा ण भते ! अणतर उव्विद्या किह गच्छिन्ति, किह उववज्जन्ति <sup>१</sup> कि नेरडएस उ० जाव देवेस उवव-जन्ति <sup>१</sup> गोयमा ! नो नेरइएसु उववजन्ति, तिरिक्खजोणिएसु उववजन्ति, मणुस्सेषु उववज्जन्ति, नो ढेवेषु उववज्जन्ति । जइ तिरिक्खजोणिएसु उव-वजनित कि एगिन्दिएसु उवदज्जिति जाव पचिन्दियतिरिक्खजोणिएसु उत्रव जन्ति <sup>२</sup> गोयमा ! एगिन्दियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति, नो वेइदिएसु उ० जाव नो चर्डारेंदिएस उनवज्जन्ति, पचिंदियतिरिक्खजोणिएस उनवज्जन्ति । जइ एगिन्दि-एस उववज्जन्ति कि पुटविकाङयएगिन्दिएसु उ० जाव वणस्सइकाइयएगिन्दिएसु उवव-

नो तेवकार्एषः नो बातकार्एषः तबबज्ञन्ति वगरसर्वार्षः वबबज्ञन्ति । स् पुरिकेशस्परः उदयमन्ति कि सुहुमपुरिकास्पृतु उपयमन्ति वामरपुरिकेनसप्त चनकारि ! गोनमा ! नामरपुत्रविकात्त्वसु उनकारि शो सङ्गपुत्रविनास्प उन्दर्जित । यह बायरपुरविद्वाहएस स्वत्रज्ञति कि पञ्चतप्रवाहरपुरविश्वाहर उदबर्जिति अपञ्चलगमायरपुर्वावेशकृत्सु उदबर्जिति हैं गोममा । पञ्चलपुर्व उदबर्जिति मी अपजन्तरमु उद्यानित । एवं जाउद्यस्सम् व मानिक्तं । पीद्यन्त्रितिकः भोनियममूरोपु य जहा नेरह्याचै उच्छाना संगुष्टिमस्या तहा मानियमा। एव जान महिपदुसारा ॥ १२१ ॥ पुत्रविखद्या वै मंत्रे ! अर्थंतरं तम्बद्धित वर्षे गच्छति कहिं सम्बन्धिन कि नेर्द्रपृष्ट स्थान देवेद हैं गोबमा भी बेरर-प्स विरिक्त बोम्पियमपरेन स्ववबंदि मो देवेल स्ववबंदि एवं उदा एएसि चंद उदयाओं तहा उन्महना वि दंदरजा शाविदन्या । एवं आउदयरस्ट्रवेर्देवेर तेईदिशक्तरिन्दिना नि । एवं तेत वाट अवर्र म्युस्टक्केट स्ववज्ञन्ति । पंचि न्दियदिरिक्सजोमिना में मते ! कर्णतरे उष्पदिता कहें गर्कादी कहें उद्यक्तिनी गोयमा । बेरहण्ड छ जाद देवेड उददमन्ति । जह नेरहण्ड उददमन्ति 🗗 रसम्पनापुरुविनरश्च्य उत्रदमन्ति जाव अहेस्त्रमापुरुविनेरश्च्य उत्रदमन्ति है गोयमा । एकपप्पमाञ्चक्रमेनरहरूस उदक्कान्त बाद अहेसत्तमापुरमिनेरहरूस एक बळान्ति । बह तिरेक्तामोनिवस उवसमन्ति हि एविन्वयस उ जाव पंचिन्दिएह सक्तअन्ति <sup>६</sup> गोक्सा । पृथिन्तिपृष्ठ क जाव पेचिन्तिपृष्ठ सक्वअन्ति । एवं व्या पुपुर्ति चेव उनदाओं उन्हाला नि दक्षेत्र सामित्रन्ताः नवरे <del>वर्षकेन्द्र</del>साराहरू**ट** मि एए उनस्मादि । यह मणुरसेष्ठ उन्त्रजनित 🏞 संगुष्टिनमस्त्ररसेष्ठ उनस्मानित यब्सवर्द्धरीयमञ्जूरेद्व उक्तअन्ति है गोयमा ! होद्व मि । एवं व्यक्त सम्मानो स्पेष रुमार्गा नि गानिवणा भगरे अञ्चलगुरुगजंतरगीवगरभावकेतिवसप्छेत वर्ष बेजनसारएइ हि एए उननक्तीति भानियन्तं । जह बेनेत्र छननजन्ति 🕸 मन भवर्षप्त सववक्षान्ति भाव भैमाजिएस् अववज्ञान्ति । गोवमा ! सम्बेश चेव उप-कर्मति । यह सम्भवदेषुः कि मसुरकुमारेषु उपवानित काम पनिवनुमारेषु तबक्कान्ति \* गोममा ! सम्बेश श्रेष तबक्कान्ति । एवं बाधमंतुरुवोद्दश्चिमीमान पिएस् निरंतरं उपवजनित जाव सङ्स्तारो कृप्योति ॥ ३१२ ॥ सङ्स्सा व मंति । अर्थातर उम्मदिता कहें गर्वकेत नहीं उन्हलनित है से मेरहएस एक ब्रजनित जान केवेछ अनवजीत ! गोयमा ! बेरहपुत नि उनवजनित जान केवेछ नि

उववजाति । एव निरंतरं सन्वेसु ठाणेसु पुच्छा । गोयमा ! सन्वेसु ठाणेसु उववजान्ति, न किं च पिडसेहो कायव्वो जाव सव्बद्धसिद्धदेवेसु वि उनवज्जन्ति, अत्थेगइया सिज्झंति, वुज्झंति, मुचति, परिनिव्वायंति, सव्बदुक्खाण अत करेंति । वाणमतर-जोइसियवेमाणियसोहम्मीसाणा य जहा अद्युरकुमारा, नवर जोइसियाण य वेमाणि-याण य चयतीति अभिलावो कायव्वो । सणंकुमारदेवाण पुच्छा । गोयमा । जहा असुरकुमारा, णवर एगिंदिएस ण उनवजाति । एन जान सहस्सारगदेवा । आणय जाव अणुत्तरोववाइया देवा एव चेव, नवरं नो तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति, मणुस्सेसु पज्जत्तसखेज्जवासाउयकम्मभूमगगच्मवक्कंतियमणूसेसु उववज्जन्ति ॥ ६ दारं ॥ ॥ ३२३ ॥ नेरइया ण भंते ! कइभागावसेसाउया परभवियाउय पकरेंति 2 गोयमा ! नियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउय०। एव असुरकुमारा वि, एव जाव थणिय-कुमारा । पुढविकाइया ण भते ! कह्मागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति  $^2$  गोयमा !पुढविकाइया दुविहा पन्नता । तजहा—सोवक्रमाउया य निरुवक्रमाउया य । तत्थ ण जे ते निस्वक्षमाज्या ते नियमा तिभागावसेसाज्या परभवियाज्यं पकरेंति । तत्य ण जे ते सोवक्रमाउया ते सिय तिभागावसेसाउया परभवियाउय पकरेंति, सिय तिभागतिमागावसेसाउया परभवियाउय पकरेंति, सिय तिभागतिभागतिभागावसेसा-उया परभवियाउय पकरेंति । आउतेउवाउवणप्फइकाइयाण वेइदियतेइदियचउ-रिन्दियाण वि एव चेव ॥ ३२४ ॥ पंचिन्दियतिरिक्खजोणिया ण भते । कहभागाव-सेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? गोयमा! पन्विन्दियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नता । तजहा---सखेजावासाउया य असखेजावासाउया य । तत्थ र्ण जे ते अस-खेजनासाउया ते नियमा छम्मामावसेसाउया परभवियाउय पकरेंति । तत्थ ण जे त सखेजनासाउया ते दुविहा पन्नता । तजहा-सोवक्कमाउया य निरुवक्कमाउया य । तत्य ण जे ते निरुवक्माउया ते नियमा तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति। तत्थ ण जे ते सोवक्रमाउया ते ण सिय तिभागे परभवियाउय पकरेंति, सिय तिभाग-तिमागे परमवियाज्य पकरेंति. सिय तिभागतिभागतिभागावसेसाज्या परभवियाज्य पकरेति । एव मणूसा वि । वाणमतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया ॥ ७ दारं ॥ ॥ ३२५॥ क्ड्विहे ण भते । आउयवधे पन्नते १ गोयमा ! छिव्विहे आउयवधे पन्नते । तजहा—१ जाइनामनिहत्ताउए, २ गइनामनिहत्ताउए, ३ ठिईनामनिहत्ताउए, ४ ओगाहणनामनिहत्ताउए, ५ पएसनामनिहत्ताउए, ६ अणुभावनामनिहत्ताउए। नेरड-याण भते । कड्विहे आउयवधे पन्नते १ गोयमा ! छिन्वहे आउयवधे पन्नते । तजहा-जाइनामनिहत्तारुए, गडनामनिहत्तारुए, ठिईनामनिहत्तारुए, ओगाहणनामनिहत्ता- 1<4 -भूगगम प्रा यानांकार्यात्राच्या अन्तराह्मार्यात्रह्णापुत्र एवं जात् विवर्णन्यन्ते । ३०६ व त्रीया में भीतः आर्थायां ने रूपात्र व प्रदेश आर्थायां में रूपार्थ है का बार्ध है जा का है जा का है जा का है जा का रदेश का लाग्ने का स्रोते का प्रधानमें अपने अ नशहका की अंतु है। जानुकार्यन्यूल पर्य करणे आयोग होरे कारेशी शास्त्राती जनकर्त शास का कार्र का मंत्री का न्य नेता अन्दे । एवं जन्म विवादिया । दर्व गानमान्दरनाप्तम् १४ (निक्रमान्दरना उप वि अभारयनायोग्रहणास्य वि यामनायोग्रहणास्य वि असनायमानीयान उप रिच ३२ ० ॥ स्पूर्ण चे भेष- जीवाचे जान्मजनिर्म्याने ज्ञाननीराम मा राष्ट्रे वा लीम वा प्रशासन महादे आमरिनारे वडनेमानाची बाररे समीदिला भगा वा बरण वा ल्या वा रिश्तारिया वा है रायमा अस्वाचा प्रीत हाई नामनिद्दमात्रमे अप्ते आवश्यमंत्र पद्देशाया गर्नात्र आवश्यमे पूर्वभाग मेरिक्तान धर्म भागीथेर पश्रेषाचा वृश्यिक्ता एई दंबर्ट संगिकान बाई वंशिकपुत होदै गेरिकाता सदि वंशिकपुत हार्च अर्रापर्न चडरेशामा वेशिक्षपुत्रा । एवं गार्च क्रांश्चर्यक्रेये क्राप्त अपुत्रमहाक्रान्द्रशाहर्यः एर्व पुर छातिम अनावपुष्तामा जीवारमा मानियक्ता थ ८ वारे ॥ १९८ ॥ यस्या णाय मगवर्षय छुट्टै वर्द्रनीयवे समर्त ह मरहवा में भेग । बेनाबाहरण आहर्मी वा पायमीन वा प्रत्मीन वा मीन मीति का है सायवा । सबसे जीतवासर अल्लामेनि का पानामेति का कलामीति मी

गारीमाना परमाना आवसीन का जाद मीनागति वा ॥ मागद्वमान से सेंठ विश्वसम्बन्धा आगमिति वा वापसीन का कारणि वा सामानित का कारणि वा सामानित का कारणी का सामानित का स्वास्त्र मान्यक्षी का कारणी का सामानित का स्वास्त्र मान्यक्षी का कारणी का सामानित का का सामानित का से सामानित का से सामानित का साम

क । गांदना । जहतेर्थ सहत्तपहत्तामा अवस्तियं दौल्हं परतानं बान नीनसर्वि

सीमानि वा ॥ २२ - धः अनुरहसारा चं अतः विवरणस्यः अन्तर्भीः वा वास् भीतः वा करमंति ॥। जीनकाः वा १ शतकाः । प्रदेशसं शतकां धावाचं उत्तरमधे वा। ईसाणगदेवा ण भते ! केवडकालस्स आणमति वा जाव नीससित वा 2 गोयमा ! जहनेण साइरेगस्स मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं साइरेगाण दोण्ह पक्खाण जाव नीससित वा । सणकुमारदेवा णं मते ! केवइकालस्स आणमित वा जाव नीससित वा <sup>१</sup> गोयमा ! जहनेणं दोण्ह पक्खाण, उक्कोसेण सत्तण्हं पक्खाण जाव नीससित वा । माहिंदगदेवा ण भते ! केवङ्कालस्स आणमति वा जाव नीससित वा १ गोयमा । जहन्नेण साइरेग दोण्ह पक्लाणं, उक्कोसेणं साइरेग सत्तण्हं पक्लाणं जाव नीमसति वा । बभलोगदेवा ण भते ! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससित वा <sup>2</sup> गोयमा । जहन्नेण मत्तण्ह पक्खाण, उक्कोसेण दसण्ह पक्खाणं जान नीससित वा। लंतगदेवा णं भते ! केवइकालस्य आणमति वा जाव नीससित वा १ गोयमा ! जहन्नेण दसण्हं पक्खाण, उक्कोसेण चउदसण्ह पक्खाण जाव नीससित वा । महासुक्षदेवा ण भते ! केवडकालस्स आणमति वा जाव नीससित वा ? गोयमा ! जहन्नेण चउदसण्ह पक्लाण, उक्कोसेण सत्तरसण्ह पक्लाण जाव नीससित वा । सहस्सारगदेवा णं भते ! केवङ्कालस्स आणमित वा जाव नीससित वा १ गोयमा ! जहन्नेण सत्तरसण्ह पक्तवाणं, उक्कोसेण अद्वारसण्हं पक्तवाण जाव नीससित वा । आणयदेवा ण भते ! केवडकालस्य जाव नीससित वा <sup>२</sup> गोयमा ! जहन्नेण अद्वारसण्ह पक्खाण, उद्घोसेण एगुणवीसाए प्रक्खाण जाव नीसस्रति वा। पाणयदेवा ण भते! केवइकालस्स जाव नीससति वा <sup>2</sup> गोयमा! जहन्नेण एगूण-वीसाए पक्खाण, उक्कोसेण वीसाए पक्खाणं जाव नीससति वा । आरणदेवा णं भते ! केवइकालस्स जाव नीससति वा १ गोयमा ! जहन्नेण वीसाए पक्खाण, उद्योसेण एगवीसाए पक्खाण जाव नीससति वा। अखुयदेवा ण भंते । केवइ-कालस्स जाव नीससति वा <sup>2</sup> गोयमा ! जहन्नेण एगवीसाए पक्साण, उन्नोसेण वावीसाए पक्खाण जाव नीससति वा ॥ ३३४ ॥ हिडिमहिडिमगेविज्ञगदेवा ण भते! केवइकालस्स जाव नीससति वा व गोयमा! जहन्नेण वावीसाए पक्खाण. उद्योसेण तेवीसाए पक्खाण जाव नीससति वा । हिट्ठिसमज्झिमगेविज्जगदेवा ण भते ! केवडकालस्स जाव नीससति वा १ गोयमा ! जहन्नेण तेवीसाए पक्खाण, उद्योसेण चउवीसाए पक्खाण जाव नीससति वा । हिद्विमउवरिमगेविज्जगदेवा ण भते ! केवइकालस्स जाव नीससति वा १ गोयमा ! जहन्नेण चडवीसाए पक्खाण, उक्षोसेण पणवीसाए पक्खाण जाव नीससति वा । मज्झिमहिष्टिमगेविज्जगदेवा ण भते ! केवइकालस्स जाव नीससित वा १ गोयमा ! जहन्नेण पणवीसाए पक्खाण, उद्दोसेण छन्वीसाए पक्खाण जाव नीससति वा । मज्झिममज्झिमगेविज्जगदेवा ण २५ सत्ता०

**पिकालकासूत्री** भेते ! नेनरफास्ट्स जाव नीससेति वा ! गोयमा ! जहकेर्च क्रमीसाए वस्तार्म

उद्दोसेण सत्तावीसाय परकार्य जान शीससैति वा । मजिसम्बन्धिमगैनिक्रययंत्रा व मेते ! केन्द्रश्राकरस जान मीससंति वा है योगमा ! जहाँक सत्तावीसाए प्राचान चडोरेणं अञ्चलीसार् पक्याणं जाव नीससंशि वा । उदरिमहेश्विमानिजयदेवा वं मेरे ! केन्द्रकारस्य जाव जीससंधि वा ई शीयमा ! जबवेर्य शहाबीसाए प्रस्ताव उद्योसेण एगुणसीसाए पर्वचाल बाब नीससंधि वा । सबरिजमजिसमगेविजगवेका में मेद्र । केनद्रकारूस्य जाब मीयसेटि वा ! वोजमा ! बहतेन एगूनतीसाए पक्यानं उन्नोसेचं चीसाए पक्याचं जाब नीससंदि वा । सबरिमनवरिमगेनिजम-वेदा मं भेते ! केवहकासस्य जान नीसस्ति वा ! गोनमा ! अक्रिके कीसाप पक्तार्ण सक्रोसेचं प्रकरीसात पक्ताव चाच मीमसंदि वा ११ ३३५ ॥ विवय वेक्टरंत स्थान सपराध्ययविमाणेल ये वेका भे भेते । केक्टरसम्बद्ध साथ जीगांचेति मा । गोयमा । बहुकेणं एकरोसाए प्रस्काणं उद्दोसेणं रोत्तीसाए प्रस्कार्य वान मीत्तर्पति वा । सम्बद्धश्रिकागदेवा वं संते ! केन्द्रकाकस्य बाद नीससंति वा ! गोबमा ! अनद्वन धकोरोणं तेलीयाए वस्त्राणं काव नीयसंति वा ॥ ३१६ म पद्मवणाप भगवर्षेष सत्तम असासपर्य समर्त ॥ बद्ध में मेंदे ! समाजो पनताओं ! गोयमा ! इस समाओं पनताओं । तंग्या-आहार्यका सबस्या सेहुलस्का परिमाइसका कोइसका गापसका मानस्का सोहस्त्रा क्रोयलका ओक्सका n ३३० n वेस्ट्रयार्थ मंते ! कड संजाओ एक

ताओं है गोयमा । वस सकाओ प्रवासको । संबदा-काहरसका चार सोपसका । अद्भरहमाराणं भते। कर सकाओ प्रवताओ ! गौक्मा ! वस सकाओ प्रवताओ ! र्वजहा-माहारसचा जान कोक्सना एवं जान निर्मानगरायं । एवं प्रविशास्यानं पाब बेमानिमाबसाजार्ज हेमको n ११८ त नेरह्या न मते ! कि शाहारसङ्गोनउता भवसनीवतता मेहणसभोवतता परिभवस्यभोवतता व योगमा । ओसमं कारमं **पहुच मध्यचोन**उत्ता चंतक्षमार्थ पहुच आक्षारचकोक्तता वि बाव परिन्यसची वस्ता नि । एएछि मं अंदं । भेष्ट्रवानं बाहारसक्तोवन्ताणं सथस्वीवन्तानं मेहुन्तकोवउत्तार्न परिमाइसक्षीवउत्ताण श कशरे क्यरेहिंतो कप्पा वा बहुवा वा द्वजा वा विसेसाद्विया वा र गोजमा । सन्वरनीया मेरह्मा मेहनस्वीवतता आहार शकोबदत्ता संक्रिक्याणा परिभावसकोवरुता संक्रिक्याचा समस्वोबदता सदिज्ञ-गुचा ॥ ३३८ ॥ सिर्वेल्प्सबोकिया के भेतं । कि आहारसचीकाता जाव परिमाई सकोबनता । गोमसा । बोसर्व पार्च पहुच आहारसनावनता चन्द्रमानं पाच

आहारसन्नोवउत्ता वि जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता वि । एएसि णं भते ! तिरिक्खजो-णियाण आहारसन्नोवउत्ताण जाव परिग्गहसन्नोवउत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा चा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा <sup>2</sup> गोयमा ! सन्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया परिग्गहसन्नोवउता, मेहणसन्नोवउत्ता संखिजगुणा, भयसन्नोवउत्ता संखिजगुणा, आहारसन्नोवउत्ता सिक्बिज्युणा॥ ३४०॥ मणुस्सा ण भते । कि आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहसम्नोवउत्ता 2 गोयमा ! ओसन्न कारण पडुच मेहणसन्नोवउत्ता, सतइभाव पहुच आहारसन्नोवउत्ता वि जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता वि । एएसि णं भते । मणुस्साण आहारसन्नोवउत्ताण जाव परिग्गहसन्नोवउत्ताण य कयरे कयरे-हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा 2 गोयमा ! सन्वत्थोवा मण्सा भयसन्नोवउत्ता, आहारसन्नोवउत्ता सखिजगुणा, परिग्गहसन्नोवउत्ता सखिजगुणा, मेहुणसन्नोवउत्ता सिखज्जगुणा ॥ ३४९ ॥ देवा ण भते । किं आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता ? गोयमा! ओसन्न कारण पहुच परिग्गहसन्नोवउत्ता, सतइभाव पडुच आहारसन्नोवउत्ता वि जाव परिग्गइसन्नोवउत्ता वि । एएसि ण मते ! देवाण आहारसन्नोवउत्ताण जाव परिग्गहसन्नोवउत्ताण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा ना बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया ना<sup>१</sup> गोयमा! सव्वत्थोवा देवा आहारसन्नोवउत्ता, भयसन्नोवउत्ता सखेजगुणा, मेहुणसन्नोवउत्ता सखेजगुणा, परिग्नहसन्नोवउत्ता सखेजगुणा ॥ ३४२ ॥ पन्नवणाए भगवईए अट्टम सन्नापयं समत्तं॥

कड्विहा ण भते ! जोणी पन्नता १ गोयमा ! तिविद्दा जोणी पन्नता । तजहा—सीया जोणी, उसिणा जोणी, सीओसिणा जोणी ॥ २४३ ॥ नेरइयाण भते ! कि सीया जोणी, उसिणा जोणी, सीओसिणा जोणी १ गोयमा ! सीया वि जोणी, उसिणा वि जोणी, णो सीओसिणा जोणी । असुरकुमाराण भते ! कि सीया जोणी, उसिणा जोणी, सीओसिणा जोणी १ गोयमा ! नो सीया जोणी, नो उसिणा जोणी, सीओसिणा जोणी १ गोयमा ! नो सीया वि जोणी, उसिणा वि जोणी, उसिणा वि जोणी, उसिणा वि जोणी, उसिणा वि जोणी, सीओसिणा जोणी १ गोयमा ! सीया वि जोणी, उसिणा वि जोणी, सीओसिणा वि जोणी । एव आउवाउवणस्सइवेइंदियतेइदियचउरिंदियाण वि पत्तेय भाणियव्व । तेउकाइयाण णो सीया, उसिणा, णो सीओसिणा । पविंदियतिरिक्ख-जोणियाण भते ! कि सीया जोणी, उसिणा जोणी, सीओसिणा जोणी १ गोयमा ! सीया वि जोणी, उसिणा वि जोणी, सीओसिणा वि जोणी । समुन्छिमपचिंदिय तिरिक्खजोणियाण नि एव चेव । गञ्भवक्वतियपचिंदियतिरिक्खजोणियाण भते !

हैं सीमा बोबी उद्यान जोगी सीबोसिया बोबी है गोयसा । जो सीना बोबी नो उरिजा जोची सीओरिजा जोवी । मकुरसार्ज ग्रेरो l कि सीमा बोबी दक्षि बोची सीबोरिका कोजी है गोयमा ! सीवा वि बोजी उत्तवा वि बोजी सीबे रिना नि चोजौ । संगुन्धिममलस्सार्थं मंते ! कि सीवा जोजी उरिन्या चोजौ रोमोरिया कोबी 🖁 गोगमा ! तिबिहा जोबी । गरुमबह्यतिकावस्साम संते ! 🎏 सीया जोवी उतिया जोवी सीजोरिका जोबी। बोयमा। वो हीया जो उरिका चीओसिया बोजी । बाजर्मतर देवाचं संते । कि सीमा बोजी अधिका जोजी सीओधिया जोणी ! योगमा ! जो सीवा जो उठिया सीखोरीया खोजी । जोइरियदमानियाण ति एवं पेत 🗈 १४४ ॥ एएसि वं सत् 🖟 सीयबोजियानं उक्तवबोनियानं सैन्टे-शिमकोमिनार्ग अनोजिनाम य कनरे कनरेहिंतो कप्पा वा अक्रया वा तुका वा निसेसादिवा वा रे गोयमा र सम्बत्वोवा जीवा सीओसियबोधिया उत्तिवजीविया अर्चसञ्जूषा अजेषिया अर्थत्तुमा सीयजोजिता अर्थत्तुमा त १४५ ॥ <sup>स्ट्र</sup> मिद्रा में सेंते ! बोजी प्रकार ! गोवमा ! तिमिद्रा बोजी प्रकार । तकहा-उनिधा कविता मीसिवा ॥ १४६ ॥ नेरहवार्च मेरे । 🏗 सविता जोबी अविका बोनी भौसिया कोजी है होतारा । जो सन्तिता कोजी अन्तिता कोजी सो मीविया कोजी ह वस्त्यमारार्व भेटे । कि स्विता बोबी अविता बोबी शीरिया बोबी गोनसा मो समिता बोजी अमिता बोजी मो मीक्षिया बोजी एवं जान नमिन्हुमारा<sup>ई</sup> ! प्रत्योद्धारमार्थं मते । कि सचिता बोची अभिता बोजी मीसिमा बोजी ! गोसमा समिता बोबी अविशः बोबी मीठिया में बोबी एवं बाद वटरिवियार्ज । एर्ड निक्रमपंत्रितिहरिक्ताबोभिगानं संमुख्यिमसम्बद्धाण य एवं चेव । गध्मवद्देतिय-पंचित्रवितिक्यवीविवार्णं पव्यवक्रीतिकस्यास्याच व शो सचिता नो सचिता मीछिया जोची । वाजमतरश्रेवसियवेमानियार्ज जहा अक्षरकुमारार्च ॥ ३४० ॥ एएसि नं मते ! जीवानं सनिताबोजीनं अविताबोबीनं सीसबोबीनं अवोधीव व कुमरे कमरेहिंतो जप्पा वा बहुया वा तुझा वा मिलेसाहिया वा १ सोक्सा रे सम्बत्ती वा जीवा मीराजोतिया अविक्तजोतिया अर्पक्षेत्रगुणा अजोतिया अर्थतगुचा सर्वि त्त्रभोषिया अर्थतगुना ॥ १४८ ॥ कड्निहा में गीत । जोनी पनता है सोबमा है शिविहा जोगी पकता। राज्या—राबुडा बोजी वियडा बोबी संपुडवियडा बोबी ॥ १४८॥ मेरह्याण भेते ! कि सनुषा कोणी निवत जोणी संग्रहवियश बोणी गोयमा ! समुद्रकोणी भी विगडकोणी जी संबुद्धविगडकोणी । एवं जाव वरस्तर क्तनार्ण । वेदिविधार्ण पुष्पत । गोममा ! नो संतक्तकोणी नियहकोणी भी संतुष

वियहजोणी। एव जाव चर्डारेदियाण। समुच्छिमपचिदियतिरिक्खजोणियाणं समुच्छिममणुस्साण य एव चेव। गञ्भवकृतियपचिदियतिरिक्खजोणियाणं गञ्भवकृतियमणुस्साण य नो सबुद्धा जोणी, नो वियद्धा जोणी, सबुद्धवियद्धा जोणी। वाणमन्तरजोद्धियवेमाणियाण जहा नेरइयाण ॥ ३५०॥ एएसि ण भंते! जीवाण सबुद्ध-जोणियाण वियद्धजोणियाण सबुद्धवियद्धजोणियाण अजोणियाण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा बहुया वा तुष्टा वा विसेसाहिया वा १ गोयमा! सञ्चत्थोवा जीवा सबुद्ध-वियद्धजोणिया, वियद्धजोणिया असिद्धजगुणा, अजोणिया अणतगुणा, सबुद्धजोणिया अणतगुणा॥ ३५९॥ कद्दविहा ण भते! जोणी पन्नता १ गोयमा! तिविह्म जोणी पन्नता। तजहा—कुम्मुण्णया, सन्धावत्ता, वसीपता। कुम्मुण्णया ण जोणी उत्तम-पुरिसमारुण। कुम्मुण्णया, पन्नावत्ता, वसीपता। कुम्मुण्णया ण जोणी उत्तम-पुरिसमारुण। कुम्मुण्णयाए ण जोणीए उत्तमपुरिसा गद्भे वक्कमंति, तजहा—अरहता, चक्कवद्दी, बलदेवा, वासुदेवा। सन्धावत्ता णं जोणी इत्थीरयणस्स, सन्धावत्ताए जोणीए वहवे जीवा य पोगगला य वक्कमंति विदक्षमित चयंति उवचयित, नो चेव ण णिप्फजति। वंसीपत्ता ण जोणी पिद्धज्ञणस्स, वसीपत्ताए णं जोणीए पिद्धज्ञणा गब्भे वक्कमति॥ ३५२॥ पन्नवणाप भगवर्द्धए नवमं जोणीपयं समत्तं॥

कइ ण भते! पुढवीओ पन्नताओ १ गोयमा! सह पुढवीओ पन्नताओ। तजहा-रगणपमा, सकरप्पमा, वालुयप्पमा, पकप्पमा, धूमप्पमा, तमप्पमा, तमतमप्पमा, ईसिप्पब्सारा ॥ ३५३ ॥ इमा ण मते ! रयणप्पमा पुढवी किं चरमा, अचरमा, चरमाइ, अचरमाइ, चरमतपएसा, अचरमतपएसा 2 गोयमा ! इमा ण रयणप्पभा पुढवी नो चरमा, नो अचरमा, नो चरसाइ, नो अचरमाइं, नो चरमतपएसा, नो अचरमंतपएसा, नियमाऽचरम चरमाणि य, चरमतपएमा य अचरमंतपएसा य, एव जाव अहेसत्तमा पुढवी, सोहम्माई जाव अणुत्तरविमाणाण एव चेव, ईसिप्पब्भारा वि एव चेव, लोगे वि एव चेव, एव अलोगे वि ॥ ३५४ ॥ इमीसे ण भते । रयणप्पभाए पुढवीए अचरमस्स य चरमाण य चरमतपएसाण य अचरमतपएसाण य दन्वहुयाए पएसहुयाए दन्वहुपएसहुयाए क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा १ गोयमा! सन्वत्थोवे इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए दन्बद्धयाए एगे अचरमे, चरमाइ असखेजगुणाइ, अचरम च चरमाणि य दो वि विसेसाहिया, पएसद्वयाए सन्वत्थोवा इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए चरमन्तपएसा, अचरमतपएसा असखेज्जगुणा, चरमतपएसा य अचरमत-पएसा य दो वि विसेसाहिया, दव्बद्वपएसद्वयाए सन्वत्योवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए दन्बद्वयाए एगे अचरमे, चरमाइ असखेज्जगुणाइ, अचरमं चरमाणि य यो वि विसेमाहिवाई, पण्सद्ववाए चरमंतपर्गा अर्थनेजनुवा अचरमंतपण्मा अर्चचेज्ञपुत्रा बरमेतपण्या व अवर्गतपण्या व दां 🖹 रिक्षमाहिका । एवं भार भोदेगतमाय, सोहम्मस्य जाव क्षेयस्स एवं चेत्र ॥ ३५५ n ब्रह्मेगस्य र्षं मेत् । अवरमस्य य भरमाग व चरमन्तपप्ताण व अवरमन्तपप्ताण य दम्बद्धसाए पएसद्वयाए क्वबद्वयपुगद्धसाए कवर क्यरेहितो अा वा बहुस वा तुत्रा वा निरोगाहिमा वा है गोधमा । शब्दायोधं शब्दगम्म श्वनद्वशाए एग अवरमे जरमाई असंरिक्युचाई, अवरमं चरमानि य दो नि विसेसाहियाई, पर्यान ह्याए सम्पत्नोता असोमस्य चरमन्त्रपरमा अचरमन्त्रप्रमा अचन्त्रपुना *चरम*-न्तरएसा य अवरमन्तपएमा य हो वि विसेमाहिया एम्बद्धपर्महयाए सम्बत्तीर अजोपस्स एगे अन्दरमे जरमाई असंगेजनुवाई अवरमं च बरमानि य हो वि विवेदाहियार्ट, वरमन्तर्पर्धा अवेदाञ्चाणा अवरमन्तरप्ता अवन्तरामा वरम न्तपर्सा व भवरमन्तपर्सा व हो वि विदेशाद्वित व ३५६ ॥ क्रोवाकोगस्य व भेत । अवरमस्य य वरमान व वरमन्त्रप्रमाण य अवरमन्त्रप्रशास व दन्छ-बाए पर्छडवाए दब्बड्डपर्छडवाए कमरे क्वरेहितो अप्या वा बहुवा वा तुल वा विसेसाहिया वा स्थापमा । सम्बद्धां क्षेपाक्षेयस्य दम्बद्धवाए हमानेने अवरमे क्षेपस्य बरमाद् व्यवंत्रेजगुणाई, बन्नेगस्य परमाई विशेशाहिताई, स्पेपस्य व मतोगस्य व अवरमं वरमान्ति व तो वि विशेशाहियार्थ, परमहत्वाय सम्बन्धेना क्षेगस्य बरमन्तपर्मा अकोगस्य बरमन्तपर्मा विवेसाहिया क्षेपस्य अवरमन्त-पएमा अर्घते अरुपा अलोगस्त अनरसन्तप्रमा अवन्तपुषा स्रोयस्य व अञ् गत्म य भरमन्तपर्का व सबरमन्तपर्का य हो वि विकेशक्षिया । शृन्द्वपर्क्द्वपर् सम्बद्धानि स्त्रेगास्त्रेगस्य वश्यक्षत्राए एममेगे जनासे स्त्रेगस्य नामानं असेने नामानं भरतोगस्त्र वरमार्वं विदेशाब्दिवार्वं, स्रोगस्य य अधोगस्य य अवरमे वरमानि य **दो वि विमेसादिवार्ट, कोगस्स चरमन्तपम्सा असेक्टेक्युका अस्टोगस्स य चरमन्दर** पपना विसेनादिया कोगस्स अचरमन्तपप्सा वर्गकेक्युचा अकोगस्य अपरर्म-तपपुसा अर्थातपुणा क्रोमस्स य क्रायोगस्स य करमन्तपपुसा य अवरमन्तपपुसा व हो वि विरोधादिया सम्बद्ध्या विरोधादिया सम्बद्ध्या सम्बद्ध्या सम्बद्ध्या क्षचंतगुणा ॥ १५७ ॥ परमानुपोमाके नं संते । 🕦 वरमे 🤊 क्षवरमे १ अव तमाए १ बरमाह ४ अवरमाई ५, अवतम्बराह ६ उवाहु वरमे य अवरमे व उद्यु चरमे व अवस्मार्व ८ उदाहु चरमाई अवस्मे व उद्यु चरमाई च श्चारमाह्न १ पढमा चत्रमंगी। उद्युष्ट चरमे व अनत्तव्यय स ११ उद्यु

चरमे य अवत्तव्वयाइ च १२, उदाहु चरमाइ व अवत्तव्वए य १३, उदाहु चरमाइ च अवत्तव्वयाई च १४, बीया चउमगी। उदाहु अचरमे य अवत्तव्वए य १५, उदाहु अचरमे य अवत्तव्वयाइ च १६, उदाहु अचरमाइ च अवनव्वए य १७, उदाहु अचरमाइ च अवत्तव्वयाइ च १८, तह्या चउभगी। उदाहु चरमे य अचरमे य अवत्तव्वए य १९, उदाहु चरमे य अचरमे य अवत्तव्वयाइ च २०, उदाहु चरमे य अचरमाइ च अवतव्वए य २१, उदाहु चरमे य अचरमाइ च अवत्तव्वयाइ च २२, उदाहु चरमाइ च अचरमे य अवत्तव्वए य २३, उदाहु चरमाइ च अचरमे य अवतव्ययाई च २४, उदाहु चरमाइ च अचरमाइ च अवत्तव्वए य २५, उदाहु चरमाइं च अचरमाइ च अवत्तव्वयाइं च २६। एए छन्वीस भगा। गोयमा। परमाणुपोगगले नो चरमे, नो अचरमे, नियमा अवत्तव्यए, सेमा भगा पिंडसेह्रेयन्वा ॥ ३५८ ॥ दुपएसिए ण भते ! खधे पुच्छा । गोयमा ! दुपएसिए खघे सिय चरमे, नो अचरमे, सिय अवत्तव्वए । सेसा भंगा पहिसेहे-यव्या ॥ ३५९ ॥ तिपएसिए ण भते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! तिपएसिए खधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवतव्वए ३, नो चरमाइ ४, नो अचरमाइ ५, नो अवत्तव्वयाई ६, नो चरमे य अचरमे य ७, नो चरमे य अचरसाइ ८, सिय चरमाइ च अचरमे य ९, नो चरमाड च अचरमाइ च १०, सिय चरमे य अव-त्तव्वए य ११, सेसा भगा पिंडसेहेयव्वा ॥ ३६०॥ चलपएसिए ण भते ! खघे पुच्छा। गोयमा। चउपएसिए ण खघे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवत्तव्तर ३, नो चरमाई ४, नो अचरमाइ ५, नो अवत्तव्वयाई ६, नो चरमे य अचरमे य ७, नो चरमे य अचरमाइ च ८, सिय चरमाइ अचरमे य ९, सिय चरमाइ च अचरमाई च १०, सिय चरमे य अवत्तव्वए य ११, सिय चरमे य अवत्तव्वयाइ च १२, नो चरमाइ च अवत्तव्वए य १३, नो चरमाइ च अवत्तव्व-याड च १४, नो अचरमे य अवत्तव्वए य १५, नो अचरमे य अवत्तव्वयाई च १६, नो अचरमाइ च अवत्तव्वए य १७, नो अचरमाइ च अवत्तव्वयाइ च १८, नो चरमे य अचरमे य अवत्तव्वए य १९, नो चरमे य अचरमे य अवत्तव्वयाई च २०, नो चरमे य अचरमाइ च अवतव्वए य २१, नो चरमे य अचरमाई च अवतव्ययाड च २२, सिय चरमाड च अचरमे य अवत्तव्वए य २३ । सेसा भगा पिंडसेहेयच्वा ॥ ३६१ ॥ पचपएसिए ण भते ! खधे पुच्छा । गोयमा ! पचपएसिए खंधे तिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवत्तव्वए २, नो चरमाइ ४, नो अचरमाड ५, नो अवतन्त्रयाड ६, सिय चरमे य अचरमे य ७, नो चरमे य

भवरमाई व ८ शिव वरमाई च सवरमे य ९ शिव वरमाई व अवरमाई व ९ सिय चरमे स सवताच्यापुन ९९ शिन्न चरमे व अवतःस्वानाई च १२ तिन चरमाई च अवतम्बए स १३ भी चरमाई च अवतम्बसाई च १४ भी अघरमं य अवतन्त्रप्र य ९५, तो अवरंगे य अवतन्त्रयाई च ९६ को अवरंगाई च अवतस्यए य ९७ जो अवस्थाई च अवसम्बन्धाई च १८ जो वर्से व अवस्मे य अवतम्बर य १९ मी बरमे य अवतर्ग य अवतम्बर्ध व १ मी बरमे व मनरमार्च च सन्तरमाए य १९ मो चरमे य सनरमार्च च बनामनार्दे च २२ तिम चरमाई च अजरनं य अवतम्बर् य २१ तिव चरमाई च अजरने न अनतम्बर्धाः च २४ सिन चरमतं च अचरमत् च अकतम्बर य २५ तो घरवाई च अवस्माई च अवसम्बन्धाई च २६ ॥ ३६२ व सप्परित में मंद्री पुष्का। गोक्सा । स्परित सं अपि सिम मरमे १ में अनरमे २ शिव अवतम्बए ३ मो चरमाह ४ मो अवरमाई ५, मो अवगमनई ६ सिय वरमे स अवरमे स ७ शिय वरमे न अवरमाई व ८ किस वरसई व भाषामें व ९ शिव चरमाई च अधरमाई च १ शिव धरमं व अवसम्प य १९ तिय चरते य जवतत्त्रवाहं च १२ तिय चरनाई च अवतत्त्रप्य २९६ स्थि बरमाई च कवतत्त्रवान के १४ तो अवस्ये व शक्तत्वए व १५, तो अवरमे य सदातम्बनाई व १६ जो क्षवरमाई व कदात्वय य १७ मो अवर मार्च भ अवताम्बदाई च १८ विज चरने व अचरमे व अवतान्वए व १५ नी चरमे य जनरमे व अवतान्ववाई च १ जो चरमे य अवरमाई च अनगन्वर व २९ भी चरन व <del>कवरमहं च अनतम्बदाई च</del> २२ छिन चरमझं च अवरमे व मक्तान्त्रप् य २३ क्षित्र चरमाई च जचरमे व भवतान्त्रपाई च २४ क्षित्र चरमाई च अवरमातं च अवराज्यए व १५ शिम चरमातं च अवरमातं च अवराज्यनारं व्य १६ ॥ ३६३ ॥ सत्तपण्छिए व असे । विवे पुच्छा। गोबसा । सत्तपण्छिए र्थ स्त्री क्षित चरमे १ भी अचारमे २ क्षिय अवसम्बद्ध ३ वो चरमाई ४ को अवस्माई ५, भी अवतत्वस्माई ६ सिय जरमे य जनस्ये व अ शिव नाम य संचरमाई च ८ सिय करमाई च संचरने व ८ सिव करमाई च संचरमाई च १ सिम परमे व अवसम्बद्ध स ११ सिम परमे व अवसम्बदाई प ११ सिव बरमाई च अवतानाए व १३ छिम चरमाई च सवतानामाई च १४ वो जबरने व सम्बद्धम्य ए व १ , जो जनरमं व सम्बद्धमार्थ च १६ यो अनरमार्थ च अवस्त्रमार् स १७ जो अधारमाई च अवसम्पर्ताः च १८ शिच चरमे व अधारमे

य अवत्तव्वए य १९, सिय चरमे य अचरमे य अवत्तव्वयाइ च २०, सिय चरमे य अचरमाइ च अवत्तव्वए य २१. णो चरमे य अचरमाइ च अवत्तव्वयाइ च २२, सिय चरमाइ च अचरमे य अवत्तव्वए य २३, सिय चरमाइ च अचरमे य अवत्तव्वयाई च २४, सिय चरमाइ च अचरमाइ च अवत्तव्वए य २५, सिय चरमाई च अचरमाड च अवत्तव्वयाइ च २६॥ ३६४॥ अट्टपएसिए ण भते ! खघे पुच्छा। गोयमा । अद्वपएसिए खघे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवत्तव्वए ३, नो चरमाइ ४, नो अचरमाड ५, नो अवत्तव्वयाइ ६, सिय चरमे य अचरमे य ७, सिय चरमे य अचरमाई च ८, सिय चरमाइ च अचरमे य ९, सिय चरमाइ च अचरमाई च १०, सिय चरमे य अवत्तव्वए य ११, सिय चरमे य अवत्तव्वयाइ च १२, सिय चरमाइ च अवत्तव्वए य १३, सिय चरमाई च अवत्तव्ययाइ च १८, णो अचरमे य अवत्तव्वए य १५, णो अचरमे य अवत्तव्वयाइ च १६, णो अचरमाड च अवत्तव्वए य १७, णो अचरमाड च अवत्तव्वयाई च १८, सिय चरमे य अचरमे य अवत्तव्वए य १९, सिय चरमे य अचरमे य अवत्तव्वयाइ च २०, सिय चरमे य अचरमाइ च अवत्तव्वए य २१, सिय चरमे य अचरमाइ च अवत्तव्वयाइ च २२, सिय चरमाइ च अचरमे य अवत्तव्वए य २३, सिय चरमाइ च अचरमे य अवत्तव्ययाइ च २४, सिय चरमाइ च अचरमाइ च अवत्तव्वए य २५, सिय चरमाइ च अचरमाइ च अवत्तव्वयाइ च २६, संखेजनप्रित् असखेजनप्रित् अणतनप्रित् खधे जहेव अट्टपएसिए तहेव पत्तेय भाणियन्व । परमाणुम्मि य तइओ पढमो तइओ य होंति दुपएसे। पढमो तइओ नवमो एकारसमो य तिपएसे॥ १॥ पढमो तइओ नवमो दसमो एक्कारसो य वारसमो । भगा चउप्पएसे तेवीसइमो य बोद्धव्वो ॥ २ ॥ पढमो तइओ सत्तमनवदसइक्कारवारतेरसमो । तेवीसचउव्वीसो पणवीसइमो य पंचमए॥ ३॥ विचडत्थपचछट्ट पनरस सोल च सत्तरद्वार । वीसेक्क्वीसवावीसग च वजेज छट्टामे ॥ ४॥ बिचउत्थपंचछट्ट पण्णर सोल च सत्तरहारं । बावीसइमिवहूणा सत्तपण्सिम खधम्मि ॥ ५॥ विचउत्थपचछ्टु पण्णर सोल च सत्तरहारं। एए विजय भगा सेसा सेसेस खधेसु ॥ ६ ॥ ३६५ ॥ कड् ण भते ! सठाणा पत्रता ? गोयमा ! पच सठाणा पत्रता । तजहा—परिमडले, भेंडे, तसे, चलरसे, आयए य ॥ ३६६॥ परिमंडला ण भते ! सठाणा किं संखेजा, असखेजा, अणता 2 गोयमा। नो सखेजा, नो असखेजा, अणता। एव जाव आयया । परिमहले ण भते ! सठाणे कि सखेज्जपएसिए, असखेज्जपएसिए, अणतपए- निए 🖁 गाममा 🕽 निय सँग्रेजपर्गनिए, सिय असंबेजपर्गनिए, सिय जगतपरिए। एवं नाव भागए । परिमेंडस ने भेरी । संठाने संदोजपूर्णपूर कि संबोजपूर्योगार्ड अर्घ नेजरएरोपाड अर्थनपर्योगाडे ! गोयमा ! संरोज्यप्योगाडे भो असंजेजपर्योगा" मा अर्गनप्रमोगार । एर्ने जान कायए । धरिमेन्के न भेत । संजाने असंग्रेजपाएनए हि मेरोजपर्मचारे अनेखेजपर्मोगल अर्थतपर्मोगाच । शोयमा । डिय हेबेन-पएमार्गान मित्र अरोधेजपुरसोगाडे को अर्थनुपरमोगाडे । एक जार आयर । परिमेन्स म भेत ! संकाम अर्णनपानिष् कि संक्षेत्रपप्तीगाउँ असंनेत्रपप्तीगाः मर्गनगणीगाद ? मोयमा ! निय संराक्ष्यगुनागा निय असराक्ष्यक्रात्रेगांद नी अधनरणनागाइ । एवं जार आवत् । परिमंडके वे अंत l संद्रान संनेजनर्मिष् सम्बद्धाराज्योगाडे दि भरम अपरम चन्याई अपरमाई चन्योत्तरास्या अपरमंत-पएना है गायसा। परिमंत्रते में सेठान सेन्डब्रफ्किए सेलब्रफ्कोगांड की बाम की सबरम ना बरमाई नो अवरमाई ना बरमनपूरमा नियम अवरमं बरमारि य नगर्मनरतमा व अवर्गनरएका य । एवं बाद आवए । परिर्वन्ते वं भीते । मैसमे अमेश जपर्तिर मलकाएगोगाँउ कि बरम पुरात । गोममा । अवेरोकपर्तिर म-रज्ञप्रमागाः जहा मभज्ञरागिए । एवं जाव आयए । वरिशंडले वं सेंदे ! मेंप्रमें अमरोज्ञानित अर्थनामराज्ञानां कि बर्ग पुग्छा । गोबमा । अर्धनाबराजिय भग (अप्रयमीमार ना परम जहां मंनाजपण्योगाडे पूर्व जान भावए। परिमाने र्ष जेन ! सेनाच अर्चनकार्यक संस्कारणायाः हि सरम अन्छ । सोबमा ! सहर अप आवण । अधनरण्यांच अनुभज्ञपन्योगारे जहां में रजपामावार एवं जाब भावत 🗈 १६७ 🛎 परिवेदस्तरम् भी भेग् 🕽 सराजस्य संभाजनार्थसम् संसेजन्यर गांगारस्य भवरमस्य य चारमाच य चर्यक्तारमाच व अचरमेर्यारमाच व इरवण्याम् पामाण्याम् वरमञ्जूषामञ्जूषाम समय कमरेशिको अत्या वर बद्धा वा द्वीय का रिम्प्यादिया का रे गावका । शत्याका र परिवेत्सम्य गैनाकस्य गेलास्टरानीयस्य मेशकरणगोपारस्य दन्बद्धयाणं सन्धं अवस्य अस्याई संभक्तपुणाई अवस्य बारमान्त्र व सार्वः विमानाहियाः। यामञ्जूषाम शास्त्राचा परिमेदास्त्रम नेपालाम में क्रिक्शांतरमः गंभक्रकानामाप्तस्य चरमयानमः अधरमगणामा मेरीक्रपूरः वरम नरम्मा य भारतसम्बन्धाम । १०१३ विश्ववीदिया दश्यन्यातनसार सम्ब क्षा । वर्गमापुरस्य संराप्तम संस्थापार्शियाम संस्थापारमायाम स्वर्गी रम् अवस्य नामाः मेलज्ञानाः अन्त्यं च नामाः व वन्तः हाः। वन्ते वाः बरमानगाना ग्रेनेमगुना अवश्यम्तराना ग्रेनेमगुना वस्त्रानराना व

अचरमन्तपएसा य दोऽवि विसेसाहिया । एव वदृतसचउरसायएसु वि जोएयव्व ॥ ३६८ ॥ परिमण्डलस्स ण भते । सठाणस्स असखेज्जपएसियस्स सखेज्जपएसोगा-ढस्स अचरमस्स चरमाण य चरमन्तपएसाण य अचरमन्तपएसाण य दव्वद्वयाए पएसहुयाए दव्बहुपएसहुयाए कयरे कयरेहिंतो अपा वा ४१ गोयमा! सव्बत्योवे परिमडलस्स सठाणस्स असखेज्जपएसियस्स सखेज्जपएसोगाढस्स दव्बद्वयाए एगे अचरमे, चरमाइ सखेजगुणाइ, अचरमं च चरमाणि य दोऽवि विसेसाहियाइ, पएसद्वयाए सन्वत्थोवा परिमडलसठाणस्स असखेज्जपएसियस्स सखेजपएसोगाडस्स चरमतपएसा, अचरमतपएसा सखेजगुणा, चरमतपएसा य अचरमतपएसा य दोऽवि विसेसाहिया, दव्बट्टपएसद्वयाए-सन्वत्थोवे परिमङलस्स सठाणस्स असखेज-पएसियस्स सखेजपएसोगाटस्स दव्बद्वयाए एगे अचरमे, चरमाइ सखेजगुणाइ, अचरम च चरमाणि य दोऽवि विसेसाहियाई, चरमतपएसा संखेजगुणा, अचरमत-पएसा सखेजगुणा, चरमतपएसा य अचरमतपएसा थ दोऽवि विसेसाहिया। एव जाव आयए । परिमङ्हस्स ण भते । सठाणस्स असखेज्जपएसियस्स असखेज्जपए-सोगाढस्स अचरमस्स य चरमाण य चरमतपएसाण य अचरमतपएसाण य दव्बट्ट-याए पएसद्वयाए दव्वद्वपएसद्वयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ <sup>१</sup> गोयमा ! जहा रयणप्पभाए अप्पावहय तहेव निरवसेस भाणियव्व, एव जाव आयए ॥ ३६९ ॥ परिमडलस्स ण भते ! सठाणस्स अणतपएसियस्स सखेजापएसोगाढस्स अचरमस्स य चरमाण य चरमतपएसाण य अचरमतपएसाण य दव्वड्ठयाए पएसड्डयाए दब्बहुपएसहुयाए कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ 2 गोयमा । जहा संखेजपएसि-यस्स सखेजपएसोगाढस्स, नवरं सकमेण अणतगुणा, एव जाव आयए। परिमड-लस्स ण भते ! सठाणस्स अणतपएसियस्स असखेज्जपएसोगाढस्स अचरमस्स य ४ जहा रयणप्पमाए, नवरं सकमे अणतगुणा, एव जाव आयए ॥ ३७० ॥ जीवे ण भते ! गइचरमेण कि चरमे अचरमे १ गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे । नेरइए ण भते! गइचरमेण कि चरमे अचरमे? गोयमा! सिय चरमे, सिय अचरमे, एव निरतरं जाव वेमाणिए। नेरइया ण भते। गडचरमेण कि चरमा अचरमा 2 गोयमा ! चरमा वि अचरमा वि, एव निरतर जाव वेमाणिया । नेरहए ण भते ! ठिईचरमेण कि चरमे अचरमे <sup>2</sup> गोयमा। सिय चरमे, सिय अचरमे, एव निरतर जाव वैमाणिए। नेरइया ण मते ! ठिईचरमेण कि चरमा अचरमा ? गोयमा! चरमा वि अचरमा वि, एव निरतर जाव वेमाणिया । नेरइए ण भते ! भवचरमेण कि चरमे अचरमे 2 गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे, एव निरतर जाव चैमा- 231

तिए <sup>३</sup> गोजमा ! शिव **एंकेजनप्**षिए, तिम का**र्वकेजनप्**षिए, सिम अर्णेतप्रतिए । एर्न जान सादरा । परियंत्रकं म संते ! सदामें संदोजपरानिए कि संवोजपरानीगाडे अर्छ-केज्ञापमीगावं अर्थयपपसीगावे । गीयमा । सक्षेत्रपपसीगावे भी अर्धवेत्रपपसीगावे नो अर्थतपर्यमोगावे । एवं जाव जागर । पूरिमंत्रके ये भेते ! संठाचे अरखजगर्सर कि सक्षेत्रपरहोगाहे कर्पकेत्रपरहोगाह कर्णतपरहोगाह ! गोममा ! सिन स<del>ंहेत्र</del>-पएसोगाङ सिय असेके अपूरोगाङ ना अर्जतपर्योगाङ । एवं जाद आसर् । परिमंत्रके जं मंते ! सक्तने कर्णतपर्शिए कि संबेकपर्न्योगार्क अस्त्रेकपर्नोपार्क जर्मतरएसोमाडे ! गोसमा । सिय संबेजपुरसोमाडे सिय असंग्रेजपुरसोगाई नी असंनग्रहोगाहे । एवं बाव आयए । परिमंडके में संते ! छंठाचे सकेजग्रहिए सके अपरांगा है कि चरमं अचरमे चरमाई, अचरमाई, चरमंतरप्रसा अचरमंत-पएमा है गोममा । परिमंडले नं सैठाने संकेळपएसिए संकेळपएसोमाडे नी नरमे नी अन्तरमे नो चरमाई, नो जनरमाइ, ना नरमठपरचा निवर्ग जनरमं चरमानि व बरमंद्रपद्सा स अवरमंद्रपद्मा न । एव भाव आस्तु । परिमंडके में मंदी ! स्टाने असंदोक्तपरसिए सक्षेत्रपरसोगावे कि जरमें प्रका। गोबमा । असंदोक्तपरसिर सदाज्ञपर्थोगाह जहां संकेज्यप्रिए । एवं बाव सावए । परिमंडके गं भीते । स्टाने अस्बोळपर्तिए असेबोळपर्योगाडे कि बर्गे पुष्पा । गोनमा ! असेबोळपर्तिए अधक्रेजपएसोगाडे नी थरमे जहां संकेजपएसोगाडे एव जाव शासर । परिमंडके र्व भेता। संद्राचे कर्णनपपतिए सकेक्पएसोगाडे कि चरभ पुष्का । मोक्मा। सहेव बाब मायए । अधारपप्रिए असकेअपएसीगाडे वहा संकेअपएसीमाडे एवं बाद भागप् ॥ ३६७ ॥ परिमङ्गलस्य में मेर्ड । सळणस्य संबेजपप्तियस्य संबेजपप् रोगा<del>त्रस्य अवस्मात् य चरमाण य चरमंतपप्साच य कपरमेतपस्</del>याच व दम्बद्वयाए परसद्वनार सम्बद्धपरसङ्घमार कवरे कमरेद्वितो करण वा बहुमा वा दुवा वा विसेमादिया वा रै गोयमा ! सम्प्रत्योवे परिमेशकस्य संठाणस्य स्वेजनगर्सिवस्य संबेजप्रश्लेगावरस बम्बद्धमाए एगे अधरमे वरमाई संबेजगुलद, अवरमं भरमाणि व दोऽनि निरेसाहिनाई, पर्शद्ववाए सम्बत्वोवा परिमंडबस्स संठानस पंचेक्यप्रियस्य एकेक्यप्रभोगानस्य वर्गतप्रसा अवस्यन्तपर्शा सकेकप्रभा परमन्तप्रमा य अवरमन्तप्रमा य बोऽनि निसेसाहिना वम्बद्वपर्मद्ववाद् सम्ब-त्वोभे परिमध्यकस्य संक्ष्मरसः संबेक्षपपृथ्यस्य स्वेक्षपपृसीगावस्य वृत्त्वपुत्राप् एगे अवरमे भरमाई संबेजगुणाई जनरम च भरमानि य बोडनि विसेगाहिनाई चरमन्तपरसा सेकेमगुषा अवरमन्तपरसा सर्वेमगुणा वरमन्तपरसा स

अचरमन्तपएसा य दोऽवि विमेसाहिया। एव वस्तंमचरसायएमु वि जोएयव्वं ॥ ३६८ ॥ परिसण्डलस्स ण संते । सठाणस्स असरोज्जपएसियस्य सखेज्जपएसोगा-डस्म अचरमस्स चरमाण य चरमन्तपएसाण य अचरमन्तपएसाण य दव्य<u>ह</u>याए पएसट्टयाए दव्बद्वपएसट्टयाए कयरे क्यरेहितो अप्पा वा ४१ गोयमा ! सन्बत्थोवे परिमडलस्स सठाणस्य असरोज्जपएनियस्य सखेज्जपएसोगाडस्स दव्बद्वयाए एगे अचरमे, चरमाह सरोजागुणाइ, अचरम च चरमाणि य दोऽवि विसेसाहियाइ, पएसट्टयाए मन्वत्थोवा परिमडलसठाणस्स असखेज्ञपएसियस्स सम्वेज्जपएसोगाडस्स चरमतपएसा, अचरमतपएया सखेजगुणा, चरमंतपएमा य अचरमतपएमा य दोऽवि विसेमाहिया, द्व्वट्टपएसट्टयाए-मन्वत्थोवे परिमङ्कस्स सठाणस्स असम्बेज-पएसियस्म सखेजपएसोगाटस्म दब्बहुयाए एगे अचरमे, चरमाड सखेजगुणाइ, अचरम च चरमाणि य दोऽवि विसेमाहियाड, चरमतपएमा सखेजागुणा, अचरमत-पएसा सखेजगुणा, चरमतपएसा य अचरमतपएसा य दोऽवि विसेसाहिया। एवं जान आग्रए । परिमडलस्स ण भते । सठाणस्स असखेज्जपएसियस्स असखेज्जपए-सोगाढस्य अचरमस्स य चरमाण य चरमतपएसाण य अचरमतपएसाण य दव्यट्ट-याए पएसद्वयाए दन्त्रहुपएमद्वयाए ऋगरे कमरेहितो अप्पा वा ४ <sup>२</sup> गोयमा । जहा रयणप्पमाए अप्पावहुय तहेत्र निरवसेस माणियन्त्र, एव जाव आयए ॥ ३६९ ॥ परिमइलस्स ण भंते । सठाणस्स अणतपएसियस्य सखेजापएसोगाडस्य अचरमस्स य चरमाण य चरमतपरसाण य अचरमंतपरसाण य दन्बहुयार परसहुयार दब्बद्वमएसद्वयाए क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ 2 गोयमा । जहा सखेजापएसि-यस्स सखेज्जपएसोगाढस्स, नवर सक्रमेण अणतगुणा, एव जाव आयए। परिमंड-लस्स ण भते । सठाणस्य अणतपएसियस्स असखेज्वपएसोगाडस्स अचरमस्स य ४ जहा रयणप्पभाए, ननर सक्मे अणतगुणा, एवं जाव आयए ॥ ३७० ॥ जीवे ण मते ! गहचरमेण किं चरमे अचरमे 2 गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे । नेरइए ण भते । गइचरमेण किं चरमे अचरमे १ गोयमा । सिय चरमे, सिय अचरमे, एव निरतरं जाव वैमाणिए। नेरइया ण भंते ! गङचरमेण कि चरमा अचरमा 2 गोयमा । चरमा वि अचरमा वि, एव निरतरं जाव वैमाणिया । नेरइए णं भते ! ठिईचरमेण कि चरमे अचरमे र्वे गोयमा। सिय चरमे, सिय अचरमे, एवं निरंतर जाव वेमाणिए। नेरइया ण भते ! ठिईचरमेण किं चरमा अचरमा १ गोयमा! चरमा वि अचरमा वि, एव निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइए ण भते ! मवचरमेण किं चरमें अचरमे १ गोयमा । सिय चरमे, सिय अचरमे, एव निरतर जाव वैमा-

पिए । नेरहमा में सेते | सम्बर्धके कि चरमा अवस्या है मोयमा | बरमा कि अवरमा वि एवं विरंतरं बाव बेमानिया । नेरहपू वा गति । मासावरमेन कि वरमे भवरमं है गोयमा । सिय चरमे सिय अन्तरमं एवं भिरेतरं चाव वेमानिए । नेराना र्ण मेत् ! माराज्यसेर्घ 🎋 जरसा अवरसा 🕯 गोयमा ! परमा वि अवरमा वि 💌 जान एसिटियनजा निरेश्वरै जान वेमानिया । नेरहए थे सेते ! आगागानुगरीनी कि बरमे अपरमे है गोबमा ! शिव बरमे शिव अबरमे । एवं निरंतर बल बेमानिए । नेरह्या चे मंदे ! आचापाशुचरनेज 🎏 परमा अवस्मा है गोबमा ! चरमा नि अवरमा नि । एवं निरंतरं बाद वैमाणिका । नेरहए वं मंते ! आहारकर मध कि बरम अवरमे ! गोयमा ! सिय चरमे सिय अवरमे । एवं निरंतरे जाब बैसानिए । नेरहवा ज शंदे ! आहार बरसर्थ कि बरमा अवरसा ! सोनमा ! चरमा नि अचरमा नि एव निरंतरे जाव बेमानिया । नेखाए वं संते ! मावचरमर्ग कि चरम अचरमे । गोयमा । किय चरमे शिय अचरमे । एवं विरंतर जान बेसाबिए । सेरह्मा च भेते । भावचारमेचे 🚳 चारमा खचरमा 🕻 गोनमा । चरमा वि मचरमा वि । एवं निरंतर काव वैमाधिना । नेखप वं भीते । बज्यचरमेनं 🎏 चरमे अचरमे र गोवमा ! सिव चरमं सिय अचरमं । एवं निरंहरं बाव वेमानिए । मेरह्मा च मंते । बञ्जनरमेणं कि चरमा अवस्मा ! चोपमा । चरमा वि अभरम वि । एवं निरंतरं कान बमाजिया । नेरहरू में संस् । गैक्चरमंत्र 🎏 चरने अन्यरमे ! घोनमा ! शिव नारमे शिव अन्यरमे । एवं निरंतरं जाव वेमानिए ! मेरप्रका में अंदे ! गंभकरनेले कि कारता अकरता ! मोयता ! करता वि अकरता मि। एवं निरतरं काव वैमानिका । मेरहए वं भेते ! रसवासम्यं कि वारमं क्षचर्म र गोनमा ! छन चरम छिन बचरमे । एवं निरंतर जान बेमामिए । नरहरा र्ष मेरी ! रसवरमर्थ कि वरमा अवस्मा ! गोवमा ! वरमा वि अवस्मा वि । एवं निरंतर जान नेमानिना । नेरहए च र्यत ! नासनारमेर्च कि चरमे बनरमें ! गोनमा ! सिव चरने सिय अचरने । एवं गिरंतर जान नेमानिए । नरहना वं तेते ! पासचरमेन कि चरमा अचरमा ! गोनमा ! चरमा वि सचरमा ति । pa निरंतरे जान बंशायिया। सनक्षणीगाडा--- "यहिन्दर्शने य शासा आनापापुत्ररमें य बोद्यमा । आहारमानवरमे नक्त्रस्ते नवनस्ते नवनस्ते व ॥ ३७१ ॥ पदावणाप भगवर्षेष् वसमे घरमपर्य समर्च ॥

से जूर्ण भेते! सञ्चानीति बोहारिची भागा वित्तमीति बोहारिची माता बह सञ्चामीति बोहारिची मासा अह वित्तमीति बोहारिची भासा तह सञ्चा- मीति ओहारिणी भामा, तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा<sup>2</sup> हता गोयमा! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चिंतेमीति ओहारिणी भासा, अह मण्णामीति ओहारिणी मासा, अह चिंतेमीति ओहारिणी भासा, तह मण्णामीति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा ॥ ३७२ ॥ ओहारिणी ण भंते ! भासा कि सचा, मोसा, सचामोसा, असचामोसा १ गोयमा ! सिय सचा, सिय मोसा, सिय सचामोसा, सिय असचामोसा । से केणहेण भते ! एव वुचइ-'ओहारिणी ण मासा सिय सचा, सिय मोसा, सिय सचामोसा, सिय असचामोसा' १ गोयमा ! आराहिणी सचा, विराहिणी मोसा, आराहणविराहिणी सचामोसा, जा णेव आराहणी णेव विराहिणी णेवाराहणविराहिणी सा असचामोसा णाम चउत्थी मासा, से तेणहुण गोयमा। एव वुचइ—'ओहारिणी ण भासा सिय सचा, सिय मोसा, सिय सचामोसा, सिय असचामोसा'॥ ३०३॥ अह भते! गाओ मिया पस् पक्खी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भामा मोसा 2 हता गोयमा िजा य गाओ मिया पस् पक्खी पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३७४॥ सह भते। जा य इत्थीवऊ, जा य पुमवऊ, जा य नपुसगवऊ पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा 2 हता गोयमा ! जा य इत्थीवऊ, जा य पुमवऊ, जा य नपुमगवऊ पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३७५॥ अह भते ! जा य इत्थिआणवणी, जा य पुमआणवणी, जा य नपुसगआणवणी पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा १ हता गोयमा ! जा य इत्थिआणवणी, जा य पुमआणवणी, जा य नपुसगआणवणी पण्णवणी णं एसा मासा, ण एसा मासा मोसा ॥ २७६ ॥ अह मते ! जा य इत्थिपण्णवणी, जा य पुमपण्णवणी, जा य नपुसगपण्णवणी पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा १ हता गोयमा ! जा य इत्थिपण्णवणी, जा य पुमपण्णवणी, जा य नपुसरापण्णवणी पण्णवणी ण एसा मासा, ण एसा भासा मोसा ॥ २०० ॥ अह भते ! जा जाईइ इत्थिवऊ, जार्डेइ पुमनक, जाईइ णपुसगनक पण्णनणी ण एसा भासा, ण एस भासा मोसा 2 हता ! गोयमा ! जाईइ इत्थिवऊ, जाईइ पुमवऊ, जाईइ णपुसगवऊ पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३७८ ॥ अह भते ! जा जाईइ इत्थिआ-णवणी, जाईड पुमआणवणी, जाईइ णपुसगाणवणी पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा नोसा 2 हता गोयमा ! जाईह इत्थिआणवणी, जाईइ पुमञाणवणी, जाहेंड णपुसगाणवणी पण्णवणी ण एसा भाया, ण एसा भासा मोसा ॥ ३७९ ॥ अह भते ! जाईइ इत्थिपण्णवणी, जाईइ पुमपण्णवणी, जाईइ णपुसगपण्णवणी ३९४ सुचारामे [ रक्जनमासुर्त प्रभावणी वं एसा भासा ण एसा मासा मोसा ! इता गोवमा ! आईड इन्हिन

प्रमाहकी जाँहेह पुरस्कावणी जाँहें। यहां विद्यासम्बन्धी प्रकाशी ये एसा मारा न एसा सामा सोसा ॥ १८ ॥ नह मेरी ! संबद्धमारए वा संबद्धमारिवा वा बानह कुसमाने-अहसेसे कुमामीरिवा गोयसा ! नो इवद्वे सम्बद्धे सम्बन्ध सम्बन्ध

बाजर हुमानि-अहमेरे हुमानीशि । गोसमा । वो हणहे हमहे, कब्बल छानिको । शह मंते ! मंददुमारए वा मंददुमारिया वा बाजर आहार आहारेमानि-जदसरे आहारमाहारेमिति । गोसमा । यो हणहे छमहे बाब्बल छन्यियो । अर मंते । मंददुमारए वा संदुष्मारिया वा बागर-क्वं ये अस्मापियणे । गोसमा । बो

श्यकुमारत् वा राष्ट्रभारत्वा वा वाचार-कव म कामाप्तवत् । गाममा व कप्ते इसके, ज्यादन एक्पियों । कहा सेती में बहुआरए वा मंद्रभारिता वा बागर्-कर्स में करत्तुत्रकों कर्स में करत्तुत्रकेशि । गोममा वा हर्गे उपने, जन्मात्व एक्पिया । कहा सेते । माद्रभारत् वा में बहुआरिता वा वाचार-कर्स में किस्ता करें के अधिकारित के में स्वाधारत्व वा में स्वाधार्मिक कर्मा

निर्देशारण, वर्ष में महिदारण है। यो स्मारी था इसके सम्ब्रेस प्रकारण सम्मिकी 11 १०९ ॥ यह मेरी / जेंद्र पोने धारे पोन्य भाग एक्यू नाम्य इसमाने-स्वरमी प्रवासने गोबमा। यो इसके सम्ब्रेस जमारन सम्मिकी । यह मेरी / उहे बाद एम्प नाम्य नाहर्ष जहारमाणे-स्वरमें आहारीमी शोबमा। जो इसके स्वर्ध

नामक आहार आहारेमाणे-अन्यस्य आहारेमाई गोयसा । को इण्डे स्पर्के आपन्य आहार आहारेमाणे-अन्यस्य आहारेमाई गोयसा । को इण्डे स्पर्के शम्पाद समिणमो । अन् संदे । वह गोने दारे बोबए आए एसए बाजद-अर्थ में सम्मापित है गोयसा । यो इल्डे स्पर्के, जन्मात्व समिशा । अह मेरी । तेरे बाब एसए बाजद-अर्थ में स्वतुत्वस्थित गोयसा । यो इन्हें स्पर्के

कम्मत्त्व धन्निमो । सह गेर्ड । उडे बाब एक्यू बावर्-वर्ष मे महिरार १ । गोसता । को रुप्ते समझे कम्मत्व धन्निमा ॥ ६८१ ॥ अह गेर्ड ! समुर्य महिरो आदे दर्शा छोडे को सिरो धीर्य कन्छे सरखे परप्तरे स्थापित स्थाप इंग्यु केस्ट्रप्य केस्ट्रीय स्थय निताय निक्रम्य केशको स्थापना छम्मा छ। रुप्तक के द्वी गोनमा ! मुक्ति आह निक्रम्य वेशको स्थापना सम्मा छ।

एम्बर । सद् प्रति ! मनुस्ता जान निक्रमा वेजानते तत्वप्यारा छना सा महुन्दर | हुँग गोनगा | मनुस्ता बान निक्रमण स्या सा महुन्दर ३.४२ । महुन्दर्भ ! मनुस्ते महिंचे समय हिंग्मिया ग्रीडी स्वाने मिनो वेदिना सम्बद्धि तत्वर्का प्रस्तार राजनी शिनाती निराज प्रतिमा चोल्याना चोल्याना विश्वा सिमा निराज निराजिता नेपानों सहस्त्रारा ग्रामा शा इत्यान्य । हुंगा योजना ।

निर्तिस्य निर्देश्या केणांके ताप्पणारा छन्ता था इधिक्यः इता यास्या। यञ्जस्य जाव निर्देश्य केणांके ताष्पणारा छन्ता था इनिषदः । शह सेंडे। जानुस्र जाव निर्देश्य केलांके ताप्पणारा छन्ता था पुसन्दरः हेवा गोस्या। सन्दर्श्य प्रदिष्ठे यात्र निर्देश्य जेलांके ताप्पणारा छन्ता था पुमन्दरः । सर सर्व।

कंस कसोय परिमडल सेल जालं थाल तारं रूवं अच्छिपव्यं कुड पउम दुद्ध दहिं णवणीय असण सयण भवणं विमाण छत्त चामरं भिंगार अगण णिरंगण आभरण रयणं जेयावजे तहप्पगारा सन्व त णपुसगवऊ <sup>2</sup> हता गोयमा! वंस जाव रयण जेयावन्ने तहप्पगारा सब्व त णपुसगवऊ ॥ ३८४॥ अह भते ! पुढवी इत्थिवक आउत्ति पुमवक धण्णेति नपुसगवक पन्नवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा १ इता गोयमा ! पुढवित्ति इत्थिवऊ आउत्ति पुमवऊ धण्णेति नपुसगवऊ पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा । अह भते ! पुढवित्ति इत्थिआणवणी, आउत्ति पुमआणवणी, धण्णेत्ति नपुंसगाणवणी पण्णवणी ण एसा मासा, ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! पुढवित्ति इत्थिआणवणी, आउत्ति पुमआणवणी, धण्णेति नपुसगाणवणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा । अह भते ! पुढवीति इत्थिपण्णवणी, आउत्ति पुमपण्णवणी, घण्णेत्ति णपुसगपण्णवणी आराहणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा १ हंता गोयमा! पुढवीति इत्थिपण्णवणी, आउत्ति पुमपण्णवणी, घण्णेत्ति णपुंसगपण्णवणी आरा-हणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा। इच्चेव भते ! इत्थिवयण वा पुमवयणं वा णपुसगवयण वा वयमाणे पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा <sup>2</sup> हता गोयसा ! इत्थिवयण वा पुमवयण वा णपुसगवयण वा वयमाणे पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३८५ ॥ भासा ण भते ! किमाइया, किपवहा, किंसिटिया, किंपजनिसया <sup>२</sup> गोयमा! मासा ण जीवाइया, सरीरप्पभवा, वजसिटिया, लोगतपज्जवसिया पण्णत्ता । भासा ऋयो य पभवइ <sup>2</sup> कड़िह व समएहि भासई भास $^{\,2}$ । भासा कडप्पगारा $^{\,2}$  कड़ वा भासा अणुमया उ $^{\,2}$ ॥ सरीरप्पभवा भासा, दोहि य समएहिं भासई भास। भासा चडप्पगारा, दोण्णि य भासा अणुमया उ ॥ ३८६ ॥ कडविहाण भते ! भासा पन्नता ? गोयमा । दुविहा भासा पन्नता । तजहा-पज्जत्तिया य अपज्जत्तिया य । पज्जत्तिया ण भते ! भासा कड्विहा पन्नता 2 गोयमा ! दुविहा पन्नता । तजहा—सचा मोया य ॥ ३८७ ॥ सचा ण भते ! भासा पज्जत्तिया कड्विहा पन्नता <sup>१</sup> गोयमा ! दसविहा पन्नता । तजहा-जणवय-सचा १, सम्मयसचा २, ठवणसचा ३, नामसचा ४, रूवसचा ५, पहुचसचा ६, ववहारसञ्चा ७, भावसचा ८, जोगसचा ९, ओवम्मसचा १०। "जणवय १ चमय २ ठत्रणा ३ नामे ४ रूवे ५ पहुच्चमचे ६ य । ववहार ७ भाव ८ जोगे ९ दसमे ओवम्मसचे य १०" ॥ ३८८ ॥ मोसा ण भते ! भासा पज्जत्तिया कटविहा पन्नता २ गोयमा । दमिवहा पन्नता । तजहा-कोहणिस्सिया १, माणणिस्सिया २,

.

मायाविस्मिया ३ स्त्रेइविस्मिया ४ येज्यविस्मिया ५, होसचिस्सिवा ६ इत्यवि-रिमया ७ मनगिरिमया ८ व्यवकाश्यामिरिमया ९ जववाश्यामिरिमवा १ । चोहे माने मामा भोमे पिजे तहेन वोसे न । इस्स मए अक्टाइम्डवनस्पर्त-रिमना वसमा ॥ १८९॥ अपअक्तिया में अंते ! कद्मिश मासा प्रवत्ता ! गीयमा । दुनिहा पत्तरा । संबहा-संबामीसा अगवामीसा व । सवामीसा व र्गत । मासा अपञ्चतिना वद्भिद्दा पंत्रता १ गोनमा । व्यक्षिद्दा प्रवता । वैज्ञद्दा-उपप्रजमिसिना विस्पर्यमिरिसमा ३ उप्पन्निमानिरस्ता ३ जीवमिरिसमा ४ जानैवमिरिसमा ५, जीवाजीवसिरिस्या ६ अर्चसमिरिस्या ७ परित्तमिरिस्या ८ अज्ञामिरिस्या ६ अदवामिरिसमा ९ ॥ १९ ॥ असमामोसा मं संते ! भासा सपजातिका क्रमेहा पनता है गोबमा है तुवाकसमिद्या पनता । तंबदा-मार्मतमि १ भावसनी २ जायकि ३ तद्व पुष्क्रणी व ४ पण्णवणी ५ । प्रवस्ताशी ६ सासासासा इक्स-क्रमोमा ७ स ॥ अव्यक्तिमा**ह**िया भागा ८ मासा **व अ**श्विमा**ही**म बोद्धमा ९ । चैसयकरणी मासा १ जोगङ १९ अवलोगका चैव १२ ॥ ३९९ µ जीवा र्च मते ! कि मासगा अभागगा है गोवमा ! जीवा भासगा वि अमास्या वि । से केन्द्रेनं संते । एवं तुवार- शोवा मासगा वि असासगा वि' १ गोनमा । जीवा प्रविदा पत्रता । तेजहा चंद्रारसमानभ्यमा व असंधारसमावण्यमा व । तस्य ने वे र असंसारसमाक्ष्यमा ते में सिका सिका में असासमा । तत्व में के ते संमारस्मा-बज्यमा से द्वविद्या पक्ता । शंजदा-सेकेसीपविषणाया व करेकेसीपविषण्या व । तत्व मं जे वे सेकेसीपविषणामा वे मं बनासमा : तत्व मं जे वे अवेकेसीपवि क्यामा तं द्विनद्दापकता । तं बदा-पृतिदियाय अनेपिदिकाय । तस्य वं वे दे प्रमिष्या ते वं मनासमा। तस्व णं जे ते अनेगॅदिया ते तुलेहा पतता। तंग्हा-प्रमाचना म भएमानना थ । तत्व मं जे ते भएमानना ते मं समासमा तत्व व ने सं पत्रकामा सं ण शासमा से एएनड्रेन धोनमा ! एवं सुन्दर- बीना मासमा नि कमासना वि' । ३ १ ॥ नेरहना ज भते । कि मासना अमासया १ नोयमा । नेरहनी भासना वि अमासना वि । से केबद्वेशं मेरो ! एवं बुब्बा-विरामा जासना वि अभी-समा नि' र गीयमा । नेएहवा चुनिहा पत्रमा । संज्ञहा-पञ्चलमा य अपञ्चलमा न र तस्य ये के दे अपजाना ते के अमाधगा तत्व ये के ते प्रवत्ना ते में मासमा से एएल्ट्रेज धोनमा ! एवं कुचा-निरहना सासगा कि असासमा कि'। एवं एपिं-दिवाजानं विरेक्तरं सानियम्य ॥ १९३ ॥ ऋ में र्शतः। साराजाया पत्तवाः मोसमा ! चतारि मासजासा पचवा । तंजका-सचमेर्ग सासजार्ग विदर्श मीस वर्ष्ण

सचामोस, चउत्यं असचामोस। जीवा णं भते ! कि सच भास भासति, मोस भास भासति, सचामोस भास भासति, असचामोस भास भासति <sup>2</sup> गोयमा ! जीवा सर्च पि भास भासति, मोस पि भास भासति, सचामोस पि भास भासति, असचामोस पि भास भासति । नेरइया ण भते ! किं सच भास भासति जान असचामोस भास भासति <sup>२</sup> गोयमा ! नेरइया ण सच पि भास भासति जाव असचामोस पि भास भासति । एव असुरकुमारा जाव थणियकुमारा । वेइदियतेइदियचर्डारिदिया य नो सच॰, नो मोस॰, नो सचामोस भास भासति, असचामोस भास भासति। पर्चि-दियतिरिक्खजोणिया ण भते ! कि सच भास भासति जाव असचामोस भास भासति 2 गोथमा! पर्चिदियतिरिक्खजोणिया णो सच भास भासति, णो मोस भास भासति, गो सचामोस भास भासति, एग असचामोस भास भासति, णण्णत्य सिक्खापुन्वग उत्तरगुणलर्द्धि वा पहुच सच पि भास भासति, मोस पि॰, सचामोस पि॰, असचा-मोस पि भास भासति । मणुस्सा जाव वेमाणिया एए जहा जीवा तहा भाणियव्वा 11 3९४ ॥ जीवे णं भते ! जाइ दव्वाइ भासत्ताए गिण्हइ ताइ किं ठियाड गिण्हइ, अठियाइं गिण्हड़ र गोयमा ! ठियाइ गिण्हड़, नो अठियाइ गिण्हड़ । जाईं भते ! ठियाड गिण्हइ ताइ कि दव्वओ गिण्हइ, खेत्तओ गिण्हइ, कालओ गिण्हइ, भावओ गिण्हड 2 गोयमा ! दब्बओ वि गिण्हड्, खेत्तओ वि०, कालओ वि०, भावओ वि गिण्हड् । जाड भते । दन्त्रओ गिण्हइ ताइ किं एगपएसियाइ गिण्हइ, दुपएसियाइ जान अणतपएसियाइ गिण्हर <sup>२</sup> गोयमा ! नो एगपएसियाइ गिण्हड् जाव नो असखेजपएसियाइ गिण्हड्, अणतपएसियाइ गिण्हइ। जाइ खेत्तओ गेण्हइ ताई किं एगपएसोगाढाइ गेण्हइ, दुपएसोगाढाइ गेण्हइ जाव असखेज्जपएसोगाढाड गेण्हड १ गोयमा ! नो एगपएसोगा-ढाइ गेण्हइ जाव नो संखेज्जपएसोगाढाइ गेण्हइ, असखेज्जपएसोगाढाई गेण्हड । जाड कालओ गेण्हइ ताइ किं एगसमयठिइयाइ गेण्हइ, दुसमयठिइयाइ गेण्हइ जाव असखेजासमयिहियाइ गेण्हइ १ गोयमा ! एगयमयिहियाइ पि गेण्हइ, दुसमयिहिइ-याइ पि गेण्हइ जाव असखेजसमयठिइयाइ पि गेण्हइ। जाइ भावओ गेण्हइ ताड कि वण्णमताइ गेण्हइ, गधमताइ०, रसमताइ०, फासमताइ गेण्हइ १ गोयमा! वण्ण-मताइ पि गे॰ जाव फासमताइ पि गेण्हइ। जाइ भावओ वण्णमताइ गेण्हइ ताइ किं एगवण्णाङ गेण्ह्इ जाव पचवण्णाइ गेण्ह्इ १ गोयमा । गहणद्व्याइ पहुन्च एगवण्णाङं पि गेण्हइ जाव पचवण्णाई पि गेण्हइ, सब्बग्गहण पहुच णियमा पचवण्णाइ गेण्हइ, राजहा--कालाइ नीलाइ लोहियाइ हालिहाइ सुिकलाइ । जाड वण्णसी कालाइ नेण्हर तार कि एगगुणकालाइ गेण्हर् जाव अणतगुणकालाइ गेण्हर् ? गोयसा ! २६ स्रता॰

प्रशासमाइ पि नेव्यह जान वार्णसम्भवकाह पि नेव्यह । यहं जान प्रक्रिकाई पि । आहं मानको गवर्णसाह विव्यह ताई कि एम्प्रेनाह शिव्यह, तुर्गमाई पिव्यह । यहं जान प्रक्रिकाई पि । आहं मानको गवर्णसाह शिव्यह ताई कि एम्प्रेनाह शिव्यह, तुर्गमाई पिव्यह । योग्यं पिव्यह , स्वक्रमाई पिव्यह नाई विश्वह । आहं ग्रेन्यह शिव्यह नाई कि एम्प्रेन्यह शिव्यह । आहं पिव्यह । आहं पिव्यह नाई कि एम्प्रेन्यह शिव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह योग्यं प्रक्रिकाह । योग्यं प्रक्रिकाह पिव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह पिव्यह प्रक्रिका । योग्यं प्रक्रिकाह पिव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह पिव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह पिव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह पिव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह योग्यं वार्णस्माह विव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह योग्यं विव्यह वार्णस्माह विव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह योग्यं विव्यह वार्णस्माह विव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह योग्यं विव्यह वार्णस्माह विव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह वार्णस्माह विव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह विव्यह वार्णस्माह विव्यह वार्णस्माह विव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह वार्णस्माह विव्यह वार्णस्माह विव्यह वार्णस्माह विव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह विव्यह वार्णस्माह विव्यह वार्णस्माह विव्यह वार्णस्म विव्यह वार्णस्माह विव्यह । योग्यं प्रक्रिकाह विव्यह वार्णस्माह विव्यह वार्णस्माह विव्यह वार्णस्माह वार्णस्माह वार्णस्माह वार्णस्माह वार्णस्माह वार्णस्माह वार्णस्माह वार्णस्माह वार्णस्माह वार्णस्म वार्णस्माह वार्णस्म वार्णस्म

एगगुमितवाई पि निम्बह जान कर्गतगुमितवाई पि फिल्हह एवं जान महरासी ! जाई सावको फासमदाई गेज्बह दाई कि एगफासहं गेज्बह बाब क्युपासह रेज्बह गोयमा ! गहमदन्त्राहं पहच को एगफासहं गेव्हड उपासहं गेव्हड बार पर फासाई रोज्य को पंचकासक रोज्य जान को श्रष्टकासाह रोज्य सम्बन्धक पूज नियमा चरफासहं गेम्बर, तंत्रहा-सीवफासहं गेम्बर, सरिवफासहं निद्धपासमं सन्यक्रसाई रोक्ड । कई पासको सीमाई रोक्ड साई कि एराग्रवसीमाई रोक्ड वान वज्ञात्यसीनाई गेल्ड्ड ? गोनमा ! एग्युकसीनाई पि गेल्ड्ड वान वर्णाः पुणसीयाहं पि गेम्बङ एवं उत्तियान्यक्षकरताई जान अनंत्युगाहं पि ग<sup>म्ब्</sup>र u १९५ u बाई मेरो । बाब अर्थला<del>मा अ</del>न्दार्त रोख्ड तार्ड कि प्रक्राई रोख्ड मपुदाई गेन्द्र ! गोनमा ! पुदाई शेन्द्र, भी अपुदाद शेन्द्र । बाई मेठे ! पुदुः रेख्द ताई कि शोगाबाई नेल्हर, अयोपादाई नेल्हर शोगमा ! ब्हेपानाई नव्हर नो अजोगाबाई रेन्द्र । बाद मते ! ओमाबाई रोव्हर ताई कि अर्थतरीयाबाई राज्य, परपरीगावार नेन्द्र है गोसमा । कर्णतरीगावार गेज्य, भी परंपरीगावार रोज्य । जाई भीते । कर्णतरीमाताई गेल्ब्य ताई कि अनुई रोज्यस बानराई रोज्द र मोसमा । जन्तुं पि रोज्दर बासराई पि रोज्दर । आई सेट ! जन्दर्र रोज्दर ताई कि उर्दू गेल्डर, अदे गेल्डर, तिरियं गेल्टर म्योयमा । उर्दू पि गेल्डर, अहे नि रोखाइ तिरिवं पि गेल्यू । जाद मते । उन्हें पि गेल्यू जाहे वि गेल्यू तिरिवं पि गेल्यू हाई कि आई गेज्द, मज्हे गेज्द, पजनभागे गेज्द है गोनमा ! आई पि गन्दर, सन्ति वि राज्या, प्रजयसामे नि नेज्या । जाई नंता । जाई पि रोज्या सन्ति दि रोजात, प्रजनसाचे वि गेजात साई कि सचित्रए रोजात अविगए रोजात र शोधमा ।

सविसए गेण्हइ, नो अविसए गेण्हइ। जाडं भते ! सविसए गेण्हड ताइं कि आणुपुव्चि गेण्हर, अणाणुपुटिंव गेण्हरू र गोयमा ! आणुपुटिंव गेण्हरू, नो अणाणुपुटिंव गेण्हरू । जाइ मते ! आणुपूर्व्च गेण्हइ तार्ड कि तिदिसिं गेण्हड जाव छिद्दिसं गेण्हइ ? गोयमा ! नियमा छिहिसिं गेण्हइ । "पुट्टोगाढअणतर अणू य तह वायरे य उद्दूमहे । आइवि-सयाणुपुर्वि णियमा तह छिद्दिसि चेव" ॥ ३९६ ॥ जीवे णं भते ! जाई द्वाङ भास-त्ताए गेण्हड ताइं किं सतर गेण्हड, निरतर गेण्हइ र गोयमा ! सतर पि गेण्हड, निरतर पि गेण्हड । सतर गेण्हमाणे जहण्णेण एगं समय, उक्कोसेण असखेजसमए अतर कहु गेण्हड, निरतर गेण्हमाणे जहण्णेण दो समए, उक्कोसेण असखेजसमए अणुसमयं अविरहिय निरतर गेण्हइ । जीवे णं भंते ! जाङ दन्वाइ भासत्ताए गहियाइ निसिरइ ताई किं सतर निसिरइ, निरंतरं निसिरइ <sup>2</sup> गोयमा ! सतर निसिरइ, नो निरतरं निसिरइ। सतरं निस्सिरमाणे एगेण समएण गेण्हइ, एगेण समएण निसिरइ, एएण गहणनिसिरणोवाएण जहन्नेण दुसमय, उक्कोसेण असखेजसमय अतोमुहुत्तिग गहणनिसिरणोवाय करेडु ॥ ३९७ ॥ जीवे णं भते ! जाइं दव्वाइ भासत्ताए गहियाई णिसिरइ ताइ कि मिण्णाइ णिसिरइ, अभिण्णाइ णिसिरइ? गोयमा ! भिन्नाइ पि णिस्सिरइ, अभिन्नाई पि णिस्सिरइ । जाई भिन्नाइ णिसिरइ ताइ अणतगुणपरिवृद्वीए ण परिवृद्धमाणाइ लोयत फुसन्ति, जाइ अमिण्णाइ णिसिरइ ताइ असखेजाओ ओगाहणवगगणाओ गता भेयमावजति, सखेजाइ जीयणाई गता विदंसमागच्छति ॥ ३९८ ॥ तेसि ण भते ! द्व्वाण क्इविहे भेए पण्णते ? गोयमा ! पञ्चविहे भेए पन्नते । तजहा-खडाभेए, पयराभेए, चुण्णियाभेए, अणु-तिहियाभेए, उक्करियामेए । से किं त खडामेए र २ जण्ण अयखडाण वा तउयखडाण वा तवखडाण वा सीसगखडाण वा रययखडाण वा जायस्ववंडाण वा खडएणं भेए भवइ, से त खडामेए १। से कि तं पयराभेए ? २ जण्ण वसाण वा वेताण वा नलाण वा कयलीयंभाण वा अञ्मपहलाण वा पयरेण भेए भवइ, से त पयराभेए २। से किं त चुण्णियाभेए ? २ जण्ण तिलचुण्णाण वा मुरगचुण्णाण वा मासचुण्णाण वा पिप्पलीचुण्णाण वा मिरीयचुण्णाण वा सिंगबेरचुण्णाण वा चुण्णियाए भेए भवइ, से त चुण्णियाभेए ३। से किंत अणुतिख्याभेए २ जण्ण अगडाण वा तडागाण वा दहाण वा नईण वा वावीण वा पुक्खरिणीण वा दीहियाण वा गुजालियाण वा सराण वा सरसराण वा सरपतियाण वा सरसरपतियाण वा अणुतिहियाभेए भवइ, से त अणुतिहियामेए ४। से किंत उक्करियाभेए १ २ जण्ण मूसाण वा सङ्साण वा तिलसिंगाण वा मुग्गसिंगाण वा माससिंगाण वा एरडवीयाण वा फुट्टिया

\* \*

प्रमाणं खंडामेएवं पशरामेएवं कुनिवसामेएवं अनुसहिसामेएवं उडहीबामेएव य मिज्ञमानार्थ कमरे कमरेहितो अप्या वा बहुवा वा तुन्ना वा विशेसाहिता ना रे गोनमा ! सम्बत्नोनाई वस्त्राई उक्तरेयासेएर्च मिळमापाई, अपुत्रि यामेएनं मिज्ञमाणहं अनंतपुणहं, चुन्त्रिवामेएवं मिज्ञमाणहं अनंतपुनारं, पगरानेएमं निज्ञताणाह अर्णतगुनाई, चंडामएर्ग निज्ञनानाई जर्गतगुनाई प ४ ॥ नेरहए ने भेते । जाई दन्नाई मासचाए गेज्ड सर्ह कि ठिनाई गेल्स भठिनाई रोज्य ! गोयमा ! एवं चेव अहा जीवे बताववा मित्रमा तहा नेरहमत्स वि नान कप्पाचहुन । एवं एगिय्यवज्ये वंडली जान हैमाफिया । जीवा ये जैठ ! यार्र यम्बाई मासताए नेम्बंदि ताई कि ठियाई नेम्बंदि आठिनाई नेम्बंदि । गीनगा एवं चेव पुरुष्तेग की लेक्कां जान वेसाविता । जीवे वर् संत । जाई राजाई सम्मासत्ताप् गेल्हर तार्द कि ठिवार्द गेल्हर, श्राठियार्द गेल्हर ! गोयमा ! वस नोहिनवंडमो तहा एखोऽनि जबरं निगर्किरिया ज पुरिक्रजेशि । एवं मोसामासार नि चवामोसामासाए वि अस्थवामोसामाधाए वि एवं चेव नवरं असवामोसामा साए बिगर्निनिया पुण्डिजोति इनमं अभिकाषेथं-विसर्निविए यो सीते । बाई दण्यारे असमामोसामासत्ताए नेप्यह ताई कि ठिनाई नेम्बड नठियाड नेम्बड नीयमा र अहा ओहिनएवओ एर्न एए एनलपुहुत्तेल एस वैद्यमा भानियन्त्रा ॥ ४ ९ <sup>॥</sup> भीने में भंते ! जाई वस्माई समभासत्ताप् शिन्दर ताई कि समभासताप् निर्मित्र मोसमासत्तार निस्तर, समामोसमासत्तार निस्तर, असमामोसमासतार निर्मारह है योगमा ! सबमासताए निसिद्ध, नो मोसमासत्ताए निसिद्ध, नो सबामोतमातार निसिद्द, भी अनवामीनमानताप् निसिद्द । एवं पृथिदियविगासिदियवासे पंडाने आव वेमाजिया । एवं पुरुत्तेन वि । जीवे में मंति । जाई व्यवद्धं मोरामामताए सिन्द्रः तारं कि सबमामकाए निविद्य भोसगासकाए सबामीसमारकाए अगबामी समासत्ताप् निविरह हे गोयमा ! को सबगानताप् निविरह, बोसनानताप् विक्रिन्ह, भी सवामानमानृताए यो अनवामीनमासत्ताए निसिरह । एउँ गुन्धामासमासनाए अस्वामोयभागताए वि एवं अव नवरं अनवामोसमानताए विमान्द्रवा तहेब पुरिक्रजीन जाए चैव सिन्दर नाए चैव निमिष्ट । एउं एए एमापुर्दिना अर्थ र्पन्या माधिकच्या ॥ ४ २ ॥ चत्रविहे में संत ! वयके पकते ! सायमा ! सासम्बद्ध वक्ते प्रभो । संबद्धा-प्राथका दुधक्ये बहुवयक इत्यापन प्रमुख्या वर्षमग्रवयमे अन्यात्मवयमे अवशीयवयमे अरुवीयववसे उपनीया

वणीयवयणे, अवणीओवणीयवयणे, तीतवयणे, पदुप्पन्नवयणे, अणागयवयणे, पचन्स्ववयणे, परोक्स्ववयणे। इचेड्यं भते! एगवयण वा जाव परोक्स्ववयण वा वयमाणे पण्णवणी ण एसा भासा, ण एमा भासा मोसा हिचेड्य एगवयण वा जाव परोक्स्ववयणं वा वयमाणे पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ४०३॥ एएसि णं भते! जीवाणं सच्चभासगाण मोसभासगाणं सच्चामोसभासगाण असच्चामोसभासगाण अभासगाण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा १ गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा सच्चभासगा, सच्चामोसभासगा असखेजगुणा, गोसभासगा असखेजगुणा, असच्चामोसभासगा असखेजगुणा, अभासगा अणंतगुणा ॥ ४०४॥ पञ्चवणाए भगवईए एकारसमं भासापयं समनं॥

क्द ण भते ! सरीरा पन्नता <sup>१</sup> गोयमा ! पंच सरीरा पन्नता । तजहा---ओरा-लिए, वेडिव्वए, आहारए, तेयए, कम्मए । नेरइयाण भते ! कह सरीरया पन्नता <sup>2</sup> गोयमा ! तओ सरीरया पन्नता । तजहा-वेडिव्वए, तेयए, कम्मए । एव असर-कुमाराण वि जाव थणियकुमाराण । पुढविकाइयाणं भेते ! कइ सरीरया पन्नता र गोयमा ! तओ सरीरया पन्नता । तजहा---ओरालिए, तेयए, कम्मए । एव वाउ-काइयवज्ञ जाव चलरिंदियाण । वालकाइयाणं भते ! कइ सरीरया पन्नता 2 गोयमा! चत्तारि सरीरया पन्नता। तजहा---ओरालिए, वेडव्विए, तेयए, कम्मए । एव पर्चिदियतिरिक्सजोणियाण वि । मणुरसाण भते ! कइ सरीर्या पन्नता ? गोयमा ! पच सरीरया पन्नता । तजहा—ओरालिए, वेउन्विए, आहा-रए, तेयए, क्रम्मए । वाणमतरजोइसियवेसाणियाण जहा नारगाणं ॥ ४०५-६ ॥ केन्रइया ण भते ! ओरालियसरीरया पन्नता ² गोयमा ! दुविहा पन्नता । तजहा-वदेल्या य मुक्केल्या य । तत्थ ण जे ते वदेलया ते ण असखेजा, असखेजाहिं उस्सप्पिणिओयप्पिणीहिं अवहीरति कालओ, खेत्तओ असखेजा लोगा। तत्थ ण जे ते मुद्देलया ते ण अणता, अणताहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा, अमवसिद्धिएहिंतो अणतगुणा सिद्धाणतभागो। केवइया णं भते ! वेडिव्वयसरीरया पन्नता १ गोयमा ! दुविहा पन्नता । तजहा-वदेहागा य सुक्रेलमा य । तत्थ ण जे ते वद्देलमा ते ण असखेजा, असखेजाहिं उस्सप्पिण-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति काल्ओ, खेत्तओ असखेजाओ सेढीओ पयरस्स असखेजाइ-भागो । तत्य ण जे ते मुक्केल्लगा ते ण अणता, अणताहि उस्सप्पिणिओसप्पिणीहि अवहीरंति कालओ, जहा ओरालियस्स मुक्केलगा तहेव वेउव्वियस्स वि भाणियव्वा

\* 1

क्रमा म सुबेक्स्या व । सरव मं जे ते बढ़ेक्समा ते नं भवता अर्थताई तस्त्राधिन ओसिंगजीहें अवहीरित काममों जेताओं अर्थता स्मेगा दश्यको श्रिकेंहितो अर्थत-गुपा सम्मनीबार्णतमायूका । तत्व वं के ते सुकेतमा तं वं अर्वता अर्मतार्वे उरसप्पिणियोसप्पिनीई अवडीरेदि काल्यो केल्यो वर्गता क्या दम्बले सन् जीपेहितो सर्वेत्स्या जीवक्सारसामेतमागो । एवं कस्मासरीराजि वि सामिक्सानि U ४ 🕶 ॥ नेरह्मार्च मंते ! केवडमा जोराकियसपीरा पचला १ गोजमा ! हरिए। पकता । र्वमहा-वदेशमा य सुदेशमा व । तत्व गं से ते वदेशमा ते नं वर्ति । तत्य में जे ते <u>स</u>देशमा ते नं कर्णता नहा आराव्यसुनेशमा दहा मानिसमा। मेरहवार्च मंते ! केनहसा नेउन्विक्षवरीरा पकता ! सोवसा ! दुनिहा पनता । राज्यान क्देक्सा व सुद्देश्या थ । तस्य यं के ते क्देक्सा ते व वसंदेश्या आस्ट्रेजाई उरस्याप्यविमोसप्पनीचै भवहीरंदि कासभो केल्प्रो मसंबेजाओ सेवारो प्रशास अस्बेब्द्रमामो ताथि ये सेदीर्थ विक्वंमर्था क्ष्मुक्कमक्रमान्द्रं विद्रम्बस्मार् पहुच्यन्त्रं अक्षत्र वं अनुस्तिहस्तानसम्बद्धपञ्चनावनेत्ताको सेदीको । शस्य वं वे ते सकेत्रमा ते में बहा ओराविनस्य सकेवमा तका भाग्यकवा । महावार्ष मंति केन्द्रवा आहारयसपीरा पवता है गांसमा । हतिहा पवता । शंबदा-वहेन्या व सकेवता य एवं बाहा मोराकिए क्लेक्स्या मुद्रेक्स्या व समितः द्रोष भाहारमा वि भागिकना । रोगाकम्मगाई बहा एएमि चेव केउधिकाई ॥ ४ ८ ह अहरकुमाराण मेरी । केरहमा ओराकिनसरीरा पक्ता ! गोवमा ! ऋहा नेरहनार्थ भोराक्रियसरीरा मणिना तक्षत्र पएसि मानियम्या । अग्ररकुमाराजे भेते । केरास केउकिवसरीत पत्रता ! गोवसा ! दुनिहा पत्रता । तंत्रहा-पदेक्रमा व मुद्देक्रमा अ. । सूच म के ते वद्रीहमा ते वं वर्षनेत्रा असंनेत्राहि उत्मध्यिनीह्रोतिमां सम्बद्धिति कामजो नेत्राणो असंबोधाओं सेवाओं पनरस्य असंबोधाद्याग्ये नासि ने सेदीने विश्वांभर्ती अगुलक्षमदमामुख्य स्थ्येज्यस्मानो । तत्व नं वे त सरेक्सा वे में बहु ओराकिनस्य सुरै स्था वहा मानिक्ष्या । आहारणमरीरण वडा एएमि चेव क्रोरानिया तहेव दुनेहा शानियम्या शवास्त्रमगन्तीरा दुनिश वि

जहा एएसिं चेव वेडव्विया, एव जाव थणियकुमारा ॥ ४०९ ॥ पुढविकाडयाण भते । केवड्या ओरालियमरीरगा पन्नता 2 गोयमा । दुविहा पन्नता । तंजहा-चदेहराग य मुकेलगा य । तत्थ ण जे ते बदेलगा ते णं असखेजा, असखेजाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरति कालओ, खेत्तओ असरोजा लोगा । तत्य ण जे ते मुकेलगा ते ण अणता, अणताहि उस्सप्पिणिओसप्पिणीहि अवहीरति कालओ, खेत्रओ अणंता लोगा, अभवसिद्धिएहितो अणतगुणा सिद्धाण अणतभागो । पुढवि-काइयाण भते ! केवइया वेउव्वियमरीरगा पन्नता ? गोयमा ! दुविहा पन्नता । तजहा-बद्धेहमा य मुद्देहमा य । तत्य ण जे ते बद्धेहमा ते ण णित्य । तत्य ण जे ते मुक्केलगा ते ण जहा एएसि चेव ओरालिया तहेव भाणियव्वा। एव आहार-गसरीरा वि । तेयाक्रम्मगा जहा एएसि चेव ओरालिया । एव आउकाइयतेउकाइया वि ॥ ४१० ॥ वाउकाइयाण भते ! केवइया ओरालियमरीरा पन्नता र गोयमा ! दुविहा पन्नता । तंजहा-बद्धेलगा य मुक्केलगा य । दुविहा वि जहा पुढविकाइयाण ओरालिया । वेउ व्वियाण पुच्छा । गोयमा ! दुविहा पन्नता । तजहा-बद्धेलगा य मुकेक्षमा य । तत्थ ण जे ते वद्धेल्लमा ते णं असखेजा, ममए ममए अवहीरमाणा २ पिलओवमस्स असखेजाङभागमेतेण कालेण अवहीरित, नो चेव ण अवहिया सिया। मुकेलगा जहा पुढविकाइयाण । आहारयतेयाकम्मा जहा पुढविकाइयाण, वणप्फइ-काइयाण जहा पुढाविकाइयाण, णवर तेयाकम्मगा जहा ओहिया तेयाकम्मगा ॥४११॥ वेइदियाण भते ! केवऱ्या ओरालिया सरीरगा पन्नता १ गोयमा ! दुविहा पन्नता । तजहा-वदेलगा य मुक्केलगा य, तत्थ ण जे ते वदेलगा ते ण असखेजा, असखे-जाहिं उस्सिप्पणिओसप्पिणीहिं अवहीरति कालओ, खेत्तओ असखेजाओ सेढीओ पयरस्स असखेजङभागो, तासि ण सेढीण विक्खभस्ई असखेजाओ जोयणकोडा-कोडीओ असखेजाइ सेढिवगगमूलाइ। बेइदियाण ओरालियसरीरेहिं वद्धेल्लगेहिं पयरो अवहीरइ, असखेजाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं काळओ, खेत्तओ अगुळपयरस्स आविलयाए य असखेज्जइभागपिलभागेणं । तत्य ण जे ते मुक्केलगा ते जहा ओहिया ओरालियमुक्केलगा । वेउन्विया आहारगा य वद्वेलगा णित्थ । मुक्केलगा जहा ओहिया ओरालियमुक्केलगा । तेयाकम्मगा जहा एएसिं चेव ओहिया ओरालिया, एव जाव चर्डोरेंदिया । पार्चिदियतिरिक्खजोणियाण एव चेव, नवर वेउ व्वियसरीरएसु इमो विसेसो-पर्चिदियतिरिक्खजोणियाण भते । केवइया वेउ व्विय-मरीरया पन्नता <sup>१</sup> गोयमा ! दुविहा पन्नता । त०-बद्धेल्लगा य सुक्केल्लगा य । तत्थ ण जे ते बद्धेहागा ते ण असखेजा, जहा असुरकुमाराण णवर तासि ण सेढीणं प्रभागि [पन्यसम्पर्धः विद्यास्त हिस्स स्वास्त हिस्स प्रशः विद्यास स्वास्त हिस्स प्रशः विद्यास स्वास्त हिस्स प्रशः विद्यास हिस्स हिस हिस्स हिस हिस्स हिस हिस्स हिस हिस्स हिस हिस्स हिस हिस्स हिस हिस्स हिस

कारुमो केएको मंगुक्रप्रधावसम्बाग्य एर्थ्यवस्थायुक्तकुष्यान्त्री । एत्व वं से हे पुष्टिमा दे क्या मोराजिया बोरिया प्रेक्षिया प्रक्रिका में किरिम्बाय में देने पुण्का । सेममा । इतिहार प्रकार । एर्क्या-व्येष्णा म सुब्क्षणा म एर्क्य वं से दे केश्रिमा ए क् पेष्रामा एस्पर २ क्वारियाणा २ एक्केकेव कार्क्रमं क्वारिया मोर्क्या । स्वार इरिया प्रिया । एर्क्य के ते ये सुक्ष्मणा ते के ब्राह्म सोरिया मोर्क्या । स्वार एक्स नेप्या कार्या कार्या । स्वाराज्यामा सहा पूर्व के ब्राह्म केश्रिया वार्या व्याप्त कार्या नेप्यान केश्रीय भारतिया वार्या वार्या प्रवार नेप्यान केश्रीय

विद्व पत्रते र सोसमा । पंजनिद्धे पत्रते । तंत्रहा-मोर्डियगरेनासः विधारिकारी

णामे, घाणिदियपरिणामे, जिन्मिदियपरिणामे, फासिदियपरिणामे २ । कसायपरि-णामे ण भते ! कड्विहे पन्नत्ते १ गोयमा ! चउव्विहे पन्नत्ते । तंजहा-कोहकसायपरि-णामे, माणकसायपरिणामे, मायाकसायपरिणामे, लोभकसायपरिणामे ३ । लेस्सा-परिणामे ण भते । कड़विहे पन्नते १ गोयमा । छिब्बहे पन्नते । तजहा-कण्हलेसापरि-णामे, नील्लेसापरिणामे, काउलेसापरिणामे, तेउलेसापरिणामे, पम्हलेसापरिणामे, सुक्रलेसापरिणामे ४ । जोगपरिणामे ण भते ! कड्विहे पन्नते २ गोयमा ! तिबिहे पन्नते । तजहा-मणजोगपरिणामे, वङ्जोगपरिणामे, कायजोगपरिणामे ५ । उवशोग-परिणामे ण भते ! कड्विहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते । तजहा-सागारोवओग-परिणामे, अणागारोवओगपरिणामे य ६ । णाणपरिणामे ण भंते ! कइविहे पन्नते 2 गोयमा ! पचिवहे पन्नते । तजहा-आभिणिबोहियणाणपरिणामे, सुयणाणपरिणामे, ओहिणाणपरिणामे, मणपज्जवणाणपरिणामे, केवलणाणपरिणामे । अण्णाणपरिणामे ण भने ! क्इविहे पन्नते व गोयमा ! तिविहे पन्नते । तजहा-मझ्अण्णाणपरिणामे, सुयअण्णाणपरिणामे, विभगणाणपरिणामे ७ । दंसणपरिणामे ण भंते ! कहविहे पत्रते १ गोयना । तिविहे पत्रते । तजहा-सम्मदंसणपरिणामे, मिच्छादसणपरिणामे, सम्मामिच्छादसणपरिणामे ८ । चरित्तपरिणामे ण भते ! कड्विहे पन्नते ? गोयमा ! पचिवहें पन्नते । तजहा-सामाइयचरित्तपरिणामे, छेदोबहावणियचरित्तपरिणामे, परि-हारविद्यक्तिपरिणामे, सहुमसपरायचरित्तपरिणामे, अहक्खायचरित्तपरिणामे ९। वेयपरिणामे ण भते । कड्विहे पन्नते १ गोयमा ! तिविहे पन्नते । तजहा-इत्यिवेयपरिणामे, पुरिसवेयपरिणामे, णपुसगवेयपरिणामे १०॥ ४१५॥ नेरइया गइपरिणामेण निर्यगङ्या, इदियपरिणामेण पर्चिदिया, क्लायपरिणामेण कोहकुमाई वि जाव लोमकसाई वि, लेसापरिणामेण कण्हलेसा वि नील्लेसा वि काउलेसा वि, जोगपरिणामेणं मणजोगी वि वङ्जोगी वि कायजोगी वि, उवओगपरिणामेण सागारो-वउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि, णाणपरिणामेण आभिणिबोहियणाणी वि द्वयणाणी वि ओहिणाणी वि, अण्णाणपरिणामेण मङ्अण्णाणी वि सुयअण्णाणी वि विभगणाणी वि, दसणपरिणामेण सम्मादिही वि मिच्छादिही वि सम्मामिच्छादिही वि, चरित्तपरिणामेण नो चरित्ती, नो चरित्ताचरित्ती, अचरित्ती, वेयपरिणामेण नो इत्थिवेयगा, नो पुरि-सवेयगा, नपुसगवेयगा। असुरकुमारा वि एव चेव, नवर देवगडया, कण्हलेसा वि जाव तेउलेसा वि, वेयपरिणामेण इत्थिवेयगा वि, पुरिसवेयगा वि, नो नपुसगवेयगा, सेस त चेव । एव जाव थिणयकुमारा । पुढिविकाइया गडपरिणामेण तिरियगइया, इदियपरिणामेण एगिंदिया, सेस जहा नेरइयाण, नवर छेसापरिणामेण तेंज्छेमा वि,

द्ममञ्ज्याणी वंसभवरिकामेणं मिश्मादिद्धी हेसं सं चेव । एवं आठनजस्तद्भाउना वि । शतकाळ एवं चेत्र नवरं सेसापरिणामेणं जहा नेरहवा । वेदंदिया गर्परे कामेचे दिरियगदका इंदियपरिकामेचे बेईबिका सेसे बढ़ा नेरहकार्य । नवरे क्रोम-परिचार्मणं बहुबोनी कामबोधी बाजपरिजार्मणं आशिषित्रोक्षियणांची वि तुसवाणी वि अञ्जानपरिजानेक महत्रकाशी वि सुबक्षकाशी कि मी विभागपानी ईसप-परिजामेजं सम्मविद्धी वि शिच्छाविद्धी वि शो सम्मामिक्कपविद्धी सेसे तं बेश। एवं जाव चटरिंगिया भवरं वंवियपरिवृत्ती कालका । पंतिविजनिरिक्यजीनिया ग्रह्मरि वानेश दिरिक्षाक्ष्मा सेसं वहा नेरहसार्थ नवरं केसापरिवासेशं बाव प्रक्रिसा में। चरैतपरिजासमां को चरित्ती अध्यक्ति के चरित्ताबद्विती के केक्परिवासेमं इन्धि वेक्या वि पुरिसवेक्या वि व्यसगवेक्या वि । मणस्या गाउपरिवासेने सक्तरागाज्ञ इंदिनपरिमाननं पंचिरिता आणिरिया वि वसायपरिचानेथं कोडकसाई वि जान क्रक्साई नि केशापरिजामेणं कन्द्रकेशा नि आव क्रकेशा नि अप्रेरापरिचामेनं मन-भोगी वि बाद काजोगी कि सक्जोयपरिणामणं वका नैरहमा जाचपरियामम सामि-विवेतिकगांची के जाब के स्थानांची वि कामांचारियारोर्न क्षित्र वि कामांचा बॅसजपरिजासंगे तिथ्यि में बंसणा जरिशपरिचारेणं चरिशी के अवरिशी में चरिशी भरित्ती नि वेसपरिकारीयं इत्विकेतमा नि पुरैस्पवेतमा नि नर्पुसमवेतमा नि अनेतमा वि । बाममेक्टा गङ्ग्रीमानेन वेवगङ्गा अहा अञ्चलकारा एवं कोङ्ग्रिम ति सबर्र केसापरिणामर्थ सुरुक्तरसा । वैमानिया वि एवं श्रेष स<del>बर्र केसापरि</del> जामेलं चेवकेसा वि पम्बकेसा वि चक्केसा वि सेसं वीक्परेजामे ॥ ४१६ म क्रजीवपरिजामे र्ण मंते ! क्वलिहे फ्लते <sup>ह</sup> गोनमा ! वसविहे फ्लते । तैनहा-चैनक परिवासे १ सङ्परिकासे १ सङ्ग्राजपरिकासे ३ सम्प्रिकासे ४ बज्यपरिवास ५ शंक्रपरिजामे ६ रसपरिजामे ७ शासपरिजामे अगुरुवद्ववपरिजामे ९ सर् परिवासे १ ॥ ४९७ ॥ वंशवपरिवासे वं गंते । व्यक्ति पक्ते ! गोनसा ! वृति पक्षते । तंत्रहा-विद्यवंशक्परिणामे अन्दार्वश्रमपरिणामे स । समनिकस्पाए वंशी व बोर्ड सम<del>्यक्तव</del>ाए वि न होड़ । वैमायनिव<del>द्धक्तव</del>त्तनेन जैनो उ संवार्ण ॥ १ व विकास निकेण बुनाहिए में सनवारस सनवीत बनाहिए ने । निकास सनवेत तकेंद्र वंगी जहुरूवरुको विसमी समी वा ॥ २ ॥ गङ्ग्रास्थामे वा मेते ! वर्शमाँ पद्यते ! गोयमा । दुनिहे पत्रते । र्तनहा-कुसमाणगङ्ग्रसमामे व अकुसमाणगर परियामे म भड़ना चीड्मइपरिनामे म इस्सम्बपरिनामं य १ । स्टब्सपरिनाम च

भते ! कडविहे पत्रते ? गोयमा ! पंचिवहे पत्रते । तंजहा-परिमटलसठाणपरिणामे जाव आययसठाणपरिणामे ३ । भेयपरिणामे ण भते ! कडविहे पत्रते ? गोयमा ! पचिवहे पत्रते । तजहा-खंडाभेयपरिणामे जाव उक्कारियाभेयपरिणामे ४ । वण्णपरिणामे ण भते ! कडिवहे पत्रते ? गोयमा ! पचिवहे पत्रते । तजहा-फलवण्णपरिणामे जाव सिक्तल्वण्णपरिणामे ५ । गधपरिणामे ण भते ! कडिवहे पत्रते ? गोयमा ! दुविहे पत्रते । तजहा-सिगयपरिणामे य दुव्भिगधपरिणामे य ६ । रमपरिणामे ण भते ! वइिहे पत्रते ? गोयमा ! पचिवहे पत्रते । तजहा-तित्रसपरिणामे जाव महुरस्वपरिणामे ७ । फामपरिणामे ण भते ! कडिवहे पत्रते ? गोयमा ! अट्टविहे पत्रते । तजहा-क्रव्यदफामपरिणामे य जाव ल्व्यक्षप्रसपरिणामे य ८ । अपुरुलहुयपरिणामे ण भते ! वडिवहे पत्रते ? गोयमा ! एगागारे पत्रते ९ । सह्परिणामे ण भते ! कडिवहे पत्रते ? गोयमा ! दुविहे पत्रते । तजहा-स्वर्धरपरिणामे य दुव्यस्तर्परिणामे य १० । सेत्त अजीवपरिणामे ॥४१८॥ पत्रवणाप भगवई ए तरसमं परिणामपर्यं सम्मनं ॥

कइ णं भते ! कसाया पन्नता १ गोयमा ! चत्तारि कसाया पन्नता । तजहा-कोहकसाए, माणकमाए, मायाकसाए, लोमकसाए। नेरइयाण भते। कइ कमाया पन्नता २ गोयमा ! चतारि कसाया पन्नता । तजहा-कोहकसाए जाव लोभकसाए । एव जाव वेसाणियाणं ॥ ४९९ ॥ कइपइद्विए ण भंते ! कोहे पक्षते १ गोयमा ! चडपइद्विए कोहे पन्नते । तजहा-आयपइद्विए, परपइद्विए, तदुभयपइद्विए, अप्पइद्विए । एव नेरइयाण जाव वेमाणियाण दडओ। एव माणेण दडओ, मायाए दडओ, लोंभेणं दंडसो ॥ ४२० ॥ क्इहिं ण मते ! ठाणेहिं कोहुप्पत्ती भवइ <sup>१</sup> गोयमा ! चडहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती भवइ, तजहा-खेत पडुच, वत्यु पडुच, सरीरं पडुच, उवहिं पडुच । एव नेरइयाण जात्र वेसाणियाण । एव माणेण वि सायाए वि लोभेण वि, एव एए वि चत्तारि दङगा॥ ४२१॥ कइविहेण भते । कोहे पन्नते १ गोयमा ! चड-व्विहे कोहे पन्नते। तजहा~अणताणुवधी कोहे, अपचक्खाणे कोहे, पचक्खाणावरणे कोहे, सजलणे कोहे। एव नेरडयाण जाव वेमाणियाण। एव माणेण मायाए लोमेण, एए वि चत्तारि दङ्गा ॥ ४२२ ॥ कड्विहे ण भते ! कोहे पन्नते <sup>2</sup> गोयमा ! चडिवहे कोहे पन्नते। तजहा-आभोगनिव्वत्तिए, अणाभोगनिव्वत्तिए, उवसते, अणुवसते। एव नेरइयाणं जाव वेमाणियाण। एव माणेण वि, मायाए वि, लोभेण वि चत्तारि दङगा ॥ ४२३ ॥ जीवा ण भते । कहिं ठाणेहिं अह कम्मपगदीओ चिणिसु १ गोयमा। चउहिं ठाणेहिं अद्व कम्मपगडीओ चिणिसु, तजहा-कोहेण,

\*12

माणेर्पं मायाए, क्रामेर्ज । एव नरह्यार्ज बाब नेमानिनार्ज । जीवा र्च प्रति ! स्वर्षे अणेर्डि सह कम्मएगडीको निर्मति ! योगमा ! चर्ठाई ठाणेर्डि , तंद्रवा-शेरेप मानेचं मानाए, स्प्रेमेर्ज । एवं मरहना जान नेमानिया । जीवा चं मंत ! व्यस् ठानेहि सह कम्मप्राधीओ विवित्संति । गोवमा । चन्नी ठाणी वह कम्मप्राधैने चिनिरसंति तंबहा-कोहेर्ण माणेर्ज माजाए, स्रोभेष । एवं नरहमा आब बेमापिना । जीवा में मते ! क्वाँहें ठाणेईं अद्ध कम्मपगडीओ उन्निर्णित ! गीयमा ! बार्जी ठामाई सद्व सम्मपगदीओ उन्निशिस, तजहा-सोहेर्ज माणेर्ज मानाए, सेमेर एव नरहरा जान बेमानिया । जीवा में भेते ! पुण्छा । योगमा ! बडिह स्वेहें उपनियंति जाव सोरोपो एव नेरावा बाव बेसाविया । एवं उद्दिश्चित्रधेति । जीवा ज मंत ! क्इहें ठावेहें कह कम्मप्यक्षेत्री वैधित ! गीममा ! वर्ज हैं ठावेहें क्छ कम्मपादीको वंशिष्ठ तंत्रहा-कोहेर्च माणैर्च काम स्रोतेर्च एवं नेरह्ना वर्ष बमाणिया वैधिन बंबंति बिरसंति उद्योरेंग स्वीरेंति उद्योरेलि वेलिस मैदेति मेदहस्सकि निर्मातः निर्माति निर्मातस्यति एवं एए व्यानस्य नेगी नियपअवशाणा वद्वारम व्हणा काव वेमानिका निकरित निकरित निक्रारिति। भागरहद्विम देत्तं पट्टन णतालबधि कामोने । निच उवनिच बंच उदीर वेम तह निका चर ॥ १ ॥ ४२४ ॥ पञ्चवणाय अगवर्षय बोह्समं कलायपर्य समर्च । संदार्भ बाह्र पोहर्स सद्देपएस बोगाडै । व्यपाबह्न पुद्ध परिद्ध विसव अवगार

माहार n 9 म अक्षाय मधी व मणी वृद्ध पालिय चेत्र फालिय छहा व । इंडे भूगा थिस्पस प्रेमोदिह कोयप्रकोगे स ॥ २ ॥ क्य वं शेठे ! हेरिया प्रशा गोममा ! पंच इंदिवा पत्ताा । तंत्रहा-सोइंदिए, चन्चिदिए, चामिदिए, बिन्मिरिए फार्मिदिए ॥ ४२५ ॥ सोईदिए वं सव ! किसेठिए पक्ते ! योक्सा ! क्वेड्या-पुप्पस्कानसंकिए पश्चते । नानिवादिए नं भेता । किर्पक्ति पन्नते । योजमा । सप्र चेत्रसहाजसंहिए पश्चते । वासिनिए वं शंदे । पुष्का । योगमा । व्यत्राक्तानंद सरामस्टिए पन्नते । विकिमिए ने प्रच्या । गोवमा । सरप्परंक्षणसंटिए पन्नते । फासिरिए ने पुच्छा । गोनमा ! वानासंक्ष्यसंक्षिए पन्ते १ ॥ ४२६ ॥ सोहेरिए ने भेते ! केन्द्रमें बाह्रकेनं पत्रते हैं गोयमा ! अंगुबस्स लसकेन्द्रमाने बाह्रकेनं पत्रते ! एवं बाद पासिरिए १। सोईबिए वं भेत । केबहर्य योहतेर्न पवते ह गोयमा । अगुक्त वर्षकेन्द्रमार्ग पोक्तेकं पनते। एवं वर्तिकरिए नि वार्निविए नि व जिम्मित्रए में पुम्का । योगमा । क्लुम्पुहुत्तेर्ण पश्चते । पासिवेद में पुष्का । योगमा । सरीरपामानमेते पोहरेनं पनते १ ॥ ४२०॥ सोईसिए नं मेते ! व्यवपृतिए पनते !

गोयमा ! अणंतपएसिए पन्नत्ते। एवं जाव फासिंदिए ४॥ ४२८॥ सोइंदिए ण भते ! कडपएसोगाढे पन्नते <sup>१</sup> गोयमा ! असखेजपएसोगाढे पन्नते । एवं जाव फार्सिदिए ५ ॥ ४२९ ॥ एएसि ण भंते ! सोइदियच्चिक्किदयघाणिदियजिब्भिदियफासिंदियाण ओगाहणहुयाए पएसहुयाए ओगाहणपएसहुयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुहा वा विसेसाहिया वा १ गोयमा ! सब्बत्थोवे चिक्सिदिए ओगाहणह्याए, सोइंदिए ओगाहणहुयाए सखेजागुणे, घाणिंदिए ओगाहणहुयाए सखेजागुणे, जिन्नि-दिए ओगाइणह्याए असखेजगुणे, फासिंदिए ओगाइणह्याए सखेजगुणे, पएसह-याए-सन्वत्योवे चिंस्विदिए पएसद्वयाए, सोइंदिए पएसद्वयाए सखेजगुणे, घाणिंदिए पएसहयाए सखेजगुणे, जिन्भिदिए पएसहयाए असखेजगुणे, फासिंदिए पएसहयाए सखेजगुणे, ओगाहणपएसहुयाए-सन्वत्योवे चिन्खिदिए ओगाहणहुयाए, सोइदिए भोगाहणहुयाए सखेजगुणे, घाणिंदिए ओगाहणहुयाए सखेजगुणे, जिन्भिंदिए ओगाहणहुयाए असखेजगुणे, फासिंदिए ओगाहणहुयाए सखेजगुणे, फासिंदियस्स ओगाहणहुयाहितो चर्निखदिए पएसहुयाए अणतगुणे, सोइदिए पएसहुयाए सखेज-गुणे, घाणिदिए पएसद्वयाए सखेज्नगुणे, जिन्मिदिए पएसद्वयाए असखेजगुणे, फासिंदिए पएसट्टयाए सखेजगुणे ॥ ४३०॥ सोइंदियस्स ण भते । केवडया कक्खडगुरुयगुणा पन्नता र गोयमा। अणता कक्खडगुरुयगुणा पन्नता, एव जाव फार्सिदियस्स । सोइदियस्स ण भते ! केवइया मजयलहुयगुणा पन्नता 2 गोयमा ! अणता मउयलहुयगुणा पन्नता, एव जाव फार्सिदियस्स ॥ ४३९ ॥ एएसि णं भते ! सोइदियचर्निखदियघाणिदियजिर्ब्भिदियफासिंदियाण कक्खङ-गस्यगुणाण मउयलहुयगुणाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४<sup>२</sup> गोयमा<sup>†</sup> सन्तरथोवा चर्किखदियस्स कक्खडगरुयगुणा, सोइंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणत-गुणा, घाणिदियस्त क्क्खडगरुयगुणा अणतगुणा, जिन्मिदियस्त कक्खडगरुयगुणा अणतगुणा, फ़ार्सिदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणतगुणा । मजयलहुयगुणाण-सन्व-त्योवा फार्सिदियस्स मजयलहुयगुणा, जिन्मिदियस्स मजयलहुयगुणा अणतगुणा, घाणिदियस्स मजयलहुयगुणा अणतगुणा, सोइदियस्स मजयलहुयगुणा अणंतगुणा, चिन्विदियस्स मजयलहुयगुणा अणतगुणा । क्क्खडगरुयगुणाण मजयलहुयगुणाण य-सन्वत्योवा चर्क्खिदयस्स कक्खडगस्यगुणा, सोइदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणतगुणा, घाणिदियस्स कक्खडगस्यगुणा अणतगुणा, जिब्भिदियस्स कक्खटगर्-यगुणा अणत्गुणा, फासिंदियस्स क्वराडगरुयगुणा अणतगुणा, फासिंदियस्स क्वस्त-ङगस्यगुणेहिंतो तस्स चेव मजयलहुयगुणा अणतगुणा, जिन्मिदियस्स मजयलहुय-

219 मुचागमे (पण्यवभारत गुना वर्णतपुरा। पासिविक्स्म मञ्जनमुक्तुना वर्णतपुरा। छोर्न्वियस्म मञ्जनमु गरामा अनतराभा पर्नियदिवस्य गउयलहुमगुगा भर्मतगुगा ॥ ४३९ ॥ मेरहवार्न भत ! क्य इंदिया पत्रता ! गोथमा ! पत्र तंत्रहा-सोइन्दिए जाव नासिनिए। नेरहमार्च मंते ! रोहम्ब्ए श्रिपंठिए पत्रते ! गोममा ! कर्मनुमापंठावपंठिए पत्रते ! एवं जहा आहियार्ज कराव्यका समिया राहेष नंश्वतार्ज पि जाव अप्यासहुदानि दोष्टित । नवरे नेरहवार्ण मेरी ! पासिन्दिए किसीठए पश्ची ! स्थाना ! हुन्दि पकते । राज्या-भरपारनिजे व उत्तरनेवन्तिए य । सस्य र्थ जे से र्ण हुंबर्सठागर्सठिए पश्चते शत्व में से सं उत्तरवैत्रव्याः # ४३३ ।। अनुरकुमाराणं श्रेते ! कह इन्दिश पत्तत भोडियापि जान सप्यानमुगायि योणिय नि । लब्दे पारि उत्तरवेजम्बए व । तम्ब न खे I O I VIVI े पासिन्दिए पश्चे । १ गोयमा । अध्रचेद्ध् 24 पाइक्रेमं प्रकृत

वेइदियाण भते ! कइ इदिया पन्नता १ गोयमा ! दो इदिया पन्नता । तजहा-जिन्मिदिए य फासिंदिए य । दोण्ह पि इंदियाण सठाण वाहरू पोहत्त पएसा ओगा-हणा य जहा ओहियाणं भणिया तहा भाणियव्वा, णवर फासिंदिए हुडसठाणसिंठए पण्णतेति इमो विसेसो । एएसि णं भते । बेइंदियाण जिब्भिदियफासिंदियाण ओगाहणह्याए पएसह्याए ओगाहणपएसह्याए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ 2 गोयमा ! सव्वत्थोवे वेइदियाणं जिब्सिदिए ओगाहणहयाए, फार्सिदिए ओगाहणहयाए संखेजगुणे । पएसद्वयाए-सव्वत्थोवे बेइंदियाण जिव्मिदिए पएसद्वयाए, फासिन्दिए सखेजगुणे । ओगाहणपएसहयाए-सन्वत्थोवे बेइदियस्स जिन्मिदिए ओगाहणहयाए, फासिन्दिए ओगाहणहुयाए सखेजागुणे, फासिंदियस्स ओगाहणहुयाएहिंतो जिन्भिदिए पएसद्वयाए अणतगुणे, फासिन्दिए पएसद्वयाए सखेज्जगुणे। वेइन्दियाण भते। जिब्मिन्दियस्स केवङ्या कमखडगरुयगुणा पन्नता <sup>२</sup> गोयमा ! अणता । एव फासि-न्दियस्स वि, एव मजयलहुयगुणा वि । एएसि ण भते । बेडन्दियाण जिटिंभदिय-फासिन्दियाण कक्खडगरुयगुणाण, मउयलहुयगुणाण, कक्खडगरुयगुणाणं, मउयलहु-यगुणाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ <sup>2</sup> गोयमा! सव्वत्थोवा वेइन्दियाण जिब्सिदियस्स कक्खडगह्यगुणा, फासिंदियस्य कक्खडगह्यगुणा अणंतगुणा, फासिंदियस्म ऋस्वडगस्यगुणेहिंतो तस्स चेव मउयलहुयगुणा अणतगुणा, जिन्भि-दियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा । एवं जाव चउरिन्दियत्ति, नवरं इदियपरिचुन्ही कायव्वा । तेडदियाण घाणिन्दिए थोवे, चलरिन्दियाण चर्विखदिए थोवे, सेस त चेन । पचिन्दियतिरिक्खजोणियाण मणूमाण य जहा नेरइयाण, नवरं फासिन्दिए छिन्वहसठाणसिठए पत्रते । तजहा-समचउरसे निग्गोहपरिमडले साई खुजे वामणे हु है । वाणमतरजोइतियवेमाणियाण जहा असुरकुमाराण ॥ ४३६ ॥ पुद्वाइ भते ! सहाइ सुणेइ, अपुद्वाइ महाइ सुणेइ १ गोयमा ! पुद्वाइ सहाइ सुणेइ, नो अपुद्वाइ सहाड सुणेइ । पुद्वाइ भते ! रूवाइ पासइ, अपुद्वाइ० पासड २ गोयमा ! नो पुद्वाइ ह्वाइ पासइ, अपुद्वाड ह्वाइ पासड । पुद्वाइ भते । गवाइ अग्वाइ, अपुद्वाड गधाइ अग्धाइ <sup>२</sup> गोयमा । पुट्ठाई गधाइ अग्घाइ, नो अपुट्ठाइ० अग्धाइ । एव रसाण वि फामाण वि, नवर रसाइ अस्साएइ, फासाइ पिडसवेदेइ ति अभिलावो कायव्यो । पविद्वाड भते ! सहाड सुणेड, अपविद्वाह सहाड सुणेड् र गोयमा ! पविद्वाह सहाइ सुणेड्, नो अपविद्वाड महाइ मुणेइ, एव जहा पुद्वाणि तहा पविद्वाणि वि ॥ ४३७ ॥ मोइन्दियस्स ण भते! केवइए विसए पन्नते र गोयमा! जहण्णेण अगुलस्म असखेज्ञइभागो, उक्कोसेर्ण वारमहिं जोयणेहिन्तो अच्छिण्णे पोग्गले पुट्टे पविद्वाङ् पुचा वर्णतपुचा धार्णिदेवस्य मउयसङ्ग्रयपुचा वर्णतपुचा सोईदिवस्य मउयसङ्ग मगुना समत्त्वा अक्यिदिवस्य महबनहुबयुना सर्वत्युना ॥ ४३२ ॥ मछुनार्न मंत ! क्द इतिया पक्ता ! गोयमा ! पंथ तंत्रहा-सोटन्ग्य आव पालिन्दिए । मेरहमाम मेरे ! सोइन्दिए किसेठिए पनते हैं गोममा ! कर्मपुनासंठाणसंठिए पनते । एवं जहा कोहिबार्ग शतक्वना भविया तहेन नेरहयार्ग पि बाब अध्याबद्धयाचि वान्यि । जबरे मेरण्यानं मते । चासिन्तियः क्रिसंठिए प्रवत्ते । मोसमा । दुनिहे पत्ती । तंत्रहा-भवभारविके य उत्तरनेउस्थिए य । तत्य मं जे से भवभारविके से र्ण हुंबर्चटायसंडिए पच्चे तत्व ने अ से उत्तर्वेडम्बिए से वि स्क्रेब ससे से बेब ॥ ४३३ ॥ अनुष्यमाराणं भेते । का पन्तिया पत्ताता । गोयमा । पंत्र एवं बहा कोडियानि जाब अन्याबद्दगान्य वोण्यि नि । नवरं पासिन्वस् सुनिहे प्रचेते । संबद्धा-मबभारमिजे य उत्तरवेउम्बए य । शन्य भी ये थे मबबारमिजे से भी समक्तर ससंठालसंदिए पन्नते लग्न में से से उत्तरबंडिंबए से में मालासंठाससंदिए, सेसं सं भेव । एवं जान नविश्वसाराणे ॥ ४३४ ॥ पुरुषि सहनाणं भेरी । वह इत्स्या पक्ता ! योजमा ! एगे पासिन्दिए पक्ते । पुरुषिनाद्वार्ण संदे ! प्रासिन्दिए किसंठानसंठिए पनते । गोयमा । सस्यविदर्शरावसंठिए पनते । पुत्रनिकाइयार्व भीते ! पासिन्तिय केक्डर्स बाहकेले धनते । गोसमा ! क्षेपुलस्य क्षर्यकेक्डसार्ग बाइक्रेज पहले । पुरुषिकात्वार्ज संते । पासिन्दिए केवर्य पोइतेर्य पश्चे । गोक्सा । सरीरप्पमाणमेती पोइतीर्थ । पुत्रविकादमार्थ भेते ! काविन्दिए कहपएसिए प्रवति ! गोयमा ! अर्थतपरतिय पत्रते । प्रतिसत्तमार्थं मेते ! प्राधिन्दर स्वपरसोगार्डे पक्ते ! गोनमा ! असंप्रेमण्यसोगाडे पजते । एएसि न भेते ! प्रविश्वद्यार्थ फासिन्दिक्स कोपाएकप्रनाए पएसद्वताए कोगाइक्पएसद्वताए कनरे कररेडियो कप्पा वा ४ र मोसमा ! सम्बद्धाने पुत्रविकारयाणं पालित्विए जोगाहणह्वाए, से चेव परसद्व्यार अर्थसराये । प्रविकादयार्थ मेरी । प्रापिन्वयस्य केवद्वया कमस्तद परमञ्जा पनता ! गोनमा ! अर्जता एवं मतमन्त्रुमञ्जा ले । एएछ वं मते ! प्रश्रीकादयाचे फासिन्यमस्य वक्तकायस्याच्याचे मस्यसहस्राह्माण य कमरे क्रमरेशितो अप्या वा ४ ई गोममा ! सम्बरचोना प्रवसित्राहमार्च कासिदिगस्स क्रमच

बारसमुद्धाः तस्य मेव अवसम्बन्धम् वर्णलेखाः । एवं आवन्धस्यायः विभाव बचन्द्रम्भार्यः नवर स्वराणे स्त्रो निर्देशे बहुन्तो-आवन्धस्यानं रिद्धपरिष्ठका-सद्यक्रियः कत्तोः सेवकस्यानं सुक्रकानस्थानस्थितः कति । सन्वस्थानस्य स्वराणक्षितः कति । सन्वस्थानस्य स्वराणक्षितः कति । सन्वस्थानस्य स्वराणक्षित् कर्मति । स्वराणक्षित् कर्मति । स्वराणक्षित् कर्मति । स्वराणक्षित् कर्मति । स्वराणक्षित्

914

बेइदियाण भते ! कह इंदिया पन्नता १ गोयमा ! दो इदिया पन्नता । तजहा-जिब्भिदिए य फासिंदिए य । दोण्ह पि इंदियाण सठाण बाहल्ल पोहत्तं पएसा ओगा-हणा य जहा ओहियाण भणिया तहा भाणियव्वा, णवर फार्सिदिए हुडसठाणसिठिए पण्णतेत्ति इसो विसेसो । एएसि णं भते ! बेइंदियाण जिब्भिदियफासिंदियाणं ओगाहणहुयाए पएसहुयाए ओगाहणपएसहुयाए क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४2 गोयमा ! सन्वत्थोवे वेइदियाणं जिब्सिदिए ओगाहणहुयाए, फासिंदिए ओगाहणहुयाए संखेजगुणे । पएसद्वयाए-सञ्बत्थोवे बेइंदियाण जिव्मिदिए पएसद्वयाए, फासिन्दिए संसेजगुणे । ओगाहणपएसद्वयाए-सन्वत्थोवे बेइदियस्स जिन्भिदिए ओगाहणद्वयाए, फासिन्दिए ओगाहणहुयाए सखेजागुणे, फासिंदियस्स ओगाहणहुयाएहिंतो जिन्भिदिए पएसहयाए अणतगुणे, फासिन्दिए पएसहयाए सखेजागुणे। बेइन्दियाणं भते। जिब्भिन्दियस्स केवइ्या कवन्बडगरुयगुणा पन्नता <sup>2</sup> गोयमा । अणता । एव फासि-न्दियस्स वि, एवं मजयलहुयगुणा वि। एएसि णं भते ! बेइन्दियाण जिब्भिदिय-फासिन्दियाण कक्खडगरुयगुणाणं, मउयलहुयगुणाण, कक्खडगरुयगुणाण, मउयलहु-यगुणाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ र गोयमा! सन्वत्थोवा बेइन्दियाण जिब्मिदियस्स क्क्खडगरुयगुणा, फार्सिदियस्स क्क्खडगरुयगुणा अणतगुणा, फासिंदियस्म क्क्खडगस्यगुणेहिंतो तस्स चेव मजयलहुयगुणा अणतगुणा, जिटिंभ-दियस्स मजयलहुयगुणा अणतगुणा । एवं जाव चजरिन्दियत्ति, नवरं इदियपरिचुङ्की कायव्या । तेइदियाण घाणिन्दिए थोवे, चउरिन्दियाण चिक्किदिए थोवे, सेस तं चेव । पंचिन्टियतिरिक्खजोणियाण मणूसाण य जहा नेरइयाण, नवर फासिन्दिए छिन्वहसठाणसिठिए पन्नते । तजहा-समचउरंसे निग्गोहपरिमडले साई खुजे वासणे हु है । वाणमतरजोइसियवेमाणियाण जहा असुरकुमाराण ॥ ४३६ ॥ पुट्टाइ भते ! सहाइ चुणेइ, अपुद्वाइ सहाइ मुणेइ र गोयमा ! पुद्वाइ सहाइ मुणेइ, नो अपुद्वाइ सहाड सुणेइ । पुद्वाई भंते ! रूवाइ पासइ, अपुद्वाइ० पासइ <sup>२</sup> गोयमा ! नो पुद्वाइ रूवाइ पासइ, अपुद्वाइ रूवाइ पासइ । पुद्वाङ भंते ! गधाइ अग्घाइ, अपुद्वाङ गधाइ अग्घाइ <sup>१</sup> गोयमा । पुद्वाई गधाइ अग्घाइ, नो अपुद्वाइ० अग्घाड । एव रसाण वि फामाण वि, नवरं रसाइ अस्साएइ, फासाइ पिडसवेदेइ ति अभिलावो कायव्वो । पविद्वाड भते! सहाइ सुणेइ, अपविद्वाइ सहाइ सुणेइ 2 गोयमा! पविद्वाइ सहाड सुणेइ, नो अपविद्वाड सहाइ सुणेड, एव जहा पुद्वाणि तहा पविद्वाणि वि ॥ ४३७॥ मोइन्दियस्स ण भते। केवइए विसए पन्नते १ गोयमा। जहण्णेण अगुलस्स असरोजडभागो, उक्कोसेर्ण वारसिंहं जोयणेहिन्तो अच्छिण्णे पोग्गरे पुट्टे पविद्वाई अगुमस्स सरिवद्रभागा उद्योसेथं सादरेगाओ जोवणस्यसहस्साओ अध्युप् पोम्पके अपुद्धे अपनिद्वाद बनाई पासह । जानिन्दिबस्य पुच्छा । गोयमा ! बाइग्लेपे अपुरुअसंद्रोजहमायो उद्योसेणं नवहीं जोयनेहिस्तो अस्टिक्न पोगल पुटे पविद्वाई गंबाद बरबाइ, एवं जिम्मिन्दियस्स वि पासिवियस्स वि ४ ४३८ ॥ सप-गारस्य व मंत्र । भाविवप्यको मार्चितिवसमुख्याएणं समोहमस्य के वरमा किजरापोब्यस्य शहुमा वं हे पोम्पसा प्रणाता धमनाउसी । सन्नं सोर्य पि य वं ते कोगाविता चे निर्देति है इसा योगमा । अनगारस्य मानिवप्पको मारपंतिक-स्मुन्याएमं समोहस्सम् से बरमा विजरापोगासा सुहुमा न ते पोशास प्रणाता सम्बारसो । सब्बं कोर्य पि य वं कोगाबिता वं चित्रंति । घटमन्त्रे वं संत ! मन्दरे दार्स विकारापीमाक्षणं कि भाजतं वा यानतं वा ओमतं वा तुल्कतं ना गरंबत्त वा सहबर्त्त वा बाणड पासड र गोयमा ! जो इनहें समदे ! से बेजडेर्प भेते । एवं बुबद्- क्रजास्थे वं मन्त्रे देखि किजरापोस्पकानं को हिन्दि कानरा का मामतं ना ओमतं ना द्वाकतं ना गठवतं ना सनुकतं ना आग्रह पासह<sup>ा</sup> गोदमा । देवे वि य न अस्तिगहर् के न देखि विकरायोग्यक्षनं नो हिन्दि आनर्रा वा नागरों वा जोमरों वा तुष्कर्त ना गढ़नर्रा वा सबुवर्त वा जानड पासड, से तेजदेशं मोचमा । एवं वचार-कठमस्ये वं मक्से शसी निजरापोशाबायं को किन्दि आवर्त वा बाब बानड पास्त्र, एक्सह्या वं से पोगगव्य पण्यता समबारसी ! सम्बक्तेयं पि सर्ज ते कोगाहिला जे विद्वेति ॥ ४१९ ॥ नेरहसा अं संत । ते क्रिअरापोलास्म कि नामति पासेति साहारेंति उदाह न जामंति म पास्ति भावारेंति । गोसमा । मेरप्रसा विकालपोसको सः कार्णते न पासंति बावारेंति एव बाब पंचित्रियमितिस्काचोनियानं ॥ ४४ ॥ अनुसा वं मंतु । ते निजरा-प्रेम्पके कि बार्गित पासेति जाहारेति उदाह न आणति म पासेति आहारेति हैं गौममा । अत्येगहवा जार्चेति पासति आहारेंति अत्येगहवा न कार्णति न पासति बाहारेंद्रि । से केनद्वेणे मेश्र । एनं युवह-करनेगहका जानंति पासित जाहारेतिः करवेग्यमा न जानंति न पाधति भावारेति" । गोनमा ! मन्सा <u>इ</u>विद्वा पत्रता । रोबदा-एन्निम्बा व अएन्जिम्या य । तत्व र्च के ते करिनम्बा ते र्च न बार्वति न पास्ति काहारेंति । तस्व र्व के ते सम्बन्धा ते बुनिहा पक्ता । तंत्रहा-संबदता व बसुबदता व । तत्व में के ते असुबदता ते में न वार्यति न पासति आहारेंदि । तस्य में के ते अवतता ते वं वार्वित पास्ति वाहारेंदि से एए कई पे

गोयमा ! एव वुच्चड-'अत्थेगडया न जाणति न पासति आहारेंति, अत्थेगड्या जाणित पासति आहारैंति' । वाणमतरजोडसिया जहा नेरइया ॥ ४४१ ॥ वेमा-णिया ण भते ! ते णिज्जरापोगगले कि जाणित पासित आहारैंति <sup>2</sup> जहा मण्सा । नवर वेमाणिया दुविहा पन्नता । तंजहा-माडमिच्छिद्दिद्वीउववण्णगा य अमाडसम्म-हिट्टीउववण्णगा य । तत्थ ण जे ते माडमिच्छिहिट्टीउववण्णगा ते ण न जाणित न पासित आहारिति, तत्थ ण जे ते अमाइसम्मिद्दिशीउववण्णगा ते दुविहा पन्नता। तजहा-अर्णतरोववण्णमा य परपरोववण्णमा य । तत्थ ण जे ते अणतरोववण्णमा ते ण न जाणति न पासति आहारेंति । तत्थ ण जे ते परपरोववण्णगा ते दुविहा पन्नता । तजहा-पजनागा य अपजनागा य । तत्थ ण जे ते अपजनागा ते ण न जाणंति न पासति आहारेंति । तत्थ णं जे ते पजतगा ते दुविहा पन्नता । तंजहा-उवडक्ता य अणुवडक्ता य । तत्य ण जे ते अणुवडक्ता ते ण न जाणित न पासित आहारेंति, तत्य ण जे ते उवउत्ता ते ण जाणित पासित आहारेंति, से एएणड्डेण गोयमा ! एव वुच्चइ-'अत्थेगइया जाणंति जाव अत्थेगइया आहारेंति ॥ ४४२ ॥ अहाय भते ! पेहमाणे मणूसे अहायं पेहइ, अताण पेहइ, पिलभाग पेहइ १ गोयमा ! अहाय पेहड, नो अप्पाण पेहड, पलिभागं पेहड़। एव एएण अभिलावेण असि मिंग दुद्ध पाणिय तेल्ल फाणियं ॥ ४४३ ॥ कवलसाडए ण भते ! आवेढियपरिवेढिए समाणे जावइय उवासतरं फुसिता ण चिट्ठइ विरक्षिए वि समाणे तावइय चेव उवासतर फुसित्ता ण चिट्टइ १ हता गोयमा! कवलसाडए ण आवेढियपरिवेढिए समाणे जावइय तं चेव । शूणा ण भंते ! उष्टु ऊसिया समाणी जावइय खेत ओगाहरूता ण चिट्ठइ, तिरिय पि य ण आयया समाणी तावइय चेव खेत्त ओगाह-इता ण चिट्ठइ १ हता गोयमा ! थूणा ण उष्टु ऊसिया त चेव जाव चिट्ठइ ॥ ४४४ ॥ आगासियगग्ले णं भते ! किणा फुडे, क्हिं वा काएिं फुडे <sup>2</sup> कि धम्मत्थिकाएण फुढे, धम्मत्थिकायस्स देसेण फुढे, धम्मत्थिकायस्स पएसेहिं फुडे <sup>2</sup> एव अधम्मत्यि-काएण, आगासित्यकाएण एएण भेएण जाव पुढिवकाएण फुडे जाव तसकाएण, अद्वासमएण फुडे १, गोयमा ! धम्मत्थिकाएण फुडे, नो धम्मत्थिकायस्स देसेणं फुढे, धम्मत्थिकायस्स पएसेहिं फुडे, एव अधम्मत्थिकाएण वि, नो आगासत्थिकाएण फुडे, आगासित्यकायस्स देसेण फुडे, आगासित्यकायस्स पएसेहिं जाव वणस्सइ-काएण फुडे, तसकाएण सिय फुडे, सिय नो फुडे, अद्धासमएण देसे फुडे, देसे नो फुढे। जबुद्दि णं भते! दीवे किंणा फुढे व कहिं वा काएहिं फुडे व किं धम्मित्यका-एण जाव आगासत्थिकाएण फुढे॰ 2, गोयमा ! णो धम्मत्थिकाएण फुढे, धम्मत्थि-२७ सत्ता०

कायस्य बेरोमं फुढे वस्मतिकायस्य एएरोड्डि फुढे एवं व्यवस्थात्वास्य वि व्यागाविकायस्य वि पुढिविकाय्यं फुढे वाव वस्परवस्थाय्यं फुढे तस्वापर्वं विम फुढे सियं भी फुढे कदास्याय्यं फुढे । एवं व्यवस्थात्व्यं के नवरं व्याग्यस्थार्यं के स्वाप्तं वस्मतेयं स्वाप्तं के नवरं व्याग्यस्थार्यं के । वहं व्याप्तं वस्त्रं व्याग्यस्थार्यं वस्त्रं वाद्यस्यस्य मे फुढे । एवं वाद्यस्य वस्त्रं वाद्यस्य वस्त्रं । वहं वाद्यस्य वस्त्रं । वस्त्रं वाद्यस्य वस्त्रं । एवं विभावत्य वस्त्रं । विश्वस्थाय्यं विवस्त्रं । वस्त्रं वाद्यस्य वस्त्रं । वस्त्रं वाद्यस्य वस्त्रं विवस्त्रं । वस्त्रं वाद्यस्य वस्त्रं । वस्त्रं वाद्यस्य वस्त्रं वाद्यस्य वस्त्रं वाद्यस्य वस्त्रं । वस्त्रं वाद्यस्य । १ ॥ वहं वस्त्रं वाद्यस्य वस्त्रं वाद्यस्य वस्त्रं वाद्यस्य विवस्त्रं । वस्त्रं वाद्यस्य वस्त्रं वाद्यस्य वस्त्रं विवस्त्रं विवतः विवस्त्रं विवस्तं विवस्तं

काएणं कुन्ने जान मो अग्रासमएणं कुन्ने । एगे अग्रीवरम्बन्नेसे क्यारम्बूरः क्यारी न्यारम्बूनगुनेहि संज्ञते सम्बागसम्बन्धाःसम्बन्धाः ॥ ४४६ ॥ पृष्णवासायः सगर्वास

114

प्रसारस्य इंदियपयस्य पढामी शहूँसो सम्मा । इसी ४ उनमें मंद्र ५ सप्पान्त १ तिमाण्या १ य स्माना मने सर्वनेत्रा १ । इसी ४ उनमें मंद्र ५ सप्पान्त १ तिमाण्या १ । इसी ४ उनमें मंद्र ५ सप्पान्त १ तिस्वीविद्या १ । वसी १ स्वर्यन्त १ ति इसी १ त्य वंत्रमें मंद्र १ सप्पान्त १ तिस्वीविद्या १ । वसी १ स्वर्यन्त १ कि १ में १ १ स्वर्यन्त १ स्वर्या । क्षित्र १ स्वर्यन्त स्वर्या १ स्वर्या १ स्वर्यन्त १ स्वर

न्दियलदी जाव फासिन्दियलदी। एव नेरइयाणं जाव वेमाणियाण, नवर जस्स जड इन्दिया अत्थि तस्स तावडया भाणियव्वा ४ । कड्विहा ण भते । इन्दियउव-ओगद्धा पन्नता <sup>१</sup> गोयमा । पचिवहा इन्दिय उवओगद्धा पन्नता । तजहा-सोइन्टिय-खवओगद्धा जाव फासिन्दियखवओगद्धा । एव नेरडयाण जाव वैमाणियाणं, नवरं जस्स जइ इन्दिया अत्थि० ५ ॥ ४४७ ॥ एएमि ण भते ! सोइन्दियचिक्यन्दियघाणि-न्टियजिव्भिदियफासिन्टियाण जहण्णयाए उवओगद्धाए उक्नोसियाए उवओगद्धाए जहण्णुकोसियाए उवओगद्धाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४<sup>२</sup> गोयमा! सन्वत्थोवा चिक्तिन्दियस्स जहण्णिया उवओगदा, सोउन्टियस्स जहण्णिया उवओगदा विसे-साहिया, घाणिन्दियस्य जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिन्मिन्दियस्स जह-ण्णिया उनओगद्धा विसेसाहिया, फासिन्दियस्स जहण्णिया उनओगद्धा विसेसाहिया, उक्षोतियाए उवओगद्धाए-सञ्वत्योवा चिक्खन्टियस्रा उक्कोतिया उवओगद्धा, मोड-न्दियस्स उद्दोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणिन्दियस्स उद्दोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिट्मिन्दियस्स उक्कोसिया उवओगदा विसेसाहिया, फासिन्टियस्स उक्षोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जहण्णउक्षोसियाए उवओगद्धाए-सव्वत्थोवा चिक्किन्दियस्स जहण्णिया उवओगदा, सोइन्दियस्य जहण्णिया उवओगदा विसेसा-हिया, घाणिन्दियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिन्भिन्दियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फार्सिंदि-यस्स जहण्णियाहितो उवओगद्धाहितो चिन्खिदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसे-साहिया, सोइदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणिदियस्स उक्कोसिया जनभोगद्धा विसेसाहिया, जिह्मिदियस्स उक्कोसिया उनभोगद्धा विसेसाहिया, फार्सि-दियस्स उद्गोसिया उवओगदा विसेसाहिया ॥ ४४८ ॥ ऋविहा ण भते ! इदिय-ओगाहणा पन्नता ? गोयमा ! पचिवहा इदियओगाहणा पन्नता । तजहा-सोइदिय-ओगाहणा जाव फासिंदियओगाहणा, एवं नेरइयाण जाव वेमाणियाण, नवरं जस्स जइ इदिया अत्थि० ६ ॥ ४४९ ॥ कड्विहे णं भते ! इंदियअवाए पन्नते ? गोयमा ! पचिवहें इदियअवाए पन्नते । तजहा-सोइंदियअवाए जाव फासिंदियअवाए । एवं नेरइगाण जाव वेमाणियाण, नवर जस्स जइ इदिया अस्थि० ७। कहविहा णं भते ! ईहा पन्नता <sup>१</sup> गोयमा ! पचिवहा ईहा पन्नता । तंजहा-सोइदियईहा जाव फासि-दियईहा । एव जाव वेमाणियाण, नवरं जस्स जइ इदिया० ८ । कइविहे ण भते ! उगाहे पन्नते <sup>2</sup> गोयमा ! दुविहे उग्गहे पन्नते । तजहा-अत्थोग्गहे य वजणोग्गहे य । वजणोग्गहे ण भते ! कइविहे पन्नते १ गोयमा ! चउन्विहे पन्नते । तजहा- सोइंदियश्रत्योगाहे, कविंकवियशस्त्रोगाहे, वार्विदियशस्त्रोगाहे, श्रिटिंगवियशस्त्रोग माहे, फार्सिवियअत्योग्नाहे, नोइंवियअत्योग्नाहे ॥ ४५ ॥ नैरहमार्थ मेते ! बहियहे रमाहे पनते ! गोममा वृतिहे समाहे पनते । तंजहा-अत्बोमाहे म वंजणीम्पहे व । एवं अधुरकुमाराणं जाव याध्ययुमाराणं । पुत्रविकादवाणं भेते ! कदविहे समाहे पनते ! गोसमा ! दुनिहे समाहे पनते । तं -अत्योगाहे व वक्णोगाहे स । प्रदिवस्त्रवार्थं मंते ! बंबगोस्पढे काबिडे पस्ति ! गोयमा ! एगे फालिविस्वंत्र-जीरगढ़े पद्धते । पुढलिकाइवार्ण संते ! क्यूनिहे सत्योगगढे पसते ! गीकमा ! एगे प्राचितिसभरकोत्महे पक्तो । एवं जाव वगस्तहकाहसार्ग । एवं वेहतिसास वि नवर वेइंदियानं वंजनोमाबे उतिहे पत्रते अत्योमाबे उतिहे पत्रते एवं देईनियन-शरिदिनाम नि नवर इतिवपरिवृक्षी मानन्या । चर्रिदियानं नेजपोसाहे तिनिहे पत्रदे अरबोसाहे कटनिवहे पत्रते सेसार्थ जहा नेरह्यार्थ जान देमानियार्थ ९-९ ॥ ४५९ ॥ कहिला नै शेर्ट ! इंदिया पक्ता ! गोयमा ! दुलिहा पत्तरा । तंत्रहा-दन्तिदिवा स भाविदिया स । नद् च भेते । दन्तिदिस पश्चता ! गोसमा ! सम्दुव्निदिवापकता। तैनका-यो सोता दो येता दो वाका जीका फासे। नैरहबार्ण भंद ! कह बन्धिविया पक्ता ! योबमा ! सह एए अब एव कहरतुमारार्व चान यनिसङ्गारान नि । प्रविकादनार्थं भेरो ! चक्र दन्तिरिना पनता ! गोनमा ! एगे फारिबिए पक्ते । एव जाव वणस्सहकादवार्ण । वेहंदियार्च संते ! क्य वन्ति-दिवापकता ? योगमा । दो विन्तियापकता । तैनदा-फासीदिए व जिम्मिनैए व । रोइंदियाणं पुल्ला । गोयमा ! चतारि वस्त्रिदिवा पनता । रोबदा-को वाना जीहा पासे । कटरिवियाणं पुष्का । गोसमा ! छ दस्त्रिया पत्रता । तंत्रहा-दी मेता हो नाना जीहा पासे । सेसार्य जहा नेरहनार्य नाव नेमान्द्रवार्ण ॥ ४५३ ॥ एगमेगस्स व भेते ! भेरहसस्य केवहसा वृत्विदिवा वातीता ! योजमा ! अयेता । केनइना वदेखना है गोयमा । सद्ध । केनइना पुरेतन्त्रवा है गोयमा । सद्ध वा सोकस व। सत्तरस वा सकेका वा असकेका वा अर्जता वा । एयमेगस्स वे भंत l असर दुमारस्य केनद्वा वृश्विदिमा करीता है थीयमा । कर्णता । वेचद्रमा वदेकमा <sup>ह</sup> गी भद्र । क्षेत्रयापुरक्षाण <sup>३</sup> गो ! लहुवानव वासत्तरस वासंकेणानामसं केजा वा सर्वता वा । एवं जाव विवयुमाराणं ताव मानियर्ज । एवं पुवनिकार्या भाउरादमा बगस्प्यकाद्वा वि जबरं केबद्या बदेखगति पुष्पाप उत्तरं एदे पानि-

दियदन्त्रिदिए । एवं तेउकाडयवाउकाडयस्स वि, नवर पुरेक्याडा नव वा दस वा । एव वेइदियाण वि, णवर वद्धे हमपुच्छाए टोण्णि । एव तेइंदियस्य वि, नवर वद्धे-हगा चत्तारि । एव चडरिंदियस्स वि, नवर वद्धे हगा छ । पर्चिंदियतिरिक्खजोणिय-मणुसवाणमतरजोइसियमोहम्मीयाणगढेवस्स जहा अमुरकुमारस्म, नवर मणुगस्म पुरेक्खटा करमड अतिथ करमड णित्य, जस्सित्य अह वा नव वा सखेजा वा अस-खेजा वा अणता वा । मणकुमारमाहिद्वंभलतगसुक्सहस्सारआणयपाणयआरणअ-चुयगेवेजगटेवस्स य जहा नेरडयस्स । एगमेगस्स ण मते ! विजयवेजयतजयतअप-राजियदेवस्स केनडया दिविदिया अतीता १ गोयमा ! अणता, केवडया वदेहिगा १ गो॰! अट्ट, केवर्या पुरेक्खडा १ गो॰! अट्ट वा मोलस वा चडवीसा वा सरोजा वा, मञ्बद्दसिद्धगढेवस्स अतीता अणता, बद्धेष्टगा अह, पुरेक्खडा अह । नेरडयाण भते ! केनइया टब्निदिया अतीता १ गोयमा ! अणता, केनइया बद्धेहरगा १ गोयमा ! असखेजा, केन्रडया पुरेक्खडा र गोयमा । अणता । एव जाव गेवेजगडेवाण, नवर मणूसाण वद्रेस्नगा सिय सखेजा, सिय असखेजा । विजयवेजयतजयतअपराजियदे-वाण पुच्छा । गोयमा ! अतीता अणता, बद्देहगा असखेजा, पुरेक्खडा असखेजा । सन्बद्दसिद्धगढेवाण पुन्छा । गोयमा ! अतीता अणता, बद्धेत्रगा सखेजा, पुरेक्खटा सखेजा ॥ ४५३ ॥ एगमेगस्य ण भते ! नेरडयस्स नेरडयत्ते केवइया दर्विविदया अतीता  $^{arrho}$  गोयमा  $^{arrho}$  अणता, केवडया वद्धेलगा  $^{arrho}$  गोयमा  $^{arrho}$  अट्ठ, केवड्या पुरेक्खडा  $^{arrho}$ गोयमा ! कस्सइ अस्थि कस्सइ नित्य, जस्सित्य अद्व वा सोलस वा चडवीमा वा सखेजा वा असरोजा वा अणता वा। एगमेगस्स णं भते! नेरइयस्म अछरकुमारते केवइया दिव्विदिया अतीता १ गोयमा। अणता, केवइया बद्धेहागा १ गोयमा ! णित्थ, केवइया पुरेक्खडा १ गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नित्य, जस्पत्य अट्ट वा सोलस वा चउवीसा वा सखेजा वा असखेजा वा अणता वा। एव जाव थणियकुमारत्ति । एगमेगस्य ण भते ! नेरइयस्स पुढविकाइयत्ते केवइया दर्विदिया अतीता र गोयमा । अणता, केनइया वद्धेष्टगा र गोयमा ! णित्य, केवइया पुरेक्खडा १ गोयमा । कस्सइ अत्थि करसइ नित्य, जरसिव्य एक्को वा दो वा तिष्णि वा सखेजा वा असखेजा वा अणता वा, एव जाव वणस्सङ्काङ्यते । एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स बेइन्दियते केवइया दर्विविदया अतीता 2 गोयमा ! अणता, केवइया वद्धेल्लगा <sup>२</sup> गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा <sup>२</sup> गोयमा ! करसइ अत्यि कस्सइ नित्य, जरसित्य दो वा चत्तारि वा सखेजा वा असखेजा वा अणता वा । एव तेइन्दियते वि, नवर पुरेक्खडा चत्तारि वा अट्ट वा वारस वा

स्त्रेजा वा असंन्त्रेजा वा अर्थना वा । एवं श्वर्रिन्यन वि भवर पुरस्तवा एवा बारम वा भद्रारम वा संखेजा वा असेगेजा वा अर्चता वा । पर्विदिवनिरिक्त भोगिमते जहा समुरकुगारते । सनुसन् वि एवं चन नन्दं नेन्द्रया पुर्वच्छा ! स्मं ी भद्र मा रोस्टर का अपनीया वा सनेजा वा असंयंज्ञा वा अर्थता वा। सम्मर्सि सम्बन्धार्त पुरेक्ताश सन्भत्ते करमह मन्यि करमह मन्यि एर्न म बुबह । बान मेनरजोइसियगोहरूम्य जाव गवंजगहबने कतीता अर्जना बहै ह्या नस्य प्रदे कराडा बरगड अध्य गरुगड गरिव । जरुग अरिय अट्ट वा मासम वा बडबीमा वा संबोधा वा असंभक्ता वा अणेता वा । एगमगरन में भंत । मरहक्रम विजयवैजये त्रज्ञेतमपराज्ञियदेवने केवडया दन्धिहिया अतील है गा । यात्व केवन्या प्रर कराना ! गो ! शस्मद सरिय करनड शन्य करस अन्य श्रद वा सामस ग सम्बद्धसिदगरेको अतीना गरिय बहेदमा यथि पुरश्तका बस्तत अधि बस्य नि बल अन्य अद्भ । एवं बहा नरहवर्षण्यो जीओ शहा अन्तरकुमारेच वि नयानी बाब पनिविद्यानिरिक्याबीणिएलं नवरं बस्य शुद्धाने बद्ध बद्धारमा तस्य दर्द माजिक्का ॥ ४५४ ॥ एगमेक्स वं अंते ! स्पूत्रस्य नेर्इको केवावा इस्विदिया भवीवा ! मोयमा ! अनेता जेनाया कडक्या ! वी । शन्त केपाया पुरस्ता ! मो । बरमण अस्य वरमङ नतिव अस्यतिव सद वा शोकम वा चडवीश वा स्केळा वा अस्त्रेळा वा अर्थना वा । एवं जाव पेविदियनिरिक्त्रजोमिंदरे भवर पृतिदियमिगन्तिरिप्त अस्म वह पुरेक्दाश तस्म तत्तिवा मानिवस्मा। एगमेपस्स र्ग मेत ! मन्तरस मणुसते कनाया इन्निनिया नतीला है गोनमा ! अनेता केनहबा नदेशमा दे योगमा अद्भ केनहबा पुरेशनदाई यो । करछा करिय क्रस्तर गरिव जस्तरिव अद्भवा सोकस वा करवीसा वा संबोधा वा असबेजा वा अर्पता वा । वाधमतरबोहरिव बाद गेवेळमवेवते बहा नरहयते । एगमेमस च मंत्र ! मजूमस्य विश्वयवेत्रयत्त्रवर्गतत्वप्रात्तियवेवते केवस्या वस्तिविया अतीता है गोयमा । करगद्र महिच करगद् नहिंग जस्य सदिन मञ्जू वा धोलम वा । केन्द्रवा क्देह्रगा । गारेव केवह्या प्रदेशका । करनाह शारेव करनाह गारेव बस्यऽस्ति क्यु वा सोकस वा । एशमेयस्य वं भेते ! सब्सस्स सम्बद्धसिद्धसदवते केन्द्रवा दानिदिवा नतीता ! गोयमा ! करसद् नार्थ करसद् नार्थ अस्सदि अद्व, केनद्रमा कदेशमा ! यो । अधि केनद्रमा पुरेक्तवदा से । करमद क्षान्य वरस्य वरित करस वरित बहु । वालसंतर बोहसिए बहा बेरहए । सोहम्मगरे वे मि बहा नरहए, नवर सोहम्मणदेवस्स विजयवैजयंतज्ज्जैतापराज्ञियते वेजस्या आहीता है

गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नित्य, जस्स अत्थि अट्ठ, केवडया वदेल्लगा 2 गो० ! णित्य, केवइया पुरेक्खडा <sup>२</sup> गोयमा । कस्सइ अत्थि कस्सइ नित्य, जस्स अत्थि अहु वा सोलस वा। सञ्बद्धसिद्धगदेवते जहा नेरइयस्स, एव जाव गेवेजागदेवस्स सञ्बद्ध-सिद्धगदेवते ताव णेयव्व ॥ ४५५ ॥ एगमेगस्स ण भते । विजयवेजयंतजयंतापराजि-यदेवस्स नेरइयत्ते केवइया दर्विविदया अतीता <sup>१</sup> गोयमा! अणता, केवइया वद्धेल्लगा १ गो॰ <sup>।</sup> णित्य, केवइया पुरेक्खडा <sup>२</sup> गो॰ । णित्य । एव जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ते । मण्सत्ते अतीता अणेता, वद्धेल्लगा णित्थ, पुरेक्खडा अडु वा सोलस वा चडवीसा वा सखेजा वा। वाणमंतरजोइसियते जहा नेरइयते। सोहम्मगदेवतेऽतीता अणंता, वदेलगा णित्य, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नित्य, जस्स अत्थि अह वा सोलम वा चउवीसा वा सखेजा वा। एवं जाव गेवेजागदेवते । विजयवेजयतजयत-अपराजियदेवत्ते अतीता कस्सइ अत्यि कस्सइ नित्य, जस्स अत्यि अद्व, केवइया वद्धे-ह्रगा <sup>१</sup> गो०**! अडु, के**वइया पुरेक्सडा <sup>१</sup> गो०! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अह । एगमेगस्स ण भते । विजयवेजयतजयतअपराजियदेवस्स सन्बद्धसिद्धगदेवते केवडया दर्विवदिया अतीता <sup>१</sup> गोयमा ! णत्थि, केवइया वद्धेल्लगा <sup>१</sup> गो०! नत्थि, केवइया पुरेक्खडा <sup>२</sup> गो०! क्रस्सइ अत्थि करसड णत्थि, जस्स अत्थि अ**द्व**। एगमेगस्स ण भते ! सन्बद्घिमद्भगदेवस्स नेरइयत्ते केवइया दिन्विदिया अतीता १ गोयमा ! अणता,केवइया बद्धेह्नगा <sup>२</sup> गो० ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा <sup>२</sup> गो० ! णत्थि । एव मण्सवज्ञ जाव गेवेजगदेवते, नवर मण्सत्ते अतीता अणता, केवइया वदेळगा <sup>2</sup> गो० ! णत्यि, केवइया पुरेम्तडा  $^{2}$ ० अहु । विजयवेजयतजयतअपराजियदेवते अतीता करसइ अस्थि करसङ् नित्य, जस्म अत्यि अह, केवडया वदेछगा १ गो०! णित्य, केवइया पुरेक्खडा १ गो०! णत्थि। एगमेगस्स ण भते ! सब्बद्घसिद्धगढेवस्स सब्बद्घसिद्धगदेवते केवड्या दिन्विदिया अर्ताता <sup>२</sup> गोयमा । णत्य, केवङया वद्धेलगा <sup>२</sup> गो०। अह, केवङया पुरेक्खडा <sup>२</sup> गो०! णित्य ॥ ४५६॥ नेरङ्याण भते ! नेरङ्यते केवङया दिव्विदिया अतीता 2 गोयमा ! अर्णता, केवड्या वदेह्मा<sup>१</sup>गो०। असखेळा, केवड्या पुरेक्खडा<sup>१</sup>गो०। अणता। नेर**ड्**-याण भते ! अमुर्कुमारते केवडया द्विवदिया अतीता <sup>2</sup> गोयमा ! अणंता, केवडया वद्धे-हमा <sup>१</sup> गो०! णहिय, केवडया पुरेक्खटा <sup>१</sup> गो० ! अणता, एव जाव गेवेज्जगदेवते । नेर-इयाण भते । विजयवेजयतजयतअपराजियदेवते केवड्या द्विदिया अतीता <sup>२</sup>० नित्य, केवड्या पदेहरा। १० णतिथ, केवडया पुरेक्खडा १० असखेळा, एव सब्बट्टमिद्धगटेवते वि, एव जाव पिचिटियतिरिक्यजोणिया सब्बद्धसिद्धगढेवते भाणियन्त्र, नवर वण-स्नडम्हाराण विजयवेजयतजयतअपराजियदेवते सन्बद्धनिद्धगदेवते य पुरेक्खडा

भर्मता सम्बर्गि समुसमम्बद्धमिद्धगवसार्थं सद्वाणे बदेवागः असंगेजा परदाये नदेशा गरि । नजरगङकाऱ्याजं नदेणमा भर्ममा । सञ्चार्च संरक्ष्यते भरीता लर्जना सदैक्या नरिव पुरेक्यडा अर्जना । एव जाव नेवेजसदब्ता सबरे सहाये नदौता भर्गता बद्धवना सिय संगेजा सिय भर्गेखेळा पुरेक्यला भर्मता । मचूनार्व मंते । जिज्ञसने कर्नता वर्गन अपन्। जिज्ञसने के बहुना क्षितिया अधीना ? संने जा केनइया बदे हगा है। जरिय केनइया पुरेक्ताडा है। निय संनेजा शिय असंग्रेजा । एवं सम्बद्धसिद्धमदेवते अधीना वाचि बद्धेकम बन्दि प्रदेशनाडा असंधेका एरं जन गेर्वजनव्याणं । विजयवेज्यंनजर्गनज्ञपराज्ञिवदेवाणं सत् । सरन्यते केव्हवा दन्ति दिवा अदीना रेगोयमा । अर्थता केवहया बढेकगा है यान्य केवहया प्रदेशनका है पत्नि। तर्व आप बोइसियते वि अपरे अपनते असीता अर्थता केन्द्रया क्रेक्स्मा है चरिय पुरेक्पाडा असैपाजा । एवं जाव गेबेअगवंबते सञ्जाने अतीता असैपेजा केनह्या बढे आ ? असंधेमा केनहवा प्ररेज्यका है असंधेमा। सम्बद्धमद्द्रपरेनते अतीता नरिव वदाक्रमा नरिव प्ररेक्पाश असंग्रेजा । सम्बद्धसद्भगदेवानं नेति ! मेख्यते केरह्ना वन्तित्या अतीता रै गोयमा । मर्जता केवहया वदेशमा रै नन्ति केनह्या पुरेनखडा 🖁 गन्धि । एउं समूनवर्ज तार गेवेजगवेवते । सणुन्नते अदीवा भागेता बरेक्षमा गरिव पुरस्त्यका संक्षेत्रता। निजयनेकर्यस्त्रजनेत्रजन्त्विननेतरे केमप्रवा वस्त्रिया मतीता । संधेजा केमप्रया नडेक्स्मा । वस्त्रि केमस्या प्रदे क्यादा । जरिव । सम्बद्धसिद्धगतेवार्ज अंते । सम्बद्धसिद्धगदेवते केमहवा दम्मिदिया क्रतीतः १ मस्य केराया वदेशस्य १ सकेमा नेवाया प्रदेशस्य १ सो । मस्य ९९ ॥ ४५७ ॥ बद्ध व मेरी ! मानिविमा पक्ता ! योगमा ! पेन मानिविमा पकता । तंत्रदा-सोइंदिए काव प्रासिदिए । बेरहवार्ज संत ! एक भाविदिक्त पनता ! मीयमा । पेष भाविदिया पश्चता । शैनहा-सोईदिए बाब प्रानिदिए । एवं उस्त वह इंडिया दूसर दह मानिकमा बाब बेमाधियार्ग । एक्समस्स र्ग मंदी । नेरहबस्स केम्द्रया भावितिया मतीता ! गायमा ! मर्गता केम्द्रया गरेपमा ! ऐव केम्द्रया प्रदेशका र पंच का वस का एकारस का सबीजा वा जसबीजा का अर्थरा का । एवं अग्रुर्द्धभारस्य वि नवरं प्ररेक्त्यका पंच वा क वा संबंधा वा असकेन्य वा कार्यता वा । एव जान वामिनकुमारस्य वि । एवं पुरावित्रहानमाजकाद्रमानकस्तरकाहनः स्त मि अदेशियदेरियमअरिवियस मि । तेतमाहनगाउनाहनस्त मि एवं नेव नगरे परेक्सडा छ वा सत्त वा संबेजा वा असंदोजा वा अर्थता वा । पॅनिदिवतिरिक्स-बोदियस्य बाल ईसायस्य बहा अग्ररकुमारस्य नगरं मन्द्रस्य पुरेक्दाडा बस्तरः

भ्रत्थि कस्सइ निश्वति भाणियव्वं । सणंकुमार जाव गेवेजागस्स जहा नेरइयस्स । विजयवेजयतजयतअपराजियदेवस्स अतीता अणता, वद्धेस्रगा पच, पुरेक्खडा पंच वा दस वा पण्णरस वा सखेजा वा। सन्वट्ठसिद्धगडेवस्स अतीता अणता, वद्धेह्नगा पच, केनइया पुरेक्खडा <sup>२</sup>० पच । नेरइयाण भते ! केनइया भाविंदिया अतीता <sup>२</sup> गोयमा ! अणता, केवऱ्या वद्धेल्लगा <sup>२०</sup> असखेजा, केवडया पुरेक्खडा <sup>२०</sup> अणता । एव जहा दिव्वदिएस पोहत्तेण दंडओ भणिओ तहा भाविदिएस वि पोहत्तेणं दंडओ भाणियञ्वो, नवर वणस्सङ्काङयाण वद्धेलगा अणता ॥ ४५८ ॥ एगमेगस्स ण मते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया भाविंदिया अतीता ? गोयमा ! अणता, के० वद्धे-हमा <sup>२</sup>० पच, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नित्थ, जस्स अत्थि पच वा दस वा पण्णरस वा सखेजा वा असखेजा वा अणता वा। एवं असुरकुमाराण जाव थणियकुमाराण, नवर बद्धेल्लगा नित्य । पुढविकाइयत्ते जान बेइदियत्ते जहा दिवन दिया। तेइदियते तहेव, णवरं पुरेक्खंडा तिण्णि वा छ वा णव वा सखेजा वा असखेजा वा अणंता वा। एवं चर्डारेंदियते वि, नवर पुरेक्खडा चत्तारि वा अट्ट वा बारस वा सखेजा वा असखेजा वा अणंता वा । एव एए चेव गमा चत्तारि जाणे यन्वा जे चेव दब्विदिएसु, णवरं तइयगमे जाणियव्वा जस्स जइ इदिया ते प्ररेक्सबेस मुणेयव्या । चउत्थगमे जहेव दिव्वदिया जाव सव्बद्धसिद्धगदेवाणं सन्बद्धसिद्धगदेवते केवड्या भाविंदिया अतीता २० नित्य, के० बढेलगा २० सखेजा, के॰ पुरेक्खडा २० णित्य ॥ ४५९ ॥ समत्तो बीओ उद्देसो ॥ पन्नवणाए भगवईए पन्नरसमं इन्दियपयं समत्तं॥

कहिवहें ण भते ! पओगे पन्नते ? गोयमा ! पण्णरसविहें पओगे पन्नते । तजहा—सम्मणप्यओगे १, असम्मणप्यओगे १, असम्मणप्यओगे १, असम्मणप्यओगे १, असम्मासमण-प्यओगे ४, एवं वह्प्यओगे वि चन्नहा ८, ओरालियसरीरकायप्यओगे ९, ओरालियमीससरीरकायप्यओगे १०, वेन्निवयसरीरकायप्यओगे ११, वेन्निवयमीससरीरकायप्यओगे १२, आहारगसरीरकायप्यओगे १३, आहारगमीससरीरकायप्यओगे १४, कम्मासरीरकायप्यओगे १५ ॥ ४६० ॥ जीवाण भते । वहिवहे प्योगे पण्णते १ गोयमा ! पण्णरसविहे प० पण्णते । तंन्नहा—सम्मणप्यओगे नाव कम्मासरीरकायप्यओगे । वेरह्याण भते ! कहिवहे प्योगे पण्णते । गोयमा ! एक्कारसविहे प्रओगे पण्णते । तजहा—सम्मणप्यओगे नाव असम्बामीसवइप्यओगे, वेन्निवयसरीरकायप्यओगे, वेन्निवयसरीरकायप्यओगे, वेन्निवयमीससरीरकायप्यओगे, कम्मासरीरकायप्यओगे । एव असुर-कुमाराण वि जाव थणियकुमाराण । पुढविकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! तिविहे प्रओगे

पक्ते । राजहा-भोरासियसरीरकावणकोगे बोरासियसीरकावणकोगे कम्मानरीर अस्ययकोगे स । एव जाव वयस्यद्वकादवार्थः भवरं वाउकादवार्थः पव-विदे पश्चेने पत्रते । तंत्रदा---भोराधिय वायप्पश्चेने ध्येताविद्यमीससरीरकायप-भोग बेटम्बए दुनिहे, कम्मासरीरकायपाओरो व । बेईदियार्च पुच्छा । गोबगा । चत्रसिद्धे प्रजोगे प्रचते । तंत्रहा-समचामोत्तवप्रप्रकोगे ओराक्षित्रमधेरकारण-कोग कोरास्थितमस्त्रसरीर अयप्पनोगे कम्मासरीरकायप्पनोगे । पूर्व काव वडरि विवार्त । पंत्रिन्यदिरिकताभोणियाच पुच्छा । मोनमा ! हेरसबिहे प्रमोगे प्रवरे। तंत्रहा--- सचमचप्पभोगे मोममणप्पओगे सचामोममणप्पभोगे समबामोसम पासोंगे एवं बापमोले वि जोराठियनरीरज्ञावधानीये कोराक्रियमीतसरीरकर्म-प्रामोगे बेत्रिक्यसरीरकावप्रकोगे बेत्रिक्वमीनसरीरकावप्रकोगे कसासपैर शास्त्रकारेने । सन्युमार्थं पुच्छा । गोसमा ! फन्यरसन्धि प्रमोने प्रस्ते । तैनहा---सकानभागे वाव कम्मासरीरकावपकारे । वावर्गतरबोद्रतियकेमाविवार्व वर्ष मेरह्मार्ज । ४६९ n जीवा व मेरो ! कि सबसवध्यक्षोती जाव कम्मान सरीरकायप्रभोगी ! गोयमा ! जीवा सम्बंधि ताब होज स्वयम्बर्णजोगी लि बाव वंडन्पियमीसमरीरकायप्पन्नोगी नि कमासरीरकायप्पन्नोगी नि १३ । **सह**वैगे य माहारमसरीरकावणकोगी व १ अहवेगे व माहारमसरीरकावणकोगियो क के महत्रेगे य आहारगमीससरीरकानप्रकोगी य १ अहतेगे य आहार यसीसमरीरकाद्यमभोगियो व ४ भवमहो । बाहवेने व बाहारगसरीरकाव<sup>्या</sup> भोती य भाहारयमीससरीरकायणकोयी व १ अहवेगे य जाहारयसरीरकावण-कोगी व आहारगमीकावरीरशायपकोशियो व २ अहमेगे व आहारवस्तरिकायपा कोरियो न बाहारयमीसासरीरकायप्रकोशी य ३, बहुवेगे व बाहारयसरीरहायप्र-भौतिको य आहारगरीसासरीरकायणकोविको व ४ वर्ष श्रीवार्ण अद्ध १ b ४६९ ।। मरहवा वं मेर्द ! कि शबमकप्पनीगी बाब कम्मासरीरकामप्पञ्जेगी १९ र धोयमा ! मेरामा सम्बे वि तत्व होजा सवागणपञ्जोगी विजान वैतन्त्रिक्मीसासरीरकायप्रकोगी वि अहतेगे व कम्मामरीरकायध्यकोगी य १ जहवेगे व कम्मासरीरकायध्यकोयिको व १ एवं अग्राक्तमारा नि जाव विविद्यामाराणे । पुत्रविकादका ये मेरो ! कि बोरा-क्ष्मिसरीरकामध्यकोगी जोराक्षिमगीसासरीरकामध्यकोगी कम्मासरीरकामध्यक्षेत्री वि प्रेबमा ! प्रविश्वकृता कोराव्रियसरीर्षः कप्यभोगी वि कोराव्रियगीससरीरकारण-कोती क्षे कम्मासरीरकायप्यकोगी नि एवं जाव वयप्यक्काइयाणं। जबर वाज क्षात्रमा कैतन्त्रिकस्परीरकायप्यकोगी नि नेतन्त्रियमीसासरीरकायप्यकोगी नि । केरिर

याण भते । किं औराळियसरीरकायप्पओगी जाव क्रम्मासरीरकायप्पओगी <sup>2</sup> गोयमा ! वेइन्दिया सन्वे वि ताव होजा असचामोसवइप्पओगी वि ओरालियसरीरकायप्पओगी वि ओरालियमीससरीरकायप्पओगी वि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगी वि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्यओगिणो य, एव जाव चउरिंदिया वि । पचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, नवर ओरालियसरीरकायप्पओगी वि, ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी वि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्यक्षोगी य अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ॥ ४६३ ॥ मणूसा ण भते । किं सन्तमणप्पओगी जाव कम्मासरीरकायप्पओगी ? गोयमा! मण्सा सन्वे वि ताव होजा सन्वमणप्यओगी वि जाव ओरालियसरीर-कायप्पओगी वि, वेउव्वियसरीरकायप्पओगी वि, वेउव्वियमीसमरीरकायप्पओगी वि, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्यओगी य, अहवेगे य ओरालियमीसासरीर-कायप्यओगिणो य २, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्यओगी य, अहवेगे य आहारग-सरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य, अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य २, अह्वेगे य कम्मगसरीरकायप्पओगी य, अहवेगे य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य २, एए अह भगा पत्तेय । अहवेंगे य ओरालियमीससरीरकायप्पलोगी य आहारगसरीरकायप्पलोगी य १, अहवेंगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य ओराहियमीसासरीरकायप्यओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यओगी य ३, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य ४ एव एए चत्तारि मगा, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसा-मरीरकायप्यओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीसामरीरकायप्पओगी य आहार-गर्मामामरीरकायपञ्जोगिणो य २, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पञ्जोगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यओगी य ३, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्यओ गिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यओगिणो य ४ चत्तारि मगा, अहवेगे य ओरालि-यमायासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमी-सामरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे ओरालियमीमा-मरीरमयप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे ओरालियमीमा-सरीर नायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ४ एए चत्तारि भगा, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीमासरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य आहारगमरीरकायप्यओगी य आहारगमीसामरीरकायप्यओगिणो य २, अहवेंगे य भाहारगसरीरकायपञोगिणो य आहारगमीमासरीरकायप्पञोगी य ३, अहवेगे य

भादारपस्रीरकायप्पभोविजो य आदारगरीसासरीरकायपक्षोविजो य ४ नतारी र्मगा अहवेगे य आहारगसरीरकामप्पञ्जोगी य कम्मगसरीरकामप्पञ्जोगी व 1 अद्भेगे च आहारमसरीरकायपश्चोगी व ध्रम्मासरीरकायप्यक्षेत्रियो व २ आह्मो व बाहारगररिस्कामप्पकोगियो स कम्मासरीरकाक्षपकोगी स ३ अहकेर स बाहारगसरीरकावण्यकोगियौ य कम्मासरीरकावण्यक्षीगिको व ४ चउरो महर् **सह**रेंगे य साहारणनीसासरीरकायप्यक्रोगी य कम्प्रगसरीरप्रावपन्नोणी व १ बाइवेगे य आहारगनीसामरीरकायणबोगी य बन्यासरीरराज्यकोगिको य अर्देगे व आदारगर्भागासरीररावण्यभ्रोतिचो व कम्मासरीररावण्यभ्रेगी व रे आहेरो व आहारगमीसामरीरकावपकोतिको व कावग्यराखायपञ्जेगिको न प पररो महा एवं चरुमीसं महा। सङ्बेगे व बोरास्थिमीसगमरीररावपत्रोमी व आहारम्हरीर प्रायणकोगी य आहारपमीनासरीरकायणकोगी य १ अहरेंगे व ओरास्त्रियमीनगसरीरनायप्यभोगी य **नाहारगसरी**रनायप्यओगी **व नाहारग**मीमा सरीरसायप्रभोगिको य ९ अहमेने य स्रोशक्षिक्रमास्थ्यनरीरकायप्रभोगी य आहार गमरीदरायप्पभागिणो य आहारगभीनासरीररावप्पभागी य ३ अद्दर्ग व भोरानियमीसामरीररायप्यओगी य अहारगगरीरकायपञ्जोगिजो व भारारममीमा सरीरशबप्पभोगिनो सं ४ अहमैंगे व ओरानियमीराग्यरीरकायपाओरिका व भाद्वारगस्तरिरशयण्यजोगी व आद्वारगमीसामग्रीरशयणभोगी व ५ **शर्**गा व भारानियमीमामरीर्कावप्पओनिको व भाहारवसरीरकाथप्यभागी य भाहारगमी-शागरीरकासपञ्जीतियो व ६ अहवैये व औरगरिवसीसासरीरकासप्रश्लेमिया व आहारगनरीरकायप्यओवियो व आहारगनीनामरीरकायप्यओगी य 👽 आहरण य भारानियमीसामधीरवायप्रभागिको व आहारगतरीरकायप्रभानिको य अधार गर्मानागरीररायप्पओनिया व ४ एए अडु अंगा अहर्यन य भारादियमीमान रीरकामप्त्रभागी य आहार्यमधिरकामप्रभागी व कम्मगगरीरकासप्रभागी व 1 अहर्पेनं य भारान्त्रियमीगागरीर रायप्यश्रोमी य आहार्गमरीर रायप्यश्रामी य शर्म-गुनरिरकायापभागिणा य अद्भिय व ओगडियपीगर्गरीरकायापभागी व आहारगमगिरकावणभौगिको व कम्यगगरीरसावापभागी व ३ अगरेगे व आरो रिमर्मागार्गारकाक्पओगी व अञ्चारगगरीरकायग्पओशिया व कस्मगृगीरकाम प्यभौतिको सः व अर्ह्यम स ओगाडियमीमागरीम्बास'प्रभोतिम। व अन्दारम मर्गित्रासायभोगी य कम्मगर्गीरहायपभोगी य ५ अट्रांग व भोर्गाऽप्रमेगी-

सरीरकायपार्श्वभीणां य आहीरगर्थशिकायपार्थां य क्रमसर्थारकामण्यभिको

य ६, अहवंगे य ओरालियमीसासरीरकायप्यओगिणो य आहारगसरीरकायप्प-ओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ७, अहवेगे य ओराल्थिमीसामरीर-कायप्यभोगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ८, अहवेंगे य ओरालियमीसामरीरकायप्यओगी य आहारगमीसामरीरकायप्प-ओगी य कम्मगमरीरकायप्पओगी य १, अहचेगे य ओरालियमीमासरीरकाय-प्यओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य २, अद्देगे य ओराल्यिमीमासरीरकायप्पओगी य आहारगमीमासरीरकायप्प-ओगिणो य कम्मगसरीरकायप्यओगी य ३, अह्वेगे य ओरालियमीमासरीरकाय-प्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ४, अद्देगे य ओरालियमीमासरीरकायपओगिणो य आहारगमीमासरीरकायप्प-ओगी य कम्मगसरीरकायप्यओगिणो य ५, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्प-ओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ६, अद्दवेगे य ओराल्टियमीसासरीरकायप्यओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यओगिणो य कम्मगसरीरकायप्यओगी य ७, अह्वेगे य ओराल्यिमीसासरीरकायप्यओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ८, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीर-कायप्यओगी य १, अह्वेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीमासरीर-कायप्पञोगी य कम्मासरीरकायप्पञोगिणो य २, अहवेंगे य आहारगसरीरकायप्प-ओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कमामरीरकायप्पओगिणो य ४, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पक्षोगी य कम्मासरीरकायप्पक्षोगी य ५, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीर-काय प्रजोगिणो य ६, अह्वेगे य आहारगसरीरकाय प्रजोगिणो य आहारगमीसा-सरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ७, अह्वेगे य आहारगसरीर-कायप्योगिणो य आहारगमीसामरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ८। एव एए तियसजोएण चतारि अद्व भगा, सन्वे वि सिल्या वत्तीस भगा जाणियन्वा ३२। अहवेगे य ओरालियमिस्सासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीर-कायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य वस्मासरीरकायप्पओगी य १, अह्वेगे य क्षोराळियमीसासरीरकायप्पक्षोगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य \*1

भाइएरामीसासरीरकायप्पञ्चेगी य कम्मासरीरकायप्पन्नोयिनो य १ क्षद्रशे र भोरास्मिमीसासरीरकावपद्योगी व बाहारगसरीरकावपद्योगी व बाहारवर्मामाः सरीरकायप्पमोनियो य कम्मासरीरकायपाओगी व १, अहवेगे व स्रोतिन मीसासरीरशायपानोगी व आहारगसरीरश्चायपानोगी य आहारगंगीसामरीरशाय प्पञ्जीयेको य कम्मासरीरकायप्पञ्जोगिणो य ४ शहकेने व ब्रोराक्रिजनीमार्न-रीरकायप्रकोगी य भाद्वारणसरीरकायप्रजोगियो य आहार्यमीमासरीरकायप्र भोगी य फन्मासरीर्रायपाओगी व ५ अड्बेगे व भोराक्रियमीसासर्गर<sup>्त</sup> प्पभोगी म माद्दारगसपीरश्चायपमोगियो य आहारगमीसासरीरकायपानीमी न कम्मानरीरकायप्यजीतिको य ६ अहबेने य खोराक्रिक्मीसासरीरकायप्यजीमी ह आहारगक्षरीरकावप्रक्रोगियो व आहारगमीसामरीरकावप्यक्रोगियो य कम्मान-रीरकायप्रकोगी य ७ कहरेगे व कोराक्षियभीमास्रीग्वायप्रकोगी व आहार<sup>क</sup> स्पिरनाबन्धभोतिको व आहारगरीमानग्रेरकायप्यभोतिको व कम्मासरीरनाबण भोमिनो स ८ अहबेगे स ओराविसमीनासरीरराज्यस्थीयेजो व आहारगर्नार कामप्यओगी व आहारगमीसाससीरकायप्यकोगी च कम्मासरीरकायप्रफोगी म ६ अहतेगे व ओराष्ट्रियमीमाचरिरशायपकोषिको व आहारगसरीरशाक्ष्पश्रीमी व भाहारपमीमामरीररावप्यक्रोगी व रम्मासरीररायप्यक्रोधिनो व १ अट्रवर्गे व भोरावियमीसासरीरराजपञ्जीनियो व आहारगसरीरकावपञ्जेती व आहारमनी सामरीरकायप्पञ्जोतिको य कम्मासरीरराज्यञ्जोती य ११ अहवेरे व भारातिक मीसामग्रीरकाक्पभोतिको व आहारयमग्रीरकाक्पभोगी व आहारगमीसामग्रिका बप्पञ्जोगिको व बस्सासरीरकायप्यक्षेत्रिको व १२ भइकेने य ओरास्त्रिवसीमार्गः रीरकामप्पत्रोगियो व आहारगसरीरकामप्पन्नोतियो म आहारगर्मामासरीरकप्प भीगी न कम्मानरीरकामप्पञ्जोगी न ११ अहबंगे व खेरासियमीतासरीरकामप्र ओगिना य आहारयमरीरतायपश्चायिको य आहारवर्गामानरीरकायपञ्चीर्गा म कमामरीर्वायप्यक्रियो व १४ अह्बेगे य आराष्ट्रियर्थामासरिर्वायप्रशासिकी य आहार्मसरीर्शयप्रभागियो य आहार्यर्मागागरीर्ध्ययपश्चेरियो व क्रमागरी-(कायप्प्रोगी य १५ जहको य ओराध्यिमीमानरीरकायप्प्रभोगियो व आहारग श्रप्तरनायप्यश्रोयिको य श्राहारमर्गानागरीरुवायप्यश्रोगिको व क्रमानग्रीरकायप्र ओगिया व १६ एई एए अवस्थोएच भारत संगा सर्वति गस्पेद्रीर व में सेनि-हिया भतीर भंगा माहि । वायमैनरखंत्मवैसाधिवा अहा अनुरद्रमारा ॥ ४६४ ॥ क्र्रिट्स मंति ! सन्प्यकार् प्रमणे ! सोयमा ! चैवनिह सहत्वकार् क्वते । तंत्रहान

पओगगई १, ततगई २, वंधणछेयणगई ३, उनवायगई ४, विहायगई ५। से किं त पओगगई १ पओगगई पण्णरसिवहा पन्नता । तंजहा-सचमणप्पओगगई, एवं जहा पओगो भणिओ तहा एसा वि भाणियन्वा जाव कम्मगसरीरकायप्पओगगई । जीवाण भंते ! कड्विहा पओगगई पन्नता <sup>२</sup> गोयमा ! पण्णरसविहा पन्नता । तंजहा-सन्वम-णप्यओगगई जाव कम्मगसरीरकायप्यओगगई । नेरइयाणं भते ! कहविहा पओ-नगई पन्नता <sup>२</sup> गोयमा ! एक्कारसिवहा पन्नता । तजहा-सचमणप्यओगगई, एव उवउज्जिसण जस्स जइविहा तस्स तइविहा भाणियव्वा जाव वेमाणियाण । जीवा ण भते ! सचमणप्यओगगई जाव कम्मगसरीरकायप्यओगगई १ गोयमा ! जीवा सन्वे वि ताव होज सन्तमणप्पओगगई वि, एवत चेव पुन्ववण्णिय भाणियन्व, भगा तहेव जाव वेसाणियाणं, से त पओगगई १॥ ४६५॥ से किं तं ततगई १ ततगई जे ण ज गामं वा जाव सण्णिवेस वा सपिट्टिए असपते अतरापहे वर्ट्ड, चैत ततगई २॥ ४६६॥ से किं तं बधणछेयणगई १ वंधणछेयणगई जीवो वा सरीराओ सरीरं वा जीवाओ, सेत्त वधणछेयणगई ३॥ ४६७॥ से कि त उववा-यगई ? उनवायगई तिविहा पन्नता। तजहा-केत्तोववायगई, भवोववायगई, नोभवो-ववायगई। से किंत खेत्तोववायगई वित्तोववायगई पचिवहा पन्नता। तजहा-नेरइयखेत्तोववायगई १, तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगई २, मण्सखेत्तोववायगई ३, देवखेतीववायगई ४, सिद्धखेतीववायगई ५। से किं त नेरइयखेतीववायगई 2 नेरइयखेत्तोववायगई सत्तविहा पन्नता । तजहा-रयणप्पभापुढविनेरइयखेत्तोववायगई जाव अहेसत्तमापुढविनेरङ्यखेत्तोववायगई। सेत्तं नेरइयखेत्तोववायगई १। से किं त तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगई १ तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगई पचिवहा पन्नता। तंजहा-एगिंदियतिरिक्खजोणियखेसोववायगई जाव पर्निदियतिरिक्खजोणियखेसो-ववायगई। सेत्त तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगई २। से कि त मणूसखेत्तोववाय-गई र मणूसखेत्तोववायगई दुविहा पन्नता। तजहा-समुच्छिममणूसखेत्तोववायगई, गञ्भवक्षतियमणूमखेत्तोववायगई । सेत्त मणूसखेत्तोववायगई ३ । से किं त देवखेतो-ववायगई १ देवखेत्तोववायगई चडिवहा पन्नता । तजहा-भवणवई० जाव वेमाणिय-देवखेत्तोववायगई । सेत्त देवखेत्तोववायगई ४॥ ४६८॥ से किं त सिद्धखेत्तोव-षायगई १ सिद्धस्तेत्तोननायगई अणेगविहा पन्नता । तजहा-जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवय-नासे सपिक्त सपिडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगई, जबुद्दीवे दीवे चुछिहमवतसिद्दिरिवास-इरपव्नयसपिक्त सपिडिदिसिं सिद्धलेत्तीववायगई, जबुद्दीवे दीवे हेमवयहेरण्णवास-मपिक्ति सपिडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगई, जबुद्दीचे दीचे सद्दावइवियटावडवट्टवेयहु-

सपरित सपनिवित्ति सिद्धानेत्रोबनावपर्वे, जंबुरीय श्रीवे महाद्विमर्वतक्षणवासहर पम्बमसार्क्तिः सपिकविसि सिक्येशोवशसमई, बंबुरीवे धीवे इरिवामरम्ममवाप-सपन्ति सपिडिदिनि विक्रक्योत्तोववायर्थं, जेनुहीवे वीचे र्यभावाद्मासर्वतपन्तर-वहवेयहुसपर्टिय सपडिदिमि विद्ययेत्रोववासगढ्, जेनुहीवे शीवे विनाहणीसर्वतवास्त्र-रप प्रसारपर्निया सपबिदिशि छिवाग्रेशोववाकगई, जेनुहान बीचे प्रस्कविद्धापरविदेशन पर्किन सपिबिदिमि सिवारेत्तोत्रवायगङ्के, जेन्द्रीयं बीचे वैकास्त्रज्ञारकुरुगर्भेरा सपि विधि सिक्कोरोजवाययर्दे, जेजुरीये बीच अवस्पानयस्य सपर्तिय सपकिर्णि निक देनीयबायम्, सबणे समुहे सप्तिय सप्रक्रिति शिक्केतीक्वाम्पारं, बाक्सके धीने प्रसिमदाग्वरियमदार्गवरमञ्चयसपर्वितः रापविदिसि निद्यवेत्रोववादमई, कासी वनमुद्दसपर्विय शपविविधि विद्ययेत्तोववावगर्वः, प्रवयस्वरचेवद्वपुरविवदसर्वेर वयगामलपर्वितः सपविदिन्ति सिद्धकेत्रोववायगर्दे, एव जाव प्रकक्षारवरश्चेवद्वपन्तिमय मदरपञ्चयनपर्वित सपविविधि विद्ववेत्रीयरायगई, से तं शिदवेत्रीयवासगई ५ ॥ ४६९ ॥ से कि तं सबोजवायगढ १ अबोजबाबगढै चाउन्बिहा पसता । तंत्रहा-नेरहरू-मबोचवानगई जान वेक्सबोचवानगई। से कि र्ल वेरह्यमबोचवामगई है नेरहनस्तेत्रका मगइ सत्तिहा प्रवता । तंत्रहा-एवं सिद्धवनो मेदो माध्यवनो को श्वेद बेतीकामग्रेए सो भव से द बबसबोजवासगई। से दं सबोबवासगई॥ ४० ॥ से 🛍 दं नोसरोन बायगई है जोमनोबबायगई दुविहा पत्तता । र्यवहा-पोम्पसनोभवोक्कावगई, स्टिमी भवीतवासगई । से कि सं पोरगकमाधवीववासगई है पोरगकमोभवीववासगई कर्म परमाञ्चपोस्पके स्रोगरस प्ररम्बिमिकाओ वरमंताको प्रवस्थितक वरमंतं ध्यसमप्रव गण्डा, प्रवरिषमित्राओं का करमंताओं पुरस्थिमितं कर्मतं एतसमपूर्ण स्वर्क्ट दाहिनिश्रामो दा चरमंतामो उत्तरिश्रं चरमंतं एगसमएनं गच्चवः, एवं उत्तरिशामो दाहिन्दिकं उनरिकाओ हेट्टिकं विकिताओ उनरिकं से तं पोग्गकनोभवोत्रवासगरे ॥ ४७९ ॥ से कि है सिक्योमकोनवानगई ! सिक्योमकोमकानगई बुव्हा प्रवर्धी ! तंत्रहा-मार्जतरसिक्षणीमगोनगामगर्वे परंपरिक्षणीमगोनगामगर्वे व । से कि अच्छर्छिद्यचोभवोवनावयाः ३ १ पन्नर्सनिक्य पत्रता । तंत्रकाः तित्वछिद्यसन्तर सिक्योभवीववाजगई न जान क्रानेगसिक सोभवीववाजगई य । से 🎋 हं प्रेपर सिद्धणोमकोववादगाई <sup>३</sup> २ अजेगविद्या पक्ताः। एकद्या-अपन्यसम्बद्धकोमकोववान-गई, एवं बुससवरिक्णोमनोक्नावगई जान अर्गतसमयसिक्कोमनोक्नामगई, सेर्त शिक्षणोभगोषपात्रमाहै, सं ते गोअगोषपायमाहै, से तं सम्बादगाहै v ॥ ४७२ ॥ सं कि तं विकासमाहे विकासमाहे सत्तारसमिका यक्ता । र्यस्रहा-प्रसमानगरे १

अफुसमाणगई २, उवसपजमाणगई ३, अणुवसपजमाणगर्ट ४, पोग्गलगई ५, मंडयगर्ड ६, णावागर्इ ७, नयगर्इ ८, छायागर्ड ९, छायाणुवायगर्दे १०, लेमागई ११, लेमाणुवायगई १२, उद्दिरमपविभत्तगई १३, चउपुरिमपविभत्तगई १८, वक्रगई १५, पक्रगई १६, वधणविमोयणगई १७॥ ४७३॥ से कि त फुसमाणगई ? फुसमाणगई जण्णं परमाणुपोग्गले(छ)दुपएसिय जाव अणतपए-तियाण रांबाणं अण्णमण्णं फुतिता ण गर्ड पवत्तड, मेत्त फुसमाणगर्ड १ । से कि त अफुसमाणगड़े 2 अफुसमाणगई जण्ण एएसि चेव अफुसिता ण गई पवत्तइ, से त अफुसमाणगडे २ । से कि त उवसपज्जमाणगई १ २ जण्णं राय वा जुनराय वा ईमर वा तलवर वा माडियय वा बोईवियं वा इन्भ वा सेहिं वा सेणावट वा सत्यवाहं वा उवसपजिता ण गच्छड, से त उवसपजमाणगई ३। से कि त अणुवसपज्जमाणगई १ २ जण्ण एएसि चेव अण्णमण्णं अणुवसपज्जिना ण गन्छइ, से त अणुवसपज्जमाणगर्ड ४। से कि त पोग्गलगर्ड <sup>2</sup> २ ज ण परमाणु-पोग्गलाण जाव अणतपएसियाण राधाण गई पवत्तह, से त पोग्गलगई ५। से कि त मह्यगंडे १ २ जण्ण मंड्ओ फिडिता गच्छइ, से त महयगई ६। से कि त णावा-गईं<sup>१</sup> जण्ण णावा पुन्ववेयालीओ टाहिणवेयालिं जलपहेण गच्छइ, दाहिणवेयालीओ वा अवरवेयालिं जलपहेण गच्छइ, से त णावागई ७। से कि त णयगई १२ जण्ण णेगमसगहववहारउज्जुसुयसद्समभिरूढएवभूयाण नयाण जा गई, अहवा मन्वणया वि ज इच्छंति, से त नयगई ८। से किं त छायागई १ २ जं ण हयछाय वा गयछाय वा नरछाय वा किण्णरछाय वा महोरगच्छाय वा गथव्वच्छाय वा उसहछाय वा रहछाय वा छत्तछाय वा उवसपिजताण गच्छड, से त छायागई ९। से कि त छायाणुवायगई १ २ जेणं पुरिस छाया अणुगच्छड, नो पुरिसे छाय अणुगच्छड, से त छायाणुवायगई १०। से कि त लेस्सागई १२ जण्ण फिण्हलेसा नील्लेस पप्प तास्वताए तावण्णताए तागधताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ, एव नील्छेसा काउलेस पप्प तारूवताए जाव ताफासत्ताए परिणमइ, एव काउले-सा वि तेउलेस तेउलेसा वि पम्हलेस पम्हलेसा वि सुक्कलेस पप्प तारूवताए जाव परिणमइ, से त हेस्सागई ११। से कि त हेसाणुवायगई १ २ ज़हेसाइ दव्वाइ परियाइता काल करेइ तल्लेसेसु उववजाइ, तजहा-किण्हलेसेसु वा जाव सुक्कलेसेसु वा, से त छेसाणुवायगई १२। से किं त उद्दिस्सपविभक्तगई <sup>2</sup> २ जण्ण आयरिय वा उवज्हाय वा थेरं वा पवित्तं वा गणिं वा गणहरं वा गणावच्छेयं वा उद्दिसिय २ गच्छाइ, से त टिह्स्सियपविभत्तगई १३। से कि त चरुपुरिसपविभत्तगई? से २८ सत्ता०

भाहार समस्रीय उत्सासे कम्मनक्तेश्वाध । समनेत्र समक्रिया समावता चेन बोदान्या ।। १ ।। नेरहना नं संते । सुन्ने समाहारा सन्ने समस्रीय सन्ने समुस्यासनिस्सासा र गोगमा । जो वजडे समझे । से केनडेमें भंते ! एवं उच्य-नेरह्या जो सुन्ने समाहारा जाव जो सन्ने समुस्यारिनस्साधा' ! योकमा ! बेरह्ना हुमिहा पवता । लेक्का-महास्तरीरा य अप्यस्तीरा य । तस्य न वो दे सहास्तरीरा दे र्ष बहुतराय पोम्पक्षे माहारीति बहुतराय पोम्पके परिवासिति बहुतराय प्रेम्पके वस्त्रचारी बहुतराय पोग्यके जीवसंति अभिक्यू व आहारेति अभिक्य व परिवान मेदि अभिनक्षयं अन्यवेदि जमिनकान नीसवेदि । तस्य य के त अप्यवदीरा वे र्षं जन्मतराप् पोमाके माहारेति अपनतराप् पोम्पके परिणामेति अप्यतराप् नोमाके क्रसप्ति बप्पदराए पोमाके नीस्तंति आहम बाहारेति आहम प्रीपार्नेदि-बाह्य क्रस्पंति बाह्य मीशसति से एएणट्रेण गोवमा । एवं सुबार-'नेरहवा भी धन्त्रे समावारा थो सन्त्रे समस्तिरा को सन्त्रे समस्यासनिस्तासा ॥ ४०५ ॥ वेरहमा में मंते ! सम्बे समक्रमा है शीयमा ! जो इच्छे समहे ! से केन्द्रेयं मंते ! एवं बुचाइ-- नेरहमा भी सम्बे समरम्मा' ! योगमा ! मेरहमा बुनिशा पत्तता । संबदा--पुरुषोक्षकमा व प्रकारकक्षमा य । तत्व में वी तं पुरुषोक्षकमा स में अप्पारूपन-तरागा तत्व में के ते पच्छोक्तका। ते ने महाक्रमतरागा से तेनहेर्च वोसमा! एवं कुच्छ-'सेरह्मा नो सम्बे समक्रमा' ॥ ४०६ ॥ मेरहमा वं अंदे । सन्दे समबन्ता ! गोयमा ! नो इणद्वै समद्वे । से केणद्वेनं गेरो ! एवं बुबर-'नेस्इवा नो सम्बं समब्दा' है गोनमा ! मेरह्या दुविहा पत्तता । तंत्रहा-पुग्योक्यप्रया व पत्ती-

ववनगा य। तत्य ण जे ते पुन्वोववनगा ते ण विसुद्धवनतरागा, तत्थ ण जे ते पच्छोनवनगा ते णं अविसुद्धवन्नतरागा, से एएणद्वेण गोयमा ! एवं वुन्नइ-'नेरइया नो सन्वे समवन्ना'। एवं जहेव वन्नेण भणिया तहेव छेसास्र विसुद्धछेसतरागा अविद्यद्धलेसतरागा य भाणियव्वा ॥ ४७७ ॥ नेरइया णं भंते ! सव्वे समवेयणा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्च६-'नेरइया नो सब्वे सम-वेयणा' <sup>२</sup> गोयमा ! नेरइया दुविहा पन्नत्ता । तजहा-सिन्नभूया य असिनभूया य । तत्य ण जे ते सिन्नभूया ते ण महावेयणतरागा, तत्य ण जे ते असिन्नभूया ते ण अप्प-वेयणतरागा, से तेणहेण गोयमा ! एवं बुच्चइ-'नेरइया नो सब्वे समवेयणा' ॥ ४७८॥ नेरइया णं भते ! सब्वे समिकिरिया ? गोयमा ! नो इणहे समहे । से केणहेणं मते ! एव वुचइ-'नेरइया नो सब्वे समिकरिया' १ गोयमा ! नेरइया तिविहा पन्नता। तजहा-सम्मादिष्ठी, मिच्छिदिष्ठी, सम्मामिच्छिदिष्ठी। तत्थ ण जे ते सम्मादिष्ठी तेसि ण चत्तारि किरियाओ कजति, तजहा-आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपचक्खाणिकरिया । तत्थ णं जे ते मिच्छिद्दिडी जे सम्मामिच्छिद्दिडी तेसि णं निययाओ पञ्च किरियाओ कर्जंति, तजहा-आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपचक्खाणिकरिया, मिच्छादसणवित्तया, से तेणहेणं गोयमा! एव बुम्ब६-'नेरइया नो सन्वे समिकिरिया' ॥ ४७९ ॥ नेरइया णं भते ! सन्वे समाख्या, सन्वे समीव-वनगा 2 गोयमा ! नो इणहे समद्वे । से केणहेण मते ! एव वुन्दइ० 2 गोयमा ! नेरहया चडिव्वहा पन्नता । तंजहा-अत्येगइया समाउया समोववनगा, अत्येगइया समाउया विसमोवनन्तरा, अत्थेगइया विसमाउया समोवनन्तरा, अत्थेगइया विसमा-उया विसमोववन्नगा, से तेणहेण गोयमा ! एव वुचइ-'नेरइया नो सब्वे समाउया, नो सन्वे समोववन्नगा' ॥ ४८० ॥ असुरकुमारा ण भते । सन्वे समाहारा १ एव सन्वे वि पुच्छा। गोयमा ! नो इणद्वे समद्वे। से केणद्वेण भते ! एव वुचइ० १ जहा नैरङ्या । असुरकुमारा णं भते ! सन्वे समकम्मा <sup>१</sup> गोयमा ! णो इणहे समहे । से केण्हेण भते । एव वुच्चइ० १ गोयमा । असुरकुमारा दुविहा पन्नता । तजहा-पुन्वोव-वन्नगा य पच्छोववन्नगा य । तत्थ ण जे ते पुच्चोववन्नगा ते णं महाकम्मतरा, तत्य ण जे ते पच्छोनवन्नगा ते ण अप्पकम्मतरा, से तेणहेणं गोयमा! एवं वुचइ-'अमुरकुमारा णो सब्वे समकम्मा'। एवं वन्नलेस्माए पुच्छा। तत्य णं जे ते पुन्नोववन्नगा ते ण अविसुद्धवन्नतरागा, तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं विसुद्भवन्नतरागा, से तेणहुण गोयमा। एव वुचइ-'असुरकुमारा ण सन्वे णो समवन्ना'। एव टेस्साए वि, वेयणाए जहा नेरइया, अवसेस जहा नेरइयाण। एव केमद्रेण 🕴 गोजमा ! पश्रमिकात्रमा सम्बे कामधी अमधिकार्य अभिवर्य वेपणे बसन्ति से रांगद्वेर्ज गोयमा ! पुत्रविशाहमा सम्बे समवेगणा । पुत्रविशहमा सं भेरी ! सम्बे समति रिया र इंता गोनमा । पुटबिशाइमा सुब्धे समक्रिरिया । से केब्ब्रेयं 🚦 गोममा । पुड निकारमा सम्मे मार्गाखारीयही। सेसी निजरवाको वैच किरियाको कमन्ति सैन्हा-जारेमिया परिव्यक्तिया मातावरितया अध्ययकत्वाणिकरिया निच्छाव्यवित्या व से तेजदेश गोयमा ! । एवं कान कडरिविया । एवं विविधितिकदाबीलिया कहा नेर इवा नवरं किरेबाई सम्बद्धि संस्क्षित्री सम्मामिकाद्धि । तस्य न च व सम्म द्विति ते दुनिश्चा पत्तता। तनशा-असंबना व संबन्धसंबना य । तत्व सं जे ते र्धनगायन्या येथि में विकि किरियाओ कमन्ति र्यनहा-आरंगिमा परिग्यहिंग मामावर्षिमा । तस्य णे जे असेत्रमा तेन्द्रि ने बतादि किरियाको अवन्ति तम्हान जारमिया परिमाद्विया मामावतिया अपनवयानकरिया । तस्य यं से ते निस्छा-विद्वी जे व सम्मानिकादिही रोधि थं विवासाओं एंव किरिनाओं क्रमानि व स्वान भारंमिया परिव्यक्तिया माथावतिया अपवक्ताजकिरिया मिच्छादंशनवदिया सेस र्व चेन ॥ ४८९ ॥ मकुरसा में मंते ! सम्बे समाहारा ! गोयमा ! मो इनदे सन्दे । से केन्द्रियं है गोदमा । स्लुस्सा बुविहा पत्रसा । तंत्रहा-महासरीरा स अप्यानरीरा ब । उत्तव न के ते महासरीरा ते ने नहरातपुर पोमाने आहारेति बाद बहुदराए भोगत्ते नीसस्ति आहुन बाहारेति आहुन मीसस्ति। तस्य वं ने ते अध्यक्तिमा दे मं अप्यतराए पोमाके भाडारेंद्रि आन अप्यतराए पोमाके नीससंहि अमिन्सने माहारेदि जान अम्बन्धर्ण नीसर्चति से वेगद्वेषं योगमा ! एवं हुन्य-'महस्या सम्मे भी समाहारा'। सेसं बहा चेरह्नार्थं अवरं क्रिनिताहि मणुसा तिनिदा पक्ता । र्तबहा-सम्मादिकी मिन्स्रायिकी सम्मामिक्समिकी । तत्त्र मं ये ते सम्मादिकी वे दिविद्या पत्ता । तीवदा-र्यजना असंजना संवधारोक्या । तस्त्र में जे दे संजना ते दुनिश्च पनता । तेन्दा-सरागरीयना न बीवरागरीयमा स । तत्व से जे पे बीनरागर्धज्ञमा है जे अस्तिरिया हरून जे के हे सरामर्थकवा है हुनिहा पक्ता !

तंत्रहा-समाधेवना य काप्साधेवया व । एत्य ने के ते कामतप्तवया तेति एता सावादीया किरिया कम्बर । एत्व नं के ते धाराधेवया तेति वो किरिवार्धे कम्बर्ध-कापिना भागविधिया थ । तत्त्व नं ने ते धंवनाधेवया तेति शैकि किरियाची कम्बर्धि तंत्रहा-कारिका परिवाहिया मानवादिया। एत्व नं के ते असजया तेसिं चत्तारि किरियाओं कजाति, तजहा-आरिभया परिग्गहिया माया-वित्तया अपचक्खाणिकरिया । तत्य णं जे ते मिच्छादिद्वी जे सम्मामिच्छादिद्वी तेर्सि नियडयाओ पच किरियाओ कजति, तजहा-आरिभया परिग्गहिया मायावत्तिया अपचक्खाणकिरिया मिच्छादसणवित्तया, सेस जहा नेरडयाण ॥ ४८३ ॥ वाण-मतराण जहा असुरकुमाराणं । एव जोइसियवेमाणियाण वि, नवरं ते वेयणाए दुविहा पन्नत्ता । तजहा-माडमिन्छिरिद्वीउववन्नगा य अमाडसम्मदिद्वीउववन्नगा य । तत्य णं जे ते माइमिच्छदिद्वीउववज्ञगा ते ण अप्पवेयणतरागा, तत्थ ण जे ते अमाइसम्म-दिद्वीउववन्नग ते ण महावेयणतरागा, से तेणहेण गोयमा! एव वुचाइ०। सेस तहेव ॥ ४८४ ॥ सलेसा ण भते ! नेरडया मन्वे ममाहारा, समसरीरा, समुस्सा-सनिस्सासा-सन्दे वि पुच्छा । गोयमा । एव जहा ओहिओ गमओ तहा सलेसाग-मओ वि निर्वसेसो भाणियव्वी जाव वेमाणिया । कण्हलेसा ण मंते ! नेरइया सन्वे समाहारा-पुच्छा । गोयमा । जहा ओहिया, नवर नेरइया वेयणाए माइमिच्छिदिट्ठी-उववन्नना य अमाइसम्मदिष्टीउववन्नना य भाणियन्ना, सेस तहेव जहा ओहियाणं । असुरकुमारा जाव वाणमतरा एए जहा ओहिया, नवरं मणुस्साण किरियाहिं विसेसो-जाव तत्थ ण जे ते सम्मदिट्टी ते तिविद्या पन्नता । तजहा-सजया असजया सजयासजया य, जहा ओहियाण । जोइसियवेमाणिया आइल्लियास तिसु लेसासु ण पुच्छिजंति । एव जहा किण्हलेसा विचारिया तहा नीललेसा वि विचारेयन्वा । काउलेसा नेरइएहितो आरब्भ जाव वाणमतरा, नवरं काउलेसा नेरइया वेयणाए जहा ओहिया। तेउलेसाण भते ! असुरकुमाराणं ताओ चेव पुच्छाओ । गोयमा ! जहेव ओहिया तहेव, नवर वेयणाए जहा जोइसिया । पुढविआउवणस्सडपचेंदिय-तिरिक्खमणुस्मा जहा ओहिया तहेव भाणियव्वा, नवरं मणूसा किरियाहिं जे सजया ते पमता य अपमत्ता य भाणियन्वा, सरागा वीयरागा नित्य । वाणमंतरा तेउले-साए जहा अयुरकुमारा, एव जोइसियवेमाणिया वि, सेस तं चेव । एव पम्ह्लेसा वि माणियव्वा, नवरं जेसिं अस्यि । सुक्षलेस्सा वि तहेव जेसिं स्रित्य, सन्व तहेव जहा भोहियाण गमसो, नवरं पम्हलेस्पसुक्कलेस्साओ पर्चेदियतिरिक्खजोणियमण्सवेमा-णियाणं चेव, न सेसाण ति ॥ ४८५ ॥ पन्नवणापः भगवईपः सत्तरसमे लेस्सापए पढमो उद्देसको समत्तो॥

कइ ण भते । हेसाओं पन्नताओ १ गोयमा । छहेमाओ पन्नताओ । तजहा-कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा, सक्कलेसा ॥ ४८६ ॥ नेरङ्गाण भते ! कह हेसाओ पन्नताओ <sup>2</sup> गोयमा ! तिनि॰ तजहा-किण्ह्हेसा, नीसकेमा कारकेमा । तिरिक्ध ग्रोणियाचं श्रेते । का केस्साओ पकताओ ! योगमा ! क्लेस्सामो पत्ततामो । तंत्रहा-कल्हेस्सा जान सङ्केस्सा । एसिरियानं मेठे रे व्य छेसाओ पन्नताओ है गोयमा । चतारि कैसाओ पन्नताओ । तंत्रहा-कन्यरेसा वार वेउछेसा । पुडमिकाइबाजै अंति । कह केसाओ पत्तताओ है गोसमा । एवं भेष । भाउवणस्मद्दशह्माम मि एवं चेन । स्रतनातमेद्दीयमोद्दीरमकारिदिनामं वहा नेरहवार्च । पंचेदियतिरिक्शकोणिनार्च पुरस्ता । गोयमा ! सक्रेमा-कश्रकेसा वार्ष सुक्ष्मेसा । संगुष्किमपंचेदियगिरिक्साओणिवार्णं पुष्का । गीवमा ! जहा नेरह्यार्ण । गरमवर्षःतिवर्षेचेदिशतिरिक्याकोषियाचं पुष्यतः । गोयमा । क्रोसा-कन्द्रतेसा वाव श्रद्धसंसा । तिरिक्शकोविणीणं पुष्का । योक्सा । क्रोसा एकाओ येव । सदसार्ग पुरुष्टा । गोबमा ! ध्रमेगा एयाको चेव । ग्रेमरिक्समण्डमार्ज प्रदक्षा । माक्सा ! वहा नेरह्यार्थ । गरमक्कविकाकुरसार्थ पुक्का । गोवमा । स्त्रेसानी वेजहा-कन्नस्था बाव प्रबन्धिता । मजुरतीर्ण पुण्छा । योगमा ! एवं श्रेष । देवार्ण प्रब्हा । योगमा ! छ एजाओ चेत्र । देवीणं पुक्ता । गोयमा । चतारि-कन्द्रतेसा जात देवकेमा । भवनवासीचे मंते । बवार्य पुच्छा । खेयसा । एवं चेव एवं सवनवासिचीन में। बानमंतरस्वार्य पुष्का । धोयमा । एवं चेव एवं बाचमंतरीन वि । चोरसियार्व पुच्छा । गोनमा । एगा चेठलेसा एवं बोहसिबीय वि । बेमानियानं पुच्छा । गोयमा । तिथि । तनहा-तेउकेसा पन्तकेसा प्रश्नकेसा । वेमानिजीमं प्रश्ना मोससा ! एमा चेउकेसा ॥ ४८७ ॥ एएसि व्यं संते ! बीवार्ण सकेरसार्ण सन्द केरसार्य बाब सुक्रकेरसार्ण अकेरसाम व कवरे क्यरेहिंसो अप्या वा बहुवा वा द्वस वा विरोधादिया वा रे गोवमा । सन्वरचीवा जीवा इससेस्सा पम्हरेस्सा संकेत्रपुवा रोडकेस्या <del>राक्षेत्रम</del>ामा अकेस्या अर्थसम्बन्धा अर्थसम्बन्धा अर्थसम्बन्धा मिरोसादिना कम्बकेरसा निरोसादिना सकेरसा निरोसादिना ॥ ४८८ ॥ एएनि में मंते ! नेरहवार्थं कम्बुकेसार्वं जीवकेसार्थं कारकेसाय व कमरे क्यरेसिंही अध्य वा ४ र गोनमा । सम्बत्योगा नेरह्या समुकेसा अध्योगसा <del>वस्योजनुया</del> व्यवस्था अपंचेत्रमुण । एएसि में मेरी ! तिरिक्सकोणिशार्ण कल्क्सार्थ जान हक्कसाथ न कमरे वन्मरेबिटी कप्पा वा ४ र धोवमा । सक्तरबोदा दिरिक्ककोलिया प्रदक्ति एवं बहा बोदिना नवरं सकेरनजा। पूपसि मेरी ! पूर्णियानं क्रब्हेस्सारं मीक्क्सार्न कारकेरसानं रोजकेरसाण स कनरे कमरेहिंदो जन्मा वा ४३ पोयमा ! सन्यत्वोना एगिरिया रोउकेस्सा काउकेस्सा कर्णारहाया जीवकेस्सा विशेषादिवा कम्केस्सा विरोशादिया । एएशि व मेरी । पुत्रविकादवार्थ कुन्युकेरसार्थ बाव रोडकेरसाय म

ऋयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४<sup>2</sup> गोयमा ! जहा ओहिया एगिंदिया, नवर काउलेस्सा असखेज्राणा । एव आउकाइयाण वि । एएसि ण मंते । तेटकाइयाण कण्हलेस्साणं नील्लेस्साणं काउलेस्साण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४<sup>2</sup> गोयमा ! सव्वत्थोवा तेडकाइया काउलेस्सा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, एवं वाउकाइयाण वि । एएसि ण भते । वणस्सङ्काङयाण कण्हलेस्साण जाव तेउलेस्साण य जहा एगिंदियओहियाण । वेइदियाणं तेइदियाण चटरिंदियाणं जहा तेउकाइयाण ॥ ४८९ ॥ एएसि ण भते । पर्चिदियतिरिक्खजोणियाण कण्हलेसाण एवं जाव सुक्र-रुसाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४<sup>१</sup> गोयमा ! जहा ओहियाण तिरिक्खजोणि-याण, नवर काउलेसा असखेजगुणा। समुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं जहा तेजकाइयाण । गब्भवक्कतियपचिदियतिरिक्खजोणियाण जहा ओहियाण तिरिक्ख-जोणियाण, नवर काउँटेसा सखेजगुणा, एव तिरिक्खजोणिणीण वि । एएसि ण भते ! समुच्छिमपचँदियतिरिक्खजोणियाण गब्भवक्वतियपँचँदियतिरिक्खजोणियाण य क्षण्हलेस्साण जाव सुक्कलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४१ गोयमा ! सञ्वत्थोवा गञ्मवक्कतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया मुक्कलेरसा, पम्हलेरसा सखेजगुणा, तेउ-लेस्सा सखेजगुणा, काउलेस्सा सखेजगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्सा समुच्छिमपचेंदियतिरिक्खजोणिया असखेजगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया । एएसि ण भते ! समुच्छिमपंचदियतिरिक्ख-जोणियाण तिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेसाण जाव सुक्लेसाण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा । जहेव पचम तहा इम छट्ठ भाणियव्वं । एएसि णं भते । गब्भवक्कतियपचेंदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीण य कण्हळेसाणं जाव इक्ष्रेसाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा । सन्वत्थोवा गन्मवक्कतिय-पर्चेदियतिरिक्खजोणिया युक्केसा, युक्केसाओ तिरिक्खजोणिणीओ सखेळगुणाओ, पम्हलेसा गन्भवक्षतियपचेंदियतिरिक्खजोणिया सखेजगुणा, पम्हलेसाओ तिरिक्ख-जोणिणीओ संसेजगुणाओ, तेउलेसा तिरिक्खजोणिया संखेजगुणा, तेउलेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ सखेजगुणाओ, काउछेसा सखेजगुणा, नीलछेसा विसेसाहिया, <sup>कण्हले</sup>सा विसेसाहिया, काउलेसाओ सखेजगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हळेसाओ विसेसाहियाओ । एएसि ण भंते । समुच्छिमपचेंदियतिरिक्खजोणियाण गन्भवक्षतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा ! सन्वत्थोवा गन्भवक्षतिया तिरिक्खजोणिया सुक्षलेसा, सुक्षलेसाओ तिरि० सखेजगुणाओ, पम्हलेसा गञ्मवक्षतिया तिरिक्ख-

एव चेव । एएसि णं भंते ! भवणवासीण देवाण देवीण य कण्हलेसाण जाव तेउलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४<sup>१</sup> गोयमा ! सव्वत्थोवा भवण-वासी देवा तेउलेसा, भवणवासिणीओ॰ तेउलेसाओ सखेजगुणाओ, काउलेसा भवणवासी देवा असखेजन्गुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, कारलेसाओ भवणवासिणीओ देवीओ सखेजगुणाओ, नीठलेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, एव वाणमतराण, तिन्नेव अप्पावहुया जहेव भवण-वासीण तहेव भाणियव्वा ॥ ४९२ ॥ एएसि णं भते ! जोइसियाण देवाणं देवीण य तेउलेस्साण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा! सन्वत्थोवा जोइसिया देवा तेउळेस्सा, जोइसिणीओ देवीओ तेउळेस्साओ सखेजागुणाओ ॥ ४९३ ॥ एएसि ण भते ! वैमाणियाण देवाण तेउछेसाणं पम्हछेसाण सुक्कलेसाण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४१ गोयमा ! सव्वत्योवा वेमाणिया देवा सुक्कलेसा, पम्हलेसा असलेजगुणा, तेउलेसा असलेजगुणा। एएसि ण भंते! वेमाणियाण देवाण देवीण य तेजलेस्साण पम्हलेस्साण छुक्कलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा। सञ्वत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असखेजागुणा, तेउ-लेस्सा असखेजागुणा, तेउलेस्साओ वेमाणिणीओ देवीओ सखेजगुणाओ ॥ ४९४ ॥ एएसि ण मते ! भवणवासीदेवाण वाणमतराणं जोइसियाणं वेमाणियाण य देघाण य कण्हलेसाण जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४<sup>२</sup> गोयमा! सन्तरयोवा वेमाणिया देवा सुक्षलेसा, पम्हलेसा असखेजगुणा, तेउलेसा असखे-जगुणा, तेउलेसा भवणवासी देवा असखेजगुणा, काउलेसा असखेजगुणा, नील-लेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, तेउलेसा वाणमंतरा देवा असखेजागुणा, काउलेसा अससेजगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, तेउलेसा जोइसिया देवा सखेजागुणा। एएसि ण भते । भवणवासिणीण वाणमतरीण जोइ सिणीण वेमाणिणीण य कण्हलेसाण जाव तेउलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४१ गोयमा ! सन्वत्योवाओ देवीओ वेमाणिणीओ तेउलेसाओ, भवणवासिणीओ॰ तेउलेताओ असखेजगुणाओ, काउलेताओ असखेजगुणाओ, नीललेताओ विसेता-हियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, तेजलेसाओ वाणमतरीओ देवीओ असखेज-गुणाओ, काउलेसाओ असखेजगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेमाओ विसेमाहियाओ, तेउछेसाओ जोइसिणीओ देवीओ सखेजगुणाओ ॥ ४९५ ॥ एएसि ण भते ! भवणवासीण जाव वैसाणियाण देवाण य देवीण य कण्हलेसाण जाव खुक्टेमाण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ <sup>8</sup> गोयमा ! सन्वत्थोवा वेमाणिया देवा [ पञ्चरचपुर्व

द्वप्रकेशा प्रमृतिमा असंखेळगुणा होउसेमा असंखेळगुणा होउसेमाओ बेमानिय द्वीमे एरोजपुषामा वेउसेमा माजवासी देवा बसंसेजपुरा एउसमार्थ भरमगरिजीको वेद्यांको संयंक्ष्याचाको कारकेसा सवववादी असंयंक्ष्याच मीसन्देसा विशेषाहिया अञ्चल्लेमा विशेषाहिया काउसेसाओ मनपनासिनीओ संयानगुणाओ नीवलेसानो विसेसाहियाओ वश्वसेमाओ विसंगाहिताओ ठउतना वायमंतरा संयेजनुषा चेउडेगाओ नाजमत्तरीओ संयेजनुषाको शाउडेता वाप मेतरा वसंदेशवराचा जीवकेमा विसेमाहिया चण्डकेमा विसेमाहिया काउकेमाओ बाजर्मररीको चंचेजपुकाको भीकरूपाको विशेसाहिनाको कम्ब्रकेसाओ विशेपा-दियामी तेतलेखा जोद्धिया चंचेज्याचा तक्तेमाओ बोद्धिजीओ संबेत्र गुणान्यो ॥ ४९६ ॥ यसस्य मं शेरी । जीवाध कवाकेसानं वाच तप्रक्रेगानं व क्यरे करोहिती अप्पत्तिया वा अवविता वा । गोनमा । क्यानेसेहिता जीतलेता महद्विया मीनलेखेदियो काउलेखा महद्विया एवं काउक्सेद्वियो चेउकसा महद्विया रेडक्सेहितो पम्हकेसा महद्विता पम्हक्सेहितो मुहकेसा महद्विता सम्बप्पद्वित जीवा कन्दछेता 'छन्वसङ्खिता सुक्रकेसा ॥ ४९७ ॥ एएछि व भेते ! नेरहमार्च कम्बुडेनार्थ जोक्केमाण काउकेसाण व क्यरे क्यरेडिंठो अध्यक्ति वा महिंद्री था है गोसमा । कन्द्रकेसेहियो जीलकेसा महत्त्विया जीलकेसेहियो काउकेसा सहद्वि<sup>या</sup> सम्बद्धविना बेरहमा कन्द्रकेमा सम्बन्धविना नेरहना कान्नकेसा स ४९८ ॥ एएछि नं अंदे ! तिरिश्वजोषिकाणं चन्द्रतेसार्थं जाव सब्द्रेमाण व क्यरे क्यरेंब्रिये अप्यद्विता वा महद्विया वा ! गोयमा ! कहा जीवार्च । एएसि याँ मेर्ड ! एसिंदर-तिरिश्वकोलियानं कल्केषाणं जान तेत्रकेसाय य क्यरे क्यरेहितो लयहिना ध सक्षिया वा र पोसमा । कन्युक्तिविद्यो प्रिवियतिरिक्तावीकिप्रदेशे नीक्क्ना महिता नीमनेपेहियो विरिन्ताबोलिएहियो शाउलेसा महिता वाउडेसेहिये रोजनेसा सहित्रमा सम्बाणिका एगेविनविधिककामेथिया सन्तर्केशा सन्तरमहिता रीडक्या । एवं पुरुतिबाह्नाम वि । एवं एएवं अधिकारेचं बहेव केत्याओं असि माओ त्रहेव नेमण्यं जाव व्यतिविद्या । पेवेनिवातिविक्यायोजियानं विविध्यायोजि बीर्ण समुक्तिमार्ग यवमकोदिनाम य सम्मेखि मानियम्बं बाब मध्यद्विता हैमा-विया वेता रेडकेसा सम्बन्धतिया वेमाणिया सक्केसा । के मर्वाद-वडनीर्व वंडएन १५। मानियना ॥ ४९९॥ पश्चवणाय मगबर्डेप सत्तरसमे छेरसा क्य बीबो बहेसओ समचो ॥

देखए में भरें । वेरहपुत जनवन्त्र, अनेखए नेरहपुत उपवन्त्र ! धोनमा !

नेरइए नेरइएस उववज्जइ, नो अनेरइए नेरइएस उववज्जइ, एव जाव वेमाणियाण । नेरइए णं भंते । नेरइएहिंतो उवनदृह, अनेरइए नेरइएहिंतो उवनदृह 2 गोयमा । अनेरइए नेरइएहिंतो उववदृह, नो नेरइए नेरइएहिंतो उववदृह । एव जाव वेमाणिए, नवर जोइसियवेमाणिएस 'चयण'ति अभिलावो कायव्वो ॥ ५०० ॥ से नूण भते ! कण्हलेसे नेरइए कण्हलेसेस नेरइएस उववजाइ, कण्हलेसे उववहरू, जहेसे उववजाइ तहेंसे उववट्ट १ हता गोयमा! कण्हलेंसे नेरइए कण्हलेंसेसु नेरइएस उववजाइ, कण्हलेसे उववरह, जहेसे उववजाइ ताँग्से उववरह, एवं नीललेसे वि, एवं काउले-से वि। एव अद्युरकुमाराण वि जाव थणियकुमारा, नवर लेसा अन्भहिया। से नूण भते ! कण्हलेसे पुढविकाइए कण्हलेसेसु पुढविकाइएस उववजाइ, कण्हलेसे वन्बद्ध, जहेंसे उववजाइ तहेंसे उववट्ड 2 हंता गोयमा! कण्हलेंसे पुढविकाइए कण्हलेसेसु पुढविकाइएस उववजाइ, सिय कण्हलेसे उववदृह, सिय नीललेसे उववदृह, सिय काउलेसे उनवदृह, सिय जल्लेसे उनवजाइ तल्लेसे उनवदृह । एव नीलकाउ-लेसासु वि। से नूणं भंते । तेउलेसेसु पुढिवकाइएस उववजाइ पुच्छा। हंता गोयमा। तेंउछेसे पुढिनिकाइए तेंउछेसेस पुढिनिकाइएस उनवजाइ, सिय कण्हलेसे उनवट्टइ, सिय नीललेसे उवबद्द, सिय काउलेसे उवबद्द, तेउलेसे उवबजाइ, नो चेव ण तेउलेसे उनवदृह । एव आउकाइया वणस्सङ्काइया वि । तेउनाक एवं चेव, नवरं प्एसिं तेउलेसा नित्य । वितियचउरिंदिया एव चेव तिम्र लेसामु । पर्चेदियतिरि-क्खजोणिया मणुस्सा य जहा पुढिनिकाइया आइह्रिया तिस्र छेसास्र भणिया तहा छम्र वि छेसासु माणियन्वा, नवर छिप्प छेसाओ चारेयन्वाओ। वाणमंतरा जहा अद्धरकुमारा । से नूणं भते ! तेजलेस्से जोइसिए तेजलेस्सेस जोइसिएस जननजाइ ? जहेव अद्धरकुमारा। एव वेमाणिया वि, नवर दोण्हं पि चयंतीति अभिलावो॥५०९॥ में नूण भते ! कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे नेरइए कण्हलेसेस नीललेसेस काउलेसेस नेरइएस उववजाइ, कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे उववष्टइ, जालेसे उववजाइ तालेसे जनबहुइ ? हता गोयमा ! कण्हनीलकाउलेसे उवनजाइ, जाहेसे उवनजाइ तहेसे उव-वद्ध । से नूण भते । कष्ह्छेसे जाव तेउछेसे असुरकुमारे कण्हलेसेसु जाव तेउछेसेसु अधुरकुमारेस उनवजाइ <sup>२</sup> एवं जहेन नेरइए तहा असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा वि। से न्ण भते। कण्हलेसे जाव तेजलेसे पुढविकाइए कण्हलेसेस जाव तेजलेसेस पुढिविकाइएसु उववजाइ १ एव पुच्छा जहा असुरकुमाराण । हता गोयमा ! कण्हलेसे जाव तेउलेसे पुढिनिक्काइए कण्हलेसेस जाव तेउलेसेस पुढिनिक्काइएस उववज्जह, सिय कम्हलेसे उववदृह, सिय नीललेसे॰, सिय काउलेसे उववदृह, सिय जल्लेसे उववजाह

बनाराम्बारमार मा मि भावित्रका। हे गूर्व संवि । बन्धदेश मीपानेरे बाउनेसे वेडनार्य बन्दरिया भीव्यनेसीय बाउनेरीय वादमार्थ्य, उवस्वत्य, कन्द्रकीय मीक्सेरी वारकेरे वर्षस्य, बन्दिर वास्त्रकार रासेरे वर्षस्य, वर्षस्य वास्त्रकीय मान्नेसीय मान्नेसीय मान्नेसीय मान्नेसीय मान्नेसीय कार्यक्रिया वास्त्रकार, वित्र वर्ष्य हेरी वर्ष्यार, वर्ष्यकेरीय भावक्रिया बाउनेसीय विकासपुर वर्षस्यम्, वित्र वर्ष्य-हेरी वर्ष्यार, वित्र नीक्सेरीय बनाया, वित्र बाउनेसी उन्हर्ष्य दिव मीक्सेर वर्ष्यक्रिय मान्निस्यक्ष्य । व दर्षे कीच वर्ष्यक्ष वर्ष्यक्ष वास्त्रकारमेर्य विव्यवस्थित कार्यक्षिय कन्द्रकीय वास्त्रकार । व दर्षे भीव । बन्द्रकेरी बाल वास्त्रकीय विविद्यक्षित कार्यक्षिय वन्द्रकीय वास्त्रकार वास्त्रकार वास्त्रकार ।

पंचित्यतिरिस्त्याचीरिए चन्नुक्येतु जाव तुरुक्येतु पर्चित्यतिरिस्ताजीनियद्य उन-कन्नाः, यिय क्वांकेते उन्वरंष्ट्र वान शिव पुरुक्येतु उच्चार्यः, तीव क्रमेतु उच्चार्याः येथे उच्चार्यः । एवं मन्तुके नि । वाच्यांतरां नहा स्वतुष्ट्रनाराः। व्याद्यियमानियां नि पूर्व चेव नहर क्वांक्ष्यः। शोष्यः नि क्वांपितः। व्याद्येत्वार्याः वा ५ १ ॥ क्वांक्ष्येते ने नि । नेरद्ध्य क्वांक्ष्यं निर्द्धं पणिहाए बोहिया उन्वक्षां सर्गता समस्मियस्माने २ केव्यंक्षं ने बात्यः केव्यंक्षः कीर्तं परिवारः बोहिया उन्वक्षां सर्गता समस्मियस्माने वे केवां व्याद्यः । बात्यः केव्यंक्षः भी पर्वः वोत्येत्वाः । अत्रिवः वृत्यं विष्यः विषयः । पर्वः । स्व क्वांक्षः भीतः । एवं वृत्यः - व्यादेशे ले निरुद्धः वे वेष वान्यः वृत्यस्त्रापः वेश्यः पर्वः । स्व क्वांक्षः भीतः । एवं वृत्यः । युर्वः वृत्यस्त्रापः विषयः स्वित्यस्य प्रतिस्थारः स्वयः । स्वस्याः स्वतिक्ष्याः विषयः विषयः विषयः विषयः । विषयः विषयः विषयः स्वयः विषयः । स्वत्याः स्वतिक्षयः । युर्वः वृत्यसः क्वांक्षः विषयः विषयः विषयः विषयः । विषयः । स्वस्यतः स्वतिक्षाः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः । विषयः विषयः । स्वत्यः स्वतिक्षः विषयः । विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः ।

हारात उस्तरकारियां ने भी बहुन का वादि गांव बात है स्तरियं के हार्रास्तर के स्वार्थ है जिन्होंने मोताना । एवं बुक्त-क्वाहिश्त में देवर का बहारियंने के से स्वर्ध में इंग्लिक के में है ने स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्ध के स्वर्ध के स्वर्ध के स्वर्ध के

खेत पासइ, से तेणहेण गोयमा । एवं बुचइ---'नीललेसे नेरडए कण्हलेस जाव विसुद्धतरागं खेत पासइ'। काउठेरसे ण भते ! नेरइए नील्ठेस्स नेरइय पणिहाय ओहिणा सन्वओ समता समभिलोएमाणे २ केवइय खेतं जाणइ० पासइ १ गोयमा ! वहुतरागं खेत्त जाणइ० पासइ जाव विसुद्धतराग खेत्त पासइ । से केणहेण भते ! एव वुचइ-- 'काउलेस्से ण नेरइए जाव विसुद्धतराग खेत पासइ' १ गोयमा! से जहानामए केइ पुरिसे वहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ पन्वयं दुरूहइ दुरूहित्ता दो वि पाए उचाविया (वहत्ता) सन्वओ समता समिमलोएजा, तए ण से पुरिसे पव्ययगय घरणितलगय च पुरिस पणिहाय सव्यओ समता समभिलोएमाणे २ वहुतराग खेर्त जाणइ, वहुतराग खेत्त पासइ जाव वितिमिरतरागं खेत पासइ, से तेणहेण गोयमा ! एव वुच्चइ--- 'काउलेस्से ण नेरइए नीललेस्स नेरइय पणिहाय त चेव जाव वितिमिरतराग खेत्त पासइ'॥ ५०३॥ कण्हलेसे ण भते। जीवे कडस नाणेस होजा <sup>2</sup> गोयमा ! दोस्र वा तिस्र वा चउस वा नाणेसु होजा, दोस्र होमाणे आभिणिबोहियस्यनाणे होजा, तिस्र होमाणे आभिणिबोहियस्यनाणओहि-नाणेसु होजा, अहवा तिसु होमाणे आभिणिबोहियसुयनाणमणपज्जवनाणेसु होजा, चउछ होमाणे आभिणिवोहियस्यओहिमणपज्जवनाणेस होजा, एव जाव पम्हलेसे । सुक्लेसे ण भते! जीवे कह्सु नाणेसु होजा 2 गोयमा! एगंसि वा दोसु वा तिसु वा चउछ वा होजा, दोछ होमाणे आभिणिवोहियनाण एव जहेव कण्हलेसाण तहेव भाणि-यव्य जाव चलहिं। एगिम नाणे होमाणे एगिस केवलनाणे होजा॥ ५०४॥ पन्नवणाप भगवईए सत्तरसमे लेस्सापए तइओ उद्देसओ समतो॥

परिणामवन्नरसगधसुद्धअपसत्थसिकिल्डुण्हा । गइपरिणामपएसोगाढवरगणठाणाणमप्पवहु ॥ १ ॥ कइ ण भंते ! लेसाओ पन्नत्ताओ १ गोयमा ! छह्नेसाओ पन्नताओ ।
तजहा—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा । से नूण भते ! कण्हलेस्सा नीललेस्स पप्प तारूवत्ताए तावण्णताए तागधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए मुजो २ परिणमइ १ हता
गोयमा ! कण्हलेस्सा नीललेस्स पप्प ताह्वत्ताए जाव मुजो २ परिणमइ । से केणहेण
भते ! एव वुचइ—'कण्हलेस्सा नीललेस्स पप्प ताह्वत्ताए जाव मुजो २ परिणमइ' १
गोयमा ! से जहा नामए खीरे दूसिं पप्प सुद्धे वा वत्थे राग पप्प ताह्वत्ताए जाव
ताफासत्ताए मुजो २ परिणमइ, से तेणहेण गोयमा ! एव वुचइ—'कण्हलेस्सा
नीललेस्स पप्प ताह्वत्ताए जाव मुजो २ परिणमइ' । एव एएण अभिलावेण नीलरेमा काटलेस पप्प, काडलेसा तेललेस पप्प, तेललेसा पम्हलेस पप्प, पम्हलेसा
नीललेस पप्प जाव भुजो २ परिणमइ ॥ ५०५॥ से नृणं भने ! वण्हलेसा नीललेस

जान सक्केर्स पण ताक्नताए सार्गपताए साध्यसताए <u>स</u>ज्जो १ परिवसह । से केपट्टेर्न मेरी ! एवं तुषाह-कम्बुकेमा नीककेरी जान सक्केरी पत्य शास्त्रवाए जार भुज्ये २ परिणमक् । योगमा । से जहानामप् नेदरिज्ञमणी सिना कन्नसाप् न नीकतत्तप् वा कोश्वियतत्तप् वा वास्मितततप् वा श्रक्तितत्तत् वा भाइए समाचे वास्त्रताए जान मुख्ये २ परिणयद, से चचडून गो ी एवं नुबद्- कन्द्रवेसा तीक्ष्मेर्छ आब सुक्रकेर्स पत्प वास्त्रताए जान भुजो २ परित्रसह ॥ ५ ६ ॥ से शूर्व मेरी। गीरुकेसा किन्युकेसे जाब सम्बन्धे पप्प तास्त्रताए जाव शुओ १ परिवाह हैता गोयमा । एवं चेव काउक्ता किन्दकेश जीवकेश केउकेश कहकेश सक्केश एवं रेउक्रेमा किन्द्रस्य मीक्क्रेयं काउक्रेयं प्रव्हेयं छहरूपं एवं प्रवहेसा किन्द कैसं शीकरेन्सं कारकेसं राजकेसं राजनेसं एवा जाव अजो १ परियमह । इन्स मोनमा । तं चन । से नूर्ण मेरि । प्रक्रकेशा किन्स्केश नीक्केश धानकेश रेडकेश पम्हलेसं प्रम जाव भुको २ परिचमह है होता सीयमा । ते चेद १ ५ ४ ह गण्डेस्सा नं मंदे ! क्वेनं केरिसिया पकता है गीयमा ! से बहानामए बीम्<u>ए</u> ह रा अन्तरी इ ना स्वामे इ ना कम्मले इ ना गयके इ ना गयकम्बर इ ना संबुक्त इ ना भग्नरिक्षपुष्के इ वा परपुद्धे इ वा अमरे इ वा अमरावको इ वा धवनकमे इ व किन्दुकेसरे इ वा आगासनिकासे इ वा किन्दुस्तिए इ वा कन्दुक्रमहीरए इ वा मण्यमंद्रजीवए इ.वा. मने एजास्ये ? योबमा ! जी इचड्डे समझे, क्ष्यक्रेस्सा वं इपे समिद्धारिया चेव अर्थततरिया चेव अध्यक्तरिया चेव सम्स्कृतरिया केव सम जामतरिया चेन क्लेक प्रकृषा ॥ ५ ४ ॥ जीक्केस्सा व मेरे । केरिसिया क्लेक पणता । गोसमा । से जहानामपु सिगपु इ वा सिगपते इ वा वासे इ वा वास पिष्कपृ इ वा ग्रए इ वा ग्रयपिष्के इ वा ग्रामा इ वा वकराई इ वा स्केतए इ वा पारेक्यगीना इ वा ओरपीना इ वा इक्क्ट्रवरूने इ वा अवस्थिता इ वा क्क्ट्यमें इ या अजनकेरिनाक्सभे इ या जीक्सपके इ या नीकासीए इ वा मीककन्तीरए इ वा नीकर्मपुत्रीये इ. वा. सर्वेशास्त्रे हैं गोनमा । यो इच्छे समक्के एसी बाव सम नास्यदिया भेन नमेन पनता ॥ ५ ९ ॥ काउन्देस्सा न संदे ! केदिसना नमेन पकता है योगमा । से ब्यह्मभामण् बहरसारण्ड् वा बद्धरसारण्ड् वा बमाससारे ह वा तीवे इ वा तंबकारों हे वा तंबिक्कावियाप इ वा वाईपन्तिस्ताने इ वा क्षेत्रक क्षरत्वस्ति इ वा क्षत्रासकुसने इ वा सवेत्रास्त्री । गोदमा । वो इनद्वे सन्दे ।

386

काउलेस्सा ण एत्तो अणिद्वयरिया जाव अमणामयरिया चेव वन्नेण पन्नता ॥५१०॥ तेउलेस्सा णं भंते ! केरिसिया वन्नेण पन्नता 2 गोयमा ! से जहानामए ससरुहिरे इ वा उरन्भरिहरे इ वा वराहरिहरे इ वा सवरिहरे इ वा मणुस्सरिहरे इ वा इदगोवे ड वा वालंदगोवे इ वा वालंदिवायरे इ वा सझारागे इ वा गुंजद्धरागे इ वा जाइहिंगुले इ वा पवालंकुरे इ वा लक्कारसे इ वा लोहियक्खमणी इ वा किमिरा-गकवले इ वा गयतालुए इ वा चीणपिट्टरासी इ वा पारिजायकुसुमे इ वा जासुमण-कुसुमे इ वा किंसुयपुष्फरासी इ वा रत्तुष्पले इ वा रत्तासोंगे इ वा रत्तकणवीरए इ वा रत्तवधुजीवए इ वा, भवेयारवा र गोयमा। णो इणहे समहे । तेउलेस्सा णं एत्तो इंद्रुतिरिया चेव जाव मणामतिरिया चेव वन्नेण पन्नत्ता ॥ ५११ ॥ पम्हलेस्सा णी भते ! केरिसिया वन्नेणं पन्नता 2 गोयमा ! से जहानामए चंपे इ वा चपयछा इ वा चपयमेए इ वा हालिद्दा इ वा हालिद्द्गुलिया इ वा हालिद्मेए इ वा हरियाले इ वा हरियालगुलिया इ वा हरियालमेए इ वा चिउरे इ वा चिउररागे इ वा धननितिप्पी इ वा वरकणगणिहसे इ वा वरपुरिसवसणे इ वा अलङ्कुसुमे इ वा चपयकुसुमे इ वा कण्णियारकुसुमे इ वा कुह्डयकुसुमे इ वा सुवण्णजूहिया इ वा इहिरिन्नयाकु समे इ वा कोरिंटमलदामे इ वा पीयासोगे इ वा पीयकणवीरे इ वा पीयवधुजीवए इ वा, भवेयारूवे व गोयमा । णो इणहे समहे । पम्हलेस्सा ण एतो इंडतरिया जाव मणामतरिया चेव वज्ञेण पनता ॥ ५१२ ॥ सुक्केस्सा ण भते ! केरिसिया वन्नेण पन्नता ? गोयमा ! से जहानामए अंके इ वा सखे इ वा चदे इ वा ऊदे इ वा दगे इ वा दगरए इ वा दही इ वा दिहघणे इ वा खीरे इ वा खीरपूरए इ वा मुक्कच्छिवाडिया इ वा पेहुणभिंजिया इ वा धतधोयरुपपट्टे इ वा सारयवलाहए इ वा कुमुयद्छे इ वा पोंडरीयद्छे इ वा सालिपिद्धरासी इ वा कुडगपुप्फरासी इ वा सिंदुवारमछ्नदामे इ वा सेयासीए इ वा सेयकणवीरे इ वा सेयवधुजीवए इ वा, भवेयारूवे १ गोयमा ! नो इणहे समहे । सुक्रलेस्सा णं एत्ती इंडतिरिया चेव जाव मणामतिरिया चेव विश्वेण पन्नता ॥ ५१३ ॥ एयाओ णं भते ! छ्हेस्साओ कइस वन्नेस साहिजाति १ गोयमा । पचस वन्नेस साहिजाति, तजहा-कण्हलेस्सा कालएण वन्नेण साहिजाइ, नीललेस्सा नीलवन्नेण साहिजाइ, काउलेस्सा काललोहिएणं विषेण साहिजाइ, तेउलेस्सा लोहिएण विषेण साहिजाइ, पम्हलेस्सा हालिद्द्रण विश्वण साहिज्जह, सुकलेस्सा सिक्कलएणं विश्वण साहिज्जह ॥ ५१४॥ कण्हलेस्मा ण भते ! केरिसिया आसाएण पन्नता १ गोयमा ! से जहानामए निंबे इ वा निवसारे इ वा निवछल्ली इ वा निबफाणिए इ वा कुडए इ वा कुडगफलए इ वा 286 भुचागमे [ पञ्चलम् सुर्य कुरगाम्नी द वा कुरगधानिए द वा बहुगतुंबीद वा बहुगतुनिफ्रके ह वा धारतउठी इ. वा धारतत्वीपके इ.वा वेशवासी इ.वा वेशवासीपुष्पे इ.वा मियवासंबो इ.वा सिमगर्द्धनीफके र था चोसावपु इ वा घोसावईफले इ वा कन्द्रकेवपु इ वा बजरदर्प इ.स. मनेयाक्त्रे हे गोयमा । जो इगद्वे समद्वे, कम्ब्रकेस्सा नं एक्तो आध्यप्रतरिना चेव काव समकामतरिया केव आसाएकं पक्षता ॥ ५१५ ॥ नीक्रडेस्याए पुरुष्ठ । गोयमा । से बहामानए संगी इ.वा संगीरए इ.वा पाना इ.वा बन्मा इ.वा बिला-सूमपृद्धापिप्यक्षी इ.चापिप्पकीसूम्बयु इ.चापिप्पकीसूक्की इ.चामिरिए इ.मा मिरियकुणाए इ.वा सिंगवेरे इ.वा सिंगवेरकुणो इ.वा भवेबावये हैं योगमा । मी १भद्वे समद्वे, नीमकेस्सा जं एत्तो जाव व्यवजानसरीया चेव आसार्ण पद्यता ॥५१६॥

करउरेस्साए पुरुष । गोजमा । से जहानामए अनाज वा अवाहगाय वा भाउर्सगण मा विश्वास मा कमिद्वाण वा समाज वा फगराज वा शाकिसाण वा अभवोधनान मा माराण वा बोरान वा तिंतुमाण वा अपकार्ज अपरिवासाणं विकेश अञ्जवदेशार्ज र्गभेगं अनुवस्थाणं कारीनं अनुवस्थाणं सम्बन्धकः गोयसा । यो इसद्वे सम्ब वान एती लगगामतिया चेव अस्ताएवं प्रवता ॥ ५१७ ॥ तेरकेस्सा र्ग मंते । पुरुत । गीयमा । से बहानामए अंबाण वा आव पदार्थ परिवासकार्य नवेर्य दबकेमार्ज पसत्येजं बाब प्राप्तेणं जाब एतो मजामयरिया चेत्र तटकेरना माना-पूर्व पक्रता ॥ ५९८ ॥ पम्बुकेस्साप् पुन्छम । गोक्मा । से बक्कामामप् विद्यमा इ. वा भवसिस्य इ. वा सीहू इ. वा बारणी इ. वा पक्तसवै इ. वा पुष्यानवे इ. वी पमासंबे इ ना नायानाये इ वा आमने इ ना महू इ वा गरए इ ना नामिमाना ह का राज्यसारए इ था मुदिनासारए इ था मुपहरतोयरसै इ का अञ्चलद्वित्रा इ वा र्वपुरस्कराकिया इ वा परका इ वा उन्नीसमयपता वनेर्व उन्नेया जाव पासेर्व वर्व-बैमा १९५७ का समित्रमा अनेवाहना र योगमा। को इन्छे सम्छे, पम्हलेग्या में एपी रञ्जनिरंबा भेष आप्र सणामतरिया भेव व्यामाएर्ग प्रतास ॥ ५१९ ॥ छक्सेस्मा <del>ग</del> मेरी | केरिसिया अस्पाएर्ण पश्चता है गोनमा | से बहानामए गुक्के इ वा घड़ि इ वा संप्रतः । बा सम्बन्धिया व बा पञ्चवसीयए व बा मिसर्वत्र व बा पुष्क्रणरा व बा पत मुत्तरा इ वा सादरिया इ वा रिक्षम्पिता इ वा सामासप्त्रक्रिओरमा इ वा उनमा ह का अयोक्सा इ.सा. सबैगारुवे र योक्सा (यो इयद्वे समद्वे पुत्र सेस्सा वो पूर्वा इट्ट<sup>न</sup>-रिया चेत्र पिनतरिया चेव सभासतरिया चेत्र आसापूर्ण पवता त' २ ॥ वर् व मेत ! हैरलाओं बुव्धिर्लपाओं पनताओं ह गोयमा ! तभो कैरलाओं बुध्धिर्णवाओं यक्तताओ । तंत्रहा-कव्हतेरसा भीसमेरमा वाडमेरमा । वर् व मंति । सेन्माओ

सुन्भिगधाओ पन्नताओ<sup>२</sup> गोयमा ! तओ लेस्साओ सुन्भिगधाओ पन्नताओ । तजहा----त्तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा, सुक्लेस्सा, एवं तओ अविसुद्धाओ, तओ विसुद्धाओ, तओ अप्पतत्थाओ, तओ पतत्थाओ, तओ सिकिलिद्वाओ, तओ असिकिलिद्वाओ, तओ सीयलुक्खाओ, तओ निद्भुण्हाओ, तओ दुग्गङ्गामियाओ, तओ सुगङगामियाओ ॥ ५२१ ॥ कण्हलेस्सा णं भंते ! कडविह परिणाम परिणमड ? गोयमा ! तिविह वा नविवह वा मत्तावीसविह वा एक्कासीइविह वा वेतेयालीसतिवह वा वहुय वा वहुविह वा परिणाम परिणमङ, एव जाव सुक्छेस्सा ॥ ५२२ ॥ कण्हछेस्सा णं भते ! कइ-पएसिया पन्नता २ गोयमा ! अणतपएसिया पन्नता, एव जाव सुक्कलेस्सा । कण्हलेस्सा ण भते ! कहपएसोगाढा पन्नता ? गोयमा ! असखेजपएसोगाढा पन्नता, एव जाव सक्टेस्सा । कष्हरुस्साए ण भते ! केवङ्याओ वग्गणाओ पन्नत्ताओ <sup>१</sup> गोयमा ! अण-न्ताओ वग्गणाओ॰, एव जाव सुक्कलेस्साए ॥ ५२३ ॥ केवइया ण भते ! कण्हलेस्साठाणा पन्नता <sup>२</sup> गोयमा ! असखेजा कण्हलेस्साठाणा पन्नता । एव जाव सुक्कलेस्सा ॥ ५२४ ॥ एएसि ण भते ! कण्हलेस्साठाणाण जाव सुकलेस्साठाणाण य जहन्नगाण दन्वट्टयाए पएसद्वयाए दव्बद्वपएसद्वयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४<sup>2</sup> गोयमा ! सव्बत्थोवा जहन्नगा काउलेस्साठाणा दब्बट्टयाए, जहन्नगा नीललेस्साठाणा दब्बट्टयाए असखेजा-चुणा, जहन्नगा कण्हलेस्साठाणा दव्वद्वयाए असखेजगुणा, जहन्नगा तेउलेस्साठाणा दन्वहुयाए असंखेजगुणा, जहन्नगा पम्हलेस्साठाणा दन्वहुयाए असखेजगुणा, जह-त्रगा सुक्रकेस्साठाणा दव्बद्वयाए असखेजगुणा, पएसद्वयाए-सव्बत्योवा जहन्नगा काउलेस्साठाणा पएसद्वयाए, जहन्नगा नीललेस्साठाणा पएसद्वयाए असखेजगुणा, जहन्नगा कण्हलेस्साठाणा पएसद्वयाए असखेजगुणा, जहन्नगा तेउलेस्साए ठाणा पएसद्वयाए असखेजगुणा, जहन्नगा पम्हलेस्साठाणा पएसद्वयाए असखेजगुणा, जह-न्नगा चुक्कलेरसाठाणा पएसद्वयाए असखेजगुणा, दव्बद्वपएसद्वयाए-सव्बत्थोवा जह-त्रगा काउलेस्साठाणा दव्बद्वयाए, जहन्नगा नीठलेस्साठाणा दव्बद्वयाए असखेजागुणा, एव कण्हलेस्सा, तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा, जहन्नगा सुक्लेस्साठाणा दव्बद्वयाए असखेज-गुणा, जहन्नएहिंतो सुक्कलेस्साठाणेहिंतो दन्बद्धयाए जहन्नकाउल्लेस्माठाणा पएसद्वयाए अससेजगुणा, जहन्नया नीललेस्साठाणा पएसद्वयाए अससेजगुणा, एव जाव सुक्कले-स्ताठाणा ॥ ५२५ ॥ एएसि ण भते ! कण्हलेस्साठाणाण जाव सुक्कलेस्साठाणाण य चकोसगाण दव्बद्वयाए पएसद्वयाए दव्बद्वपएसद्वयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ 2 गोयमा। सन्वत्योवा उक्कोसगा काउलेस्साठाणा दव्यद्वयाए, उक्कोसगा नीललेस्साठाणा दन्बद्वयाए असखेजगुणा, एव जहेव जहन्नगा तहेव उक्कोसगा वि, नवर उक्कोसत्ति २९ सुप्ता०

840

समितानो ह ५२६ ॥ एएमि वॉ सेत् ! कव्युध्मतावाणं जान शुक्रसेमतानान न वाइसटकोरामार्थं सम्बद्धसाए पर्यमञ्जयाए इस्वद्वपर्याद्धमार इस्वरे इसरेक्षितो अन्या वा ४ ! गोयमा ! सम्बरयोगा जहसगा काउछेमठाना वस्त्रद्ववाष्, जहबमा मीठ-छेगराचा व्यवहुमाए असेराजगुणा एवं क्यहराउपम्हरेमठाणा अहमता स्वर्तेन रामना प्रमद्वमाय् असंग्रजनुषाः वाहकपृष्टितो सङ्क्षेत्रमायस्ति सम्बद्धमाय् उद्योगाः काउसेमठाचा दथ्बद्वयाए असेन्द्रेज्युणा अप्रोसा मीतसेमठाचा दम्बद्वयाए असे-राज्ञगुणा एवं बज्दतंत्रपादशसङ्ख्या उद्दोगा सङ्ग्यमाणा व्यवद्वाए असेवेज शुना । पर्वगद्भवाय्-मध्यस्योजा बद्दशया कारुसेमठाना पर्वगद्धशाय, बद्दश्या नीतसंगठामा पर्माद्ववाय् असंध्येत्रायुगाः एवं जहेब बस्मद्ववार् तहेब पर्सद्ववार् में मानियम् नवरं पएमद्ववाएति अभिमानविसंगी । व्यवद्वपर्मद्ववाए-समानीय बहुत्तना कारकेमठाणा दश्वद्वयाण्, बहुत्तना वीककेमठाका दक्वद्वयाए सर्वकेत-गुजा एवं कन्द्रतेउपम्बुक्तिम्हाचा जहनया ग्रमस्थ्यकाचा वस्त्रद्वयाए सर्वकेन्द्राचा बहबएदितो पुरुक्षेसठाचहितो बम्बहुसाए उङ्गोसा काउन्तेमठामा हम्बहुबाए अस्वे असुमा उडोमा नीसकेसठाणा सम्बद्धकाए असंदोक्त्युचा एवं सम्बद्धकपम्हेत्यहुमा दक्षोममा सङ्केमठामा वश्यद्ववाए असंध्येत्रमुचा वहासपृष्ट्वितो सुवस्यक्रमेवियो वस्त्रद्वनाए अवस्था कारकेसञ्ज्ञा प्रवृत्तद्वनाए अर्थतगुला अवस्था मीसकेसञ्जा पर्महरार असंस्थाना एवं कन्यतं उपमहर्ममहाला अहलपा मुक्केराजाया पर्स्यहर्मार वसक्षेत्रगुका अङ्कएहिंतो द्वत्रवेसठावेहितो पर्यस्तुमार् वद्योचा कारवेसठामा १९४ चहुमाएं <del>अस्यो अनुचा उद्योसमा नीमसेनदा</del>णा पर्<del>यद्वनाएं मसंसे अनुचा</del> एवं स्व्वतेर पम्बुक्तेत्रुप्तमा उद्योखना सुरक्षेमठाचा पर्यमुद्रमार् **अर्थकं अ**र्थका प्रभाव **पर्यकार** मगर्याप असरममस्स लेक्नापयस्त चढरचो उद्देसको समचौ । कद् र्ग मंत्र । कसाओं प्रवशाओं ? गोनमा । ध्रेन्सको प्रवशाओं । वंबहा---

कुलक्षमा नाम क्षत्रकेसा । से नूर्ण भेता । मण्डकेसा मीक्कोसं प्रप्य तास्त्रवार तामनताप् वार्गभवाय् वारसताप् वापासताप् मुख्ये मुख्ये परिजयः ह इत्तं सावर्षः बहा चउरवम्मे सहस्त्रमो तहा माजिनम्बं जान नेरुक्तिमसमितिहरोति ॥५१८॥ से नूबे मेरे ! कन्दकेसा नीककेस प्रत्य को ताहबताए बाब को ताप्रसाचाए भुजो भुजो परि काह र इता गोगमा ! कब्दुकेसा शीसकेस पप्प यो तास्वताए, यो ताककताए, यो तार्ग स्ताए, यो सारसचाए, जो सारासताए मुख्ये १ परिणमः । से केन्द्रेन सर्व ! एवं बुच्यः । गोसमा । भागारशावसावाय् वा सं सिना पश्चिमायसवसावाय् वा से रिना। कन्द्रकेसार्वसा जी सा जो सह मीस्रकेसा सरव गया ओरमक्ट उस्तवस्थ

वा, से तेणहुण गोयमा! एव वुच्चइ—'कण्हलेसा नीललेस पप्प णो तारूवताए जाव भुजो २ परिणमइ'। से नूण भंते! नीललेसा काउलेस पप्प णो तारूवताए जाव भुजो २ परिणमइ हता गोयमा! नीललेसा काउलेस पप्प णो तारूवताए जाव भुजो २ परिणमइ । से केणहुणं भते! एव वुच्चड—'नीललेसा काउलेस पप्प णो तारूवताए जाव भुजो २ परिणमइ' गोयमा! आगारभावमायाए वा सिया, पिलमागभावमायाए वा सिया। नीललेमा ण सा, णो खल्ल सा काउलेसा, तत्थगया ओसक्षइ उस्सक्षइ वा, से एएणहुण गोयमा! एव वुच्चइ—'नीललेसा काउलेस पप्प णो तारूवताए जाव भुजो २ परिणमइ'। एव काउलेसा तेउलेस पप्प, तेउलेसा पम्हलेस पप्प, पम्हलेसा सुक्कलेस पप्प। से नूण भते! सुक्कलेसा पम्हलेस पप्प णो तारूवताए जाव परिणमइ हिता गोयमा! सुक्कलेसा तं चेव। से केणहुण भते! एवं वुच्चड—'सुक्कलेसा जाव णो परिणमइ' गोयमा! आगारभावमायाए वा जाव सुक्कलेसा ण सा, णो खल्ल सा पम्हलेसा, तत्थ गया ओसक्षइ, से तेणहुणं गोयमा! एव वुच्चइ—'जाव णो परिणमइ'॥ ५२९॥ पन्नवणाप भगवईए सत्तर-समे लेस्सापए पंचमो उद्देसको समचो॥

कइ ण भते ! लेसा पन्नता <sup>२</sup> गोयमा ! छ लेसा पन्नता । तजहा---कम्हलेसा जाव चुक्रुंचेसा । मणुस्साण मते ! कड् लेसाओ पन्नताओ <sup>१</sup> गोयमा ! छ लेसाओ पन्न-त्ताओ । तजहा-कण्हलेसा जाव सुकलेसा । मणुस्सीण भते ! पुच्छा । गोयमा ! छ्हेरमाओ पन्नताओ । तजहा—कण्हा जाव सुक्का । कम्मभूमयमणुस्साणं भते ! कह ठेसाओ पन्नताओ १ गोयमा ! छ ठेसाओ पन्नताओ । तजहा-कण्हा जाव सुका । एव कम्मभूमयमणुस्सीण वि । भरहेरवयमणुस्साणं भते ! वह लेसाओ पन्नताओ ? गोयमा ! छहेसाओ पन्नताओ । तजहा-कण्हा जाव मुक्ता । एव मणुस्सीण वि । पुन्वविदेहे अवरविदेहे कम्मभूमयमणुस्साण कइ हेस्साओ० 2 गो० ! छ्छेस्साओ० । तजहा-कण्हा जाव सुका । एव मणुस्सीण वि । अकम्मभूमयमणुस्साण पुच्छा । गोयमा! चत्तारि लेसाओ पन्नताओ। तजहा-कण्ह॰ जाव तेउलेसा, एव अकम्म-भूमगमणुस्त्रीण वि, एव अतरदीवगमणुस्ताण, मणुस्त्रीण वि । एव हेमवयएरन्नवय-अकम्मभूमयमणुस्साण मणुस्सीण य कह छेसाओ पन्नताओ <sup>2</sup> गोयमा! चत्तारि, तजहा—कण्हलेसा जाव तेउलेसा । हरिवासरम्मयअकम्मभूमयमणुस्साण मणुस्सीण य पुच्छा । गोयमा ! चत्तारि, तजहा--कण्ह० जाव तेउलेसा । देवकुरुउत्तरकुरू-अकम्मभूमयमणुस्सा एव चेव, एएसिं चेव मणुस्सीण एव चेव, धायइसहपुरिमद्धे वि एव चेव, पच्छिमद्धे वि, एव पुक्खरदीवे वि भाणियव्व ॥ ५३० ॥

वा, से तेणहेण गोयमा! एव वुच्ड-'कण्हलेसा नीललेस पप्प णो ताह्वताए जाव भुजो २ परिणमड'। से नूण भंते! नीललेसा काउलेस पप्प णो ताह्वताए जाव भुजो २ परिणमड हता गोयमा! नीललेसा काउलेस पप्प णो ताह्वताए जाव भुजो २ परिणमड हता गोयमा! नीललेसा काउलेस पप्प णो ताह्वताए जाव भुजो २ परिणमड शे केणहेण भते! एव वुच्चड—'नीललेसा काउलेस पप्प णो ताह्वताए जाव भुजो २ परिणमड' गोयमा! आगारभावमायाए वा सिया, पिलभागभावमायाए वा सिया। नीललेसा ण सा, णो खलु सा काउलेसा, तत्थगया ओसक्षइ उस्सक्ष्ठ वा, से एएणहेण गोयमा! एव वुच्चड—'नीललेसा काउलेस पप्प णो ताह्वताए जाव भुजो २ परिणमड'। एव काउलेसा तेउलेसा पम्हलेस पप्प, तेउलेसा पम्हलेस पप्प, पम्हलेसा मुक्कलेस पप्प। से नूण भते! सुक्कलेसा पम्हलेस पप्प णो ताह्वताए जाव परिणमइ हता गोयमा! सुक्कलेसा तं चेव। से केणहेण भते! एव वुच्चइ—'सुक्कलेसा जाव णो परिणमइ' गोयमा! आगारभावमायाए वा जाव सुक्कलेसा ण सा, णो खलु सा पम्हलेसा, तत्थ गया ओमक्षइ, से तेणहेण गोयमा! एव वुच्चइ—'जाव णो परिणमइ'॥ ५२९॥ पच्चणाए भगवईए सच्चर-समे लेस्सापए पंचमो उद्देसओ समचो॥

कड ण भते ! लेसा पन्नता २ गोयमा ! छ लेसा पन्नता । तजहा--क्यहलेसा जाव छक्केसा। मणुस्साण भते ! कह ठेसाओ पन्नताओ <sup>२</sup> गोयमा ! छ ठेसाओ पन्न-त्ताओ । तजहा-कण्हलेसा जाव सुक्रलेसा । मणुस्सीण भते ! पुच्छा । गोयमा ! छ्हेस्साओ पन्नत्ताओ। तजहा-कृष्हा जाव सुक्का। कम्मभूमयमणुस्साण भते! क्ह लेसाओ पन्नताओ २ गोयमा ! छ लेसाओ पन्नताओ । तंजहा—कण्हा जाव सुका । एव कम्मभूमयमणुस्सीण वि । भरहेरवयमणुस्साण भते ! वह लेसाओ पन्नताओ ? गोयमा ! छ्ह्रेसाओ पन्नताओ । तजहा-कण्हा जाव सुका । एव मणुस्सीण वि । पुन्वविदेहे अवरविदेहे कम्मभूमयमणुस्साण कइ लेस्साओ० 2 गो० ! छ्लेस्साओ० । तजहा-कण्हा जाव सुका। एवं मणुस्सीण वि। अकम्मभूमयमणुस्साण पुच्छा। गोयमा! चत्तारि लेसाओ पन्नताओ । तजहा-कण्ह० जाव तेउलेसा, एव अकम्म-भूमगमणुस्तीण वि, एव अतरदीवगमणुस्साण, मणुस्सीण वि । एव हेमवयएरच्चय-अकम्मभूसयमणुस्साण मणुस्सीण य कड् छेसाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा! चत्तारि, तजहा—कण्हलेसा जाव तेउलेसा । हरिवासरम्मयअकम्मभूमयमणुस्साण मणुस्सीण य पुच्छा । गोयमा । चतारि, तजहा--कण्ह० जाव ते उलेसा । देवकुरुउत्तरकुर-अकम्मभूमयमणुस्सा एव चेव, एएसिं चेव मणुस्सीण एव चेव, धायइसङपुरिमद्धे वि एवं चेव, पच्छिमद्धे वि, एव पुक्खरदीवे वि भाणियन्व ॥ ५३० ॥

गाफो जरोजा। नीसकेंग्रे मणुस्ते कब्हेक्से यक्षे वरोजा। है होता गोयमा। वर्षेका एवं शाक्रिये ताइसे वाह हुइक्से गाम्ये वर्षेका एवं शाक्रिये हारि वाहाय मामियाया। रेतकेसाण कि परवृद्धेशाण कि प्रवृद्धेशाण कि परवृद्धेशाण कि प्रवृद्धे हारि क्षाप्तिका । एवं प्रवृद्धे हार्षे क्षाप्तिका ना मामियाया। रेतकेसाण कि एवं क्षाप्तिका वर्षे प्रवृद्धे क्षाप्तिका ना मामियाया। क्षाप्तिका कि एवं हित क्षाप्तिका । क्षाप्तिका कि एवं एवं क्षाप्तिका । क्षाप्तिका कि एवं एवं क्षाप्तिका वा। क्षाप्तिका कि एवं एवं क्षाप्तिका । क्षाप्तिका कि क्षाप्तिका । क्षाप्तिका कि क्षाप्तिका विकास कि वाहिक कि वाहिक क्षाप्तिका वाहिक कि वाहिक क्षाप्तिका । क्षाप्तिका कि क्षाप्तिका । क्षाप्तिका क्षाप्तिका कि वाहिक क्षाप्तिका कि वाहिक क्षाप्तिका । क्षाप्तिका क्षाप्तिका कि वाहिक क्षाप्तिका कि वाहिक क्षाप्तिका कि वाहिक क्षाप्तिका क्षाप्तिका क्षाप्तिका क्षाप्तिका क्षाप्तिका कि वाहिक क्षाप्तिका क्षाप्ति

होह <sup>इ</sup> गोनमा | सम्बद्धे n बारं १ ॥ ५३९ n नेरहए वं मंते | नेरहएति का<sup>कसी</sup> केवन्दरं होत् ? मोसमा ! बहुवेयं इस बाससहस्सातं, उद्गासेनं तेतीस सागरीर माई । विरिक्ताजीलिए जं श्री । विरिश्वाजीलिएति कस्वली केनलिए होत्र । वीसमा बहुषेयं शरोसुहतं उद्देशोणं बर्जरं कार्त अनंताओ उस्सप्पितिकोसप्पिणीको कासओं बेराओं अर्थता क्षेपा असंबोधा पोश्गसपरियहां से श्रं पुम्पक्षपरिवर्ध भावक्रियाएं शसक्रेज्यमाने । तिरिक्षाजीकियीं में संते ! तिरिक्षाजीकिविति कास्त्री केन किर होत् । गीनमा । जहबैर्ज अतोसुकृतं उद्योगेगं तिकि पश्चिमोनमार्वे पुम्पकी बिपुत्तरामम्मक्षियाई । एवं सपुरसे वि सपुरसी वि एवं चेव । देवे वं संते ! दवेति क्रमधी केमचिर होत् ! धोयमा । जहेव मेरहए । वेवी न मंत्र । देविति वासमी केनकिरं होत् । मोनमा । कहत्रेणं एस वाससहस्तार्थं, बद्दोर्सणं प्रमण्णं प्रक्रियी-बसर्छ । सिद्धे मं अंते ! सिद्धेति कारुओं केनचिरं होत्र ! गोवमा ! साहए अपनव रिए । नेरहसंसपज्ञतम् वं वर्ते ! नेरहशसप्ज्ञतम्ति कासमा केनविरं शेष्ट्र है मोसमा ! काक्रेय वि उद्दोरेण वि अतोसुक्षर्य एवं जान देवी अपजातिया । सेरहमपजातप् व

भंते! नेरइयपज्जत्तएति कालओ केविचर होड<sup>२</sup> गोयमा! जहन्नेण दस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाई, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ । तिरिक्खजोणियपजा-त्तए ण भते! तिरिक्खजोणियपज्जतएति कालओ केविचर होइ<sup>२</sup> गोयमा! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाईं अतोमुहुत्तूणाइ । एव तिरिक्खजोणिणिपज्ज-त्तिया वि, एव मणुस्से वि, मणुस्सी वि एवं चेव। देवपज्जत्तए जहा नेरडयपज्जत्तए। देवी-पजात्तिया ण भते! देवीपजात्तियत्ति कालओ केविचरं होइ 2 गोयमा! जहनेणं दस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ, उक्कोसेण पणपन पिठओवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ ॥ दार २॥५३३॥ सडदिए ण भते! सङ्दिएति कालओ केविचर होइ१ गोयमा! सईदिए दुविहे पन्नते । तजहा-अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए । एगिंदिए ण मंते! एगिंदिएत्ति कालओ केविचर होइ १ गोयमा। जहनेणं अतोमुहुत्त, उद्दोसेण अणंत कालं वणस्सइकालो । बेइदिए ण मंते ! वेइदिएति कालओ केविचर होइ <sup>2</sup> गोयमा ! जहनेण अतोमुहुत्त, उद्घोसेण सखेज कालं । एव तेइंदियचउरिंदिए वि । पर्विदिए ण भते ! पर्विदिएत्ति कालओ केविचर होइ <sup>2</sup> गोयमा ! जहन्नेण अतो~ मुहुत्त, उक्रोसेण सागरोवमसहस्स साइरेग । अणिदिए ण पुच्छा । गोयमा । साइए अपजनितए। यइदियअपजात्तए ण पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्तोसेण वि अतो-सुहुत । एव जाव पिचदियअपज्जताए । सईदियपज्जताए ण भते । सइदियपज्जताएति कालओ केविचर होइ १ गोयमा! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं सागरोवमसय-पुरुत माइरेग । एगिदियपज्जत्तए ण भेते ! पुच्छा । गोयमा ! जहनेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सखेजाइ वाससहस्साइ । बेइदियपजन्तए ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुहुत्त, रक्षोसेण सखेजवासाइ । तेइदियपजत्तए ण पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अतोमुहुत, उक्षोसेण सखेजाइ राइदियाइ। चउरिंदियपजत्तर ण भते ! पुच्छा। गोयमा । जहन्नेण अतोसुहुत्त, उक्कोसेण सखेजा मासा । पर्चिदियपज्जतए ण भते ! पचिंदियपज्ञत्तएत्ति कालओ केवचिर होइ <sup>2</sup> गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्त ॥ दार ३ ॥ ५३४ ॥ सकाइए ण भंते ! सकाइएत्ति कालओ केविचिर होड <sup>१</sup> गोयमा! सकाइए दुविहे पन्नते । तंजहा-अणाइए वा अपज्जव-सिए, अणाइए वा सपज्जवसिए, तत्य ण जे से अ॰ स॰ से जहन्नेण अतोमुहुत्त, च्होसेण दो सागरोवमसहस्साङ संखेजवानमञ्महियाङ । अकाइए ण मंते ! पुच्छा । गोयमा! अकाडए साइए अपज्जवसिए। सकाइयअपज्जत्तए ण पुच्छा। गोयमा! जह-नेण वि उद्दोसेण वि अतोमुहुत्त, एव जाव तसकाइयअपज्ञत्तए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्नोसेण सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेग । पुढिविकाडए ण पुच्छा । राइदियाहे । बारकाइनपज्यतप् ने पुष्का । गीयमा ! जहबेज जंतीसहर्तः उद्दोरेणे संकेळाई बास्पदस्साई । वयस्पदकादयपळारा प्रच्छा । गोसमा ! जहनेनं मंत्रेष्ठ हुएं चक्कोरोपं संकेशकां गाससहस्थातः । तसकादकाव्यासम् पुच्छतः । गोनमा । व्यवस्था क्तोमुहुतं उद्दोरेणं सावरोक्मसम्बर्धातं साहरेगं ॥ ५१ ४ ॥ धुहमे वं मंते । धुहमेति कासभी केनविर होड़ ! गोयमा ! बहुकेचे मतामुहुचे उद्गोरीके असंबेज कार्य **गरंबे जाओ** उत्सप्तिकासिपयांको काक्को केलको वर्धकेला खेगा । ध्रुप पुरुषेकारण, सहसमानकारण, सहस्रवेशकारण, सहस्रवासकारण, सहस्रवणप्यकारण प्रहुमनिगोरे वि वहकेने अरोमहर्ण उद्योगेण शर्वकेन व्यक्त असकेनामी उस्त प्पित्रकोसप्पनीको बासको जेताको अस्बेका स्रोगा । सहने वं अंते ! अपनार पत्ति पुन्तमः । गोनमा । बहुबेर्ण श्रेतोमुद्दतं सहोसेज नि श्रेतामुद्दतं । पुरुषेक्दरं व्याउकाहमार्वेडकाह्यमारकाहम्बन्नाप्यकृत्वाह्यामार्थः य एवं चेन प्रजातमान नि एवं चेन। वाबरे वं संते ! वाबरेति व्यवको केवनिर होत ! गोयसा ! वहचेर्य शतेसहते रकोरेपं अस्केनं शक अस्वेत्राको उत्सप्तिकोसप्तिको शासको वेत्रके क्युक्तस्य क्युंकेकद्वार्थः । वागरपुरक्षिकाद्य् वं शेष्टे ! पुष्काः । शोपसाः ! व्यक्ति मेदोसुइच उन्नोरेणं राचरि सागरीयमधोजायोगीको । एवं वायरकारकारप मि कासरतेसकाइए वि भासरवातकाइए वि । भासरवजन्मकाइए वे बानर पुरस्क । गोममा । वहबेच करोसुहुएं उक्सेरेणं अर्थकेजं कार्यं जान केटनो अंगुक्स्स <del>वर्धके ज</del>हमार्गः । परोजसरीरनाजरनणप्पद्वनाष्ट्यः वं गेरो ! पुरुषः । गीनमा ! षह केनं अंदोस्कृतं जवासेनं सत्तरि सागरीनगनोवाकोबीको । निर्माए नं अंदि ! निर्माएति काकमी केनमिए होह ! धोनमा ! महनेच मंत्रीसहूर्त छक्तेसेन नर्मर्ट कार्य अगताओं उस्सिप्पिकोसिपाणीओं काल्को जेताओं स्थापना पोप्पर परिका। बादरभिनोवे में संते ! बादरनिनोवेशि पुष्का । नोबमा ! बहुवेर्ज अतिमङ्कतं चकारोणं सत्तरि सागरोजनकोगाकोशीको । वावरतसकारए व मेरी /

वायरतसकाइएति कालओ केविचरं होइ र गोयमा ! जहन्नेण सतोमुहुत्त, उक्कोसेण दो सागरोवमसहस्साइ सखेजवासमञ्महियाइ। एएसि चेव अपज्जनगा सब्वे वि जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । वायरपज्जत्तए ण भते ! वायरपज्जत्तएत्ति पुच्छा । गोयमा । जहन्नेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेग । चायरपुढविकाइयपज्जत्तए णं भते ! बायर॰ पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सखेजाई वाससहस्साइ। एव आउकाइए वि। तेउकाइयपज्जत्तए ण भते ! तेउकाइयपज्जत्तएत्ति पुच्छा । गोयमा ! जहनेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सखे-जाइ राइदियाइ। वाजकाइयवणस्सङ्काइयपत्तेयसरीरवायरवणप्पद्रकाइए पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहत्त, उक्कोसेण सखेजाइ वाससहस्साइ । निओयपजत्तए वायरनिओयपज्ञत्तए पुच्छा । गोयमा ! दोण्ह वि जहन्नेण अन्तोमुहुत्तं, उद्दोसेणं अतोमुहुत्त । बायरतसकाइयपज्जत्तए ण भते ! वायरतसकाइयपज्जतएति कालओ केविचर होइ <sup>२</sup> गोयमा । जहन्नेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण सागरोवमसयपुहुत्त माइ-रेगं ॥ दार ४ ॥ ५३६ ॥ सजोगी ण भते ! सजोगिति कालओ केविचर होइ 2 गोयमा ! सजोगी दुविहे पन्नते । तंजहा-अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवितए । मणजोगी ण भंते ! मणजोगित्ति कालओ केविचर होइ १ गोयमा ! जहनेणं एक समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्त । एव वहजोगी वि । कायजोगी ण मते ! कायजोगि॰ 2 गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वणप्फहकालो । अजोगी ण मते ! अजोगित्ति कालओ केविचर होइ <sup>१</sup> गोयमा ! साइए अपजवसिए ॥ दारं ५ ॥ ॥ ५३०॥ सवेदए ण भते। सवेदएति कालओ केविचर होइ 2 गोयमा! सवेदए तिविहे पन्नते । तजहा-अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए, साइए ना सपजनिसए। तत्थ ण जे से साइए सपजनिसए से जहनेण अतोसुहुत्त, उक्षोसेण अणत फाल, अणताओ उस्सिप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवस्रु पोग्गल-परियह देस्ण । इत्थिवेदए ण भते । इत्थिवेदएति कालओ केविचरं होइ <sup>2</sup> गोयमा ! एगेण आएसेण जहन्नेण एक समय, उक्कोसेण दस्तर पिल्ञोवसमयं पुन्वकोडिपुहु-त्तमन्मिहिय १, एगेण आएसेण जहन्नेण एग समय, उक्कोसेण अद्वारसपछिओवमाई पुन्वकोडिपुहुत्तमन्भिह्याः २, एगेण आएसेण जहन्नेण एग समयं, उद्दोसेण चउ-दस पल्ञिनेत्रमाड पुन्वकोडिपुहुत्तमन्माहियाड ३, एगेण आएसेणं जहन्नेण एग समय, उद्योसेण पलिओवमसय पुन्वकोडिपुहुत्तमन्महिय ४, एगेण आएसेण जहनेण एग ममय, उक्कोसेण पलिओवमपुद्वत्त पुव्यकोडिपुद्वत्तमञ्मद्दिय ५। पुरिसचेदए ण भते ! पुरिसवेदएति ॰ गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उद्दोसेण सागरोवमसयपुहुत्त साइ- दुनिद्दे पकते । तंजहा-साहप् वा अध्यवस्थिप्, साहप् वा सपजवस्थिप् । तत्व वं वं से

साहप् सम्बन्धिप् से जहणीर्व एवं समर्थ उद्योशेर्व संदास्त्रतं ॥ दारं ६ ॥ ५३८ ॥ सकराई ग मते ! सम्साहति भावको केन्निई होह ? गोयमा ! सक्साई तिनिहे पचते । तंजका-अधादप् वा अपज्ञविष्, अबादप् वा सपज्जविष्, सादप् वा सपजावतिए जान अन्तु पोमाक्कपरियक्ष बंसूनं । कोक्षकसाई नं मंते । प्रकार गोबमा ! जब्बेज वि उद्योगेण वि अतोमुहुत्तं पूर्व जाव माणमायाद्याई । स्रोमक साई नं सर्व ! क्षेत्रकसाइति प्रकार गोयमा ! जरूनेणं एवं समयं उद्गीरेणं अवीमुद्दत्तं। अञ्चाहे नं भवं ! सक्यतहति कासको केनलिएं होह ! यानमा ! अन्तराहे दुनिक्के पक्ते । तंत्रहा--साहए वा अध्यवनतिए सद्धए वा समजविए । तरन में के से सक्ष्य समजनसिए से काकोर्ण हुन समर्थ अक्टोसेर्प कांत्रीसुहुन । वारं ७ ॥ ५६५ ॥ छलेसे वं अंते । सकेसेलि प्रच्या । गावमा । सकेसे डिलिसे पक्तो । तंत्रहा-अनाइए वा अध्यजनसिए, अधाहए वा सपद्धवसिए । कन्द्रअसे व र्मतं । कन्द्रकेरोत्ति कामभो केमिक्द होह । योजमा । बहुबेज अंदोसहतं उद्गीरीर्व वर्तीर्थं सायरोक्साइ अंवोस्हत्तम्ब्महियाई । मील्लेसे वं मेव । मील्सेसेति पुच्छा । मोनमा । जहवेर्ण अंतोस्हर्ण एकासेर्ण वस सागरीवमाई पविव्यवसासिकाः मागमन्मवियाहं । कारकेसे में पुष्का । मोजसा । बहुबेमं अंदोसहर्त्तं उद्देशियं विकित सागरीनमाई पविकानमार्थिककारभागसम्मानियाई। तरकेस मं पुन्ता। गोयमा ! बहनेत्रं भंदोसहतं उक्कोरेनं को सागरोक्साई परिज्ञोक्सासंध्यज्ञहभीम-मञ्जाहियाई । पन्दकेशे व पुषक्षा । गीवमा ! अहबेर्च अंदो<u>सहत्तं</u> उहोसेर्च इस सागरीनमाई अंदोगुडुत्तमस्मदिगह । क्षटमेसे च पुच्छा । योदमा ! बहुबेर्च अंदो-सुन्तं उक्तेसेणं तेत्तीसं सागरोबमाहं अंदोसहत्तमक्महियातं । अमेरो ने पुच्या । गोयमा । साइए अध्यावसिए ॥ बारै ८ ॥ ५४ ॥ ध्यमहिद्वी में मेरा । सम्महि दिति काराओं केमिकर होद है गोयमा । सम्महिद्वी बुनिक्के पकते । तमहा--साइव ना भगजनिए, साइए वा शपजनिस्य । तत्व नं के से शहूप सपजनिए से अवीर्ण अतोमुकुतं उद्योक्षेणं छावद्वि सागरीयमाई साइरेगाई । मिन्छारिद्वी वं भेते । पुष्या । गोनमा । मिष्कारिद्वी तिनिहे पत्तो । र्तनहा-अगद्रए वा अपन्नविष् अमार्प वा रापमक्षिप, सार्प वा सपमवसिए । सत्य में में सं सार्प सपमक सिए से अहबेस संतीमुहुर्ग उहारील अर्चत वार्ध वर्षनाओ उत्साव्यविद्याति

णीओ कालओ, खेत्तओ अवङ्ग पोग्गलपरियह देस्ण । सम्मामिच्छादिष्टी ण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेणं अतोमुहुत्त ॥ दार ९ ॥ ५४१ ॥ णाणी ण भंते ! णाणित्ति कालओं केविचर होइ १ गोयमा ! णाणी दुविहे पन्नते । तजहा---साइए वा अपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए। तत्थ ण जे से साइए सपज्ज-वितए से जहण्णेण अतोसुहुत्त, उक्कोसेण छाविंद्ध सागरीवमाइ साइरेगाइ । आभिणि-वोहियणाणी ण पुच्छा । गोयमा । एव चेव, एव सुयणाणी वि, ओहिणाणी वि एव चेन, णवर जहण्णेण एग समय । मणपज्जवणाणी ण भते ! मणपज्जवणाणित्ति कालओ केविचर होइ? गोयमा। जहन्नेण एग समय, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोढी। केवलणाणी णं पुच्छा । गोयमा ! साइए अपज्जवसिए । अण्णाणी मइअण्णाणी स्र्यअण्णाणी पुच्छा । गोयमा ! अण्णाणी, मङ्अण्णाणी, स्रयअण्णाणी तिविहे पन्नते । तजहा-अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए। तत्थ ण जे से साइए सपज्जवसिए से जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणत काल, अणताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवष्टुपोग्गलपरियदृ देस्ण । विभंगणाणी णं भते ! पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइ देस्णाए पुन्वकोडीए अब्भहियाइ ॥ दारं १०॥ ५४२॥ चक्छदसणी ण भते! पुच्छा। गीयमा! जहनेण अतीसुहुत्त, उक्कोसेण सागरोवम-सहस्स साइरेग । अचक्खुदसणी ण भते ! अचक्खुदसणित्ति कालओ० 2 गोयमा ! अचक्ख़दसणी दुविहे पन्नते । तजहा-अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्ज-विसए । ओहिदसणी ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण एग समय, उक्नोसेण दो छाव-डीओ सागरोवमाण साइरेगाओ । केवलदसणी ण पुच्छा । गोयमा ! साइए अपज्ज-वसिए ॥ दार ११ ॥ ५४३ ॥ सजए ण भते ! सजएति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण एग ममय, उक्नोसेण देस्ण पुन्वकोडिं। असजए ण भंते ! असजएति पुच्छा। गोयमा ! असजए तिविद्दे पत्रते । तजहा-अणाडए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपजनसिए, साइए वा सपज्जवसिए। तत्थ ण जे से साइए सपज्जवसिए से जहन्नेण सतोमुहुत्त, उक्कोसेणं अणत काल, अणताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालओ, खेतओ अवस्रु पोग्गलपरियह देस्ण । सजयासजए ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण देस्ण पुञ्चकोर्डि । नोसजए-नोअसजए-नोसजयासजए ण पुन्छा । गोयमा ! साइए अपज्जविसए ॥ दार १२ ॥ ५४४ ॥ सागारीवओगोवउत्ते ण भते । पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोसुहुत्त । अणागारोवउत्ते वि एव चेव ॥ दार १३ ॥ ५४५ ॥ आहारए ण भते ! पुच्छा । गोयमा ! आहारए मंते ! स्टमत्वाहारपति कास्को केवविर होत ! गोयमा ! जहतेलं बहायमसम्पर्ध दुसमयकर्ण उद्योरेण ससंसंज कार्ड जर्सचेजाओ सस्सप्पिक्जोसप्पियोजो समझो चेताओं मंगुक्स्स असंखेजहमार्ग । केनक्षिआहारए वं अंते ! केनक्षिआहारएकि कासभी केनविरं हाइ १ गोयमा । करवेर्च अंतीमुद्धतं उक्कोरीयं देसूर्ण पुम्परोर्डि । अगाहारए र्ग मंदे ! अजाहारएति कासओ केनविर्द होत्र ! गोयमा ! अनाहारए दुर्भिद्दे पनते । तन्त्रः-उद्यारमञ्जादारएं व केनक्रिश्वणाहारए व । हदगरमञ्जा-हारए में मंते ! पुष्का । गोक्सा ! बहुके में एगं समय उड़ीसे में से समगा। केरिकनगहारए न मेरी । केरिक ! गीयमा ! केरिकलगहारए इतिहै पत्री ।

\*\*4

र्तजहा विद्ववेदविष्णणाद्वारए य मनस्यवेवक्रिश्रणाद्वारण य । विद्ववेतक्रिणणाद्वारए ण पुच्छा । गोयमा । सहर् अपञ्चनित् । अवस्वकेनविजनाहारए वं र्मते । पुण्या गोनमा । सदस्यकेनकिञनाहारप् तुनिहे प्रवर्षे । श्रंबहा-स्वोनिसदस्यकेनिजना हारए व अजोमिमवस्वकेनशिक्यशहारए व । सन्नोगिभक्त्यकेनकिमनाहारए <sup>स</sup> मेर्दे ! पुच्छा । योगमा ! अजहच्चमणुकोश्चनं दिन्य समग्र । अजीनगरत्वकेननि मजाहारए में पुच्छ । योगमा ! जहबंग वि उद्योरोण वि अठोशहर्त ॥ दार्र ९४ म u ५४६ व मासए में पुष्का । गोबमा ! अबहेपं एवं समयं उन्नोसेपं सतोसुहुर्ग । अमासए में पुन्छम । मोक्सा ! अमासए दिनिक्के पत्रदे । वंजका-अजाइए वा अस्म-वसिए, अगाइए वा सक्तव्यक्तिए, साइए वा सक्तव्यक्तिए । तत्व वं से से साइए वा सपज्यस्तिए से जङ्ग्लेबी अती<u>भार</u>ता उन्होसेज वजन्मक्काओ ॥ वारं १५ ॥ ५४७ ॥ परिते में पुच्चम । गोयमा । परिते दुनिहे पत्तरो । तंत्रहा—रावपरिते व संनार परिते स । कामपरितः र्ण पुच्छा । योगमा ! बहुबेज अहोसहत्तं । बहोसेजे पुरन्ति काळे असकेजाको उत्सरिपिकासिपियोजो । ससारपरिते चे प्रवस । गोरमा बहुबेर्ण अतोसहुर्ण उन्नोरेण कर्णत कार्य बाग कार्य प्रोमालगरियाँ देएने। अपरिते में पुष्का । ग्रोममा । अपरिते दुनिते पहते । त्यहा-रावभपरिते व संनार कपरिते न । कामअपरिते में पुण्डा । गोयमा । जहकेने अंतोसुहत्तं सहीसेने वनस्पद्दनास्ते । संवारमपरिते नं पुच्छा । गोयमा ! संवारमपरिते दुनिहे पत्रते । तंत्रदा-अवादए वा अपजनतिए, अनाद्य वा सपजनतिए । मोपरिते-मोअपरि र्ण पुरुष्ठा । गोममा । साहष् अपजनसिष् ॥ दारं १६ ॥ ५४८ ॥ पज्रतप् अ पुरुष गोयमा । जब्बेर्ज कालोसङ्कतः उद्योसेर्ज सागरीयमसन्पुदुत्तं साहरेगं । जपजाप प पुच्छा । गोयमा । बहुबेज वि उद्दोतेण वि अलोमुहुत्ते । नोपवतप्-नोमपवतप् व

पुच्छा । गोयमा | साइए अपज्जवसिए ॥ दार १७ ॥ ५४९ ॥ सुहुमे ण भते ! सुहुमेत्ति पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुढविकालो । वायरे ण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेणं अतोमुहुत्त, उक्तोसेण असखेज काल जाव खेत्तओ अगुलस्स असखेज्जइभागं । नोत्तहुमनोवायरे ण पुन्छा । गोयमा ! साइए अपज्जवसिए ॥ दार १८॥ ५५०॥ सण्णी णं भते ! पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेण अतोसुहुत्तं, च्छोसेण सागरोवमसयपुहुत्त साइरेग । असण्जी ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वणस्यङकालो । नोसण्णीनोअसण्णी ण पुच्छा । गोयमा ! साइए अपज्जवितए॥ दार १९॥ ५५१॥ भवितिद्धिए ण पुच्छा। गोयमा! अणाङए सपज्जवसिए। अभवसिद्धिए ण पुच्छा। गोयमा ! अणाइए अपज्जवसिए। नोमनसिद्धिए-नोअभनसिद्धिए ण पुच्छा । गोयमा ! साइए अपज्जनसिए ॥ दार २०॥ ॥ ५५२ ॥ वस्मित्यिकाए ण पुच्छा । गोयमा । सन्वद्ध, एव जाव अद्धासमए ॥ दारं २१ ॥ ५५३ ॥ चरिमे ण पुच्छा । गोयमा । अणाइए सपज्जवसिए । अचरिमे ण पुच्छा । गोयमा । अचरिमे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—अणाउए वा अपज्ञवसिए, साइए वा अपज्ञविसए ॥ दार २२ ॥ ५५४॥ पन्नवणाए भगवईए अद्वार-समं कायद्विइनामपयं समत्तं॥

जीवा ण भते ! किं सम्मदिही, मिच्छादिही, सम्मामिच्छादिही 2 गोयमा ! जीवा सम्मिद्दि वि, मिच्छादिद्वी वि, सम्मामिच्छादिद्वी वि। एव नेरइया वि। असुरकु-मारा वि एव चेव जाव थणियकुमारा। पुढवीकाइया ण पुच्छा।गोयमा! पुढवीका-इया णो सम्मदिद्वी, मिच्छादिद्वी, णो सम्मामिच्छादिद्वी, एव जाव वणस्सइकाइया। वेइंदिया ण पुच्छा । गोयमा ! वेइदिया सम्मदिद्वी, मिच्छादिद्वी, णो सम्मामिच्छा-दिही। एव जाव चडरिंदिया। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा वाणमतरजोइसि-यवेमाणिया य सम्मदिद्वी वि मिन्छादिद्वी वि सम्मामिन्छादिद्वी वि । सिद्धा ण पुच्छा। गोयमा! सिद्धा सम्मदिद्धी, णो मिच्छादिद्धी, णो सम्मामिच्छादिद्धी॥ ५५५॥ पन्नवणाए भगवईए एगूणवीसइमं सम्मत्तपयं समत्त ॥

नेरइय अतिकिरिया अणन्तरं एगसमय उव्बद्धा । तित्थगरचिक्कवलवासुदेव-महिलयरयणा य ॥ दारगाहा ॥ जीवे ण भते । अतिकारिय करेजा 2 गोयमा ! अत्थेगइए करेजा, अत्थेगइए णो करेजा। एव नेरइए जाव वेसाणिए। नेरइए ण भते ! नेरइएस अतिकिरिय करेजा 2 गोयमा । णो इणहे समहे । नेरइया ण भते ! अधुरकुमारेम् अतिकिरिय करेजा १ गोयमा ! णो इणहे समहे । एव जाव वेमाणिएछ । नवरं मणूसेछ अतिकरिय करेजात्ति पुच्छा । गोयमा । अत्थेगहए

सचागमे

75

पर्रेति परंपरायत्रा संतक्षितिनं पर्देति है गोनमा ! कर्णसरागमा वि संतक्षितिनं पर्देति परपरानमा वि अंतिकिरिये पकरेंति । एव एवजप्पमापुरकिनेरहमा वि जाव पेक्पमा

पुरवीनस्त्रमा । भूमणमापुरवीनेस्त्रमा चै पुच्छा । योगमा । नो अवंतसमा संतक्तिरे पटरेंति परंपरागमा संतक्तिरेयं पटरेंति एवं जाव सहेसत्तमापुरणे नेरह्या । असुरकुमारा जान बाधिनकुमारा प्रक्रतीमारामपरसङ्ग्रह्या स व्यवस्थान

गया वि शंतकिरिनं पर्वरेति परेपरागया नि शंतकिरिन पर्वरेति । तेजनानवेरेनिन तेइंदियचर्डारेदिया जो अर्जतरागना शतकिरियं पकरेति परंपराधना अरकिरिने पर्करेदि । ऐसा अर्गकरायका नि अंतकिरिनं फ्लॉरेटि परंपरासया वि अंतकिरिनं

पररेति ॥ ५५७ ॥ अर्णवरागया - नेरहवा कुगवस्य केन्द्रसा अंतिकिरिय पर्केति है मोयमा ! अहले में एगो वा दो वा ति वि वा उद्योर्धण दस । रवयप्यमाधुवकीने रहना

वि एवं चेव बाव व्यक्तव्यमापुरवीनेरह्या । वर्णतरागवा व संत । पंकप्यमापुरवी-बेरह्या एगसम्पूर्य केनह्या अंतिकारियं पकरेति । योजमा ! अहलेमं एको वा के

वा दिक्रि वा उद्योगेण जतारि । अवन्तरागवा वं मंते ! अञ्चल्यास एमस्मर केमह्या संतन्त्रिरंगं पकरेंति है गोकमा ! कहतेये एको या वो वा विकि वा उसी

रोज वस । अर्जतरागमाओं जं मंति l अञ्चरकुमारीओ एगसमर केनद्रया अंतकेरिन

पकरेंदि । गायमा । अक्षेत्रणं एको ना दो ना दिकि ना उक्षोतेर्ग पंच । एवं नहा असुरकुमारा स्रदेशीया एडा जाव विकारमारा। भवेतरागया ये मेरे ! पुरुषिकाहमा एमसमए केनद्रवा अशकिरिन पकरेंदि " गोयमा ! जहचेर्ण एको वा दो वा शिक्ष का उद्योग्तिमं बतारि । एवं माजकाह्या वि बतारि वयस्यकाह्या 🕶 पंचितिय-

उन्त्रकेका अल्पेगव्य को उन्त्रकेका। अ व अंते ! नेरहप्रहेता वर्वतरं ठ पेवि दिसरितिकराओलिएस धववजेजा से में अंते ! केविडप्यर्ग वर्म्स समेजा समस्याए है

विरिक्ता जोनिजा वस विरिक्ता जोनिजी जो वस समुरसा वस समुरसीओ बीर्प बाणमतरा इस बाणमंतरीओ पेन ओइसिया इस चोइसियीओ बीर्स देमानिया

क्ट्रमर्थ वेमानिजीको शीस ॥ ५५८॥ नरहपू वे मेरी । नेरहएहिसी क्यांतर समाहिसी नरहपुतु सन्बन्धा ? गोयमा ! यो इवड्डे समद्धे । नेरहपू व मति ! नेरहपृहितो वर्ष

तरं उम्मद्विता कदरकुमारेस अवन्त्रेका है गोयमा । भो इनद्वे समद्वे । एवं निरंतरं

बान व उरिविएम पुण्छा । योगमा ! नो इण्डे समद्रे । बेरहए व मंते ! बेरहएहैं हो

भगेतरे उन्तरिता पंत्रिवियविरिक्तानीयिएस उन्तरीका है घोतमा ! जरकेमस्

गोयमा ! अत्थेगइए लमेजा, अत्थेगइए णो लमेजा । जे ण भंते ! केवलिपन्न तं भम्म लमेजा सवणयाए से ण केवलिं बोहिं वुज्झेजा १ गोयमा ! अत्थेगडए वुज्झेजा, अत्थेगइए णो वुज्झेजा। जे ण भते ! केविंह वोहिं वुज्झेजा से णं सद्देजा पत्तिएजा रोएजा 2 गोयमा ! सद्दहेजा, पत्तिएजा, रोएजा । जे ण भते ! सद्दहेजा पत्तिएजा रोएजा से ण आभिणिवोहियनाणसुयनाणाई उप्पाडेजा ? हता गोयमा! उप्पाढेजा । जे ण भते ! आभिणिबोहियनाणसुयनाणाई उप्पाडेजा से ण सचा-एजा सील वा वयं वा गुणं वा वेरमणं वा पचक्खाण वा पोसहोववास वा पडिव-जित्तए <sup>२</sup> गोयमा ! अत्थेगइए सचाएजा, अत्थेगइए णो सचाएजा । जे ण भते ! सचाएजा सील वा जाव पोसहोववास वा पिडविजनए से ण ओहिनाण उप्पाडेजा? गोयमा ! अत्येगइए उप्पाहेज्जा, अत्येगइए णो उप्पाहेज्जा । जे ण भते ! ओहिनाण उप्पादेजा से णं सचाएजा मुण्डे भवित्ता आगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए 2 गोयमा ! नो इणहे समहे ॥ ५५९ ॥ नेरइए ण भते ! नेरइएहिंतो अणतरं उब्व-हिता मणुस्सेस उनवजेजा १ गोयमा । अत्थेगइए उनवजेजा, अत्थेगइए णो उनवजेजा। जे ण भते ! उनवजेजा से ण केविटिपन्नत्त यम्म टिमेजा सवणयाए 2 गोयमा ! जहा पर्चिदियतिरिक्खजोणिएस जाव जे णं भते ! ओहिमाण उप्पाडेजा से ण सचाएजा मुण्डे भवित्ता आगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए 2 गोयमा ! अत्थे-गइए सचाएजा, अत्थेगइए णो सचाएजा । जे ण भते ! सचाएजा मुडे भवित्ता आगाराओ अणगारिय पञ्चइत्तए से ण मणपज्जवनाणं उप्पाढेजा 2 गोयमा अत्थे-गइए उप्पादेजा, अत्थेगइए णो उप्पादेजा। जे ण भते ! मणपजवनाण उप्पा-हेजा से ण केवलनाण उप्पाहेजा 2 गोयमा । अत्येगइए उप्पाहेजा, अत्येगइए णो उप्पाहेजा। जे णं भंते। केवलनाण उप्पाहेजा से ण सिज्झेजा युज्झेजा मुचेजा सन्बदुक्खाण अत करेजा 2 गोयमा । सिज्झेजा जाव सन्बदुक्खाणमतं करेजा । नेरइए ण भते ! नेरइएहिंतो अणतर उव्वष्टिता वाणमतरजोइसियवेमाणिएस उवव-जेजा 2 गोयमा । नो इणहे समद्वे ॥ ५६०॥ असुरकुमारे ण भते । असुरकुमारेहिंतो भणतर उन्बहिता नेरइएस उववजेजा 2 गोयमा! नो इणहे समहे। असरकुमारे ण भते ! अप्तरकुमारेहिंतो अणतरं उव्विहता अप्तरकुमारेषु उववजेजा १ गोयमा ! नो इण्हें समहे। एव जाव यणियकुमारेसु। असुरकुमारे ण भते! असुरकुमारेहिंतो अण-तर उव्विहिता पुढिविकाइएसु उववजेजा १ हन्ता गोयमा ! अत्येगइए उववजेजा, अत्येगइए णो उनवज्जेजा। जे ण भते ! उनवज्जेजा से ण केवलिपन्नत्त वस्म रुमेजा सवणयाए 2 गोयमा ! नो इणहे समहे । एव आउवणस्सइस् वि । असुर- दिएमु उदब्बेका ? गोयमा ! नो इज्हे नमद्रे । श्रवसेसेम् पंचम् पंचित्रमनिरिस्स कोणियान्त्र अमुख्यमारेस जहा मराओ एवं जाव वित्रद्रमारा ४५६१ ह पुर्णानाइए पं भेते । पुरुषोनाइएहिंसो अर्थनरे उच्चहिला बेटाएस उपप्रकेश ! गोयमा ! जो न्यते समद्वं । एवं अदरकुमारम् वि जात वशियकुमारम् वि । पुन्धे काण् में मेरे ! पुनर्वाकाण्यक्ति अर्मतरे उच्चतिला पुत्रतीकत्त्व उवच्येत्रा ! गोयमा ! अस्पेगप्रए उक्त्रजेजा अस्पेयप्रए गो जनगतेजा । में गं मंत् ! उक्त्रजेजा से में कंपनित्यते कर्म समेका स्वयवाए । गायमा । भा इसके समेके । एवं माउदाहबाहम् निरंगरं भाषियान याव अवरिद्यान् । पंत्रिदेवनिदिनदाबोनिनमञ् स्पनु बडा नंद्रप् । बाबर्मतर्बोऽनिवबंगानिएनु परिपेहो । एव जहा प्रत्वीवानी मिनेजो तहर काउडाएको वि जाव क्यस्पद्रकाएको वि मानिकानो 🗈 ५६२ 🛭 🗗 हाइए में संत ! तेजहानपृष्टितो अर्थतर उम्बद्धिता सरहपूत अन्यज्ञजा ! गोनसः ! नो इन्हें मन्द्रे । एवं अनुरक्तारेसु वि बाव पविष्युमारेख : पुत्रवीकाइनआउ शाउवाजवणवेद्देवियचेद्देवियचारिवियम् अस्येगार् अववाजेजा अस्येगार् मो उवन-केका । कं में मंत्र ! उपनक्षेत्रा सं में केवलिएकत यार्ग समेजा स्वनगर ! गोनमा ! नो न्यक्के समद्वे । ततहाइए में संते ! तेतहत्व्हितो अर्वतरं सम्बद्धिः पंचित्रियितिस्त्वत्रोत्रिप्त जनकोत्रा ! गोयमा ! अस्पेयहए उन्हत्रेजा अस्पेयहर गो उपदक्षेत्रा । ज से न देशतिपक्षतं धरमं समेत्रा सक्यमाए है मोगमा । अत्येगहर् क्रमेजा अत्येगद्रए जो क्रमेजा । वे र्ग संते ! चेत्रकिएवर्स दर्म क्रमेजा स्वन्ताए से मं केवर्ति बोब्दै बुज्केजा है गोबमा ! जो इपके समझे । मुलुस्सवाजर्मतरबोरें सिवनमानिएम् पुन्छा । गोयमा ! भो इच्छे समद्वे । एवं शहेव देवबाइए निरंहर एवं बाउकारण वि ॥ ५६३ ॥ बेइंदिए थे मेरे ! बेईदिएईंद्रों सबंदर सम्बद्धिः मर्प्पृत तमक्त्रेजा ! योगमा ! जहा पुत्रवीशाह्या सवर मनुस्तेष्ठ जाव सवपज्ञव नार्य उप्पादका । एवं तंगीरया चटरिविया में बाव समयकामं उप्पादेका । क्षं यं सम्पद्मनार्थं उप्पादेजा से वं क्षत्रक्रमान उप्पादेजा १ गोनमा ! नो इस्ट्रे समद्वे । पीनिवियतिरिक्ककोमिए ये भते । पीनिविवतिरिक्ककोमिएसियो सर्वेतरे रुक्तिता नेरहपुत्त समम्बोजा है गोनशा । अल्लेपहपु चमनकेजा अल्लेपहपु मी उदबनेजा । वे से ग्रं कंजनियवर्षा वस्त्री करेजा सक्यायाए है गोसमा । अस्पेगाइए स्पेजा अल्बेगरूए को स्पेजा । से में नेमकिएकर्स धर्म क्रमेजा सम्बन्ध से में केर्डि बोर्ड पुण्लेमा ! योगमा ! मत्येगाए प्रक्तेमा अत्येगहए यो पुण्लेमा !

जे ण भते । केवलि बोर्हि बुज्झेजा से ण सद्देजा पत्तिएजा रोएजा ? हता गोयमा ! जाव रोएजा । जे ण भते ! सद्देजा ३ से ण आभिणिवोहियनाणस्यनाणओहि-नाणाइ उप्पाडेजा <sup>2</sup> हता गोयमा! जाव उप्पाडेजा। जे ण भते! आभिणिवोहिय-नाणसुयनाणओहिनाणाइ उप्पाढेजा से णं सचाएजा सील वा जाव पिंडविजित्तए 2 गोयमा ! नो इणद्वे समद्वे । एवं असुरकुमारेस वि जाव थणियकुमारेस । एगिदिय-विगलिंदिएसु जहा पुढवीकाइए । पचिंदियतिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसु य जहा नेरइए । वाणमतरजोइसियवेमाणिएस जहा नेरइएस उववजेजा पुच्छा भणिया एव मणुस्से वि । वाणमतरजोइसियवेमाणिए जहा असुरकुमारे ॥ ५६४ ॥ रयणप्पभा-पुढवीनेरइए ण भते ! रयणप्पभापुढवीनेरइएहिंतो अणतरं उच्चिहिता तित्यगरत्त लेभेजा व गोयमा ! अत्थेगइए लेभेजा, अत्थेगइए णो लेभेजा । से केणहेण भते ! एव वुचड—'अत्येगइए लभेजा, अत्येगइए णो लभेजा' र गोयमा! जस्स ण रयणप्पभापुढवीनेरइयस्स तित्थगरनामगोयाइ कम्माइ बद्धाई पुट्टाइ निधत्ताइ कडाई पद्वियाइ निविद्वाइ अभितिविद्वाइ अभिसमन्नागयाइ उदिषाई, णो उवसताई हवति, से ण रयणप्पभापुढवीनेरइए रयणप्पभापुढवीनेरइएहितो भणतरं उव्वद्विता तित्य-गरत्त लमेजा, जस्स ण रयणप्पभापुढवीनेरइयस्प तित्थगरनामगोयाइ० णो वद्धाइ जान णो उदिन्नाइ, उनसताइ हनति, से ण रयणप्पभापुढनीनेरइए रयणप्पभापुढनी-नेरइएहिंतो अणतर उव्वष्टिता तित्यगरत णो लभेजा, से तेणद्वेण गोयमा। एवं वुचट-'अत्थेगइए लमेजा, अत्थेगइए णो लमेजा'। एव सक्करप्पमा जाव वालुयप्प-भापुढवीनेरइएहिंतो तित्यगरत्त लमेजा। पकप्पभापुढवीनेरइए ण मते। पकप्पभा०-नेरङएहिंतो अणंतरं उञ्बहिता तित्यगरतं लभेजा १ गोयमा । नो इणहे समहे, अतिकरिय पुण करेजा । यूमप्पमापुढवीनेरइए पुच्छा । गोयमा ! नो इण्डे समड्डे, सव्विवरइ पुण लमेजा । तमप्पभापुढवी-पुच्छा । नो विरयाविरइ पुण लमेजा । अहेसत्तमपुढवी-पुच्छा । गोयमा ! नो इणहे समहे, सम्मत्त पुण लभेजा । असुर-कुमारस्स पुच्छा। गोयमा। नो इणहे समद्धे, अतिकिरिय पुण करेजा। एव निरं-तर जाव भाउकाइए। तेउकाइए ण भते! तेउकाइएहिंतो अणतर उव्बहिता तित्यगरत्त लभेजा र गोयमा ! नो इणहे समहे, केवलिपन्नत्त धम्मं लभेजा सवण-थाए। एव वाउकाइए वि। वणस्सइकाइए ण पुच्छा। गोयमा। नो इणहे समहे, अतिकिरिय पुण करेजा । बेइदियतेइदियचउरिंदिए ण पुच्छा । गोयमा ! नो इण्हे समहे, मणपज्जवनाण उप्पाढेजा । पाँचिंदियतिरिक्खजोणियमणूसवाणमतरजोडिंसए ण पुच्छा। गोयमा। नो इणहे समहे, अतिकरिय पुण करेजा। सोहम्मगदेवे ण मेतं ! भर्गतरं चर्यं चइता दित्ययरते अभेजाः योयमा ! अस्पेयर्ए तभेजा भारपेयर्ए यो तभेजा एवं बहा रदयप्यशापुरविनेरहए, एवं जाद सम्बद्धिययदवे n ५६५ n रवयप्यमापद्रविनेस्द्रण में सेत्र ! अथतर उम्बद्धित बहुबद्धित तमेजा ! गोयमा । अत्येयण्य क्रमेजा अत्येयहर् श्री क्रमेजा । से केपट्टेर्य मेरी ! एवं तुवा ! गोयमा ! बहा रयवप्पमापुत्रविनेरहयस्य दिल्पयर्था । सदरप्पमा नरहर् अर्जनरै उम्महिता बद्रबहितं सभेजा है गोदमा है भी इण्डे समद्वे । एवं बाव महेसत्तमा-पुरविनेरहरू । तिरियमपुरुतियो पुरुद्धा । योजमा ! मो इण्डे समुद्रे । भरपरणाण मंतरबोइसियबेमानिएहिंतो पुरुष्ता । गोनमा । अत्येगद्द समेत्रा अत्येगद्द पो समेशा । एतं बसदेवतं पि नवरं सहरप्पमापुत्रविनरहरू वि समेशा । एवं बातुप्रवर्त्त दोक्रितो प्रन्तिकितो बेमानिएक्कितो य अन्यव्योवबाद्रयप्रवेक्कितो सेसंस नो इसदे सम्दे । मंत्रवियतः अहेततमावेदबादवजेदियो । सेनावहरयनतं गाहास्यरमन्त बहुइरवमते प्रवेद्वियरयक्त अधिरवधते संएव चेव चवरं अध्वतरोववादववने-वितो। मासरवनतं इत्यारवयतं रक्यप्यमामो निरंतरं बाद सहस्यारो अस्पे-यहए समेजा अल्पेयहए यो तभेजा। चढरवचत कतरवर्जा चम्मरयनां दंडरययचं असिरयम्तं अमिरयक्तं स्थिनिरयम्यं एएसि वं स्मुरक्त्मारेहितो भारत निरतर बाव ईशामाओ उववाओ सेसेहिंगों नो इयदे समदे n ५६६ # मह भंदे ! अस्वयमनियद्व्यदेवाणं अधिराद्वियस्त्रमाणं विराह्वियसंत्रमाण सनि-राहियसमासंबनाथ विराहियसजनासंबनाय असल्यीयं साइसायं चंदप्पि-वार्ण परगपरिम्यासगार्थ किव्यक्तियार्थ तिरिच्छितार्थ आवेतियार्थ सामि-भोगियाणं सर्वियीय वसववाद्यस्थानं देवत्येगेस तदस्यसम्बन्धं करत सर्वे उदयाओ पञ्चलो ! गोयमा ! अस्वयामनियदम्बदेवाचं बहन्येच मदयवातीप्र रहोसेव उनरेमगेवेजपुर समिराद्वियसंबनायं जहवेयं सोहम्मे ध्यो उद्दोसेनं सन्बहरिते, विरादियसबसायं बहुनेयं सक्तवासीत उद्दोरेवं सोहज्ने वप्पेः अति-राश्चिमसबमासबमायं बहुबेर्ण सोहम्म क्यो बहुनेसेव स्कूए क्यो; निराहियसंब मार्चजनार्य जहनेर्य मनजनासीस उद्दोसेर्य जोडसिएसः अपनीनं जहनेर्य मनय-बासीस उद्दोरेनं वापमंतरेष्ठः तावसाय बहबेनं मदयवासीस उद्दोद्धेयं को सिएस् बहुतेर्वं भवपवासीसः सहोसेर्वं सोहम्मे क्प्पे चत्रापरिस्वामगार्थ 'नवासीस उद्दोसेणं बंगलोए कप्पे कित्विसियाणं अहबेचं सोहम्मे कप्पे त्र इप्पे; विशिष्धियाणं जहुत्रेणं महणवासीस्, उद्दोरेणं सहस्सारे प्राणं जडतेषं भवणवासीत अडोसेणं अरबार कृते: धवं आसिमी-

गाण वि, सिलंगीणं दसणवावण्णगाण जहनेण भवणवासीस्र, उक्कोसेण उविरमिगेवेज-एस्र ॥ ५६० ॥ क्इविहे ण भंते ! असिण्णयाउए पन्नते १ गोयमा ! चउिवहे असिण्णयाउए पन्नते । तजहा—नेरइयअसिण्णयाउए जाव देवअसिण्णयाउए । असण्णी ण भते ! जीवे किं नेरइयाउय पमरेइ जाव देवाउय पमरेइ गोयमा ! नेरइयाउय पमरेइ जाव देवाउय पमरेइ जाव देवाउय पमरेइ । नेरइयाउ पमरेमाणे जहनेणं दस वास-सहस्साइ, उक्कोसेण पिलओवमस्स असखेज्जइभागं पमरेइ । तिरिक्खजोणियाउयं पमरेमाणे जहनेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पिलओवमस्स असखेज्जइभागं पमरेइ । एव मणुस्साउय पि । देवाउय जहा नेरइयाउय । एयस्स ण भंते ! नेरइयअसिण्ण-आउयस्स जाव देवअसिण्णआउयस्म कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा ! स्वव्यथों देवअसिण्यआउए, मणूसअसिण्णआउए असखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणिय-असिण्णआउए असखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणिय-असिण्णआउए असखेजगुणे, तिरिक्खजोणिय-असिण्णआउए असखेजगुणे ॥ ५६८ ॥ पन्न-वणाए भगवईए वीसइमं अतिकिरियापयं समत्तं ॥

विहिसठाणपमाणे पोग्गलचिणणा सरीरसजोगो । दव्वपएसऽप्पबहु सरीरोगा-इणऽप्पबहुं ॥ कड ण भते । सरीरया पन्नता १ गोयमा ! पच सरीरया पन्नता । त्तजहा-ओरालिए १, वेडब्बिए २, आहारए ३, तेयए ४, कम्मए ५।ओरालिय-सरीरे ण भते ! कइविहे पन्नते १ गोयमा ! पचिवहे पन्नते । तजहा-एगिंदियओरा-लियसरीरे जाव पचिंदियओरालियसरीरे । एगिंदियओरालियसरीरे ण भते ! कइ-विहे पन्नते १ गोयमा । पचिवहे पन्नते । तजहा—पुढिविकाइयएगिदियओरालिय-सरीरे जाव वणप्पाइकाइयएगिंदियओरालियसरीरे । पुढविकाइयएगिंदियओरालिय-सरीरे ण भते । कइविहे पन्नते १ गोयमा । दुविहे पन्नते । तजहा-सुहुमपुढविका-इयएगिंदियओरालियसरीरे य वायरपुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरे य। सुहम-पुढविकाइयएरिंदियओरालियसरीरे ण भते! ऋविहे पन्नते १ गोयमा! दुविहे पनते । तजहा--पजत्तगमुह्मपुढविकाङयएगिंदियओरालियसरीरे य अपजत्तगमुह्म-पुढिनिकाइयएगिंदियओरालियसरीरे य । वायरपुढिनिकाइया वि एवं चेव, एव जाव चणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरेत्ति । वेइदियओरालियसरीरे ण भते ! कडविहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते । तजहा—पजत्तगवेइदियओरालियसरीरे य अपज-त्तगचेइदियओरालियसरीरे य । एव तेडदिया चर्डारेदिया वि । पर्चिदियओरालिय-सरीरे ण मते ! कडविहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते । तजहा-तिरिक्ख-जोणियपचिदियओरालियसरीरे य मणुस्सपचिटियओरालियसरीरे य । तिरिक्ख-जोणियपचिदियओराहियसरीरे ण भते! कड्विहे पन्नते<sup>2</sup> गोयमा! ३० मुत्ता०

पकते । तंत्रहाजसनरतिरिक्यायोणियर्गनिष्यक्षोराख्यिसरीरे य वसनरतिरिक्त
जोलियपंचिदियओरक्रियमरीरं व सहयरनिरिक्सओ(श्रेयपंचिदियओराहिक्मरी
<ul> <li>व । जलमरिक्यभोभियांशिन्यश्रोराव्यमरीरे व श्रीत । क्इमिद्दे पक्ते ।</li> </ul>
• ग्येनमा । दुविहे पक्ते । र्राजहारामुधिज्ञभवस्तिरिकराजीविकाचिवकोणसम
सरीरे य गब्भवत्रतिस्थासम्परतिरिक्ताजोधिमपैकितिकोराधिमपरीरं व । संप्रक्रि
मक्तम्यरतिरिक्तकोषियपैचिदिवभोदाकियसपीरं ण भता ! वद्रविद्वे पश्चते ! गोवमा
दुनिद्दे पक्तो । संबद्धा-पजागर्गसुरिक्तमतिरिक्ताजोजिवपंजिद्दमञोरानिवराधीरे व
मपजलारं मुन्द्रिमतिरेक्द्रजोषिकपॅबिदिवभोरास्त्रिकमीरे व एवं गञ्जवहतिए
वि । यसपर्विरिज्याकोशिवर्गनिवियकोरानिवसरीरे मं संते ! क्यमिंहे पर्वते !
गावमा ! द्वरिष्ट्रं यक्ता । तेजहा-चउप्यवसम्बर्शितकावीसिकर्रीवरियश्रराणिन
सरीर य परिमण्यसम्बर्धिरिकाजोविक्यचन्द्रियओसक्षित्रमधीरै य । बङ्ग्पन-
धमयर्गिरिक्य श्रोविवर्गविदिवशोरानियमरीर वं श्रंत ! क्राब्रिड पत्ते ! गोस्या !
दुनिहे पत्रते । तंत्रहारामुन्जियवज्ञप्ययसम्बर्गिरित्सकोवियांपिरिवामेराधित
सर्धर व गब्भारंतिवचटप्यवस्तरातिवित्राजीविवर्गसिवसीरातिवनगरे व ।
र्ममुण्डिमचडण्यः निरिक्तकालियपंचितिकारानियसरीरे वद्विद्वे पर्वते है
गोसमा ! दुसिद्दे पक्षणे । तंत्रहापत्रकत्तरंपुण्डिसश्वरुप्यस्तवरानिरिन्छकोगिय
पंचितिमाओरास्तिवसरीरे य अपजासंगुण्छमच उपपवस्तवर्गनिकारकोनिवर्गे विवर्गे विरेक्
वाराज्यिमधीरे व । एर्न गम्भवर्जनिए वि । परिमण्यसम्बर्गिरिङ्धकोनिवर्धेवैदिव
भोराजियगरीरे में मेल (कडरिंदे पत्रश ? गायमा ! कुबिंदे पत्रते । संग्रह
उत्परिमध्यमसम्पर्तितक्तामानिकानिकानिकार्यानिकारीरे व भूगपरिमध्यक्तका
निरिक्तामानियर्वविविवकोशास्त्रियगरीर य । उर्परिणणप्रस्वरनिरिक्तामोनियर्वि
ियआराजियमगार णे भंत । बटबिहे कात ? गोयमा ! वुविह पत्ती । वेप्रदा
मस् निप्रमा इरपरि गरण्या स्थारनिर्मित्रस्य जोतियपचित्रियकोगारियम् सिर्मा
कतिवारपरिमध्यवसमर्गनिरकारभाजियपनिरिवासराधियमशार् व । पेमुण्टिम र्ड रहे
पन्ने । नेप्रदा-अवस्थानिकात्रवासीगणभाउपर्वित्ववस्यानिकारिकारिकार्यानिकारी
न्यागीरे य प्रजनमेमुन्छिमउरपर्शगण्यक्यस्तिविक्रकातियाँनिरियभेरा नि

नति स एरं गरभागीयाज्ञतित्वाचे बागमा अभा । एवं मुदारिताचा वि मंद्रीराध्यामभागीया बमाता बागमा व । गाद्या पृत्या वरणा । तैया-मंद्रीराध्या व गरभागीया व । गमुरिधमा दृश्या पवता-बामा अपन्या व । प्रथमित्रा वि वर्षणा बारामा व । मार्गावीनिकशेताद्वारीयो वे भेग ! कडविहे पन्नते <sup>2</sup> गोयमा <sup>1</sup> दुविहे पन्नते । तजहा-समुच्छिममण्सपचिंदियओरा-लियमरीरे य गञ्भवकंतियमण्सपंचिंदियओरालियसरीरे य। गञ्भवकतियमण्स-पर्चिदियओरालियसरीरे णं भते ! कडविहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते । तजहा-पज्जतगगञ्भवक्षतियमणुसपचिंदियओरालियसरीरे य अपज्जतगगञ्भवक्षतियमणुस-पिंचिंदियओरालियसरीरे य ॥ ५६९ ॥ ओरालियसरीरे ण भते ! किसिटिए पन्नते 2 गोयमा ! णाणासठाणसिठए पन्नते । एगिंदियओरालियसरीरे० किसिठिए पन्नते 2 गोयमा ! णाणासठाणसठिए पन्नते । पुढविकाइयएगिंदियओराल्यिसरीरे० किंसिठिए पन्नते 2 गोयमा! मसूरचदसठाणसिठिए पन्नते । एव सुहुमपुढिविका-इयाण वि वायराण वि एव चेव, पज्जतापज्जताण वि एव चेव, आउक्काइयएगिंदिय-ओरालियसरीरे ण भते ! किसठिए पन्नते 2 गोयमा ! यिव्वयविद्वसठाणसिठए पन्नते । एवं सुहुमवायरपज्जतापज्जताण वि । तेउकाइयएगिंदियओरालियसरीरे ण भेते ! किसिठए पन्नते १ गोयमा ! स्ईक्लावसठाणसिठए पन्नते । एव सहमवायर-पजतापजताण वि । वाउकाइयाण वि पडागासठाणसिठए, एवं सुहुमवायरपजता-पजताण वि । वणप्पड्काइयाण णाणासठाणसठिए पन्नते, एव युहुमवायरपजता-पजताण वि । वेइदियओरालियसरीरे ण भते ! किसठाणसिठए पन्नते १ गोयमा ! हुडसठाणसिठए पन्नते, एव पज्जतापज्जताण वि, एव तेईदियचउरिंदियाण वि। पर्चिदियतिरिक्खजोणियओराठियसरीरे ण भते ! किसठाणसठिए पन्नते 2 गोयमा ! छिव्वहसठाणसठिए पन्नते । तजहा-समचउरंससठाणसठिए वि जाव हुडसठाणसठिए वि, एव पज्जत्तापज्जत्ताण वि ३ । समुच्छिमतिरिक्खजोणियपचिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किसठाणसिठए पन्नते १ गोयमा ! हुडसठाणसिठए पन्नते, एव पज्जताप-जत्ताण वि । गञ्भवक्कतियतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरे ण भंते! किंसठाणसिंठए पन्नते <sup>१</sup> गोयमा । छिन्वहसठाणसिंठए पन्नते । तजहा-समचडरंस० जाव हुडसठाणसठिए। एव पजनापजनाण वि ३। एवमेए तिरिक्खजोणियाण ओहियाण णव आलावगा । जलयरतिरिक्खजोणियपर्चिदियओरालियसरीरे ण भते ! किंसठाणसिठए पन्नते २ गोयमा ! छिव्वहसठाणसिठए पन्नते । तंजहा-समच-उरंसे जाव हुडे, एवं पज्जत्तापज्जत्ताण वि । समुन्छिमजलयरा हुडसठाणसठिया, एएर्सि चेव पज्जत्ता अपज्जत्ता वि एवं चेव । गञ्भवक्षतियजलयरा छिन्विह्सठाण-सिंठिया, एव पज्जत्तापज्जत्ताण वि । एव थलयराण वि णव सुत्ताणि, एव चलप्यय-थलयराण वि उरपरिसप्पथलयराण वि भुयपरिसप्पथलयराण वि । एव खहूयराण वि णव सुत्ताणि, णवरं सव्वत्थ समुच्छिमा हुडसठाणसठिया भाणियव्वा, इयरे 114

**एम्. नि । सन्**सर्पविदियम्बाराज्ञिनसरीरे में मेते | फ़िसंठानसंदिर प्रवते ! घोपमा ! धन्दिर्धेक्षणसंदिर् क्वते । वैजहा-समयहरेसे जाव हुँडे पञ्चतापञ्चतान नि एवं चेव गञ्सक्टंदिसाय वि एवं चेव पञ्चतापञ्चताम वि एवं चेव। समक्तिमार्व पुच्छा । गोबमा । हुंबचैठाणसैठिया पण्याचा ॥ ५७ ॥ स्रोतस्थियसरीरस्य मे र्मते ! केयहाकिया सरीरोगाहणा पकता ! गोयमा ! जहक्येर्ण अंगुलसस असवे भाइमार्ग चन्नोसेर्ग साइरेगं जोयणसहस्स । एपिंदियजोराधियस्स वि एवं पेर वहां भोडिनसः । प्रविश्वत्रनप्रिविश्वभोराजिनसरीरस्य यं श्रेते । केमहास्थितः सरीरी-गाइना पहला है गोयमा । बहुद्देज वि सहोसेण वि अंग्रसस्य असंक्षेत्रज्ञमागं एवं सपञ्चतमान नि पञ्चतमान नि । पूर्व <u>शह</u>मार्च पञ्चतपञ्चतार्थ । वानरार्व पञ्चताः प्रभागत है। एवं एसी चवनों मेन्से बहा पुरुष्काह्यांच तहा आउहाइना है तेतकहरनाम मि बातकप्रयाण नि । बनस्तककहरूकोराकिश्वरीरस्य में संते। केमहाकिया सरीरागाइना पत्रता है योदमा । व्यक्तेषं व्यक्तस्य असेकेजरमार्ग रहोतेर्यं साइरेर्यं जोजगरहरसं । अपञ्चलपार्यं बहन्नेय जि तक्रोतेल जि उत्पालस सर्वकेन्द्रमार्गं प्रज्ञत्वानं नहत्रेणं अंगुलस्य अर्वकेन्द्रभागं उद्दोरेणं साहरेयं चोपनसङ्ख्ये । वासराणं व्यक्तेणं अंगुसस्य असंखेळाड्यायं उद्योतेणं सहरेगं कोयगसङ्ख्यं पञ्चलाज वि धूर्व केव । अपञ्चलाजं अव्योग वि उद्योगेन वि भगुक्तस अर्थबेज्युमान । सुदुमाथ पजनापजनाथ व तिष्टु वि बहुदेव नि उमी र्पेण वि अंगुक्तस् वर्षकेणहमार्गः । वेडस्थिकोरास्थित्स्युरारस्य च मते ! बेमहास्थि स्पीरोगाइमा पदता । योगमा! कहतेन अंगुक्स असंबेक्द्रमार्ग उद्देशिये नारस जोसनाई । एव सन्तरम में अपजारवार्य अपुसरस **करने अ**हमार्थ क्**रा**नेप वि उन्नोसेग वि । प्रजातगार्थं व्यक्ते बोराधियस्य बोद्वियस्य । एवं देईविवार्यं तिभिन्न गाउवाई, चतरिमियामं चचारि यादयाई, पविभिन्नतिरिक्तजोक्षितमं उद्दी संयं जीयनसङ्ख्स ३ एवं समुच्छियायं ३ यव्यक्कावियाय वि ३ एवं व्यव थहमो मेओ मानिवन्त्रो । एर्न करुवराय वि बोवनसङ्स्य जवलो मेशा वसर्व-राम मि सब मेबा ९ उन्होरेन ह गासवाई, प्रमणगान वि एवं चेव ऐसुविष् मार्ग प्रवत्तमान व तहोसेर्ग यात्रश्<u>रपत</u>्तं १ शब्सक्तंतियाणं उहोसंग्र गाउनाई प्रजााय स २ ओहिनचरपानपजागगरसम्बद्धीरपजास्त्राम वि उद्योगेर्ग छ गाउनाई । समुच्छिमाणं पजाताय व माउनपुर्द्वतं उद्दोनमं वृषं उरपरिसप्पण वि । श्रोडिनगम्मवर्द्दिनपज्ञतागार्ने जोयचसहरस संगुरिक्रमार्वं पज्ञतान न कोयचप्रवर्तः मुख्यसिस्पार्वं कोहियगव्यक्दंतिशकः व उद्योतेषं गाउसपृष्ट्यं

समुच्छिमाण धणुपुहुत्तं, खहयराण ओहियगन्भवकंतियाणं समुच्छिमाण य तिण्ह वि उद्दोसेणं धणुपृहुत्त । इमाओ सगहणीगाहाओ—जोयणसहस्स छग्गाउयाइ तत्तो य जोयणसहस्स । गाउयपुहुत्त भुयए धणुहपुहुत्त च पक्खीसु ॥ १ ॥ जोयणसहस्स गाउयपुहुत्त तत्तो य जोयणपुहुत्त । दोण्ह तु वणुपुहुत्तं समुच्छिमे होइ उचतं ॥ २ ॥ मणूसोरालियसरीरस्स ण भते! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेण अगुलस्स असखेजहभाग, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइं । एव अपज्जताणं जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अगुलस्स असखेजइमाग । समुच्छिमाण जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अगुलस्स असखे-जइभाग, गन्भवक्कतियाण पजताण य जहन्नेण अगुलस्स असखेजाइभागं, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइ॥ ५७१॥ वेउन्वियसरीरे ण भते ! कइविहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते । तंजहा-एगिंदियवेउ व्वियसरीरे य पर्चिदियवेउ व्वियसरीरे य । जड एगिंदियवेड व्वियसरीरे किं वाउकाइयएगिंदियवेड व्वियसरीरे, अवाउका-इयएगिंदियवेउ व्वियसरीरे १ गोयमा ! वाउक्काइयएगिंदियवेउ व्वियसरीरे, नो अवा-उक्काइयएगिंदियवेउ व्वियसरीरे । जइ वाउक्काइयएगिंदियवेउ व्वियसरीरे किं सुहुम-वाउकाइयएगिदियवेउव्वियसरीरे. बायरवाउकाइयएगिदियवेउव्वियसरीरे १ गोयमा ! नो सहुमवासक्षाइयएगिदियवेउ व्वियसरीरे, बायरवासक्षाइयएगिदियवेउ व्वियसरीरे । जइ वायरवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे किं पज्जत्तवायरवाउकाइयएगिंदियवेउ-व्वियसरीरे, अपजत्तवायरवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे १ गोयमा! पजत्त-वायरवाजकाइयएगिंदियवेजव्वियसरीरे, नो अपजत्तवायरवाजकाइयएगिंदियवेज-न्त्रियसरीरे । जइ पर्चिदियवेउव्वियसरीरे कि नेरइयपर्चिदियवेउव्वियसरीरे जाव देवपर्चिदियवेउव्वियसरीरे १ गोयमा ! नेरइयपर्चिदियवेउव्वियसरीरे वि जाव देवपचिदियनेउन्वियसरीरे वि । जइ नेरइयपंचिदियनेउन्वियसरीरे किं रयणप्प-मापुढिवनेरइयपिंविदयवेउव्वियसरीरे जाव अहेसत्तमापुढिवनेरइयपेचिंदियवे-जिव्यसरीरे १ गोयमा ! रयणप्पभापुढिनेनरइयपिचिदियवेजिव्यसरीरे वि जाव वहेंसत्तमापुडविनेरइयपचिंदियवेउव्वियसरीरे वि । जइ रयणप्पभापुडविनेरइय-पर्चिदियवेड व्वियसरीरे किं पज्जत्तगरयणप्पभापुढविनेरइयपचिंदियवेड व्वियसरीरे, अपजातगर्यणप्पभापुडविनेरइयपचिंदियवेउ व्वियसरीरे १ गोयमा ! पजातगर्यणप्प-मापुढविनेरइयपचिदियवेउन्वियसरीरे, अपजत्तगरयणप्पमापुढविनेरइयपंचिदियवेउ-व्वियसरीरे, एव जाव अहेसत्तमाए दुगओ मेलो भाणियव्त्रो । जइ तिरिक्ख-जोणियपचिदियवेउ व्वियसरीरे किं समुच्छिमतिरिक्खजोणियपंचिदियवेउ व्वियसरीरे, विरिक्ता बोम्बर्गाविष्यगेवविश्वतिश्वासीरे गव्यक्तांतियतिरिक्ता कोवियगंविदिनके

चिम्बसरीरे । जह गरुमवर्षतियतिरिक्ताबोनियर्गविदियवेउन्विमसरीरे कि संबेज-नासार्वयगन्नव्यक्तिय पंनिवियवेर्यन्यस्तीरे असंबेधनासार्ययगन्नवरंतियतिरे क्सबोक्रियपेकित्रियकेतिकाससीरे ? गोनमा । संबेजनासात्रयगम्भवद्वंतियतिरिक्क

कोत्मयपंत्रियकेतव्यवसरीरे मो असके जनासार सम्बद्धितरिक्षको विवयनिविध्येत्रेत्र विवयसरीरे । वह संबेधवासात्रयग्रह्माद्वेतियसिविध्यायोगिक पेनिदिवनेटस्मित्रसरीरे कि पञ्चलगर्थकेजवासास्यगन्त्रम् तिप्रतिरेक्टकोभिन्यनि विवदेशकायसीरे अपवासगस्के अवासातवगम्भवकंतियतिरिक्ताकोवियपविदिध-मैतम्बदसरीरे 👫 गोयमा 🕽 प्रमत्तगर्थके ज्ञाबासात्त्रगरमम्बद्धतियतिरिक्ताबोनिक पंचित्रकेटन्यियस्टीर नो अपज्ञक्तासंकेजनासस्यक्तास्ट्रीयस्टिरेक्यवोतिन पंचित्रववेतन्त्रियसरीरे । जह संकेत्रवासात्रयम्बन्धत्यतिवतिक्रवाधिकपंचित्रक

वैद्यान्यस्परीते कि वस्त्रपरसंखे**क्या**सादसग**न्यवर्क**दिवदिश्वकत्रोनिवर्गवितिन केतिकावस्रीरे अक्षवर्**एके ज**वासात्रवर्गकावर्ग**रिवतिरेक्क बोधिवर्पविरिवके**ति यसरीरे अक्षावरसक्षेत्रवासादयगञ्जवक्षीत्रयतिरिक्षाक्षेत्रविद्यासरीरे वि गोयमा ! वस्त्रदर्शके जवासातसगरमान्द्रतिस्त्रितिक को विस्तर्वे विस्तरेत निवस्ति । सहस्रदस्योजनसञ्जयप्रभावतीयमान्याची वर्षा को विस्तर्य के स्वाप्तरस्था है। वर्ष

क्छवरसं<del>चे जवा</del>सार ययक्मकारियदिविकताची शिवपविद्यवकेत व्यवस्थिते कि म<del>र्थ</del> प्रसानकार सम्बोद्धाना सारायणा असमाईति यति विकास मोजियपं निवेदावन विकास स्थिते. अप कत्तराजसम्बद्धकेकवासाउथग्रहसक्तितिहित्वकोषिककोषिकवेदिववेद्धविदस्परिरे **ै** गोसमा ! पळात्रासम्बद्धासम्बद्धासम्बद्धासम्बद्धाः प्रमानकंतिवतिरिक्तस्योगिवर्गनिरिववेउ व्ययस्पीरं नो भएजक्तगमकत्ररस्योजनासातनगण्यकप्रतिवितिसम्बज्ञोविन्संवितिः वैद्याबासरीरे । जत्र वस्त्यस्तिरिक्ताओधामपविविध वाच सरीरे कि वदापम वाव सरीरे परिसप्प जान सरीरे ! गोयमा ! चटप्पय जान सरीरे नि परिसप्प बान सरीरे वि । एवं सम्बेसि नेशव्यं जान सहस्यराणं पळतायं नो सपजतायं। वर मणुरापेविदियमेतन्त्रितरोरे कि एमुक्तिसमण्डापेविदियमेतन्त्रितरे, गम्मण्ड तियसम्पर्वनिविज्ञवेत्रव्यवस्थि । गोनसा । मो समुध्तसमम्बर्धाविविज्ञान यसरीरे, गरुमवद्गेरीकमन्तर्गविविविववेडस्विवस्पीरे । वदः गरुमवद्गेरीयमपूर्णार्वे दिववेडम्बिक्सपीरे कि कम्भगूमगणक्मवदेशियमक्सपीवेदिववेडम्बिक्सपीरे, अक-

म्मभूमगगन्भवक्कतियमणूसपन्विदियवेउ व्वियसरीरे, अतरदीवगगन्भवक्कतियमणूस-पचिद्यवेडव्वियसरीरे १ गोयमा ! कम्मभूमगगन्भवक्कतियमण्सपचिद्यवेडव्विय-सरीरे, णो अकम्मभूमगगञ्भवकृतियमण्सपचिदियवेउन्वियसरीरे, णो अतरदीव-गगञ्भवकृतियमण्सपचिन्दियवेउ व्वियसरीरे । जड कम्मभूमगगञ्भवकृतियमण्स-पचिंदियवेडिव्वयसरीरे किं सखेजवामाउयकम्मभूमगगव्भवकृतियमण्सपंचिंदिय-वेउव्वियसरीरे, असखेजवासाउयकम्मभूमगगन्भवदंतियमण्सपचिदियवेउव्विय-सरीरे १ गोयमा । सखेजवासाउयकम्मभूमगगन्भवङ्गतियमण्सपचिंदियवेउव्विय-सरीरे, नो असखेजवासाउयकम्मभूमगगञ्भवकृतियमण्सपचिदियवेउव्वियसरीरे । जड सखेजनासाउयक्रमभूमगगन्भनकतियमणूसपर्चिदियनेउन्त्रियसरीरे कि पजत्त-यसखेजनासाउयनम्मभूमगमण्मपचिंदियचेउन्त्रियसरीरे, अपजन्तयसखेजनासाउय-कम्मभूमगगब्भवद्गंतियमणूसपचिंदियवेड व्वियसरीरे <sup>2</sup> गोयमा ! पजत्तयसखेजवासा-जयकम्मभूमगगव्भवकृतियमणूसपचिदियवेउव्वियसरीरे, नो अपजत्त्यसखेजवासा-उयकम्मभूमगगव्भवक्कतियमणुसपंचिदियवेउव्वियसरीरे । जइ देवपचिदियवेउव्वि-यसरीरे किं भवणवासिदेवपचिंदियवेउ विवयसरीरे जाव वेमाणियदेवपचिंदियवेउ विव-यसरीरे १ गोयमा ! मवणवासिदेवपन्विदियवेड विवयसरीरे वि जाव वेमाणियदेवप-चिंदियवेड व्वियसरीरे वि । जङ भवणवासिदेवपचिंदियवेड व्वियसरीरे कि असरक्र-मारभवणवासिदेवपचिदियवेजिवयसरीरे जाव थणियकुमारभवणवासिदेवपचिदियवे-उन्त्रियसरीरे १ गोयमा ! असुरकुमार० वि जाव यणियकुमारदेवपचिन्दियचेउन्त्रिय-सरीरे वि । जइ असुरक्तमारभवणवासिदेवपचिंदियवेउव्वियसरीरे कि पज्जत्तगञ्जसु-रकुम।रमवणवासिदेवपचिंदियवेउ व्वियसरीरे. अपज्जत्तगअसुरकुमारभवणवासिदेवप-चिंदियवेउ विवयसरीरे १ गोयमा । पजात्तगअसुरकुमारभवणवासिदेवपांचिंदियवेउ व्वि-यसरीरे वि, अपजनगञ्जस्रकुमारभवणवासिदेवपाचिदियवेडव्वियसरीरे वि, एवं जाव थणियकुमाराण दुगओ मेओ। एव वाणमतराण अहविहाणं, जोइसियाण पंचिवहाण । वेमाणिया दुविहा-कप्पोवगा कप्पातीता य । कप्पोवगा वारसविहा, वेसिं पि एन चेत्र दुइओ मेओ । कप्पातीता दुविहाए-गेवेजजग य अणुत्तरोवनाइया य, गेवेज्जगा णविवहा, अणुत्तरोववाइया पचिवहा, एएसि पज्जतापज्जताभिलावेण दुगओं मेओ माणियन्वो ॥ ५७२ ॥ वेडिन्वयसरीरे ण भते । किंसिठिए पन्नते १ गोयमा । णाणासठाणसठिए पन्नते । वाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे ण भते ! किंसिठिए पन्नत्ते 2 गोयमा ! पडागासठाणसिठिए पन्नत्ते । नेरइयपर्चिदियवेउव्नियस-चीरे ण मते! किंसठाणसिठए पन्नते 2 गोयमा! नेरइयपचिंदियवेउव्वियसरीरे

बुलिक्के प्रवति । संबद्धा-अववारणिको य उत्तर्वउम्बए च । तत्व व के से सववा-रिक्रिके से में हुँ इसेठायसंदिए पचले । तत्त्व क जे से उत्तरवंउच्चिए से वि हुँ इसेठा-णसंदिर पक्ते । रमणपमापुक्रविनंदरमपंचित्रियनेत्रविनस्तरीरे जं मंते ! विस्त्रम संदिय पनते ! योगमा ! रयचप्पमापुत्रविनेरह्यार्ण शुविहे सरीरे पवते । राजहा-सम्बद्धारियाओं व जन्तर्वत्विक्षण् य । तत्व र्ण जे से अवजारियाओं से वं 🗯 🗷 से से उत्तरनेटम्बर् स में हुँवे । एवं काव महेसत्तमापुरुविनेरहमवंटिकासरीरे । तिरी करा गोनिवर्पविदियमेन स्वियससीरे में भेते ! फिर्सठामसंदिए पहले ! योगमा ! नामार्गरागर्गरेटर पक्ते । एवं बाव वक्तवरवक्तवरपद्ववरान वि । वस्तवराय नि कराणयगरिसप्पाय वि परिसप्पाय वि उरपरिसप्पसुयगरिसप्पाय वि । एवं स्कुरसर्प-विविधवेतम्बर्धाः वि । असरकमारभवणवासिववपविविववेतम्बरस्परे वं मंदे ! किस्टाजर्स्टिय पन्ते ! योगमा ! बसुरकुमारार्थं धवानं श्रविदे स्रीरे पन्ने । र्तजहा-सबभारिको य उत्तरवेठिनए व । तत्व वं से से सबबारिको से वं सम्बद्धांसस्कानसंक्षिए प्रवर्ष तस्य में व से उत्तरबेटिन्यए से यं यावास्कान-संक्रिय प्रवत्ते एवं बाव वाविवक्रमारदेवपंत्रिविववेतव्यवसीरे एवं वावसंस्टान कि गर्वर ओहिया कानमंतरा पुरिकार्वति एवं जोहरियान कि ओहियार्ग एव सोहम्मे जाव अनुभदेवसरीरः। गेवेजगङ्गातीत्वमान्यवेदपविदिववेद्गन्तिकसीरे वं भव ! किंस्टिए पत्रते ! गोनमा ! गवेजमवैदार्च एगे सववारविजे सरीरे सं सं समयदरसर्वेठायसंठिए प्रजी एवं अनुत्तरीयसह्याण वि ॥ ५७३ म केरिकावस्पीरस्य में मंद्रे ! केमद्वालिया सरीरोगाइचा पत्तता ! मोबमा ! जहनेन क्षरात्स्य सम्बद्धकारमार्गः तक्षेत्रेयं साप्तरेगं जोधनसम्बद्धस्य । बारुकाप्रवर्णनि जोडिन्स्यसरीरस्ट भ भेते ! केन्स्राकिया सरीरोगस्था पत्रता ! योगमा । वस्त्रेय अग्रामस्य व्यक्तकेश्वद्रमार्गः तकोसेण वि अग्राकस्य **अर्थकेश्व**रमार्गः । नेरहचपेविसेव क्षेत्रभिवससीरस्य व श्रंत ! केनहारिक्या सरीरोयाहणा पवता १ धोवमा ! इब्स्टि पनता । तंत्रहा-भववारणिजा व उत्तरवेठव्या य । तत्त्व वं वा सा समगरणिजा सा अरबेर्ज क्युकरस कसकेश्रहमार्ग उद्दोसेर्ज वंत्रवयुस्यतं । तत्व न वा सा उत्तरभेट मित्रा सा अवसेषं अगुकस्य सम्बोधव्यागं उद्दोरोण वसुस्टरस । रक्तप्र सापहनिनेस्त्रनाम गते केमहाकिना सरीरोगाहमा पक्ता है योजमा । इतिहा पत्रता । तत्रहा-भवधारविज्ञा य शत्तरवैठव्यिका य । तत्य नै का श्रा भवनारविज्ञा सा बहुनेर्ग म्युक्टस शस्त्रेजह्मार्ग उद्दोत्तेर्न बत्त प्रमुद्दं दिख्य रचयोजो स्व अगुक्तर्त । तत्प मंत्रा सा उत्तरवैत्रनिया सा व्यक्तेमं अगुक्तस संवेक्त्रभागं

202

उक्कोसेण पण्णरस धणूड् अ**सृ**।इजाओ रयणीओ । सक्करप्पभाए पुच्छा । गोयमा [ जाव तत्य णं जा सा भवधारणिजा सा जहन्नेण अगुलस्स असखेजाइभाग, उक्कोसेण पण्णरस धणुइ अङ्गाडजाओ रयणीओ । तत्य ण जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहन्नेण अगुलस्स सखेजाइभाग, उद्गोसेणं एक्तीस धणूई एका य रयणी। वालुयप्पभाए भवधारणिजा एकतीस वण्ईं एका रयणी, उत्तरवेउ व्विया वासिट्ठं धणूइ दो रय-णीओ । पकप्पभाए भवधारणिजा बासिंह वणूइ दो रयणीओ, उत्तरवेउव्विया पणवीस धणुसय । धूमप्पभाए भवधारणिजा पणवीस धणुसयं, उत्तरवेउ व्विया अह्वाइजाइ धणुसयाइ । तमाए भवधारणिजा अष्ट्वाइजाइ धणुसयाइ, उत्तरवेडिवया पंच धणुसयाइ । अहेसत्तमाए भवधारणिजा पच वणुसयाइ, उत्तरवेउव्विया धणु-सहस्स एव उक्कोसेण । जहनेण भवधारणिजा अगुलस्स असखेजाइमाग, उत्तर-वेउव्विया अगुलस्स सखेजाइभाग । तिरिक्खजोणियपार्चिदियवेउव्वियसरीरस्स णं मते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेणं अगुलस्स सखेजाइ-भाग, उक्कोमेण जोयणसयपुहुत । मणुस्सपिचिदियवेउव्वियसरीरस्स ण भते ! केम-हालिया सरीरोगाहणा पन्नता 2 गोयमा ! जहन्नेण अगुलस्स सखेजहभाग, उक्वोसेणं साइरेग जोयणसयसहस्स । असुरकुमारभवणवासिदेवपर्चिदियवेउ व्वियमरीरस्स ण भते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नता २ गोयमा ! असुरकुमाराण देवाणं दुविहा सरीरोगाहणा पन्नता । तजहा-भवधारणिजा य उत्तरवेउव्विया य । तत्थ ण जा सा भवधारणिजा सा जहन्नेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्कोसेण सत्त रयणीओ । तत्थ णं जा सा उत्तरवेडिविया सा जहन्नेण अगुलस्स सखेजाइभाग, उक्कोसेण जोयणसयसहस्स । एव जाव यणियकुमाराण, एवं ओहियाण वाणमतराण एव जोइसियाण वि, सोहम्मीसा-णदेवाण एव चेव, उत्तरवेउ व्विया जाव अच्छुओ कप्पो, णवरं सणकुमारे भवधार-णिजा जहन्नेण अगुलस्स असखेजङभाग, उक्षोसेण छ रयणीओ । एव माहिंदे वि, वमलोयलतगेसु पच रयणीओ, महासुक्कसहस्सारेसु चत्तारि रयणीओ, आणयपाणय आरणचुएस तिण्ण रयणीओ । गेविज्जगकप्पातीतवेमाणियदेवपचिदियवेउ विवयसरी रस्स ण भते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नता 2 गोयमा ! गेवेज्जगढेवाण एगा भववारणिजा सरीरोगाहणा पत्रता । सा जहन्नेण अगुलस्य असखेज्वडभाग, उद्दोसेण दो रयणी । एव अणुत्तरोववाइयदेवाण वि, णवरं एका रयणी ॥ ५७४ ॥ आहारगसरीरे ण भते ! कड्विहे पन्नते <sup>2</sup> गोयमा ! एगागारे पन्नते । जड एगागारे प॰ कि मण्सआहारगसरीरे, अमण्सआहारगसरीरे १ गोयमा । मण्सआहारगसरीरे, नो अमण्सआहारगसरीरे । जङ मण्सुआहारगसरीरे कि समुच्छिममण्सआहारग-

सरीरे गब्नारदेतिसमण्समाहारगसरीरे ! गोबमा ! मो समुच्छिनस्यूनमाहारफ सरीरे पदमानदंतियमभूसभाक्षारगसरीरे । वह गप्मानदंतियमभूसभाक्षारगसरीरे हिं कम्मभूमगगब्मवज्ञतिवमण्सभाद्वारगसरीरे अकम्भभूमगगब्भवज्ञेतिसम्बस्नाद्वारग सरीरे अंतररीवगगब्भवदंवियसम्बन्धवादारगसरीरे ! शोबमा । क्रम्ममूनगयसम्बद्ध-तिन नो सरम्मभूमधगव्यवद्वतिय भी संतर्शीवगगव्यवद्वतिकम्पूमञाद्वारसः सरीरे । अह कम्ममूमानमध्याकौतियानुगमाहारकसरीरे कि संबोधकासाउमकमा-मूनगमस्भवदेतिनमञ्जनभाद्यारगसरीर् असेनेजवासात्रयकम्मानमानमावद्वतिसम् समाहारमधरीरे । गोयमा । संबेधवासाउयरम्यभूमगम्यमध्यिकमक्ताहारय-सरीरे नो असेचेअवासात्यकम्मभूमगगण्यवर्षतिकावुपआद्वारगसरीरे । अ रंबेजवासावकम्यम्मनगय्भवकंतियमवृत्तवाहारगसरीरे कि प्रजन्तसंबज्जवासा-**उपक्रमान्**मागम**ावक्रतिवमन्त्रभाष्ट्रा**रमसरीरे **अरञ्जत्तर्ववे बन्ना**साठब रूमम्माप-गर्क्सन्त्रंतियमणुख्याहारगसरीरं <sup>ह</sup> योक्सा । एकत्तरं**के**जवासादयकम्मस्मगयम्भ नरंदियमञ्चलभाटारगसरीरे नो अपजातसंखेळवासाउवकम्मग्रमगणभावकरिय-सन्दरभाहारगसरीरै । जह पजातसंकेजवासाउसकम्बद्धभगगन्भवद्वविसमन्दर्भाहार गसरीरे कि सम्मविद्धीपवल<del>र्धवे व</del>नासासव रूमम्मसम<del>ाकां वि</del>समवसाहारगः सरीरे मिक्करिद्वीपन्नतर्थने जनाचालग्रकम्मम्भगगरभवकंतिनमञ्जलाहारगर्धरेर फ्रमामिन्**ध्रक्तिपञ्चलक्षेञ्चा**वाकालमञ्ज्यस्मयग<del>ण्यावदं</del>तिसमञ्**स**भाहारगसरीरे । भोजमा ! सम्मादिक्षीमञ्जासको जनासात्रकारमञ्जूमगराज्याका दिवसक्षाज्ञाहारणसरीरे भी मिन्दर्रियंग्यतः भी सम्मामिन्द्ररिद्धीप्यत्तर्थेये वदासाय क्रम्मम्सम्मन कंतियमपुरभाद्यारणसपीरे । कर् सम्मद्विपञ्चतश्चेञ्चनसारमञ्जानमञ्जानमञ्जान विजयपुरआहारगरसीरे कि सम्बन्धस्यविद्योपमत्तर्भवे मनासारयक्रमामूस्यपभार **इं**दियम<del>ण्ड्याद्वार</del>यसरीरे असमयसम्मद्विपनत्तस<del>्येजना</del>सारयक्रमम्मयगस्य क्वंतिममन्समाहारगसरीरं सम्बासंक्रयसम्महिद्वीपन्तासंचे मनासाटमकम्मम्सर गक्नानकेश्विमम्बूपकाहारगस्पीरे <sup>३</sup> योजमा ! संजनसम्माद्विप<del>कतसंजे</del>जनासार्वमः कम्मभूमगणम्मवद्यतिसम्बद्धश्राहारगस्तिरे मो अर्चक्रयसम्मिद्धारवतस्य मण सातमकन्यभूमगयध्यकार्वातियमण्सभाद्वारगसरीरं, नो श्वनवासनयसम्मिश्वेपन्याः माहारगसरीरे । ऋ छत्रयसम्मादिक्षेपवतसंखेजवासाध्यकम्मभूमसगद्भवतिवर्गः पूसभाहारमसरीरे कि पमतसम्बग्धमारिही सक्षेत्रसाराजयकन्त्रमूमगणकानकेति यसव्यानाहारगररीरे अध्यात्तसम्यसम्मादिद्वा-स्रकेमवासार्यकामानूमयगरमान तिवसम्बन्धकाद्यस्थाते । योगमा । पमत्तवैववसम्भक्तिपव्यतस्ये व्यवस्थातव सम

भूमगगब्भवद्गंतियमण्सआहारगसरीरे, नो अपमत्तसजयसम्महिद्वी०कम्मभूमगगब्भ-वक्षतियमण्सआहारगसरीरे । जइ पमत्तसजयसम्मिद्दृही०सखेज्जवासाउयकम्मभूमग०-मणूसआहारगसरीरे किं इष्ट्रिपत्तपमत्तसजयसम्मिद्दृष्टी०कम्मभूमगसखेजावासाउयग-ञ्भवक्षतियमण्सआहारगसरीरे, अणिष्ट्विपत्तपमत्तसजय०कम्मभूमगसखेज्जवासाउय-गञ्भवक्षतिय०आहारगसरीरे १ गोयमा । इष्ट्रिपत्तपमत्तसजयसम्महिद्वी०सखेज्जवासा-उयकम्मभूमगगञ्भवक्षतियमणूसआहारगमरीरे नो अणिह्निपत्तपमत्तसज्जयसम्महिद्वी० ससेजवासाउयकम्मभूमगगन्भवकतियमण्सआहारगसरीरे । आहारगसरीरे ण भते! किंसिंठिए पन्नते १ गोयमा ! समचउरसस्ठाणस्ठिए पन्नते । आहारगसरीरस्स ण भंते । केमहालिया सरीरोगाहणा पजता १ गोयमा । जहनेण देस्णा रयणी, उक्कोसेण पिंडपुण्णा रयणी ॥५७५॥ तेयगसरीरे ण भंते ! कहविहे पन्नते <sup>2</sup> गोयमा ! पचिवहे पन्नते । तजहा---एगिंदियतेयगसरीरे जाव पाचिंदियतेयगसरीरे । एगिंदिय-तेयगसरीरे ण भंते ! कडविहे पन्नते १ गोयमा ! पचविहे पन्नते । तजहा-पुढवि-काइय० जाव वणस्सइकाइयएगिंदियतेयगसरीरे । एवं जहा ओरालियसरीरस्स मेओ भणिओ तहा तेयगस्स वि जाव चउरिंदियाण। पाचिंदियतेयगसरीरे ण भते। कड्विहे पन्नते १ गोयमा ! चउन्निहे पन्नते । तजहा-नेरइयतेयगसरीरे जान देवतेयगसरीरे, नेरइयाण दुगओं भेओ भाणियव्वो जहा वेजिव्ययसरीरे । पर्चिदियतिरिक्खजोणियाण मण्साण य जहा ओरालियसरीरे भेओ भणिओ तहा भाणियव्वो । देवाण जहा वेउव्वियसरीरमेओ मणिओ तहा भाणियव्वो जाव सव्वडसिद्धदेवति । तेयगसरीरे णं भते ! किंसिटिए पन्नते ? गोयमा ! णाणासठाणसिटए पन्नते । एगिंदियतेयग-सरीरे ण मंते ! किंसिठिए पन्नते ? गोयमा णाणासठाणसिठए पन्नते । पुढविकाइय-एगिंदियतेयगसरीरे ण भते ! किंसिंठिए पन्नते १ गोयमा ! मस्रचंदसठाणसिंठिए पन्नते, एव ओरालियसठाणाणुसारेण भाणियव्य जाव चटरिंदियाण वि । नेर्ड्याण भंते ! तेयगसरीरे किसिटिए पजते 2 गोयमा । जहा वेउ व्वियसरीरे । पार्चिदियति-रिक्सजोणियाण मणूसाण जहा एएसिं चेव ओरालियत्ति । देवाण भते ! तेयगसरीरे किंसिठिए पन्नते २ गोयमा ! जहा वेउन्वियस्स जाव अणुत्तरोववाइयत्ति ॥ ५७६ ॥ जीवस्म ण भते ! मारणितयसमुग्घाएण समोहयस्य तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नता ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खभवाहहेण, आयामेण जहन्नेण अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्षोसेण लोगताओ लोगते । एगिदियस्म णं भते ! मारणतियसमुग्घाएण समोहयस्य तेयासरीरस्य केमहािठया सरीरोगाहणा पन्नता 2 गोयमा । एव चेव जाव पुढवि० आड० तेउ० वाउ० वणप्फडकाडयस्स । वेइदियस्स

र्षं मते! मारणेतिकसमुकायुर्णं समोहसस्य वेयासरीरस्य क्रेमहासिमा सरीगेपाइणा पण्णा! गोममा! सरीरप्रमाणनेता विश्वतंत्रवाहोत्रं आयामन बहुतेनं मीप-सस्य अस्तिकहरूमार्गं उद्योगित शिर्मकोगान्नो कोगरी । एवं बाव चनसिनस्य ।

208

नेरइमस्य ग भरे ! मार्गितिवसमुखाएगं समोद्रयस्य चनासरीरस्य केनद्राक्ष्मि सरीरोगाइमा प १ गोवमा ! सरीरप्पमाश्रमेता विश्वसम्बाहरेषं जामानेन महन्तर्ग सहरेगं जोयणसहस्यं बहे. उद्दोधेनं जान महसत्तमा पुरुषी विरिनं जान स्यभुरमये समुद्दे, सङ्क जान पडामचे पुनरप्रशिनीओ । पश्चितिनशिक्तिकोभिनस्य ष मंत ! मार्पित्यसमुख्याएवं समोहयस्य तेवासरीरस्य केमहास्थि। एएँसेया-हणा १ पोयमा । जहा वेदविवसरीरस्य । मणुस्सस्य णं मंते । मारणदिवसमुग्या-एकं समोहबस्य संवासरीत्स्य केमहाकिया स्टीरोमाहका 🕯 गोनमा ! समभक्तान्ये घोरंतो । असुरक्तारस्य णे भेते । मार्शिवयसमुख्याएय समोहयस्य तकासरीरस्य फेन्क्राकिया सरीरोगाइका १ गोधमा । सरीर्ज्यमाचनेता विक्कंप्रवाहरूवं आयार्थकं न्द्रनेमं अंगुक्तस अधेने नदभागं उद्योगेनं नहे बाद तबाह पुरशीए दिक्कि नरमंते विरित्न कान सर्वसुरमणसमुद्दस नाहिस्हि नेहर्यते उड्ड बान ईसिप्पम्मारा पुढवी एवं जान विश्वकुमारतेकासरीरस्य । वाजमतरबोहरियसोहम्मीसावना न एवं चव । सर्गेडमारवेवस्स गं अते । आरणदिवसमुख्याएथं समोह्रमस्स देवासरीरस्य केमहास्त्रना सरीरोगाश्चमा १ योदमा । सरीरच्यमाणमेता विक्योनवाहतेनं सानामेनं महत्तेचं अनुस्तरस असंबेजहमार्ग अहत्तेचं कहे बाद सहापानसाणं दोने दिमार्ग तिरियं बान सर्वसुरमणे समुद्दे, उर्व जान स्वतुको कन्यो। एवं बान सहस्सारदेवस्य। भागवदेवस्य व मंते । मारणेतिक्षस्यरणाएणं धमोहयस्य तेयासरीरस्य केमहास्थि छरिरोगाङ्गा <sup>३</sup> कोसमा 1 सरीर्व्यमाणमेता विक्वांमकाकेलं सानामेलं व्यक्तं मगुक्तस अर्चकेमहमार्ग उद्योगेन नाम अहोत्रोद्दययामा तिरिनं बाद सक्तानेतं वर्द बाव अनुको भन्यो एवं जाव भारनदेवस्स । अनुवर्षकस्य एवं नेव नवरं उर्द्र जाव समातं विमानकः । गेविज्ञगवेतस्य व भेते । सार्वतियसमुख्याएणं समोहनस्य देवन चरीरस्य केमहाकिमा सरीरोगाष्ट्रमा १ योगमा ! सरीरप्पमाणमेता निवर्शमा मूले भागामंत्रं महत्रेणं विज्ञाहरसेवीको उक्तरेशं जान न्योक्रोहनगामा विरियं जान सम्बद्धानोते उड्ड बाव सगाई विभाजाई, अनुतारोजनाइयरस वि सूर्व चेत्र। इस्मगसरीरे थं भेते ! कहनित्रे प्रवत्ते ! गोयमा ! पंचनित्रे प्रवते । संग्रहा---एगिवियकम्मगसरीरै बाल पंचित्रकम्मनसरीरे व । एवं जहेन तेजनसरीरस्य मेळो संठायं भोगाहना य मनिना तक्षेत्र निरवरोध माणितस्यं जात जन्मतरोपवादमति ॥ ५७७ ॥

ओरालियसरीरस्स ण भते ! कइदिसिं पोग्गला चिजाति <sup>२</sup> गोयमा ! निव्वाघाएण छिह्सिं, वाघाय पडुच सिय तिदिसिं, सिय चउिह्सिं, सिय पचदिसिं। वेडिव्विय-सरीरस्स ण भंते ! कइदिसिं पोग्गला चिज्जित र गोयमा । णियमा छिदिसिं । एव आहारगसरीरस्स वि, तेयाकम्मगाण जहा ओरालियसरीरस्स । ओरालियसरीरस्स ण भते ! कइदिसिं पोग्गला उवचिर्जात १ गोयमा ! एव चेव जाव कम्मगसरीरस्स एव उविचिजाति, अविचिजाति ॥ ५७८ ॥ जस्स ण भते ! ओरालियसरीर तस्स चेडिव्वयसरीर, जस्स चेडिव्वयसरीर तस्स ओरालियसरीर <sup>2</sup> गोयमा <sup>!</sup> जस्स ओरालियसरीर तस्स वेउव्वियसरीरं सिय अत्थि सिय नित्य, जस्स वेउव्वियमरीर तस्स ओरालियसरीर सिय अत्थि सिय नित्थ । जस्स ण भते ! ओरालियसरीर तस्स आहारगसरीरं, जस्स आहारगसरीरं तस्स ओरालियसरीर <sup>2</sup> गोयमा! जस्स ओरालियसरीर तस्स आहारगसरीर सिय अत्थि सिय नित्य, जस्स पुण आहारग-सरीर तस्स ओरालियसरीर णियमा अत्थि । जस्स ण भते । ओरालियसरीर तस्स तेयगसरीर, जस्स तेयगसरीरं तस्स ओरालियसरीर <sup>१</sup> गोयमा ! जस्स ओरालिय-सरीर तस्स तेयगसरीर णियमा अत्थि, जस्स पुण तेयगसरीरं तस्स ओरालिय-सरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि, एव कम्मगसरीर पि। जस्स ण भते ! वेडिवय-सरीरं तस्स आहारगसरीरं, जस्स आहारगसरीरं तस्स वेजिव्वयसरीरं १ गोयमा ! जस्स वेजिव्वयसरीरं तस्स आहारगसरीर णित्य, जस्स वि आहारगसरीर तस्स वि वैउव्वियसरीर णित्य । तेयाकम्माइं जहा ओरालिएण सम तहेव आहारगसरीरेण वि सम तेयाकम्मगाइ चारेयव्वाणि । जस्स ण भते ! तेयगसरीर तस्स कम्मग-सरीरं, जस्स कम्मगसरीर तस्स तेयगसरीरं <sup>१</sup> गोयमा ! जस्स तेयगसरीर तस्स कम्मगसरीरं णियमा अत्थि, जस्स वि कम्मगसरीर तस्स वि तेयगसरीर णियमा अत्थि ॥ ५७९ ॥ एएसि ण भते ! ओरालियवेडिवयआहारगतेयगकम्मगसरीराण दव्बद्दयाए पएसद्वयाए दव्बद्दपएसद्वयाए कयरे कयरेहितो अप्पा वा ४ १ गोयमा ! सन्वत्थोवा आहारगसरीरा द्व्वहुयाए, वेउव्वियसरीरा द्व्वहुयाए असखेजगुणा, ओरालियसरीरा दव्बद्वयाए असखेजागुणा, तेयाकम्मगमरीरा दोवि तुल्ला दव्बद्वयाए अणतगुणा । पएसद्वयाए-सन्बत्थोवा आहारगसरीरा पएसद्वयाए, वेउन्वियसरीरा पएसद्वयाए असखेजगुणा, ओरालियसरीरा पएसद्वयाए असखेजगुणा, तेयगसरीरा पएसद्वयाए अणंतगुणा, कम्मगसरीरा पएसद्वयाए अणंतगुणा । दव्बद्वपएसद्वयाए-सन्वत्योवा आहारगसरीरा दन्वद्वयाए, वेउन्वियसरीरा दन्वद्वयाए असखेज्जगुणा, ओरालियसरीरा द्व्वद्वयाए असखेज्जगुणा, ओरालियसरीरेहिंतो द्व्वद्वयाएहिंतो आहा-

204 सुचाराने [ प्रज्यकासूत्रं रगमधेरा पर्यद्ववाए अर्थतगुणा नेतन्त्रियसरीरा परसङ्ख्याए अर्थयञ्चाना ओरा-किमसरीरा पएमद्भवाए असंखेळगुणा तेगाकम्मा होनि तहा बम्बद्धवाए अर्थतपुणा त्तेबगमरीरा पएसद्वयाएं अन्तर्भुधाः कम्मगसरीरा पएसद्वयाएं अनेतर्भुषा ॥५८ ॥ एएसि श भीत । ओराजिमनेत्रन्तिमभाद्दारगतेयगञ्जनगरारीराणं जद्दन्तियाए भोमा-इनाए उड़ोसियाए आंगाइनाए जहन्त्रकांसिजाए खोगाइकाए करो करोहिंगे अप्या वा ४ ! योगमा ! सम्बरचीया शोरावित्रससीरस्स वहविजया श्रीगाहणा चैत्रा-कम्मगार्ण वोज्त वि तुक्रा बह्म्भिया बोगाह्या विसेसाहिता वेउन्प्रियसपीरस्य वह िगया भोगाइणा अधेबेजगुणा आहारगसरीरस्स बहन्जिया भोगाइणा अस्तिज्ञ-गुना । उद्दोतियाए ओगाइजाए-सन्दर्शना माहारगसरीरस्य इद्दोतिया ओगाइजा भौरासियमरीरस्य उद्दोखिना भोगाह्या संदोक्रगुना नेउव्यक्तमधैरस्य उद्दोखिना आगाइमा संदेशपुला । समाचन्यगार्थं बाल्ड वि तुत्रा उक्रोसिया भागाइमा असेतेजन गुना । जरुन्युरोसिमाए ओगाइचाए-मध्वत्थोदा ओएम्ब्युरीरस्य बङ्ग्यिमा भागाहणा चयाक्रमार्थं दोन्ह विनुद्धा बहण्जया क्षेत्रगहणा क्षित्रमहिया चेउन्हिय

सरीररम बहुव्जिया ओगाइमा असैनेजनुषा आहारयसरीरहम बहुव्यया जीमान इणा असंदेजगुजा आहारगसरीरस्य जहन्त्रियाहितो क्षोगाहपादिता तस्य वेर उडालिया ओगाइका बिमेसाहिका औराजिकारीरसम उडीखिया ओपाइका संसंबन गुणा बडम्बियमरौरस्य उद्योगिया श्रोगाद्या संदेशगुणा संयारम्मणार्च सेन्द्र वि दुवा उदानिका ओगाइना असंनक्ष्युवा ॥ ५८९ ॥ वदायवाय भगपईय पगवीसहमें भागाहणासंटाणपर्य समर्त 🛊 कर ग्री भेत । रिश्वाओ एकताओ है गायमा है येव रिश्वाओ परवताओं है तंत्रदा-राद्या ९ अधिगर्ययमा वाजानिया ३ वारियावविया ७ वामान्याव-रिरिया ५ । बाइया थे मैत ! रिरिया वर्डबहा पत्रता है गायमा ! हिस्स पत्रता ! नंबदा-भाउरपराण्या व दुष्पउत्तरादया व । अदिगरनिया में मंत ! रिस्वा बर्गादश पत्रमा र गोयमा । बुभिद्रा पत्रमा । संबदा-संबोदबादिगरणिया व निगम मारियरियमा स । पाश्चानिया ण शैत ! हिरिया वर्णबद्धा पश्चना है गायमा ! तिनिद्धा पमला । तेजदा-जण अप्यजो वा परस्य वा ततुभयरस्य वा अनुमें सर्च ग्रेरपारेह सत्ते पाआंत्रया निर्माया । पारियात्रतिया वं शतः । निर्माया वर्द्धारम् पद्मता । निविद्वा पत्तमा + नैजदा-जन आपमा वा परस्य वा तपुसवस्य वा अस्मार्व वेदगै उद्दीरेड मेले पारियात्रिया निर्दिया : पाणपूर्वायोक्तिया में अंतर्ध वर्जाया प्रमान

गोपमा - रिभिद्दा पक्रण । रोजदा-जर्म अप्यार्थ वा परे था लहुमने वा जैर्पनाओं

ववरोवेइ, सेत्त पाणाइवायकिरिया ॥ ५८२ ॥ जीवा ण भंते । कि सकिरिया अिकरिया <sup>२</sup> गोयमा ! जीवा सिकरिया वि अकिरिया वि । से केण्ड्रेण मंते ! एवं बुचड-'जीवा सिकरिया वि अकिरिया वि'<sup>2</sup> गोयमा ! जीवा दुविहा पन्नत्ता । तजहा~ससारस-मावण्णगा य अससारसमावण्णगा य । तत्थ ण जे ते अससारसमावण्णगा ते ण सिद्धा, सिद्धा ण अकिरिया । तत्थ ण जे ते ससारसमावण्णगा ते दुविहा पन्नता । तजहा—सेलेसिपडिवण्णगा य असेलेसिपडिवण्णगा य । तत्य णं जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते ण अकिरिया, तत्य ण जे ते असेलेसिपडिवण्णमा ते ण सकिरिया, से तेणहेण गोयमा ! एव बुच्चर-'जीवा सकिरिया वि अकिरिया वि' ॥ ५८३ ॥ अत्थि ण भंते ! जीवाण पाणाइवाएण किरिया कज्जइ 2 हता गोयमा! अत्थि । किम्ह ण भते ! जीवाण पाणा-इवाएणं किरिया कजाइ १ गोयमा । छस्र जीवनिकाएस । अत्थि ण भते ! नेरइयाण पाणाडवाएण किरिया कजड़ १ गोयमा । एव चेव । एव निरतर जाव वेमाणियाण । अिंद्य ण भते ! जीवाण मुसावाएणं किरिया कज्जइ १ हता ! अित्य । किन्ह ण भते ! जीवाणं मुसावाएणं किरिया कजड़ १ गोयमा ! सन्वदन्वेसु, एव निरतरं नेरडयाण जाव वेमाणियाण । अस्थि ण भते ! जीवाण अदिबादाणेणं किरिया कजड़ <sup>१</sup> हता ! अत्थि । कर्म्हि ण भते ! जीवाणं अदिशादाणेण किरिया कजड़ १ गोयमा । गहणधारणिजेसु दब्वेसु, एव नेरइयाण निरंतरं जाव वेमाणियाण । अत्थि ण भते । जीवाण मेहुणेण किरिया कजाइ १ हता। अत्थि । कर्मिह ण भते ! जीनाण मेहुणेण किरिया कज्जइ 2 गोयमा! रूवेस वा रुवसहगएस वा द्वेसु, एव नेरइयाण निरतर जाव वेमाणियाण । अत्थि णं भते ! जीवाण परिग्गहेण किरिया कजइ हता! अत्थि। किम्ह ण भते! जीवाण परिग्गहेणं किरिया कजइ ह गोयमा ! सन्वद्व्वेसु एवं नेरइयाण जाव वेमाणियाण । एव कोहेण माणेण मायाए लोमेण पेज्जेण दोसेण कलहेण अन्भक्ताणेण पेसुनेण परपरिवाएण अरइरईए मायामोसेण मिच्छादसणसहेण । सन्वेसु जीवनेरइयमेएण भाणियन्वा निरतर जान नेमाणियाण ति, एन अद्वारस एए दङगा १८॥ ५८४॥ जीने ण भते ! पाणाइवाएण कइ कम्मपगढीओ वधइ 2 गोयमा । सत्तविहवधए वा अट्टविहवधए वा । एव नेरइए जाव निरंतर वेमाणिए । जीवा ण भते । पाणाडवाएण कड कम्मपगढीओ वधति २ गोयमा । सत्तविहवधगा वि अद्वविहवधगा वि । नेरङ्या ण मते ! पाणाङ्वाएण कड् कम्मपगडीओ वधित ? गोयमा ! मञ्चे वि ताव होजा सत्ताविह्वधगा, अहवा मत्ताविह्वधगा य अट्टविह्वधण् य, अहवा सत्तिविह्यथगा य अद्वविह्वघगा य । एव असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा पुढवि-

74

मानावरिक्य करन वेजसामा कारिस्या है गोसमा ! सिक निकिरेगा सिन वर्तन क्रिरेवा शिम पेंचकिरिया वि एवं नेरहमा निरंतरं बाव बेमामिवा। एवं वरिस्या-बर्मिज बबनिज मोहमिज जाउमें नार्न गोर्च अंतराह्य च अट्टबिइस्स्मास्मीले माजिक्याओं एयतपाइधिया सोडम दहना अवन्ति त ५,८६ त जीव में मेर्दे ! बीबाओ क्इफिरिए हे गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय वर्जकरिए, सिन पवकिरिए शिय महिरिए । जीव में मंत्र ! नेरहवाओं बहुडिरिए ! गोयमा ! शिव निर्मिरिए सिन पर्वकिरिए, सिन अफिरिए, एवं काव वर्षियक्रमाराओं । पुत्रमेकानाने आउद्यान्याको एउद्यान्याको बाउद्यान्यकप्पन्तराह्यवेद्वतिवतुर्वसम्बद्धिमान्द्रविभागानिका दिनदिरिक्य मेनियम्बरमाओ बदा जीवाओ वाजर्मनर मोइसियवमानिवामो गर्ह मरक्ष्माञ्चे । जीने न मेत्र ! जीनहरता क्युक्रिए हैं सीवमा ! सिम निरिप्तिए, विर चडकिरिए, सिव पनकिरिए, सिव अकिरिए । शांचे नं शंते ! सेट्टएहेंतो स्वर्करिए ! गोयमा । सिन निकारिए, सिव नातनिरिए, सिए शक्तिरिए, एवं जहेन प्रामी रंग्ने राह्य एसी बिद्दमी सामित्रम्थी । जीवा में मेरा ! जीवामी क्षतिस्मा ! गीयमा ! स्व तिकिरिया कि सिम कडकिरिया कि सिम पैककिरिया कि सिम सकिरिया कि। जीवा के र्मते । नेरद्रवाची कानित्या । गोवमा । जहेन आह्यत्र्वको तहेन भावित्रको वान वेसामिवति । बीदा वं अंत् ! वीचेहितो पद्रतिस्या ? गोसमा ! विक्रिया में चडिकरिया के पंचकिरिया कि अफिरिया नि । जीवा वर्ष संत । मेरहर्ण्डि क्ट्रिटिया रे गोनमा । तिकिरिया वि. चउकैरिया वि. शक्तिया वि.। अग्रस्कुमारे हितो वि एव चेत्र जाव वेमानिएहितो कोराजियमधैरेहितो क्या जीवेहितो । स<sup>रप्</sup> र्थ भेते । जीवाओं क्यारिरिए ! गांवमा ! सिथ शिक्तिए, शिय चडरिरिए, शिर पंचित्ररिष् । नेरक्ष् च भेते ! नेरह्याको कालिरिष् ! बोयमा ! सिव निरिप्तिष्

तिय चउकिरिए । एर्न जान वैमाणिएवितो नवरं मेरह्यस्स नेरह्एवितो वेवेहितो न पंचमा निरिना नरिन : नेरान्या जे भेरो ! श्रीवाओं कालिशन है ग्रीममा ! छिम निर्मि रिया शिव करामिरिया शिय पंचाकिरिया पूर्व जान वेमानियाओ शवर बरहराओ वेबाओं य पंचमा किरिया गरिय। नेएसा व मंशा जीवर्दिनो वहतिरेवा है

गोयमा! तिकिरिया वि, चलकिरिया वि, पचिकिरिया वि। नेरइया ण मते! नेरडएहिंतो कडकिरिया 2 गोयमा ! तिकिरिया वि चडकिरिया वि । एव जाव वेमा-णिएहिंतो, नवरं ओरालियसरीरेहिंतो जहा जीवेहिंतो । असुरकुमारे णं भते ! जीवाओ कड़िकारेए <sup>2</sup> गोयमा ! जहेव नेरडए चत्तारि दङगा तहेव असुरकुमारे वि चत्तारि दडगा भाणियव्वा, एव च उवउजिन्छण भावेयव्वं ति । जीवे मणूसे य अकिरिए वुच्चइ, सेसा अकिरिया न वुचिति । सन्वजीवा ओरालियसरीरेहिंतो पंच-किरिया । नेरइयटेचेहिंतो पचिकरिया ण बुचित । एव एकेकजीवपए चतारि चतारि दङगा भाणियन्वा एव एयं दङगसय सन्वे वि य जीवाइया दङगा ॥ ५८७ ॥ कइ णं भते! किरियाओ पण्णताओ <sup>2</sup> गोयमा! पंच किरियाओ पण्णताओ । तंजहा---काइया जाव पाणाडवायकिरिया। नेरइयाण भते! कइ किरियाओ पण्णत्ताओ 2 गोयमा ! पच किरियाओ पण्णत्ताओ । तजहा-काइया जाव पाणाइवायकिरिया, एव जाव वेमाणियाण । जस्स ण भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स अहिगर-णिया किरिया कजइ, जस्स अहिगरणिया किरिया कजइ तस्स काइया किरिया कज्ज $\xi^2$  गोयमा । जस्स णं जीवस्स काइया किरिया कज्ज $\xi$  तस्स आहेगरणिया किरिया नियमा कज्जइ, जस्स अहिगरणिया किरिया कज्जइ तस्स वि काइया किरिया नियमा कज्जइ। जस्स ण भते! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स पाओसिया किरिया कजाइ, जस्म पाओसिया किरिया कजाइ तस्स काइया किरिया कजाइ? गोयमा! एव चेव । जस्स ण भते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स पारियावणिया किरिया कजह, जस्स पारियावणिया किरिया कजह तस्स काइया किरिया कजह <sup>8</sup> गोयमा ! जस्स ण जीवस्स काइया किरिया कजाइ तस्स पारियावणिया० सिय कजाइ, सिय नो कजह, जस्स पुण पारियावणिया किरिया कजइ तस्स काइया० नियमा कजइ, एव पाणाइवायकिरिया वि । एवं आइल्लाओ परोप्परं नियमा तिण्णि कजिति । जस्स आइहाओ तिण्णि कजाति तस्स उविरिहाओ दोषि सिय कजाति, सिय नो कजाति, जस्य उवरिहाओं दोण्णि कजाति तस्स आइहाओं नियमा तिण्णि कजाति । जस्स ण मते ! जीवस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ तस्स पाणाइवायकिरिया कज्जइ, जस्स पाणाइवायिकरिया कज्जइ तस्स पारियाविषया किरिया कज्जइ १ गोयमा ! जस्स ण जीवस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ तस्स पाणाइवायिकरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ, जस्स पुण पाणाइवायकिरिया कज्जइ तस्स पारियावणिया किरिया नियमा कज्जइ। जस्स ण भते! नेरइयस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स अहिगरणिया किरिया कजड़ र गोयमा । जहेव जीवस्स तहेव नेरइयस्स वि, एव निरतरं जाव ३१ स्रप्ता०

बेसानियस्य । जे पएसे ने शंदे । जीवस्स कक्ष्मा किरिया दे पएसे वं बह्विगरनिना क्रिरेसा एवं तहेब जाब ब्रमाणियरस । एवं एए जरस वं समय वं हेस वं पर्ध वं चतारि रहेगा होति ॥ ५८५ ॥ वह व भेते । सामोजियाओ दिशेयाची पण-त्ताओं ! गोयमा ! पंच आओजियाओं किरिनाओं फलताको । शबहा-महना जल पाणक्रवायिकिरेका एव नेरह्यार्थ बाव वैमानियार्थ । बत्स व मेरी । बीवस्य ष्प्रद्रमा भाग्नेजिया फेरिया शरिष तस्त शहिमरनिया मान्नेजिया किरिया मस्पि जरस अद्वियरविया आक्रोजिया किरिया अस्य तस्य श्राह्या आक्रोजिया किरिया अस्य ! एवं एएनं श्रामिकानेयं ते चव चतारि वंबगा मामिकामा अस्य <sup>व</sup> समर्ग में देशे में बाव देशावियाये ॥ ५९ ॥ जीव में शंते ! में समर्थ गाइनाए महिगरिक्सए पाओसियाए जिसियाए पुद्रे ठ समय पारियादिक्सियाए पुट्रे, पानार-नावकिरियाए पुढे र गोयमा र बत्येगहए और एगइयाओ जीनाओ के समर्थ नार-बाद ब्रोडियरविवाद पाओसियाद किरियाद एडे वे समर्थ पारियावनिवाद किरिवाद प्रदे, पाचाहबायकिरिवाध प्रदे १ अस्मिगहए वीचे फाइयाओ जीवाओ वे समर्व नार-माप महिगरमियाए पास्त्रेशियाए किरियाए पुढे वे शसर्थ पारियामसियाए किरियाए पुद्वे, पाजाइमामकिरियाए अपुद्वे २ करवेगहए जीवे एगड्याओ जीवाओ व समर्व कार्बाए अक्षेगरमिनाए पामोसियाए प्रदे ते समने पारियानकिनाए केरिवाए म्पुद्धे, पामाप्त्वाचकिरियाए अपुद्धे ३ ॥ ५९१ ॥ बद्ध व र्यते ! विशेवाणी

तंजहा-आरभिया जाव मिच्छादसणवत्तिया। एव जाव वेमाणियाण। जस्स ण भते ! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जइ तस्स परिग्गहिया॰ कज्जइ जस्स परिग्गहिया किरिया कजइ तस्स आरभिया किरिया कजइ <sup>2</sup> गोयमा ! जस्स णं जीवस्स आरिभया किरिया कजाइ तस्स परिगाहिया सिय कजाइ, सिय नो कजाइ, जस्स पुण परिग्गहिया किरिया कज्जइ तस्स आरिभया किरिया णियमा कज्जइ । जस्स ण भते ! जीवस्स आरभिया किरिया कज्जइ तस्स मायावत्तिया किरिया कज्जइ पुच्छा। गोयमा। जस्स ण जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जइ तस्स मायावत्तिया किरिया नियमा कजइ, जस्स पुण मायावत्तिया किरिया कजइ तस्स आरंभिया किरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जड । जस्स ण भते ! जीवस्स आरभिया किरिया कजड तस्स अपचक्खाणकिरिया पुच्छा । गोयमा ! जस्स णं जीवस्स आरिभया किरिया कजाइ तस्स अपचवन्खाणिकरिया सिय कजाइ, सिय नो कजाइ, जस्स पुण अपचक्खाणिकरिया कज्जइ तस्स आरिभया किरिया णियमा कज्जइ । एवं मिच्छा-दसणवत्तियाए वि सम । एवं परिग्गहिया वि तिर्हि उवरिल्लार्हि समं सचारेयव्वा । जस्स माथावत्तिया किरिया कजइ तस्स उवरिहाओ दो वि सिय कजति, सिय नो कजति, जस्स उवरिल्लाओ दो कजति तस्स मायावत्तिया० णियमा कजह । जस्स अपचक्खाणकिरिया कज्जइ तस्स मिच्छादसणवत्तिया किरिया सिय कज्जइ, सिय नो कजइ, जस्स पुण मिच्छादसणवत्तिया किरिया० तस्स अपचक्काणकिरिया णियमा कजाइ । नेरइयस्स आइल्लियाओ चत्तारि परोप्परं नियमा कजान्ति, जस्स एयाओ चत्तारि कजाति तस्स मिच्छादसणवित्तया किरिया भइजाइ, जस्स पुण मिच्छादसणवित्तया किरिया कजाइ तस्स एयाओ चत्तारि नियमा कजाति, एव जाव थणियकुमारस्स । पुढवीकाइयस्स जाव चर्डारेदियस्स पंच वि परोप्परं नियमा कर्जाति । पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स आङ्ख्रियाओ तिण्णि वि परोप्पर नियमा कजाति, जस्स एयाओ कजाति तस्स उवरिक्रिया दोण्णि भइजाति, जस्स उनिरिह्नाओ दोण्णि कजाति तस्स एयाओ तिण्णि वि णियमा कजाति । जस्स अपचक्वाणिकरिया॰ तस्स मिच्छादसणवत्तिया॰ सिय कजाइ, सिय नो कजाइ, जस्स पुण मिच्छादसणवत्तिया किरिया कजाइ तस्स अपचक्खाणकिरिया नियमा कजाइ, मणूसस्स जहा जीवस्स, वाणमतरजोइसियवेमाणियस्स जहा नेरइयस्स । ज सम-यण्ण भते ! जीवस्स आरंभिया किरिया कजाइ त समय परिग्गहिया किरिया कज्जइ र एव एए जस्स ज समय ज देस ज पएसेण य चत्तारि दहगा णेयव्वा, जहा नेरइयाणं तहा सन्वदेवाण नेयन्व जाव वेमाणियाण ॥ ५९३ ॥ अत्थि

जीवार्च पाणाइवासवर्मणे चळाइ हं गोममा ! छम्र जीवनिताएस । अस्य र्च भीते ! नेरहवार्ग पालाइकामकेरसके कब्बई गोममा ! मो इबक्रे समक्षे । एवं जाव वेमानियाणं चवरं मण्याचं जहा जीवाणं। एवं शुसावाएणं वाव मायामोधेणं भीवस्स व मन्सस्य व सेसाणं ना इनक्क समद्वे । नवरं अविकाशांचे गङ्गवार विज्ञेस बब्बेस मेहने रूपेस वा काससग्रम् वा वर्गेस सेसार्थ सन्त्रेस प्रक्रेस । व्यक्ति में मेरे ! जीवार्ग विवकायसगरस्वेदसमें केन्द्र ! क्या ! अस्ति । शास क अंद ! जीवार्क मिप्तार्वसगराक्षरेरमचे कवाई गावमा ! सम्बद्ध्येस पर्र नेरहमाणं जाव केमानियाचे जबर एर्गिवियनिगर्केवियाज जो इसदे समेडे ।। ५५४ ॥ पाणाइबानविरए के शेरो । श्रीवे क्य कट्यप्याधीको कंबर । गोनमा । सत्तमिहनवए का अद्वविहर्वकए वा छन्जिह्येकए का एतमिहर्वकए वा अनेक्ए का । एवं सप्ते कि मानिवस्ते । पाणाहकावनित्या में मेरे । बीवा क्रद्र कम्मपन-बीओं कर्पति है गोयमा । सन्ये वि राज होजा चत्तविहर्जकगा य एमनिहर्जकमा अहमा सत्तिवृत्तीकता व एतनिवृत्तीवता स अञ्चलक्ष्तीवते व २ सहका सत्तिक्षेत्रमा य एमनिक्षभमा व अञ्चलिक्षेत्रमा व ३ **अव्या** सत्तिक्षेत्रमा म एयमिहर्गभगा व छन्निहरूको व ४ महचा सत्तमिहरूभगा व एगसिहर्गभगा में छिमिहर्गेषया व ५ अहवा सत्तिहर्गेषणा व एगनिहर्गेषणा व अर्थेवर् व ६ क्ष्मा सत्तिक्रवंदगा व एनविद्ववंद्या व कर्वद्या य ७ कद्वा सत्तिद्ववंदगी य प्रामिष्टमक्या य अञ्जनिष्टबंक्यो स श्रामिष्टवंक्य य १ क्षद्वा शतिष्टवंक्या य एगमिहर्वभगा स अद्भविहर्वभग स क्षमिहर्वभगा स २ सहका सत्तनिहर्वभगा व एगनिहर्यक्या व अटुनिहर्गभगा य कव्यिहरूमए य ३ अहवा सत्तिहर्यवर्या य एयनिहर्णमा। य अञ्चलिहर्णमा। म अस्मिहर्णमा य ४ अहवा सातिहर्णमा य प्रानिहर्णकराः स काद्वनिहर्णकप् न जनभए न १ आह्ना सत्तनिहर्णनया व एगविद्वर्षभगा व अदुनिद्वर्षकप् व अर्वक्या य २ अद्वा सत्तविद्वर्षकमा व एगलिहण्याम स अद्वतिहर्यभगा स अर्थपए व १ आह्वा सत्तविहर्यभमा व एगलिइकंभगा य अञ्चलिइकंभगा य अवभगा य ४ । अहवा सत्तविइकंभगा य एगमिइर्यक्षमा स छन्किइर्यक्ये न अर्जनपु स १ अहवा सत्तमिइर्वेकमा य एगनिष्ट्रमेशना न अभिष्टमभय न अर्थनयां न २ अर्था सत्तिष्ट्रमेशना य प्राविहर्वपना स सम्बद्धिमना स श्रवेतपुत १ अहवा सत्तविहर्वपमा स एगमिहनेपमा स क्रम्बिहननगा य अनेनगा व ४ । भहना सत्तविहनेपगा न एस-

र्ण मेर्दे जिल्ला पाणाइकायनस्मणे कम्बद्धः ईता । अस्ति । क्ष्मिद्ध ने मेदे ।

विह्वंधगा य अट्टविह्वधगे य छिव्वह्वंधए य अवधए य १, अहवा सत्तविह-चंधगा य एगविह्वधगा य अट्ठविह्वधए य छिन्वहवधए य अवंधगा य २, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्ठविहवन्धए य छिव्वहवन्धगा य अवन्धए य ३, अहवा मत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धए य छिन्वहबन्धगा य अवन्धगा य ४, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अद्वविहवन्थगा य छिव्वहवन्धगे य अवन्धए य ५, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविह्वन्धगा य अट्टविह्वन्धगा य छिन्वह्वन्धगे य अवन्धगा य ६, अहवा सत्तविह्वन्थगा य एगविह्वन्थगा य अट्ठविह्वन्थगा य छिव्वह्वन्थगा य अबन्धए य ७, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य छव्विह-वन्थगा य अवन्थगा य ८, एवं एए अह भगा, सन्वे वि मिलिया सत्तावीस भगा भवति । एव मणूसाण वि एए चेव सत्तावीस भगा भाणियव्वा, एव मुसावायविर-यस्स जाव मायामोसविर्यस्स जीवस्स य मण्सस्स य । मिच्छादसणसञ्जविरए णं मते ! जीवे कड़ कम्मपगढीओ वन्धइ <sup>२</sup> गोयमा ! सत्तविहवन्यए वा अडविहवन्धए वा छिन्वहवन्थए वा एगविहवन्थए वा अवन्थए वा । मिच्छादसणसह्रविरए ण भते ! नेरइए कइ कम्मपगडीओ वन्धइ १ गोयमा ! सत्तविहवन्धए वा अट्टविह-वन्थए वा जाव पचिंदियतिरिक्खजोणिए । मणूसे जहा जीवे । वाणमंतरजोइसिय-वैमाणिए जहा नेरइए । मिच्छादसणसल्लविरया णं मते ! जीवा कह कम्मपगढीओ बन्वन्ति १ गोयमा ! ते चेव सत्तावीस भगा भाणियव्वा । मिच्छादसणसहन्विरया ण भते ! नेरइया कइ कम्मपगढीओ बन्धन्ति है गोयमा ! सन्वे वि ताव होजा सत्तविह्वन्धगा, अह्वा सत्तविह्वन्धगा य अट्ठविह्वन्धगे य, अह्वा सत्तविह-वन्धगा य अद्वविहवन्धगा य एव जाव वेमाणिया, णवरं मण्साण जहा जीवाण ॥ ५९५ ॥ पाणाइवायविरयस्स ण भते ! जीवस्स कि आरेभिया किरिया कजाइ जाव मिच्छादसणवित्तया किरिया कजाइ १ गोयमा ! पाणाइवायविरयस्स ण जीवस्स आरभिया किरिया सिय कजह, सिय नो कजड़ । पाणाइवायविरयस्स ण भते ! जीवस्स परिग्गहिया किरिया कजइ 2 गोयमा ! णो इणहे समहे । पाणाइवायवि-रयस्स णं भते ! जीवस्स मायावत्तिया किरिया कजइ १ गोयमा ! सिय कजइ, सिय नो कजइ । पाणाइवायविरयस्स ण मते! जीवस्स अपचक्खाणवित्तया किरिया कज्जइ 2 गोयमा ! णो इणहे समहे । मिच्छादसणवत्तियाए पुच्छा । गोयमा ! णो इणहे समद्धे । एव पाणाइवायविरयस्स मणूसस्स वि, एव जाव माया-मोयविरयस्स जीवस्स मणूसस्स य । मिच्छादसणसह्वविरयस्स ण भते ! जीवस्स किं सारिमना किरिया कव्यः बाल भिन्छार्यसण्यतिया किरिया कव्यः । गोनमा । निष्छार्यसणस्त्रभिरयस्य जीवस्य ने बारिमना किरिया सिव कव्यः, सिव गो कव्यः, एवं बात संस्कृत्याजकिरिया । भिर्चार्यसम्बन्धिया किरिया न कव्यः । भिर्मार्य प्रण्यास्त्रियसस्य च भेते । निरम्भस्य कि बारिमया किरिया कव्यः बात निष्पार्यः स्ववत्तिया किरिया कव्यः । गोममा । बारिमया किरिया कव्यः वात स्ववस्थान चारिमया किरिया कव्यः । भिर्चारस्य किरिया नो क्याः । च्यं जाल क्ष्मिक्यः

सुत्तागमे

**्रिक्सक्या**सूर्य

128

सदामानो व्यक्तियों करका ॥ नह णं मारो । करमाण्यकियों एकणाहानी । योकणा । सङ्ग करमाणादीमों एकणाहानी। एंकंबा — साणावरिक्रियं । एएकपायरिक्रियं ९ कार्यव ५ तार्थ ६ गोर्थ ५ कंदर रहन ४ । वेरपूर्वा कंदरी । वर्ष १ मार्श्विक्ष्य ४ कार्यव ५ तार्थ ६ गोर्थ ५ कंदर रहन ४ । वेरपूर्वा कंदरी । वर्ष महर्ष मंदी । वर्षि काङ्क करमाणादीको वरण्या १ गोर्थमा । वालावरिक्यस्य करमार्थ वरुप्यां ग्रीस्वावात्रिक्ष्यं कर्मा शिवस्थ्या, वंद्यालावरिक्यस्य करमार्थः वरुप्यं प्रत्यमोदिक्षां कर्मा शिवस्थ्यः, वंद्यालोदिक्यस्य करमार्था वरुप्यं विश्व-कर्मा मित्रं । वरुप्यं गोर्थमा । पूर्वं क्ष्म वर्षेणो अञ्च करमार्थामोदिक्यां वरुप्यं वर्षे क्षेत्र स्वति । वरुप्यं गोर्थ । वर्षेण क्षमार्था । पूर्वं कर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे कर्मा क्षेत्र स्वति । वरुप्यं गोर्थ । वर्षेण करमार्थामोदिक्षं वरुप्यं गोर्थमा । पूर्वं कर्षे पूर्वं मार्वे सार्थिमा । ५५५६ ॥ वर्षेण करमार्थामोदिक्षं कर्मा वर्षेण वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षेण वर्षेण वर्षेण वर्षेण वर्षेण करमार्थामोदिक्षं वर्षेण वर्षेण वर्षेण वर्षेण वर्षेण वर्षेण कर्मे वर्षेण एव नेरइए जाव वेमाणिए। जीवा ण भते ! णाणावरणिज कम्म कइहिं ठाणेहिं वन्यन्ति २ गोयमा ! दोहिं ठाणेहिं एव चेव, एवं नेरहया जाव वेमाणिया । एव दंसणावरणिज जाव अतराइय, एवं एए एगत्तपोहत्तिया सोलस दङगा ॥ ६००॥ जीवे ण भते । णाणावरणिज कम्मं वेएइ 2 गोयमा । अत्येगइए वेएइ, अत्येगइए नो वेएइ। नेरइए ण भते ! णाणावरणिजं कम्मं वेएइ 2 गोयमा ! नियमा वेएइ, एव जाव वेमाणिए, णचर मण्से जहा जीवे। जीवा ण भंते! णाणावरणिज कम्मं वैदेति <sup>२</sup> गोयमा । एवं चेव, एव जाव वेमाणिया । एव जहा णाणावरणिज तहा दसणावरणिज मोहणिज अतराइय च, वेयणिजाउनामगोयाई एव चेव, नवरं मणूसे वि नियमा वेएइ, एव एए एगत्तपोहत्तिया सोलस दङगा ॥ ६०१ ॥ णाणा-वरणिजस्म ण भते ! कम्मस्स जीवेणं वद्धस्स पुट्टस्स वद्धफासपुट्टस्स सचियस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं क्यस्म जीवेण निव्वत्तियस्स जीवेणं परिणामियस्स सय वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिजमाणस्स गइ पप्प ठिइं पप्प भवं पप्प पोग्गल-परिणाम पप्प कड्विहे अणुभावे पन्नते १ गोयमा ! णाणावरणिज्ञस्स ण कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पोग्गलपरिणाम पप्प दसविहे अणुभावे पन्नते । तंजहा—सोया-वरणे, सोयविण्णाणावरणे, णेत्तावरणे, णेत्तविण्णाणावरणे, घाणावरणे, घाणविण्णाणा-वरणे, रसावरणे, रसविण्णाणावरणे, फासावरणे, फासविण्णाणावरणे, ज वेएइ पोग्गल वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाण परिणामं तेसिं वा उद्एणं जाणियव्य ण जाणइ, जाणिउकामे वि ण जाणइ, जाणिता वि ण जाणइ, उच्छन्नणाणी यावि भवइ णाणावरणिजस्स कम्मस्स उदएण, एस ण गोयमा ! णाणावरणिजे कम्मे, एस ण गोयमा ! णाणावरणिजस्स कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पोगगलपरिणाम पप्प दसविद्दे अणुमावे पन्नते ॥ ६०२ ॥ दरिसणावरणिजस्स ण भते ! कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प कड्विहे अणुभावे पन्नते ? गोयमा ! दरिसणावरणिज्ञस्स ण कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पोग्गलपरिणाम पप्प णविविहे अणुभावे पन्नते । तजहा—णिद्दा, णिद्दाणिद्दा, पयला, पयलापयला, थीणद्दी, चक्खुदंसणावरणे, अचक्खुदसणावरणे, ओहिदसणावरणे, केवलदसणावरणे, ज वेएइ पोग्गल वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणाम वा वीससा वा पोग्गलाण परिणामं तेसिं वा उदएण पासियव्व ण पासइ, पासिउकामे वि ण पासइ, पासिता वि ण पासइ, उच्छन्नदसणी यावि भवइ दरिसणावरणिज्ञस्म कम्मस्स उदएण, एस ण गोयमा ! दरिसणावरणिजे कम्मे, एस ण गोयमा ! दरिसणावरणिजस्स कम्मस्स

आरंभिना किरिया कन्मद् जान भिरकाश्वालनशिभा किरिया कन्मद् थे सेना भिरकाश्वालयत्वरयस्य नीवस्य मं आरंभिया किरिया स्थि कन्नद् स्ति नो नन्नद् । भिन्नदे एवं जान भारवस्त्राणकिरिया । भिरकाश्वालशिया किरिया ना कन्मद् । भिन्नदे स्थानत्रविद्यस्य भेती । भैरवस्य कि आरंभिया किरिया कन्मद् जान भिरकाश्वालया भूतविद्या किरिया कन्मद् गैयोच्या । आरंभिया किरिया कन्मद् जान मानवर्य-प्रविद्या निकन्मद् भिरकाश्वरणयशिया किरिया गो कन्मद् । एवं जान नम्बस्य-मारस्य । भिरकाश्वरणयशिया किरिया भो कन्मद् । एवं जान नम्बस्य-इच्छा । भोयम्या आरंभिया किरिया कन्मद् जान आयानशिया किरिया नम्मद् भूतकस्यालक्ष्यालक्ष्यस्य स्थाल कन्मद् अपना कन्मद् जान स्थानशिया किरिया नम्मद्

कमार् । मण्यस्य जहा जीवस्य । बाजमंतरकोद्दश्चिववेमानियायं जहा बेरह्रवस्य

सुचागमे

[ पञ्चनमञ्जूष

202

प्रभाव प्रवास्ति में भेरं ! आरंगियाण बाब शियकाव्यवस्तिताव व वन्य म्मण्या विद्याल क्षा हा १ वे पोयमा ! सम्बन्धां वाले शिवकाव्यवस्तिताव शिवां के मण्या वाला विद्याल स्ति हा त्रिकार शिवां के मण्या वाला के स्ति हा त्रिकार शिवां के स्ति वाला हा त्रिकार हा त्रिकार के सिराज्ये शिवका वाला के सिराज्ये सिराज्

र माहिक्त ४ कावर्व ५ सार्थ ६ गोर्च ७ अंतराद्व ८। नेर्ड्याचं सर्वे। वेर वास्त्र सर्वे। वेर १ ० ६८० कर्म म सर्व। मीर्च चंद्र वस्त्र माहिक्त १ ० ६८० कर्म म सर्व। मीर्च चंद्र वस्त्रण्याकी बच्चर ! गोर्चमा ! नागावर्तमञ्जल क्रमल उरएक इरिस्तावर्तिक क्रम सिक्चक्द्र, वंद्रमण्याकित क्रमल कर्म स्थान्य क्रमलाकित क्रमल क्

एव नेरइए जाव वेमाणिए। जीवा णं भते ! णाणावरणिज्ञ कम्म कइहिं ठाणेहिं वन्यन्ति 2 गोयमा ! दोहिं ठाणेहिं एव चेव, एव नेरइया जाव वेमाणिया। एवं दंसणावरणिज्ञ जाव अतराइयं, एवं एए एगत्तपोहत्तिया सोलस दङगा ॥ ६०० ॥ जीवे ण भते ! णाणावरणिर्ज्ञं कम्मं वेएइ <sup>2</sup> गोयमा ! अत्थेगइए वेएइ, अत्थेगइए नो वेएड । नेरइए ण भते ! णाणावरणिजं कम्म वेएइ 2 गोयमा ! नियमा वेएइ, एवं जाव वेमाणिए, णवर मणूसे जहा जीवे। जीवा ण भंते ! णाणावरणिज कम्मं वैदेति ? गोयमा ! एव चेव, एव जाव वेमाणिया । एवं जहा णाणावरणिजं तहा दसणावरणिज मोहणिज अतराइय च, वेयणिजाउनामगोयाई एव चेव, नवरं मणूसे वि नियमा नेएइ, एव एए एगत्तपोहत्तिया सोलम दडगा ॥ ६०१ ॥ णाणा-वरणिज्ञस्स णं भते । कम्मस्स जीवेणं वद्धस्म पुट्टस्स वद्धफासपुट्टस्स सन्वियस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कयस्स जीवेण निव्वत्तियस्स जीवेण परिणामियस्स सय वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिजमाणस्स गइ पप्प ठिइं पप्प भव पप्प पोरगल-परिणाम पप्प कड्विहे अणुभावे पन्नते १ गोयमा ! णाणावरणिज्जस्स ण कम्मस्स जीवेण वद्धस्य जाव पोग्गलपरिणाम पप्प दसविहे अणुभावे पञ्चते । तंजहा—सोया-वरणे, सोयविण्णाणावरणे, णेत्तावरणे, णेत्तविण्णाणावरणे, घाणावरणे, घाणविण्णाणा-वरणे, रसावरणे, रसविण्णाणावरणे, फासावरणे, फासविण्णाणावरणे, ज वेएइ पोग्गल वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणाम वा वीससा वा पोग्गलाण परिणामं तेसिं वा उदएण जाणियव्य ण जाणइ, जाणिउकामे वि ण जाणइ, जाणिता वि ण जाणइ, उच्छन्नणाणी यावि भवइ णाणावरणिजस्स कम्मस्स उदएण, एस ण गोयमा ! णाणावरणिजे कम्मे, एस ण गोयमा ! णाणावरणिज्ञस्स कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पोग्गलपरिणाम पप्प दसविहे अणुभावे पन्नते ॥ ६०२ ॥ दरिसणावरणिजस्स ण भते ! कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पोग्गलपरिणाम पप्प कहिवहें अणुभावे पन्नते १ गोयमा ! दरिसणावरणिजस्स ण कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पोग्गलपरिणाम पप णविविहे अणुभावे पन्नते । तजहा---णिहा, णिहाणिहा, पयला, पयलापयला, थीणद्धी, चक्खुदसणावरणे, अचक्खुदसणावरणे, ओहिदसणावरणे, केवलदसणावरणे, ज वेएड पोग्गल वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणाम वा वीससा वा पोग्गलाण परिणाम तेसिं वा उदएण पासियञ्च ण पासइ, पासिउकामे वि ण पासइ, पासिता वि ण पासइ, उच्छन्नदसणी यावि भवइ दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, एस ण गोयमा ! दरिसणावरणिजे कम्मे, एस ण गोयमा ! दरिसणावरणिज्ञस्स कम्मस्स

जीवेगं वदस्य कार्य पोम्पक्यरिणार्मं पच्य वनतिहे अनुमावे पनते R ६ ३ व सामानेयविकास वे मेते ! कम्मस्स जीवेर्ण कप्टरस काव कोमाळपरियाम पर्म कड़ियेडे अगमाने पन्नते हैं गोयमा । मायानेयनिकास वं कारमस जीवेन स्वरूप जाय सद्धविहे सब्धाने पक्तं । तैनहा---मणुण्या सङ्ग १ मणुज्या रूपा २ मणुज्या शर्था रे म्हणज्या रसा भ म<del>हा</del>च्या फासा ५ मनोग्रह्मा ६ वदहहरा ७ शर्म छह्या ८ वं केएइ पोम्नकं वा पोम्नके वा पोम्नकपरिवार्म का बीससा वा पोम्प-कार्ज परिचार्स देखि वा उदएवं सामावेगिकां कार्य वेटक एस व गोक्सा! सामानेयविको कम्मे एस वं योगमा । शामानेनविकास्य जाद अप्रविद्वे अनुसाने पत्तरे । असावादेवनिकस्त वं अंते ! बकास्य प्रविजं तहेव प्रस्तव उत्तरं व वनरं काराज्यमा सहा जाब काबतुह्या एस वं योगमा । असायावेदकिके कामे एस वं गोजमा ! असम्बादियविकास काव कार्यवहे अज्ञान पक्ते ॥ ६ ४ ॥ मोहमिकास नं भेते । कम्मस्य जीवेण कदस्य जाव कदमिन्ने क्लुमाने एकते १ गीयमा । मोर्ड निजन्स में कम्मस्य जीवेणं कद्वस्य जाव पंचनिष्ठे अनुमाने क्लते । तंबहा--सम्मर्पः वेयमिने मिच्छत्वेदनिने सम्मामिन्द्रमावेयणिकं वसायवेदनिने गोष्ट्रान वैद्यक्रिके । वं बेल्ड कोरलक वा पोरलके वा पोरपस्वतिवासं वा बीससा वा पोस्पकार्य परिमामं देखिं वा उवएण ओहक्तिओं करने बेएह, एस वं गोदना। मेहिकिकस कम्मस्य जान पंत्रविद्वे मनुमाने पश्चते ॥ ६ ५ ॥ माउनस्य मं अंते । कमस्य जीवेगं तहेव पुच्छा । योवमा ! जातमस्य नं कम्मस्य जीवेयं बद्धस बाव वतमिहे क्लामाने पकते : तंत्रवा-नेखनातए, तिरियाउए, अल्बातए, बेबाउए, वं केष्र पोमार्स वा पोमाके वा पोमास्वरियाम वा बीससा वा पोमाकार्य परियामं वेसि का उदएकं भाउर्य करने बेएह, एस अं गोबमा ! काउए करने एस वं गोबमा ! भाउनकामस्य बाब चउमिन्हें शक्ताने प्रवर्ते ॥ ६ ६ ॥ छुर्जामस्य वं मेर । कम्मस्य जीवेचं पुच्चा । योजमा ! सुह्यासरस में कम्मस्य जीवेचं न्यवस्थिते क्लुमाने पत्रते । तेनहा—स्ट्रा सहा १ स्ट्रा स्वा २ स्ट्रा गैवा ३ इहा रसा ४ (द्वा फासा ५ इद्वा गाँ६ इद्वा ठिड़ी ७ इद्वे सावव्ये ८ इद्वा जसीतियों ६) इते रहाणकम्मवसमीरियपुरिसकारपरकामे १ इहस्सरया ११ केतस्यरमा १७ पिमस्सरमा १३ मछण्यस्सरमा १४ व वेएह पोमार्क वा पोमाके वा पोमाक परिनामं वा बीससा वा भ्रोगनार्न परिचान तेसि वा उदएनं तहनानं इस्में बंगा, एस वं योजमा । शहबामक्रमे एस वं गोयमा । शहबामस क्रमल बार बार्यक्रि बलुमाने पत्रते । बुर्मामस्य थं मेते । बुच्छा । गोदमा ! एवं चेन

णवर अणिहा सद्दा जाव हीणस्सरया, दीणस्सरया, अकतस्सरया, ज वेएड सेस त चेव जाव चउद्दसविहे अणुभावे पन्नते ॥ ६०७ ॥ उच्चागोयस्स ण भते ! कम्मस्स जीवेण पुच्छा । गोयमा ! उचागोयस्स ण वम्मस्स जीवेणं बदस्स जाव अट्टविहे अणुभावे पन्नते । तजहा-जाइविसिद्धया १, कुलविसिद्धया २, वलविसिद्धया ३, स्विविसिट्टया ४, तवविसिट्टया ५, सुयविसिट्टया ६, लाभविसिट्टया ७, इस्सरिय-निसिद्धया ८, ज वेएड पोग्गल वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणाम वा वीससा वा पोग्गलाण परिणाम तेसि वा उदएण जाव अद्वविहे अणुभावे पन्नते । णीयागोयस्स ण भते ! पुच्छा । गोयमा । एव चेव, णवर जाइविहीणया जाव इस्सरियदिहीणया, जं नेएइ पुग्गल वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणाम वा वीससा वा पोग्गलाण परिणाम तेसि वा उद्एण जाव अट्टविहे अणुभावे पन्नते ॥ ६०८ ॥ अतराइयस्म ण भते ! कम्मस्स जीवेण पुच्छा । गोयमा ! अतराइयस्स ण कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पचितिहे अणुभावे पन्नते । तंजहा-दाणतराए लाभतराए भोगतराए जनभोगतराए वीरियतराए, ज वेएइ पोग्गल वा जाव वीससा वा पोग्गलाण परिणाम तेसि वा उदएण अतराइय कम्म वेएइ, एस ण गोयमा ! अतराइए कम्मे, एस ण गोयमा ! जाव पचिविहे अणुभावे पन्नते ॥ ६०९ ॥ पन्नवणाए भगवईए तेवीसह-मस्स पयस्स पढमो उद्देसो समत्तो॥

कड़ ण भते! कम्मपगढीओ पन्नताओ 2 गोयमा! अह कम्मपगढीओ पन्नताओ । तजहा—णाणावरणिज जाव अतराइय । णाणावरणिजे ण भते! कम्मे कहिं हे पन्नते 2 गोयमा! पचित्रहे पन्नते । तजहा—आभिणिवोहियनाणावरणिजे जाव केवलनाणावरणिजे ॥ ६१०॥ दसणावरणिजे ण भते! कम्मे कहिं दे पन्नते 2 गोयमा! दुविहे पन्नते । तजहा—निहापंचए य दसणचउक्कए य । निहापंचए ण भते! कहिंवहे पन्नते 2 गोयमा! पचित्रहे पन्नते । तजहा—निहा जाव थीणद्धी । दसणचउक्कए ण पुच्छा । गोयमा! चउित्रहे पन्नते । तजहा—चक्खुदंसणावरणिजे जाव केवलदसणावरणिजे ॥ ६११॥ वैयणिजे ण भते! कम्मे कहिंवहे पन्नते 2 गोयमा! दुविहे पन्नते । तजहा—सायावेयणिजे य असायावेयणिजे य । सायावेयणिजे ण भते! कम्मे पुच्छा । गोयमा! अहिंवहे पन्नते । तंजहा—मणुण्णा सद्दा जाव कायसहया । असायावेयणिजे ण भते! कम्मे कहिंवहे पन्नते 2 गोयमा! अहिंवहे पन्नते । तजहा—अमणुण्णा सद्दा जाव कायसहया ॥ ६९२॥ मोहणिजे ण भते! कम्मे कहिंवहे पन्नते । तजहा—समणुण्णा सद्दा जाव कायसहस्या ॥ ६९२॥ मोहणिजे ण भते! कम्मे कहिंवहे पन्नते । तजहा—समणुण्णा सद्दा जाव कायसहस्या ॥ ६९२॥ मोहणिजे ण भते। कम्मे कहिंवहे पन्नते । तजहा—समणुण्णा सद्दा जाव कायसहस्या ॥ ६९२॥ मोहणिजे ण भते। कम्मे कहिंवहे पन्नते । तजहा—समणुण्णा सद्दा जाव कायसहस्या ॥ ६९२॥ मोहणिजे ण भते। कम्मे कहिंवहे पन्नते । तजहा—समणुण्णा सद्दा जाव कायसहस्या ॥ ६९२॥ मोहणिजे ण भते। कम्मे कहिंवहे पन्नते । तजहा—समणुण्णा सद्दा जाव कायसहस्या ॥ ६९२॥ मोहणिजे ण भते। कम्मे कहिंवहे पन्नते । तजहा—समणुण्णा सद्दा जाव कायसहस्या ॥ ६९२॥ मोहणिजे ण भते। कम्मे कहिंवहे पन्नते । तजहा—समणुण्णा सद्दा जाव कायसहस्या ॥ ६९२॥ मोहणिजे ण भते। कम्मे कहिंवहे पन्नते । तजहा—समणुण्णा सद्दा जाव कायसहस्य । स्वस्य कहिंवहे पन्नते । तजहा—समण्यास्य । स्वस्य माहण्यास्य स्वस्य स्वस्

हरिडे पक्ते । राजहा-करामधैननिजे नोकरायनेनणिजे ( करायनेयक्ति व संते ! करने काविडे पण्ता ! गोसमा ! सोकसमिडे पक्ते । तंत्रहा-अवतास्त्री कोडे अर्थतालुक्यी माने कायन्तालुकंपी मामा कायन्तालकंपी कोमे अरक-क्याणे कोहे. एवं माणे मामा स्वेमे क्यानाजावरणे कोहे. एवं माने भाग स्रोमे चंत्रसम्बद्धेहे, एव माचे जाया स्रोमे । शोरसायवेगविको व गेरे । वस्मे कार्रिके पत्तरे ! गोनमा ! णवनिके पक्षेत्रे । तीनका-इस्वीवेनकेश्वाकिके पुरिस्तिक बमांचाओं नर्पसम्बद्धिवालिक हासे ग्री सर्प, स्मेंगे हुर्गुद्ध ॥ ६९३ म भारए में मंदे ! कम्मे काविड्रे प्रवत्ते ! गोयमा ! शतमित्रे प्रवत्ते । तंत्र्या-नेरायाज्य जान देशारण ॥ ६९४ ॥ गाम में संते । क्रमी काविडे प्रती । गोसमा । बासाधीसङ्गिहे पक्तो । ठंजहा-पङ्गामे १ सङ्गामे २ सरीरमार्म सरीरोत्रंगणामे ४ सरीरलंबणणामे ५ सरीरसंबयणणामे ६ संबायणणामे मुद्राशमासं ८ ब्रष्णणासे ९ संब्रणासे १ एसलासे १९ पालमाने १२ अगुरुक्तवामे १३ जववायणामे १४ परावायवासे १५ आवापन्यामे १६ उत्सासनामे १७ आवश्यामे १८ उज्जेयनामे १५ विद्वानन्द्रशामे २ तस्यामे २१ बावरणामे २२ शहरायाने ६३ वायरणामे १४ प्रजानामे २५ अपज्ञतानामे २६ साहारणसरीरमाने २७ परेक्सरीरमाने २८ मिरणाने २९ अविर्णामं ३ सम्माने ३१ असम्माने ३२ सुमतभामं ३३ दुमन थाने ३४ स्तरकाने ३५ बृतरकाने ३६ आवजवाने ३७ क्वारजवाने ३८ बसावितिजामे ३९ अवसोवितीवामे ४ विस्सायनामे ४९ विस् गरजाम ४० । महानामे व श्रंति । वस्मे वश्रविद्ये पक्ते ह शोवमा ! वडन्निहे पक्ते । वंश्रहा-निरम्गद्गामे विरिमगद्गामे मनुकाइनामे वेकाइनामे । बाहवामे र्व भेते ! कामे पुषका । गोगमा ! पंचविद्दे धक्तो । तंत्रहा-एनिवियत्रह्मामे अन वंभिन्नवाहणामे । सरीरमामे वं अंशे ! काम वहनित्रे पक्तो ! गोवमा ! पंचित्रे पक्ते। तंत्रहा-मोराशिषसरीरमामे जान नम्मगसरीरमाम । सरीरोक्गनामे नं भेते ! क्रांबंडे प्रकृते ! सीयमा ! तिमित्ते प्रकृते । तमहा-ओरासिक्यारीरीकंपनामे के मिक्समरीहोनंगनामं आहारसमरीहोर्गमनानं । सरीहनधनमामे थं मंत ! रहनिके पकते ! योगमा । पंचविद्दे पनते । तंत्रहा-भोराविश्वसरीरवंजयनाये जाव वामाव-सरीरबंधजनासे । सरीरसंपायनामे वं श्रेत । क्ट्रमिहे पनते है ग्रोक्मा ! पेक्रिहे

पन्नते । तजहा-ओरालियसरीरसघायनामे जाव कम्मगसरीरसघायनामे । सघयण-नामे ण भते । कइविहे पन्नते १ गोयमा ! छिन्वहे पन्नते । तजहा-वइरोस-भनारायसघयणनामे, उसहनारायसघयणनामे, नारायसघयणनामे, अद्धनाराय-सघयणनामे, कीलियासघयणनामे, छेवद्वसघयणनामे । सठाणनामे ण भते !० कइविहे पन्नने १ गोयमा ! छव्विहे पन्नते । तजहा-समचउरससठाणनामे, निग्गोहपरिमङल-सठाणनामे, साइसठाणनामे, वामणसठाणनामे, खुज्जसठाणनामे, हुडसठाणनामे । वण्णनामे ण भते! कम्मे कड्विहे पन्नते १ गोयमा! पचिविहे पन्नते। तजहा-कालवण्णनामे जाव सिक्कलवण्णनामे। गधनामे णंभते! कम्मे पुच्छा। गोयमा! हुविहे पन्नत्ते। तजहा-सुरमिगधनामे, दुरमिगधनामे। रसनामे ण पुच्छा। गोयमा! पचिवहे पन्नते । तजहा-तित्तरसनामे जाव महुररसनामे । फासनामे ण पुच्छा । गोयमा । अद्वविहे पन्नते । तजहा-क्रक्खडफासनामे जाव लहुयफासनामे । अगुरु-ल्हुयनामे एगागारे पन्नते। उवधायनामे एगागारे पन्नते, पराघायनामे एगागारे पत्रते । आणुपुन्वीणामे चउव्विहे पन्नते । तजहा-नेरइयआणुपुन्वीणामे जाव देवाणुपुन्वीणामे । उस्सासनामे एगागारे पन्नते, सेसाणि सञ्वाणि एगागाराइ पण्ण-त्ताइ जाव तित्थगरणामे । नवर विहायगइनामे दुविहे पन्नते । तजहा—पसत्यविहा-यगइनामे, अपसत्यविहायगइनामे य ॥ ६१५॥ गोए ण भंते ! कम्मे कइविहे पन्नते व गोयमा ! दुविहे पन्नते । तजहा-उचागोए य नीयागोए य । उचागोए ण मते । कइविहे पन्नते २ गोयमा ! अडविहे पन्नते । तजहा---जाइविसिद्धया जाव इस्सरियविसिद्वया, एव नीयागोए वि, णवरं जाङ्विहीणया जाव इस्सरियवि-हीणया ॥ ६१६ ॥ अतराइए ण मते ! कम्मे कड्विहे पन्नते १ गोयमा ! पचिवहे पन्नते । तंजहा-दाणतराइए जाव वीरियतराइए ॥ ६१७ ॥ णाणावरणिजस्स ण भते । कम्मत्स केवडय काल ठिई पन्नता <sup>2</sup> गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहरसाइ अवाहा, अवाहूणिया कम्म-ठिई कम्मिनिसेगो ॥ ६९८ ॥ निद्दापचगस्स ण मते । कम्मस्स केवइय काल ठिई पन्नता २ गोयमा ! जहन्नेण सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागा पिठ्योवमस्स असखे-जडभागेण ऊणिया, उक्कोसेण तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साड अवाहा, अवाहूणिया कम्मद्विई कम्मनिसेगो। दसणचउक्कस्स ण भते। कम्मस्स केव-इय काल ठिई पन्नता 2 गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तीस सागरोवम-कोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साई अवाहा ॥ ६१९ ॥ सायावेयणिज्ञस्स इरिया-विहय वध्म पहुच अजहण्णमणुद्दोसेण दो समया, सपराइयवधम पहुच जहन्नेण

भगाद्वा । असानानेयणिकस्य नद्वजेणे सागरीनगरस विभिन्न सत्तमाया पश्चिमानस्य व्यक्तिकद्वमागणं क्रमया । सकोसेणं शीर्षं सागरोगमकोहाक्षोडीको विकिन स वाप-सहस्मातं व्यवहा ॥ ६२ ॥ सम्मातवेयनिकस्य प्रच्या । गीवमा । बहुतेयं अती-सद्दर्श उद्योगेनं छानद्वि सागरीवमाई साहरेगाई। निन्तानेनविज्ञस्य बहुदेनं सागरोपमं पवित्रादमस्य असंबेक्कमानेन कर्णा उद्योसेन सत्तर बोडाहोडीओ सत्त य बाससङ्ख्याई कवाहा अबाहमिका । सम्मानिकालवेशविकास कहरेर्ण अंदोस्टर्त उद्योरेणं अंदोस्टत । क्सान्कारसंगस्य व्यक्षेण समारोक्सस्य वराप्रि सत्तमागा पश्चिमोकसस्य समेबाबारमागर्न स्वयंत्रा उद्दोसंत्र बलाहीसे सागरीयान को बाक्षे वैदेशे वताकीस वासस्याई अवाहा काव निसेयो । कोइसकानी पुन्छा । योगमा । बहत्तेर्ण वो मासा उद्योसेर्च चत्तासीर्ध सायरोदमकोहाद्योद्योद्यो अतासीर वासस्वतः अवादा जाव निसेगो । माध्यस्यकणाए पुरुष्का । गोदमा । अद्वर्षेणं मास उद्देशेनं नदा फोइन्स । मायासवस्थाए प्रच्या । गोवमा ! अवसेतं सर्वे मास उद्दोक्षेत्रं ज्वा कोहरूछ । त्योदसम्बद्धमाए पुष्का । गोयमा ! व्यक्केत्रं अद्येसुद्वर्ण उद्योगेणं बद्दा कोइस्स । इत्यिनेवस्स पुष्का । गोवमा । अद्योगं शागरोकमस्स विस् सक्तमानं पश्चिमोदमस्य जस्मे बद्दमानेच सम्पर्व उद्दोरेचं पञ्चरस समारोगमनीमा-कोबीमा पण्यरस वाससयतं कवादा । प्रतिस्थेयस्य वं प्रच्छा । गोनमा ! सहवर्षे बाद संबन्धरक, उक्रोतेणं बस सागरीयमकोडाकाबीब्रे वस बाससमार्थ भगवा बाब निसंपो । वर्षुस्यवेयस्स णं प्रचल । गोयमा ! बहवेषं सागरोक्तस्य होन्नि रक्तमागा परिओक्सरस अर्थकेक्समारोणं छलका उक्तेरेणं वीचे सागरीक्सकेका कोडीओ बीस६ मास्स्वत्राई अवाहा । हासर्ग्य पुण्का । गोयसा । वहवेर्य सायरीन सस्स एकं सत्तमानं पश्चिमोनमस्स असके महमानेणं क्रमं उद्योसेणं वस सायरोक्स-भोगारोगीओ वस वाससवाई जनाहा । अरहमवसोयहुर्गुकार्व पुच्छा । गोवमा ! जर्बेणे सागरीवमस्य बोल्जि सत्तमागा पक्षिकोक्सस्य असंबोधकमागेले समया उद्दोरंण शीस सागरोक्मकोवाको**नी**को शीसं वासस्यादं क्रवाहा ॥ ६२१ ॥ मेरहमाठमस्स नं पुष्का । गांगमा । बहुषेण वस वासस्वरसाई अंदोमुहुतमञ्जू बतं, सहोसेनं रातीर्थं सागरोजनादं पुल्कानेनीतिमागमञ्जविदादं । तिरिक्कानोति नाजयस्य पुष्काः । योजमा l अहतेण नतोसुहुर्तः जहोसेनं दिन्यि पक्रिजेलमाई पुम्बकोदीतमागस्यमहिमार्गः, एवं सम्सालयस्य वि । वदातवस्य वहा नेरद्यावयस्य

दिवृति ॥ ६२२ ॥ निरमपक्षामए न पुष्पम । गोममा । वाह्रोवं सागरीकमसर

स्परम दो मत्तभागा प्रतिओवमस्स असरोज्ञइभागेण ऊणया, उद्दोसेण वीस साग-रोवमकोडाकोडीओ, वीस वामसयाउ अवाहा । तिरियगइनामए जहा नपुमगवेयस्स । मणुयगडनामए पुच्छा । गो० । जहन्नेणं सागरोवमस्य दिवष्ट्र सत्तभाग पिटओवमस्य असरोज्ञइभागेण ऊणग, उद्योसेण पण्णरम सागरोवमकोडाकोढीओ, पण्णरसवास-सयाइ अञाहा । देवगडनामए ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण मागरोवममहस्सस्स एग मत्तभाग प्रिओवमस्य असरोज्जङभागेण ऊणय, उक्कोसेण जहा पुरिमवेयस्य । एगिंदियजाङनामए ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण सागरोवमस्य टोण्णि सत्तमागा परिओवमसा असखेज्ञइभागेण ऊणया, उक्षोमेणं वीस मागरीवमकोडाकोढीओ, वीयः वासययाः अवाहा । वेडिटयजाइनामाए णं पुन्छा । गोयमा ! जहन्नेण सागरोवमस्म नव पणतीसङ्भागा पलिओवमस्स असखेजङभागेण ऊणया, उक्कोसेण अहारस सागरोवमकोडाकोढीओ, अहारस य वासमयाडं अवाहा । तेडदियजाइ-नामए ण जहण्णेण एव चेव. उक्कोसेण अट्टारम सागरीवमकोडाकोहीओ, अट्टारस वाससयाइ अवाहा । चर्डारेदियजाइनामाए पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण सागरोवमस्स णव पणतीयइभागा पलिओवमस्य असरोज्जडभागेण ऊणया, उछोसेण अद्वारस सागरोवमकोडाकोढीओ, अद्वारम वाससयाइ अवाहा । पचिदियजाइनामाए पुच्छा । गोयमा! जहनेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पिल्ञओवमस्स असरोज्जडभागेणं रुणया, उक्रोसेणं वीस सागरोवमकोडाकोडीओ, वीस य वाससयाड अवाहा । ओरा-लियसरीरनामाए वि एव चेव । वेडिव्ययसरीरनामाए ण भते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तभागा परिश्रोवमस्स असखेज्जइभागेण ऊणया, उक्कोसेण वीस सागरोवमकोडाकोडीओ, वीसइ वाससयाइ अवाहा । आहारगसरीर-नामाए जहन्नेण अतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेण अतोसागरोवमकोडाकोडीओ। वेयाकम्मसरीरनामाए जहण्णेण दोण्णि सत्तभागा पिल्ओवमस्स असलेजङ्भागेण कणया, उक्कोसेण वीस सागरोवमकोडाकोडीओ, वीस य वाससयाड अवाहा। बोरालियनेउव्वियआहारगसरीरोवगनामाए तिण्णि वि एव चेव, सरीरवधणनामाए वि पचण्ह वि एव चेव, सरीरसघायनामाए पचण्ह वि जहा सरीरनामाए कम्मस्स ठिइत्ति, वइरोसभनारायसघयणनामाए जहा रइनामाए । उसभनारायसघयणनामाए पुच्छा । गोयमा। ज॰ सागरोवमस्स छ पणतीसङ्मागा पिलओवमस्स असखेजङ्भागेण ऊणया, उक्कोसेण वारस सागरोवमकोडाकोडीओ, वारस वाससयाइ अवाहा । नारायसघ-यणनामस्स जहन्नेण सागरोवमस्स सत्त पणतीसङ्भागा पिल्लोवमस्स असखेज्जङ्-भागेण ऊपया, उक्कोसेण चोद्दस सागरोवमकोडाकोडीओ चउद्दस वाससयाइ अबाहा ।

727

**अद्भारामसंबयभनामस्य बहुबेर्णं सागरोगमस्य अहु पथवीसङ्भागा पश्चिमेक्सस** <del>भएंकेम्द्रमानेनं क</del>णमा उद्योक्षेत्रं क्षोत्तर सागरोबमकोडाकोडीओ क्षोत्तम शर्मः संभाई व्यवाहा । च्याकियासंवयणे च पुच्छा । गोयमा । जहचेर्ग सागरोदभस ना प्यतीसङ्भागा पश्चिमोक्मस्स असंबेश्वहमागेणं स्रम्या ज्ञाहेशं अद्वारस सामरोप मानेवादोबीको सञ्चारस वासस्याई सवाहा । क्षेत्रदर्शकरवनामस्य प्रका । गोनमा बहुतेर्णं सागरोबमस्य योण्य सत्तमागा पश्चिमोबमस्य असंकेज्यसमोनं सन्त तक्रोरेणं वीसं सागरीकारोडाकोडीको नीस व नासस्यातं भानाहा एवं 🐠 सम्बर्गनामाए स्वस्थित एवं रोठाणा वि स्वस्थाविक्तमा । सुविजनव्यासाम् पुष्टा । गोयमा ! ऋचेषं सागरोबमस्त एवं सत्तमार्गं पविज्योबमस्त अस्तेज्यमाने क्रमां उद्योरेय वस सागरीवमकोडाकोडीओ दस वाससमाई अवाहा । हान्यि क्रमणासए नं पुक्का । गोयमा ! अव्येनं धागरीवयस्य एव अञ्चाबीसङ्गाया पति भोदमस्य अरोकेजङ्गागेणं कलवा । उक्षोरीयं अवतेरससागरीवस्त्रोडावीडी 🚟 देरस बाससमाद अवाहा । सोहियवणायामप् वं पुष्का । गोनमा । अहवेर्व साम-रोक्सरस छ भद्वानीसक्मामा पविकोदमस्य वर्धकेन्द्रमारोई स्वत्रवा उडासे फनरस सागरीबमध्येजाकोबीको पञ्चरस बाससमाई कवाद्वा । नीसबन्ननामार पुष्का । गोबमा । व्यक्तेषं शागरोबमस्य सत्त बद्धावीसहमागा पृक्किनेकास्य वर्षः के**ज्य**भागेलं क्रमशा उड़ोसेलं लढ्डारस सामरोक्मकोडाकोडीको *ल*ढ्डारस <sup>हास</sup> समझे अवाहा । कालकण्यनामाए वहा क्रेक्ट्रपंचननामस्य । मुक्तिगोबनामप् पुष्पा । गोसमा । अब द्वविक्रमण्यामास्य पुष्पिमांबणामाए वहा क्षेत्रदेवस्यस्य रसामें महुराईन जहा नन्यानं अनिय छहेन परिवादीए सानियनं पासा वे अपस्तमा वर्ति बहा छेन्द्रस्य जे पगत्या वेधि बहा स्वक्षिक्रमण्यानासस्य अध्यस्त्र मामाए वहा क्षेत्रद्वस्य पूर्व उवचायनामाए वि परावायनामाए वि एवं येत । निरवर्षः पुरुषीनामाप् पुष्छा । गोसमा । जहकेणं धायरीवमसहस्तरस वो सत्तमागा पश्चिते भरम अस्प्रेज्यभागेणं समया खडोसेणं गौस सागरी गरोडाकोगीओ गौसं वास्तर वारं अवाहा । तिरिवानुपुर्वीए पुच्छा । गोवमा । जहचेर्च सामरोगमस्य हो मत्तमामा पश्चिजोबमस्य अस्पेश्चर्मानेच प्रणवा उन्नोतेणं वीसं सागरोबमहोडाचोडीजी बीसद् अभ्यस्यार्वं अवाहः । मनुसासुपुर्मानामाए वे पुच्छा । शोयमा ! अहबर्व सागरोवमस्स दिवर्षं सत्तमार्गं पश्चित्रोवमस्य असलोजङ्गागेर्वं समर्वे उडासेर्व पन्त्ररम सागरोत्रमणोडारोजीओ पञ्चरस बालसमाई अराहा । देवानुपुच्चीनामाए पुष्पा । गांवमा । बहुबेणं सागरोवमसहस्मस्य एपं सत्तमार्गः पांत्रजोवमस्य क्राप्त-

खेजाइमागेण ऊणय, उक्कोसेण दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस य वाससयाई अवाहा । ऊसासनामाए पुच्छा । गोयमा ! जहा तिरियाणुपुव्वीए, आयवनामाए वि एव चेव । उज्जोयनामाए वि पसत्यविहायोगइनामाए वि पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण एगं सागरोवमस्स सत्तभाग, उक्वोसेण दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस वाससयाई अवाहा । अपसत्यविहायोगइनामस्स पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पिल्ञोवमस्स असखेज्ञहमागेण ऊणया, उक्कोसेणं वीस सागरोवम-कोडाकोडीओ, वीस य वाससयाई अवाहा । तसनामाए थावरनामाए य एव चेव । सुहुमनामाए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण सागरोवमस्स णव पणतीसङ्भागा पलिओव-मस्स असखेज्जइमागेणं ऊणया, उक्कोसेण अद्वारस सागरोवमकोडाकोढीओ, अद्वारस य वाससयाइ अवाहा । वायरनामाए जहा अपसत्थिवहायोगइनामस्स । एव पजत्त-नामाए वि, अपजत्तनामाए जहा सुहुमनामस्स । पत्तेयसरीरनामाए वि दो सत्तभागा, साहारणसरीरनामाए जहा द्वहुमस्स, थिरनामाए एग सत्तभाग, अथिरनामाए दो, समनामाए एगो, असुमनामाएँ दो, सुभगनामाए एगो, दूभगनामाए दो, सूसरनामाए एगो, दूसरनामाए दो, आदिजनामाए एगो, अणादिजनामाए दो, जसोकित्तिनामाए जहन्नेण अहु मुहुत्ता, उद्घोसेण दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस वाससयाइ अवाहा। अजसोकित्तिनामाए पुच्छा । गोयमा ! जहा अपसत्यविहायोगइनामस्स, एव निम्मा-णनामाए वि । तित्थगरणामाए ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोसागरोवमकोडा-कोबीओ, उक्कोसेण वि अतोसागरीवमकोडाकोबीओ । एव जत्य एगो सत्तभागो तत्य उक्कोसेण दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस वाससयाइ अवाहा, जत्य टो सत्तभागा तत्य उक्षोसेण वीस सागरोवमकोडाकोडीओ वीस य वाससयाई अवाहा ॥ ६२३ ॥ उचागोयस्स ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अहु मुहुत्ता, उक्कोसेण दस सागरोवम-कोडाकोडीओ, दस य वाससयाइ अवाहा । नीयागोत्तरस पुच्छा । गोयमा ! जहा अपसत्थविहायोगइनामस्स ॥ ६२४ ॥ अतराइए ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साई अवाहा, अवाहूणिया कम्मिहिई कम्मिनिसेगो ॥ ६२५ ॥ एगिंदिया ण भते ! जीवा णाणाव-रणिजस्स कम्मस्स किं वंधित १ गोयमा । जहन्नेण सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागा पिलओवमस्स असखेज्ञहभागेण ऊणया, उक्तोसेण ते चेव पिंडपुण्णे वंधित । एव निद्दापचगस्स वि, दसणचउक्कस्स वि । एगिदिया णं भते !० सायावैयणिज्ञस्स कम्मस्स किं वधति १ गोयमा । जहन्नेण सागरोवमस्स दिवन्नु सत्तभाग पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणय, उक्कोसेण त चेव पिडपुण्ण वघति । असायावेयणिजस्स गोयमा । लिख किषि वंशीत । एगिरिया जं मता । जीवा शिष्ठाप्तवेयस्थितस्य स्मास्स कि वंशीत । गोगामा । वाह्योणं वास्परोवसं प्रिक्षावस्य स्पंडीकारमानिक स्वास्पर किष्ठीकारमानिक स्वास्पर विश्वापत्र किष्ठीकारमानिक स्वास्पर विश्वापत्र किष्ठीकारमानिक प्राप्तिक विश्वापत्र किष्ठीकारमानिक प्राप्तिक विश्वापत्र किष्ठीका । गोवामा । जिल्हा किष्ठी वास्पर विश्वापत्र कार्मीत्र वास्पर व

प्ररिष्ठनेबस्स करहमनसोम्बुपुंकाए कहा नपुरुगमेनस्स । नेरासाउसदेवाउननिर थगङ्गामदंशकृतासमेडाभिनसधीरनामणाङ्वारगसरीरनासनेरङयङ्गप्<del>रथिनासदेन≅ऽ</del> विरमामदित्वगरमास-प्रमासि गव प्रमासि च वंशेरि । दिरिक्वकोनियानमस् बहुनेफं अंतोसुहूतः उद्गोरेनं पुम्बद्धोगे एताई बाएसहस्सेहें बायसहस्स मामेन य अद्विपं वंशितः। एवं मुक्तरसारबस्स वि । दिरिवगङ्गामाए बहा मुद्रसगवेगस्य। मञ्जनाहरामाए **व्यक्त सावावेयभिका**स । एगिदियनासाए पविदिधवाहनामाएँ व जहा नर्पुसमवेगस्य । वेद्रविगतिहेदियजाहनामाय् पुच्छा । चहुचेत्रं सागरोकमस्य वर् प्याचीपद्रमारी परिकोबनस्य कार्यकेजहमारेणं समय, सहोसेषं त के पविपुत्री वपदि । क्वरिविजनामाए नि अक्षेत्रेण सापरोक्सस्स वव प्रवसीसहमागे पश्चित्रेयः मस्य अस्त्वेजक्षमारीकं समय्, उन्नोसेकं तं चेत्र प्रविपुष्ये वेर्वति । एवं वस्य 🗯 न्त्रग दो शत्तमागा दिनि ना चत्तारि ना शत्तमागा अ<u>द्या</u>नीसङ्गागा मनीते दर्ज मं बहुच्येन ते चेव पश्चिमोनसस्य असचेन्द्रभागेनं सन्दर्भा मामिनम्बा उद्दोरेनं ते चन परिपुर्ण्ने वेवेरि । जल्म ये जहल्मैण एगी ना मैनहो वा सत्तमाओ रूप बहतेजं तं चेव साधियम्बं उद्योगेयं तं चेव पविपुज्यं वैचेति । वतीवित्तिउचान्येवानं बरुन्नेनं सागरीवमस्य एवं सत्तमार्गं पविष्योदमस्य जसबैजङ्गानेयं प्रतं उड़ोरोनं तः चन पश्चिपुण्य नेवेति । मेराराध्यस्य नं मेरी 🏻 पुरुष्का । गोक्सा 🛚 🖏। जाना-

बर्गिकस्स बाव उद्दोरीय ते चंद पविपुज्ये बंदाति ॥ ६२६ त वेहिया वं सेत । जीवा यानावरिकास्य कम्मस्य कि वर्षति १ योगमा बद्दोर्य सागरीकमणवीयाए तिण्णि सत्तभागा पिलओवमस्स असखेज्वइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं ते चेव पिडपुण्णे वधित, एव निद्दापचगस्स वि । एवं जहा एगिंदियाण भणियं तहा वेइदियाण वि भाणियन्व, नवरं सागरोवमपणवीसाए सह भाणियन्वा पलिओवमस्स असखेजाइभागेण ऊणा, सेस त चेव पिडपुण्ण वधति । जत्थ एगिंदिया न वधित तत्थ एए वि न वधित । वेइदिया ण भते ! जीवा मिच्छत्तवेयणिजस्स० कि वयित २ गोयमा ! जहन्नेण सागरोवमपणवीस पाँठओवमस्स असखेजाइभागेण ऊणय, उद्दोसेण तं चेव पडिपुण्ण चयति । तिरिक्खजोणियाउयस्म जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं पुन्वकोडिं चडिंह वासेहिं अहिय वधति । एवं मणुयाउयस्स वि, सेस जहा एगिंदियाण जाव अतरा-इयस्स ॥६२७॥ तेइंदिया ण भते ! जीवा णाणावरणिज्ञस्स॰ कि वधति <sup>२</sup> गोयमा ! जहन्नेण सागरोवमपण्णासाए तिण्णि सत्तभागा पिलओवमस्स असखेज्जइभागेण ऊणया, उक्कोसेण ते चेव पडिपुण्णे वधति, एवं जस्स जइ भागा ते तस्स सागरोवमपण्णासाए सह भाणियव्वा । तेइदिया ण भते 1० मिच्छत्तवेयणिजस्स कम्मस्स किं वधति 2 गोयमा ! जहन्नेण सागरोचमपण्णास पलिओवमस्सासखेजाइमागेण ऊणय, उक्कोसेण त चेव पिंडपुण्ण वधति । तिरिक्खजोणियाउयस्स जहन्नेण अतोमुहुत्त, उद्दोसेण पुञ्चकोडिं सोलसेहिं राइदिएहिं राइदियतिभागेण य अहियं वधति, एव मणुस्माउयस्स वि, सेस जहा वेइदियाण जाव अतराइयस्स ॥ ६२८ ॥ चर्डारेदिया ण भते । जीवा णाणावरणिजस्स० किं वर्धति १ गोयमा ! जहनेण सागरोनमसयस्य तिण्णि सत्तभागे पिलओवमस्स असखेबाइभागेण ऊणए, उद्दोसेण ते चेव पडिपुण्णे वधति, एवं जस्स जइ भागा तस्स सागरोवमसएण सह भाणि-यव्या । तिरिक्खजोणियाजयस्स कम्मस्स जहन्नेण अतीमुहुत्त, उन्नोसेण पुन्वकोडिं दोहिं मासेहिं अहिय । एव मणुस्साउयस्स वि, सेस जहा वेइंदियाण, णवर मिच्छत्त-वेयणिजस्स जहन्नेण सागरोवमसय पिठ्ञोवमस्स असखेज्जइभागेण ऊणय, उक्कोसेण त चेव पिंडपुण्ण वयति, सेस जहा बेइदियाण जाव अतराइयस्स ॥ ६२९ ॥ असण्णी ण मते! जीवा पर्चिदिया णाणावरणिजस्स कम्मस्स किं वयति 2 गोयमा । जहन्नेण सागरोवमसहस्सस्स तिण्णि सत्तमागे पलिओवमस्सासखेज्जइभागेण कणए, उक्कोसेण ते चेव पडिपुण्णे वधति, एव सो चेव गमो जहा वेइंदियाण, णवरं सागरोवमसहस्सेण समं भाणियन्व जस्स जइ भागत्ति । मिच्छत्तवेयणिज्जस्स जहन्नेण सागरोवमसहस्स पलिओवमस्सासखेजङभागेण ऊणयं, उक्कोसेण तं चेव पहिपुण्ण । नेरइयाज्यस्स जहन्नेण दस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमञ्महियाइ, उक्को-सेण पिल्लोवमस्य असखेजइभाग पुन्वकोहितिभागव्महिय वधित । एवं तिरिक्ख-३२ सला०

तिभिम नाससङ्स्याई अवाहा । सन्त्री न भते ! पनिदिया विहार्यकारस कि वैचीति ! मोयमा । बहुबेमं अंदोसागरोबमकोडाकोडीको उद्योसेचं दीसं सागरोदनकोडां क्रोबीओ दिन्ति व नासस्हरसाई मनाहा। व्सवश्वदक्षरस बद्दा बाबाबरमिखरस। सायानेमभिकस्य बहा बोहिना ठिई भनिया तहेन मानियम्बा हरैनानहिननने पहुच सप्राइयर्वपर्यं च । महायावेगनिजस्स बहा विशापकाससः। सम्मापेगनि करम सम्मासिग्डलक्सणिकस्स वा बोद्दिवा ठिवे मध्यमा सं वंबेदि । निकारवेवनि कस्त बर्चेण भत्तोसामरीनमणोडाकोडीको उक्तेसेण सत्तरि सागरीनमकोडाकोडीकी क्तारि न बाससहरसाई भवाहा । कसानबारसमस्य जहतेर्थं एवं चेव उडोसेय बता कीम सागरीवमत्रोज्ञाकोज्ञीको जनातीस य वाससमाई सवाहा । कोइसाकमायाकोन-सजसमाए व दो मासा मासी जबमासी मतो<u>सङ्</u>को एवं बहुचर्ग उडोस्में पुर बहा क्लानवारसमस्स । कठक् वि माठयाच जा मोद्विया देवी मनिया है वेचेति । आहारमसरीरस्य विस्कारनामाप् य बहुन्येर्णं अतीसागरीवमभोडाकोद्येको दकी सेच अठोसागरोक्सकाडाकोबीओ । पुरिसक्यणिकस्य जहकेच जह सक्छरहं, उड़ी-सेमं दस सागरोत्रमकोडाकोबीमो इस य नाससमाई भनाहा । बसोडिटिनामार् उव्यायोक्तरम एवं पन अनर अहवेर्ण अद्ध सुद्धका । अतराह्यसम् बहा जामानरनि जरस रोमएम् सम्बोत् ठामेत् सम्बाभेत् रोठाणित बबेत्त संबेत् व बहुतेसं अनीस-

गरोवमरोटाकोढीओ, उद्योसेण जा जस्स ओहिया ठिई भणिया तं वंधति, णवर इम णाणत्त-अवाहा अवाहृणिया ण वुचड । एवं आणुपृन्वीए सन्वेमि जाव अतराइयस्म ताव भाणियव्य ॥ ६३१ ॥ णाणावरणिज्ञस्य ण भते ! कम्मस्य जहण्णि ठिईवंधए के १ गोयमा । अण्णयरे सुहुमसपराए उवसामए वा खवगए वा, एस ण गोयमा ! णाणावरणिज्ञस्स कम्मस्स जहण्णिठिईवधए, तब्बडरित्ते अजहण्णे, एव एएण अभिला-वेण मोहाउयवज्ञाण सेसकम्माण भाणियन्त्र । मोहणिजस्य ण भंते ! क्रम्मस्स जह-णाठिईवघए के १ गोयमा ! अन्नयरे वायरसपराए उनसामए वा सवए वा, एस ण गोयमा ! मोहणिजस्स कम्मस्म जहण्णिठिईवधए, तन्बर्रिते अजहण्णे । आउयस्स ण भते ! ऋमास्स जहण्णिठिङेवधए के १ गोयमा ! जे ण जीवे असरोप्पदापिवेट्टे, सम्बनिरुद्धे से आउए, सेने मन्वमहंतीए आउयवधद्वाए, तीसे ण आउयवधद्वाए चरिमकालसमयंति सन्वजहण्णिय ठिइं पज्जतापज्जत्तिय निव्वत्तेत्र, एस ण गोयमा ! भाउयकम्मस्स जद्दण्णिठईवधए, तन्वडारेत्ते अजहण्णे ॥ ६३२ ॥ उद्दोसकालिट्डय ण मते । णाणावरणिज्ञ ० किं नेरङओ वधइ, तिरिक्यजोणिओ वधड, तिरिक्खजो-णिणी वथइ, मणुस्सो वधइ, मणुस्सिणी वधइ, देवो वधइ, देवी वधइ <sup>२</sup> गोयमा ! नेरङओ वि वधङ जाव देवी वि वधङ। केरिसए णं भते ! नेरङए उक्कोसकालिङ-डय णाणावरणिज कम्मे वधइ <sup>२</sup> गोयमा ! सण्णी पंचिंदिए सन्वाहिं पजत्तीहिं पजत्ते सागारे जागरे सत्तो(ओ)वउत्ते मिच्छादिद्वी कण्हलेसे य उद्योससिकिलिट्टपरि-णामे ईसिमिन्झमपरिणामे वा, एरिसए ण गोयमा ! नेरइए उक्वोसकालिट्टइय णाणा-वरणिज कम्म वधइ । केरिसए ण भते ! तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्टिडय णाणा-वरणिज कम्म वधह १ गोयमा । कम्मभूमए वा कम्मभूसगपितभागी वा सण्णी पिचिटिए मञ्जाहि पज्जतीहि पज्जत्तए सेस त चेव जहा नेरइयस्स । एव तिरिक्ख-जोणिणी वि मण्से वि मण्सी वि, देवदेवी जहा नेरइए, एवं आउयवज्ञाण सत्तण्हं फम्माण । उक्कोसकालिहुइय ण भते ! आउयं कम्म किं नेरइओ वधइ जाव देवी वघड १ गोयमा । नो नेरहओ वघइ, तिरिक्खजोणिओ वधइ, नो तिरिक्खजोणिणी वधइ, मणुस्से वि वधइ, मणुस्सी वि वधइ, नो देवी वधइ, नो देवी वधइ। केरिसए ण भंते ! तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालद्विड्य आउय कम्म वधड् १ गोयमा ! कम्मभूमए वा कम्मभूमगपलिभागी वा सण्णी पर्चिदिए सन्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए सागारे जागरे मुत्तोवउत्ते मिच्छिद्दिडी परमकण्हलेसे उक्कोससकिलिद्वपरिणामे, एरिसए ण गोयमा ! तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालिहरूय आउय कम्म वधइ । केरिसए णं भते ! मण्से उक्कोसकालिहरूय आउय कम्म वघइ 2 गोयमा ! कम्मभूमए वा कम्मभूमग-

[ पञ्चलपासुर्व

٠,

चरगविमुज्यसमानपरिचाम वा प्रिसप् में गोयमा l समूर्ग उद्रोसकास**ह**रमें क्षाउर्व ष्टम्मं बाजरः । केरिसिया यं भंतं । भगुरसी उद्गीसक्रकंद्वित्रम् आउर्व कम्म कन्परे गोरमा ! कम्ममृदिवा वा कम्मभूयगप्रक्रिमाणी वा बाव शत्तोवउत्ता सम्भाविद्वी हरू<sup>क्रमा</sup> त्रपाउमानिमुक्तमापपरिपामा एरिसिया नं पोबमा । सन्सी उद्दोसकामध्रितं भारतं कर्म कबर, जेतराइवं बहा याचावरनिज ॥ ६३३ ॥ श्रीमो उद्देखी समच्चे 🛭 पञ्चलाए भगवर्ष्य तेवीसहम् कम्मपगडीपर्य समर्च 🛘 कर् में नेते ! कम्मपनकीको पत्रमताओ ! गोवमा ! सद्ध कम्मपनकीको प्रणा-त्ताओ । शंजहा-जामावरविज्ञं आप जंतराहवं । एवं नेरहवार्ण जाव वेमानियार्थं ।

जीवे में भते ! जाणावरविज्ञं करमें बरुवमाने 👊 क्रम्मफारीओ वस्बद् 🖁 मोनगा ! सत्तविद्वापद् वा महिन्द्वान्यए वा सम्बद्धान्यए वा। नेरह्रपू व मते ! बावा बर्गनर्ज कार्म कल्पमाने कह कम्मावर्गको कथ्पह है गोपमा । सत्तविहबत्वए <sup>बा</sup> महुनिद्दशन्त्रण्या एव जाव वैमानिष्, शवरं अनुस्ते बद्धा जीवे। जीवा व मंते ! पाणावरमित्रं क्षम्य व चमाणा ऋ कम्मपाद्येको बन्धन्ति । गोनमा । सम्बे है दान होज सत्तिहरूनमा व महनिहरूनमा य भहरा सत्तिहरूनमा ४ **ग**ई विद्वनन्त्रता स स्रविव्हवन्त्रते व अह्वा सत्तविद्वन्त्रमा व अङ्कतिद्वनम्पा <sup>व</sup> क्टब्स्ट्रक्त्या व : गरह्या में मंते ! माजावरमिर्ज कम वन्त्रमामा व्ह क्रम पगर्मको बन्बन्ति है गोबसा । सब्बे विदाय होज्या सत्त्विबन्वमा अहवा स्त्रविद बन्धमा त्र श्रद्धविद्दरम्पने यः अद्दा सत्तविद्दाचना व श्रद्धविद्दरम्पना व विभि सगा एव जान विभिन्नप्रसारा । पुरुषिशाह्या वं पुच्छा । योजमा । सङ्गिहकामा वि अञ्चान्यसम्बन्धाः नि एवं वात्र वणस्ताहमास्या । विचळार्गं पेनिविविविधिक्त क्रीनियार्थं तियमंगी-सम्बं वि ताव होजा सत्तविहन-वगा शहना सत्तिहनन्त्रमा व शदुविह्यन्त्रमो सः शहण सत्तविह्यन्त्रसम् स अनुविह्यन्त्रमम स । अनुसा व स्वि ( गाणावरमिजस्स पुष्पम । गोसमा ! सन्में में ताव होजा शतमहबन्धमा १ आहा सत्तिहरूनम्बरा व अञ्चलिद्दनम्बरो व २ व्यवता सत्तिहरूम्बरा व अञ्चलिद्दम्बरा य १ अहवा स्तानिहवन्त्रमा य स्रम्मिहवन्त्रम् ४ ४ अहवा स्तानिहवन्त्रया व छन्मिह्दरम्पमा य ५ अह्दा सत्तविह्दरम्यमा च अनुविह्दरम्यमे य छन्मिह्दरम्यमे व ६ अह्वा सत्तवहबन्यमा य व्यक्तिहतन्त्रमे व क्रकिट्वन्थमा य 🗸 अह्वा सर्प मिह्नत्त्रया व महुनिह्नाचगा व इध्मिह्नत्त्रों गढे वहवा सत्तिहनत्त्रा व

अट्टविह्वधगा य छिन्वह्वन्थगा य ९, एव एए नव भंगा । सेसा वाणमतराङया जाव वेमाणिया जहा नेरङया मत्तविहाडवन्धगा भणिया तहा भाणियव्या । एव जहा णाणावरण वन्धमाणा जिंह भणिया दंसणावरण पि वन्धमाणा तिहं जीवाडया एगत्तपोहत्तएहिं भाणियव्वा ॥ ६३४ ॥ वेयणिज्ञ० वधमाणे जीवे कड कम्मपगढीओ वन्चड २ गोयमा ! सत्तविहचन्धए वा अट्टविहवन्धए वा छिन्वहवन्धए वा एगविह-वन्धए वा, एव मण्से वि । सेमा नारगाउया सत्तविहवन्धगा वा अट्टविहवन्धगा वा जाव वेमाणिए । जीवा ण मते ! वेयणिज कम्म पुच्छा । गोयमा ! सन्वे वि ताव होजा मत्तविहवन्धमा य अट्टविहवन्धमा य एमविहवन्थमा य छिन्वहवन्धए य, अहवा मत्तविहयन्थगा य अद्वविहयन्थगा य एगविहयन्थगा य छिन्वहवन्थगा य, अवसेसा नारगाइया जाव वेमाणिया जाओ णाणावरण वधमाणा वधन्ति ताहिं भाणियव्वा । नवर मण्सा ण भंते ! वेयणिज कम्म वन्धमाणा कड कम्मपगढीओ वधित 2 गोयमा ! सन्त्रे वि ताव होजा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य १, अहवा सत्तिविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगे य २, अहवा सत्तिविह-वन्थगा य एगविह्यन्थगा य अट्टविह्यन्थगा य ३, अह्वा सत्तविह्यन्थगा य एगविह्यन्थगा य छिन्नहवन्थगे य ४, अहवा सत्तविह्यन्थगा य एगविह्यन्थगा य छिन्त्रहचन्यमा य ५, अहवा सत्तिवहचन्यमा य एगविहचन्थमा य अट्टविहचन्थए य छिव्वहचन्वए य ६, अहवा सत्तिवहचन्धगा य एगविहचन्धगा य अट्टविहचन्धए य छिव्वहवन्थगा य ७, अहवा सत्तविहवन्थगा य एगविहवन्थगा य अट्टविहचन्धगा य छिव्वहचन्यमे य ८, अहवा सत्तिवहबन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहबन्धगा य छिव्वहबन्धगा य ९, एव एए नव भगा भाणियन्वा॥ ६३५॥ मोहणिजा० वन्यमाणे जीवे कड कम्मपगढीओ वन्धइ १ गोयमा। जीवेगिंदियवज्ञो तियभगो। जीवेगिंदिया सत्तविहवन्धगा वि अद्वविहवन्धगा वि । जीवे ण भते ! आउय कम्म वन्वमाणे ऋ कम्मपगढीओ वन्धङ् गोयमा । नियमा अह, एव नेरइए जाव वेमा-णिए, एव पुहुत्तेण वि । णामगोयतराइय० वन्धमाणे जीवे कइ कम्मपगडीओ वन्धइ 2 गोयमा। जास्रो णाणावरणिज कम्मं वन्धमाणे वन्धइ ताहिं भाणियव्वो, एव नेरइए वि जाव वेमाणिए, एव पुहुत्तेण वि भाणियन्व ॥ ६३६॥ पन्नवणाए भगवईए चउवीसइमं कम्मवन्थपयं समत्तं॥

कइ ण भते ! कम्मपगढीओ पन्नताओ ? गोयमा ! अद्व कम्मपगढीओ पन्नताओ । तजहा—णाणावरणिज जाव अतराइय, एव नेरइयाण जाव वेमाणियाण । जीवे ण भते ! णाणावरणिज कम्मं वन्धमाणे कइ कम्मपगढीओ वेएइ ? गोयमा ! नियमा पगरीमो बंदेव है गोसमा । सत्तविश्वविदयं वा बद्धविश्ववेदयं का बस्तमिष्टवेदयं वा

एवं स्पष्टि है। सेवा सेरणाई एमरेलं पुहुनेत है तिवसा यह वस्प्रसाधिक वेदित वाब केपिया। बीवा के सेते । वेधकिक वस्पे बस्याया वह स्मान्याओं वेदित । केदमा । एक्वे है नाव होता का प्रतिकृति वेदित । केदमा । एक्वे है नाव होता का प्रतिकृत्वेद्या व वतिष्वदेद्या व कार्यक्रियों का प्रतिकृत्वेद्या व कार्यक्रियों का प्रतिकृत्या कार्यक्रियों का प्रतिकृत्या व कार्यक्रियों कार्य

स्तितिहर्ष नए ना अपुनिरमन्त्रम् था यहं नाव नेताविष्, एवं यन्तुरे उदा वीरै ।
वीता मं अंदि । नामाइरिएजो नामा द्रम्पाणा नर् क्राम्पाधिको रामाद्री ।
गोवना ! सन्ते वि ताव होजा स्वतिवृद्धम्या न कृतिवृद्धम्या न ) अद्यो
स्तित्रमन्त्रमा व कृतिवृद्धमन्त्रमा य स्वतिवृद्धम्या न ) अद्यो
स्तित्रमन्त्रमा व कृतिवृद्धमन्त्रमा य श्रित्तेष्ट्यम्या व कृतिवृद्धम्या न महित्रमन्त्रमा व कृतिवृद्धमन्त्रमा व कृतिवृद्धमन्त्रमा न कृतिवृद्धमन्त्रमा न कृतिवृद्धमन्त्रमा न प्रमित्रमन्त्रम्य व ५ अद्या स्तित्रमन्त्रम्य व ५ अद्या स्तित्रमन्त्रम्य व कृतिवृद्धमन्त्रम्य व ५ अद्या स्तित्रमन्त्रम्य व कृतिवृद्धमन्त्रम्य व ५ अद्या स्तित्रमन्त्रम्य व कृतिवृद्धमन्त्रमा व कृतिवृद्धमन्त्रम्य व ५ अद्या स्तित्रमन्त्रम्य य अप्रमित्रमन्त्रम्य व ५ अद्या स्तित्रमन्त्रमम् व अप्रमित्रमन्त्रम्य व ५ अद्या स्तिवृद्धमन्त्रमा य अप्रमित्रमन्त्रम्य व ५ अद्या स्तिविद्यमन्त्रमा व ५ अद्या स्तिविद्यमन्त्रम्यम् व ५ एवं स्तिवृद्यमन्त्रम्यमा व ५ अद्या स्तिविद्यमन्त्रमा व ५ अद्या स्तिविद्यमन्त्रमा व ५ अद्या स्तिविद्यमन्त्रमा व ५ अद्या स्तिविद्यमन्त्रमा व ५ अद्या स्तिविद्यमन्त्रम्यमा व भविद्यमन्त्रम्यम्य व ५ अद्या स्तिविद्यमन्त्रमा व ४ अद्या स्तिविद्यमन्त्रमा व ५ अद्या स्तिविद्यमन्त्यमा व ५ अद्या स्तिविद्यमन्त्रमा व ५ अद्या स्तिविद्यमन्त्रमा व ५ इत्या स्तिविद्यमन्त्रमा व ५ अद्या स्तिविद्यमन्त्यमन्त्रमा व ५ अद्

हवन्यए य चउभगो १, अहवा यत्तविहवन्धगा य अट्ठविहवन्धए य एगविहवन्धगे य चरभगो २, अहवा मत्तविह्वन्थगा य छिव्वह्वन्थए य एगविह्वन्थए य चर्छभंगो ३, अहवा सत्तविहवन्यगा य अट्टविहवन्यए य छिन्वहवन्यए य एगविहवन्यए य भगा अट्ठ, एव एए सत्तावीस भगा । एव जहा णाणावरणिज्ञ तहा दसणावरणिज्ञ पि अतराइय पि ॥ ६३८ ॥ जीवे ण भंते ! वेयणिज कम्म वेएमाणे कइ रम्मपगडीओ यन्यङ १ गोयमा ! सत्तविहवधए वा छिव्वहवन्यए वा एगविहवन्धए वा अवधए वा, एव मण्से वि । अवसेसा णारयाइया सत्तविहवन्धगा अट्टविहवन्यगा य, एव जाव वैमाणिया । जीवा ण भते । वेयणिज कम्म वेएमाणा कड रम्मपगडीओ वन्धन्ति ? गोयमा! सन्वे वि ताव होजा मत्तविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य १, अहवा सत्तविह्वन्थमा य अट्टविह्वन्थमा य एमविह्वन्थमा य छिन्वह्वधमे य २, अहवा सत्तविहयन्थगा य अट्टविहयन्थगा य एगविहयन्थगा य छिन्वहयन्थगा य ३, अवधगेण वि सम दो भगा भाणियव्वा ५, अहवा सत्तविहवनधगा य अट्ट-विहवन्यमा य एमविहवन्थमा य छिव्वहवन्थमे य अवधमे य चउभंगो, एव एए नव भगा। एगिंदियाण अभगय नारगाईण तियभगा जाव वेमाणियाणं। नवर मण्माण पुच्छा । सन्वे वि ताव होजा सत्तविह्वधगा य एगविहवन्धगा य, अहवा सत्तविह-वन्धमा य एमनिहवंबमा य छिन्तिहवधए य अट्टनिहवधए य अवधए य, एव एए सत्तावीस भगा भाणियन्वा, एव जहा वेयणिज तहा आउय नाम गोय च भाणि-यव्व । मोहणिज वेएमाणे जहा णाणावरणिज तहा भाणियव्व ॥ ६३९ ॥ पन्नव-णाए भगवईए छन्दीसहमं कम्मवेयवन्धपयं समत्तं ॥

कड़ ण भते ! कम्मपगढीओ पन्नताओ ? गोयमा ! अह कम्मपगढीओ पन्नताओ । तजहा—णाणावरण जाव अतराइय, एव नेरहयाण जाव वेमाणियाण । जीवे णं भते ! णाणावरणिज कम्म वेएमाणे कइ कम्मपगढीओ वेएइ ? गोयमा ! सत्तविह्वेयए वा अहिवह्वेयए वा, एव मण्से वि । अवसेसा एगत्तेण वि पुहुत्तेण वि णियमा अह कम्मपगढीओ वेदिति जाव वेमाणिया । जीवा ण भते ! णाणावरणिज्ञ० वेएमाणा कइ कम्मपगढीओ वेएति ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ञा अहिवह्वेयगा १, अहवा अहिवह्वेयगा य सत्तविह्वेयगे य २, अहवा अहिवह्वेयगा य सत्तविह्वेयगा य ३, एव मण्सा वि । दिसणावरणिज्ञ अतराइय च एवं चेव भाणियव्व । वेयणिज आउयनामगोत्ताइ वेएमाणे कइ कम्मपगढीओ वेएइ ? गोयमा ! जहा वधवेयगस्स वेयणिज्ञ तहा भाणियव्वाणि । जीवे ण भते ! मोहणिज्ञ कम्म वेएमाणे कइ कम्मपगढीओ वेएइ ? गोयमा ! जहा वधवेयगस्स

कम्मवेयवेयप्यं समनं ॥ सिक्ताहारही केवर कि वानि सम्बजो पेव । बद्धार्य सब्दे बस्त परियाने 🐃 बोकस्वे ॥१॥ पृतिदिनसरीराई सोमाहारो तहेव सवसक्वी । एएसि तु प्रवार्व निमः-

नजा होह कामच्या ॥२॥ नेरहमा जं मंते ! 🗱 समिताहारा अभिताहारा मीस-हारा ! गोयमा ! नो सन्धिताहारा अनियाहारा नो मीसाहारा एवं अध्यासकारा जाब वैमानिया । क्येराविकसरीरा जाब शबसा सनिताहारा नि अविताहारा नि मीसाहारा वि । नरहमा भै भंते ! आहारकी शहनता! आहारको । बेरहजा में भते ! केमहमात्रस्य बाहारद्वे समुप्पज्ञह । गोयमा ! नेरह्याणं दुविते आहारे पत्रपे । र्वजरा-आसोगनिव्यक्तिए व अवागोयनिव्यक्तिए व । तत्व व वे से अवागोयनिव्य

विए से ज अनुसमस्मिरिहरू आहारके समुख्यका । तरव में के से शासीगनित्र-चिए से वं वर्षकिञ्चसम्हए अरोमुहुतिए आहारहे समुप्पञ्च ॥ ६४९ ॥ नैरह्मा र्ग मंत्र । किमाद्दारमाद्द्रारेति । गोयमा ! रम्बको अर्णतपप्रियतः, केत्रको अर्णने पएचोगाडाई, कामभो अन्त्रवरक्षित्रवाई, भावको चण्णसदाई संघनताई रामंदाई फासमताह । वाहं संत । माबमो बळानंताहं भाषारिति ताह कि एगवण्याहं भारारिति बान पेनकनाई आहारिति ! गोनमा ! ठाणमध्यर्थ पहुच एगवरवाई पि आहारिति बाब प्रवचनमाई पि माहारेशि निहाणसमार्थ पहुच शास्त्रकाई पि माहारेशि बाब द्वतिक्रमं पि भारतारेति । बार्च वण्यको कास्वकन्मम शक्रारेति तमं कि पृष पुजरासर्व बाहारेंदि कार दसपुबकायतं बाहारेंदि संविक्यपुणकासरं, <sup>सर्च</sup> विज्ञानकासर्व, सर्वेद्धानअकार्व साहारेति है योगमा । एमगुलकाकार्व पि अही-

रैति जाव अर्णक्षामनामाह वि अक्षारेति एवं जान तक्षिणको वि एवं गनामे नि रसभी वि । बाई मानमी फासमैदाई भारारेवि ताई वी एमपासाई नाहारिति की हुफ्रमाई बाहारेंत्रि नो तिशासई बाहारेन्ति *च*रफासाई पि शहारेन्ति जान मह भारतं पि आहारेन्ति निहासमार्थं पटुच करवावां पि आहारेन्ति वाव सुनवारं। बाई फासमी कमधार्गा माहारेन्ति ताई कि एगगुचक्तपादाई माहारेन्ति जान सर्गतपुन्नरक्याङाई सम्हारेग्ति ! गोसमा ! एनपुन्यस्त्यव्यई पि साहारेग्ति जन सर्वतगुणस्त्रवादादं पि आहारेनियः एवं अद्भवि पासा सावित्रवा अतः समय गुम्पुक्ताई पि बाहारेन्ति । बाई अति । अर्वतगुक्तकाई बाहारेन्ति ताई कि पुद्राई माहारेन्ति मपुद्राई भारारेन्ति । गोनमा । पुद्राई माहारेन्ति । नो नपुद्राई नाहारेग्वि जहा मासुर्तप् जाव नियमा छहिसि माहारेश्नि क्रोसन्तं कारण

पडुच वण्णओ कालनीलाई, गघओ दुन्भिगधाई, रसओ तित्तकडुयाइ, फासओ क्क्लडगुस्यसीयलुक्खाइ, तेसिं पोराणे वण्णगुणे गधगुणे रसगुणे फासगुणे विपरि-णामइत्ता परिपीलइत्ता परिसाडइत्ता परिविद्धंसङ्ता अण्णे अपुन्वे वण्णगुणे गध्गुणे रसगुणे फासगुणे उप्पाइत्ता आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले सन्वप्पणयाए आहार आहारेन्ति । नेरइया ण भते । सन्वओ आहारेन्ति, सन्वओ परिणामेंति, सन्वओ ऊससति, सन्त्रओ नीससति, अभिक्खण आहारेन्ति अभिक्खण परिणार्मेति, अभिक्खण ऊससति, अभिक्खण नीससति, आहच आहारेन्ति, आहच परिणा-मेंति, आहच ऊससति, आहच नीससति १ हता गोयमा! नेरइया सन्वओ आहारेन्ति एवं त चेव जाव आह्च नीससित ॥ ६४२ ॥ नेरइया ण भते ! जे पोग्गले आहारताए गिण्हित ते ण तेसिं पोग्गलाण सेयालिस कड्भाग आहा-रेन्ति, क्इमाग आसाएति 2 गोयमा। असखेजाइभाग आहारेन्ति, अणतभाग अस्साएति । नेरइया ण मते । जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हति ते कि सब्वे आहारेन्ति, नो सन्वे आहारेंति <sup>१</sup> गोयमा! ते सन्वे अपरिसेसए आहारेन्ति । नेरइया ण भते ! जे पोग्गला आहारताए गिण्हति ते ण पोग्गला वेसिं कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमति १ गोयमा । सोइदियत्ताए जाव फासिंदियताए अणिद्वताए अकतत्ताए अप्पियत्ताए असुमत्ताए अमणुण्णत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अ(ण)भिज्जियत्ताए अहताए नो उष्टुताए दुक्खताए नो सुहत्ताए तेसिं भुजो भुज्जो परिणमति ॥ ६४३ ॥ असुरकुमारा ण भेते ! आहारट्ठी १ हता ! आहारट्ठी । एव जहा नेरइयाण तहा असुरकुमाराण वि भाणियव्व जाव तेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमति । तत्थ ण जे से आभोगनिव्वत्तिए से ण जहण्णेण चउत्थभत्तस्स, उक्तेसेण साइरेगवाससहस्सस्स आहारहे समुप्पज्जइ । ओसण्ण कारण पडुच वण्णओ हालिद्युक्तिलाइ, गधओ सुब्भिगधाइ, रसओ अविलमहुराई, फासओ मरुयलहुय-निद्धण्हाइ, तेसि पोराणे वण्णगुणे जाव फासिदियताए जाव मणामत्ताए इच्छियत्ताए भिज्ञियत्ताए उष्ट्रताए नो अहत्ताए सुहत्ताए नो दुहत्ताए तेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमति, सेस जहा नेरइयाण, एव जाव यणियकुमाराण, नवर आभोगनिव्वत्तिए उक्कोसेण दिवसपुहुत्तस्स आहारहे समुप्पज्जइ ॥ ६४४ ॥ पुढविकाडया ण भते ! आहारट्टी १ हता । आहारट्टी । पुढविकाइया ण भते ! केवइकालस्स आहारट्टे समुप्पज्जड १ गोयमा । अणुसमयमविरहिए आहारहे समुप्पज्जइ । पुढिनकाइया ण भंत ! किमाहारमाहारेन्ति <sup>2</sup> एव जहा नेरइयाण जाव ताड कइदिसिं आहारेन्ति <sup>2</sup> गोयमा ! निव्वाघाएण छिद्दिसि, वाघाय पहुच सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय

पैचरिति नवरं ओसलवारचं न अत्यद् । बण्यको वास्त्रजीतस्मोहियद्दारिज्यविकर्णः गेपको मुक्तिगरप्रक्रियंभारं, रसको वित्तरसङ्क्ष्यसस्यावरमक्रीवित्तमहुर्गः पासमो क्ल्लब्यासमञ्ज्याहरमस्त्रुवसीयतक्ष्णिक्लुक्साई, तेन्त्रं योगाने वन्त्रुव रीस बना नेरहमार्च बाब आहब नीमसंति । पुत्रविशहमा व मेते ! जे फेम्प्रे आहारताए गिर्व्हेंति वेसिं भेते ! पोम्पसार्व सेवासंखि कदमार्ग आहारेन्ति क्यमार्य आसार्पति ! गोनमा ! असेकेक सामं आहारेन्ति अर्णतमार्ग कासार्पति । पुर्वान काइया में मेते ! के पोम्पके काहारताए गिर्व्हति से कि सका आहारेन्ति मी सम्बे आहारन्ति है बहेब नेरहवा सहेब । पुत्रविकारवा व असे ! जे पोमाने माद्वारताए मिन्देति ते पं प्रमाना तेनि कीसताए भूजो भूजो परैक्पेति गीनमा ! प्रासिदियवेमायकाए देखि भुज्यो मुज्जो परिवर्मति एवं बाव वजस्मा शहना u ६४० u बेईदिया में मेरे ! आहारही ! इन्ता! आहारही । बेईदिया में मेर केनहभावस्य आहारहे समुप्पनद है जहां बेरहवार्ग अवर सत्य में जे से बामान निव्यक्तिए से य सर्वविज्ञसमञ्जू अंतोस्वृहतिए बेमानाए आहारहे स्मृप्पज्ञाः सर्व जहा पुरनिकार्याण जान आहन नीससदि मनरे नियमा सहिति। वेहंदिनार्य मेर्ते । मे पोल्पके बाहारताए मिल्हति ते ने तेसि पुरुगकामं सेपानंसि <sup>कर</sup> मार्ग आहारेन्ति कदमान जासापृति । एवं वहा नेरह्याच । वेइंदिना वं मंत्री ने पेरमका आहारताए गिक्ति ते कि सकी माहारेन्ति को सक्त माहारेन्ति गीनमा । वेहेंदिवाणं दुविहे जाहारे पत्रते । तब्दा-सोगाहारे व पत्रवेताहारे व ने पोव्यके सोनाहारताए विन्हानित ते सक्ने अपरिपेधे आहारेन्ति से पोव्यके पन-वेवाहारताए गेण्डंति वेतिमधेकेकश्मायमाहारेन्ति क्येगाई च में मामस्वरसम अफासाइज्यानाई जनासाइज्यानाई विश्वसागर्वाति । यपति वं मेते ! प्रेम सार्वं समानाइजनामाण अपासाइजनामाण य कवरे कारेहितो समा वा ४ है गीनमा । सम्बद्धाना पोगाका अवासा-अमाना अफासाइजनामा अर्थटगुर्था । वेदंविया में सेते ! के पोरगका आहारताए-पुष्का । गोयसा ! विकिसियरासिवर बेमायताप देखि मुख्ये मुख्ये परिणमति । एवं जाव कर्तरिदेश यदर येगई च च भागसङ्ख्यादं अनावा जमानादं अनासङ्जनानादं अधासहजनानादं विदेशमा यस्कृति । एएसि में भरे ! पोमान्सवे अनावाह्यसावार्यं बयासाहजसायार्वं बरा-साइज्यसामाण य क्यरे क्यरेहितो क्या वा ४३ घोदमा ! सव्वरचीवा पीमासा अवा-वारकमाना स्वामद्यसमाया सर्वतगुवा अपायार्जमावा सर्वतगुवा ॥ ६४६ ॥ ति दिवा में मेठ ! के पोम्पका-पुष्पा । गोयमा ! ते न पोम्पका वासिदिवि मि

4 8

दियफासिंदियवेमायत्ताए तेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमति । चडरिंदियाण चिंखिदय-घाणिदियजिदिंगदियफासिंदियवेमायत्ताए तेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमति, सेस जहा तेइदियाण । पर्चिदियतिरिक्खजोणियाणं जहा तेइदियाण, णवर तत्य ण जे से आभोगनिब्बत्तिए से जहण्णेण अतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेण छट्टभत्तस्स आहारट्ठे समुप्प-जइ। पर्चिदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! जे पोग्गला आहारत्ताए-पुच्छा। गोयमा! सोइदियचिन्खदियघाणिदियजिन्भिदियफासिदियनेमायत्ताए तेसि भुज्जो भुजो परि-णमति । मणूसा एव चेव, नवर आभोगनिव्वत्तिए जहन्नेणं अतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेण अद्वमभत्तस्स आहारहे समुप्पज्जइ । वाणमतरा जहा नागकुमारा, एव जोडसिया वि, नवरं आभोगनिव्वत्तिए जहन्नेण दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेण दिवसपुहुत्तस्स आहारहे समुप्पजइ, एवं वेमाणिया वि, नवर आभोगनिव्वत्तिए जहन्नेण दिवसपुहत्तस्स, उक्को-सेण तेत्तीसाए वाससहरसाणं आहारहे समुप्पज्जइ, सेस जहा असुरकुमाराणं जाव तेसिं भुजो भुजो परिणमति । सोहम्मे आभोगनिव्वत्तिए जहन्नेण दिवसपुहत्तस्स, उङ्कोसेणं दोण्ह वाससहस्साण आहारहे समुप्पजइ । ईसाणे पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण दिवस-पुहुत्तस्स साइरेगस्स, उक्कोसेणं साइरेग दोण्ह वाससहस्साण। सणकुमाराण पुच्छा। गोयमा । जहन्नेणं दोण्ह वाससहरसाण, उक्नोसेण सत्तण्ह वाससहरसाण । माहिंदे पुच्छा । गोयमा ! जहनेण दोण्ह वाससहस्साण साइरेगाणं, उक्कोसेण सत्तण्ह वाससहस्साण साइरेगाण । वभलोए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण सत्तण्ह वाससह-स्साण, उन्होसेण दसण्ह वामसहस्साण । रुतए ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण दसण्हं वाससहस्साण, उक्कोसेण चउदसण्ह वाससहस्साण। महासुक्के णं पुच्छा। गोयमा! जहनेण चउदसण्ह वाससहस्साण, उद्दोसेण सत्तरसण्ह वाससहस्साण। सहस्सारे पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण सत्तरसण्ह वाससहस्साण, उक्कोसेण अद्वारसण्हं वाससह-स्साण । आणए ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अद्वारसण्ह वाससहस्साण, उक्कोसेण एगूणवीसाए वाससहस्साण । पाणए ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण एगूणवीसाए वाससहस्साण, उक्कोसेण वीसाए वाससहस्साण । आरणे ण पुच्छा । गोयमा! जह-न्नेण वीसाए वाससहस्साण, उक्कोसेण एक्कवीसाए वाससहस्साण। अञ्चुए ण पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेण एक्कवीसाए वाससहस्साण, उक्कोसेण वावीसाए वामसहस्साणं । हिद्दिमहिद्दिमगेविज्जगाण पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण वावीसाए वाससहस्साण, उक्षोसेणं तेवीसाए वाससहस्साण, एव सन्वत्य सहस्साणि भाणियव्वाणि जाव सव्वद्घ । हिद्दिसमज्झिमगाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण तेवीसाए, उक्कोसेण चउवीसाए । हिद्दिमउवरिमाण पुच्छा । गोयमा ! जहनेण चउवीसाए, उक्कोसेण पणवीसाए ।

मजिसमदबरियाणं पुष्पम । गोवमा ! जहचेणं स्थावीसाय, उद्योसेणं सद्धारीसार् । उनरिमहेडिमाण पुच्छा । मोममा ! बहुवेर्ण अहुवीसाय, उक्कोसेर्ण एगूनतीसार । उपरिममजिसमार्थं पुष्का । गोसमा ! अङ्गोर्ण पुगुलशीसाय, उद्योसेर्ण शीसाय ! उनिस्मतनिमार्ज प्रच्छा । गोयमा । बहुबेर्च तीसाए, उद्दोसेष एक्दीसाए । विजय वेजवतक्यंतजपराजिवाणं प्रच्छा । गोसमा । जहबेणं धगतीसाए, उद्दोरेणं वेतीसाए । सम्बद्धस्थवनवेवान पुच्छा । गोयमा । अवहन्नाम्बद्धारेश्यं वेतीसाए बाससहस्थानं भाहारहे समुणक्त ॥ ६४७ ॥ मेरहवा र्ण भते । 🏂 एर्थिववस्यीर्धः माद्वारेन्ति बाव पेविवियस्तरीरक भादारेन्ति । गोयमा । पुरुवानपुरुवावर्ष पहुच प्रिंदियस्पीराह पि जाहारेन्ति जाव पंथितिय पद्धप्यव्यमावपञ्चवर्ण पहुच निक्सा पर्विदियसरीराई आहारेन्ति एवं जाव वन्तिवकुमारा । प्रक्रिकाइमार्च प्रकार गोसमा । पुल्लभावपन्त्रवर्ण पद्भव एवं चेव पद्धप्यव्यभावपन्नावर्ण पद्भव निक्सा प्रितियसपीरातं आहारेश्ति । बेडंबिना पुज्यसानप्रवासं पहच वर्व केन पहण्यस भानपञ्जनम पहुच निक्सा बेहंदिनाण सरीराई आहारेन्ति एवं बाव बडरिहेना जाव पुरुषमाक्ष्यकां पहुच एवं पहुप्परूपमाक्षप्रवर्ध पहुच नियमा करत व्य इंदिसम् तत्रइंदिसम् सरीरमं आकारेन्ति सेसा वहा नेरहवा जाव वेसानिना । नेरहरा ग मते ! कि स्रोमाहारा परकेशहारा है शोयमा ! स्रोमाहारा नी परकेश-द्वारा एवं एगिदिना सब्बे देना व मानियन्ता जान नेमानिया । देवेदिया जाव मण्सा कोमाद्वारा नि पक्केबाहारा नि ॥ ६४८ ॥ नेराव्या व मंते । कि बोबाहारा मजसक्बी र योगमा । बोनाहारा जो सजनक्बी एवं एवं बोरास्थिएरीरा वि। देशा सम्बं नि बान नेगायिना खोनाहारा वि गणमक्की नि । शुल्ब में जे हे मन-सक्वी बंबा वेसि ण इप्लामने समुण्यकः इय्बामो वं मणमस्यानं वरितप् तप् वं तेहिं देवेहें एवं मणसीवए समाचे किप्पानेद के पोन्मस्य इद्धा कंता बाद मचामा वे तेसिं मजगनवाराप् परिणमंति से बहामामए सीवा पोम्पन्य सीवं पण सीवं वेत भा बरताणं निकृति उतिभा वा पोम्मका उतिर्थं पव्य सरिकं चेद अद्वरतायं निकृति एवामेव राष्ट्रिं रवेष्ट्रिं मध्यमक्षीकए समाने से इच्छामणे शिष्णामेव अवेद ह ६४९ ह पद्मवणाय मगवर्षेय महावीसहमे आहारपय पहमो बहेसी समत्ती।

काहार मंत्रिय संज्यी हैसा विद्वी य संजय क्साए । वाले बोगूबारोगे पेए व एपैर पत्रची । बीबे के मंत्रों ! कि काहारए क्याहारए ? योगमा ! हिन आहारए, दिन अणाहारए, एव नेरडए जाव असुरकुमारे जाव वेमाणिए। सिद्धे ण भते ! कि आहारए अणाहारए <sup>१</sup> गोयमा ! नो आहारए, अणाहारए । जीवा ण भते ! किं आहारया अणाहारया <sup>2</sup> गोयमा ! आहारया वि अणाहारया वि । नेरङयाण पुच्छा । गोयमा ! सन्वे वि ताव होजा आहारया १, अहवा आहारगा य अणाहारए य २, अहवा आहारगा य अणाहारगा य ३, एव जाव वेमाणिया, णवर एगिंदिया जहा जीवा । सिद्धाण पुच्छा । गोयमा ! नो आहारगा, अणाहारगा ॥ दारं १ ॥ भवसिद्धिए णं भते ! जीवे कि आहारए अणाहारए <sup>2</sup> गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणा-हारए, एव जाव वेसाणिए। भवसिद्धिया ण भते ! जीवा कि आहारगा अणाहारगा 2 गोयमा ! जीवेगिंदियवज्जो तियमगो, अभवसिद्धिए वि एव चेव । नोभवसिद्धिए-नोअभवसिद्धिए ण भते ! जीवे कि आहारए अणाहारए १ गोयमा ! णो आहारए, अणाहारए, एव सिद्धे वि । नोभवसिद्धियनोअभवसिद्धिया ण भते ! जीवा कि आहारमा अणाहारमा १ गोयमा ! नो आहारमा, अणाहारमा, एव सिद्धा वि ॥ दारं २ ॥ सण्णी णं भते ! जीवे किं आहारए अणाहारए १ गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए, एव जाव वेमाणिए, नवर एगिंदियविगलिंदिया नो पुच्छिजाति। सण्णी ण मते ! जीवा कि आहारगा अणाहारगा 2 गोयमा ! जीवाइओ तियभगो जाव वेमाणिया । असण्णी ण भते । जीवे किं आहारए अणाहारए 2 गोयमा । सिय आहारए, सिय अणाहारए, एव णेरइए जाव वाणमतरे । जोडसियवेमाणिया ण पुच्छिजति । असण्णी ण भते ! जीवा किं आहारगा अणाहारगा <sup>२</sup> गोयमा ! आहारगा वि अणाहारगा वि एगो भगो। असण्णी ण भते ! णेरइया किं आहारया अणाहारया 2 गोयमा । आहारगा वा १, अणाहारगा वा २, अहवा आहारए य भणाहारए य ३, अहवा आहारए य अणाहारया य ४, अहवा आहारगा य अणाहारए य ५, अहवा आहारगा य अणाहारगा य ६, एव एए छन्भगा, एवं जान थणियकुमारा । एगिंदिएस अभगय, वेइदिय जान पंचिंदियतिरिक्खजोणिएस तियभगो, मणूसवाणमतरेसु छन्भगा। नोसण्णीनोअसण्णी ण भते ! जीवे किं आहारए अणाहारए <sup>२</sup> गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए य, एवं मणूसे वि । सिद्धे अणाहारए, पुहुत्तेण नोसण्णीनोअसण्णी जीवा आहारगा वि अणाहारगा वि, मण्सेस तियमगो, सिद्धा अणाहारगा ॥ दार ३ ॥ ६५० ॥ सलेसे ण मते ! जीवे किं आहारए अणाहारए १ गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए, एव जाव वेमाणिए। सलेसा ण भते ! जीवा किं आहारगा अणाहारगा १ गोयमा ! जीवेपिं-दियवजो तियमगो, एव कण्हलेसा वि नीललेसा वि काउलेसा वि जीवेगिंदियवजो अस्माई बहा गोमव्याचाभरक्या ॥ वारं ७ ॥ ६५४ ॥ बाजी बहा सम्मादी ! आभिनिनाहियमाणी सुवणाची व वेर्द्रतिसतेर्द्रतियवउरितिएस स्टब्स्टा अवसेना नीनाइभा दिवसयो असि नास्य । भोडिणाची पंचिदयदिस्वराजीयना नाहार्या ना भगाद्दारमा अवनेसंयु जीवाद्को निजर्मयो जेनि मरिय मोद्दिनाचे संचवजरनाची जीवा मनुगा व एगतेण वि पुहुत्तेण वि आहारमा । णा अजाहारमा । वेषसनानी बद्दा नोगरणीनाभगण्यो ॥ बार्र ४-९ ॥ अन्याणी सङ्ग्रन्थाणी सुवभगानी वीने निदिवरमा नियममा । निर्मणणाची पर्विदियनिरिवररजोणिया सब्रुगा व बाहारमा ना भगाहारमा अवसंग्रेष्ठ जीवाइमा शियसमी ॥ हारे ८-९ ॥ ६५५ ॥ राज्येनी जीवनिदियाजा नियर्भगो । मनजागी बन्जागी जहां नम्मामिन्डरिद्धी नारे वर जागा भिगतिदिवाण वि । कामजोगील अधिमिदियरको तिमर्भगा अजोगी जीव मनुसमिद्धा समाहरसमा ॥ दारं ९ ॥ मायाराणायारोवउनेमु जीपनि वियाजी विवर्तनी शिद्धा भणाद्वारमा ॥ बारं ९ व सर्वेयए जीवेगिदिवयचो नियमेगा श्रीचिरासपुरिय-

वेयएस जीवाइओ तियभगो, नपुसगवेयए य जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, अवेयए जहा केवलणाणी ॥ दारं ११॥ ६५६॥ ससरीरी जीवेगिंदियवज्जो तियभगो, ओरालिय-सरीरीजीवमणूसेसु तियभगो, अवसेसा आहारगा, नो अणाहारगा जेसिं अत्थि ओरालियसरीर, वेडव्वियसरीरी आहारगसरीरी य आहारगा, नो अणाहारगा जेसिं अत्थि, तेयकम्मसरीरी जीवेगिंदियवज्जो तियभगो, असरीरी जीवा सिद्धा य नो आहारगा, अणाहारगा ॥ दारं १२ ॥ आहारपज्जतीए पज्जत्तए सरीरपज्जतीए पज्जत्तए ईंदियपज्जत्तीए पज्जत्तए आणापाणुपज्जतीए पज्जत्तए भासामणपज्जतीए पज्जत्तए एयासु पंचसु वि पजत्तीसु जीवेसु मण्सेसु य तियभगो, अवसेसा आहारगा, नो अणाहारगा, मासामणपज्जत्ती पर्चिदियाणं, अवसेसाण नित्य । आहारपज्जत्तीअपज्जत्तए णो आहारए, अणाहारए एगत्तेण वि पुहुत्तेण वि, सरीरपज्जत्तीअपज्जत्तए सिय आहारए सिय अणाहारए, उनिरिक्ष्यासु चउसु अपजन्तीसु नेरहयदेवमणूसेसु छन्मगा, अवसेसाण जीवेगिंदियवजो तियभगो, भासामणपजन्तएस जीवेस पर्चिदियतिरिक्खजोणिएस य तियभगो, नेरइयदेवमणुएसु छन्भगा । सन्वपएसु एगत्तपोहत्तेण जीवाइया दङगा पुन्छाए भाणियन्वा जस्स ज अन्थि तस्स तं पुच्छिजङ, जस्स ज णरिथ तस्स त ण पुच्छिजइ जाव भासामणपजतीअपजत्तएसु नेरइयदेवमणुएसु छन्भगा, सेसेसु तियभगो ॥ ६५७ ॥ दार १३ ॥ विद्यो उद्देसो समत्तो ॥ पन्नवणाप भगवईए अट्टावीसइमं आहारपयं समत्तं॥

कड़िवहें ण भते! उवओगे पन्नते १ गोयमा! दुविहें उवओगे पन्नते। तजहा-सागरीवओगे य अणागरीवओगे य। सागरीवओगे ण भते! कड़िवहें पन्नते १ गोयमा! अट्ठिवहें पन्नते। तजहा-आभिणिवोहियणाणसागारीवओगे, क्रेन्नलणाणसागारीवओगे, ओहिणाणसागारीवओगे, मणपज्जवणाणसागारीवओगे, केन्नलणाणसागारीवओगे, महअण्णाणसागारीवओगे, सुयअण्णाणसागारीवओगे, विभगणाणसागारीवओगे। अणागारीवओगे ण भते! कड्विहे पन्नते १ गोयमा! चउिवहें पन्नते। तजहा-चक्खुदसणअणागारीवओगे, ओहिदसणअणागारीवओगे, केनलदंसणअणागारीवओगे, अचक्खुदसणअणागारीवओगे, लेनलदंसणअणागारीवओगे य। एव जीवाण ॥ ६५८॥ नेरहयाण भते! कड्विहे उवओगे पन्नते १ गोयमा! दुविहे उवओगे पन्नते । तजहा-सागारीव-ओगे य अणागारीवओगे य। नेरहयाण भते! सागारीवओगे कडविहे पन्नते १ गोयमा! छिवहें पन्नते । तजहा-महणाणसागारीवओगे, सुयणाणसागारीवओगे, नेरहयाण भते! अणागारीवओगे, सुयणाणसागारीवओगे, नेरहयाण भते! अणागारीवओगे, सुयअण्णाणसागारीवओगे, विभ-गणाणसागारीवओगे। नेरहयाण भते! अणागारीवओगे कड्विहे पन्नते १ गोयमा!

717 [ ए**ज्यानम**पूर्व सचागमे विभिद्ये प्रचारे । संबद्धा-चनच्चवसणअणायारोवओं अचनवारंसणअणागारोवअणे भोद्विदसम्भगाराखेवजाने एवं जाव वकियनुमाराखं । पुन्नविशाह्याच पुस्छा । गोयमा ! दुनिहे सक्कोगे पक्तो । तबहा-सागारीक्कोगे अवागारीक्कोगे स : पुण्डे कार्यार्थः सागारोक्कोगे कहिंबे पचते ? गोयसा ! बुविडे पक्तो । ठंबदा-महभक्तान-सागारोवकोगे सुवक्रभगणसागारोवकोगे व । पुत्रविकाह्याण क्षणायारोवकोगे क् विहे पन्ते ! गोयसा ! एगे अवन्यप्रसम्बन्धारारोवजोगे पन्ते एव बाव वयस्पर-शहराम : बेइदिनामं पुच्छा । गोयमा ! बुविहे उत्रभागे पहले । समहा-सागारीम आरो अजागारोनओं व । नेईदिनाण संते ! सागारोक्यों गे काबिडे पनते ! गोमगा चठिकाहे पत्ती । तकहा-आभिनियोद्वियशाय सुवजाज सहस्रकाक उन अञ्जानसामारोवओंगे । वेइंदियार्ण भंते ! अजायारोक्योगे कहनिष्ठे पन्ते ! मोसमा ! एगे <del>अववक्</del>षदसम्भजागारोज्योगे एवं देईदियाच वि । वटरिविजाम वि एवं वर मधरं अजागारोबसोगे दुनिहे पसते । संस्था<del>-कास</del>र्वसनसमारोबजोगे अन्यतः र्देसगमनारोगभोगे । पंचित्रविरिषकाभोनियार्ण बद्दा सेरहमार्ग । सहस्मार्ग बद्दा कोहिए उक्कोने मणियं तक्षेत्र माणिकव्यं । बाधमंतरको सिववेमाविकार्यं वर्षा गेरह्यार्थं ॥ ६५९ ॥ जीवा न मंति । कि सामारोबडता बगामारोबडता । मीयमा सागारोक्उत्ता वि सणागारोक्उता वि । से केच्छ्रेचं संते ! एवं ब्रुवह-'वांना सामा रोवउत्ता नि समागारोवठता वि' है योगमा ! केर्च जीवा आमिलिनोहिमनाक्युवनार्व ओद्दिजाजसम्पद्मकामकोत्रकाणसङ्ग्रहमान<u>स्य</u>वकानविसंगवाजोऽदता जीवा सागारीवउत्ता केलं श्रीवा चन्नद्वदंगनकवन्द्वन्यनकोहिदसमहेनलंगने बढता धर्म जीवा मजागारीवढता छ तबद्वेज पोयमा। एवं पुचर--- वीवी समारोपउत्ता नि मणागारोउदत्ता वि' । नरह्मा गै संद ! 🎋 सागारोपउत्ता अना गारोवउत्ता 🖁 गोयमा 🛘 मंध्रुया सागारोवउत्ता वि क्यामारोवउत्ता वि । सं वयद्वेर्य मर्भकापपुरभवाधिकंगनाणीवउत्ता तर्ण नेरह्या सागारीवउत्ता अर्थ नेरहर्या चनगुरंसगमचनगुरसमामोहित्सणायज्ञता तथ मेरद्या अवासारोवउत्ता में तेन द्वेणं गोबमा एव बुक्द-जान सागारीवउत्ता नि अणागारीवउत्ता नि' एव जाव यमियुमारा । पुटनिवाह्याचे पुण्छ । योजसा । शहेत्र जाव सेच पुरनिवन्द्रवा महत्रन्याणमुबक्तन्यात्रावरणा तेथ पुत्रविष्ठाह्या मागारीवरणा अर्थ पुत्रविष्ठाह्या अवस्युर्वमगोद्रउत्ता सर्वे पुरविशाहवा अवामारोद्रउत्ता से तपद्वर्य गायमा । एव बुबर जाव वयण्डकार्या । वहंदियाचं मंत्र । अट्टमरिया तहर पुग्छ ।

गोयमा ! जाव जेण वेइदिया आभिणियोहियणाणसुत्रणाणमइअण्णाणसुयणाणोवडत्ता तेण वेइदिया सागारोवडत्ता, जेणं बेइदिया अवक्खुदसणोवडत्ता तेणं अणा-गारोवडत्ता, से तेणहेण गोयमा ! एव वुचइ०, एव जाव चडिरिदिया, णवर चक्खु-दसण अब्भिह्यं चडिरियाण ति । पंचिदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, मणूसा जहा जीवा, वाणमतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया ॥ ६६० ॥ पन्नवणाप भगवईए एगूणतीसइमं उवओगपयं समत्तं ॥

कड्विहाण भते ! पासणया पन्नता ? गोयमा ! दुविहा पासणया पन्नता । तजहा-सागारपासणया, अणागारपासणया । सागारपासणया ण भते ! कङ्विहा पन्नता <sup>२</sup> गोयमा ! छिन्नहा पन्नत्ता । तजहा-सुयणाण०पासणया, ओहिणाण०पास-णया, मणपज्जवणाण०पासणया, केवलणाण०पासणया, सुयअण्णाणसागारपासणया, विभगणाणसागारपासणया । अणागारपासणया ण मते ! कड्विहा पन्नत्ता <sup>२</sup> गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता । तजहा-चक्खुदसणअणागारपासणया, ओहिदसणअणागारपासणया, केवलदंसणअणागारपासणया, एव जीवाण पि । नेरडयाण भते ! कड्विहा पासणया पन्नता १ गोयमा । दुविहा पन्नता । तंजहा-सागारपासणया, अणागारपासणया । नेरइयाण भते ! सागारपासणया कड्विहा पन्नता <sup>2</sup> गोयमा ! चडव्विहा पन्नता । त्तजहा-सुयणाण०पासणया,ओहिणाण०पासणया,सुयअण्णाण०पासणया, विभगणा-ण॰पासणया। नेरइयाण मते ! अणागारपासणया कहविहा पन्नता १ गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता । तजहा-चक्खुदसण० ओहिदमण०, एव जाव थणियकुमारा । पुढविकाङ्याण भते । कड्विहा पासणया पन्नता <sup>२</sup> गोयमा । एगा सागारपासणया प० । पुढविकाइयाण भते ! सागारपासणया कइविहा पन्नता 2 गोयमा ! एगा स्रयअन्नाणसागारपासणया पन्नता, एव जाव वणस्सइकाइयाण । वेइदियाण भते ! कहविहा पासणया पन्नता 2 गोयमा । एगा सागारपासणया पन्नता । वेडदियाण भते । सागारपासणया कड्विहा पन्नता २ गोयमा । दुविहा पन्नता । तंजहा-सुयणाणसागारपासणया, सुयअण्णाण-सागारपासणया, एव तेइदियाण वि । चउरिंदियाण पुच्छा । गोयमा ! डुविहा पत्रता । तजहा-सागारपासणया य अणागारपासणया य । सागारपासणया जहा वेइदियाण । चउरिंदियाण भते । अणागारपासणया कइविहा पन्नता 2 गोयमा ! एगा चक्खुटसणअणागारपासणया पन्नता । मणूसाण जहा जीवाण, सेसा जहा नेर-इया जाव वेमाणियाण ॥ ६६१ ॥ जीवा ण भते ! कि सागारपस्सी, अणागार-पस्ती १ गोयमा । जीवा सागारपस्ती वि अणागारपस्ती वि । से केणहेण भते ! एव वुचइ-'जीवा सागारपस्सी वि अणागारपस्सी वि'? गोथमा । जेण जीवा

चेव नदरं सागारमसणवाण् मणपञ्चनभाजी चेवसनाथी सृष्यः, अधारमसम्ब वाण् केवस्वरंसणं नतिय एवं बाव चन्दियुरमारा । पुत्रविकारवाणं पुच्छा । ध्येनमा ।

पुडिय राह्या सामारपस्ती को भाषायारपस्ती । से केल्क्क्रेण मंते ! एवं इन्ह गोनमा ! पुढविराह्बाच एना पुबक्तजाणसागारपास्त्रवा पनता से उन्देवे योगमा । एव तुच्छ, एवं जाव वजस्महशहयार्ग । बेहदिवास पुच्छर । मोनमा सागारपरसी जो अजागारपरसी। से केजद्वेर्ण मंते ! एवं कुक्द [ गोयमा | केवियान हुविद्वा सागारपासवया पंचता । तेन्द्वा-स्थवायसागारपास्थ्याः स्थयप्रकाससागार पासन्त्रमा से एएजड्डेन गोयमा । एवं कुच्छ । एवं केईदियान वि । कर्रीदियान पुष्का ! गोबमा ! क्टरिंदिया शागारपस्ती वि श्रवागारदेश्ती दि । से केमट्टेय : मेक्मी केंग वर्जीदिवा इयमाणी ध्रयज्ञन्माची तेचे कर्जीदिवा शागरफरी वर्ष पर्टारेदिया वक्स्यरंखणी तेणं जटरिंदिया अजागारपत्सी सं एएजड्रेमं द्येस्सा! एवं तुबह । सपूछा बहा बीवा अवस्था बहा नेरहना बाब पेसामिना ४ ६६ ह केवली में मेरी ! इसे रजगणमं पुत्रमिं बागारेखे केवली अवसाधि रिद्वेरेखें बागोर्स सठाणेहि पमानोहि पडोमारेहि व समर्थ जाणह ते समर्थ पास्त, जे समर्थ पास्त वे समय बाजह र योकमा ! तो इगढ़े समक्के । से केमहैयं असे ! एवं दुकर-केम ण नमें रमजन्मम पुढ़िनें भागारेहि के समय बाबह भी ते समये पासरे वे समन पासइ मो त समनं जानह है गीयमा ! सामारे से नाने मनह समागारे हैं दंसने भवड़, से देजहेणं जाव नी र्त समर्थ बाजह, एक बाव महेसरमं। एवं सोरम्मक्रमं बाद सन्दुर्ग गेविज्ञगनियाचा अनुसर्गनमाना देखियाच्यारं पुनि परमाञ्जपोसामं बुपप्रियं सार्थ जाव अर्वतप्रवृत्तियं बर्धा । केमसी व नेते । हर्य रवजपर्म पुत्रमि भनागारेहि बहेरुहि अनुवसाहि सरिद्वेतेहि अवन्वेहि अस्टावेहि सपमानेदि सपडोगारेहि पासद न बाक्ड़ हिता गोयमा । केन्द्री नं इसे रसक्यमे

पुर्वि जपानारेष्ट्रि बाव पासह स बालह । से केन्द्रेब आठे । एवं पुष्य-केश्तों मं त्मं (बन्त्यमं पुष्यि क्वानारेष्ट्रि बाव पासह न बालह है सोक्सा । बबातरे से बंदावे मदद, सामारे से नावे मवह, से तेल्व्हेनं गोसमा । एवं पुष्य-केश्तर्य सं इ.म.स्वयप्यमं पुष्यि स्वाधारेष्ट्रि बाद पासह स बावह' एवं बाद हैन्यिसारे पुढविं परमाणुपोग्गल अर्णतपएसियं खघ पासइ, न जाणइ॥ ६६३॥ **पन्नवणाए** भगवर्ड्डेए तीस्हमं पासणयापयं समत्त ॥

जीवा ण भते ! किं सण्णी, असण्णी, नोसण्णीनोअसण्णी <sup>2</sup> गोयमा ! जीवा सण्णी वि असण्णी वि नोसण्णीनोअसण्णी वि । नेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! नेरइया सण्णी वि असण्णी वि नो नोसण्णीनोअसण्णी । एव असुरकुमारा जाव यणियकुमारा । पुढविकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! नो सण्णी, असण्णी, नो नोसण्णीनोअसण्णी । एव बेइदियतेइदियचउरिंदिया वि, मणूसा जहा जीवा, पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया वाणमतरा य जहा नेरइया, जोइसियवेमाणिया सण्णी, नो असण्णी, नो नोसण्णीनोअसण्णी । सिद्धाण पुच्छा । गोयमा ! नो सण्णी, नो असण्णी, नोसण्णीनोअसण्णी । नेरइयतिरियमणुया य वणयरगसुराइ सण्णींऽसण्णी य । विगलिंदिया असण्णी जोइसवेमाणिया सण्णी ॥ ६६४॥ पञ्चवणाप भगवईप इगतीसइमं सण्णीपयं समत्तं ॥

जीवा ण भते ! कि सजया, असजया, सजयासजया, नोसजयनोअसजयनोसजयासजया १ गोयमा ! जीवा सजया वि १, असजया वि २, सजयासजया वि
३, नोसजयनोअसजयनोसजयासजया वि ४ । नेरइया णं भते ! पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो सजया, असजया, नो सजयासजया, नो नोसजयनोअसजयनोसजयासजया । एव जाव चडिरिदिया । पंचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ।
गोयमा ! पचिदियतिरिक्खजोणिया नो सजया, असजया वि, सजयासजया वि, नो
नोसजयनोअसजयनोसजयासजया वि । मणुस्साण पुच्छा । गोयमा ! मणूसा सजया
वि असजया वि सजयासजया वि, नो नोसजयनोअसजयासजया । वाणमतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरङया । सिद्धाण पुच्छा । गोयमा ! सिद्धा नो सजया
१, नो असजया २, नो सजयासजया ३, नोसजयनोअसजयनोसजयासजया ४ ।
गाहा-"सजयअसजयमीसगा य जीवा तहेव मणुया य । सजयरिह्या तिरिया सेसा
अस्सजया होति" ॥ ६६५ ॥ पन्नवणाप भगवईप वत्तीसइमं संजयपर्य
समन्तं ॥

भेयविसयसठाणे अर्ध्भितरवाहिरे य देसोही । ओहिस्स य खयवुष्ट्वी पिंडवाई चेव अपिंडवाई ॥ कइविहाण भते ! ओही पन्नत्ता १ गोयमा ! दुविहा ओही पन्नता । तजहा— भवपच्चइया य खओवसिमया य, दोण्ह भवपच्चइया, तजहा—देवाण य नेरइयाण य, दोण्ह खओवसिमया, तजहा—मण्साण पिंचेदियतिरिक्खजोणियाण य ॥ ६६६ ॥ नेरडया ण भते ! केवइय खेत्त ओहिणा जाणित पासित १ गोयमा ! जहन्नेण अद्द- द्वारं गाउनाह, रक्कोरोजे पत्तारि गाउसह ओहिया जाजरी पासेरी । सहरणमा

पुडिननरहमा जहचेण विभिन्न गाउमाह, उक्तरेर्ज अनुहुन्हं गाउमाहं नोहिना जानित पार्थति । बह्मसप्पमापुर्वानेतद्भा जहसेर्ण सङ्खाद्रजाई गाउसाः उपनेत तिरिय गाउसमं घोद्दिणा वार्णेति पासंति । पंग्रममापुष्टमिनेरहवा बाह्रवेर्ण होन्य गाउ**यम्, उक्रोरेण अकुक्त्वम् गाउयम् ओहि**या जाय**ति** गासति । मूम्प्यमापु<del>र्वि</del> नेरह्या कर्षेणं दिवषु गाउवाहं, उक्रोरेच हो गाउवाई मोहिमा जार्गनि पासी। तमापुरमिनेरहमा अहचेय गाठवं उद्दोरेजं दिव्हं गाउन बोहिया बार्नी पार्वति । अहेसत्तमाप् पुच्छा । योयमा । अहहोर्ण सर्वः यादयं तहोसेम बाउर भोदिणा जायदि पारंदि ॥ ६६७ ॥ अद्यरक्षमारा न गेर्दै ! लोदिणा केनाने वेर्ट वार्णति पार्पति : गोक्सा ! कहवेर्ण प्यवीस कोस्वाई, उडोसेर्च वर्सकेने शैक्सी जोहिजा जार्नदि पासति । नागकुमारा र्ण क्ष्ट्रक्षेचं क्यतीयं जोमजतं, उक्रांसेचं संदेने चीवसमुद्दे कोक्षिका जालंदि पासंदि एवं जाव वाधवडमारा । पविदिवसिरेक्य-कोलिना नं मंद ! केनहर्य केर्स जोहिए। जानंदि पार्वदि ! गोदमा ! तहरेनं अगुन्दस असकेक्द्रमार्ग एक्टोपेर्च असकेके श्रीवसमुद्दे । मण्सा व मेठ ! कोविया केनहर्व केर्रा जार्मदि पासंदि ? योगमा ! जहहेन अगुमरस असंकेनहमाय उद्दोरेषे भर्<del>यकेशार्व अम्प्रे</del>ण् क्षीयप्पमायमेतादं **बंदाहं** मोहिणा बाबदि पासंदि । बाबमंतरा बहा नागकुमारा ॥ ६६८ ॥ ओड़िएया वं संते । केवहच केतं ओहिया वानी पासित । गोममा । अवसेर्ण संस्थेत श्रीकसमुद्दे, उक्कोरीज वि सकेले श्रीकस्पीरें सीहरूमगर्वेचा वं मेरी । केनहम केत ओहिया वार्यारी प्रसंदि ! योगमा । अर्थेचं अगुक्तस अस<del>चे व</del>्यामार्ग उक्नोरोणं आहे जान इमीसे रवजप्पमाए क्रिक्के बरमंत्रे विरियं बाव अस<del>क्षेत्रे</del> बीवसमुद्दे, उन्नं काल समाहं सेमानाई स्पेद्रिया वार्वी पारुचि एन ईसामगरेमा में । सर्पमुमारवेमा ने एनं चेन समर्थ तम अहे होनाए सकरप्पनाए पुत्रवीए विक्रिक चरमते एवं मार्शिववेदा वि । वंसलोकांतुमवर्ग ताबाए पुरुवीए बिद्धिके बरमेते अवस्थितहरसारगरेका बदस्वीए वेक्न्यमाए पुटनीए हे 🗗 नरमेरी आणस्यानसभारणसुरवेश सह बाद पंत्रमाए पूना माए हेड्डिक चरमंते हेड्डिममजिसमगेनेकगरेना सह बान एड्डाए तमाए उ केए हेक्क्रि चरमंते : उद्गरिमगेविजगवेश भं मेते ! देशहर्य खेतं कोहिना जामी पासित । गोममा । बहुबेर्च अंगुक्स्स असबेब्ब्स्मार्ग उत्रोसेर्च बहुसतमार

हेडिल्ले चरमते, तिरिय जाव असखेजे दीवसमुद्दे, उद्ध जाव सयाई विमाणाई ओहिणा जाणति पासति । अणुत्तरोववाइयदेवा ण भते । केवइय खेत ओहिणा जाणति पासित १ गोयमा ! सिमनं लोगनालि ओहिणा जाणति पासित ॥ ६६९ ॥ नेरइयाण भंते । ओही किंसिठिए पन्नते १ गोयमा ! तप्पागारसिठिए पन्नते । असुर-कुमाराण पुच्छा । गोयमा । पह्लगसिंठए, एव जाव थणियकुमाराणं । पर्चिदिय-तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! णाणासठाणसठिए, एव मणूसाण वि । वाणमत्तराण पुच्छा । गोयमा । पडहगसठाणसिठए । जोइतियाण पुच्छा । गोयमा । झहरिसठाणस्रिष् पन्नते । सोहम्मगदेवाण पुच्छा । गोयमा ! उन्द्रुसुयंगागारसिक्ष पन्नते, एव जाव अचुयदेवाण । गेवेज्जगदेवाण पुच्छा । गोयमा ! पुप्फवंगेरिसिटिए पन्नते । अणुत्तरोववाइयाण पुच्छा । गोयमा ! जवनालियासिंठए ओही पन्नते ॥ ६७० ॥ नेरइया ण भंते । ओहिस्स कि अतो, बाहिं 2 गोयमा ! अतो, नो वाहिं, एव जाव थणियकुमारा । पर्चिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा । नो अतो, वाहिं। मण्साण पुच्छा। गोयमा! अतो वि वाहिं पि। वाणमंतरजोइसिय-वेमाणियाणं जहा नेरइयाण ॥ ६७१ ॥ नेरइयाण मते ! किं देसोही, सब्बोही 2 गोयमा । देसोही, नो सन्वोही, एव जाव थणियकुमारा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! देसोही, नो सञ्चोही। मणूसाण पुच्छा। गोयमा ! देसोही वि सन्वोही वि । वाणमतरजोइसियवेमाणियाण जहा नेरइयाण ॥ ६७२ ॥ नेरइयाण भते ! ओही किं आणुगामिए, अणाणुगामिए, वहुमाणए, हीयमाणए, पडिवाई, अप्पडिवाई, अविद्विए, अणविद्विए र गोयमा ! आणुगामिए, नो अणाणुगामिए, नो वहुमाणए, नो हीयमाणए, नो पिडवाई, अप्पिडवाई, अविद्विए, नो अणविद्विए, एव जाव थणियकुमाराण । पिचदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! आणुगा-सिए वि जाव अणवद्विए वि, एव मण्साण वि । वाणमंतरजोइसियवेमाणियाण जहा नेरङ्याण ॥ ६७३ ॥ पन्नवणाए भगवईए तेत्तीसइमं ओहिपयं समत्तं ॥

अणतरागयाहारे १ आहारे भोयणाड य २ । पोग्गला नेव जाणति ३ अज्ज्ञव-साणा ४ य आहिया ॥१॥ सम्मत्तस्साहिगमे ५ तत्तो परियारणा ६ य वोद्धव्वा । काए फासे रूवं सद्दे य मणे य अप्पवहु ७ ॥२॥ नेरङ्या ण भते ! अणतराहारा, तओ निव्वत्तणया, तओ परियाङ्णया, तओ परिणामया, तओ परियारणया, तओ पच्छा विउव्वणया १ हता गोयमा ! नेरङ्या ण अणतराहारा, तओ निव्वत्तणया, तओ परि-याङ्णया, तओ परिणामया, तओ परियारणया, तओ पच्छा विउव्वणया । असुरकु-मारा ण भते ! अणतराहारा, तओ निव्वत्तणया, तओ परियाङ्णया, तओ परिणा- पुष्तिकारमा नै भीते । अमीरसाहारा तओ निव्यक्तगंथा तको परिवाहयमा तमे परिधासमा तको परिवारणया तको वितन्त्रणया है हैता योक्सा ! ते चेव नार परियारणया जो चेव जं किरुव्यवना । एवं बाव चर्रारेकिया नवरं वास्वाहना पेनिविविविविक्यकोषिया समसा य जहा नेरहमा शासर्गतरकोऽसियवेगाविका 🔫

सप्तरक्रमारा ॥ ६७४ ॥ नेखनार्ण मंते ! जातारे कि जामीगदिव्यक्तिए, जन्म मोगनिम्बतिए हैं मोबमा ! आमोगनिम्बतिए वि अजामोगनिम्बतिए वि । एवं बहुरकुमाराणं जान वैमानियाणं वनरं एगिविनार्ण तो आसोगनिन्नतिए, जना मोपनिम्बतिए । नेरहवा वं मेते ! से पोमाने बाहारताए मिस्रंति ते कि वार्यी पारंति आहारेति । उदाह व आजेति न पारंति आहारेति । गोबमा ! न बावेति

म पासित बाहारेंति एवं बाब तंत्रीदया । वसरिविवार्च प्रका । योदमा । अत्येव-इवा म प्रार्गदि पास्ति बाहारैति अस्पेगइया न बार्गति न पास्ति बाहारैति। पाँचेरियदिरिक्कवोनियामं प्रकार । गोयमा । अत्वेशक्या वार्यदि पासंदि बाहारिति अत्येगस्या बामित न पार्वति माहारैति २ अत्येगस्या न बार्वति पार्वति भारारिति ३ अरमेन्द्रवा भ जामंति भ पार्चति आहारिति ४ एवं जाव सङ्ख्या मि । बाजर्मकरजोद्दश्या जहा नेराजा । बेसानिवान पुच्छ । गोरमा l अत्येक्स

चार्चति पार्चति माहारेन्ति अस्पेगास्था न मार्चति न पार्चति माहारेन्ति। है केनदेनं मंते । एवं नुका-केमानिया अत्येग्ह्या जार्पति पासंति भाषारे नि भरभेग्यना न बार्जित न पासति आहारनित' र गोवमा ! वैनामिना वृतिहा पत्रव बीसए प्रामे मनिर्म ठहा गानिवणं जाव से एएएकोर्ज गोयमा । एवं कुवार 🗈 ६५% भेरह्मार्ज मेर्ड ! केक्ट्या अज्यावसाचा पक्ता ! गोयसा ! अस्केजा अज्यावसाचा प्रवत्ता । ते में मंते ! कि पसरमा अपसरमा <sup>इ</sup> मोसमा ! पसरमा नि जपसरमा है

तंत्रहा-माइनिकादेद्वित्रवयक्या व अमात्त्वन्यदिद्वित्रवक्यमा य एवं बदा देनि एवं जाव वेसानियार्ज । नेरहना वं संत ! कि सम्मतासियमी सिच्छतासिगरी सम्मानिकतामिगमी है खेबमा । सम्मतामिगमी वि सिस्क्रतामिगमी वि सम्बा शिक्कपानिगमी वि पूर्व जान वैगानियाज वि । नवरं शृतिदेशविगनिदेश के सम्मतासिंगमी सिक्बतासिंगमी जो सम्मासिक्वतासियमी व ६७६ व देवा द भेते ! 🏗 सदेवीया सपरियारा सदेवीया अपरिवारा आदेवीया सपरियारा आदेवीया क्षपरिवास ! प्रेक्सा ! करपेनक्या देशा सदेशीया सपरिवास अस्येनक्षा देश

अदेवीया सपरियारा, अत्येगइया देवा अदेवीया अपरियारा, नो चेव ण देवा सदेवीया अपरियारा । से केणद्वेण भंते ! एव वृच्चड- अत्थेगइया देवा सदेवीया सपरियारा, त चेव जाव नो चेव ण देवा सदेवीया अपरियारा १ गोयमा । भवण-वइवाणमत्तरजोडससोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवा सदेवीया सपरियारा, सणकुमार-माहिंदवभलोगलतगमहासुक्तसहस्मारआणयपाणयआरणचुएस कप्पेस देवा अदेवीया मपरियारा, गेवेज्ञअणुत्तरोववाइया देवा अदेवीया अपरियारा, नो चेव ण देवा सदेवीया अपरियारा, से तेणहेण गोयमा! एव बुचड-'अत्थेगड्या देवा सदेवीया सपरियारा, तं चेव, नो चेव णं देवा सदेवीया अपरियारा'॥ ६७७॥ कड्-विहा ण भते ! परियारणा पन्नता ? गोयमा ! पचविहा परियारणा पन्नता । तजहा-कायपरियारणा, फासपरियारणा, स्वपरियारणा, सद्परियारणा, मणपरि-यारणा । से केणहेण भते ! एव वुच्चइ-पचिवहा परियारणा पन्नता । तजहा-कायपरियारणा जाव मणपरियारणा १ गोयमा । भवणवइवाणमतरजोइससोहम्मी-साणेस कप्पेस देवा कायपरियारगा, सणकुमारमाहिंदेसु कप्पेस देवा फासपरियारगा, वमलोयलंत्रगेषु देवा स्वपरियारगा, महासुक्तमहस्मारेषु देवा सहपरियारगा, आणयपाणयआरणचुएसु कप्पेसु देवा मणपरियारगा, गेवेजअणुत्तरोववाडया देवा अपरियारगा, से तेणहेण गोयमा। त चेव जाव मणपरियारगा। तत्य ण जे ते कायपरियारगा देवा तेसि ण इच्छामणे समुग्पज्जइ-'इच्छामो ण अच्छराहिं सर्द्धि कायपरियार करेत्तए, तए णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकए समाणे खिप्पामेव ताओ अच्छराओ ओरालाइ सिंगाराइ मणुण्णाइ मणोहराइ मणोरमाइ उत्तरवेउव्वियस्वाइ विडव्नति विडव्निता तेसिं देवाण अतिय पाडब्भनति, तए ण ते देवा ताहिं अच्छराहिं सिद्धें कायपरियारण करेंति । से जहाणामए सीया पोग्गला सीय पप्प सीय चेव अइवइत्ताण चिद्वति, उसिणा वा पोग्गला उसिण पप्प उसिण चेव अइवइत्ताण चिट्ठति, एवमेव तेहिं देवेहिं ताहिं अच्छराहिं सर्दि कायपरियारणे कए समाणे से इच्छामणे खिप्पामेव अवेइ ॥ ६७८ ॥ अत्थि ण भते ! तेसिं देवाण ग्रक्षपोग्गला १ इता ! अत्य । ते ण भते ! तासिं अच्छराण कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमति ? गोयमा! सोइदियताए चक्खुइदियत्ताए घाणिदियत्ताए रसिंदियताए फासिंदियताए इंडताए कतत्ताए मणुनताए मणामताए सुभगत्ताए सोहम्मरूवजोन्वणगुणलावन्नताए ते तासिं भुज्जो मुज्जो परिणमति ॥ ६७९ ॥ तत्थ ण जे ते फासपरियारगा देवा तेसि ण इच्छामणे समुप्पजाइ, एवं जहेव कायपरियारगा तहेव निरवसेस भाणि-यव्व । तत्थ ण जे ते रूवपरियारमा देवा तेसि ण इच्छामणे समुप्पज्जइ—

सगर्धीकए समाणे छो्ड बाब उत्तरवेडिकास रवाह विडिक्ता जेपासन द सम रागामेन उबारपर्छते उबारपिकता गिर्म वहार्य कार्युस्तामें देखा दाई सम्बद्ध जाब समोरामाई उत्तरवेडिकामंद्र रवाह उब्बंदेमाणीओ २ विद्वारी रहा वे य हेवा गाडि कम्पराहि छाँद्र क्वादीसारणं करीते सेचे वे येव जाब प्रज्य प्रज्ये परिपामित । तत्व में से से संव्यविद्यारण करिए र एक तेष्ट्रि देखें में हण्डामों म कच्छार्यी छाँद्र स्वयविद्यारण करिए र एक तेष्ट्रि देखें में सम्पर्धीक्ष समाणे रहेव जाव उत्तरवेडिकामं क्वाद्र विज्ञानित अधिकामंत्र अध्यास्त्र स्व

द्विमा अपुत्तरार्य, वमाध्याम सहसे समुग्रीरामाणीको २ विद्वंशि ताए वे ते व्या हार्षि अन्वस्तामि एकि सम्परियारण करीत्त सेसं ते केम जाव मुन्नो मुन्नो प्रस्न-मार्गित ।तस्य म के सम्परियारण वित्ता सेसं होति इच्छामाणे समुग्नम्बद्ध-१०६व्ये म जान्वसार्थि सिद्धं अपपरियारण करेताएं तर् म तेष्ट्वं होत्तेषु एवं सम्पर्धान्य समार्थित सिप्पानेम तामां अध्यादाको स्वत्य-गयाको केम स्मार्थानो अपुत्तरा स्थापसार्थ्य समार्थ स्थापित्राचेमाणीको २ विद्वारी तर् म तेष्ट्राची हार्ष्ट्य स्वयस्ति । १४ १ एएति मं मंत्र ! सेस्पाने मान्यप्रियारणा मान्यप्रियारणा में अपरिवारणा मान्यप्रियारणा अपरेवारणा मान्यप्रियारणा अपरेवारणा मान्यप्रियारणा स्थाप्तेष्ट्याना । सारणा स्थापेन्यप्रमा सङ्ग्रीरियारणा अस्यस्त्राप्ता स्थापनेन्यप्ता अस्यस्त्राप्ता ।

सीया य इवन सर्पेरा सामा तह किया। मन्द्र पुरुषा। सम्युक्तमंत्रविक्तियां विद्या य मन्द्रिया न नावक्या। 1 प्रशासकार्य कर्मने सूर्व क्ष प्रमुक्त सद्वस्त्रकार्य भी सामस्यद्भित्व में स्थित प्रशासकीर्य व सेसा पुरुष्टिक । ॥ स्ट्राम्बर्स्य में मेरन । नेक्सा प्रमुर्श । सेप्ता । नेक्सा । तीव्या। निर्मेश्व मेरान । वेस्पा । तीव्या। नीव्या। नीव्या। नीव्या। नेक्सा नोव्या। तीव्या। नीव्या। नीव्या । वेस्पा नेक्सा नेव्या नेव्या। नोव्या। नोव्या नाव्यामा निर्मेश्व नेव्या नेव्या नेव्या नेव्या नेव्या नोव्या नेव्या नेव्या नेव्या नेव्या नेव्या नेव्या नेव्या नेव्या नोव्या नेव्या नेव्या नेव्या नेव्या नाव्यामा नेव्या नेव्या नेव्या नेव्या नाव्यामा नेव्या नेव्या नेव्या नाव्यामा नेव्या नेव्या नेव्या नाव्यामा नेव्या नेव्या नाव्यामा नेव्या नेव्या नाव्यामा नेव्या नाव्यामा नेव्या नेव्या नाव्यामा नेव्या नेव्या नाव्यामा नेव्या नाव्या निव्या निव्

वयणं वर्षेति एवं जाव बाह्ययप्पमापुरविनरह्या । वेद्रप्पमापुरविनरह्याचं पुच्छ ।

णाप भगवर्षेप बदसीसहमै परिवारणाप्य समर्च 🛊

गोयमा । सीय पि वेयणं वेदेंति, उसिण पि वेयण वेदेंति, नो सीओसिणं वेयणं वेदेंति । ते वहुयतरागा जे उसिण वेयणं वेदेति, ते थोवतरागा जे सीयं वेयण वेदेंति । वूमप्पभाए एव चेव दुविहा, नवरं ते बहुतरागा जे सीय वेयण वेदेति, ते घोवतरागा जे उसिण वेयण वेदेंति। तमाए य तमतमाए य सीय वेयण वेदेंति, नो उसिण वेयण वेदेति, नो सीओसिण वेयण वेदेति । अग्ररकुमाराणं पुच्छा। गोयमा। सीय पि वेयण वेदेंति, उसिणं पि वेयण वेदेति, सीओसिण पि वेयण वेदेंति, एव जाव वेमाणिया ॥ ६८२ ॥ कड्विहा ण भते ! वेयणा पन्नता 2 गोयमा । चडिव्वहा वेयणा पन्नता । तजहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । नेरइया णं भते ! किं दन्वओ वेयण वेटेंति जाव भावओ वेयण वेदेंति ? गोयमा। द्वां वि वेयण वेदेंति जाव भावओ वि वेयण वेदेंति, एव जाव वेमाणिया । कड्विहा ण भते ! वेयणा पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेयणा पन्नता । तजहा-सारीरा, माणसा, सारीरमाणसा । नेरइया ण भते । किं सारीर वेयणं वेदेंति, माणसं वेयण वेदेति, सारीरमाणस वेयणं वेदेंति १ गोयमा ! सारीर पि वैयण वेदेंति, माणस पि वेयण वेदेंति, सारीरमाणस पि वेयण वेदेंति । एवं जाव वैमाणिया, नवरं एगिंदियविगलिंदिया सारीर वेयण वेदेंति, नो माणस वेयण वेदेंति, नो सारीरमाणस वेयणं वेदेति। कङ्विहा ण भते! वेयणा पन्नता 2 गोयमा ! तिविहा वेयणा पन्नता । तंजहा-साया, असाया, सायासाया । नेरहया ण भते । किं साय वेयण वेदेंति, असायं वेयण वेदेति, सायासायं वेयण वेदेंति १ गोयमा ! तिविह पि वेयण वेदेंति, एव सब्वजीवा जाव वेमाणिया । कइविहा णं मते ! वेयणा पन्नता ? गोयमा ! तिनिहा वेयणा पन्नता । तजहा-दुक्खा, सुहा, अदुक्खमसुद्दा। नेरइया णं भते! किं दुक्ख वेयण वेरैंति पुच्छा। गोयमा! हुक्ख पि नेयण नेदेंति, सुद्द पि नेयण नेदेति, अहुक्खमसुद्द पि नेयण नेदेंति, एव जाव वेमाणिया ॥ ६८३ ॥ कड्विहा ण भते ! वेयणा पन्नता १ गोयमा ! दुविहा वैयणा पन्नता । तजहा-अन्भोवगमिया य उवक्कमिया य । नेरइया ण भंते ! अञ्भोवगिमय वेयण वेदेंति, उवक्कमिय वेयण वेदेंति १ गोयमा ! नो अञ्भोवग-मिय वेयण वेरेंति, उवक्कमिय वेयण वेरेंति, एव जाव चउरिंदिया । पचिंदियति-रिक्सजोणिया मणूसा य दुविह पि वेयण वेर्देति, वाणमतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरडया ॥ ६८४ ॥ कड्विहा ण भते ! वेयणा पन्नत्ता 2 गोयमा ! दुविहा वेयणा पन्नता। तजहा-निदा य अणिदा य। नेरइया ण भते! कि निदाय वेयण वेदेंति, अणिदाय वेयण वेदेंति १ गोयमा! निदाय पि वेयण वेदेंति, अणिदाय पि

संचामो

[ पञ्चनकासुर

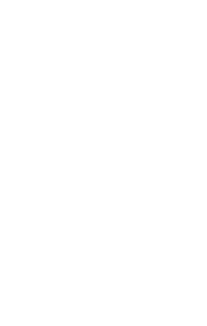
448

मसंख्यारते केवर्वा वेबनासभुग्वाया करीता है गोयमा । काता । केवर्वा पुरेक्याबा है गोनमा ! कस्टाइ अस्य करसइ मरिय करस्रिय अहतेमं एको वा की वा तिभिन वा उद्दोशेयाँ संकेता वा कसंकेता वा अलता था एव नागकुनारपे नि जान नेमानिनते एवं जहां नेयणाससुरवाएचं अञ्चरकुमारे नेरहवाहनैसानिनप जबमार्जम् भन्निको तका नाग्रङ्गाराङ्गा सक्तेग्रेष्ठ स्ट्रानेष्ठ परहानेष्ठ मानिसमा बाब बंगाणिबस्य बंगाबियते। एवमेए बठम्बीसं बठम्बीसा इंडपा मर्गेति 🛭 ६८९ 🗈 एगमेगस्म र्ण मंते । नेरहसस्य भरहस्ते केवहत्रा करास्प्रमुखासा **मदी**ता है गोनमा । अर्थता । केन्द्रवा प्ररेक्पका । योगमा । कस्यद्र अस्य कस्यद् अस्य बस्सरिब एमुत्तरिबाए बाब अर्थता । एक्येगस्स र्थ मंते ! नेरहक्स व्याख्यारते केन्द्रमा क्षायसमुग्याका असीता है गीवमा । अनेता केन्द्रया पुरेक्सडा है ग्रेयमा । करसङ् अस्ति करसङ् मरिय अस्तालि सिय सबोजा सिय सर्ववेजा सिय सर्वता एवं भाग नेरहक्तम विवस्कुमारके । पुत्रविताहयके एम्प्तिरेकार नेक्ष्मं एवं वार्ष मनुवरे वायमंतरचे बहा कपुरकुमारते । बोहरियरे करीता सर्वता पुरेक्बडा कस्तर अस्ति करसर शस्ति करसस्य सिय कसकेजा सिय कर्मता एवं वेमानिकी वि शिम असकेमा शिम भर्णता । मग्रस्टुमारस्स नंस्कृतो महीता सर्नता पुरे क्तात्रा करनद्र मरिन करसद् गरिन जस्तिय सिम संधेजा सिम असेक्ट्रेका सिक मचता । शतुरदुमारस्य अञ्चलमारते अधीता," पुरेक्का ( नागउमारते बाब निरंतरं वेमाणियते नहा मे बाब प्रतियुक्तमारस्य नि वैमानियते नवर 🖒

जहेन असुरकुमारस्स । पुढिनिकाइयस्स नेरडयत्ते जान थणियकुमारत्ते अतीता अणता, पुरेक्खडा करसइ अत्यि करसइ नित्य, जस्सित्य सिय सखेजा, सिय असखेजा, सिय अणता । पुढविकाइयस्स पुढविकाइयत्ते जाव मणूसत्ते अतीता अणता, पुरेक्खडा करसइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि एगुत्तारेया । वाणमतरत्ते जहा णेरइयत्ते । जोइसियवेमाणियत्ते अतीता अणता, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नित्य, जस्स अत्यि सिय असखेजा, सिय अणंता, एव जाव मणूसे वि नेयव्व । वाणमतरजोइ-सियवेमाणिया जहा असुरकुमारा, णवर सद्घाणे एगुत्तरियाए भाणियव्वे जाव वेमाणियस्स वेमाणियते । एव एए चउव्वीस चउव्वीसा दंडगा ॥ ६९०॥ मारणति-यसमुग्घाओ सद्घाणे वि परद्वाणे वि एगुत्तरियाए नेयव्वो जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते, एवमेए चडवीस चडवीसद्डगा भाणियव्वा । वेडिव्वयसमुग्घाओ जहा कसायसमु-म्घाओ तहा निरवसेसो भाणियव्वो, नवर जस्स नत्थि तस्स न वुच्चइ, एत्थ वि चउ-वीस चडवीसा दङगा भाणियव्वा । तेयगसमुग्घाओ जहा मारणतियसमुग्घाओ, णवरं जस्सऽस्थि, एवं एए वि चउन्वीस चउन्वीसा दङगा भाणियव्वा ॥ ६९१ ॥ एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया आहारगसमुग्घाया अतीता 2 गोयमा ! णत्थि । केवइया पुरेक्खडा १ गोयमा ! णत्थि, एव जाव वेमाणियत्ते, नवरं मणूसत्ते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नित्थ, जस्सित्थ जहन्नेण एको वा दो ना, उक्नोसेण तिन्नि । केवइया पुरेक्खडा 2 गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नित्य, जस्सित्य जहन्नेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण चत्तारि, एव सञ्वजीवाण मणुस्साण भाणियव्व । मणूसस्स मणूसत्ते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नित्थ, जस्सित्य जहन्नेणं एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण चत्तारि, एव पुरेक्खडा वि । एवमेए चडवीस चडवीसा दङगा जाव वेमाणियते ॥ ६९२ ॥ एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया केवलिसमुग्धाया अतीता <sup>२</sup> गोयमा ! णित्थ । केवइया पुरेक्खडा <sup>2</sup> गोयमा ! नित्थ, एव जाव वेमाणियत्ते, नवरं मण्सत्ते अतीता नित्य, पुरेक्खडा कस्सइ अत्यि करसइ नित्य, जस्सित्य इक्को, मणूसस्स मणूसते अतीता करसाइ अत्थि करसाइ नित्य, जरसात्थि एक्को, एव पुरेक्खडा वि । एवमेए चउव्वीस चउव्वीसा दङगा ॥ ६९३ ॥ नेरइयाण भते ! नेरइयत्ते केवइया वेयणा-समुग्घाया अतीता <sup>२</sup> गोयमा । अणता । केवइया पुरेक्खडा <sup>२</sup> गोयमा । अणता, एव जाव वेमाणियत्ते, एव सव्वजीवाण भाणियव्व जाव वेमाणियाण वेमाणियत्ते, एव जाव तेयगसमुग्घाया, णवर उवड जिस्रण णेयव्य जस्सित्थ वेडव्वियतेयगा ॥ ६९४ ॥ नेरइयाण भते ! नेरइयत्ते केवइया आहारगसमुग्धाया अतीता <sup>२</sup> गोयमा ! नित्थ ।

केरस्या पुरक्रावा है गोयमा जिल्हि एवं जान बेमानियति। सन्हरं मधुनते सतीता भर्तिया पुरेक्यका अर्वध्येका एवं जान बंगायियार्च । जबरे बमस्पदशादगान मण्मते अतीता अर्थता पुरेक्पका सर्जना । मज्याजं मज्यते अतीता विय संपेका रिय असेरोजा एवं पुरेकरामा थि। सेसा सम्बे बहा नरहवा एवं एए वजनीसे बडपीना पड़ना ॥ ६९५ ॥ नेखबार्च अंते । भरहयत्तं केउडवा केवजिनमुखाना भरीता । गोवमा । नत्य । केल्या पुरेनराशा शोवमा । नत्य एवं बाव बेशाणियते । जनरं राजुनते अतीना चरिच पुरेश्याहा अधंखेळा एवं जान नेगा निया अवरं वजस्तरशास्त्राण मणुसत्ते अतीता गरिय प्रदेश्यका सर्गता। सन्धार्व मगूमते अदौदा मिय अत्वि दिय शस्य जड् अत्य जहवेर्ज एडी वा दो वा दिग्यि वा उद्दोरेणं सवपुत्रते । वेबह्या प्ररेक्याता । धोनमा । शिम सबैजा विव अधेकेमा एवं एए शतस्त्रीचे शतस्त्रीचा रहगा सम्बे पुच्छए शासिनमा बार बेमानिबाजं बंमानियरे ॥ ६९६ ॥ पृष्टि यं भेरे ! जीवायं बेमनासमुखाएवं कमामसमुख्याएकं मारकंतिबसमुख्याएचं वङ्गाधनस्थाएणं समासमुख्याएचं माहा-रगरामुग्याएमं केनसिन्धमुख्याएणं समोह्याणं असमोह्याच य स्वरे क्यरेहितो बन्धा ना बहुबा था तुक्षा ना निस्तेगाविया वा <sup>इ</sup> गोयमा ! सम्बल्बोबा जीवा माहारगः समुरमाएनं समोहवा केनकिसमुरवाएवं समोहवा संबेकपुणा तेकासमुन्धाएवं समोहका व्यक्तिकपुणा क्वान्त्रक्तमुरकाएकं समोहका असंक्रेजपुका मारपैदिकः समुख्याएमं समोहवा अर्गतगुषा कमावसमुख्याएवं समोहवा असंबेजपुणा वेवणासमुग्याएवं समोहया विशेषाहिया असमोहवा असंकेखगुना । ६६७ ह प्राप्ति च भेत ! नेरह्माचे नेमणासमुख्याएणं क्षायसमुख्याएचं भारमंतिकसमुख्याएमं वतन्त्रमस्भुरवाएम समोह्यानं असमोह्याच य क्यरे क्यरेक्ट्रो अन्या वा ४ गोयमा सम्बद्धांमा नरहवा मारजंतियसमुग्याएचं समोहया वेतन्त्रियसमुग्याएचं एमोहमा नसकेजगुणा क्यावसमुरकाएणं समोहमा सकेजगुणा देववारस्यागाएणं समोहमा प्रवेजगुना वसमोहमा सकेजगुणा। एएसि वं मेरे ! अप्रक्रमार्ण वेगनासमुग्नाएव अक्षायसमुग्नाएव मार्ग्यियसमुग्नाएवं वटिवनसमुग्नाएवं तकासमुग्याएमं समोहनामं कसमोहनाम व उनरे कररेहितो कपा वा ४ है शोसमा । सम्बन्धोवा असुरकुमारा त्रकासमुख्याएवं समोहसा मार्वदिवससुरवाएवं धमोदमा मसकेन्द्राणा वैयनाससुरवाएनं समोदमा मसकेन्द्रामा वसावस्य रभाएन समोहमा संबद्धगुणा वैतम्बससुरभाएनं समोहमा संबद्धगुणा बसमी र्थ शेर्थ । पुरस्का ह्या अस्ये अपूर्ण एवं जाव विश्वस्थाना

वेयणा ॰ कसाय ॰ मारणतियसमुग्घाएण समोहयाणं असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा! सन्वत्थोवा पुढिवकाइया मारणितयसमुग्धाएण समोहया, क्सायसमुग्घाएण समोहया सखेजागुणा, वेयणासमुग्घाएण समोहया विसेसाहिया, असमोहया असखेजगुणा । एव जाव वणस्सइकाइया, णवर सन्वत्योवा वाउकाइया वेडिव्वियसमुग्घाएण समोह्या, मारणतियसमुग्घाएण समोहया असखेजगुणा, कसायममुग्घाएण समोहया सखेजगुणा, वेयणासमुग्घाएण समोहया विसेसाहिया, अममोह्या असखेजागुणा । बेइदियाणं भते ! वेयणासमुग्घाएण कसायसमुग्घाएण मारणतियसमुग्घाएण समोहयाणं असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा! सव्वत्थोवा वेइदिया मारणतियसमुग्घाएणं समोहया, वेयणासमुग्घाएण ्समोह्या असस्वेजगुणा, कसायसमुग्घाएण समोह्या असखेजगुणा, असमोह्या सखेजगुणा, एव जाव चर्डारेदिया । पर्चिदियतिरिक्खजोणियाणं भते ! वेयणासमु-ग्घाएण क्सायसमुग्घाएण मारणतियसमुग्घाएणं वेडिव्वयसमुग्घाएण तेयासमुग्धा-एण समोहयाण असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ 2 गोयमा ! सव्व-त्योवा पर्चिदियतिरिक्खजोणिया तेयासमुग्घाएण समोहया, वेडिव्वयममुग्घाएण समोहया असखेजगुणा, मारणतियसमुग्घाएण समोहया असखेजगुणा, वेयणा-समुग्घाएण समोह्या असखेजगुणा, कसायसमुग्घाएण समोह्या सखेजगुणा, असमोहया सखेज्जगुणा। मणुस्याण भते। वेयणासमुग्घाएण कसायसमुग्घाएण मारणतियसमुग्घाएणं वेडिव्वियसमुग्घाएण तेयगसमुग्घाएण आहारगसमुग्घाएणं केवाितसमुग्घाएण समोहयाण असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा ! सन्वत्थोवा मणुस्सा आहारगसमुग्घाएण समोहया, केवलिसमुग्घाएण समोहया सखेजगुणा, तेयगसमुग्घाएण समोहया सखेजगुणा, वेउव्वियसमुग्घाएण समोहया सखेजगुणा, मारणतियसमुग्घाएण समोहया असखेजगुणा, वेयणासमु-ग्घाएण ममोहया असखेजगुणा, कसायसमुग्घाएण समोहया सखेजगुणा, असमोहया असखेजगुणा । वाणमतरजोइसियवेमाणियाण जहा असुरकुमाराण ॥ ६९८ ॥ कड ण भते ! कमायसमुग्घाया पन्नता ? गोयमा ! चत्तारि कसायसमुग्घाया पन्नता । तजहा-कोहसमुग्धाए, माणसमुग्धाए, मायासमुग्धाए, लोहसमुग्धाए । नेरइयाण मते ! कइ कसायसमुग्घाया पन्नता व गोयमा ! चत्तारि कसायसमुग्घाया पन्नता० एव जाव वेमाणियाण । एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स केवडया कोहसमुग्धाया अतीता <sup>२</sup> गोयमा । अणता । केवङ्या पुरेक्खडा <sup>२</sup> गोयमा ! करसङ् अत्यि करसङ् नित्य, जस्सित्य जहण्णेणं एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेजा वा अस-



विग्गहेणं एवडकालस्स अप्पुष्णे, एवडकालस्स फुडे । ते णं भंते ! पोग्गला केवइ-कालस्स निच्छुच्मति <sup>2</sup> गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेण नि अतोमुहु-त्तस्स ॥ ७०६ ॥ ते ण भते । पोग्गला निच्छ्डा समाणा जाइं तत्थ पाणाईं भूयाइ जीवाड सत्ताई अभिहणति जाव उद्वेंति, ते(हि)ण भंते! जीवे कइ-किरिए <sup>2</sup> गोयमा! सिय तिकिरिए, सिय चडिकरिए, सिय पंचिकरिए। ते णं भंते !० जीवाओ कड़िकरिया ? गोयमा ! एव चेव । से णं भते ! जीवे ते य जीवा अण्णेसि जीवाण परंपराघाएण कड़िकरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि चडिकरिया वि पंचिकिरिया वि, एवं मण्से वि॥ ७०७ ॥ अणगारस्स ण भते । भावियप्पणी केवलिसमुग्घाएण समोहयस्स जे चरमा णिजरापोग्गला सहुमा ण ते पोग्गला पन्नत्ता समणाउसो । सन्वलोग पि य ण ते फुसित्ताणं चिट्टति <sup>2</sup> हता गोयमा ! अणगारस्स भावियप्पणो केवलिससुरघाएणं समोहयस्स जे चरमा णिजरापोग्गला घहुमा ण ते पोग्गला पन्नता समणाउसो ! सन्वलोग पि य णं ते फ़िसताणं चिट्ठति ॥ ७०८ ॥ छउमत्थे ण भते ! मणूसे तेसिं णिजरापीग्गलाण किंचि वण्णेण वण्णं गंधेणं गंघ रसेण रस फासेण वा फास जाणइ पासइ <sup>2</sup> गोयमा ! णो इजड्डे समद्वे। से केणहेण भते! एव ञुन्बर्-'छउमत्थे ण मणूसे तेसिं णिजारापोग्गलाणं णो किंचि वण्णेण वण्ण गधेणं गंध रसेण रस फासेण फास जाणइ पासइ'? गोयमा ! अयण्णं जबुद्दीवे दीवे सञ्वदीवसमुद्दाण सञ्वञ्भंतराए सञ्वखुट्टाए वट्टे वेलापूयसठाणसठिए वट्टे रहचक्रवालसठाणसठिए वट्टे पुक्खरकण्णियासठाणसठिए वहे पिडपुण्णचदसठाणसिठिए एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खमेण तिण्णि जोय-णसयसहस्साइ सोलस सहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अहावीस च धणुसय तेरस य अगुलाई अद्धगुल च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पन्नते । देवे ण महिश्हिए जाव महासोक्खे एग महं सविलेवण गधसमुग्गयं गहाय त अवदालेड, त महं एग सविलेवण गधसमुग्गय अवदालइता इणामेव कर्टु केवलकप्पं जबुद्दीव दीव तिहिं अच्छराणिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियहित्ताण हव्वमागच्छेजा, से नूण गोयमा। से केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे १ हता ! फुडे, छउमत्थे ण गोयमा ! मणूसे तेसि घाणपुग्गलाणं किचि वण्णेण वण्ण गघेण गघ रसेण रस फासेण फास जाणइ पासइ 2 भगव ! नो इण्हे समद्वे, से एएण्ट्रेण गोयमा ! एव वुच्चइ-'छउमत्थे ण मण्से वेसिं णिज-रापोग्गलाण णो किंचि वण्णेण वण्ण गर्धेण गंघ रसेण रस फासेण फास जाणइ पासइ, एस्रुहुमा ण ते पोग्गला पन्नत्ता समणाउसो । सन्वलोग पि य ण फुसित्ता- क्षेत्रे मप्तुज्जे एरूप् येते कुढे। से वं र्गत ! येते क्षेत्रकुत्वसः मृत्युज्जे केतः फारस्य फुटे ! गोवमा ! एनसमङ्ख्य वा तुसमङ्ख्य वा तिसमङ्ख्य वा परमध्य एन वा निग्गोर्ट एक्ट्वाबरम अच्छुनी एक्ट्वाकरस छड सेस ते पेर बार पंचरितिया मि । एवं नेरहए मि शवरं सायामणं जहलीलं साहरेपं जीववसहस्य उद्गोरेनं मर्शकेमह जीयनाई एगविसि एक्स्ए केते अच्छको एक्स्ए केते अ बिन्पहुंचे एयसन्तर्ण वा तुसनकर्ण वा तिसन्दर्ण वा नवरं वडसन्दर्ण वा न मक्द्र, सेसे ते जब बाब पंजकिरिया वि । अल्याक्रमारस्य उद्या रीने पए, नवरं मिग्गहो विसमस्बो जहा नेरहयस्य छैर्छ सं चेत्र वहा अहर कुमार एवं आव केमालिए, जबरं एलिदिए बहा बीवे निरवछेउं ६ ७ रे हे जीने ण भेट । नेडम्बिक्स्स्युरुवाएण समोहए समोहमिता है प्रसाह निष्ट्रीन वेहि न सव ! पोलस्केहि केनश्य क्षेत्र अप्युक्ति केनश्य दाते प्रव ! मोक्स ! सरीरप्यमानभी निवसंभवाहतेयं सायागणं बहसेसं स्थानस्य संकेत्रस्थां क्रकोरीयं संबेजाई जोनजाई एगरिएँ निवित्तिं वा एक्ट्र देखे अस्टुन्ने एक्ट्र भोते पुन्ते । से नं मंते । केन्युस्थलस्य अप्युज्ने केन्युक्तस्य पुन्ते । ग्रासमा एगसमञ्जून वा बुसमञ्जून वा विसमायम वा विमाहेण एनप्रकारस स्थान एक्इफास्ट्स फुके सेसं ॥ चेव जान पंचाितरिया वि एवं नेरहए वि समर अस्टि मेर्च जहनेम अपुन्तरस असंखेजहमार्च उद्दोरेजं सकेमार्ड जोयबाई एमहिरी। एकरए क्षेत्रे केनहकाकरत है ते जब बाहा जीवपर, वर्ष बाहा नेरहमस्स तहा क्सर्युमारस्य नेवरं पुगविसि विविधि वा पूर्व वास वसियकुमारस्य । वास्का इमस्स बद्दा जीवपप्, जबरं एयवैसि । पंचितियतिरैक्दावोमिवस्म निरवपेर बहा नेरह्यस्य । मबूधनावमतरबोइतिनवैमानियस्य तिरवसेषं वहा नहरपूर्ण रस्य ॥ ५ ४ ॥ अति नं संते । तकासमुरवाएवं समोहण समोहलिता है पोलाक निष्क्षास्य तेहि व र्शतः। प्रेमाकेहि केन्द्रए क्षेत्रे अप्युज्ये क्षेत्रस् केरे पुने ! एवं ब्राहेन केतन्त्रिए समुरमाए छहेन नन्दं मामानेचं बहतेनं समुकर्छ अधरोज्यामार्ग सेस से केन एवं जान नेमानियस्स सन्दर्भ विदिनतिहरूका वि मस्य एगविमि एसइए केते कपुल्के एसइए केते पुत्र 🛭 🕫 ५ ॥ जीव व मेत् । भाषारगसमुग्धाएर्ण समोहए समोहमिता वे पोमाके निव्हुमन तेहि वे मेते पोगाडेबे डेन्डए बेरे अप्पुली डेन्डए सेते फुडे शोबसा । सरीरजमानमेते विपर्यसमाहर्णे आवार्यवं बहुन्येनं अनुस्तरस सर्वकेन्द्रभागं उक्तरेनं सक्तारं बोबणाई एगहिसी एकाए बेरो एगसम्बर्ण वा इसमहरून वा शिल्मार्थ वी

णजोग॰, नो मचामोसमणजोगं जुजइ, अमचामोसमणजोगं जुंजइ, वहजोगं जुंजमाणे कि सचवडजोगं जुजड, मोसवडजोगं जुजइ, सचामोसवइजोगं०, असचामोसवडजोग जुजर <sup>२</sup> गोयमा । सचवङ्जोग०, नो मोसवङजोगं०, नो सचामोसवङजोगं०, असचामो-मवहजोग पि जुंजड, कायजोग जुजमाणे आगच्छेज वा गच्छेज वा चिट्टेज वा निसीएज वा तुग्रहेज वा उद्धंघेज वा पलघेज वा, पाटिहारियं पीढफलगसेजा-सथारग पचिष्पिणेजा ॥ ७१३ ॥ से ण भते ! तहा मजोगी सिज्झड जाव अत करेड १ गोयमा ! नो डणहे समहे । मे णं पुन्वामेव सण्णिस्स पचिदियपजत्तयस्स जहण्णजोगिस्स हेट्टा असखेजगुणपरिहीणं पढम मणजोगं निरुंभइ, तथो अणंतर वेडिंदयपजत्तगस्स जहण्णजोगिस्स हेट्टा असखेजगुणपरिहीण दोचं वहजोगं निरुमङ, तओ अर्णतर च ण सहुमस्स पणगजीवस्य अपज्ञत्तयस्स जहण्णजोगिस्स हेट्टा असरोजगुणपरिहीण तम्ब कायजोग निरुमड, से ण एएण उचाएणं-पढम मणजोग निरुभड, मणजोग निरुभित्ता वडजोग निरुभड, वडजोग निरुभित्ता कायजोगं निरुभइ, फायजोगं निरुभित्ता जोगनिरोह करेड, जोगनिरोह करेता अजोगत्त पाउणः, अजोगत्त पाउणिता ईर्मि हस्मपचक्यारुचारणद्वाए असखेजसमङ्यं अतोमु-हुत्तिय सेलेमि पडिवजाइ, पुव्वरहयगुणसेढीयं च णं कम्म, तीसे सेलेसिमडाए असरेजाहिं गुणसेढीहिं असखेजे कम्मखंधे रावयड, खवडता वेयणिजाउणामगोत्ते डचेए चत्तारि कम्मसे जुगव रावेड, जुगव रावेता ओरालियतेयाकम्मगाड सन्वाहिं विष्यजहणाहि विष्यजहङ, विष्यजहिता टज्जुसेढीपटिवण्णो अफुममाणगईए एगय-मएण अविग्गहेण उद्दू गता सागारोवउत्ते सिज्झड वुज्झड०, तत्य सिद्धो भवइ। ते ण तत्य सिद्धा भवति अमरीरा जीवघणा दंसणणाणोवउत्ता णिहियहा णीरया णिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्ध काल चिट्टति । से केण्ट्रेण भति ! एव बुचट-'ते ण तत्य मिद्धा भवति असरीरा जीवघणा दमणणाणीवउत्ता णिहियहा णीरया णिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा सामयमणागयद्ध काल चिट्ठति' १ गोयमा ! से जहाणामए चीयाण अग्गिददृाण पुणरवि अक्कुप्पत्ती ण भवड, एवामेव मिद्धाण वि कम्मवीएम् दहुम् पुणरवि जम्मुप्पत्ती ण भवड, से तेणट्टेण गोयमा! एव वुचट-'ते ण तत्थ मिद्धा भवति असरीरा जीवघणा दसणणाणीवउत्ता णिट्टियट्टा णीरया णिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्ध काल चिट्टति' ति । निच्छि-ण्णसन्वदुक्या जाइजरामरणवन्धणविमुक्षा । साययमन्वावाह चिट्टति सुही सुह पता ॥ १ ॥ ७१४ ॥ पन्नवणाप भगवईंग छत्तीसहमं समुग्घायपयं समत्तं ॥ पण्णवणासुत्तं समत्तं ॥

में विद्विति ।। ७ ९ ॥ कम्हा मं सेते | केमकी सहुत्याय गर्काह । गोसमा | केमकिस्स वचारि क्रम्सेसा सक्वीचा व्यक्तित स्वितिक्या स्वर्धि तंत्रहु-केमिसे
भाउए, माने गोए सम्बद्धान्यस्य सेवितिक्या स्वर्धित स्वर्धाने भाउए कमे
हरह, सिस्से सार्व क्षेत्रवे स्वाहित द्वितिह्व य सिस्सस्योक्त्यायाए वंपमेहि दिवित व स्वर्म क्रम्स केन्द्रवे स्वर्धान्य एवं ब्राह्म सहुत्यायं गर्काहत । स्वर्धान में देवे वे मंते | केम्प्रे समोहंपति सम्बे में में मेर्ने केमकी सहुत्यायं गर्काहत । सार्वामा । सहुत्यायं ने स्वर्धान स्वर्धान स्वर्धान सहुत्यायं व्यक्ति विद्विह्व य । गर्वामागहक्त्यात् सुत्रायं ने मान्या । अर्वाचित्यायात् स्वर्धान सहुत्यायं वर्षात् केमकी वित्वा । बात्यस्वमित्यात् । सिद्धे बरण्हं या १ ॥ वर्णम्य सहुत्यायं वर्णाः केमकी वित्वा । बात्यस्वमित्यात् स्वर्धे स्वर्यं स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्यं स्वर

सुत्रागमे

[ पञ्चनक्सूर्य

411

बहुबोमं जेवह, ब्याबोगं जुंकह । गोवमा । जो समावोगं जुंकह, जो वहर्षे जुंकह, ब्याबोगं जुंकह । ब्याबोगं थं सेते । जुंबमांव हैंड ब्यासिक्यपरिक्तवर्षे कुंकह, कोराक्रियमीमास्परीस्वावत्योगं जुंबह, केउव्यिवस्परीस्वावत्योगं केंग्रह केविस्थरीखास्परीस्वावत्योगं जुंकह, ब्याह्मराव्यपरिक्तवर्षोगं ब्याह्मराव्यपरिक्तवर्षोगं आहार्ष्याचे स्वाद्यपर्याचे स्वाद्यपर्याचे व्याद्यपर्याचे स्वाद्यपर्याचे काह्मराव्यपर्याचे स्वाद्यपर्याचे त्रिक्ता । क्रेस्टिक्यमीम् स्वाद्यपर्याचे त्रिक्ता । क्रेस्टिक्यमीमा स्वाद्यपर्याचे क्रेस्टिक्यमीमा स्वाद्यपर्याचे क्रेस्टिक्यस्वर्याचे क्रेस्टिक्यस्वर्याचे क्राह्मराव्यपर्याचे क्राह्मराव्यपर्याचे क्राह्मराव्यपर्याचे क्रेस्टिक्यस्वर्याचे क्राह्मराव्यपर्याचे क्राह्मराव्यपर्याचे क्राह्मराव्यपर्याचे क्राह्मराव्यपर्याचे क्राव्यप्याचे क्राह्मराव्यपर्याचे क्राह्मरस्वयपर्याचे क्राह्मर्याचे क्राह्मरस्वयप्याचे क्राह्मरस्वयपर्याचे क्राह्मरस्वयप्याचे क्राह्मरस्वयचे क्राह्मरस्वयचे क्राह्मरस्वयचे क्राह्मस्वयचे क्रा

रामण बोर्य सुंबर, अगवामोसमय बोर्ग सुंबर है गोयमा ! सबमण बोर्य भी मोराम-

सरीरत्ये मबद् ॥ ७९९ ॥ से णं मेरे ! तहा समुख्याबगए कि समझेनं संबंध

णजोग॰, नो सच्चामोसमणजोग जुजइ, असचामोसमणजोग जुजइ, वइजोगं जुंजमाणे किं सचवइजोगं जुजइ, मोसवइजोग जुजइ, सचामोसवइजोगं०, असचामोसवइजोग जुज<sup>ु २</sup> गोयमा ! सचवइजोग०, नो मोसवइजोगं०, नो स<del>बा</del>मोसवइजोगं०, असचामो-मवइजोग पि जुजह, कायजोग जुंजमाणे आगच्छेज वा गच्छेज वा चिट्ठेज वा निसीएज वा तुर्यहेज वा उहंघेज वा पलघेज वा, पाडिहारिय पीडफलगसेजा-सथारग पचिष्पणेजा ॥ ७१३ ॥ से ण भते ! तहा सजोगी सिज्झइ जाव अत करेड १ गोयमा ! नो इणहे समद्धे । से ण पुन्वामेव सण्णिस्स पनिवियपजत्तयस्स जहण्णजोगिस्स हेट्टा असखेजागुणपरिहीणं पढम मणजोगं निरुभड, तस्रो अणतर वेडदियपजत्तगस्स जहण्णजोगिस्स हेट्टा असखेजगुणपरिहीण दोच वइजोगं निरुभइ, तओ अणतर च ण सुहुमस्स पणगजीवस्स अपजत्तयस्स जहण्णजोगिस्स हेट्टा असलेजगुणपरिहीण तम्ब कायजोग निरुभड, से ण एएण उचाएणं-पढम मणजोग निरुभइ, मणजोग निरुभित्ता वङ्जोग निरुभइ, वङ्जोग निरुभित्ता कायजोग निरुभइ, मायजोग निरुभित्ता जोगनिरोह करेड, जोगनिरोह करेत्ता अजोगत्त पाउणइ, अजोगत्त पाउणिता ईसिं हस्सपचक्खरुचारणद्धाए असखेज्जसमझ्यं अतोमु-हुत्तिय सेलेसिं पडिव्जाइ, पुन्वरइयगुणसेढीय च ण कम्म, तीसे सेलेसिमदाए असखेजाहिं गुणसेढीहिं असखेजे कम्मखंधे खनयइ, खनइत्ता वेयणिजाउणामगोत्ते इचेए चत्तारि कम्मसे जुगव खवेइ, जुगव खवेता ओरालियतेयाकम्मगाइ सञ्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहड्, विप्पजहित्ता उज्जुसेढीपडिवण्णो अफुसमाणगईए एगस-मएण अविग्गहेण उद्दू गता सागारोवउत्ते सिज्झड वुज्झइ॰, तत्य सिद्धो भवड । ते ण तत्य सिद्धा भवति अमरीरा जीवघणा दसणणाणोवउत्ता णिहियहा णीरया णिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्ध काल चिट्ठति । से केण्ट्रेण भते ! एव वुचड-'ते ण तत्य सिद्धा भवति असरीरा जीवघणा दंसणणाणीवउत्ता णिहियहा णीरया णिरेयणा वितिमिरा विमुद्धा सासयमणागयद काल चिट्ठति' गोयमा ! से जहाणामए वीयाण अग्निद्दृाण पुणरवि अकुरुपत्ती ण भवड, एवामेव सिद्धाण वि कम्मवीएन दर्देनु पुणरवि जम्मुप्पत्ती ण भवड, से तेणहेण गोयमा! एव उत्तर-'ते ण तत्य निद्धा भवति अमरीरा जीवधणा दसणणाणीवडत्ता णिट्टियट्टा णीरया णिरयणा वितिमिरा विसुद्धा नास्यमणागयद्भ काल चिट्टति' ति । निच्टि-प्तम्बदुम्बा जाडकरामरणवन्थणविमुषा । सानयमन्वावाह चिट्टति मुही सुह पता ॥ १ ॥ ७१४ ॥ पत्रवणाए भगवईए छत्तीसहमं समुग्घायपयं नमत्तं॥ पण्णवणासुत्तं समत्त॥



## णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

## सुत्तागमे

## तत्थ णं

## जंबुद्दीवपण्णत्ती

णमो आरिहताण णमो सिद्धाण णमो आयरियाणं णमो उवज्ज्ञायाणं णमो लोए सन्वसाद्रूणं। तेण कालेण तेण समएणं मिहिला णाम णयरी होत्था, रिद्धित्थिमिय-समिद्धा वण्णओ । तीसे णं मिहिलाए णयरीए वहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ ण माणिमहे णाम उजाणे होत्था, वण्णओ । जियसत्तू राया, धारिणी देवी, वण्णओ । तेण कालेणं तेण समएण सामी समोसह, परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ॥ १ ॥ तेण काळेण तेण समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई णाम अणगारे गोयमगोत्तेणं सतुस्सेहे समचउ-रंससठाणे जाव [ तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ २ ता वदइ णमसइ विदत्ता णमंतिता ] एवं वयासी-कहि ण भते ! जबुद्दीवे २ १ केमहालए ण भते ! जबुद्दीवे २१ किसिठिए ण मंते । जबुद्दीवे २१ किमायारभावपडीयारे ण भते । जबुद्दीवे २ पण्णते २, गोयमा । अयण्ण जबुद्दीवे २ सन्वदीवससुद्दाण सव्वब्भतराए सञ्बद्धश्राए वट्टे तेल्लापूयसठाणसिठए वट्टे रहचकःवालसठाणसिठए वट्टे पुक्खरकिण-यासठाणसिठए वेहे पिंडिपुण्णचदसठाणसिठिए एग जोयणसयसहस्स आयामवि-क्लमेण तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलस महस्साई दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिष्णि य कोसे अद्वावीस च वणुसय तेरस य अगुलाइ अद्धगुल च किंचिविसेसाहिए परिक्सेवेण पण्णते ॥ २-३ ॥ से णं एगाए वइरामईए जगईए सव्वओ समंता सपरिक्लिते, सा णं जगई अट्ट जोयणाइ उष्टु उच्चतेण मूळे वारस जोयणाइ विक्खंमेण मज्झे अह जोयणाइ विक्खमेण उवरिं चतारि जोयणाई विक्खमेणं मूळे विच्छिना मज्हे सिखता उविर तणुया गोपुच्छसठाणसिठया सन्ववहरामई अच्छा सण्हा लण्हा घट्टा मद्दा णीरया णिम्मला णिप्पका णिक्कतडच्छाया सप्पभा समिरीया सडच्चीया पासादीया दरिसणिजा अभिल्वा पिंडल्वा, सा ण जगई एगेणं महंतग-वक्लकहरूण सन्वस्रो समता सपरिक्खिता, से णं गवक्लकहरू अद्धजोयणं उ**द्ध** उचतिणं पच घणुसयाइ विक्खमेण मञ्बरयणामए अच्छे जाव पिकह्वे, तीसे ण जगईए उप्पि



पव्वयवहुले पवायवहुले उज्झरवहुले णिज्झरवहुले खङ्कावहुले दरिवहुले णईवहुले दहवहुरे स्क्खबहुरे गुच्छबहुरे गुम्मबहुरे लयाबहुरे ब्हीबहुरे अडवीबहुरे साव-यवहुछे तणवहुछे तक्षरवहुछे डिम्बवहुछे डमरवहुछे दुब्भिक्खवहुछे दुक्वालवहुछे पासटवहुले किवणवहुले वणीमगवहुले ईतिवहुले मारिवहुले कुबुद्विबहुले अणायुद्वि-वहुले रायवहुले रोगबहुले सिकलेसबहुले अभिक्खण अभिक्खणं सखोहबहुले पाईण-पढीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे उत्तरओ पलियकसठाणसिठए दाहिणओ वणुपिट्ठ-सिठिए तिहा लवणसमुद्द पुट्ठे गगासिंधृहिं महाणईहिं वेयद्वेण य पव्वएण छव्मागपविभत्ते जबुद्दीवदीवणउयसयभागे पचछव्वीसे जोयणसए छच एगूणवीसङभाए जोयणस्स विक्खमेण। भरहस्य ण वासस्य वहुमज्झदेसभाए एत्थ ण वेयहुं णाम पव्वए पण्णत्ते, जे ण भरह वास दुहा विभयमाणे २ चिद्वइ, त०-दाहिणहुभरह च उत्तरहुभरह च ॥ १०॥ कहि ण मते ! जबुद्दीवे दीवे दाहिणहे भरहे णाम वासे पण्णते १ गो० ! वेयहृस्स पव्वयस्म दाहिणेण दाहिणलवणसमुद्दस्स उत्तरेण पुरित्थमलवणसमुद्दस्स पचित्थिमेणं पचित्यमलवणसमुद्दस्य पुरित्यमेणं एत्य ण जवुद्दीवे दीवे दाहिणहृभरहे णाम वासे पण्णत्ते, पाईणपढीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे अद्भचदसठाणसठिए तिहा लवणसमुद् पुढ़े गगासिधूहिं महाणईहिं तिभागपविभत्ते दोण्णि अद्वतीसे जोयणसए तिण्णि य एगूणवीसङमागे जोयणस्स विक्खभेण, तस्स जीवा उत्तरेण पाईणपढीणायया दुहा लवणममुद्द पुट्ठा पुरित्थिमिल्लाए कोडीए पुरित्थिमिल्ल लवणसमुद्द पुट्ठा पचित्थिमिल्लाए कोडीए पचित्यिमिल्ल लवणसमुद्द पुट्ठा णव जोयणसहस्साइ सत्त य अडयाले जोयणसए दुवालस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेण, तीसे घणुपुट्ठे दाहिणेण णव जोयण-सहस्साइ सत्तछावट्टे जोयणसए इक च एगूणवीमइभागे जोयणस्म किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण पण्णते, दाहिणद्वभरहस्स ण भते । वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णते १ गो० ! वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, से जहाणामए-आर्लिंगपुक्खरेड् वा जान णाणाविहपश्चनण्णेहिं मणीहिं तणेहिं उनसोभिए, तजहा—कित्तिमेहिं चेन अकित्तिमेहिं चेव, दाहिण हुभरहे ण भते ! वासे मणुयाण केरिसए आयारभावपडो-यारे पण्णते 2 गोयमा ! ते ण मणुया वहुसघयणा वहुसठाणा वहुउच्चत्तपज्जवा वहुआउपज्जवा वहूड् वासाई आउ पार्छेति पालित्ता अप्पेगङ्या णिर्यगामी अप्पेगङ्या तिरियगामी अप्पेगइया मणुयगामी अप्पेगडया देवगामी अप्पेगइया सिज्झति वुज्झति सुचिति परिणिव्वायित सन्वदुक्खाणमंत करेंति ॥ ११ ॥ किह ण भंते । जबुद्दीवे २ भरहे वासे वेयक्के णाम पव्वए पण्णत्ते १ गो० ! उत्तरहुभरहवासस्स दाहिणेण दाहिणहु-भरहवासस्स उत्तरेण पुरित्थमलवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेण पचित्थिमलवणसमुद्दस्स पुर-- बहुमजादेसमाए एरब र्ण सहुई एया पठमबर बेह्या पञ्चला अञ्चलोधर्व उर्व उर्व-त्तेर्य पंत्र पणुसरातं विक्योतेण अगईसमिया परिक्षेत्रेतं सम्बद्धवासङ् सन्धा नार पवित्रवा । तीरे जं परमवरवेदमाए असमेवाद्यं वज्जावारे प्रकार तंबदा-वद्यमव पेमा ए<del>वं बढ़ा जीचाभिगमे बाव भक्को बाद ध्वा</del> विस्त्रा सास्त्रा भा<del>व निवा</del> u ¥ II तींसे में जगईए सम्मि बाहिं परमन्द्रवेश्याए एत्य व मई एगे वससंडे पन्में देस्नाई दो जोयमाई विक्लंमेर्च अगईसम्य परिक्लेवेर्च वयसंत्रकामाओ देशमी ।। ५ व दस्स नं बनर्संडस्स अंदो बहुसस्यसमिजे मुसिसाने कनते. से बहुत्यासङ् मार्निगपुरुपरेह दा बाव भाषाविद्यपेषक्योही भवीहि तमेही उदसीमिए, तैनही-किन्देहि एवं करते पंची रस्रो फासी सद्दो पुरूपरिणीको पम्बस्पर बरगा संहरूप पुरुमिशिष्यपद्भया स नेयन्या स्टब्स नं बहुने बायर्मंडरा देशा य देशीओं व भासपंति समंति निष्ठति विसीयति तुमर्रति रमंति क्लंति क्रीकृति मोर्हति अप पोरानामं स्परकरानं सुमायं ब्लायायं ब्लायं ब्ल्याणं ब्लायरसमितिनितेर प्रवासनमाणा निष्ट्रंग्रेटि । शीसे वी क्याह्रेए स्टिंग संदो परस्वर्रदेशसार एत्व वी एगे नई बक्संडे एन्क्से बेस्याई वो खोयणहं बिन्यंमेणं केमासस्यव प्रीस्के वैसं क्रिक्ट काव समविद्वमे नेशम्बे । ६ ॥ जंबुदीवरस न शंद ! बीवरस म्ह दारा परणता र गो । चतार दारा पंतर-विवर १ वेस्पंते १ वर्ष रे मपराजिए ४ ॥ ७ ॥ नहि नं मंते ! जंबुहीनस्त बीवस्त विजए नामं वारै पन्यते ह गो । बांबुर्वावे कीचे संवरस्य प्रकासस्य प्रराध्यमेणं पणसान्त्रस्य क्षेत्रकस्य स्थान नीइनइता अनुदीवरीवपुरत्थिमपेरते समयसमृदपुरत्थिमदस्य वचनिवसेनं सीवार महामहैए सपि एस ने अनुहोबस्स विवय जार्स वार प्रजात बद्ध जोबणाई ग्रह उन्होंचे बतारि जोसवाई विक्तांसेचे ताब्द्रने चन प्रवेचे शेए बर्ज्यप्रशृतिकार बान नारस्य कममो भाग रामहामा । एवं बतारि मे नारा घरम्बरा<sup>दिना</sup> माधियम्बा ॥ ४ ॥ **बंबुदी**क्स वं गेरो दीक्स दारस्य य दारस्य व केमहुए समाहाए अंतरे पण्यते । यो । अस्थासीई मोक्यसहस्याइ मानन्ने व भोमनाई देसूर्ण च भवजोननं वारस्य न २ अवाद्याग सदरे प्रमादे गाहा अतुआधीर सहस्या नावन्त्रं क्व जोयशा हुति । सर्व च अह्बोसन दारता अपुरीवरस त १ ॥ ९ ॥ कहि वं गेठे ! जंजुरीवे धीवे मरहे बार्म वासे पत्र्योः " यो । पुत्रिक्षिमर्वतस्य शासदरपञ्चनस्य दावियोगं दाविषयनमस्युरस्य उत्तरेगं पुरस्थिमाम्बर्णसमुद्रस्य क्वरियमेर्च क्वरियमक्वनसमुद्रस्य पुरस्थिमेर्च एत्व र्च वंतुरीने रीने मरहे नामें वासे पन्नते बालुबहुके बंदगबहुके लिसनहुके उत्तरहुके

434

पन्नयन्हुले पवायवहुले उज्झरवहुले णिज्झरवहुले खड्ढाबहुले दरिवहुले णईवहुले दहवहुले स्क्लवहुले गुच्छवहुले गुम्मवहुले लयावहुले वलीवहुले अडवीवहुले साव-यवहुरे तणवहुरे तक्करवहुरे डिम्बबहुरे डमरवहुरे दुब्भिक्खबहुरे दुक्कालबहुरे पासटवहुले किवणवहुले वणीमगवहुले ईतिवहुले मारिवहुले कुबुद्धिवहुले अणावुद्धि-वहुले रायवहुले रोगवहुले सिकलेसवहुले अभिक्खण अभिक्खण सखोहवहुले पाईण-पढीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे उत्तरओ पलियंकसठाणसिठए दाहिणओ वणुपिट्ट-सठिए तिहा लवणसमुद्द पुट्ठे गगासिंधूहिं महाणईहिं वेयद्वेण य पव्वएण छन्भागपविभत्ते जबुद्दीवदीवणजयस्यभागे पंचछन्वीसे जोयणसए छच एगूणवीसङ्भाए जोयणस्स विक्खमेण। भरहस्स ण वासस्स वहुमज्झदेसभाए एत्थ ण वेयहे णाम पव्वए पण्णत्ते, जे णं भरह वास दुहा विभयमाणे २ चिट्ठइ, त०-दाहिणहुभरह च उत्तरहुभरह च ॥ १०॥ कहि ण भते ! जबुद्दीवे दीवे दाहिणहे भरहे णाम वासे पण्णते १ गो० । वेयहुस्स पन्वयस्स दाहिणेण दाहिणलवणसमुद्दस्स उत्तरेण पुरित्थमलवणसमुद्दस्स पश्चित्थिमेण पचित्यमलवणसमुद्दस्स पुरित्यमेण एत्य ण जवुद्दीवे दीवे दाहिणह्नुसरहे णाम वासे पण्णते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे अद्भचदसठाणसिठए तिहा लवणसमुद्द पुढे गगासिंधूहिं महाणईहिं तिभागपविभत्ते दोण्णि अद्वतीसे जोयणसए तिण्णि य एगूणवीमइमागे जोयणस्स विक्खमेण, तस्स जीवा उत्तरेण पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुद्द् पुट्टा पुरित्थिमिल्लाए कोबीए पुरित्थिमिल्ल लवणसमुद्द् पुट्टा पच्चित्थिमिल्लाए कोडीए पचित्यिमिल्ल लवणसमुद्द पुट्ठा णव जोयणसहस्साइ सत्त य अडयाले जोयणसए दुवालस य एगूणवीसइमाए जोयणस्स आयामेण, तीसे धणुपुट्टे दाहिणेण णव जोयण-सहस्साइ सत्तछावट्टे जोयणसए इक च एगूणवीसइभागे जोयणस्स किचिविसेसाहिय परिक्खेवेण पण्णत्ते, दाहिणहुभरहस्स ण भते ! वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णते १ गो० ! बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, से जहाणामए-आर्लिंगपुक्खरेइ वा जाव णाणाविहपञ्चवण्णेहिं मणीहिं तणेहिं उवसोभिए, तजहा—कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव, दाहिणहुभरहे ण भते । वासे मणुयाण केरिसए आयारभावपडो-यारे पण्णते ? गोयमा ! ते णं मणुया बहुसघयणा वहुसठाणा वहुउच्चत्तपज्जवा बहुआउपज्जवा बहूई वासाई आउ पालेंति पालित्ता अप्पेगङ्या णिर्यगामी अप्पेगङ्या तिरियगामी अप्पेगङ्या मणुयगामी अप्पेगङ्या देवगामी अप्पेगङ्या सिज्झति बुज्झति सुचिति परिणिव्वायति सव्वदुक्खाणमतं करेंति ॥ ११ ॥ कहि ण भते ! जबुद्दीचे २ भरहे वासे वेयहे णामं पव्वए पण्णते <sup>१</sup> गो॰ ! उत्तरहुभरहवासस्स दाहिणेण दाहिणहु-मरहवासस्स उत्तरेण पुरित्थमलवणसमुद्दस्स पचित्थिमेण पचित्थिमलवणसमुद्दस्स पुर-

416 सुचागमे ि संबद्धी क्यान्नाची रियमेर्ग एरव थ अंतुरीने २ सराहे वासे वैसक्के जार्स पव्याप पञ्जी पाईलपरीयानए सरीचदाहिगविध्यानी बुद्दा कानसमुदं पुद्धे पुरस्थितकाए कोडीए पुरस्थिति समन समुद्दं पुद्धे प्रवास्थितिकाए कोबीए प्रवास्थितिकं कागसमुद्दं पुद्धे, प्रवासि बोक्नाई उर्द् उन्होंने इस्सकोशाई जोगनाई उन्नेहेर्ण पन्नार्ध कोगगाई विज्वानेमं तस्स गा। पुरत्पिग्राचरिक्रोणं चतारि अञ्चासीय कोक्यसप् सोकस य प्रमुखनीस्त्रमागे जोक्यस भद्रमार्गं च सामामेर्जं पचता। तस्स जीवा उत्तरेर्जं पाईणपर्धिमानया हुड्डा स्वनस्मुई प्रदा प्ररत्यिभिकार कोबीए प्ररत्यिकि काशसमुद्दं प्रदा क्वात्विभिकार कोबीए पर्व-रिवरिक्तं स्वजस्मुद् पुद्वा दस जोयनसङ्ख्याङ् सत्त य बीसे जोयनस्य बुवास्य व प्रमुचनी छन्नागे जोजनस्य जाजामेर्ज तीसे क्लुप्ते बाहिनर्ज इस कोजनसहरसाई सा य तेवाके जोवकरण् क्यारस य एगूमवीसङ्गामे कोवकरस परिकारिक स्वयस्त्राव-पठिए सम्बर्गनामए अच्छे सन्ते बढे गडे गडे औरए जिम्मले क्रिपेंड विसंबर काए राज्ये समिरीए पाराईए दरिसमिजे श्रामिको पश्चिते । उसनो पार्सि शेर्वे परमारकेयाहि दोहि न नगर्यव्हि सम्बन्धे समहा संपरिकियते । सन्ते ने परमार्वेडमासो लक्क्टेसर्च रङ्ग राजतेर्च पंचयक्तसमूह विकासीमं प्रवाससीमानी आयामेर्न कन्मओ शामिक्नो । ते ज क्यसंडा देखनाई वो जोदवाई निस्जी<sup>र्व</sup> पदमगरकेजासम्बद्धाः सामानेन किन्या किन्योमासा कन्यको । वेशहस्स <sup>व</sup> पन्यमस्य पुरन्तिसम्बन्धिमेणं वो गुहाओ पन्यचामो उत्तरहाहिनावनामे पाईजपरीयमितियन्त्राको पन्नास बोजवाई बाजानेयं दुवासस कोक्याई निकासिने

सङ्ख कोरणाहः तक्षं तकरोणं वहरामगदमाडोहाकियाओ जमसन्तरकरमाडकन्द्र<sup>पर</sup> वेसामो मिर्चनगर्शिमिरसामो कागवणक्षपद्यसम्प्रताबोदसपदान्ते वास परि-स्वामो तंबदा-दानिस्गुदा केव रांवणमानगुद्धा केव तत्व भंदो देवा महितिया महज्जूमा सहावका सहायशा सहाजुकका सहजुमाना परिवर्शनमञ्जाना परिवरणी र्रंबहा-कममाक्य वन वहमासर केन । तेसि व ववर्षकार्य बहुसगरमिकान्ये मुमिमागाओं केन्द्रस्य प्रवासस्य समधो प्राप्ति वस वस व्योगनाहं एवं उप्पादता एत्य नं दुवे विजाहरसेडीको पञ्चताको पा[जपडीनावयाको उरीवहाहिननिकि भ्याओं दश इस कोमनाई निक्कीमेन पन्यवसमियाओं आधामेर्च उसको पार्ति नोहि परमवरवैद्यावि वोहि वथसकेवि संपरिविकताको ताओ व पक्षमवरकेरमाओ भवनोजर्प तर्षु वर्षोणं पंच वर्रुयनाई विच्वतियं पञ्चनसमिनाजो आनिर्मे कुमाओं नेवच्यों कुप्पड़ा वि प्रतमक्षेत्रसासमाः आयामेर्च कुच्चओ । विजाहर सेबीचं मेरे ! भूमीवं चेरिसए जानारमानपढीनारे पञ्चते । योक्सा ! बहुसमर

मणिजे भूमिभागे पण्णते, से जहाणामए-आर्लिंगपुक्खरेड वा जाव णाणाविह-पचवण्णेहिं मणीहिं तणेहिं उवसोभिए, तंजहा-कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव, तत्य ण दाहिणिल्लाए विजाहरसेढीए गगणवल्लभपामोक्खा पण्णास विजाहरण-गरानासा फणता, उत्तरिल्लाए विजाहरसेढीए रहनेउरचक्कवालपामोक्खा सिट्ट विजाहरणगरावासा पण्णता, एवामेव सपुव्वावरेणं दाहिणिल्लाए उत्तरिलाए विजा-हरसेढीए एग दस्तर विजाहरणगरावाससय भवतीतिमक्खाय, ते विजाहरणगरा रिद्धित्थिमियसमिद्धा पमुङ्यजणजाणवया जाव पिंडह्वा, तेसु णं विज्ञाहरणगरेसु विजाहररायाणो परिवसति महयाहिमवतमलयमंदरमहिंदसारा रायवण्णस्रो भाणि-यन्वो । विजाहरसेढीणं भते ! मणुयाण केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णते ? गोयमा! ते ण मणुया वहुसघयणा वहुसठाणा वहुउचत्तपज्जवा वहुआउप-ज्ञवा जाव सञ्बद्धक्खाणमंत करेंति, तासि णं विज्ञाहरसेढीण वहुसमरमणि-जाओ भूमिभागाओं वेयष्टुस्स पन्वयस्स उभओ पार्सि दस दस जोयणाइ उष्टु उप्पइता एत्य ण दुवे आमिओगसेढीओ पण्णताओ, पाईणपडीणाययाओ उदीण-दाहिणविच्छिण्णाओ दस दस जोयणाइ विक्खमेण पव्वयसमियाओ आयामेण उमओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसडेहिं सपरिक्खिताओ वण्णओ दोण्ह वि पव्वयसमियाओ आयामेण, आभिओगसेढीण भते । केरिसए आयारभाव-पडोयारे पण्णते ? गोयमा ! बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते जाव तणेहिं उव-सोभिए वण्णाइ जाव तणाण सद्दोत्ति, तासि ण आभिओगसेढीणं तत्य तत्य देसे २ तिहैं तिहें जान नाणमतरा देवा य देवीओ य आसयंति सयित जान फलिनिन-विसेस पचणुभवमाणा विहरंति, तासु ण आभिओगसेढीसु सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमजमवस्णवेसमणकाह्याण आभिओगाण देवाणं वहवे भवणा पण्णता, ते ण भवणा वाहिं वट्टा अतो चउरसा वण्णओ जाव अच्छरघणसघसविकिण्णा जाव पिड-ह्वा, तत्य ण सक्स्स देविंद्स्स देवरण्णो सोमजमवरुणवेसमणकाइया बहवे आभि-ओगा देवा महिष्ट्रिया महजुइया जाव महासुक्खा पिठ्योवमद्विहया परिवसित । तासि णं भाभिम्रोगसेढीण बहुसमरमणिजाओ भूमिमागाओ वेयष्ट्रस्य पन्वयस्स उमओ पार्सि पच २ जोयणाइ उहु उप्पहता एत्य ण वेयहुस्स पव्वयस्स सिहरतछे पण्णते, पाईणपदीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे दस जोयणाइ विक्खभेणं पव्वयसमगे सायामेण, से ण इक्काएं पडमवरवेइयाएं इक्केणं वणसंडेण सन्वओ समता सपरि-विखते, प्रमाण वण्णगो दोण्हिप, वेयष्टुस्स ण भते ! पव्वयस्स सिहरतलस्स केरि-सए आगारभावपढोयारे पण्णते ? गोयमा ! वहुसमरमणिजे भूमिमागे पण्णते, से

के र्द•-द्रसमसुमयराज १ सुनगा**का**ते १ मिलपेनियाए तथि निकासने प ४ क्रान्समाञ्चले ५ ब्रह्ममृत्रसमाधने पूर्व जुला-दाहिनकुमरहकु ३३३ बैबे महिश्विए बाब पसिआंबमटिङ्य जानसर्पर्य चार्राः रवीमं चउप्दं सरगमहितीलं सपरिः ⇒ य तनुन्तर अभियादिवर्ड्न सोलगन्द्रं आयरकरा-रामहाणीप अन्त्रेनि प बहुर्ग हेबळ:

दाहिणद्वभरहकृडस्स देवस्स दाहिणद्वा णाम रायहाणी पण्णता <sup>२</sup> गो०! मदरस्स पन्वयस्म दिक्यणेण तिरियमसखेजदीवसमुद्दे वीडेवइत्ता अण्णमि जंबुद्दि दीवे दिक्खणेण वारस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता एत्य ण ढाहिणहुभरहकूडस्म देवस्म दाहिणहुभरहा णाम रायहाणी भाणियव्वा जहा विजयस्स देवस्स, एव सव्वकृडा णेयव्वा जाव वेसमणकृष्डे परोप्पर पुरच्छिमपचित्यमेण, इमेसि वण्णावासे **गाहा-**मज्झे नेयद्रुस्स उ क्णयमया तिष्णि होति कृडा उ । सेसा पव्नयकूडा मव्वे रयणामया होंति ॥ १ ॥ माणिभद्दकृडे १ वेयद्वकृडे २ पुण्णभद्दकृडे ३ एए तिण्णि चूडा कणगामया सेसा छिप रयणामया, दोण्ह विसरिसणामया देवा कयमालए चेव णदमालए चेन, सेसाण छण्ह सरिसणामया-जण्णामया य कूडा तण्णामा खल्छ हवति ते देवा। पल्लिओवमद्विईया हवति पत्तेयपत्तेयं ॥ १ ॥ रायहाणीओ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण तिरिय असखेज्जदीवसमुद्दे वीईवइत्ता अण्णाम जबुद्दीवे दीवे वारस जोयणसहस्साइ ओगाहिता एत्य ण रायहाणीओ भाणियव्वाओ विजयरायहाणीसरिसयाओ ॥ १४ ॥ से केणहेण भते ! एव वुचड-वेयहे पन्वए वेयहे पव्वए १ गोयमा । वेयहे णं पव्वए भरह वास दुहा विभयमाणे २ चिट्टइ, तंजहा-दाहिणहुभरहं च उत्तरहुभरह च, वेयहुगिरिकुमारे य महिह्विए जाव पलिओ-वमहिहए परिवसइ, से तेणहेण गोयमा । एव बुचड-वेयहे पव्वए २, अदुत्तर च ण गोयमा ! वेयहुस्स पन्वयस्स सासए णामधेजे पण्णते ज ण क्याड ण आसि ण कयाइ ण अत्थि ण कयाइ ण भविस्सड भुविं च भवड य भविस्सड य बुवे णियए सासए अन्खए अन्वए अविद्विए णिचे ॥ १५ ॥ कहि ण भंते ! जबुद्दीवे दीवे उत्तरहुभरहे णाम वासे पण्णते 2 गोयमा ! चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेण वेयहुस्स पव्वयस्स उत्तरेण पुरच्छिमलवणसमुद्दस्स पचचिछमेण पच-च्छिमलत्रणसमुद्दस्स पुरच्छिमेण एत्थ ण जबुद्दीने दीने उत्तरहृभरहे णाम बासे पण्णते, पाईणपढीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे पिठयकसठाणसिठए दुहा लवणसमुद्द पुट्टे पुरिच्छिमिल्लाए कोडीए पुरिच्छिमिल लवणसमुद्द पुट्टे पचिच्छिमिल्लाए जाव पुट्टे गगासिधूहिं महाणईहिं तिभागपविभत्ते दोण्णि अहतीसे जोयणसए तिण्णि य एगूणवीसइमागे जोयणस्स विक्खमेण, तस्स वाहा पुरच्छिमपचच्छिमेण अहारस वाणउए जोयणसए सत्त य एगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धमाग च आयामेण, तस्स जीवा उत्तरेण पाईणपढीणायया दुहा लवणससुद पुद्वा तहेव जाव चोद्दस जोयणस-हस्साइ चतारि य एकहत्तरे जोयणसए छच एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेस्णे आयामेण पण्णत्ता, तीसे घणुपद्धे दाहिणेण चोद्दस जोयणसहस्साइ पंच अद्वावीसे कृषा प रे गो । जब कृषा प - तं--सिरक्टे ९ वाहिजहसरहर्षे ९ राडप्पनायगुहाकृषे १ मामिसहर्षे ४ वेशहृष्टे ५ पुष्पासरकृषे ६ विसिन्

पुरन्तिमंगं शिक्ष्यहरस क्वन्तिमेगं एत्य गं वेसपुरम्बए वाहिक्युमरहरूडे वर्ग

कृषे प्रवारी विवाह कथानाणसारिये जान तरस में बहुसमरमिकास्य मृत्मानार्थ्य बहुसमस्थितार पूरण के महे पूरी पासानार्थितार एवमा क्रोत वहाँ उन्होंने सकरोप मिक्सोर्थे माध्युम्पार्थियम् (त्रिप्त माना पासार्थ्य में कर वहाँ वहाँ के सकरोप मिक्सोर्थे माध्युम्पार्थियम् प्राप्त माध्युम्पार्थे प्रवाह के पासायविश्वास्य वृक्षामां स्थापनार्थे माध्युम्पार्थे सामित्र कर्म के के कर्मुम्पार्थं माध्युम्पार्थं सामित्र कर्म के कर्मुम्पार्थं माध्युम्पार्थं सामित्र कर्म के कर्मुम्पार्थं माध्युम्पार्थं सामित्र कर्म के कर्मुम्पार्थं माध्युम्पार्थं माध्युम्पार्यं माध्युम्पार्थं माध्युमार्थं माध्युमार्यं माध्युम्पार्यं माध्युम्पार्यं माध्युमार्यं माध्युम्पार्थं माध्युम्पार्यं माध्युम्पार्यं माध्युम्पार्य

६, उस्सिप्पिणिकाले ण मते ! कड्विहे प० १ गो० ! छिव्विहे पण्णते, त०-दुस्सम-दुस्समाकाले १ जाव मुसमम्रसमाकाले ६ । एगमेगस्स णं भंते ! मुहुत्तस्स केवइया उस्तासद्धा वियाहिया 2 गोयमा ! असखिजाण समयाण समुदयसमिइसमागमेण सा एगा आवित्यति वुच्चइ सिखजाओ आवित्याओ ऊसासी सिखजाओ आविति-याओ नीसासो, गाहा-इट्टस्स अणवगहस्स, णिख्विकट्टस्स जंतुणो । एगे ऊसास-नीसासे, एस पाणुत्ति वुचई ॥ १ ॥ सत्त पाणुइ से थोवे, सत्त थोवाइ से छवे । लवाण सत्तहत्तरींप्, एस मुहुत्तेत्ति आहिए॥ २॥ तिण्णि सहस्सा सत्त य सयाइ तेवत्तरिं च ऊसासा । एस मुहुत्तो भणिओ सन्वेहिं अणतनाणीहि ॥ ३ ॥ एएण मुहुत्तप्पमाणेण तीस मुहुत्ता अहोरत्तो पण्णरस अहोरत्ता पक्खो दो पक्खा मासो दो मासा उऊ तिष्णि उऊ अयणे दो अयणा सवच्छरे पचसवच्छरिए जुगे वीस जुगाइ वाससए दस वाससयाइ वाससहस्से सय वाससहस्साण वाससयसहस्से चउरासीइं वाससयसहस्साइ से एगे पुन्वंगे चउरासीई पुन्वगसयसहस्साइ से एगे पुन्ने एव निगुण विगुण णेयन्व तुहियंगे २ अङ्डगे २ अववंगे २ हूहुयंगे २ उप्प-लगे २ पडमगे २ णलिणगे २ अच्छिणिउरंगे २ अउयंगे २ नउयगे २ पडयगे २ चूलियमे २ जाव चउरासीइ सीसपहेलियमसयसहस्साइ सा एमा सीसपहेलिया एताव ताव गणिए एताव ताव गणियस्स विसए तेण पर ओविमए॥ १८॥ से किंत ओविमिए १ २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-पलिओविमे य सागरोविमे य, से कि त पिल्ञोनमे १ पिल्ञोनमस्स परूवण करिस्सामि, परमाणू दुविहे पण्णत्ते, तजहा-सुहुमे य वावहारिए य, अणताण सुहुमप्रमाणुपुग्गलाणं ससुद्यसमिइसमागमेण वावहारिए परमाण् णिप्फजइ तत्थ णो सत्थ कमइ-सत्थेण स्रतिक्खेणवि छेतुं भित्तु च ज ण किर सक्ता । तं परमाणु सिद्धा वयति आइ पमाणाण ॥ १ ॥ वाव-हारियपरमाण्ण समुदयसिमइसमागमेण सा एगा उस्सण्हसिण्हयाइ वा सण्हसिण्ह-याइ वा उ**हु**रेण्ड वा तसरेण्ड् वा रहरेण्ड् वा वालग्गेड वा लिक्खाइ वा ज्याइ वा जनमज्झेड् ना उस्सेहगुलेड् ना, अट्ट उस्सण्हसिष्हियाओं सा एगा सण्हसिष्हिया अह मण्हसम्हियाओ सा एगा उष्टुरेण् अह उष्टुरेण्ओ सा एगा तसरेण् अह तसरेण्ओ सा एगा रहरेण् अड रहरेण्ओ से एगे देवकुरूत्तरकुराण मणुस्साण वालागे अह देवकुरूत्तरकुराण मणुस्साण वालागा से एगे हरिवासरम्मयवासाण मणुस्साण वालम्मे एव हेमवयहेरण्णवयाण मणुस्साण पुञ्वविदेहअवरविदेहाण मणुस्माण बालम्मा सा एगा लिक्खा अट्ट लिक्खाओ सा एगा जूया अट्ट ज्याओं से एगे जनमज्झे अंद्व जनमज्झा से एगे अंगुले एएण अगुलप्पमाणेणं

488

मेते । बासरम बेरिसए आयारमावपडोबारे पञ्चते ! गोनमा ! बहसमरम्बिजे मूनि मागे प्रमत्ते से जहाणामए-आसिंगपुरूराचेर ना जान कितिमेही चेन समितिमें भर उत्तरहुमरहे व मंते ! बारी मुखुमार्ग केरिसए आसारमावपहोसारे कवते ! गोयमा । ते चं म्युवा बहुसंध्यका जाब अप्येगद्या विज्यंति जान सम्बद्धस्वात्मंत्रं बेरेंदि ॥ १६ ॥ वृद्धि में मेरो । जंबुहीने बीन वत्तरबुमरहे वाले असमुद्रे वाले पम्बप् परमति । योगमा । गैगाकुङस्स प्रवस्थिमेर्च निपुर्कुङस्स परस्थिमार्च सुर्गह सर्वतस्य बासहरपञ्चास्य वाहिणिके चित्रंबे एत्व में जंबतीय हीवे उत्तरहमधे वासे उमहरू है बार्स पम्बए पज्जते अह बोबपाई उर्द्व उबलेलं हो बोबपाई तम्बेहेर्ण मुख्ये भट्ट जीयवाई विक्यामेर्च मण्डी छ बोबमई विक्यामेर्च उक्ती चतारि जोयगाई विक्योनेण सुके साध्येशाई पणवीर्थ जोयमाई परिक्योवेर्ग सन्ते साइरगाई भद्रारम जोवयाई परिक्येषेजं स्वर्धि साइरेगाई स्वासस जोयबाई परि क्रोबेनं ( पाइंतरं-मूरं वारम जावनाई मिक्समेर्च सन्हो सह जोबबाई बिस्पीमेर्न द्यप्ति बतारि क्रोसणाई विज्वांसेणं मुखे समरेगाई सत्तदीसं आयणाई वरिडकेरे मज्ते साररेगाई वनबीर्थ ओवनाई परिज्योवेर्य द्वार्थ शहरेगाई बारम खेनगर परिकरिवर्ष ) मूने विविद्यन्त मज्ज्ञे संक्षित वर्षि समुद्र सीपुरव्यसंज्ञमधील सम्बर्भगुणयाम् । अच्छ सन्ते बाब पहिस्य स वं एगाए पडसग्रसहाए वहेर भाव भवर्ग कोर्स आजामणे अञ्चलीसं विश्वप्रमेणे देगळणं बोसं सब्दे उच्चीर्थ अजे राहेब उप्पतानि पत्रमाणि मात्र उसम स एत्य देवे महिहिए जार राहियेन द्यबद्वाची तहेब संवरत्म परवयमा बहा विजयसः अधिग्रासर्व ॥ १० ॥ पहासे

प्रक्रारी समत्ती 🛭 **प्रेंड्रॉम में भंत ! बीमै भारहे बाल क्यमिटे काले क्यमे ! व्हें में ! दुनिहे का**ने पश्याने तंत्रहा-भोगपिकिशते य तस्यपिपिकार्ते व आसप्यितिशाने व मंति। बर्जादे पण्यतः । सो ! सम्बद्ध पणते सं--शुगममुमसरासे १ मुनदादा<sup>दे १</sup> मुनमपुरनमकातः ३ बूरनमगुनमाकातः ४ बुरनमाकाते ७ बुरनमपुरनमावः

९ विज्ञाहरसमयर्थनमध्ये कम्माच राभावसम्बिनित्याण माइनहर्या बहराहि बास अनुस्पादियमुद्दानुबन्नबद्धांगां (गर्य सम्प्राः) बद्दिशस्ये य समुत्राःगाः धि द निष्यसराद्रमान्न सम्मानकारका सद्धवादी अनुद्रभने वननेतसः सब् ध निर्दाप्त अरुवा तम्बानसमित्रो "रुमार्गन्य नहा स्वयम्मस्यरिष्ठ निर्दार अरुता सन्दर्भ पत्र्य तथ निर्दा नेमपेशन । ६, उस्सप्पिणिकाले णं भते ! कड्विहे प० १ गो० ! छव्विहे पण्णते, तं०-दुस्सम-दुस्पमाकाले १ जाव द्यसमद्यसमाकाले ६ । एगमेगस्स णं भंते <sup>।</sup> मुहुत्तस्स केवइया उस्सासद्धा वियाहिया 2 गोयमा ! असखिजाण समयाणं समुदयसमिइसमागमेण सा एगा आवितयत्ति वुच्चइ सिखजाओ आवितयाओ ऊसासी सिखजाओ आविति-याओ नीसासो, गाहा-हट्टस्स अणवगह्रस्स, णिरुविकट्टस्स जतुणो । एगे ऊसास-नीसासे, एस पाणुत्ति चुचई ॥ १ ॥ सत्त पाणूर् से थोवे, सत्त थोवाई से लवे । लवाण सत्तहत्तरीए, एस मुहुत्तेति आहिए ॥ २ ॥ तिण्णि सहस्सा सत्त य सयाइ तेवत्तरिं च ऊसासा । एस मुहुत्तो भणिओ सन्वेहि अर्णतनाणीहिं ॥ ३ ॥ एएण मुहुत्तप्पमाणेणं तीस मुहुत्ता अहोरत्तो पण्णरस अहोरत्ता पक्खो दो पक्खा मासो दो मासा रक तिण्णि उक अयणे दो अयणा सवच्छरे पचसवच्छरिए जुगे वीस जुगाइ वासमए दस वाससयाइ वाससहस्से सय वाससहस्साण वाससयसहस्से चटरासीइ वाससयसहस्साइ से एगे पुब्नंगे चटरासीई पुब्नगसयसहस्साइ से एगे पुन्वे एव विगुण विगुण णेयव्व तुर्डियंगे २ अडडगे २ अववंगे २ हूहुयगे २ उप्प-लगे २ पउसगे २ णलिणगे २ अच्छिणिउरगे २ अउयगे २ नउयगे २ पडयगे २ चूलियगे २ जाव चउरासीइ सीसपहेलियगसयसहस्साइ सा एगा सीसपहेलिया एताव ताव गणिए एताव ताव गणियस्स विसए तेण पर ओविमए॥ १८॥ से किं त ओविंमिए १ २ दुविहे पण्णते, तजहा-पिलओवमे य सागरोवमे य, से किं त पलिओवमे १ पलिओवमस्स परूवण करिस्सामि, परमाण् दुविहे पण्णत्ते, तजहा— मुहुमे य वावहारिए य, अणताण मुहुमपरमाणुपुग्गलाणं समुद्यसिव्समागमेण वावहारिए परमाण् णिप्फजड तत्थ णो नत्य कमइ-सत्येण सुतिवन्खेणवि छेत्तुं मित्तु च ज ण किर सका । त परमाणु सिद्धा वर्यांति आइ पमाणाण ॥ १ ॥ वाव-हारियपरमाण्ण समुद्यसमिइसमागमेण सा एगा उस्मण्हसण्हियाड वा सण्हसण्हि-याड वा उद्दरेण्ट वा तसरेणूह वा रहरेणूह वा वाटमगेड वा टिक्खाइ वा ज्याड वा जनमज्झेड वा उस्सेहगुलेड् वा, अट्ट उस्मण्हसण्हियाओ सा एगा सण्हसण्हिया अह मण्हमण्हियाओ मा एगा उष्ट्ररेण् अह उद्दरेण्ओ सा एगा तसरेण् अह तमंग्जो मा एगा रहरेण् अह रहरेण्ओ से एगे देवकुहत्तरकुराण मणुस्साण वालमे अट्ट देवकुरुत्तरकुराण मणुस्माण वालम्मा से एगे हरिवासरम्मयवासाण मणुम्माण वालग्गे एव हेमवयहेरण्णवयाण मणुस्साण पुव्यविदेहअवरविदेहाणं मणुरमाण वालरगा मा एगा हिक्खा अट्ट हिक्नाओ सा एगा ज्या अट्ट ज्याओं से एने जनसङ्को अह जनमङ्मा से एने अगुरु एएण अगुरूप्यमाणेणं प्रशास प्रभावन विद्वा विद्या विद्या

नो इरमेजा यो परिविद्धेनेजा ना भन्नी बहेजा यो नाए इरेजा वो पूर्ण हम्ममानकें जा तभो ने बाससए २ एगमंगे बाकर्म अवहास बाबहएनं कामेंगे हैं पत्रे चीण जीरए विकेषे बिट्टिए सक्द से तं पत्रिओवमे । एएसि पहार्च बाहारोपै इवेज दएगुनिका । त सागरोक्यस्य उ एगस्य मन्ने परीमार्थ ॥ १॥ एए ग्रागरोषमञ्चमाणेलं चत्रारि सायरोषमञ्जाकोत्रीको काको सस्स्वसम्य । हिन्स यागरीयमरोडारोगीओ काबो तुसमा २ दो सागरीयमरोडाकोडीओ काबो स्टम दुस्समा ३ एमा सागरोबमको नाकोडी बाबाधीसाए बाससङ्ख्येत स्त्रीया करें दुरनमग्रममा ४ एकवीचे वासमङ्ख्याई कामो इत्समा ५ एकवीचे बाससङ्ख्याँ कामां हुररामहरूममा ६ पुनरमि वस्सापिकीए एउनीचे शासग्रहस्साहं कामो हुस मदुरसमा १ एव पविकोर्ग नेक्न्यं जाव चतारि सागरोक्सकोडाकोडीको कार्क तसममुख्या ६ वससागरीवमकोडाकोडीको कालो औद्यप्पिकी दक्तागरीवमशेडा-नोडीओ बाक्रो एरएपिकी बीर्च सायरोक्सओडाकोवीओ काको ओसप्रियीउस्म पिजी ॥ १९ ॥ चंतुरीने मं मंते ! बीमें मरहे वासे इसीसे गुरामाप् शमाप् वक्तमञ्ज्युक्ताप् भरदस्य बायस्य केरिस् होत्या है गा । बहुसमरमधिक मुनिभागे होत्या से बहुई हा बाब नामानिहर्यवक्लाह राजेहि व शलीहि य उ चान ग्रविकेट, एवं बच्ची गंधी-जान तत्व न बहुवे मनुरसा म त्रमंति हसति स्मंति समेति । महाला क्यमाला भइमाका ५ वामं दुमगणा क्यता इसनिय पतिहि स पुष्केहि स फ**के**हि स ७ निर्देशि तीसे भे समाय गरहे भेरतासकारां प्रमयसम्बन्धाः

खजूरीवणाइं णालिएरीवणाइ कुसविकुसविम्रुद्धस्वखमूलाइ जाव चिद्वति, तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ तत्थ वहवे सेरियागुम्मा णोमालियागुम्मा कोरटयगुम्मा वधुजीवगगुम्मा मणोज्जगुम्मा वीयगुम्मा वाणगुम्मा कणइरगुम्मा कुज्ञायगुम्मा सिंदुवारगुम्मा मोरगरगुम्मा जृहियागुम्मा मिक्षयागुम्मा वासितयागुम्मा वत्थुलगुम्मा कत्थुलगुम्मा सेवालगुम्मा अगत्थिगुम्मा मगदतियागुम्मा चपगगुम्मा जाईगुम्मा णवणीइयागुम्मा कुद्गुम्मा महाजाइगुम्मा रम्मा महामेहणिउर्वभूया द्सद्धवण्ण कुसुम कुसुमेंति जे णं भरहे वासे वहुसमरमणिज भूमिभाग वायविधुयग्गसाला सुक्षपुष्पपुजोवयारकलिय करेंति, तीसे णं समाए भरहे वासे तत्य २ तहिं तहिं वहुईओ पउमलयाओं जाव सामलयाओं णिचं कुसुमियाओं जाव लयावण्णों, तीसे 'ण समाए भरहे वासे तत्थ २ तिहं २ वहुईओ वणराईओ पण्णताओ, किण्हाओ किण्होभासाओ जाव मणोहराओ रयमत्तगछप्पयकोरगर्भिगारगकोंडलगजीवजीवग-नदीमुहकविलिपंगलक्खगकारङवचक्कवायगकलहसहसमारसक्षणेगसङणगणमिहुणप-वियरियाओ महुण्णइयमहुरसर्णाइयाओ सर्पिडिय० णाणाविहगुच्छ० वावीपुक्ख-रिणीदीहियास अ सुणि॰ विचित्त॰ अर्टिभत॰ साउ॰ णिरोगकः सन्वोडय-्पुप्फफलसिद्धाओं पिंडिम जाव पासाइयाओं ४। तीसे ण समाए भरहे वासे तत्य तत्य तिहं तिहं मत्तगा णामं दुमगणा पण्णत्ता, से जहा० चदप्पभा जाव छण्णपडिच्छण्णा चिह्नति, एवं जाव अणिगणा णाम दुमगणा पण्णता ॥२०॥ तीसे ण भते! समाए भरहे वासे मणुयाण केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णते ? गो॰! ते ण मणुया सुपइहियकुम्मचारुचलणा जाव लक्खणवजणगु-णोववेया सुजायसुविभक्तसगयगा पासादीया जाव पिडरूवा । तीसे णं भते! समाए भरहे वासे मणुईण केरिसए आयारमावपडोयारे पण्णत्ते १ गो० ! ताओ ण मणुईओ सुजायसन्वगसुदरीओ पहाणमाहिलागुणेहिं जुत्ताओ अइङ्कतविमप्पमाणमङ-याओ सुकुमालकुम्मसिठयविसिद्धचलणाओ उज्जुमजयपीवरससाहयगुलीओ अञ्भुण्णय-रइयत्रिणतवसुङ्णिद्धणक्खाओ रोमरिहयवदृलद्वसिठयमजहण्णपसत्यलक्खणअको-प्पजघजुयलाओ सुणिम्मियसुगृहसुजण्णुमङलसुबद्धसधीओ क्यलीखभाइरेगसिठयणि-ञ्चणसुकुमालमञ्चमसलञ्चविरलसमसहियसुजायवष्टपीवरणिरतरोहः अद्वावयवीइयपट्ट-सठियपसत्यविच्छिणपिहुलसोणीओ वयणायामप्पमाणदुगुणियविसालमसलसुवद्धज-<sup>हणवरधारिणीओ वज्जविराङयपसत्यलक्खणनिरोद्रतिवलियवलियतणुणयमज्जिमाओ</sup> उज्जयसमसहियजचतणुकसिणणिद्धभाइज्जलङहसुजायसुविभत्तकतसोभतरुइलर्मणिज्ज-रोमराईओ गगावत्तपयाहिणावत्ततरगभगुररविकिरणतरुणबोहियआकोसायतपउमग-

गीरिवेववणामीको कल्प्यावणात्वयोजनुन्द्रयोजो एल्यायसासा रीयवरणावे स्वायपासामो सियाद्वयोगाराययामावो कर्याद्वयास्यायसामावार्ययाम्यायसामावार्ययास्यायस्य स्वायपास्य स्वायपास्य स्वायपास्य स्वायपास्य स्वायपास्य स्वायपास्य स्वायपास्य स्वयपास्य स्वयपास्य

माओ सुसम्माओ पीजमञ्जाबस्याओ जडरेसपसम्बस्मिकाकाओ कोमुहैरविनिक रविमधपदिपुण्यस्त्रोमवस्थाको छन्तुष्यवरत्तर्मयाको अक्षिक्रमुस्टिक्स्हर्मनग्रीहरीर याओ क्रत ९ जसय २ जस ३ हामणि ४ कर्महार ५ कक्स ६ बाहि ७ सोरिप<sup>ह ६</sup> प्रदाग ५ जव १ : सच्छ ११ : इस्म १२ रहवर १३ सगरकहर १४ संब १५ द्वय १६ माळ १७ मेंबुस १८ मद्वायय १९ छफ्द्वय १ अटर ११ सिरियमिं सेंब २२ तारम २३ महामि २४ ठव्छि २५ बरमक्व २६ मिरि 🕠 बरबार्मस २६ स्वीक्रयय २९ उसमे ३ सीह ३१ जागर ३२ उत्तमसम्बद्धांसस्ययवर्गम (समरिसगईको कोइकमहुरगिरप्रस्थाको <del>र्वतान</del>े सम्बस्स क्युमवानो <del>स्वयस्ति</del> पवित्रवंगपुरमञ्जनाद्विपोद्दमासोगमुद्दाको स्वतेत्र य वराष बोक्तमुस्सियान्ने समा वर्मियार्थारवेमाओ सगकायाः सिवमनिवाचित्रियमिकासस्यान् वित्रवाहासेवार् सामी मुंबर्यजनद्वावयणवर्वसम्मन्त्रवादण्यन्त्रत्येम्वयदिसास्<del>व दिवासे वेर्य</del>-ववविवरवारिजीउम्ब वच्छराजी सरहवासमानुमक्छराजो अच्छेरसपेन्छरीजाओ गासाइमामा काव पत्रिस्नाओं से व मनुवा ओव्सारा ईमसस्य वीवसारा वीर स्मरा मंत्रिक्षेमा सीहस्मरा सीहक्षेसा हस्मरा स्मरक्षिकोमा धानावकोजीवर्वसर्वना वक्षस्मरनाराभसवयणा क्षमवातरमस्यागतैदिया सविमिरावेवा अपुरोमवातवैमा र रामादणी क्यांसपरिजामा मजनियोगपिर्द्वगरोरपरिणया **बद्युन**रस्ममृनिया वेति र्षं स्युवार्यं वे कप्पन्ना पिटुवर्रेडयसया पश्ता स्थनाउसी ! परमुप्पस्थान्वनारे

श्रणीमानमुरभित्रवया त र्वं स्णुया पगईउवस्ता पगईपव्युकोहमानसामस्येता

मिउमद्वसपत्रा अर्हाणा भद्गा विणीया अप्पिन्छा असण्णिहिसचया विडिमंतरपारे-वसणा जिहच्छियकामकामिणो ॥ २१ ॥ तेसि णं भते ! मणुयाणं केवडकालस्स आहारहे समुप्पज्ञड <sup>१</sup> गोयमा ! अट्टमभत्तस्स आहारहे समुप्पज्ञइ, पुढवीपुप्फफला-हारा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो !, तीसे ण भते !० पुढवीए केरिसए आसाए पण्णते ? गो॰! से जहाणामए-गुलेइ वा खडेड वा सक्सराइ वा मच्छंडियाइ वा पप्पडमोयएड वा भिसेड वा पुष्फुत्तराड वा परमुत्तराइ वा विजयाइ वा महावि-जयाइ वा आगासियाइ वा आदसियाइ वा आगासफालिओवमाड वा उग्गाइ वा अणो-वमाइ वा इमेए अज्झोववणाए, भवे एयारूवे 2, णो इणहे समहे, सा णं पुढ़घी इत्तो इंद्रतिरया चेव जाव मणामतरिया चेव आसाएण पण्णता । तेसि णं भंते ! पुष्फफ लाण केरिसए आसाए पण्णते ? गोयमा ! से जहाणामए-रण्णो चाउरतचक्कविट्स्स क्छाणे भोयणजाए सयसहस्सनिप्फन्ने वण्णेणुववैए जाव फासेण उववेए आसायणिजे विस्सायणिजे दिप्पणिजे दप्पणिजे मयणिजे [ विग्घणिजे ] विंहणिजे सिव्वदियगाय-पल्हायणिजे, भने एयारूने 2, णो इणहे समहे, तेसि ण पुष्फफलाण एत्ती इहतराए चेव जाव आसाए पण्णते ॥ २२ ॥ ते णं भंते ! मणुया तमाहारमाहारेता किंह वसिंह डवेंति <sup>२</sup> गोयमा ! स्क्खगेहालया ण ते मणुया पण्णता समणाडसो !, तेसि ण मंते ! स्वखाण केरिसए आयारमावपडोयारे पण्णते 2 गोयमा ! कृडागारसिठया पेच्छाछत्तज्झयतोरणगोयरवेइयाचोप्फालगअटालगपासायहम्मियगवक्खवालम्मपोइ-यावलभीघरसिठिया अत्यण्णे इत्य वहवे वरभवणिवसिद्वसठाणसिठिया दुमगणा स्रह-चीयलच्छाया पण्णाता समणाउसो ! ॥ २३ ॥ अत्थि ण भते ! तीसे समाए भरहे वासे गेहाइ वा गेहावणाइ वा <sup>2</sup> गोयमा ! णो इणहे समद्वे, स्क्खगेहालया ण ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ।, अत्थि ण भते । तीसे समाए भरहे वासे गामाइ वा जाव सिणवेसाइ वा व गोयमा। णो डणहे समहे, जिहिच्छियकामगामिणो ण ते मणुया पण्णत्ता॰, अत्थि ण भते !० असीइ वा मसीइ वा किसीइ वा विणिएत्ति वा पणिएत्ति वा वाणिळेड् वा १ गो० ! णो इष्ट्टे समद्घे, ववगयअसिमसिकिसिवणियपणिय-वाणिज्ञा ण ते मणुया पण्णता समणाउसो !, अत्थि ण भते !० हिरण्णेइ वा सुवण्णेइ वा कंसेड वा दूसेइ वा मणिमोत्तियसखसिलप्पवालरत्तरयणसावइजोइ वा <sup>2</sup> हता! अत्यि, णो चेव ण तेसिं मणुयाण परिभोगताए हव्वमागच्छइ। अत्थि णं भते !० मरहे॰ रायाइ वा जुवरायाइ वा ईसरतलवरमाडवियकोडवियइण्मसेट्टिसेणावइस-त्यवाहाइ वा <sup>२</sup> गोयमा ! णो इण्हे समद्दे, ववगयइस्ट्रिसकारा ण ते मणुया०, अत्यि ण भते । ॰ भरहे वासे दासेइ वा पेसेइ वा सिस्सेइ वा भयगेइ वा भाइछएइ वा

भश्य शुक्तामा विश्वदिक्यण्यती कम्मवरप्र वा है जो क्षप्टे समुद्ध, बम्मयभामिकोमा व ते मुद्दमा पण्यता सम्

क-मन्त्रपुर वा र जा वृष्णु वर्षुत्र वृत्त्रप्रभाशिकामा प्राप्त का किया विकास वा मानवा विकास के भूता जिसि स्थापु भारी काश्रिय आपाद का किया वा मानवा भारीयों मानवा जिस्स के मानवा भारीयों मानवा के प्रमुख्य हुआ के किया के प्रमुख्य का प्रमुख्य के प्रमुख्य के प्रमुख्य का प्रमुख्य के प्रमुख्य के प्रमुख्य का प्रमुख्य के प्रमुख्य के प्रमुख्य का प्रमुख्य के प्रित्य के प्रमुख्य के प्रमु

बहुए हैं पार्विक्वीस्पर् बाध्याधितां का है भी | जो इज्युद्धे पार्ट्य बहुध्य बहुध्य विद्यास्त्र का अस्त्र स्थास है स्थास प्रमात स्थापार स्थापार के स्थापार का स्थापार को पान्य का पर्वापार का पहले का सहित्र का स्थापार वा विद्या किया की विद में देखि समुपार दिव्य राग्य के स्थापार का स्थापार का स्थापार का स्थापार की स्थापार का स्थापार की स्थापार का स्थापार की स्थापा

र्ष देवि मसुरानं दिन्ने एगर्नेचे स्कुप्तम्बद्ध स्वित्व वं अंद । अर्डे वसे अर्था इत्य ना नीताह्न वा कल्यार वा एक्डार वा वालियागार वा निवरिव्यत्तिकार वा ने नो इन्हें स्वत्के, व्यवप्यश्रामान्द्वीवाह्मक्ष्मस्वयत्त्रियागान्तिपिंडहरिनेया पा ते स्यापाप्तमास्त्रमान्द्रों। अतिय ने गंदा अर्डे वारे इंट्यक्ट्र वा ने वास नामा पुत अर्थन प्रवास वह कह रूस्य प्रवासकृत वा तो | नोहस्य एक्ड्रे, क्ल्यम्प्रस्था पा ते स्थाप प्रवास व्यक्ति व्यक्ति प्रवास प्रवास व्यक्ति

काल्य में सदी निर्देश कार्याह वा हरूवी उद्योग पाया गर्मन करा एक्या पराया मिना बराहा वह स्टासा वयुर व्हरेगतेक्व्यमस्याई इंदा! कदिव को बेद के सीरे परिमागताप इव्यसला सेटे! मरहें वारे सीहार वा वर्ग स्थानितक्व्यस्थारस्य दिवस्थेन्द्रवगाद वा इंदा । केद से दें वा प्रसाद

बा प्रशिपकेर्म वा उपमापृति a र्ब भेते । भरते बाते प्राप्त वार्विका

नार पा र्विशः ! मरिषः । मरिषः पं मेते । भरके वासे इधके समझे, मरके वास पुक्खरेड वा॰, अत्थि णं मते !॰ भरहे वासे खाणूइ वा कटगतणकयवराइ वा पत्तकयवराड वा २० णो इणहे समहे, ववगयखाणुकटगतणकयवरपत्तकयवरा णं सा समा पण्णता॰, अत्य ण भते ।॰ भरहे वासे उसाइ वा मसगाइ वा ज्याइ वा लिक्खाइ वा हिंकुणाइ वा पिसुयाइ वा १० णो इण्हे समहे, ववगयडसमसगज्य-लिक्खिंकुणिपसुया उवद्वविरहिया ण सा समा पण्णत्ता॰, अस्यि ण भंते !॰ भरहे॰ अहीइ वा अयगराइ वा <sup>१</sup> हंता ! अत्थि, णो चेव ण तेसि मणुयाण आवाह वा जाव पगडभह्या ण ते वालगगणा पण्णता०, अत्थि ण भंते ।० भरहे० डिंवाइ वा हमराइ वा कलह्वोलखारवहरमहाजुद्धाइ वा महासगामाइ वा महासत्थपडणाइ वा महापुरिसपडणाइ वा १ गोयमा । णो इणहे समहे, ववगयवेराणुवंधा णं ते मणुया पण्णता स॰ !, अत्थि ण भते !० भरहे वासे दुन्भूयाणि वा कुलरोगाइ वा गामरो-गाइ वा मडलरोगाइ वा पोद्टवे० सीसवेयणाइ वा कण्णोट्टअच्छिणहर्दतवेयणाइ वा कासाइ वा सासाइ वा सोसाइ वा दाहाड वा अरिसाइ वा अजीरगाइ वा दओदराइ वा पहुरोगाइ वा भगदराइ वा एगाहियाइ वा वेयाहियाइ वा तेयाहियाइ वा चउ-त्याहियाड वा इदग्गहाइ वा धणुग्गहाइ वा खदग्गहाइ वा कुमारग्गहाइ वा जक्ख-ग्गहाइ वा भूयग्गहाइ वा मच्छस्लाइ वा हिययस्लाइ वा पोट्ट॰ कुच्छि॰ जोणिस्-लाइ वा गाममारीइ वा जाव सिण्णवेसमारीइ वा पाणिक्खया जणक्खया कुलक्खया वसणव्भूयमणारिया 2 गोयमा । णो इणहे समहे, ववगयरोगायका ण ते मणुया पण्णता समणाउसो ! ॥ २४ ॥ तीसे ण भंते ! समाए भारहे वासे मणुयाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता 2 गोयमा ! जहण्णेण देस्णाड तिण्णि पलिओवमाई उक्कोसेण देस्-णाई तिण्णि पलिओवमाइ, तीसे ण भते ! समाए भारहे वासे मणुयाण सरीरा केवइय उचतेण पण्णत्ता <sup>१</sup> गोयमा ! जहन्नेण तिण्णि गाउयाइ उक्तोसेणं तिण्णि गाउयाइ, ते ण भते ! मणुया किसघयणी पण्णता व गोयमा ! वहरोसभणारायसघयणी पण्णता, तेसि ण भते ! मणुयाण सरीरा किंसठिया पण्णता १ गोयमा ! समचन्रंससठाण-षठिया, तेसि ण मणुयाण बेछप्पण्णा पिट्ठकरंडयसया पण्णता समणाउसो !, ते णं भते ! मणुया कालमासे काल किन्ना किंह गच्छति किंह उववज्जति <sup>2</sup> गो०! छम्मा-सावसेसाउया जुयलग पसवति, एगूणपण्ण राइंदियाई सारक्खित सगोवेंति सा० २ त्ता कासित्ता छीइता जभाइता अकिट्ठा अव्वहिया अपरियाविया कालमासे काल किचा देवलोएस उववजाति, देवलोयपरिग्गहा ण ते मणुया पण्णता॰, तीसे ण मते ! समाए भारहे वासे कड्विहा मणुस्सा अणुसिन्या <sup>२</sup> गो० ! छिन्वहा प०, त०-पम्हगधा १ मियगधा २ अममा ३ तेयतली ४ सहा ५ सणिचारी ६ ॥ २५ ॥ तीसे ण समाए

484

कम्मकरएइ वा है जो इच्छे सम्बद्धे, वक्शक्कामिक्रीया वाँ ते मूल्या पञ्चल सम णाउसो ! अत्य नै मेरो ! सीसं समाय मरहे नासे मानाह वा पिनाह ना मान मनिणी सजा प्रता भया धुव्यात्र वा । ब्रेशा । अरिव जो चेव में तिकी पेमने चेंचणे समुप्पजाः, शरिय वें संते ! अरहे वासे जरीह वा वेरिशृह वा वानगः व नहएइ वा पविजीयसूर वा प्रवासितिह वा ईशो िणो इनहे समद्रे, वहस्यवेरा<del>हरा वे</del> ते महाया पण्यता समनावसो । अतिन नं भीते । भरहे नासे मिताह वा वर्नस्य <sup>क</sup> नानपुर वा संपादिएइ वा सङ्गाह वा सुद्रीय वा संग्रहपुर वा है ईसा। अस्य भी के कं तेरि सहावार्ण तिक्वे रागार्वधरी समप्यजाह, करिय वा गेते ! गरहे वारे आही हार वा नीवाहार वा कळाडू वा सहार वा याळीपायाह वा मिनपिडनिवेदपार व यो इन्द्रे सम्हे, वयगयभावाद्वीयाद्वक्यस्यवानीपागनिवरिक्रमिवेदवा व वे मञुगा पन्नता समयावसो ! अति मं श्रेते ! अरहे वासे ईदमहार वा बर वार जनक भूग भगड तहात वह यह स्कटा प्रमायमहाह वा तो । बार<sup>क्</sup> समद्दे, बदगयमहिमा में ते अगुवा प स अतिव में मंते ! अरहे वाते वर पेप्छार वा गर का साम मुद्धिक वेसेश्चन व्यस्य प्रवस सामग्रेस्ट बा रे मो । यो इक्ट्रे सम्बे, वक्यस्कोउइका न ते स्युवा क्याता समागरकी मति में मेरे ! मरहे नासे सगडत वा रहाइ वा वाणाह वा जुम्मा निर्म पिको सीमा चेदनामित्राह वा है भी इन्द्रे समहे पाक्चारमिहारा में तं मु<sup>क्</sup> प समयाउसो । अतिव से मदे । अरक्षे बारी गलीइ वा महिसीइ वा अवाद वा एकमाइ वा है हेंदा । अतिव जो जैन ने देखि मनुवान परिमोधाताए हमनामकी मिल में मेंदें। मरहे नाधे भारतह ना हरनी दश खेला गनमा सर्वी एक्या एसवा मिना बराहा रुठ सरना चमरा दुरंगग्रेकनमाहवा इंता । अरिक जो क्षेत्र कं तेथि परियोगताम् बुक्यमागच्छति अरिक में मेते । मराहे वासे सीहाइ वा वश्वाह का निगरीवियानच्छतरच्छारिकातनिशासमुन्यमंत्रीके शियकोक्छवगाइ वा र ईता ! अरिय भी अब में देशि मनुवार्त आवाई वा नागाई बा **छविन्छैर्व** का कप्पाएँकि पशहसहया के छ सावस्थाना प**ं**समकाउसी ! अस्ति र्व भंत । मरहे वासे साठीह वा वीद्वियोध्यावनवदववाह वा वत्त्रामस्रमुखायी याइ वा रे हेता । अस्य को चैव वे शरीं। मणुयार्थ परिमोपतार हम्बमामकांति मति में मेर्त ! सरहे वारी गहार वा वरीओनावपरायनिसमक्तिमार ना । मो इण्डे समट्टे मरद्वं वार्धं बहुसमरमधिनै भूमिभागे पञ्जी सं जहावामए-बामिय-

पिंडस्सुई २ सीमंकरे ३ सीमधरे ४ खेमकरे ५ खेमधरे ६ विमलवाहणे ७ चक्खुमं ८ जसम ९ अभिचदे १० चदाभे ११ पसेणई १२ मरुदेवे १३ णाभी १४ उसभे १५ ति ॥ २८ ॥ तत्थ ण सुमइपिंडस्सुडसीमकरसीमधरखेमंकराण एएसिं पंचण्हं कुलगराणं हकारे णामं दण्डणीई होत्था, ते ण मणुया हकारेण दंढेण हया समाणा रुजिया विलिजया वेहा भीया तुसिणीया विणओणया चिहुंति, तत्य ण खेमधर-विमलवाहणचक्खुमजसम्अभिचदाण एएसि ण पचण्हं कुलगराण मङ्कारे णामं दडणीई होत्या, ते ण मणुया मकारेणं दडेण हया समाणा जाव चिह्नति, तत्थ ण चंदाभपसेणइमरुदेवणाभिउसभाण एएसि ण पचण्ह कुलगराण धिकारे णाम दडणीई होत्था, ते ण मणुया धिकारेणं दंडेण हया समाणा जाव चिट्ठति ॥ २९ ॥ णामिस्स ण कुळगरस्स मरुदेवाए भारियाए कुर्च्छिस एत्य ण उसहे णाम अरहा कोसलिए पढमराया पढमजिणे पढमकेवली पढमतित्थयरे पढमधम्मवरचक्षवटी समुप्पजित्था, तए ण उसमे अरहा कोसलिए वीस पुन्वसयसहस्साइ कुमारवास-मज्झे वसइ वसइत्ता तेविंद्व पुव्वसयसहस्साइ महारायवासमज्झे वसइ, तेविंद्व पुव्व-सयसहस्साइ महारायवासमज्झे वसमाणे लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणस्य-पजनसाणाओ वावत्तरिं कलाओ चोसिट्टं महिलागुणे सिप्पसयं च कम्माण तिण्णिवि पयाहियाए उवदिसइ उवदिसित्ता पुत्तसय रज्जसए अभिसिंचड अभिसिंचित्ता तेसीइ पुन्वसयसहस्साइ महारायवासमज्झे वसइ वसित्ता जे से गिम्हाण पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तवहुळे तस्स ण चित्तवहुलस्स णवमीपक्खेण दिवसस्स पच्छिमे भागे चइत्ता हिरण्णं चइत्ता सुवण्ण चइता कोस कोद्वागार चइत्ता वल चइत्ता वाहण चइत्ता पुर चइता अतेउर चडता विउलधणकणगरयणमणिमोत्तियसखसिलप्पवाल-रत्तरयणसतसारसावङज विच्छुःइत्ता विगोवइत्ता ढाय दाइयाण परिभाएता सुदंस-गाए सीयाए सडेवमणुयासुराए परिसाए समणुगम्ममाणमग्गे सखिदचिक्कयणगिल-यमुह्मगलियपूसमाणववद्धमाणगआइक्खगलंखमखघटियगणेहिं ताहिं इद्वाहिं कताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मगलाहिं सस्सि-रीयाहिं हिययगमणिजाहिं हिययपल्हायणिजाहिं कण्णमणणिव्युइकराहिं अपुणस्ताहिं अद्वसऱ्याहि वग्गृहि अणवरय अभिणदता य अभिथुणता य एव वयासी-जय जय नदा! जय जय भद्दा! धम्मेण अभीए परीसहोवसग्गाण खतिखमे भयभेरवाणं धम्मे ते अविग्व भवउत्तिकट्टु अभिणदंति य अभिथुणति य । तए ण उसमे अरहा कोसलिए णयणमालासहस्सेहिं पिच्छिजमाणे २ एव जाव णिग्गच्छइ जहा उववाडए जाव आउलयोलयहुल णम करेते विणीयाए रायहाणीए मज्झमज्झेण णिगनच्छइ

पागरोक्त्रको बाक्षेत्रीति काके बीहकंते अधि क्षेत्रपालके बाद अर्थरमुक्त्री हाचीए परिक्रासमाणी २ एरच में इसमदरसमा मार्स समा परिक्रकिस सम्मारसी है सा व समा दिहा विभवाद-पहले दिसाए १ यजिसमें दिसाए १ पश्चिमी दिसाए है वंदरीय र्ण सते । वीवे इसीसे कोसप्पियीए ससमस्त्रमाए समाए प्रसम्बन्धि विभागम मरहस्त वायस्त बेरितय् जानारमाक्यतीनारे पुष्का घोडमा । बहुयन रमिक्के भूमिमार्ग होत्या सो क्षेत्र गमो चेक्को पायद हो प्रश्नसहस्तर्भ वर्ष चनतेनं वेसि च सङ्गानं नवसङ्गिष्डकरंडया चवरचमतस्य जाहारङ स्म्र<sup>प्यास</sup> ठित पश्चिमोनमं एगूणाचीई राहंबिसाई चारक्यंति चंगोबेति काल देक्लोपपरि म्महिमा में ते महामा पन्यता समभातको ! तीसे में मेरे ! समाय पन्धिमें तिमार मरहरूत वासस्य केरिसण् आवारभावपडीयारे होत्वा <sup>ह</sup> योक्मा ! बहुस्मरमाने मूमिमाने होत्या हे जहाजामय्-जाकियपुरुवहेद वा बान मधीह हवसेनिए रामहा किरोमोहि चेव सकिरिमोहि चेव सीसे में मंते ! समाप प्रकाम विमान भरदे वासे महावार्य केरिसए बाजारगावपकोजारे होत्या ! योगमा ! रासि महावार्य क्रमिहे संकाने हमिहे छठाने नहमि पनुसनामि तर्ष उनतेनं बहानेयं संविजानि नासानि उद्दोरेणं अस्तिज्ञानि नासानि नास्यं पार्वेदी पानिसा अञ्चलमा निरन मानी भप्पेयहवा विरिक्ष्णामी अप्पेयहवा स्कुरसमामी अप्पेयहवा देववामी अप्पे गर्या सिन्सरि बाद सम्बद्दकाणमंतं करेति ॥२०॥ तीरे यं समाए पश्चिमे तिमाए पश्चिमोदस्द्वमागावसेसे एत्य वं इसे क्लारस श्रुकारा समय्यक्तिका संबद्दा-समई १

गमरहपहरुरेन पाइहचारकरेण व संश २ उद्धारेलुई करेमाचे » अनेव निकार वने उज्रान जेपेव अगोगवर्पाववे तंथेव उवायक्कर १ शा असोगवर्पायवस्य महे सीर्य अबेद २ ता सीयाओ पचोदहर २ ता सबसेवासरकार्तकार बोसुसर २ ता समनेव चर्डाई सुद्रीहिं सोयं वरेड २ ता स्ट्रीयं अतेर्ग अपानएम आमानाई नक्यतेर्ग जोगगुनागर्ग उम्मानं मागानं राहनानं यतियानं चढके सहस्मेदै सबि एवं व्यक्तमादान होंदे भनिता भपाराओं अध्यारियं क्रवहए है रे वे उसमें ने अरहा कोमछिए सबच्छा साहियें चीतरवारी होत्या सन पर अवस्य । जप्पितिई व वं उसमें भरहा कोस्रिय मुंबे मनिता कगाराओं क्षवगारिवं पनाएं तुप्पनितं च में इसमे भरहा बोसलिए निर्व बोमद्रग्राए विकारेडे से है। उपस्पा उप्पनंति त-दिम्बा वा वाव पहिलोगा वा अणुसोमा वा शत्व पहिलोगा <sup>वेरीन</sup> ना जाब नरेज वा काए आउडेजा अनुसीमा विदेश वा नमसेज वा जाद प**र्**वि रेज दा दे (उप्पन्त) सम्बं सम्बं सन्दर् बाद अदिवासेह, तए में से समर्व समने जाए इरियासमिए जाव पारिहाबनियासमिए सबसमिए वयसमिए वानसमिए मगगुत्ते जाव गुत्तर्नमयारी अशोहे जाव अस्पेड चंत्र परंते उदसंते परिनित्तरे ष्टिप्पत्तीए निरुब्रहेने <del>एंक</del>मिन निरंजन जन्दश्रमये व जायस्व आहरिसप्रहेमाने हेर पागडमाने कुम्मी इन शुर्तिविए पुरुष्यरप्तामेश निरवक्षेत्रे गगमसिव निराधिक अभिने इव निरामए चेंदी इव स्रोमवंसने स्रो इव तेर्यसी मिट्टर ॥व अप्रेडेवर-मामी सामरो इब मंगीरे गंबरो इब अब्दि पुडची बिब सम्बक्तसमिसहे जीने निव क्षप्पविद्यगद्ति । शन्य न तस्य मगर्गतस्य भ्रम्बद् पविषेषे से पविषेषे बर्ग जिह सक्त र्रजहा-वन्त्रमो कितनो कास्स्रो सावस्रो वन्त्रसो हह सह मार्था मे पिया में भागा में भगिजों में जान सर्पयसंख्या में हिरण्यों में स्वाम में वार्य रुपगर्ज में भाइना समासको सनिते ना अचिते था गीसए वा इस्त्रआए हैंगें तरम म मनद्, दिशाओं याने वा अनरे वा अरूपो वा केते वा सके वा गेदे वा समाणे वा एवं तस्त व मक्द, कालको धोवे वा कवे वा सुद्दते वा कहोरते वा पक्से वा मासे वा रुक्य वा अवणे वा संवश्सने वा कल्पवरे वा रीहवासवित्रने एवं तस्स भ मक्द, भावमी कोहे वा जाव सोहं वा मए वा हासे वा एवं हस्स व मनर, से व मार्ग वासावासवाजं हेर्नतानिमहास वासे एवराव्य बनारे पंचराहर वयगबद्वाससोपअरदमवपरितासं विस्तानं विद्युंकारे स्ट्रुपूर असंधे बासीतकारे हुमद्वे चंद्रमानुकेनचे भरते केंद्रीम कंचणमि व समे वह ब्योप अपविवद्धे जीनिम-

मरणे निरवकंखे ससारपारगामी कम्मसगणिग्घायणद्वाए अन्भुद्विए विहरइ । तस्स ण भगवतस्स एएण विहारेण विहरमाणस्स एगे वाससहस्से विइक्कंते समाणे पुरिम-तालस्स णयरस्स बहिया सगडमुहंसि उज्जाणिस णग्गोइवरपायवस्स अहे झाणतरि-याए वष्टमाणस्स प्रम्गुणबहुलस्स इक्कारसीए पुन्वण्हकालसमयंसि अद्वमेण भत्तेण अपाणएणं उत्तरासाढाणक्खतेण जोगमुवागएण अणुत्तरेण नाणेणं जाव चरितेण अणुत्तरेण तवेण बलेण वीरिएण आलएण विहारेण भावणाए खतीए गुत्तीए मुत्तीए तुद्वीए अज्जवेण मद्द्वेण लाघवेणं सुचरियसोवचियफलनिव्वाणमग्गेण अप्पाण भावे-माणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पहिपुण्णे केवलवरनाणदसणे ससुप्पण्णे जिणे जाए केवली सन्वण्ण् सन्वदिरसी सणेरइयतिरियणरामरस्स लोगस्स पजने जाणइ पासइ, तजहा-आगइ गइ ठिइ उनवाय भुत्त कड पिडसेनियं आवीकमं रहोकम्म त त काल मणवयकाए जोगे एवमाई जीवाणवि सन्वभावे अजीवाणवि सन्वभावे मोक्खमग्गस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे पासमाणे एस खळ मोक्खमग्गे मम अण्णेसिं च जीवाण हियसुहणिस्सेसकरे सव्बद्धक्खिवमोक्खणे परमसहसमाणणे भविस्तः । तए ण से भगव समणाण णिग्गथाण य णिग्गंथीण य पच महव्वयाड सभावणगाई छच्च जीवणिकाए धम्म देसमाणे विहरइ, तजहा-पुढविकाइए भावणा-गमेण पच मह्व्वयाइ सभावणगाइ भाणियव्वाइ। उसमस्स ण अरह्यो कोसल्यिस्स चडरासी गणा गणहरा होत्था, उसभस्स ण अरहओ कोसल्थिस्स उसभसेणपामो-क्खाको चुलसीइ समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसपया होत्था, उसभस्स ण० वभी-उसमस्स ण॰ सेज्जसपामोक्खाओ तिण्णि समणोवासगसयसाहस्सीओ पच य साह-स्त्रीओ उक्कोसिया समणोवासगसपया होत्या, उसमस्स ण० समहापामोक्खाओ पच समणोवासियासयसाहस्सीओ चउपण्ण च सहस्सा उक्कोसिया समणोवासियासपया होत्या, उसभस्स ण अरहओ कोसांलेयस्स अजिणाण जिणसकासाण सन्वक्खरस-ण्णिवाईण जिणो विव अवितहं वागरमाणाण चत्तारि चउद्सपुन्वीसहस्सा अद्वहुमा य सया उक्कोसिया चउदसपुन्वीसपया होत्या, उसभस्स ण० णव ओहिणाणि-सहरसा उक्कोसिया॰, उसभस्स णं॰ वीस जिणसहस्सा॰ वीस वेउव्वियसहस्सा छन्च सया उद्योतिया॰ वार्स विउलमईसहस्सा छच सया पण्णासा॰ वारस वाईसहस्सा छच सया पण्णासा०, उसभस्स ण० गङ्कल्लाणाण ठिङ्कल्लाणाण आगमेसिभद्दाण वावीस अणुत्तरोववाइयाणं सहस्सा णव य सया॰, उसभस्स ण॰ वीस समणसहस्सा निद्धा, चत्तालीस अजियासहस्सा सिद्धा, सिद्ध अतेवासीसहस्सा सिद्धा, उसभस्स ण

५५१ सुत्तामाने भारित्रपरिमाजनस्यान्त्रपुरणोत्त्रमारकनिर्मा (नदान्तः सम्बद्धस्यकरेस पाइद्रमणकरोल स मीत् २ सदत्तरः

बचे उजारो जेगेव कसोगवरपायवे तेभेव उदागा सीने ठावेर १ ता शीमाओ प्यावद्वर १ ता शा समयंव पठाई मुद्रीई कोर्य वरेर १ ता छुठा कप्याचेर्स ओगमुनागवृत्तं उत्ता मेरावि राग सार्टि एमें वेशमुनागव्यं अध्या मेरावि राग उस्ते से कार्या नेस्तिय स्वच्छरं साहियं चीरा

उत्तर में स्वाद्भा के निवस् करकर्म साहित् कीर-बायमिंह क में उसमें अरहा को सिवस् में हैं माँ त्यमिंह क में उसमें अरहा को सिवस् में हो माँ त्यमिंह के में उसमें अरहा को सिवस् मा हा मा— हा जाद करेक मा अपने आरहेका क्यान्समा का से जा है (उपना) सकी सामी सहस् वाल भा बाप हरित्सानिष्य का पारिहासिकासिए मनपूरी बात पुत्तरेगारिक को से बाद कामे क्रिम्मारीए मिरस्केन स्वामित किरसमें काव माने। प्रावस्थान कुनमी हव प्राविद्या क्यान्समा प्रावस्थानिक क्यान्समा क्

सनपुत्त बाब पुतास्त्रपार्ध कराव वा स्वस्तार्थ विक्रण्योएं निरुक्षेत्रे उद्योगि तिराक्षेत्र व्यक्तमाया पाग्रहमान्ने इस्मो इव ग्रामियिए पुरुक्तरस्त्राध्य कालिक हुत निराम्ध्य कालिक हुत निराम्ध्य कालिक हुत निराम्ध्य कालिक हुत निराम्ध्य कालिक वा सामि वा स्वर्ण पुत्रका कालिक सम्बद्ध प्रमाणि में स्वर्ण कालिक सम्बद्ध कालिक सम्बद्ध मान्ध्य कालिक सम्बद्ध मान्ध्य कालिक सम्बद्ध मान्ध्य मान्ध्य कालिक कालिक सम्बद्ध मान्ध्य कालिक सम्बद्ध कालिक सम्बद्ध मान्य कालिक सम्बद्ध मान्ध्य कालिक सम्बद्ध मान्ध्य कालिक सम्बद्ध मान्य कालिक सम्बद्ध मा

पूर्व तरस्य व प्रमुखं वासावासकां हेर्सदियमहातः गामं प् बहराजहारस्थानस्यरहासपपरितासे निम्माने विरहस्तरे बहुस् बुसहे चेदवासुक्रेनके सरते बेहींने संपर्कार य समे हह स्था चीवसमुद्दाण मञ्झमज्झेण जेणेव अट्ठावयपव्वए जेणेव भगवओ तित्यगरस्स सरीरए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता विमणे णिराणंदे चिद्वइ । तेणं कालेण तेणं समएण ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरष्ट्रलोगाहिवई अद्वावीसविमाणसयसहस्साहिवई स्लपाणी वसहवाहणे सुरिंदे अरयवरवत्यधरे जाव विउलाई भोगभोगाइ भुंजमाणे विहरइ, तए णं तस्स ईसाणस्स देविंदरस देवरण्णो आसण चलइ, तए णं से ईसाणे जाव देवराया आसण चलियं पासइ २ ता ओहिं पउजइ २ ता भगव तित्यगरं ओहिणा आभोएइ २ ता जहा सक्के नियगपरिवारेण भाणेयव्वो जाव चिद्वरु, एव सन्त्रे देविंदा जाव अचुए णियगपरिवारेण आणेयव्वा, एव जाव भवण-वासीण वीस इदा वाणमंतराण सोलस जोइसियाण दोण्णि णियगपरिवारा णेयन्वा। तए ण सक्के देविंदे देवराया ते बहुवे भवणवडवाणमतरजोइसवेमाणिए देवे एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! णदणवणाओ सरसाइ गोसीसवरचदणकट्ठाइ साहरह २ ता तओ चिइगाओ रएह-एग भगवओ तित्यगरस्स एगं गणहराणं एगं अवसेसाण अणगाराण । तए ण ते० भवणवइ जाव वेमाणिया देवा णदणवणाओ सरसाइ गोसीसवरचदणकट्ठाइं साहरंति २ ता तओ चिड्गाओ रएति, एग भगवओ तित्थगरस्स एग गणहराण एगं अवसेसाण अणगाराण, तए ण से सक्के देविंदे देवराया आभिओगे देवे सहावेह २ ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! खीरोदगसमुद्दाओ खीरोदग साहरह, तए ण ते आभिओगा देवा खीरोदगसमुद्दाओ खीरोदग साहरति, तए ण से सक्ने देविंदे देवराया तित्थगरसरीरगं खीरोदगेण ण्हाणेइ २ ता सरसेण गोसीसवरचदणेण अणुलिंपइ २ ता हसलक्खण पडसाडय णियसेइ २ ता सन्वालकारविभूसिय करेइ, तए ण ते० भवणवइ जाव वेमाणिया० गणहरसरीरगाइ अणगारसरीरगाइपि खीरोटगेणं ण्हार्वेति २ ता सरसेण गोसीसवर-चदणेण अणुलिंपति २ ता अह्याइ दिव्वाइ देवदूसजुयलाई णियसेति २ ता सव्वा-लकारविभूसियाइ करेंति, तए ण से सक्के देनिंदे देवराया ते वहवे भवणवइ जाव वेमाणिए देवे एव वयासी-खिप्पामेव मो देवाणुप्पिया ! ईहामिगउसभतुरय जाव वणलयभित्तिचित्ताओं तओ सिबियाओ विजन्बह, एग भगवओ तित्थगरस्स एगं गणहराण एग अवसेसाण अणगाराण, तए ण ते वहवे भवणवइ जाव वेमाणिया० तस्रो सिवियास्रो विउन्नंति, एग भगवस्रो तित्थगरस्स एग गणहराण एग अव-चेसाणं अणगाराण, तए ण से सके देविंदे देवराया विमणे णिराणदे मगवओ तित्थगरस्स विणद्वजम्मजरामरणस्स सरीरगं सीय आरुहेड २ ता चिइगाए ठवेड, तए ण ते वहचे भवणवइ जाव वेमाणिया देवा गणहराण अणगाराण य विणह- कम्मबरामरकार्यं सरिरमहं सीर्यं कारहेशि २ ता विश्वमाएं ठवेशि तए वं से खें हेर्निदे देवराना ते बहुदे महत्वकद जाव देमानिए देदे एवं नवाती-किप्पांने से देवाडापिता। तिरुपारिकृताएं जाव कानारिकृताएं क्यासरहसूत्रं व देमानी

न भारमारो य साहरह, तए ये ते । मनसन्ह जान बेमाश्रिया देश शिलागरियम् बाम भगगारिवदगाए बान भारमारो य सक्तदेश तए जी से सहे देखि देवतमा

सिगाउसारे देवे धहावेद २ ता एवं नवासी-विक्यागेव वो देवल्याया । हिल् गरिक्याग्य वाव कामारिक्याग्य कार्यक्षमध्य विक्वाह २ ता एक्सानिकेर क्वाप्यवह, उए में वे सिम्हमारा देवा विभाग विरावेदा शिल्यामिक्स्स बाव जमनारिक्याण्य कार्यक्रमें विज्ञाहि तपु में वे छत्ने देवेहि देवरावां बावज्ञारे देवे छात्रेक २ ता एवं क्याची-विक्यामेव मो देवल्यामा शिल् परिक्याण्य काव कल्यारिक्याण्य वात्रवार्थ विज्ञाह २ ता क्लाक्स्में ठेवाक्से शिल्यास्थिरां मवादरस्थिरमाई क्ष्यमास्थिरमाई महासे, उर्द में वे बावज्ञात्रवि शिल्यास्थिरां मवादरस्थिरमाई क्ष्यमास्थिरमाई महासे, उर्द में वे बावज्ञात्रवि श्रामिक्सा विद्याणीय शिल्यास्थ व्यक्ति क्यामेश्रम क्रिक्से क्यामेश्रम व्यक्ति क्यामेश्रम व्यक्ति स्वावस्थ वाव वैमारिका विवाय क्षयास्थिर परिक्रियाच्यासिक्से क्रिकेट १ ता क्षेत्रव स्वावस्थ वाव वैमारिका वेशा वार्त्व २ सम्बाह्य वेषेत्रवार विद्यवि १ १ १ व रावेश्य स्वावस्थ उत्यायक्षीय २ ता विज्ञास मीमानीयाई प्रकाया विद्यवि १ १ १ व रावेश्य स्वावस्थायस्थि १ ता विज्ञास मीमानीयाई प्रकाया विद्यवि १ १ १ व रावेश्य

एत्य णं दूसमा णामं समाकाळे पिंडविजिस्सइ समणाउसो!, तीसे ण भते! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ १ गोयमा ! वहुसम-रमणिजे भूमिभागे भविस्सइ से जहाणामए-आलिंगपुक्खरेइ वा मुइगपुक्खरेइ वा जाव णाणामणिपचवण्णेहिं कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव, तीसे ण भते ! समाए भरहस्स वासस्स मणुयाण केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णते 2 गो०! तेसिं मणुयाण छिन्वहे सघयणे छिन्वहे सठाणे बहुईओ रयणीओ उष्टु उचतेण जहण्णेण अतोसुहुत्त उक्कोसेण साइरेगं वाससय आउय पालेंति २ ता अप्पेगइया णिरयगामी जाव सव्वदुक्खाणमत करेंति, तीसे णं समाए पिच्छमे तिभागे गणधम्मे पासड-थम्मे रायधम्मे जायतेए धम्मचरणे य वोच्छिजिस्मइ॥ ३५॥ तीसे ण समाए एकवीसाए वाससहस्सेहिं काळे विइक्कते अणतेहिं वण्णपज्जवेहिं गथ० रस० फासपज्जवेहिं जाव परिहायमाणे २ एत्थ णं दूसमदूसमा णाम समाकाले पडिव-जिस्सइ समणाउसो !, तीसे ण भते ! समाए उत्तमकट्टपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! काले भविस्सइ हाहाभूए भमाभूए कोलाहलभूए समाणुभावेण य खरफरसधूलिमइला दुन्विसहा वाउला भयकरा य नाया सवद्रगा य वाइति, इह अभिक्खण २ धूमाहिति य दिसाओ समता रङस्तला रेणुक्छसतमपडलणिरालोया समयछक्खयाए णं अहिय चदा सीय मोच्छिहिति अहिय सूरिया तिवस्सिति, अदुत्तरं च ण गोयमा! अभिक्खण २ अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा अग्गिमेहा विजुमेहा विसमेहा अजवणि-जोदगा वाहिरोगवेयणोदीरणपरिणामसिळला अमणुण्णपाणियगा चडाणिलपहयति-क्सवाराणिनायपुर वास वासिहिंति, जेणं भरहे वासे गामागरणगरखेडकव्वडम-इंवदोणसुहपट्टणासमगय जणवय चउप्पयगवेलए खहयरे पक्खिसपे गामारण्णप्प-यारणिरए तसे य पाणे बहुप्पयारे स्वन्वगुच्छगुम्मलयविष्ठपवालकुरमाइए तणवण-स्सङ्काइए ओसहीमो य विद्धसेहिंति पव्वयगिरिङोंगरूत्थलमिडमाइए य वेयह्नगिरि-वजे विरावेहिंति, सिललिबलिवसमगत्तिणिणुण्णयाणि य गगासिंधुवजाइ समीकरे-हिंति, तीसे ण भते ! समाए भरहस्त वासस्स भूमीए केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ <sup>२</sup> गोयमा । भूमी भविस्सइ इगालभूया मुम्मुरभूया छारियभूया तत्तकवेळु-यभूया तत्तसमजोइभूया धूळिवहुला रेणुवहुला पंकबहुला पणयवहुला चलणिवहुला बहूण घरणिगोयराण सत्ताण दुनिकस्मा यावि भविस्सइ । तीसे ण मते ! समाए भरहे वासे मणुयाण केरिसए भायारभावपडोयारे भविस्सइ १ गोयमा । मणुया भविस्सिति हुरूवा दुवण्णा दुगवा दुरसा दुफासा अणिद्वा अकता अप्पिया असुमा

भगजामस्यरा अमञ्जून्यस्यरा शजावेजन्ययपन्यायाया विक्रमा कृषक्षकसम्ब<sup>देश</sup>-वेरनिर्या समायहरसप्त्वाणा अस्मणिनुमया गुरुणिओगविनयरहिना स निर्-सम्बा परवणक्केतमधुरोमा कामा छरप्रश्वसमावण्या प्रश्वित कविकपविगक्तेश वहुन्दारगिर्सयिक्दरुर्सिक्षक्ता स्कृतिक्वनतीत्ररंगपरिवेदिर्यगर्मगः करापरिवयन बेरगबरा पविरम्परिसक्तिवर्दतसेबी उच्मक्यक्रमुहा विसम्बन्धवर्वक्रमासा वेदन्ती विगयमेराजमुद्दा दद्दविकिटिमसिब्सपुर्वियप्रस्तान्त्रम् विश्ववैगर्मगा क्रम्प्ससरामिः म्या सरविक्षणक्षकंक्ष्रविक्यलय् टोक्यइविसम्प्रेषिकंपया उद्वद्वपद्विमार्थः इम्मलर् संस्थानकुणमाणकुर्सिठेना इस्ना इक्कालासम्बर्धेन्द्रभोहमो असुर्मो स<sup>हे</sup> गमाविपीकिर्यगर्मगा सनेतविक्यक्याहे विक्च्छाहा सत्तपरिक्रमगा विगवचेठा 🖼 तेया अमिनवर्ग १ सीवज्यवरपञ्चनावनिञ्जलियम्भिनपंतरबोर्ग्डियंगर्ममा ग्र कोइमाणसम्बाकोमा बहुसोहा असुन्तुक्षभागी खेसका घरसस्यासन्तरपरिन्छ उद्योग्रेज रवनिष्यमायमेता सोक्स्वीस्ट्रवासप्रमानसो बहुपुत्तवसुपरिवासस्वय<sup>क्</sup>री र्गगार्लिम्को सङ्गगहैको बेनच् व पञ्चर्य जीसाए बाक्सरि विन्धेसबीचे बीक्सर्ग निक्नातियो स्टुया सविस्तंति त व मंते ! मनुवा कमाहारित्तंति ! गोवमा ! तेमं बाकेनं तेनं समएवं पगासिक्को महान्यको रहपद्मितवित्वराको अस्त्रस्थे सप्पमाणमेतं कर्त वोज्यित्विति । सेनिव वं क्ले बहुस<del>क्कारण्ड</del>माहरूने वो क्ल कं आतमकुके मनिस्तर, तए नं ते महानः ध्रम्ममण्युक्तीय य ध्रस्यमण<u>मक</u>्तीय न विकेहिंतो निकाररचित विके २ ता सन्करकार बनाई गाईसित सन्कर्णने क्साई गाहेता सीमाक्सतीही मध्यक्तकोही इस्तीयं वाससहस्ताई हिर्दि हमें मामा विक्रित्सिदि : ते वं गंदी । स्युवा विक्सीका विक्यदा विस्तुमा विक्सेस मिप्पनन्यामपोसहोत्रमासा जोसन्तं संसद्वारा सच्चाहारा दशहारा दृक्षमाद्वारा कारमाचे कार्ड किया कर्के गरिवर्सित कर्के समाजिति ! यो । बोस्टमें पर गतिरिक्त अभिपृद्धं उपमुख्यिति । तीसे में भेते ! समाप् सीहा बन्धा विया सीविया भक्ता तर्व्या परस्तरा सरमतियासविरासमुख्या क्रेन्स्यवया सत्त्या वितया चित्रकार खेल्लं संसाहारा सच्छतारा बोहाहारा कृषिमाहारा क्रकमासे वार्ड निया वर्हि गव्यिक्षिति कहि जनविक्षिति ! यो ] कोस्त्र्यं नरयदिरिक्स वेनि एम् उनविज्ञिति ते व मेरी विश्व करा पीक्रमा संस्पुता सिही कोरा क मेसाद्वारा जान कहि स**िकार्ति**चे कहि उन्तिकार्तिचे योगमा । जास<del>की</del> परमितिस्थानोमिप्छु उत्तरमिहिति ॥ ३६ ॥ तीरी यो समाप् इदरीसाएँ

वाससहस्सेहिं काले वीइक्कते आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सावणवहुलपिवए वालवकरणसि अभीइणक्खत्ते चोद्सपढमसमए अणतेहिं वण्णपज्जवेहिं जाव अणतगुणपरिवुद्शीए परिवुद्धेमाणे २ एत्थ ण दूसमदूसमा णाम समाकाले पडिव-जिस्सइ समणाउसो ! । तीसे ण मते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगार-भावपडोयारे भविस्सइ १ गोयमा ! काले भविस्मइ हाहाभूए भमाभूए एव सो चेन दूसमदूसमावेढओ णेयव्वो, तीसे ण समाए एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं काले विइक्कते अणतेहिं वण्णपज्जवेहिं जाव अणतगुणपरिवृङ्गीए परिवृङ्केमाणे २ एत्य णं दूसमा णाम समाकाले पश्चिवज्जिस्सइ समणाउसो। ॥ ३७॥ तेण कालेणं तेणं। समएण पुक्खलसवदृष् णामं महामेहे पाउन्भविस्सइ भरहप्पमाणमित्ते आयामेण तयणुरुव च ण विक्खभवाह्नेण, तए ण से पुक्खलसवदृए महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ खिप्पामेव पतणतणाइत्ता खिप्पामेव पविज्जुयाइस्सइ खिप्पामेव पविज्जुयाइत्ता खिप्पामेव जुगमुसलमुद्विप्पमाणमित्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्त वास वासिस्सइ, जेणं भरहस्स वासस्स भूमिभाग इंगालभूयं मुम्मुरभूयं छारियभूयं तत्तकवेक्षुगभूय तत्तसमजोइभूय णिव्वाविस्सइ, तसि च ण पुक्खलसवद्वगिस महा-मेहंसि सत्तरत्त णिवइयसि समाणसि एत्थ ण खीरमेहे णाम महामेहे पाउन्भविस्सइ भरहप्पमाणमेत्ते आयामेण त्यणुस्व च णं विक्खमबाह्हेण, तए णं से खीरमेहे णाम महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ जाव खिप्पामेव जुगमुसलमुद्धि जाव सत्त-रत वास वासिस्सइ, जेणं भरहवासस्स भूमीए वण्ण गध रस फास च जणइस्सइ, तिस च ण खीरमेहिस सत्तरत्त जिवइयसि समाणिस इत्थ ण घयमेहे जाम महामेहे पाउञ्भविस्सइ, भरहप्पमाणमेत्ते आयामेण, तयणुरूव च ण विक्खभवाहलेण, तए ण से घयमेहे॰ महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ जाव वास वासिस्सइ, जेणं भर-हस्य वासस्स भूमीए सिणेहभाव जणइस्सइ, तिस च ण घयमेहिस सत्तरत्त णिवइयंसि समाणिस एत्थ ण अम्यमेहे णाम महामेहे पाउन्भविस्सइ भरहप्पमाणिमत्त आयामेण जाव वास वासिस्सइ, जेण भरहे वासे स्वन्तगुच्छगुम्मलयविश्वतणपव्यगहरियग-ओसिहपनालकुरमाइए तणवणस्सइकाइए जणइस्सइ, तसि च ण अमयमेहंसि सत्त-रत्त णिवइयसि समाणसि एत्य ण रसमेहे णाम महामेहे पाउन्भविस्सइ भरहप्पमा-णमित्ते आयामेण जाव वास वासिस्सइ, जेण तेसि वहूण स्वन्खगुच्छगुम्मलयविहतण-पव्वयगहरियगओसहिपवालकुरमाईण तित्तकडुयकसायअविलमहुरे पचविहे रसविसेसे जणडस्मइ, तए णं भरहे वासे भविस्मइ परूढक्ष्वसुन्द्वगुन्द्वगुम्मलयवङ्गितणपव्वयगहरिय-गओसहिए, उवचियतयपत्तपवालकुरपुप्फफलसमुइए सहोवभोगे यावि भविस्तइ॥३८॥

टनेस्पंति २ ता मरहे वापे धक्यहेणं कामिरममाना २ विवृत्तिरपंति D ३९ व वीसे प मंदे । समाप मरहस्य बासस्य केरिसप बाजारआवपश्चेजारे अमिलाई गो । बहुसमरमिको मुमिनागे मविस्तह जाव कितिमेहि जब अकितिमेहै <sup>चेह</sup> तीसे में मते ! समाए मधुवाणं बेरिसए आवारभावपदीयारे भविस्तह ! गोरमा। देखि मं मनुसानं छन्दिहे सक्यने कांन्वहे संठाणे बहुईको रवसीओ सर्ह उन्होंने बहुन्गेमं संदोमुहृत्तं सहोसेणं साहरेगं वाससमं आउर्थ पाकेर्हिदि २ ता नदीगहरा निरस्मामी जान अप्येगङ्गा बेनगामी च किर्ऋति । शीरी न समाए एहनौग्रार नाससहरसेहि काके नीइकंते अर्गतेहि बज्जपजानेहि जान परित्रोताणे १ एल न इसमस्या जाम समाराके पविविक्तसङ् समजावसो । तीस मे मेदे । समार मरहस्य वास्त्स केरिसए आमारभावपढोगारे भक्तिसह ! योजमा ! व<u>ह</u>समरस्थिते जान अकितिमेहि चेन तेसि ज मैते । मनुवाय केरिसए आयारमानपडोगारे मि रसर ! गो ! देखि में मन्त्रवामं कृत्मिहे संघवणे खब्बिहे संठाने बहुई पन्तं वह उनतेनं महन्येणं अतीमुहुत्तं रहोतेणं पुन्तकोडीआउर्थ पाकिहिति ९ ता अप्येप इवा निरमगानी जान शर्त करेडिति कीचे व समाप क्लो नेवा समुव्यक्रिक्टी तं -- तित्यगरर्वते चक्रविक्षेते वसार्वते वीते व समाए तेवीते वित्यगरा प्रारत चत्रबद्दी जब बकरेबा चब बाउदेबा समुप्पञ्चिस्पति थीसे वं समार् सामरेसम कोडाकोडीए बामार्कसाए बाससहस्ते हैं कविमाए कार्क बीहरूरी अवसे हैं वर्णा पञ्जवेदि जान अर्थतराज्यपितृङ्कीए परितृङ्केमाचे २ एरव व्यं सरसन्तमा नार्ने समी काळे पत्रिनक्रिस्तर समधारामो । सा ये समा दिहा निभजिस्तर, पत्रमं निमाये मजितमं निमारो पश्चिम दिगारे तीसे नं मंते ! समाय पत्न दिमाए मद्धान बाएस्य केरिसप् शाबारमावपद्मवारे गनिस्मद् है गोबमा है बहुसमरमणिजे जार मनिस्पर, मञ्जूयानं जा चेव भोसप्पणीए पश्चिमे विभागं बस्त्रवा मा मानि-

सम्मा नुकारवजा उसमगमितजा अच्छे पहुँति-तीते यं गमाए पत्रमें निभाए इमे कमरत कुमगरा समुध्यमिस्त्रनि संज्ञा-तुमई जाव उसमें वेसं तं वर्ष देंद्र- णीईओ पिंडलोमाओ णेयव्वाओ, तीसे ण समाए पढमे तिमाए रायधम्मे जाव धम्मचरणे य बोच्छिजिस्सइ, तीसे ण समाए मिज्झिमपिन्छिमेछ तिभागेछ जा पढममिज्झिमेछ बत्तव्वया ओसिप्पणीए सा भाणियव्वा, सुसमा तहेव सुसमास्रसमा-वि तहेव जाव छिन्वहा मणुस्सा अणुसिजिस्सित जाव सिणचारी ॥ ४०॥ वीओ वक्खारो समन्तो॥

से केणहेण भते । एवं वुचइ-भरहे वासे २ १ गोयमा । भरहे ण वासे वेयहुस्स पव्वयस्स दाहिणेण चोद्युत्तरं जोयणसय एगारस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स अवाहाए दाहिणलवणसमुद्दस्स उत्तरेण चोद्दमुत्तरं जोयणसयं एकारस य एगूण-वीसइभाए जोयणस्त अवाहाए गगाए महाणईए पचित्यमेण सिंधूए महाणईए पुरित्यमेणं दाहिणहुभरहमिज्जलिमागस्स वहुमज्ज्ञदेसभाए एत्य णं विणीया णाम रायहाणी पण्णता, पाईणपढीणायया उदीणदाहिणविच्छिण्णा दुवालसजोयणायामा णवजोयणविच्छिण्णा धणवड्मङ्णिम्माया चामीयरपागारा णाणामणिपञ्चवण्ण-कविसीसगपरिमडियाभिरामा अलकापुरीसकासा पमुइयपक्कीलिया पचक्खं देव-लोगभूया रिद्धित्थिमियसमिद्धा पमुइयजणजाणवया जाव पिंहरूवा ॥ ४९॥ तत्य ण विणीयाए रायहाणीए भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवर्द्यो समुप्पजित्या, महयाहिमनतमहत्तमलयमदर जांव रजा पसासेमाणे विहरइ। विह्थो गमो राय-वण्णगस्स इमो-तत्य असखेजकालवासतरेण उप्पज्जए जससी उत्तमे अभिजाए सत्तवीरियपरकमगुणे पसत्यवण्णसरसारसघयणतणुगवुद्धिधारणमेहासठाणसीलप्पगई पहाणगारवच्छायागइए अणेगवयणप्पहाणे तेयआउवलवीरियजुत्ते अझुसिरघणणि-चियलोहसक्लणारायवइरलसहसघयणदेहवारी झस १ जुग २ भिंगार ३ वद्धमाणग ४ भद्माणग ५ सल ६ छत्त ७ वीयणि ८ पढाग ९ चक्क १० णंगल ११ मुसल १२ रह १३ सोत्यिय १४ अकुस १५ चदाइच १६-१७ अगि १८ जूय १९ सागर २० इदज्झय २१ पुहवि २२ पउम २३ कुजर २४ सीहासण २५ दड २६ फुम्स २७ गिरिवर २८ तुरगवर २९ वरमउड ३० कुडल ३१ णदावत ३२ घणु ३३ कोंत ३४ गागर ३५ भवणविमाण ३६-सणेगलक्खणपसत्यस्रवि-भत्तिकरचरणदेसभाए उष्टुामुहलोमजालसुकुमालणिद्धमउआवत्तपसत्थलोमविरइ-यसिरिवच्छच्छण्णविजलवच्छे देसखेत्तस्विमत्तदेह्धारी तरुणरविरस्सिवोहियवरकमल-विवुद्धगब्भवण्णे ह्यपोसणकोससण्णिभपसत्यपिद्वतणिरुवळेचे पउमुप्पलकुदजाङ्जूहि-यवरचपगणागपुष्फसारंगतुह्नगधी छत्तीसाहियपसत्यपत्थिवगुणेहि जुत्ते अन्वोच्छि-ण्णायवत्ते पागडउभयजोणी विसुद्धणियगकुलग्यणपुण्णचदे चदे इव सोमयाए णयण-

मनभिन्तुरकरे अक्कोने सागरी व विमिए वणवहन्त्र भौगसमुद्रमसङ्ग्यार समर्रे अपराहरू परमविष्यमुक्ते कमरकासमागसरिसको म्युयकई मरहणहरूकी भरहें हैं य पञ्चद्वमत् ॥ ४५ ॥ तए गं सस्य भरहस्य रच्नो अञ्जवा कमाङ् आउडवरसासए हैम्से चहरत्यमे समुप्पाजित्या तस व से आउडचरिए मरहस्य रच्यो आउडपरसाम्पर रिर्म चहर्यमं समुप्पन्नं पासह पासिता बहराह्मित्तमाधारीए भरिए पीत्रमने क्रमपीन नस्सिए इसिमनसनिमध्यमाणक्षिनए भाउड्चरसामाओ पडिमिन्समङ् २ ता जेणाये बाहिरिया उबद्धायसासा खेवामेन भरहे राजा सेवामेच डवामक्क २ ता क्रावर बाद अएवं निअएवं क्याबेट २ ता एवं बवाधी-एवं बढा देवलापियान बाज-भरसामाए रिम्मे चहरका समुप्पम्मे सं एकवं देवलुप्पियावं पिन्छ्याए सिर्व निवेदमि पिय से मनज तए में से भरहे राजा तस्य आउहबरिकस्स मतिए एयस्ट्रं सोचा निसन्त इद्व जाव सोमणरिसए विवसिक्तरक्रमसम्बद्धन सर्व माउद्दर्भारेयस्य मद्दाशावित्र सउददर्जं ओसीय दलक्ष 🤏 चा बिदर्स वीविवासि पीइदामं इक्त्यह ९ ता सदारेइ सम्माण्य स - २ ता पश्चितसभेद । तए सं से सम्हे राया कोई निम्पुरिसे सहावेद २ ता पूर्व बवासी-विष्णामेन भी देवानुष्या। विजीवं राज्याणि साम्भेतरबाहिरियं शासिवसंगनिवसिक्तप्रगरस्वेतरबीहिवं से<sup>च्</sup>र मंचक्किनं वानानिहराज्यमध्यक्रियसयपणागाइपडागमंडियं आजहोदसमहि<sup>नं सोडी</sup> सगरसरचनदन समर्थ अञ्चलकातुक्य जान गेरुहुयामिरामं धर्मयक्रमंत्रियं सैरगीस्ट्री करेह कारबेह करेता फारबंता य एवमागतिये पवप्यियह । तए वे ध बोईनिक पुरिसा मरोहेर्ण रच्या पूर्व श्रुता समाजा 😝 करवन जान पूर्व सामिति आ<sup>जार</sup> वित्रपूर्ण क्यमें परिमुर्थित २ ता मरहस्म अंतियाको परिमिन्समंति २ ता विभीते रामश्चाणि जन्म करेता कारवेता य तमावतिये पर्याप्ययंति । तए वं से मरहे राजा भेषेत्र सम्मारी रागेत्र उदागनग्रह १ ता सम्माप्त अनुपतिशह १ ता समु<sup>त्रहरू</sup> सारुमाभिराम विवित्तमणिर्यणङ्कृतिमन्त्रे रमणित्रे व्हाचर्मङ्कीय वाचामविरवचनः तिबित्तीरे व्हाणपीर्वास गुह्नियमण्ये मुद्दोत्रपृद्धि गंधीन्त्रहि पुरनोहरुई गुह्नोत्रपृद्धि स पुष्पे बजामगपनरमञ्जननिरीए मञ्जिए शरथ कोउनगएहि बहुनिहेर्द्ध बजानगरसर मञ्जानमामे पम्हण्यनुमासर्गयनामाह्यसहिर्ये। सरस्वरहिष्येनीमर्थरमाहित्या बाहबगुमहण्यदमस्यमुर्गेनुङ स्त्रमासावण्यमानिकणे आस्टिमयिनुवरी वर्रीनमही रद्धारिंगरियातमेक्संब्रमाणशिमुतमुक्यणोड् विसद्येविद्यालेगुरिजा स्वय क्लिनिक्याभरणं णांश्रामनिस्हगतुद्दिययंभिवमुप् शहिवमस्त्रियाः इंडल्डलेड याचचे मडबरित्तसिरम् हारोत्पवमुक्तरप्रयवधे पालंबस्त्रमम् ग्युक्ताउउत्तरे ।

सुद्दियापिंगलंगुलीए णाणामणिकणगविमलमहरिहणिउणोवियमिसिमिसिंतविरइयसु-तिलिट्टविसिट्टलट्टसिटियपसत्यआविद्धवीरवलए, कि वहुणा <sup>2</sup>, कप्परुक्खए चेव अल-कियविभूसिए णरिंदे सकोरंट जाव चउचामरवालवीइयंगे मगलजयजयसहकयालोए अणेगगणणायगद्डणायग जान दूयसिघवालसिद्धं सपरिवुडे धवलमहामेहणिगगए इव जाव सिसेन्व पियदसणे णरवई मज्जणघराओ पिडिणिक्खिमइ २ ता जेणेव आउहघरसाला जेणेव चक्करयणे तेणामेव पहारेत्थ गमणाए। तए ण तस्स भरहस्स रण्णो वहवे ईसरपिभइओ भरह रायाणं पिट्टओ २ अणुगच्छंति । तए णं तस्स भरहस्स रण्णो वहुईस्रो—खुज्जा चिलाइ वामणिवडमीस्रो वञ्चरी वउसियास्रो । जोणियपल्हिवयाओ ईसिणियथारुगिणियाओ ॥ १॥ लासियलउसियदमिली सिंहिलि तह आरवी पुलिंदी य। पक्षणि वहलि मुसंही सवरीओ पारसीओ य॥ २॥ भरहं रायाण पिट्ठओं २ अणुगच्छति, तए ण से भरहे राया सिव्वङ्गीए सन्वजुईए सन्वबलेण सन्वसमुद्रएण सन्वायरेण सन्वविभूईए सन्वालकारविभूसाए सन्व-तुडियसह्सण्णिणाएण महया इ**ङ्गीए** जान महया वरतुडियजमगसमगप्पनाइएण ससपणवपडहमेरिझहरिखरमुहिमुरयमुइंगदुदुहिणिग्घोसणाइएणं जेणेव आउहघर-साला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता चक्करयण पासइ २ ता आउहघरसालाओ पिंडिणिक्खम्इ २ ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवा-गच्छइ २ ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सिण्णिसीयइ २ ता अद्वारस सेणिप्पसे-णीओ सहावेड २ ता एव वयासी-खिप्पामेव मो देवाणुप्पिया! उस्सुक उक्करं उक्किट्ट अदिज्ज अमिज्ज अमङप्पवेस अदङकोदिङम अधारिम गणियावरणाङङ्ज-केलिय अणेगतालायराणुचरिय अणुद्धुयमुङ्ग अमिलायमह्नदाम पमुङ्यपक्कीलियसपु-रजणजाणवय विजयवेजइय चक्करयणस्य अद्वाहिय महामहिम करेह २ ता ममेय-माणित्तय खिप्पामेव पचिष्णह, तए णं ताओ अद्वारस सेणिप्पमेणीओ भरहेण रन्ना एव वुत्ताओं समाणीओं हट्ट जाव विणएण वयण पिंडसुणेंति २ त्ता भरहस्स रण्णो अति-याओ पिडिणिक्समेन्ति २ ता उस्सुक उक्कर जान करेंति य कारवेंति य क॰ २ ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति २ ता तमाणत्तिय पचिष्णित ॥ ४३॥ तए ण से दिन्वे चक्करयणे अद्वाहियाए महामहिमाए णिन्वत्ताए समाणीए आउह-घरसालाओ पिंडणिक्खमइ २ त्ता अतिलेक्खपिंडवण्णे जक्खसहस्ससपिरिचुडे दिव्व-तुः हियसद्सणिणणाएण आपूरेंते चेव अवरत्तल विणीयाए रायहाणीए मञ्झमञ्झेण णिमान्छई २ ता गगाए महाणईए दाहिणिक्षेण कूलेण पुरित्थम दिसि मागहतित्था-मिमुहे पयाए यावि होत्या, तए ण से भरहे राया त दिव्व चक्करयण गंगाए

महाभईए बाहिमिक्रेल क्केल पुरत्विम विभि मागहतिरवामिमुई प्रमार्थ पासह १ % **इहरुद्ध जान हिराप कोइंजिनपुरिसे सहानेह १ शा एवं बनासी-रिप्रणानेन म** देवाणुप्पिमा ! आमिसेकं इत्यरमणं परिक्रपेड इनगयरहप्रदानोहरूकिनं चाउरेनि चेण्य सम्बाहेह एममाणशियं प्रमण्जिलह सए न ते कोहंनिय जान प्रमण्डित दा र्षं सं भरहे राया जेलेव सञ्ज्ञाचारे श्रेनेव त्यामन्त्रकृ २ ता अञ्ज्ञाचरे अनुपनिसह २ छ समुक्तजासाङ्खामिरामे तहेन बान अनसमहामेहनिरगए इन जान सरिस्न पिकंपने नरवर् सञ्जनवराख्ये पविभिन्नदासङ् १ ता इक्ष्मसरहपवरवाहणसङ्ग्रहस्यर संकुन्यए ऐकाए पहिनकिशी जेलेव बाबिरिया उच्छावसास्य जेयव आभिनेत इतिपरवर्गे तेमेव संवागकात २ ता अंजपनियरिक्डसन्विमे रामवर्ग वरवर्ष इस्तं। तए में स भरहाक्षित्रे गरिंद हारोत्वयस्थ्यस्थ्यक्को क्रेडकराजोहराजने मरुविष् सिरए नरसीहे नरनहे गरिंदे भरवसहे सक्यराब्वसभरूपे जब्मश्चनरावतेन्य कर्म विष्यमाने परात्वमंगकनपृद्धि संबुक्तमाने अव र सहकवाकोए हत्सिकंभवरगए स्वीरेटर्न क्रदासम् क्रतेणं चरिज्ञसामणं सेन्दरचामराहे उन्नव्यमाणी**ई** ९ जरूटा**स्ट**स्ट परिकृष्टे बेसमने केन मनवर्ष कामरक्ष्यकिमाह दश्वीए पश्चिमकेती संतार महत्वरेर वाहित्यामं कृषेणं गामागरणगरकोडकम्बद्धमर्ववद्योजमुङ्ग्यन्यस्यस्यम्बद्धस्यमंदिवं विभियमेद्रगीमं वसूत्रं कामिजिलमाचे २ जन्मतं परक्षं स्थलतं पढिच्छमाचे १ ह दिन्धं पक्करवर्णं अनुगच्छमाणे २ जीवशंतरिवाहि वस्त्रीहि वसमाणे २ जेमेव मार्ल इतिस्ये रोजेव उपायप्यस्य २ ता आग्रहतित्वस्य कार्यसारेते पुनाकसस्येकवारार्ये पनस्येयपनिच्छित्रां वरकारस्यरेचके निवनर्यपानानिकेसे करेत्र २ ता वहुरत्यं **प्राप्तिः एक्नक्ता एवं वयाधी-दि**ष्यामेव सो देवानुष्यिता । समं वावास येख चीनं क करेडि करेशा मनेनमाणशिर्य प्रकप्पिणाहि, तए न से बहुररवर्षे मधीन रण्या एवं कुरी छमाचे इक्काइनिशमानंदिए पीक्सपे बाद संबद्ध कर एवं तानी राष्ट्रति भाणाप् विवयण क्यार्ण पडिश्चणेह २ ता भरहस्स रच्नो बानसहं सेसासार् व करेड़ २ ता एक्सामतिर्ध कियामेव प्रविध्यक्त, तए न से सरदे रावा मानि-रीकाओ इस्मिरनणाओ पश्चोरहत्र २ शा खेचेन पोसहरासा रागेन समाय<del>का</del> २ शा पोध्यसासं अध्यानिस्य २ ता पोसङ्ग्राकं पमन्त्र २ ता वश्मस्वारंगं संबरह २ त वस्मसनारगं इन्हर् १ ता मागहविस्वत्रमारस्य वेवस्य बद्धममते परिन्दर् १ त पोसहसामाए पोसब्रिए हैंच बंगवारी उम्मुक्तमनियुक्ती वक्यसमाजाककाविकेट

जलवस्ते ।

९ कन्निसद्देऽयं । १ जो पोमहिष्ति अक्षो पोसहे शहान्दिहेवनितनवज्ञान

णिक्खित्तसत्थमुसले दव्भसथारोवगए एगे अवीए अट्टमभत्त पिंडजागरमाणे २ विहरइ। तए ण से भरहे राया अट्टमभत्तसि परिणममाणसि पोसहसालाओ पडिणि-क्खमइ २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कोडुविय-पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हयगयरहपवरजो-इकलिय चाउरगिणि सेण सण्णाहेह चाउम्घट आसरह पडिकप्पेहत्तिकहु मजणघर अणुपविमइ २ ता समुत्त तहेव जाव धवलमहामेहणिग्गए जाव मज्जणघराओ पिडणि-क्समइ २ त्ता ह्यगयरहपवरवाहण जाव पहियकित्ती जेणेव वाहिरिया उवद्वाणसाला जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ २ ता चाउग्घट आसरहं दुरूढे ॥ ४४ ॥ तए णं से भरहे राया चाउम्घट आसरह दुल्हे समाणे हयगयरहपवरजोहकलियाए सिद्धं सपरिवुढे महयाभडचडगरपहगरवदपरिक्खित चक्करयणदेसियमग्गे अणेगराय-वरसहस्साणुयायमग्गे महया उक्तिद्विसीहणायबोलकलकलरवेण पक्खिमियमहासमुद्दर-वभ्य पिव करेमाणे पुरित्यमिदसाभिमुद्दे मागहितत्थेण लवणसमुद्द ओगाहइ जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला, तए ण से भरहे राया तुरंगे निगिण्हइ २ ता रह ठवेइ २ ता थणु परामुसइ, तए ण त अइरुग्गयबारुवदइदधणुसकास वरमहिसदरियदप्पि-यद्बघणसिंगरइयसारं उरगवरपवरगवलपवरपरहुयभमर्कुलणीलिणिद्धधतघोयपृहं णिउणोवियमिसिमिसितमणिरयणघटियाजालपरिक्खित तङितरुणकिरणतवणिज्जबद्ध-र्चिघ दहरमलयगिरिसिहरकेसरचामरवालद्धचदर्चिघ कालहरियरत्तपीयद्धक्षिल्लवहुण्हा-रुणिसपिणद्धजीव जीवियतकरण चलजीव धणु गहिस्डण से णरवई उसु च वरवइर-कोडिय वइरसारतों कं कचणमणिकणगरयणधोइद्वयुक्तयपुख अणेगमणिरयणविविहसु-विरइयणामचिध वइसाह ठाइऊण ठाण आययकण्णायय च काऊण उद्यमुदार इमाइ वयणाइ तत्य भाणीअ से णरवई-इदि सुणतु भवतो वाहिरओ खलु सरस्स जे देवा। णागासुरा सुवण्णा तेसिं खु णमो पणिवयामि ॥ १ ॥ हिंद सुणतु भवतो अन्भित-रक्षो सरस्स जे देवा । णागासुरा सुवण्णा सब्वे मे ते विसयवासी ॥ २ ॥ इतिकट्ट उमु णिसिरइत्ति–परिगरणिगरियमञ्झो वाउद्धयसोभमाणकोसेज्ञो । चित्तेण सोभए घणुवरेण इदोव्व पचक्ख ॥ ३ ॥ त चचलायमाण पचमिचदोवम महाचाव । छजाड वामे हत्थे णरवङ्णो तिम विजयमि ॥ ४॥ तए ण से सरे भरहेण रण्णा णिसट्ठे समाणे खिप्पामेव दुवालस जोयणाइ गता मागहतित्थाहिवइस्स देवस्स भव-णिस निवइए, तए ण से मागहतित्थाहिवई देवे भवणंसि सरं णिवइय पासङ २ ता आसुरुत्ते रहे चडिक्किए कुविए मिसिमिसेमाणे तिवलिय भिउडिं णिडाले साह्ररइ २ त्ता एव वयासी-केस ण मो ! एस अपत्थियपत्थए दुरंतपतलक्खणे हीणपुण्णह्सेउचा चत्रकरि ये जीवमंत्रं तीवज्जुपन्यमणामाणं मागद्वतिस्यञ्जाराजं देशाचे रर्धने सुवरमानियं करेत्तम् ते सच्छानि यं अर्द्धीय सम्बन्धः रच्चो वदस्यामियं करेमिणि कर्दुः एमं चेरेचेह्र संपेद्वेता द्वारं महत्व क्षेत्रकाणिय नवगानि व तृत्विवानि व सन्तर्मियं

सामरलालि व सर्व य गामाहर्यें मागह्तिस्पीवर्ग व नेक्ट्र पिक्ट्रिया स्वरं विद्या स्वरं प्राप्त कार्या विद्या व्यवसार निर्माण स्वरंता विद्या व्यवसार स्वरंत प्राप्त स्वरंत स्वरंति स्वरं

द्वरए विभिन्द्द २ ता रहें उन्हें २ ता रहाजों स्वोत्ह्द २ ता वैपेश प्रवादि वैवेद स्थानक्ष्य २ ता मक्त्यामं अपुर्णियः २ ता वास समिक दिवरिक्तं वार्टे स्वाद प्रवादशामो पविभिन्नकाम् २ ता सेनेच मोनकार्यक्षे रोगेच उत्तारक्द्य २ ता सेने-नर्मकार्यक्षि सहामन्त्रकार्य ब्रह्ममार्य पाष्ट्र २ ता मोनकार्यकास्त्र पविभिन्नकार्य २ ता सेने-सेने वाहिरिता उद्युक्तामा सेनेच सहासमे तेनेच अपारक्व २ ता सीर-सम्प्रतार पुरस्कानिस्त्र वैक्तिकार २ ता ब्रह्मत्व स्वित्यकेस सामि स्वाद्या स्वादि स्वाद्या स्वादि स्वाद्या स्वादि स्वाद्या स्वादि स्वाद्या स्वादि स्वाद्या स्वादि स्वाद्या सामि स्वाद्या स्वादि स्वाद्या सामि स्वाद्या सामित स्वाद्या सामित स्वाद्या स्वाद्या सामित स्वाद्या स्वाद्या सामित स्वाद्या सामित स्वाद्या सामित स्वाद्या सामित स्वाद सामित स्वाद्या सामित स्वाद सामित स्वाद सामित स्वाद सामित स्वाद सामित सामि सेणिप्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एव वृत्ताओ समाणीओ हट्ठ जाव करेंति २ ता एयमा-णत्तिय पचप्पिणति, तए णं से दिन्वे चह्नस्यणे वइरामयतुवे लोहियक्खामयारए जंवू-णयणेमीए णाणामणिखुरप्यथालपरिगए मणिमुत्ताजालभृसिए सणदिघोसे सर्खिखिणीए दिन्वे तरुणरविमंडलणिमे णाणामणिरयणघटियाजालपरिक्खित्ते सन्वीउयसुरभिकुसम-आसत्तमस्रदामे अतिस्वपिडवणो जक्तसहस्ससपिरवृडे दिन्वतुडियसहसणिणणाएणं पूरेंते चेन अवरतल णामेण य छदसणे णरवइस्स पढमे चक्करयणे मागहतित्यकुमा-रस्स देवस्स अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पिडणि-क्लमइ २ ता दाहिणपचित्यमं दिसिं वरदामितत्याभिमुहे पयाए यावि होत्या॥ ४५॥ तए ण से भरहे राया त दिव्व चक्करयण दाहिणपचित्थमं दिसिं वरदामितत्थाभि-मुद्द पयाय चावि पासइ २ ता हट्टतुट्ट० कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुष्पिया ! हयगयरहपवर० चाउरगिणि सेण्णं सण्णाहेह आभि-पेक हत्यरयण पिंकम्पेहत्तिकडू मज्जणघर अणुपविसइ २ ता तेणेव कमेणं जाव घवलमहामेद्दणिग्गए जाव सेयवरन्वामराहिं उद्भुव्वमाणीहिं २ माइयवरफलयपवर-परिगरखेडयवरवम्मकवयमाढीसहस्सक्रिए उक्कडवरमउडितरीडपडागझयवेजयति-चामरचलतङत्तघयारकलिए असिखेवणिखग्गचावणारायकणयकप्पणिसूललउङभिंडि-मालथणुहतोणसरपहरणेहि य कालणीलरुहिरपीयद्मक्रिल्लअणेगर्चियसयसण्णिविद्वे अप्फोिंडयसीहणायछेलियहयहेसियहत्यिगुलुगुलाइयअणेगरहसयसहस्सचणघर्णेतणी-हम्ममाणसह्सहिएण जमगसमगमभाहोरंभिकाणितखरमुहिमुगुंदसखियपरिलिवच्चगप-रिवाइणिवसवेणुविपचिमहइकच्छिभिरिगिसिगियकलतालकंसतालकरघाणुत्थिएण महया सद्दसिण्णिणाएण सयलमिव जीवलोग पूर्यते वलवाहणसमुद्रएणं एव जक्खसहस्स-परिवुढे वेसमणे चेव धणवई अमरवइसण्णिभाइ इङ्कीए पहियकित्ती गामागरणगर-खेडकञ्चड तहेव सेस जाव विजयखघावारणिवेस करेइ २ ता वष्ट्रइरयण सद्दावेइ २ ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । मम आवसह पोसहसाल च करेहि, ममेयमाणत्तिय पच्चिपणाहि ॥ ४६ ॥ तए णं से आसमदोणमुहगामपृहणपुरवर-खघावारगिहावणविभागकुसले एगासीइपएस सन्वेसु चेव वत्थूसु णेगगुणजाणए पिंडए विहिष्णू पणयालीसाए देवयाण वत्थुपरिच्छाए णेमिपासेसु भत्तसालाद्ध कोट्ट-णीसु य वासघरेसु य विभागकुसले छेजे वेज्झे य दाणकम्मे पहाणवुद्धी जलयाण भूमियाण य भायणे जलयलगुहासु जतेसु परिहासु य कालनाणे तहेव सद्दे वत्थुप्प-एसे पहाणे गढिभणिकण्णस्क्खविहिवेढियगुणदोसवियाणए गुणहे सोलसपासायकरण-कुसळे चउसद्विविकप्पवित्थियमई णदावत्ते य वद्धमाणे सोत्थियरुयग तद्द सव्वओ- महराण्यिकेते व बहुकितेते चहकियवेकक्रोहदार्खणिरकाक्काहकविमागरुक्के-इव तस्त बहुगुमहे भवह रवणे जरिवर्षवस्स । तबसेजमनिमिद्धे कि करवाणीनुबहु।है ॥ १ ॥ सो देवकम्मविक्षिणा कावावारे पार्रिद्वमयोगं । कावसहभवनककिय करेड्र सम्बं सुरू-तेर्च ॥ २ ॥ करेता पवरपोछड्वर करेड् २ ता ओनेन भरडे रामा बाब एसमान-तियं दिव्यासेन प्रमाणिगाइ, संसे राहेन जान समाजधराओ विविधनदासङ् २ ता नेनेन बाहिरिया उबद्धाणसाक्षा खेलेब जातार्थेढे बासराहे सेलेब स्वागच्छा ॥ ४० व दप् वं तं भरमितस्यमगरम्बं तमो बहुसम्बद्धायपत्तनं दिमनंतरंदरंतरभिवानसंबद्धिः विकारिकारिका जेव्यकारुमपूर्व क्यार्वियार प्रक्रमारिक्णीकसासगणाङ-फ्रिक्बर्रवजबेद्धमस्त्रिवृगमिभ्छियं अवयात्रीसारस्यतनिज्ञासस्महिकद्वर्द्धा पष्टियपरिवासिनिमवधनपरपुरुपरिविद्वियं विशिक्षक्षणकानेषुकद्वकर्मा हरिपहरणर यमसरिसम्बर्क वाह्रेयमहेव्यीलयासगस्समाहियमस्यात्रकारमः परस्यविनिक्रमसम्बर् प्रत्वरं च ग्रतं सुकिरणतमित्रजातकतियं केक्ट्यकितुत्तकार्यं पहरणासुवारं वंड यक्तमा बन्दर्भ हत्समा वर ए कि जैतितो भर एर एक्क्स ती सतो वपरिसंदियं स्वापार वस्त्री गी कृतं इस्रीमुद्दवक्षमागवर्वतर्णवमो विवतनयोक्षियकुंद्रकुवयवरस्थितार्वद्रकारके<del>वनि</del> गरहारकाराप्यान्यमक्त्रेहे अमरमभपवनव्यवस्थारिकारामीहे बरहे वामराक्त्र गमिमसिर्गगार्ड क्षरमेर्ड सम्बन्धं सम्बन्धं सर्वटं सपकार्ग सक्ष्मसंविकामं सुसमावि क्छमरकमामंभीरतुक्रवेधं वरकुप्परं श्रवकं वरवेभीमंत्रकं वरवारातींकं वरवस्तक र्तुवं वरकंत्रकम्मास्त्रवं करानस्थितिमार्थं कर<u>त्तरपसं</u>परत्तं वरसार**क्र**ससंप्रसाहितं वर प्ररिधे वरमहारकं दुस्के आरके पन्ररत्नपरिग्रंथियं क्रमवर्षिकियोजानस्मेनिर्ग सरकां सोयामनिकायतनिवर्णस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थाः गुन्स**रह**री क्य (राहिंगुक्ताविधरिवेंगुरस्यक्केकुनपारेन्थ्यसम्बद्धकक्षेत्रक्ष्मधमावरमस्य त्तासोगक्यमकसुवगयतस्य रिवणोकासमध्यमध्यासं विवयसस्य ध्वास्तरिक्र ध्वास्तरिक सरिएं सम्बोतनसरविक्रक्षमवासत्तमक्रमार्गं कसिन्सेयवसर्वं सहानेहरविन्संसीरविक् भोर्स समुद्रिजनकंपर्ण प्रमाप् व सरिसरीय जामेथं पुर्विविक्यकरीति विरसर्व स्रोप-निस्प्रथमधोऽद्यं पाउन्हें बाएएं नरवह दुसी तए नं से मरहे रावा पावन्हें जासरहं दुवडे समाणे सेसं तहेन वाहिणामिमुहे वरदामतिलोपं क्राज्यसमु( बोया-हरू जान से रहनरस्य कुम्परा एका बान पीहनार्य से जनरं जुडासबि व निर्णे सर ल्लोपिक्मां शोधियप्रतर्भ करगाणि य तुविजाणि य बान दासिन्द्री सत्वाके जान बद्वादियं महासदिमं करेति २ ता एवमाणतिर्व प्रवाणकीत तए वं से देशी कार यने वरदामतिरवक्तमारस्य वेषस्य अद्वाक्षित्राए महामहिसाए विज्ञाताए समानीए

भाउह्घरसालाओ पिडणिक्यमइ २ ता अतिलिक्खपिडवण्णे जाव पृरते चेव अवर-तल उत्तरपचित्थिम दिसि पभासितत्थाभिमुहे पथाए यावि होत्था, तए णं से भरहे राया त दिव्यं चक्दरयणं जाव उत्तरपचितथम दिसिं तहेव जाव पचित्यमिष्टसािममुहे पभामतित्येण लवणममुद्द ओगाहेड २ त्ता जाव से रहवरस्स कुप्परा उला जाव पीइदाण से, णवर माल मडिंड मुत्ताजालं हेमजाल कडगाणि य तुडियाणि य आभ-रणाणि य सर च णामाहयंकं प्रभामतित्थोदग च गिण्हड २ ता जाव पचित्थिमेण पभासतित्थमेराए अहण्णं देवाणुप्पियाण विमयवासी जाव पचत्थिमिहे अतवाले, सेस तहेव जाव अद्वाहिया णिव्वता ॥४८-४९॥ तए ण से दिव्वे चक्करयणे पभामतित्थ-कुमारस्स देवस्स अद्वाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउद्दघरसालाओ पिंडिणिक्खमड २ ता जाव पूरेंते चेव अवरतल सिंधूए महाणईए दाहिणिलेण कृलेण पुरिच्छम दिसि सिंधुदेवीभवणाभिमुहे पयाए यावि होत्या । तए ण से भरहे राया त दिन्व चक्करयण सिंधूए महाणडेए दाहिणिहेण कुलेण पुरितथम दिसि सिंधुढेवी-भवणाभिमुह पयाय पासइ २ ता हट्टतुट्टचित तहेव जाव जेणेव सिंधूए देवीए भवण तेणेव उवागच्छा २ ता सिंधूए देवीए भवणस्स अदूरसामते दुवालसजीय-णायाम णवजोयणविच्छिण्णं वरणगरसारिच्छं विजयख्यावारणिवेस करेइ जाव सिंघुदेवीए अद्वमभत्त पिगण्हइ २ ता पोसहसालाए पोसहिए इव वभयारी जाव दव्भसथारोवगए अद्वमभत्तिए सिंधुदेविं मणसि करेमाणे २ चिद्वइ । तए ण तस्स भरहस्स रण्णो अद्वमभत्तसि परिणममाणसि सिंधृए देवीए आसण चलह्, तए ण सा सिंधुदेवी आसण चिल्यं पासइ २ ता ओहिं पउजइ २ ता भरह रायं ओहिणा आमोएइ २ ता इमे एयारूवे अञ्मत्यिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे ममुप्प-जित्या-उप्पण्णे खलु भो ! जबुद्दीवे दीवे भरहे वासे भरहे णाम राया चाउरत-चक्कवटी, त जीयमेय तीयपञ्चपण्णमणागयाण सिंधूण देवीण भरहाण राईण उव-त्याणिय करेत्तए, त गच्छामि ण अहपि भरहस्स रण्णो उवत्याणिय करेमित्तिकट्टु क्रमद्वसहस्स रयणचित्र णाणामणिकणगरयणमत्तिचित्ताणि य दुवे कणगभद्दासणाणि य कडगाणि य तुडियाणि य जाव आभरणाणि य गेण्हइ २ ता ताए उक्किट्ठाए जाव एव वयासी-अभिजिए ण देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे अहण्णं देवाणु-प्पियाण विसयवासिणी अहण्ण देवाणुप्पियाण आणत्तिर्किकरी त पडिच्छंतु ण देवाणुष्पिया ! मम इम एयारूव पीइदाणतिकट्टु कुभट्टसहस्स रयणचित्त णाणामणिकणगकहगाणि य जाव सो चेव गमो जाव पिडविसजेइ, तए ण से भरहे राया पोसहसालाओ पटिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव जनारच्छा २ ता प्याप् स्रवयानेशाई र्गगकाई नत्याई वनरपरिक्रिए भप्पमहत्ता-भरमासम्बद्धारीरे सञ्जानसराको पश्चिमनासङ् २ ता क्रेनेव मोजबर्धान्ये तेनेन उपाय-सद २ ता भोनवर्गवर्गस सुद्दाराजवर्गए अञ्चलभत्तं परिवासिकः पत चीइ।सणवरगए पुरत्याभिमुद्दे विसीयह २ चा भद्वारस सेनिय्मसेजीओ सदाके र चा बान मद्वाद्वियाए सहासब्रिमाए रासार्गातर्थ प्रवाप्पर्गति ॥ ५ ॥ तए भी से सिनी चहरूको सिंधए वेकीए महाहिबाए सहामहिसाए निम्मत्ताए समाजीए माउहकर शामाओं तहेब काब उत्तरपुरनिक्रम विसि चेमक्रणवरामिमके प्रमाप वानि होत्या टए में से मराहे राजा जान नेनेन नेमहण्याए जैनेन नेमहरूस एक्स्यरस वाहि<sup>क्सि</sup> मिन्ने तेनेन उदायन्त्रक २ ता वेशवस्य प्रकारस वाक्रियते मिन्ने ब्रवास्पर्नेन जायामं जबबोयचनिष्ठक्रमं बरचगरसीरकं निवयसपानारणिवेसं क्रोड १ छ वन क्षेपक्रियोरकमारस्य वेकस्य सञ्जयमर्गा पमिन्द्र १ ता पोखहराकाए जल 🕬 मतिए वेसकृतिरिक्तमारं देश मजरि करेमाने २ निद्वयः तए में तस्स मरहस्य रण्यो भद्रममदीरि परिषममाणांसे वेशाबिएडमारस्स देवस्य कासूनं कका, एवं सिंड्यमी नेतम्बो पीइवार्य मामिसेकं रवनाककारे कडगानि व दुविवानि य क्यापि व बानर मानि न गेव्हर २ ता ठाए उविद्वाए जाव नहाहिये बाव प्रमाणनंति । तर में पं दिन्ने चक्दराने न्युरहियाएं महामहिमाएं निन्नताएं समाजीएं बान प्रचारिक्स हिर्दि तिमिस्पुदामिश्चद्दे प्रवाप नानि होत्ना तप में से मराहे राजा ते हिम्में कारमने बाव प्रवरिवर्ग दिसि तिमिस्ट्रांगिमुई प्रवास पास्ट २ चा इ<u>क्ट्रा</u>ंडवित बाव दिनि-सगुहाए अव्यानमेरी पुशास्त्रतीयमानामे यनशीयभविक्रिको जान स्थानस्य वेक्स्स अञ्चनभत्तं विशेषहर २ ता पोसहसाकाए पोसहिए इव वंगवा<u>णे वा</u>र कममाकर्ग देव मणीः करेमाने २ विद्वार, तथ् गं तस्त मरहस्स रभ्नो क्हुम्मरीय परिवयमाणसि कममानस्स बंबस्य आसर्ण बन्ध् सहेव बाव वेनहृगिरिङ्गारस्य यबर पीइराजं इत्वीर वयस्स शिकाबोहरी अंशकंतारै बढगायि व जाव वासरवाणि व नेम्बर २ ता तापु विविद्यापु जान सदारेड सम्मानेड स २ ता पश्चिममनेर काव मोजनार्वको राहेन सहासहिसा करमात्रस्य पनप्पनिति ॥ ५१ ॥ तर् र्ण से भरहे रामा क्यमाक्स अद्वादिनाए सहामहिमाए किन्यताए समानीर सुरोज सेवानई सहानेह १ ता एन बनासी-नच्छादि मं भी देवास्त्रियन। सिपूर सहागईए प्यत्यिमीले विक्लुवं सर्विषुसागर्विहिनेरामे समितसम्बद्धानि व कोमवैद्धि कोभवेता जम्माई वराई रक्षाई पक्ष्यितह अन्माई पठिन्याता मसेव

मानतिर्यं प्रविभक्ताहि, तस् वं से सेवावदै वस्तरस नेमा गरहे वासंमि निरमुवज्जे

महावलपरक्षमे महप्पा ओयसी तेयलक्खणजुत्ते मिलक्खुभासाविसारए चित्तचार-भासी भरहे वासिम णिक्खुडाण णिण्णाण य दुग्गमाण य दुप्पवेसाण य वियाणए अत्थसत्यकुसले रयणं सेणावई सुसेणे भरहेणं रण्णा एव युत्ते समाणे हट्टतुट्टचित्त-माणदिए जाव करयलपरिगाहियं दसणह सिरसावत्त मत्यए अजलिं करृ एवं सामी! तहति आणाए विणएण वयण पिंडसुणेड २ ता भरहस्स रण्णो अतियाओ पिंडणि-क्लमङ २ ता जेणेव सए आवासे तेणेव उवागच्छङ २ ता को डुबियपुरिसे सहावेह २ ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! आभिसेकं हत्थिरयण पडिकप्पेह हयगयरहपवर जाव चालरगिणि सेण्ण सण्णाहेहत्तिकटु जेणेव मज्जणघरे तेणेव उनागच्छः २ ता मजणघर अणुपविसः २ ता ण्हाए सण्णद्भवद्भविम्मयकवए उप्पी-लियमरामणपट्टिए पिणद्धरोनिज्ञवद्धभाविद्धविमलवर्ग्विधपट्टे गहियाउद्दृप्पहरणे अणे-गगणणायगद्डणायग जाव सिद्धं सपरिवुढे सकोरंटमहृदामेण छत्तेणं धरिज्ञमाणेणं मगलजय रनद्कयालीए मज्जणघराओ पडिणिक्समइ २ ता जेणेव वाहिरिया उवद्वा-णसाला जेणेव आमिसेके हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ २ ता आभिसेक हत्थिरयणं हुरूढे । तए ण से मुसेणे सेणावई हत्थिखधवरगए सकोरंटमह्नदामेण छत्तेण धरिज्ज-माणेण हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सार्दे सपरिवृडे महयास-डचडगरपह्गरवदपरिक्खिते महया उिकद्विसीहणायवोलकलकलसहेण समुद्दरवभूय पिव करेमाणे सिव्वह्वीए सन्वजुईए सन्ववलेणं जाव निम्घोसनाइएण जेणेव सिंधू महाणई तेणेव उवागच्छइ २ ता चम्मरयणं परामुसइ, तए ण त सिरिवच्छसरिसरूव मुत्ततारद्धचंदचित्त अयलमकप अमेजकवय जत सलिलाम्च सागरेम्च य उत्तरण दिव्य चम्मरयण सणसत्तरसाइ सव्वधण्णाई जत्य रोहति एगदिवसेण वावियाइ, वास णाऊण चक्कवट्टिणा परामुद्धे दिव्वे चम्मरयणे दुवालस जोयणाइ तिरियं पिनत्यरइ तत्य साहियाइ, तए ण से दिन्ने चम्मरयणे सुसेणमेणानइणा परामुद्धे समाणे विष्पामेव णावाभूए जाए यावि होत्या, तए ण से सुसेणे सेणावई सखधा-वारवलवाहणे णावाभूयं चम्मरयण दुरूहद् २ ता सिंधु महाणइ विमलजलतुगवीई णानाभूएण चम्मरयणेण सवलवाहणे ससेणे समुत्तिण्णे, तओ महाणइमुत्तरित्तु सिंधु अप्पडिहयसासणे सेणावई किहनि गामागरणगरपन्वयाणि खेडकन्बडमडवाणि पष्टणाणि सिंहलए बब्बरए य सन्व च अगलोय वलायालोय च परमरम्म जवण-रीव च पवरमणिरयणकणगकोसागारसमिद्ध आरबए रोमए य अलसङिवसयवासी य पिक्खरे कालमुद्दे जोणए य उत्तरवेयष्ट्रसियाओ य मेच्छजाई बहुप्पगारा दाहिणअवरेण जाव सिंधुसागरंतोसि सन्वपनरकच्छ च ओअवेऊण पडिणियसो

५०२ सुचामते [संबुद्धियन्तर्गते बहुधसरमिके य सूमिमाने एसा कन्क्रस्स सुहमिशको ताहे ते क्षावधान कथान परमाण व ज व तहि सामिया पसूना आगरतहे व नीककत्वे व परमहो व स्मे बेगुन गहुहाई सामरणार्थिय सुस्तानि व रह्मानि सन्तर्भावि सन्

च जे नरेंद्रे राजारिई के च इच्छिक्कों एव सेगावहरस उपलेखि मस्वयक्तवसिद्धा

पुणरति बारान बीजकि सस्पर्वेसि पणमा तुबसे अम्बेटरण सामिया वेदर्य व सर्वेन गवा मो हुन्मं विस्त्रमासियोति निजय जंपसाणा धेणाज्यका खडारिष्टं रुपिन सकारित विसंज्ञिका विकास संगाणि वगराचि पहचानि कवप्रक्रिया लाहे छेनानी समिजनो चतुन पाडुकाई आमरजानि भूसयाचि रक्ष्यानि व पुचरति है सिंडुनी मधेजं रातिको अवहसासमक्के सहैव भरत्रस्य रण्यो विवेदह विकेशा व मन्नि निता य पाइकाई सक्करियसम्मानिए सहरिसे निसम्बद्ध सर्ग प्रवादवसहमए, वर न प्रतेने रेजानई जाए जिमिस्<u>शत</u>त्तरागए समाणे जान सरसगोरीसर्वस्त्रति क्तान्यसरीरे सच्च पासन्वरमप् पुत्रमाणेल् सुरुगमत्वपृत्ति वर्तसर्वकेले बारप्र बर्पस्थीसंप्रतते हैं उदलक्षिक्रमाने २ वदगिक्षमाणे २ उदलाखि( स्ति )क्रमाने १ सहया इनगञ्जीवनहः वर्षतीनस्त्रतासन्तिवयमणस्त्रदंगपद्भाष्यस्वत्वेणं हते धर्<sup>धीः</sup> सरसङ्बर्गेचे पंचविद्वे मालुरसए काममोगे संबनाये विरुद्ध ॥ ५२ ॥ हर् वं से मरहे राजा करणाजा कनाइ प्रक्षेण सेणाव्ह सहावेह २ ता एवं वनायी-गच्छ गं जिप्पासेन मा बंबागुप्पिया । विमित्रगुदाप् वाहिषिश्वस्स दुवारस्य व्याहे विश्वादेशि २ ता सम एवमायवियं प्रवास्थिनाहिति वयु व से छ्येने सेवार्वा मर्सेन रण्या एवं बुत्ते समाने इष्टतक्रितमार्थविए जान करनक्रपरिमाहियं सिरसानते मत्नप् अवसि कडू बाब परिसुणेष २ ता मस्तुरस रूगो अतिवाको परिविक्समध् २ ता वेचेन एए आनासे जेणेन पोसहसामा तेणेन उनामका १ ता हमासेनारमें संब रह कान कनमाकस्य बेक्स्स महमानां पशिन्द्द पोसद्वसामाय पोसद्विय हर केर्ड-यारी आव अद्भारतीर परिजयमार्गास पोसब्साकाको पविकित्तकस्य १ शा केरेल समानारे तेनेन चनायक्तम् १ ता काप् प्रक्रप्यानेसाई संपक्षाई नत्नाई पनरप रिहिए कप्पाइत्याभरकालेकियसर्थि सम्बन्धराको पविश्वित्वसङ् ३ ता क्षेत्र विभिक्तपुर वाविकारस बुवारस क्यावा तेणेन पहारेख समणाए, हए व तस्स प्ररोणस्य सेवाकास्य वहवे रावैसरतक्ष्यरगार्वविय जाव सस्पवाहप्यमिवनी प्रश्नेन रेजानई पिट्टको २ व्यक्तपत्रकारि तप् न तस्य प्रशेनस्य रेजानहस्य वहरेन् क्यामो निकार्याको वाम इंकिनविदियपत्थियविद्याविद्याको विटवकुरकामो निर्धाताओं बास शहरान्वांति । तए एं से सूरोजे रीजानई सम्बद्धीए सन्वर्धार

जाव णिग्घोसणाइएण जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिह्नस्स दुवारस्स कवाडा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता दहरयण परामुसइ, तए ण त दहरयण पंचलइयं वहरसारमइय विणासण सन्वसत्तुसेण्णाण खघावारे णरवइस्स गृहद्रिविसमपन्भारगिरिवरपवायाणं समीकरण सतिकरं सुभकर हियकर रण्णो हियइच्छियमणोरहपूरग दिव्वमप्पडिहय दडरयणं गहाय सत्तद्व पयाइं पचोसकइ पचोसिकता तिमिस्सगुहाए दाहिणिह्रस्स दुवारस्स क्वाडे दंडरयणेण महया २ सद्देण तिक्खतो आउडेइ, तए ण तिमिसगु-हाए दाहिणिह्नस्स दुवारस्स कवाडा स्रुसेणसेणावइणा दंडरयणेण महया २ सद्देणं तिखत्तो आउडिया समाणा महया २ सद्देण कोंचारव करेमाणा सरसरस्स सगाइ २ ठाणाइ पचोसिक्तरया, तए णं से सुसेणे सेणावई तिमिसगुहाए दाहिणिहस्स इवारस्स कवाडे विहाडेइ २ ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ २ ता जाव भरह राय कर्यलपरिग्गहिय जएण विजएण वद्धावेइ २ ता एव वयासी-विहाडिया ण देवाणुप्पिया । तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा एयण्णं देवाणुप्पियाण पिय णिवेएमि पिय मे भवड, तए ण से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अतिए एयमड सोचा निसम्म हहतुङ्घित्तमाणंदिए जाव हियए सुसेण सेणावई सक्कारेइ सम्मा-णेइ सकारिता सम्माणिता कोर्डुंबियपुरिसे सहावेइ २ ता एव वयासी-खिप्पामेव मो देवाणुप्पिया ! आभिसेक इत्थिरयण पिंडकप्पेह हयगयरहपवर तहेव जाव अजण-गिरिकूडमण्णिभ गयवर णरवई दुरूढे ॥ ५३ ॥ तए णं से भरहे राया मणिरयणं परा-सुसइ तोत चउरगुरुप्पमाणमित्त च अणग्घ तसिय छलस अणोवमजुइ दिव्वं मणिरयण-पइसम वेरुलिय सन्वभूयकत जेण य मुद्धागएण दुक्खं ण किचि जाव हवइ आरोग्गे य सन्वकालं तेरिच्छियदेवमाणुसकया य उवसम्मा सन्वे ण करेंति तस्स दुक्ख, समा-मेऽवि असत्यवज्झो होइ णरो मणिवरं घरेंतो ठियजोव्वणकेसअवद्वियणहो हवइ य सव्वभयविष्पमुको, त मणिरयण गहाय से णरवई हत्थिरयणस्स दाहिणिह्राए कुमीए णिक्खिवइ, तए ण से भरहाहिवे णिरंदे हारोत्ययसुकयरइयवच्छे जाव अमरवइ-सिण्णभाए इङ्घीए पहियकित्ती मणिरयणकउजोए चक्करयणदेसियमग्गे अणेगरायसह-स्ताणुयायमग्गे महया उक्किद्विसीहणायवोलकलकलर्वणं समुद्रवभूय पिव करेमाणे जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तिमिसगुह दाहि-णिहेण दुवारेण अईइ सिक्व मेहघयारणिवह । तए णं से भरहे राया छत्तल दुवा-लससिय अट्टकण्णिय अहिगरणिसिठिय अट्टसोवण्णिय कागणिरयण परामुसङ । तए ण त चउरगुरुप्पमाणमित्त अद्वसुवण्ण च विसहरण अउरु चउरससठाणसठिय समतल माणुम्माणजोगा जस्रो लोगे चरति सन्वजणपण्णवगा, ण इव चदो ण इव

मान**रुत्तं दुवालसन्येयणा**ई तस्य छेमाउ निवर्डृति हिमिरविगरपडिसेहियाओ र्राहे <sup>ब</sup> रामराज संपादारे करेड़ आकोर्य दिवसभूनं अस्य प्रमावेण चवार्याः तिमिन्तर अर्देद रोज्यसदिए अमिलेली विज्यसद्भरतं रायवरे कायणि गहास विभिन्द्रसम् पुरस्किमिक्रकतिमारेम् भवरम् बोदर्गतिसाई पंचधनुसदमिस्स्माई योगनुष्टे कराई चक्रणेमीसंठियक् चंद्रमंडसपडिविधासाई एगूलपर्ल्य मण्डातं आस्ट्रमाने र अनुप्रविसद्, तए में सा तिमिसगुहा भरहंचे एव्या तंहीं ओवर्नेतरेएहीं आव गान्डें जोनकरेड्ड एगुणपञ्चाए मैडकेड माठिडिजनाचेड २ विष्णामेव मान्येगम्बा उनी यम्या विवसमया कावा वावि होत्वा ॥ ५४ ॥ तीसे वं विभिस्तास्य बहमज्यवसम्ब एरन न उम्मानाविमानाकमाओं जाम हुने महायहैओ पञ्चलाओं पाओं में ठिनिन प्रकार पुरन्धिमित्राओं भितिकत्यामो पर्वाओं समाजीओं प्रवस्थिमने सिंधुं सही-थाई समर्पेति से केपड्रेचं मंते । एव वुषाइ-सम्माणिमस्यवसाओ महाजहने भीयमा । जन्म उम्मामाञ्चलप् महाजहेप् तमे वा पर्ता वा बहुं वा सहरे वा आसे व इत्बी ना रहे ना जोड़े ना मज़रसे ना पविश्वापक राज्यं उम्मासम्बद्धा महानई निक्चाये भाडुनिय २ एगंदे नर्मसि एडेड, जन्मे जिसलाकसए सहानर्द्रए तथे वा पर्च क 👫 था सक्षरे या बाब न्युस्से वा पनिचायह तक्त्रं विमन्यवस्य महाजर्द तिश्वतो अर्थ यिय २ जंदो क्यंदि जिसमानेह, से देशद्वेर्य गोवसा ! एवं हुक्द-बस्समाधियन जनाओं महानईको तए वं से मरहे रामा वकरवचवेतियममे अधेमराव सहवा उदिश्विपीइमान नाम करेमामे सिंबुए महामईए पुरन्धिमीको मुकेन समेन उम्म म्मबन्म महानई देनेव उवाभक्तक १ वा बहुद्दराचे स्वाबेद १ वा एव ववासी-बिप्पामेव मो देवागुप्पिया । सम्मागविष्यसम्बद्धम् महाश्रद्धेम् अपेतवासस्य<sup>मान</sup> विद्वे अवस्थाकी क्षेत्रेजकाए सार्वनणवाद्वाए सम्बर्गयामए स्वरंकम वरेहि वरेख सम एवमाजरियं किञ्चामेत्र पत्राणियाहि, राए वं से बहुदरवने मरहेत्रं रच्या एवं कुते समाये हतुरुद्वविद्यमार्णदिए जान निजएच पडिसुनेह २ ता किप्पामेन ठम्मान विगमगजसाम् महावर्षम् अनेगर्वमस्यसम्बद्धिः बाव महसक्ये करेर २ ता वेवव भरहे रामा रोजेन उदागच्छक् २ ता जान एनमायतियं एकप्पिनद्र, तर् नं से मरहे राना सर्वामानारमञ्ज्ञ सम्मान्यविमागमनामो महानाँमो तेहि समेगार्वमसम्बस्तिन द्वेहि बाब सङ्ग्रेषमोहि उत्तरह, तप् नं वीचे शिमिस्सगुहाप् उत्तरिकस्य बुबारसः क्वाडा सम्मेन मह्या २ कॉनारनं करेमाणा धरसरस्य स्पार्व २ ठावातं प्रवोसहित्ना ॥ भी रोम कालेमी रोज समएन उत्तरबुसरहे वासे बहुवे जावाडा बामी विडावा पी.

वसति अद्गा दित्ता वित्ता विच्छिण्णविज्ञलभवणसयणासणजाणवाहणाङ्ण्णा वहुधण-वहुजायरुवरयया आओगपओगसपउत्ता विच्छद्द्रियपउरभत्तपाणा वहुदासीदासगो-महिसगबेलगप्पभृया बहुजणस्स अपरिभूया सूरा वीरा विकंता विच्छिण्णविउल्यल-वाहणा वहुन्नु समरसपराएमु लद्धलक्या यावि होत्था, तए ण तेसिमावाडचिलायाण अण्णया क्याई विसयसि वहूइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भवित्था, तजहा—अकारे गिज्जर्य अकाले विज्ञुया अकाले पायवा पुष्फति अभिक्खणं २ आगासे देवयाओ णचंति, तए ण ते आवाडिचिलाया विसयसि वहुँ उप्पाडियसयाइ पाउँ भूयाई पासित पासिता अण्णमण्ण सद्दाविति २ त्ता एवं वयासी-एव राखु देवाणुप्पिया । अम्हं विमयसि वहूड उप्पाइयसयाइ पाउच्भृयाइ तजहा-अकाले गजियं अकाले विज्या अकाले पायवा पुष्फिति असिक्खण २ आगासे देवयाओ णचति, त ण णजह णं देवाणु-प्पिया। अम्ह विसयस्स के मन्ने उवद्दे भविस्सर्वत्तिकट्ट ओहयमणसकप्पा चिंतासोग-सागरं पिनद्वा कर्यलपल्हृत्यमुहा अङ्ज्झाणोवगया भूमिगयदिद्विया झियायंति, तए ण से भरहे राया चक्करयणदेखियमग्गे जाव समुद्दरवभृय पिव करैमाणे तिमिस-गुहाओ उत्तरिहेण दारेणं जीइ सिवव मेहघयारणिवहा, तए ण ते आवाडचिलाया भरहस्स रण्णो अग्गाणीय एजमाण पासति २ ता आसुरुता रुद्वा चिडिक्वया कुविया मिसिमिसेमाणा अण्णमण्ण सहावेंति २ ता एवं वयासी-एस ण देवाणु िपया ! केइ अपित्ययपत्थए दुरतपतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्दे हिरिसिरिपरिविज्जिए जे ण अम्ह विसयस्स उवरिं विरिएण हव्यमागच्छइ त तहा ण घत्तामो देवाणुप्पिया ! जहा ण एस अम्ह विसयस्स उविर विरिएणं णो हव्बमागच्छइत्तिक्हु अण्णमण्णस्स अतिए एयम्ड पिंडसुणेति २ ता सण्णद्भवद्भविम्मयकवया उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्भगे-विजा वद्धभाविद्धविमलवरार्चिथपद्य गहियाउहप्पहरणा जेणेव भरहस्स रण्णो अग्गा-णीय तेणेव उवागच्छंति २ त्ता भरहस्स रण्णो अग्गाणीएण सिद्धं सपलग्गा यावि होत्या, तए ण ते आवाडचिलाया भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं हयमहियपवरवीर-घाइयविवडियर्चिधद्वयपडाग किच्छप्पाणोक्गय दिसोदिसिं पिट्टसेहिति ॥ ५६॥ तए ण से सेणावलस्स णेया वेढो जाव भरहस्म रण्णो अग्गाणीय आवाडचिलाएहिं ह्यमहियपनरवीर जान दिसोदिसिं पिडसेहिय पासइ २ ता आसुरुत्ते रुद्धे चिटिक्किए कुविए मिसिमिसेमाणे कमलामेल आसरयण दुरूहइ २ ता तए ण तं असीइमगुल-मृत्तिय णवणडङ्मगुलपरिणाह अद्वसयमगुलमायय बत्तीसमगुलमृत्तियसिर चडरंगुल-कण्णाग वीसङ्अगुलवाहाग चउरंगुलजाणूक सोलसअगुलजघाग चउरगुलमूसियखुरं सुनोलीसवत्तवलियमञ्झ ईर्सि सगुलपणयपद्व सणयपद्व सगयपद्व सुनायपद्व पसत्य-

404

पद्वं निसिद्वपृष्ट् एषी माणुष्यमधिरवयवद्यपद्वः वितासम्बद्धाविवासमञ्जूषामपद्वारपरिवन्तिः येगे राजिक ज्ञासार गाहिकाले वरक जगहारक यासगविकार ज्ञास राज्या के जान गविका गपनरयणानासिङ्गेरिकाकासमुत्तिकाकाळपृष्टि परिमडिएवं प्रोप शोममानेन धोममाने क्षेत्रगाईदणीयमरगयमसारगद्भाव संग्रनहान आविद्यमानिद्यक्तगविभृतिर्यं क्ष्यानं सपरसारच्याच्यात्रे केवस्त्रवियापियं प्रत्यारिद्यात्रवयोग्यायमं श्रुवयं ब्रुज्यमायरेन्याः द्वामरामेळा वरेंते क्वाब्यवाहं कामेक्वमणं कोकाशिक्वहरूप<del>राक्तक</del>ं स्वावर<sup>क्षक</sup>ं कमगतनियद्यविकारासुनीहासयै विरिवासिसेयकोण पोलकारपत्तसिव सक्तिकितुन्ते अवचर्त नेनासस्रीरं जोवनावर्गपरिन्याययो विव विसीधमार्थ १ वरणस्मानगर्<del>ष</del> देहिं परितर्क मनिद्यामार्थ २ होति न पक्की बसपसमर्ग सुद्दाको विकिमानी व सिम्बराय सुणाक्यंतुत्रदगमवि थिरसाय पद्धवंदी बाह्युक्तदवरमावासम्बर्धास्थारमी वत्तरमिद्धद्वभारतयं सङ्करपस्यं मेहानिमहबन्नियारं शतुक्त<u>त्त्रकस्य</u>नासम्बेद<sup>म्</sup>र च्छनि प्रवासकारमञ्ज्ञकागरककार्याचवस्थानस्थानि इतिनिव संतिकार्य प्रतीतः मित्र प्रवस्त्यसमित्रीने उदगहुनवद्यासालपंगुक्तसस्त्रकारसम्बद्धस्तर स्वयमिस्पर क्मार्गिरिक्रोसुक्रेक्गपिक्रणित्वार्वासमस्यं सर्वक्रपादियं र्ववसत्रं क्रयेसुपारं अस् सराह्यं प काम्बेरि कियविद्गवेतनं विद्यारितदं वचकादेन महिद्दानि प्रयस्ता म्पाक्रीसस् मणामिरासं कार्यक्रमेक कार्यवं शासरवर्ण सेपावर्षं करेण समस्मिरके उनस यवस्त्रप्तामसं व रसम्बद्धंत्रसम्बद्धं शतुस्त्रमनिणात्वर्थं कागरवनमंत्रं कामानिन्द<sup>ार्</sup> प्ररहिर्गर्षि नाजामनिक्रममधिनितं न पहोत्रमिसिसिसिसिस्टिक्सवारं दिस्सं समारान्यं छोप् अमोक्मार्थ तं च पुणो वंस्रकारासिंगद्वितंत्रकासावसमित्रसकोहदंदवनरकारमे बाद सम्बत्यसप्पविद्वं कि पुत्र देहेतु वंगमान गाहा-पन्मासंगुस्दीहो खेलस है मगुमारं विकिल्यो । मर्बणुमसोणीको सेहुपगायो कसी प्रविक्षे त १ ॥ असि यर्च भरनहस्स इत्यामो त गहिजन मैणेन मानावनिसम्या तेमेन वनामकार १ ती भावाङभिस्मए**ड** सर्वि संगम्ममे शानि होत्वा । सप् व से मुसेने सेवार्यः क्ष भावाद्रविकाए इसमहिसम्बर्गार्गाह्म जान विद्योदिम् विदेवेदे ॥ ५० ॥ तर् न स आवाडनियाया ग्रसेनसेनावह्या इवसद्विय बात परिधेद्विया समाधा धीवा तत्या महिना उष्मिम्मा धजावमना अस्त्रामा अन्ता भनीरिया अपुरियत्रारमहरूना अमारमिजमितिषर् अनेगार् योगमार् नाउपति २ ता एवनमो मिलावित २ ता क्रणेप निभू महाबद्दे तर्वव उवायच्छेति २ ता बाह्यपार्वपारए सबरेनि १ ता बात्तवार्धभारप् दुन्द्रश्चि ? या अद्भुसमक्षाद्रं परिष्द्रश्चि २ ता बाह्यसार्धवारी-बमबा उत्तानगाः कारणना अद्भगभतिया नै तर्ति कुतरेवया गहसुदा मार्ग नागः

सुत्तागमे

मारा देवा ते मणसीकरेमाणा २ चिट्टति । तए ण तेसिमावाडचिलायाण अट्टम-भत्ति परिणममाणंसि मेहमुद्दाण णागकुमाराण ढेवाण आसणाइ चलति, तए ण ते मेहसुहा णागकुमारा देवा आसणाइं चलियाइ पासति २ ता ओहिं पउजति २ ता आवाटचिलाए ओहिणा आमोएति २ त्ता अण्णमण्ण सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! जबुद्दीवे दीवे उत्तरहृभरहे वासे आवाडचिलाया सिंधूए महाणईए वालुयास्यारोवगया उत्ताणगा अवसणा अद्वमभत्तिया अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसीकरेमाणा २ चिट्ठति, त सेय खळु देवाणुप्पिया। अम्ह आवाडचिलायाण अतिए पाउच्भवित्तएत्तिकडु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ट पर्डिसुणेति पिंडसुणेता ताए उक्किट्टाए तुरियाए जाव वीड्वयमाणा २ जेणेव जबुद्दीवे दीवे उत्तर-हुभरहे वासे जेणेव सिंधू महाणई जेणेव आवाङचिलाया तेणेव उवागच्छति २ त्ता अतिलक्खपिडवण्णा सर्विखिणियाइ पंचवण्णाइ वत्थाई पवरपरिहिया ते आवाड-चिलाए एव वयासी-ह मो आवाडचिलाया! जण्णं तुब्मे देवाणुप्पिया! वालुया-चयारोवगया उत्ताणगा अवसणा अद्वमभत्तिया अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णाग-कुमारे देवे मणसीकरेमाणा २ चिट्टह तए ण अम्हे मेहमुहा णागकुमारा देवा तुब्भ इलदेवया तुम्ह अतियण्ण पाउच्भूया, त वदह ण देवाणुप्पिया! कि करेमो के व मे मणसाइए 2, तए ण ते आवाडिचलाया मेहमुहाण णागकुमाराण देवाण अतिए एयम्ड सोचा णिसम्म हट्टतुट्टचित्तमाणदिया जाव हियया उद्घाए उद्देति २ ता जेणेव मेहमुहा णागकुमारा देवा नेणेव उनागच्छति २ त्ता करयलपरिग्गहिय जाव मत्थए अजिं किं हु मेहमुहे णागकुमारे देवे जएण विजएण वद्धावेंति २ त्ता एव वयासी-एस ण देवाणुप्पिया ! केइ अपत्थियपत्थए दुरतपतलक्खणे जाव हिरिसिरिपरिवज्जिए ने ण अम्ह विसयस्स उवरिं विरिएण ह्व्यमागन्छ इ, त तहा ण घत्तेह देवाणुप्पिया। जहा ण एस अम्ह विसयस्स उवरिं निरिएण णो हव्वमागच्छइ, तए ण ते मेह्सुहा णागकुमारा देवा ते आवाङचिलाए एव वयासी-एस ण मो देवाणुप्पिया! भरहे णाम राया चाउरंतचक्वदृरी महिष्टुए महञ्जुइए जाव महासोक्खे, णो खलु एस सको केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गध-च्वेण वा सत्यप्यओगेण वा अग्गिप्पयोगेण वा मतप्पओगेण वा उद्दवित्तए पिंडसेहि-त्तए वा, तहाविय ण तुन्भ पियद्वयाए भरहस्स रण्णो उवसम्ग करेमोत्तिकट्टु तेसिं आवाडचिलायाण अतियाओ अवक्रमति २ ता वेउ व्वियसमुग्घाएण समोहणति २ ता मेहाणीय विज्ञ्वति २ ता जेणेव भरहस्स रण्णो विजयक्खधावारणिवेसे तेणेव उवागच्छति २ ता उप्पि विजयक्खधावारणिवेसस्म खिप्पामेव पतणतणायति २ त्ता ३७ मुत्ता०

प्रकार मुख्यां विश्व क्षेत्र कर विश्व क्षिप्त क्षिप्त क्षेत्र कर में स्वाप्त क्षेत्र कर में सार्व कर मार्व कर मार्व

णमुक्तरमपुरुपकत्पुराष्ट्रदेसभागं तहा तक्षिकारस्थरमतिपरिवर्वं कहितन्तिगरीरं सार्थरमध्यम्बद्धमानयविपुरूपर्वदर्गटनमाणन्यं वरिदरामप्यमनायमहस्तरपर्वं <del>उप</del>्तरं संहथकर्त रच्को संबारिम विमार्च स्रायत्रवायबुद्धिरोगाल य रायतरे तवगुर्वे <sup>झर्ड</sup>े महत्य बहुगुमदार्थं उक्रम विश्वविद्यान्त्रवाष्ट्रायं । छत्तरवर्षं वहात्रं सुरु<sup>न्हं सान</sup>ः पुरमार्थ । १ ॥ प्रमाणराङ्ग तवगुणाग प्रसेगदगभागं विमाणरासेवे हुएएएँ बरबारियमप्रशासकार्थे शारवयवतकमराययदिगर्प्यगार्थं क्रि**ब** छत्तरवर्षं स्ट्रि बहरून भरविस्तरपुण्यदेशे । तम् वं स दिम्ब छत्तरयच यरहेचं रच्या पाउँ गमान रिप्रणामर गुणानम कोबनाई परित्यर६ गाहियाई निरियं । <sup>७६ ॥</sup> नए वं से मरह रावा छनरवर्ष खपानारस्त्रारि ठपेर १ ता सविरवर्ष पास्त्रा मेडा जाब क्रमरसगरमा वन्धिमार्गान ठका शहरा य असम्बर् बाहरूने निर्माह भरममेनमन्याकित्रक्योहुमभुभागामिनक्ष्यस्थाङ्किगभिष्करक्षकारोहरसं पुंजीते हैं गुररगरामगमनमपत्र्णारस्यदास्थिगभत्रमम्लगद्वी उद्देशद्वयत्रमनुरशासियरिद्धिते बभाविक्यमध्यक्तिपायम् गुरुमणः सादापद्रश्यमि सम्बन्धमारीमृद्युते । तर् वे है याद्वावन्यस्य भरदस्य रज्यो लिह्नसम्बन्धारिकारसम्बन्धार्यः सम्बर्यनार्वं स्रोति वैमानहरूमा बन्द्रीर ताम वे में भारह राया बन्मारवागामार हे छन्य नामीरछ माण्यिमस्त्रातः गमुमायभूतम् गुर्दनृहुणं शन्त्तं परिशाद्-तारि से गुण व मिडिय मेन भये मेर विज्ञा दुवस । मरहादिस्म स्थ्या स्टेशपरस्मा । हरे ॥ १ ॥ तम् वर्ग नामा अग्रहस्य राज्यो साम्यकार परिण्यानामा । इध्यक्ति मार्भामप् निर्देश विषय सवागण संवाये समुग्यामणा-वेस वं आ ! अपीपर-पापन् दुरेन्द्रोन्डक्रमाने बान् परिचित्रम् या वर्षे समें इसार त्यान्या प्राप

क्षमिसमण्णागयाए उपि विजयखंघावारस्स जुगमुसलमुद्धि जाव वास वासइ । तए णं तस्स भरहस्स रण्णो इमेयारूवं अन्मत्थिय चितियं पत्थियं मणोगय सकप्पं समुप्पण्णं जाणिता सोलस देवसहस्सा सण्णिज्झिड पवत्ता यावि होत्या, तए ण ते देवा सण्णद्भबद्भवस्मियकवया जाव गहियाउहप्पहरणा जेणेव ते मेहमुहा णाग-कुमारा देवा तेणेव उवागच्छति २ त्ता मेहमुहे णागकुमारे देवे एवं वयासी-हं भो मेहमुहा णागकुमारा देवा! अपत्थियपत्थगा जाव परिवर्जिया किण्ण तुब्से ण जाणह भरह राय चाउरंतचकविं महिब्हियं जाव उद्वित्तए वा पिंडसेहित्तए वा तहा वि ण तुब्मे भरहस्स रण्णो विजयखंघावारस्स उप्पि जुगमुसलसुद्विप्प-माणमिताहिं धाराहिं ओघमेघ सत्तरत्त वास वासह, त एवमवि गए इत्तो खिप्पा-मेव अवक्रमह अहव ण अज्ज पासह चित्त जीवलोगं, तए णं ते मेहमुहा णाग-कुमारा देवा तेहिं देवेहिं एवं बुत्ता समाणा मीया तत्या वहिया उव्विगगा सजाय-भया मेहाणीय पडिसाहरंति २ ता जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छति २ ता आवाडचिलाए एव वयासी-एस ण देवाणुप्पिया! भरहे राया महिङ्किए जाव णो खलु एस सक्को केणइ देवेण वा जाव अग्गिप्पओगेण वा जाव उद्दवित्तए वा पिड-सेहित्तए वा तहावि य णं अम्हेहिं देवाणुप्पिया ! तुब्भ पियद्वयाए भरहस्स रण्णो उवसम्मे कए, त गच्छह ण तुन्मे देवाणुप्पिया ! ण्हाया उल्लपहसाडमा ओचूलमणि-यच्छा अग्गाइ वराइ रयणाइ गहाय पजलिउडा पायविडया भरहं रायाण सरण उवेह, पणिवइयवच्छला खलु उत्तमपुरिसा णित्य मे भरहस्स रण्णो अतियाओ भय-सितिकहु एव वडत्ता जामेव दिसिं पाउच्भूया तामेव दिसिं पडिगया। तए ण ते आवाडचिलाया मेहमुहेहिं णागकुमारेहिं देवेहिं एव वुत्ता समाणा उद्घाए उद्वेति २ ता ण्हाया उल्लपडसाडगा ओचूलगणियच्छा अग्गाइ वराइ रयणाइ गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति २ त्ता करयलपरिग्गहिय जाव मत्थए अजिलं क्ट्रु भरह राय जएण विजएण वद्धाविति २ ता अग्गाङ वराइ स्यणाइ उवणिति २ ता एव वयासी-वसुहर गुणहर जयहर, हिरिसिरिधीकित्तिधारगणरिंद । लक्खणसह-स्सागरम रायमिद् मे चिर धारे ॥ १ ॥ हयवइ गयवड मरवइ णविमहिवइ भरह-वासपटमवर्दे । वत्तीमजणवयसहस्सराय सामी चिर जीव ॥ २ ॥ पढमणरीमर ईसर हियर्डेमर महिलियासहस्साण । देवसयसाहसीसर चोद्दसरयणीसर जससी ॥ ३॥ सागरिगरिगराग उत्तरवाईणमभिजिय तुमए । ता अम्हे देवाणुप्पियस्य विसए परि-वसामो ॥ ४ ॥ अहो णं डेवाणुप्पियाण इन्ही जुई जसे वले वीरिए पुरिसकारपर-षमे दिच्चा देवजुई दिन्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, त दिहा ण देवा-

चं देतामुप्पिया ! दशुसराहंति मं देवाणुप्पिया ! महः भुज्ये २ एवंडरकमाएतिर[ पैबन्निटका पावबक्षिया सर्वा राज्यं सर्वं स्वविति । तए वं से सर्वे एना वैसि जानावनिकायानं कामाई वरतं रचवाई पविच्छा २ शा वे आनावनिकार एव बमारी-गच्छद में मो तुक्से समें बाहुच्छावापरिस्महिया विकास किरिक्तिक **ग्रहशक्षेत्रं** परिवसक, व्यरिय में क्लोबि संयमस्वितिकह सकारेह सम्मानेह सकारेण सम्मानेता पश्चिमक्ता । तत् ने से भरहे राजा धरोने सेनाका सहावेद २ त सं वयाची--गच्छादि वे मो देवालुणिया । दोबंपि सिव्यु महानर्द्रेप प्रविक्त निक्बड ससिपुरामर्गिरिनेराणं समितसमिक्बडाणि व श्रोठवेदि १ ता सम्मर् वराई रजनाई पविच्छाहि १ ता सम एक्साजतिय विध्यानेक प्रचयिकाहि <sup>वहा</sup> बाहिजिक्स्स कोञनर्ण तहा समर्थ शामिकम्पं जाब प्रबल्धनकराने निहरद् ॥ ६९ व तए जं दिव्ये पद्धरवने कव्यावा क्याह माउहकरसाकाओ पहित्यसम्बद्ध र व र्मत<del>विन स</del>पश्चिको बाद उत्तरपुरव्छिमं दिस्ति शुक्रक्षिमवत्तक्ष्मवासिसुद्दे प्रवाप वामि होत्या तए में से मर्रोह रामा ते दिव्यं चटरपर्थ जाव सुरुद्दिमनेत्यास्वरप न्त्रमस्य **अव्य**क्षामतं वुवानसःवीययायाम् वात वुद्धक्षिमवंत्रियदिकुमारस्य वेवस्य अहममत्त प्रमिष्ट्रः, तहेव बहा मामहतित्वस्य जाव सम्बद्धमूर्यं पित वरेगा<sup>ह</sup> सत्तरदिशामिमु**हे जे**लेन पुरुष्टिमर्नाजनायहरफनए तेलेन श्वामक्का २ ता प्राप्टि सर्वेठनासहरमन्त्रमं विश्वको रहयिरेणं कुसह कुरिता हरए। निरिन्दर सिविविधी राहेन जान भारतकण्यासय च काराज रा<u>ष्ट्रम</u>्यारे इसामि दनमानि राष मानीम से नरवर्ष भाव सम्में में ते निसमवासितिकह सक् नेहार उसे मिटिए परिगरिक्सिरिस्माजी बाब तए वं से सरे भरहेब रूका सब बहार किस्ते समित खिप्पानेन वावतारि जीववाई गंता कुविमवस्त्रिमिकमारस्य देवस्य मेराए 🗺 इए, तए गं से चुक्रक्रिमक्तनिरिक्तमारे देने मेराए सरे व्यवहर्ग पास्टर १ ता नाउँ क्ते रहे बाद पीख़ाण सम्बोधर्षि सक गोसीसर्वदर्ध व व्ययापि वाद दहोंदे व गेक्ट ॰ ता ताए उक्तिप्ताए जाव उत्तरेण जुलक्षिमनंत्रियरिमेराए बदाव्यं देवार्ट पिमाण मिसक्वासी जान कहण्यं वेनानुष्यिमाण उत्तरिक्ने सरमार्के बान परिक्रिया केंद्र ॥ ६९ ॥ तस् मं से मरहे राजा द्वारण विभिन्नह १ ला खं पराजीह १ स जेनेन जसहरूके तेथेन सनामध्यम् १ ता बसहरूक पन्नमं तिनक्ती राशिर्ण कुरात् २ ता द्वारए निगिन्द्द २ चा रह उनेह २ ता इन्तर्क दुवासमधिन अद्वर्ष िनमं बाह्यगरियस्टियं सोबन्गिनं कामणिरननं परामुख्य र ता उसमनूबस्य

पव्वयस्स पुरित्थिमिहसि कडगिस णामगं आउडेइ-ओसप्पिणीइमीसे तइयाऍ समाइ पच्छिमे भाए। अहमसि चक्कवटी भरहो इय नामधिजेणं॥ १ ॥ अहमसि पढमराया अहय भरहाहिबो णरवरिंदो । णित्थ मह पिंडसत्त् जियं मए भारह वास ॥ २ ॥ तिक्टु णामग आउडेइ णामग आउडिता रह परावतेइ २ ता जेणेव विजयखधावा रणिवेसे जेणेव वाहिरिया उवहाणसाला तेणेव उवागच्छः २ ता जाव चुछहिम-वतिगिरिकुमारस्स देवस्स अद्वाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघ-रसालाओ पिडणिक्खमइ २ ता जाव दाहिणदिसि वेयड्डपव्वयाभिमुहे पयाए यावि होत्या ॥ ६३ ॥ तए ण से भरहे राया त दिव्य चक्करयण जान वेयद्वुस्स पव्य-यसा उत्तरिहे णियचे तेणेव उवागच्छा २ ता वेयद्वस्स पव्वयस्स उत्तरिहे णियंबे दुवालसजोयणायाम जाव पोसहसाल अणुपविसइ जाव णिमविणमीण विज्जाहरराईण अट्टमभत्त पगिण्हइ २ ता पोसहसालाए जाव णमिविणमिविजाहररायाणो मणसी-करेमाणे २ चिट्टइ, तए ण तस्स भरहस्स रण्णो अद्वमभत्तंसि परिणममाणसि णिन-विणमीविजाहररायाणो दिन्वाए मईए चोइयमई अण्णमण्णस्स अतियं पाउन्भ-वित २ ता एवं वयासी-उप्पण्णे खलु भो देवाणुप्पिया! जबुद्दीवे दीवे भरहे वासे भरहे राया चाउरतचक्कवटी तं जीयमेय तीयपच्चुप्पण्णमणागयाण विज्ञाहरराईण चक्कवट्टीण उनत्थाणियं करेताए, तं गच्छामो ण देवाणुप्पिया! अम्हेवि भरहस्स रण्णो उवत्याणिय करेमोत्तिक्टु विणमी णाऊण चक्कविंट दिव्वाए मईए चोइयमई माणु-म्माणप्पमाणजुत्त तेयस्सि रूवलक्खणजुत्त ठियजुव्वणकेसवद्वियणह इच्छियसीउ-ष्ह्रभासजुत्त-तिसु तणुय तिसु तब तिवठीगङ्डण्णयं तिगंभीर । तिसु कार्ल तिसु सेयं तियायय तिद्ध य विच्छिण्णं ॥ १ ॥ समसरीर भरहे वास्तमि सञ्चमहिलप्पहाण सुद-रयणजहणवरकरचलणणयणसिरसिजदसणजणहिययरमणमणहरिं सिंगारागार जाव जुनोवयारकुसल अमरवहूणं सुरूवं रूवेण अणुहरतिं सुभद्द भद्दमि जोव्वणे वद्दमाणि रत्यीरयण णमी य रयणाणि य कडगाणि य तुडियाणि य गेण्हइ २ ता ताए उक्किहाए तुरियाए जाव उद्ध्याए विजाहरगईए जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति २ ता अतिलिक्सपिडविण्णा सर्विखिणियाइ आव जएण विजएण वद्धार्वेति २ ता **एवं** वसासी-अभिजिए णं देवाणुष्पिया! जाव अम्हे देवाणुष्पियाणं आणत्तिकिंकरा इतिक्ट तं पिडन्छतु ण देवाणुष्पिया। अम्ह इस जाव विणमी इत्थीरयण णमी रयणाणि० समप्पेइ। तए ण से भरहे राया जान पढिनिसज्जेइ २ ता पोसहसालाओ पढिणिक्ख-मइ २ ता मजणघरं अणुपविसइ २ ता भोयणमङचे जाव णिमविणमीण विज्ञाहर-राईण अट्टाहियमहामहिमा, तए ण से दिन्ने चक्करयणे आउहघरसालाओ पिडणि-

सुत्तागमे [ र्जनुदीवपन्यत्ती जुम्पियान हन्नी एवं चेव जान अभिसमन्यागए, वं शामेमु वं देवाणुप्पिता ! वर्मद्व र्ण देवालुध्यता ! शतुमरहंति यं देवालुध्यमा । याह भुजो १ एवंकरनवाएत्तिक पंत्रकितका पायवकिया भरते रागे धरण धर्मिति । तए ण से भरते रामा देखिं मानाविक्यानाम अस्माई नराई रसपाई पविष्णव २ ता ते बानाविक्याए एवं बबासी-राय्यक्ष वं मो तुब्भे समें बाहुच्छायापरिगादिया विष्यामा पिरुव्यिया

46

प्रश्नंत्रहेभं परिकाद, जरिय में क्लोबि सबसरियचिक्क एकारेड सम्मानेट सहारेता सम्मानेता पडिनिसमेद । तर् नं से भरहे राथा ससेन सेवावर सहावेर २ ता एवं विश्वात सर्सिक्सागर्गिरिमेरार्गं समविसमनिक्बात्राचि व ओमवेदि २ ता सम्माई बराई रक्नई पटिकाहि ९ चा सस पुस्तानतिस शिकासेंव क्विप्पासे क्विपासे वाहिमिक्स ओजवर्ग वहा सम्में गामिक्म बाद पर्यक्रमदमाणे विद्वस् । ६९ त तए में दिन्ने बहरपणे कण्यमा क्याह भाउह्नपरशासको पश्चिमान्सम्ब २ ता कंटरिजनापनिकने जान उत्तरपुरस्थिनं विधि पुत्रक्षिमर्वतपन्यगरिसाहे प्यार नानि होत्या थए ज से भरहे राजा ते दिव्यं चहरपर्य जाव चुक्रहिमनंतनासहरन-म्मयस्य भदरधानंते दुवान्यज्ञोकपावानं वात पुत्रक्षिमवंत्तमिदिवुमारस्य देवस्य अद्रमभत्त प्रिवह, उद्देव बहा मान्हतिस्वस्य बाद समहरवस्य पित करेमाचे उत्तरिसामिम् हे जेनेव जुल्लिक्नेतवासहरपन्यस् देनेन स्वाक्टक १ ता जुल्ली सर्वतवासक्रप्रमानं दिक्खता राष्ट्रियेनं प्रस्त् प्रश्चिता प्रस्य श्रीमिन्द्रः निमिन्द्रता तहेद जाद आनवक्षणानव च काळन त्रप्रमुवार हमानि शरकानि तत्व साजीम से मरबई जान सम्बे में वे निसंबनासितिकड़ उच्च नेहास उद्धे निस्टिड परिवरनिवरियमको जान हुए च से सरे मरहेर्च रच्या स्टब्स बेहार्स किस्डे समामे बिप्पामेव बाबतारें कोयणाई यदा जुकतिमनतमिरिजमारस्य देवस्य मराए निव-इए, तए में से चुक्किमकतनिरिक्तमारे वेबे मेराए सरे विवहस पासह ? ता बाहि-रते रहे जाव पीइदार्ज सम्बोसहिं गार्ज गोसीसर्वत्व व कागाणि जाव दहोर्ग च रोज्दर २ ता ताए उनिक्षाए जान उत्तरेणं जुनसिम्मतिनिरमेराए सहर्ज देवाडी प्पिताणं निसनवासी जाव व्यक्षणं वेषाणुप्पिताम उत्तरिक्के बंदनाके बाद पविनित भेद ॥ ६२ ॥ तए वं से अरहे रासा द्वरए विशिवहरू २ ता रहे परावरेंद्र २ ता क्षेत्रेव उत्तर्ष्ट्रके रोजेन उदागच्छा २ ता उत्तर्ष्ट्रक पन्तर्व दि<del>नवा</del>तो स्वितिर्व पुस्तः २ ता द्वरए नियिक्तः २ ता रहे अवेद २ ता कतम द्वनाक्सरीय *नद्व*कः क्तियं सक्षिगरविसर्दिनं सोनक्तिमं कागविरनम परासुसद् १ ता उसमङ्करा

पव्वयस्स पुरित्थमिहृति कडगित णामगं आउडेड-ओसप्पिणीइमीसे तडगाएँ समाइ पन्छिमे भाए। अहमसि चक्कवटी भरहो इय नामधिजेणं॥ १ ॥ अहमसि पढमराया अहय भरहाहिवो णरवरिंदो । णित्य मह पिंडसत्तू जिय मए मारह वास ॥ २ ॥ तिकृष्टु णामग आउडेइ णामग आउडिता रहं परावत्तेइ २ ता जेणेव विजयखधावा-रणिवेसे जेणेव वाहिरिया उवद्वाणसाला तेणेव उवागच्छ २ ता जाव चुल्लिम-वतिगिरिकुमारस्स देवस्स अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वताए समाणीए आउहघ-रसालाओ पिडणिक्खमड २ ता जाव दाहिणदिसिं वेयष्ट्रपव्वयाभिमुहे पयाए यावि होत्था ॥ ६३ ॥ तए ण से भरहे राया तं दिव्व चक्करयणं जाव वेयष्ट्रस्स पव्व-यस्स उत्तरिहे णियवे तेणेव उवागच्छः २ ता वेयद्रुस्स पव्वयस्स उत्तरिहे णियंवे दुवालसजोयणायाम जाव पोसहसाल अणुपविसइ जाव णमिविणमीणं विजाहरराईणं अद्वमभत्त पिगण्हइ २ ता पोसहसालाए जाव णिमविणमिविजाहररायाणो मणसी-करेमाणे २ चिट्ठइ, तए ण तस्स भरहस्स रण्णो अद्वममत्तिस परिणममाणिस णिम-विणमीविजाहररायाणो दिन्वाए मईए चोइयमई अण्णमण्णस्स अतिय पाउच्भ-वित २ ता एवं वयासी-उप्पण्णे खन्न भो देवाणुप्पिया! जबुद्दीवे दीवे भरहे वासे मरहे राया चाउरतचक्रवटी त जीयमेय तीयपच्चुप्पण्णमणागयाण विजाहरराईण चक्कवट्टीण उवत्थाणिय करेत्तए, त गच्छामो ण देवाणुप्पिया! अम्हेवि मरहस्स रण्णो उबत्थाणिय करेसोत्तिकृह विणमी णाऊणं चक्कविंह दिव्वाए मईए चोइयमई माणु-म्माणप्पमाणजुत्त तेयस्सि रूवलक्खणजुत्तं ठियजुव्वणकेसवद्वियणह इच्छियसीज-ण्हफासजुत्त-तिसु तणुय तिसु तव तिवलीगइउण्णयं तिगमीरं । तिसु काल तिसु सेय तियायय तिद्ध य विच्छिण्णं ॥ १ ॥ समसरीरं भरहे वास्ति सन्वमहिलपहाण संद-रथणजहणवरकरचलणणयणसिरसिजदसणजणिहययरमणमणहरिं सिंगारागार जाव जुत्तोवयारकुसल अमरवहूण सुरूव रूवेण अणुहरतिं सुमद भद्दंमि जोव्वणे वृद्धमाणि इत्थीरयण णमी य रयणाणि य कडगाणि य तुडियाणि य गेण्हइ २ त्ता ताए उक्किद्वाए दुरियाए जाव उद्ध्याए विजाहरगईए जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति २ ता अतिलेक्सपडिवण्णा सिसंखिणियाइ जाव जएण विजएण वदावेंति २ ता एवं वयासी-अभिजिए ण देवाणुप्यया ! जाव अम्हे देवाणुप्पियाण आणतिकिंकरा इतिक्ष त पिडच्छतु ण देवाणुष्पिया! अम्ह इम जाव विणमी इत्थीरयण णमी रयणाणि • समप्पेइ। तए णं से भरहे राया जाव पिडविसजेड २ ता पोसहसालाओ पिडणिक्ख-मइ २ ता मज्जणघर अणुपविसङ् २ ता ः भोयणमङ्चे जाव णमिविणमीण विजाहर-राईण अद्वाहियमहामहिमा, तए ण से दिव्वे चक्करयणे आउह्धरसालाओ पडिणि- प्रश्न प्रियामी [बंदुरीबरम्बर्ग बस्ताद बाब उत्तरपुरिवर्ग विसिं वैधावेशीममणास्मिष्ट प्रयाप मानि होत्या एवेबर सम्बा सिक्ताम्बर्मा बाब व्यवदं कुंसहसाहरतं रवणवित्तं नाणामणिकमण रूपणमणिविताणि व दुवे कम्मासीहरूणाई सेसं वेब बाब महिनारि ॥ ६४ ॥ तर् गं से विस्ते प्रवहस्वर्ग वंसाय वेशीय स्वकृतिवाय महामाहिनाए विस्ताए समागरिय सारहरूपाध्यस्य पविधित्तसमाह २ ता बाब वंसाय महानाहिए प्रश्निक्तं कर्माय

विकेणं करेकं बाहिएविधि संबच्चानगृहानिमुद्दे प्रमाय मानि होत्या तए में छे भरते रामा जान सेपेन सैकप्पनानपुदा तेपेन चनागस्य १ ता समा कनमानप-कात्मवा नेथम्या प्रवरं णङ्गाको देवे पीड्याचे से आक्रेकारेजर्मे कडगानि व सेर्स सम्बं तहेव काद क्युज़िया महाम । तए यं से भरहे राजा गृहमास्मास्य देवस्य अक्काद्वियाए म विश्वकाए धमाचीए सरीचं सेवावड स्वाबेड २ ता जान सिंबुधमो नेयन्त्रो जाव समाप महाचाँए पुरस्थिमित निक्क्ष स्थानासागरगिरिनेरार्म समित्रसम्बद्धान्य व कोमके २ ता कमायि क्रामि रक्षाम्य पविच्छ २ ता क्षेत्रेन रांमा महामार्ट रोजेन उनामकाद १ शा दोनापि शनकानावाहरूके संगा-सङ्गामई मिनसम्बर्ध्यागरीई जानासूर्य चन्नारवर्णेच उत्तरह २ ता अधेन मरहत्य रूप्यो विकस्त्रांचामारचिकेते योजेन नाहिरिया समुद्राधसासा तेचेन स्मार्ग-कड़ २ ता शामिनेकाओं इत्पिरवयाओं व्योख्यह २ ता कव्याई बर्स्ड स्वयाई राहास जैनेद सरहे रामा वेणेद स्वागच्छा १ ता करवसपरिग्यहिसे वाद सम्बर्ध कह सरहं रानं करणं विकरणं बढावेड २ ता कसाई वरहं रवजहं स्वयेद ! तुए में से मरहे राया प्रक्षेपरस सेमानइस्स समातं बरतं रक्यातं प्रक्रिक्ट र ता धुरोजं रोजानई स्कारेड सम्मानेड स २ ता पश्चिमसमेड, वर् ये से बरेचे सेनानई मरहारच राज्यो चेशीप तहेन बाम विहास, तए में से मरहे रामा अध्याम पनाई श्चरीनं सेमानदरमर्थ सहानेह १ ता एवं क्यासी-शच्छ यं तो दवायुष्पिया ! सडम-प्यवाबनाहाए उत्तरीक्रस्य दुवारस्य कवाने विहानेति २ शा वदा विभिसग्रहाए ट्या माजिनमं बाब पिर्व में भगत सेसं राहेव बाब मरहो उत्तरिकेनं बुबारेमं नाईई ससिम्ब मेर्बाचनारमिवर्ड तहेव पविसंतो सङ्ख्यां सामित्र, तीरी व संप्राप्तवान गुद्वाए बहुमजसबेसमाए वाच राम्यानासम्बद्धानो जाम पुरे महावर्षमो ट्रोव कार प्रवाशिमित्राजो करणाओ पक्षाओ समाजीओ प्रशिवमेर्च सर्ग महानरे समप्रेंति सेसं तहेव ववरं पचरिविक्षेणं कृष्टेवं वंगाए संक्रमकात्रवा तहेवति त्तप् यं खंडणप्यानसम्बाप् वाविधिकस्य बुवारस्य श्वाङा सम्मव मह्या र कींबारनं करेसाचा सरसरस्स समादं १ ठावाई वजीसकिस्वा तए वं से मरहे छमा

चक्करयणदेसियमग्गे जाव खंडगप्पवायगुहाओ दिक्खणिक्षेणं दारेणं णीणेइ सिसव्व मेहंधयारणिवहाओ ॥ ६५ ॥ तए ण से भरहे राया गगाए महाणईए पचित्थिमिले कूले दुवालसजोयणायाम णवजोयणविच्छिण्ण जाव विजयक्खधावारणिवेस करेइ, अवसिद्ध त चेव जाव णिहिरयणाण अद्वमभत्त पगिण्हइ, तए ण से भरहे राया पोसहसालाए जाव णिहिरयणे मणिस करेमाणे करेमाणे चिद्रह, तस्स य अपिर-मियरत्तरयणा धुयमक्खयमव्वया सदेवा लोकोपचयकरा उवगया णव णिहओ कोगविस्सुयजसा, तजहा—णेसप्पे १ पडुयए २ पिंगलए ३ सव्वरयण ४ मह-पउमे ५। काले ६ य महाकाले ७ माणवगे महाणिही ८ सखे ९॥ १॥ णेस-प्पमि णिवेसा गामागरणगरपष्टणाण च। दोणमुहमङबाणं खंधावारावणगिहाणं ॥ १ ॥ गणियस्स य उप्पत्ती माणुम्माणस्स जं पमाण च । धण्णस्स य बीयाण य उप्पत्ती पद्धए भणिया ॥ २ ॥ सन्वा आभरणिवही पुरिसाणं जा य होइ महिलाण । आसाण य हत्थीण य पिंगलगणिहिंमि सा भणिया ॥ ३ ॥ रयणाइ सन्वरयणे चउदसवि वराइ चक्कविह्स । उप्पज्जते एगिंदियाइ पंचिंदियाई च ॥ ४ ॥ वत्थाण य उप्पत्ती णिप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं । रगाण य घोव्वाण य सन्वाएसा महापडमे ॥ ५ ॥ काले कालण्णाण सन्वपुराण च तिस्रवि वंसेस्र । सिप्पसय कम्माणि य तिष्णि पयाए हियकराणि ॥ ६ ॥ लोहस्स य उप्पत्ती होड महाकालि आगराण च । रूपस्स सुवण्णस्स य मणिमुत्तसिलप्पवालाण ॥ ७॥ जोहाण य उप्पत्ती आवरणाण च पहरणाण च । सन्वा य जुद्धणीई माणवरो दडणीई य ॥ ८ ॥ णट्टविही णाडगविही कव्वस्स य चउव्विहस्स उप्पत्ती । सखे महाणिहिंमि तुबियगाण च सन्वेसिं॥ ९॥ चक्कहपडहाणा अहुस्सेहा य णव य विक्खभा । वारसदीहा मजूससिठिया जण्हवीइ मुहे ॥ १० ॥ वेहलियमणिकवाडा कणगमया विविहरयणपिंडपुण्णा । ससिसुरचक्रुक्खण अणुसमवयणोववत्ती या ॥ ११ ॥ पिलेओनमद्विईया णिहिसरिणामा य तत्थ खलु देवा । जेसिं ते आवासा अिक जा शिवचा य ॥ १२ ॥ एए णव णिहिरयणा पभूयघणरयणसचयसिद्धा । जे वससुवगच्छंति भरहाहिवचक्षवट्टीण ॥ १३ ॥ तए ण से भरहे राया अद्वमभत्तास परिणममाणसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, एव मज्जणघरपवेसी जाव सेणि-प्पसेणियद्दावणया जाव णिहिरयणाण अद्वाहिय महामहिम क॰, तए ण से भरहे राया णिहिरयणाण अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए सुसेण सेणा-वडरयण सद्दावेइ २ ता एव वयासी-गच्छ ण भो देवाणुप्पिया ! गगामहाणईए पुरित्यमिल णिक्खुड दुचिप सगगासागरिगोरेमेराग समविसमणिक्खुडाणि य 448

मोगमोगाइ मुंबसाचे निहरह । तए य से दिम्बे चकरपने अक्ता क्याइ साउह षरसारमध्ये पविभिन्नसम् २ ता अंतिमिन्दापविषय्ये <del>वर</del>ससहरससंपरिष्ठे दिम्म तिक्षेय जान आपूरैते चेन विजयनकथानारियनेसं गर्जायकोर्ण विभागात् वाहिन प्रकरियम दिस्थि विजीय रामहाणि अभिमुद्दे प्रयाप यानि होरवा वैतप ज से भराहे राजा जान पासक १ ता बहुतुह जान कोई विमयुरिसे सहानेत १ ता एवं वनाची-सिप्पामेव मो देवास्थिया ! सामितेकं काव पविपासीत ॥ ६६ ॥ तए में से मरहे राजा अजिनरजो विजियसत् उप्पण्णसमत्तरको बहरसमप्याने गविविवां समिद्रकोसे वजीसराववरसङ्ख्याल्यासमाने सद्वीए विशेशकास्सेष्ठ फेबलरप्पे मर्ख वार्च ओमनेड ओमबेता कोइनियपुरिये सहानेत २ ता एवं न्यादी—विष्यामेन भी वंबल्यप्यिया ! आभिनेवं इत्विरवर्ण इक्पन्नरह तहेन जाव अजगिरिकृत्वतिज्ञम सवकई नरवई दुक्डे । तए न तस्य भरहस्स राज्यो जामिन सेद्र इत्परवर्ग हरूकस्य समाग्यस्य इमे अद्वासम्बन्धः पुरको अहत्यपुर्णीए संपद्मिमा तैनहा- सोरिवमिनियक बाव बच्चेन तमर्गतरे पाण पुज्यकम्य मिंगार दिस्ता य क्रमप्रकामा नाम संपद्विया ध्यणंतर च च बेरक्रियमिसंस्वितकर है जाब सहाजुपुब्बीए संपद्धियं अयर्थतरे च व सत्त एगिदिवरक्या पुरक्के कहाई-प्रथमित संपन्निया तं ०- चत्ररयणे १ कत्तरयणे २ चम्मरवये ३ बंडरवाचे ४ असि रवणे ५ समिरयणे ६ मागणिरयणे ७ तवजंतर च में जब सहाबिहाने पुरसी अद्वालप्रस्थीए संपद्भिता ठक्का-असप्ये पंडयए जान संसे ठडपांटर न न

स्रोक्स देक्सहरसा पुरको अहानुपुर्जीए संपद्विया तथर्नतर व न बत्तीसं राज्यर सहस्या पुरवो अहाजुपुम्भीप सपद्विमा तमर्थतरं 🖛 भ सेमलहरूको पुरस्रो सहा अपन्त्रीय सपदिय, एवं गाहावहरयणे वहहरवने पुरोक्षियरवने अपनेतर व व इरियरकण पुरुषो महाजुपुत्रवीए तमर्गतरे च व वर्तीस उद्वरहामिनासहस्सा परको बहालपुर्वाए वयर्थंदरं व वं वत्तीस वनवयरणवियासहरमा पुरनो भद्दानुपुन्तीए तमर्थतरं व वं वतीस वत्तीसहबद्धा नावगसदृस्या पुरुत्तो लदानुः प्रम्मीए तसर्वतरं च मं तिथ्यि सङ्घा स्वसमा प्ररत्नो भारतपुरमीए तमर्पतरं व नं मद्वारस सेनिय्यसेबीओ पुरबो वयर्गतरं व वं ववरासीई आससपस-हस्सा पुरको । तक्ष्मंतरं च मं चउरासीई हत्वसम्बद्धस्या पुरओ भद्दानुपुन्नीए त्यर्गतरे म म नउरासीहं रहसक्तहस्या पुरक्षे अहत्तुपुर्मीए समर्गतरे न

ण छण्णडई मणुस्सकोडीओ पुरओ अहाणुपुरवीए सपष्टिया, तयणतर च ण वहवे राईसरतल्वर जाव सत्यवाहप्पभिङ्ओ पुरओ अहाणुपुन्वीए सपट्टिया, तयणतर च ण यहवे अतिग्गाहा छद्विगाहा कुंतग्गाहा चावग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा फलगरगाहा पर्नुगगाहा पोत्ययरगाहा वीणरगाहा क्यरगाहा हडण्फरगाहा दीविय-गगहा सएहिं सएहिं स्वेहिं, एव वेसेहिं चिंधेहिं निओएहि सएहि २ वत्येहिं पुरओ अहाणुप्रवीए सपिट्टिया, तयणतरं च ण वहचे टंडिणो मुडिणो सिहडिणो जडिणो पिच्छिणो हासकारमा खेङ्कारमा दवकारमा चाडुकारमा कदप्पिया बुक्इया मोहरिया गायंता य दीवता य (वायंता) नन्नता य हसता य रमंता य कीलता य सानेता य सावेता य जावेता य रावेता य सोभेता य सोभावेता य आलोयता य जयजयमह च पडजमाणा पुरओ अहाणुपुरवीए सपद्विया, एव उववाइयगमेण जाव तस्स रण्णो पुरओ महुआसा आसघरा उभओ पासि णागा णागधरा पिट्टओ रहा रहसगेली अहाणुपुच्चीए सपट्टिया। तए ण से भरहाहिवे णरिंटे हारोत्ययसुक-यरहयवच्छे जाव अमरवइसिणमाए इङ्गीए पहियकित्ती चक्करयणदेसियमग्गे अणे-गरायवरमहस्माणुयायमग्गे जाव समुद्दरवभूय पिव करेमाणे सन्विद्दीए सन्वज्रुईए जाव णिग्घोसणाइयरवेण गामागरणगरखेडकव्वडमडव जाव जोयणंतरियाहिं वस-हीहि वसमाणे २ जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता विणी-याए रायहाणीए अदूरसामते दुवालसजोयणायाम णवजोयणविन्द्रिणण जाव खधा-वारणिवेस करेड २ ता बहुइरयण सहावेइ २ ता जाव पोसहसालं अणुपविसङ २ ता विणीयाए रायहाणीए अद्वमभत्त पगिण्हइ २ ता जाव अद्वमभत्त पडिजागरमाणे २ विहरइ। तए ण से भरहे राया अद्वमभत्तिस परिणममाणिस पोसहसालाओ पिडणि-क्खमड २ ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ २ ता तहेव जाव अजणगिरिकृडसण्णिभ गय-वइ णरवई दुस्टे त चेव सन्व जहा हेट्ठा णवर णव महाणिहओ चतारि सेणाओ ण पविसति सेसो सो चेव गमो जाव णिग्घोसणाइएण विणीयाए रायहाणीए मज्ञ-मज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव भवणवरवर्डिसगपडिटुवारे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तए ण तस्स भरहस्स रण्णो विणीय रायहाणि मज्झमज्झेण अणुपविसमाणस्स अप्पे-गङ्या देवा विणीय रायहाणि सन्भतरवाहिरियं आसियसम्मज्जिओविलित करेंति, अप्पेगइया० मचाइमचकलिय करेंति, एव सेसेसुवि पएसु, अप्पेगइया० णाणाविहरागव~ सणुस्मियधयपडागामडियभूमिय॰, अप्पेगडया॰ लाउल्लोड्यमहिय करेंति, अप्पेगड्या जाव गधनद्विभूय करेंति, अप्पेगइया० हिरण्णवास वासिति० सुवण्णरयणवहरआभरण-वास वासंति, तए ण तस्स भरहस्स रण्णो विणीय रायहाणि मज्झमज्झेणं अणुपवि-

रियमा इक्रिक्सिया क्रिक्सिसिया कारोडिया नारवाहिया संधिया नहिया श्रीविधा सहस-गरिन्या पुनमाणया बद्धमाणया बेद्धमदामा ना ताई ओरासाई इद्वाहि बेताई पिनाई मपुण्याहि मणामाञ्चि तिचाहि चण्याहि मैगलाहि गरिसरीबाहि हिमत्रपमनिजाहि द्विययप्रस्हानियज्ञाई नम्मृहे अणवर्यं कमिणेर्युता य अभिवर्णता य एवं नगासी---बन बय मंदा ! जब बय गहा ! महं ते अविन्यं जिलाहि जिमें पास्त्याहि जिनमञ्जे क्साहि इंदो कि देवाचे चेत्रो किए तारार्थकम रो कि बामराण घरको कि मागार्थ षहरे पुरुषसम्परस्यादं बर्ट्रकोः पुरुषरोगीओ बर्ड्रको पुरुषरोगारीकोओ निवीगाए रामहाजीव जुरुष्टिमर्वतियितिमागरमेरागस्य व केक्सकप्परस् भरहस्म बासस्य यामाय-रपारधेडकम्बडमटंबरोलम्बप्रवासमस्थितेतेतः सम्मं वरापालवाहित्रसम्बद्धमे महना बाब माहेवचं पोरेवचं बाब बिहराहितिकह बयवयसई पर्वकेति अर मं से मरहे राया पत्रपमाकासहरसेक्षे पिन्छिजनाणे २ वयणमास्मासहरसेक्षे अधिवस्त्रमाणे २ हिमममाध्यस्टस्पेद्वे उज्यंदिज्ञमाये २ मधोरहमाकासहस्तेहि विरिक्टयमामे २ केठि स्वसोइम्स्युगेहॅं पिटिछन्नमाचे १ अंगुरिमासासइरसेहें दहन्तमाचे १ हाहिचहरवेने बहुर्यं चरमारीसहस्याणं संबक्षिमाससहहस्यातं पविच्छेमाने २ मनजर्वतीमहस्यातं समहत्रक्रमाचं २ तंतीतसनुवियगीयबाहयरवेणं सहरेणं सन्तरेण सञ्जनस्या बोरेणं पविद्युक्तमामे २ जेपेव सए गिड्डे जेणेव सए मवचवरवर्डिसवदुवारे तेमेव स्वा-पच्छा २ ता मामिनेबं हरियरवर्ग ठनेइ २ ता मामिनेबामो हरियरमधानी प्रचोरहर १ ता सोमस बेबसहरसे सदादेश सम्माध्ये स १ ता बत्तीस रामस्वरसे सद्दारेड सम्माणेड स २ ता सेबाकायणं सङ्दारेड सम्माणेड स २ ता एवं माहानप्रस्थमं बहुदस्यमं प्रतिविक्तस्यमं सकारेष्ठ सम्मानेष्ठ स २ ता विन्ति स्ट्रे स्वसप् सकारेड् सम्मानेड् स २ ता अञ्चारस सेनिप्पसेचीको सद्दारेड्र सम्मानेड् स २ ता अन्योति बहुने राईसर नाव सत्यवाहुप्यमित्रको सहारेत्र सम्माचेद स २ ता पितिस्त्रोह, इत्वीरयनेनं क्यीचाए उडुक्डावियासहस्त्रीहें क्यीवाए वन वगक्तामिनासहस्तेल्ले वत्तीसाए वत्तीसहबदेहि बाववसहस्तेहि सबि संपत्ति भवमकरवृत्तिसर्ग कर्मेष्ट् नदा कुनेरोच्य वेकरावा केकाससिव्दरिसिममूबंदि तए व से भरदे राजा मित्तवादमियगसननसंगितपरिवर्ण प्युक्तिसाह २ ता वेजेव मजनगरे तेणेव सवास्थ्यक्त २ ता बाव सम्बणकराओं एडिनिक्क्सह २ ता बेकेंद्र सोरक्सहरे रोपेन उनामका २ ता मोयनमंडवंसि शहासणवरमए बद्धमभतं पारेह २ ता हर्पि पासस्वरमण् पुरुषालेखें मुहंगमरूपपृष्टि वचीसङ्बदेखें बालपृष्टि वदक्षक्रिजमाने 🥄

उवणिचज्जमाणे २ उवगिज्जमाणे २ महया जाव मुंजमाणे विहरइ ॥ ६७ ॥ तए ण तस्य मरहस्स रण्णो अण्णया कयाइ रज्जधुर चिंतेमाणस्स इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्या-अभिजिए ण मए णियगबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमेण चुछ्छिमवत-गिरिसागरमेराए केवलकप्पे भरहे वासे तं सेय खलु मे अप्पाण महया २ रायाभि-सेएण अभिसेएण अमिसिंचावित्तएत्तिकहु एव सपेहेड २ त्ता कल पाउप्पभायाए जाव जलते जेणेव मज्जणघरे जाव पडिणिक्खमइ २ ता जेणेव बाहिरिया उवद्वाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ णिसीइत्ता सोलस देवसहरसे वत्तीस रायवरसहरसे सेणावहरयणे जाव पुरोहियरयणे तिण्णि सहे स्यसए अहारस सेणिप्पसेणीओ अण्णे य वहवे राईसरतलवर जाव सत्यवाहप्पभियओ सहावेह २ ता एव वयासी-अभिजिए णं देवाणुप्पिया । मए णियगवलवीरिय जाव केवलकप्पे भरहे वासे त तुन्भे ण देवाणुप्पिया! मम मद्दयारायाभिसेय वियरह्, तए णं ते सोलस देवसहस्सा जाव पभिइओ भरहेण रण्णा एवं वृत्ता समाणा इट्टतुट्ट० करयल० मत्थए अजिल कट्ट भरहस्स रण्णो एयमट्ट सम्मं विणएणं पिडसुणेति, तए णं से भरहे राया जेणेव पोसहसाला तेणेव उनागच्छइ २ ता जाव अद्वमभत्तिए पडिजागरमाणे २ विहरइ, तए णं से भरहे राया अट्टमभत्तसि परिणममाणसि आभिओगिए देवे सद्दावेइ २ ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! विणीयाए रायहाणीए उत्तरपुरिच्छमे दिसीभाए एगं महं अमिसेयमण्डव विखन्वेह २ ता सम एयमाणत्तिय पन्निप्पणह, तए ण ते आभिओगा देवा भरहेण रण्णा एव वृत्ता समाणा हट्टतुट्ठ जाव एव सामित्ति आणाए विणएण वयण पडिसुणेंति पडिसुणित्ता विणीयाए रायहाणीए उत्तरपुरित्यम दिसीभाग अवक्रमति २ ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति २ ता सिखजाई जोय-गाइ दर्ड गिसिरति, तजहा-रयणाण जाव रिद्वाणं अहावायरे पुरगले परिसार्डेति २ ता सहाम्रहुमे पुरगले परियादियति २ ता दुचपि वेडिव्वयसमुग्घाएण समोहणति २ ता वहुसमरमणिज भूमिभाग विख्वति से जहाणामए-आलिंगपु-क्खरेइ वा॰, तस्स ण बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं मह एग अभिसेयमण्डव विजव्वति अणेगखमसयसण्णिविद्व जाव गधविद्वभूय पेच्छाघ-रमडववण्णगोत्ति, तस्स ण अभिसेयमडवस्स वहुमज्झदेसभाए एत्य ण महं एगं अभिसेयपेढ विउव्वति अच्छं सण्ह०, तस्स ण अभिसेयपेढस्स तिदिसिं तओ तिसोवा-णपिंडस्वए विजन्ति, तेसि ण तिसोवाणपिंडस्वगाण अयमेयास्वे वण्णावासे पण्णते जाव तोरणा, तस्स ण अभिसेयपेढस्स वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, तस्स ण

बहुसमरमधिन्नरसः भूमिमायस्य बहुमञ्चावैसमाए एत्य **चं सहं** एगं सीहास**नं मि**उ मिति तस्य में सीक्षासमस्य अध्ययेयास्य वण्यावासे पण्यते जाव दामवण्यम सम-रांदि । तप में ते देवा स्थानसेयमंडमं निउम्मंति २ ता जैणेव अरहे रामा अध पर-प्पिणिति तए ने से मरहे राजा आसिओयाणं दंवानं अंतिए एयमद्वं सोबा निसम्म बहुतह जान पोसङ्साममञो पडिणिक्यमङ् २ ता कोईबियनुरिसे सहानेह २ ता एवं बमाधी-विष्यामेन मो बेबल्लियना ! शामिसेई इत्यिरयनं पश्चिकपेड १ ता इनगम जान सञ्चाहेला एनमामलिय प्रचिप्पह जान क्विप्पिगेटि तए वे से मरहे राया अजनवर अनुपनिसह जाव अंजनगिरिकृत्रसम्बार्ध समार्थ गरवर्ष हुरवे तए म तस्य भरहस्य रच्यो आभिनेदं इत्निरवर्ण हुरुटस्य समानस्म इमें अद्भुद्धमगतन्या जो चेव धमो विशीर्व पविस्तमाचरस सो चेव विकारममावरसवि जाव पविजुज्ज्ञासाने १ विक्रीय रायद्वार्थि सर्ज्ञांसकोर्ज विस्पन्द्वद १ ता जेपेद विपी-नाए रानद्दाजीए उत्तरपुरस्थिमे दिसीमाए समिसेयमँडने तेसेब उद्यागच्छा २ ता मिसेयमंबन्द्रवारे मामिसेद इत्यरयय ठावेड् २ ता शामिसेकामो इत्यरयनामी प्योखहर २ ता इत्योरमणेर्यं वर्तीसाए उडक्कान्विनासहरसेक्टें वर्तीसाए अकायक ब्राणियामहरसेहि वत्तीसाए वत्तीसक्ववेहि वाहगसहरसेहि सर्वि संपरिवर्ड असिसेन-महन म्ह्यपविच्छ २ ता जेवेन जमिनेयपेड तथेन उनागच्छद २ ता अभिनेतपेड स्युप्पनादिची सरेमाचे २ प्रस्तिकिये विसोवाजपहिरुवएचे बुरुद्वद २ ता केमेव चीहासमे वेमेब तबामच्या २ ता पुरत्यामिमुहे चन्निचन्ता । वर मे क्सा मर इस्स रण्यो वर्तासं राजसङ्करसा खेणेव अभिसेयसण्डवे तेचेव स्वारकारी १ 🟗 अभिरोक्तंदर्व स्कुपविपेति २ ता अभिरोदपैर्ड अनुष्पराहिजीकरेमाना २ उत्तरि<sup>केव</sup> विशेषाणपविस्त्रपूर्व क्षेणेव अरहे राया तंत्रेव तवायकांति २ ता करका वार्य कवालि कर सरह रामाणं कएवं विकएनं क्यावेंति २ था सरहस्स रक्तो भवासन्ये मान्द्रे सस्तुरुमाणा जान पसुनासति तपु न तस्य मराहस्य रन्यो सेमान्द्ररूनने मान सरनगर्पभित्मो रोऽनि तर् नेव मन्दे वाश्विधीको तिसोनाचपविस्मप्ने जान प्रमुवासीते तए में से मरहे राना आसिम्झेणे देवे सहावेद ए ता एनं बनाती-रिज्यामेन मो देवलुप्पिना ! समें अवृत्यं अवृत्यं सहरिष्टं सहारस्याभिनेतं उन्ह नेह. तप ज ते आसिम्प्रोहना देशा सरहेर्ज रच्चा एवं <u>ब</u>त्ता समाया **स्ट्राइ**निय जान उत्तरपुरम्बिमं विसीमार्थं अनवस्पति अनवस्पिता वेटन्नियसमुखाएनं समोद मंति एवं बहा विकास्स तहा इत्वंपि काव पंडगवये प्राको निकार्यति एयानो मिलहत्ता जेनेन दाक्षिमञ्चमरहे वासे क्षेत्रेन विजीना रामहाची तेचेन उनामच्छेति २ तम

469

विणीय रायहाणिं अणुप्पयाहिणीकरेमाणा २ जेणेव अभिसेयमङवे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति २ ता त महत्य महम्घ महरिह महारायामिसेय उव-हुर्वेति, तए ण त भरह रायाण बत्तीस रायसहरूसा सोभणिस तिहिकरणदिवसण-क्खत्तमुहुत्तिस उत्तरपोट्टवयाविजयसि तेहिं सामाविएहि य उत्तरवेटिव्वएहि य वर-कमलपइट्ठाणेहिं सुरभिवरवारिपिडपुण्णेहिं जाव महया महया रायाभिसेएण अभि-सिंचति, अभिसेओ जहा विजयस्स, अभिसिंचित्ता पत्तेय २ जाव अजिलं कहु ताहिं इट्ठाहिं जहा पविसतस्स॰ भणिया जाव विहराहित्तिकट्टु जयजयसह पउजित । तए ण त भरह रायाण सेणावङ्रयणे जाव पुरोहियरयणे तिण्णि य सद्घा स्यसया अद्घारस सेणिप्पसेणीओ अण्णे य वहवे जाव सत्यवाहप्पभिइओ एव चेव अभिसिंचति तेहिं वरकमलपइद्वाणेहिं तहेव जाव अभिथुणति य सोलस देवसहस्सा एव चेव णवर पम्हलसुकुमालाए जाव मउड पिणद्वेति, तयणतर च ण दहरमलयसुगिधएहिं गिधेहिं गायाइ अन्भुक्खेंति दिन्वं च सुमणोदाम पिणदेंति, किं बहुणा <sup>2</sup>, गठिमवेढिम जाव विभूसिय करेंति, तए ण से भरहे राया महया २ रायाभिसेएण अभिसिंचिए समाणे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ २ ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थि-खधवरगया विणीयाए रायहाणीए सिंघाडगतिगचउक्कचचर जाव महापहपहेस महया २ संदेण उग्घोसेमाणा २ उस्सुक उक्करं उक्किट्ट अदिज अमिज अभडप्पवेस अदड-कोदिस जाव सपुरजणजाणवय दुवालससवच्छरिय पमोय घोसेह २ ता ममेयमाण-त्तियं पचपिणहत्ति, तए ण ते कोडुवियपुरिसा भरहेण रण्णा एव बुत्ता समाणा हट्टाड-चित्तमाणदिया पीइमणा० हरिसवसविसप्पमाणहियया विणएण वयण पिंडसुणेंति २ त्ता खिप्पामेव हिल्यखन्नवरगया जाव वोसेंति २ ता एयमाणत्तिय पचप्पिणति, तए ण से भरहे राया महया २ रायाभिसेएण अभिसित्ते समाणे सीहासणाओ अन्सुद्वेड २ त्ता इत्यिरयणेण जाव णाडगसहस्सेहिं सिद्धं सपरिवृद्धे अभिसेयपेढाओ पुरित्थिमि-हेण तिसोवाणपिंडस्वएण पच्चोरुहइ २ ता अभिसेयमडवाओ पिंडणिक्यमइ २ ता जेणेव आभिसेहेः हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ २ ता अजणगिरिकृडसण्णिभ गयवइ जाव दुरूढे, तए ण तस्स भरहस्स रण्णो वत्तीस रायसहस्सा अभिसेयपेढाओ उत्तरिक्षेणं तिसोवाणपिंडक्वएण पच्चोरुहति, तए ण तस्स भरहस्स रण्णो सेणावडर-यणे जान सत्यवाहप्पभिइओ अभिसेयपेढाओ दाहिणिहेण तिसोवाणपडिरुवएण पचोरहति, तए णं तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक् हत्थिरयण दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्टरमगलमा पुरओ जाव सपिट्टया, जोऽविय अङगच्छमाणस्स गमो पढमो कुनेरावसाणो सो चेव इहिंप कमो सक्षारजहो णेयव्यो जाव कुवेरोव्य देवराया सम्मागेइ स २ ता पडिक्सिक्टेंद २ ता उप्पि पासाधवरयए आव विद्वरह 🛭 ६८-१ 🗈 मरहरून रूप्यो चहरवणे १ दंडरवये २ व्यक्तिरवणे ३ छत्तरवणे ४ एए वं चतारि प्रिविधरमणा भाउद्वरसामाय समुध्यच्या कम्मरवर्षे १ मधिरवर्षे २ सम्पन्न रनमे १ जब य महाविद्वाओ एए ने शिरिक्टिश समुध्यक्या सेनामहरमने ९ गहा-नदरनमं २ अञ्चरत्यमे ३ प्रशिक्षियत्यये ४ एए वं कतारि मनुपरनमा निजीनाए रामद्वाजीए समुप्पन्ना आसर्यणे १ हरियरवणे १ एए अं हुवे पंत्रिक्सरवणा नेपहुरिगरिपासमूके समुप्पन्या सुमहा इत्वीरयणे उत्तरिकाए निजाइरसेकीए सम प्पर्ण ॥ ६८-२ ॥ तए में से भरहे रामा चत्रदस्य रहणायं व्यव्हं महामिद्दीयं सोखसन्दं देवमाहस्त्रीज वत्तीसाए रामसदस्यानं वर्षासाए सहरुद्धानिमासहस्यानं वत्तीमाप् जमक्यम्ब्राणिशसङ्ख्याणं वत्तीसस् वतीसङ्बद्धानं वाडयसङ्ख्यानं निन्द् स्ट्रीमं सुगारस्यानं स्टारस्यां सेनिप्यरेगीय श्वरतसीर्धेए जासस्यस्ट्रसानं चठरासीहर वंशिसमस्वरसानं चठरासीहर रहसमसहस्मानं जन्मवहरू महस्य-कोडीर्ज बाबतारीए पुरवरसङ्ख्यार्ज वर्षासाए वयववसङ्स्सार्थ सम्पन्देए मार्म-नोबीयं जवजउर्देए दोणमुद्दमहस्राजं अवयाधीसाए पावसहस्सायं जउम्मीनाए कम्मडसङ्स्सार्यं चटम्मीसाए महंबसङ्खानं बीसाए जागरसङ्स्यानं सोबसन् बंदसङ्स्यानं चउदसर्वं स्वाहसङ्स्यानं स्वयाण्याएं संवरोदयान पूर्वपन्याए इरमाणं विजीपाए रामदाजीए उद्यक्तिगर्वतगिरिसागरमेरागस्य केमानाप्यस्य मरहरम नासस्य अप्नेति च नहूर्ण राईसरतसम्बर बान सत्वनहप्पनिर्दर्व भाहेनचे प्रोरेक्वं महितं सामित्तं महत्तरपत्तं आनाइसरसेनावर्वं कारमाने पाकेमाने जोहर निइएत केंद्रपुमु उदियसस्यिक सम्बनतुष्ठ मिन्निएत सरहाहिये वरिषे कर्रावेदम-

चिचयंगे वरहाररइयवच्छे वरमउडविसिद्धए वरवत्थभूसणघरे सन्वोउयसरहिकुसुम-वरमह्नसोभियसिरे वरणाङगणाङइज्जवरइत्थिगुम्मसर्द्धि सपरिवुडे सव्बोसहिसब्बरय-णसन्वसमिइसमग्गे सपुण्णमणोरहे ह्यामित्तमाणमहणे पुव्वक्यतवप्पभावणिविद्व-सन्वियफले भुजइ माणुस्सए छहे भरहे णामधेजेति ॥ ६९ ॥ तए णं से भरहे राया अण्णया कयाइ जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ ता जाव ससिव्य पियदसणे णरवई मज्जणघराओ पिडणिक्खमइ २ ता जेणेव आयंसघरे जेणेव सीहासणे तेणेव जवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ २ त्ता आयसघरेंसि अताण देहमाणे २ चिट्टई, तए णं तस्स भरहस्स रण्णो समेण परिणामेण<sup>२</sup> पसत्थेहिं अञ्झवसाणेहिं ठेसाहिं विसुञ्झमाणीहिं २ ईहापोहमगगणगवे-सण करेमाणस्स तयावरणिजाण कम्माण खएणं कम्मरयविकिरणकर अपुव्वकरणं पविद्वस्स अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पिंडपुण्णे केवलवरनाणदसणे समुप्पणो, तए ण से भरहे केवली सयमेवाभरणालकार ओर्सुयइ २ ता सयमेव पंचमुद्विय लोय करेइ २ ता आयंमघराओ पिडणिक्खमइ २ ता अतेउरमज्झमज्झेण णिग्गच्छइ २ ता दसिंह रायवरसहस्सेहिं सिद्धं सपरिवुडे विणीयं रायहाणिं मज्झमज्झेण णिगगच्छइ २ ता मज्झदेसे सुहसुहेण विहरइ २ ता जेणेव अद्वावए पव्वए तेणेव उवागच्छइ २ ता अद्वावयं पव्वय सणिय २ दुरुहइ २ ता मेघघण-सिणगास देवसिणवाय पुढविसिलावस्य पिडलेहेइ २ ता सलेहणाझ्सणाझ्सिए भत्तपाणपिडयाइक्खिए पाओवगए काल अणवकखमाणे विदृरइ, तए णं से भरहे केवली सत्तत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झे वसित्ता एग वाससहस्स मङ्क्रियरायमञ्झे वसित्ता छ पुन्वसयसहस्साइ वाससहस्सूणगाइ महारायमञ्झे विसत्ता तेसीइपुञ्वसयसहस्साइ अगारवासमञ्झे विसत्ता एग पुञ्वसयसहस्स देस्णग केवलिपरियाय पाउणिता तमेव वहुपिडपुण्ण सामण्णपरियाय पाउणिता चडरासीइपुन्वसयसहस्साइ सन्वाउय पाउणित्ता मासिएण मत्तेण अपाणएण सव-णेण जनस्तरोण जोगमुवागएण खीणे वेयणिजे आउए णामे गोए कालगए वीइक्तते समुजाए छिण्णजाइजरामरणवधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्वुडे अतगडे सव्बदुक्ख-प्पहीणे ॥ ७० ॥ इइ भरहचिक्कचरियं समत्तं ॥

१ तिहमप्पाणमवलोयतस्स तस्सेगगुलीए गिलयमगुलिज्ञय, सो य त पडत ण जाणइ, अणुक्मेण वुर्दि पेहमाणे तमगुलिमसोहितयमवलीएइ ताहे हारक्डगाइसव्य-माभरणमवणेइ । २ गत्तअसारत्तभावणाहवजीवपरिणईए । ३ सयमेवाभरणभूयम-लकारं वत्यमलहवमोमुग्रइत्ति अहो ।

सरहे य इत्व देवे महिश्विए महजुरूए जान परिज्ञीनमहिरूए परिवाद से एएपहोंगे गोसमा! एवं मुज्जू-मरहे वाले २ वृति अनुतारे व न गो । सरहरस बासस्य सासर पामसंक्रेमे पण्यो वां वा कमाइ च जालि च कमाइ चरित्र वा कनाइ जा मिसरह गुनि व अन्दर य गनिस्तर न चुने मिसर सासर कन्नाए कन्नाइए भिने मरहे वृति ॥ ७१ ॥ सहस्रो यक्कारों स्वास्त्राची ॥

वहि मं सद । अम्बुरीवे जुजहिमवेते थाम वासहरपञ्चए पञ्चते ! गोसमा !

द्वैमवयस्य बाधस्य वादिनेणं मरहस्य बासस्य उत्तरेणं पुरत्यिमकव्यसमुहस्य पचरिवमेर्ज पवरिवयक्षयसमुद्दस्य पुरश्चिमेर्ण एर्थ वं जम्मुदीवे धीवे चुह्नहिमांति मामं नासहरपञ्चए पञ्चले पाईवपबीचावए उद्योगदाविजनिक्तिके इहा स्वय-समर पडे परस्थिमिताए कोबीए प्रस्थिमितां स्वकासार पडे प्रवस्थिमिताए कोबीए प्रवित्तिको सम्बन्धसुद् पुद्धे एगे जोवजसर्व उर्द्ध उन्होंने यमशीसे जोपणाई बम्बेहेण एग जीवनसरस्य नावर्ण च कोमनाई हुनाक्स य एग्सनीस्टमाए भीयणस्य विश्वयमेर्गति हस्य बाह्य प्रस्थिमप्रवास्तिमेर्ग पंत्र भोयणसङ्ख्या विकित स पञ्जासे जोसणसए पञ्चरस स एगूपबीसङ्गाए जोस्वस्स झद्रभाग ब सावामंत्रं तस्य जीवा उत्तरेणं पाईषप्रधेणायया जाव प्रवास्तिकाए कोडीए प्रवातिमन्द्रित व्याजसमुद्दं पुद्रा अवन्त्रीसं कोमणसहस्ताई यद व बतीसे बोक्यसप् अदमार्ग व किचिविसेम्मा भागामर्थ क्लता तीसे बलुरहे शाहियेण क्लीस जीयजसहरसकं वोष्णि य शीरं जीवजसए बतारि य एएयपीस्ट्रयाल जोवजस्य परिस्थानमं पन्यते स्थानस्थानस्थितं सम्बन्धानाम् अच्छे सन्दे तहेत नाव पिन्हने उसको पासि दोई पउमनरनेहमाई होहि य नपस्डेड संग्रेरिन्यमे **बुन्द**नि प्रमार्थ बुन्यग्येति । पुरुष्टिमबन्तस्य बासहरपम्बसस्य स्वरि बहुनमर समिजे मुसिनाने कनते से बहावासए-आक्षितपुन्यदेश वा जाव वहवे शवनंतरा देशा न दनीमो न मासनेति जान निहरेति ॥ ७२ ॥ शरस व बहुसमरमिजस्स मसिमागरस बहुमञ्जवसमाए इत्व न न्ये सह पउमहहे वार्म हहे फजते पाईनपरीगायए उदीनवादिसमिन्छिल्म इष्ट नोमणसहरस भावामनं पंत बोबचगनाई विस्तामेनं वस बोबलाई उम्मेहेनं सन्छे एन्हे रसवासमार्थे जाब पामाईए जान परिक्लेति सं य एगाए पडम्बरक्षजाए एगन व बयसंडेने सम्बभी समेता सपरिस्तितो पैद्यारणसन्दरणमा माणिवन्योति सस्य व पडमर इन्स भउदिसि बतारि विसोबाणपटिकव्या पञ्चता वज्जावासो माधिवस्तीति।

तस्य ये तिमोरावयश्विस्वयायं पुरओ पतेर्थं तोर्गा पञ्चता त ये तार्या

सरहे स इस्व धेवे सहितिए सहस्वरूप नाव परिन्तीनसहित्रए परिचार ऐ एएनहेर्न पोसमा ! एवं शुक्त-मरहे वाले २ इति । अनुतरे व नं तो । सरहरम बालस्य एतए सामसेने पण्यते वं च कमाह च नाति का बनाह मरित्य क बनाह सामित्रहार पुनि क अवह य गरिस्सह व सुवे नियम् सामग्र करनाए अन्यत् आहिर निये मरहे सुवे व भा ॥ सहस्यो शक्ताति हसमन्ता ॥

वहि में भेते ! बन्दु(वे १ कुन्नहिमवीचे बाम वासहरपम्बए प्रकारी ! मीममा ! हेमकास्य बास्स्य दाहियेर्वं भरहस्य दास्त्य उत्तरेर्वं पुरश्विमानवनसम्बन्धः प्रविधानेचे प्रवत्थितसम्बक्षसमुद्दस्य पुरत्वितनं एरः। नं बम्प्रदाने दीवे पुत्रहितनंते नामं बासहरपम्बए फर्नात पाईचपशीबायए उदीनदाविष्मिनिकाने दुहा सबन-स्मर्दं प्रके प्ररत्यिनिजाए कोबीए प्रतियनिज स्ववसमुद्दं प्रते प्रयत्यिनिजाए कोबीए प्रवरिधिमात्रं समयसमुदं पुढे एगं जोनजसन उद्घं उन्होनं प्रमास जोनगारं सम्बोधे एवं जोयनस्वरस्य बाक्य्यं च जोवनाई हुवाकस्य व एम्पूनवीस्टमाए जोवजस्य विक्वानेमंति तस्य बाह्य पुरस्थिमस्यस्थिमेवं र्वत्र बोबनसहस्मर्वे विकित स प्रणासे जोकासक कारस व कामबीस्त्रमाए जोकास्य बद्धाग प कामानंत्र करत जीवा उत्तरेणं पाईपाएडीयाज्या बाद प्रवास्थितिकाए कोनीए प्रवास्त्रिमेलं स्वणस्मुई पुद्रा चटम्पीर्ध बोवकसङ्ख्याई वह य बतीरे बोवकस् सदमार्ग व किविविधेस्था आयामेर्ज पञ्चला दीसे बनुपद्वे दाहियेण पमनीर्प बोमबाधइस्ताइं दोन्जि व तीसे बोमबसए चतारि व एगूजबीस्तामाए खोममस्स परिकारियाँ प्रमाति राज्यस्थ्यानस्थ्या सम्बद्धानामण् अच्छे सन्हे सहेव बार्ग पविस्त्रे उसको पार्छि दोई प्रजस्तरनेह्याई दोहि य क्याउडेई स्परिनियों दुष्ट्रमि प्रसार्य कम्परयोति । शुक्रविमयन्तरस्य वासव्हरपञ्चयसस्य सवीरे बहुसमर समिन्ने भूमिमारी फ्लाते से न्याणामए-माकिन्युक्योद्द वा कार्य कर्ष वानांतरा देवा व वेवीओ व भासपेति जाव बिहरेति ॥ ७२ ॥ सस्स व बहुसगरमिन्नस्स मूमिमामस्य बहुमञ्चावेसमाए इत्व यं इदे सह पतमहद्वे वार्स वहे प्रस्मते पर्यप्रकाणान्य उरीयगाहिणनिरित्रको हक कोन्यसहस्य भागानेनं पंत भोदणसमादं विक्तासम्य इस कोक्साई उम्मेहेण अच्छे सम्बे स्वयासन्द<sup>हे</sup> जाब पासाईए जान पविरुवेति से नं एगाए प्रस्तवस्थिताए एरेन व बगासीन सम्बजी सर्गता छपरिविकाते केइयावणसङ्ख्यामा माणिवण्योति तस्स वं पडनत्-इस्स चटडिसि चतारै विसोवानपटिक्तगा पञ्चता क्ष्मादासे माविकन्योति। वेसि में विशेषावपुरिक्षणार्थं पुरक्षों योत्में २ तोरणा प्रव्यता है च दोरणा

णाणामणिमया॰, तस्स ण पउमह्हस्स वहुमज्झढेसभाए एत्थ मह एगे पडमे पण्णत्ते, जोयण आयामविक्खंमेण अद्भजोयण वाह्हेण दस जोयणाइ उन्वेहेण दो कोसे कसिए जलताओ साइरेगाइ दसजोयणाई सन्वरगेणं पण्णत्ते, से ण एगाए जगईए सन्वओ समता सपरिक्खित जम्बुद्दीवजगइप्पमाणा गवक्खकडएवि तह चेव पमाणे-णति, तस्स ण पंजमस्स अयमेयाहवे वण्णावासे प०, तं०-वहरामया मूला रिट्टामए कदे वेरुलियामए णाले वेरुलियामया बाहिरपत्ता जम्बूणयामया आर्बिभतरपत्ता तवणिज्ञमया केसरा णाणामणिमया पोक्खरवीयभाया कणगामई कण्णिया, सा णे० अद्वजोयण आयामविक्सभेण कोस वाहहेण सन्वकणगामई अच्छा०, तीसे ण कण्णियाए उप्पि बहुसमरमणिज्ञे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए-आलिंग०, तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसभाए एत्य ण सह एगे भवणे प० कोस आयामेण अद्धकोस विक्खमेण देस्णग कोस उन्हु उच्चतेण अणेगखंभसय-सिण्णिविद्वे पासाईए दरिसणिजे॰, तस्स ण भवणस्स तिदिसिं तस्रो दारा प॰, ते ण दारा पञ्चथणुसयाइ उन्ह उन्नत्तेण अहु।इजाइ धणुसयाइ विक्खमेणं तावइय चेव पवेसेण सेया वरकणगयूमियागा जाव वणमालाओ णेयन्वाओ, तस्स ण भवणस्स अतो वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, से जहाणामए-आलिंग०, तस्स ण वहुमज्झदेसभाए एत्थ ण महई एगा मणिपेढिया प॰, सा ण मणिपेढिया पंचथणुसयाइ आयाम-विक्खंमेण अहु।इजाइ धणुसयाइ वाह्हेण सन्वमणिमई अच्छा०, तीसे ण मणिपेढियाए उप्पि एत्थ ण मह एगे सयणिजे पण्णते, सयणिजवण्णओ भाणियव्वो । से ण पउमे अण्णेण अद्वसएण पडमाण तद्दु बत्तप्पमाणमित्ताण सन्वओ समता सपरिक्खिते, ते ण पउमा अद्वजोयण आयामिवन्खमेण कोस वाहलेण दसजोयणाइ उव्वेहेण कोस ऊतिया जलताओ साइरेगाइ दसजोयणाइ उचतेण, तेसि ण पडमाण अयमेयाल्वे वण्णावासे पण्णते, तजहा-वहरामया मूला जाव कणगामई कण्णिया, सा ण कण्णिया कोस आयामेण अद्धकोस वाह्हेण सन्वकणगामई अच्छा इति, तीसे ण कण्णियाए उप्पि बहुसमरमणिजे जाव मणीहिं उवसोभिए, तस्सण पउमस्स अवस्तारेण उत्तरेण उत्तरपुरित्थमेण एत्य ण सिरीए देवीए चडण्ह सामाणियसाहस्सीण चतारि पडम-साहस्सीओ पण्णताओ, तस्स ण पउमस्स पुरित्थमेण एत्य ण सिरीए देवीए चउफ् महत्तरियाण चत्तारि पडमा प॰, तस्स ण पडमस्स दाहिणपुरित्यमेण सिरीए े । अव्मितरियाए परिसाए अट्टण्ह देवसाहस्सीणं अट्ट परमसाहस्सीओ दाहिणेण मज्झिमपरिसाए दसण्ह देवसाहस्सीण दस पउमसाहस्सीओ न्दाहिणपचित्यमेण वाहिरियाए परिसाए वारसण्ह देवसाहस्सीणं वारस ३८ सुत्ता०

498

स्सीओ पञ्चनाओं पद्मविकों समुद्धं अविवादिवाँचे सत्त परमा पञ्जता उस्स र्ण पर्तगस्य चरदिसि सम्बन्धो समता इत्य गं सिरीए देवीए सोकसम्ब सागरमङ-देवसाइस्सीन सोकस परमसाइस्सीको पञ्चताओ से वं तीहें परमपरिवरेंगेहें <del>एनको समेता संपरिकियते त –अन्मिसरएन मन्त्रिमरूण बाह्यरएन मन्त्रिसर</del> पटमपरिक्षेत्रे वत्तीसं पठमसंबसाइस्सीको पण्णताको मजिसमप् पठमपरिक्षेत्रे कताठीसं प्रवमसम्बसाहरूसीको क्ष्यताको बाह्यरए प्रवमपरिक्**रे**वे अङ्गासीसं प्रवम-सक्ताहरूसीको पञ्चलको एवामेव सपुष्यावरेषं तिक्क्षं प्रवस्परिककेवेद्वं एवा परमधीयी बीसे च परमध्यपाहस्सीको भवेतीति सक्यामं । से केपटेसं सेते ! एवं क्या - पटमार हे २ है गोयमा ! पटमार हे ज तत्व २ हेसे २ लडि २ वह वे सप्पार्ट बाब सक्सहस्स्पताई परमहहूष्यमह परमहहूषणामाई सिरी व इस्ब देवी महिनिया काब पतिकोनमद्विदया परिवसद, सं एएलह्रमाँ काब कवलर व मं गोयमा पठमञ्चन्त सामय नामयेने पञ्चते य क्याइ वासि व ४ ७३ व स्स मं परामहद्दरस पुरस्विम्बिन्य तोर्थिय गंगा महानई पञ्चा समाजी पुरस्वान सिल्ही पन कोकरस्याई पम्बद्ध मेदा कंतावलकाई आवता स्थाजी एव संबंधि जोनजसए दिक्ति व एगूणवीसङ्भाए जोनजस्स हाहिचासिसही पन्नएनं पैटा महामा भवानुद्दपनितिएनं भुतानिन्दारपेठिएनं धाइरेगबोबयसङ्ग्रनं पदाएमं पदार् रोगा सहाजहै कवो प्रवृद्ध स्त्य ने सहं एगा जिकिस्या प्रवृत्ता सा वं जिक्सिया अज्ञानार्य आयामेण 🗷 एकोसाई जोयणाः विकासीनं स्टब्सेस बाहरेनं सगर सहित्रसहस्रेठाणस्किया सन्तवहरामहै सच्छा सन्ता संगा सहायहै जला प्रवह एत्व र्ण सहं एगे फंगप्पनानकुंडे नाम इंडे पन्नते सद्धे बोस्पाई भागमनिमनीमें नतन जोननसर्थ किन्तिनिसेसाहिनं परिनक्षेत्रेणं वस बोसलाई अन्तेहेलं जन्छे सन्दे रम्यामसर्वे समतीरे वहरासमपासाने वहरतके ग्रवण्यप्रकारवयासमाञ्चाए वेर क्षित्रमनिमाधिनपत्रकाचीवते सहीयारै सहीयारे वालामनिशित्तहरू को समुध्य-श्चजासबप्पगमीरसीयसम्बक्ते सरक्रप्रताससम्बद्धाः बहुतप्पस्तुसुक्वविनद्वसम् सोगंतिनपाँवधिनमदापाँवधीनस्यपत्तसहस्सपत्तस्यसहस्सपत्तप्रकृतस्यरोननिए इप्य-यमहुगरपरिमुजनाणकमके अच्छलिसक्रपत्नसक्तिके पुण्ने पविद्वत्वससन्तमच्छन् छ-मञ्जेयसञ्जयक्रिह्मयविवरियसङ्ख्याह्यसमृहुरसर्णाह्य पासाहेषु । से मं एसाए पडसगरकेम्याए एरोल य बनसण्डेजं सम्बन्धो समेता सपरिविदाले देशवाबनतंत्रगार्च परमाच रूपको माणियको तस्स नै गैगप्यवायनुकस्स तिदिसि तको दिसोगान पश्चिरवंगा प विज्ञहा-पुरित्वमेनं वाहियेयं प्रवास्थिमेनं तेशि में विशोगनपरि

ह्वगाण अयमेयाह्वे वण्णावासे पण्णते, तजहा-वइरामया णेम्मा रिद्वामया पइद्वाणा वेरुलियामया खभा सुवण्णरूपमया फलया लोहियक्खमईओ सूईओ वयरामया सधी णाणामणिमया आलवणा आलवणवाहाओत्ति, तेसि णं तिसोवाणपहिरूवगाणं पुरओ पत्तेय पत्तेयं तोरणा पण्णता, ते ण तोरणा णाणामणिमया णाणामणिमएस खंमेस उवणिविद्वसणिविद्वा विविह्मुत्ततरोवचिया विविह्तारास्वोवचिया ईहामियउसहतुर-गणरमगरिवहगवालगिकण्णररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपडमलयभित्तिचित्ता खभुग्गय-वइरवेइयापरिगयाभिरामा विजाहरजमलजुथलजतजुताविव अचीसहस्समालणीया रूवगसहस्सक्रिया भिसमाणा भिब्भिसमाणा चक्खुल्लोयणळेसा ग्रहफासा सस्सिरी-यस्वा घटाविचिवियमहुर्मणहुरसरा पासाईया॰, तेसि ण तोरणाणं उवरिं वहवे भट्टहुमगला प०, त०-मोत्थिए सिरिवच्छे जाव पडिरुवा, तेसि ण तोरणाण उवरिं वहवे किण्ह्चासर्ज्झया जाव सुिक्कल्चामरज्झया अच्छा सण्हा रूपपटा वइरामयदण्डा जलयामलगिया सुरम्मा पासाईया ४, तेसि ण तोरणाण उप्पि वहवे छताइच्छता पडागाइपडागा घटाजुयला चामरजुयला उप्पलहृत्यगा पउमहृत्यगा जाव सय-सहरसपत्तहत्थगा सन्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तस्स ण गंगप्पवायकुडस्स वहुमज्झदेसभाए एत्य णं मह एगे गगादीवे णाम दीवे पण्णते अट्ट जोग्रणाइं आयामनिक्खंमेण साइरेगाइ पणवीस जोयणाइ परिक्खेवेणं दो कोसे ऊहिए जल्ताओं सन्ववयशामए अच्छे सण्हे॰, से ण एगाए पडमवरवेडयाए एगेण य वणसंडेण सन्वओ समता सपरिक्खित वण्णओ भाणियच्चो, गगादीवस्स ण दीवस्स उपि वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, तस्स णं वहुमज्झदेसभाए एत्थ ण महं गगाए देवीए एगे भवणे पण्णते कोस आयामेणं अद्धकोस विक्खमेण देस्णग च कोस उहु उचतेण अणेगखभसयसण्णिविद्वे जाव बहुमज्झदेसभाए सणिपेहियाए सयणिजे, से केणहेण जान सासए णामधेजे पण्णते, तस्स ण गगप्पनायकु उस्स दिक्खिणिहेणं तोरणेण गगामहाणई पवृदा समाणी उत्तरहुभरहवास एजेमाणी २ सत्ताहिं सिल्लासहरसेहिं आऊरेमाणी २ अहे खण्डप्पवायगुहाए वेयद्रुपन्वयं दालङत्ता दाहिणष्टुभरह्वास एजेमाणी = दाहिणहुभरह्वासस्स वहुमज्झ-देगमान गता पुरत्यामिमुही आवत्ता ममाणी चोद्दसहिं सलिलामहस्सेहिं समग्गा अहे जगड दालङत्ता पुरित्यमेण ल्वणममुद्द समप्पेड, गगा णं महाणई पवहे छ सकोसाइ जोयणाड विक्खमेण अद्भोस उब्वेहेण तयणतर च ण मायाए > परिवद्दमाणी २ सुहे वासिंह जोयणाङ अद्धजोयण च विक्खमेण सरोस जोयण उन्वेहेणं उमओ पार्मि दोहिं परमप्रचेड्याहिं दोहिं वणसडेहिं नर्डर सिंपुरियो अहा सी पाय जाय अहेतिमिस्प्रहाए वेसबुक्तमं शास्त्रता पत्रतिमामित्रको आवणा समाचा चोक्सरक्रिका कहे चगई पत्रतिवरेण धानगर्मा जान समयोद, सेर्स है अब । तस्य में प्रवसद्वरस उत्तरिक्षेण होर्सिण रोहियमा महान्यद्रै पक्टा समाजी दोण्यि क्षावशरे जीयजसए क्रम एगूजबीसदमाए जीवनस चत्तरामिमुद्दी पम्बएमं गैता सहजा महमुह्दपवितिएन श्वतानविदारमंहिएगं महारेप-जीयजसङ्क्ष्यं प्याप्त्यं प्याङ्कः, रोहियंसा वास महाच्याः कको प्याङः पर्य वं सर्दे एगा जिक्सिया पञ्चला सा च जिक्सिया जोवर्च शासामेर्च सद्धवेरसंजीवनाई निक्सं मेर्च कोर्च बाइकेर्ण मगरमुइबिवड्संडायसंडिया धम्मक्ट्ररामहे सम्बद्ध - रोहि र्यसा महामई बहें प्लब्द एन्य में गई एगे रोडियसाप्लाक्ट के बार्ग कुछ एम्परे स्वीतं बोतवसर्वं मानामविक्वीने विभिन्न भरीए बोनवसूर् मेनिमिटेस्से परिक्षेत्रेण दसकोराणाइ तल्लेहेणं रूक्के कुंक्यप्यामी बाद तीरचा तस्य में रोहिशंसाक्वायकंकरस वहसम्बावेसमाए एरव गं गई एने रोहिशंसा वार्स धीवे पन्नते धोसस बोसनाई आवासनिक्यं मेलं साहरेगाई फ्लास बोसपाई परिक्येयेन हो कीसे उद्धिए कर्तताको सम्बरमणामए <del>जन्के</del> सम्बे पेसं तं चेव जाब भवर्ष क्ये य सामित्रको तस्य न रोक्षियंसप्पनावर्षकस्य उत्तरिक्षेत्रं होरनेयं रोक्षेत्रसा स्वानी पबुदा समाजी डेमपर्न गार्स एजेमाणी २ जनवस्ति सरिकासदरसेहें आपूरेमाणी २ सर्वरम्हमेनद्वपन्नवं श्रद्धबोययेथं असंपद्या समाची एकत्वासिस्ही अल्पा समाणी द्रेमकर्म वास द्वदा विमयनाणी २ व्यक्तवीसाय स्वित्यस्वस्टेडी समन्ता जहे कार्य बालहता वर्षास्थानं स्थानसमुद्दं समध्येत, रोहिनंसा वं पनहे सदतेर सजीनगर्द विक्यामेणं कोस उन्मेहेणं तक्ष्मंतरं च नं सामाए २ परिवहुमानी २ सुइन्हें पनगीस जोजणसर्व विक्तारियं अञ्चादनाई जोयनाई उच्चेडेचे शमध्ये पार्टि वोहें परमवरमेहवाहें वोहि य वक्सवेहें संबरिविकता ॥ ७४ ॥ कुन्हिस्वन्तं र्ग सन्ते । बालहरपञ्चए वह कृषा प है योगमा । इकारस कृषा प ते --विक्रू है १ जुल्लिमकत्त्रू है । मरहपूर्व ३ इकावेबीकून ४ संगादेवीकून ५ सिरेक्ट ६ रोहिनंसक्ते । सिन्सनेतीकृते । हरनेतीहरे ९ इस्लयक्ते १ बेसमम्बर्ध १९ । वहि यं सन्त ! जुल्हिमकाते वासहरपम्बर् सिदक्ड वार्म कृष्टे प<sup>्ड</sup> गोनमा । पुर<del>श्चिमकननसमुद्दस्य पन्यत्यिमेनं कुन्धिमन-स्</del>रूबस्य पुर<del>त्यिमेन</del>ं एत्व ने सिक्कुके वार्म कूब पन्नते पंच ब्येजनसवाई वर्ष तवरैलं मुक्ते पंच जोत-

णसयाइं विक्खमेणं मज्हो तिण्णि य पण्णत्तरे जोयणसए विक्खमेणं उप्पि अहुाइजे जोयणसए विक्खमेण मूले एग जोयणसहस्स पच य एगासीए जोयणसए किंचि-विसेसाहिए परिक्खेवेण मज्झे एग जोयणसहस्स एग च छलसीय जोयणसय किंचि-विसेस्ण परिक्खेवेणं उप्पि सत्तर्काणउए जोयणसए किचिविसेस्णे परिक्खेवेणं, मूळे विच्छिणो मज्झे संखिते उपिंप तणुए गोपुच्छसठाणसठिए सन्वरयणामए अच्छे॰, से ण एगाए पडमवरवेड्याए एगेण य वणसंडेण सव्वओ समता सपरिक्खित, सिद्धस्स कूडस्स ण उप्पि बहुसम्रमणिजे भूमिभागे पण्णते जाव विहरंति । कहि ण भन्ते ! चुल्लहिमवन्ते वासहरपव्वए चुल्लहिमवन्तकूडे णाम कूडे पण्णते <sup>२</sup> गो०! भरहकूडस्स पुरिथमेण सिद्धकूडस्स पच्चित्थमेण एत्य णं चुह्रहिमवन्ते वासहरपव्वए चुह्रहिमवन्त-कूडे णाम कूडे पण्णत्ते, एव जो चेव सिद्धकूडस्स उचत्तिविक्खमपरिक्खेवो जाव व० भू० प॰ वण्णओ, तस्स णं बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ ण महं एगे पासायवर्डेसए पण्णते वासिंह जोयणाइ अद्वजोयण च उचतेणं इक्षतीस जोयणाइ कोस च विक्सभेणं अञ्भुगगयमृतियपहतिए विव विविह्मणिरयणभत्तिचित्ते वाउद्भय-विजयवेजयतीपडागच्छत्ताइच्छत्तकलिए तुगे गगणतलमभिलंघमाणसिहरे जालतररय-णपजरुम्मीलिएन्व मणिरयणथूभियाए वियसियसयवत्तपुटरीयतिलयरयणद्वचदिचेत्ते णाणामणिमयदामालकिए अतो वर्हि च सण्हे वइरतवणिज्ञास्हलवालुयापत्थडे सुहफासे सिस्सरीयरूवे पासाईए जाव पिडरूवे, तस्स ण पासायवर्डेसगस्स अतो वहुसमरमणिजे भूमिमारे प॰ जाव सीहासण सपरिवार, से केणहेण भन्ते ! एव बुच्चइ-चुल्लहिमवन्त-चुल्लहिमवन्ते णामं देवे महिन्निए जाव परिवसइ, किह ण भन्ते! चुछ्रहिमवन्तगिरिकुमारस्स देवस्स चुछ्रहिमवन्ता णाम रायहाणी प०१ गी० ! चुछ्र-हिमवन्तकूडस्स दिक्सणेणं तिरियमसखेजे दीवससुद्दे वीईवइत्ता अयण्ण जम्बुद्दीवं २ दिक्सणेण वारस जोयणसहस्साई ओगाहिता इत्थ ण चुल्लहिमवन्तस्स गिरिकुमारस्स देवस्स चुरुहिमवन्ता णाम रायहाणी प॰ वारस जोयणसहस्साइ आयामविक्ख-मेण, एव विजयरायहाणीसरिसा भाणियन्वा, एव अवसेसाणवि कूडाणं वत्तन्वया णेयव्वा, आयामविक्खभपरिक्खेवपासायदेवयाओ सीहासणपरिवारो अद्घो य देवाण य देवीण य रायहाणीओ णेयन्वाओ, चउस्र देवा चुल्लहिमवन्त १ भरह २ हेमवय ३ वेसमणकू हेस ४, सेसेस देवयाओ, से केणद्वेण भन्ते ! एव वुचइ-चुह्रहिमवन्ते वासहरपव्वए २ १ गो०! महाहिमवन्तवासहरपव्वयं पणिहाय आयामुचतुव्वे-हिवक्खभपरिक्खेवं पहुन्द ईसिं खुरूतराए चेव हस्सतराए चेव णीयतराए चेव, चुल्लहिमवन्ते य इत्थ देवे महिङ्किए जाव पलिओवमद्विइए परिवसइ, से एएणट्टेण

भागाम<del>विषयी</del>?

Ħ

यं परिकार

गो ! एवं जुन्ह--- कुश्हिमकृत्वे बासहरूपम्बए २ अवुत्तरं च वं गो । जुन्हि

**पंतरीने रीने हेमकए** वामें वासे प हैं थे । महाहिम<del>कर</del>ारस वासहरपम्बयस्स

यनिस्त्रवेणं नुबहिमवन्तस्य वासहरणन्त्रयस्य उत्तरेणं प्रतिकासकानसम्बस्य पन रियमनं पन्नत्विमञ्ज्यनसमुद्दस पुरस्विमेर्ग एत्व नं व्युद्दीने दीने हेमकए पाम बासे पञ्चति पाईजपदीजामए सरीजवाहिणविधिकचे पविनेषसंठायसठिए क्रुहा समयसम्बं पुढे पुरस्थिमित्राए कोबीए पुरस्थिमित्रं स्थलसम्बं पुढे प्यस्थि-मिकाए कोबीए एकरियमिङं ब्लब्स्स्म् पुद्धे वीचित्र जीनयसङ्ख्यातं एतं च पंचार जायजसर्व पंच व एग्याचीसङ्गाए कोक्यम्स निक्यंनेण इस्स बाहा प्रातिकारम्बात्विमेर्ग क्ष्मोनमस्सातं सत्त य काएको कोरकसर विकिय न एम्लबीसदमाए श्रोयनस्य नायामेणं तस्य बीचा उत्तरेषं पर्णवपश्रीजायमा हुइस्रो क्रमणसमुद्रं पुद्रा पुरत्यिमिक्षाए कोकैए पुरन्यिमिक्कं क्रमणसमुद्र पुद्रा प्रवत्यिमिक्काए जाब प्रद्रा सत्ततीस जोयनसहरमाई इन परवत्तर बोयनसर सोस्टम य एगूमनीस-इमाए बोक्नास्त किनिनिसेस्ये जानामेकं तस्त वर्त्त दाहिणेलं कद्वरीस जीमक-सहस्माई सत्त व चताके कोश्रमसर बस य रगुवबीसहसार कोश्रमस परिक्षेत्रेण हेमक्यस्त र्णं मन्त्रं । वासरतं केरिसए भावारमाक्पडोगारे प्रणाते ? मो । बहुसमर मिने मुमिमान प्रणाचे एवं व्यवसमानमानो नयकोति ॥ ७६ ॥ इहि पं भ वे । हेमक्ए बारे सहार्क्ड बार्न बहनैक्बुपन्कए क्लते ! योगमा ! रोहियाए सहार्क्स क्वाच्छिमेश रोहिर्यसाए महाचर्वेए पुरन्धिमंत्र हेम्बयवासस्य बहुमञ्जावेसमाए एरच मं सहावर्ष गाम वर्षनिकापम्बर पन्नते एगे जोवबसहरसं उन्नं स्वीतं क्षक्र आहे कोमजनवारं उन्नेहेर्ण सम्बद्धसमे प्रकार्धक्रपर्सिक्ष एवं जोन्नसम्बद्धसं

ओनमसहस्साई एथ व नामद्र बोयमसर्थ विविधिया-

ें बहुससर्य**निजे** भूमिमारे प्रणार

करके से वं एगाए पत्रमधरवैद्रमाए स्परिक्तिते वैद्यावनसंहदप्यक्षे सुर्वे को

मबन्तरस सास्य गामधेजे फ्लते वं व हमाइ जारि ॥ ४५ ॥ इद्वि वं मन्त ।

महावई य इत्थ ढेवे महिङ्किए जान महाणुभावे पिठओनमद्विइए परिवसइ, से ण तत्थ चउण्ह सामाणियसाहरसीण जाव रायहाणी मंदरस्स पन्वयस्स दाहिणेण अण्णमि जम्बुद्दीवे दीवे०॥ ७७॥ से केणहेणं भन्ते ! एव वुच्चद्-हेमवए वासे २ 2 गोयमा! चुछिहमवन्तमहाहिमवन्तेहिं वासहरपव्वएहिं दुहओ समवगूढे णिचं हेम दलइ णिच हेम दलइत्ता णिच हेमं पगासङ हेमवए य इत्य देवे महिष्टिए० पिलओव-महिङ्ग परिवसङ्, से तेणहेणं गोयमा! एव वुच्च-हेमवए वासे हेमवए वासे ॥ ७८॥ किं मनते ! जम्बुद्दीवे २ सद्दाहिमवन्ते णाम वासहरपव्वए प॰ १ गो॰ ! हरि-वासस्स दाहिणेणं हेमवयस्स वासस्स उत्तरेण पुरित्यमलवणसमुद्दस्स पचित्थिमेण पचित्यमलवणसमुद्दस्स पुरित्यमेण एत्थ ण जम्बुद्दीवे दीवे महाहिमवंते णामं वासहरपव्वए पण्णते, पाईणपढीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे पिलयकसठाणसिठए दुहा लवणसमुद्द पुट्टे पुरित्थिमिल्लाए कोडीए जाव पुट्टे पचित्थिमिल्लाए कोडीए पचितयमिलं लवणसमुद्द पुद्धे दो जोयणसयाइ उद्घ उचतेण पण्णास जोयणाइ उन्वे-हेण चतारि जोयणसहस्साई दोण्णि य दस्ततरे जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खभेणं, तस्स वाहा पुरित्यमपचित्यमेण णव जोयणसहस्साइ दोण्णि य छावत्तरे जोयणसए णव य एगूणवीसइभाए जोयणस्स अद्भाग च आयामेण, तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपढीणायया दुहा लवणसमुद्द पुट्ठा पुरित्यमिल्लाए कोडीए पुरित्थिमिल लवणसमुद्द पुट्ठा पचित्थिमिलाए जाव पुट्ठा तेवण्ण जोयणसहस्साइ णव य एगतीसे जोयणसए छच एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसाहिए आयामेण, तस्स धणु दाहिणेण सत्तावण्ण जोयणसहस्साइ दोण्णि य तेणउए जोयणसए दस य एगूणवीसइमाए जोयणस्स परिक्खेवेण, स्यगसठाणसठिए मव्वरयणामए अच्छे॰ उमओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसदेहिं सपरिक्खित । महाहिमव-न्तरस ण वासहरपन्वयस्स उपि बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते जाव णाणावि-इपचनण्णेहिं मणीहि य तणेहि य उवसोभिए जान आसयति सयति य ॥ ७९ ॥ महाहिमनतस्स ण० वहुमज्झदेसभाए एत्थ ण एगे महापउमद्दे णाम दहे पण्णत्ते दो जोयणसहस्साइ आयामेण एग जोयणसहस्स विक्खमेण दस जोयणाइ उन्वेहेण अच्छे० रययामयकूळे एव आयामविक्खभविहूणा जा चेव पउमद्हस्स वत्तव्वया सा चेव णेयव्वा, परमप्पमाण दो जोयणाइ अद्वो जाव महापरामद्द्वण्णाभाइ हिरी य इत्य देवी जान पिठओनमद्विस्या परिवसह, से एएणहेण गोयमा । एव वुच्चइ०, अदुत्तर च णं गोयमा ! महापउमद्दस्स सासए णामधेजे प॰ जं ण क्त्याइ णासी ३ , तस्स ण महापडमद्दहस्स दिन्खिणिल्लेण तोरणेण रोहिया महाणई पवृदा समाणी सोलस पेचुतरे जोक्यस्य पंच म स्मूचबीमाश्माए जानवरम दादिलामिमुही पव्चएर्च गंता मह्या चन्मुहपनितिएनं मुक्तार्रा ब्हारसैठिएमं सहरेयदो बोमजसङ्करणं प्रवापनं क्वडड.

प्येरणं भाजामणं भदतरराजोगमाई विज्यामेणं कोचं वाहरेणं मगरमुद्दविज्ञहर्मगः पर्पेठिया सम्बद्धरामह मन्छ। रोटिया वै महावर्ष्ट बहि परण्ड एरब वै सहै एरे रोडिसप्परायक्षेत्रे नामं कुत्रे प सनीसं जोनजन्मं भागामनिकरामिणं पन्नत निर्मय मधीए जोम्बराए किंबिविसम्ब परिकारेबर्च इस जोमबाई उच्चेहेर्च सक्छ सब्हे सा **भव बन्गाओं ब**रतके वहे समतीरे जार तीरणा तस्म **में रोहियणवास्** इन्हरूस बहुमज्ज्ञदम्माए एरव वे गई एगे रोडिक्डीके कार्य दीव पत्र्यते. मोसस क्रोबमार्य आयामविक्यमेनं साइरैयाई क्यास् जीववाई परिकरीवर्व दो कोस समिए बर्क-ताका सम्बद्धरामए अच्छे सं ग्रं एगाए प्रमुक्तकेकाए एगेग व इत्रसंदेशे सम्बन्धा सर्माता संपरिविधाता. रोहिक्दीवस्य व्यं वीवस्य उप्पि बहुसम्रहानिके सूमि-मागे पञ्चति ठरस णै बहुसमरमनिजस्य भूमिमागस्य बहुमञ्चादसमाए एख चै मई हुने सब्ब क्यांत कोर्स आधारीकं क्षेत्रं सं बेब प्रमार्थ व अद्धे व भागिवानी। हरून ये रोहिनप्पनानकुण्डरस इक्सिक्सिकेन तोरकेन रोहिना महाबाई पट्टा समानी द्देसबर्य बार्स एजेमाणी २ सहावर्ष बह्वेबबुफ्जर्य अद्धवोबणेच असंपत्ता प्रस्वामिन सुद्धी आवता समाणी हेमक्य वार्स बहा निभवमाणी २ अदाबीमाए सक्रिकास्वरसेहिं सममा अहे कर्ला राज्यता प्रात्मिण क्ष्मणसूर्व समप्तेत, रोहिया में बहा रोडियेना तहा प्रवाहे व सहे य मानियन्ता जाव संपरिक्यता । तस्य व महापडमरहरस उत्तरिकेन शारकेमं हरिकता महानई प्रमुद्ध समानी स्टेक्स पंजुत्तरे जोमगसए पन व एगूनबीसहमाए जोबनरस उत्तरामिसुरी पन्नएने गैडा मह्या घन्मुहपनितिएणं मुशावनिदारसिरएणं सहरेगहजीयनसहएमं प्याएणं परभर, इरिकेटा में महाणक्ष् कभी परवह एत्य में सब्दें एसा जिम्मिसा प जोरपाई आयामणं प्रामीस जोयगाई विस्तामियं शक्त जोयणं बाहोवं सपरसाह निउद्गसरामसरिया सम्बरयणायह अच्छा । हरिज्ञा वं सहायहै वर्षी प्रवद्य एरव र्व सर्ह एगे इरिकेतप्पनायकुट बास कुडे पन्यते गोणिन स चलाके जोनवसए जासा-मनिज्ञामेण सत्तमज्ञाने भोवणसए परिषयोगेर्ग श्रूपके एव हुन्तवसम्बदा सम्बा मेनस्या बाद रोरमा तस्स में इरिकेटप्यामकुण्यस्य बहुमञ्जादेसमाए एत्व वे मई एगे इरिकंतरीने कार्य बीच प वर्षीस जीनकाई जानामनिकरीमें एपुरार जीवक सर्व प्रहेशकोने हो कीचे करिए जर्मदाओ सम्बरस्थामए लच्छे है में एमाए पउ-

रोदिया न महाचर्ष जभो पनका एत्य वे मई एमा जिन्मिया व । मा वे जिन्मिया

वरवेडयाए एगेण य वणसंडेणं जाव सपरिक्खित वण्णओ भाणियव्वोत्ति, पमाण च यणिज च अट्ठो य भाणियव्वो । तस्स णं हरिकतप्पवायकुण्डस्स उत्तरिहेणं तोरणेणं ाव पन्हा समाणी हरिवस्स वास एज्नेमाणी २ वियडानई वहवेयहु जोयणेणं अस-त्ता पच्चत्थाभिमुही आवत्ता समाणी हरिवास दुहा विभयमाणी २ छप्पण्णाए सिंठ-गसहस्सेहिं समग्गा अहे जगईं दालइत्ता पच्चित्थिमेण लवणसमुद्द समप्पेइ, हरिकंता ा महाणई पवहे पणवीस जोयणाइ विक्खम्मेण अद्धजोयण उन्वेहेण तयणतर च ण गयाए २ परिव**ह**माणी २ मुहमूले अ**ह**ाइजाइ जोयणसयाई विक्खम्मेण पञ्च जोय-गाइ उन्वेहेण, उभओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसडेहिं सपरिक्खिता । ८० ॥ महाहिमवन्ते ण भन्ते ! वासहरपव्चए कइ कूडा प० २ गो० ! अट्ट कूडा प०, त०-सिद्धकूढे १ महाहिमवन्तकूडे २ हेमवयकूडे ३ रोहियकुडे ४ हिरिकूडे ५ हरि-कतकूडे ६ हरिवासकूडे ७ वेरलियकूडे ८, एव चुल्लहिमवतकूडाण जा चेव वत्तव्वया सचेन णेयव्वा, से केणद्वेण भनते! एव वुचइ-महाहिमनंते वासहरपव्वए २ 2 गोयमा ! महाहिमवंते णं वासहरपव्वए चुह्नहिमवतं वासहरपव्वय पणिहाय आया-मुचतुव्वेहविक्खम्भपरिक्खेवेणं महततराए चेव दीहतराए चेव, महाहिमवंते य इत्य देवे महिहिए जाव पिलओवमिट्टिइए परिवसइ ॥ ८१ ॥ किह णं भन्ते ! जम्बुद्दीवे दीवे हरिवासे णाम वासे प० १ गो०! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स दिक्लणेण महाहिमवन्तवासहरपव्ययस्य उत्तरेण पुरत्थिमलवणसमुद्दस्य पचित्थिमेण पचित्थमलवणसमुद्दस्स पुरित्थमेण एत्थ ण जम्बुद्दीवे २ हरिवासे णाम वासे पण्णते एव जाव पचित्थिमिलाए कोढीए पचित्थिमिल लवणसमुद्द पुट्टे अह जोयण-सहस्साइ चत्तारि य एगवीसे जोयणसए एगं च एगूणवीसइभागं जोयणस्स विक्खम्मेण, तस्स वाहा पुरित्यमपचित्यमेणं तेर्स जोयणसहस्साइ तिण्णि य एग-संद्वे जोयणसए छच एगूणवीसइभाए जोयणस्स अद्धभाग च आयामेणति, तस्स जीवा उत्तरेण पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुद्द पुट्टा पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरित्थिमिल जाव रुवणसमुद्द पुट्टा तेवत्तरिं जोयणसहस्साइ णव य एगुत्तरे जोयणसए सत्तरस य एग्णवीसङभाए जोयणस्स अदभाग च आयामेण, तस्स धणु दाहिणेण चउरासीडं जोयणमहस्माइ सोलस जोयणाइ चत्तारि एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेण । हरिवासम्म ण भन्ते ! वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे प० १ गोयमा ! वहुसमर-मणिजे भृमिभागे पण्णत्ते जाव मणीहिं तणेहि य उवसोभिए एव मणीण तणाण य वण्णो गन्धो फासो सहो भाणियन्वो, हरिवासे ण० तत्य २ देसे २ तहिं २ वहचे खुट्टा-चुट्टियाओ एव जो सुसमाए अणुभावो सो चेव अपरिसेसो वत्तव्वो । कहि ण भन्ते ! दिशाने व्यवस्था विश्वस्था विश्वस्य विश्वस्था विश्वस्य विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्य वि

न "त्य देवे महिद्दिए बाव पश्चित्रीवमहिद्दाए परिचन्द, से शंक्ट्रेजं मोतमा ! एवं कुवर् ॥ ४२ ॥ कट्रि वो मन्त्रो ! अमुद्दीवे २ विस्तृद्दे बार्यं बासहरएम्बर् एक्फ्रो ! गोनमा !

महानिवेहस्य बास्स्य विन्युवेनं हरिवासस्य उत्तरेणं पुरिवासस्यवस्युर्ध्य पर्व-तिकोणं प्रवासस्यक्षस्युर्ध्य प्रास्थियेक एक यं अनुहाँ है स्वीत निर्माह कर्मा वास्त्रस्यय् प्रणाने पाईकप्रधानाय्य चान पुड़े चनारि बोवस्प्याहं प्रवेत पुरिवासिकाय् बाव पुड़े प्रवासिकाय् कान पुड़े चनारि बोवस्प्याहं उद्वे उच तैयं चतारि गाउयस्याहं उन्वेदेनं घोत्रस्य बोवस्याहस्थाहं अद्व य बातात्रे बोवस्य स्य प्रोस्तिय य एत्याबीन्त्रस्याय् बोवस्यस्य विकास्य वाह्य प्रतिकारस्थानं मेणं बीस बोवस्याहस्थाहं एगं च पनतुं बोवस्यम्यं दुनिय प्रपूचानास्य बोवस्यस्य क्षायास्य वाह्य-रुद्ध अद्याहायः कामायाग्यं तस्य बीचा उत्तरेणं वाह्य वाह्यस्थान्त्यस्य बोवस्यस्य प्राप्तियः वाह्यस्य वाह्यस्

एग च ब्राज्यमं बोबवावतं दुलिन य एएएगरियद्दानाए बोबायस्य ब्राचानेबीं तस्य यद ब्राहिशनं एग बोबायस्वस्य रिवानं व व्याप्यस्य स्वादानं दिवित व व्याप्यस्य स्वादानं व व्याप्यस्य स्वादानं दिवित व व्याप्यस्य स्वादानं स्वतानं स्वादानं स्वादा

जोयणसहस्साइ चत्तारि य एक्क्वीसे जोयणसए एग च एगूणवीसइभाग जोयणस्स दाहिणाभिमुही पव्वएणं गता महया घडमुहपवित्तिएण जाव साइरेगन्वउजोयण-सइएण पवाएण पवटइ, एव जा चेव हरिकन्ताए वत्तव्वया सा चेव हरीएवि णेयन्वा, जिट्मियाए कुडस्स दीवस्स भवणस्स त चेव पमाण अहोऽवि भाणियन्वो जाव अहे जगइ दालइत्ता छप्पण्णाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरितथम लवणसमुद्दं समप्पेइ, त चेव पबहे य मुहमूले य पमाण उन्वेहो य जो हरिकन्ताए जाव वण-सडसपरिक्खिता, तस्स ण तिगिछिद्दहस्स उत्तरिह्रण तोरणेण सीओया महाणई पबृढ़ा समाणी सत्त जोयणसहस्साइ चत्तारि य एगवीसे जोयणसए एग च एगृण-वीसइभाग जोयणस्स उत्तराभिमुही पव्वएण गता महया घडमुहपवित्तिएण जाव साइरेगचउजोयणसइएण पवाएण पवडइ, सीओया ण महाणई जओ पवडइ एत्थ ण महं एगा जिक्मिया पण्णता चत्तारे जोयणाइ आयामेण पण्णास जोयणाड विक्खमेण जोयण वाह्रहेण मगरमुह्विउद्वसठाणसिठया सन्ववहरामई अच्छा ०, चीओया ण महाणई जिहें पनडइ एत्य ण मह एगे सीओयप्पवायङ्ण्डे णाम कुण्डे पण्णते चत्तारि असीए जोयणसए आयामविक्खमेण पण्णरसअहारे जोयणसए किंचिविसेस्णे परिक्खेवेण अच्छे एवं कुडवत्तव्वया णेयव्वा जाव तोरणा। तस्स ण सीओयप्पनायकुण्डस्स वहुमज्झदेसमाए एत्य ण सह एगे सीओयदीचे णाम दीचे पण्णते चउसिंह जोयणाइ आयामविक्खमेण दोण्णि विउत्तरे जोयणसए परिक्खेवेण दों कोसे ऊसिए जलताओं सन्ववइरामए अच्छे सेस तहेव वेहयावणसङभूमिभाग-भवणसयणिजासद्वो भाणियव्वो, तस्स ण सीओयप्पवायकुण्डस्स उत्तरिहेण तोरणेण सीओया महाणई पबूढा समाणी देवकुरु एजेमाणी २ चित्तविचित्तकूडे पञ्चए निसढ-देवकुरुस्र्सुलसविज्जुप्पभदहे य दुहा विभयमाणी २ चउरासीए सल्लिलासहरसेहिं आपूरेमाणी २ भइसालवण एजेमाणी २ मदर पन्वय दोहिं जोयणेहिं असपत्ता पचित्यमाभिसुही आवत्ता समाणी अहे विज्जुप्पभ वक्खारपव्यय दारइत्ता मन्दरस्स पन्वयस्स पचित्थिमेण अवरिवदेह वास दुहा विभयमाणी २ एगमेगाओ चक्कविट-विजयाओ अडावीसाए २ सलिलासहस्सेहिं आपूरेमाणी २ पञ्चिहिं सलिलासयसहस्सेहिं दुतीसाए य सिकलासहस्सेहिं समग्गा अहे जयतस्स दारस्स जगइ दालइत्ता पचित्थिमेण लवणसमुद्द समप्पेइ, सीओया ण महाणई पवहे पण्णास जोयणाइ विक्समेण जोयण उन्वेहेण, तयणतर च ण मायाए ? परिवह्नमाणी २ मुहमूले पञ्च जोयणसयाइ विक्खम्मेण दस जोयणाइ उन्वेहेण उमओ पार्सि दोहिं पडमवर-वेइयाहिं दोहि य वणसंदेहिं सपरिक्खिता। णिसदे ण भन्ते ! वासहरपन्वए

हरिवागर्ड र पुज्यविश्वकृते भ हरिर्हे ५ रिर्वकृते ६ तीमोबार्ड ० ध्वमर विदेश्ये ८ स्मार्ड ९ यो पेव पुजाहिमांतरुवाय उपपानिकाममारित्वे वो पुण्यविष्यमे राज्याणी य समेव व्यक्ति वेशस्या से केपाईच मान्ते र एवं मुख्य निराह बारहरपत्रम् २ रे गोमामा विषयहे व बारहरपत्रम् वहते कुण प्रमानिकामानिकामारिता विषयहे यो मान्ति एवं मान्ति या प्रमानिकामारिता क्रियर परिवाद, से जेपाडे में गोममा व पुण्यकृतिकासे बारहरपत्रम् २ अस्त प्रमानिकामानिकास

कहि ने मन्ते ! वस्तुहीने चीवे सहायिषेहें नामं वासं एक्नो है योगमा ! नौक बन्तरम बासहरफक्सस्य एकिसणेर्ज विस्तहरूम बासहरफक्यस्स सत्तरेर्थे दुरस्थि-

स्वाक्तमस्त्राहरू एकिकोच एकिकास्ववस्याहरू प्रतिकारेचे एक नं बाजुरी रे ।
स्वाकिते गार्म नाग्ने पार्वकरियालय उत्तिकार्मिकारिकामिकार्म परिकर्तन्ति
केतास्परित्य दुझ स्वक्तपञ्ज दु उत्तिकर जाव पुत्रे व्यक्तिस्तिकार कोर्येए एक
रिविमाने जाम पुत्रे जीतीर्थ केयायाहरूसाई क्ष्य कुम्बरीए स्वीक्तपन्ति रिवास्य
राज्यक्तिस्तार कोन्यक्त विकासम्पर्यक्ति एस कुम्बरीए स्वीक्तपन्ति रिवास्य
राज्यक्तिस्तार कोन्यक्तपन्ति क्षय कुम्बरीए स्वीक्तपन्ति रिवास्य
वाज्यक्तिस्तार कोन्यक्तपन्ति क्षया कुम्बरीय स्वीक्तपन्ति क्षया
वाज्यक्तिस्ति तस्य जीवा बहुस्वक्रविकारण पार्वक्रपन्ति इत्तार क्ष्यक्तपन्ति अर्थे
प्रतिभिक्तार कोरीर प्रतिकारिक कम्बर प्रकृति क्षया क्षयक्तपन्ति इत्तार क्षयक्तपन्ति अर्थे
स्वीक्तपन्ति क्षयानिकीति एस्त व्यक्तिस्ति प्रवासिकी व्यक्तपन्ति केयायः
वीवस्तानी कोन्यस्य किनिकीशाहिए परिक्रवेक्ति महासिकी यो वाल्यक्ति स्वासिकी व्यक्तपन्ति स्वासिकी स्वस्ति स्वासिकी स्वस्ति स्वासिकी स्वस्ति स्वस्त

महिष्ट्रिए जाव पलिओवमहिइए परिवसइ, से तेणहेणं गोयमा! एव वुच्चइ-महा-विदेहे वासे २, अदुत्तर च णं गोयमा ! महाविदेहस्स वासस्स सासए णामधेजे पण्णते ज ण क्याइ णासि ३ ॥ ८५ ॥ किह ण भन्ते ! महाविदेहे वासे गन्ध-मायणे णामं वक्तवारपञ्चए पण्णते १ गोयमा। णीलवन्तस्स वासहरपञ्चयस्स दाहिणेण मंदरस्स पव्ययस्य उत्तरपचित्थिमेणं गिघलावङ्स्स विजयस्स पुरिच्छमेण उत्तरकुराए पचित्यमेण एत्य ण महाविदेहे वासे गन्धमायणे णामं वक्खारपव्वए पण्णते, उत्तरदाहिणायए पाईणपढीणविच्छिण्णे तीस जोयणसहस्साइ दुण्णि य गउत्तरे जोयणसए छच य एगूणवीसइमाए जोयणस्स आयामेण णीलवतवासहर-पव्वयतेणं चत्तारि जोयणसयाइ उष्टूं उच्चतेणं चत्तारि गाउयसयाई उन्वेहेण पद्य जोयणसयाइ विक्खम्भेण तयणतरं च ण मायाए २ उस्सेहुव्वेहपरिवद्धीए परिवद्ध-माणे २ विक्खम्भपरिहाणीए परिहायमाणे २ मदरपव्वयतेणं पन्न जोयणसयाइ उष्ट उचतेण पद्म गाउयसयाइ उन्वेहेण अगुलस्म असखिजाइभाग विक्खम्मेणं पण्णते गयदन्तसठाणसठिए सन्वरयणामए अच्छे॰, उभओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडोहं सव्वओ समन्ता सपरिक्खिते, गन्धमायणस्स ण वक्खारपव्व-यस्स उप्पि बहुसमर्मणिजे भूमिमागे जाव आसयन्ति । गन्धमायणे ण० वक्खार-पव्वए कह कूडा पण्णता १ गो० । सत्त कूडा प०, तजहा-सिद्धकूढे १ गन्धमायणकूढे २ गिथलावईकृहे ३ उत्तरकुरकृहे ४ फलिहकृहे ५ लोहियक्खकृहे ६ आणदकृहे ७। किह ण भन्ते ! गंधमायणे वक्खारपव्वए सिद्धकृडे णाम कूडे पण्णते ? गोयमा ! मदरस्स पव्वयस्स उत्तरपत्रियमेण गधमायणकूडस्स दाहिणपुरित्यमेणं एत्य ण गंधमायणे वक्खारपञ्चए सिद्धकूढे णामं कूढे पण्णते, ज चेव चुल्रहिमवन्ते सिद्धकुडस्स पमाण त चेव एएसिं सब्वेसिं भाणियव्व, एवं चेव विदिसाहिं तिण्णि कूडा भाणियव्वा, चउत्थे तइयस्स उत्तरपचित्थमेणं पश्चमस्स दाहिणेण, सेसा उ उत्तरदाहिणेण, फलिहलोहियक्खेसु भोगकरभोगवईओ देवयाओ सेसेस सारेसणा-मया देवा, छस्रवि पासायवर्डेसगा रायहाणीओ विदिसासु, से केणहेण भन्ते! एव वुचइ-नाधमायणे वक्खारपञ्चए २ १ गो० ! गधमायणस्स ण वक्खारपञ्चयस्स गंधे से जहाणामए-कोट्टपुडाण वा जाव पीसिज्जमाणाण वा उक्किरिज्जमाणाण वा विकिरिज्ञमाणाण वा परिभुज्जमाणाण वा जाव ओराला मणुण्णा जाव गधा अभि-णिस्सवन्ति, भवे एयारुवे 2, णो इणहे समहे, गंधमायणस्स ण इत्तो इद्वतराए चेव जाव गधे पण्णते, से एएणहेण गोयमा! एव वुचइ-गधमायणे वक्खारपव्वए २, गधमायणे य इत्य देवे महिश्विए परिवसङ्, अदुत्तर च ण० सामए णामधेजे

॥ ४६ ॥ प्रह्निय सम्से ! सहाविदेहे वासे उत्तरकुरा जार्म द्वरा प १ गो । मंदरस्य पन्दमस्य उत्तरेर्वं जीकाश्तरम् बासहरपन्दबस्य इक्टिग्लेर्गं शत्वमायबस्य बन्दरारपन्त्रयस्य पुरश्यिमेण आस्त्रवन्तस्य वक्यारप्रकामस्य प्रवस्थिमेणं एत्यः गै उत्तरहरा नामे हरा प्रव्यक्ता पाईवपधीमायया उद्योधशादिवानिकिया अञ्चर्षर संद्राणसंद्रिया इहारस कोमधमहस्साई भट्ट य बाबाडे बोयधसए होण्यि य एगूर्व-बीसइमाए जोयकस्य विक्याम्प्रेजेति तीसे जीवा उत्तरेर्व पाईनपरीयायमा हुरा वक्यारपच्चवं पुद्राः चंबहा-पुरस्थिमिजाए कोबीए पुरस्थिमिक वक्षारपञ्चव पुद्रा एवं पविधानिकाए जाव पवरियमितं वत्रतारमञ्जय पुट्टा श्रवण्यं जोगणसङ्ख्यारं बायामेमंति चीरे न बणु दाहियेवं सर्वे जोयपसहस्मातं बतारे व अद्वारहे जीयजसप् हुबासस य एन्एवनीसहमाएं खोबणस्य परिक्चेदेवं उत्तरकुराएं वं मन्तं ! इराए केरिसए आबारभावपडोवारे पन्तते ! गोयमा ! बहुसमरमञ्जि मूमिमारो पञ्चते एवं पुरुषाञ्चिता क्योब सुरमासस्मानतकता स्थेव नेताना वार प्रसंगमा १ मिसगदा २ असमा ३ सदा ४ तेवतर्ग ५ सक्वितारी ६ n ८७ ॥ रहि र्व मन्ते ! उत्तरकुराए २ बमगा भागं हुवे पन्यसा पन्यता ! योजमा ! जीवर्गतस्य बासहरमञ्चयस्य इक्स्प्रियाओं जरिमन्दाओं व्यवस्थितकार् चौतीने चतारि व सत्तमाए जोदणस्य अनाहाए सीदाए महावहेए उसको कुछ एत्व भ बस्या नामे हुवे पन्नता प्रमाता जोनगरहस्स उर्द उन्होज लहुहृह्याई जोनगरवाई उन्हेहेर्न मुके एगं बोजपसङ्स्यं बागामिकस्यामेणं सन्तरे अस्ट्रमाई बोजनसमहं शानामः विक्यान्सेचं उन्ति पेन जोसनसम्बद्ध कानासन्तिस्यस्येण सुके हिन्ति जोननसर स्साइ एग च बाबर्ड जीवजसर्य किनिविसेसाहियं परिश्चोधेर्च मज्हे दो जोवजसर स्पन्नं तिष्मि बाबतरे जोमणसए किंभिनिसंसाहिए परिक्लेवेलं उदारे एमं जोमण-सहरस पत्र व एकारीए जोनजसए किविविसेसाबिए परिक्जेबेर्च सूत्रे विकित्ता मज्ते परिता उपि त्युया असमस्राजनंतिया सम्बर्गनगासया अबद्ध सन्त्रा परीमं २ परमानरवेड्यापरिविधाता यतेर्यं २ वनसङ्घपरिविश्वाता दास्रो से पर्यम-क्रकेहनाओं हो गाठमाई उच्च जनतेर्ग प्रध वसुसनाई विश्वकानेर्ज है।याक्क राज्यक्तमको सामिक्तम्बो तेसि व समगपन्तमार्थं तथ्य बहुसमरमनिजे मूसिमारी क्ष्मतो जान तस्त व बहुसमस्मानिकस्स भूमिमागस्य बहुमकादेसमाए एत्व व पूर्व पासासक्वेसमा प ते व पासासक्वेसमा क्षावर्ष्ट जोसवार्व अदक्षेत्रम व तर्व त्रवोत्यं इदातीरं योजवारं क्षेत्र व आयामनिक्यंगेर्व शासायवानमे मानियमो हीद्वासना सपरिवास बाब एल्ब पं क्रमगान देवायं सोलस्टर्य

आयरक्यादेवसाहस्सीण सोलस महासणसाहस्सीओ पण्णताओ, से केणहेण भते! एव वुचड-जमगा पव्वया २ <sup>१</sup> गोयमा ! जमगपव्वएसु ण तत्य २ टेसे २ तिहें २ वहवे खुट्ठाखुट्टियासु वावीसु जाव विलपंतियासु वहवे उप्पलाइ जाव जमगवण्णा-माडं जमगा य इत्थ दुवे देवा महिद्धिया॰, ते ण तत्थ चउण्ह सामाणियसाह-स्सीण जाव भुजमाणा विहरंति, से तेणद्वेण गो०! एव वुचइ-जमगपव्वया २, अटुत्तर च ण सासए णामधेजे जाव जमगपन्वया २। कहि ण मन्ते ! जमगाणं देवाण जिमगाओ रायहाणीओ पण्णताओ १ गोयमा ! जम्बुद्दीवे वीवे मन्दरस्स पन्वयस्स उत्तरेण अण्णाम जम्बुद्दीवे २ वारस जोयणसहस्साइ ओगाहिता एत्थ ण जमगाण देवाण जिमगाओ रायहाणीओ पण्णत्ताओ वारस जोयणसहस्याइ आयामविक्लम्भेण सत्ततीस जोयणसहस्साइ णव य अडयाले जोयणमए किंचिविसेसाहिए परिक्येवेण, पत्तेय २ पायारपरिक्खिता, ते ण पागारा सत्ततीस जोयणाइ अद्धजोयण च उहु उचतेण मूले अद्धतेरसजोयणाइ विक्खम्भेण मज्झे छ सकोसाइ जोयणाइ विक्खम्भेण उवरिं तिण्णि समद्भोसाइ जोयणाड विक्खम्भेण मूले विच्छिण्णा मज्झे सखित्ता उर्पिप तणुया वाहि वहा अतो चडरंसा सन्वरयणामया अच्छा , ते ण पागारा णाणामणि-पञ्चवण्णेहिं कविसीसएहिं उनसोहिया, तजहा-किण्हेहिं जाव सुक्लिहिंह, ते ण कवि-सीसगा अदकोस आयामेण देस्ण अदकोस उड्ढ उच्चतेण पञ्च धणुसयाइ वाहहेण सन्वमणिमया अच्छा॰, जिमगाण रायहाणीण एगमेगाए वाहाए पणवीस पणवीस दारसय पण्णत्त, ते ण दारा वाविद्वं जोयणाइ अद्धजोयण च उद्घ उच्चतेण इक्षतीस जोयणाइ कोस च विक्खम्भेण तावइय चेव पवेसेण, सेया वरकणगथूभियागा एवं रायप्पसेणइज्जविमाणवत्तव्वयाए दारवण्णओ जाव अट्टहमगलगाइति, जमियाण रायहाणीणं चउिह्सिं पञ्च पञ्च जोयणसए अवाहाए चत्तारि वणसण्डा पण्णता, तंजहा-असोगवणे १ सत्तिवण्णवणे २ चपगवणे ३ चूयवणे ४, ते ण वणसङा साइरेगाड वारसजोयणसहस्साइ आयामेण पञ्च जोयणसयाड विक्खम्मेण पत्तेय २ पागारपरिक्खिता किण्हा वणसण्डवण्णको भूमीओ पासायवर्डेमगा य भाणियन्वा, जमिगाण रायहाणीण अतो वहुसमरमणिज्ञे भूमिभागे पण्णत्ते वण्णगोत्ति, तेसि ण वहुसमरमणिजाण भूमिमागाण वहुमज्झदेसभाए एत्थ ण दुवे उवयारियालयणा पण्णता वारस जोयणसयाइ आयामिवनसम्भेण तिण्णि जोयणसहरसाइ सत्त य पञ्चाणरुए जोयणसए परिक्खेवेण अद्धकोस च वाह्हेण सन्वजंबूणयामया अच्छा०, पत्तेय पत्तेय पउमवरवेइयापरिक्खिता, पत्तेय पत्तेय वणसहवण्णओ भाणियव्वो, तिसोवाणपिडस्वगा तोरणचउद्दिसिं भूमिभागा य भाणियव्वत्ति, तस्स ण बहुमज्झ- अभिसेयसभाए वहु आभिसेके भडे, अलकारियसभाए वहु अलकारियमंडे चिट्टड, ववसायसभाद्य पुत्ययरयणा, णदा पुक्खरिणीओत्ति,-उववाओ जमगाण अभिसे-यविहूसणा य ववसाओ । अवरं च सुहम्मगमो जहा य परिवारणाइही ॥ १ ॥ जावङ्यमि पमाणिस हुति जमगाओं णीलवताओ । तावङ्यमन्तर खलु जमगदहाण दहाण च ॥ २ ॥ ८८ ॥ किह ण भन्ते । उत्तरकुराए २ णीलवन्तद्दे णाम दहे पण्णते १ गोयमा । जमगाण० दिक्खिणहाओ चरिमन्ताओ अद्वसए चोत्तीसे चत्तारि य सत्तभाए जोयणस्स अवाहाए सीयाए महाणईए बहुमज्झदेसभाए एत्थ ण णीलवन्तद्दे णाम दहे पण्णते, दाहिणउत्तरायए पाईणपधीणविच्छिण्णे जहेव पउमद्दे तहेव वण्णओ णेयव्वो, णाणत्त दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसडेहिं सपरि-क्खित्ते, णीलवन्ते णाम णागकुमारे देवे सेस त चेव णेयव्व, णीलवन्तद्हस्स पुव्वावरे पासे दस २ जीयणाई अवाहाए एत्य ण वीस कंचणगपव्वया पण्णता, एग जीयणसय उद्दु उचतेण-मूलमि जोयणसय पण्णत्तरि जोयणाइ मज्झंमि । उवरितले कचणगा पण्णास जोयणा हुति ॥१॥ मूलमि तिण्णि सोले सत्तत्तीसाइ दुण्णि मज्झिम । अट्ठावण्णं च सय उवरितके परिरबो होइ ॥ २ ॥ पढमित्य नीलवनतो १ बिइओ उत्तरकुरू २ मुणेयव्वो । चदद्दहोत्य तइओ ३ एरावय ४ मालवन्तो य ५ ॥ ३ ॥ एवं वण्णओ अद्धो पमाण पिल्ञोवमद्विद्या देवा ॥ ८९ ॥ किह ण भन्ते ! उत्तरकुराए २ जम्बूपेढे णाम पेढे पण्णते १ गोयमा ! णीलवन्तस्स वासहरपव्वयस्स दक्क्लिण मन्दरस्स० उत्तरेण मालवन्तस्स वक्खारपव्वयस्स पचित्यमेण सीयाए महाणईए पुरिविमिहे कृते एत्थ ण उत्तरकुराए कुराए जम्बूपेढे णास पेढे पण्णते पञ्च जीयण-सयाइ भायामविक्खम्मेण पण्णरस एकासीयाइ जोयणसयाई किचिविसेसाहियाई परिक्खेवेणं वहुमज्झदेसभाए वारम जोयणाइ वाहक्षेण तयणन्तर च ण मायाए २ पएसपरिहाणीए परिहायमाणे २ सन्वेस ण चरिमपेरंतेस दो दो गाउयाइ बाह्रेण सव्वजम्बूणयामए अच्छे०, से ण एगाए पडमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेण मन्वओ समन्ता संपरिक्खिते दुण्हपि वण्णको, तस्स ण जम्बूपेटस्स चडिहसिं एए चत्तारि तिसोवाणपिडहवगा पण्णता वण्णओ जाव तीरणाइ, तस्स ण जम्बूपेढस्स बहुमज्झ-देसभाए एत्य ण मणिपेढिया पण्णता अट्टजोयणाइ आयामविक्खम्मेण चत्तारि जोय-णाड चाहहेण, तीसे ण मणिपेढियाए उप्पि एत्य णं जम्बूसुदसणा पण्णता अह जोय-णाइ उच्च उचतेण अद्भजोयण उच्वेहेण, तीमे ण खघो दो जोयणाइ उष्टु उचतेण अद्भजोयण वाहलेण, तीमे ण साला छ जोयणाइ उष्टु उष्वतेण वहुमज्झदेसभाए अह जीयणाइ आयामविक्खमेण साइरेगाइ अह जीयणाई सन्वरंगेण, तीसे ण अय-३९ मुता०

किम्बुद्रकरी पासाईमा वरिसक्तिका अंजूप् य सर्वस्थाप् चटहिर्मि बतारि साक्ष प तत्य में जे से पुरत्विभिन्ने साके पूरम में भवने पञ्जत कोसे धामामेम एकमेव भवरमित्व समाधिकं सेसेस पासायवर्वेसमा सीहासमा य सपरिवारा इति । प्राम् र्व+ बारसदि पडमबरधेरवादि सम्बन्धे समन्ता सपरिविचता वेश्याण कण्यको कर्ण् यं अञ्जेशं शर्द्वसर्थं बम्बूयं तत्रुवताय सम्बन्धो समन्ता संपरिविक्तता तासि वं क्लाओं ताओं ने कम्यूओं छाँहै पडमक्रिक्साहि संगरिकियत्ता कम्यूए में हुईसमाप वत्तरपरिवर्गन वत्तरेक वत्तरप्रकृतिकार्य ग्रस्थ मं अवादियस्य वेत्रस्य कार्य धानानिक्साहरसीर्ण कतारि कम्बुसाइरसीको कन्यताओं ठीसे र्ण पुरक्षिकेर्य नउण्हं अस्मामहिसीनं कतारि वस्तुओं एज्यताओं -वाहिनपुरस्थिमे इविवासेन तह अवरदमिक्तवेषं च । अद्ध दस वारसेत य मवन्ति कामूसहस्सात् ॥ ९ ॥ अभिवादिवान प्रचरियमेण सत्तेव हाति कम्युओ । स्रोक्स साहरसीओ चत्रहिति भागरक्कार्ज ॥ २ ॥ जम्बू मं विद्ये सङ्ख्यी वजसब्दे सम्बद्धी समन्ता संप-प्रिक्तिता कम्बूए ने पुरक्षिभये प्रमाधे बोयवाई प्रवर्ध बयसेड बोयाब्रिक एत में भवने प्रजात कीस मायामण सो पन बज्बाओ सववित्र क एवं सेसाप्तनि विसास भवमा जम्बूए न उत्तरपुरस्थिमेथं कार्म बजसर्व कमास क्रेमपाई कोगाहिता एत्य णं कतारि पुरुक्तरिणीओ क्लताओं तैनहा-परमा १ पश्चमध्यमा इसवा ३ इसवप्यमा ४ तस्यो यं कोसं आवासेचं अकरोसं विकटामोर्ज प्रवासन्तर्मा व विश्व व क्लामा वासि व सन्त्रो पासायवश्चरा कोस मानामेले कदरोसं विक्यान्मेर्व वेसूर्ण क्रोस उर्च उक्तेर्ग बज्यको सीहासमा स्परेपारा एवं संसामु विविसाञ्च वाहा-पडमा पडमप्पमा चव इमुवा कुमुवप्यहा । स्पन्त-गुम्मा चित्रका उप्पक्षा उप्पक्तका ॥ १ ॥ भिगा सिगपसा के अंत्रमा क्षांक्रममा । सिरिकेना सिरिमहिका सिरिजेदा जेव सिरिमिक्स ॥ २ ॥ वस्तुएँ पुरश्विमानस्य अवणस्य उत्तरेणं उत्तरपुरश्विमानस्य पासायवर्डेसयस्य विधि-नेन एत्न वं नृष्टे पन्गते अञ्च कोसनाई उर्षु उपरोजं वो बोननाइ उम्मेदेन सूचे मञ्च बोगजाई भागमनिकसम्मेणं ज्युगजार्यसमाए छ बोर्वणाई सामामिकग्रामेणे उन्हें क्तारि जोनधाई आनामनिक्यम्भेर्ज-फानीस्युरस नारसेन मूले व महित

त्रवर्षि च । समिसमाद परित्यो कृषस्य इमस्स बोद्यम्यो ॥ १ ॥ सून विकित्ये मन्दरे सचितो त्रवरि तत्रुए सम्बरमयसम्प व्यक्ते वेदसमयसबस्यको एवं स्वर्तम कृना इति । कम्पूप नं सनस्याप् तुनासमा नामनेज्ञा च तं न-सनस्या ॥ जमोदा २ य, सुप्पवुद्धा ३ जसोहरा ४ । विदेहजम्वू ५ सोमणसा ६, णियया ७ णिच-महिया ८॥१॥ मुभद्दा य ९ विसाला य १०, मुजाया ११ मुमणा १२ विया । सुद्सणाए जम्बूए, णामघेजा दुवालस ॥ २ ॥ जम्बूए ण० अट्टहुमगलगा०, से केणहेणं भन्ते ! एव वुचइ-जम्बू सुदसणा २ १ गोयमा ! जम्बूए ण सुदंसणाए अणाढिए णामं देवे जम्बुद्दीवाहिवई परिवसइ महिद्धिए०, से ण तत्थ चउण्ह सामाणिय-साहस्सीणं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं जम्बुद्दीवस्स ण दीवस्स जम्बूए सुदसणाए अणाढियाए रायहाणीए अण्णेसिं च बहूण देवाण य देवीण य जाव विहरइ, से तेणहेण गो०! एव वुचइ०, अदुत्तर च णं गोयमा! जम्बूसुदसणा जाव भुविं च ३ धुवा णियया सासया अक्खया जाव अवद्विया । कृहि ण भन्ते ! अणादियस्स देवस्य अणाढिया णाम रायहाणी पण्णता १ गोयमा ! जम्बुद्दीवे २ मन्दरस्स पव्ययस्स उत्तरेण जं चेव पुव्वविणयं जमिगापमाण तं चेव णेयव्व जाव उववाओ अभिसेओ य निरवसेसोति ॥ ९० ॥ से केणट्टेणं भन्ते ! एवं वुच्ह-उत्तरकुरा २ १ गोयमा । उत्तरकुराए० उत्तरकुरू णाम देवे परिवसइ महिष्टिए जाव पलिओ-वमहिइए, से तेणहेणं गोयमा एवं बुचइ-उत्तरकुरा २, अदुत्तर च णं जाव । किह ण भनते । महाविदेहे वासे मालवंते णामं वक्खारपन्वए पण्णते ? गोयमा ! मदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरित्यमेण णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं उत्तरकुराए० पुरित्थमेण वच्छस्स चक्कविदिविजयस्स पचित्थिमेण एत्थ णं महाविदेहे वासे मालवते णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते उत्तरदाहिणायए पाईणपढीणविच्छिण्णे जं चेव गधमायणस्स पमाण विक्खम्मो य णवर्गिमं णाणत्त सञ्ववेरुलियामए अवसिद्ध त चेव जाव गोयमा ! नव कूडा पण्णत्ता, तजहा-सिद्धकूढे०, सिद्धे य मालवन्ते उत्तरकुरु कच्छसागरे रयए। सीओय पुण्णभद्दे हरिस्सहे चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥ कहि णं भन्ते ! मालवन्ते वक्खारपन्वए सिद्धकृडे णाम कृडे पण्णते १ गोयमा ! मन्दरस्स पन्वयस्स उत्तरपुरित्थमेण मालवतस्स कूडस्स दाहिणपचित्थमेणं एत्य ण सिद्धकृडे णाम कूडे पण्णते पच जोयणसयाई उष्टू उचतेणं अवसिद्ध त चेव जाव रायहाणी, एव माल-वन्तस्स कूडस्स उत्तरकुरकूडस्स कच्छकूडस्स, एए चत्तारि कूडा दिसाहिं पमाणेहिं णेयव्वा,कूडसरिसणामया देवा,कहि णं भन्ते ! मालवन्ते ० सागरकूडे णाम कूडे पण्णते १ गोयमा ! कच्छक्डस्स उत्तरपुरत्यिमेण रययकूडस्स दिक्खणेण एत्थ ण सागरकूडे णाम कृडे पण्णते पच जोयणसयाइ उष्टू उचतेण अवसिद्ध त चेव सुभोगा देवी रायहाणी उत्तरपुरित्थमेण रययकूढे भोगमालिणी देवी रायहाणी उत्तरपुरित्थमेणं, अवसिद्धा कृडा उत्तरदाहिणेण णेयन्वा एक्केण पमाणेणं ॥ ९१ ॥ किह ण मन्ते !

हासीए तहा पमार्च भावियम् सहिद्विए सहज्करए, से क्षेत्रदेशं मन्तः। एवं युवर्-

सामकरने वन्यारकवय २ र गोयमा । सावनने व वन्यारयवय तस्य तस्य है २ ति है २ वह वेतिसायमा गोमानिकायमा वाव मक्तिययमा ते व प्रमा तहे २ वह वेतिसायमा गोमानिकायमा वाव मक्तिययमा ते व प्रमा तहे २ ति हमा विद्यार प्रमाणिकायमा वे व प्रमा प्रमाणिकायमा वृद्धान प्रमाणिकायमा वृद्धान प्रमाणिकायमा वृद्धान प्रमाणिकायमा वृद्धान प्रमाणिकायमा वृद्धान प्रमाणिकायमा विद्यार अपूर्ण व प्रमाणिकायमा । विद्यार अपूर्ण व प्रमाणिकायमा । विद्यार अपूर्ण व प्रमाणिकायमा । विद्यार व प्रमाणिकायमा । विद्यार प्रमाणिकायमा । विद्यार प्रमाणिकायमा । विद्यार प्रमाणिकायमा । विद्यार प्रमाणिकायमा विद्यार व प्रमाणिकायमा विद्यार प्रमाणिकायमा विद्यार प्रमाणिकायमा । विद्यार प्रमाणिकायमा व प्रमाणिकायमा विद्यार व व्यापार व व्यापार व विद्यार व व्यापार विद्यार व व्यापार व व्यापार व विद्यार व व्यापार व व्यापार व विद्यार व व्यापार विद्यार व व्यापार व व्यापार व विद्यार व व्यापार विद्यार व व्यापार व व्यापार व व्यापार व व्यापार व व्यापार व व्यापार व विद्यार व व्यापार व व्

पुरित्यनेतं एक वं बाजुरीने व महानिरहे वाते वच्छे वासं निजय पणतो उत्तर वाहिष्मस्य पारं वर्गानीव्यक्तिक्विक स्वाधिक्र के स्वाधिक्र के स्वाधिक्र के स्वाधिक्र के स्वध्यक्ति स्वाधिक्र के स्वध्यक्ति स्वाधिक्र के स्वध्यक्ति स्वाधिक्र के प्रमुख्य के स्वध्यक्ति स्वाधिक्र के प्रमुख्य के स्वध्यक्ति स्वाधिक्र के प्रमुख्य के स्वध्यक्ति स्वाधिक्र के स्वध्यक्ति के

मेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव, दाहिणद्धकच्छे णं भन्ते ! विजए मणुयाण केरिसए आयारमावपडोयारे पण्णते १ गोयमा ! तेसि ण मणुयाण छिन्वहे सघयणे जान सम्बदुक्खाणमत करेंति । कहि ण भन्ते ! जम्बुद्दीचे दीवे महाविदेहे वासे कच्छे विजए वेयहे णाम पव्वए प॰ 2 गोयमा ! दाहिणद्धकच्छविजयस्य उत्तरेणं उत्तरद्ध-कच्छस्स दाहिणेणं चित्तकूडस्स० पचित्यमेण मालवन्तस्स वक्खारपव्वयस्स पुरित्य-मेण एत्य ण कच्छे विजए वेयहे णामं पन्वए पण्णत्ते, पाईणपरीणायए उदीणदाहि-णविच्छिणो दुहा वक्खारपव्वए पुट्टे पुरिक्थिमिलाए कोडीए जाव दोहि वि पुट्टे भर-ह्वेयहूसिरसए णवरं दो बाहाओ जीवा घणुपट्ट च ण कायव्व, विजयविक्खम्मसिरसे आयामेण, विक्खम्मो उचत उन्वेहो तहेव य विजाहरआभिओगसेढीओ तहेव, णवरं पणपण्ण २ विज्ञाहरणगरावासा प०, आमिओगसेढीए उत्तरिलाओ सेढीओ सीयाए ईसाणस्स सेसाओ सक्स्सित्त, कूडा-सिद्धे १ कच्छे २ खडग ३ माणी ४ वेयहु ५ पुष्ण ६ तिमिसगुहा ७ । कच्छे ८ वेसमणे वा ९ वेयहे होंति कूडाई ॥ १ ॥ किह ण मन्ते ! जम्बुद्दीचे २ महाविदेहे वासे उत्तरद्धकच्छे णामं विजए पण्णते 2 गोयमा ! वेयष्ट्रस्स पन्वयस्स उत्तरेण णीलवन्तस्स वासहरपन्वयस्स दाहिणेणं माल-वन्तस्स वक्खारपञ्चयस्स पुरित्यमेण चित्तकृडस्स वक्खारपञ्चयस्स पच्चित्यमेणं एत्य ण जम्बुद्दीवे कीवे जाम सिज्झन्ति तहेव णेयव्य सव्वं, कहि ण भन्ते । जम्बुद्दीवे दीने महाविदेहे वासे उत्तरद्धकच्छे निजए सिंधुकुडे णाम कुंडे पण्णते १ गोयमा । मालवन्तस्स वक्खारपन्वयस्स पुरित्यमेण उसभक् इस्स० पत्रित्यमेणं णीलवन्तस्स वासहरपन्वयस्स दाहिणिले णियने एत्य ण जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उत्तरद्वकच्छ-विजए सिंधुकुढे णाम कुढे पण्णते सिंहुं जोयणाइ आयामविक्खम्मेण जाव भवण भट्टो रायहाणी य णेयव्वा, भरहसिंधुकुडसरिस सर्व्वं णेयव्व जाव तस्स ण सिंधुकुण्डस्स दाहिणिहेण तोरणेण सिंधुमहाणई पवृद्धा समाणी उत्तरद्धकच्छविजय एजेमाणी २ सत्ताहिं सिललासहस्सेहिं आपूरेमाणी २ अहे तिमिसगुहाए वेयष्ट्रपव्वय दालहत्ता दाहिणकच्छविजय एजेमाणी २ चोइसिंह सिललासहस्सेहिं समग्गा दाहिणेण सीय महाणइ समप्पेइ, सिंधुमहाणई पवहे य मूले य भरहसिंधुसरिसा पमाणेण जाव दोहिं वणसडेहिं सपरिविखता । कहि ण भन्ते ! उत्तरद्वकच्छविजए उसभकृडे णाम पव्वए पण्णते १ गोयमा ! सिंधुकुडस्स पुरित्यमेण गंगाकुण्डस्स पचित्यमेण णीलवन्तस्स वासहरपव्वयस्म दाहिणिके णियवे एत्थ ण उत्तरद्वकच्छविजए उसह-क्रें णाम पत्वए पण्णते अह जोयणाई उद्घ उच्चतेण त चेव पमाण जाव राय-हाणी से णवर उत्तरेण भाणियस्वा। कहि ण भन्ते । उत्तरद्धकच्छे विजए गंगा- एत्य मं उत्तरहरूके गंगाकुके मार्ग कुछ क्यारे सर्हि क्येगाई माग्रामिक्स म्मेर्न तहेन बहा सिंधु बाब नवसंबेच य संपरिनिकता । से केजदेवं अन्ते ! एवं नुष्य-भक्ते मिनए क्वके निनए हैं गोनमा । कव्के निनए वेनपूरस पम्बनस्स बाह्रि पैत्रं सीमाप् महापाईप् उत्तरेणं नमाप् महानाईप् पन्तरिवमेणं सिंघूए महाबाईप् प्ररश्चिमेय दाविषद्वक्ष्यभिवयस्य अहमञ्जावेसभाए एत्व यं खेमा गामं रामहानी प विकीयारायद्वाणीसरिया माणियव्या तत्व थे केमाए राजद्वाणीए क्यो मार्म राजा समुप्यज्ञह, अहवाहिशवन्त जाव सम्बं अरहोमवर्ग माधियन्त्रं निकस-मधक्यों सेसे सर्ज माधियां बाद मुंबए माष्ट्रसए हाहे, काकगामकेले य कर्क इरन देने महिन्दिए जान पठिन्नोनमङ्ग्रिए परिनसह, से एएजड्रेनं गोसमा एनं हुन्य-क्रम्के निवए पत्के विकए जान निन्ते ॥ ६३ ॥ कहि व सन्ते । जस्तुरीये चीने महानिबंदे बासे जिलकुके यार्ग क्वन्सारपम्बए एव्यति है गोयमा ! सीनाए महानईए उत्तरेनं बौलवन्तरस नासहरक्ववरस दाक्किनेचं कन्कविवयस्स पुरुत्विमेर्च प्रकारकियरस एकरिक्रोणं एत्य णं कम्बुहीने कीचे सहाविदेहे वासे निएक्टे यांनं वक्सारपञ्चए एव्यक्ते उत्तरदाहिनावए पाईपपदीनविकित्ये छोछस्त्रीमन-सहस्साह प्रवा व बाजरूए जोमपासए बुजिंग य एगूजबीस्क्रमाए जोमगस्स मासामेर्च प्य बोस्प्रस्थतं विक्यास्त्रेणं चीव्यन्तवासहरपन्यतिषं वतारि योग्यस्यातं स्ट उन्होंनं नतारि गाउनसमाई उन्नेहेर्ण तननंतरं न मं भानाए २ **इस्सेहम्मेह**परि वदीए परिवस्ताचे २ शीकामहापाई मेरोलं पत्र कोयकसमझं उन्हें उनतेनं पत्र माउन समार्च उम्महेर्ण करस्क्षण्यस्थानस्थित् सम्बर्गयामम् अच्छे सम्बे बाद पहिर्दे उसमो पार्स दोई पठमवरनेदवाई दोहि य वनसंदेह संपरिनिकते वन्नमो दुर्वा विताकुकरस व क्वजारपञ्चयस्य उप्पि बहुसगरमधिकै मुमिमारो पञ्चते अत्र आस-बन्ति वितार्वे में भन्ते । क्वकारफ्लए का कृता फ्लाता है योक्सा । चार्मी कृता पर्वाता तैनहा- शिवनुकै जितनुके कृष्णकृते सुप्रकारुके समा उत्तरदावि केनं परप्परिति पढमं सीयाय कत्तरेण चठरवय मीक्कन्तरस वासहरप्रव्यवसस दाहिनेनं एत्व नं चितन्तुके बार्य देने सहित्रिए बान रायहाणी सेति ॥ ९४ ॥ कृष्टि में सन्ते ! कम्बुर्राने कीने महानिनेहें नारी सकन्छे जामें निजय पत्नते हैं धोयमा । धीनाए सञ्जानद्वेषु उत्तरेणै जीठकन्तरस वासक्रएम्बनस्य वाद्विगेर्न यदा-वरेए महावर्ष् प्रवाधिमेणे वित्तकृतस्य वक्ताराज्यवस्य पुरस्थिमेन एस म

जम्बुहीवे दीवे महाविदेहे वासे सकच्छे णामं विजए पण्णते, उत्तरदाहिणायए जहेव कच्छे विजए तहेव सुकच्छे विजए, णवर खेमपुरा रायहाणी सुकच्छे राया ससुप्पज्जइ तहेव सन्व। कहि ण भन्ते । जम्बुद्दीवे २ महानिदेहे वासे गाहाबङ्कुडे० पण्णते 2 गो॰ । सुकच्छविजयस्स पुरित्थमेण महाकच्छस्स विजयस्स पचित्थमेणं णीलवन्तस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिहे णियम्बे एत्य ण जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे गाहावइ-कुडे णाम कुण्डे पण्णते, जहेव रोहियंसाकुण्डे तहेव जाव गाहावइदीवे भवणे, तस्स ण गाहावइस्स कुण्डस्स दाहिणिहेण तीरणेणं गाहावई महाणई पवृहा समाणी पुक्च्छमहाकच्छविजए दुहा विभयमाणी २ दाहिणेण सीय महाणइ समप्पेइ, गाहावई ण महाणई पवहे य मुहे य सन्वत्य समा पणवीस जोयणसय विक्खम्मेण अहु।इजाइ जोयणाइ उन्वेहेण उमओ पासि दोहि पउमवरवेहयाहि दोहि य वण-सण्डेहिं जाव दुण्हिव वण्णाओ, किह ण भनते ! महाविदेहे वासे महाकच्छे णामं विजए पण्णते १ गोयमा । णीलवन्तस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेण सीयाए महाणईए उत्त-रेण पम्हकूडस्स वक्खारपञ्चयस्स पचित्थिमेण गाहावईए महाणईए पुरस्थिमेणं एत्थ ण महाविदेहे वासे महाकच्छे णाम विजए पण्णते, सेस जहा कच्छविजयस्स (णवरं भरिद्वा रायहाणी) जाव महाकत्छे इत्य देवे महिड्डिए अट्टो य भाणियन्वो । कहि णं भन्ते ! महाविटेहे वासे पम्हकूडे णामं वक्खारपव्वए पण्णते १ गोयमा ! णील-वन्तरस॰ दिक्खणेण सीयाए महाणईए उत्तरेणं महाकच्छस्स पुरित्थमेण कच्छावईए पचित्यमेण एत्य ण महाविदेहे वासे पम्हकूढे णाम वक्खारपञ्चए पण्णते, उत्तर-दाहिणायए पाईणपढीणविच्छिण्णे सेस जहा चित्तकूडस्स जाव आसयन्ति०, पम्हकूढे चतारि कूडा प०, त०-सिद्धकूढे पम्हकूढे महाकच्छकूढे कच्छावइकूढे एव जाव अद्घो, पम्हकूडे य इत्य देवे महिद्विए० पिठओवमद्विहए परिवसइ, से तेणद्वेण गोयमा । एव वुचइ०। कहि ण मन्ते । महाविदेहे वासे कच्छगावई णाम विजए प० १ गो०! णीलवन्तस्स॰ दाहिणेण सीयाए महाणईए उत्तरेण दहावईए महाणईए पचित्यमेण पम्हकूडरूस॰ पुरित्यमेण एत्थ ण महाविदेहे वासे कच्छगावई णाम विजए प॰, उत्तर-दाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे सेस जहा कच्छस्स विजयस्स जाव कच्छगावर्ड य इत्य टेवे॰, कहि ण भन्ते ! महाविदेहे वासे दहावईकुण्डे णाम कुण्डे पण्णते ? गोयमा ! आवत्तस्स विजयस्स पचित्यमेण कच्छगावईए विजयस्स पुरित्थमेण णील-वन्तस्स व दाहिणिहे णियने एत्थ ण महाविदेहे वासे दहावईकुण्डे णाम कुण्डे प० सेस जहा गाहावईकुण्डस्स जाव अद्यो, तस्स णं दहावईकुण्डस्स दाहिणेण तोरणेण दहावर्ड महाणई पबूढा समाणी कच्छावर्डभावते विजए दुद्दा विभयमाणी २ दाहिणेण

एत्प व उत्तरद्वक्तके र्गगाकुण्डे जामं कुन्ते कुनते सर्वि बोजगाई शाजामिकप्र-म्मेर्न सहैव बहा सिभू जाव बजरीकेण व संपरिविकाता । से केजट्रेजं अन्ते ! एर्न <u>तुमाइ-फरके निजए कम्के निजए हैं गोनगा ! क्रम्के निजए बेरबुस्य प्रध्यवस्य दार्वि</u> नेपं चीनाए महानईए उत्तरेणं गंगाए महान्यीए प्रवस्थिमेशं सिंदाए महानईए पुरस्थिमेच बाह्यिणस्वकण्डाविषयसस्य बहुमज्जावेसमाय् युख्य यं श्रेमा थार्म रावद्याणी प विभोगारायद्वाचीसरिसा माभिवस्था तत्व में केमाए रावद्वाचीए मध्ये णामं राजा एसुप्पजाह, महजाहिमकरा जान सम्मं माहोजनमं माहिसकां निगक सम्बद्धां सेसं सर्ग सामियमां बाव श्रीचए साबुरसए छहे, बच्छनामहेको य क्ले इत्य देवै महित्रिए काव पश्चिमोबमहित्य परिवस्त, से एएनद्वेर्य ग्रीवमा रिव कुचर-व को निवय करके निवय जान किये ॥ ९३ ॥ बक्षी में मन्ते । बस्तरि चैने महानिदेहें वासे निचनुके जार्ग क्वन्तार्थन्वए क्वन्ते । गोयमा ! चीनार महान्द्रेषु उत्तरैनं नीक्नन्तस्य वासद्रपम्बयस्य दाक्क्ष्मेनं क्रन्छविकयस्य <u>प्र</u>रस्थितं प्रकारमें वृद्धस्य प्रचारिकारेणं एत्व गं कामुतीचे वीचे महानिवेदे बासे निपन्ने यामं बक्दारपञ्चए क्याते अत्तरवाश्चिवायए पर्वजनशैकवित्वाको सोक्सजीमण सङ्स्थाई पद्ध व बाक्छए चोयक्छए डुन्चि व एगून्वीस्क्रमार जीवगरस सावायेर्न पत्र कोममस्वादं निक्यास्त्रोणं मीक्सम्यवास्त्रहरूपम्बरंतेणं चताति जोपणस्यादं गई क्वतेर्ज क्वारि गालबसवाई सम्बेद्देष सर्वातरे व वं माबाए १ स्टे**ट्ट**केंद्र<sup>मो</sup> कुद्वीय परिवर्षमाचे २ सीमामद्वाग्यहँगीतेणं पत्र जोवणस्थाद सर्द्व स्वतीनं का गाउन सवाई राज्येहेर्य करराच मस्काणपंकिए सम्बद्धणासए सन्दे सन्हे बाद पश्चित्रे समजो पासि बोर्बि फरमवरवेदवार्बि वोहि व वजसवेदि संपरिविदाते वज्जनो इ<sup>न्हरि</sup> वित्तकुरस्य र्व वक्कारपन्ववस्य उपि वहुसमर्माणजे भूमिमारो पञ्चते अव वार्स-बन्ति भित्तकुर्वे में मन्ते । क्लबाएक्सए कह कृता एक्ता ! योजमा । क्तारी कृश पन्नता रांबहा-छित्रकृषे विशानुचे कत्करूचे सरस्करूचे समाउत्तरवाहि मर्ज परप्परित पत्रमं सीमाए उत्तरेशं चतत्थए मीतम्बन्तस्य वासहरपन्मक्स वाहियोजं एरव वे निताहरे नामं वेचे महित्तिए बाव रानदानी सेति ॥ ५४ ह कद्वि में सन्ते ! जन्तुहीने कीने महानिश्चेहे नासे शक्तको चार्स विवय पत्नती ! योगमा ! सीवाय महाण्ड्यं उत्तरेणं जीवन-तरस वासहरपम्बनस्य वाहिनेमं पहा-बरेप महानदेप पन्नतियोगं निवाहत्त्वस वक्तारकन्यस्य प्रतियोगं एल व

लनभर परा । कह न मन्त । महानवह वाध मंक्षेणकु मार्ग क्वाराण्या रूपते ! गो । गोक्ष्म तस्य वाहियोगं दीवाए उत्तरेतं प्रेयताशस्य विवयस्य एक्टियोगं आवास्य विवयस्य पुरिवयेश्य एक्ष प्रेयारिदेहे वाहे कविष्कृतं वास स्वत्यारस्मार् स्वमते वत्तरहाहित्रावर् पाईनपर्यापविक्रिके के छे बहा वित्रहरूस वाह आस्प्रतिद पाईन्यकृते में मन्त्री ! कह हवा प ! गोयमा ! नतारि देश स्वता अस्प्रतिद पाईन्यकृते में मन्त्री ! कह विवयस्य स्वता क्वारा हत्त्र स्वता स्व

तहा एवो मानियन्त्रों जीव मंगकावते य हरू देवे परिकार है एकड्रेम । क्वें मं भन्ते । मानिवेंद्रे वाध पंचार्य क्रेंद्रे वामं कृष्णे एकत्रे । पोजना । मंगनावर्ष्ण इतिकारे पुरुवासिकसम्स्य एक्वियोगं गीवक्रक्तस्य वाह्रिके स्वितं एक मं पंचार्य कर्ते वाह्रक्ष कर्म प्रकार कर्म क्वेंद्र कर्म मंदि का क्वेंद्र एक मंदि का क्वेंद्र क्वेंद्र कर्म पर्वेंद्र का क्वेंद्र क्वेंद्र कर्म पर्वेंद्र का क्वेंद्र क्वेंद्य क्वेंद्र क्वेंद्र क्वेंद्र क्वेंद्र क्वेंद्र क्वेंद्र क्वेंद्र

प्रकारे ! गोसमा ! जीवमन्तरस ब्रमिटायेणं सीवाए उत्तरेणं सक्षिमकृतस्य पुरस्थियेणं पंत्राबद्देष प्रवास्थियेणं शुरुष वं प्रंगसावते जामं विवार राज्यों ज्या इन्कास्य विवार

महालेबहैं वाने पुरुक्तकावों वार्म विवाद करती हो गोसा। वीस्तान्तरास वार्रि वेसं गीवाद जरूर के वार्वाह्म प्रशिक्त स्वाह्म कर्म वार्याह्म कर्म वार्याहमी गार्म विवाद कर्माहम क्षाह्म क्षाह्म कर्माहम प्रशिक्त से एक मं पुरुद्ध में इस्ताहम क्षाह्म क्षाह्म क्षाह्म कर्म वार्याहम क्षाह्म क्षाह्म

महाविटेहे वासे पुक्खलावई णाम विजए पण्णत्ते, उत्तरदाहिणायए एवं जहा कच्छ-विजयस्स जाव पुक्खलावई य इत्थ ढेवे॰ परिवसङ, से एएणहेणं॰। कहि ण भनते ! महाविदेहे वासे सीयाए महाणईए उत्तरिह्ने सीयामुहवणे णाम वणे प० १ गोयमा ! णीलवन्तस्स दक्खिणेण सीयाए उत्तरेण पुरित्थमलवणसमुद्दस्स पञ्चित्थमेण पुक्ख-लावडचक्कविश्विजयस्स पुरितथमेणं एत्थ ण सीयामुहवणे णामं वणे पण्णत्ते, उत्तर-दाहिणायए पाईणपढीणविच्छिण्णे सोलसजोयणसहस्साइ पञ्च य वाणउए जोयणसए दोण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं सीयाए महाणईए अन्तेण दो जोयण-सहस्साइ णव य धावीसे जोयणसए विक्खम्मेण तयणतर च ण मायाए २ परिद्ययमाणे २ णीलवन्तवासहरपव्वयतेण एग एगूणवीसइभागं जोयणस्स विक्खमेणति, से ण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसण्डेणं सपरिक्खिते वण्णओ सीयामुद्दवणस्स जाव देवा आसयन्ति०, एवं उत्तरिष्ट पास समत्तं । विजया मणिया । रायहाणीओ इमाओ—खेमा १ खेमपुरा २ चेव, रिट्टा ३ रिट्टपुरा ४ तहा। खग्गी ५ मजूसा ६ अविय, ओसही ७ पुंडरीगिणी ८॥ १॥ सोलस विजाहरसेढीओ तावऱ्याओ आमिओगसेढीओ सन्वाओ इमाओ ईसाणस्स, सन्वेस विजएस कच्छवत्तव्वया जाव अहो रायाणो सरिसणामगा विजएस सोलसण्ह वक्खारपव्वयाण चित्तकृडवत्तव्वया जाव कृडा चतारि २ वारसण्ह णईण गाहावइव-त्तव्वया जाव उमओ पासि दोहिं पउमवरवेड्याहिं वणसण्डेहि य॰ वण्णओ ॥ ९५॥ कहि ण मनते! जम्बुद्दीने दीने महानिदेहे वासे सीयाए महाणईए दाहिणिहे सीयामुह्वणे णाम व्रणे पण्णते 2 एवं जह चेव उत्तरिष्ठ सीयामुह्वण तह चेव दाहिणपि भाणियव्वं, णवर णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेण सीयाए महाणईए दाहिणेण पुरित्थमलवणसमुद्दस्स पचित्यमेण वच्छस्स विजयस्स पुरित्थमेण एत्थ ण जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सीयाए महाणईए दाहिणिहें सीयामुहवणे णाम वणे प०, उत्तरदाहिणायए तहेव सन्व णवरं णिसहवासहरपव्वयतेण एगमेगूणवीस-इमाग जोयणस्स विक्खम्मेण किण्हे किण्होभासे जाव महया गन्यद्धणि मुयते जाव आसयन्ति॰ उभक्षो पासि दोहिं पउमवरवेहयाहिं॰ वणवण्णओ इति । किह ण भन्ते ! जम्बुहीवे दीवे महाविदेहे वासे वच्छे णाम विजए पण्णते ? गोयमा ! णिसहस्म वासहरपव्वयस्स उत्तरेण सीयाए महाणईए दाहिणेण दाहिणिहस्स सीया-मुद्दवणस्स पचित्यमेण तिउडस्स वक्खारपव्ययस्स पुरत्थिमेण एत्य ण जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे वच्छे णाम विजए पण्णते त चेव पमाण सुसीमा रायहाणी १, तिउडे वक्खारपन्नए सुवच्छे विजए कुण्डला रायहाणी २, तत्तजला णई महा- **अस्या**रपम्बए रम्मणे निजय पम्हानई रामहाणी ६ सम्मत्तवका महागई रमनिजे निजए प्रभा राज्ञाणी ७ मार्चकणे क्वन्यारप्रकाए मंगळावश्च विजय रज्ञमसंचमा रामशाणीति ८ एवं अह चेन सीयाए महाजाँए उत्तरं पासं शह चेन दिनानिर्ध मानियमं दाहिनिज्ञसीयामुहनपाइ, इमे सक्यारकृषा र्च∽शितवे १ नेसमणहरे र संबने १ मार्वबने ४ [गईंड तत्तक्का १ सत्तवका १ सम्भूतवसा १] निजमा स -मच्छे ध्वच्छे महावच्छे पजत्ये वच्छगावहै । रम्मे रम्म्ए चेव रम-किया संग्रमाबद्वे १ १ व राजदाणीको वंद्यहा-मुसीमा इच्चका चेत्र अक्साहर पहचरा । संभावहं पन्दावह, द्वभा रसजस्वमा ॥ २ ॥ वच्छस्त विकास्त निर्वाह वाहिकेणं सीया उत्तरेशं वाहित्रिज्नीयामुहक्णे पुरस्किनेश शिवते प्रवासिनार्न सुरीमा राबद्वाणी पमार्ज वं चेवेति क्ष्म्ब्यर्जन्तरं तिजवे तम्बे सक्ये निगए एएमं क्ष्मेणं दक्तका नई महाक्के विवर बेसमजबूबे क्ष्मारक्कर नक्कार्य विवयं मत्त्रक्ता गई रम्मे विवयं संबने क्ल्यारपञ्चए रमाए विवयं उपनाधक माद्रै रसनिज्ये निजय मार्थजणे वक्तारपञ्चय संगक्तवाद्र निजय ॥ ९६ म कहि ने मन्ते । बन्दुरीने शीचे महानिषेत्रे वासे शोमक्स नामं इन्दारपन्तर पन्नते ! यो | जिन्हस्स बान्दरपन्नवस्स सत्तरेचं सन्दरस्य पञ्चवस्य बाह्रिकपुरस्य-मने संग्रहाबहुविज्ञवस्य प्रवरिधमेनं देशकुराष् पुरस्थिमेनं एस्य नं बानुहीने र महाबिदंहे वासे सोमजसे वामं बन्धारपञ्चए क्यते उत्तरवाहिणावए पाईपपडीम मिकिन्ने का माइक्टे काबारपमप् तहा नवरं समारवामप् अप्टे वाव पडित्वे विस्कृतान्त्ररपन्धरंतिर्वं बत्तारि बोयणसमहं उर्वु उक्तेर्वं बतारि गार्टन-स्याइं तम्बेदेनं सेस तदेव सम्बं धवरं अद्धे सं गोबमा ! सोमवसे यं वश्वारपनए बद्दवे बंदा म बंदीओं य सोमा शुमना सोमनसं म इत्य बंदे महिद्विए बाद परि बसर्, से एएनट्रेबं धीयमा ! जाव विजे। सोमधसे ये मंते ! बस्यारफनए वह बूडा प १ गो । सत्त कुटाप तं∞-सिदे १ सोमजस १ किय बोक्स्थे संगळावर्षे रूटे है । देशक ४ मिसस ५ वेंचन ६ मसिद्रकृत ७ स बोदस्मे ॥ ९ ॥ एवं सम्ब प्रसारमा कृता एएसि पुरुद्धा विशिविविद्याए माजिशका जहा गर्ममायनस्य विस्तरका<del>य</del>-कृतिमु सवर बंबयाओ धुवच्छा वच्छमिता य कारिक्षेत्र वृत्रस्त सरेसवामना वंता रामद्वाणीओ वनिराणेणीते । वृद्धि ये मन्ते । मदानिवहे वासे वेवउरा नामं इरा क्याता । गोममा । अन्दरस्य क्ष्मयस्य दाविकेचं असहस्य बासहरक्ष्मयस्य उत्तरेचं

विज्जुप्पहस्स वक्खारपव्वयस्स पुरित्थमेण सोमणसवक्यारपव्वयस्स पचित्थमेण एत्थ ण महाविदेहे वासे देवकुरा णाम कुरा पण्णता, पाईणपडीणायया उदीण-दाहिणविच्छिण्णा इक्कारस जोयणसहस्साइ अट्ट य वायाले जोयणसए दुण्णि य एगूणवीसङ्भाए जोयणस्स विक्खम्भेणं जहा उत्तरसुराए वत्तव्वया जाव अणुसज्ज-माणा पम्हगन्धा मियगन्था अममा सहा तेयतली सणिचारीति ६ ॥ ९७ ॥ कहि ण भन्ते ! देवकुराए २ चित्ताविचित्तकृङा णाम दुवे पव्त्रया प० १ गो० ! णिसहस्स वासहरपन्वयस्स उत्तरिहाओं चरिमताओं अट्टचोत्तीसे जोयणसए चत्तारि य सत्तमाए जोयणस्स अवाहाए सीओयाए महाणईए पुरित्यमपचित्यमेणं उभओरू छे एत्य ण चित्तविचित्तरूडा णाम दुवे पव्वया प०, एव जच्चेव जमगपव्वयाण० सच्चेव०, एएसि रायहाणीओ दिक्खणेणित ॥ ९८ ॥ किह ण भन्ते ! देवकुराए २ णिसढद्दे णाम दहे पण्णते १ गो० । तेसिं चित्तविचित्तकूडाणं पव्वयाण उत्तरिहाओ चरिमन्ताओ अड़चोत्तीसे जोयणसए चत्तारि य सत्तभाए जोयणस्स अवाहाए सीओयाए महाण-ईए बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं णिसहद्दहे णाम दहे पण्णत्ते, एवं जचेव णीलवत-उत्तरकुरुचन्देरावयमालवताण वत्तव्वया सच्चेव णिसहदेवकुरुम्रसुलसविज्जुप्पभाणं णेयव्वा, रायहाणीओ दक्तिलणेणित ॥ ९९ ॥ किह ण भन्ते ! देवकुराए २ कूड-सामिलिपेढे णाम पेढे पण्णत्ते १ गोयमा । मन्दरस्स पव्वयस्स दाहिणपचित्यमेणं णिसहस्स वासहरपन्वयस्स उत्तरेण विज्जुप्पभस्स वक्खारपन्वयस्स पुरितथमेण सीओयाए महाणईए पचत्थिमेण देवकुरुपचत्थिमदस्स वहुमज्झदेसभाए एत्थ णं देवकुराए कुराए कूडसामलीपेढे णाम पेढे प०, एव जन्नेव जम्बूए सुदसणाए वत्तव्वया सच्चेव सामलीएवि भाणियव्वा णामविहूणा गरुलदेवे रायहाणी द्विख-गेण अवसिष्ठ त चेव जाव देवकुरू य इत्थ देवे० पिलओवमिट्टइए परिवसइ, से तेणहेण गो० । एव बुचइ-देवकुरा २, अदुत्तर च ण० देवकुराए० ॥ १०० ॥ कहि ण भन्ते ! जम्बुद्दीवे २ महाविदेहे वासे विज्जुप्पमे णाम वक्खारपव्वए पण्णते १ गो० । णिसहस्स वासहरपन्वयस्स उत्तरेण मन्दरस्स पव्वयस्स दाहिण-पचित्यमेण देवकुराए० पचित्यमेण पम्हस्स विजयस्स पुरित्यमेणं एत्य ण जम्यु-हीवे २ महाविदेहे वासे विज्जुप्पमे० वक्खारपञ्चए प०, उत्तरदाहिणायए एवं जहा मालवन्ते णवरि सञ्चतवणिज्ञमण् अच्छे जाव देवा आसयन्ति । विज्जुप्पमे ण भन्ते ! वक्खारपञ्चए कइ कूडा प० १ गो० ! णव कूडा प०, त०-सिद्धकूडे विज्जुप्पभवृहे देवकुरुवृहे पम्हकूहे कणगकूहे सोवित्ययकूहे सीओयाकूहे सयज्जल-कूढे हरिक्ढे । सिद्धे य विज्जुणामे देवकुरू पम्हकणगसोवत्थी । सीओया य सयज्ज-

सदिर्दे पेर बोदम्बं ॥ १ ॥ एए इरिश्डवमा प्रशस्त्रका गेरम्बा एएसि कृतार्ण पुण्छा दिसिनिदिसाओ णयन्त्राओ बहा मासमन्तरस हरिस्महकृते तह अब इरिट्टेर रामहानी जह चेन वाहिनेमं चमरचना रामहानी तह मेसका क्यम-सोमत्थियर्डेस बारिसेणवमाइयाओ हो वेबयाओ अवसिद्वेस कृडेत कृडसरिसणा-मया देवा राजद्वाणीओ वाद्विकेणं से केल्ट्रेजं अन्ते ! वर्षं कुक्द्-विज्ञुप्पभे वज्यात् पम्बर् ९ है गोयमा । विज्ञासको स्ने बक्दारपन्तर विक्तुमित सम्बन्नो समन्ता भीमासेइ उज्जेबेइ पमासङ्ग विक्राप्पासे य इत्य देवे जाब पविज्ञोत्रमद्विरए परिवस्त, से एएसड्रेनं गोबसा । एवं लुक्क-विज्ञुप्पसे २ अकुत्तरं क मं जाव क्रिके B १ १ ॥ एवं परने निवय अस्तपुरा रायक्काची औरावई वक्कारपम्बए १ डपरहे निवय सीहपुरा राक्टाणी भीरांवा सदान्त्रे १ सहायम्बे निवय सहापुरा रावदायी पम्हान्त्रं चन्द्रारपम्पए ३ पम्ह्रगान्त्रे विवय विवयपुरा रामहाणी सीक्योमा महानह ४ संबे निवय अवराह्या रायहाची सारीविसे वनकारपन्नय ५, इनुए विवय करमा राजद्वाणी अंतोवादियी ग्रहायाँ ६ यक्ति विवय वसीमा राजदाणी द्वहानहे नक्यारमञ्जूष ७ वक्तिगानहे विवय नीयरोमा राजहाजी ८ दाहिन्दि पीमोबामुद्दवनसङे उत्तरिकेले एमेव भानियम्ने बद्दा सीबाए, क्ये लेकर विक्या रायहाजी चन्चे बक्यारपञ्चए १ शक्ये विकए अयन्ती एनहासी समिमाक्षिणी गई २ सहावप्ये अवयु वयन्त्री रायहाणी शुरे वक्ष्यारपञ्चए रे वप्पावह निजय नपराहरा रामहाजी फेजमारिकी वह ४ क्रमा निजय बह्यरा राबद्वाजी जागे क्वजारपञ्चए ५, शुक्रमा विजय समयपुरा रायद्वाची येसीरमास्त्रियी सतरमाई ६ गन्निके लेकए अवज्ञा गावहाणी देवे वक्यारकवए » गेनिकलई विवय अओन्सा रानद्वाणी ८ एवं सन्दरस्य प्रव्यवस्य प्रवस्थितिकं पार्च मानि-यम्म तरण ताव सीमोसाए नवैए वनिकामिक में कुछे इस निकास तं-नाम्बे द्युपन्हें सक्षापन्हें, चंडरणे पम्हणान्हें । संबे असूप् नक्रिणे असूमें नक्षिणान्हें ।। १ ।। हमामा रामहाणीमा र्त -मासपुरा सीहपुरा महापुरा चेन इक्ट विवन-पुरा । अवराहमा व अस्या व्यक्तेण शह बीक्सीमा व ॥ २ ॥ इमे वनवारा र्तजहा-मके पाने सासीलिंगे ग्रहानहे, एवं इत्य परिकारीए दो वो लिसवा कुम्परि समामया माणिवन्ता निसा निविसाओ य र्रं सीओयसहर्वा प पासे इसे विकस मानिज्ञां सीमोगाप वारि<sup>०</sup> निर्श्व थ तंत्रहा-वप्पे सवप्पे महा पंचित्राको ॥ १ ॥ रामको

जिया। चक्कपुरा खम्गपुरा हवइ अवज्झा अउज्झा य ॥ २॥ इमे वक्खारा, तजहा-चन्दपब्वए १ सूर्पब्वए २ णागपब्वए ३ देवपब्वए ४, इमाओ णईओ सीओयाए महाणईए दाहिणिहे कूळे-खीरोया सीहसोया अंतरवाहिणीओ णईओ रे, उम्मिमालिणी १ फेणमालिणी २ गमीरमालिणी ३ उत्तरिछविजयाणन्तराउत्ति, इत्थ परिवाडीए दो दो कूडा विजयसरिसणासया भाणियन्वा, इमे दो दो कूडा अवद्विया, तजहा–सिद्धकूडे पव्वयसरिसणामकूडे ॥ १०२ ॥ कहि ण भन्ते ! जम्बुद्दीवे २ महाविदेहे वासे मन्दरे णाम पव्वए पण्णते १ गोयमा । उत्तरकुराए दिक्खणेण देवकुराए उत्तरेण पुत्र्वविदेहस्स वासस्स पचित्थिमेण अवरविदेहस्स वासस्स पुरित्यमेण जम्बुद्दीवस्स २ बहुमज्झदेसभाए एत्य ण जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरे णामं पन्वए पण्णते णवणउङ्जोयणसहस्साइं उद्घ उच्चतेणं एगं जोयणसहस्स उन्वेहेण मूळे दसजोयणसहस्साई णवई च जोयणाइ दस य एगारसभाए जोयणस्स विक्खम्मेण वरणियले दस जोयणसहस्साइ विक्खम्मेण तयणन्तर च ण मायाए २ परिहायमाणे परिहायमाणे उवरितले एग जोयणसहस्स विक्खंमेण मूले एकतीस जोयणसहस्साइं णव य दसुत्तरे जोयणसए तिण्णि य एगारसभाए जोयणस्स परि-क्खेंबेणं घरणियले एक्सतीस जोयणसहरसाइं छच तेवीसे जोयणसए परिक्खेंबेणं उनिरतले तिण्णि जोयणसहस्साइ एग च वावट्ठ जोयणसय किंचिविसेसाहिय परिक्खे-वेण मूले विच्छिणो मज्झे सिखते उविरं तणुए गोपुच्छसठाणसिठए सव्वरयणामए अच्छे सण्हेति । से ण एगाए पडमवरवेइयाए एगेण य वणसङ्गेण सन्वओ समन्ता सपरिक्खिते वणाओति, मन्दरे ण भनते । पव्यए कइ वणा प० १ गो० ! चतारि वणा प॰, त॰-भह्सालवणे १ णन्दणवणे २ सोमणसवणे ३ पडगवणे ४, कहि ण भनते ! मन्दरे पञ्चए भद्दसालवणे णाम वणे प० १ गोयमा ! धरणियले एत्थ ण मन्दरे पन्वए भइसालवणे णाम वणे पण्णते, पाईणपढीणायए उदीणदाहिणविन्छण्णे सोमण-सिवज्जुप्पहगधमायणमालवतेहिं वक्खारपव्वएहिं सीयासीओयाहि य महाणईहिं अहमागपविभत्ते मन्दरस्स पव्वयस्य पुरित्थमपचित्थमेण वावीस वावीस जोयणसह-र्साइ आयामेण उत्तरदाहिणेण अष्ट्वाइजाइ अष्ट्वाइजाइ जोयणसयाइ विक्खम्मेणति, से ण एगाए पडमनरवेइयाए एगेण य वणसंडेण सन्वओ समन्ता सपरिक्खित दुण्हवि वण्णओ भाणियन्त्रो किण्हो किण्होमासे जान देवा आसयन्ति सयन्ति , मन्दरस्स ण पव्वयस्स उत्तरपुरित्यमेण भद्दसाळवण पण्णास जोयणाइ ओगाहिता एत्थ ण चत्तारि णन्दापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, त०-पडमा १ पडमप्पमा २ चेव, कुमुया ३ कुमु-यपमा ४, ताओ ण पुक्यरिणीओ पण्णास जोयणाइ आयामेण पणवीस जोयणाड ६२२ मुणलमे (जेड्र(१४रणणी

रिकारमार्ग वर्गायाप्त उत्पद्दर्ग बराधा विद्वाहरणेडाणे आविद्वाह बडाएँ। आरमा आव साधा में पुनर्शास्त्रीयं बहुमदारात्माम् एवम् में सर्द राग केनात्मा देशिहरण देवरको पागावादित्यत् याना पदाराक्त्यत्या पुत्र प्रकारी सुद्दाको योपमान्य शिवरोजनी अञ्चामामार्गाय सर्व साधिक प्रकारी पागावद्वान्त्री साधि स्था मेनात्मा में एवं साधिनपूर्व प्रको पुरस्तियोजा प्रकारमामा माध्या उत्पार

उपमुख्याता सं पत्र प्रमानं मात्रो पामावद्दिस्या सहस्य सर्मायो छाते वह प्रमानं द्वाहित्यक्षियमार्गः पुरस्तियोजा-ियम निर्माण्या वेत्र अंत्रण अंत्रस्त्र अंत्रस्त्रस्त्रस्त्र अंत्रस्त्र अंत्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्र अंत्रस्त्रस्ति अंत्रस्त्रस्त्रस्त्रस्ति अंत्रस्ति अंत्रस्ति अंत्रस्त्रस्ति अंत्रस्ति अं

रेणं गण्य सं वासुत्तर वामं िनारिया व पर्नात वास्त्रायकावार्णं वर्ष्ट्र स्वयन्त्रेयवार्यायां वर्ष्ट्र स्वयन्त्रेयं पूर्व विस्तरमाणियां वामायात्रं य प्रवादान्त्रेयं वर्ष्ट्र स्वयन्त्रेयं प्रवादान्त्रेयं वर्ष्ट्र स्वयन्त्रेयं प्रवादान्त्रेयं प्रवादान्त्रेयं वर्ष्ट्र स्वयन्त्रेयं वर्ष्ट्र स्वयन्त्रेयं वर्ष्ट्र स्वयन्त्रेयं वर्ष्ट्र स्वयन्त्रेयं प्रवादान्त्रेयं वर्ष्ट्र स्वयन्त्रेयं वर्ष्ट्र स्वयन्त्रेयं वर्ष्ट्र स्वयन्त्रेयं स्वयन्त्रयं स्वयन्त्यः स्वयः स्वयन्त्रयं स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयन्त्रयं स्वयन्त्रयं स्वयन्त्रयं स्वयन्त्रयं स्वयन्त्रयं स्वयः स्वयः

वत्ता राज्याचा राविष्युराज्याचा । जय स्व अवकारावादसम्बाद्धा बहु इ.स.च्या स्वादित्यस्य स्वाद्धान्यस्य स्वाद्धानस्य स्वाद्य

वणे पण्णत्ते १गो० । भद्दसालवणस्स वहुसमरमणिज्ञाओ भूमिभागाओ पञ्चजोयणसयाङ उद्धं उप्पडत्ता एत्य ण मन्दरे पव्वए जन्दणवणे णाम वणे पण्णत्ते पञ्चजोयणसयाई चक्कवालविक्खम्मेण वहे वलयागारसठाणसिठए जे ण मन्दरं पव्वयं सव्वओ समन्ता संपरिक्खिताण चिट्टइत्ति णवजोयणसहस्साइ णव य चउप्पण्णे जोयणसए छ्वेगारसभाए जोयणस्स वाहिं गिरिविक्खम्मो एगत्तीस जोयणसहस्साइ चत्तारि य अउणासीए जोयणसए किचिविसेसाहिए बाहिं गिरिपरिरएण अट्ट जोयणसहस्साइ णव य चउप्पणी जोयणसए छचेगारसभाए जोयणस्स अतो गिरिविक्खम्भो अट्टावीस जोयणसहस्साइ तिण्णि य सोलमुत्तरे जोयणसए अहु य इक्कारसभाए जोयणस्स अतो गिरिपरिरएण, से ण एगाए पउमवरवेड्याए एगेण य वणसडेणं सव्वको समन्ता सपरिक्खिते वण्णओ जाव देवा आसयन्ति॰, मदरस्स णं पव्वयस्स विदिसासु पुक्खरिणीओ त चेव पमाण पुक्खरिणीणं पासायवर्डिसगा तह चेव सक्केसाणाण तेण चेव पमाणेण, णदणवर्णे ण भन्ते ! कइ कृडा प० <sup>२</sup> गोयमा ! णव कृडा पण्णत्ता, तजहा-णन्दण-वणकूडे १ मन्दरकूडे २ णिसहकूडे ३ हिमवयकूडे ४ रययकूडे ५ रयगकूडे ६ सागरचित्तकूडे ७ वइरकूडे ८ बलकूडे ९ । कहि ण भन्ते ! णन्दणवणे णदणवणकूडे णाम कूढे प॰ <sup>२</sup> गोयमा ! मन्दरस्स पन्वयस्स उत्तरपुरियमिल्लस्स पासायवर्डेसयस्स दिक्लिणेण एत्थ ण णन्दणवणे णदणवणे णाम कुढे पण्णत्ते० पञ्चसङ्या कुढा पुरुव-विष्णिया भाणियव्वा, देवी मेहकरा रायहाणी विदिसाएति १ एयाहिं चेव पुव्वाभि-लावेण णेयव्वा इमे कूडा इमाहिं दिसाहिं दाहिणपुरत्यिमिहस्स पासायवर्डेसगस्स उत्तरेण मन्दरे कूडे मेहवई देवी रायहाणी पुव्वेण २ दाहिणपुरित्थिमिल्रस्स पासायवर्डेसगस्स पचित्यमेण णिसहे कूडे सुमेहा देवी रायहाणी दिक्खणेण ३ दिक्खणपचित्यमिल्लस्स पासायवर्डेंसगस्स पुरित्थमेण हेमवए कूडे हेममालिणी देवी रायहाणी दिक्खणेण ४ दाहिणपचितथिमिल्रस्स पासायवर्डेसगस्स उत्तरेण रयए कडे सबच्छा देवी रायहाणी पच-त्थिमेण ५ उत्तरपच्चित्थिमिल्लस पासायवर्डेसगस्स दिवखणेण रुयगे कृडे वच्छिमिता देवी रायहाणी पचित्थिमेण ६ उत्तरपचित्थिमिहस्स पासायवर्डेसगस्स पुरत्थिमेण सागरचित्ते कूडे वइरसेणा देवी रायहाणी उत्तरेण ७ उत्तरपुरित्थिमिल्लस्स पासायवर्डेसगस्स पचित्यमेण वइरकूडे वलाह्या ढेवी रायहाणी उत्तरेणति ८, किह ण भन्ते ! णन्दणवणे वलकूडे णामं कूडे पण्णत्ते १ गोयमा ! मन्दरस्य पन्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेण एत्य ण णन्दणवणे वलकूडे णाम कूडे प०, एव ज चेव हरिस्सहकूडस्स पमाण रायहाणी य त चेव वलकूडस्सवि, णवर वलो देवो रायहाणी उत्तरपुरित्यमेणित ॥ १०४ ॥ कहि ण भते ! मन्दरए पन्त्रए सोमणसवणे णाम वणे प० २ गोयमा ! णन्दणवणस्स अंदो मिरिपरिरएनंदि । धे जं पृथाप् परमवरवेह्याप् पुरोम स वमस्त्रेजं सम्बन्धे

समन्ता संपरिनियों नक्याओं किन्हें किन्होंगासे बाव आसयति एवं इत्तरबा एवंद प्रत्यक्ष्मप्रकाणक्या गाविकवा र्यं वेद्य कीपाहिकत बाव पाहास्वरक्षमा स्वाधान प्रत्यक्षम्यक्षणक्या गाविकवा र्यं वेद्य कीपाहिकत बाव पाहास्वरक्षमा स्वाधान प्रत्यक्षम्यक्षम्य । १ % ॥ किही यं गेरी ! मन्दरक्षम्य पंतावने पान वेद र ! गो ! ऐसेनक्षम्यक्षम्य नद्वादस्यक्षम्यक्षा मुस्तिवाणको क्षाणि वेद्यक्षम्यस्यक्षित् के संस्ता क्ष्मित् कार्यक्षम्यस्यक्षित् के व्यवसायक्ष्मित् वेद्यक्षम्यस्यक्षित् क्षाण्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षित् विकारक्षम्यस्यक्षम्यक्षम्यस्यक्षम्यक्षम्यस्यस्यक्षम्यस्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षम्यस्यक्षमस्यस्यक्षमस्यस्यवस्यक्षमस्यस्यक्यस्यक्यस्यस्यक्षमस्यवस्यक्यस्यक्षमस्यस्यस्यक्षमस्यस

उत्तरदाहिणायया पाईणपढीणविच्छिण्णा अद्भचन्दसठाणसिठया पचजोयणसयाइ आयामेण अद्बाइजाइ जोयणसयाइ विक्खम्मेण चत्तारि जोयणाड वाहहेण सव्वक-णगामई अच्छा वेडयावणसंडेण सव्वओ समन्ता सपरिक्खिता वण्णो, तीसे ण पण्डुसिलाए चर्डाद्द्सिं चत्तारि तिसोवाणपडिस्वगा पण्णत्ता जाव तोरणा वण्णओ, त्तीसे णं पण्डुसिलाए डप्पि वहुसमर्मणिजे भूमिभागे पण्णते जाव देवा आसयन्ति०, तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसभाए उत्तरदाहिणेण एत्थ ण दुवे सीहासणा पण्णता पञ्च वणुसयाइ आयामविक्खम्मेण अहुाइजाई घणुसयाइ नाहहेण सीहासणवण्णओ भाणियव्वो विजयदूसवज्जोत्ति । तत्थ ण जे से उत्तरिहे सीहासणे तत्य ण वहाहिं भवणवडवाणमन्तरजोइसियवेमाणिएहि देवेहिं देवीहि य कच्छाइया तित्ययरा अभिसिचन्ति, तत्य ण जे से दाहिणिक्षे सीहासणे तत्थ ण नदूहिं भवण जाव वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य वच्छाइया तित्थयरा अभि-सिचन्ति । कहि ण भन्ते ! पण्डगवणे पण्डुकवलसिला णाम सिला पण्णत्ता ? गोयमा ! मन्दरचूलियाए दिक्खणेण पण्डगवणदाहिणपेरंते एत्थ ण पंडगवणे पडुक्वलिसला णाम सिला पण्णत्ता, पाईणपढीणायया उत्तरदाहिणविच्छिण्णा एव तं चेव पमाण वत्तव्वया य भाणियव्वा जाव तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसमाए एत्थ ण मह एगे सीहासणे प० तं चेव सीहासणप्पमाण तत्थ ण वहाँहें भवणवइ जाव भारहगा तित्थयरा अहिसिचन्ति, कहि ण भन्ते ! पण्डगवणे रत्तिसला णाम सिला प॰ १ गो॰ । मन्दरचूलियाए पचित्यमेणं पण्डगवणपचित्यम-पेरते एत्य ण पण्डगवणे रत्तसिला णाम सिला पण्णत्ता, उत्तरदाहिणायया पाईण-पढीणविच्छिण्णा जाव त चेव पमाण सव्वतवणिजमई अच्छा० उत्तरदाहिणेण एत्य ण दुवे सीहासणा पण्णता, तत्थ ण जे से दाहिणिहे सीहासणे तत्थ ण वहूहिं भवण ॰ पम्हाइया तित्थयरा अहिसिचन्ति, तत्थ ण जे से उत्तरिहे सीहासणे तत्थ ण वहूहिं भवण जान वप्पाइया तित्थयरा अहिसिचिति, कहि ण भन्ते ! पण्डगवणे रत्तक्वलसिला णाम सिला पण्णता <sup>2</sup> गोयमा ! मद्रचूलियाए उत्तरेण पडगवण-उत्तरचरिमते एत्थ ण पडगवणे रत्तकबलसिला णाम सिला पण्णता, पाईणपडीणा-यया उदीणदाहिणविन्छिण्णा सञ्वतवणिज्ञमई अच्छा जाव मज्झदेसभाए सीहासण, त्तत्थ ण वहूहिं भवणवइ जाव देवेहिं देवीहि य एरावयगा तित्थयरा अहिसिचन्ति ॥ १०७ ॥ मन्दरस्स ण भन्ते ! पव्वयस्स कइ कण्डा पण्णत्ता १ गोयमा ! तओ कडा पण्णत्ता, तजहा-हिद्विक्ने कडे मज्झिल्ले कण्डे उवरिल्ले कण्डे, मन्दरस्स ण भन्ते ! पव्वयस्स हिहिले कण्डे कहिवहे पण्णते १ गोयमा ! चउन्विहे पण्णते, तजहा-पुढवी १ उवले २ ४० सुत्ता०

वारे १ सहरा ४ मजिसमिके में सन्ते । कुन्ये सहित्हे प १ गीयमा ! वजन्तिहे पम्पति तंत्रहा-संकि १ प्रक्रिहे ९ आवस्त्री १ रसए ४ उनक्षि काहे कान्दि क्लते । शोयमा । एगायारे क्लते सञ्जवम्बन्ध्यामप्, मन्दरस्य पं भन्ते । क्ष्यमस्य

424

हेडिके करने केन्द्रमं बाहकेण प ई गीयमा । एव जीवजसहस्यं वाहजेमं पन्ती मञ्चिमिक्के कन्द्रे पुच्छा गोसमा । तेवर्द्धि चोनवसङ्स्साई नाङ्क्रेणं प - तमस्त्रि पुष्का गौयमा! छतीर्थ भोगनसङ्ख्याह माहकेर्य व एकामेत्र सर्वनागरमं सन्दरे पम्बए एगं फोनणसनसहस्सं सम्बन्गेर्ण पञ्चते ॥ १ ८ ॥ सन्दरस्य र्ण सन्ते । पम्बस्स का बामधेजा प्रवाता है गोयमा । शोक्स यामधेजा प्रवाता र्तज्ञा-सन्दर १ मेठ २ मणोरम ३ धर्दसण ४ सर्वप्रम य ५ निरिश्चा ६। रबजोबर ७ विद्योचन ४ भागों सोयस्स ५ णामी य ९ ॥ १ ॥ भको व ११ सुरिनाक्ते १२ सुरियावरकं १३ तिया । उत्तमे १४ य विसाधी य १५ वडेंसेटि १६ व सोक्ष्ये ॥ १ ॥ से केम्प्रेमं मन्ते । एवं कुबार-सन्दरे पम्बए २ । योक्सा ! सन्दरे प्रध्यए सन्दरे जामे बेबै परिचल्ड महिन्निए जस्य प्रक्रिओवसद्विदर, है वेनद्वेण ग्रीममा ! एवं अन्वर-मन्दरे प्रम्बए २ महत्तरं तं नेनति ॥ १ ५ ए कहि में भन्ता । जन्मुद्दीने बीने जीमधन्त थामं नासहरफलए फलते ! ग्रोनमा ! महानिरेह्नस्य नासस्य उत्तरेण रम्मगनासस्य पनिदार्गणं प्ररक्षिकसम्बन्धस्य प्रवारियमेर्न प्रवारियमानवणसमुद्दस्य पुरस्विमेर्गं एत्य वं अन्द्रश्वे १ वीसक्टे नामं नासहरपन्नए पन्यते पाईनपडीनाश्चर् स्वीणवाहियनिरिक्रने निसहबत्तनन्त्र मीसमन्तरस मानियम्बा जबरे बीबा बाहियेमं बर्च उत्तरेषं एत्व में बेटरेर्से वाहिनेयं चीना सहागर्हे पहुंचा समाची उत्तरहर्दं एनेमाजी २ क्सम्परन्तर् जीन-बन्दानात्कुबचन्देरावनमामनन्ताहहे य दुहा विभवमाणी १ चन्दाबीए सक्रियाः सहरसंह आयुरेमाणी २ महनासपूर्ण एजेमाणी २ मन्दर पण्यवं होई जोननेई भागमा पुरस्वामिस्रही भावता समाची अहे माळव-सवक्याएपमर्व शाम्यता मन्त्ररस्य प्रवासस्य पुरत्वियोग पुरवतिबेहतास तुहा विशयसाची २ एयमयाओ नाइन वदिनिजयाओं अञ्चानीमाए २ सनिकासहरतेष्टि आयुरेमाणी १ पत्रहि सनिकासयस्य स्मेदि वर्तानाए य सिम्ममदस्मेह समस्या बाहे विश्वयस्य बारस्य बच्चे बुन्ध्यर्ग पुरत्विमयं समजसमुद्दं समप्पेर, अवसिद्धं त चेनति । एवं नारिजंतानि उत्तरामिश्चरी मेत्र ना व्यवस्मिमं नानतं राज्याक्त्वप्रवेगबुप्तवर्यं जोयनेवं व्यवस्ता प्रवरवासिस्हरी नवानाः भवततानाः वात्रावानाः वात्रावानाः वात्रावानाः वात्रावानाः वात्रावानाः वात्रावानाः वात्रावानाः वात्रावानाः वात्रावानाः विष्णानाः विष्णानाः विष्णानाः विष्णानाः विष्णानाः विष्णानाः विष्णानाः विष्णानाः विष्णानाः वात्रावानाः वात्राव

तजहा-सिद्धकूडे॰, सिद्धे १ णीळे २ पुव्वविदेहे ३ सीया य ४ कित्ति ५ णारी य ६ । अवरिवदेहे ७ रम्मगकूडे ८ उवदसणे चेव ९ ॥ १ ॥ सन्वे एए कूडा पञ्च-सङ्या रायहाणील उत्तरेण । से केणद्वेण भन्ते ! एवं वुच्चइ-णीलवन्ते वासहरपव्वए २ १ गोयमा ! णीळे णीलोभासे णीलवन्ते य इत्य देवे महिष्हुए जाव परिवसई सञ्ववेरुलियामए णीलवन्ते जाव णिचेत्ति ॥ ११० ॥ किह ण भन्ते ! जम्बुद्दीवे २ रम्मए णाम वासे पण्णते १ गो० । णीलवन्तस्स उत्तरेणं रुप्पिस्स दिक्खणेणं पुरित्यमलवणसमुद्दस्स पचित्यमेण पचित्यमलवणसमुद्दस्स पुरित्थमेण एवं जह चेव हरिवास तह चेव रम्मय वास भाणियव्वं, णवर दिक्खणेण जीवा उत्तरेण धणुं अवसेस त चेव । कहि ण भन्ते ! रम्मए वासे गन्धावई णाम वद्ववेयहु-पव्वए पण्णत्ते व गोयमा । णरकन्ताए पचित्थमेणं णारीकन्ताए पुरितथमेण रम्म-गवासस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ ण गन्धावई णाम वहवेयहुपव्वए पण्णते, जं चेव वियडावइस्स तं चेव गन्धावइस्सवि वत्तव्वं, अट्ठो बहवे उप्पलाइ जाव गधा-वईवण्णाइ गन्धावइप्पभाइं पउमे य इत्थ देवे महिन्द्रिए जाव पलिओवमद्विइए परिवसइ, रायहाणी उत्तरेणति । से केणद्रेणं भन्ते ! एव वृच्चइ-रम्मए वासे २ ? गोयमा ! रम्मगवासे ण रम्मे रम्मए रमणिजे रम्मए य इत्य देवे जाव परिवसइ, से तेणहेण०। किह ण भन्ते ! जम्बुद्दीवे २ रुप्पी णाम वासहरपव्वए पण्णत्ते १ गोयमा ! रम्मग-वासस्स उत्तरेण हेरण्णवयवासस्स दिक्खणेण पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पचित्यमेण पचित्यमलवणसमुद्दस्स पुरित्यमेण एत्थ ण जम्बुद्दीवे दीवे रुप्पी णाम वासहरपव्वए पण्णते, पाईणपढीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे, एवं जा चेव महाहिमवन्तवत्तव्वया सा चेव रिप्पिम्सिव, णवर दाहिणेण जीवा उत्तरेण घणु अवसेस त चेव महापुण्डरीए दहे णरकन्ता णई दिक्खणेण णेयव्वा जहा रोहिया पुरित्थमेणं गच्छाइ, रूप्पकूला उत्तरेण णेयन्वा जहा हरिकन्ता पचित्यमेणं गच्छइ, अवसेस त चेवित । रुप्पिमि ण मन्ते ! वासहरपव्वए कइ कृडा प० र गो० ! अह कूडा प०, त०-सिद्धे १ रुप्पी २ रम्मग ३ णरकन्ता ४ वुद्धि ५ रूप्पकृता य ६ । हेरण्णवय ७ मणिकचण ८ सह य रिप्पिम कूडाइ ॥ १ ॥ सन्वेवि एए पचसइया रायहाणीओ उत्तरेण । से केणहेण मन्ते ! एव वुन्वइ-रूप्पी वासहरपव्वए > 2 गोयमा ! रूप्पीणामवासहरपव्वए रुप्पी रप्पपट्टे रुप्पोभासे सन्वरुप्पामए रुप्पी य इत्य देवे पिठओवमद्विइए परिवसइ, से एएण्डेण गोयमा ! एव वुचइति । किह ण भन्ते ! जम्बुद्दीवे २ हेरण्णवए णाम वासे पण्णते २ गो॰ ! रुप्पिस्स उत्तरेण सिहरिस्स दिक्खणेण पुरत्यिमलवणसमुद्दस्स पचित्यमेण पचित्यमलवणसमुद्दस्स पुरित्यमेण एत्य ण जम्बुद्दीवे दीवे हेरण्णवए णाम

424

बासे पञ्चति। एवं बाह चेब हेमलबे तह चेब हेएन्सबापि भावितमं । मार्थ जीवा बाहि मेर्ग उत्तरेर्ग बलु अवसिद्धं ये चेवति । वृद्धि में अन्ते ! हेर्य्यवर वासे मानवन्तपरिवार् पार्म नष्टनेबङ्कुपञ्चर् प हैं मो ो सुक्रणकृत्वरू प्रवाधियोर्ध हत्यकृत्वरू प्ररात्माणे स्टब र्ण हेरन्मदगस्य बासस्य बहुमञ्जादेसभाए गाम्बन्तपरियाए बार्मे बहुनेगङ्गपराए व नह चेन सहावह तह चेन मास्तरीतपरियापनि कही उप्पत्नहं प्रत्महं मानकत-प्रमाह मासकताबण्याई मासकताबण्यामाई प्रभारी य दृश्य देवी महिश्विए। प्रतिप्रोक मद्विरए परिवसह, से एएचट्टेबं राजहाणी उत्तरेबंदि । से केपट्रेज मन्ते ! एवं हुचर-हेरप्पारए वासे २ हे योगमा ! हेरप्पारप व बासे रुप्पीरिक्रीई बासहर पम्बप्रें दुरुयो समदगुढे निर्व हिरका दुसद विर्व हिरका संबद किये हिरको पर्या-सर हेरन्यनए व दरन वेबे परिवस्तः से एएनक्वेजेरि । कहि नं सन्ते ! अस्तुरीय सीचे सिहरी नामं बासहरपम्बए पञ्चते है गोयमा ! हेरण्यवयस्य उत्तरेष परश्ववस्य वाहि-नेपं पुरत्विमध्यमध्यपुरस्य प्रवास्थितस्यप्रसुपुरस्य पुरत्विमेत्रं एवं बह वेत पुनर्वे समन्दी तह चेन सिहरीनि मनरं श्रीना वाहियेथं वर्षु उत्तरेमं अवसिद्धं तं केन पुण्डरीर नहें प्रकरणकृता महागई वाहियेणे चेकना वहा रोहियंसा पुरस्थितं गन्धा एवं वह बेद गंगारिन्धूको तह के एतारतवहँको नेयम्बाओ पुरस्थिमेर्च रता प्रवस्थिमेर्च रत्तवर्षः अवसिद्धं त नेव [ अवसेसं मानियम्बंदि ] । सिहरिस्म वं भन्ते ! वस्य रपन्तर् ऋ कृषा पण्णाता र भो । इदारस कृषा प स⊷स्टिक्टे १ सिहरिक्टे ३ हेरणनगरु है । प्रनम्पर कार्ड ४ इस्स्वेन्ड ५ रताकु है ६ सम्बोन्ड ४ रत्तवर्षकृषे ८ इसावेबीकृषे ९ एरवयकृषे १ शिमिव्यकृषे ११ एवं सम्बेशि कूरा पंतरहमा रायहाणीको उत्तरेन । से बेजडेर्न मन्ते । एक्सूक्न-विद्रासम्ब रंपन्यपुर है मीवना ! विदर्शिम वासदरपन्यपु वहवे कुटा विद्वरिसंडानसंडिया सम्बारमणासना सिक्सी य इत्य देने नाम परिचसक, से तेचतेयं अदि व सन्ते ! कम्बुरीने रीने एएकए नाम नासे फब्बते हैं गीयमा ! सिक्सिसा उत्तरेनं उत्तरमन वसमुद्दस्य वृत्रिकानेचं पुरस्थिमक्यवसमुद्दस्य प्रचरिकाम्य प्रचरिकास्यवसमुद्दस्य प्रतिवर्मणं एत्य मं बम्दुरीने शैने एरावए जार्म वासे पञ्चते बायुवनुकं करन-नहुते एवं जनेव मरहरस नगण्यमा सनेव सम्बा विश्वसेसा मैक्या सब्देशका सुनित्यमणा सपरिनित्याणा अवरं प्रावको चहवडी प्रावको देवो से तेणदेव एरावए वासे २ ॥ ५५१ ॥ खउत्यो **वक्सा**री समन्तो ॥

क्या में एक्सेचे अक्रवहिमेशए मनमन्त्री तिस्वदरा एसुप्पमन्ति तेचे शक्ते वेचं समपूर्ण महोकोमनत्वन्यामा भट्ट विचालुमारीयो महत्तरियामो क्यूबँ २ दृष्टेई

सएहिं २ भवणेहिं सएहिं २ पासायवर्डेसएहिं पत्तेयं २ च उहिं सामाणियसाहस्सीहिं चर्जाहं महत्तारियाहिं सपरिवाराहिं सत्ताहिं अणिएहिं सत्ताहिं अणियाहिवईहिं सोलसएहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं भवणवइवाणमन्तरेहिं देवेहिं देवीहि य सिद्धं सपिरवुडाओ महया हयणदृगीयवाइय जाव मोगमोगाइ भुजमाणीओ विहरति, तजहा-भोगंकरा १ भोगवई २, सुभोगा ३ भोगमालिणी ४। तोयधारा ५ विचित्ता य ६, पुप्फमाला ७ अणिंदिया ८ ॥ १ ॥ तए णं तासि अहेलोगवत्यव्वाणं अद्वण्हं दिसाकुमारीण मयहरियाण पत्तेय पत्तेयं आसणाइ चलति, तए ण ताओ अहेलोग-वत्थव्वाओ अह दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ पत्तेय २ आसणाइ विलयाई पासन्ति २ ता ओहिं पडंजति पडजिता भगव तित्थयरं ओहिणा आभोएति २ त्ता अण्ण-मण्ण सद्दाविति २ ता एव वयासी-उप्पण्णे खलु भो! जम्बुद्दीवे दीवे भयव तित्थयरे तं जीयमेय तीयपञ्चपण्णमणागयाण अहेलोगवत्थव्वाण अट्टण्ह विसाकु-मारीमहत्तरियाण भगवओ तित्यगरस्स जम्मणमहिम करेत्तए, त गच्छामो ण अम्हे-वि भगवओ जम्मणमहिम करेमोत्तिकहु एव वयति २ ता पत्तेय २ आभिओगिए देवे सहावेंति २ ता एव वयासी-खिप्पामेव मो देवाणुप्पिया! अणेगखम्भसयस-ण्णिविद्वे लीलद्विय॰ एव विमाणवण्णओ भाणियन्वो जाव जोयणविच्छिण्णे दिन्वे जाणिवमाणे विडिव्वता एयमाणितय पचिपणहत्ति, तए ण ते आमिओगा देवा भणेगखम्भसय जाव पचप्पिणति, तए ण ताओ अहेलोगवत्यव्वाओ अट्ठ दिसाकु-मारीमहत्तरियाओ हद्वतुद्व० पत्तेय २ चछिं सामाणियसाहस्सीहिं चछिं महत्तरि-याहिं जाव अण्णेहिं वहृहिं देवेहिं देवीहि य सिद्धं सपरियुडाओं ते दिन्वे जाणविमाणे दुरूहति दुरुहिता सन्विद्द्वीए सन्वजुईए घणमुईंगपणवपनाइयरवेण ताए उक्किट्ठाए जाव ढेवगईए जेणेव भगवओ तित्थगरस्स जम्मणणगरे जेणेव० तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छन्ति ? ता भगवओ तित्थयरस्त जम्मणमवणस्त उत्तरपुरित्थमे दिसीमाए ईसिं चउरगुलमसपत्ते घरणियले ते दिन्वे जाणविमाणे ठविंति ठवित्ता पत्तेय २ चर्डाहें सामाणियसाहस्सीहिं जाव सिर्दे सपरिवृडाओ दिव्वेहिंतो जाणिवमा-णेहिंतो पचोरुहति २ त्ता सिन्त्रद्वीए जाव णाइएण जेणेव भगव तित्ययरे तित्यय-रमाया य तेणेव उवागच्छन्ति २ ता भगव तित्ययर तित्ययरमायर च तिखुत्तो आयाहिणपयाहिण करेंति २ त्ता पत्तेय २ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अजिं क्टू एव वयासी-णमोऽत्यु ते रयणकुच्छिवारिए जगप्पईवदाईए सब्वजग-मगलस्स चक्-गुणो य मुत्तस्स सञ्वजगजीववच्छलस्स हियकारगमग्गदेसियवागि-द्धिविभुपभुस्स जिणस्स णाणिस्स णायगस्स बुहस्म बोहगस्स सञ्बलोगणाहस्स 44

विम्ममस्य प्रा**र्क्कस्मु**ब्स्नस्य बाईए श्रतियस्य बंधि स्रोगुत्तमस्य बमनी धम्मारि र्व पुण्यासि कनत्वासि सम्हे ण देवागुप्पिए । आहेकोगकत्वम्याओ स्ड दिसाइमान रीमइत्तरिवाको संगक्को विस्वयरस्य कम्मणमहिमं करिस्सामो छन्नं तुष्माई व माइनम्बंदिषद् उत्तरपुरिवर्ग विशीमार्ग अवश्यमन्ति २ ता वेडम्बियसमुख्याएवं समोहर्गरी २ ता संविज्ञाई जोनवाई एंड निविरंति तंजहा-रजगार्थ वान संवा-गबाए किटब्बंदि २ का तेजं सिवेजं सदएयं मारएज अबुब्रुएमं मूसितस्विमध्यस केलं मजहरेणं सञ्जोतमधरविक्रसमगन्त्राध्यातिएल पिन्यम्मीहारिमेनं गन्सुहरूनं विरियं प्यादपुर्वं मगक्यो वित्यवरस्थ कम्मजस्य सम्बन्धे समन्ता जोनवर्गे सम्बन्धं से कहालामए<del>. कम्</del>मगरबारए सिया बाब तहेब व्हें तरब तर्ज वा पर्च वा व्हें वा कबररे वा अद्भरप्रवोक्त्ये पूर्व बुव्धिगम्ब र्ट सम्बं बाहुविव २ एया ते एवँति ९ ता जेनेन भगर्व तित्ययरे तित्वयरमाया य तेनेन उनागच्छन्ति १ ता भगनम्ये तित्व-बरस्स तित्वयरमावाए य अब्दुसामन्ते वागायमाणीयो परिगासमाणीयो निर्देश ॥ ११२ ॥ वेजं क्रकेपं तेजं धमएजं उच्चोयकरणमाओ शह दिशाहमारीमहत्तरेगाओ सप्रें १ क्वेड सप्रें १ मनगेई सप्रें १ पासाववरेंसप्रें पतेन १ वर्ड समान मिनपाइस्सीहें एवं वं चेन पुम्बनियमं जान विदर्शि तंत्रहा-मेईच्या १ केहनहैं २ समेदा रे मेहमाकियो ४ । धक्यत ५ वच्छमिता व ६ वारितेमा ७ वर्मी इगा < ॥ १ ॥ तपु मं तासि उड्डमेयक्त्वम्माण अक्कर्त् श्रेसकुमारीमहत्तरेवामं परेपं २ आसमाई असमित एवं तं चेव पुज्यविक्यं गामिक्ज आव अम्हे वं वेवाज्ञान्तिर् । उङ्गुलेग्नरमञ्जाको 🗪 विसाज्ञमारीमकत्तरिवास्त्रे सेर्च मधक्यो तित्वगरस्य कम्मनमहिमं **करि**स्सामो तर्जं तुब्मा**ह्यं** य मा<del>ङ्क्लंतिकडु उत्तरपुरम्बिम</del>ं **दिसी**मार्ग <del>अवस्</del>मन्ति २ ता जाव सम्मव्हसम् विजन्मन्ति २ ता बाद वे विद सर्व महरवं सहरवं पद्मतरमं जबचेतरवं करेंति १ ता विष्पासेव **प्रा**वधमन्ति पूर्व पुण्यमहर्कति पुण्यमास भारति गारिया जान काळागुक्तमर वान प्रत्मरामिणान-क्षत्रोमां करेंगि १ छ। क्षेत्रेय मन्त्रं शिल्पमरे शिल्पमरमामा स तेवेव तवान-बद्धन्ति २ ता जाव व्यायासमाणीको परियासमाणीको विद्वति ॥ ११३ ॥ तेचे व्यक्तेले तेर्च समएमं पुरश्चिमक्वयवत्यम्बाओ अड विसाङ्ग्यारीमङ्ग्रस्थाओ सप्री र क्वेब्रि राहेव कात विहरति राजहा-माँदुत्तराय १ जस्या २ आवस्या ३ वीर बदमा ४ । विजया स ५ वेजनस्ती ६ जनस्ती ७ अपराखिना ४ ॥ १ ॥ <del>ऐस</del> र्तं चन जान दुष्माहिं व शाहनव्यंतिकहु मध्यक्यो शिल्पवरस्य शिल्पवरमानाए व पुरस्थिमेर्ज मार्यसङ्ख्ययाची आपासमाजीओ परिवादमाजीओ विद्वति । तेर्ज

कालेण तेण समएण दाहिणस्यगवत्यव्वाओ अद्व दिसाकुमारीमहत्तारियाओ तहेव जाव विहरेति, तजहा-समाहारा १ सुप्पड्ण्णा २, सुप्पवुद्धा ३ जसोहरा ४ । लच्छि-मई ५ सेसवई ६, चित्तगुत्ता ७ वसुधरा ८॥ १॥ तहेच जाव तुब्भाहि ण भाइ-यव्वतिकद्दु भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य दाहिणेण भिंगारहत्यगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठन्ति । तेण काळेण तेणं समएण पचित्य-सस्यगवत्थव्वाओ अह दिसाकुमारीमहत्तरियाओ सएहिं २ जाव विहरंति, त०~ इलादेवी १ सुराढेवी २, पुहवी ३ पउमावई ४ । एगणासा ५ णवमिया ६, भद्दा ७ सीया य ८ अद्वमा ॥ १ ॥ तहेव जाव तुन्भाहिं ण भाइयव्वंतिकद् जाव भग-वक्षो तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य पचित्थिमेण तालियटहत्थगयाओं आगायमा-णीओ परिगायमाणीओ चिद्रन्ति । तेण कालेण तेणं समएणं उत्तरिह्नस्यगवत्य-व्वाओ जाव विहरंति, तजहा-अलयुसा १ मिस्सकेसी २, पुण्डरीया य ३ वारुणी ४। हासा ५ सव्वप्पभा ६ चेव, सिरि ७ हिरि ८ चेव उत्तरओ ॥ १॥ तहेव जाव वन्दिता भगवओ तित्थयरस्त तित्थयरमाऊए य उत्तरेण चामरहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्टन्ति । तेण कालेण तेण समएण विदिसि-रुयगवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ जाव विहरंति, तंजहा-चित्ता य १ चित्तकणगा २, सतेरा ३ य सोदामिणी ४। तहेव जाव ण भाइयव्वंतिकृद्ध भगवस्रो तित्ययरस्स तित्ययरमाऊए य चउसु विदिसासु दीवियाहत्थगयास्रो भागायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठन्तित्ति । तेणं कालेण तेण समएण मज्झि-मरुयगवत्थव्वाओ चतारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ सएहि २ कृडेहि तहेव जाव निहरंति, तजहा-ह्या स्यासिया चेव, सुरूया रूयगावई । तहेव जाव तुब्माहिं ण भाइयव्यतिकहु भगवयो तित्ययरस्स चउरगुलवज्ञ णाभिणाल कप्पन्ति कप्पेता विय-रग खणन्ति खणित्ता वियरगे णाभि णिहणति णिहणिता रयणाण य वहराण य प्रेंति २ ता हरियालियाए पेढ बन्घति २ ता तिदिसिं तओ कयलीहरए विउन्वति, तए ण तेसिं क्यलीहरगाण वहुमज्झढेसमाए तओ चाउरसालए विउव्वन्ति, तए ण तेसिं चाउस्सालगाण वहुमज्झदेसभाए तस्रो सीहासणे विउव्वन्ति, तेसि ण सीहासणाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते सच्वो वण्णगो भाणियच्वो । तए ण ताओं स्यगमञ्झवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तराओ जेणेव भयवं तित्ययरे तित्ययरमाया य तेणेव उवागच्छन्ति २ ता भगव तित्ययर कर्यट-संपुडेण गिण्हन्ति तित्ययरमायर च बाहाहिं गिण्हन्ति २ ता जेणेव दाहिणिहे क्यठीहरए जेणेव चाउस्सालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छन्ति २ पा भगव वित्वयरं वित्वयरमायरं च चीहासने विचीमानेति ॰ ता चयपागसहस्त्यागेर्दै

489

विनेति बार्स्नोर्गेति २ ता सुरमिणा ग व्यवस्पूर्ण सम्बद्धि २ ता भगवं तिस्वसर करमकरंपुढेमं तिरमगरभागरं च बाहाध गिन्हन्ति १ ता वेगेव पुरक्षिमेके कमनी हरए जेणेन चाउरसामण खेनेन सीकासणे तेणेन उनायस्क्रान्त उनायस्क्रान्त विरुप्तर विरूपरमायरं व चीडासणे विचीनार्नेति २ ता विक्रिं उद्दशक्की सजार्नेति तजहा-सन्बोदपूर्ण १ पुष्फोदपूर्ण १ श्वादपूर्ण १ सजाविता सम्बार्कप्रदेशिए करेंद्रि २ का मार्ग दिस्पार करवासीपत्रेण दिखावरमागरे व बाहाहि गिवान्ति २ ती जैपेन उत्तरिक्के रूपलीवरण अनेव चाउस्साक्षय जेणेव सीवासचे तेवेव तन क्कान्त २ ता संगर्न तिस्पवरे तिस्थवरमावरे व सीहासचे विश्वीवार्नित २ ता आमिओंगे देवे धराविन्ति २ ता एवं वयासी-विष्यामेव मो देवाखण्या ! ड्रॉन् दिमनन्ताको बासदरपञ्चयाको योधीसर्वदणक्क्षर्य साहरह, सए वं ते आमिश्रोनर देवा शाहि स्वयमज्ञावस्थानाहि परुद्धि विशाहमारीमहत्तरियाहि एवं बुता समापा इह्नद्र जान निमएन नवर्ण पविच्छन्ति २ ता विष्यामेव श्रुक्तहिमवन्तानो नार हरपम्बनाओ चरवाई गोवीसकन्यकस्त्राई साहरन्ति तप् वं ताओ मञ्जिमस्वय-गरअम्बाओ चरारि विसाकमारीमबसरिजाओ सर्प करेन्स २ ता कर्गन वर्डेस अर्थि बढिता सरएल अर्थि महिति २ ता अस्मि पाइति २ ता अस्मि सेई क्यंति २ ता गोधीसचन्त्रनक्द्वे पनिकायन्ति २ ता कारिंग बजासंति १ ता भूरक्रेम करेंति २ ता रैक्यापोडकियं बंबक्ति बन्धेता वानामविश्वयमतिविधे इनिर्दे पाद्दानबहुने यद्दान संगवनो तित्यसरस्य कन्यन्त्रसेनि विद्विसानिन्ति सर्वत समर्ग पम्बयाज्य १ । तप् मं ताओ स्मगासन्तानत्त्रम्थाओ चतारि विसाहसारीसङ्गरि माओ समर्व दिलावरे करतमसंपृष्टेचं शिल्ययरमावरे च बहाई विश्वनित विविद्या अंगेड मगवमो तित्पमरस्य वम्मणमवने तेणेव सवासच्छन्ति १ ता हित्ववरमावरं संबंधिकीस विसीवाविति विसीयाविता संयवं तित्वयर मारूप पासै अवि अविस भागानमाजीओ परिगानमाणीओ विद्यन्तीति ॥ १९४ ॥ तेर्च वस्त्रेयं तर्च समय्मे सके जाम दलिंदे देवरावा बज्याणी पुरंदर संबच्चेक सहस्तवन्ते सवर्ष प्राथमास्वे दाहिष्णहुमोगाहिवर्ष वर्षास्त्रीमाणावासस्यसहस्साहिवर्ष एरानणवाहच शर्रिदे अरवे-वर्तत्ववरे जानस्यमासमञ्जे जनहोमचावितार्गचसङ्ख्यावितिहेजमावगंवे भाग्रर वांची पसम्बद्धमाने महिश्विए सहजुदए सहाबके सहावसे सहानुमान सहा-

अण कम्मण कहाई मस्सक्ताई म्हिति से सारिस । ६ मस्मिति वा मध्येति ना मुद्दि ना रक्ताित वा एगद्वा । ३ जीविति काळण विधानिता सरसग्रेशिका ते ।

सोक्खे सोहम्मे कप्पे सोहम्मविंसए विमाणे सभाए सहस्माए सक्किस सीहा-सणिस से ण तत्थ वत्तीसाए विमाणावाससयसाहरूसीण चडरासीए सामाणि-यसाहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्ह लोगपालाणं अट्ठण्ह अग्गमहि-सीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण चडण्ह चउरासीण आयरक्खदेवसाहस्सीण अण्णेसि च वहूण सोहम्मकप्पवासीण वेमाणियाण देवाण य देवीण य आहेवच पोरेवच सामित्त महित्त महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच कारेमाणे पालेमाणे महया ह्यणदृगीयवाइयततीतलतालतु डियघणमुइगपहुपडहवाइय-रवेण दिव्वाइ भोगभोगाई भुजमाणे विहरइ। तए ण तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो आसण चलइ, तए ण से सक्के जाव आसण चलिय पासइ २ ता ओहिं पउजड पउजित्ता भगव तित्थयरं ओहिणा आभोएइ २ ता हट्टतुट्टचिते आणदिए पीइमणे पर्मसोमणस्सिए ह्रारेसवसविसप्पमाणहियए भाराहयक्यवकुसुमचचुमालइय-ऊसवियरोमकूवे वियसियवर्कमलणयणवयणे पयलियवरकडगतुडियकेऊरमउडे कुण्डलहारविरायतवच्छे पालम्बपलम्बमाणघोलतभूसणधरे ससभम तुरिय चवल सुरिंदे सीहासणाओ अञ्भुद्धेड २ ता पायपीढाओ पन्नोरुहइ २ ता वेरुलियवरिद्धरिद्धअजणणि-जणोवियमिसिमिसितमणिर्यणमिडयाओ पाउयाओ ओमुयइ २ ता एगसान्डियं उत्तरा-सग करेइ २ ता अजलिमजलियगगहत्ये तित्ययराभिमुहे सत्तद्व पयाइ अणुगच्छइ २ ता वाम जाणु अचेइ २ ता दाहिण जाणु धरणीयलसि साहर्ट्ड तिक्खुत्तो मुद्धाण घरणियलसि णिवेसेइ २ ता ईसिं प्चुण्णमइ २ ता कहगतु डियथभियाओ भुयाओ साहरइ २ ता करयलपरिग्गहिय • सिरसावत्त मत्थए अजलिं कहु एव वयासी----णमोऽत्थु ण अरहताण भगवन्ताण, आइगराण तित्थयराण सयंसवुद्धाण, पुरिस्तनाणं पुरिस-सीहाण पुरिसवरपुण्डरीयाण पुरिसवरगन्धहृत्थीण, लोगुत्तमाणं लोगणाहाण लोग-हियाण लोगपईवाण लोगपज्जोयगराण, अभयदयाण चक्खुदयाण मग्गदयाणं सरणदयाण जीवदयाण वोहिदयाण, घम्मदयाण धम्मदेसयाण धम्मणायगाण धम्मसारहीण धम्मवरचाउरन्तचक्कवद्दीण, वीवो ताण सरण गई पइट्ठा अप्पिटहय-वरनाणदसणधराण वियद्वछउमाण, जिणाण जावयाण तिण्णाणं तारयाण बुद्धाण वोहयाण मुत्ताण मोयगाण, सन्वण्णूण सन्वद्रिसीण सिवमयलमस्यमणन्तमक्खय-मव्वावाहमपुणरावित्तिसिद्धिगइणामधेय ठाण सपत्ताण णमो जिणाण जियभयाण, णमोऽत्यु ण भगवयो तित्यगरस्स आइगरस्स जाव सपाविउकामस्स, वदामि ण भगवन्त तत्थगय इहगए, पासउ मे भयव ! तत्थगए इहगयतिकट्ट वन्दइ णमसइ व० २ त्ता सीहासणवरित पुरत्याभिमुहे सिण्यसण्णे, तए ण तस्स सक्करस देविंदस्स

मगर्न तित्पवरे तं जीवमेर्य तीयप्रजुप्पणमणागवार्ग तदार्थ देविदानं देवरारेण तित्पनराणं जन्मणमञ्जूम करेताए, तं गच्छाना न महीप मगनमो जिल्लगरस्य अस्मजनहिमं करेमिकिक्षं एवं चेपेहेव् २ ता हरिनेधमंशि पामताजीमाहिक्षं स्व सहानेंद्र २ ता एवं क्यासी-रिज्ञपानेव मो बेबालणिया ! सभाए प्रहम्माए मेघोस विमर्गमीरमहरयरसङ् बोबचनरियव्यकं सुधोर्स सुसरं येदं विकक्ता वक्ताक्रेमाण १ महबा महबा छोमं उन्मोसमाने १ एवं बबाहि-भागवेह यं भी ! छके वर्निह देवराना गच्छद ये हो । सक्रे देविदे देवराया चम्पुद्दि २ मगवसी हिल्सवरस्य जन्मकमहिमें करितार, व तुक्तेनि ये देवायुध्यिका । सम्बद्धीए सम्बद्धीए सम्बद्धीर सम्बर्गायूपणं सम्बायदेणं सम्बन्धियोग् सम्बर्गभ्येणं सम्बन्धदर्शे सम्बन्धरे हैं सम्बानं अरविश्वताए सम्बद्धिकातिकातिकारस्थितवाएगै सहसा श्रृष्टीए जान रनेमें विस्थररियाकर्रपरिषुका समावे १ जाननियालनाङ्ग्याहं तुम्बा समामा अक्ष परिशीन जेन सकस्य भाग अंतिय पाडक्सवह, तए वं से हरिजेसमंत्री देने पान शामीमाहिनई सदेनं ३ वान एवं बुत्ते समाने क्ष्म्यक बान एवं देवोति कानाए विभएणं वदन परिक्षणेड् २ ता सकस्य ३ अंतिमानो परिक्रिक्टसम्ड २ ता जेनेन समाए ग्रहम्माए मेथोबरविकारमीरमङ्करशरसहा व्यवकपरिमन्दका प्रकेश करा रेकेव चवागच्छा २ ता र्च मेवोकरियगमजीरमङ्गरवरखं बोक्नपरिमण्यमं इत्तेर्यं भन्दं विकास सक्राम्ब, तए वं दीते मेचोबरतिक्यम्मीरमङ्करवरसङ्गए बोक्यगरि सम्बन्धाए द्वपोशाए कराए तिकश्वतो शकाक्ष्माए समाजीए सोहम्मे क्रमे क्रमंब प्रतृशिक्षे नतीस्त्रिमानावाससम्बद्धस्थिक्षे कन्यातं प्रगुवातं वतीसं करासमधारसर्व बसमसमगं रचक्याराव कार्ड प्रवताई जावि हरवा तए व सोहस्से कृत्ये यसार्व निमाधानितकाववित्रसङ्सम्बित्रकाराक्ष्मतास्वरहस्तर्सके वाए वानि होत्या राप् मं रोसि सोहरमरूपमासीनं नहुणं केमामिनाच केवाम व देवीच न एमन्तरहपसत्ताविकपमस्तानिसगरम्भ्य विक्रमार्थे स्तरकटारतिकवित्रस्त्रोतस्य रिक्यन पश्चिमोहये कप् समाने भीरानकोठ्यकारिकाकामामानावित्ततकारामामार्ग से पान तार्णानाहित्वं बेने तेरि क्यारनंधि विसंवपविसंत्रि समार्थित तत्व हरे र तक्षि र महना सहना सीर्ण उज्जोसेमाने ए एवं वशासी—इन्त ! डमेड अनंदो बहुषे छोदम्मक्रमवासी वेमानियवैवा वेबीको य सीटम्मक्रमवर्गो इनमो ववर्ग ब्रियत्यहर्ष-जाननेह मं मो ! सके ते जैव जान अतियं पातन्मवहति। तए जं ते देवा देवीको न एमसई छोचा इड्रशुङ्क जान दिनमा अप्येगहमा मन्त्रकारिये एवं अमेछ-

णवत्तिय सक्कारवत्तिय सम्माणवत्तिय दंसणवत्तियं जिणभत्तिरागेण अप्पेगडया त जीयमेय एवमाइत्तिकट्टु जाव पाउव्भवंतित्ति । तए ण से सक्ने देविंदे देवराया ते वेमाणिए देवे देवीओ य अकालपरिहीण चेव अतिय पाउन्भवमाणे पासद २ ता हट्ट॰ पालय णामं आभिओगियं देव सद्दावेड २ ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखम्भसयसण्णिवेट्ठ ठीलद्वियसालभजियाक्तिय ईहामियउसभ तुरगणरमगरविह्गवालगिकण्णरहहसरभचमरकुजरवणलयपटमलयभितिचित्त खसुगग-यवइरवेडयापरिगयाभिरामं विजाहरजमलजुयलजतजुत्तपिव अचीसहस्समालिणीयं रूनगसहस्सकितय भिसमाण भिव्भिसमाण चक्खुलोयण्ळेस सहसास सस्मिरीयहन घण्टावलियमहुरमणहरसर सुह कन्त दरिसणिज णिडणोवियमिसिमिसिंतमणिरयण-घटियाजालपरिक्खित जोयणसहस्सविच्छिण पञ्चजोयणसयमुन्विद सिग्धं तुरियं जङ्गणिव्वाहि-दिव्व जाणविमाणं विजव्वाहि २ त्ता एयमाणत्तियं पचप्पिणाहि॥११५॥ तए ण से पालयदेवे सक्केण देविंदेण देवरण्णा एव वृत्ते समाणे हट्टतुट्ट जाव वेउ विवयसमुग्घाएण समोहणिता तहेव करेड् इति, तस्स ण दिव्यस्म जाणविमाणस्स तिदिसिं तओ तिसोवाणपिङ्ख्यमा वण्णओ, तेसि णं पिङ्ख्यमाण पुरओ पत्तेय २ तोरणा वण्णओ जाव पडिल्वा, तस्स ण जाणविमाणस्स अतो वहुसमरमणिजे भूमि-भागे॰, से जहाणामए-आलिंगपुक्खरेइ वा जाव दीवियचम्मेइ वा अणेगसकुकीलग-सहस्सवियए आवडपचावडसेहिप्पसेहिसुत्यियसोवत्थियवद्भाणपूसमाणवमच्छडगम-गरङगजारमार्फ्लाविष्यस्मपत्तसागर्तरगवस्रतलयप्रमलयभक्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पमेहिं समरीइएहिं सउजोएहिं णाणाविहपञ्चवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिए, तेसि णं मणीण वण्णे गन्धे फासे य भाणियव्वे जहा रायप्परीणइजी, तस्स णं भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए पेच्छाघरमण्डवे अणेगखम्भसयसण्णिविद्वे वण्णक्षो जाव पिहरूवे, तस्स उल्लोए पउमलयभितिचिते जाव सञ्वतवणिजमए जाव पिडस्वे, तस्स ण मण्डवस्स बहुसमरमणिज्जस्स भूमिमागस्स बहुमज्झदेसभागसि मह एगा मणिपेढिया० अड जोयणाइ आयामविक्खम्भेणं चत्तारि जोयणाइ बाह्रहेण सञ्चमणिमई वण्णओ, तीए उवरिं मह एगे सीहासणे वण्णओ, तस्युवरिं मह एगे विजयद्से सव्वरयणामए वण्णओ, तस्स मज्झदेसमाए एगे वइरामए अकुसे, एत्य ण मह एगे कुम्भिक्षे मुत्तादामे, से ण अण्णेहिं तद्बुचतप्पमाणमित्तेहिं चउहिं अद्कुम्भिक्केहिं मुत्तादामेहिं सन्वयो समन्ता सपरिक्सिते, ते ण दामा तवणिज्ञलवूसगा सुवण्णपयरगमण्डिया णाणामणिरयणविविहहारद्धहारउवसोभियसमुदया ईसिं अण्णमण्णमसपत्ता पुन्वाइ-एहिं नाएहिं मन्द २ एइज्जमाणा जाव निन्नुइकरेण सद्देण ते पएसे आपूरेमाणा २ जान गर्दैन २ उन्होंनेमाजा २ निर्द्धित तस्स ग्रं शीहास्त्रास्त्री न्यार्यस्य उत्तरपुरित्रीयं पूरण कं शहरस न्यारास्त्रीय सामान्द्रस्य न्यारास्त्रीय न्याराम्स्य व्यवस्य क्रियार्यस्य व्यवस्य क्ष्यां विद्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां विद्यां क्ष्यां विद्यां क्ष्यां क्ष्यां विद्यां क्ष्यां क्ष्यां विद्यां क्ष्यां विद्यां क्ष्यां विद्यां क्ष्यां क्ष्यां विद्यां विद्यां क्ष्यां विद्यां क्ष्यां विद्यां क्ष्यां विद्यां विद्यां विद्यां क्ष्यां विद्यां वि

दुरहर् २ तां बाब वीहास्थाने पुरस्थानिस्त्रहें सम्बन्धानी पूर्व बंद समायिक मि उत्तरेंग रिप्तोमाधेनी दुरसीता एवेर्ड २ प्रस्तामारपेट महास्वरित स्वरूपेट वेदा व देवीओं य साहित्रीकोंन हिस्तायोंने दुरुद्दीता एवेर नाम निर्धानी छुटे तत्त्व सम्बन्धानी स्वरूपेट एवे स्वरूपेट स्वरूपेट स्वरूपेट स्वरूपेट स्वरूपेट स्वरूपेट स्वरूपेट स्वरूपेट स्वरूपेट

त्वर्रहेमाने १ जेनेव छोड्नमस्य कप्पस्य वर्षाये विज्ञानसम् तेवेव वद्यास्त्वरं उदानिकता जोजनसम्बाहिसस्य विकास क्षेत्रसम्बद्धः व्यवसमावे १ तार् वक्षित्रस्य वात्र देशस्य वीदेवनमने १ विरियमसंविज्ञानं सैवस्यस्य सम्बद्धान्ते णन्दीसरवरे दीवे जेणेव दाहिणपुरित्थिमिक्टे रइकरगपन्वए तेणेव उवागच्छइ २ ता एव जा चेव स्रियाभस्स वत्तव्वया णवर सक्ताहिगारो वत्तव्वो जाव तं दिव्व देविङ्कि जाव दिव्य जाणविमाण पिंडसाहरमाणे २ जाव जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणणगरे जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छः २ ता भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणस्स उत्तरपुरित्थमे दिसीभागे चउरगुलमसपत्त धरणियले त दिन्व जाणविमाण ठवेइ २ ता अट्ठिह अगगमिहसीहिं दोहिं अणीएहिं गन्धव्याणीएण य णद्याणीएण य सद्धि ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ पुरस्थिमिल्लेणं तिसोवाणपिकस्वएण पञ्चोरहृइ, तए ण सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउरासीइ-सामाणियसाहस्त्रीओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ उत्तरिल्लेण तिसोवाणपडिरूवएण पचोरहति, अवसेसा देवा य देवीओ य ताओ दिन्वाओ जाणविमाणाओ दाहिणिहेणं तिसोवाणपिडस्वएणं पचोरुहतिति । तए णं से सक्ते देविन्दे देवराया चलरासीए सामाणियसाहस्सिएहिं जाव सिद्धं सपरिवृढे सिव्वद्द्वीए जाव दुदुहिणिग्घोसणाइय-रवेणं जेणेव भगव तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छइ २ ता आलोए चेव पणाम करेइ २ ता भगव तित्ययर तित्ययरमायर च तिक्खत्तो आयाहिण-पयाहिण करेड २ ता करयल जाव एव वयासी-णमोऽत्थु ते रयणकुच्छिथारिए एव जहा दिसाकुमारीओ जाव घण्णासि पुण्णासि त कयत्थासि, अहण्ण देवाणुप्पिए! सके णाम देविन्दे देवराया भगवओ तित्ययरस्स जम्मणमहिमं करिस्सामि, त ण तुब्माहिं ण भाइयव्वतिक्ट्ट् ओसोवणिं दलयइ २ ता तित्ययरपंडिरूवग विउव्वइ २ ता तित्थयरमाजयाए पासे ठवेइ २ ता पञ्च सक्के विजन्वइ विजन्विता एगे सक्के भगव तित्थयर करयलसपुढेण गिण्हइ एगे सक्के पिट्टओ आयवत्त धरेइ दुवे सक्का उभओ पासिं चामरक्खेनं करेन्ति एगे सक्के पुरओ वज्जपाणी पकहुइत्ति, तए ण से सक्के देविन्दे देवराया अण्णेहिं वहूहिं भवणवङ्वाणमन्तरजोइसवेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सिद्धं सपरिवृद्धे सिव्वद्द्वीए जाव णाइयरवेण ताए उक्किट्ठाए जाव वीईवयमाणे २ जेणेव मन्दरे पव्वए जेणेव पहगवणे जेणेव अभिसेयसिला जेणेव अभिसेयसीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णेति ॥ ११७ ॥ तेण कालेणं तेण समएण ईसाणे देविन्दे देवराया स्लपाणी वसभवाहणे सुरिन्दे उत्तरहुलोगाहिवई अद्वावीसविमाणवाससयसहस्साहिवई अरयवरवत्यघरे एव जहा सक्वे इम णाणत्त-महाघोसा घण्टा लहुपरक्क्सो पायत्ताणियाहिनई पुप्फओ विमाण-कारी दक्क्षिणे निज्जाणमग्गे उत्तरपुरिक्षिमिल्लो रइकरगपन्वओ मन्दरे समोसरिओ जाव पज्जुवासइत्ति, एव अविधिद्वावि इदा भाणियव्वा जाव अञ्जुओत्ति, इम णाणत्त- सहस्मा ॥ ९ ॥ पूप् सामानिवाणं वशीनकावीसा बारमञ्जू वजरो सनसहस्मा । पणा चत्ताठीसा छच सहस्या सहस्यारे व १ ॥ शासमयाणबन्ध्ये चत्तारे समान SS(मनुए शिष्म । एए निमाणार्च इमे जाननिमाजनारी वेदा शंबहा-पासन १ पुष्फे सं २ सोमण्ये ३ सिरिक्फो य ४ वॅदियाक्से ७ । कामगमे ६ पीइगम ७ मजोरमे ८ नियम ९ सम्बन्धोमोर् ९ ॥ ९ ॥ सोश्रूम्मपार्थं समञ्जूमारगार्थं कंम-ध्येमगाचे महापुद्धवाचे पाजवगार्थ ईहार्च क्ष्योसा करा इरिकेगमेरी पामशाबीना हिनई उत्तरिका विज्ञासम्मी बाहिजपुरव्यक्ति रहरुरायम्बए, ईसाणगाम माहिंद कंतगसङ्स्सारकसुवयाय व इंदाय महत्त्वोसा कटा डहुप्रकारो पामतायीयाहिक्हें दक्ष्त्रिके विज्ञासमम्मे उत्तरपुरत्विमेडे सुरूरायम्बए, परिसा व 🗨 स्त्रीयामि-गामे जान्दरन्ता सामानिवक्टम्यूषा सम्बेमि बाजविमाणा सम्बेसि बोवनमगसङ्ख्य विरिज्ञन्या उन्हेर्य समिमानप्यमाचा सङ्कदण्डाया सम्बेसि प्रोयनसाहरिगमा सर् बजा सन्दरे छमीयरवि बाब प्रमुखारंविचि ॥ १९८ ॥ वेष कालेमं तेर्ग समर्प असरे असुरिन्दे लहुररामा जमरच्याए राज्हाणीए समाए सहस्ताए कारवि चीहासपेसि वरसङ्गेए सामाग्यियमाहस्सीश्च वावचीसार वस्यचीसेश्च वर्ड सेग-पाकेर्ड पर्वाई अन्गमहर्शाई सपरिवाराई दिई परिसाई स्टाई अमिएई सपई मानियाहिक्द्रह् कराहि करस्क्रीहै आयरक्खादेवसाहरूसीहि अव्यक्ति व बहा सहे वगरे इमं पानतं-नुमो पायताजीनाहिषदे ओक्स्परा चन्दा विमार्ग कवार्स बोमपस्ट स्माह महिन्द्ञाओं प्रवामीवणस्थाई विमायरारी आमिसीयओ देशे अवस्ति हैं चेव बाव सन्दर समीतरह प्रज्ञवास्त्रति । तेवं कासेवं तेवं समूपवं वटी सहरित्ये बनुरराचा एवमव कवरं सद्धी सामाणियनाहरसीओ चटनुवा आवरक्या महासुमी पायताशीयाहिनई महासोहरसरा ऋदा सेस तं चन परिमानो वहा जीवामिगमे । तेनं नाक्ष्मं तर्ज समपूर्ण भरवे तहेन णानशं-क सामाध्यसमाहत्सीको छ समामहि चौभ्रो च उस्पुष्पा मायरक्या भेक्स्सरा क्या महरोपो पावतानीयाहिका विमार्व पथ-बीस जोजनगरूरवाई महिष्जाओ अशाङ्जाई जोगणसमाई एवमग्रदिन्द्वजियाप भव नवास्तिदाण यनर जमुरायं कोक्स्मरा चय्या जागार्च संक्स्परा ध्वन्यार्च ईस्स्मरा निव्यूर्ण काबस्सरा सम्मीर्ण मैजुस्करा विसार्च मैजुबोमा उदहीय ग्रह्मरा शैवार्च महुरस्मरा बाक्रम पदिस्मरा यनियानं निर्मासा चडसड्डी सड्डी वस छव सहस्सा स समुर्वज्ञानं । सामान्यियाः च पूप् चडस्नुनाः ब्यावरस्याः व ॥ १ ॥ दक्षिनानं पानताचीयादिवरै सर्तेणां उत्तरिकार्णं इक्योति । वाच्यनतर बोहरिया येवस्या एर्

चेव, णवरं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ चत्तारि अगगमहिसीओ सोलस आयरक्ख-सहस्सा विमाणा सहस्स महिन्दज्झया पणवीस जोयणसयं घण्टा दाहिणाण मजुरुसरा उत्तराण मजुधोसा पायत्ताणीयाहिवई विमाणकारी य आभिओगा देवा जोइसियाण सुस्सरा सुस्सरणिग्घोसाओ घण्टाओ मन्दरे समोमरण जाव पज्जुवासतित्ति ॥ ११९ ॥ तए ण से अञ्चुए देविन्दे देवराया मह देवाहिवे आभिओगे देवे सहावेइ २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । महत्थ महग्घ महारेह विउठं तित्थयराभिसेयं उबद्वेबह, तए णं ते अभिओगा देवा हट्टतुद्व जाव पिडसुणित्ता उत्तरपुरित्थिम दिसीमाग अवक्स्मन्ति २ त्ता वेउव्वियसमुग्घाएण जाव समोहणिता अद्वसहस्स सोवण्णियकल-साण एव रूप्पमयाण मणिमयाण सुवण्णरूप्पमयाणं सुवण्णमणिमयाण रूप्पमणिमयाणं म्रुवण्णरूपमणिमयाण अहुसहस्स भोमिजाण अहुसहस्स चन्दणकलसाण एव भिंगाराण आयसाण थालाण पाईण सुपइहुगाण चित्ताण रयणकरडगाण वाय करगाण विडव्वति २ ता सीहासणछत्तचामरते हससुग्ग जाव सरिसवससुग्गा तालियटा जाव वीयणा विउन्वति विउन्विता साहाविए वेउन्विए य कलसे जाव वीयणे य गिण्हिता जेणेव खीरोदए समुद्दे तेणेव आगम्म खीरोदगं गिण्हन्ति २ ता जाड तत्य उप्पलाइ पउमाइ जाव सहस्सपत्ताई ताड गिण्हति, एव पुक्खरोदाओ जाव भरहेरवयाण मागहाइतित्थाण उद्गं मिट्टय च गिण्हन्ति २ ता एव गगाईण महाणईण जाव चुछिहमवन्ताओ सन्वतुवरे सन्वपुप्फे सन्वगन्धे सन्वमछे जाव सन्त्रोमहीओ सिद्धत्थए य गिण्हन्ति २ त्ता परमदृहाओ दहोदग रुप्पलाईणि य०, एवं सन्वकुरुपन्वएमु वर्ष्वेयहेनु सन्वमहद्देमु सन्ववासेमु सन्वचक्रवृहिविजएमु वक्खार-पव्यएन अतरणंडेनु विभातिज्ञा जाव उत्तरकुरुमु जाव मुदसणभद्दमालवणे सव्वतुवरे जान सिद्धत्यए य गिण्हन्ति, एव णन्दणनणाओ सन्नतुनरे जान सिद्धत्यए य सरस च गोसीमचन्दण दिव्य च सुमणदाम गेण्हन्ति, एव मोमणसपटगवणाओ य सव्य-तुवरे जाव समणदाम दहरमलयसगन्धे य गिण्हन्ति ? ता एगओ मिलति ? ता जेणेर मामी तेणेव उवागच्छन्ति २ ता महत्य जाव तित्थयराभिसेय उवहवेतिति ॥ ५२० ॥ तए ण से अञ्चुए देविन्दे दसहि सामाणियमाहस्सीहि तायत्तीमाए तायत्तांमएहि चडिं स्रोगपालेहि तिहि परिमाहि सत्तिह अणिएहिं सत्तिहिं अणिया-हिवर्देह चत्तानीमाए आयरकगढेवसाहस्सीहिं मद्धि सपरिचुडे तेहिं माभाविएहिं वेडिव्यएरित य परकमलपड्टाणेहिं नुरभिवरचारिपडिपुण्णेहिं चन्दणक्यचचाएहिं आनिदारण्टेराणिर् परमुप्पलपिद्दाणिर्हि कर्यलमुक्तमाल्परिग्गहिर्णाह अट्टनहस्सेण चेपिन्ययाण क्लमाण जाव अद्वमहत्त्वेण भोमेजाण जाव मन्त्रोदएहिं सन्वमिट्ट- १४ प्रश्नाति । विद्यास्य । विद्य

इंदाइया बेबा छत्तनासरकसम्बद्धस्थाया इत्यद्ध जाव वस्रमुख्याची प्रदेशा विद्वति पैजिन्नितवा इति एवं निकराणुसारेच बाव लप्पेगद्दशा वेवा भावियसंसिक्तिमेव निविधितद्वर्तमम्बद्धर्ववरावक्वीद्विमं करेन्ति वाव गञ्चवद्विमूर्वित अप्येप द्विरव्यानाचे नासिति एवं श्रम्कारनवनप्रशासरकप्रताप्रप्रप्रक्रियसम्बद्धाः नाव चन्नवासं वासंक्षः कच्चेगावा क्रिरन्जनिक्कं नार्तति एवं चाव चन्नविक्कं महति अप्येगह्या क्लामिह कर्ज बाएन्सि तेमहा-तत १ नितर्त ९ वर्ष ३ झसिरं ४ अप्येद्रमा चटन्बिट नेन पायन्ति शेजहा-उक्कियं १ पायपं २ मन्दाहर्न ३ रोह्नाबसार्ण ४ अध्येगहरा चतन्त्रहं जहं चचन्ति तं-मनियं १ हमं १ भारमा । मसीनं ४ व्यप्पेगर्वा चटन्त्रिं भागमन समित्राति तं -विद्वेतिये पाकिस्टार्य सामन्जोवधिवाहर्य कोयमञ्चावसामियं बज्जेगहवा वत्तीस्ट्रविद्वं दिन्तं महिम्हिं सब्दंसेन्ति अप्येगहवा उप्पतनिक्यं निवक्तप्पयं सङ्गिरफ्तारितं वान म तर्चनन्त्रणमं दिव्हं जहविश्वं जबईएन्डीटि अप्येतहवा दंडवेंद्रि अप्येगहवा कारेन्ति अप्येगह्या पीकेन्ति एवं बुद्धारेन्ति अप्येदेशिः वस्पन्ति सीहमार्व णवन्ति कप्पे सम्बद्धं करेन्ति अप्पे इयक्षेत्रियं एवं इत्य<u>ग्रहस</u>्बद्धार स्वयन पणाइयं भप्पे तिरिन्ति सप्पे उच्छोसन्ति सप्पे एच्छोसन्ति भप्पे निन्हं छिदन्ति पानवदूर्यं करेन्ति सूनिकवेडे दक्तसन्ति क्यें सहवा १ स्ट्रैमं रावेति एवं चत्रोमा निमारियच्या अप्ये इद्वारेन्ति एउं , रन्य उप्पर्वति परिवर्वति कालन्ति तर्वति पत्तर्वति गर्वति निक् भन्येगद्रया बेनुप्रक्रियं करेंति एवं देवपद्यवद्या करेंति व बन्ये विकित्रभूताई इवाई विश्वविकता प्रश्रवंति विजयस्य जाव गण्यको समन्ता आधार्वेति र्थ से असूबि सपरिवार सामि तेलं महता महसा

करवानपरिमाहियं बाह साराण् अवस्ति बहु वाण्यं नाहि इहाहि जार कनवानां प्रवेकह प्रतिकृता जाव उपयाराण प्राप्ति इहेह र ता एवं जाव वर्षर् प्राप्ति उच्चरेष्ठ र ता वर्णप्रियं पराध्ये , उद्भावनिर्मेष्ठ अनुवानोहिं वार्ति अवस्थानस्माहियं अनुवानोहिं णमोऽत्यु ते सिद्ध्युद्धणीर्यसर्मणसमाहियसमत्तसमजोगिमहगत्तणणिवभयणीरागदो-सणिम्ममणिस्सगणीसह्रमाणमूर्णगुणरयणसीलसागर्मणतमप्पमेयभवियधम्मवरचा-उरतचक्कवट्टी णमोऽत्यु ते अरहओत्तिकद्रु एवं वन्दइ णमसइ व० २ ता णचासण्णे णाइट्रे सुस्सूसमाणे जाव पजुवासइ, एव जहा अचुयस्स तहा जाव ईसाणस्स माणियव्व, एवं भवणवडवाणमन्तर जोइसिया य सूरपज्जवसाणा सएण परिवारेण पत्तेय २ अमिसिंचिति, तए ण से ईसाणे देविन्दे देवराया पञ्च ईसाणे विउन्वइ २ ता एंगे ईसाणे भगव तित्ययर करयलसपुढेण गिण्हइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिसुहे सिण्पसण्णे एगे ईसाणे पिट्टओ आयवत्त घरेड दुवे ईसाणा उभओ पासिं चामस्क्खेव करेन्ति एगे इंसाणे पुरओ सूलपाणी चिद्वह, तए ण से सक्के दैविन्दे देवराया आभिओगे ढेवे सहावेइ २ ता एसोवि तह चेव अभिसेयाणति देंड तें 5वि तह चेव उवणेन्ति, तए ण से सके देविन्दे देवराया भगवओ तित्य-यरस्स चउद्दिसिं चतारि घवलवसमे विउन्वेड सेए सखदलविमलिणम्मलद्धिघण-गोखीरफेणरययणिगरप्पगासे पासाईए दरिसणिजे अभिरूवे पिहरूवे, तए ण तेसिं चउण्ह घवलत्रसभाण अट्टाई सिंगेहितो अट्ट तोयवाराओ णिग्गच्छन्ति, तए ण ताओं अट्ठ तोयघाराओं उड्ढ वेहास उप्पयन्ति २ ता एगओ मिलायन्ति २ ता भगवओं तित्थयरस्य मुद्धाणिस णिवयति । तए ण से सक्के देविन्दे देवराया चउरासीईए सामाणियसाहस्सीहिं एयस्सवि तहेव अभिसेओ भाणियव्यो जाव णमोऽत्यु ते अरहभोत्तिकदु वन्दइ णमसङ जाव पज्जवासङ ॥ १२२ ॥ तए णं से सक्ते देविंदे देवराया पच सक्ते विउव्बह २ ता एगे सक्ते भयव तित्थयर करयल-चपुढेण गिण्हड एगे सक्के पिद्वओ आयवत्त धरेइ दुवे सक्का उभओ पासि चामरुक्खेव क्रेंति एगे सक्के वज्जपाणी पुरओ पकहुइ, तए ण से सक्के चउरासीईए सामाणिय-साहस्सीहिं जाव अण्णेहि य॰ भवणवडवाणमतरजोइसवेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सर्दि सपरियुढे सिव्बद्वीए जाव णाइयरवेण ताए टिक्क्टिए जेणेव भगवओ तित्थ-यरसा जम्मणणयरे जेणेव० जम्मणभवणे जेणेव तित्थयरमाया तेणेव उवागन्छः २ ता भगव तित्थयर माऊए पासे ठवेड २ ता तित्थयरपिडहवग पिडसाहरड २ ता -ओसोवर्णि पडिमाहरड २ ता एग मह खोमजुयल कुटलजुयल च भगवओ तित्य-यरस्य उस्सीसगमूले ठवेड २ ता एग मह सिरिटामगड तवणिज्ञलवृयग सुवण्णपय-रगमिडय णाणामणिरयणविविहहारद्वहारउवसोहियसमुदय भगवओ तित्थयरस्म उष्टोयिन णिक्सिवड तण्ण भगव तित्थयरे अणिमिमाए दिर्द्वाए देहमाणे २ मुहमुहेण अभिग्ममाणे ? चिट्टर, तए ण से सक्षे देविंदे देवराया वेसमण देव सहावेद ? ता ४१ मुता०

क्षेत्रों बतार्थ पदछ बतार्थ सहाई छुम्ये सुमग्रहबुख्यणजाबन्धे व मगबम्मे दिल-भरस्य सम्मानमाने साहराहि १ ता एवसागतिमं प्रवापनाहि, तए वं से बेसमणे देवे सन्देण चान निवारणं काण परिशालेंद्र २ शा जीमए देवे सहानेद्र २ <sup>छा</sup> पूर्व बदा<del>धी कि</del>प्पाशंव मो देवाणुप्पिया ! बत्तीसं हिरण्यकोडीको जाव अस्वको विरुपंदरस्य जम्मयमवर्गसि साहरह साहरिता एयमाशतिर्व प्रवासिनंद सर् व रे र्जमगा देवा वेसमणेचे वर्वेचं एवं जुला समाना इध्युद्ध काव क्रिप्पासेव वर्तीस हिरण्यकोबीओ जाव सम्बन्धो तिस्वगरस्य बस्सवस्वर्णति शाहरेति १ ता वेकेन वेसमने देवे तेथेन कान पनाधियांति तए यां से वेसमये देवे खेलीह सके देविंदे देवराया जान प्रमध्यमह । तए थं से सक्ते केनिंदे वेकराया ३ आसिम्सेगे देवे सहाकेद्र २ ता एवं वगायी-विष्णामेन सो धकाकुण्यता ! सगतको दिल्बन्हरू बस्मजनसरित विवादण जान सहापद्वादेश सहना २ शहेर्ण अरबेरेसाना १ एवं क्"इ-इंबि प्रणंतु शर्वतो वहवे अवजवद्याणमगरबोहधवेमाथिया देवा व देवीको य से में देवासुप्यिया ! तित्वयरस्य तित्ववरमाळ्य वा व्युप्तं सर्व प्रवारेह दस्य र्ग अञ्चानंबरिया इव संबद्दा मुखानं कुटवरिष्ठ ह बोरोह १ ता एउमानतिर्व प्रवापनहति छए नं ते आभिओमा देश बान एवं देशेति आयाप सेवएनं वननं पविद्यपंति १ ता सक्स्स वेनियस वेनरच्यो संविधाओ पविक्रियमित १ स चिप्पामेत्र सगतभो दिलगरस्य वस्मनगगरेच सिंबाडम काव एवं वसारी-दृष्ट द्वर्णंद्व भवतो बहुषे भवणगढ् जाव से में देवालुप्पिया ! तित्वनरस्य जाव प्र<sup>तिही</sup> तिरङ्क बोसपर्य बेर्पेति १ ता एसमानतिर्म एकपिनंति तए यं त बहुवे सनकारतः गर्मतरबोहसकेमानिया वंचा सगवको शिल्पगरस्य बम्मानमधिमं करेंद्रि १ ता बामन दिसि पारुम्पूबा तामेव विसि पश्चिममा ॥ १२३ व पंचामी चनस्तारी समची

ण भते ! दीवे केवड्य जोयणगणिएण पण्णते 2 गोयमा !-सत्तेव य कोडिसया णउया छप्पण्ण सयसहस्साः । चउणवः च सहस्सा सय दिवहः च गणियपयं ॥ १ ॥ जबुद्दीवे ण भते ! दीवे कड वासा पण्णता 2 गोयमा ! सत्त वासा प०, तंजहा-भरहे एरवए हेमवए हेरण्णवए हारेवासे रम्मगवासे महाविटेहे, जंबुद्दीवे ण भते । दीवे केवड्या वासहरा पण्णता केवडया मदरा पव्वया पण्णता केवड्या चित्तकूडा केवड्या विचित्तकृडा केवइया जमगपव्वया केवइया कचणगपव्वया केवडया वक्खारा केवइया दीह्वेयह्य केवड्या वट्टवेयह्य पण्णता <sup>२</sup> गोयमा । जबुद्दीवे २ छ वासहरपव्वया एगे मदरे पव्वए एगे चित्तकृष्टे एगे विचित्तकृष्टे दो जमगपव्वया दो कचणगपव्ययसया वीस वक्खारपव्वया चोत्तीस दीहवेयहुा चत्तारि वट्टवेयहुा , एवामेव सपुव्वावरेण जबुद्दीवे दीवे दुण्णि अजणत्तरा पन्वयसया भवतीतिमक्खाय । जबुद्दीवे णं भते ! दीवे केवइया वासहरकूडा केवइया वक्यारकूडा केवडया वेयहुकूडा केवइया मदरकूडा छप्पण्ण वासहरकूडा छण्णउई वक्खारकूडा तिण्णि छलुत्तरा वेयहृदूड-सया णव मदरकूडा पण्णत्ता, एवामेव सपुव्वावरेण जबुद्दीवे २ चत्तारि सत्तद्वा कूड-सया भवन्तीतिमक्खाय । जबुद्दीवे ण भते । दीवे भरहे वासे कह तित्था प॰ 2 गो॰। तओ तित्था प॰, त॰-मागहे वरदामे पभासे, जंबुद्दीवे॰ एरवए वासे कड़ तित्था प॰ १ गो॰ ! तओ तित्था प॰, त॰-मागहे वरदामे पभासे, जबुद्दीवे ण मते ! दीने महाविदेहे नासे एगमेगे नकविदिनिजए कई तित्था प० १ गो० ! तस्रो तित्था प॰, तं॰-मागहे वरदामे पभासे, एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे २ एगे विउत्तरे तित्यसए भवतीतिमक्खाय । जंबुद्दीवे णं भते । दीवे केवइयाओ विजा-हरसेढीओ केवइयाओ आभिओगसेढीओ प० १ गो० ! जंबुहीने दीवे अद्वसद्धी विज्ञा-हरसेढीओ अहुसही आमिओगसेढीओ पण्णताओ, एवामेव सपुव्वावरेण जबुद्दीवे दीवे छत्तीसे सेढीसए भवतीतिमक्खायं, जबुद्दीवे ण भते ! दीवे केवइया चक्कविटिवजया केवइयाओ रायहाणीओ केवइयाओ तिमिसगुहाओ केवइयाओ खंडप्पवायगुहाओ केवइया क्यमालया देवा केवइया णदृमालया देवा केवइया उसमकूडा० ५०१ गो० ! जबुद्दीवे दीवे चोत्तीस चक्कविष्टिविजया चोत्तीस रायद्दाणीओं चोत्तीस तिमिसगुहाओ चोत्तीस खडप्पनायगुहाओ चोत्तीस क्यमालया देवा चोत्तीस णहमालया देवा चोत्तीस उसमकूडा पन्वया प॰, जबुद्दीवे ण भते ! दीवे केवड्या महद्द्दा प॰ <sup>१</sup> गो॰ ! सोलस महद्द्दा पण्णता, जबुद्दीवे ण मते । दीवे केवइयाओ महाणईओ वासहरपवहाओ केव-इयाओ महाणईओ कुडप्पवहाओ पण्णताओ १ गोयमा । जबुद्दीने २ चोद्दस महाणईओ वासहरपवहाओ छावत्तरिं महाणईओ कुडप्पवहाओ०, एवामेव सपुव्वावरेण जबुद्दीवे

सिक्षानाइसिक्ष्ट्रं समागा प्रशिवसण्यावियोगं व्यवस्मानं सम्पर्कः एवामंत्र स्ट्राम्बं वरिण संबुद्धि २ देख्याहरण्यास्त्र वासेत्र् वास्तातं सविकासवरहास्य स्वयोगिः सम्परातं । चंतुरिव वं नोते । वीचे दृशेवास्त्रस्यागास्त्रे व्यवस्थानावर्षे स्वयागांत्रे स्वर्णाः स्वयागां व्यापि सहायोगं स्वयागायः स्वर्णामान्त्रस्य सम्पर्का प्रशिवस्थानार्यस्य स्वर्णामान्त्रस्य स्वर्णामान्यस्य स्वर्णामान्त्रस्य स्वर्यस्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्यस्य स्वर्यस्यस्यस्य स्वर्णामान्त्रस्य स्वर

दो करावेदा एकिकासम्बद्धारा मर्परीतिसम्बार्य बंदुर्गने से मंति । सेवे म्हा-मिनेहे वार्त वह महाव्यहेंनो पञ्चताओं है गोवमा। यो महाव्यहेंनो एक्ताम्बे रोज्या—चीवा न सीजोवा च एत्व मंत्रपारमा महाव्यहें क्वाह्नी र एक्तिमान्त पहान्ती हैं वर्गीचार य सक्तिमात्वहरी समस्या उपनिवस्त्रमात्रिकार कानस्यां सर्वान्ति, एक्तिम सर्वान्तावरणे बंदुर्गने सेवे महाभिवेहें बावे द्वार सर्वान्तावर्षार बावेस्टि च सक्तिमात्वहरूसा मन्तीतिसम्बार्गनं । बंदुर्गने से सेते । सेवे मंदरस्य

पम्नमस्य ब्रिन्धनेथं केनह्ना समिकासमसङ्ख्या प्रश्**रित्म**न्वरिक्माभिस्रा स्वय

स्त्रं सम्पंति । गो । एगे एञ्चलए एक्किसस्याव्यक्ते पुरित्यसम्बर्भियास्त्रिय स्वत्रसम्बर्धः संबुधिव वं अति । धोवे अंदरस्य कावस्य तर्रात्वं केवस्य सम्बर्धसम्बर्धस्या प्रतिकारकारित्या सम्बर्धाः सम्बर्धाः सम्पर्धः गो । एवे सम्बर्धः सम्बर्धाः प्रतिकारकार्यस्य प्रतिकारकारित्याम् वास्य सम्पर्धः संत्रीवे वं प्रतिकारम् । स्वतिकारकारस्याः सम्बर्धः अस्त्राम् सम्बर्धः सम्बर्धः स्वत्यक्षः ।

सर्व । एवं क्यांसा एकस्पारस्थारस्था शुरलासम्बद्धाः स्व स्वस्था वाद सम्पर्धेते, व्यंतुरे वं योजमा । एत एकिकास्यव्यवस्था स्वाध्यावस्था स्व स्वस्था वाद सम्पर्धेते, व्यंतुरे वं तेत्रे । एवे केपास्य एकियास्यवस्थाः स्वाधिकासिम्बद्धाः स्व स्वर्धेते । योजमा । यत्तं एकियास्यवस्थाः स्वाधिक यहास्या वाद सम्पर्धेते । स्वाधेतः एक्याबदेव संतुर्धेव एवे चोहर प्रक्रिकासम्बद्धाः स्वयम्यं व सहस्या अर्थेतिः

सम्बार्ग ॥ १९५ ॥ छड्डो बनकारी समस्ती ॥

जंबुद्दीवे ण भते । दीवे कइ चंदा पभासिंसु पभासित पभासिस्सति कइ स्रिया तवइसु तवेंति तविस्सति केवइया णक्खत्ता जोग जोइसु जोयंति जोइस्सति केवइया महग्गहा चारं चरिंग्र चरंति चरिस्सति केवइयाओ तारागणकोडाकोडीओ सोभिंग्र सोमित सोभिस्सिति <sup>2</sup> गोयमा ! दो चंदा पभासिंसु ३ दो सूरिया तवइसु ३ छप्पण्ण णक्खता जोग जोइंसु ३ छावत्तर महग्गहसय चार चरिसु ३-एगं च सयसहस्स तेत्तीस खलु भने सहस्साइं। णव य सया पण्णासा तारागणको डिकोडीणं॥ १॥ ति ॥ १२६ ॥ कड ण भते ! सूरमङला पण्णता 2 गोयमा ! एगे चउरासीए मङलसए पण्णते । जंबुद्दीवे ण भते ! दीवे केवइय ओगाहिता केवइया सूरमङला पण्णत्ता 2 गोयमा ! जबुद्दीवे २ असीय जोयणसयं ओगाहित्ता एत्य ण पण्णही सूरमङला पण्णत्ता, लवणे ण भते ! समुद्दे केवइय ओगाहित्ता केवइया सूरमडला पण्णत्ता ? गोयमा ! छवणे समुद्दे तिण्णि तीसे जोयणसए ओगाहिता एत्थ णं एगूणवीसे सूर-मडलसए पण्णत्ते, एवामेव सपुव्वावरेण जंबुद्दीवे दीवे लवणे य समुद्दे एगे चुलसीए स्रमटलमए भवतीतिमक्खाय १ ॥ १२७ ॥ सन्वन्भतराओ ण भते ! स्रमङलाओ केनइयाए अवाहाए सन्वबाहिरए सूरमंडले प॰ <sup>२</sup> गोयमा! पचदसुत्तरे जोयणसए अबाहाए सव्ववाहिरए सूरमङ्छे पण्णते २॥ १२८॥ सूरमङ्कस्स ण भंते ! सूर-मडलस्स य केवइय अबाहाए अतरे पण्णते १ गोयमा ! दो जोयणाई अबाहाए अतरे पण्णते ३॥ १२९॥ सूरमडले ण भते ! केवइय आयामविक्खमेणं केवइयं परिक्खे-वेण केवड्य बाह्रहेण पण्णते <sup>२</sup> गोयमा ! अडयालीस एगसद्विभाए जोयणस्स आयाम-विक्खमेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण चउवीस एगसहिभाए जोयणस्स वाह्हेण पण्णते इति ४ ॥ १३० ॥ जंबुद्दीवे ण भते । दीवे मदरस्स पव्वयस्स केवङ्याए अवाहाए सन्वन्भतरे सूरमङ्छे पण्णते 2 गोयमा । चोयालीस जोयणसहस्साइ अह य वीसे जोयणसए अबाहाए सन्वन्भतरे सूरमङ्छे पण्णते, जबुद्दीवे ण भते ! दीवे मदरस्स पन्वयस्स केवइअवाहाए सन्वन्मतराणतरे सूरमङ् पण्णते १ गी० ! चोया-ठीस जोयणसहस्साई अट्ट य वावीसे जोयणसए अडयाठीस च एगसद्विमागे जोय-णस्स अवाहाए अन्मतराणतरे सूरमङ्छे प०, जबुद्दीवे ण भंते ! दीवे मदरस्स पव्वयस्स केवइयाए अवाहाए अञ्मतरतचे सूरमङ्छे पण्णते १ गो०! चोयाठीस जोयणसहस्साइ अट्ट य पणवीसे जोयणसए पणतीस च एगसिट्टभागे जोयणस्स अनाहाए अञ्मतरतचे सूरमंडठे पण्णते, एव खलु एएण उवाएणं णिक्खममाणे सृरिए तयणतराओ मडलाओ तयणतर मंडल सकममाणे २ दो दो जोयणाइ अडयालीस च एगसिट्टभाए जोयणस्स एगमेगे मडले अवाहानुहिं अभिवद्वेमाणे २ सञ्ववाहिरं नाए कराहाए सम्बाह्य स्वारंग्य कराह्य मानावित स्वारंग्य प्रमाह्य सम्बाह्य सम्बाह्य सम्बाह्य सम्बाह्य स्वारंग्य स्वरंग्य स्वरंग्य स्वारंग्य स्वरंग्य स्वरंग्य

परिश्लोकेन पत्रपति है भी । यहपानई जीवनसहस्ताई छन नताई क्षेत्रनगर वाजासनिक्ष्यभेत्र द्विष्टित व जोवणसक्तकस्थातं पण्यस्य य जोवणसङ्ख्यातं पृष्टी क्या व क्येमनाई किनिविधेसाविवाई परिक्केवेण अवसंतरासतरे ने अंते। स्ट्रमंडके केवहमं मानामनिक्कीमणं केवहनं परिक्कीवेणं कनते । गोसमा l वदमत्रहे भोक्नसङ्स्साई छच प्रकशके कोक्नसए प्रकारि च एयसक्रिमाए कोक्सस आर्थाः मनिक्सीनं दिग्नि कोयनस्यस्टरसई पन्परस व कोयनस्टरसई एर्ग स्टुपर कोनक्सर्य परिक्केविण पत्करे अन्मांतरतके व संवि । सरसंद्रके केन्द्रने वानस-निक्कीनं केनहर्न परिक्केनेणं प 🚦 यो 📘 शक्तवर्षः जोजवसहरूसाई 🕶 एक्टनाने जोनवसए यन व एपसक्रिमाए जोनवस्त सानामस्वरक्षमणं हिन्ति व बोन<del>वस्</del>व सङ्क्साई पन्परस कोननसङ्ख्याह एवं न पणकीसं कोनकसर्व परिनकोवेर्य । एवं कर्स यूपन उदाएचं विकस्तममाचे स्रिय तमार्चतराओ मंडकाओ तमार्चतरं मंडबं उर्क सक्तमाणै १ पंच १ कोशवाई पनतीस व एगसक्तिमाए चोयवरस एममेंगे संडके वित्रवंग्लुर्वि व्यक्तिक्ट्रेगाने २ शङ्कारस २ कोवनात् परिरक्तुर्वि व्यक्तिक्ट्रेगाने १ सम्भवादिरं मंडकं स्वर्धकरिया चारं चरह, सम्भवादिरए चं मंते ! स्रमंडके केन इत यासामनिक्यमिनं केवहर्तं परिक्येतेण पण्यते हं गोदमा । एवं बोरणसक्तहर्तं क्रम सद्धे चोनपसप् भागामनिन्धरीयं तिष्टि ए चोमनसमस्हरसई स्कारस व सङ्स्सतं विक्ति व पञ्चरस्तारे जीवनसप् परिवर्धनेच वाहिएचंटरे से मंति।

सूरमङ्के केवङ्यं आयामनिक्खमेण केवङ्य परिक्खेवेण पण्णते 2 गोयमा ! एगं जोयणसयसहस्स छच चउप्पण्णे जोयणसए छन्वीस च एगसद्विभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेण तिण्णि य जोयणसयसहस्साइ अद्वारस य सहस्साई दोण्णि य सत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेणति, वाहिरतचे ण भते ! सूरमंडले केवइय आया-मविक्खभेणं केवइय परिक्खेवेण पण्णते <sup>२ गो०</sup>! एग जोयणसयसहस्स छच अड-याले जोयणसए वावण्ण च एगसद्विभाए जोयणस्स आयामविक्खभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साई अट्टारस य सहस्साई दोण्णि य अउणासीए जोयणसए परिक्खे-वेण०, एव खळु एएण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतराओ मङलाओ तयाणंतरं मडलं सक्तममाणे २ पच पच जोयणाई पणतीस च एगसिंहभाए जोयणस्स एगमेगे मडले विक्लभवुद्धिं णिवुद्धेमाणे २ अट्ठारस २ जोयणाई परिरयवुद्धिं णिवुद्धेमाणे २ सन्वन्मंतर मडल उवसकिमत्ता चार चरइ ६ ॥ १३२ ॥ जया णं मंते ! सूरिए सव्वर्भतरं मडल उवसकिमत्ता चार चरइ तया ण एगमेगेण मुहुत्तेण केवइयं खेत्तं गच्छइ <sup>२</sup> गोयमा । पच पंच जोयणसहस्साइ दोण्णि य एगावण्णे जोयणसए एगूण-तीस च सद्विभाए जोयणस्य एगमेगेण मुहुत्तेणं गच्छइ, तया ण इहगयस्स मणूसस्स सीयाठीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवद्वेहिं जोयणसएहिं एगवीसाए य जोयणस्स सिंडिमाएहिं स्रिए चक्खप्फास हव्वमागच्छइ, से णिक्खममाणे स्रिए णव सवच्छरं अयमाणे पढमिस अहोरत्तिस सन्वन्भतराणतरं मंडल उवसकिमत्ता चार चरइ. जया ण भते ! सूरिए अन्मंतराणंतर मङ्लं उवसकिमत्ता चारं चरइ तया ण एगमेगेण मुहुत्तेण केवइय खेत्त गच्छइ 2 गोयमा ! पच पच जोयणसहस्साई दोण्णि य एगावण्णे जोयणसए सीयालीस च सद्विभागे जोयणस्स एगमेरोण सुहुत्तेण . गच्छइ, तया ण इहगयस्स मणुस्सस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणासीए जोयणसए सत्तावण्णाए य सिंहुभाएहिं जोयणस्स सिंहुभाग च एगसिंहुहा छेता एगूणनीसाए चुण्णियामागेहिं स्रिए चक्खण्फास हव्वमागच्छइ, से णिक्खममाणे स्रिए दोचिस अहोरत्ति अन्मतरतच मडल उवसकिमत्ता चार चरह, जया ण भते! स्रिए अब्भतरतच मडल उवसकमित्ता चारं चरइ तया ण एगमेगेणं मुहु-त्तेण केवइयं खेत गच्छइ व गोयमा । पच पच जोयणसहस्साइ दोण्णि य बावण्णे जोयणसए पच य सिट्टभाए जोयणस्स एगमेगेणं सुहुत्तेण गच्छह्, तया णं इहगयस्स मणुस्सस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं छण्णउईए जोयणेहिं तेत्तीसाए सिंहमागेहिं जोयणस्स सिंहमाग च एगसिंद्वहा छेत्ता दोहिं चुण्णियाभागेहिं स्रिए चक्खुप्फास इन्वमागच्छइ, एव खल्ल एएण उवाएणं णिक्खममाणे स्रिए तयाणतराओ मड- पुरिसन्छारं नितुष्टेमाणे २ सम्बन्धाहिर भंडकं स्वतंत्रक्षीता बारं बरह । वना वं भंदे ! दिए सम्बन्धहिरभंडकं स्वतंत्रके सा बारं बरह समा नं एममेलेनं मुद्दुर्गेनं केन्द्रस्य बेटो सम्बन्धह भोगामा ! येच पंत्र जोगस्यस्यस्याह सिर्माण व पद्मारं स्वोतन्त्र सर् प्रमारस्य व पश्चिमाण जोगास्त्रस्य एममेलियं सुद्दुर्गेनं सम्बन्धक, समा व बेटामाण

त्यु प्लग्तर व राह्माएं कांग्यस्य एमगंप्य सुद्वांच राच्छा, त्या व हास्मार्थ महत्त्रस्य एयतीसाए कोम्प्यस्टारीहीं बहुद्धि व एमारीहीं कोम्यस्यपृष्टि हीसार्थ रिह्नापृष्टि कोम्प्यस्य खरिए कर्माच्याचे हम्बामाच्छा, एस व लम्मे सम्मारी एर्य मं प्रस्तरस्य सम्मारस्य पत्राक्षाण्ये से पत्रिसमाने स्रिए होने हम्मारी स्वमार्थे परमित कहिरपरिय महिरामेवरं मंत्रने वनसंक्रीता वारं बद्ध, बचा मं मेरी सिर्प

बाहिताबंदरं सेवलं जवनकरिता बारं बार्ड एसा वं एमसेनेब सुद्दुतेन केदरं बेता गच्छा ! गोसमा ! एव पंच बोयबस्टरसद् तिरिव य बाउडतरं कोनक्सर्य सप्ताकलं व सिद्धारा बोयबस्टर एमसेनेलं सुद्दोलं एक्का, स्था वं इस्पर्टर स्ट्रस्टरस्ट एमसिसाय बोयबस्टरस्टिं बाहिय सोक्कारदेई बोयनस्टर्स्ट स्ट्रानं स्ट्रेसरस्ट एमसिसायह बोयबस्टरस्टिं बाहिय सोक्कारदेई बोयनस्टर्स्ट स्ट्रानं

क्षेत्राय च चिक्कमापार्वे जोजवरस सिक्कमां च एकसिक्का क्षेत्रा स्क्रीप जुन्निवासमार्वे स्वीर्य क्ष्मस्यपार इक्ष्ममामाञ्चा, त विषयमान स्वीर्य दोन्सीर काहेरलेंड साहिएलें मंडके उत्तरकर्मिता जारे करह क्या क भंते । सिर्य साहिएलके संबंध उत्तरिकर्मिता वार्त करह करा वें पुगरेरीके सुद्वीये केन्द्रते केया सम्बद्ध है स्वेत्रमा । येन पेन जोजसस्ट स्वार्थ दिन्मित न करारी खोजवरस स्वार्थक्रस व स्विक्काए जोन्सरस

एप्सीनमं प्रहुतेणं पन्त्रव्य, तथा णं इहायस्य सन्त्रस्य एपाझिएहि वार्रवार वेश्वस् सहस्योहें एएनपञ्चाप व सिद्धानायि कोस्मरस्य सिद्धानां व एनाविद्धा के वीचाप वृत्तिवनामापि सिए वनकाप्यसी सन्त्रामाण्यक्त एव वक्ष एपरे वनाव्यं परिस्तानां परिए तनानंत्रास्त्र संवक्षको तथानंतरं श्रव्धं केस्त्रमाणे हरिए तथानंत्रास्त्र संवक्षक्रियानां र एक्स्त्रयः । सिद्धानाप जोयनस्य एगमेगं गेवकं ग्रहुत्तन्त्रं निवहेनाने २ चतरंत्रम्यं पंत्रप्री जोयानां प्रतिस्वानां नित्रम्यानां २ स्वान्त्रमंत्रातं श्रव्धं कास्त्रमता वार्तं वर्तः एव वे रोचे कमार्थः एव वेशक्षस्य स्वत्रप्रावे एकस्योतं एव पंत्रप्रीतं एव पंत्रप्रीतं ।

वासपाद प्रश्तिकान कार्यकृतिक ए प्रवक्तिए सक्क प्रश्तिक एवं कार्य एवं वी वी कमार्थ एवं वी वीचर क्रमार्थ एक संव ए वे कार्य स्वकारे, एस कं कार्यकरा एक्जिस्स प्रकारावे कन्ति थ ११११ ॥ वया में सेटे | प्रिए एक्किसीर रेडके अधिकतात चारं करह तथा वे नेताकार मिर्ट केमहास्तित एहे मक्क हैं गोस्मा । एवा कं उपस्कृतने उन्हेस्ट क्रमाराज्ञ है विको समझ व्यक्तिया प्रशास्त्रसमुद्धा एहे सक्द, हे सिक्बसमाने स्ट्रीर कर्त सवच्छर अयमाणे पढमंसि अहोरत्तसि अञ्भतराणतर मडल उवसकिमत्ता चार चरइ, जया ण भते ! सृरिए अन्भतराणतर मडल उवसकमित्ता चारं चरइ तया ण केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ 2 गोयमा । तया ण अद्वारसमुहुते दिवसे भवइ दोहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहि य एगद्विभा-गमुहुत्तेहिं अहियत्ति, से णिक्खममाणे स्रिए दोचिस अहोरत्ति जाव चारं चरइ तया ण केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवड 2 गोयमा ! तया ण अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चर्डोहें एगद्विभागमुहुत्तेहिं छणे दुवालसमुहुत्ता राई भवड चर्डोहें एगद्विभागमुहुतेहिं अहियत्ति, एव खलु एएण उवाएण णिक्खममाणे स्रिए तया-णतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणे २ दो दो एगद्विभागसुहुत्तेहिं मडले दिवसखेत्तस्स निवुद्वेमाणे २ रयणिखेत्तस्स अभिवद्वेमाणे २ सन्ववाहिरं मडल उवसकमित्ता चारं चरइत्ति, जया णं स्रिए सन्वन्मतराओ मडलाओ सन्वनाहिर मडल उवसकामित्ता चारं चरड तया ण सन्वन्भतरमंडल पणिहाय एगेण तेसीएण राइंदियमएणं तिण्णि छावट्ठे एगद्विभागमुहुत्तसए दिवसखेतस्स निवुहुता रयणि-खेतस्स अभिवृष्ट्रेता चार चरइत्ति, जया ण भते ! स्रिए सव्वबाहिरं मङल उवसकिसत्ता चारं चरइ तया ण केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ <sup>2</sup> गोयमा! तया ण उत्तमकट्टपत्ता उक्कोसिया अद्वारसमुहुत्ता राई भवड जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइत्ति, एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। से पविसमाणे सूरिए दोच छम्मास अयमाणे पढमिस अहोरत्ति वाहिराणतरं मङल उवसकिमत्ता चारं चरइ, जया ण मंते ! स्रिए बाहिराणतरं मंडल उवसकिमता चारं चरइ तया णं केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ <sup>2</sup> गोयमा! अट्टा-रसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एग द्विभागमुहुत्तेहिं अहिए, से पविसमाणे स्रिए दोचिस अहोरत्ति वाहिरतच मडल उवसकिमत्ता चारं चरइ, जया णं भते ! स्रिए बाहिरतच मडल उवसकिमता चार चरइ तथा ण केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवड़ 2 गोयमा ! तया ण अद्वारममुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चर्डाहें एगद्विभागमुहुत्तेहिं अहिए इति, एवं खळु एएण उवाएण पविसमाणे स्रिए तयाणतराओ मङलाओ तयाणतरं मङल सक्ममाणे सक्ममाणे दो दो एगद्विभागमुहुत्तेहिं एगमेगे मडछे रयणिखेत्तस्स निवुद्देमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवुद्देमाणे २ सव्बब्धतर मडल उवसकमिता चार चरइति, जया ण सूरिए सन्ववाहिराओं मंडलाओं सन्वन्भतर मडल उवसकिमत्ता चारं चरइ तया ण एस में होने सम्मासे एम में हुन्दस्य सम्मासस्य प्रमासाणे एस में आपे समस्कारे एस में माइनस्स संबन्धरस्य प्रमाससाने एकाते ८ ॥ ११४ ॥ वर्गा

य संदे | यूरिए राज्यक्सेलर्र संबर्ध व्यवर्धक्रीता चारे चरह एसा में विदेशित 
ताववेत्तराठित प्रकार गोक्सा | व्यक्तिप्रकार प्राप्त क्षेत्रवा क्षेत्र

जोबस्स्यप् नामार्थे न व्यवनाय जोबन्यन्य यहैरूबबेरेन हो लं सहि। यहैरूबेर्यनेनेन्यं नामो आबिएदि प्रएमा है गोममा । जे वर्ष जेबूदिस्य २ यहिन्केबे दे पहिन्केद ते व्यवस्थिते हैं गुगेचा व्यवस्थित होता होता है स्वाप्त एवं यहिन्केबिटिक आबिएदि वहंगा। रुपा के मेंदी । यानकीत केन्द्रमं जानामेद्री य है गोमसा। सहुवादी स्वेमन यहस्याद्र विभिन्न न रोगीले कोम्बनवार जोबन्यस्य विवादी स्वान्तमेत्री कानामेनी

भेरस्स सरुसभारे बान व सम्लग्स रव्यक्रमामा । शामावामो एसी सम्युद्धीयिक्तमा ॥ १ ॥ तमा च अते । किसेटिया अंबवारसंदिई कन्ता । सोक्षा । वहीं पुरस्क्षमुन्यपुरस्करामध्यित्व अन्वसारसंदिई कन्ता । सोक्षा । वहीं पुरस्क्षमुन्यपुरस्करामध्यित्व । अन्वसारसंदिक्ष (जन्मा अते प्रेरं पुरा वार्ष्ट सिल्वा व पंत्र वार्ष्ट से संव स्थानित वाला । वहरत्वमध्ये के कम्बन्तस्वरूपि सिल्वा व प्रवासीय योगपास्य प्रकार वार्ष्ट्र वार्ष्ट्याप् वोप्यस्य परिक्वेवेवेवि हे वं अते । परिक्वेविविध क्रमो साक्षिपुर्व वप्तमा । क्षे वं संवरस्य प्रकारम्य परिक्वेवेविविध कामित्रस्य परिक्वेविविध साक्षिपुर्व वर्ष्ट्या क्षेत्रस्य साक्ष्य स्थानस्व साक्ष्य स्थानस्व स्थानस्य परिक्वेवेविधि साक्ष्य परिक्वेवेविधि क्ष्मो साक्ष्य स्थानस्व स्थानस्य परिक्वेवेविधि क्ष्मो आविप्रीय वप्तमा । वो व्यवस्था वोष्ट्या विष्ट विधानस्य र वर्ष्ट

क्खेवे त परिक्खेव दोहिं गुणेता जाव त चेव तया ण भते! अधयारे केवडए आयामेणं प॰ 2 गोयमा । अट्टहर्तारं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए तिभागं च आयामेण प०। जया ण भंते ! स्रिए सन्ववाहिरमंडल उवसकिमता चार चरड तया ण किसिटिया तावखेतसिटई प॰ १ गो॰ ! उद्दीमुहकलवुयापुप्फ-सठाणसठिया॰ पण्णत्ता, तं चेव सन्व णेयन्व णवर णाणतं जं अधयारसठिईए पुन्वविष्णिय पमाण त तावखेतसिठिईए णेयन्य, ज तावखेतसिठिईए पुन्वविष्णियं पमाण त अधयारसिर्व्हिए णेयव्वति ९ ॥ १३५ ॥ जबुद्दीवे ण भंते ! दीवे स्रिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मुळे य दीसति मज्झतियमुहुत्तंसि म्छे य दूरे य दीसति अत्यमणमुहुत्ति दूरे य मूळे य दीसित १ हता गोयमा ! त चेव जाव दीसित, जम्बुद्दीवे ण भन्ते । सूरिया उग्गमणमुहुत्तसि य मज्झंतियमुहुत्तसि य अत्थमण-सहत्ति य सन्वत्य समा उचतेण 2 हता त चेव जाव उचतेण, जइ णं भन्ते ! जम्बुद्दीवे दीवे सूरिया उगगमणमुहुत्तसि य मज्झं अत्य सन्वत्य समा उचतेण कम्हा ण भन्ते ! जम्बुद्दीवे दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसित ० १ गोयमा ! व्यापिङघाएण उग्गमणमुहुत्तसि दूरे य मूले य दीसित व्याहितावेण मज्झतियमुहुतांसि मूळे य दूरे य दीसति छेसापडिघाएणं अत्यमणमुहुत्तसि दूरे य मूळे य दीसति, एव खलु गोयमा ! त चेव जाव दीसति १०॥ १३६॥ जम्बुद्दीचे ण भन्ते ! दीवे स्रिया कि तीय खेत गच्छन्ति पहुप्पण्णं खेत गच्छन्ति सणागय खेत गच्छन्ति <sup>२</sup> गोयमा ! णो तीय खेत गच्छन्ति पहुप्पण खेत गच्छिन्ति णो अणागय खेत गच्छिन्तिति, त मन्ते ! कि पुट्ठ गच्छिन्ति जाव नियमा छिइसिति, एव ओमासिति, त भन्ते । कि पुद्ध ओमासिति । एवं आहारपयाइ णेयन्वाई पुद्धोगाढमणतरअणुमह्याइविसयाणुपुन्वी य जाव णियमा छिहिसँ, एव उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ११ ॥ १३७ ॥ जम्बुद्दीवे णं भन्ते ! दीवे स्रियाणं कि तीए खेते किरिया कजह पहुप्पण्णे॰ अणागए॰ 2 गो॰ । णो तीए खेते किरिया कज्जइ पहुप्पण्णे॰ कज्जइ णो अणागए॰, सा भन्ते ! कि पुट्टा कज्जइ॰ १ गोयमा ! पुट्टा॰ णो अणापुद्वा कजाइ जाव णियमा छिद्दिस १२ ॥ १३८ ॥ जम्बुदीवे ण मन्ते ! दीवे स्रिया केवइय खेत उष्टु तवयन्ति अहे तिरिय च १ गोयमा ! एग जोयणसय उष्ट्र तवयन्ति अद्वारससयजोयणाइ अहे तवयन्ति सीयालीस जोयणसहस्साई दोण्णि य तेबद्धे जोयणसए एगवीस च सद्विभाए जोयणस्स तिरिय तबयन्तिति १३॥ १३९॥ अतो णं मन्ते । माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स जे चिद्मसूरियगहगणणक्खत्तताराख्ना ते ण भन्ते ! देवा किं उद्गोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा चारिहरूवा गररस्या धर्मावाकणा ! गोवमा ! क्षेत्रो वां मालुकारस्य पनक्षा दे बरिस्म्म्स्य बाव ताराव्वा स वं देवा वो उद्वीरवणम्या को स्प्येसकर्या मेमायोरकच्या वार्त्यकण्या यो बारिहरूवा गरस्या गरस्याक्ष्माण्या गर्वाद्व कर्म्युवपुण्डेट्याचेटिय्ये कोवजवाहिस्पर्हि शावदेशीहे शाहिस्पाहि वेशिकार्हे वाहिराहे परिसाहि महबा एक्यास्थाववाहस्पर्धातक्षमानिकप्राव्याप्त्रीयक्ष्मापूर्णप्रप्रपाहरू वेणे रिकाहे भोगमोगार्थ ग्रेजनाचा महबा वाहिरहितीह्यावसभावकर्यालं अस्य पनकर्याय वाहिर्यावक्षमण्यकवारं येवं बालुपरिस्मित १४ । १४ ।

सामोजनात्र्याः प्राचारक च नात्र का प्राच्या च व व व व व विकास के सामोजनात्र्याः यो चार्यक्रमात्र्याः वार्ष्यक्षयाः वो वार्यक्रमात्र्याः वार्यक्रमात्र्यः वार्यक्रमात्र्यः वार्यक्रमात्र्यः वार्यक्रमात्र्यः वार्यक्रमात्र्यः वार्यक्रमात्र्यः वार्यक्रमात्र्यः वार्यक्रमात्र्यः वार्यक्रमात्राः वार्यक्रमात्र

बाहें हैंदे जुए संबद्ध हे ब्यूमिवाणि एक्टेन्टिंग बाब ब्यूब्लेचे क्या सार्थ बाह्येने किसास इंदि ? । ॥ १४% ॥ ब्यू के आहें। बेब्दास्थका प्रीयो । क्या के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वर्ध के स्

वीचे करूपे च समुद्दे पन्यस्थ जोदारका वाक्स्तीविक्सकारी ॥ १४४ व ॥ १००० व्यस्ताराओं कं भरते । 'वर्षमंत्रकारचे केवस्थाए स्ववादार एववसाहरण व्यस्ते केव प्रश्ने । वर्षमंत्रकारचे व्यक्तिया स्ववादार व्यस्ते वर्षमंत्रके प्रश्ने । । १४३ वा व्यस्ते वर्षमंत्रके प्रन्ते । । १४३ वा व्यस्ते वर्षमंत्रके प्रश्ने । वर्षमंत्रकारा वर्षमंत्रकार वर्

क्खेवेण केवइय वाह्हेणं पण्णते ? गोयमा! छप्पण्ण एगसिट्टभाए जोयणस्स आयामविक्खम्मेणं त तिगुण सविसेस परिक्खेवेणं अहावीस च एगसहिभाए जोयणस्स वाहल्लेणं ।। १४५ ॥ जम्बुद्दीचे ण भंते । दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स केव-इयाए अवाहाए सव्वब्भतरए चन्दमङ्छे पण्णते १ गोयमा ! चोयाछीस जोयण-सहस्साइ अट्ट य धीसे जोयणसए अवाहाए सन्वन्भन्तरे चन्दमंडले पण्णते, जम्बुद्दीवे मन्दरस्स पव्वमस्स केवङ्याए अवाहाए अब्भतराणन्तरे चन्दमङ्छे पण्णते १ गोयमा ! चोयालीस जोयणसहस्साइ अट्ट य छप्पण्णे जोयणसए पणवीस च एगसिंडुभाए जोयणस्सं एगसिंडुभागं च सत्तहा छेता चतारि चुण्णियाभाए अवाहाए अञ्मतराणन्तरे चन्दमङ्छे पण्णत्ते, जम्बुद्दीवे० दीवे मन्दरस्स पव्व-यस्स केवइयाए अवाहाए अब्मतरतचे चदमडले प॰ १ गोयमा! चोयालीस जोयणसहस्साइ अट्ट य बाणउए जोयणसए एगावण्ण च एगसिट्टभाए जोयणस्स एगसट्टिमाग च सत्तहा छेता एग चुण्णियाभाग अबाहाए अब्भतरतचे चंदमंडले पण्णते, एव खळु एएण उवाएणं णिक्खममाणे चदे तयाणन्तराओ मंडलाओ तयाणन्तर महल सक्तममाणे २ छत्तीस छत्तीस जोयणाई पणवीस च एगसिट्टभाए जोयणस्स एगसद्विभाग च सत्तहा छेता चत्तारि चुण्णियाभाए एगमेगे मडले अवा-हाए युद्धि अभिवद्वुमाणे २ सन्वबाहिरं मंडल उवसकिमत्ता चार चरइ। जम्बुद्दीवे० दीने मन्दरस्स पन्नयस्स केनइयाए अनाहाए सन्नबाहिरे चंदमंडले प॰ 2 गो॰ ! पणयालीस जोयणसहस्साइ तिण्णि य तीसे जोयणसए अबाहाए सब्ववाहिरए चदमङ्छे प०, जम्बुद्दीने० दीवे मन्दरस्म पव्वयस्स केवइयाए अबाहाए वाहिरा-णन्तरे चदमङ्के पण्णते १ गो०। पणयालीस जोयणसहस्साइ दोण्णि य तेणउए जोयणसए पणतीस च एगसद्विभाए जोयणस्स एगसद्विभाग च सत्तहा छेता तिण्णि चुण्णियाभाए अवाहाए वाहिराणन्तरे चदमङले पण्णते, जम्बुद्दीवे॰ दीवे मन्द-रसा पञ्चयस्स केवइयाए अबाहाए वाहिरतचि चदमहले प॰ १ गो॰ ! पणयालीस जोयणसहस्साइ दोण्णि य सत्तावण्णे जोयणसए णव य एगसहिभाए जोयणस्स एगसद्विमाग च सत्तहा छेता छ चुण्णियाभाए अबाहाए वाहिरतचे चदमडहे प॰। एव खल्ल एएण उवाएण पविसमाणे चदे तयाणतराओ मङलाओ तयाणतर मडल सक्तममाणे २ छत्तीस २ जोयणाइ पणवीस च एगसद्विमाए जोयणस्स एगसिंहमाग च सत्तहा छेता चत्तारि चुण्णियामाए एगमेगे मडले अवाहाए बुह्हिं णिबुह्वेमाणे २ सञ्बन्मतरं मङ्क उवसकामित्ता चार चरइ ॥ १४६ ॥ सन्वन्मतरे णं भन्ते । चृदमङ्के केवइय आयामविक्खम्भेण केवइय परिक्खेवेण

...

[ **बंबुदीयप्**रम्पती

पदण्डर बोक्यसहरसाह सत्त य बारप्रतारे खोवणसप् एमाक्कां व एगडिमाने बोमणस्स एगद्विमार्गं च सत्तक् केता एगं चुण्जियामार्थं आसामविक्तामोर्गं विणि य जीयजनसम्हरसाई पञ्चरस सहरसाई विभिन्न य एग्पणीस जोयजसप किनिनिसे साक्षिए परिक्खेनेजं काव्यान्तरत्त्वे यं काव प १ गो । शबचाउर्द जोयकसङ्ख्यार्ट सत्त न फ्यासीए जोक्यसए इनताकीर्स च एनड्रिमाए क्येन्जस्स एचड्रिमार्ग च सचस छेता दोन्नि व बुध्निवासाए सायासबिरकस्मेर्ण दिन्ति य कोयजस्यस्वरसर्ह पञ्जरस जोनकसङ्स्साह पन व शुकापको जोनकसर विविधिसाहिए परिस्के नेपंदि एवं सम्र प्रचल स्वापन्यं विश्वसम्माने वंदे बाव संदममान्ये २ नावर्तारे २ बोबजाइ एगावण्य च एयद्विमाए बोबबस्स एगद्विमार्ग च सत्तहा हेता एगे च चुण्यियामार्ग एवमेने मंडके विश्वकम्पूर्णी कमिन्द्रीमाणे २ दो हो तीसहं जोग<sup>न</sup> सवाई परिरक्षुच्चि अभिवद्वेमाथे २ सम्बवादिर संदर्ध उपसंदमिता बारे वरह । सम्बनाहिरए य मन्ते ! कन्दमङ्के केन्द्रवं मानामनिश्चमोर्थ केन्द्र्यं परिस्केरेन प्रणाति ! गो ा एनं जोनवनयसहरूचं छवसद्वे जोयजसम् आनामकिश्वानीनं विस्थि य जोयजस्यसङ्स्साई बद्धारस सङ्स्याई तिन्य व पन्नरस्ततरे जोयबस्य परिवर्षे केन बाहिराक्तरे में पुक्का को । एनं बोडकममधहरसं पत्र सत्तारीए केन्न सए जब व एगद्विमाए कोरणस्य एगद्विमार्गं च धताझा हेता छ जुन्मिवामाए

जाबामनिन्दामीयं दिन्ति व जोवनधमसहस्साई अद्वारस सहस्साई पेवासीई प जीयनादं परिश्चेदेशं नाहिरताचे में अन्तं । चन्द्रमण्डके प १ गो । एमं क्येम जसवसङ्ख्य पंज व जाउद्यक्तरे बोधनसम् पूर्वशीतं च प्राद्विमाप् बोडवस्य एगद्विमाग व संदक्षा हेता पंच चुण्यिवासाए आयामनिक्यम्भेय विकित स क्येपन स्वयमहत्सारं सत्तरम् सहस्सारं बद्धं व प्रवपन्ने बोयवसप् परितन्तेवेणं एवं वर्षः एएमं उदाएमं पविसमाणे चन्त्र आव रोज्यमाणे २ वावकरि ९ जोनवाई एमावर्ण च एगद्विभाए कोक्करस दगद्विमार्ग च सत्तहा छैता दर्ग चुन्नियामार्च दमामी मण्डलं विक्तान्मपुष्टिं निपृष्टेमानं २ दो दो तीनाई कोयनसमाई वरेरयपुष्टि नितुद्देमामं २ सम्बन्धतर सहस्र उनसंदत्तिता चारं चरह ॥ १४७ ॥ जना मं मन्त ! चन्द सम्बन्धन्तरमण्डलं जबसंबभिता चार चरह तथा वं रूपमेरेलं सुदुत्तेन केव्यूय रातं गच्छ्य । योगमा । यंच जोगणमहत्त्वाई श्रवति च जोवचाई स्ततिरि

च चोयाले भागसए गच्छइ मण्डल तेरसिंह सहस्सेहिं सत्तिह य पणवीसेहिं सएहिं छेता इति, तया णं इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवद्वेहिं जोयणसएहिं एगवीसाए य सिट्टभाएहिं जोयणस्स चन्दे चक्खप्फास हव्व-मागच्छइ । जया ण भन्ते ! चन्दे अन्भन्तराणन्तर मण्डलं उवसकमिता चार चरइ जाव केवइय खेत गच्छइ २ गो० ! पंच जोयणसहस्साइ सत्तत्तारॅ च जोयणाइ छत्तीस च चोवत्तरे भागसए गच्छइ मण्डल तेरसिंह सहस्सेहिं जाव छेता, जया ण भन्ते! चन्दे अब्भतरतच मण्डल उवसकमिता चार चरइ तया ण एगमेगेण मुहुत्तेण केव-इय खेत्त गच्छह् <sup>२</sup> गोथमा! पच जोयणसहस्साइ असीइ च जोयणाइ तेरस य भागसहस्साइं तिण्णि य एगूणवीसे भागसए गच्छइ मण्डल तेरसिंह जाव छेता इति । एव खल्ज एएण उवाएण णिक्खममाणे चन्दे तयाणन्तराओ जाव सकममाणे २ तिण्णि २ जोयणाइ छण्णउइ च पंचावण्णे भागसए एगमेगे मण्डले मुहुत्तगई स्रभिवद्वेमाणे २ सम्बनाहिर मण्डल उवसकमित्ता चार चरड, जया ण भन्ते! चन्दे सव्ववाहिर मण्डल उवसकमिता चार चरइ तया ण एगमेगेण सुद्वतेण केवइय खेत गच्छड १ गोयमा । पंच जोयणसहस्साइं एग च पणवीस जोयणसयं अउणत्तरिं च णउए भागसए गच्छइ मण्डल तेरसिंह भागसहस्सेहिं सत्तिह य जाव छेता इति, तया ण इहगयस्स मणूसस्स एकतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्टिहि य एगत्तीसेहिं जोयणसएहिं चन्दे चक्खुप्फास ह्रव्वमागच्छइ, जया ण मन्ते ! वाहिराणन्तर पुच्छा, गोयमा । पच जोयणसहस्साइ एक च एक्वीस जोयणसय एकारस य सहे. भागसहस्से गच्छइ मण्डल तेरसिंह जाव छेत्ता, जया ण भते! वाहिरतम्ब पुच्छा, गोयमा ! पच जोयणसहस्साइ एग च अहारस्तारं जोयणसय चोइस य पचुत्तरे भागसए गच्छइ मडल तेरसिंह सहस्सेहिं सत्तिहं पणवीसेहिं सएहिं छेता, एवं खलु एएण उवा-एण जाव सकममाणे २ तिण्णि २ जोयणाइ छण्णउइ च पचावण्णे भागसए एगमेगे मण्डले मुहुत्तगइ णिनुष्ट्वेमाणे २ सन्वन्भतर मण्डल उवसक्तमित्ता चार चरइ ॥ १४८॥ कड ण भते ! णक्खत्तमण्डला प०१ गोयमा ! अट्ट णक्खत्तमण्डला पण्णता। जम्यु-द्दीवे ण भते ! दीवे केवइय ओगाहिता केवइया णक्खत्तमङला पण्णता <sup>२</sup> गोयमा ! जम्बुद्दीवे दीवे असीय जोयणसय ओगाहेता एत्थ ण दो णक्खत्तमंडला पण्णता, लवणे ण भंते ! समुद्दे केवइय ओगाहेता केवइया णक्खत्तमङला पण्णता र गोयमा ! लवणे ण समुद्दे तिष्णि तीसे जोयणमए ओगाहिता एत्य ण छ णक्खत्तमङला पण्णता, एवामेव सपुञ्चावरेण जम्बुद्दीवे दीवे लवणसमुद्दे अह णक्खत्तमङला भवतीतिमक्खाय। सव्यव्भतराओं ण भते । णक्खत्तमटलाओं केव्ह्याए अवाहाए सव्ववाहिरए १५६ मुक्तामे [बंबुशियरणारी जनजामश्रके पञ्चते १ गोवमा ! पंचरक्षारे बोवणस्य क्षाहाए सम्मादिए पमजार्गनके पञ्चते वस्त्रामंत्रकस्य च मन्त्री । पञ्चतामंत्रकस्य च एवं

केनहमाए अवाहाए अतरे प्रणाति । धोयमा । तो जोयपाहं जनरतासंडसस्य न जनरतासडसस्य न अवाहाए अतरे प्रणाते । अवस्तासंडके जं सेते ! वेनहर्व आवासविक्तवस्त्रेयं केनहर्यं परिक्तवैत्रेणं केनहर्यं बाह्यकेषं प्रणाते ! स्रोयमा ! माठवे

सावामिकराम्मेणं शे तिग्रणं स्थितियं प्रिमिक्षेत्रेणं क्षरास्तर बाह्येलं काली । सम्प्रति वं सन्ते ! शेवे मेदरस्य प्रकारस्य केदरायः स्वाहायः स्वाहा

च चोरपाई किनिक्सेनाहिए परिचनेकेचे कर्णा सम्बन्धाहिएए में मेरे ! करणा-मेरेके केर्द्रमें आयामिक्सरीयों केन्द्रने परिचनेकेच क्लाने र गोरपा ! एमे धोन्म-स्वस्वहर्त्य क्ला खेले जोवनस्य आयामिक्सरीयों शिक्षा व जोवनस्वन्यत्यात्री कहाएत व च्योपसम्बन्धसम् विभिन्न व स्वन्यद्वार धोनस्वस्य परिचनेकेचे प कवा स मेरी ! मन्दरी सम्बन्धात्रस्य क्लास्टक्स धोनस्वस्य परिचनेकेचे प कवा स मेरी ! मन्दरी सम्बन्धात्रस्य क्लास्टक्स धोनस्वस्य परिचनेकेचे प

सहुतानं कंन्यरं बोर्ग ज्याव्य ? गोनमा । येन बोत्यवाहस्ताहं होनिय व तन्त्रें बोर्गनयए अञ्चार का मागवास्त्रें होनिय व तेवहें मांगवार रख्या मानं एन्टें सन्त्र प्रमाण स्वाद स्वाद प्रमाण स्वाद स्वाद प्रमाण स्वाद स्वाद प्रमाण स्वाद स्वा

अद्वाणउईए य सएहिं छेता इति । एगमेगेण भन्ते ! मुहुत्तेण सूरिए केवहयाई भाग-सयाई गच्छह १ गोयमा ! ज जं मडल उवसकिमत्ता चार चरइ तस्स २ मंडलपरि-क्खेवस्स अद्वारसतीसे भागसए गच्छइ मंडल सयसहस्सेहिं अद्वाणउईए य सएहिं छेता, एगमेगेण मते ! मुहुत्तेण णक्खते केवइयाइ भागसयाइ गच्छइ १ गोयमा ! ज ज मडल उवसकिमिता चार चरइ तस्स तस्स मंडलपरिक्खेवस्स अद्वारस 'पणतीसे भागसए गच्छइ मंडल सयसहस्सेण अद्वाणउईए य सएहिं छेता ॥१४९॥ जम्बुहीवे ण भते । दीवे स्रिया उदीणपाईणसुगनच्छ पाईणदाहिणमागच्छित १ पाईणदाहिणमुग्गच्छ दाहिणपढीणमागच्छंति २ दाहिणपढीणमुग्गच्छ पढीणउदीण-मागच्छति ३ पढीणउदीणमुग्गच्छ उदीणपाईणमागच्छति ४ १ हता गोयमा ! जहा पंचमसए पढ़मे उद्देसे जाव णेवत्यि ० उस्सप्पिणी अवट्टिए ण तत्य काले प० समणा-उसो !, इचेसा जम्बुद्दीवपण्णती सूरपण्णती वत्थुसमासेणं सम्मत्ता भवइ । जम्बुद्दीवे ण भते ! दीवे चितमा उदीणपाईणसुगगच्छ पाईणदाहिणमागच्छंति जहा स्रवत्त-व्वया जहा पचमसयस्स दसमे उद्देसे जाव अविद्विए ण तत्थ काले पण्णते समणा-उसो ।, इच्चेसा जम्बुद्दीवपण्णत्ती चदपण्णेती बत्थुसमासेण सम्मत्ता भवइ ॥ १५० ॥ कइ ण भनते! सवच्छरा पण्णता र गोयमा । पच सवच्छरा प०, त०-णक्खतसव-च्छरे जुगसवच्छरे पमाणसवच्छरे लक्खणसवच्छरे सणिच्छरसवच्छरे । णक्खता-सवच्छरे ण भन्ते । कड्विहे पण्णते १ गोयमा ! दुवालसविहे प०, तं०-सावणे मद्द्वए आसोए जाव आसाढे, ज वा विहप्फई महरगहे दुवालसेहिं सवच्छरेहिं सन्वणक्खत्तमडल समाणेइ सेत्त णक्खत्तसवच्छरे । जुगसवच्छरे ण भन्ते ! कइविहे पण्णते १ गोयमा । पंचविहे ५०, तजहा-चंदे चदे अभिवहिए चटे अभिवहिए चेवेति, पढमस्स ण भन्ते ! चन्द्सवच्छरस्स क्इ पव्वा पण्णता १ गोयमा ! चउव्वीस पन्ना पण्णत्ता, विइयस्स ण भन्ते ! चन्द्सवच्छर्स्स कइ पन्ना पण्णत्ता 2 गोयमा ! चउन्वीस पन्ना पण्णता, एव पुच्छा तइयस्स, गोयमा। अभिवद्धियसवच्छरस्स ख्वीस पन्ना प०, चरुरयस्स० चन्द्सवच्छरस्स० चोन्नीस पन्ना०, पंचमस्स ण० अभिविह्यस्स॰ छन्वीस पन्वा पण्णत्ता, एवामेव सपुन्वावरेण पचसवच्छरिए जुए एगे चउव्वीसे पव्यसए पण्णते,सेत्त जुगसवच्छरे । पमाणसवच्छरे ण भन्ते ! कडविहे पण्णते १ गोयमा ! पचिवहे पण्णते, तजहा---णक्खते चन्दे उस आइचे अभिविष्टुए, सेत

१ आइल्डीवस्स जहाबद्वियसस्वणिस्विमा मधपद्धई—तीए । २ स्रियाहिगारप-डिवद्धापयपद्धई । ३ मडलसखाईण स्रियपण्णत्तीआडमहामधावेक्खाए सखेवो तेण । ४ चदाहिगार० । ५ मटलसखाईण चदपण्णत्तीआइ० ।

पमानसंबद्धारे । क्रव्याणसंबद्धारे में सन्ते ! बद्धविद्वे पम्मते ! गोबमा ! पंजनिहे पन्यते संबद्धाः—"समर्वं जनसत्ता जोगं जोगंति समय उद्ध परिवर्गति । वद्वव नाइसीओ बहुरको होइ वक्कते ॥ ९ ॥ सथि समगपुण्यमासि कोएन्टि विसम भारियक्यता । **बहु**को बहुक्को य तमाङ्क <del>संबद्धारं भ</del>न्द ॥ २ ॥ मिसमं प्रशासिको परिकामन्ति मनुबन्ध विशि पुष्पपन्तं । वासं न सम्म बासद् समाह् संबच्छरं कर्म u ३ u प्रवसिदगार्ग च रसं प्रध्यक्रसभ्यं च केत्र आह्वो । अध्येत्रनि अधि सम्मं निष्क्रमए सस्यं ॥ ४ ॥ आङ्कतेयतनिया क्रवस्मित्सा उळ परैक्सन्ति । पूरेह स मिल्यपछे छमाष्ट्र अभिविद्ययं चाच ॥ ५ ॥" शमिकारसंक्कारे व मन्ते । क्इतिहे प्रकर्ते । योगमा । शहावीसक्षिहे प्रकरो, तजहा-अमिट्टै सर्वे विका सनमित्रया दो य दाँदि मदवया । रेक्ट अस्तिया गरकी कतिय तह रोडियो के ॥ १ ॥ जान दत्तराको भारावाओं जै ना समिन्दरे महम्महे शीसाए संनक्तरे सन्तं जनवातमध्यतं समानेत् सेता समिवरसंक्वारे ॥ १५१ ॥ एयमेयसं वं मन्ते ! संकष्टरस्य कर मासा पश्चता ! योगमा ! बुकाकस मासा प्रवता तेहि र्च दुविहा समाधेमा प टं-सोर्गा क्षेत्रणीया य *शन्य बोर्गा समा हे*ने र्त--सावने मन्वप् बाव आसाडे कोठतारिया जासा इसे तंबहा-असिनेदिए पडे य मिन्नए पीर्वदाने । सेनीसे य सिवे चव सिविरे य सहोतनं ॥ १ ॥ वनमे बसंदमारे एसमे इस्तर्यमने । एकारचे निवाहे या बननिरोहे य बारवे । १ व एगमंगस्य में मन्ते I मासस्य का प्रकार प्रणाता ! योगमा ! दो प्रका प्रवास र्व⊶बहुक्रलचे य श्रद्रपत्रचे य । एगनेयस्य वं मन्ते । पत्रबस्य व्ह हेनवा पण्यता है गोममा । पण्यरस विवसा पण्यता संक-पविवासिवसे विश्वमादिवसे बाब पत्रारसीदिवसे एएसि नं भेदो । पत्रारसन्त्रं विवसार्णं का धामभेन्ना पत्राता गोयमा । एज्यरस भागमेन्द्रा पण्यता र्तक-पुत्रवी शिवस्थारमे व राते मधीरी भव । असमी य मसमरे छुट्टे सम्बद्धमस्त्रियो ॥ १ ॥ इत्युक्तामिनिये व स्रोत्यस क्षांत्रए य बौदम्बे । मत्यसिद्धे कमिनाए अवसणे सर्वत्रण् चन ॥ १ व मन्त्रिकेटे तक्तमे दिवसार्थ होति चामाई । एएछ वं भेते । पञ्चसम्बं विवसार्थ पर दिही क्ष्यता <sup>ह</sup> गोबमा । क्ष्यत्म तिही क्ष्यता तै - मेरे सहे अप तुन्धे पुन्धे परचास्य पंत्रमी पुणराने बन्दि मोहे जए तुल्के पुण्ये परुधस्य वसमी पुनराने बन्दि मो बंद तुन्छे पुण्ये पनवस्त पण्यासी एवं व शिपुणाओं शिक्षी सम्बेति शिक्सा वृद्धि । तुगमगस्य चं श्रेत् । त्वस्यस्य च्यू राहुँको त्वस्याको है योदना । त्यस्य राहुँको त्व्यताओ सं –पत्रिवाराहुँ वाव त्वस्यस्याहुँ, स्वानि वं शेते । त्यस्तान्

राईणं कइ णामधेजा पण्णता 2 गोयमा ! पण्णरस णामधेजा पण्णता, तजहा---उत्तमा य सुणक्खत्ता, एलावचा जसोहरा । सोमणसा चेव तहा, सिरिसभ्या य वोद्धव्वा ॥ १ ॥ विजया य वेजयन्ति जयंति अपराजिया य इच्छा य । समाहारा चेव तहा तेया य तहा अईतेया ॥ २ ॥ देवाणदा णिरई रयणीण णामधिजाई। एयासि ण भते ! पण्णरसण्ह राईणं कइ तिही प० १ गोयमा ! पण्णरस तिही प०, त॰-उग्गवई भोगवई जसवई सन्वसिद्धा सहणामा, पुणरिव उग्गवई भोगवई जसवई सन्वसिद्धा सहणामा, पुणरवि उग्गवई भोगवई जसवई सन्वसिद्धा सहणामा, एवं तिगुणा एए तिहीओ सन्वेसिं राईण, एगमेगस्स ण भते ! अहोरत्तस्स कइ मुहुता पण्णता १ गोयमा ! तीस सहता प॰, तं०-रहे सेए मित्ते वाउ सुवीए तहेव अभिचंदे। माहिंद वलव वभे वहुसचे चेव ईसाणे ॥ १ ॥ तट्टे य भावियप्पा वेसमणे वारुणे य आणंदे । विजए य वीससेणे पायावचे उवसमे य ॥ २ ॥ गधव्व अग्गिवेसे सय-वसहे आयवे य अममे य । अणव भोमे वसहे सन्वहे रक्खसे चेव ॥ ३ ॥ १५२ ॥ कइ ण भन्ते ! करणा पण्णता व गोयमा ! एकारस करणा पण्णता, तजहा-ववं वालवं कोलव थीविलोयण गराइ वणिजं विट्ठी सउणी चउप्पय णागं किंथुग्य, एएसि ण भन्ते ! एक्कारसण्ह करणाण कड़ करणा चरा कड़ करणा थिरा पण्णता ? गोयमा ! सत्त करणा चरा चतारि करणा थिरा पण्णता, तजहा—ववं वालवं कोलवं शीविलोयणं गराइ वणिजं विद्वी, एए ण सत्त करणा चरा, चत्तारि करणा थिरा प०, तं०-सडणी चडप्पय णाग किथुग्ध, एए ण चत्तारि करणा थिरा पण्णता, एए ण भन्ते ! चरा थिरा वा कया भवन्ति <sup>२</sup> गोयमा ! सुक्रपक्खस्स पडिवाए राओ वर्वे करणे भवड़, बिड्याए दिवा वालवे करणे भवड़, राओ कोलवे करणे भवइ, तइयाए दिवा थीविलोयण करण भवइ, राओ गराइकरण भवइ, चउत्थीए दिवा वणिजं राओ विद्वी पचमीए दिवा बव राओ बालवं छद्वीए दिवा कोलवं राओ थीविलोयण सत्तमीए दिवा गराइ राओ वणिज अहुमीए दिवा विट्टी राओ ववं णवमीए दिवा वालवं राओ कोलव दसमीए दिवा थीविलोयण राओ गराइ एकारसीए दिवा वणिज राओ विद्वी बारसीए दिवा ववं राओ बालव तेरसीए दिवा कोलव राओ थीविलोयण चडद्सीए दिवा गराइकरण राओ वणिजं पुण्णिमाए दिवा विट्टीकरण राओ बव करण मवइ, बहुलपक्खस्स पढिवाए दिवा बालवं राओ कोलवं विइयाए दिवा शीविलोयण राओ गराइ तइयाए दिवा वणिज राओ विद्वी चउत्थीए दिवा वव राओ वालव पचमीए दिवा कोलव राओ थीविलोयण छट्टीए दिवा गराइ राओ वणिज सत्तमीए दिवा विद्वी राओ वव अट्टमीए दिवा वालवं राओ कोलवं ६६० प्राचनामे [बंदुरीकरव्यकी जनमीए दिया बीक्सियर्ण राजो गराह दशमीए दिया बक्षियं राख्ये दियो एकारवैंप्र दिया वर्ष राखों गामने बारहीए दिया क्षेत्रण राजो बीक्सियर्थ हेरहीए दिया कर्ष

रान्ने विभिन्नं चल्युणीए दिवा विद्वी राज्यों सम्प्रान्ताशाए दिवा चल्युणी रान्ने वार्त उद्यानस्य पाविष्य दिवा विद्वालं करण अन्य ॥ १५६ ॥ क्रेमहारा में स्थानं उद्यानस्य प्राप्त क्ष्माह्मा के क्ष्माह्मा में स्थानं क्ष्माह्मा क्ष्मा क्ष्

पनकाय बद्धारपर्योग ब्होरणस्या कायान्य ह्यूह्मण्ड्रस्य वन स्या पन्यामा ३५४ ।

शाह्य-नीया १ देवन २ ताराय १ योग ४ छंडाक ५ व्यंत्रविनोगा १ । इन व प्रीप्तम स्वानस्था २ च छिनवाय ६ व नेया १ १ १ १ १ १ १ १ व्यं में मन्दे ।

शाह्य-नीया १ गोममा | ब्ह्यांवीचे सम्बन्धा प थे न्यासि १ १ स्वा १ श्रीक्ष १ स्वा १ स्व प्रीप्त १ १ प्राप्त १ स्व १ १ प्राप्त १ स्वी १ स्व १ १ प्राप्त १ स्व १ १ १ प्राप्त १ स्व १ १ प्राप्त १ १ स्व १ १ प्राप्त १ १ स्व १ १ प्राप्त १ स्व १ १ प्राप्त १ १ स्व १ १ प्राप्त १ १ स्व १

उपरास्ता २८ इति ॥ १५५ ॥ एएकि में मनते । बहुमीदाए सम्बन्धान में मनति । सहमोदाए सम्बन्धान में मनति सम्बन्धान में मन्दिर उपरास्त्री में मन्दिर अपरास्त्री मन्दिर प्राप्ति सम्बन्धान में मन्दिर प्राप्ति मन्दिर प्राप

भोवि उत्तरओवि पमद्दिप जोगं जोएंति ते ण सत्त, तजहा-कत्तिया रोहिणी पुणव्वस् मघा चित्ता विसाहा अणुराहा, तत्थ ण जे ते णक्खता जे णं सया चन्दस्म दाहिणओवि पमदंपि जोग जोएंति ताओ णं दुवे आसाढाओ सन्ववाहिरए मंडले जोग जोइंसु वा ३, तत्य णं जे से णक्खते जे णं सया चन्दस्स पमई० जोएइ सा ं णं एगा जेडा इति ॥ १५६ ॥ एएसि णं भन्ते ! अड्डावीसाए णक्खत्ताण अभिई णक्खते किंदेवयाए पण्णते र गोयमा! वम्हदेवयाए पण्णते, सवणे णक्खते विण्हु-देवयाए पण्णत्ते, धणिहा॰ वसुदेवयाए पण्णत्ते, एएणं कमेण णेयव्वा अणुपरिवाही इमाओ देवयाओ-चम्हा विण्हू वस् वरुणे अए अभिवही पूसे आसे जमे अगगी पया-वई सोमे रहे अदिई वहस्सई सप्पे पिऊ भगे अजम सविया तट्टा वाऊ इदग्गी मित्तो इदे णिरई आरु विस्सा य, एवं णक्खताणं एसा परिवाही णैयव्वा जाव उत्तरासाढा किंदेवया पण्णता <sup>२</sup> गोयमा ! विस्सदेवया पण्णता ॥ १५७ ॥ एएसि णं भनते ! अष्ठावीसाए णक्खताणं अभिडेणक्खते कह्तारे पण्णते ? गोयमा ! वितारे प॰, एवं णेयव्या जस्स जङ्याओ ताराओ, इम च त तारगं-विगविगपच-गसयदुग दुगवत्तीसगतिग तह तिगं च। छप्पचगतिगएक्सगपंचगतिग छक्कां चेव ॥ १ ॥ सत्तगदुगदुग पचग एकेक्सग पच चडतिगं चेव । एक्कारसग चडकं चडक्सगं चेव तारग्ग ॥ २ ॥ ति ॥ १५८ ॥ एएसि णं भन्ते ! अट्टावीसाए णक्खत्ताणं अभिर्ड णक्कते किगोत्ते प० १ गोयमा ! मोग्गलायणसगोत्ते , गाहा-मोग्गलायण १ सखायणे २ य तह अग्गमाव ३ कण्णिहे ४। तत्तो य जाउकणो ५ घणंजए ६ चेव वोद्धव्वे ॥ १ ॥ पुरसायणे ७ य अस्सायणे य ८ भग्गवेसे ९ य अग्गिवेसे १० य । गोयम ११ भारहाए १२ लोहिचे १३ चेव वासिट्ठे १४ ॥ २ ॥ ओम-जायण १५ मडव्वायणे १६ य पिंगायणे १७ य गोवल्ले १८। कासव १९ कोसिय २० दट्भा २१ य चामरच्छाय २२ सुगा य २३ ॥ ३ ॥ गोवल्लायण २४ तेगि-च्छायणे २५ य कचायणे २६ हवइ मूले । तत्तो य विज्ञयायण २७ वरघावचे य गोत्ताइ २८ ॥ ४॥ एएसि ण भन्ते ! अद्वावीसाए णक्यताण अभिईणक्यते किंसठिए पण्णते <sup>2</sup> गोयमा । गोसीसाविलसिंठिए प**्र गाहा**—गोसीसाविल १ काहार २ सर्राण ३ पुष्फोबयार ४ वावी य ५-६। णावा ७ आसक्खधग ८ भग ९ छरघरए १० य सगद्धद्वी ११ ॥ १ ॥ मिगसीसाविल १२ रुहिरविंदु १३ तुल्ल १४ वदमाणग १५ पडागा १६। पागारे १७ पिट्यंके १८-१९ हत्ये २० मुहफुछए २१ चेव ॥ २ ॥ खीलग २२ दामणि २३ एगावली २४ य गयदत २५ विच्छुअयले य २६ । गयविकमे २७ य तत्तो सीहणिसीही य २८ सठाणा ॥ ३ ॥ १५९ ॥ बोर्ग बोएर, एवं इसाब्रि गाहाब्रि क्यान्तर्स्य अम्बर्स बन्द्रबोर्गो साम्ब्रिसियो बाह्रोस्ट । वे द्वेति वच सुद्धुता सामविष्टं कामणो व 2 %। असमियाम अस्पर्केत बाह्रा बरस्य सह अस्पर्क या । एए क्रण्यस्थाता प्रकारस्य सुद्धानसंभाग । 2 ९ ॥ विभोद तारात् पुरावस्य रोहिशो सिसाहा व । एए क्रण्यस्थाता प्रवासम्बर्धा स्वीति । 2 १ ॥ असरेसा जब्बाता प्रकारति द्वेति सीसामुद्धाता । बन्दिमी एस बेर्चे प्रवासतार्थ सुर्पेशको ॥ ४ ॥ एएसि वौ सन्ते । ब्युत्योसाए गामबतार्थ बारितील वक्तो का बाह्रोती सुर्पेश स्वित्र बोर्ग बोर्ग्य सुर्वी साम्बर्ध येसके स्वाति क्या सुर्वेति । सुर्वेत सुर्पेश स्वति बोर्ग बोर्ग्य सुर्वे समाह्रि गाह्रास्त्रि येसके स्वाति क्या सुर्वेति । सुर्पेश सुर्वेत सुर्पेश क्या सुर्वेति । सुर्पेश सुर्वेति सुर्वेति सुर्पेश क्या सुर्वेति । सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्वेति । सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश क्या सुर्वेति सुर्पेश क्या सुर्वेति । सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश क्या सुर्वेति । सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्वेति । सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्वेति । सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्वेति । सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्वेति । सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्पेश सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्पेश सुर्पेश सुर्वेति । सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्पेश सुर्पेश सुर्पेश सुर्पेश सुर्पेश सुर्पेश सुर्पेश सुर्पेश सुर्वेति सुर्पेश सुर्येश सुर्पेश सुर्

मिसमा भरनीको नहा अस्तेस साह केन्द्रा व । क्वीत सुद्वते स्थ्वीस क्वीकार्यारी

ा २ ध दिग्लेव जतराई प्रकल्प रोहिणी विशाहा व । क्लिंग हाड़ि दिलि क्ले विर्ध करियों । य अवस्था प्रकल्पा प्रलादाक स्टाइयाना वर्षी । व्याप्त करियों । या अवस्था प्रकल्पा प्रकल्पा स्टाइयाना वर्षी । व्याप्त करियों । वर्षा करियां वर्षा करियां । वर्षा करियं । वर्षा करियां । वर्षा करियां । वर्षा करियां । वर्षा करियां । वर्षा करियं । वर्षा करियां । वर्षा करियं । वर्षा करियं । वर्षा करिया

पोडुनई सासोई करियों सम्परितों पोबी माही फ्यूजी चेची करवारी बेडाम्स्सै बासाडी सामिड्रियों सन्ते | पुनियसासि वह नकरता बोर्ग जोएटि ! होतमा ! क्षिपित प्रसन्ता कोर्ग बोर्ग्सि सं -बांग्से सम्बन्धे समिद्धा । योड्स्सर्ग संत ! पुण्णिमं कह णक्खत्ता जोगं जोएति 2 गोयमा ! तिण्णि णक्खत्ता० जोएति, त०-सयभिसया पुन्वभद्दवया उत्तरभद्दवया, अस्सोइण्णं भते ! पुण्णिम कइ णक्खत्ता जोगं जोएति १ गोयमा ! दो जोएंति, त०-रेवई अस्सिणी य, क्रतिइण्ण दो-भरणी कत्तिया य, मग्गसिरिण्णं दो-रोहिणी मग्गसिर च, पोसिं णं तिण्णि-अहा पुणव्वस् पुरसो, माविष्ण दो-अस्सेसा मधा य, फरगुणि ण दो-पुन्वाफरगुणी य उत्तरा-फरगुणी य, चेत्रिण्ण दो-हत्थो चित्ता य, विसाहिण्णं दो-साई विसाहा य, जेट्ठा-मूलिण्ण तिण्णि-अणुराहा जेट्ठा मूलो, आसाढिण्ण दो-पुन्वासाढा उत्तरासाढा । साविद्विण्ण भन्ते । पुण्णिमं किं कुल जोएइ उवकुल जोएइ कुलोवकुल जोएइ 2 गोयमा। कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ कुलोवकुल वा जोएइ, कुल जोएमाणे धणिष्ठा णक्खते जोएइ उनकुल जोएमाणे सवणे णक्खते जोएइ कुलोनकुल जोए-माणे अभिई णक्खते जोएइ, साविद्विण्ण पुण्णिमासि कुल वा जोएइ जाव कुलो-वकुल वा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता साविद्वी पुण्णिमा जुत्तत्ति वत्तव्व सिया, पोट्टवइण्ण भते ! पुण्णिम कि कुल जोएइ ३ पुच्छा, गोयमा । कुल वा॰ उनकुल वा॰ कुलोवकुल वा जोएइ, कुल जोएमाणे उत्तरमद्दवया णक्खते जोएइ उ॰ पुन्वमद्दवया॰ कुलोव॰ संयमिसया णक्खते जोएइ, पोद्वनइण्णं पुण्णिम कुलं वा जोएइ जाव कुलोवकुल वा जोएइ कुलेण वा जुता जाव कुलोवकुलेण वा जुता पोद्धवई पुण्णमासी जुत्तति वतन्व सिया, अस्सोइण्णं भन्ते । पुच्छा, गो० । कुळं वा जोएइ उवकुळं वा जोएइ णो लब्भइ कुलोवकुल, कुल जोएमाणे अस्सिणीणक्खते जोएइ उवकुल जोएमाणे रेवइणक्खते जोएइ, अस्सोइण्ण पुण्णिम कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुता अस्सोई पुण्णिमा जुतति वत्तव्वं सिया, कतिङ्ण्ण भते ! पुण्णिम कि कुल पुच्छा, गोयमा! कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ णो कुलोवकुल जोएइ, कुल जोएमाणे कत्तियाणक्खते जोएइ उव० भरणी०, कतिइण्ण जाव वत्तव्व०, मग्गसिरिण्ण भते ! पुण्णिमं किं कुल त चेव दो जोएइ णो भवइ कुलोवकुल, कुल जोएमाणे मम्मसिरणक्खते जोएइ उ० रोहिणी०, मम्मसिरिण्ण पुण्णिम जान वत्तन्न सिया इति । एव सेसियाओऽवि जान आसाढिं, पोसिं जेहा-म्लिंच कुल वा उ० कुलोवकुल वा, सेसियाणं कुल वा उवकुल वा कुलोवकुल ण भण्णइ । सानिद्विण्ण भते । अमानास नइ णक्खता जोएति <sup>२</sup> गोयमा ! दो णक्यत्ता जोएति, त०-अस्सेसा य महा य, पोडुवङ्ण्ण भते ! अमावास वड णक्सत्ता जोएति १ गोयमा ! दो पुन्वापनगुणी उत्तरापनगुणी य, अस्सोइण्ण भते !

यो-देवई शरिसानी य बद्धाद्विकों दो-सरनो वर्तिया व बेहुम्मुक्षेकों दो-ऐडियो मम्मिस च बासामिको तिकित-बाहा पुरुष्वास पुरसो हति । सामिद्विको मेदे । सरतारात के सुर वेश्वर उच्छक्ने बोराइ इजीवहुको बोराइ हे सोध्यर । दुर्भ शार्वेशर उच्छक्ति बोराइ यो स्वारक कुमोबहुकों कुई बोर्ग्याचे महालब्बती मोरा उच्छक्ते बोरासपे सरसेशायक्याचे बोराइ सामिद्धिका स्थानास कुई वा बोराइ उच्डक वा बोराइ, कुकेय वा सुत्ता उच्छक्तेय वा क्षात समिद्धी स्थानसा स्तारित सामि

शिवा पेंद्रवहरूपं मंत्रे । समावार्ध तं बेब हो बोएर वर्ज वा बोरह उनक्र का इस्त बोरमारि उत्तराज्याणी पक्षकते बोएर उब प्रकारप्रपणी वोह्रकार्ण काना गांध बाव नतन्त्र दिया मागशिरण्यं तं बेब इस्तं मुक्ते नत्त्वतो बोरह उ वेद्धा -इस्तेमकुल कद्भारका बाव कुतारि नाम्यं शिया एवं माहीए करण्योत् बाधार्थे ए इस्ते वा उनहुकं वा इसोद्धार्क वा स्ववशिवार्थं इस्तं वा उन्हुकं वा बोरह व बवा ये मात्रे । शांबिही प्रक्रिया मन्दर तथा लं माही समावारमा सद्ध तथा बवा ये मात्रे । शांबिही प्रक्रिया मन्दर (वा यो पोमा । वस्त्र माही पुल्मिमा मन्दर तथा लं पार्ची वा पार्चिक्या मन्दर तथा यो पोमा । वस्त्र माही पुल्मिमा मन्दर तथा लं पार्ची प्रक्रिया मन्दर तथा लं पर्यापी समावारमा मन्दर तथा लं परमुणी समावारमा मन्दर कथा लं परार्ची पुल्मिमा मन्दर तथा लंगिया । वस्त्र विकास मन्दर विकास सम्बाध मन्दर विकास मन्दर विकास सम्बाध मन्दर । वस्त्र विकास मन्दर विकास सम्बाध मन्दर ।

पोरिसी भवइ । वासाण भन्ते ! तह्य मासं कह णक्खत्ता जेति <sup>2</sup> गोयमा ! तिण्णि णक्खत्ता र्णेति, त०-उत्तरभद्दवया रेवई अस्सिणी, उत्तरभद्दवया चउद्दस राइदिए णेइ, रेवई पण्णरस॰ अस्सिणी एगं॰, तसि च ण माससि दुवालसगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियद्ध, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे छेहद्वाई तिण्णि पयाई पोरिसी भवइ । वासाण भन्ते ! चउत्थ मास कइ णक्खत्ता णेति २ गोयमा ! तिष्णि॰, तं॰-अस्सिणी भरणी कत्तिया, अस्सिणी चउद्स० भरणी पण्णरस० कत्तिया एगं०, तंसि च ण मासिस सोलसगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियट्ट, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइ चत्तारि अगुलाइ पोरिसी भवइ । हेमन्ताण भनते । पढम मास कड़ णक्सता गेंति १ गोयमा ! तिण्णि , त० – कत्तिया रोहिणी मिगसिरं, कत्तिया च उदस रोहिणी पण्णरस॰ मिगसिर एगं अहोरत्त णेइ, तंसि च ण माससि वीसगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियद्द, तस्स णं मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसि च णं दिवसिस तिण्णि पयाइ अद्व य अगुलाई पोरिसी भवइ, हेमताणं भन्ते ! दोच मास कइ णक्खत्ता णैति १ गोयमा ! चतारि णक्खत्ता णैति, तंजहा-मिगसिरं अहा पुणव्वसू पुस्सो, मिगसिरं चउइस राइदियाइ णेइ, अहा अट्ट० णेइ, पुणव्वसू सत्त राइंदियाइ॰, पुस्सो एग राइंदियं णेइ, तया ण चडव्वीसगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियदृह, तस्स ण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसि च णं दिवसित लेहद्वाई चत्तारि पयाई पोरिसी भवड, हेमन्ताण भते ! तच मास कड् णक्खता णेति <sup>2</sup> गोयमा ! तिण्णि॰, त०-पुस्सो असिलेसा महा, पुस्सो चोह्स राइदियाइ णेइ, असिलेसा पण्णरस० महा एक०, तया ण वीसगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियदृह, तस्स णं मासरस जे से चरिमे दिवसे तास च ण दिवसिस तिण्णि पयाइ अट्टगुलाइ पोरिसी भवइ । हेमताण भन्ते । चउत्थ मास कइ णक्खता णिति 2 गोयमा ! तिण्णि ण०, तं॰-महा पुन्वाफगुणी उत्तराफग्गुणी, महा चडद्स राइदियाइ णेइ, पुव्वाफग्गुणी पण्णरस राइदियाइ णेइ, उत्तराफग्गुणी एग राइदिय णेड, तया ण सोलसगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियदृह, तस्स ण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसि च णं दिवसित तिष्णि पयाइ चत्तारि अगुलाइ पोरिसी भवइ । गिम्हाण भनते । पढम मास कइ णक्खत्ता जेंति <sup>२</sup> गोयमा ! तिण्णि णक्खत्ता जेंति, त०-उत्तराफगुणी हत्यो चित्ता, उत्तराफागुणी चउद्स राइदियाइ णेड, हृत्यो पण्णरस राइंदियाड णेड, चित्ता एगं राडंदिय णेइ, तया णं दुवालसगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियट्टइ, तस्स ण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसि च ण दिवसंसि छेहद्वाड तिण्णि पयाडं पोरिसी भवइ, गिम्हाण भनते । दोच मास कइ णक्खत्ता णेति १ गोयमा । तिण्णि णक्खत्ता नाई पेर निवाहा एवं राइदियं नेद, तथा नं कर्द्वपुक्रयोरिचीए झमाए परिए मर्ड परिनद्द, तस्त में गाएरस जै से नारेंगे विनसे देखि न में दिवसंदि दो पनाई क्ट्रंगुमाई पोरिसी मबद्र । निम्हार्च मन्ते ! तबं मार्च बद्ध बन्दाता चेंति ! मोम्मा! नतारि यस्त्रचा येथि यंग्रहा—निसाहाऽश्वराहा बेहा मूम्से निसाहा कार्य राहंदियाई चेत्र, अनुराहा बद्ध राहियाई नेत्र, बेट्टा सत्त राहंदियाई नेत्र, मूच्चे एई रहंबियं तया वं वर्रगुरुपोरिसीए छायाए सुरिए ब्लुगरिबद्ध, तस्य वं मानस में से करिन दिवसे लेखि व में जिनसीस को पनई बतारि व अंगुनाइ मेरीसी सबर । गिम्हार्ण म ते । चडत्वं मार्च बढ जक्यता बेंदि । योवमा । विनि भक्यता केंद्रि र्ट-मूको पुम्बासाडा उत्तरासाडा मूओ बउदस रहारिवाई केंद्र, प्रमान साडा पञ्चरस राईनिवर्द्ध नेह, उत्तरासाडा एगं राईनिव नेह, तवा न बहार सम्बद्धर सर्वठानपंदिनाए बम्पोइपरिमण्डकाए सकावम्बुरंगिनाए कामाए सुरिए स्बुपरिमाध तरस में मासरस के से करिये दिवसे तीर क में विवसंख सेवहते से स्वाहं पोरिसी मनद् । एएसि वं पुष्तवण्यायां प्रवायं ह्या संबद्धणी तं--क्रोगी देवनदारस्य-गोत्तर्पळाण चन्द्रविज्ञोगो । कुछपु न्त्रिममञ्ज्या येवा छाया य बोळ्या ॥१॥१६२॥ गाहा हिंदुं छरिपरिवारी सन्वरज्वाहा यहेव खेरीते । वर्रावेदछाओं अवाध मंतो बाई च स्वानुद्दे ॥ ९ ॥ एंक्सर्व च पमार्च बहुति सीवर्ग्य रहिमन्त्री म । तारंदरऽज्ञगमहिसी दुविन पहु दिसै म अप्पवह त १ ॥ अरिव वे सन्दे करिमच्दिरवार्च हिर्द्धिपे वारास्त्रा अर्धिपे तुलानि संगेने तारस्त्रा नर्द्धिपे द्रवाने एमिपि तारस्था क्लुपि तुकानि है हैता सोसगा है सेव स्वारेक्न है केमहोप मन्त्रो । एवं <del>तुष्यः ।</del> शरिष वं आहा आहा यं तेशि देवानं तकनिक सबंभचेराई करिवाई मचन्ति तहा तक्षा मं तेथि मं देवामं एवं प्रमानक र्तंत्रहा-ज्युरी वा द्वालते वा अहा अहा में तेथि देवार्थ तबस्वत्रमनंत्रवेशमें मी करियाई मर्पति तका वर्ष तेसि देवाणं पूर्व को प्रकासए, तंक-अनुते वा द्वा<sup>के</sup> वा ॥ १६३ ॥ एवमेयस्य वं सन्ते ! चन्दस्य चेन्द्रवा सहमन्द्रा वरिवारो केन्द्रवा मन्त्रता परिवारी केन्द्रसाओ ताराणककोडाकोडीओ एल्पतान्त्र ! योजमा । अञ्चर्वतः महम्महा परिवारो सङ्घानीच व्यवस्थाता परिवारो स्ववश्चित्रहरूताई वद स्था पञ्चतरा वारागणकोडाकोडीओ पञ्चवाको ॥ १६४॥ सन्वरस्य में सन्वे । व्यवस्य कार याप् अवाहाए जोहर्स चार चरह र गोममा । स्वारस्त्री स्वापिती बोल्लाप्री भवाद्वाए चोर्स वारं वरह अमेताको यं अन्ते ! केन्द्रवाए अवाद्वाए बाहरी

पण्णते १ गोयमा ! एकारस एकारसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसे पण्णते । धरणितलाओं णं भन्ते । सत्तिहं णउएहिं जोयणसएहिं जोइसे चार चरइत्ति, एव स्रविमाणे अडहिं सएहिं, चंदविमाणे अडहिं असीएहिं, उनिरेक्ने तारारूवे णवहिं जोयणसपृहिं चार चरइ। जोइसस्स ण भन्ते! हेट्ठिलाओ तलाओ केवइयाए अवाहाए स्रविमाणे चारं चरइ 2 गोयमा ! दसिंह जोयणेहिं अवाहाए चार चरइ, एवं चन्दिबमाणे णखईए जोयणेहिं/चार चरइ, उविरेष्ठे तारारूवे दसत्तरे जोयणसए चारं चरइ, सूरविमाणाओ चर्दिवमाणे असीईए जोयणेहिं चारं चरइ, स्रिविमा-णाओ जोयणसए उनरिक्षे ताराख्ने चारं चरइ, चन्दिवमाणाओ वीसाए जोयणेहिं उवरिहें ण तारारूवे चारं चरइ ॥ १६५ ॥ जम्बुद्दीवे ण भते ! दीवे अट्ठावीसाए णक्खताणं कयरे णक्खते सव्वब्मंतरिहं चारं चरइ १ कयरे णक्खते सन्ववाहिरं चारं चरइ  $^{2}$  क्यरे॰ सन्वहिद्धिलं चार चरइ  $^{2}$  क्यरे॰ सन्वखवरिल चार चरइ  $^{2}$ , गोयमा! अभिई णक्खते सव्बब्भतरं चार चरइ, मूलो सव्ववाहिर चारं वरइ, भरणी सव्वहिद्विह्नगं० साई सव्वुविरह्मग चारं चरइ। चन्दविमाणे ण भते! किंसठिए पण्णते? गोयमा । अद्भविद्वसराणसिठिए सन्वफालियामए अन्मुग्गयम्सिए एवं सन्वाई णेयव्वाइं, चन्दविमाणे ण मन्ते ! केवइयं आयामविक्खमेण केवइय वाह्हेण 2 गोः !-छप्पण्ण खलु भाए विच्छिण्ण चन्दमडल होइ । अद्वावीस भाए वाहरू तस्स वोद्धव्व ॥ १ ॥ अडयालीस भाए विच्छिण्ण स्रमण्डलं होइ । चउवीस खळु भाए बाहरूं तस्स बोद्धव्य ॥ २ ॥ दो कोसे य गद्दाणं णक्खताण तु ह्वइ तस्सद्ध । तस्सद्ध ताराण तस्सद्ध चेव बाहल्ल ॥ ३ ॥ १६६ ॥ चन्दविमाण ण भन्ते ! कइ देवसाहस्सीओ परिवहति <sup>१</sup> गोयमा ! सोलस देवसाहस्सीओ परिवहति । चन्दिनमाणस्स ण पुरित्थमेणं सेयाणं सुमगाण सुप्पमाण सखतलिमलिणम्मल-दहिघणगोखीरफेणरययणिगरप्पगासाण थिरलद्वपउद्ववद्वपीवरस्रुसिलिद्वविसिद्वतिक्ख-दाढाविडवियमुहाण रत्तप्पलपत्तमउयस्मालतालुजीहाण महुगुलियपिंगलक्खाणं पीनरनरोरुपिडपुण्णविजलबंघाण मिजनिसयसुहमलक्खणपसत्यवरवण्णकेसरसडोव-सोहियाण असियसुणसियसुजायअप्पोडियलगूलाण वइरामयणक्खाण वइरामय-दाढाणं वइरामयद्नताण तवणिज्जजीहाण तवणिज्जतालुयाण तवणिज्जजोत्तगसु-जोइयाण कामगमाण पीइगमाण मणोगमाण मणोरमाण अमियगईणं अमिय-वलवीरियपुरिसकारपरक्कमाणं मह्मा अप्फोडियसीहणायवोलक्लकलरवेणं महुरेणं मणहरेण प्रेंता अवर दिसाओ य मोभयता चतारि देवसाहस्सीओ सीहरूव-धारीणं पुरत्थिमिह वाह परिवहति । चंदविमाणस्स ण दाहिणेण सेयाण ग्रभगाणं त्वविज्ञतास्मार्थं त्वविज्ञवोत्तगष्टवोद्वार्थं शामग्रमार्थं पीद्रग्रमार्थं मनोपमार्थं मगोरमाणं समिनगर्देणं समिश्वसनौरिनपुरिसहारपरकमाथं सहवा र्यमीरपुर्द्धग्रहारू रवैनं महरेमं मनहरेमं प्रेता अंगरे विसानो य सोमर्थता चतारि देवसाहरतीयो गनस्वभारीमं देवाणं दक्षिप्रक्रिकं बाह् परिवर्दति । जन्दविमाणस्य में प्रवस्थिते पेवापं पुसराजं प्रयामानं वक्षणवक्षत्रपृष्ट्याधीयं धवविनिवयु**व**दसमयानुष्यारी तिमानस्वसमोद्वानं अंगमिकसकिनपुक्तिपश्चककक्षगव्जिनपर्युचं सञ्जवपासार्थं संगन-पांसाणं स्वासपासाणं पीवरवरियस्पेरियक्सीयं शोकेनपुरुक्तन्ववरमाम्बर्धाः समिजनाक्ष्मकार्थं समञ्जरनाक्षिभाषाणं समसिक्षेत्रपरिगतिकक्षमासंस्थानं स्ट्राप्ट्रम द्वजाननिक्रकोस्टर्सन्यराणं उत्रनिक्स<del>स्यत्वित्।स्यवितुम्बर्शक्यस्य</del> मिसत् अक्यासुनिरिक्षणार्थं अत्तपमानपद्दान्तस्यावपस्यत्मस्यानपराज्ञस्योति याचं पर्वरममुसन्बर्केडमरिमाध्वनायं वाजासमिकनगर्यजनस्थानेमरिकार्कर् माक्रिमार्थं करकटागक्रममाक्रुव्यवस्थिरेशराचं परमुप्पकस्यकपुरमिमाक्राविम्<sup>रिमा</sup> वहरकराजं निविद्द<del>विवक्</del>यराणं फाकियासम्बन्ताचं तबनिजनीहरूयं तबनिकता**त्र**ास त्विभिजवीत्त्रम्युजीदसार्थं क्षमगमार्जं पीद्दशमार्जं सबोगमार्थं सबोरमार्थं अभिगमार्थं श्रमियसक्यौरिक्पुरिच्कारपरक्रमार्थं महता शक्किमसमीहरुकेनं महरेलं मन्दरेलं पूरेता मनरं विधाओं य सोमर्येता चतारि देवधाइस्सीओ वसहस्मानारीयं देवानं प्रवस्ति मिन्ने बाई परिवर्हति । अञ्चलिमाजस्य वं बत्तरेचं सेमार्च ग्रमगार्च प्रथमार्च सम्मिन हाममार्च हरिनेक्सरक्समीत्रमञ्जलं चंत्रुवियक्षवियपुरियचनका वर्णकार्युचं धेव-नवमायमानमकोरणिक्यम्यपितिग्रवगर्वेषं स्वतिसामधस्यावगरभूतवार्वं सम्ब

यपासाणं सगयपासाण सुजायपासाण पीवरवद्वियसुसठियकडीण ओलवपलंबलक्रा-णपमाणजुत्तरमणिजवालपुच्छाणं तणुसुह्मसुजायणिद्धलोमच्छविहराण मिडविसयसुहु-मलक्खणपसत्यविच्छिण्णकेसर्वालिहराण ललतथासगललाडवरभूसणाण मुद्दमण्डग-ओचूलगचामर्थासगपरिमण्डियकढीण तवणिज्ञखुराण तवणिज्जजीहाण तवणिज्जतालु-याण तवणिजजोत्तगमुजोइयाण कामगमाण जाव मणोर्माण अमियगईण अमिय-यलवीरियपुरिसङ्गारपरक्रमाण महया हयहेसियकिलकिलाइयरवेण मणहरेण पृरेता अवर दिसाओ य सोभयता चतारि देवसाहस्सीओ हयस्वधारीण देवाण उत्तरिल वाह परिवहीते । गाहा-सोलसदेवमहस्सा हवंति चटेसु चेव स्रेसु । अट्टेव मह-स्साई एकेकमी गहविमाणे ॥ १ ॥ चत्तारि सहस्साइ णक्खत्तमि य हवति इक्षिके । दो चेव सहस्साइ तारास्त्रेक्क्रमेक्कंमि ॥ २ ॥ एव स्र्विमाणाण जाव तारास्विवमा-णाणं, णवर एस देवसचाएति ॥ १६७ ॥ एएसि णं भन्ते ! चंदिमस्रियगहराण-णक्खतताराह्वाण क्यरे सब्बसिग्चगई कयरे सब्बसिग्धतराए चेव ? गोयमा! चन्देहिंतो सूरा सिग्धगई, सूरेहिंतो गहा सिग्धगई, गहेहिंतो णक्खता सिग्धगई, णक्खतेहिंतो ताराह्वा सिग्घगई, सव्वप्पगई चंदा, सव्वसिग्घगई ताराह्वा इति ॥१६८॥ एएसि ण भन्ते ! चदिमस्रियगहगणणक्खत्तताराख्वाण कयरे सन्वमहिद्विया क्यरे सव्वप्पिष्ट्या १ गो० ! ताराह्वेहिंतो णक्खता महिष्ट्रिया, णक्खतेहितो गहा महिष्ट्रिया, गहेहिंतो सरिया महिष्ट्रिया, स्रेहिंतो चन्दा महिष्ट्रिया, सञ्विष्पिट्टिया ताराख्वा, सन्वमहिष्टिया चन्दा॥ १६९॥ जम्बुद्दीवे ण भन्ते । दीवे ताराख्वस्स य ताराह्वस्त य केवइए अवाहाए अतरे पण्णत्ते 2 गोयमा ! दुविहे प०, त०-वाघाडए य निव्वाघाइए य, निव्वाघाइए जहण्णेण पचधणुसयाइ उक्कोसेणं दो गाउयाई, वाघाइए जहण्णेण दोण्णि छावद्वे जोयणसए उन्होसेण वारस जोयणसहस्साइ दोण्णि य वायाले जोयणसए तारास्त्रस्स य २ अवाहाए अतरे पण्णते ॥ १७० ॥ चन्दस्स ण मंते! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अगगमिहसीओ पण्णताओ ? गोयमा! चत्तारि अगगमहिसीओ पण्णताओ, त०-चन्दप्पमा दोसिणामा अचिमाली पमकरा, तओ ण एगमेगाए देवीए चत्तारि २ देवीसहस्साई परिवारी पण्णत्ती, पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्न देवीसहस्स विडन्वित्तए, एवामेव सपुन्वावरेण सोलस देवीसहस्सा, सेत तुबिए। पहू ण भंते! चढे जोइसिंदे जोइसराया चदवडेंसए विमाणे चन्दाए रायहाणीए सभाए छहम्माए तुडिएण सिद्धें महया हयणहुनीय-वाइय जाव दिव्वाई भोगमोगाइ भुजमाणे विहरित्तए 2 गोयमा ! णो इणट्टे समद्वे, पभू ण चंदे सभाए मुहम्माए चलहिं सामाणियसाहस्सीहिं एव जाव दिव्वाड भोग- तमिजनिसाळकम्पन्यस्थानंतविमञ्ज्ञानां सहयमानिसंताविद्यपतसनिम्पनिस् क्नमविरयज्ञेयकार्वे अकारगयभवसम्बद्धाविवाचवस्तरिसरीठियनिकायदृहस्त्रीयदान विमासम्बद्धनाम्बद्दनतुस्यकोवधोसियाणं कृष्यकोधीपविद्वयन्तस्यविससस्यविर्मणस्य पेरेत्वित्तर वर्गनिराक्रमार्थे तवनिव्यविसावितम्प्यम् परिमण्डियाणं भानामविरमयन मञ्जूपेनिज्ञवञ्च एक स्वर भूसाया ये वेदावित्य विचित्तर एक विस्तासमा इरास्म विकटास्वय संस्थान क्रमञ्जूबनर्रत रोविवाणे तनविक्तावद्यक्रकव्यप्तियवस्थाराणे विमनप्रमानककाराम-यसाम्राक्षवियत्।सनार्वे याचामविरवजनप्टपस्मिरस्मामसम्बद्धरानुसंभिवपंटानुस-नमङ्करसरमञ्जूराजे सञ्जीवपमाजञ्चलवद्भिनद्धव्ययन्त्रवयपस्यरमानिजनानस्यरिरे पुंख्याणं उवन्वियपविपुण्यकुरम्बसणसङ्ख्यामार्थः अक्रमयबक्यामा उवनिज्ञाबीहामं त्विज्ञतास्थामं त्विज्ञिजोत्तमध्येबोद्धानं कामयमार्गं पीड्गमार्थं मध्योगमानं मणोरमाणं अमियगर्देणं अभिवनकवीरियण्सिकारपरक्षमाणं सहवा गैमीरकुरगुक्तहर-रवेजे महरेगे मजहरेगे प्रेता अंतरे विसामा व सोमर्गता चतारि देवसाहस्सीमा गमस्ववारीयं देवायं दक्तिकार्यः बाहः परिवर्द्धते । अन्यविमाणस्य वं प्रवास्तिमेर्य सेवानं सुमगानं सुप्पमानं वकववलक्ष्युवसाठीनं वयनिविदसुवदक्ष्यवन्त्रवर्षः सियाध्ययसमोद्वार्म <del>चंद्रनिवयक्तित्पुक्रियक्कवस</del>्यव्यक्त्यस्याहेगं स्व्ववप्रसावं संगर-पासानं समानपासाणं पीनरवहित्रसर्धित्यक्त्रीणं कोसंवयनंत्रकारप्राप्तमानसूत्रर मिक्रमाक्रमण्डाव सम्बर्शक्रियानार्ण समस्ब्रियसिंगतिक्वरगसंयवार्थं तसुग्रहुमः ध्वाप्रविद्यक्षेत्रक्रविवराणं उवनिवर्मसक्षविसानगरिपुण्यक्षप्रप्रस<u>र्व</u>वराणं वैरक्षित मिर्सनश्चक्यमुम्बरिक्सकार्णं शुक्तपमायपद्दासकक्यावपस्तरमणिजगस्परमञ्ज्योगि वाभ वर्षरगप्तसभ्यक्षंठपरिमध्यवाणं जानामविष्यमार्थणपरिजावेगरिक्षपप्तस्थः माक्रियाचे वरक्टायसम्बन्धस्त्रज्ञससिरिवरार्थं पत्रमुप्पस्तवसस्तुरसिमास्त्रतिभूतिवाचे नहरस्यराचं निविद्वनिक्पुराणं फाक्रियामयद्श्ताणं सम्बिकशीहरणं सम्बिकस्यसमानं तरभिज्ञजोक्तगमुजोद्धमार्जं कामगमार्जं पीड्यमार्जं मचोगमार्चं मचोरमार्चं अभियमर्ड्नं भभित्रवसमीरिक्पुरैसङारफ्रहमान मह्या विश्वयंगीररवेचे महुरेनं मनहरेनं पूरेंता भेतरं दिमात्रो व सोमर्यता चतारि देवसाइस्सीयो वसहरूपारीयं देवानं पदम्पि-मित्रं वार्षं परिवरंति । चन्द्विमाणस्य र्ण उत्तरेणं सैयाणं गुमगाण गुप्पभागं शरमिन हामचार्च हरिमेसमउत्तमक्रिक्च्यार्च अंजुवियस्तिरम्पुक्षित्रवस्वयस्यवेषसमार्द्यं संप-नद्रमान्यम्बन्धोर्जितक्त्वकृत्रशितिरादगर्दृत्यं समेत्स्यमगस्यम्बरभूधनार्जः सत्र्य-

यपासाणं सगयपासाण सुजायपासाणं पीवरवष्ट्रियससिठयकढीण ओलंवपलवलक्ख-गपमाणजुत्तरमणिज्ञवालपुच्छाणं त्णुसुहूमसुजायणिद्धलोमच्छविहराण मिउविसयसुह्-मलक्खणपसत्यविच्छिण्णकेसरवालिहराण ललतथासगललाडवरभूसणाण सुद्दमण्डग-ओचूलगचामर्यासगपरिमण्डियकढीण तवणिजाखुराणं तवणिजजीहाण तवणिजातालु-याण तवणिज्जजोत्तगसुजोइयाण कामगमाण जाव मणोरमाणं अमियगईण अमिय-वलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमाण महया हयहेसियकिलकिलाइयरवेण मणहरेण पूरेंता अवरं दिसाओ य सोभयता चत्तारि देवसाहस्सीओ हयरूवधारीण देवाण उत्तरिह्नं बाहं परिवहति । गाहा—सोलसदेवसहस्सा हवंति चदेस चेव सूरेस । अट्टेव सह-स्साइ एकेकमी गहविमाणे ॥ १ ॥ चत्तारि सहस्साइ णक्खत्तंमि य हवति इक्कि । दो चेव सहस्साइं तारारूवेक्समेक्समि ॥ २ ॥ एवं सूरविमाणाण जाव तारारूवविमा-णाणं, णवरं एस देवसघाएति ॥ १६७ ॥ एएसि ण भनते ! चंदिमस्रियगहगण-णक्खत्तताराख्वाण कयरे सञ्वसिग्धगई कयरे सञ्वसिग्धतराए चेव १ गोयमा! चनदेहिंतो सूरा सिम्घगई, सूरेहिंतो गहा सिम्घगई, गहेहिंतो णक्खता सिम्घगई, गक्खतेहिंतो ताराह्वा सिग्घगई, सञ्चप्पगई चंदा, सञ्वसिग्घगई ताराह्वा इति ॥१६८॥ एएसि ण भन्ते ! चिदमस्रियगहगणणक्खत्तताराख्वाण कयरे सव्वमहिष्टिया कयरे सन्वप्पद्भिया ? गो॰ ! ताराह्जवेहिंतो णक्खत्ता महिष्ट्रिया, णक्खतेहितो गहा महिब्बिया, गहेहिंतो सुरिया महिब्बिया, स्रेहिंतो चन्दा महिब्बिया, सञ्चिपिब्बिया ताराख्वा, सव्वमहिद्धिया चन्दा ॥ १६९ ॥ जम्बुद्दीवे ण भन्ते । दीवे ताराख्वस्स य ताराह्वस्स य केवइए अवाहाए अतरे पण्णते १ गोयमा ! दुविहे प०, त०-वाघाडए य निव्वाघाइए य, निव्वाघाइए जहण्णेणं पचधणुसयाइ उक्कोसेण दो गाउयाई, वाघाइए जहण्णेण दोण्णि छावट्टे जोयणसए उद्योसेणं वारस जोयणसहस्साइ दोण्णि य वायाले जोयणसए ताराख्वस्स य २ अवाहाए अतरे पण्णते ॥ १७० ॥ चन्दस्स ण भते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अगगमहिसीओ पण्णताओ ? गोयमा ! चत्तारि अगगमहिसीओ पण्णताओ, त०-चन्दप्पभा दोसिणामा अचिमाली पभकरा, तओ ण एगमेगाए देवीए चतारि २ देवीसहस्साई परिवारो पण्णतो, पभू ण ताओ एगमेगा देवी अनं देवीसहस्स विउव्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेण सोलस देवीसहस्सा, सेत्त तुडिए। पहू ण भते । चढे जोइसिंदे जोइसराया चढवडेसए विमाणे चन्दाए रायहाणीए सभाए सहम्माए तुडिएण सिद्धं महया हयणदृगीय-वाइय जान दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए व गोयमा ! णो इणहे समहे, पभू ण चेंदे सभाए सुहम्माए चलिंह सामाणियसाहस्सीहिं एव जाव दिव्वाड भोग- इंगासर् १ तिवासर् २ कोहिनके ३ समिच्छरे भेव ४ । शाङ्क्रीए ५ गाहुनिए ६ कनगरनामा म पंचेय १९ ॥ १ ॥ सोमे १२ सबिए १६ मासास्यो म १४ कमो-वर् १५ व कम्पुरर १६। समस्यर १७ ईंदुमर संदासनामेन तिन्नेष १ 🛭 २ 🗈 एवं सानिक्यां चाप मानकेतस्य सरगमहिसीओधि ॥ १७१ ॥ गाहा-नम्हा निक् य क्स बरचे क्य तुर्शी पूछ आप क्षते । अधिन प्यानह खोने दो अधिई नहस्सई सप्पे ॥ ९ ॥ पिठ सगम्बाजसस्तिया तक्का बाक तहेब ईदानी । मिठे हैंवे निरहे बाक विस्ता व बोबाने ॥ २ ॥ १७२ ॥ चदनिमाणे वं मंते । देशांने अकर काळ ठिड्रै पञ्चला है यो 🤰 बहुज्लेल चरुमायपक्रिओवर्म राक्ष्मेरीर्म परिज्ञोबर्म बासस्यस्यस्यमञ्जातियं चंवनिमाये व वेवीनं व्यवन्त्रेणं वटमागप्रक्रिजीवमं व कद्वपविश्वोदमं पञ्चालाप् बारासहरतेत्रिमनमहियं सरविमाये देवानं व वर क्सागपविक्रोक्सं उद्योगेर्ण पविक्रोक्सं बासस्वस्यसभ्यक्षियं सुरविमाने वेबीर्ण क्षात्रपोणं करावसारापविकोदमं सहोक्षेण बाह्यपविकोदमं पंचक्क वासस्पर्धे व्यक्तक्रियं गहविद्याणे वेदाणं बहुन्तेयं क्षत्रक्यापपक्रिकोक्त्रं उक्कोरोवं पक्रिको-क्सं गङ्गिमाणे देवीयं जङ्गण्येणं शतकमागपक्रिकोरमं राष्ट्रोरोणं अद्यपन्तिस्थे वर्ग वक्यतिमाचे वंतामं बहुन्येनं शतक्मागपविकोक्यं उद्योरेयं सदप्रक्रियो-वसं जनकत्तिमाने वेवीनं वहन्तेशं चतन्त्रायपक्रियोगमं उद्योगेनं साहितं चरकमायपक्रिओदर्ग शासनिमाणे वेवानं बद्दक्येनं बद्धमारपक्रिजोदर्ग स्वदेसेमं चत्रभागपवित्रोक्तं तार्यविमाणदेशीयं वहणीयं सहमागपवित्रोतमं उद्योगेर्य साइरेगं अञ्चनतपक्रिमोधर्मं ॥ १७३ ॥ एएसि वं शंते ! वंदिमस्रियम्स्यानवर्गना तारास्थानं क्यरे २ हिंतो जप्या वा बहुया वा तुवा वा लिखाहिया वा है मो चेदिसप्रिया तुचै तुक्का सम्बत्धोवा जनसत्ता एंकेक्युमा गहा एंकेक्युमा तारा-रवा संबेज्यामा इति ॥ १५४ ॥ जन्मुहीने व सन्ते । वीचे बहुन्तपर ना रकोत्तपए वा केनद्वा तित्ययरा सम्बद्धीर्थ प 1 में 1 कह्नपपए बतारि रुको-सप्य बोतीसं वित्ववरा सम्बन्धनं पञ्चता । बन्तुहीवे व संवे ! हीवे बहुन्वप्य वा उद्दोलपए वा केन्द्रमा जन्मकी सम्बन्धेन प र यो । जहम्बद्ध जनारि प्रक्रियाय दीस पहराही सम्बन्धिय प्रमाता इति सम्बन्धित प्रतिका चेत्र विशिष्ट प्रदेशियय दीस पहराही सम्बन्धिय प्रमाता इति सम्बन्धित प्रतिका चेत्र विशिष्ट प्रदेशिक वास्त्रेवामि दिसिया चेत्रिय । सम्बन्धित वं शेते । वीते केत्रका विदित्या

सन्वरंगेण प॰ १ गो॰ । तिण्णि छलुत्तरा णिहिरयणसया सन्वरंगेणं प॰, जम्बुद्दीवे ण भंते! दीवे केवइया णिहिरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छिति ? गो०! जहण्णपए छत्तीस उक्कोसपए दोण्णि सत्तरा णिहिरयणसया परिभोगत्ताए हव्यमा-गच्छति, जम्बुद्दीवे॰ केन्नइया पचिदियरयणसया सल्नग्गेणं पण्णता १ गो० ! दो दसुत्तरा पचिदियरयणसया सन्त्रगोण पण्णता, जम्बुद्दीवे॰ जहण्णपए वा उक्कोस-पए वा केवइया पर्चिदियरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति <sup>2</sup> गो॰ ! जहण्णपए अद्वावीस उद्योसपए दोण्णि दस्तरा पंचिदियरयणसया परिमोगताए ह्वमा-गच्छति, जम्बुद्दीचे णं भन्ते ! दीचे केवइया एगिंदियरयणसया सव्वरंगेण प॰ ? गो० । दो दम्रतरा एगिंदियरयणसया सन्वग्गेणं प०, जम्बुहीवे ण भनते ! दीवे केवडया एगिंदियरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छन्ति 2 गो० । जहण्णपए अट्ठा-वीस उक्कोसेण दोण्णि दसुत्तरा एगिंदियरयणसया परिभोगत्ताए हन्वमागच्छेति ॥ १७५ ॥ जम्बुद्दीचे ण भन्ते । दीवे केवइयं आयामविक्खमेण केवइय परिक्खे-वेण केवइय उन्वेहेण केवइयं उद्ग उचतेणं केवइय सन्वरगेण प॰ १ गो॰ । जम्बु-हीने २ एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खमेण तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलस य महस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्टावीस च धणुसयं तेरम य अगुलाइ अद्भुल च किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण प०, एग जोयणसहस्स उन्वेहेण णवणउइ जोयणसहस्साइ साइरेगाइ उद्धं उचतेणं साइरेग जोयणसय-सहस्स सव्वग्गेण पण्णते ॥ १७६ ॥ जम्बुद्दीवे ण भन्ते ! दीवे कि सासए असा-सए ? गोयमा ! सिय सासए सिय असासए, से केणहेणं भन्ते ! एव वुचड-सिय सासए सिय असासए <sup>२</sup> गो० ! दव्बद्वयाए सासए बण्णपज्जवेहिं गघ० रस० फास-पजनेहिं असासए, से तेणद्वेण गो० ! एव वुच्चइ-सिय सासए सिय असासए । जम्बुद्दीवे ण मन्ते ! दीवे कालखो केविचर होइ १ गोयमा ! ण कयावि णासि ण क्यानि णित्य ण क्यानि ण भिवस्सइ भुनि च भवइ य भिवस्सइ य धुने णिइए सासए अन्वए अवद्विए णिचे जम्बुद्दीवे दीवे पण्णते इति ॥ १७७ ॥ जम्बुद्दीवे ण भनते ! दीवे किं पुढविपरिणामे आउपरिणामे जीवपरिणामे पोग्गलपरिणामे 2 गोयमा ! पुढविपरिणामेवि आउपरिणामेवि जीवपरिणामेवि पुग्गलपरिणामेवि । जम्बुद्दीवे ण भन्ते ! दीवे सञ्चपाणा सञ्बजीवा सञ्बभूया सञ्बसत्ता पुढविकाइ-यताए बाउकाइयताए तेउकाइयताए वाउकाइयत्ताए वणस्सइकाइयताए उववण्ण-पुन्ता ? हता गो० । असइ अदुवा अणतखुत्तो ॥ १७८ ॥ से केणहेण भन्ते ! एव वुचइ-जम्बुद्दीवे २१ गो० ! जम्बुद्दीवे ण दीवे तत्थ २ देसे २ तिहं २ वहचे भारवदार १८ मासा १९ य पंच संबच्छरा इय २ ॥ १८॥ बोहसस्स य दार्स २९ चक्सतमित्रण् विस २२। दसमे पाहुके पूप् वानीसं पाहुकपाहुका ॥ ९९ व देणं बाहेर्यं तेणं समस्यं मिहिका बाम वयरी होत्वा रिवरियमियसम्बा प्सर्र चराजानक्याः पासारीया ४ ॥ ९ ॥ तीसे मं मिक्कियर समरीए बहिया उत्तर पुरिषक्तमे विसीमाए मानिसेंह जामं उजाणे होत्या बज्जभो ॥ २ ॥ हीसे व मिहिनाए जयरीए जियसत्तु णार्म राया होत्या वण्यको ॥ ३ ॥ तस्स अं जिनसत्तुस्स राज्ये बारिनी जामें बेची होत्या चण्यको ॥ ४॥ तेर्ण काकेर्ण तेर्ण समर्प तम्म टकान सानी समोसडे परिसा अभगया यामी वर्तिको परिसा पविगवा बाव राज जानंत दिसिं पारकमृष् तानेव विसिं पविषय् ॥ ५ ॥ तेलं काकेल तेमं समप्तं समणत्स मगक्को सद्दाबीरस्य जेट्ठे अतैवासी इंदम्क्के पामं अलगारे गोवमे गोति सतुरसहे समन्तरंससंठाणसंठिए कमारेसहजारायसवनने बाद एवं वयासी-सा 🗪 ते न्द्रोनही सुद्धताम वाद्दिवेदि बएमा 🏿 सा सङ्क्रप्यूनबीसे सुद्धतसम् स्वामीस च प्रद्विमाने मुद्दुत्तस्य काहितेति वएका ॥ ६ ॥ ता जया चं प्ररिए सम्बद्धांतराजी मंडकाओं सम्बदाहिर मंडकं उनसक्तिता चारं परह सम्बदाहिराओं मंडकाओं सम्बद्धांतरं संबतं उक्सकमिता चारं चरह एस वं अदा केन्द्रमं राहंदिसमीनं माहितेति वएजा <sup>9</sup> ता तिण्य छावडे रहमियसए रहमियमोर्य बाहितेति वएजा । अ ।। ता एनाए कडाए स्ट्रीए इद संस्थातं वरह, इद संस्थातं दुवनाती चरह, चह मंत्रकाई एगवन्त्रतो चरह ता चुन्नसीय संस्कत्यमं चरह, वातीह मॅडक्स्पर्य कुनक्सो करा, राजहा-निककारमाने केंद्र पविस्ताने केंद्र हुने व क्सु मंडकाई छई चरह, धंजहा-सम्बद्धांतर चेव मंडक सम्बद्धाहर चेव मंडक II < II क्य या तरिन नाव्यस्य सम्बद्धारस्य सर्व क्यारस<u>मुख्ये दिवसे</u> सक्य सर्व अक्षारसमूहता राहे अबद सर्व दुवाकसमूहते विवसे सबद सई दुवाकस-सहत्ता राहे मक्द्र अपने सम्मासे जतिय बद्वारसस्हता राहे, यति बद्धारसस्हते विवसे कारिक तुवासन्तमुख्यो दिवसे चारिय तुवासन्तमुद्रुता राई मनह, बोजे स्नमानी भरित बद्धारसमुद्वते देक्से वरित बद्धारसमुद्वता राहे, अदिव दुवाससमुद्रता राई, मत्यि बुनास्पमुक्को त्रिक्ते अवर, पडमे वा सम्मारी दोचे वा सम्माने वर्ति राई भगर, रूख में बंदें पन्परसमुद्रते विवसे नाव वारिय 44 १ ६ जाव विशेशा-वप्**या ।** ता करण द्विए परिक्कीवेर्ण बारे बाज तवा ये

ामुहुत्ता राई भवड, से णिक्खममाणे स्रिए णवं सवच्छरं अयमाणे पढ-महोरत्तीस अब्भितराणतरं मडल उवसकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं यदिंमतराणतरं मडल उवसकमित्ता चारं चरइ तया ण अद्वारसमुहुते दिवसे हि एगद्विभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुता राई भवइ दोहिं एगद्विभाग-अहिया, से णिक्खममाणे स्रिए दोचिस अहोरत्तंसि अन्भितरं तचं मंडलं स्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भितरं तत्त्वं मडल उवसकिमत्ता चारं ग ण अद्वारसमुद्दत्ते दिवसे भवइ चर्डाई एगद्विभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवाल-गई भवड चर्डाई एगड्डिभागमुहुत्तेहिं अहिया, एव खळ एएणं उवाएण ाणे सूरिए तयाणतराओ० मडलाओ मडल सक्तममाणे २ दो २ एगद्विमागमुहुत्ते ें दिवसखेत्तस्स णिवुद्देमाणे २ रयणिखेत्तस्स अभिवुद्देमाणे २ सन्वबाहिर-ाकमिता चार चरइ, ता जया ण स्रिए सन्वन्भंतराओं मंडलाओं सन्त्र-ल उनसकिमत्ता चारं चरड तथा णं सब्बब्भतरमंडलं पणिहाय एगेण उदियसएणं तिण्णिस्रावद्वएगद्विभागमुहुत्ते सए दिवसखेतस्स णिवुङ्किता य अभिवृद्धिता चार चरइ, तथा ण उत्तमकहुपता उक्कोसिया अहार-भवइ, जहण्णए बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एस ण पढमे छम्मासे, एस म्मासस्स पज्जवसाणे । से पविसमाणे स्रिए दोच छम्मास अयमाणे त्ति वाहिराणतर मंडल उवसकमिता चारं चरइ, ता जया ण सूरिए नडल उवसकिमता चारं चरइ तया ण अद्वारसमुहुता राई भवइ ामुहुत्तेहिं सणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवड दोहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं माणे स्रिए दोचंसि अहोरत्तंसि वाहिरं तच मंडल उवसकिता चारं ण सूरिए वाहिरं तच मडल उवसकिमता चारं चरइ तया ण ाई भवइ चर्डाहें एगद्विभागमुहुत्तेहिं कणा, दुवालसमुहुते दिवसे त्रभागमुहुत्तेहिं अहिए। एव खळ एएणुवाएण पविसमाणे सूरिए ातर महलाओ महल सकममाणे २ दो दो एग द्विभागमुहुत्ते एगमेने णिबुद्देमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवद्देमाणे २ सन्वन्भतर महरुं ारइ, ता जया ण स्रिए सन्ववाहिराओ मङलाओ सन्वन्भतर ारं चरइ तया ण सन्ववाहिरं महल पणिहाय एगेण तेसीएण बंडे एगडिमागमुहुत्तसए रयणिखेतस्य निवृद्धिता दिवसखेत्तस्स तया ण उत्तमकद्वपत्ते उक्षोसए अद्वारसमुहुते दिवसे भवइ, । राई भवर, एस ण दोचे छम्मासे, एस ण दुचस्स छम्मा- वान्युक्तरा बार्युक्ता बार्युक्यपंका थिकं द्वाधीमा जाव विविद्यानंत्रहर्वे प्रथमित विदेश वार्युक्त व्यव्याप्त अवस्थित वार्युक्त विदेश वार्युक्त व्यव्याप्त अवस्थित वार्युक्त विदेश वार्युक्त वार्युक



## णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

## सुत्तागमे

## तत्थ णं

## चंद्पण्णत्ती

जयइ णवणलिणकुवलयवियसियसयवत्तपत्तलदलच्छो । वीरो गर्यदमयगलसललि-यगयविष्ममो भयव ॥ १ ॥ निमऊण सुरअसुरगरूलभुयगपरिवदिए गयकिलेसे । अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाय सन्वसाहू य ॥ २ ॥ फुडवियडपागडत्थ वुच्छ पुन्व-स्र्यसारणीसदं । सहुमगणिणोवइह जोइसगणरायपण्णितं ॥ ३ ॥ णामेण इंदभूइति गोयमो विदेखण तिविहेण । पुच्छई जिणवरवसह जोइसगणरायपण्णत्ति ॥ ४ ॥ कइ मडलाइ वचइ १, तिरिच्छा किं च गच्छइ २। ओभासइ केवइयं ३, सेयाई कि ते सिठिई ४ ॥ ५ ॥ किह पिडिहया छेसा ५, किह ते ओयसिठिई ६ । के सूरिय वर-यए ७, कहं ते उदयसिठेई ८ ॥ ६ ॥ कह कहा पोरिसिच्छाया ९, जोगे कि ते व आहिए १०। किं ते सबच्छरेणाई ११, कइ सबच्छराइ य १२॥ ७॥ कहं चद-मसो बुद्दी १३, कया ते दोसिणा वहू १४। केइ सिग्चगई बुत्ते १५, कह दोसिण-रुक्खणं १६॥ ८॥ चयणोववाय १७ उचते १८, सूरिया कइ आहिया १९। अणुमाने के व सवुत्ते २०, एवमेयाइ वीसई ॥ ९ ॥ वस्त्रोवस्त्री मुहुत्ताण १, अद्ध-मंडलसिंठई २। के ते चिण्णं परियरइ ३, अतर कि चरति य ४॥ १०॥ उग्गा-हड़ केवइय ५, केवइय च विकपइ ६। मंडलाण य सठाणे ७, विक्खमो ८ अट्ट पाहुडा ॥ ११ ॥ छप्पच य सत्तेव य अद्व तिण्णि य हवति पडिवत्ती । पडमस्स पाहुहस्स हनति एयाउ पहिनत्ती ॥ १२ ॥ पहिनतीओ उदए, तहा अत्यमणेसु य । मियवाए कण्णकला, मुहुत्ताण गईइ य ॥ १३ ॥ णिक्खममाणे सिग्धगई, पविसते मदगईइ य । चुलसीइसय पुरिसाण, तेसिं च पडिवर्तींको ॥ १४॥ उदयम्मि अह भणिया मेयग्घाए दुवे य पिडवत्ती । चतारि मुहुत्तगईए हुति तहयम्मि पिंचती ॥ १५॥ आविलिय १ मुहुत्तागो २, एवभागा य ३ जोगस्सा ४। कुलाई ५ पुण्णमासी ६ य, सिण्णवाए ७ य सिठेई ८ ॥ १६॥ तार(य)ग्ग च ९ णेया य १०, चदमग्गिति ११ यावरे । देवयाण य अज्झयणे १२, मुहुत्ताण णामया इय १३॥ १७॥ दिवसा राइ बुत्ता य १४, तिहि १५ गोत्ता १६ भोयणाणि १० य। ४३ सुसा०

पुरिच्छमे दिसीभाए माणिमेंह नामें उजाने होत्या बज्जनो ॥ १ ॥ शीसे में मिद्रिकार णमरीए जिस्मानु नार्म राजा होत्या बनाओ ॥ ३ ॥ तस्म न जिससन्हरून रज्यो भारियाँ यामें देवी इत्या क्लाको ॥ ४ ॥ तेल काकेर्ण तर्थ समर्थ्न तम्म समाज सामी मसीमढे परिसा विकास अस्तो कडिओ परिसा पढियवा बाद राजा जानेन विसि पाडकमूए तानेव विसि पडियए ॥ ५ ० वर्ण कालेनं तमें समर्ग समयस्य मगबनो महाबीरस्य केंद्रे कतिवासी इंदर्म्ह वार्य क्रणमारे गोबने मीतिर्व समुत्सेहे धमकारंगर्थठागरंठिए वजारिसहवारावर्यवयमे बाद एव वयाती-सा **वर्ड त वहीनड्डी मुहतार्थ आदितित थएजा है ता बद्धारम्मानीसे मुहत्तमर् सत्तानीसे** च चड्डिमाने सङ्क्तस्य आहितेति चतुना ॥ ६ ॥ ता चया चं स्टीए सम्मानंतराजी मैं-बाओ धन्यवाहिर संडक्षे जनसन्तिता चार चरह सम्बदाहिराको संडत्सको सम्बद्धांतर संदर्भ तक्तकानिया चार चरह एस में कहा केन्द्रवं राईरिसमीचे माहितेति वएका है ता विभिन्न छान्द्वे रावंदियसए रावंदियसोनं जाहितेति वस्मा । ७ ॥ ता एवाए अहाए सरिए क्यू मेंडक्क चरह, क्यू मेंडकर दुनचाये चरह, कर सडकाई एगान्यतो चरहा ता चुक्कीये संस्कासमं चरह, वासीह मेंडक्समं हुस्बुत्तो परम्, तैयहा-विश्वज्ञममाने चेव पत्रिसमाने चेव हुने य पह मंडमाई छई चरह, रांबहा-सम्बद्धांतर चेव मंडक सम्बदाहिर सेव मंडर्फ B 4 B बद् राज रुस्तेन मादवस्य स्वन्ध्ररस्य सम् बद्धारस्थातुरे प्रेवरे भवर क्द महारसमुद्रुता राहे मनद सर्थ गुवारसमुद्रुते विवधे सन्द सर्व दुवाक्स-सङ्गा राई मन्द्र, प्रथमे क्रम्मासे अलिव अद्वारसमुद्धता राई, गरिव अद्वारसमुद्धते विवर्धे जरित दुवास्त्यमुकुत्ते विवर्धे जरित दुवालसमुक्कता राई सबह, बोबे क्रम्माचे करिय स्ट्रारधमुद्दुते वित्रये अस्य अद्वारधमुद्दुता राई, अस्य दुवाव्यमुद्दुता राहे, नरिन दुवास्प्यसुङ्कृते दिवसे अवह, प्रन्यों वा झम्मासे वोन्ने वा झम्मासे वरिन

रामरासमुद्रोत विक्ते अनव, व्यक्ति कागरासमुद्राम छो अवद तत्त्व या है है व बद्धा । या असलां केतृषि १ सम्बाधिकामुद्रामं सम्बाधिकारण बात विरोध-विद्यु धीरकोकां प्रकारी या बसा या स्त्रीय सम्बाधिकां स्वरामिता बार व्यक्त स्त्रा मं तामप्रकृति वहोश्य अक्तरसमुद्रोत विक्रों अवद, व्यक्तिना दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, से णिक्खममाणे स्रिए णव सवच्छरं अयमाणे पढ-मंसि अहोरत्तिस अब्भितराणतरं मडलं उवसकिमत्ता चार चरइ, ता जया णं स्रिए अव्भितराणतरं मङल उवसकमित्ता चारं चरड तया ण अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगद्विभागसुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालससुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगद्विभाग-मुहुतेहिं अहिया, से णिक्खममाणे सुरिए दोचंसि अहोरतंसि अब्भितरं तचं मडलं उवसकिमत्ता चारं चरइ, ता जया णं स्रिए आर्ट्सतर तच मडल उवसकिमत्ता चारं चरड तया ण अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवड चर्डाह एगट्टिभागमुहुत्तेहिं सणे, दुवाल-समुहुत्ता राई भवइ चर्डाहें एगद्विमागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खङ एएणं उवाएण णिक्खममाणे सूरिए तथाणतराओ० मङलाओ मङल सकममाणे २ दो २ एगट्टिभागसुहुत्ते एगमेंगे मडले दिवसखेत्तस्स णिवुद्दुमाणे २ रयणिखेत्तस्स अभिवुद्देमाणे २ सन्ववाहिर-मडल उवसकिमता चार चरह, ता जया ण स्रिए सन्वन्भतराओ मंडलाओ सन्त-वाहिरं मडलं उवसकमिता चार चरइ तया ण सव्वन्भतरमंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइदियसएण तिण्णिछानद्वएगद्विमागमुहुते सए दिवसखेतस्स णिवुङ्गिता रयणिक्खेतस्स अभिवृद्धिता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ता उक्कोसिया अट्टार-समुहुता राई भनइ, जहण्णए वारसमुहुते दिवसे भनइ, एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे । से पविसमाणे स्रिए दोच छम्मास अयमाणे पढमिस अहोरत्तसि वाहिराणतर मंडल उवसकिमत्ता चारं चरइ, ता जया ण सूरिए वाहिराणतर मडल उनसकिमत्ता चारं चरइ तया ण अद्वारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगडिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुते दिवसे भवर दोहिं एगडिभागमुहुतेहिं सिहए, से पविसमाणे स्रिए दोचंसि अहोरत्तिस वाहिर तच मडल उवसकिमत्ता चारं चरइ, ता जया ण स्रिए वाहिर तच मडल उवसकमिता चारं चरइ तया ण षद्वारसमुद्वता राई भवइ चडिह एगद्विभागमुद्वतेहि ऊणा, दुवालसमुद्वते दिवसे भवड चर्डाहें एगडिभागमुहुत्तेहिं अहिए। एव खलु एएणुवाएण पविसमाणे स्रिए तयाणतराओं तयाणंतर महलाओं मडल सकममाणे २ दो दो एग हिमागसुहुत्ते एगमेगे मङ्ळे रयणिखेत्तस्स णिवुहुमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवहुमाणे २ सन्वन्भतर मंडल उवसकिमता चार चरइ, ता जया ण सृरिए सन्ववाहिराओ मङलाओ सन्वन्भतर मंडल उवसकमिता चारे चरइ तया णं सन्ववाहिर मडल पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएण तिण्णिछाबद्धे एगद्विभागमुहुत्तसए रयणिखेत्तस्स निवृिष्कृता दिवस अभिविद्विता चार चरइ, तया ण उत्तमकडुपते उद्दोसए अट्टारसमुहुते दिक् जहण्णिया दुवालममुहुत्ता राई भवइ, एस ण दोन्ने छम्मासे, एस ण 🦫

दर एक तस्वे नावस्य क्षेत्रकरास सर्व न्यास्त्रपुर्व दिस्ती मार स्व न्यास्त्रपुर्व विद्य क्षेत्रपुर्व द्वासम्पर्व क्षेत्रपुर्व क्षित् व्यासम्पर्व क्षेत्रपुर्व क्ष्य व्यासम्पर्व क्ष्य क्ष्य व्यासम्पर्व क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य व्यासम्पर्व द्वासम्पर्व क्ष्य क्ष्

मंडमरंदिर्दे पन्नता राजहा-शाहिमा चन अदमंडसरंदिर्दे उत्तरा चन सदमंडमर्च-ठिदै । ता कई ते शारिनभद्यमञ्चनंठिई आदितादि वर्जा है ता अवस्यं बंदूरीये **धीवै सम्बर्धेवसमुद्दार्ण जाव परिचलेवेर्ण** का बया व्यं सुरिष् सम्बंकर दाहिमं नद मेहमसंदिर्व उदसननिता चारं चरह तवा वं उत्तयसङ्ख्यते उहाेसए शहरसस्हरे दिवसे सबह, बहुन्जिया तुवाक्रसमुबुक्ता सर्वे सबह, से व्यवस्थानाचे सुरेए वर्ष संबद्धारं अवमाने पद्मांति बहोरतीति दाविनाए अंतराए मागाए तस्ताहपएसाए अधिमतराजंतरं उत्तरदर्भडळं सर्व्वि उवसेकमिता बारं बरह, बबा में सुरेप समिन तरानंतरं उत्तरं अदमेबक्रवेद्धिं उन्हेब्सीता चारं चरह तना र्ण बद्धारस्पुडुते(🗷) विवसे समझ दोहि एगद्विमागमुक्कोहि कने जुनाससमुक्कता राई दोहि एगद्विमान-सक्तोहें विदया से विस्ताममाने स्रीए दोनंति बहोर्सांस इतराए अतराए मामाप् रुत्साइपएसाए अस्मितरे तथे दाहिणं अदमेहकं संदिहं स्वसंदर्भिता चारे चरह । देश करा में सुनिए अस्मितरे तर्च बाहिमें अक्सेंडर्स संदिई उपसेरितिश चार चरइ तथा वं सङ्कारसमुद्धतं विवसे मन्दर चनहीं एवड्डिमायमुङ्कतेही प्राने दुवास्त्तमुद्भुद्भा राहे अनद्भ चलहि एगद्विमायमुद्भुतेहि सदिया एवं बद्ध एएवं उदाएम <del>विक्तवा</del>मनाणे सूरिए तमर्गतराओऽर्गतरीक्ष तेति १ देसीर र्त तै *व*द संबद्धचित्रं चरममाणे २ बाहिबाए २ असराए मानाए तस्याद्रप्रसाए ए<del>प्य</del> बाहिर उत्तरे व्यक्तरंडक्संद्रिहं उक्सनमिता बारे बरह, ता बना वे स्पेए सम बाहिर उत्तरे श्रदमेडकर्सटिई धर्वर्धक्रियेता चार चछा तथा वे उत्तमबद्वपता स्को रिमा **बद्धा**रस<u>मुद्</u>रता राहे भक्त, बङ्क्यए हुवाकरसहुद्वते दिक्छे भक्त । एस वी

पढमे छम्मासे, एस ण पढमछम्मासस्स पज्जनसाणे, से पविसमाणे स्रिए दोच छम्मास अयमाणे पढमिस अहोरत्तंसि उत्तराए अतरभागाए तस्साइपएसाए वाहि-राणतरं दाहिण अद्धमंडलसिटइ उवसकमित्ता चार चरइ, ता जया ण स्रिए वाहिराणतरं दाहिणअद्धमंडलसिठइ उवसकिमत्ता चार चरइ तया ण अद्वारससु-हुत्ता राई भवइ दोहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगडिभागमुहुत्तेहिं अहिए, से पविसमाणे सूरिए दोचिस अहोरत्तिस दाहिणाए अत-राए भागाए तस्साइपएसाए बाहिरतरं तचं उत्तरं अद्धमङलसिठइं उवसकमिता चारं चरइ, ता जया ण स्रिए बाहिरं तचं उत्तर अद्धमंडलसिटई उवसकिमता चार चरड तया ण अद्वारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं सहिया, एव खल्ल एएण उवाएण पविसमाणे स्रिए तयाणतराओ तयाणंतर॰ तसि २ देससि त त अद्भंडलसिठइ सकममाणे २ उत्तराए अतराभागाए तस्साइपएसाए सन्वन्भ-तरं दाहिण अद्भाडलसिंठई उवसकमिता चारं चरइ, ता जया ण स्रिए सव्वन्ध-तर दाहिण अद्धमंडलस्ठिइ उवसकिमता चारं चरइ तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे मवइ, जहिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एस ण दोचे छम्मासे, एस ण दोचस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस ण आइचे सवच्छरे, एस ण आइचसवच्छरस्स पज्जवसाणे ॥ १० ॥ ता कहं ते उत्तरा अद्भाडलसिंठई आहि-ताति वएजा १ ता अय ण जंबूदीने दीने सन्वदीन जान परिक्लेनेण, ता जया ण स्रिए सन्वन्भतर उत्तर अद्भगडलसिंठइ उवसकिमता चार चरइ तया ण उत्तम-क्टुपत्ते उक्कोसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवड्, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई मवइ, जहा दाहिणा तहा चेव णवर उत्तरिष्ठओ अन्मितराणतर दाहिण उव-सकमइ, दाहिणाओ अब्भितरं तच उत्तर उवसकमइ, एवं खळु एएण उवाएण जाव सन्ववाहिर दाहिण उवसकमइ सन्ववाहिर दाहिणं उवसकमिता दाहिणाओ वाहिराणतर उत्तर उवसकमड, उत्तराओ वाहिर तच दाहिण तचाओ दाहिणाओ सकममाणे २ जाव सन्वन्भतरं उवसकमइ, तहेव। एस ण दोचे छम्मासे, एस ण दोचस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस ण आइचे सवच्छरे, एस ण आइचस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे, गाहाओ ॥ ११ ॥ पढमस्स पाहुडस्स वीयं पाहुड-पाहुडं समत्तं॥ १-२॥

ता के ते चिण्ण पडिचरइ आहितेति वएजा १ तत्य खलु इमे दुवे सूरिया पन्नता, तजहा-भारहे चेव सूरिए एरवए चेव सूरिए, ता एए ण दुवे सूरिया पत्तेय २ तीसाए २ मुहुत्तेहिं एगमेग अद्धमडलं चरति, सट्टीए २ मुहुत्तेहिं एगमेगं

[ चंदपन्नवी सचायमे मंडक संपार्यति ता विकयासमाणा श्राह्म एए तुनै सूरिना थो काव्यसन्यस्य किन्नै पविष्यरंहि पविसमाणा कार्य एए बुवे सुरिया अन्यमध्यस्य विजयं पविष्यरंहि है

...

सममेर्ग भोबार्स तत्व के हेळ ति वर्ष्णा है ता अमर्ज संबूधीने १ बाद परिस्के वेनं तत्व जं क्षम भारहए पेव श्रीर वंश्वीतस्य २ पाईचपर्येणायस्वरीच-दाहिजामगाए जीवाए मैडके करवीसपूर्ण रापूर्ण केता बाह्वजपुरस्पिमिर्हास कर-मागर्गंडरंसि बाजरहयम्रियसयाई जाई अप्यया चेव विकास प्रक्रितरह, उत्तरपन लिमिज्ञी क्वमागर्मक्रमेरी एकाणवर्ष सरिवसवार्ध बाह सुरीए क्रमानी जेन किर्मा पतिचरह, तस्य में कर्म मारहे सुरिए प्रवमस्य श्रुपितस्य जेव्छीवस्य २ पाईक पद्मैजायनाए उद्योजदाहिणानबाए जीवाए अञ्च अत्वीसएवं सएनं छेता उत्तर पुरत्विमिर्गति करमागमकमेति वाणर्व्हं सुरियमबाह नाथ सुरिए परस्य निर्म पहिचार बाहिनक्वित्रिक्ति चनमायमङ्ग्लेख एगूचमनई सुरिक्तमाई वर्ष सुरिए परस्स क्षत्र जिल्ला पहिचारा, तस्त्र में कर्न एरवए सुरिए चंत्रुरीनस्य १ पाईचपद्मेषायमाए उदीलदाहिजाननाए बीनाए संवर्ध करनीसएन सएन हेच्य उत्तरपुरत्विमिक्नेति चाउवमागर्मप्रसंधि वाचउई सुरैयमयाई जाव सुदेए अपनो येव निर्ण परिचर, वाहिणपुरलिमिकंति चटमागर्गडकंति एकाणवर्ड सरियमगर्द आव सुरिए अप्पन्नो चन चिण्णं पहिचरह, तत्थ णं वनं एरवहए सुरिए मार्यस्स स्रियस्य जेवूरीवस्त २ पाईणपरीणायवाए सरीणदाहिकासमाए बीवाए मंडर्म वटबीसपूर्ण सपूर्व केता दाहिकाबारिकमिनेति वटमायमंडसंस बाबटर् स्रियमकर स्रिए परस्म बिज्यं पविषदः, उत्तरपुरत्विमिर्गसः वदमागमेडकंसि एकानदर्व सुरियमबाई जाई सुरिए परस्त यन विष्णं पविषयः, हा किन्नाममाना 🕾 पए दुवे स्तिया यो अञ्जनणास्य विर्ण्यं गडिवरंति पविस्तामा रस्त एर दुवे सुरिवा भाज्यसञ्ज्ञस्य विकलं पविकारित रायमेनं कोवासं । नाहासो ॥ १९ ॥

ता कंपरनं एए वृषे सुरिना अज्यानज्यस्य अंतरं बहु बारं बर्शन आहितादि बएआ र तत्य राजु इसाओं छ पविज्ञतीयों पञ्चताओं तंत्रहा-तत्व एगे एवमा-दंग-ना एगं जीवनसहरस एगं च तेतीस जीवयसमें अञ्चयन्त्रस्य अंतरं की सुरिया चारं चरेनि आहिताति वएका एगं एउनाईंगु १ एगे पुत्र एवमाईंगु-ता एगं अज्ञासहरूरं एमं च चवतीरं जोमवानवं अञ्चमध्यस्य अंतरं कृतु सुरिया चारं चर्रित बाहितानि वर्णमा एगे एवमाईत » एगे पुत्र एमगाईग्र-ना एगे जोवन शहरतं पूर्वं च पनतीतं जीवनायं अन्यक्षणसम् अंतरं वह मृदिया चारं चरेति

पढमस्य पादुङस्य सङ्ग्रं पादुङ्गपादुङ्गं समर्थं ४ १-३ 🏾

आहिताति वएजा एगे एवमाहस ३, एवं एग दीव एगं समुद्दं अण्णमण्णस्स अतरं कट्टु ४, एगे दो दीवे दो समुद्दे अण्णमण्णस्स अतर कट्टु स्रिया चार चरित आहिताति वएजा एगे एवमाहसु ५, एगे तिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे अण्णमण्णस्स अतरं कडु स्रिया चार चरति आहिताति वएजा एगे एवमाहसु ६, वय पुण एवं वयामो-ता पच पंच जोयणाई पणतीस च एगद्विमागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अतरं अभिवहुमाणा वा निवहुमाणा वा स्रिया चार चरति०। तत्य णं को हेऊ आहिएति वएजा १ ता अयण्ण जंबूदीवे २ जाव परिक्खेवेण पण्णते, ता जया ण एए दुवे सूरिया सन्वन्भतरमङल उवसकमित्ता चार चरति तया ण णवणउइजोयणसहस्साई छचचताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर कट्ट चार चरति आहिताति वएजा, तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, ते णिक्खममाणा सूरिया णव सवच्छर अयमाणा पढमिस अहोरत्तिस अव्भितराणतर मङ् उवसकमिता चार चरति, ता जया ण एए दुवे स्रिया अध्भितराणंतरं मडल उवसकमिता चार चरंति तया ण णवणवइ जोयणसहस्साइ छच पणयाले जोयणसए पणवीस च एगद्विभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चारं चरंति आहिताति वएजा, तया ण अद्वार-समुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगिट्टमागमुहुत्तेहि ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवड दोहिं एगडिमागमुहुत्तेहिं अहिया, ते णिक्खममाणा सूरिया दोचिस अहोर्त्तसि अब्भितरं तच महल उवसकिमता चार चरति, ता जया ण एए दुवे स्रिया अब्मितरं तच मंडल उवसकमित्ता चारं चरति तया ण वणणवइ जोयणसहस्साइं छचड्छावण्णे जोयणसए णव य एगद्विभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अतर कहु चार चरति आहिताति वएजा, तया ण अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चडहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खलु एएणु-वाएण णिक्यममाणा एए दुवे सूरिया तओऽणतराओ तयाणतरं मङलाओ मङल सकममाणा २ पच २ जोयणाइ पणतीस च एगडिमागे जोयणस्स एगमेगे मडछे अण्णमण्णस्स अतर अभिवड्ढेमाणा २ सन्ववाहिर मडल उवसकिमत्ता चार चरंति, ता जया ण एए दुवे स्रिया सन्ववाहिर मङ्क उवसकिमता चारं चरंति तया ण एग जोयणसयसहस्स छन्न सट्ठे जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर कट्टु न्वारं चरति, तया ण उत्तमक्ट्रपत्ता उक्कोसिया अद्वारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुते दिवसे भवर, एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, ते पविसमाणा स्रिया दोचं छम्मास अयमाणा पढमसि अहोरत्तासि भुचागमे

4

माजा स्रिया दोबंधि अहोरतेथि बाहिर तबं मेटलं उबसंद्रमिता बारं बरेवि ता कवा जे एए दुवे सुरिया नाहिरे तन मेडक जनसंत्रमिता चार वरंति तथा ने एमें भोजनसम्बद्धस्यं स्टब्स् अङ्गाके जोजनसम् नावन्तं च एगद्विमागे बीवमस्य मन्त्र मञ्चारस संतरं कडू चारं वरंति तथा व बहुत्त्वसुकूता राहे सबह चर्जाह हमाहि-मामसङ्केष्ट कमा ह्वाक्ससङ्को विक्ते अवह काई एमद्रिमागसङ्केष्ट बाईए । एवं दस्स एरखवाएकं पविसमाचा एए तुवे सुरिया तकोऽजंतराओ तवाबंतरं मंड माओ मंडर्क उनर्यन्त्रममाना २ पेच २ कोयपाई पलतीसे एसडिमाने ब्येयनस्य एगमेंगे मंडके अन्यमण्यस्थेतरं निवृद्देमाया १ सम्बन्धंतर्गंडसं उपस्कानता बार परंदि ता कवा ने एए इने सरिया सम्बन्धतर अंबर्ध उनसंख्याता कर नरी तवा मं नवपरक्षोत्रयसङ्ख्यातं छना नताके जोगनसए सन्यस्त्रयस्य संदर्भ गा बारं बरति तवा वं उत्तमऋपते श्रद्धोसए बहुररसमुद्धते दिवसे मन्द्र बहुन्मिया कुना<del>वरामुद्रुक्ता राहे</del> भक्त, एस व दोने अम्मासे एस व होन्यस्स अमासस्स प्रजनसामे एस ने आह्नो सनस्करे एस ने आह्मसंगरकरस्य प्रजनसामे ॥ १३॥ प्रधासस पाइक्स भवत्यं पाइक्पाइकं समर्थ ॥ १-४ ॥

ता केम्बर्स दें शर्म ना समुद्दं हा ओगादिया शुरिए चार चरह आहितारी वएका रे राज बद्ध इसाओ पंच पविज्ञतीको प्रव्यक्तस्मी र्य --तरुप प्री एंसमाहर्ष-ता को कोशमसहस्य कृषे व तेतीस कोनवसर्व की वा समुद्दं का कोगाहिता स्<sup>हेर्</sup> बार बरह १ एगे पुण एक्साइस-शा एवं ओवकसहरस एय व बनती से बोनकसर्व रीनं वा समुदं वा कोगाविता सरिए बार बराइ एने एवमार्द्ध र पूर्ने प्रव एवमा हेंसु-ता पूर्व कोनलसहस्स पूर्व व पनतीस कोयवसर्व हीनं वा समुद्दे वा बोपाहिता सुरिए चार करा एने एकमाइस १ एने पुण एकमाइस-ता अवर्ष श्रेणं वा समुद्रं वा कोगाहिला सुरिए भार करा प्रे प्रवाहित ४ वरो पुर्व प्रवाहित हा वो किन बीनं वा समुद्दं वा कोमाबिता परिए बार बरह ५ तत्व के दे एवमार्टस-ता एमें जोजनसङ्स्यं पूर्ण क हेतीस जोनकसर्व बीर्व वा समुद्दं वा ओगाहिता स्हिए कार करा. ते एवमाईछ-ता कवा नं ध्रीए सम्बन्धीतरं संबर्क उथस्क्रमिता बारं चए ध्रमा

णं जवूदीवं २ एगं जोयणसहस्स एगं च तेत्तीस जोयणसय ओगाहिता स्रिए चार चरइ, तया ण उत्तमकद्वपत्ते उद्योसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवा-लसमुहुत्ता राई भवइ, ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकिमत्ता चार चरइ तया ण लवणसमुद्द एग जोयणसहस्स एगं च तेत्तीस जोयणसय ओगाहिता चारं चरइ, तथा ण उत्तमकट्ठपता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ । एव चोत्तीस जोयणसय । एव पणतीस जोयणसय । तत्थ जे ते एवमाहसु-ता अवह दीवं वा समुद्द वा ओगाहिता स्रिए चार चरइ, ते एवमाहसु-ता जया ण स्रिए सन्वन्भतर महल उत्रसकमिता चार चरइ तया ण अवहु जवूदीव २ ओगाहिता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमु-हुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एव सव्ववाहिरएवि, णवर अवहु लवणसमुद्द, तया ण राइदिय तहेव, तत्य जे ते एवमाहंसु-ता णो किचि दीव वा समुद्द वा ओगाहिता स्रिए चार चरइ, ते एवमाहसु-ता जया ण स्रिए सम्बन्भतर मडल उवसकिमत्ता चार चरइ तया णं णो किंचि दीवं वा ससुद्द वा भोगाहिता स्रिए चार चरइ, तया ण उत्तमकहुपत्ते उक्कोसए अद्वारसमुहुते दिवसे भवइ तहेव एव सन्ववाहिरए मडले णवर णो किंचि लवणसमुद्द ओगाहिता चारं चरइ, राइदिय तहेव, एगे एवमाइस ५॥ १४॥ वय पुण एव वयामो-ता जया ण स्रिए सन्वन्भतरं मङ्क उवसकिमत्ता चारं चरइ तया णं जवूदीव २ असीय जोयण-सयं ओगाहिता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपते उक्कोसए अद्वारसमुहुते दिवसे मवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एवं सव्ववाहिरेवि, णवर लवणसमुद्द तिण्णि तीसे जोयणसए ओगाहिता चार चरइ, तया णं उत्तमकट्टपता उक्कोसिया यद्वारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, गाहाओ भाणिय-वाओ ॥ १५ ॥ पढमस्स पाहुडस्स पंचमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१-५॥ ता केवइय (ते) एगमेगेण राइदिएण विकंपइता २ सूरिए चारं चरइ आहितेति वएजा १ तत्य खलु इमाओ सत्त पिंडवत्तीओ पण्णत्ताओ, त०—तत्थेगे एवमाहसु-ता दो जोयणाइ अद्भुचतालीस तेसीयसयभागे जोयणस्स एगमेगेण राइदिएण विकपइत्ता २ सूरिए चारं चरइ० एगे एवमाहसु १, एगे पुण एवमाहसु-ता असूह-जाइ जोयणाई एगमेगेणं राइदिएण विकपइत्ता २ स्रिए चारं चरइ० एगे एवमाहसु २, एगे पुण एवमाहसु-ता तिभागूणाइ तिष्णि जोयणाइ एगमेगेण राइदिएणं विकप-इता २ सूरिए चारे चरइ० एगे एवमाहसु ३, एगे पुण एवमाहसु-ता तिण्णि जोयणाइ अदसीयालीस च तेसीइसयमागे जोयणस्स एगमेगेण राइंदिएण विकंप-

141 सचागमे [ चंद्रपञ्चती इता र स्रिए कार करह एगे एकमाईश्च ४ एगे पुत्र एकमाई<del>श्च</del>रा अनुद्राहं जोमणाई एगमेंगेय रहंदिएमं विश्वंबाधा २ स्रिए चारं चरह एसे एवमाईस 🐦 एने पुण एक्साइंस-ता अतब्सागुलाई चतारि जोशनाई एससेनेज रहेक्एच निकंपहता २ स्रिए चारे चरह एगे एवमाईछ ६ एगे पुण एवमाईछ-ता बतारि जोनजाई करवानकों च रोसीइसबमाने जोनजस्य एगसेनेवं राईदिएल विश्वंत्रज्ञा १ सरिए बार बरह एने एवमाईस ७ । वर्ग प्रच एवं बमामी-सा हो बोमपाई बाहबारीस च एसहिमाने बोबबस्स एममेनं मंडलं एममेनेमं रहंपिएमं विसंवाता १ सरिए बार बरह तत्व में को हेऊ दि बएका है दा अवन्त अंबुरीने ए जान परिक्कोबेलं प्रश्नते ता कथा वं सुरिए सम्बन्धनर शंडकं उक्सेरमिता बार बरह त्या मं उत्तमकद्वपते उद्योशप् बद्धार्धसङ्घते दिवसे भवड् बङ्ग्णिमा दुवाकसमुहता राई सबद, से जिल्लाममाने सुरिए जब संश्वाहरं जनमाने जडमंति बहोरतीय अभितराजेतर मंडक उनसक्तिता नारं करह, ता क्या में सुरिए अस्मितराक्तर संबर्भ उपसंज्ञानाः चार चल तवा भे दो जोवजाई शबबाठीसं च एमहिमागे जोबनस्य एरेन् राहरिएनं निरंपाता चारं चरह, तथा वं अदारसमुहत्ते विक्रे मबद दोही एगदिमायमुद्रदेशी कने बुबाकसमुद्रता राई भवद दोही एगदिमाय-

सहरोहें अहिवा । से नियदानमाचे स्रीए दोचेरि अहोररांसि वस्थितरं तर्व मंडल उदसरमिता बारं चरह ता बना वं सुरेए अस्मितरं तवं संस्मं उदसंस्मिता चारं चरइ तमा न पंच जोवनाह प्रमुतिशं च एपट्टिमागे जोवपस्य होहें रहंपिएहैं विकंपहता १ चारं करह, तथा वं अद्वारसमुद्धते विक्से मनइ कडाई एनद्विमान्स इतेहीं कने दुवाससमुद्भता राहै सक्त चटहि एगद्विमागमुहतेहि बहिया एवं यह एएणं उदाएन विस्थासमाचे शरिए तमार्थतराओं तमार्थतर मंडसम्बो मंडलं संस् समाने २ दो २ जोनवाई वहशालीसं च एगद्विभागे जोनवरम एगमेपं में की प्रामेनेन राहेरिएमं विस्पानि र सम्बन्धिंहरं गंडकं सबसंत्रमिता कार करहे ती अया चं सुरिए सम्बन्धंतराओं संदक्षाओं सम्बन्धिर मेटक उपसन्तिया बारे बरह तमा ने सन्बन्धतरं मैडकं पविद्यास पूरीयां तेसीएलं राईश्विसएमं पंचदत्रतार कारणसम् विकेटरता २ चारे चरह, तथा में उत्तमक्रुपता उद्दोशिया अङ्गारसमुद्रुपा राई भवड, जहरूपए दुवलस्त्ममुहुते विवसे भवड, एस वं पत्रमध्यमासे एस वं पदमारम्मासस्य पञ्चवताचे से य पनिसमाचे स्रिए दोचे प्रम्मासं व्यसाचे वर्जारी अहोरतीम बाबिराणंतरं मंडकं डवर्सनमिता चारं चरह, ता जवा वं सरेए बाहिराजंतरं मंडकं उवधरनिया चारं चरड् तमा नं दो दो बोजंबनारं सहसार्धर्य

च एगद्विभागे जोयणस्स एगेण राइंदिएण विकपइता २ चार चरइ, तया णं अद्वारसमुहुत्ता राई भवइ दोहि एगद्विभागमुहुत्तिहिं छणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहि एगद्विभागमुहुत्तिहिं अहिए, से पिवसमाणे स्रिए दोच्चिस अहोरत्तिसे वाहिरतच्चिस मडलंसि उवसकिमित्ता चार चरइ, ता जया णं स्रिए वाहिरतच्च मडलं उवसकिमित्ता चार चरइ तया ण पंच जोयणाइं पणतीस च एगद्विभागे जोयणस्स दोहिं राइदिएहिं विकपइता २ चार चरइ, राइदिए तहेव, एव खल एएणुवाएण पिवसमाणे स्रिए तओऽणंतराओ तयाणतर च ण मडल सकममाणे २ दो २ जोयणाइ अटयालीस च एगद्विभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइदिएण विकपमाणे २ सव्ववभतर मडल उवसकिमित्ता चार चरइ, ता जया ण स्रिए मञ्जाहिर राओ मडलाओ सव्ववभतर मडल उवसकिमित्ता चार चरइ, ता जया ण स्रिए मञ्जाहिर राओ मडलाओ सव्ववभतर मडल उवसकिमित्ता चार चरइ तया ण सव्ववाहिर मडलं पिणहाय एगेण तेसीएण राइदियसएण पचदसुत्तरे जोयणसए विकपइत्ता २ चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्वोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालममुहुत्ता राई भवइ, एस ण ढोचे छम्मासे, एस ण दोचस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइचे सवच्छरे, एस ण आडचस्म सवच्छरस्स पज्जवसाणे॥ १६॥ पढमस्स पाइडस्स छहं पाहुडएगाहुडं समन्तं॥ १–६॥

ना वह ते मंडलसिठंड आहिताति वएजा १ तत्य प्रलु इमाओ अट पिड-वत्तीओ पण्णताओ, त०-तत्येगे एवमाहनु-ता मन्वावि ण मडल्वया समयटरस-सठाणसिट्या पण्णता एगे एवमाहनु १, एगे पुण एवमाहनु-ता सन्वावि ण मडल्वया विसमचडरसमठाणसिट्या पण्णता एगे एवमाहनु २, एगे पुण एवमा हनु-ता गन्वावि ण मडल्वया समचडयोणसिट्या पण्णता एगे एवमाहनु ३, एगे पुण एवमाहनु-ता सन्वादि ण मडल्वया विसमचडयोणसिट्या पण्णता एगे एव-गाना ४, एगे पुण एवमाहनु-ता मन्वावि ण मडल्वया समचयालसिट्या पण्णता गगे एवमाहनु ५, एगे पुण एवमाहनु-ता नन्वावि ण मडल्वया विसम-गाना पण्णता एगे एवमाहनु ६, एगे पुण एवमाहनु-ता नन्यावि ण गान्याव पण्णता एगे एवमाहनु ६, एगे पुण एवमाहनु-ता नन्यावि ण गान्याव पण्णता एगे एवमाहनु ६, एगे पुण एवमाहनु-ता नन्यावि ण गान्यावि ण गान्यावि एगे गान्याविया पण्णता एगे एवमाहनु ८, तत्य जे ते प्यमाहनु-गा नन्यावि ण मंडल्यया उत्तागारमिट्या पण्णता एग्ण णएणं पानु उत्तर सन्तमे पानु उपानु से समत्ते॥ १०॥।

क ज्यान म महत्वाम पेत्रस्य पार्रोण पेत्रस्य आयामनिस्यमेण पेत्रस

**चित्र**पञ्जकी

परिच्चेनेर्ग माहिताति भएजा है सत्य प्रमु इमाओ तिकिन पविश्वांको प्रन्मवासी र्वजहा-तत्येगे एक्साईग्र-ता सम्बान में मंडक्कना ओवर्च माहक्रेम हर्ग जोनक सहस्यं एरं च तेत्तीर्थ कोयणसर्गं आयामनिक्संमेणं तिक्ति कोयससहसाई विकि

448

य जबसङ्ख् ओय्यसण् परिक्केबेल पञ्चला एने एवमाईस १ एने पुज एक्सा-इ.सु-ता सन्नामि वं मैडसनमा जोयर्च नाहतेर्यं पूर्व जोयनसहरसं पूर्व व वठ-धीर्र जोगनसर्गे मामागरिक्ष्वेमेणे विभिन्न जोनपरवरसर्वे जतारि विउत्तर व्यवस-सए परिक्रवेदेनं फलता एंगे एक्साईस २ एगे पुण एक्साईस~ता क्रोस्पं बाई

हैनं एर्ग कोनपरहरूसं एम 🔻 रणतीसं जीनजसर्व आशामनिक्सोनेश तिकित कोमज-

सहरक्षतं चतारि व पंचुकरे बोबक्कप प्ररक्षिकेचं पञ्चक्त एगे प्रवसक्षत ३ वर्ष प्रण एवं वजामी-ता सम्बानि न मैडसबया शहयातीसं च एमद्रिमाने जीवनस बाहरेनं अभिक्या सामामन्त्रचेनेणं परिच्चेनेण शा**ह**रादि बएजा स्टब नं वी

हें छ दि वएना है ता असण्य पंत्रुचीवे २ बाव परिज्येनेयं दा बसा में सुरिए धम्बन्नेतरं नंडमं उन्धंकमिता चारं चर्फ दया वं सा मंडसक्या अहनासीस च एसद्विमारे औमणस्य नाक्ष्मेर्य जनगर्ज बोसपरहस्साई छन बताके कोमणसप् मासामनिष्यामेणं विक्ति वोक्यस्यसन्तरसर्ह पण्यरसवीयनसङ्स्तह प्रमूणनवर् नोयगार्ड किनिमिसाहिए परिक्येवेर्च तया व उत्तमस्ट्रपते वहोसए अद्वारस-

सङ्क्षे निवसे मन्द्र, बहुन्निया हुवाससमुद्रका एई सब्द, से निक्यममाचे स्रिए भवं सक्तकरं अपमाने पर्कास अहोरतीस व्यक्तिसारायंतरं संदर्भ उवसंक्रिया चारं चरह, ता बबा में चरिए अस्मित्तरार्वतरं मेटकं उपसंक्रमता चारं चरह तया गं था मंबसम्या सम्बाधीत च एयक्किमाने कोनकस्य बाह्येयां सम्बन्ध चौनजसहरसक एक वनगाडे कोसनस्य वनतीर्थं व प्लाहेमाने बोक्नस्य

क्षीजनसर्व किनिसिसर्व परिक्कोबर्व तथा व विकारकप्यमार्व तथेन। से पिक्कसमाथे पुरिए कोचंछि अहोरत्तछ अभिंगतरं तर्च संबर्ध उवसंबर्धता चार चरह, ता क्या ने सुरिए सन्मित्र तर्व गंडले छवसेहमिता चार चरह त्रवा वे सा मैक्सबना अवनातीर्थं च एगद्विमागे खोयबस्य बाह्मीर्चं धनजवद्जीनर्च

सहरसाई क्रम एकान्त्रणे भोगणसम् मह ग एगद्विभागा जोजनस्य बाजामहिन्द मंग्रं शिक्ति बोमनस्यसहरसाई पन्यरस व सहरसाई एगं च पनशैसं बोमनसर्व परिक्योवेणं प्रव्यक्ता तथा में विवसराई तहेब एवं कह एएवं मध्यं विवसममाने

सरिए तबार्वतराम्यो तबार्वतरं मंदकामो मेडकं ठवर्धनममाने ९ देव क्येननाई

जायामनिष्यं मेर्च विभिन क्षेत्रकराज्यहर्साई पक्तर व स्वस्ताह एमं कारार

पणतीस च एगद्विमागे जोयणस्स एगमेगे मडले विक्खमवुह्वि अभिवह्वेमाणे २ अद्वारस २ जोयणाइ परिरयवुद्धि अभिवद्धेमाणे २ सव्ववाहिर मंडल उवसक मित्ता चार चरइ, ता जया ण सूरिए सन्ववाहिरमंडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण सा मडलवया अडयालीस च एगद्विभागा जोयणस्स बाह्लेण एग जोयण-सयसहस्स छच सहे जोयणसए आयामविक्खमेण तिण्णि जोयणसयसहस्साई अद्वारस सहस्साई तिण्णि य पण्णरस्ततरे जोयणसए परिक्खेवेणं०, तया णं उक्कोसिया अट्ठा-रसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पडमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, से पविसमाणे सूरिए दोश्व छम्मास अय-माणे पढमिस अहोरत्ति वाहिराणतरं मडलं उवसकमिता चार चरइ, ता जया ण स्रिए वाहिराणतर मडल उवसकमिता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडया-लीस च एगद्विभागे जोयणस्य बाह्रेण एग जोयणसयसहस्स छब चउप्पण्णे जोयणसए छव्वीस च एगद्विभागे जोयणस्स आयामविक्खमेण तिण्णि जोयणसय-सहस्साई अद्वारससहस्साइ दोण्णि य सत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णता, तया ण राइदिय तहेव, से पविसमाणे सूरिए दोचसि अहोरत्तसि बाहिर तच मडलं उवसकिमत्ता चार चरइ, ता जया ण सारिए बाहिर तच मडल उवसकिमत्ता चार चरइ तया ण सा मंडलवया अडयाठीस च एगट्टिमागे जोयणस्स वाह्रहेण एग जोयणसयसहस्स छन् अडयाले जोयणसए वावण्ण च एगद्विभागे जोयणस्स आया-मविक्सभेण तिष्णि जोयणसयसहस्साइ अद्वारससहस्साइ दोष्णि य अउयणातीसे जोयणसए परिक्खेवेण पण्णता, दिवसराई तहेव, एव खळु एएणुवाएणं से पवि-समाणे स्रिए तयाणतराओ तयाणतर मङलाओ मङल सक्तममाणे २ पच २ जोयणाइ पणतीस च एगद्विभागे जोयणस्स एगमेगे मडले विक्खभवुष्टिं णिनुष्टू-माणे २ अद्वारस जोयणाइ परिरयवुद्धिं णिवुद्धेमाणे २ सव्वन्भतर मडल उव-सकामिता चार चरइ, ता जया ण स्रिए सव्वब्भतर मडल उवसकामिता चार चरड तया ण सा मडलवया अडयालीस च एगद्विभागे जोयणस्स वाहहेण णवणउद जीयणसहस्साइ छच चत्ताले जोयणसए आयामविक्खमेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइ पण्णरम य सहस्साइ अउणाउई च जोयणाइ किंचिविसेसाहियाइ परिक्खेवेण पण्णता, तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवड, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एस ण दोचे छम्मासे, एस ण दोचस्म छम्मासस्स पञ्जवमाणे, एम ण आइमे सवच्छरे, एस ण आइचस्स सवच्छरस्स पजवसाणे, ता सन्वावि ण मडल-चया अडयालीस च एगद्विभागे जोयणस्स वाह्हेणं, सव्वावि ण मंडलतरिया दो

आहिताति पएका ता अस्मित्रराजो मॅन्सनवाजो वाहिर संबद्धवर्य वाहिराको वा वस्मितरं मंडसवरं एस न कहा केव्हवं आहिताति वएजा हैता पेववसुत्तरजोगम धए भाषिताति वएजा ता भन्भितराए भंडसवनाए नाहिरा संडसवना नाहिराओ मेडक्यमाओ अस्मितरा गेडसम्या एस य असा क्ष्मपूर्व साहिताति बएजा है ता वेचव्यत्तरे जोवनसर् अवयातीसं च एवश्विमाने जोननस्स आहिताति वर्या ता अस्मतराओं संबधनपानो बाहिरमैडकम्बा वाहिरायो अर्घ्यतरमैन्स्वया एउ वे अका केन्द्रमं काहिताति क्याचा ! ता पंचणनतारे कोमणसप तेरस *व एचडिमा*गे जीमयस्य जाहिताति वएजा ता जनिमतुराए मंडक्क्याए वाहिरा मंडस्क्या वाहि राए संबद्धम्याए जन्मित्रसंबद्धम्या एस न सद्धा क्ष्मार्थं जाहियादि क्एजा र वा पंचवकतरे चोवज्ञवय आहिताति वर्णा ॥ १८ ॥ प**दम**स्स पा**दुवस्स** अहुर्ग पाइक्पाइक समर्च ॥ १-८ ७ पदर्भ पाइक समर्च ॥ १ n ता नई रोरेक्टपई बाबिसारि वएका । स्टब यह इसको क्यू प्रवेवसीमी क्याताओं तं⊶तत्वेरो एवमाईछ~ठा प्रतिख्याओं खेवताओं पान्ने मरीई जामा-सपि चरित्रहा, से ण इसे विरिश्नं कोने विरिश्नं करेड विरिश्नं करेला प्रवास्थितीय कोर्यंतीय सामंत्रि रावं भागारंशि निर्मातह एगे एक्साईस १ पूर्वे ५ण एक्साईस-ता प्ररच्छि-माओ सोनंताओं पाओ शरिए मागासिस उत्तिहर, से वं इसं विदेश सोनं विदेश करेड़ करिता प्रवारिकारित कोर्यतीत स्थित कागार्थित निर्मासक एगे एनमार्वेड % एपे प्रण एवमक्क्य-ता प्रतिकालों कोवंदाको पामो सुरिए जाधार्यसि विद्यार धे नं इस विरिव क्रीर्य विरियं करेड़ ऋरिया क्वाल्यनंसि क्षेत्रसि सार्व सुरिए बागार्स अपुपनिस्त १ ता सहे प्रतिशामका सहे प्रतिशासकोता प्रमरति सन्त<u>रस्</u>प्रसिक् मामो कोर्यवाओ पामो सुरिए भागासीस सन्तिहर एग एक्साईस रे एगे उन एक्साईछ-ता प्ररत्निमाओं कोर्गताओं पाक्ते सुरिए पुरुषिधार्याचे वरिद्वार, से वं इसे शिर्म क्षेत्रं शिर्म करेड् करेचा पणिवासिकंश कोर्गतीय सार्व सरिए पुडानेकारीय विर्वासक एगे एनमार्टस ४ एगे प्रम एनमाईस-ता पुरश्विमान्त्रे कोनंताओ भानी सुरिए पुरुषिनार्थित वरिश्वर, से में क्ष्में विदियं स्मेने विदियं स्टेड करता पश्चतिकांति क्रोनेरीति सार्च सूरिए पुरुषिकार्यति अणुपनिसङ् अणुपनितिया अहे परिवासकार् १ ता पुगरवि भगरमुपुरस्थिमाओं कोर्नेताओं पाओं सूरिए पुरक्षिकानींश चरित्रहरू एरे एवमाईस ५ एने प्रण एकमाईस-सा प्रदक्षिताको धोर्नताको पाको स्टिप कार कार्यसि चरित्रम्, से ण इमं तिरिनं क्षेत्रं तिरिनं करेष्ट्र करेता प्रवास्थानि क्षेत्रेरीरि

पाओ स्रिए आउकायिस विद्धसइ एगे एवमाहसु ६, एगे पुण एवमाहंसु-ता पुरित्थ-माओ लोगताओ पाओ सूरिए आउकायंसि उत्तिहुइ, से णं इम तिरियं लोयं तिरिय करेड करेत्ता पचित्यमिस लोयंतंसि सायं स्रिए आउकायंसि अणुपविसइ २ ता अहे पिडयागच्छा २ ता पुणरवि अवरभूपुरित्यमाओ लोयताओ पाओ स्रिरए आउ-कायित उत्तिद्वड एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु-ता पुरित्थमाओं लोयंताओ वहुड जोयणाड वहूइ जोयणसयाई वहुइ जोयणसहस्साई उन्हु दूरं उप्पइता एत्थ णं पाओ स्रिए आगासिस उत्तिहुइ, से णं इम दाहिणहु लोग तिरिय करेइ करेता उत्तरहुलोय तमेव राओ, से ण इम उत्तरहुलोय तिरिय करेइ २ ता दाहिणहुलोय तमेव राओ, से ण इमाइ दाहिणुत्तरहुलोयाई तिरिय करेइ करेता पुरित्थमाओ लोयताओ वहूइ जोयणाड वहूइ जोयणसयाई वहूइ जोयणसहस्साइ उद्घ दूर उप्प-इता एत्थ ण पाओ सूरिए आगासिस उत्तिहुइ एगे एवमाहसु ८ । वय पुण एवं नयामो-ता जंबूदीवस्त २ पाईणपढीणाययउदीणदाहिणाययाए जीवाए मडलं चउ-न्वीसेण सएण छेता दाहिणपुरिच्छमंसि उत्तरपचित्यमिस य चडच्भागमङलिस इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ अह जोयणसयाई उहु उप्प-इता एत्य ण पाओ दुवे स्रिया॰ उत्तिद्वति, ते णं इमाइ दाहिणुत्तराइ जवूदीव-भागाइ तिरिय करेंति २ ता पुरित्थमपचित्यमाइ जवूदीवभागाइ तामेव राओ, ते ण इमाइ पुरिच्छमपचित्यमाइ जवूदीवभागाइ तिरिय करेंति २ ता दाहिणुत्तराइ जवू-दीवभागाड तामेव राखो, ते ण इमाइ दाहिणुत्तराई पुरिच्छमपचित्यमाइ च जवू-दीवभागाड तिरिय करेंति २ ता जवृदीवस्स २ पाईणपढीणाययउदीणदाहिणाययाए जीवाए मडल चउव्वीसेणं सएण छेता दाहिणपुरच्छिमिल्लस उत्तरपचित्यिमिल्लस य चउभागमङलिस इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ अट्ट जोयणमयाइ उन्हु उप्पइत्ता एत्थ ण पाओ दुवे सरिया आगाससि उत्तिद्वति ॥ १९ ॥ विइयस्स पाहुडस्स पढमं पाहुडपाहुडं समत्तं॥ २-१॥

ता कह ते मडलाओ मडल सकममाणे २ स्रिए चार चरह आहिताति वएजा १ तत्य यत इमाओ दुवे पिटवतीओ पण्णताओ, त०-तत्थेगे एवमाहमु-ता मंडलाओ मडल सकममाणे २ स्रिए भेयघाएण सकमड० एगे एवमाहमु १, एगे पुण एवमाहमु-ता मडलाओ मडल सकममाणे २ स्रिए कण्णकल णिक्वेढेड २, तत्य (ण) जे ते एवमाहमु-ता मडलाओ मडल सकममाणे २ स्रिए भेयघाएण सकमइ, तेसि ण अय डोसे, ता जणतरेण मडलाओ मडल सकममाणे २ स्रिए भेयघाएण सकमइ एवडय च ण अद पुरओ ण गच्छइ, पुरओ अगच्छमाणे मडलकालं परिहवेड, तेसि

चं बार्य दोते रास्य के ते एबमाइए-ता मंडळाको संहार्व एंतमायाणे २ मृरिए कम्पार्क मिन्येरेड, तेरिए वा बार्व वितेत ता वोप्येत्रेल मंडकाओ मंडल एंडल-माने स्तिए कमार्क विश्वेष पूर्वात्रे च वे बार्ड पुराने मान्य बार्ड पुराने मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य मान्य गच्छमाने मंडकामां वा परिद्वेष, तेरिन जं बार्य वितेते रास्य के ते एबमाईत-ता मंडकामां मान्य एंडलामा २ स्तिए कम्बाकं विक्वेषेड, एएलं सर्पनं वार्य गच्छा मान्य स्वार्य प्राप्त मान्य मान्य स्व

ता केनहमें ते बेक सुरिए एगमेंगेयं मुहुतेर्ण गच्छह शाहिताति बएजा ! तस्य बाह इसाओ बतारि परिवर्तीओ पञ्चताओं तें -तत्व एगे एक्साईश्व-ता छ ह भोगजसङ्स्ताह सरिए एवमेगेणं मुहुतेशं गच्छर एग एक्माईस १ एगे प्रम एक्साइंस-का एक पेक कोमधसहस्साई स्तिए एयमेरीय सङ्क्तेचं राच्छा स्रो एक्साइंस २ एगे पुण एक्साइंस-ता चतारि २ जोवकसहरसाई सुरिए एग्सेनेल सङ्क्षेतं राज्यस्य एरो एवमार्वेस १ एरो पुण एवमार्वेस-ता स्ववे राज्यम् वरास्टिन कोनजसङ्ख्यारं एरिए एममेरोजे सङ्क्षेत्रं राज्यस्य एरो एवमार्वेस ४ दरव वस वे ते एक्ताइंद्र-ता छ रू बोक्यस्क्रस्ताई सुरैए एयमेरोवं सुरुतेयं सन्छर, र एक मार्रेष्ठ-शा बया में सुरिए सम्बन्धेतर मंत्रकं तबसंब्धिता बारे बरह तना में उत्तमक्कुपरे उद्योग्डए अञ्चारसमुद्धते दिक्ते सवह, बहुन्यना ह्याक्रसमुद्धता राहे मक्द, तंसि च र्ण दिवसीसे एगे जोजनसनसहस्से बहु व जोवचसहरसाई तान<del>वच</del>ेते पण्नते ता क्या में सूरिए सम्बन्धिर श्रीडले उनसंज्ञीता चार चरह तया में उत्तमकट्टपता उद्योतिया बङ्कारतभुद्वता राई सबर, बहुव्यए पुनावसमुद्वते हिन्छे मध्द तेसि व पं दिवसंसि बावकारि जोनगराहरसाई तत्वश्वेते पत्नके तना व छ क्षेत्रमसहस्वाई सुरिए एममेगेर्ज मुहुतैर्ज पच्छा, तस्य वे वे एक्साईय-वा र्वच पंत्र कोमजसहरसाई सुरिए एगमेगेर्ज गुहुदोर्च गण्डा, ते एवमहरू-दा बया र्व स्पिए सम्बन्धितरं मंत्रकं अवसंक्रमिता चार चरह, तहेव विवसरहण्याणं देशि व में दिवसीर तावक्वेतं मतहबोनपसहरसारं, ता पता ये सूरिए सम्बनाहिरे मडमं उक्सक्रिया चार चरह तया नं तं नेव राईदिवयमार्ग तंति व नं दिवसीरी सर्दि जोराजसङ्स्सार्व राजककोते पञ्चचे राजा न पेक पेक कोराकसङ्स्सार्व स्पीप प्रामेगेनं मुद्दुतेनं मण्डव, तत्त्व व ते प्रवसाईप्र-ता चतारि २ बोरनतहस्साई स्मिए एगमेगेलं सङ्कोणं सन्बद्ध, चं एक्साईश्च-ता जवा नं स्परिए सम्बद्धान्तर संबर्ध जनसंज्ञमिता कार करह तथा में विवस्ताई स्क्रेंग तीस व वे विवसंध गणारि

४४ युत्ता०

जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णते, ता जया ण स्रिए सन्ववाहिरं मडल उवसकिसत्ता चारं चरइ तया ण राइदिय तहेव, तसि च ण दिवसिस अडयालीस जोयणसह-स्साइ तावक्खेते पण्णते, तया ण चतारि २ जोयणसहस्साइ स्रिए एगमेगेणं मुहुतेणं गच्छइ, तत्थ जे ते एवमाहसु–ता छवि पचिव चतारिवि जोयणसहस्साइ स्रिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु-ता सूरिए ण उग्गमणमुहुत्तिस य अत्थमणमुहुत्तं-सि य सिग्चगई भवइ, तया ण छ छ जोयणसहस्साइ एगमेगेणं मुहुत्तेण गच्छइ, मज्झिमतावक्खेत समासाएमाणे २ स्रिए मज्झिमगई भवइ, तया णं पच पच जोयणसहस्साइ एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, मज्ज्ञिम २ तावक्खेत सपत्ते स्रिए सदगई भवइ, तया णं चतारि जोयणसहस्साइ एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, तत्थ को हेऊ • ति वएजा १ ता अयण्णं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेण •, ता जया णं स्रिए सन्वब्मतरं मङल उवसकामिता चार चरइ तया ण दिवसराई तहेव, तसि च णं दिवसिस एकाणउइ जोयणसहस्साइ तावक्खेते पण्णते, ता जया ण सूरिए सन्वबाहिरं मडल उवसकिमता चार चरइ तया ण राइदिय तहेव, तस्सि च ण दिवसिस एग-द्विजोयणसहस्साइ तावक्खेते पण्णते, तया ण छवि पचिव चत्तारिवि जोयणसहस्साइ स्रिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ एगे एवमाहस । वयं पुण एव वयामो-ता साइरेगाड पच पच जोयणसहस्साइ स्रिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ०, तत्थ को हेऊ०ति वएजा <sup>2</sup> ता अयण्ण जबुद्दीवे २ परिक्खेवेण ०, ता जया ण स्रिए सव्वब्भतर मंडल उवसकिमता चारं चरइ तया ण पच २ जोयणसहस्साई दोण्णि य एकावण्णे जोयणसए एग्णतीस च सद्विमागे जोयणस्स एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छर्, तया ण इहगयस्म मणुस्सस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवहेहिं जोयणसएहिं एकवीसाए य सद्विभागेहिं जोयणस्य सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छर्, तया ण दिवसे राई तहेव, से णिक्खममाणे सूरिए णव सवच्छर अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि अधिभतराणंतर मडल उनसकमिता चार चरइ, ता जया ण स्रिए अधिभतराणतरं मडल उवसकिसता चार चरइ तया ण पंच पच जोयणमहस्साइ दोण्णि य एकावण्ये जोयणसए सीयालीस च सिद्धभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेण गच्छइ, त्तया ण इह्रगयस्स मण्सस्स सीयाठीसाए जोयणसहस्सेहि अउणासीए य जोयणसए सत्तावण्णाए सिंहुमागेहिं जोयणस्स सिंहुमाग च एगद्विहा छेता अङणावीसाए चुण्णियाभागेहिं स्रिणु चक्खुप्फास हञ्चमागच्छड, तया णं दिवसराई तहेव, से णिक्खममाणे स्रिए दोबसि अहोरत्तसि अस्मित्रतन्व मङल उवसकामिता चार चरइ, ता जया ण स्रिए अव्भितरतच मडल उवसकमिता चारं चरङ तया ण पंत्र २ कोमकसङ्करसर्व दोष्णि य बाकको कोमणसए एक य सदिमाने कोककर एगमेनेणं मुद्दत्तेजं गश्कार, तथा णं रहायवस्स अपसस्स सीवाठीसाए बोवणसहस्तेई कम्मरहेप् य कोयनेहि तेतीसाए य सङ्गिमागेहि कोयनस्स सङ्ग्रामां क एयद्विहा केता दोहि जुन्जिसासागेहि सुरिए जवजाप्यासे हम्मसायच्या तथा जे विकासारे तहेव एवं बक्ष एएवं सवाएवं निक्यममाणे सुरिए तकार्यतराओ समावंतर मेंब बालो मंडबं संबामाणे २ जहारस १ सहिमाने बोयबस्स वनमेन मंडबं महत्तर्ग व्यक्तिकृतिमाने २ जुळवीई सहरेपाई बोयणाह पुरिसच्छार्व विसुद्देमाने २ सम्बन् बाहिर मेंडबं उनसंकरिता बारे बरड़, ता बना थं शुरिए सम्बाहिरमंडबं उनस्क मिता चार चरक तथा में पंच २ बोबयसकस्ताई तिनिय व पंचतरे खेवनसर पन्नरस म सदिमारे कोक्सरस एमनेरेचं मुहतेयं धन्त्रह, तथा वं इष्ट्रधक्त मह सरस एक्टरीसाए जोनगसहरसेहि बहुई एडटीसेई जोनगसएई तीसाए न स्ट्री मानोहिं कीयनस्य सुनिए चवन्द्राप्यसं इञ्चमारान्छाः, तथा यं उत्तमनद्वाता उद्यो चित्रा उद्धारसमुद्रता रात्रै भक्त, बहुन्बए तुवाकसमूहते विवसे सब्द्र, एस वं पहने क्षम्माचे एस में पडमस्स क्षम्मासस्य पञ्चवसाचे । से पनिसमाने सुरिए दोनं क्षमार्स करमाचे परमंति कहोरचेरि बाहिराजंतरं मंडल उबसेरमिता जारं जार, ता जमा में सुरिए बाह्रियानंतर मंडक उवसेश्वमिता चारं चरक तथा में पंच २ जोननसर स्साई दिन्ति व चठकारे जीवनसङ् सत्तावन्तं च सद्विभाए जीवनस्त एयमेनेनं सङ्गीर्ण गच्छड, तथा नं इहगयस्य सञ्चनस्य एकतीयाए क्षेत्रक्यहरसेहें वनहि व सोकेंद्र जोयनसमृह एगूक्बाठीसाए सद्विमागेद्रि जोयजस्य सद्विमार्ग व एमद्विद्रा केता सङ्ग्रिप् जुन्मिनाभागे सुरिष् चनकुण्यसं इन्यमागच्छा, तथा मं राहेरिमं तहेर से पविस्तामे सुरेए क्षेत्रंसि महोरसंखि बाहिर तर्ज संबद्धे स्वसंत्रतिता चारे चया ता जना व स्रिए नाहिरतक मंडकं सन्सक्तिता जारे जरह तना व रंच पंच जोबचधहरसाई तिष्यि व चतरारे जोजनसए समानीसं थ सद्विमागे सोववत्म एय-मेंनेन सुहुरोनं गच्छा, समा वं इहणबस्य मण्सस्य प्नाहिनेह्रं बत्तीसाए चोमक सङ्स्पेड्रि एरावज्याए व सङ्घिमागेहिं बोवचस्य सङ्घार्य च एमछ्रा छेटा देवी साय पुष्णियामागोदी स्थिए जनस्यात्रा इन्यमायन्स्य स्वीतर्थ तहेव एवं यस एएपुनाएमं पनिसमाचे स्रिए तथार्णतराओं तथार्णतर ग्रंडसानो गंडनं संस्थापे र **बद्वारस १ सक्किमार्ग कोमणस्स एममेने मेडक सुकुत्ताई विपुद्वेमाले १ साहरेगाई** पंचासीई २ जोमजाई पुरसम्बक्तार्थ अभिनुष्टेमाणे २ सम्बन्धनरं संडसं उत्तरंत्रिया चार चरह, ता जया वं स्थिए सम्बन्धतर गंडले उनस्तिमा चार चरह तमा न

पच २ जोयणसहस्साइ दोण्णि य एकावण्णे जोयणसए अहतीस च सिंहभागे जोय-णस्स एगमेगेणं मुहुत्तेण गच्छइ तया ण इह्गयस्स मण्रसस्स सीयाठीसाए जोयणसह-स्पेहिं दोहि य दोवहेहिं जोयणसएहिं एकवीसाए य सिंहभागेहिं जोयणस्स स्रिए चक्खुप्भास हव्वमागच्छइ, तया ण उत्तमकह्रपत्ते उक्तोसए अहारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवड, एस ण दोचे छम्मासे, एस ण दोचस्स छम्मा-सस्स पज्जवसाणे, एस ण आइचे सवच्छरे, एस ण आइचस्स सवच्छरस्स पज्जव-साणे॥ २१॥ विइयस्स पाहुडस्स तइयं पाहुडपाहुडं समत्तं॥ २-३॥ विहयं पाहुडं समत्तं॥ २॥

ता केवइय खेत चिदमस्रिया ओभासित उज्जोवेंति तवेंति पगासित आहिताति वएजा 2 तत्य खलु इमाओ बारस पिडवत्तीओ पण्णताओ, त०-तत्थेगे एवमाहद्य-ता एग दीव एग समुद्द चिदमस्रिया ओभासति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति एगे पुण एवमाहस-ता तिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे चिदमस्रिया ओभासति एवमाह्य २, एगे पुण एवमाहंयु-ता अद्वचउत्ये दीवसमुद्दे चंदिमस्रिया ओमा-सित एगे एवमाहस ३, एगे पुण एवमाहस्र-ता सत्त दीवे सत्त समुद्दे वंदिमस्-रिया ओमासति एगे एवमाहसु ४, एगे पुण एवमाहसु-ता दस दीवे दस समुद्दे चितमस्रिया ओभासति एगे एवमाहसु ५, एगे पुण एवमाहसु-ता वारस दीवे बारस समुद्दे चिदमस्रिया ओभासति ६, एगे पुण एवमाहसु-ता वायालीस दीचे वायालीस समुद्दे चितमसूरिया ओमासित एगे एवमाहसु ७, एगे पुण एवमाहसु-ता वावत्तरिं दीवे वावत्तरिं समुद्दे चिदमस्रिया ओभासति एगे एवमाहसु ८, एगे पुण एवमाहस्र-ता वायाठीस दीवसय बायाठीस समुद्दसय चिदमसूरिया ओभासित एने एवमाहस ९, एने पुण एवमाहस-ता बावत्तरिं दीवसय बावत्तरिं समुद्दसय चंदिमस्रिया ओभासित 'एगे एवमाहसु १०, एगे पुण एवमाहसु-ता वायालीस दीनसहस्स वायाल समुद्दसहस्स चदिमस्रिया ओमासति एगे एवमाहंस ११, एगे पुण एवमाहसु-ता बावत्तरिं दीवसहस्स वावत्तरिं समुद्दसहस्स चिदमस्रिया ओमा-सित एगे एवमाहसु १२, वय पुण एवं वयामो-ता अयण्ण जबुद्दीवे २ सव्वदी-वससुद्दाण जाव परिक्खेवेण पण्णते, से ण एगाए जगईए सव्वक्षो समंता सपरि-क्खिते, सा ण जगई तहेव जहा जंवूदीवपणणसीप जाम एवामेव सपुन्वावरेण जबुद्दीवे २ चोद्दससिललासयसहस्सा छप्पण्ण च सिललासहस्सा भवतीति मक्खाया, जबुद्दीचे ण बीवे पचचक्रमागसिठए आहिएति वएजा, ता कह जबुद्दीवे २ पंचचक-भागसठिए आहिएति वएजा<sup>२</sup> ता जया ण एए दुवे स्रिया सन्वञ्भतर मङस्ट चनसंब्रमिता नारं नरंहि तया जं जेन्नावस्य २ विभिन्न पेननक्षमाने सोमासंति तंबदा-एनेबि एर्ग दिवर्ष पंजवद्रशार्ग ओसासद एनेबि एर्ग दिवर्ष पंजवद्रशाग तना में उत्तमनद्वपते उद्योसए बद्धारसमृद्धते विवसे मन्द्र, ब्यून्यिना दुनान्नसमुद्रता राई भवड़, ता जना र्ण एए बुचे सुरिना सम्बनाहिर मंडलं स्वसं-कमिता चारं चरंदि तमा में बंबुहीवस्स १ दोनिन बह्ममाने ओमाएंदि ता प्रोति सरिए एमं पंचनद्रशाक्षमार्ग भोगासद् उज्लेक्द्र तकेद्र प्रमासेद्र, एगेवि एग पंचनदः बाबमार्गं भोमालहः तथा च उत्तमख्द्रपता उद्दोतिमा भद्रारसमुद्रता एई मन्द्र, बहुन्नए दुवामसमुद्रुते विवसे भाग ॥ ५२ ॥ तहचे पादुन्ह समूर्य ॥ ३ ॥

वा नहीं वे सेवाए संदर्भ बाहितारि बएजा है तत्व बहु हमा हुनिहा संदिर्द पन्नता तंत्रहा-चंदिमस्पियसंदिवे य वावपन्तेत्तरंदिवे व ता बह ते वंदिमस्पिन चंदिवें माहितारि वर्णमा रे तत्व यहां इसामी सोक्य परिवर्तीमी पन्नतामी रं--तरपेगे एक्साइंस-ता समकारंसस्टिमा णं चेत्रिमस्टिपसंटिई एगे एक्साईस ९ एने पुत्र एक्सर्वयु-का विश्वनथार्थसर्थिका नं वंदिनस्परिक्षंटिई पन्नया 🤚 एवं एएनं अभिकावेचं समयउद्योजसंकिया ३ विसमयउद्याजसंक्रिया ४ समयद बाक्सिटिया ५. विसम्बद्धवाकस्टिया ६ ता चन्नव्यवस्थाकसंक्रिया <sup>प्रस्था</sup>ता एरे एबमार्ट्स 🔸 एरे पुत्र एबमार्ड्ड-का छतायारवंटिया नं बंदिमध्रहेवर्धेटिं पन्नता ८ एवं गेह्र्स्टिया ९ गेह्राक्यचंटिया १ पासलसंटिया ११ गोर्डर संदिना १२ वेच्छावरसंदिया १३ वसमीसंदिया १४ इतिसनतसर्वदिया १५ एरो पुत्र एवमाईछ~ता बालम्बरोहनास्राठिया थं बेदिनस्र्युरेवस्राठेई पन्नदा १६ करण जे च एवमाईछ-ता समयजरससंदिया में श्रदिमस्रिवसंदिदे क्याता (पं पूर्ण अपूर्व वेसम्बं को भेव कं इसरेहिं। ता कहं ते ता अक्वेचर्य दिई आहिराति वएजा है तत्त्व दम्ह इमाओ सोसम पडिवर्ताओ पञ्चताओं र्य-नात्व व एमे प्रमार्ट्य-ता गेड् पंटिमा में तावनचेत्तसर्दिष् पञ्चता एवं बाव शक्षमधीइमास्टिबा वे दावनचेतः सिटेइ प्री पुज एकमाईछ-ता जस्सिटिए में जैनुरीचे १ तस्सिटिवा में तामक्योत्तरिहें क्ष्मता एने एवनाईस ९. एने पुच एवमाईस-ता क्स्संटिए वो मारहे वास तस्स्रिटन पञ्चता १ एवं उज्जानसर्दिया निजानसर्दिता गुगमो विनाइसेटिना पुरनो मित्रह्मित्या संक्ष्मगस्राठिमा । एगे एकमाईच ९५, एगे पुत्र एकमाईच-ता सेक्य-पदुस्रक्रिया न तात्रक्योत्तस्रक्षिद्धं प्रन्याता एगे प्रवसाह्य १६ वर्ष पुच एवं ववासी-या उद्वीमुहद्रमतंतुमापुण्यसक्रिया ये तामप्रधासक्रिये पण्यता अगो सङ्ग्रा बाह्र वित्यम् भतो बद्दा बाहि पिहुका भनो सबसुद्दयदिया बाहि सरिवशुद्दयदिया उसमे वाधर्न

तीसे दुवे वाहाओ अवद्वियाओ भवति पणयालीस २ जोयणसहस्साई आयामेण, तीसे दुवे वाहाओ अणविद्वयाओ भवति, तजहा-सव्वन्भतिरया चेव वाहा सव्व-बाहिरिया चेव वाहा, तत्थ को हेऊ ०ति वएजा 2 ता अयण्णं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेण , ता जया ण स्रिए सन्बन्भतर मडल उवसकमिता चार चरइ तया ण उद्गीमुहकलबुयापुष्फसठिया ण तानक्खेत्तसठिई आहिताति वएजा, अतो सकुडा वाहिं वित्यडा अतो वहा वाहिं पिहुला अतो अक्सुइसठिया वाहिं सत्थिसुइसठिया, दुहुओ पासेणं तीसे तहेव जाव सन्ववाहिरिया चेव वाहा, तीसे ण सन्वन्भंतिरिया वाहा मदरपञ्चयंतेण णव जोयणसहस्साइ चत्तारि य छलसीए जोयणसए णव य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेण आहिताति वएजा, तासे ण परिक्खेविवसेसे कओ आहिएति वएजा <sup>२</sup> ता जे णं मदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे त परिक्खेव तिहिं गुणिता दसिंह छेता दसिंह भागे हीरमाणे एस ण परिक्खेविवसेसे आहिएति वएजा, तीसे ण सन्ववाहिरिया वाहा लवणसमुद्दतेण चउणउइ जोयणसहस्साइ अट्ठ य अट्टसट्ठे जोयणसए चतारि य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेण आहिताति वएजा, तासे णं परिक्खेवविसेसे क्यो आहिएति वएजा <sup>2</sup> ता जेण जबुद्दीवस्स २ परिक्खेवे 'तिहिं गुणिता दसिंह छेता दमिंह मागे हीरमाणे एस ण परिक्खेवविसेसे आहिएति वएजा, तीसे ण तावक्खेत्ते केवइयं आयामेण आहिएति वएजा 2 ता अड्ठत्तरि जोयणसहस्साइ तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागे य आयामेण आहिएति वएजा, तया ण किंसिठिया अधयारसिठई आहिताति वएजा <sup>2</sup> ता उ**द्धी**मुहकलबुयापुप्फसिठिया तहेव जाव बाहिरिया चेव वाहा, तीसे ण सव्वव्भतरिया बाहा मदरपव्वयतेणं छज्जोयणसहस्साइ तिण्णि य चउवीसे जोयणसए छच दमभागे जोयणस्स परिक्खे-वेण आहिताति वएजा, तीसे ण परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएजा १ ता जे ण मदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे त परिक्खेव दोहिं गुणेता सेस तहेव, तीसे ण सन्वबाहिरिया वाहा लवणसमुद्दतेण तेवद्विजोयणसहस्साइ दोण्णि य पणयाले जोयणसए छच दसमागे जोयणस्स परिक्खेवेण आहिताति वएजा, तासे ण परि-क्खेनविसेसे कलो आहिएति वएजा १ ता जे ण जबुद्दीवस्स २ परिक्खेने त परि-क्खेन दोहिं गुणिता दसहिं छेता दसहिं भागे हीरमाणे एस ण परिक्खेनविसेसे आहि-एति वएजा, ता से ण अधयारे केवइय आयामेण आहिएति वएजा <sup>2</sup> ता अहत्तरिं जोयणसहस्माइ तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभाग च आयामेणं आहिएति वएजा, तया ण उत्तमकद्वपत्ते अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवड्, जहण्णिया दुवालसमुहूत्ता न भवड, ता जया ण स्रिए सञ्बवाहिरं महल उवसकिमत्ता चारं चरइ तया ण किसंदिया तावनकेलर्पटियें आहिलाति वएआ ? ता ज्युश्चिद्द्यकेन्यापुरण्यंदिया तावनकेलर्पटियें ब्राहिलाति वएआ एवं वं व्यक्तित्तर्पंत्रके केम्बारप्टिदेश् प्रावं तं वाहिर्पंत्रके तावनकेलर्पटिदेश् वं तिष्ठी तावनकेलर्पटिदेश् प्रं वाहिर्पंत्रके अंत्र-तर्पाटिदेश् मामियकं ज्ञाव तथा वं वत्त्रमण्ड्यता ज्योशिया महास्त्रमुद्धता रहें मन्द्र, ज्याक्यम् वृत्तम्ममुद्धां निवसे मन्द्र, ता व्यक्तिं २ प्रिया वेक्त्यं केते वर्षे तरिते केन्द्रयं वेशं महे तपदि केन्द्रयं येते विरितं तपदि ? ता पंत्रुशिवं वं पीचे प्रतिया एवं वोद्यक्तम उद्ध तपदि ब्यक्त्या योजप्यवास्त्र महे तपदि श्रीमान्तर्पर्यः वीवनम्बद्रस्तमं दुष्तिय वर्षेत्र वर्षेत्र व्यक्ति प्रदार वोत्रम्यवास्त्रमं अर्थे तप्तियं तपदि ॥ १३ ॥ व्यवस्था वर्ष्ट्र वरस्य थे।

ता करित में स्रिक्स केरना पविदया जाहिताति वएजा है तस्य स्वत हमानी बीस पडिवर्ताओ क्यसाओं ते--तत्थेने एक्माईस-सा मंब्र्सन व पन्नवंति सरे यस्स बंस्मा पहिद्दमा भाद्वितानि बयजा एग एक्साईस १ एगे एक एक्साईत-ठा मेर्रेल में पम्मर्गेल स्रोरेक्स्स छेस्सा परिव्या माहिताति वएमा एगे एवमाईस १ एवं एएजं अभिकावेर्य मारियव्यं-ता मचोरमंति वं पव्ययंति ता सुरंसवंति वं पम्बर्धेनि ता सर्वपर्मित ने पम्बर्वेसि ता चिरितार्थेसि वे पम्बर्वेनि ता रक्ष्यवेधि भं प्रस्तवंति ता सिल्क्येसि वो प्रस्तवंति ता सोयसञ्जंति **शं प्रधारं**ति ती सोयपार्मिति में परवर्षति ता अव्यक्ति में परवरति ता सरिवायरेति में परवर्षति दा सुरिवाबर बंधि न पम्बवंति हा उत्तर्मति वं पम्बवंति हा रिमाईगि वं पम्ब वैचि ना अपवेसति ने पन्यवैचि ता वरवितीलीय ने पव्यवैचि ता वरवितिवैदि र्श पम्बर्गम ता पम्पर्रेवृत्ति में पम्बर्गमा ना पम्बर्शनीय में पम्बर्गमा स्रोरमण सेस्मा परिद्रमा भादिगानि वएना एगे एक्साईनु १ । वर्ष एक **एवं ध**वामी<sup>—ता</sup> मंदरेशि प्राचर बाब पण्डनगया प्राचर, ता जे में पुरुषता सरियरम केस्से पुनिरी ध न पुमासा मृरियरम भैरम शिक्षकीनि अधिदानि व पोरमसा सुहैरसम छेरसे परिदर्शीत परिमानन्त्रत्याचि व पाम्यसा सरियामा सस्य परिदर्शीत ॥ १४ ॥ पेथमे पाद्र हं समर्च ॥ ५ ॥

ता बर्धे त आयर्गिर्धे व्यक्तियति वर्जा है तस्य राष्ट्र हमाधे सम्बद्धि परिवर्ताओं स्टामाधे सम्बद्धि स्वाद्धिना अपुन्तमस्यव द्यवित्रम् अस्य स्वयाद्ध स्याद्ध स्वयाद्ध स्वयाद्य स्वयाद्ध स्वयाद्ध स्वयाद्ध स्वयाद्ध स्वयाद्ध स्वयाद्ध स्वयाद्ध

अयणमेव, ता अणुसवच्छरमेव, ता अणुजुगमेव, ता अणुवासमयमेव, ता अणुवास-सहस्समेव, ता अणुवाससयसहस्ममेव, ता अणुपुन्वमेव, ता अणुपुन्वसयमेव, ता अणुपुन्वसहस्समेव, ता अणुपुन्वसयसहस्समेव, ता अणुपिलओवममेव, ता अणुपिल-ओवमसयमेव, ता अणुपिलकोवमसहस्समेव, ता अणुपिलकोवमसयसहस्समेव, ता अणुसागरोवममेव, ता अणुसागरोवमसयमेव, ता अणुसागरोवमसहस्समेव, ता अणुसागरोवमसयसहस्समेव, एगे पुण एवमाहस्र-ता अणुउस्सप्पिणिओसप्पिणिमेव स्रियस्स ओया अण्णा उप्पज्जड अण्णा अवेड, एगे एवमाहसु २५। वयं पुण एवं वयामो-ता तीस २ मुहुत्ते स्रियस्स ओया अवद्विया भवइ, तेण पर स्रिरयस्स ओया अणवद्विया भवड, छम्मासे सूरिए ओय णिवुहुई छम्मासे स्रिए ओयं अभिवहुंइ, णिक्खममाणे स्रिए देस णिबुद्धेइ पविसमाणे स्रिए देस अभिबुद्धेइ, तत्य को हेऊ०ति वएजा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे २ सव्वदीवसमु॰ जाव परिक्खेवेणं॰, ता जया ण स्रिए सव्बब्भतर मडलं उवसकमित्ता चार चरइ तया ण उत्तमकट्टपते उक्कोसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे मनइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भनइ, से णिक्खममाणे स्रिए णव सवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तसि अब्भितराणतर मंडल उवसकमिता चार चरइ, ता जया ण स्रिए अस्भितराणतर मडलं उवसकमिता चारं चरइ तया ण एगेणं राइदिएण एग भाग ओयाए दिवसखेतस्स णिवुष्टिता रयणिखेत्तस्स अभि-विद्वता चार चरइ मडलं अद्वारसिंह तीसेहिं सपृहिं छेता, तथा ण अद्वारसमुहुते दिवसे भवइ दोहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं छणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगडिमागमुहुत्तेहिं अहिया, से णिक्खममाणे सूरिए दोचंसि अहोरत्तसि अब्भितरतच मडल उवसकमिता चारं चरइ, ता जया ण स्रिए अब्भितरतन्व मडल उवसकमिता चारं चरइ तया णं दोहिं राइदिएहिं दो भागे ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुद्धिता रयणिखेतस्स अभिवद्वेता चार चरइ मडल अद्वारसतीसेहिं सएहिं छेता, तया ण अहारसमुहुते दिवसे भवइ चउहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवर चर्डाहें एगद्विमागमुहुतेहिं अहिया, एव खलु एएणुवाएण णिक्खममाणे स्रिए तयाणतराओ तयाणतरं महलाओ महल सक्समाणे २ एगमेगे महले एग-मेगेण राइदिएण एगमेग भाग ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुद्धुमाणे २ रयणिखे-त्तरस अभिवद्देमाणे २ सव्यवाहिरं महल उवसकिमता चार चरह, ता जया णं स्रिए सन्वन्मंतराओं महलाओं सन्वबाहिर मंडल उवसकिमता चार चरइ तया ण सञ्बन्भतर महल पणिहाय एगेण तेसीएण राइदियसएण एग तेसीयं भागसय ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुष्ट्रेता रयणिखेतस्य अभिवुद्धेता चार चरइ मडळ अड्डा-

बहुन्यए दुवाससमुहुत्तं दिवसे भवह, एस वे पटमक्रमासे एस वे वहसस्य हम्मा-धरम पजनमाने से पनिसमाणे सरिए दोने छम्मासे बदमाने पटमीस महोरापि बाहिरानंतरं संबद्धे उपक्षेत्रमिना चारं करह, ता जबा वं सुरिए बाहिरानंतरं संबत उनसम्बनिता चारे परइ तया मं एनेमं राईदिएमं एन मानं बोसाए रसमित्रकेतस्य मित्रदेता विवस्थेतस्य भमिनदेता वारं चरह मैडस अञ्चारसहें तीसेहें हेता तया चं अद्वारममुष्ट्रशा राई मन्दर दोहिं एगद्विभागमुङ्क्तेहिं कमा हवान्यमुहुपै विवसे सबद वोर्ड एगद्विमानसहत्ते के ब्रिडिए, से प्रतिसमाने सरिए बोर्नेस नदी-रतिथ बाहिरं तर्व मंडलं उवर्धेश्मिता बारं बरह, ता क्या णं सरिए बाहिरतर्व में नर्न उनसंक्रमिता नारं चरह तना गंदोहिं राष्ट्रीयपूर्ट दो भाए ओवाए रक्ष येत्तस्य निवृद्वेता विषययेत्तस्य समिनुद्वेता चारं चरड् महसं सङ्गरसर्हे तीयेहैं छेता तवा न अद्वारममुद्दत्ता राइ मबद बर्डाई व्यद्विमायमुद्दतेई छना उपी-हममुहुते न्यिषे सक्त् चवर्षे एमहिमायमुहुतेहि महिए, एवं यस एएडवाएवं परिमान मुरिए तमानंतराओं तमार्गतर मैन्काओं मैटले संस्थान र एप-मेनाग राईंटिएवं एनमेथं मार्ग बोबाए स्वविकेत्तस्य वित्रहेमाचे । दिवसकेतस्य अभिवर्गाणे २ सम्बन्धेतरे मैन्छं उवसरमिता चारे चरह, ता जवा व सहैए सम्बनिहराओं संन्काओं सम्बन्धनरे मेडले उनस्निमा बारे बरह तया में सम्बन नाहिर सदकं परिदान एकतं तसीएमं राहरितसएच एम तसीयं भागमनं ओनाए रयनिगरतस्य मिनुद्रेता दिवसमीतस्य अभिवद्वेता बारं बरह मंडलं महारप्रदेशेष्ट्री मप्रिं छता तया नं उत्तमञ्द्रको उद्दोनप् अद्वारममुहुते दिवसे मध्य अद्वानमा इरासनमुद्रता राई मकर, एम में दोने छम्मास एस में दोनस्य छम्मासस्य नमार साण एउ ने भादने सबच्छर एग में भादकरम संबच्छारस्य प्रजनमाने ॥ २०॥ छा पात्रहे समर्च ॥ ६॥

शुरू प्रमुख्य कर ।

ता क है मुर्दियं कर्री क्षाहिताति बप्ता है तरब गुड़ इसाओ दीयं प्री
क्षाीओ परमाताओं ते⇔नार्यम एकमार्ट्य-ना संक्रे के प्रमुख प्रोपे करका
आदिनार्ति वप्ता एमें एकमार्ट्य है एव प्रकार प्रमुख्य के कर्या परितं वाद आदिनार्थिय एका एव एक्य सिमार्ट्य के वेष्ट्र बराए य पन्तर मुर्दिय वर्ष्य काहितार्थि क्षाह्य एक एक्सार्ट्य वर्ष प्रमुख्य एकं क्षामा-ना संदर्शित प्रमुख्य तर्देव जाव प्रचल्दराध्य प्रमुख्य ता के कं प्रमुख्य करमार्थ्य स्थापनार्थिय वर्ष्य करिय कार्यक्ष प्रमुख्य ता के कं प्रमुख्य करमार्थ्य स्थापनार्थिय वर्ष्य करिय कर्यांत्र स्थापनार्थिय क्षाह्य स्थापनार्थिय कर्यांत्र के प्रमानार्थ स्रिय वरयति, चरमलेसतरगयावि णं पोग्गला स्रिय वरयति ।। २६ ॥ सत्तमं पाहुडं समत्तं ॥ ७॥

ता कह ते उदयसिठई आहितेति वएजा १ तत्य खलु इमाओ तिष्णि पिड-वत्तीओ पण्णत्ताओ, त०-तत्थेगे एवमाहसु-ता जया ण जबुद्दीवे २ दाहिणहे अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया ण उत्तरहेवि अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया ण उत्तरहें अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणहेवि अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवड़, जया णं जबुद्दि २ दाहिणहें सत्तरसमुहुते दिवसे भवड़ तथा ण उत्तरहेंवि सत्तरसमुहुते दिवसे भवइ, जया णं उत्तरहें सत्तरसमुहुते दिवसे भवइ तया ण दाहिणद्भेवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एव (एएण अभिलावेण) परिद्वावेयव्व, सोल समुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे चउइसमुहुत्ते दिवसे तेरसमुहुत्ते दिवसे जाव जया णं जबुद्दीवे २ दाहिणहे बारसमुहुत्ते दिवसे० तया णं उत्तरहेवि वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया ण उत्तरहें वारसमुहुते दिवसे भवइ तया ण दाहिणहेवि वारस-सुहुते दिवसे भवइ, जया णं दाहिणहें बारसमुहुते दिवसे भवइ तया ण जबुद्दीवे २ मदरस्स पव्वयस्स पुरिच्छमपचित्यमेण सया पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सया पण्णरसमुहुता राई भवइ, अवद्विया ण तत्य राइदिया पण्णता समणाउसो ! एगे एवमाहसु १, एगे पुण एवमाहसु-ता जया ण जबुद्दीवे २ दाहिणहे अद्वारससुहुता-णतरे दिवसे भवइ तया ण उत्तरहेवि अद्वारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, जया ण उत्तरहें अद्वारससुहुताणतरे दिवसे भवड तया ण दाहिणहेवि अद्वारससुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, एव परिहावेयव्व, सत्तरसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवड सोलसमुहुत्ता-णतरे॰, पण्णरसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ चोइसमुहुत्ताणतरे॰, तेरसमुहुत्ता-णतरे॰, जया ण जबुद्दीवे २ दाहिणहें वारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवड् तया ण उत्तरहेवि वारसमुहुत्ताणतरे दिवसे॰, जया ण उत्तरहे वारस-सुहुताणतरे दिवसे भवइ तया ण दाहिणहेवि वारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण जबुईंग्ने २ मदरस्स पन्नयस्स पुरित्थमप्चित्थमेण णो सया पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवड़, णो सया पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, अणबद्विया ण तत्थ राइदिया प॰ समणा-उसो ! एगे एनमाहसु २, एगे पुण एनमाहसु-ता जया ण जनुदीने २ दाहिणहें अहारममुहुत्ते दिवसे भवइ तया ण उत्तरहे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, जयाण उत्तरहे अहारसमुहुते दिवसे भवइ तया णं दाहिणहे वारसमुहुत्ता राई भवइ, जया ण दाहि-णद्दे अद्वारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवड तया णं उत्तरहे वारसमुहुता राई भवड, जया ण उत्तरहे अद्वारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवड तया ण दाहिणहे यारसमुहुत्ता राई

समावेर्ड

446

सम्ह पूर्व नेवर्ज स्वावेद्दे य कावतारिं व पढ़िने वो दो आसमाग सम्वेदि इस्ति सम्ह सा एं निरु का वा बाव वं वंदिने व सहिन्तु बारसमुद्दामार्थर सिर्मे सम्ह त्या वं जारहे इवास्म्यमुद्धामार्थर रिवरे अवह तथा व वाहिन्दे इवास्म्यमुद्धामार्थर रिवरे अवह तथा व वंदिन वाहिन सिर्मे सम्ह विद्या विद्या स्वावेद वाहिन सिर्मे स्वावेद वाहिन स्वावेद राहिन स्वावेद वाहिन सिर्मे सिर्मे स्वावेद वाहिन सिर्मे सि

न्धिमंत्रति दिवसे सवह, क्या में एकन्थिमंच दिवसे सवह स्था क बंबुहीवे र गेर रस्य पन्त्रयस्य उत्तरवाहिणेत्रं राई अवह, ता क्या वं दाहिन्द् उद्योगए वडार समुद्रुते दिक्से मद्भ तथा यं उत्तरहृति उडोमप् अञ्चारसमुद्रुत दिक्स मनाः <sup>करा</sup> र्ण उत्तरङ्कृतया च बंबुद्दाने २ अंदरस्य एव्ययस्य पुरस्विकावस्थिनेर्च बङ्गीनना दुवा<del>वसमुद्</del>रुता राहे भन्छ, ता बया च बंबुर्शवे २ मंदरस्य पञ्चयस्य पुरिन्धवं उज्ञेसए **अ**द्वारसमु**न्ते दिवस मक्द तया नं क्वारियमेग**नि उज्ञेसए **बद्धारस्प**हरे दिवसे संबद जया में क्षारिकाणं तकोताए श्रद्धारसमुकुचे दिवसे सबद तका <sup>सं</sup> जेनुर्रावे २ मंदरस्य प्रम्यस्य उत्तरदाहियेनं बङ्ग्लिया नुवाकसमुहुता रह सर्दे एवं एएचं गमेर्च केवन्त्रं अञ्चलममुहुतार्थनर दिक्स सबह, साहरेगदुवाकामा<u>ड</u>ा राई अन्द, सत्तरसमुद्रते विक्से तरसमुद्रुता राई, सत्तरसमुद्रुतानंतरे विक्से अनी सदरेगतेरममुदुता राई मकर, सोक्मसुदुते दिवसे मरद, चोत्तसमुदुता राइ मन्द्र सोलमसुद्वरार्णंतरे विक्से मध्य, साइरेगचोङ्गसुदुता राई मक्द्र, पञ्चरसमुदुते विक्ते क्ष्मरममुद्रता राई, क्ष्मरममुद्रुचार्थंदरे दिवसे साहरेशक्यरसमुद्रुचा राई मन्द्र वजर्ममुद्रुते दिवसे सोसम्मुदुता राष्ट्र, बोह्समुद्रुतार्णतरे दिवसे साररेगायेकम्स हुता राई, वेरसमुद्दुने दिवसे सत्तरममुद्दुना राई, वरसमुद्दुनाचंतरे दिवसे सार्रेय सत्तरसमुद्रुता राहे, ता बना वे अंतुर्शने वीने वाहिनहे अहण्यए हुनास्त्रममुद्रुतए दिवसे मनद तना में सत्तरहूं जहन्यए तुवालममुद्रते हैवसे भवर, ता क्या में उत्तरहे बहुन्यए बुवाअसमुहुते दिवने मन्त्र तथा न वेजुदीने २ संदरम्य प्रवादन्त

पुरत्थिमपचित्थिमेण उद्दोसिया अद्वारममुहुत्ता राई भवइ, ता जया ण जबुईवि २ मदरस्स पन्वयस्स पुरित्थमेण जहण्णए दुवालसमुहुते दिवसे भवड तया णं पचित्थ-मेणवि जहण्णए दुवालसमुहुते दिवसे भवइ, जया णं पचित्यमेण जहण्णए दुवाल-समुहुत्ते दिवसे भवइ तथा णं जबुद्दीवे २ मदरस्म० उत्तरदाहिणेण उक्कोसिया अट्टार-समुहुत्ता राई भवइ, ता जया ण जन्नुदीने २ दाहिणहें नासाण पढमे समए पटिनजङ तया ण उत्तरहेवि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, जया ण उत्तरहे वासाणं पढमे समए पिडवजाड तया ण जवुद्दीवे २ मदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपचित्यमेणं अणतरपुरक्खडकालसमयसि वासाण पढमे समए पुल्चिज्इ, ता जया ण जबुद्दीवे २ मदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेण वासाण पहमें मेणवि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, जया पिंडवज्जइ तया ण जबुद्दीवे २ भ५रउत्तर र वासाणं पढमे समए पड़िन् लवे मुहुत्ते अहोरते पक् एव द गिम्हाण च साणियव्वा, तया ण उत्तरहुवि तया ण दाहिणहेवि वजाइ तया णं जबुई क्लडकालसमयसि पढमे यस्स पुरित्थमेण पढमे वजाइ, जयाण पचारि पव्वयस्स उत्तरदाहिणेण 🛶 जहा अयणे तहा सवच्छरे <sup>पुल्वे</sup> एव जाव सीसपहेलिया दाहिणक्टुं उस्सप्पणी पडिवजड णं उत्तरहें उस्सप्पिणी पडिवजड पचित्यमेण जैवत्यि उस्सप्पिणी पण्णते समणाउसो !० एव जोस्स दिवसे भवइ तया ण लवणसमुद्दे 🕏 तया ण लवणसमुद्दे ,

अगयइसडे ज

पीये वाहिण्युं दिससे मणह तथा व उत्तर्युं वि हिससे मणह, वया मं उत्तर्युं दिससे मणह तथा मं वाज्यद्वे से सीवे अंदराज प्रकाराजं पुरिस्पारक्तियमंत्र त्ये प्रत्य एवं बद्दारीये २ व्यहा त्येष्ट जाव उत्तरियां प्रकार व्याप्त क्षेत्र व्यवस्था क्षेत्र व्यवस्था क्ष्मा व्यवस्था क्ष्मा क्ष्मा व्यवस्था क्ष्मा विवस्था विवस्य विवस्था विवस्था

इमाओ विक्ति परिवर्तीको पञ्चताको तं-नत्वेगे प्रमाईप्र-ता से में पोगास सुरियस्य क्षेत्र पुन्तृति वे वं पोमासा संतप्पति ते वं पोमाब्य संतप्पमाना दवन तर्रात बाहिराइ पोमाञ्जा संवार्वेतीति एस वं से समिए तावक्षेते एगे एक्साईंड र एने पुण एक्साइंड-सा जे वं योग्यका सुरैयस्य केर्स फुर्सेट स वं योगास नो चंतपंति ते वं पोश्यका अर्थतप्यमाया त्यर्गतरहं वाक्षरहं पोश्यक्षरं वो संता-वेतीति एस में से समिए ताववकेते एगे एकमाईस २ एगे पुण एकमाईस-ता में ण पोमाला पुरिवस्त केले कुलंति हे ने पोमाला अल्बेगहवा चंतुव्हेंति अल्बेगहवा गो संतप्पंति तस्य अस्पेनहरा संतप्पमाना वर्वचरत्रहं बाहिएहं प्रेत्यसहं संतर्निति भत्येगक्रमा व्यक्तपमाचा तबणतरकं बाहिरकं योगमहर्व को संतावेति एउ वं से समिए तावक्येंदे एगे एकमाईत १ । वर्ष प्रच एवं क्यामी-ता बाब्दे हमानी चेविमस्रियामं देवान निमामेहितो केसाओ बहिया [उस्ट्रवा] निमिन्स्यामे पतार्वेदि एयासि यं केसायं अंतरेस कन्यवरीओ छिन्यकेसाओ एंप्रस्कृति तए में तामी क्रिमाक्साओं संमुख्यिनाओं समाधीओ तसर्वतराई बाहिएई चोगामाई स्नावेंति 💵 एस र्ण से समिए ताक्क्बेरी ॥ २४ ॥ ता क्यूक्ट्रे त सुरेए पोरेसि-च्छाम मिम्बतेह आहितति बएआ । तत्व खह्य हमाओ पमबीछ पश्चितीओ पन्यभाओं वं -तरबेगे एवमाईयु-ता अनुगमयमंत्र स्रिए ग्रेरिसिस्टार्य विस्वतेष्ट माहिराति बएमा एगं एवमाईमु १ एगे पुण एवमाईस-ता मनुपुरुत्तमेव ध्रीए पोरितिराममं निम्बतेष्ठ् साहितेति वएना १ एरं एएवं समितावेचं पेयानं हा जानो चर स्मेनसर्विष्ठ् पत्रवीसं पविवतीओ ताओ चेव नेयानाओ जार नी उस्मप्तिणी सेव सुरैए पोरिसिन्छार्य विकार आहिताति वरण्या एने पुत्रमाहर २५ । वर्ष पुत्र एवं वसामी-ता सुरैसरस चंडचले च केसं च पहुच छाउँही

उचत च छाय च पडुच लेसुद्देसे लेस च छाय च पडुच उचतुद्देसे, तत्थ खलु इमाओ दुचे पडिवत्तीओ पण्णताओ, त०-तत्थेगे एवमाहस्र-ता अत्थि ण से दिवसे जंसि च ण दिवसिस स्रिए चडपोरिसिच्छाय णिव्वत्तेद्द, अत्थि ण से दिवसे जिस च ण दिवसिस स्रिए दुपोरिसिच्छाय णिञ्बत्तेइ० एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमा-इस-ता अत्थि ण से दिवसे जिस च ण दिवसिस सूरिए दुपोरिसिच्छाय णिव्वत्तेइ, अत्यिण से दिवसे जसि॰ दिवसिस स्रिएणो किचि पोरिसिच्छाय णिव्वत्तेड॰ २, तत्य जे ते एवमाहसु-ता अत्य ण से दिवसे जिस च ण दिवसित स्रिए चडपोरिसिय छाय णिन्वतेइ, अत्थि ण से दिवसे जिस च ण दिवसिस स्रिए दोपोरिसिय छाय णिव्वत्तेइ, ते एवमाहं धु-ता जया ण स्रिए सव्वव्भतर मंडल उवसकिमत्ता चार चरइ तया ण उत्तमक्टुपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवा-लसमुहुत्ता राई भवइ, तसि च ण दिवससि स्रिए चउपोरिसिय छाय णिव्वतेइ, त॰-उग्गमणमुहुत्तिस य अत्थमणमुहुत्तिस य, छेस अभिवह्वेमाणे णो चेव ण णिवुह्देमाणे, ता जया ण स्रिए सब्बवाहिर मडल उवसकिमत्ता चार चरइ तथा ण उत्तमक्ट्रपत्ता उक्नोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई मनइ, जहण्णए दुवालस-सुहुते दिवसे भवइ, तिस च ण दिवसिस सूरिए दुपोरिसिय छाय णिव्यतेइ, त॰-उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्यमणमुहुत्तसि य, लेस अभिवुह्वेमाणे णो चेव ण णिवुह्वे-माणे० १, तत्य ण जे ते एवमाहसु-ता अत्य ण से दिवसे जिस च ण दिव-सित सूरिए दुपोरिसिय छाय णिव्वत्तेइ, अत्थि णं से दिवसे जसि च ण दिवसिस स्रिए णो किंचि पोरिसिय छायं णिव्वतेद्द, ते एवमाहंसु-ता जया ण स्रिए सव्व-न्मतर मंडल उवसकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, तसि च ण दिवससि स्रिए दुपोरिसिय छाय णिव्यतेह, तें०-उग्गमणमुहुत्तिस य अत्यमणमुहुत्तिस य, लेस अभिवहेमाणे जो चेव ण णिवुहुमाणे , ता जया ण सूरिए सन्ववाहिरं मङल उवसकामित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकद्वपत्ता उक्कोसिया अद्वारससुहुता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तिस च ण दिवसिस सूरिए णो किंन्वि पोरि-सिच्छाय णिव्वतेह, त०-उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्यमणमुहुत्तंसि य, णो चेव ण छेस अभिवुद्देमाणे वा णिवुद्देमाणे वा॰ २, ता कङ्कद्व ते स्रिए पोरिसिच्छाय णिव्वत्तेड आहिताति वएजा <sup>2</sup> तत्य खळ इमाओ छण्णउई पडिवत्तीओ पण्णताओ, त०-तत्येगे एवमाहम्र-ता अत्थि ण से देसे जिस च णं देसिस सूरिए एगपोरिसिय छाय णिव्व-त्तेइ॰ एगे एवमाहसु, एगे पुण एवमाहसु-ता अत्थिण से देसे जिस च ण देसिस स्रिए दुपोरितियं छाम निम्मतेषः एवं एएन अभिकानेमं नेवानं जाव प्रन्नउर्ह पोरिधिन्छार्य निम्मतेह तत्प थे ते एवमाईस्र-ता अस्य में से देसे जंस व में देसी सरिए एगपोरिसिनं कार्य विन्यतेष, तं एनमाईस-ता स्रियस्स वं सम्बद्धिमान्मे प्रपादिक्षीमो बहिया अभिव्यस्त्राहि सेवाहि ताहिज्यमावीहि इमीसे रमवप्पनार प्रकीए वहसमस्मित्रजामो भूमिमायाची मानार्व सरिय वर्ष वस्तेनं प्रवास एगाए बडाए एनेलं छानाजुमाजप्पमानेणं उमाए तत्व से सुरिए एमपोपैसिनं हार्व किम्बीत, तत्व के ते एक्माईस-ता करिय में से बेसे कंश व में बेसेंसे स्रीए ह्योरिधिनं कार्य विम्नोक, ते एक्साइड-ता स्रीयस्य वं सन्त्रहेड्निमान्त्रे सरियप्यविश्वीको बह्रेवा कमिनिसहियाई केसाई साविज्ञमानीई हमीसे स्वयप-माए प्रदर्शए बहुसमरमनिकाको भूमिनागाको जानहर्व सुरिए उड्डं उक्टीनं एवर-याहि दोहि सदाहि दोहि छायानुसामप्पमानेहि उमाए एस्थ ने से सुरेए हुपोरिसिं कार्य विस्वतेह, एवं केवलं जान तत्व ने ते एवमाईछ-ता नत्व में हे देहे नेहि व नं देवंचि सुरेए स्वयन्तर्थं पोरिनिनं स्वयं निम्बतेष्ठ, ते एक्साइंस-ता स्रियस्य व सम्बद्धिद्वासो स्र्याविद्यासे वहवा अभिवित्ताहा कैसाई ताविजनावीई स्मीते रसध्यमाए पुरुषेए बहुसगरमधिजाको मुनिमागाको बाक्डबं सरिए वर्ड उपतेर्प एक्ट्रमाहि छज्यबर्ट्स अवस्थानाणप्यमानाहि समाए एत्व में से सूरिए अवटर्ड पोरिसिर्व काय विकास एगे एकमाईस का पुण एवं क्यासी-ता सहरेगकरमाई पोरिसीनं सुरिए पोरिशिकार्य निकारेक् ता वस्त्रुपोरिसी नं कामा विस्तरह 🎏 मए था संसे वा है ता विभागे गए का सेसे वा ता प्रोरेसी व अपना देवस्य 🎏 गए वा ऐसे वा है ता चटकमाने गए वा ऐसे वा ता दिवसुपोहिसी के अना दिवस्स्य कि मए वा धेसे वा ! ता प्रवस्माने गए वा सेसे वा एवं स्वरूपे हैिं सोई पुन्का दिवसस्य भार्य कोई वायरण जाव दे। कदकारणासद्विप्रेरेरीकाना विकारस कि गए वा सेने वा <sup>8</sup> ता एगूनवीससमागे गए वा सेने वा ता वारणा-सङ्गिरिसी न झामा विनसस्य 🏂 गए वा सेसे ना 🖁 ता नानीससहस्यमाने यर् वा सेरो वा ता साइरेगमनजासक्कियोरिसी नं आना विवसस्य 🎏 यए वा सेरे वार् ता गरिव किन्वि वर्ष का धेरी वा तत्व यस्त इसा प्रवासिक्तिक्का स्पना प र्व-चैमन्द्रामा रञ्जुन्द्रम्या पागारकामा पासामकामा द्रवसन्द्रमा उपसन्द्रमा क्युकोमस्थाना बाद्धीमना समा पविद्या चीक्यकाना पनवाच्याया पुरकोठदना पुरिमक्टिमाठवगना पश्चिमक्टमाठवगया कानागुनाइची केट्टानुनाइचीकाना कार हामा १७ पोक्काना तरम में योककाता महिमहा पण्यता तैनहा-गोककामा समृद्

• \*

गोलच्छाया गाटलगोलच्छाया अवद्गुगाढलगोलच्छाया गोलावलिच्छाया अवद्गुगोला-वलिच्छाया गोलपुजच्छाया अवद्गुगोलपुजच्छाया २५॥ २९॥ **णवमं पा**हुडं समत्तं॥९॥

ता जोगेति वत्थुस्म आविष्याणिवाए आहितेति वएजा, ता कह ते जोगेति वत्थुस्स आविष्याणिवाए आहितेति वएजा १ तत्थ खलु इमाओ पच पिडवत्तीओ पण्णताओ, त०-तत्थेगे एवमाहसु-ता सन्वेवि णं णक्खता कित्तयाउया भरणिपजवस्ताणा प० एगे एवमाहसु १, एगे पुण एवमाहसु-ता सन्वेवि णं णक्खता महाइया अत्सेसपज्वसाणा पण्णता एगे एवमाहसु २, एगे पुण एवमाहसु ता सन्वेवि णं णक्खता विष्टाउया सवणपज्वसाणा पण्णता एगे एवमाहसु ३, एगे पुण एवमाहसु ता सन्वेवि णं णक्खता अस्तिणीआइया रेवइपज्जवसाणा प० एगे एवमाहसु ४, एगे पुण एवमाहसु ४, व्य पुण एव वयामो-ता सन्वेवि णं णक्खता अभिईआइया उत्तरासाहापज्जवसाणा पण्णता, तजहा-अभिई सवणो जाव उत्तरासाहा ॥ ३०॥ दसमस्स पाहु उत्तरा पढमं पाहु उपाहु समत्तं ॥ १०-१॥

ता कह ते मुहुत्ता आहितेति वएजा ? ता एएसि ण अट्टावीसाए णक्खताण अत्यि णक्खते जे ण णव मुहुते सत्तावीस च सत्तिष्ट्रभागे मुहुत्तस्स चदेण सिद्ध जोय जोएइ, अत्यि णक्खता जे ण पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सिद्धं जोय जोएंति, अत्यि णक्खता जे ण तीस मुहुत्ते चदेण सिंद जीय जीएति, अत्थि णक्खता जे ण पणयालीसे मुहुत्ते चदेण सार्द्धे जोय जोएंति, ता एएसि ण अद्वावीसाए णक्ख-त्ताण क्यरे णक्खते जे ण णवमुहुत्ते सत्तावीस च सत्ति हिभाए मुहुत्तस्स चदेण सिंद्धं जोय जोएइ, कयरे णक्खता जे ण पण्णरसमुहुते चंदेण सार्द्धं जोय जोएति, कयरे णक्खता जे ण तीस मुहुते चंदेण सिंद्धं जोय जोएति, कयरे णक्खता जे ण पणयालीस मुहुत्ते चदेण सिर्द जोय जोएति १ ता एएसि ण अट्टावीसाए णक्खत्ताण तत्य जे से णक्खते जे ण णव मुहुत्ते सत्तावीस च सत्तिहिभागे मुहुत्तस्स चदेण सिद्ध जोय जोएइ से ण एगे अमीई, तत्थ जे ते णक्खता जे णं पण्णरसमुहुते चदेण सिंद जोय जोएति ते ण छ, त०-सयभिसया भरणी अद्दा अस्सेसा साई जेट्टा, तत्य जे ते णक्खता जे ण तीस मुहुत चदेण सिर्द्ध जोय जोएति ते ण पण्णरस् त०-सवणे धणिष्ठा पुव्वामइवया रेवई अस्सिणी कत्तिया मिगसिरपुस्सा महा पुन्वाफरगुणी हत्यो चित्ता अणुराहा मूलो पुन्वासाढा, तत्य जे ते णक्खता जे ण पणयालीस मुहुत्ते चदेण सिर्दे जोय जोएति ते ण छ, तजहा-उत्तराभद्वया रोहिणी

पुनम्मस् उत्तरारम्युणी निसाहा उत्तरासामा ॥ ११ ॥ ता एएवि म बहुगीशए यानदार्गाजं जिल् यनस्योते से गं बचारि कहोरते एक सुद्धते परिएम सर्दि मोर्न सोएइ, श्रतिय पनस्यात से गं ह सहोरते एत्यागें न सुद्धते प्रिएम सर्दि मोर्न बोऐदि अरिय पनस्यात से गं तेरस स्वहोरते हामस्य समुद्धते प्रोएस सर्दि मोर्न बोऐदि अरिय पनस्यता से गं नीर्स स्वहोरते हामस्य समुद्धते पूर्वेच सर्

बोएडि ता एएडि वे बद्धावीसाए वस्त्रवाशय करने वस्त्रकों से वं जाशि सरेएडे एक मुदुते प्रदेश सब्दि बोध बोएड कमरे वस्त्रका से य क बहोरते एक्पीस-मुद्दों पूर्ण सब्दि सेमें बोएडि कमरे वस्त्रका से वे तरस कारोरते बारस मुद्दी मुंत पूर्ण को बोद बोध बोएडि कमरे वस्त्रका से वं बीध करोरते क्षिण्य न मुद्दी पूर्ण सब्दि कोमं बोएडि कार वस्त्रका से वं बीध करोरते क्षिण्य न मुद्दी पूर्ण सब्दि कोमं बोएडि का एएडि वं बद्धावीसाए वस्त्रकालने दस्त्र से से वस्त्रकों से वं बतारि क्योरते छव मुदुते पूर्ण सब्दि सोम बोएड से व एमे समीई, हम्ब

सुप्ती हस्त्री निया अस्त्राह्या सूखे पुन्तासका तस्य ने ते जरूनता ने में पैर बहोरते तिन्त्र म मुहुके सूरेन सर्वि योग नोप्ति से मं त तक्षा-जतरामहरून रोवेली पुनन्त्रस्त जतराम्बर्ग्या निमाहा कत्तरासा ॥ १२ ॥ तस्य स्तर पाहुबस्स विद्वर्ष पाहुबस्याहुई साम के १०-२ ॥ ता को ने प्रमान कार्यामा नामा ॥ सामा वा स्वर्णाना स्वरामीना स्वरामीना

ता घट ते एकमाया बाहितारि वपना । ता प्रपृष्ठ यं बहुत्तीवाए करनातां किया वर्षातां के स्वरं व प्रकार प्रकार प्रकार करिया एक्सेमार्थ क्रमस्या प्रकार क्रमस्या प्रकार क्रमस्य प्रकार क्रमस्य प्रकार क्रमस्य प्रकार क्रमस्य क्रमस्य

जाब बजरे करन्यता जनसमाधा शिवहुक्तेसा प्रवासीगरस्वदुताय । ता एरंगी वे बद्धामीगर् कस्तामक ताब जे ता सरस्ता पुर्वमामा सामकेषा वीतापुत्रमं । व के की तीवापुत्रमं व के की तीवापुत्रमं वा ताब जे ता प्रदेश । व के की तीवापुत्रमं व ताब जे ता प्रवास । व ताब जे तो महत्ता । व को का ताब जे तीवापुत्रमं व तो की ताब जे तीवापुत्रमं व तो की ताब जे तीवापुत्रमं व ताब की तीवापुत्रमं व तो की तीवापुत्रमं व तो की तीवापुत्रमं व ती

सयभिसया भरणी अहा अस्सेसा साई जेट्टा, तत्य जे ते णक्खता॰ उभयभागा दिवहृक्खेता पणयालीस मुहुत्ता प॰ ते ण छ, तजहा-उत्तरापोट्टवया रोहिणी पुणव्वस् उत्तराफगुणी विसाहा उत्तरासाटा ॥ ३३ ॥ दसमस्स पाहुडस्स तह्यं पाहुडपाहुड समत्त ॥ १०-३॥

ता कह ते जोगस्त आई आहिताति वएजा <sup>2</sup> ता अभीईसवणा खल्ल दुवे णक्खता पच्छाभागा समक्खेता साइरेगऊयालीसइमुहुत्ता तप्पडमयाए साय चदेण सिंद्धं जोयं जोएति, तओ पच्छा अवर साइरेय दिवस, एव खळु अभिईसवणा दुवे णक्खत्ता एगराई एग च साइरेग दिवस चदेण सिद्ध जोय जोएति जोय जोएता जोय अणुपरियद्दति जोय अणुपरियद्दिता साय चद धणिद्वाण समप्पेंति, ता धणिद्वा खलु णक्खत्ते पच्छभागे समक्खेते तीसइमुहुते तप्पढमयाए साय चंदेण सर्द्धि जीय जोएइ २ ता तस्रो पच्छा राई अवर च दिवस, एवं खलु धणिद्वा णक्खते एग च राई एग च दिवस चदेण सिद्धं जोयं जोएइ जोएत्ता जोय अणुपरियदृह जोय अणुपरि-यदिता साय चद सयभिसयाण समप्पेइ, ता सयभिसया खळु णक्खते णत्तभागे अवहुक्खेत्ते पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सर्द्धि जोय जोएइ णो लभइ अवर दिवस, एव खल्ल सयभिसया णक्खते एग राइ चदेण सिद्ध जोय जोएइ जोय जोएता जोयं अणुपरियद्द जोय अणुपरियद्विता पाओ चदं पुन्वाण पोद्ववयाण सम-प्पेइ, ता पुन्वापोट्टवया खलु णक्खते पुन्वभागे समक्खेते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सिंद जोय जोएइ, तओ पच्छा अवरराइ, एव खलु पुन्वापोद्ववया णक्वते एग च दिवस एग च राइ चंदेण सिद्धं जोय जोएड २ त्ता जोय अणुपरि-यदृइ २ ता पाओ चद उत्तरापोट्टवयाण समप्पेइ, ता उत्तरापोट्टवया खलु णक्खते उभयमाने दिवष्टुक्खेते पणयालीसङ्मुहुते तप्पढमयाए पाओ चदेण सर्द्धि जोय जोएड् अवर च राईं तओ पच्छा अवर दिवस, एव खलु उत्तरापोद्ववया णक्खते दो दिवसे एग च राइ चदेण सिद्धं जोय जोएइ अवर च राइ तओ पच्छा अवरं दिवस, एवं खलु उत्तरापोद्वनया णक्खते दो दिवसे एग च राइ चदेण सिर्द जोय जोएइ जोइत्ता जोय अणुपरियद्व २ त्ता साय चद रेवईण समप्पेइ, ता रेवई खळु णक्खत्ते पच्छमागे समक्खेते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सर्दि जोय जोएह, तओ पच्छा अवरं दिवस, एव खलु रेवई णक्खते एग राइ एग च दिवस चंदेण सिदं जोय जोएइ २ ता जोर्थ अणुपरियदृद्द २ ता सार्य चद अस्सिणीण समप्पेइ, ता अस्तिणी खल्ल णक्सते पच्छमागे समक्खेते तीसङमुहुत्ते तप्पढमयाए साय चढेण सिंद्धं जोय जोएइ, तओ पच्छा अवर दिवस, एव खिंछ अस्सिणी णक्खते एगं च ४५ सत्ता०

व्सानस्स पाहुबस्य जावरचे पाहुबसाहुबै समस्त ॥ १०-५ ॥
या वर्ष रा इमा उस्तवा इत्येष्ट्रमा वास्तिगति पएवा १ तत्त स्व १ मे नार्य इमा नार्य उत्युक्त कार्या हुव्येष्ट्रमा या नार्य इमा राव्या-विद्वान्त्रे उत्तराम्ह्यान्त्र्यं कारियांच्यं विभावत्र्यं उत्याच्यः प्रस्तक्रमे व्यक्तम् उत्तरा-क्रम्णणिक्रं विभावत्र्यं विस्तवाद्यं वृक्तम् व्यक्तमं व्यव्यावत्र्यं नार्यः उत्तरम् प्रस्तो उत्तरमं प्रस्ता उत्तरमं प्रस्ता उत्तरमं प्रस्ता व्यक्तमं विद्वान्त्रयम् वित्वन्त्रयम् विद्वान्त्रयम् विद्वान्तिः विद्वानिः विद्वानिः विद्वानिः विद्वानिः विद्वान्तिः विद्वानिः विद्वानि

पंचार पांडु पांडु के पारंपता में रिकेट बंदामा है तस्य उस्त न्याओं वारण दुष्टिन साह्य दें पुष्टिमासिकी बाहितीलें बंदामा है तस्य उस्त न्याओं वारण दुष्टिन मासिकीओं वारम असावागाओं रूक्ताओं तैवहा—साविद्वां पोंडु गई असोवा क्षित्रें प्रमानिकी के क्षा करताता ओएंडि है ता तिविद्य करताता औएंडि रैक्डा—साविद्यं प्रमानिक क्षा प्रमानिक दुष्टिमां के करताता औएंडि ते रिका करताता औएंडि तैवहा—साविस्था पुरुगणेंड्र मा उत्तरीन वा ता आमार्क्स दुष्टिमां कई परायता औएंडि है ता दोलिक करताता औएंडि तैवहा— रेवई य अस्सिणीय, ता कत्तियण्णं पुण्णिमं कड णक्खत्ता जोएंति<sup>२</sup> ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा-भरणी कत्तिया य, ता मग्गसिरीपुण्णिम कइ णक्खत्ता जोएति <sup>२</sup> ता दोष्णि णक्खता जोएति, तंजहा-रोहिणी मिगसिरो य, ता पोसिणां पुण्णिमं कइ णक्खता जोएंति १ ता तिण्णि णक्खता जोएंति, तजहा-अद्दा पुण-व्वस् पुस्सो, ता साहिण्ण पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएति <sup>१</sup> ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, त॰-अस्सेमा महा य, ता फरगुणिण्ण पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति <sup>२</sup> ता दुष्णि णक्खता जोएंति, तं०-पुव्याफगुणी उत्तराफगुणी य, ता चेतिण्ण पुण्णिम कइ णक्खता जोएति व ता दोण्णिन, तन्न्हत्थो चित्ता य, ता वेसाहिण्णं पुष्णिम कह णक्खता जोएंति 2 ता दोण्णि णक्खता जोएंति, त०-साई विसाहा य, ता जेड्डामूलिण्णं पुण्णिमासिणि कड णक्खत्ता जोएति <sup>२</sup> ता तिण्णि णक्खत्ता जोएति, त॰-अणुराहा जेट्टा मूलो, ता आसाढिण्णं पुण्णिमं कड् णक्खता जोएति 2 ता दो णक्खत्ता जोएति, तंजहा-पुव्वासाढा उत्तरासाढा ॥ ३६ ॥ [णाउमिह अमावास जइ इच्छिंस किम्म होइ रिक्खिम्म । अवहारं ठाविजा तत्तियरूवेहि सगुणए ॥ १ ॥ छावडी य मुहत्ता विसिट्टभागा य पंच पिडपुण्णा । वासिट्टभाग-सत्तद्विगो य इक्को हवह भागो ॥ २ ॥ एयमवहाररासि इच्छअमावाससगुण कुन्ना । णक्खत्ताण एत्तो सोहणगविहिं णिसामेह ॥ ३ ॥ वावीस च सुहुत्ता छायालीस विसद्विभागा य। एय पुणव्वस्रस्स य सोहयव्व हवइ वुच्छं ॥ ४ ॥ वावत्तर सय फरगुणीण वाणउइय बे विसाहास । चतारि य वायाला सोज्झा उ उत्तरासाढा ॥ ५ ॥ एय पुणव्वसुरुस य विसद्विभागसहिय तु सोहणग । इत्तो अभिईआई विड्य वुच्छामि सोहणग ॥ ६ ॥ अभिडस्स णव मुहुत्ता विसद्विभागा य हुंति चउवीस । छावडी असमत्ता भागा सत्तिष्ठियक्या ॥ ७ ॥ उगुणह पोट्टवयाइसु चेव णवोत्तर च रोहिणिया । तिसु णवणवएसु भवे पुणव्यसू फुम्गुणीओ य ॥ ८ ॥ पचेव उगुणपण्ण सयाड उगुणुत्तराई छचेव । सोज्झाणि विसाहामुं मूळे सत्तेव चोयाला ॥ ९ ॥ अद्वसय उगुणवीसा सोहणगं उत्तराण साढाण । चउवीस खळु भागा छावही चुण्णियासो य ॥ १० ॥ एयाइ सोहइत्ता ज सेस त हचेइ णक्खत्तं । इत्य करेड उडुवड स्रेण सम अमावास ॥ ११ ॥ इच्छापुण्णिमगुणिओ अवहारो सोत्य होइ कायव्वो । त चेव य सोहणग अभिईआङ तु कायव्व ॥ १२ ॥ छदमि य सोहणगे ज सेस त भविज्ज णक्खत्त । तत्य य करेड् टडुवड् पडिपुण्णो पुण्णिम विडरूं ॥ १३ ॥ ] ता साविद्धिण्ण पुण्णिमासिणि कि कुल जोएइ उवकुल जोएइ कुलोवकुल जोएड <sup>2</sup> ता कुल वा जोएड उवकुल वा जोएइ कुलोवकुल वा कि इन्हें बोएर रबदुओं बोएर इस्टोरइस्हें ना बोएर ? ता इन्हें ना बोएर उनक्ष ना जोएह कुओबदुर्ज ना जोएह, हुर्ज जोएमाये उत्तरापोहुनया नकराते जोएह, स्व-इसं बोएमाचे पुरमापुद्धवरा यस्यति बोएह, इस्प्रेस्ट्रमं बोएमान स्वमिधवा नस्वात ओएइ, पोक्षक्त्र्यं पुरूषमातिर्थि 🗫 वा बोएइ उवक्र वा जोएई इस्पेन इस्में ना जोएड, इकेन वा जुत्ता ३ पुद्धवबा पुष्पिया खुत्तादि वत्तम्मं हिना ता बासोर्ड में पुरिनमासियि कि इसे बोएड स्वयुक्त बोएड इस्मेबरुस बोएड स इकेपि जोएर जबदुर्किप जोएर को करनाइ इस्सेन्ट्राई इस्तें बोएमाचे धनिसमी वरपति जोएह, छन्द्रल बोएमाने रे**न्हें यनक**ते बोएह, कारोहं में पुन्निमें इसे वा जोएइ उद्दु<del>र्व</del> वा जोएइ, इक्टेय वा छत्ता उ<del>व्हुके</del>ण वा छत्ता अस्मीर्दै वं पुल्लिमा ब्रुतादि बत्तम्बं सिवा एवं शेवन्यात थोसं पुण्यमं सेट्रामूबं पुल्लिमं व इक्लेबर्डकंपि क्षेत्रह, जबसेसास गरिव इस्लेबर्डकं बाब शासाबी पुण्लिमा श्रासी क्तरमं रिया । ठा समिद्धि मं असानार्थ **भद्र शक्कता बो**ण्दि शि भन्दाता जोएदि तंत्रहा-अरपेशा व महा य एवं एएनं श्राप्तकानेनं सेमर्प पोद्वार्य हो मन्द्रता बोल्डि तंब्रहा-पुम्बाप्त्रमुची उत्तरापरगुची अस्टोर्ड हो इत्यों विक्ता व कक्तियें साई विसादा व सम्पतिरं क्युराहा केट्टा मूखें पेति पुम्भासाहा उत्तरासाहा माद्रि अमीदै स्वयो प्रस्कृत फ्रम्युवि स्वमित्या पुरुरापोञ्जनना उत्तरापोञ्जनना चेति देनहैं अस्तिची य निसाई मरची कीतना य भेडूम्पूर्व रोहियो सिगसिर व ता आसार्वि व व्यमानार्वि स्त्र वस्पता भोएंदि है ता विभिन्न वक्त्यता जोएंदि वं ← जहा पुरुष्यस् पुस्सो हा सामित्रि चं समावास कि इसे योएं। उवज्रसं ओएं, इकोरकुरं ओएं, है हा इसे वा सेएं, सबुज्ञ वा जोएर जो सक्तर इस्तेवपुर्व इसे जोएगाने सहा यहदाते बोएर्ट <sup>हम</sup> कृतं कोर्प्सामे असिकेसा जोएइ, कुकेण वा श्वता उत्रक्रकेण वा शुता सा<sup>हि</sup>ड्डी समानासा सुतादि बत्तम्बं सिना एवं नेयम्बं गवरं सम्मन्तिसर भाहीए फारानीर मासाबीए म अमावासाए इन्धरकुर्मीय जोएड, सेसेट गरिय बाव आसाबी भमागता जुलाठि वत्तम्बं सिवा ॥ १०॥ इसम्बस्स पादुङस्स छट्ट पादुङ पादुर्व समर्च 🛭 १०-६ ॥

इस्पेक्टमं मोएमाने अभिद्रं पक्यते बोएह, ता साविद्विः पुनिवर्ग हुमं वा बोएह उन्द्रमं ना बोएड् कुस्प्रेन्ड्रकं ना जोएड्, कुम्पेय ना खुत्ता उन्द्रकेण ना सुता इन्पेन-इंकेन वा जुता साबिद्री पुल्यमा जुताबि वत्तम्ब सिया ता पोठ्रवद्रम्यं पुल्यमं ता कहं ते सण्णिवाए आहिएति वएजा १ ता जया ण साविद्वी पुण्णिमा भवइ तया ण माही अमावासा भवइ, जया ण माही पुण्णिमा भवइ तया ण साविद्वी अमावासा भवइ, जया ण पुट्ठवई पुण्णिमा भवइ तया ण फरगुणी अमावासा भवइ, जया ण फरगुणी पुण्णिमा भवइ तया णं पुट्ठवई अमावासा भवइ, जया ण आसीई पुण्णिमा भवइ तया णं चेती अमावासा भवइ, जया णं चेती पुण्णिमा भवइ तया णं खासोई अमावासा भवइ, जया ण कतिई पुण्णिमा भवइ तया णं वेसाही अमावासा भवइ, जया ण वेसाही पुण्णिमा भवइ तया ण कतिया अमावासा भवइ, जया ण मग्गितिरी पुण्णिमा भवइ तया ण जेट्ठामूली अमावासा भवइ, जया ण जेट्ठामूली पुण्णिमा भवइ तया ण मग्गिरी अमावासा भवइ, जया ण पोसी पुण्णिमा भवइ तया ण कासाढी अमावासा भवइ, जया ण यासाढी पुण्णिमा भवइ तया ण पोसी पुण्णिमा भवइ तया ण पोसी पुण्णिमा भवइ तया ण पोसी अमावासा भवइ, जया ण यासाढी अमावासा भवइ तया ण पोसी अमावासा भवइ तया ण पासा कर तया ण पोसी अमावासा भवइ तया ण पासा कर तया ण पोसी अमावासा भवइ तया ण पासा कर तया ण पासा कर तया ण पासा कर तया ण पासा कर तया ण भवि अमावासा भवइ तया ण भवि अमावासा भवइ तया ण भवि अमावासा भवइ तया ण भवि अमावासा भव कर तया ण भवि अमावासा भव कर तया ण भवि अमावासा भव कर तया

ता कहं ते णक्खत्तसिठेई आहितेति वएजा १ ता एएसि णं अद्वावीसाए णक्खत्ताणं अभीईणक्खते किंसिठए पण्णते १ ता गोसीसावित्सिठिए पण्णते, ता सवणे णक्खते किंसिठए पण्णते १ ता काहारसिठए प०, धणिद्वाणक्खते सर्जणि-पर्नाणगसिठए, सयिस्याणक्खते पुष्फोवयारसिठए, पुन्वापोद्वयाणक्खते अवहु-वाविसिठए, एव उत्तरावि, रेवईणक्खते णावासिठए, अस्सिणीणक्खते आसक्खध्सिठए, भरणीणक्खते भगसिठए, किंत्रयाणक्खते छुरघरगसिठए, रोहिणीणक्खते सगडिए, भरणीणक्खते भगसिठए, किंत्रयाणक्खते छुरघरगसिठए, रोहिणीणक्खते सगडिए, भगिसिराणक्खते मिगसीसावित्सिठए, अद्याणक्खते रहिरविदु-सिठए, पुण्व्यस्णक्खते तुलासिठए, पुष्फे णक्खते वद्धमाणसिठए, अस्पेसाणक्खते पडागसिठए, महाणक्खते पागारसिठए, पुव्वाफ्रगुणीणक्खते अद्धपित्यंकसिठए, एव उत्तरावि, हत्ये णक्यते हत्यसिठए, चित्ताणक्खते मुहफुळसिठए, साईणक्खते खीलगसिठए, विसाहाणक्खते दार्माणसिठए, अणुराहाणक्खते एगावित्सिठए, जेष्टाणक्खते गयदंतसिठए, मूले णक्खते विच्छुयलगोलसिठए, पुव्वासाढाणक्खते गयवंतसिठए, उत्तरासाढाणक्खते साइयसिठए प०॥ ३९॥ दसमस्स पाहु-डस्स अहमं पाहुडपाहुडं समत्तं॥ १०-८॥

ता कह ते तार्गे आहिएति वएजा <sup>2</sup> ता एएसि ण अट्टावीसाए णक्खत्ताणं अमीईणक्यते कडतारे प॰ <sup>2</sup> ता तितारे पण्णेन, सवणे णक्खते तितारे, धणिट्टाणक्खते पणतारे, सयभिसयाणक्खते सयतारे, पुन्वापोट्टवयाणक्खते हुतारे, एवं उत्तरावि, रेवई॰ वर्तासडतारे, अस्सिणीणक्यते तितारे, भरणी तितारे, कत्तिया छतारे,

राक्षा वनकार मनावर स्वाक्त का एनावर प्रावस्त्र प्रवास्त्र प्रवस्त्र स्वाक्त स्वाक्त स्वाक्त स्वाक्त स्वाक्त स्व भूक्त प्रवास प्रवास प्रवास स्वाक्त स्

पेंदि ! ता चतारि चनकता पेंदि तंबडा-उत्तरासाडा अभिडे सबनो विस्त

उत्तरासामा नोस्स महोरते नेह, नमिहे सत नहोरते नेह, सममे भट्ट बहोरते मेरे. षरिद्धा एम महोरत्तं क्षेत्र, तेति व व मार्थसि वर्तशालयोगिसीए समार स्टिए स्टरपरिकार तरस में आसस्य चरिने विवसे से पायाई चतारि य मंगुकार पोरिसी भक्त, ता वासार्य दोन्द्र मासै का नक्यता थेति । ता चतारि कायता पेंद्रि तंत्रका-वरिद्धा स्थामिसया पुरुषापोद्धक्या कत्तरापोद्धक्या प्रशिक्षा वी(स महोरते भेड स्थिमस्या सत्त कहोरते नेह प्रम्यापोठस्या अट सहोरते भेट उत्तरापेक्ष्यमा एवं सहोरते केंद्र, तीव व मं मार्थति अद्यंत्रक्योरिसीए झाबाए परिए करपरियद्भ, तस्य वं मासस्य चरिमे विवसे हो पराई कर व संगुक्तई पोरिसी मका, ता बारार्थ तक्ष्यं मास का बन्यता वेंदि । ता विका काकार वेंदि तं -बत्तरापोद्धस्या रेवहं करिसणी सत्तरापोद्धस्या बोइस बहोरते मेह, रेवर परणारस बढ़ोरते नंद, अस्सियी एगं अहोरतं नेष्ठ, तीर च न नासीर हवाडय-गुम्बप् चेरिसीप् झानाए सुरिष् न्ह्युपरियाझ्, तस्स व गासस्स नहेमदिक्से निकार विक्ति पनाई पोरीची मकड, ता कासार्थ जनत्वं आस क्य जनवता मेरी <sup>5</sup> ता विभिन्न नम्बता येदि तं -बरिसनी भरूनी कविया अस्तिनी कडह्स बहेरते मेरु मरणी पण्नरस महोरते नेर, कतिया एवं महोरतं नेर, तंति च वं मार्चेरि सोकसगुकाए पोरिस्कायाए सुरिए क्लुपरिवाह, तस्स व मासस वरिये विक्षे तिनिम पनाई चचारि व मधुकाई पोरिची सन्छ । ता हैसंताचं पक्षमें सार्थ 🚅 वनस्त्रता केंद्रि है ता तिकिन सम्बन्धाः वेंद्रि र्त•-कतिया रोहियाँ चंठाया वित्तया वेह्रेस कहोरते मेह, रोहिजी प्रन्यरस ब्हारते सेह, संठामा एवं अहोरते सेह, तीत व व मासरि वीसगुक्रमोरिसीए कानाए स्रीए अलुपरिनाद, तस्य वं मासरि वारीने विवसे दिन्यि पमाहं क्छ न क्लुमाई पोरिसी सक्छ, ता हेर्मताण दोने सार्थ दह मन्द्रपा जेति <sup>३</sup> ता दत्तारि वन्द्रता जैदि त - स्टाया जहा पुत्रज्ञस् पुरसो संग्रामा मोहस बहोरते केंद्र अहा सत बहोरते केंद्र, प्रथम्बस् बढ़ बहोरते केंद्र,

पुस्से एगं अहोरत्त णेइ, तसि च ण माससि चउवीसगुलपोरिसीए छायाए स्तिए अणुपरियदृह्, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहद्वाई चतारि पयाइ पोरिसी भवइ, ता हेमनाण तह्य मास कह णक्यात्ता गेंति <sup>2</sup> ता तिष्णि णक्खता गेंति, त०-पुस्से अस्सेसा महा, पुस्से चोइस अहोरत्ते णेइ, अस्सेसा पंचदस अहोरते णेइ, महा एगं अहोरत्त णेइ, तसि च ण माससि वीसगुलाए पोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियट्ट, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं अहुगुलाइ पोरिसी भवइ, ता हेमताण चउत्थ मास कह णक्खता जेति ? ता तिण्णि णक्खता जेति, त०-महा पुट्या-फरगुणी उत्तराफरगुणी, महा चोद्दस अहोरते णेइ, पुट्याफरगुणी पण्णरस अहोरते णेइ, उत्तराफरगुणी एम अहोरत णेइ, तसि च णं मासिस सोलसअगुलाए पोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियदृइ, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाई चतारि य अगुलाइ पोरिसी भवइ । ता गिम्हाण पढमं मास क्ह णक्खता गेंति <sup>2</sup> ता तिण्णि णक्खता जैति, त०-उत्तराफगुणी हत्थो चिता, उत्तराफगुणी चोइस अहोरते णेइ, हत्यो पण्णरस अहोरत्ते णेइ, चित्ता एग अहोरतं णेइ, तिस च ण मासिस दुवाल-सगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियदृह, तस्स णं मासस्य चरिमे दिवसे छेहृहाई तिष्णि पयाइ पोरिसी भवइ, ता गिम्हाण विडय मास कइ णक्खता गैंति ? ता तिण्णि णक्खता णेंति, त०-चित्ता साई विसाहा, चित्ता चोइस अहोरते णेइ, साई फ्णरस अहोरते पेइ, विसाहा एग अहोरत पेइ, तसि च प माससि अहगुलाए पोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियदृह्, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाह अह य अगुलाइ पोरिसी भवड, ता गिम्हाण तइयं मास कड् णक्खता गैति ? ता तिणक्खत्ता गेंति, त०-विसाहा अणुराहा जेट्टामूलो, विसाहा चोइस अहोरत्ते णेइ, अणुराहा पण्णरस०, जेद्वामूलो एग अहोरत्त गेइ, तसि च ण मासंसि चडरंगुलपो-रिसीए छायाए स्रिए अणुपरियदृइ, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाणि य चतारि अगुलाणि पोरिसी भवड, ता गिम्हाण चलत्थ मास कइ णक्खता णेति ? ता तिण्णि णक्खता णेति, त०-मूलो पुन्वासाडा उत्तरासाडा, मूलो चोद्दस अहोरत्ते णेइ, पुर्वासाढा पण्णरस अहोरते णेइ, उत्तरासाढा एग अहोरत्त णेइ, तसि व ण माससि वटाए समचडरससिठियाए णग्गोहपरिमङलाए सकायमणुरगिणीए छायाए स्रिए अणुपरियदृइ, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे छेहृद्वाइ टो पयाई पोरिसी भवइ ॥ ४९ ॥ दसमस्स पाहुडस्स दसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१० ॥

ता कह ते चदमग्गा आहितेति वएजा 2 ता एएसि ण अहावीसाए णक्खताण अधि णक्खता जे ण सया चदस्स दाहिणेण जोय जोएंति, अत्थि णक्खता जे ण ५१ प्रचारमे [पंत्राचर्या रोहिणी पंचारो, मिगविरे तिवारे व्हा एयतारे पुणव्यस् पंचारोट पुस्ते विवारे, सरसेवा वारारे महा वत्तारों, प्रव्याप्त्रमुवर्णी वारों एवं वतारेति हस्ते पंचारों, विकार प्रवार मही प्रवारों विस्ता पंचारों काराया प्रवारों केर निर्देश

भरसेसा छवारे महा कतवारे, पुत्रमाक्रमुनी हुवारे एवं कतरावि हस्ये कंततारे, वित्ता एगदारे, छाई एगवारे विश्वहा पंत्रतारे, ब्युराहा जवतारे वेद्धा ठिवारे मुझे एगदारे, पुत्रमासात्र चववारे, जारासात्रा चववारे छ ४ ॥ वस्त्रमस्स्य पाइंडस्स्य प्रथमें पाइंडपाइंड स्थाने ॥ १०-९ ॥ ता कई वे नेवा साहियेदि पर्याई वा बाधान पत्रमें मार्स वह परवार

वेंदि ! ता चतारि वनवता वेंदि तैयहा-उत्तरासका व्यभि सक्ते विद्य उत्तरासाह्य कोहस अहोरते गेड, मिनई सत्त बहोरते गेड, सबसे सह बहोरते थेड, बनिहा एग महोरतं नेह, तेंछि व नं मासंति चर्तगुक्रमोरिसीए धायार सरिए करपरिकार, तस्य भै मासस्य चरिमे दिश्से हो पानाई चतारि व संगुधाई पोरिसी सबद, दा बासाजें दोनें आसे कह जनस्ता जेंदि है हा बतारि जनस्ता जेवि तंत्रहा-यनिद्वा सविमसया प्रम्यापोद्धमया उत्तरापोद्धमया वनिद्वा चोरस बहोरते के, सबिमसना सत्त अहोरते के प्रमाणोहबसा बहु बहोरते के, उत्तरापोद्धनवा एग अहोरचै नेह, तींछ च थं भार्थस अर्ह्वगुक्रगोरिसीए समाए समिए अवपरिवास, तस्त य गासस्य वारिमे विवसे दो पशाई बहु व अंगुक्रह पोरीसी मन्द्र, वा दासानं तहनं मास बद्ध नजनता नेति ! वा विभिन्न जनवता निर्म तं –उत्तरापोद्धक्या रंग्डे अस्तिगी उत्तरापोद्धक्या चोडस क्होरते केंद्र, रेग्डे पन्नरस भारोरते गेर, बरिसमी एवं अहोरतं नंड, वैसि च नं मासंबि हुनासर्प पुकार पोरिचीए कामाप सुरिए अनुपरियद्य, तस्त र्ण मासस्य वरिमविवसे केरान दिन्यि पर्वातं प्रेरिसी सन्दर् ता बासार्थ चतत्व गार्थ वह वस्वता देति <sup>‡</sup> द्य विभिन पनवारा गरि तं -भरितयौ भरणी करिया अस्तियौ चडरप अहोरते मेर, भरबी रुवरस बहोरते गेर, वतिया एवं बहोरते बेर, तंति व वं मास्की सोससगुबाए पोरिजिकासाए सुरिए अनुपरिनात, तस्य व मासस्य वरिने विनरे विभिन प्रमाह बतारि व अगुलाई पोरिसी भक्द । ता हेर्मतार्च पत्रमें मास वह अवस्था वेति र ता दिग्यि नक्सामा वेति तं - क्तिवा रोहियाँ चंडाया कतिवा केए अहोरते गेर, रोहिणी पन्यरस अहोरते येड, संक्षणा एगं आहोरतं येड, टींस व व मासि बीसगुरूयोरेसीए समाप् स्तिप् अनुपरियद्भ, तस्य र्च मासस्य बरिपे द्विवसे दिग्नि पनाई सद्ध न स्युकाई पोरिती सक्द, ता हेर्मदायं दोनं भारी क्य णक्यता वेति है ता चतारि वक्सता वेति र्त∞-ग्रह्मचा बहा पुत्रव्यस् पुस्सो संक्षमा बोहम महोरते येह, बहा छत्। अहोरते बेह, पुनव्यत् बड़ महोरते यह,

पुस्ते एग अहोरत्तं णेइ, तसि च णं मासिस चउवीसगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियदृह, तस्म ण मासस्स चरिमे दिवसे छेहडाई चतारि पयाइ पोरिसी भवड, ता हेमताण तह्य मास कह णक्खता णेंति <sup>2</sup> ता तिण्णि णक्खता णेंति, त०-पुस्से अस्सेसा महा, पुस्से चोद्दस अहोरते णेइ, अस्सेसा पचदस अहोरते णेइ, महा एग महोरत्त णेइ, तसि च ण माससि वीसगुलाए पोरिसीए छायाए सुरिए अणुपरियट्टइ, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाई अहुगुलाइ पोरिसी भवइ, ता हेमताण चिज्य मास कइ णक्खता णेंति ? ता तिण्णि णक्खता णेंति, तं०-महा पुन्वा-फागुणी उत्तरापमगुणी, महा चोद्दस अहोरते णेइ, पुन्वाफागुणी पण्णरस अहोरते णेइ, उत्तराफागुणी एग अहोरत्त णेइ, तिस च णं मासिस सोलसअगुलाए पोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियदृङ, तस्स ण मासस्स चिरमे दिवसे तिण्णि पयाई चतारि य अगुलाइ पोरिसी भवइ । ता गिम्हाण पढमं मास कड णक्खता गेंति 2 ता तिण्णि णक्खता जैति, त०-उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता, उत्तराफग्गुणी चोद्दस अहोरते णेइ, हत्यो पण्णरस अहोरते णेइ, चित्ता एग अहोरतं णेइ, तसि च ण माससि दुवाल-चगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियदृह्, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे छेहङ्काई तिष्णि पयाइ पोरिसी भवइ, ता गिम्हाण विइय मास कइ णक्खता गैंति? ता तिण्णि णक्खता णॅति, त०-चित्ता साई विसाहा, चित्ता चोइस अहोरते णेइ, साई पण्णरस अहोरते णेइ, विसाहा एगं अहोरत्त णेइ, तसि च ण माससि अट्टगुलाए पोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियदृह, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाई अहु य अगुलाइ पोरिसी भवइ, ता गिम्हाण तइय मास कड णक्खता णेति <sup>2</sup> ता तिणक्खता मेंति, त०-विसाहा अणुराहा जेद्वामूलो, विसाहा चोद्दस अहोरत्ते मेइ, अणुराहा पण्णरस॰, जेट्ठामूलो एग अहोरत्त णेइ, तिस च ण मासिस चर्रगुलपो-रिसीए छायाए सूरिए अणुपरियदृइ, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाणि य चतारि अगुलाणि पोरिसी भवइ, ता गिम्हाण चउत्थ मास कई णक्खता पेंति ? ता तिष्णि णक्खता गैंति, त०-मूली पुन्वासाढा उत्तरासाढा, मूलो चोइस अहोरत्ते णेइ, पुष्वासाढा पण्णरस अहोरते णेइ, उत्तरासाढा एग अहोरत्त णेइ, तसि च ण माससि वट्टाए समचउरंससठियाए णग्गोहपरिमङलाए सकायमणुरगिणीए छायाए सृरिए अणुपरियदृह्, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे छेह्छाइ दो पयाइ पोरिसी भवइ ॥ ४१॥ दसमस्स पाहुडस्स दसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१०॥

ता वह ते चद्मग्गा आहितोति वएजा 2 ता एएसि ण अद्वावीसाए णक्खताण अत्थि णक्खता जे ण सया चदस्स दाहिणेण जोय जोएति, अत्थि णक्खता जे ण

उत्तरेगति पमद्देपि जोगं जोएंशि जात्व बक्याता से ग बदस्स हान्निभयनि पम्तूपि कोर्स बोएरी अस्य जनकरे के वं समा बंदरस पमई कोर्स जोएर, ता एएसि वं मद्वाबीसाए पक्यताय समरे यक्सता जे वं समा चंदरस बाहिमेश बोर्म मोएंठि ठदेव जान कमरे जरूपाते के में समा नेहरूस पगड़ ओर्ग कोएइ है ता एएसि में भद्रावीसाए पनवतार्य के ये ननवता सना नन्स नाश्चिम कोन कोएठि ते में तं -रंध्यना भए। पुस्तो अस्पेता इत्वो मूखे शत्य वे ते पक्याता वे वं सवा भंदरस उत्तरेणं कोयं कोएंति ते नं बारस राज्या-अभिद्रं सन्यो विद्रा संबंधितमा पुरमामद्वया उत्तरायोद्वया रेवई अस्तिनी मरबी पुरमापसुनी उत्तराफ्रमाजी साई ११ तत्व के ते शक्यता के थे भवस्य वाहिनेजनि उत्तरेजनि परहारी बोर्च बोप्टि ते ने सत्त रिज्या-कविवा रोहिजी प्रवस्तव्य सदा निर्धा निराहा असराहा तत्व के ते यक्कता के वं शवस्य वादिशेववि प्रार्टींपे कोर्य बोएंटि ताओं ने दो मासाडाओं सन्दर्शाहरे मंडडे बोर्य बोएंट वा बोएंटि वा बोर्-स्पेठि वा तत्व से से जक्यते वा व स्था चंद्रस्य पर्या बोबं खोल. सा में एमा बेह्र १ ४२ १ ता १३ ते बंबर्मंड्स फणता है ता प्रकारस बंदर्मंडस फमता ता एएसि में पत्रगरसको बदमहजार्च अस्य बंदमंत्रजा के वं समा करती हैं क्रमिरहिंदा अत्य चंद्रमैन्सा जे नं रनिससिजनकताथ सामन्ता मर्वते अवि चंद्रमंडका जे म संग काइवेद्धि निरिद्धेगा ता प्रशिः नं पन्यर्शकं संदर्भडकार्य कबरे चंदर्मंडाम के जं समा जनकोति श्रविरक्षिम बाव कमरे चंदर्मंडका जं वं स्था आइबनिरद्विया रे ता एपूछि नै प्रणारसन्त्रं बद्भटकार्ग तस्व से तं बंदमंडका वे में समा नक्ताहरू भनिरश्चिमा से में मठ, तंत्रहा-पडमे चंदमंडले तहर चर्मंडले Bट्टे चंदमंडके सत्तमे चंदमंडके बद्धम चंदमंडके दसम चंदमं°के एकारसम वंदमंडके क्यारममे चहर्म के तत्व ने वे चव्सडका से व सवा चक्रताहि विरिद्या वे यं मतः तंत्रहाः निरूप् चेत्रमंडके चलस्य चेत्रमङ्के पेचम चेत्रमंडके ब्लामे चेत्रमंडके बारसमं भंदमंगके तेरसमे चंदमंगके चउइसमे चंदमंगके तत्थ के ते चंदमंडमा चे नं रविसरियरपतानं सामण्या मर्वति तं वं चतारि, र्तत्रहा-पत्रमे चंदमंडके नीय भवमंडके इद्यारसमे चंदमडके क्यारसम चंदमंडके तत्त्व ज सं चंदमंडका

जे य सवा आइवनिरक्षिया ते वं पेच तंज्ञहा-छट्टै वंदर्मडके सत्तमे वंदर्मडके बहुमं वंदर्मडके नदमे वंदर्मडके दसमे वंदर्मडके॥ ४३ ॥ व्हरामस्टर पाहुडस्म

ए अरसमें पाइबपाइडे समर्च II १०-११ II

ता कह ते देवयाण अज्झयणा आहिताति वएजा १ ता एएसि ण अट्टावीसाए णक्सताण अभिईणक्खते किंदेवयाए पण्णते १ ता वभदेवयाए पण्णते, सवणे० विण्हु०, घणिट्टाणक्खते वसुदेवयाए०, सयभिसयाणक्खते वस्ण०, पुञ्चापोट्ट० अयदे०, उत्तरापोट्टवयाणक्खते अभिवह्नि०, एव सन्वेवि पुच्छिजति, रेवई पुस्सदेवया०, अस्सिणी अस्सदेवया०, भरणी जमदेवया०, कित्तया अग्गिदेवया०, रोहिणी पया-वइदेवया०, सठाणा सोमदेवयाए०, अहा रुद्देवयाए०, पुणन्वस् अदिति०, पुस्सो वह-स्सइ०, अस्सेसा सप्प०, महा पिइ०, पुञ्चाफगगुणी भग०, उत्तराफगगुणी अज्ञम०, हत्ये सविया०, चित्ता तद्व० साई वाउ०, विसाहा इदग्गी०, अणुराहा मित्त०, जेट्टा इद०, मूळे णिरइ०, पुञ्चासाढा आउ०, उत्तरासाढा० विस्सदेवयाए पण्णते ॥ ४४॥ दस्मस्स पाहुडस्स वारसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१२॥

ता कह ते मुहुत्ताण नामथेजा आहिताति वएजा <sup>2</sup> ता एगमेगस्स ण अहोरत्तस्स तीस मुहुता प॰, तजहा—रुद्दे सेए मित्ते वाउ मुगी(पी)ए तहेव अभिचदे । माहिंद वलव वमे वहुसचे चेव ईसाणे॥ १॥ तहे य भावियप्पा वेसमणे वारणे य आणदे । विजए य वीससेणे पयावई चेव उवसामे॥ २॥ गधन्व अग्गिवेसे सयरिसहे आयव च अममे य। अणव भोमे रिसहे सन्वहे रक्खसे चेव॥ ३॥ ४५॥ दसमस्स पाहुडस्स तेरसमं पाहुडपाहुडं समत्तं॥ १०-१३॥

ता कह ते दिवसा आहिताति वएजा 2 ता एगमेगस्स ण पक्खस्स पण्णरस दिवसा पण्णता, त०-पिंडवादिवसे विद्यादिवसे जाव पण्णरसीदिवसे, ता एएसि ण पण्णरसण्ह दिवसाण पण्णरस णामधेजा प०, त०-पुठवंगे सिद्धमणोरमे य तत्तो मणोरहे(हरे) चेव । जसमेंद्दे य जसोधर य सन्वकामसिर्धे ॥ १ ॥ इंदमुद्धामि- सिते य सोमणस धणजए य वोद्धन्वे । अत्यसिद्धे अमिजाए अचसणे सयजए चेव ॥ २ ॥ अग्गिवेसे उवसमे दिवसाण णामधेजाड । ता कह ते राईओ आहिताति वएजा १ ता एगमेगस्स ण पक्खस्स पण्णरस राईओ पण्णताओ, तजहा-पिंडवाराई विद्याराई जाव पण्णरसीराई, ता एयासि ण पण्णरसण्हं राईणं पण्णरस णामधेजा पण्णता, तं०-जत्तमा य सण्यत्वत्ता, एलावचा जसोधरा । सोमणसा चेव तहा सिरिसभ्या य वोद्धन्वा ॥ १ ॥ विजया य वेजयंति जयति अपराजिया य इच्छा य । समाहारा चेव तहा तेया य तहा य अइतेया ॥ १ ॥ देवाणदा णिरई रय-णीण णामधेजाड ॥ ४६ ॥ दसमस्स पाहुडस्स चउद्दसमं पाहुडपाहुडं समन्तं ॥ १०-१४ ॥

ता कह ते तिही आहितेति वएजा 2 तत्य खलु इमा दुविहा तिही पण्णता,

वैबद्दा-रिवसितदी य राहेतिही य ता वह ते दिवसितती आदितेति वएमा है ता एगमेगस्य गं पन<del>ब</del>स्य पन्नर्स २ विवसतिही पञ्चता तै-नित मो बए तुप्छे पुण्ने पक्यस्य पंचमी पुणर्मि पवि मोह् बए तुषके पुण्ने पक्सस्य वसमी पुणर्मि नीर मोर जए तथ्के प्रण्ये पल्यास्स पण्यासी एवं ते तिगुवा तिप्रीओ सम्बोर्स गिर-सार्थ ता कई ते राईतिही माहितेति वएमा <sup>8</sup> ता एगमेगस्स नं पत्रदास्स पम्बरस राहेतिही प तं -सरगबड्डे मोराबर्डे बसबड्डे सम्बस्थिता सहणामा पुणर्नि सम्बद्धे मोगबर बनवर्ष सम्बन्धिया धुद्दणामा पुणर्गि समावर्ष मोगबर्ष जसबर्ष सम्बन्धि प्रकामा एए विज्ञा विहीको समाधि राहेंथे ॥ ४० ॥ वसमस्य पाइडस्स पण्णरसमं पाइडपाइडं समर्च ॥ १०-१५॥

...

ता नई ते मोता आदिवारि वएमा है ता एएसि वं सदाबीसाए वक्तावार अभिर्वधकराते किगोत्ते प है ता मोमाझामध्यसमीते प्रकार सबसे समायब भोदेहा मन्मिदाबस स्वमिस्या क्लिमलायगसगीत पुस्वापोद्रवसा बाउँ न्त्रियसगोते उत्तरापोद्वयमा अर्थव्यसयोते रेखंच्यक्यते पुरसायनसगोते अस्मि-गीणक्यते भरसामजसगोचे मरबीयक्कते ममाबेससगोचे कविमासक्को अस्मि-नेससगोते रोहियीयनकते गोवम एंठाणानकदत्ते भारतवसगोते अवायनदारे स्मेक्षिकारणस्पोचे प्रवस्त्वसम्बद्धाः वासद्वसगोते पस्ते तस्त्वारकसगोते वरपे-धानक्को मंडम्बान्यसगोचे महायन्यते विगानवसगोचे पुरुषापरगुणीनकर्ये गोनक्रामणस्पेति उत्तराक्रम्युवीयस्वते कास्य इत्ये शेक्षित विद्यायन्त्रते विभागस्यगोते साईमक्यते नागरकारणस्योचे विसाहाणकाते संगानमस्योचे मनुराह्यमस्यते गोलम्बान्यसमोत्ते अञ्चलकवते विभिन्नायनसमोते सुद्धे वस्यते क्यान्यस्थीते पुन्नासाम<del>ण्य</del>ते विस्थान्यस्थीते शतरासाम<del>ण्य</del>ते सर्गा-न्यसगोरे ॥ ४८ ॥ व्समस्त पाइडस्स मोस्समं पाइडपाइड स ३१-०५ त रेष्ट्राम

सा कई वे मोनना आहिताति वएआ <sup>ह</sup> ता एएसि में क्क्क्राबीसए अवस्तार्म क्तियाहि दक्षिण भोषा कर्ज सार्वेति रोहिषाहि सुरेव भोषा कर्ज सार्वेति छठ-नाहि करवृरि भोषा कर्म सामेंशि अवाहि अवजीएय भोषा कर्म सामेंशि पुण्य समा भएन मोचा कर्ज सामेंति पुस्सेमं बीरेण मोचा कर्ज साभेति अस्सेशाए गास्त्रिएर मोचा कम शावंति महाहै करेंगेति मोचा कर्म शावंति पुरवाहि परग्रः जीहि एकाएछं मोना कर्ज सामेंति जत्तराध्यानीहि इदेशं मोना कर्ज सामेंति

९ पडे हुए सूंस १ जारिनकडी गिरी ३ शासनिशेष ४ आवजोध स्कानची।

हत्येण वत्याणीएणे भोचा कज साधित, चित्ताहिं मुग्गस्वेणं भोचा कजं साधित, साइणा फलोइ भोचा कज साधित, विसाहाहिं आसित्तियाओ भोचा कजं साधित, अणुराहाहिं मिस्साकृर भोचा कज साधित, जेट्ठाहिं लिट्ठिएण भोचा कज साधित, मूलेणं मूलेणं भोचा कजं साधित, पुन्वाहिं आसाडाहिं आमलग भोचा कज साधित, उत्तराहिं आसाडाहिं विल्लफेलेहिं [णिम्मिय] भोचा कज साधित, अभीइणा पुँप्फेहिं [निम्मिय] भोचा कज साधित, सवणेण खीरेण भोचा कज साधित, वणिट्ठाहिं जूसेणं भोचा कज साधित, सयभिसयाए तुवराउ भोचा कज साधित, पुन्वाहिं पुद्वयाहिं कारियंह्रएहिं भोचा कज साधित, उत्तरापुट्टवयाहिं वसरीयण भोचा कज साधित, रेवईहिं सिंधांटग भोचा कज साधित, अस्सिणीहिं तिर्त्तिफलं भोचा कज साधित, भरणीहिं तिलतेबुलयं भोचा कज साधिति, अस्सिणीहिं तिर्त्तिफलं भोचा कज साधित, मरणीहिं तिलतेबुलयं भोचा कज साधिति। ४९॥ दसमस्स पाइडस्स सत्तरसमं पाइडस्स समतं॥ १०-१७॥

ता कह ते चारा आहिताति वएजा है तत्थ खळ इमे दुविहा चारा पण्णता, त०-आइचचारा य चदचारा य, ता कह ते चदचारा आहिताति वएजा है ता पव सवच्छिरए ण जुगे अभीइणक्खत्ते सत्तसिष्टचारे चदेण सिंद जोय जोएइ, सबणे णक्खत्ते सत्तसिष्टचारे चदेण सिंद जोय जोएइ, एव जाव उत्तरासाढा-णक्यते सत्तसिष्टचारे चदेण सिंद जोय जोएइ। ता कह ते आइचचारा आहितेति चएजा है ता पच सवच्छिरए ण जुगे अभीईणक्खते पचचारे स्रेण सिंद जोय जोएइ, एव जाव उत्तरासाढाणक्खते पचचारे स्रेण सिंद जोय जोएइ, एव जाव उत्तरासाढाणक्खते पचचारे स्रेण सिंद जोय जोएइ, एव जाव उत्तरासाढाणक्खते पचचारे स्रेण सिंद जोय जोएइ ॥ ५०॥ दसमस्स पाइडस्स अट्टारसमं पाइडपाइडं समतं॥ १०-१८॥

ता कह ते मासा आहिताति वएजा 2 ता एगमेगस्स ण सवच्छरस्स वारस मासा पण्णता, तेसि च दुविहा णामघेजा पण्णता, त०-लोइया य लोउत्तरिया य, तत्थ लोइया णामा॰, त०-सावणे भद्दवए आसोए जाव आसाढे, लोउत्तरिया णामा॰, तं०-अभिणटे पइट्टे य, विजए पीइवद्धणे । सेज्जसे य सिवे यावि, सिसिरेवि य हेमवं ॥ १॥ णवमे वसतमासे, दसमे कुसुमसभवे । एकारसमे णिदाहो, वणविरोही य वारसे ॥ २॥ ५१॥ दसमस्स पाहुडस्स एगूणवीसइमं पाहुड-पाहुडं समन्तं ॥ १०-१९॥

ता कह ते सबच्छरा आहिताति वएजा? ता पच सबच्छरा आहिताति वएजा,

१ सायविशेष, २ त्रिफला, ३ खायविशेष, ४ खायविशेष, ५ शाकविशेष, ६ चेलफलका मुरच्या, ७ गुलक्द, ८ करेले का शाक, ९ वशलोचन, १० स्खा सिंघाडा, ११ त्रिकुटा सॉठ-काली मिर्च-पीपल।

फारे ॥ ५२ ॥ ता शक्सत्तर्गक्छारे वं उद्विद्देष 🖁 ता शक्सतर्गक्कारे वं दुवाससमिद्दे पञ्चले तं -सावने भद्दप् जान आसाडे जंबा बहुस्त्यमहरगद्दे हुरास्माई संस्कारेई सम्बं गरुरातार्वहर्क समागेड ॥ ५३ ॥ ता अवसंदर्करे वं र्पनितिहे पञ्चते । तन्त्रहा-चीर चीर व्यक्तिविहुए चीर व्यक्तिविहुए चीर ता प्रव्यस्य नं श्रेदर्शनकारस्य श्रावधीर्थ प्रमा प दोनस्य नं त्रीव्यनकारस्य श्रावधीर्थ पन्ना प तत्त्वस्य जें कभिवश्चित्रसंबच्छरस्य कन्दीसं पन्ना प भवत्त्वस्य वे भवसकान्त्ररस्य बाउबीस पञ्चा प प्रकारस में अभिवृद्धिवर्धकारस्य स्वामीस पम्बा प्रणाता एक्समेव स्पुष्यावरेचं पंचर्यक्कारिए हुगे एमे बढवीछे प्रमासर मनतीति सन्दार्म R ५४ ॥ ता प्रमाणसंबच्छरे ये पंचनिक्रे प विका-यन्तरे **परि** उड्ड आहेते क्यमिषद्विए ॥ ५५ ॥ ता समय<del>णसंबद्धरे में पंचनिद्धे</del> प र्ष -समगं नम्बता बोबं बोऐदि समगं उक परिवर्गति । न्युन्द बाइसीए गृह उदए होरू गनदत्ते ॥ १ n सन्दि समय प्रकामासि बोईदा विसमवारिक्तवता ! **ब्युओ बहुदको** य तमा**हु** सेवज्यरं बंदं ॥ २ ॥ विसमं प्रशासिको परिवर्गीत नर्ज स्द विति पुण्यपन्ने । वासे न सम्म वासङ् तमाङ्क संबच्छरं क्रम्मे ॥ ३ ॥ प्रवस्ति मान न रसे पुष्पपुत्रमणं न देश आह्वे । अप्येणवि वासेनं सम्मं निप्रक्राय सस्य प्रभाग साहचतेयत्विया समस्मित्रका उक्त परिणमंति । पूरेह सिन्मवस्य दमाह जमिनद्वियं भाग ॥ ५ ॥ ता धनिन्छरधेरच्छरे न शहरनीयहमेहे प तं -ममौरे सक्य काव उत्तरासाता वं वा सक्तिकरे महम्पद्दे तीसाम् संवयकरेले सम्बं जनवत्तर्गहर्म समाणेह ॥ ५६ ॥ वसमस्स पाइडस्स वीसहर्म पाइड पाइड समर्च ॥ १०-२० ॥ ता नद वे फोरसस्स वारा आदिवादि वएना है तस्त नाह इसाओ पेन परि

पाहुँ व स्तमन्त्र ॥ १०-० ॥

ता नह व सेश्रस्तस्य वारा आहियाति वएका है तल कह स्ताको वंत पर्व नामिको प्रण्यामो तं--ताकोने एवसाहेंधु-ता नित्तकात्वा नं यत प्रस्कात प्रस्-हारिया प्रण्या एने एवसाहेंध १ एने पुण प्रमासिय-ना महस्या नं यत सन्तरा प्रस्कात प्रमासिया प्रण्यासाहेंध १ एने पुण प्रमासिय-ना स्वर्धियान स्वर्धियान स्वर्धियान स्वर्धियान स्वर्धिया प्रमासियान स्वर्धाया प्रमासियान स्वर्धिया स्वर्धाया प्रमासियान स्वर्धाया प्रमासियान स्वर्धाया प्रमासियान स्वर्धिया स्वर्धियान स्वर्धियान स्वर्धाया प्रमासियान स्वर्धाया प्रमासियान स्वर्धाया प्रमासियान स्वर्धाया प्रमासियान स्वर्धाया प्रमासियान स्वर्धाया स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धियान स्वर्धिया स्वर्धियान स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धियान स्वर्धिया स्वर्या स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्यं स्वर्या स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धिय दाहिणदारिया पण्णता, तंजहा-महा पुन्वाफरगुणी उत्तराफरगुणी हत्थो निता साई विसाहा, अणुराहाइया ण सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा-अणुराहा जेट्ठा मूलो पुञ्चासाढा उत्तरासाढा अभिई सवणो, घणिद्वाइया णं सत्त णक्सत्ता उत्तरदारिया पण्णता, तजहा-धणिद्वा सयभिसया पुव्वापोद्ववया उत्तरा-पोट्टनया रेवई अस्सिणी भरणी। तत्थ जे ते एवमाहसु-ता महाइया णं सत्त णक्सत्ता पुन्वदारिया पण्णता, ते एवमाहसु-तंजहा-महा पुन्वाफरगुणी हत्थो चित्ता साई विसाहा, अणुराहाइया णं सत्त णक्खता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तजहा-अणुराहा जेट्ठा मूळे पुन्नासाढा उत्तरासाढा अभिई सवणे, धणिद्वाडया ण सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा-धणिद्वा सयभिसया पुन्वापोद्ववया उत्तरापोद्ववया रेवई अस्सिणी भरणी, कत्तियाइया ण सत्त णक्खता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा-कत्तिया रोहिणी सठाणा अद्दा पुणव्वस् पुस्सो अस्सेसा । तत्थ जे ते एवमाहसु-ता धणिद्वाइया णं सत्त णक्वता पुरुवदारिया पण्णता, ते एवमाहसु-तंजहा-धणिहा सयभिसया पुन्वाभद्वया इत्तराभद्वया रेवई अस्सिणी भरणी, कत्तियाइया ण सत्त णक्खता दाहिणदारिया पण्णता, तजहा-कत्तिया रोहिणी सठाणा अहा पुणव्वस् पुस्सो अस्सेसा, महाइया ण सत्त णक्खता पच्छिमदारिया पण्णता, तंजहा-महा पुव्वाफरगुणी उत्तराफरगुणी हत्थो चित्ता साई विसाहा, अणुराहाइया ण सत्त णक्खता उत्तरदारिया पण्णता, तजहा-अणुराहा जेट्ठा मूलो पुन्नासाढा उत्तरासाढा अभीई सवणो । तत्थ जे ते एवमाहस्र–ता अस्सिणी-भाइयाण सत्त णक्खता पुन्वदारिया पण्णता ते एवमाहंसु-तजहा-अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी सठाणा अद्दा पुणव्यस्, पुस्साइया ण सत्त णक्खता दाहिणदारिया पण्णता, तजहा-पुस्सा अस्सेसा महा पुव्वाफागुणी उत्तराफागुणी हत्यो चित्ता, साईआइया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तजहा-साई विसाहा अणुराहा जेट्टा मूलो पुन्वासाटा उत्तरासाटा, अमीईआइया ण सत्त णक्याता उत्तरदारिया पण्णता, तजहा-अभिई सवणो धणिहा सयभिसया पुन्वा-भह्वया उत्तराभद्वया रेवई । तत्य जे ते एवमाहस्र-ता भरणीआङया ण सत्त णक्खता पुव्वदारिया पण्णता, ते एवमाहंग्र-तंजहा-भरणी कत्तिया रोहिणी सठाणा अहा पुणव्वस् पुस्सो, अस्सेसाइया ण सत्त णक्खता दाहिणदारिया पण्णता, तजहा-अस्सेसा महा पुव्वाफरगुणी उत्तराफरगुणी हत्थो चित्ता साई, विसाहाडया ण मत्त णम्बता पच्छिमदारिया पण्णता, त०-विसाहा अणुराहा जेट्टा मूलो पुज्वामाटा उत्तरामाडा अभिई, सवणाइया णं सत्त णक्खता उत्तरदारिया पण्णता,

पं - गुमयो परिद्धा समिक्तवा पुम्नापोङ्कमा उत्तरापोङ्कमा देवो अस्तिकी एए एमार्थित वर्ष पुष्ट एवं बमायो-ता असिक्तावना यं सम प्यन्ताता पुम्वनारिया प विका-असिक्तं श्रमणे मिन्द्रा समिक्तिया पुम्मापोङ्कमा रोप्ता देवो असिक्तं मिन्द्रा में एवं पामकता बाह्निक्तारिया पम्मापा यं -असिक्तं प्रस्थे करिमा रोहिणी पंजाया वर्षा पुष्माच्या प्रस्थान्य में एवं पानकता प्रक्रिम्ना बारिया पम्मापा ने पुरस्थी अस्त्रेता यहा पुष्माच्याप्रणी उत्तराक्रम्य हाले किता शर्वेवास्त्र में एवं प्रकारता उत्तराह्या प्रभाव वे -साई विस्तर प्रमुद्धा केंद्रा सूचे पुष्माधावा उत्तराह्याता ॥ ५५ ॥ वृक्तसम्बन्ध पाष्ट्रकराह्य सम्बन्ध १०-२१ ॥

ता नहें ते चन्त्रचलियए माबिएति बएमा है ता अवज्ले बंबुरीय २ वाव परिक्रकेश ता चंद्रहावे में कीवे को चंदा प्रभावेंद्व वा प्रभावेंद्व दा प्रभावित्वेंवि वा वो सरिया तर्विस वा तवेति वा तविरसंति वा **अ**प्यक्रां वसकता कीने बोएंड वा रे तंबहा-यो समीहै से प्रक्या के क्याड़ से धवनिस्वा से प्रमान पोठनना दो उत्तरापोक्षमवा दो रेनई वो अस्छिनी दो भरणी वो करिया वो रोबि<sup>मी</sup> दो संजना दो अहा दो प्रमम्बस दो प्रस्ता दो अस्तेसानो दो सदा हो प्रमा परगुणी को जनराष्ठ्रमुणी यो हत्या वो विशा को साई वो विसाहा को अञ्चलका वो नेद्रा दो मूखा वो पुरुवासादा वो उत्तरसावा ता प्रपृष्टि न क्रपल्याए नार्व तामं अत्व मक्दता ने मं यह मुहुते सताबीसं च सतक्रिमारे महरूस विक सबि बोर्ग जोएंदि अस्य वज्याता के नं पन्नरस सुदूरी विदय सबि कोर्ग कोएंदि मत्य नक्कता वे नं तीसमृहते विदय सदि कोनं जोएंदि बरिव पक्षता के में पजवाकीय सुद्वते वंदेव सदि बोर्य बोर्एंट ता एएटि में 🕬 म्याप् मन्त्रताणं क्यरे परयक्ता के वं वद <u>मुद्</u>रते सतावीर्ध व सत्तिक्रमते सहत्तस्य चर्चम सर्वि जोर्य कोर्एति कवरे शक्कता के वं प्रव्यस्तमुहुते धरेन सकि बोर्न आएंति वयर नक्यता व व तीस सुक्ते विश्व सबि कोर्न जोएंति क्यरे गरपता जे जं पनवाबीस सुहत्ते विषण सब्दि जोर्व खोएति है ता एएलि व प्रधानगाए पक्ततार्ग तत्व ने वं गरवाता ने मं वन सहते चतानीये न साहि माने सुदूर्तस्य बंदेन सर्वि भोगे जोएंति ते नं दो अमीदै, तस्य यं ते यहराता के में पत्रारस मुद्दुते चंदिय सर्वि चोर्य कोएंति ते में बारस रांबदान्दो सर्वान-समा दो भरनी दो अस दो अस्सेसा दो साई दो नेद्धा तत्व ज राजनताम भे में तीस मुद्दुते वंदेण सर्वि जोर्य जोएंदि तं वं तीस तंजदा—को स्कटा की

धणिष्टा दो पुन्वाभद्दवया दो रेवई दो अस्सिणी दो कत्तिया दो सठाणा दो पुस्सा दो महा दो पुन्वाफरगुणी दो इत्था दो चित्ता दो अणुराहा दो मूला दो पुन्वा-साहा, तत्थ जे ते णक्खता जे ण पणयालीस मुहुत्ते चंदेण सर्दि जोय जोएति ते ण वारस, तजहा-दो उत्तरापोद्ववया दो रोहिणी दो पुणव्वस् दो उत्तराफरगुणी दो विसाहा दो उत्तरासाढा, ता एएसि ण छप्पण्णाए णक्खताण अतिथ णक्खता जे ण चतारि अहोरते छच मुहुते स्रिएण सिंद्धं जोयं जोएति, अत्थि णक्खता जे णं छ अहोरते एक्क्वीस च मुहुते सूरेण सिंद्ध जोयं जोएंति, अत्थि णक्खता जे ण तेरस अहोरते बारसमुहुते सूरेण सिंद्धं जोय जोएति, अत्थि णक्खता जे ण वीस अहोरते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सर्दि जोय जोएंति, ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्यताणं कयरे णक्यता जे ण तं चेव उचारेयव्व, ता एएसि ण छप्पण्णाए णक्खताणं तत्थ जे ते णक्खता जे ण चतारि अहोरते छच मुहुते सूरेण सिंद जोय जोएंति ते ण दो अमीई, तत्य जे ते णक्खता जे णं छ अहोरते एक्षवीस च मुहुत्ते सूरेण सिंद्धे जीय जीएति ते ण वारस, तंजहा-दो सग्रिमसया दो अहा दो अस्सेसा दो साई दो विसाहा दो जेट्टा, तत्य जे ते णक्खता जे ण तेरम यहोरते वारसमुहुते सूरेण सिद्धं जोय जोएति ते णं तीस, तजहा-दो सवणा जाब दो पुन्वासाहा, तत्य जे ते णक्खता जे ण बीस अहोरते तिष्णि य मुहुत्ते स्रेण सार्द्ध जोय जोएति ते ण वारस, तजहा-दो उत्तरापोद्ववया जाव दो उत्तरा-साढा ॥ ५८ ॥ ता कह ते सीमाविक्खमे आहिएति वएजा १ ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताण अत्थि णक्खता जैसि ण छ सया तीसा सत्तद्विभागती-सइमागाण सीमाविक्खमो, अत्थि णक्खता जेसि ण सहस्स पचीत्तरं सत्तिह-भागतीसहमागाणं सीमानिक्खभो, अत्थि णक्खता जेसि ण दो सहस्सा दस्ततरा सत्ति हिभागतीसइभागाण सीमाविक्यंमो, अत्यि णक्खता जेसि णं तिसहस्स पच-दस्तर सत्तिष्टिभागतीसइभागाण सीमानिक्खभो, ता एएसि ण छप्पण्णाए णक्ख-लाण क्यरे णक्खता जेसि ण छ सया तीसा त चेव उचारेयव्व जाव कयरे णक्यता जेति ण तिमहस्स पचदसुत्तर सत्तिहिभागतीमङ्भागाणं सीमाविक्यभो ? ता एएनि ण छप्पण्णाए णक्यताण तत्य जे ते णक्यता जेति ण छ यया तीसा सत्तिष्टिमागतीसङभागाण सीमाविक्खंभो ते ण दो अभीई, तत्य जे ते णक्यता जैति ण सहस्स पचुत्तर यत्तिद्वभागतीसङ्मागाण सीमाविक्सभो ते ण वारस, तजहा-दो नयभिमया जाव दो जेट्टा, तत्य जे ते णक्खता जेति ण दो सहस्सा दसतरा यत्तिहिभागतीयदभागाण सीमाविक्यमो ते ण तीस, तजहा-दो सवणा बाद वो पुष्तासाठा तत्व बे ते जनपत्ता क्षेत्रि में विभिन्न सहस्सा पन्नरस्तारा सत्तद्विमायसीसहमागार्ण सीमाविक्यंमी से व बारस तं-दो उत्तरापोद्ववरा नाव दो उत्तरासामा ॥ ५९ ॥ ता एएसि नं स्वयन्त्राए जनसन्तानं कि स्था पाओ चंदेग सदि जोगं बोएंटि कि सवा साथ चंदेज सदि जोगं ओएंटि कि सवा दुरको पनिसिय २ भेदेण सर्वि कोर्य बोर्यंति है ता एएसि वं कप्पन्याए शक्स-त्तार्ग च किमति स के सवा पाओ परिष शक्ति बोर्न जोएंति बो सवा साम भेडेच सर्दि जोर्च जोएति को स्था बुद्दको पविस्तित २ विक सर्दि जीर्न जोएति वरिष राईदियान तुडोतुडीए सङ्घार्य व क्लोक्कएर्ग नज्जल होई असीर्डाह, वा एएणं दो समीई पार्ववित्र पार्ववित्र जोशासीसं ९ क्षमाशासं कोएंडि को जब में पुण्जिमातिथि ॥ ६ ॥ तस्य प्राप्त इमामो बावर्ष्के पुण्यमासिमीको बावर्षि भगावासाओ पञ्चनाओ ता एएसि व पंचन्द्रं संबच्छराचं पढमं प्राच्यमासिन नंदे केसि देवेसि कोएड़ है हा असि में देवेसि नंदे नार्स नामक पुण्यमासिर्पि भोरत टाओ पुण्यमासिमिक्समाओ सटकं चउन्तरियं सुएमं केता दुवतीसं मारी सबद्धमानेता एत्व में से बंद पडमें प्रक्रियासिति बोएद, हा एएसे वे पंत्रवे सबच्छरानं दोनं पुन्जिमाछिनं नीं करि देशेष्ठि बोर्फ है ता जीसे ने देशेष्ठ नी पहनं पुरिषमाधिक कोएर तालो पुष्किमादिविद्वाचालो मैटल करवीरेनं छएमं हेता दुवतीस माने स्वाहणाविता एत्व व से बीद होन्द्र पुरूजमासिनि बोयह ता एएसि र्थ पंत्रज्हं समक्षरार्थ तमं पुण्यिमासियि बंद कंदि बेसीस जोएह ! ता बंसि वं इससि क्यो दोवं पुण्जिमाधिनि बोएह दाओ पुन्तिमासिनिद्वाजाओं संबर्ध वट क्यस्तिनं सएनं केता बुक्तीसं आगे बकाइवाकेता एता ने से बंदे दर्च प्रतिकार-सिनि बोएर ता एएसि ये पंत्रक् सक्करानं बुवाकसने पुल्लिमातिर्नि बारे नेसि बेससि जोएइ <sup>1</sup> ता जीसे ने बेससि नवं राजे पुल्लिमासिनि जाएइ ताओ पुण्यिमा-सिभिद्वागाओं मंडलं भरुव्यसिणं सएलं केता. शेक्ति स<u>मा</u>सीए शास्कए संगाहका-नेता एस में से बंदे बुवामसमं पुन्यसारिति बोएड, एवं बस एएएवाएन ताओ र पुण्यिमासिविद्वानाओं मेडबं नतस्त्रीसेर्ज सर्व्यं केता बुक्तीसं गांगे श्वाहनावेता र्तित र इसकी र्च सं पुरूषमासिणि चीव बोयह, ता एएसि चे देवनई सक्टप्रार्ण नरिमं बावर्षि पुन्पिमाशिनि चेवे वेशि बेसीर बोएइ १ ता चेउदिवस सं पाईन पर्वचामबाए उद्योजदाहिजासबाए जीवाए गेंडकं चतन्त्रीरेच सएवं ग्रेसा दाहिन अद्भारीसद्भागे शैमहा ≢ति **चटम्मागमेश्बेति सदान**े ~ श्वासिमितं वर' केता अदारग

न्मागमहरूं असपते एत्य ण से चंदे चरिमं वाविष्ठं पुण्णिमासिणिं जोएइ॥ ६९॥ ता एएसि णं पचण्ह सवच्छराण पढमं पुण्णिमासिणि सूरे कसि देसिस जोएइ 2 ता जिस ण देसिस सूरे चरिम वावर्ट्डि पुण्णिमासिणि जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिहाणाओ मडल चडव्वीसेणं सएण छेता चडणवई भागे उवाडणावेता एत्य णं से स्रिए पढमं पुण्णिमासिणि जोएइ, ता एएसि ण पचण्हं सवच्छराण दोच पुण्णिमासिणि स्रे किं देसिस जोएइ १ ता जिस ण देसिस सूरे पढम पुण्णिमासिणि जोएइ ताओ 'पुण्णिमासिणिद्वाणाओ महल चउवीसेणं सएणं छेता दो चउणवङ्भागे उवाङ्णावेता एत्य ण से सूरे दोच पुण्णिमासिणि जोएइ, ता एएसि ण पचण्हं सवच्छराण तचं पुण्णिमासिणिं सूरे किस देसिस जोएइ 2 ता जिस ण देसिस सूरे दोच पुण्णिमासिणिं जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिद्वाणाओ महल चउन्वीसेण सएणं छेता चटणहइभागे उवाइणावेता एत्य ण से सूरे तच पुष्णिमासिणि जोएइ, ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दुवालसम पुण्णिमासिणि सूरे किस टेसिस जोएइ <sup>2</sup> ता जिस ण टेसिस स्रे तच पुण्णिमासिणि जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिद्वाणाओ महल चडव्वीसेणं सएणं छेता अड्डछताले भागसए उवाइणावेता एत्य ण से सूरे दुवालसमं पुण्णि-मासिणि जोएइ, एव खलु एएणुवाएण ताओ २ पुण्णिमासिणिद्वाणाओ मङल चउव्वीसेणं सएण छेता चडणडड २ मागे उवाइणावेता तसि २ देससि तं त पुण्णिमासिणि स्रे जोएड, ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चरिम वाविष्टं पुण्णिमासिणिं स्रे क्सि देसिस जोएड १ ता जबुद्दीवस्स ण० पाईणपडीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए महल चडन्वीसेण सएण छेता पुरिच्छिमिहसि चडभागमहलसि सत्तावीस भागे उवाइणावेता अद्वावीसइम भाग वीसहा छेता अद्वारसभागे उवाइणावेता तिहिं भागेहिं दोहि य कलाहिं दाहिणिल चडभागमडल असपते एत्थ ण सूरे चरिमं वावर्डि पुण्णिमं जोएइ ॥ ६२ ॥ ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पढम अमावास चंदे किस देसिस जोएड 2 ता जिस ण देसिस चंद्रे चरिमवाविद्वं अमावास जोएड ताओ अमावासद्वाणाओं महल चउव्वीसेण सएण छेता दुवत्तीस भागे उवाइणावेत्ता एत्य ण से चदे पहम अमावास जोएइ, एव जेणेव अभिलावेण चदस्स पुण्णि-मासिणीओ० तेणेव अभिलावेण अमावासाओवि भाणियव्वाओ-विडया तइया दुनारुसमी, एव खलु एएणुनाएणं ताओ २ अमानासद्वाणाओ मडल चउन्नीसेण मएण छेता दुवत्तीस २ भागे उवाइणावेता तसि २ देससि त त अमावास॰ चढे जोएइ, ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चरिम वावर्ड्डि अमावास चटे कसि देससि जोएट १ ता जिस ण देसिम चदे चरिम वाविष्ट पुण्णिमासिणि जोएइ ताओ ४६ सुता०

पुष्णिमासिषिद्वाषाओं संबर्ध पराव्यसिनं सपूर्व केता सोस्समागे उद्दोक्तत पूर्व र्ण से जेदे जरिमे नानहिं असावासं जोएत ॥ ६३ ॥ ता एएसि ये पेचाव संवयक राणं पढमं बमाबार्छ सूरे ऋषि बेसंसि बोध्य ! ता बंधि णं बेसंसि सूरे चरिन नानद्वि जमानाचे बोएइ हाओ अमानासङ्घाणाओ मंडक चडम्बीसेच सएने हेता भटणनद्दमागे उपाइणाभेता पूरव थ से सूरे एकम अमावार्स बोएह, एव जेपेव अमि-कारेणे स्रियस्य पुरियमासिणीको तेथेण अमानासायोगि संबद्दा-निद्ना छना बुवाकसभी एवं बस्स एएलुवाएर्ज ताको अमावासङ्काषाच्ये अंडर्स बस्मीरोर्च स्एवं केता चडफ्टई र भागे उबाइपावेता तीस २ देखीस त २ समावार्ष धरे जोएड, ता एएसि वं पंचवां छेक्करावं चरिमं बावर्डि समानास पुक्का ता जेसि नं देशिंस सूरे चरिनं बावर्षि पुण्जिमासिनि चोएर तानी पुण्जिमासिनिद्धानानी सङ्गं चरुव्यस्पिणं सपूर्णं क्रेता सत्ताकीसं मागे उन्होनहत्ता पृत्य न स सूरे बारेमं बावर्ष्क्रि समावार्थ ब्येएइ ॥ ६४ ॥ ता एएसि गं पंबर्ष्ट संबच्छराब क्रम् पुल्बमासिर्वि विदे केमें जनप्रतिर्भ (क्षेत्र) कोएड़ है या विष्टुाई, विष्ट्राज शिष्ट शुकुता एगूपर्वेष व बावद्विमामा शुकुत्तस्य बावद्विमाग व सत्तद्विद्या केता प्रकार दुनिवसामामा सेसा तं समयं च वं स्टिए क्ष्यं जन्मतेनं जोएइ है ता तुम्माफरगुरीहिं, तुम्मापरगुरीनं भद्वाबीय सुद्कृता भद्वतीय च बाबद्विभागा अञ्चलस्य बाबद्विमामं च सत्तद्विदा छेता दुवतीर्धं दुष्णिनामागा सेवा ता एएसि वं क्यन्तं सनक्करानं दोनं पुन्निमासिमी वंदे केमं जन्दारेपं कोएइ है दा उत्तराई पोक्टकाहै, उत्तराण पोट्टक्यायं सत्तावीस सुहुता चोर्स व बावडिमारो सङ्कृतस्य बाबडिमार्ग च सत्तरिका छता बलदि पुन्तिनामाना सेसा ये समय च र्ण सूरे केर्ण सक्यतीनं बोएइ है ता बत्तराह्य परगुजीही, सतरा-प्रमुचीनं सत्त सुद्वता तेतीस न नानद्विभागा सुद्वतस्य बावद्विमार्ग न सत्तिहा हेपा एक्ट्रीस चुण्यिमामागा छेता ता एएसि में पंचन्द्रं छबख्यरार्थ तथे पुष्पिमासियि वर्षे केन पक्षातेले बोएह र ता मस्सिनीहि, अस्सिनीये पृष्टवीस सुदुता वव न एमडि भागा सुदुत्तस्य वावद्विभाग व सत्तद्विहा छेता देवहिं चुन्चियामाया छेटा दे समये व मं सूरे केमं अनकतेमं ओएड़ ! ता चिताहि, विताबं एको मुहुत्तो अद्भावीतं व बानद्विभागा सङ्करस्य बाबद्विभागे च सत्तद्विद्य डेना तीच चुन्वियाभागा छेना ता एप्सि चे पंचर्च सम्बद्धानं चुनानममं पुन्तिमातिले चेंच डेर्ग वनयतेन नोएर है ता उत्तराष्ट्रि सासाराष्ट्रि, उत्तराणं आसावार्ण करुवीस सुकृता ब्रह्मीस व नारहि भागा सुद्रतास्य बानद्विभागं च सत्तद्विद्धा केता चडप्पर्व्न चुन्त्रिकामामा सैसा तं समनं च वं स्रे स्वं वक्यतेषं कोएर् हेता पुक्रमत्या पुक्रमत्रस्त सोलगमुः

हुत्ता अट्ट य वाबद्विभागा मुहुत्तस्स बाबद्विभागं च सत्तद्विहा छेत्ता वीस चुण्णिया-भागा सेसा, ता एएसि णं पंचण्हं सवच्छराणं चरिम वाविंद्वं पुण्णिमासिणि चदे केणं णक्खत्तेणं जोएड 2 ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाण चरमसमए, तं समयं च णं स्रे केण णक्खतेणं जोएइ ? ता पुस्सेण, पुस्सस्स एगूणवीस सुहुत्ता तेयालीस च वावद्विभागा मुहुत्तस्स वावद्विभाग च सत्तद्विहा छेता तेत्तीस चुण्णिया-भागा सेसा ॥ ६५ ॥ ता एएसि ण पचण्हं सवच्छराण पढम अमावास चदे केणं णक्खत्तेणं जोएड् $^{2}$  ता अस्सेसाहिं, अस्सेसाणं एक्के मुहुत्ते चत्तालीस च वाविट्ठ-भागा सुहुत्तस्स वावद्विभागं च सत्तद्विहा छेता वावर्द्वि चुण्णियाभागा सेसा, त समयं च ण सूरे केण णक्खत्तणं जोएइ 2 ता अस्सेसाहिं चेव, अस्सेसाणं एक्को मुहुत्तो चत्तालीस व बावद्विभागा मुहुत्तस्स वावद्विभागं च सत्तद्विहा छेत्ता वावद्वि चुण्णियाभागा सेसा, ता एएसि णं पचण्ह सवच्छराणं दोच अमावास चदे केणं णक्खतेणं जोएइ २ ता उत्तराहिं फरगुणीहिं, उत्तराण फरगुणीणं चत्तालीस सुहुत्ता पणतीस वाबद्विमागा मुहुत्तरस वाबद्विमाग च सत्तद्विहा छेता पण्णद्वि चुण्णियाभागा सेसा, तं समय च ण सूरे केण णक्खतेण जोएइ <sup>2</sup> ता उत्तराहिं चेव फरगुणीहिं, उत्तराण फागुणीण जहेव चदस्स । ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराणं तच समावास चदे केण णक्खतेण जोएइ 2 ता इत्थेणं, हत्यस्स चत्तारि मुहुत्ता तीस च वावद्वि-भागा मुहुत्तस्स वावद्विभाग च सत्तद्विहा छेता वावद्वि चुण्णियाभागा सेसा, त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ <sup>2</sup> ता हत्येण चेव, हत्यस्स जहा चदस्स, ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दुवालसम अमावास चदे केण णक्खतेणं जोएइ ? ता अहाहिं, अहाण चत्तारि मुहुत्ता दस य वावद्विभागा मुहुत्तस्य वावद्विभागं च सत्त-द्विहा छेता चडप्पण्ण चुण्णियाभागा सेसा, तं समय च णं स्रे केण णक्खत्तेण जोएइ 2 ता अदाहि चेव, अदाण जहा चदरस । ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चरिम वाविंड अमावास चदे केण णक्खतेण जोएइ <sup>२</sup> ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स वावीस मुहुत्ता वायाठीस च वासिंहभागा मुहुत्तस्स सेसा, त समय च ण स्रे केण णक्खतेण जोएइ <sup>१</sup> ता पुणव्वसुणा चेव, पुणव्वसुस्स ण जहा चद्स्स ॥ ६६ ॥ ता जेणं अज्जणक्खत्तेण चढे जोयं जोएइ जिस देसिस से ण इमाई अद्व एगूणवीसाइ मुहुत्त-सयाड चउवीस च चावद्विभागे मुहुत्तस्स वावद्विभाग च सत्तद्विहा छेता वावर्द्वि चुण्णियाभागे उवाइणावेता पुणरिव से चंदे अण्णेण सरिसएण चेव णक्खतेण जोय जोएड अण्णति देसित, ता जेण अज्ञणक्खत्तेण चटे जोय जोएइ जिस देसिस से ण इमाइ सोलग अहत्तीसे मुहुत्तसयाइ अडणापण्ण च वावहिभागे मुहुत्तस्य वावहिभागं ०१४ झुष्यासे [ वेद्र्यच्यी च साहिद्वा क्षेत्रा क्यांक्षि चुन्निवामाने उवाह्यांवेता पुजरवि से जं वेद दोनं वेद मन्दारेलं बोर्ज बोर्ज्य क्यांक्षि देसीत ता बोर्ज क्यावस्वतीनं वेदे बोस बोर्ज्य की देसीत से चं हमाई वस्त्रण्यमुङ्कसस्ताहं नव व सङ्कास्याह उवाहयांवेता पुण-

रति हे चंद्रे मज्जेर्य तारिसएमं चेन जोर्य बोएइ तंसि वेसंसि ता बेर्च क्षज्ञ नक्तारेण चेंदे कोर्य जोएइ करि देखेंसि से वर्ष इसाई एवं कर्म का न सहरसे महान शहरासप समाहजानेता पुनरनि से भीदे तेन नेव सम्मतिन बोर्ड बोएइ तीस दैसींचे ता केर्य सम्मानकरोपं सूरे कोर्य बोध्ह कींचे देसींचे से वर इसह विलि कानद्वारं एडस्यस्यक समावजानेता प्रचरनि से सारेए कानेनं वारेसएनं केन वनकरेन बोर्य बोरह रांधि बेसंधि ता बेण अजगनकरेम सुरे बोर्य बोरह रांधि दैसंखि से में इमाई सत्तद्वरीसे राईबियसमई उवाहणाचेता पुनरनि से सूरे तेने नेव पनवरेनं बोर्व कोएइ एंछि वेसंसि ता क्षेत्रं कामकावरेणं सरे कोर्व कोएइ वेसि देखेंसि से न इसके नद्धारस वीसाई रहांदिवस्थाई सवाइनावेता पुनरति से सूरे माणीनं जेन पानवारियं जोनं जोएइ संसि देसीच सा बोर्च बाजपक्वतीनं सूरे बोनं भोग्र असि बेसेसि तर्ज इसहं क्लीसे सद्धाई राईविक्सयाई सक्छबाविता प्रभर्मि से स्रे देर्ग चेव नक्सरोनं कोश कोएह तीर वैसेशि ॥ ६० ॥ ता क्या नं इसे चंद्रे गहसमायण्यप् अवह तया नं हयरेनि चंद्रे गहसमायण्यप् अवह बना वं इसरे वहे गहसमावश्यए अवह तथा वं हमेनि वदि गहसमावश्यए अवह वा अया में हमें सुरिए गहसमाकने अबह तना में हमरेनि सुरिए धहसमारन्न सन्ह क्या नं इनरे सुरेए कासमानको मनद तया नं इमेवि सुरेए कासमानने भग्र एवं महेनि वनक्तिन । छा कहा मं इस नैदे श्रीत बोनोर्य सन्दर तया वं इसरेनि कींद्र अते बोगेर्ज सक्त, बया ने इसरे कींद्र अते बोगेर्ज सबद क्या ने हमेले की

स्त्रों बोग्ल मनइ, एवं प्रेमेंने गांकि वन्नस्त्रोंनि स्वाप्ति ने चरा उसे वें स्त्राप्ति में पूरा दुला को मेंह स्वाप्ति में यहा हुता बोगेंह स्वाप्ति ने बन्या हुता स्त्रा बोगेंह उदमीति ने चंदा उत्ता कोगेंह उदमीते ने पर उता बोगेंह इसमीति में पहा उता बोगेंह उदमीति ने वन्तता हुता बोगेंह, जेंग्लं पत-स्वस्त्रेचे जहान्यनाए वर्ष्ट्व केंग्ला इनेस मन्यती खेलगरेमाने नन्यत्रमें म्या पाइनेंद्र साहिएता नेमि ॥ ६८ ॥ व्यस्त्रस्य पाइन्डस्य वाचीसहम्म पाइन्द्र पाइन्डिस साहिएता नेमि ॥ ६८ ॥ व्यस्त्र पाइन्डस्य वाचीसहम्म पाइन्ड पाइन्डसम्बद्धाना । १८ – १८ ॥ व्यस्त्र पाइन्डस्य क्ष्य स्वर्थ में प्रवच्या पल्ला तन्नहा नहे १ अमिनाईक्ष मेंद्र स्विविद्य व्यस्त्र । व्यस्त्र स्वर्थ स्वन्य- राण पढमस्स चंदसवच्छरस्स के आई आहिएति वएजा 2 ता जे णं पचमस्स अभिवद्वियसवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं पढमस्स चंदसवच्छरस्स आई अणतर-पुरक्लडे समए, ता से ण किं पज्जवसिए आहिएति वएजा 2 ता जे ण दोचस्स चदसवच्छरस्स आई से णं पडमस्स चंदसवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए, त समय च ण चंद्रे केण णक्खत्तेणं (जोग) जोएइ <sup>२</sup> ता उत्तराहिं आसा-ढाहि, उत्तराण आसाढाण छदुवीस मुहुत्ता छदुवीस च वावद्विभागा मुहुत्तस्स वाव-द्विभागं च सत्तद्विहा छेता चउपपण्णं चुण्णियामागा सेसा, त समय च णं स्रे फेण णक्खतेर्णं जोएड<sup>१</sup> ता पुणन्वसुणा, पुणन्वसुस्स सोलस सुहुता अट्ठ य वाव-हिभागा मुहुत्तस्स वावहिभाग च सत्तहिहा छेता वीस चुण्णियाभागा सेसा। ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोचस्स चंदसवच्छरस्स के आई आहिएति वएजा? ता जे ण पढमस्स चद्सवच्छरस्स पज्जवसाणे से ण दोचस्स चंदसवच्छरस्स आई अणतरपुरक्खंडे समए, ता से णं किं पज्जवसिए आहिएति वएजा <sup>2</sup> ता जे ण तचस्स अभिविद्वयसवच्छरस्स आई से ण दोचस्स चदसवच्छरस्स पज्जवसाणे अणतरपच्छाकडे समए, त समय च ण चंदे केण णक्खत्तेण जोएड <sup>२</sup> ता पुन्वाहिं आसाढाहि, पुव्वाणं आसाढाण सत्त मुहुत्ता तेवण्णं च वावद्विभागा मुहुत्तस्स वावद्विभाग च सत्तद्विहा छेता इगतालीस चुण्णियाभागा सेसा, त समय च णं सूरे केण णक्खतेण [जोयं] जोएइ <sup>२</sup> ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स ण वायालीस मुहुत्ता पणतीस च वाविष्टमागा मुहुत्तस्स वाविष्टमाग च सत्तिद्वहा छेता सत्त चुण्णिया-भागा सेसा। ता एएसि ण पंचण्हं सवच्छराण तच्चस्स अभिवद्वियसवच्छरस्स के आई आहिएति वएजा <sup>२</sup> ता जे णं दोचस्स चंदसवच्छरस्स पजवसाणे से ण तचस्स समिविष्ट्रियसनच्छरस्स आई अणतरपुरक्खंडे समए, ता से णं किं पज्जवसिए आहिएति वएजा <sup>2</sup> ता जे णं चडत्थस्स चदसवच्छरस्स आई से ण तचस्स अभि-विश्वयसवच्छरस्स पज्जवसाणे अणतरपच्छाकडे समए, त समय च ण चदे केणे णक्खत्तेण जोएइ 2 ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण तेरस मुहुत्ता वेरस य वाबद्विमागा मुहुत्तस्स वाबद्विमाग च सत्तद्विहा छेता सत्तावीस च चुण्णि-यामागा सेसा, त समय च णं सूरे केण णक्खतेण जोएइ 2 ता पुणव्वसुणा, पुण-व्वद्यस्स दो मुहुत्ता छप्पण्ण च वावड्रिभागा मुहुत्तस्स वावड्रिभागं च सत्तद्विहा छेत्ता सद्घी चुण्णियाभागा सेसा । ता एएसि ण पंचण्ह सवच्छराण चउत्थस्स चंदसवच्छ-रस्स के आई आहिएति वएजा ? ता जे ण तचस्स अभिवद्धियसवच्छरस्स पजन-साणे से णं चउत्थरस चदसवच्छरस्स आई अणतरपुरक्खडे समए, ता से ण किं पन्नविए भाहिएति वएना <sup>इ</sup> ता जे नं चरित्रस्य अमिवविवर्धनक्तरस्य नाई से र्ज पारतपास्य अंदर्शनच्छरस्य पञ्चनधाणे क्षत्रीतरपञ्चानके समयु, त समर्ग च न र्वेद केन नक्दत्तेर्य बोरह है ता सत्तराहि भासाबाहि, उत्तरान शासाडार्ग करा-

तीर्च मुहुता चत्तासीर्च **च वास**ड्डिमाया मुहुत्तस्य वाबड्डिमागं च सत्तद्वहा स्रवा बरसड़ी चुन्जियासामा सेसा तै समर्व व न सूरे केर्च वनदारेच जोएर । ता

पुनम्बद्धना पुजम्बद्धस्य भरमतीसं सुहुत्ता एउनीसं नानक्षिमामा सुहुत्तस्य नानक्षि मार्थ च सत्तद्विद्धा केता सीयासीसं शुण्यियामाया सेसा । ता एएसि न पेनच्ये संबन्धार्य पेक्सस्स अभिविष्ट्रस्थिकारस्य के लाई आहिएति वएमा है हा में ने

**गवत्वत्स नेव्यंबन्धर**स्य प्**यक्याने से नं पंचमस्य अमिनन्त्रिययंक्ट**करस्य अमे मनतरपुरक्कारे धनए, ता से में कि प्रमाशिए काहिएति कर्जा ! ता से में पडमस्य चंदपंशकारस्य आहे से र्ण प्रचमस्य अभिवद्विवसंबद्धस्य प्रज्ञासाने कर्मतरपन्छन को समय, ते समने व यं वदि केनं वक्करेर्य बोएह ! ता उद्यासी

भासाडाही, उत्तरार्ग | चरमसमय, वं समयं च वं स्रे केर्य नक्द्रोचं बोएर f वा पुरसेणं पुरस्ता नं एक्कीसं सुहुता। तेबाकीसं व बावद्विमागे सहत्तरसः वानद्वि मार्ग व सत्तिहरू केता वेचीचे चुन्यिमामागा सेसा ॥ ६९॥ व्यापासम पाइवं समर्च ३ ११ ॥

ता बद नं संबच्छरा आदिवादि वर्ग्या है तस्य च्यह इसे पंच संबच्छरा पन्नात र्यमा;--पश्चते बदि उड्ड कार्च अभिविद्यु, ता पूप्ति थं पंजबं संवयाराणं परमस्य पन्धत्तरकण्डरस्य चन्द्रतमारे वीसस्मृहृतेचं सहोरहेवं मित्रमाचे केन्द्रप् रहंदियमीचं माहिएति वर्षमा है ता सत्ताचीचं रहंदिवाई एहबीचं व सर्प द्विमागा राहित्यस्य राहित्यमोर्न भाविष्यि वर्षमा ता से व केवर्ष संप्राप्ति

माब्रिएवि वएआ है ता अद्भगए एग्एनसि सुद्वतार्थ सत्ताबीसे च सत्तद्विनामे सिर्ह् त्तरम सुद्रुत्तमोर्च आहेएति वएवा ता एस नै अद्या दुवाससरस्त्रतका वनगती

सक्तारे, ता से ये केनहए राहित्तमंगेयं आहिएति वएमा है ता तिथ्य सतारीपे राहित्सए एकाकर्ण च सत्तक्षिमागे सहदिवस्स राईविवमोर्ण बाहिएति वर्भ्य ता से नं केनइए मुहुत्तमोर्न आहिएति वएआई ता जव मुहुतसहस्मा **व्यः व** वर्तीसे सुहुत्तराय **उप्पर्का च** सश्चद्विमागे सुहुत्तरूगं सुहुत्तरूगं आहिएति नएजा। ता प्राप्ति न पंत्रक सरकारानं योजला नंदसरकारसा नंद आसे तीरवसुद्वानं नदोरीनं पणिजनाचे के दूर राईहिसमोर्ग माहिएति वर्णमा ह ता एगूनदीर्घ राईहिबाई बतीर्घ बाबद्विमागा राष्ट्रंदिवस्य राष्ट्रीरवयोणं आद्विपृति वपृत्वा ता से वं वेनरए सङ्घर्षः

ग्गेणं आहिएति वएजा <sup>2</sup> ता अट्टपचासए मुहुत्ते तेत्तीस च छावट्टिमागे मुहुत्तरगेणं आहिएति वएजा, ता एस ण अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा चंदे सवच्छरे, ता से ण केव-इए राइंदियग्गेण आहिएति वएजा ? ता तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसए दुवालस य वावद्विभागा राइदियम्गेण आहिएति वएजा, ता से ण केवइए मुहुत्तम्गेण आहिएति वएजा 2 ता दस मुहुत्तसहरूसाई छच पणवीसे मुहुत्तसए पण्णास च वाविष्टभागे मुहुत्तागोण आहिएति वएजा। ता एएसि णं पचण्ह सवच्छराण तचस्स उद्घसवच्छरस उडुमासे तीसइसुहुत्तेण गणिजमाणे केनइए राईदियग्गेण आहिएति वएजा ? ता तीस राइदियाणं राइदियग्गेण आहिएति वएजा, ता से णं केनइए मुहुत्तग्गेण आहि-एति वएजा <sup>2</sup> ता णव मुहुत्तसयाइ मुहुत्तरगेण आहिएति वएजा, ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा उडू सवच्छरे, ता से ण केवइए राइदियग्गेण आहिएति वएजा 2 ता तिण्णि सट्ठे राइदियसए राइदियग्गेण आहिएति, वएजा, ता से ण केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएजा <sup>2</sup> ता दस मुहुत्तसहस्साइ अट्ट य सयाइ मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएजा । ता एएसि णं पचण्ह सवच्छराण चउत्थस्स आइचसवच्छरस्स आइचे मासे तीसइसुहुत्तेण अहोरत्तेणं गणिजमाणे केवइए राइदियग्गेण आहिएति वएजा र ता तीस राइदियाइं अवहुभागं च राइदियस्स राइदियग्गेण आहिएति वएजा, ता से ण केवइए मुहुत्तरगेण आहिएति वएजा <sup>१</sup> ता णव पण्णरस मुहुत्तसए मुहुत्त-गोणं आहिएति वएजा, ता एस ण अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा आइचे सवच्छरे, ता से ण केनइए राइदियम्गेण आहिएति नएजा ? ता तिण्णि छावहे राईदियसए राइ-दियरगेण आहिएति वएजा, ता से ण केवइए मुहुत्तरगेण आहिएति वएजा 2 ता दस मुहुत्तस्स सहस्साइ णव असीए मुहुत्तसए मुहुत्तरगेणं आहिएति वएजा । ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पवमस्स अभिविद्वयसवच्छरस्स अभिविद्विए मासे तीसइमुहुत्तेण गणिजमाणे केवइए राइदियग्गेण आहिएति वएजा १ ता एकतीस राइदियाइ एगूणतीस च मुहुत्ता सत्तरस वाबद्विभागे मुहुत्तस्स राइदियग्गेण आहिएति वएजा, ता से ण केवइए मुहुत्तरगेण आहिएति वएजा  $\imath$  ता णव एगूणसट्टे मुहुत्तसए सत्तरस वाविह्मागे मुहुत्तरस मुहुत्तरगेण आहिएति वएजा, ता एस ण अद्धा दुवाल-सक्खुतकडा अभिविद्वियसवच्छरे, ता से ण केवडए राइदियग्गेण आहिएति वएजा 2 ता तिष्णि तेसीए राइदियसए एक्वीस च मुहुत्ता अद्वारस वावद्विभागे मुहुत्तस्स राइदियमोण आहिएति वएजा, ता से ण केवडए मुहुत्तमोण आहिएति वएजा 2 ता एकारस मुहुतसहस्साड पच य एकारस मुहुत्तमए अद्वारम वावद्विभागे मुहुत्तस्स सुहुत्तरगेण आहिएति वएजा ॥ ७० ॥ ता केवइय ते नोजुगे राईदियरगेण आहिएति

बएआ ? ता सत्तरस एकाणतए राईशियसए एगूणबीसँ च सुहुत्तं सत्तावच्ये बावडि माने सङ्गतस बाबद्विमार्गं च सत्तद्विदा केता पत्रपत्र्यं चुण्जियामाने रहित्यमोनं माहिएति वर्जा तासे ये केनहए सुहुत्तरनेयं माहिएति वर्जा है ता तंपन्यसुहुत-सहस्साई रात य अञ्चलापण्ये शृहुत्तसप् सत्तावण्य वावद्विभागे सुहुत्तस्स वावद्वि भागं च सत्तद्भित्र केता पनपर्ण्यं चुन्धिनामागा सुदूत्तरगेर्व माहिएति वर्ष्णा ठा केवहए के ते क्षणव्यते *रा*वंत्रियमोर्ज बाहिएति वएजा हैता अनुतीसे रावंत्रिवाई रस*य* मुहुत्ता चतारे थ बावद्विमाने मुहुत्तस्य बावद्विमार्यं च सत्तद्विहा छेता तुवाकसः जुन्यि-यामागे राईवियमोर्च आहिएति वएमा ता से वं केन्द्रए मुहुत्तरगर्न आहिएति वएमा है ता एकारस पञ्चासे मुद्दुत्तसंय चतारि य बाबद्विमागं बाबद्विमानं ब सतद्विमा केता दुराक्स चुन्जिकामार्गे सुदुत्तमोर्ग काहिएवि बएजा ता केवदवं सुर्गे रहंदिव-मार्ग जाहिएति वएजा <sup>३</sup> ता भद्वारस्त्रीचे राईदिवसए रईदिवमोर्ज साहिएति वस्त्रा ता से ने केबद्दर मुद्रुत्तमोनं आदिएति बएजा है ता बउप्पन्यं मुद्रुत्तसहस्सदं वन य सहरास्याई सहरायोगं भाक्षिपवि थएजा ता से मं बेन्हए बावहिमामसहरायोगं भाविपति वर्ण्या । ता चकतीचे सवसहस्थाई बहुदीचं च बाबद्विमागमुहुत्तवप् नावद्विमायमुद्रुक्तमोर्यं आहिएदि वएना ॥ ७१ ॥ ता क्या वं एए अहबनेर सक्त्यरा समाह्या समस्व्यवस्थि। आहितेही वर्जा है ता सर्द्धि एए आह्यानासा नावर्षि एए नदमासा एस य भवा <del>उन्हा</del>तकता दुवास्थ्यमञ्ज्या तीसे एए साम्बन् सरच्चरा एक्सीस एए चेवसेक्च्छरा तथा व एए बाइचचेदसेक्चरा स्माहना समक्रमस्या माहिताति गएमा । ता ह्या वं एए बाह्यतहर्वद्मकारा <del>प्यक्ता स्माहमा समयवासमा आविति वर्षणा है तर शर्द्ध एए माह्यमास</del> एगाई एए बद्धमासा बलाई एए बंबमाधा सत्ताई एए व्यवसामासा एस बं स्था दुवाअसम्बद्धतास्त्रा दुवाससमहमा सर्छि पूर्व वाह्या संबच्छरा एगर्छ एए रङ्गसम्बद्ध बाबद्धि एए चंदा सबच्छरा एकद्धि एए अस्त्रका सबच्छरा तथा में एए मार्ड रञ्जवद्यक्तकता सक्त्यारा समाहमा समप्रव्यक्तिया आहितेति वएजा ≀ता क्या में एए अभिवन्तिनवाद्रवरङ्गवेदनक्कता सक्तकता समाह्या समानवादिया भावितेति वर्षमा है ता सक्तावर्ण्य मासा सक्त व अव्होरचा एकारस य सुद्वुक्त रावीर्स वावद्विमाना मुहुनस्स एए ममिनविष्या मासा सिंह एए आह्वमासा एनद्वि एए उड्डमासा बानकी एए चंदमासा सर्वाई एए वनकातमासा एस वं अदा स्वयन्तसभन्दरास्त्रा बुबाकसमहत्या सत्त सवा चोताका पूर् वं कमिवद्विना सवव्यवरा सत्त संया असीवा पूर् च महत्वा सेवन्सरा सत्त सवा तेवतवा पूर् व तङ्क्षतकारा बहुसवा बस्तरा

एए णं चदा सवच्छरा, एकसत्तरी अट्टसया एए ण णक्खत्ता सवच्छरा, तया णं एए अभिवद्धिया आइचउडुचदणक्खता सवच्छरा समाइया समपज्जवसिया आहितेति वएजा, ता णयद्वयाए णं चदे सवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइदियसए दुवालस य वाबद्विभागे राइंदियस्स आहिएति वएजा, ता अहातचेणं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसए पंच य मुहुत्ते पण्णास च वाविष्टभागे मुहुत्तस्स आहिएति बएजा ॥ ७२ ॥ तत्थ खलु इमे छ उड़ पण्णत्ता, तजहा-पाउसे वरिसारते सरए हेमंते वसते गिम्हे, ता सब्वेवि णं एए चदउडू दुवे र मासाइ चउपण्णेण र आयाणेण गणिजमाणा साइरेगाइ एगूणसिट्ट २ राइंदियाइ राइंदियगोणं आहितेति वएजा, तत्य खलु इमे छ ओमरत्ता पण्णत्ता, तजहा-तइए पन्ने सत्तमे पन्ने एकार-समे पन्ने पण्णरसमे पन्ने एगूणवीसइमे पन्ने तेवीसइमे पन्ने, तत्य खलु इमे छ अइरत्ता प०, त०-वउत्थे पन्वे अट्टमे पन्वे वारसमे पन्वे सोलसमे पन्वे वीसइमे पन्वे चउवीसइमे पन्वे । छचेव य अइरत्ता आइबाओ हवति माणाइं । छचेव ओम-रत्ता चदाहि हवति माणाहिं॥ १॥ ७३॥ तत्य खळ इमाओ पच वासिकीओ पच हेमताओ आउट्टीओ पण्णत्ताओ, ता एएसि ण पचण्हं सवच्छराणं पढम वासिक्हिं वाउद्दिं वदे केण णक्खताण जोएड <sup>१</sup> ता अमीइणा, अमीइस्स पढमसमएण, त समय च ण स्रे केण णक्खत्तेण जोएइ 2 ता पूसेण, पूसस्स एगूणवीस मुहुत्ता तेतालीस च वावद्विभागा मुहुत्तरस वावद्विभाग च सत्तद्विहा छेता तेत्तीस चुण्णिया-भागा सेसा, ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच वासिक्ति आउर्डि चंदे केण णक्खतेण जोएइ <sup>२</sup> ता सठाणाहिं, सठाणाण एकारसमुहुते ऊयालीस च वाविडिमागा मुहुत्तस्स वावद्विमाग च सत्तद्विहा छेता तेपण्ण चुण्णियाभागा सेसा, त समय च ण सूरे केण णक्खतेणं जोएइ 2 ता पूसेण, पूसस्स ण तं चेव जं पढमाए, ता एएसि णं पचण्ह सवच्छराण तम्ब वासिक्तिं आउट्टिं चदे केण णक्खतेण जोएइ <sup>२</sup> ता विसाहाहिं, विसाहाण तेरस मुहुत्ता चलप्पण्णं च वावद्विभागा मुहुत्तस्स वावद्विभागं च सत्तद्विहा छेता चताळीस चुण्णियाभागा सेसा, तं समय च ण सूरे केण णक्ख-त्तेण जोएइ <sup>2</sup> ता पूसेण, पूसस्स तं चेव, ता एएसि ण पचण्हं सवच्छराण चउत्थ वासिक्तिं आउर्टि चदे केण णक्खतेण जोएइ १ ता रेवईहिं, रेवईण पणवीस मुहुत्ता वासिंहभागा मुहुत्तस्स बाविंद्रभाग च सत्तिंद्वहा छेता बत्तीस चुण्णियाभागा सेसा, त समय च ण सूरे केण णक्खतेणं जोएइ 2 ता पूसेण, पूसस्स त चेव, ता एएसि ण पंचण्ह सवच्छराण पचम वासिकिं आउर्हि चंदे केणं णक्खतेण जोएइ ? ता पुन्वाहिं फरगुणीहिं, पुन्वाफरगुणीण वारस मुहुत्ता सत्ताठीस च वावद्विभागा पंचर्य पंचरहराणे पवने हेमैति भावदि चेर केण सकरतीणं बोएह र ता इरवेर्च

इत्वस्स नं पन सुद्वाा क्याच न वानदिमामा सुद्वास्य न वानदिमार्य न समझित हैता सिंद्र निकासमामा सेवा सं समयं न म सूर केर्य क्यान्तरेन कोए हैं ता करमाई असावार्धि, उत्तरार्थ आपावार्य निराससम्, ता प्रवासिकार्धि, सर्वेत्र एमं बीचे हेमिट आपिट निर्दे क्या क्यापीलं नीए हैं ता स्वतिकार्धि, सर्वेत्र स्वापं दुन्नि सुदुन्ता बद्धारीलं न नविद्याया सुद्वास्य नावदिमार्थ न सप्तिका हैता हमार्वीय निकासमार्थ स्वापं सं स्वतं न म सूरे क्या क्याप्ति में बीए हैं ता समार्थि असावार्धि, उत्तरार्थ नावदिकार्य स्वतं हमार्थ स्वतं स्वतं

राजं चटरिंग हेर्मिट बार्ट्स वंदे केणं यस्यतेषां कोएड ! ता मुकेणं मूक्स्स छ मुद्रता बहुक्यं व नावद्विमागा सहत्तस्य वावद्विमार्थं व सत्तद्विदा हेळा वीर्ष पुन्तियामागा सेसा ते समय न में श्रे केमें शक्**यां**न बोपर है ता स्त**ार्ध** आसाडाहि, उत्तराणं आसाताच चरिमसमय, ता एएसि चं पंत्रव्हं संत्रस्कराचे पनमें हेमति आउदि जी केन वन्यतिम चोएर है ता कतियाई, अतिमाने अप्रारह सुद्वता स्तीस च बाबद्विमाना सुबुत्तम्स वाबहिसार्यं च सत्तद्विद्वा सेता 🗷 चुन्निवामार्थः सेसा एं समर्ग च नं प्रे केनं वनसारेनं ओएर है ता उत्तराई भासवाई, डाग्यचे भारागानं चरिमसमप् ॥ ४५ ॥ तत्व राष्ट्र इमे दसविद्दे जोए पञ्चते । तमहान्यम मालुजोए मेलुबालुजोए सबे संबादमंबे क्यो छतादकते सुवसदे पवसंगरे पीनिए मंडयप्पुत्ते नामं इसमे ता एएसि ये पैनम्बू सबस्करानं समहत्त्वाते बोर्न बेदे वेति बेसस्य जोएर र ता जंडरीवस्य २ पार्रणपद्मैणाययाए वरीजवादिचायवाए जीवाए मंडले भत्रव्योत्तेमं सएवं हेता बाहिणपुरस्तिमित्रीनं भत्रमागर्मन्त्रीन सत्तादीस मार्ग स्वान रमानेता अञ्चानीसदमाग नीमहा हेता अञ्चारममागं उनाइनानेता तिहि भागेई बाहै कसाहि बाहिसपुरविक्रमितं अडब्सानमंत्रसं असरते एस ग से बंद एनान्यस्तं जाने जीएर् उपि चरी गण्डा जनगरी देहा आहथे सं समर्थ च व चर देन ने गणातिये कोएर ! ता वितासि, करमसमए ॥ ०६ ॥ सारसमी पानुडे समर्च #१९#

ता कह ते चढमसो वहुोवहुी आहितेति वएजा ? ता अद्व पचासीए मुहत्तसए तीस च वावद्विभागे मुहुत्तस्स, ता दोसिणापक्खाओ अधयारपक्खमयमाणे चदे चतारि वायालसए छत्तालीस च वाविष्टभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे रजाइ, तजहा-पढमाए पढम भाग विइयाए विइय माग जाव पण्णरसीए पण्णरसम भाग, चरिम-समए चंदे रत्ते भवइ, अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, इयण्ण अमा-नासा, एत्य णं पढमे पब्ने अमानासा, ता अधयारपन्खो, तो ण दोसिणापन्खं अयमाणे चदे चत्तारे वायाले मुहुत्तसए छायालीस च वाविद्वभागा मुहुत्तस्स जाई चंदे विरज्ञह, तं०-पढमाए पढम भाग विड्याए विड्यं भाग जाव पण्णरसीए पण्णरसम भाग, चरिमे समए चदे विरत्ते भवड़, अवसेससमए चढे रत्ते य विरत्ते य भवडु, इयण्ण पुण्णिमासिणी, एत्य ण दोचे पन्ने पुण्णिमासिणी ॥ ७७ ॥ तत्य खलु इमाओ वाविंद्व पुण्णिमासिणीओ वाविंद्व अमावासाओ पण्णत्ताओ, वाविंद्व एए किसणा रागा, वाविट्टं एए किसणा विरागा, एए चडव्वीसे पव्वसए, एए चडव्वीसे कसिणरागविरागसए, जावइया ण पचण्ह सवच्छराण समया एगेण चउन्वीसेण समयसएणूणगा एवइया परित्ता असखेजा देसरागविरागसया भवंतीति मक्खाया, ता अमावासाओं ण पुण्णिमासिणी चत्तारि वायाले मुहुत्तसए छत्तालीस च वावडि-भागे मुहुत्तस्य आहितेति वएजा, ता पुण्णिमासिणीओ ण अमावासा चत्तारि वायाळे मुहुत्तसए छत्ताळीस च वाबिष्टभागे मुहुत्तस्स आहितेति वएजा, ता अमा-वासाओं ण अमावासा अद्वपवासीए मुहुत्तसए तीस च वावद्विभागे मुहुत्तस्स याहितेति वएजा, ता पुण्णिमासिणीओ ण पुण्णिमासिणी अद्वपनासीए मुहुत्तसए तीस च वाबद्विमागे मुहुत्तस्स आहितेति वएजा, एस ण एवइए चदे मासे एस ण एवइए सगळे जुगे ॥ ७८ ॥ ता चदेण अद्मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ १ ता चोद्दस चउच्भागमंडलाइ चरइ, एग च चउव्वीससयभागं मडलस्स, ता आइचेणं अदमासेण चदे कइ मडलाइ चरइ? ता १४ <del>६६६</del> मडलाई चरइ, ता णक्खतेण अदमासेण चदे कइ मडलाइ चरइ? ता तेरस मंडलाइ चरइ, तेरस सत्तिष्टभागं मडलस्स, तया अवराइ खलु दुवे अद्वगाइ जाई चटे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविद्विता २ चारं चरह, कयराइ खलु ताइ दुवे अहुगाइ जाइ चदे केणइ असा-मण्णगाइ सयमेव पविद्विता २ चारं चरह १ ता इमाइ खळ ते वे अहुगाई जाइ चदे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविद्विता २ चार चरह, तजहा-णिक्खममाणे चेन अमानासतेण पविसमाणे चेन पुष्णिमासितेण, एयाइ खलु दुवे अद्वगाइ जाइ चढे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविद्विता २ चारं चरइ, ता पहमायणगए चदे

**4**12

दाविचाए भागाए पनिसमाने सच अवसंबद्धाई काई चींबे बाविचाए मागाए पनिसमाणे चारं चरह. कनराई राज ताई सत अदमहमाई बाई चेंद्र बाद्रिकाए मागाए पविसमाधे बारे बरड है इसाई बहुद तहां सत्त बद्धमंडकां बारे बरे दाहिमाए मागाए पनिसमामे भार चरह, तबहा-विद्यु अदमेडके चठाचे नह मंडके छद्वे अद्यमंडके शहुने अद्यमंडके व्सने अद्यमंडके बारसमे अद्यमंडके घटवसने **सदमारके एयाई राख ता**ह शत्त सदमंडकाई आई पदि दाक्कियाए भागाए पनि-समाणे चारे चरह, ता परामाक्वपए चंदे उत्तराए मामाच पविसमाने 🖝 मह मंडमतं रेरस व उत्तक्तिमायतं अद्यगंडमस्य आतं चीत उत्तराए मानाए एकि समाने बार बरह, क्यराई खल ताई क कदर्गवकर्त तरस य सत्तद्विमानकं बदर्ग-डकरस नहं चेंद्रे उत्तराए मागाए पविचमाने चार चरह } श्रमाई **चन्न** तहं **ड नद**-मंडलाई चेरस व सत्तद्विमागतं अद्यगंडसस्य वर्षे वेदे उत्तराय मानाय पविस्थाने नारं चरर, तंनका-तरए अञ्चमक्के पंचमे अञ्चमक्के सत्तमे अञ्चमक्के अवसे अवसे डडे एदारसमे अदमंडके देरसमे अदमंडके फन्मरसमस्य अदमंडमस्य तेरस सा दिमागहं, एनवं एक तवं छ अबगंत्रकार तेरस य सत्तदिमागतं अबगंत्रमस्य नाई बढ़ि उत्तराए मागाए पवित्रमाणे चार घटा, प्रतावता व पढ़मे वंदायने धमते सदर, ता बक्को अदमारे में बढ़े अदमारे ने बढ़े अदमारे परवर्षे अदमारे ता गरदताओं अदमासाओं से वह वहने अदमारेनं किमहेर्न चरह ! ता एनं अद्धर्मकर्म चरह चतारि व चट्टिमायलं अद्धर्मकरस्य चताद्विमायं कातीसार छेता कर मागाई, ता बोबायकमप् की पुरिकासप् मामाप् विस्प मनाचे समदय्यन्याई काई वह परस्य निर्म्य पविचरह, सत देरसमई बाई वीर सप्पनो विष्णं पदिवरह, ता दोवावयगए वर्षे पवस्थिमाए मागाए विस्यान-मार्च चटम्मन्नाई बाई की परसा विक्न पडिकार, छ हेरसमाई वह अपनी पिन्नं पविचरहे, अवस्मार्वं श्रम्भ द्वते शेरमगाई जाई वह केयह अग्रामनावाई समान पनिद्विता १ जारे जरह, अनराई यह ताई हुने शरतवाई बाई बंदे केयर क्रमामञ्जयाई नवभव पविद्विता २ चार चरड़ है इसाई दानु खाई हुवे हेरखमाई माई चंदी केप्प अमामनमाई सम्मेष प्रमिद्धिया २ बार्ट चरड, री०-सप्य-क्मेंगरे चर मंदके सम्बनाहिरे चेव मेन्के एवाई राज ताई हुने तरमगाई काई बंदि केयद जान चारे चरह प्रतानता दोन चंदानचे समते सन्छ ता नक्यत मारी को चैद मारे भेद मारे को नक्यते मारे ता नक्यते मारे चेदचे मारेचे दि अदिनं परह र ता यो अदर्गहरूमई परद जड य सत्तद्विमामाई अदर्गहरूस

सत्तिष्ठिभागं च एक्कतीसहा छेता अद्वारस मागाई, ता तचायणगए चंदे पचित्यमाए मागाए पविसमाणे वाहिराणतरस्स पचित्थिमिहस्स अद्धमंडलस्स ईयालीस सत्तिष्टु-भागाइ जाइं चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पिडचरइ, तेरस सत्तिष्ठिमागाइ जाइं चदे परस्स चिण्ण पडिचरइ, तेरस सत्तिष्टिभागाइ चदे अप्पणो परस्स चिण्ण पडि-चरइ, एतावता बाहिराणंतरे पचित्थिमिल्ले अद्भाउछे समत्ते भवइ, ता तचायणगए चदे पुरिच्छमाए भागाए पविसमाणे वाहिरतचस्स पुरिच्छिमिहस्स अद्धमंडलस्स ईयालीस सत्तिहिभागाइ जाई चंदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पिडचरइ, तेरस सत्त-द्विभागाइ जाइं चंदे परस्स चिण्णं पिडचरइ, तेरस सत्तद्विभागाई जाइ चदे अप्पणो परस्स चिण्ण पिटचरइ, एतावताव बाहिरतचे पुरिच्छिमिल्ले अद्धमङले समत्ते भवइ, ता तचायणगए चदे पचित्थमाए भागाए पविसमाणे वाहिरचउत्थस्स पचित्थिमिह्नस्स अद्भाडलस्स अद्भत्तद्विभागाईं च एक्तीसहा छेता अट्टारस भागाइ जाड चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पिडचरइ, एतावताव बाहिरचउत्थपचित्थिमिल्ले अद्भमङले समते भवइ । एव खळु चंदेणं मासेणं चदे तेरस चउप्पण्णगाई दुवे तेरसगाई जाइ चंदे परस्स चिण्णं पडिचरइ, तेरस तेरसगाइ जाइं चदे अप्पणो चिण्णं पडिचरइ, दुवे ईयालीसगाई अह सत्तिहिभागाड सत्तिहिभाग च एक्कतीसहा छेता अहारसभागाई जाइ चदे अप्पणो पॅरस्स य चिण्ण पिडचरइ, अवराई खल्ल दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविद्विता २ चारं चरइ, इचेसो चंदमासोऽभि-गमणणिक्खमणबुद्धिणिबुद्धिभणविद्वयसठाणसिठिईविउञ्चणगिद्धिपते रूवी चदे देवे २ आहिएति वएजा ॥ ७९ ॥ तेरसमं पाहुडं समत्तं ॥ १३ ॥

ता कया ते दोसिणा वहू आहितित वएजा १ ता दोसिणापक्खे ण दोसिणा वहू आहितित वएजा १ ता अधयारपक्खाओं णं॰ दोसिणा वहू आहिताति वएजा, ता कह ते अध्यारपक्खाओं दोसिणापक्खे दोसिणा वहू आहिताति वएजा, ता कह ते अध्यारपक्खाओं दोसिणापक्खे दोसिणा वहू आहिताति वएजा १ ता अध्यारपक्खाओं णं दोसिणापक्खे दोसिणा वहू आहिताति वएजा १ ता अध्यारपक्खाओं णं दोसिणापक्ख अयमाणे चदे चतारि वायाले मुहुत्तसए छत्तालीस च बाविद्विभागे मुहुत्तस्स जाइ चंटे विर्ज्जइ, तं०-पदमाए पदम भाग विद्याए विद्य भाग जाव पण्णरसीए पण्णरसम भाग, एव खछ अध्यारपक्खाओं दोसिणापक्खे दोसिणा वहू आहिताति वएजा, ता केवइया ण दोसिणापक्खे दोसिणा वहू आहिताति वएजा १ ता अध्यारपक्खे ण अध्यारे वहू आहिएति वएजा, ता कह ते अध्यारपक्खे॰ वहू आहिएति वएजा, ता दोसिणापक्खाओं ण अध्यारपक्खे अध्यारे वहू आहिएति वएजा, ता दोसिणापक्खाओं ण अध्यारपक्खे अध्यारे वहू आहिएति वएजा,

. \$ 8

हा नई से दोशिनायनयानो अंध्यारकन्त्रे अंध्यारे बहु लाहिएति बएवा ! हा बीशियामन्त्रास्थे च अंध्यारकन्त्रे लवशाणे पेदे नतारि वायाके ह्युक्तर्य वालांकेरी मान वालांक्रियाते सहुत्तर्य आई चीर रज्जा, तें —ग्वमाए पदर्म मानं निवस्य विदर्भ मान वान राज्यस्थिए राज्यस्थाते आते एव बहु रोशियामन्त्रास्थो अंध्यारस्थे अंध्यारे बहु माहिएके प्रथमा धा केल्स्य के अंध्यारक्ष्मे अंध्यारे बहु साहिएके वास्त्रा है सार्वस्था कर्यकेष्ण माना ॥ ८ ॥ योष्ट्रास्थाने पाइके स्वस्था है प्रशेष्ण स्थानिक स्थानिक

गजनन्यत्ततारास्थाणं चंबेहितो सूरा सिम्बयई सुरेहितो यहा सिम्बयई यहेंबैंगे नक्यता सिव्हर्या करकोष्टियो छारा सिव्हर्या सम्बद्धाः संदा समाधिकारी तारा ता एगमनेषं सङ्ग्रेणं चंदे केक्ट्रयाई भागसमाह शक्कद है ता वा ने मंत्रके उपसन्तिता नारं नरह तस्य २ अंडस्यरिक्सेक्स सत्तरस सङस्टि सामस्य सच्चर संबक्ष स्थलहरूरोणं बहुअवहरूपपृष्ट केवा वा प्रामेनेनं सहरेसं दरिए केनक्रमाई मागसभाक मच्छ्य है ता जो जो मैंबर्ड उक्संक्रमिता जारे बरा दस्स र मेंबर्ड परिक्लेवस्य महारस तीरे भागसम् यन्त्र्य मंडकं सवसङ्खेणं व्यापनदर्शसम्ह हेगा। ता एयमेरेव मुद्दतेनं वक्कारे केक्ट्याई मायस्याई मच्छा ! शा वं वं मंदर वर्ष संक्रमिता चारं चरह तस्त २ गंडकपरिचन्नेवस्त बहारस प्रवतीरी मागसए पन्न मंडसं समस्वरूरोमं स्ट्रायस्त्रंसपृष्टि केता ॥ ४९ ॥ ता क्या न चंद्रं गहसमादन्तं स्ट्रे गइसमादक्य संदर् से यां व्यवसायाय केन्द्रनं विसेश्व है ता बाबद्विमाने विसेशेड वा बना च चर्च गइसमावर्ण्य भक्तको गइसमावर्ण्य सब्द से यं गइमानाए क्यारं मिसेक्टर ता सत्ति भागे विसेक्ट ता क्या में सूर गहसमावर्ण वस्त्रते मर समायण्ये मनद से वं गद्रमायाय केनदर्य निसंसेन् है या पंचमाने निसेसर, या बना र्च वर्ष गर्समावर्ग्य कमीईनक्यते गत्समावर्ग्न पुरस्क्रिमाए मागाए समासाद्री पुरिक्तमाए भागाए समासामिता जब सुद्वते सत्तानीसं व सत्तद्विमाने सुद्वतस्य भवेज सर्कि जीर्य चोएह जीर्य जोएसा वार्व जलुपरिवाह जीर्व अनुपरिवाहिसा विध्य-अदृह २ ता विमयबोह यानि भवर, ता जवा ये वंद गहसमावन्त्रं स्ववे सन्धी गइसमानव्ये पुरिक्रमाए मानाए समासावेइ पुरिक्रमाए भागाए समासवेता तीर्स मुदुत्ते चंदण शर्दि जोर्य जोएर २ ता जीन अनुपरियद्द ओ २ शा विपानस्य विगयजोई सानि भन्छ, एवं एएक अधिकानैयं नेयन्त्रं पञ्चरसमुद्रताई धीनझमुद्रुताई पजसाठीरामुहुताई सामियक्वाई काव उत्तरासावा । ता जवा व वंद धरसमावन्य गर्दे महसमानका पुरिकामाप् मागाप् समासाका पुर १ ता विदर्ध सर्वि जोर्प

जुजइ २ त्ता जोग अणुपरियष्टइ २ ता विप्पजहइ० विगयजोई यावि भवड । ता जया णं सूरं गइसमावण्णं अमीईणक्खत्ते गइसमावण्णे पुरच्छिमाए भागाए समासादेइ पुर० २ ता चत्तारि अहोरत्ते छच मुहुत्ते सूरेण सिंद्धं जोयं जोएइ २ ता जोय भणुपरियदृह २ ता विष्पजदृइ० विगयजोई यावि भवइ, एव अहोरता छ एक्ववीस मुहुत्ता य तेरम अहोरत्ता वारस मुहुत्ता य वीस अहोरत्ता तिण्णि मुहुत्ता य सन्वे भाणियव्या जाव जया ण सूर गइसमावण्ण उत्तरासाढाणक्खत्ते गइसमावण्णे पुरिच्छ-माए भागाए समासादेइ पु॰ २ त्ता वीस अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सिंद्धं जोयं जोएड जो॰ २ त्ता जोय अणुपरियदृड जो॰ २ त्ता विप्पजहृइ॰ विगयजोई यावि भवइ, ता जया ण सूर गइसमावण्ण णक्खते गइसमावण्णे पुरच्छिमाए भागाए नमासांदेइ पु॰ २ ता सूरेण सिद्धं जोय जुजइ २ ता जोयं अणुपरियद्वड २ ता जाव विगय-जोई यावि भवइ॥ ८२॥ ता णक्खत्तेण मासेण चदे कड मडलाइ चरइ<sup>2</sup> ता तेरस मडलाइ चरइ तेरस य सत्तिष्टिमागे मडलस्स, ता णक्खतेण मासेण स्रे कइ महलाइ चरइ? ता तेरस मंडलाई चरइ चोत्तालीस च सत्तिष्टिमागे मंडलस्स, ता णक्खतेण मासेण णक्खते कइ मडलाई चरइ? ता तेरस मंडलाइ चरइ अद्ध-सीयालीस च सत्तिद्वभागे मडलस्स, ता चदेण मासेण चदे कड़ मडलाइ चरइ <sup>2</sup> ता चोद्दस चउभागाइ मडलाई चरइ एग च चउन्वीससयभाग मडलस्स, ता चदेणं मासेण स्रे कह मडलाइ चरइ <sup>१</sup> ता पण्णरस चन्नभागूणाइ मडलाइ चरइ एगं च चडवीससयभाग मडलस्स, ता चंदेण मासेण णक्खते कइ मडलाइ चरइ? ता पण्णरस चडभागूणाई मडलाइ चरइ छच चडवीससयमागे मडलस्स, ता उडुणा मासेण चढे कइ मडलाइ चरइ <sup>१</sup> ता चोह्स मडलाइं चरइ तीस च एगट्टिभागे मडलस्स, ता उडुणा मासेण स्रे कइ मंडलाइ चरइ<sup>2</sup> ता पण्णरस मडलाइ चरइ, ता उडुणा मासेण णक्खते कइ मडलाइ चरइ<sup>२</sup> ता पण्णरस मडलाइ चरइ पन्न य वावीनसयमागे मडलस्स, ता आइचेण मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ <sup>2</sup> ता चोह्स मडलाइ चरइ एक्कारसभागे मडलस्स, ता आङ्चेण मासेण सूरे कइ मडलाइ चरइ? ता पण्णरस चडभागाहियाइ मडलाई चरइ, ता आइचेण मासेण णक्खते कई मडलाइ चरइ <sup>2</sup> ता पण्णरस चडभागाहियाइ मडलाइ चरइ पचतीस च चड-वीयस्यभागमङलाइ चरइ, ता अभिवद्गिएण मासेण चढे कइ मङलाइ चरइ? ता पण्गरस मडलाई॰ तेसीइ छलसीयसयभागे मडलस्स, ता अभिविद्वुएण मासेण स्रे कड मडलाइ चरइ 2 ता सोलस मडलाई चरइ तिहिं भागेहिं सणगाई दोहिं अडया-लेहिं सएहिं मडल छेता, ता अभिविद्वुएण मासेण णक्खत्ते क्ट् मडलाइ चरइ <sup>2</sup> ता

मंडलं चरह एकदीसाए भागेबि कर्ण चन्हीं फ्लारसेबि बद्धमंडलं क्षेत्रा ता दगमेगेचे जहोरतेणं स्टिए कर मंडसाई चरह र ता एमं असमध्यं चरह, ता एममेथेणं **अ**ही-रतेनं चन्त्रते का गंडकाई कार ! ता एवं अक्रांटनं कार बोर्ड मामेई सहैर्य सत्तर्ष्ट्र वर्षीनेहिं सपृष्टि अदमेशने केता ता प्रामेर्ग मेशने की काहि अहोरते हैं बरह ! ता दोहीं भद्दोरतेही करह एदतीसाय भागेति अद्विपृति करही बीमामेदी सफ्ट रवंतिपाई केता ता एगमेर्ग नैक्कं सरे काह आहोरते हैं चरा है ता बोर्ट महोरतेई चढ़, ता एगमेर्ग गंडल चन्छते बड़ र महोरते हैं चढ़ है ता संबे महोरते हैं चया दोहें क्ये हैं विहें सत्तरहे हैं सपूर्व एईस्पूर्व हेता ता समेर्न चीरे का मेडकाई चरा है हा शब्द पुत्रसीए संबन्धर चरह, हा हुरोपे सरे 🕬 मंडलाई चर्ड़ रे ता जनपण्णरहामेहळाए चरह, ता सुनेन पनायते पर में नार्य चरह र ता मद्भारम गणतीते बुमागर्मण्यसम् चरह । इचेता शहतमह रिम्गारमा हरा<sup>न्</sup>दिमहत्पर्मडलगनिमता सिग्पगई गत्थु बाबितेति (शएका) वेमि ॥ ६४ म चण्णरस्तर्म पाहुई समसे ॥ १५ ॥ वा न्यूरं वे दोसिमासक्ताने आदिएवि वएजा है वा चंदनेसाइ य दोसियम् व दौतिजाइ व नंदत्रेसाइ व के अदे कि सक्ताचे हैं ता एगड़े एगलागांचे ता कई व सुरसम्बन्धे साहिएति वएजा है ता श्रुरकेरणह य जायवेद य आवरेद व म्रुरहे<sup>न्सा</sup>र

य के अदि कि सरकार है ता प्रगात प्रकारकार्य ता कई वे प्रायासकार आर्थिकी

ता कह ते उचते आहितेति वएजा ? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ प॰, त॰-तत्थेगे एवमाईसु-ता एग जोयणसहस्स स्रे उद्गु उचतेण दिवहु चदे एगे एवमाहसु १, एगे पुण एवमाहसु-ता दो जोयणसहस्साइ स्रे उद्घ उचतेण अहुाङजाई चदे एगे एवमाहसु २, एगे पुण एवमाहंसु-ता तिण्णि जोयणसहस्साइ स्रे उन्द्र उन्तेण अद्धुटाइ चढे एगे एवमाहंस ३, एगे पुण एवमाहसु-ता चत्तारि जोयणसहस्साइ सूरे उन्ह उचतेण अद्धपचमाइ चदे एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाह्य –ता पच जोयणसहस्साइ स्रे उहुं उचतेण अद्ध्य हाई चढे एगे एवमाह्य ५, एगे पुण एवमाहसु–ता छ जोयणसहस्साइ स्रे उद्धं उचतेण अद्धसत्तमाई चढे एगे एवमाह्य ६, एगे पुण एवमाह्य-ता सत्त जोयणसहस्साई स्रे उर्द्ध उचतेणं अदद्वमाड चदे एगे एवमाहसु ७, एगे पुण एवमाहसु-ता अट्ट जोयणसहस्साइ स्रे उन्ह उच्चतेण अद्भणवमाइ चढे एगे एवमाह्स ८, एगे पुण एवमाह्स-ता णवजोयणसहस्साइ स्रे उन्ह उचित्तेण अद्वदसमाइ चंदे एगे एवमाहसु ९, एगे पुण एवमाहसु-ता दस जोयणसहस्साई स्रे उद्दू उचतेण अद्धएकारस चढे एगे एवमाहसु १०, एगे पुण एवमाहसु-ता एक्कारस जोयणसहस्साइ सूरे उन्हु उन्नत्तेण अद्धवारस चदे ११, एएण अभिलावेण णेयन्व चारत सूरे अद्धतेरत चदे १२, तेरस सूरे अद्धचोह्त चदे १३, चोह्त सूरे अद्धपण्णरस चेंदे १४, पण्णरस सूरे अद्धसोलस चदे १५, सोलस सूरे अद्धसत्तरस चढे १६, सत्तरस स्रे अद्धअद्वारस चदे १७, अद्वारस स्रे अद्धएगूणवीस चदे १८, एगूण-वीस सूरे अद्वतीस चढे १९, वीस सूरे अद्भएकवीस चदे २०, एकवीस सूरे अद-वावीस चदे २१, वावीस सूरे अद्धतेवीस चदे २२, तेवीस सूरे अद्धवडवीस चदे २३, चउनीस स्रे अद्धाणवीस चदे एगे एवमाइस २४, एगे पुण एवमाइसु-ता पणवीस जोयणसहस्साइ सूरे उद्घ उच्चतेण अद्धछव्वीस चदे एगे एवमाहसु २५। चय पुण एव वयामो-ता इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए बहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ सत्तणउइजोयणसए उद्दू उप्पइत्ता हेड्रिक्षे ताराविमाणे चारं चरइ अङ्गजोयणसए उद्दू उप्पइत्ता सूरविमाणे चार चरह अद्वअसीए जोयणसए उद्ग उप्पइता चदविमाणे चारं चरइ णव जोयणसयाइ उष्टु उप्पइत्ता उवरिं ताराविमाणे चार चरइ, हेडिलाओ ताराविमाणाओ दसजोयणाइ उष्टु उप्पइत्ता सुरविमाणे चार चरइ णउइ जोयणाइ च्हु उप्पइता चदविमाणे चार चरइ दसोत्तर जोयणसय उहु उप्पइता उविरिष्ठे ताराख्वे चार चरइ, सूरविमाणाओ असीइ जोयणाइ उष्टु उप्पइत्ता चदविमाणे चार चरइ जोयणसय उद्दू उप्पद्ता उवरिक्षे तारारूने चारं चरइ, चद्विमाणाओ ण वीस जोयणाई उद्गु उप्पद्ता उविस्ति तारास्वे चार चरइ, एवामेव सपुव्वावरेण दस्तर-

४७ मुत्ता०

जीयजसन नाहके तिरियमसँकेजे बोहसनिसए बोहसं चारं चरह शाहितेति वएगा II < ।। ता अस्मि में विभागतियाणं देवाणं विद्विप तासस्था अनुपि सुवानि समंपि ताराक्ता क्लूंपि तुकानि सर्विपि ताराक्ता क्लूंपि तुवानि ! सा नारि ता सह ते चंदिमस्रियाणं वेवाचं हिर्द्वीय तारास्त्रा अर्णाय तुवावि समीप तारास्त्रा मर्थेपि तहानि सर्पिपि तारास्था मर्थेपि तहानि है ता बहा बहा ये तेसि में देशमें तमियममंगचेराई शरिसमाह गर्वति तहा शहा व तेसि दवान एवं मण्ड तमहा-अनुते वा कुलते वा ता एवं कुछ वंदिनस्परिमान देवानं हिर्द्धि तारास्या अर्थेप तमानि तहेन बान वर्णियी तारास्था अर्थेप तमानि ॥ ८८ ॥ वर्ष एममेगस्स नं चंदस्स देवस्स देवस्य पद्मा परिवारो प केवस्या वास्वता परिवारी पञ्चलो केवहना सारा परिवारो पञ्चलो है ता एमझेमस्स ल बौदस्स हेकस्य क्कासीवरका परिवारी पञ्चलो ब्रह्माबीसं धक्बला परिवारी पञ्चले सामग्रि सहस्याई यन पेन समाई पेनकराई (पंजस्थराई)। एयससीधरेनारी हारामण कोशिकोबीर्ण ॥ १ ॥ परिवारो प ॥ ८९ ॥ ता मंदरस्य अ प्रस्तवस्य केनस्र भगाहाए बोइसे चारे जरह है ता एकारस एकवीरी बोरायसए समाहार बोहसे नार चरह, ता धोर्मताओं न केनहर्व अवाहाए बोहरी प ई ता एडारस एकारे को<del>पन</del> धएं मबाहाए कोश्से प a ९ a ता क्लाही वे वीव करण जनकते सम्मानारी चारं चत्र, स्वरं यस्कारे सम्बनाहिति वारं चरह, क्वरं नक्करे सम्बन्धि पारं चर्छ, क्यरे पक्ती समाहितिमें भारं चर्छ । ता असीई क्याती सम स्मितरिकं चारं चरह, शूके जनवती सम्बन्धियां चारं चरह, साई वस्बत्ते सर्चे वरित्रं बारं चरह, मरबी बक्यते सम्बद्धेक्किं बारं चरह ॥ ६१ त दा बंदनिराये र्णं किस्रक्रिए प ाँ ता अञ्चलविद्वराचठाणचीठेण् सम्बन्धानियामण् अस्तुम्मक्सूरिय पद्दशिए विविद्यमनिरयणमति विक्ते जान पवित्वे एवं स्रविमाणे महिमाणे जन्या निमाणे तारानिमाणं । ता चंद्रविमाणे वं केन्द्रमं आयासनिक्तारेण केन्द्रवं परि क्केरेज केक्न बाहकेश प<sup>्</sup>ता क्रम्पक्यं युराद्विमागे जोयवस्स आवामनिवसीर्व तं तिगुण समिरेस परिरएणं अञ्चानीसं एमक्किमाने खोश्यस्य बाह्रहेनं पन्तते ही स्रिमाने मं केन्द्रयं आनामनिक्षितेणं पुण्या ता अहन्तासं एयद्विमाने कोन-बरस मामामनिक्यमेशं है तिपूर्ण समिति परिरएणं बठन्योसं एगद्विमागं बोबनस बाह्यकेनं प ता सक्यातिसाचै वं केवहर्व युच्छा ता कोर्स आवाममिन्सीनेचं र्य तिगुणं समिसेषं परिरएण अदकोस बाह्येषं प ता ताराविमाने में केन्द्रमें पुचान ता अञ्चलेषं कामामविज्यमिनं तं तिपूर्णं सक्तिष्ठं परिराहनं दंशवयुगनारं बाहरेपं

\*14

प॰ । ता चदविमाण ण कड देवसाहस्सीओ परिवहंति <sup>2</sup> ता सोलस देवसाहस्सीओ परिवहंति, त०-पुरच्छिमेण सीहरवधारीण चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहति, दाहि-णेण गयस्वधारीण चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहति, पचित्थमेणं वसहस्वधारीण चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, उत्तरेण तुरगहवधारीण चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहति, एव स्रविमाणि, ता गहविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहति 2 ता अह देवसाहस्सीओ परिवहति, त०-पुरच्छिमेण सीहरूवघारीण देवाण दो टेवसाह-स्सीओ परिवहति, एव जाव उत्तरेण तुरगत्वधारीण०, ता णक्खत्तविमाणे ण कड देवसाहस्सीओ परिवहति १ ता चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, त०-पुरिच्छमेणं सीहरूवधारीण देवाणं एका टेवसाहस्सी परिवहड, एव जाव उत्तरेण तुरगरूवधारीणं देवाण॰, ता ताराविमाणे ण कइ देवसाहस्सीओ परिवहति <sup>१</sup> ता दो टेवसाहस्सीओ परिवहंति, त०-पुरिच्छमेण सीहरूवधारीण देवाण पंच देवसया परिवहति, एवं जानुत्तरेण तुरगरूवधारीणं ० ॥ ९२ ॥ ता एएसि ण चंदिमस्रियगहगणणक्खत्तता-राह्वाणं क्यरे २ हिंतो सिग्धगई वा मदगई वा 2 ता चदेहिंतो सूरा सिग्धगई, स्रेहिंतो गहा सिग्घगई, गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई, णक्खतेहिंतो तारा० सिग्घ-गई, सन्वप्पगई चदा, सन्विसिग्वगई तारा । ता एएसि ण चंदिमस्रियगहगण-णक्खततारास्त्राण क्यरे २ हिंतो अप्पिष्टिया वा महिष्टिया वा <sup>2</sup> ता तारा०हिंतो णक्खत्ता महिश्रिया, णक्खतेहिंतो गद्दा महिश्रिया, गहेहिंतो सूरा महिश्रिया, सूरे-हिंतो चंदा महिश्विया, सव्वप्पश्विया तारा॰, सव्वमहिश्विया चंदा॥ ९३॥ ता जबुद्दीवे ण दीवे तारारूवस्स य २ एस ण केवइए अवाहाए अतरे पण्णते 2 ता दुविद्दे अतरे प०, त०-वाघाइमे य निव्वाघाइमे य, तत्थ णं जे से वाघाइमे से णं जहण्णेणं दोण्णि नावहे जोयणसए उक्कोसेण वारस जोयणसहस्साई दोण्णि वायाले जोयणसए तारास्वस्स य २ अबाहाए अतरे पण्णते, तत्य णं जे से निव्वाघाइमे से ण जहण्णेणं पच घणुसयाइ उक्कोसेण अद्धजोयण तारारूवस्स य २ अबाहाए अतरे प० ॥ ९४ ॥ ता चदस्स ण जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अगगमहिसीओ पण्ण-त्ताओ <sup>2</sup> ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णताओ, त०-चंदप्पभा दोसिणाभा अचिमाली पमकरा, तत्थ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि देवीसाहस्सी परिवारी पण्णत्तो, पमू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ चत्तारि २ देवीसहस्साइ परिवारं विउन्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेणं सोलस देवीसहस्सा, सेत्त तुढिए, ता पभूणं चदे जोइसिंदे जोइसराया चदविंसए विमाणे समाए सुहम्माए तुिंडएण सिद्धं दिन्वाइ भोगभोगाइ मुंजमाणे विहरित्तए 2 णो इणद्वे समद्वे, पभू ण चंदे जोइसिंदे जोइसराया चदवर्डिसए विमाणे \*\*\*

सभाए हरूमाए भेदेंगि शीहासमसि चढाई सामानियसहरसीहि चढाई असमहि चीहें चपरिवाराहें तिहीं परिसाई सत्तहें अभिवृहिं सत्तहें अभिवाहिवईहें सोमगरे भावरक्रादेक्साइस्सीह अप्योह व वहुई खेड्सिएई वेवेह देवीह व सर्वे महया इनजहरीयनाइयर्वेतीतस्रताब्द्रविज्ञाचनमुर्वगयहप्यवह्यर्वेजं दिख्याह स्रोय-भोगाई गुंबमाणे निहरित्तप् केवकं परियार निहीए को चेव व मेहुमनकियाएं। वा प्रस्त व कोइसिंदस्य कोइसर्को बह कागमहिसीको प है तर बतारि अन्त-महिसीओ प तैनका-सरप्यमा भागारा शिक्साका पर्यकरा छेसे उद्या संदरस णकर स्रवर्डेसए विमाने काव यो चेव क मेड्नवतिवार ॥ ९५ १ ता जोइसिक-में देवामें केन्द्रयं कार्क ठिई एक्जता है ता जहन्येचे कडमागपकिस्तोवसं उड़ीरेचे पश्चित्रोवमं बासस्यसङ्ख्याक्याद्वितं ता कोइसिकीणं वेबीच केनद्रव कार्र जि प है ता बहुन्नेणं अञ्चमायपक्रिजोहमं उद्योरीणं कदपक्रिजोहमं वन्त्रासाए वास-सहरते हैं अन्मद्विनं ता केन्द्रिमाधे ने देवानं केन्द्रनं कार्क्ष दिशे क्याता है य बहुम्मेच चतन्नायपश्चिमोवर्ग तहोतेषं पश्चित्रोतम वाससमस्त्र समस्माहेर्व वा र्वदिमाने नं देशीयं केनद्रय काक दिने य है ता अवज्येयं चडकसायपिकनीतमे तहोसेमं सद्यप्रिकोषमं पञ्जासाय वाससहस्वेहि अञ्जाहियं सा स्ट्रामाणे वे वेबाजं करदमं करतं ठिक्रं करणात १ सा जहण्येलं चत्रकागरप्रिकोवनं उन्हेरेलं परिजीवमं वाससहस्त्रमञ्माहियं ता स्राविमाणे व देवाणं केवहवं कार्ध कि व ता अक्रुप्येमं भतन्मागपविश्लोगमं तक्ष्मेशे भद्रपविश्लोगमं पंत्रश्चे नामसप्त्री करमहियं ता गहकिमाणे वे देवाचे केन्द्रमें काले ठिई ग है ता बहन्येचे <sup>कर्</sup> क्सागपक्षिभोवमं उद्योग्धेषं पश्चित्रोवमं ता सद्दक्षमाणे च वेत्रोधं केनहर्व वार्क ठिई प र ता बङ्ग्येणं कउच्यायप्रक्रिकोक्नं उक्रोरो<del>णं सङ्ग्रप्रक्रोक्नं</del> स नक्यतनिमाने में देवाओं केन्द्रमें काले दिई प है ता बहुच्येच चढ़स्मामपति-भोवमं उड़ोरीमं सदएकियोवमं सा अन्यत्तिमाणे मं वेबीनं केवन्यं वाले वि प ति । अक्रूम्पेन लहुभागपक्रिओवर्स तक्षोतेचं चत्रक्सायपत्रिओवर्स ता स्पर्तः विमाने यं देशानं पुरक्षा ता जहानीनं अङ्ग्रमागपक्षित्रोयम उद्योग्ने वउस्मायः परिभोगमं ता ताराविमानं वं वेतीनं पुत्रस ता व्यक्तिनं शहुमागपरिजोगमं उद्योसेर्च साइरेयअङ्कमागविक्रमोनमं ॥ ९६ ॥ वा एप्ति च वंदिसग्दिकप्रम यस्यात्तारात्मार्यं स्परं १ हिंतो अप्या मा बहुया ना तुझा ना सिसासिया नी ता महा स पुरा स एए मं नी नि तुझा सम्बत्नीना नस्याता संशास्त्रीना यस संवित्रगुमा तारा सधिवगुणा ॥ ९० ॥ अद्वारसमं पाद्ववे समत्ते ॥ १८ ॥

ता कइ ण चिदमस्रिया सन्वलोय ओभासित उज्जोएंति तर्वेति पभासिति आहि-तेति वएजा 2 तत्य खलु इमाओ दुवालस पडिवत्तीओ पण्णताओ, त०-तत्येगे एवमाहसु-ता एगे चंदे एगे सूरे सञ्वलोय ओभासड उज्जोएइ तवेइ पभासेड० एगे एवमाह्य १, एगे पुण एवमाह्य-ता तिण्णि चदा तिण्णि सूरा सन्वलोय ओमार्सेति ४ ॰ एगे एवमाहसु २, एगे पुण एवमाहंसु-ता आउर्दि चदा आउर्दि सूरा सन्वलीय ओभासंति ४ एगे एवमाहसु ३, एगे पुण एवमाहसु-एएण अभिलावेण णेयव्वं सत्त चदा सत्त सूरा दस चंदा दस सूरा वारस चदा वारस सूरा वायालीस चदा २ वावत्तरिं चदा २ वायालीस चदसय २ वावत्तर चंदसय वावत्तरं स्रसयं वायालीस चदसहस्स वायालीस स्रसहस्स वावत्तर चंदसहस्स बावत्तर स्रसहस्स सव्वलोय ओभारोंति ४ एगे एवमाहसु १२, वय पुण एव वयामो-ता अयण्ण जबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेण०, ता जबुद्दीवे २ केवइया चदा पमासिंस वा पभासिंति वा पभासिस्सति वा 2 केवइया सूरा तर्विस वा तर्वेति वा तविस्सति वा 2 केवइया णक्खता जोय जोइसु वा जोएति वा जोइस्सति वा <sup>2</sup> केवइया गहा चारं चरिंसु वा चरित वा वरिस्सित वा 2 केवइयाओ तारागणकोडिकोहीओ सोभ सोमेंच वा सोमेंति वा सोभित्सिति वा 2 ता जबुद्दीवे २ दो चदा पभासेंछु वा ३, दो सुरिया तवइस वा ३, छप्पण्णं णक्खता जोय जोएस वा ३, छावत्तरि गहसय चार चरिंसु वा ३, एग सयसहस्स तेत्तीस च सहस्सा णव य सया पण्णासा तारागणकोडिको-ढीण सोभ सोभेंसु वा ३, ''दो चदा दो सूरा णक्खता खलु हवति छप्पण्णा । छावत्तरं गहसय जबुद्दीवे विचारीण ॥ १ ॥ एगं च सयसहस्स तेत्रीस खळु भवे सहस्साइ। णव य सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीण ॥ २ ॥" ता जबुद्दीव णंदीव लवणे णाम समुद्दे वहे वलयागारसठाणसिठए सन्वओ समता सपरिक्खिताणं चिद्वह, ता लवणे ण समुद्दे किं समचक्कवालसिठए विसमचक्कवालसिठए <sup>2</sup> ता लवणसमुद्दे समचक्कवालसिठिए णो विसमचक्कवालसिठिए, ता लवणसमुद्दे केवइय चक्कवाल-विक्समेण केवइय परिक्खेवेण आहिएति वएजा 2 ता दो जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खभेणं पण्णरस जोयणसयसहस्साइ एकासीय च सहस्साइ सयं च स्याल किंचिविसेस्ण परिक्खेवेण आहिएति वएजा, ता लवणसमुद्दे केवइयं चदा पमासेंसु वा ३१ एव पुच्छा जाव केवइयाउ तारागणकोडिकोडीओ० सोमिंसु वा ३१, ता लवणे ण समुद्दे चत्तारि चदा पभासेंसु वा ३, चत्तारि स्रिया तवइसु वा ३, वारस णक्खत्तसय जोय जोएस वा ३, तिष्णि बावण्णा महम्महसया चारं चरिंसु वा ३, दो सयसहस्सा सत्तिष्टुं च सहस्सा णव य सया तारागणकोडिकोडीण० सोभिंधु

दक्षिमी परिक्थेनी ॥ ९ ॥ बतारि चेन चंदा बतारि न सरिया सक्लतीए। नरस जबकत्तसर्थ ग्रहाज विज्ञेष बावज्या ॥ २ ॥ दो जेव सवसहस्या सत्तद्धि सद्ध सर्वे सहरमतं । वह य स्था क्यान्यके तारागणकोकिनेकायं ॥ ३ ॥ ता अवगस्पूर्व भारतें संदे जाने रीवे को वस्त्यागारसंद्रश्यसंदिए तहेव जाव की विसमवद्भवाकसंदिए, वानदेशंडे नं वीने केन्द्रमं बद्धनावनिक्यंमेर्ग केन्द्रमं परिक्योत्रेनं आहिएति वएजा है ता बतारि बोदबसवस्वरसाई बद्धवासमिक्षीयेथं ईवासीसं बोदजसवसहरसाई इस य सहस्याह कर व एगड्डे जोयजसए किनियसेस्यो परिवचनियं साक्षिएति पएना मानईसंदे शीने केन्द्रमा चैवा प्रशासेंस था रे प्रच्या सहेव सा बायईसंदे में चीवे बारस चंदा प्रभासेंद्र वा ३ बारस सरिया तर्वेष्ट वा ३ तिक्नि क्वांसा मन्त्रातस्या जीर्य चोएंद्र वा ३ एर्य छप्पर्न्य सहस्यस्यस्य वारं परिद्र वा ३ बद्धेन सबस्वस्था विभिन्न सबस्याई सत्त व समाई । एनससीपरिवासे तारान्य-कोविकोबीओ ॥ १ ॥ सोमी सोमीस था १-बावईसेडपरिएओ देवाळ बस्तारा स्व-सहस्या । गम समा व एगद्रा किनिमित्तेसपरिश्रीना ॥ १ n मटबीरं संस्रितिमी मनकातसमा य विकित क्रांसिस । एथ च शहसहरसं स्वयन्त्रं बार्यहर्सं स र प्र बहेर समस्तरसा विन्ति सहरसम् सत्त व समम् । बावर्डस्ट रोवे तारायमधीर कोडीनं । १ । ता बानवेरीनं वं बीनं बासोए नार्न समुद्दे नहे नस्वरमार्टिजान चेठिए बाद जो निसमसङ्गानसंठानसंठिए, ता काळोए वं समेरे कारचे कार बास्त्रिक्सीनेचे केमहर्ग परिक्लेबेकं आशिएति बएजा ! ता वास्रेए वं स्पृहे वह बोयमसमसहस्याह चत्रमामनिषयंभेगं प्रणते वृद्दाभत्तं बोनगसम्पहस्याहं सर्तारे च सहरसाई सब पंजुतरे जोवजसय किनिविधेसाहिए परिकारेवेसं आहिएति नर्जन ता कामोए नं समुद्रे केनप्रया चौदा पगारीं मुना रे प्रच्छा ता कामोप समुद्रे बामाकीसं चंदा पमासेस वा ३ बामातीसं सुरिवा तरेस वा ३ एकारस वावतरा धक्रातस्या जोर्य जोईत वा ३ तिथ्य सहस्सा छन सम्मत्या महस्महभवा नार चरित ना १ नारस सनसङ्ख्याई अञ्चलीसे च सहरस्राई चार न सनाई पण्याना शासमानिको मौको सोर्ग स्वोभेस का सोर्गति का स्वोमित्सेति वा "प्रदान है समर्ग्दं सहस्साई परित्रजो सस्य । अक्षिताई क्रज पंतुत्तराई बाल्पेयहिवरस्य ॥ ९ ॥ वाबाधार्य वंदा वाबाठीस व दिणवरा दिला। वास्प्रेयहिम एए वर्रन संस्थानाया 🛚 ९ ॥ अक्रात्मसहरूचे पृगमेन छावतारे च सवमन्त्री । छच शवा सन्त्राज्या सह माहा जिल्लि व सहस्या ॥ १ ॥ अञ्चानीसं कासोयदिमि नारस य सहस्याई । जन

य सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीण ॥ ४ ॥" ता कालोय णं समुद्द पुक्खरवरे णाम दीवे वहे वलयागारसठाणसिंठए सन्वओ समता सपरिक्खिताण चिद्वड, ता पुक्खरवरे णं दीवे किं समचक्कवालसिठए विसमचक्कवालसिठए ? ता समचक्कवाल-सिठए णो विसमचक्कवालसिठए, ता पुक्खरवरे णं दीवे केवडय समचकवालविक्ख-मेण केवइयं परिक्खेवेण ० १ ता सोलस जोयणसयसहस्साइ चक्दवालिक्खभेण एगा जोयणकोढी बाणउरं च सयसहस्साइं अउणावण्ण च सहस्साइ अट्टचउणउए जोयणसए परिक्खेवेणं आहिएति वएजा, ता पुक्खरवरेण दीवे केवइया चदा पभासेसु वा ३ पुच्छा तहेव, ता चोयालचदसय पभासेंसु वा ३, चोत्ताल स्रियाणं सय तवइस वा ३, चतारि सहस्साइ वत्तीस च णक्खता जोय जोएस वा ३, वारस सहस्साइ छच वावत्तरा महग्गहसया चार चरिस वा ३, छण्णउइसयसहस्साइ चोयालीस सहस्साइ चतारि य सयाइं तारागणकोडिकोडीणं सोभ सोसिंसु वा ३, ''कोडी वागरुई खलु अरुणाणरुड भवे सहस्साइ । अट्टसया चरुणरुया य परिरओ पोक्खरवरस्स ॥ १ ॥ चोत्ताल चंदसय चत्ताल चेव स्रियाण सर्य । पोक्खरवर-दीवम्मि चरंति एए पभासता ॥ २ ॥ चत्तारि सहस्साइ छत्तीस चेव हुंति णक्खता । छच सया वावत्तर महग्गहा वारह सहस्सा ॥ ३ ॥ छण्णउइ सयसहस्सा चोत्तालीस ॰ खलु भने सहस्साइ। चतारि य सया खलु तारागणकोडिकोडीण ॥ ४॥" ता पुक्खरवरस्स णं दीवस्स० वहुमज्ब्नदेसभाए माणुसुत्तरे णाम पञ्चए वलयागार-सठाणसिठए जे णं पुक्खरवरं दीव दुहा विभयमाणे २ चिद्वह, तजहा-अस्मितर-पुक्खरद्ध च वाहिरपुक्खरद्धं च, ता अधिभतरपुक्खरद्धे ण कि समचक्रवालसिठिए विसमचक्कवालस्रिए? ता समचक्कवालसंठिए णो विसमचक्कवालस्रुठिए, ता अव्भि-तरपुक्खरद्धे ण केवइय चक्कवालविक्खमेणं केवइय परिक्खेवेण आहिएति वएजा 2 ता अट्ट जोयणसयसहस्साइ चक्कवालिक्खंभेण एका जोयणकोढी वायालीस च सयसहस्साइ तीस च सहस्साइ दो अउणापण्णे जोयणसए परिक्खेवेण आहिएति वएजा, ता अर्दिभतरपुक्खरद्धे ण केवइया चदा पभासेंस वा ३ केवइया सूरा तर्विस वा ३ पुच्छा, ता बावत्तरिं चदा पभासिंग्र वा ३, बावत्तरिं स्रिया तवइमु वा ३, दोण्णि सोला णक्खत्तसहस्सा जोयं जोएंस वा ३, छ महग्गहसहस्सा तिण्णि य बत्तीसा चारं चरेंसु वा ३, अडयालीससयसह्स्सा वावीस च सहस्सा दोण्णि य सया तारागणकोहिकोहीणं सोभ सोर्मिसु वा ३। ता समयक्खेते ण केवइय आयाम-विक्लभेण केवइय परिक्खेवेण आहिएति वएजा व ता पणयालीसं जोयणसयसह-स्साइ आयामनिक्खभेण एगा जोयणकोडी वायालीस च सयसहस्साई दोण्णि य

दिन्ति समा छत्तीमा छत्र सहस्सा महत्त्वहार्य हु । वनस्त्रतार्य हु मने सोन्दर्र हुनै स्वरूसक्षं ॥ ४ ॥ भवनालस्यस्यहरूसा नानीसं ध्यन्त सन्नै सहरसक्षं । दो व सम पुक्यरदे तारागणकोजिकोद्येशं ॥ ५ ॥ वशीशं चैदसव बतीसं केन सरि नाम सर्व । स्थ्यं मा<del>ह्यपा</del>रोनं चरेति एए पमार्वेता ॥ ६ ॥ एदारस न स्वरसा हप्पि य चौता सहस्महात्र <u>त</u> । छत्र संया क्रम्बन्दा वरूदाता तिरित्र व सहस्मा ॥ भद्वरसीइ चलाई समस्यस्थाई म्लुस्कोर्गमि । सत्त व सवा अनुवा तरा-पण रोक्षिकोनीयां p ८ n एसी तारापिको सम्बस्तारीच समुदकोर्गम । बहिना उच राएको क्रिपेट्ट मुक्किया बसंदोजा ॥ ९ ॥ एकस्य शारम्यं च मुक्कि महर्समे सोगीत । चारं कर्मनुबायुष्कस्रक्षित स्टेश्स चर्च ॥ १ ॥ १विस्रक्षिणहस्त्रस्य एमस्या भादिना सनुकारेए। वेसि वासागोत्ती च पायमा पञ्चवेदिति 🛭 🤧 🛭 क्षत्रक्षि पिष्टगाई चंदाह्याण मञ्जयनेयम्मि । वी चदा दो सरा व इंसि एकेस्प पित्रए ॥ १२ ॥ स्वर्षेद्वे पित्रगाई अवसतार्गं तु शकुवस्रोवस्मि । स्टब्स्वे सरवता हुंति एकेकप् पिटप् ॥ १३ ॥ कावर्क्कि पिडगाई सहस्यकार्यं त समुक्कोनीस : कावतारे गहरामं होत् एकेकए पिक्यू ॥ १४ ॥ बतारि व पेतीको चेदाहवाल संस्थ-स्रोयम्म । समार्के २ व होद एकिकिया पद्मै ॥ १५ ॥ स्टब्प्व पेदीओ सनवागर्य तु सनुसकोर्यमः । कानद्वि २ इनंति एकेक्टिया पंती ॥ १६ ॥ कानतरं गहार्न पैतिसर्वे इत्र मञ्जयकोर्गमि । स्मवर्ष्कि २ इत्तर स प्केटिया पैती ॥ १४ ॥ वे मेक्स्युवरता प्रशास्त्रवानतमंत्रका सन्ते । अध्यवद्वियकोनेव्हें चंदा स्रा ध्यूपमा य ॥ ९८ ॥ जनवारतारगार्वं अवद्विया संश्रकः शुनेयन्था । सेवि व प्रवादिता-नामिन मेर्द सनुवरिति ॥ १८ ॥ रमनियरित्वक्राणं उर्द्वं व शहे व संक्रमी मस्य । मंडमसंकानं पुत्र समितरवाहिर तिरिए ॥ १ ॥ स्मित्यस्यानं

णक्खत्ताण महग्गहाण च । चारविसेसेण भवे भ्रहदुक्खविही मणुस्साणं ॥ २१ ॥ तेसिं पविसताणं तावक्खेतं तु बहुए णियय । तेणेव कमेण पुणो परिहायङ णिक्ख-मंताण ॥ २२ ॥ तेसिं कलवुयापुष्फसिठया हुति तावखेतपहा । अतो य सकुडा वाहि वित्थडा चंदस्राण ॥ २३ ॥ केणं वहुड चंदो १ परिहाणी केण होड चदस्स १ । कालो वा जोण्हो वा केणऽणुभावेण चदस्स ॥ २४ ॥ किण्ह राहुविमाणं णिच चढेण होइ अविरहिय । चउरगुलमसपत्तं हिचा चदस्स तं चरइ ॥ ५५ ॥ वावट्टि २ दिवसे २ उ सुक्ष्पक्खस्म । ज परिवहृड चदो रावेइ त चेव कालेणं ॥ २६॥ पण्णरसङ्भागेण य चद पण्णरसमेव त वरइ । पण्णरसङ्मागेण य पुणोवि त चेव वक्कमङ् ॥ २० ॥ एव वहुइ चंदो परिहाणी एव होइ चंदस्स । कालो वा जुण्हो वा एवऽणुभावेण चदस्स ॥ २८ ॥ अतो मणुरूसखेते हवंति चारोवगा उ उववण्णा । पचिवहा जोइ-सिया चंदा सूरा गहगणा य ॥ २९ ॥ तेण परं जे सेसा चदाइचगहतारणक्खता । णित्य गई णिव चारो अवद्विया ते मुणेयन्वा ॥ ३० ॥ एव जबुद्दीचे दुगुणा लवणे चउग्गुणा हुति । लावणगा य तिगुणिया ससिसूरा धायईसडे ॥ ३१ ॥ दो चंदा इह दीवे चत्तारि य सायरे लवणतोए । धायइसडे दीवे वारस चदा य सूरा य ॥ ३२ ॥ धायइसडप्पभिइसु उद्दिष्टा तिगुणिया भवे चदा । आइस्रचदसिह्या अणतराणतरे खेते ॥ ३३ ॥ रिक्खग्गह्तारग्ग दीवसमुद्दे जहिच्छसी णाउ । तस्ससीहिं तग्गुणिय रिक्खग्गहतारगग्ग तु ॥ ३४॥ बहिया उ माणुसणगस्स चंदसूराणऽबद्विया जोण्हा । चदा अभीइजुत्ता सूरा पुण हुति पुस्सेहिं ॥ ३५ ॥ चंदाओ स्रस्स य स्रा चदस्स अतर होइ । पण्णाससहस्साइ तु जोयणाण अणूणाइ ॥ ३६ ॥ स्रस्स य २ सितणो २ य अतरं होइ। वाहिं तु माणुसणगस्स जोयणाण सयसहस्स ॥ ३७॥ स्रंतिरया चंदा चदतिरया य दिणयरा दित्ता । चित्तत्ररहेसागा सहहेसा मदलेसा य ॥ ३८ ॥ अट्ठासीइं च गहा अट्ठावीस च हति णक्खता । एगससीपरिवारो एतो ताराण वोच्छामि ॥ ३९ ॥ छावद्विसहस्साई णव चेव सयाइ पचसयराई । एगससीपरिवारो तारागणकोहिकोहीण ॥ ४०॥ ता अतो मणुस्सखेते जे चदिमस्रिया गहगणणक्तताराख्वा ते णं देवा कि उड्डोबवण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणीव-वण्णगा चारोववण्णगा चारद्विड्या गइरइया गइसमावण्णगा 2 ता ते ण देवा णो उद्दोवनण्णगा णो कप्पोवनण्णगा विसाणीवनण्णगा चारोवनण्णगा णो चारहिइया गइरइया गइसमावण्णगा उष्द्वासुहकलवुयापुष्फसठाणसठिएहिं जोयणसाहस्सिएहिं तावक्खेतिहिं साहरिसएहिं वाहिराहि य वेउव्वियाहिं परिसाहिं महया ह्यणह-गीयवाइयत्ततीतलतालतुष्टियघणमुद्दगपडुप्पवाइयरवेणं मह्या उक्किद्विसीहणायकल- वेचा तं ठाणे वनसंपत्रिताणं विद्धि आव मण्ये दस्य देवे उदावणे सन्दर्, सा दंग्ह्राचे नं केन्द्रपूर्ण कालेलं विरक्षिए पण्यते हैं ता व्यक्ष्मेल इक्स समये उद्योगकं सम्मासे ता विद्या च सामुस्टमचेन्द्रस्य के विद्यस्तित्वगद्ध जान तासस्या से

र्व देशा कि उद्योजनकामा कम्पीनककामा विमानीनककामा जारहिस्या महरस्या गङ्समाबञ्चमा १ ता ते भं देशा जो तङ्कोबबज्जमा जो कम्मोनबञ्जमा विमानोध-कुलागा को बारोक्कलगा। बारद्विक्या को गहरूबा को गहरूबाकलगा। प्रदेशग-एंटरकसंदिएक्कि कोपक्रप्यसम्बन्धित्वी ताक्क्केपेकि स्वसाहत्स्वार्क्क वाहिएकि कैठन्मियाहि भौरसाहि भह्नया इयक्ष्मगियकस्य जाव रवेलं दिव्हाई मोयमोगाई मंबमाना विद्वरेदि छवकेसा संबंधेसा संबायक्केसा विश्वंतरकेसा अञ्चोत्नसमी-गाडाहि केसाहि कुछा इव ठाविन्या से पर्ध सम्बगी सर्गता क्षेताचंदि कवीरेंदि वर्वेदि प्रसारिति वा वेदि ने वेदाने बाहे इदि कबा से कहासवानि पर्नेदि है वा चतार पंच सामाधिकवेगा व ठार्ण वहेक चान क्रमासे ॥ ९८ ॥ वा पुरुक्तरवरं में कीवं पुरुक्तरों हे भागें समुद्दे बड़े क्वामागारसंद्रायसंद्रिय सम्ब बान निद्धाः ता प्रकारोदे मं समोदे कि समयक्ष्यालसंदिय बाब को विसम्बद्धनान स्टिए, ता प्रस्करोवे मं अमुरे नेवहर्य जनमध्यविनसंग्रेज केन्द्रयं प्ररास्त्रेवेनं भाविष्यंत कर्जा ! ता संबोजाई बोनकसङ्ख्याई जानामजिन्सीमेर्न संबेज्यरं नायनसङ्स्साह परिक्केनेने शाहिएति वएका ता प्रक्करनरोहे वे स्मुहे नेन्द्रना चंदा प्रभाविद्य था ३ प्रच्छा तहेव. ता प्रक्चारोदे वे वसुदे संखेजा चंदा प्रभावित <sup>का</sup> ३ जान संबेजानो तारायवकोविकोवीको सीम सोर्नेश ना ३ । एएवं अभिनानेमं बरुवारे बीचे बस्पोदे समुद्रे ४ औरवारे बीचे जीरवारे समुद्रे ५ वसवारे बीचे वसीचे समुद्दे ६ योजनरे राजे योजोदे समुद्दे • अहिरसारे राजे अहिरसरवारे समुद्दे • अहि योदे रीवे मदनोवे समुद्दे ९ जरुववरे रीवे अस्ववरे समुद्दे १ जरवदरोमाचे रीनै भएनवरोभारी एसुरे ११ ईंडके रीने इंडलोवे एसुरे १९ इंडलवरे सैंपे कुंडसमारीके एस्ट्रे ११ कुंडममारीमासे बीच कुंडसमारीमासे समुद्रे १४ सम्बेटि विक्लंमपरिक्येको जोहराई पुक्तारोदसायरसरिसर्छ । ता व्रंडलकरोमाणलं सर्हर स्यए रीवे बहे बस्पागारसंजानसकिए सञ्चमो जान निद्वर, ता स्यए नं रीवे 🎘 समबद्दास जान यो विसमवद्दशानसीटिए, ता स्वए यं दीने फेनर्स समबद्दशास-विस्टोनिन केरहर परिचलेके आदिएति क्यूना है ता अस्त्रजाई जोगमन्ह

स्साइ चक्क्वालविक्खमेण असखेजाइ जोयणसहस्साई परिक्खेवेण आहिएति वएजा, ता रुयगे ण दीवे केवडया चदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा, ता रुयगे ण दीवे अस-खेजा चदा पभासेंसु वा ३ जाव असखेजाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभेंसु वा ३, एव स्यगे समुद्दे रुयगवरे दीवे स्यगवरोदे समुद्दे स्यगवरोभासे दीवे स्यग-वरोभासे समुद्दे, एव तिपडोयारा णेयव्वा जाव सूरे दीवे सूरोदे समुद्दे सूरवरे दीवे स्रवरे समुद्दे सरवरोभासे दीवे स्रवरोभासे समुद्दे, सन्वेसिं विक्खभपरिक्खेवजोइ-साई रुयगवरदीवसरिसाइ, ता स्रवरोभासोदण्ण समुद्द देवे णाम दीवे वट्टे वलया-गारसठाणसिठए सन्वओ समता संपरिक्खिताण चिद्वड जाव णो विसमचक्कवाल-सिंठए, ता देने ण दीने केनइय चक्कवालिनिक्सभेणं केनइय परिक्सेनेण आहिएति वएजा १ ता असखेजाइ जोयणसहस्साई चक्रवालविक्खंमेण असखेजाइ जोयण-सहस्साइ परिक्खेवेण आहिएति वएजा, ता ढेचे ण दीवे केवऱ्या चदा पभासेंख वा ३ पुच्छा तहेव, ता देवे णं दीवे असखेजा चदा पभासेंसु वा ३ जाव अस-खेजाओ तारागणकोडिकोडीओ० सोभेंसु वा ३। एव देवोदे समुद्दे णागे दीवे णागोदे समुद्दे जनखे दीवे जनखोदे समुद्दे भूए दीवे भूओदे समुद्दे सयभुरमणे दीवे सयंभुर-मणे समुद्दे सब्वे देवदीवसरिसा ॥ ९९-१००-१०१ ॥ एगूणवीसइमं पाहुडं समत्तं॥ १९॥

तेर्प प्रयह इसतेर्प गिष्टिता गुर्वतेर्प पुत्रह गुर्वतेर्प गिष्टिता गुर्वतेर्प गुर्वते । बागमुगतेर्प विविद्ता बागमुर्वतेर्प गुरुह बागमुर्वतेर्प गिष्टिता बाह्यवार्वतेर्प

सुयह वाहियम्यंतेणं विविद्या शामसुर्यतेणं सुबह वाहिणसुर्यतेणं गिविशा बाहिज-मुनंदर्ज मुक्द, तत्व के ते एवमाइस-सा वरिय में से शह देवे के वे बंद ग सूरं वा रोव्हड, ते एकमाईस-तत्व व इमे प्रवारस क्रिश्रपोग्गव्य ए तं -सिंबावए वकिक्य प्रत्य प्रक्रम संबंध रोजने सीयके दिमसीनके केसारे बहुवाने परिजय यमसूरए क्षेत्रस्य वियसए राह्न, ता क्या में एए फनरस करिया पोस्प्रसा स्था चंदरस वा सरस्य वा क्रेस्ट्रावद्वचारियो मर्वति तया वं मानसकोर्यस मानसा एवं वर्षेति—एवं राख्न राष्ट्र चंद्र वा स्ट्रे वा गेलाइ १ ठा कवा यं एए पञ्चरस करिया पोम्पाला को समा बहरस का स्ट्रस का केसायुक्कवारिको सर्वित हमा वे साहर-स्रोमन्मि मक्त्सा एवं क्यंति-एव **कह राहु चंद वा स्**र्र वा नेन्द्र यूए एक्साईछ क्यं पुण एवं क्यामी-ता राह् जं देवे महिश्विए महासमावे बरवत्वपरे नार्व बरामरमभारी शहरत न देवस्स वन जामधेजा प र् --सिंबाडा बादिसम् करए केतए इन्हों मगरे मनके वनक्षमें किन्दुसम्भे ता राष्ट्रस्स में देवस्स विमाना पेन-क्या प र्त-किन्हा जीवन सोहिया काविका ग्रतिका जरिन कावय राष्ट्रिनेमाचै बंबधवज्यासे प<sup>्</sup> व्यत्व जीसए शहनिमाणे सारमक्यासे क्वारे संदिध संदिध राहुनिमाने शैकिहाक्ष्णामे पञ्चते अस्य दाक्षिण् राहुनिमाचे दाक्षित्सकामे प अस्य प्रक्रिकट राहुनिमाचे भारतराधिकच्याये प्रक्राच राहुनेने आरम्बसाचे वा राष्ट्रमाणे था विरुक्तिमाने वा परिवारेमाणे वा चंदरस वा स्टर्स वा क्रेस्स प्राप्ति मेग आमरिता प्रवरिवमेनं बीवंकनइ तया नं पुरस्क्रियेयं चंदे वा पुरे वा उपरिद्ध प्रवासिमेर्ण राष्ट्र कवा के राष्ट्रदेवे आगच्छेमाचे वा गच्छेमाचे वा वितस्वेमामे वा परियारेमाने वा र्वबस्स वा स्रस्स वा केर्स वाहिनेमं कानरिता उत्तरेनं नीईक्नरं तमा में दाहिणेमं नेदे वा सरै वा उन्दरेड उत्तरेण राह, एएलं समिनानेने क्षरिवर्भवं आवरिता पुरविक्रमेनं नीईववह छत्तरेणं आवरिता वाहिकेचे वीईवयर बया में राह देवे काशकामाने वा राज्यभाषे वा विवन्त्रेमाने वा परिवारेमार्ग वा चंदरस वा स्ट्रस्य वा केर्य दाक्षिण्युरच्छिमेणं आवरिता उत्तर्श्वास्त्रमेणं वीहेवमह

त्वा मं राह्नियपुरिध्यमेर्यं चेवे वा सूरे वा उववंसेड् उत्तरप्रवस्थिमेर्यं राह्न् वया वं राह्ने देने आन्त्यस्थाने ना गय्यमाने ना विश्वसमाने वा गरेयारेमाचे वा वंदरस वा सुरस्स वा लेस दाहिणपचित्यमेण आवरित्ता उत्तरपुरिच्छमेण वीईवयइ तया ण दाहिणपचित्थिमेण चदे वा सूरे वा खबदंसेइ उत्तरपुरच्छिमेणं राहू, एएण अभि-लावेण उत्तरपचित्थमेणं आवरेता दाहिणपुरच्छिमेण वीईवयइ, उत्तरपुरच्छिमेण आवरेता दाहिणपचित्यमेण वीईवयइ, ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा॰ चदस्स वा स्रस्स वा छेस आवरेमाणे चिद्वइ [आवरेता वीईवयइ], तया ण मणुस्स-लोए मणुस्सा वयति-एव खलु राहुणा चदे वा सूरे वा गहिए॰, ता जया ण राहू ढेवे आगच्छमाणे वा॰ चदस्स वा सूरस्स वा छेस आवरेता पासेण वीईवयइ तया ण मणुस्सलोयमि मणुस्सा वयति-एव खलु चदेण वा सूरेण वा राहुस्स उच्छी भिण्णा०, ता जया ण राहुदेवे आगच्छमाणे वा चदस्स वा स्रस्स वा छेस आवरेत्ता पचोसक्कड् तया ण मणुस्सलोए मणुस्सा वयति-एवं खलु राहुणा चटे वा सूरे वा वते राहुणा ० २, ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा ० चदस्स वा स्रस्स वा लेस आवरेता मज्झमज्झेण वीईवयइ तया ण मणुस्सलोए मणुस्सा वयति० राहुणा चंदे वा सूरे वा वीइयरिए० राहुणा० २, ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे० चदस्स वा सूरस्स वा छेस आवरेत्ताण अहे सपिनख सपिडिदिसिं चिट्टइ तया ण मणुस्सलोयसि मणुस्सा नयति० राहुणा चदे वा० घत्ये० राहुणा० २ । ता कड़िवहे ण राहू प॰ १ ता दुविहे प॰, त॰-धुवराहू य पन्वराहू य, तत्थ णं जे से धुवराहू से ण वहुळपक्खस्स पाडिवए पण्णरसङ्भागेणं भागं चदस्स छेख आवरे-माणे॰ चिद्वइ, त०-पढमाए पढम भाग जाव पण्णरसम भागं, चरमे समए चदे रत्ते भवइ, अवसेसे समए चदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, तमेव सुक्रपक्षे उवदंसेमाणे २ चिद्वह, त०-पढमाए पढमं भाग जाव चदे विरत्ते भवह, अवसेसे समए चदे रते य निरते य भवड, तत्य ण जे से पव्नराहू से जहण्णेणं छण्ह मासाण, उक्कोसेणं बायालीसाए मासाण चदस्स अडयालीसाए सवच्छराण स्रस्स ॥ १०३ ॥ ता कह ते चदे ससी २ आहिएति वएजा 2 ता चदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियके विमाणे कता देवा कताओ देवीको कताइ आसणसयणसममङमत्तोवगरणाइ अप्प-णावि य ण चदे देवे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कते सुमगे पियदसणे सुरूवे ता एव खलु चदे ससी चंदे ससी आहिएति वएजा । ता कहं ते सूरिए आइचे सूरे २ आहिएति वएजा 2 ता स्राइया ण समयाइ वा आवलियाइ वा आणापाणूड वा थोवेइ वा जाव उस्सप्पिणिओसप्पिणीइ वा, एव खलु सूरे आइचे २ आहिएति वएजा ॥ १०४ ॥ ता चदस्स ण जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ <sup>2</sup> ता चद्स्स॰ चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णताओ, त०-चदप्पमा •4

वोसियामा **मध्यमारा धर्मकरा बहा हेट्टा तं चेन बा**न को चेन य मेहुयवतिनं एत स्रस्यति गेमर्कं ता विस्तस्रिया गं बोइस्तिया वं बोइसरायाजी बेरिसप् वाममोपे पन्यासनभागा निहर्गत है ता से बहायामए-केर पुरिसे परमजोबन्यकुणवक्रासनी पटमजोष्यबुद्धायनस्वयस्थाए सारिजाए सर्वे अचिर्वत्तविवाहे श्रापत्थी अत्यपने समयाएं शोकप्रवासविष्यवसिए से में तभी सबदे क्वक्के क्याइसमयी पुणर्शि विवर्त इन्बमागए ज्हाए सुद्ध्यावेसाई मेंपलई बरवाई शवरपरिक्षेए बप्पमहरवामरपार्वकिन सरीरे मणुज्यं पाकीशागञ्जयं अद्वारसमंबनाडक मोननं भृते समाने देशि तारिसपेरी नासवर्रित संतो बाहिरको बुनिबच्छामहे विवित्ततकोशनिक्रियत्तके बहुसमस्विमापस् मिनाए मनिरयमप्यातिर्ययवारे काळागरमकाई दुख्यतुरुक्यूनमदमर्थरगंदुबुवानिराने प्रनेषवरनंषिए नंषवहिम्पु दक्षि तारिश्वनंति स्पत्रिकंति बुहुन्धे उन्मए सन्हो मध्यंत्रीरे सास्तित्ववद्विष् पञ्चल्यंवविक्योवये सरम्बे र्ययापुरिव्यवस्थानस्थानस्थान सए प्रतिरहरूरयत्ताचे ओवविवकोभियकोम्बुगुकपक्षपक्षिकसम्ये रत्तंत्रवस्तुहे सुरम्मे माईजगस्महरमनमीनत्त्रपाने कुण्यनरकुतुमपुण्यस्यकोवसारक्षत्रिए ताए तारिसाए मारियाए सबि सिंगारायारमाक्ष्मसाए संगवनवस्थियमधिवनिद्वित्रसंस्थानिकास<sup>िक</sup> उन्तरतोषमारकुरामाएं म्लुरताबिरताएं स्थानुरूमाएं एक्तरङ्क्तते सम्पन् रूक्त सर्व सकुम्बनाचे हुद्रे सहफारिसरसङ्ख्यांचे पंचनिष्ठे सामस्तर कामसीने पन्छनंद माणे निहरिका छ। से में पुरिसे निउसम्बरात्स्यमर्गस बेरीसर्ग सामासेनने पन्छ मबनाये बिहुतः । उत्तर्व समनावस्ते । या दस्य वं प्रतिसस्य कामग्रेगेकीये एये मर्जतगुजनिविद्वतरा चेव बायमंतराज देवाजं काममीगा वायमंतराजं देवाजं वासं मोगाईँदो वर्णद्युणविशिष्ट्रदरा चेत्र बर्हार्रेड्ड किवार्ण सक्वकाचीर्ण देवार्थ कामग्रेणा बाहरिवर्गाभवाच केवाण कामगोगाँहैतो सर्वेटपुर्वावसिद्धारा केव महासुमारार्व इंदम्सार्थं दवाणं काममोगा अक्षरकुमाराणं देवाणं काममोगेहितो गहरायण क्यततारावनार्वं काममीगा यहगणनक्यतताराकार्यं काममीगेहिते वर्वतहर्वः मिरिकुतरा चेव वंदिसस्रियाणं क्षेत्रार्थं कासमीमा सा प्रिस्त्य वं वंदियस्रिया बोइर्सिया चोइसरावाची काममोगे प्रवस्ताया शहरति ॥ १ ५ ॥ स्टब का इमे अञ्चारीई महस्तका पण्यता हो -हमालप स्थानक स्थेतिसंक समित्करे मार् किए पाहुकिए क्यो कवाए क्यक्याए काविवायप १ कवार्यताचे सीमे स**हिए** भारासचे क्योवए कनरए सरकरए हुंडुवए संजे क्यानामे १ स्थाननामे वेरे बंसनामें कंतरणामें चीके चौद्योमारे रूपे रुप्पोभासे आसे भासराधी १ विके तिसपुण्डमच्यो हो हगवच्ये काए वेचे इंदर्गी धूसकेक हरी विम्मण् ४ प्रदे

सुषे वहस्सई राहू अगत्थी माणवए कामफासे धुरे पमुद्दे वियर्डे ५० विसधी कप्पेहए पड़िहे जिंद्यालए अर्गे अगिगहए काले महाकाले सोत्थिए सोवत्थिए ६० वद्धमाणगे पलवे णिचालोए णिचुजोए सयपमे ओभासे सेयंकरे खेमकरे आभकरे
पमंकरे ७० अर्ए विरए अमोगे विसोगे विमले विवत्ते विवत्थे विसाले साले
सन्वए ८० अणियदी अणाविए एगजही दुजही करकरिए रायग्गले पुष्फकेक
भावकेक ८८॥ १०६॥ वीसइमं पाहुं समत्तं॥ २०॥

इइ एस पाहुडत्या अभव्वजणहिययदुल्लहा इणमो। उक्कित्तिया भगवया जोइगरा-यस्स पण्णत्ती ॥ १ ॥ एस गहियावि सता थडे गारवियमाणिपिडणिए । अवहुस्मुए ण देया तिव्ववरीए भवे देया ॥ २ ॥ सद्धाधिडउद्वाणुच्छाहकम्मवलवीरियपुरि-सकारेहिं । जो सिक्खिओवि सतो अभायणे परिकहेजाहि ॥ ३ ॥-सो पवयणकुल्लगण-सघवाहिरो णाणविणयपरिहीणो । अरहतथेरगणहरमेर किर होइ बोलीणो ॥ ४ ॥ तम्हा धिइउद्वाणुच्छाहकम्मवलवीरियसिक्खिय णाण । धारेयव्व णियमा ण य अविणीएस दायव्व ॥ ५ ॥ वीरवरस्स भगवओ जरमरणिकलेसदोमरिस्यम् । वदामि विणयपणओ सोक्खुप्पाए सया पाए ॥ ६ ॥ १०७ ॥ वद्पण्णत्ती समना ॥





#### णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

### तत्थ णं सूरियपण्णत्ती

णमो अरिहताण णमो सिद्धाण णमो आयरियाण णमो उवज्झायाण णमो लोए सन्वसाहूण। तेण कालेण तेण समएण मिहिला णाम णयरी होत्था रिद्धितथ-मियसमिद्धा पमुइयजणजाणवया पामादीया ४। तीसे ण मिहिलाए णयरीए वहिया उत्तरपुरिच्छमे दिसीभाए माणिभद्दे णाम उज्जाणे होत्था वण्णओ । तीसे ण मिहिलाए णयरीए जियसत् णाम राया होत्था वण्णओ । तस्स ण जिय-सत्तरस रण्णो धारिणी णाम देवी होत्या वण्णओ। तेण कालेण तेण समएण तम्मि उजाणे सामी समोसढे, परिसा णिग्गया, वम्मो कहिओ, परिसा पिंगया जाव राया जामेव दिसिं पाउच्भूए तामेव दिसिं पिडिगए ॥ १ ॥ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई णाम अणगारे गोयमे गोत्तेण सनुस्सेहे समचडरंससठाणसिठए वजरिसहणारायसघयणे जाव एव वयासी-कइ मडलाइ वचइ १, तिरिच्छा किं च गच्छइ २। ओभामइ केवइय ३, सेयाई किं ते सिठई ४ ॥ १ ॥ किंह पिडहिया लेमा ५, किंह ते ओयसिठिई ६ । के सूरिय वरयए ७, कहं ते उदयसिठेई ८ ॥ २ ॥ कह कट्टा पोरिसिच्छाया ९, जोगे कि ते व आहिए १०। किं ते सवच्छराणाई ११, कइ सवच्छराइ य १२॥ ३॥ कर चदमसो बुड्डी १३, कथा ते दोसिणा वहू १४। केइ सिग्घगई बुत्ते १५, कह दोसिणलक्खण १६॥ ४॥ चयणोवनाय १७ उचते १८, सृरिया कड आहिया १९। अणुभावे के व सबुत्ते २०, एवमेयाइ वीसई ॥ ५ ॥ २ ॥ वस्नोबस्नी मुहत्ताण १, अदमडलसिंठई २ । के ते चिण्ण परियरड ३, अतर किं चरति य ४ ॥ ६ ॥ उग्गाहर केवइय ५, केवइय च विकपइ ६। मटलाण य सठाणे ७, विक्खभो ८ अह पाहुटा ॥ ७ ॥ छप्पच य मत्तेव य अह तिण्णि य हवति पहिवत्ती । पढमस्स पाहुडस्स हनति एयाउ पडिवत्ती ॥ ८ ॥ ३ ॥ पडिवत्तीओ उदए, तहा अत्यम्णेसु य । भियवाए कण्णकला, मुहुत्ताण गईइ य ॥ ९ ॥ णिक्खममाणे सिग्धगई, पविसते मदगईइ य । चुलसीइसय पुरिसाण, तेसिं च पिडवर्तीओ ॥ १० ॥ उदयम्मि अट्र ४८ सुत्ता०

मिना मेमरबाए तुथे य पडिवत्ती । बतारि मुहत्तवर्डेए हॅनि सहयम्मि पडिवती ॥ १९ ॥ ४ ॥ बावकिम १ सङ्क्तमे २ एवंमाना स ३ जोगस्सा ४ । इसक् ५ पुज्यसारी ६ य सम्बन्धाए ७ य संदिदे ८ ॥ १२ ॥ शार(य)म्यं चार नेवा व

 बदमस्यति १९ यावरे । वेतवाण य अज्ययणे १९ सङ्ग्राणं नामया इन १३ ॥ १३ ॥ दिस्साराइ मुताय १४ तिहि १५ गोता १६ मोबधामि १० य जान्यबार १८ माला १९ व र्थन संश्<sup>म</sup>ारा १ वय ॥ १४ ॥ बोहसस्त दाराई २९ जनन्दर्शिकप् विच २२। दसमे पहुके एए बाबीचे पहुकपाहका ॥ ९५॥ ५३ यसो कमविसेसो ताब सरियपण्णचीए अवसेसो अपरिसेसो भाषियम्यो जहा चंदपण्णचीय जाव अंतिमा गाडचि ॥ स्रिय पुष्पक्ती समस्ता ॥



#### णमोऽत्धु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

### सुत्तागमे

### तत्य णं निरयाविलयाओ [कप्पिया]

तेणं कालेणं तेण समएण रायगिहे नाम नयरे होत्या, रिद्धित्थिमियसमिद्धे । • गुणसिलए नाम उज्जाणे 👤 चण्णओ । असोगवरपायचे । पुडविसिलापदृए वण्णओ ॥ ९ ॥ तेण कालेण तेणं समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तेवासी अजासहम्मे नामं अणगारे जाइसपन्ने जहा केसी जान पश्चिह अणगारसएहिं सिंखें सपरिचुडे पुष्वाणुपुर्वि चरमाणे जेणेव रायगिहे नयरे जाव अहायहिरूव उग्गह ओगि-ण्हित्ता सजमेण जाव विहरइ । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा पडिगया ॥ २ ॥ तेण काळेणं तेणं समएण अजाग्रहम्मस्स अणगारस्स अन्तेवासी जम्बू नाम अणगारे समवडरंससठाणसिठए जाव सिसत्तविडलतेडलेस्से अजाडहम्मस्स अणगारस्स अदूरसामन्ते उद्भुजाणू जाव विहरइ। तए ण से जम्बू जायसङ्घे जाव पज्जवासमाणे एवं वयासी-उवज्ञाण भनते । समणेण जाव सपत्तेणं के अहे पत्रते 2 एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया जाव सपत्तेण एवं उवक्काण पञ्च वरगा पन्नता, . तजहा-निरयावित्याओ, कप्पवर्डिसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूित्याओ, चण्हि, दसाओ ॥ ३ ॥ जइ ण भनते ! समणेण जाव सपत्तेण उवङ्गाणं पञ्च वरगा पन्नता. तजहा-निर्यावित्याओं जान निष्हदसाओं, पढमस्स ण भन्ते ! वग्गस्स उनङ्गाण निरयाविलयाण समणेणं भगवया जाव सपत्तेण कह अज्झयणा पनता १ एवं खछ जम्नू ! समणेण जान सपत्तेणं उनद्गाण पढमस्स नगस्स निर्यानिखयाण दस अज्ञयणा पनता, तजहा—काले सकाले महाकाले करहे सकरहे तहा महा-कण्हे । वीरकण्हे य वोद्धन्वे रामकण्हे तहेव य ॥ १ ॥ पिउसेणकण्हे नवमे दसमे महासेणकण्हे उ । जइ णं भन्ते । समणेण जाव सपत्तेण उवक्काणं पढमस्स वग्गस्स निरयाविलयाण दस अज्झयणा पन्नता, पढमस्स ण भन्ते ! अज्झयणस्स निर-याविल्याण समणेण जाव सपतेर्ण के अट्टे पनते १ एव खरु जम्बू । तेणं कारेण तेण समएण इहेव जम्बुद्दीने दीने भारहे वासे चम्पा नाम नयरी होत्या,

पडमार्गरे नाम वेदी होत्या सोमासपानियाया जान बिहरर् ॥ ४ ॥ तथ्य में चम्पाए नवरीए सेनियस्स रही अञा कृषियस्य रही पुत्रमात्रमा शासी नाम देशी इरिया सोमास आब मुस्या । तीस में बाठीए इंबीए प्रेरी काई नामें इमारे हात्या सोमाल जार चन्ये ॥ ५ ॥ तए थं से काके चुमारे अचया कयाई निर्दे दन्तिमहस्मेई निर्दे रहसहम्मेश्चे निर्दे बारासहस्मई निर्दे मणुबबोगीई गरुमर्हे एकारममेनं राज्यनं बुक्तिएयं रक्षा सर्वि रहमुगर्नं संगामं कीमाए ॥ ६ ॥ ठए मं तीसे नाजीए वेबीए अध्या द्वाइ इडम्यवागरेवं जागरमाणीय अयमवास्वै भारतियप् जाव रामुप्पजित्वा-एवं राखु मर्ग प्रते वाक्युमारे विद्वि बन्तिस्त स्सर्ट् जार मोबाए, सं मर्खा क बहरनह है नो बहरनह है जीमिरनद है नो जीमिस्नर १ पर्राजिमिस्नर १ भी पर्राजिमिस्नर १ काले ने हमारे कई जीरमार्ज पासिजा है ओइसमण जान पिवाइ ॥ ७ ॥ तेचे काकेप तर्च समपूर्व समये मगर्न महाबोरे समोछरिए । परिसा निरमया । तए व खैसे काठीए देवीए इमीपे नद्दाए संबद्धाए समाजीए अयमेबाहरी अञ्चलिए जाद रामप्यजिला---एनं पष्ठ समने भगर्व पुम्बलपुरिंग बाब विदरह, ते महापर्स यस तहास्वान बाव विजयस अद्भरम पहणपाए, ते गच्छामि वे समने जान पञ्जनासामि हमें व ने एनारन नागरणं पुच्छिस्सामितिक पूर्व संपेद्देश १ ता कोइन्वियपुरिसे सराजेर या प्रा नगारी-दिप्पासेन भी देनागुप्पिया । बस्मिसं बाजप्पनरं सुत्तासेन उन्दुर्वेह उन्दुर्विता नाव पत्रप्पिनन्ति ॥ ४ ॥ तए न सा शास्त्री वेत्री न्द्राया सप्प्रमहरवामस्त्रा<del>व्यक्ति</del>न सरीरा बहुई राजाई बान महत्तरमिन्वपरिक्यिता बन्देवराओ निध्यस्य १ ता क्षेपम नाहिरिया उन्द्रानसामा सेनेव नम्मिए नामप्पनरे रोपेन उन्यानधर १ ता वस्मिमं बागप्पवरं दुरुद्द २ शा शिययपरिश्राक्तरंपरिश्रुद्धा अर्ग्य क्यारि मजोगजोर्ज नियानस्य २ था जेनन पुरुषसी, उजाने रोगेन उनागच्या २ था कताईए जाब धन्मिनं जायप्पनरं उनेह २ ता धन्मिनाओ जायप्पनराओ प्रचेन्दर् २ ता **बहुवि सः जार्दि जान** निन्तुपरिनिकाता अनेचेव समये अगर्व अद्वादीर तेचेन उदानगरम् १ ता समर्थ समर्थ सङ्ग्रहीरै विषयाचे बन्दर १ ता दिया चेव सपरि बारा पुरस्कारणी अमेसमाणी अधिभुद्धा विचएन प्रवस्तितवा पञ्जबासद् ॥ ९ ॥ तए में संस्पे स्वयं जान राजीए देवीए दीसे य स्वर्मवाकिनाए बस्तनहा मा<del>ति</del>

सम्बा बाद सममोवासए वा सममोवासिया वा विद्वरमाने आमाए आराहए सन्द

॥ १०॥ तए ण सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्म सोचा निसम्म हुट जाव हियया समणं भगवं तिक्खुत्तो जाव एवं वयासी---एव खलु भन्ते ! मम पुत्ते काले कुमारे तिहिं दन्तिसहस्सेहिं जाव रहमुसल सगाम ओयाए, से ण भन्ते ! किं जइस्सइ <sup>2</sup> नो जइस्सइ जाव काले णं कुमारे अहं जीवमाण पासिजा <sup>2</sup> कालीइ समणे भगव॰ कार्लि देविं एव वयासी-एव खलु काली ! तव पुत्ते काले कुमारे तिहिं दन्तिसहस्सेहिं जाव कृणिएण रचा सिद्धं रहमुसल सगाम सगामेमाणे हयमहियपवरवीरघाइयनिवडियचिन्घज्झयपडागे निरालोयाओ दिसाओ करेमाणे चेडगस्त रह्यो सपक्ख सपिडिदिसिं रहेण पिडरह हन्वमागए, तए ण से चेडए राया काल कुमार एजमाण पासइ २ ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे घणु परामुसइ २ ता उसु परामुसइ २ ता वइसाह ठाण ठाइ २ ता आययकण्णायय उसु करेइ २ ता काल कुमार एगाइच कूडाइच जीवियाओ ववरोवेइ, तं कालगए ण काली ! काले कुमारे, नो चेव ण तुम काल कुमारं जीवमाण पासिहिसि ॥ ११ ॥ तए ण सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिय एयमट्ट सोचा निसम्म महया पुत्तसोएण अप्फुन्ना समाणी परम्रनियत्ता विव चम्पगलया धसत्ति धरणीयलसि सन्विहाँ सनिविडिया। तए ण सा काली देवी महत्तन्तरेण आसत्या समाणी उद्घाए उद्वेइ २ ता समण भगव० वन्दइ नमंसइ व० २ ता एव वयासी-एवमेय भनते ! तहमेय भनते । अवितहमेय भनते । असदिद्रमेयं भनते । सच्चे णं भनते । एसमट्ठे जहेंय तुन्मे वयहत्तिक्टु समण भगव० वन्दइ नमसइ व० २ ता तमेव धम्मियं जाणप्पवर दुरूहइ २ ता जामेव दिसिं पाउच्भूया तामेव दिसिं पिडगया ॥ १२ ॥ भनते ! ति भगव गोयमे जाव वन्दइ नमंसइ व० २ ता एव वयासी-काले ण भन्ते! क्रमारे तिहिं दन्तिसहस्सेहिं जाव रहमुसल सगामं सगामेमाणे चेडएण रचा एगाइच कूडाइचं जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किचा कहिं गए कर्हि उववन्ने ? गोयमाइ समणे भगव॰ गोयम एवं वयासी-एव खलु गोयमा। काले कुमारे तिहिं दन्तिसहस्सेहिं जाव जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किचा चउत्थीए पद्मप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरगे दससागरोवमहिइएस नेरइएस नेरडयत्ताए उववन्ने ॥ १३॥ काले ण मन्ते ! कुमारे केरिसएहिं आरम्भेहिं केरिसएहिं समारम्भेहिं केरिसएहिं आरम्भसमारम्भेहिं केरिसएहिं मोगेहिं केरिसएहिं सभोगेहिं केरिसएहिं भोगसभोगेहिं केरिसेण वा असुभकडकम्मपन्भारेणं कालमासे काल किचा चउत्थीए पद्भूप्पभाए पुढवीए जाव नेरइयत्ताए उववन्ने १ एवं खल गोयमा ! तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे नाम नयरे होत्या. रिद्धत्यिमियसिद्धे । स्रचागमे

\*40

पुत्ते नन्दाए देवीए कत्तए असए नामं कुमारे होत्या सोमाळ बाद प्रहवे साम-बाजभेनबस्य अहा विक्तो बाव रअधुराए बिन्तए गावि होत्वा । तस्य वं सेनि-यस्स रको चेक्रणा नामँ वेनी होत्ना सोमान आन निहरह ॥ १४ ॥ तर न स चेत्रजा देवी अवया क्याइ तेसि तारिसर्वेसि वासक्तीरे बाद सीई समित्रे प्राप्तितार्व परिवृद्धा कहा प्रमावहै जान श्रमिनपारमा पश्चिमिस्क्रिया जान चेक्सा से स्वर्ण परिकारता केनेन सर अवये तेनेन क्ल्प्पिटा ॥ १५ ॥ तर नं तीसे चेत्रनार देवीए अजया करते हीन्हें मासानें बहुपडिपुन्यार्थ क्यमेवाहने दोहके पासकप्र-वजानों म तासी सम्मवाओं चाव बन्मवीविवप्रके बाब्से वे सेनियस्स रही तवर क्फीसंधेही संब्रिक्ट व तक्षिपक्कि व सम्बद्धि व सर्र च बाव पर्स्त व बासारमा गीओ जार परिमाएमाणीओ वोहकं पविनेन्ति । तए वं धा शंक्रमा देवी टीरी बोहर्कस अमिन्नमानीस सहा मुक्या निम्मेसा बोहरना बोहरनासरीरा वितेमा रीमहिन्सक्यमा प्रमुद्धसमुद्री जोगन्त्रिकन्यस्वयक्यका कोलिवं पुरस्तरसम्ब सङ्गार्थकारं क्षत्ररेशुक्रमाणी कर्यकमक्रिकम् काक्सम्बा बोह्नस्यपरेशमा बाह् क्रियाह ॥ १६ ॥ तए वे तीसे चेक्रजाप देवीए स्क्रुपडिवारियाओं चेक्र्य देनि सर्व <u>अन्तरं</u> जाव क्रिकानमानि पासम्ति १ ता **बे**नेन सेथिए राजा तनेव श्वामक्कित १ ता करसमपरिसाहित सिरसानत गत्यए अवस्थि रह सेन्सिन रामे एव स्वासी-एवं क्क सामी! चेक्कमा देवी न यानामी केवड कारचेर्य शका अक्का जान सिन्हें ॥ ९७ ॥ तए व से सेमिए राजा तासि अञ्चयकियारियाच व्यन्तिए एसमई सोवा निसम्म देहेन समन्ते समाने खेलेन चेत्रमा देवी देवेन तनायस्कर १ ता चेत्रम देनि श्रक्ष भुमन्दं बान क्रियायमानि पासिता एवं बनासी-क वं तुमे देनश्रियए। छका सुक्ता जान दिशासि है ॥ १८ ॥ सपूर्ण सा चेत्राणा देवी सेवियस रही एकमई नो जाबाद नो परिजानाइ, शुरीयाँया संविद्ध । तए ये से सेबिए समा भेडमं देनि दोनंपि तनंपि एनं बनाधी-कि व जहं वेदालुप्पए ! एसम्प्रस्स मो करिद्वे सक्यमाए वं य तुर्ग प्रसङ्ख रहरुसी रहेशि १॥ १९ ॥ तए वं सा केहका देवी सेमिएम् रचा दोवंपि तवंपि एवं बुता समानी सेमिन रामें एवं बनारी-वन्नि ण सामी। से केंद्र आहे वस्सा में तुक्ते अन्तरेहा सवनवाए, नो घेव में इमस्म जदुस्स सम्बन्धाए, एवं एक्ट साथी । मर्ग हरूम श्रोराकरसः वाच महानुमेनस्स विन्हं मासार्थं बहुपडिपुष्णार्थं अवसेगास्ये दोहके पाउस्मूए-पताओं वं ताओ

अम्मयाओ जाओ ण तुब्भ उयरविष्टमंसीहं मोहएहि य जाव दोहल विणेन्ति, तए ण अह सामी ! तिस टोहलसि अविणिज्ञमाणिस नुषा भुक्या जाव झियामि ॥ २०॥ तए ण से सेणिए राया चेहण देवि एव वयासी-मा ण तुम देवाणुप्पिए। ओहय० जाव झियाहि, अह ण तहा जितहामि जहा ण तव दोहरुस्स सपत्ती भविस्पडिति-क्टु चेहण देविं ताहिं इट्टाहिं फन्ताहिं पियाहिं मणुनाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कलाणाहिं सिवाहिं वनाहिं मङ्गलाहिं मियमहुरसिसरीयाहिं वर्ग्गृहि समासासेड २ ता चेलणाए देवीए अन्तियाओ पडिनिक्खमइ २ ता जेणेव वाहिरिया उवद्वाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छ २ ता सीहासणवरिस पुरत्थाभिमुहे निसीयइ २ ता तस्स दोहलस्स सपितानिमित्त वहूहिं आएहि उवाएहि य उप्पत्तियाए य वेणइ-याए य कम्मियाए य पारिणामियाए य परिणामेमाणे २ तस्स दोहलस्स आय वा उवाय वा ठिइ वा अविन्दमाणे ओहयमणसकप्पे जाव झियाइ ॥ २१ ॥ इम च ण अभए कुमारे ण्हाए अप्पमहग्घाभरणालिकयसरीरे सयाओ गिहाओ पिंडिनिक्समंड २ ता जेणेव वाहिरिया उवद्वाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ २ ता सेणियं राय ओहय॰ जाव झियायमाणं पासड २ ता एव वयासी-अन्नया ण ताओ! तुन्मे मम पासिता इट जाव हियया भवह कि णं ताओ ! अज तुन्मे ओहय॰ जाव झियाह 2 त जइ ण अह ताओ ! एयमहुस्स आरिहे सवणयाए तो ण तुब्से सम एयमड जहासूयसवितह असदिइं परिकहेह, जा णं सह तस्स अहस्स अन्तगमण करेमि ॥ २२ ॥ तए ण से सेणिए राया अभयं कुमार एव वयासी-नित्य ण पुत्ता ! से केंड अट्टे जस्स ण तुम अणिरहे सवणयाए, एव खल पुता। तव चुहमाउयाए चेहणाए देवीए तस्त ओरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्ह मासाण बहुपिडपुण्णाण जाव जाओ ण मम उयरवठी-मसेहिं सोल्लेहि य जान दोहल विणेन्ति, तए ण सा चेल्लणा देवी तसि दोहलसि अविणिज्ञमाणिस सुक्षा जान क्षियाइ, तए ण अह पुत्ता । तस्स दोहलस्स सपत्ति-निमित्त वहूहिं आएहि य जान ठिइ वा अविन्दमाणे ओहय० जान क्षियामि ॥ २३ ॥ तए ण से अमए कुमारे सेणिय राय एव वयासी-मा ण ताओ ! तुल्मे ओहय॰ जान भ्रियाह, भह ण तहा जितहामि जहा ण मम चुलमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स दोइलस्स सपत्ती भविस्सइत्तिकृहु सेणिय राय ताहि इद्वार्हि जाव वग्गूहि समासासेइ २ ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ ता अब्भिन्तरए रहस्सियए ठाणिजे पुरिसे सद्दावेड २ ता एव वयासी-गच्छद ण तुन्मे देवाणुप्पिया ! सूणाओ अछ मस रहिरं वित्थपुडमं च गिण्हह ॥ २४ ॥ तए णं ते ठाणिजा पुरिसा

अन्तिनामो परिनिक्तमन्ति २ ता जेभेत्र सूचा तंगेष उदागरप्रन्ति २ ता मार् <sup>ईर्ग</sup> हर्दिर बरियपुडर्म च गिश्वनित २ ता जवार भगए हुमारे तेलेव उदागदहन्ति २ <sup>ता</sup> करमहरू संबाद मेंसे रहिरं वरिवपुत्रमं च उपयोग्ति छ २५ ॥ तए च हे क्षमण क्रमारे से बार्ज असे रहिरं कप्पाधी कप्प हिस्सा करेड २ सा जेवर संवित् राया तंत्रक उनागण्डद् र ता सेवियं रायं रहस्मित्रव समित्रकंति उत्तर्या निवजानेद १ चा सेवियस्स उपरवतीत ते क्षा मेर्स इहिर्र मिर्मेद १ ता विच पुडएवं वेडेर २ ता सबन्तीकरणेयं करेड २ ता बजर्ण देवि प्रप्ति पामाए सर्व कोरकाररार्थ ठवानेह २ शा केडलाए वर्षीए अहे सरकर्त स्पहिनिति सैनिर्म रा<sup>ई</sup> सबिजिति उत्ताममें निम्नामंत्र, सेवियस्य रही उत्तरमध्येताई कर्या विकि क्षियार्थं करेंद्र १ ता से य मायर्थसि पतिन्तक्ष । तत् वं से सेविए राजा अस्ति मुच्छिनं करेद २ ता मुष्टुतकारेचे अध्यक्षेत्र एकि एंसबमाने निद्रह । तए <sup>हो से</sup> ममग्रुमारे सेमियस्य रहो उयस्यमिनंसाई गिन्हेड २ ता जेनेव चडना हुनै राजेन उपागच्छा २ ता केलवाए वेबीए उपचेश । तए वं सा केलवा देवी से<sup>मिर</sup> यस्य रची तेहिं तमरविमीनेहें सोनेहें बाब बोहर्स बिनेड़ । तए थे सा चेन्ना दवी धपुण्यदोहमा एवं छंगाविक्दोहमा मिण्डिबदोहमा सं गर्क सहंप्रहेर्व वर्षे बहुद व २६ ॥ तयु व तीसे बेक्नमाए देवीए अवस्या कारतः प्रस्वरतावरतकार-समर्पेश अयमेशारने जान शतुष्पजित्या-जर तान इमेश शारपर्ग गम्मगरून चेव पिटको अवरवसिनीसामि पाइमामि है सेनै पाह गए एवं गर्क सावित्रम् बा पाक्तिए वा गाकितए का निकेशितए का एवं सप्तेष्ट १ ता र्स गार्म गार्म गब्जसावनेहि व गब्मपावनेहि य गब्सगावनेहि व गब्समिक्सपेहि व स्थार ए गर्का सावित्तए वा पाविताए वा गाविताए वा निर्देशिताए वा नो चव व से मध्ये सक्द मा पत्रइ ना सकद ना विजेसइ ना । शपु में सा चेक्नस देनी है सम्में वाह नो समाप्र कहुँहैं गब्भसाडमेहि व बाब सब्समिर्दयमेहि स साहित्तप् दा बान निकरिताए शा दाहे सन्ता तन्ता परितन्ता विभिन्ना समाची अवस्थित अव सबसा महनपारहेंद्रशा से यक्यों परिकृत्य ॥ २० ॥ सप् वे सा नेवना देवी नार्ज मासार्य बहुपविदुष्णाणं जान सोमार्क सुरूव बार्य पनावा । तप में रीसे चंत्रवाए देवीए हमें प्रसारने जान समुप्यानिक्या-जह तान हमेन दारपूर्व सवस्पर्य नेत पित्रयो स्थारमध्यमंत्राहे वाहन ई. ते न मज्जह में एस बारए सम्ब्रह्माने अन्हें हुसस्स भन्तकरे मनिस्तह, ये सेवं ऋह अमई एवं शरगं एमन्त सहसीवनार

उज्झावित्तए, एव सपेहेड् २ ता दासचेडिं सहावेड् २ ता एव वयासी-गच्छ णं तुम देवाणुप्पिए! एय दारग एगते उक्कुरुडियाए उज्झाहि ॥ २८ ॥ तए णं सा दासचेढी चेह्रणाए देवीए एवं वृत्ता समाणी करयल जाव कहु चेह्रणाए देवीए एयमट्टं विणएणं पडिसुणेइ २ ता तं दारग करयलपुडेणं गिण्हइ २ ता जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ २ ता त दारग एगन्ते उक्कुहिडयाए उज्झाइ। तए ण तेण दारगेण एगन्ते उक्कुरिंडयाए उज्झिएण समाणेण सा असोगवणिया उज्जोविया यावि होत्था॥ २९ ॥ तए णं से सेणिए राया इमीसे कहाए लख्डे समाणे जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ २ ता तं दारग एगन्ते उकु-रुडियाए उज्झिय पासेइ २ ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे त दारग करयलपुडेणं गिण्हइ २ ता जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ २ ता चेल्लण देविं उचावयाहिं आओसणाहिं आओसइ २ त्ता उच्चावयाहिं निव्भच्छणाहिं निव्भच्छेइ एव उद्धं-सणाहिं उद्धसेंइ २ ता एव वयासी-किस्स ण तुम मम पुत्त एगन्ते उक्कुरुडियाए उज्झावेसि १ त्तिकट्ट चेल्लण देवि उच्चावयसवहसाविय करेड २ ता एव वयासी-तुम ण देवाणुप्पिए! एय दारग अणुपुरुवेण सारवस्त्रमाणी सगोवेमाणी सबहेहि ॥ ३० ॥ तए ण सा चेल्लणा देवी सेणिएण रन्ना एवं बुता समाणी लजिया विलिया विड्डा करयलपरिगगहिय॰ सेणियस्स रन्नो विणएण एयमट्ट पडिसुणेइ २ त्ता त दारग अणुपुन्वेण सारक्खमाणी सगोवेमाणी सबह्वेड् ॥ ३१ ॥ तए ण तस्स दारगस्म एगंते उद्गुरुहियाए उज्झिजमाणस्स अग्गङ्खिया कुक्दुडपिच्छएण दूमिया यावि होत्था, अभिक्खण अभिक्खण पूर्य च सोणिय च अभिनिस्सवइ । तए ण से दारए वेयणाभिभूए समाणे महया महया सहेण आरसइ । तए ण सेणिए राया तस्स दारगस्स आरसियसद् सोचा निसम्म जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ २ ता त दारग कर्यलपुरेण गिण्हइ २ ता त अग्गङ्खलिय आसयंसि पिक्सवइ २ ता प्य च सोणियं च आसएण आमुसइ। तए ण से दारए निव्वुए निव्वेयणे तुसिणीए सचिद्वइ । जाहे वि य ण से दारए वैयणाए अभिभूए समाणे महया महया सहेग भारसङ ताहे वि य ण सेणिए राया जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ २ ता त दारग करग्रलपुडेण गिण्हड़ तं चेव जाव निब्वेयणे तुसिणीए सचिट्टड ॥ ३२ ॥ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो तइए दिवसे चन्दसूरदिसणिय करेन्ति जाव सपते वारसाहे दिवसे अयमेयास्व गुणनिष्फन्नं नामधेज करेन्ति-जम्हा ण अम्ह इमस्स दारगस्स एगन्ते उक्कुरुडियाए उज्झिजमाणस्स अङ्गुलिया कुक्कुडपिच्छएण दूमिया त होउ णं अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज कूणिए २ । तए णं तस्स दार- ०१२ ध्रुप्तमांमे [नित्याविष्यानो परत कम्मापियरो मामवेजं करेनित कृषित ति । तए पं तस्त कृषितस्य धात पुत्रवेष ठित्रवितं च वाहा नेवस्य जाव त्रिय पाछास्वरपण विद्दार, अद्भुद्धनो हम्यो ॥ १३ ॥ तए पं तस्य कृषित्रस्य कुमारस्य मध्या पुत्रवरणा वाह सनुम्पांक्रवान्

एर्व **यह वहं** सेकिनस्स रखो भाषाएर्ण को संचाएमि सबसेब स्वासिर्टि करेमाचे पालेमाचे विद्वरित्तय, तै सेर्व यह सम सेकिये सर्व विकासन्त्रचं करेता अप्यार्ज महाना

महना रावामिसीएयं क्रांभिष्ठिवासिताएतिस्टुः एव प्रेपेहेर २ था सेन्निवस्स रहो बन्द एमि व विद्वाभि य विद्वाभि व विकासारताचि २ निहरतः ॥ ३४ ॥ तए ये हें कृतिए इमारे सेन्निवस्स रहो अन्दर्श का वाव सम्म वा व्यवस्थाने अवदा करते अमारे एस इमारे निवकर स्काखेर २ ता एवं बवाधी-एवं यद्ध हेक्स्प्रीम्वा । अम्हे सेन्निवस्त रहो वाचाएयं नो संवाएमी स्वयंव रक्षांशित करामा प्राचिमावा विद्वारत्ता, तं सेवं यक्क वेत्रालायां अम्बे सेनियं रावं विकासारतार सिर्मा वा रहे व वर्ष क वाहर्य व क्रोस्ट्राल प्राचिमायां वाव विद्वारत्ता ॥ १५ ॥ एवं विकास स्वयंन रक्षांशित करेमायावं प्राचिमायां वाव विद्वरत्ता ॥ १५ ॥ एवं विकास स्वयंन रक्षांशित करेमायावं प्राचिमायां वाव विद्वरत्ता ॥ १५ ॥ एवं

मं छे नूमिए इमारे अवसा संगह छेबिनता नहीं अन्तरं वापह २ ता छैनिने रार्व दिनकान्त्रण करेंद्र २ ता अप्याणं महना महना राजारियणं अमिरिवालेंद । तर्ष में छे कृमिए इमारे शाम नाए महना ॥ ३ ६ तत्र ए में छे कृमिए समा वाचना कमार त्यार राज्यासंनारिमेम्ब्रिय चेकागा देवीए पावचन्यए हम्बामान्यकर । यह में छे कृमिए समा चेक्नमं देवि कोइस वाच हिसासमाणि राज्य २ ता चेकाण देवीए

पायम्पर गं चरेर २ ता बेक्टम देखि एव क्यायी—कि मं अस्ती । हुम्स न द्विते वा त करए वा व हरिये वा न आपन्ते वा चं मं अहं एसनेव र स्वरिति वाति विद्यासि । १ ४ ७ । वप मं शा बेक्सम देखी स्थित एसे एवं नवाधी—क्षें मं पुता । समें तुद्री वा करण्य था इरिये वा आपन्ये वा मनिस्स्य मं ने दूर्म रिवेर्स समें पिये देवरी एक्समां अव्यानकोत्त्र लागर तिम्लास्त्र को किस करण्ये महा से रामामिर्याएन मिरितामिरित । व ८ ॥ वस मं श्रेष्ठ कृत्या एवं मारेज व्याप्त के स्वर्त । रामामिर्याएन मिरितामिरित । व ८ ॥ वस मं श्रेष्ठ कृत्या एवं मारेज विभिन्न के सम्मो । समें सेवित एसे क्यायानकोत्त्र प्राप्त कामो । समें सेवित एसा एवं मारेज विभिन्न के सम्मो । समें सेवित एसे मार्ग कामाने हिन्दों स्वर्त कामाने कामाने क्षायान क्षायान कामो । समें सेवित एसे क्यायानकोत्त्र कामो । समें सेवित एसा तं वर्ष मं असमाने । समें सेवित एसे क्यायानकोत्त्र कामो । समें सेवित एसा तं वर्ष मं असमाने । समें सेवित एसे व्याप्त स्वर्त कामो व्याप्त विद्यासि सम्बन्ध सामाने क्षायानकोत्र असमाने अस्त अस्तरीकारित । याओ निरवसेस भाणियव्व जाव जाहे वि य ण तुम वेयणाए अभिभूए महया जाव तुसिणीए सचिद्वसि, एवं सछ तव पुत्ता ! सेणिए राया अचन्तनेहाणुरागरत्ते ॥४०॥ तए ण से कृणिए राया चेल्रणाए देवीए अन्तिए एयमहं सोचा निसम्म चेल्रण देविं एवं वयासी—दुद्धु ण अम्मो । मए क्य सेणियं राय पिय देवय गुरुजणगं अच-न्तनेहाणुरागरत्त नियलवन्धण करन्तेण, तं गच्छामि ण सेणियस्स रन्नो सयमेव नियलाणि छिन्दामित्तिकट्टु परसुहत्थगए जेणेव चारगसाला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ ४१ ॥ तए ण सेणिए राया कृणिय कुमार परमुहत्यगय एजामाणं पासइ २ ता एव वयासी---एस ण कूणिए कुमारे अपितथयपितथए जाव सिरिहिरिपरिविजिए पर-सुहत्यगए इह ह्व्वमागच्छइ, तं न नज्जइ ण मम केणइ कुमारेणं मारिस्सइत्तिकहु भीए जान सजायभए तालपुडग निस आसगिस पिन्खन । तए ण से सेणिए राया तालपुडगविसिस आसगिस पिन्खते समाणे मुहुत्तन्तरेण परिणममाणिस निप्पाणे निचेंद्वे जीवविष्पजढे ओङ्ण्णे ॥ ४२ ॥ तए ण से कृणिए क़ुमारे जेणेव चारगसाला तेणेव उवागए, सेणिय राय निष्पाणं निचेट्ठ जीवविष्पजढ ओडण्ण पासइ २ ता महया पिड्सोएण अप्फुण्णे समाणे परसुनियते विव चम्पगवरपायवे धसत्ति धरणी-यलिस सन्बद्गेहिं सनिवडिए। तए णं से कृणिए कुमारे मुहुत्तन्तरेण आसत्थे समाणे रोयमाणे कन्दमाणे सोयमाणे विलवमाणे एव वयासी-अहो ण मए अधन्नेण अपुण्णेणं अकयपुण्णेण दुहुकयं सेणिय राय पिय देवय अचन्तनेहाणुरागरत्त नियलवन्धण करन्तेणं, मममूलाग चेव ण सेणिए राथा कालगएत्तिकह ईसरतलवर जाव सिध-वालसिंद्धं सपरिवुद्धे रोयमाणे ३ महया इङ्कीसकारसमुदएणं सेणियस्स रन्नो नीहरणं करेइ २ त्ता वहूइ लोइयाइ मयिकचाइ करेइ। तए ण से कृणिए कुमारे एएण महया मणी-माणसिएण दुक्खेण अभिभूए समाणे अन्नया कयाइ अन्तेउरपरियालसपरिवुंडे सभ-ण्डमत्तोवगरणमायाए रायगिहाओ पिडनिक्खमइ २ ता जेणेव चम्पा-नयरी तेणेव उचा-गच्छइ, तत्थिव णं विउलभोगसिमइसमन्नागए कालेण अप्पसोए जाए यावि होत्था ॥ ४३॥ तए णं से कृणिए राया अनया कयाइ कालाईए दस कुमारे सद्दावेइ २ त्ता रज्ज च जाव जणवय च एकारसभाए विरिघइ २ ता सयमेव रज्जिसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥ ४४ ॥ तत्थ ण चम्पाए नयरीए सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए कृणियस्स रत्नो सहोयरे कणीयसे भाया वेहल्ले नाम कुमारे होत्था, सोमाले जाव सुरूवे। तए ण तस्स वेहहस्स कुमारस्स सेणिएणं रज्ञा जीवतएण चेव सेयणए गन्धहत्थी अद्वार-सवके य हारे पुन्वदिन्ने । तए ण से वेह्ने कुमारे सेयणएण गन्थहित्यणा अन्तेजर-परियालसपरिवृहे चम्पं नयरिं मज्झमज्झेण निगगच्छ २ ता अभिक्खणं २ गङ्ग

\* 4 \*

महापर्व सज्ज्ञचन क्षांजरह । तम् भै सेमणप् गन्यहत्वी वेदीको सोणाम् गिन्हर् २ ता वापीगइसाओ पुद्धे उपेक् कापीगहराओं साम्ब उपेक् एवं कुम्मे उपेक् सीसे ठभेड, वरतमुसके ठमेड, कप्पेगदमाओं सोडाए गहाम तह महासं तमिन्हर, अप्पे गरमाओं सेव्हाममान्यों अन्दोकानेह, अप्येगहवाको चन्तन्तरेस नीगेह, अप्येगहवाको सीमरेणं ज्हानेद, काञ्चेयद्ववाको अणेगेहि कीकाकोहि कीकानेद्र । तप ये कम्पाए नवरीए विवादगतिगमनकानवरमदागद्दणेस बहुनजो शवसवर्गः एवमावनसद बाब पर्योक-एव राज्ञ वेशामध्या । वेहते क्षमारे सेवनपर्यं गञ्चहत्वमा कन्तेटर है जेब बाद करेनेहिं कीकावगएबिं कीमा देह, से एस में नेहते हुआहै रखसिरिफर्ल पचलुमक्साचे विद्वतह, भी कृतिए राया ॥ ४५ ॥ तए व तीने पनमार्क्डए देवीए इमीसे कहार कदादाए समाजीए अयमेगारवे बाव समुप्पजित्या-एवं बाह वेडके इमारे सेम्बाएनं गन्बहरिक्या जाव अपनेहिं क्षेत्रग्रवक्यके क्षेत्रमहेऽ तं एस पं मेहते कुमारे रजस्तिरकां पण्यामनमाणे निवृद्धः मो कुमिए रामा से 🏗 वं सम्ब रजेग वा बाब कनवर्ष वा बह में अन्य सेवकरे सम्बद्धात महिल है है सेसे सह मने कृष्टिनं राज एजमई निकामिताएतिका एव धंपेहेक ता जेलेन कृष्टिए रामा तेनेव उवाशकाद २ ता करका जान एव वयाची-एवं दक्क सामी । नेती इमारे सेनवर्ण सन्भद्रतिका जाव जयेगेहि कीकावकरहि कीकावेद से के ज कार रजीय वा बाब बयावरण वा का ने कार्य सेमार गरभारती महिन् IFY\$ U तए में से कृषिए राजा परुमार्थीए। एसस्ट्री नो आस्ट्रा नो परिसामार्थ हरिजीए सेन्द्रित । तए ये सा परमानहै हेती अभिक्यणं २ क्रिये रात्रं एवस्ट विसनेद । तए में से बूनिए एजा: पटमाबरेए वेबीए अभिनस्त्ये ५ एकाई निच-विज्ञमानी बाह्यस कमाह बेहाई इमार्र सहावेद २ ता सेयानां सन्बहाँख बहुससम्बर्ध व दारे जायह ॥ ४७ ॥ तप जे से वेदके सुभारे कृषियं रावे एवं बवासी-एव पछ सामी ! सेकिएमं रक्षा जीन रोगं जन सेनजए सन्बद्दत्वी अद्वारसमीके यहारे दिने र्ष कड में सामी ! तुब्से सम रजन्स न जान जणनगरस य अर्थ बढना हो ने काई तुक्तां सेनकां सन्बद्धिं ब्लुसरसर्वेद्ध व द्वारं चुक्रमानि । तए में से मुन्दिएं राजा बेडाइस्स इतारस्य एयम्ब्रं नो बाहाइ नो परिजासई, अमिनरार्च २ छेजनर्न गन्बहरिय बहुारसभेके च बारे भागद ॥ ४४ ॥ तए जे तस्स बेहहस्स इमारत्म कमिएस रहा आभिकरान १ रीनपर्य गन्यहरिंग अग्रुप्रस्तर्वेत च हार्र पूर्व राह शक्रिप्रमित रामे से गिलिहत रामे में बदाबंत मामे से सम स्मिए राजा सेमनर्ग सन्द हिंग क्ट्रारमचंके भ द्वार, ये जान न उद्दाकेर मर्ग कुनिए राया तान ( सैर्य मे )

सेयणग गन्धहरिय अट्टारसवकं च हार गहाय अन्तेउरपरियालसपरिवुडस्म सभण्डम-त्तोवगरणमायाए चम्पाओ नयरीओ पिडिनिक्यमिता वैसालीए नयरीए अज्ञग चेडय राय उवसपजिताण विहरित्तए, एव सपेहेड २ ता कृणियस्स रन्नो अन्तराणि जाव पिंडजागरमाणे २ विहरइ । तए ण से वेह्हें कुमारे अन्नया कयाउ कृणियस्य रजो अन्तर जाणड २ ता सेयणगं गन्यहर्त्यि अद्वारसवक च हार गहाय अन्तेउरपरियाल-सपरिचुंदे सभण्डमत्तोवगरणमायाए चम्पाओ नयरीओ पिडिनिक्खमइ २ ता जेणेव वेसाली नयरी तेणेव उवागच्छड २ ता वेसालीए नयरीए अजग चेडयं राय उवसपजित्ताण विहरइ ॥ ४९ ॥ तए ण से कृणिए राया डमीसे कहाए लख्डे समाणे-एवं खलु वेहले कुमारे मम असविदिएण सेयणगं गन्यहरिय अद्वारमवक च हार गहाय अन्तेउरपरियालसपरिवुडे जाव अज्जग चेडय राय उवसपिजत्ताणं विहरह, त सेय खलु मम सेयणग गन्यहरिंथ अट्टारसवक च हार आणेड द्य पेसितए, एव सपेहेइ २ ता दूय सहावेइ २ ता एव वयासी---गच्छह ण तुमं देवाणुप्पिया ! वेसालि नयरिं, तत्थ ण तुम मम अज चेडग राय करयल० वद्धावेता एव वयाहि-एव खळु सामी! कृणिए राया विश्ववैड---एस ण वेहले कुमारे कृणि-यस्स रन्नो असविदिएण सेयणग० अट्टारसवक च हारं गहाय इह हव्वमागए, तए ण तुन्मे सामी ! कृणिय रायं अणुगिण्हमाणा सेयणग० अद्वारसवक च हार कृणियस्स रन्नो पञ्चिप्पणह वेहल कुमार च पेसेह ॥ ५० ॥ तए णं से दूए कृणिएण० करयल० जाव पिंडसुणिता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ ता जहा चित्तो जांच वदावेता एव वयासी-एव खलु सामी ! कूणिए राया विश्ववेइ-एस ण वेहले छुमारे तहेव भाणियव्व जाव वेहल कुमार च पेसेह ॥ ५१ ॥ तए ण से चेडए राया त दूरं एव नयासी-जह चेव ण देवाणुप्पिया ! कृणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए मम नत्तुए तहेव ण वेहलेवि कुमारे सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेलणाए देवीए अताए मम नतुए, सेणिएण रचा जीवन्तेण चेव वेहलस्स कुमारस्स सेयणगे गन्धहत्थी अद्वारसवके य हारे पुव्वविड्ण्णे, त जइ ण कृणिए राया वेहहरूस रजस्स य० जणनयस्स य अद्ध दलयइ तो ण अह सेयणगं० अद्वारसनक च हार कृणियस्स रन्नो पचिप्पणामि नेहहं च कुमार पेसेमि। त दृय सक्वारेइ समाणेइ पिंडविसजेंड ॥ ५२ ॥ तए ण से दूए चेडएणं रज्ञा पिंडविसिजिए समाणे जेणेव चाउग्वण्टे आसरहे तेणेव उवागच्छइ २ ता चाउग्वण्ट आसरह दुरूहइ २ ता वेसालि नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ २ ता सुमेहिं वसहीहिं पायरासेहिं जाव वद्धावेता एव वयासी--एव खलु सामी! चेडए राया आणवेड्--जह चेव ण

महारसर्वर्क च हार वैद्यातं च मी पेसेड् ॥ ५३ ॥ तप् वाँ से कृष्यिए राजा दोवंपि बूस सदानेता एवं बसासी-गच्चा में तुमें स्वास्थिया विसाधि नवरि, तत्व में द्वम सम अजर्ग चेडर्ग रामै जान एवं ननाहि-एव बहु सामी ! कृतिए राना निवनेद---वानि काभि रवणानि समुप्पजनित सन्वानि ताभि रावकुसगामीनि ऐमियस्स रको रजासिर्रि करेमाणस्स पाकेमाणस्स दुवे रक्ता समुप्तका तंक्का~ संगतप पन्यवस्थी लढारसबंके बारे. ते वे तुक्ते साती ! शवकस्थरपरामवं ठिउने अओबेनामा सेवचर्ग गाच्यहरिंव ब्रह्मारसम्बंधं च द्वारं कृतिवस्स रह्यो प्रवास्तिहरू नेहां इमारं पेसेह II ५४ II ठए जे से बुए कुमियरस रखो तहेन जान नहानेता एवं प्रसासी-एवं काल सामी ! कृतिए राजा विश्ववेद-वाणि कालि बाव नेप्रके इमार पेसेह। तए मं से चेबए राया तं दूर्व एवं क्याची— कह चेब मं दवल प्पिया ! क्रमिए रामा सेनियस्स रको प्रते चेक्रणाए वेबीए सहए क्का प्रस्म नम नेक्स च इसार पेसेसि । ते दुने स्वारेड संगायेड प्रक्रिस्टजेड त ५५ प्र टए में धे दूप जान कृतियस्य रचो नडानेता एवं क्यासी-चेडए राया जानके,-जह <del>पेन</del> नं देवाणुप्तिया । कृतिए राजा सेनियस्स रको प्रते चेक्क्याए देवीए अत्तर जान मेरा कुमारे पेसेमि तं न के ज सामी ! श्रेडए राजा सेवलर्ग गन्धद्रश्य स्ट्रार सर्वें च हारं, वेडकं इमारं नो पेसेड ॥ ५६ ॥ तए वं से कृतिए एका वस्स दूबरच अन्तिए एसमाई सोचा निसम्म आसुरते बाद मिसिमिरेसाने एवं दूर सत्त्वेद २ ता एवं वयासी-गच्चद ये तुम वेवानुष्यिया ! वेसाठीए नवरीए वेदपस्य रको बाममें पाएमें पान[वी]पीडं ब्वह्ममहि १ ता इन्तमोर्ज केंद्र प्लानेहे १ ता मासुदर्त जाब मिसिमिसेमाने विपन्निय सिश्रंडि निडाके साव्यु नेडर्य एवं एवं क्याद्वि-इं मी भेडयरावा । अपरिवनपरिवना । तरन्त आव परिवक्तिना । एस में कृतिए राजा भागनेइ-पन्निपणाति न कृतियस्स रह्नो सेयवर्थ अद्वारसनंद न हार बेहरू प इमार पेसेहि शहना शुद्धसम्मो चिद्वाहि एस मं सूनिए राजा सन्हे संबाहने सकन्यालारे ज जुद्धसम्बे इह हम्बद्धारम्बद्धः ॥ ५०॥ तए वं से दूर करवंक तहेव बाव केमेव चेटणु तेनेव बनागच्चरः १ ॥ करवंस बात क्यानेता एवं ववाधी-एस नं सामी । अर्थ विजयपतिवत्ती इवालि कृषिकस्य रही आजित भडगस्स रको बामेणं पाएणं पानपीतं अन्दमह र ता आसुरेत इन्तमोन क्ट्रं प्रजाक्द्र ते चेव सक्तकम्बाबारे वें इह हम्बमायकद ॥ < ॥ तर् वे से

चेडए राया तस्स दूयस्स अतिए एयमई मोचा निसम्म आम्रुरुते जाव साहद्रु एव वयासी-न अप्पिणामि णं कृणियस्म रन्नो सेयणम अद्वारसवकं हार वेहल च कुमार नो पेसेमि, एस ण जुद्धसः चिद्वामि । तः द्य असक्तारिय असमाणियं अनदारेण निन्छुहाबेड ॥ ५९ ॥ तए ण से कृणिए राया तस्य द्यस्य अन्तिए ए[अ]यमह सोचा निसम्म आमुक्ते कालाईए दस कुमारे सद्दावेइ २ ता एव वयासी-एवं यल देवाणुष्पिया ! बेह्छे कुमारे मम असविदिएणं सेयणग गन्धहर्तिय अद्वारसवक हार अन्तेउर मभण्ड च गहाय चम्पाओ पिडनिक्खमड २ ता वेसालि अजगं जाव उवसपज्जित्ताण विहरइ, तए णं भए सेयणगस्स गन्धहित्यस्स अट्टारसवक्स्स० अट्टाए द्या पेसिया, ते य चेडएण रना इमेण कारणेण पिडसेहिया, अदुत्तर च ण मर्म तचे दूए अमकारिए असमाणिए अवहारेण निच्छुहावेइ, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह चेडगस्स रन्नो जुत्तं गिण्हित्तए । तए ण कालाईया दस कुमारा कृणियस्स रन्नो एयमट्टं विणएण पिंडसुणेन्ति ॥ ६० ॥ तए ण से कृणिए राया कालाईए दस कुमारे एवं वयासी-गच्छह ण तुन्भे देवाणुप्पिया ! सएमु सएमु रज्जेसु पत्तेय पत्तेय ण्हाया हिरियखन्धवरगया पत्तेय पत्तेय तिहिं दन्तिसहस्सेहिं एवं तिहि रहसहस्सेहिं तिहिं आमसहस्सेहिं तिहिं मणुस्सकोडीहिं सिद्धें सपरिवृद्धा सिव्वद्वीए जाव रवेण सएहिन्तो र नयरेहिन्तो पिंहनिक्खमह २ ता मम अन्तिय पाउच्भवह ॥ ६१ ॥ तए ण ते कालाईया दस कुमारा कृणियस्स रत्नो एयम्ह सोचा सएमु सएमु रजेसु पत्तेय २ ण्हाया हित्य जाव तिहिं मणुस्सकोडीहिं सिद्धें सपरिवुडा मिन्बद्वीए जाव रवेणं सएहिन्तो २ नयरेहिन्तो पिडनिक्खमन्ति २ ता जेणेव अङ्गा जणवए जेणेव चम्पा नयरी जेणेत्र कृणिए राया तेणेव उवागया कर्यल॰ जाव वदावैन्ति ॥ ६२ ॥ तए ण से कूणिए राया कोडुम्वियपुरिसे सद्दावेड ? ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक हत्थिरयण पडिकप्पेह, हयगयरहजोहचाउरद्गिणि सेण सनाहेह, मम एयमाणतिय पचिपणह जाव पचिपणन्ति । तए ण से कूणिए राया जेणेव मजजणघरे तेणेव उवागच्छइ जाव पिंडनिम्मच्छिता जेणेव वाहिरिया उवट्टा-णसाला जाव नरवई दुरूढे ॥ ६३ ॥ तए ण से कृणिए राया तिहिं दन्तिसहस्सेहिं जाव रवेण चम्प नयरिं मज्झमज्झेण निगगच्छ २ ता जेणेव कालाईया दस कुमारा तेणेव उवागच्छइ २ ता कालाइएहिं दसहिं कुमारेहिं सिद्धं एगओ मेला-यन्ति । तए ण से कूणिए राया तेत्तीसाए दन्तिसहस्सेहिं तेत्तीसाए आससहस्सेहिं तेत्तीमाए रहसहस्सेहिं तेत्तीसाए मणुस्सकोडीहिं सिद्धं सपरिवुढे सिव्वद्वीए जाव रवेण सुभेहिं वसहीहिं सुभेहिं पायरासेहिं नाइविगिट्रेहिं अन्तरावासेहिं वसमाणे २

नगारी-पुर •श्वः वेषानुष्यना । <sup>के</sup>श्वो इत्यारं क्ष्मिनस्स (तो अधिनेत्रिपूर्व देश्यारं स्ट्रास्टाप्तं व द्वारं ग्राह्म वह रचनामार, ठए वे बूलिएलं देशवास्त आहारतं स्था स ब्यह्मप् रुत्तो तृत्या पेरिया से य सप् द्वायेण कारणेत वेरियोद्धारा रुप्त में से क्रमीप् सर्म स्वस्था अधिकाराणे वासराविष्ठी छोणास सवि स्थितेक अस्त

सन्ने हुँ इस्परागयन्त्र, ले कि जे देशप्राध्या । स्वागर्य काइरस्टर्क (म) इर्ल्यस्य रही ज्यादिकारी है देशके इनार पेस्टर्मी ह व्याद्व स्वायर्थित । १८ व में नय मार्क नम केस्प्रदे कार्यों कार्याचे कार्याद्व कार्याद्व मार्च केस्ट्र्य स्वायंचिन एपं सानी । सुर्व के पर स्वायंचिन एपं सानी । सुर्व के पर स्वयं एपं सानी । सुर्व के पर स्वयं एपं सानी । सुर्व केस्ट्र्य केस्ट्र्य कार्याव्य कार्य कार्याव्य कार्य कार

जान पेसासि नवरि मज्हेंमजीनं निमान्का १ ता केनेव से तम मन्द्र तन

णं से चेडगे राया सत्तावन्नाए दन्तिसहस्सेहि जाव सत्तावनाए मणुस्मकोडीहिं सगडवृह रएइ २ ता सगडवृहेण रहमुसल सगाम उवायाए । तए णं ते डोण्हवि राईण अणीया सनद्ध॰ जाव गहियाउहपहरणा मगइएहिं फलएहिं निक्कट्ठाहिं असीहिं असागएहि तोणेहिं सजीवेहिं धणृहिं समुक्खितेहिं मरेहिं समुलालियाहिं डावाहिं ओसारियाहिं ऊरुघण्टाहिं छिप्पत्रेण वजमाणेण महया उकिट्टसीहनाय-वोलक्लकलर्वेण समुद्दरवभृयं पिव करेमाणा सन्विद्दीए जाव रवेण हयगया हय-गएहिं गयगया गयगएहिं रहगया रहगएहि पायत्तिया पायत्तिएहिं अन्नमनेहिं सिंदं सपलग्गा यावि होत्या । तए णं ते दोण्हवि रायाणं अणीया नियगसामी-सासणाणुरत्ता मह[या]न्त जणक्खय जणवहं जणप्पमद् जणसवटकप्पं नचन्तकवनध-वारमीम रुहिरकद्दम करेमाणा अञ्चमन्नेण सिद्धं जुज्झिनत ॥ ७० ॥ तए ण से काळे कुमारे तिहिं दन्तिसहस्सेहिं जाव मण्सकोडीहिं गरुलवृहेण एकारसमेण खन्धेण कूणिएण रज्ञा सिद्धं रहमुसल संगाम संगामेमाणे हयमहिय० जहा भग-वया कालीए देवीए परिकहिय जाव जीवियाओ वबरोविए ॥ ७९ ॥ तं एयं खलु गोयमा । काले कुमारे एरिसएहिं आरम्मेहिं जाव एरिसएणं अद्यभकडकम्मपञ्मा-रेणं कालमासे कालं किचा चउतथीए पह्रण्पभाए पुढवीए हेमामे नरए नेरइयताए उववंत्रे ॥ ७२ ॥ काले ण भनते । कुमारे चउत्थीए पुढवीए अणन्तरं उव्व-हिता कहि गच्छिहिइ कहि उवनिजिहिइ <sup>२</sup> गोयमा ! महाविदेहे वासे जाइ कुलाई भवन्ति अहुाइ जहा दढपइन्नो जान सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ जान अन्त काहिइ ॥ ७३ ॥ त एव खल्ल जम्बू ! समणेणं भगवया जाव सपत्तेणं निरयावलियाण पढमस्स अज्ञयणस्स अयमेडे पन्नते-तिवेमि ॥ ७४ **॥ पढमं अज्झयणं** समतं॥१।१॥

जइ ण भन्ते ! समणेण जाव सपत्तेणं निरयाविष्ठयाण पढमस्स अज्झयणस्स अयमेडे पन्नते , दोचस्स ण भन्ते ! अज्झयणस्य निरयाविष्ठयाणं समणेण भगवया जाव सपत्तेण के अडे पन्नते ? एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण्ण चम्पा नामं नयरी होत्या । पुण्णमद्दे उज्जाणे । कृणिए राया । पडमावई देवी । तत्य णं चम्पाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भजा कृणियस्स रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नाम देवी होत्या, सुकुमाल० । तीसे ण सुकालीए देवीए पुत्ते सुकाले नाम कुमारे होत्या, सुकुमाल० । तए णं से सुकाले कुमारे अन्नया कयाइ तिहिं दन्तिसहस्सेहिं जहा कालो कुमारो निरवसेस त चेव भाणियव्य जाव महाविदेहे वासे.. अन्त काहिइ । निक्खेवो ॥ ७५ ॥ वीय अज्झयणं समन्तं ॥ १ । २ ॥





#### णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

## सुत्तागमे

#### <sub>तत्थ</sub>णं कप्पविहंसियाओ

जइ णं भन्ते! समणेण भगवया जाव संपत्तेण उवज्ञाण पढमस्स वगगस्स निरयाव-छियाण अयमहे पन्नते, दोचस्स ण भन्ते ! वग्गस्स कप्पवर्डिसियाण समणेण जाव सपत्तेण कइ अज्झयणा पन्नता र एव खलु जम्नू ! समणेण भगवया जाव सपत्तेण कप्पविंसियाणं दस अञ्झयणा पन्नता, तजहा-पडमे १, महापडमे २, भेद् ३, सुभेद्दे ४, पडमभेंद्दे ५, पडमसेणे ६, पडमगुम्मे ७, नलिणिगुम्मे ८, आणन्दे ९, नन्दणे १० ॥७७॥ जइ णं भन्ते ! समणेण जाव सपत्तेण कप्पवृहिंसियाण दस अज्झयणा पन्नता. पढमस्स ण भन्ते ! अज्झयणस्स कपवर्टिसियाण समणेण भगवया जाव सपत्तेण के अट्टे पन्नते १ एव खछ जम्बू ! तेणं कालेणं तेण समएणं चम्पा नाम नयरी होत्या । पुण्णभेद्दे उज्जाणे । कृणिए राया । पउमावई देवी । तत्य णं चम्पाए नयरीए सेणियस्स रन्नो मजा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया जाली नाम देवी होत्था, चुउमाल । तीसे ण कालीए देवीए पुत्ते काले नाम कुमारे होत्या, चुउमाल ।। तस्स ण कालस्स कुमारस्स पउमावई नाम देवी होत्था, सोमाल॰ जाव विहरइ ॥ ७८ ॥ तए ण सा पउमावई देवी अन्नया क्याइ तसि तारिसगिस वासघरिस अव्भिन्तरओ सचित्तकम्मे जाव सीह द्वमिणे पासित्ताण पडिवुद्धा । एवं जम्मण जहा महावलस्स जाव नामधेज-जम्हा ण अम्ह इमे दारए कालस्स कुमारस्स पुत्ते पडमावईए देवीए अत्तए त होउ ण अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज पउमे पडमे, सेस जहा महावलस्त, अट्टओ दाओ जाव उप्पि पासायवरगए विहरइ। सामी समोसिरए। परिसा निग्गया। कृणिए निग्गए। पडमेवि जहा महाबछे निग्गए तहेव अम्मापिइआपुच्छणा जाव पव्वइए अणगारे जाए जाव गुत्तवम्भयारी ॥ ७९ ॥ तए ण से पडमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्य तहारूवाणं थेराण अन्तिए सामाइयमाइयाई एक्तारस अङ्गाइ सिहजइ २ त्ता वहूहिं चउत्थछद्वद्वम० जाव विह-रह ॥ ८० ॥ तए ण से पउमे अणगारे तेणं ओरालेण जहा मेहो तहेव वम्मजाग-रिया चिन्ता एव जहेव मेहो तहेव समण भगव० आपुच्छिता विउछे जाव पाओ- बगए समाये तहरबानं बेराणं शनितए सामाहसमाहयाई एकारस साहाई बहुती पुज्यादे यह बासमें सामान्यविक्ता, माधियाए सेबेहजाए साहें माहाई बहुती सम्माए । येरा सोहत्या । अगर्व गोमने पुण्या, सात्री बढ़ेंद्र जाव साहें अग्रे समस्याए ऐहात आसोहयपरिकटन उन्हें बनिया सोहस्मे क्यो इस्ताए उससे । यो सामराई ॥ ८९ ॥ से यो सन्दे । पत्रम वेश सान्नो देसकोगाओ आउम्प्यत्वे पुज्या । योग्या। महानिदेशे कार्य बहुतको बाद कर्म कार्येह । से एवं बन्द बन्द्र । सम्मेन बात्र संपत्तियं क्यानी सिनायं प्रमास अन्यत्वयस्य समाहे जार्य-रिवेस ॥ ८९ ॥ एक्स्में अन्यत्वयणं सामणे स २ ॥ १ ॥

क् व सन्ते ! सम्बेची अगवता बाव संतीर्य कामाविद्यामं प्रमास्य कामा राग्स्स कत्ताहै (क्लो होकस्य में मन्ते ! काकावनस्त के कहे पाती ! एवं की तामा ! तेर्च काको स्थापना वामाविद्यासा हिल्ला ! प्रमासे कामाविद्यासा रहे स्था ! प्रमासे कामाविद्यासा रहे स्था ! ता ! कामाविद्यासा हो स्था हिल्ला ! उत्तरे व हाककर उप्तासा हिल्ला ! उत्तरे व हाककर उप्तासा तामाविद्यासा हो हो हो हिल्ला ! उत्तरे व हाककर उप्तासा हिल्ला ! उत्तरे व हाककर उप्तासा हिल्ला ! उत्तरे व हाककर उप्तासा हिल्ला । उत्तरे व हाककर उप्तासा हिल्ला हिल्ला । उत्तरे व हाककर उप्तासा हिल्ला हि

एवं ऐसामि सह नेयमा। माधाओं सरियामाओं। शस्त्रहेंचे दक्षे उपने माधा के स्वपूर्ण (एन्से एक्से उपने प्राप्त माधा सेया है। स्वपूर्ण (एन्से एक्से प्राप्त माधा सेया है। स्वपूर्ण (एन्से माधा सेया है। से से सेया से एक्से एक्



#### णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुरामहावीरस्स

## सुत्तागमे

#### तत्य णं पुष्फियाओ

जइ ण भते ! समणेण भगवया जाव सपत्तेण उवङ्गाण दोचस्स० कप्पवर्डिसियाण अयमहे पन्नते, तचस्स णं भनते ! वग्गस्स उवङ्गाणं पुष्फियाण के अहे पन्नते 2 एव खळ जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण उवङ्गाण तचस्स वग्गस्स पुण्फियाण दस अज्झयणा पन्नता, तजहा—चंदे सूरे सुक्के बहुपुत्तिय पुण्ण माणिभहे य । दत्ते सिवे वले या अणाहिए चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥ जह णं भन्ते ! समणेण जाव सपत्तेण युष्फियाण दस अज्झयणा पन्नता, पडमस्स ण भन्ते! समणेण जाव सपत्तेणं के अहे पन्नते <sup>१</sup> एव खलु जम्बू । तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे नामं नयरे । गुणसिलए उज्जाणे । सेणिए राया । तेण कालेण तेण समएण सामी समीसहै । परिसा निग्गया । तेण काळेण तेण समएणं चन्दे जोइसिन्दे जोइसराया चन्द-वर्डिसए विमाणे सभाए सहम्माए चन्दिस सीहासणिस चर्डाहें सामाणियसाहरसीहिं जाव विहरइ। इम च ण केवलकप्प जम्बुदीवं दीव विजलेण ओहिणा आभोएमाणे २ पासइ २ ता समण भगव महावीरं जहा सूरियाभे आभिओगे देवे सहावेता जाव द्वरिन्दाभिगमणजोग्ग करेता तमाणत्तिय पच्चिष्पणन्ति । ससरा घण्टा जाव विउव्यणा, नवर जाणविमाण जोयणसहस्सवित्थिण्ण अद्धतेवद्विजोयणसमूसियं, महिन्दज्झओ पणुवीस जोयणमृसिओ, सेस जहा स्रियामस्स जाव आगओ, नष्टविही तहेव पहिंगसो ॥ ८६ ॥ भन्ते ! ति मगव गोयमे समणं भगवं० पुच्छा । कूडागारसाला । सरीर अणुपविद्वा । पुन्वभवो । एव खलु गोयमा ! तेण कालेण वेण सम्एण सावत्थी नामं नयरी होत्था । कोहुए उज्जाणे । तत्थ ण सावत्थीए० अङ्गई नाम गाहावई होत्या, अङ्गे जाव अपरिभूए। तए ण से अङ्गई गाहावई साव-रथीए नयरीए वहूण नगरनिगम० जहा आणन्दो ॥ ८७ ॥ तेण कालेण तेणं समएण पासे ण अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा महावीरो नवुस्सेहे सोलसेहिं समणसाहस्सीहिं अद्वतीसाए अजियासहस्सेहिं जाव कोट्ठए समोसढे । परिसा गिगगया ॥ ८८ ॥ तए ण से अङ्गई गाहावई इमीसे कहाए लखद्दे समाणे हुट्रे जहा Anthu

\*\*\*

बार मं मनते ! मामीचं मामचा बान पुण्डियां क्लास्स बाराम का समाद्धे तसी दोक्स कं अन्ते ! आजावन्त पुण्यिकां काले मामचा का संत्रीत के बद्धे तसी १ एवं कहत आन् ! तेल नंदान तेष समाद्यं प्राप्ती गर्मे मार्गे । प्रमानिय कवाणे । सेनिय राजा । उसोस्टर । बारा करते ता सामि साराओं जाव मामीची कंदिकीया पश्चिमको । प्रमानदाक्या । सामनी करते । स्टर्ड तमने गाहानी होता को बहे कहते जाव सिद्दा । साम सामि के सहा अमरी तहिष भन्नपुर, तहिष निराहित्सामणे बान मामिनेहे नारे सिद्धा । सामि बाद अपने करेडिंग । मिनकेक्सो १०३ थ निहार अकामणे समान्त है है १३ है

बहु पं सते । जान स्परेपं जनकाना सामियला। रामियहं सतरे । गुनिकर्य दलाये। ऐसिए राजा। सामी समोसके। परिसा तिरमया। रोपं नाकेनं तेने सम्मर्स प्रान्ते महणाहे सुन्दानिस्प निमाणे सुन्दारि पीहाएकारी नाजही सामानिस्पाहरकी नाही पान्ते रोहेन जानेले गहिन्दि स्वतिस्पादा पीहामधी। मनते । ति। पुन्तार साहा। पुन्तमपुष्टाना। एवं जन्न गोमया। तेण नाहोजी तेणं समाप्तं नाजारी सर्वे नहरी होत्या। तत्व मं नामारासीप नानरीए सोमिले नागे माहन परिस्तर, जहें बार्य मार्परपुर, रिस्तेन नाम स्वरोपिकीस्प। पासे समोसके। परिसा प्रमुक्तारा त प्रमु तए ण तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धद्वस्स समाणस्स इमे एयारुवे भज्झत्थिए०-एवं राखु पासे भरहा पुरिसादाणीए पुन्वाणुपुन्वि जाव अम्बसालवणे विहरइ, त गच्छामि णं पासस्स अरह्यो अन्तिए पाउच्भवामि, इमाइ च ण एयाहवाइ अद्वाइ हेरुड जहा पणणत्तीए। सोमिलो निग्गमो खण्डियविहूणो जाव एव वयासी-जता ते भन्ते ! जवणिज च ते <sup>2</sup> पुच्छा । सरिसवया मासा कुलत्था एगे भव जाव सबुद्धे सावगधनमं पडिवजिता पडिगए॥ ५५॥ तए ण पासे ण अरहा अत्रया कयाइ वाणारसीओ नयरीओ सम्बसालवणाओ उज्जाणाओ पिडिनिक्खमइ २ ता विहया जणवयविहार विहरइ। तए णं से सोमिले माहणे अन्नया कयाइ असाहुदसणेण य अपञ्जुवासणयाए य मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवहुमाणेहिं २ सम्मत्तपज्जवेहिं परिहाय-माणेहिं २ मिच्छत च पडिवन्ने ॥ ९६ ॥ तए ण तस्स सोमिलस्स माहणस्स अन्नया क्याइ पुन्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुम्वजागरिय जागरमाणस्स अयमेग्रारूवे अज्झ-त्यिए जाव समुप्पजित्था—एव खल्ल अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नाम माहणे अचन्तमाहणकुरुप्पस्ए, तए ण मए वयाई चिण्णाइ, वेया य अहीया, दारा आहूया, पुत्ता जणिया, इङ्कीओ समाणीयाओ, पसुव[वर]धा कया, जन्ना जेद्वा, दक्खिणा दिन्ना, अतिही पूड्या, अग्गी हूया, जूवा निक्खिता, त सेय खळु मम इयाणि कल्लं जाव जलन्ते वाणारसीए नयरीए यहिया यहचे अम्यारामा रोवावित्तए, एवं माउलिङ्गा विल्ला कविट्ठा चिन्ना पुष्फारामा रोनावित्तए, एव सपेहेड् २ ता कल्लं जाव जलन्ते वाणारसीए नयरीए बहिया अम्बारामे य जाव पुष्फारामे य रोवावेइ । तए ण बहवे अम्बारामा य जाव पुष्फारामा य अणुपुन्वेणं सारविखजमाणा सगोविजमाणा संबह्धिजमाणा आरामा जाया किण्हा किण्होभासा जाव रम्मा महामेहनिकुरम्बभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिजमाणसिरीया अईव २ उवसोमेमाणा २ चिद्वन्ति ॥ ९७ ॥ तए ण तस्स सोमिलस्स माहणस्स अनया कयाइ पुन्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुद्धम्वजाग-रिय जागरमाणस्स अयमेयारूचे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्या—एव खळु छहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नाम माहणे अचन्तमाहणकुलप्पस्ए, तए णं मए वयाइ चिण्णाड जाव जूवा निक्खिता, तए ण मए वाणारसीए नयरीए वहिया वहवे अम्वा-रामा जाव पुष्फारामा य रोवाविया, त सेय खद्ध ममं इयाणि कह जाव जलन्ते म्रुवहु लोहकडाहकडुच्छुय तम्विय तावसभण्ड घडावेत्ता विउलं असण पाण खाइम साइम मित्तनाइ आमन्तेत्ता तं मित्तनाइनियग० विउन्हेण असण० समाणेता तस्सेव मित्त० जाव जेद्वपुत्त कुडुम्बे ठवेता त मित्तनाइ जाव आपुच्छिता <del>ए</del>वहु लोहकडाहकडुच्छुय तम्विय तावसभण्डगं गहाय जे इमे गङ्गाकूला वाणपत्या

दन्तुक्राक्रिया अम्बज्ञा संस्क्रा नियजना संस्कृतामना कृषियानुका उत्तरपूर्ण संपन्नमा कृतसमा मित्रस्यया इत्नितानसा उद्ग्या हिसापानिवानो वहनारियो विस्तारिको जसनारिको सन्धमुक्तिया सम्बन्धकित्वजो नाउसनित्वजो सेवातमस्बिक् मृत्यद्वारा कन्दाहारा तथाहारा पताहारा प्रथमहारा प्रभाहारा भी बाहारा ग्रीमंदिन करम्बत्यपत्तपुण्यकाद्वारा वकामिसेनकविषणायम्या बायाववादि प्रशासकारे इहाबमोद्रिमं कन्त्रमोद्रिनं पित्र कप्पार्ण करेमात्रा निहरन्त तस्य वं ने त मिन्न-पोरिसामा तावसा तेलि मन्तिए दिमापोनिसमताए पम्पताए, पम्पूरए दि व व ममापे इस एकारने असिमाई असिनिविहस्सामि-कप्पर में जानजीवाए क्येंजें समिनियाचर्य दिसाचरवाकेर्यं त्वोक्स्मेवं तर्बु बाहाको पणिक्तिस २ स्राम्सिस् भावत्वप्रमूनीए भावावेगाणस्य भेदरितप्तिकटुः एवं संपेद्देह २ ता का वाव का वे क्षत्र हो बाद विधापीनिवायतावनताए प्रमहत् । प्रमहत् वि व व सं इमें एवाहर्ग अभिगाह जान जीभियिष्ट्रिया पटमें छट्टरूसमंग स्वसंपीता व निवरः ॥ ९८ ॥ तए यं सोमिके माव्ये तिसी पत्रमञ्जूनकमणपारचंति कामनवम्पीर पनीयहरू र या नामकारणनिमरने नेपन सए सहस्र तेपेन स्वापस्कर् र 🔨 किविजर्सकार्य गेल्हर २ गा पुरस्थिमं विनि पुरुखेर २ गा पुरस्थिमाए दिसार से<sup>मे</sup> महाराना परकाचे परिवर्त मीमरक्चाउ छोमिकमावुनरिनि जामि य तत्व धन्दान व मृत्यमि व तथानि य पंचानि व पुरशानि व कमानि य चीवानि व हरेगानि व वापि अधुजानवित्तरहु पुरम्बारं विश्वं पद्मादः २ चा बावि य तस्य बन्हाने व जान इरियाणि व दाई गेजाइ २ ता क्रिक्सिसंबाहयर्ग मरेइ २ ता दक्से न डिंडे व पतामोई च शमहास्कुलि स गेन्हर् २ ता जैसेन श्रष्ट् चटए तेसेन प्रनामध्यः २ ती किविमर्सकारमाँ ठनेर २ गा नेई बहुँर २ ता उपकेषणसंग्रामा वरेर २ वी बस्भक्तमहरवगर् जेपेव गडा महावई राज्य ठवायच्छर् १ ता गई महावई सेया-इह २ ता असमजर्ण कोह २ ता जसकिई वरेह २ ता असामियर्थ वरेह २ ता सामन्त शोक्ते परमञ्जूष वेत्रपितकमकत्रे वृष्टमद्रममहस्यम् यहानो महावर्षे पशुक्तरह १ ता जैमेन सए उपए तचन तमानकत १ ता बच्चेहि व इसेहि व वार्ट माए य बेई रएह २ ता सरमें करेह ता अरचि करह २ ता तरत्वी मरचि महेद ९ री समित पाउड १ चा समित संयुक्तोड् १ ता समिहाच्छ्राई पहिन्दक १ ता समित इसी केंद्र १ ता मस्मिस्स ब्राह्म् पास लत्त्वाद्र तमावहे । तमहा-तक्कं वरते दावं हे म सर्ग्र क्सर हो। दश्यक्ष तहरूपार्च अह ताई समात्रहें ॥ १ ॥ महुवा स क्ष्य व सर्

\*\*4

लेहि य अग्गि हुणइ, चर्रु साहेइ २ ता वलिवइस्सदेव करेइ २ ता अतिहिपूर्य करेइ २ ता तओ पच्छा अप्पणा आहारं आहारेइ ॥ ९९ ॥ तए ण से सोमिले माहणरिसी -दोचंसि छट्टक्खमणपारणगंसि त चेव सन्वं भाणियन्व जाव आहार आहारेइ, नवरं इम नाणत्त—दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलं माहणरिसिं, जाणि य तत्थ कन्दाणि य जाव अणुजाणउत्तिकहु दाहिणं दिसिं पस-रइ। एव पचित्थिमेण वरुणे महाराया जाव पचित्थिम दिसि पसरइ। उत्तरेण वेसमणे सहाराया जाव उत्तरं दिसिं पसरह । पुन्वदिसागमेणं चतारि विदिसाओ भाणिय-न्वाओ जाव आहारे आहारेइ॥ १००॥ तए ण तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स अन्नया क्याइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयिस अणिचजागरियं जागरमाणस्स अयमेयाहवे अज्झ-त्थिए जाव समुप्पजित्या-एव खळु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिछे नामं माह-णरिसी अचन्तमाहणकुलप्पमूए, तए ण मए वयाइ निण्णाइ जाव जूवा निक्खिता, तए ण मए वाणारसीए जाव पुष्फारामा य जाव रोविया, तए ण मए धुबहुं लोह० जाव घडावेता जाव जेट्टपुत्तं कुडुबे ठवेता जाव जेट्टपुत्त आपुन्छिता युवहु लोह० जाव गहाय मुण्डे जाव पव्यइए, पव्यइए वि य ण समाणे छट्टंछट्टेण जाव विहरामि, त सेय खलु मम इयाणि कल जाव जलन्ते बहवे तावसे दिश्वामहे य पुन्वसगइए य परियायसगइए य आपुच्छिता आसमससियाणि य वहुई सत्तसयाइ अणुमाणइत्ता नागलवत्यनियत्यस्य किढिणसकाइयगहियसभण्डोनगरणस्य कद्वभुद्दाए मुह वन्थिता उत्तरिसाए उत्तराभिमुहस्स महपत्थाण पत्थावेत्तए, एव सपेहेइ २ ता कल जाव जलन्ते वहवे तावसे य दिद्वाभट्ठे य पुन्वसगइए य तं चेव जाव कद्वमुद्दाए मुद्द वन्धइ २ ता अयमेयारूव अभिगाह अभिगिण्हइ-जत्थेव ण अह जलिस वा एव अलिस वा दुरगिस वा निज्ञिस वा पञ्चर्यसि वा विसमिस वा गङ्गाए वा दरीए वा पक्खलिज वा पविष्ण वा, नो खलु में कप्पइ पचुहिताएतिकहु अयमेयास्व अभिग्गहं अभिगिण्हइ २ ता उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहपत्याण पत्थिए से सोमिले माहणरिसी पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागए, असोगवरपायवस्स अहे किढिणसकाइय ठवेइ २ ता वेई वहूं ३ ता उवलेवण-समजाण करेड २ ता दब्भकलसहत्यगए जेणेव गङ्गा सहाणई जहा सिवो जाव गङ्गाओं महाणईओ पञ्चत्तरइ २ ता जेणेव असोगवरपायचे तेणेव उवागच्छइ २ ता दब्मेहि य क़सेहि य वालुयाए य वेड रएइ २ ता सरग करेड २ ता जाव विट-वडस्सदेव करेइ २ सा कह्मुद्दाए मुद्द वन्धइ २ ता तुसिणीए सन्विट्टड ॥ १०१ ॥ तए ण तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स पुन्वरत्तावरत्तकालसमयसि एगे देवे अन्तियं

मई नो मावतः मो परिजालकः बान तुसिचीप् संचिद्धः । सप् वं से देवे सोमिकेन माइजरितिया सनावाद्रजनाये नामेन विश्विं पाशस्मूय तामेन विश्विं पविगर। तए में से सोमिक को जान जसनते नामसमस्यानित्रामे किवियसंग्रहर्य गहान पदिनमण्डोलगरचे क्षुमुद्दाए मुद्दं कम्बद् २ ता उत्तरामिमुद्दे संपर्तवए ॥ ९ ९ <sup>३</sup> तए में से सोमिके निज्ञानिकारिय पुरुषावरम्बकाळसमर्गात जेनेव सत्तवन्त्रे तेनेव उनागए, सत्तवज्ञस्य **महे किवि**यसंबाह्य ठवेह २ ता वेद्रं बहेह बहा क्यो<sup>स</sup> बरपावने जान जरिंग हुच्छ, श्रद्धमुद्दाए सुई कन्नह, तुसिजीए संनिद्धर । ट्यं <sup>ब</sup> तस्य सोनिकस्य पुन्यरत्तावरत्त अभसमयस्य एगे देवे अन्तिवं पातकमूप् । तप् <sup>वं</sup> से देव अन्तरिक्दप्रविषके कहा असोगवरपायवे काव पश्चिपर t तर व से सोमिन्हे 🛍 बाब जसन्ते नागस्थरवनिसरये किविगर्सनाइयं गेण्डइ ९ ता नद्वश्रहाप सर्द कन्बर २ ता कत्तरविसाए कत्तरासिमुद्दे संपरिषण् ॥ १ ३ ॥ तए भे से सोमिन्डे द्यमिक्सम्म पुरुवा(पच्छा)नरम्बुक्सस्यसंग्रंति श्रेणेव श्रसोगवरपानवे हेनेन उनागच्छद्र १ ता असोगनरपायनस्य बाह्ने किविजयं छत्त्रं उनेह १ ता वेर्ड नहेर जान गर्ह सहानई पशुचरह २ ता अथेन असोपनरपानने वेणेन उनामक्कर २ ता असंगवरपाववस्य अहे किटिवसकाइवं उवेद ? ता वेदं रएह १ ता बद्धहार सुई बन्बर २ शा द्वविचीए संबिद्धर । तर् मं तस्य सोमिनस्य पुरूरतावर्यगरी पूरो क्षेत्र अन्तिनं पाडम्अनित्वा तं चेत्र अन्त्र बाव पविगए । तए वं ऐ से<sup>क्षेत्रि</sup> बाव बामन्त्रे वामसवरवनियस्ये क्रिन्गिलंशाइयं बाव क्टूमुद्दाए सुद्दं बन्धर् १ स टत्तराप् रिमाप् रत्तरामिमुद्दे र्सपरिवप् ॥ १ ४ ॥ तप् वं से स्रोमिके बडर<sup>क</sup> निवसपुरमावरम्बनासमामर्थनि जेनेव वटपानवे शनेव उवागए, वहपानवस्य सहै किरिया अवैद २ ता वेद वर्षेद्र, उनसेवलसंग्रज्ञणं करेड् जाव बहुमुहाए मुई बन्धरः तुर्तिजीए सनिद्वरः । तए जे तत्त्व सोमिक्षस्य पुज्यस्तारस्तवानं एगे देवे अन्तिर्य पातकभिरंथा ते पेत मणर बाद पहिताए । तए वे से सोमित बाद करन्त वान-हमन्यनियाथ फिन्जिसकार्य जाव क्षुमुहाए सुद्दं बन्धर् उत्तराए उत्तराभिमुद्दे सुपर्याप् ॥ १ ५ ॥ नए वं सं शोमिके प्रधानिकारिम पुम्बावरण्डालगमपैनि जैमेर उम्मरपायन संघेन उनामण्डर अम्मरपायनस्य अहे शिक्षिणसंगर्न हरेट मेर् बहुर जार बद्धमुराए सुई व वर जाब तुमिणीए संविद्धर । तण जे लग्य सोमिजमाद्दलस्य पुरुष्तावरताससे एव देवे जार एवं बवावी-ई मा सोधना

पव्वह्या ! दुप्पव्वह्यं ते, पढमं भणइ तहेव तुसिणीए सचिद्वड । देवो दोचिपि तचिप वयड-सोमिला ! पन्वइया ! दुप्पव्वइय ते । तए ण से सोमिले तेणं देवेण दोचिप तचिप एव बुत्ते समाणे त देव एवं वयासी-कहं णं देवाणुप्पिया! मम दुप्प-व्वड्यं १ । तए ण से देवे सोमिल माहणं एवं वयासी-एव खळु देवाणुप्पिया ! तुम पामस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अन्तिय पञ्चाणुव्वए सत्तसिक्खावए दुवालसविहे सावयधम्मे पिडवन्ने, तए ण तव अन्नया कयाइ असाहुटसणेण० पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयित कुडुम्बजागरिय जाव पुन्वचिन्तियं देवो उचारेड जाव जेणेव असो-गवरपायवे तेणेव उवागच्छिस २ त्ता किढिणसकाइयं जाव तुसिणीए सचिद्वसि, तए ण पुन्वरत्तावरत्तकाले तव अन्तिय पाउन्भवामि, ह भो सोमिला ! पन्वइया ! दुप्पन्वइय ते, तह चेव देवो नियवयण भणइ जाव पञ्चमदिवसम्मि पुन्वावरण्हकालसमयसि जेणेव उम्बरपायवे तेणेव उवागए किढिणसकाइय ठवेसि, वेड वहुसि, उवलेवण० करेसि २ ता कट्टमुद्दाए मुह वन्धेसि २ ता तुसिणीए सचिट्टसि, त एवं खल देवा-णुप्पिया ! तव दुप्पन्वडय ॥ १०६ ॥ तए णं से सोमिले तं देवं एव वयासी-कह णं देवाणुपिया ! मम सुपव्वडय १ । तए ण से देवे सोमिल एवं वयासी—जइ ण तम देवाणुप्पिया ! इयाणि पुन्वपिडवन्नाङ पञ्च अणुव्वयाङ० सयमेव उवसपिजताण विह-रित तो ण तुज्झ इयाणि सुपव्वइय भवेजा । तए ण से देवे सोमिल वन्दइ नम-सइ व॰ २ त्ता जामेव दिसिं पाउन्भूए तामेव दिसिं पडिगए । तए णं सोमिले माहणरिसी तेण देवेण एव वुत्ते समाणे पुरुवपिडवन्नाई पञ्च अणुव्वयाइ० सयमेव उवसपजिताण विहरइ ॥ १०७ ॥ तए ण से सोमिले वहूहि चउत्थछहुद्वम जाव मासदमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोवहाणेहिं अप्पाण भावेमाणे वहूइ वासाइ समणो-वासगपरियाग पाउणइ २ ता अद्धमासियार सलेहणाए अत्ताण झुसेड २ ता तीस मत्ताइ अणसणाए छेएइ २ ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपिडक्कन्ते विराहियसम्मत्ते कालमासे काल किचा मुक्कविंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिजासि जाव ओगाहणाए सुक्तमह्रगहत्ताए उववन्ने ॥ १०८ ॥ तए ण से सुक्के महरगहे अहणोव-वन्ने समाणे जाव भासामणपज्जतीए । एवं खलु गोयमा ! सुक्केणं० सा दिव्वा जाव अभिसमन्नागया । एग पलिओवम ठिई । सुक्के ण भन्ते ! महग्गहे तओ देवलोगाओ आउक्खएणं० कर्हि गच्छिहिइ २ १ गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झि-हिंड ५ । निक्खेवओ ॥ १०९ ॥ तह्यं अज्झयणं समत्तं ॥ ३ | ३ ॥

जइ ण मते ! उक्खेवओ । एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे । गुणसिलए उज्जाणे । सेणिए राया । सामी समोसढे । परिसा निग्नया

॥ ११ ॥ तेर्ज करकेर्ण तेर्ज समपूर्ण बहुपुत्तिमा देवी सोहरमे कप्पे बहुपुतिए विमाने समाप् ध्रहमाप् बहुप्रामिश्री सीहासपीर चढी समाविक्सहरवीर चनके सहचारेवादि जहां सुरियांने जान मुख्याणी निहरहे, हमें च ने बक्तनमें बम्ब्रुप्तैनं चीनं बिटकेणं कोहिणा बासीयमाणी २ पासत्र २ ता समर्थ समर्थ स्था-नौरं बहा सुरैजाओ काव नर्मकिया चीहासणवरंखि पुरत्वाभिमुहा सजिसच्या । आनि नोया बहा सुरियामस्त स्वरा क्या भामिभोगियं देव सहावेद्, जानस्मानं बोस्पसहरसमितिकणं जामविमाणकवाको काव उत्तरिक्रेणं निमाकस<sup>मीर्व</sup> चोयजसाहरिसएई विस्महेर्दि भागमा नहा स्टिनामे । चम्मक्हा सम्मता । तर् वं सा बहुप्रतिमा देवी बाद्विणं सुध परारेड् वेष्ट्रमाराणं बहुसम दवस्मारिया<sup>म व</sup> नामाओं भुयाओं कदस्ये तथानन्तरं च में बहुने दारया य दारियाओं न किम्स्य व किन्सिनाओं य जिल्ला, अधिकि जहां सरियामी उपविद्या पश्चिमना प्र १९<sup>९ है</sup> मन्ते | ति अगर्व गोयमे धुमण भगर्व सहावीरं वन्त्रह नर्मघर । कुलगारसाम ! बहुपुतिबाए ने सन्ते । बेबीए सा विच्या वेक्ट्री प्रच्या काव असिस्सवस्थानी पूर्व बहु गोयमा । तेर्व काकेन तक समपूर्व बायारची गाम नवरी अम्बसास्ट्रि उजाने : तस्य ने वाजारसीए जयपीए महे नामें सल्बनाई होत्वा अने वर्त नपरिसूप् । उत्स मं सङ्ग्रस समार नाम भारिया सरमास वन्ना सन्धानार विकास प्परमादा नानि होरेगा ॥ १९२ ॥ तए गं ग्रीचे धमहाए संस्थाहीए अन्नना कर्नन पुम्मरत्तावरत्तराचे कुदुस्वकागरिवं कागरमाशीध इमेशाववे बाव सकमे स्ट्राम-कित्ना---पूर्व प्रश्न कई मोर्च सत्वनाहेर्ण सुद्धि केरकाई मोगमोनक सुक्रमानी निहरामि भी चेद ण कह वारण वा दारियं वा प्याया र्थ प्रजानो वं ताला अम्म-बालो बाद पुरुद्धे में तासि कम्मवानं मनुषवस्भवीतियपुके बाति सबै निम्ह संमृत्याई अमहरक्षकार्य शहरसमुद्रावयाचि सन्त्रण(संज्ञुक)प्यवन्यिवालि अवसूर्व-करवादेसमार्य कमिसरमापनाणि पण्डमन्ति पुणी स क्रोमककमध्येनमेंहै इत्येही मिष्दिनं उच्चत्रनिविधानि बेन्ति समुक्तावप् समहरे पुन्ने पुन्ने सस्तवप्यमिष् आहे में अवका लयुक्ता करवयुक्ता एका एवमकि न पत्ता आहेव वान हिनाई ॥ १९३॥ तर्ग काकेण २ सम्बदानो में कजाओ हरियासमिनाको मासास्टिताको प्रथमास्तिमान्तो कायाणमण्डमत्तिन्त्रकेषणास्तिमान्त्रो स्वारपास्यकक्षमङ्गर्सेवानः पारिकुम्बनासमियाको मण्युतीको नक्ष्युतीको नावयुतीको युक्तिन्दमान्ते पुतानम बारिबोओ बहुरसुवाओ बहुपरिवाराको पुव्यालुपुक्ति बरमाजीओ पायख्याने वह न मानीओ जेनेत बाजारसी धयरी रोपेब उदायदा स्वामक्कता व्यापिकता व्यापिकता

ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा॰ विहरन्ति ॥ ११४ ॥ तए ण तासि सुन्वयाणं अज्जाण एगे सघाडए वाणारसीनयरीए उचनीयमज्ज्ञिमाड कुलाई घरसमुदाणस्स भिक्खा-यरियाए अडमाणे भह्स्स सत्थवाहस्स गिह अणुपविद्वे । तए ण सुभद्दा सत्यवाही ताओ अजाओ एजमाणीओ पासइ २ ता हट्ट० खिप्पामेव आसणाओ अन्भु-हेड २ ता सत्तहपयाई अणुगच्छड २ ता वन्दइ नमसइ वं० २ ता विउठेण असणपाणखाइमसाइमेणं पिंडलामेत्ता एव वयासी—एवं खळु अह अजाओ ! महेण सत्यवाहेण सिद्धं विजलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरामि, नो चेव ण अह टारग वा दारिय वा पयायामि, त भन्नाओं ण ताओं अम्मयाओं जाव एत्तो एगमवि न पता, त तुन्मे अजाओ । वहुणायाओ बहुपिटयाओ चहूणि गामागरनगर जाव सनिवेसाइ आहिण्डह, वहूण राईसरतलवर जाव सत्यवाहप्पभिईण गिहाइ अणु-पितसह, अतिथ से केइ कहिंचि विज्ञापओए वा मन्तप्पओए वा वमण वा विरेयण वा वित्यकम्म वा ओसहे वा मेसजे वा उवलदे, जेण सह दारगं वा दारिय वा पयाएजा १ ॥ १९५ ॥ तए ण ताओ अजाओ सुभइ सत्यवाहि एव वयासी-अम्हे णं देवाणुप्पिए! समणीओ निग्गन्थीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तवम्भया-रिणीओ, नो सलु कप्पइ अम्ह एयमट्ट कण्णेहिवि निसामेत्तए किमङ्ग पुण उद्दिसित्तए वा समायरित्तए वा, अम्हे णं देवाणुप्पिए! नवर तव विचित्त केवलिपन्नत्तं धम्म परिकहेमो ॥ ११६ ॥ तए ण सा समहा सत्यवाही तासि अजाण अन्तिए वम्म सोचा निसम्म हट्टतुट्टा ताओ अजाओ तिक्खुत्तो वन्दइ नमंसइ व० २ ता एव वयासी सहहामि ण अज्ञाओ! निग्गन्थ पावयण, पत्तियामि ण रोएमि ण अजाओ। निम्मन्य पावयण, एवमेय तहमेय अवितहमेय जाव सावगधम्मं पडिवजाए, अहाम्रह देवाणुप्पिए! मा पिडवन्ध करेह, तए णं सा सुमहा सत्थवाही तासि अजाणं अन्तिए जाव पडिवज्जइ २ ता ताओ अज्जाओ वन्दइ नमसइ वं० २ ता पिडिविसज्जइ। तए ण सा भुमद्दा सत्थवाही समणोवासिया जाया जाव विहरइ ॥ १९०॥ तए ण तीसे सुमहाए समणोवासियाए अन्नया क्याइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयसि कुडुम्बजागरिय जागरमाणीए अयमेयास्वे अज्झत्यिए जाव समुप्प जित्या—एव खलु अह मद्देण सत्थवाहेण० विउलाइ भोगभोगाइ जाव विहरामि, नो चेव ण अहं दारग वा , त सेय खलु मम कल जाव जलन्ते महस्स आपुच्छिता सुन्वयाण अज्ञाण अन्तिए अज्ञा मवित्ता आगाराओ जाव पन्वइत्तए, एव सपेहेड २ ता कल्ले जेणेव भेद्दे सत्यवाहे तेणेव उवागया करयल जाव एव वयासी-एवं खलु अह देवाणुप्पिया! तुन्भेहिं सिद्धं बहुइ वासाइ विजलाइ

मोगमोगाई जान विश्रामि को चेव वं कार्य वा बारिम वा प्रवासि है इच्छामि वं देशकुणिया ! तुब्सेहिं अव्यक्ताया समाची सम्बद्धार्थं समावं वार पन्नशत्तप् ॥ १९८ ॥ तप् ज से मोह सरभवाई समाई सरभवाईि एवं बनासी-मा बे द्वमं देवालुप्पिए । इमानि मुण्या चाव यन्त्रवाहि, मुबाहि दान देवालुप्पिए । मर सर्दि निरुवाई मोगगोगाई, तभो पच्छा भुतामोई सुम्बयार्ण बजाय बाद पन्नवर्दि । तप् ज सुभावा सरक्षणावी अवस्था एकपर्छ नो परियाजक । दोर्विय तर्विय सम्ब सरवयाही महं सत्ववाहं एवं वयासी-इकाममि च वेवालुप्पमा ! हुम्मोई बन्न्ड बाना समाजी बाब पव्यक्ताए । तए वं से महे सत्यनाहे वाहे मो स्वाएर नहीं भारतपादि व एवं प्रवच्यादि य सञ्चवपादि य निमवनादि य आवनितए वा वार निवनित्तए वा ताडे मन्त्रमए चंब छमहाए निवन्त्रमर्ग ब्युमवित्वा ॥ १९५ ॥ तर् र्ष सं सह सरवदाहे लिटले असर्प ४ उवक्सकाविक मिछनाइ तमी परका सेवर् वेकाए जान निस्ताह - स्कारेड संगानेड, ग्रमह सरवनाई न्हार्थ सम्बार्कश्रासीत सिर्ग पुरिसम्बर्ग्यक्षिणि चीमें दुरहेद् । तथी था समदा सत्ववाही मितनाद <sup>बार्</sup> संगन्धिसपरितुदा अभिवङ्गीए बाब रहेणं वासारसीनश्रसीए मर्ज्यामञ्चेनं जे<sup>लेस</sup> पुम्बनार्यं भन्नार्यं वयस्तार् वेथेन अवागन्त्रव्य १ ता पुरिसम्बद्धमाहिति वैने टके समा स्वाह समानी प्रवासिक ॥ १२ ॥ तए व महे स्ववह स्व सरकार्दि पुरको कार्व जेनेक छन्यता अमा तेनेक उत्तराज्य २ हा हानवासे भजानो बन्दर गमध्य वं २ ता एवं बनासी-एवं 📆 देवलुध्यिना 🖁 छन् सरकाही मम भारिया शुद्ध करता बाद मा वे बाह्या चिकिया विभिया विभिया बादना निमेद्दा होगामङ्का फुछन्तु, एव वं वेशजुप्पया ! संवारमविकासा दीवी जन्म(न)मरमार्थ देशानुम्पिमाणे बन्तित् शुन्मा मनिता बान मन्त्रमार, त एवं कर देवालुप्पिमार्गं शीरामीमिक्य दक्षमामि पक्षिकान् भं देवालुप्पिना । शीनमी मिन्द्र्य । क्वासूर्व वेनालुप्पिया आ पविवार्ग्य करेब ॥ १२१ ॥ तए वं सा द्वानी स्त्रवाही ग्रम्बमाहि समावि एवं बुता समावी हु समीव बामरवाहाहेगार र्कोमुक्द १ ता सबसेव स्वमुद्धिनं सोर्थं करेड् १ ता अनेव सम्बन्धां समासी रोनेव बनायरक्य २ शा ग्रम्भवामो अज्ञामो तिचवतो सावाहितपवाहिनेन इन्दर् नमंतर वं २ ता एवं बवारी-जाभिते नं अन्ते 'बहा देवाबाना तहा क्यारी जान क्षत्रा जान शहर शुस्त्रम्थारिणी ॥ १९२ ॥ तए जे सा प्रमहा अजा अवस नगर् बहुनकरस चेवरने समुध्यिया जान कालोकाण जनमानो व उपार्च व पास्त्रवामं च असरामं च नद्रणायि व अवनं च नज्यमं च चुन्नमं च चेन्नपानि

य खज्जलगाणि य खीर च पुष्फाणि य गवेसइ गवेसिता वहुजणस्स दारए वा दारिया वा कुमारे य कुमारियाओं य डिम्मए य डिम्भियाओं य अप्पेगइयाओं अञ्मङ्गेइ, अप्पेगइयाओ उन्बहेइ, एव फासुयपाणएणं ण्हावेइ, अप्पेगइयाणं पाए रयइ,० ओट्ठे रयइ,० अच्छीणि अक्षेड्,० उग्रुए करेड्,० तिलए करेड्, अप्पेगड्याओ दिगिंदलए करेइ, अप्पेगइयाण पन्तियाओ करेइ, अप्पेगगाइ छिजाइ करेइ, अप्पेगइया वण्णएण समालमइ,० चुण्णएण समालमइ, अप्पेगइयाण खेल्लणगाई दलयइ,० खज्जलगाई दलयह, अप्पेगइयाओ खीरभोयण भुजावेइ, अप्पेगइयाणं पुष्फाइं ओसुयइ, अप्पे-गइयाओ पाएस ठवेइ, जंघास करेइ, एव ऊरूस उच्छक्ते कढीए पिट्टे उरिस खन्धे सीसे य करयलपुडेण गहाय हलउलेमाणी २ आगायमाणी २ परिगायमाणी २ पुत्तपिवास च धूयपिवास च नत्तुयपिवास च नत्तिपिवास च पचणुभवमाणी विहरइ ॥ १२३ ॥ तए ण ताओ झन्वयाओ अजाओ सुमद्दं अज एव वयासी-अम्हे णं देवाणुप्पिए! समणीओ निरगन्थीओ इरियासियाओ जाव गुत्तवम्भयारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ जातककम्म करेत्तए, तुम च ण देवाणुप्पिए! बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया जान अज्ञोवनना अञ्भङ्गणं जान नित्तिपिनास ना पचणुभनमाणी विहरसि, त णं तुमं देवाणुष्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पाय[प]च्छित्त पडिवजाहि ॥ १२४ ॥ तए ण सा सुमहा अज्जा सुव्वयाण अज्जाण एयम्द्र नो आढाह नो परिजाणह अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरह । तए णं ताओ समणीओ निग्गन्थीओ ध्रमद्दं अज हीलेन्ति निन्दन्ति खिसन्ति गरहन्ति अभिक्खण २ एयमद्व निवारेन्ति ॥ १२५ ॥ तए ण ती[ए]से सभदाए अजाए समणीहिं निग्गन्थीहिं हीलिजमाणीए जाव अमिक्खण २ एयमद्व निवारिज्ञमाणीए अयमेयारूवे अज्झात्थिए जाव समु-प्यजित्या—जया ण अह अगारवास वसामि तया णं अहं अप्पवसा, जप्पभिङं च ण अहं मुण्डा भवित्ता आगाराओ अणगारिय पव्वइया तप्पिसिइं च णं अह परवसा, पुन्ति च समणीओ निग्गन्थीओ आढेन्ति परिजाणेन्ति इथाणि नो आढाएन्ति नो परिजाणन्ति, त सेय खलु मे कल जान जलन्ते सुन्वयाण अज्जाण अन्तियाओ पिंडिनिक्खिमित्ता पाडिएक उवस्सय उवसपिजताण विहरित्तए, एवं सपेहेइ २ ता क्छ जाव जलन्ते सुन्वयाण अजाण अन्तियाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता पाडिएकः उनस्मयं उनसपजिताण विहरइ। तए णं सा सुभद्दा अजा अजाहिं अणोदृद्धिया अणि-वारिया सच्छन्दमई वहुजणस्स चेडहवेसु मुच्छिया जाव अञ्भङ्गण च जाव नित्त-पिनास च पचणुभनमाणी विहरइ ॥ १२६ ॥ तए ण सा सुभद्दा पासत्था पासत्थविहा-रिणी एव ओमना ओसन्नविहारिणी कुसीला कुसीलविहारिणी ससत्ता ससत्तविहारिणी

**बुव्यव**नी

... भद्राप्टन्या अदासन्दिवहारिणी भट्टई वासाह सामण्यपरिवाध पाउचाई ९ ता बदमी

सिमाप् चेनेहप्पाए जनार्थः शीर्धं भताइ अणसपाए छेट्ना सुरुस ठावस्य अर्थाः मोद्यपंडिकन्ता भारत्मासे बाल किया सोहम्मे कृप्ये बहुपुतिमाविमाने उपनास्थान देवनमध्यांति देवद्यन्तरिया अहमस्य असंखेळशायमेताय खोगाहणाए वरुप्रतिन देखिताए उनका ॥ १२० ॥ तए जं सा बहुपुतिया देवी अनुचीवकसंता समार्थ प्रविद्याए प्रजातीय जान आधारमणप्रजातीय, पूर्व राख गोवसा ! बहुपुत्तिबाय देवीय सा विस्ता देखिनो जान अभिसमजागया ॥ १९८ ॥ से केनदेनो अन्ते ! एने उन्दर-बहुपुरित्मा देवी २ १ गोयमा ! बहुपुरित्मा में देवी जाहे जाहे छङ्स हैकिय्स देवरती उवस्थानिवर्ण करेप्र साहे २ वहवे दारए व बारियाली व क्रिम्मए व बिस्मिमाओं य निजम्बह २ शा जेवेब एके देनिन्दे देवराया रोचेब रावासक्य १ शा सकस्य वंत्रिम्बस्य बेवरको विक्यं वेत्रिक्ष विक्यं देवळाई विक्यं ववाप्तनामं उपविदे से तन्त्रेणं योगना ! एवं कुण्य-वहुपुत्तिया देशी २।वहुपुत्तियाए वा सन्ति ! देशीर केनहर्म काम ठिर्दे पकता ? गोयमा ! कतारि पक्तिनोवमाई ठिर्दे पकता । बहुप्रतिना व मन्ते । देवी वाओ देवलोगाम्नो भाउवन्त्रपूज ठिज्यसपूर्ण अस्वसार्ण अस्त्रसार्थ वर्ष **भदता नहिं गच्छिद्दि नदि उन्हणिदिद**ी गौथमा ! इद्देव चम्मुद्दीने हीने जारहे वर्षे निम्सामिरिपायम्बे निमेक्टनिवेधे माहण्डलंकि वारियताए क्वामाक्रिट ॥ १९५ ॥ तर् य तींचे दारियाए भन्मापियरी एकारसमे दिवसे बीहरूको जान बारसेई दिवसे बीइकरवेहिं अयमेवारचं नामकेजं करेन्ति—होत यं अस्ट इमीसे हारिवाद नामके दोमा ॥ १३ ॥ तए व दोमा उन्सुक्रवासमाना विकायपरिवयमेता कोव्यक्रमञ्जूषा क्षेण य कोव्क्सेस स काक्न्मेय व तक्षिद्धा तक्षिद्धातरीत काव समिस्सर । तप व र्त सीमं वारिनं सम्मापियरी उम्मुद्रशासमानं विश्वपरियममेतं सोम्बन्यस्युपर्यः पविकृतियम छोत्रेलं पडिक्कपूर्णं निजगस्स शहकेकस्य रहकूतस्य सारिक्ताए वक्दरगरः । सा में तस्सः भारिया अनिरसः इक्षः करना कन्नः सम्बन्धन्यस्ताना रोक्षकेमा इस ग्रासंगोनिका चेळपे(का)का इस ग्रासंपरिकाहिका रजनर रक्ताों विश प्रसारनिकास प्रस्त्येनिया मा र्ज सीमं वाच निनिद्वा रोमानक्षा कुरान्द्र ॥ १३९ ह तए पं चा सोमा माइणी स्क्रुपूर्वेणं सर्वि नितकार मामगोगले सुक्रमाणी सक्ष्मारे २ जुसमर्ग प्रशासमानी घोसपेक्ष पंत्रकरिक्ष वरीय दारमस्त्रे प्रशास । तए वं सा सोमा मामूची तेहें बहुरे बारगेक्षिय बारमाहि य कुमारेक्षि व कुमारेक्षि व विस्मपृष्टि य विभ्मित्राहि य कप्पेयहपृष्टि उत्तानक्षेत्रपृष्टि व व्ययेयहपृष्टि व पृद्धि म कच्चेयपृद्धि पीइयगापृत्ती अच्चेयश्पृत्ती वरंगणपृत्ती अच्चेयगुर्द्धि पर्दश्यमानी

अप्पेगइएहिं पक्कोलणएहिं अप्पेगइएहिं थण मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं खीर मग्ग-माणेहिं अप्पेगइएहिं खेल्लणय सग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं खज्जग सग्गमाणेहिं अप्पेगइ-एहिं कूर मग्गमाणेहिं पाणिय मग्गमाणेहिं इसमाणेहिं रूसमाणेहिं अक्रोसमाणेहिं अक्कुस्समाणेहिं इणमाणेहिं विप्पलायभाणेहिं अणुगम्ममाणेहिं रोवमाणेहिं कन्दमाणेहिं विलवमाणेहिं कूवमाणेहिं उक्कूवमाणेहिं निद्दायमाणेहिं पलवमाणेहिं दहमाणेहिं दसमाणेहिं वममाणेहिं छेरमाणेहिं मुत्तमाणेहिं मुत्तपुरीसविमयसुलित्तोवलिता मङ्ल-वसणपुचहा जाव असुइवीभच्छा परमदुग्गन्या नो सचाएइ रद्वकृडेण सार्द्धे विउलाई भोगभोगाइ भुजनाणी विहरित्तए ॥ १३२ ॥ तए णं तीसे सोमाए माहणीए अन्नया क्याइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयित कुडुम्बजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे जाव समुप्पजित्था-एव खल्ल अह इमेहिं वहूहिं दारगेहि य जाव डिम्भियाहि य अप्पेग-इएहिं उत्ताणसेजएहि य जाव अप्पेगइएहिं मुत्तमाणेहिं दुजाएहिं दुजम्मएहिं हयविप्पहयमग्गेहिं एगप्पहारपिंडएहिं जेण मुत्तपुरीसविमयसुलित्तोवलिता जाव परम-दुव्भिगन्धा नो सचाएमि रहुकूडेणं सर्दि जाव भुजमाणी विहरित्तए, त धनाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव जीवियफले जाओ ण वन्झाओ अवियाउरीओ जाणुकोप्पर-मायाओ सुर्रिमसुगन्धगन्धियाओ विउलाइ माणुस्सगाई भोगभोगाइ भुजनाणीओ विहरन्ति, अह ण अघन्ना अपुण्णा अकयपुण्णा नो सऱ्वाएमि रहकूडेण सिद्धं विउलाइ जाव विहरित्तए ॥१३३॥ तेण कालेण तेण समएण सुव्वयाओ नाम अजाओ इरियासमियाओ जाव वहुपरिवाराओ पुन्वाणुपुन्वि जेणेव विमेले सनिवेसे अहापिडिह्न उग्गह जान निहरन्ति । तए ण तासिं सुन्वयाण अज्जाण एगे सघाडए विमेले सनिवेसे उच्चनीय॰ जाव अहमाणे रहुकूहरूस गिह अणुपविद्वे । तए ण सा सोमा माहणी ताओ अजाओ एजमाणीओ पासइ २ ता हट्ट० खिप्पामेव आसणाओ अञ्भुद्देह २ त्ता सत्तद्वपयाइ अणुगच्छड २ त्ता वन्दइ नमंसइ वं० २ त्ता विउल्लेणं असण ४ पडिलामेइ २ ता एव वयासी-एव खलु अह अजाओ ! रहकूडेणं सिद्धं विउलाइ जान सनच्छरे २ जुगल पयामि, सोलमहिं सनच्छरेहिं वत्तीस दारगहने पयाया, तए ण अह तेहिं वहूहिं दारएहि य जाव डिम्भियाहि य अप्पेगडएहिं उत्ताणसेजएहिं जाव मुत्तमाणिहिं हुजाएहिं जाव नो सचाएमि विहरित्तए, त उच्छामि ण अह अज्जामो ! तुम्ह सन्तिए धम्म निसामेत्तए । तए ण ताओ अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्त केवलिपन्नत धम्म परिकहेन्ति ॥ १३४॥ तए ण सा मोमा माहणी तासिं अजाण अन्तिए धम्म सोचा निसम्म हट्ट जाव हियया ताओ अजाओ वन्दर् नमसर् व० २ ता एव वयासी-सद्दामि ण अजाओ ! ५० सुत्ता०

निमान्त्रं पात्रवर्ण जाव अच्छाद्वीमि जं अज्ञाओ । निमान्त्रं पात्रवर्ण एवमेर्व अज्ञान्ते । जान से महेर्य हुन्से नगह, भे नगर जजाओ। रहुपूर मायुक्तामि हर ने मह देशकुप्पिशायः सन्तिए सुण्या जाव पश्चशामि । सङ्गासाई देशाकुप्पए ! मा प्रदे षर्भ । तपु में था सोमा माहणी वास्त्रो अज्ञाओ कन्यह नर्मछइ वं १ <sup>छा</sup> परिविक्तांत् ॥ १३% ॥ तए में सा सीमा माहणी बेजेन रहरूके रोमेन उपानन कर**्म** एव पमाची-एवं **ब**श्चमए देवालुप्पिना । समाच सन्तिए वामे तिस<sup>न्</sup>ते से नि न ने बस्से इन्किए भाव सभित्तरं, तप नं शहं बेबलुप्सिंग ! इस्सेंबैं अन्यक्षयाचा सम्बदार्ण अजार्ण जाव प्रवाहतप् ॥ १३६ ॥ तप् में हे रहन्द्रे सेर्प माइकिं एवं बवाधी-मा थे दुर्ग देवखांथिए। इसावि मुख्या मनिता बाव क्ष्मवाहिः मुकादि ताब देवालुप्पिए ! अए सर्वि निरुक्तई मोगमोगाई तुओ एका मुहामें प्रम्मभाज अञ्चानं अन्तिए सुण्या काव प्रम्मनाहि ॥ १३७ ॥ तए वे ता छेन् माद्रणी न्द्राता अप्पत्रहरवातरवार्वक्षितसरीरा चेवियानक्वाक्षरिकेरण सं<sup>त्री</sup> मिहाओ पडिनिक्कमत १ चा विशेलं संतिवेसं सञ्जंतपन्तेयं वैकेन प्रव्या<sup>ने</sup> अञार्ण चनस्पर तेनेव क्यागच्छा र ता क्ष्मवालो अञाको सन्दर <sup>सर्वद</sup> पमुचासङ् । दए नं तानो सुन्वयानो वाजाओ सोसाए माङ्गीए विनित्तं काहिराहर्य कर्म परिकट्टेन्टि जहां जीवा वज्कान्ति । तप ये सा सोमा माहनी प्र<sup>व्यवार्थ</sup> कवानं करिएएं काव पुनासंधरिष्टं शाकाश्वरमं पविवक्तः २ शा <del>श्रमानाको समाने</del> बन्दह कर्मसह वं २ ता बामेव दिसि पासक्त्रता तासक हैसि परियमा। तर वं चा चीमा मा**इजी अ**मणोवासिया जाया अभिगय वाव अप्यार्थ भावेमाची विदर्ह। चए नं तान्ते सम्बनानो भवानो सक्ता कताइ विशेषाको संनिवेतानो परिनिक मन्ति २ ता बहैना अवस्थितहारं विहरन्ति ॥ १३४ ॥ तए ने टानो छन्नामी सम्माओं नक्षमा क्यांक पुन्नालपुर्निः। बाब निहरन्ति । तए वे सा सेमा माह<sup>बी</sup> इमीरी बहाए स्वाप्ता समानी हड्ड व्याना तहेब निस्पना बाम बन्दर नमर्टर वं २ ता बच्ने क्षेत्रा बाव नवरं रहकुटे आयुक्तामि तए वं पन्यमामि। व्यापरं तप् भं सा स्प्रेमा मादणी सम्मने अर्ज वन्यद वर्तस्य व २ ता सम्मना अन्तितामो पश्चिमितवाद्य २ ता वेपेन छए थिवे केनेन रहन्दे हेवेन उपार क्स्य १ ता करमल तहेन आयुक्तस् बान पन्धशत्। महातहं देशानुध्यार मा पडिक्ल्मं । तए यं से रक्ष्यूके मित्रकं आराणं तहेर कान पुल्वमन् शुम्बर जाब सन्त्रा जाना इरियाससिमा जान ग्रास्त्रमनारियी ॥ १६९ म तप् म सा सीमा अजा सम्बन्ध अजार्च अनिवस् समाहनमाहनम् एकारस

अङ्गाइं अहिजाइ २ ता वहूिं छट्टहमदसमदुवालस जाव भावेमाणी वहूइं वासाइं सामण्णपिरयागं पाउणइ २ ता मासियाए सल्हेहणाए सिंह भत्ताइ अणसणाए छेइता आलोइयपिडक्कन्ता समाहिपत्ता कालमासे काल किचा सक्कस्स देविन्दस्स देवरजो सामाणियदेवताए उवविज्ञिहिइ। तत्थ णं अत्थेगइयाण देवाण दो सागरोवमाइं ठिई पन्नता। १३९॥ से ण भन्ते! सोमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण जाव चय चइता किंह गच्छिहिइ किंह उवविज्ञिहिइ गोयमा! महाविदेहे वासे जाव अन्तं काहिइ। निक्खेवओ॥ १४०॥ चखत्थं अज्झयणं समत्तं॥ ३ । ४॥

जइ णं भंते ! समणेण० उक्खेवभो । एवं खळु जम्वू ! तेणं काळेणं तेण समएण रायगिहे नाम नयरे । गुणसिलए उज्जाणे । सेणिए राया । सामी समोसरिए । परिसा निरगया ॥ १४१ ॥ तेण कालेण तेण समएण पुण्णभद्दे देवे सोहम्मे कप्पे पुण्णमें विमाणे सभाए सुहम्माए पुण्णभद्दि सीहासणिस चर्जाहें सामाणियसाह-स्सीहिं जहा सूरियामो जाव वत्तीसइविहं नष्टविहिं उवदंसिता जामेव दिसिं पाउच्भूए तामेव दिसिं पिंडगए। कूडागारसाला। पुञ्चभवपुच्छा। एवं खळु गोयमा! तेणं कालेण तेण समएण इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे मणिवइया नाम नयरी होत्या, रिद्धः । चन्दो राया । ताराइण्णे उज्जाणे । तत्थ ण मणिवइयाए नयरीए पुण्णभद्दे नाम गाहावई परिवसइ, अङ्ग्रे० । तेण कालेण तेण समएण थेरा भगवन्तो जाइ-सपना जाव जीवियासमरणमयविष्पमुक्ता बहुस्सुया बहुपरिवारा पुव्वाणुपुट्वि जाव समोसढा । परिसा निग्गया । तए ण से पुण्णभद्दे गाहावई इमीसे कहाए लद्धहे॰ ६६० जाव जहा पण्णासीए गङ्गदत्ते तहेव निग्गच्छ जाव निक्खन्तो जाव गुत्त-वम्भयारी ॥ १४२ ॥ तए णं से पुण्णमद्दे अणगारे भगवन्ताण अन्तिए सामाइय-माइयाइ एकारस अङ्गाइ अहिजाइ २ ता बहूहिं चउत्यछहद्वम जाव भाविता बहूई वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ २ ता मासियाए सलेहणाए सर्डि मत्ताई अणसणाए छेड्ता आलोइयपडिकन्ते समाहिपत्ते कालमासे काल किचा सोहम्मे कप्पे पुण्णमेहे विसाणे उननायसभाए देवसयणिज्ञसि जाव भासामणपज्जत्तीए ॥ १४२ ॥ एव खलु गोयमा ! पुण्णमद्देण देवेण सा दिन्ना देविङ्की जाव अभिसमन्नागया । पुण्णभद्दस्स ण मन्ते ! देवस्स केवइय काल ठिई पन्नता व गोयमा ! दो सागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता । पुण्णभद्दे ण भन्ते ! देवे ताओ देवलोयाओ जाव कहिं गच्छिहिइ कहिं उवविजिहिइ<sup> २</sup> गोयमा । महाविटेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अन्त काहिइ । निक्रोवओ ॥ १४३ ॥ पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥ ३ । ५ ॥

कर में गीठी एसकेण जनकेन को। एवं एक कम्यू ी तेनं वाकेनं हैनं समार्षं एनिमों पनरे । गुम्पिक्य जनायो । सेनिए राजा । सानी समोसिए ए १४८ । तेनं आकेमं तेनं समार्ण माधिनारे वेने समार् प्रसम्मार माधिनारेश तीवाण्यां जनारे सामान्यित्याहरसीहिं कहा गुण्यमहो तोवा जागमणं माजियों प्रमान्त पुन्वा । समियों नदी मानिमों माहान्ति तेराणं निराप पन्यां एवारिस मार्य अहिन्या, नदूर्वं नासारं परिवाको मासिया संक्षाणा सक्ति मार्ता मानिमों विमाने जनवानो हो समारोबमार्ग् तिहे, महानिमेंहे वासे विजिक्तिहर । निर्मे

वजो ॥ १४५ ॥ छाई सम्बायप्यं समर्त्तं ॥ ३ । ६ ॥ एवं दत्ते ७ सिवं ४ क्वे ९ कामाक्ष्य १ सम्बे बहा पुरूपमे देवे । स्व्यंति यो सामग्रेसमार्वं तिहे ॥ किमाया वेदस्यिकामा । ग्रुव्यव्यं दत्ते कन्द्रणायार्थं एवि मिह्नाए, ब्वे हस्थिवपुरं नवरे अवाविष् कारन्धीए । उच्चानाई वहां स्वरं परंतु ॥ १४६ ॥ ३ । १० ॥ पुष्पित्याको समस्तायो ॥ तद्दको बागो समस्तो ॥ ३ ॥



### णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

## <sub>तत्थ</sub> णं पुप्फचूिखयाओ

जइ ण भन्ते ! समणेण भगवया उक्खेवओ जाव दस अज्झयणा पन्नत्ता, तजहा--सिर-हिरि-धिइ-कित्तीओ वुदी लच्छी य होइ वोद्धव्वा। इलादेवी द्धरादेवी रसदेवी गन्धदेवी य ॥ १ ॥ जइ ण भन्ते ! समणेणं भगवया जाव सपत्तेण उवद्गाण चउत्थस्स वग्गस्स पुष्फचूळियाण दस अज्झयणा पन्नता, पढमस्स ण भन्ते ! उक्खेवओ । एव खलु जम्बू ! तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे नयरे, गुणसिलए उजाणे, सेणिए राया । मामी समोसढे, परिसा निग्गया । तेणं कालेण तेण समएण सिरिदेवी सोहम्मे कप्पे सिरिवर्डिसए विमाणे सभाए ग्रहम्माए सिरिंसि सीहासणसि चर्डाहें सामाणियसाहस्सीहिं चर्डाहें महत्तरियाहिं० जहा बहुपुत्तिया जाव नदृविहिं उवद्वित्ता पिंडगया। नवर [दारय]दारियाओ नत्य। पुरुवभवपुच्छा। एवं खलु गोयमा । तेणं कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे, गुणसिलए उजाणे, जिय-सत्तू राया । तत्य णं रायगिहे नयरे खदसणे नाम गाहावई परिवसइ, अङ्केट । तस्स ण **घुदसणस्स गाहाब**इस्स पिया नाम भारिया होत्या, सोमाल॰ । तस्स ण **घुदंसणस्स** गाहावइस्स व्या पियाए गाहावइणीए अत्तिया भूया नाम दारिया होत्या वृ[वु]ह्ना वुहुकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पिडयपुयत्थणी वरगपरिविज्ञया यावि होत्या ॥१४७॥ तेण कालेण तेण समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए जाव नवरयणिए वण्णओ सो चेव, समोसरण । परिसा निम्मया ॥ १४८ ॥ तए णं सा भूया दारिया इसीसे कहाए लद्धद्वा समाणी हट्टतुद्व॰ जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छह २ ता एवं वयासी-एव खळु अम्मताओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए पुन्वाणुपुर्टिंव चरमाणे जाव गणपरिवुढे विहर्ह, तं इच्छामि ण अम्मताओ । तुब्मेहिं अन्भणुनाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवन्दिया गमित्तए । अहासुह देवाणुप्पिए ! ॥ १४९॥ तए णं सा भूया दारिया ण्हाया अप्पमहन्दाभर्णालकिय-सरीरा चेढीचक्वालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ २ ता जेणेव वाहिरिया उवद्वाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ ता घम्मियं जाणप्पवरं दुरूदा । तए ण सा ••

पासे मरहा प्रतिसादाणीए तेणेन तनागच्छा २ ता तिकतुती कान पञ्चनार्थ ॥ १५ ॥ तए णं पासे अरहा प्रिसावाचीए मुसाए दारिवाए मध्ये भम्मास्ता भम्मं सोचा निसम्म हुद्ध अन्दर् मर्मसङ् व २ ता एवं वनार्थ-सहदामि में मन्ते ! निस्पर्य पाषवर्ण बाब अब्स्द्रेमि में मन्ते ! निस्पर्य पाषवर्ण, से बहेर्य हुरूने बनह, वं नवरं मनते ! सन्मापियरो बायुच्छानि तए वं बहं बन पम्बद्रतप्। अहास्त्रदे देशस्त्राप्पिप् । ॥ १५९ ॥ तप् यं सा भूना हारिना टर्नेन वर्गिमर्व जानपन्तरे जान पुरुद्द २ ता धेनेन रामगिद्दे नवरे हेमेन उडानम रायनिष्टं नमरं मर्ज्यमण्डेत्वं जेनेव सए गिहे तेथेव सवागता रहाओ प्लोस्ट्रिय जिपेन भारतापिनचे तेनेन तनागमा करका जहा जमानी आपुन्तर । 🕬 हाई देशलुप्पिए । ॥ १५२ ॥ तए जै से छुन्तिचे गाहावई वित्रकं असर्ज ४ तर-क्षकाचेद्र मितनार कामन्तेर २ ता जाव किमिय्<u>शत</u>तरकारे धरेम्ए निकास ममाचेता रोडम्बरपुरिते छड्वैड २ ता एवं ववारी-विष्यामेव मो देवल्यामा मूनादारियाए पुरिस्सहरसमाहिणीयं सीयं उपद्ववेह १ ता बाद प्रविध्वह । तए में ते जान पनाप्तिसन्ति ॥ १५३ ॥ तए में से सर्वसने गाहानई सूर्व बारिन न्हार्न छ निम्मुरियस्टरिरं पुरिससहस्सनामिनि सीने बुक्हेह २ ता मितानाह बान रहेन रामिश्व नगरं सञ्जानकोनं केनेव ग्रुमिक्य उमाने तेचेन उनामए क्वाईर विरवस्ताहरू पासद २ ता सीर्य अवेद २ ता मूर्य दारियं सीमाको प्रवेसिके ॥ १५४ ॥ तए में तं मूर्व दारिवं अम्मापियरी पुरब्धे कर्त केमेन पासे अरही पुरिसादाजीए वंजेव बवागया विश्वकृतो वन्दन्ति शर्मसन्ति वं १ ता एवं वनायी-एवं कह देवाडिप्पिया ! मूथा बारिवा अम्ब पूगा धूना इह्ना प्रस में देवाडिपाई! र्धसार्मतम्बन्मा मीता बाव बेवालुप्पिमार्च अमित्र प्रस्वा बाव पन्त [वा]वर, हे एवं नं देवासुप्पिया । विस्तिनिविक्यं वृक्त्यामी पविच्यन्तु नं देवासुप्पिया सिस्सिमितिनम् । अवस्तुः वैजालुप्पिया ! ॥ १०५ ॥ शए में सा भूता वारिना वासेनं अरह्मा एवं बुत्ता समानी हर्ड सत्तरपुरस्थिमं सबसेव जामरणसङ्ख्या क्ष्में[सम]मुनक् बहा वेनावन्ता पुण्यवृक्ष्मणं वन्तिए जान गुरुवस्मनारियी ॥ १५६ व रुप्यं सा भूमा अन्या अन्या कताइ सरीरवासीक्ष्या बाबा बावि होत्या अभिनक्षणं २ इत्ये भोजह, पाए योगह, एवं वीर्स योगह, सुर्थ योगह, सम्पन्स्सर्म

घोवइ, क्वस्तन्तराइ घोवइ, गुज्झन्तराइ घोवइ, जत्य जत्य वि य णं ठाण वा सेज वा निसीहिय वा चेएइ, तत्थ तत्थ वि य ण पुन्वामेव पाणएण अन्भुक्खेइ, तओ पच्छा ठाण वा सेज वा निसीहिय वा चेएइ ॥ १५७ ॥ तए णं त्ताओ पुप्पचूलाओ अजाओ भूयं अजा एव वयासी-अम्हे ण देवाणुप्पिए! समणीओ निरगन्थीओ इरियासियाओ जाव गुत्तवम्भयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह सरीरवाओसियाण होत्तए, तुम च ण देवाणुप्पिए । सरीरवाओसिया अभि-क्खणं २ हत्थे घोवसि जाव निसीहिय चेएसि, त णं तुमं देवाणुप्पिए! एयरस ठाणस्स आलोएहित्ति, सेस जहा सुभद्दाए जाव पाडिएक उवस्सयं उवसपजिताण विहरइ । तए णं सा भूया अजा अणोहिंदया अणिवारिया सच्छन्दमई अभिक्खण २ हत्ये घोवइ जाव चेएइ ॥ १५८ ॥ तए ण सा भूया अजा वहूहिं चउत्थछहु॰ वहुई वासाई सामण्णपरियागं पाउणिता तस्स ठाणस्स अणालोइयपिडक्कन्ता कालमासे काल किचा सोहम्मे कप्पे सिरिवर्डिसए विमाणे उववायसमाए देवसयणिजसि जाव ओगाहणाए सिरिदेवित्ताए उववना पञ्चविहाए पजत्तीए जाव भासामणपजतीए पजता। एव खलु गोयमा! सिरीए देवीए एसा दिन्दा देविही लद्धा पता। एग पिल्योवमं ठिई। सिरी ण भनते । देवी जाव कहि गच्छिहिइ० 2 महाविदेहे वासे सिज्ज्ञिहिइ। निक्खेवओ ॥ १५९ ॥ **पढमं अज्झयणं समत्तं ॥ ४**। १ ॥

एव सेसाणवि नवण्ह भाणियव्व । सिरसनामा विमाणा । सोहम्मे कप्पे । पुव्वभवे नयरजजाणिपयमाईण अप्पणो य नामाई जहा सगहणीए । सव्वा पासस्स अन्तिए निक्तन्ता । ताओ पुष्पचूलाण सिर्स्सिणियाओ सरीरवाओसियाओ सव्वाओ अणन्तर चय चइता महाविदेहे वासे सिज्झिहिन्ति ॥ १६०॥ ४ । १०॥ पुष्पचू- लियाओ समत्ताओ ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो ॥ ४ ॥



#### षमोऽत्यु वं समणस्स भगवभो णावपुसमहावीरस्स

### सुत्तागमे

तत्य ण

#### वणिद्दसाओ

बद् भं भग्ठे । उनकेवजो जाव हुवासस अञ्चयना पनता । धबहा-निगर्दे मायनि-वह-बहे पगया जुली वसरहे बहरहे य । महाबब् सत्तवम् इसवन् नामे संबंधपुर 🖟 🤊 ।। बहु याँ मन्ते 🕽 समयेष वाच प्रवास्त सन्धानवा प्रवा प्रयास्य में अन्ते । अवकोषको । एवं कह कम्मू । रोगं कळेलं तेनं समस्में बारवर्षे नामं नवरी द्वेरचा दुवाकस्त्वोवनावामा काव प्र<del>कार्य</del> देवसोवभूवा <sup>पासीन</sup> रीया दरिसनिजा कमिस्ना परिस्ता ॥ १६१ ॥ तील व बारबरेप नवरीर वहें डतःपुरियमे दिसीभाए एत्व यं रेवपं नाम पन्वप् दोत्वा हुद्रै गव<del>वदस्य</del>ा निहन्तिविहरे नागानिहरूनवागुच्यागुम्मकमानद्वीपरिगयामिशामे हंतमित्रमद्दरमेशनार सन्दर्भागमम्परासाक्षक्रकृत्रमेववेष् । शबक्रवनिषर्भ्येजसर्ववाजपन्मारस्वरूपवरे मक्करगणदेवसम्बारनविकाहरमिद्वमधैनिकियो निक्कमण् इसारक्रनीखरी वेलोक्सक्सनार्ण सीमे धमए पिन्नइंसले श्रक्ते पासाईए बाब पडिस्ते ॥ १६९ म दस्स में रेबबगस्स प्रव्यवस्य अवस्तामान्ये पृत्व में नन्त्ववने नाम उजाने होत्या सम्बोदनपुष्ट जान वरिद्यायके ॥ १६३ ॥ तत्त्व ने वारवाँच नवरीर क्यें नार्न बाद्धदेने रामा होत्या बाल परासेमाणे निहरह । से में रास्य समुहत्तिककामोत्तवाण दसन्दं वसारामं बळ्येवपामोनकानं प्रान्दं ग्रहानीराणं समासेवपामोनकाव सेर्न एक् राष्ट्रेपाहरपीणं प्रमुक्तपानोक्ताणं अबुद्धाणं कुमार्क्षवीणं सम्मपानोक्ताणं सद्वीप दुरूकसाहरसीच गीरसेणपामोलकार्ज एवनस्याप ग्रीरसङ्खीजं सद्वासेक पामोक्सानं कप्पदाए कम्नगसाहरसीनं अध्यिकपामोक्याच सोकसर्व देवीसाह रसीण अनेति च नहुणे राहैसर काल सरक्वाहप्पनिहैयं वेयनुविहेसायरमेटाव्सस दाक्षित्रकृतरहस्य माहेक्कं काव विहरह ॥ १६४ ॥ तत्व यां वारवहेए नक्सिए बसदेवें नाम रामा होल्या सहना बाव रखें परासेमाने निहरह १ तस्त में बसदेवस्स रमा रेवई नामें देवी होरणा सोमाळ जान निहरह । शपू में सा रेवई देवी जनना क्याह रोसि तारेसमेसि समणिजेसि बान सीह स्रीयेपे पासितार्च

परिक्हण, कलाओ जहा महावलस्म, पन्नामओ दाओ, पन्नासरायकन्नगाण एगदिव-सेण पाणिग्गहण -, नवर निसंढे नाम जाव उप्पि पासाए विहरइ ॥ १६५ ॥ तेण कारुण तेणं समएण अरहा अरिट्टनेमी आइगरे दम धण्ड वण्णओ जाव समोसिरए । परिसा निम्गया ॥ १६६ ॥ तए णंसे क्यहे वासुदेवे इमीसे कहाए लड्डे समाणे हृहतुहे ॰ कोडुम्चियपुरिस सद्दावेड २ ता एव वयासी-सिप्पामेव देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाणिय मेरि तालेह। तए ण से कोडुम्बियपुरिसे जाव पडिसुणिता जेणेव मभाए मुहम्माए यामुदाणिया भेरी तेणेव उवागच्छा २ ता सामुदाणिय भेरि महया २ सद्देण तालेइ ॥ १६७॥ तए ण तीसे सामुदाणियाए भेरीए महया २ सद्देण तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा देवीओ(डण) भाणियव्वाओ, क्षेत्रे य वहवे राईसर जात्र सत्यवाहप्पभिइओ ण्हाया सन्वालकारविभृसिया जहाविभव-इष्ट्वीसद्वारसमुदएण अप्पेगडया इयगया जाव पुरिसवग्गुरापरिक्खिता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छन्ति २ ता करयल० कण्ह वासुदेव अएण विजएणं वद्धावेन्ति। तए ण से कग्हे वासुदेवे कोडुम्बियपुरिसे एवं वयासी-खिप्पामेव मो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्ट्र त्थिरयण पडिकप्पेह हयगयरहपवर जाव पचप्पिणन्ति । तए ण से कण्हे वासुदेवे मजाणचरे जाव दुरुढे, अट्टह मङ्गलमा, जहा कूणिए, सेयवरचामरेहिं उद्भुव्वमाणेहिं २ समुद्दविजयपामोक्खेहि दसिं दसारेहिं जाव सत्थवाहप्पभिईहिं मार्दि सपरिवृडे सन्विद्वीए जाव रवेण वारावइ नयरि मज्झंमज्झेण सेस जहा कृणिओ जाव पज्जवासइ ॥ १६८ ॥ तए णं तस्स निसदस्स कुमारस्स उपि पासा-यवरगयस्स तं महया जणसह् च जहा जमाली जाव धम्मं सोचा निसम्म वन्दड नमंसइ व॰ २ ता एवं वयासी-सद्दृत्तमि णं भन्ते! निगगन्थ पावयण जहा चित्तो जाव सावगधम्म पडिवज्जइ २ त्ता पडिगए॥ १६९॥ तेण कालेणं तेणं समएण अरहओ अरिट्टनेमिस्स अन्तेवासी वरदत्ते नाम अणगारे उराले जाव विहरह । तए ण से वरदत्ते अणगारे निसंड कुमार पासंइ २ त्ता जायसङ्कृ जाव पज्ञवासमाणे एवं वयासी-अहो ण भनते ! निसढे कुमारे इहे इहरूवे कनते कन्तरूवे, एव पिए॰ मणुन्नए॰ भणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे पियदंसणे सुरूवे, निसढेण भन्ते ! कुमारेण अयमेयास्वा माणुयद्दश्ही किण्णा छद्धा किण्णा पत्ता 2 पुच्छा जहा स्रियामस्स । एव खळु वरदत्ता । तेण काळेण तेण समएण इहेव जम्बुदीवे दीवे भारहे वासे रोही हए नाम नयरे होत्या, रिद्ध० । मेहवणी उज्जाणे । तत्थ ण रोहीहए नयरे महब्बले नाम राया, पउमावई नामं देवी, अन्नया कयाइ तिस तारिसगिस संयोजन्निस सीह सुमिणे , एव जम्मण भाणियन्व जहा महावलस्स, नवरं वीरक्षको जामं बत्तीसको वाको अतीसाए राजवरकत्वरार्च पावि बाद ३१ मिन्दमाचे १ पाउधवरिचारत्तसरबहेमन्त्रवसन्तर्गम्बपन्नन्ते छप्पि उक्त बहाविमनेवं र्श्वनमाचे ९ काळं साक्षेमाचे हुई सह जान विहरह ॥ १७ ॥ तेलं काक्ष्में तेर्व समपूज रिक्टल्या माम भावरिया जहारीपथा जहा केवी अवर बहुस्सवा बहुपरिवार अनेन रोहीबए मयरे खेलेन मेहनको स्त्राने तेथेन सनामना अहापविष्यं वा मिहरन्ति । परिशा निम्पया ॥ १७१ ॥ तप् वं तस्य वीरक्रयस्य क्रमारस्य छन्नि पासाजवरगमस्य सं महाया वागसाई वाहा वामानी निभागो धार्म सीवा वं नवरं देशानुध्यका । अस्मापियरो आपुच्छामे जहा कमाकी तहेव निकक्ती वार्त भमगारे जाए जान ग्राच्यानारी ॥ १७२ ॥ तए मं से नीरकर क्षमगारे सिक्स्नानं भावरिवार्ग अन्तिए सामादवगदवर्ग एकारस **भावतं महिन्छ** २ ता गहरी च्छत्व जाव अप्याणे भावेमाचे वहुपविपुण्नाई प्रवस्तिस्वासाई सामन्वपरिकर्ण पारुकिता होमानियाए संकेषभाए अतार्थ श्राप्तता स्वीसं भूतस्यं अवस्थार केरता आमोर्यपिकल्पे समाहिप्ता पाकमासे कार्स केवा गम्मसीए पच्चे मनीपे निमाने देवताए जनको । तस्य णं अस्मिगइयानं देवाचं वससायरोत्समं विर प्रवक्ता ॥ १७३ ॥ से वं बीरक्रप् वेचे ताओ वेवकोताओं आउपपार्व क्रम जनन्तरं जब जहंचा होन भारवहेए शम्पीए बख्येवस्म रही रेवहेए देवीर इन्हिंस पुलताए उनको । तए जे सा रेवहे देवी तीस सारक्षिति स्वमित्ती ग्रमित्वदसमं भाग उप्पि पासायकरगए मिहरह । ते एवं सन्त बरवता ! निसंदेवं ड्र<sup>मा</sup> रेलं अवस्थारना धराका महानवश्री कहा रे ॥ १७४ ॥ पसू चं सन्त । विस् इमारे वैवल्डिपियाणं अस्तिए जाव पम्बद्रतए है इन्ता । प्रमू । से एवं अस्ते । १ इन करवते कनपारे कान अप्पार्च आनेमाचे निवृद्ध । तए ये अरहा अपि नेगी अज्ञया क्याह गारवहेंजो गवरीओ बाद बहिया जनवसमिहार विदर्ध। निसंदे कुमारे समयोगसङ् वाए अमियवजीवाजीवे जाव विहरह प्र १४% ह हुए भें से निसंदे कुमारे भक्तवा क्याह जेवेद पोसद्वसम्य तेवेद स्वागकहर ५ स जान वृष्णसंजारीकाप् निष्टरह । तप् भं तस्य निसंबदस कुमारस्य पुष्परसावर्षः कामसम्बंधि धम्मजागरियं जायरमाजस्य इनेवास्त्रे अञ्चारिवए जाव स्मुप्त-भिरपा---वक्षा च रां गामागर जान शतिनेता जल वं बरहा वरिहनेगी मिहरी बचा मं ते राईसर बार सलबाइप्पमिश्रमे के नं भरिद्वनेमि बन्द्रिनि नर्मातीन नाम पञ्जुवासन्ति नइ ये मरहा भरिपुनेगी पुष्पालपुरित नम्ब्यवने सिर्देना तो के आई अरहें अस्टिनेसि वस्तिमा जाम परमुवासिमा श १७६ छ तए में अरहा

...

अरिट्टनेमी निसंदर्स कुमारस्स अयमेयास्वमज्झित्यय जाव वियाणिता अट्ठारसाई समणसहस्सेहिं जाव नन्दणवणे उज्जाणे समोसढे। परिसा निग्गया। तए ण निसढे कुमारे इमीसे कहाए लख्दें समाणे हट्ट॰ चाउग्घण्टेण आसरहेण निग्गए जहा जमाली जाव अम्मापियरो आपुच्छिता पन्वइए अणगारे जाए जाव गुत्तवम्भयारी ॥१७७॥ तए ण से निसंदे अणगारे अरहओ अस्डिनेमिस्स तहारूवाण येराण अन्तिए सामाङ्यमाङ्याङ् एकारस अङ्गाई अहिजाइ २ त्ता वहूँ हिं चउत्थछट्ट जाव विनित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं मावेमाणे बहुपिंडपुण्णाइ नच वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ २ ता वायालीस भत्ताइ अणसणाए छेएइ, आलोइयपिडक्दन्ते समाहिपत्ते आणुपुन्नीए कालगए ॥ १७८ ॥ तए ण से वरदत्ते अणगारे निसंह अणगारं कालगय जाणिता जेणेव अरहा अरिद्वनेमी तेणेव उवागच्छइ २ ता जाव एव वयासी—एवं खळु देवाणु-प्पियाण अन्तेवासी निसंढे नाम अणगारे पगइमहुए जाव विणीए, से ण भन्ते! निसढे अणगारे कालमासे कालं किचा किहं गए किहं उववन्ने <sup>१</sup>॥ १७९॥ वरदत्ताइ अरहा अरिट्टनेमी वरदत्त अणगारं एव वयासी--एव खल्ल वरदत्ता। मम अन्ते-वासी निसंढे नामं अणगारे पगइभद्दे जाव विणीए ममं तहाहवाण थेराणं अन्तिए सामाइयमाइयाइ एकारस अङ्गाई अहिजिता वहुपडिपुण्णाइ नव वासाई सामण्णपरि-यागं पाउणिता वायालीस भत्ताइ अणसणाए छेइता आलोइयपडिकान्ते समाहिपते कालमासे काल किया उड्ढ चन्दिमसूरियगहगणणक्खतताराख्वाणं सोहम्मीसाण जाव अञ्चए तिष्णि य अद्वारभुत्तरे गेविजविमाणावाससए वीइवइता सन्वद्वसिद्धविमाणे देवत्ताए उनवन्ने, तत्य ण देवाण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पन्नता, तत्य ण निसबस्सवि देवस्स तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णता ॥ १८०॥ से ण भन्ते! निसंढे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएणं अणन्तरं चय चइता किं गिच्छिहिइ, किं उननिजिहिइ <sup>2</sup> नरदत्ता ! इहेन जम्बुद्दीने दीने महाविदेहे नासे उन्नाए नयरे निम्रद्धिपेइनंसे रायकुळे पुत्तत्ताए पन्नायाहिइ। तए णं से उम्मुक्कवाल-मावे विषयपरिणयमेते जोव्वणगमणुप्पते तहाख्वाण थेराण अन्तिए केवलवोहिं वुज्झिहिइ २ त्ता अगाराओ अणगारिय पन्विजिहिइ । से ण तत्य अणगारे मविस्सइ इरियासमिए जाव गुत्तबम्भयारी । से ण तत्य वहू हिं चउत्यछद्वद्वमदसमदुवाळसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे बहुइ वासाइ सामण्ण-परियाग पात्रणिस्सइ २ त्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताणं झ्रसिहिइ २ ता सर्हि भत्ताइ अणसणाए छेइहिइ, जस्सद्वाए कीरइ थेरकप्पभावे जिणकप्पमावे मुण्डमावे अण्हाणए जाव अदन्तवणए अच्छत्तए अणोवाहणए फलह्सेजा कट्टसेजा केसलोए वम्भचेर- वासे परपरपक्ते पिण्डवाओ सदावस्ट स्वावस य वासकत्या विविधि तमञ्ज भाराहेत् २ ता भारेमेहि वरसासनिस्सासेहि सिञ्जाहिर बाज्यस्थ

दुक्बार्ज कर्न्त काहेड् । विक्षेत्रको ॥ १८१॥ प्रदर्भ आउद्ययणं श्रामत्तं 🖼 🕻 एवं सेसावि एकारस अञ्चयमा नेयव्या सँगहणीमसुसारेण अहीवनाही

प्रारसञ्जन किनेमि॥ १८२ ॥ ५ । १२ ॥ वण्डिक्साओ समसामी । पश्चमो चम्नो समचो ॥ ५ ॥ निरवायस्थितहस्यपस्त्रस्थो समचो। समसाणि जवकाचि ॥

निरियानक्रियाङ्गबद्धार्ण एगो स्थयनक्षण्यो पश्च वस्मा पद्धस्र शिक्टेस वरि

स्सन्ति तत्व बरुस बजेस बस बस जोसमा प्रकासमे बारस जोसमा ।

।। निरयावलियाइसचाइ समचाई ।। तेसिं समसीए

### बारस उवंगाइं समत्ताई

॥ सम्बद्धिमेगसंखा १५००० ॥

# णमोऽत्यु णं समणस्स भगवशो णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

चउछेयसुत्ताईं तत्थ णं

ववहारो

पहमा उद्स

जे भिक्ख् मासिय परिहार्डाः माणस्स मासिय, पलिउचिय आ परिहारद्वाण पहिसेवित्ता आन्ध पळिउचिय आलोएमाणस्स ते पडिसेवित्ता आलोएजा, अपि माणस्य चाउम्मासिय ॥ ३ ॥ **भालोएजा, अपलिउचिय भालो**् पचमासिय ॥ ४ ॥ जे मिक्ख् भपिलडिचिय आलोएमाणस्स 🖫 ॥ ५॥ तेण पर पलिउचिए वा भिक्ख् बहुसो वि मासिय परिहारहा माणस्स मासिय, पलिउचिय साली वि दोमासिय परिहारहाण पनिवेता दोमातिय, पलिउचिय भालोएमा वेमासिय पृ चिय, पछिड चाडम्मासिय ५ चारम्मातिय, ५. वि पचमासिय पचमातिय, पालका

भुचाममे

\*\*

बारे परबरपमेरे पिकब्राओं कदालकों उचावमा व गामकप्रमा भ रुमहं आराहेड् २ ना चरिमेर्ड्स उस्सासिस्सारोहें सिन्सिक्ट्रिड् श्रीकार्ड्स् दुक्कार्ण अन्तं काहेड् । जिल्बेक्सो ॥ १८९ ॥ एक्टर्स अस्ट्राप्ट्राप्टर्स स्ट

एवं छेडानि एकारस बज्जायणा वेनन्या चंगाइणीक्ष्युधारेच हेन्स एकारख्येन तिकेशि ॥ २२ ॥ ७ । १२ ॥ विचित्तसाको सम्भू पद्मारा वरगो समस्त्री ॥ ५॥ निरयावस्त्रियादसुयक्ष्यान्मो हेन्स् समस्त्राजि वक्सानि ॥

समस्तात्व उवक्राम्ब ॥ तिरिमानस्वित्रहरवद्याणं एमो समक्त्रमधो पञ्च बन्मा पञ्चस वित्र हिस्सीन्त तत्व नक्स क्रमेस एस व्यवस्था पञ्चस्था हिस्सीन्त

॥ निरमावलियादसचार् समचार्र ॥

तेसिं समसीप

बारस उवंगाइं समत्ताइं

॥ सन्यसिक्षोगसंस्रा ६५००० ॥



पहिंविए निव्विसमाणे पिंडसेवेड से वि किसणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ॥ १७ ॥ जे मिक्ख् चाउम्मासिय वा साइरेगचाउम्मासियं वा पचमासिय वा साइरेगपंचमासियं वा एएसिं परिहारद्वाणाणं अण्णयर परिहारद्वाण पिंडसेवित्ता आलोएजा, पिलडंचिय बालोएमाणे ठवणिज्ञ ठवउत्ता करणिज्ञ वैयाविडय, ठविए वि पिडसेवित्ता से वि क्षिणे तत्येव आरुहेयव्वे सिया, पुट्चि पिडसेविय पुट्चि आलोइय, पुट्चि पिडसेवियं पन्छ। आलोइय, पच्छा पिडसेविय पुर्वि आलोडय, पच्छा पिडसेविय पच्छा आलोइय, अपिलंडिचिए अपिलंडिचियं, अपिलंडिचिए पिलंडिचियं, पिलंडिचिए अपिलंडिचियं, पिलेउचिए पिलेउचिय, पिलेउचिए पिलेउचिय आलोएमाणस्स सञ्चमेय सक्य साहणिय जे एयाए पट्टबणाए पट्टबिए निव्विसमाणे पडिसेवेइ से वि कलिणे तत्थेव आरहेयन्वे सिया ॥ १८ ॥ जे भिक्ख बहुसो वि चाउम्मासिय वा बहुसो वि पाइरेगचाउम्मासिय वा वहुसो वि पचमासिय वा वहुसो वि साइरेगपचमासियं वा एएसिं परिहारहाणाण अण्णयर परिहारहाण पिंसेविता आलोएजा, अपलिउचिय थालीएमाणे ठवणिज ठवइत्ता करणिज वेयाविडय, ठविए वि पिडसेवित्ता से वि क्षिणे तत्येव आरुहेयन्वे सिया, पुन्ति पिडसेविय पुन्ति आलोइय, पुन्ति पिडसेविय पच्छा आलोडय, पच्छा पिडसेविय पुर्वि आलोड्य, पच्छा पिडसेविय पच्छा आलोडय, भपिल उचिए अपलिउचिय, अपलिउंचिए पलिउचिय, पलिउचिए अपलिउचिय, पिलेडचिए पिलेडचिय आलोएमाणस्स सन्वमेय सक्य साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पहुनिए निन्त्रिसमाणे पिडसेवेइ से वि किसणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ॥ १९॥ जे भिक्ख् बहुसो वि चाउम्मासिय वा बहुसो वि साइरेगचाउम्मासिय वा बहुसो वि पचमासिय वा वहुसो वि साइरेगपचमासिय वा एएसिं परिहारद्वाणाण अण्णयर परिहारद्वाण पिंडसेविता आलोएजा, पिंठउचिय आलोएमाणे ठवणिज ठवइत्ता करणिज वेयाविडिय, ठिवए वि पिडिसेवित्ता से वि किसणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया, पुटिंव पिंडसेविय पुर्विंव आलोइय, पुनिंव पिंडसेविय पच्छा आलोइय, पच्छा पिंहसेविय पुर्वि आलोइय, पच्छा प**िं**सेविय पच्छा आलोइय, अपलिउचिए अपिलेडिचिय, अपिलेडिचिए पिलेडिचिय, पिलेडिचिए अपिलेडिचिय, पिलेडिचिए पिंटचिय आलोएमाणस्स सञ्चमेय सक्य साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पट्टविए निन्त्रिसमाणे पांडिसेवेइ से वि किसणे तत्थेव आरुहेयन्वे सिया ॥ २०॥ वहवे पारिहारिया वहवे अपारिहारिया इच्छेजा एगयओ अभिनिसेज वा अभिनि-सीहिय वा चेएतए, नो ण्ह कप्पइ थेरे अणापुच्छिता एगयओ अभिनिसेज वा अभिनिसीहिय वा चेएत्तए, कप्पइ ण्ह थेरे आपुच्छिता एगयओ अभिनिसेज्ज वा

[ क्लापे

\*\*\*

वा भगरिन्तविष् वा रा चेव छम्मासा ॥ १२ ॥ से मिन्न्त् मासिर्य वा दोमासिर्य वा देमासियं वा चार्यस्मासियं वा पंचमासियं वा एएसि परिद्वारद्वामार्वं अन्वतरे परिद्वारद्वाणं परिसेविका आक्रोएका अपसिर्वेचिक आस्रोपमाणस्य मासिर्वे वा दोमासियं वा तमासिवं वा बाउम्मासियं वा पंचमासियं वा परिजंबिय आनेर मानस्य दोमारिय था दोमासियँ वा चारुम्मासियँ वा पंचमासियँ वा सम्मासिवँ वा रोज परं परिवर्तिषय वा अपनिवंतिष्य वा से अंग सम्मासा ॥ ९३ ॥ जे मिनव बहुरो वि सारिनं का बहुरो वि दोमारियं का बहुरो कि तेमारियं का बहुरो वि वाजम्मासिय वा बहुसी वि पंचमासियं वा पूप्ति परिहारहावार्च अञ्चलर परिहारक पश्चिमेनता आस्रोएजा अपक्रितंत्रिय साम्रोपमायस्य मास्रियं वा दोमानिर्वं वा रोमाचिनं वा चारम्मासियं वा पंचमासियं वा पत्निर्वेचिय शासोएमानस्स होमासिनं वा चेमा<del>रियें</del> वा चारुम्मारियं वा पंचमारियं वा क्रम्मारियं वा चेन परं पहिरंबिए वा अपक्रितंत्रिए वा ते चेव सम्मासा ॥ १४ ॥ वे मिक्कू चारुम्मासिवं वा साईरे सवाजनमासिव वा पेचमासिव वा सहरेगपंचमासियं वा एएसि परिहारक्षणां क्रण्यसर परिद्वारद्वाणं पविश्वेतिता आक्रोएना अपक्रितंत्रिय आक्रोएमानस्य नार म्मासिनं वा साहरेयकातम्मासियं वा पंत्रमासियं वा साहरेगपंत्रमासियं वा पत्रि र्चनित आसोएमायस्य पंचमाधिनं वा छाइरेगपंचमाधिमं वा क्रम्माधिमं वा वेव परं पक्रिनेचिए वा अपक्रिनेचिए वा छ चेव क्रम्माचा ॥ ९५ ॥ के मिनव, बहुसे नि बारुम्मारियं वा बहुसो वि साहरेगबाउम्मारिनं वा बहुसो वि पंत्रमारिनं वा बहुसो वि सद्धरेगपंचमारिक का एएसि परिद्वारक्षकार्य क्ष्म्यार परिद्वारको परि रेबिता मानोएका अपन्दिनिय आक्रोएमानस्य वाउम्मासिय वा साहरेगवाउम्मा विमं वा प्रवस्तविमं वा श्रव्रश्मर्गयमातिर्वं वा पश्चितंत्रिय क्षास्मेरमान्तस्य पंवसतिर्व वा शहरेमपंत्रमासिने वा क्षम्मासिन वा तेण पर पश्चितीनए वा अपक्रितीनए वा ते चेष कम्मासा ॥ १६ ॥ के मिन्न्यू वास्त्रमासिर्व वा साहरेमबारुम्मासिर्व वा पंचमासियं वा साहरेयपंचमासियं वा एएसि परिहार**हाचार्च अन्य**वरं परिहारकार्च पश्चितिता आसोएजा क्यतिसंत्रिय आलोएमाये उत्तरिजं उत्तरता क्रहिजं देवावदिनं उनिए नि पविस्थिता से नि कसिने तत्सेर आस्त्रेयको सिना प्र<sup>क्रि</sup> पश्चिमिर्स पुनि शास्त्रेदनं पुनि पश्चिमेर्य पन्का नास्त्रेदनं पन्का पश्चिमिर्स पुन्ति आक्रोदर्व पत्रका पविश्वतिनं पत्रका आक्रोदर्व अपवित्रतिए अपवित्रतिनं क्षप्रक्रिटिक्षिप् प्रक्रिटिक्षिप् प्रक्रिटिक्ष्य अपनित्रिक्ष प्रक्रिटिक्ष्य अपनित्र रंकिए काम्ब्रिटंकियं बाक्केएमाजस्स सम्बर्भनं सक्ये साहवित्र के एवाए खुक्काए

प्रविए निन्विसमाणे पिंडसेवेइ से वि किसणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ॥ १७ ॥ जे भिक्ष् चाउम्मासिय वा साइरेगचाउम्मासियं वा पचमासिय वा साइरेगपंचमासिय वा एएसि परिहारद्वाणाणं अण्णयर परिहारद्वाण पिंसिवित्ता आलोएजा, पलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिज्ञ ठवइत्ता करणिज्ञ वैयाविडय, ठविए वि पिडसेवित्ता से वि किसणे तत्येव आरुहेयन्वे सिया, पुर्व्वि पिडसेविय पुर्वि आलोइय, पुर्विव पिडसेविय पन्छा आलोइयं, पच्छा पिडसेविय पुर्वि आलोइय, पच्छा पिडसेविय पच्छा आलोइय, अपलिउचिए अपलिउचिय, अपलिउचिए पलिउचिय, पलिउचिए अपलिउचिय, पिलेउचिए पिलेउचिय, पिलेउचिए पिलेउचिय आलोएमाणस्स सन्वमेय सक्य साहणिय जे एयाए पहुचणाए पहुचिए निब्विसमाणे पिडसेवेइ से वि किसणे तत्थेव आरुहेयन्वे सिया॥ १८॥ जे भिक्ख् बहुसो वि चाउम्मासिय वा बहुसो वि साहरेगचाउम्मासिय वा नहुसो वि पचमासिय वा वहुसो वि साहरेगपचमासिय वा एएसिं परिहारहाणाण अण्णयर परिहारहाण पिंडसेविता आलोएजा, अपलिउन्विय आलोएमाणे ठवणिज ठवइत्ता करणिज वैयाविडयं, ठविए वि पिडसेवित्ता से वि किसणे तत्येव आरुहेयन्वे सिया, पुन्नि पिडसेविय पुन्नि आलोइय, पुन्नि पिडसेविय पच्छा आलोइय, पच्छा पिडसेविय पुर्विव आलोइय, पच्छा पिडसेविय पच्छा आलोइय, अपलिउचिए अपलिउचिय, अपलिउंचिए पलिउचिय, पलिउचिए अपलिउचिय, पिलंडिचिए पिलंडिचिय आलोएमाणस्स सन्वमेय सक्य साहिणय जे एयाए पट्टवणाए पहुनिए निन्चिसमाणे पडिसेनेइ से वि किसणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया॥ १९॥ जे मिक्खू बहुसो वि चाउम्मासिय वा बहुसो वि साइरेगचाउम्मासिय वा बहुसो वि पचमासिय वा बहुसो वि साइरेगपचमासिय वा एएसिं परिहारद्वाणाण अण्णयर परिहारद्वाण पिंडसेविता आलोएजा, पिंठउचिय आलोएमाणे ठवणिज ठवइत्ता करणिजा वेयाविडय, ठिवए वि पिडसेवित्ता से वि किसणे तत्येव आरुहेयव्वे सिया, पुब्वि पिंडसेविय पुर्विव सालोइय, पुर्विव पिंडसेविय पच्छा सालोइय, पच्छा पहिसेविय पुर्नित सालोइय, पच्छा पहिसेविय पच्छा आलोइय, अपलिउचिए अपलिउचिय, अपलिउचिए पलिउचिय, पलिउचिए अपलिउचिय, पलिउचिए पिलंडिचिय आलोएमाणस्स सन्वमेय सक्य साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पट्टविए निन्त्रिसमाणे पडिसेनेइ से वि किसणे तत्थेव आफ्हेयन्वे सिया ॥ २०॥ वहचे पारिहारिया वहवे अपारिहारिया इच्छेजा एगयओ अभिनिसेज वा अभिनि-सीहिय वा चेएतए, नो ण्ह कप्पइ थेरे अणापुच्छिता एगयओ अभिनिसेज वा अभिनिसीहियं वा चेएत्तए, कप्पइ ण्ह थेरे आपुच्छिता एगयओ अभिनिसेज वा

٠.

य में गरजा क्या में एगराज्याए परिमाए जन्म २ चिने अन्त शाहमिया निहरी। तस्य > पिर्ग जननिताल, ना मं कच्चर तस्य विहारवतिर्थः बस्यस, कप्स म तम्य कारमयत्तियं कम्यण्, सेनि व ये कारकी। मिद्रियमि परी क्एका-वनार्वे अजो । एगराये वा दुराये था वर्ष सं बच्चन कुगराये था दुराये वा ब बक् में बच्चर पर एगरावाओं वा दुशयाओं का बन्दर में लन्द पर एगरायाओं वा दुराबाभा वा बगर से संबंध हेणू वा परिहारे वा ॥ २९ ॥ परिहारकमहित मिन्स बहिया थेराचे बयारदियाए गरहेत्या थेरा य मी मरैन्स कप्पर से निनित्रमध-करत प्राराह्माए पटिमाए जल्मे करूपे हिन्ने <del>जसे साहम्मिना बिहर्सी तर्</del>ने तन्त्रं दिसे अवितित्त् मा से कप्पा तथ्य विद्वारवित्यं बायप्, बप्पा में ताब वारमवतिमं कवए, तमि च नं वार्यांग निद्वियंनि परी वएका-बनाई अले। पुगरामं वा दुरानं वा एवं से वरणद एगरानं वा दुरागं वा बन्धए. नी सं बन्धर परं एयरायाओं वा हुएमाओं वा बन्धए, जे तत्व परं एवरामाओं वा हुएमाओ मा मचर, से चंतरा हैए मा परिवारे मा ॥ २३ ॥ परिवारकव्यद्विए निक्य बहिना भेराणं येमारण्याए गण्डेजा भेरा य हे हरेजा वा नो हरेजा वापर है निम्बिममानस्य एगराइमाए पण्माए जन्मं जन्मं मेर्च अब शहरिमया निस्पी राज्यं तच्यं तिस उपलिताए, जो से वच्चाइ तत्य विकारवस्ति वत्वाए वच्चा है ताच कारपनितर्भ काचाए छाछ च में कारणीत निद्धिवर्ध परो वएजा-वनार्वि काजो ! प्रमार्थ का बुरार्थ का एक छ कप्पन्न एगरार्थ का बुरार्थ का बुरार्थ का करन्द्र परं एनरामाओं वा बुराबाओं वा कलाए, जे तन्त्र परं एनराबाओं वा दुराबाओं वा बसंद, से छंतरा हैए वा परिदारे वा स २४ त के सिक्स म गवाकी अवदम्स प्राज्ञिवहारपत्रियं सवस्पत्रिकालं विहरेजा से य वो स्वरंजा से व इच्छेजा बोर्च पि तभेव गण उवसपिनताचं हैस्ट्रितर, पुत्रो आकोर्जा पुत्रो पविश्वमेला प्रण्यो कैम्पनिवारस्य जन्द्रपुरला। १ २५ व स्वास्त्रेत्व प्रण्यानिवारस्य जन्द्रपुरला। १ २५ व स्वास्त्रेत्व प्रण्यानिवारस्य किंद्रपुरला। १ २५ व स्वास्त्रेत्वस्य प्रण्यानिवारस्य किंद्रपुरलाम् अवस्यानिवारस्य किंद्रपुरलाम् विवरस्य किंद्रपुरलाम् अवस्यानिवारस्य किंद्रपुरलाम् विवरस्य किंद्रपुरलाम् अवस्यानिवारस्य किंद्रपुरलाम् विवरस्य किंद्रपुरलाम् विवरस्य किंद्रपुरलाम् विवरस्य किंद्रपुरलाम्य किंद्रपुरलाम् विवरस्य किंद्रपुरलाम् विवरस्य किंद्रपुरलाम् विवरस्य किंद्रपुरलाम् विवरस्य किंद्रपुरलाम् विवरस्य किंद्रपुरलाम्य किंद्रपुरलाम्य किंद्रपुरलाम्य किंद्रपुरलाम्य किंद्रपुरलाम्य किंद्यस्य किंद्रपुरलाम्य किंद्रपुरलाम्य किंद्रपुरलाम्य किंद्रपुरलाम्य

पिंडक्षमेजा पुणो छेत्रपिन्हारस्स उवद्वाएजा ॥ २६ ॥ एव आयरियउवज्ञाए य गणाओ अवधम्म एगलविहारपंडिम उवसपंजिताण विहरेजा, से य उच्छेजा दोचं पि तमेव गण उवसपजिताणं विहरित्तए, पुणो आलोएजा पुणो पडिक्मेजा पुणो छेत्रपरिहारस्स उवद्वाएजा ॥ २७ ॥ भिक्ख् य गणाओ अवकम्म पासत्थविहार उवसपानिताण विहरेजा, से य इच्छेजा टोचं पि तमेव गण उवसपानिताण विहारित्तए, अत्यि याउ थ सेमे, पुणो आलोएजा पुणो पटिक्रमेजा पुणो छेयपरि-हारसः उवटाएजा ॥ २८॥ भिक्ख् य गणाओ अवधम्म अहाछद्विहार उव-चपित्ताण विहरेजा, से य उच्छेजा दोच पि तमेव गणं उवसपिजताण विहरि-त्तए, अत्यि याइं य सेसे, पुणो आलोएजा पुणो पडिक्रमेजा पुणो छेयपरिहारस्म चन्हाएजा ॥ २९ ॥ मिक्खू य गणाओ अवहम्म उसीलविहार उवसपिजताणं विहरेजा, से य इन्छेजा दोच पि तमेव गणं उवसपाजिताणं विहरित्तए, अत्थि याई य सेसे, पुणो आलोएजा पुणो पिडक्कमेजा पुणो छेयपरिहारस्स उवट्टाएजा 1) ३० ॥ सिक्ख् य गणाओ अवदम्म ओसण्णविहार उवसपजिताणं विहरेजा, से य इच्छेजा दोच पि तमेव गण उवसपजिताण विहरित्तए, अस्थि याइ थ रेसे, पुणो आलोएजा पुणो पडिकमेजा पुणो छेयपरिहारस्स उवहाएजा ॥ ३१॥ भिक्त य गणाओं अवहम्म ससत्तविहार उवसपिकत्ताण विहरेजा, से य उच्छेजा दोच पि तमेव गण उवसपाजिताण विहरित्तए, अत्थि याङ य सेसे, पुणो आलोएजा पुणो पिकक्मेजा पुणो छेयपरिहारस्स उवहाएजा ॥ ३२-१ ॥ भिक्ख् य गणाओ अश्वम्म परपासङ उवसपजिताण विहरेजा, से य इच्छेजा दोच पि तमेव गण उवसपिबत्ताण विहरित्तए, नित्य ण तस्य तप्पत्तिय केइ छेए वा परिहारे वा णण्णस्थ एगाए आलोयणाएँ ॥ ३२-२ ॥ भिक्ख य गणाओ अवहस्म ओहावेजा, से य इन्छेजा दोच पि तमेत्र गण उवसपिजताण विहरित्तए, नित्य ण तस्स केड छेए वा परिहारे वा णण्णत्य एगाए सेहोनद्वावणियाए ॥ ३३ ॥ भिक्ख् य अण्णयर अिक बड़ाण (पिंड)सेवित्ता इच्छेजा आलोएत्तए, जत्थेव अप्पणो आयरियउवज्झाए पासेंबा, तेसितयं आलोएजा पडिक्समेजा निंदेजा गरहेजा विउद्देजा विसोहेजा अकरणयाए अञ्मुहेजा अहारिह तवोकम्मं पायच्छित पडिवजेजा ॥ ३४॥ नो चेव अप्पणो आयरियडवज्ङ्गाए पासेज्जा, जत्थेव समोइयं साहम्मिय पासेज्जा वहुस्सुय

१ फुढीकरणमेयस्स विवाहपण्णत्तिपणवीसङमसयणियठवत्तव्वया-ठाणचडभगीओ तह इमस्स चेव ववहारस्स दसमुद्देसाओ णायव्वं । २ **पार्डतरं**-ऋप्पइ से तस्स्रतिय आळोडत्तए वा पिडकृमित्तए वा जाव पिडविजित्तए । ५१ सन्तर

वस्तातमं उत्तरंतिर्थं नार्यपुण्या जाव पविश्वज्ञमा ॥ १० ॥ नो येव वं देसीर्थं मार्गस्य अत्येद अन्यंत्रापूरं पाहस्थियं परिवाद बहुत्यं वस्ताप्तमं क्रतंत्रियं प्राह्मियं अत्येव द्वार्ष्यमं क्रतंत्रियं प्राह्मियं आवाद पविश्वज्ञेष्या ॥ १९ ॥ गो पत्र नं नार्यम्प्रेतं अत्येव द्वार्ष्यमं क्रतंत्रियं परिवाद वाद पविश्वज्ञेष्या ॥ १० ॥ गो पत्र वाद प्रतिवद्येष्या ॥ १० ॥ शो पत्र द्वार्ष्यमं वस्त्राप्तमं व्यवद्यस्य वस्त्राप्तमं क्रयंद हे त्वर्ष्यस्य नाम्याप्तमं व्यवद्यस्य वस्त्राप्तमं व्यवद्यस्य वस्त्राप्तमं वस्त्रप्तमं वस्त्रपत्तमं वस्तयस्तयस्त्रपत्तमं वस्त्रपत्तमं वस्त्रपत्तमं वस्त्रपत्तमं वस्त्रपत

#### ववहारस्य विद्वा उदेसओ

वो चाविस्तामा एपमाओं विवरित एगे तत्व बण्णवर काक्रवतानं प्रविवेदेता साजोएवा उत्तरिको उक्ताता वरित्रेवे वा स्वाव विवरित ग्री में छ जारामा वरित्रेवे वा साव साव प्रवाद प्रविवेद ग्री में छ जारामा वरित्रेवे वा साव साव प्रविवेद ग्री में छ जारामा प्रविवेद का साव प्रविवेद के सित्रेवेद का प्रविवेद के साव प्रविवेद के सित्रेवेद का प्रविवेद के साव प्रविवेद के सित्रेवेद का प्रविवेद का स्वाव के सित्रेवेद का प्रविवेद का स्वाव के सित्रेवेद का प्रविवेद का स्वाव के सित्रेवेद का स्वाव के सित्रेवेद का स्वाव के सित्रेवेद का सित्रेवेद का स्वाव के सित्रेवेद का सित्रेवेद के सित्रेवेद का सित्रेवेद के सित्रेवेद का सित्रेवेद के सित्रेव

सिक्ट्यं अपुना वेलं पुल्यपारिक्सकाम्यामा वाधिनपानिकारितं ।

क्रिणज वेयावटिय जाव तओ रोगायकाओ विप्पमुक्तो, तओ पच्छा तस्स अहा-लहुसए नामं ववहारे पट्टवियव्वे सिया ॥ ४६ ॥ अणवट्टप्पं भिक्ख गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निज्जूहित्तए, अगिलाए तस्स करणिज वैयावडियं जाव तओ रोगायकाओ विष्पमुद्यो, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नाम ववहारे पद्विवयन्त्रे सिया ॥ ४७ ॥ पारिचयं मिक्खु गिलायमाण नो कप्पइ तस्स गणा-वच्छेडयस्स निजूहित्तए, अगिलाए तस्स करणिजं वेयावडियं जाव तओ रोगायकाओ विष्पमुक्तो, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नाम ववहारे पट्टवियन्वे सिया ॥ ४८॥ खित्तचित्त भिक्ख गिलायमाण नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निज्नूहित्तए, अगि-लाए तस्स करणिज वैयानडिय जाव तओ रोगायं जाओ विष्पमुक्को, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नाम ववहारे पट्टवियन्वे सिया ॥ ४९ ॥ दित्तचित्त भिक्ख गिलायमाण नो कप्पइ तस्स गणावच्छेड्यस्स निजृहित्तए, अगिलाए तस्स करणिज वैयाविडय जाव तभी रोगायकाओ विष्पमुको, तभो पच्छा तस्स अहालहुसए नाम ववहारे पट्टवियन्ने सिया ॥ ५० ॥ जनखाइट्ट भिक्खु गिलायमाण नो कप्पड तस्स गणावच्छेइयस्स निज्जहित्तए, अगिलाए तस्स करणिज वैयावडिय जाव तओ रोगायंकाओ विप्पमुक्को, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नाम ववहारे पट्टवियव्वे सिया ॥ ५१ ॥ उम्मायपत्त भिक्ख गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निर्जाहित्तए, अगिलाए तस्स करणिज वैयाविडय जाव तओ रोगायकाओ विप्पमुक्तो, तको पच्छा तस्स अहालहुसए नाम ववहारे पट्टवियन्वे सिया ॥ ५२ ॥ उवसम्मपत्त मिक्ख गिलायमाण नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निज्जूहित्तए, अगिलाए तस्स करणिज वेयाविडय जाव तओ रोगायकाओ विष्पमुक्को, तओ पच्छा तस्म अहालहु-सए नाम ववहारे पट्ठवियञ्चे सिया ॥ ५३ ॥ साहिगरण भिक्खं गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निज्नृहित्तए, अगिलाए तस्स करणिजं वेयाविडयं जाव तओ रोगायकाओ विप्पमुक्को, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नाम ववहारे पट्टवियन्वे सिया ॥ ५४ ॥ सपायच्छित्त भिक्ख गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निज्जूहित्तए, अगिलाए तस्स करणिज वैयाविडयं जाव तस्रो रोगायकाओ विप्पमुक्तो, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नाम ववहारे पट्टवियन्वे सिया ॥ ५५ ॥ भत्त-पाणपिडयाइक्खित मिक्खु गिलायमाण नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निज्नू-हित्तए, अगिलाए तस्स करणिजं वेयावडिय जाव तओ रोगायंकाओ विप्पसुको, तथो पच्छा तस्त अहालहुसए नाम ववहारे पट्टवियन्वे सिया ॥ ५६ ॥ अट्टजाय मिक्खु गिलायमाणं नो कप्पइ तस्म गणावच्छेइयस्स निज्नूहित्तए, अगिलाए तस्स

4 1

करमिनं पेयावदियं जाव तजो रोगायंग्रजो निष्पमुद्दी तको प्रन्छा तस्य वर्ध-समुसए नामं वनहारे पद्धविवस्त्रे शिया ॥ ५७ ॥ शकस्त्रुप्तं शिहर्द्धं अविद्विमूर्वं ने कम्पद तस्य यमानकोदयस्य उनदावैताए ॥ ५८ ॥ अवनद्रापं भिन्न विहिम् कप्पार तस्य गमाक्यकेव्यस्य उवञ्जावेतप् ॥ ५९ ॥ पारंचियं निक्रं अविविस् नो कम्पद तस्य मजाकचोद्यस्य कबद्वानेत्तप् ॥ ६ ॥ पारंचित्रं मिक्पुं निविध्नं कप्पद् तस्य गणाक्ष्यदेवस्य समझवेताए॥ ६९॥ सणबङ्घपं भिरस्रं शमिबेस्रं वा विद्विभूमें वा कप्तह तस्स यथावच्छेद्वस्स उक्द्वावेत्तप्, बहा तस्स यमस्स पर्ति सिना ॥ ६२ ॥ पारंचिमं मिनन्तं समिद्विभूमं वा मिद्विभूमं वा कथाई तस्य गनानाने इबस्य उबद्धावेदए, बहा क्स गणस्य परियं विवा ॥ ६३ ॥ को शाहमिमा एक्से निवरंति एने तत्व कान्यपरे अकिनद्वार्ण पविशेषिता कास्त्रोहका-अर्द्ध में संवे। क्सुगोर्न साहुणा सदि इमस्मि नारणस्मि पढिसेवी से व पुरिक्रवाने 🎋 पडिसेवी से अ वर्ष्ट्या-पविसरी परिदारपते से य वर्ष्ट्या-भी पविसेवी जी परिदारपते वे से प्रमार्थ बबद से प्रमाणामा केवल्के से किमाहू मेरी (1) है सम्बद्धा सक्दार प्रदूष सिन्स् व गणाओ सनक्षम ओहामुप्पे(हिए)ही क्ले(गक्के)जा हे व (माह्ये) भणोहार्ष् हक्केजा दोलं पि तमेन गर्च उनसंपत्रितान विहरिताए, तस्व वं नेराने इमेबास्ये निवाद समुप्पनिस्था-इमं मो ! बाजह 🏗 परिशेषी ! हे व प्रस्कितनी कि पश्चिमे**ाँ** से व वर्ण्या-पश्चिमी परिदारपरे से व वर्ण्या-मी पश्चिमी मो परिहारपते में से पमार्ण क्यह से पमाणाओ केवन्ये से किमाद्व मंदि <sup>8</sup> सर्ग परमा नमहारा ॥ ६५ ॥ प्यानिकवस्य मिनकस्य कपाइ आधारेसवस्यानार्थः इत्तरियं विस्त ना अञ्चवित्रं वा उदिशित्तपू वा चारेत्तपू वा चहा वा तस्य गवस्य परियं किया ॥ ६६ ॥ बहुने परिहारिया बहुने अपरिहारिया इन्हेन्सा एयन्सी एनमार्च वा हुमांच वा विमार्च वा चठमांच वा पंचमार्च वा कम्मांच वा वावप् हे अन्तराज्यं पर्शुचंद्रि अञ्चामन्त्रं भी पंशुंजंदि (एग) मार्छ( सार्विते) हजो पत्र्या सब्बे मि एक्सको चंतुंबंदि ॥ ६७ ॥ परिवारकमाहिकस्य मिलक्रस्य जो कम्पर कसर्चना पार्चना काहमें ना सहसे ना वार्सना अनुप्रदान ना बेरा व व गण ना भाग ना जारनं वा शहास वा वहण वा अनुस्पराह वा वरा ने न वर्षमान्सरा ता सन्त्री है हम पूर्णि वेली वा अनुस्पराहि वा एवं वे वरण्य वार्ट वा कनुस्पराचे वा कथ्यह से केले अनुसावाबीत्या, अनुसावाह ते क्षेत्रार एवं वे कथ्यह केले अनुसावाकीत्या (१ ४६ ॥ परिवारक्षणिक्षर विकास सर्व्य विकासी विद्या पैराजे वैसावविसाए व्यक्तिया वेरा च जं वर्षमान्यविकाहित्य, त्राच तो कथ्यह सर्वि वि स्रोमकामि वा वाहामि वा एवं वे कथ्यह परिकासिया, त्राच तो कथ्यह

अपरिहारिएणं परिहारियस्स पडिग्गहिस असण वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा भोत्तए वा पायए वा, कप्पइ से सयिस वा पडिग्गहिस पाणिसि वा उद्धु उद्धु भोत्तए वा पायए वा, एस कप्पो अपरिहारियस्स परिहारियाओ ॥ ६९ ॥ परिहार-कप्पिट्ठिए मिक्ख् थेराणं पडिग्गहएणं विह्या थेराणं वेयाविडयाए गच्छेजा, थेरा य ण वएजा-पडिग्गाहे अजो । तुम पि पच्छा भोक्खिस वा पाहिसि वा, एव से कप्पइ पडिग्गाहित्तए, तत्य नो कप्पइ परिहारिएण अपरिहारियस्स पडिग्गहिस असणं वा पाण वा खाइम वा साइमं वा भोत्तए वा पायए वा, कप्पइ से संयंसि वा पडिग्गहिस पाणिसि वा उद्धु उद्धु भोत्तए वा पायए वा, एस[लेस] कप्पो परिहारियस्स अपरिहारियाओ ॥ ७० ॥ ति-बेमि ॥ ववहारस्स विइओ उद्देसओ समत्तो ॥ २ ॥

ववहारस्स तहओ उद्देसओ

भिक्ख् य इच्छेजा गण घारेत्तए, भगव च से अपिलच्छ (क्रे)ए, एव नो से कप्पइ गण धारेत्तए, भगव च से पलिच्छने, एव से कप्पइ गण धारेत्तए ॥ ७९ ॥ भिक्ख् य इच्छेजा गण धारेत्तए, नो से कप्पइ थेरे अणापुच्छिता गण धारेत्तए, कप्पइ से थेरे आपुच्छिता गण घारेतए, थेरा य से वियरेजा, एव से कप्पइ गण घारेतए, थेरा य से नो वियरेजा, एवं से नो कप्पइ गण धारेत्तए, जण्ण थेरेहिं अविङ्ण्ण गणं वारेजा, से सतरा छेखो वा परिहारो वा ( साहम्मिया उद्घाए विहरंति नित्थ ण तेसिं केइ छेए वा परिहारे वा) ॥ ७२ ॥ तिवासपरियाए समणे णिग्गथे आयार-कुसले सजमकुसले पवयणकुसले पण्णतिकुसले सगहकुसले उवग्गहकुसले अक्खयायारे अभिनायारे असवलायारे असिकलिङ्डायारचि (चिरि)ते बहुस्छुए बन्मागमे जहण्णेण आयारपकापधरे कप्पइ उवज्झायताए उद्दिसित्तए॥ ७३॥ सम्बेव णं से तिवास-परियाए समणे णिग्गचे नो आयारकुसळे नो सजमकुसळे नो पवयणकुसळे नो पण्णितिकुस हे नो सगहकुस हे नो उनगाहकुस हे खयायारे भिन्नायारे सवलायारे सिकेलिट्टायारिचेत्ते अप्पसुए अप्पागमे नो कप्पइ उवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए॥ ७४॥ पचवासपरियाए समणे णिग्गथे आयारकुसले सजमकुसले पवयणकुसले पण्णत्तिकुसले संगहकुसले उनगहकुसले अक्खयायारे अभिन्नायारे असवलायारे असकिलिद्वायार-चित्ते वहुस्झुए वन्भागमे जहण्णेण द[स]साकप्पववहारघरे कप्पइ आयरियञ्जक्झाय-ताए उद्दिसित्तए ॥ ७५॥ सचेव ण से पचवासपरियाए समणे णिग्गंथे नो आयारकुसछे नो सजमकुसले नो पवयणकुसले नो पण्णितिकुसले नो सगहकुसले नो उवग्गहकुसले खयायारे भिन्नायारे सवलायारे सिकलिद्वायारचित्ते अप्पस्तए अप्पागमे नो कप्पइ

मानरिक्उवन्धावकाएं उद्दिशिक्षएं ॥ ७६ ॥ भट्टवासपरियाएं समने विम्यंचे भागर कुरा के चैत्रसङ्ग्रके प्रथमपुरुपके प्रणातिकारके संगातकरके उत्रसाहकरा के शहरानारी मिमायारे अस्यकानारे असंकिलिप्रायारचिते बहुस्सए बन्भायमे बहुन्येनं सन समनाबपरे कप्पा भागरियताए जान गनामकोद्यताए उदिशिताए ॥ ५५ ॥ छने र्ष से अञ्चलसपरियाप समये विश्ववि मी जागारकुरुके भी संज्ञमुक्तरके भी पनन <u>इसके मो पञ्चरित्तरके को संगद्दकुसके भो उत्तगद्दकुसके बागावारे मिदावारे स्व</u> कायारे चंकेक्क्रियारचित्रे अपसूज् अपायमे तो कपन भावरिवताज् बाव मनान कोप्यताए सहितिए ॥ ७८ ॥ निस्तपरिवाए समने विभावे कप्पड ततिवर्ध वार्त-रियउक्त्यायताप् छरिनित्तप्, से किमाहु मंदे हैं सरिव में धेरामें तहास्वामि कुमाने कतानि परिवासि चेजानि चेसासिवासि संगवासि सम्मुद्रकराचि श्रमुमवासि 👫 सनामि भवति वेही कोही वेहि पविष्टि वेहि केनेही वेहि केवारिएही वेहि संमग्री तेहीं सम्माहकरेडी तेहीं अखनगृही तेहीं बहुमगृही वे से निरुद्धपरिवार समये निमाने कन्द्र मायरियउनज्जानचाए उद्दिशचाए चहिनसं ॥ ७९ ॥ दिस्स बासपरियाप समने जिलांबे कप्छ सुमारियश्वकसावताए सहितार सहकेर कर्णति तस्य वं भागारपञ्चयस्य वेसे अवद्विष्य, से य अद्वितिस्सामिति अद्विज्ञाना एवं से कप्पद्र आन्दिस्टनज्ञानकाय् वदिनिक्तप्, से य बद्धि <del>अस्सामिति नो बद्धि अ</del> एवं से नो कप्पर कामरियनक्सायताए निहित्तम् ॥ « ॥ किर्मवस्य वं मक्त इरतरमस्य कामरियतवष्णाए शी(हं)संगेका मो से कप्तव क्रमावरियतकात्रावरतं होत्तर, बप्पह से पुर्म्न भागरिनं वहिसानेता त्त्यो पच्या बक्त्यानं से निमाह सेते हैं दुर्छगद्विए समने निर्माणे रोजहाः जायरिएनं रहण्याएग य ॥ ८९ ॥ किर्माहीर् मं नवडब्र्रहरूनीए सामरिक्जकजनाए प्(वि)वत्तिनी सवीसेनेका नो से क्या सर्वा बरियरक्ताह्माए कप्तिपाणिए होताए, कप्पत् से पुर्क्त आबरियं सहिसवेका दसी बक्जसार्न तको पथ्छा पक्तिकि से किमाह सेते हैं विसंग्रहेना समयो किर्मकी र्रबद्दा - जानरिएणं छनज्ञाएणं पनतिचीए य ॥ ८१ ॥ मिनन्य पनाको सनिनिन विता मेहुणबम्मं पिडिऐनिजा बानजीवाए तस्य तप्पतिनं नो से वप्पत बावरिनर्प का उक्कापर्यं वा पवितर्यं वा वेरणं वा वितर्यं वा विवासके स्था वा कहिन्तर वा भारितपुता ॥ ४३ ॥ शिक्ष्या य शकाओं अवसम्म सेब्रुकवर्म पश्चितेजा तिरिम स्वच्छरानि तस्य तप्पतिर्व जो कृत्यह आयरिवत वा बाल स्वानस्वेदवर्त वा समिताए वा वारेपए वा विद्धिं सन्वकरें विश्ववेती वास्त्रवेती वास्त्रविद्धी प्(उन्)द्विमंसि ठिनस्य धनधतस्य जनरक्तस्य पत्रिनिरमस्य (विक्विप्रस्त) एवं से

कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेडयत्त वा उद्दिसित्तए वा घारेत्तए वा॥ ८४॥ गणावच्छेइए गणावच्छेइयत्त अणिक्खिवत्ता मेहुणधम्म पिडसेवेजा, जावजीवाए तस्स तप्पत्तिय नो कप्पड आयरियत्त वा जाव गणावच्छेड्यत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ८५ ॥ गणावच्छेइए गणावच्छेइयत्त णिक्खिवता मेहुणधम्म पिंडसेवेजा, तिण्णि सवच्छराणि तस्स तप्पत्तिय नो कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावन्छेइयत्त वा उदिसित्तए वा धारेत्तए वा, तिहिं सवच्छरेहिं वीडकतेहिं चउत्थगिस सवच्छरिस पहियमि ठियस्स उवसतस्स उवरयस्स पिडविरयस्स एव से कप्पड आयरियत्त वा जाव गणावच्छेइयत्त वा उद्दिसित्तए वा धारैत्तए वा ॥ ८६ ॥ आयरियउवज्झाए आयर्रियउवज्झायत्त भणिक्खिवित्ता सेहुणधम्म पिडसेवेजा, जावजीवाए तस्स तप्पत्तिय नो कप्पड आयरियत्त वा जाव गणावच्छेइयत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ८७ ॥ आयरियजवज्झाए आयरियजवज्झायत्त णिक्खिवता मेहुणधम्मं पिड-सेवेजा, तिण्णि सवच्छराणि तस्स तप्पत्तिय नो कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावच्छेरयत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, तिहिं सवच्छरेहिं वीइक्रतेहिं चउत्यगसि सवच्छरंसि पद्वियंसि ठियस्स उवसतस्स उवरयस्स पडिविरयस्स एव से कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावच्छेइयत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ८८ ॥ मिक्ख् य गणास्रो अवकस्म ओहायइ, तिष्णि सवच्छराणि तस्स तप्पत्तिय नो कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावच्छेड्यत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, तिहि सवच्छरेहि वीइक्सतेहिं चिज्यगित सनच्छर्ति पिद्वयित ठियस्स उनसतस्स उनस्यस्स पिहिनिरयस्स एन से कप्पइ आयरियत वा जाव गणावच्छेइयत वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ८९ ॥ गणावच्छेर्ए गणावच्छेर्यत्त अणिक्खिवता ओहाएजा, जावजीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कपड आयरियत्त वा जाव गणावच्छेइयत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ९०॥ गणावच्छेइए गणावच्छेइयत्त णिक्खिवता ओहाएजा, तिण्णि सवच्छराणि तस्स तप्पत्तिय नो कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावच्छेड्यत्त वा उद्दिसित्तए वा घारेत्तए वा, तिहिं सवच्छरेहिं वीइक्षतेहिं चउत्थगिस सवच्छरिस पट्टियसि ठियस्स उवसतस्स उनरयस्स पिडविरयस्स एव से कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावच्छेइयत्त वा उद्दि-िषत्तए वा धारेत्तए वा ॥ ९१ ॥ आयरियजवज्झाए आयरियजवज्झायत्त अणिनिख-विता ओहाएजा, जावजीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कप्पड आयरियत्त वा जाव गणावच्छेइयत्त ना उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ९२ ॥ आयरियडवज्झाए आय-रियउवज्झायत्त णिक्खिवता ओहाएजा, तिण्णि सवच्छराणि तस्स तप्पत्तिय नो कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावच्छेइयत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, तिहिं

4.1

भागरियउरज्ञामकाए उद्दिविक्तए ॥ ७६ n जडनासपरियाए समने क्रेमीये कार कुराके संकार राखे प्रवासकार के प्रवासिक राखे संवाहक राखे अवस्थाहक राखे अवस्था भगिकागारे असरकागारे असंफ्रिकिट्टागारविते शहरतस् वस्मागमे वहनेत्रं स्म समनायपरे कम्पद आयरियदाएं बान गणानच्छेत्यदाएं हरिशिष्टए ॥ 🕶 🛚 एने न से अद्भासपरियाएं समये निर्माये नो आजारकुमके नो संवसकरके नो पार<sup>का</sup> इसके मो पन्यतिहासके नो संबह्यसके नो सक्तवहत्रसके कवाशारे मिन्नारी 🧺 सामारे चंद्रिबिद्वामारचिते सप्पमुए अप्यासमे नो कप्पद्र आमरिवतार बार स्वर्ध चेद्रयत्ताए रहिन्तिए ॥ ७४ ॥ निरुद्वपरियाए समने विम्यंग्रे कृष्यु तहिस्सं नार्ने रियनकरमायताए सहितिताए, से कैमाह मेरे ! बतिब वे बेराजे तहास्त्रात्र इसाने कडानि पतिवानि चेकानि वेद्याविवानि संगयानि सम्मुक्तानि बन्समानि 🏗 सवामि सर्वति वेहें क्लेहें वेहें पतिपृष्टि वेहें वेलेहें वेहें केमारिए हैं वेहें र्चमएक्कि वेहि सम्मुद्दकरेक्कि वेहि अनुमएक्कि वेकि बहुमएक्कि वं से विस्तरप्रीकर्त चनने जिमापे कृप्य नागरियडवज्जायताएं उद्दिनिताएं तहिवसं ॥ ७५ ॥ निस् नास्परियाप् स्थले मिलांचे रूप्य सूचरिक्टकासमाप् सहित्रप स्टिकेर कर्णांच तरस में आवारपरूपस्स वेसे व्यक्तिया, से व अविकिस्सामिति वर्षे गेंगी एवं से कप्पत्र आयरिवटवज्ञानताए रहिनित्तए, से य शक्किस्सामिति नो सहिनेत्रा एवं से तो कप्पद कामरियववनसामताएं उद्दिस्तिए ध < स निर्मावस्य वे स्पर्नः इरतरबस्य कामरियटकज्ञाए वी(शु)चंगेजा को से कमह अवावरियटक्जावर्त होत्तए, कम्प्र से पुर्व्य भागरियं विहसानेता तको पच्छा उनज्ञार्व से क्रिमाह मेरी है हुसंपिह्य समने निर्माये राजहा—सामरिएनं उपन्याएक व ८ ८९ ८ निर्मारीय र्ज नगरहरतास्वीप् भागमियतगञ्जाए प्(वि)वरिजी य ग्रीसंसेका भी से समार वर्षा मरिक्डमञ्चाह्वाए अञ्चतिचीए होतप्, क्यम् से पुर्व्य मामरिकं तिसावेता संब संबद्धार्थ तको पच्छा प्रवित्ति से किमाह भेते हैं विसंबद्धिया समझी किम्बेसी र्तबहा--- जामरिएणं उषण्काएणं प्यतिगीए व ॥ ८९ ॥ भिक्त् ग्राम्के निर्मित निता मेडुनकर्म पविधेनिजा जावजीनाए हस्स तथ्यतिर्वं नो से वध्यह बाबरेवर्ण बा उनकामर्ता वा प्रवित्वे वा वेर्त वा यनित वा प्रवासकेरवर्त वा स्विध्य वा वासितए वा II < ३ II मितव्य व गणाको अवहस्य सेह्यवस्ते प्रविधेवेका विभिन संस्कारामि तस्य तप्पतिर्वं को कप्पह सामारिका का बाह यजनकोरको वा उद्दिश्याए वा भारेतए वा विद्ये सरकारेई बीरबंगई चरावरीय सरकारी प(डब)द्विनीतः द्वेत्रस्य चवसंतस्य उवरमस्य पविवेदनस्य (विविक्तरस्य) दर्व हे

कप्पड आयारियत्त वा जाव गणावच्छेड्यत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ८४ ॥ गणावच्छेइए गणावच्छेइयत्त अणिक्खिवता मेहुणधम्म पिडसेवेजा, जावजीवाए तस्स तप्पत्तिय नो कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावन्छेइयत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ८५ ॥ गणावच्छेइए गणावच्छेइयत्तं णिक्खिवित्ता मेहुणघम्म पिंडसेवेजा, तिण्णि सवच्छराणि तस्स तप्पत्तिय नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, तिहिं सवच्छरेहिं वीइक्कतेहिं चडत्थगिस सवच्छरंसि पहियित ठियस्स उवसतस्स उवरयस्स पिडविरयस्स एव से कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावच्छेडयत्त वा उद्दिसित्तए वा घारेत्तए वा ॥ ८६ ॥ आयरियउवज्झाए आयरियउवज्झायत्त अणिक्खिवित्ता मेहुणधम्म पिडसेवेजा, जावजीवाए तस्स तप्पत्तिय नो कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावच्छेइयत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ८७ ॥ आयरियउनज्झाए आयरियउनज्झायत्त णिक्खिनता मेहुणधम्म पिड-सेवेजा, तिण्णि सवच्छराणि तस्स तप्पत्तिय नो कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावच्छेइयत्तवा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, तिहिं सवच्छरेहिं वीइक्षतेहिं चउत्थगसि सवच्छरंसि पट्टियसि ठियस्स उवसतस्स उवरयस्स पडिविरयस्स एवं से कपड् आयरियत्त वा जावगणावच्छेड्यत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ८८ ॥ भिक्सू य गणाओं अवकम्म ओहायइ, तिण्णि सवच्छराणि तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावच्छेइयत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, तिहिं सवच्छरेहिं वीइक्षतेहिं चडत्थगिस सवच्छरंसि पद्वियसि ठियस्स उवसंतस्स उवरयस्स पिडविरयस्स एव से कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ८९॥ गणावच्छेइए गणावच्छेइयत्त अणिक्खिवता ओहाएजा, जावजीवाए तस्स तप्पत्तिय नो कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावच्छेइयत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा॥ ९०॥ गणावच्छेइए गणावच्छेइयत्त णिक्खिवता ओहाएजा, तिण्णि सवच्छराणि तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्त वा जान गणानच्छेइयत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, तिहिं सवच्छरेहिं वीइकातेहिं चउत्थगसि सवच्छरंसि पद्वियसि ठियस्स उवसतस्स उनरयस्स पिंडिविरयस्स एवं से कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दि-सित्तए वा घारेत्तए वा ॥ ९१ ॥ आयरियडवज्झाए आयरियडवज्झायत्त अणिक्खि-वित्ता ओहाएजा, जावजीवाए तस्स तप्पित्तिय नो कप्पड आयरियत्त वा जाव गणावच्छेइयत्त वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ९२ ॥ आयरियटवज्झाए आय-रियउनज्झायत्त णिक्खिवित्ता ओहाएजा, तिण्णि सवच्छराणि तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियतं वा जाव गणावच्छेइयत्त वा उद्दिसिताए वा घारेत्तए वा, तिहिं

र्धनप्छरेहिँ नीहर्कतेहिँ पास्तवमधि र्धनच्छरेति पद्वित्रीति क्रिनस्स स्वर्धसस्य स्वर क्स्स परिविर्मस्य एवं से कृष्यद आयरियर्त वा बाब ग**ावकोऽ्**यर्त वा स्रवितिष् वा पारेतए वा ॥ ९३ ॥ भिनन् य बहुस्थए बब्सागरे बहुसी बहुसामाप्रपतेष्ठ कारनेध साई सुसानाई अनुई पानजीनी कामजीनायू तस्य तप्पतिसं मी रूपर मामरियर्त्त का जाव गमावध्येद्यतं ना छाईसित्तए वा कारेतए का ॥ ९४ ३ ममानच्छेत्ए बहुस्छए बब्भायमे बहुतो बहुआमाहागाहेशु आरमेशु आहे सुतावहें लहुई पावजीबी व्यावजीवाए उस्स राप्यक्तिनं को कप्यद ब्रावरिवर्त्त वा बाव गर्वा-क्षकेर्यतः वा उदिशिक्तए वा वारेक्य वा ॥ ९५ ॥ आसरिवजकरमार बहुतार बञ्जागम बहुतो बहुआनातागावेस कारणेस माई मुसावाई अग्नई पावजीवी बावजीवाए तस्य तप्पतियं मो क्पन्न बायरियर्त वा काव मधावज्येदनरे ग त्रहिसित्तए वा बारेतए वा u ९६ u वहवे मिनवायो बहुस्युवा वब्साममा धार्ती बहुभागादागादेस करनेस मार्व सुसावाई अस्त्री पाक्तीनी बादमीनाए तेसि तप्पत्तिनं नो कप्पत्र आयरियतं वा बाद गयाक्तकेद्यतं वा उद्दिश्चित् वा धारेतप् वा ॥ ९७ ॥ वहवे यमानकस्था बहुत्सवा बब्धावमा बहुतो बहुआयावसावेत कारफेड माई मुसानाई बढ़ाई पानगीनी बानजीवाए तेसि तप्पतिन नो ४०% मायरिन्तं वा बान यनाक्यकेश्यर्थं वा उद्दियतत् वा बारेतत् वा प्र ५४ ॥ व्यर् मागरियनकामा महस्सुमा वस्मागमा बहुसो बहुमायानामास्य स्वरंबेड गरि सुसाबाई क्याई पावजीकी काकजीवाए देखि तप्पत्तियं मो कृप्पर आवरिका वी जान सनावच्छेदनर्यका उद्धिताए का भारेत्तए वाध ५५ ॥ बहुने सिन्द्रकी बहुने रायानच्योदमा बहुने भागरिनतकातामा बहुस्युना वयमागमा बहुसी गा भागाबागादेस करनेस मार्च सुचानाई मध्ये पत्रजीवी वामजीवाए वेसि सप-चिय नो कम्पर वामरियर्त वा बाव गणाव**च्छे**द्यत वा उद्दिशतप् वा धारेतप् p वि-बेमि ॥ अवहारस्स तहुमो उहेसमो समचा व रे है ववहारस्स चडस्यो उद्देसको

भी कप्पद सामरिजन कार्यस्य एवाभिनस्य हेमन्तरिम्हास सर्गि(ग)र ॥ १ १ कप्पद सामरिजन कार्यस्य एवाभिनस्य हेमनिक्सास अमित्रिक्त ॥ १ १ ॥ १ ॥ १ तो कप्पद पाना स्थ्रीक्षरस्य स्थानिक्सस्य हेमनिक्सास अमित्र ॥ १ १ ॥ गो कप्पद पाना स्थ्रीक्सस्य अपनिक्र स्थानिक्सास अमित्र स्थानिक्सस्य स्थानिक्सस्य स्थानिक्सस्य स्थानिक्सस्य स्थानिक्सस्य स्थानिकस्य स्थानिकस

अप्पतइयस्स वासावास वत्थए॥ १०७॥ कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पचउत्थस्स वासावास वत्यए ॥ १०८ ॥ से गामंसि वा नगरिस वा निगमिस वा रायहाणीए वा खेडिस वा कव्वडिस वा मडविस वा पृष्टणंसि वा दोणमुईसि वा आसमिस वा सवाहिस वा सनिवेसिस वा वहूण आयरियउनज्झायाण अप्पविद्याणं वहूण गणावच्छेइयाण अप्पतइयाणं कप्पइ हेमतिगम्हासु चरिए अण्णमण्ण निस्साए ॥ १०९ ॥ से गामसि वा नगरसि वा निगमसि वा रायहाणीए वा खेडसि वा कव्यडिस वा मडवंसि वा पृष्टणिस वा टोणमुहिस वा आसमिस वा सवाहिस वा सणिवेसिस वा वहूण आयरियजवज्झायाण अप्पतइयाण वहूणं गणावच्छेइयाण अप्पचडत्थाण कप्पड् वासावास वत्थए अण्णमण्ण निस्साए ॥ ११० ॥ गामाणु-गाम दइजमा(ण)णो भिक्खू य ज पुरओ कट्ट विह्(रेजा से य)रइ आहच वीसमेजा, अत्य याइ थ अण्णे केइ उवसपजाणारिहे कप्पइ से( ॰ ) उवसपिज( ताण विहरित्तए )यव्वे, नित्य याइ य अण्णे केइ उवसपज्जणारिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए असमते कप्पइ से एगराइयाए पिडमाए जण्णं जण्ण दि( सिं )स अण्णे साहम्मिया विहरंति तण्ण तण्ण दिस उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तिय वत्थए, कप्पइ से तत्थ कारणवत्तिय वत्थए, तंसि च ण कारणसि निद्वियसि परो वएजा-वसाहि अज्ञो । एगराय वा दुराय वा, एवं से कप्पइ एगरायं वा दुराय वा वतथए, नो से कप्पइ परं एगरायाओं वा दुरायाओं वा वत्यए, ज तत्य पर एगरायाओं वा इरायाओं वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १११ ॥ वासावास पज्जो-सिव(ए)ओ भिक्ख य ज पुरओ कट्ट विहरइ आहच वीसमेजा, अत्थि याड य अण्णे केइ उनसपज्जणारिहे से उनसपज्जियन्ने, निरथ याइ य अण्णे केइ उनसपज्जणा-रिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए असमत्ते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्ण दिस अण्णे साहम्मिया विद्वरति तण्ण तण्णं दिस उवलित्तप्, नो से कप्पड तत्य विहारवत्तिय वत्यए, कप्पइ से तत्य कारणवित्तय वत्थए, तसि च ण वारणसि निद्धि-यसि परो वएजा-वसाहि अजो ! एगराय वा दुराय वा, एव से कप्पइ एगराय वा इराय वा वत्थए, नो से कप्पइ पर एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, ज तत्य परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ ११२ ॥ आयरिय-उवज्ह्याए गिलायमाणे अण्णयर वएजा-अज्जो ! ममसि ण कालगयसि समाणसि अय समुक्तियव्वे, से य समुक्त्सणारिहे समुक्तिसयव्वे से य नो समुक्त्सणारिहे नो समुक्तिसग्वे, अत्यि याइ य अण्णे केइ समुक्त्रणारिहे से समुक्तिसग्वे, नित्य याइ थ अण्णे केड समुक्कसणारिके से चेव समुक्कसियञ्चे, तसि च ण समुक्किट्टसि परो संबच्छरेहिं बीर्इट्रेटिं बजल्यगेति सेक्च्छरेति पद्मिनीति ठिजस्त उदर्शकस इक्र मस्स परिविद्यस्य पूर्वं सं कम्पद् सामरियक्त वा बाव गवाक्क्टेट्यस्य वा उदिशिकर ना भारेताए ना n १ ॥ जिल्ला य नहुस्तुए नब्सायसे नहुसी नहुसागाहायानेपु कार**मेद्र मार्ड** शुरावाई अद्यंत्र पावजीवी जावजीवाए तस्य चप्पतिर्व जो कप्पद भागरिक्तं वा जाव गणावच्छेद्यसं वा सहित्तस् वा वारेत्तर् वा ॥ ९४ व गणाबच्छेद्रप् बहुस्क्षण् बब्मागमे बहुसो बहुआमाठागावंद्र कार्जेमु आहे मुसावारे मद्वारं पावनीती जावनीवाए ठस्छ कथ्यतिर्थं नो कथ्यह भागरिनते वा बाव गणा-क्कोइस्त वा उदिशित्तप् वा धारेतप् वा ॥ ९५ ॥ वासरिस्टवज्ञाप् बहुसाए बक्नाममे बहुसो बहुद्धागादागावेस कारकेस माई मुख्याई बसई पावजीवी जानकीबाए तस्य ठप्पतियं नो कप्पड आवरिन्तं वा बाव गवानकोदन्ते वा उदिशित्तए वा बारेत्तए वा ॥ ५६ ॥ व्यवे शिवन्त्रजो बहुस्समा वक्साममा बहुस्रे बहुमागाबागाड्य कारबेश माहै सुसामाई बहुई पाक्तीबी जावजीबाए देनि तप्पत्तिनं नो कप्पद्र कायरियर्त वा जान गणाननोद्धवर्त्त वा उद्वितित्त वा वारेत्तप् था ॥ ५७ ॥ वहरे गणावच्छेत्वा वहुस्द्ववा बच्नायमा बहुसो बहुआयातामान्छ कारपेस माई मुसाबाई असई भावनीती बाकजीबाए हेसि स्पातियं नी कप्पार मानरिनर्त वा बाद गवानकोदनर्त ना अदिशित्तए वा वारेत्तए वा त ९४ व वहने मानिर्वेदनम्हाना बहुत्सुना बन्नागमा बहुत्तो बहुत्वायातामानेस कारनेस मार्र मुसाबाई असुई पानजीवी जावजीवाए देखि एप्पतिर्व मो कपाइ जावरिका वा कान गनावकोद्यते वा संदिशितपु वा बारेतपु वा ॥ ५५ ॥ बाबे मिनवनी बहुवे मनावश्क्षेद्या बहुवे भावरिक्टवज्ज्ञाया बहुस्तुया वश्मानमा बहुवो वह आयातागाविद्य श्रारकंग्र मात्रे सुसावादे क्रह्मे पावजीवी जावजीवाए वर्षि वय-क्तियं नो कप्पद आयरिनक्तं वा बाब गथाक्योदन्तं वा उद्दिरिक्यं वा वारिक्यं वा ॥ १ ॥ श्री-बेमि ॥ वयहारम्य तहुओ वहेसओ समची ॥ १ ॥

### वयहारस्स चउत्थो उदेसमो

को कप्प कानस्व जनसायस्य एगावियस्य हेमन्तविष्वाद्यं वार्र्या) ए० १ १ व कप्प बानस्व व्यवस्थानस्य कप्पविष्वस्य हेमंतविष्याद्यं वार्र्य्यार्थे, ता १ ६ व मो कप्प प्रवासक्षेत्रस्य कप्पविष्यस्य हेमंतविष्याद्यं वार्ष्यं वार्ये १ १ १ व वप्प सामानव्यस्य कप्पविष्यस्य हेमंतविष्याद्यं वार्ये १ १ ४ व वो कप्प वार्याः वार्यावायं स्वयं वार्यः सम्बद्धाः वप्पयः वार्यावायं स्वयं वार्यः सम्बद्धाः वप्पयः वार्यावायं स्वयं वार्यः प्रवास्यः वार्यावायं स्वयं वार्यः वार्यः सम्बद्धाः वार्यः वा

अप्पतइयस्स वासावास वत्यए॥ १०७॥ कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पचउत्यस्स वासावास वत्थए ॥ १०८ ॥ से गामंसि वा नगरंसि वा निगमसि वा रायहाणीए वा खेडिस वा कन्वडंसि वा मडविस वा पृष्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आसमिस वा सवाहिम वा सनिवेसिस वा वहूण आयरियउवज्झायाणं अप्पिबिङ्याण वहूण गणावच्छेड्याण अप्पतइ्याणं कप्पइ हेमतगिम्हासु चरिए अण्णमण्णं निस्साए ॥ १०९ ॥ से गामसि वा नगरिस वा निगमिस वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कव्यडिंस वा मडविंस वा पृष्टणंसि वा दोणमुहिंस वा आसमिस वा सवाहंसि वा सणिवेसिस वा बहूण आयरियजवज्झायाण अप्पतइयाण बहूण गणावच्छेइयाण अप्पचउत्थाण कप्पइ वासावास वत्थए अण्णमण्ण निस्साए॥ ११०॥ गामाणु-गाम दूर्जमा(णे)णो भिक्ख्य ज पुरस्रो कट्ट विह्(रेजा, से य)रइ आहच वीसमेजा, अत्य याइ थ अण्णे केइ उवसपज्जणारिहे कप्पइ से( ॰ ) उवसपिज( ताण विहरित्तए )यब्वे, नित्य याइ थ अण्णे केइ उवसपज्जणारिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए असमत्ते कप्पइ से एगराइयाए पिंडमाए जण्णं जण्ण दि( सिं )स अण्णे साहम्मिया विहरति तण्ण तण्ण दिस उनिलत्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तिय वत्थए, कप्पइ से तत्थ कारणवित्तयं वत्यए, तंसि च ण कारणिस निद्वियसि परो वएजा-वसाहि अजो ! एगराय वा दुराय वा, एव से कप्पइ एगरायं वा दुराय वा वत्थए, नो से कप्पइ पर एगरायाओं वा दुरायाओं वा वत्यए, ज तत्थ पर एगरायाओं वा दुरायाओ वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १११ ॥ वासावास पज्जो-सिव(ए)ओ भिक्ख य ज पुरओ कट्ट विहरइ आहच वीसमेजा, अत्थि याइ थ अण्णे केइ उवसपज्जणारिहे से उवसपज्जियन्वे, नित्थ याइ थ अण्णे केइ उवसपज्जणा-रिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए असमत्ते कप्पइ से एगराइयाए पिडमाए जण्ण जण्ण दिस अण्णे साहम्मिया विहरंति तण्ण तण्ण दिस उचिलत्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तिय वत्यए, कप्पड से तत्य कारणवत्तिय वत्यए, तसि च ण कारणसि निद्धि-यसि परो वएजा-वसाहि अजो । एगराय वा दुराय वा, एव से कप्पइ एगराय वा हुराय वा वत्थए, नो से कप्पइ पर एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, ज तत्थ पर एगरायाओ वा दुरायाओ वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ ११२ ॥ आयरिय-उवज्ञाए गिलायमाणे अण्णयर वएजा-अजो । ममसिण कालगयसि समाणसि अयं समुकत्तियव्वे, से य समुक्क्सणारिहे समुक्क्तियव्वे से य नो समुक्क्सणारिहे नो समुक्तियव्चे, अत्थि याइ य अण्णे केइ समुक्त्सणारिहे से समुक्कियव्चे, नित्य याह थ अण्णे केड समुक्कसणारिके से चेन समुक्कसियव्वे, तसि च ण समुक्टिसि परो

[ बद्धारो सचागमे संबन्धरेहि बीहर तेहि बाउत्पर्गति संबन्धरेति पद्विर्गति ठियस्य उपसंतरस उपर यस्य परिविद्यस्य पूर्व से क्ष्याः भागरियच वा जाव गणावच्डेद्यमं वा उद्धित्य ना मारेतए ना ॥ ९३ ॥ भिनन्त् य नहुन्छए नब्सायये बहुतो बहुनामाराणारेषु बारणेषु साई मुखाबाई अधुई पावबीबी जावजीबाए तस्त्र तप्पतिर्य की बण्द

...

भागरियर्थं वा आव यवावण्डेज्यर्तं वा छहिनित्तर् वा घारेल्ए वा त ९४ ह गमानच्छेद्रए बहुस्प्रए बब्नाममं बहुसी बहुआगावागाडेनु बार्मेनु माई मुमार्ग्य अपूर्व पानजीती जानजीवाए शस्य तप्पतियं को बप्यद कामरियर्त वा जान सम बस्डेन्यत वा उदिसित्तए वा धारेतए वा ॥ ९५ ॥ बायरियडवज्हाए बन्द्वरे बण्मानम् बहुत्ते बहुजानाद्यमादेशु कार्यमु माई मुसाबाइ ज्हुई पार्यम जाबजीबाए तरम तप्पतिर्व मो कप्प्य बायरिवर्त वा जाब यमावचीएमाँ वा उदिवित्तए ना भारेतए ना ॥ ९६ ॥ बह्वे भिक्द्रणो बहुस्त्रमा बन्माममा बहुन्ने बहुआमानगाइम् बार्चेत आई सुधाबाइ बन्दे शबशीबी जावजीवए तमि तप्पत्तिर्यं नो कप्पद्र भागरियते वा काव गयावण्डेद्यते वा उद्दिश्चित्रए वा वारेतर ना ॥ ९७ ॥ वहत्र गणावच्छेत्रमा बहुत्स्त्रया वच्नाममा बहुमो बहुज्ञामाराया<sup>3</sup>ऽ बारगद्ध मार् मुसाबाई अवर्ड पावर्राची बावर्जनाए तमि तपावित हो बाद भागरियते वा जान गणानकोद्भयते वा किर्मितत् वा पारेतत् वा ॥ ९८ ॥ वर्षे भागरियउपन्याया बहर्ख्या वस्मानमा बहुमो बहुआयात्रागाहेतु कारमेऽ मारै समानाई जड्डर पानर्वाची जानजीनाए वेशि वर्ष्यात्तर्य नो कथ्यर अध्यक्षियण मा बार मगाबल्डेट्यतं वा उद्दिन्नच्य वा वारेनए वा ध < u बहुवे तिन्युम् बहुबे यमावरछेर्या बहुबे भायस्यित्रव माया बहुस्युया बस्मायमा बहुनी बर्ड भायात्रागान्ति कारचमु साई मुनावाई अमुई पावर्शवी जावजीवार हमि हार्य-रिय ना कप्प आयरियर्त वा जाद गयावद्यायत वा बहिमिनए वा वरिण्य गा ॥ १ ॥ ति-वर्मि ॥ धयदारम्म तरुमा उद्सकाः समरो ॥ ३ ॥

पवहारसम चउत्थो उदेसओ

ना रूप्य भागरिय उपण्यायस्य एयानियस्य हेमञ्लयम्हान् समे(न)१४५ 👫 कापा भागरियत्रवाजायम् भागनिष्यस्य हेर्सन्दिव्हान् वर्षि(पार)( # 1 र # ना रूप्य रामानगद्भरस्य अध्यतिग्यन्य हमनारिन्दानु चरिए ॥ १ ३ ॥ वर्ष गागरगाहरसम् मापण्यसम् हेर्मगरिमहाम् बरीपृ ॥ १ ४ ॥ महे बाराः अप रियातकारमा अगरित्यामा वजावाचे वाचर् ॥ १ ५ ॥ वस्तर् आवरेगाक ज्ञान्यमा अध्यतस्यम् बन्यस्य बन्यस्य ॥ १ ६ ॥ तो बन्स् यत्र रहे सन

अप्पतइयस्स वासावास वत्थए॥ १०७॥ कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पचउत्थस्स वासावास वत्थए ॥ १०८ ॥ से गामसि वा नगरंसि वा निगमसि वा रायहाणीए वा खेडिस वा कब्बडिस वा मडविस वा पट्टणिस वा दोणमुहंसि वा आसमिस वा सवाहसि वा सनिवेससि वा वहूण आयरियडवज्झायाण अप्पबिइयाण वहूण गणावच्छेड्याण अप्पतङ्याण कप्पइ हेमतगिम्हासु चरिए अण्णमण्ण निस्साए ॥ १०९ ॥ से गामसि वा नगरंसि वा निगमसि वा रायहाणीए वा खेडसि वा कब्वडिस वा मडविस वा पृष्टणंसि वा दोणमुहिस वा आसमिस वा सवाहिस वा सणिवेसिस वा वहूण आयरियउवज्झायाणं अप्पतइयाण वहूण गणावच्छेइयाण अप्पचज्रत्थाण कप्पइ वासावास व्रत्थए अण्णमण्ण निस्साए ॥ ११० ॥ गामाणु-गाम दूइजमा(णे)णो भिक्ख य ज पुरओ कट्ट विह(रेजा से य)रइ आहच वीसमेजा, अस्थि याइ थ अण्णे केड उवसपज्जणारिहे कप्पइ से(॰) उवसपिज(त्ताण विद्दरित्तए )यञ्चे, नित्य याइ य अण्णे केइ उवसपज्जणारिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए असमते कप्पइ से एगराइयाए पिंडमाए जण्ण जण्ण दि( सिं )स अण्णे साहिम्मिया विहरति तण्ण तण्ण दिस उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्य विहारवत्तिय वत्यए, कप्पइ से तत्थ कारणवित्तय वत्थए, तसि च ण कारणिस निद्वियसि परो वएजा-वसाहि अजो ! एगराय वा दुराय वा, एव से कप्पइ एगरायं वा दुराय वा वत्थए, नो से कप्पइ पर एगरायाओं वा दुरायाओं वा वत्थए, ज तत्थ पर एगरायाओं वा दुरायाओ वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १११ ॥ वासावास पज्जो-सिव(ए)ओ मिक्ख् य ज पुरलो कट्ट विहरइ आहच वीसमेजा, अत्थि याइ थ अण्णे केइ उवसपज्जणारिहे से उवसपज्जियव्वे, नित्य याई थ अण्णे केइ उवसपज्जणा-रिहे, तस्स अप्पणी कप्पाए असमते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्ण जण्ण दिस अण्णे साहम्मिया विहरति तण्ण तण्णं दिस उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तिय वत्थए, कप्पइ से तत्य कारणवत्तिय वत्यए, तसि च ण कारणसि निष्टि-यसि परो वएजा-वसाहि अजो ! एगराय वा दुराय वा, एव से कप्पइ एगराय वा दुराय वा वत्थए, नो से कप्पइ पर एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, ज तत्य परे एगरायाओ वा दुरायाओ वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ ११२ ॥ आयरिय-उवज्झाए गिलायमाणे अण्णयर वएजा-अजो । ममसि ण कालगयसि समाणसि अय समुक्तियव्वे, से य समुक्त्सणारिहे समुक्तियव्वे से य नो समुक्तसणारिहे नो समुकत्तियन्वे, अत्थि याइ थ अण्णे केइ समुक्तसणारिहे से समुक्तसियन्वे, नित्य याड य अण्णे केइ समुक्तसणारिहे से चेव समुक्तसियव्वे, तसि च ण समुक्तिहित परो संबच्छरेब्रि वीहकेतेब्रि चारायगयि संबच्छरेखि पश्चित्रीय ठियस्स उवसेतस्स उवर क्स्स परिविरयस्य एवं से कथाई आमरिक्त वा बाब ग्रथावच्छेर्यत्तं वा स्रहितिस वा भारेत्रए वा ॥ ९३ ॥ फिक्स य बहुरसुए बब्सायमे बहुरो बहुभागतागानेष्ठ कारनेस मार्ड सुसावाई असुई पावजीवी जावजीवाए तस्य तप्पतिर्व को वन्पर भागरियत्तं वा चाच गणाचन्नेक्यतं वा **व**िष्ठितात् वा धारेतात् वा ॥ ५४ ह गमानच्छेर्ए बहुस्छए बब्सानमे बहुसी बहुसामाहानाहेस् कारनेस् माई सुसावर्षः असूर्य पानजीवी जानभीवाए तस्य राप्पतिर्यं नो कप्यद्व जानरियत्तं वा बाव गर्याः बच्चेद्रपत्त वा उद्गितित्वप् वा बारेतप् वा ॥ ९५ ॥ आसरिकउक्तमाएं बहुत्तप् बब्भायमे बहुसो बहुआगावागावेस करचेस माई मुखबाई असुई पार्कीनी बावजीनाए तस्य तप्पत्तियं नो कप्पह भावरियतं वा जाव गमानकेस्पर्तं ग **त्रदितित् वा बारेत्रप् वा ॥ ५६ ॥ वहवे मिक्कुजो बहुस्सुवा वद्याग्यमा बहुस्रे** बहुमागाडागाडेस भारचेस माई सुसाबाई जर्स्ड पाक्यीबी बावजीबाए वंसि वप्पतियं नो कप्पर मामरियत्तं ना नाव गयाक्तकेष्मत्त ना उद्दिशितप् ना बारेतप् मा ॥ ५७ ॥ बहुचे गणाक्वकेद्या बहुस्सुवा बञ्मागमा बहुस्रो बहुमागासमादेऽ कारणेख माई मुसाबाई अखंद पाक्तीची जानजीवाए तेथि तप्पतियं तो वप्पत आयरियतं वा बाद गयावच्छेत्वच वा उद्धितत् वा बारेतत् वा ॥ ५४ ॥ वही नागरिक्यक्यामा वहस्तुया बम्भागमा बहुसो बहुसायकागस्त्रम् सरकेष्ट मार् मुचाबाई क्याई पावजीवी कावजीवाए रोसि तप्पत्तियं मो क्रम्पह सामहेनत वा बाव पनाक्केद्रसर्थ वा अविधित्तप् वा भारेतप् वा ॥ ९९ ॥ वहवे जिलक् बहुवे गनावच्छेद्या बहुवे नामरिवटवज्ज्ञामा बहुस्सुवा वदमागमा बहुतो वर् भागाबागावेद्व भारणेसु आहे सुसावाई भग्नई पानजीवी बावजीवाए वर्षि वर्ण-क्तिन नो कम्पद आन्दिन्तं वा आन गयानच्छेद्रम्य वा वहिस्तत् वा करेण् ॥ ति-नेमि ॥ ववहारस्य तहुमी उद्देशको समची ॥ १ ॥

4.4

चयहारस्स चउत्था उद्देसओ

अप्पतइयस्स वासावास वत्थए॥ १०७॥ कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पचउत्थस्स वासावास वत्थए ॥ १०८ ॥ से गामंसि वा नगरंसि वा निगमसि वा रायहाणीए वा खेडिस वा कव्वडिस वा मडवंसि वा पृष्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आसमिस वा सवाहिस वा सनिवेसिस वा वहूण आयरियउवज्झायाणं अप्पिबिड्याण वहूण गणावच्छेड्याण अप्पतङ्याण कप्पइ हेमतगिम्हासु चरिए अण्णमण्ण निस्साए ॥ १०९ ॥ से गामसि वा नगरसि वा निगमसि वा रायहाणीए वा खेडसि वा कन्यडिस वा मडबिस वा पृष्टणंसि वा दोणमुहिस वा आसमिस वा सवाहंसि वा सणिवेसित वा बहुणं आयरियउवज्झायाण अप्पतइयाण वहूण गणावच्छेइयाण अप्पचउत्थाण कप्पइ वासावास वत्थए अण्णमण्ण निस्साए ॥ ११० ॥ गामाणु-गाम दूइजमा(ण)णो भिक्ख य ज पुरओ कटु विह्(रेजा से य)रइ साहच वीसमेजा, अत्य याइं थ अण्णे केइ उवसपज्जणारिहे कप्पइ से(ं०) उवसपज्जि( त्ताण विहरित्तए )यन्वे, नित्य याइ य अण्णे केइ उवसपज्जणारिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए असमते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्ण जण्ण दि( सिं )स अण्णे साहृम्मिया विहरति तण्ण तण्ण दिस उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्य विहारवित्तय वत्थए, कप्पइ से तत्थ कारणवित्तय वत्यए, तिस च ण कारणिस निद्वियसि परो वएजा-वसाहि अजो ! एगराय वा दुराय वा, एवं से कप्पइ एगरायं वा दुराय वा वत्थए, नो से कप्पइ परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्यए, ज तत्य परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १११ ॥ वासावास पज्जो-सिव(ए)ओ भिक्ख य ज पुरओ कट्टु विहरइ साहच वीसमेजा, अत्यि याइ थ अण्णे केइ उनसपज्जणारिहे से उनसपज्ज्यिन्ने, नित्य याइ थ अण्णे केइ उनसपज्जणा-रिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए असमते कप्पइ से एगराइयाए पिडमाए जण्ण दिस अण्णे साहम्मिया विहरति तण्ण तण्ण दिस उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तिय वत्यए, कप्पड से तत्य कारणवत्तिय वत्थए, तसि च ण कारणसि निद्वि-यसि परो वएज्जा-नसाहि अजो । एगराय वा दुराय वा, एव से कप्पइ एगराय वा दुराय वा वत्यए, नो से कप्पइ पर एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्यए, ज तत्य परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ ११२॥ आयरिय-उवज्झाए गिळायमाणे अण्णयर वएजा-अज्जो ! ममसि ण काळगयसि समाणसि अय समुक्कानियन्वे, से य समुक्कसणारिहे समुक्कासियन्वे से य नो समुक्कसणारिहे नो समुक्कसियव्वे, अत्थि याइ थ अण्णे केइ समुक्क्सणारिहे से समुक्कसियव्वे, नित्थ याइ थ अण्णे केइ समुक्तसणारिको से चेव समुक्कसियन्वे, तसि च ण समुक्टिस परो

पएजा~दुस्समुकिष्ठ ते अन्त्रो । निषिधवाद्धि, तस्स मं निषिज्ञावमाणस्स नत्वि वेद क्रेप वा परिदारे वा के (तें) साहरियाना अहाकप्पेर्ण को उद्याप बेहरं(क्रम्पर्दें)-वि (दिसिं) सम्बोर्सि देसि राप्पतिनं क्रेप् ना परिदारे ना ॥ ११३ ॥ सामरिन-चनजराए कोश्वासमाणे अञ्चयरं नएजा-कजो । समित व बोहाविसेति समार्वति भयं रमुदरिवन्त्रे से व समुद्रसणारिष्के रमुद्रासियन्त्रे से य मी समुद्रसनारिष्के मी एसुद्रसिजनने अरिय नाइ व अपने केह एसुक्रसणारिक्वे समुक्रसिजनी मरिव बाई व बाज्ये केंद्र समुक्षसणारिक्के से चेव समुक्रिकेन्ये तीत व व समुक्रिकेन्द्र परो बएका-बुस्समुक्टिं ते कमो । निनिधवाहि, तस्य वं निनिधवमायस्य गरिष केंद्र केंद्र वा परिदारे वा अ साहम्मिया शहाकप्पेय नो सद्वार बिहर्स्ट सन्वसि देसिं तप्पत्तिम छेप वा परेष्ठारे वा ॥ ९१४ ॥ जावरिम्रजवज्ञाए सरमाने (पर) जाद चडरावर्पचरायांको कप्पानं निवन्धं नो उक्कानेह, कप्पाए सरिव सर्वे व से केंद्र मामफिजे कम्पाप, नरिन से केंद्र केंद्र वा परिवार वा नरिन यह न है केंद्र मामिके कम्पए, से संतरा केंद्र का परिदार वा ॥ १९५॥ जासरिवज्यकार वसरमाणे पर नड(पंच)रायाओ क्रमार्थ मिक्खं मो शब्दाके, क्रमाए वरिष बाई व से केंद्र माम्पनिजे करपाए, गरिव से केंद्र छैए वा परिवारे वा गरिव नर्म य से फेड़ मामनिजे क्याए, से सतरा केए वा परिदारे वा ॥ १९६ ॥ आवरिक उक्जाए सरमाने वा अधरमाने वा परं इसरावकरणाओं कपाप मिनई मी उबद्वाबेद्ध, कम्पाए मरिच बाद व से केंद्र सामनिको कमाए, नारेव से केंद्र केंद्र वा परिकारे का मरिक सर्व्य व से केंद्र सामगिने कप्पाए, संकच्छर द्वस्स तप्पतिने नी कुम्मद् सामरिजर्स (जाव) डाइँछितप् ( )॥ १९७॥ मिनक् व स्थाओ जयहम्म वर्णे गेर्ज उदस्यभितार्ज निवृद्देजाः सै व केंद्र साव्यम्मप् पासिता वर्षमा के अजी रवसपिकतार्थं निदृर्शि है से तत्व सम्बराष्ट्रियए से वस्त्रा राष्ट्रियए से बस्त्रा । भड़ भते ! शस्स कप्पाए ! जे तत्व सम्बन्धस्याए सं शएका व्यं वा से समर्व <del>वर्ष र</del> तस्य भानाध्ववायवनमनिष्ठे विद्विस्तामि ॥ १९८ ॥ वृद्धे साहम्मिना हुन्सेन एयसको समिनिभारिने वास्य, कथ्य, नो वृद्धे वेरे अन्युक्तिना एयसको समिनि चारियं चारए, क्यह म् बेरे बायुव्धिता एमयमो असिविचारिमं चारए, वेरा य से किनरेजा ए(व)वर्ण कप्पक् एमसको अमिनिकारिय आएए, वेरा व से नी नियरेका एवं भी कप्पद एणको समिधिचारियं चारए, वं तस्व वेरेई सहि-क्नो समिनियारिनं वरेति से संकरा केए वा परेवारे था ॥ १९९ ॥ वरिनायिक

१ नामात्रविभिष्ये ।

भिक्ख् जाव चउरायपचरायाओं थेरे पासेजा, सचेव आलोयणा सचेव पडिकमणा सचेव ओग्गहस्स पुट्वाणुण्णवणा चिट्टइ अहालंदमिव ओग्गहे ॥ १२० ॥ चरियापविट्ठे भिक्खू पर चउरायपचरायाओ थेरे पासेजा, पुणो आलोएजा पुणो पिकक्षमेजा पुणो छेयपरिहारस्स उवद्वाएजा, भिक्खुभावस्स अट्वाए दोचं पि ओग्गहे अणुण्ण-वेयव्वे सिया, अणुजाणह भते ! मिओग्गह अहालंद धुव नि(च्छइ)तियं वेउ दिय, तलो पच्छा कायसफास ॥ १२१ ॥ चरियानियहे भिक्ख् जाव चउरायपंचरायाओ थेरे पासेजा, सचेव आलोगणा सचेव पंडिकमणा सचेव ओग्गहस्स पुन्वाणुण्णवणा चिद्धइ अहालदमिव ओग्गहे ॥ १२२ ॥ चरियानियंहे भिक्खू परं चडरायपंचरायाओ थेरे पासेजा. पुणो आलोएजा, पुणो पडिक्समेजा, पुणो छेयपरिहारस्स उवट्ठाएजा, भिक्खुभावस्स अद्वाए दोच पि ओग्गहे अणुण्णवेयन्वे सिया । अणुजाणह भते ! मिओग्गह अहालद धुन नितियं वेउट्टिय, तओ पच्छा कायसफास ॥ १२३ ॥ दो साहम्मिया एगयओ विहरंति, तंजहा-सेहे य राइणिए य, तत्थ सेहतराए पिल-च्छणो, राइणिए अपलिच्छणो, सेहतराएण राइणिए उनसपज्जियन्ने, भिक्खोननायं च दलयइ कप्पाग ॥ १२४ ॥ दो साहम्मिया एगयओ विहरंति, तजहा-सेहे य राइणिए य, तत्थ राइणिए पलिच्छणे, सेहतराए अपलिच्छणे, इच्छा राइणिए सेहतराग उवसपजइ इच्छा नो उवसपजइ, इच्छा भिक्खोववाय दलयइ कप्पाग इच्छा नो दलयइ कप्पाग ॥ १२५ ॥ दो भिक्खुणो एगयओ विहरति, नो ण्हं कप्पइ अण्णमण्णं उवसपजिताण विहरित्तए, कप्पइ ण्ह अहाराइणियाए अण्ण-मण्ण उवसपजिताण विहरित्तए ॥ १२६ ॥ दो गणावच्छेड्या एगयओ विहरति, नो ण्ह कप्पइ अण्णमण्ण उवसपजित्ताण विहरित्तए, कप्पइ ण्ह अहाराइणियाए अण्णमण्ण उनसपजित्ताण निहरित्तए ॥ १२७ ॥ दो आयरियउनज्झाया एगयओ विहरेति, नो ण्ह कप्पड अण्णमण्ण उवसपजित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ ण्ह अहाराइ-णियाए अण्णमण्ण उवसपिजताण विहरित्तए ॥ १२८ ॥ वहवे भिक्खुणो एगयओ विहरंति, नो ण्ह कप्पइ अण्णमण्ण उवसपजित्ताण विहरित्तए, कप्पइ ण्ह अहाराइ-णियाए अण्णमण्ण उवसपजिताण विहरित्तए ॥ १२९ ॥ वहवे गणावच्छेड्या एगयओ विहरति, नो ण्ह कप्पइ अण्णमण्ण उवसपिजताण विहरित्तए, कप्पइ ण्ह अहाराइणियाए अण्णमण्ण उनसपिजताण विहरित्तए ॥ १३० ॥ वहवे आय-रियउवज्झाया एगयओ विहरंति, नो ण्ह कप्पइ अण्णमण्ण उवसपिजताण विहरि-त्तए, कप्पइ ण्ह अहाराइणियाए अण्णसण्ण उवसपिजताण विहरित्तए ॥ १३९ ॥ वहचे भिक्खुणो वहूवे गणावच्छेड्या वहूवे आयरियउवज्झाया एगयओ विहरंति. कम्पद्र भ्रतं अहाराद्रविशाध अञ्जलभागं उदसंपिजनाणं विहरित्तप् (हेर्मदनिन्हाद) ॥ ११९ ॥ ति-मेमि ॥ चवहारस्स चउत्थो उहेसमो समन्तो ॥ ४ ॥ वयहारस्स पंचमो उद्देसओ मो बच्चर क्वतिनीए जन्मनिह्याए हेर्यतनिम्हास चारए ॥ १३३ ॥ बच्चर

पवतिजीय मध्यतद्वराए हेमेतथिम्हाछ चारए॥ ११४॥ मो अध्यद् गमानच्छेरचीए अप्पनद्भवाप् देर्मतिवस्दात् चारए ॥ १३५ ॥ कप्पद्म गमामखेदधीए अप्पनजन्ताए देमंतिगिम्हार् चारए ॥ १३६ ॥ नो कम्ब्ह प्वतिबीए अन्यतह्याए वासावासं परमण् ॥ १२७ ॥ कम्पद्र पवतिजीए अप्यक्तत्वाए वासावासे प्रत्यण् ॥ १२८ ॥ भी कपाड राजाबरक्रेप्रचीए अप्यच्यात्वाए बासाबार्स गरबए ॥ १३६ ॥ कपाइ गजाबच्छेद्रबीए अप्परेचमाए बासावाचे बत्यए ॥ १४ ॥ से गामीव वा नगरेसि वा निगमरी वा रावहाजिति वा बहुनं क्वतिजीनं मण्याहवानं बहुनं यमानस्टेर शीर्ग अप्ययतत्वानं कपाः हेमंत्रकिन्हास शारए अन्वमन्यं पी(निर)साए ॥ १४९ ग धे गामित पा नगरेति वा निगमेति वा रायद्वानिति वा वहूनं प्रवित्तिनी न नय-चउत्पानं बहनं गनावरहेऽजीनं अपरांचमानं रूपाइ वासावादं बह्यार सन्यसन्त

मीगाए ॥ १४२ ॥ गामालगार्थ ब्राजमाची विम्यंदी य थे प्रस्को (बर्ड) कार्व भिडं रिजा)रह सा आहच बीसंभेजा अल्पि याई थ साह कल्या उपसंपजमाण्डिर ता कार्यपनियम्या नास्य बाई व नाइ सम्बा उन्तंपज्ञक्यी नीमे व जपमी बापाई भगमते (१४) बच्च है। विगालमाए परिमाए क साइम्मिनीओ निहरंति सन्ने 🐔 उबलितप, जो ग H वतियं वापणं कप्पाः सा तत्व √. तंति **च** 

परो पएमा-स्माहि अ**ओ!** एगर ए । सा व क्षा कामग्र मो साक्ष्यद् वर्ष

दुराय वा, एव सा कप्पइ एगराय वा दुराय वा वत्थए, नो सा कप्पइ पर एग-रायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, जं तत्थ पर एगरायाओ वा दुरायाओ वा वसइ, सा सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १४४ ॥ पवित्तणी य गिलायमाणी अण्णयर वएजा-मए ण अजो ! कालगयाए समाणीए अयं समुक्कसियन्वा, सा य समुक्क-सणारिहा समुक्कसियव्वा, सा य नो समुक्कसणारिहा नो समुक्कसियव्वा, अत्यि याई थ अण्णा काइ समुक्कसणारिहा सा समुक्कसियव्वा, नित्थ याइ थ अण्णा काड समुक्कसणारिहा सा चेव समुक्कसियव्वा, ताए व ण समुक्किट्ठाए परो वएजा-दुस्स-मुक्तिह ते अजे । निक्खिवाहि ताए णं निक्खिवमाणाए नित्य केइ छेए वा परिहारे वा, जाओ साहम्मिणीओ अहाकप्प नो उद्घाए विहरति सन्वासिं तासिं तप्पत्तिय छेए वा परिहारे वा ॥ १४५॥ पवत्तिणी य ओहायमाणी अण्णयर वएजा-मए ण अजो । ओहावियाए समाणीए अयं समुक्तसियव्वा, सा य समुक्तसणारिहा समुक्त-सियव्वा, सा य नो समुक्कमणारिहा नो ममुक्किसयव्वा, अत्यि याड थ अण्णा काइ समुक्कसणारिहा सा समुक्किसियव्वा, नित्य याड थ अण्णा काइ समुक्कसणारिहा सा चेव समुक्किसयव्वा, ताए व ण समुक्किट्ठाए परो वएजा-दुस्समुक्किट्ट ते अजे! निक्खिवाहि, ताए ण निक्खिवमाणाए नत्थि केइ छेए वा परिहारे वा, जाओ साहिम्मणीओ अहाकप्प नो उट्टाए विहरंति सव्वासिं तासिं तप्पत्तिय -छेए वा परिहारे वा ॥ १४६ ॥ निग्गथस्स (ण) नवडहरतरुण(ग)स्स आयारपक्ष्पे नाम अज्झयणे परिन्महे सिया, से य पुच्छियन्वे, केण ते अजाे! कारणेण आयार-पकप्पे नाम अज्झयणे परिच्महे, किं आवाहेण पमाएण 2 से य वएजा-नो आवा-हेण पमाएण, जावजी(वाए)व तस्स तप्पत्तिय नो कप्पइ आयरियत्त वा जाव गणावच्छेउयत्त वा उद्दिसत्तएवा धारेत्तए वा, से य वएजा-आवाहेण नो पमाएण, से य सठवेस्सामीति सठवेजा, एव से कप्पड आयरियत्त वा जाव गणावच्छेडयत्त वा डिइसित्तए वा धारेत्तए वा, से य सठवेरसामीति नो सठवेजा, एव से नो कप्पड सायरियत्त वा जाव गणावच्छेड्यत्त वा उद्दिसित्तए वा वारेत्तए वा ॥ १४७ ॥ निमाधीए (ण) नवडहरतह(णिया)णाए आयारपरुपे नाम अञ्झयणे परिञ्मेट्रे सिया, सा य पुच्छियव्या, केण भे कारणेण (अजा!) आयारपकप्पे नाम अज्जयणे परिन्महे, कि आवाहेण पमाएण ? सा य वएजा-नो आवाहेण पमाएण, जावजीव तींसे तप्पत्तिय नो क्प्पड प्रतिणित वा गणावच्छेडणित वा उद्दिसितए वा धारेत्तए वा, सा य वएना-आवाहेणं नो पनाएण, मा य सठवेस्मामीति सठवेजा, एव से रप्पद पर्नात्तिणित वा गणावच्छेर्णित वा उद्दिवित्तए वा धानेत्तए वा, मा य सठवेस्मा- ना भारेतए ना ॥ १४४ ॥ चेरानं नेरस्मिपताल कायारपक्रये लागं अञ्चलये परिनादे चिमा कप्पा देखि रंडवेताल वा असंडवेताण वा आयरियर्त वा **बा**व गदावरकेरयर्त वा उदिसिताए वा पारेताए वा ॥ १४९ ॥ बेरावाँ बेरमूमिपतार्थं आसारपद्रम्ये नार्स अजस्यये परिच्यद्वे सिया कृष्या वेसि संनिधन्यात्र वा संत्यक्षण वा सत्यक्षण वा सत्तावमान वा पाधिक्रमान वा आसारपकर्ष्यं भागं अञ्चलक दोवं पि तवं पि पविप्रस्कित् वा परि सारेन्य वा व १५ व के किमांबा व किमांबीओ य संगोहमा सिवा नो कं क्यार धान्त्रमञ्ज्ञस्य अंतिए जाकोएतए, अत्य यहं (थ) म्हं केइ जामोरायारिहे, क्रम्ब में तस्य अंतिए साओइसए, गरिय बाई क्षं केंद्र लाकोयगारिके एव क्षं कप्पद स<del>न्द</del>-मञ्चारस सरिए आसोएतए ॥ १५९ ॥ से जिलांबा व विर्मावीको व सेमोहवा सिना भी क्षे कप्पद अञ्चल व्यत्स अतिए)जोर्ज वेशावर्ष शास्त्रीतए, अस्त्रि शह क्षेत्र मेनावणकरे कम्पद्र व्हें विवासको कारतेलाए, परिच शहं व्ह केद वेदासककरे एन पर् कमाद शामामञ्जर्भ नेजायने चारविताए ॥ १५२ ॥ विस्ताच जा र्ज राज्ये वा विवासे प पीइपद्धो व्हरेजा *इर*नी वा प्रश्चिस्य श्रोमानेना प्रश्चि वा इरनीए जोमानेका एवं पे कप्ता, एवं से निक्का, परिवारं च से श(यो) पाउचह-पुस कप(यो)ये वेरकप्रिवार्च एवं हे नो क्रम्यह, एवं से नो निद्वह, परिवार च नो पातवाइ-एस क्रम्पे जिनक्रिय-याणं ॥ १५३ ॥ ति-जैमि ॥ ववहारस्छ पंचमो उद्देसको समचो । ५ ॥ ववहारस्स छही उदेसओ

मिक्स स इच्छेमा नामिक्षं एतए, नो (छ) प्रप्त के समयुक्तिका स्तर्मिं एतए, कप्पत्त (ह) वेरे सायुक्तिका नामिक्षं एतए, नो (छ) प्रप्त के समयुक्तिका नामिक्षं एतए, वेरा स हे सिवरंगा वर्ष है सप्त स्तर्मिं एतए, वेरा म हो सिवरंगा वर्ष है सप्त स्तर्मिं एतए, वेरा म हो सिवरंगा वर्ष है सप्त स्तर्मिं एतए, वेरा म हो सिवरंगा वर्ष है सप्त है स्तर्मिं स्तर्मिं है पत्र है स्तर्मिं स्तर्मिं है पत्र है स्तर्मिं स्तर्मिं स्तर्मिं है पत्र है स्तर्मिं स्तर्मिं स्तर्मिं स्तर्मिं है पत्र है स्तर्मिं है स्तर्मिं है स्तर्मिं है स्तर्मिं स्तर्मिं है स्तर्भिं है स्तर्मिं है स्तर्भिं है स्तर्भे है से है स्तर्भिं है है से हम्मार्गिं हो है से हे स्तर्भे हो है से हम्मार्गिंग है है से हे हम्मार्गिंग् हो है से हम्मार्गिंग्य हो हो है से हम्मार्गिंग हो हम्मार्गिंग हो है से हम्मार्गिंग हो हम्मार्गिंग हो है से हम्मार्गिंग हो हम्मार्गिंग हो हम्मार्गिंग हो हम्मार्गिंग हो हम्मार्गिंग हम्मा

गमणेणं पुट्याउत्ते से कप्पड पिड्यगाहेत्तए ॥ १६१ ॥ जे से तत्थ पुन्वागमणेणं पच्छाउत्ते नो से कप्पइ पिडिग्गाहेत्तए ॥ १६२ ॥ आयरियउवज्झायस्स गणिस पंच अडसेसा पण्णता, तजहा-(१) आयरियउवज्झाए अतो उवस्सयस्स पाए निगिज्झिय २ पप्फोडेसाणे वा पमज्जमाणे वा नो अ(णा)इक्षमइ ॥ १६३ ॥ (२)आयरियउवज्झाए अतो उवस्सयस्स उचारपासवणं विभिन्नमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्षमइ॥ १६४॥ (३) आयरियउवज्झाए पभू वेयाविधय इच्छा करेजा इन्छा नो करेजा ॥ १६५ ॥ (४) आयरियउवज्झाए अतो उवस्सयस्स एगरायं वा दुराय वा वसमाणे नो अइक्षमइ ॥ १६६ ॥ (५) आयरियउवज्झाए वाहिं उवस्सयस्स एगराय वा दुरायं वा वसमाणे नो अइक्ष्मइ ॥ १६७ ॥ गणावच्छेइयस्स ण गणिस दो अइसेसा प०, त०-(१) गणावच्छेइए अतो उवस्सयस्स एगराय वा दुराय वा वसमाणे नो अडक्क्सइ॥ १६८॥ (२) गणावच्छेइए वाहिं उवस्सयस्स एगराय वा दुराय वा वसमाणे नो अइक्कमइ ॥ १६९ ॥ से गामसि वा जाव रायहाणि-(सिण्णवेस)सि वा एगवगडाए एगदुवाराए एगणिक्खमणपवेसाए णो कप्पइ बहुण अगडसुयाण एगयओ वत्थए, अत्थि याइ ण्ह केइ आयारपकप्पारे णत्थि याइ ण्ह केइ छेए वा परिहारे वा, णित्य याइ ण्हु केइ आयारपकप्पधरे से (सब्वेसिं तेसिं) सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १७० ॥ से गामसि वा जाव रायहाणिसि वा अभि-णिन्वगडाए अभिणिदुवाराए अभिणिक्खमणपवेसणाए णो कप्पइ बहूण वि अगड-सुयाण एगयओ वत्थए, अत्थि याइ ण्ह केइ आयारपकप्पघरे जे तत्तिय स्यणि सवसइ णित्य याइ ण्हं केह छेए वा परिहारे वा, णित्य याइ ण्ह केइ आयारपकप्पधरे जे तत्तिय रयणि सवसइ सन्वेसिं तेसिं तप्पत्तिय छेए वा परिहारे वा ॥ १७१ ॥ से गामसि वा जाव रायष्टाणिसि वा अभिणिव्वगडाए अभिणिदुवाराए अभिणिक्ख-मणपवेसणाए णो कप्पइ बहुसुयस्स बब्भागमस्स एगाणियस्स भिक्खुस्स वत्थए, किमग-पुण अप्पागमस्स अप्पस्भुयस्स १॥ १७२॥ से गामसि वा जाव रायहाणिसि वा एगवगडाए एगदुवाराए एगणिक्खमणपवेसाए कप्पइ बहुसुयस्स बब्भागमस्स एगाणियस्स भिक्खुस्स नत्थए दुइ(उभ)ओ काल भिक्खुमाव पिंडजागरमाणस्स ॥ १७३ ॥ ज(जे त)त्य एए वहवे इत्थीओ य पुरिसा य पण्हावेंति तत्य से समणे णिग्गये अण्णयरंसि अचित्तसि सोयसि सुक्षपोग्गले णिग्घाएमाणे इत्यकम्मपिड-सेवणपत्ते आवज्जइ मासिय परिहारहाण अणुग्चाइय ॥ १७४॥ जत्य एए वहवे इत्थीओ य पुरिसा य पण्हावेंति तत्थ से समणे णिग्गथे अण्णयरसि अचित्तसि सोयसि मुक्ष्पोग्गले णिग्घाएमाणे मेहुणपिंडसेवणपते आवज्जद चाउम्मासियं परि- बारद्वामं अनुस्माद्वं ॥ १७४, ॥ यो कप्पर् दिस्मेवान वा विस्मेवीन वा सिर्म्यवं (अन्त्रपत्राजो भागमं) पुमावारं सन्त्रावारं सिन्नावारं सिन्नावारं

#### ववहारस्य सत्तमो उद्देसधी

खे जिम्मेचा व पिन्मेचीको न प्रेमीचा दिवा ना क्यान् पिन्मेचीको सम्बेच समापुरिकता पिम्मेचीको न प्रेमीचा दिवा ना क्यान् पिन्मेचीको सम्बेच समापुरिकता पान्मेची सम्बन्धित समापुरिकता ना प्राथमिकत सम्विक्ता सार्विक्त दिक्ताप वा नाएतए वा वन्द्रानेत्रण वा प्रेमेचीकाए वा प्रेमेचित्त पान्मेचीको प्रित्मेची दिक्ताप वा नाएतए वा वन्द्रानेत्रण वा वरिष्णु वा ॥ १ ४ ॥ वे निम्मेचा ने पिम्मेचीके न प्रमोद्धा दिना क्यान् पिम्मेचीके विस्मेचीक संपुर्विक्ताय निर्मेची सम्यापास्था सार्व्य बुद्धावार प्रकारात्री पिन्मचाचीका प्रकारित स्वा वा स्थापित सम्बन्धित सम्बन्धित सम्बन्धित सम्बन्धित सम्बन्धित स्व वा स्वप्रदेश सम्बन्धित वा स्वप्रदेश स्व वा स्वप्रदेश वा स्वप्रदेश स्व वा स्वप्रदेश स्व वा स्वप्रदेश स्व वा स्वप्रदेश वा स्वप्रदेश वा स्वप्रदेश वा स्वप्रदेश स्व वा स्वप्रदेश वा स्वप्रदेश वा स्वप्रदेश वा स्वप्रदेश वा स्वप्रदेश स्व वा स्वप्रदेश वा स्वप्रदेश वा स्वप्रदेश वा स्वप्रदेश वा स्वप्रदेश स्व वा स्वप्रदेश वा स्वप्रदेश स्व स्व स्वयं स्व स्वप्रदेश स्व वा स्वप्रदेश स्व स्वयं स्व स्वयं स्व स्वयं स्वयं स्व स्वयं स्वयं स्व स्वयं स्वयं स्व स्व

१ आयो जानरिसे संबद्धगमहिनमुक्तकाह १७६-१७७ सरिस वदर "बिमार्वि" राजे "किमार्वि" ति ।

4। १८० ॥ जे णियनया य णियनधीओ य समोडया सिया, नो ण्ह कप्पइ (णियनथे) पारोक्ख पाडिएकं सभोइय विसमोग करेत्तए, कप्पइ ण्ह पच्चक्ख पाडिएक समोइयं विसमोग करेत्तए, जत्थेव अण्णमण्णं पासेज्ञा तत्थेव एव वएज्ञा-अह ण अज्ञो ! तु(म)माए सिद्ध इमिम्म कारणिम्म पचक्ख सभोग विसभोग करेमि, से य पिडतप्पेजा एव से नो कप्पइ पचक्खं पाडिएक सभोइय विसभोग करेत्तए, से य नो पडित-म्पेजा एव से कप्पइ पञ्चक्ख पाडिएकं सभोइय विसभोगं करेत्तए॥ १८१॥ जाओ णिग्गथीओ वा णिग्गथा वा सभोइया सिया, नो ण्ह कप्पइ (णिग्गथीओ) पचक्ख माडिएक सभोइय विसभोग करेतए, कप्पइ ण्ह पारोक्ख पाडिएक सभोइय विसमोग करेत्तए, जत्येव ताओ अप्पणो आयरियडवज्झाए पासेजा, तत्थेव एव वएजा-अह णं भते! असुगीए अजाए सिंद इमिम कारणिम्म पारोक्ख पाडिएक सभोग विसभोग करेमि, सा य से पिंडतप्पेजा एवं से नो कप्पइ पारोक्ख पाडिएक समोइयं विसमोग करेत्तए, सा य से नो पडितप्पेजा एवं से कप्पइ पारोक्ख पाडिएक सभोइय विसमोग करेताए ॥ १८२ ॥ नो कप्पइ णिग्गथाण णिग्गंथि अप्पणो अहाए पञ्चावेत्तए वा मुडावेत्तए वा (सिक्खावेत्तए वा) सेहावेत्तए वा उबद्वावेत्तए वा सविसत्तए वा सभुजित्तए वा तीसे इत्तरिय दिस वा अणुदिस वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ १८३ ॥ कप्पइ णिग्गयाण णिग्गयि अण्णेसि अद्वाए पन्वावेत्तए वा जाव सभुजितए वा तीसे इत्तरिय दिस वा अणुदिस वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ १८४ ॥ नो कप्पइ णिग्गथीण णिग्गथ अप्पणो अद्वाए पन्वावेत्तए वा मुंडावेत्तए वा जाव उद्दिसित्तए वा धारेतए वा ॥ १८५ ॥ कप्पड् णिग्गथीण णिग्गथ णिग्गथाण अट्ठाए पव्वावेत्तए वा मुडावेत्तए वा जाव उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ १८६॥ नो कप्पइ णिग्गथीण विइकिष्ठिय दिस वा अणुदिस वा उद्सितए वा धारे-त्तए वा ॥ १८७ ॥ कप्पइ णिगंथाण विङ्किद्विय दिस वा अणुदिस वा उद्दिसित्तए वा घारेत्तए वा ॥ १८८ ॥ नो कप्पइ णिग्गथाण विइकिट्ठाइ पाहुडाइ विओसवेत्तए ॥१८९॥ कप्पइ णिग्गंथीण विइकिद्वाई पाहुढाइ विओसवेत्तए ॥ १९० ॥ नो कप्पइ णिग्गथा-(ण वा णिगगथीण वा)ण विइकिट्ठए काले सज्झाय (उिह्सित्तए वा) करेत्तए (वा) ॥ १९१ ॥ कप्पइ णिग्गथीण विइकिट्ठए काले सज्झाय करेत्तए णिग्गथणिस्साए ॥ १९२ ॥ नो कप्पइ णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा असज्झाइए सज्झाय करेत्तए ॥ १९३ ॥ कप्पइ जिम्मथाण वा जिम्मथीण वा सज्झाइए सज्झाय करेताए ॥ १९४॥ नो कप्पइ णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा अप्पणो असज्झाइए सज्झाय करेत्तए, कप्पइ ण्ह अण्णमण्णस्स वायण दलङ्क्तए ॥ १९५ ॥ तिवासपरियाए समणे णिगाये ५२ युत्ता०

पंचवासपरिचाए सक्ने विमांचे सद्विवासपरिचाए समचीए विमांचीए कप्त वार्च रिम(त्ताए)उक्जानताए चरिवितए॥ १९७॥ गामानुगामै सूज्जाने निक्य य शहन वीर्यमेका वं व सरीरण केंद्र साहमिनए पासेका कप्पद्र से तं सरीरपं से न (सा) सागारैयमिति कह ( एगेते अभिते ) वंश्रिते बहुन्यसुए पश्चिमेहण पमन्तिता परिद्वेताषु, अस्य मार्च व केव साविभावपंतिए उकारणवाए परि इरणारिहे, कप्पत्र से सागारकार गहाय बोर्च पि बोम्गई क्लुव्बदेता परिहार परि हारेचए । १९८ । सामारिए सबस्यमं बहरूचं परक्षेत्रा से व बहरूमं बस्मान इम(मिड)मि य इमसि य कोबासे समका विकास परिवर्सत से सामारिए पारिक्री रिए, से य नो (एवं) वएजा क्टब्र्ए वएजा() से सागारिए पारिहारिए, दो वि ते (एवं) बएजा (बाब) यो वि सागारिया पारिशारिया ॥ १९ ॥ सामारिए वर्ष-स्सर्भ विकिलेका से व कहने बएका-स्मीत व इसमि व ओवासे समजा विमीना परिवर्धित से सामारिए पारिकारिए, से म नो वएना कहए वएना से सामारिए पारिकारिए, दो नि ते वएका वो नि सागारिया पारिकारिका ॥ १ ॥ निक्रमूना ना(नि)यञ्चकवाचिजी छा वि याचि कोसमई क्लुक्बवेयव्या क्रिसंग-पुच पिवा वा साया वा प्रते वा छे (व) वि वा(वी)वि को(वी)मा(वी) कोगोविव(का)वे प्र १ ॥ पदिए वि कोममहे व्यक्तविक्षया ॥ १ १ ॥ छे त्वा(पर)परेवडेड एवडेड कल्लोपबेड कल्लोक्कियोड कारएपरिमादिएस स्वेब कोमाहस्य उल्लाह्न वका विद्वय सहासंस्थान ओमाहे n २ ३ n से राजपरियोध अर्थवनेत होसके बोच्छिनोड परपरिमाहिएछ जिल्ह्यगावस्य बहुाए दोवं पि ओगाई जनुन्यदेशनी विना ॥ २ ४ छ वि-नेमि ॥ यवहारस्स सत्तामी उद्देसको समतो ॥ ७ ॥

#### वयहारस्स अहमो उरेसओ

पाहा(शिह) अहं) स्थान से स्वार स्थान कि स्वार क्यां कर स्थान स्थान

॥ २०७ ॥ से अहालहुसग सेजासथारगं जाए(गवेसे)जा ज चिक्कया एगेण हत्येण ओगिज्झ जाव एगाह वा दुयाह वा तियाहं वा चंउयाह वा पं(चाह वा दूरमिव)चगाह वा अद्धाण परिवहित्तए, एस मे वृद्धावासास भविस्सइ॥ २०८॥ थेराण थेरभूमिपत्ताण कप्पइ दङए वा भडए वा मत्तए वा चेले वा चेलचिलमिली वा अविरहिए ओवासे ठवेत्ता गाहावद्दुल पिंडवायपिंडया(भत्ताए वा पाणा)ए (वा) पविसित्तए वा णिक्खमित्तए वा, कप्पड ण्हं सणियहचारीण दोचं पि ओग्गह अणुण्णवेता (परिहार) परिहरित्तए ॥ २०९ ॥ नो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गथीण वा पाडिहारिय वा सागारियसतिय वा सेजासयारग दोचं पि ओग्गह अणणुण्ण-वेता विहया नीहरित्तए ॥ २१०॥ कप्पइ णिग्गथाण वा णिग्गंथीण वा पाडि-हारियं वा सागारियसितय वा सेजासथारग दोच पि ओग्गह अणुण्णवेता वहिया नीहरित्तए ॥ २११ ॥ नो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पाडिहारिय वा सागारियसतिय वा सेजासथारग सन्वप्पणा अ(पच)प्पिणिता दोच पि (तमेव) ओग्गह अण्णुज्जवेता अहिद्वित्तए, कप्पइ (०) अणुज्जवेता (०)॥ २१२॥ नो कप्पइ णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा पुरुवामेव ओग्गह ओगिण्हिता तओ पच्छा अणुण्णावेत्तए ॥ २१३ ॥ कप्पइ णिरगयाण वा णिरगंथीण वा पुरुवामेव ओरगह अणुण्णवेत्ता तओ पच्छा ओगिण्हित्तए॥ २१४॥ सह पुण एव जाणेजा, इह खलु णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा नो छलमे पाडिहारिए सेजासथारए ति कट्ट एव ण्हं कप्पइ पुन्वामेव ओग्गह ओगिण्हिता तओ पच्छा अणुण्णवेत्तए, मा व(दु)ह(ओ)उ अज्ञो॰ व(त्तिय)इ अणुलोमेण अणुलोमेयन्वे सिया ॥ २१५॥ णिगगथस्स णं गाहाबङ्कुल पिंडवायपिंडयाए अणुपिवद्वस्स अहालहुसए उवगरणजाए परिब्सट्टे सिया, त च केइ साहम्मिए पासेजा, कप्पइ से सागारकड गहाय जत्थेव (ते) अण्णमण्ण पासेज्ञा तत्थेव एव वएज्ञा-इ(मं ते)मे मे अज्ञो ! किं परिण्णाए १ से य वएजा-परिण्णाए, तस्सेन पिंडणिजाएयव्वे सिया, से य वएजा-नो परिण्णाए, तं नो सप्पणा परिभुं(जए)जेजा नो अ(ण्णेसिं)ण्णमणस्स दावए, एगते बहुफाछए (पएसे पिंडेलेहित्ता) यंडिले परिद्ववेयव्वे सिया ॥ २१६॥ णिग्गथस्स ण वहिया वियारसूर्मि वा विहारभूमिं वा णिक्खतस्स अहालहुसए उवगरणजाए परिब्मद्वे सिया. त च केड साहम्मिए पासेजा, कप्पइ से सागारकडं गहाय जत्थेव अण्णमण्णं पासेजा तत्थेव एव वएजा-इमे (ते) मे अजो ! किं परिण्णाए १ से य वएजा-परिण्णाए, तस्सेव पिंडिणिजाएयन्वे सिया, से य वएजा-नो परिण्णाए, त नो अप्पणा परिभुजेजा नो अण्णमण्णस्य दावए, एगते वहुफासुए थिंडहे परिद्ववेयव्वे सिया ॥ २१७॥

निर्माबस्स में गामाणुगाम कुल्ममाणस्य भव्यवरे छदगरणजास परिष्यक्षे श्रवा है च केंद्र शाहमितए पासेच्या कप्पड़ से सामारकार शहास बुर्(श्राव)मेक्यदार्ग परि विहाए, बरचेव अञ्चनपर्य पासेजा ठरचेव एवं वर्ण्या-इमे मे बज्यो ! कि परि ज्याए ? से म वर्ष्णा-परिज्ञाए, तस्सेव परिन्तजाएयक्वे क्षित्रा से म वर्षा-नो परिण्याए, तं मो अप्यथा परिमुद्धेजा नो कण्यमन्त्रस्य दावए, एगंते बहुणहुए मविशे परिद्ववेदकी शिजा ॥ २१८ ॥ कप्यद् निर्माणान वा मिर्माणीय वा अहरेग-पविभाह अञ्जसञ्जरस बद्धाए (बूरसबि अद्धार्च परिवद्दित्तए) बारेत्तप् वा परिस्पद्धितर बा सो बार्च घारेस्टर काई वार्ज बारेस्साम जन्बो बार्ज बारेस्टर, तो से कन्मद् ते जनायुच्छित्र कनामधित कन्नमन्त्रीष्टं वार्ट वा क्युपानाते वा कन्म पै वे लखुरिकम आमंतिर सम्बग्नेली राउं वा शतुप्पवार्व वा ॥ २१९ म **स्ड** क्लक्रयमायमेते बाहारै बाहारैमाने (समये) विमाय क्रयाहारे बार(इवाव)स कास-पमाजनेते आहार माहारेमांचे क्रिम्पि अवहोमोयरिया होस्स क्याप्रमान मेरी भाहारे भाहारेमाणे किमांचे बुमागपते चत्रवीर्ध करसम्प्रमाणमेरी आहारे शाहारेमामे निम्मने मो(प्राो)मोगरेना प्रश्तीयं व्यवस्थानमेति आहारे महारे माणे निमानि किन्त्रोमोनरिता नतीयं काकप्यमानमेत आहारं आहारेमाने निमाने वमायपत्ते एन्द्रे एनेन नि कउने(वाते)वं कन्तं आहारे आहारेमाने समने निर्माने को पनामरसमोह-ति बत्तमं सिया ॥ ११ व ति-वेस ॥ धनहारस्स महमो उद्देशको समस्तो 🛚 ८ 🛎

#### वयहारस्य णवदी उदेसमी

धागारिवस्स आएवे कोठो बगवायु ग्रीका निर्देश निर्देश) मो वाधिमारिए, हमा बान्य, मो वे बन्दर परिवाहितए ॥ २२ ॥ धागारिवस्त आएवे क्यो बगार ग्रूज्य निर्देश निर्देश नगरिवहित्स । १२ ॥ धागारिवस्त आएवे कोठ बगार ग्रूज्य निर्देश निर्देश नगरिवहित्स । १२२ ॥ धागारिवस्त आएवे वार्षे पात्र ग्रूज्य निर्देश निर्दे

भुजड निट्ठिए निसंहे पाडिहारिए, तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २२७॥ सागारियस्स दासे वा वेसे वा भयए वा भइण्णए वा वाहिं वगडाए भुजइ निहिए निसट्ठे अपाडिहारिए, तम्हा दावए, एव से कप्पड पडिगाहेत्तए ॥ २२८॥ सागारिय(स्स)णायए सिया सागारियस्स एगवगडाए अतो (सागारियस्स) एगपयाए सागारिय चो(च उ)वजीवइ, तम्हा दावए, णो से कप्पड पिडगाहेत्तए ॥ २२९ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स एगवगडाए अतो अभिणिपयाए सागारिय चोव-जीवइ, तम्हा दावए, जो से कप्पइ पिंडगाहेत्तए ॥ २३० ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स एगवगडाए वाहिं एगपयाए सागारिय चोवजीवइ, तम्हा दावए, णो से कप्पइ पिडगाहेत्तए ॥ २३१ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स एगवगडाए वाहिं अभिणिपयाए सागारियं चोवजीवइ, तम्हा दावए, णो से कप्पइ पडिगाहेतए ॥ २३२ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स अभिणिव्वगडाए एगदुवाराए एग-णिक्यमणपवेसाए अतो एगपयाए सागारिय चोवजीवइ, तम्हा दावए, णो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २३३ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स अभिणिव्वगडाए एग-दुवाराए एगणिक्खमणपवेसाए अतो अभिणिपयाए सागारिय चोवजीवइ, तम्हा दावए, णो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २३४ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स अभिणिव्वगडाए एगदुवाराए एगणिक्खमणपवेसाए वाहिं एगपयाए सागारियं चोव-जीवइ, तम्हा दावए, णो से कप्पइ पिडगाहेत्तए ॥ २३५ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स अभिणिव्वगडाए एगदुवाराए एगणिक्खमणपवेसाए वाहिं अभिणिपयाए सागारिय चोवजीवइ, तम्हा दावए, णो से कप्पइ पिडगाहेत्तए ॥ २३६ ॥ सागा-रियस्स चिक्कयासाला साहारणवक्कयपउत्ता, तम्हा दावए, जो से कप्पइ पिंडगाहेत्तए ॥ २३७ ॥ सागारियस्स चिक्कयासाला णिस्साहारणविक्कयपउत्ता, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २३८ ॥ सागारियस्स गोलियसाला साहारणवक्कयपउत्ता. तम्हा दावए, णो से कप्पइ पिंडगाहेत्तए॥ २३९॥ सागारियस्स गोलियसाला णिस्साहारणवक्कयपउत्ता, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पहिगाहेत्तए॥ २४०॥ सागारियस्स नो(नो)धियसाला साहारणवक्ष्यपउत्ता, तम्हा दावए, णो से कप्पइ पिंडगाहेत्तए ॥ २४१ ॥ सागारियस्य वोधियसाला णिस्साहारणवक्यपउत्ता, तम्हा दावए, एव से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २४२ ॥ सागारियस्य दोसियसाला साहारण-वक्यपंडता, तम्हा दावए, णो से कप्पइ पंडिगाहेत्तए ॥ २४३ ॥ सागारियस्स दोसियसाला णिस्साहारणवक्षयपउत्ता, तम्हा दावए, एव से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २४४ ॥ सागारियस्स सोत्तियसाला साहारणवृक्क्ष्यपन्ता, तम्हा दावए, णो से

कप्पद् पविभाहेत्तर् ॥ २४५ ॥ सामारियस्य शोतियसाळा विस्साद्वारमक्द्रकप्रका तम्दा दावप्, एवं से ऋण्यह पविभाहेतप् ॥ २४६ ॥ सामारियस्स बोडियतास साहारणबद्ध्यपउत्ता तम्हा दावप्, णो से कप्पड़ पविमाहेत्तए ॥ २४० ॥ सन्ध-रियस्त बोडिनसाका जिस्साहारणनवस्यपउत्ता समहा वालप्, एवं से कप्पद्र परि गोहेत्त् ॥ १४८ ॥ सायारिजस्य यंभिवसामा साहार्यवृद्धयन्त्रता । तम्हा राषर् वो से कप्पर पश्चिमाहेत्रम् ॥ १४९ ॥ सामारियस्य गंत्रियसामा मिस्साहारव्यस्य पटता तम्हा दावयु, एवं से कप्पट्र पडिगाहेतयु ॥ २५ ॥ सामाप्रिक्स स्टेडिक साब्य साहारणवद्यपन्नता सम्बा शावर, वो से कप्पट पडिगाडेतर ॥ १५९ ह सागारिक्त्स सोविक्तामा विस्ताहार्जनकायपत्रता सम्बा बावए, एवं से कप्त पहिमाहेल्य ।। २ १ ॥ सागारियस्य क्येसडीको संबद्धाकी तम्हा दाउए को से कप्पद प<sup>णि</sup>गाहेक्य ॥ २५३ ॥ सामारियस्य श्रीस**हिमो असंबदान्ते** तमहा सारर एनं से कम्पद पहिचाहेसर ॥ २५४ ॥ सामारियस्य अंत्रक्रम संबद्धा तमहा दागरः गी से कप्पद परिवाहेक्य ॥ १५५ ॥ सामारियस्य अंत्रक्रमा असंबंधा वस्सा बानए, एपं से कप्पद पडियाहेचए ॥ २५६ ॥ शायारियनावर सिना मापारियन एगबगडाए एगदुसराए एगकिन्यमभाषेशाए धागारियस्त एगाय् समारियं व क्षत्रीवर्, तम्हा वावयु, को छे क्यन्त् परिगाहेत्तर ॥ १५७ ॥ सामारियवासर निया सामारिमस्स एगकाडाए एगबुवाराए एगविकामकावेगाए सामारिमसा अमिनिन् मामारियं च जनजीवर तम्हा दाउप, यो से कप्पद्र पडिमाहेल्ए ॥ १ ८ ॥ रागारिकमानए शिया शायारिकस्य अमिजिन्तगढाए अभिनित्ताराण अभिनित्तार मध्यप्रेमाए सामारियरण एयरम् सामारियं च उपनीवरः तम्हा दावर मो वै कृपाइ पटिमाद्देशए n २७९॥ सामारियकायम् सिया नामारिक्स अभिनिम्पानार् अमिनिदुबाराएं अभिनिकरामगपरेगाएं गागारियस्य अमिनिदयु माम्परितं 🤻 उदबीवड तम्हा हारए, था से क्याद पहिमाहेल्छ ॥ १६ ॥ मान्यतमिया व मिश्वरहिमा (मं) एगूगरम्बाय राहेरिएडि क्रेन राज्यवर्च शिक्सामाचे नहार्ज भद्दाचाय भद्दामार्गे भद्दालचं भद्दालम्(मङापूर्ण)मं पाण्डि(ता)मा पाण्डिया (म<sup>न्यून</sup>) तीरिया किरिया (भागाए) अनुगतिया भवर त ६९ ॥ अन्त्रनीया चे निवर्ष पंडिमा चडमद्वीप् राप्टीपृद्धि रोदि व अगतीगदि भित्रगामप् अदागनं अदावर्ष अहाममां अहातर्च अहागम्यं चानिया पाडिया ग्रीरिया हिरिया अन्यतिया महा ■ १६१ व गरपरमिया में भिन्नुपहिमा प्यामीए सां<sup>क्रम</sup>िया<sup>र</sup> व पंरुपति मिलगागएदि सदामुणे सदाहर्णे सहायमां सदानचं सदागम्यं पार्गाया पार्णिया पार्णिया

तीरिया किट्टिया अणुपालिया भवइ ॥ २६३ ॥ दसदसमिया ण भिक्खपिडिमा एगेण राइदियसएण अद्धछट्टेहि य मिक्खासएहिं अहासुत्त अहाकप्पं अहामग्ग अहातच अहा-सम्म फासिया पालिया तीरिया किट्टिया अणुपालिया भवइ॥ २६४॥ दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तजहा-खुड्ढिया वा (चेव) मोयपिडमा महिह्या वा मोयपिडमा, खुड्डियण्ण मोयपिंडमं पिंडवण्णस्स अणगारस्सं कप्पड पढ(मेसरद)मिणदाहकालसमयिस वा चरिमणिदाहकालसमयंसि वा विहया गामस्स वा जाव रायहाणीए (सिणवेसिस) वा वणिस वा वणदुग्गिस वा पव्वयसि वा पव्वयदुग्गिस वा, भोचा आरुभइ चोह्समेण पारेइ, अभोचा आरुभइ सोलसमेण पारेइ, एवं खलु एसा ख्रिष्ट्या मोयपिडमा अहा-सत्त जाव अणुपालिता भवइ॥ २६५॥ महस्रियण्ण मोयपिंडमं पिंडवण्णस्स अणगारस्स कप्पइ से पढमणिदाहकालसमयसि वा चरिमणिदाहकालसमयसि वा वहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा वणिस वा वणदुग्गिस वा पव्वयसि वा पव्वयदुग्गिस वा, भोचा आस्मइ, सोलसमेण पारेइ, अभोचा आरुभइ, अद्वारसमेण पारेइ, एव खलु एसा मह-क्रिया मोयपिंडमा अहासुत्त जाव अणुपालिता भवइ ॥ २६६ ॥ संखादित्तयस्य ण (भिक्खुस्स पिडग्गहघारिस्स गाहावङ्कुल पिंडवायपिडयाए अणुप्पविद्वस्स) जावङ्य केइ अतो पडिग्गहंसि उ(वित्ता) वहतु दलएजा तावइयाओ (ताओ) दत्तीओ वत्तव्व सिया, तत्थ से केंद्र छ[प्प]व्वएण वा दू(दुर्)सएण वा वालएण वा अतो पिंडग्गहिस उविता दलएजा, सा (सन्वा) वि ण सा एगा दत्ती वत्तन्व सिया, तत्य से बहवे भुज-माणा सन्वे ते सय (२) पिं(इसाहणियं)इ अतो पहिग्गहिस उविता दलएजा, सव्वा वि ण सा एगा दत्ती वत्तव्वं सिया ॥ २६७॥ (सखादत्तियस्स ण मिक्खुस्स) पाणि-पिडिग्गहियस्स ण (गा॰) जावइय केइ अतो पाणिसि उवइत्त दलएजा तावइयाओ दत्तीओ वत्तव्य सिया, तत्य से केइ छव्यएण वा दूसएण वा वालएण वा अतो पाणिसि उवित्ता दलएजा, सा वि ण सा एगा दत्ती वत्तव्व सिया, तत्य से बहवे भुजमाणा सव्वे ते सय ( ' एग) पिं(ड)ड अतो पाणिसि उवित्ता दलएजा, सन्वा वि णं सा एगा दत्ती वत्तव्व सिया ॥ २६८ ॥ तिविहे उवहडे पण्णते, तजहा-सुद्धोवहडे फलिओवहडे ससद्वोबहरे ॥ २६९ ॥ तिबिहे ओग्गहिए पण्णते, तजहा-ज च ओगिण्हइ, जं च साहरइ, ज च आसगिस पिन्खवइ, एगे एवमाहर्स्य ॥ २०० ॥ (एगे पुण एव माहस्र) दुविहे ओग्गहिए पण्णते, तजहा-ज च ओगिण्हर, ज च आसगिस पिक्खवर ॥२०१॥ ति-वेमि ॥ ववहारस्स णवमो उद्देसको समत्तो ॥९॥

## ववहारस्स दसमो उद्देसओ

दो पिडमास्रो पण्णतास्रो, तजहा-जनमज्ज्ञा य चदपिडमा वहरमज्ज्ञा य

निमारेडे ने केड परीखड़ों(उ)नसम्मा समु(उ)प्पर्वति विम्ना वा महाएसमा वा तिरिक्त मोलिया वा(अणुन्धेमा वा ) वे (सम्बे) उपक्रणे सम्मं स्ट्रिका) हर कमर विविक्षेत्र महिकारोह् ॥ २७२ ॥ अवसञ्चल्यं चंदपत्रिम परिक्रणस्स अनगारस्य सहप्रकारत से पाकिक्य कप्पद एवा वर्षी ओजनस्स पढिगाईशाए एया पानस्म (सम्बेहें दुप्यवरुप्यवाइएहें आहारकवीहें सतेह परिविक्तेहें) क्षण्यागर्ने सुबोबहर्व पिजुद्दिता बहवे समनमाहणमञ्जूतिजयवनीमगा कम्पङ से एगस्ट मुक्तामस्य परिवाहेत्वर, यो दोन्हं को विषद् को बदर्ज यो वसकूं, को ग्रन्थ-गीए मो बानवरबाए वो दारमं रेजमाजीए, थो (से बप्पद) अंदो एक्टरस्ट दो है पाए साहरू रसमाजीए, (पटिगाद्विचए सह पुण एवं बालिका) को बाई एसकरन दो हि पाए साहरू बक्रमाचीए, एनं पानं कंदो केवा एनं पानं बाहे किया एहरं विश्वसदत्त्व (एयाए एसमाए एसमाणे कमीका जाहारे एयाए एसमार एस माने मो अस्मेजा को शाहारेजा) एवं रक्तरह एवं से कप्यह पडियाहेतए, रवं की इसमाइ, एवं से बा कम्पन परिणाहोत्तर, विहमाए से कम्पन दोलिंग हातीसी सीमनस्य परिचाहितर, दोलिंग पायस्य (सन्बेर्डि ) सहसाय से कमाइ द्वित्स वर्तीयो मोयजस्य परिमाहेत्त्य तिण्यि पाणस्य "चतःबीए से बण्यः चतःतीको मोनवस्य पडिगाहेराए करपायस्य पंत्रमीए से कम्पह पंत्रदर्शीओ भीयनस्य पडियाहेराए पंचपानस्य **क्ट्री**ए से कपड़ छ ब्लीओ सोमनस्य पहिलाहेत्तए छ पा<del>वस्</del>स स्टामीए से बण्या सत्त बताओं ओनगस्स पश्चिमहितप् कत्त वागस्स अञ्चमीप् से बण्या नह इत्तीको मोनगरस पश्चिमावेत्तप् अद्भ पागरसः जनगीए से कम्पह यन इतीको मोनगरस पडिगाईताए वन पायरस दसमीए से कप्पर इस इसीओ मोक्यरस पडिगाईपए वस पानस्स एपार(धी)समीए से कप्तइ एगार्स वत्तीओ मोपपस्स पश्चित्ताए प्यास्य पानस्य कारकगीप से कन्नड कार्स इसीको मोक्नस्य विध्याहेगर् बारस पामस्य तेरसमीप से क्याइ तेरस वशीओ ओवबस्स पहिचाईतए तरह प्रापरस जोत्समीए से कप्पड़ जोइस वृत्तीओ मोधनरस विन्याहेतए जोइस पानस्य पञ्चरसंभी(पुण्चिमा)ए सं कण्ड पञ्चरसं वृत्तीको शोज्यस्य पत्रिगाहेन्छ पञ्चरस पाणस्य वर्षुक्रमकस्य से पाडिवए कप्पति वोहस (वर्ताको मोनकस्य प्रविवाहेतप् चोइस पाणस्य सम्बद्धि बुप्पय बान को माहरिया) विद्रवाए कप्पद्द तरस इसीमो मोक्यस्स पविगाहेत्तप् ठेरस पानस्स बाद वो आहारेजा कावाए वप्यह बारस वर्त्तीओं मीनणस्स पृष्टिगाहेराण् बारस पाणस्स जाव यो आहारेजा बताबीण्

कप्पइ एकारस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, पचमीए कप्पइ दस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, छट्टीए कप्पइ णव दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, सत्तमीए कप्पइ अट्ट दत्तीओं भोयणस्स जाव णो आहारेजा, अट्टमीए कप्पइ सत्त दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, णवमीए कप्पइ छ दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, दसमीए कप्पइ पंच दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, एकारसीए कप्पइ चउदत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, वारसीए कप्पड तिदत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, तेरसीए कप्पइ दो दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा चउहसीए कप्पइ एगा दत्ती मोयणस्स जाव णो आहारेजा, अमावासाए से य अभत्तद्वे भवइ, एवं खलु एसा जवमज्झचदपिडमा अहासुत्त अहाकप्प जाव अणुपालिता भवइ ॥ २७३ ॥ वङ्रमञ्झण्ण चदपिडम पिंडवण्णस्स अणगारस्स मास वोसद्वकाए चियत्तदेहे जे केइ परिसहोवसग्गा ससु-प्पजति, तजहा-दिन्वा वा माणुरसगा वा तिरिक्खजोणिया वा अणुलोमा वा पिंडलोमा वा, तत्थ अणुलोमा वा ताव वदेजा वा नमसेजा वा सकारेजा वा सम्माणेजा वा कल्लाण मंगल देवय चेंड्य पज्जवासेज्जा, तत्थ पडिलोमा वा अण्णयरेण दडेण वा लडीण वा मुद्रीण वा जोतेण वा वेतेण वा कसेण वा काए आउडेजा, ते सन्वे उप्पण्णे सम्म सहेजा खमेजा तिइक्खेजा अहियासेजा ॥ २०४ ॥ वहरमज्झण्ण चदपिंडम पिंडवण्णस्स अणगारस्स वहुलपक्खस्स पांडिवए कप्पइ पण्णरस दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए पण्णरस पाणगस्स सन्वेहिं दुप्पयन्वउप्पयाइएहिं आहारकखेहिं जाव णो आहारेजा, बिइयाए से कप्पइ चउद्दस दत्तीओ भोयणस्स पिडगाहेत्तए जान णो आहारेजा, तहयाए कप्पइ तेरस दत्तीओ भोयणस्स जान णो आहारेजा, चउत्थीए कप्पइ बारस दत्तीओ मोयणस्स जाव णो आहारेजा, पचमीए कप्पइ एगारस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, छद्वीए कप्पइ दस दत्तीओ मोयणस्स जाव णो आहारेजा, सत्तमीए कप्पइ णव दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, अट्टमीए कप्पइ अट्ट दत्तीओ मोयणस्स जाव णो आहारेजा, णवसीए कप्पइ सत्त दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, दसमीए कप्पइ छ दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, एगारसीए कप्पइ पच दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, वारसीए कप्पइ चउदत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, तेरसीए कप्पइ तिम्णि दत्तीओ भोयणस्स जाव गो आहारेजा, चउदसीए कप्पइ दो दत्तीओ मोयणस्स जान णो आहारेजा, अमानासाए कप्पइ एगा दत्ती भोयणस्स पडिगाहेत्तए जाव णो आहारेजा, सुक्षपक्खस्स पाटिवए से कप्पइ दो

दत्तीओं मोमकस्य जान नो आहारैजा विद्याए से कृत्यह तिनिन इतीजे केंग भरस पान नो भाहारेजा तहवाए से कप्पह चठवतीमा सोवनस बार बे माहारेजा चउत्सीए से कप्पह पंजवतीओ मोजजस्स जान नो जाहरेज पैबमीए कप्पद **छ** दत्तीओ मीयकस्य जान वो श्राहारैजा **व्हा**ए रूप्प <sup>हर</sup> इतीओ मोनजस्य बान वो जाहारेजा सत्तनीए कप्पह क्यु इसीजे केर भरस जान को भादारेजा अद्वर्गीए कव्यह क्व ब्लीओ ओरमस्स बन <sup>ब</sup> आहारेजा गवभीए कण्ड इस इसीओ भोनगस्स जाव मो बाहारेजा स्वर्गेत कम्पइ एयारस दर्जीओ मोस्नस्स जान गो आहारेजा एयारसीए रूप्य बर्स इतीमा मोवणस्य भाव को जाहारेजा बारबीए कपाइ तेरस दतीमें करें नस्य जान को भाइरिका वैरसीए कप्पर चलहर दलीको भोगवस्य सन वो माहारेजा चवहवीए कमाइ पञ्चरत दत्तीको मोमकस्त परिगाहेतर, स्वार पाजगस्स परिगाहेतव, सम्बेह्र हुप्पद्वरूपय बाद जो हरेखा को आहारित पुण्यमाए अमत्तद्वे भक्त, एवं यस एवा क्रमक्ता वंदपविमा अहातर्च व्याप भाव अभुपाकिया अवद् u २०५ u पंजिब्दे वक्दारे पञ्जी संबद्ध-जारमे डर्र भागा पारमा त्रीए । बत्येष तस्य भागमं सिया आगमर्थ स्वद्वारं पद्धवेगा वर्षे से तत्प भागमें तिना व्यक्ता से तत्न सुए सिया सएलं स्वकारे रहनेका को है तल्ब छए सिवा जहां से तल्ब भागा दिवा भाषाए बनहार मुद्देश्या को से तल भाजा दिना जहां है तत्व बारणा दिया। धारणाए बन्धारे पदुकेमा जो हे तर् भारमा दिया अवहा से तत्व औए किया औए वे ववहार स्टूबेओ एरहें केई वनदारेहि वनदारं पहुनेजा तंनदा-आयमेर्ण प्रएच व्याचाए वारवाए बीएर्न 🐠 से भागमे द्वए भागा धारणा जीए तहा तहा नवहारे पद्वनेमा से किमाई गेर्ड र भागमननिया समना दिगांचा श्लेयं गंजविद्दं वसहार क्या वया वर्षे वर्षे गर्ने द्यक्षा ताहर ताबी अमिरिकोनस्सियं क्यकारं क्यकारेमाने समग्रे निर्माय आगार भाराहेए सम्बद्ध ॥ २०६ ॥ चतारि पुरिष्[णा]जाना पञ्चता तंत्रहा-अपूर्वरे मा(ममे)मं एगे को माजकरे माजकरे वामं एने को बहुकरे एगे बहुकरे हैं सक करे वि एगे को सहको जो माणको ॥ २७७॥ चलारि प्ररितवादा प्रकार टंबहा-गम्बहुकरे वार्थ एगे यो सायकरे मानकरे नार्थ एगे को यबद्वकरे, हो शबद्धकरे मि सामकरे मि पूर्ण को समझकरे को सामकरे ॥ २५४ ॥ बस्ती पुरिसवामा पञ्चला त -गवसंग्रहकरे मार्ग एवं को मावकरे मानकर कार्म की

को गणसगहकरे एवं गणसगहकरे वि शालकरे वि एवं वो शलस्वहकरे वो

माणकरे ॥ २७९ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णता, तंजहा-गणसो(भ)हकरे णाम एगे णो माणकरे, माणकरे णाम एंगे णो गणसोहकरे, एंगे गणसोहकरे वि माणकरे वि, एगे णो गणसोहकरे णो माणकरे ॥ २८० ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त०-गणसोहिकरे णाम एगे णो माणकरे, माणकरे णाम एगे णो गणसोहिकरे, एगे गण-सोहिकरे वि माणकरे वि, एगे णो गणसोहिकरे णो माणकरे ॥ २८१ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णता, तजहा-रूवं णामेगे जहइ णो धम्म, धम्म णामेगे जहइ नो स्त, एगे रूव पि जहइ धम्म पि जहइ, एगे णो रूव जहइ णो धम्म जहइ॥ २८२॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तजहा-धम्म णामेगे जहइ णो गणसिठइ, गणसिठइ णामेंगे जहइ णो धम्म, एगे गणसिठेइ पि जहइ धम्म पि जहइ, एगे णो गणसिठेइ जहइ णो धम्म जहइ ॥ २८३ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तजहा-पियधम्मे णामेंगे णो द्रव्यम्मे, द्रव्यम्मे णामेंगे णो पियधम्मे, एगे पियधम्मे वि द्रव्यम्मे वि, एगे णो पियधम्मे णो दढधम्मे ॥ २८४ ॥ चतारि आयरिया पण्णता, तंजहा-पन्वावणायरिए णामेंगे णो उवद्वावणायरिए, उवद्वावणायरिए णामेंगे णो पन्वावणा-यरिए, एगे पव्वावणायरिए वि उवद्वावणायरिए वि, एगे णो पव्वावणायरिए णो उबद्वावणायरिए ॥ २८५ ॥ चत्तारि आयरिया पण्णता, तजहा-उद्देसणायरिए णामेगे णो वायणायरिए, वायणायरिए णामेगे णो उद्देसणायरिए, एगे उद्देसणायरिए वि वायणायरिए वि, एगे णो उद्देसणायरिए णो वायणायरिए ॥ २८६ ॥ धम्मायरियस्स चतारि अतेवासी पण्णता, तजहा-पव्वावणतेवासी णामेगे णो उवद्वावणतेवासी, उचट्टावणतेवासी णामेगे णो पव्वावणतेवासी, एगे पव्वावणतेवासी वि उव-हावणतेवासी वि, एगे णो पव्वावणतेवासी णो उवहावणतेवासी ॥ २८७ ॥ चत्तारि सतेवासी पण्णता, त०-उद्देसणतेवासी णामेगे णो वायणतेवासी, वायणतेवासी णामेंगे णो उद्देसणंतेवासी, एगे उद्देसणतेवासी वि वायणतेवासी वि, एगे णो उद्दे-सणतेवासी णो वायणतेवासी ॥ २८८ ॥ चत्तारि धम्मायरिया पण्णता, तजहा-पञ्चावणघम्मायरिए णामेगे णो उवद्वावणघम्मायरिए, उवद्वावणधम्मायरिए णामेगे णो पन्वावणधम्मायरिए, एगे पन्वावणधम्मायरिए वि उवद्वावणधम्मायरिए वि, एगे णो पञ्चावणधम्मायरिए णो उवद्वावणधम्मायरिए ॥ २८९ ॥ चत्तारि धम्मायरिया पण्णत्ता, त०-उद्देसणवम्मायरिए णामेगे णो वायणधम्मायरिए, वायणधम्मायरिए णामेंगे णो उद्देसणधम्मायरिए, एगे उद्देसणवम्मायरिए वि वायणधम्मायरिए वि, एने जो उद्देसणधम्मायरिए जो वायणवम्मायरिए ॥ २९० ॥ चतारि धम्मतेवासी पण्णता, तजहा-पन्वावणधम्मतेवासी णामेगे णो उषद्वावणधम्मतेवासी, उबद्वावण- 476

धर्मितेवासी जामेने को पञ्चावकथरमतेवासी एने प्रमावकथरमतिवासी 🖹 उपग्र-वर्गवर्ग्गतेवासी वि एगे वो प्रजावजवर्ग्गतेवासी यो सब्हावचवर्ग्गतेवासी ॥ २९९ ॥ बतारि बम्भतेबासी कुणता तंबदा-उद्देशकथम्मतिबासी बासेने भी बामणबन्धतेवासी बामणबन्धतिवासी जावेगे को बहैसजबन्धतिवासी एगे वहे-सम्मन्नेतेवासी वि वासम्बन्धेतेवासी वि एवे वो सहस्ववस्त्रेतेवासी नो वानन-कर्मातेवासी । २९२ ॥ तको धेरम्मीको वकाताको संबद्धा-बाइवेरे ध्रमवेरे प्(बजा)रियामधेरे । सङ्गिन(बरि)समाए (समचे बिर्मावे) बात बेरे (सब)समना-र्मं जाद स्वचारण स्वचेरे वीसवासपरिवार परिवायचेरे ॥ १५३ ॥ ठमी छ भूमीको एक्बताको तं -सत्तराहेबिया बाउम्मासिया बम्मासिया बम्माकित रकोतिना जातम्मातिया सञ्ज्ञानिया सत्तराक्षणो वहान्याना ॥ १९४ ॥ जो सम्बर् विस्तेषाण वा विस्ताबीण वा बहुने वा बहिने वा क्रमहुबासवाने अब्हाबेगर वा संजंभिताए वा ४२९५ । कन्न किमाबान वा किमोबीन वा बामों वा स्टिमिं वा साररेगड्यासवार्य उक्झवेशए वा संश्रंतिकाए वा ॥ १९६ ॥ वो करपद विसंवाय वा विमांश्रील का बहुगस्स वा बृहियाए वा शब्देशजवावस्य बार्याएपरूपे वामे करमायमे सहितित्व ॥ २९७ ॥ करमह निर्वासाय वा निर्वासीय वा **बा**गस्य वा बाहियाए वा कंजकशाकरस आयारपञ्चे कार्स अञ्चलके उद्दिशितए ॥ १९८ ॥ विवासपरियासस्य समणस्य क्रिमोबस्स कम्पद् काबारपकम्पे वासे क्रमायने वरि शिराए ॥ १९९ ॥ वडवासपरिया(बस्स )ए कप्पद्द नुमयके बाले और अहिस्तिए u रे u पंचवास्परियाए कप्या वसाकप्यवद्यारे (नामसञ्चाको) व्यक्तियर u रे १ व मह्मासपरिवाए कप्पद ठाणसम्बाए (बार्स की) सहित्ताप प रे २ व दसवासपरिमाए कप्पर मि(वाहे)वाहे जामें अंगे उदिशिष्तए ॥ ३ ३ ॥ एडाएस-बासपरियाए कप्या द्विमा निमाणपनिमत्ती आक्रिया विमाधपविमत्ती अंपन्तिया वर्भ वे)गंजुनिया विवाहजुनिया जासँ अञ्चलको उदिशिष्ट ॥ ३ ४ ॥ बारसमार्क परिवाए कप्पद्र गरुसोक्काए भरणोक्काए वेसमुनोक्ताए वेसेवरोक्काए वार्स अन्त-म्पी उदिशिक्तए ॥ ३ ५ ॥ तेरसनासपरियापु कप्पद् उद्वान(द्व)परियाननिए स्स् क्षणप्तए देनिदोनपार नागपरियाननिए जार्थ अञ्चानजे उदिशाल ॥ रे ६ ह कोर्(करेप)धवासपरियाप कप्पर शि(श्र)मिकशाक्का जामें अञ्चलके उदिशतप ॥ १ 🕶 ॥ कमरसवासपरिवाए कप्पा वार्स्का)णमाववा वार्स झकारके वर्ति वित्तप् ॥ १ ८ ॥ सोनस्वानपरियाप् बच्याः तंत्रवीसगे वासं वज्जवसे उहिनाए u १ ९ n सत्तरस्वानपरियाए कप्पड भारतिसस्यायमा बार्म अज्ञाबचे बरिमितर

॥ ३१० ॥ अद्वारसवासपरियागस्स समणस्स णिग्गथस्स कप्पइ दिद्वीविसभावणा णाम अञ्झयणे उद्दिसित्तए॥ ३११॥ एगूणवीसवासपरियाए कप्पइ दिद्विवाए णाम अगे उद्दिसित्तए ॥ ३१२ ॥ वीमवासपरियाए समणे णिग्गंथे मन्वस्याणुवाई भवड ॥ ३१३ ॥ दसविहे वेयावचे पण्णते. तजहा-आयरियवेयावचे उवज्झायवेयावचे थेरवेयावचे सेहवेयावचे गिलाणवेयावचे तवस्सिवेयावचे साहम्मियवेयावचे कुल-वेयावचे गणवेयावचे सघवेयावचे ॥ ३१४॥ आयारियवेयावच करेमाणे समणे णिग्गये महाणिज्ञरे महापज्जवसाणे भवड़ ॥ ३१५ ॥ उवज्झायवैयावच करेमाणे समणे णिरगथे महाणिजारे महापज्जवसाणे भवड़ ॥ ३१६ ॥ थेरवेयावच करेमाणे समणे णिग्गथे महाणिज्ञरे महापज्जवसाणे भवइ॥ ३१७॥ तवस्सिवेयावच करेमाणे समणे णिग्गये महाणिजरे महापज्जवसाणे भवड ॥ ३१८ ॥ सेहवेयावच करेमाणे समणे णिग्गथे महाणिज्ञरे महापज्जवसाणे भवइ॥ ३१९॥ गिलाणवेयावच करेमाणे समणे णिग्गथे महाणिजारे महापज्जवसाणे भवइ ॥ ३२० ॥ साहम्सियवेयावच करेमाणे समणे णिगांथे महाणिजरे महापजवसाणे भवड ॥ ३२१ ॥ कुलवैयावच करेमाणे समणे णिग्गथे महाणिजरे महापजनसाणे भवइ॥ ३२२॥ गणवेयावच करेमाणे समणे णिग्गथे महाणिजरे महापजनसाणे भवइ ॥ ३२३ ॥ सघवेयावच करेमाणे समणे णिग्गथे महाणिजारे महापज्जवसाणे भवइ ॥ ३२४ ॥ त्ति-वेमि ॥ ववहारस्स दसमो उद्देसओ समत्तो ॥ १० ॥ ववहारसुत्तं समत्तं ॥





## णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

## <sub>तत्य णं</sub> विहक्षपसुत्तं

## पढमो उद्देसओ

नो कप्पड़ निग्गन्याण वा निग्गन्थीण वा आमे तालपलेम्बे अभिन्ने पिड(गाहि)-गाहेत्तए ॥ १ ॥ कप्पड निमान्थाण वा निमान्थीण वा आमे तालपलम्बे भिन्ने पंडिरगाहेत्तए॥ २॥ कप्पड निरगन्थाणं पद्ये तालपलम्बे भिन्ने वा अभिन्ने वा पंटिग्गाहेत्तए ॥ ३ ॥ नो कप्पंदं निग्गन्थीण पष्टे तालपलम्बे अभिन्ने पंडिग्गाहेत्तए ॥ ४॥ कप्पइ निग्गन्थीण पक्षे तालपलम्बे भिन्ने पटिग्गाहेत्तए, से वि य विहिभिन्ने, नो (चेव-ण) अविहिभिन्ने ॥ ५ ॥ से गामिस वा नगरिस वा खेडंसि वा कव्वडिस वा मडम्बिस वा पट्टणंसि वा आगरिस वा दोणसुद्दसि वा निगमंसि वा रायहाणिसि वा आसमित वा सिनवैसित वा सवाहंति वा घोसित वा असियति वा पुडमेयणित वा सपरिक्खेवित अवाहिरियित कप्पड निग्गन्थाण हेमन्तगिम्हासु एग मास वत्थए ॥ ६ ॥ से गामंति वा जाव रायहाणिति वा सपरिक्खेविस सवाहिरियंसि कप्पइ निगन्याण हेमन्तगिम्हास दो मासे वत्थए, अन्तो एग मास वाहिं एगं मास, अन्तो वसमाणाण अन्तोभिक्खायरिया वाहिं वसमाणाणं वाहिभिक्खायरिया॥ ७॥ से गामिस वा जाव रायहाणिसि वा सपरिक्खेविस अवाहिरियसि कप्पइ निग्गन्थीण हेमन्तिगम्हाम् दो मासे वत्थए॥ ८॥ से गामिस वा जाव रायद्दाणिसि वा सप-रिक्खेविस सवाहिरियसि कप्पइ निग्गन्थीणं हेमन्तिगम्हासु चत्तारि मासे वत्थए, अन्तो दो मासे, वाहिं दो मासे, अन्तो वस(न्ती)माणीण अन्तोभिक्खायरिया वाहिं वसमाणीण याहिंभिक्खायरिया ॥ ९ ॥ से गामसि वा जाव रायहाणिंसि वा एगवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए नो कप्पइ निग्गन्थाण य निग्गन्थीण य एगयओ वत्थए ॥ १० ॥ से गामंसि वा जाव रायहार्णिसि वा अभिनिव्वगडाए अभिनिद्दुवाराए अभिनिक्खमणपवेसाए कप्पइ निग्गन्थाण य निग्गन्थीण य एगयओ

१ कयलीफले।

बरबंद ॥ १९ ॥ मो कप्पह निमान्त्रीणं कावणनिर्देशि वा र(श्वा)कामुहंसि वा सिकारगीरी का तिथीरी का करकारी का ककारी का कलाराकारी का कलाए ॥१२॥ कप्पद् निस्पर-वाणे आवजगिर्वसि वा जाव अन्तरावणसि वा बरवस ॥ १३ ॥ नी कप्पद् निम्गा नीर्ण समहत्रवृद्धारिए तबस्सए बरबए, एवं परवार सम्ती किया एवं परवार वार्डि किया ओहाडिय(चेरु)चिकिसिकियागीरी पूर्व जीव महं कप्पह बरवर ॥ १४ ॥ कप्पद्र निमान्यार्ण अनहस्त्वुनारिए छनस्तए बरवए ॥ १५ ॥ <sup>कप्पद्</sup> निम्म बीच अस्तोकित्तवं चडिमलवं भारेत्तवं वा परिवरित्तव वा ॥ १६ ॥ नो वप्पद निस्मान्याचे अन्तोष्ठिएसं चडिसससं चारेसप वा परिहरित्तए वा h १० # कम्प्स निसान्यान वा निरग बीज वा चेळचिकिमि(ळि)निर्य बारेल्प वा परिश्वरित्तप् वा ॥ १८ ॥ भी कम्प्ट निमा बाब वा निम्मन्वीय वा व्यक्तिरंशि विक्रित्तर वा तिसी इत्तर वा तुसहितर वा निरावृत्तर वा पश्चमादत्तर वा व्यसमं वा पाने वा कार्स वा साहमं या आहारमाहा(रि)रेत्तप्(वा) चनारं वा पानवस वा लेकं वा सिवार्व वा परिद्व(मि)नेतप्, धज्जाम वा करेतप्, (बम्मकागरियं वा काम(रे)रितप्) हार्व वा झाइताय, काउरस्तर्ग या ठावं या ठावताय ॥ १५ ॥ को कप्ताइ निवस्त्राच मा निस्पानीम वा शनित्तकस्ये उवस्तर् वस्त्रप् ॥ १ ॥ कप्तरः निस्पत्वान वा निस्मन्त्रीम वा अवितक्तमे उनस्सए नस्पए॥ १९॥ नो कप्पा निस्नन्त्रीन सागारिसमाभितसाए करवए ॥ २२ ॥ कप्प्यः निमान्त्रीयं सागारिसनितसाए बरवए ॥ २३ ॥ भण्यद् निमान्यार्णं खागारियनिरसाएं वा वनिरसाएं वा वन्यरं ॥ २४ 🗈 मी कप्पद्द निमान्त्राण था निमान्त्रीय वा सामारिए सवस्थय नत्त्रए ॥ १५ व कप्पद्र निस्मन्त्राम वा निस्मान्त्रीण वा अप्यसायारिए चनस्वए बत्त्रए ॥ १६ ॥ मी काप्य तिमान्नार्ण इत्यायागारिए धनस्यए क्लाए ॥ १७ ॥ क्रम्य समानार्ण पुरिस्थानारिए रुवस्थए बरबए॥ १८॥ नो कप्या निमान्त्रीचे पुरिस्नानारिए चत्रसम् तरुप् ॥ २९ ॥ कम्बर् विस्मान्त्रीणं इतिसागारिए उवस्थए सत्वर् ॥ १ ॥ सी कप्पद् निम्मम्यार्च पडिच(क)वाप सेजाए गल्यए ॥ ११ ॥ कप्पद् निमार्चीर्च पवित्रहाएं सेजाएं मत्त्रप् ॥ ११ ॥ मो कप्पड़ निजन्मार्थं माहण्डाकस्य संग्रे मज्हेर्ज सन्तुं बरबण् ॥ ११ ॥ कप्पष्ट् मिस्तरणीय गाहावहकुमस्य सञ्जीसञ्जेर्ण गार्च बत्वार घ रेश । जिनक् व महिरार्स करू ते बहिरारो अभिनोतिका अभि-स्टेसिन्दाहुँ-रुकार परी लाकारमा इच्छार परी ने नावारमा इच्छार परी अम्प्रदेना इच्छार परी नावारमा इच्छार परी कवाला इच्छार परी अम्प्रदेना इच्छार परी नो अम्प्रदेना इच्छार परी कवाला इच्छार को ने बन्देजा इच्छाए परो समुक्रेजा इच्छाए परो मो समुक्रेजा इच्छाए परो संबधना

इच्छाए परो नो सवसेजा, इच्छाए परो उवसमेजा, इच्छाए परो नो उवसमेजा; जे (जो) उवसमइ तस्स अत्थि भाराहणा, जे न उवसमइ तस्स नित्य भाराहणा, तम्हा अप्पणा चेव उवसमियव्व, से किमाहु भन्ते (!) 2 उवसमसार सामण्ण ॥ ३५॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा वासावासास चार(चरित्त)ए॥ ३६॥ कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा हेमन्तगिम्हासु चारए॥ ३७॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा वेरज्जविरुद्धरजासि सज्ज गमण सज्जं आगमण सज्ज गमणागमण क(रि)रेत्तए जे (जो) खळु निग्गन(थो)थे वा निग्गन्थी वा वेरजाविरुद्ध-रजिस सर्ज गमण सज आगमणं सज गमणागमण करेइ क(रं-रिं)रेन्त वा साइजाइ, से दुहुओ(वि) वीइक्सममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाण अणुग्घाइय ॥ ३८॥ निग्गन्थ च णं गाहावइकुल पिण्डवायपिडयाए अणुप्पविद्व केइ वत्थेण वा पिडग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपुञ्छणेण वा उवनिमन्तेजा, कप्पइ से सागारकड गहाय आयरि-यपायमुळे ठवेता दोच पि ओग्गहं अणुन्नवेता परिहार परिहरित्तए॥ ३९॥ निग्गन्थ च ण बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खन्त समाणं केइ वत्थेण वा पिडग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपुञ्छणेण वा उवनिमन्तेजा, कप्पइ से सागारकड गहाय आयरियपायमूळे ठवेता दोच पि ओग्गह अणुज्जवेता परिहारं परिहरित्तए ॥ ४० ॥ निम्मन्यि च ण गाहावर्कुल पिण्डवायपडियाए अणुप्पविद्व केइ वत्येण वा पडिम्महेण वा कम्बलेण वा पायपुञ्छणेण वा उवनिमन्तेजा, कप्पइ से सागारकड गहाय प(वि)वित्त(णि)णीपायमूळे ठवेता दोच पि ओग्गह अणुन्नवेत्ता परिहारं परिहरित्तए ॥ ४९ ॥ निग्गन्थि च ण वहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खन्तं समाणि केइ वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपुञ्छणेण वा उवनिमन्तेजा, कप्पइ से सागारकड गहाय पविताणीपायमूळे ठवेता दोच पि ओगगह अणुक्रवेता परिहारं परिहरित्तए ॥ ४२ ॥ नो कप्पइ निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा राओ वा वियाले वा असण वा ४ पिंडमगाहेत्तए नन्नर(थे)थ एगेण पुन्वपिंडलेहिएण सेजासथारएण ॥ ४३ ॥ नो कप्पइ निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा राओ वा वियाछे वा वत्थ वा पटिम्मह वा कम्वल वा पायपुञ्छण वा पिडम्माहेत्तए, नन्नत्य एगाए हरियाह(रि)-हियाए, सा वि (य) याइ परिभुत्ता वा घोया वा रत्ता वा घट्टा वा महा वा संपधृमिया वा ॥ ४४ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा राओ वा वियाले वा अद्धा-णगम(णाए)ण एत्तए, (नो ) सखर्डि सखडिपडियाए एत्तए ॥ ४५ ॥ नो कप्पइ निमान्यस्स एगाणियस्स राओ वा वियाछे वा विह्या वियारभूमि वा विहारसूमि वा निक्समित्तए वा पविसित्तए वा, कप्पइ से अप्पविड्यस्स वा अप्पतड्यस्स वा राओ ५३ सत्ता०

विश्वो उदेस्यो

उषस्तमस्य अन्तो वगढाए सात्रीम वा बौद्दीमि वा मुख्यामि वा मासाचि वा विकाणि ना कुकरवाणि ना योष्ट्रमाणि ना क्वाकि वा क्वकवार्थि ना भोकि(ता)-ज्ञाणि वा नि(कि)निकाल्लाचि वा विद्याल्लाचि वा विच्याल्लाचि वा वो <sup>च्यान</sup>र निमान्त्राण वा निमान्त्रीण वा अङ्गाकन्त्रमित्र नत्त्राण ॥ ४९ ॥ वह प्रमाप्त्रं वालेजा-नो सोबिज्जाई मो विकिस्तन्त्राई नो विक्रियन्त्राई नो विप्तक्रमाहः रासिक्डानि वा पुत्रकराणि वा मित्तिकराणि ना कुकियकराणि वा कविक्रवाणि हा सुद्रिवाणि वा पिद्विशामि वा कप्पद्र निस्मन्याण वा निस्पन्यीण वा डेसन्तरिस्डाई क्रव्यं 🛚 🤻 🗈 सद् पुत्र पूर्व वालेका-भी राधिनवाई भी प्रवस्ताई मी मितिकाई मी इतिस क्बार, कोहाउत्तायि वा प्रकारतानि वा महारततानि वा मास्प्रदतायि वा नोन्नि त्तामि वा निकिताणि वा कन्किनाणि वा सुदियाणि वा पिहिनाणि वा कम्प्यू निस्मन्त्राण वा निस्मन्त्रीण वा बासावार्थ वरवप् १ ५९ n स्वस्तरस्य करते मराकाए प्रराविजयकुम्भे वा सोबीरमविजयकुम्भे वा अवमिक्सित शिवा को कम्प निस्तान्त्राण वा निस्तान्त्रीय वा **महासन्दर्शने वस्त्र**प्, हुरस्या य उपस्तत्र पविचेत् माने मो क्मोका एवं से कप्पड़ एगरावें वा हरावें वा बरवार को से कप्पड़ वरें एगरामाओं वा दुरानाओं वा वस्वयु से तस्व एगरानाओं वा दुरानाओं वा पर ब्(सइ)संज्ञा से सन्तरा क्रेप्ट वा परिवार वा त ५२ ॥ जबस्तकस्त अस्तो क्राडाए सीओद्यावियहकुम्मे वा स्थिनोद्यावियहकुम्मे वा अवगिविक्षेत्रे स्थिता को कप्पा निरगान्याच वा निरमान्योण वा सहासन्यसमि वस्त्रण, हरस्या व जनस्वर पविकेद साचे मो क्सेजा एवं से कम्पड एयरार्ज वा तरार्थ वा करवा, तो से क्यूद्र पर

एगरायाओ वा दुरायाओ वा चत्थए, जे तत्य एगरायाओ वा दुरायाओ वा पर वसेजा, से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ॥ ५३ ॥ उवस्सयस्य अन्तो वगडाए सव्वरा(ई)इए जोई झियाएजा, नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहा-' लन्दमवि वत्थए, हुरत्या य उवस्सय पडिलेहमाणे नो लभेजा, एव से कप्पइ एग-राय वा दुराय वा वत्यए, नो से कप्पइ पर एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्यए, जे तत्य एगरायाओ वा दुरायाओ वा पर वसेजा, से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ॥ ५४ ॥ उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सन्वराइए पईवे दिप्पेजा, नो कप्पइ निगा-न्याण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमिव वत्यए, हुरत्या य उवस्सयं पिडलेहमाणे नो लभेजा, एव से कप्पइ एगराय वा दुराय वा वत्यए, नो से कप्पइ परं एग-रायाओ वा दुरायाओ वा वत्यए, जे तत्य एगरायाओ वा दुरायाओ वा पर वसेजा, से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ॥ ५५ ॥ उवस्सयस्स अन्तो वगडाए पिण्डए वा लोयए वा खी(रे)र वा दिह वा सिप्प वा नवणीए वा तेल्ले वा फाणि(ए)य वा पूर्व वा सक्कुली वा सिहरिणी वा ओखिण्णाणि वा विक्खिण्णाणि वा विइगिण्णाणि वा विप्पइण्णाणि वा, नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए ॥ ५६ ॥ अह पुण एव जाणेजा-नो ओखिण्णाई ४, रासिकडाणि वा पुजकडाणि वा मित्तिकडाणि वा कुलियकडाणि वा लिन्छयाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा, कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा हेमन्तगिम्हासु बत्यए ॥ ५७ ॥ अह पुण एव जाणेजा-नो रासिकडाइ ४, कोट्टाउत्ताणि वा पल्लाउत्ताणि वा मञ्चाउत्ताणि वा मालाउत्ताणि वा कुम्भिउत्ताणि वा कर्मिउत्ताणि वा ओलित्ताणि वा विलित्ताणि वा लिष्डियाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा, कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा वासावास वत्यए ॥ ५८ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थीण अहे आगमणगिहंसि वा वियडगिह्सि वा वसीमूलसि वा स्वन्खमूलसि वा अञ्मावगासियसि वा वत्यए॥ ५९॥ कप्पइ निग्गन्थाण अहे आगमणगिहंसि वा वसीमूलंसि वा स्व्यामूलसि वा अब्सा-वगासियसि वा वतथए ॥ ६० ॥ एगे सागारिए पारिहारिए, दो(क्रि) तिण्णि चत्तारि पद्म सागारिया पारिहारिया, एग तत्थ कप्पाग ठवइत्ता अवसेसे निव्विसेजा॥ ६१॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा सागारिग्रपिण्ड वहिया अनीहर्ड (अससट्ट वा) ससद्व-पिटरमाहेत्तए ॥ ६२ ॥ नो कप्पह निरगन्थाण वा निरगन्थीण वा सांगारियपिण्ड वहिया अनीहड अससद्ध पिडग्गाहेत्तए ॥ ६३ ॥ नो कप्पइ निग्ग-न्याण वा निग्गन्थीण वा सागारियपिण्ड बहिया नीहड अससद्व पडिग्गाहेत्तए ॥ ६४ ॥ कप्पइ निम्मन्याण वा निम्मन्थीण वा सामारियपिण्ड वहिया नीहड ससद्व

पविमाहितप् ॥ ६५ ॥ नो इत्यह निगननाथ वा निगनवीय वा सामारिवपियं बहिना मीहर्ष करंबई संसई करेताए, के राह्न निम्मान्ये था निम्मानी वा सामा-रियपिक्ट कहिया जीवर्ड क्षरंसद्वं संस्तुं करेड करेन्तं वा सल्लाह, से हुइजो बीहरू ममाने भागमह नाउम्मासिर्व परिहारद्वानं मधुम्बाहर्व ॥ ६६ ॥ सागारिकस साहिदया सामारिस(स)ने पविनगाहि(वा)ता सम्हा दावए, मो से कप्पद्र पविनगहिः त्तप् ॥ ६७ ॥ सामारियस्य आह्रविया सामारियणं अपवित्रमाक्किता । तम्हा दानप् एवं से बच्चा पविकाहिताए ॥ ६८ ॥ सागारियस्य बौद्रविमा परेण क्यविकाहिया ठम्हा दावयु, मो से कम्प्त् पत्रिम्मादेतायु ॥ ६९ व सामादिवस्य नीहारिक परेष पडिस्माहिता तथ्हा बाबय, एवं से कुम्बई पडिस्माहेत्तय ॥ ७० ॥ सामारिक्स कंसियाओं अमिसताओं कम्बोक्कियाओं अम्बोपडाओं अनिज्ञरामी (एवं से) सन्ध बानए, नो से क्रम्य परिज्ञाहेत्तए ॥ ७९ ॥ सागारिकस्य असियाओ जिनतानी मोरिक्काओ पोगडाओ निज्ञालो राज्या बनाए, एवं से कप्पष्ट एकिम्पादेगर n ७२ n सामारियस्य पूँचामचे जोतिए केईए पाइविजाए, चारादिक्स जनम्ह काए निक्किए निसंहै प(पा)विद्यारिए, से सामारिको दे(का)इ, सामारिकस्स परिजनी रेर, तमहा दावए, जो से कम्ब्र पढिनगाहेतए ॥ ७३ ॥ सत्यारिक्स्स पुरामते वोस्टिए चेहर् पाहृदिवाप्, सागारिक्स्स उक्गरणबाप् निश्चिप् नि(सि)सङ्घे पविदाहेप्, वं नो सामारिको देह, नो सामारिकस्स परिवाची देह, सामारिकस्स पूना देह, सन्दा ब्रम्य, नो से कप्यत् पविमाक्षेत्रम् ॥ ७४ ॥ सामारिकस्य पूजामते तदेविर केर् पाहृदियाप्, शागारिक्स्य तदगरभवाप् निश्चिप् निसङ्के अपविद्यारिए, र्तं शामारिके बेह, सामारिक्स्स परिवणी बेह, तम्बा श्रावध, तो से कम्प्य पवित्मावेदार । पण ह सामारियस्य प्यानते अवेतिए चेवए पाह्नविवाए, सामारियस्य उक्ष्यरमवाए निहिए

तिसक्के अपनिवासिए, ते गो सागारिको केह, शो सागारिकस्य प्रदेशको केह हामा-रिजस्य पूरा केह, तथा बावए, एवं से कमाह पडिल्गावेतए D ७६ 🏾 बन्दर निमान्याण वा निमान्यीण वा (पश्चिमाणि) इसाई एव वस्ता(के)ई वारेसर वा परिवारितर वा संबद्धाः—बाहिए बोमिए सागए योत्तर विरोधनोहे ना(में)म व्याने B vv II क्याइ निस्मन्याय वा निस्मन्यीय वा इसहे प्(वेष)म स्वहत्याहं बारेकर वा परिष्कितपु वा र्वन्ता—भोण्निषु ओद्वि(तद्वि)षु सामप् वध्यापिनि(दवा-निष्य)य सुद्धिपनिष् नाम प्रवासे ॥ ७८ ॥ ति निक्षि ॥ विद्वासन्ये विद्वासी रहेसमी समत्तो ॥ ९ ॥

९ पदा-सामिककायरियातको तत्रहा भत्ते पूराभत्ते । १ 🔫 ।

## तइओ उद्देसओ

नो कप्पइ तिग्गन्थाण निग्गन्थीण उवस्म(यप्ति)ए आसङ्क्तए वा चिट्ठिक्तए वा निसीइत्तए वा तुयहित्तए वा निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा, असण वा ४ आहार-माहारेत्तए, उचारं वा पासवर्णं वा खेलं वा सिङ्गाण वा परिष्ठवेत्तए, सज्झाय वा करेत्तए, झाण वा झाइतए, काउस्सग्गं वा ठाण वा ठाइत्तए॥ ७९॥ नो कप्पइ निग्गन्थीण निग्गन्(थ)थाण उवस्सए आसइत्तए जाव ठाइत्तए॥ ८०॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा किसणाइ वत्थाइ वारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ ८९॥ कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अकसिणाइ वत्थाइ धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ ८२ ॥ नो कप्पइ निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा अभिनाइ वत्थाइ धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ ८३ ॥ कप्पइ निग्गन्याण वा निग्गन्थीण वा भिन्नाइं वत्याइ धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ ८४ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थाणं ओ(उ)ग्गहणन्तग वा ओग्गहणपट्टग वा धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ ८५ ॥ कप्पइ निग्गन्थीण ओग्ग-हणन्तग वा ओग्गहणपट्टग वा यारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ ८६ ॥ निग्गन्थीए य गाहावइकुल पिण्डवायपिडयाए अणुप्पिवद्वाए चेलहे समुप्पजेजा, नो से कप्पइ अप्पणो नीसाए चेल पिंडग्गाहेत्तए, कप्पइ से पवित्तणीनीसाए चेल पिंडग्गाहेत्तए ॥ ८७ ॥ नो (य से) ज(त)त्थ पवित्तणी समा(णा)णी सिया, जे तत्थ समाणे आयरिए वा उवज्झाए वा प(वि)वत्ती वा थेरे वा गणी वा गणहरे वा गणावच्छेइए वा (ज चडन पुरओ कहु विहरइ), कप्पइ से त(तेसिं)नी(निस्)साए चेल पिंड-गगहित्तए ॥ ८८ ॥ निग्गन्थस्स (य) ण तप्पढमयाए सपन्वयमाणस्स कप्पइ रय-हरणपिडिग्गहगोच्छगमायाए ति(हिं)हि य किसणेहिं वत्थेहिं आयाए सपव्यइत्तए, से य पुरुवीवट्टविए सिया, एव से नो कप्पड रयहरणपडिग्गहगोच्छगमायाए तिहि य कसिणेहि वत्थेहिं आयाए सपन्वइत्तए, कप्पइ से अहापरिग्गहियाइ वत्याइ गहाय आयाए सपव्यइत्तए ॥ ८९ ॥ निग्गन्थीए ण तप्पढमयाए सपव्ययमाणीए कप्पइ रयहरणपडिग्गहगोच्छगमायाए चर्डाहे य क्सिणेहिं वत्येहिं आयाए सपव्वइत्तए, सा य पुन्वीबद्वविया सिया, एव से नो कप्पड रयहरणपिडम्महगोच्छगमायाए चडिह य क्सिणेहिं वत्येहिं आयाए सपव्वडत्तए, कप्पड से अहापरिगगहियाई वत्याड गहाय आयाए सपव्यइत्तए॥ ९०॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पंडमममो-मरणुदेसपत्ताइ चेला(चीवरा)इ पडिस्माहेताए॥ ९९॥ कप्पड निस्मन्याण वा निस्म-न्थीण वा दोचसमोमरणुद्देसपत्ताइ चेलाइ पढिगगाहेत्तए ॥ ९२ ॥ कप्पड निग्गन्याण वा निरगन्थीण वा आ(अ)हाराङ्णियाए चेलाङ् पडिरगाहेत्तए॥ ९३॥ कप्पङ निरग-

कारस्यमं वा ठाणे वा ठाइतए, बाह पुण एवं जाणेजा-कराजुकी वाहिए (मेरे) तक्स्मी हुम्मछे विकन्ते ( नाजरिए) मुच्छेम वा परक्षेत्र वा एवं से कप्प सन्तरिष्टि आसरतए का बाद ठार्ग वा ठाइतए ॥ ९६ ॥ मी कप्पर निमम्बान वा निम्मन्त्रीय का शन्तर्रिखंखि जाव चठमाह वा प्रक्रमाहं वा माहनिकाए वा मिमानेचए वा किश्चिए वा पनेद्रतए वा नकरच एगमाएच वा एगवायरवेण वा प्रामाष्ट्राप् वा एमस्स्रियेण वा से जिन दिवा नो चेव वं अधिवास ५० ॥ मी **क**प्पद्र निमान्काक वा निमान्त्रीय वा अन्तरिगईछि इमाई (क व) प्रव महम्मनाई समानवाई आहरियलाए वा बाब परेहलए वा जबाय एममाएन वा कान एगरिकोएम वा से वि व ठिका जो चेव में व्य(ठि)डिका ॥ ९८ ॥ को कम्पश् क्तिगन्याण वा निस्मन्यील वा पश्चिद्वारियं (वा सामारियसंदियं) सेजार्स्यार्थ स्रामाप् अपडिद्वर् संपन्नवृद्धाए a ९९ a नो कप्पद्व शिरगम्बाय वा सिम्पन्नीम वा सामारिक्सन्तिवं से मासंबारवं कावाप विद्यारचं कह संक्ष्यश्चर ॥ १ 📑 कृप्यह निमान्याय वा निगगन्वील वा पविद्यारियं वा सामारियसन्तियं वा सेवा-र्धवारने मानाए नियरणं कडु र्यपन्यश्ताए ॥ १ १ ॥ इव वस्तु निस्पन्यान स किमान्त्रीण वा पविद्यारिए वा सामारिक्सन्तिए वा सेजासंबारए (किमान्हे)सजा) परिकाहे सिमा से य अध्ययक्रियक्त्रे सिमा; से य अध्ययक्रमाचे बसेजा रस्पेन क्लुप्प(पिक)यानम्बे कियाः से व क्लुगबैसमाये भी कमेट्या एवं से क्या दोनं पि क्षेत्रमाई जोमिन्दि(क्लुक्(१)मि)ता परिश्वारं परिवृत्तित्त् ॥ १ १ ॥ वहि(वं है) ली व व समणा निम्मन्त्रा सेजार्समार्थ मिण्यमहन्ति तरि(त मि)वर्स व व वनरे समाजा निमान्त्रा इत्त्रमाध्यक्केज सन्देन जोमगहरस पुरुषापु(बान)कामा निम महारूपानि मोगाई ॥ १ ३ ॥ मरिय नार्वं व केर् उक्तम्यपरिवार्व्वाए)व नविचे परिदरणारिके स्थेन ओम्माइस्स पुज्जालुकान्या निद्वार बाह्यसम्यमित ओमाई ॥ १ ४॥ से सम्बद्ध अम्बानवैद्ध सम्बोगडेष्ठ अमरपरिमाहिएल अमरपरिमाहिएल स्वेन क्षोगाइस्य पुरुषाञ्चनमा निद्धाः सहासन्दमनि जोगाहे ० १ ५ ॥ वे सन्द्रा नलबेस नोपबेत परपरिमाझिएस मिन्सुमानस्सद्वाए दोचे पि जीवाहे जनुबनेतन्त्रे

सिया (अहालदमिव उगाहे) ॥ १०६ ॥ से अणुकुहेस वा अणुभित्तीस वा अणुचिर-यास वा अणुफिरहास वा अणुपन्थेस वा अणुमेरास वा सचिव ओग्गहस्स पुठ्वाणु-जवणा चिद्धइ अहालन्दमिव ओग्गहे ॥ १०७ ॥ से गा(मस्स)मिस वा जाव (रायहाणीए) सिवेसिस वा विह्या सेणं सिविविद्ध पेहाए कपइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तिह्वस भिक्खायिरयाए गन्तूण पिड(ए)नियत्तए, नो से कप्पइ (सा रयणी) त रयणि तत्थेव उवा(य)इणा(वि)चेत्तए, जे खलु निग्गन्थे वा निग्गन्थी वा त रथणि तत्थेव उवाइणावेइ उवाइणावेन्त वा साइजइ, से दुहओ वीइक्समाणे आवज्जड चाउम्मासिय परिहारद्वाण अणुग्धाइय ॥ १०८ ॥ से गामिस वा जाव सिवेसिस वा कपइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा सव्बओ समन्ता सकोस जोयण ओग्गह ओगिण्हित्ताणं परिहार परिहरि(चिद्वि)तए ॥ १०९ ॥ ति–वेमि ॥

## विहक्रणे तहको उद्देसको समत्तो ॥ ३ ॥ चउत्थो उद्देसओ

तओ अणुग्घाइ(मा)या पन्नत्ता, तजहा-हत्यकम्म करेमाणे, मेहुण पिंडसेवमाणे, राईभोयण भुजमाणे॥ ११०॥ तओ पारिविया पन्नता, तजहा-दुहे पारिविष्, पमते पारिश्चिए, अन्नमन्न करेमाणे पारिश्चिए ॥ १९१ ॥ तओ अणवद्वप्पा पन्नता, तंजहा-साहम्मि(य)याण ते(णिय)शं करेमाणे, अन्नध(पर-ह)म्मि(य)याण तेन्न करेमाणे, हर(थता)थायाल दर्लमाणे ॥ ११२ ॥ तओ नो कप्पन्ति पन्वावेत्तए, तजहा-पण्डए कीवे वा(हि) इए, एव मुण्डावेत्तए सिक्खावेत्तए उवडावेत्तए समुझित्तए स(वा)वसित्तए ॥ ११३ ॥ तआ नो कप्पन्ति वा(इ)एतए, तजहा-अविणीए विगई-पडिबद्दे अविओसवियपाहुडे ॥ ११४ ॥ तओ कप्पन्ति वाएत्तए, तजहा-विणीए नो विगईपडिवदे विओसवियपाहुडे ॥ ११५ ॥ तओ दुस्सन्नप्पा पन्नता, तजहा-दुट्टे मृढे बुगगाहिए॥११६-१॥ तमो सस्सनप्पा पनता, तजहा-अदुट्टे अमृढे अबुगगा-हिए॥११६-२॥ निग्गन्थि चण गिलायमाणि माया वा भगिणी वा वृया (पिया वा भाया वा पुत्ते) वा पिलस्सएजा, त च निग्गन्(थी)ये साइज्(जइ)जेजा, मेहुणपिंड-नेवणप(ता)ते आवज्जड चाउम्मासिय परिहारद्वाण अणुम्घाइय॥ ११७॥ निरगन्य च ण गिलायमाण पिया वा भाया वा पुत्ते वा (माया वा भगिणी वा बूया वा) पलिस्स-एजा, त च निरगन(चे)थी साइजेजा, मेहुणपटिसेवणप(ते)ता आवजह चाउम्माधियं परिहारद्वाण अणुम्घाइय ॥ ११८ ॥ नो कप्पड निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा असण वा ४ पडमाए पो(रि-र)हसीए पडिग्गाहेता (चड-त्य-हिंय) पन्छिम पोहसिं उवाडणावेत्तए, से य आहब उवाडणाविए सिया, त नो अप्पणा भुझेजा नो अन्नेसि

वैपन्ने सिना र्च नणचा भुक्रमाचे नहेति ना नणुप्यवेमाने नावज्य पाउम्मार्थन परिदारक्काण स(क्ला)मधावर्ग ॥ १९९ ॥ नो भ्रम्यत्र निस्मान्थाण वा निस्मान्धीण वा असमं वा ४ पर्र अञ्चलीयलमं(र)राष्ट्र जनाइणावेताय से य शाहक उनाइणातिए विवा तं मो अध्यक्षा अनेजा नो अनेति अलुप्यवेजा एगन्तं बहुरास्य विवर् विकेदिता प्रसमिता परिद्रवेशको सियाः सं अध्यका सक्रमाणे करेसि वा अध्यन बेमाने मामजाइ चाजस्मासिन परिश्वारक्षणं उरवाहर्य ॥ ११ ॥ विज्यान्वेय व गादानक्क्ष्मं पिण्यवायपत्रियाए अञ्जयिक्षेणं अवस्ति अविशे अवेसिक्षेत्रं पात्रमीति पविश्वाहिए सिवा अरिव यार्व य नेड् सेड्( )तराए अञ्चलक्रामिन्ए, क्रम्प्य से वस्स दार्ज वा अञ्चय्यवाले वाः नित्व याते व केत्र सेहतराए कणुबद्धानियए (सिया) वं मी अप्पना मुक्केजा मी क्यांसि क्लुप्पकेजा; पूग ते बहुराष्ट्रप बण्डिक पविकेरिय पमंजिला परिद्वनेयको सिमा ॥ १२१ ॥ से वन्ते बप्पद्वियार्ग नो से कपह कपहि बार्च के करे कपड़िवार्ण कपड़ से अकपड़ियार्च ने करे अकपड़िवार्च तो से कम्पद् कप्पद्विनार्णः से क्ने अकप्पद्विपार्णं कप्पद् से अकप्पद्विपार्णः रपाद्विना निकर्णे ठिना कपाडिया अक्रमे ठिया अक्रमाडिया ॥ १६२ ॥ सिक्**य** य गर्ना(को अ)न वक्रमा इच्छेजा क(क)वं गण उवसंपाजितानं विहरितयः ना सं कपाइ अभान पुष्पिन्त(य) सामित्रं वा उपण्यानं वा पनति वा येरं वा पण्चि वा पण्डरं वा मनाक्रकेटर्स वा अन्तं गर्व जवसंपित्रकार्ण विद्वरित्तयः क्रम्यद्व से आपुर्विकता <sup>आ</sup>र्व रिनं था बान गनानच्छेत्वं या अधै गर्न उपरीपनितानं निवरिताए दे न है मिन(रेजा)एन्टि पूर्व से कप्पद कर्ता गर्ज उनसंपजितायं विद्याराम्) तं व हे नो निनरन्ति एवं से ना कप्पड़ कर्क पर्ण तक्संपत्रिभागे निव्हरिसए ॥ १२३ ॥ वना-वस्त्रोद्ध्य म गणाजक्दरम इच्छेका अर्थ वर्ण क्षत्रपंत्रितार्ण क्षेत्ररित्तम्, नो क्ष्मद् यानावन्तित्वस्य गणावन्तित्वर्ते स्रोतिनियानिया सर्व गर्व एक्छेपनियार्व स्टिरिट्य कप्पः समामप्रकेरमस्स गणानकोदनगं निविज्ञानिता वर्ष शब्द प्रवर्धनिकारण विद्वतितप्, नो से कम्बद्ध अवाधुविकता आधरितं वा जाव धनावकेहर्य वा कर्त गर्न उद्ययन्त्रिताणं निद्दरिताणः कप्ततः चे आपुन्तिकता आवरियं वा चाव यवावन्त्रेयं वा मर्ज यर्ज श्वसपनितालं विहरितार् से व से विद्यारित एवं से क्या मर्ज धर्म प्रवर्षपनितालं विहरितार् से व से विद्यारित एवं से क्या मर्ज धर्म प्रवर्षपनितालं विहरितार् से व से सो विद्यारित एवं से सो क्या वर्ष श्वरंपनिज्ञाणं मिहरितप् ॥ १९४ ॥ मानरियज्ञकात् न वनायवद्यम् वर्णाना कर्त वर्ष प्रवसपानिकाण निवसित्तप्, को कप्पत जावस्वितक्त्रस्यस्य अनिर्देश

उवज्झायत्त अनिक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसपिजताण विहरित्तए, कप्पइ आयरिय-उवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्त निक्खिवत्ता अनं गणं उवसपिजताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छिता आयरियं वा जाव गणावच्छेइय वा अन्न गण उवसप-जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छिता आयरिय वा जाव गणावच्छेइय वा अज्ञ गण उवसपजिताणं विहरित्तए, ते य से वियरन्ति, एव से कप्पइ अन गणं उव-सपजिताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरन्ति, एवं से नो कप्पइ अन्न गण उव-सपिजाताण विहरित्तए ॥ १२५ ॥ भिक्ख् य गणायवक्षम्म इन्छेजा अन्न गण सभोगपिडयाए उवसपिजताण विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छिता आयरियं वा उवज्झायं वा पवत्ति वा थेरं वा गणि वा गणहरं वा गणावच्छेड्य वा अनं गणं सभोगपिडयाए उवसपिजताण विदृरित्तए, कप्पइ से आपुच्छिता आयरिय वा जाव गणावच्छेड्य वा अन्नं गण सभोगपिडयाए उवसपिजताण विहरित्तए, ते य से वियरन्ति, एव से कप्पइ अन्न गण समोगपिडयाए उवसपिजताण विहरित्तए, ते य से नो वियरन्ति, एव से नो कप्पइ अन्न गण सभोगपिडयाए उवसपिजिताणं विहरिताए, जत्युत्तरिय धम्मविणय लमेजा, एव से कप्पइ अन्न गण समोगपिडयाए उवसपजिताण विहरित्तए, जत्युत्तरिय धम्मविणय नो लमेजा, एवं से नो कप्पइ अन्न गण समोगपडियाए उवसपजित्ताण विहितत्तए ॥ १२६ ॥ गणावच्छेइए य गणायवक्षम्म उच्छेजा अन्न गण सभोगपिडयाए उवसपिजताण विहरितए, नो कप्पइ गणावच्छेइयस्य गणावच्छेइयत्त अनिक्खिवता अन्न गण सभोगपिडयाए उवसपजित्ताण विहरित्तए, कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्त निक्खिवित्ता अन्न गण सभोगपिडयाए उवसपिजताण विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छिता आयरिय वा जाव गणावच्छेइय वा अन्न गण सभोगपिडयाए उवसपिजताण विहरित्तए, कप्पड से आपुच्छिता आयरिय वा जाव गणावच्छेड्य वा अन्न गण सभोगपिडयाए उनसपिजताण विहरित्तए, ते य से वियरन्ति, एव से कप्पइ अन्न गण सभोगपिड-थाए उनसपज्जिताण विहरित्तए, ते य से नो वियरन्ति, एव से नो कप्पइ अन्न गण समोगपडियाए उवसपजिताण विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणय लमेजा, एव से कप्पइ अन्न गण सभोगपिटयाए उवसपिजताण विहरित्तए, जत्युत्तरिय धम्मविणय नो लमेजा, एव से नो कप्पड अन्न गण सभोगपडियाए उवसपजिताण विहरित्तए ॥ १२७ ॥ आयरि(ओ)यउवज्झाए य गणायवकम्म इच्छेजा अन्न गण सभोगपडि-याए उनसपिजताण विहरिताए, नो कप्पइ आयरियडवज्झायस्स आयरियडवज्झायत्त अनिक्सिविता अन्न गण सभोगपटियाए उवसपजिताणं विहरित्तए, कप्पइ आयरि- बरुषण्यायस्य कायरिवरवण्यायतं निषित्वविता कर्ता वर्णं संयोगपदिवार स्व-

488

संपानितार्थं बिहरिताए, मो से कप्पड अजापधिकता आश्रावियं वा बाब गनावरकेर्द मा **मर्च** गर्न संभोगपश्चिमाए उनसंपश्चितानं बिहरित्तपुः ऋष्यद् सं आपुरिता आमरिने वा जान गणलच्छेर्य वा अंच गर्ज संमोगपश्चिमाए उन्हेंपन्नियार निहरित्तए, ते व से विमर्गित एवं से कम्पह सर्व गर्ज संभोगपडियाए उवसप्रजिता मिहरित्तए; से य से नो नियरन्ति पून से नो कप्पन्न आई सर्व संमोगपत्रिकार सवसंपानिताचे विद्वतित्तप्, जल्पुत्तरियं चम्मविषयं समेजा, एवं से कप्पद्र शर्व गर्व चंनोपपडियाए उपरंपिकताचे निवृरितए। कलुत्तरियं धरमनिवर्य नो क्रमेजा एतं से मो क्याद अर्थ गर्ण संभोगपडियाए उपसंपत्रितार्थ विदरिक्त 🛭 १९८ 🛭 निवस य इच्छेजा अन आयरिवटवज्हार्य उदिसावेतए, शो से कप्त्र अवायुध्या आयरियं वा जान गणाक्योदारं वा अर्थ आवरिकतवासार्गं वादिसावेत्ता। क्रम्यं में आप्रस्थिता आवरिनं ना बान गणानचेक्य ना क्षत्रं आयरियस्त्रकारां सरिधानेष्य दे व से विवरन्ति एव से कन्छ वर्ण मानरियतकानार्व उदिसावेतर, दे व से मी क्रियरन्ति एवं से नो क्रम्यह क्रज़ं भागरियतकत्वार्य छहिसादेतए, नो से क्रम्पर रेसिं कारणे अवीवेता मार्च भागरियतकासार्य उदिसावेतात. सम्पद्द से रेसि कारणे रीवेता अर्थ जावरियवनज्ञानं विद्यानेतप् ॥ ११९ ॥ परामच्चेदप् न इच्छेजां अस आयरिक्डमञ्चानं उदिवानेतप् ( ) भो ये कम्पद् अजापुर्व्यता बानरेनं वा बाव राजाक्योद्धर्य वा जर्ज आगरियतवन्त्रसार्थ सहितावेताए, कप्पह से श्राप्तियाँ भावरियं वा जान गणावच्छेद्वं वा शर्च आयरिवतवज्ञानं तरिसावेतप्, ते व है नियरन्ति पूर्व से कम्प्य अर्थ आयरियतगज्जार्य तहिसावेत्तरः ते व से नी विवरन्ति एव से नो कम्पद अर्थ जामरिक्तक्तार्थ उदिसावितपः नो 🗓 कप्पद देखि वार्ष अधीनेता कर्क भागरियत्वनमानं तहिसानेत्तप्, कप्पद्व से रोसि कारणं ग्रीनेता सर्व मामरियत्वकार्यं सहिसावेशए ॥ १६ ॥ शामरियत्वकाराए व क्ष्मेणा वर्ष भागरिकतकारार्वं प्रविधानितय, ( ) भी से कप्पत्त समायुष्टिका बागरियं वा मान गमानच्येवनं ना सर्व मानरिक्तनज्ञानं छहिसानेतपः कप्पदः से मापुष्यजी भागरित वा बाल गणावरकेत्र वा अर्थ भागरियतवन्तार्य तरिवानेतप्, तं य प्रे मियरन्ति पूर्व से कप्पक् मर्च मायरिवतकमार्थ तक्तिसमितपः ते व से नी विवरन्ति एवं से मी कप्पड़ कर्ज कायरियतक्त्रामं प्रशिसानेतर, नो है क्पाई देसि कार्ण असीनेका सर्व भागरियतमञ्जात दक्षितनेका, कप्पह से वसि नार्प रिनेता क्या आध्यस्य विकास किया है तो स्थान के स

77-

वा आहन्त वीसुम्(भि)मेजा, त च सरीरगं (केइ) वेयावन्तक(रा-रे भिक्खू)रा इ(च्छि)च्छेजा एगन्ते वहुफासुए (पएसे) थण्डिले परिद्ववेत्तए, अत्यि याई थ केइ सागारियसन्तिए उवगरणजाए अचित्ते परिहरणारिहे, कप्पइ से सागा(रि)रकड गहाय त सरीरग एगन्ते बहुफाछए थण्डिले परिद्ववेत्ता तत्थेव उवनिक्खेवियव्वे सिया॥ १३२॥ भिक्ख्य अहिगरण कट्टुत अहिगरण अविओसवेता-नो से कप्पइ गाहावइकुल (पिण्डवायपिडयाए) भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, नो से कप्पइ वहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खिमित्तए वा पविसित्तए वा, नो से कप्पड गामाणुगाम (वा) दूइजित्तए, (गणाओ वा गण सकमित्तए वासावास वा वत्थए) जत्थेव अप्पणो आयरि(ओ)यउवज्झाय पासेजा वहुस्सुय वच्भागम, कप्पइ से तस्स(अ)न्ति(य)ए आलो(इजा)एतए पडिक्कमित्तए निन्दित्तए गरहित्तए विउद्वित्तए विसोहित्तए अकरणाए अञ्भुद्वित्तए अहारिह पायच्छित्त (तवो-कम्म) पिंडविजत्ताए, से य सुएण पट्टविए आइयव्वे सिया, से य सुएण नो पट्टविए नो आडयन्वे सिया, से य सुएण पट्टविज्ञमाणे नो आइयइ, से निज्जूहियन्वे सिया ॥ १३३॥ परिहारकप्पडियस्स ण भिक्खुस्स कप्पइ (आयरियडवज्झा(या)एण) तिह्वस ए(गंसि)-गगिहसि पिण्डवाय दवावे(पिडिग्गाहे)तए, तेण पर नो से कप्पइ असण वा ४ दाउ वा अगुप्पदाउ वा, कप्पइ से अन्नयर वेयाविडय करेत्तए, तजहा-उड्डावण वा अणुद्वावण वा निसीयावण वा तुयद्वावण वा, उन्ना(र)रपासवणखेलजल्लसिङ्घाणविगि-बण वा विसोहण वा करेत्तए, अह पुण एव जाणेजा-छिन्नावाएस पन्थेस (आउरे जजारे(सिंसि)ए पिवासिए) तवस्सी दुव्वले किलन्ते मु(च्लि)च्लेज वा पव(डि)डेज वा, एव से कप्पइ असण वा ४ दाउ वा अणुप्पदाउ वा ॥ १३४ ॥ नो कप्पइ निगान्याण वा निग्गन्थीण वा इमाओ पञ्च (महण्णवाओ) महानईओ उदिहाओ गणियाओ विक्षयाओ अन्तो मामस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा सतरि-त्तए वा, तंजहा-गङ्गा जनणा सरयू (एरावई) कोसिया मही, अह पुण एवं जाणेजा-ए(रा)रवर्ड कुणालाए-जत्थ चिक्क्या एग पाय जले किचा एग पाय यले किचा, एवं से कप्पड़ अन्तो मासस्म दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा सतरित्तए वा, जत्य नो एव चिक्कया, एव से नो कप्पड अन्तो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुती वा उत्तरित्तए वा सतारित्तए वा ॥ १३५ ॥ से तणेस वा तणपुषेस वा पलालेमु वा पलालपुडेमु वा अप्पण्डेमु अप्पपाणेमु अप्पनीएमु अप्पहरिएमु अप्पोस्सेमु अप्पुत्तिङ्ग-पणगदगमहि(य)यामः (डग)डासताणएन अहेसवणमायाए नो कप्पड निग्गन्याण वा निग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्मए हेमन्तगिम्हानु वत्यए ॥ १३६ ॥ से तणेसु ना बान छंतानपुर्ध, उप्पिसनस्मायाप् रूप्यू किमानाज ना क्षेत्रान्यांच ना सहप्पापे उत्तरप्र हैमन्त्रिमस्तात बत्यप् व १९४० ॥ से तमेस ना वास छंत्रप्राप् एस अहैरमस्त्रिक्तसब्वे(ध) यो क्रम्यू किमान्याल ना क्षित्रपर्धि करस्पर्य उत्तरपर्धि वात्रांच क्ष्त्रपर्धि अस्तर्धि हो जान छंतापुर्ध्व विकासि उत्तरपर्धि वात्रान्यं क्ष्यप् वा १९२० ॥ से तमेस ना स्वत्रपार्धि अस्तर्धि क्षात्रपर्धि विकासिक स्वत्रप्र क्षात्रपर्धि व्यवस्था वात्रप्राप्ता क्ष्रिस्तर्थे क्षत्रपर्धि क्षात्रपर्धि क्षात्रपर्धि क्षात्रपर्धि वात्रपर्धि क्षात्रपर्धिक स्वत्रप्धिक वात्रपर्धिक स्वत्रप्ति क्षात्रपर्धिक स्वत्रपर्धिक स्वत्रपर्या स्वत्रपर्धिक स्वत्रपर्धिक स्वत्रपर्धिक स्वत्रपर्धिक स्वत्रपर्धिक स्वत्रपर्य

पश्चमो उदेसओ देवे य इत्विहर्व मिठम्बिता निमार्ज पविस्पाहे(नेव्हे)जा र्व व सिमार्जे साहर (जर) वेजा मेहूनपश्चिमणपत्ते वानजह पाउम्मासियं परिहारद्वरमं अञ्चनम् n १४ ।। देवे व पुरिशस्य विजनिक्ता निगानिंग पवित्रवाहेजा से व निमान्त्री साइजेजा मेहूमपश्चित्रकापता आवज्य चाउम्मास्त्रं परिदारक्षणं अस्त्रमार्थः u १४१ ॥ देवी य इत्यक्तं विश्वन्तिता निमान्तं पविस्ताद्वेजाः तं न विस्पन्ते सत्जेजा मेहूनपरितेनचपरे बावजह पारम्मासिरं परिहारकां अक्षानिरं ॥ १४२ ॥ देवी य पुरिसम्बं मिठमित्रा निमान्त्रि पविस्ताहेजाः सं व निमन्त्री साहकेका भेडुमपहित्रेवणपता आवका कारम्मातिये वरिहारद्वार्थ क्यान्यस् ॥ १४३ ॥ सिनक् य व्यक्तिगरणं कर् तं व्यक्तिगरण व्यक्तिसविता इच्छेणा व्य<sup>क्</sup>रो गर्न उनर्धपनिताणं निवरित्तप्, कन्नद् शस्य पत्र शहन्त्(व)मारं केनं कर्ड परि मि(क्वा) व्यक्तिस २ तामेव गर्च पश्चिमिकाएमक्वे सिवा अहा वा तस्य गक्स परि<sup>वे</sup> विया ॥ १४४ ॥ निक्स, य वस्ययनितीए अपरसमियरोक्यो संबद्धिए निर्मित (गिंका-भिज्ञ-समानवं)गिष्के कसमं वा ४ पविभावेता आहारमहारेखने 🗯 पच्छा जानेजा अनुस्पर् सूरिए जल्बसिए वा से वं व (जासवंति) सुदे वं व पार्जिति व व पविनग(हर्नेति)हे ते निगिक्तगांचे (वा) निसोहेमाने मा(नो न)स्त्रम् तं अध्यना मुक्रमाने अवेसि वा (व्यमाने) असुप्यवेमाने (शहमीवनपश्चित्रपर्ये) मानजङ् बाउम्मासिनै परिहारक्काण भूजवाहर्य ॥ १४५ ॥ सिन्ब् य उम्मननिरीए अन्नत्वमिमर्पक्रमे पंपविष् निकृतित्वात्तमानने असर्व ना ४ पवित्माहेता नाहार माहारेमाने यह पत्रका वाणेजा-जनुम्मय प्रिए सत्वमिय ना से व न सहै व व पाकिसि जं च पड़िमाहे सं मिशिक्साचे विसोहेसाणे नाइक्सर रो अध्या सुद्रमाने महोति वा मञुज्यवेगाचे बावजह नासम्मासिनं परिहारहार्यं बसुन्वहर्य ॥ १४६ ॥ मिनम् म सम्मयनितीए अपरनमियपेड्यो असेनडिए तिकित्ति<del>को</del> ससमं वा v पविमाहिता भाहारसाहारेमाने श्रह पच्चा वानेमा-मसुमए स्रेए

अत्थिमिए वा, से ज च मुहे ज च पाणिसि ज च पिडम्गहे त विगिद्धमाणे विसोहे-माणे नाइक्कमइ, त अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसि वा अणुप्पदेमाणे आवजह चाउम्मासिय परिहारद्वाण अणुग्चाइय ॥ १४७ ॥ भिक्ख् य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसकप्पे असथिडए विडिंगेच्छासमावने असण वा ४ पिडिग्गाहेता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेजा-अणुग्गए स्रिए अत्थिमए वा, से जं च मुहे ज च पाणिसि ज च पिंडरगहे त विगिन्नमाणे विसोहेमाणे नाउकमइ, तं अप्पणा भुजमाणे अनेसि वा अणुप्पदेमाणे आवजाङ् चाउम्मासिय परिहारद्वाण अणुम्घाइय ॥ १४८ ॥ इह खलु निगान्यस्स वा निग्गन्यीए वा राओ वा वियाले वा सपाणे सभीयणे उग्गाले आग-च्छेजा, त विगिश्चमाणे विसोहेमाणे नाइक्षमइ, त उग्गिलित्ता पश्चोगिलमाणे राइ-भोयणपिंडसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासिय परिहारद्वाण अणुग्घाइय ॥ १४९ ॥ निग्गन्थस्त य गाहावइकुल पिण्डवायपिडयाए अणुप्पविट्ठस्स अन्तो (०) पिडग्गहसि पा(णाणि)णे वा बी(याणि)ए वा रए वा परियावजेजा, त च सचाएइ विगिधितए वा विसोहेत्तए वा, (तं पुच्चामेव आलो॰ विसोहि-य-या-त) तओ सजयामेव भुक्षेज वा पिएज वा, त च नो सचाएइ विगिष्टित्तए वा विसोहेत्तए वा, त नो अप्पणा भुषेजा (तं) नो अन्नेसि अणुप्पदेजा. एगन्ते बहुपासुए थण्डिले पहिलेहिता पमजिता परिद्वेतेयव्वे सिया ॥ १५० ॥ निग्गन्थस्स य गाहावङकुल पिण्डवाय-पिडियाए अणुप्पिनिट्टस्स अन्तो पिडिग्ग(हगं)हिस दए वा दगरए वा दगफुसिए वा परियावजेजा, से य उसि(ण)णभोयणजाए, परिभोत्तन्वे सिया, से य (नो उसिणे) सीयमोयणजाए, त नो अप्पणा भुक्षेजा नो अनेसिं अणुप्पदेजा, एगन्ते बहुफासुए थण्डिले पिंडलेहित्ता पमिनता परिद्ववेयव्वे सिया ॥ १५१ ॥ निरगन्थीए य राओ वा वियाले वा उचारं वा पासवण वा विगिन्नमाणीए वा विसोहेमाणीए वा अन्नयरे पद्यजाईए वा पक्खिजाईए वा अन्नयरइन्दियजाए त परामुसेजा, त च निगान्थी साइजेजा, हत्यकम्मपिडसेवणपत्ता आवज्जइ वाउम्मासियं परिहारद्वाण अणुम्घाइय ॥ १५२ ॥ निगम्थीए य राओ वा वियाछे वा उन्चार वा पासवण वा विगिन्नमाणीए वा विसोहेमाणीए वा अन्नयरे पद्यजाईए वा पक्खिजाईए वा अन्नयरेसि सोयंसि ओगाहेजा, त च निम्मन्थी साइज(अइ)जेज्जा, मेहुणपिंडसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासिय परिहारद्वाण अणुग्वाङ्य ॥ १५३ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए होत्तए ॥ १५४ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए गाहावइकुरूं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ १५५ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए वहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ १५६ ॥

॥ १५७ ॥ मो क्रम्यः जिस्सन्यीए अचेकियाए होत्त(ईत)ए ॥ १५८ ॥ मो सम्ब निस्पन्नीए अपह्याए द्वोत्तए॥ १५९॥ तो कपह निस्पन्नीए बोसद्वसद्वाए होतर १ १६ ॥ मो कप्पह निमान्बीए बद्धिमा गामस्समा बाब (रामहाबीए) पंतिबेसस्य वा उर्व बाहाको धायिजिसन २ स्रामिस्(हो)हाए एयपहराए ठिया भागावणाए मानावेशए ॥ १६९ ॥ कण्य है स्वरणगरस मन्त्रो नगडाए संबादिपविषदाए समनभगडवाए ठिवा आवादनाए आवानेण् ॥ १६१ ॥ मी कप्पद्र निव्यानबीए ठाणाइबार होतए ॥ १६३ ॥ मी कप्प निरगान्दीए पविस्टाविद्याए होताए ॥ १६४ ॥ नो कप्पद्र निरमान्दीए अङ्ग्री यासनिवाद होताए ॥ १६% ॥ मो कप्छ निमान्दीए से(ति)मजिवाद होण्डे प्र १६६ n नो कप्पद निस्थल्पीय बीरासक्रियाए होत्तए ॥ १६७ n नो क्प्पद निस्यन्त्रीय वण्डा(ई)सविवाए (पक्रिक्सवाहाए) होताए ॥ १६८ ॥ मी बण्ड निमान्गीए क्रमण्डसार्याए होतए ॥ १६९ ॥ नो क्यह निमान्दीए क्रेमेनि बाए होतए ॥ १७ ॥ मो क्यूड निमान्बीए क्ता(बसाइ)विवाए होतए ॥ १४९ व मो कपद निमानीए अम्बद्धविनाए होतए ॥ १७२ ॥ मो क्पाइ निमानीए एगपासिनाय होताए ॥ १७३ ॥ नो बस्टाइ निम्मन्यीर्थ जासक्रमपूर्ण भारेण वा परिवरिक्तर वा ध १७४ ॥ कप्पद निस्तानवार्थ जातक्रमञ्जूमे वारेकर ना परिदर्श(नदि)ताए जा ॥ १४% ॥ नो रूपद निम्मन्तीयं शर्शा)<del>गरवर्षी</del> बाए(बर्ग)मंत्रि शास्त्र(बिद्वि)तर् वा द्वबद्वि(तिस्त्रि)तर् वा ॥ १०६ ॥ वर्ण्य निस्तान्वार्ल सादस्यवंशि कासर्पति कासदत्तप् वा द्वयद्वितर् वा ॥ ९५० ॥ वी क्रम्पद्र निस्मान्वीचं समिसा(शर्व)चेति प्रकर्मति वा पी(वर्ग)चेति वा विद्वित्तर् वा निर्शिद्रतए वा (आख्द्रतए वा हुमहितए वा) ॥ ९७८ ॥ कृष्यः निरम्भवार्षं सर् निश्चीवृत्तापु का ॥ १७९ ॥ नो कम्पाह् निमान्बीन (सनाहब)अनाई पानी महिद्वित्तए) सनेप्टर्न काडर्न चारेत्तए वा परिवृत्तितए वा ॥ ९८ ॥ वण्ड निम्प-न्यानं सबस्यनं साउनं कारेताए वा परिवृत्तित्त् वा ॥ १८९ ॥ नो क्यार मिसन्त्रीनं स(बिड)मे(बिजा-मो)प्टेर्य पायकेसी(जाजो)चे मारताए वा परिवरित्तर वा ॥ १८९ । कप्पद निमान्यार्थ सकेव्यर्थ पायकेसरियं वारेत्तए वा परिवरित्तए वा ते १८३ व तो

सर्विटमा सञ्जद्ध ।

तरवामिणसण्डकगुढ्दे बाक्यतण्डलो च माइ तस्य जन्मतमो क्याने क्याने क्याने क्याने स्थानिक प्रमाणने वंडी किक्या, तस्यम्ममाने वंडी वा प्यानेक्यानेवा सा प्रमाणनेवाने वंडी किक्या, तस्यम्ममाने वंडी वा प्रमाणनेवानेवा सा प्रमाणनेवानेवा

कप्पइ निम्मन्थीण दारुदण्डयं पायपुञ्छण धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ १८४ ॥ कपड निरगन्थाण दारुदण्डय पायपुञ्छणं धारैत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ १८५ ॥ नो कम्पइ निग्गन्याण वा निगान्थीण वा पारियासि(ए भोयणजाए)यस्स आहारस्स जाव त(द्व)यणमाणमेत्तमवि भूइप्पमाणमेत्तमवि विन्दुप्पमाणमेत्तमवि आहारमाहारे-त्तए, नन्नत्थ आ(गाडा)गाडे(म्र)हिं रोगायद्वेहिं ॥ १८६ ॥ नो कप्पइ निम्मन्याण वा निग्गन्थीण वा पारियासिएण आलेवणजाएणं गा(य)याइ आलिम्पित्तए वा विलिम्पित्तए वा, नन्नत्य आगाढेहिं रोगायद्भेहिं ॥ १८७ ॥ नो कप्पड निग्गन्थाण वा निग्गनथीण वा पारियासिएण तेहेण वा घएण वा गायाइ अव्भिन्नेताए वा म(क्सि)क्खेत्तए वा, नन्नत्य आगाढेहिं रोगायद्वेहिं ॥ १८८ ॥ नो कप्पइ निग्ग-न्थाण वा निग्गन्थीण वा कक्केण वा लोद्धेण वा अन्तयरेण वा आलेवणजाएण गायाइ उन्बलेत्तए वा उन्बहित्तए वा, नन्नत्य आगादेहिं रोगायद्वेहिं ॥ १८९ ॥ परिहारकप्पट्टिए ण भिक्ख् वाहिया थेराण वेयाविडयाए गच्छेजा, से य आहच अइक्रमेजा, त च थेरा जाणेज अप्पणो आगमेण अन्नेसि वा अन्तिए सोचा, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नाम ववहारे पट्टवियन्वे सिया ॥ १९० ॥ निमान्थीए य गाहानइकुल पिण्डवायपिडयाए अणुप्पविद्वाए अन्यरे पुैलागभत्ते पिडगगाहिए सिया, सा य सथरेजा, एव से कप्पइ (त दिवस) तेणेव भत्तहेणं पज्जोसवित्तए, सा य नो सथरे, एव से कप्पइ दोच पि गाहावहकुल (पिण्डवायपिडयाए अ०) मत्ताए वा पाणाए वा निक्लामित्तए वा पविसित्तए वा ॥ १९१ ॥ ति-नेमि ॥ विहक्रणे पञ्चमो उद्देसओ समत्तो ॥ ५॥

छट्टो उद्देसओ

नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा इमाइ छ अव(यणा) तञ्चाइ वइत्तए, तजहा—अलियवयणे हीलियवयणे खिंसियवयणे फरुसवयणे गार त्थियवयणे, वि(उ)-ओसिवय वा पुणो उदी(िर)रेत्तए ॥ १९२ ॥ छ कप्पस्स पत्थारा पन्नता, तजहा—पाणाइवायस्स वाय वयमाणे, मुसावायस्स वाय वयमाणे, अदिज्ञादाणस्स वाय वयमाणे, अविरह्(य)यावायं वयमाणे, अपुरिसवाय वयमाणे, दासवाय वयमाणे, इचेए कप्पस्स छप्पत्थारे पत्थरेता सम्मं अप्पिडिपूरेमाणे तद्घाणपत्ते सिया ॥ १९३ ॥ निग्गन्थस्स य अहे पायंसि सा(णू)णुए वा क(णू)ण्टए वा ही(सक्क)रे वा परियावजेजा, त च निग्गन्थे नो सवाएइ नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, त (च) निग्गन्थी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्कमइ ॥ १९४ ॥ निग्गन्थस्स य

१ नीरसे भोयणे।

486

अस्टिएसि पाने वा बीए वा रए वा परियावजेजा र्त प विज्यन(बो)ये तो संवार-(जा)इ नीहरिताए वा विमोद्देशए वा त निस्मन्दी नीहरसाजी वा विमोद्देमाची वा मान्डमइ ॥ १९५ ॥ निम्मन्यीए य **आहे** पार्यक्ष लायपुर वा क्रप्टए वा **ह**(रए)रे ग (सप्तरे वा) परियायकेका ते च निम्मम्बी मो संवाहर नीहरित्तर वा विमोहेतर बा. ते निमान्ये नीहरमाणे वा विगोहेमाणे वा नान्यसङ् ॥ ९९६ ॥ निम्मन्वीए व अस्टिस्टि पाने वा वीए का व्यावा प्रीयानजेका र्श्व भारतमानी नी स्वाप्र नीइरित्तप् या निसोहेतप् वा तं निमान्ये मीहरमाथे वा निसोहेमाथे वा नाप्डमर n १९७ n विरगत्ये निमान्यि बुर्मास वा विसमित वा पवर्गत वा पर (द)वान मानि ना प्यडमाणि वा गेक्टमाचे वा अवसम्बनाचे वा नाइडमह त १५८ है विस्तानचे निमान्य सेवेंसि वा पहेंसि वा फलगति वा उदर्वसि वा कोर(उद्द)प्सार्वि वा अनेत्(उप)स्ममाणि वा गेष्ट्रमाणे वा अवस्थ्यमाणे वा लहस्टमई ॥ १९५ ॥ निमान्ये निम्मन्यं नार्वं भा(रोड)दममाणि वा खो(उ-ऐड)दममावि वा रेक्ट्सने ना अनसम्बनामे वा नाण्डमह ॥ २ ॥ वित्तनिर्त्त निम्पन्ति निमान्ते ग्रे(मि)न मामे वा भरतम्बनाणे का नाइक्सइ॥ २ ९ ॥ विचवित्त निस्पन्ति निस्पन्ति रोज्याचे वा अवकारमाचे वा नाइवसइ ॥ २ २ ॥ वस्ताहाई ( ) उम्मावपर्व ( ) डबसम्गरच ( ) साहिमर्थं ( ) सपायच्छितं ( ) मत्तपामर्थडनारमि<del>ड</del>नं ( ) अञ्चला(यस्मि)ने निम्मन्त्रि निम्मन्त्रे नेन्द्रसाचे वा कारक्ष्ममाचे वा नास्क्रम ॥ १ १॥ छ कम्परस पश्चिमन्यू पश्चताः संबद्धाः कोन्द्रस्य संवयस्य पश्चिमन्यू, मोदरिप सचनवगरस प्रक्रिमन्यू, डिन्ति(बी)विष् एसमागोनरस्य प्रक्रिमन्यू, वत्रक्रकेष् इरियापदियाए प्रक्रिमन्यू, इष्टाक्रो(ग-स-ए)मे मुक्तिमनास्त प्रक्रिमन्यू (सिक्री) मुख्ये मुख्ये निवानकाणे सिवि(गोक्क)मानस्य प्रक्रियन्त्व, सन्त्व मात्रवा वार्ष-

मानवा पसत्या ॥ २ ४ ॥ अस्मिहा कपश्चिद्रं पचता संबहा-सामाद्रवसेववर पश्चि

क्षेत्रोबद्वावनिवसमयकप्पष्ठिई, निन्तिसमानकप्पष्ठिई, निन्दित्रवादयकप्पष्टिई, विन कपद्धि, वेरकपद्धिरं ॥ २ ५ ॥ ति वेमि ॥ विष्ठकस्य स्ट्रो स्ट्रेसको समत्तो ॥ ६ ॥ विष्ठकप्पसर्च समर्च ॥

वा कारेड् कारेंत्रं वा सङ्बद्धः। १७ ॥ के मिक्क् कव्यसोहनगरस्तरहरूनं बन्ध-उरियएग वा गारत्विएग वा कारेड़ कारेंते वा शाहजड़ ॥ १८ ॥ जे मिन्न जन्मण सुई जायह बार्यते वा साहजह ॥ १९ ॥ वे मिनन्त कानुसूत् विप्यक्रमें बारह बार्वते में सहस्वद् ॥ २ ॥ से निक्ष अवद्वाए कम्पसीहर्ग्य वासक बार्यंत वा साइस्ट ॥ ११॥ के मिल्ल भजद्वाए मराच्छेमकर्य जानह आयरा ना साहजार ॥ ११ ॥ जे मिल्ल समिद्दीए सूर्व आनद्द आनंदि वा साइन्यद् ॥ २३ ॥ जे शिन्यू समिद्दीए पिप्सर्न कायह जायेते वा राहणह ॥ २४ ॥ वे निमन्द्र शतिहीए जहखेशकर्य जमह कार्यंते वा शाहज्ञह ॥ २५ ॥ से मिलन् कविद्दीय कन्नसीहमने कायह वार्यंत ना साइनाइ ॥ २६ ॥ वे शिक्त पाविद्वारिये सर्व नाइता बर्ल सिम्बरसामिति पार्न क्तिकड क्रिकेट वा साइकड़ ॥ २० ॥ वे मिकब् पाडिडामिने पिप्सामें बाइस करें स्विदिस्सामिति यार्व किंद्ह स्वितंतं वा साइजह ॥ १८ ॥ व मिनव पाडिहारैनं महत्त्वोजगर्न माहता गई बिविस्सामिति समुद्रदर्भ करेड करेंत्र वा साहज्य में २९ म वे निस्त्य पाविद्यारिनं कन्मछोड्नग बाइता कन्ममते जीहरिस्सामिति रहमकं वा जनसर्व वा जीहरेड जीहरेंतें वा सक्तक ध १ ध जे सिवन अधानो एडस्स भद्वाए सहं बाहता भव्यमणस्य **भ्या**पवेह भयुप्पवेतं वा सहज्जह म ११ म वे मिलन् जपानो एडरस बद्वाए पिप्कर्न बाइता बानामध्यस्य समुप्तदेव ब्रह्मपर्देव वा सम्बद्ध ॥ १२ ॥ वं निक्ष अपनो एक्स अञ्चार जारकेननरं वारण क्षमामनस्य क्षुप्यवेद मनुष्यवैदं ना साइज्जद् ॥ ११ ॥ के मिनक् मध्यमी एकस्य अह्याए कन्नसोङ्ग्यमं जाइता जन्मगण्यस्य अञ्चलदेइ अञ्चलदेतं वा साहन्यः ॥ ३४ ॥ के निषय, सूर्ध अनिहीए प्रथमिक्द प्रविमर्जत वा सक्षक ॥ ३५ ॥ वे निष्य भमिद्वीए पिप्पक्षमं प्रवाणिनाइ प्रवाणिनांतं वा साइजाइ ॥ ३६ ॥ वे निकल् जन्मिए महत्त्वकेम्पर्या प्रमाध्यमह प्रमाध्यमंत्री वा साहकाह ॥ ३७ ॥ मे जिल्ला समिहीए वक्तारीम वर्ष प्रविधानक प्रविधार्थतं वा साहरूकः ॥ ३४ ॥ मे शिक्त् कालवपार्ववावाक्यार्व वा महियापानं वा अन्यतिवर्ण वा गारत्विप्य वा परिवशके वा संदर्भ वा कमानेद वा सक्कापनो नारणवाए सहुमसनि यो कप्पद बाबमाने सरमाने मा मण्यस्य विवदः मियदेवं वा साहजह ॥ १९ ॥ वे विक्तः रहेवं वा अवनेद्वितं ना बेकुस्तान्य ना सम्ब्यतस्थिएक ना गारस्थिएक ना परिच्छानेह ना संदर्भेह ना क्मान्त्र वा अक्सप्पणी कारकशाप शहुममनि शो क्पन्त् बाबमाने सरमाने बान मुज्यस्य निमर्द्धं निमर्दतं वा साहन्यदः॥ ४ ॥ जे निक्ष्यं पायस्य एवं दृष्टिवं

१ बेराकिसाय, देसि बप्पा ति ।

याणि वा पच्छासथुयाणि वा कुलाई पुव्वामेव भिक्खायरियाए मणुपविसइ अणुप-विसत वा साइजइ ॥ ९४ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अपारे-हारिए वा अपरिहारिएण सर्दिः गाहावङ्कुल पिंडवायपिंडयाए णिक्खमइ वा अणुप-विसइ वा णिक्खमतं वा अणुपविसत वा साइजइ ॥ ९५ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ वा अपरिहारिएण सद्धि वहिया विहारभूमि वा वियारभूमि वा णिक्खमइ वा पविसइ वा णिक्खमत वा पविसत वा साइजाइ ॥ ९६ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ अपरिहारिएहिं सर्द्धि गामाणुगाम दुइजाइ दुइजातं वा साइजाइ ॥ ९७ ॥ जे भिक्खू अण्णयरं पाणगजायं पिनाहिता पुष्फा पुष्फा आडयइ कसाय २ परिट्टनेइ परिट्टनेंत वा साइजइ ॥ ९८ ॥ जे भिक्ख अण्णयर मोयणजाय पिडगाहित्ता सुन्मि २ भुजइ दुन्भि २ परिद्ववेइ परिद्ववेंत वा साइजइ ॥ ९९ ॥ जे भिक्खू मणुण्ण भोयणजाय पहिगाहेत्ता वहुपरियावण्णं सिया अदूरे तत्थ साहम्मिया सभोइया समणुण्णा अपरिहारिया सता परिवसति ते अणापु-च्छि(य)या अणिमतिया परिद्ववेह परिद्ववेंत वा साइजाइ ॥१ ००॥ जे मिक्ख् सागारिय र्पिंड गिण्हइ गिण्हत वा साइजाड ॥ १०१ ॥ जे भिक्खू सागारिय पिंड भुजइ भुंजत वा साइजाइ ॥ १०२ ॥ जे भिक्ख सागारिय कुलं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पुन्त्रामेव पिंडवायपिंडयाए अणुप्पविसइ अणुप्पविस्त वा साइज्जइ ॥ १०३ ॥ जे भिक्ख् सागारियनीसाए असण वा पाण वा खाइम वा साइमं वा ओमासिय २ जायइ जायतं वा साइज्जइ ॥ १०४ ॥ जे भिक्खू उडुविद्धयं सेजासथारयं पर पज्जोसवणाओ उवाइणाइ उवाइणत वा साइजाइ ॥ १०५ ॥ जे भिक्ख वासा-वासिय सेजासथारय परं दसरायकप्पाओ उवाइणाइ उवाइणत वा साइजइ ॥ १०६ ॥ जे भिक्ख् उडुबद्धिय वा वासावासिय वा सेजासथारग उवरि सिज-माण पेहाए न ओसारेइ न ओसारेंत वा साइजाइ ॥ १०७ ॥ जे भिक्ख् पाडि-हारिय सेजासथारय अणगुण्णनेता वाहिं णीणेइ णीणेंत वा साइजइ ॥ १०८ ॥ जे भिक्ख् सागारियसितय सेजासथारय अणणुण्णवेता बाहिं णीणेइ णीणेंत वा साइजाइ ॥ १०९ ॥ जे भिक्ख् पाडिहारियं सागारियसतिय वा सेजासथारय दोचंपि अणणुण्णवेत्ता वाहिं णीणेइ णीणेंत वा साइज्जइ ॥ ११० ॥ जे मिक्ख् िए रिथ सेजासथारय आदाय अप्पिहिह्दु सपव्वयइ सपव्वयतं वा साइजइ १९९ ॥ जे सागारियसतिय सेजासयार्य आदाय आहेगरण कहु अण-वनयत वा साइजइ ॥ ११२ ॥ जे भिक्खू पाडिहारियं 🍽 जासथारय विप्पणद्व ण गवेसइ ण गवेसत वा साइजइ

**िम्हिप्**सम

u ६७ n के सिक्ष्य शिक्स का शिक्सपर्णतमं वा समयोग करेड करेंते वा साहन्य u ६८ u के निक्क सोतिने वा रक्तमं वा विकिमिति वा समनेव करेड़ करेंचे व

सारकार १ ६५ ॥ के मिनक प्रकारने वा संबर्ध वा कार्यकां वा समीव करेर करेते ना साहज्यह ॥ ६६ ॥ से मिनजा बयबीकियं सजमेन करेड करेते ना साहज्य

साइयाइ ॥ ६९ ॥ जे मिनल् सुरूप् चतरकरणं सम्मेब करेड् करेंर्त वा साइया ॥ भ तो निक्क पिवास्त्रस्य उत्तरकरणं सम्मेन करेड करेंचे वा साह्यार ॥ ४९ ॥ खे मिन्न महच्छेपजगस्य उत्तरकार्ग सबसेन करेह करेंग्रं वा साहजह ॥ ४२ ॥ जे निकल् कन्यक्षेत्रमहत्त्व कतरकरणं सम्मेन करेड् करेंत्रं वा साहजड म परे व के मिनन्त् करुतार्ग प्रश्ने बनद करंते वा शाहकद ॥ ५४ ॥ में मिनन्त् महत्त्रमें सुरी नगर कर्पते का साहम्बद्ध ॥ ५५ ॥ जे निकन्त कहुसर्ग अवर्ष कावित्र आदेवीं वा धारमर ॥ ७६ ॥ से मिनन् सबुसएय सीसीदगमिबडेन वा उतिनोदगमिवडेन स इत्यानि ना पानानि ना कल्लावि ना शरकीवि ना येतानि ना यहानि नी (सुई न) उच्छोकेन वा पत्रोकेन का उच्छोठेंट का प्रधोवेंट का शाहकह II ५० II जे मिल्ड करिनाई बत्बाई वरेड परेंग्रं वा साहकह ॥ ७८ ॥ वे मिनव् अभिज्वाई बताई नरेर परेंद्र वा साइज्य ॥ ५५ ॥ से मिक्स काउमपार्व वा बास्त्रपार्व वा महिना पाम वा सममेने वरिकटेर वा संस्केट वा कमानेट वा परिकटी वा संस्केट वा कमार्वेतं वा साक्ष्मक् ॥ ८ ॥ जे मिनन्त् देवर्गं वा अवस्थिमं वा वेडण्यूनं वा सबसेव परिमाहेद वा संस्तिद का असानेत वा परिवारत वा संस्तित वा असानेत वा साइबाइ ॥ ८९ ॥ जे निकर्षे श्रियगवैशियमं पविस्तहर्यं वरेत्र वरेतं वा साइबाइ II ८२ II जे मिल्लू फरगवेदिवर्ग पविस्ताहर्ग सरेह सरेत वा सहज्ञर II ८३ ह स्रे निक्तम् वरगवेशियमं पविभाइतं परेड् वरेतं वा साइमाइ ॥ ४४ ॥ मे भिन्य क्कानेतिकां परिकादां परेद वरीतं वा साहबद ॥ ८५ ॥ वे निकल क्रांकेतिकां पहिल्लाई परेड वरेंत्रं वा शाहजह ॥ <६ ॥ के लिक्स निविधं कागरित्रं श्रेका मुक्ति था साहक्ष्य ॥ ८७ ॥ के मिनक् भिद्रिवं गिर्व मेंबह मुक्ति वा सहक्ष II se ॥ वे मिनक् निर्मि नाहुमार्ग गुंकह भूंबर्त वा साहजह प es ग के मिन्स नितिनं भागे सेन्द्र भेजेरी वा साहन्यह ॥ ९ ॥ वे भिक्त निर्देश उन्हासन मुंबह मुंबंद का साहबह ॥ ६९ ॥ जे मिनक निविवानार्थ बन्ध वर्शना साइजाइ 0 ९२ ॥ जे मिरना, पुरेसवर्ष वा प्रकासकर्ष वा करेड वर्षों वा हरूकी 0 ९१ ॥ जे मिरना, प्रसामे वा वसमाण वा गामालगार्म वा बहुकमाने र्रावेड

१ बिमुसाए। १ सोदाए। ३ ग्रदशायद विचा।